दस महाविद्या सहस्रनामावलि

(प्रत्येक नाम के हिन्दी अर्थ सहित)

डॉ० जगदीश सेमवाल
डॉ० शिवबालक द्विवेदी
सोमेश तिवारी

प्रकाशक : श्री सोमेश तिवारी

प्रकाशक : श्री सोमेश तिवारी
टाइप 5वाँ/4, इन्कम टैक्स कालोनी
लक्ष्मणबाग, कानपुर नगर – 208 002

वर्ष : 2023

मुद्रक : श्रेय ऑफसेट
फजलगंज, कानपुर

शब्द संयोजन :
राजेश मल्होत्रा, कानपुर

प्राप्ति का स्थान :
श्रीचण्डी–धाम
आलोपी देवी मार्ग, प्रयाग – 211006
मो. : 9450222767

-: अनुक्रमणिका :-

ॐ श्री गणेशाय नमः

(परब्रह्मस्वरूप एवं सर्वश्रेष्ठ भगवान गणेश जी को नमस्कार है। सबकी रक्षा करने वाले, सबको आश्रय देने वाले, भगवान गणेश को नमस्कार है।)

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभः।

निर्विघ्नं कुरू मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

(घुमावदार मुख वाले/दुष्टों को दण्ड देने वाले, विशाल शरीर वाले, करोड़ों सूर्यों की कान्ति के समान कान्ति वाले, हे भगवान गणेश! सदा मेरे सभी कार्यों को विघ्नरहित करो।)

सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।

शरण्ये त्रयम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते॥

(सभी मंगलों में मंगल की कारण, कल्याणस्वरूपिणी, सभी मनोरथों को पूरा करने वाली, शरण लेने योग्य, त्रिनेत्रा, ज्ञान का आश्रय, गौरी देवी! आपको नमस्कार है।)

कर्पूरगौरं करूणावतारं, संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्

सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानि सहितं नमामि।

(जो कपूर जैसे गोरे वर्ण वाले हैं, करूणा के अवतार हैं, संसार के सार हैं और श्रेष्ठ सर्पों को हार रूप में धारण करते हैं, वे भगवान शिव माता भवानी सहित मेरे हृदय में सदैव निवास करें, उन्हें मेरा नमन है।)

कलहंससमारूढां, वीणापुस्तकधारिणीम्।

वितन्वतीं सदालोकं प्रणमामि सरस्वतीम्॥

(कलहंस के ऊपर अच्छी प्रकार से विराजमान, वीणा और पुस्तक को धारण करने वाली, सदैव प्रकाश (ज्ञान के) को फैलाने वाली, सरस्वती मॉ को मैं प्रणाम करता हूँ।)

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।

तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

(सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के स्वरूप वाले, जिनके द्वारा स्थावर और जंगम जगत् व्याप्त है, जिनके द्वारा परम पद अर्थात ब्रह्म का साक्षात्कार किया गया है, ऐसे परम आदरणीय गुरूदेव को नमस्कार है।)

गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णुः गुरूर्देवो महेश्वरः ।

गुरूर्साक्षात् परं-ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

(गुरू ही ब्रह्मा है, गुरू ही विष्णु है, गुरू ही भगवान शिव हैं, गुरू साक्षात् परब्रह्म है, ऐसे परम–आदरणीय गुरूदेव को नमस्कार है।)

सम्पादकीय

प्रत्येक अच्छे कार्य के पीछे ईश्वर की प्रेरणा होती है। मेरे भीतर बहुत दिनों से यह प्रेरणा आ रही थी कि दस महाविद्या की सहस्रनामावलियों का हिन्दी में अनुवाद हो। भगवान का नाम एक ऐसा जहाज है जो मनुष्य को संसार सागर से पार करा देता है। इन नामों में श्रद्धा और एकाग्रता हो इसके लिए आवश्यक है कि इन नामों का समुचित अर्थ भी पता हो। मेरी सामर्थ्य बहुत सीमित थी अतः इस कार्य के लिए मुझे संस्कृत के दो विद्वानों श्री जगदीश सेमवाल जी एवं श्री शिवबालक द्विवेदी जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ जिन्होंने अपना ज्ञान एवं बहुमूल्य समय प्रसन्नता एवं बड़ी सहजता से दिया। सरकारी नौकरी में रहते हुए समय निकाल पाने की समस्या थी किन्तु जिस किसी प्रकार से इस कार्य हेतु समय निकाला गया। पराशक्ति के नामों की सही व्याख्या केवल पराशक्ति ही कर सकती हैं फिर भी उनकी कृपा से जितनी बुद्धि खुली, तद्नुसार नामों के अर्थ निकाले गये। मानवीय स्तर पर बात की जाए तो इस कार्य के लिए एक ऐसी टीम का होना आवश्यक है जिसमें सदस्य रूप में व्याकरणाचार्य, आगमाचार्य, साहित्याचार्य एवं शास्त्रों का मन्थन करने वाले लोग हों। उपलब्ध संस्कृत कोश इस कार्य के लिए अपूर्ण है। बहुत से शब्द इन शब्द–कोशों में नहीं मिलते हैं और उनके लिए व्युत्पत्ति कर या एकाक्षरीकोश की मदद से अर्थ निकालना पड़ता है, इसके अलावा बहुत सारे शब्द प्रतीक रूप में कहे गये हैं। भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान या गणित में अध्याय के पश्चात कुछ हल किये गये प्रश्न होते हैं और इन उत्तरित प्रश्नों के बाद अनुत्तरित प्रश्न होते हैं। उपलब्ध संस्कृत कोश उदाहरण के तौर पर दिये गये हल किये गये अर्थात उत्तरित प्रश्न की तरह ही हैं। एक परेशानी यह भी है कि कई बार एक ही नाम कई जगह आ जाता है और प्रत्येक जगह पर उनका अलग अलग अर्थ निकालना पड़ता है जिससे अर्थ में पुनरूक्ति न हो। कुछ शब्द ऐसे भी हैं जिनके अर्थ प्रचलित या शब्दकोश में दिये गये अर्थ से भिन्न होते हैं क्योंकि उनकी देवी के नाम से संगति नहीं बैठती है। कुछ विद्वानों का कहना है कि शब्द सांकेतिक हैं एवं उनके वास्तविक अर्थ कुछ और हैं। मेरा मानना है कि अभिधाशक्ति भी शक्ति ही है अतः अभिधाशक्ति से निकाले गये अर्थों को गलत नहीं कहा जा सकता। भक्त के लिए अभिधाशक्ति से निकला हुआ अर्थ पर्याप्त है, जबकि ज्ञानी की प्रवृत्ति गूढ अर्थ में होती है। अभिधाशक्ति, लक्षणाशक्ति या व्यंजनाशक्ति से निकाले गये अर्थ या प्रतीकात्मकता के आधार पर निकाले गये अर्थ, सभी अर्थ सही हैं। यह कहा जाता है कि भगवान को जिस रूप में ध्यावोगे, उस रूप में वे मिलेंगे, अतः अभिधाशक्ति से निकाला गया अर्थ गलत नहीं कहा जा सकता यद्यपि इसका सूक्ष्म अर्थ भी पता हो तो और बेहतर है। विज्ञान की भाषा में भगवान को ऊर्जा कहा जा सकता है और ऊर्जा कोई भी आकार ग्रहण कर सकती है। ध्यान में ईश्वर का जो स्वरूप दिया जाता है, वह स्वरूप भले ही किन्हीं चीजों का प्रतीक हो, किन्तु उस स्वरूप का ध्यान करने पर ईश्वर उसी स्वरूप में आ जाते हैं। मैं शक्ति सहित परमात्मा को प्रमाण करता हूँ और उन्हें धन्यवाद देता हूँ क्योंकि उन्होंने मुझे इस अच्छे कार्य को करने की प्रेरणा, शक्ति एवं संसाधन दिये। मैं गुरू शक्ति को प्रणाम करता हूँ और उन्हें धन्यवाद देता हूँ। मैं उन सभी को प्रणाम करता हूँ, धन्यवाद देता हूँ जिनसे मुझे कुछ भी प्राप्त हुआ है। इस अच्छे कार्य में सहयोग देने वाले सभी को प्रणाम करता हूँ और धन्यवाद देता हूँ।

साधकों एवं पाठकों के बीच ऐसी पुस्तक का अभाव था जिसमें दस महाविद्या के सहस्रनाम में दिये गये नामों का हिन्दी अनुवाद उपलब्ध हो। इस पुस्तक के माध्यम से इस अभाव को दूर करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस पुस्तक से पाठकों एवं साधकों को कुछ न कुछ लाभ अवश्य होगा। इस पुस्तक की सफलता इस बात पर है कि भविष्य में इस विषय पर इतनी अच्छी टीकाएं लिखी जाएं कि लोग इस पुस्तक / ग्रन्थ को भूल जाएं।

(सोमेश तिवारी)

दस महाविद्या

महा के अर्थ हैं महत् (ब्रह्म, परमात्मा, परमचैतन्य), सर्वोपरि, अतिशय, पूजनीय आदि। विद्या के अर्थ ज्ञान, स्त्रीदेवता का मन्त्र, ज्ञान प्राप्ति का साधन, साधन अर्थात किसी चीज की प्राप्ति का साधन, रूप अर्थात अभिव्यक्त रूप है। विद् ज्ञाने और विद् लाभे धातु से क्यप् प्रत्यय लगाने पर बने विद्या शब्द के पूर्वलिखित अर्थ निकलते हैं। विद्यते अनया इति विद्या अर्थात जिससे/जिस साधन से जाना जाता है वह विद्या है। विद्यते इयम् इति विद्या अर्थात जिसको जाना जाता है वह विद्या है। सर्वोच्च सत्ता परब्रह्म है जिसे स्त्रीलिंग में पराशक्ति या आद्याशक्ति भी कहते हैं। ब्रह्म तीनों लिंगों में भी है और तीनों लिंगो से परे भी है तथा यह सर्वोच्च सत्ता है एवं अन्य सभी सत्ताएं इसी पर आधारित हैं। ब्रह्म सम्बन्धित ज्ञान महाविद्या है। ब्रह्म की प्राप्ति कराने वाला साधन महाविद्या है। वे मन्त्र जिनकी साधना करने पर महत् (ब्रह्म या पराशक्ति) की प्राप्ति होती है, महाविद्या है। शून्य में सब कुछ वैसा ही समाया रहता है जैसे बीज में वृक्ष। ब्रह्म शून्य है क्योंकि उसमें सब कुछ समाया हुआ है और उसके बाहर कुछ भी नहीं है। शून्य से ही सब कुछ पैदा होता है। अतः ब्रह्म निर्गुण भी है और सगुण भी है। निर्गुण से ही सारे गुण निकलते हैं। महाविद्या ब्रह्म सम्बन्धी ज्ञान है। ज्ञान का तात्पर्य किताबी ज्ञान या बौद्धिक ज्ञान से नहीं अपितु अनुभवात्मक ज्ञान से है। प्रश्न उठता है कि महाविद्या एक ही क्यों नहीं बनाई गई, दस की क्या आवश्यकता है। हम अनन्त आकाश को दस दिशाओं में विभाजित कर मान लेते हैं कि इन दस दिशाओं में सारा अनन्त आ जाता है, यही दस की संख्या कहने का तात्पर्य है। ब्रह्म के अनन्त गुणों को मोटे तौर पर दस दिशाओं में विभाजित किया जा सकता है। किसी भी महाविद्या से ब्रह्म की प्राप्ति हो जाती है पर उससे ब्रह्म का एक पक्ष ही पता चलेगा। ब्रह्म के सम्पूर्ण ज्ञान के लिए दसों महाविद्याओं का सहारा लेना पड़ेगा। शक्ति/समय शक्ति/विनाशकारी शक्ति (काली), मुक्ति/शब्दशक्ति (तारा), सौन्दर्य/आनन्द (त्रिपुर सुन्दरी), वृहत् दृष्टि (भुवनेश्वरी), संग्रहीत ऊर्जा/संचित तपशक्ति/तेजस्वी आकर्षण (त्रिपुरभैरवी), ग्रन्थिभेदन शक्ति (छिन्नमस्ता) विरोधी शक्तियों को स्तम्भित करना/समाप्त करना (बगलामुखी), वाक् शक्ति/अभिव्यक्त करने की शक्ति/संगीत (मातंगी), सामंजस्य/शान्ति/वैभव (कमला) ये सब उस अनन्त या पराशक्ति के प्रमुख गुण या पक्ष हैं। आपने जैन धर्म में स्याद्वाद का सिद्धान्त पढ़ा होगा जिसमें पैर को ही हाथी समझता है, कोई पूँछ को हाथी समझता है, कोई पेट को हाथी समझता है, कोई मुख को हाथी समझता है जबकि हाथी इन सभी का समूह है। पेट, पूँछ, मुख तो उसके हिस्से हैं। महाविद्या का चित्रण देवी के रूप में अर्थात शरीर धारी देवी के रूप में किया गया है। प्रत्येक महाविद्या भोग और मोक्ष देने में समर्थ है। यह प्रत्येक महाविद्या का सामान्य कर्म है। इसके अतिरिक्त कुछ विशेष (अर्थात औरों से हटकर) कार्य इन्हें दिये गये हैं जिसके कारण ये महाविद्याएं अलग अलग हो गई हैं। जिस प्रकार एक सिक्के के दो पहलू होते हैं उसी प्रकार ब्रह्म के दो पक्ष हैं। एक है स्थैतिक और आनन्दात्मक पक्ष जिसे शिव कहते हैं, दूसरा है गत्यात्मक या क्रियाशील पक्ष जिसे शक्ति कहते हैं।

ऐसा भी कहा जाता है कि काली से लेकर कमला तक दस महाविद्यायें सृष्टि और व्यष्टि, गति, स्थिति, विस्तार, भरणपोषण, नियन्त्रण, जन्म–मरण, उन्नति–अवनति, बन्धन तथा मोक्ष की अवस्थाओं की प्रतीक हैं। काली समय की, तारा शब्द की, त्रिपुर सुन्दरी भीतरी सौन्दर्य, आनन्द, प्रकाश की, भुवनेश्वरी आकाश या स्थान की, भैरवी ऊर्जा, शक्ति, तप की, छिन्नमस्ता अवबोधन/बोध/perception की, धूमावती शून्यता या अन्धकार की, बगलामुखी स्थिरता या स्तम्भन की, मातंगी ज्ञान और संगीत की तथा कमला आनन्द एवं सौन्दर्य की अधिष्ठात्री देवी हैं।

चण्डी प्रकाशन प्रयाग के श्री बालाकल्पतरू अंक में परम पूज्य श्री हिमालय अरण्य जी ने दस महाविद्याओं पर अपने विचार व्यक्त किये हैं जो अग्रलिखित हैं– प्रथम महाविद्या महाकाल की शक्तिदायिनी महाशक्ति काली एवं द्वितीया महाविद्या अनन्त देश की प्रकृति रूपिणी, देश शक्ति तारा हैं। काली और तारा का तत्व प्रायः एक ही रूप है। देश और काल में जो भिन्नता है, तारा और काली में वही प्रभेद है। काली–तारा दोनों ही काल और देश की आत्मशक्ति से संहारकारिणी हैं। श्वेत, पीत आदि रंग जिस प्रकार कृष्ण वर्ण में विलीन हो जाते हैं, उसी प्रकार उत्पन्न सभी कालज पदार्थ काली में एवं देशज पदार्थ तारा में विलीन होते हैं। इसलिए निर्गुणा, निराकारा, विश्वहितैषिणी काल–शक्ति काली कृष्णवर्णा हैं एवं देशशक्ति तारा नीलवर्णा है। आकाश का रंग नीला होता है। ये नित्या, अव्यया और कल्याणदायिनी है। अमृतत्व–युक्त चन्द्रकला इनके ललाट में है, देवी के तीन नेत्र हैं, सूर्य, चन्द्र और अग्नि जिनसे सारा जगत दृश्यमान हो रहा है। काल और देश दोनों अनन्त हैं, इसी कारण काली और तारा दिगम्बरी हैं क्योंकि अनन्त को कोई वस्त्र नहीं पहनाया जा सकता। वस्त्र पहनाने का तात्पर्य है कि वह अनन्त नहीं रहा। काली कालशक्ति (समयशक्ति) एवं तारा देशशक्ति हैं। आकाश अनन्त है, काल और देश भी अनन्त हैं अतः आकाश काल और देश का प्रतीक है।

आकाश से सर्वशक्तिसम्पन्ना चिरयौवना षोडशी की उत्पत्ति है। शक्ति का बल चिर काल तक अक्षुण्ण रहता है, इसी से उन्हें चिरयौवना षोडशी कहते हैं। षोडशी सभी शक्तियों से श्रेष्ठ हैं अतः राजराजेश्वरी कहलाई जाती हैं। इनका पंचदेवता भी ध्यान करते हैं क्योंकि इन्हीं आद्याशक्ति से उन्हें शक्ति मिलती है। काली, तारा महाविद्याओं से इस तृतीय महाविद्या की उत्पत्ति है। इसे ऋषियों ने त्रिगुणानुसार त्रिधा विभक्त कर समष्टि अर्थ में त्रिभुवन–ईश्वरी के रूप में दिखाया है। अतः चतुर्थ विद्या का नाम भुवनेश्वरी है। शक्ति के दो रूप हैं– एक है कोमलकान्त और दूसरा है प्रचण्ड। भुवनेश्वरी देवी जगत्स्वरूपा हैं। जब जगत को देवी का रूप मान लेते हैं तो सूर्य, चन्द्र और अग्नि को उनके नेत्रों के रूप में कल्पित किया गया है। भुवनेश्वरी मनोहर रूप में प्रकट हुई हैं एवं भैरवी चण्डीशक्ति अष्टविध प्रचण्डता में विभक्त होकर तन्त्रोक्त अष्टनायिका हैं। तन्त्र इस प्रकार नाना ध्यानज रूपों का प्रकाश कर शक्तिवाद का प्रचार करता है। कोई भी अन्य विज्ञानशास्त्र शक्ति का इस रूप में विश्लेषण नहीं कर सका है।

अष्टनायिकाभिन्न भैरवी ही भयंकरी मूर्ति छिन्नमस्ता में प्रसारित हुई हैं, अतः वह परापरा रूप से छठी विद्या मानी गई। छिन्नमस्ता विद्या में पालिकाशक्ति के प्रबल रूप में रहने से वे भैरवी मूर्ति से स्वतन्त्र हैं। सभी रूपों में एक ही भगवती हैं, तथापि केवल उपासनार्थ विभिन्न ध्यानज रूप की प्रतिमा ग्रहण करनी होती है।

छिन्नमस्ता रूप में पालन शक्ति की प्रधानता किस प्रकार है ? इस प्रकार कि उनमें भगवती अन्नपूर्णा के त्रिधा शक्ति–विभाग देखने में आते हैं– 1. भोक्त्री 2. भोज्य 3. भोगरूप में अन्नपूर्णा जगत् में अन्न–रूप हुई हैं। इसी से छिन्नमस्ता स्व देह की तीन रक्त धारा पानकर अन्नपूर्णा को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित कर रही हैं। कभी जगत्–भोक्त्री रूप में अपनी जगद्–देह से भोग्य अन्न का संग्रह करती हैं, कभी उसी भोग्य अन्न को स्वयं ही भोगकर परिपुष्ट और पालित होती है। इस प्रकार भोक्ता, भोग्य और भोग यही तीन पृथक शक्ति रूप में दिखाई देते हैं। भोग के न रहने से पुष्टि का साधन नहीं हो सकता। भोग नहीं, तो भोग्य कुछ भी नहीं। पीड़ित के पास भोग्य है, किन्तु भोग नहीं है। भोग ही जगत् का पालन–हेतु है। इसलिए भोगधारा को छिन्नमस्ता स्वयं पान करती हैं और अन्य दो धाराओं को सखीद्वय पान करती है। इस प्रकार छिन्नमस्ता में अन्नपूर्णा की जगत्–पालन–रीति अति स्पष्ट रूप में दिखाई दे रही है।

जगत् का भोग पूर्ण हो जाने पर प्रलय होती है। अतएव छिन्नमस्ता के बाद धूमावती भगवती की घोर प्रलय–मूर्ति है। प्रलय काल में जगत् का भोग शेष हो जाने पर जरा–जीर्णा भगवती वृद्धा वेश में यमराज के

काकध्वज प्रलयरथ में आरूढ़ होकर क्षुधातुरा, विस्तार–वदना, हाथ में सूर्प लेकर समस्त विश्व को संग्रह कर अपना उदर पूर्ण करती है।

अष्टम मूर्ति रक्तवर्णा, रजोरूपिणी वगला है। इस मूर्ति से भगवती देव–विरोधी असुरों का विनाश करती हैं। असुर नाश से जो ज्ञान का उदय होता है, वही निर्मल ज्ञानरूपिणी शक्ति ही मातंगिनी मूर्ति में अज्ञान रूप अविद्या की नाशिनी कृशांगी, तमोरूपिणी शक्ति है। ये समस्त शक्तिधारिणी होकर भगवती अष्टैश्वर्यशालिनी कमला रूप में जगतव्यापिनी होकर अवस्थित हैं। जो ब्रह्माण्ड–कमल ब्रह्मा के आसनरूप कारण–वारि में प्रकट हुआ था, वही कमल कमला का ब्राह्मी–शक्ति एवं अपरा विद्या का भी आसन कल्पित हुआ है।

केवल काली और तारा मूर्ति में भगवती महाकाल और महादेव रूप ब्रह्म स्वरूप विश्वेश्वर के ऊपर अवस्थिता हैं। यही काली और तारा मूर्ति प्रधान महाविद्याएँ हैं। अन्य अष्ट मूर्ति (1. षोडशी ,2. भुवनेश्वरी, 3. भैरवी, 4. छिन्नमस्ता, 5. धूमावती, 6, बगला, 7. मातंगी, 8. कमला) तदुत्पन्न परापरा विद्या और सिद्ध विद्या रूप में प्रसिद्ध हैं। अतएव जो विश्व कमल त्रिगुणमय होकर त्रिभुवन में व्याप्त हुआ है, वही उस अष्ट–विद्या का आसन स्वरूप हुआ है।

ये दश महाविद्याएं – ब्रह्म की अर्धांगिनी, सृष्टि–स्थिति–प्रलयकारिणी प्रकृति शक्ति रूपा होकर उज्जवल वर्ण के एकासन में ही विराजमान हैं।

दशविध प्रकृति ही दश महाविद्या हैं। वही समष्टिरूप में दशभुजा भगवती है। अतः दश महाविद्याओं की किसी भी मूर्ति की दृढ़ भक्तिपूर्वक उपासना करने से शीघ्र ही जीवन मुक्ति होती है। इसीलिए महाशक्ति के दश महाविद्या रूपों की उपासना हिन्दू समाज में प्रवर्तित हुई है।

ब्रह्म का ही दूसरा नाम ज्ञान व विद्या है। शाक्त सम्प्रदाय में जिन दस प्रधान रूपों में ब्रह्म की उपासना होती है, उन्हें महाविद्या कहते हैं। ब्रह्म या ब्रह्ममयी की उपासना असंख्य रूपों में हो सकती है पर प्रमुख रूप से दस रूपों में उपासना होती है जो हैं– काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, छिन्नमस्ता, त्रिपुरभैरवी, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी और कमलात्मिका। ब्रह्म को पुल्लिंग में चित् कहते हैं एवं स्त्रीलिंग में चिति कहते हैं। शैवदर्शन, शाक्त दर्शन एवं तन्त्र दर्शन में प्रकाश और विमर्श इन दो शब्दों का बहुत प्रयोग होता है जो वेदान्त के परमार्थ एवं प्रपंच (विश्व) की तरह है। प्रकाश रूप परब्रह्म के अपने आप होने वाले स्पन्दन को विमर्श कहते हैं। परब्रह्म का स्वाभाविक स्फुरण विमर्श है। इस विमर्श शक्ति के कारण ब्रह्म (शिव) को अपने होने का अहसास होता है और अपने भीतर से व्यक्त होने वाले संसार एवं प्रत्येक गतिविधि का अपने से जुड़ाव (मानसिक स्पर्श) का आभास होता है। विमर्श शक्ति के कारण ही जगत की उत्पत्ति होती है अर्थात यह शक्ति ज्ञानात्मक होने के साथ साथ क्रियात्मक भी है। प्रकाश के साथ साथ प्रकाशित वस्तु का होना भी जरूरी है। प्रकाशित वस्तु प्रपंच या जगत है। परब्रह्म का तात्पर्य है समरस रूप में शक्तिमान शिव। शिव में शक्ति वैसे ही समाई है जैसे दूध में पानी या अग्नि में दाहकता। निष्क्रिय ब्रह्म और इसमें समाई हुई शक्ति मिलकर के परब्रह्म या परमशिव, इस प्रकार से कहा जाता है। जिस प्रकार से एक सिक्के के दो पहलू होते हैं उसी प्रकार से परब्रह्म का एक पहलू शिव है और दूसरा पहलू शक्ति है। जब शक्ति (विमर्श) स्पन्दनहीन होकर प्रकाश (शिव) में लीन होकर स्थिर हो जाती है, तब सृष्टि नहीं होती, यह सृष्टि के बिना परब्रह्म की अवस्था है। स्पन्दन नहीं होने का तात्पर्य यह नहीं है कि स्पन्दन की क्षमता समाप्त हो गई, गर्भ में तो स्पन्दन की शक्ति छुपी हुई ही है। विमर्श शक्ति को पराशक्ति कह सकते हैं जिसके प्रधान दस रूप दस महाविद्याएं हैं।

ऐसा कहते हैं कि पुराण के बाद दो उपपुराणों अर्थात भागवत महापुराण एवं बृहद्धर्म महापुराण की रचना हुई जिसमें इन महाविद्याओं के बारे में उल्लेख है। भक्तिभाव को केन्द्र में रखते हुए इन महाविद्याओं का उल्लेख

किया गया है। एक मत जो ज्ञान प्रधान है, के अनुसार इन महाविद्याओं में देवी के जिन रूपों की संकल्पना की गई है, वे किसी चीज के प्रतीक हैं, उनका वास्तविक स्वरूप वैसा नहीं है जैसा काली जी द्वारा सिर काटना अहंकार को नष्ट करने का प्रतीक है, कमर में कटे हुए हाथ बाँधना कर्मबन्धन समाप्त करने का प्रतीक है। हमें इन स्वरूपों से एवं इन देवियों के चरित (कार्यकलाप) से जिस ज्ञान या शिक्षा का बोध होता है, उसे अपनाकर ब्रह्म प्राप्ति के रास्ते में अग्रसर हो जाना चाहिए। भक्ति के मार्ग पर चलने वालों के अनुसार देवी का जैसा स्वरूप ध्यान में बताया गया है, वह सत्य है। ईश्वर के बारे में कहा गया है कि जिस रूप में उनका ध्यान किया जाएगा, उसी रूप में वे प्रकट हो जाएंगे। आज के इस वैज्ञानिक युग में यदि एक शब्द में ईश्वर को परिभाषित करना हो तो हम कह सकते हैं कि ऊर्जा ही ईश्वर है। ऊर्जा का अनेक रूपों में रूपान्तरण होता है। यदि कोई भक्त देवी के उस रूप का प्रगाढ़ ध्यान करता है जिसमें उसके दस हाथ हैं, शेर पर सवार है, अनेक अस्त्र शस्त्र धारण किये है तो उस विश्वव्यापी ऊर्जा अर्थात देवी को उस रूप में आना ही होगा। भगवान नरसिंह खम्भा फाड़कर प्रकट हो गये थे अर्थात कण कण में व्याप्त ऊर्जा भगवान नरसिंह के रूप में प्रकट हो गई थी। व्यक्ति की मानसिकता के आधार पर एक शक्ति अनेक रूप धारण कर सकती है। ज्ञानी अपने तरह से इन महाविद्याओं की व्याख्या कर सकता है और भक्त इन महाविद्याओं को अपने दृष्टि से देख सकता है। सभी सही हैं, किसी को गलत नहीं कहा जा सकता। शक्ति या ऊर्जा का रूपान्तरण केवल दृश्य पदार्थों के रूप में ही नहीं होता बल्कि अदृश्य पदार्थों के रूप में भी होता है। समय, अवस्था, क्रिया, गुण, तुलना, सम्बन्ध आदि जो कुछ भी है, ऊर्जा या शक्ति का रूपान्तरण होने के नाते देवी रूपा ही हैं।

इन दस महाविद्याओं की उत्पत्ति की पाँच कथाएं मिलती हैं। दो कथाएं सती (दक्ष प्रजापति की कन्या, पार्वती जी का पूर्व जन्म) से सम्बन्धित हैं। तीसरी कथा के अनुसार महाकाली से ही दसों महाविद्याओं की उत्पत्ति हुई थी। चौथी कथा के अनुसार शुम्भ–निशुम्भ वध के प्रकरण में दुर्गा जी से इन महाविद्याओं की उत्पत्ति हुई थी। देवी भागवत पुराण के अनुसार शताक्षी (शाकम्बरी) देवी से इन दसों महाविद्याओं अर्थात प्रधान देवियों की उत्पत्ति हुई थी। अन्तिम दो कथाओं के आधार पर इन्हें भगवान विष्णु के अवतार से भी जोड़ा जाता है। महाविद्या की शक्ति के कारण ही भगवान विष्णु अपनी संगिनी शक्ति के साथ सृष्टि में सामंजस्य बनाये रखने के लिए अवतार लेते हैं। सृष्टि में सामंजस्य बनाये रखने के लिए अर्थात धर्म की रक्षा के लिए और अधर्मियों का नाश करने के लिए भगवान विष्णु समय–समय पर अवतार लेते रहते हैं।

सती से जुड़ी कथा ही अधिक प्रचलित है। दक्ष प्रजापति जब एक यज्ञ कर रहे थे, तो उन्होंने शिव और सती को छोड़कर सभी देवताओं और ऋषि–मुनियों को उस यज्ञ में आमन्त्रित किया था। नारद जी के द्वारा जब सती को उस यज्ञ के बारे में पता चला तो भगवान शिव ने सती को बिना आमन्त्रण उस यज्ञ में जाने के लिए मना किया। इससे क्रुद्ध होकर देवी सती ने रौद्र रूप दिखाकर अपने अलग अलग दस रूप शिव को दिखाये और ये रूप इतने डरावने थे कि शिव भयभीत हो गये और उन्होंने सती को यज्ञ में जाने की अनुमति दे दी। ये दसों रूप दस महाविद्याएं हैं। दूसरी कथा के अनुसार हास–परिहास के दौरान शिव और सती के बीच बात बिगड़ गई और शिव ने आँख बन्द कर ली। जब आँख खोली तो सती रौद्र रूप में थीं। शिव ने वहाँ से भागना चाहा। शिव ने अपने भागने के लिए दसों दिशाओं का सहारा लिया पर हर जगह सती अपने किसी न किसी रूप में शिव के सामने खड़ी हो जाती थीं और शिव को अपने स्थान से भागने का विचार त्यागना पड़ा और जैसे ही शिव वहाँ स्थिर हो गये, सती बेहद सुन्दर रूप में उनके सामने थीं। शिव ने उन रूपों के बारे में जानना चाहा तो सती ने बताया कि वे मेरे ही रूप हैं। ये दसों रूप ही दस महाविद्याएं हैं। इस कथा का तात्पर्य है कि शक्ति शिव से बढ़कर है और शिव को भी शक्ति से डरना पड़ता है। दूसरा तात्पर्य है कि शक्ति सर्वत्र है। तीसरा तात्पर्य है कि शक्ति का शिव से अतुलनीय प्रेम है अर्थात वे शिव को नहीं छोड़ सकती हैं।

शंकराचार्य जी अद्वैत ब्रह्म के बारे में इतना प्रचार कर रहे थे कि वे शक्ति की अनदेखी करने लगे। इससे शंकराचार्य जी बेहद कमजोर हो गये थे। तब शक्ति ने उन्हें सिखाने के लिए कहा कि आप जो भी उपदेश, चिन्तन, मनन कुछ भी करते हैं, वे सब शक्ति ही करती हैं और आप शक्ति की अनदेखी कर रहे हैं। शंकराचार्य जी को समझ में आया कि ब्रह्म और शक्ति एक ही हैं तथा उनकी अनदेखी नहीं की जा सकती। इसके पश्चात शंकराचार्य जी ने सौन्दर्य लहरी नामक ऐसा अनुपम ग्रन्थ रचा जो शक्ति की साधना के लिए मील का पत्थर है। उन्हें भक्ति को भी स्वीकार करना पड़ा और भक्ति के लिए द्वैत का होना जरूरी है। भज् गोविन्दम् भक्ति प्रधान रचना है और अद्वैत वेदान्ती होते हुए भी उन्होंने विष्णु सहस्रनाम, ललिता त्रिंशति पर अपनी टीका लिखी। कहने का तात्पर्य है कि शक्ति के बिना कुछ नहीं हो सकता और वह सर्वोपरि है। किताब लिखना, पढ़ना, बोलना कुछ भी करना शक्ति ही करती है। भगवान शिव या भगवान विष्णु के बारे में कहा जाता है कि उन्होने राक्षसों को मारा पर सत्य यह है कि उनकी शक्ति ने राक्षसों को मारा। यह अलग बात है कि शिव और शक्ति दो अलग अलग दिखते हुए भी वास्तव में दो नहीं है। विद्या अर्थात स्त्रीदेवता का मन्त्र। इन दसों विद्याओं के मन्त्रों का सहारा लेकर व्यक्ति महत् (परब्रह्म या पराशक्ति) को प्राप्त कर सकता है अतः इन दसों देवियों के मन्त्रों को भी महाविद्या कहते हैं। इन दस महाविद्याओं का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है–

काली जी

ब्रह्म की नित्य क्रियाशक्ति काली जी हैं। काली जी निष्क्रिय ब्रह्म का सक्रिय रूप या निष्क्रिय ब्रह्म की क्रियाशक्ति हैं। निराकार ब्रह्म का प्रथम साकार रूप शव है, यह निश्चल तत्व का प्रतीक है। इसलिए इसे शव और वज्र कहा जाता है। वज्र अर्थात अपरिवर्तनीय। जब इसकी शक्ति स्पन्दित हो जाती है तो शव शिव हो जाते हैं अर्थात क्रियाशील शक्ति से युक्त हो जाते हैं। शवासन अर्थात महाशक्ति की क्रीड़ा का आधार। काली जी के चित्रों में काली जी के पैरों के नीचे शिव को पड़ा हुआ देखा जाता है। नीचे पड़ा उज्जवल पुरूष–रूप ज्ञान–स्वरूप ब्रह्म है जो वेदान्तियों का निरूपाधिक निर्विकल्प अशेष तत्व, बौद्धों का शून्य, वज्र और जैनों का कैवल्य है। पद्म (कमल) साकार सृष्टि का प्रतीक है। कल गतौ धातु से कल् धातु का अर्थ गति करना या हिलना होता है जिससे काली शब्द बनता है। निश्चल शिव पर उनका अपना ही हिलता डुलता रूप अर्थात क्रियाशील रूप काली है। शिव का क्रियाशील रूप काली है। वेदान्तियों का निर्विकल्प निरूपाधिक ब्रह्म, बौद्धों का शून्य, तान्त्रिकों का श्मशान एक ही है। शून्य अर्थात केवल प्रकाश स्वरूप या केवल महा–अन्धकार स्वरूप। अन्धकार अर्थात सब कुछ उसमें समा गया अर्थात और कुछ नहीं रहा। सभी नाम रूपों को आत्मसात् कर महा–अन्धकारमय शून्य स्वरूप काली हैं। काली का महानिर्गुण रूप सभी आकार को समाप्त कर गुप्त ही है। काल का अर्थ होता है सर्वग्रासी अर्थात सबको खा जाने वाला जिससे काली शब्द बना है। काली जी के ध्यान का जो स्वरूप बनाया गया है, उसमें जो चीजें दिखाई गई हैं, वे किसी न किसी चीज के प्रतीक हैं।

खड्ग शक्ति का प्रतीक हैं। प्रायः ज्ञानशक्ति के अर्थ में शब्द खड्ग का प्रयोग किया जाता है जिससे अज्ञान को काटा जाता है। महाकाली नित्यक्रिया शक्ति है। महा अर्थात नित्य और काली अर्थात क्रियाशक्ति। दक्ष/दक्षिणा/दक्षिण के अर्थ बल, मानसिक शक्ति, विवेक शक्ति, विकासात्मक आत्मशक्ति है और ये सभी क्रियाशक्ति के आधार हैं। दक्षिणाकाली शब्द में दक्षिणा शब्द का अर्थ है– जो सगुण रूप में अपने उपासकों को वर देने में चतुर और उदार है। यज्ञ में दक्षिणा के बिना यज्ञ सम्पन्न नहीं होता अतः दक्षिणाकाली का अर्थ है जिसके बिना कोई भी कार्य पूरा नहीं हो सकता। हम कोई भी कार्य करें, शक्ति तो चाहिए ही और शक्ति का अर्थ है देवी। दक्षिण दिशा में यम रहता है। काली जी को देखकर दक्षिण दिशा में रहने वाला यम काली जी के

भक्तों के प्राण लेने की हिम्मत नहीं करता अर्थात वह ऐसे भक्तों से दूर भाग गया है जिसके कारण काली जी का एक नाम दक्षिणाकाली भी है। चतुर्भुजाकाली में चतुर्भुजा से तात्पर्य चारों दिशाओं में व्याप्त होने से है अर्थात काली जी की शक्ति चारों दिशाओं में अर्थात सर्वत्र व्याप्त है। भुजा का अर्थ बाहु भी होता है। बाहु की व्युत्पत्ति वारयति इति बाहु, जो रोकती है वह बाहु, इस प्रकार की गई है। यदि कोई व्यक्ति हमला करता है तो सबसे पहले भुजाएं ही उस हमले को रोकने का काम करती है। इस प्रकार बाहु या भुजा का अर्थ रोकने वाला कर सकते है। समाधि के रास्ते में आने वाली चारों बाधाओं को रोकने वाली, यह चतुर्भुजा का अर्थ हुआ। चतुर्भुजा का तात्पर्य चारों पुरूषार्थों का उपभोग कराने वाली, चारों वेदों को धारण करने वाली अर्थात चारों वेदों का ज्ञान रखने वाली भी होता है। रजोगुण लाल रंग का होता है, जो सृष्टि का प्रतीक है। सतोगुण सफेद होता है और यह स्थिति का प्रतीक है अर्थात उत्पन्न हुई सृष्टि कुछ समय तक बनी रहती है। तमोगुण काले रंग का होता है और यह संहार का प्रतीक है। काली जी के दोनों कानों में जो दो शव हैं वे धर्म और अधर्म के प्रतीक हैं अर्थात काली जी धर्म और अधर्म को धारण करने वाली हैं। सृष्टि के लिए जितना धर्म आवश्यक है उतना ही अधर्म। यदि सभी मनुष्य वैरागी हो जाएं तो कुछ समय बाद धरती मनुष्यों से विहीन हो जाएगी क्योंकि किसी के अन्दर सन्तान पैदा करने की इच्छा नहीं होगी। यदि चोर न हो तो पुलिस नहीं होगी, फिर अदालत भी नहीं होगी, इन्हें सही रास्ते पर लाने वाले प्रवचक भी नहीं होंगे। अतः अधर्म ने भी बहुत सारे लोगों को कार्य में लगा रखा है। सृष्टि चलने के लिए धर्म और अधर्म दोनों की आवश्यकता है और काली जी के कानों में धारण किये गये दोनों शवों का यही अर्थ है। जीवनमुक्त साधक शव है। जिनके हृदय में वासना और इच्छा नहीं है वे शव हैं और ऐसा हृदय श्मशान है। शव का अर्थ है निश्चल या निश्चेष्ट। शव अर्थात निश्चल चित्तवृत्ति वाले। घोड़ा शक्ति का प्रतीक है तभी हम हार्स पावर या अश्वशक्ति ऐसा कहते है।

काली जी अपने गले में मुण्डों (कटे सिरों) की माला पहने हुए हैं। यह माला वर्णमाला का प्रतीक है। शब्द ब्रह्म (वाक्) का स्थूल प्रतीक वर्णमाला है। वर्णमाला ही सृष्टि का बीज है अतः मुण्डमाला सृष्टि का प्रतीक है। मुण्ड से लगातार टपकता रक्त प्रत्येक क्षण होने वाली सृष्टि का प्रतीक है। लाल रंग रजोगुण का प्रतीक है जिससे सृष्टि पैदा होती है। प्रतिक्षण कोई न कोई पैदा हो रहा है अतः सृष्टि की क्रिया अनवरत जारी है। काली जी की कमर में बहुत से कटे हुए हाथ बंधे हैं। हाथ अर्थात कर, कर से ही सारे कार्य होते हैं अतः कर कर्म का प्रतीक है। कटे हुए हाथ कर्म बन्धन के काटने का प्रतीक हैं। इस प्रकार कटे हुए हाथ उन जीवनमुक्त लोगों का प्रतीक हैं जिनके कर्म बन्धन कट चुके हैं और उनका कमर में बँधे होना इस बात का प्रतीक है कि काली जी ने ऐसे जीवनमुक्त लोगों को अपना आश्रय दिया है। कर कर्मबन्धन का प्रतीक है। पशु को मारने का अर्थ होता है पाप और पुण्य रूपी पशु को मारना। पाप भी बन्धन है और पुण्य भी बन्धन है क्योंकि इन दोनों को भोगने के लिए धरती पर जन्म लेना पड़ता है। पशु जंजीर से बाँधे जाते हैं और सकाम मनुष्य पाप तथा पुण्य से बँधे होते हैं। विद्या और अविद्या की क्रियाओं के कारण ही सृष्टि का संकोच और विकास होता है। अविद्या जीवन के प्रधान उद्देश्य अर्थात ब्रह्म प्राप्ति या महानन्द की प्राप्ति की बाधक है। काली जी के हाथ में कटा हुआ मुण्ड भी है। इसका तात्पर्य है कि काली जी वह शक्ति हैं जो अज्ञान, मोह, अविद्या को काटती हैं। कटा हुआ मुण्ड अहंकार के नाश का भी प्रतीक है। भगवान विष्णु द्वारा राक्षसों को मारा जाना, भगवान शिव द्वारा राक्षसों को मारा जाना, बुद्ध द्वारा मार के काम पर एवं अन्य विरोधियों को परास्त करना जिस शक्ति के द्वारा होता है वह काली जी ही हैं। वासनाशून्य हृदय, तान्त्रिकों का श्मशान, वेदान्तियों की निर्विशेष निर्विकल्प समाधि, बौद्धों की शून्यता, शाक्तों और वैष्णवों का सामरस्य और जैनियों की कैवल्यावस्था एक ही है। शिवाबलि का नाम आपने सुना होगा। शिवा का आवाज निकालना अपनी कृपा देने के लिए चिल्लाना है और मुक्तिदेवी या काली का प्रतीक है। यह मोह, अज्ञान, अष्टपाश का भक्षण करती हैं। यही शिवा को दी जाने वाली बलि का अर्थ है। शास्त्रों में जिन छः पशुओं की बलि

देने का विधान किया गया है वे किसी भाव के प्रतीक हैं। महिष क्रोध का प्रतीक है, छाग (बकरा) काम का प्रतीक है, मार्जार (बिल्ला) लोभ का प्रतीक है, नर (मनुष्य) मद का प्रतीक है, मेष (भेड़) मोह का प्रतीक है और उष्ट्र (ऊँट) मात्सर्य (ईर्ष्या) का प्रतीक है। इन दुर्गुणों को छोड़ना ही देवी को बलि चढ़ाना है पर अज्ञान वश मनुष्य इन निरीह प्राणियों को बलि देने के लिए मार देता है। शिवा मुक्ति का प्रतीक है और वह मुक्ति देने वाली एवं शिवत्व के लिए प्रयत्नशील रहती हैं। लम्बी बाहर निकली हुई जिह्वा उज्जवल दाँत के बीच में है। उज्जवल दाँत सतोगुण का प्रतीक है एवं जिह्वा तथा ओष्ठ लाल रंग के होने के कारण रजोगुण के प्रतीक हैं। दॉत ने जिह्वा को दबाया हुआ है अर्थात सतोगुण ने रजोगुण को नियन्त्रित कर रखा है। जिह्वा एवं ओष्ठ से टपकता रस निरन्तर प्रपंच क्रिया में प्रवृत्त रजोगुण का प्रतीक है अर्थात इस बात का प्रतीक है कि सृष्टि लगातार हो रही है।

काली जी के चार हाथ उसके सभी दिशाओं में व्याप्त होने अर्थात सर्वव्यापी होने के प्रतीक हैं। यह पूरे चक्र का प्रतीक है अर्थात सृष्टि और विनाश के चक्र को पूरा करने वाली शक्ति का प्रतीक है। रक्त से युक्त तलवार और कटा हुआ सिर अज्ञान के नाश का अर्थात ज्ञान के उदय का प्रतीक है। तलवार को ज्ञान की तलवार कहा गया है जिससे अज्ञान को काटा जाता है। यह इच्छाओं की समाप्ति का भी प्रतीक है अर्थात इच्छारहित साधना के द्वारा इच्छाओं को समाप्त करने का प्रतीक है। कटा हुआ सिर, मिथ्याचेतना को या अष्टपाशों को काटने का प्रतीक है। मिथ्याचेतना या मिथ्याज्ञान विपरीत एवं असत्य ज्ञान है। जैसे हम आत्म स्वरूप हैं पर इसे अपने आपको शरीर मान लेना मिथ्या ज्ञान है। जगत और जगत के पदार्थ क्षणभंगुर हैं पर उसे नित्य मान लेना मिथ्या ज्ञान है। अष्टपाश का तात्पर्य है घृणा, लज्जा, शंका, भय, जुगुप्सा, कुल, जाति और शील। इन पाशों के माध्यम से जीवात्मा माया से बँध जाती है। इन पाशों के ऊपर सबसे बड़ा बन्धन अहंकार का होता है जिसे दुर्गासप्तशती में शुम्भ नामक असुर से व्यक्त किया गया है। अष्टपाशों को भी असुरों के नाम से दुर्गासप्तशती में लिखा गया है जैसे घृणा के लिए उदायुध असुर नाम दिया गया है जो 86 प्रकार के हैं अर्थात घृणा 86 प्रकार की होती है। अष्टपाशों से मुक्त होकर ही जीवात्मा सदाशिव अर्थात मुक्त चेतना या सार्वभौम चैतन्य का रूप धारण करती है। आठ पाशों से मुक्त होने पर अहंकार भी समाप्त हो जाता है। खून बहना अर्थात रजोगुण का बहना है, रजोगुण का निकल जाना अर्थात साधक का सतोगुणी होना या सत्य के प्रति जागरूक होना है और यह सत्य की जागृति है। कटा हुआ सिर बच्चे की तरह निर्दोषिता या मासूमियत आने का भी प्रतीक है और भक्ति की पूर्णता का भी प्रतीक है। जब सिर ही नहीं रहा तो सोचने वाला नहीं रहा अर्थात मैं कुछ हूँ, कुछ करने वाला हूँ यह भाव नहीं रहा अर्थात बच्चे की निर्दोषिता आ जाना हुआ। लम्बी लपलपाती लाल जिह्वा जो सफेद दॉतों के बीच में है, इस बात का प्रतीक है कि सात्विक गुणों ने राजसी गुणों पर जीत हासिल कर ली है अर्थात नियन्त्रण हासिल कर लिया है। देवी का काला रंग सबको स्वीकार करने के भाव को अर्थात उनकी सर्वसमावेशी प्रवृत्ति को दिखाता है। काला रंग सभी रंगों को शोषित कर लेता है उसी प्रकार देवी को जो भी याद करेगा देवी अपने पास बुला लेंगी। काला रंग अन्य रंगों की अनुपस्थिति का भी प्रतीक है अतः देवी का काला होने उनके निर्गुण रूप या परमसत्ता अर्थात ब्रह्म का प्रतीक है जो सभी नाम रूपों से परे हैं। देवी का नग्न दिखाया जाना इस बात का प्रतीक है कि वे मायारूपी वस्त्र धारण नहीं किये हुए हैं अर्थात उनपर माया का प्रभाव नहीं है। नाम रूप भी वस्त्र है अतः देवी का नग्न दिखाया जाना उनके नामरूप से परे होने को भी दिखाता है। यह उनके अनन्त होने का भी प्रतीक है क्योंकि अनन्त को वस्त्र से नहीं ढका जा सकता। श्मशान में चीजें जलाई जाती हैं। श्मशानवासिनी कहने का भी तात्पर्य है– जिन्होंने सारे विकार अर्थात काम, क्रोध आदि षड्विकार जला दिये हैं, बाँधने वाली भावनाएं जला दी हैं, सांसारिक इच्छाओं से रहित कर दिया है, जिनका हृदय वासनाशून्य या इच्छा शून्य हो गया है, वे सभी श्मशान की तरह हैं और देवी ऐसे श्मशान बने हृदय में

वास करती हैं। सुषुम्नानाड़ी को भी श्मशान कहा गया है। कुण्डलिनी शक्ति इसी सुषुम्नानाड़ी से होती हुई मूलाधारचक्र से चलकर सहस्रार तक जाती है।

शव निश्चेष्ट होता है अतः शव को जड़ पदार्थ के प्रतीक के रूप में भी देख सकते हैं क्योंकि जड़ पदार्थ में कोई क्रिया या होश, ज्ञान नहीं देखा जाता है। शवासना का तात्पर्य जड़ पदार्थों में भी विद्यमान कर सकते हैं। जड़ पदार्थों में भी परमाणु होते हैं एवं परमाणु में इलेक्ट्रान घूमने हैं अतः क्रिया मौजूद है। माया का पर्दा होने के कारण हमें जड़ पदार्थों, जो चेतना से ही बने हैं, के मूल रूप अर्थात चेतना नहीं दिखाई पड़ती। जब माया का चश्मा हट जाता है या चेतना का स्तर बहुत ऊँचा हो जाता है तो हमें प्रत्येक वस्तु की वह चीज दिखने लगती है जिससे वह चीज बनी है अर्थात हमें हर जगह चैतन्य के दर्शन होते हैं। उच्चकोटि के भक्तों द्वारा कण कण में भगवान देखना, उनके वास्तविक स्वरूप को ही देखना है। शव ऐसी चीज है जिससे लोग घृणा करते हैं और अपने पास नहीं रखना चाहते। इस नाम का यह भी तात्पर्य है कि देवी के लिए कुछ भी त्याज्य नहीं है अर्थात जिनसे लोग घृणा करते हैं उन्हें भी देवी अपने पास रखती हैं। अघोरी लोग मल–मूत्र का सेवन घृणा मिटाने के लिए ही करते हैं अर्थात वे इस बात की साधना करते हैं कि उन्हें ऐसा अनुभव होने लगे कि प्रत्येक चीज उसी परमतत्व का रूपान्तरण है। रामकृष्ण परमहंस न केवल अपना बल्कि दूसरों का भी मल खा जाते थे, यह घृणा मिटाने की साधना अर्थात सभी कुछ को उस परमतत्व या अपने आराध्यदेव का रूपान्तरण मानने की साधना होती है। मल, मूत्र, हड्डी, रक्त, प्रत्येक चीज उसी परमतत्व का रूपान्तरण है क्योंकि उसके अलावा कुछ है ही नहीं। शवासन का एक अर्थ और भी है। शव अर्थात साँस से रहित होना। उन्हीं भक्तों को देवी प्राप्त होती हैं जिन्होने अपनी साँस भी देवी को समर्पित कर दी अर्थात प्रत्येक सांस के साथ देवी का नाम या मन्त्र चल रहा होता है। ऐसी अवस्था आने पर ही देवी ऐसे भक्तों के हृदय में प्रवेश कर उनकी हर तरह से परवरिश करती है। भक्त तो देवी में डूबा हुआ है पर वह सभी सांसारिक कार्य कर रहा है क्योंकि देवी ही उसके शरीर में प्रवेश कर सांसारिक कार्य करा रही हैं। भक्त को सांसारिक कार्यों का कोई होश नहीं है पर उसके शरीर से ये कार्य हो रहे हैं और दूसरा व्यक्ति उसे देखकर यही कहेगा कि यह व्यक्ति तो मेरी ही तरह सांसारिक कार्य कर रहा है।

परब्रह्म के दो पक्ष हैं– एक है निष्क्रिय और अपरिवर्तनीय पक्ष और दूसरा है गतिमान और क्रियाशील पक्ष। यह गतिमान और क्रियाशील पक्ष ही शक्ति या देवी है और विश्व का रूपान्तरण देवी का ही रूपान्तरण है। दोनों पक्ष अलग अलग नहीं दिखते हैं बल्कि दूध में पानी की तरह मिले हुए होते हैं। विपरीत रति की मुद्रा भी दिखाई गई है। सामान्य रति में पुरुष ऊपर होता है एवं पत्नी नीचे होती है तथा सम्बन्ध बनने पर बच्चे का जन्म होता है अर्थात सामान्य रति से सृष्टि या संसार पैदा होता है। विपरीत रति में पत्नी ऊपर होती है और पति नीचे होता है, जिस मुद्रा में सम्बन्ध होने पर सृष्टि नहीं होती है। विपरीत रति संसार से दूर होने का, संसार से वैराग्य का प्रतीक है। काली जी को इस मुद्रा के रूप में उल्लेखित किया जाना यह शिक्षा देता है कि परमसत्य (पराशक्ति या ब्रह्म) को पाना है तो संसार से वैराग्य होना चाहिए। वैराग्य का तात्पर्य संसार से भागकर जंगल जाना नहीं है, बल्कि इसका तात्पर्य है कि जहाँ भी रहो आसक्ति न रहे। चाहे कोई चीज मिले, चाहे न मिले, न सुख न दुख। वैराग्यवान व्यक्ति को अपनी सन्तान की मृत्यु पर कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि उसने किसी चीज को अपना माना ही नहीं। सन्तान भगवान की थी जिसे भगवान ने ले लिया। मेरा कुछ भी नहीं, मैं अर्थात आत्मा भी ईश्वर का, शरीर भी ईश्वर का। चाहे रहूँ, चाहे न रहूँ। चाहे कुछ मिले, चाहे न मिले। वह ईश्वर के अलावा किसी चीज को अपने से नहीं जोड़ता। चाहे प्रशंसा हो, चाहे बेइज्जती हो। ईश्वर का खेल साक्षी भाव से दिखता है। दो समूह में लड़ाई हो रही है, ईश्वर इन इन रूपों में आकर खेल खेल रहा है। दो टीमों में मैच हो रहा, ईश्वर इन रूपों में आकर खेल, खेल रहा। यदि हॉकी का कोई मैच चल रहा हो तो वह भक्त इस रूप में लेगा कि ईश्वर ने अपने को 22 रूपों में बाँटा, 11 सदस्यों की दो टीमों में विभक्त किया और खेल, खेल रहा है।

जीतने वाला भी वही और हारने वाला भी वही। जीत भी वही और हार भी वही। एक क्रिया को जीत नाम दे दिया और दूसरी क्रिया को हार नाम दे दिया। यश भी वही और अपमान भी वही। महाभारत युद्ध के बाद जब पाण्डव बर्बरीक के पास युद्ध की असलियत जानने पहुँचे तो बर्बरीक जी ने बताया कि उन्हें तो कृष्ण ही दिख रहे थे, इसके अलावा कुछ नहीं दिख रहा था। मारने वाले भी वही, मरने वाले भी वही।

गले में मुण्ड–माला वर्णाक्षरों का प्रतीक है। शिव शक्ति मिलन से नाद हुआ, नाद से बिन्दु, बिन्दु से विश्व पैदा हुआ। नाद अक्षरों(नाम) के मूल हैं एवं बिन्दु आकार के मूल हैं। इन अक्षरों से ही विश्व पैदा हुए अतः मुण्डमाला विश्व या ब्रह्माण्ड का प्रतीक है। मुण्ड गोल होता है और ब्रह्माण्ड भी गोल होता है। अनेक ब्रह्माण्डों को अपने में धारण किये हुए, यह मुण्डमाला धारण करने का अर्थ हुआ।

हाथ से ही कर्म होते हैं। कमर में कटे हुए हाथ बाँधना अर्थात कर्म बन्धन को काटकर जीवनमुक्त हुए लोगों को अपनी शरण देना है। खुले हुए बाल अर्थात बन्धन की अवस्था से रहित अर्थात मोक्षावस्था का प्रतीक है। देवी और देवता का तात्पर्य है कि जो उसके पास है, वह दूसरों को भी दे। खुले हुए बाल स्वयं मुक्तावस्था में स्थित रहने एवं दूसरों को मोक्ष प्रदान करने का प्रतीक है। खुले हुए बाल इस बात का भी प्रतीक हैं कि देवी न तो प्रकृति के बनाये हुए नियमों के अधीन हैं और न ही मनुष्यों के बनाये हुए नियमों के अधीन हैं। ये नियम देवी पर लागू नहीं होते। मुख से बाहर निकली हुई जिह्वा इस बात का प्रतीक है कि उनके सामने जो आएगा सबको खा जाएंगी। एक से एक महापुरुष एवं सन्तों को शरीर छोड़ना पड़ता है। काल के अधीन सभी हैं, यह बाहर निकली जीभ का प्रतीक है। वे सभी कुछ खा सकती हैं, चाहे जितनी घृणास्पद वस्तु क्यों न हो जैसे मल–मूत्र आदि। काली को काली इसलिए भी कहते है क्योंकि उन्होंने समयशक्ति अर्थात कालशक्ति को अपने अधीन किये हुए है और इस समय शक्ति के द्वारा ब्रह्माण्ड को चला रही हैं। समयशक्ति को पैदा करने वाली भी वे ही हैं। आपने सुना होगा समय बड़ा बलवान है, जिसका तात्पर्य है कि काल भी शक्ति का एक रूप है। कोई भी प्राणी या वस्तु समय पर पैदा होती है, बढ़ती है और समाप्त हो जती है, पैदा करना महिला का कार्य है अतः समय को शक्ति कहा गया है। काली जी तो काल अर्थात समय को भी खा जाती है अर्थात काली जी को प्राप्त होने के बाद भूतकाल, वर्तमान और भविष्य ये भेद नहीं होता। सिर्फ वर्तमान रह जाता है या समय का भी होश नहीं होता जैसे गहरी नींद में।

तारा

दूसरी महाविद्या का नाम तारा है। तरति इति तारा, तारयति इति तारा, इस व्युत्पत्ति के अनुसार जो पार करती हैं या जो पार कराती है, उसका नाम तारा है। अज्ञान के समुद्र से या कठिनाइयों के समुद्र से या संसार सागर रूपी समुद्र को पार करती है या भक्तों को पार कराती है, उसका नाम तारा है। जब भक्तों को पार करायेंगी तो स्वयं भी पार करेंगी। अज्ञान को पार करना अर्थात परमज्ञान में स्थित होना अर्थात मोक्षावस्था में स्थित होना। संसार सागर को पार करना अर्थात मोक्षावस्था (स्थाई आनन्दावस्था) में स्थित होना। जो देवी देवताओं के पास होता है, उसे वे अपने भक्तों को देती हैं। इस प्रकार तारा अपने भक्तों को मोक्ष देने वाली महाविद्या है। अपने उपासकों को सभी दुखों से मुक्त कराने के कारण भी इन्हें तारा कहा जाता है। तारा देवी अपने भक्तों को सभी प्रकार के भयों जैसे हिंसक जानवरों का भय, चोरी का भय, समुद्र में डूबने का भय आदि से पार कराती हैं। जब व्यक्ति असमंजस रूपी चौराहे पर खड़ा होता है अर्थात उसे समझ में नहीं आता है कि कहाँ जाऊँ, उस असमंजस से निकालती है। तारा का अर्थ नक्षत्र भी होता है जो प्रकाश करता है और प्रकाश का अर्थ होता है रास्ता दिखाना अर्थात रास्ते को पार कराना। इसी कारण तारा का सम्बन्ध सूर्य से माना जाता

है। पश्यन्ती वाक् भी प्रकाशमान होती है और इस पश्यन्ती वाक् को तारा का रूप माना जाता है। प्रकाशमान पश्यन्ती भविष्य में होने वाले पदार्थों को देखती है या योगियों को स्वयं को दिखाती है, इसी कारण इसे पश्यन्ती कहते हैं। वाक् से ही सभी पदार्थों की उत्पत्ति होती है। तारा देवी की उपासना हिन्दुओं के अतिरिक्त बौद्धों में भी होती है। इसके बीज वेद के उत्तराम्नाय में हैं। कोई भी घटना पहले कारण स्तर पर होती है, फिर सूक्ष्म स्तर पर आती है और उसके बाद स्थूल स्तर पर आती है। शब्द के स्थूल और सूक्ष्म दोनों अर्थ होते हैं और सभी अर्थ सही हैं। जहाँ तारा देवी अज्ञान से पार कराती हैं वहीं भौतिक नदी या समुद्र में बाढ़ आने पर भक्तों को उस स्थिति से पार कराती हैं। ज्ञानी प्रायः शब्दों के सूक्ष्म या प्रतीक अर्थ में अधिक ध्यान देता है जबकि भक्त स्थूल अर्थ से ही संतुष्ट हो जाता है। देवी के नाम के स्थूल अर्थ एवं सूक्ष्म अर्थ दोनों ही अर्थ सही हैं, दोनों ही अर्थ लक्ष्य (मोक्ष) में पहुँचा देते हैं अतः किसी अर्थ को हीन या कमतर नहीं कहना चाहिए। देवी आज की भाषा में ऊर्जा के रूप में कही जा सकती हैं और जिस रूप में भगवान को ध्याया जाता है उस रूप में वे आ जाते हैं। यदि कोई भक्त किसी नाम के स्थूल अर्थ का ध्यान करता है तो भी देवी को उसी रूप में आना होगा।

वेद में सृष्टि की उत्पत्ति के लिए कहा गया है कि परमब्रह्म में सर्वप्रथम इच्छा हुई की सृष्टि हो। इस इच्छा से कई स्पन्दन पैदा हुए जिसने नाद (ध्वनि) को उत्पन्न किया। पहला नाद ओंकार था जो तारादेवी ही हैं। ओंकार को तारबीज भी कहते हैं। इस पहले नाद ओम् (ऊँ) से अन्य नाद या शब्द पैदा हुए और उन नादों से विभिन्न अर्थ (वस्तुएं) पैदा हुईं। पहले नाद अर्थात ऊँ को ही तारा देवी एवं पश्यन्ती वाक् कहा गया है। तारक मन्त्र की बात आती है तो ऊँ या ऊँ रां रामाय नमः का उल्लेख आता है। इस प्रकार तारा देवी का भगवान राम से भी बड़ा सम्बन्ध है। हर महाविद्या रूपी देवी के एक शिव हैं और इन तारा देवी के शिव (भैरव) हैं अक्षोभ्य। तोडल तन्त्र में कथा है कि समुद्र मन्थन के दौरान जब विष निकला तो उसकी तपन से शिव के अलावा अन्य सभी बेहद व्याकुल हो गये थे। शिव क्षुभित नहीं हुए थे और उन्होंने जिन देवी के कहने पर उस कालकूट विष को पी लिया, वे तारादेवी ही थी। क्षुभित या व्याकुल न होने के कारण भगवान शिव का नाम अक्षोभ्य पड़ा। एक अन्य स्थान पर उल्लेख मिलता है कि देवी ने भगवान शिव की पीड़ा को दूर करने के लिए उन्हें बच्चा बनाकर अपना स्तनपान कराया था, जिससे भगवान शिव की सारी पीड़ा दूर हो गई थी। बौद्धों के अनुसार कामदेव के बाणों के बावजूद भगवान बुद्ध उन बाणों से प्रभावित नहीं हुए जिसके कारण भगवान बुद्ध का नाम अक्षोभ्य है।

कठिनाईयों/दुखों से पार कराना एवं ज्ञान देने में विरोधाभास नहीं है। सबसे बड़ा दुख है अज्ञान। ज्ञान पाने के लिए एवं वाणी में कुशलता पाने के लिए इन देवी की उपासना की जाती है। कश्मीर में एवं मिथिला में इन देवी की खूब उपासना हुई है जिसके कारण यहाँ बड़े बड़े विद्वान एवं बोलने में कुशल लोग पैदा हुए। इन देवी के तीन अन्य नाम भी हैं, जो हैं— उग्रतारा, नीलसरस्वती एवं एकजटा। उग्रा का तात्पर्य होता है जो तुरन्त प्रसन्न या नाराज हो जाती है। तीनों लोकों में जो अज्ञान है उसे एक झटके से दूर कर देती हैं अर्थात उस अज्ञानता से पार करा देती हैं, यह उग्र तारा का अर्थ हुआ। खोपड़ी हाथ में लिये हैं अर्थात खोपड़ी में भरे अज्ञान को तुरन्त दूर कर देती हैं। दूसरा नाम है नील सरस्वती। संस्कृत में नीला का अर्थ काला भी होता है। सरस् का एक अर्थ है ज्ञान क्योंकि ज्ञान पानी के प्रवाह की तरह ऊपर से नीचे बहता है अर्थात गुरू से शिष्य की ओर जाता है। सरस्वती का अर्थ हुआ ज्ञान से युक्त अर्थात ज्ञान देने वाली। अज्ञान का रंग काला होता है। अज्ञान रूपी अन्धकार में ज्ञान का प्रकाश देने के कारण इन देवी का नाम नील सरस्वती है। नील अर्थात काला अर्थात अज्ञान रूपी अन्धकार। कुछ लोगों के अनुसार लील शब्द ही नील हो गया। लील अर्थात लीला अर्थात अतिसरलता। जो सहज ही अर्थात बिना प्रयास के ज्ञान दे दे, वह नील सरस्वती हैं। बच्चे के जन्म के तीन दिन के भीतर उसकी माँ या अन्य कोई महिला शलाका के द्वारा बच्चे की जिह्वा में शहद से नील सरस्वती देवी का तीन अक्षर का मन्त्र लिखती हैं जिससे बच्चा आगे चलकर विद्वान एवं कुशल वक्ता बनता है। तारा देवी का

तीसरा नाम एकजटा प्रसिद्ध है। एक–जटा अर्थात जटाओं को एक दिशा में करना। फैले हुए स्पन्दनों को एक दिशा देने वाली जिससे सृष्टि का आरम्भ हो, एक–जटा है। ऐसा कहते हैं कि यदि मनुष्य एक चीज को बार बार सोचता रहे तो वह चीज वास्तव में घटित हो जाती है क्योंकि ऊर्जा के सभी दिशा में फैलाव को एक दिशा में केन्द्रित कर दिया जाता है जिससे वह ऊर्जा उस वस्तु के रूप को धारण कर लेती है। हर क्षण भगवान के नाम लेने पर भगवान के प्रकट होने के पीछे यही विज्ञान है।

कुछ स्थानों पर यह भी मिलता है कि तारा की उपासना चीनाचार पद्धति से ही हो सकती है जो वाममार्ग की तरह है। चीनाचार का मतलब यह है कि अब प्रत्येक क्षण, प्रत्येक स्थान, बिना किसी नियम के भगवान का नाम लिया जा सकता है। सामान्यतः कहा जाता है कि सुबह या शाम पूजा करो, स्नान करके करो, इस मुद्रा (आसन) में करो। ऐसे नियमों को तोड़ने के लिए ही चीनाचार है। जब कण कण में भगवान हैं तो कोई स्थान, शरीर, पदार्थ अपवित्र नहीं। जब भगवान नित्य है तो हर क्षण शुभ है। जिस किसी भी क्षण भगवान का नाम ले लिया जाए वह क्षण शुभ है। सिद्ध या अवधूत स्थान, क्षण, स्नान करने पर जोर नहीं देते। यहाँ तक कि शौचालय या अन्य अपवित्र समझी जाने वाले स्थानों में भी भगवान के नाम लेने पर रोक नहीं है। तन्त्र में जो कहा गया है कि पियो पियो जब तक कि गिर न जाओ, यदि उठो तो फिर पीने लगो, उसका तात्पर्य है भगवान के नाम की शराब पियो। पीते रहो पीते रहो, भूल जाओ या सो जाओ जैसे ही याद आ जाए, या उठो पुनः भगवान का नाम लेना शुरू कर दो। यही कारण है कि सिद्ध लोग भगवान के नाम या मन्त्र को सांस के साथ जोड़ने की सलाह देते हैं। जब व्यक्ति भगवान का नाम लेते लेते सो जाता है तो सोने के दौरान अवचेतन मन जप करता रहता है।

तारा देवी के ध्यान के स्वरूप के विशेष अर्थ हैं। नीला रंग आकाश का प्रतीक होने के कारण सर्वव्यापकत्व का प्रतीक है। आकाश का रंग नीला तब होता है जब आकाश मेघ रहित हो अर्थात निर्मल हो। यह रंग देवी के शुद्धत्व का बोध कराता है। श्मशान में स्थित का तात्पर्य है कि देवी पृथ्वी में व्याप्त हैं। पृथ्वी एक महाश्मशान है क्योंकि इसमें प्राणी मृत्यु को प्राप्त होते हैं। देवी शिव के ऊपर स्थित हैं अर्थात पंचतत्वों से परे आत्मा के रूप में स्थित हैं। शव में पंचतत्व होते हैं। शव पर खड़े होने का अर्थ अनैक्यभाव का खण्डन करना या द्वन्द्वत्व का खण्डन करना भी होता है। शव प्रपंच या जगत का प्रतीक है। जगत का आधार अर्थात जगत उसी से निकला है, यह अर्थ हुआ। इसका दूसरा अर्थ जगत ही जिसका आधार है अर्थात जगत में रहने वाली या जगत से जिसको जाना जाता है। कार्य से कारण का बोध होता है अर्थात जगत रूपी कार्य से जानी जाने वाली। देवी को खर्वा (नाटी) भी कहा जाता है। खर्व गर्व का प्रतीक है। खर्व+आ, आ का एक अर्थ है नाश करना। गर्व का नाश करने वाली यह अर्थ हुआ। नाटा का दूसरा अर्थ सूक्ष्म कर सकते हैं। ब्रह्म बड़े से बड़ा एवं छोटे से छोटा भी है। सूक्ष्म रूप में भी स्थित या सूक्ष्म कही जाने वाली वस्तुओं में भी विराजमान, ऐसा अर्थ कर सकते हैं। हमेशा युवावस्था में रहने वाली, यह कहने का तात्पर्य है कि देवी परिवर्तनशील नहीं है अर्थात काल के परे हैं। नव यौवनावस्था नित्यसत्ता के चित्स्वरूप का प्रतीक है। देवी दूध से भरे बड़े स्तन वाली हैं, इसका तात्पर्य है कि देवी जगत की पालिका शक्ति हैं। देवी के स्तन के अमृत रूपी दूध अर्थात तत्वज्ञान से अमृतत्व की प्राप्ति होती है अर्थात मोक्ष की प्राप्ति होती है। तत्वज्ञान से ही जीव की वास्तविक रक्षा होती है। व्याघ्र के चर्म को धारण करने का अर्थ है रजोगुण जन्य अज्ञान का नियन्त्रण या दमन करने वाली हैं। व्याघ्र पशुओं का राजा होता है और पशु अज्ञानी कहा जाता है या कम ज्ञान वाला कहा जाता है जो रजोगुण से पैदा होता है। राजा भी रजोगुण का प्रतीक है। वास्तव में देवी (ब्रह्म) को रजोगुण या तमोगुण प्रभावित नहीं करते। केवल लीलावश और आनन्द की प्राप्ति के लिए उन्होंने ऐसा कर रखा है। चीता तमोगुण का प्रतीक है, चीते के चर्म को पहनना तमोगुण का नियन्त्रण करना है। व्याघ्र अहंकार रूपी रजोगुण एवं चीता क्रूरभाव रूपी तमोगुण का प्रतीक है। तीन

नेत्र होने का तात्पर्य है कि देवी भूतकाल, वर्तमानकाल एवं भविष्यकाल सभी जानती हैं। ब्रह्माण्ड रूप में सूर्य, चन्द्र और अग्नि रूपी नेत्रों को धारण करने वाली यह अर्थ भी हुआ। इसका अर्थ इच्छाशक्ति, ज्ञानशक्ति, क्रियाशक्ति को धारण करने वाली भी होता है। त्रिनेत्र से प्रमाता, प्रमाण और प्रमेय का ही बोध होता है अर्थात भगवती स्वयं में ये तीनों चीजें हैं। चतुर्भुजा का तात्पर्य होता है चारों पुरुषार्थों का उपभोग कराने वाली। इन चार भुजाओं में खड्ग, कैंची, कपाल और कमल हैं। खड्ग (तलवार) का तात्पर्य है कि यह ज्ञान रूपी तलवार है जो अज्ञान का नाश करती है। पाप–पुण्य रूपी पशुओं का अर्थात कर्मबन्धन का जो पाप और पुण्य से पैदा होते हैं, उनका नाश करने वाली है। कैंची का प्रयोग उन छोटे स्थानों में होता है जहाँ तलवार नहीं पहुँच पाती। क्षुद्र कष्टों या आधिभौतिक और आधिदैविक तापों को नष्ट करने वाली। देवी कपाल से रक्तपान करती हैं और रक्त रजोगुण अर्थात मोह (अज्ञान) का प्रतीक है। भक्त के मोह का नाश करने वाली, यह अर्थ हुआ। कमल उनकी निर्लिप्तता का प्रतीक है अर्थात वे संसार में या किसी भी कार्य में लिप्त नहीं होती। चारों आयुधों का तात्पर्य यह भी है कि वे निर्विकल्प समाधि के चारों विघ्नों (लय, विक्षेप, कसाय, रसास्वाद) का नाश करने वाली हैं। पचास मुण्डों (कटे सिर) से पचास वर्णों या अक्षरों का प्रतीक है जिसका तात्पर्य है कि तारादेवी शब्द–ब्रह्म हैं। देवी का अट्टहास करना उनके आनन्दमय स्वरूप का बोधक है। आनन्द मात्र से हंसी आ जाती है। अट्टहास में ध्वनि भी निकलती है जो ब्रह्म के नादतत्व का प्रतीक है। सारा जगत बिन्दु और नाद से पैदा हुआ है। रूप अर्थात वस्तुओं के आकार बिन्दु से एवं सभी नाम नाद से पैदा हुए हैं। अष्ट नाग धारण करने से तात्पर्य है कि देवी के पास अणिमा, लघिमा आदि अष्ट सिद्धियाँ हैं। दूसरा तात्पर्य है कि देवी यम, नियम, आसन, प्राणायाम आदि अष्टांगयोग से सुशाोभित हैं। प्रकृति को अष्टधा कहा जाता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ अष्टधा प्रकृति को धारण करने वाली। ललाट में अर्द्धचन्द्र है और चन्द्रमा से अमृत निकलता है। इसका अर्थ हुआ कि देवी अमृततत्व का पान करने वाली हैं अर्थात अमर हैं। यह चन्द्रमा भौतिक चन्द्रमा नहीं बल्कि चित्–चन्द्रमा है। देवी प्रत्यालीढ मुद्रा में हैं अर्थात उनका बायां पैर आगे और दाँया पैर पीछे है, इस प्रकार खड़ी हैं। यह मुद्रा नियन्त्रण करने की एक विशेष मुद्रा है जो सक्रिय ब्रह्म का लक्षण है। गति में, जो गमनशील क्रिया है, स्त्री या शक्ति का बायां पैर ही उठता है। इस मुद्रा से तमोगुण और रजोगुण का दमन करके भगवती सत्वावस्था में खड़ी हैं, ऐसा बोध होता है। लपलपाती जिह्वा को दबाकर चमकती हुई दाँतों की पंक्ति वाली, ऐसा कहने का तात्पर्य है कि देवी ने रजोगुण को सत्वगुण से दबाकर रखा है अर्थात नियन्त्रण कर रखा है। इस प्रकार लपलपाती जिह्वा नित्यप्रकाश का प्रतीक है। पिंगवर्ण की एक जोड़े वाली अर्थात एक जटा भी उन्हें कहा गया है। जटा अर्थात केश अर्थात क्+अ+ईश। क् ब्रह्मा का, अ विष्णु का और ईश शिव का प्रतीक है जिससे केश शब्द बनता है और ये तीनों देव क्रमशः रजोगुण, सतोगुण और तमोगुण के अधिष्ठात्र देव हैं। एक–जटा का तात्पर्य हुआ कि सत्वगुण में अन्य दोनों गुणों को एकीकृत किया गया है या इससे अभेदत्व का भी बोध होता है। जब बालों का संस्कार नहीं होता अर्थात कंघी आदि का प्रयोग नहीं होता तो वे आपस में बुनकर एक जटा में परिणत हो जाते हैं। केशविन्यास विलास का प्रतीक है। देवी विलास नामक विकार से रहित हैं अर्थात निर्विकार हैं। पीला रंग मिला धूम्रवर्ण तपस्या का प्रतीक है। घोर तपस्या के कारण केश पिंगवर्ण जैसे दिखते हैं और घोर तपस्या से सत्वगुण की प्राप्ति होती है तथा सत्वगुण से ही रज और तमोगुण दबाये जा सकते हैं। तीनों गुणों के प्रतीक इन तीनों वर्णों के सम्मिश्रण से पिंग वर्ण बनता है। तारादेवी हड्डियों की पट्टिका से बने आभूषण को धारण करने वाली हैं। हड्डी से प्रलयकाल में सभी जीवों के चर्म, रक्त आदि के समाप्त होने का बोध है। इससे यह पता चलता है कि देवी प्रलय काल में सबको समाप्त करने वाली है। हड्डी का रंग सफेद होता है जो सत्वगुण का प्रतीक है तथा ऊँ का रंग भी यही माना जाता है। देवी सत्वगुण से युक्त हैं तथा ऊँ स्वरूपा हैं। देवी पंचमुद्रा से विभूषित हैं। मुद्रा का अर्थ है मुदम् राति अर्थात आनन्द देने वाली। सूक्ष्म अर्थ में इन्हें कला भी कहते हैं जो सूक्ष्म शक्ति का प्रतीक है तथा जिससे आनन्द की प्राप्ति होती है। ये पाँच कलाएं हैं– निवृत्ति, प्रतिष्ठा, विद्या, शान्ति और

शान्त्यतीता। इसका दूसरा तात्पर्य पंच रश्मि भी है और पंचरश्मि का अर्थ होता है प्रणव या ऊँ। देवी ऊँ स्वरूपा हैं या ऊँ नाम वाली हैं या ऊँ से विभूषित हैं। देवी को कराला या भीष्मा भी कहते हैं जो नित्य विराट् सत्ता का प्रतीक है। विराट रूप भीषण या उग्र होता है अर्थात उससे डर लगता है। इसी कारण आकाश को या समुद्र को भीषण कहा गया है। भीषण स्वरूप होने का तात्पर्य उनके अर्थात ब्रह्म के विराट और तेजस्वी रूप से है। शास्त्रों में लिखा है कि ब्रह्म अर्थात भगवती के डर से देवता तक डरते हैं और उसी डर से सूर्य उदय होता है, पवन चलता है, अग्नि जलती है। संसार में समस्त छोटी बड़ी क्रियाएं इसी के डर से अर्थात इनकी इच्छा के वशीभूत होकर ही होती है। इस विशेषण से देवी के परब्रह्म होने का प्रमाण मिलता है अर्थात जिसे पुरुष की विवक्षा में परब्रह्म बोलते हैं वही स्त्रीलिंग में देवी या भगवती कही जाती हैं। यही मूल सत्ता या पराशक्ति है जिसके अधीन संसार की सभी अपराशक्तियॉ हैं। यह सामान्य लोगों के लिए दुर्निरीक्ष्या हैं और वीरों के लिए सुगम्या है। डरावनी होने के कारण इन्हें बहुत कठिनाई से ही देखा जा सकता है अर्थात बिना वीर बने नहीं देखा जा सकता। मोटी विशाल उदर वाली कहने से ब्रह्म के विराट, विश्व रूप स्थूल शरीर का बोध होता है। सारा विश्व इनके उदर में समाहित है जिससे उदर मोटा या आगे निकला हुआ है।

षोडशी/त्रिपुरसुन्दरी

तीसरी महाविद्या षोडशी कहलाती हैं। देवी या देवता के अनेक रूप होते हैं जैसे मनुष्य की तरह सगुण साकार, मन्त्र रूप, निराकार रूप। इसमें आश्चर्य नहीं करना चाहिए क्योंकि पानी, भाप या बर्फ के रूप में भी होता है। सगुण साकार रूप में देवी 16 वर्ष की बहुत सुन्दर युवती जैसी दिखती हैं, उन्हें षोडशी कहते हैं।तीनों लोकों में सबसे सुन्दर होने के कारण उन्हें त्रिपुरसुन्दरी भी कहते हैं। श्री विद्या का सम्बन्ध इन्हीं महादेवी से है। इस महाविद्या (देवी) के बीज वेद और उपनिषद में हैं। उपनिषदों में आया है कि परब्रह्म के भीतर यह इच्छा हुई कि वह एक से अनेक हो जाएं। उनकी यही इच्छा कामकला, त्रिपुर सुन्दरी या षोडशी कहलाती हैं। परब्रह्म की सर्वप्रथम गति या क्रिया इसी इच्छा के रूप में होती है। काम का अर्थ है इच्छा और कला का अर्थ इकाई या सूक्ष्म शक्ति। किसी निरवयव सत्ता में इच्छा होने पर उसके विभक्तीकरण की शुरूआत हो जाती है। इस इच्छा से नाद या स्पन्द पैदा हुए, इस नाद से बिन्दु उत्पन्न हुआ और बिन्दु अपना विस्तार कर त्रिकोण रूप में परिवर्तित हो गया। इसी त्रिकोण से सारे विश्व की उत्पत्ति हुई है। त्रिकोण ही विश्व की योनि या कारण है। इसी त्रिकोण से सारे त्रिक (तीन का समुदाय) उत्पन्न हुए और ब्रह्माण्ड की सभी चीजें इसी त्रिक के अन्तर्गत ही आती हैं। इच्छा–ज्ञान–क्रिया, ज्ञाता–ज्ञेय–ज्ञान, जाग्रत–स्वप्न–सुषुप्ति, प्रमाण–प्रमेय–प्रमाता, परा–अपरा–परापरा आदि सभी कुछ इसी त्रिकोण के अन्तर्गत आता है।

सौन्दर्य का तात्पर्य केवल रूप की सुन्दरता नहीं है बल्कि प्रत्येक पदार्थ में विद्यमान उसकी अच्छाई उसका सौन्दर्य है जिसे गीता में दैवी सम्पदा से सम्बोधित किया गया है। करूणा, सद्भाव, रूप–सौन्दर्य, धैर्य आदि सभी उसी सौन्दर्य के अन्तर्गत आते हैं। जो आनन्द दे, वह सुन्दर है। विश्व का तात्पर्य है सभी त्रिकों का समूह। त्रि अर्थात त्रिक, पुर अर्थात पूरयति। सभी त्रिकों अर्थात पूरे विश्व को भरने वाली अर्थात पूरे विश्व में व्याप्त एवं इस विश्व से परे भी जो सुन्दरी है वह त्रिपुरसुन्दरी है। सुष्ठु उनत्ति से भी सुन्दरी शब्द बनता है जिसका अर्थ होता है अच्छी प्रकार से गीला करना अर्थात सभी जगह गीला करना अर्थात सभी जगह व्याप्त होना। यदि त्रिपुर का अर्थ तीनों लोक अर्थात पूरा विश्व करें तो त्रिपुर–सुन्दरी का अर्थ होगा जो पूरे विश्व को गीला किये हुए है अर्थात व्याप्त है। भरने वाली चीज केवल उस वस्तु को ही नहीं भरती बल्कि उस वस्तु के बाहर भी भराव पैदा करती है या उस वस्तु के बाहर भी विद्यमान रहती है। इस प्रकार त्रिपुर सुन्दरी इस विश्व में भी व्याप्त है और इस विश्व के परे भी है। इन्हें श्री महाराज्ञी, राजराजेश्वरी भी कहा जाता है क्योंकि ये ब्रह्माण्ड में रहने वाले

राजाओं की भी महारानी है अर्थात सभी पर शासन करने वाली है। शासन का अर्थ होता है अपनी इच्छानुसार या अपने नियम बनाकर घटनाओं को घटित कराना, सभी पर नियन्त्रण करना। शासित शासक की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकते अन्यथा उन्हें दण्ड मिलेगा। इनका नाम ललिता त्रिपुरसुन्दरी भी है। ललिता का अर्थ होता है क्रीडा करने वाली, कोमलता युक्त सुन्दरता वाली या आनन्दप्रद सुन्दरता वाली, जिनके अंग विन्यास ललित हैं। सृष्टि की उत्पत्ति, पालन, संहार, अपने को माया के परदे से छिपाकर भक्तों से आँख मिचौली करना यह सब उनकी क्रीडा है। इनका 15 अक्षर का मन्त्र इनका नादस्वरूप है तथा इस मन्त्र को मन्त्रराज कहते हैं। इस मन्त्र के रूप में भी त्रिपुरसुन्दरी देवी हैं और कहा जाता है कि इस मन्त्र में 33 करोड़ मन्त्रों की शक्ति है। उनका यह मन्त्र श्री विद्या के नाम से प्रसिद्ध है जो न केवल मोक्ष देता है बल्कि व्यक्ति को सर्वज्ञ बनाता है एवं सभी सिद्धियों को देने वाला है। इनके मन्त्र के तीन भाग हैं अर्थात तीन वर्ण समुदाय हैं जिसे तीन कूट कहते हैं। इनके नाम है– वाग्भव बीज (समस्त ध्वनि या शब्दो का स्रोत), कामराज बीज (प्रेम का स्रोत) एवं शक्तिबीज (क्रिया का स्रोत)। 15 अक्षर के मन्त्र में कुछ अन्य बीज लगाकर 16 अक्षर का मन्त्र बनता है जिसे षोडशी विद्या कहते हैं। विद्या का एक अर्थ स्त्रीदेवता का मन्त्र भी होता है। श्रीविद्या की साधना में बाला–त्रिपुरसुन्दरी, ललिता–त्रिपुरसुन्दरी एवं षोडशी देवी की आराधना की जाती है। बाला–त्रिपुरसुन्दरी देवी ललिता–त्रिपुरसुन्दरी की ही पुत्री हैं। आपने श्री यन्त्र का नाम सुना होगा। श्री यन्त्र देवी का निवास स्थान है अतः यह उनकी ऊर्जा का ही स्वरूप (pattern) है। इस यन्त्र के बिन्दु में जो सर्वोच्च स्थान है, देवी ललिता त्रिपुर सुन्दरी माँ का वास है। इस यन्त्र के अन्य हिस्से जैसे त्रिकोण, तीनों शक्तियों (महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती) का प्रतीक हैं, दशार भगवान विष्णु के दस अवतारों के प्रतीक हैं। इसी प्रकार अन्य अंश भी किसी न किसी के प्रतीक हैं। ब्रह्माण्ड के विकास में सर्वप्रथम श्री यन्त्र की ही आकृति प्रकट हुई थी और यह ब्रह्माण्ड भी श्री यन्त्र के आकार का है। मनुष्य का शरीर भी श्रीयन्त्र के आकार का है। जो ब्रह्माण्ड में है, वह शरीर में है। बाहर गंगा जी है तो शरीर के भीतर की एक नाडी भी गंगा जी है।

ब्रह्म का स्वरूप सत्, चित्, आनन्द होता है और आनन्द की अभिव्यक्ति प्रेम में होती है। इस जगत में सर्वत्र व्याप्त प्रेम उसी आनन्द की अभिव्यक्ति है और यह प्रेम केवल मनुष्यों में नहीं बल्कि पशु–पक्षियों, वनस्पतियों, यहाँ तक की जड़ पदार्थों में भी होता है। आनन्द हमारा स्वरूप है अतः स्वरूप की ओर जाना हमारा स्वभाव होता है अतः प्रत्येक प्राणी प्रेम चाहता है। सिद्ध कहते हैं कि आनन्द अन–अपेक्षित प्रेम (unconditional love) से बना है। इच्छा से ही विस्तार होता है जैसे ब्रह्म की इच्छा से ब्रह्माण्ड बन गया। इच्छा हम लोगों के भीतर भी है और हम अपना विस्तार करते हैं, सन्तान पैदा कर, मकान बनवाकर, सम्पत्ति इकठ्ठा कर। दसों महाविद्याओं में धूमावती को छोड़कर सभी महाविद्याओं के साथ उनके भैरव अर्थात शिव हैं। षोडशी महाविद्या के शिव और शक्ति इस तरह से मिले हुए हैं कि इन्हें पृथक करना सम्भव नहीं है अर्थात शिव में शक्ति एवं शक्ति में शिव मिले हैं। इतनी प्रगाढ़ता अन्य महाविद्याओं में नहीं है। श्रीविद्या मन्त्र में कुछ अक्षर शिव से भी सम्बन्धित हैं, जो इस प्रगाढ़ता का प्रमाण हैं। यह मन्त्र देवी के ध्यान मन्त्र से प्रगाढ रूप से सम्बद्ध है अर्थात जब यह मन्त्र आकार ग्रहण करता है तो उसका आकार वही होता है जो ध्यान के श्लोक में दिया गया है। बिना शिव के शक्ति की उपासना नहीं हो सकती और बिना शक्ति के शिव की उपासना नहीं हो सकती। यही कारण है कि शक्ति के उपासक शक्ति मन्त्र के अतिरिक्त शिव के लगभग दशांश मन्त्र जप करते हैं एवं शिव के उपासक शक्ति के लगभग दशांश मन्त्र शक्ति जप करते हैं।

श्री विद्या मन्त्र की साधना बहुत से देवताओं एवं ऋषियों ने की थी और उनके नाम पर इस साधना का नाम भी पड़ता रहा, 12 देवताओं और ऋषियों के नाम प्रमुख हैं किन्तु कादि विद्या एवं हादि विद्या ही अधिक प्रचलित थीं। ध्यान के चित्र में देवी माँ को उस चारपाई पर बैठा हुआ दिखाया जाता है जिसके चारों पाये ब्रह्मा,

विष्णु, रूद्र और ईशान हैं तथा उस चारपाई का फलक सदाशिव हैं। इसका तात्पर्य है कि देवी का स्थान इन पॉचों देवताओं से ऊपर है और शक्ति (देवी) के बिना ये सभी शव की तरह हैं। इनमें स्थित शक्ति अर्थात देवी ही इनके कार्यों को करती हैं। इन देवताओं को सृष्टि, पालन, संहार, तिरोधान, अनुग्रह का जो कार्य दिया गया है वह इन देवताओं की शक्ति ही करती हैं अर्थात देवी ही करती हैं क्योंकि देवी का अर्थ है शक्ति।

इनके ध्यान मन्त्र में चार हाथ है, तीन नेत्र हैं, अपने हाथों में पाश, अंकुश, गन्ना तथा पॉच फूलों का बना बाण धारण किये हुए हैं। देवी का रंग अरूण अर्थात लाल है। लाल रंग रजोगुण का प्रतीक है। रजोगुण क्रियाशीलता का प्रतीक है। यह रंग प्रेम का भी प्रतीक है। क्रियाशीलता एवं प्रेम की भावना का स्रोत देवी ही हैं। तीन नेत्र अर्थात उन्हें तीनों कालों का ज्ञान है। हाथ में लिया गया पाश इस बात का प्रतीक है कि वे पूरी सृष्टि को प्रेम के पाश से बाँधे हुए हैं। जब तक प्राणी स्वयं से या संसार से जुड़ा है तब तक वह बन्धन में है और जब अपने को देवी से जोड़ लिया तो वह बन्धन से मुक्त हो जाता है। अंकुश से हाथी चलता है और नियन्त्रित होता है अर्थात अंकुश क्रियाशीलता का प्रतीक है। अंकुश को क्रोध का भी प्रतीक माना गया है और यह क्रोध प्रेम का ही नकारात्मक पक्ष है और इस क्रोध के भय से ही सभी देवता अपने कार्य में लगे रहते हैं तात्पर्य है कि देवी ही सृष्टि में प्रत्येक क्रिया का कारण है। पॉच फूलों के बाण पंचतन्मात्रा का प्रतीक है जिससे सारी सृष्टि पैदा हुई है। तात्पर्य है कि सृष्टि के उपादान कारण ही देवी से ही उत्पन्न हुए हैं। हाथ में लिया हुआ गन्ना मन का प्रतीक है। यह संकेत देता है कि अपने मन को देवी के हाथ में पकड़ा दो तो उसके बाद देवी ही तुम्हारे योगक्षेम को वहन करेंगी। सिद्ध और सन्त यह कहते आये हैं कि मन को भगवान में अर्पित करो एवं बाकी शरीर से संसार का कार्य करो। यही योगस्थ होकर कर्म करना है। कुछ सन्त तो इसी को वेद का सार कहते हैं। मन में हमेशा ईश्वर का चिन्तन होता रहे एवं शेष शरीर संसार का कार्य करता रहे। मन को ईश्वर में लगाए हुए बाकी शरीर से संसार का कार्य करना है, यही वेद आदि शास्त्रों का सार है। जितना जप मन से होता है, वही ईश्वर तक पहुँचता है।

भुवनेश्वरी

भुवनेश्वरी देवी विश्व को उत्पन्न करने वाली एवं उसका संचालन करने वाली देवी हैं। विश्व का पालन करने वाली देवी हैं जिसे शाकम्भरी या शताक्षी भी कहा गया है। ब्रह्म जब गति करता है तो विस्तार होता है और यह विस्तार दो तरह से होता है– समय की दृष्टि से एवं स्थान की दृष्टि से, जिसे काल और देश कहा गया है। समय की शक्ति पैदा करने वाली काली देवी हैं और वे विश्व को इस समय–शक्ति से संचालित करती हैं। भुवनेश्वरी देवी ब्रह्म का आकाश या जगह के रूप में हुआ विस्तार है। इस विस्तार में समाई शक्ति भुवनेश्वरी हैं। देवी या देवताओं के कई स्वरूप होते हैं। भुवनेश्वरी देवी का स्वरूप जहाँ आकाश है वही दूसरी ओर चार भुजाओं वाली सुन्दर महिला के रूप में भी है एवं मन्त्र के रूप में भी है।

उपनिषदों में कहा गया है कि ब्रह्म ने स्वयं को देखा, इस देखने मात्र से उसका आकाश या स्थान के रूप में फैलाव हुआ, जिसमें बहुत से ब्रह्माण्ड एवं नामरूप वाले पदार्थों की उत्पत्ति हुई। वास्तव में आकाश या स्थान में व्याप्त तरंगें या स्पन्दन घनीभूत होकर वस्तुओं के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं अतः आकाश ही सत्य है। काली का सम्बन्ध समय, तन्मात्रा, ध्वनि आदि से है वही भुवनेश्वरी का सम्बन्ध आकाश से है। भुवनेश्वरी को ज्ञान शक्ति भी कहते हैं। संस्कृत में देखने का अर्थ जानना भी होता है। हमारे लिए आकाश उतना है जितना हम देख सकते हैं। दृष्टि बढ़ने पर हमारा आकाश भी बढ़ जाता है। देखना अर्थात जानना, इस प्रकार भुवनेश्वरी देवी ज्ञानशक्ति हैं। त्रिपुर सुन्दरी देवी इच्छाशक्ति हैं। कुछ विद्वानों ने भुवनेश्वरी को इच्छाशक्ति एवं त्रिपुरसुन्दरी को ज्ञानशक्ति माना है। भुवनेश्वरी और त्रिपुरसुन्दरी दोनों ही देवियॉ विश्व में व्याप्त हैं पर जहाँ भुवनेश्वरी देवी विश्व

में ही सीमित हैं, वही त्रिपुरसुन्दरी देवी विश्व में व्याप्त भी हैं और विश्व के परे भी हैं। त्रिपुरसुन्दरी देवी के हाथों में गन्ना और पाँच फूलों का बाण मन और मन के संकाय/शक्ति (faculty) का प्रतीक हैं अर्थात त्रिपुरसुन्दरी देवी की स्थिति मन के परे भी बताई गई है।

वेदों और उपनिषदों में जिसे अदिति कहा गया वही तन्त्रशास्त्र में भुवनेश्वरी देवी हैं। अदिति का अर्थ है अखण्ड चैतन्य। अदिति कश्यप ऋषि की पत्नी है। पश्यक ही कश्यप हो गया। पश्यक का अर्थ है देखने वाला अर्थात ज्ञानी। ज्ञानी की पत्नी ज्ञानी की शक्ति कहलाती है इस प्रकार अदिति अर्थात भुवनेश्वरी का अर्थ हुआ ज्ञानशक्ति। भुवनेश्वरी को प्रकृति देवी या मायाशक्ति भी कहते हैं। मायाबीज ही भुवनेश्वरी बीज है जिसका एक नाम है हृल्लेखा। लेखा या रेखा दो स्थानों को जोड़ती है। हृदय के आकाश को परमाकाश को जोड़ने वाला मन्त्र मायाबीज है। तात्पर्य हुआ जीवात्मा को परमात्मा से जोड़ने वाला बीज। समस्त आकाशों की उत्पत्ति भुवनेश्वरी ही करती हैं। ऐसा कहा जाता है जो ब्रह्माण्ड में वह पिण्डाण्ड (शरीर) में है। हृदयमें भी एक आकाश है जिसे दहराकाश कहते हैं और भुवनेश्वरी का वास उसमें है। भुवनेश्वरी देवी परमाकाश में भी है और हृदयाकाश में भी हैं। मायाबीज को लज्जा बीज भी कहते हैं। लज्जा का अर्थ है संकोच। तात्पर्य है कि वर्तमान विश्व पूर्ण विकसित विश्व नहीं है और इसका और विकास हो सकता है। वेदों में जो महत्व प्रणव (ऊँ) का है वही महत्व शाक्त साधना में मायाबीज का है जिसे देवी प्रणव कहते हैं।

ईश्वररात्रि में जब ईश्वर के जगतरूप व्यवहार का लोप हो जाता है, उस समय केवल ब्रह्म अपनी अव्यक्त प्रकृति के साथ शेष रहता है, तब ईश्वर रात्रि की अधिष्ठात्री देवी भुवनेश्वरी कहलाती हैं। सर्वरूपा मूल प्रकृति ही भुवनेश्वरी हैं। जो विश्व का वमन करने के कारण वामा, शिवमयी होने से ज्येष्ठा तथा कर्मनियन्त्रण, फलदान और जीवों को दण्डित करने के कारण रौद्री कहीं जाती है। भगवान शिव का वाम भाग भुवनेश्वरी कहलाता है। भुवनेश्वरी के संग से ही भुवनेश्वर सदाशिव को सर्वेश होने की योग्यता प्राप्त होती है। दस महाविद्याएं दस सोपान हैं। काली तत्व से निर्गत होकर कमला तत्व तक ही दस स्थितियॉ हैं, जिनसे अव्यक्त भुवनेश्वरी व्यक्त होकर ब्रह्माण्ड को धारण कर सकती हैं तथा प्रलय में कमला से अर्थात व्यक्त जगत से क्रमशः लय होकर काली रूप में मूल प्रकृति बन जाती हैं। दुर्गासप्तशती के ग्यारहवें अध्याय में इनका ध्यान श्लोक है। महानिर्वाण तन्त्र के अनुसार सम्पूर्ण महाविद्याएं भगवती भुवनेश्वरी की सेवा में सदा संलग्न रहती हैं। सात करोड़ महामन्त्र इनकी सदा आराधना करते हैं।

भुवनेश्वरी देवी के ध्यान श्लोक का अर्थ है– प्रातःकालीन दिन की तरह रक्त प्रभा वाली, चन्द्रमुकुट, पुष्टस्तन, तीन नयन और मन्द मुस्कान वाला मुख, जिनके हाथों में पाश, अंकुश, वरद मुद्रा एवं अभयमुद्रा है। रक्तप्रवाह विमर्श (साकार रूप या साकार जगत) का प्रतीक है। माथे पर चन्द्रमा ब्रह्मानन्द के अमृत का प्रतीक है। यह ब्रह्मानन्द ही वेदों का सोमरस है। भरे एवं उठे हुए स्तन उनकी भरणपोषण की योग्यता का प्रतीक हैं। ज्ञान और कर्म के सोमरस से भरे दो अमृत घट भी देवी के चित्र में दिखाई देते हैं जो जगत को जीवन प्रदान करते हैं। यह इनका जगन्मातृत्व है। तीन नेत्र ज्ञान, इच्छा और क्रियाशक्ति का प्रतीक है अर्थात देवी इन शक्तियों को धारण करने वाली है। तीन नेत्र चन्द्रमा, अग्नि और सूर्य का भी प्रतीक हैं अर्थात आकाश रूप देवी के ये तीन नेत्र हैं। मन्द मुस्कान इनके आनन्दमय स्वरूप या करूणा को दिखाता है। प्रलय काल में अस्त हुए प्राणियों को पुनर्जीवित करना उनकी करूणा का ही प्रतीक है। पाश से मायाशक्ति का बोध होता है अर्थात इस शक्ति के द्वारा देवी प्राणियों को संसार से या शरीर से बाँधे रखती हैं अर्थात मनुष्य शरीर को ही मैं समझता है एवं संसार की ओर आकृष्ट होता है। अंकुश इस मायाशक्ति को भेदने वाली शक्ति है अर्थात हटाने वाली शक्ति है। पाश और अंकुश को शासन शक्ति का भी प्रतीक माना गया है अर्थात सभी पर शासन करने की शक्ति से युक्त हैं देवी। अंकुश हाथी में गति पैदा करता है अतः यह क्रियाशीलता या क्रियाशक्ति का भी प्रतीक है।

ललिता सहस्रनाम में क्रोध का अर्थ आकार (विषय ज्ञान) किया गया है और इस क्रोध को अंकुश का प्रतीक माना गया है। इस प्रकार अंकुश ज्ञानशक्ति का भी प्रतीक है। सामान्यतः अंकुश को नियन्त्रण का प्रतीक माना जाता है तथा पाश को राग अथवा आसक्ति का प्रतीक माना जाता है। पाश देवी माँ के अपनी सृष्टि के प्रति प्रेम रूपी अर्थात ममत्व गुण को भी दिखाता है।

छिन्नमस्ता

शास्त्रों में इनके प्रादुर्भाव की कथा इस प्रकार दी गई है– एक बार भगवती भवानी अपनी सहचरी जया और विजया के साथ मन्दाकिनी में स्नान करने के लिए गयीं। स्नानोपरान्त क्षुधाग्नि से पीड़ित होकर वे कृष्णवर्ण की हो गयीं। उस समय उनकी सहचारियों ने भी उनसे कुछ भोजन करने के लिए माँगा। देवी ने उनसे कुछ समय प्रतीक्षा करने के लिए कहा। थोड़ी देर प्रतीक्षा करने के बाद सहचरियों ने जब पुनः भोजन के लिए निवेदन किया, तब देवी ने उनसे कुछ देर और प्रतीक्षा करने के लिए कहा। इस पर सहचारियों ने देवी से विनम्र स्वर में कहा कि माँ तो अपने शिशुओं को भूख लगने पर अविलम्ब भोजन प्रदान करती हैं। आप हमारी उपेक्षा क्यों कर रही हैं। अपने सहचरियों के मधुर वचन सुनकर कृपामयी देवी ने अपने खड्ग से अपना सिर काट दिया। कटा हुआ सिर देवी के बायें हाथ में आ गिरा और उनके कबन्ध से रक्त की तीन धाराएँ प्रवाहित हुई। वे दो धाराओं को अपनी दोनों सहचरियों की ओर प्रवाहित कर दी, जिसे पीती हुई दोनों प्रसन्न होने लगीं और तीसरी धारा को देवी स्वयं पान करने लगीं। तभी से देवी का छिन्नमस्ता के नाम से प्रसिद्ध हुई।

उपरोक्त कथानक का अर्थ है कि विचार/मन से परे होने पर ही मनुष्य की चेतना विशुद्ध चेतना या सार्वभौम चेतना का रूप धारण कर सकती है जिससे व्यापकता एवं आनन्द का अनुभव होगा। सामान्य मनुष्य की चेतना शरीर और मन में बँधी रहती है और वह अपने वास्तविक स्वरूप सत्, चित्, आनन्द को नहीं जान पाती। यह शरीर होते हुए विदेह होने की अवस्था है। नीचे से ऊपर तक जो रक्त की धाराएं प्रवाहित हो रही हैं वे मनुष्य की छिपी हुई गुप्त शक्तियों के ऊर्ध्वगमन या जाग्रत होने का प्रतीक हैं। ऐसी सभी शक्तियों के जाग्रत होने पर मनुष्य का शरीर देदीप्यमान हो जाता है। छिन्नमस्ता स्वरूप मनुष्य की उन्मनी अवस्था अर्थात मन से पार अवस्था को दिखाता है। चित्रों के माध्यम से ऐसे कथानक इसलिए दिये जाते हैं क्योंकि चित्रों का अधिक प्रभाव पड़ता है। छिन्नमस्ता स्वरूप मुक्त हुई चेतना का प्रतीक है अर्थात शरीर और मन से मुक्त हुई चेतना छिन्नमस्ता है। हमारे चेतना को बाँधने वाली ग्रन्थियाँ होती हैं, जो हैं– ब्रह्माग्रन्थि (वाणी से सम्बन्धित, मूलाधारचक्र में स्थित), विष्णु ग्रन्थि (भावों से सम्बन्धित, हृदय चक्र में स्थित) एवं रूद्र ग्रन्थि (मन से सम्बन्धित, आज्ञाचक्र में स्थित)। कुण्डलिनी के सम्बन्ध में छिन्नमस्ता देवी का सम्बन्ध रूद्र–ग्रन्थि–भेदन से है। ऐसा कहते हैं कि ब्रह्मा ग्रन्थि एवं रूद्र ग्रन्थि का भेदन गुरू के द्वारा शक्तिपात से ही हो सकता है, जबकि विष्णु ग्रन्थि का भेदन साधक अपने प्रयास से कर सकता है। मानव शरीर में विद्यमान विद्युत को अध्यात्म की भाषा में प्राण कहा जाता है। रक्त की तीन धाराएं सुषुम्ना, इड़ा, पिंगला नाड़ियों से ऊर्ध्व की ओर प्रवाहित चेतना या प्राण का प्रतीक है। चित्र में देवी के नीचे रति और कामदेव का युग्म भी दिखाया गया है। कुछ लोग इस बारे में कहते हैं कि यह इस बात का प्रतीक है कि देवी की कृपा से ही मनुष्य काम के प्रभाव से या कामसुख से ऊपर उठ सकता है। कामसुख क्षणिक ही होता है जबकि आत्मानन्द अर्थात चेतना का विशुद्ध रूप काम सुख से हजारों गुना अधिक होता है और स्थाई भी होता है। इसी कारण स्थाई आनन्द की प्राप्ति के लिए कहा जाता है कि मनुष्य को कामसुख से ऊपर उठना चाहिए। कुछ लोग रति कामदेव के युग्म को मनुष्य के भीतर ही पुरुष ऊर्जा एवं नारी ऊर्जा के मिलन के रूप में अर्थ करते हैं जिससे अपार आनन्द मिलता है और यह बाहरी कामसुख की

तरह क्षणिक भी नहीं होता है। मस्तक छिन्न होना देवी या शक्ति के व्यापक रूप को भी दिखाता है क्योंकि सर्वव्यापी चीजों जैसे आकाश, हवा, बिजली आदि में मुख या अन्य इन्द्रियों की कल्पना करना व्यर्थ है। मुख शरीर का सर्वोच्च अंग है अतः मुख कहने से शरीर के समस्त अंगों या इन्द्रियों का भी बोध हो जाता है। कटा हुआ सिर मन में उत्पन्न भ्रम और मोह (अज्ञान) के ज्ञानरूपी खड्ग से विक्षेप का भी प्रतीक है। अपना रक्तपान करना इस बात का भी प्रतीक है कि महाशक्ति स्वयं अपना अवलम्बन हैं, उसे किसी अन्य के सहारे की जरूरत नहीं है। केश खुले होने का तात्पर्य है कि प्रकृति स्वतः अपना श्रृंगार है, वह मानवीय नियमों से बॅंधी हुई नहीं है अर्थात मुक्त है। चन्द्र, सूर्य और अग्नि रूप तीन नेत्र इच्छा, ज्ञान, क्रियास्वरूप हैं। छिन्नमस्ता के साथ जो दो देवियॉ हैं उनके नाम हैं वर्णिनी एवं डाकिनी/भोगिनी। जिनके रंग लाल और काले हैं। लाल रंग रजोगुण का प्रतीक है एवं काला रंग तमोगुण का प्रतीक है। बीच में छिन्नमस्ता देवी का रंग मध्याह्न सूर्य अर्थात तरूणार्क की तरह दिया गया है जो उनके तेजस्वरूप अर्थात सतोगुण का प्रतीक है। इसका तात्पर्य है कि सभी गुण देवी के आश्रित हैं और देवी त्रिगुणात्मिका है। रजोगुण और तमोगुण को अपने रक्त अर्थात शक्ति से स्थिर रखती हैं। शक्ति, स्वयं ही अपना आश्रय है, यही इनका स्वरक्तपान करना और पिलाना है। यद्यपि महाशक्ति के सर्वव्यापक होने के कारण कोई अंग नहीं है फिर भी इच्छामात्र से वे सारे कार्य होते हैं जो अंगों से होते हैं। कहने का तात्पर्य है कि देवी की इच्छा ही क्रिया बन जाती है। ब्रह्म की इच्छाशक्ति के अन्तर्गत ज्ञानशक्ति और क्रियाशक्ति भी आ जाती है अर्थात् उनकी इच्छा में ज्ञान और क्रिया भी समाहित है।

परिवर्तनशील जगत के अधिपति कबन्ध नामक शिव की शक्ति छिन्नमस्ता हैं। विश्व में विकास और ह्रास हमेशा होता रहता है। जब विकास की मात्रा अधिक और ह्रास कम हो तो भुवनेश्वरी का प्राकट्य होता है, जब ह्रास अधिक हो और विकास कम हो तो उस समय छिन्नमस्ता का प्राधन्य रहता है। अर्द्धरात्रि में अर्थात चतुर्थ सन्ध्या काल में इनकी उपासना से सरस्वती सिद्धि होती है। शत्रुओं पर विजय, समूह स्तम्भन, राज्य प्राप्ति और दुर्लभ मोक्ष प्राप्ति भी इनकी साधना से होता है। छिन्नमस्ता का आध्यात्मिक स्वरूप अत्यन्त महत्वपूर्ण है। छिन्न यज्ञशीर्ष की प्रतीक ये देवी श्वेतकमल पीठ पर खड़ी हैं। दिशाएँ ही इनके वस्त्र हैं। इनकी नाभि में योनिचक्र है। कृष्ण (तम) और रक्त (रज) गुणों की देवियाँ इनकी सहचरियाँ हैं। ये अपना शीश काटकर भी जीवित हैं। यह अपने आप में पूर्ण अन्तर्मुखी साधना का संकेत हैं।

त्रिपुरभैरवी

कहीं पर त्रिपुरभैरवी को पाँचवी तथा छिन्नमस्ता को छठवीं महाविद्या दिखाया गया है वहीं कहीं पर छिन्नमस्ता को पाँचवी एवं त्रिपुरभैरवी को छठी महाविद्या दिखाया गया है। त्रिपुरभैरवी का शाब्दिक अर्थ है– तीनों लोकों में भयंकर ध्वनि या शब्द करने वाली। भै का अर्थ है भयानक एवं रव का अर्थ है शब्द। भ अर्थात भरण, र अर्थात रवण (नाश) एवं वमन (सृष्टि) करने के कारण भी इन्हें भैरवी कहा जा सकता है। भैरम् (दुखसमूहम्) वाति (हिनस्ति) अर्थात दुख समूह को नष्ट करने के कारण भी इन्हें भैरवी कहते हैं।

उपनिषदों में आया है कि ब्रह्म ने इच्छा की, उसने देखा, उसने तप किया। इच्छा करना अर्थात इच्छाशक्ति (त्रिपुरसुन्दरी) का कार्य, देखना अर्थात जानना अर्थात ज्ञानशक्ति (भुवनेश्वरी) का कार्य, तप किया अर्थात अपने को शक्ति या ऊर्जा से सम्पन्न किया अर्थात क्रियाशक्ति (त्रिपुरभैरवी) का कार्य। त्रिपुरभैरवी चिदग्नि स्वरूपा है अर्थात चैतन्य की अग्नि या क्रियाशक्ति स्वरूपा हैं। प्रत्येक प्राणी में मूलाधारचक्र में जो सोयी हुई कुण्डलिनी शक्ति है, वह त्रिपुरभैरवी हैं। यह सुप्तकुण्डलिनी शक्ति जाग्रत होकर जब सहस्रारचक्र में शिव से मिलती है तो इसे त्रिपुरभैरवी कहते हैं। इस प्रकार त्रिपुरभैरवी और त्रिपुरसुन्दरी को एक ही सिक्के के दो पहलू कह सकते हैं। जहाँ

त्रिपुरभैरवी का सम्बन्ध भयानकता से है, वहीं त्रिपुरसुन्दरी का सम्बन्ध सौन्दर्य से है। भयानकता को पार करके ही सौन्दर्य को पाया जा सकता है। भय के लिए दो का होना आवश्यक है। जो नानात्व को मानते हैं एवं अज्ञान में पड़े हुए हैं उनके लिए भी त्रिपुर भैरवी भयंकर हैं। ईश्वर के भक्तों के मार्ग में आने वाली बाधाओं के लिए भी भयंकर हैं। त्रिपुर भैरवी और त्रिपुरसुन्दरी दोनों के मन्त्रों में कुछ समानताएं हैं, दोनों के मन्त्रों में तीन कूट हैं।

त्रिपुरभैरवी के शिव दक्षिणामूर्ति (कालभैरव) हैं। क्षीयमान विश्व के अधिष्ठान दक्षिणामूर्ति कालभैरव हैं। छिन्नमस्ता का सम्बन्ध जहाँ महाप्रलय से है वहीं त्रिपुरभैरवी का सम्बन्ध नित्य प्रलय से है। प्रत्येक पदार्थ प्रतिक्षण नष्ट होता है, हर क्षण बहुत से परमाणु नष्ट होते हैं और बनते हैं। प्रत्येक क्षण नष्ट करने का कार्य त्रिपुरभैरवी का है। त्रिपुरभैरवी का सम्बन्ध अग्नि से है जो तेज तत्व है तथा विश्वकलन (नाश) का कार्य करती है।

कुण्डलिनी जागरण में त्रिपुरभैरवी देवी के एवं त्रिपुरसुन्दरी देवी के मन्त्रों का प्रयोग किया जाता है। मूलाधारचक्र में स्थित परावाक् (अनभिव्यक्त वाक् जो अभिव्यक्ति की ओर प्रवृत्त है) त्रिपुरभैरवी का ही रूप है। परावाक् से ही सृष्टि उत्पन्न हुई है। अतः इसका सम्बन्ध काम ऊर्जा से भी है। ब्रह्म अर्थात परावाक्, जिसका सम्बन्ध काम ऊर्जा से भी है। इसी कारण ब्रह्मचर्य का अर्थ कामऊर्जा को नियन्त्रित करने से भी लिया गया है। इन्द्रियों पर विजय और सर्वत्र उत्कर्ष की प्राप्ति हेतु त्रिपुरभैरवी की उपासना का वर्णन शास्त्रों में मिलता है। ब्रह्माण्ड पुराण में इन्हें गुप्तयोगनियों की अधिष्ठात्री देवी के रूप में चित्रित किया गया है। एक स्थान पर इन्हें ललितात्रिपुर सुन्दरी या महात्रिपुरसुन्दरी की रथवाहिनी भी कहा गया है।

इनके ध्यान का उल्लेख दुर्गासप्सशती के तीसरे अध्याय में महिषासुर वध के प्रसंग में हुआ है। इनका रंग लाल है। ये लाल वस्त्र पहनती हैं, गले में मुण्डमाला धारण करती हैं और स्तनों पर रक्त चन्दन का लेप करती है। ये अपने हाथों में जपमाला , पुस्तक तथा वर और अभय मुद्रा धारण करती हैं। ये कमलासन पर विराजमान हैं। भगवती त्रिपुरभैरवी ने ही मधुपान करके महिष का हृदय विदीर्ण किया था। रूद्रयामल एवं भैरवी कुल सर्वस्व में इनकी उपासना तथा कवच का उल्लेख मिलता है। संकटों से मुक्ति के लिए भी इनकी उपासना करने का विधान है।

घोर कर्म के लिए काल की विशेष अवस्थाजनित मनों को शान्त कर देने वाली शक्ति को ही त्रिपुरभैरवी कहा जाता है। इनका अरूण वर्ण विमर्श का प्रतीक है। इनके गले में सुशोभित मुण्डमाला ही वर्णमाला है। देवी के रक्त लिप्त पयोधर रजोगुणसम्पन्न सृष्टि प्रक्रिया के प्रतीक हैं। अक्षजपमाला वर्ण समाम्राय की प्रतीक है। पुस्तक ब्रह्मविद्या है, त्रिनेत्र वेद त्रयी हैं तथा स्मिति हास करूणा है।

आगम ग्रन्थों के अनुसार त्रिपुरभैरवी एकाक्षररूप (प्रणव) हैं। इनसे सम्पूर्ण भुवन प्रकाशित हो रहे हैं तथा अन्त में इन्हीं में लय हो जायेंगे। अ से लेकर विसर्ग तक सोलह वर्ण भैरव कहलाते है तथा क से क्ष तक के वर्ण योनि अथवा भैरवी कहे जाते हैं। स्वच्छन्दोद्योत के प्रथम पटल में इस पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। यहाँ पर त्रिपुरभैरवी को योगीश्वरी रूप में उमा बतलाया गया है। इन्होंने भगवान शंकर को प्रति रूप में प्राप्त करने के लिए कठोर तपस्या करने का दृढ़ निर्णय लिया था। बड़े बड़े ऋषि मुनि भी इनकी तपस्या को देखकर दंग रह गये। इससे सिद्ध होता है कि भगवान् शंकर की उपासना में निरत उमा का दृढनिश्चयी स्वरूप ही त्रिपुरभैरवी का परिचायक है। त्रिपुरभैरवी की स्तुति में कहा गया है कि भैरवी सूक्ष्म वाक् तथा जगत के मूल कारण की अधिष्ठात्री है।

त्रिपुरभैरवी के अनेक भेद हैं– जैसे सिद्धिभैरवी, चैतन्यभैरवी, भुवनेश्वरीभैरवी, कमलेश्वरीभैरवी, कामेश्वरीभैरवी, शट्कूटाभैरवी, नित्याभैरवी, कोलेशीभैरवी, रूद्रभैरवी आदि।

धूमावती

सातवीं महाविद्या को धूमावती कहा गया है। इनके सन्दर्भ में कथा आती है कि एक बार भगवती पार्वती भगवान शिव के साथ कैलास पर्वत पर बैठी हुई थीं। उन्होंने महादेव से अपनी क्षुधा का निवारण करने का निवेदन किया। कई बार माँगने पर भी जब भगवान शिव ने उस ओर ध्यान नहीं दिया, तब उन्होंने महादेव को ही उठाकर निगल लिया। उनके शरीर से धूमराशि निकली। शिव जी ने उस समय पार्वती से कहा कि आपकी सुन्दर मूर्ति धुएँ से ढक जाने के कारण धूमावती या धूम्रा कही जायगी। धूमावती महाशक्ति अकेली है तथ स्वयं नियन्त्रिका है। इसका कोई स्वामी नहीं है, इसलिए इसे विधवा कहा गया है। दुर्गासप्सशती के अनुसार इन्होंने ही प्रतिज्ञा की थी कि जो मुझे युद्ध में जीत लेगा तथा मेरा गर्व दूर कर देगा, वही मेरा पति होगा। ऐसा कभी नहीं हुआ, अतः यह कुमारी हैं, ये धन या पतिरहित हैं अथवा अपने पति महादेव को निगल जाने के कारण विधवा हैं।

धूमावती देवी उस सत्ता का प्रतिनिधित्व करती हैं जो सृष्टि के पहले एवं प्रलय के बाद की अवस्था है। वेदों में/उपनिषदों में लिखा है कि सृष्टि के पहले असत् था अर्थात अन्धकार ही अन्धकार था। दर्शन में चार प्रकार के अभाव हैं और देवी प्राक् अभाव या प्रध्वंसाभाव का प्रतिनिधित्व करती हैं। यह अन्धकार सुर्ख कालापन नहीं है, यह धूम्रवर्णा हैं। धूम का तात्पर्य होता है जिसके गर्भ में अग्निकण या प्रकाश मौजूद हो। इस प्रकार धूमावती एक ऐसी सत्ता हैं जिसके गर्भ में समूची सृष्टि विद्यमान है। विधवा कहने का तात्पर्य है कि देवी किसी पर निर्भर नहीं है और वह अकेली सत्ता हैं, इनका कोई स्वामी नहीं है। हाथ में सूप लेने का तात्पर्य है कि वास्तविक सत्ता (आत्म सत्ता) को भौतिक सत्ता (भ्रमात्मक या क्षणभंगुर सत्ता) से अलग करने की शिक्षा दी जा रही है। मनुष्य को स्थाई आत्मतत्व को पाने का प्रयास करना चाहिए जिसका स्वभाव आनन्दमय है। वस्तुओं और प्राणियों के बाहरी आकार क्षणभंगुर होने के कारण त्याज्य हैं और उनसे मिलने वाला सुख भी क्षणभंगुर है। भयानकता यह दिखाती है कि ऐंन्द्रिक भोग भयानक हैं एवं इनसे खतरा है क्योंकि यह स्थाई आनन्द और पूर्णता की प्राप्ति नहीं कराते। कुरूपता यह दिखाती है कि प्राणियों एवं पदार्थों के बाहरी आकार की दिखने वाली सुन्दरता एक दिन कुरूप हो जाएगी एवं वास्तविक सौन्दर्य इनके अन्दर निहित चैतन्य तत्व का सौन्दर्य है। वस्तुओं और प्राणियों के बाहरी रूप का सौन्दर्य बदलकर एक दिन कुरूप हो जाता है किन्तु इनके भीतर की सच्चाई अर्थात चैतन्यतत्व ही वास्तविक सौन्दर्य है। सौन्दर्य वह है जो आनन्द दे। ध्वज जिसमें कौआ बना है, श्मशान का प्रतीक है क्योंकि श्मशान में कौए रहते हैं। श्मशान का तात्पर्य है विषय वासनाओं से या इच्छाओं से रहित ह्रदय। ऐसे व्यक्ति पर धूमावती देवी कृपा करती हैं। धूमावती देवी अपने आकार से नामरूप जगत के नकारात्मक पक्षों की ओर ध्यान आकर्षित कर इधर से आसक्ति को त्यागने की शिक्षा देती है जिससे हम परम चैतन्य तत्व जो सत्, चित् आनन्द है को प्राप्त करने का प्रयास करें जो हमारा वास्तविक स्वरूप भी है।

नारदपांचरात्र के अनुसार इन्होंने अपने शरीर से उग्रचण्डिका को प्रकट किया था, जो सैकड़ों गीदड़ियों की तरह आवाज करने वाली थी, शिव को निगलने का तात्पर्य है, उनके स्वामित्व का निषेध। असुरों के कच्चे माँस से इनकी अंगभूता शिवाएं तृप्त हुई, यही इनकी भूख का रहस्य है। इनके ध्यान में इन्हें विवर्ण, चंचल, काले रंगवाली, मैले कपड़े धारण करने वाली, खुले केशोंवाली, विधवा, काकध्वज वाले रथ पर आरूढ़, हाथ में सूप धारण किये, भूख प्यास से व्याकुल तथा निर्मम आँखों वाली बताया गया है। स्वतन्त्रतन्त्र के अनुसार सती ने जब दक्षयज्ञ में योगाग्नि के द्वारा अपने आपको भस्म कर दिया, तब उस समय जो धुआँ उत्पन्न हुआ उससे धूमावती विग्रह का प्राकट्य हुआ था।

धूमावती की उपासना विपत्ति नाश, रोग निवारण, युद्ध जय, उच्चाटन तथा मारण आदि के लिये की जाती है। शाक्त प्रमोद में कहा गया है कि इनके उपासक पर दुष्टाभिचार का प्रभाव नहीं पड़ता है। संसार में रोग दुख

के कारण चार देवता हैं। ज्वर, उन्माद तथा दाह रूद्र के कोप से, मूर्च्छा, विकलांगता यम के कोप से, धूल, गठिया, लकवा, वरूण के कोप से तथा शोक, कलह, क्षुधा, तृषा आदि निर्ऋति के कोप से होते हैं। शतपथब्राह्मण के अनुसार धूमावती और निर्ऋति एक हैं। यह लक्ष्मी की ज्येष्ठा है, अतः ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न व्यक्ति जीवन भर दुःख भोगता है।

तन्त्र ग्रन्थों के अनुसार धूमावती उग्रतारा ही हैं, जो धूम्रा होने से धूमावती कही जाती है। दुर्गासप्तशती में वाभ्रवी और तामसीनाम से इन्हीं की चर्चा की गयी है। ये प्रसन्न होकर रोग और शोक को नष्ट कर देती हैं तथा कुपित होने पर समस्त सुखों और कामनाओं को नष्ट कर देती हैं। इनकी शरणागति से विपत्ति नाश तथा सम्पन्नता प्राप्त होती है। ऋग्वेदोक्त रात्रिसूक्त में इन्हें सुतरा कहा गया है। सुतरा का अर्थ सुखपूर्वक तारने योग्य है। तारा या तारिणी को इनका पूर्व रूप बतलाया गया है। इसलिए आगमों में इन्हें अभाव और संकट को दूर कर सुख प्रदान करने वाली भूति कहा गया है। धूमावती स्थित प्रज्ञता की प्रतीक है। इनका काकध्वज वासनाग्रस्त मन है, जो निरन्तर अतृप्त रहता है। जीव की दीनावस्था भूख, प्यास, कलह, दरिद्रता आदि इसकी क्रियाएं हैं, अर्थात् वेद की शब्दावली में धूमावती कद्रू है, जो वृत्रासुर आदि को पैदा करती है।

बगलामुखी

स्वतन्त्रतन्त्र के अनुसार भगवती वगलामुखी के प्रादुर्भाव की कथा इस प्रकार है सम्ययुग में सम्पूर्ण जगत को नष्ट करने वाला भयंकर तूफान आया। प्राणियों के जीवन पर आये संकट को देखकर भगवान् महाविष्णु चिन्तित हो गये। वे सौराष्ट्र देश में हरिद्रा सरोवर के समीप जाकर भगवती को प्रसन्न करने के लिए तप करने लगे। श्री विद्या (श्री त्रिपुरसुन्दरी देवी) ने उस सरोवर में से वगलामुखी रूप में प्रकट होकर उन्हें दर्शन दिया तथा विध्वंसकारी तूफान का तुरन्त स्तम्भन कर दिया। वगलामुखीरूप में महाविद्या भगवान विष्णु के तेज से युक्त होने के कारण वैष्णवी है। मंगलवारयुक्त चतुर्दशी की अर्द्धरात्रि में इनका प्रादुर्भाव हुआ था। इस विद्या का उपयोग दैवी प्रकोप की शान्ति, धन धान्य के लिए पौष्टिक कर्म एवं आभिचारिक कर्म के लिए भी होता है। यह भेद केवल प्रधानता के अभिप्राय से है, अन्यथा इनकी उपासना भोग और मोक्ष दोनों की सिद्धि के लिए की जाती है।

इनके ध्यान में बताया गया है कि ये सुधा समुद्र के मध्य में स्थित मणिमय मण्डप में रत्नमय सिंहासन पर विराज रही हैं। ये पीत वर्ण के वस्त्र, पीत आभूषण तथा पीले पुष्पों की ही माला धारण करती हैं। इनके एक हाथ में शत्रु की जिह्वा और दूसरे हाथ में मुद्गर है। पीतवर्ण पृथ्वी का रंग है और पृथ्वी को स्थिरता का प्रतीक माना गया है। पीतवर्ण ज्ञान और समृद्धि का भी प्रतीक है। पीतवर्ण मांगलिक वर्ण भी है और रक्षा करना मंगल का एक अवयव है। पीतवर्ण रक्षा करने का भी प्रतीक है। देवी के बीजमन्त्र को रक्षामय बीजमन्त्र भी कहा गया है। इस प्रकार देवी वगलामुखी स्थिरता (स्तम्भन), ज्ञान और समृद्धि को देने वाली देवी हैं। पीला वर्ण ज्ञान की उस चमक को दिखाता है जो अज्ञानरूपी अन्धकार पर हावी हो जाता है। पीले रंग की चमक प्रसिद्ध है। ऐसा कहते हैं कि पीले रंग को जिस रंग में मिलाया जाता है वह उस रंग की चमक को खा जाता है। अहंकार सबसे बड़ा शत्रु है और यह अहंकार रूपी शत्रु का नाश कर देती है। देवी के ध्यान में आता है कि विरोधी की जिह्वा को पकड़े हुए है। इसकी व्याख्या कई तरीके से की गई है। इन देवी की उपासना करने वाले के विरूद्ध यदि कोई नकारात्मक बात करता है या हावी होने का प्रयास करता है तो देवी उसकी वाक्शक्ति को कुण्ठित या स्तम्भित कर देती हैं, इसी कारण कहा जाता है कि भगवती के उपासकों को शास्त्रार्थ में या वाद–विवाद में कोई हरा नहीं सकता है। कुछ लोग इसकी व्याख्या, भगवती ने उपासक की जिह्वा को पकड़ लिया है, अर्थात बैठ गई हैं, इस प्रकार से भी अर्थ किया। सुधाब्धि अर्थात अमृत का सागर चिदानन्द का आनन्द सागर है। मणिमण्डप और रत्नवेदी सृष्टि

अर्थात संसार का प्रतीक है। सांख्य दर्शन के 25 तत्व, 25 रत्न हैं। जिनसे यह संसार बना है अतः मणिमण्डप और रत्नवेदी संसार या सृष्टि का प्रतीक है। पीतवर्ण पृथ्वी का प्रतिनिधित्व होने के कारण स्थित्यात्मक दिक् शक्ति है। सभी प्रकार की गतियों/चेष्टाओं को रोकने अर्थात स्तम्भन करने के लिए देवी भगवती की आराधना की जाती है। व्यवहारिक जगत में शत्रुओं की गति अर्थात उनकी गतिविधि को रोकने के लिए इनकी उपासना की जाती है। पारमार्थिक क्षेत्र में मन की चंचलता को रोकने के लिए अर्थात मन की चंचलता को रोककर पराशक्ति में मनोलय के लिए इनकी उपासना की जाती है। देवी ब्रह्मस्वरूपा हैं। स्वर्णकुण्डल भोग और मोक्ष के परिचायक हैं अर्थात देवी इनको देती हैं। देवी या देवता का तात्पर्य है, उसे देने वाली/वाला जो उनके पास है। रत्न से जड़ी माला ऐश्वर्य का प्रतीक है। मुकुट परमपद का प्रतीक है अर्थात देवी स्वयं सर्वोपरि हैं एवं अपने भक्तों को भी परमपद अर्थात मोक्ष देती हैं। चन्द्र, सोलह कलाओं का प्रतीक है और कला का अर्थ होता है शक्ति। सोलह से सम्पूर्णता का बोध होता है। देवी समस्त शक्तियों से युक्त हैं यह अर्थ हुआ। चन्द्रमा अमृत की वर्षा करता है अर्थात देवी आनन्दरूपी अमृत का पान करने वाली हैं और भक्तों को भी पान कराती हैं। तीनों नेत्र, चन्द्र, अग्नि और सूर्य का प्रतीक हैं अर्थात विश्व रूप में ये देवी के नेत्र हैं। देवी या देवता के अनेक रूप होते हैं। निर्गुण–निराकार, सगुण–साकार, विश्वरूप, मन्त्ररूप आदि। जिस प्रकार पानी बर्फ और भाप बन जाता है उसी प्रकार देवी–देवता भी अनेक रूप धारण कर लेते हैं। तीन नेत्र का तात्पर्य भूतकाल, वर्तमान एवं भविष्य सभी कुछ जानने वाली भी होता है। नेत्र अर्थात देखने वाला अर्थात जानने वाला। तीन नेत्र से जागृत, स्वप्न और सुषुप्ति अवस्थाओं का भी बोध होता है अर्थात देवी इन तीनों अवस्थाओं को जानने वाली हैं अर्थात इन अवस्थाओं के दौरान इन अवस्थाओं का अनुभव भी करती हैं अर्थात देवी आत्मास्वरूपा हैं।

सिंह से तात्पर्य धर्म से है। पाश के कई अर्थ हैं। ललितासहस्रनाम में इसे इच्छाशक्ति का प्रतीक बताया गया है। मधुरवाणी या आकर्षक व्यक्तित्व के कारण जब कोई व्यक्ति बँधता है अर्थात किसी के समीप आता है, ऐसे गुणों को भी पाश कहा गया है। पाश का तात्पर्य बन्धन है। आत्मा को शरीर समझना या द्वैतभाव रखना भी पाश है। कौलमार्ग में अष्टपाश जैसे लज्जा, घृणा, भय आदि बताए गये हैं, इन्हें भी पाश कहा गया है। कहने का तात्पर्य है कि जो लोग आत्मतत्व की सत्ता नहीं मानते, ईश्वर के रास्ते पर नहीं चलते उन्हें देवी इन पाशों से संसार में बाँधे रखती है। अंकुश से ज्ञानशक्ति का बोध होता है। अंकुश से हाथी को चुभोया जाता है अर्थात कष्ट दिया जाता है जिससे वह सही रास्ते पर चले। द्वैत ज्ञान का भेदन करने वाला अर्थात ज्ञान देने वाला अंकुश है। अमृत समुद्र के बीच मणिमण्डित मण्डप में रत्नजड़ित वेदी में सिंहासन पर बैठने का तात्पर्य है कि देवी विश्व की महारानी है अर्थात विश्व का संचालन करने वाली हैं। विश्व में वही होगा जो वे चाहेंगी तथा उनके बनाये हुए प्राकृतिक या नैतिक नियमों से विश्व संचालित होगा। कर्म का नियम उन्हीं का बनाया हुआ नियम है। पीतवर्णा अर्थात पीतवर्णा पृथ्वी की तरह स्तम्भन शक्ति। पीले वस्त्र धारण करना अर्थात परमैश्वर्य रूपिणी वैष्णवी शक्ति। स्वर्णाभूषण और पीले माला से विभूषित होने से उनके सर्वशक्तिस्वरूपिणी का बोध होता है तथा जो सृष्टि, स्थिति और लय की अधिष्ठात्री देवी हैं। बाँये हाथ में मुद्गर लेना शत्रु को पीड़ित करने का प्रतीक है। दाँयें हाथ से शत्रु की जिह्वा पकड़ने और दॉये पैर से लात मारने से वैराग्यरूपी लात मारकर तमोगुण युक्त एवं रजोगुण युक्त जिह्वा को दबाते हुए ज्ञानरूपी मुद्गर से काम, क्रोध आदि शडऋ्पुओं का नाश करने वाली भुक्ति, मुक्ति को देने वाली शक्ति स्वरूपिणी होने का प्रतीक है। इस प्रकार जिह्वा को पकड़ना अर्थात रजोगुण और तमोगुण को दबाना है। मुद्गर अर्थात ज्ञानरूपी मुद्गर जो ज्ञान के बाधक तत्वों का नाश करता है।

स्वर्ण के आसन में स्थित होने से परमात्मस्वरूपिणी का बोध होता है। तप्त स्वर्ण की भॉति कान्तिमय अंगों से सम्पूर्ण दोष विकारों को रोकने वाली स्तम्भन शक्ति का बोध होता है। चन्द्रमा से षोडश कलामयी नादशक्ति का बोध होता है। चम्पा पुष्प की माला धारण करने से सम्पूर्ण मातृकाओं (अक्षरों) को धारण करने वाली

कुण्डलिनी शक्ति का बोध होता है। चार भुजाओं से चारों पुरुषार्थों का उपभोग कराने वाली अर्थात उन्हें देने वाली का उपभोग होता है। इन भुजाओं से परा–पश्यन्ती–मध्यमा–वैखरी इन चारों वाणियों को पैदा करने वाली शक्ति का बोध होता है। गदा से व्यक्त वचन के अर्थ की सूचक शक्ति का बोध होता है। गद् व्यक्तायाम् वाचि धातु होती है और गदति का अर्थ होता है व्यक्तवाणी को बोलना। व्यक्त वचन का अर्थ होता है ऐसा वचन जिसके अनुरूप वस्तु या घटना अवश्य हो। यह नदियों की कलकल या अन्य कुछ ध्वनियों की तरह नहीं है जिनके अनुरूप वस्तु या घटना नहीं होती। इस शब्द या वाक्य का यह अर्थ (वस्तु या घटना) है, ऐसा सूचित करने वाली शक्ति गदा है। गदा से विघ्नों को चूर्ण करने वाली शक्ति एवं वफादारी का भी बोध होता है। वज्र से वाणी का बोध होता है अर्थात वाणी शक्ति का बोध होता है। मनुष्यों को बातें बहुत चुभती हैं। बातों का बुरा इतना माना जाता है कि लोग युद्ध तक कर देते हैं। द्रौपदी ने जब दुर्योधन को कहा कि अन्धे का बेटा अन्धा होता है, उससे युद्ध की नींव तक पड़ गई। वज्र से अमोघशक्ति एवं कठोरता का बोध होता है अर्थात देवी की शक्ति और आराधना कभी व्यर्थ नहीं जाती। आघात करके देवी को क्षति नहीं पहुँचाई जा सकती क्योंकि वे अतिकठोर हैं। जिह्वा से बोला जाता है अतः जिह्वा अकार से लेकर क्षकार पर्यन्त सम्पूर्ण वर्णों की मूल शक्ति का भी प्रतीक है। शरीर आभूषणों से लदा है जिसका तात्पर्य है कि देवी षडैश्वर्य युक्त हैं एवं इन ऐश्वर्य को अपने भक्तों को देने वाली भी हैं।

देवी का सम्बन्ध अथर्वा से भी बताया गया है अर्थात अथर्वा को नियन्त्रित करने वाली या इसका ज्ञान देने वाली शक्ति भी देवी हैं। प्राणियों और पदार्थों के चारों ओर एक तेज या प्राणसूत्र होता है जिसे अथर्वा कहते हैं। कौआ मेहमान के आने की सूचना देता है। जब कोई मेहमान कहीं जाना चाहता है तो उसके विचार और चाहना से वह अथर्वा उस जगह तक पहुँच जाता है जहाँ वह जाना चाहता है। सामान्य मनुष्य उस अथर्वा को नहीं पकड़ पाता है किन्तु कौआ पकड़ लेता है तभी वह कॉव कॉव करता है। सुरक्षा एजेंसियां कुत्ते का प्रयोग अपराधियों को पकड़ने में करती हैं। कुत्ता इसी अथर्वा अर्थात प्राणसूत्र के सहारे अपराधी तक पहुँच जाता है। देवी की आराधना करने वाला व्यक्ति इस अथर्वा का ज्ञान प्राप्त कर टेलीपैथी विद्या में निपुण हो जाता है। वगलामुखी देवी की साधना को ब्रह्मास्त्र विद्या भी कहते हैं। जब देवी का मन्त्र अस्त्र की तरह काम करता है तब वह ब्रह्मास्त्र कहलाता है और मन्त्र भी देवी का एक रूप है। ब्रह्मास्त्र अर्थात अचूक अर्थात जो व्यर्थ न जाए। देवी स्तम्भन की शक्ति है और स्तम्भन का अर्थ होता है रोकना। सभी ग्रह–नक्षत्र अपने रास्ते पर ही चलते हैं और आपस में टकराते नहीं हैं तथा नीचे भी नहीं गिरते। यह देवी की स्तम्भन शक्ति के कारण है। त्रिलोकी का स्तम्भन, तूफान–अतिवर्षा–अग्नि आदि का स्तम्भन, उपासकों के विघ्नों का स्तम्भन, बीमारियों का स्तम्भन (रोक देना), मन की चंचलता का स्तम्भन, शत्रुओं की गतिविधियों का स्तम्भन (रोक देना) आदि सभी वगलामुखी देवी की स्तम्भनशक्ति का ही कार्य है।

शत्रुओं के द्वारा किये गये अभिचार कर्म को वेद में वल्गा कहा गया है। खनु अवदारणे धातु से मुख शब्द बनता है जिसका अर्थ है खण्डित या नष्ट करने वाला। मुख से हम भोजन को चबाते या खण्डित करते हैं। इस प्रकार वल्गामुखी का अर्थ शत्रुओं के द्वारा किये गये अभिचारकर्म को नष्ट करने वाली भी होता है। मुख निःसरणम् से बाहर निकालना अर्थ भी होता है। शत्रुओं के अभिचार कर्म को बाहर निकाल देने वाली अर्थात उसके प्रभाव को बाहर निकालकर समाप्त करने वाली, यह अर्थ भी कर सकते हैं। कभी कभी वर्ण को आगे पीछे कर दिया जाता है जैसे हिंस शब्द सिंह बन गया। इसी प्रकार वल्गा शब्द भी वगला बना गया। संस्कृत में ब और व में अभेद होता है अतः वगला मुखी या बगलामुखी एक ही है। वल्गामुखी या बगलामुखी भी एक ही है। बगला उन पक्षियों में से एक माना जाता है जिन्हें सुन्दर माना गया है और सुन्दरता के कारण चित्रकारों का भी ध्यान इस पक्षी पर गया है। अतः बगला का अर्थ बगलापक्षी के समान अर्थात सुन्दर भी कर सकते हैं। इस

प्रकार बगलामुखी का अर्थ सुन्दरमुख वाली भी किया जा सकता है। जिन्होंने देवी की प्रतिमा देखी है, उन्हें स्पष्ट हो जाएगा कि देवी देखने में बहुत सुन्दर हैं। वगलामुखी देवी का बीजमन्त्र (ह्लीं) है। किन्तु इसे शापग्रस्त, कीलित और स्तम्भित बताया गया है, इन दोषों से निवृत्ति के लिए कहा गया है कि उपासक को (ह्ल्रीं) को जपना चाहिए। अनुस्वार का उच्चारण मकार की तरह करना उचित है किन्तु गुरू ने जैसा उच्चारण किया है वैसा ही करना चाहिए। अनुस्वार का उच्चारण कुछ लोग मकार की तरह करते हैं और कुछ लोग ङ् की तरह करते हैं। ऐसा कहते हैं कि मकार बोलने पर ओठ बन्द होते हैं और ङ् कार बोलने पर ओठ खुले रहते हैं। ओंठ खोलकर मकार का उच्चारण नहीं कर सकते एवं ओंठ बन्द कर ङ्कार का उच्चारण नहीं कर सकते। जब ओंठ बन्द किये रहते हैं तो मन्त्र जप से उत्पन्न ऊर्जा शरीर के अन्दर ही रहती है। अतः उसका प्रभाव शरीर के अन्दर ही पड़ता है। मकार व्यंजन में अन्तिम वर्ण है और यह समाप्ति का बोधक है। सांसारिक कामनाओं की समाप्ति करनी हो अर्थात मोक्ष पाना हो, शरीर के अन्दर छिपी शक्तियों को जगाना हो, कुण्डलिनी शक्ति को ऊपर उठाना हो, संसार से ऊबकर भगवान के शरण की चाहत हो तो मकार का उच्चारण ही करना चाहिए। सांसारिक कामना हो या तान्त्रिक कर्म (मारण, मोहन, उच्चाटन आदि षटकर्म) तो ङ्कार का उच्चारण करने चाहिए। कुछ लोगों का यह मत है कि हमेशा मकार का ही उच्चारण करना चाहिए क्योंकि मकार से ही ङ्कार बना है। दतिया के परमपूज्य स्वामी जी के शिष्यों ने बताया है कि उन्हें स्वामी जी ने मकार का उच्चारण करके ही मन्त्र दिया है। वगलामुखी देवी का 36 अक्षर का मन्त्र सबसे प्रसिद्ध मन्त्र है इसे ब्रह्म विद्या कहते हैं। कुछ लोगों के अनुसार ये 36 अक्षर शैव दर्शन के 36 तत्वों का प्रतीक है जिनसे यह सारा विश्व बना है।

प्रायः लोग वगलामुखी देवी की उपासना शत्रुबाधा निवारण एवं मुकदमे में जीत के लिए करते हैं परन्तु देवी तो भोग और मोक्ष दोनों को देने वाली देवी हैं। ज्ञान और विद्या में एक अन्तर है। किसी पदार्थ को जानना कि वह क्या है, वह क्या क्या कर सकता है, ज्ञान है। पदार्थ अपने कार्यो को जिस शक्ति से करता है वह शक्ति या सार विद्या है। कोई मन्त्र पुत्र सन्तान देता है तो यह जानकारी ज्ञान है किन्तु वह मन्त्र जिस शक्ति के कारण पुत्र सन्तान देता है तो वह सार या शक्ति विद्या है। महा का अर्थ परब्रह्म है, इन्हें शिव भी कहते हैं क्योंकि शिव को महादेव भी कहा गया है। विद्या का अर्थ है शक्ति। शिव की शक्ति एक साथ दस प्रमुख कार्यों को करती है इसलिए उन्हें दस महाविद्या कहते हैं। कुछ कार्य जैसे भोग और मोक्ष देना प्रत्येक महाविद्या करती है। कुछ विशेष कार्य हैं जिनमें उनमें अन्तर है जिसके कारण दस महाविद्याओं की कल्पना की गई है।

मातंगी

मातंगी देवी नवीं महाविद्या हैं। मतम् गमयति इति मातंगी अर्थात जो विचारों को जनवाती हैं, वे मातंगी हैं। विचारों को वैखरी वाणी से ही जाना जा सकता है। अतः देवी मातंगी वैखरी वाणी स्वरूपा या इस वाणी की शक्ति स्वरूपा हैं। मतम् गच्छति इति मातंगी से मातंगी का अर्थ होता है जो विचारों में या मन में जाती हैं। तात्पर्य हुआ जो विचारों में शक्ति रूप में विद्यमान हैं वे मातंगी हैं, इनकी कृपा होने पर श्रेष्ठ विचार आते हैं। मत का अर्थ है विचार। पुराकाल में मतंग नामक मुनि ने नानावृक्षों से परिपूर्ण कदम्ब वन में सभी जीवों को वश में करने के लिए भगवती त्रिपुरा अर्थात त्रिपुर सुन्दरी देवी की प्रसन्नता हेतु कठोर तपस्या की थी। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवती त्रिपुरा के नेत्र से उत्पन्न तेज ने श्यामल वर्ण की नारी का रूप धारण किया, जो राज मातंगिनी कहलाईं। मतंग मुनि की कन्या के रूप में उत्पन्न होने के कारण इन्हें मातंगी कहा जाता है। एक अन्य कथा के अनुसार पार्वती जी ने भगवान शिव से अपने पिता हिमालय के यहाँ जाने का अनुरोध किया। पार्वती जी द्वारा जिद करने के कारण भगवान शिव को अनुमति देनी पड़ी परन्तु शिव ने यह शर्त लगा दी कि यदि उन्हें

अपने पिता हिमालय के यहाँ अधिक दिन हो गये तो वे लेने स्वयं आ जाएंगे। पार्वती जी जब समय पर नहीं लौटी तो भगवान शिव आभूषण बेचने वाले का रूप धारण कर उनके पिता के यहाँ पहुँच गये। पार्वती जी ने सारे आभूषण खरीद लिये और उन आभूषणों की कीमत माँगी। भगवान शिव ने कहा इनकी कीमत है आपका मुझसे प्यार करना। पार्वती जी क्रोधित हो गई परन्तु दिव्यदृष्टि से पहचान लिया कि ये तो उनके पति शिव ही हैं। पार्वती जी ने कहा आपके द्वारा माँगी गई कीमत स्वीकार है परन्तु कुछ समय बाद दी जाएगी। कुछ दिनों बाद पार्वती जी शिकारी का एवं चाण्डालिनी का वेश धारण कर घोड़े पर सवार होकर शाम के समय शिव जी के पास पहुँचकर नृत्य करने लगीं। शिव जी ने पूछा कि तुम्हारे आने का प्रयोजन क्या है? पार्वती जी ने कहा मैं यहाँ तपस्या करने के लिए आई हूँ। भगवान शिव ने कहा कि तपस्या करने वालों को फल प्रदान करने वाला मैं ही हूँ। भगवान शिव ने भी पहचान लिया कि ये पार्वती जी ही हैं जो चाण्डालिनी का रूप धारण करके आईं हैं। भगवान शिव ने भी चाण्डाल का रूप धारण कर पार्वती जी के साथ प्रेम किया। इस कारण देवी का यह रूप चाण्डालिनी भी कहलाता है।

मतंग शिव का नाम है, इनकी शक्ति मातंगी है। मातंगी के ध्यान में बताया गया है कि वे श्यामवर्ण हैं और चन्द्रमा को मस्तक पर धारण किये हुए हैं। भगवती मातंगी त्रिनेत्रा, रत्नमय सिंहासन पर आसीन, नीलकमल के समान कान्तिवाली तथा राक्षस समूह रूप अरण्य को भस्म करने में दावानल के समान हैं। इन्होंने अपनी चार भुजाओं में पाश, अंकुश, खेटक और खड्ग धारण किया है। ये असुरों को मोहित करने वाली एवं भक्तों को अभीष्ट फल देने वाली हैं। गृहस्थ जीवन को सुखी बनाने, पुरुषार्थ सिद्धि और वाग्विलास में पारंगत होने के लिये मातंगी की साधना श्रेयस्कर है। महाविद्याओं में नवें स्थान पर परिगणित हैं। मातंगी देवी का श्यामवर्ण परावाक् बिन्दु का प्रतीक है। त्रिनयन सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि का प्रतीक हैं। चार भुजाएं चार वेद का प्रतीक हैं। पाश अविद्या का प्रतीक है अर्थात अविद्या की शक्ति भी उनके द्वारा धारण की हुई है। अंकुश विद्या का प्रतीक है, कर्मराशि दण्ड है। शब्द स्पर्श आदि गुण, कृपाण हैं अर्थात पंचभूतात्मक शक्ति के प्रतीक हैं। कदम्ब वन ब्रह्माण्ड का प्रतीक है। योगराजोपनिषद में ब्रह्म लोक को कदम्ब गोलकाकार कहा गया है। भगवती मातंगी का सिंहासन शिवात्मक महामंच या त्रिकोण का प्रतीक है। उनकी मूर्ति सूक्ष्म रूप में यन्त्र तथा पर रूप में भावना मात्र है। एक अन्य स्थान पर इनका रंग गहरे हरे रंग अर्थात पन्ना रत्न के समान बताया गया है जो गहन ज्ञान का प्रतीक है। हरा रंग बुध ग्रह का भी प्रतीक है अर्थात देवी बुद्धिशक्ति का भी प्रतीक हैं। उनकी सुन्दरता आकर्षण शक्ति का प्रतीक है तथा हाथ में ली हुई वीणा संगीत शक्ति या नादशक्ति का प्रतीक है। हाथ में लिये हुए शस्त्र शासन शक्ति का प्रतीक है अर्थात देवी सभी का नियन्त्रण करने वाली शक्ति हैं। पास में बैठा तोता वाक्शक्ति का प्रतीक है।

भैरवी महाविद्या परावाणी का प्रतीक है, तारामहाविद्या पश्यन्ती वाक् का प्रतीक है, मातंगी महाविद्या वैखरी वाणी का प्रतीक है। चूँकि मध्यमा वाणी विचारों से सम्बन्धित है, अतः मध्यमा वाणी को भी मातंगी देवी से सम्बन्धित माना गया है। वैदिकों की सरस्वती देवी ही तान्त्रिकों की मातंगी देवी हैं। सरस्वती देवी का सम्बन्ध जहाँ ज्ञान के बाहरी रूप से है वही मातंगी देवी का सम्बन्ध ज्ञान के भीतरी रूप या आत्मज्ञान से सम्बन्धित है। देवी सरस्वती कभी भी नियमों को भंग नहीं करती जबकि मातंगी देवी सभी नियमों से परे हैं। देवी मातंगी आत्मस्वरूपा हैं और आत्मा आनन्द स्वरूपा तो होती ही है, साथ में सभी प्राकृतिक नियमों, पाप–पुण्य आदि से परे होती है। उच्छिष्ट अर्थात सभी जातियों से हटकर कहने का यही तात्पर्य है। इससे यह सन्देश भी मिलता है कि अधिक साफ सफाई या स्वच्छता में पड़ना घातक हो सकता है। अस्वच्छता से कभी घृणा नहीं करना चाहिए क्योंकि देवी सर्वव्यापक हैं अर्थात अस्वच्छता में भी विद्यमान हैं। यही कारण है कि उन्हें उपासना में जूठी चीजें, स्त्रीरज से युक्त वस्त्र आदि भी चढ़ाये जाते हैं जिन्हें सामान्य तौर पर अपवित्र माना जाता है। इनकी उपासना में

नहाना, स्वच्छ होना, दीक्षित होना, उपवास आदि का कड़ाई से नियम नहीं है। जो लोग अन्य देवी–देवताओं की उपासना नहीं कर सकते वे मातंगी देवी की शरण ले सकते हैं। इससे यह भी शिक्षा मिलती है कि कोई भी व्यक्ति अछूत नहीं है और सभी से प्यार करना चाहिए और सभी के साथ उठना–बैठना चाहिए, खाना–पीना करना चाहिए। पवित्रता और नियम में अधिक बँधे रहना हानिकारक भी हो सकता है।

दुर्गासप्तशती के सातवें अध्याय में भगवती मातंगी के ध्यान का वर्णन करते हुए कहा गया है कि वे रत्नमय सिंहासन पर बैठकर पढ़ते हुए तोते का मधुर शब्द सुन रही हैं। उनके शरीर का वर्ण श्याम है। वे अपना एक पैर कमल पर रखी हुई हैं। अपने मस्तक पर अर्धचन्द्र तथा गले में कल्हार पुष्पों की माला धारण करती हैं। वीणा बजाती हुई भगवती मातंगी के अंग में कसी हुई चोली शोभा पार ही है। वे लाल रंग की साड़ी पहने तथा हाथ में शंखमय पात्र लिये हुए हैं। उनके बदन पर मधु का हलका हलका प्रभाव जान पड़ता है और ललाट में बिन्दी शोभा पा रही है। इनका वल्लकी धारण करना नाद का प्रतीक है। तोते का पढ़ना ह्रीं वर्ण का उच्चारण करना है, जो बीजाक्षर का प्रतीक है। कमल वर्णात्मक सृष्टि का प्रतीक है। शंखपात्र ब्रह्रन्ध्र तथा मधु अमृत का प्रतीक है। रक्तवस्त्र अग्नि या ज्ञान का प्रतीक है। वाग्देवी के अर्थ में मातंगी यदि व्याकरणरूपा हैं तो शुक शिक्षा का प्रतीक है। चार भुजाएँ वेदचतुष्टय हैं। इस प्रकार तान्त्रिकों की भगवती मातंगी महाविद्या वैदिकों की सरस्वती ही हैं।

मातंगी का अर्थ मदशील अंगों वाली भी है। मतवाले ढंग से चलने के कारण भी उनको मातंगी कहते हैं। हाथी मस्त होकर झूमता हुआ आनन्द से भरा हुआ ऐसे चलता है जैसे उसे बाहरी दुनिया का होश नहीं। मातंगी देवी को हाथियों की जन्मदात्री भी कहा जाता है तथा गणेश जी की दोनों पत्नियों अर्थात बुद्धि और सिद्धि/ऋद्धि का सम्बन्ध मातंगी देवी से है। मातंगी देवी को गुरू की शक्ति के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि गुरू व्यक्त वाणी से ही शिष्यों को उपदेश देता है। सभी मन्त्रों में रहने वाली शक्ति भी मातंगी का ही रूप है अर्थात देवी मातंगी उपासकों को उनके इष्ट देवताओं से सम्बन्ध कराने के लिए मन्त्र रूप में अपना योगदान देती हैं, इसी कारण इन्हें मन्त्रिणी कहते हैं। भगवती ललिता त्रिपुर सुन्दरी देवी की परामर्श दात्री होने के कारण भी इन्हें मन्त्रिणी कहते हैं। उपनिषद में वाणी को ही मनुष्य का सार माना गया है और मातंगी देवी की कृपा से मनुष्य वाणी का स्वामी हो जाता है। बातों को अच्छी तरह से अभिव्यक्त करने की शक्ति इन्हीं देवी की कृपा से आती है। कुछ लोगों को बहुत ज्ञान होता है पर वे उसे अच्छी प्रकार से अभिव्यक्त नहीं पाते हैं। परमज्ञान या आत्मज्ञान या रहस्यज्ञान को शब्दों में अभिव्यक्त करना बहुत कठिन होता है परन्तु मातंगी देवी की कृपा हो तो ऐसा करने में मनुष्य सक्षम हो जाता है। संगीत में अच्छा करना हो तो सरस्वती देवी या मातंगी देवी की कृपा की आवश्यक होती है। मातंगी देवी का वास विशुद्धि चक्र एवं जिह्वा के अग्रभाग में माना जाता है।

कमला

कमला महाविद्या दसवीं महाविद्या हैं। इनके ध्यान में बताया गया है कि इनकी कान्ति स्वर्ण के समान है। हिमालय के सदृश श्वेत वर्ण के चार हाथी अपने सूँड़ में चार स्वर्ण कलश लेकर इन्हें स्नान करा रहे हैं। ये अपनी दो भुजाओं में वर एवं अभय मुद्रा तथा दो भुजाओं में कमल पुष्प धारण किये हुए हैं। इनके सिर पर सुन्दर मुकुट तथा शरीर पर रेशमी वस्त्र सुशोभित है। ये कमल के सुन्दर आसन पर आसीन हैं। श्रीमतभागवत की कथा के अनुसार अमृत प्राप्ति के उद्‌देश्य से किये गये समुद्र मन्थन के फलस्वरूप इनका प्रादुर्भाव हुआ था। इन्होंने भगवान विष्णु को पति रूप में वरण किया था और ये भगवान विष्णु की लीलासहचरी हैं। भगवती कमला वैष्णवी शक्ति हैं। ये समस्त भौतिक या प्राकृतिक सम्पत्ति की अधिष्ठात्री देवी हैं तथा भगवान विष्णु से अभिन्न हैं। इनकी उपासना स्थिर लक्ष्मी, सौन्दर्य, सन्तति की प्राप्ति के लिए की जाती है। भार्गवों द्वारा पूजित होने पर

इनको भार्गवी भी कहा जाता है। वाराही तन्त्र के अनुसार प्राचीनकाल में ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव द्वारा पूजित होने के कारण कमला का एक नाम त्रिपुरा प्रसिद्ध हुआ। कालिका पुराण में कहा गया है कि त्रिपुर शिव की भार्या होने से ये त्रिपुरा हैं। कमला महाविद्या के पॉच कार्य हैं जो हैं– सृष्टि, स्थिति, संहार, तिरोभाव और अनुग्रह।

इस महाविद्या को कमलात्मिका कहते हैं जिसका अर्थ है कि जिनकी प्रकृति या स्वभाव कमल की तरह है अर्थात जो बहुत सुन्दर, आकर्षक, आनन्दप्रद, निर्लिप्त हैं एवं सृष्टि को पैदा करते हैं। कमल सृष्टि का प्रतीक है। कमल सुबह खिलता है और शाम को बन्द हो जाता है। सृष्टि उत्पन्न होती है और संहार भी होता है। अतः कमल और सृष्टि में समानता है। कमलासना कहने का तात्पर्य है कि कमल में विराजमान है अर्थात सृष्टि में व्याप्त है। कमल धारण करने का अर्थ भी सृष्टि उनमें समाहित है, यह अर्थ है। कमल में बैठना सृष्टि के उत्पन्न होने एवं जीवन के लगातार चलने का प्रतीक है। पीछे खड़े दो हाथी आध्यात्मिक सम्पत्ति का प्रतीक हैं। हाथ से निकलने वाले सिक्के भक्तों को दी जाने वाली सम्पत्ति का प्रतीक है। कमला महाविद्या परम चैतन्य या ब्रह्म के भौतिक जगत में पूर्ण विकास को दिखाता है। व्यक्तिगत स्तर पर देखा जाए तो यह मनुष्य की सुषुम्नानाड़ी में स्थित सभी कमल के आकार वाले चक्रों के पूर्णतः खुलने का प्रतीक है अर्थात सभी चक्रों के जाग्रत होने का प्रतीक है अर्थात कुण्डलिनी शक्ति के शिव से मिलन का प्रतीक है अर्थात यह मोक्ष का प्रतीक है। सुन्दरता, जनन क्षमता, धन, प्रेम, भक्ति, सौभाग्य, सफलता आदि सभी कुछ इनकी आराधना से मिलता है। मनुष्य को भौतिक सम्पत्ति के बजाए आध्यात्मिक सम्पत्ति पाने के लिए इनकी आराधना करनी चाहिए। सच्ची भक्ति की प्राप्ति, मोक्ष, सत्–चित्–आनन्द की अवस्था इन्हें ही माँगने में समझदारी है। कमलादेवी से अपने लिये जो भी माँगा जाएगा उसे दे देंगी किन्तु भौतिक सुख, भाग्य, प्रतिभा, प्रसिद्धि, धन–सम्पत्ति क्षणभंगुर चीजें ही हैं। कमला देवी का त्रिपुर सुन्दरी देवी से भेद यह है कि जहाँ त्रिपुर सुन्दरी देवी आनन्द के सूक्ष्म स्तर से सम्बन्धित हैं वहीं कमला देवी उस भीतरी आनन्द के बाह्य प्रकटीकरण से सम्बन्धित हैं। कमला देवी की कृपा होने पर व्यक्ति को सृष्टि के कण–कण में वह दिव्य सुन्दरता और दिव्य आनन्द की अनुभूति होने लगती है। उसके लिए कुछ भी असुन्दर या त्याज्य नहीं होता। कमला देवी का सम्बन्ध भीतरी शक्ति अर्थात छिपी हुई शक्ति या क्षमता का बाह्य रूप से पूर्ण प्रकटीकरण से है। हमारे भीतर जो भी क्षमता या प्रतिभा छिपी हुई है वह इस बाह्य जगत में पूर्ण रूप से प्रकटित हो जाती है। कमला देवी हमारे भीतर की सम्भावना का पूर्ण विकास करती हैं। कमला देवी और लक्ष्मी देवी में यदि अन्तर देखा जाए तो लक्ष्मी जी का ज्ञानात्मक पक्ष या योग में लक्ष्मी जी के जिस पक्ष को लिया जाता है, उससे कमला देवी का सम्बन्ध है। कमल अन्दर की क्षमता के बाह्य रूप से पूर्ण प्रकटीकरण का प्रतीक है। पानी आध्यात्मिक कृपा, प्रेम और ऐक्य (समन्वय) का प्रतीक है। स्वर्ण अनुभूति/बोध एवं भक्ति की प्रचुरता का प्रतीक है। कमला देवी का निवास हृदयचक्र में माना जाता है।

श्री काली जी

सहस्रनामावलि



श्री काली सहस्रनामावलि

(काली सहस्रनामस्तोत्र शाक्तप्रमोद, हिन्दी मन्त्रमहार्णव, इण्टरनेट आदि के माध्यम से देखा जा सकता है। इन ग्रन्थों में दिये गये मूल स्तोत्र के नामों का हिन्दी अनुवाद देखने में नहीं आया है। पाठकों के लाभार्थ इसका अनुवाद प्रस्तुत किया जा रहा है जो निम्नवत् है)

1. **ओं क्रीं काली**– ओं क्रीं बीजों की शक्ति से युक्त काली। कलयति संहारयति इति काली अर्थात वह शक्ति जो प्रलय काल में जगत का संहार कर देती है, काली है। काली ब्रह्म की क्रिया शक्ति है। जो काल पर नियंत्रण रखने वाली है। सारी घटनाएं उन्हीं के अनुसार होती हैं। ओं (ॐ) का अर्थ है रक्षा करने वाली, अवति इति ॐ। क्रीं का अर्थ है हे ब्रह्मशक्तिसम्पन्न महामाया काली! मेरे दुःखों को दूर करो। क अर्थात ब्रह्म, र अर्थात शक्ति एवं ई अर्थात महामाया, बिन्दु अर्थात दुःखहरण। इसे संक्षेप में दुःख हरने वाली ब्रह्मशक्तिसम्पन्न महामाया काली कह सकते हैं।

2. **क्रूंकराली**– क्रूं बीज की शक्ति से युक्त या इस बीज में शक्ति के रूप में स्थित काली जो शत्रुओं के लिए अतिशय विकराल (भयावह) रूप वाली है।

3. **कल्याणी**– सभी का कल्याण करने वाली। कल्याण का अर्थ आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रगति अर्थात मोक्ष, आनन्द या भगवान की प्राप्ति तथा सांसारिक क्षेत्र में मनुष्य जीवन की सभी आधारभूत आवश्यकताओं जैसे रोटी, कपड़ा, मकान, बिजली, पानी, सड़क, शिक्षा, चिकित्सा, मनोरंजन आदि के साधनों की उपलब्धता है। कल्यम् आनयति इति कल्याणी। जो निरोगता को लाये वह कल्याणी है। कल्यम् का अर्थ है निरोगिता। सबसे बड़ा रोग है अज्ञान और सबसे बड़ा ज्ञान है आत्मज्ञान। इस प्रकार कल्याणी का अर्थ हुआ आत्मज्ञान देने वाली। आत्मज्ञान का अर्थ पुस्तकीय तरीके से आत्मज्ञान की बात समझना नहीं, बल्कि आत्मा का अनुभव करना है। कल्याणकारी गुणों से युक्त। कल्याणकारी गुण हैं – प्रेम, करुणा, उदारता, क्षमा, सत्यसंकल्प, दुष्टों के विनाश की प्रवृत्ति आदि। कल्यम् अणति इति कल्याणी अर्थात शुभ शब्द बोलने वाली। कल्य का अर्थ है शुभ समाचार अर्थात शुभ शब्द, शुभकामना। कल्य के अन्य अर्थ हैं प्रशंसा, प्रातः काल, बधाई, उपाय।

4. **कमला**– लक्ष्मी स्वरूपा। कमल में विराजमान होने के कारण लक्ष्मी को कमला कहते हैं। कमलम् अस्या अस्ति इति कमला (कमल वाली अर्थात कमल से युक्त)। काम्यते असौ इति कमला अर्थात लोग जिसकी कामना करते हैं अर्थात लोग जिसे प्राप्त करना चाहते हैं वह कमला है। धन को सभी प्राप्त करना चाहते हैं। जो क (अर्थात् विष्णु) को सुशोभित करे। कम् विष्णुम् अलति इति कमला। जो जल को सुशोभित करे (कम् = जल)। कमल की तरह संकोच–विकास वाली। सृष्टि = विकास, संहार = बन्द होना। काम्यते इति कमला। जिनकी प्राप्ति की कामना की जाती है वह कमला हैं। काम्यते असौ इति कमला, कलच् प्रत्यय लगाने से यह शब्द बनेगा। सर्जनात्मक चेतना (Creative consciousness) को धारण करने वाली। क का अर्थ है जल जो Creative conscioueness का प्रतीक है क्योंकि जल से ही सृष्टि पैदा हुयी है। पुराणों में आया है कि सर्वप्रथम जल था। मल् धारणे धातु होती है जिससे मला का अर्थ है धारण करने वाली। समस्त ज्ञान को धारण करने वाली। क का अर्थ है सिर और सिर अर्थात मस्तिष्क में ही ज्ञान को धारण किया जाता है। सिर का अर्थ

नोट :– सिद्धान्त कौमुदी के सूत्र ''मोऽनुस्वारः'' के अनुसार हल् (व्यंजन) परे होने पर मकारन्त पद के अन्तिम म् के स्थान पर अनुस्वार हो जाता है। स्पष्टता के लिए इस ग्रन्थ में कहीं कहीं पर अनुस्वार के स्थान पर मकार लिख दिया गया है एवं कहीं कहीं पर सन्धि नहीं की गई है। पाठक यह ध्यान रखें कि मकारन्त पद के बाद स्वर होने पर म् ही रहेगा एवं व्यंजन होने पर मकारान्त पद के अन्तिम म् का अनुस्वार होता है।

है जो शरीर में सबसे ऊपर है। सिर स्थान को धारण करने वाली अर्थात् सभी देवी–देवताओं में श्रेष्ठ। वैदिक कोष में कमल का अर्थ जार या परस्त्रीगामी दिया गया है। कमल + आ, आ का अर्थ है नाश करना। परस्त्रीगामी व्यभिचारी पुरुषों को नाश करने वाली। पद्मचन्द्रकोश में कमल का अर्थ पद्म, जल, सारस पक्षी, तॉबा तथा कमला का अर्थ सर्वोत्तम, एक प्रकार का नींबू, सन्तरा दिया गया है। कमल (जल) स्त्रीलिंग में कमला हुआ। शब्द के आगे 'में विराजमान' या 'के समान' या 'का कारण' लगाने से शब्द के अन्य अर्थ निकल आते हैं। इस प्रकार कमला का अर्थ हुआ जल स्वरूपा, जल में विराजमान। कमला (सन्तरा) अस्या अस्ति इति कमला अर्थात सन्तरा वाली या सन्तरा से युक्त अर्थात पूजा में जिन्हें सन्तरा फल चढ़ाया जाता है। फल चढ़ाने से देवी उस फल से युक्त हो जाती हैं। उत्तरपदलोपी समास मानते हुए कमला का अर्थ सन्तराप्रिया या नींबू प्रिया कर सकते हैं अर्थात जिन्हें ये फल पसन्द है। कमला नामक नदी स्वरूपा।

5. **कला**– सृष्टि रूपा। साकार सृष्टि जिसे हम अपनी इन्द्रियों से अनुभव करते हैं वह कला का एक अर्थ है। सृष्टि प्रकृति का ही एक रूप है और प्रकृति ही देवी है। आत्मा को परमानन्द देने वाली शक्ति को भी कला ही कहते हैं। मातृका वर्ण को भी कला कहते हैं। शिव स्वरूपा। शिव की शक्ति स्वरूपा। कला का एक अर्थ शिव है। जिसके द्वारा क (ब्रह्म) लीन या आच्छादित होता है, उस शक्ति को कला कहते हैं। कं ब्रह्म लीयते आच्छाद्यते यया, सा कला। ब्रह्म की 16 कलाएं हैं, जिनके नाम हैं – प्राण, श्रद्धा, आकाश, वायु, तेज, जल, पृथ्वी, इन्द्रिय, मन, अन्न, वीर्य, तप, मन्त्र, कर्म, लोक और नाम। कला का अर्थ है अवयव या अंश होता है, ये ब्रह्म के अवयव हैं। विशिष्ट शक्तियों या विशिष्ट गुणों को कला कहते हैं। कला अर्थात एक विशेष कार्य करने की शक्ति या आत्मिक शक्ति। भगवान कृष्ण की 16 कलाएं हैं अर्थात 16 शक्तियाँ हैं जो अलग अलग कार्य करती हैं। 16 को पूर्ण अंक कहा गया है अर्थात 16 पूर्णता का प्रतीक है। 16 कलाएं वे हैं जो विश्व में अभिव्यक्त हैं। पुरुष सूक्त के अनुसार ब्रह्म का एक चौथाई पाद ही विश्व में है, इस प्रकार ब्रह्म में 64 कलाएं हैं। कला का अर्थ नाद का अंश भी है। कलयति कलते वा कर्त्तरि अच्, कल्यते ज्ञायते अच् वा अर्थात् जो किसी के कर्म अथवा स्थिति को द्योतित करती है, वह कला है। जैसे चन्द्रमा के सोलहवें भाग को उसकी कला कहते है। कृष्णपक्ष एवं शुक्लपक्ष में प्रतिपदा से चतुर्दशी तक चौदह कलायें होती है, अमावस्या और पूर्णिमा में दो और कलायें होती हैं, इस प्रकार सोलह कलायें हो गयी। सोलह की संख्या को पूर्णता का प्रतीक माना गया है। भू–लोक पर सोलह कलायें ही विद्यमान है। पुरुष सूक्त के अनुसार ब्रह्म का एक चौथाई हिस्सा भू–लोक में है, तीन चौथाई इसके बाहर है। इस प्रकार ब्रह्म में कुल चौंसठ कलायें है। सामान्यतः सोलह कला को ही पूर्ण कला कहा जाता है। कला अर्थात् कोई विशेष कार्य करने की शक्ति। कला अर्थात् अवयय, अवयय अर्थात् एक हिस्सा। कला अर्थात् एक विशेष प्रकार का कार्य करने की शक्ति। जैसे किसी की दस कलायें है तो प्रत्येक कला कोई एक विशेष कार्य करने में समर्थ होगी अर्थात् प्रत्येक कला कोई विशेष कार्य करने में सक्षम है। कला को आत्मशक्ति भी कहते है। एक से नौ तक की कलायें मनुष्य में पायी जा सकती है यदि वह साधना करे। नौ से सोलह की कलायें देवताओं के अवतारों में होती है। देवताओं में पायी जाने वाली ये कलायें (विशेष कार्य करने की शक्ति) इस प्रकार है– प्रभ्वी, कुण्ठिनी, विकासिनी, मर्यादिनी, संह्लादिनी, आह्लादिनी, परिपूर्ण, स्वरूपावस्थिति। इनमें प्रभ्वी का अर्थ ईश्वर की उस परिभाषा से सम्बन्धित है, जिसमें उन्हें कर्तुं अकर्तुं अन्यथाकुर्तं समर्थ प्रभु कहा गया है अर्थात् असम्भव को भी सम्भव कर दिखाना जैसे खम्भे में से नृसिंह अवतार प्रकट हो जाना। कुण्ठिनी कला (शक्ति) से पंचमहाभूत या विषादि को कुण्ठित (प्रभावरहित) किया जा सकता है। जैसे शिव ने विष का प्रभाव कम करके ही हलाहल पिया था। विकासिनी कला के द्वारा ही भगवान् वामन ने तीन पगों में समूचे ब्रह्माण्ड को नाप लिया था। मर्यादिनी कला के द्वारा भगवान श्रीराम सर्वशक्ति से सम्पन्न होते हुए भी मर्यादाओं (आदर्शों या नियमों की सीमा) में बँधे रहे व मर्यादा पुरुषोत्तम (Lord of Decorum) कहलाये। संह्लादिनी कला से भगवान् कृष्ण ने

अऋतु में फूल–फल आदि उत्पन्न करके प्रकृति के नियम में हस्तक्षेप कर दिया था। आह्लादिनी कला से ही राधिका ने नित्य कृष्ण जी के साथ रहकर उनका अनुरज्जन किया था। स्वरूपावस्थिति कला के द्वारा सम्पूर्ण कलाओं को समेट कर अपने मूलरूप में अवस्थित हुआ जा सकता है– जैसे द्वापर में श्री कृष्ण ने अपनी सभी कलाओं को समेटकर मूल रूप में धारण किया था, जिससे उन्हें पूर्ण अवतार माना जाता है। उपर्युक्त कलाओं के अतिरित अन्य भी लौकिक कलाएँ है जैसे– वास्तुकला, चित्रकला, हस्तकला, काष्ठकला, संगीतकला, नृत्यकला आदि। कृ विक्षपे धातु में अच् एवं टाप् प्रत्यय लगाने से कला शब्द बनता है। संस्कृत में र और ल एक ही होता है। करा अर्थात् कला। जो फेंक दी जाती है अर्थात् किसी समुदाय से निकाल कर कहीं फेंकी जाती है, वह कला है। इसी कारण कला का एक अर्थ अंश है। समय का अंश भी कला है। माप–तौल का नाम भी कला है। व्यावहारिक हुनर जैसे संगीत, चित्रकारी आदि कला है। बुद्धि की प्रवीणता भी कला है। कला का अर्थ है धोखा, जाल, प्रवंचना। कला का अर्थ है नौका। कला का अर्थ है मात्रा। कला अस्या अस्ति इति कला अर्थात् बुद्धि की प्रवीणता वाली अर्थात् कुशाग्र बुद्धि वाली। आ का अर्थ देना, नाश करना होता है। बुद्धि की प्रवीणता देने वाली। कला + आ, धोखा (षडयन्त्र) का नाश करने वाली या धोखे से मिले दुख को समाप्त करने वाली। जो नौका के समान है अर्थात् अपने भक्त को दुख युक्त संसार सागर से पार करा देने वाली है। कला का अर्थ साकार जगत भी होता है। प्रकृति जो चेतन के अधीन है वह कला है। कल्यते इति कला अर्थात जिसका परिग्रणन किया जाये वह कला है। पत्नी अर्थ में भी कला का प्रयोग होता है।

6. **कलावती**– चौसठ कलाओं से युक्त अर्थात इन चौसठ कलाओं के ज्ञान से युक्त है। चन्द्रमा की सोलह कलाओं से युक्त। कला का अर्थ सुख या आनन्द भी होता है। आनन्द के उल्लास से युक्त। कलाओं से युक्त अर्थात इन्हें चौसठ कलाओं का ज्ञान है। कलावती से यह स्पष्ट नहीं होता कि अन्य लोग इस मामले में इनसे बेहतर हो सकते हैं या नहीं। कलाओं वाली अर्थात उन कलाओं के साथ रहने वाली। चन्द्रमा को कलाधर कहते हैं अतः कलावती का अर्थ चन्द्रिका स्वरूपा भी कर सकते हैं। कला का अर्थ आत्मशक्ति भी होता है। जैसे भगवान राम 12 कलाओं वाले एवं भगवान कृष्ण 16 कलाओं वाले कहे जाते हैं अर्थात पूर्ण आत्मशक्ति को यदि 16 माना जाए तो 12 कला लिए भगवान राम थे और सभी कलाओं से युक्त भगवान कृष्ण थे। कला अर्थात अवयव या अंग। अवयवों या अंगों से युक्त अर्थात सगुण साकार रूप वाली। बहुत सी अंगभूता अर्थात विशेष कार्य करने वाली शक्तियों से युक्त। कला अर्थात अवयव अर्थात सूक्ष्म। सूक्ष्म शक्तियों से युक्त। वर्णमालास्वरूपा, कला का एक अर्थ मातृका अर्थात वर्ण या अक्षर भी है।

7. **कलाढ्या**– पूर्ण रूप से कलाओं से युक्त अर्थात सभी कलाओं से युक्त। कलाओं से सम्पन्न। जिनकी कलाएं पूर्ण रूप से ध्यान या चिन्तन करने योग्य हैं। आढ्या शब्द आ + ध्यै धातु से बनता है, आध्यायति इति आढ्यः, अमर कोष में ऐसी व्युत्पत्ति दी गई है, जनः आध्यायति इयम्, लोग जिसका निरन्तर ध्यान या चिन्तन करते हैं। अतः ध्यान या चिन्तन अर्थ किया गया है। सम्पत्ति का निरन्तर ध्यान किया जाता है। कला का अर्थ शक्ति, सौन्दर्य, इकाई या अवयव भी होता है। शक्तियों से सम्पन्न, सौन्दर्य की प्रचुरता वाली, सभी अवयवों या इकाईयों से सम्पन्न, ये अर्थ भी कर सकते हैं। आ समन्तात् से आ का अर्थ सभी ओर से या पूर्ण निकलता है। दिव्य प्रकाश के रूप में निरन्तर या पूर्ण रूप से ध्यान करने योग्य। भगवान शिव द्वारा निरन्तर ध्यान करने योग्य। कला का एक अर्थ है दिव्य प्रकाश, शिव, प्रभा या प्रकाश। (कलावती और कलाढ्या में अन्तर यह है कि एक कला से युक्त होने पर भी कोई व्यक्ति कलावान या कलावती कहलाया जा सकता है। जबकि कलाढ्या में सम्पन्नता अर्थात सभी कलाओं से युक्त होना अर्थ आता है।) कला रूपी धन से युक्त अर्थात कला से धनी। आढ्य का अर्थ धनी, सम्पन्न, पूर्ण होता है। जो कला से समृद्ध है अर्थात औरों से अधिक कलाओं वाली। कलाढ्या को एक प्रकार से खानदानी रईस की तरह देख सकते हैं। सभी कलाओं में सम्पूर्ण ज्ञान रखने वाली

जबकि कलावती से यह अर्थ स्पष्ट नहीं होता। वैष्णव तन्त्र के अनुसार संवित की 6 कलाएं (अवयव) होती हैं, जो हैं–ज्ञान/चेतना (knowledge/conciousness), ऐश्वर्य (devine glory), शक्ति (power), बल (strength), वीर्य (heroism) और तेजस (splender)। इन समस्त कलाओं से सम्पन्न अर्थात इन समस्त कलाओं से युक्त। तात्पर्य है कि देवी में सभी कलाएं है और वे भी पूर्ण मात्रा में हैं। कलावती और कलाढ्या में यह अन्तर है कि एक कला से भी युक्त होने वर कलावती कहा जा सकता है जबकि कलाढ्या में सम्पन्नता का भाव या सभी से युक्त होने का भाव निहित है।

8. **कलापूज्या**– जो कला के द्वारा पूजनीय है। कला अंश को भी कहते हैं, देवी के जो अंश रूप में देवियाँ हैं वे भी कला हैं। अंश रूप देवियों से पूजित। 64 कलाऐं जब शरीर रूप में आ जाती है तो उनके द्वारा देवी की पूजा होती है। कला का अर्थ शिव भी है। शिव के द्वारा पूजनीय। कला अस्य अस्ति इति कला अर्थात जो कलाओं (आत्मशक्ति, सौन्दर्य) से युक्त है उसे भी कला कह सकते हैं। भगवान विष्णु, सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि आदि द्वारा पूजनीय क्योंकि ये सभी कलाओं से युक्त हैं।

9. **कलात्मिका**– कला स्वरूप वाली। चौसठ कलाऐं उन्हीं के स्वरूप हैं। कलाओं की आत्मा अर्थात उनके तत्व स्वरूप वाली। सभी कलाओं में अर्थात 64 कलाओं में व्याप्त। आप्लृ व्याप्तौ धातु से आत्मा शब्द बनाने पर आत्मा का अर्थ व्याप्त भी होता है। आत्म और आत्मिका का एक ही अर्थ होता है।

10. **कलाहृष्टा**– कलाओं से हर्षित या आनन्दित रहने वाली।

11. **कलापुष्टा**– शक्ति से मजबूत या बलिष्ठ। कला अर्थ है शक्ति, अवयव या इकाई, प्रभा, सुन्दरता, आत्मिक शक्ति का अंश और पुष्ट का अर्थ है मजबूत, बलिष्ठ, पूर्ण। सभी अवयवों से पूर्ण अर्थात सभी अंगों से परिपूर्ण। तेज/प्रभा से पूर्ण, शोभा/छटा से पूर्ण। मन्त्र, द्रव्य, श्रद्धा तीनों अंगों से पूर्ण यज्ञस्वरूपा। समस्त सोलह कलाओं से पूर्ण चन्द्रस्वरूपा, समस्त बारह कलाओ से पूर्ण सूर्यस्वरूपा और समस्त दस कलाओं से पूर्ण अग्निस्वरूपा। कला का अर्थ आत्मिक शक्ति का अंश भी होता है जैसे भगवान कृष्ण को समस्त कलाओं से पूर्ण माना जाता है अर्थात वे पूर्ण आत्मशक्ति लिये हुए थे। सभी वर्णाक्षरों से पूर्ण। तन्त्र में कला का एक अर्थ वर्णाक्षर बताया गया है। पूर्ण कलाओं से पुष्ट। कलाभिः पुष्टा। कला से परिपुष्ट रहने वाली। सुख या आनन्द से परिपुष्ट। कम् का अर्थ सुख होता है जिस कारण कला का अर्थ सुख या आनन्दोल्लास भी होता है। कलापुष्टा अर्थात कलाओं से पूर्ण अर्थात सारी कलाओं का सम्पूर्ण ज्ञान रखने वाली। पुष्ट को Self-made की तरह ले सकते हैं।

12. **कलामस्ता**– कलाओं की मस्तक स्वरूपा अर्थात श्रेष्ठ मस्तक स्वरूपा। कलाओं में जो श्रेष्ठ कला है, उसको धारण करने वाली। कला को मस्तक में रखने वाली अर्थात आदर देने वाली।

13. **कलाकरा**– कला को करने वाली अर्थात चौंसठ कलाओं की रचना या निर्माण करने वाली।

14. **कलाकोटिसमाभासा**– करोड़ों कलाओं के समान तेज या कान्ति वाली। कला का अर्थ है तेज, ज्योति, प्रभा, शोभा।

15. **कलाकोटिप्रपूजिता**– करोड़ों कलाओं के द्वारा विशेष रूप से पूजित। कोटि का अर्थ प्रकार भी होता है। तब अर्थ होगा कलाओं के विभिन्न प्रकारों द्वारा विधिवत पूजित।

16. **कलाकर्म्मकलाधरा**– विभिन्न प्रकार के अच्छे कर्म या सत्कर्म के लिए चन्द्रमा के समान। सत्कर्मियों को प्रकाशित करने वाली या आह्लादित करने वाली या उन्हें अमृतपान कराने वाली। कलाकर्म अर्थात कलारूपी कर्म या विभिन्न प्रकार के अच्छे कर्म या सत्कर्म। कलाधर का अर्थ है चन्द्रमा जो आह्लाद, शान्ति, अमृततत्व देता है।

17. **कलापरा**– कलाओं में लगी रहने वाली अर्थात जो नृत्य कर रहीं हैं, गायन कर रहीं हैं, चित्रकारी कर रही हैं या अन्य कलाओं को कर रही हैं। परा का अर्थ है प्रवृत्त, लीन, तत्पर। कलाओं में तल्लीन रहने वाली।

कलासु परा इस व्युत्पत्ति के अनुसार अर्थ हुआ कलाओं श्रेष्ठ कला वाली। कला अर्थात शक्ति, शोभा, सुन्दरता। इस प्रकार अर्थ हुआ जो शक्ति में श्रेष्ठ है, शोभा, सुन्दरता में श्रेष्ठ है। वह ज्ञान जो आत्मा को परमात्मा से मिला दे, परमा कला होती है।

18. कलागमा– कला के द्वारा गमनीय अर्थात इकाई या द्युति से जिसका ज्ञान होता है। कलाभिः गम्यते इति कलागमा। कला का अर्थ इकाई, द्युति या प्रकाश भी होता है। कला की आगम, सभी कलाऐं जिसमें आगमन करती हैं अर्थात कलाओं का निकेतन या घर। कला के द्वारा सिद्ध होने वाली।

19. कलधारा– मधुर शब्द धारण करने वाली अर्थात मधुर गुनगुनाने वाली। कल का अर्थ है मधुर अव्यक्त शब्द। सुन्दर धारा से युक्त। सुन्दर पानी के झरने के स्वरूप वाली। सुन्दर नदी धारा स्वरूपा। सुन्दर (श्रेष्ठ) सेना वाली। सुन्दर वाणी वाली। सुन्दर (श्रेष्ठ) सन्तान वाली। कल का अर्थ है सुन्दर और धारा का अर्थ है झरना, नदी प्रवाह, सेना, वाणी, सन्तान।

20. कमलिनी– कमलिनीस्वरूपा। कमलिनी की तरह अर्थात कमल के गुणों जैसे सुन्दरता, कोमलता, निर्लिप्तता आदि से युक्त।

21. ककारा– क अक्षर से निरूपित सुखस्वरूपा। क का एक अर्थ सुख भी होता है। ककार+आ, आ का एक अर्थ देना होता है। सुख देने वाली। क वर्ण रूपा। क वर्ण की शक्ति स्वरूपा। एकाक्षरी कोष में क का अर्थ ब्रह्म, ब्रह्मा, विष्णु, सूर्य, वायु आदि बताया गया है। क अक्षर से निरूपित ब्रह्म की शक्तिस्वरूपा। ब्रह्मा, विष्णु, सूर्य, वायु स्वरूपा या इनकी शक्तिस्वरूपा। क का अर्थ स्वर्ग भी होता है और कारयति का अर्थ है निर्माण कराना। इस प्रकार ककारा का अर्थ हुआ स्वर्ग का निर्माण कराने वाली।

22. करुणा– दयाभावस्वरूपा। वह भाव जिसके कारण व्यक्ति दूसरे के कष्ट या दुख को दूर करने की इच्छा करता है एवं दूर करने का प्रयास करता है। देवी उस भाव के स्वरूप वाली। कर्तव्य कर्म वाली अर्थात हमेशा कर्तव्य कर्म ही करती हैं। देवताओं को कर्तव्य कर्म सौंपने वाली या बताने वाली। शास्त्रों के माध्यम से कर्तव्य कर्म का उपदेश देने वाली। वेद में जिन कर्मों को करने योग्य बताया गया है, वे कर्तव्य कर्म हैं। वैदिक कोष में करुण का एक अर्थ कर्तव्य कर्म (Duty) बताया गया है। ऋग्वेद के 1/100/7 मन्त्र में लिखा है सः (इन्द्रः) विश्वस्य करुणः ईशः। करुण + आ, आ का अर्थ है देना। देवताओं को कर्तव्य कर्म बताना या सौंपना कर्तव्य कर्म देना ही है। करुणः अस्या अस्ति इति करुणा (कर्तव्य कर्म वाली)।

23. कवि– शास्त्रों का वर्णन करने वाली। कवृ वर्णने धातु होती है। जगतरूपी काव्य की रचना करने वाली। विभिन्न श्रेष्ठ काव्यों अर्थात वेदों, पुराणों, उपनिषदों की रचना करने वाली। किसी भी ऋषि ने इन शास्त्रों की रचना की हो, वह रचना उन ऋषियों के अन्दर रहने वाली शक्ति ने की है और शक्ति का अर्थ है देवी। कविः सर्वज्ञः। कश्च आनन्दमयश्च विश्च विगतदोषश्च कविः। करोति विश्वम् इति कविः। कं ब्रह्माणं वायुं दक्षम् वा वेति गच्छति जनयति, अन्ते निरस्यति चेति कविः। तान् सृष्टिविस्तारार्थम् इच्छति वा। इस प्रकार कवि का अर्थ हुआ सर्वज्ञ। जो आनन्दमयी हैं एवं दोषों से रहित हैं। एकाक्षरी कोष में क का एक अर्थ आनन्द है। विगतदोष का वि अक्षर ले लिया। विश्व का निर्माण करने वाली। वि अर्थात विश्व। कृ धातु में ड प्रत्यय लगाने से बने क का अर्थ करने वाला अर्थात निर्माण करने वाला होता है। जो ब्रह्मा, प्राण वायु एवं दक्ष प्रजापति के पास जाती है या उन्हें पैदा करती है तथा प्रलयकाल में उन्हें नष्ट भी कर देती है। सृष्टि के विस्तार के लिए इनकी इच्छा करती है। विस्तार का वि ले लिया।

24. ककारवर्णसर्वाङ्गी– क अक्षर से युक्त सभी अंगों वाली। मन्त्रों को देवताओं का सूक्ष्म शरीर या नाद शरीर कहते हैं। उनके मन्त्र में क अक्षर होते हैं जिसका तात्पर्य है उनके अंग क अक्षर वाले हैं। एकाक्षरीकोष में

क का एक अर्थ चामीकर (स्वर्ण) बताया गया है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ स्वर्ण के रंग वाले हैं सभी अंग जिसके। स्वर्ण की तरह दीप्ति वाले सभी अंगों वाली। क का एक अर्थ एकाक्षरीकोष में उदात्त बताया गया है और उदात्त का अर्थ होता है श्रेष्ठ या उच्च। श्रेष्ठ रंगों वाले हैं सभी अंग जिसके। सुनहरे रंग को भी श्रेष्ठ कह सकते हैं क्योंकि धातुओं में श्रेष्ठ स्वर्ण होता है। क से शुरू होने वाले शब्दों से द्योतित गुणों से युक्त हैं सभी अंग जिसके। क वर्ण से आरम्भ होने वाले शब्द जैसे कमलनेत्रा, कांचनप्रभा, कमनीयभुजा आदि। शुभसंज्ञक वर्ण से युक्त हैं सभी अंग जिनके।

25. **कलाकोटिप्रभूषिता**— करोड़ों कलाओं से विभूषित। यहाँ पर कला का तात्पर्य दिव्य पदार्थ, दिव्य शक्ति, अवयव अर्थात सूक्ष्म शक्ति से है।

26. **ककारकोटिगुणिता**— स्वर्ण के सभी प्रकार के गुणों वाली अर्थात स्वर्ण की तरह दिव्य सौन्दर्य वाली। कोटि का एक अर्थ प्रकार होता है, क का एक अर्थ कांचन अर्थात स्वर्ण होता है। स्वर्ण भी कई प्रकार का होता है जैसे जाम्बूनद स्वर्ण, हाटक स्वर्ण आदि करोड़ों सौख्यों से अलंकृत। क का एक अर्थ सुख अर्थात सौख्य है। क से शुरू होने वाले करोड़ों गुणवाची शब्दों से बोधित गुणों वाली। ककार से शुरू होने वाले शब्द जैसे कांचना, कमनीया, कमला आदि।

27. **ककारकोटिभूषणा**— करोड़ों सूर्य हैं आभूषण जिसके। क का एक अर्थ है सूर्य। ब्रह्माण्डरूपी देवी के लिये करोड़ों सूर्य आभूषण की तरह ही हैं। करोड़ों सुख हैं आभूषण जिनके। क का अर्थ सुख भी होता है।

28. **ककारवर्णहृदया**— क अक्षर मुख्य है जिनके मन्त्र में। हृदय अर्थात मुख्य। जिनके मन्त्र में क अक्षर मुख्य रूप से रहता है। क्रीं, क्लीं आदि बीज मन्त्र जिनके मन्त्र में रहते हैं। क अर्थात सूर्य। सौर वर्ण जिनके हृदय में है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश अर्थात त्रिदेव जिनके हृदय में निवास करते हैं। त्रिदेवों के हृदय में रहने वाली। एकाक्षरी कोष के अनुसार क वर्ण का अर्थ ब्रह्मा, विष्णु, महेश है।

29. **ककारमनुमण्डिता**— ककार रूपी मन्त्र से अभिमण्डित अर्थात जिनके मन्त्र में क्रीं, क्लीं आदि बीज मन्त्र रहते हैं। मनु अर्थात मन्त्र।

30. **ककारवर्णनिलया**— ककार वर्ण है निवास स्थान जिनका।

31. **काकशब्दपरायणा**— शुभ अशुभ शब्दों की ओर जाने वाली या जुड़ी हुई। कौआ शुभ अशुभ की सूचना देता है। अयन का अर्थ है गति करना। परायण का अर्थ है श्रेष्ठता की ओर जाना या साथ जुड़ना। चारों दिशाओं में होने वाले शुभ अशुभ शब्दों की ओर जाने वाली या इन शब्दों से जुड़ी हुई। काक शब्द का अर्थ चतुर्दिक और चारों प्रहर भी कर सकते हैं। काक शब्द से आनन्दित होने वाली। योग–उपनिषद कोष में काक का अर्थ शिव दिया गया है। जिसके वश में माया है, वह काक या मायावी भगवान शिव है। शिव शब्द अर्थात मंगल सूचक शब्दों में लगी हुई अर्थात उसे करने वाली या उन शब्दों में रहने वाली। शिव के शब्दों को ध्यानपूर्वक सुनने में लगी हुई।

32. **ककारवर्णमुकुटा** — ककार वर्ण को मुकुट के रूप में धारण करने वाली।

33. **ककारवर्णभूषणा**— सौख्यप्रद क वर्ण है आभूषण जिनका। क का एक अर्थ है सुख।

34. **ककारवर्णरूपा**— क अक्षर स्वरूपा। क अक्षर को देखने वाली या दिखाने वाली। रूपयति का अर्थ है देखना, दिखाना, स्वरूप देना (निर्माण करना)।

35. **काकशब्दपरायणा**— दुष्टों को फटकारने के लिए कर्ण कटु शब्द बोलने में लगी हुई अर्थात बोलने वाली। काकवर्ण का अर्थ है खर अर्थात जो सुनने में कष्ट देता है। चारों प्रहरों में होने वाले काक शब्द अर्थात शुभ

अशुभ शब्दों से जुड़ी हुई या उसमें रहने वाली। काक शब्द का अर्थ शुभ अशुभ कर सकते हैं क्योकि कौआ शुभ और अशुभ की सूचना देता है। 31 वें नाम में चतुर्दिक दिशा अर्थ ले लिया और इस नाम में चारों प्रहर अर्थ ले लिया जिससे दोनों शब्दों के अर्थ में भिन्नता रहे। पर + अयन अर्थात श्रेष्ठता की ओर जाना। अयन अर्थात जाना या घर। देव परायण अर्थात देवता से जुड़ा हुआ। काक शब्द सुनने के लिए तत्पर। वैदिक उपनिषद कोष में क (माया) को वश में करने वाले मायापति शिव का नाम काक दिया गया गया है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ शिव (मंगलमय या शुभ) शब्दों को सुनने में लगी हुई। एकाक्षरी कोष में का का अर्थ दुर्गा, भूमि या पृथ्वी दिया गया है। स्वार्थ (बिना अर्थ बदले) में कन् प्रत्यय लगाने से काक शब्द बनता है जिसका अर्थ भी वही होता है। दुर्गा देवी या भूमि देवी के शब्दों को सुनने में लगी हुई या इनमें शक्ति रूप से रहने वाली।

36. ककवीरास्फालरता– आकाश और जल को अपनी वीरता से फैलाने में लगी हुई। क का अर्थ आकाश भी होता है और जल भी होता है। स्फार अर्थात फैलाना। रता अर्थात लगी हुई। आकाश और जल रूप में जो पराक्रम वाली है। आकाश और जल के पराक्रम से विस्तार वाली। दो ककारों की शक्ति/सुख से युक्त अतिशय सौख्य–समृद्धियुक्त। वीर अर्थात अतिशय। क का अर्थ है सुख। दो क लगने से अर्थ हो गया अधिक सुख। दो ककारों की अधिकता से समृद्धि युक्त। वीरा अर्थात पराक्रम युक्त, वीरयति।

37. कमलाकरपूजिता– विष्णुजी द्वारा या ब्रह्मा द्वारा पूजित। आकर अर्थात उत्पत्ति स्थान। ब्रह्मा जी का उत्पत्ति स्थान विष्णु जी की नाभि का कमल है। लक्ष्मी के करों द्वारा पूजित।

38. कमलाकरनाथा– विष्णु की नाथ या स्वामिनी। स्वामिनी का अर्थ है जिनका भगवान विष्णु पर अधिकार है अर्थात भगवान विष्णु को जैसा चाहे वैसा आदेश दे सकते हैं। स्वामी या स्वामिनी अर्थात अधीनस्थों को अपनी इच्छानुसार चलाने वाले। कमलाकर का अर्थ भगवान विष्णु और ब्रह्मा जी होता है। आकर का अर्थ उत्पत्ति स्थान। कमल का उत्पत्ति स्थान अर्थात भगवान विष्णु क्योंकि भगवान विष्णु की नाभि से कमल उत्पन्न हुआ था और उस कमल में ब्रह्मा जी का वास है। कमल है उत्पत्ति स्थान जिनका, इसु व्युत्पत्ति से ब्रह्मा जी अर्थ निकलेगा। वैसे कमलाकर का अर्थ है कमलों की खान अर्थात जहाँ बहुत से कमल उत्पन्न होते हैं।।

39. कमलाकररूपधृष् – विष्णुजी या ब्रह्माजी का रूप धारण करने वाली। कमलाकर के रूप में सुशोभित रहने वाली।

40. कमलाकरसिद्धिस्था– भगवान विष्णु, ब्रह्मा जी की सिद्धि में रहने वाली। सिद्धि का अर्थ अणिमा, लघिमा आदि योग की अष्ट सिद्धियां हैं। सिद्धि का अर्थ है कार्य में सफलता। भगवान विष्णु द्वारा राक्षसों को मारने या अन्य कार्यों में जो सफलता मिलती है उसके पीछे देवी जी का ही हाथ होता है।

41. कमलाकरपारदा– विष्णुजी या ब्रह्माजी को पार लगा देने वाली। कमलाकर के द्वारा भवसागर से पार करा देने वाली।

42. कमलाकरमध्यस्था– तालाब के मध्य में स्थित। कमलसमूह के मध्य में स्थित।

43. कमलाकरतोषिता– विष्णु जी द्वारा एवं ब्रह्मा जी द्वारा अपनी उपासना से सन्तुष्ट की गई।

44. कथंकारपरालापा– तुम्हारी समस्या क्या है, कैसे दूर करें इस प्रकार के कथनों से युक्त है वाणी जिनकी।

45. कथंकारपरायणा– कथंकार में लगी हुई अर्थात स्थित है। वह कैसी है इस प्रश्न पर विराजमान। कथं अर्थात प्रश्न, कार प्रश्न को सीमित करता है। कथंकार में निरत रहने वाली। कथंकार का तात्पर्य है क्या करना है, कैसे देना है आदि ।

46. कथङ्कारपदान्तस्था– कथङ्कारपद के सार रूप में स्थित। अन्त का अर्थ है सार। वह कैसी है? यह

प्रश्न बना ही रहता है। इसका उत्तर नहीं मिलता है। कथनकार के अन्त में र अक्षर है। इस र पर स्थित अर्थात अग्निस्वरूपा। र अर्थात अग्नि। कथंकार पद के अन्तिम भाग में स्थित रहने वाली।

47. कथङ्कारपदार्थभू– अनिर्वचनीय पदार्थस्वरूपिणी। अनिर्वचनीय सत्तास्वरूपिणी। भू का अर्थ है सत्ता। कथंकार (क्या करना है, क्या देना है आदि) इस पद के अर्थ से प्रकट होने वाली।

48. कमलाक्षी– कमल के समान सुन्दर और विशाल नेत्र वाली। कमल में व्याप्त। अक्षु व्याप्तौ धातू से अक्षी का अर्थ व्याप्त करने वाली भी होता है। कमलम् अक्ष्णोति इति कमलाक्षी। कमल ऐश्वर्य का भी प्रतीक है। देखने मात्र से भक्तों को ऐश्वर्य देने वाली। कोमल नेत्रों वाली।

49. कमलजा– कमल से उत्पन्न होने वाली। जल से उत्पन्न होने वाली। अमरकोष के अनुसार कमल का एक अर्थ जल भी होता है। कमल सृष्टि का प्रतीक है। एकाक्षरी कोष में ज का अर्थ विस्तार एवं जा का अर्थ शैय्या दिया गया है। सृष्टि में है विस्तार जिनका या सृष्टि है शैय्या जिनकी अर्थात सृष्टि के कण कण में ऊर्जा रूप में विद्यमान।

50. कमलाक्षप्रपूजिता– भगवान विष्णु द्वारा विशेष रूप से या विधिवत् पूजित।

51. कमलाक्षवरोद्युक्ता– विष्णु को वर देने के लिए उद्योग में रत अर्थात तत्पर, तैयार। उद्युक्त अर्थात उद्योग में रत, तत्पर, तैयार।

52. ककरा– सुख करने वाली अर्थात सुख देने वाली। क का अर्थ है सुख। सौख्य/सुख प्रदान करने वाली, अभय मुद्रा से युक्त हाथों वाली अर्थात हाथों में अभयमुद्रा बनाए हुए। अभय मुद्रा वाली अर्थात जो व्यक्ति सच्चे हृदय से देवी का दर्शन करता है उसको भयरहित करने वाली।

53. कर्बूराक्षरा– सुन्दर रंग बिरंगे अक्षरों से युक्त।

54. करतारा– कर्म करने वाले उद्यमी को पार लगाने वाली। उपासना रूपी कर्म करने वाले को पार लगाने वाली अर्थात संसार सागर से तार देने वाली। करोति इति करः अर्थात जो कर्म करता है वह कर है। जिसके करों में विशिष्ट सुन्दरता विद्यमान है। तारे में चमक होती है अतः वे सुन्दरता के प्रतीक हैं।

55. करच्छिन्ना– हाथों में ली खड्ग द्वारा दुष्ट दैत्यों के सिर को काट देती हैं।

56. करश्यामा– सुन्दर साँवले हाथों से सुशोभित।

57. करार्ण्णवा– जिनके हाथों में समुद्रों का भी निवास है।

58. करपूज्या– भक्तों के हाथों द्वारा पूजनीय।

59. कररता– उपासकों को सुख देने के कार्य में लगी हुई। कम् (सुखम्) राति इति करः, कर का अर्थ है सुख देने वाली। जो हाथों से भक्तों पर दया की वर्षा करने में संलग्न है।

60. करदा– हाथों द्वारा सभी प्रकार की संपत्तियाँ/अभय देने वाली हैं। कर्म बन्धन को नष्ट करने वाली। उनकी उपासना करने का देवी उपासक के कर्म बन्धन नष्ट कर देती है। कर का अर्थ है हाथ जिससे कार्य किया जाता है। संस्कृत में दो अवखण्डने, दैप् शोधने, दा ददाति धातु होती है जिसमें ड प्रत्यय लगाने से द शब्द बनता है, स्त्रीलिंग में दा बनेगा, जिसका अर्थ है खण्डन करने वाली, शोधन करने वाली, देने वाली। कर्म की शुद्धि करने वाली। कर का अर्थ छल या पखण्ड भी होता है। छल, पखण्ड को नष्ट करने वाली। कर का अर्थ सूर्य की किरण भी होता है। सूर्य की किरण देने वाली अर्थात् सूर्य स्वरूपा या सूर्य की शक्ति स्वरूपा। प्रकाश की किरण ज्ञान का प्रतीक है क्योंकि ज्ञान प्रकाश स्वरूपा है। ज्ञान का प्रकाश देने वाली।

61. **करजिता**– जो अपने हाथों द्वारा शत्रुओं को जीत लेती हैं।

62. **करतोया**– जो हाथ में स्थित जल के द्वारा भक्तों को अभिसिंचित/ पवित्र करती हैं।

63. **करामर्शा**– हाथ द्वारा जिसको छुआ नही जा सकता। मृश्+घञ् से मर्श का अर्थ जिसको छुआ नहीं जाता या अनस्पर्श भाव स्वरूपा होता है। घञ् प्रत्यय कर्ता कारक के अतिरिक्त अन्य कारको में एवं भाव में होता है। अतः जिसको (कर्म कारक) में अर्थ किया गया, न कि कर्ता कारक में। हाथ से स्पर्श करना रूपी भाव से विपरीत भाव स्वरूपा। यह निर्गुण निराकार रूप को दिखा रहा है, तभी छुआ नहीं जा सकता। असह्य तीक्ष्ण किरणों वाली। कर अर्थात किरण और अमर्श अर्थात असहिष्णु। सुख देने वाली पर दुष्टों के लिये असहिष्णु। कम् सुखम् राति इति करः, करा अर्थात जो सुख दे वह कर या करा है। अमर्श का एक अर्थ है असहिष्णु। सुख देने वाली और क्रोध रहित/क्रोध शून्य। सज्जनों को सुख देने वाली और दुष्टों के लिये क्रोधयुक्त। करा च असौ अमर्शा च इति करामर्शा। अमर्श का अर्थ क्रोध रहित एवं क्रोधयुक्त दोनों होता है ठीक उसी प्रकार से जैसे अरिष्ट का अर्थ अलग अलग व्युत्पत्ति के अनुसार कष्ट रहित और कष्ट दोनों होता है। असह्य (तीक्ष्ण) किरणों वाली। कर का एक अर्थ किरण है, अमर्श का अर्थ है असहिष्णु अर्थात असह्य। मृश् धातु में घञ् प्रत्यय लगाने से मर्श शब्द बनता है जिसका अर्थ हुआ स्पर्शन, जिसको स्पर्श किया जाता है। अमर्श का अर्थ हुआ स्पर्शन रहित। करामर्शा का अर्थ हुआ हाथ के द्वारा स्पर्शन से रहित अर्थात हाथ के द्वारा हम छू नहीं सकते। मृश् धातु में आ उपसर्ग लगाने से छूना, आक्रमण करना अर्थ हो जाता है। करैः आमर्शनम् यस्या सा, करामर्शा अर्थात जिसका हाथ के द्वारा आक्रमण होता है अर्थात शत्रुओं पर हाथ से प्रहार करने वाली। हाथों द्वारा क्षमा करने वाली।

64. **कर्म्मनाशा**– अपनी कृपा से कर्मजन्य पापों को नष्ट कर देती हैं।

65. **करप्रिया**– जिसे कर्मठ व्यक्ति प्रिय हैं अर्थात अच्छे लगते हैं। करोति इति करः अर्थात जो कर्म करता है वह कर है। सुन्दर हाथों से सुशोभित अर्थात जिनके हाथ अच्छे लगते हैं। प्रीणाति इति प्रिया से प्रिया का अर्थ प्रसन्न करने वाली एवं प्रीयते इति प्रिया से प्रिया का अर्थ प्रसन्न होने वाली होता है। कर्मठ व्यक्ति को प्रसन्न करने वाली, कर्मठ व्यक्ति से प्रसन्न होने वाली, ये अर्थ भी हो सकते हैं।

66. **करप्राणा**– सुख देने वाली इन्द्रियों वाली। प्राण का अर्थ एक वचन में आत्मा और बहुवचन में इन्द्रियाँ हैं। जिनके हाथों में राक्षसों के प्राण निवास करते हैं। जब चाहे मृत्यु दे दें।

67. **करकजा**– जलपात्र या जल से उत्पन्न होने वाली।

68. **करका**– कमण्डलु वाली। करकम् अस्या अस्ति इति करका। कमण्डलु धारण किये हुए। कमण्डलु या अनारवृक्ष स्वरूपा। करक का अर्थ है ओला भी होता है। करक+आ, आ का अर्थ है देना। ओला देने वाली अर्थात ओला की वृष्टि करने वाली अर्थात प्रकृति स्वरूपा। अनार देने वाली अर्थात संसार के लिये अनार वृक्ष पैदा करने वाली।

69. **करकान्तरा**– घड़े के अन्दर रहने वाली अर्थात जल स्वरूपा। ओले के अन्दर रहने वाली अर्थात विनाशक शक्ति स्वरूपा। ओले के अन्दर विनाशक शक्ति होती है जो फसल को नष्ट कर देती है उसी प्रकार देवी भी दुष्टों के लिए विनाशक हैं। करक का अर्थ छोटा घड़ा, ओला। आधुनिक वेद विज्ञान में सिर में ऊपरी भाग में चार छिद्र या रिक्त स्थान होते हैं जिनमें सोमरस भरा होता है जो पूरे शरीर को शक्ति या स्फूर्ति देते हैं। इन विवर या छिद्र को घट, कलश, कमण्डलु आदि कहते हैं और इसमें भरे हुए रस को सुधा कहते हैं।

70. **करकाचलरूपा**– जो हिमालय के रूप में है। हिमालय की तरह गोरे वर्ण वाली। गौरी देवी या सरस्वती देवी गोरे रंग की हैं। काली जी का इन देवियों से अभेद है क्योंकि सभी देवी एक ही हैं अतः काली जी को गोरे रंग वाली कह दिया गया है। करक का अर्थ है ओला, जो बर्फ का बना होता है। अचल का अर्थ है पर्वत।

बर्फीला पहाड़ अर्थात हिमालय। हिमालय सतोगुण, उच्चगुण एवं दृढ़ संकल्प का प्रतीक है। सफेद होने के कारण सतोगुण का प्रतीक है, ऊँचाई के कारण गुणों की उच्चता का प्रतीक है एवं अचल होने के कारण दृढ़ संकल्प का प्रतीक है।

71. **करकाचलशोभिनी**– ओला से युक्त पर्वत अर्थात बर्फ से युक्त पर्वत अर्थात हिमालय पर सुशोभित होने वाली।

72. **करकाचलपुत्री**– ओला (अर्थात बर्फ) से युक्त पर्वत अर्थात हिमालय की पुत्री पार्वती से अभेद है जिनका।

73. **करकाचलतोषिता**– करकाचल अर्थात हिमालय से तृप्त/प्रसन्न/सन्तुष्ट रहने वाली।

74. **करकाचलगेहस्था**– करकाचल (हिमालय) पर स्थित घर में निवास करने वाली।

75. **करकाचलरक्षिणी**– करकाचल अर्थात हिमालय की रक्षा करने वाली।

76. **करकाचलसम्मान्या**– करकाचल (हिमालय) द्वारा विशेष रूप से सम्मान करने योग्य अर्थात जिन्हें सम्मान दिया जाता रहा है। कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र से कृत्य प्रत्यय उनसे भिन्न कालों एवं कारकों का भी बोध कराते हैं, जिनमें सामान्यतः उनकों प्रयोग किया जाता है।

77. **करकाचलकारिणी**– करकाचल अर्थात हिमालय का निर्माण करने वाली।

78. **करकाचलवर्षाढ्या**– पहाड़ जैसे ओले अर्थात बड़े आकार वाले ओले की वर्षा से समृद्ध। अचल अर्थात पहाड़ अर्थात बड़ा आकार। प्रचुर मात्रा में ओले से युक्त वृष्टि करने वाली। अचल अर्थात प्रचुर मात्रा।

79. **करकाचलरञ्जिता**– हिमालय पर प्रसन्न रहने वाली। करकाचल अर्थात हिमालय से आनन्दित होने वाली।

80. **करकाचलकान्तारा**– करकाचल (हिमालय) के दुर्गम मार्गस्वरूपा।

81. **करकाचलमालिनी**– हिमालय के समान धवल वर्ण वाले मनकों की माला पहने हुए अर्थात सफेद मोतियों या स्फटिक की माला पहने हुए।

82. **करकाचलभोज्या**– हिमालय या कैलाश पर्वत पर भोजन कराने योग्य अर्थात इनके लिए भोग लगता है। हिमालय की तरह सफेद भोज्य पदार्थ वाली अर्थात खीर आदि खाने वाली।

83. **करकाचलरूपिणी**– करकाचलरूपी (शिव) की गृहिणी। गृहिणी अर्थात पत्नी। जैसे दण्डी और दण्डिनी वैसे ही करकाचलरूपी और करकाचलरूपिणी। करकाचलरूपी का अर्थ है हिमालय की तरह रूप वाले अर्थात हिमालय की तरह गोरे रंगवाले अर्थात भगवान शिव। करकाचलरूपा और करकाचलरूपिणी में अन्तर यह है कि करकाचलरूपा का अर्थ है जो स्वयं गौरवर्णा हैं जबकि करकाचलरूपिणी का अर्थ है जो गौरवर्णा शिव की पत्नी हैं। विशाल अनार वृक्ष के स्वरूप वाली। अचल अर्थात पर्वत जो विशालता का प्रतीक है।

84. **करामलकसंस्था**– सम्पूर्ण ज्ञान में अच्छी प्रकार रहने वाली। जिन्हें इहलौकिक और पारलौकिक सभी वस्तुओं का ज्ञान है उनमें भली भँति रहने वाली। करामलक का तात्पर्य है हस्तामलक अर्थात हाथ में रखा हुआ आँवला। करामलक या हस्तामलक एक मुहावरा है। इस मुहावरे के अर्थ है सम्पूर्ण और स्पष्ट ज्ञान, ब्रह्माण्ड, आसानी से या तुरन्त। हाथ में रखा आँवला अत्यन्त पास होने के कारण सम्पूर्णता से दिखता है अतः वह पूर्ण और स्पष्ट ज्ञान का प्रतीक है। हाथ में आँवला लेना बहुत आसान काम है और यह आसानी से और तुरन्त लिया जा सकता है। यह कोई कठिन काम नहीं है अतः हस्तामलक का एक अर्थ आसानी से या जो दुर्गम नहीं है, निकलता है। गर्गसंहिता में ब्रह्माण्ड को भगवान के हाथ में रखे आँवले की तरह बोला गया है। इस प्रकार करामलक या हस्तामलक ब्रह्माण्ड का ही प्रतीक है। हस्तामलक नाम के एक विद्वान भी हुए हैं जो शंकराचार्य जी के शिष्य थे और जिन्हें ब्रह्म का ज्ञान था। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ हस्तामलक नामक विद्वान में शक्ति

के रूप में भलीभाँति स्थित।

85. करामलकसिद्धिदा– भक्तों को आसानी से या सरलता से या तुरन्त सिद्धि देने वाली। करामलक का अर्थ आसानी से क्यों निकला यह पिछले नाम में स्पष्ट किया जा चुका है। जिसे सम्पूर्ण ज्ञान है उसे सिद्धि या सफलता देने वाली।

86. करामलकसमपूज्या– सम्पूर्ण और स्पष्ट ज्ञान रखने वाले की तरह पूजनीय। जिसे सम्पूर्ण और स्पष्ट ज्ञान होता है ऐसा विद्वान सर्वत्र पूजनीय होता है। देवी भी ऐसे विद्वान की तरह सर्वत्र पूजनीय हैं।

87. करामलकतारिणी– भक्तों को सहज में ही या आसानी से तार देने वाली। यहाँ पर करामलक मुहावरे का अर्थ आसानी से लिया गया है। सम्पूर्ण ज्ञानी को पार करा देने वाली।

88. करामलककाली– ब्रह्माण्ड को ग्रसित करने वाली अर्थात प्रलय काल में ब्रह्माण्ड का लय करने वाली। यहाँ पर करामलक का अर्थ ब्रह्माण्ड लिया गया है क्योंकि ब्रह्माण्ड आँवले की तरह गोल होता है और काली का अर्थ है ग्रसित कर दे अर्थात खा ले। कम् सुखम् आलाति इति काली इस व्युत्पत्ति से काली का अर्थ सुख लाने वाली कर सकते हैं। सम्पूर्ण ज्ञानी के लिए सुख लाने वाली यह अर्थ हुआ। सम्पूर्ण रूप से ज्ञात काली। हस्तामलक की तरह काली के स्वरूप को प्रकट कर देने वाली।

89. करामलकरोचिनी– हाथ में रखे हुए आँवले की तरह स्पष्ट चमकने वाली। हस्तामलक की तरह चमकने वाली।

90. करामलकमाता– ब्रह्माण्ड को जन्म देने वाली। उसकी रक्षा करने वाली, पालन करने वाली। हस्तामलक की जननी। हस्तामलक का अर्थ है हाथ में रखे आँवले की तरह जिसे स्पष्ट रूप से देखा जा सके, जाना जा सके। पूर्ण ज्ञान भी हस्तामलक का एक अर्थ होता है। गर्ग संहिता में छठे अध्याय में ब्रह्माण्ड के रूप में इस शब्द का प्रयोग किया गया है जहाँ कहा गया है कि भगवान के लिए ब्रह्माण्ड हाथ में रखे आँवले की तरह है। जिसे अद्वैत ब्रह्म का आसानी से ज्ञान हो गया है अर्थात अनुभूति हो गयी है उसके लिए भी हस्तामलक शब्द का प्रयोग होता है।

91. करामलकसेविनी– ज्ञात होने पर सेवनीय। सेवा का अर्थ भज् सेवायाम् धातु से पूजा करना, मिले हुए आदेश का तुरन्त पालन करना होता है। पूजा में अन्तः और बाह्य दोनों तरह की पूजा होती है जबकि सेवा में हाथ पैर आदि का प्रयोग होने के कारण बाह्य पूजा ही प्रमुखता से होती है। हस्तामलक के द्वारा संसेवित।

92. करामलकवत्ध्येया– हाथ में रखे आँवले की तरह ध्यान करने योग्य अर्थात आसानी से ध्यान करने योग्य। सम्पूर्णता में ध्यान करने योग्य अर्थात काली जी के ध्यान में उनके सम्पूर्ण रूप का ध्यान करना चाहिए। हाथ में रखा आँवले को सम्पूर्ण रूप से देख पाते हैं अतः हाथ में रखा आँवला सम्पूर्ण और स्पष्ट ज्ञान का प्रतीक है। सम्पूर्ण रूप से ध्यान करने योग्य। हस्तामलक की तरह ध्यान करने योग्य।

93. करामलकदायिनी– सम्पूर्ण ज्ञान देने वाली अर्थात सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का ज्ञान देने वाली। तत्काल ही बड़े से बड़े फल को देने वाली।

94. कञ्जनेत्रा– कमल की तरह सुन्दर नेत्रों वाली। कमल की तरह गोल नेत्रों वाली। सजल नेत्रों वाली।

95. कञ्जमति– विकसित या प्रफुल्लित बुद्धि वाली। श्रेष्ठ बुद्धि वाली, न कि मुकुलित बुद्धि वाली। कमल विकसित और प्रफुल्लित होता है। ब्रह्मा की तरह उत्कृष्ट या श्रेष्ठ बुद्धि से युक्त। कंज का अर्थ कमल, ब्रह्मा, अमृत है। अमृत अर्थात दूसरों को जीवन देने वाली बुद्धि से युक्त। (यदि कंजमती शब्द है तो अर्थ होगा जो कमल से युक्त है, ब्रह्मा जी से युक्त है, अमृत से युक्त है।)

96. कञ्जस्था– कमल में स्थित रहने वाली। अमृत में शक्तिरूप में रहने वाली। कमल सृष्टि का प्रतीक है।

सृष्टि में ऊर्जा या शक्ति के रूप में सर्वत्र विद्यमान।

97. कञ्जधारिणी– कमल को धारण करने वाली। अमृत पात्र को धारण किए हुए।

98. कञ्जमालाप्रियकरी– कमल की माला से प्रिय कार्य कर देती हैं अर्थात सिद्ध हो जाती हैं। कमल के फूलों की माला चढ़ाने से या कमलगट्टे की माला से जप करने पर प्रिय कार्य कर देती है अर्थात उस कार्य को कर देती हैं जिससे खुशी मिलती है।

99. कञ्जरूपा– कमल की तरह सुन्दर रूप है जिनका। कमल को देखने वाली या दिखाने वाली। रूपयति का अर्थ देखना, दिखाना, निर्माण करना है। ब्रह्माजी की रचना करने वाली।

100. कञ्जजा– कमल से उत्पन्न होने वाली। लक्ष्मी जी समुद्र मन्थन में कमल के ऊपर ही प्रकट हुईं थी। देवी के प्रत्येक रूप में अभेद है। ब्रह्माजी से उत्पन्न अर्थात देवी सरस्वती स्वरूपा। ब्रह्मा जी के तेज से सरस्वती जी की उत्पत्ति मानी गई है। वैदिक ऋचाओं के स्वरूप वाली जो ब्रह्माजी के मुख से उत्पन्न बताई गई हैं।

101. कञ्जजाति– कमल में उत्पन्न। जाति का एक अर्थ है जन्म। सभी कमलों में समान बुद्धि देने वाली अर्थात किसी भी प्रकार का कमल आए तो हम उसे कमल कह सके ऐसी बुद्धि देने वाली। सभी गायों को गाय कहते हैं क्योंकि उनमें गोत्व नामक सामान्य (जाति) है। सभी मनुष्यों को मनुष्य कहते हैं क्योंकि उनमें मनुष्यत्व नामक सामान्य या जाति है। कमल में रहने वाले सामान्य स्वरूपा अर्थात सुन्दरता/शोभा स्वरूपा। जाति का एक अर्थ है सामान्य। जितने भी कमल होते हैं उनकी शोभा वाली। जाति अर्थात प्रकार अर्थात जितने भी प्रकार हैं जैसे लाल कमल, नील कमल, श्वेत कमल। सभी कमलों की जातियों अर्थात प्रकारों के गुणों वाली अर्थात सुन्दरता वाली। ब्रह्मा के गोत्र वाली। कंज अर्थात ब्रह्मा, जाति अर्थात गोत्र। अमृत सहित उत्पन्न। कंज अर्थात अमृत और जाति अर्थात जन्म। ब्रह्माजी से उत्पन्न अर्थात सरस्वती स्वरूपा या वेटिक ऋचाओं के स्वरूप वाली।

102. कञ्जगति– सुन्दर गति या चाल वाली। कमल सुन्दरता का प्रतीक है। ब्रह्मा का लक्ष्य स्वरूपा। ब्रह्मा का ज्ञान स्वरूपा।

103. कञ्जहोमपरायणा– कमलों के द्वारा हवन करने में संलग्न रहने वाली।

104. कञ्जमण्डलमध्यस्ता– कमल समूह के मध्य में स्थित रहने वाली।

105. कञ्जाभरणभूषिता– कमल के आभूषणों से विभूषित।

106. कञ्जसम्माननिरता– कमल पुष्पों के द्वारा सम्मान पाने में लगी हुई। देवता, मनुष्य देवी को सम्मानित करने के लिए कमल चढ़ाते हैं। कमल के द्वारा जो सम्मान किया जाता, उससे प्रसन्न होने वाली।

107. कञ्जोत्पत्तिपरायणा– कमल की उत्पत्ति में लगी हुई। सभी कमलों की उत्पत्ति इन्हीं से होती है। परायण अर्थात जुड़ी हुई या लगी हुई।

108. कञ्जराशिसमाकारा– कमल समूह के सौन्दर्य के समान है आकार (रूप) जिनका।

109. कञ्जारण्यनिवासिनी– कमल वन में निवास करने वाली।

110. करञ्जवृक्षमध्यस्था– करंजवृक्ष के मध्य में स्थित रहने वाली।

111. करञ्वृक्षवासिनी– करंजवृक्ष पर निवास करने वाली।

112. करञ्फलभूषाढ्या– करंज के फलों से निर्मित आभूषणों से सुशोभित होने वाली।

113. करञ्जारण्यवासिनी– करंजों के वन में निवास करने वाली।

114. करञ्जमालाभरणा– करंजों की माला है आभूषण जिनका।

115. करवालपरायणा– तलवार में लगी हुई अर्थात तलवार से युक्त अर्थात तलवार को धारण करने वाली (असुरों, शत्रुओं के लिए)।

116. करवालप्रहृष्टात्मना– तलवार धारण करके हृदय से आनन्दित होने वाली।

117. करवालप्रियागति– तलवार से प्रिय है चलना जिनको अर्थात जिनको तलवार धारण कर चलना प्रिय है।

118. करवालप्रियाकन्या– तलवार धारण करना प्रिय है जिसे ऐसी कन्या के स्वरूप वाली। कन्या अर्थात दीप्तिमती, कम उम्र की लड़की, पुत्री अर्थात हिमालय की पुत्री। (यदि करवालप्रियाकन्था नाम है तो अर्थ होगा तलवार धारण करना जिसे प्रिय है ऐसी जोगियों का वस्त्र पहने हुए। कन्था अर्थात जोगियों का वस्त्र, कन्था अस्या अस्ति इति कन्था (जोगियों के वस्त्र वाली))।

119. करवालविहारिणी– तलवार को लेकर विचरण करने वाली।

120. करवालमयी– तलवार से युक्त या सुशोभित।

121. कर्मा– विविध प्रकार के श्रेष्ठ कर्मों से सुशोभित। कर्मों वाली, कर्माणि अस्या अस्ति इति कर्मा।

122. करवालप्रियंकरी– तलवार के द्वारा भक्तों का प्रिय करने वाली (दुष्टों को मारकर)।

123. कबन्धमालाभरणा– कबन्धों (सिर, ग्रीवा रहित शरीर) की माला है आभूषण जिनका।

124. कबन्धराशिमध्यगा– कबन्ध समूहों के मध्य में स्थित रहने वाली।

125. कबन्धकूटसंस्थाना– कबन्ध के ऊपरी भाग में अच्छी प्रकार स्थित। कूट का अर्थ होता है पर्वत की चोटी अर्थात ऊपरी भाग। कबन्घ का अर्थ है शरीर का सिर रहित भाग अर्थात सिर कटा धड़। कबन्ध के समूहों में स्थित रहने वाली। कूट का अर्थ है समूह।

126. कबन्धानन्तभूषणा– अनन्त कबन्ध हैं आभूषण जिनके। आदि काल से लोग मरते रहे हैं इसलिए कबन्धों की संख्या अनन्त है।

127. कबन्धनादसन्तुष्टा– कबन्धों की नाद (आवाज) से प्रसन्न होने वाली। युद्ध में सिर कटने से कबन्ध हुए असुरों की चीत्कार से प्रसन्न होने वाली।

128. कबन्धासनधारिणी– कबन्धों के आसन को धारण करने वाली अर्थात उसमें विराजमान। कबन्ध को आसन के रूप में धारण करने वाली अर्थात आसन के रूप में प्रयोग करने वाली।

129. कबन्धगृहमध्यस्था– कबन्धरूपी घर के बीच स्थित अर्थात रहने वाली। कबन्ध में स्थित घर में निवास करने वाली। कबन्ध में हृदय होता है और हृदय में आत्मा का वास होता है। आत्मा के रूप में स्थित। कबन्ध के घर के मध्य में स्थित रहने वाली।

130. कबन्धवनवासिनी– कबन्धों के वन में रहने वाली अर्थात जहाँ बहुत से कबन्ध है वहाँ रहने वाली। वन में बहुत से पेड़ होते हैं इसलिए वन का अर्थ बहुत लिया गया है। बहुत से कबन्ध श्मशान में होते हैं अतः श्मशानवासी।

131. कबन्धकाञ्ची– कबन्धों से बनी हुई कांची या करधनी है जिसकी अर्थात ऐसी करधनी को धारण करने वाली। कबन्धों की करधनी को धारण करने वाली।

132. करणी– सुख देने वाली इन्द्रियों को ले जाने वाली अर्थात क्रियाशील बनाने वाली। कम् सुखम् राति इति

करः, जो सुख दे वह कर है। इन्द्रियाँ सुख देती हैं अतः वह कर है। करणी में णी शब्द नी नयति (ले जाना) से आ सकता है। श्रेष्ठ इन्द्रियों से सुशोभित होने वाली।

133. कबन्धराशिभूषणा– कबन्धों का समूह ही है आभूषण जिनका।

134. कबन्धमालाजयदा– कबन्धों की माला धारण करके भक्तों को जीत देने वाली या देवताओं को जय का वरदान देने वाली।

135. कबन्धदेहवासिनी– कबन्ध के शरीर में निवास करने वाली। देवी सर्वव्यापक हैं अतः कबन्ध में भी विराजमान हैं।

136. कबन्धासनमान्या– कबन्धों का आसन है मान्य जिन्हें।

137. कपालमाल्यधारिणी– कपालों (सिर की हड्डी) की माला को धारण करने वाली। कपाल, कमल, कमण्डलू आदि शब्द अमृत अर्थात मोक्ष से भरे हुए पात्र या सृष्टि को बनाने के लिए आवश्यक तत्वों से भ्रे पात्र का प्रतीक हैं। माला में कई फूल होते हैं। प्रत्येक फूल सृष्टि निर्माण का कोई एक तत्व या एक प्रकार के मोक्ष का प्रतीक है। सृष्टि निर्माण के लिए आवश्यक सभी तत्वों को माला के रूप में धारण करने वाली।

138. कपालमालामध्यस्था– कपालों की मालाओं के मध्य में स्थित रहने वाली। मोक्ष के सभी प्रकार एक प्रकार के फूल हैं। सभी प्रकार के मोक्ष के मध्य स्थित अर्थात आनन्द रूप से स्थित।

139. कपालव्रततोषिता– कपाल में भोजन करने से सन्तुष्ट होने वाली। इन्हें कपाल में रखकर भोजन दिया जाता होगा जिससे ये प्रसन्न हो जाती हैं। व्रत का अर्थ खाना नहीं खाना भी है और खाना खाना भी है जैसे पयोव्रत का अर्थ है दूध का आहार लेने वाला। कपाल अर्थात खोपड़ी या मस्तक। कपाल के व्रत से प्रसन्न अर्थात सन्तुष्ट होने वाली। क का अर्थ है सुख, स्वर्ग। सुख का पालन (रक्षा) विचार या ज्ञान से ही होता है। ज्ञान होने पर व्यक्ति क्षण भंगुर पदार्थों की ओर नहीं जाएगा और नित्य आनन्द प्राप्त करने के लिए प्रयासरत रहेगा। स्वर्ग का पालन करने वाले हैं इन्द्र। इस प्रकार कपाल का अर्थ हुआ इन्द्र, विचार या ज्ञान। इन्द्र के व्रत (संकल्प) से प्रसन्न।

140. कपालदीपसन्तुष्टा– शिव के लिए दीपदान करने से सन्तुष्ट। मन्दिर में शिव के समक्ष दिया जलाने से देवी खुश हो जाती हैं। कपालम् अस्य अस्ति इति कपालः, अर्थात जो कपाल को धारण करे वह कपाल है। शिव जी कपाल को धारण करने वाले हैं, अतः वह कपाल हैं। पापम् का अर्थ पाप है और पापः का अर्थ पाप वाला है, पापम् अस्य अस्ति इति पापः। कपाल के दीप से सन्तुष्ट होने वाली। ज्ञान का दीप या प्रकाश करने वाले जो ज्ञानी हैं उनसे पूर्ण रूप से प्रसन्न। ज्ञान मस्तिष्क का क्षेत्र है अतः कपाल का अर्थ है ज्ञान।

141. कपालदीपरूपिणी– मस्तिष्क में आत्मा के रूप में जल रही ज्योति के स्वरूप वाली। कुछ लोग कहते हैं कि आत्मा हृदय में है और कुछ लोग कहते हैं कि यह आज्ञा चक्र में है। आज्ञा चक्र का स्थान दोनों नेत्रों के केन्द्र से पीछे की ओर, यदि सिर को गेंद माना जाए तो उसके लगभग केन्द्र में। कपालों के दीपक के स्वरूप वाली। ज्ञान के प्रकाशक के रूप वाली अर्थात ज्ञान शक्ति स्वरूपा।

142. कपालदीपवरदा– शिव जी को दीपदान करने से वरदान देने वाली। कपालों रूपी दीपों को देने (जलाने) से भक्तों को वर देने वाली। ज्ञान के प्रकाशक अर्थात ज्ञानी भक्तों को वर देने वाली।

143. कपालकंजलस्थिता– सुख का पालन करने वाली एवं मैना पक्षी जिसके पास स्थित है। कम् सुखम् पालयति इति कपालः। कंजल अर्थात मैना पक्षी। ब्रह्माण्डरूपी कपाल में स्थित सूर्य में स्थित। कपाल घड़े का आधा भाग है। भर्तृहरि ने पृथ्वी को एक कपाल, द्युलोक को दूसरा कपाल माना गया है और सूर्य द्यु लोक में रहता है। कंजल अर्थात कंजर अर्थात सूर्य। कम् जलम् जरति, जो जल को सुखा दे अर्थात सूर्य। कपाल (श्मशान में) में स्थित पक्षी पर सुशोभित होने वाली।

144. कपालमालाजयदा– शिवजी को सर्वतोभावेन जय देने वाली। कपालमाल+आ+जयदा। कपालमालः अर्थात जो कपाल की माला पहने हुए हैं अर्थात शिवजी। आ का अर्थ है सर्वतोभावेन। देवी की शक्ति या कृपा से ही शिवजी को जीत मिलती है। कपालों की मालाओं द्वारा अपने भक्तों को जय प्रदान करने वाली।

145. कपालजलतोषणी– शिवजी को जलाभिषेक करने से सन्तुष्ट (प्रसन्न) हो जाने वाली। कपाल के जल के द्वारा सन्तुष्ट होने वाली। ज्ञान रूपी जल से प्रसन्न होने वाली। (तोष का सामान्य अर्थ सुख या आनन्द, प्रसन्नता, इच्छा का अभाव, धैर्य, शान्ति, हर हाल में प्रसन्नता है। आगे सम् उपसर्ग लगाने से पर्याप्त या अधिक अर्थ जुड़ेगा। परि लगाने से चारों ओर तोष ही तोष, ऐसा अर्थ होगा यदि तोष का अर्थ सुख माना जाये तो सन्तोष का अर्थ हो गया अधिक सुख या पर्याप्त सुख, परितोष का अर्थ होगा सुख ही सुख। सन्तोष में त्याग का भाव होता है जो तुष्टि और तृप्ति में नहीं होता। त्याग अर्थात इच्छा का त्याग। इच्छा थी दस की, मिला 4 ही, बाकी 6 को छोड़ दिया, जो मिला उसी में सुख या प्रसन्न हो जाना, यह सन्तोष है। तुष्टि में जो मिला, उसे पूर्ण मान लिया (भले ही पूर्ण न हो) जिससे आगे कुछ जानने या प्राप्त करने की चेष्टा या इच्छा का अभाव हो जाता है और अन्य सब के प्रति तुच्छ भाव हो जाता है। स्पष्ट है कि तुष्टि में त्याग नहीं है। तुष्टि को यदि तृप्त होने की साधारण अवस्था माना जाये तो सन्तुष्टि का अर्थ होगा पर्याप्त तुष्टि, परितुष्टि का अर्थ होगा पूर्ण तुष्टि। तृप्ति में वास्तव में किसी चीज की पूर्ण मात्रा प्राप्त होती है अर्थात उस चीज से भर दिया जाता है।)

146. कपालसिद्धिसंहृष्टा– शिवजी की सफलता से बड़ी प्रसन्न होने वाली। कपालों की सिद्धि से प्रसन्न होने वाली। ज्ञान की सिद्धि से अर्थात प्राप्ति से बहुत प्रसन्न होने वाली।

147. कपालभोजनोद्यता– कपाल में भोजन करने के लिए उद्यत। ज्ञान रूपी भोजन को भक्तों को देने के लिये या ऐसे भोजन को शिव से लेने के लिए हमेशा तैयार।

148. कपालव्रतसंस्थाना– शिवजी के नियम में भलीभाँति स्थित। व्रत का अर्थ है धारण करना और नियम। कपाल धारण करने वाले कापालिक में नियम के रूप में सम्यक् प्रकार से स्थित। कापालिक एक सम्प्रदाय है जो हाथ में खोपड़ी धारण किये रहता है। ये पंचमकारों का प्रयोग करते हैं तथा अपने साथ कापालिका अर्थात महिला साधिका को भी रखते हैं। व्रत का अर्थ सामान्यतः भोजन नहीं करना होता है, पर इसका अर्थ कहीं कहीं भोजन करना भी होता है। कपाल अर्थात खोपड़ी में भोजन करने से सम्यक् स्थिति वाली यह इस नाम का अर्थ हुआ। कपाल (शिव) के व्रत में संस्थित रहने वाली। शिव जी को पाने के लिये किये जाने वाले व्रत (नियम) में भली भाँति स्थित।

149. कपालकमलालया– सिर में स्थित कमल अर्थात सहस्रारचक्र में निवास करने वाली। कपालरूपी कमल हैं निवास स्थान जिनका।

150. कवित्वामृतसारा– कवितारूपी अमृत की साररूपा।

151. कवित्वामृतसागरा– कवितारूपी अमृत की समुद्र।

152. कवित्वसिद्धिसंहृष्टा– कवित्व की सिद्धि से अतिशय प्रसन्न होने वाली।

153. कवित्वादानकारिणी– कवित्वशक्ति को सम्पूर्ण रूप से प्रदान करने वाली। कवित्व अर्थात कवित्व–शक्ति। कवित्व+आ (पूर्ण रूप से)+दान+कारिणी।

154. कविपूज्या– कवियों द्वारा पूजनीय। शब्दकोष में कवि के कई अर्थ दिये गये हैं जो हैं – काव्य की रचना करने वाला, ब्रह्मा, शुक्राचार्य, सूर्य, ऋषि, क्रान्तदर्शी, दूरदर्शी, सर्वज्ञ, ज्ञानी, मेधावी, प्रशंसनीय। ब्रह्मा द्वारा पूजनीया। कविरूपेणपूज्या, इस प्रकार विग्रह करने पर अर्थ होगा विश्व का निर्माण करने वाली, के रूप में पूजनीया, सर्वज्ञ या प्रशंसनीय रूप में पूजनीया। करोति विश्वम् इति कविः।

155. कविगति– कवियों का सहारा अर्थात कवि जिनकी शरण लेते हैं। कवियों का अन्तिम उपाय अर्थात उनके प्रयत्न की सीमा। कवियों का लक्ष्य अर्थात कवि इनके पास पहुँचने का यत्न करते हैं। कवि लोग जिनकी उपासना करते हैं। कवि का वेष या रूपरंग धारण की हुई। ब्रह्मा, शुक्राचार्य, ऋषियों के ज्ञान के स्वरूप वाली। कवि का अर्थ है कविता करने वाला, ऋषि, ब्रह्मा, शुक्राचार्य, सूर्य। सूर्य की गति का कारण। बति का अर्थ है गमन, प्रिया, सहारा, अन्तिम उपाय, लक्ष्य, ज्ञान। ऋषियों का लक्ष्य स्वरूपा।

156. कविरूपा– क्रान्तदर्शी स्वरूपा। कवियों को क्रान्तदर्शी कहा जाता है। जो व्यवधान के उस पार को भी देख ले वह क्रान्तदर्शी है अर्थात उसे परोक्ष का भी ज्ञान होता है। इसी कारण कहा जाता है कि जहाँ सूर्य भी नहीं जाता वहाँ कवि पहुँच जाता है। क्रान्त का अर्थ पाद अर्थात पैर भी होता है। कहने का तात्पर्य है जो जड़ तक देख ले। क्रान्तदर्शी का देवी के सन्दर्भ में अर्थ होगा जो सर्वज्ञ है, सभी वस्तुओं को सदा देखने वाली है। कवियों को देखने वाली अर्थात उन पर नजर डालने वाली, उनका ख्याल करने वाली, उनकी देखभाल करने वाली। कवियों को ढूंढने वाली। कविम् रूपयति इति कविरूपा। रूपयति का अर्थ है देखना, दिखाना, ढूँढ़ना, परीक्षा लेना, स्वरूप देना अर्थात निर्माण करना। कवियों की परीक्षा लेने वाली। ब्रह्मा, सूर्य की रचना करने वाली। जो ब्रह्मा या सूर्य के रूप में है।।

157. कविप्रिया– कवि हैं प्रिय जिन्हें या जो कवियों को प्रिय है। प्रिय अर्थात जिसके प्रति स्नेह/प्रेम हो, जो मन का अच्छा लगे। कवियों से प्रसन्न होने वाली या कवियों को प्रसन्न करने वाली। प्रीयते इति प्रियः से प्रिय का अर्थ प्रसन्न होने वाला, प्रीणाति इति प्रियः से प्रिय का अर्थ प्रसन्न करने वाला होता है।

158. कविब्रह्मानन्दरूपा– कवियों के लिए ब्रह्मानन्दस्वरूपा। ब्रह्म से एक होने पर अनुभूत होने वाले आनन्द को ब्रह्मानन्द कहते हैं।

159. कवित्वव्रततोषिता– काव्य करने के व्रत से तुष्ट या प्रसन्न। कवित्वव्रत का अर्थ है निरन्तर कविता करना। यहाँ काव्य या कविता से तात्पर्य वेद, पुराण, आगम ग्रन्थों से है। ब्रह्मा जी सबसे बड़े कवि माने जाते हैं। शुक्राचार्य को भी कवि कहते हैं। कवित्वशक्ति रूपी व्रत से प्रसन्न होने वाली।

160. कवित्वव्रतसंस्थाना– कवित्वशक्ति के व्रत में स्थित रहने वाली।

161. कविवांछाप्रपूरिणी– कवियों की इच्छाओं को पूर्ण रूप से पूरा करने वाली।

162. कविकण्ठस्थिता– कवियों के कण्ठ में विद्यमान रहने वाली। कण्ठ में विराजमान अर्थात कवित्व शक्ति, वाक् कौशल, सरस्वती।

163. कंह्रींकक्कंककविपूर्तिदा– कंह्रींकक्कंकं इन बीज मन्त्रों के उच्चारण से कवियों को सिद्धि देने वाली।

164. कज्जला– काजल से सुशोभित होने वाली। काजल काले रंग का होता है जो तमो गुण का प्रतीक है। तमोगुण से सुशोभित होने वाली अर्थात इनमें तमोगुण का प्राचुर्य है। काजल से उपलक्षित तमोगुण स्वरूप वाली या तमोगुण की अधिकता को धारण करने वाली। काजल का रंग काला होता है जो तमोगुण का रंग है। काला रंग दुख या शोक, उदासी, मृत्यु, विरोध का भी प्रतीक माना गया है। कज्जल+आ, आ का एक अर्थ है नाश करना। तमोगुण जनित दुख, शोक, उदासी, मृत्युतुल्य कष्ट, विरोध का नाश करने वाली। काजल का प्रयोग बच्चों के सौन्दर्य को बढ़ाने के लिए एवं नकारात्मकता दूर करने के लिए भी होता है। काजल वाली अर्थात सौन्दर्य से युक्त। नकारात्मकता से दूर। रहस्यवाद को भी दर्शाने के लिए काले रंग का प्रयोग किया जाता है। कुछ विद्वानों ने काले रंग को तटस्थता, व्यवसायिकता, ऐश्वर्य और सरलता का भी प्रतीक माना गया है। न्यायाधीश और वकील काला कोट पहनते हैं जो निष्पक्षता, न्याय का प्रतीक है। निष्पक्ष या तटस्थ स्वरूपा। काला रंग प्रकाश को अवशोषित कर लेता है और प्रकाश का तात्पर्य है ज्ञान। जो समस्त ज्ञान को अपने में

धारण किये है। आत्मा की स्वाभाविक शक्तियों अर्थात ज्ञान, क्रिया, इच्छा, शक्तियों को ढ़कने वाले तत्व को भी मल या कालिमा कहा गया है। इन्हें नष्ट करने वाली। काजल का प्रयोग शनि, राहु, केतु के कुप्रभावों को दूर करने के लिए किया जाता है। इस प्रकार इसका नाम हुआ इन ग्रहों के कुप्रभावों को दूर करने वाली।

165. कज्जलदानमानसा– काजल दान करने के मन वाली अर्थात दृष्टि दान करने के मन वाली अर्थात दृष्टि दान करने वाली या ज्ञान देने वाली। काजल नेत्र ज्योति बढ़ाता है और दृष्टि को ज्ञान का प्रतीक माना गया है। काजल के दान करने से परिपूर्ण है ह्रदय जिनका।

166. कज्जलप्रिया– काजल है प्रिय जिन्हें। दुष्टों के नाश में कारक होने के कारण तमोगुण हैं पसन्द जिन्हें। तमोगुण से युक्त रुद्र से प्रसन्न होने वाली या रुद्र को प्रसन्न करने वाली।

167. कपालकज्जलसमा– कपाल से बने काजल के समान कृष्ण वर्ण वाली। कपाल को धारण करने वाली और काजल के समान काली। कपाल के काजल की तरह या कपाल में लगे काजल की तरह सुन्दर।

168. कज्जलेशप्रपूजिता– काजल के समान ईश्वर, उसके द्वारा विशेष रूप से पूजित। काजल के समान काले रंग वाले काल भैरव हैं। काल भैरव द्वारा विशेष रूप से पूजित। श्रेष्ठ काजल का प्रयोग करने वाले शिव के द्वारा विशेष रूप से पूजित।

169. कज्जालार्णवमध्यस्था– काजल रूपी समुद्र के मध्य में रहने वाली।

170. कज्जलानन्यरूपिणी– काजल से नहीं है अन्य रूप जिनका अर्थात काजल जैसे रूप वाली अर्थात काजल की तरह काली दिखने वाली। काजल के विशेष रूप से सुशोभित होने वाली।

171. कज्जलप्रियसन्तुष्टा– जिस उपासक को काजल प्रिय है उससे सन्तुष्ट होने वाली। प्रीणाति इति प्रियः, इस विग्रह से जो प्रसन्न करता है वह प्रिय है। जो भगवती को काजल चढ़ाकर प्रसन्न करता है उससे अच्छी तरह तुष्ट। सन्तुष्ट अर्थात अच्छी तरह तुष्ट, तृप्त, प्रसन्न। काजलप्रिय शिव द्वारा सन्तुष्ट रहने वाली।

172. कज्जलप्रियतोषिणी– काजल पर प्रीति दिखाने वाले को सन्तुष्ट करने वाली अर्थात प्रसन्न करने वाली। जो उपासक भगवती को काजल चढ़ाकर प्रसन्न करने का प्रयास करता है उसको देवी द्वारा प्रसन्न अर्थात सन्तुष्ट किया जाता है। काजलप्रिय शिव को सन्तुष्ट करने वाली। (तुष्टि/सन्तुष्टि/तृप्ति/तोषिणी– तोष का अर्थ तुष्टि या तृप्ति या प्रसन्नता है। सन्तुष्टि का अर्थ है पूर्ण तृप्ति, पूर्ण तुष्टि, सदा तुष्टि, चारों ओर से प्रसन्नता अर्थात् कोई दुख नहीं, शान्ति, पूर्ण सन्तोष। तुष्टि का अर्थ होता है कि जो भी प्राप्त है उससे अधिक प्राप्त करने या जानने की इच्छा या लालसा का अभाव हो जाना। जो भी है उसी को पूर्ण मानकर आगे और कुछ जानने या प्राप्त करने की इच्छा या प्रयास का अभाव तुष्टि है। तुष्टि भौतिक और मानसिक दोनों तरीके से हो सकती है। आप दुखी हैं, किसी ने समझा दिया आप तुष्ट हो गये। तृप्ति में पदार्थ का होना आवश्यक है तभी पितरों को तर्पण के लिए कुछ खाद्य पदार्थ अवश्य दिया जाता है। तृप्त हो गये अर्थात् भूख मिट गई, अब और नही चाहिए। सन्तृप्ति (Saturation) में अब जरा भी और डालने की गुंजाइश नही रही अर्थात् अब और कुछ नहीं डाला जा सकता। जैसे कोई गाड़ी या बस है जिसमें 75 आदमी बैठ सकते है। 75 आदमी बैठना तृप्त होना होगा। 75 आदमी के बाद भी आपने 25 और लोगों को भर दिया है, अब एक भी व्यक्ति का उस गाड़ी में प्रवेश नहीं दियाा जा सकता तो 75 + 25 अर्थात् 100, यह संतृप्ति की अवस्था हुई। तुष्टि अर्थात् अब और कुछ न तो जानना है, न प्राप्त करना है, जो है वही मेरे लिए पूर्ण है, भले ही पूर्णता आयी हो या न आयी हो। प्रसन्न अर्थ में भी ये शब्द प्रयुक्त होते है। तुष्टि अर्थात् प्रसन्नता, संतुष्टि अर्थात् पूर्ण प्रसन्नता। तुष्टि में किसी एक वस्तु को लेकर तुष्टि हो सकती है जबकि अन्य वस्तुओं में चाहना बाकी हो सकती है। सन्तुष्टि हमेशा के लिए या सभी

वस्तुओं के लिए हो सकती है। तुष्टि अर्थात् पूर्ण होने का भाव या प्रसन्नता। तृप्ति अर्थात् भरा जाना अर्थात् पूर्ण हो जाना अर्थात् यह भाव होना कि और कुछ नही चाहिए।)

173. कपालमालाभरणा– कपालों की माला है आभूषण जिनका। सुख की रक्षा करने वाले अर्थात देवताओं की समष्टि है आभूषण जिनका। माला अर्थात समष्टि या समूह। क अर्थात सुख, पालन अर्थात रक्षा करना। कपाल से सृष्टि के निर्माण करने वाले तत्व का भी बोध होता है। कपाल से ज्ञान का भी बोध होता है। ज्ञान के समूह अर्थात सभी प्रकार के ज्ञान से सुशोभित।

174. कपालकरभूषणा– जिनके हाथ में रखे कपाल ही हैं आभूषण जिनके। कपाल वैराग्य का प्रतीक है। क अर्थात सुख, सुख की रक्षा करने वाला अर्थात विचार या ज्ञान या भक्ति कपाल है। क अर्थात स्वर्ग। स्वर्ग की रक्षा करने वाला अर्थात इन्द्र। कलश, घट, कमण्डलु आदि पात्र अमृत से भरे पात्र या उन पात्रों का सूचक है जिसमें विश्व के निर्माण करने वाले तत्व अर्थात पंचभूत आदि भरे हुए हैं। अमृत मोक्ष का प्रतीक है।

175. कपालकरभूषाढ्या– हाथ में रखे कपाल के आभूषणों से जो विशेष सुशोभित होती हैं।

176. कपालचक्रमण्डिता– कपाल समूह से सुशोभित।

177. कपालकोटिनिलया– अनेक प्रकार के कपाल हैं निवास स्थान जिनके। कोटि का अर्थ प्रकार भी होता है। करोड़ों कपाल हैं निवास स्थान जिनके।

178. कपालदुर्गकारिणी– जो कपालों के द्वारा दुर्ग का निर्माण करने वाली है अर्थात निर्माण करने में सक्षम है।

179. कपालगिरिसंस्थाना– कपालों के द्वारा निर्मित पर्वत में स्थित रहने वाली।

180. कपालचक्रवासिनी– कपाल समूहों में निवास करने वाली।

181. कपालपात्रसन्तुष्टा– कपाल के पात्र से ही सन्तुष्ट (प्रसन्न) रहने वाली।

182. कपालार्घ्यपरायणा– कपाल रूपी अर्घ्य पात्र से जुड़ी हुई अर्थात इस पात्र को रखने वाली। परायण का अर्थ है जुड़ी होना अर्थात यहाँ पर अर्थ है रखना। कपाल में दिया गया अर्घ्य इनके पास पहुँचता है। कपाल के द्वारा दिये गये अर्घ्य को आनन्दपूर्वक स्वीकार करने वाली।

183. कपालर्घ्यप्रियप्राणा– कपाल द्वारा दिये गये अर्घ्य से जिन्हें अतिशय प्रसन्नता होती है। यहाँ प्राण का अर्थ है अतिशय प्रिय।

184. कपालर्घ्यवरप्रदा– कपाल द्वारा दिये गये अर्घ्य को प्राप्त करने पर वरदान देने वाली।

185. कपालचक्ररूपा– कपाल को चक्र रूप में धारण करने वाली अर्थात चक्ररूपी हथियार की तरह धारण करने वाली। हाथ में कपाल को चक्र नामक हथियार की तरह धारण कर उसका प्रयोग करती हैं। जैसे चक्र को चलाया जाता है वैसे ही कपाल को चलाती हैं। कपालचक्र के स्वरूप वाली।

186. कपालरूपमात्रगा– जितने भी दृश्य कपाल हैं अर्थात दिखने वाले कपाल हैं उन सब में रहने वाली। रूप अर्थात जो दिखाई दे। प्रत्येक कपाल में विचरण करने वाली अर्थात रहने वाली।

187. कदली– केले की तरह शुभ और अत्यन्त पवित्र। केले में भगवान विष्णु और बृहस्पति जी का वास माना जाता है। इसे उचित स्थान पर लगाते हैं तथा अच्छी तरह इसकी देखभाल की जाती है जिससे सुख समृद्धि, संयम, सात्विकता, आध्यात्मिक सुख, वैवाहिक सुख बढ़ता है, जो शुभ की निशानी है। अत्यन्त कोमल अंगों वाली एवं शीतल गुणों से युक्त। केला को कोमल माना जाता है। केला स्वरूपा। केला के समान सुन्दर जंघा वाली।

188. कदलीरूपा– केले की तरह दिखने वाली अर्थात अत्यन्त कोमल एवं विशाल दिखने वाली। रूप अर्थात

दिखने वाली, जो आँखों से दिखता है वह रूप है। जैसे केले के पत्ते बड़े होते हैं वैसे ही देवी के हाथ विशाल हैं। केले के रूप में दिखने वाली या केले की तरह दिखने वाली। केला वृक्ष भी ऊर्जा या शक्ति का रूपान्तरण होने के कारण देवी का ही एक रूप है। केला की तरह कोमल अंगों से युक्त रूप वाली। दुर्गा सप्तशती में आया है सौम्या सौम्यतरा। केला या कदली के स्वरूप वाली। केले की तरह विशाल रूप वाली अर्थात उसके हाथ विशाल हैं। केले को देखने वाली अर्थात केले की देखभाल करने वाली। कदलीम् रूपयति इति कदलीरूपा। केले के वृक्ष की रचना करने वाली। रूपयति का अर्थ है देखना, दिखाना, रचना करना।

189. कदलीवनवासिनी– केला के वन में निवास करने वाली।

190. कदलीपुष्पसम्प्रीता– केला के फूलों से प्रसन्न होने वाली।

191. कदलीफलमानसा– केला के फल जिनके मन या हृदय को अच्छे लगते हैं अर्थात प्रिय लगते हैं। मानस का अर्थ है मन, हृदय।

192. कदलहोमसन्तुष्टा– केला के हवन से सन्तुष्ट (प्रसन्न) होने वाली। सन्तुष्ट का अर्थ है तृप्त (अब और नहीं चाहिए, यह भाव), प्रसन्न, समझाने पर राजी।

193. कदलीदर्शनोद्यता– केला के दर्शन के लिए उद्यत रहने वाली। उद्यत का अर्थ है तैयार, तत्पर, मुस्तैद, उतारू।

194. कदलीगर्भमध्यस्था– केला के गर्भ (मध्य भाग) में रहने वाली। देवी ऊर्जा या शक्ति के रूप में सर्वत्र विद्यमान है।

195. कदलीवनसुन्दरी– केला के वन में अतिशय सुन्दर रूप को धारण करने वाली। तात्पर्य है कि सुन्दर रूप धारण कर विचरण करती हैं।

196. कदम्बपुष्पनिलया– कदम्ब पुष्प है निवास स्थान जिनका अर्थात कदम्ब पुष्प में निवास करने वाली।

197. कदम्बवनमध्यगा– कदम्ब वन के मध्य में विचरण करने वाली।

198. कदम्बकुसुमामोदा– कदम्ब के पुष्प से प्रसन्न रहने वाली। आमोदित का अर्थ है प्रसन्न रहना। आमोद का अर्थ सुगन्ध भी होता है तब इस नाम का अर्थ होगा कदम्ब के पुष्प के समान सुगन्ध वाली। कदम्ब के फूलों की सुगन्ध से प्रसन्न होने वाली।

199. कदम्बवनतोषिणी– जिसे कदम्ब वृक्ष के वन में रहना अच्छा लगता है। कदम्ब वन से सन्तुष्ट अर्थात प्रसन्न होने वाली। तुष् तुष्यति धातु में णिनि प्रत्यय लगाने से तोषिन् शब्द बनेगा जो स्त्रीलिंग में तोषिणी होगा जिसक अर्थ है तृप्त या सन्तुष्ट या प्रसन्न होने वाली। तुष् धातु में णिच् प्रत्यय करके फिर णिनि प्रत्यय लगाने से बने तोषिणी शब्द का अर्थ सन्तुष्ट करने वाली होगा। कदम्ब वन को प्रसन्न (विकसित या फलना–फूलना) करने वाली अर्थात वन को हरा–भरा होने के लिए आवश्यक सुविधाएं जैसे पानी, उर्वरा भूमि आदि देने वाली। कदम्ब वन को विकसित करने वाली।

200. कदम्बपुष्पसम्पूज्या– कदम्ब के पुष्पों द्वारा सम्यक् (विधिवत्) पूजा करने योग्य।

201. कदम्बपुष्पहोमदा– कदम्ब के पुष्पों से होम करने पर मनोवांछित फलों को देने वाली।

202. कदम्बपुष्पमध्यस्था– कदम्ब के पुष्पों के मध्य में रहने वाली।

203. कदम्बफलभोजनी– कदम्ब के फलों का भोजन करने वाली।

204. कदम्बकाननान्तस्था– कदम्ब के वन के मध्य में रहने वाली।

205. कदम्बाचलवासिनी– कदम्ब नामक पर्वत पर निवास करने वाली। कदम्ब पर्वत अर्थात जिसमें कदम्ब अधिक संख्या में उगते हैं।

206. कक्षपा– पाप पीने वाली अर्थात भक्तों के पापों को पी जाती हैं नष्ट कर देती हैं। कक्ष का एक अर्थ पाप भी है। जंगल की रक्षा करने वाली। कक्ष का एक अर्थ जंगल भी है। पा पिबति भी होता है और पा पाति (रक्षा करना) भी होता है। कक्ष के जल को पीने वाली। जहाँ पानी हट जाता है, कीचड़ जैसा हो जाता है उससे बचे जल को पीने वाली। ऐसे स्थानों से पानी को पी लेने वाली। यदि कच्छपा शब्द होता तो अर्थ होता कछुऐ का अवतार लिये हुए भगवान कूर्म की शक्ति स्वरूपा। शब्द–कल्पद्रुम में एक शब्द आया है कक्षहा, यहाँ कक्ष का अर्थ कच्छ किया गया है अर्थात कक्ष एवं कच्छ एक ही है।

207. कक्षपाराध्या– पाप को नष्ट करने वाले देवी देवताओं की भी आराध्या। जंगल की रक्षा करने वाले वन देवी देवताओं की भी आराध्या। यदि कच्छपाराध्या शब्द होता तो अर्थ होता कच्छप अवतार लिये कूर्म भगवान अर्थात विष्णु भगवान द्वारा आराधना करने योग्य।

208. कच्छपासनस्थिता– कछुए के आसन पर विराजमान।

209. कर्णपूरा– कर्णपूर अर्थात कानों के आभूषण को धारण करने वाली। कानों के आभूषण स्वरूपा अर्थात बाली रूपा। प्रत्येक वस्तु ऊर्जा या शक्ति की बनी है या कह सकते हैं ऊर्जा रूप ही है। देवी शक्ति या ऊर्जा है, अतः प्रत्येक वस्तु देवीस्वरूपा है।

210. कर्णनासा– कान से लेकर नासिका तक की इन्द्रियों अर्थात पाँचों ज्ञानेन्द्रियों की शक्ति स्वरूपा। पाँचों ज्ञानेन्द्रियों से उपलक्षित, पाँचों महाभूतस्वरूपा या पाँचों महाभूतों की शक्ति स्वरूपा। सृष्टि के क्रम में पहले आकाश हुआ फिर वायु फिर अग्नि फिर जल और अन्त में पृथ्वी हुई। आकाश का गुण है शब्द और शब्द कर्णेन्द्रिय से ग्रहण होता है। पृथ्वी का गुण है गन्ध जो नासिका से ग्रहण होती है। कर्णनासा का अर्थ है कर्ण से नासिका तक अर्थात प्रत्याहार नियम से पाँचों इन्द्रियाँ इसमें आ गईं।

211. कर्णाढ्या– कान से सम्पन्न अर्थात सुन्दर कानों वाली। कर्ण (पतवार) से सम्पन्न अर्थात युक्त या सजीधजी। पतवार से युक्त अर्थात नौकास्वरूपा। भव–सागर से पार करने वाली नौका स्वरूपा। कर्ण का एक अर्थ पतवार भी होता है।

212. कालभैरवी– काल को भी भयभीत करने वाली।

213. कलहप्रीता– दुष्टों का संहार करने के लिए कलह है प्रिय जिन्हें अर्थात दुष्टों में कलह कराना जिन्हें अच्छा लगता है।

214. कलहदा– दुष्टों का संहार करने के लिए उनको कलह देने वाली अर्थात उनके बीच आपस में कलह करा देती हैं।

215. कलहा– कलह स्वरूपा। कलह+आ, आ का अर्थ देना और नाश करना दोनो होता है। पवित्र स्थानों में नकारात्मक शक्तियों के कारण हो रहे कलह का नाश करने वाली। युद्ध, झगड़ा, विवाद का नाश करने वाली।

216. कलहातुरा– कलह करने के लिए आतुर हो जाने वाली। आतुर का अर्थ है उतावला, अधीर, बेचैन।

217. कर्णयक्षी– उपासक के कान में शुभ अशुभ बताने वाली देवयोनि विशेष की देवी। यक्ष एक देवयोनि विशेष हैं। यक्षी अर्थात यक्ष योनि की सुन्दर महिला। यक्ष का अर्थ ब्रह्म भी है। यक्ष पूजायाम् धातु से यक्षी और यक्षिणी शब्द बनते हैं, यक्षी का अर्थ है जो पूजनीय हो। कर्णयक्षिणी स्वरूपा। कान में किसी के बारे में जानकारी देने वाली। भूत, भविष्य व वर्तमान की जानकारी देने वाली। कर्णयक्षिणी से अभेद है जिनका।

218. कथिनी– बोलने वाली, कहने वाली अर्थात कथा कहने वाली। कान में कह देने वाली।

219. कर्णसुन्दरी– सुन्दर कानों वाली अर्थात सर्वांगसुन्दरी। कभी कभी केवल एक अंग से सुन्दर लिख दिया जाता है या बता दिया जाता है पर उसका तात्पर्य सर्वांगसुन्दरी से होता है जैसे सुदती का अर्थ है सुन्दर दाँतों वाली पर वह सुन्दर महिला के लिए है। कानों से विशेष सुन्दर। कर्णाभ्याम् सुन्दरी। यद्यपि देवी सर्वांगसुन्दरी हैं पर कानों में अधिक सुन्दरता है। वो सुन्दरी देवी जो कानों में शुभ अशुभ कहती है। कानों के द्वारा जो अतिशय सुन्दर लगती हैं।

220. कर्णपिशाचिनी– कान में आकर बोलने वाली पिशाच जैसी आकृति वाली देवी। जो साधक उपासना करता है वह तो नहीं डरता पर दूसरे लोग डर जाते हैं। कर्णपिशाचिनीस्वरूपा। कान में किसी के बारे में, उसके भूत, वर्तमान व भविष्य के बारे में बता देती हैं। किसी के बारे में प्रश्न पूँछने पर उसका उत्तर बता देती हैं। पिशित (कच्चा माँस) खाने वाले पिशाच होते हैं। पिशाच हीन देव–योनि है जो यक्ष, राक्षस से भी निम्न मानी जाती है और यह वीभत्स और क्रूर कर्म करने वाली योनि है। पिशाच प्रायः गन्दे और अपवित्र स्थानों में रहते हैं।

221. कर्णमञ्जरी– कानों में मंजरी को धारण किये हुए। कर्णयोः मंजर्यौ यस्या सा कर्णमंजरी। कान में लगाने वाली मंजरी अर्थात कर्णाभरण जैसी सुन्दर। कानों की मञ्जरीस्वरूपा। प्रत्येक वस्तु ऊर्जा या शक्ति की बनी है। देवी ऊर्जा या शक्ति ही हैं।

222. कपिकक्षदा– वानरों को स्थान देने वाली। कपिश्रेष्ठ हुनमान को विशेष स्थान अर्थात भगवान राम का सान्निध्य देने वाली।

223. कविकक्षविरूपाढ्या– कवियों की श्रेणी या पंक्ति में विशेष रूप से सम्पन्न अर्थात श्रेष्ठ कवयित्री। कक्ष का अर्थ पंक्ति या श्रेणी भी होता है। कवि के कक्ष में विशेष रूप से सुशोभित होने वाली।

224. **कविकक्षस्वरूपिणी**– कवि की सुन्दर गोष्ठीस्वरूपा। कवि के कक्षस्वरूपा। श्रेष्ठ कवियों के तेजोमय स्थान की तरह तेजोमयस्वरूप वाली। शुक्र, भृगु आदि ऋषि श्रेष्ठ कवि हैं और जहाँ बैठकर वे काव्य की रचना करते हैं वह स्थान कक्ष है तथा उनका यह स्थान अर्थात कक्ष दिव्य या तेजोमय होता है।

225. **कस्तूरीमृगसंस्थाना**– कस्तूरीमृग में सम्यक् रूप से अर्थात भली भाँति निवास करने वाली। कस्तूरी को ईश्वर या आत्मा का प्रतीक माना गया है। कबीरदास जी ने यही कहा है कि ईश्वर या आत्मा तो मनुष्य के भीतर है और वह अपने भीतर ढूंढ़ने की बजाए उसी प्रकार बाहर ढूंढ़ने में लगा है जैसे मृग अपने भीतर स्थित कस्तूरी को बाहर ढूंढ़ने का प्रयास करता है। मृग को वेद का प्रतीक बताया गया है। ईश्वर या आत्मा से सम्बन्धित वेद में भली–भाँति रहने वाली अर्थात इन वेदों में परम तत्व के रूप में देवी का ही उल्लेख किया गया है और वेदों के शब्दों में रहने वाली शक्ति भी देवी ही हैं। ईश्वर या आत्मा या देवी एक ही तत्व हैं।

226. **कस्तूरीमृगरूपिणी**– कस्तूरीमृगस्वरूपिणी। लक्ष्मीजी ने एक बार हिरणी का रूप धारण किया था। देवियों के सभी स्वरूप एक ही हैं, उनमें अभेद है अर्थात कालीजी, लक्ष्मीजी या सरस्वतीजी एक ही हैं।

227. **कस्तूरीमृगसन्तोषा**– कस्तूरी धारण करने वाले मृग के समान सन्तुष्ट। देवी कस्तूरी मृग पालती होंगी, उनसे सन्तुष्ट अर्थात प्रसन्न। कस्तूरी मृग से सन्तुष्ट होने वाली।

228. **कस्तूरीमृगमध्यगा**– कस्तूरीयुक्त मृगों के मध्य में विचरण करने वाली।

229. **कस्तूरीरसनीलांगी**– कस्तूरी के रस से जिनके अंग नीले हो गये हैं।

230. **कस्तूरीगन्धतोषिता**– कस्तूरी की गन्ध से सन्तुष्ट (प्रसन्न) रहने वाली।

231. **कस्तूरीपूजकप्राणा**– कस्तूरी के द्वारा पूजा करने वालों की अत्यधिक प्रिय। प्राण अर्थात अत्यधिक प्रिय। कस्तूरी द्वारा पूजा करने वाले जिन्हें प्राणों की तरह अत्यधिक प्रिय हैं।

232. कस्तूरीपूजकप्रिया– कस्तूरी से पूजा करने वाले जिन्हें प्रिय हैं। कस्तूरी से पूजा करने वालों को प्रसन्न करने वाली या उनसे प्रसन्न रहने वाली।

233. कस्तूरीप्रेमसन्तुष्टा– कस्तूरी से प्रेम रखने वाले से सन्तुष्ट रहने वाली अर्थात जो उपासक प्रेमपूर्वक कस्तूरी चढ़ाता है उससे सन्तुष्ट रहने वाली। कस्तूरी के प्रेम से संतुष्ट रहने वाली।

234. कस्तूरीप्राणधारिणी– कस्तूरी की गन्ध को धारण करने वाली। कस्तूरी का प्राण उसकी गन्ध है। कस्तूरी से अतिशय प्रेम करने वाली।

235. कस्तूरीपूजकानन्दा– कस्तूरी से पूजन करने वालों को आनन्द देने वाली या आनन्दित होने वाली। कस्तूरी पूजकों से आनन्दित होने वाली।

236. कस्तूरीगन्धरूपिणी– स्वयं कस्तूरी गन्धस्वरूपा हैं। देवी गन्धात्मिका भी है। कस्तूरी के गन्ध के स्वरूप वाली।

237. कस्तूरीमालिकारूपा– कस्तूरी के समान सुगन्धित माला के समान रूपवती। कस्तूरी सुगन्ध के लिए जानी जाती है और माला सुन्दर मानी जाती है। कस्तूरी के समान सुगन्धित माला को धारण करने से सुन्दर अर्थात रूपवती। कस्तूरी की तरह सुगन्धित माला स्वरूपा। कस्तूरी की माला के स्वरूप वाली।

238. कस्तूरीभोजनप्रिया– कस्तूरी से युक्त भोजन प्रिय है जिन्हें।

239. कस्तूरीतिलकानन्दा– कस्तूरी के तिलक से आनन्दित होने वाली। देवी को कस्तूरी का तिलक लगाने से उपासक को आनन्द देने वाली। आनन्दा अर्थात आनन्द+आ, आ का अर्थ है देना।

240. कस्तूरीतिलकप्रिया– जिन्हें कस्तूरी का तिलक है प्रिय है।

241. कस्तूरीहोमसन्तुष्टा– कस्तूरी के हवन से सन्तुष्ट होने वाली।

242. कस्तूरीतर्पणोद्यता– कस्तूरी से तर्पण करने के लिए उद्यत (तैयार) रहने वाली अर्थात कस्तूरी युक्त द्रव से तर्पण करने के लिये तैयार रहने वाली।

243. कस्तूरीमार्जनोद्युक्ता– कस्तूरी से अर्थात कस्तरी युक्त द्रव से मार्जन करने के लिए तत्पर रहने वाली। मार्जन का अर्थ है छींटे मारना। अनुष्ठान में जप के पश्चात हवन, तर्पण होता है, उसके बाद मार्जन होता है जिसमें मन्त्र पढ़ते हुए पानी से या किसी अन्य द्रव से अपने ऊपर छींटे मारे जाते हैं। उद्युक्त अर्थात तत्पर, तैयार, उद्योग में रत।

244. कस्तूरीचक्रपूजिता– कस्तूरी के समूह से पूजित अर्थात सुगन्धित द्रव्यों से पूजित। चक्र का अर्थ है समूह। कस्तूरी सुगन्धित द्रव्य का उपलक्षक है। कस्तूरी के ढ़ेरों से पूजित होने वाली।

245. कस्तूरीपुष्पसम्पूज्या– कस्तूरी के पुष्पों द्वारा (कस्तूरी के समान सुगन्धित पुष्पों द्वारा) सम्यक् अर्थात विधिवत पूजा करने योग्य।

246. कस्तूरीचर्वणोद्यता– कस्तूरी को चबाने के लिए उद्यत रहने वाली।

247. कस्तूरीगर्भमध्यस्था– कस्तूरी के गर्भ के मध्य में स्थित। गर्भ अर्थात बीच का हिस्सा।

248. कस्तूरीवस्त्रधारिणी– कस्तूरी की सुगन्ध से युक्त वस्त्रों को धारण करने वाली।

249. कस्तूरिकामोदरता– कस्तूरी की सुगन्ध से प्रसन्न। कस्तूरी की सुगन्ध सूंघने में लगी हुई। रता का अर्थ प्रसन्न, लगी हुई होता है।

250. कस्तूरीवनवासिनी– कस्तूरी के वन में निवास करने वाली।

251. कस्तूरीवनसंरक्षा–कस्तूरी के वनों की सम्यक् रूप से रक्षा करने वाली।

252. कस्तूरीप्रेमधारिणी– कस्तूरी के प्रति प्रेम को धारण करने वाली अर्थात प्रेम से परिपूर्ण।

253. कस्तूरीशक्तिनिलया– कस्तूरी में जो शक्तियाँ हैं उन शक्तियों का घर है अर्थात वे शक्तियाँ देवी में रहती हैं। कस्तूरी की शक्तियाँ हैं रोग निवारक शक्ति, सुगन्ध फैलाने वाली शक्ति। कस्तूरी के समान शक्ति की निलय अर्थात मूल निवास। निलीयते अत्र इति निलयः। इधर उधर से आकर जहाँ विश्राम करते हैं वह है निलय। कस्तूरी में सुगन्ध होती है और कई औषधीय गुण होते हैं अर्थात यह कई औषधीय गुणों का पुंज है। कस्तूरी के समान शक्तियों का भण्डार।

254. कस्तूरीशक्तिकुण्डगा– कस्तूरी में जो शक्ति (गुण) है, वही है एक प्रकार का कुण्ड, उसमें जाने वाली अर्थात रहने वाली। कस्तूरी के गुण रूपी कुण्ड में रहने वाली। कस्तूरी के समान शक्ति–कुण्ड के रूप में जानी गई। कस्तूरी के समान शक्तिसमूह या शक्तिपुंज के रूप में जानी गई। कस्तूरी के शक्तिपुंज में गमन करने वाली या रहने वाली। जैसे कस्तूरी औषधीय गुणों का पुंज है उसी प्रकार देवी में भी शक्तियों का पुंज है। कस्तूरी की शक्ति के कुण्ड में गमन करने वाली। गत्यर्थक धातु ज्ञानार्थक भी होती है अर्थात गति का अर्थ गमन करना, जानना दोनों होता है। गति का अर्थ चेष्टा करना अर्थात क्रिया करना भी होता है।

255. कस्तूरीकुण्डसंस्नाता– कस्तूरी के कुण्ड में सम्यक् रूप से स्नान करने वाली।

256. कस्तूरीकुण्डमज्जना– कस्तूरी के कुण्ड में मज्जन करने वाली अर्थात डुबकी लगाने वाली। कस्तूरी युक्त जल में मज्जन करने वाली।

257. कस्तूरीजीवसन्तुष्टा– कस्तूरी की गन्ध से सन्तुष्ट रहने वाली। कस्तूरी जिस पर जीवित है (अर्थात गन्ध), उस गन्ध को चढ़ाने से सन्तुष्ट। जीव अर्थात प्राण अर्थात जिस पर जीवित रहा जाता है। कस्तूरी का प्राण है उसकी गन्ध। अगर गन्ध निकल गई तो लोग कस्तूरी को फेंक देते हैं। कस्तूरी से युक्त जीवों से सन्तुष्ट रहने वाली अर्थात प्रसन्न रहने वाली।

258. कस्तूरीजीवधारिणी– कस्तूरी के प्राण अर्थात सुगन्ध को उसके अन्दर रखने वाली। कस्तूरी की रोग निवारक शक्ति को कस्तूरी के अन्दर धारण कराने वाली। प्राण अर्थात सबसे महत्वपूर्ण चीज। जिस प्रकार मृग कस्तूरी को धारण करता है उसी प्रकार उस कस्तूरी की तरह सभी जीवों को धारण करने वाली अर्थात कभी अपने से अलग नहीं करती।

259. कस्तूरीरामामोदा–कस्तूरी के समान रमणीय सुगन्ध वाली। कस्तूरी में सुगन्ध होती है और कई औषधीय गुण होते हैं। कस्तूरी से अत्यधिक आनन्दित होने वाली।

260. कस्तूरीजीवनक्षमा– कस्तूरी के समान जीवन दान देने में सक्षम या समर्थ। कस्तूरी अपने औषधीय गुणों के कारण जीवन दान देने में समर्थ मानी जाती है। कस्तूरी के जीवन को वहन करने वाली अर्थात वहन करने में समर्थ। क्षमा का अर्थ है समर्थ।

261. कस्तूरीजातिभावस्था– कस्तूरी जिस किसी भी जाति की हो उसके भाव (प्रभाव या शक्ति) में रहने वाली। कस्तूरी की कई जातियाँ होती है जैसे वन कस्तूरी, मृग कस्तूरी आदि। कस्तूरी से उत्पन्न होने वाले भाव (प्रभाव या शक्ति) में रहने वाली। कस्तूरी की जाति के भाव में स्थित रहने वाली।

262. कस्तूरीगन्धचुम्बना– कस्तूरी की गन्ध का चुम्बन करने वाली अर्थात स्पर्श या अनुभव करने वाली।

263. कस्तूरीगन्धसंशोभाविराजितकपालभू– कस्तूरी की गन्ध की जो सम्यक् शोभा, उससे विराजित है ललाट देश जिसका। कस्तूरी की गन्ध से सुशोभित होने वाले ऐसे कपाल पात्र से सुशोभित होने वाली। कपालभू का अर्थ है कपाल में रहने वाली या होने वाली।

264. कस्तूरीमदनान्तस्था– कस्तूरी से प्रसन्न हृदय वाली। मदि हर्षे धातु होती है अतः मदन का अर्थ प्रसन्न लिया गया है। अन्तस्थ का अर्थ है हृदय। जो उन्हें कस्तूरी चढ़ाता है या जब वे कस्तूरी का तिलक लगाती हैं तो उनका हृदय प्रसन्न हो जाता है। कस्तूरी के समान आकर्षक काम के अन्दर स्थित रहने वाली।

265. कस्तूरीमदहर्षदा– कस्तूरी के मद (सुगन्ध) से हर्ष प्रदान करने वाली या प्रसन्नता देने वाली। सुगन्ध से मन प्रसन्न होता है। जो भक्त कस्तूरी की सुगन्ध करता है उसे देवी हर्ष प्रदान करती हैं। अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति से होने वाली खुशी हर्ष है। कस्तूरी के मद से आनन्द देने वाली।

266. कस्तूरी– कस्तूरी के समान सुगन्ध वाली। कस्तूरी के समान रोगनिवारिका। संसार सागर रूपी रोग का निवारण करने वाली। कस्तूरीस्वरूपा। ब्रह्म स्वरूपा/आत्मस्वरूपा। कस्तूरी को ईश्वर या आत्मा का प्रतीक माना गया है। कबीरदास जी ने यही कहा है कि ईश्वर या आत्मा तो मनुष्य के भीतर है और वह अपने भीतर ढूंढ़ने की बजाए उसी प्रकार बाहर ढूंढ़ने में लगा है जैसे मृग अपने भीतर स्थित कस्तूरी को बाहर ढूंढ़ने का प्रयास करता है।

267. कवितानाढ्या– कविता के प्राण से सम्पन्न अर्थात सुशोभित। कविता का अनन अर्थात कविता का प्राण। अन प्राणने धातु होती है। काव्य रचना को पैदा करने वाली या उनकी ही कृपा से दूसरे लोग काव्य रचना कर पाते हैं। कविता द्वारा अतिशय हर्षित या आनन्दित होने वाली।

268. कस्तूरीगृहमध्यगा–कस्तूरी से निर्मित घर के मध्य में निवास करने वाली।

269. कस्तूरीस्पर्शकप्राणा– कस्तूरी को स्पर्श करने वाले प्राणों वाली अर्थात कस्तूरी की सुगन्ध को सूँघना जिन्हें बहुत प्रिय हो। कस्तूरी का स्पर्श करना अर्थात सूँघना जिन्हें अत्यन्त प्रिय है। प्राण अर्थात अत्यन्त प्रिय। जिसके प्राण कस्तूरीस्पर्शक की तरह हैं अर्थात दूसरे को भी सुगन्धित बना देते हैं। स्पर्शक का अर्थ होता है पारस जो जिसे छूता है उसे अपने जैसा बना देता है। जिसके प्राण कस्तूरी पारस की तरह हैं अर्थात दूसरे को भी सुगन्धित कर देते हैं। कस्तूरी का स्पर्श है अतिशय प्रिय जिन्हें।

270. कस्तूरीनिन्दाकान्तका– कस्तूरी की निन्दा करने वालों का अन्त करने वाली।

271. कस्तूर्यामोदरसिका– कस्तूरी सुगन्ध की रसिक अर्थात प्रेमी।

272. कस्तूरीक्रीडनोद्यता– कस्तूरी से खेलने के लिए तैयार रहने वाली। कस्तूरी का तिलक लगाना, उसे अपने अंगों में लगाना यही कस्तूरी से खेलना है। कस्तूरी के साथ क्रीडा करने के लिए उद्यत।

273. कस्तूरीदाननिरता– कस्तूरी का दान करने से अर्थात कस्तूरी चढ़ाने से अत्यन्त प्रसन्न। रम् धातु से रत शब्द बनाने पर प्रसन्न, लगा हुआ अर्थ आता है। कस्तूरी (यश) का दान करने में संलग्न रहने वाली।

274. कस्तूरीवरदायिनी– कस्तूरी को वरदान के रूप में प्रदान करने वाली।

275. कस्तूरीस्थापनाशक्ता– कस्तूरी की स्थापना करने में समर्थ।

276. कस्तूरीस्थानरञ्जिनी– कस्तूरी से अपने स्थान को रंजित करने वाली अर्थात लेप देने वाली। जहाँ कस्तूरी है उस स्थान में मनोरंजन करने वाली।

277. कस्तूरीकुशलप्राणा– कस्तूरी गन्ध से कुशल रहने वाले प्राणों वाली अर्थात कस्तूरी गन्ध जिन्हें अच्छी

लगती है। कस्तूरी गन्ध से कुशल रहने वाले प्राणों वाली अर्थात जिसके प्राणों को कस्तूरी अच्छी लगती है। कस्तूरी जिन्हें प्राणों से भी अधिक प्रिय है।

278. कस्तूरीस्तुतिवन्दिता– कस्तूरी के समान जो स्तुति है, ऐसी स्तुति से जिसकी वन्दना होती है। कस्तूरी अर्थात सुगन्ध अर्थात यश। जिनकी कस्तूरीस्तुति अर्थात बढ़िया यश से युक्त स्तुति से वन्दना की जाती है या अच्छे यश को गाया गया है। यह स्तुति जहाँ तक सुनाई पड़ती वहाँ तक श्रोता प्रसन्न हो जाता है। कस्तूरी की स्तुति द्वारा वन्दित होने वाली।

279. कस्तूरीवन्दकाराध्या– आकर्षक अर्थात सुन्दर, मधुर आवाज वाले वन्दकों की आराध्या। कस्तूरी की सुगन्ध आकर्षित करती है और यह माधुर्य युक्त श्रेष्ठ होती है। अतः कस्तूरीवन्दक का अर्थ लिया गया ऐसे वन्दक जिनकी सुन्दर मधुर आवाज है। वन्दना का अर्थ होता है भगवान के गुणों का गायन करना और उनके सामने नतमस्तक होना। कस्तूरी के प्रशंसकों द्वारा आराधना करने योग्य।

280. कस्तूरीस्थानवासिनी– कस्तूरी के स्थान पर निवास करने वाली अर्थात जहाँ कस्तूरी प्रचुर मात्रा में है वहाँ इनका निवास होता है।

281. कहरूपा– उस मन्त्र के स्वरूप वाली जिसमें क और ह अक्षर हैं। विष्णु और शिव के रूप में विद्यमान। एकाक्षरी कोष के अनुसार क का अर्थ है विष्णु और ह का अर्थ है शिव। भगवान विष्णु, ब्रह्मा और शिव को देखने वाली या उन पर नजर डालने वाली। क का एक अर्थ ब्रह्मा जी है। रूपयति का अर्थ है देखना।

282. कहाढ्या– विष्णु और शिव से समृद्ध या विभूषित। क का अर्थ है विष्णु और ह का अर्थ है शिव। कह से आढ्य। विशिष्ट शिव या विष्णु से आढ्य (सम्पन्न)।

283. कहानन्दा– विष्णु और शिव को आनन्दित करने वाली या आनन्द देने वाली।

284. कहात्मभू– विष्णु, शिव और आत्मा की जन्मस्थान।

285. कहपूज्या– विष्णु और शिव द्वारा पूज्य। ब्रह्मा और शिव द्वारा पूज्य। क का अर्थ ब्रह्मा भी होता है।

286. कहेत्याख्या– ब्रह्मा/विष्णु और शिव इस प्रकार का है नाम जिसका। कह+इति+आख्या इति कहेत्याख्या

287. कहहेषा– सभी ब्यंजनों की ध्वनिस्वरूपा या घ्वनि वाली। क से लेकर ह तक सभी ब्यंजन आ जाते हैं अतः कह का अर्थ सभी ब्यंजन किया गया है। कह बीजमन्त्र की ध्वनिस्वरूपा या ध्वनि वाली। हेषा का अर्थ है शब्द या ध्वनि। सृष्टि, स्थिति और हरण में हेषा अर्थात सृष्टि और हरण में होने वाले शब्द स्वरूपा। सृष्टि और संहार में होने वाला शब्द स्वरूपा अर्थात ध्वनि स्वरूपा। क करोति से सृष्टि अर्थ देता है और ह का अर्थ हरति से संहार हो सकता है। प्रत्याहार नियम से सृष्टि से संहार तक अर्थात सृष्टि, स्थिति और प्रलय तीनों कह शब्द में आ जाते हैं। हेषा का अर्थ है शब्द या ध्वनि। निश्चित रूप से ब्रह्मा, विष्णु और शिव के स्वरूप वाली। क का अर्थ है ब्रह्मा या विष्णु। हि+एषा (निश्चित रूप से यह)।

288. कहात्मिका– ब्रह्मा/विष्णु और शिव के स्वरूप वाली। आत्मिका का अर्थ है स्वरूप वाली। त्रिदेवों अर्थात ब्रह्मा, विष्णु और शिव की आत्मास्वरूपा।

289. कहमाला– त्रिदेवों को माला के रूप में धारण करने वाली। क का अर्थ है ब्रह्मा या विष्णु। ह का अर्थ है शिव। सारे व्यंजनों को माला के रूप में धारण करने वाली। पाणिनी के प्रत्याहार सूत्र को देखा जाए तो कह प्रत्याहार में सारे व्यंजन आ जाते हैं। व्यंजन में स्वर भी होते हैं। देवी स्वर और व्यंजन स्वरूप वाली हैं। ब्रह्मा/विष्णु और शिव की माला को जपने वाली अर्थात सुन्दर माला को जपने वाली अर्थात सिद्ध करने वाली माला को जपने वाली।

290. कण्ठभूषा– कण्ठ में सुन्दर आभूषणों को धारण करने वाली या मधुर कण्ठ ही है आभूषण जिनका।

291. कहमन्त्रजपोद्यता– जिस मन्त्र में क और ह अक्षर हैं, उसे जपने में तत्पर। काली जी के मन्त्रों में या श्रीविद्या के मन्त्र में क और ह अक्षर बहुतायत से आये हैं। ब्रह्मा/विष्णु और शिव के मन्त्रों को जपने में तैयार या तत्पर।

292. कहनामस्मृतिपरा– ब्रह्मा/विष्णु और शिव के नामों के स्मरण में संलग्न रहने वाली।

293. कहनामपरायणा– ब्रह्मा/विष्णु और शिव के नाम का निरन्तर जप करने वाली।

294. कहपरायणरता– जिस मन्त्र में कह अक्षर है ऐसे मन्त्र का जप करने वाले से प्रसन्न, उससे प्रेम करने वाली या उनपर स्नेह दृष्टि रखने वाली। रम् धातु से रत बनाने पर प्रसन्न, प्रेम करने वाली, अच्छा लगता है जिसे यह अर्थ निकलता है। जिस मन्त्र में कह अक्षर हैं उनके जाप करने में जो लगे हुए हैं उनपर प्रसन्न रहने वाली। सृष्टि, स्थिति में निरन्तर गति करने में लगी हुई अर्थात सृष्टि, स्थिति, संहार को निरन्तर करने में लगी हुई। सृष्टि, स्थिति में निरन्तर क्रियाओं में लगी हुई। परायण अर्थात निरन्तर गति या क्रिया। ब्रह्मा/विष्णु और शिव में परायण रहने वाली। करोति से कह का क अक्षर आया जिसका अर्थ है सृष्टि करना, हरति से ह अक्षर आया जिसका तात्पर्य है हरण करना अर्थात संहार करना। प्रत्याहार नियम से आदि और अन्त के अक्षर बोलने पर बीच के अक्षर भी आ जाते हैं। जैसे उत्तर प्रदेश से केरल तक यह बोला गया तो इसमें उत्तर प्रदेश और केरल के बीच आने वाले राज्य भी आ जाएंगे। अतः कह शब्द से सृष्टि, पालन और संहार तीनों क्रियाऐं आ जाती हैं।

295. कहदेवी–त्रिदेवों की चमक वाली। क से लेकर ह तक के व्यंजनों की चमक वाली। देवी अर्थात जो चमक से युक्त हैं। देवी शब्द दिव् धातु से बना है जिसके अनेक अर्थों में एक अर्थ चमकना भी है। सूर्य और चन्द्रमा से युक्त देवी। क का एक अर्थ सूर्य एवं ह का अर्थ चन्द्रमा है। सूर्य और चन्द्रमा देवी के नेत्र माने जाते हैं। ब्रह्मा/विष्णु और महेश के स्वरूप को हृदय में धारण करने वाली।

296. कहेश्वरी– जिस मन्त्र में कह ये अक्षर हैं उस मन्त्र के द्वारा आराधनीय। त्रिदेवों पर शासन करने वाली। ब्रह्मा/विष्णु और शिव अर्थात त्रिदेवों की ईश्वरी। कह का अर्थ है सृष्टि, पालन और संहार। कहेश्वर का अर्थ हुआ सृष्टि, पालन और संहार करने वाले ईश्वर अर्थात त्रिदेव। कहेश्वरी का अर्थ हुआ इन त्रिदेवों की शक्ति स्वरूपा। कह का अर्थ क से लेकर ह तक के सभी व्यंजन भी होता है, उन व्यंजनों में शक्ति रूप से विद्यमान। कहेश्वरी और कहेश्वरा में अन्तर यह है कि कहेश्वरी का तात्पर्य है कहेश्वर अर्थात त्रिदेव की शक्ति और कहेश्वरा का अर्थ है त्रिदेव स्वरूपा। कहेश्वरी का अर्थ है सृष्टि, पालन और संहार करने वाले त्रिदेवों की शक्ति, जबकि कहेश्वरा का अर्थ है स्वयं में सृष्टि पालन और संहार करने वाली। कहेश्वरी का अर्थ है व्यंजन की शक्ति स्वरूपा जबकि कहेश्वरा का अर्थ है व्यंजन स्वरूपा।

297. कहहेतु– ब्रह्मा/विष्णु और शिव अर्थात त्रिदेवों की कारण।

298. कहान्दा– कहम् ददाति इति कहान्दा। कह इन बीजाक्षरों से व्यक्त होने वाली चीजों को देने वाली। क का अर्थ सूर्य एवं ह का अर्थ चन्द्रमा। सूर्य की तरह तेजस्विता एवं चन्द्रमा की तरह आन्तरिक शान्ति एवं प्रसन्नता देने वाली। कह का अर्थ यदि खराब है तब इस नाम का अर्थ होगा इन बीजाक्षरों से व्यक्त होने वाली चीजों को नष्ट करने वाली। नष्ट करने में दो अवखण्डने से दा आयेगा। ब्रह्मा/विष्णु और शिव अर्थात त्रिदेवों को देने वाली अर्थात उनकी कृपा को दिलाने वाली। कम् सुखम् में ओहाक् त्यागे धातु लगाने से कह शब्द बनेगा जिसका अर्थ होगा सुख का नाश करने वाली। तब कहान्दा का अर्थ होगा सुख में बाधा पहुँचाने वाले तत्वों का नाश करने वाली। कहने का तात्पर्य हुआ सुख देने वाली।

299. कहनादपरायणा– जिस मन्त्र में कह ये वर्णाक्षर हैं उसका उच्चारण करने में लगी हुई। ब्रह्मा/विष्णु और शिव अर्थात त्रिदेवों से सम्बन्धित ध्वनियों में परायण रहने वाली या इनके बीज मन्त्रों का उच्चारण करने वाली।

300. कहमाता– जिस मन्त्र में कह ये अक्षर हैं उनको उत्पन्न करने वाली। ब्रह्मा/विष्णु और शिव अर्थात त्रिदेवों की माता। सूर्य और चन्द्रमा को उत्पन्न करने वाली। क का अर्थ है सूर्य और ह का अर्थ है चन्द्रमा।

301. कहान्तस्था– ब्रह्मा/विष्णु और शिव अर्थात त्रिदेवों के हृदय में रहने वाली।

302. कहमन्त्रा– ब्रह्मा/विष्णु और शिव अर्थात त्रिदेवों के मन्त्रों से युक्त।

303. कहेश्वरा– स्वयं में सृष्टि, पालन और संहार की क्रिया करने वाली। स्वर की परिभाषा है स्वयं राजन्ते। जो स्वयं में अपनी सत्ता वाले हैं अर्थात किसी पर निर्भर नहीं वे स्वर हैं। कह अर्थात व्यंजन जो स्वर पर निर्भर होते हैं। व्यंजन को स्थूल जगत के रूप में माना जा सकता है जबकि स्वर को परमात्मशक्ति के रूप में माना जा सकता है क्योंकि स्थूल जगत परमात्मा पर निर्भर है। त्रिदेव रूपी ईश्वर स्वरूपा। कहेश्वरा का अर्थ है त्रिदेव ईश्वर स्वरूपा जबकि कहेश्वरी का अर्थ है त्रिदेव ईश्वरों की शक्ति। कहेश्वरा का अर्थ हुआ व्यंजन स्वरूपा, जबकि कहेश्वरी का अर्थ हुआ व्यंजन में स्थित शक्ति स्वरूपा। ब्रह्मा/विष्णु और शिव अर्थात त्रिदेवों की ईश्वरी।

304. कहगेया– त्रिदेवों के द्वारा जिनका गान या स्तुति की जाती है।

305. कहाराध्या– जिस मन्त्र में कह वर्णाक्षर हैं उसके द्वारा आराधनीय। त्रिदेवों के द्वारा आराधना करने योग्य। सूर्य और चन्द्रमा के द्वारा आराधनीय। क का अर्थ है सूर्य और ह का अर्थ है चन्द्रमा।

306. कहध्यानपरायणा– त्रिदेवों के ध्यान में परायण रहने वाली अर्थात लगी रहने वाली।

307. कहतन्त्रा– त्रिदेवों के तन्त्र से युक्त।

308. कहकहा– त्रिदेवों की शक्तिस्वरूपा। कह का अर्थ है त्रिदेव, कहा का अर्थ है त्रिदेवों की शक्ति। त्रिदेव का त्रिदेवत्व देवी ही हैं। इन्हीं के कारण त्रिदेव का त्रिदेवत्व है। त्रिदेवों की वार्ता में संलग्न रहने वाली।

309. कहचर्यापरायणा– कह से स्थूल जगत ले सकते हैं क्योंकि कह का अर्थ है सारे व्यंजन जिससे ये सृष्टि पैदा हुई। विश्व में जो भी क्रियाएें हो रही हैं उस क्रिया में निरन्तर संलग्न रहने वाली। चूँकि क्रियाएें शक्ति के द्वारा ही होती हैं इसलिए शक्ति की संलग्नता स्पष्ट है। त्रिदेवों की परिचर्या(सेवा) में संलग्न रहने वाली। देवी ही भगवान शिव की सेवा करती हैं। लक्ष्मी रूप में भगवान विष्णु की और ब्रह्माणी रूप में भगवान ब्रह्मा की सेवा करती हैं। चर्या का अर्थ है क्रिया, सेवा, आचरण। कह का अर्थ सूर्य और चन्द्रमा भी होता है। सूर्य का आचरण है अन्धकार का नाश करना, शैत्य दूर करना और भय दूर करना। जबकि चन्द्रमा का तात्पर्य है औषधियों में अमृत बरसाना। सूर्य और चन्द्रमा के आचरण में लगी हुई अर्थात भक्तों को सूर्य और चन्द्रमा की तरह दान करने वाली अर्थात ज्ञान देने वाली या निरोगिता देने वाली।

310. कहाचारा– सृष्टि से हरण तक के आचार वाली अर्थात क्रियाकलाप वाली। करोति से क अक्षर लिया जिसका अर्थ है सृष्टि करना। हरति से ह अक्षर लिया जिसका अर्थ है हरण अर्थात संहार करना। प्रत्याहार नियम से सृष्टि करने से लेकर संहार करने तक में बीच का पालन करना भी आ जाता है। क का अर्थ ब्रह्मा और विष्णु और ह का अर्थ शिव है। इस प्रकार कह का अर्थ ब्रह्मा, विष्णु और महेश अर्थात त्रिदेव हो जाता है। इस प्रकार कहाचारा का अर्थ त्रिदेवों के कार्यकलाप वाली भी निकलता है। क से ह के बीच में लगभग सारे व्यंजन आ जाते हैं। इन व्यंजनों के आचार वाली अर्थात इन व्यंजनों से होने वाले कार्यस्वरूपा। त्रिदेवों के द्वारा किये गये आचारों को धारण करने वाली।

311. कहगति– त्रिदेवों की गति अर्थात लक्ष्यस्वरूपा। त्रिदेव हैं गति (लक्ष्य) जिनकी। गति अर्थात प्राप्ति का लक्ष्य।

312. **कहताण्डवकारिणी**– शिव को ताण्डव कराने वाली। क का अर्थ है ब्रह्म अर्थात शिव। ह का अर्थ भी शिव है। सृष्टि से संहार तक होने वाली क्रियाऐं हैं एक प्रकार का ताण्डव, उस ताण्डव को कराने वाली। त्रिदेव से अभिप्रेरित होकर ताण्डव नृत्य करने वाली।

313. कहारण्या– कह+अरण्य, कह+आरण्य। दोनों तरह से यह शब्द बन सकता है। अरण्य अर्थात जंगल क्योंकि वह रमणीय नहीं होता है क्योंकि वहाँ डर लगता है। आरण्यम् अर्थात समन्तात् रमणीयम्, चारों ओर से रमणीय। कह अर्थात समस्त व्यंजनों में सभी ओर से रमण करने वाली अर्थात शक्ति रूप में विराजमान रहने वाली यह आरण्य शब्द लेने से अर्थ निकला। कह अर्थात समस्त विश्व है जिसका अरण्य या जंगल यह अर्थ भी निकलता है। त्रिदेवों की प्राप्ति के लिए वन में निवास करने वाली। सृष्टि से संहार तक की क्रियाऐं हैं एक अरण्य, तत्स्वरूपा। अरण्य का एक व्युत्पत्तिपरक अर्थ है, जो रमणीय न हो, रमणीयं न भवति इति अरण्यम्।

314. कहगति– सृष्टि से संहार तक की समस्त क्रियास्वरूपा अर्थात सृष्टि, स्थिति (पालन या रक्षण) और संहार रूपी क्रियास्वरूपा। त्रिदेवों अर्थात आदि शक्तियों की ज्ञान स्वरूपा। गति का अर्थ ज्ञान भी होता है क्योंकि गत्यार्थक धातुऐं ज्ञानात्मक भी होती हैं। त्रिदेवों की उपासना ही है लक्ष्य जिसका।

315. कहशक्तिपरायणा– त्रिदेवों की शक्ति से युक्त।

316. कहराज्यरता–त्रिदेवों के कार्य में लगी हुई। त्रिदेवों के कार्य हैं उत्पत्ति, स्थिति और संहार। यहाँ राज्य का अर्थ है राजा का कर्म। ब्रह्मा, विष्णु, महेश रूपी राजाओं का एक ही क्षेत्र होता है केवल कार्यों का विभाजन होता है। जब यह देव अपना काम करते हैं तो वास्तव में इनके भीतर स्थित शक्ति ही सारा कार्य करती है। देव तो शक्ति के बिना शव हैं। त्रिदेवों के राज्यों से प्रेम करने वाली। त्रिदेवों के राज्य से प्रसन्न। रत अर्थात प्रसन्न।

317. कर्म्मसाक्षिणी– सभी प्रकार के कर्मों की साक्षी।

318. कर्म्मसुन्दरी– कर्म में सुन्दरी अर्थात जिसके कर्म सुन्दर (श्रेष्ठ या लोगो को अच्छा लगने वाले) हैं। कर्मसु सुन्दरी इति कर्म सुन्दरी। कर्म के कारण सुन्दर अर्थात सुन्दर (श्रेष्ठ) कर्म करने वाली। सुन्दरी शब्द की व्युत्पत्ति है सुष्ठु उनत्ति आर्द्रयति आकर्षयति इति सुन्दरी। जो चित्त को अच्छी प्रकार से पिघला दे अर्थात आकर्षित कर दे, वह सुन्दरी है। इस नाम का अर्थ हुआ श्रेष्ठ कर्मों के कारण लोगों को आकर्षित करने वाली। सुन्दर कर्म अर्थात जिनसे लोगों का मन खुश हो और उनका भला हो। राक्षसों के मारने पर लोगों की सुरक्षा होती है अतः यह कर्म सुन्दर कर्म कहलाया जाएगा। कर्मों से भी सुन्दरी अर्थात कर्म भी अच्छे हैं और उनका सौन्दर्य भी लोगों को आकर्षित करता है।

319. कर्म्मविद्या– कर्म के ज्ञान वाली। कर्म–विद्या यस्या सा, कर्मविद्या। विद्या का एक अर्थ ज्ञान है। कर्म के बारे में विशेष और व्यवस्थित ज्ञान रखने वाली। प्रारब्ध कर्म, संचित कर्म, क्रियमाण कर्म और कर्म के जितने भी रूप शास्त्र में बताए गए हैं उनका ज्ञान रखने वाली। यज्ञ विद्या स्वरूपा। कर्म का एक अर्थ यज्ञ भी होता है। मीमांसा दर्शन में कर्म का प्रयोग यज्ञ के लिए ही किया गया है। लौकिक कर्म अर्थात आजीविका के लिए किये जाने वाले कर्म की विद्यास्वरूपा अर्थात जिस विद्या या ज्ञान के कारण व्यक्ति आजीविका कमाता है या लौकिक कर्मों को सफलतापूर्वक सम्पादित करता है। कर्म विद्या में पारंगत।

320. कर्म्मगति– कर्म का लाभ (फल) स्वरूपा। कर्म का लक्ष्य अर्थात कर्म करने से जिनको पाना लक्ष्य होता है। कर्म का ज्ञान है जिसे अर्थात प्रत्येक कर्म को सफलता हेतु किस प्रकार वह कर्म करना है, उन्हें आता है। कर्म की चेष्टा वाली अर्थात कर्म करने वाली। कर्म ही है गति (उद्देश्य या लक्ष्य) जिनकी।

321. कर्म्मतन्त्रपरायणा– कर्म के निश्चित सिद्धान्तों में लगी हुई। कर्म के निश्चिन्त सिद्धान्तों की रक्षिका। कर्म समूह का अन्तिम उद्देश्य। तन्त्र का अर्थ है निश्चित सिद्धान्त, समूह और परायण का अर्थ है लगा होना, रक्षक,

अन्तिम लक्ष्य। यज्ञ विस्तार में रहने वाली अर्थात विभिन्न यज्ञों के स्वरूप वाली। मीमांसा दर्शन में कर्म का तात्पर्य यज्ञ या पूजन कर्म है। कर्म के तन्त्र में निरत रहने वाली।

322. कर्म्ममात्रा– सर्वयज्ञस्वरूपिणी। कर्म का एक अर्थ यज्ञ होता है और मात्र का अर्थ है सभी, समस्त। कर्म मात्र ही है लक्ष्य जिसका।

323. कर्म्मगात्रा– कर्ममय शरीर वाली अर्थात जिनके शरीर से निरन्तर कर्म होता रहता है।

324. कर्म्मधर्म्मपरायणा– कर्म और धर्म में निरत अर्थात लगी रहने वाली।

325. कर्म्मरेखानाशकर्त्री– कर्म से होने वाली रेखाओं का विनाश कर देने वाली। कर्म का फल देने वाली रेखाओं अर्थात अमंगलकारी रेखाओं का नाश कर देने वाली। पूर्व अशुभ कर्मों का फल देने के लिये हाथों में अमंगलकारी रेखाएं बन जाती हैं।

326. कर्म्मरेखाविनोदिनी– सत्कर्म की रेखाओं के अनुसार आनन्दित करने वाली।

327. कर्म्मरेखामोहकरी– विधाता के द्वारा लिखी गई कर्म अर्थात भाग्य रेखाओं को भी मूर्छित करने वाली अर्थात नाश करने वाली। जब बच्चा पैदा होता है तो छठवें दिन विधाता की पूजा होती है और कहा जाता है कि इस दिन बच्चे के हाथ में भाग्य की रेखाओं को लिख दिया जाता है। कर्म की रेखाओं के द्वारा मोह करने वाली अर्थात मोह में डाल देने वाली। मोह अर्थात संसार में आकर्षण, ममत्व। मोह अर्थात अज्ञान अर्थात वस्तुओं के वास्तविक रूप को न देख पाना और उनके बाहरी रूप को ही उनका वास्तविक रूप समझना। वस्तुओं का या अपना खुद का स्वरूप वास्तव में जैसा है, उसे उस रूप में अनुभूत न कर पाना। ज्ञान होने पर अपने आत्म स्वरूप एवं वस्तुओं के चैतन्य स्वरूप का अनुभव होने लगता है और ननात्व या भेद–दृष्टि समाप्त हो जाती है। अपने को शरीर समझने का अज्ञान दूर हो जाता है और चैतन्य स्वरूप की अनुभूति होने लगती है। जैसे आप अपने को कमरे से अलग अनुभव करते हैं तथा तथा कमरे की दीवारों पर हथौड़ा चलने से आपके शरीर को कोई कष्ट नहीं होता, उसी प्रकार आप अपने को शरीर से अलग अनुभव करते हैं, आपके शरीर को चाहे कोई काट दे, आप चैतन्यावस्था में आनन्दित ही रहते हैं। चैतन्य अर्थात अनुभव वाला ज्ञान, Conciousness, Awareness।

328. कर्मकीर्तिपरायणा– कर्म से होने वाली कीर्ति में लगी हुई अर्थात रहने वाली अर्थात कीर्तिस्वरूपा। कर्म भौतिक या आध्यात्मिक कुछ भी हो सकते हैं। कर्म और उनके द्वारा होने वाली कीर्ति, उनमें परायण रहने वाली। परायण का अर्थ है गया हुआ, अन्तिम लक्ष्य, आश्रित अर्थात उसमें रहने वाली, आश्रय, सारतत्व।

329. कर्मविद्या– कर्मों का निरूपण करने वाले शास्त्र स्वरूपा। विद्या का एक अर्थ शास्त्र भी होता है। कर्म ही है विद्या जिनकी अर्थात कर्म की विद्या से विभूषित।

330. कर्म्मसारा– कर्म का फल या परिणाम। यज्ञ कर्म करने से देवी मिलती हैं, यह तात्पर्य है। कर्म का अर्थ है यज्ञ कर्म। कर्म ही है सार जिनके लिए।

331. कर्म्माधारा– कर्म का आधार अर्थात जिसके बिना कोई कर्म नहीं हो सकता अर्थात चैतन्यस्वरूपा। सामान्यतः कर्म के पीछे इच्छा को कारण माना जाता है अर्थात इच्छा के बाद ही कोई कर्म होता है पर इच्छा भी चैतन्य का ही धर्म है। जब तक शरीर में चेतना है तब तक शरीर द्वारा कर्म हो सकते हैं। यदि कर्म का अर्थ वैदिक कर्म या श्रौत याग है तो कर्माधारा का अर्थ होगा अग्निस्वरूपा क्योंकि अग्नि के बिना कोई यज्ञ कर्म नहीं हो सकता। आधार अर्थात जिसके बिना आधेय का अस्तित्व नहीं हो सकता। कर्म ही है आधार जिनका।

332. कर्म्मभू– कर्म का एक अर्थ यज्ञ भी होता है। भू का अर्थ उत्पत्ति स्थान भी होता है यज्ञ का उत्पत्ति

स्थान अर्थात यज्ञ जिससे उत्पन्न होते हैं। यज्ञ कर्म या भक्तिकर्म या साधना कर्म से उत्पन्न या प्रकट हो जाने वाली। द्रौपदी यज्ञ से पैदा हुई थी। ललितासहस्रनाम में एक शब्द आया है चिदग्निकुण्डसम्भूता वहाँ देवी जी यज्ञ से पैदा हुई थी। कर्म से होने वाली या कर्म जिनसे होते हैं।

333. **कर्म्मकारी**– विविध कर्मों को सम्पन्न करने वाली। प्रत्येक कर्म के पीछे शक्ति होती है और शक्ति का अर्थ है देवी। कर्मों को कराने वाली। शब्द के तुरन्त बाद कारी शब्द लगने से करने वाली, कराने वाली दोनों अर्थ आ जाते हैं। कारयति से कारी बनने पर कराने वाली अर्थ आएगा। कुम्भकार में कार का अर्थ करने वाला है।

334. **कर्म्महारी**– प्रलय काल में सभी कर्मों का हरण करने वाली। आयु समाप्त होने पर कर्मों का हरण करने वाली अर्थात आयु समाप्त होने पर उस शरीर से कर्म नहीं हो सकते। यदि हार का आहरण अर्थ लें और कर्म का यज्ञ अर्थ लें तो कर्महारी शब्द का अर्थ होगा यज्ञ का विधान या आयोजन करने वाली। कर्मों द्वारा मन को हर लेने वाली।

335. **कर्म्मकौतुकसुन्दरी**– जो कर्म को खेल समझकर करते हैं उनकी गृहिणी अर्थात सेवा करने वाली। खेल समझकर करने का तात्पर्य है कि हमेशा कर्म में लगे रहते हैं और उन्हें कर्म करते समय कष्ट, थकावट या बोरियत का अनुभव नहीं होता है। कर्म के कौतुक से सुन्दर लगने वाली।

336. **कर्म्मकाली**– कर्म (जो बन्धनकारक होते हैं) उनको ग्रसित करने वाली अर्थात खाने वाली। कलयति इति काली। जो संहार कर दे, ग्रसित कर दे वह काली है। अन्त में सभी कर्मों का ग्रास करने वाली। बन्धनरूपी कर्मों का नाश करने वाली। जिन कर्मों से बन्धन होता है उनका ग्रास करने वाली। जो कर्म से शक्ति के रूप को धारण कर लेती हैं।

337. **कर्म्मतारा**– कर्म के द्वारा भक्तों को भवसागर से पार कर देने वाली। भक्तिरूपी या उपासनारूपी कर्म करने से उपासकों को भवसागर से पार कर देने वाली। अनुग्रह या कृपारूपी कर्म के द्वारा अपने भक्तों को भव सागर से पार करा देने वाली।

338. **कर्मछिन्ना**– कर्मों से अलग या अलिप्त हैं। छिन्न का अर्थ होता है जिसका छेदन किया गया पर भावार्थ में यहाँ पर अलिप्त अर्थ लगाना बेहतर है। यदि छिन्नकर्मा शब्द होता है तो अर्थ होता जिन्होंने कर्मों को छिन्न कर दिया क्योंकि क्त प्रत्यय शब्द के पहले लगते हैं। कर्म के द्वारा ही दुष्ट दैत्यों को चीर चीर कर देने वाली।

339. **कर्म्मदा**– कर्मों के फलों को प्रदान करने वाली। यदि कर्मदा का दा शब्दाक्षर दो अवखण्डने से लिया जाए तो अर्थ होगा कर्म का नाश करने वाली अर्थात कर्मबन्धन का या कर्मजनित संस्कारों का नाश करने वाली जिससे मोक्ष मिल सके।

340. **कर्म्मचाण्डालिनी**– कर्मों का दहन करने वाली। चाण्डाल अर्थात शवगृह का अधिष्ठाता, जो शवों के जलाने का काम करता है। राक्षसों के कुकर्म के कारण चाण्डालिनी का रूप धारण कर उनका विनाश करने वाली। चाण्डाल श्मशान में शवों को जलाने का काम करते हैं।

341. **कर्म्मवेदमाता**– यज्ञों के ज्ञान की रक्षा करने वाली या यज्ञ सम्बन्धी ज्ञान की रक्षा करने वाली। कर्म का अर्थ है यज्ञ और वेद का अर्थ है ज्ञान। कर्म का ज्ञान जिसे है उसकी रक्षा करने वाली। कर्म का ज्ञान होने का तात्पर्य है कि यह ज्ञान होना कि कब कौन सा कार्य करना है। जो कर्मो के द्वारा वेदों की भी माता है। माति इति माता अर्थात जो रक्षा करे वह माता है।

342. **कर्म्मभू**– यज्ञों में पैदा होने वाली या यज्ञ से पैदा होने वाली अग्नि स्वरूपा। तपस्या/भक्ति रूप कर्म से प्रकट हो जाने वाली। कर्म से उत्पन्न होने वाली।

343. कर्म्मकाण्डरतानन्ता– कर्मकाण्ड से प्रसन्न और अनन्त स्वरूपों वाली। रता का अर्थ है प्रसन्न, मुग्ध, संलग्न। वैदिक कर्मों में लगी हुई और अनन्त स्वरूप वाली। काण्ड का अर्थ समूह भी होता है। कर्म का एक अर्थ है यज्ञ। यज्ञ समूह में लगी हुई और अनन्त स्वरूप वाली। यज्ञ कई प्रकार के होते हैं। एक दिन में होने वाला यज्ञ, दो दिन में होने वाला यज्ञ, अनन्त काल से चली आ रही सृष्टि परम्परा भी एक यज्ञ है। एक दिन से लेकर अनन्त दिनों तक चलने वाले यज्ञों में रहने वाली। अपने अनन्त रूपों द्वारा जो कर्मकाण्ड में संलग्न रहती हैं।

344. कर्म्मकाण्डानुमानिता–कर्मकाण्ड के द्वारा जिनकी अनुमिति होती है या ज्ञान होता है। जैसे धुऐं से आग का ज्ञान होता है वैसे ही कर्मकाण्ड के द्वारा जिनका ज्ञान होता है। इस नाम से स्पष्ट है कि कर्मकाण्ड बेकार नहीं है। वेद में तीन काण्ड हैं उपासना काण्ड, ज्ञान काण्ड, और कर्मकाण्ड। कर्मकाण्डी लोगाों द्वारा जिनका ज्ञान किया गया है। अनुमान ज्ञान का एक प्रकार है।

345. कर्म्मकाण्डपरिणीहा– वैदिक कर्म को सम्पूर्ण रूप से ले जाने की इच्छा वाली अर्थात पूर्ण रूप से करने की इच्छा वाली। कर्मकाण्ड को सर्वतोभावेन करने की इच्छा स्वरूपा। परि का अर्थ है सर्वतोभावेन। णी अर्थात नी अर्थात नयन अर्थात आचरण अर्थात करना। ईहा अर्थात इच्छा। कर्मकाण्डों द्वारा जो विशाल स्वरूप में हो गयी हैं। कर्मकाण्ड का बहुत विस्तार हो गया है यह हम सब देखते हैं।

346. कमठी– कूर्म भगवान की पत्नी या कूर्म भगवान की शक्ति स्वरूपा। कमठ का स्त्री रूप। कमठ अर्थात कछुआ के स्वरूप को धारण करने वाली।

347. कमठाकृति– कछुए की आकृति वाली।

348. कमठाराध्यहृदया– विष्णुजी के द्वारा आराधनीय है हृदय जिनका। कमठ अर्थात कछुआ अर्थात कूर्मावतार भगवान विष्णु। जो कमठ स्वरूप से आराधना करने वालों की अतिशय प्रिय है।

349. कमठा– हाथ में कमण्डलू वाली। कमठम् अस्या अस्ति। कमठ का एक अर्थ है कमण्डलु। कमठ का एक अर्थ धनुष है अतः कमठा का अर्थ हुआ धनुष स्वरूपा। कमठा और कमठी में अन्तर यह है कि कमठा स्वतन्त्र रूप से होता है अर्थात कमठा का तात्पर्य हुआ जिसने स्वयं ही मन्दराचल पर्वत को उठा लिया। कमठी का अर्थ हुआ मन्दराचल पर्वत को उठाने वाले कमठ (कूर्मावतार भगवान विष्णु) की पत्नी। व्याकरण में ईकार लगाकर जो स्त्रीलिंग बनाते हैं उसमें कई जगह पुरुष की अपेक्षा होती है। गोपा अर्थात जो स्वयं गाय पालन का कार्य करती है और गोपी अर्थात गाय पालन का काम करने वाले गोप की पत्नी। गोपी स्वयं में गाय पालन कर भी सकती है और नहीं भी कर सकती है। कूर्म अवतार भगवान विष्णु स्वरूपा।

350. कण्ठसुन्दरी– सुन्दर या मधुर कण्ठ वाली। कण्ठेन सुन्दरी इति कण्ठसुन्दरी।

351. कमठासनसंसेव्या– कमठ के आसन पर विराजमान, जो सम्यक् रूप से सेवा (पूजा) करने योग्य है। सेवा का अर्थ है पूजा, मिले हुए आदेश का तुरन्त पालन करना।

352. कमठी– जल में या सुख में निवास करने वाली। के (जले या सुखे) मठति (निवसति) इति कमठः, स्त्रीलिंग में कमठी। देवी कमठी। कूर्म अवतार विष्णु भगवान की शक्ति।

353. कर्म्मतत्परा– कर्मों में तत्पर अर्थात लगी हुई। चाहे मनुष्य हो या देवता प्रत्येक पल किसी न किसी क्रिया में लगा है चाहे सोने (शयन) की क्रिया ही क्यों न हो।

354. करूणाकरकान्ता– करूणा के आकर (खान) शिव या विष्णु की प्रियतमा।

355. करूणाकरवन्दिता– करूणा के आकर भगवान शिव या विष्णु द्वारा वन्दित।

356. कठोरा– दुष्ट दैत्यों के लिए कठोर स्वभाव वाली। कठोर स्वभाव अर्थात दैत्यों पर दया नहीं करती हैं। दैत्यों के प्रति निष्ठुर हैं, निर्दयी हैं।

357. करमाला– हाथ में माला धारण करने वाली।

358. कठोरकुचधारिणी– स्थूल और कड़े स्तनों को धारण करने वाली।

359. कपर्दिनी– जटा भार से युक्त अर्थात जटाजूट धारण करने वाली। कपर्द अर्थात जटा, जटाजूट।

360. कपटिनी– कपट वाली अर्थात दैत्यों के लिए कपट विद्या को धारण करने वाली।

361. कठिनी– छोटी अंगुली की तरह देवताओं में प्रथम। अंगुलियों में शुरूआत छोटी अंगुली से होती है। छोटी उंगली की तरह छोटे रूप वाली। कठिनी का अर्थ है छोटी उंगली। जिस तरह से छोटी उंगली अन्य अंगुलियों से छोटी होती है उसी तरह देवी छोटा रूप भी धारण कर लेती हैं। दैत्यों के लिए कठोर स्वभाव वाली। कठोर स्वभाव अर्थात दया नहीं करती है।

362. कङ्कभूषणा– कंक पक्षी हैं आभूषण जिनके। कंक पक्षी सम्भवतः चील को कहते हैं और ये पक्षी श्मशान में रहते हैं।

363. करभोरू– करभ के समान जंघा है जिनकी। हाथ में मणिबन्ध से लेकर छोटी उंगली तक का हिस्सा करभ कहलाता है। शुरू में पतली, बीच में मोटी और पुनः पतली इस प्रकार की जांघ वाली। स्थूल जंघा वाली। हाथी की सूंड़ की तरह सुडौल जांघ वाली। करभ का एक अर्थ हे हाथी की सूंड़।

364. कठिनदा– असम्भव वरों को देने वाली। जिनको जीतना अत्यन्त कठिन है उन दैत्यों का नाष करने वाली। दा ददाति से दा शब्दाक्षर का देना अर्थ आता है एवं दो अवखण्डने से दा शब्दाक्षर बनने पर अवखण्डन अर्थात नाश करना अर्थ आता है।

365. करभा– हाथों से सुशोभित अर्थात जिनके हाथ देदीप्यमान, चमकीले हैं। सुन्दर स्थूल जंघाओं वाली।

366. करभाला– हाथ में भाला धारण करने वाली।

367. कलभाषामयी– सुन्दर मधुर भाषण से युक्त।

368. कल्पा– कल्पस्वरूपा (कल्प समय की एक अवधि है)। ब्रह्माजी के एक दिन की अवधि को कल्प कहते हैं। यह 4 अरब 32 करोड़ वर्ष की अवधि होती है, जिसमें 14 मन्वन्तर होते हैं।

369. कल्पना– उस शक्ति के रूप में जो अन्तःकरण में ऐसी वस्तुओं का स्वरूप उपस्थित करती है जो उस समय इन्द्रियों के सम्मुख नहीं होती हैं। वह क्रियात्मक मानसिक शक्ति जो अवास्तविक वस्तु की प्रतीति कराए। कल्पनास्वरूपा। भावनास्वरूपा। कल्पना का एक अर्थ भावना भी है। कल्पं नीयते से भी कल्पना शब्द बन सकता है। नी धातु में ड प्रत्यय लगाने से न शब्दाक्षर बनता है जो स्त्रीलिंग में नी हो जाएगा। इस प्रकार बने न शब्दाक्षर का अर्थ ले जाने वाला होगा। कल्प को प्रेरित करने वाली, काम में लगाने वाली, ले जाने वाली अर्थ होगा। कल्प का एक अर्थ वैदिक सूत्रग्रन्थ, एक प्रकार का नृत्य, प्रलय, स्वर्ग का वृक्ष विशेष, प्रातः काल, शरीर को निरोग करने की क्रिया है। रचना शक्ति या नये विचार पैदा करने की शक्ति स्वरूपा। रचना शक्ति या नये विचार पैदा करने की शक्ति या आविष्कार करने की शक्ति देने वाली। कल्पना + आ, आ का एक अर्थ है देना। मन की उड़ान करने की शक्ति स्वरूपा।

370. कल्पदायिनी– मनोवांछित फल देने वाली (कल्प वृक्ष मनोवांछित फल देता है)। कल्प नामक समयावधि को देने वाली अर्थात उसका निर्माण करने वाली। प्रलय देने वाली अर्थात प्रलय करने वाली।

371. कमलस्था— कमल में विराजमान। कमल के समान स्थित अर्थात निर्लिप्त। कमल द्वारा जिन गुणों का प्रतीक होता है अर्थात सौन्दर्य, कोमलता, निर्लिप्तता आदि, उनमें स्थित। जल में स्थित। कमल का एक अर्थ जल भी होता है। गंगाजी, नर्मदाजी आदि देवियों का वास अपने लोक के अतिरिक्त जल में भी है। सभी देवियां एक ही हैं।

372. कलामाला— सभी कलाऐं अर्थात 64 कलाओं से युक्त हैं माला जिनकी। सभी कलाओं को धारण करने वाली। मल् धारणे धातु होती है। कलाओं की समष्टि वाली। माला का एक अर्थ समष्टि भी होता है।

373. कमलास्या— कमल के समान सुन्दर मुख वाली।

374. क्वणत्प्रभा— जिनकी कान्ति ध्वनि करती है अर्थात सुन्दरता को प्रकट या व्यक्त करती है।

375. ककुद्मिनी— सुन्दर ककुद की तरह ऊपर उठी हुई अर्थात अन्य देवताओं से प्रत्येक चीज में ऊँची हैं अर्थात बढ़कर हैं। बैल में गले के पास ऊपर की ओर उठा हुआ माँस ककुद कहलाता है।

376. कष्टवती— भक्तों के दुख देखकर कष्ट से युक्त हो जाने वाली। कष्टेन अवाप्तुम योग्या, अर्थात कष्ट से पाई जाने वाली। बिना कष्ट सहन किये हुए नहीं मिलती हैं। कष्ट देने वाले गुण से युक्त अर्थात असुरों या दैत्यों को कष्ट देने वाली।

377. करणीयकथार्च्चिता— करने योग्य कथाओं से पूजित। वास्तविक घटनाओं से युक्त कथा कहकर जिनकी अर्चना की गई या अर्चना की जाती है। संस्कृत व्याकरण के कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र से कृत्य प्रत्यय का अर्थ कभी कभी दूसरे कारकों और दूसरे कालों में भी लगाया जाता है। अर्चिता का शाब्दिक अर्थ है जिनकी पूजा की गई, किन्तु उक्त सूत्र से जिनकी पूजा की जाती है भी अर्थ होगा अर्थात भूतकाल वाले शब्द कभी कभी वर्तमान काल का भी अर्थ देने लगते हैं। अस्तित्व वाली वार्ताओं द्वारा पूजित अर्थात जिनका दुनिया में वास्तव में अस्तित्व है ऐसी कथाओं को देवी के समक्ष कह कर अर्चना की जाती है। कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनका अस्तित्व नहीं होता जैसे वन्ध्या पुत्र, आकाश पुत्र आदि। ऐसे शब्द अकरणीय हैं। देवी को देवी की जिन कथाओं को सुनाया जाता है वे काल्पनिक नहीं हैं बल्कि वे घटनाएं वास्तव में घटित हुई थी।

378. कचार्च्चिता— बृहस्पति के पुत्र कच द्वारा जिनकी अर्चना की गई।

379. कचतनु— स्वकान्ति शरीर वाली अर्थात अपने आप चमकने वाली कान्ति के शरीर वाली। कचति का अर्थ है अपने आप द्योतित होना या चमकना। सुन्दर बालों के द्वारा अतिशय सुन्दर रूप वाली।

380. कचसुन्दरधारिणी— सुन्दर लम्बे या घुँघराले बालों को धारण करने वाली।

381. कठोरकुचसंलग्ना— स्थूल, कठोर स्तनों से युक्त अर्थात सुशोभित होने वाली।

382. कटिसूत्रविराजिता— यज्ञोपवीत से सुशोभित होने वाली अर्थात उसे धारण करने वाली।

383. कर्णभक्षप्रिया— कर्ण जैसे महान योद्धा को नष्ट करना था प्रिय जिन्हें।

384. कन्दा— अंकुर स्वरूपा अर्थात जो विश्व का मूल या जड़ है। कन्द मोटी जड़ होती है जो प्रायः पृथ्वी के अन्दर होती है और इसी से वृक्ष का विकास होता है।

385. कथा— वह जो लोगों के बीच कही जाए अर्थात जिसके बारे में चर्चा होती है। जो कही जाती है अर्थात जिसकी चर्चा होती है। कथ्यते इति कथा। जो कुछ भी कहा जाता है या वर्णन किया जाता है वह कथा है अर्थात देवी वाक्स्वरूपिणी है। इस प्रकार कथा का अर्थ हुआ वाक्स्वरूपिणी। संस्कृत में कथा का अर्थ कीदृशी भी होता है अर्थात किस प्रकार की है। जिसके बारे में कहा जाता है कि वह कैसी है अर्थात अनिर्वचनीय है। इस

प्रकार कथा का अर्थ हुआ अनिर्वचनीय। कथा स्वरूपा। कथा वह पौराणिक आख्यान है जो धर्मोपदेश के रूप में लोगों को सुनाया जाता है।

386. कन्दगति– कन्द की तरह विकसित होने वाली अर्थात वर्धनशील। कन्द जड़ या गाँठदार जड़ है जिससे विकास होकर वृक्ष बनता है। कन्द के समान समझी जाने वाली अर्थात विश्व की जड़ के रूप में समझी जाने वाली। कन्द का अर्थ है अंकुर जो ऊपर भी गति करता है और नीचे भी गति करता है। अंकुर के समान ऊर्ध्व गति वाली एवं निम्न गति वाली। सुन्दर है चाल जिनकी।

387. कलि– कलियुग स्वरूपा। कलियुग की व्युत्पत्ति अग्रलिखित प्रकारों से की गई है – कलते कलेराश्रयत्वेन वर्तते। कलते स्पर्द्धते अनेन। कलन्ते स्पर्द्धमाना भाषन्ते अस्मिन्। कल्यते पापेषु निक्षिप्यते अनेन। कलयति पापेन जडयति। कलुषितं करोति। कलियुग। जो कलि के आश्रय में रहता है। कलते स्पर्द्धते से कलि का अर्थ हुआ कि जिसके कारण व्यक्ति दूसरे से आगे बढ़ना चाहता है अर्थात गलत तरीके से भी आगे बढ़ना चाहता है। इसके कारण युद्ध, झगड़े होते हैं, यहाँ ईर्ष्या की ओर इशारा है। एक दूसरे से आगे बढ़ने की भाषा का प्रयोग इसमें होता है अर्थात एक दूसरे से वाद विवाद या कलह करना होता है अर्थात एक दूसरे से ऊँची आवाज में बोलने का प्रयास होता है। जिसके द्वारा लोगों को बुराई में फेंका जाता है। दुष्कर्म के प्रति जड़ कर देता है अर्थात यह ध्यान ही नहीं रहता कि जिसे वह कर रहा है वह बुराई है अर्थात मनुष्य को विवेकशून्य बना देता है। कलुषितं करोति अर्थात जो पाप कर्म करवा देता है। कभी कभी अण्यन्त धातु ण्यन्त धातु का अर्थ और कभी कभी ण्यन्त धातु अण्यन्त धातु का अर्थ दे देती है। संग्राम या युद्ध स्वरूपा। कलि का एक अर्थ संग्राम भी है। कलह या झगड़ा स्वरूपा। दुष्टों में आपसी कलह कराकर उन्हें नष्ट करवा देती हैं। वीरता से युक्त। कॄ विक्षपे धातु में कि प्रत्यय लगाने से कलि शब्द बनता है। जिस क्रिया में बातों को फेंका जाता है अर्थात् बहस होती है वह क्रिया या घटना कलि अर्थात् कलह कहलाती है। कल (गिनना) + कि से कलि शब्द बनता है जिसका अर्थ हुआ जो गिनने में कुशल है। आयु गिनने में या कोई भी चीज गिनने में कुशल है। कलि का अर्थ युद्ध, वीर भी होता है। देवी के सन्दर्भ में कलि का अर्थ कर सकते हैं – जो सर्वाधिक वीर है, जो युद्ध में उपस्थित रहती हैं।

388. कलिघ्नी– कलियुग के पापों को नष्ट कर देने वाली।

389. कलिदूती– कलियुग में दूती की तरह कार्य करने वाली अर्थात शिव से मिलाने वाली और शिव के सन्देशों (उपदेशों) को शास्त्रों तथा गुरुओं के माध्यम से पहुँचाने वाली। कलियुग की दूती अर्थात कलियुग की सूचना देने वाली।

390. कविनायकपूजिता– कवि द्वारा अपनी प्रस्तुति में जो नायक या नायिका प्रस्तुत किये जाते हैं उनके द्वारा पूजित।

391. कणकक्षानियन्त्री– छोटी से छोटी कक्षाओं को भी नियन्त्रित करने वाली अर्थात सबको नियन्त्रित करने वाली। कण अर्थात अणु अर्थात छोटा। कण कण के कक्ष (समूह) का नियन्त्रण करने वाली अर्थात प्रत्येक वस्तु का नियन्त्रण करने वाली।

392. कश्चित्कविवरार्चिता– किसी श्रेष्ठ कवि द्वारा पूजी गई। कालिदास ने काली जी की उपासना की थी।

393. कर्त्री– सम्पूर्ण सृष्टि की रचना करने वाली।

394. कर्तृकाभूषा– कैंची या छुरी है आभूषण जिनका अर्थात कैंची/छुरी को धारण करने वाली। कृति छेदने से कर्तृका शब्द बनता है जिसका अर्थ है छेदन करने वाली या काटने वाली अर्थात कैंची/छुरी। कैंची या छुरी रूपी अस्त्र से विभूषित। कर्तृत्व शक्ति से अलंकृत। कर्तृत्वशक्ति है आभूषण जिनका।

395. करिणी– हथिनी की तरह अर्थात हथिनी की तरह मस्त चाल चलने वाली। कर का अर्थ सूर्य की किरण भी होता है। कीर्यते इति करः अर्थात जो बिखर जाती है या फैल जाती है। इस प्रकार करिणी का अर्थ हुआ किरणों वाली। कर का अर्थ करण भी होता है, करोति इति करः। जो करने वाला है वह भी कर है। करिन् का अर्थ हुआ करने वाला और करिणी का अर्थ हुआ करने वाले की स्त्री। करी का अर्थ हुआ करने वाली अर्थात स्वयं करने वाली, अर्थात क्रियाशील। हिन्दी शब्दकोष में करी का अर्थ करने या कराने वाली लिखा है। प्रलय करने वाली यह अर्थ निकल सकता है। शुभकरी के अनुसार शुभ करने वाली अर्थ निकल सकता है। अर्थकरी के अनुसार अर्थ प्राप्त कराने वाली या उत्पन्न कराने वाली अर्थ निकल सकता है। करी अर्थात करने के स्वभाव वाली। करी अर्थात कर (करने वाला) की स्त्री। हथिनी के समान अतिशय विशाल स्वरूप वाली।

396. कर्णशत्रुपा– कर्ण जैसे शत्रु को पीने वाली अर्थात विनाश करने वाली।

397. करणेशी– इन्द्रियों की ईश्वरी। इन्द्रियों का संचालन करने वाली अर्थात इन्द्रियाँ इन्हीं की शक्ति से कार्य करती हैं। चेतन तत्व/आत्मा देवी ही हैं जिनकी शक्ति पाकर इन्द्रियाँ कार्य कर पाती हैं।

398. कर्णपा– कर्ण की रक्षा की जिन्होंने । पहले बच्चे के रूप में जब कुन्ती ने नदी में बहा दिया था तो देवी ने रक्षा की थी। रक्षा करना एक क्रिया है और क्रिया का अर्थ है शक्ति अर्थात देवी। किसी ने भी रक्षा की हो, कहा जाएगा देवी ने रक्षा की क्योंकि देवी क्रियास्वरूपा हैं। बाद में अधर्मियों का साथ देने के कारण विनाश भी किया। पाति इति पा। पाति का अर्थ है रक्षा करना।

399. कलवाचा– सुन्दर प्रिय मधुर वाणी से युक्त।

400. कलानिधि– चन्द्रमा के समान सुन्दर, शीतल, शान्त और आह्लादकारी। कलानिधि अर्थात चन्द्रमा।

401. कलना–रचना क्रिया स्वरूपा या सृष्टि स्वरूपा। कलना का अर्थ है गणना और गणना अनेक की होती है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ नानात्व को प्राप्त। कल का अर्थ शिव, सुन्दर, मधुर भी होता है। ना का अर्थ एकाक्षरी कोष में ज्ञान बताया गया है। शिव के ज्ञान के स्वरूप वाली या मधुर ज्ञान के स्वरूप वाली। नी धातु में ड प्रत्यय लगाने पर न शब्द बनेगा जिसका अर्थ है ले जाने वाला या लाने वाला। शिव को लाने वाली, शिव को अपने काम में लगाने वाली। कल्पना स्वरूपा। कल्पना शक्ति देने वाली। कलना + आ, आ का एक अर्थ है देना, नाश करना। योग–उपनिषद कोष में कलना का एक अर्थ कल्पना दिया गया है। कश्मीरी शैव दर्शन के अनुसार जो अपने भीतर है उसे बाहर निकालना कलना है। शैव दर्शन में कलना का यही अर्थ दिया गया है और कहा गया है कि कलना कल्पना नहीं है। इसी कारण काली जी का नाम काली पड़ा। कलनात् काली। यद्यपि शब्द कोष में कलना का अर्थ कल्पना भी मिलता है।

402. कलनाधारा– गणन (परिगणन या गिनती) का आधार अर्थात अंक स्वरूपा। देवी वर्ण स्वरूपा तो हैं ही, साथ में अंक स्वरूपा भी हैं। गिनती में 1, 2, 3, ...आदि जो हम लिखते हैं वह भी देवी का स्वरूप है। रचना का मूल कारण। कलना का एक अर्थ रचना भी होता है। गणना की आधार स्वरूपा। कल्पना का आधार अर्थात कल्पना शक्ति जिससे पैदा होती है, आधार न रहे तो वह वस्तु टिक नहीं सकती है अर्थात नष्ट हो जाती है।

403. कारिका– सम्पूर्ण विश्व को बनाने वाली या निर्माण करने वाली। कारिका का अर्थ है बनाने वाला या निर्माण करने वाली। समस्त कार्यों की करने की शक्ति वाली।

404. करका– ओले के समान शीतल स्वरूप वाली। कर्क का एक अर्थ होता है ओला।

405. करा– सुख देने वाली। कम् (सुखम्) राति इति करा। क का एक अर्थ है सुख। भगवान विष्णु की लक्ष्मी या समृद्धि स्वरूपा। एकाक्षरीकोष में क का अर्थ विष्णु और रा का अर्थ लक्ष्मी या समृद्धि लिखा है। करने वाली अर्थात प्रलय करने वाली, रचना करने वाली। यदि करा और करी दोनों शब्द होते तो दोनों का अर्थ समान ही है

फिर भी यदि अन्तर पूछा जाए तो व्याकरण के नियमानुसार करा अर्थात जो स्वयं करती है कुछ काम और करी अर्थात जो करने वाले (कर) पुरुष की स्त्री है। करने की शक्ति अर्थात कर्तृत्वशक्ति से युक्त।

406. कलगेया– मधुर स्वर वालों द्वारा कीर्तन करने योग्य। सुन्दर या मनोहर तरीके से कीर्तन करने योग्य। शिव द्वारा कीर्तन करने योग्य। कमजोर या दुर्बल द्वारा कीर्तन करने योग्य। कल का अर्थ है मधुर, शिव, कमजोर।

407. कर्कराशि– कर्क राशि स्वरूपा। कर्क राशि में विराजमान। शब्द के आगे 'में विराजमान' जोड़कर भी अर्थ निकलता है।

408. कर्कराशिप्रपूजिता– कर्क राशि के लोगों द्वारा अच्छी तरह से पूजा की जाने वाली।

409. कन्याराशि– कन्या राशि स्वरूपा। कन्या राशि वाली। कन्या राशि में विराजमान।

410. कन्यका– छोटी कन्या स्वरूपा। कन् प्रत्यय "के सदृश" अर्थ में भी आता है। कन्या की तरह अर्थात दीप्तिमती। छोटी कन्या के स्वरूप वाली। दस वर्ष की बालिका कन्या कहलाती है एवं दस वर्ष से छोटी आयु वाली बालिकाओं को कन्यका कह सकते हैं। देवी इच्छानुसार कोई भी रूप धारण कर सकती हैं। कृष्ण और कालिका में कोई भेद नहीं है। बालकृष्ण बाल कालिका ही हैं और उन्हें कन्यका कह सकते हैं अर्थात उनकी उम्र दस वर्ष से कम की है, वैसे सोलह वर्ष से कम आयु वाली लड़कियों को बाला कहा जाता है। क का एक अर्थ सुख है। जो कन्याओं के सुख का कारण है अर्थात कन्याओं को सुख देने वाली। कन्या और कन्यका का एक ही अर्थ है। अर्थ भेद के लिए कन्यका को छोटी कन्या कह सकते हैं। (कन्या का अर्थ–कमनीया या कुमारी। कमनेन आनीयते इति कन्या, पति द्वारा अत्यन्त अभिलाषा से जिनको लाया जाता है। देवी के सन्दर्भ में अर्थ होगा अभिलाषा अर्थात् मनोकामना पूर्ति करने के लिए जिनका आवाहन किया जाता है या उनकी मूर्ति को घर में लाया जाता है। जो अत्यन्त कान्तिमती अर्थात् दीप्तिमती या चमक वाली होती है। कन् दीप्तौ धातु होती है। कन् + यक् + टाप्, इति कन्या।)

411. कन्यकाप्रियभाषिणी– कन्या की तरह प्रिय बोलने वाली।

412. कन्यकादानसन्तुष्टा– कन्या दान से अच्छी तरह तुष्ट रहने वाली। सन्तुष्ट अर्थात सम्यक् प्रकार से तुष्ट। सन्तुष्ट अर्थात सन्तोषयुक्त, तृप्त, राजी, प्रसन्न। कन्या दान से सन्तुष्ट (प्रसन्न) होने वाली।

413. कन्यकादानतोषिणी– कन्यादान से तुष्ट होने वाली या तुष्ट रहने वाली। कन्यादान से तुष्ट की गई। कन्यादान से प्रसन्न होने वाली। सन्तुष्ट और तोषिणी लगभग समानार्थक शब्द हैं। सन्तुष्ट अर्थात अच्छी प्रकार से तुष्ट। तोषिणी अर्थात तुष्ट। सन्तुष्ट अर्थात संतोषयुक्त, तृप्त या राजी हो जाना। तोषिणी अर्थात प्रसन्न या तृप्त हो जाना। कन्या दान से सन्तुष्ट होने वाली।

414. कन्यादानकरानन्दा– कन्या दान करने वालों से आनन्दित होने वाली। आनन्दते से आनन्दा शब्द बनाने पर आनन्दित होने वाली एवं आनन्दयति से आनन्दा शब्द बनाने पर आनन्दित करने वाली अर्थ होगा। आनन्द + आ से भी आनन्दा का अर्थ आनन्द देने वाली होगा क्योंकि आ का एक अर्थ देना होता है। कन्यादान करने वालों को आनन्द देने वाली अर्थात आनन्दित करने वाली।

415. कन्यादानग्रहेष्टदा– कन्या दान से अभीष्ट ग्रहों को प्रदान करने वाली या अनुचित ग्रहों को शान्त करने वाली। शब्द के अन्त में दा लगा हो तो वह दा ददाति का भी होता है और दो अवखण्डने का भी होता है।

416. कर्षणा– आकर्षित कर देने वाली। अपने रूप, गुण, शक्ति, ऐश्वर्य कार्यों से किसी को भी आकर्षित कर देती हैं। पापों को खींचने वाली अर्थात भक्तों के पापों को खींचकर नष्ट कर देती हैं।

417. कक्षदहना– अनुचित कक्षों अर्थात राक्षसों के घरों को जला देने वाली।

418. कामिता– शिव की ओर गई। कामम् शिवम् इता। इच्छिता अर्थात जिसे सब चाहते हैं अर्थात जिसे सब प्राप्त करना चाहते हैं। कामम् इता इति कामिता। जिसने इच्छानुसार गति की अर्थात इच्छानुसार गई हुई अर्थात इच्छानुसार जाने वाली। कामना वाली अर्थात चाह वाली। चाह करती हैं। कान्ति वाली अर्थात इच्छा वाली। भक्तों का कल्याण हो, ऐसी इच्छा करने वाली। कमु कान्तौ धातु होती है और कान्ति का एक अर्थ है इच्छा।

419. कमलासना– कमल है आसन जिनका अर्थात कमल में विराजमान। कमल पर विराजमान लक्ष्मी जी से अभेद है जिनका। ऐश्वर्य में शक्ति रूप से विराजमान। कमल धन – ऐश्वर्य का प्रतीक है। ताम्बा, सारस में अंश रूप में विराजमान। कमल का एक अर्थ जल, ताँबा, सारस, एक प्रकार का मृग है।

420. करमालानन्दकर्त्री– हाथ में माला लिए हुए और भक्तों को आनन्दित करने वाली। करमाला अस्या अस्ति इति करमाला (करमाला वाली)। हाथ में माला लेकर जप करने पर या करमाला से जप करने पर उस उपासक को आनन्दित करने वाली। हाथ की अँगुलियों के पोरों से गिनकर जप करने को करमाला से जप करना कहते हैं।

421. करमालाप्रतोषिता– करमाला के द्वारा अच्छी प्रकार से तृप्त अर्थात अपने उपासकों के द्वारा करमाला से जप करने पर अत्यन्त प्रसन्न। हाथ में माला लिए हुए एवं स्वयं में अत्यन्त प्रसन्न।

422. करमालाशयानन्दा– कर माला में शयन कर रहा है आनन्द जिनका। कर माला के मध्य में रहने से आनन्दित होने वाली। आशय का अर्थ है ह्रदय अर्थात मध्य। करमाला के मध्य में रहना अर्थात करमाला में रहना। करमाला से जो जप करते हैं उनसे आनन्दित होने वाली यह अर्थ निकला। मनकों की माला के अलावा अंगुलियों के पोरों से भी गिनती की जाती है जिसे कर माला कहते हैं। करमाला में आनन्द से शयन करने वाली। करमाला से प्रसन्न रहने वाली। हाथ से माला लेकर जो जप करते हैं उससे प्रसन्न रहने वाली। कर माला है हथेली में जिनके, उनके द्वारा आनन्द देने वाली। शय का अर्थ है हथेली। पाणि का अर्थ है पाँच अंगुली + हथेली। जिसके ह्रदय में करमाला चलती है ऐसे भक्तों को आनन्द देने वाली।

423. करमालासमागमा– करमाला के साथ समागम है जिनका अर्थात जुड़ी हुई हैं। हाथ में माला ले लिया तो वह हाथ से जुड़ गई। जिनके हाथों में सुन्दर माला सुशोभित होती है।

424. करमालासिद्धिदात्री– करमाला के द्वारा सिद्धि देने वाली।

425. करमाला– जिनके हाथ में माला है। कर माला के रूप में सुशोभित होने वाली।

426. करप्रिया– जिन्हें सूर्य/चन्द्रमा की किरणें पसन्द हैं। करने वाले अर्थात उद्यमी व्यक्ति जिन्हें पसन्द हैं। करोति इति करः, जो करता है अर्थात उद्यमी व्यक्ति। सुन्दर हाथों से सुशोभित होने के कारण प्रिय लगने वाली।

427. करप्रियाकररता– उपासकों के घर में रमण करने वाली अर्थात निवास करने वाली। कर का अर्थ है टैक्स या बलि। बलि का एक अर्थ दक्षिणा, पूजा भी होता है क्योंकि पूजा में हम दक्षिणा भी चढ़ाते हैं। करप्रिय का अर्थ है जिसे पूजा प्रिय है। अतः करप्रिय का अर्थ हुआ उपासक। आकर का अर्थ है घर। रत का अर्थ है जिसमें रमण किया अर्थात निवास किया। सुन्दर हाथों के कारण भक्तजन जिनमें रत रहते हैं, मन लगाये रहते हैं।

428. करदानपरायणा– हाथों से दान देने में लगी रहने वाली।

429. कलानन्दा–कलाओं से आनन्दित रहने वाली। कला से तात्पर्य है चौंसठ कला, अवयव, दीप्ति। चन्द्रकला का अर्थ है चन्द्रदीप्ति। विशेष या अतिशय आनन्द प्रदान करने वाली। यहाँ कला का अर्थ है विशेष या अतिशय।

430. कलिगति– कलियुग में लोगों की एकमात्र आश्रय। कलियुग में उपासना रूपी कर्म का फल देने वाली। कहते हैं कर्म की गति अच्छी नही ंतो वहाँ पर गति का तात्पर्य परिणाम या फल से है। कलियुग में उपासना

करने से शीघ्र फल देने वाली। गति का एक अर्थ आश्रय भी होता है। कलियुग में आश्रय स्वरूपा। कलियुग में सद्गति प्रदान करने वाली।

431. कलिपूज्या– कलियुग में पूजनीय।

432. कलिप्रसू– कलियुग की माता। कलियुग को जन्म देने वाली।

433. कलनादनिनादस्था–सुन्दरध्वनि से होने वाले विशेष निनाद अर्थात शब्द में स्थित रहने वाली।

434. कलनादवरप्रदा– सुन्दर शब्दों के द्वारा वरदान प्रदान करने वाली। प्रदान का अर्थ होता है प्रकृष्ट रूप से दान अर्थात स्थाई रूप से दान।

435. कलनादसमाजस्था– सुन्दर नाद (ध्वनि) के द्वारा समाज में स्थित रहने वाली या सुशोभित होने वाली। अच्छी बोलचाल से समाज को प्रिय लगती होंगी।

436. कहोला– कहोल ऋषि वाली अर्थात कहोल ऋषि से युक्त अर्थात कहोल ऋषि द्वारा उपासित। कहोल ऋषि के श्रेष्ठ गुणों से सम्पन्न। कहोल अर्थात ब्रह्म के रूप में बुलाये जाने वाली भूमि। एकाक्षरी कोष के अनुसार क का अर्थ है ब्रह्म, हो का अर्थ है आवाहन और ल का अर्थ है भूमि।

437. कहोलदा– कहोल ऋषि को अपनी कृपा देने वाली। कहोल ऋषि की कृपा को देने वाली। कहोल ऋषि जब कृपा करते हैं तो कृपा कराने वाली शक्ति भी देवी ही हैं।

438. कहोलगेहमध्यस्था– कहोल ऋषि के घर के मध्य में विराजमान रहने वाली।

439. कहोलवरदायिनी– कहोल ऋषि को वरदान देने वाली।

440. कहोलकविताधारा– कहोल ऋषि की कविता का आधार।

441. कहोलऋषिमानिता– कहोल ऋषि द्वारा जो सम्मानित हैं।

442. कहोलमानसाराध्या– कहोल ऋषि द्वारा मन से, हृदय से आराधना करने योग्य अर्थात आराधना की जाती है या आराधना की गई। कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र से कृत्य प्रत्यय कभी कभी उन कारकों एवं कालों से भिन्न अर्थ बताते हैं जिनमें वे सामान्यतः प्रयोग किये जाते हैं। आराध्या का सामान्य अर्थ है आराधना किए जाने योग्य, किन्तु इस सूत्र से आराधना की गई, की जा रही है, की जाती रहेगी आदि अर्थ निकाल सकते हैं। वामन आप्टे के संस्कृत–हिन्दी शब्दकोष में मानसम् का अर्थ मन, हृदय बताया गया है।

443. कहोलवाक्यकारिणी– कहोल ऋषि के वाक्य को करने वाली अर्थात कहोल ऋषि की प्रार्थना अनुसार करने वाली। वाक्यकारि अर्थात आदेश का पालन करने वाली या प्रार्थना सुनने वाली। कहोल अर्थात ब्रह्म का आवाहन करने वाली भूमि अर्थात जो ब्रह्म का आवाह्न करता है। क अर्थात ब्रह्म, हो अर्थात आवाहन और ल अर्थात भूमि। कहोल ऋषि के द्वारा दिये गये उपदेशों को करने वाली।

444. कर्तृरूपा– संसार में समस्त क्रियाओं को सम्पन्न करने वाली। वह शक्ति जो सभी जड़–चेतन पदार्थों के भीतर रहकर कार्य करती है। बनाने वाले को अर्थात भगवान ब्रह्मा को बनाने वाली। कर्तृ का अर्थ है करने वाला, बनाने वाला एवं रूपयति इति रूपा से रूपा का अर्थ देखने वाली, दिखाने वाली, स्वरूप देने वाली अर्थात निर्माण करने वाली होता है।

445. कर्तृमयी– कर्तृत्व शक्ति से युक्त। कर्तृ अर्थात करने वाला यो बनाने वाला। यहाँ पर करने वाली शक्ति, यह अर्थ ले सकते हैं। संसार बनाने वाले ब्रह्मा जी से युक्त अर्थात ब्रह्मा जी में शक्ति रूप से स्थित। ब्रह्मा जी के स्वरूप वाली।

446. कर्तृमाता– ब्रह्मा की रक्षिका। जो भी कार्य होता है उसका कोई न कोई कर्ता होता है, उसकी रक्षिका। कर्तृ अर्थात करने वाला। कोई भी व्यक्ति जो कार्य करता है या ब्रह्मा जो सृष्टि की रचना करता है। माति इति माता, जो रक्षा करे वह माता है। माति का एक अर्थ रक्षा करना है। चूँकि माता गर्भ में शिशु की रक्षा करती है अतः उसे माता कहते हैं। कर्तृत्व शक्ति की माँ या जननी।

447. कर्तृतरी– कर्म करने वाले लोगों को अर्थात कर्मठ लोगों को तारने वाली। कर्म अर्थात वैदिक याग। अधिक करने वाली।

448. कनीया– छोटी अंगुली स्वरूपा अर्थात अद्वितीय या अप्रतिम। जब गिनती की जाती है तो प्रथम गिनती छोटी अंगुली से शुरू होती है। कनीया वाली अर्थात सर्वप्रथम। दूसरी अंगुली का नाम अनामिका इसलिए पड़ा कि उनके समकक्ष कोई दूसरा आया ही नहीं अर्थात देवी के आसपास कोई नहीं है। बाल्यावस्था से सम्पन्न।

449. कनकाराध्या– कनकावती यक्षिणी या कनकेश्वरी देवी के रूप में आराधना करने योग्य। स्वर्ण चढ़ाकर आराधना करने योग्य अर्थात जिनकी उपासना में स्वर्ण भी चढ़ाये जाते हैं। स्वर्ण निर्मित मालाओं द्वारा आराधना करने योग्य।

450. कनीनकमयी– कनीनक का अर्थ आँख की तारा या पुतली है। मयी का अर्थ युक्त या स्वरूपा होता है। इस नाम का प्रकाशयुक्त अर्थात ज्ञानयुक्त यह अर्थ भी कर सकते हैं। आँख की पुतली आँख के दर्पण का काम करती है जिसके द्वारा रोशनी अन्दर जाती है। इस पर चोट लगने से व्यक्ति के देखने की क्षमता कम हो जाती है। आँख की पुतली आँख में प्रवेश करने वाले प्रकाश की मात्रा को नियन्त्रित करती है। इस प्रकार कनीनकमयी का तात्पर्य प्रकाश–नियन्त्रक–स्वरूपा अर्थात ज्ञान को नियन्त्रित करने वाली कर सकते हैं। छोटी अंगुली पर अधिष्ठित। छोटी अंगुली पर गिनी गई अर्थात उसके बाद कोई आया नहीं। यही कारण है कि अगली अंगुली को अनामिका कहते हैं क्योंकि कोई आया ही नहीं। इस प्रकार कनीनक सर्वश्रेष्ठता का प्रतीक है। कवियों की श्रेष्ठता के आधार पर गणना में कालिदास का नाम सबसे पहले आया। उसके बाद कोई आया ही नहीं। गणना में प्रथम अर्थात अतुलनीया या अद्वितीया। कन्या की तरह अतिशय सुन्दर स्वरूप वाली।

451. कनीयानन्दनिलया– अबोध बालक के आनन्द का निवास। कनीय का अर्थ है छोटे बच्चे या अबोध बालक। श्रेष्ठ आनन्द है आवास जिनका।

452. कनकानन्दतोषिता– प्रचुर आनन्द द्वारा सन्तुष्ट रहने वाली। सोने के जैसे आनन्द से अर्थात उच्च या प्रचुर आनन्द से सन्तुष्ट। सोना उच्चता और प्रचुरता का प्रतीक है। कनकधारास्तोत्र से की जाने वाली श्रेष्ठ स्तुति से आनन्दित होने वाली या सन्तुष्ट होने वाली। कनक श्रेष्ठता और अच्छेपन का प्रतीक है।

453. कनीनककरा– आँख की पुतली का दर्शन कराने वाली अर्थात ज्ञान कराने वाली। कनीनक का अर्थ है आँख की पुतली अर्थात आँख अर्थात प्रकाश। प्रकाश ज्ञान का प्रतीक है। हर तरह का दर्शन कराने वाली। अतिशय सुन्दर हाथों से युक्त। कनीनक का अर्थ है छोटा और छोटे हाथ सुन्दर होते हैं। यहाँ छोटे से तात्पर्य बहुत छोटे से नहीं है।

454. काष्ठा– दिशा स्वरूपा। गन्तव्य लक्ष्य स्वरूपा अर्थात भक्त जहाँ तक जाना चाहते है या जिसे अन्तिम रूप से प्राप्त करना चाहते हैं। चरम स्थिति या उच्चतम ऊँचाई स्वरूपा अर्थात इनसे बढ़कर कुछ नहीं है। जो सभी को व्याप्त कर एवं घेरकर स्थित है। निरुक्त में क्रान्त्वा स्थिता इति काष्ठा, ऐसा विग्रह किया गया है जहाँ काष्ठा का अर्थ जल किया गया है। सृष्टि के आरम्भ में जल ही जल था। पूरा विश्व देवी के भीतर है अर्थात देवी गति कर अर्थात उसको चारों ओर से घेरकर एवं अन्दर भी व्याप्त होकर स्थित हैं। क्रान्त्वा अर्थात गत्वा, जाकर।

समय स्वरूपा। काष्ठा का अर्थ है चरम या अन्तिम लक्ष्य, चिन्ह, दिशा, समय की एक इकाई, जल। समय स्वरूपा। काष्ठा समय की एक इकाई है।

455. कथार्णवकरी— कथासागर का विस्तार करने वाली। पुराणों का विस्तार कथाओं का ही विस्तार है और प्रत्येक कार्य के पीछे कोई न कोई शक्ति अवश्य होती है।

456. करी— करने या कराने वाली। प्राप्त कराने वाली। प्रलय करने वाली। उत्पन्न करने वाली जैसे अर्थकरी विद्या। करी का अर्थ हुआ करने वाली अर्थात स्वयं करने वाली, अर्थात क्रियाशील। हिन्दी शब्दकोष में करी का अर्थ करने या कराने वाली लिखा है। प्रलय करने वाली यह अर्थ निकल सकता है। शुभकरी के अनुसार शुभ करने वाली अर्थ निकल सकता है। अर्थकरी के अनुसार अर्थ प्राप्त कराने वाली या उत्पन्न कराने वाली अर्थ निकल सकता है। करी अर्थात करने के स्वभाव वाली। करी अर्थात कर (करने वाला) की स्त्री।

457. करिगम्या— हाथी की सवारी करने योग्य। करिणा गम्या। इन्द्राणी ऐरावत पर सवारी करती हैं। हाथी पर सवार होने योग्य अर्थात इन्द्राणी स्वरूपा। हस्तिनी पर सवार होकर गमन करने वाली।

458. करिगति— हथिनी की तरह सुन्दर चाल वाली। जिनकी चाल हथिनी से ही सम्पन्न होती है अर्थात गजगामिनी।

459. करिध्वजपरायणा— जिसकी ध्वजा में हाथी बना हुआ है उसके साथ साथ रहने वाली अर्थात उसके साथ हमेशा चलती हैं। जिसकी ध्वजा में हाथी बना रहता है उससे लगी हुई अर्थात सुशोभित।

460. करिनाथप्रिया— इन्द्र की प्रिया। इन्द्र जिन्हें पसन्द करते हैं। करि अर्थात हाथी अर्थात ऐरावत। ऐरावत का स्वामी इन्द्र है। श्रेष्ठ हाथी है प्रिय जिन्हें। नाथ अर्थात श्रेष्ठ।

461. कण्ठा— सुन्दर या मधुर कण्ठ वाली। कण्ठ की तरह अर्थात बोलने वाली। कण्ठ + आ, आ का अर्थ है देना। अपने भक्तों को सुन्दर कण्ठ देने वाली अर्थात अच्छा गायक या गायिका बनाने वाली।

462. कथानकप्रतोषिता— विभिन्न प्रकार के कथानको या कथाओं से अत्यन्त सन्तुष्ट होने वाली।

463. कमनीया— कामना करने योग्य अर्थात जिनकी प्राप्ति की इच्छा करनी चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति स्थाई आनन्द चाहता है जो केवल देवी की कृपा से मिल सकता है, संसार से तो क्षणभंगुर सुख मिलते हैं। मनोहर, सुन्दर। अत्यन्त सुन्दर स्वरूप वाली। कमनीय उस सुन्दर व्यक्ति को कहते हैं जिसकी प्राप्ति की कामना लोगों द्वारा की जाती है। भक्ति के द्वारा प्राप्त करने योग्य। कमनी का अर्थ है भक्ति। ईया का अर्थ है प्राप्त करने योग्य। ई प्रापणे धातु से यत् प्रत्यय लगाने से बने ईय शब्द का अर्थ प्राप्त करने योग्य होता है।

464. कमनका— अत्यन्त सुन्दर। शब्दकल्पद्रुम के अनुसार कमनः का अर्थ कमनीयः है। कमन ही कमनक है। सर्वैः काम्यते। सभी जिसकी इच्छा करते हैं, प्राप्ति की चाहत रखते हैं। सबके लिए आकर्षण का केन्द्र है। सुन्दर शरीर वाली। कमन कमनीय से एवं का काय (शरीर) से सम्बन्ध रखता है। कमन का अर्थ है कामदेव, अशोक वृक्ष, ब्रह्मा, कामी या कामुक, कांक्षी, सुन्दर होता है। कै शब्दे धातु होती है जिसका रूप कायति, इस प्रकार से चलता है। कायति का अर्थ होता है बोलना। कै धातु को णिजन्त करने पर काययति का अर्थ होता है बुलवाना। कै धातु में ड प्रत्यय लगाने से क शब्द बनेगा जिसका अर्थ होगा बोलना या बुलवाना। ब्रह्मा जी से बुलवाने वाली अर्थात उनके मुख से वेद की ऋचाओं को प्रकट करने वाली। क एक अर्थ सुख भी होता है। आ का अर्थ है देना। का अर्थात क + आ अर्थात सुख देने वाली। ब्रह्मा जी, कामदेव, कामियों को सुख देने वाली। कमनः शब्द का अर्थ कांक्षी (इच्छुक) होता है एवं कमनम शब्द का अर्थ अभिलाषा है। कृ धातु में ड प्रत्यय लगाने से बने क शब्द का अर्थ करने वाला है। कामनाओं को करने वाली अर्थात पूरा करने वाली।

465. कमनीयविभूषणा– सुन्दर आभूषणों से विभूषित।

466. कमनीयसमाजस्था– सुन्दर आदर्श समाज में स्थित रहने वाली।

467. कमनीयव्रतप्रिया– सुन्दर व्रत है प्रिय जिन्हें।

468. कमनीयगुणाराध्या– कमनीय गुण होने के कारण आराध्या। कमनीय गुण अर्थात सुन्दर गुण या श्रेष्ठ गुण। सुन्दर गुण वही होगा जो दूसरों को लाभ पहुँचाता हो, परोपकार करता हो। कमनीय गुणों के द्वारा अर्थात कमनीय गुणों के कारण जो आराधना के योग्य है।

469. कपिला– भूरे रंग वाली। कपिल ऋषि के गुणों से युक्त। कपिल ऋषि की शक्ति स्वरूपा। मुक्त लोगों को धारण करने वाली अर्थात् अपने सान्निध्य में या समीप रखने वाली। कं (सुखम्) पिबति इति कपिः, जो सुख को पी जाते है अर्थात् समाप्त कर देते है वे कपि है। मुक्त पुरुष सुख और दुख से विरक्त रहते है, अतः वे कपि कहलाये जाते है। इस प्रकार कपि का अर्थ हुआ मुक्त व्यक्ति। ला धातु का अर्थ है ग्रहण करना, नाश करना। कम् सुखम् पिबति इति कपि अर्थात् सुख का अस्वादन लेने वाले अर्थात् सुखी व्यक्ति भी कपि कहलाये जा सकते है। सुखी व्यक्तियों को ग्रहण करने वाली अर्थात् अपनी समीपता देने वाली। तात्पर्य हुआ कि देवी की शरण में आने पर व्यक्ति सुखी या आनन्दित हो जाता है। आनन्दरूपाः पाता लाता वा। जो आनन्द स्वरूपा है, भक्तों की रक्षिका है एवं भक्तों को अपना आश्रय देने वाली है। क अर्थात् आनन्द। पाता (रक्षिका) से पि शब्दाक्षर लिया एवं ला से ग्रहण करने वाली अर्थात् अपने लोक में जगह देने वाली या आश्रय देने वाली अर्थ किया गया है। कपिला अर्थात वह विशेष चेतना जो जड़ीभूत चेतना (मैं शरीर हूँ, इस प्रकार की चेतना जड़ीभूत चेतना है) को कँपा देती है अर्थात् नष्ट कर देती है। वह ज्ञान जो अज्ञान (मैं शरीर हूँ ऐसा अज्ञान) को कँपा देता है अर्थात् नष्ट कर देता है, कपिल है जिसका स्त्रीलिंग रूप कपिला है। सबको कम्पित करने वाला सबका संचालक जीव या आत्मा कपिल है। उस आत्मा के स्वरूप वाली। कम्प् धातु से कपिल शब्द बनता है।

470. कपिलेश्वरी– कपिल ऋषि की ईश्वरी अर्थात उपास्या।

471. कपिलाराध्यहृदया– कपिल ऋषि के द्वारा आराधनीय हृदय वाली। कपिला गाय का भी नाम है जिसे हम कामधेनु के रूप में ले सकते हैं। राध्नोति अर्थात सिद्धि देना अर्थात पूर्ति करना। कामधेनु की तरह मनोरथपूर्ति के लिए है हृदय जिनका। करूणापूर्ण बनाये जाने वाली हृदय वाली। कपिल ऋषि के द्वारा जिनके हृदय की विशेष आराधना की गयी। कपिल ऋषि के द्वारा हृदय से आराधना करने योग्य।

472. कपिलाप्रियवादिनी– जिनके शरीर से भूरे रंग की आभा निकल रही है और जो प्रिय बोलने वाली है। कपिला च प्रियवादिनी च। कपिल स्वरूप वाली और प्रिय बोलने वाली।

473. कहचक्रमन्त्रवर्णा–कह जो मन्त्र समूह हैं, उसी मन्त्र के वर्णों वाली।

474. कहचक्रप्रसूनका– कह मन्त्र समूह वही है प्रसून (पुष्प), उससे सुशोभित शरीर वाली।

475. कएईलह्रींस्वरूपा– कएईलह्रीं यह मन्त्र जिसका अपना ही रूप है अर्थात किसी दूसरे की नकल नहीं है। कएईलह्रीं यह मन्त्र जिसका वास्तविक या तात्विक रूप है अर्थात कभी अलग न होने वाला या कभी नष्ट नहीं होने वाला रूप या गुण है। स्वरूप + आ, आ का अर्थ है देना। अपने भक्तों को कएईलह्रीं इस मन्त्र के गुण (प्रभाव) को देने वाली। कएईलह्रीं यह मन्त्र जिसकी अपनी प्रतिकृति है। कएईलह्रीं ही है आत्मा, उससे अभेद। स्वरूप का एक अर्थ है आत्मा या स्वभाव। क ए ई ल ह्रीं मन्त्र ही है अपना रूप जिसका अर्थात मन्त्र ही देवी हैं। मन्त्रस्वरूपा अर्थात मन्त्र जिसका बाहरी आकार हो। स्वरूप का एक अर्थ होता है किसी वस्तु का बाह्य आकार या संरचना। मन्त्रस्वरूपिणी अर्थात जिसने मन्त्र के स्वरूप को धारण किया है अर्थात उसका स्वयं में भी

अस्तित्व है और मन्त्र के रूप में भी उसका अस्तित्व है। स्वरूपा में केवल एक रहा अर्थात वह मन्त्र रूप में देवी है जबकि स्वरूपिणी में दो हो गये अर्थात देवी का स्वयं में अर्थात बिना मन्त्र रूप में भी अस्तित्व है और मन्त्र का भी रूप धारण करके अस्तित्व है। क ए ई ल ह्रीं यह मन्त्र जिसका स्वभाव, प्रकृति या आत्मा है। क ए ई ल ह्रीं इस मन्त्र के स्वरूप वाली। इस मन्त्र के वर्णों वाली। स्वरूप का अर्थ आत्मा या स्वभाव भी है अर्थात जिसे अलग नहीं किया जा सकता। कएईलह्रीं है जिसकी आत्मा अर्थात इन मन्त्राक्षरों से कभी अलग नहीं होती। कएईलह्रीं में आत्मा के रूप से स्थित अर्थात शक्ति के स्रोत के रूप में स्थित। आत्मा से ही शक्ति पुरे शरीर में आती है। उसी प्रकार देवी रूपी आत्मा से ही इन मन्त्राक्षरों में शक्ति आती है और ये मन्त्राक्षर कार्य कर पाते हैं। (इस मन्त्र का अर्थ है – हे ईश्वर! मुझे ऐसी वाणी शक्ति प्रदान कीजिए, जिससे मैं विश्व की उत्पत्ति कारक माया के दिव्य गुण गा सकूँ। एक अन्य अर्थ है– प्रकाशिका वाणी सर्वत्र व्याप्त है। ए का अर्थ है वाणी, सरस्वती जी के बीज मन्त्र में ए का ही प्रयोग होता है, क का अर्थ है सूर्य अर्थात प्रकाशक। ई का अर्थ है कीर्ति। ब्रह्म स्वरूप देवी माँ से प्रार्थना की गई है कि हमें ऐसी वाणी दीजिए। ह्रीं माया बीज है जिसका अर्थ है परब्रह्म (शिव और शक्ति का सामरस्य)। ह्रीं का अर्थ है – माया (ई) की अमोघ शक्ति (र) जो विश्वव्यापी (ह) है, वह दुख दूर करे (अनुस्वार)। विशेशण के रूप में ह्रीं का अर्थ होगा– दुख दूर करने वाली, माया की अमोघ शक्ति जो विश्वव्यापी है।) (स्वरूप और रूप में अन्तर – स्वरूप का अर्थ है अपना रूप, वास्तविक रूप या मूल रूप अर्थात जिससे अलग नहीं हुआ जा सकता। स्वरूप अर्थात वास्तविक गुण या वास्तविक लक्षण जो किसी वस्तु या व्यक्ति से अवियोज्य होते हैं अर्थात उन्हें हटाया नहीं जा सकता। स्वरूप का अर्थ शरीर भी होता है। जैसे ब्रह्म के लक्षण सत्, चित्, आनन्द स्वरूप लक्षण हैं क्योंकि ये ब्रह्म के साथ–साथ हमेशा रहेंगे। रूप का अर्थ है बाहरी आकृति की सुन्दरता, गुण, लक्षण, रंग, समान। जब कोई व्यक्ति आकृति या शरीर में या किन्हीं गुणों या लक्षणों में किसी अन्य से मिलता जुलता है तो उसमें भी रूप शब्द का प्रयोग कर देते हैं। रूप का अर्थ किसी की विभूति या भूति (निर्मित या अभिव्यक्त रूप) भी है। जैसे ऊर्जा सभी जगह व्याप्त है और किसी स्थान पर उसने एक रूप धारण कर लिया हो। गीता में भगवान कहते हैं कि वृक्षों में पीपल हूँ, तो पीपल उनकी विभूति या रूप है। गुण का अर्थ प्रभाव भी होता है। मन्त्ररूपिणी का अर्थ होगा मन्त्र के रूप अर्थात आकार को धारण करने वाली। मन्त्र स्वरूपिणी अर्थात मन्त्र के वास्तविक रूप को धारण करने वाली, मन्त्र जो उसका अपना ही रूप है, उसे धारण करने वाली। मन्त्ररूपिणी का अर्थ मन्त्र के रूप अर्थात उसके गुण अर्थात प्रभाव को धारण करने वाली। मन्त्र स्वरूपिणी अर्थात मन्त्र के वास्तविक गुण या मूल गुण अर्थात इनके प्रभाव को धारण करने वाली।)

476. कएईलह्रींवरप्रदा– क ए ई ल ह्रीं इस मन्त्र के द्वारा वर प्रदान करने वाली अर्थात इस मन्त्र का जप करने से देवी वरदान देती हैं।

477. कएईलह्रींसिद्धिदात्री – क ए ई ल ह्रीं इस मन्त्र के द्वारा सिद्धि देने वाली।

478. कएईलह्रींस्वरूपिणी– कएईलह्रीं मन्त्र, जो उसका अपना रूप है, उसे धारण करने वाली। कएईलह्रीं रूपी आत्मा से युक्त अर्थात कएईलह्रीं रूपी आत्मा है जिसके अन्दर। स्वरूप अर्थात आत्मा या स्वभाव। जिसने क ए ई ल ह्रीं इस मन्त्र के स्वरूप को धारण किया। 475 वें नाम में स्वरूपा शब्द है और यहाँ पर स्वरूपिणी शब्द है। दोनों में बहुत बारीक अन्तर है। स्वरूपा अर्थात अपना निजी रूप या वास्तविक रूप, स्वरूपिणी अर्थात स्वरूप (आकार या गुण) से युक्त। जब हम ''से युक्त'' कहते हैं तो दो सत्तायें हो जाती हैं, एक वह स्वयं है और दूसरी जो उससे जुड़ा है। स्वरूपा में दो चीजों के जुड़ने का भाव नहीं है। स्वरूपिणी का मतलब है देवी बिना मन्त्र के स्वरूप वाली भी हैं और मन्त्र का स्वरूप धारण करने वाली भी हैं अर्थात दो सत्ताओं का अस्तित्व है। स्वरूपा में मन्त्र ही देवी हैं अर्थात यहाँ केवल एक ही सत्ता है चाहे उसे मन्त्र कहो चाहे देवी। स्वरूपी/स्वरूपिणी अर्थात जो किसी के स्वरूप के अनुसार हो अर्थात जिसने किसी के स्वरूप को धारण किया हो। क ए ई ल ह्रीं इस

मन्त्र के स्वरूप वाली। (रूप में बाह्य आकृति या आचरण का तात्पर्य होता है जिसे आँखों से देखा जा सकता है जैसे हवन करना, वेदि आदि। स्वरूप से तात्पर्य आत्मा से है या अविनाशी तत्व से है जो देखने में नहीं आता पर जिसका अनुभव किया जा सकता है। अपरिवर्तनीय अन्तस्थ तत्व स्वरूप होता है। स्वरूप तदात्मक होता है। स्वरूप का अर्थ स्वभाव भी किया गया है अर्थात वे विशेषताएं या गुण जो किसी व्यक्ति या वस्तु से अलग नहीं हो सकते जैसे अग्नि में दाहकता, किसी मनुष्य के अन्दर दया धर्म। आँखों से दिखने वाले कर्मकाण्ड रूप के अन्तर्गत आएंगे जबकि जीवन–मूल्य स्वरूप में आएगा। यज्ञस्वरूपिणी का अर्थ यज्ञ जिसका अपना ही रूप है यह भी कर सकते हैं। यज्ञरूपिणी में अर्थ निकला कि यज्ञ के रूप वाली पर यह रूप उसका अपना होना आवश्यक नहीं अर्थात किसी दूसरे की नकल भी हो सकती है। आजकल के शब्दकोश में रूप और स्वरूप का एक ही अर्थ मिलता है अर्थात बाहरी आकृति, शक्ल।) (रूपा/स्वरूपा/रूपी/रूपिणी/स्वरूपिणी– ये शब्द किसी शब्द के आगे बहुधा से प्रयुक्त होते है। रूप और स्वरूप को साधारणतः आकृति, आकार या शक्ल के रूप में अर्थ किया जाता है। रूप और स्वरूप में यह अन्तर है कि स्वरूप का अर्थ है निजी या अपना रूप या वास्तविक/तात्विक रूप या गुण जो उस वस्तु के साथ हमेशा रहेगा अर्थात् नष्ट नहीं हो सकता। स्वरूप अर्थात स्वभाव या प्रकृति अर्थात हमेशा रहने वाला गुण। रूप में ऐसी बाध्यता नही है। ब्रह्म का स्वरूप लक्षण एवं तटस्थ लक्षण होता है। रूपी/रूपिणी के अर्थ है– के रूप में, तुल्य, समान, से युक्त, से बना हुआ। स्वरूपिणी का अर्थ है– तुल्य, समान, उन जैसी आकृति वाली। रूपा का एक अर्थ बोधिका या ज्ञापिका भी होता है। रूप्यते ज्ञाप्यते अनेन/अनया इति रूपः/रूपा। एक प्रकार से पहचान का चिन्ह जिससे कोई चीज पता चलती है या ज्ञात होती है। रूपयति इति रूपा से रूपा का अर्थ निर्माण करने वाली, देखने वाली, दिखाने वाली भी हो जाता है। मन्त्ररूपा का अर्थ हुआ मन्त्र के रूप (आकृति) वाली, मन्त्र का निर्माण करने वाली, मन्त्र से ज्ञात होने वाली या बोधित होने वाली आदि अर्थ निकाले जा सकते है। मन्त्ररूपिणी का अर्थ हुआ मन्त्र के रूप वाली, मन्त्रस्वरूपिणी का अर्थ हुआ मन्त्र के वास्तविक या तात्विक या अपने या निजी रूप वाली अर्थात् मन्त्र उन्हीं का रूप है, किसी दूसरे की नकल नही है। कुछ लोग रूप को बाहरी आकृति से एवं स्वरूप को भीतरी आकृति या गुण से जोड़ते है। स्वरूप वास्तविक होता है जो हमेशा रहता है और एक जैसा रहता है एवं वह रूप का भी कारण है। रूप को नष्ट करने पर भी स्वरूप ज्यों का त्यों बना रहता है। रूप का अस्तित्व और कार्यकलाप स्वरूप के कारण है। स्वर्ण से बनी हुयी चूड़ियां या हार या झुमके सभी रूप है पर स्वर्ण स्वरूप है अर्थात् अपना ही रूप या कभी समाप्त न होने वाला रूप है या वास्तविक/तात्विक रूप है। स्वरूप शक्ति अन्तरंग या भीतरी शक्ति है किन्तु आजकल इसका प्रयोग बाहरी आकृति में भी होने लगा है। रूप प्रायः बाहरी आकृति से सम्बन्धित है। रूप और स्वरूप का अर्थ गुण या विशेषता भी है। कृष्णरूपिणी औ कृष्णस्वरूपिणी। कृष्णरूपिणी का अर्थ है कृष्ण की तरह, आवश्यक नहीं कि सभी अंशों में कृष्ण की तरह है। कृष्णस्वरूपिणी का अर्थ है सभी अंशों या अवययों में कृष्ण की तरह है। रूप में बाहरी आकृति आती है एवं स्वरूप में भीतरी आकृति अर्थात् गुण या विशेषता भी आते है किन्तु आजकल बाहरी आकृति के लिए भी स्वरूप शब्द का प्रयोग किया जाता है। स्वरूप अर्थात् वास्तविक या तात्विक रूप या गुण अर्थात् हमेशा बना रहने वाला गुण या रूप, जो नष्ट नहीं होता।) (मन्त्रस्वरूपा/मन्त्रस्वरूपिणी– स्वरूप का अर्थ है स्वभाव या प्रकृति, गुण, बाह्य आकृति आदि। मन्त्रस्वरूपा का अर्थ हुआ मन्त्र है बाह्य आकार जिनका। मन्त्रस्वरूप + आ, आ का अर्थ है देना। उपासको को मन्त्र के गुण (प्रभाव) को देने वाली। मन्त्रस्वरूप + णिनि प्रत्यय लगाने से मन्त्रस्वरूपिणी शब्द बनेगा जिसका अर्थ हुआ मन्त्र के आकार/गुण (शक्ति या प्रभाव) से युक्त अर्थात् उसे रखने वाली। णिनि प्रत्यय युक्त अर्थ में प्रयुक्त हुआ और इससे दो का बोध होता है अर्थात् दो चीजें है जो आपस में जुड़ी हुई है, स्वरूपा में ऐसा अर्थ नहीं आता है। मन्त्ररूपा का अर्थ मन्त्र है बाह्य आकार जिनका, मन्त्र को देखने वाली, मन्त्र का साक्षात्कार कराने वाली, मन्त्र का निर्माण करने वाली, मन्त्र है ज्ञापक जिनका अर्था त मन्त्र से जिनका बोध होता है।) (रूपा–रूप्यते ज्ञाप्यते

अनया, जिससे कोई चीज ज्ञापित indicate होती है, उसे रूपा कह सकते हैं। उस चीज का कोई विशेष गुण या लक्षण जिससे पता चल जाता है। स्वरूप अर्थात अपना रूप या वास्तविक रूप अर्थात जो उससे कभी अलग न हो और किसी दूसरे की नकल नहीं है। स्वरूप अर्थात आकृति, गुण (प्रभाव), खास लाभदायक तत्व, nature। मन्त्र स्वरूपिणी अर्थात इस मन्त्र के गुण (प्रभाव से युक्त)। मन्त्र स्वरूपा अर्थात इस मन्त्र की आकृति वाली। मन्त्र रूपा और मन्त्ररूपिणी का एक ही अर्थ है कि मन्त्र के रूप वाली पर फिर भी अन्तर करना हो तो णिनि प्रत्यय स्वभाव अर्थ भी देता है। मन्त्र रूपा मन्त्र के रूप वाली। मन्त्ररूपिणी में मन्त्र के रूप में होना स्वभाव है जिसका ऐसा कर सकते है। मन्त्ररूपिणी अर्थात मन्त्र बनाना जिनका स्वभाव है, मन्त्र रूपा अर्थात मन्त्र को बनाने वाली, मन्त्रम रूपयति इति रूपा या मन्त्रेण रूप्यते ज्ञाप्यते इति मन्त्र रूपा अर्थात मन्त्र से जिसका ज्ञान होता है। मन्त्र स्वरूपा को मन्त्र स्वरूप वाले भगवान की शक्ति ऐसा अर्थ भी कर सकते है। मन्त्रस्वरूप+आ, एकाक्षरी कोश में आ का एक अर्थ शक्ति दिया गया है। शब्दकोश में रूप् धातु के कई अर्थ है जैसे रचना करना, देखना, दिखाना आदि। रूपयति इति रूपा से रूपा का अर्थ रचना करने वाली, देखने वाली, दिखाने वाली आदि अनेक अर्थ किये जा सकते है जैसे मन्त्ररूपा अर्थात मन्त्र की रचना करने वाली।) (मन्त्र के अन्तिम बीज अर्थात माया बीज का अर्थ है– महामाया (ई) की शक्ति (र) जो शिवयुक्त (ह अर्थात शिव) है, मेरे दुख दूर करे। बिन्दु का अर्थ है दुख हरण। विशेषण के रूप में इस बीज मन्त्र का अर्थ है दुख दूर करने वाली महामाया की शक्ति जो शिव से युक्त है। महामाया की वह अमोघ शक्ति (र) जो सर्वव्यापी(ह) है मेरे दुख दूर करें, माया की शिव सम्बन्धिनी शक्ति मेरे दुख दूर करें। ह अर्थात आकाश अर्थात सर्वव्यापी।)

479. कएईल्ह्रींमन्त्रवर्णा– क ए ई ल ह्रीं इन अक्षरों से युक्त मन्त्र वाली।

480. कएईलह्रींप्रसूकला– क ए ई ल ह्रीं इस मन्त्र को उत्पन्न करने वाली शक्ति या इकाई। कला का अर्थ शक्ति या इकाई है। क ए ई ल ह्रीं इस मन्त्र को प्रकट करने की कला से युक्त। कला का एक अर्थ है शक्ति, हुनर।

481. कवर्ग्गा– क वर्ग स्वरूपिणी। संस्कृत में क वर्ग का तात्पर्य है क, ख, ग, घ, ङ। सुख के समूह वाली। क का एक अर्थ है सुख।

482. कपाटस्था– मोक्ष द्वार पर स्थित जिससे अपात्र इसके भीतर न घुस सकें अर्थात मोक्ष न पा सकें। कपाट अर्थात दरवाजे में स्थित रहने वाली। घरों में दरवाजे में देवी का वास माना जाता है तभी देहली पूजा होती है।

483. कपाटोद्घाटनक्षमा– मोक्ष का दरवाजा खोलने में समर्थ।

484. कङ्काली– कंकाली स्वरूपा। कंक पक्षी से सुशोभित। कंक पक्षी श्मशान में रहता है। मेघ की तरह शोभायमान। कंक मेघ को भी कहते हैं। कम् जलम् कटति वर्षयति इति कंकालः, जो जल को बरसाता है वह कंक अर्थात मेघ है। कंकवत् अलति इति कंकालः, स्त्रीलिंग में कंकाली। जो मेघ के समान शोभायमान है, वह कंकाली है। कं (शिरः) कालयति खण्डयति इति कङ्कालः, स्त्रीलिंग में कङ्काली। राक्षसों के सिरों को काट देने वाली। भगवान शिव ने ब्रह्मा के एक सिर को काटा था अर्थात भगवान शिव की शक्ति ने काटा था। कं सुखम् कलयति सम्पादयति इति कङ्काली अर्थात उपासकों को सुख देने वाली। कङ्काल अर्थात अस्थिपंजर जैसे रूप वाली। देवी के कई रूपों में धूमावती या अन्य कोई रूप ऐसा होता है। सभी रूप एक ही हैं। अन्यथा भी देवी इच्छानुसार कोई भी रूप धारण कर सकती हैं। पिशाच की आकृति का एक भयानक अस्त्र भी होता है जिसे कङ्काल कहते हैं। उस अस्त्र को धारण करने वाली। कङ्कालम् अस्य अस्ति इति कङ्कालः (कङ्काल अस्त्र वाला अर्थात इस अस्त्र को धारण करने वाला, स्त्रीलिंग में कङ्काली हुआ)। कंकैः अल्यते इति कंकाली। कौआ, गृध्र से सुशोभित अर्थात् इनके मन्दिरों के आस–पास ये पक्षी रहते है। सुखाभिलाषी पुरूषों द्वारा सुशोभित अर्थात

ऐसे पुरूषों द्वारा जिनकी आराधना की जाती है जिससे उन्हें सुख मिल सके। वैदिक कोष के अनुसार कंक का अर्थ है गृध्र, सुखाभिलाषी पुरूष, काक।

485. कपाली– कपाल अर्थात खप्पर को धारण करने वाली। स्वर्ग का पालन करने वाले इन्द्र की शक्ति। क का अर्थ है स्वर्ग। विचार स्वरूपा। क (अर्थात सुख) का पालन करने वाला अर्थात विचार।

486. कङ्कालप्रियभाषिणी– शिव जी से बात करने वाली, संवाद करने वाली। कंकालप्रिय का अर्थ है शिव। कंकाल श्मशान में होते हैं और शिवजी भी श्मशान में होते हैं। शिवजी को कंकाल पसन्द हैं अतः कंकालप्रिय का अर्थ है शिव। कंकाल भैरव के स्वरूप से मधुर बोलने वाली।

487. कङ्कालभैरवाराध्या– कंकाल भैरव के द्वारा आराधना करने योग्य।

488. कङ्कालमानससंस्थिता– कंकाल भैरव (अर्थात शिव) के मानस (हृदय) में रहने वाली। यहाँ कंकाल का अर्थ कंकाल भैरव ले सकते हैं।

489. कङ्कालमोहनिरता– कंकाल भैरव के मोह में संलग्न रहने वाली। मोह अर्थात आकर्षण।

490. कङ्कालमोहदायिनी– कंकाल की तरह मोह देने वाली। मोह का अर्थ अज्ञान है। कंकाल को कुछ ज्ञान नहीं होता क्योंकि वह चेतना शून्य होता है। मोह देने वाली अर्थात व्यक्ति को विवेकशून्य करने वाली। मोह या अज्ञान का अर्थ है वस्तु में अवस्तु को देखना और अवस्तु में वस्तु को देखना। वस्तु या व्यक्ति को उस रूप से न देख पाना जो उसका वास्तविक रूप है, मोह कहलाता है। मोह का परिणाम आकर्षण, ममत्व होता है। कंकाल भैरव अर्थात शिव को मोहित करने वाली। भगवान शिव मोहिनी रूप को देखकर मोहित हो गये थे अर्थात आकर्षित होकर उसके पीछे पीछे दौड़ने लगे थे। कंकाल भैरव के मोह को प्रदान करने वाली। शरीर को आत्मा समझना मोह है।

491. कलुषघ्नी– पापों को नष्ट करने वाली।

492. कलुषहा– पापी को त्याग देने वाली। जैसे पापम् का अर्थ है पाप और पापः का अर्थ है पापी। उसी प्रकार कलुषम् का अर्थ है पाप और कलुषः का अर्थ है पापी। कलुषम् अस्य अस्ति इति कलुषः। पापों को नष्ट करने वाली। जहाति (ओहाक् त्यागे धातु) से हा शब्दाक्षर बनाने पर त्यागना अर्थ आता है और हा हन्ति से हा शब्दाक्षर बनाने पर मारना अर्थ आता है।

493. कलुषार्त्तिविनाशिनी– पापों से होने वाली पीड़ा को पूर्ण रूप से नष्ट कर देने वाली।

494. कलिपुष्पा– कलियुग में पुष्प की तरह अर्थात पुष्पित होने वाली अर्थात समृद्धि देने वाली। भक्तों को पुष्पित करने वाली अर्थात समृद्धि देने वाली। कहते हैं फलो फूलो, इसका अर्थ है कि समृद्धि को प्राप्त करो। कलियुग के लिए पुष्प के समान प्रिय।

495. कलादाना– भक्तों को कला की निपुणता देने वाली। कलाओं को प्रदान करने वाली। उपासकों को उनकी इच्छानुसार कलाओं (गायन, नृत्य, चित्रकारी आदि) में दक्ष बनाने वाली। कलाओं का आदान (ग्रहण) करने वाली अर्थात धारण करने वाली।

496. कशिपु– सभी जीवों का आधार स्वरूपा। सभी जीवों को आधार प्रदान करने वाली। कशिपु का अर्थ है चटाई अर्थात आधार।

497. कश्यपार्चिता– कश्यप ऋषि द्वारा पूजित।

498. कश्यपा– कश्यप ऋषि की शक्तिस्वरूपा। कश्यप ऋषि के स्वरूप को धारण करने वाली। आनन्दरूपी मदिरा का पान करने वाली। कश्य का एक अर्थ है मदिरा। कश्य का अर्थ है सोमरसादिजनित मद्य। यह आनन्द

का प्रतीक हुआ। आनन्द का पान करने वाली अर्थात आत्म स्वरूपा या जीवात्मा। वर्णों के आगे पीछे होने से पश्यक ही कश्यप हो गया। सूर्य सबको देखता है अतः सूर्य पश्यक या कश्यप है। कश्यप+आ, एकाक्षरीकोश में आ का एक अर्थ शक्ति दिया गया है। इस प्रकार कश्यपा का अर्थ हुआ सूर्य की शक्ति स्वरूपा। कश्य का अर्थ है सोमलता से उत्पन्न मद्य। इस मद्य को पीने वाली।

499. कश्यपाराध्या– कश्यप ऋषि के द्वारा आराधना करने योग्य।

500. कलिपूर्णकलेवरा– कलियुग में पूर्ण शरीर से विराजमान रहने वाली।

501. कलेवरकरी– सुन्दर शरीर को प्रदान करने वाली।

502. काञ्ची– कांची के समान अर्थात कांची के समान शोभायमान। कांची नामक आभूषण शोभायुक्त माना जाता है। सुन्दर करधनी से सुशोभित होने वाली।

503. कवर्ग्गा– सुख समूह स्वरूपा। क का अर्थ सुख और वर्ग का अर्थ समूह। सुख के जितने भी रूप होते हैं वे देवी के ही स्वरूप हैं या देवी उन सभी सुखों के समूह से युक्त हैं। क वर्ग (क ख ग घ ङ) वाली अर्थात क वर्ग में स्थित रहने वाली।

504. करालका– दुष्टों के लिए अतिशय कराल रूप अर्थात भयंकर रूप को धारण करने वाली।

505. करालभैरवाराध्या– कराल भैरव द्वारा आराधना करने योग्य। कराल अर्थात भयंकर स्वरूप वाले।

506. करालभैरवेश्वरी– भयंकर स्वरूप वाले भैरव की ईश्वरी अर्थात आराध्या। करालभैरव पर नियन्त्रण/शासन करने वाली।

507. कराला–दुष्टों के सुख साधन को नष्ट करने वाली। करम् सुखसाधनम् लाति नाशयति इति करालः। कम् सुखम् राति इति करः अर्थात कर का अर्थ है सुख देने वाला साधन। परिपूर्ण या दूसरों से उन्नत। कराल का एक अर्थ उत्तुंग, विस्तृत या बड़ा भी होता है। कराल अर्थात अधिक बढ़ा हुआ। कराल अर्थात भयंकर स्वरूप वाली। दुष्टों के सुख साधन को नष्ट करने वाली। कम् (सुखम्) राति (ददाति) इति करः। कर का अर्थ हुआ सुख देने वाला अर्थात सुख साधन। लाति का अर्थ ग्रहण करना भी होता है और नाश करना भी होता है। करम् लाति नाशयति इति कराला। करं लाति ददाति इति कराला अर्थात भक्तों को सुख के साधन देने वाली। दुष्टों के लिए भयंकर। शब्दकोशों में कराल का अर्थ भयंकर दिया गया है। काली जी, धूमावती जी आदि देखने में बड़ी भयंकर हैं और सभी देवियाँ एक रूप हैं। आगे निकले दाँतों वाली। मुख बन्द करने पर भी कुछ दाँत आगे निकले रहते हैं जिससे भयंकर लगती हैं। दन्तुर का अर्थ है जिसके दाँत आगे निकले हों। दन्तुर का अर्थ आवरण रहित या खुला हुआ भी होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ जो माया के आवरण से रहित हैं। 'करालो दन्तुरे तुंगे भीषणे' ऐसा शब्दकोश में मिलता है। तुंग अर्थात ऊँची। जो बहुत ऊँची हैं (आकार या गुणों में)। पुरुषसूक्त में लिखा है कि ब्रह्म का एक चौथाई ही यह विश्व है। देवी ब्रह्म स्वरूपा हैं। जो सभी से अधिक ऊँची हैं।

508. कलनाधारा–गणना की आधार अर्थात नानात्व को प्राप्त। कलना का अर्थ है गणना और गणना अनेक की ही होती है।

509. कपर्दीशवरप्रदा– शिव को वरदान देने वाली।

510. कपर्दीशप्रेमलता– शिव के प्रेम की लतास्वरूपा। कपर्द अर्थात मुण्ड या खप्पर। शिवजी मुण्ड की माला पहनने से कपर्दीश हुए। शिव की प्रेम की लता।

511. कपर्दिमालिका– कपालों की या मुण्ड की माला धारण करने वाली। कपर्द अर्थात मुण्ड या खप्पर। कपर्दी का अर्थ शिव होता है। शिव की माला धारण करने वाली अर्थात शिव नाम की माला धारण करने वाली। जैसे

माला को हृदय में लगाया जाता है उसी प्रकार शिव नाम या शिव जिनके हृदय में लगे हुए हैं। शिव की माला स्वरूपिणी।

512. कपर्दिजपमालाढ्या– शिव की जपमाला से सुशोभित होने वाली। शिव नाम के जप से सम्पन्न अर्थात शिव नाम का लगातार जप करती रहती हैं। भगवान का नाम सबसे बड़ा धन माना गया है।

513. करवीरप्रसूनदा– कनेर के फूलों को देने वाली। कनेर का फूल धारण करने वाले वृक्ष को संसार को देने वाली।

514. करवीरप्रियप्राणा– कनेर के फूल जिन्हें अतिशय प्रिय हैं। प्राण का अर्थ है अतिशय प्यारा।

515. करवीरप्रपूजिता– कनेर के फूलों के द्वारा विशेष रूप से पूजी गईं अर्थात पूजी जाने वाली। कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र से कृत्य प्रत्यय आवश्यकता पड़ने पर दूसरे काल एवं कारक का भी बोध कराते हैं।

516. कर्णिकारसमाकारा– कनेर के फूल के समान सुन्दर आकृति वाली।

517. कर्णिकारप्रपूजिता– कनेर के समान पुष्पों के द्वारा पूजित होने वाली।

518. करीषाग्निस्थिता– सूखे कण्डे की अग्नि में स्थित होने वाली। चैतन्य रूप में या ऊर्जा रूप में देवी सर्वव्यापक हैं, गाय के गोबर में लक्ष्मी जी का वास माना गया है। कार्य करने की इच्छा रूपी अग्नि अर्थात कामाग्नि में स्थित। करि + ईषा (इच्छा)। (यदि करीषिणी नाम है तो अर्थ होगा– समृद्धि से युक्त। करीष का एक अर्थ वैदिक कोष में समृद्धि दिया गया है। ऐश्वर्य सम्पन्न भी करीषिणी का एक अर्थ है। करीष का अर्थ गोबर होता है। अतः करीषिणी का अर्थ गोबर और मूत्र आदि करने वाली गाय होता है। देवी के सन्दर्भ में अर्थ होगा जो इस प्रकार की गाय के समान अपने भक्तों को उपयोगी एवं लाभदायक चीजों को देती है।)।

519. कर्षा– अपनी ओर आकर्षित करने वाली।

520. कर्षमात्रसुवर्णदा– कर्ष जितना सोना देने वाली अर्थात कई कर्ष सोना देने वाली अर्थात कर्षों की मात्रा में सोना देने वाली। कर्ष एक मात्रा का नाम है। कर्ष नामक तौल पर सोना देने वाली। कर्ष तौलने की एक मात्रा है।

521. कलशा– कलश के स्वरूप वाली। नवरात्रि में कलश में देवताओं का आवाहन होता है जिससे कलश देव स्वरूप हो जाता है। अमृत तत्व से भरी हुई। अमृत अर्थात मोक्ष या आनन्द। सृष्टि के निर्माण करने वाले तत्वों से भरी हुई। तन्त्र या आगम में कलश, कपाल, कमण्डलु, घट आदि शब्द अमृत/मोक्ष या आनन्द, सृष्टि के निर्माण करने वाले तत्व से भरे होने को सूचित करते हैं। समुद्र मन्थन में अमृत इसी घड़े में भरा हुआ था। आधुनिक वेद विज्ञान में सिर में ऊपरी भाग में चार छिद्र या रिक्त स्थान होते हैं जिनमें सोमरस भरा होता है जो पूरे शरीर को शक्ति या स्फूर्ति देते हैं। इन विवर या छिद्र को घट, कलश, कमण्डलु आदि कहते हैं और इसमें भरे हुए रस को सुधा कहते हैं। जल (जीवन) का आधार। कलश में जल भरा जाता है। ब्रह्माण्ड स्वरूपा। ब्रह्माण्ड में विराजमान (शक्ति रूप से)। कलश या घट ब्रह्माण्ड के प्रतीक होते है क्योंकि ये गोलाकार होते है तथा इनके अन्दर सामग्री होती है। (कलश का विग्रह कम् जलम् लसति यस्मिन् इति कलशः। स्त्रीलिंग में कलशा। जिसमें जल सुशोभित होता है। कलः (मात्रा अर्थात् जल की मात्रा) शेरते यस्मिन्। जिसमें मात्रा (जल की मात्रा या अंश) सोता है अर्थात् रहता है)।

522. कलशाराध्या– कलश के द्वारा अर्थात कलश स्थापित कर आराधना करने योग्य।

523. कषाया– जो कसैले रस की तरह है, तात्पर्य हुआ कि अभक्त लोग देवी से वैसे ही भागने का प्रयास करते हैं जैसे व्यक्ति कसैले रस का स्वाद लेने से हिचकता है। कसैले रस से युक्त। कषाय वस्त्र वाली अर्थात गेरू के रंग का वस्त्र धारण करने वाली जो प्रायः सन्यासिनी धारण करती हैं।

524. करिगानदा– गज को गान देने वाली अर्थात हाथी को गायन सिखाने वाली।

525. कपिला– कपिला गाय की तरह कई उपयोगी चीजों को मनुष्यों को देने वाली। भूरे रंग वाली। जिनके शरीर से भूरे रंग की आभा निकलती है। वह विशेष चेतना जो जड़ीभूत चेतना (मैं शरीर हूँ, इस प्रकार की चेतना जड़ीभूत चेतना है) को कँपा देती है अर्थात् नष्ट कर देती है। वह ज्ञान जो अज्ञान (मैं शरीर हूँ ऐसा अज्ञान) को कँपा देता है अर्थात् नष्ट कर देता है, कपिल है जिसका स्त्रीलिंग रूप कपिला है। सबको कम्पित करने वाला सबका संचालक जीव या आत्मा कपिल है। उस आत्मा के स्वरूप वाली। कम्प् धातु से कपिल शब्द बनता है।

526. कलकण्ठी– मधुर कण्ठ वाली।

527. कलिकल्पलता– कलियुग की कल्पलता के समान अर्थात इनकी उपासना से सबकुछ मिल जाता है।

528. कल्पलता– कल्पलतास्वरूपा अर्थात सबकुछ देने वाली।

529. कल्पमाता– यज्ञ विधान की रक्षा करने वाली। कल्प अर्थात श्रौतयज्ञों का विधिविधान। कल्प में कर्मकाण्ड होते हैं। कल्पों को जन्म देने वाली। कल्प का तात्पर्य कल्पवृक्ष से है।

530. कल्पकारी– कल्पपर्यन्त जो काल या समय होता है उसका निर्माण करने वाली। कल्पवृक्ष का निर्माण करने वाली। कल्प ब्रह्मा जी के एक दिन की अवधि होती है जिसमें 14 मन्वन्तर होते है और यह मनुष्य के चार अरब 32 करोड़ वर्ष के बराबर होता है। यज्ञ विधान बनाने वाली। कल्पों की रचना करने वाली। (कल्प अर्थात शास्त्र विधान या निर्दिष्ट नियम। ब्रह्मा जी का एक दिन भी कल्प कहलाता है। कल्प वृक्ष स्वरूपा। यह वह वृक्ष है जिसके सम्मुख प्रार्थना करने पर अभीष्ट फल की प्राप्ति हो जाती है। कल्प सूत्र मानक ग्रन्थ जिसमें यज्ञों के विधान तथा गृहस्थों के धर्मों का उल्लेख किया गया है)।

531. कल्पभू– कल्पपर्यन्त जो समयावधि होती है उसके रूप में विद्यमान। भू सत्तायाम् धातु होती है। भू का अर्थ केवल उत्पन्न होना ही नहीं होता बल्कि विद्यमान होना भी होता है। कल्पः भवति अस्याः इस व्युत्पत्ति से कल्पसमयावधि जिससे उत्पन्न हो यह अर्थ भी कर सकते हैं।

532. कर्प्पूरामोदरूचिरा– कपूर के गन्ध से सुहावनी या अच्छी लगने वाली।

533. कर्प्पूरामोदधारिणी– कपूर की सुगन्ध को धारण करने वाली।

534. कर्प्पूरमालाभरणा– कपूर के समान उज्जवल माला है आभूषण जिनका।

535. कर्प्पूरवासपूर्त्तिदा– कपूर की सुगन्ध से सभी आवश्यकताओं को पूर्ण कर देने वाली। पूजा में कपूर की सुगन्ध करने से आवश्यकताओं को पूर्ण कर देने वाली।

536. कर्प्पूरमालाजयदा– कपूर से पूजा करने पर और माला से जप करने पर जय देने वाली। पहले पूजन होता है फिर जप होता है।

537. कर्प्पूरार्णवमध्यगा– कपूर के समान सफेद समुद्र के मध्य में गई हुई अर्थात वहाँ रहने वाली या विराजमान। सुधा (अमृत) का रंग सफेद माना जाता है अतः कर्पूरार्णव का अर्थ है सुधा समुद्र। कपूर के सागर के मध्य में विचरण करने वाली।

538. कर्प्पूरतर्प्पणरता– कपूर के द्वारा तर्पण में संलग्न रहने वाली।

539. कटकाम्बरधारिणी– नितम्ब को ढके हुये वस्त्र को धारण करने वाली। कटक का अर्थ है कि नितम्ब। आपने काली जी का चित्र देखा होगा कि नितम्ब के चारों ओर आज के स्कर्ट की तरह पहने हुये हैं। कटक का अर्थ कंगन या चूड़ी भी होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ जो कंगन और वस्त्र को धारण किये हुए है। कंगन के रूप में आकाश को धारण करने वाली।

540. कपटेश्वरसम्पूज्या– श्रीकृष्ण के द्वारा या शिव के द्वारा पूजनीय।

541. कपटेश्वररूपिणी– कृष्ण या शिव के स्वरूप वाली।

542. कटु– शत्रुओं/दुष्ट राक्षसों के लिए अत्यधिक कड़वे या कठोर रूप को धारण करने वाली। कठोर अर्थात जो दया न करे। कड़वे रस में विराजमान (गुण या शक्ति के रूप में)। कस्य पटु। सुख में प्रवीण अर्थात भक्तों को सुख देने में प्रवीण। क का एक अर्थ है सुख। पटु का टु अक्षर ले लिया।

543. कपिध्वजाराध्या– अर्जुन के द्वारा आराधना करने योग्य।

544. कलापपुष्परूपिणी– पुष्प समूह रूपिणी अर्थात नाना पुष्प स्वरूपिणी। कलाम् आप्नोति इति कलापः। कला का अर्थ है इकाई। इकाईयों को प्राप्त करता है अतः समूह रूप में हो जाता है अतः कलाप कहते हैं। मयूर पंख को पुष्प के रूप में धारण करने वाली। कलाप का अर्थ मोर की पूँछ, चन्द्रमा भी होता है। कलाप का अर्थ कातन्त्र व्याकरण भी होता है। रूपिणी अर्थात दिखने वाली अर्थात नेत्रों से जैसा देखती है। चन्द्रमा और पुष्प के रूप में दिखने वाली। प्रत्येक चीज ऊर्जा की बनी है और ऊर्जा ही शक्ति या देवी हैं।

545. कलापपुष्परूचिरा– पुष्प समूह के समान सुन्दर। कलाप का अर्थ है समूह। मयूर पंख से सुशोभित होने वाली।

546. कलापपुष्पपूजिता– आभूषण और पुष्प के द्वारा पूजित। कलाप एक अर्द्धचन्द्राकार गहना है। मयूरपुच्छरूपी पुष्प द्वारा पूजित।

547. क्रकचा– शत्रुओं को काटने में आरे की तरह। क्रकच आरे को कहते हैं।

548. क्रकचाराध्या– आरा के द्वारा आराधना करने योग्य। आरा का तात्पर्य काटने वाले दुष्ट दैत्यों राक्षसों से कर सकते हैं।

549. कथंब्रूमा– उसे पुकारने या सम्बोधन करने का शब्द नहीं है। उसे किस शब्द से बोला जाए ऐसा शब्द नहीं है अर्थात speachless। किस प्रकार से जिनके स्वरूप का वर्णन किया जाए अर्थात वाणी से वर्णन असम्भव है अर्थात अवर्णनीय स्वरूप वाली।

550. करलता– लता की तरह नाजुक (कोमल) एवं हर ओर मुड़ने वाली हाथ से युक्त। लता वृक्ष को घेरे रहती है। जिसने अपने हाथों से विश्व को घेरा हुआ है या पकड़ा हुआ है। कम् (सुखम्) राति इति करः, जो सुख को देता है वह कर है। तन्त्र में लता शब्द का प्रयोग स्त्री के लिये आया है और वहाँ लता साधना एक प्रसिद्ध शब्द है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ भक्तों को सुख देने वाली स्त्री स्वरूपा। सुख देने वाली वल्ली या लता। सभी प्रकार का सुख देने वाली वल्ली। कम् सुखम् राति इति करः। इस प्रकार कर का अर्थ है सुख देने वाला। कर है लता के समान। लता सुन्दर मानी जाती है। लता के समान सुन्दर हाथों वाली।

551. कथङ्कारविनिर्मुक्ता– वह किस प्रकार की हैं इस अर्थ से मुक्त हैं अर्थात अनिर्वचनीया। देवी कैसी हैं? इस बात से एकदम निर्मुक्त हैं अर्थात वह कैसी हैं नहीं बताया जा सकता। देवी कैसी है इससे मुक्त अर्थात इसे बताया नहीं जा सकता। वो किस प्रकार की हैं इस कथन से रहित अर्थात अनिर्वचनीय स्वरूप वाली।

552. काली– काल अर्थात शिव की स्त्री या शक्ति। काल को भी अपने में समेटने वाली। कालसंकलनात् इति काली। काले रंग वाली। प्रलय काल में विश्व का संहार कर देने वाली। काली वह शक्ति या तत्व है जो अपने भीतर स्थित विश्व को अपने से बाहर फेंकता है अर्थात् बाहर निकालता है। कल् क्षेपे धातु होती है जिसके अनुसार कल् धातु को अर्थ फेंकना होता है। वह शक्ति जो सभी पदार्थों को ज्ञान करती है। कल् धातु का एक अर्थ जानना अर्थात् ज्ञान करना भी होती है। ज्ञान का एक अर्थ प्राप्त करना भी होता है। संस्कृत में गति, ज्ञान

और प्राप्ति समानार्थक माने जाते है और कल् गतौ धातु से कल् धातु का अर्थ जाना, जानना एवं प्राप्त करना होता है। जो विश्व को प्राप्त करती है अर्थात् अपने भीतर समा लेती है अर्थात् संहार कर देती है। कल् संख्याने धातु भी होती है, जिसका अर्थ होता है गिनना अर्थात अलग–अलग करना। अलग–अलग होने पर ही गिनती हो सकती है। जो पदार्थों की आयु की गणना करती है अर्थात् यह निर्धारित करती है कि उसकी आयु पूरी हुई या नहीं हुई जिससे पूरी होने पर उसका अस्तित्व मिटाया जा सके। वह शक्ति जो अव्यक्त पदार्थों को एक दूसरे से पृथक करती है अर्थात् जिसके कारण यह पदार्थ यह है, यह पदार्थ वह नही है, वह पदार्थ वह है, इस प्रकार का भेद करवाती है। संख्यान का अर्थ है अन्यतो व्यतिभेदन अर्थात् दूसरे से अलग होना। काल अर्थात् भगवान शिव की पत्नी। जो समय शक्ति को उत्पन्न कर इस समय शक्ति से संसार का संचालन करती है। जो अपने उपासकों को काल (मृत्यु) के भय से मुक्त कराती है। जो कालेवर्णन वाली है। कलयति विश्वम् इति काली अर्थात् जो प्रलय काल में विश्व का संहार कर देती है। सभी पदार्थों (जड़ व चेतना) की आयु की गणना करने वाली। ब्रह्माण्ड को या समस्त जगत को धारण करने वाली या अपने अधिकार में रखने वाली। सभी देवताओं एवं प्राणियों को प्रेरित करने वाली अर्थात् उन्हें काम में लगाये रखने वाली। सब कुछ जानने वाली। कल् धातु का अर्थ गिनना, रखना, जाना, धारण करना, अधिकार में करना, अधिकार में रखना, गति करना, सम्पादित करना, जानना, प्रेरित करना, प्रोत्साहन करना होता है। कल् धातु में अच् प्रत्यय लगाया तो कर्ता अर्थ में कल बना। स्वार्थ में अर्थात् बिना अर्थ बदले अण् प्रत्यय लगाने से कल काल हो गया तथा स्त्रीलिंग में काली हो गया।

553. कालक्रिया– दुष्टों के प्राण हरण करने की क्रिया स्वरूपा। काल अर्थात मृत्यु अर्थात प्राण हरण करने वाला। जो काल भी है और क्रिया भी है। संसार में जो काल (समय) अनुभव में आता है वह यही देवी हैं। काल भी क्रिया से देखा जाता है। काल कुछ नहीं होता, क्रिया ही होती है। समय आकार में नहीं होता। भगवान को अकालमूर्ति कहते हैं। तीनों कालों में विविध क्रियाओं को करने वाली।

554. क्रतु– निश्चय या संकल्प स्वरूपा। विवेकस्वरूपा। प्रज्ञास्वरूपा। विष्णुस्वरूपा। यज्ञस्वरूपा। वह यज्ञ जिसमें वैदिक मन्त्रों का प्रयोग किया जाता है क्रतु कहलता है। यज्ञेषु प्रत्यहं त्रीणि सवमानि क्रतवः। तत्र गतस्तदाराध्या क्रतुः। ज्ञानरूपत्वात् च। संसारचक्रात् तारयतीति च क्रतुः। प्रत्येक दिन होने वाले तीन प्रकार के सवन अर्थात यज्ञ क्रतु हैं, उनमें विराजमान। क्रवणात् इति क्रतु अर्थात जाने वाला क्रतु है अर्थात प्रत्येक दिन होने वाले प्रातः मध्यान और सायं काल में होने वाले यज्ञ में जाने वाली अर्थात वहाँ विराजमान। क्रमते का अर्थ चमकना या प्रकाशित होना भी होता है और ज्ञान प्रकाशस्वरूप होता है। इस प्रकार क्रतु का अर्थ ज्ञानस्वरूपा भी होगा। संसार चक्र से पार कराने वाली। चक्र से क्र ले लिया और तारयति से त ले लिया। वे यज्ञ जिनमें सोमपान (यह शराब नही है बल्कि अमृततुल्य पेय है जो शरीर को बहुत ऊर्जावान एवं सजग बनाता है) का प्रयोग होता है, क्रतु कहलाते हैं तथा जिनमें नहीं होता यज्ञ कहलाते हैं। ऐसा भी पढ़ने को मिला है जो कर्म फल नहीं देते अर्थात जिन कर्मो का अच्छा या बुरा कोई फल नहीं होता, वे कर्म क्रतु कहलाते हैं। भक्तों का हित करने वाली। करोति स्वजनानाम् हितम् इति क्रतुः। वैदिक कोष में क्रतु के कई अर्थ दिये गये है जैसे कर्ता, कर्म, आत्मा, प्रज्ञा, संकल्प, यज्ञ। जिन यज्ञों में सोमरस का प्रयोग होता है वे क्रतु कहलाते है। क्रतुस्थला एक अप्सरा का नाम है जिसका अर्थ है जिसमें श्रेष्ठ प्रज्ञा विराजमान है। क्रम् धातु में क्तु प्रत्यय लगाने से क्रतु शब्द बनता है। क्रम धातु का अर्थ है कदम दर कदम चलना। क्रमशः चलना। चले, रूके, चारों तरफ देखा, पुनः चले चले, रूके, चारों तरफ देखा। इस प्रकार की चाल चलने वाली। सकाम यज्ञ को क्रतु कहते हैं। आजकल किसी मनोकामना से या पैसा लेकर जो कार्य किया जाता है वह क्रतु है। Mercenary service जो पैसे लेकर की जाती है क्रतु कही जायेगी।

555. कामिनी– सुन्दर रूप वाली। इच्छा वाली अर्थात भक्तों का कल्याण हो ऐसी इच्छा से युक्त। काम का एक अर्थ है इच्छा। काम में णिनि प्रत्यय लगाने से स्त्रीलिंग एक वचन में कामिनी शब्द बन जायेगा। जिनकी कृपा

की कामना सभी करते हैं। काम शक्ति से युक्त। (कामिनी एवं सुन्दरी में अन्तर है। काम का अर्थ कोई भी इच्छा या काम वासना होता है। काम भावों से युक्त होने के कारण जवान स्त्री जिसे देखने से काम विकार जाग्रत हो वह कामिनी है। सुन्दरी गुणों से भी सुन्दर हो सकती है। वृद्धा भी गुण और ज्ञान के कारण सुन्दरी हो सकती है पर वह कामिनी नहीं होगी। देवी के प्रसंग में कामिनी का अर्थ होगा अच्छी इच्छाओं या कामना वाली अर्थात भक्त का कल्याण हो, धर्म की हमेशा जीत हो, इस प्रकार की इच्छा रखने वाली।)

556. कामिनीपूज्या– सुन्दरी स्त्रियों द्वारा पूजनीय।

557. कामिनीपुष्पधारिणी– सुन्दर रमणी के रूप में पुष्पों को धारण करने वाली।

558. कामिनीपुष्पनिलया– स्त्री का पुष्प अर्थात उनके रज में रहने वाली अर्थात प्रजनन शक्ति देने वाली। सुन्दरी स्त्रियों को अच्छे लगने वाले अनेक पुष्पों से सुशोभित।

559. कामिनीपुष्पपूर्णिमा– स्त्री के रजोधर्म की पूर्णिमा अर्थात रजोधर्म को सम्पूर्णता देने वाली, उसे पूर्ति करने वाली। तात्पर्य है मनोरथ पूरा करने वाली। कामिनियों के सुन्दर पुष्पों को धारण करने के कारण पूर्णिमा की तरह चमकने वाली।

560. कामिनीपुष्पपूजार्हा– कामिनियों के द्वारा सुन्दर फूलों से पूजा के योग्य।

561. कामिनीपुष्पभूपणा– कामिनियों के द्वारा प्रस्तुत किये पुष्प जिनके आभूषण बन गये हैं।

562. कामिनीपुष्पतिलका– ऐसी कामिनी जो फूलों से अपने को सजाती है अर्थात फूलों का आभूषण धारण किये हुए हैं। तिलक का अर्थ आभूषण भी होता है। कामिनी च असौ पुष्पतिलका ऐसा विग्रह हुआ। कामिनी का अर्थ दारूहल्दी या जंगली हल्दी भी होता है। दारूहल्दी के फूलों को आभूषण के रूप में धारण करने वाली। कामिनियों (सुन्दर स्त्रियों) के पुष्प अर्थात उनके रज का तिलक लगाये हुए। सम्भवतः वाम मार्ग या कौल मार्ग में ऐसा होता होगा। या तो देवी को लगाते होंगें या साधक साधिका को लगाते होंगें। न्यास प्रक्रिया से साधक साधिका और देवी में अभेद होता है। साधक साधिका के द्वारा स्वयं को लगाये गये तिलक का अर्थ हुआ देवी ने तिलक लगाया। कामिनियों द्वारा प्रस्तुत किये गये पुष्प जिनके तिलक बन गये।

563. कामिनीकुण्डचुम्बना– ऐसी कामिनी जिसने कुण्ड (यज्ञ कुण्ड) का चुम्बन किया है अर्थात उसमें निवास करती है अर्थात अग्नि स्वरूपा। चुम्बन का अर्थ है स्पर्श करना अर्थात निवास करना। अमृत कुण्ड के समान जो कामिनी उसको स्पर्श कर लिया अर्थात उस जैसी हो गई। अमृत तुल्य कामिनी की तरह। कामिनी अर्थात अतिशय सुन्दर, वही है कुण्ड (आनन्द कुण्ड या अमृत कुण्ड) तत् तुल्य। चुम्बित यौवना अर्थात युवावस्था स्वरूपिणी। ऐसी कामिनी जिसके कुण्डल कानों से स्पर्श कर रहे हों। कामिनियों के जो कुण्ड हैं उनके द्वारा अतिशय सुन्दर लगने वाली। चुम्बन का सम्बन्ध अर्थात अर्थ सुन्दर से जोड़ सकते हैं।

564. कामिनीयोगसन्तुष्टा– कामिनियों के द्वारा किये जाने वाले योग से सन्तुष्ट हो जाने वाली। पहले योगिनियाँ हुआ करती थी जो योग करती थी। कामिनियों के योग से प्रसन्न हो जाने वाली।

565. कामिनीयोगभोगदा–कामिनियों को योग और भोग देने वाली। कामिनियों के कारण विभिन्न प्रकार के भोगों को प्रदान करने वाली।

566. कामिनीकुण्डसम्मग्ना– कामिनियों के सौन्दर्य रूपी कुण्ड में निमग्न होने वाली।

567. कामिनीकुण्डमध्यगा– कामिनियों के सौन्दर्य रूपी कुण्ड के मध्य में विचरण करने वाली।

568. कामिनीमानसाराध्या– कामिनियों के हृदय द्वारा आराधना करने योग्य। वामन आप्टे के संस्कृत हिन्दी शब्दकोष में मानसम् का अर्थ मन, हृदय दिया गया है।

569. कामिनीमानतोषिता– कामिनियों के मान (सम्मान) के द्वारा सन्तुष्ट होने वाली। यदि व्यक्ति कामिनियों को सम्मान देता है तो देवी उस व्यक्ति से सन्तुष्ट (प्रसन्न, तृप्त) हो जाती हैं।

570. कामिनीमानसञ्चारा– कामिनियों में अर्थात स्त्रियों में मान का संचार करने वाली। इसके कारण ही स्त्रियों में यह मान या गर्व आ जाता है कि मैं दूसरों से अधिक हूँ। मैं दूसरों से अधिक सुन्दर या गुणवान हूँ ऐसा स्त्रियाँ अपने आपको मानने लगती हैं। रूठने का गुण भी मान का आना है। कामिनियों के मान से प्रसन्न होकर संचरणशील।

571. कालिका– समय की अधिष्ठात्री देवी या समय पर नियन्त्रण करने वाली। आपने भूतकालिक, भविष्यकालिक ये शब्द सुने होंगे। कालिका अर्थात समय से सम्बन्धित देवी। कलयति घातयति दण्डयति इति कालिका अर्थात जो शत्रुओं पर आघात करे वह कालिका है। इस प्रकार कालिका का अर्थ हुआ शत्रुओं पर आघात करने वाली।

572. कालकालिका– काल की भी कालिका अर्थात काल पर भी शासन करने वाली या काल को मारने वाली।

573. कामा– इच्छा स्वरूपा। कामदेव स्वरूपा। कामदेव की शक्तिस्वरूपा।

574. कामदेवी– काम की देवी। कामदेव जिनकी आराधना करते हैं। दिव् धातु के कई अर्थों में एक अर्थ स्तुति करना है जिससे देवी शब्द बना और देवी का अर्थ हुआ जिनकी स्तुति की जाती है।

575. कामेशी– काम की ईश्वरी। इच्छाओं पर शासन करने वाली या नियन्त्रण करने वाली। इच्छा को पैदा करने वाली। पूर्व जन्म के संस्कार भोगने के लिए उसे पाने के लिए इच्छा पैदा करने वाली। काम के जितने भी भेद हैं उनकी ईश्वरी अर्थात पैदा करने वाली। कामदेव की उपास्या।

576. कामसम्भवा– काम से उत्पन्न होने वाली। काम (मनुष्य की इच्छा/ ईश्वर की इच्छा) से सत्तावान। सम्भवा का एक अर्थ सत्तावान भी है। उपनिषद में सम्भूति शब्द आया है जिसका अर्थ है सम्यक् सत्ता। काम (इच्छा) रूपी सत्ता वाली।

577. कामभावा– काम के रूप में सत्ता वाली। काम भावना के रूप में सत्ता वाली। काम ही है सत्ता जिसकी अर्थात काम स्वरूपा या इच्छा स्वरूपा। काम का अर्थ है काम भावना, इच्छा। भवति इति भाव अर्थात पदार्थ। भू सत्तायाम् धातु से भाव का अर्थ है सत्ता। काम की भावना से सुशोभित।

578. कामरता– विषयों में लगी हुई। इच्छा में लगी हुई अर्थात इच्छा शक्ति में लीन। काम में संलग्न रहने वाली। भगवान शिव से लगी हुई अर्थात उनके साथ हमेशा रहने वाली। कामदेव से प्रसन्न। रत का एक अर्थ प्रसन्न भी होता है।

579. कामार्त्ता– सृष्टि की उत्पत्ति के लिए काम से व्याकुल। यहाँ काम का अर्थ कामशक्ति अर्थात कामवासना है। काम का अर्थ इच्छा या मनोरथ भी होता है। कामान् दातुम् आर्ता इति कामार्ता। मनोरथ को पूरा करने के लिए हर समय तैयार। अतिशय बढ़े काम से पीड़ित हो जाने वाली।

580. काममञ्जरी– उपासकों की कामनाओं की मंजरी अर्थात समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाली मंजरी तुल्य। कामदेव के समान अत्यन्त सुन्दर मंजरी तुल्य या पुष्प तुल्य। काम की मंजरी अर्थात काम की उत्कृष्ट रूप की कला। सुन्दर मंजरीस्वरूपा अर्थात लक्षणा से अर्थ होगा सुन्दर मंजरी धारण करने वाली। भाला चले आ रहे हैं अर्थात भाला को धारण करने वाले चले आ रहे हैं, यह है लक्षणा का एक प्रकार।

581. काममञ्जीररणिता– कामनाओं को पूरा करने वाले वाद्य विशेष के रूप में शब्द करने वाली अर्थात वरदान देते समय शब्द करती है। मंजीर एक प्रकार का वाद्य है। काम रूपी मंजीरों से जिनका गुणगान किया जाता है।

582. कामदेवप्रियान्तरा– जो कामदेव की दूसरी पत्नी की तरह है। काम के कारण अर्थात काम देव से जिनका हृदय सुन्दर या अच्छा हो जाता है।

583. कामकाली– कामनाओं को पूरा करने वाली काली। कल्पित मनोरथों को पूरा करने वाली काली। इच्छानुसार काली के स्वरूप को धारण करने वाली।

584. कामकला– शिव की शक्ति स्वरूपा। काम का एक अर्थ शिव है और कला का एक अर्थ शक्ति है। शिव और शक्ति के मिलने से उत्पन्न प्रथम अभिव्यक्त पदार्थ स्वरूपा। शिव और शक्ति के मिलने से सर्वप्रथम जिस पदार्थ की उत्पत्ति होती है वह है कामकला और कामकला से ही सृष्टि का विकास हुआ है। काम देव की कला अर्थात उत्कृष्ट स्वरूप वाली।

585. कालिका– काली घटा के समान गुणों वाली अर्थात मनोरथों को बरसाने वाली अर्थात कामनाओं को पूरा करने वाली। कालिका का एक अर्थ काली घटा भी होता है। जिस प्रकार काली घटा वर्षा करती है उसी प्रकार कालिका देवी अभीष्टों की वर्षा करती हैं, अभीष्ट पूरा करती है। काल ग्रसित करता है या खा जाता है। सबको अपने में समाने वाली कालिका है। जिनके वक्ष स्थल पर काला चिन्ह है या शरीर का रंग काला है।

586. कमलार्च्चिता– लक्ष्मी द्वारा पूजित। अर्चना और पूजा में अन्तर यह है कि अर्चना में शास्त्र में जितने भी पदार्थ बताये गये हैं, उन सभी का चढ़ाना अनिवार्य है जबकि पूजा में जितने उपलब्ध हो जायें, या न भी उपलब्ध हों उस सहित स्तुति की जाती है। पूजा में मानसिक रूप से भी पदार्थों को चढ़ा सकते हैं।

587. कादिका– आदि प्रजापतिस्वरूपा। सबसे पहले प्रजाओं को उत्पन्न करने वाली। क अर्थात प्रजापति अर्थात प्रजा को उत्पन्न करने वाला। प्रजा का आरम्भ करने वाली। प्रजाओं को यज्ञ के साथ उत्पन्न किया गया। क का एक अर्थ सुख भी होता है। सुख का आदि स्वरूप या सुख जिनसे आरम्भ होता है यह अर्थ भी किया जा सकता है। सुख, सौन्दर्य आदि से परिपूर्ण रहने वाली। क का अर्थ है सुख।

588. कमला– कमल वाली अर्थात कमल में निवास है जिनका या हाथ में कमल धारण किये हुए हैं। कमलम् अस्या अस्ति इति कमला अर्थात कमल वाली अर्थात कमल से युक्त। लक्ष्मी से अभेद है जिनका। जो अपनी उपस्थिति से जल को सुशोभित करती हैं। कम् जलम् अलति इति कमला। शब्दकल्पद्रुम के अनुसार काम्यते इति कमला। जो लोगों द्वारा चाही जाती है अर्थात लोग जिसे प्राप्त करना चाहते हैं वह कमला है। रूपया धन तो सभी प्राप्त करना चाहते हैं।

589. काली– उत्पन्न सभी पदार्थों की आयु की गणना करने वाली अर्थात यह तय करने वाली कि किसको कितने समय तक रहना है। कलयति का एक अर्थ है गणना करना।

590. कालानलसमप्रभा– कालाग्नि (प्रलयाग्नि) के समान कान्ति वाली। कालाग्नि एक भैरव का नाम है जो पीले रंग से चित्रित किया जाता है। मृत्यु के देवता की अग्नि को भी कालाग्नि कहा जाता है। कल्प की समाप्ति पर होने वाली प्रलय के समय जलने वाली आग को भी कालाग्नि कहते हैं। कालाग्निरुद्र रुद्र का एक रूप है।

591. कल्पान्तदहना– कल्प के अन्त की अग्नि स्वरूपा।

592. कान्ता– अतिशय सुन्दर स्वरूप वाली। कान्त अर्थात मनोहर। ब्रह्मा का अन्त करने वाली। क का अर्थ है ब्रह्मा। सुख की पराकाष्ठा, क का अर्थ है सुख। जिसको सभी चाहते हैं, कमु कान्तौ धातु होती है जिसका अर्थ होता है चाहना। दुष्टों के सुख का अन्त करने वाली। सिर का अन्त करने वाली अर्थात काट डालने वाली। युद्ध में राक्षसों के सिरों को काट देने वाली। क का अर्थ है सिर। सिर से ज्ञान अर्थ ले सकते हैं। ज्ञान की पराकाष्ठा स्वरूपा। कान्त + आ, आ का अर्थ है देना। भक्तों को सुख की पराकाष्ठा या ज्ञान की पराकाष्ठा देने वाली।

बन्धन अर्थात संसार से बन्धन को नष्ट करने वाली। उपताप नष्ट करने वाली। शत्रुओं द्वारा किये जा रहे दमन को नष्ट करने वाली। एकाक्षरी कोष में क का अर्थ बन्धन, उपताप, दमन दिया गया है।

593. कान्तारप्रियवासिनी– अरण्य (जंगल) में रहना जिसे ज्यादा अच्छा लगता है। यह अर्थ त्रिपदी बहुब्रीहि समास से आयेगा। कान्तारे प्रियः वासः यस्या सा। दुर्गम जंगल जिनके प्रिय निवास स्थान हैं।

594. कालपूज्या– काल अर्थात यमराज के द्वारा पूजनीय।

595. कालरता– काल के साथ जुड़ी हई अर्थात काल से अभिन्न है। काल अर्थात समय जो सबकी आयु गिन रहा है। समय के अनुसार विविध विधान करने वाली। काल (शिव) से जुड़ी हुई। शिव से प्रसन्न। यमराज से प्रसन्न। शनि से प्रसन्न। म अक्षर से जुड़ी हुई। संहार में लगी हुई। प्रत्येक पल किसी न किसी पदार्थ का एवं प्राणियों के शरीर की कोषिकाओं का नाश हो रहा है।

596. कालमाता– कालों को भी उत्पन्न करने वाली। काल का अर्थ है भूत, वर्तमान, भविष्य। काल अर्थात यमराज का भी भरण पोषण करने वाली। शिव की रक्षा करने वाली। माता शब्द की एक व्युत्पत्ति है – माति इति माता अर्थात जो रक्षा करे, वह माता है।

597. कालिनी– सृष्टि निर्माण करना या संहार करने के स्वभाव वाली। आयु गिनने के स्वभाव वाली। कलयितुम् शीलम् अस्या सा कालिनी। कल् धातु में णिनि प्रत्यय लगाने से कालिनी शब्द बनेगा। णिनि प्रत्यय कभी–कभी स्वभाव अर्थ देते है। कल् धातु का अर्थ है निर्माण करना, संहार करना, गिनना। काल शब्द में भी णिनि प्रत्यय लगाने से कालिन् शब्द बनेगा जो पुल्लिंग में एक वचन में काली एवं स्त्रीलिंग में कालिनी होगा। इस प्रकार कालिनी का अर्थ हुआ समय शक्ति को धारण करने वाली। देवी ने पहले समय की शक्ति को उत्पन्न किया और फिर उस शक्ति से संसार को संचालन कर रही है। णिनि प्रत्यय युक्त अर्थ भी देता है। काल वाले भगवान शिव की गृहिणी। काल वाले अर्थात ग्रास या संहार करने वाले अर्थात भगवान शिव। कालः अस्य अस्ति इति कालः। काली अर्थात जगत का ग्रास करने वाली एवं कालिनी अर्थात जगत का ग्रास करने वाले शिव की पत्नी। काल स्वरूपा या काल से युक्त।

598. कालवीरा– काल स्वरूपा पराक्रमी। काल (शिव या यमराज) के समान पराक्रम वाली या बहादुर। यमराज बड़ों बड़ों के प्राण हरण कर लेते हैं अतः पराक्रमी हैं। समय के विषय में अद्वितीय वीर (समय के अनुसार विधान करने वाली)। समय की माँग होने पर अत्यन्त पराक्रमी रूप धारण करने वाली। वि + ईरयति से भी वीरा शब्द बन सकता है जिसका अर्थ होगा विशेष रूप से प्रेरित करने वाली। शिव का विशेष रूप से प्रेरित करने वाली कि सृष्टि का उत्पादन करो। समय को विशेष रूप से प्रेरित करने वाली।

599. कालघोरा– काल अर्थात यमराज के समान भयंकर आकृति वाली। समय के अनुसार दुष्टों के समक्ष भयंकर रूप धारण करने वाली।

600. कालसिद्धा– काल की तरह नित्य। सिद्ध का एक अर्थ नित्य भी होता है। जिस तरह से काल नित्य है उसी तरह से देवी भी नित्य हैं। काल अर्थात समय। काल की तरह सिद्ध। समय के द्वारा या समय के अनुसार या समय आने पर सिद्ध हो जाने वाली।

601. कालदा– काल (मृत्यु) को खण्डित कर देने वाली अर्थात नष्ट करने या रोक देने वाली। यहाँ शब्द के अन्त में दा अक्षर दो अवखण्डने का है, न कि दा ददाति का। भक्तों को समय अर्थात अच्छा समय या अच्छा अवसर देने वाली। सुखद समय को देने वाली।

602. कालाञ्जनसमाकारा– काले अंजन के समान काली आकृति वाली अर्थात काले रंग वाली।

603. कालञ्जरनिवासिनी–कालंजर में निवास करने वाली।

604. कालऋद्धि– समय के अनुसार ऋद्धि (धन धान्य, सम्पत्ति की वृद्धि) प्रदान करने वाली।

605. कालवृद्धि– समय के अनुसार अपने भक्तों की वृद्धि करने वाली (धन–सम्पत्ति, ज्ञान, गुण, ऐश्वर्य आदि सभी में)।

606. कारागृहविमोचिनी– भक्तों को कारागार से छुटकारा दिलाने वाली। संसार रूपी कारावास से छुटकारा दिलाने वाली।

607. कादिविद्या– जिस विद्या (मन्त्र) के आदि में क अक्षर है, तत्स्वरूपा। कामदेव द्वारा उपासित श्रीविद्या स्वरूपा। सुखादि विद्याओं के स्वरूप वाली। क का एक अर्थ सुख भी होता है।

608. कादिमाता– कादि मन्त्र को उत्पन्न करने वाली। ललिता त्रिपुर सुन्दरी देवी माँ का जो मन्त्र क से आरम्भ होता है उसको उत्पन्न करने वाली। सुखादि समृद्धियों की जननी।

609. कादिस्था– कादि मन्त्र में स्थित। सुख, सम्पत्तियों में निवास करने वाली।

610. कादिसुन्दरी– क आदि में है जिसके ऐसे शब्दों वाली सुन्दरी अर्थात कमनीया, कांचनवर्णा ऐसे विशेषणों से युक्त सुन्दरी। ब्रह्मा, विष्णु महेश की गृहिणी। एकाक्षरी कोष के अनुसार क का अर्थ है ब्रह्मा, विष्णु और महेश। एकाक्षरी कोष में क का अर्थ ब्रह्मा और विष्णु दिया गया है और साथ में ब्रह्म दिया गया है। ब्रह्म का तात्पर्य है शिव। अतिशय सुन्दर स्वरूप वाली।

611. काशी– काशी तीर्थ स्वरूपा। जो प्रकाशित होती है। कम् सुखम् आशयति आस्वादयति इति काशी अर्थात सुख का आस्वादन कराने वाली। काशी तीर्थ के समान अर्थात काशी तीर्थ की तरह मोक्ष देने वाली।

612. कांची– कांची तीर्थ स्वरूपा। कांची तीर्थ के समान अर्थात कांची तीर्थ के समान पुण्यदायिनी।

613. काञ्चीशा– कांची नगरी की ईश्वरी। कांची नगरी पर शासन करने वाली। कांची नगरी में रहने वाले लोगों की आराध्या।

614. काशीशवरदायिनी– शिव को भी वरदान देने वाली।

615. क्रींबीजा– क्रीं बीज स्वरूपा। क्रीं बीज वाली अर्थात जो इस बीज मन्त्र में शक्ति रूप से स्थित है या जिनके मन्त्रस्वरूप में यह बीज अवश्य होता है। क्रीं बीज का अर्थ है ब्रह्म शक्ति से सम्पन्न महामाया काली मेरे दुःखों को दूर करे या ब्रह्म शक्ति से सम्पन्न दुःख दूर करने वाली महामाया काली। क का अर्थ है काली, र का अर्थ है ब्रह्म, शक्ति, ई का अर्थ है महामाया और बिन्दु का अर्थ है दुःखहरण।

616. क्रींबीजाहृदया स्मृता– क्रीं बीज मन्त्र है हृदय में जिनके और भक्तों द्वारा सदैव स्मरण की जाने वाली।

617. काम्या– भक्तों के द्वारा चाही जाने योग्य अर्थात चाही जाने वाली। जिससे कामना की सिद्धि हो। काम्य यज्ञस्वरूपा अर्थात ऐसा यज्ञ जिससे किसी कामना की सिद्धि होती है।

618. काम्यगति– जहाँ जहाँ भक्त इच्छा करतें हैं वहाँ वहाँ गति वाली अर्थात वहाँ पहुँच जाती है। जिसने भी उन्हें पूजा ग्रहण करने के लिये या आहूति ग्रहण करने के बुलाया अर्थात इच्छा की वहाँ वहाँ पहुँच जाती है। एक ही समय में यदि हजार लोंगों ने बुलाया तो हजारों के यहाँ भी एक साथ पहुँच जाएंगी। श्रेष्ठ गति को देने वाली।

619. काम्यसिद्धिदात्री– चाही गई सिद्धियों या सफलताओं को देने वाली।

620. कामभू– इच्छाओं और मनोरथों का प्रभवस्थान अर्थात इच्छाएं और मनोरथ इसी से पैदा होते हैं। मनोरथों की सत्तास्वरूपा अर्थात मनोरथस्वरूपा। चैतन्य में ही इच्छा होती है। भू का अर्थ उत्पन्न करना भी होता है और सत्ता भी होता है। इच्छा को पैदा करने वाली अर्थात चैतन्य स्वरूपा। काम (इच्छा शक्ति) से उत्पन्न होने वाली।

621. कामाख्या– कामा यह नाम है जिनका। कामा या काम इस नाम रूप से बोली या पुकारी जाने वाली। कामा अर्थात इच्छाओं को देने वाली अर्थात इच्छा पूरी करने वाली, यह नाम है जिनका। कामा अर्थात काम+आ, काम का अर्थ है इच्छा और आ का एक अर्थ देना होता है। काम है आख्या अर्थात नाम जिनका। असम की कामाख्या देवी स्वरूपा। शिव और शिवा एक ही हैं। चाहे काम बोलो या कामा बोलो, दोनो एक ही हैं।

622. कालरूपा– कालस्वरूपा। काल का अर्थ है समय, मृत्यु, यमराज आदि। कालम् रूपयति इति कानरूपा अर्था काल का भी निर्माण करने वाली। रूप अर्थात जो दिखता है या अनुभव में आता है। काल, इस प्रकार से सूचित होने वाली या परिभाषित होने वाली।

623. कामचापविमोचिनी– कामदेव का धनुष अर्थात पुष्प धनुष, उसे छोड़ने वाली। कामस्य चापेन शरान् विमोचति अर्थात कामदेव के धनुष में तीरों को छोड़ने वाली अर्थात कामदेव के धनुष से तीर को छोड़ने में इसी का हाथ है। काम प्रहार से मुक्त कर देने वाली यह अर्थ भी हो सकता है। अपने उपासकों या भक्तों को कामभाव से मुक्त करने वाली। कामदेव के धनुष से दूर रहने वाली अर्थात मुक्त रहने वाली। काम रूपी धनुष से घायल हुए लोगों को छुटकारा दिलाने वाली।

624. कामदेवकलारामा– कामदेव की क्रीड़ाओं में अर्थात कामक्रीड़ाओं में रहना जिसे पूर्णतया पसन्द है। आराम अर्थात चारों ओर से रमण करना अर्थात वहाँ रहना पूर्णतया पसन्द है। कामदेवकला का अर्थ है कामक्रीड़ा या रतिक्रीड़ा। कामदेव की जो कला, उस कला रूपी उद्यान में विचरण करने वाली।

625. कामदेवकलालया– कामदेव की कलाओं (श्रृंगार चेष्टाओं) का आश्रय। कामदेव की कला ही है निवास जिनका। कला का तात्पर्य है श्रृंगार चेष्टायें जो कामसूत्र में वर्णित हैं। कामदेव प्रेम, शारीरिक आकर्षण, शारीरिक सुन्दरता के प्रतीक हैं। इनमें कामदेव की निपुणता है। इन्हें भी कामदेव की कला कह सकते हैं।

626. कामरात्रि– सुन्दर रात्रि स्वरूपा। कमु कान्तौ से काम का अर्थ सुन्दर भी होता है। रा दाने धातु से रात्रि बना है जिसका अर्थ है देने वाली। कामना को देने वाली अर्थात कामनाओं को पूरा करने वाली। कामदेव का संहार करने वाली। रात्रि का अर्थ संहार करने वाली होता है क्योंकि वह प्रकाश का दिन का संहार करती है। कामदेव को बढ़ाने वाली क्योंकि रात्रि कामदेव के प्रभाव को बढ़ाती है।

627. कामदात्री– इच्छाओं को देने वाली अर्थात इच्छाओं को पूरा करने वाली। इच्छानुसार विभिन्न प्रभाव को बढ़ाने वाली।

628. कान्ताराचलवासिनी– दुर्गम वन से युक्त पर्वत पर निवास करने वाली।

629. कालरूपा– काल को भी देखने वाली अर्थात उस पर नजर रखने वाली। कालम् रूपयति इति कालरूपा। कालस्वरूपा।

630. कालगति– समय की क्रियास्वरूपा। जगत को ग्रास बनाने वाली क्रियास्वरूपा। समय और जगत को ग्रास बनाने दोनों में अभेद है। गति का अर्थ क्रिया भी होता है। समय को भी चलाने वाली। शिव में है प्रवेश या दखल जिसका। गति का एक अर्थ है प्रवेश, पहुँच या दखल। शिव की क्रियास्वरूपा।

631. कामयोगपरायणा– कामनाओं को जोड़ने में परायण अर्थात निपुण अर्थात पूरा करने वाली। अप्राप्त की प्राप्ति ही योग है। समाधि अवस्था को भी योग कहतें है। इच्छित समाधि की अवस्था को भी प्राप्त कराने में लगी हुई या निपुण। काम से जोड़ने में लगी रहने वाली।

632. कामसम्मर्दनरता– कामदेव को नष्ट करने में लगी रहने वाली अर्थात अपने भक्तों में कामदेव के प्रभाव को समाप्त करने वाली।

633. कामगेहविकाशिनी– कामदेव के मन्दिर अर्थात जननेन्द्रिय को प्रकाशित करने वाली अर्थात उसका विकास करने वाली। यदि कामगेहविकासिनी शब्द है तो अर्थ होगा काम रूपी घर का विकास करने वाली या बढ़ाने वाली, कामदेव के मन्दिर अर्थात जननेन्द्रिय का विकास करने वाली।

634. कालभैरवभार्या– कालभैरव की पत्नी या शक्तिस्वरूपा। काल भैरव का भरण पोषण करने वाली।

635. कालभैरवकामिनी– कालभैरव की कामिनी अर्थात अतिशय प्रिय।

636. कालभैरवयोगस्था– काल भैरव नामक देवता जब योग लगाते हैं अर्थात समाधि लगाते हैं तो उनकी समाधि में रहने वाली। जीवात्मा और परमात्मा का ऐक्य योग है। चित्त की वृत्तियों का निरोध योग है। काल भैरव या शंकर जी जब योगावस्था में रहते हैं तब भी देवी स्थित हैं। काल भैरव के योग में स्थित रहने वाली।

637. कालभैरवभोगदा– काल भैरव को भी भोग प्रदान करने वाली। भोग अर्थात सांसारिक पदार्थ, सांसारिक सुखानुभूति

638. कामधेनु– कामधेनु स्वरूपा अर्थात भक्तों को उनकी इच्छानुसार सबकुछ देने वाली।

639. कामदोग्ध्री– जिनसे मनोरथों या अभीष्ट को दुहा जाता है अर्थात मनोरथ या अभीष्ट पूरे होते हैं। दोग्ध्री अर्थात जिसका दोहन किया जाता है। इच्छा (काम) के अनुसार समस्त भोगों को प्रस्तुत कर देने वाली।

640. काममाता– काम देव की जननी। प्राणियों में काम शक्ति या काम भाव की जननी।

641. कान्तिदा– सुन्दरता को प्रदान करने वाली। कान्ति ऐसी आभा या सौन्दर्य है जिसके कारण किसी के मुख मंडल को निहारने का मन करता है। जिसके कारण अर्थात जिसके रूप को देखकर मन स्वतः आकर्शित और प्रसन्न होता है। मन शान्त होने पर शरीर से कान्ति निकलती है। शरीर में प्राण ऊर्जा बढ़ने पर भी कान्ति निकलती है। (शोभा, कान्ति, दीप्ति, द्युति, आभा और प्रभा–यौवन, रूप अंगों की आकृति आदि के कारण जो शारीरिक सौन्दर्य है वह शोभा है। शोभा की परिभाषा साहित्य दर्पण एवं नाट्य शास्त्र में इस प्रकार दी गई है– रूप (शरीर के अंगों की बनावट), यौवन, आत्मशक्ति एवं पौष्टिक खाना खाने से जो शारीरिक सौन्दर्य होता है वह शोभा है। शोभा natural beauty है। पुरुष के सन्दर्भ में शोभा का प्रयोग उनके कुछ विशेष गुणों के लिए किया गया है। शोभा अर्थात distinguished merit. पुरुष के सन्दर्भ में शोभा (brilliant charector) की परिभाषा है skill in various things, heroism, energy eversion to mean activity emulation of best virtue. शोभा शब्द शुभ् धातु से बना है जिसका अर्थ है चमकना। शोभा के लिए अन्य शब्द हैं– beauty handsomeness, comeliness, graceful expression. कान्ति की परिभाषा इस प्रकार दी गई है–कामभाव या प्रेमभाव के उदय होने पर बढ़ी हुई शोभा (शारीरिक सौन्दर्य) कान्ति है। ऐसा कहते हैं कि मनुष्य में या अन्य प्राणियों में कामभाव जाग्रत होने पर उसकी शारीरिक सुन्दरता और बढ़ जाती है। इसके कारण वह सामने वाले व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करता है। ऐसा शारीरिक सौन्दर्य जो सामने वाले व्यक्ति को अपनी ओर आकर्शित करे, कान्ति है। कान्ति के कारण आकर्षण केवल प्रेमी प्रेमिका के रूप में ही नहीं होता, अन्य सम्बन्धों जैसे उपास्य–उपासक, माता–पिता, भाई–बहन, मित्र आदि के रूप में भी होता है। यहाँ काम भाव के कारण आकर्षक सौन्दर्य नहीं हुआ है। कान्ति को देवी देवता के सन्दर्भ में दिव्य गुण के रूप में देखा जाता है। यही कारण है कि देवी–देवताओं के नाम में भी कान्ति शब्द का प्रयोग आता है। ऐसा बढ़ा हुआ शारीरिक सौन्दर्य जो सामने वाले व्यक्ति के अन्दर भी प्रेम का भाव जाग्रत कर दे, उसे अपनी ओर आकर्षित करे कान्ति है। इसके

लिए बेहतर अंग्रेजी शब्द charming beauty होगा। ऐसा कहते हैं कि जब इन्द्रियाँ और मन शान्त होते हैं तो व्यक्ति के शरीर से कान्ति निकलती है। जब सत्वगुणों का आधिक्य होता है तो कान्ति अर्थात दूसरे को अपनी ओर आकर्षित करने वाली चमक या प्रभा निकलती है। कान्ति का अर्थ इच्छा भी होता है। देखने वाले व्यक्ति के अन्दर कान्ति युक्त व्यक्ति को प्राप्त करने की इच्छा होती है। चन्द्रमा की एक पत्नी का नाम भी कान्ति है। कान्ति के लिए charming beauty, radiance शब्द आता है।

दीप्ति की परिभाषा साहित्यदर्पण एवं नाट्यशास्त्र में इस प्रकार दी गई है– अतिविस्तीर्ण कान्ति दीप्ति है। जो अधिक तेजी से या अधिक मात्रा में आकर्षित करे वह बढ़ा हुआ शारीरिक सौन्दर्य जिसमें प्रेम भी सम्मिलित है, दीप्ति है। दीप्ति अर्थात extreme loveliness. High degree of charm is called radiance (दीप्ति) योग में कहा गया है नाड़ियों की शुद्धि होने पर या प्राणायाम सिद्ध होने पर शरीर में जो तीव्र चमक आ जाती है, वह दीप्ति है। दीप्ति अर्थात radiation, great brilliance. जैन ग्रन्थ में आभा मण्डल को बनाये रखने वाली शक्ति दीप्ति कही गई है। अतः दीप्ति का अर्थ है power of retention of aura. अंग्रेजी में दीप्ति के लिए radiation, great brilliance, flash, flame, refulgence शब्द बेहतर शब्द हैं। प्रभा में भी flash शब्द आता है पर दीप्ति में flash और flame पर अधिक जोर दिया गया है। दीप्ति का प्रयोग ज्ञान के सन्दर्भ में भी होता है। दीप्ति का एक अर्थ feeling of enlightment है। कोई चीज दीप्त हुई अर्थात flash में पता चला। चकाचौंध का अर्थ है आँखें देख पाने में सक्षम नहीं है और बन्द हो जाती हैं। इस प्रकार दीप्ति में चकाचौंध करने वाली चमक भी है। दीप्ति शब्द का उद्दीप्त और दीपक से सम्बन्ध है। दीप्ति भड़कीला प्रकाश, चकाचौंध करने वाला प्रकाश है। दीपक की तरह स्वयं को प्रकाशित करता है और दूसरे को भी प्रकाशित करता है। भौतिक विज्ञान में fluorescent शब्द में दीप्ति शब्द का प्रयोग किया गया है।

द्युति शब्द विष्णुसहस्रनाम में आया है और वहाँ पर एक शब्द आया है ओजस्तेजोद्युतिधरः। द्युति शब्द द्युत् एवं दिव् दोनों धातुओं से बन सकता है और दोनों धातुओं का अर्थ है चमकना। यहाँ जितने भी शब्द आये हैं उन सबमें कुछ न कुछ चमक अवश्य है पर वे चमक के साथ कुछ और भी कर रहे होते हैं जैसे प्रभा चारों ओर रोशनी भरती है, दीप्ति चकाचौंध भी कर सकती है, कान्ति अपनी ओर आकर्षित करती है। द्युति शब्द सिर्फ चमक की ओर इशारा कर रहा है अर्थात द्युति का अर्थ चमक कर सकते हैं। द्योतनात् इति द्युति से द्युति का अर्थ निकलता है कि वस्तुओं को प्रकाशित करने वाली शक्ति या ऊर्जा द्युति है। जो ऊर्जा या शक्ति आँखों से जुड़कर किसी वस्तु को अभिव्यक्त कर दे अर्थात दिखा दे या ज्ञान करा दे वह द्युति है। एक स्थान पर यह पढ़ने को मिला है कि आत्मा जिस आकाश में स्थित है उसके सबसे समीप की रोशनी या प्रकाश द्युति है, सम्भवतः द्यु का अर्थ आकाश लेकर ऐसा अर्थ निकाला गया हो। वहाँ स्थूल शरीर के बल को ओज कहा गया है एवं सूक्ष्म शरीर की शक्ति को तेज कहा गया है तथा कारण शरीर में रहने वाली ज्योति या प्रकाश को द्युति कहा गया है। कारण शरीर आत्मा के सबसे समीप रहने वाले आकाश की तरह है अतः वहाँ की चमक द्युति है। मेरी भव बाधा हरौ राधा नागरि सोये, जा तन की झाईं परे श्याम हरित द्युति होए। सम्भवतः ईश्वर के सबसे नजदीक प्रकाश या रोशनी को द्युति कहते हैं।

प्रभा में प्र का अर्थ प्रकृष्ट अर्थात बहुत अधिक है और भा का अर्थ है रोशनी या प्रकाश अतः प्रभा का अर्थ हुआ बहुत अधिक मात्रा में फैली हुई रोशनी अर्थात चारों ओर फैली हुई रोशनी/प्रकाश। सूर्य, चन्द्रमा या अन्य नक्षत्र चारों ओर बहुत अधिक मात्रा में रोशनी या प्रकाश फैलाते हैं अतः उनके लिए प्रभा शब्द का प्रयोग करना उचित होगा। प्रभा अर्थात बहुत दूर तक चारों ओर फैली हुई रोशनी या प्रकाश। आपने आदित्यप्रभा, समप्रभा ऐसे शब्दों को सुना होगा। अंग्रेजी में इसके लिए splendor शब्द करना उचित रहेगा। अंग्रेजी शब्दकोशों में

splendor शब्द का अर्थ diffusing, shedding of light किया गया है अर्थात वह प्रकाश या रोशनी जो स्रोत से निकलकर फैल जाए और अपने चारों ओर की जगह भर दे। प्रभा अर्थात spreading/ scattering of light in many direction, light is not concentrated. प्र का अर्थ प्रारम्भ भी लेते हैं अतः रोशनी या प्रकाश के प्रारम्भ को भी प्रभा कह देते हैं। प्रभातकाल, यह नाम सम्भवतः इसी लिए पड़ा होगा।

प्रभा के लिए efflulgence, blaze शब्द ठीक है। efflulgence is brightness taken to extreme. You may be dazelled, stunned by it or even overcome by it. आभा के लिए lustre, tint, shade शब्द ठीक है। आभा एक प्रकार से कोमल चमक या मुलायम चमक है। lustre is gentle shining of light. कहीं पर lustre का अर्थ very shining भी किया गया है। वह शक्ति या तत्व जिसके योग से वस्तुओं आदि का रूप आँख को दिखता है, आभा है (कुछ लोग यह परिभाशा दीप्ति के लिए भी करते हैं।)। light (रोशनी) वह है जो चीजों को दृश्य बनाती है। brightness is intensity of light, perceived lumination. आभा अर्थात चारों ओर से निकलने वाला प्रकाश जो व्यक्ति या वस्तु से कुछ आगे तक होता है, कितना आगे तक जाएगा, यह शुद्धता और पवित्रता पर निर्भर करता है। आपने आभामण्डल या aura का नाम सुना होगा। आ अर्थात समन्तात् अर्थात चारों ओर से अर्थात शरीर के चारों ओर से निकलने वाला प्रकाश। देवी देवताओं के चेहरे के चारों ओर ring के रूप में एक गोला सा दिखाई देता है जो उनके अन्दर की ऊर्जा का प्रकटीकरण है। वस्तु में पूरी वस्तु के चारों ओर एवं मनुष्य में प्रायः चेहरे के चारों ओर दिखाया जाता है।

वह अदृश्य प्रकाश या ऊर्जा जो मनुष्य या वस्तु को चारों ओर से घेरे रहती है, आभा है। आ का अर्थ है समन्तात् अर्थात चारों ओर से और भा का अर्थ है रोशनी, प्रकाश। आपने आभामण्डल या aura का नाम अवश्य सुना होगा। संस्कृत में आ का अर्थ ईषत् अर्थात कुछ भी होता है। अतः आभा शब्द कुछ या कम मात्रा में चमकते हुए प्रकाश को भी कहते हैं। आभायन या आभाकरण को अंग्रेजी में tinging कहते हैं। आभा को अंग्रेजी में में tinge, shade, lustre, shining भी कहते हैं। प्रभा और द्युति में अन्तर क्या है। प्रभा अधिक तीक्ष्ण हो सकती है एवं फैलती भी है। सूर्य की प्रभा पूरे लोक में फैलती है, पर अन्धकार में अनुपस्थित हो जाती है। द्युति सर्वव्यापक है और अन्धकार में भी रहती है। द्युति की रोशनी प्रभा की तरह तीक्ष्ण नहीं होती। द्युति और प्रभा दोनों पूरे आकाश में फैलते हैं पर द्युति चकाचौंध वाला नहीं है। व्यापकता और तीक्ष्णता में प्रभा का स्थान सर्वोपरि है किन्तु व्यापकता और अतीक्ष्णता में द्युति का स्थान सर्वोपरि है। कही पर द्युति के लिए splendor, illumination, radiance शब्द आये हैं। छटा के लिए halo शब्द आया है। shining is sending out or reflecting of light(रोशनी या प्रकाश). प्रभा अर्थात shining brightly. यहाँ जो शब्द प्रयोग किये गये गए हैं उनमें चमक तो है ही। भा दीप्तौ धातु है अतः प्रभा दीप्ति से तो बढ़कर है। प्र अर्थात प्रकृष्ट अर्थात श्रेष्ठ अर्थात बढ़कर।)

642. कामुका– इच्छा से युक्त। किसी भी प्रकार की अच्छी इच्छा से युक्त। भक्तों का कल्याण हो, ऐसी इच्छा से युक्त। अपने पति के प्रति काम भावना से युक्त।

643. कामुकाराध्या– कामी पुरुषों, जो ईश्वर को मानने वाले हैं, द्वारा भी आराधना करने योग्य। यहाँ सन्धि विच्छेद कामुक + आराध्या, इस प्रकार से होगा। शब्दकल्पद्रुम में कामुका का अर्थ धन सम्पत्ति की अभिलाषा करने वाली स्त्री एवं कामुकी का अर्थ काम वासना से युक्त स्त्री किया गया है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ

धन की कामना रखने वाली स्त्रियों द्वारा आराधनीया होगा। यहाँ सन्धि विच्छेद कामुका + आराध्या, इस प्रकार से होगा। धन सम्पत्ति आध्यात्मिक भी होती है और सबसे बड़ा धन है ईश्वर एवं उनका नाम।

644. कामुकानन्दवर्द्धिनी– कामी पुरुषों के आनन्द को बढ़ाने वाली। धन की कामना रखने वाली स्त्रियों के आनन्द को बढ़ाने वाली अर्थात उन्हें धन सम्पत्ति देने वाली क्योंकि तभी आनन्द बढ़ेगा। धन सम्पत्ति आध्यात्मिक भी होती है और सबसे बड़ा धन है ईश्वर एवं उनका नाम।

645. कार्त्तवीर्या– कार्त्तवीर्य द्वारा उपासित। कृतवीर्य का अर्थ है काम करने में पराक्रम। वीरता पूर्वक कार्य करने वाला कृतवीर्य हुआ और कृतवीर्य का बेटा कार्त्तवीर्य हुआ। कार्त्तवीर्य स्वरूप वाली।

646. कार्त्तिकेया– कार्तिकेय के स्वरूप वाली या कार्तिकेय की शक्ति स्वरूपा।

647. कार्त्तिकेयप्रपूजिता– भगवान कार्तिकेय के द्वारा विशेष रूप से पूजी गई।

648. कार्या–स्थूल जगत स्वरूपा। स्थूल जगत ईश्वर का कार्य है। क का अर्थ सुख भी होता है। काय (सुखाय) आर्या, केन सुखेन आर्या यह उत्पत्ति भी हो सकती है। सुख के लिये पूज्य या सुख रूप से पूज्य। आर्या का अर्थ पूजनीया होता है। सत्कार्य स्वरूपा। कार्य स्वरूपा। कार्यों वाली अर्थात समस्त कार्यों को सम्पन्न करने वाली, कार्याणि अस्या सन्ति इति कार्या (कार्यों वाली)।

649. कारणदा– जगत को उत्पन्न करने वाले पंचभूत आदि कारणों को देने वाली अर्थात उत्पन्न करने वाली। जगत को उत्पन्न करने वाले कारण अर्थात ब्रह्मा जी को देने वाली या उनको उत्पन्न करने वाली। कारणों को प्रदान करने वाली अर्थात कारणों की कारण।

650. कार्यकारिणी–कार्यों को सम्पन्न करने वाली। देवताओं के कार्यों को सम्पन्न करने वाली। जगत की सृष्टि, पालन और संहार का कार्य सम्पन्न करने वाली।

651. कारणान्तरा– विभिन्न कारणों के मध्य में रहने वाली।

652. कान्तिगम्या– चमक से प्रतीत अर्थात भासित होने वाली अर्थात जानी जाने वाली। अतिशय सुन्दर स्वरूप द्वारा ध्यान करने योग्य।

653. कान्तिमयी– कान्ति से युक्त। कान्ति का तात्पर्य है स्वरूप की उज्जवलता।

654. कात्या– कत ऋषि से सम्बन्धित या उनके स्वरूप वाली। ब्रह्मनिष्ठ ऋषियों की शक्ति स्वरूपा। कात्य का एक अर्थ ब्रह्मनिष्ठ है। कत ऋषि के गोत्र मे उत्पन्न अर्थात् कत ऋषि के वंशजों वाली अर्थात् उनके द्वारा उपासनीया। कत ऋषि के गोत्र में उत्पन्न कात्य हुये। कात्याः अस्या सन्ति इति कात्या (कात्य वाली अर्थात् उनसे युक्त अर्थात् उनके द्वारा उपासनीया, उपासना से व्यक्ति जुड़ जाता है।) ब्रह्मनिष्ठ साधक को भी कात्य कहते है। ऐसे ब्रह्मनिष्ठ साधकों द्वारा उपासनीया। ब्रह्मनिष्ठ अर्थात् हमेशा ब्रह्म के चिन्तन में लगे रहते है। कम् सुखम् तनोति इति कतः, जो सुख को देता है या विस्तार करता है वह कत है। देवता या सिद्ध सुख को देते है अतः उन्हें कत कहा जा सकता है। सुख देने वाले देवताओं या महापुरुषों के द्वारा उपासनीया। परम सुख अर्थात आनन्द तो ब्रह्म ही देता है अतः ब्रह्म ही कत है। काति+यत् प्रत्यय से कात्या शब्द बन सकता है। काति का अर्थ शब्दकोश में इच्छुक दिया गया है। भगवत् प्राप्ति के इच्छुक या मोक्ष प्राप्ति के इच्छुक उपासकों के लिए अनुकूल या हितकारी, इस शब्द का यह अर्थ हुआ।

655. कात्यायनी– कत ऋषि के वंश में उत्पन्न अर्थात ऋषि कात्यायन की पुत्री रूप में प्रकट। ब्रह्मनिष्ठ ऋषियों द्वारा जिन्हें प्राप्त किया जाता है। कात्यैः अय्यते इति कात्यायिनी।

656. का– ब्रह्म की शक्ति स्वरूपा। सूर्य की शक्ति स्वरूपा। क का अर्थ सुख या ब्रह्म या सूर्य है। दुर्गा या

पृथ्वी स्वरूपा। दुर्गा या पृथ्वी की शक्ति स्वरूपा। एकाक्षरी कोष में का का अर्थ है दुर्गा, भूमि। क का अर्थ है ब्रह्म, स्वर्ग, सुख। आ का अर्थ है देना, नाश करना, शक्ति। ब्रह्म की शक्ति स्वरूपा। स्वर्ग देने वाली। सुख स्वरूपा। सुख देने वाली।

657. कामसारा– परम इच्छा स्वरूपा। सार का अर्थ है श्रेष्ठ। इच्छा का कारण। इच्छा या कामभाव की तत्व स्वरूपा। काम देव की सार तत्व। कामसार नामक ग्रन्थस्वरूपा।

658. काश्मीरा– कश्मीर में उत्पन्न अर्थात प्रकट। कश्मीर में प्रकट शैव दर्शन के स्वरूप वाली। कश्मीर में प्रकट या उत्पन्न काश्मीर है। केसर कश्मीर में उत्पन्न होता है अतः वह काश्मीर है। केसर वाली अर्थात जिन्हें केसर चढ़ाया जाता है। काश्मीर स्वरूप वाली अर्थात कश्मीर में होने वाली।

659. काश्मीराचारतत्परा– कश्मीर में उत्पन्न केसर चढ़ाकर की जाने वाली पूजा में तत्पर अर्थात ऐसी पूजा जिन्हें प्रिय है। यहाँ आचार का अर्थ है पूजा। कश्मीर में होने वाले शैव दर्शन में बताये गये आचरण अथवा क्रिया कलाप से जुड़ी हुई हैं अर्थात ऐसा आचरण करने वाली। कश्मीर के सुन्दर आचारों में तत्पर रहने वाली।

660. कामरूपाचाररता– कामरूप देश के आचार में लगी रहने वाली अर्थात हमेशा पालन करने वाली या ऐसे आचरण से प्रसन्न होने वाली। रता का अर्थ है लगी हुई, प्रसन्न। इच्छानुसार रूप धारण कर आचार करने वाली अर्थात मनमौजी स्वभाव वाली। जैसा चाहे वैसा आचार करने वाली अर्थात जो मन में आता है वैसा करने वाली। शास्त्र में बताये गये कर्तव्य कर्म आचार हैं।

661. कामरूपप्रियंव्वदा– इच्छानुसार रूप धारण करने वाली और प्रिय बोलने वाली। कामरूपा च असौ प्रियंवदा इति कामरूपप्रियंवदा। इच्छानुसार रूप धारण करके प्रिय बोलने वाली यह अर्थ भी कर सकते हैं। कामरूप के अनुसार प्रिय बोलने वाली।

662. कामरूपाचारसिद्धि– इच्छानुसार रूप धारण करने सम्बन्धी क्रिया की सिद्धि है जिनके पास। आचार का अर्थ है क्रिया, कर्म, प्रयोग। कामरूप (असम का शक्तिपीठ) के आचार से सिद्धि प्रदान करने वाली।

663. कामरूपमनोमयी– इच्छानुसार रूप धारण करने वाली और मन स्वरूपा। मन स्वरूपा का अर्थ होता है संकल्प विकल्प करने वाली, ज्ञान स्वरूपा। मन संकल्प विकल्प करता है। मन ज्ञाने धातु से मन का अर्थ ज्ञान भी होता है।

664. कार्त्तिकी– कार्तिकेय की शक्ति स्वरूपा। कार्तिक पूर्णिमा स्वरूपा। कार्तिक पूर्णिमा की तरह सुन्दर।

665. कार्त्तिकाराध्या– कार्तिक पूर्णिमा पर विशेष रूप से आराधना करने योग्य।

666. काञ्चनारप्रसूनभू– कचनार के पुष्प में स्थित रहती हैं जो या कचनार के पुष्प को पैदा करने वाली। कोई शक्ति ही पुष्प पैदा करेगी और हर शक्ति देवी का रूप है।

667. काञ्चनारप्रसूनाभा–कचनार के पुष्पों के समान सुन्दर है कान्ति जिनकी।

668. काञ्चनारप्रपूजिता– कचनार के पुष्प के द्वारा विशेष रूप से पूजित।

669. काञ्चरूपा– चमकते रूप वाली। जो दीप्त हो वह कांचन या कांच है। सुन्दर रूप वाली।

670. काञ्चभूमि– प्रजापति का पूजन करने वाली भूमि (व्यक्ति) स्वरूपा अर्थात प्रजापति को सम्मान देने वाली भूमि या व्यक्ति स्वरूपा। क का अर्थ प्रजापति है। अंचति का अर्थ पूजना अर्थात सम्मान करना होता है।

671. कांस्यपात्रप्रभोजिनी– काँसे के बर्तन में विशेष रूप से भोजन करने वाली।

672. कांस्यध्वनिमयी– काँसे की आवाज की तरह आवाज वाली। सुन्दर मधुर ध्वनि से युक्त।

673. कामसुन्दरी— कामदेव की सुन्दरी (पत्नी) रति के समान सुन्दर। स्वेच्छानुरूपा सुन्दरी अर्थात स्वेच्छानुसार सुन्दर रूप धारण करने वाली। अतिशय सुन्दर स्वरूप वाली।

674. कामचुम्बना— स्वेच्छानुसार छू लेने वाली अर्थात स्वेच्छानुसार किसी को छूकर अपनी कृपा की बरसात करने वाली अर्थात जिसे चाहें, छू लें अर्थात राजा बना दें। अपने पति के साथ कामक्रिया में चुम्बन में तत्पर रहने वाली।

675. काशपुष्पप्रतीकाशा— काश पुष्प के समान सुन्दर। प्रतिकाश का अर्थ है समान।

676. कामद्रुमसमागमा— मनोरथ रूपी वृक्ष के साथ रहने वाली। मनोरथ पूरा करने वाले कल्पवृक्ष के साथ रहने वाली अर्थात कल्पवृक्षस्वरूपा। कल्पवृक्ष के साथ एकता है जिसकी अर्थात कल्पवृक्ष के समान। कामद्रुम का अर्थ है इच्छा पूरी करने वाला वृक्ष अर्थात कल्पवृक्ष। कामरूपी वृक्ष पर आरूढ़ रहने वाली।

677. कामपुष्पा— कामनाओं के अनुसार पुष्पित (संवृद्धि) होने वाली या देने वाली। जो भी चीज विकसित होती है बढ़ती है उसे पुष्पित होना या फलित होना कहते हैं। कामनाओं को समृद्ध करने वाली। कामरूपी पुष्प के समान।

678. कामभूमि— कामनाओं की भूमि अर्थात कामनाऐं इसी में होती हैं अर्थात कामनाऐं इसी में पैदा होती हैं। काम देव की भूमि या आधार।

679. कामपूज्या— काम देव के द्वारा पूजनीय।

680. कामदा— इच्छानुसार फल देने वाली। भक्त जो इच्छा करता है, उसे पूरा कर देती हैं।

681. कामदेहा— सुन्दर शरीर वाली। कामदेव सुन्दरता का प्रतीक है।

682. कामगेहा— मनोरथों का घर अर्थात यहीं से कामनाऐं बनती हैं पैदा होती हैं। कामना या इच्छाऐं चैतन्य से ही पैदा होती है और देवी चैतन्यस्वरूपा हैं। कामनाओं का उत्पत्ति स्थान। कामदेव की गृह स्वरूपा।

683. कामबीजपरायणा— काम बीजमन्त्र (क्लीं) के जप में लगी रहने वाली।

684. कामध्वजसमारूढा— पुरुष और स्त्री की जननेद्रिय में सम्यक् रूप से चढ़ी हुई अर्थात वहाँ शक्ति रूप में या वहाँ होने वाली क्रियाओं के रूप में विराजमान। कामदेव की पताका (मीनकेतन पताका) लगी है जिस रथ में उस रथ में बैठने वाली।

685. कामध्वजसमास्थिता— पुरुष और स्त्री की जननेद्रिय में सम्यक् रूप से अर्थात अच्छी प्रकार से स्थित अर्थात विराजमान। कामदेव के ध्वजयुक्त रथ पर आश्रित रहने वाली या बैठने वाली।

686. काश्यपी— पृथ्वीस्वरूपा। कश्यप ऋषि की शक्तिस्वरूपा। कश्यप ऋषि के वंश में उत्पन्न। काश्य का अर्थ मदिरा या सोम भी होता है। आनन्द की मदिरा पीने वाली या सोमपान करने वाली। कश्यप का अर्थ आत्मा या जीवात्मा भी है। आत्मा (परमात्मा) से उत्पन्न जीवात्मा, यह अर्थ भी इस नाम का हो सकता है। पश्यक से कश्यप बना है। देखने वाली अर्थात जानने वाली अर्थात चैतन्य स्वरूपा। चेतना के कारण ही व्यक्ति कुछ जानता है, awareness रखता है एवं अपने बाहर तथा भीतर क्रिया–प्रतिक्रिया करता है। कश्य का अर्थ है सोमरसादिजनित मद्य। यह आनन्द का प्रतीक हुआ। आनन्द का पान करने वाली अर्थात आत्म स्वरूपा या जीवात्मा स्वरूपा। पश्यक का कश्यप हो गया है। पश्यक का अर्थ है देखने वाला। दृष्टा आत्मा स्वरूपा। बिना अर्थ बदले अण् प्रत्यय लगाने से पाश्यक बनेगा या काश्यप बनेगा। स्त्रीलिंग में काश्यपी हो जायेगा। सर्वदृष्टा। तत्वदर्शी।

687. काश्यपाराध्या— कश्यप ऋषि की सन्तानों द्वारा आराधना करने योग्य।

688. काश्यपानन्ददायिनी– काश्यप अर्थात कश्यप ऋषि की सन्तानों को आनन्द प्रदान करने वाली।

689. कालिन्दीजलसंकाशा– यमुना नदी के जल के समान सुन्दर। संकाश का अर्थ है समान।

690. कालिन्दीजलपूजिता– यमुना के जल के द्वारा पूजित। यमुना जी कर्म का प्रतीक हैं। कर्म का बहाव अर्थात लगातार कर्म करने से या कर्मयोग के द्वारा पूजिता।

691. कादेवदपूजानिरता– दुर्गास्वरूप की पूजा में या भूमि की पूजा में लगी हुई अर्थात दुर्गा, भूमि देवी का सम्मान करने वाली। एकाक्षरी कोष के अनुसार का का एक अर्थ दुर्गा, भूमि भी है। श्रेष्ठ देव की पूजा में लगी रहने वाली। क का अर्थ है ब्रह्म या आत्मा जो सर्वश्रेष्ठ सत्ता है। क+आ+देव+पूजा+निरता। एकाक्षरी कोष के अनुसार आ का एक अर्थ भाव है। भाव का अर्थ पदार्थ या अस्तित्व होता है। प्रत्येक चीज पदार्थ या अस्तित्व है अतः आ का अर्थ छोड़ सकते हैं जैसे विश्वामित्र अर्थात विश्व मित्र। क का एक अर्थ प्रजापति है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ प्रजापति स्वरूप की पूजा में लगी हुई अर्थात प्रजापति का सम्मान करने वाली।

692. कादेवपरामार्थदा– प्रजापति को सर्वतोभावेन अर्थात पूर्ण अर्थात उच्चतम मोक्ष देने वाली। परमार्थ का अर्थ है चार पुरुषार्थों मे ंसबसे अन्तिम या सबसे श्रेष्ठ पुरुषार्थ अर्थात मोक्ष। मोक्ष के पाँच प्रकार हैं जिनमें कैवल्य सर्वश्रेष्ठ है। क+आ+परमार्थदा। क का अर्थ है प्रजापति, आ का अर्थ है सर्वतोभावेन। मनोरथ पूरा करने वाले कादेव के द्वारा परमार्थ प्रदान करने वाली।

693. कार्म्मणा– कर्म करने में लगी हुई अर्थात हमेशा कर्म करने वाली। कर्म के लिए हितकारी अर्थात कर्म को निर्विघ्न कर उसे पूरा कराने वाली। शब्दकल्पद्रुम में कर्मन् शब्द में तद्युक्तत्वात् कर्मणो अण् सूत्र से अण् प्रत्यय लगाकर कार्मण शब्द बनाया, जिसका अर्थ हुआ कर्म से युक्त। कार्मणा का अर्थ हुआ जो निरन्तर कर्म करती रहती है। देवता लोगों को कर्म से विश्रान्ति नहीं होती है। कर्मणे हितम् सूत्र से भी अण् प्रत्यय लगाकर कार्मण शब्द बनता है जिसका अर्थ हुआ कर्म के लिए हितकारी अर्थात कर्म को निर्विघ्न करने वाली, कर्म को विघ्न रहित कर पूरा कराने वाली। जो कर्म से सम्बन्धित है, तदस्वरूपा। मीमांसा दर्शन में याग के लिए कर्म शब्द का प्रयोग किया गया है। यज्ञ से सम्बन्धित मन्त्र, विधि–विधान, सामग्री सभी कार्मणा हैं। कृ धातु में मनिन् प्रत्यय लगाने से कर्मन् शब्द बनेगा जिसमें अण प्रत्यय लगाने से कार्मण शब्द बनेगा। कर्मणः इदम् इति कार्मणः, जो कर्म से सम्बन्धित है, वह कार्मण है। कर्म वाली या कर्म रूपा। कर्म में णिच् प्रत्यय लगाने से कार्मी बनता है और ल्युट् या युच् प्रत्यय लगाने से कार्मण बनता है। कर्म इव आचरति इस व्युत्पत्ति से कार्मी बना और ल्युट् या युच् प्रत्यय लगाने से कार्मणा बना। रचना रूपा या सृष्टि रूपा। कर्मों वाली अर्थात भाग्यवाली अर्थात सर्वसौभाग्यवती। कर्मन् से कार्मणा बना। पंजाब में कर्मो वाली को सौभाग्यवती कहते हैं। विविध प्रकार के कर्मों से युक्त शरीर वाली।

694. कार्म्मणाकारा – जादू और इन्द्रजाल, वशीकरण के स्वरूप वाली। कार्मण + आकार। वशीकरण मन्त्र के स्वरूप वाली। यज्ञ सम्बन्धी विधान को कराने वाली अर्थात पूरा कराने वाली। कार्मण का अर्थ कर्म (यज्ञ) से सम्बन्धित विधान। कारयति अर्थात पूरा कराने वाला। शब्दकोश में कार्मण का अर्थ दिया हुआ है– मूल कर्म जिसमें मन्त्र और औषधि आदि से मारण, मोहन, वशीकरण आदि किया जाता है। मन्त्र तन्त्र आदि का प्रयोग। जादू और इन्द्रजाल, वशीकरण। कर्मकुशल, कर्म में दक्ष, कर्मपूर्ण करने वाली। यज्ञ से सम्बन्धित सामग्री के स्वरूप वाली। कर्मठता स्वरूपी। कार्मण्य का अर्थ है निरन्तर कर्म करना अर्थात कर्मठता। कर्म समूह या सौभाग्य इन्हीं का स्वरूप है। कर्म समूह अर्थात कार्मणा। विविध प्रकार की कर्मसमूह की आकृति वाली।

695. कामकार्म्मणकारिणी– मनोरथ की सिद्धि के लिए किये जाने वाले कर्म (यज्ञ) को कराने वाली। कर्म अर्थात यज्ञ विधि। कार्मण का अर्थ है कर्म, काम का अर्थ है इच्छा या मनोरथ। भक्तों के अभीष्ट कर्मों को कराने वाली या करने वाली। कामकर्म का अर्थ है अभीष्ट कर्म या इच्छित कर्म। काम से सम्बन्धित विविध कर्मों को करने वाली।

696. कार्म्मणत्रोटनकरी– दैत्यों के कर्म (अर्थात यज्ञ) में विघ्न करने वाली। मीमांसा दर्शन में कर्म का अर्थ यज्ञ बताया गया है। कर्म बन्धन से निवृत्ति अर्थात छुटकारा दिलाने वाली।

697. काकिनी– जो अमृत पाने के लिए चेष्टा करती है। काय अकति इति काकिनी। क का अर्थ अमृत और अकति का अर्थ है चेष्टा करना। काक वाली अर्थात कौओं से युक्त अर्थात जिनके आस पास कौए रहते हैं। धूमावती देवी के रथ का वाहक कौआ है। एकाग्रता से युक्त। काक मुद्रा एकाग्रता का प्रतीक है। कौड़ी में विराजमान। काकिणी का अर्थ कौड़ी होता है। धन सम्पत्ति का आरम्भ जहाँ से होता है यह अर्थ हुआ। काक का अर्थ शिव भी है क्योंकि यह माया को वश में किये रहता है। क या किम् का अभिप्राय माया या प्रकृति है। इस प्रकार काकिनी का अर्थ हुआ शिव से युक्त। काक से युक्त अर्थात काकदृष्टि से युक्त अर्थात समदृष्टि वाली। कौआ एक ही ऑख से देख पाता है जो समदृष्टि का प्रतीक है। काकिणी का अर्थ कौड़ी या धन होता है। धन स्वरूपा या धन का कारण। कौड़ी से गिनती भी की जाती है। कई अवतारों वाली, तभी गिनती की जा सकती है। का, का करने से कौआ को काक कहते है। कै शब्दे धातु में ड प्रत्यय लगाने से बने क शब्द का अर्थ शब्द करने वाला अर्थात् आवाज करने वाला होता है। का ऐसी आवाज करने वाला। धृष्टता आदि दोषों के कारण को कुत्सित समझा जाता है जिससे वह काक है। धार्ष्ट्यादि दोष समुच्चयेन यः कुत्स्यते स काकः। अतः काक का अर्थ भ्रष्ट या दुष्ट व्यक्ति भी होता है। काक का अर्थ लंगड़ा, पानी में सिर्फ सिर डालकर स्नान करने वाला भी होता है। काक या कौआ जिस पदार्थ को छूता है वह पदार्थ अपवित्र हो जाता है अतः काक या कौआ को लोग तुरन्त भगा देते है। इस प्रकार काकिनी का अर्थ हुआ दुष्टों वाली या अपवित्र व्यक्तियों वाली अर्थात् ऐसे व्यक्ति भी जिनकी आराधना करते है। कौआ वाली अर्थात् जिनके मन्दिर के आस–पास कौए रहते हैं।

698. कारणाह्वया– कारण नाम से पुकारी जाने वाली अर्थात कारण जिसकी संज्ञा या आत्मा है। सम्पूर्ण विश्व की आदि कारण।

699. काव्यामृता– काव्यामृतस्वरूपा। काव्य पढ़ने से जिस आनन्द का अनुभव होता है वह अमृत स्वरूप है।

700. कालिङ्गा– कलिंग देश से सम्बन्धित देवी। कलिंग में बिना अर्थ बदले अर्थात स्वार्थ में अण् प्रत्यय लगाने से कालिंग बनेगा। कलि का अर्थ कलह, युद्ध, वीर दिया गया है। युद्ध को जाने वाली अर्थात असुरों से युद्ध करने वाली। कालिम् का अर्थ जलसमूह भी होता है। जलसमूह के रूप में जाने वाली अर्थात यमुना नदी या अन्य नदी स्वरूपा। कालिन्दी अर्थात यमुना अर्थात जलसमूह देने वाली।

701. कालिङ्गमर्दनोद्यता– कलिंग देश के राजा को हराने में तत्पर रहने वाली।

702. कालागुरूविभूषाढ्या– काले अगुरू से विभूषित। अगुरू पूजा में प्रयुक्त होने वाली एक सामग्री है।

703. कालागुरूविभूतिदा– भक्तों के द्वारा काला अगुरू की गन्ध देने से भक्तों को ऐश्वर्य देने वाली। काले अगुरू की विभूति देने वाली अर्थात सुन्दर कीर्ति देने वाली। काले अगुरू की विभूति (धन) है सुगन्ध। सुगन्ध अर्थात यश। अगुरू एक प्रकार का पेड़ या सुगन्धित लकड़ी है जिसका प्रयोग पूजा में होता है।

704. कालागुरूसुगन्धा– काला अगुरू के समान सुगन्ध से युक्त।

705. कालागुरूप्रतर्प्पणा– काला अगुरू से अत्यन्त तृप्त होने वाली। तृप्त होने पर व्यक्ति कहता है अब और नहीं चाहिए।

706. कावेरीनीरसम्प्रीता– कावेरी नदी के जल से अच्छी प्रकार से अर्थात पूर्णतया प्रसन्न होने वाली।

707. कावेरीतीरवासिनी– कावेरी नदी के तट पर निवास करने वाली।

708. कालचक्रभ्रमाकारा– कालचक्र का भ्रमण ही है आकार जिसका अर्थात समयस्वरूपिणी। कालचक्र (दोबारा

या बार बार आने वाला समय) है आकार जिसका अर्थात समय स्वरूपिणी। ऋतु चक्र, महीनों का चक्र, युगों का चक्र, कल्पों का चक्र ये सब कालचक्र हैं। कालचक्र के भ्रमण के समान है आकृति जिनकी।

709. कालचक्रनिवासिनी– कालचक्र में निवास करने वाली।

710. कानना– वन स्वरूपा। वनों वाली अर्थात वनों की मालकिन। वनों वाली अर्थात वन में निवास करने वाली। काननम् अस्या अस्ति इति कानना (वनों वाली)।

711. काननाधारा– जंगल का आधार अर्थात पृथ्वी स्वरूपा। जंगल का आधार अर्थात जलस्वरूपा। वर्षा से जंगल होता है और जंगल होने से वर्षा होती है। वन हैं आधार जिनका। आधार का अर्थ है आश्रय या आश्रय देने वाला। वनों ने जिन्हें आश्रय दिया है। सीता जी भगवान राम के साथ वनवास में गईं थी। वन में रहने वाली।

712. कारू– शिल्पकार, सर्वोत्तम शिल्पी, शिल्प शास्त्र में निपुण। समस्त विश्व की कुशल शिल्पकार।

713. कारूणिकामयी– करूणामयी, करूण हृदय वाली।

714. काम्पिल्यवासिनी– काम्पिल्य देश में निवास करने वाली।

715. काष्ठा– दिक् शक्ति स्वरूपा। काष्ठा नामक समयावधि स्वरूपा। कला अलग अलग मतों के अनुसार एक मिनट या 48 सेकेण्ड या 8 सेकेण्ड की समयावधि मानी जाती है। कला का 30वाँ हिस्सा काष्ठा है। परम लक्ष्य या अन्तिम गति अर्थात ब्रह्मस्वरूपा। उपनिषद में ब्रह्म के लिए कहा गया है स काष्ठा स परागतिः। काष्ठा का अर्थ गन्तव्य लक्ष्य, उच्चतम चोटी या ऊँचाई, चरम स्थिति या अन्तिम सीमा। दिशा या उपदिशा स्वरूपा। समय स्वरूपा। जल स्वरूपा। वैदिक कोश में आया है कि क्रान्त्वा स्थिता भवन्ति इति काष्ठा अर्थात जो गति कर स्थित हो जाता है, वह काष्ठा है। इधर–उधर से बहता हुआ जल सरोवर में स्थिर होता है अतः जल काष्ठा है। जल अर्थात जीवन। जीवन स्वरूपा। क+आ+स्था। क अर्थात सुख, आ अर्थात समन्तात् अर्थात पूर्ण रूप से अर्थात चरम या परम रूप से। इस प्रकार काष्ठा का अर्थ हुआ परम सुखदायी स्थिति, इस स्वरूप वाली। काष्ठा+आ, आ का अर्थ है देना, नाश करना। भक्तों को परम सुखदायी स्थिति देने वाली। सूर्य स्वरूपा या सूर्य की शक्ति स्वरूपा। सूर्य भी अपनी परिधि में गति करता हुआ स्थित है। संग्राम प्रदेश को भी काष्ठा कहते हैं क्योंकि यह कुछ दूर जाकर सीमित होता है। युद्ध क्षेत्र की एक सीमा होती है। काष्ठा का अर्थ है दूर दूर देश की सीमा। वैदिककोश में गाष्ठा को काष्ठा कहा गया है जिसका अर्थ है वेद वाणियों में परमस्थिति। गो का अर्थ है वाणी। ऋचाओं का गान होता है, गान से भी गा शब्द ले लिया। दक्ष की काष्ठा नामक कन्या स्वरूपा या इस कन्या से अभेद है जिनका।

716. कामपत्नी– कामदेव की पत्नी रति स्वरूपा। कामदेव की पत्नी रति से अभेद है जिनका।

717. कामभू– कामाः भवन्ति अस्याः अर्थात कामनाओं को पूरा करने वाली। मनोरथों की उत्पत्ति स्थल अर्थात मनोरथों को पूर्ण करने वाली। इच्छाओं की उत्पत्ति स्थल अर्थात वह शक्ति जिससे कारण इच्छाएं पैदा होती हैं। (यदि कानभू शब्द है तो अर्थ होगा – ब्रह्म को चेतन रखने की निमित्त (कारण)। क अर्थात ब्रह्म, भू अर्थात निमित्त या कारण। अनति का अर्थ जीवित रखना अर्थात चेतन बनाना होता है, इसी कारण अन का एक अर्थ जीव किया गया है। ब्रह्मा को जीवित रखने की निमित्त (कारण)। ब्रह्मा कल्प पर्यन्त तक जीवित रहते हैं। क का अर्थ ब्रह्मा भी होता है। सुखी जीवन की माता अर्थात सुखी जीवन देने वाली। सुख का अनन (जीवन) है कान। कम् अनति श्वसिति इति कान। सुख को प्राणित करना या जीवन देना कान है। क का अर्थ है सुख। भू का अर्थ है आधार या उत्पन्न करने वाला। जल में स्थित प्राण शक्ति की उत्पत्ति स्थान। क का अर्थ है जल, अनति का अर्थ है प्राण देना अर्थात जीवित करना या जीवित रखना जैसे भवानी का अर्थ है संसार को या शिव को जीवित रखे हुए है या चैतन्य बनाये हुए है। अनति अर्थात जीवयति।)

718. कादम्बरीपानरता– मदिरा पीने में संलग्न रहने वाली।

719. कादम्बरी– कादम्बरी अर्थात सरस्वती स्वरूपा। कदम्बैः रमते इति कादम्बरी। जो कदम्ब अर्थात कलहंसों के साथ सुशोभित होती है वह है सरस्वती।

720. कला– 64 कला स्वरूपा। अक्षर स्वरूपा। साकार जगत स्वरूपा। कला का एक अर्थ वर्णाक्षर, साकार जगत भी होता है।

721. कामवन्द्या– कामदेव द्वारा वन्दनीय। सामने आकर झुक कर प्रणाम करना तथा गुणों का यशोगान करना ही वन्दना है।

722. कामेशी– इच्छाओं की ईश्वरी अर्थात इच्छाओं को पैदा करने वाली, इच्छानुसार फल देने वाली। काम (भोगपदार्थों) को भक्तों तक प्रेरित करने वाली अर्थात भक्तों तक पहुँचाने वाली। ईष्टे से ईशी बनाने पर प्रेरित करने वाली अर्थ निकलता है।

723. कामराजप्रपूजिता– कामदेव द्वारा विशेष रूप से पूजित। कामराज का एक अर्थ कामदेव होता है। कामराज अर्थात काम का राजा अर्थात सुन्दरता में सर्वश्रेष्ठ अर्थात कामदेव। कामानाम् राजा अर्थात कामनाओं को देने वाला (पूरा करने वाला) अर्थात ब्रह्मा, विष्णु, महेश। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ ब्रह्मा, विष्णु, महेश द्वारा विशेष रूप से आराधित। कामराज द्वारा प्रकृष्ट रूप से पूजित। श्रीविद्या के मन्दिर में श्रीविद्या मन्त्र के कामराज कूट नामक मन्त्र भाग के द्वारा विधिवत पूजित।

724. कामराजेश्वरीविद्या– कामदेव की ईश्वरी विद्या अर्थात फल देने वाली विद्या। यहाँ पर ईश्वरी का अर्थ होगा फल देने वाली और विद्या का अर्थ है स्त्री देवता का मन्त्र। कामदेव द्वारा जिस मन्त्र का जप किया गया वह अभीष्ट को देने वाला है। कामराजेश्वरी विद्या स्वरूपा अर्थात श्री विद्या स्वरूपा। कामदेव द्वारा जिस मन्त्र से उपासना की गई थी, तत्स्वरूपा।

725. कामकौतुकसुन्दरी– इच्छानुसार मनोरंजन कराने वाली सुन्दरी। सुन्दरी अर्थात जिसने सुन्दर रूप धारण किया है। कौतुक अर्थात आश्चर्य जिससे लोग प्रसन्न होते हैं। कामनाओं में जो कौतुक है उसको देने वाली सुन्दरी। काम के कौतूहल से अतिशय सुन्दर लगने वाली।

726. काम्बोजजा– कम्बोज देश में होने वाली।

727. काञ्चिनदा– नदियों को कांची के रूप में धारण करने वाली। कांची का तात्पर्य है करधनी। अनिर्वचनीय चैतन्य की प्रवाह स्वरूपा। देवी की मेखला, प्रवाह की तरह हिलती रहती।

728. कांस्यकाञ्चनकारिणी– कांसा और सोने को उत्पन्न करने वाली। सुन्दर सोने को उत्पन्न करने वाली।

729. काञ्चनाद्रिसमाकारा– स्वर्ण पर्वत (हेमाद्रि, सुमेरू) के समान आकार वाली।

730. काञ्चनाद्रिप्रदा– स्वर्ण पर्वत को देने वाली अर्थात प्रचुर सोना देने वाली। पर्वत बड़ा होने के कारण प्रचुरता का अर्थ देता है।

731. कामकीर्ति– कामदेव को प्राप्त कीर्ति स्वरूपा। इच्छानुसार कीर्ति स्वरूपा अर्थात इच्छानुसार कीर्ति देने वाली। स्वरूपा का अर्थ है कि वह चीज उसके पास है अतः दूसरों को दे दी। देवत्व इसी बात पर है कि वह दूसरों को दे। इसी कारण पुष्टि का अर्थ पुष्टि स्वरूपा भी होता है और पुष्टि देने वाला भी होता है। यदि कोई चीज किसी के पास है पर वह दूसरों न दे तो इससे उसे देवता नहीं कह सकते क्योंकि देवता वही है जो दूसरों को दे। काम की कीर्ति स्वरूपा या काम को कीर्ति देने वाली।

732. कामकेशी– अतिशय सुन्दर बालों वाली। कामदेव सुन्दरता का प्रतीक है।

733. कारिका– करने वाली अर्थात अच्छी रचनाओं को रचित करने वाली।

734. कान्ताराश्रया– दुर्गम वन में निवास करने वाली।

735. कामभेदी– काम भावना को छिन्न भिन्न अर्थात विनष्ट करने वाली।

736. कामार्त्तिनाशिनी– काम भावना की पीड़ा को नष्ट कर देने वाली।

737. कामभूमिका– समस्त इच्छाऐं इसी में उत्पन्न होती हैं अर्थात चैतन्यस्वरूपिणी। चैतन्य में ही इच्छाऐं पैदा होती हैं। नदी का किनारा गिरना चाहता है, यह नहीं होगा क्योंकि किनारा चैतन्य नहीं होने के कारण इच्छा पैदा नहीं कर सकता। इसका समाधान यह है कि चैतन्य सभी जगह होता है। काम अर्थात इच्छा, भूमिका अर्थात भूमि अर्थात आधार। भूमि में ही चीजें टिकती हैं एवं भूमि से ही चीजें उत्पन्न होती हैं। कामदेव की भूमिका स्वरूपा।

738. **कालनिर्णाशिनी**– काल अर्थात मृत्यु या मृत्युभय का नितान्त नाश करने वाली अर्थात समूल नाश करने वाली। कष्टदायक समय अर्थात अनुचित या गलत समय को नष्ट कर देने वाली।

739. **काव्यवनिता**– काव्यरूपिणी वनिता अर्थात सुन्दर कवितास्वरूपा। वनिता का अर्थ है सुन्दरी जिससे सुन्दर अर्थ लिया गया है। वनु याचने धातु से वनिता शब्द बना जिसका अर्थ है जिसकी याचना की जाए। सुन्दर स्त्री की प्राप्ति की याचना की जाती है। शुक्राचार्य की गृहिणी स्वरूपा। शुक्राचार्य जी का एक नाम काव्य भी है। शुक्राचार्य भृगु ऋषि की सन्तान थे और भृगु ऋषि का एक नाम कवि है, अतः कवि से उत्पन्न होने के कारण शुक्राचार्य का एक नाम काव्य पड़ा।

740. **कामरूपिणी**– स्वेच्छानुसार रूप धारण करने वाली।

741. **कायस्थाकामसन्दीप्ति**– शरीर में निवास करने वाले काम की चमक स्वरूपा अर्थात अग्नि स्वरूपा। शरीर में निवास करने वाली कामाग्नि स्वरूपा।

742. काव्यदा– काव्य को देने वाली अर्थात काव्य रचना की शक्ति देने वाली।

743. कालसुन्दरी– शिव की पत्नी स्वरूपा। काल का एक अर्थ शिव भी है। समास में सुन्दरी का अर्थ पत्नी होता है। समय की सर्वोत्तम रूप–रेखा।

744. कामेशी– कामदेव को अनुशासन में रखने वाली। भक्तों की काम भावना को नियन्त्रित करने वाली। काम सम्बन्धी नियमों को बनाने वाली। ईश् धातु शासन करने के अर्थ में प्रयुक्त होती है और शासन का अर्थ होता है नियन्त्रण में रखना, अनुशासन में रखना जिसके लिए नियम कानून बनाना पड़ता है। काम देव की ईश्वरी अर्थात कामदेव की आराध्या।

745. कारणवरा– श्रेष्ठ कारण स्वरूपा। जो सभी कारणों का भी कारण है वह श्रेष्ठ कारण ही होगा।

746. कामेशीपूजनोद्यता– कामदेव की ईश्वरी (ललितात्रिपुरसुन्दरी देवी माँ या दुर्गा माँ) के पूजन में विशेष रूप से रूचि रखने वाली।

747. काञ्चीनूपुरभूषाढ्या– करधनी और नूपुरों के आभूषणों से सुशोभित होने वाली।

748. कुङ्कुमाभरणान्विता– कुमकुम और आभूषणों से युक्त। कुमकुम की शोभा से युक्त। आभरण का अर्थ आभूषण, शोभा है और अन्वित का अर्थ है युक्त। कुमकुम जिनके ऊपर डाला गया है, ऐसे आभूषणों को धारण करने वाली।

749. कालचक्रा– समय चक्र स्वरूपा। परिवर्तित होने वाला समय स्वरूपा अर्थात गतिमान समय स्वरूपा।

750. कालगति– काल का परिवर्तन, व्यतीत होना वाली क्रिया स्वरूपा। काल का भी सहारा अर्थात आश्रय। समय की गति स्वरूपा। समय जो गुजरता हुआ प्रतीत होता है वह प्रतीति भी देवी है। काल अखण्ड होता है फिर भी उसमें मुहूर्त, क्षण, मिनट, घण्टा, दिन, मास, वर्ष, कल्प आदि की जो कल्पना की जाती है वह सूर्य और चन्द्र के सापेक्ष ही की जाती है, उसमें वास्तव में कोई गति नहीं होती, गति की प्रतीति होती है क्योंकि काल तो अखण्ड है। भूतकाल, भविष्यकाल केवल प्रतीति है, वास्तव में नहीं है पर वह प्रतीति भी एक प्रकार की गति है। कलयति का एक अर्थ है गणना करना। इसी कारण समय को काल कहते हैं क्योंकि इसकी गणना होती है।

751. कालचक्रमनोभवा– समय परिवर्तन होने पर काम भाव अर्थात काम वासना के रूप में अभिव्यक्त होने वाली। युवावस्था आने पर ऐसा होता है, बालपन में कामभाव नहीं होता है। चक्र अर्थात घूमके दोबारा आना अतः परिवर्तन अर्थ लिया गया है। कालचक्र के मन में उत्पन्न होने वाली। काल तो अनन्त है, अनन्त काल ही कालचक्र है। कालचक्र के लिए कामरूपिणी यह अर्थ भी हो सकता है। कालचक्र अर्थात चलता हुआ समय। काल के मन में मन्थन (मथना) उत्पन्न करने वाली अर्थात काल में रहने वाली। कालचक्र अर्थात समय का बराबर पलटते या बदलते रहना जो एक पहिये के घूमने के समान है। समय का फेर, जीवन का उतार चढ़ाव। कालचक्र का अर्थ युग भी है। बौद्ध धर्म के अनुसार कालचक्र अथवा समय का चक्र, प्रकृति से सुसंगत रहते हुए ज्योतिषशास्त्र, सूक्ष्म ऊर्जा और आध्यात्मिक चर्या के मेल से बना तान्त्रिक ज्ञान है। कालचक्र का अर्थ समय का बदलते रहना या भाग्य परिवर्तन है। कालों के समूह में होने वाली कामदेवस्वरूपा। विभिन्न ऋतुओं का क्रम से आना ही कालचक्र है। बसन्त ऋतु में कामदेव का प्रभाव रहता है। कालचक्र की कामदेवी। काल का सरल अर्थ समय है और चक्र का अर्थ निरन्तर गतिमान रहने वाला पहिया। कालचक्र अर्थात समय का चक्र।

752. कुन्दमध्या– जिसका मध्य भाग सुन्दर और सुरभित है। कुन्द पुष्प सुन्दर और सुरभित होता है। सुरभित अर्थात सुगन्ध से युक्त। मध्य भाग मे कुन्द पुष्प को धारण करने वाली।

753. कुन्दपुष्पा– कुन्द के पुष्पों से युक्त अर्थात कुन्द पुष्प को धारण किये हुए। कुन्दपुष्पाणि अस्याः सा कुन्दपुष्पा, कुन्दपुष्प जिसके हैं अर्थात कुन्दपुष्प वाली अर्थात कुन्दपुष्प को धारण करने वाली।

754. कुन्दपुष्पप्रिया–जिन्हें कुन्द के फूल प्रिय हैं।

755. कुजा– पृथ्वी जिससे पैदा हुई। कु (पृथ्वी) जाता अस्याः इति कुजा। पृथ्वी (कु) से उत्पन्न सीता से अभेद है जिनका या सीता स्वरूपा। मंगलग्रह की गृहिणी या शक्ति स्वरूपा। सुन्दर वृक्ष स्वरूप। मंगल ग्रह स्वरूपा।

756. कुजमाता– मंगल ग्रह की माता अर्थात उनकी जननी।

757. कुजाराध्या– मंगल के द्वारा आराधना करने योग्य अर्थात आराधना की जाती है।

758. कुठारवरधारिणी– श्रेष्ठ कुठार (फरसा) को धारण करने वाली।

759. कुञ्जरस्था– गजराज या हाथी पर स्थित/विराजमान होने वाली।

760. कुशरता– कुश से प्रसन्न होने वाली अर्थात कुश हैं प्रिय जिन्हें। रता का एक अर्थ है प्रसन्न। रता का अर्थ लगी हुई भी होता है, अतः इस नाम का अर्थ हुआ कुश से लगी हुई अर्थात कुशासन में बैठी हुई।

761. कुशेशयविलोचना– कमल के समान सुन्दर नेत्रों वाली।

762. कुनठी– शब्द ज्ञान की कुटुम्बनी अर्थात शब्द ज्ञान के समूह वाली अर्थात शब्द ज्ञान में पारंगत। एकाक्षरी कोष में कु का अर्थ शब्द, न का अर्थ ज्ञान एवं ठी का अर्थ कुटुम्बनी। यदि कुनठी की जगह कुनटी होता तो अर्थ होता पृथ्वी पर नटी (नर्तकी) की तरह। कु का अर्थ है पृथ्वी। पृथ्वी पर समस्त क्रियाओं को करना ही मानो उनका नृत्य हो। नदी का बहना, पेड़ों का हिलना, पक्षियों का चहचहाना आदि मानो देवी का नृत्य है क्योंकि देवी प्रकृति स्वरूपा हैं।

763. कुररी– कुररी (मादा क्रौंच पक्षी या एक प्रकार के सारस की किस्म) पक्षी की तरह अपने पति से अतिशय अनुराग करने वाली, उसे कभी न छोड़ने वाली। कुररी पक्षी की तरह ऊँचाई में स्थित अर्थात जो अन्य देवी देवताओं से ऊपर के लोक में स्थित है। बाल्मीकि रामायण में क्रौंच पक्षी का उल्लेख है। यह जोड़े में रहता है। अपने साथी की मृत्यु या अन्य कारणों से बिछड़ने पर वह दूसरा जोड़ा नहीं बनाता और जीवन भर अकेला ही रहता है। वह या तो अपने साथी के साथ रहेगा या साथी के बिछड़ने पर अकेला रहेगा। इस प्रकार का सारस स्वयं में ऊँचाई वाला होता है और ऊँचाई में उड़ता है। चूँकि यह पक्षी जल के पास प्रायः रहता है अतः इस नाम का अर्थ कुररी पक्षी की तरह जल के पास अपना निवास स्थान बनाने वाली भी कर सकते हैं। संस्कृत में 'की तरह' अर्थ बताने के लिए वत् प्रत्यय का प्रयोग होता है। नियम है कि यदि वत् प्रत्यय न भी लगा हो तब भी वत् प्रत्यय की तरह अर्थ कर सकते हैं। कुररी पक्षी स्वरूपा।

764. क्रुद्धा– दुष्टों, अधर्मियों, दैत्यों पर क्रोध दिखाने वाली।

765. कुरङ्गी– हरिणी के समान सुन्दर और चंचल।

766. कुटजाश्रया– कुटज वृक्ष पर निवास करने वाली।

767. कुम्भीनसविभूषा– विषैले साँप को आभूषण के रूप में धारण करने वाली।

768. कुम्भीनसवद्योद्यता– जहरीले सर्प के वध के लिए तत्पर, तैयार।

769. कुम्भकणमनोल्लासा– विशेष प्रकार के ब्राह्मण के ज्ञान को प्रकाशित करने वाली। कुम्भीधान्य ब्राह्मण सर्वश्रेष्ठ माने गये हैं जो एक छोटे से घड़े में भी मात्र दो दिन का अन्न कण रखते थे। कुम्भकण का तात्पर्य हुआ कुम्भीधान्य ब्राह्मण। यहाँ मन का तात्पर्य ज्ञान से है न कि मन से, क्योंकि मन वाला शब्द मनस् होता है। म का अर्थ मोनियर विलियम्स के शब्दकोष के अनुसार ज्ञान है और एकाक्षरी कोष से न का अर्थ भी ज्ञान है, इस प्रकार मन शब्द का अर्थ ज्ञान होगा। उल्लासा का अर्थ है प्रकाशित करने वाली। ब्रह्मा जी को कुम्भकार कहा जाता है अर्थात कुम्भ का अर्थ है ब्रह्माण्ड, कण का अर्थ हुआ ब्रह्माण्ड के अत्यन्त सूक्ष्म जीव। ब्रह्माण्ड के अत्यन्त सूक्ष्म जीवों के मन को उल्लसित या प्रसन्न करने वाली। कुम्भ के कण से मन को हर्षित करने वाली।

770. कुलचूडामणि– वंश की चूड़ामणि की तरह श्रेष्ठ अर्थात कुलश्रेष्ठ। परिवार में श्रेष्ठ। शाक्त कुल के परिवार में श्रेष्ठ क्योंकि सभी इन्हीं की पूजा करते हैं।

771. कुला– श्रेष्ठ कुल वाली। मूलाधारचक्र की शक्ति स्वरूपा। कुल का एक अर्थ है मूलाधार चक्र। पृथ्वी जिसमें लीन हो जाती है वह है कुला। कु अर्थात पृथ्वी और लीयते से ला बना।

772. कुलालगृहकन्या– कुम्हार के घर की कन्यास्वरूपा। कनि दीप्तौ धातु से कन्या का अर्थ दीप्त या प्रकाशित करने वाली भी होता है। कुम्हार के घर को दीप्त करने वाली।

773. कुलचूडामणिप्रिया– कुल की चूड़ामणि (श्रेष्ठ) होने के कारण अतिशय प्रिय।

774. कुलपूज्या– शाक्त कुल में पूजनीय। कुल या परिवार में पूजनीय। हर परिवार किसी न किसी देवी–देवता की पूजा करता है और प्रत्येक देवी या देवता काली जी का ही रूप है। जो भी सामग्री उपलब्ध हो उसे चढ़ाना और स्तुति करना पूजा है। यदि सामग्री उपलब्ध न भी हो तो मात्र स्तुति करें, वह भी पूजा है। अर्चना में जिन सामग्रियों को बताया जाता है, उन सभी सामग्रियों को चढ़ाना अनिवार्य होता है।

775. कुलाराध्या– कुल में आराधना के योग्य।

776. कुलपूजापरायणा– कौल मार्ग में जिनकी पूजा में उपासक लगे रहते हैं। कुल की पूजा में अर्थात कुल देवी की पूजा में लगी रहने वाली। कुल देवी की पूजा साधक या उपासक ही करेगा किन्तु न्यास प्रक्रिया के

कारण देवी का उस साधक से अभेद हो जाता है और इस कारण साधक द्वारा की गई पूजा देवी द्वारा की गई पूजा कहलाई जाएगी अर्थात देवी स्वयं की पूजा कर रही होती हैं। कौल मार्ग से पूजा करने में परम गति देने वाली। परायण अर्थात सर्वश्रेष्ठ लक्ष्य अर्थात परम गति। परायण + आ, आ का अर्थ है देना अर्थात परायणा का अर्थ हुआ परम गति देने वाली। कुल का एक अर्थ कौलमार्ग, वाममार्ग भी है।

777. कुलभूषा– कुल की आभूषण स्वरूपा अर्थात कुल की शोभा को बढ़ाने वाली। कौलमार्ग/वाममार्ग की आभूषण स्वरूपा। तान्त्रिक गुरु एवं उनके शिष्यों को मिलाकर के भी उस समूह की संज्ञा कुल कहलाती है।

778. कुक्षि– खराब चीजों का नाश करने वाली। कुत्सितम् क्षिणोति इति कुक्षि। कुक्षिस्वरूपा अर्थात भीतरी भाग में अर्थात हृदय गुफा या बुद्धि रूपी गुफा में निवास करने वाली। प्रलयकाल में पृथ्वी का नाश करने वाली। कु का एक अर्थ पृथ्वी भी होता है।

779. कुररीगणसेविता– कुररी पक्षियों द्वारा सेवित। सेवा का अर्थ है पूरा करना और मिले आदेश का तुरन्त पालन करना। कुररी पक्षी मादा क्रौंच पक्षी है। कुररी पक्षीगण आसपास रहते हैं।

780. कुलपुष्पा– कौल मार्ग पर चलने वालों के लिए पुष्प के समान सुरभित करने वाली अर्थात समृद्धि देने वाली। पुष्प विकसने धातु होती है। पुष्पित होना अर्थात विकसित होना अर्थात समृद्धि देना। कुल का एक अर्थ शरीर भी होता है। कुल पुष्प अर्थात शरीर से निकलने वाला पुष्प अर्थात स्त्री में उत्पन्न होने वाला रज। कुलपुष्पा का अर्थ हुआ रज नामक पदार्थ को धारण किये हुए, रज स्वरूपा या रज की शक्ति स्वरूपा। कुल की पुष्प स्वरूपा। कुल अर्थात शरीर की पुष्प अर्थात रजस्वरूपा। महिलाओं का रजस्वरूपा।

781. कुलरता– कुल मार्ग की पूजा में मन लगाने वाली या कुल मार्ग की पूजा से प्रसन्न होने वाली। रत का अर्थ संलग्न एवं प्रसन्न दोनों होता है। रम् धातु से बनने पर प्रसन्न, अच्छा लगना आदि अर्थ निकलते हैं। वास्तव में मन तो साधक लगाता है पर न्यास प्रक्रिया के कारण साधक का देवी से अभेद हो जाता है। अभेद होने के कारण साधक ने मन लगाया का अर्थ देवी ने मन लगाया हो जाता है। अपने कुल को बढ़ाने में संलग्न रहने वाली।

782. कुलपुष्पपरायणा– कौलमार्गियों के विकास के लिए हर सम्भव करने वाली अर्थात उनका विकास करने में लगी हुई। पुष्प समूह में रहने वाली। कुल अर्थात समूह। वंश में पुष्प की तरह प्रफुल्लित होने वाली अर्थात परायण रहने वाली।

783. कुलवस्त्रा– कौलमार्ग की रक्षा करने वाली। वस्त्र शरीर की रक्षा करते हैं अतः वस्त्र का अर्थ रक्षक लिया गया है। कौलमार्ग की पूजा को वस्त्र के रूप में धारण करने वाली अर्थात कौलमार्ग की पूजा से जुड़ी है या उनके साथ रहती है। वस्त्र शरीर से जुड़ा रहता है इसलिए यहाँ वस्त्र का अर्थ जुड़ा रहना किया गया। कुल का वस्त्र अर्थात कुल से जुड़ी हुई। कुल की आभूषण स्वरूप। वस्त्र भी आभूषण हैं।

784. कुलाराध्या– तान्त्रिक परिवारों के द्वारा आराधना करने योग्य। तान्त्रिक गुरु और उनके शिष्यों का एक कुल होता है।

785. कुलकुण्डसमप्रभा– समूह में जो शक्ति होती है उसकी तरह कान्ति वाली। यज्ञकुण्ड शक्ति के स्रोत होते हैं अतः कुण्ड का अर्थ शक्ति ले लिया गया है। कुल का एक अर्थ है समूह। समूह में जो अग्निशक्ति होती है वह असहनीय होती है। श्रेष्ठ कुण्ड के समान कान्ति वाली। श्रेष्ठ यज्ञ कुण्ड की अग्नि की समान कान्ति वाली।

786. कुलकुण्डसमोल्लासा– समूह में जो अग्नि शक्ति है उसके समान उल्लसित या चमकने वाली। श्रेष्ठ कुण्ड के समान उल्लास वाली अर्थात हर्ष प्रदान करने वाली।

787. कुण्डपुष्पपरायणा– पोखरे में उगे पुष्प से जुड़ी हुई अर्थात उसे अपने पास रखने वाली। जलकुण्ड या पोखरा कुण्ड का अर्थ है। परायणा अर्थात जुड़ी हुई। अग्नि में शक्ति रूप से विराजमान। कुण्ड पुष्प अर्थात यज्ञकुण्ड का पुष्प अर्थात अग्नि। सुन्दर पुष्प को अपने पास रखने वाली। कुण्ड नाम है देवालय के पास के पोखरे का। अतः उसमें उगने वाले फूल सुन्दर या श्रेष्ठ होंगे।

788. कुण्डपुष्पप्रसन्नास्या– पोखरे के पुष्प या श्रेष्ठ पुष्प के द्वारा प्रसन्न मुख वाली या जिनका मुख पोखरे के पुष्प से प्रसन्न हो जाता है।

789. कुण्डगोलोद्भवात्मिका– गोल यज्ञ कुण्ड में उत्पन्न अग्नि के स्वरूप वाली। कुण्ड अर्थात यज्ञकुण्ड। आत्मिका अर्थात स्वरूप वाली। देवता रूपी कुण्ड, जिनका आकार गोल है, से उत्पन्न। दुर्गासप्तशती के चौथे अध्याय में लिखा है कि देवता लोग गोलाकार (घेराकार) आकृति में इकठ्ठे हुए और उन्होंने पराशक्ति की आराधना की। कुण्ड का अर्थ देव जलाशय है अतः देवता अर्थ ले लिया गया।

790. कुण्डगोलोद्भवाधारा– यज्ञकुण्ड जो गोल है, से उत्पन्न अर्थात अग्नि की आधार स्वरूपा। कुण्डलिनी की उत्पत्ति अर्थात ऊपर उठने का आधार अर्थात इनकी कृपा से कुण्डलिनी उठती है। कुण्ड का एक अर्थ होता है नाग तथा गोल का अर्थ है गोल या वृत्त। वृत्ताकार नाग अर्थात कुण्डलिनी। सुन्दर स्वर्गलोक से उत्पन्न होने वाली। सुन्दर स्वर्ग लोक से उत्पन्न हुई धारा के समान। देवताओं के मण्डल से उत्पत्ति ही जिसका आधार है।

791. कुण्डगोलमयी– गोल यज्ञकुण्ड से युक्त अर्थात ऐसी अग्नि स्वरूपा जो गोल यज्ञकुण्ड में प्रज्जवलित हो रही है। सुन्दर गोलमय स्वरूपा।

792. कुहू– अमावस्या स्वरूपा। जिस अमावस्या में चन्द्रमा बिलकुल नहीं दिखता वह कुहू अमावस्या है। कुह् धातु का अर्थ है आश्चर्यचकित करना। इस प्रका कुहू शब्द का अर्थ हुआ जो अपने कार्यों से दूसरों को आश्चर्यचकित कर दे। अमावस्या के अन्तिम दो प्रहर के स्वरूप वाली जब कला (चन्द्रमा का अंश) का सम्पूर्णतः क्षय हो जाता है। चतुर्दशी का अन्तिम प्रहर एवं अमावस्या के आठ प्रहर चन्द्रमा के क्षय काल है। इन नौ प्रहरों में प्रथम दो प्रहर में चन्द्रमा की सूक्ष्मता रहती है। अमावस्या का प्रथम प्रहर जिसमें कला (अवयव या प्रकाश) की सूक्ष्मता रहती है सिनीवाली नामक अमावस्या कहलाती है जबकि अन्तिम दो प्रहर को कुहू कहते है। बीच के पाँच प्रहरों को दर्श कहा जाता है। जो गुह्य बातों को गुप्त रखती है अर्थात् बहुत गम्भीर रहती है। गुह् + कु + ऊङ् = कुहू। जिसके बारे में पूँछा जाता है कि वह किस कुल की है अर्थात् उत्कृष्ट कुल वाली। क्व + यू = कुहू। अंग्रेजी का Queen शब्द कुहू से उत्पन्न हुआ बताया जाता है। जिसे आवश्यकता पड़ने पर कभी भी बुला दिया जाता है भले ही वह कहीं पर भी हो। क्व+ ह्वञ् = कुहू। इस प्रकार के कुछ अर्थ वैदिक कोष में दिये गये हैं।

793. कुण्डगोलप्रियप्राणा– गोलाकार यज्ञकुण्ड में रहना जिनको अधिक प्रिय है या अधिक अच्छा लगता है। गोल यज्ञकुण्ड जिन्हें प्राणों से भी अधिक प्रिय है। कुण्डलिनी शक्ति जिन्हें प्राणों से भी अधिक प्रिय है। खट्टा चावल, दलिया या माड़ जिन्हें प्राणों के समान प्रिय है। कुण्डगोल का एक अर्थ खट्टा चावल, दलिया या माड़ भी है। कौलमार्ग में कुण्डगोल का अर्थ स्वयंभू पुष्प अर्थात स्त्री का रज माना जाता है।

794. कुण्डगोलप्रपूजिता– खट्टा चावल या चावल के माड़ से विधिवत पूजित होने वाली। कुण्डलिनी के रूप में जिनकी विधिवत पूजा होती है। कौलमार्ग में कुण्डगोल का अर्थ स्वयंभू पुष्प अर्थात स्त्री का रज माना जाता है। वाम मार्ग, कौल मार्ग की पूजा में स्त्री रज को चढ़ाकर विशेष रूप से पूजित। गोल यज्ञकुण्ड में जिनकी अग्नि के रूप में विधिवत पूजा होती है। देवतागण जिन्होंने मण्डलाकार में होकर देवी की विधिवत उपासना की जैसा कि दुर्गा सप्तशती में लिखा है। कुण्ड का अर्थ शिव भी है तथा देवालय के पास उपस्थित पवित्र पोखरा है अतः कुण्ड का अर्थ देवता ले लिया गया है। देवताओं के मण्डल द्वारा विधिवत पूजित।

795. कुण्डगोलमनोल्लासा– गोलाकृति आकार वाले यज्ञकुण्ड में जिनका मन उल्लसित है अर्थात सुशोभित है। साधक के द्वारा स्त्री रज चढ़ाने से जिनका मन उल्लसित अर्थात प्रसन्न हो जाता है। शिवलिंग के द्वारा मन को आनन्दित करने वाली। शिवलिंग थोड़ा गोलाकार होता है। खट्टा चावल, दलिया या माड़ के रूप में मन को आनन्दित करने वाली। दक्षिण भारत में नीबू चावल बहुत चाव से खाया जाता है।

796. कुण्डगोलबलप्रदा– मण्डलाकार उपस्थित हुए देवताओं को बल प्रदान करने वाली। स्त्री के रज का पूजा में प्रयोग करने पर साधक को बल प्रदान करने वाली।

797. कुण्डगोलदेवरता– सुन्दर देवताओं में रत रहने वाली, प्रसन्न रहने वाली। शिवलिंग रूपी देवता में रमण करने वाली अर्थात निवास करने वाली। कुण्ड का अर्थ है शिव।

798. क्रुद्धा–युद्ध के समय क्रोधयुक्त रूप को धारण करने वाली।

799. कुलसिद्धिकरीपरा– ऐसी श्रेष्ठ जो कौलमार्गियों की सिद्धि करने वाली है। परा का अर्थ है श्रेष्ठ। समूह को सिद्धि देने वाली। समूह में रहने पर सिद्धि देने वाली। वंश की अतिशय सिद्धि प्रदान करने वाली। कौल मार्ग से आराधना करने पर परम सिद्धि देने वाली या सिद्धि देने में परायण (लगी हुई)।

800. कुलकुण्डसमाकारा–मूलाधारचक्र में स्थित कुण्डलिनी के आकार वाली। कुल का एक अर्थ मूलाधारचक्र होता है। कुल के कुण्ड के समान आकृति वाली।

801. कुलकुण्डसमानभू– समूह की शक्ति के समान होने वाली या रहने वाली। कुल अर्थात समूह, कुण्ड अर्थात यज्ञकुण्ड अर्थात शक्ति। समूह शक्ति के रूप में विराजमान। भक्तों का समूह दुर्जेय होता है। समूह में शक्ति के रूप में विराजमान है। कुल अर्थात समूह, कुण्ड अर्थात कुण्डाग्नि अर्थात शक्ति, भू अर्थात होना। कुलमार्ग रूपी कुण्ड (जलाशय) के समान जन्म देने वाली। कुल कुण्ड के समान आधार स्वरूपा।

802. कुण्डसिद्धि– यज्ञ कुण्ड से अर्थात यज्ञों से सिद्धि देने वाली। यज्ञों से सफलता देने वाली। श्रेष्ठ सिद्धि देने वाली। सिद्धि से तात्पर्य अणिमादि अष्टसिद्धियाँ या कार्यों में सफलता से। कुण्ड के रूप में या कुण्ड में या यज्ञकुण्ड में पूजा करने से सिद्धि देने वाली। केदारनाथ के पास सेमवाल गाँव में काली पीठ है वहाँ एक कुण्ड है जो ढका रहता है। कुण्ड को देवी मानकर लोग उस पर चन्दन, चावल चढ़ाते हैं उसे सामान्यतः कोई खोलता नहीं है। कुछ ही पात्र लोग साल में एक बार खोलते हैं वह भी अंधेरे में, कहते हैं कि इस कुण्ड में देवी का वास है। यह कुण्ड है जिसमें जल रहता है, यह हवन कुण्ड नहीं है।

803. **कुण्डऋद्धि**– यज्ञ कुण्डों से अर्थात यज्ञों से ऋद्धि देने वाली। ऋद्धि का अर्थ है लौकिक सम्पत्ति, धन सम्पत्ति। कल्याणमयी ऋद्धि देने वाली। ऋद्धि का अर्थ धनधान्य सम्पत्ति आदि से है। कुण्ड का एक अर्थ है शिव और शिव का अर्थ है कल्याण।

804. **कुमारीपूजनोद्यता**– कन्याओं की पूजन के लिए उद्यत (तैयार) रहने वाली।

805. **कुमारीपूजकप्राणा**– कुमारी पूजक जिन्हें अतिशय प्रिय हैं। प्राण अर्थात अत्यन्त प्रिय।

806. **कुमारीपूजकालया**– कुमारी देवी के रूप में पूजन करने वालों की रक्षा करने वाली, पालन करने वाली। कुमारी की पूजा करने वालों के लिए घर की तरह है। घर में रक्षा होती है, व्यक्ति सुरक्षित रहता है। इस प्रकार घर पालन या रक्षा करता है। जिनका निवास स्थान कुमारियों के पूजन करने का आधार स्थान है।

807. **कुमारी**– कुमारी स्वरूपा अर्थात कौमार्यावस्था से युक्त। कुमार अर्थात कार्तिकेय भगवान की शक्ति स्वरूपा। 10–12 वर्ष की बालिका कुमारी कही गई है। कुमारत्व में अक्षत–योनि का होना अनिवार्य है। कुमारत्व भंग होने का तात्पर्य है अक्षतयोनि न रह जाना। 10 वर्ष की बालिका कन्या कहलाती है। 16 वर्ष से कम की

अवस्था बाला कहलाती है, 9 वर्ष की अवस्था वाली को रोहिणी कहते हैं। नवयौवना। ब्रह्मचारिणी। पद्मचन्द्रकोश के अनुसार दस से बारह वर्ष की अविवाहित कन्या कुमारी है। कुत्सा (बुराई) को मारने वाली अर्थात् समाप्त करने वाली। दुष्टों को कुत्सित तरीके से अर्थात् बहुत बुरी तरीके से मारने वाली। वैदिककोश के अनुसार रहस्य को न जानने वाली मुग्ध बुद्धि भी कुमारी है। कुमार 05 वर्ष से कम के बालक को कहते हैं।

808. **कामसन्तुष्टा**– काम से सन्तुष्ट होने वाली। काम का अर्थ है कामदेव जिनकी आराधना से देवी सन्तुष्ट हुई थी। कामदेव को सन्तुष्ट करने वाली यह अर्थ भी हो सकता है। देवी ने कामदेव को वरदान देकर सन्तुष्ट किया था। शिव से प्रसन्न। काम का एक अर्थ है शिव और सन्तुष्ट का एक अर्थ है प्रसन्न। कामदेव से प्रसन्न।

809. **कुमारीपूजनोत्सुका**– कुमारी के पूजन के लिए उत्सुक रहने वाली अर्थात मेरा कुमारी के रूप में पूजन हो ऐसी उत्सुकता रखने वाली। कुमारियों के पूजन करने के लिए उत्सुक रहने वाली।

810. **कुमारीव्रतसन्तुष्टा**– कुमारियों के व्रत से सन्तुष्ट रहने वाली या कुमारियों के लिए जो व्रत किया गया उससे प्रसन्न रहने वाली।

811. **कुमारीरूपधारिणी**– कुमारी कन्याओं के रूप को धारण करने वाली।

812. **कुमारीभोजनप्रीता**– कुमारियों को भोजन कराने से अर्थात कन्याभोज से प्रसन्न होने वाली।

813. **कुमारी**– कुत्सित दैत्यों को मारने वाली। कौमार्यावस्था से सुशोभित।

814. **कुमारदा**– पुत्र को देने वाली अर्थात इनकी उपासना से पुत्र प्राप्ति होती है। पृथ्वी पर कामदेव की तरह सौन्दर्य प्रदान करने वाली। कु अर्थात पृथ्वी, मार अर्थात कामदेव जो सौन्दर्य का प्रतीक है। सन्तान प्रदान करने वाली।

815. **कुमारमाता**– स्वामी कार्तिकेय की माता पार्वती से अभेद है जिनका।

816. **कुलदा**– श्रेष्ठ कुल को देने वाली अर्थात श्रेष्ठ कुल में जन्म देने वाली या श्रेष्ठ कुल में विवाह कराने वाली।

817. **कुलयोनि**– शाक्त कुल जिनसे पैदा हुआ। ब्रह्माण्ड या विश्व जिनसे पैदा हुआ। शरीर जिनसे पैदा हुआ। कु अर्थात पृथ्वी, ला आदाने, ला धातु में ड प्रत्यय लगाने से ल शब्द बनता है जिसका अर्थ है धारण करने वाला। ब्रह्माण्ड, शरीर पृथ्वी तत्व को धारण करने के कारण कुल कहलाये जाते हैं। कुल की कारण अर्थात जिनसे कुल नाम से सम्बन्धित सभी पदार्थ उत्पन्न होते हैं।

818. **कुलेश्वरी**– कुल की ईश्वरी अर्थात श्रेष्ठ कुल के लोगों द्वारा या भक्तकुल के लोगों द्वारा उपासनीया या जो कुल के योगक्षेम का ध्यान रखती है।

819. **कुललिङ्गा**– कुल का चिन्ह अर्थात पहचान। शाक्त कुल की पहचान इन्हीं से होती है।

820. कुलानन्दा– शाक्त कुल को आनन्द देने वाली। कुल अर्थात समूह अर्थात देव समूह को आनन्दित करने वाली। कुल का अर्थ है वंश या खानदान, समूह, मकान, तन्त्र के अनुसार (प्रकृति, काल, आकाश, जल, तेज, वायु आदि पदार्थ), संगीत का एक ताल, शरीर, नगर, गोत्र, कुण्डलिनी शक्ति।

821. कुलरम्या– सम्पूर्ण कुल में अतिशय रमणीय (मनोहर, सुन्दर)।

822. कुतर्क्कधृष्– कुतर्कों को नष्ट करने वाली, परास्त करने वाली।

823. कुन्ती– पृथ्वी का विस्तार करने वाली अर्थात समस्त विश्व का विस्तार करने वाली। कुं पृथ्वीं तनोति इति कुन्ती। पृथ्वी तो उपलक्षण है और वह समस्त विश्व का प्रतीक है। दैत्यों के लिए भाला (बरछी) स्वरूपा। कुन्त का अर्थ है भाला। महाभारत की कुन्ती स्वरूपा। कुन्त अर्थात भाले को धारण करने वाली। अपने प्रयास से

जिन्होंने सिर को ठंडे मिजाज का रखा है। क अर्थात सिर, उन्द अर्थात गीला अर्थात शीतल, ई अर्थात शक्ति अर्थात प्रयास। पृथ्वी तत्व का विस्तार करने वाली अर्थात् जगत का विस्तार करने वाली। कु का अर्थ है पृथ्वी, तन् धातु में ड प्रत्यय लगाने से त शब्द बनता है जिसका अर्थ है विस्तार करने वाला। पृथ्वी से समस्त ब्रह्मण्ड का बोध होता है। पृथ्वी तत्व से क्रियाओं का विस्तार करने वाली अर्थात पार्थिव तत्व से या पार्थिव तत्व को विस्तारित करने वाली। जन्म, अस्ति, वृद्धि, विपरिणाम, क्षय, नाश ये छह भाव होते हैं। कु अर्थात पृथ्वी। क+उन्द्+ई अर्थात जिसने प्रयास (शक्ति) से अपने सिर को गीला अर्थात कोमल भाव वाला या दयालु बना रखा है। क अर्थात सिर, उन्द् अर्थात गीला, ई अर्थात शक्ति या प्रयास।

824. कुलकान्ता– कुलमार्ग से पूजा करने वालों की प्रिया अर्थात कुलमार्ग से पूजा करने वाले देवी को पसन्द करते हैं। कुलमार्ग के लिए दीप्तिस्वरूपिणी अर्थात दीप्ति देने वाली। सम्पूर्ण वंश में अतिशय प्रिया। प्रलयकाल में कुल अर्थात ब्रह्माण्ड का नाश करने वाली। कुल शब्द में कन् प्रत्यय लगाने से बने कुलक का वही अर्थ होता है जो कुल का है।

825. कुलमार्ग्गपरायणा– कुलमार्ग की पूजा पद्धति में लगी हुई अर्थात कुल मार्ग की पूजा पद्धति इन्हें अधिक पसन्द है। कुल के मार्ग पर चलने वाली। कुल पूजा पद्धति अर्थात कौल मार्ग की पूजा पद्धति की रक्षिका, सार तत्व, अन्तिम लक्ष्य। परायण का अर्थ है तत्पर, श्रेष्ठ गति (अन्तिम लक्ष्य), रक्षिका, सार तत्व।

826. कुल्ला– कुल को बढ़ाने वाली। कुलम् लाति आदत्ते वर्धते इति कुल्ला। इन्द्रिय समूह को पुष्ट करने वाली। कुलम् लालयति इति कुल्ला। कुल अर्थात समूह अर्थात इन्द्रिय समूह। कुलेन लापयति अर्थात समूह के द्वारा लापित या बोली गई अर्थात समूह द्वारा स्तुति की गई जिनकी। देवगणों या ब्राह्मी, माहेश्वरी आदि मातृ समूहों द्वारा लापित अर्थात स्तुत। कुल्ला का अर्थ है वंश परम्परा, चूँकि ज्ञान गुरू शिष्य परम्परा से लाया जाता है अतः कुल्ला का अर्थ ज्ञान परम्परा भी होता है।

827. कुरूकुल्ला– (क) कर्ता होने के कारण विभिन्न कुलों को लाने वाली अर्थात उत्पन्न करने वाली। कुरू की व्युत्पत्ति है– करोति इति कुरू अर्थात करने वाला अर्थात कर्ता। कुल से तात्पर्य सृष्टिकुल, स्थितिकुल या संहारकुल से है। कुल से तात्पर्य गाणपत्यकुल, शैवकुल, वैष्णवकुल, शाक्तकुल, सौरकुल से है। इन विभिन्न कुलों को उत्पन्न करने वाली उनको पोषित करने वाली।

(ख) कर्ता होने के कारण कुलों का लालन करने वाली। कर्तृत्व शक्ति से युक्त होकर कुल को बढ़ाने वाली। कर्तृत्व शक्ति से युक्त होने के कारण कुल को बढ़ाने वाली। जो कर्तृत्वशक्ति से युक्त है और कुल को बढ़ाने वाली है। क्रियते अनया इति कुरू।

(ग) ज्ञान परम्परा को लाने वाली (उत्पन्न करने वाली) या ज्ञान परम्परा का विनाश करने वाली। कुल्ला का अर्थ है वंश परम्परा, चूँकि ज्ञान गुरू शिष्य परम्परा से लाया जाता है अतः कुल्ला का अर्थ ज्ञान परम्परा भी होता है। कुरू का अर्थ है करने वाला। कुल्ला में ला का अर्थ लाना भी होता है और नाश करना भी होता है।

(घ) शास्त्रोक्त विधान पूर्वक कर्म से जो वंश को ऊँचाई की ओर/मोक्ष की ओर/सात्विकता की ओर ले जाए। कुरू का अर्थ कर्म है, जो कर्म विधान पूर्वक शास्त्रोक्त रूप से किये जाएं। कुरूक्षेत्र शब्द आपने सुना होगा वहाँ कुरू का अर्थ कर्म से है।

(ङ) कुत्सित ध्वनि निकालने वाले परिवार से सम्बन्धित। कु का अर्थ है कुत्सित, रू का अर्थ है ध्वनि। कुल्ला का अर्थ वंश या परिवार है। Pertaining to family of harsh sound. ऐसी देवियाँ जो कठोर शब्द निकालती हैं उस परिवार से सम्बन्धित हैं।

(च) कुरूकुल्ला पहाड़ (जो लाट देश गुजरात में है) में रहने वाली।

(छ) कर्म समूह को लाती हैं अर्थात ग्रहण करती हैं। लाना का अर्थ यहाँ पर लाकर संहार करना होगा अर्थात संचित कर्मों को नष्ट कर मोक्ष देती हैं। कुरूकुलम् लाति इति कुरूकुल्ला। कुरूक्षेत्र में कुरू का अर्थ कर्म है। कुरूकुल का अर्थ है कर्म समूह।

(ज) कुरू अर्थात करते हुए, स्पन्दन करते हुए सृष्टि को लाने वाली अर्थात पैदा करने वाली। कुल का अर्थ सृष्टि या संसार भी होता है। कुरू का अर्थ कर्ता लगाने पर इस नाम का अर्थ होगा स्पन्दन करने वाली होने के कारण सृष्टि को/सन्तान को लाने वाली अर्थात पैदा करने वाली। शिव का क्षोभण करके जगत पैदा करती है। शिव का क्षोभण करने वाली होने के कारण कुल अर्थात संसार को लाने वाली अर्थात पैदा करने वाली।

(झ) शक्ति संगम तंत्र के सुन्दरी खण्ड में कुरूकुल्ला का अर्थ इस प्रकार बताया गया है। विद्या का कुल जिसकी उपासना करता है, वह है कुल्लुका या कुल्ला। कुल्ला या कुल्लुका भी जिसकी उपासना करती है वह है कुरूकुल्ला। विद्याओं के समूह द्वारा लापित अर्थात स्तुत यह कुल्ला की व्युत्पत्ति हुई। कुल अर्थात समूह अर्थात विद्या का समूह।

(ञ) यह शब्द श्री ललिता सहस्रनाम में भी आता है। वहाँ श्री भास्कर राय जी ने इस नाम का अर्थ लिखा है श्रीनगर/श्रीचक्र में अहंकार (ego) और चित् (consciousness) नाम क दो दीवालों के बीच में विमर्श नामक सरोवर है उसके अधिष्ठान में रहने वाली देवी कुरूकुल्ला है।

(ट) कुरूकुल्ला हिन्दुओं और बौद्धों की तान्त्रिक देवी हैं जो नाव और शराब की देवी कही जाती हैं। इनका निवास उस नाव में माना जाता है जो रत्नों से भरी है तथा पतवार भी रत्न से बना है। यह तारा देवी का उग्र रूप है जो उपासक के शत्रुओं को वशीकृत करता है। इन देवी का रंग लाल है। अतः उपासक इनकी आराधना के दौरान लाल वस्त्र पहनते हैं।

(ठ) कुरू अर्थात करने वाला। कुल्ला अर्थात अपनी सन्तान के लिए लाने वाली। (स्नेह) करने वाली होने के कारण अपनी (भक्त) सन्तान के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ लाने वाली जिससे उसकी भक्त सन्तान को ज्ञान प्राप्त हो सके। कुरूकुल्ला को ज्ञान की देवी कहते हैं। कुरूकुल्ला को प्रेम की देवी भी कहते हैं। तब इसका अर्थ होगा – (स्नेह) करने वाली होने के कारण अपनी भक्त सन्तान को आकर्षक या चुम्बकीय व्यक्तित्व लाती है जिससे उसे प्रेम, सम्पन्नता, यश, सम्मान आदि मिले। जिसे प्रेम नहीं मिला हो वह कुरूकुल्ला की उपासना करता है। कुरूकुल्ला का शाब्दिक अर्थ हुआ – करते हुए सन्तान के लिए लाने वाली या कर्ता होने के कारण सन्तान के लिए लाने वाली। स्नेह की बारिश करते हुए सन्तान के लिए प्रेम, यश, स्वास्थ्य, सांसारिक जीवन मे सफलता, चुम्बकीय व्यक्तित्व, जादुई शक्तियाँ लाने वाली। स्नेह की बारिश करने वाली होने के कारण सन्तान के लिए प्रेम, यश, स्वास्थ्य, सांसारिक जीवन मे सफलता, चुम्बकीय व्यक्तित्व लाने वाली। कुरूकुल्ला मुख्यतः रजोगुण से सम्बन्धित हैं। सुकुल्ला सतोगुणी देवी हैं। विकुल्ला तमोगुण की देवी हैं। कुरूकुल्ला देवी के लौकिक और अलौकिक दोनों पक्ष होते हैं। लौकिक पक्ष में यह व्यक्ति को संसार में श्रेष्ठ ऊँचाई तक पहुँचा देगी पर संसार से बाहर नहीं निकलने देगी। इस प्रकार कुरूकुल्ला देवी सांसारिकता से अधिक सम्बन्ध रखती हैं और यह वैराग्य के विरोधी हुईं। कुरूकुल्लाविरोधी का अर्थ हुआ रजोगुण, सांसारिकता या द्वैतभाव का विरोध करने वाली। संसार में जुनून (पैशन या आसक्ति) जगाती हैं, द्वैत या नानात्व की ओर ले जाती हैं। कौन सा कुल है कौन सा अकुल है इसकी पहचान कराने वाली। भक्तों को उदारता, यश, प्रसिद्धि, प्रेमपात्र देती हैं, उत्पत्ति करती व्यक्ति को कुल और अकुल का ज्ञान करवाती। भक्तों को उदार बनाती हैं। जिन्हें प्रेम की तलाश है, वे कुरुकुल्ला देवी की उपासना करते हैं।

(ड) कुरूविन्द मणि से भी जोड़कर इसका अर्थ निकाल सकते हैं। कुरूविन्दमणि में निवास करने वाली यह अर्थ

हुआ। कुरूविन्दमणि से बने हुए कुलपर्वत पर सुशोभित। शब्द का आखिरी ला शब्दाक्षर लसते अर्थात सुशोभित होना से लिया।

(ढ) दुर्वासा ऋषि के ललितास्तवरत्न में श्लोक है–

कुरूविन्दतरूणीनिलयां कुलाचलस्पर्धिकुचनमनमध्यमाम्।

कुमकुमविलिप्तगात्रीं कुरूकुल्लां मनसी कुर्महे सततम्।।

कुरूविन्द मणि की तरह दीप्तिमती तरूणियों में रहने वाली, कुलाचल पर्वत से स्पर्धा करते हुए स्तन के भार के कारण झुके हुए मध्य भाग वाली (कमर वाली), कुमकुम से पुते लेपित शरीर वाली, ऐसी कुरूकुल्ला को मन से निरन्तर ध्यान करते हैं। इस श्लोक के आधार पर यदि कुरूकुल्ला का अर्थ निकाला जाए तो अर्थ होगा– कुरूविन्द मणि की तरह कान्ति/लावण्यता/तेजस्विता/दीप्ति से एवं कुलाचल पर्वत की उन्नत अर्थात ऊँचे स्तन द्वारा या स्तन से सुशोभित। शब्द का आखिरी ल शब्दाक्षर लसते अर्थात सुशोभित होना से लिया गया है। कुरूविन्द मणि से कुरू शब्द लिया, कुलाचल से कुल शब्द लिया तथा लसते (सुशोभित) को हमने अपनी ओर से लिया।

कुरूविन्द मणि से कुरू लिया। विन्ध्याचल, सह्यादि आदि सप्त पर्वत कुलाचल कहलाते हैं। इन पर्वतों से कुल शब्द लिया। लसति अर्थात शोभित होना से ल बना।

(ण) जगत को करने वाली अर्थात जगत को संचालित करने वाली। जगत को करने वाली अर्थात जगत का निर्माण करने वाली। कुरु का अर्थ है करने वाली अर्थात संचालित करने वाली, निर्माण करने वाली। कुल्ल अर्थात कुल (समूह) को ग्रहण करने वाला अर्थात जगत क्योंकि जगत में कई प्रकार के समूह होते हैं। कुलानि लाति ग्रह्णाति इति कुल्ल। स्त्रीलिंग में कुल्ल का कुल्ला हुआ। इस प्रकार कुल्ला का अर्थ जगत हुआ।

(त) वैदिक कोष में कुरू का अर्थ, जो शत्रुओं को काटता है ऐसा किया गया है। शत्रून कृन्तति इति कुरूं। कृत् + कु इति करुः। (कृत् के ऋ का उ और निपातन से त् का लोप हो गया)। कुरु का अर्थ क्रूर भी होता है। कृत् + रक् = क्रूर। (कृत् का क्रूर आदेश)। कुल अर्थात समूह। जो शत्रुओं को काट देती है एवं भक्त समूह को ग्रहण करती है अर्थात् अपनाती है। ला धातु का अर्थ आदान करना अर्थात् ग्रहण करना भी होता है। दुष्टों को छेद डालने वाली एवं भक्त समूह या शाक्त समूह का लालन पालन करती है। कूरु का अर्थ कुरू देश का राजा भी होता है। कुरू देश के राजा के वंश को अपनाने वाली (अर्थात् कृपा करने वाली) या उसका लालन पालन करने वाली। कुल का अर्थ समूह अर्थात् इन्द्रिया समूह भी होता है। इन्द्रियों का लालन करने वाली अर्थात् उसे शक्ति देकर पुष्ट करने वाली या कार्य के लिए सक्षम बनाने वाली। कुरू वंश को धारण करने वाली अर्थात उसे adopt करने वाली अर्थात उसका लालन या पालन पोषण करने वाली।

828. कुल्लुका– वंश का लोप करने वाली अर्थात जन्म मरण रूप परम्परा का लोप करने वाली अर्थात मोक्ष देने वाली। यदि कुल्लुका है तो लुक् शब्द लेंगे जिसका अर्थ है लोप। समूह (दृश्य और अदृश्य जगत) का लोप या संहार करने वाली। लुक् का अर्थ होता है लोप करना। कुल का अर्थ है प्राणी समूह। यदि कुल्लूका है तो लू छेदने से छेदन अर्थ लेंगे अर्थात वंश का छेदन करने वाली। कुल अर्थात वंश अर्थात जन्म मरण का चक्र। कुल पर्वत युक्त भूमि स्वरूपा। लू अर्थात भूमि, लूक का वही अर्थ है जो लू का। कुल का अर्थ है कुल पर्वत। एकाक्षरी कोष में लू का अर्थ भूमि दिया गया है। इस प्रकार कुल्लूका का अर्थ हुआ कुल पर्वत युक्त भूमि स्वरूपा। कुण्डलिनी की स्थान भूमि अर्थात मूलाधारचक्र स्वरूपा। कुल अर्थात सर्वोच्च अर्थात मुख्य। सिर को सर्वोच्च मानते हैं, लू का अर्थ है खोदना। लू में कन् प्रत्यय लगाने से लूक बना पर अर्थ परिवर्तित नहीं होता। लूक का अर्थ हुआ खोदना, सिर में खोदना अर्थात सिर स्पर्श करना। जो सिर में स्पर्श किये है अर्थात सहस्रार चक्र में रहती है। सहस्रारचक्र में निवास करने वाली। सिर को छेदने अर्थात स्पर्श करने वाली अर्थात सह्रसारचक्र में

विराजमान। क का अर्थ है सिर, लू छेदने धातु होती है जिसका अर्थ है छेदन यहाँ पर अर्थ हुआ स्पर्श करना। मन्त्रशास्त्र में कुल्लूका होती है जिसमें कुछ मन्त्र होते हैं जिन्हें पढ़ते हुए सिर पर स्पर्श किया जाता है। सम्भवतः कुल अर्थात सिर के छेदन (अर्थात स्पर्श, लू छेदने) के कारण कुल्लूका मन्त्र महा जाता है। कुल को प्रकाशित करने वाली। कुलम् लोक्यते अनया। कुल का अर्थ कुण्डलिनी भी होता है। कुण्डलिनी की भूमि अर्थात मूलाधारचक्र। समूह में रहने वाली। कुल का अर्थ है समूह और ऊक का अर्थ है रहना। कहा गया है समूह में शक्ति होती है। पृथ्वी का लय करके उस लय में भी रहने वाली। कुल्ल का अर्थ हुआ पृथ्वी का लय, कु का अर्थ है पृथ्वी। कुल्ल में ऊक (निवास) है। संस्कृत में लुनाति धातु छेदन करने अर्थ में प्रयुक्त होती है। लू में कन् प्रत्यय लगाने से लूक बनता है जिसका अर्थ वही होता है जो लू का है अर्थात छेदन करने वाला। इस प्रकार कुल्लूका का अर्थ हुआ, प्रलय काल में जो प्राणियों का संहार कर देती हैं।

829. **कुलकामदा**– उपासको के कुल को उनकी इच्छानुसार फल देने वाली। कामदा अर्थात इच्छा देने वाली अर्थात इच्छा पूरी करने वाली। तान्त्रिक गुरू एवं उसके शिष्यों को मिलाकर एक कुल बनता है। वंश को इच्छानुसार फलों को देने वाली।

830. **कुलिशाङ्गी**– वज्र के समान कठोर अंगों वाली।

831. **कुब्जिरिका**– उच्चावच भूमि स्वरूपा अर्थात कुछ टेढ़ी है ऐसी भूमि स्वरूपा। कु+उब्ज+इरा। उब्ज का अर्थ सीधा या आर्जव, इस प्रकार कुब्ज का अर्थ हुआ ऊबड़ खाबड़ या टेढ़ा। इरा का अर्थ है भूमि। कुब्जक पुष्प के समान सर्वाधिक सुन्दर। यह शब्द कुब्जक शब्द से बना जो एक प्रकार का पुष्प होता है जो कई पुष्पों से सुन्दर होता है। पृथ्वी पर सबसे सौम्य आकृति वाली अर्थात जो सबसे सादगी वाली या सीधापन लिये हुए है। क का अर्थ पृथ्वी है। उब्ज का अर्थ होता है आर्जव, सादगी या सीधापन। क्+उब्ज से कुब्ज बना। मतुप अर्थ में र प्रत्यय लगाने से कुब्जर बना और स्त्रीलिंग में कुब्जिरिका बना (कुब्जिका का अर्थ है शिव के साथ प्रणय प्रसंग में अपने शरीर को मोड़ देने वाली। जो शत्रुओं के लिए टेढ़ी हैं)।

832. **कुब्जिकानन्दवर्द्धिनी**– आठ वर्ष की कन्या के आनन्द को बढ़ाने वाली। आठ वर्ष की कन्या को कुब्जिका कहते हैं। शिवजी के साथ प्रणय प्रसंग में अपने शरीर को कुछ मोड़ देने के कारण पार्वती जी का एक नाम कुब्जिका भी है। कुब्ज अर्थात टेढ़ापन। दुष्टों और शत्रुओं के लिए जो टेढ़ी हैं।

833. **कुलीना**– श्रेष्ठ वंश में होने वाली। पृथ्वी में लीन अर्थात पृथ्वी के कण कण में व्याप्त। कु का अर्थ है पृथ्वी। कु जिसमें लीन होती है अर्थात जल स्वरूपा क्योंकि पृथ्वी जल में लीन होती है।

834. **कुञ्जरगति**– गजगामिनी। विलास पूर्वक चलने वाली या मटककर चलने वाली। हाथी मस्त होकर अर्थात आनन्द में डूबा हुआ, झूमता हुआ अगल–बगल की परवाह किए बिना आगे बढ़ता है। राजसी की तरह चलना।

835. **कुञजरेश्वरगामिनी**– श्रेष्ठ हाथी पर विराजमान होकर चलने वाली। ईश्वर अर्थात श्रेष्ठ।

836. **कुलपाली**– उपासकों के कुलों या शाक्त कुलों या कौल कुलों को पालने वाली। तान्त्रिक गुरू और उनके शिष्यों का भी एक कुल होता है। कुल मार्ग से अर्थात कौल मार्ग से आराधना करने वालों का पालन करने वाली। कुल को पालने वाली। यदि कुलपात्री शब्द है तो अर्थ है कुल पद्धति से पूजन करने योग्य। पात्रता का अर्थ है योग्यता।

837. **कुलवती**– कुलमार्ग अर्थात कौलमार्ग की पूजा पद्धति वाली अर्थात इस पूजा पद्धति से युक्त। जिनकी कुलमार्ग/कौलमार्ग पद्धति से पूजा की जाती है। श्रेष्ठ कुल वाली। कुल श्रेष्ठता का प्रतीक है। कुल पर्वत अर्थात श्रेष्ठ पर्वत। कुल मार्ग अर्थात श्रेष्ठ मार्ग।

838. **कुलदीपिका**– कुल की दीपक के समान अर्थात कुल को चमकाने वाली, नाम दिलाने वाली।

839. **कुलयोगेश्वरी**– कुलमार्ग वालों को अभीष्ट वस्तु प्रदान कर देने वाली। योग का अर्थ अभीष्ट की प्राप्ति और ईश्वरी का अर्थ है देने वाली। कुल की योगेश्वरी।

840. **कुण्डा**– शिव की शक्ति स्वरूपा। कुण्ड का एक अर्थ शिव है। पात्र या मिट्टी की कटोरी स्वरूपा अर्थात सारा विश्व जिसमें समाया है। पात्र में जल समाहित होता है और देवी में सारा विश्व समाहित है अतः वे पात्र रूप में हो गईं। शिव के स्वरूप वाली। नाग के स्वरूप वाली।

841. **कुङ्कुमारूणविग्रहा**– कुमकुम के कारण अर्थात उसके लेप से जिनका शरीर लाल लाल हो गया है।

842. **कुङ्कुमानन्दसन्तोषा**– कुमकुम लगाने से होने वाले आनन्द से सन्तुष्ट। कुमकुम लगाने से आनन्द और सन्तोष को स्वयं अनुभव करने वाली। उपासकों द्वारा कुमकुम लगाने से उन्हें आनन्द और सन्तोष देने वाली। कुमकुम से होने वाले आनन्द से सन्तुष्ट हो जाने वाली।

843. **कुङ्कुमार्ण्णववासिनी**– कुमकुम के समुद्र में (अर्थात कुमकुम के आधिक्य में) निवास करने वाली। यहाँ अर्णव (समुद्र) का तात्पर्य आधिक्य से है। जैसे कहतें है कि आप विद्या के समुद्र है इसका तात्पर्य है कि आपमें विद्या का आधिक्य है। कुमकुम रूपी समुद्र में निवास करने वाली।

844. **कुसुमा**– पुष्प स्वरूपा अर्थात पुष्प की तरह प्रफुल्लित रहने वाली।

845. **कुसुमप्रीता**– पुष्पों के द्वारा प्रसन्न अर्थात फूल चढ़ाए जाने पर प्रसन्न।

846. **कुलभू**– श्रेष्ठ वंश में उत्पन्न होने वाली।

847. **कुलसुन्दरी**– कुल मार्ग के लिए सुन्दरी के रूप में उपासनीया अर्थात त्रिपुर सुन्दरी के रूप में उपासनीया। सम्पूर्ण कुल में अतिशय सुन्दर स्वरूप वाली।

848. **कुमुद्वती**– कुमुद पुष्प को धारण करने वाली अर्थात उसे हाथ में लिये हुए। कु अर्थात पृथ्वी, मुद अर्थात प्रसन्न। पृथ्वी पर प्रसन्न रहने वाला या प्रसन्नता देने वाला कुमुद है। कुमुद पुष्पों से सुशोभित होने वाली। कुमुद के गुणों से युक्त अर्थात सौन्दर्य और सुगन्ध से युक्त।

849. **कुमुदिनी**– कुमुदिनी पुष्प की तरह सुन्दर एवं सुगन्ध युक्त। कुमुदिनी की तरह प्रसन्न। कुमुद से कुमुदी और कुमुदी से कुमुदिनी बना। कुमुद के समान प्रसन्न या प्रसन्नता देने वाली। कुमुदिनी कमल की तरह होता है पर कमल के पत्ते जल से ऊपर होते हैं जबकि कुमुदिनी के पत्ते और पुष्प जल पर तैरते हैं। कुमुदिनी स्वरूपा। कुमुदिनी कमल की तरह एक छोटा पौधा है जो सफेद होता है और रात में खिलता है। कुमुदिनी उस स्थान को भी कहते हैं जहाँ कुमुद (श्वेत कमल) एवं लाल कमल लगे हों।

850. **कुशला**– चतुर या दक्ष (सभी कार्यों में)। पृथ्वी पर विचरण करने वाली। कु अर्थात पृथ्वी, शल् गतौ धातु होती है। नदी भी पृथ्वी पर गति करती है अतः नदीस्वरूपा। कुशल का अर्थ श्रेष्ठ, पुण्यशील, प्रसन्न भी होता है।

851. **कुलटालया**– कुलटा स्त्रियों का आश्रय। कुलटा का अर्थ है व्यभिचार के लिए दूसरे से संसर्ग करने वाली। कुलटा स्त्रियाँ यदि देवी के शरणागत होती हैं तो देवी उनके पापों का नाश कर देती हैं।

852. **कुलटालयमध्यस्था**– कुलटा स्त्रियों के भवनों के मध्य में रहने वाली। नवरात्रियों में वैश्याओं के घर से मिट्टी माँगी जाती है जो बड़ी पवित्र मानी जाती है।

853. **कुलटासङ्गतोषिता**– कुल देवी के रूप में पूरे परिवार के द्वारा पूजा करने से तुष्ट की जाने वाली। कुले कुले अटति इति कुलटा अर्थात जो प्रत्येक कुल में जाती है अर्थात प्रत्येक कुल में पूजी जाती है अर्थात कुल देवी। संग का अर्थ साथ साथ रहने वाले अर्थात परिवार। कुलटाओं के संग से सन्तुष्ट हो जाने वाली।

854. **कुलटाभवनोद्युक्ता**– कुल कुल में जाना रूपी होना (घटना) के लिए तैयार। भवन का अर्थ भू धातु से होना है और होना अर्थात घटना। कुलटाओं के भवन में रहने के लिए उद्यत (हमेशा तैयार) रहने वाली।

855. **कुशावर्त्ता**– पितृ तर्पण के लिए कुशावर्त तीर्थ स्वरूपा। कुशों से व्यवहार करने वाली अर्थात कुशों का प्रयोग करने वाली।

856. **कुलावर्ण्णवा/कुलार्णवा**– वर्ण या जाति प्रथा से रहित अर्थात इसे न मानने वाले सम्प्रदाय को आगे ले जाने वाली अर्थात समृद्धि देने वाली। कौलमार्ग में ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि का भेद नहीं है। कुंल+अवर्ण+वा। इस शब्द का आखिरी वा, वाति से आया जिसका अर्थ है गति करना अर्थात यहाँ पर अर्थ होगा आगे ले जाना। कुलमार्गियों के लिए समस्त वर्णों वाली ये अर्थ भी हो सकता है। कुल+आ+वर्ण। यदि कुलार्णवा शब्द है तो अर्थ है वंश की समृद्धि में समुद्र की तरह आचरण करने वाली। कुलमार्गियों के लिए समुद्र स्वरूपा अर्थात रत्नाकर स्वरूपा अर्थात रत्न देने वाली। अर्णव का अर्थ है समुद्र अर्थात रत्नाकर। कुलमार्गियों के लिए समुद्र अर्थात अपार स्वरूपा अर्थात अगम्य स्वरूपा यह शाब्दिक अर्थ हुआ पर यह बेहतर अर्थ नहीं लग रहा। कुल + अर्णव। व का अर्थ इव अर्थात की तरह भी होता है। इस प्रकार अर्थ होगा कुल पद्धति के लिए या कौल मार्ग के लिए अक्षर की तरह अर्थात अक्षर स्वरूपा। कुलार्णव तन्त्र की शक्ति स्वरूपा या इस तन्त्र की अधिष्ठात्री देवी।

857. **कुलार्ण्णवाचाररता**– कौल मार्ग से पूजित होने पर लीन अर्थात प्रसन्न। रति से रत बना जिसका तात्पर्य है प्रसन्न। कुलार्ण्णव तंत्र में बताये गये आचार में लगी हुई या उस आचार से पूजित होने पर प्रसन्न। कुल का एक अर्थ कौलमार्ग या वाममार्ग भी होता है। श्रेष्ठ वंशों के सुन्दर आचारों में संलग्न रहने वाली।

858. **कुण्डली**– कुण्डलिनी शक्ति स्वरूपा। कुण्डल धारण करने वाले शिव की पत्नी। कुण्डलम् अस्य अस्ति इति कुण्डलः। कुण्डलः अर्थात कुण्डल वाला अर्थात कुण्डल धारण करने वाले शिव।

859. **कुण्डलकृति**– गोल रचना वाली। गोल कुण्डल की तरह अर्थात कुण्डलिनी रूपा। दुनिया की समस्त वस्तुऐं स्वाभाविक रूप से गोलाई में होती हैं, व्यक्ति बाद में उस पर काम कर चपटा आदि कर देता है। फल, फूल, पुष्प आरम्भ में गोल ही होते हैं। सुन्दर रचना। ब्रह्माण्ड स्वरूपा। पृथ्वी स्वरूपा।

860. **कुमति**– पृथ्वी पर जो उपासक हैं उनके लिए ज्ञान स्वरूपा। कु अर्थात पृथ्वी और मति अर्थात ज्ञान। शत्रुओं की कुबुद्धि स्वरूपा अर्थात तात्पर्य हुआ शत्रुओं को कुबुद्धि प्रदान करने वाली।

861. **कुलश्रेष्ठा**– कुल में श्रेष्ठ। देव कुल में सर्वोपरि। गुण, शक्ति आदि सभी में सभी देवताओं से श्रेष्ठ।

862. **कुलचक्रपरायणा**– वंश के समूह (चक्र) के पालन पोषण को बढ़ाने में या करने में लगी रहने वाली। कुलचक्र कौलमार्ग उपासकों का समूह है जिसमें महिलाऐं और पुरुष गोलाकार आकृति बैठकर देवी की उपासना करते हैं। इस प्रकार की पूजा पद्धति में लगी रहने वाली अर्थात पसन्द करने वाली। परायण का अर्थ उत्तम लक्ष्य भी होता है। इस नाम का अर्थ कुलचक्र से की जाने वाली पूजा का उत्तम लक्ष्य है।

863. **कूटस्था**– कूट ब्रह्म में स्थित रहने वाली। तटस्थ होकर रहने वाली।

864. **कूटदृष्टि**– रहस्यमय दृष्टि स्वरूपा अर्थात रहस्यमय दृष्टि वाली। कूट का अर्थ पहेली अर्थात रहस्यमय या छुपा हुआ होता है। कूटा दृष्टि यस्या सा। तटस्थ दृष्टि स्वरूपा।

865. **कुन्तला**– लम्बे बालों वाली या घुंघराले बालों वाली। कुन्तलाः अस्या सन्ति इति कुन्तला। सुन्दर बालों से सुशोभित।

866. **कुन्तलाकृति**– बालों के कारण सुन्दर आकृति वाली अर्थात बालों से सुन्दर है आकृति जिसकी। कुन्तल अर्थात बालों से रूपवती। बाल की तरह काले शरीर वाली। कुन्तल का अर्थ है बाल। सुन्दर बालों से जिनकी आकृति अतिशय शोभायमान है।

867. **कुशलाकृतिरूपा**– कुशलक्षेम या सर्वमंगलों के स्वरूप वाली। दुष्टों को दुखी करने वाली आकृति वाली। कु अर्थात कुत्सित अर्थात दुष्ट। शल अर्थात कष्ट देना। श्रेष्ठ/ अतिशय सुन्दर आकृति के स्वरूप वाली।

868. **कूर्चबीजधरा**– कूर्चबीज (हूं) को धारण करने वाली।

869. **क्व**– कहाँ। नास्तिक जिसके बारे में प्रश्न करते हैं कि वह कहाँ है। अर्थात नास्तिकों में यह भावना डालने वाली कि वह कहाँ है।

870. **कुंकुंकुंकुंशब्दरता**– कुंकुंकुंकुं शब्द में लगी हुई अर्थात इनका उच्चारण करने वाली। कुंकुंकुंकुं शब्द के उच्चारण को सुनकर प्रसन्न।

871. **क्रुंक्रुंक्रुंक्रुंपरायणा**– क्रुंक्रुंक्रुंक्रं इन बीजाक्षरों में रहने वाली अर्थात विद्यमान। क्रुंक्रुंक्रुंक्रं इस प्रकार के तांत्रिक शब्द में रत रहने वाली। परायण अर्थात आश्रित रहने वाली अर्थात रहने वाली।

872. **कुंकुंकुंकुंशब्दनिलया**– कुंकुंकुंकुं ये शब्द हैं आश्रय जिनके।

873. **कुक्कुरालयवासिनी**– कुत्ते के आवास में निवास करने वाली।

874. **कुक्कुरासङ्गसंयुक्ता**– कुत्ते के साथ रहने वाली।

875. **कुक्कुरानन्तविग्रहा**– अनन्त कुत्तों के शरीर वाली। सभी प्राणियों की आत्मा देवी ही है अर्थात कुत्ते का शरीर भी देवी का शरीर है।

876. **कूर्च्चारम्भा**– कूर्च बीज से जिनकी साधना का आरम्भ होता है।

877. **कूर्च्चबीजा**– कूर्च बीर्ज (हूं) स्वरूपा।

878. **कूर्च्चजापपरायणा**– कूर्च बीज के जप में लगी रहने वाली।

879. **कुलिनी**– कुलों वाली अर्थात कौल मार्ग में पूजी जाने वाली या शाक्त कुल में पूजी जाने वाली या हर कुल में पूजी जाने वाली। प्रशस्त कुल से युक्त। कुल का एक अर्थ कौल मार्ग, वाम मार्ग है।

880. **कुलसंस्थाना**– श्रेष्ठ कुल में निवास करने वाली। शाक्त कुल श्रेष्ठ कुल माना जाता है। तान्त्रिक गुरु और उनके शिष्यों का भी एक कुल होता है। श्रेष्ठ तान्त्रिक कुल में अच्छी प्रकार से विराजमान।

881. **कूर्च्चकण्ठपरागति**– जिनके (कालीजी के) कण्ठ में कूर्च बीज रहता है उससे सभी प्राणियों (भक्तों) को परमगति देने वाली। जिन भक्तों के कण्ठ में कूर्चबीज विराजमान है उन्हें परमगति अर्थात मोक्ष देने वाली। जिस मन्त्र में कूर्च (हूं) बीज का प्रयोग होता है, ऐसे बीजयुक्त श्रेष्ठ मन्त्र वाली। ऐसा मन्त्र समीप में रहता है जिसके। कण्ठ का अर्थ यहाँ समीप करेंगे।

882. **कूर्च्चवीणाभालदेशा**– कूर्चमन्त्र (हूं) ही है वीणा और भाल देश (माथा) जिसका। जिनके मस्तक से वीणा के समान कूर्चबीज की मधुर ध्वनि झंकृत होती रहती है।

883. **कूर्चमस्तकभूषिता**– कूर्च बीज द्वारा जिनका मस्तक सुशोभित है।

884. **कुलवृक्षगता**– कुल वृक्षों में विराजमान। दस प्रमुख वृक्ष हैं जिन्हें कुलद्रुम कहा जाता है। वे हैं – पीपल, बरगद, बेल, नीम, कदम्ब, गूलर, इमली, आँवला, लसोड़ा और करंज। कुलरूपी वृक्षों में स्थित रहने वाली।

885. **कूर्म्मा**– कूर्मावतार भगवान विष्णु की शक्ति। भगवान विष्णु के स्वरूप वाली।

886. **कुर्म्माचलनिवासिनी**– कूर्म पर्वत पर निवास करने वाली। कुमायूँ क्षेत्र में द्रोणगिरि पर्वत में देवी का वास है। कूर्मांचल पर्वत पर निवास करने वाली।

887. **कुलबिन्दु**– कौल मार्ग का मध्य भाग अर्थात लक्ष्य अर्थात उपासना का लक्ष्य। बिन्दु अर्थात नाभि अर्थात मध्य भाग अर्थात लक्ष्य। कुल की बिन्दु स्वरूपा।

888. **कुलशिवा**– कौल मार्गियों के लिए कल्याण स्वरूपा। कुल की कल्याणकारिणी।

889. **कुलशक्तिपरायणा**– कौल मार्ग की ऐसी शक्ति जो परायण है अर्थात अन्तिम लक्ष्य है। कौल मार्ग की शक्ति स्वरूपा परम अयन अर्थात अन्तिम लक्ष्य। कौल मार्ग के लिए परम शक्ति स्वरूपा। कुल की शक्ति को बढ़ाने वाली।

890. **कुलबिन्दुमणिप्रख्या**– कौलमार्ग के श्रेष्ठ लक्ष्य के रूप में प्रसिद्ध बिन्दु अर्थात लक्ष्य, जो केन्द्र में होता है। मणि को सब प्राप्त करना चाहते हैं और यह श्रेष्ठता का प्रतीक है। प्रख्या का अर्थ है प्रसिद्ध। कुलमार्ग के जानने वालों के लिए मणि की तरह प्रसिद्ध। कुल मार्ग के जानने वालों के लिए मणि की तरह अर्थात मणि की तरह समृद्धि देने वाली या मणि की तरह प्रकाशित करने वाली। बिन्दु का अर्थ जानने वाला होता है। कुल मार्ग का ज्ञान प्राप्त करने के लिए मणि की तरह प्रकाशिका। कुलमार्ग को जानने वालों में मणि की तरह अर्थात कुलमार्ग के ज्ञान को प्रकाशित करने वाली या बताने वाली। बिन्दु का अर्थ ज्ञान या जानने वाला है। कुल की बिन्दु, वही है मणि, वही है संज्ञा जिनकी अर्थात कुल की मुख्य आधार स्वरूपा। कुलबिन्दु ही संज्ञा है। (यदि कुलबिन्दुमणिप्रख्याया तो अर्थ होगा कुल मार्ग के जानने वालों के लिए मणि की तरह कीर्तनीय, ख्या प्रकथने धातु होती है उसमें घञ् प्रत्यय लगाने से प्रख्याया का अर्थ प्रकृष्ट रूप से कही जाने वाली अर्थात कीर्तनीय निकलेगा। यदि आखिरी या को याति धातु रूप लिया जाय तो अर्थ होगा विशेष रूप से प्राप्त। याति अर्थात जाता है अर्थात प्राप्त।

891. **कुङ्कुमद्रुमवासिनी**– कुमकुम के वृक्ष पर निवास करने वाली।

892. **कुचमर्दनसन्तुष्टा**– अपने पति द्वारा किए गए कुचमर्दन से सन्तुष्ट (प्रसन्न) रहने वाली। कुच का अर्थ है स्तन। वाममार्गी साधना में यह सब होता है। साधिका भी न्यास प्रक्रिया के कारण देवी रूप हो जाती हैं। कुच का एक अर्थ संकुचित, कृपण या कंजूस भी होता है। संकुचित मानसिकता वाले या कंजूस लोगों का नुक्सान कर प्रसन्न होने वाली।

893. **कुचजापपरायणा**– साधना में कुचों (स्तन) का प्रयोग करते हुए जप करने में लगी हुई। वाममार्गी या कौलमार्गी तांत्रिक साधना में कभी कभी साधक कुच का स्पर्श करते हुए जप करते हैं। न्यास करने से उपासक और देवता एक हो जाते हैं अर्थात उपासक स्वयं में देवी हो जाते हैं। उपासक द्वारा कुछ करना देवी द्वारा करना हो जाता है। करना अर्थात क्रिया अर्थात शक्ति अर्थात देवी। चुपचाप मानस जप करने वाली। कुच तक ही जप सुनाई पड़े अर्थात एक तरह से मानस जप। कुच का एक अर्थ चुपचाप भी होता है।

894. **कुचस्पर्शनसन्तुष्टा**– कुच (स्तन) के स्पर्श से प्रसन्न होने वाली। वाममार्गी या कौलमार्गी साधना में कभी कभी पुरुष साधक स्त्री साधिका के स्तन का स्पर्श करते हुए जप करते हैं।

895. **कुचालिङ्गनहर्षदा**– कुच से आलिंगन करने में आनन्द देने वाली।

896. **कुगतिघ्नी**– उपासकों की दुर्गति या दुर्दशा या बुरी हालत को नष्ट करने वाली। कुत्सित गति/कुत्सित कार्य/गलत चाल को नष्ट कर देने वाली। कुत्सित गति वालों अर्थात खराब आचरण करने वालों का नाश करने वाली।

897. **कुवेरार्च्चार्या**– कुबेर की द्वारा पूजा करने योग्य।

898. **कुचभू**– आर्त भाव से पुकारे जाने पर प्रकट होने वाली। कुच का एक अर्थ तार, ऊँचा, बुढ़ापे की रोक होता है। ऊँचा अर्थात आर्त भाव से पुकारना। बुढ़ापे का उपरोध पैदा करने वाली। कुचों (स्तनों से) से होने

वाले आनन्द से युक्त। कंजूस व्यक्ति में भी विद्यमान। कंजूस व्यक्ति में होने वाले अर्थात पाए जाने वाले धन की सुरक्षा या अन्य गुण स्वरूपा।

899. **कुलनायिका**– कुल मार्ग के उपासकों को सन्मार्ग में ले जाने वाली। कुलमार्ग के उपासको को श्रेष्ठ लक्ष्य या मोक्ष की ओर ले जाने वाली। नायिका अर्थात नेतृ अर्थात अधीश्वरी। नायिका अर्थात मार्गदृष्टा। कुल की नायिका अर्थात कुल को लेकर चलने वाली।

900. **कुगायना**– पृथ्वी पर गाने की शैली स्वरूपा। कु अर्थात पृथ्वी और गायन अर्थात गाने की शैली। पृथ्वी पर गायी जाती हैं। पृथ्वी पर सुन्दर सामवेद से सम्बन्धित या मनोहर गीतों को गाने वाली।

901. **कुचधरा**– सुन्दर स्थूल कुचों या स्तनों को धारण करने वाली।

902. **कुमाता**– पृथ्वी की माता।

903. कुन्ददन्तिनी– कुन्द पुष्प के समान सुन्दर सफेद दाँतों वाली।

904. **कुगेया**– पृथ्वी पर कीर्तन करने योग्य अर्थात जिनके चरित का कीर्तन किया जाना चाहिए अर्थात जिनका गायन किया जाता है।

905. **कुहराभासा**– कुहरे के समान कान्ति वाली।

906. **कुगेयाकुघ्नदारिका**– जो पृथ्वी पर गायन करने योग्य हैं और पृथ्वी पर होने वाले विघ्नों का विदीर्ण करने वाली हैं। पृथ्वी पर आस्थावान लोगों द्वारा उपासित होने वाली एवं दुराचारियों को मारने वाली बालिका।

907. **कीर्ति**– कीर्ति या यश स्वरूपा। अच्चे कार्यों से मिलने वाली प्रसिद्धि कीर्ति है।

908. **किरातिनी**– किरातिनी का रूप धारण करने वाली। अर्जुन की परीक्षा के लिए भगवान शिव ने किरात का वेश धारण कर धनुष प्रहार किये थे। उनके साथ पार्वतीजी किरातिनी के वेश में थी। किरात एक जंगली जाति है।

909. **क्लिन्ना**– दया या आनन्द से आर्द्र या भीगी हुई। क्लिन्न का अर्थ है भीगी हुई। समृद्ध। गरीबी को सूखी एवं अमीरी को गीली माना जाता है। क्लिन्न का शाब्दिक अर्थ है भीगा हुआ।

910. **किन्नरा**– किन्नर जाति के पुरुष या महिला की तरह अर्थात् उनकी तरह गायनप्रिया या नृत्य प्रिया। शब्द कोष में किन्नर को स्वर्ग गायक, हरिणनर्तक (मनोहर नृत्य करने वाला) कहा गया है। किन्नर का अर्थ अर्हत् उपासक भी लिखा गया है। किन्नराः अस्या सन्ति इति किन्नरा (किन्नरों वाली) अर्थात् किन्नरों द्वारा उपासनीया। किन्नरों में रहने वाले गुण स्वरूपा अर्थात् गायन विद्या या नृत्य विद्या स्वरूपा। अर्हत् उपासक जैन होते हैं। जैन हिंसा के डर से कुछ कार्य ऐसे करते होंगे जो वैदिक परम्परा के अनुसार कुत्सित कहा जाता होगा। किन्नर को किन्नर इसलिए कहते है क्योंकि वे देखने में कुत्सित अर्थात् खराब लगते है। कुत्सित को ही कित् हो गया है। नर का अर्थ है पुरुष और नरा का अर्थ है नारी। इनका मुख घोड़े की तरह होने के कारण कुत्सित हैं। स्वयं किन्नर के स्वरूप वाली (यहाँ किसी किन्नर की पत्नी होना अनिवार्य नही है)। किन्नर स्वरूपा।

911. **किन्नरी**– किन्नर जाति की महिलाओं में या स्त्रियों में विराजमान। शब्द के आगे ''में विराजमान'' लगाने से भी अर्थ निकल आता है। किन्नरी छोटे आकार की सारंगी या तम्बूरा (संगीतवाद्य) का भी नाम है। किन्नरी नामक वाद्य धारण करने वाली। धारण करने वाली, यह अर्थ शब्द में नही छिपा है, लक्षणा शक्ति से यह अर्थ आया है। जैसे दिल्ली ने कहा का अर्थ हुआ दिल्ली में रहने वाले ने कहा, बन्दूक चली आ रही है अर्थात् बन्दूक धारण करने वाले लोग चले आ रहे है। किन्नर अर्थात परब्रह्म की शक्तिस्वरूपा। किसी किन्नर की पत्नी स्वरूपा। किन्नर अर्थात नपुंसक लिंग या परब्रह्म। परब्रह्म का कोई लिंग नहीं होता। किन्नरी स्वरूपा।

912. **क्रिया**– जीवधारियों की चेष्टा स्वरूपा। क्रिया वाली अर्थात समस्त श्रेष्ठ क्रियाओं को करने वाली। क्रिया

अस्या अस्ति इति क्रिया (क्रिया वाली)। पंचरात्रागम ग्रन्थ में देवताओं के मन्दिरों एवं मूर्तियों के निर्माण को क्रिया कहा गया है, तद्स्वरूपा। कुण्डलिनी जागरण की साधना के दौरान शरीर में होने वाली हलचल या स्वाभाविक चेष्टा स्वरूपा।

913. **क्रीङ्कारा**– क्रीं बीज मन्त्र का उच्चारण करने वाली। क्रीं बीज मन्त्र स्वरूपा।

914. **क्रींजपासक्ता**– क्रीं इस बीज मन्त्र के जप में लगी रहने वाली। क्रीं बीज मन्त्र है अत्यन्त प्रिय जिसे।

915. **क्रींहूंस्त्रींमन्त्ररूपिणी**– क्रींहूंस्त्रीं मन्त्र के स्वरूप वाली। यह मन्त्र देवी की आकृति है।

916. **किर्मीरितदृशापाङ्गी**– नानावर्णो वाले नेत्रों के किनारों वाली। दीर्घ लम्बी आँखों के किनारों वाली। चित्र विचित्र नेत्रों के कोरों या किनारों वाली। चित्र विचित्र अर्थात अतिशय सुन्दर नेत्रों के प्रान्त भाग वाली।

917. **किशोरी**– किशोरावस्था से युक्त। सामान्यतः तेरह वर्ष से उन्नीस वर्ष की अवस्था किशोरावस्था कहलाती है। अंग्रेजी के शब्दों में आखिरी में teen लगा होता है। कल्याण के विष्णु अंक में 15 वर्ष की अवस्था के आसपास की अवस्था किशोरावस्था मानी गई है। कहीं पर 17–19 और कहीं पर 10–24 वर्ष की अवस्था किशोरावस्था मानी गई है। इस अवस्था में ग्रन्थियों में कुछ परिवर्तन होने लगते हैं जिससे दाढ़ी मूंछ का आना, विपरीत लिंगी व्यक्ति के प्रति काम भाव जागृत होना आदि लक्षण आने लगते हैं। किशोरावस्था के बाद तरुणावस्था/युवावस्था आती है। देवी इच्छानुसार कोई भी रूप धारण कर लेती हैं अतः नामों के अर्थ में भिन्नता होने पर आश्चर्य नहीं करना चाहिए। राधा जी को भी किशोरी जी कह कर पुकारा जाता है, अतः इस नाम का अर्थ हुआ राधा स्वरूपा या राधा जी से अभेद है जिनका। पद्मचन्द्रकोष के अनुसार किशोरावस्था वाली अर्थात 11 से 15 वर्ष की अवस्था वाली। बाल्यावस्था और युवावस्था के बीच की अवस्था किशोरावस्था कहलाती है। आवश्यकता पड़ने पर या इच्छा होने पर देवी इस रूप को धारण कर लेती हैं।

918. **किरीटिनी**– सुन्दर मुकुट को धारण करने वाली।

919. **कीटभाषा**– कीट की बोली की तरह जिनकी बोली प्राणियों को समझ में नहीं आती। सामान्य व्यक्ति के लिए समझ में न आने वाली भाषा बोलने वाली। कीड़े की भाषा समझ में नहीं आती कि वह बोल क्या रहे हैं उनका क्या अर्थ है। कीट की तरह सूक्ष्म भाषा वाली अर्थात ऐसी भाषा बोलती हैं कि दूसरों को सुनाई नहीं पड़ती है। कीट से सूक्ष्मता का बोध है अर्थात सूक्ष्म भाषा बोलने वाली अर्थात आसानी से न समझ में आने भाषा वाली। भाषा के रूप में सर्वव्यापक अर्थात कीड़े तक में भी बोलने की सामर्थ्य है इस प्रकार भाषा के रूप में देवी सर्वव्यापक हैं। नपीतुली भाषा में बोलने वाली। देवी सन्तुलित बोलती हैं, फालतू नहीं बोलती हैं। कीट का अर्थ है बँधी हुई। मधुर प्रिय बोलने वाली।

920. **कीटयोनि**– संसार के समस्त प्राणियों की कारण। कीट में सभी प्राणी आ जाएंगे।

921. **कीटमाता**– कीटों की जननी। देवी सभी प्राणियों की जननी है। कीटों अर्थात क्षुद्र जीवों का भी भरण पोषण करने वाली।

922. **कीटदा**– बन्धन का नाश करने वाली। कीट बन्धने होता है। यहाँ शब्द के अन्त में दा दो अवखण्डने से आया है अतः खण्डन करना या नाश करना अर्थ हुआ। कीटों को देने वाली अर्थात पैदा करने वाली। कीट रेंगने वाला या उड़ने वाला छोटा जीव है अतः कीट को छोटे जीवों का उपलक्षण मान सकते हैं।

923. **किंशुका**– पलाश (टेसू) पुष्प के समान रक्तवर्णा।

924. **कीरभाषा**– तोते की तरह मधुर बोलों वाली।

925. **क्रियासारा**– समस्त क्रियाओं की सार तत्व। सार अर्थात मूल तत्व अर्थात जिसके बिना क्रिया होना सम्भव नहीं है। सार का अर्थ हे अनिवार्य स्थिर अंश अर्थात जो किसी भी चीज में अनिवार्य रूप से स्थित रहेगा। सार का अर्थ निष्कर्ष भी है। परम क्रिया स्वरूपा।

926. **क्रियावती**– निरन्तर क्रियाशील। हर क्षण स्पन्दन करती रहती हैं अर्थात एक क्षण के लिए भी नहीं रूकती हैं। क्रियावती दीक्षा के रूप में। इस दीक्षा में गुरू अपने नेत्रों से शिष्य में शक्तिपात करता है। इसके पूर्व शिष्य की आँख में पट्टी बाँधकर पंचद्रव्य का सेवन कराकर यज्ञ कुण्ड के पास लाया जाता है। क्रियाओं से युक्त। सक्रिय महिला क्रियावती होती है। an active, agile, responsive, grateful, thankful woman. धार्मिक संस्कारों/विधिविधानों को नियमानुसार कड़ाई से पालन करने वाली यह अर्थ भी क्रियावती का होता है।

927. **क्रींक्रींशब्दपरा**– क्रींक्री शब्द के उच्चारण में लगी रहने वाली।

928. **क्रींक्रींक्लूंक्रैंक्रोंमन्त्ररूपिणी**– क्रींक्रींक्लूंक्रैंक्रों इस मन्त्र के आकार से युक्त या इस मन्त्र के स्वरूप वाली।

929. **कांकींकूंकैंस्वरूपा**– कांकींकूंकैं इस मन्त्र के स्वरूप वाली। इस मन्त्र की आत्मा स्वरूपा अर्थात देवी के कारण ही यह मन्त्र चैतन्य होता है और कार्य करने में सक्षम हो पाता है।

930. **कःफट्मन्त्रस्वरूपिणी**– कःफट् मन्त्र के स्वरूप वाली।

931. **केतकीभूषणानन्दा**– केतकी से निर्मित आभूषणों से आनन्दित रहने वाली।

932. **केतकीभरणान्विता**– केतकी से निर्मित आभूषणों से युक्त अर्थात इन्हें धारण करने वाली।

933. **कैकदा**– उच्च स्वर में बोलने वाली। केका मयूर की आवाज होती है। के (सिर से) कायति। केकाम् ददाति इति केकद, केकद से कैकद बना। केकद का अर्थ है उच्च स्वर में बोलना। ज्ञान देने वाली। किकि का अर्थ ज्ञान होता है। किकि में डण् प्रत्यय लगाने से कैक शब्द बनता है जिसका अर्थ भी है ज्ञान।

934. **केशिनी**– लम्बे काले बालों को धारण करने वाली। सुन्दर घुँघराले बालों को धारण करने वाली। केशी नामक दैत्य से युक्त अर्थात उसके विनाश करने में लगने के कारण उसके साथ।

935. **केशीसूदनतत्परा**– केशी नामक दैत्य के विनाश करने में तत्पर।

936. **केशरूपा**– सर्वोच्च सुख रूपा। क अर्थात सुख, ईश अर्थात सर्वोच्च। केश अर्थात सर्वोच्च सुख। ब्रह्मा, विष्णु और शिव के स्वरूप वाली। क का अर्थ है ब्रह्मा और विष्णु, ईश का अर्थ है शिव।

937. **केशमुक्ता**– खुले फैले बालों वाली, बिखरे बालों वाली। बन्धन रहित प्रकृति स्वरूपा। जैसे खुले बाल बन्धन रहित हैं वैसे ही प्रकृति को मनुष्य की शक्तियों से नहीं बाँधा जा सकता।

938. **कैकेयी** – अतिशय शब्द करने वाली या पुनः पुनः शब्द करने वाली। कै शब्दे धातु होती है जिसमें यङ् प्रत्यय लगाया जिससे कैकै बना जो किकै हो गया। फिर अण् प्रत्यय लगाया, जिससे कैकेयी बनाया जिसका अर्थ हुआ शब्द करने वाली। कैकेयी को इच्छाशक्ति कहते हैं। मन में शब्द अर्थात हलचल इच्छा उत्पन्न करने के कारण होती है। इच्छा ही मन में ध्वनि पैदा करती है। इस प्रकार मन में शब्द या हलचल पैदा करने वाली इच्छाशक्ति स्वरूपा यह कैकेयी का अर्थ हुआ। कै (ध्वनि) कायति (बोलना) अर्थात ध्वनि बोलने वाली, करने वाली। की ज्ञाने धातु से भी कैकेयी शब्द बनता है तब कैकेयी का अर्थ होगा ज्ञान देने वाली। की ज्ञाने धातु में यङ्लुक्, अच् करने से किकय शब्द बना और फिर तद्धित प्रत्यय लगाने पर कैकेयी बनेगा। कैकयी शब्द भी मिलता है जिसका अर्थ भी कैकेयी के अर्थ की तरह है। शब्द कल्पद्रुम में केकयराज की पुत्री अर्थात केकय देश के राजा की पुत्री यह अर्थ दिया गया है। कैकेयी की तरह सुन्दर, बुद्धिमती और दृढ़ प्रतिज्ञ। प्रवृत्ति स्वरूपा। आत्म–रामायण में कैकयी को प्रवृत्ति (अर्थात संसार के सुख भोग की ओर जाना) का प्रतीक माना गया है।

939. **कौशिकी**– कौशिकी स्वरूपा। पार्वती के कोश अर्थात शरीर से निकलने वाली देवी। उपदेश देने वाली। धर्म या वेद का उपदेश देने वाली। कुश् धातु का अर्थ है शब्द करना अर्थात उपदेश देना। इससे कुशिक शब्द बना। स्वार्थ में अण् प्रत्यय लगाने से कौशिक बनेगा जो स्त्रीलिंग में कौशिकी बन जाएगा। वैदिक कोश में क्रंश् धातु (प्रकाशित करना) से भी कुशिक शब्द बनाया गया है। शब्दों के या मन्त्रों के अर्थ को प्रकाशित करने वाली अर्थात बताने वाली। ऐश्वर्य प्रकाश युक्त माना जाता है। अतः कौशिकी का अर्थ ऐश्वर्यमती या धनवती या तेजस्विनी भी है। कुशिक विश्वामित्र का नाम है। तेन दृष्टा सूत्र से अण् प्रत्यय लगाने से स्त्रीलिंग में कौशिकी शब्द बनेगा जिसका अर्थ होगा विश्वामित्र द्वारा जिनका दर्शन किया गया। विश्वामित्र द्वारा साक्षात्कार की गई वैदिक ऋचाओं के स्वरूप वाली। दान वाली अर्थात दान देने में लगी हुई। कुश में ठक् प्रत्यय लगाने से बने कुशिक शब्द से यह अर्थ आएगा। कुश एवं जल लेकर के ही दान किया जाता था। कुश लिये हुए है अर्थात दान में लगी हुई है।

940. **कैरवा**– कैरव (श्वेत कुमुद) स्वरूपा या उनके समान सुन्दर, सुगन्ध युक्त।

941. **कैरवाह्लादा**– श्वेत कमल के समान प्रसन्न चित्त वाली। श्वेत कमल के समान प्रसन्नता देने वाली। कैरव का अर्थ है श्वेत कमल जो अपनी सुन्दरता के कारण देखने वाले को प्रसन्नता देती है। के जले रौति इति केरव। कैरव के द्वारा जो शुद्ध स्वरूप है उससे आनन्दित करने वाली।

942. **केशरा**– सुन्दर बालों को देने वाली। केशान् राति इति केसरः। केसर के समान सुगन्धित और दिव्य गुण वाली। केसर के समान सुन्दर रूप वाली। संस्कृत में कभी कभी श एवं स में अभेद होता है।

943. **केतुरूपिणी**– केतुग्रह के स्वरूप वाली। ज्ञान स्वरूपा। ज्ञान कराने वाली, जिसके द्वारा जाना जाता है। किति ज्ञाने धातु से केतु शब्द बनाने पर ऐसा अर्थ निकलता है। उणादिकोष में केतु शब्द की व्युतपत्ति दी गई है – चायते पूजयति निशामयति श्रावयति इति केतु। जो सम्मानित करता है, सुनाता है वह केतु है। धर्म तत्व को या वेद की बातों को सुनाने वाली। किरणों के रूप वाली अर्थात प्रकाशवान या तेजस्विनी। ज्ञानरूपिणी या प्रज्ञारूपिणी। वैदिककोश में केतु के कई अर्थ दिये गये हैं जो है ज्ञापक अर्थात जिससे किसी पदार्थ का ज्ञान हो। अतः ब्रह्म या शिव का ज्ञान कराने वाली अर्थ कर सकते हैं। अन्य अर्थ हैं प्रज्ञा, कर्म, कर्ता, लक्षण, रश्मि, अश्व, प्रज्ञापक, अन्धकार, सामर्थ्य, कर्मयोग तथा ज्ञानयोग।

944. **केशवाराध्यहृदया**– केशव (कृष्ण) द्वारा जिनके हृदय की आराधना की गई। जिनके हृदय में केशव आराध्य के रूप में है अर्थात जिनका हृदय केशव की आराधना से युक्त रहता है।

945. **केशवासक्तमानसा**– जिनका हृदय श्रीकृष्ण में आसक्त रहता है।

946. क्लैव्यविनाशिनी– नपुंसकता को नष्ट कर देने वाली।

947. **क्लैंचक्लैंबीजजपतोषिता**– जिसे क्लैंचक्लैं बीजमन्त्र के जप से तृप्त, तुष्ट, (प्रसन्न) किया गया। भक्त के द्वारा किए जा रहे जप को सुनकर प्रसन्न होती हैं या स्वयं के द्वारा इसका जप करने से उन्हें तृप्ति मिलती है। तोषिता का एक अर्थ है तुष्ट हो जाना या तृप्त हो जाना। तोष अर्थात अघाना अर्थात मन भरना, राजी होना। जप में ही राजी हो गई अर्थात मानने को तैयार हो गई या अनुकूल हो गईं। तृप्त अर्थात जिसकी इच्छा पूरी होन पर शान्ति और आनन्द की अनुभूति हो गई है। तोषयति से भी तोषिता बन सकता है, तब अर्थ होगा इन बीज मन्त्र के जप कराकर अर्थात किसी दूसरे के द्वारा जप कराकर तृप्त किया गया।

948. **कौसल्या**– कोः सल्यते निवार्यते अर्थात जो पापों से दूर करती है हटाती है, वह कौसल्या है। कु का अर्थ है पाप। कुत्सितम् सलति निवर्तयति अर्थात जो पाप को लौटाती है। पहले कुसल शब्द बना और फिर ण्य प्रत्यय लगाने से कौसल्या शब्द बना। जो पाप को लौटाती है अर्थात भक्त को पाप से बचाती है वह कौसल्या है। कु

अर्थात पृथ्वी, कौ सलति सरति इति कौसल्या। पृथ्वी में गति स्वरूपा। पृथ्वी की गति स्वरूपा। पृथ्वी में गमन करने वाली नदी स्वरूपा। ये अर्थ कौसल्या के निकलते हैं। कौसल्या यह नाम कौशल्या के रूप में भी मिलता है। भगवान राम की माता कौशल्या से अभेद है जिनका। कुशलता के लिए उपासनीया। समस्त कुशलताओं वाली। समस्त कुशलताऐं इसी में रहती हैं अर्थात मंगल स्वरूपा। कौशल्या शब्द कुशल से बना है।

949. **कोशलाक्षी**– विशाल और प्रसन्न नेत्रों वाली। कोशल अयोध्या को कहते हैं और अयोध्या विस्तृत, समृद्ध नगरी थी और लोग प्रमुदित होते थे। अतिशय विशाल सुन्दर नेत्रों वाली।

950. **कोशा**– कोश के समान अर्थात सारा विश्व जिसमें समाया है। कोष या खजाने में धन को संग्रहीत किया जाता है। कुश्यति अत्र अर्थात जहाँ धन को संग्रहीत किया जाता है। कुश् संश्लेषणे धातु होती है। संश्लिष्यते अर्थात जहाँ चीजें एक दूसरे से जुड़ती हैं अर्थात इकठ्ठी रखी जाती हैं। कोष स्वरूपा। कोष और कोश एक ही होते हैं।

951. कोमला– अतिशय कोमल। मृदुल त्वचा वाली।

952. कोलापुरनिवासिनी– कोलापुर में निवास करने वाली।

953. कोलासुरविनाशिनी– कोलासुर का विनाश करने वाली।

954. कोटिरूपा– करोड़ों रूपों वाली। लक्षणा शक्ति से अर्थ होगा अनन्त रूपों वाली। कोटिं रूपयति इति कोटि रूपा अर्थात करोड़ों ब्रह्माण्डों को बनाने वाली या दिखाने वाली। माता पार्वती ने अपनी माँ मैना को अपने मुँह में ऐसा दिखाया था। भगवान कृष्ण ने माता यशोदा को अपने मुँह में ऐसा दिखाया था। कृष्ण और काली में अभेद है। समूह स्वरूपा अर्थात जड़ चेतन सभी पदार्थों का समूह स्वरूपा।

955. कोटिरता– करोड़ों कार्यों में अर्थात अनन्त कार्यों में संलग्न रहने वाली।

956. क्रोधिनी– जिसमें क्रोध है। क्रोधः अस्या अस्ति इति क्रोधिनी। क्रोधी (रूद्र) की पत्नी यह अर्थ भी हो सकता है। दुष्टों शत्रुओं पर क्रोध करने वाली।

957. क्रोधरूपिणी– क्रोध नामक गुण के स्वरूप वाली। क्रोध से युक्त चेहरे वाली। रूप का अर्थ शक्ल, चेहरा भी होता है। क्रोध रूप वाले की सहधर्मिणी अर्थात पत्नी। क्रोध है रूप जिसका ऐसा क्रोधरूपी हुआ। उस क्रोधरूपी पुरुष की पत्नी क्रोधरूपिणी हुयी। क्रोधरूपी शिव की पत्नी। क्रोधरूपिणी और क्रोधरूपा में अन्तर यह है कि क्रोधरूपिणी में तो अर्थ है क्रोधरूपी शिव की पत्नी किन्तु क्रोधरूपा का अर्थ है स्वयं क्रोध स्वरूपा। स्त्रीलिंग शब्दों में अन्त में ई या आ रहता है। पुम्योगात् ङीप् सूत्र से स्पष्ट है कि ङीप् (ई) प्रत्यय लगाने पर पुरुष की अपेक्षा होती है जबकि टाप् (आ) लगाने पर पुरुष की अपेक्षा नहीं है। शत्रुओं के संहार के समय क्रोध स्वरूप हो जाने वाली। (यदि क्रोध रूपा यह नाम है तो अर्थ होगा वे स्वयं क्रोध रूपा हैं। क्रोधरूपा में पुरुष की अपेक्षा नहीं है जबकि क्रोधरूपिणी में पुरुष की अपेक्षा है।) (रूप ओर स्वरूप में अन्तर– रूप और स्वरूप का प्रायः एक ही अर्थ होता है। स्वरूपा में स्व का अर्थ अपना या आत्मा ले सकते है। आत्मा अर्थात् वास्तविक अर्थात् जो अलग न हो। वेदान्त में स्वरूप लक्षण एवं तटस्थ लक्षण की बात की गई है। सत्–चित्–आनन्द स्वरूप लक्षण है अर्थात् कभी अलग नही होते। ऐसे गुण या प्रभाव या विशेषता जो कभी अलग न हो, स्वरूप कहे जा सकते है। स्वरूप अर्थात् अपना या स्वभाविक या वास्तविक या कभी अलग न होने वाला। रूप का अर्थ है shape, form, beauty, colour, character, having nature। स्वरूप का भी यही अर्थ मिलता है किन्तु स्वरूप में character, गुण, विशेषता आदि पर अधिक जोड़ है। स्वरूप अर्थात् अपना रूप अर्थात् किसी दूसरे की नकल नही है। स्वरूप अर्थात् स्वभाविक रूप अर्थात् उसमें कृत्रिमता नही है। स्वरूप अर्थात् मूल रूप या वास्तविक रूप। कुछ लोगों के अनुसार रूप बाहरी है। रूप अर्थात् shape। स्वरूप अर्थात् आन्तरिक गुण (आचार),

सदाचार के कारण शरीर में उत्पन्न प्रभाव। राधास्वरूपिणी अर्थात् राधा के वास्तविक गुणों से युक्त अर्थात् राधा के उन गुणों से युक्त जो उसके व्यक्तित्व से कभी अलग न हो। राधा स्वरूपिणी अर्थात् राधा का हर अंश इनमें भी है। मन्त्रस्वरूपिणी अर्थात् मन्त्र के गुण (प्रभाव) से युक्त, of like character। True (just as it happens) सच्चा (स्वभावतः जैसा होता है)। स्वरूप अर्थात् आन्तरिक गुण (आचार), सदाचार के कारण शरीर में आई चमक। रूप प्रायः बाहरी आकार एवं स्वरूप प्रायः आन्तरिक गुण या आचार होता है। ललनास्वरूपा अर्थात् स्त्री है जिसका अपना रूप (दूसरे की नकल नही है)। स्त्रियों के वास्तविक True रूपवाली, मूल रूप वाली।)

958. **केका**– मधुर, प्रिय वाणी वाली (केका मोर की वाणी है)।

959. **कोकिला**– कोयल के समान मधुर बोलने वाली।

960. **कोटि**– आखिरी सीमा या सिरा स्वरूपा अर्थात ब्रह्माण्ड की अन्तिम सीमा स्वरूपा। किसी अस्त्र की नोक या धार के समान अर्थात दुष्टों को ऐसी नोक की तरह फाड़ डालने वाली। करोड़ों रूपों वाली अर्थात अनन्त रूपों वाली।

961. **कोटिमन्त्रपरायणा**– करोड़ों मन्त्र अर्थात असंख्य मन्त्र जिनका श्रेष्ठ घर है। करोड़ों अर्थात असंख्य मन्त्रों में आत्यन्तिक रूप से रहने वाली अर्थात वे इसमें रहती ही रहती हैं। पर का अर्थ हैआत्यन्तिक या श्रेष्ठ। करोड़ों मन्त्रों में परायण रहने वाली/उनका निर्माण करने वाली।

962. **कोट्यनन्तमन्त्रयुता**– करोड़ों अर्थात अनन्त मन्त्रों से युक्त रहने वाली या इनके स्वरूप वाली।

963. **कैरूपा**– मोर की आवाज स्वरूपा। पवित्रता स्वरूपा। एकाक्षरी कोष में कै का अर्थ शिखिस्वन (मोर की आवाज), और शुचि (पवित्रता) दिया गया है। शब्दस्वरूपिणी। श्रेष्ठ शब्दों या ध्वनि से युक्त।

964. **केरलाश्रया**– केरल देश में निवास करने वाली।

965. **केरलाचारनिपुणा**– केरल देश में होने वाले सदाचार में दक्ष। शास्त्र में जिसे करने का विधान होता है वह आचार कहलाता है।

966. **केरलेन्द्रगृहस्थिता**– केरल के श्रेष्ठ लोगों / महापुरुषों के घरों में निवास करने वाली।

967. **केदाराश्रमसंस्था**– भगवान केदार के आश्रम में रहने वाली अर्थात केदारनाथ में रहने वाली।

968. **केदारेश्वरपूजिता**– केदारनाथ द्वारा पूजित। यदि केदार का अर्थ केदारनाथ अर्थात शिव से लें तो शिव के भी आराध्य भगवान राम या विष्णु हैं। भगवान राम द्वारा पूजित।

969. **क्रोधरूपा**– स्वयं क्रोध स्वरूपा हैं। रूप अर्थात जो आँखों से दिखे। दुष्ट दैत्यों के संहार के समय क्रोध का रूप धारण करने वाली। क्रोध ब्रह्म का रूप माना गया है अर्थात ब्रह्म स्वरूपा। क्रोधम् रूपयति इति क्रोध रूपा। क्रोध को देखने वाली या क्रोध दिखाने वाली। रूपयति का अर्थ है स्वरूप देना (निर्माण करना), देखना, दिखाना। रूप्यते का अर्थ है ज्ञापिका या बोधिका। रूप्यते इति रूपा। जिससे बोध होता है या कोई चीज ज्ञापित होती है वह रूपा है। इनके क्रोध को देखकर पता चल जाता है कि ये काली देवी ही हैं।

970. **क्रोधपदा**– क्रोध है स्थान जिनका अर्थात जहाँ जहाँ क्रोध होता वहाँ वहाँ देवी होती अर्थात वह क्रोध देवी के कारण होता है। क्रोध शब्द से बोली जाने वाली अर्थात इनका नाम क्रोध है। पद का अर्थ स्थान एवं शब्द है। क्रोध का स्थान अर्थात दुष्टों पर कुपित भी होती हैं। पद का अर्थ है स्थान। क्रोधास्पद। क्रोध जिसके अन्दर सवार है (दुष्टों का विनाश करने के लिए)।

971. **क्रोधमाता**– दैत्यों के संहार के समय क्रोध की जननी बन जाने वाली। क्रोध भैरव की भी जननी।

972. **कौशिकी**– कोशी नदी स्वरूपा। कोशी नदी बिहार में है। वृन्दावन के पास बहने वाली एक नदी का नाम भी कोशी है। कौशिकी और कोशी का एक ही अर्थ है। कौशिकी के स्वरूप को धारण करने वाली। सभी विद्याओं का उपदेश देने वाली या उन्हें प्रकाशित (प्रकट) करने वाली। कुश् धातु का अर्थ उपदेश करना एवं क्रंश् धातु का अर्थ प्रकाशित करना है जिससे कौशिक शब्द बनता है। स्त्रीलिंग में कौशिकी हो जायेगा। सूर्य को भी कौशिक कहते हैं क्योंकि यह दो कुशियों (दिन और रात) से परिग्रहीत है। सूर्य की पत्नी या शक्ति कौशिकी होगी। उपदेश करने वाली। कुश धातु का अर्थ उपदेश करना है। वेदों के अर्थ का प्रकाशन करने वाली। क्रंश् धातु से कौशिक शब्द बनाने पर यह अर्थ निकलता है। क्रंश् धातु का अर्थ है प्रकाशन करना।

973. **कोदण्डधारिणी**– धनुष को धारण करने वाली।

974. **क्रौञ्चा**– क्रौंच पर्वत स्वरूपा। क्रौंच पर्वत वाली अर्थात उसमें रहने वाली। क्रौंचम् अस्या अस्ति इति क्रौंचा।

975. **कौशल्या**– कुशल क्षेम वाली। कुशल से कौशल्या बनता है। कुशल में ष्यञ् प्रत्यय लगाने से कौशल्या बनता है। मन की ज्ञानशक्ति स्वरूपा। कु का अर्थ शब्द अर्थात ज्ञान होता है। मन की ज्ञानशक्ति स्वरूपा। शब्द अर्थात ज्ञान में गति करने योग्य कौशल्या का अर्थ हुआ। शल् गतौ धातु होती है। मन की इच्छाशक्ति कैकेयी हैं जबकि क्रियाशक्ति सुमित्रा हैं। कुशलता देने वाली अर्थात अपने भक्तों को किसी कार्य में निपुण बनाने वाली। कौशल्य + आ, आ का एक अर्थ है देना। भक्ति स्वरूपा। आत्म–रामायण में कौशल्या को भक्ति का प्रतीक माना गया है।

976. **कौलमार्गगा**– कौल मार्ग पर चलने वाली।

977. **कौलिनी**– शिव और शक्ति के एकीकृत रूप वाली। शिव और शक्ति के मिलन को कौल कहते हैं। कौल पूजा पद्धति से जिनकी पूजा की जाती है। कौल पूजा पद्धति में उपासक, उपासना और देवी ये तीन होते हैं। कौल मार्ग में पंचमकारों का प्रयोग होता है पर यह प्रयोग पूजा के समय ही होता है। कौल साधना में चक्राकार या घेराकार रूप में साधक और साधिका जोड़े के रूप में बैठते हैं। कौल सिद्धान्तों और कौल दर्शनों के सिद्धान्तों के स्वरूप वाली।

978. **कौलिकाराध्या**– कौलिकों द्वारा आराधना करने योग्य।

979. **कौलिकागारवासिनी**– कुल मार्ग से जो भगवती की अराधना करतें हैं उनके घर में निवास करने वाली। कौलिकों के भवनों/मन्दिरों में निवास करने वाली।

980. **कौतुकी**– मनोविनोद करने वाली या कराने वाली। कौतुक का अर्थ है चमत्कार, खेल तमाशा, हंसी ठिठौली जैसे विवाह के समय लड़की की सहेलियाँ करतीं हैं। विभिन्न प्रकार के कौतुकों को करने वाली।

981. **कौमुदी**– जिससे पृथ्वी पर लोग प्रसन्न होते हैं। कु का अर्थ है पृथ्वी और मुद का अर्थ है प्रसन्न होना। चन्द्रिका या चांदनी स्वरूपा। चान्दनी की तरह प्रकाश, शान्ति देने वाली।

982. **कौला**– कुल मार्ग की आराध्या। कुल मार्ग वाले कौल कहलाते हैं। कौलाचार से युक्त।

983. **कौमारी**– पृथ्वी पर कामदेव के समान अत्यन्त सुन्दर। कु (अर्थात पृथ्वी) की सप्तम विभक्ति कौ है जिसका अर्थ है पृथ्वी पर। मार का अर्थ है कामदेव अर्थात सुन्दर। कु अर्थात कुत्सितों अर्थात दुष्टों को मारने वाली या मारने का भाव रखने वाली। कुमारत्व की विशिष्ट अवस्था से युक्त।

984. **कौरवार्चिता**– कौरवों द्वारा भी पूजित।

985. **कौण्डिन्या**– कुण्डिन वंश या कुण्डिन देश में रहने वालों द्वारा उपासनीय। कौण्डिन्य ऋषि के द्वारा पूजित। कुण्डिन (विदर्भ) में हुए एक ऋषि का नाम है कौण्डिन्य। कुण्डिन के वंश में जो हुए वह हैं कौण्डिन्य।

कुण्डिनी के रूप को धारण करने वाली। कुण्ड से कुण्डी, कुण्डी से कुण्डिनी और कुण्डिनी से कौण्डिन्य शब्द बन सकता है। कुण्ड से सरोवर, कुण्डी से छोटा सरोवर और कौण्डिन्य से छोटे सरोवर में होने वाले अर्थात कमल आदि अर्थ निकलेगा।

986. **कौशिकी**– विश्वामित्र (कौशिक) के द्वारा आराधित। उल्लू (कौशिक) पर सवार लक्ष्मी जी से जिनका अभेद है।

987. **क्रोधज्वालाभासुररूपिणी**– क्रोधरूपी अग्नि की दीप्ति स्वरूपा। ज्वाला का अर्थ है अग्नि और भासुर का अर्थ है दीप्ति। क्रोध के कारण निकलने वाली अग्निज्वाला की तरह देदीप्यमान स्वरूप वाली।

988. **कोटिकालानलज्वाला**– करोड़ों कालाग्नि (प्रलयाग्नि) के समान ज्वालाओं वाली।

989. **कोटिमार्तण्डविग्रहा**– करोड़ों सूर्यों के समान चमकने वाले शरीर वाली। यह प्रकाश जलाता नहीं है बल्कि सुकून देता है।

990. **कृत्तिका**– दैत्यों को काटने वाली। कृती छेदने धातु से यह शब्द बना। कार्तिकेय जी की माता। कार्तिकेय जी का जन्म कृत्तिका से माना गया है। कृत्तिका नक्षत्र छह नक्षत्रों का समूह है। कृत्तिका नक्षत्र के स्वरूप वाली।

991. **कृष्णवर्णा**– काले वर्ण वाली।

992. **कृष्णा**– कृष्ण स्वरूप। कृष्ण की शक्ति। द्रौपदी स्वरूपा या द्रौपदी की शक्ति स्वरूपा। सौन्दर्य का सार होने के कारण अर्थात सौन्दर्य का मूल होने के कारण या मुख्य सौन्दर्य होने के कारण सभी लोगों को अपनी ओर खीचने वाली। नियम है कि जो जो वस्तु सुन्दर है वह दूसरे को आकृष्ट करती है। मुख्य सौन्दर्य तो ये ही हैं, बाकी तो मात्र सौन्दर्य के छीटें हैं। नियमन आदि के द्वारा सबको खीचकर रखने वाली अर्थात मर्यादा के भीतर ही खींचकर रखने वाली। कृष् से खीचना अर्थ लिया और नियमन का न ले लिया। संसार से मुक्ति की ओर खीचकर ले जाने वाली। जिनका रंग सांवला अर्थात काला है। जिनके कारण भूमि का आनन्द है अर्थात भूमि या पृथ्वी आनन्दित या प्रसन्न हो जाती है। दुर्गा सप्तशती में आया है कि देवी के द्वारा राक्षसों को मारने पर भूमि एवं सम्पूर्ण प्रकृति को अत्यंत आनन्द प्राप्त हुआ था। जब भगवान धरती पर अवतार लेते हैं तो धरती प्रसन्न या आनन्दित हो जाती है। कृष् अर्थात भू अर्थात सत्ता। ण अर्थात आनन्द, निवृत्ति। सत्ता अर्थात हमेशा रहने वाला। इस प्रकार कृष्णा का अर्थ हुआ हमेशा रहने वाले आनन्द स्वरूपा या हमेशा आनन्दित रहने वाली। उत्कृष्ट मोक्ष देने वाली। कृष्ण का अर्थ है मोक्ष।

993. **कृत्या**– अभिचार कर्म में प्रयुक्त होने वाली कृत्या नामक शक्ति के स्वरूप में। कृति छेदने से यह शब्द बना। वह शक्ति जो शत्रुओं का छेदन करती है या हिंसा करती है। यह कृत्या शक्ति शत्रुओं का छेदन करती हैं। शत्रुओं के संहार में अभिचार क्रिया करने वाली। अभिचार कर्म स्वरूपा। कृत्या अभिचार कर्म का भी नाम है और इस कर्म में बुलायी जाने वाली देवी/शक्ति/पिशाची का भी नाम है। अभिचार कर्म अर्थात मारण, मोहन, उच्चाटन आदि षट्कर्म। यह देवी या शक्ति ही शत्रुओं को मारण, मोहन, उच्चाटन आदि कार्य करती हैं।

994. **क्रियातुरा**– विविध प्रकार की क्रियाओं को करने के लिए आतुर (हमेशा तैयार) रहने वाली।

995. **कृशाङ्गी**– सुन्दर छरहरे शरीर वाली।

996. **कृतकृत्या**– करने योग्य जो भी था वह इनके द्वारा कर डाला गया। सारे करने योग्य कर्म इनके द्वारा कर लिये गये अर्थात कुछ भी बाकी नहीं रहा। जिन्हें कोई भी काम करना बाकी नहीं रह गया। पूर्णतः सफल अर्थात जिनके सभी मनोरथ पूरे हैं। भूतकाल में किए गए कार्य और भविष्य में किए जाने वाले कार्य स्वरूपा। प्रत्याहार

नियम से भूतकाल में किए गए कार्य, वर्तमान में किए जा रहे कार्य और भविष्य में किए जाने वाले कार्य स्वरूपा या इन कार्यों वाली अर्थात इन कार्यों को करने वाली।

997. **क्रःफट्स्वाहास्वरूपिणी**– क्रःफट्स्वाहा मन्त्र स्वरूप वाली।

998. **क्रौंक्रौंहूंफट्मन्त्रवर्णा**– क्रौंक्रौंहूंफट् वर्ण जिनके मन्त्र में है।

999. **क्रींह्रीहूंफट्नमस्स्वधा**– क्रींह्रीहूंफट्नमस्वधा मन्त्र स्वरूप वाली।

1000. **क्रींक्रींह्रींह्रींतथाहूंहूंफट्स्वाहामन्त्ररूपिणी**– क्रींक्रींह्रींह्रींतथाहूंहूंफट्स्वाहा इस मन्त्र के स्वरूप वाली।

श्री तारासहस्रनामावली

(तकारादिनामावली)



श्री तारासहस्रनामावलि (तकारादिनामावलि)

1. **तारा** – संसार रूपी सागर से पार करा देने वाली। शीघ्र ही अभीष्ट फल प्रदान करने वाली। तारा तूर्णफलप्रदा। जो आकाश में नक्षत्र रूप से पार करती है अर्थात यात्रा करती है। तर शब्द में बिना अर्थ बदले अण् प्रत्यय लगाने से तार शब्द बन सकता है। तारा का अर्थ आँख की पुतली भी होता है। जो आँखों में प्रकाश देकर रास्ता पार कराने लायक बनाती है। कृपा देने वाली, करुणा देने वाली अर्थात करुणा से देखने वाली। लक्ष्मी अर्थात धनसम्पत्ति देने वाली। एकाक्षरीकोश ता का अर्थ कृपा, करूणा, श्री, महालक्ष्मी दिया गया है। राति का अर्थ है देना जिससे रा अक्षर लिया गया। ताम् राति इति तारा।

2. **तारादिपञ्चार्णा** – ॐ से शुरू होने वाले पाँच अक्षर वाले मन्त्र के स्वरूप वाली। तार का अर्थ है ॐ, अर्ण का अर्थ है अक्षर। मन्त्र देवताओं के सूक्ष्म शरीर कहे गये हैं। मन्त्र और देवता में कोई अन्तर नहीं होता है। पाँच अक्षर का मन्त्र है – ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं फट्। एक मत के अनुसार जितने स्वर, उतने अक्षर माने जाते हैं।

3. **तारान्यावेदवीर्यजा** – ॐ से भिन्न अवेद (अर्थात तान्त्रिक) मन्त्र की शक्ति से उत्पन्न। ॐ से भिन्न अवेद मन्त्र ह्रीं है, जिसे देवी प्रणव भी कहते हैं और इसे ॐ के समान ही माना जाता है। इस मन्त्र ह्रीं के जपने से देवी प्रकट हो जाती हैं। ॐ से भिन्न और तन्त्रोक्त मन्त्र की शक्ति से उत्पन्न। तार + अन्य+ अवेद, अवेद का अर्थ है वेद से भिन्न अर्थात तन्त्र। तारा ही है एक विशेष या अद्वितीया, जो वैदिक मन्त्रों की शक्ति से उत्पन्न है। तारा अर्थात संसार सागर से पार कराने वाली शक्ति, अन्या अर्थात अद्वितीया। वीर्य का अर्थ है शक्ति। वेद का दूसरा नाम मन्त्र भी है क्योंकि वेद मन्त्रों की संहिता है। अन्य वेद अर्थात वेद का दूसरा नाम अर्थात मन्त्र। ऐसी तारा जो दूसरे वेद (अर्थात मन्त्र) की शक्ति से उत्पन्न है।

4. **तारा** – सांसारिक बन्धनों एवं विपत्तियों/कष्टों से पार करा देने वाली। सर्वोच्च स्थान पर स्थित होने वाली। तार का एक अर्थ उच्च भी होता है। ॐ इस अक्षर से वाच्य। तारशब्दवाच्यात् तारा। तार का एक अर्थ है ॐ। जो दुखों से पार लगा देती हैं अर्थात दूर कर देती है। तारयति दुखेभ्यः। जो सर्वत्र व्याप्त है एवं सभी प्रकार से आनन्दित है। सर्वत्र तता आरमते च। जो ज्ञान से विस्तृत हैं अर्थात ज्ञानी हैं, उनको सभी प्रकार से आनन्दित करने वाली। ज्ञानेन ततास्ताः, तेषाम् आरमणम् यस्या। पृथ्वी में फैले हुए दुष्टों या राक्षसों को जिनके द्वारा आनन्द नहीं दिया जाता। भूमौ तता ज्यायांसो असुरा तेषाम् अरमणं यस्मात। जो संसार सागर से पार चले गये हैं, उनकी यह अर्थात उनकी स्वामिनी अर्थात उनकी देखभाल करने वाली या रक्षा करने वाली। तरन्ति संसारसागरम् इति ताराः मुक्ताः, तेषाम् इयम् स्वामिनी। लक्ष्मी अर्थात धन–सम्पदा या शोभा को देने वाली। एकाक्षरीकोश में ता का अर्थ है लक्ष्मी एवं राति का अर्थ है देती है। एकाक्षरी कोष से ता या त के अर्थ लेकर तारा शब्द के कई अर्थ किये जा सकते हैं। जो सब जगह व्याप्त हैं तथा हर प्रकार के आनन्द से युक्त हैं। तता का अर्थ है सब जगह फैला हुआ, तता से ता अक्षर ले लिया। आ रमते या रमते से र अक्षर ले लिया। ततत्वात् तः, आरमणात, आरः। रमते का अर्थ है आनन्दित होती है, क्रीड़ा करती है। सब जगह फैली लक्ष्मी जी को प्रसन्न करती हैं। सर्वत्र ततां रमां रमयति। त, अ, र इन अक्षरों के अर्थ एकाक्षरीकोश से लेकर भी तारा का अर्थ किया जा सकता है। जो सर्वत्र व्याप्त है, अ अक्षर से व्याप्त है, आनन्दित होती है या क्रीड़ा करती है। तार में स्वार्थ (बिना अर्थ बदले) कन् प्रत्यय लगाने से बने तारक शब्द का वही अर्थ होता है जो तार का है। जैसे बालक का वही अर्थ है जो बाल का।

5. **ताराहितावर्णा** – तारों में छिपे हुए सम्पूर्ण वर्ण वाली अर्थात उज्जवल वर्ण वाली। तारा+ आहित+आवर्णा। तार (अर्थात ॐ) में निगूढ़ वर्ण वाली अर्थात अ, उ, म वर्ण वाली अर्थात जिनके मन्त्र में ॐ लगा है। तारों के द्वारा धारण किये गये वर्ण वाली अर्थात चमकीला या चमकदार वर्ण वाली। आहित का अर्थ है सम्पूर्ण रूप से धारण किया हुआ। अपने आप में समस्त वर्णों को धारण करने वाली। आ+हिता, हित का अर्थ है धारण करना।

धा धातु से हित शब्द बनता है, ध में ह का आदेश हो जाता है। उच्च स्वरूप के द्वारा सम्पूर्ण विश्व का हित साधन करने वाली।

6. **ताराद्या** – पार कराने वालों में जो सर्वप्रथम है। संसार सागर से पार कराने वालों में जो सर्वोपरि अर्थात सर्वश्रेष्ठ हैं। ऐसी तारा जिसके पूर्व कोई नहीं है अर्थात जो आद्या हैं। तारारूपी आदि शक्ति।

7. **ताररूपिणी** – ओम् के स्वरूप वाली। सर्वश्रेष्ठ रूप या स्वरूप वाली।

8. **तारारात्रिसमुत्पन्ना** – सर्वश्रेष्ठ रात्रि में प्रकट होने वाली। तार का एक अर्थ श्रेष्ठ भी होता है। चैत्र शुक्ल नवमी को उत्पन्न या प्रादुर्भूत। इस दिन तारा देवी का आविर्भाव माना गया है। तारों वाली रात्रि के रूप में उत्पन्न अर्थात प्रकट। तारा अर्थात जो कठिनाइयों या दुखों से पार करा दे। रात्रि अर्थात काला अर्थात नीला। संस्कृत में काले का अर्थ नीला भी होता है। तारा देवी का एक अन्य नाम नील सरस्वती भी है। दुखों या कठिनाईयों से पार कराने वाली ऐसी शक्ति जो नील सरस्वती के रूप में प्रकट हुई।

9. **तारारात्रिवरोद्यता** – चैत्र शुक्ल नवमी की अर्द्ध रात्रि में उपासना करने वालों को वर देने में उद्यत। सर्वश्रेष्ठ रात्रि में वर देने के लिए उद्यत हैं। तारा भरी रात्रि में उपासना करने से वर देने के लिए उद्यत (तैयार, प्रस्तुत, आमादा) हो जाती हैं। सर्वश्रेष्ठ रात्रि में सर्वोत्कृष्ट शक्ति से सम्पन्न हो जाती हैं और वर देने के लिए उद्यत हैं।

10. **तारारात्रिजपासक्ता** – ऐसी तारा जो रात्रि में उपासक के जप से जुड़ जाती है अर्थात उसकी पूजा से या जप से खिंच जाती है या जुड़ जाती है। श्रेष्ठ रात्रियों में जप में आसक्त हो जाती हैं अर्थात लग जाती हैं या भक्तों के द्वारा किये जप को सुनने में लग जाती हैं। ऊँ के उज्जवल जप में तल्लीन। अरात्रि अर्थात प्रकाश अर्थात उज्जवल। ऊँ वही है प्रकाश, उस प्रकाश के जप में आसक्त अर्थात ध्यान किये हुए।

11. **तारारात्रिस्वरूपिणी** – श्रेष्ठ रात्रि स्वरूपा। तारों से युक्त रात्रि स्वरूपा। चैत्र शुक्ल नवमी की रात्रि स्वरूपा। सर्वोत्कृष्ट रात्रि में सर्वश्रेष्ठ स्वरूप को धारण करने वाली। तार+अरात्रि, ऊँ की प्रकाश या ज्ञान स्वरूपा। तार अर्थात ऊँ, अरात्रि अर्थात प्रकाश।

12. **ताराराज्ञीस्वसन्तुष्टा** – तारा ऐसी महारानी जो अपने आपसे सन्तुष्ट है अर्थात उन्हें राजा की जरूरत नहीं होती। सामान्यतः रानी के साथ राजा होता है। सर्वश्रेष्ठ महारानी के रूप में सुशोभित होने से सब प्रकार से स्वयं सन्तुष्ट। सन्तुष्ट का अर्थ है तृप्त या प्रसन्न।

13. **ताराराज्ञीवरप्रदा** – सर्वश्रेष्ठ महारानी के स्वरूप में स्थित होकर वर प्रदान करने वाली। सर्वश्रेष्ठ स्वरूप में स्थित सर्वोत्कृष्ट रूप को धारण करने वाली और श्रेष्ठ वर को प्रदान करने वाली। तार या तारा का एक अर्थ सर्वश्रेष्ठ भी होता है।

14. **ताराराज्ञीस्वरूपा** – ऐसी तारा जो ब्रह्माण्ड की महारानी के स्वरूप में है। ऐसी तारा जो अधिक शोभा सम्पन्न है। रानी का राजा से ज्यादा हुकुम चलता है। राजृ दीप्तौ धातु से भी राज्ञी बनता है जिसका अर्थ है ज्यादा सुन्दर या सजी धजी। राजा का एक अर्थ है – रंजयति इति राजा अर्थात जो प्रजा को खुश रखे। राजा अर्थात जो औरों से अधिक शोभासम्पन्न या सजा धजा हो। अपने मुकुट और कपड़ों से वह औरों से अधिक चमकता है। तारा के रूप में महारानी स्वरूपा।

15. **ताराराज्ञीप्रसिद्धिदा** – ऐसी तारा जो महारानी है और भक्तों को प्रसिद्धि दिलाने वाली हैं।

16. **ताराहृत्पङ्कजागारा** – ऐसी तारा देवी जो हृदय कमल में रहती है। आगार अर्थात् घर या रहने का स्थान। तारा अर्थात् ऐसी शक्ति जो कष्टों से या संसार सागर से पार करा दे या छुटकारा दिला दें। ऐसी तारा

जिसका ह्रदय रूपी कमल में घर है अर्थात जो ह्रदय रूपी कमल में विराजमान है। आगार अर्थात घर। तारा च असौ ह्तपंकजागारा इति ताराह्तपंकजागारा। तारारूपी ह्रदय कमल में निवास करने वाली। आगार का अर्थ है निवास स्थान।

17. **ताराह्रत्पङ्कजापरा** – ऐसी तारा जो ह्रदय कमल में रहने वाली है और श्रेष्ठ है। परा का अर्थ है श्रेष्ठ। तारों को ग्रहण किया गया कमल के रूप में, उस कमल वाली। परा का अर्थ है तत्पर अर्थात उससे युक्त। आह्रत का अर्थ है धारण या ग्रहण किया गया। तात्पर्य है तारों को कमल के रूप में धारण करने वाली। श्रेष्ठ कमलों को धारण किये अर्थात हाथ, पैर, मुख सभी श्रेष्ठ कमल की तरह हैं अर्थात सुन्दर हैं। आपने चरणकमल, मुखकमल ये नाम सुने होंगे। परा का अर्थ है श्रेष्ठ, आह्रत का अर्थ है हरण किया अर्थात धारण किया। तारा के ह्रदय कमल में जो सर्वश्रेष्ठ कमल है, वह है आश्रय जिनका अर्थात कमल को आश्रय देने वाली।

18. **ताराह्रत्पङ्कजाधारा** – ऐसी तारा जो ह्रदय कमल रूपी आसन पर बैठी हुई है। आधारयति इति आधारा भी कर सकते है। ऐसी तारा जो ह्रदय कमल में स्थित होकर जीवात्मा को धारण किये हुये है अर्थात् परमात्मा स्वरूपा। जीवात्मा के भीतर ही परमात्मा होता है और वह जीवात्मा, प्राण एवं पूरे शरीर को धारण किये रहता है अर्थात् टिकाये रहता है या उसका अस्तित्व बनाये रखता है या उसे क्रियाशील बनाये रखता है। ऐसी तारा जो रमणीय सृष्टि को आधार है अर्थात् सृष्टि जिस पर टिकी हुई है। ह्रत का अर्थ है ह्रदय को हरने वाला अर्थात् रमणीय या सुन्दर। पंकज या कमल सृष्टि का प्रतीक माना जाता है। ऐसी तारा जिसका आधार ह्रदय कमल है अर्थात वहाँ रहती हैं। तारा रूपी ह्रदय कमल है जिनका आधार। आधार अर्थात जिसमें कोई चीज टिकी होती है।

19. **ताराह्रत्पङ्कजा** – ऐसी तारा जिनका ह्रदय कमल के समान सुन्दर, कोमल और सुगन्धित है। तारा रूपी ह्रदय कमल में निवास करने वाली।

20. **तारेश्वरी** – नक्षत्रों की ईश्वरी अर्थात उन्हें पैदा करने वाली एवं उनका संचालन करने वाली। तारा देवी के उपासकों को एक अवस्था के बाद तारों (नक्षत्रों) की ध्वनि, स्पन्दन और उनकी गतिविधियों का साक्षात अनुभव होता है। ईश्वरी अर्थात स्वामिनी अर्थात उनके अनुसार ही सब कुछ होगा। आज की भाषा में कहें तो जैसा वे Download करेंगी वैसा होगा। ईश्वरी अर्थात उत्पत्ति, पालन (कुछ समय तक स्थिति बनाये रखना) एवं संहार करने वाली।

21. **ताराभा** – तारा (नक्षत्र) की तरह आभा वाली। तारा की देदीप्यमान शक्तिस्वरूपा।

22. **तारागणस्वरूपिणी** – तारा (नक्षत्र) मण्डल के स्वरूप वाली। पार लगाने वाली आदिशक्ति के जो अनेक गण हैं, उनके स्वरूप को धारण करने वाली।

23. **तारागणसमाकीर्णा** – ऐसी तारा जिसके सेवकगण चारों ओर फैले हैं। समाकीर्ण का शाब्दिक अर्थ है सम्यक् रूप से बिखरे हैं। तारों से व्याप्त अर्थात आकाशस्वरूपा। ऐसी तारा जो सेवकों से घिरी हुई है। नक्षत्र मण्डल इन्हीं के अन्दर फैला हुआ है अर्थात आकाशस्वरूपा। पार लगाने वाली आदिशक्ति के जो गण हैं उन सबमें सम्यक् रूप से विराजमान रहने वाली।

24. **तारागणनिषेविता** – नक्षत्र गणों द्वारा या श्रेष्ठ गणों द्वारा सेवा की जाने वाली। पार लगाने वाली आदिशक्ति के गणों द्वारा सेवा की जाने वाली। तार का एक अर्थ श्रेष्ठ भी होता है।

25. **तारा** – असमंजस या दुविधा की स्थिति से पार करा देने वाली अर्थात निकाल देने वाली। बुद्धिहीनता से पार लगा देने वाली अर्थात मूर्ख को भी विद्वान बनाने वाली। मन्त्र दोष एवं उच्चारण दोष से पार करा देने वाली। देवी की कृपा से यदि शत्रु मन्त्र है या मन्त्र के उच्चारण में कोई दोष है तो वह नहीं होता। आदि शक्ति माँ तारा। ऊँ इस अक्षर से वाच्य। तार का एक अर्थ है ऊँ। जो दुखों से पार लगा देती हैं अर्थात दूर कर देती

है। तारयति दुखेभ्यः। जो सर्वत्र व्याप्त है एवं सभी प्रकार से आनन्दित है। सर्वत्र तता आरमते च। जो ज्ञान से विस्तृत हैं अर्थात ज्ञानी हैं, उनको सभी प्रकार से आनन्दित करने वाली। ज्ञानेन ततास्ताः, तेषाम् आरमणम् यस्या। पृथ्वी में फैले हुए दुष्टों या राक्षसों को जिनके द्वारा आनन्द नहीं दिया जाता। भूमौ तता ज्यायांसो असुरा तेषाम् अरमणं यस्याः। जो संसार सागर से पार चले गये हैं, उनकी यह अर्थात उनकी स्वामिनी अर्थात उनकी देखभाल करने वाली या रक्षा करने वाली। तरन्ति संसारसागरम् इति ताराः मुक्ताः, तेषाम् इयम् स्वामिनी। लक्ष्मी अर्थात धन–सम्पदा या शोभा को देने वाली। एकाक्षरीकोश में ता का अर्थ है लक्ष्मी एवं राति का अर्थ है देती है। जो सब जगह व्याप्त हैं तथा हर प्रकार के आनन्द से युक्त हैं। तता का अर्थ है सब जगह फैला हुआ, तता से ता अक्षर ले लिया। आ रमते या रमते से र अक्षर ले लिया। ततत्वात् तः, आरमणात, आरः। रमते का अर्थ है आनन्दित होती है, क्रीड़ा करती है। सब जगह फैली लक्ष्मी जी को प्रसन्न करती हैं। सर्वत्र ततां रमां रमयति। त, अ, र इन अक्षरों के अर्थ एकाक्षरीकोश से लेकर भी तारा का अर्थ किया जा सकता है। जो सर्वत्र व्याप्त है, अ अक्षर से व्याप्त है, आनन्दित होती है या क्रीड़ा करती है। तार में स्वार्थ (बिना अर्थ बदले) कन् प्रत्यय लगाने से बने तारक शब्द का वही अर्थ होता है जो तार का है। जैसे बालक का वही अर्थ है जो बाल का। राति का अर्थ है देता है, राति इति रा से रा का अर्थ देने वाली होता है। एकाक्षरी कोश से ता के अर्थ लेकर एवं या ऐसे शब्द लेकर जो ता से आरम्भ होते हैं, उसके आधार पर भी तारा शब्द के कई अर्थ निकाले जा सकते हैं।

26. **तारान्विता** – नक्षत्रों की शक्ति से युक्त। इनकी कृपा से तारों में होने वाला स्पन्दन अनुभव होने लगता है। पार लगाने वाली आदिशक्ति की शक्ति से युक्त। अन्विता अर्थात अनु + इता अर्थात पीछे गई हुई अर्थात पीछे से युक्त। तारों से युक्त अर्थात आकाश स्वरूपा।

27. **तारारत्नान्वितविभूषणा** – तारारूपी रत्नों से युक्त आभूषणों वाली। श्रेष्ठ रत्नों से युक्त है आभूषण जिनके। तार का अर्थ श्रेष्ठ या उच्च भी होता है।

28. **तारागणरणासन्ना** – तारा समूह से युक्त युद्ध स्थान अर्थात आकाश में नजदीक से रहने वाली। आकाशीय तारा समूह से युद्ध स्थान में अर्थात आकाश में नजदीक से रहने वाली। देवी और असुरों के युद्ध में कई बार आकाश में भी युद्ध हुआ अतः आकाश भी एक रण क्षेत्र बना। ऐसी तारा जो युद्ध में सैनिकगणों के समीप रहती हैं अर्थात उन्हें उत्साहित करती हैं, बल प्रदान करती हैं। युद्ध में तारागणों से सुशोभित होने वाली अर्थात तारागण उनको घेरे रहते हैं।

29. **ताराकृत्यप्रपूजिता** – श्रेष्ठ शक्ति के श्रेष्ठ कृत्यों द्वारा विशेष रूप से पूजित। जो भी सामग्री उपलब्ध है या नहीं भी उपलब्ध है, उसके सहित की जाने वाली दैनिक स्तुति पूजा है। भौतिक पदार्थ उपलब्ध हैं तो चढ़ाये जाते हैं, मानसिक रूप से भी चढ़ाये जाते हैं। पूजा के भौतिक तथा मानसिक दोनों तरीके होते हैं। ऐसी तारा जो शाक्त मार्ग में बतायी गयी पूजा विधान से अच्छी प्रकार से पूजी जाती है। कृत्य का अर्थ कर्म होता है पर यहाँ पर प्रसंगवश उपासना कर्म या पूजा विधान या शाक्त कर्म अर्थ लेगें। इनके लिए जैसा पूजा विधान बताया गया वह कृत्य है।

30. **तारागणकृताहारा** – तारों से बना हुआ है सम्पूर्ण हार या सम्यक् हार जिनका। आहार अर्थात आ (सम्पूर्ण)+हार। तारों से बना है हार जिनका। एकाक्षरी कोष में आ का अर्थ भाव (पदार्थ, सत्ता) दिया गया है और प्रत्येक चीज भाव है अतः आ का अलग से कोई अर्थ देने की आवश्यकता नहीं है। जैसे विश्वामित्र अर्थात विश्वमित्र।

31. **तारागणकृताश्रया** – नक्षत्र समूह द्वारा जिनका आश्रय लिया गया है। पार लगाने वाली पराशक्ति के गणों द्वारा अर्थात सेवकों द्वारा जिनका आश्रय लिया गया है।

32. **तारागणकृतागारा** – तारा समूह को बनाया है जिसने अपना घर अर्थात तारों में रहने वाली। तारागणों में अपने घर को बनाया हुआ है अर्थात तारागणों में चमक के रूप में या द्युति के रूप में स्थित। आदि शक्ति माँ तारा के जो समस्त गण हैं उनके द्वारा बनाया गया है आश्रय स्थान जिनका।

33. **तारागणनतत्परा** – ऐसी तारा जो गिनने में लगी हुई है। यहाँ गिनने का तात्पर्य है मूल्यांकन करना। मूल्यांकन करना अर्थात गुण दोष देखना, उपासकों की उपासना की तीव्रता या शुद्धता देखना, कौन श्रेष्ठ है कौन नहीं, इसका मूल्यांकन करना। ताराओं का गणन (आकलन अर्थात रचना) करने में तत्पर। पार लगाने वाली आदिशक्ति की जो विभिन्न विभूतियाँ हैं उनके आकलन में तत्पर।

34. **तारागुणगणाकीर्णा** – तारों के समान असंख्य गुण–समूहों से व्याप्त। तारे असंख्य की संख्या में होते हैं, अतः देवी के गुण भी असंख्य हैं। तारों के समान उज्जवल गुण समूहों से व्याप्त। संसार सागर से पार कराने वालों के गुण समूहों से व्याप्त। ऐसी तारा जो सद्गुणों के समूह से भरी हुई हो। जिनके श्रेष्ठ गुण–गण अर्थात गुणों का समूह सर्वत्र अभिव्याप्त है।

35. **तारागुणगणप्रदा** – तारों के गुण समूह अर्थात दीप्ति के पुंज को देने वाली अर्थात अपने भक्तों को भीतर से एवं बाहर से देदीप्यमान करती हैं। पार लगाने वाली पराशक्ति के गुण समूहों को अपने भक्तों को देने वाली।

36. **तारागुणगणासक्ता** – तारों के गुण समूह अर्थात दीप्ति के पुंज में आसक्त हैं अर्थात जुड़ी हुई हैं अर्थात जो बाहर और भीतर से देदीप्यमान है। पार कराने वाली पराशक्ति के गुण समूहों में आसक्त रहने वाली अर्थात उसे बेहद पसन्द करने वाली।

37. **तारागुणगणालया** – तारों के गुण समूह अर्थात दीप्ति पुंज का निवास स्थान। पार लगाने वाली पराशक्ति के गुण समूह का निवास स्थान अर्थात जिनमें वे गुण रहते हैं।

38. **तारेश्वरी** – पार लगाने वाली पराशक्ति का ईश्वरी रूप। संसार सागर से पार लगाने वाले देवी देवताओं, गुरुओं, ऋषि मुनियों की ईश्वरी अर्थात आराध्या या स्वामिनी (संचालित करने वाली)।

39. **तारपूज्या** – ऊँ मन्त्र के द्वारा पूजा करने योग्य। ऊँ रामाय नमः मन्त्र द्वारा पूजा करने योग्य। अतिशय पूजित होने वाली। ऊँ या ऊँ रामाय नमः दोनों मन्त्र तारक मन्त्र कहलाते हैं।

40. **तारजप्या** – ओम् के द्वारा जपने योग्य अर्थात स्मरण करने योग्य। श्रेष्ठ शक्ति/आदि शक्ति होने के कारण जो जप करने योग्य है। तार का एक अर्थ श्रेष्ठ या उदात्त भी होता है।

41. **तारणा** – स्वयं ही स्वतन्त्र रूप से पार लगाने वाली। धन की समस्या या वाणीगत समस्या से पार ले जाने वाली अर्थात दूर करने वाली। तारा देवी को नील सरस्वती भी कहते हैं जो वाणी की देवी हैं। संसार सागर से तारने वाली। तारणा और तारणी में अन्तर वैसा ही है जैसा आचार्या और आचार्याणी में। तारणा और तारणी दोनों ही पार लगाने वाली हैं किन्तु तारणा में स्वतन्त्र रूप से अर्थात बिना किसी की सहायता लिये पार लगाने का गुण है, जबकि तारिणी किसी की अपेक्षा से यह कार्य करती हैं अर्थात उन्हे शिव की अपेक्षा है। यदि तारणी शब्द है तो अर्थ होगा पार लगाने वाले शिव की पत्नी (यदि तारण में ङीष् प्रत्यय लगाया जाए तो)। संसार सागर से पार कराने का ज्ञान देने वाली। तार + ण + आ, ण का एक अर्थ है ज्ञान, आ का एक अर्थ है देना।

42. **तारमुख्या** – संसार सागर से तार देने वालों में जो प्रमुख स्थान रखती हैं।

43. **ताराख्या** – तारा है संज्ञा या नाम जिनका।

44. **तारदक्षा** – संसार सागर से पार करने में प्रवीण या चतुर। शीघ्रता से संसार सागर से पार कराने वाली। दक्ष् शीघ्रार्थे धातु होती है। जो प्रत्येक कार्य को शीघ्रता से करता है वह दक्ष कहलाता है।

45. **तारिणी** – भौतिक समुद्र को पार करा देने वाली। ऐसा कहा जाता है कि यदि समुद्र/नदियों में बाढ़ या उफान आदि आये तो माँ तारा का नाम लेने से समुद्र बिना बाधा के पार हो जाता है। तार देने वाली या पार करा लेने वाली। भगवान शिव को विषपान करने के बाद उत्पन्न कष्ट से पार करा देने वाली। कहते हैं कि भगवान शिव को छह माह का बालक बनाकर जब देवी ने अपना स्तनपान कराया तो शिव विषजनित सारी पीड़ाओं से मुक्त हो गये। मृत्यु के भय से पार करा देने वाली।

46. **तारागम्या** – तारक शक्ति के द्वारा या ऊँ के द्वारा समझी जाने वाली या प्राप्त की जाने वाली।

47. **तारस्था** – ओम्कार (ऊँ) में स्थित। उच्च स्थान पर आसीन रहने वाली।

48. **तारामृततरङ्गिणी** – श्रेष्ठ अमृत की नदीस्वरूपा। ऐसी पार कराने वाली जो अमृत की नदी स्वरूपा है। तार देने की अमृत नदी के स्वरूप वाली।

49. **ताराभव्या** – ऐसी तारा जो भव्य है अर्थात बहुत अधिक सुन्दर है। ऐसी सुन्दरता जो दूसरे के मन को प्रभावित करे तथा दूसरे में उसके प्रति आदरभाव जागृत हो, भव्यता कहलाती है। अतिशय भव्य।

50. **तारार्णा** – तार देने की श्रेष्ठ मन्त्र–शक्तिस्वरूपा। अर्ण का अर्थ है अक्षर अर्थात मन्त्राक्षर।

51. **तारहव्या** – ऊँ मन्त्र से या ऊँ मन्त्र से युक्त मन्त्र से आहुति दी जाने योग्य। श्रेष्ठ हवन सामग्री स्वरूपा। तार का अर्थ ऊँ, श्रेष्ठ है। तारक मन्त्र ऊँ से बुलाई जाने वाली या जिनके लिए इस मन्त्र से आहुति दी जाती है। ऊँ रामाय नमः को भी तारक मन्त्र कहते हैं। इस मन्त्र से बुलाई जाने वाली या आहुति दी जाने वाली। उच्चतम हवन सामग्री वाली अर्थात हवन में जिन्हें उच्चतम गुणों वाली हवन सामगी दी जाती है। तार का एक अर्थ उच्च भी होता है।

52. **तारिणी** – दरिद्रता से पार लगाने वाली। सुषुम्नानाड़ी में स्थित तीनों ग्रन्थियों अर्थात ब्रह्मा ग्रन्थि, विष्णु ग्रन्थि, रूद्र ग्रन्थि से पार करा देने वाली, तार देने वाली। दुख के सागर से मुक्त करा देने वाली। सभी प्रकार के भयों से पार करा देने वाली। कुण्डलिनी शक्ति की उस अवस्था के स्वरूप वाली जिसमें वह आज्ञा चक्र के भी ऊपर स्थित अमृत के झरने (स्थान) को भी पार कर गई हो, किन्तु अन्तिम पड़ाव (सहस्रार चक्र) आना बाकी है। आज्ञा चक्र तक पहुँची कुण्डलिनी मनोरमा है अर्थात मन में रहने वाली है। मन का सम्बन्ध आज्ञा चक्र से है। तार (ऊँ) के द्वारा जिन्हें हृदय में लाया जाता है अर्थात प्रकट रूप में धारण किया जाता है। तारेण हृदि नीयते इति तारिणी। ऊँ मन्त्र के जप से या इस मन्त्र की साधना के द्वारा देवी सक्रिय रूप से हृदय में बैठ जाती हैं। ऊर्जा रूप में देवी सभी जगह व्याप्त हैं, कहीं कहीं सुषुप्त अवस्था में और कहीं जागृत अवस्था में। संसार सागर से पार कराने वालों या दुखों से पार कराने वालों का भी नेतृत्व करने वाली अर्थात उन्हें पार कराने की शक्ति देने वाली। ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि देवताओं को भक्तों को संसार सागर से पार कराने की जो शक्ति मिली है वह भी देवी द्वारा प्राप्त है। भगवान शिव विष पान से पीड़ा अनुभव कर रहे थे तो देवी ने उन्हें बच्चा बनाकर स्तानपान कराकर उनका सारा कष्ट हर लिया था। सीता जी की खोज के समय समुद्र पार करने वाले वानरों को प्रेरित करने वाली अर्थात शक्ति देने वाली। तारयति संसारात् इति तारिणी। तारकानपि नयति इति तारिणी। तारेण हृदि नीयते। कपीन् उदधेः तारयति रामात्मना। तत्र तारं कपिं नयति। स्वयं तत, जीवेषु अरम् दोषम् नयति अपनयति। संसार सागर से पार कराने वाली अर्थात् संसार के सभी दुखों से छुटकारा दिलाकर शाश्वत आनन्द अर्थात् मोक्ष की अवस्था में पहुँचाने वाली। संसार से पार कराने वाले अन्य देवी–देवताओं का भी नेतृत्व करने वाली अर्थात् उन्हें आवश्यक शक्ति देकर संसार से पार कराने के लिए सक्षम बनाने वाली अर्थात् उन्हें वह शक्ति देने वाली जिससे वे प्राणियों के दुखों को पूर्ण रूप से दूर कर सकें। ऊँ के जप के द्वारा या इनकी साधना के द्वारा जिन्हें हृदय में लाया जाता है अर्थात् बिठाया जाता है। तार का अर्थ है ऊँ। देवी सर्वत्र व्याप्त है, जब कहा

जाता है कि इस स्थान पर विराजमान है तो उसका तात्पर्य है जाग्रत होकर अर्थात् अपनी शक्तियों को प्रकट करते हुए विराजमान। भगवान राम के स्वरूप वाली, क्योंकि उन्होंने वानरों को समुद्र से पार कराया था। सीता जी की खोज में लंका में प्रस्थान करने के लिए जिस शक्ति ने वानरों को समुद्र पार कराया था वह शक्ति तारिणी है। तारा देवी को भगवान राम से जोड़ा जाता है। बन्दर एक जगह से दूसरी जगह को पार करते रहते है इसलिए बन्दर को तार कहा जा सकता है। बन्दरों का नेतृत्व करने वाली अर्थात् उन्हें पार करने की शक्ति देने वाली। त+अर (दोष)+न। जो स्वयं सर्वत्र व्याप्त है एवं जीवों के अर्थात् अपने भक्तों के दोषों को हटाने वाली है। तता का अर्थ है व्याप्त अर्थात् सर्वत्र व्याप्त। तता शब्द का आरम्भिक त अक्षर ले लिया। अर का अर्थ है दोष। अपनयति शब्द का न अक्षर ले लिया। (तार शब्द में णिनि प्रत्यय लगाने से तारिन् शब्द बनेगा जो स्त्रीलिंग एक वचन में तारिनी होगा अर्थात तारिणी होगा। णिनि युक्त अर्थ में होता है। तार के अर्थ लेकर तारिणी के अन्य अर्थ किये जा सकते हैं।)

53. **तारका** – तारक+आ, आ का अर्थ है देना। बिना किसी दूसरे की मदद से अपने आप उत्पन्न होने वाला प्रातिभ ज्ञान तारक ज्ञान है। अज्ञान को दूर करने वाले ज्ञान को भी तारक ज्ञान कहते है। तारक शब्द मन के लिए आया है। तारक का अर्थ है नक्षत्र। चन्द्रमा को भी नक्षत्र कह सकते हैं और चन्द्रमा का प्रतीक मन है। मन से परे जाने पर ही मनुष्य को मोक्ष की अर्थात शिव के राज्य की प्राप्ति होती है। भक्तों को भवसागर से या समस्त दुखों से पार कराने वाली। भय से रक्षा करने वाली। तारयति (पार कराना) से एवं त्रायते (रक्षा करना) दोनों से तारा या तारका शब्द बन सकता है। तारक ज्ञान को देने वाली। अज्ञान से पार करा देने वाले ज्ञान को तारक ज्ञान कहते हैं। किसी निमित के बिना अपनी प्रतिभा से उत्पन्न ज्ञान, विवेक ज्ञान से उत्पन्न ज्ञान तारक ज्ञान होता है। तारक+आ, आ का अर्थ है देना। बाधाओं को पार करा देने वाली। तारने के स्वभाव वाली। तारक ज्ञान को देने वाली।

54. **तारकान्तस्था** – तारक मन्त्र के भीतर मन्त्र शक्ति के रूप में या मन्त्र चैतन्य के रूप में स्थित। तारक मन्त्र ऊँ या ऊँ रामाय नमः के अन्दर विद्यमान रहने वाली। संसार सागर से तार देने वालों में सर्वोच्च स्थान पर रहने वाली। अन्त का अर्थ है सर्वोच्च, पराकोटि। संसार सागर से पार कराने वाले जितने भी देवी देवता या ऋषि मुनि हैं उनके भीतर शक्ति या चैतन्य के रूप में स्थित।

55. **तारकाराशिभूषणा** – तारों के समूह को आभूषण के रूप में धारण करने वाली। तारा समूह जिसके आभूषण हैं। तार देने वालों का जो समूह है, उसकी आभूषण स्वरूपा।

56. **तारकाहारशोभाढ्या** – अतिशय श्रेष्ठ हार को धारण करने से अत्यधिक शोभा से सम्पन्न हैं।

57. **तारकावेष्टिताङ्गणा** – तारों से घिरा हुआ है आँगन जिनका। यह देवी का विराट स्वरूप हुआ जिसमें आकाश उनका आँगन है और यह आँगन तारों से घिरा हुआ है। ऊँ मन्त्र से घिरा हुआ अर्थात सम्पुटित है जिनका मन्त्र रूपी आँगन। तारा देवी का मन्त्र आँगन है और इस मन्त्र के आगे और पीछे ऊँ लगा है। तारक मन्त्र से आवेष्टित (घिरे हुए) हैं अंग जिसके या जिनका आँगन तारक मन्त्र से अभिमन्त्रित है। तारक शक्ति से जिनका निवास स्थान सभी प्रकार से अलंकृत हो रहा है। यहाँ देवी के विराट् स्वरूप का वर्णन है।

58. **तारकाहंसकाकीर्णा** – तारे रूपी हंसों से घिरी हुई या व्याप्त। देवी के विराट् रूप की चर्चा हो रही है जिसके चारों ओर तारे रूपी हंस फैले हुए हैं। तारे रूपी आभूषणों से घिरी हुई अर्थात विभूषित। हंसुली गले का एक आभूषण है। तार देने वालों के सर्वश्रेष्ठ स्वरूप से फैली हुई या विभूषित। हंसक का अर्थ है सर्वश्रेष्ठ।

59. **तारकाकृतभूषणा** – जिसने तारों से अपना आभूषण बनाया है। तारों ने स्वयं को जिसका आभूषण बनाया है। ताराओं को किया है, आभूषण के रूप में अर्थात ताराओं को आभूषण के रूप में धारण करने वाली। यह देवी का विराट रूप है। सर्वश्रेष्ठ विविध प्रकार के अलंकारों से विभूषित होने वाली।

60. **तारकाङ्गदशोभाङ्गी** – तारों से बने बाजूबन्द से सुशोभित अंगों वाली अर्थात भुजाओं वाली। अंगद अर्थात बाजूबन्द जो भुजाओं में पहने जाते हैं। सर्वश्रेष्ठ बाजूबंदों द्वारा जिनके अंग सुशोभित हैं।

61. **तारकाश्रितकङ्कणा** – तारे जिसके कंकण का आश्रय लेतें हैं अर्थात जिसके कंकण में तारे लगें हैं। उच्च कोटि के कंकण अर्थात कंगन से सुशोभित होने वाली।

62. **तारकाञ्चितकाञ्ची** – तारों से कान्तिमान मेखला या करधनी वाली। अंचित का अर्थ पूजित होता है पर यहाँ कान्तिमान ले लिया गया। अंचित का अर्थ गया हुआ भी होता है क्योंकि अंचु गतौ धातु भी होती है। तारे गये हैं करधनी में जिनके अर्थात सितारे जड़ित करधनी वाली। सुन्दर करधनी से अतिशय सुशोभित होने वाली।

63. **तारकान्वितभक्षणा** – तारों से युक्त (अर्थात आकाश) का भी भक्षण करने वाली, खा जाने वाली। तात्पर्य है कि प्रलय काल में देवी तारों से भरे आकाश को भी खा जाती हैं। तारक मन्त्र से अभिमन्त्रित भोज्य पदार्थ वाली। तारक मन्त्र से अभिमन्त्रित कर भोज्य पदार्थ खाने वाली। भोज्य पदार्थ के समीप तारक मन्त्र को पढ़कर उसमें फूँक मारने से वह अभिमन्त्रित हो जाता है। प्रत्येक बार अर्थात प्रत्येक मन्त्र पढ़ने के बाद उस वस्तु में फूँक मारने से वह वस्तु अभिमन्त्रित होती है। अभिमन्त्रित होना अर्थात उससे युक्त होना। इनका भक्ष्य तारक मन्त्र से अभिमन्त्रित या युक्त होता है। जिनका भक्षण भी चमक वाला है जैसे मिठाइयों में चाँदी का वर्क लगा होता है। तारने वाला का अर्थ पुष्टि करने वाला भी कर सकते हैं तब अर्थ होगा पुष्टिकारक गुणों से युक्त भक्षण वाली। संसार के सर्वश्रेष्ठ भक्ष्य पदार्थों को ग्रहण करने वाली।

64. **तारकाचित्रवसना** – सितारों से सम्पूर्ण रूप से रंग बिरंगे हुये वस्त्रों वाली। आचित्र अर्थात आ (सम्पूर्ण रूप से)+चित्र। सितारों से निकलने वाले किरणों से जिनके वस्त्र रंग बिरंगे हो गये हैं। वस्त्रों में भी सितारे लगे होते हैं। विश्व के सर्वश्रेष्ठ सुन्दर वस्त्रों को धारण करने वाली। चित्र का अर्थ यहाँ पर चितकबरे के बजाए सुन्दर लेना उचित है।

65. **तारकासनमण्डला** – तारे जड़े हुए हैं आसन के घेरे में। सितारे जड़े आसन के घेरे वाली या साक्षात तारे हैं आसन का घेरा। यहाँ देवी के विराट रूप की कल्पना की गई है। विश्व के सर्वश्रेष्ठ आसन पर विराजमान या उसे ग्रहण करने वाली या उसमें सुशोभित।

66. **तारकाकीर्णमुकुटा** – तारे हैं व्याप्त जिनके मुकुट में अर्थात मुकुट तारे से जड़ित हैं। संसार सागर से पार कर देने वाले श्रेष्ठ मुकुट से व्याप्त अर्थात विभूषित।

67. **तारकाश्रितकुण्डला** – तारे आश्रित हैं कुण्डल पर अर्थात जिनके कुण्डलों में तारे जड़ें हैं। संसार सागर से पार करा देने वाले सुन्दर कुण्डलों से अलंकृत अर्थात उन्हें धारण करने वाली।

68. **तारकान्वितताटङ्कयुग्मगण्डस्थलोज्ज्वला** – तारक मन्त्र से युक्त बाली के जोड़ों के झूलने से जिनके गाल उज्जवल हो गये हों। सर्वश्रेष्ठ ताटंक नामक आभूषण के जोड़े से जिनका कपोल–मण्डल देदीप्यमान हो रहा है।

69. **तारकाश्रितपादाब्जा** – तारों पर आश्रित हैं चरण कमल जिनके अर्थात जिनके चरण कमल तारों पर रखे हैं (विराट स्वरूप में)। जिनके चरण कमल भक्तों को संसार सागर से सहज में पार करा देने वाले हैं।

70. **तारकावरदायिका** – ऐसा वरदान जिससे भक्त संसार सागर से पार कर जाए, को देने वाली। ऐसी संसार सागर से पार कराने वाली जो भक्तों को उनके अभीष्टों का वर देने वाली है। तारका च असौ वरदायिका इति तारकावरदायिका। अपनी सर्वश्रेष्ठ शक्ति के द्वारा भक्तों को सर्वश्रेष्ठ वर प्रदान करने वाली।

71. **तारकादत्तहृदया** – ऐसी तारका जो भक्त को अपना हृदय तक दे देती हैं अर्थात भक्त से बहुत प्रेम करती हैं। हृदय से आगे कुछ नहीं दिया जा सकता है। तारका अर्थात संसार सागर से या दुखों के समूह से

पार कराने वाली। अपने भक्तों को संसार सागर से पार करने के लिए जो हृदय से समर्पित रहती हैं। हृदय के ऊपरी भाग में या हृदय देश में तारे रखे हैं या चमक रहे हैं।

72. **तारकाञ्चितसायका** – जिनके बाणों में भी तारे लगे हैं। तारक का अर्थ चाँदी या कीमती धातु भी होती हैं, चाँदी या कीमती धातुओं से युक्त है बाण जिनका। जिनके श्रेष्ठ बाण संसार सागर से पार करने या पार कराने की शक्ति से युक्त हैं।

73. **तारकान्यासकुशला** – तारों को अपने अपने स्थान में रखने में निपुण अर्थात दो तारे आपस में टकराऐं नहीं, इस प्रकार से रखने वाली। न्यास का अर्थ है रखना। ऐसी तारा जो भक्तों के लिए कल्याण रखने में निपुण है। तार देने वाले पूजन विधि के अंगन्यास, करन्यास आदि इन सब में कुशल या दक्ष।

74. **तारकान्यासविग्रहा** – तारे रखे हैं सम्पूर्ण रूप से जिसके शरीर में अर्थात तारों से युक्त शरीर वाली। आन्यास अर्थात आ(सम्पूर्ण)+ न्यास। आ समन्तात् शब्द होता है अर्थात आ का अर्थ है सम्पूर्ण रूप से, चारों ओर से। तारे रखे हैं जिसके शरीर में अर्थात तारों से युक्त शरीर वाली। एकाक्षरी कोष में आ का एक अर्थ भाव (पदार्थ, अस्तित्व) होता है, प्रत्येक चीज पदार्थ या अस्तित्व है अतः आ के लिए कोई अर्थ देने की आवश्यकता नहीं है जैसे विश्वामित्र अर्थात विश्वमित्र। तारक + आ + न्यास + विग्रहा। तार देने वाले पूजन विधि के सम्पूर्ण अंगन्यास, करन्यास आदि उनसे जिनका शरीर सुशोभित हो रहा है।

75. **तारकान्याससन्तुष्टा** – तार देने वाले पूजन विधि के सम्पूर्ण अंगन्यास, करन्यास आदि, उससे सन्तुष्ट (तृप्त या प्रसन्न) रहने वाली।

76. **तारकान्याससिद्धिदा** – तार देने वाले पूजन विधि के सम्पूर्ण अंगन्यास, करन्यास आदि विधि के द्वारा सिद्धि प्रदान करने वाली।

77. **तारकान्यासनिलया** – तारे रखे हैं घर में जिनके। घर में भी सितारे लगे हैं, चमक रहे हैं जैसे क्रिसमस में घरों के अन्दर कृत्रिम तारे लगा देते हैं। तार देने वाले पूजन विधि के अंगन्यास आदि जिनका आश्रय हैं।

78. **तारकान्यासपूजिता** – ऊँ मन्त्र से युक्त मन्त्र के द्वारा सम्पूर्ण रूप से न्यास कर पूजित होने वाली। मन्त्र पढ़कर अंगों का स्पर्श करना न्यास करना होता है। तारक मन्त्र से किये गये न्यास से जिनकी पूजा हुई है। तार देने वाले पूजन विधि के अंगन्यास आदि, उनके द्वारा पूजित।

79. **तारकान्याससंहृष्टा** – तार देने वाले पूजन विधि के सम्पूर्ण अंगन्यास, करन्यास आदि, उससे अतिशय हर्षित रहने वाली।

80. **तारकान्याससिद्धिदा** – ऊँ मन्त्र से युक्त मन्त्र से सम्पूर्णतया न्यास करने पर सिद्धि देने वाली या कार्य में सफलता देने वाली। आन्यास अर्थात सम्पूर्ण रूप से न्यास, सभी प्रकार के न्यास क्योंकि आ का अर्थ है समन्तात् अर्थात पूर्ण रूप से। तारक मन्त्र (ऊँ या ऊँ रामाय नमः) के न्यास से जल्दी सिद्धि देने वाली। तार देने वाले पूजन विधि के अंगन्यास, करन्यास आदि, उनके द्वारा सिद्धि प्रदान करने वाली। ऊपर के कुछ नामों में स्पष्ट कर दिया गया है कि कभी कभी आ का अलग से अर्थ देने की आवश्यकता नहीं है अतः इस नाम का अर्थ हुआ – ऊँ मन्त्र से युक्त मन्त्र से न्यास करने पर सिद्धि देने वाली या कार्य में सफलता देने वाली।

81. **तारकान्याससंमग्ना** – तार देने वाले पूजन विधि के सम्पूर्ण अंगन्यास, करन्यास आदि, उनमें सम्यक् रूप से मग्न रहने वाली या आनन्दित रहने वाली। तारों की स्थिति में डूबी हुई अर्थात इनके ऊपर – नीचे तारे ही तारे हैं। यह देवी का विराट रूप हुआ।

82. **तारकान्यासवासिनी** – तार देने वाले पूजन विधि के सम्पूर्ण अंगन्यास, करन्यास आदि, उनमें निवास करने वाली।

83. **तारकान्याससम्पूर्णमन्त्रसिद्धिविधायिनी** – तारक मन्त्र से सम्पूर्णतया न्यास करने से समस्त मन्त्रों की सिद्धि देने वाली। तार देने वाले पूजन विधि के अंगन्यास आदि, उनके सहयोग से सम्पूर्ण मन्त्र सिद्धि देने वाली।

84. **तारकोपासकप्राणा** – तारक मन्त्र (ऊँ या ऊँ रामाय नमः) या तारा देवी के मन्त्र की उपासना करने वाले भक्तों की प्राण स्वरूपा। प्राण स्वरूपा अर्थात अत्यन्त प्रिय। तारक शक्ति की उपासना करने वाले भक्तों की प्राण स्वरूपा।

85. **तारकोपासकप्रिया** – तारक मन्त्र (ऊँ या ऊँ रामाय नमः) या तारा देवी के मन्त्र की उपासना करने वाले उपासकों की प्रिया अर्थात ऐसे उपासक जिन्हें पसन्द करते हैं या ऐसे उपासक हैं प्रिय जिन्हें। तार देने वाली माता की उपासना करने वाले जिनको प्रिय हैं।

86. **तारकोपासकासाध्या** – तारक मन्त्र (ऊँ या ऊँ रामाय नमः) या तारा देवी के मन्त्र की उपासना करने वालों को सम्पूर्ण रूप से सिद्ध होने वाली हैं। तार देने वाली माता के जो उपासक हैं, उनके द्वारा सिद्ध होने वाली।

87. **तारकोपासकेष्टदा** – तारक मन्त्र (ऊँ या ऊँ रामाय नमः या तारा देवी के मन्त्र) की उपासना करने वालों को उनका मनोरथ देने वाली। तार देने वाली माता के उपासकों को अभीष्ट फल देने वाली।

88. **तारकोपासकासक्ता** – तारक मन्त्र (ऊँ या ऊँ रामाय नमः) या तारा देवी के मन्त्र की उपासना करने वालों के साथ सदैव रहने वाली। तारिणी देवी के उपासकों के साथ सदैव रहने वाली अर्थात आसक्त रहने वाली।

89. **तारकोपासकार्थिनी** – ऊँ की उपासना करने वालों को चाहने वाली। संसार सागर से पार कराने वाली पराशक्ति के उपासको को सदैव चाहने वाली।

90. **तारकोपासकाराध्या** – ऊँ की उपासना करने वालों की आराध्या अर्थात ऊँ के उपासक भी जिनकी आराधना करते हैं। संसार सागर से पार कराने वाली पराशक्ति के उपासकों की आराध्या।

91. **तारकोपासकाश्रया** – ऊँ की उपासना करने वालों की आश्रय। आश्रय का अर्थ है सहारा, आधार, जीवन निर्वाह का अवलम्ब। संसार सागर से पार लगाने वाली पराशक्ति के उपासकों की आश्रय।

92. **तारकासुरसन्तुष्टा** – तारकासुर की तपस्या से सन्तुष्ट (प्रसन्न, तृप्त) हो जाने वाली।

93. **तारकासुरपूजिता** – ऐसी तारका जिसकी असुर भी पूजा करते हैं। तारका अर्थात संसार सागर से पार कराने वाली देवी। तारकासुर के द्वारा पूजित।

94. **तारकासुरनिर्माणकर्त्री** – ऐसी तारका जिसने असुरों का भी निर्माण किया है। तारकासुर नामक असुर की भी रचना करने वाली। तारकासुर को शक्ति देकर उसका निर्माण करने वाली अर्थात बढ़ाने वाली। देव्यथर्वशीर्ष स्तोत्र में देवी ने कहा है कि मैं ही देवता हूँ, असुर हूँ, राक्षस हूँ, विद्या हूँ, अविद्या हूँ।

95. **तारकवन्दिता** – शिव द्वारा जिनकी वन्दना की गयी अर्थात् की जाती है। वन्दिता का अर्थ वन्दना की गयी होता है अर्थात् भूतकाल का अर्थ होता है किन्तु कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र के अनुसार कृत्य प्रत्यय कभी–कभी उन कालों एवं कारकों से भिन्न अर्थ भी देते है जिनमें वे साधारणतः प्रयुक्त किये जाते है अर्थात् भूतकाल वाला शब्द वर्तमान या भविष्य का अर्थ भी दे देगा या कर्म कारक वाला शब्द कर्ता अर्थ भी दे देगा। तारक का अर्थ है संसार सागर से पार कराने वाला। तारक का अर्थ ऊँ या ऊँ रामाय नमः भी होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ ऊँ बोलकर जिनकी वन्दना की जाती है। तारों द्वारा वन्दित। तारक भक्तों (जो दूसरों को कष्टों से पार करा देते हैं) द्वारा वन्दित। वन्दना का अर्थ है सामने से आकर सिर झुकाना और सामने वाले के यश का बखान करना।

96. **तारकासुरसम्मान्या** – ऐसी तारका जो देवताओं के द्वारा सम्मान करने योग्य है। तारकासुर राक्षस के द्वारा सम्मानीया या पूजनीया।

97. **तारकासुरमानदा** – ऐसी तारका जो देवताओं को सम्मान देने वाली हैं, तात्पर्य है देवताओं को सम्मान दिलाती है। तारकासुर+मानदा। तारकासुर को मान प्रदान करने वाली, शक्ति प्रदान करने वाली। मान का एक अर्थ शक्ति या सामर्थ्य भी होता है। तारकासुर के मान को नष्ट करने वाली। दो अवखण्डने धातु से दा बनाने पर खण्डन या नष्ट करने वाली अर्थ आता है।

98. **तारकासुरसंसिद्धा** – तारकासुर ने अपनी तपस्या द्वारा जिन्हें सम्यक् रूप से सिद्ध कर लिया था। तात्पर्य हुआ कि तारकासुर ने जिस मन्त्र को सिद्ध कर रखा था, उससे अभीष्ट कार्य लिया जा सकता है।

99. **तारकासुरदेवता** – तारकासुर दैत्य के लिए जो देवी रही हैं अर्थात स्तुति करने योग्य रही हैं। देवता या देवी दिव् धातु से बने हैं जिसके अनेक अर्थ हैं, उनमें से एक अर्थ है स्तुति करना। इस प्रकार देवी या देवता का अर्थ हुआ स्तुति करने योग्य।

100. **तारकासुरदेहस्था** – जो तारकासुर की भक्ति के कारण उनके शरीर में स्थित (शक्ति रूप से स्थित) हो गई थीं। तारका च असौ सुरदेहस्था, इस प्रकार व्युत्पत्ति करने पर अर्थ होगा – ऐसी तारका जो देवताओं के देह में शक्ति रूप में स्थित हैं।

101. **तारकासुरस्वर्गदा** – तारकासुर को स्वर्ग प्रदान करने वाली। ऐसी तारका जिसने देवताओं को स्वर्ग में स्थान दिया। वेद में असुर शब्द केवल राक्षस के लिये ही नहीं आता, देवताओं के लिये भी प्रयोग किया गया है। असु का अर्थ है प्राण, जो दूसरों को प्राण दे अर्थात जीवन दे वह असुर अर्थात देवता है। राक्षस अर्थ में असुर का विग्रह है जो प्राण निकालने से आनन्दित होते हैं या देवताओं को फेंक कर आनन्दित होते हैं। अस् धातु का अर्थ फेंकना है। रमन्ते का र अक्षर ले लिया, रमन्ते का अर्थ है आनन्दित होना।

102. **तारकासुरसंसृष्टा** – तारकासुर की अच्छी प्रकार से रचना करने वाली। ऐसी तारका जिसने देवताओं की अच्छी प्रकार से रचना की।

103. **तारकासुरगर्वदा** – तारकासुर को वरदान के द्वारा अभिमान प्रदान करने वाली अर्थात उसके भीतर यह भाव पैदा करने वाली कि वह शक्ति में दूसरों से बढ़कर है। तारक + आ + सुर + गर्वदा, इस प्रकार सन्धि विच्छेद कर इस नाम का अर्थ दुःखों से पार कराने वाले सभी देवताओं में गर्व का भाव पैदा करने वाली, भी कर सकते हैं।

104. **तारकासुरसंहन्त्री** – तारकासुर का संहार करने वाली अर्थात् मार देने वाली। अन्तरिक्ष में अनगिनत तारें होते है एवं मन में अनगिनत विचार होते है। इस प्रकार तारकासुर का अर्थ विचारों में लगा हुआ मन भी होता है। विचारों से युक्त मन को नष्ट करने वाली अर्थात् मन को विचार रहित करने वाली। ऐसी स्थिति आने पर कुण्डलिनी शक्ति ऊपर उठती है और सहस्रार चक्र में शिव से मिलती है। वायु रहित करने पर द्रव को ऊपर खींचा जा सकता है, उसी प्रकार कुण्डलिनी शक्ति भी ऊपर उठ जाती है। तारकासुर मन का प्रतीक है क्योंकि मन में बहुत से विचार आते हैं। तारक का अर्थ होता है नक्षत्र जो अन्तरिक्ष के सभी नक्षत्रों का प्रतिनिधित्य करता है। जिस प्रकार अन्तरिक्ष में अनगिनत तारें होते हैं उसी प्रकार मन में अनगिनत विचार चलते हैं। इस प्रकार यह नाम मनुष्य को मन से परे ले जाने वाली शक्ति के रूप में प्रतीत होता है। मन की क्रियायें नष्ट हो जाती है अर्थात वह शान्त हो जाता है जो तभी सम्भव है जब मन आत्मा में लीन हो जाये।

105. **तारकासुरमर्दिनी** – तारक नामक असुर को मसल देने वाली। मन में अपना प्रभाव प्रवेश करा देने वाली अर्थात् अपने गुण एवं शक्ति को प्रवेश करा देने वाली। आपने तेलमर्दन शब्द सुना होगा जिसमें तेल को शरीर

के अंगों में दबा कर लगाने से तेल शरीर के अन्दर प्रवेश कर जाता है। इस शब्द को मध्यमपदलोपी समास मानते हुए तारकासुरमानमर्दिनी मूल शब्द माना जा सकता है तब इसका अर्थ होगा तारकासुर के मान का मर्दन करने वाली। तेजी से प्रहार करने को भी मर्दन बोलते है। तब इसका अर्थ होगा अपने शत्रुओं पर तेजी से प्रहार करने वाली। तारकासुर का मर्दन (कुचलना, रौंदना, नाश करना) करने वाली। जो भी क्रिया हो रही है वह शक्ति ही करती है, अतः नामों के अर्थों में विरोधाभास होने पर आश्चर्य नहीं करना चाहिए। वही शक्ति उत्पत्ति करती है, वही शक्ति पालन करती है, वही शक्ति संहार करती है। देवताओं द्वारा जो भी किया जाता है वह उनके अन्दर स्थित शक्ति करती है और कह दिया जाता है कि देवताओं ने किया है। तारकासुर मन का प्रतीक है क्योंकि मन में बहुत से विचार आते हैं। तारक का अर्थ होता है नक्षत्र जो अंतरिक्ष के सभी नक्षत्रों का प्रतिनिधित्य करता है। जिस प्रकार अंतरिक्ष में अनगिनत तारें होते हैं उसी प्रकार मन में अनगिनत विचार चलते हैं। इस प्रकार यह नाम मनुष्य को मन से परे ले जाने वाली शक्ति के रूप में प्रतीत होता है। मन की क्रियायें नष्ट हो जाती है अर्थात वह शान्त हो जाता है जो तभी सम्भव है जग मन आत्मा में लीन हो जाये।

106. **तारकासुरसंग्रामनर्तकी** – तारकासुर के साथ संग्राम में नृत्य करने वाली या युद्ध विद्या का नृत्य करने वाली।

107. **तारकापहा** – तारकासुर का त्याग करने वाली अर्थात दूर भगा देने वाली। तारकासुर को नष्ट कर देने वाली।

108. **तारकासुरसंग्रामकारिणी** – तारकासुर के साथ संग्राम करने वाली। भले ही देखने में देवता लड़ रहे होते हैं पर वास्तव में उनमें रहने वाली शक्ति ही लड़ रही होती है। शक्ति अर्थात देवी।

109. **तारकारिभृत्** – तारकासुर के शत्रु अर्थात स्वामी कार्तिकेय को धारण करने वाली अर्थात उनका भरण पोषण करने वाली।

110. **तारकासुरसङ्ग्रामकबन्धबृन्दवन्दिता** – तारकासुर के साथ हो रहे संग्राम में दैत्यों के सर कटने से उत्पन्न कबन्धों द्वारा प्रणाम की गई एवं यशोगान की गई। तारकासुर के साथ हुए संग्राम में जो कबन्ध हो जाते हैं, उनके समूह द्वारा वन्दित। कबन्ध का अर्थ है सिर के नीचे का हिस्सा। किसी का सिर तलवार से अलग कर दिया गया तो जो धड़ बचता है वह कबन्ध है।

111. **तारकारिप्रसू** – तारकासुर के शत्रु अर्थात कार्तिकेय को जन्म देने वाली अर्थात उनकी माँ।

112. **तारकारिमाता** – कार्तिकेय की माँ अर्थात उनका रक्षण करने वाली, पालन–पोषण करने वाली।

113. **तारिका** – तीनों लोको की नायिका। व्याकरणाचार्यों का मत है कि तारका शब्द नक्षत्रों के लिए एवं तारिका शब्द नायिका के लिए आता है। यही कारण है कि हम फिल्मी अभिनेत्रियों को सिने तारिका कहते हैं। नायिका का अर्थ है जो औरों से सुन्दर है। तारों में चमक या सुन्दरता होती है। नायिका का अर्थ नेतृत्व करने वाली अर्थात् मार्गदर्शन करने वाली भी होता है। तारः, तीव्रता अस्या अस्ति इति तारिका अर्थात् जिसमें तीव्रता हो वह तारिका है। तीव्रता का तात्पर्य शीघ्रता से या तेजी से किसी भी कार्य को करना या बहुत प्रभावशाली तरीके से कोई कार्य करना। शीघ्रता से अपने भक्तों को संसार सागर से पार कराने वाली। ठन् प्रत्यय लगाकर तारिका शब्द बना है। ता+अरि+का से भी तारिका शब्द बन सकता है। तारकासुर का ता ले लिया, अरि का अर्थ है शत्रू। इस प्रकार तारि का अर्थ हुआ तारकासुर के शत्रु अर्थात् कार्तिकेय। बिना अर्थ बदले कन् प्रत्यय लगाने से तारिका बनेगा। तब अर्थ होगा कार्तिकेय स्वरूपा या कार्तिकेय की शक्ति स्वरूपा। कै धातु में ड प्रत्यय लगाने से भी क शब्द बनता है। तब अर्थ होगा कार्तिकेय को उपदेश देने वाली। संसार सागर से या भौतिक नदी/समुद्र से कुशलतापूर्वक पार करवा देने वाली मल्लाह स्वरूपा। अभिनय करने वाली, अवतार लेकर विभिन्न प्रकार की

लीलाऐं उनके अभिनय ही हैं। फिल्म अभिनेत्री को सिने तारिका कहा जाता है। जो सुन्दर भी हैं और लीला भी करती हैं। जो नर्तकी या नायिका के रूप में है। पूरे विश्व में जो कुछ भी क्रिया हो रही है वह देवी के स्पन्दन का विलास ही है जो उनका नृत्य है।

114. **तारकारिमनोहारिवस्त्रभूषानुशासिका** – कार्तिकेय जी के लिए सुन्दर वस्त्र और मनोहर आभूषण की अनुशासिका। अनुशासिका अर्थात यह निर्धारित करने वाली कि यह पहनो यह नहीं, इस तरीके से पहनो, कब क्या पहनना है, आज की भाषा में कहें तो ड्रेसकोड निर्धारित करने वाली। अनुशासिका अर्थात अपने शासन अर्थात अपनी आज्ञा के अनुसार कराने वाली। कार्तिकेय को मनोहर वस्त्र भूषा के द्वारा अलंकृत करने वाली, बताने वाली। माँ पहना भी देती हैं अर्थात अलंकृत करती हैं।

115. **तारकारिविधात्री** – कार्तिकेय की रचना करने वाली अर्थात जन्म देने वालाी।

116. **तारकारिनिषेविता** – तारकासुर के शत्रु कार्तिकेय के द्वारा जिनकी भली भांति सेवा की गई। सेवा अर्थात पूजा, मिले आदेश का तुरन्त पालन करना।

117. **तारकारिवचस्तुष्टा** – कार्तिकेय के वचनों द्वारा सन्तुष्ट रहने वाली या कार्तिकेय के द्वारा की गई स्तुति से सन्तुष्ट रहने वाली।

118. **तारकारिसुशिक्षिता** – कार्तिकेय जी जिसके द्वारा सुशिक्षित हुए हैं अर्थात कार्तिकेय को सुन्दर शिक्षा देने वाली। तारकारिः सुशिक्षिता यया सा इति तारकारिसुशिक्षिता। यदि तारकारिसुक्षिता शब्द है तो अर्थ होगा तारकासुर के शत्रु कार्तिकेय में सुन्दर ढ़ंग से निवास करने वाली अर्थात अच्छी तरह से लीन। क्षित निवासे धातु होती है। क्षी क्षये धातु भी होती है तब अर्थ होगा तारक नामक शत्रु जिसके द्वारा अच्छी प्रकार से क्षीण हो जाता है। देवताओं में परस्पर माता पिता का सम्बन्ध होता है। जैसे वृक्ष से बीज बनता है और बीज से वृक्ष बनता है। कही गणेश जी को शिव का पुत्र बताऐंगे कहीं शिव जी को गणेश का पुत्र बताऐंगे जो वृक्ष बीज की तरह ही है। इस आधार पर इस नाम का अर्थ हुआ जिन्हें कार्तिकेय जी द्वारा अच्छी प्रकार से शिक्षा प्राप्त हुई है।

119. **तारकारिसुसन्तुष्टा** – कार्तिकेय के द्वारा अतिशय सन्तुष्ट (प्रसन्न, तृप्त) होने वाली।

120. **तारकारिविभूषिता** – कार्तिकेय के द्वारा अतिशय सुशोभित होने वाली।

121. **तारकारिकृतोत्संगी** – कार्तिकेय को गोद में लेने वाली। उत्संग का अर्थ है गोद।

122. **तारकारिप्रहर्षदा** – कार्तिकेय के द्वारा आनन्दित होने वाली अर्थात कार्तिकेय जिन्हें प्रसन्नता देते हैं।

123. **तमःसम्पूर्णसर्वाङ्गी** – तम के आधिक्य से लिप्त सभी अंगों वाली। सम्पूर्ण और सर्व का एक ही अर्थ होता है अतः भिन्नता दिखाने के लिए पहले लिखे सम्पूर्ण शब्द का आधिक्य अर्थ लिया गया। अन्धकार के आधिक्य से युक्त अंगों वाली। यहाँ सम्पूर्ण का अर्थ आधिक्य ले लिया। प्रलय काल में सम्पूर्ण शरीर को तमोगुण से युक्त कर देने वाली।

124. **तमोलिप्तकलेवरा** – तमोगुण (हिंसा, क्रोध) से युक्त शरीर वाली। इतनी काली कि कालिख का लेप लग गया है। संस्कृत में काला का अर्थ नीला भी होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ नीले रंग से लिपे शरीर वाली अर्थात नील सरस्वती स्वरूपा। तमोगुण की तरह काले रंग से लिपे हुए शरीर वाली। तमोगुण का रंग काला माना जाता है। अन्धेरा मानो शरीर के अंगों से लिपट गया हो। इतनी काली कि मानो कालिख का लेप लगा हो। प्रलय काल में जिनका सम्पूर्ण शरीर अन्धकार में लिप्त है अर्थात अन्धकार पूर्ण हो जाता है।

125. **तमोव्याप्तस्थलासङ्गा** – अज्ञान से व्याप्त स्थल से दूर रहने वाली। असंग का अर्थ है दूर रहने वाली। प्रलय काल में तमोगुण से व्याप्त स्थल के द्वारा जो सम्पूर्ण रूप से आसक्त हो जाती है अर्थात अभिव्याप्त हो जाती हैं।

126. **तमःपटलसन्निभा** – अन्धकार के समूह की तरह अर्थात अत्यन्त काले वर्ण वाली। सन्निभा का अर्थ है सदृश या की तरह। पटल का अर्थ है समूह। अन्धकार की राशि के समान कृष्ण वर्ण वाली। अन्धकार समूह के समान दृष्टिगोचर होने वाली।

127. **तमोहन्त्री** – अन्धकार या तमोगुण को नष्ट कर देने वाली।

128. **तमःकर्त्री** – प्रलय काल में अन्धकार को उत्पन्न करने वाली।

129. **तमःसञ्चारकारिणी** – अन्धकार को फैलाने वाली अर्थात रात्रिस्वरूपिणी। त्रिगुणात्मक संसार में तम रूप में भी विचरण करने वाली। तमो गुण के द्वारा संचार करने वाली अर्थात प्रलय काल में संहार करने वाली। प्रलय काल में अन्धकार को चारों ओर फैला देने वाली।

130. **तमोगात्री** – प्रलय काल में तमोगुण युक्त शरीर वाली।

131. **तमोदात्री** – मूर्खों या दुष्टों को अज्ञान में डालने वाली। तम का एक अर्थ अज्ञान भी है। यदि दो अवखण्डने धातु से दात्री शब्द बनाये तो अर्थ होगा भक्तों के अन्धकार अर्थात अज्ञान को मिटाने वाली। दुष्टों को अन्धकार या कष्ट देने वाली। भक्तों के अन्धकार अर्थात दुख को मिटाने वाली। दो अवखण्डने से मिटाना अर्थ और दा ददाति से देना अर्थ आता है। प्रलय काल में प्राणि मात्र को अन्धकार को प्रदान करने वाली।

132. **तमःपात्री** – सूर्य की रक्षा करने वाली। तमः का अर्थ है अंधकार। तमः पिबति इति तमःपः, अन्धकार को पीने वाला अर्थात् नष्ट करने वाला अर्थात् सूर्य। त्र धातु का अर्थ है रक्षा करना। पात्र बर्तन को भी कहते है जिसमें कुछ रखा जाता है। जिसमें अन्धकार रखा हुआ है अर्थात् रात्रिस्वरूपा। देवी को रात्रि स्वरूपिणी भी बोलते है। अविद्या को धारण करने वाली। देवी स्वयं कहती है कि मैं विद्या स्वरूपा भी हूँ और अविद्या स्वरूपा भी हूँ। तम भी इसी में रहता है। गुण गुणी में रहता है। तम अर्थात तमोगुण। प्रलयकाल के समय जो तमोगुण की अधिष्ठाता या आश्रय बन जाती है।

133. **तमोऽपहारी** – भक्तों की भक्ति से सन्तुष्ट होने पर तमोगुण/अन्धकार/अज्ञान रूपी अन्धकार को दूर करने वाली अर्थात विनष्ट कर देने वाली।

134. **तमोराशिपूर्णराशि** – अन्धकार की राशि के रूप में पूर्ण रूप से फैली हुई अर्थात सृष्टि के आरम्भ में या सृष्टि के पूर्व अन्धकार की पूर्ण राशि के रूप में थी। अन्धकार अर्थात अज्ञान अर्थात जिनके वास्तविक स्वरूप को कोई नहीं जानता। प्रलय काल में प्रचण्ड अन्धकार की राशि या अन्धकार समूह के रूप में स्थित हो जाने वाली।

135. **तमोराशिविनाशिनी** – अन्धकार की राशि या तमोगुण की अधिकता को नष्ट कर देने वाली। अन्धकार या तमोगुण को नष्ट कर देने वाली। विनाश अर्थात पूर्ण नाश। नश् अदर्शने धातु से नाश का अर्थ अदृश्य करना होता है। वस्तु को उसके कारण में भेजना नाश है। घट तोड़कर उसके कारण मिट्टी में परिवर्तित कर देना नाश है क्योंकि कार्य कारण में मिल गया।

136. **तमोराशिकृतध्वंसी** – तमोराशि के द्वारा अर्थात अन्धकार के समूह के द्वारा सम्पूर्ण संसार को नष्ट कर देने वाली।

137. **तमोराशिभयङ्करी** – अन्धकार के समूह से जो भयंकर रूप धारण कर लेती हैं।

138. **तमोगुणप्रसन्नास्या** – काले और प्रसन्न मुख वाली। यहाँ तमोगुण का अर्थ तमोगुण से उपलक्षित होने वाला रंग अर्थात काला रंग ले लिया गया। तमोगुण के कारण भी जिनका मुख प्रसन्न हो जाता है (अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए)।

139. **तमोगुणसुसिद्धिदा** – जो तमोगुण वाले किन्तु भक्त हैं, उन्हें अच्छी प्रकार से सिद्धि देने वाली। प्रलय काल के समय तमोगुण के द्वारा जो अपने उद्देश्य को सिद्ध कर लेती है/अपने लक्ष्य को सिद्धि देती हैं अर्थात पूर्ण कर लेती हैं। (यदि तमोगुणसुसिद्धा यह नाम होता तब अर्थ होता तमोगुण में परिपक्व अवस्था वाली अर्थात तमोगुण की पूर्णता वाली। एक होता है द्रव्य जो क्रिया रूप है, दूसरा होता सत्व अर्थात सिद्ध रूप। क्रिया की समाप्ति पर सत्व रूप या सिद्धि होती है। चावल पक गये अर्थात चावल सिद्ध हो गये अर्थात सिद्धि का एक अर्थ पकना भी है। नित्य अर्थ में भी सिद्ध का प्रयोग होता है जैसे पृथ्वी सिद्ध है अर्थात नित्य है।) (यदि तमोगुणसुसिद्धिता नाम है तो अर्थ होगा – तमोगुण वाले किन्तु उपासक भक्तों को श्रेष्ठ सिद्धि देने वाली। तन् धातु में ड प्रत्यय लगाने से त शब्द बनता है जिसका अर्थ है विस्तार करने वाला, देने वाला, निर्माण करने वाला। मेघनाद ने देवी की उपासना करके बड़ी–बड़ी सिद्धियाँ प्राप्त की थी। तमोगुणम् अस्य अस्ति इति तमोगुणः (तमोगुण वाला तमोगुण से युक्त)। तात्पर्य हुआ राक्षसों को भी श्रेष्ठ सिद्धि देने वाली यदि वे देवी की उपासना करते हैं। श्रेष्ठ (प्रभावशाली) तामसी सिद्धि के स्वरूप वाली। अन्तिम त अक्षर भाव में है जिसका अर्थ गुण या भाव कर सकते है। मारण, मोहन, उच्चाटन आदि बहुत प्रभावशाली सिद्धियाँ है पर तामसी प्रकृति की है। तामसी प्रकृति के उपासकों में भी श्रेष्ठ सिद्धि के रूप में गई हुयी अर्थात् प्राप्त। सिद्धिम् इता इति सिद्धिता।)

140. **तमोगुणोक्तमार्गस्था** – तमोगुण के अन्तर्गत या तमोगुण के रूप में कहे गये मार्ग में भी स्थित। तमोगुण के अन्तर्गत कहे गये मार्ग अर्थात निद्रा, आलस्य, लापरवाही, जड़ता आदि में स्थित। तात्पर्य होगा कि इन गुणों को राक्षसों या शत्रुओं को देने वाली। इन गुणों को तभी दिया जा सकता है जब देवी का इनसे सम्बन्ध हो। सृष्टि के लिए तमोगुण भी जरूरी है। जड़ता अर्थात तमोगुण। जड़ता तमोगुण है, तमोगुण के कारण ही गुरूत्वाकर्षण शक्ति होती है। यदि गुरूत्वाकर्षण शक्ति न हो तो आप कोई चीज ऊपर फेंके तो वह वापस जमीन में नहीं आएगी। आप ऊपर उछलेंगे तो आप ऊपर चलते जाएंगे। तमोगुण के कारण ही निद्रा आती है, शरीर को आराम मिलता है। तमोगुण के द्वारा कहे गये प्रलयकाल के मार्ग में स्थित रहने वाली।

141. **तमोगुणविराजिता** – तमोगुण से शोभासम्पन्न। कहीं कहीं दोष भी गुण बन जाते हैं। बच्चे को काला टीका शोभा बढ़ा देता है। तमोगुण में भी रहने वाली क्योंकि देवी सर्वव्यापक है। तमोगुण से भी सुशोभित। यद्यपि काली हैं फिर भी सुन्दर हैं। प्रलय काल में तमोगुण के द्वारा सुशोभित रहने वाली।

142. **तमोगुणस्तुतिपरा** – तमोगुण के रूप में भी जिनकी स्तुति की जाती है। स्तुतिपरा अर्थात स्तुति वाली या स्तुति से युक्त। तमोगुण से युक्त अवस्था में भी स्तुति करने पर जुड़ जाने वाली अर्थात पास आ जाने वाली। तमोगुण वालों द्वारा भी स्तुति करने पर उनसे जुड़ जाने वाली अर्थात उनके पास आने वाली। तमोगुणः अस्य अस्ति इति तमोगुणः (तमोगुण वाला अर्थात तमोगुण से युक्त)। अतः तमोगुणः का अर्थ तमोगुण वाला भी होता है। तमोगुण तो अर्थ है ही, तमोगुण वाला भी अर्थ है। प्रलय काल में तमोगुण के द्वारा स्तुति में संलग्न।

143. **तमोगुणविवर्धिनी** – दुष्टों में तमोगुण की वृद्धि करने वाली। इसके कारण दुष्ट आपस में लड़ झगड़कर मर मिटते हैं। प्रलय काल में तमोगुण को बढ़ाने वाली।

144. **तमोगुणाश्रितपरा** – तमोगुण का आधिक्य जिनके आश्रित है अर्थात जिनमें है, ऐसे दुष्टों और दैत्यों में भी रहने वाली (क्योंकि देवी सर्वव्यापक हैं, ऊर्जा या शक्ति के रूप में सभी जगह मौजूद हैं। थोड़ा तमोगुण तो सभी में होता है। तमोगुण पर निरन्तर आश्रित या अधिक आश्रित। परा का अर्थ है तल्लीन, तत्पर या युक्त। यहाँ परा का अर्थ निरन्तर या अधिक लिया गया। प्रलय काल में एक मात्र तमोगुण के आश्रित रहने वाली।

145. **तमोगुणविनाशिनी** – तमोगुण का विशेष रूप से अदर्शन करने वाली। विशेष रूप से अर्थात अत्यन्त या पूर्ण रूप से। इतनी दूर चला जाए कि हमें दिखाई न दे और हम पर प्रभाव न डाल सके। नश अदर्शने धातु

होती है अर्थात नाश का अर्थ है अदर्शन होना। जिस कारण से आया है उस कारण में वापस भेज देना नाश करना है। सात्विक रूप में आने पर तमोगुण का विनाश कर देने वाली।

146. **तमोगुणक्षयकरी** – तमोगुण का क्षय कर देने वाली। क्षय का अर्थ नष्ट करना है या धीरे धीरे कम करना है। तमोगुण को धीरे धीरे कम करने वाली। तमोगुण को नष्ट करने वाली।

147. **तमोगुणकलेवरा** – प्रलय काल में तमोगुण के शरीर को धारण कर लेने वाली।

148. **तमोगुणध्वंसन्तुष्टा** – तमोगुण के नष्ट कर देने पर सन्तुष्ट हो जाने वाली। जब देवी तमोगुण को नष्ट कर देती है या लोग तमोगुण से दूर होते हैं तो देवी प्रसन्न होती हैं।

149. **तमःपारेप्रतिष्ठिता** – तमोगुण या अन्धकार के आगे प्रकाश में स्थित रहने वाली।

150. **तमोभवभवप्रीता** – तमोगुण से उत्पन्न संसार से प्रेम करने वाली। पहले भव का अर्थ है उत्पन्न और दूसरे भव का अर्थ है संसार। पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु इन पाँच तत्वों से यह संसार बना है। ये पाँचों तत्व जड़ होने के कारण तमोगुणी हैं। जल से उत्पन्न पृथ्वी या जलमूर्ति शिव, ऐसी पृथ्वी पर उत्पन्न संसार, उस संसार में रहने वाले उपासको पर प्रसन्न रहने वाली। जल से उत्पन्न पृथ्वी, पृथ्वी पर उत्पन्न जो संसार, संसार में रहने वाले उपासकों के प्रति प्रसन्न रहने वाली। तमः का अर्थ जल भी होता है। शब्दकल्पद्रुम में तमसा शब्द आया है जो एक नदी का नाम है, इस शब्द की व्युत्पत्ति के समय तम का अर्थ जल लिया गया है। तमोगुण से होने वाला जो संसार है उसके कारण संसार को प्रिय लगने वाली।

151. **तमोभवभवप्रिया** – तमोगुण से उत्पन्न संसार या शिव की प्रिया अर्थात संसार जिन्हें पसन्द करता है। पहले भव का अर्थ उत्पन्न और दूसरे भव का अर्थ है संसार या शिव। ऐसे संसार पर प्रसन्न रहने वाली। तमोगुण के उत्पन्न होने से सृष्टि के विनाश के समय शिव को प्रिय लगने वाली। भव का अर्थ है शिव, संसार।

152. **तमोभवभवश्रद्धा** – तमोगुण से उत्पन्न संसार के लिए श्रद्धास्वरूपा। तम अर्थात जल से उत्पन्न पृथ्वी में जो भव (अर्थात संसार है या शिव) है, उस शिव अर्थात अच्छाई से श्रद्धा रखने वाली।

153. **तमोभवभवाश्रया** – तमोगुण से उत्पन्न संसार की आश्रय स्वरूपा।

154. **तमोभवभवप्राणा** – तमोगुण से उत्पन्न संसार की प्राण स्वरूपा। प्राण अर्थात अतिशय प्रिय या जिसके बिना अस्तित्व सम्भव न हो।

155. **तमोभवभवार्चिता** – तमोगुण से उत्पन्न इस संसार के द्वारा या शिव द्वारा पूजित।

156. **तमोभवभवप्रत्यालीढकुम्भस्थलस्थिता** – तमोगुण से उत्पन्न संसार को चाटने वाले कुम्भ स्थल में रहने वाली। हाथी में कुम्भ स्थल सिर होता है। कु अर्थात पृथ्वी और भ अर्थात प्रकाश या शोभा। शरीर पृथ्वी तत्व से बना होता है अतः कु से शरीर का अंग ले सकते हैं। इस प्रकार कुम्भ का अर्थ शोभा सम्पन्न अंग हुआ। रात्रि के द्वारा होने वाले संसार (अँधेरा) को चाट लेने वाले सूर्य के कुम्भ स्थल में स्थित। लिह् धातु से लीढ बनता है जिसका अर्थ होगा जिसे चाट लिया गया है या समाप्त कर दिया गया है। शोभा या शक्ति के रूप में स्थित होती होंगी। तमोगुण से उत्पन्न होने वाले शंकर की प्रत्यालीढक्रीड़ा, उस क्रीड़ा में पयोधरों (स्तनों) के मध्य सुशोभित होने वाली। प्रत्यालीढ का अर्थ है वह मुद्रा जिसमें बाँया पैर आगे रहता है। अग्नि से उत्पन्न जल, जल से उत्पन्न पृथ्वी, वह पृथ्वी है प्रत्यालीढ़मुद्रा, वह मुद्रा है कुम्भ स्थल जिसका, उसमें स्थित।

157. **तपस्विबृन्दसन्तुष्टा** – तपस्वियों के समूह द्वारा सन्तुष्ट (प्रसन्न) रहने वाली।

158. **तपस्विबृन्दपुष्टिदा** – तपस्वियों के समूह को पुष्टि (पूर्णता, मजबूती) प्रदान करने वाली।

159. **तपस्विबृन्दसंस्तुत्या** – तपस्वियों के समूह के द्वारा सम्यक् रूप से स्तुति के योग्य या स्तुति की जाने वाली।

160. **तपस्विबृन्दवन्दिता** – तपस्वियों के समूह के द्वारा वन्दना की जाने वाली। उपासना के आरम्भ में सिर झुकाकर प्रणाम एवं देवताओं के गुणों का जो बखान किया जाता है वह वन्दना कहलाती है।

161. **तपस्विबृन्दसम्पन्ना** – तपस्वियों के समूह से सम्पन्न अर्थात युक्त अर्थात घिरी हुई। तपस्या समूह रूपी सम्पत्ति वाली। तपस्वियों के समूह के द्वारा सम्पन्न या सुशोभित होने वाली।

162. **तपस्विबृन्दहर्षदा** – तपस्वियों के समूह को प्रसन्नता देने वाली। अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति होने पर मिलने वाली खुशी हर्ष है।

163. **तपस्विबृन्दसम्पूज्या** – तपस्वियों के समूह के द्वारा विधिवत् या सम्यक् रूप से पूजा करने योग्य।

164. **तपस्विबृन्दभूषिता** – तपस्वियों के समूह से सुशोभित। तपस्वियों के समूह से विभूषित।

165. **तपस्विचित्ततल्पास्था** – तपस्वियों के चित्तरूपी बिस्तर पर स्थित रहने वाली।

166. **तपस्विचित्तमध्यगा** – तपस्वियों के चित्तों के मध्य में जाने वाली अर्थात वहाँ विराजमान।

167. **तपस्विचित्तचित्तार्हा** – तपस्वियों के चित्त अर्थात एकाग्रचित्त में एकत्रित होने लायक अर्थात विराजमान होने लायक। दूसरे चित्त का अर्थ चि चिनोति धातु से एकत्रित लिया गया। अर्ह का अर्थ है योग्य। तपस्वियों के चित्त की तरह अर्थात शुद्ध चित्त में विराजमान होने लायक। तपस्वियों के चित्तों, ऐसी उन चित्तों में रहने की योग्यता रखने वाली। दो बार चित्त का प्रयोग होने से अतिशय अर्थ भी हो सकता है अर्थात तपस्वियों के चित्त में अतिशय रूप से रहने की योग्यता वाली।

168. **तपस्विचित्तहारिणी** – तपस्वियों के चित्तों को हर लेने वाली।

169. **तपस्विकल्पवल्लभा** – तपस्वियों के लिए कल्पवृक्ष के समान अतिशय प्रिय। कल्पवृक्ष सभी को प्रिय होता है क्योंकि इससे जो इच्छा करो, पूरी हो जाती हैं। तपस्वियों के लिए कल्पों तक अतिशय प्रिय अर्थात अच्छी लगने वाली।

170. **तपस्विकल्पपादपी** – तपस्वियों के लिए जो कल्पवृक्ष के समान है।

171. **तपस्विकामधेनु** – तपस्वियों के लिए जो कामधेनु के समान है अर्थात सभी इच्छित पदार्थ देने वाली।

172. **तपस्विकामपूर्तिदा** – तपस्वियों की कामनाओं की पूर्ति करने वाली।

173. **तपस्वित्राणनिरता** – तपस्वियों की रक्षा करने में संलग्न रहने वाली।

174. **तपस्विगृहसंस्थिता** – तपस्वियों के घरों में भली भांति रहने वाली, निवास करने वाली।

175. **तपस्विगृहराजश्री** – तपस्वियों के घरों की राजलक्ष्मीस्वरूपा।

176. **तपस्विराज्यदायिका** – तपस्वियों को राज्य प्रदान करने वाली। मोक्ष राज्य, आनन्द राज्य आदि देने वाली।

177. **तपस्विमानसाराध्या** – तपस्वियों के मन, हृदय के द्वारा आराधना करने योग्य। वामन आप्टे के संस्कृत हिन्दी शब्दकोष में मानसम् का अर्थ मन, हृदय दिया गया है।

178. **तपस्विमानदायिका** – तपस्वी भक्तों को मान या सम्मान प्रदान करने वाली।

179. **तपस्वितापसंहत्री** – तपस्वी भक्तों के त्रिविध तापों अर्थात आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक तापों (दुखों या कष्टों) को नष्ट कर देने वाली।

180. **तपस्वितापशान्तिकृत्** – तपस्वी भक्तों के त्रिविध तापों को शान्त कर देने वाली।

181. **तपस्विसिद्धिविद्या** – तपस्वियों के लिए सफलता रूपी विद्या स्वरूपा। अपने प्रयोजन में सफलता सिद्धि है। तपस्वी इनके मन्त्रों का किसी प्रयोजन से प्रयोग करता है तो उसमें सिद्धि अर्थात सफलता मिलती है। विद्या अर्थात स्त्रीदेवता का मन्त्र। तपस्वियों के लिए सिद्धि प्रदान करने वाली विद्या की तरह।

182. **तपस्विमन्त्रसिद्धिकृत्** – तपस्वियों के मन्त्रों को सिद्ध कर देने वाली।

183. **तपस्विमन्त्रतन्त्रेशी** – तपस्वियों के मन्त्र और तन्त्रों की ईश्वरी। तात्पर्य है कि मन्त्र और तन्त्र देवी के अधीन हैं अर्थात तपस्वियों के लिए मन्त्र और तन्त्र रूपी साधन देवी ही जुटाती हैं, पहुँचाती हैं। ईश का अर्थ फलदाता के अर्थ में भी कर सकते हैं। अर्थ होगा तपस्वियों द्वारा जो बीजमन्त्र आदि मन्त्र या तन्त्र किये जाते हैं उनमें सफलता देने वाली।

184. **तपस्विमन्त्ररूपिणी** – तपस्वियों द्वारा जपे जाने वाले मन्त्र के रूप वाली। तपस्वियों के लिए मन्त्रस्वरूप को धारण करने वाली। ऐसी तपस्विनी जो मन्त्रस्वरूपा भी है।

185. **तपस्विमन्त्रनिपुणा** – तपस्वियों के द्वारा जो मन्त्र जपे जाते हैं उन मन्त्रों में निपुण अर्थात उन्हें भली भांति जानने वाली या उन मन्त्रों की सिद्धि को रखने वाली। तपस्वियों को मन्त्र देने में दक्ष या तपस्वियों के मन्त्र सिद्ध करने में चतुर। ऐसी तपस्विनी जो मन्त्र में निपुण है।

186. **तपस्विकर्मकारिणी** – तपस्वियों के कार्यों को सम्पन्न करा देने वाली।

187. **तपस्विकर्मसम्भूता** – तपस्वियों के सत्कर्मों द्वारा प्रकट होने वाली।

188. **तपस्विकर्मसाक्षिणी** – तपस्वियों की तपस्या आदि कर्मों की साक्षी।

189. **तपस्सेव्या** – तपस्वियों के द्वारा सेवनीय अर्थात भजनीय। तपस्या के द्वारा सेवनीय।

190. **तपोभव्या** – तपस्या के द्वारा और अधिक सुन्दर लगने वाली। भव्यता वह सुन्दरता है जो देखने वाले के चित्त को प्रभावित करती है और उसके अन्दर आदर की भावना भी जाग्रत होती है। तपस्या के द्वारा भव्य आकृति को धारण करने वाली।

191. **तपोभाव्या** – तपस्या के द्वारा प्राप्त किये जाने योग्य। तपस्या के द्वारा भावनीय अर्थात चिन्तनीय या ध्यान गम्या या ध्यान में आ जाने वाली।

192. **तपस्विनी** – तपस्या में निरत अर्थात लगी हुई।

193. **तपोवश्या** – तपस्या के द्वारा वश में हो जाने वाली।

194. **तपोगम्या** – तपस्या के द्वारा प्राप्त हो जाने वाली/ समझी जाने वाली/ जानी जाने वाली।

195. **तपोगेहनिवासिनी** – तपस्यारूपी भवन में निवास करने वाली।

196. **तपोधन्या** – तप है धन जिनका। तप से धन्य (कृतकृत्य) मानने वाली। तप को धन के रूप में मानने वाली। तप अर्थात् किसी चीज को पाने के लिए अत्यन्त कष्ट सहना। योग के यम, नियम आदि एक प्रकार के तप ही है। तपोधन अर्थात् तपस्यों के लिए अनुकूल अर्थात् हितकारी। तत्र साधु सूत्र से तपोधन में यत् प्रत्यय लगाने से तपोधन्य शब्द बनेगा। साधु का अर्थ है अनुकूल या हितकारी। तपोधन का अर्थ है तपस्वी। तपस्या से धन्य है जो अर्थात धनवाली बन जाती है अर्थात तपस्या रूपी धन वाली। तपस्या से धन्य हो जाने वाली।

197. **तपोमान्या** – तपस्या के द्वारा सम्माननीया।

198. **तपः कन्या** – तप की दीप्ति से युक्त। तपस्या के द्वारा दीप्तिमती। कनि दीप्तौ धातु होती है। तपस्या के द्वारा जिनकी उत्पत्ति हुई है अर्थात जिन्हें प्रकट किया जा सकता है।

199. **तपोवृता** – तप से होने वाली अर्थात् दिखने वाली या प्रकट होने वाली। वृत अर्थात् जिसका अस्तित्व है जो विद्यमान है। इतिवृत शब्द का अर्थ सम्पूर्ण भी होता है। वृ वृणोति धातु भी होती है जिसका अर्थ है चुनना। तपस्वियों के द्वारा चुनी हुई अर्थात् तपस्वियों ने जिन्हें अपनी आराधना या साधना का विषय बनाया। वृत का अर्थ घेरा भी होता है। तपस्वियों द्वारा घिरी हुई अर्थात् बहुत से तपस्वी जिनकी आराधना में लगे रहते हैं। तप से घिरी हुई। इनके चारों ओर तप ही तप है। तप का वरण किया है जिसने अर्थात तप में लगी हुयी अर्थात तप के आचरण वाली।

200. **तपः** – अग्नि स्वरूपा। तप नामक कल्प स्वरूपा। तपोलोक स्वरूपा। शरीर को कष्ट देने वाले व्रत और नियम स्वरूपा जो चित्त को शुद्ध करने के लिए तथा विषयों से निवृत्त करने के लिए किया जाता है। तप क्रिया स्वरूपा। तप में होने वाले आचार स्वरूपा। तपस्यास्वरूपिणी शक्ति या देवी। तपस्वरूपा। अपने शरीर को तपाना या कष्ट में डालना तप है। तपस्या एक प्रकार की क्रिया या कर्म है। देवी स्वयं में क्रिया रूपा है। एक नियम है कि शब्द के आगे ''में विराजमान'' या ''का कारण'' लगाने से भी शब्द के अन्य अर्थ आ जाते है। तपरूपी क्रिया में विराजमान। तप रूपी क्रिया का कारण अर्थात् तपस्या कराने वाली शक्ति भी यह देवी ही हैं। लक्षणा से तपस्या के द्वारा सिद्ध (प्राप्त) होने वाली, यह अर्थ भी कर सकते हैं।

201. **तथ्या** – सत्य स्वरूपा। यथार्थ स्वरूपा। रहस्य स्वरूपा

202. **तपोगोप्या** – तप से रक्षणीय या तप के द्वारा रक्षणीय। जब तक साधना जारी रहेगी दैवी कृपा होती रहेगी, साधना छोड़ दी तो कुछ समय बाद बन्द हो जाएगी। तपस्या के द्वारा गोपनीयस्वरूप को धारण करने वाली।

203. **तपोजप्या** – तपस्या के द्वारा या तपस्या में जप करने योग्य।

204. **तपोऽनृता** – तपस्या के द्वारा झूठ का अर्थात झूठ के प्रभाव को नाष करने वाली। तपस्या की शक्ति झूठ के पाप को नष्ट कर देती है और शक्ति का अर्थ हे देवी। तप + अनृत (झूठ) + आ (नाश करना)। अनृत का अर्थ विपरीत या अन्यथा भी होता है। तपस्या के विपरीत अर्थात विलास स्वरूपा। तपस्या के द्वारा असत्य संसार को मिटा देने वाली अर्थात संसार की प्रतीति नष्ट कर देने वाली। तपोनृत + आ, आ का अर्थ है नाश करना। तपस्वियों में तप के रूप में और दुष्टों में झूठ के रूप में विद्यमान। तपस्या के द्वारा असत्य को जीत लेने वाली। तपस्या में निरन्तर रहती हैं अर्थात निरन्तर तप करती रहती हैं। तप के रूप में स्थिर है। नृत अर्थात नर्तन अर्थात चंचलता। अनृत अर्थात चंचलता रहित अर्थात स्थिर।

205. **तपः साध्या** – तपस्या से साधनीय अर्थात सिद्ध करने योग्य या प्राप्त करने योग्य।

206. **तपोराध्या** – तपस्या के द्वारा आराधनीया। तात्पर्य हुआ देवी प्रसन्नता हेतु तपस्या माँगती हैं अर्थात देवी की प्रसन्नता के लिए तपस्या करनी पड़ेगी। तपस्या के दौरान आराधनीया।

207. **तपोवन्द्या** – तपस्या के द्वारा वन्दना की जाने योग्य अर्थात् जिनकी वन्दना की जाती है या स्तुति की जाती है। तपस्या अर्थात् स्वयं को तपाना या कष्ट में डालना। योग के यम नियम एक प्रकार की तपस्या ही है। तपस्या करना मानो इन्हीं की वन्दना है क्योंकि तप करने से जो कुछ भी अन्तिम रूप से मिलता है वे देवी ही है। तात्पर्य तो उनके ब्रह्म स्वरूप होने से ही है। तपस्या के दौरान इनके मन्त्र जपे जाते है अर्थात् इन मन्त्रों से वन्दनीया। तपस्या के द्वारा वन्दनीय। तपस्या के दौरान वन्दनीया।

208. **तपोमयी** – तपस्या के स्वरूप वाली। तपस्या के गुण या शक्ति से युक्त। मयट् प्रत्यय स्वरूप एवं युक्त दोनों अर्थ देता है। तपस्या के सारे पक्षों से युक्त या सभी प्रकार की तपस्याओं की क्षमता से युक्त। तपोमाम् अयते इति तपोमयी। तपस्या रूपी लक्ष्मी की ओर जाने वाली। मा का अर्थ है लक्ष्मी अर्थात् धन सम्पत्ति। तपस्या भी एक प्रकार की धन सम्पदा है। तप के लिए किये जाने वाले आचार वाली अर्थात आचार से युक्त। तपः का अर्थ है आचार स्वरूपा और तपोमयी का अर्थ है आचार वाली या आचार से युक्त। तपस्यामयी अर्थात तपस्या स्वरूपा या तपस्या से युक्त।

209. **तपः सान्निध्यकारिणी** – तपस्या से समीपता करने वाली अर्थात तपस्वी के समीप आ जाने वाली। तपस्या की समीपता को ला देने वाली।

210. **तपोध्येया** – तपस्या में ध्यान करने योग्य। तपस्या के द्वारा ध्यान करने योग्य।

211. **तपोगेया** – जिनका तप भी गेय है अर्थात प्रशंसनीय है अर्थात उसका बखान किया जाता है। जिनका गायन भी तप है। तप के रूप में गेय है। तपस्या को प्राप्त हैं जो उनके द्वारा प्राप्त होने योग्य। तपोग+ईया, तपोग का अर्थ है तपस्या को प्राप्त अर्थात तपस्वी, ईया का अर्थ है प्राप्त होने योग्य। तपस्या में या तपस्या के द्वारा कीर्तन करने योग्य।

212. **तपस्तप्ता** – तप से तपी हुई अर्थात जो स्वयं भी तप करती हैं। पार्वती जी ने शिव जी को पाने के लिए तपस्या की थी। तपस्या के द्वारा जो तप्त की गईं अर्थात सिद्ध की गईं।

213. **तपोबला** – तपस्या रूपी बल वाली अर्थात तपस्या ही है बल जिनका। तपस्या के द्वारा शक्ति अर्जित करने वाली।

214. **तपोलेया** – तपस्या के द्वारा आश्लिष्ट (चिपकने वाली) होने वाली अर्थात जुड़ जाने वाली अर्थात तपस्या करने वाले से जुड़ जाने वाली। लीङ् श्लेषणे धातु होती है। तपस्या में लीन या तत्पर। लीङ् श्लेषणे धातु होती है जिसका अर्थ है चिपकना या तल्लीन होना। तपस्या के द्वारा प्राप्त करने योग्य।

215. **तपोदेया** – तपस्वियों को देने योग्य अर्थात मन्त्र स्वरूपा। तपो का अर्थ तपस्या होता है पर मध्यमपदलोपी समास के अनुसार तपस्या युक्त अर्थात तपस्वी अर्थ कर सकते हैं। तपस्वियों को क्या दिया जाएगा, मन्त्र या साधना। देवी मन्त्रस्वरूपा हैं। तपोदा+ईया से भी अर्थ निकल सकता है। दैप् शोधने धातु से तपोदा का अर्थ हुआ तपस्या से जिन्होने अपने को शुद्ध कर लिया है अर्थात अपना अन्तःकरण शुद्ध कर लिया है। ईया का अर्थ है प्राप्त होने योग्य। तपस्या के द्वारा शुद्ध हुए उपासकों के द्वारा प्राप्त होने योग्य, यह इस नाम का अर्थ होगा। तपस्या के द्वारा भक्तों को सभी पदार्थों को देने योग्य। जिनकी तपस्या भी देने योग्य है अर्थात देवी अपनी तपस्या के प्रभाव को अपने भक्तों को दे देती हैं एवं पूर्ण होने के कारण देने के बाद भी उनमें कोई कमी नहीं आती। दाप् शोधने धातु से देय बनाने पर अर्थ होगा शुद्धि योग्य। जिनकी तपस्या शुद्धि योग्य है अर्थात जिनके लिए तपस्या करने पर उपासकों को शुद्धि प्राप्त होती है।

216. **तपस्तत्वफलप्रदा** – तपस्या के द्वारा तत्वज्ञान (आत्मज्ञान या परमात्मज्ञान) के फल को देने वाली।

217. **तपोविघ्नवरघ्नी** – तपस्या के द्वारा बड़े बड़े विघ्नों को नष्ट कर देने वाली। स्वयं विघ्नों को नाश करती हैं या भक्तों की तपस्या के द्वारा विघ्नों का नाश करवाती हैं। वर अर्थात श्रेष्ठ अर्थात बड़ा।

218. **तपोविघ्नविनाशिनी** – तपस्या में आने वाले विघ्नों को पूर्ण रूप से ओझल कर देने वाली अर्थात गायब कर देने वाली। विघ्न जहाँ से आये हैं वहाँ वापस भेज देने वाली। नश् अदर्शने धातु होती है। तपस्या में होने वाले विघ्नों को नष्ट कर देने वाली।

219. **तपोविघ्नचयध्वंसी** – तपस्या में आने वाले विघ्नसमूहों को वहीं पर नष्ट कर देने वाली। तपस्या में या तपस्या के द्वारा भक्तों को अनुभव होने वाले विघ्न समूहों को नष्ट कर देने वाली।

220. **तपोविघ्नभयङ्करी** – तपस्या में आने वाले विघ्नों के लिए भय देने वाली अर्थात उन्हें भगा देने वाली। तपस्या में या तपस्या के दौरान विघ्न उत्पन्न करने वाली आसुरी शक्तियों के लिए भयंकर रूप धारण कर लेने वाली।

221. **तपोभूमिवरप्राणा** – तपोभूमि में श्रेष्ठ प्राण शक्ति को धारण करने वाली।

222. **तपोभूमिपतिस्तुता** – तपोवन में रहने वाले राजा जनों या जमीदार/किसानों द्वारा स्तुति की गयी। तपस्या के दौरान राजाओं के द्वारा स्तुति की जाने वाली। तपोभूमि का स्वामी राजा या तपस्वी होगा।

223. **तपोभूमिपतिध्येया** – तपस्या के दौरान राजाओं के द्वारा ध्यान करने योग्य।

224. **तपोभूमिपतीष्टदा** – तपस्या के द्वारा राजाओं को अभीष्ट फल देने वाली। तपस्या के दौरान राजाओं को अभीष्ट फल देने वाली।

225. **तपोवनकुरङ्गस्था** – तपोवन में विचरण करने वाले मृग पर विराजमान रहने वाली। कुरंग का अर्थ यदि श्रेष्ठ पशु माने तो अर्थ होगा सिंह पर विराजमान रहने वाली।

226. **तपोवनविनाशिनी** – तपोवन में होने वाली बाधाओं को नष्ट करने वाली। विनाश का अर्थ विगतम् नाशम् से ''नाश नहीं'' अर्थ भी कर सकते है अर्थात जो तपोवन का नाश नहीं करती अर्थात रक्षा करती है। तपोवन में होने वाले पापों/झाड़ झंकाड़ों/दुर्गमता को नष्ट कर देने वाली।

227. **तपोवनगतिप्रीता** – तपोवन में आने वाले या होने वाले आचरण से प्रसन्न होने वाली। गति अर्थात गमन अर्थात आचरण। तपोवन में तपस्वियों द्वारा किये जाने वाले आचरण या क्रियाकलाप से प्रसन्न होने वाली। तपस्या के लिए तपोवन में विचरण करने वाले या गति करने वाले या जाने वाले तपस्वियों को अतिशय प्रिय लगने वाली।

228. **तपोवनविहारिणी** – तपोवन में विचरण करने वाली।

229. **तपोवनफलासक्ता** – तपोवन में होने वाले फलों पर चाह रखने वाली, अनुरक्त, खूब पसन्द करने वाली अर्थात वहाँ के फलों का सेवन करती हैं। तपोवन में तपस्या के दौरान प्राप्त होने वाले फलों में आसक्त रहने वाली।

230. **तपोवनफलप्रदा** – तपोवन में रहने वाले मुनियों को तपस्या करने पर फल देने वाली अर्थात परम ज्ञान या सिद्धि देने वाली। तपोवन में तपस्या आदि के द्वारा होने वाले फलों को प्रदान करने वाली।

231. **तपोवनसुसाध्या** – तपस्वियों द्वारा पूर्ण रूप से अनुकूल करने योग्य या प्राप्त करने योग्य। तपोवन में कठिन तपस्या के दौरान अच्छी तरह से साधनीय अर्थात प्राप्त करने योग्य या उनके द्वारा सिद्धि प्राप्त करने योग्य।

232. **तपोवनसुसिद्धिदा** – तपोवन में तपस्या करने पर अच्छी प्रकार सिद्धि देने वाली।

233. **तपोवनसुसेव्या** – तपोवन में विधिवत सेवा करने योग्य अर्थात आराधना करने योग्य। भज् सेवायाम् धातु से सेवा का अर्थ भजन, पूजन होता है।

234. **तपोवननिवासिनी** – तपोवन में निवास करने वाली।

235. **तपोधनसुसंसेव्या** – तपस्वियों द्वारा अच्छी प्रकार से सेवा की जाने योग्य। तपस्या है धन जिनका ऐसे तपस्वियों के द्वारा अच्छी तरह सेवनीय।

236. **तपोधनसुसाधिता** – तपस्वियों के द्वारा अच्छी तरह सिद्ध (प्राप्त) की जाने वाली। तपस्या है धन जिनका अर्थात तपस्वी। तपस्वियों द्वारा जिनकी सुन्दर ढंग से आराधना की गई अर्थात जिनको अनुकूल बनाया गया है।

237. **तपोधनसुसंलीना** – तपस्वी लोग जिनमें अच्छी तरह लीन होते हैं या ध्यानमग्न हो जाते हैं। तपस्वियों से अच्छी प्रकार से जुड़ी हुई। लीङ् श्लेषणे धातु होती है। तात्पर्य हुआ उन्हें कभी नहीं छोड़ती। तपस्वियों में उनके तपस्या रूपी गुण या अन्य गुणों के रूप में अच्छी प्रकार से विराजमान।

238. **तपोधनमनोमयी** – तपस्वियों के मन से जुड़ी हुई अर्थात् तपस्वियों के मन से अपने आपको जोड़ लेती है। तपस्वियों के मन स्वरूपा। तपस्वियों के मनों में विचरण करने वाली अर्थात् रहने वाली। अय् गतौ धातु होती है। तपस्वियों के मनस्वरूपिणी। तपस्वियों के मन को अच्छी लगने वाली।

239. **तपोधननमस्कारा** – तपस्वियों के द्वारा जिनको सदैव प्रणाम किया जाता है।

240. **तपोधनविमुक्तिदा** – तपस्वियों को विशेष रूप से मोक्ष प्रदान करने वाली।

241. **तपोधनधनासाध्या** – तपस्वियों द्वारा पूर्ण रूप से साधनीय, आराधना के योग्य। साधनीय का अर्थ है प्राप्त करने योग्य, जानने योग्य, वशीकरण योग्य, प्रयोग करने योग्य अर्थात उनके मन्त्रों का किसी भी कार्य के लिए प्रयोग किया जा सकता है। यहां आसाध्या होगा अर्थात पूर्ण रूप से साधना या आराधना करने योग्य। तपस्वियों के द्वारा उनके धन अर्थात तपस्या रूपी धन के द्वारा सिद्ध (प्राप्त) होने वाली।

242. **तपोधनधनात्मिका** – तपस्वियों की धनस्वरूपिणी। आत्मिका का अर्थ है स्वरूपिणी। तपस्वियों के पास तप के अलावा कोई दूसरा धन नहीं होता इसलिये उन्हें तपोधन कहते हैं। तपस्वियों का जो तपस्या का धन है, उससे युक्त होने वाली।

243. **तपोधनधनाराध्या** – तपस्वियों के तपस्यारूपी धन के द्वारा आराधनीय।

244. **तपोधनफलप्रदा** – तपस्वियों को फल प्रदान करने वाली। तपस्वियों को उनकी तपस्या का फल देने वाली।

245. **तपोधनधनाढ्या** – तपस्वियों के तपस्या रूपी धन से आढ्य या सम्पन्न।

246. **तपोधनधनेश्वरी** – तपस्वी लोगों के धन की ईश्वरी अर्थात उसकी रक्षा करने वाली। तपस्या ही तपस्वियों का धन होता है। रक्षा करती है अर्थात बनाये रखती है अर्थात प्रेरणा आदि देकर उन्हें तपस्या में लगाये रखती है। व्यर्थ में शाप आदि देकर तपस्या नष्ट नहीं होने देती। ईश्वरी का अर्थ उत्पन्न करना, बनाये रखना (पालन करना) और संहार करना होता है। तपस्वियों की तपस्या रूपी धन की ईश्वरी।

247. **तपोधनधनप्रीता** – तपस्वियों के धन अर्थात तपस्वियों के तपस्या रूपी धन से प्रसन्न रहने वाली। तपस्या ही तपस्वियों का धन है। तपस्वियों की तपस्या रूपी धन से प्रसन्न रहने वाली।

248. **तपोधनधनालया** – तपस्वियों के तपस्या रूपी धन में निवास करने वाली।

249. **तपोधनजनाकीर्णा** – तपस्वी लोगों से घिरी हुई। तपस्वी लोग स्तुति के लिये इन्हें घेरे रहतें हैं। तपस्या है धन जिनका ऐसे तपस्वी लोगों से घिरी रहने वाली।

250. **तपोधनजनाश्रया** – तपस्वी लोगों का आश्रय अर्थात शरण स्थान या सहारा पाने का स्थान। तपस्वी जन है आश्रय जिनके अर्थात तपस्वियों में रहने वाली अर्थात तपस्वियों में शक्ति, श्रद्धा, भक्ति भाव के रूप में रहने वाली।

251. **तपोधनजनाराध्या** – तपस्वी लोगों के द्वारा आराधना के योग्य।

252. **तपोधनजनप्रसू** – तपस्वी जनों की माता अर्थात उन्हें उत्पन्न करने वाली।

253. **तपोधनजनप्राणा** – तपस्वी जनों की प्राण स्वरूपा (अत्यन्त प्रिय)।

254. **तपोधनजनेष्टदा** – तपस्वी लोगों को अभीष्ट पदार्थों को देने वाली।

255. **तपोधनजनासाध्या** – तपस्वी लोगों के द्वारा सम्यक् रूप से साधनीय। यहाँ आसाध्या शब्द है जिसका अर्थ है समन्तात् साध्या अर्थात चारों ओर से या सम्यक् रूप से साधनीय। तपोधन + जन + आ + साध्या। यहाँ असाध्या शब्द नहीं है। साधनीय का अर्थ है प्राप्त करने योग्य, वशीकृत करने योग्य जिससे उनके मन्त्रों का प्रयोग किसी भी कार्य के लिये किया जा सके। कभी कभी आ का कोई भी अर्थ नहीं करते हैं अतः इस नाम का तात्पर्य होगा तपस्वी लोगों द्वारा प्राप्त करने योग्य।

256. **तपोधनजनेश्वरी** – तपस्या है धन जिनका ऐसे तपस्वी लोगों की ईश्वरी। ईश्वरी अर्थात उनका पालन पोषण करने वाली।

257. **तरुणासृक्प्रपन्नार्त्ता** – ताजा रक्त, उसको खूब पीने के लिए आतुर स्वरूपा अर्थात छिन्नमस्तास्वरूपा। असृक् का अर्थ है रक्त या खून। शरण में आये हुए दीनदुखियों के लिए ताजे या नये रक्त की तरह अर्थात उन्हें जीवन प्रदान करने वाली। बहुत चमकने वाला रक्त देकर दुष्टों को दुखी करने वाली।

258. **तरुणासृक्प्रतर्पिता** – ताजे रक्त का पान करने से अच्छी प्रकार से सन्तुष्ट (प्रसन्न), तृप्त होने वाली छिन्नमस्ता से अभेद है।

259. **तरुणासृक्समुद्रस्था** – ताजा रक्त, वही है एक समुद्र, उसमें स्थित। ताजा रक्त रूपी समुद्र में स्थित। ताजे रक्त के समुद्र में स्थित अर्थात रुधिर या रुधिर का तत्व स्वरूपा।

260. **तरुणासृक्प्रहर्षदा** – ताजे रक्त को विकसित करने वाली अर्थात रक्त को बढ़ाने वाली अर्थात रक्त की कमी नहीं होने देतीं। हर्ष अर्थात विकसित होना।

261. **तरुणासृक्सुसन्तुष्टा** – ताजा रक्त (खून) पीने से अच्छी प्रकार सन्तुष्ट (प्रसन्न) होने वाली। युद्ध में दैत्यों का रक्त पीने से अच्छी प्रकार सन्तुष्ट हो जाती हैं।

262. **तरुणासृग्विलेपिता** – ताजे रक्त की तरह लाल चन्दन से चर्चित है जिनका शरीर या लेप किया गया है।

263. **तरुणासृङ्नदीप्राणा** – ताजे रक्त की नदी, वही है प्राण जिसका। प्राण अर्थात अत्यन्त प्रिय।

264. **तरुणासृग्विभूषणा** – हाल ही मारे गये असुरों की मुण्डमाला जिसमें ताजा रक्त निकल रहा था, उसे आभूषण के रूप में गले में धारण करने वाली। तरुण रक्त अर्थात अधिक दीप्ति वाले रक्त से विभूषित। यह रक्त है आभूषण जिनका। छिन्नमस्ता देवी से तात्पर्य है।

265. **तरुणैणबलिप्रीता** – जवान मृग (हिरण) की बलि से प्रसन्न हो चुकी या प्रसन्नता को प्राप्त हो चुकी। जवान बारहसिंगा की बलि के द्वारा प्रसन्न होने वाली। शब्दकोष के अनुसार एण हिरण की एक जाति है जिसके पैर छोटे और आँखें बड़ी होती हैं। यह काले रंग का होता है। कस्तूरी मृग।

266. **तरुणैणबलिप्रिया** – जवान मृग की बलि पसन्द है जिसे अर्थात यह बलि उन्हें पसन्द आती है। जवान बारहसिंगा की बलि है प्रिय जिनको।

267. **तरुणैणबलिप्राणा** – जवान या सुन्दर बारहसिंगा की बलि, वह जिन्हें प्राणों के समान प्रिय है अर्थात अतिशय प्रिय है।

268. **तरुणैणबलीष्टदा** – जवान या सुन्दर हिरण/बारहसिंगा की बलि के द्वारा अभीष्ट पदार्थों को देने वाली।

269. **तरुणाजबलिप्रीता** – जवान या सुन्दर बकरे की बलि से प्रसन्न होने वाली।

270. **तरुणाजबलिप्रिया** – जवान बकरे की बलि है प्रिय जिनको अर्थात अच्छी लगती है जिनको।

271. **तरुणाजबलिघ्राणा** – जवान बकरे की बलि को सूँघने वाली अर्थात सूँघकर पसन्द करने वाली।

272. **तरुणाजबलिप्रभुक्** – जवान या सुन्दर बकरे की बलि को ग्रहण करने वाली, खाने वाली।

273. **तरुणादित्यसङ्काशा** – दोपहर के सूर्य के समान चमकने वाली।

274. **तरुणादित्यविग्रहा** – दोपहर के सूर्य के समान देदीप्यमान शरीर वाली।

275. **तरुणादित्यरूचिरा** – दोपहर के सूर्य के समान सुन्दर लगने वाली।

276. **तरुणादित्यनिर्मला** – दोपहर के सूर्य के समान स्वच्छ।

277. **तरुणादित्यनिलया** – दोपहर का सूर्य ही है आश्रय जिनका या निवास स्थान जिनका।

278. **तरुणादित्यमण्डला** – दोपहर के सूर्य मण्डल में स्थित रहने वाली।

279. **तरुणादित्यललिता** – दोपहर के सूर्य के समान अत्यन्त सुन्दर। ऐसा लगता है कि यह नाम बर्फीली जगह के लिए है क्योंकि वहीं दोपहर का सूर्य अच्छा लग सकता है। दोपहर के सूर्य के समान अतिशय सुन्दर।

280. **तरुणादित्यकुण्डला** – दोपहर के सूर्य के समान चमकते हुए कुण्डलों वाली।

281. **तरुणार्कसमज्योत्सना** – मध्याह्नकालीन सूर्य के समान प्रकाश वाली या तेज वाली। दोपहर के सूर्य के समान चाँदनी वाली अर्थात अत्यधिक देदीप्यमान।

282. **तरुणार्कसमप्रभा** – दोपहर के सूर्य के समान कान्ति वाली। प्रभा अर्थात अधिक प्रकाश, कान्ति।

283. **तरुणार्कप्रतिकाशा** – दोपहर के सूर्य के समान अर्थात तेजस्विनी। मध्याह्नकाल के सूर्य के समान चमकने वाली अर्थात अच्छी तरह से प्रकाशित। प्रतिकाशा अर्थात के समान चमकने वाली। दोपहर के सूर्य के समान सुशोभित होने वाली। प्रतिकाशा अर्थात सुशोभित होने वाली। (यदि तरुणार्कप्रतिकारा है तो अर्थ होगा मध्याह्न के सूर्य के समान आकृति वाली या मध्याह्न के सूर्य के आकार वाली अर्थात अत्यन्त प्रचण्ड अर्थात आँख देख नहीं सकती, ऐसे आकार वाली। मध्याह्न के सूर्य के समान आकृति वाली या उसके समान तेजस्विनी। प्रति में कार लगाने से प्रति का प्रती हो जाता है क्योंकि कार में घञ् प्रत्यय लगा है। प्रति अर्थात के समान और कार अर्थात स्वरूप या आकृति, इस नाम में प्रचण्ड स्वरूप अर्थ होगा। यदि तरुणाप्रतीकारा है तो अर्थ होगा चमक लिये आकृति वाली या सम्पूर्णता को लिये आकृति वाली। तरुणावस्था में चमक आती है अतः तरुणाप्रतिकारा का अर्थ चमक लिये आकृति वाली होगा)। तरुण + आ + प्रतिकार, आ अर्थात सम्पूर्णता, भाव (पदार्थ या अस्तित्व), शब्द। प्रत्येक चीज पदार्थ है अतः कई बार आ का अलग से अर्थ देने की जरूरत नहीं है जैसे विश्वामित्र अर्थात विश्वमित्र। प्रतिकाश और प्रतीकाश का एक ही अर्थ है।

284. **तरुणार्कप्रवर्धिता** – दोपहर के सूर्य की तरह अत्यन्त बढ़ी हुई अर्थात् अत्यन्त तेजस्विनी। जिनका तेज अत्यन्त बढ़ा हुआ है। दोपहर के सूर्य के समान अपने तेज या प्रकाश से बढ़ने वाली।

285. **तरुणारूणनेत्रा/तरुणातरूणानेत्रा** – मध्याह्न के सूर्य के समान तेजस्वी आँख वाली। अरूण का एक अर्थ सूर्य भी होता है। यदि तरुणातरूणानेत्रा है तो अर्थ होगा कुछ प्रचण्ड (क्रोध) एवं दया के भाव से युक्त नेत्र वाली। तरुण अर्थात तेज युक्त सूर्य अर्थात क्रोध, अतरूण अर्थात दया। बहुत अधिक लाल नेत्रों वाली। यदि तरुणातरूणानेत्र नाम है तो अर्थ होगा अत्यन्त तरुण अर्थात विशाल नेत्रों वाली। विशाल लाल लाल नेत्रों वाली। जो स्वयं तरुण अवस्था वाली है एवं तारूण्य युक्त अर्थात मद वाली या मतवाली आँखों वाली है।

286. **तरुणारूणलोचना / तरुणातरूणलोचना** – मध्याह्नकालीन सूर्य के समान प्रकाश वाले नेत्र वाली। मध्याह्नकालीन सूर्य की तरह देखने वाली। लोचयति अर्थात देखने वाली। दुष्टों के प्रति क्रोध और भक्तों के प्रति कोमल दृष्टि से देखने वाली। तरुण सूर्य अर्थात तेज अर्थात क्रोध, अतरूण अर्थात कोमल। बहुत अधिक लाल रंग के नेत्रों वाली। विशाल लाल नेत्रों वाली। तरुणावस्था वाली और मतवाले नेत्रों वाली।

287. **तरुणारूणगात्रा / तरुणातरूणनेत्रा** – अतिशय लाल रंग के शरीर वाली। विशाल नेत्र वाली।

288. **तरुणारूणभूषणा / तरुणातरूणभूषणा** – अतिशय लाल आभूषणों वाली। स्वयं तरुण अवस्था वाली है और उज्जवल आभूषण धारण किये हैं। यहाँ तरुणावस्था का तात्पर्य है सोलह वर्ष से बत्तीस वर्ष तक की अवस्था (भाव प्रकाश के अनुसार)। आजकल अंग्रेजी में जिसके अन्त में टीन लगा हो (अर्थात तेरह वर्ष से उन्नीस वर्ष की अवस्था) वह किशोरावस्था है। तरुण भूषणा में तरुण का अर्थ है उज्जवलता, कान्ति से युक्त। दोपहर के सूर्य की दीप्ति के समान चमकने वाले आभूषणों से सुशोभित।

289. **तरुणीदत्तसंकेता** – ऐसी तरुणी जो अपने भक्तों को शुभ सकेत देती है कि तुम्हारे साथ ये अच्छा होने वाला है। ऐसी तरुणी जो अपने भक्तों को शुभ–अशुभ सकेत देती है कि तुम्हारे साथ ये अच्छा होने वाला है। साहित्य में दत्तसंकेता उस स्त्री को बोला जाता है जो अपने प्रिय से किसी विशेष स्थान पर मिलने का संकेत देती है। तरुणी का अर्थ है तरुण अवस्था वाली अर्थात् 16–32 वर्ष की अवस्था वाली। देवी अपनी इच्छानुसार कोई भी रूप धारण कर सकती है। बाल, युवा, वृद्ध, सुन्दर, कुरूप, पुरुष, महिला, नपंसुक, जड़ पदार्थ, चेतन पदार्थ इच्छा मात्र से बन जाती है। अतः विभिन्न नामों में विरोध होने पर आश्चर्य नहीं करना चाहिए। कभी कोई रूप धारण कर लिया, कभी अन्य रूप धारण कर लिया। ऐसी तरुणी जो ज्ञान देने वाली है। संकेत का एक अर्थ ज्ञान भी होता है। ऐसी तरुणी जो अपने उपासकों को शुभ अशुभ संकेत का ज्ञान कराती है। लक्ष्य विशेष का संकेत कराने वाली तरुणी। साहित्य में अभिसारिका को दत्तसंकेता कहा गया है जो संकेत स्थान पर प्रियतम से मिलने जाती है। नवयुवती द्वारा जिनको दिया गया संकेत अर्थात भक्ति आदि के द्वारा आवाहन का संकेत दिया गया है।

290. **तरुणीदत्तभूषणा** – नवयुवती के द्वारा जिन्हें आभूषण प्रदान किये गये।

291. **तरुणीगणसन्तुष्टा** – नवयुवतियों के समूह द्वारा जो सन्तुष्ट (प्रसन्न) की जाती हैं अर्थात स्तुति आदि के द्वारा सन्तुष्ट की जाती हैं।

292. **तरुणी** – युवावस्था से सम्पन्न रहने वाली। सोलह वर्ष से बत्तीस वर्ष तक की अवधि तरुणावस्था है। तरुणावस्था अर्थात युवावस्था। जिसने बाल्यावस्था और कुमारावस्था को पार कर लिया है वह तरुण कहलाता है। सामान्यतः तरुण को ही युवा कहते हैं। संगीत की एक रागिनी स्वरूपा। मेघराग की रागिनी तरुणी कहलाती है।

293. **तरुणीमणि** – युवावस्था से सम्पन्न श्रेष्ठ स्त्रियों के समान। मणि अर्थात श्रेष्ठ।

294. **तरुणीमणिसंसेव्या** – श्रेष्ठ तरूणियों के द्वारा भलीभांति सेवा करने योग्य।

295. **तरुणीमणिवन्दिता** – श्रेष्ठ तरूणियों या सुन्दर नवयुवतियों के द्वारा वन्दित। वन्दना का अर्थ है सामने से सिर झुकाकर प्रणाम करना एवं गुणों का बखान करना।

296. **तरुणीमणिसन्तुष्टा** – ऐसी तरुणी जो मणिजटित आभूषण पहनने से प्रसन्न है। मणि अर्थ श्रेष्ठ अर्थ में भी प्रयुक्त होता है जो किसी क्षेत्र में बहुत आगे है उन्हें भी मणि कह दिया जाता है। पुरुष मणि, स्त्री मणि, विद्या मणि, वस्तु मणि ऐसा हो सकता है। ऐसी तरुणी जो श्रेष्ठ मनुष्यों या वस्तुओं को प्राप्त करने के कारण अत्यन्त प्रसन्न है। श्रेष्ठ भक्त भी एक प्रकार की मणि है। श्रेष्ठ पदार्थ महल, वस्त्र आदि एक प्रकार के मणि ही है। श्रेष्ठ तरूणियों के द्वारा जो सन्तुष्ट की गई (स्तुति के द्वारा)।

297. **तरुणीमणिपूजिता** – श्रेष्ठ नवयुवतियों के द्वारा जिनकी पूजा की गई। जो कुछ भी उपलब्ध है उसे चढ़ाना या उपलब्ध नहीं है तो मानसिक रूप से चढ़ा कर स्तुति करना पूजा है। अर्चना में शास्त्र में जितनी भी वस्तुएं बताई गई हैं, उन सभी का चढ़ाना आवश्यक है। पूजा भौतिक और मानसिक दोनो तरीके से हो सकती है।

298. **तरुणीबृन्दसंवन्द्या** – युवतियों के समूह द्वारा विधिवत् वन्दनीय।

299. **तरुणीबृन्दवन्दिता** – युवतियों के समूह द्वारा वन्दित।

300. **तरुणीबृन्दसंस्तुत्या** – सुन्दर रमणियों के द्वारा भलीभांति स्तुति किये जाने योग्य। इनके द्वारा स्तोत्र आदि से देवी की स्तुति की जाती है।

301. **तरुणीवृन्दमानदा** – तरुणी स्त्रियों के समूह द्वारा जिनको मान अर्थात सम्मान प्रदान किया गया।

302. **तरुणीबृन्दमध्यस्था** – श्रेष्ठ तरूणियों के मध्य में विराजमान रहने वाली।

303. **तरुणीबृन्दवेष्टिता** – सुन्दर तरुणी स्त्रियों से घिरी हुई।

304. **तरुणीबृन्दसम्प्रीता** – तरुणी देवकन्या समूहों या तरुणी मनुष्य उपासिकाओं के समूह पर प्रसन्न रहने वाली या इनके द्वारा प्रसन्न की गई। सुन्दर तरुणी स्ित्रयों के द्वारा जिनसे प्रीति या प्रेम किया गया हो।

305. **तरुणीबृन्दभूषिता** – सुन्दर नवयुवतियों द्वारा शोभित।

306. **तरुणीजपसंसिद्धा** – तरूणियों द्वारा किये जाने वाले जप से अच्छी तरह से प्राप्त अर्थात तरूणियों को उनका अभीष्ट देने वाली। सुन्दर नवयुवतियों के जप से अच्छी प्रकार सिद्ध होने वाली।

307. **तरुणीजपमोक्षदा** – तरुणी रमणियों के जप के द्वारा उन्हें मोक्ष प्रदान करने वाली।

308. **तरुणीपूजकासक्ता** – तरुणी उपासकों से जुड़ जाने वाली अर्थात उनपर कृपा कर देती हैं। पूजा करने वाली तरुणी नवयुवतियों से आसक्त रहने वाली तथा प्रसन्न रहने वाली। देवी की तरुणी के रूप में उपासना करने वालों से जुड़ जाने वाली।

309. **तरुणीपूजकार्थिनी** – तरुणावस्था वाली उपासिकाओं के लिए अच्छी कामना रखने वाली। तरुणी रमणियों की पूजा को चाहने वाली अर्थात यह आशा रखने वाली कि वे पूजा करें।

310. **तरुणीपूजकश्रीदा** – पूजा करने वाली तरुणी रमणियों को शोभा सम्पत्ति, लक्ष्मी देने वाली।

311. **तरुणीपूजकार्त्तिहा** – पूजा करने वाली तरुणी स्त्रियों की पीड़ाओं को नष्ट करने वाली।

312. **तरुणीपूजकप्राणा** – जो स्वयं तरुणी हैं और पूजा करने वालों द्वारा अत्यन्त वांछनीय है अर्थात उपासकों की सर्वाधिक प्रिय है। पूजा करने वाली तरुणी स्त्रियों की प्राणों की तरह रक्षा करने वाली। प्राण अर्थात अत्यन्त प्रिय।

313. **तरुणीनिन्दकार्तिदा** – तरूणियों की निन्दा करने वालों को पीड़ा देने वाली।

314. **तरुणीकोटिनिलया** – ऐसी तरुणी जिसके करोड़ों घर हैं अर्थात असंख्य घर हैं। करोड़ों या असंख्य तरूणियों में रहने वाली। करोड़ों तरुणी स्त्रियाँ (नवयुवतियाँ) जिनका आश्रय है। 16 से 32 वर्ष तक की अवस्था तरुणावस्था कहलाती है।

315. **तरुणीकोटिविग्रहा** – करोड़ों तरुणी स्त्रियाँ जिनका विग्रह या शरीर हैं। दुर्गासप्तशती में आया है कि समस्त नारियाँ उनके रूप हैं।

316. **तरुणीकोटिमध्यस्था** – करोड़ों तरुणी स्त्रियों के मध्य में रहने वाली।

317. **तरुणीकोटिवेष्टिता** – करोड़ों तरुणी स्त्रियों से घिरी हुई।

318. **तरुणीकोटिदुस्साध्या** – करोड़ों तरुणी स्त्रियों के द्वारा कठिन तपस्या से सिद्ध करने योग्य।

319. **तरुणीकोटिविग्रहा** – जो तरुणी हैं और करोड़ों शरीर वाली हैं। दुर्गासप्तशती में कहा गया है कि सभी स्त्रियाँ देवी के स्वरूप वाली हैं। करोड़ों तरुणी स्त्रियों के शरीर सौन्दर्य से विभूषित।

320. **तरुणीकोटिरूचिरा** – करोड़ों सुन्दरियाँ जो तरुण अवस्था में हैं उन सुन्दरियों के समान सुन्दर। करोड़ों तरुणी स्त्रियों के समान सुन्दर गात्र या शरीर वाली।

321. **तरुणी** – तरुणी का अर्थ घीक्वार या ग्वारपाठा भी होता है जो वनौषधि है। घीक्वार या ग्वारपाठा की तरह सर्वरोगहारी अर्थात सभी कष्टों का हरण करने वाली यह अर्थ भी हो सकता है। तरुणी सुन्दरी के समान सुशोभित होने वाली। द्वितीय अवस्था तरुणावस्था है। शब्द कल्पद्रुम में भाव प्रकाश ग्रन्थ को उद्धरित करते हुए कहा गया कि 16 से 32 वर्ष तक की अवस्था तरुणावस्था या युवावस्था है।

322. **तरुणीश्वरी** – तरुणी स्त्रियों की स्वामिनी या आराध्या।

323. **तरुणीमणिहाराढ्या** – ऐसी तरुणी जो मणियों के हार से समृद्ध है, सुशोभित है। तरुणी स्त्रियों के मणिनिर्मित हारों से आढ्य अर्थात सुन्दर लगने वाली।

324. **तरुणीमणिकुण्डला** – ऐसी तरुणी जो मणियों से जड़ित कुण्डल पहने हुए है। तरुणी स्त्रियों के मणि जड़ित कुण्डलों को धारण करने वाली।

325. **तरुणीमणिसन्तुष्टा** – तरुणी स्त्रियों के मणियों से सन्तुष्ट रहने वाली। श्रेष्ठ तरुणी अर्थात दैवी गुण से युक्त तरुणी से प्रसन्न।

326. **तरुणीमणिमण्डिता** – ऐसी तरुणी जो मणियों से सुशोभित है। तरुणी रूपी मणियों से सुशोभित या घिरी हुई। दुर्गा जी हाथ में तलवार लिये बहुत सारी कन्याओं से घिरी हुई हैं। सुन्दर मणियों से विभूषित होने वाली।

327. **तरुणीसरणीप्रीता** – ऐसी तरुणी जो सन्मार्ग या वेदमार्ग पर चलने वालों पर प्रसन्न होती हैं। सरणी अर्थात मार्ग। तरूणियों की पंक्ति अर्थात समूहों पर प्रसन्न होने वाली। सुन्दर मार्ग से प्रेम करने वाली।

328. **तरुणीसरणीरता** – परिपक्व या पूर्णता को प्राप्त उपासना पद्धति में आसक्त या निवास करने वाली अर्थात उससे प्रेम करती हैं। सुन्दर या बाधा रहित मार्ग पर आसक्त या ऐसे उपासना मार्ग से प्रेम करने वाली।

329. **तरुणीसरणीस्थाना** – ऐसी तरुणी जो ठीक मार्ग पर चलने वाली है, उसमें रहने वाली। सरणी अर्थात मार्ग। ऐसी तरुणी जो सरणी स्थान है अर्थात सही या योग्य पद्धति स्वरूपा है। सुन्दर मार्ग ही है स्थान या आश्रय जिनका।

330. **तरुणीसरणीमता** – ऐसी तरुणी जो अप्रतिहत बुद्धि से युक्त है। सरण का अर्थ गति होता है। निरन्तर चलने वाली बुद्धि अर्थात् जो बाधित नही होती या अटकती नहीं है। अप्रतिहत ज्ञान वाली तरुणी। उनके ज्ञान को कोई नष्ट नहीं कर सकता या उनका ज्ञान किसी से परास्त नहीं हो सकता। मत का अर्थ ज्ञान भी होता है। जो पूर्ण विकसित और सुन्दर उपासना का मार्ग मानी गई हैं या कही गई हैं। बाधा रहित उपासना मार्ग के रूप में मान्य या कही गई। तरुणी अर्थात विशाल अर्थात जो उबड़खाबड़ न हो, बाधा रहित हो। ऐसी मार्ग के रूप में मान्य। सुन्दर मार्ग है प्रिय जिन्हें। यहाँ मता का अर्थ मान्यता दिया हुआ या प्रिय होगा।

331. **तरणीमण्डलश्रीदा** – पार करने वाली नौकादि समूह को सम्पत्ति देने वाली। (पतिव्रता स्त्री भी संसार सागर में पति को पार करा देने वाली है)। पतिव्रता स्त्रियों के समूह को शोभा या धनसम्पत्ति देने वाली।

332. **तरणीमण्डलेश्वरी** – संसार सागर से पार करा देने वाली स्त्री समूह की ईश्वरी या पतिव्रता स्त्रियों के समूह की ईश्वरी।

333. **तरणीमण्डलश्रद्धा** – पतिव्रता स्त्रियों के समूह के प्रति श्रद्धा का भाव रखने वाली। संसार सागर से पार कराने वाली अर्थात् देवताओं के समूह में रहने वाली श्रद्धास्वरूपा। श्रद्धा का अर्थ है अति विश्वास। देवताओं के समूह की जिनके प्रति श्रद्धा है।

334. **तरणीमण्डलस्थिता** – पतिव्रता स्त्रियों के समूह में स्थित रहने वाली।

335. **तरणीमण्डलार्घ्याढ्या** – पतिव्रता स्त्रियों के समूह के द्वारा दिये गये अर्घ्य से सम्पन्न (युक्त)।

336. **तरणीमण्डलार्चिता** – पतिव्रता स्त्रियों के समूह के द्वारा पूजित।

337. **तरणीमण्डलध्येया** – पतिव्रता स्त्रियों के द्वारा जिनका ध्यान किया जाता है।

338. **तरणीभवसागरा** – संसार सागर से पार कराने वाली नौका स्वरूपा अर्थात् ऐसी शक्ति जो अपने उपासकों को संसार सागर अर्थात् कष्टों के सागर से पार कर देती है। इस शब्द को भवसागरे तरणी, इस प्रकार विग्रह करना होगा। शब्द के आगे ''में विराजमान'', ''का कारण'' लगाने से भी शब्द का अर्थ निकलता है। संसार सागर से पार करने वाले उपायों में विराजमान। संसार सागर से पार कराने वाले उपायों की कारण अर्थात् उसे बनाने वाली। नौका एक प्रकार का साधन या उपाय ही है। जो संसार सागर से पार कराने वाली भी हैं और स्वयं में संसार सागर स्वरूपा भी हैं। ऐसी तरणी जो संसार सागर स्वरूपा है। भवसागर अर्थात संसार भी देवी का रूप है। पतिव्रता स्त्रियों के माध्यम से भव सागर को पार करा देने वाली।

339. **तरणीकारणासक्ता** – पार कराने वाले के कारण में आसक्ता है अर्थात् जुड़ी हुई। तरी या तरणी का अर्थ है नौका जो पार कराने का कार्य करती है। इस नौका का कारण हुआ लकड़ी जिससे वह बनती है। भक्तों को संसार सागर से पार कराने वाली अन्य देवियाँ तरणी हुई। यह देवियाँ जिस शक्ति से पार करती है वह शक्ति तरणीकारण हुई। वह पार कराने वाली शक्ति जिनके अन्दर है या जिनसे जुड़ी हुई हैं, वह तरणीकारणासक्ता है। भावार्थ तो यही निकला कि संसार सागर से पार कराने वाली शक्ति से युक्त। पार कराने वाले कारणों से जुड़ी हुई या सम्बन्धित। पार कराने वाले कारण जैसे नौका आदि। पार करा देने वाली सती स्त्रियाँ, उनके कारणों और निमित्तों पर आसक्त रहने वाली।

340. **तरणीतक्षकार्चिता** – नौका का निर्माण करने वाले विश्वकर्मा के द्वारा अर्चित। संसार सागर को पार करने के लिए तैयार करने वाले नौका का निर्माण करने वाले विश्वकर्मा द्वारा अर्चित। तक्षक अर्थात लकड़ी चीरने या तराशने वाला। तक्ष् धातु का अर्थ है पतला करना अर्थात छीलना या तराशना। संसार सागर से पार कराने वाले तथा कर्म बन्धनों को छील देने वाले ब्रह्मा, विष्णु और महेश द्वारा जिनकी पूजा की गई अर्थात पूजा की जाती है।

341. **तरणीतक्षकश्रीदा** – तरणी (नौका) के निर्माण करने वाले कारीगर को सम्पत्ति प्रदान करने वाली। तरणी अर्थात पार करा देने वाली अर्थात नौका।

342. **तरणीतक्षकार्थिनी** – नौका का निर्माण करने वाले कारीगर की कामना करने वाली।

343. **तरी** – संसार सागर पार करने के लिए या कराने के लिए नौका स्वरूपा देवी।

344. **तरणशीला** – संसार सागर से पार करा देने के स्वभाव वाली।

345. **तरीतरणतारिणी** – ऐसी नौका जो समुद्र या नदी को पार कराने वाली है। तरी का अर्थ है नौका, तरण का अर्थ है समुद्र या नदी या समुद्र या नदी को पार करना और तारणी का अर्थ है पार कराने वाली। संसार

सागर को पार करने के लिए सुन्दर नौका के द्वारा पार करा देने वाली अर्थात सुन्दर नौका का रूप धारण कर पार करा देने वाली। तरी का अर्थ है नौका, तरण का अर्थ है पार करना और तारिणी का अर्थ है पार करा देने वाली। (तारिणी का अर्थ है – तार (ऊँ) के द्वारा जिन्हें हृदय में लाया जाता है अर्थात प्रकट रूप में धारण किया जाता है। तारेण हृदि नीयते इति तारिणी। ऊँ मन्त्र के जप से या इस मन्त्र की साधना के द्वारा देवी सक्रिय रूप से हृदय में बैठ जाती हैं। ऊर्जा रूप में देवी सभी जगह व्याप्त हैं, कहीं कहीं सुषुप्त अवस्था में और कहीं जागृत अवस्था में। संसार सागर से पार कराने वालों या दुखों से पार कराने वालों का भी नेतृत्व करने वाली अर्थात उन्हें पार कराने की शक्ति देने वाली। ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि देवताओं को भक्तों को संसार सागर से पार कराने की जो शक्ति मिली है वह भी देवी द्वारा प्राप्त है। भगवान शिव विष पान से पीड़ा अनुभव कर रहे थे तो देवी ने उन्हें बच्चा बनाकर स्तानपान कराकर उनका सारा कष्ट हर लिया था। संसार सागर से पार कराने वाली। तारयति संसारात् इति तारिणी। संसार सागर से पार कराने वाले अन्य देवी देवताओं का भी नेतृत्व करने वाली अर्थात उन्हें पार कराने की शक्ति देने वाली। तारकानपि नयति इति तारिणी। रामायण के प्रसंग में वानरों को समुद्र से पार कराने वाली राम की आत्मा स्वरूपा। कपीन् उदधेः तारयति रामात्मना। वानरों का नेतृत्व करने वाली अर्थात उन्हें पार कराने वाली शक्ति देने वाली। तारं कपिं नयति। स्वयं में सर्वत्र व्याप्त हैं एवं जीवों के दोषों को हटाने वाली हैं। स्वयं तता, जीवेशु अरम् दोषं नयति अपनयति।)

346. **तरीतरणसंवेद्या** – ऐसी नौका है जिसका पता तैरने से चलता है। भवसागर से पार करा रही है, ऐसा पता बाद में चलता है। तैरने पर नहीं पर जब पार हो जाता है तब पता चलता है। ऐसी नौका जो तैरने का ज्ञान कराती है पार कराने का ज्ञान कराती है अर्थात संसार सागर से पार कराने का ज्ञान कराती है। नौका के द्वारा पार करा देने वाले स्वभाव से जानने योग्य।

347. **तरीतरणकारिणी** – नौका स्वरूप द्वारा संसार सागर से पार लगा देने वाली।

348. **तरुरूपा** – पार उतारना क्रिया स्वरूपा। तरूम् रूपयति अर्थात नौका को दिखाने वाली या निरूपित करने वाली। वृक्षों का निर्माण करने वाली। रूपयति का अर्थ स्वरूप देना अर्थात निर्माण करना होता है।

349. **तरूपस्था** – वृक्ष के समीप स्थित रहने वाली।

350. **तरु** – तारने वाली, जो तारती है अर्थात पार करा देती है। तरुरूपा शब्द में पार कराने की क्रिया अर्थ लिया और तरु में पार कराने वाली, यह अर्थ लिया। वृक्षस्वरूपिणी अर्थात वृक्ष की तरह पालन पोषण करने वाली। वृक्ष पशु पक्षियों एवं मनुष्यों का पोषण करते हैं क्योकि पशु पक्षी और मनुष्य इनको खाते हैं।

351. **तरूलतामयी** – वृक्ष और लता से युक्त स्वरूप वाली।

352. **तरुरूपा** – वृक्ष स्वरूपा अर्थात दूसरों को आश्रय देने वाली। वृक्ष विभिन्न पशु – पक्षियों को आश्रय देते हैं। वृक्ष पर दृष्टि डालने वाली। तरुम् रूपयति इति तरुरूपा, रूपयति का अर्थ है देखना, दिखाना आदि। रूप्यते इति रूपा अर्थात जिन लक्षणों से कोई चीज ज्ञापित होती है अर्थात पता चलती है, उसे भी रूप या रूपा कहते हैं। अतः रूपा का अर्थ है ज्ञापक अर्थात बताने वाला। जिस वस्तु को ज्ञापक कहा जाता है उसके गुण या लक्षण ही ज्ञापक का कार्य करते हैं अर्थात वे गुण चीज में भी होता हैं। तरु है ज्ञापक जिनका अर्थात तरु में व्याप्त गुणों से ज्ञापित होने वाली अर्थात जो गुण तरु में है वे गुण देवी में भी हैं।

353. **तरूस्था** – श्रेष्ठ वृक्ष पर विराजमान जैसे आम, पीपल, बरगद आदि वृक्ष पर विराजमान।

354. **तरूमध्यनिवासिनी** – वृक्ष के मध्य में निवास करने वाली। तरु अर्थात तारने वाला अर्थात तारने वाले मन्त्र के भीतर मन्त्र शक्ति रूप में निवास करने वाली। वृक्ष आश्रय देता है, पशु पक्षियों को खाना देता है अतः तरु का अर्थ परमात्मा भी कर सकते हैं। परमात्मा के भीतर शक्ति के रूप में निवास करने वाली। विश्व को और मानव

शरीर को भी वृक्ष की उपमा दी गई है। विश्व के भीतर संचालित करने वाली शक्ति के रूप में निवास करने वाली। मानव शरीर के भीतर शक्ति के रूप में निवास करने वाली।

355. **तप्तकाञ्चनगेहस्था** – तपाये गये सुन्दर स्वर्ण से निर्मित भवन में निवास करने वाली।

356. **तप्तकाञ्चनभूमिका** – तपाये गये स्वर्ण से निर्मित भूमि का स्वरूप धारण करने वाली।

357. **तप्तकाञ्चनप्राकारा** – तपाये गये स्वर्ण से निर्मित प्राकार से संरक्षित अर्थात चहार दीवारी से घिरे सुन्दर भवन वाली। प्राकार का अर्थ है वह दीवार जो नगर, किले आदि की रक्षा के लिए उसके चारों ओर बनायी जाती है अर्थात परकोटा या चहारदीवारी। प्राकार का अर्थ घेरा, बाड़ भी होता है।

358. **तप्तकाञ्चनपादुका** – तपाये गये सुन्दर सोने से निर्मित है खड़ाऊ जिनकी।

359. **तप्तकाञ्चनदीप्तांगी** – तपाये गये स्वर्ण के समान चमकने वाले अंगों वाली।

360. **तप्तकाञ्चनसन्निभा** – तपाये गये सोने अर्थात उज्जवल या शुद्ध सोने की तरह शुद्ध वर्ण वाली। तपाने से गन्दगी दूर होकर सोना शुद्ध या उज्जवल हो जाता है। तपाये गये स्वर्ण के समान सुशोभित होने वाली।

361. **तप्तकाञ्चनगौराङ्गी** – तपाये गये स्वर्ण के समान गोरे अंगों वाली या गौर वर्ण के अंगों वाली।

362. **तप्तकाञ्चनमञ्चगा** – तपाये गये स्वर्ण से निर्मित मंच पर विराजमान रहने वाली।

363. **तप्तकाञ्चनवस्त्राढया** – तपाये गए सोने के समान अर्थात शुद्ध, उज्जवल वस्त्रों से सुशोभित। तपाये गये स्वर्ण से निर्मित वस्त्रों से सुशोभित होने वाली।

364. **तप्तकाञ्चनरूपिणी** – तपाये गये सुन्दर स्वर्ण के समान रूप वाली। तपाया गया सोना शुद्ध, उज्जवल होता है।

365. **तप्तकाञ्चनमध्यस्था** – तपाये गये स्वर्ण के मध्य में स्थित होने वाली।

366. **तप्तकाञ्चनकारिणी** – तपाये गये सुन्दर स्वर्ण का निर्माण करने वाली।

367. **तप्तकाञ्चनमासार्च्या** – तपाये गये स्वर्ण से निर्मित आभूषणों के द्वारा महीने महीने पूजा के योग्य।

368. **तप्तकाञ्चनपात्रभुक्** – तपाये गये स्वर्ण से निर्मित पात्रों में भोजन करने वाली।

369. **तप्तकाञ्चनशैलस्था** – तपाये गये स्वर्ण से निर्मित अर्थात स्वर्णमय पर्वत पर विराजमान रहने वाली।

370. **तप्तकाञ्चनकुण्डला** – तपाये गये स्वर्ण से निर्मित है कुण्डल जिनका।

371. **तप्तकाञ्चनक्षेत्राढया** – तपाये गये स्वर्ण के क्षेत्र से सुशोभित अर्थात अतिशय सम्पन्न क्षेत्र वाली।

372. **तप्तकाञ्चनदण्डधृक्** – तपाये गये स्वर्ण से निर्मित दण्ड को धारण करने वाली।

373. **तप्तकाञ्चनभूषाढ्या** – तपाये गये स्वर्ण से निर्मित आभूषणों से सुशोभित या विशेष छवि से युक्त।

374. **तप्तकाञ्चनदानदा** – शुद्ध या उज्जवल सोने का दान करने वाली। दानदा में दान का अर्थ दान और दा शब्दाक्षर का अर्थ करना लगाया गया है। शुद्ध सोने का दान करने से शुद्ध स्वरूप वाली। दानदा का दा दैप् शोधने धातु से शोधन या शुद्ध अर्थ देता है। तपाये गये स्वर्णों को दान में देने वाली अर्थात सुन्दर सोने का दान देने वाली।

375. **तप्तकाञ्चनदेशेशी** – शुद्ध या उज्जवल सोने के समान देश में रहने वाली शक्ति। देवीका मणि द्वीप तपे सोने की तरह उज्जवल होता होगा। तपाये गये सोने के समान दीप्तिमय देश या द्वीप वाली। सुन्दर स्वर्णमय देश की ईश्वरी।

376. **तप्तकाञ्चनचापधृक्** – तपाये गये सुन्दर स्वर्ण से निर्मित धनुष को धारण करने वाली।

377. **तप्तकाञ्चनतूणाढ्या** – तपाये गये सुन्दर स्वर्ण से निर्मित तूणीर या तरकश को धारण करने वाली।

378. **तप्तकाञ्चनबाणभृत्** – तपाये गये सुन्दर स्वर्ण से निर्मित बाणों को धारण करने वाली।

379. **तलातलविधात्री** – तलातल लोक की रचना करने वाली।

380. **तलातलविधायिनी** – तल अर्थात नीचे के लोक और अतल अर्थात ऊपर के लोक का विधान करने वाली अर्थात बनाने वाली।

381. **तलातलस्वरूपेशी** – तलातल लोक के स्वरूप की स्वामिनी। तल अर्थात पृथ्वी और अतल अर्थात आकाश। पृथ्वी से आकाश तक जो भी स्वरूप हैं अर्थात आकार अर्थात नामरूपात्मक वस्तुऐं हैं उनकी स्वामिनी अर्थात उनको बनाने वाली या उन पर शासन करने वाली। शासन करने का तात्पर्य है कि सूर्य चन्द्रमा आदि या अन्य वस्तुओं में उनका गुण धर्म भर दिया गया है जिसके अनुसार वे काम करती हैं।

382. **तलातलविहारिणी** – तलातल लोक में विचरण करने वाली। तल अर्थात नीचे के लोक एवं अतल अर्थात ऊपर के लोक में विहार करने वाली।

383. **तलातलजनासाध्या** – तलातल नामक पाताल के लोगों द्वारा आराधनीय। तल का अर्थ है Bottom या सबसे नीचे और अतल का अर्थ है ऊपर। नीचे से ऊपर तक के सभी लोकों के द्वारा आराधनीय। तल और अतल पर रहने वाले लोगों के द्वारा सम्यक प्रकार से साधनीय या प्राप्त की जाने योग्य।

384. **तलातलजनेश्वरी** – तलातल लोक के प्राणियों की ईश्वरी। तल (नीचे का लोक) और अतल (ऊपर के लोक) में निवास करने वाले लोगों की ईश्वरी।

385. **तलातलजनाराध्या** – तलातल लोक में निवास करने वाले लोगों के द्वारा आराधनीय। नीचे के लोक एवं ऊपर के लोक के प्राणियों की आराध्या।

386. **तलातलजनार्थदा** – तलातल लोक में निवास करने वाले लोगों को धन सम्पत्ति प्रदान करने वाली। नीचे के लोक एवं ऊपर के लोक के प्राणियों को धन देने वाली।

387. **तलातलजयाभाक्षी** – नीचे के लोकों पर जीत हासिल करने के कारण सम्पूर्ण चमक से युक्त आँखों वाली। नीचे के लोकों पर जीत हासिल करने के कारण चमक से युक्त आँखों वाली। आ का अर्थ समन्तात् (चारों ओर से या पूर्ण रूप से) और भाव (पदार्थ, अस्तित्व) होता है। प्रत्येक चीज भाव है अतः कभी कभी आ का अलग से कोई अर्थ देने की जरूरत नहीं हैं जैसे विश्वामित्र अर्थात विश्वमित्र। नीचे के लोकों पर जीत हासिल करने के कारण सम्पूर्ण चमक से युक्त आँखों वाली। तल और अतल दोनों नीचे के लोक हैं। यदि तल का अर्थ नीचे के लोक और अतल का अर्थ ऊपर के लोक माना जाए तो अर्थ होगा नीचे और ऊपर के लोकों अर्थात सम्पूर्ण लोकों पर जीत हासिल कर सम्पूर्ण चमक से युक्त आँखों वाली। आभाक्षी अर्थात आ (पूर्ण)+ भा (चमक)+ अक्षी (आँख)। सभी लोकों पर जीत को प्राप्त करने वाली। भक्षण अर्थात अपने में समाहित करना अर्थात प्राप्त करना। तलातल नामक निम्न लोक को जीतने की चमक से युक्त आँखों वाली। नीचे के लोक और ऊपर के लोकों को जीतने की चमक से युक्त आँखों वाली। तल का अर्थ है नीचे का लोक और अतल का अर्थ है ऊपर का लोक।

388. **तलातलजचञ्चला** – तलातल नामक लोक पर उत्पन्न होकर चंचल स्वरूप वाली। तल का अर्थ है नीचे का लोक और अतल का अर्थ है ऊपर का लोक। नीचे के लोक एवं ऊपर के लोक पर उत्पन्न होकर चंचल स्वरूप वाली।

389. **तलातलजरत्नाढ्या** – तलातल नामक लोक पर उत्पन्न होने वाले रत्नों से आढ्य या श्रीसम्पन्न।

390. **तलातलजदेवता** – तलातल नामक लोक में उत्पन्न होने वाली देवी। नीचे के लोक और ऊपर के लोक में उत्पन्न होने वाली देवी।

391. **तटिनीस्थानरसिका** – नदी के किनारों पर निवास करने की शौकीन या रूचि वाली।

392. **तटिनीतटवासिनी** – नदियों के तट पर निवास करने वाली।

393. **तटिनी** – नदी स्वरूपा। जिसके तट रहते हैं। शिव से युक्त। तट का एक अर्थ है शिव।

394. **तटिनीतीरगामिनी** – नदी के किनारे पर विचरण करने वाली।

395. **तटिनीप्रिया** – नदी है प्रिय जिन्हें।

396. **तटिनीप्लवनप्रीता** – नदी में तैरना है पसन्द जिनको।

397. **तटिनीप्लवनोद्यता** – नदी में तैरने के लिए उद्यत (तैयार) रहने वाली।

398. **तटिनीप्लवनश्लाघ्या** – आशा रूपी नदी को पार करने के लिए स्तुति करने योग्य। श्लाघ्या का अर्थ प्रसंशनीय या स्तुति करने योग्य। नदी पार कराना रूपी प्रशंसनीय कर्म वाली। तटिनी अर्थात नदी और प्लवन अर्थात पार कराना। नदी में तैरना जिन्हें श्लाघनीय अर्थात अच्छा लगता है। प्लवन का अर्थ पार करना या तैरना होता है पर कभी कभी शुद्ध धातुऐं प्रेरणार्थक अर्थ भी दे देती हैं अतः पार कराना अर्थ भी कर सकते हैं।

399. **तटिनीप्लवनार्थदा** – जो नदी में तैरने वालों को अर्थात स्नान करने वालों को धन सम्पत्ति प्रदान करती हैं।

400. **तटलास्था** – महादेव को ग्रहण करके स्थित है। नदी के तट को ग्रहण करके अर्थात स्थान बनाकर स्थित है। नदी के किनारे बहुत से देवी मन्दिर हैं। तट का एक अर्थ महादेव भी होता है। नदी के तट पर क्रीड़ा करने वाली।

401. **तटस्थाना** – नदी तट या समुद्र तट में जिनका स्थान है अर्थात वहाँ विराजमान हैं।

402. **तटेशी** – नदी या समुद्र तट की ईश्वरी या स्वामिनी।

403. **तटवासिनी** – तट पर निवास करने वाली। नदी के तट पर एवं समुद्र के तट पर बहुत से देवी मन्दिर हैं। महादेव के साथ वास करने वाली यह अर्थ भी कर सकते हैं क्योंकि तट का एक अर्थ महादेव भी है।

404. **तटपूज्या** – तट पर पूजनीय। जो भी सामग्री उपलब्ध है उसे चढ़ाकर देवता का स्तुतिगान करना पूजा है, यदि सामग्री उपलब्ध नहीं है तब भी कोई बात नहीं है। अर्चना में शास्त्रों में जो भी पदार्थ बताये गये हैं, उन सभी का रहना अर्थात देवताओं को चढ़ाना अनिवार्य है।

405. **तटाराध्या** – तट पर आराधना करने योग्य। किसी के अनुसार आराधना का अर्थ है ईश्वर से दया की याचना करना अर्थात ईश्वर का ध्यान कर मानसिक रूप से कहना कि आप मुझ पर दया करें, कृपा करें। इसमें सामग्री चढ़ाने की जरूरत नहीं है। कहीं पर कहा गया है कि भगवान के नामरूप, महिमा, गुणों का निरन्तर स्मरण करना आराधना है। आराधना में आ का अर्थ निरन्तर या अविचल है। भगवान के पीछे इस प्रकार दौड़ जाना अर्थात इस प्रकार खो जाना कि अपनी सुधबुध न रहे, आराधना है।

406. **तटरोममुखार्थिनी** – महोदव के रोम मुख का अर्थात नवयौवन का सुख चाहने वाली। रोम मुख का अर्थ है रोम का आरम्भ अर्थात नयी नयी दाढ़ी मूँछ आना अर्थात नव यौवन।

407. **तटजा** – तट से उत्पन्न होने वाली अर्थात तट में उत्पन्न होकर आनन्दित होने वाली। शिव से उत्पन्न गंगा स्वरूपा या गंगा से अभेद है जिनका। शिव से उत्पन्न नर्मादा स्वरूपा या नर्मदा से अभेद है जिनका।

408. **तटरूपा** – तट स्वरूपा। तटम् रूपयति अर्थात तट (नदी का तट या समुद्र का तट) को देखने वाली। तट का अर्थ शिव भी होता है इस प्रकार तटरूपा का अर्थ हुआ शिवस्वरूपा या शिव को देखने वाली अर्थात शिव पर दृष्टिपात करने वाली। शिव को दिखाने वाली अर्थात साक्षात्कार कराने वाली। रूपयति का एक अर्थ है दिखाना।

409. **तटस्था** – तट पर स्थित रहने वाली या सारे संसार से उदासीन/ तटस्थ। पक्षपात रहित।

410. **तटचञ्चला** – तटों पर चंचल रहने वाली अर्थात नदी स्वरूपा या समुद्र स्वरूपा क्योंकि इनके तट पर चंचल लहरे होती हैं। तट पर चंचलता के साथ विचरण करने वाली।

411. **तटसन्निधिगेहस्थासहिता** – तट के किनारे (समीप) पर स्थित घर में रहने वाली और हितकारिणी। तट अर्थात नदी का तट या समुद्र का तट। शिव के साथ मन्दिर में स्थित होकर आने वाले या उपासना करने वालों का हित करने वाली। तट का एक अर्थ शिव भी होता है। आस का अर्थ है आने वाले या उपासना करने वाले। तट पर घर में रहते सांगोपांग निवास करने वाली।

412. **तटशायिनी** – तट पर शयन करने वाली। तट का एक अर्थ शिव भी है। शिव में शयन करने वाली अर्थात शिव में शक्ति रूप से हमेशा विराजमान रहने वाली।

413. **तरङ्गिणी** – तरंगों से युक्त अर्थात शिव के प्रति प्रेम की तरंगों से युक्त। तरंगों से युक्त अर्थात नदी स्वरूपा। चित्त की उमंग/मन की मौज से युक्त। स्वरों के उतार चढ़ाव से युक्त अर्थात संगीत स्वरूपा। तरंग का अर्थ है चित्त की उमंग, मन की मौज, स्वर का उतार चढ़ाव। अध्याय से युक्त ग्रन्थस्वरूपा। तरंग का एक अर्थ अध्याय भी होता है। आपने राजतरंगिणी ग्रन्थ का नाम सुना होगा।

414. **तरङ्गाभा** – तरंगों की कान्ति से युक्त।

415. **तरङ्गायतलोचना** – तरंग के समान बड़े बड़े नेत्रों वाली।

416. **तरङ्गसमदुर्धर्षा** – ऐसी तरंग के समान जिसे रोका नहीं जा सकता जैसे ज्वारभाटे में उठने वाली तरंग। देवी के कार्यों को अजेय या अनिवारणी तरंग की तरह कोई रोक नहीं सकता है। तरंग के समान दुर्धर्ष अर्थात शत्रुओं को डुबो देती है जैसे तरंगें डुबो देती हैं।

417. **तरङ्गसमचञ्चला** – तरंगों के समान चंचल।

418. **तरङ्गसमदीर्घाङ्गी** – तरंगों के समान बड़े बड़े अंगों वाली।

419. **तरङ्गसमवर्धिता** – तरंग के समान बढ़ी हुई अर्थात बढ़ने वाली। तरंग दूर से छोटी लगती है पर तट के पास आते आते बड़ी हो जाती है। तरंगों के समान बढ़ने वाली।

420. **तरङ्गसमसंवृद्धि** – तरंग के समान वृद्धि स्वरूपा अर्थात वृद्धि गुण स्वरूपा। तरंग के समान सम्यक् वृद्धि स्वरूपा। पिछले नाम से अन्तर यह है कि यहाँ पर वृद्धिगुण ले लिया गया। तरंगों के समान सम्यक् रूप से बढ़ने वाली।

421. **तरङ्गसमनिर्मला** – तरंगों के समान स्वच्छ या निर्मल।

422. **तडागमध्यनिलया** – तालाब के मध्य में निवास करने वाली। (तडाग का अर्थ है – सरोवर या तालाब। हृदय को या मन को तालाब कहा गया है। आपने मानसरोवर शब्द सुना होगा। सरोवर शब्द जीवन, चेतना, शान्ति, पवित्र करने वाला, जीवात्माओं को धारण करने वाला ब्रह्म या परमात्मा, निर्लिप्ता, जीवन देने वाला या पुष्ट करने वाला, माया या भ्रम, स्वप्न, जगत आदि अनेक अर्थों का प्रतीक है। पाँच सरोवर बहुत प्रसिद्ध है जो हैं मानसरोवर, बिन्दुसरोवर, नारायणसरोवर, पम्पासरोवर एवं पुष्करसरोवर। इनमें स्नान करने से व्यक्ति के पाप दूर होकर व्यक्ति शुद्ध होता है। तालाब में कमल होते हैं और कमल कीचड़ से अलग होने के कारण निर्लिप्ता का

प्रतीक है। जल जीवन है। समुद्र की बूँद जीवात्मा एवं समुद्र परमात्मा है। यही चीज सरोवर के सन्दर्भ में कही जा सकती है।)

423. **तडागमध्यसम्भवा** – तालाब के मध्य में प्रकट होने वाली। परमात्मा के बीच अपने दृढ़ अस्तित्व को रखने वाली। भू सत्तायाम् धातु होती है। (तडाग योग की एक मुद्रा का नाम है। इसका आधार लेकर भी अर्थ निकाले जा सकते हैं।) तडाग मुद्रा में अच्छी प्रकार से सत्तावन अर्थात विराजमान।

424. **तडागरचनाश्लाघ्या** – तालाब की रचना के द्वारा जो प्रशंसनीय है अर्थात ये तालाबों की रचना करती है।

425. **तडागरचनोद्यता** – तालाब की रचना या निर्माण के लिए समुद्यत रहने वाली अर्थात हमेशा तैयार रहने वाली।

426. **तडागकुमुदामोदी** – तालाब में होने वाले कमल की सुगन्ध वाली या उन कमलों के साथ खिलने वाली या उन कमलों के साथ प्रसन्न होने वाली। तालाब पर होने वाले कुमुद पुष्पों से फैलने वाली सुगन्ध से युक्त।

427. **तडागेशी** – तालाब की ईश्वरी या मालकिन। तडाग नाम की एक योग मुद्रा भी होती है। उसकी स्वामिनी या उसे उत्पन्न करने वाली।

428. **तडागिनी** – तालाबों वाली अर्थात वहाँ या उसके किनारे स्थित। तडाग मुद्रा वाली अर्थात इस मुद्रा में विराजमान या इस मुद्रा से उपासना होती है जिनकी। अनेक तालाबों को धारण करने वाली।

429. **तडागनीरसंस्नाता** – तालाब के जल में सम्यक् रूप से स्नान करने वाली।

430. **तडागनीरनिर्मला** – तालाब के जल की तरह निर्मल या स्वच्छ रहने वाली।

431. **तडागकमलागारा** – निवास के लिए तालाब के कमलों को ग्रहण किया है जिसने। गृ धातु से आगार शब्द बनाने पर ग्रहण करना अर्थ आएगा। तालाब में खिले हुए कमल में है निवास स्थान जिनका। तालाब पर उगने वाले कमल हैं निवास स्थान जिनके।

432. **तडागकमलालया** – तालाब के जल में रहने वाली। कमल का एक अर्थ जल भी होता है। शोभासम्पन्न जल को कमल कहते हैं। कम् तत् अलति, जल जो सुशोभित होता है, वह कमल है। कमलों में लीन होने वाली अर्थात प्रवेश करने वाली। तालाब के कमल में लीन या छुपने वाली। आलीयते अत्र इति आलयः, जहाँ पर लोग सब ओर से आकर छिप जाते हैं वह है आलय या घर। दिन के समय लोग चाहे जहाँ जायें, रात को आकर घर में ही छुपते हैं। तालाब पर उगने वाले कमल हैं घर जिनके।

433. **तडागकमलान्तस्था** – तालाब पर उगने वाले कमलों के अन्दर निवास करने वाली।

434. **तडागकमलोद्यता** – सरोवर में उत्पन्न कमल के लिए उद्यत अर्थात उसे प्राप्त करने के लिए या ग्रहण करने के लिए उद्यत (तैयार)। तालाब पर होने वाले कमल के लिए उद्यत रहने वाली।

435. **तडागकमलाङ्गी** – तालाब पर उगने वाले सुन्दर कमलों के समान सुन्दर अंगो से युक्त।

436. **तडागकमलानना** – तालाब पर उगने वाले सुन्दर कमल के समान मुख वाली अर्थात सुन्दर मुख वाली। कमल सुन्दरता का प्रतीक है।

437. **तडागकमलप्राणा** – तालाब पर उगने वाले कमल हैं जिन्हें अतिशय प्रिय।

438. **तडागकमलेक्षणा** – तालाब पर उगने वाले कमलों के समान नेत्रों वाली।

439. **तडागरक्तपद्मस्था** – तालाब पर उगने वाले लाल कमलों में स्थित रहने वाली।

440. **तडागश्वेतपद्मगा** – तालाब पर उगने वाले सफेद कमलों में विचरने वाली या रहने वाली।

441. **तडागनीलपद्माभा** – तालाब पर उगने वाले नील कमलों के समान कान्ति वाली।

442. **तडागनीलपद्मभृत्** – तालाब पर उगने वाले नील कमलों को धारण करने वाली।

443. **तनु** – स्वयं में स्वल्प स्वरूप वाली। विस्तार करने वाली अर्थात संसार सागर का विस्तार करने वाली। तन् धातु में उणादि उ प्रत्यय लगाने से तनु शब्द बन जायेगा। विस्तारयुक्त अर्थात स्वयं विस्तार वाली। तन् धातु का अर्थ है विस्तार करना। तनु का अर्थ स्त्री, सुन्दर या बढ़िया, कोमल भी होता है। शरीर रूपा। प्रत्येक चीज शक्ति या ऊर्जा का रूपान्तरण हैं, देवी का अर्थ है शक्ति या ऊर्जा। शरीर भी ऊर्जा का रूपान्तरण होने के कारण देवी रूपा है।

444. **तनुगता** – छोटी से छोटी या सूक्ष्म से सूक्ष्म वस्तुओं में भी गई हुई अर्थात विराजमान। विस्तार को प्राप्त। सुन्दर गति वाली।

445. **तन्वी** – सुन्दरी। पतली जो सुन्दरता का प्रतीक है। कृशांगी रूपा अर्थात कृश अंगों वाली। तन्वी उस नारी को कहते है जो पतली एवं कोमल है। लक्षणा से सुन्दर अर्थ में यह शब्द प्रयुक्त होने लगा है।

446. **तन्वङ्गी** – पतले अवययों वाली। तनु+अंगी। छोटी–छोटी पूजा में भी पहुँच जाने वाली। अंगति का अर्थ है गच्छति अर्थात् गति करना। तनु अर्थात छोटा, छोटे से छोटे कणों में भी विद्यमान अर्थात सर्वव्यापा। कोमलांगी, नाजुक। सुन्दर अंगों वाली। अतिशय कृश रूप वाली। कृश गात्रों (शरीरों) वाली।

447. **तनुधारिणी** – शरीर धारण करने वाली। देवी निर्गुण निराकार और सगुण साकार दोनों रूपों में हैं। सगुण साकार रूप में शरीर धारण करती हैं। दुबले पतले अंगों को धारण करने वाली।

448. **तनुरूपा** – स्त्री स्वरूप वाली। तनु का एक अर्थ स्त्री भी होता है। तनुम् रूपयति इति तनुरूपा अर्थात स्त्रियों को देखने वाली, उन पर नजर डालने वाली। स्त्रियों का ख्याल करने वाली, उन पर विचार करने वाली। रूपयति का अर्थ है देखना, ख्याल करना, विचार करना। कृश अंगों से युक्त रूप को धारण करने वाली। स्त्री की रचना करने वाली। रूपयति का एक अर्थ रचना करना भी होता है। स्त्री के द्वारा ज्ञापित अर्थात बतायी जाने वाली। तात्पर्य है कि स्त्री में जो गुण हैं, वह देवी में हैं इस प्रकार से बताई जाने वाली। रूप्यते इति रूपा से रूपा का अर्थ ज्ञापिका हो जाता है।

449. **तनुगता** – हर शरीर में मौजूद है विराजमान है (चेतना के रूप में)। जो छोटी से छोटी वस्तुओं में भी अर्थात अणुओं और परमाणुओं में भी विराजमान हैं। जो विस्तार को प्राप्त है। तनु से विस्तार का बोध होता है और गत अर्थात प्राप्त। सुन्दर चाल वाली।

450. **तनुधृक्** – चर्म (Skin) को धारण करने वाली अर्थात स्थूल स्वरूप वाली। केंचुली को धारण करने वाली अर्थात नागिनी स्वरूपा। तनु का एक अर्थ चर्म, केंचुली भी होता है। दुबले पतले शरीर को धारण करने वाली।

451. **तनुरूपिणी** – श्रेष्ठ रूप को धारण करने वाली। कोमल रूप, सुन्दर रूप को धारण करने वाली। तनु का अर्थ सुन्दर, श्रेष्ठ, बढ़िया, दुबला पतला, कोमल होता है। दुबले पतले रूप को धारण करने वाली।

452. **तनुस्था** – शरीर में स्थित रहने वाली अर्थात आत्मस्वरूपा। शरीर में आत्मा का वास होता है। छोटे अर्थात अल्प स्वरूप में भी स्थित। तुच्छ चीजों में भी स्थित क्योंकि देवी सर्वव्यापी हैं।

453. **तनुमध्याङ्गी** – कृश मध्य भाग (कटि भाग) वाली।

454. **तनुकृत्** – सूक्ष्म से सूक्ष्म कार्य करने वाली। तनु अर्थात दुबले पतली रचना वाली। शुत्रओं को अल्प अर्थात कृश कर देने वाली।

455. **तनुमङ्गला** – जिनका शरीर, प्रतिमा या मूर्ति मंगलकारी है अर्थात उनके दर्शन से मंगल ही होता है। विस्तृत मंगलों वाली अर्थात मंगलों की कोई सीमा नहीं है जिसे वे देती हैं। तनोति का अर्थ है विस्तार करना जिससे तनु शब्द बनता है। अतः तनु का अर्थ विस्तृत या बहुत बड़ा लिया गया है। अतिशय श्रेष्ठ मंगल रूपा।

456. **तनुसेव्या** – भक्तों के शरीरों द्वारा सेवित। शरीर रूप धारण करती हैं सेवा के लिए। भक्तों के द्वारा सदैव सेवनीय।

457. **तनुजा** – पुत्री या कन्यास्वरूपा। पार्वती जी हिमालय की पुत्री या कन्या के रूप में उत्पन्न हुईं थी। प्रकृति के रूप में उत्पन्न। योग के एक क्लेश के रूप में अस्तित्व वाली। योग में अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश इन चारों क्लेशों का एक भेद तनु है जिसमें चित्त में क्लेश की अवस्थिति तो होती है पर साधन या सामग्री आदि के कारण उस क्लेश की सिद्धि नहीं होती। कोई भी चीज जिसका अस्तित्व है, ऊर्जा या शक्तिरूप है। अतः प्रत्येक चीज देवीरूप है क्योंकि देवी का अर्थ है शक्ति या ऊर्जा। कृश अंगों को धारण कर उत्पन्न होने वाली।

458. **तनुजातनुसम्भवा** – जो विस्तृत अर्थात विशाल रूप से उत्पन्न हुई हैं और जो सूक्ष्म रूप से उत्पन्न हुई हैं। विस्तृत से विस्तृत और सूक्ष्म से सूक्ष्म रूप से उत्पन्न होने वाली। तनोति से तनु बनायेंगे तो अर्थ होगा विस्तृत। तनु का अर्थ छोटा या सूक्ष्म भी होता है।

459. **तनुभृत्** – शरीरों का भरण पोषण करने वाली। शरीर को धारण करने वाली। प्रकृति को धारण करने वाली। तनु का एक अर्थ है प्रकृति। शरीरों में भरी हुई अर्थात व्याप्त। प्रकृति में भरी हुई अर्थात व्याप्त।

460. **तनुसम्भूता** – प्रकृति के रूप में सम्यक् प्रकार से सत्तावान। भू सत्तायाम् धातु होती है। प्रकृति में उत्पन्न। दुबले पतले शरीर के रूप में उत्पन्न होने वाली।

461. **तनुदा** – विश्वरूपी शरीर का दान करने वाली अर्थात बनाने वाली। विश्वरूपी शरीर का अवखण्डन करने वाली या नष्ट करने वाली। यदि शब्द का अन्तिम दा अक्षर दो अवखण्डने धातु से बनता है तो वहाँ अर्थ अवखण्डन करना या नाश करना हो जाता है। सुन्दर श्रेष्ठ पदार्थो को देने वाली।

462. **तनुकारिणी** – शरीर को बनाने वाली अर्थात सभी प्राणियों के शरीर का निर्माण करती हैं। छोटे से छोटे कार्य को भी करने वाली। सुन्दर, श्रेष्ठ या अच्छे कार्यों को करने वाली।

463. **तनुभृत्** – विश्व है शरीर, विश्व रूपी शरीर का भरण पोषण करने वाली। सुन्दर अर्थात उत्तम पदार्थों को धारण करने वाली। तनु का अर्थ है शरीर, सुन्दर।

464. **तनुसंहन्त्री** – शरीर का संहार करने वाली। अन्तकाल में शरीर का नाश हो जाता है। सूक्ष्म से सूक्ष्म वस्तु को भी अपने में समेटने वाली।

465. **तनुसञ्चारकारिणी** – सूक्ष्म रूप से संचार करने वाली अर्थात आवागमन या निरन्तर गति करने वाली। सुन्दर रूप में विचरण करने वाली।

466. **तथ्यवाक्** – सत्य प्रतिज्ञा वाली। जिनकी वाक् इन्द्रिय (जिह्वा) सत्य वचनों से युक्त है।

467. **तथ्यवचना** – जिनसे निकले हुए बोल सत्य होते हैं। सत्य वचनों वाली।

468. **तथ्यकृत्** – सत्य कार्य करने वाली।

469. **तथ्यवादिनी** – सत्य बोलने वाली।

470. **तथ्यभृत्** – सत्य को धारण करने वाली।

471. **तथ्यचरिता** – सत्य चरित (जीवन) से युक्त या सत्य जीवन जीने वाली।

472. **तथ्यधर्मानुवर्तिनी** – सत्य धर्म का अनुसरण करने वाली अर्थात उस पर चलने वाली। तथ्य अर्थात जो जैसा है वैसा बताना। सत्य धर्म के अनुसार व्यवहार करने वाली।

473. **तथ्यभुज्** – सत्य का सेवन करने वाली।

474. **तथ्यगमना** – सत्य पर चलने वाली। सत्य का मार्ग अर्थात सन्मार्ग पर चलने वाली।

475. **तथ्यभक्तिवरप्रदा** – सत्य भक्ति को करने वाले भक्तों को वर देने वाली।

476. **तथ्यनीचेश्वरी** – वास्तविक अर्थ की गहराई/गम्भीरता की ईश्वरी अर्थात सत्यता की गंभीरता की भी ईश्वरी। तलगत सत्य की ईश्वरी। केवल ऊपर की सच्चाई नहीं अपितु तल या bottom तक की सच्चाई है। नीच का अर्थ निम्न होता है अर्थात नीचे तक।

477. **तथ्यचित्ताचाराशुसिद्धिदा** – सत्य से युक्त चित्त, जिनका चित्त सत्य के आचरण में लगा है उनको जल्दी सिद्धि देने वाली। आशु का अर्थ है शीघ्र या जल्दी।

478. **तर्क्या** – तर्क के योग्य अर्थात जिन पर चर्चा, तर्क – वितर्क किया जाता है।

479. **तर्क्यस्वभावा** – बुद्धि या तर्क का विषय बनने के स्वभाव वाली। कोई कहता है ईश्वर का अस्तित्व है, कोई कहता है नहीं है। कोई कहता है विश्व की शक्ति है, कोई कहता है विश्व की शक्ति नहीं है, कोई कहता है निर्गुण है कोई कहता है सगुण है इस प्रकार बुद्धि का विषय बनाया जाता है। तर्क योग्य है स्वभाव जिनका।

480. **तर्कदाया** – जिसके पास तर्क रूपी देने वाली वस्तु है। तात्पर्य है सभी मनुष्यों को तर्क शक्ति देने वाली या अपने भक्तों को श्रेष्ठ तर्क शक्ति देने वाली। दाय का अर्थ है दहेज या वस्तु जिसे दिया जाता है जो तर्क से रहित है अर्थात् बुद्धि से परे चले गये है उनके द्वारा जिन्हें प्राप्त किया जाता है। दो अवखण्डने धातु होती है जिसमें ड प्रत्यय लगाकर दा शब्द बनता है जिसका अर्थ है खण्डित करने वाली या नष्ट करने वाली। तर्कम् द्यति इति तर्कदः, तैः अय्यते प्राप्यते सा तर्कदाया। ईश्वर तभी मिलते है जब मनुष्य मनबुद्धि से परे चला जाता है, तर्क बुद्धि का ही कार्य है। तर्क देने वाली अर्थात तर्कशक्ति या तर्कबुद्धि देने वाली। तर्क की शक्ति को देने वाली। शब्दकल्पद्रुम में दाय दाने लिखा हुआ है। तर्क में खण्डन, मण्डन होता है। तर्क बुद्धि देने वाली। दाय का अर्थ दहेज है जिसका तात्पर्य देने से है। तर्क का विच्छेद करने वाली अर्थात जिन पर तर्क लागू नहीं होता है। दो अवखण्डने से दा शब्दाक्षर बनाने पर विच्छेद करना अर्थ आता है।

481. **तर्ककृत्** – तर्क करने वाली। विचार कर चुकी है जो अर्थात विचार करने वाली। कृ करोति धातु में क्विप् प्रत्यय लगाने से तुक् का आगम होकर कृत् शब्द बनता है। तर्क–संग्रह ग्रन्थ में किसी विषय को विचारपूर्वक ग्रहण करने अर्थात जानने को तर्क कहा गया है। तर्क का खण्डन करने वाली। नास्तिकों के द्वारा जो भी तर्क दिये जाते हैं, अपने सच्चे भक्त में बैठकर विराधियों के तर्क काट देती हैं। कृती छेदने धातु होती है।

482. **तर्काध्यापनमध्यस्था** – तर्क के विद्या के अध्यापन के मध्य में विराजमान हो जाने वाली।

483. **तर्काध्यापनकारिणी** – तर्क विद्या का अध्यापन कराने वाली।

484. **तर्काध्यापनसन्तुष्टा** – तर्क विद्या के अध्यापन से सन्तुष्ट (प्रसन्न) रहने वाली।

485. **तर्काध्यापनरूपिणी** – तर्क विद्या के अध्यापन के स्वरूप वाली।

486. **तर्काध्यापनसंशीला** – तर्क विद्या के अध्यापन के सुन्दर स्वभाव वाली।

487. **तर्कार्थप्रतिपादिता** – विद्वानों ने तर्क के द्वारा जिस अर्थ को प्रतिपादित किया हे अर्थात बताया है। अर्थ अर्थात वस्तु अर्थात जिसका अस्तित्व है। दार्शनिकों ने तर्कों के द्वारा सिद्ध किया है कि आत्मा या ईश्वर का अस्तित्व होता है।

488. **तर्काध्यापनसन्तृप्ता** – तर्क के अध्यापन से या तर्क विद्या के अध्यापन से सम्यक् रूप से तृप्त हो जाने वाली।

489. **तर्कार्थप्रतिपादिका** – तर्क के द्वारा वास्तविक अर्थ को समझाने वाली। तर्क के द्वारा सिद्धान्त का प्रतिपादन करने वाली। पक्ष प्रतिपक्ष ये दो जिसमें हो ऐसी चर्चा तर्क कहलाती है। पूर्व पक्ष – उत्तर पक्ष वस्तु के ज्ञान को बुद्धि विषयक बनाते हैं अर्थात तर्क ज्ञान को बुद्धिविषयक बनाता है। तर्क के द्वारा सत्य अर्थ का प्रतिपादन करने वाली।

490. **तर्कवादाश्रितपदा** – तर्कवाद के लिए प्रयुक्त होने वाली शब्दावली स्वरूपा। तर्कवाद में पूर्व पक्ष और उत्तर पक्ष का विचार होता है, गुणदोष का विचार होता है। तर्कवाद के आश्रित है पद जिनके। पद का अर्थ है जिसमें सुबन्त या तिङ्न्त प्रत्यय लगेगा। श्लोक में पद रहते हैं।

491. **तर्कवादविवर्धिनी** – तर्क के द्वारा वाद – विवाद प्रक्रिया को बढ़ाने वाली।

492. **तर्कवादैकनिपुणा** – तर्क वाद में एकमात्र अर्थात सबसे अधिक निपुण। एक का अर्थ प्रधान या सबसे अधिक या परम भी होता है। तर्क के द्वारा वाद विवाद करने में चतुर।

493. **तर्कवादप्रचारिणी** – शास्त्रार्थ का प्रचार करने वाली। एक दूसरे के साथ तर्क करना तर्कवाद या शास्त्रार्थ है। ईश्वर है, नहीं है, ऐसा है, वैसा है इस प्रकार बुद्धि से करना तर्कवाद या शास्त्रार्थ है। तर्क के द्वारा जो वाद विवाद हैं, उससे सत्यविद्या का प्रचार करने वाली या प्रकाशित होने वाली।

494. **तमालदलश्यामाङ्गी** – तमाल के पत्ते के समान श्यामले अंग वाली।

495. **तमालदलमालिनी** – तमाल के पत्तों की माला धारण करने वाली।

496. **तमालवनसंकेता** – तमाल का वन है पता जिनका।

497. **तमालपुष्पपूजिता** – तमाल के फूलों द्वारा पूजित।

498. **तगरी** – तगर वृक्ष के सुगन्धित पुष्प के समान गन्ध वाली अर्थात यशस्विनी। तगर वृक्ष के समान शुभ गुणों वाली। श्रेष्ठ तगर के गुणों से युक्त रहने वाली। तं का अर्थ क्रोडभाग अर्थात गोद भी होता है। गृ धातु का अर्थ उद्गिरण करना अर्थात बताना भी होता है। गोद से युक्त हूँ, ऐसा बताने वाली। गणेश जी और कार्तिकेय के लिए उनकी गोद है, ऐसा बताने वाली।

499. **तगराराध्या** – श्रेष्ठ तगर के द्वारा आराधना के योग्य। तगर को पूजा में चढ़ाया जाता है। तगर एक प्रकार का औषधि वृक्ष है।

500. **तगरार्चितपादुका** – तगर के द्वारा जिनकी पादुकाये पूजित हुई हैं।

501. **तगरस्रक्सुसन्तुष्टा** – तगर से बनी माला से अत्यन्त सन्तुष्ट रहने वाली। यह सुगन्धित होती होगी। तगर की माला के द्वारा अतिशय सन्तुष्ट होने वाली।

502. **तगरस्रग्विराजिता** – तगर की माला के द्वारा सुशोभित होने वाली।

503. **तगराहुतिसन्तुष्टा** – तगर के द्वारा दी जाने वाली आहुतियों से सन्तुष्ट हो जाने वाली।

504. **तगराहुतिर्कीतिदा** – तगर की आहूति के द्वारा अर्थात तगर की आहूति करने पर कीर्ति देने वाली।

505. **तगराहुतिसंसिद्धा** – तगर की आहुति के द्वारा सम्यक् रूप से सिद्ध होने वाली। सम्यक् रूप से अर्थात पूर्ण रूप से या अच्छी तरह से। सिद्ध का अर्थ है काम करने के लिए हमेशा उपलब्ध, ज्ञात, प्राप्त।

506. **तगराहुतिमानदा** – तगर की आहुति के द्वारा मान सम्मान या प्रतिष्ठा देने वाली।

507. **तडित्** – बिजली स्वरूपिणी। बिजली की तरह देदीप्यमान। बिजली की तरह शुत्रुओं पर टूट पड़ने वाली।

508. **तडिल्लताकारा** – विद्युत लता के समान आकृति वाली। बिजली की आकृति कोणीय रेखा की तरह होती है। बिजली सीधी रेखा में नहीं चलती है बल्कि कई शाखाऐं हो जाती हैं और Zig-Zag (कोणीय रेखा) आकार की होती हैं। लता में भी शाखाऐं होती हैं और बिजली में भी शाखाऐं हैं। लता भी जमीन से निकलकर ऊपर या अगल बगल फैलती है। बिजली भी कहीं से उत्पन्न होकर ऊपर या नीचे फैलती है। इस कारण बिजली को लता भी कहा जाता है। विद्युल्लता का अर्थ है लता के आकार वाली विद्युत। विद्युल्लता का अर्थ केवल विद्युत भी होता है। तडिल्लताकारा शब्द का अर्थ हुआ बिजली की तरह कोणीय रेखाकृति वाली। ऐसा लगता है कि यह शब्द बिजली के सभी गुणों (चमक, शत्रुओं पर टूट पड़ना, गर्जना से डराना, आग लगा देना आदि) को अपने में आत्मसात् किये हुए, यह कहना चाहता है।

509. **तडिच्चंचललोचना** – विद्युत के समान चंचल नेत्रों वाली।

510. **तडिल्लता** – बिजली की तरह अन्तर्धान होने वाली अर्थात क्षण भर के लिए प्रकट हुई और फिर गायब हो गई। विद्युत लता के समान सुन्दर।

511. **तडित्तन्वी** – विद्युत के समान कृश अंगों वाली।

512. **तडिद्दीप्ता** – विद्युत के समान चमकने वाली। दीप्ति अतिविस्तीर्ण कान्ति है। साहित्य दर्पण में आया है कि रूप, युवावस्था, कोमलता के कारण जो शारीरिक सौन्दर्य होता है, वह शोभा है। जब काम भावना का भी अंकुरण हो जाता है तो बढ़ी हुई शोभा कान्ति है। जब काम–भावना का उपभोग होने लगता है तो कान्ति और बढ़ जाती है जिसे दीप्ति कहते हैं। यह नाम और अगला नाम अर्थ की दृष्टि से एक जैसे हैं। एक नाम में बिजली के द्वारा प्रकाशित होने वाली एवं दूसरे नाम में बिजली की तरह प्रकाशित होने वाली, ऐसा अर्थ कर सकते हैं। बिजली की तरह चमकयुक्त अर्थात बहुत तेज चमक वाली। बिजली की चमक तेज किन्तु क्षणिक होती है। देवी का तेज बिजली की तरह बहुत अधिक है किन्तु क्षणिक नहीं है। यहाँ समानता मात्रा में है। बिजली की चमक में विराजमान। बिजली की चमक का कारण।

513. **तडित्प्रभा** – बिजली के प्रकाश में विराजमान। बिजली के प्रकाश का कारण। शब्द के आगे ''में विराजमान'' या ''का कारण'' लगाने से शब्द के अन्य अर्थ आ जाते हैं। बिजली को भी अधिक चमकाने वाली अर्थात बिजली की चमक का कारण। सभी प्रकाशयुक्त पदार्थों में उनकी उनके प्रकाश या चमक का कारण देवी ही हैं। बिजली की तरह अधिक चमक वाली। तडितप्रभा+आ। आ का अर्थ है देना। ऐसी प्रभा को देने वाली। तडितप्रभा+आ। आ का अर्थ है नाश करना। ऐसी प्रभा का नाश करने वाली। बिजली से निकलने वाली प्रभा के स्वरूप वाली। तडित् + प्रभा + आ, बिजली को प्रकाश देने वाली। आ का एक अर्थ है देना। विद्युत की किरण या प्रकाश स्वरूपा। प्रभा का अर्थ किरण, प्रकाश होता है। प्र उपसर्ग लगने से प्रभा का अर्थ है अधिक प्रकाश। भा दीप्तौ धातु होती है। विद्युत की प्रभा से युक्त। विद्युत लता के समान कान्ति वाली। प्रभा का अर्थ दीप्ति, चमक, शोभा, छवि, किरण होता है। बिजली में व्याप्त चमक या शोभा स्वरूपा। बिजली के प्रकाश में विराजमान। बिजली के प्रकाश का कारण। शब्द के आगे ''में विराजमान'' या ''का कारण'' लगाने से शब्द के अन्य अर्थ आ जाते हैं।

514. **तद्रूपा** – ब्रह्म स्वरूपिणी। तत् का एक अर्थ ब्रह्म है। हेतु (कारण) रूपिणी। तत् का एक अर्थ हेतु भी होता है।

515. **तत्स्वरूपेशी** – ब्रह्मस्वरूपा ईश्वरी अर्थात ऐसी ईश्वरी जो ब्रह्मस्वरूपा है। ब्रह्मस्वरूप की ईश्वरी।

516. **तन्मयी** – शिव में तल्लीन। तन्मय का एक अर्थ है तल्लीन। मयी शब्द स्वरूप का अर्थ भी देता है और युक्त होने का भी अर्थ देता है। ब्रह्म से युक्त है जो। ब्रह्ममयी।

517. **तत्वरूपिणी** – वस्तु का सारस्वरूपा। वस्तुमात्र में जो अनिर्वचनीय भाव है तत्स्वरूपा। ब्रह्म स्वरूपा। तत् त्वम् असि वाक्य में ब्रह्म को ही जगत का तत्व बताया गया है। तत्व वह है जिससे कोई चीज बनती है। पंचतत्व अर्थात क्षिति जल, पावक, गगन, समीर स्वरूपा। तत्व स्वरूपा या जगत का सार स्वरूपा।

518. **तत्स्थानदाननिरता** – परम पद स्थान को प्रदान करने में संलग्न रहने वाली। परम पद अर्थात ब्रह्म पद, मोक्ष, आत्मसाक्षात्कार।

519. **तत्कर्मफलदायिनी** – मुख्य कर्म अर्थात असली कर्म अर्थात वैदिक कर्म (श्रौतयाग) का फल देने वाली। श्रेष्ठ कर्मों के फलों को प्रदान करने वाली।

520. **तत्वकृत्** – सांख्य के 25 तत्वों का निर्माण करने वाली। तत्व विद्या या तत्व मीमांसा को बनाने वाली या प्रतिष्ठित करने वाली।

521. **तत्वदा** – तत्व (सत्य) को प्रदान करने वाली।

522. **तत्वा** – तत्व स्वरूपा या जगत की सार स्वरूपा।

523. **तत्वविद्** – तत्व को जानने वाली। तत्व का अर्थ है परमात्मा या ब्रह्म, पंचभूत, सार वस्तु, वास्तविक स्थिति, जगत का मूल कारण, सांख्य दर्शन के 25 तत्व, न्याय दर्शन के 16 तत्व, वैशेषिक दर्शन के 6 तत्व और शैव दर्शन के 36 तत्व।

524. **तत्वतर्पिता** – पंच तत्व या वस्तु मात्र के सार से तृप्त रहने वाली। तत्व के द्वारा सन्तृप्त होने वाली।

525. **तत्वार्च्या** – पाँच महाभूतों अर्थात क्षिति, जल, पावक, गगन और समीर इनके द्वारा अर्चनीय अर्थात इन्हें विग्रह में चढ़ाया जाता है। गन्ध अर्थात पृथ्वी, नैवेद्य अर्थात जल तत्व, धूप अर्थात वायु तत्व, पुष्प अर्थात आकाश तत्व, दीप अर्थात अग्नि तत्व इन्हें देवताओं को भौतिक रूप से या मानसिक रूप से चढ़ाया जाता है। ये पाँच तत्व भगवान के भी रूप कहे गये हैं। इस प्रकार इस नाम का अर्थ इन पाँच तत्वों के स्वरूप में अर्चनीय भी कर सकते हैं। तत्व के द्वारा पूजा के योग्य। ज्ञान रूपी तत्व द्वारा पूजा के योग्य।

526. **तत्वपूज्या** – आत्मतत्व, विद्या तत्व और शिव तत्व इनके द्वारा पूजनीय। शैव दर्शन के 36 तत्वों का समाहार इन तीन तत्वों में किया गया है। पंचभूत रूपी तत्वों के द्वारा पूजा करने योग्य। तत्वों के द्वारा पूजनीय।

527. **तत्वार्घ्या** – तत्वों के द्वारा जिन्हें अर्घ्य दिया जाता है। पंच तत्व अर्थात क्षिति, जल, पावक, गगन और समीर इनके द्वारा अर्घ दिए जाने योग्य।

528. **तत्वरूपिणी** – तत्वस्वरूपिणी। शैव दर्शन के 36 तत्वों के स्वरूप वाली। तत्वरूप अर्थात ब्रह्म या चैतन्य से युक्त। तत्व रूप होना है स्वभाव जिनका।

529. **तत्वज्ञानप्रदानेश्वरी** – तत्व ज्ञान को प्रदान करने वाली ईश्वरी। तत्वज्ञान अर्थात ब्रह्म, आत्मा और सृष्टि आदि के सम्बन्ध का यथार्थ ज्ञान। ऐसा ज्ञान जिससे मनुष्य को मोक्ष मिल जाए। तत्व ज्ञान में ब्रह्माण्ड या जगत का मूल कारण ज्ञात होता है।

530. **तत्वज्ञानसुमोक्षदा** – तत्व ज्ञान के द्वारा सुन्दर मोक्ष प्रदान करने वाली।

531. **त्वरिता** – त्वरित अर्थात शीघ्र ही सद्गति देने वाली। भक्तों की प्रार्थना पर शीघ्र ही दौड़कर आने वाली।

532. **त्वरितप्रीता** – शीघ्र या तुरन्त प्रसन्न होने वाली।

533. **त्वरितार्तिविनाशिनी** – शीघ्र ही पीड़ा को नष्ट कर देने वाली।

534. **त्वरितासवसन्तुष्टा** – ताजी मदिरा अर्थात जो अभी अभी निकाली गई है उस मदिरा को पीने से प्रसन्न होने वाली। शीघ्र ही ज्ञान रूपी आसव से सन्तुष्ट होने वाली।

535. **त्वरितासवतर्पिता** – सद्योजात या ताजीशराब पीने से तृप्त हो जाने वाली। शीघ्र ही ज्ञान रूपी आसव से सन्तृप्त हो जाने वाली।

536. **त्वग्वस्त्रा** – वल्कल वस्त्रों से सुशोभित होने वाली।

537. **त्वक्परीधाना** – वल्कल वस्त्रों को पहनने वाली।

538. **तरला** – चंचला। एक जगह स्थिर न रहने वाली लक्ष्मी जी से अभेद है जिनका।

539. **तरलेक्षणा** – चंचल नेत्रों वाली।

540. **तरक्षुचर्मवसना** – व्याघ्र के चमड़े को धारण करने वाली।

541. **तरक्षुत्वग्विभूषणा** – व्याघ्र के चर्म से विभूषित (सुशोभित) होने वाली।

542. **तरक्षु** – व्याघ्र के समान बलशालिनी (दैत्यों के समक्ष)। तरम् बलम् क्षिणोति इति तरक्षु। व्याघ्र के समान अतिशय तेजस्विनी अर्थात तेज को धारण करने वाली।

543. **तरक्षुप्राणा** – व्याघ्र के समान अतिशय शक्ति से युक्त।

544. **तरक्षुपृष्ठगामिनी** – व्याघ्र की पीठ पर सवार होकर चलने वाली या प्रस्थान करने वाली।

545. **तरक्षुपृष्ठसंस्थाना** – व्याघ्र या शेर की पीठ पर ठीक ठीक बैठी हुई। तरम् बलम् क्षिणोति अर्थात जो दूसरे के बल को नीचा कर दे वह तरक्षु है अर्थात लकड़बघ्घा, शेर, व्याघ्र तरक्षु हैं। व्याघ्र के पृष्ठ भाग पर अच्छी प्रकार से स्थित रहने वाली।

546. **तरक्षुपृष्ठवासिनी** – शेर या व्याघ्र की पीठ पर आसन है जिसका। वस् आच्छादने धातु होती है जिससे वास का अर्थ कपड़ा अर्थात आसन किया जा सकता है। पिछले नाम में बिना आसन के बैठ सकती थी जबकि इस नाम के अनुसार आसन वाली अर्थ हुआ। व्याघ्र के पृष्ठ भाग पर अर्थात पीठ पर वास करने वाली।

547. **तर्पितोदैस्तर्पणाशा** – तृप्त कर देने वाले जल से तर्पण की आशा वाली अर्थात भक्तों से आशा करती हैं कि तर्पण करें। नियत आकांक्षा आशा है। उद का अर्थ है उदक अर्थात जल। आपने उदपान शब्द सुना होगा। उत्कृष्ट कोटि के (दिव्य, साक्षात) अमृत से तृप्त या उठी हुई कुण्डिलिनी से तृप्त। उत्+ऐः, ऐ का अर्थ है अमृत या कुण्डिलिनी।

548. **तर्पणाशा** – तर्पण की आशा रखने वाली। लोग उनका तर्पण करें यह आशा रखने वाली।

549. **तर्पणासक्तमानसा** – तर्पण में लगी हुई ह्रदय वाली।

550. **तर्पणानन्दहृदया** – तर्पण करने से आनन्दित होने वाला है हृदय जिनका।

551. **तर्पणाधिपति** – तर्पण क्रिया की अधिपति अर्थात पितरों को तृप्त करने की जो विधि है, उसके अधिकार क्षेत्र में आती है। तर्पण विधि को बनाने वाली। तर्पण क्रिया की स्वामिनी।

552. **तति** – अत्यधिक विस्तार रूप वाली अर्थात सर्वव्यापक स्वरूप वाली। तनोति इति तति। मतम् विस्तारयति, शैव या शाक्त सिद्धान्त का विस्तार करने वाली। विस्तारयति या तनोति से ति ले लिया। ऐसे शब्द जो त से आरम्भ होते हैं उनसे त ले लिया। इस प्रकार अर्थ बन जायेंगे। प्रायः आरम्भ के अक्षर को लिया जाता है पर आवश्यकता पड़ने पर बीच का या बाद का अक्षर भी ले लिया जाता है।

553. **त्रयीमयी** – तीन वेदों से युक्त रहने वाली। यहाँ वेदत्रयी से तात्पर्य चारों वेदों से भी है क्योंकि वेद तीन प्रकार के होते हैं। गद्य में, पद्य में और गीत में होते हैं। गीतमय जो गाया जाता है, रोचकता के कारण मनमोहक लगता है अर्थात सामवेद। ऋग्वेद पद्य में है और यजुर्वेद गद्य में है।

554. **त्रयीसेव्या** – वेदों के द्वारा सेवनीय अर्थात पूजनीय। वेदों की साधना करने वालों द्वारा सेवित।

555. **त्रयीपूज्या** – वेदों के रूप में पूजनीय। तीनों वेदों के रूप में पूजनीय। चारों वेदों के रूप में पूजनीय।

556. **त्रयीकथा** – तीनों वेदों में जिसकी चर्चा की गई है।

557. **त्रयीभव्या** – सुन्दर वेद स्वरूपी। त्रयीभव्या अर्थात भव्यत्रयी, जैसे श्यामघन घनश्याम हो जाता है उसी प्रकार भव्या त्रयी त्रयीभव्या हो जाता है। भव्यता ऐसी सुन्दरता है जो दूसरों को प्रभावित करती है। भव्य का अर्थ विशाल और सुन्दर भी होता है। तीनों वेदों में जिनके भव्य स्वरूप का प्रतिपादन हुआ है।

558. **त्रयीभाव्या** – तीनों वेदों के द्वारा जो भावित हैं अर्थात जिनकी भावना की गई, विचार किया गया या ध्यान किया गया।

559. **त्रयीहव्या** – तीनों प्रकार के वेदों अर्थात सभी वेदों के श्रेष्ठ मन्त्रों के द्वारा जिनका हवन किया जाता है।

560. **त्रयीयुता** – तीन प्रकार के वेदों अर्थात चारों वेदों के ज्ञान से युक्त।

561. **त्र्यक्षरी** – ऊँ रूप में। ऊँ के तीन अक्षर अ, उ और म हैं। तीन अक्षारों वाले मन्त्र के स्वरूप में।

562. **त्र्यक्षरीशानी** – तीन अक्षरों अर्थात अ, उ और म की स्वामिनी, ज्ञात्री या उपदेश देने वाली। उनके सम्पूर्ण रूपों को समझने वाली।

563. **त्र्यक्षरीशीघ्रसिद्धिदा** – ऊँ का जप करने पर शीघ्र सिद्धि देने वाली। जो देवी के त्रयक्षरी स्वरूप को जान लेता है उसे शीघ्र सिद्धि प्रदान करने वाली।

564. **त्र्यक्षरेश्वरी** – त्रयक्षर ब्रह्म की उपासनीया। ब्रह्म अर्थात ओम्। अ, उ और म इन तीन अक्षरों वाला ओम् ब्रह्म है। ओम् को उत्पन्न करने वाली यह अर्थ भी किया जा सकता है। तीनों अक्षरों की ईश्वरी।

565. **त्र्यक्षरीस्था** – ओम् के तीनों अक्षरों में शक्ति रूप में स्थित। बालात्रिपुरसुन्दरी मन्त्र के तीनों अक्षरों में शक्ति रूप में स्थित। कभी कभी अक्षर से तात्पर्य स्वर से ही लिया जाता है अर्थात मन्त्र में जितने स्वर होंगे उतने अक्षर होंगे। बालात्रिपुरसुन्दरी के मन्त्र में चार अक्षर होते हुए भी त्र्यक्षरी माना जाता है क्योंकि उसमें तीन ही स्वर हैं। तीनों अक्षरों में स्थित।

566. **त्र्यक्षरीपुरुषास्पदा** – ऊँ के तीन अक्षरों से ज्ञापित होने वाले चैतन्य या ब्रह्म में है निवास स्थान जिसका। पुरुष अर्थात पुर (शरीर) में शयन करने वाला अर्थात चैतन्य अर्थात ब्रह्म। तीन अक्षरों से ज्ञापित होने वाले ब्रह्मा, विष्णु और महेश नामक पुरुषों में शक्ति रूप में रहने वाली। ओम् के तीन अक्षरों से प्रकटित। ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश में रहने वाली शक्ति स्वरूपा। ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश ओम् के तीन अक्षरों से व्यक्त होने वाले तीन पुरुष हैं। त्र्यक्षर से तात्पर्य भू, भुवः, स्वः या अ, उ, म। ऊँ ही है त्र्यक्षरी पुरुष, इसमें रहने का स्थान है जिसका। तीनों लोकों में रहने वाली।

567. **तपना** – सूर्य स्वरूपा या अग्नि स्वरूपा। सूर्य या अग्नि की शक्तिस्वरूपा। तपने की क्रिया या भाव तपस्या है। तपने वाली अर्थात तपस्यास्वरूपा।

568. **तपनेष्टा** – सूर्य ने जिनके लिए तप किया। सूर्य के रूप में इच्छित या पूजनीय। इष् धातु से इष्ट बनाने पर इच्छित अर्थ निकलता है तथा यज् धातु से इष्ट बनने पर पूजनीय अर्थ निकलता है। तपन का अर्थ है सूर्य। तपस्या द्वारा सिद्ध हो जाने वाली।

569. **तपस्** – तपस्यास्वरूपिणी। तपस्या का अर्थ है वे नियम या व्रत जिससे शरीर को कष्ट होता है, जिनका पालन चित्त को शुद्ध करने और व्यसनों से हटाने के लिए किया जाता है।

570. **तपनकन्यका** – सूर्य की पुत्री अर्थात यमुना स्वरूपा। अग्नि की सन्तान अर्थात शमीवृक्ष स्वरूपा। तपस्या के द्वारा प्रदीप्त होने वाली।

571. **तपनांशुसमासह्या** – सूर्य की किरणों के समान असह्य अर्थात उग्र या प्रचण्ड। जिसे दैत्य सहन नहीं कर पाते। तपस्या की जो प्रभा या कान्ति है, उस कान्ति के द्वारा अनन्त काल तक सहन करने योग्य।

572. **तपनकोटिकान्तिकृत्** – करोड़ों सूर्य के समान प्रकाश करने वाली अर्थात उनके शरीर से निकलने वाला प्रकाश करोड़ों सूर्य जितना होता है। यह प्रकाश झुलसाता नहीं है बल्कि व्यक्ति को आनन्द में डुबो देता है। करोड़ों सूर्यों की कान्ति करने वाली अर्थात करोड़ों सूर्यों की कान्ति वाली। कोटि का अर्थ अनन्त या अनेक, अग्रभाग या चोटी होती है। प्रचण्ड तपस्या के द्वारा प्राप्त होने वाली दिव्य कान्ति से सुशोभित देवी।

573. **तपनीया** – स्वर्ण वाली अर्थात स्वर्ण के आभूषणों से युक्त। स्वर्णस्वरूपा। स्वर्ण की शक्ति स्वरूपा। तपनीय का एक अर्थ स्वर्ण भी होता है। तपस्या के योग्य अर्थात तप के द्वारा जिन्हें प्राप्त किया जा सकता है।

574. **तल्पगता** – शैय्या पर सुशोभित होने वाली। तल्प का अर्थ है शैय्या अर्थात जिस पर लेटा जाता है। जड़ जगत रूपी शैय्या पर चेतन रूप से विद्यमान। देवी चेतन भी है और जड़ भी है। जड़ जगत को अगर शैय्या माना जाए तो उस जड़ जगत में विराजमान चैतन्य शैय्या में गया हुआ होगा। गद्दे में सोया जाता है, सारा जगत ब्रह्म में सोता है अतः शिव या ब्रह्म ही गद्दा (तल्प) है। ब्रह्म में गई अर्थात विराजमान।

575. **तल्पा** – बिस्तर स्वरूपा अर्थात आधार स्वरूपा। पूरा विश्व जिस पर लेटा है अर्थात विराजमान है। श्रेष्ठ दिव्य शैय्या स्वरूपा। हर चीज ऊर्जा की बनी है और ऊर्जा है शक्ति या देवी। इस प्रकार शैय्या भी देवी स्वरूपा हुई।

576. **तल्पविधायिनी** – शैय्या या महल को बनाने वाली। तल्प का अर्थ शैय्या, अट्टालिका (महल), स्त्री होता है। सुख की शैय्या या पुष्पों की शैय्या या उत्तमोतम ज्ञान राशि रूपी शैय्या को बनाने वाली, सम्पादित करने वाली।

577. **तल्पकृत्** – अट्टालिका अर्थात महल को बनाने वाली। कोमल आसन को बनाने वाली। सुखरूपी शैय्या का निर्माण करने वाली। श्रेष्ठ ज्ञान शैय्या की रचना करने वाली।

578. **तल्पगा** – अट्टालिका अर्थात महलों में विचरण करने वाली। श्रेष्ठ ज्ञान शैय्या पर विराजमान रहने वाली।

579. **तल्पदात्री** – बिस्तर की तरह आराम देने वाली अर्थात कष्टों को दूर करने वाली या सुख देने वाली। तल्प का अर्थ होता है बिस्तर जो आराम पाने का प्रतीक है। सुन्दर भार्या या अट्टालिका (महल) को देने वाली। सुख रूपी शैय्या या श्रेष्ठ ज्ञान रूपी शैय्या को प्रदान करने वाली।

580. **तल्पतलाश्रया** – पृथ्वी का आधार अर्थात उसे भी धारण करने वाली। तल्प का अर्थ होता है शैय्या या गद्दा। गद्दा या शैय्या का आधार जमीन ही है जो पृथ्वी स्वरूपा है। तल्पतल है पृथ्वी। परम आनन्द का कारण। शैय्या या गद्दा में सुख मिलता है। सुख के कारण की कारण। इस सुख का तल है सुख देने वाले पदार्थ या कारण। उन कारणों का भी आश्रय अर्थात समस्त सुख देने वाले कारणों का भी कारण। तात्पर्य ब्रह्म

स्वरूपा जो सत्चित् आनन्द स्वरूपा है। जो बिस्तर या गद्दे पर आश्रित है अर्थात लेटी है। ज्ञान रूपी शैय्या का तल आधार (आश्रय) है जिनका।

581. **तपनीयतलारात्रि** – स्वर्ण के तल की तरह रात्रि स्वरूपा अर्थात चाँदनी रात या सुहानी रात स्वरूपा अर्थात सुख देने वाली। तपनीय का अर्थ है स्वर्ण, स्वर्ण का तल भी स्वर्ण ही है जो चमकीला होता है। चमकीला होने के कारण चाँदनी या सुहानी रात अर्थ आया। ऐसी रात सुख देने वाली रात होती है। तात्पर्य है अपने भक्तों को अत्यन्त सुख देने वाली। ऐसी रात्रि जो सोने/चाँदी के तल जैसी है अर्थात सुखद है अर्थात चाँदनी रात स्वरूपा है। चाँदनी रात के समान सुखदायी। तपनीय अर्थात सोना चाँदी। सोना चाँदी का तल अर्थात चाँदी का तल जो सुखद होता है। स्वर्ण के तल अर्थात (पत्ता या आधार) को सम्पूर्णतया देने वाली। आ का अर्थ है सम्पूर्ण रूप से और रात्रि का अर्थ रा दाने धातु से 'देने वाला' है। स्वर्ण के पत्ते के समान उज्जवल। अरात्रि का अर्थ है उज्जवल। सोने के तल तक देने वाली अर्थात अन्तिम ऐश्वर्य देने वाली। रात्रि का अर्थ होता है सुख देने वाली जो रा दाने से बनता है।

582. **तपनीयांशुप्रार्थिनी** – स्वर्ण की चमक की इच्छा रखने वाली। सोने की चमक या किरण को चाहने वाली। सोने के सदृश चमक वाली।

583. **तपनीयप्रदा** – भक्तों को स्वर्ण देने वाली। भक्त जहाँ हाथ डालते हैं वहाँ सोना हो जाता है। भक्तों को स्वर्ण देने वाली। श्रेष्ठता/दिव्यगुणों को प्रदान करने वाली।

584. **तप्ता** – कठोर तपस्या के द्वारा तपी हुई।

585. **तपनीयाद्रिसंस्थिता** – तपस्या के योग्य पर्वत पर निवास करने वाली। तपनीय का अर्थ है स्वर्ण। हेमाद्री या सुमेरु पर्वत में स्थित।

586. **तल्पेशी** – सुखरूपी या ज्ञानरूपी शैय्या की स्वामिनी। बड़े बड़े महलों की स्वामिनी।

587. **तल्पदा** – भक्तों को भी कोमल आसन देने वाली अर्थात बेशकीमती आसन देने वाली। सर्वोत्तम ज्ञान को प्रदान करने वाली। सुख देने वाली। तल्प अर्थात गद्दा जो सुख का प्रतीक है। दुष्टों के सुख का नाश करने वाली।

588. **तल्पसंस्थिता** – श्रेष्ठ शैय्या पर या महल पर या सुखरूपी शैय्या पर या श्रेष्ठ ज्ञानमयी शैय्या पर स्थित रहने वाली।

589. **तल्पवल्लभा** – कोमल आसन या शैय्या प्रिय है जिन्हें। ज्ञानमयी शैय्या है प्रिय जिनको।

590. **तल्पप्रिया** – बिस्तर अर्थात शयन करना जिसे प्रिय है।

591. **तल्परता** – कोमल गद्दे या सिंहासन पर विराजमान। शैय्या पर लेटी हुई हैं। रता शब्द रम् धातु से बना है जिसका अर्थ है रमण करता है अर्थात अच्छा लगता है। ज्ञान की शैय्या अर्थात ज्ञान विद्या अर्थात ज्ञान योग में संलग्न रहने वाली। रता का अर्थ प्रसन्न भी होता है। कोमल गद्दे या सिंहासन पर विराजमान होने पर प्रसन्न। ब्रह्म में सब कुछ विराजमान है और वह आनन्द स्वरूप भी है अतः सर्वश्रेष्ठ तल्प (गद्दा या सिंहासन) ब्रह्म ही है। ब्रह्म से जुड़ी हुई। ब्रह्म में रहते हुए अति प्रसन्न या आनन्दित।

592. **तल्पनिर्माणकारिणी** – शैय्या का निर्माण करने वाली अर्थात विवाह का प्रबन्ध करने वाली। ज्ञान योग रूपी शैय्या का निर्माण करने वाली।

593. **तरसापूजनासक्ता** – एकाग्र होकर या अनन्य भाव से की जाने वाले पूजा से आसक्ता अर्थात् अत्यन्त जुड़ी हुई अर्थात् वहाँ पहुँचकर फिर हटती नहीं हैं। तरसा का अर्थ तीव्र गति होता है। यदि पानी फैला हो तो

उसकी गति तीव्र नहीं होती पर उसको सकरा कर दो तो गति तीव्र हो जाती है। वायु को भी संपीडित कर दो तो उसकी गति तेज हो जाती है। मन को एकाग्र कर दो तो उसका प्रभाव तीव्र हो जाता है। यही कारण है कि तरसा का अर्थ अनन्य या एकाग्र भाव किया गया है। जो तीव्र होगा वो अधिक दूरी तक जायेगा और लक्ष्य को पा लेगा। एकाग्र चित्त मन या अनन्य भाव से की जाने वाली पूजा तीव्र होने के कारण दूर तक पहुँचती है और लक्ष्य को पा लेती है। शीघ्र ही पूजन में निरत रहने वाली। आवश्यकता पड़ने पर शीघ्रतापूर्वक किये गये पूजन के साथ जुड़ी हुई। किसी को यह मालूम हो कि उसका अन्तिम समय आने वाला है तो वह अतिशीघ्रता से भगवान के पूजन में लग जाता है। तरम् साधयति से भी तरसा शब्द बन सकता है जिसका अर्थ हुआ पार कराने वाली अर्थात संसार सागर से पार कराने वाली। तर का अर्थ है पार करने की क्रिया। संसार सागर से पार कराने वाले पूजन से जुड़ी हुई अर्थात ऐसा पूजन जहाँ होता है, वहाँ पहुँच जाती हैं। तरस का अर्थ तट या किनारा भी होता है। पवित्र नदी तट या समुद्र तट या तालाब के तट में पूजन करने से जुड़ जाती हैं अर्थात वहाँ पर उपस्थित हो जाती हैं। शीघ्र पूजन करने से या जल्दी जल्दी जप करने से बीच में विचार नहीं आते। एकाग्र होकर या अनन्य भाव से की जाने वाले पूजा में आसक्त अपने उपासकों में विराजमान।

594. **तरसावरदायिनी** – तत्काल ही प्रसन्न होकर वर देने वाली।

595. **तरसासिद्धिसन्धात्री** – शीघ्रता से सिद्धि का सन्धान (धारण) करने वाली अर्थात शीघ्र ही सिद्धि देने वाली। शीघ्र ही श्रेष्ठ गुणों की तपस्या द्वारा भक्तों को धारण या भरण पोषण करने वाली।

596. **तरसामोक्षदायिनी** – शीघ्र ही भक्तों पर प्रसन्न होकर उन्हें मोक्ष प्रदान करने वाली।

597. **तापसी** – तपस्या करने वाली स्त्री। तपस्वी शिव की स्त्री। तापस का अर्थ है तपस्या करने वाला।

598. **तापसाराध्या** – तपस्वियों द्वारा आराधनीय।

599. **तापसार्तिविनाशिनी** – तपस्वियों की पीड़ा को नष्ट कर देने वाली।

600. **तापसार्ता** – तपस्वियों के लिए दुखी अर्थात तपस्वियों का कष्ट देखकर दुखी हो जाने वाली। तापस शब्द बेचारे या दीन हीन लोगों के लिए भी प्रयुक्त होता है। ऐसे दीन हीन लोगों की दीनता को देखकर दुखी होने वाली। भक्त तपस्वियों के द्वारा स्वयं पीड़ित होने वाली अर्थात भक्तों की पीड़ा देखकर शीघ्र पीड़ित या दुखी होने वाली।

601. **तापसश्री** – तपस्वियों की शोभा/सम्पत्ति/लक्ष्मी स्वरूपा।

602. **तापसप्रियवादिनी** – भक्त तपस्वियों से प्रिय वचन बोलने वाली।

603. **तापसानन्दहृदया** – तपस्वियों को आनन्द देने वाले हृदय वाली। तपस्या सम्बन्धी आनन्द के हृदय वाली अर्थात तपस्या से उत्पन्न होने वाले आनन्द से भरपूर है हृदय जिनका। (यदि तापसान्नहृदया नाम है तो अर्थ होगा – तपस्वियों द्वारा खाये जाने वाले अन्न की हृदय स्वरूपा अर्थात उसका प्राण या मुख्य सार स्वरूपा या पूजा या शक्तिस्वरूपा। तपस्वी लोग स्वयं उत्पन्न होने वाले नीवार आदि धान्य खाते हैं। तपस्वियों के हृदय में आनन्द देने वाली।)

604. **तापसानन्ददायिनी** – तपस्वियों को आनन्द प्रदान करने वाली।

605. **तापसाश्रितपादाब्जा** – तपस्वियों द्वारा जिनके चरण–कमलों का सहारा लिया गया।

606. **तापसासक्तमानसा** – तपस्वी भक्तों में जिनका मन, हृदय विराजमान रहता है। आसक्त का अर्थ है अनुरक्त, लीन, मोहित, चाह आदि। मन का अर्थ हृदय भी होता है।

607. **तामसी** – तमोगुण युक्ता। प्रलय के समय तमोगुण को धारण करने वाली।

608. **तामसीपूज्या** – तमोगुण वाले दैत्यादि द्वारा भी पूजनीय।

609. **तामसीप्रणयोत्सुका** – ऐसी तामसी जो शिव से प्रेम करने के लिए उत्सुक है। तामसी च असौ प्रणयोत्सुका, कर्मधारय समास बना कर अर्थ निकाला गया। काली या दुर्गा के प्रेम के लिए उत्सुक। तामसी का अर्थ काली या दुर्गा भी होता है। यह देवी काली या दुर्गा से बहुत प्रेम करती हैं। जो तामसी प्रकृति की हैं पर शिव के साथ प्रेम करने के लिए उत्सुक हैं। जो तामसी प्रकृति की है पर अपने भक्तों के साथ प्रेम करने के लिए उत्सुक हैं। भक्तों के साथ प्रेम का तात्पर्य है कि उन पर कृपा बरसाने को उत्सुक हैं। तामसी प्रवृत्ति के किन्तु भक्ति करने वाले लोगों के प्रेम के लिए उत्सुक रहने वाली।

610. **तामसी** – अँधेरी रात स्वरूपा। तामसी एक प्रकार की माया विद्या है जिसे शिव ने निकुम्भला यज्ञ से प्रसन्न होकर मेघनाद को दी थी। दैत्यों के संहार के समय तमोगुण प्रधान शक्ति को धारण करने वाली। जटामांसी वनौषधि का भी एक नाम तामसी है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ जटामांसी वनौषधि की तरह सर्वरोगनिवारिका अर्थात सभी कष्टों को दूर करने वाली।

611. **तामसीप्रीता** – ऐसी तामसी (तमोगुण से युक्त) जो भक्तों पर प्रसन्न है। काली जी से प्रसन्न होने वाली। तमोगुण से युक्त काली जी हैं। कृष्ण रंग वाली एवं भक्तों पर प्रसन्न होने वाली। तामसी च प्रीता च। तमोगुण प्रधान दैत्यों द्वारा भक्ति के रूप में प्रेम की जाने वाली। तमोगुण वाले दैत्य मनोरथों की सिद्धि के लिए भक्ति के रूप में जिनसे प्रेम करने लगते हैं।

612. **तामसीशीघ्रसिद्धिदा** – ऐसी तमोगुणयुक्ता देवी जो शीघ्र सिद्धि देती हैं। तमोगुण वाले दैत्यों की तपस्या से प्रसन्न होकर शीघ्र सिद्धि प्रदान करने वाली।

613. **तालेशी** – ताल नृत्य की ईश्वरी। ईश्वरी का अर्थ है स्वामिनी या पारंगत। इनकी कृपा से ही यह कला दूसरे तक पहुँच सकती है। ताल ध्वनि या ताल विद्या नृत्य है। नृत्य भाव के अधीन। ताल लय पर जो ठुमक लगता है वह नृत्य है ताल, उसकी ईश्वरी। ताण्डव और लास्य नृत्य की स्वामिनी अर्थात इनकी इच्छा के बिना यह नृत्य नहीं हो सकता। ताल का ता शब्दाक्षर ताण्डव को सूचित करता है और ल शब्दाक्षर लास्य नृत्य को सूचित करता है। अर्द्धनारीश्वर रूप में देवी ताण्डव एवं लास्य दोनों नृत्यों की स्वामिनी हो जाऐंगी। ताल नृत्य को प्रेरित करने वाली अर्थात अपने भक्त को इसका ज्ञान पहुँचाने वाली। तल का अर्थ है आधार। स्वार्थ में अण् प्रत्यय लगाने से तल ही ताल हो जाता है। संसार वृक्ष का ताल अर्थात आधार ब्रह्म है। ब्रह्म स्वरूपिणी ईश्वरी।

614. **तालभुक्** – ताल वृक्ष के फल का भक्षण करने वाली। बेलपत्र के फल का भक्षण करने वाली। दैत्यों के वध के पूर्व ताल वृक्ष से बनी शराब ताड़ी का भक्षण करने वाली।

615. **तालदात्री** – भक्तों को ताल वृक्ष के समान ऊँचाई अर्थात उन्नति देने वाली। भक्तों को ऐश्वर्य से मधुरत्व देने वाली। आनन्द प्रदान करने वाली।

616. **तालोपमस्तनी** – ताड़ वृक्ष के फल के समान बड़े एवं कठोर स्तनों वाली। यह देवी की पोषिका शक्ति का प्रतीक है अर्थात् देवी सबका पोषण करने वाली है। ताड़ वृक्ष के समान विशाल स्तन वाली।

617. **तालवृक्षस्थिता** – सबके आधार संसार रूपी वृक्ष में स्थित अर्थात् कण–कण में शक्ति या ऊर्जा के रूप में विराजमान। संसार को एक वृक्ष कहा गया है जिसे ज्ञानरूपी कुल्हाड़ी से काटने की सलाह दी जाती है जिससे व्यक्ति जन्ममरण के चंगुल से हट जाए। तल् प्रतिष्ठायम् धातु से तल या ताल का अर्थ प्रतिष्ठा या आधार किया गया। संसार में सभी प्राणी रहते है अतः वह सबका आधार है। तालवृक्ष बहुत ऊँचा होता है जिसे उन्नति का प्रतीक माना जा सकता है। उन्नत संसार रूपी वृक्ष में स्थित। ताड़ के वृक्ष पर विराजमान रहने वाली।

618. **तालवृक्षजा** – ताड़ के वृक्ष पर उत्पन्न या प्रकट होने वाली।

619. **तालरूपिणी** – महादेव के स्वरूप वाली। संगीत में होने वाले ताल के स्वरूप वाली। नृत्य की सबसे बड़ी कला अर्थात ताल के स्वरूप को धारण करने वाली। नृत्य पर ताल अर्थात बाजा बजने पर ठुमका लगाना यह है ताल और गाने के समय ध्वनि में लीन होना है लय।

620. **तार्क्ष्या** – गरूड़ स्वरूपा। गरूड़ वेद एवं धर्म का प्रतीक है। गरूड़ की तरह दूरदर्शी, हमेशा जागरूक एवं दुष्टों पर टूट पड़ने वाली। गरूड़ की दृष्टि सभी पक्षियों से अधिक तीक्ष्ण है तथा ऊँचाई पर होने के बाद भी जमीन पर रेंगता हुआ कोई सर्प मिल जाए तो उस पर बिजली की तरह टूट पड़ता है और तोड़–मरोड़ देता है। गरूड़ की चाल अन्य पक्षियों की तुलना में सबसे अधिक तीव्र होती है तथा आलस्य और प्रमाद उससे कोशो दूर रहती है। इसी कारण गरूड़ को जागरूकता का प्रतीक माना गया है। अव्यवस्था रूपी सर्प से घोर शत्रुता रखने वाली तथा उसे निरस्त करने के लिए टूट पड़ने वाली प्रकृति गरूड़ है। दूरदर्शिता अपनाने वाले लोंगों को गरूड़ कहा जाता है जिन्हें न आलस्य है, न प्रमाद है व गरूड़ है। वैष्णवी देवी गरूड़ पर आरूढ़ है अर्थात् वैष्णवी की कृपा उन्हीं को मिलती है जिनकी प्रवृत्ति गरूड़ जैसी है।

621. **तार्क्ष्यसमारूढा** – गरूड़ पर आरूढ़ होने वाली। गरूड़ वेद एवं धर्म का प्रतीक है। धर्म एवं वेद के रास्ते पर चलने वालों पर अच्छी प्रकार से विराजमान। तात्पर्य है कि उन्हें अपनी जाग्रत अवस्था का अनुभव कराती है अर्थात शक्ति और कृपा दिखाती है।

622. **तार्क्ष्येशी** – गरूड़ पर शासन करने वाली अर्थात गरूड़ की स्वामिनी। शासन की परिभाषा के अनुसार शासक जैसा बोलेगा शासित वैसा करेगा। शासक ने कहा रूको तो शासित रूक जायेगा। कहा पूर्व में चलो तो पूर्व में चलेगा। वेद को उत्पन्न करने वाली। धर्म या वेद के रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करने वाली।

623. **तार्क्ष्यपूजिता** – गरूड़ द्वारा पूजित। पूजा का अर्थ सेवा भी होता है और सेवा का एक अर्थ हे मिले हुए आदेश को तुरन्त पूरा करना।

624. **तार्क्ष्येश्वरी** – गरूड़ की ईश्वरी (आरूढ होने पर)। गरुड़ को ऐश्वर्य देने वाली। ऐश्वर्य का अर्थ है प्रभुसत्ता। ऐश्वर्य का अर्थ है शक्ति + सम्पन्नता।

625. **तार्क्ष्यमाता** – गरूड़ की माता अर्थात गरुड़ की रक्षा करने वाली। माति का एक अर्थ रक्षा करना भी होता है। माति इति माता। माता गर्भ में शिशु की रक्षा करती है अतः माता को माता कहते हैं।

626. **तार्क्ष्येश्वरवरदायिनी** – गरूड़ के ईश्वर अर्थात भगवान विष्णु को वरदान देने वाली। रावण वध के पूर्व भगवान राम ने शक्ति की आराधना की थी। तार्क्ष्य को विशिष्ट शक्ति या ईश्वरी शक्ति प्रदान करने वाली।

627. **तापी** – दुष्टों को या असुरों को कष्ट पहुँचाने वाली या उन्हें पीड़ित करने वाली। तापयति इति तापी। बुरी वृत्तियाँ या दुर्गुण असुर हैं। सूर्य की तापी नामक कन्या से अभेद है जिनका। यमुना नदी स्वरूपा। बुद्धदेव स्वरूपा। जिसमें ताप हो अर्थात तपस्या की ऊर्जा या शक्ति हो। ताप देने वाला। दुष्टों को सन्तप्त करने वाली अर्थात उन्हें कष्ट देने वाली।

628. **तपिनी** – स्वयं तपने वाली अर्थात् तपस्या करने वाली या तपस्या में लगी हुई। तपने वाली (सूर्य के रूप में)।

629. **तापसंहन्त्री** – दुखों को मिटा देने वाली या संहार कर देने वाली। विविध तापों को या कष्टों को नष्ट करने वाली। इहलौकिक दुख को समाप्त कर देने वाली।

630. **तापनाशिनी** – दुखों को दूर भगा देने वाली अर्थात आँखों से ओझल कर देने वाली। जहाँ से दुख आया

है वहाँ वापस भेज देने वाली। नश् अदर्शने धातु होती है जिससे नाश का अर्थ अदर्शन, अपने कारण में वापस भेजना होता है। जैसे घड़े का नाश हुआ अर्थात अपने कारण मिट्टी में वापस चला गया। तापों (कष्टों) का विनाश कर देने वाली। पारलौकिक दुख को समाप्त करने वाली।

631. **तापदात्री** – दुष्टों या राक्षसों को सन्ताप अर्थात दुख देने वाली।

632. **तापकर्त्री** – तीनो प्रकार के दुःखों का निर्माण करने वाली जिससे मनुष्यों को उनके कर्मों के अनुसार दुःख दिया जा सके। तेज या ऊष्णता का निर्माण करने वाली। सूर्य के रूप में गर्मी या ऊष्णता की उत्पत्ति करने वाली अर्थात दूसरों को देने वाली। दुष्टों को दुखित कर देने वाली।

633. **तापविध्वंसकारिणी** – भक्तों की पीड़ाओं का ध्वंस कर देने वाली।

634. **त्रासकर्त्री** – कुमार्गगामियों में भय पैदा करने वाली।

635. **त्रासदात्री** – भगवान से विमुख लोगों को भय देने वाली।

636. **त्रासहन्त्री** – भक्तों, सज्जनों और सन्तों के विभिन्न प्रकार के भयों, कष्टों को नष्ट करने वाली।

637. **त्रासहा** – अपने भक्तों के भय, कष्ट को दूर करने वाली। ओहाक् त्यागे धातु से हा शब्द बनाने पर दूर करने वाली अर्थ आता है।

638. **त्रासिता** – अधर्म करने से डरी हुई। पति (शिव) कहीं नाराज न हो जाए इस आशंका से डरी हुई। दैत्यों को त्रास देने वाली। सामान्यतः त्रासिता का अर्थ होता है जो डरी हुई हो पर तृच् प्रत्यय लगाने से डराने वाली अर्थ भी हो जाएगा। त्रासितृ के प्रथम वचन में त्रासिता बनेगा। दुष्ट राक्षसों/असत जनों द्वारा सम्पीडित अर्थात पीड़ा पहुँचाये जाने का प्रयास किये जाने वाली। जो भक्तों की रक्षिका है एवं काले वर्ण वाली या तमोगुण से युक्त है। त्रा+असिता, त्रा का अर्थ है रक्षा करने वाली, असिता का अर्थ है जो सफेद न हो अर्थात् काले वर्ण वाली।

639. **त्रासरहिता** – स्वयं विविध प्रकार के त्रासों (भयों) से रहित है।

640. **त्रासनिर्मूलकारिणी** – उपासकों के सभी प्रकार के भयों को जड़ से नष्ट कर देने वाली।

641. **त्राणकृत्** – भक्तों/सज्जनों की रक्षा करने वाली।

642. **त्राणसंशीला** – रक्षा करने के स्वभाव वाली।

643. **तानेशी** – संगीत के 49 तानों की स्वामिनी। इन्हीं के अनुशासन में स्वर चलते हैं। ईश का अर्थ होता है शासन करना। ईष्टे प्रेरयति भी होता है जिससे ईश का अर्थ प्रेरण करना अर्थात प्रेरित करके कहीं पहुँचाना भी होता है। स्वर ज्ञान को सुपात्र तक पहुँचाने वाली यह तानेशी का अर्थ हुआ। संगीत के स्वरों अर्थात सात स्वरों की ईश्वरी अर्थात उनकी उत्पत्ति करने वाली। विविध प्रकार के तानों (संगीत का खिंचाव) की ईश्वरी। तन्यते आत्मा अनेन इति तानः। जिसके द्वारा आत्मा का विस्तार होता है अर्थात आत्मा परमात्मा में विलीन होती है।

644. **तानदायिनी** – संगीत के स्वरों को देने वाली अर्थात जो भक्त संगीत सीखते हैं उन्हें स्वरों में दक्ष बनाने वाली। उच्च स्थान या मोक्ष को देने वाली।

645. **तानगानरता** – संगीत के स्वरों को गाने में निपुण या तल्लीन। देवी वीणा से गाती रहती हैं। निरन्तर अच्छे गानों को गाने वाली।

646. **तानकारिणी** – संगीत के स्वरों का विधान करने वाली अर्थात बनाने वाली। अच्छे लय स्वर आदि को उत्पन्न करने वाली।

647. **तानगायिनी** – संगीत के स्वरों को गाने वाली। तान के आधार पर गान करने वाली।

648. **तारूण्यामृतसम्पूर्णा** – तरुणाई रूपी अमृत से भरपूर। युवावस्था के अमृत (सुख) से परिपूर्ण।

649. **तारूण्यामृतवारिधि** – युवावस्थारूपी अमृत (आनन्द) की सागर। तरुणावस्था अर्थात युवावस्था जो भावप्रकाश ग्रन्थ के अनुसार 16 से 32 वर्ष तक की अवस्था मानी गई है।

650. **तारूण्यामृतसन्तुष्टा** – युवावस्थाजन्य अमृत (आनन्द) से प्रसन्न रहने वाली।

651. **तारूण्यामृततर्पिता** – युवावस्थाजन्य आनन्द से सन्तृप्त की जाने वाली।

652. **तारूण्यामृतपूर्णाङ्गी** – तारूण्यरूपी अमृत से पूर्ण हैं अंग जिनके अर्थात भरपूर यौवन वाली। युवावस्थाजन्य आनन्द से परिपूर्ण अंगों वाली।

653. **तारूण्यामृतविग्रहा** – युवावस्थाजन्य आनन्द से परिपूर्ण है शरीर जिनका।

654. **तारूण्यगुणसम्पन्ना** – युवावस्था के गुणों से सम्पन्न।

655. **तारूण्योक्तिविशारदा** – जोर से बोलने या डाँटडपट कर बोलने में निपुण जैसे किसी को जोर से कहा गया कि क्या तुम वहाँ नहीं जाओगे। यह तारूण्योक्ति हो गयी। कोई हिन्दी बोल रहा तो हिन्दी बोलते बोलते आवेश में आकर अंग्रेजी बोलने लगा तो यह तारूण्योक्ति हो गई। युवावस्था जन्य जो गाने हैं, उनमें दक्ष या पारंगत।

656. **ताम्बूली** – ताम्बूलम् अस्या अस्ति इति ताम्बूली। पान वाली अर्थात पान से सुशोभित मुख वाली अर्थात मुख में ताम्बूल धारण करनेवाली। ताम्बूलः का अर्थ पान खाने वाले शिव, व्याकरण के नियम के अनुसार ताम्बूली का अर्थ होगा पाने खाने वाले शिव की पत्नी। ताम्बूलम् अस्य अस्ति इति ताम्बूलः (ताम्बुल वाला)। ताम्बूल अर्थात पान वाली अर्थात पान खाने वाली।

657. **ताम्बूलेशानी** – पानयुक्त ईश्वरी अर्थात ताम्बूल के द्वारा सुशोभित मुख वाली ईश्वरी। ताम्बूलभक्षिका – ईशानी। पान खाने वाली ईश्वरी या ब्रह्माण्ड का शासन करने वाली। पान की स्वामिनी अर्थात पान को उत्पन्न करने वाली। वेद में तमीमीशान शब्द में ईशान का अर्थ स्वामी किया गया है। पान का भक्षण करने वाली ईश्वरी। श्रेष्ठ पानों का सेवन करने में दक्ष।

658. **ताम्बूलचर्वणोद्यता** – पान को चबाने के लिए उत्सुक अर्थात हमेशा तैयार रहने वाली।

659. **ताम्बूलपूरितास्या** – पान से परिपूर्ण मुख वाली अर्थात पान युक्त होने से शोभा वाली।

660. **ताम्बूलारूणिताधरा** – पान के लाल रंग से जिनके अधरोष्ठ लाल रहते हैं।

661. **ताटङ्करत्नविख्याता** – ताटंक (कान की बाली) में लगे रत्नों से जो विख्यात है अर्थात उनका यह रूप विख्यात है।

662. **ताटङ्करत्नभूषिणी** – रत्न जड़ित बालियों के आभूषण वाली। ताटंके रत्नानि सन्ति इति ताटंकरत्ना। जो ताटंक (कान की बाली) में लगे हुए रत्नों से विभूषित रहती है।

663. **ताटङ्करत्नमध्यस्था** – कर्णाभरण में जड़े रत्न के मध्य में स्थित रहने वाली (सुन्दरता या शक्ति के रूप में स्थित रहने वाली)। ताटंक (कान की बाली) में लगे रत्नों के मध्य में विराजमान रहने वाली।

664. **ताटङ्कद्वयभूषिता** – दोनों कानों में बालियों से सुशोभित अर्थात धारण करने वाली। 662 नाम से स्पष्ट नहीं है कि दोनों कानों में बालियाँ हैं। दो ताटंक (कान की बाली) नामक आभूषणों से विभूषित रहने वाली।

665. **तिथीशा** – समस्त तिथियों की स्वामिनी या मालकिन या अधिष्ठात्री। तिथियों में फलोत्पादकता का सामर्थ्य देवी की कृपा से ही आती है। किस तिथि में क्या करना चाहिए क्या नहीं, यह सब देवी ही निर्धारित करती हैं। तिथियों के स्वामी की शक्ति। चतुर्दर्शी तिथि के स्वामी भगवान शिव की शक्ति या पत्नी। अलग–अलग तिथियों के अलग–अलग स्वामी। जैसे पतिपदा तिथि के स्वामी अग्नि है, द्वितीया तिथि के ब्रह्मा, तृतीया की गौरी, अष्टमी की दुर्गा आदि। तिथियों पर अनुशासन करने वाली अर्थात् तिथियों से सम्बन्धित नियम बनाने वाली। जैसे इस तिथि पर यह करना चाहिए, यह नही करना चाहिए, ऐसा करने पर यह फल मिलेगा आदि। शासन हमेशा नियम कानून बना करके ही होते है। ईश सिद्धि उत्पन्न करने वाली सिद्धि है। तिथियों को उत्पन्न करने वाली या उन्हें लाने वाली। सूर्य का जितना प्रकाश चन्द्रमा पर पड़ता है उस प्रकाश के आधार पर तिथियों को निश्चित किया जाता है। (यदि तिथीश्वरी शब्द है तो भी वही अर्थ है। वहाँ तिथियों में आराध्य अर्थ कर सकते है। आराध्य अर्थ ईश में भी आता है। ईश् धातु में स्थेशभास... सूत्र से वरच् प्रत्यय लगाने से ईश्वर बनता है और वरच् प्रत्यय यहाँ पर कर्ता कारक में शील (स्वभाव) में होता है। ईश का अर्थ शासन करने वाला एवं ईश्वर का अर्थ है शासन करने के स्वभाव वाला अर्थात् जिसके रक्त में शासन करने वाला गुण है। दूसरा अन्तर यह है कि प्रत्येक शासन करने वालों को ईश कह सकते है पर ईश्वर उन्हें कहेगें जो शासन करने के साथ–साथ श्रेष्ठ गुणों से भी युक्त है। वर का अर्थ है श्रेष्ठ। दया, उदारता, करूणा, प्रेम, क्षमा आदि दिव्य गुण श्रेष्ठ गुण है।) शासन करना अर्थात नियम बनाना, निर्धारित करना कि इसमें क्या क्या होना चाहिये, ऐसा होने पर क्या होगा।

666. **तिथिसम्पूज्या** – तिथियों में विधिवत् पूजन करने योग्य।

667. **तिथिस्था** – तिथियों में स्थित रहने वाली। तिथियों में देवी की उपासना होती है अर्थात इनमें देवी उपस्थित हैं।

668. **तिथिरूपिणी** – तिथिस्वरूपिणी। तिथि के रूप को धारण करने वाली। प्रत्येक चीज शक्ति या ऊर्जा का रूपान्तरण होने के कारण देवी रूपा है। प्राणी, पदार्थ, वस्तु, समय, दिशा, गुण, भाव, सम्बन्ध सभी देवी रूपा हैं।

669. **तिथित्रितयवास्तव्या** – तीन श्रेष्ठ तिथियों में निवास करने योग्य। प्रतिपदा (नन्दा), षष्ठी, एकादशी तीन श्रेष्ठ तिथियाँ कहीं गई है। नन्दा तिथि में आवाहन करने से देवी जल्दी आ जाती हैं अर्थात यह तिथि आराधना के लिए ज्यादा ठीक है।

670. **तिथीश्वरदायिनी** – तिथियों के स्वामी पर अपनी कृपा का दान करने वाली। ज्योतिष में अलग अलग तिथियों के अलग अलग स्वामी हैं जैसे प्रतिपदा के लिए अग्नि, द्वितीया के लिए ब्रह्मा आदि। तिथियों के स्वामी पर अपनी कृपा देने वाली। तिथियों के देवता/ईश्वर को वर प्रदान करने वाली।

671. **तिलोत्तमादिकाराध्या** – तिलोत्तमा आदि अप्सराओं द्वारा आराधना के योग्य।

672. **तिलोत्तमादिकप्रभा** – तिलोत्तमा, उर्वशी, रम्भा आदि अप्सराओं की कान्ति से युक्त।

673. **तिलोत्तमा** – तिलोत्तमा अप्सरा के समान सुन्दर। जिनके शरीर का एक एक तिल या कण उत्तम है अर्थात अतिश्रेष्ठ है। प्रत्येक श्रेष्ठ चीज का एक एक तिल (कण) लेकर तिलोत्तमा अप्सरा का निर्माण हुआ था।

674. **तिलप्रेक्षा** – सूक्ष्म रूप को भी देखने वाली या सूक्ष्म रूप से भी देखने वाली। तिल का ताड़ मुहावरा है जिसमें तिल सूक्ष्म के लिए आया और ताड़ बड़े के लिए आया। तिल के समान अत्यन्त सूक्ष्म दृष्टि वाली अर्थात अत्यन्त सूक्ष्म को भी देख लेने वाली। ईक्ष् धातु में अप् प्रत्यय लगाकर फिर टाप् प्रत्यय कर ईक्षा शब्द बनेगा जिसका अर्थ है दृष्टि। तिल जैसी काली दिखने वाली। यहाँ काले तिल से तात्पर्य है। तात्पर्य है तमोगुण वाली। ईक्षते इति ईक्षा से ईक्षा का अर्थ देखने वाली एवं ईक्ष्यते यते इति ईक्षा से दिखने वाली अर्थ आ जायेगा।

675. **तिलाराध्या** – तिल चढ़ाकर आराधना की जाने योग्य। तिल अर्थात छोटा अर्थात दीन–हीन पुरुषों द्वारा आराधना करने योग्य। तिल का अर्थ यदि श्रेष्ठ लगायें तो अर्थ होगा श्रेष्ठ पुरुषों द्वारा आराधनीय। तिल को श्रेष्ठ हवन सामग्री माना गया है अतः तिल श्रेष्ठता का प्रतीक है।

676. **तिलार्चिता** – तिलों के द्वारा जिनकी पूजा की गई अर्थात जिन्हें तिल चढ़ाये गये।

677. **तिलभुक्** – तिल का आहार करने वाली।

678. **तिलसन्दात्री** – स्नेह गुण को अपने भक्तों को अच्छी प्रकार से अर्थात् स्थाई रूप से देने वाली। तिल से तेल निकलता है और तेल स्नेह का प्रतीक है। सूक्ष्म वस्तुओं को भी पूर्ण रूप से देने वाली। आत्मज्ञान सबसे सूक्ष्म वस्तु है। जो छोटे अर्थात दीन–हीन हैं उनको भी देने वाली। श्रेष्ठ अर्थात सुन्दर अंगस्वरूप को देने वाली। हवन सामग्री में तिल सर्वश्रेष्ठ सामग्री है अतः तिल श्रेष्ठता का प्रतीक है। तिल से उपलक्षित सभी खाद्य पदार्थों को देवताओं एवं पितरों को देने वाली। हवन सामग्री में एवं पितरों के अर्पण में तिल का प्रयोग होता है। शक्ति या बल को अपने भक्तों को अच्छी प्रकार से देने वाली। तिल में बहुत शक्ति या बल होता है।

679. **तिलतुष्टा** – तिल चढ़ाने मात्र से सन्तुष्ट होने वाली। छोटे या दीन हीन लोगों की उपासना से सन्तुष्ट हो जाने वाली। श्रेष्ठ पुरुषों/भक्तों द्वारा सन्तुष्ट रहने वाली। तुष्टि पदार्थ भोगने पर ही होती है, पूर्णता होने पर ही होती है, यहाँ संतोष की तरह इच्छा का त्याग नहीं होता। पदार्थ को भोगा, उसके बाद इच्छा का अभाव होने पर होने वाली सुखानुभूति तुष्टि है।

680. **तिलालया** – तिल नामक पवित्र धान्य या यज्ञ धान्य में रहने वाली। तिल यज्ञ में प्रयुक्त होता है। देवी इसमें शक्ति या ऊर्जा रूप में रहती हैं। सुन्दर तिल है निवास स्थान जिनका।

681. **तिलदा** – तिल की तरह ऊष्णता, शक्ति या बल को देने वाली। तिल का सेवन सर्दियों में होता है जिससे शरीर में गर्मी बनी रहती है और शरीर को आवश्यक विटामिन आदि मिलते है। ऊष्णता का अर्थ गर्मी या उत्साह ले सकते है। भक्तों को तिल देने वाली। तिल का दान करने वाली या तिल को बढ़ाने वाली। सूक्ष्म वस्तुओं को भी देने वाली या सूक्ष्म ज्ञान देने वाली। श्रेष्ठ अर्थात सुन्दर स्वरूप/सम्पत्ति आदि को प्रदान करने वाली। स्नेह के गुण को देने वाली अर्थात अपने भक्तों को स्नेह के गुण भरने वाली। तिल से तेल निकलता है जो स्नेह का प्रतीक है।

682. **तिलसंकाशा** – तिल के समान आभा वाली। तिल सामान्यतः काले रंग का होता है और काली जी काले रंग की हैं। तारा का एक अर्थ नील सरस्वती भी होता है और संस्कृत में नीला का अर्थ काला भी होता है। संकाश अर्थात सदृश आभा वाली। यदि सफेद तिल लें तो गौरवर्णा सरस्वती या गौरी देवी अर्थ निकलेगा। तिल के समान सुन्दर स्वरूप वाली।

683. **तिलतैलविधायिनी** – तिलों में तेल का विधान करने वाली। विधान करना अर्थात प्रस्तुत करना या उत्पन्न करना, भीतर डालना।

684. **तिलतैलोपलिप्तांगी** – तिल के तेल द्वारा जिनका शरीर संलिप्त है।

685. **तिलतैलसुगन्धिनी** – तिल के तेल से सुगन्ध को धारण करने वाली।

686. **तिलाज्यहोमसन्तुष्टा** – तिल और घृत आदि से किये गये होम से सन्तुष्ट रहने वाली। आज्य का अर्थ है घी।

687. **तिलाज्यहोमसिद्धिदा** – तिल और घी से होम किये जाने पर सिद्धि देने वाली। सिद्धि अर्थात योग की सिद्धि, सफलता (किसी भी कार्य में)।

688. **तिलपुष्पाञ्जलिप्रीता** – तिल के साथ जो पुष्पांजलि दी जाती है उससे प्रसन्न रहने वाली। पूजा के अन्त में प्रायः पुष्पांजलि दी जाती है। तिलों से और पुष्पों से दी जाने वाली अंजली से प्रसन्न होने वाली।

689. **तिलपुष्पाञ्जलिप्रिया** – तिल के साथ दी जाने वाली पुष्पांजलि है प्रिय जिन्हें अर्थात अच्छी लगती है अर्थात इनके द्वारा प्रसन्न की जाती है। तिल और पुष्प की अंजलि है प्रिय जिन्हें।

690. **तिलपुष्पाञ्जलिश्रेष्ठा** – तिल पुष्पों से अंजलि देने के लिए श्रेष्ठ है जो अर्थात इन्हें ही अंजलि देना चाहिये क्योंकि यह देवी सर्वश्रेष्ठ हैं अर्थात इन्हें अंजलि दे दी तो सारे पितर तृप्त। तिलपुष्प के दोनों अर्थ हो सकते हैं। तिल का पुष्प, तिल और पुष्प दोनों अर्थ हो सकते हैं। तिल और पुष्प की अंजलि से श्रेष्ठ अर्थात सुशोभित हैं। तिलों की पुष्पांजलि से जो अतिशय सुशोभित या श्रेष्ठ होती है।

691. **तिलपुष्पाभनासिनी** – तिलपुष्प की आभा के समान नासिका वाली। प्रायः नायिकाओं की तुलना तिलपुष्प से की जाती है। पुष्प विकसने धातु से पुष्प का अर्थ होता है खिला हुआ। खिला हुआ अर्थात नाक में कोई अड़चन नहीं है। सुन्दर और सुडौल नाक वाली। तिल के फूल की कान्ति के समान सुन्दर नाक है जिनकी।

692. **तिलकाश्रितासिन्दूरा** – जिन्होंने सिन्दूर का तिलक कर रखा है।

693. **तिलकाङ्किंतचन्दना** – जिन्होंने चन्दन का तिलक लगाया है। यदि तिलकांछितचन्दना शब्द है तो अर्थ होगा तिल जैसे आकार वाली चन्दन की चाहना रखने वाली अर्थात् ललाट में तिल की आकृति के चन्दन का तिलक लगाने की आकांक्षा वाली।

694. **तिलकाहृतकस्तूरी** – जिन्होंने कस्तूरी को तिलक के रूप में धारण कर रखा है। आहृत का अर्थ है धारण करना।

695. **तिलकामोदमोहिनी** – शरीर में लगे हुए तिलक में रहने वाली सुगन्ध से ही दूसरों को मोहित करने वाली अर्थात आकर्षित करने वाली। आमोद अर्थात सुगन्ध। तिल नामक वृक्ष या पुष्प के सुगन्ध के समान मोहित करने वाली। तिलक के सौन्दर्य से सुन्दर लगने वाली।

696. **त्रिगुणा** – तीनों गुणों की शक्ति स्वरूपा। तीन गुणों के स्वरूप वाली। तीन गुणों से युक्त। तीनों गुणों में विराजमान। तीनों गुणों का कारण अर्थात उन्हें उत्पन्न करने वाली। नियम है कि शब्द के आगे ''में विराजमान'' या ''का कारण'' लगाने से शब्द के अन्य अर्थ भी निकल आते हैं। गुण्यते धातु रूप से भी अर्थ निकाले जा सकते हैं।

697. **त्रिगुणाकारा** – तीनों गुण यदि आकार धारण कर लें तो वह आकार देवी रूपा होगा। तीन गुणों से युक्त आकृति वाली। आकार अर्थात रूप, सूरत, चेष्टा, चिन्ह, निशान। त्रिगुणों का रूप या सूरत स्वरूपा। त्रिगुणों की चेष्टा स्वरूपा। त्रिगुणों के चिन्ह या निशान स्वरूपा।

698. **त्रिगुणान्वितविग्रहा** – त्रिगुण (सत्व, रज और तम) से युक्त शरीर वाली।

699. **त्रिगुणाकारविख्याता** – तीन गुणों से युक्त आकृति के कारण प्रसिद्ध।

700. **त्रिमूर्ति** – तीन मूर्ति स्वरूपा। महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती स्वरूपा या ब्रह्मा, विष्णु, महेश स्वरूपा या सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण स्वरूपा।

701. **त्रिगुणात्मिका** – तीनों गुणों की आत्मा अर्थात सार स्वरूपा। तीनों गुणों का स्वभाव या धर्म स्वरूपा। तीनों गुणों में रहने वाली अनिवाशी चैतन्य तत्व स्वरूपा जिसके कारण तीनों गुण क्रियाशील बनते हैं। तीनों गुणों के स्वरूप वाली। तीनों गुणों में व्याप्त। आत्मा का एक अर्थ व्याप्त भी है।

702. **त्रिशिरा** – तीन शिरों वाली। मन्त्र शास्त्र में त्रिशिरा देवी का मन्त्र मिलता है। लाकिनी देवी स्वरूपा या

लाकिनी देवी से अभेद है जिनका। ललितासहस्रनाम स्तोत्र में आया है कि मणिपुर चक्र (नाभि) में तीन सिरों वाली देवी लाकिनी का वास है।

703. **त्रिपुरेशानी** – तीनों पुरो अर्थात तीनों लोकों की मालकिन। भगवान शिव की मालकिन। वेद में ईशान का अर्थ तमीशान शब्द में स्वामी किया गया है। त्रिपुर की ईश्वरी या तीनों लोकों पर शासन करने वाली।

704. **त्रिपुरा** – इड़ा, पिंगला, सुषुम्नानाड़ी रूपी तीन पुरों में वास करने वाली। तीनों लोकों में निवास करने वाली। पुर का अर्थ यहाँ पर लोक ले लिया गया। तीन पुरों वाली अर्थात् तीन पुरों में निवास करने वाली या तीन पुरों (लोकों) की स्वामिनी।

705. **त्रिपुरेश्वरी** – भगवान शिव के ऐश्वर्य वाली। त्रिपुर अर्थात शिव की ईश्वरी या आराध्या।

706. **त्रिपुरेशी** – भगवान शिव पर अनुशासन करने वाली अर्थात उन्हें कुछ भी आज्ञा दे सकती हैं। मध्यम पद लोपी समास से त्रिपुर का अर्थ शिव कर सकते हैं। अन्यथा भी आगम में त्रिपुर का अर्थ परशिव बताया गया है जिसके शरीर में तीन पुर अर्थात तीन भाग हैं, ब्रह्मा, विष्णु और महेश। त्रिपुर की शासिका। तीन लोकों की शासिका।

707. **त्रिलोकस्था** – तीनों लोकों में विराजमान रहने वाली।

708. **त्रिपुरी** – तीनों शरीरों अर्थात् स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर, कारण शरीर में रहने वाली अर्थात् यहाँ रहने वाली चेतना स्वरूपा। पुर का अर्थ शरीर भी है। तीनों पुरुषार्थों अर्थात् अर्थ, धर्म और काम को पूरा करने वाली अर्थात् भक्तों को देने वाली। इन तीनों पुरुषार्थों को पूरा करके चौथे पुरुषार्थ अर्थात् मोक्ष की ओर ले जाने वाली। तीन पुरों वाली अर्थात जिनके तीन पुर हैं। तीनों पुरों की मालकिन।

709. **त्रिपुराम्बिका** – तीन पुरों अर्थात तीन लोकों को उत्पन्न करने वाली। ब्रह्मबैवर्त पुराण के अनुसार अम्ब शब्द पूजित या वन्दित के अर्थ में प्रयुक्त होता है। तीनों लोकों में पूजित या वन्दित। तात्पर्य है कि देवी तीन लोकों को उत्पन्न करने वाली तो हैं ही, उनमें पूजित या वन्दित भी हैं।

710. **त्रिपुरारिसमाराध्या** – शिव के द्वारा विधिवत् आराधनीया।

711. **त्रिपुरारिवरप्रदा** – शिव को वर प्रदान करने वाली। त्रिपुरारि अर्थात त्रिपुर नामक राक्षस के अरि (शत्रु)। भगवान शिव ने इस राक्षस का वध किया था, अतः वे त्रिपुरारि हैं।

712. **त्रिपुरारिशिरोभूषा** – शिव के मस्तक की आभूषण स्वरूपा।

713. **त्रिपुरारिसुखप्रदा** – शिव को सुख प्रदान करने वाली।

714. **त्रिपुरारीष्टसन्दात्री** – शिव के अभीष्ट मनोरथों को अच्छी प्रकार से देने वाली अर्थात पूर्ण कर देने वाली।

715. **त्रिपुरारीष्टदेवता** – शिव की इष्ट देवता। इष्ट देवता का अर्थ है जिनकी पूजा से हर प्रकार की कामना सिद्ध होती है। वह देवता जिनसे आप प्रत्येक प्रकार की कामना की पूर्ति के लिए आश्रित रहते हैं, प्रार्थना कर सकते हैं, इष्ट देवता कहलाता है।

716. **त्रिपुरारिकृतार्धाङ्गी** – शिव के द्वारा जिन्हें अर्द्धांगिनी बनाया गया।

717. **त्रिपुरारिविलासिनी** – त्रिपुरारि शिव के साथ विलास क्रीड़ा करने वाली अर्थात नृत्य, गीत, वाद्य या श्रृंगार परक चेष्टाऐं करने वाली। शिव को खुश करने वाली, आनन्दित करने वाली। शिव के साथ मनोरंजन करने वाली।

718. **त्रिपुरासुरसंहन्त्री** – त्रिपुरासुर का संहार करने वाली। (त्रिपुर – सत, रज और तम, यही तीन पुर हैं। सत को स्वर्ण, रज को रजत (चाँदी) और तम को लोहा कहा जाता है। इन तीनों धातुओं से तीन पुर प्रत्येक प्राणी के

भीतर बने हुए हैं। इन्हीं को जागृत, स्वप्न और सुषुप्ति कहा जाता है। इन तीन अवस्थाओं के द्वारा ही चेतना की अभिव्यक्ति होती है। त्रिपुरासुर के वध का तात्पर्य हुआ कि मनुष्य इन तीन गुणों से ऊपर चला जाय या इन तीनों अवस्थाओं से परे अर्थात तुरीय या तुरीयातीत अवस्था में चला जाए। तुरीय अवस्था आनन्द की अवस्था है। जब आनन्द की अवस्था स्थाई हो जाती है तो वह तुरीयातीत कहलाती है।)

719. **त्रिपुरासुरमर्दिनी** – त्रिपुरासुर का मर्दन या नाश करने वाली। (त्रिपुरासुर अविद्या या अज्ञान या महामोह की अवस्था है। त्रिगुण पर ही अविद्या आधारित है।) स्थूल, सूक्ष्म एवं कारण तीनों शरीर त्रिपुर हैं, ये त्रिपुर ही मानो असुर हैं। इनसे पार होने पर आत्मा का साक्षात्कार होता है। तात्पर्य है देह बोध से ऊपर उठाकर आत्म साक्षात्कार कराने वाली।

720. **त्रिपुरासुरसंसेव्या** – त्रिपुरासुर के द्वारा सम्यक् प्रकार से अर्थात विधिवत सेवा या पूजा की जाने वाली।

721. **त्रिपुरासुरवर्यया/त्रिपुरासुरवर्यपा** – त्रिपुरासुर को रोकने वाले शिव के पास जाने वाली। त्रिपुरासुरम् वृणोति इति त्रिपुरासुरवरी, अयते इति अया(जाने वाली), अय् गतौ धातु होती है। त्रिपुरासुरवरी+अया, त्रिपुरासुरवर्यया। यहाँ वृणोति का अर्थ चुनना न होकर, रोकना होगा। त्रिपुरासुर को वरण करने वाले नरक स्वरूपिणी। वरी + अय, वरी अर्थात वरण करना और अय का एक अर्थ नरक भी होता है। यदि त्रिपुरासुरवर्यपा हो तो अर्थ होगा त्रिपुरासुर को रोकने वाले शिव की अखिल रूप से अर्थात सम्पूर्ण रूप से रक्षा करने वाली। त्रिपुरासुरवरी+अपा, अपा का अर्थ अखिलम् पाति अर्थात सम्पूर्ण रूप से रक्षा करने वाली। त्रिपुरासुर का वरण करके नाश करने वाली। वरी+अप, अप का अर्थ है त्यागना अर्थात नाश करना। यदि त्रिपुरासुरवरपा हो तो अर्थ होगा त्रिपुरासुर को विविध वरदानों के द्वारा पालने वाली या रक्षा करने वाली।

722. **त्रिकूटा** – त्रिकूट पर्वत में रहने के कारण इन्हें भी त्रिकूटा कहा जाता है। त्रिकूटानि अस्या सन्ति इति त्रिकूटा अर्थात त्रिकूट वाली अर्थात त्रिकूट पर्वत पर रहने वाली। तीन कूटों वाली अर्थात तीन वर्ण समुदाय वाली। पंचदशी मन्त्र में तीन भाग हैं जिन्हें तीन कूट कहते हैं। कूट का अर्थ समूह होता है। तीन वेदों के समूह वाली, तीन लोकों के समूह वाली, इच्छा–ज्ञान–क्रिया इन तीन शक्तियों के समूह वाली, महाकाली–महालक्ष्मी–महासरस्वती इन तीन महादेवियों के समूह वाली, ब्रह्मा–विष्णु–महेश इन तीन प्रमुख देवों के समूह वाली। यदि त्रिकुट है तब अर्थ होगा त्रिकुट नामक औषधि के समान सर्वरोगहारी अर्थात कष्टों को दूर करने वाली।

723. **त्रिकूटाराध्या** – त्रिकूट पर्वत पर आराधनीय। वैष्णवदेवी त्रिकूट पर्वत पर स्थित है। त्रिकूट पर्वत की आराध्या या त्रिकूट पर्वत पर रहने वाले प्राणियों की आराध्या। तीन चोटियाँ हैं इसलिए त्रिकूट कहते हैं या महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती ही जिनके तीन श्रृंग या चोटियाँ हैं। शिव के द्वारा आराधनीय या त्रिकूट मन्त्र द्वारा आराधनीय। श्री विद्या का पंचदशी मन्त्र त्रिकूट मन्त्र है क्योंकि उसके तीन वर्ण समुदाए हैं। (यदि त्रिकुटाराध्या शब्द है तो अर्थ होगा त्रिकुट नामक औषधि वृक्ष में पूजा के योग्य अर्थात जिनकी पूजा की जाती है या त्रिकुट औषधि चढ़ाकर जिनकी पूजा की जाती है)। भ्रूमध्य जहाँ तीन नाड़ियाँ मिलती हैं, त्रिकूट स्थान है जिसे आज्ञा चक्र भी कहते हैं। इस स्थान पर ध्यान करने योग्य।

724. **त्रिकूटार्चिताविग्रहा** – त्रिकूट पर्वत पर पूजा जाता है जिनका विग्रह। वैष्णो देवी त्रिकूट पर्वत पर विराजमान हैं। जम्मू में त्रिकूट नामक नगर भी बनाया गया है। त्रिकूट द्वारा पूजित है शरीर जिनका।

725. **त्रिकूटाचलमध्यस्था** – त्रिकूट पर्वत के मध्य में स्थित रहने वाली।

726. **त्रिकूटाचलवासिनी** – त्रिकूट पर्वत पर निवास करने वाली। आज्ञा चक्र को त्रिकूट भी कहते हैं।

727. **त्रिकूटाचलसञ्जाता** – त्रिकूट पर्वत पर प्रकट होने वाली। आज्ञा चक्र में ध्यान लगाने से अभिव्यक्त होने वाली अर्थात सर्वत्र व्याप्त शक्ति के उस स्थान में जाग्रत होने वाली।

728. **त्रिकूटाचलनिर्गता** – त्रिकूट पर्वत से निकल गयीं। पहले जन्म लिया फिर वहाँ से निकलकर चारों ओर भ्रमण करने वाली। तीन गुणों से युक्त शरीर को त्रिपुर या त्रिकूट कह सकते हैं।

729. **त्रिजटा** – तीन जटाओं को धारण करने वाली। तीन गुणों की समूह स्वरूपा। जट् संघाते धातु होती है और संघात का अर्थ है समूह जिसमें अवयय एक दूसरे से जुड़े रहते है। त्रिजटा का अर्थ बिल्व पत्र भी है। त्रिजटा अस्या अस्ति इति त्रिजटा (बिल्व पत्र वाली)। तात्पर्य है जो बिल्व पत्र वाली है अर्थात् बिल्व पत्र से युक्त है अर्थात् जिन्हें पूजा में बेल पत्र चढ़ाया जाता है। – तॄ धातु का अर्थ सन्तरण या Flowing, जटा शब्द जरा का ही परिवर्तित रूप है जिसका अर्थ होता है पुराना या Old। The perpetually old power which comes flowing is Trijata. intutive Power is the old power which comes flowing from sub-conscious mind to conscious mind. Trijanta is an old Intutive Power because an old Intutive Power is always associated with knowledge. In Ramanyana Trijata is associated with knowledge because whenever she tells something she tells related to knowledge only. She consoles Sita by using knowledge. (यह नाम छिन्नमस्ता देवी या षोडशी देवी में भी है।) (जटा शब्द आकाश या आकाश में रहने वाली वायु का प्रतीक है। भगवान शिव को व्योमकेश कहा जाता है। व्योम अर्थात आकाश। आकाश में ही वायु रहती है। बाल प्रायः काले होते है तथा सिर से बॅधे रहते है। जटाधारिणी का अर्थ हुआ काले रंग वाले तमोगुण को बाँधे हुए अर्थात अपने में नियन्त्रण किये हुए। जटाएं एक–दूसरे से उलझी हुई रहती है। इसे अज्ञान या माया का प्रतीक मान सकते है। इस प्रकार जटा धारिणी का अर्थ अज्ञान को बॉधे हुए है अर्थात अपने नियंत्रण में लिये हुए है।)

730. **त्रिजटेशानी** – त्रिजटा नामक राक्षसी या त्रिजटा से उपलक्षित सभी राक्षसों पर शासन करने वाली। त्रिजटा (अर्थात बिल्व पत्र) की ईश्वरी अर्थात उसे उत्पन्न करने वाली। तीन जटाओं की स्वामिनी।

731. **त्रिजटावरदायिनी** – त्रिजटा आदि को वर देने वाली।

732. **त्रिनेत्रेशी** – शिव की ईश्वरी अर्थात शिव को दिशा निर्देश कर सकती हैं या शिव जिनकी आराधना करते हैं।

733. **त्रिनेत्रा** – तीन नेत्रों को धारण करने वाली। भूतकाल, वर्तमान और भविष्य को जानने वाली। नेत्र अर्थात देखने वाला अर्थात जानने वाला।

734. **त्रिनेत्रवरवर्णिनी** – तीन नेत्रों वाली सुन्दर और श्रेष्ठ महिला के रूप में। भगवान शंकर की सुन्दर पत्नी के रूप में। वरवर्णिनी का अर्थ है सुन्दर और श्रेष्ठ महिला। तीन नेत्रों के द्वारा सुन्दर अंगों से सुशोभित रहने वाली। वरवर्णिनी का अर्थ है सुन्दर अंगों से सुशोभित रहने वाली।

735. **त्रिवली** – तीन रेखाओं अर्थात स्वर्ग, अन्तरिक्ष और भूलोक रेखा के रूप में स्थित। तीन वलियों अर्थात पेट में पड़ने वाली रेखाओं का घेरा स्वरूपा। तपस्या के दौरान जिनके पेट पर तीन रेखाऐं पड़ गई थीं।

736. **त्रिवलीयुक्ता** – तीन वलियों से युक्त या सुशोभित। पेट में तीन वलियों अर्थात घेरों से युक्त।

737. **त्रिशूलवरधारिणी** – श्रेष्ठ त्रिशूल को धारण करने वाली। वर का अर्थ है श्रेष्ठ। Trishul or Trident is symbol of three divine powers of knowing, doing and willing.

738. **त्रिशूलेशी** – त्रिशूल की स्वामिनी अर्थात् त्रिशूल को धारण करने वाली। तीनों दुखों की विघातक शक्तियों को धारण करने वाली। त्रिशूल तीनों दुखों की विघातक शक्ति, इच्छा–ज्ञान–क्रिया शक्ति का प्रतीक है। इन तीनों शक्तियों की स्वामिनी अर्थात् धारण करने वाली। त्रिशूल नामक शस्त्र की स्वामिनी। त्रिशूल अर्थात तीन प्रकार के दुखों का नियन्त्रण करने वाली। नियन्त्रण अर्थात दुख समाप्त भी कर सकती हैं या कम ज्यादा भी कर सकती हैं। त्रिशूल की अधिकारिणी अर्थात त्रिशूल से जो चाहे करें या जिसे चाहें मारें।

739. **त्रिशूलीशी** – भगवान शिव के साथ रहने वाली ईश्वरी। त्रिशूलः अस्य अस्ति इति त्रिशूलः (त्रिशूल वाला अर्थात त्रिशूल धारण किये हुये)। त्रिशूल में णिनि प्रत्यय लगाने से त्रिशूलिन् शब्द बनेगा जिसका अर्थ है त्रिशूल वाला अर्थात् त्रिशूल धारण करने वाला जो भगवान शिव है। त्रिशूलिन् का पुल्लिंग एकवचन में त्रिशूली बनेगा एवं स्त्रीलिंग एकवचन में त्रिशूलिनी बनेगा। तीनों दुखों की विधातक शक्तियों को धारण करने वाली। इच्छा–ज्ञान–क्रिया इन तीनों शक्तियों को धारण करने वाली। त्रिशूली अर्थात भागवान शिव की स्वामिनी। शिव पर अधिकार रखने वाली।

740. **त्रिशूलभृत्** – त्रिशूल को धारण करने वाली।

741. **त्रिशूलिनी** – त्रिशूल को धारण करने वाले शिव की गृहिणी या सहधर्मिणी। स्त्रीलिंग में ईकारान्त होने पर कई बार पुरुष की पत्नी अर्थ निकलता है। त्रिशूल को धारण करने वाली।

742. **त्रिमनु** – तीन प्रमुख मन्त्रों के स्वरूप वाली। (श्रीं, ह्रीं, क्लीं) इन मन्त्रों के स्वरूप वाली। ऐं ह्रीं क्लीं मन्त्रों के स्वरूप वाली। ऐ श्रीं क्लीं मन्त्रों के स्वरूप वाली। इन तीनों मन्त्रों में विराजमान। इन तीनों मन्त्रों का कारण अर्थात् इन्हें उत्पन्न करने वाली। नियम है कि किसी शब्द में ''में विराजमान'' या ''का कारण'' लगाने से शब्द का एक अन्य अर्थ निकल आता है। बाला त्रिपुर सुन्दरी देवी के तीन अक्षरों के मन्त्र वाली। वेद में भी मन्त्र होते है अतः वेद को भी मन्त्र कह सकते हैं। तीन वेद अर्थात ऋक्, यजु और साम वेद के स्वरूप वाली। ओम्कार में स्थित अ, उ और म स्वरूपा। तीन मनु स्वरूपा। मनु का अर्थ मन्त्र भी होता है।

743. **त्रिमनूपास्या** – ऐं ह्रीं श्रीं मन्त्रों के द्वारा उपासना करने योग्य। तीन मनुओं के द्वारा उपासना के योग्य। ऐं ह्रीं क्लीं मन्त्र का प्रयोग कर उपासना करने योग्य। बाला–त्रिपुरसुन्दरी के त्र्यक्षरी मन्त्र (ऐं क्लीं सौः) के द्वारा उपासनीया।

744. **त्रिमनूपासेकश्वरी** – त्र्यक्षरी मन्त्र की उपासना करने वालों की ईश्वरी अर्थात उनकी भी आराध्या। त्र्यक्षरी मन्त्र को जपने वालों की आराध्या। लगभग प्रत्येक देवी देवता के त्र्यक्षरी मन्त्र होते हैं जैसे बालात्रिपुरसुन्दरी का मन्त्र। अक्षर से तात्पर्य कहीं कहीं मातृका वर्ण से होता है और कहीं कहीं स्वर से होता है। ऊँ में तीन मातृका वर्ण है अ, उ और म् अतः वह त्र्यक्षरी है। ऐं ह्रीं क्लीं मन्त्र में यद्यपि वर्णाक्षर तीन से ज्यादा हैं किन्तु स्वर तीन ही हैं अतः यह भी त्र्यक्षरी मन्त्र कहलाता है। ऐं ह्रीं क्लीं मन्त्रों के उपासकों की ईश्वरी अर्थात स्वामिनी, उनका योगक्षेम वहन करने वाली।

745. **त्रिमनुजपसन्तुष्टा** – तीन मन्त्रों अर्थात ऐं ह्रीं श्रीं या ऐं ह्रीं क्लीं के जप से सन्तुष्ट होने वाली। बाला–त्रिपुरसुन्दरी के त्र्यक्षरी मन्त्र (ऐं क्लीं सौः) के जप से सन्तुष्ट अर्थात प्रसन्न। तीन मनुओं के द्वारा जप से सन्तुष्ट होने वाली।

746. **त्रिमनोस्तूर्णसिद्धिदा** – तीन मन्त्रों अर्थात ऐं ह्रीं क्लीं या ऐं ह्रीं क्लीं मन्त्रों के जप से शीघ्र सिद्धि देने वाली। तीन मनुओं को शीघ्र ही सिद्धि देने वाली।

747. **त्रिमनुपूजनप्रीता** – तीन मन्त्रों अर्थात ऐं ह्रीं श्रीं मन्त्रों द्वारा पूजन करने से प्रसन्न होने वाली। तीन मनुओं के पूजने से प्रसन्न होने वाली।

748. **त्रिमनुध्यानमोक्षदा** – त्र्यक्षरी मन्त्रों का प्रयोग कर ध्यान करने से मोक्ष देने वाली। तीन प्रमुख मन्त्रों का प्रयोग कर ध्यान करने से मोक्ष देने वाली। तीन मनुओं के द्वारा ध्यान करने पर उन्हें मोक्ष प्रदान करने वाली।

749. **त्रिविधा** – तीन प्रकार अर्थात तीन गुणों या ब्रह्मा, विष्णु, महेश या महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती के स्वरूप वाली। तीनों प्रकार के वेद के स्वरूप वाली। वेद चार है पर उनके प्रकार तीन है। ये है गद्य, पद्य एवं गीत। चारों वेद इन तीन प्रकारों से ही लिखे गये है।

750. **त्रिविधाभक्ति** – मन, वचन, कर्म से की जाने वाली भक्तिस्वरूपा। मन, वचन, कर्म के द्वारा जिनकी भक्ति की जाती है।

751. **त्रिमता** – तीन स्वरूपों में ज्ञात। महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती। मन् ज्ञाने धातु से मता का अर्थ ज्ञात हुआ। तीन देवताओं को अभिमत अर्थात उन्हें प्रिय हैं या उनपर आदर रखने वाली। तीनों प्रमाणों से ज्ञान होता है जिनका। ये तीन प्रमाण है प्रत्यक्ष, अनुमान एवं शब्द। मत का अर्थ ज्ञान है। तीनों वेदों का ज्ञान स्वरूपा या तीनों वेदों का ज्ञान रखने वाली।

752. **त्रिमतेश्वरी** – तीन देवताओं के तीन प्रकार के मत हैं उनकी स्वामिनी।

753. **त्रिभावस्था** – तीन भावों में स्थित रहने वाली। भाव का अर्थ अवस्था या पदार्थ भी होता है। तीन अवस्थाओं अर्थात जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति में विद्यमान रहने वाली। तीन पदार्थों अर्थात ठोस, द्रव और गैस में स्थित रहने वाली। ये तीन भाव हैं सत, रज, तम या आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक।

754. **त्रिभावेशी** – तीनों भावों का नियन्त्रण करने वाली। कल्याण के गणेश अंक में लिखा है कि प्रत्येक पदार्थ के तीन भाव होते हैं जो हैं प्रतिष्ठा, आगति और गति। प्रतिष्ठा का सम्बन्ध ब्रह्मा से, आगति का सम्बन्ध भगवान विष्णु से और गति का सम्बन्ध शिव से है। उत्पन्न होना, बढ़ना और नाश होना ये तीन भाव कहे जा सकते हैं। जन्म, जीवन और मरण इन तीन भावों पर अधिकार रखने वाली अर्थात सृष्टि स्थिति और प्रलय इन तीनों भावों को करने वाली। तीन प्रकार के भावों की ईश्वरी। सात्विक, राजसिक और तामसिक भाव की ईश्वरी अर्थात इन्हें पैदा करने वाली। विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भाव (संचारी भाव) ये तीन रस के अंग हैं, इनकी ईश्वरी अर्थात इन्हें बनाने वाली या इन पर नियन्त्रण करने वाली या इनको प्रेरित करने वाली या इन पर कौशल को अपने भक्त कवियों को देने वाली। भाव का अर्थ अवस्था भी होता है अर्थात जाग्रत स्वप्न और सुषुप्ति तीन अवस्थाओं की ईश्वरी। भाव का अर्थ पदार्थ भी होता है अर्थात ठोस पदार्थ, द्रव पदार्थ एवं गैसीय पदार्थ की उत्पत्ति करने वाला।

755. **त्रिभावपरिपूरिता** – तीन भावों से परिपूर्ण। सृष्टि, स्थिति और संहार इन तीन भावों से परिपूर्ण। प्रत्येक पदार्थ के तीन भाव होते हैं जो हैं प्रतिष्ठा, आगति और गति। प्रतिष्ठा का सम्बन्ध ब्रह्मा से, आगति का सम्बन्ध भगवान विष्णु से और गति का सम्बन्ध शिव से है। तीन प्रकार के भावों से परिपूर्ण। सात्विक, राजसिक और तामसिक इन तीन भावों या सृष्टि स्थिति प्रलय इन तीन भावों से परिपूर्ण। ठोस, द्रव और गैस तीनों अवस्थाओं वाली।

756. **त्रितत्वात्मा** – तीन तत्वों अर्थात आत्म तत्व, विद्या तत्व और शिव तत्व के स्वरूप वाली। शैव दर्शन में 36 तत्व हैं जिन्हें तीन तत्वों में बाँटा जा सकता है। शिव तत्व में शिव और शक्ति, विद्या तत्व में सदाशिव, ईश्वर और सद्विद्या और आत्म तत्व में शेष 31 तत्व आते हैं। जिस प्रकार केशव, नारायण, माधव का नाम लेकर तीन आचमनी (जल पीना) ली जाती हैं उसी प्रकार आत्म तत्व, विद्या तत्व और शिव तत्व का नाम लेकर आचमनी ली जाती है। तीन प्रकार के तत्वों से युक्त।

757. **त्रितत्वेशी** – आत्म तत्व, विद्या तत्व और शिव तत्व की स्वामिनी। तीन प्रकार के तत्वों की स्वामिनी।

758. **त्रितत्वज्ञा** – आत्म तत्व, विद्या तत्व और शिव तत्व को जानने वाली। तीन प्रकार के तत्वों अर्थात सत, रज और तम गुण को जानने वाली।

759. **त्रितत्वधृत्** – आत्म तत्व, विद्या तत्व और शिव तत्व को धारण करने वाली।

760. **त्रितत्वाचमनप्रीता** – आत्म तत्व, विद्या तत्व और शिव तत्व को बोलकर आचमन लेने से (जल पीने से) प्रसन्न होने वाली। तीन प्रकार के तत्वों के आचमन अर्थात ग्रहण करने में प्रेम रखने वाली।

761. **त्रितत्वाचमनेष्टदा** – आत्म तत्व, विद्या तत्व और शिव तत्व बोलकर आचमन लेने से अभीष्ट देने वाली। तीन प्रकार के तत्वों का जो लोग पान करते हैं उन्हें अभीष्ट फल देने वाली।

762. **त्रिकोणस्था** – त्रिकोण के मध्य में स्थित या त्रिकोण के रूप में स्थित। मूलाधार चक्र में त्रिकोण के बीच में कुण्डलिनी स्थित है और कुण्डलिनी देवी स्वरूपा है। त्रिकोण सृष्टि का मौलिक आकार है, यह सब से एकीकृत रूप है। बहुत से देशों में त्रिभुजाकार छत न्यूनतम सामग्री के साथ अधिकतम मजबूती के लिए बनाई जाती है। भारत में सपाट छत बनती है क्योंकि कंक्रीट की छत बनाते हैं। उसी मजबूती का दूसरा आकार बनाना हो तो बहुत सी सामग्री लगेगी और सामग्री भी मजबूत होना चाहिये। बहुत कम सामग्री से अधिक मजबूती हेतु दो डण्डे लेकर धरती को आधार बनाकर लोग घर बना लिया करते थे। सृष्टा ने त्रिभुज के आकार को चुना। आण्विक संरचना को देखें तो वह त्रिभुजों का जटिल संयोजन ही है। शरीर में ऊर्जा का एक बुनियादी रूप है। शरीर का बुनियादी रूप त्रिभुज है। सभी नाड़ियां त्रिभुज के रूप में मिलती हैं। जिन्हें चक्र कहते हैं वे त्रिभुज ही हैं। चक्र गतिशीलता का प्रतीक हैं। सभी यन्त्र त्रिभुजों अर्थात त्रिकोणों की जटिल संरचनाएं हैं। शरीर की ऊर्जा प्रणाली इसी तरह से बनी है। त्रिकोण अस्तित्व का मूलभूत पहलू है।

763. **त्रिकोणेशी** – तीन कोणों वाले यन्त्र में अर्थात तिकोने यन्त्र में रहने वाली ईश्वरी। पूजा में त्रिकोण अर्थात त्रिभुजाकार यन्त्र का भी प्रयोग होता है। श्रीयन्त्र में बहुत से त्रिकोण हैं। अन्य यन्त्रों में भी त्रिकोण मिलते हैं। ईश्वरी अर्थात जो अधिकार रखे निग्रह करे, अनुग्रह करे। ज्योतिष की कुण्डली में पाँचवें एवं नौवे भाग को त्रिकोण कहते हैं। तीन कोणों की स्वामिनी। मूलाधार चक्र में त्रिकोण होता है और उस त्रिकोण में कुण्डलिनी शक्ति स्वरूपा ईश्वरी। स्त्री योनि भी त्रिकोण है। इसमें रहने वाली शक्ति।

764. **त्रिकोणचक्रवासिनी** – त्रिकोणरूपी चक्र (यन्त्र) में अर्थात मध्य में निवास करने वाली।

765. **त्रिकोणचक्रमध्यस्था** – त्रिकोणाकार यन्त्र के मध्य में स्थित रहने वाली।

766. **त्रिकोणबिन्दुरूपिणी** – त्रिकोण यन्त्र के मध्य में स्थित बिन्दु के स्वरूप वाली।

767. **त्रिकोणयन्त्रसंस्थाना** – त्रिकोण यन्त्र में भली भाँति या अच्छी प्रकार से स्थित रहने वाली।

768. **त्रिकोणयन्त्ररूपिणी** – त्रिकोण यन्त्र के स्वरूप वाली।

769. **त्रिकोणयन्त्रसंपूज्या** – त्रिकोण यन्त्र के द्वारा संपूजनीय।

770. **त्रिकोणयन्त्रसिद्धिदा** – त्रिकोण यन्त्र के द्वारा सिद्धि प्रदान करने वाली।

771. **त्रिवर्णाढ्या** – तीन वर्णों में अ, उ, म से सुशोभित अर्थात ऊँ के रूप में सुशोभित। उनमें प्रधानता रखने वाली। ह्रीं बीज के रूप में तीन वर्णों से सम्पन्न। ह्, र, ई ये तीन अक्षर इस बीज में हैं।

772. **त्रिवर्णेशी** – तीन वर्णो की स्वामिनी। तीन वर्ण अर्थात ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य।

773. **त्रिवर्णोपासिरूपिणी** – तीन वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) के द्वारा जिनकी उपासना की जाती है, उसके स्वरूप वाली।

774. **त्रिवर्णस्था** – तीन मूल स्वरों अर्थात अ, इ और उ में रहने वाली। ऊँ कार के तीन अक्षरों अर्थात अ, उ और म में रहने वाली। ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इन तीन वर्णों में रहने वाली। तीन वर्णों में स्थित रहने वाली।

775. **त्रिवर्णाढ्या** – तीन अक्षरों अर्थात अ, उ और म से सम्पन्न अर्थात तीन वर्ण वाले ऊँ से सम्पन्न। तीन रंगों वाली अर्थात तीन रंगों से सम्पन्न प्रकृति स्वरूपा अर्थात लोहित (रजोगुण), शुक्ल (सत्वगुण) और कृष्णवर्ण (तमोगुण) से युक्त/सम्पन्न प्रकृति स्वरूपा। तीन वर्णो से आढ्य या सम्पन्न या सुशोभित।

776. **त्रिवर्णवरदायिनी** – तीन वर्ण वाले मन्त्र का जप करने से वरदान देने वाली।

777. **त्रिवर्णाद्या** – तीन वर्णो वाले प्रथम शब्द स्वरूपा अर्थात ऊँ स्वरूपा। आद्य का अर्थ है प्रथम। तीन वर्णों के आदि स्वरूप वाली। ऊँ के रूप में मूल कारण। ऊँ में तीन अक्षर है जिसके कारण उसे त्रिवर्ण कहते है। आद्या अर्थात् आदि कारण या जिसका सबसे पहले अस्तित्व था। ऊँ की भी मूल कारण।

778. **त्रिवर्णार्च्या** – तीन वर्णों के द्वारा पूजनीय या अर्चनीय।

779. **त्रिवर्गफलदायिनी** – तीन प्रकार के अर्थात अर्थ, धर्म, कामरूपिणी फलों को देने वाली।

780. **त्रिवर्गाढ्या** – तीन वर्ग अर्थात धर्म, अर्थ और काम से सम्पन्न। त्रिवर्ग की सम्पन्नता को लिये हुए। त्रिवर्ग में आढ्य या सुशोभित या पूजनीय।

781. **त्रिवर्गेशी** – तीन वर्गों की ईश्वरी या स्वामिनी।

782. **त्रिवर्गाद्यफलप्रदा** – तीन वर्गों में जो प्रथम वर्ग है अर्थात धर्म के फल को देने वाली। तीन वर्गों के द्वारा श्रेष्ठ फल देने वाली। आदि का अर्थ यहाँ पर श्रेष्ठ होगा।

783. **त्रिसन्ध्यार्च्या** – त्रिसन्ध्या के द्वारा अर्चनीय।

784. **त्रिसन्ध्येशी** – तीन सन्ध्याओं की ईश्वरी अर्थात इनमें पूजनीय या इनका फल देने वाली। तीनों प्रकार की सन्ध्याओं पर अनुशासन करने वाली अर्थात् इन संध्याओं के सम्बन्ध में नियम बनाने वाली। नियम बनाना अर्थात् क्या करना, क्या नही करना, किस प्रकार से पूजा करनी है आदि। शासन या अनुशासन नियम बना करके ही होता है। तीनों संध्याओं में आराध्या अर्थात् जिनकी उपासना होती है।

785. **त्रिसन्ध्याराधनेष्टदा** – तीनों संध्याओं में आराधना करने वालों को अभीष्ट फल देने वाली। प्रातः, मध्याह्न और सायं तीन सन्ध्याएं होती हैं।

786. **त्रिसन्ध्यार्चनसन्तुष्टा** – तीन संध्याओं में पूजन किये जाने से सन्तुष्ट (प्रसन्न) रहने वाली।

787. **त्रिसन्ध्याजपमोक्षदा** – तीन सन्ध्याओं में जप करने वालों को मोक्ष देने वाली।

788. **त्रिपदाराधितपदा** – गायत्री या गंगा के द्वारा जिनके चरण कमलों की आराधना की गई।

789. **त्रिपदा** – तीन पैरों वाली गंगा देवी से अभेद है जिनका। त्रिपदा गायत्री से अभेद है जिसका। 24 अक्षरों वाले गायत्री मन्त्र को त्रिपदा कहते हैं क्योंकि इसके तीन खण्ड हैं। तीन स्थानों वाली अर्थात तीनों लोको में रहने वाली। पद का एक अर्थ स्थान भी है।

790. **त्रिपदेश्वरी** – त्रिपदा अर्थात गायत्री मन्त्र को उत्पन्न करने वाली।

791. **त्रिपदाप्रतिपाद्येशी** – गायत्री द्वारा व्याख्या करने योग्य अर्थात गायत्री द्वारा जिनकी व्याख्या की गई है ऐसी ईश्वरी। गायत्री द्वारा जिनका निरूपण हुआ, ऐसी ईश्वरी। प्रतिपाद्य अर्थात जो दिया जा सकता है, जिसका स्पष्टीकरण दिया जा सके, जिसे प्रमाणित किया जा सकता है।

792. **त्रिपदाप्रतिपादिका** – गायत्री की प्रतिपादिका अर्थात उनका निरूपण करने वाली। प्रतिपादन का अर्थ होता है अच्छी तरह समझाना, भली भाँति ज्ञान कराना। गायत्री विद्या का भली भांति ज्ञान कराने वाली, अच्छी प्रकार समझाने वाली।

793. **त्रिशक्ति** – तीन प्रकार की शक्तियों के स्वरूप वाली अर्थात महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती इन तीन शक्तियों के स्वरूप वाली।

794. **त्रिशक्तीशी** – इच्छा शक्ति, ज्ञान शक्ति और क्रिया शक्ति पर शासन करने वाली, उसका संचालन करने वाली, उन्हें प्रेरित करने वाली। उत्पत्ति, स्थिति और संहार की शक्ति के सामर्थ्य को रखने वाली। ईशी अर्थात सामर्थ्य वाली। तीन प्रकार की शक्तियों अर्थात महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती इन शक्तियों की ईश्वरी।

795. **त्रिशक्तेष्टफलप्रदा** – तीन शक्तियों की आराधना करने वालों को अभीष्ट फल देने वाली।

796. **त्रिशक्तेष्टा** – ब्रह्मा विष्णु महेश की इष्ट देवी अर्थात् उनके द्वारा उपासना की जाती है। इष्ट देवी का तात्पर्य होता है कि मन जिसकी ओर स्वतः जाता है तथा इस देवी से आप हर कार्य बोल सकते है। शक्त का अर्थ है जिसमें शक्ति या सामर्थ्य हो। रचना, पालन और संहार की शक्ति क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु और महेश में है। उत्पत्ति, स्थिति और संहार की शक्ति के लिए इष्ट अर्थात इच्छित या अभीप्सित। यदि उत्पत्ति करने की सामर्थ्य चाहिए तो इनकी उपासना करना चाहिए, यदि पालन या संहार करने की शक्ति चाहिए तो इनकी उपासना करनी पड़ेगी। तीन प्रकार से सामर्थ्यवालों द्वारा आराधित। तीन प्रकार से सामर्थ्य वाले हैं ब्रह्मा, विष्णु और महेश।

797. **त्रिशक्तीष्टा** – तीनों शक्तियों अर्थात् काली, लक्ष्मी और सरस्वती की इष्ट देवी अर्थात् ये शक्तियाँ भी जिनकी आराधना करती है। तीन शक्तियों के रूप में इष्ट देवी अर्थात् सभी के द्वारा पूजनीय। ये तीन शक्तियाँ है– उत्पत्ति, पालन और संहार शक्ति। तीन प्रकार की शक्तियों अर्थात महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती द्वारा आराधित। जो तीन शक्तियों की इष्ट देवी के रूप में है।

798. **त्रिशक्तिपरिवेष्टिता** – तीनों शक्तियों से घिरी रहने वाली अर्थात महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती इन शक्तियों से घिरी रहने वाली।

799. **त्रिवेणी** – तीन वेणियों अर्थात चोटियों को धारण करने वाली। प्रयाग में स्थित त्रिवेणी तीर्थ स्वरूपा। तीन वेणी अर्थात तीन धाराओं वाले संगम तीर्थ (प्रयाग) स्वरूपा। वेणी का एक अर्थ धारा या प्रवाह भी होता है। गाय, गंगा और गायत्री रूपी त्रिवेणी स्वरूपा। इन तीनों को भारतीय संस्कृति की त्रिवेणी कहा गया है। सत्–चित्–आनन्द की त्रिवेणी स्वरूपा। उत्पत्ति, वृद्धि, नाश की त्रिवेणी स्वरूपा। तीनों गुणों की त्रिवेणी स्वरूपा।

800. **त्रिवेणीस्त्री** – त्रिवेणी वाली अर्थात तीन चोटियों को धारण करने वाली स्त्री स्वरूपा।

801. **त्रिवेणीमाधवार्चिता** – त्रिवेणी (प्रयाग) स्थित माधव श्रीकृष्ण द्वारा अर्चित या सम्पूजित।

802. **त्रिवेणीजलसन्तुष्टा** – त्रिवेणी (संगम, प्रयाग) के जल से प्रसन्न होने वाली।

803. **त्रिवेणीस्नानपुण्यदा** – त्रिवेणी (संगम, जो प्रयाग में है) में स्नान करने से पुण्य प्रदान करने वाली।

804. **त्रिवेणीजलसंस्नाता** – त्रिवेणी के जल के द्वारा सम्यक् स्नान की गई।

805. **त्रिवेणीजलरूपिणी** – त्रिवेणी के जल के स्वरूप वाली।

806. **त्रिवेणीजलपूताङ्गी** – त्रिवेणी के जल से पवित्र अंगों वाली।

807. **त्रिवेणीजलपूजिता** – त्रिवेणी के जल से पूजित।

808. **त्रिनाडीस्था** – तीन नाड़ियों अर्थात इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना में स्थित।

809. **त्रिनाडीशी** – तीन नाड़ियों की स्वामिनी। स्वामिनी अर्थात जिसके आधार पर जीवन निर्वाह होता है, जो करता धरता है। स्वामी अर्थात अपनी इच्छानुसार चलाने वाला। स्वामी अर्थात जिसकी इच्छानुसार या जिसकी शक्ति से दूसरा व्यक्ति (जिस पर स्वामित्व है) कुछ करता है। जिस क्षेत्र की स्वामिनी है, उस क्षेत्र की सभी चीजों पर अधिकार है। उस क्षेत्र पर रह रहीं सभी शक्तियाँ इन्हीं के आदेश का पालन करती हैं। ईष्टे प्रेरयति से ईश बनाने पर प्रेरित करना अर्थ भी आता है। नाड़ियों को प्रेरित करने वाली अर्थात उन्हें जो काम दिया गया है उसके लिए प्रेरित करने वाली अर्थात नाड़ियों को उनके काम में लगाने वाली।

810. **त्रिनाडीमध्यगामिनी** – तीन नाड़ियों के मध्य में विचरण करने वाली।

811. **त्रिनाडीसन्ध्यसंच्छ्रेया** – तीन नाड़ियों द्वारा संध्या करने पर (प्राणायाम या ध्यान करने पर) समीचीन कल्याण देने वाली अर्थात निरोगिता देने वाली। तीन नाड़ियों के द्वारा सम्यक् ध्यान करने से विधिवत कल्याण करने वाली। तीन नाड़ियों के द्वारा सम्यक ध्यान (पूरक, कुम्भक और रेचक प्राणायाम के द्वारा) उससे क्षय को प्राप्त न होने वाली अर्थात क्षीण न होने वाली। तीन नाड़ियाँ हैं इडा, पिंगला और सुषुम्ना नाड़ी। तीनों नाड़ीयाँ जहाँ मिलती है अर्थात् आज्ञा चक्र में इनकी साधना या ध्यान करने से इनके द्वारा कल्याण देने वाली। तात्पर्य है कि आज्ञा चक्र में देवी का ध्यान करने से देवी उपासकों को कल्याण देती है।

812. **त्रिनाडी** – तीन नाड़ी अर्थात इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना स्वरूपा।

813. **त्रिकोटिनी** – तीन प्रकारों वाली अर्थात महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती के प्रकार वाली। तीन प्रकार की कोटियों अर्थात अग्रभाग या श्रेष्ठ स्वरूप वाली।

814. **त्रिपञ्चाशत** – तिरेपन स्वरूपों वाली।

815. **त्रिरेखा** – तीन रेखाओं से सुशोभित होने वाली। त्रिकोण में सुशोंभित होने वाली। तीन रेखाएं हैं जिसकी अर्थात त्रिकोण। मूलाधार चक्र में त्रिकोण होता है और उस त्रिकोण में कुण्डलिनी शक्ति सुशोभित है। स्त्री योनि भी त्रिकोण है।

816. **त्रिशक्तिपथगामिनी** – सृष्टि, स्थिति और संहार रूपी शक्ति के मार्ग पर चलने वाली अर्थात उस कार्य को करने वाली। किसी मार्ग पर चलना अर्थात उस कार्य को करना। तीन प्रकार की शक्तियों से श्रेष्ठ पथ पर विचरण करने वाली या चलने वाली।

817. **त्रिपथस्था** – तीन मार्गों में स्थित रहने वाली।

818. **त्रिलोकेशी** – तीन लोकों की स्वामिनी।

819. **त्रिकोटिकुलमोक्षदा** – तीन प्रकार के कुलों अर्थात देवकुल, दानवकुल और मानवकुल को मोक्ष देने वाली। कोटि अर्थात प्रकार। तीन प्रकार के कुलों को मोक्ष प्रदान करने वाली।

820. **त्रिरामेशी** – तीन प्रकार के रामों (परशुराम, दशरथ पुत्र राम एवं बलराम) की स्वामिनी।

821. **त्रिरामार्च्या** – तीन प्रकार के रामों या देवियों द्वारा अर्चनीया।

822. **त्रिरामवरदायिनी** – तीनों रामों को वरदान देने वाली।

823. **त्रिदशाश्रितपादाब्जा** – देवताओं द्वारा जिनके चरण कमल आश्रित हुए हैं अर्थात देवताओं ने जिनके चरण कमल का आश्रय लिया है।

824. **त्रिदशालयचञ्चला** – स्वर्ग में निवास करने पर भी चंचल स्वरूप वाली।

825. **त्रिदशा** – देवताओं के स्वरूप में तीन दशाओं वाली अर्थात बालपन, कौमार्य एवं युवावस्था वाली। इनका कभी बुढ़ापा नहीं होता। कहीं कहीं पर त्रिदशा का अर्थ तीसरी अवस्था वाली अर्थात युवावस्था में ही रहने वाली किया गया है।

826. **त्रिदशाप्रार्थ्या** – देवताओं के द्वारा प्रार्थना करने योग्य।

827. **त्रिदशाशुवरप्रदा** – देवताओं को शीघ्र ही वर प्रदान करने वाली।

828. **त्रिदशैश्वर्यसम्पन्ना** – देवताओं के ऐश्वर्य से सम्पन्न (युक्त, धनी) रहने वाली।

829. **त्रिदशेश्वरसेविता** – देवताओं के ईश्वरों अर्थात ब्रह्मा, विष्णु, महेश द्वारा सेवित या पूजित। सेवा का अर्थ पूजा होता है। यदि दोनो के अर्थ में अन्तर करना हो तो सेवा का अर्थ होता है जिसकी सेवा करता है उसके आदेश के इशारे मात्र से उस आदेश का पालन करने के लिए लग जाता है।

830. **त्रियामार्च्या** – तीनों यामों में पूजा के योग्य। पूजन और अर्चन में अन्तर यह है कि पूजन में जो भी सामग्री मिल जाये उसको चढ़ाने से काम चल जाता है किन्तु अर्चना में शास्त्र में जितनी भी सामग्री बताई गई है वह सब चढ़ाना आवश्यक है। सामग्री चढ़ाने के बाद स्तुति करनी होती है। पूजन में यदि सामग्री नहीं भी मिली तब भी काम चल जाता है।

831. **त्रियामेशी** – रात्रि के तीनों प्रहरों की ईश्वरी। प्रहर अर्थात 3 घण्टे का समय। तीनों प्रहरों में देवी की उपासना होती है।

832. **त्रियामानन्तसिद्धिदा** – रात्रि के तीनों प्रहरों में पूजा करने से अनन्त सिद्धियों को प्रदान करने वाली।

833. **त्रियामेशाधिकज्योत्स्ना** – चन्द्रमा से अधिक चाँदनी वाली। त्रियामा का अर्थ है रात्रि इसलिए उसे यामिनी कहते हैं। रात्रि के ईश हैं चन्द्रमा। तीनों यामों में श्रेष्ठ प्रकाश से युक्त।

834. **त्रियामेशाधिकानना** – चन्द्रमा से अधिक सुन्दर मुख वाली। तीनों प्रहर में अधिक उपासना से प्रसन्न चित्त रहने वाली।

835. **त्रियामानाथवत्सौम्या** – जो तीनों यामों के स्वामी हैं अर्थात चन्द्रमा, शिव के समान सौम्य स्वरूप वाली।

836. **त्रियामानाथभूषणा** – चन्द्रमा को आभूषण के रूप में सिर में धारण करने वाली। तीनों यामों के नाथ चन्द्रमा या शिव, उनके द्वारा विभूषित होने वाली।

837. **त्रियामानाथलावण्यरत्नकोटियुतानना** – तीनों यामों के नाथ शिव के लावण्य से युक्त और करोड़ों रत्नों से विभूषित मुख वाली।

838. **त्रिकालस्था** – तीनों कालों में विराजमान रहने वाली। तीन काल अर्थात भूतकाल, वर्तमान और भविष्य काल।

839. **त्रिकालज्ञा** – तीनों कालों को जानने वाली।

840. **त्रिकालज्ञत्वकारिणी** – त्रिकालज्ञता नामक सिद्धि की रचना करने वाली। त्रिकालज्ञता की कारण।

841. **त्रिकालेशी** – तीनों कालों की ईश्वरी। ईश्वरी अर्थात उत्पत्ति करने, चलाने (कुछ समय तक बनाये रखने), नाश करने वाली।

842. **त्रिकालार्च्या** – तीनों कालों में पूजा के योग्य।

843. **त्रिकालज्ञत्वदायिनी** – त्रिकालज्ञता सिद्धि को अपने उपासकों को देने वाली। त्रिकालज्ञता को प्रदान करने

वाली (यदि त्रिकालत्वदायिनी शब्द है तो अर्थ होगा तीनों कालों में देने वाली अर्थात भूतकाल में भी उन्होने दिया, वर्तमान में भी दे रही हैं और भविष्य में भी देंगी)।

844. **तीरभुक्** – नदी के किनारों का उपभोग करने वाली अर्थात आनन्द पूर्वक विचरण करने वाली। संसार सागर से दूसरे किनारे का भोग करने वाली अर्थात् कराने वाली अर्थात् भक्तों को संसार सागर से पार कराने वाली। संसार सागर के दूसरे किनारे पर मोक्ष अर्थात् आनन्द का साम्राज्य है।

845. **तीरगा** – नदी के तट पर गमनशील। संसार सागर से दूसरे किनारे पर पहुँचाने वाली अर्थात् भक्तों को मोक्ष तक पहुँचाने वाली। गमयति इति गा, पहुँचाने वाली।

846. **तीरसरिता** – किनारों पर नदी के रूप में प्रवाहित होने वाली अर्थात किनारा युक्त नदी के रूप में है जो।

847. **तीरवासिनी** – नदी के तट पर निवास करने वाली। देवी के कई मन्दिर नदियों के किनारें हैं।

848. **तीरभुग्देशासञ्जाता** – बिहार के तिरहुत देश में या स्थान में ठीक तरह से उत्पन्न या सेवित। किनारों का भोग करने वाले स्थानों अर्थात नदी और समुद्र के किनारों पर अच्छी प्रकार से उत्पन्न या सेवित। नदी के तटों पर भोगों को प्राप्त करने वाले स्थानों पर उत्पन्न होने वाली। तीर अर्थात जहाँ नदी की समाप्ति होती है। तीरभुक् अर्थात समाप्ति को खाना अर्थात सृष्टिस्वरूपा या सर्वव्यापक। जो सर्वव्यापक है तथा देश काल से परे है। असंजाता अर्थात किसी काल में पैदा नहीं हुई।

849. **तीरभुग्देशसंस्थिता** – बिहार के तिरहुत देश में अच्छी प्रकार से स्थित। जहाँ तैरकर जाया जाता है वह है तीर। समुद्र या नदी के किनारे का भोग करने वाले देश में भली प्रकार से स्थित। नदी या समुद्र के किनारों का भोग करने वाले स्थान में अच्छी प्रकार स्थित।

850. **तिग्मा** – वज्र से युक्त। भक्तों के अन्दर उत्साह का संचार करने वाली। तिज् निशाने धातु में उणादि मक् प्रत्यय लगाने से तिग्म शब्द बनता है। तेज करना अर्थात उत्साहित करना। योद्धाओं को वज्र मिलने से उनके अन्दर उत्साह का संचार हो जाता था। तिग्म शब्द तीक्ष्ण या असह्य के लिए भी प्रयुक्त होता हैं। दुष्टों के लिए तीक्ष्ण वचन स्वरूपा या उसे बोलने वाली। तप्त कर देने वाली। तप्त कर देने वाले सूर्य की शक्ति। तिग्म का एक अर्थ सूरज भी है। प्रचण्ड या उग्र। तीक्ष्ण स्वरूप वाली। तीक्ष्ण अर्थात असह्य अर्थात उनका तेज सहन नहीं किया जा सकता।

851. **तिग्मांशुसङ्काशा** – तीक्ष्ण किरणों के समान तेज वाली अर्थात तेजस्विनी। तीक्ष्ण अर्थात असह्य।

852. **तिग्मांशुक्रोडसंस्थिता** – सूर्य के मध्य में विराजमान रहने वाली।

853. **तिग्मांशुकोटिदीप्तांगी** – करोड़ों सूर्यों के समान देदीप्यमान अंगों वाली।

854. **तिग्मांशुकोटिविग्रहा** – करोड़ों सूर्यों के समान शरीर वाली।

855. **तीक्ष्णा** – तीक्ष्ण स्वरूप वाली अर्थात जिनके तेज को झेलना बहुत कठिन है। असह्य। निरालस्य। जिसका तेज या क्रोध असह्य है। तीक्ष्ण अर्थात पैनापन। तेज धार की तरह शत्रुओं को आसानी से काट डालने वाली एवं उनके शरीर के बहुत भीतर तक मार कर देने वाली। तीक्ष्ण अर्थात जो शत्रुओं के लिए पीड़ा दायक हो। तीक्ष्ण अर्थात जो दुष्टों के लिए कठोर, निर्दयी, दयालुरहित है। जो तीक्ष्ण बुद्धि वाली एवं तीक्ष्ण दृष्टि वाली है। तीक्ष्ण बुद्धि अर्थात बहुत जल्दी ही सोचने वाला या समझने वाला, नोटिस करने वाला और तुरन्त प्रतिक्रिया कर देने वाला। तीक्ष्ण व्यक्ति क्रोध से बात करता है या कार्य करता है जिससे दूसरों को क्षति पहुँच सकती है। तीक्ष्णता में चुभना, पीड़ा पहुँचाना, असह्यता यह भाव रहता है जो तीव्रा शब्द में नहीं।

856. **तीक्ष्णतरा** – दूसरों से अधिक पैनी या तेजस्विनी। अधिक आसानी से मारने वाली। दुर्ग आदि को भी भेद डालती है। अतिशय तीक्ष्ण। अन्य देवी देवताओं से तीक्ष्ण।

857. **तीक्ष्णमहिषासुरसंस्थिता** – जिसे मारना बेहद मुश्किल था ऐसे दुर्जेय महिषासुर पर अच्छी तरह से स्थित (मारने के लिए) जिससे वह रूप न बदल पाये। भयंकर/प्रचण्ड या उग्र महिषासुर के ऊपर स्थित होने वाली।

858. **तीक्ष्णकर्त्रिलसत्पाणि** – तीक्ष्ण अर्थात पैनी छुरी से सुशोभित हैं हाथ जिनके। कर्त्रि का अर्थ छुरी या तलवार है। लसत् का अर्थ सुशोभित। अतिशय तीक्ष्ण करवाल द्वारा जिनका हाथ सुशोभित है। तेज छुरी सुशोभित है जिनके हाथों पर।

859. **तीक्ष्णासिवरधारिणी** – तीक्ष्ण और श्रेष्ठ तलवार को धारण करने वाली।

860. **तीव्रा** – तीव्र स्वरूप वाली। वेगमयी, फुर्तीली, असह्य। तीव्र भगवान महादेव को भी कहते हैं। अतः महादेव स्वरूपा। शीघ्रगामी। फुर्तीला। कार्यों को चीजों को बहुत शीघ्रता से करने वाली। राक्षसों पर शीघ्रता से झपटने वाली। तीव्रा स्वर के रूप में अर्थात जो कुछ ऊँचा और अपने स्थान में बढ़ा हुआ है। तीव्र अर्थात महादेव की शक्ति स्वरूपा। जो किसी कार्य को बहुत ऊर्जा, उत्साह एवं एकाग्रता से करता हो तथा जिस कार्य को करता हो या जिस व्यक्ति के लिए करता हो उसमें भावनात्मक रूप से बहुत जुड़ा हो। (तीव्रा और तीक्ष्णा में अन्तर – तीव्रा का सम्बन्ध गुण की अत्यधिक मात्रा या क्रिया की अत्यधिक गति से है। जैसे तीव्र पीड़ा अर्थात पीड़ा की अनुभूति, बहुत बढ़ी–चढ़ी, तीव्र प्रकाश अर्थात प्रकाश की दीप्ति बहुत बढ़ी–चढ़ी। तीव्र गन्ध अर्थात गन्ध का प्रभाव बहुत बढ़ा–चढ़ा। तीव्र गति अर्थात गति का वेग बहुत बढ़ा–चढ़ा। तीव्र विरोध अर्थात विरोध की अभिव्यक्ति बहुत बढ़ी–चढ़ी।

तीक्ष्णा का सम्बन्ध तीखेपन, पैनेपन से है तथा उसमें गहराई तक पहुँचकर प्रभाव करने की प्रवृत्ति या क्षमता होती है। तीक्ष्ण ताप या तीक्ष्ण ठंड। ताप और ठंड के आधिक्य की ऐसी अवस्थाएं है जब वे असह्य हो जाती है। स्पष्ट है कि तीव्र और तीक्ष्ण दोनों में अधिकता है। किन्तु तीक्ष्ण में असह्यपन या चुभना भी शमिल है अर्थात व्यक्ति उससे हटना चाहता है। तीक्ष्ण वचन इतना अप्रिय होता है कि सुनने वाले के दिल में चुभ जाता है। तीक्ष्ण का प्रभाव तीव्र से अधिक गहरा होता है। तीव्र गन्ध की तुलना में तीक्ष्ण गंध ज्यादा तेज होती है।)

861. **तीव्रगति** – तेज गति वाली। तीव्र का अर्थ हे वेगयुक्त, तेज।

862. **तीव्रासुरसंघविनाशिनी** – असह्य या प्रचण्ड असुरों के समूह का विनाश करने वाली। विनाश अर्थात पूर्ण नाश। तीव्र का अर्थ है प्रचण्ड, असह्य और भयंकर, डरावना। दुर्दान्त या दुर्धर्ष असुरों के समूह का विनाश करने वाली। तीव्र अर्थात भयंकर/प्रचण्ड/वेगयुक्त अर्थात तेजी से झपटने वाले। ऐसे दैत्यों के समूहों को नष्ट कर देने वाली।

863. **तीव्राष्टनागाभरणा** – प्रचण्ड अष्ट नागों को आभूषण के रूप में धारण करने वाली। तक्षक, कर्कोटक आदि अष्टनाग हैं। तीव्र का अर्थ है प्रचण्ड, असह्य, भयंकर डरावना। अमोघ विष वाले अष्ट नाग जिनके आभूषण हैं। तीव्र का यहाँ पर अर्थ है उग्र या जिनका काटा हुआ बच नहीं पाता। भयंकर/असह्य आठ नागों के आभूषणों वाली।

864. **तीव्रमुण्डविभूषणा** – भयंकर अर्थात डरावने मुण्डों को आभूषण के रूप में धारण करने वाली। चण्ड और मुण्ड असुरों के सिरों को आभूषण के रूप में या माला के रूप में धारण किये हुए। तीव्र का अर्थ है प्रचण्ड अर्थात चण्ड या भयंकर।

865. **तीर्थात्मिका** – तीर्थ स्वरूपा। तीर्थों का सार तत्व स्वरूपा। तीर्थों मे व्याप्त। आत्मा का एक अर्थ व्याप्त भी

होता है। अत सातत्यगमने धातु से आत्मा शब्द बना जिसका अर्थ है निरन्तर गति करना। तीर्थों की ओर निरन्तर गति करने वाली अर्थात तीर्थों से कभी अलग न होने वाली। तीर्थ जिनके कारण जीवन्त होते हैं।

866. **तीर्थमयी** – सभी तीर्थों से युक्त अर्थात सभी तीर्थ उनके अन्दर हैं। तीर्थमय शरीर वाली।

867. **तीर्थेशी** – तीर्थों की स्वामिनी अर्थात तीर्थों का अधिकार उनके पास है। तीर्थों को संचालित करने वाली। तीर्थों को अनुशासित करने वाली (नियम आदि बनाकर)। तीर्थों की ईश्वरी। तीर्थ के लिए अर्थात तीर्थों में जाने के लिए लोगो को प्रेरित करने वाली। ईष्टे प्रेरयति से ईश शब्द का अर्थ प्रेरित करने वाला होता है। सामान्यतः ईश् धातु का अर्थ शासन करना होता है। तीर्थ सम्बन्धी नियम बनाने वाली। अनुशासन में नियम बनाये जाते हैं।

868. **तीर्थपूजिता** – तीर्थों में जिनकी पूजा की गई अर्थात पूजा की जाती है। पूजित का शाब्दिक अर्थ है जिनकी पूजा की गई पर कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र से कृत्य प्रत्यय दूसरे कालों में भी अर्थ देते हैं अर्थात भूतकाल वाला अर्थ वर्तमान काल में भी लगाया जा सकता है। इस प्रकार जिनकी पूजा की जाती है ऐसा वर्तमान काल वाला अर्थ भी निकाला जा सकता है।

869. **तीर्थराजेश्वरी** – तीर्थराज प्रयाग या श्रेष्ठ तीर्थों की ईश्वरी या स्वामिनी।

870. **तीर्थफलदा** – तीर्थों के फलों को प्रदान करने वाली।

871. **तीर्थदानदा** – तीर्थों में दान देने वाली या दान करने वाली। मनुष्य दान देता है अर्थात मनुष्य की शक्ति दान देती है। शक्ति का अर्थ है देवी। किसी भी क्रिया को करने वाली शक्ति होती है, दान क्रिया को करने वाली शक्ति ही होगी।

872. **तुमुली** – भयंकर स्वरूप वाली। सेना के या युद्ध के शोर गुल से युक्त अर्थात असुरों के साथ युद्ध करने वाली। सेना के शोरगुल वाली अर्थात युद्ध वाली। तुमुल का अर्थ सेना का कोलाहल, लड़ाई की हलचल है। तुमुल अव्यक्त शब्द या नाद है। अध्यात्मिक सन्दर्भ में इसे अनाहद नाद करने वाली कह सकते हैं अर्थात शब्द ब्रह्म स्वरूपा। युद्ध करने वाली अर्थात उपासकों के कर्म संस्कारों या अन्य दोषों को हटाने वाली। मैं ही आत्मा हूँ, सत्–चित्–आनन्द स्वरूप हूँ, नित्य शुद्ध–बुद्ध हूँ ऐसा निरन्तर नाद स्वरूपा। ऊँ की या अन्य अनाहत ध्वनि करने वाली।

873. **तुमुलप्राज्ञा** – शोरगुल को या युद्धभूमि में किये हुए ऊँचे शब्द को विशेष रूप से जानने वाली। युद्ध को अधिक जानने वाली अर्थात युद्ध विद्या में निपुण। भयंकर स्वरूप वाली। उच्च अनाहत नाद को जनवाने वाली अर्थात् अनुभव कराने वाली। ज्ञपयति इति ज्ञा से ज्ञ का अर्थ जनवाने वाली अर्थात् बोध कराने वाली होता है। तुमुल का अर्थ है शोरगुल। यह अव्यक्त ध्वनि होती है। डमरू, भेरी, घण्टा आदि के एक साथ बजने पर जो ध्वनि उत्पन्न होती है वह तुमुल ध्वनि है। यह अव्यक्त ध्वनि ही होती है अर्थात् इस ध्वनि के अनुरूप कोई वस्तु नहीं होती है। अनाहत नाद भी अव्यक्त ध्वनि है। व्यक्ति जब ध्यान की गहराई में उतरता है तो उसे यह सुनाई पड़ता है। यह अनाहत नाद शब्द ब्रह्म है और देवी का ही रूप है।

874. **तुमुलासुरघातिनी** – भयंकर दैत्यों का वध कर देने वाली।

875. **तुमुलक्षतजप्रीता** – शोरगुल के साथ होने वाले दैत्यों के रक्त से प्रसन्न होने वाली अर्थात उनके रक्त को पीने से प्रसन्न होती हैं। क्षतज अर्थात घाव से उत्पन्न अर्थात रक्त। जब किसी को काटा जाएगा तो आवाज भी होगी। भयंकर घाव आदि से निकलने वाला रक्त है प्रिय जिन्हें अर्थात भयंकर दैत्यों से निकला रक्त है प्रिय जिन्हें। युद्ध में असुरों का रक्त पीकर प्रसन्न रहने वाली। तुमुलम अस्य अस्ति इति तुमुलः अर्थात युद्ध। सेना के शोरगुल से युक्त अर्थात युद्ध। क्षत अर्थात घाव। क्षतज अर्थात घाव से उत्पन्न अर्थात खून।

876. **तुमुलाङ्गणनर्तकी** – युद्ध क्षेत्र रूपी आँगन में नाचने वाली। तुमुल का अर्थ शोरगुल होता है, युद्ध भूमि में शोरगुल होता है अतः अर्थ हुआ शोरगुल से उपलक्षित युद्ध भूमि रूपी आँगन में नृत्य करने वाली। विशाल आँगन में नृत्य करने वाली। युद्ध भूमि में नृत्य करने वाली अर्थात दुष्टों को मारने में आनन्दित होने वाली, न डरने वाली।

877. **तुरगी** – घोड़ी की तरह तेज गति वाली। शीघ्र गति करने वाली अर्थात शीघ्रता से प्रत्येक क्रिया करने वाली। तुर का अर्थ है शीघ्र। संज्ञा स्वरूपा। सूर्य की पत्नी संज्ञा सूर्य के तेज को न सहन करने के कारण घोड़ी के रूप में परिवर्तित हो गयी थी। हयग्रीव भगवान की शक्ति स्वरूपा।

878. **तुरगारूढा** – घोड़े पर सवार होने वाली। घोड़ा शक्ति, व्याप्ति एवं तीव्र गति का प्रतीक है। घोड़े के अच्छे गुण जिन व्यक्तियों में होते हैं, उनमें विराजमान अर्थात जाग्रत रूप से विराजमान अर्थात उन्हें अपनी शक्ति या कृपा देने वाली।

879. **तुरंगपृष्ठगामिनी** – घोड़े की पीठ पर बैठकर चलने वाली।

880. **तुरंगगमनाह्लादा** – घोड़े पर चलने से आनन्दित होने वाली।

881. **तुरंगवेगगामिनी** – घोड़े के समान तेजी से चलने वाली। तात्पर्य है तीव्रता से कार्य करने वाली।

882. **तुरीया** – चतुर्थ गति स्वरूपा या अवस्था स्वरूपा। इस अवस्था में आनन्द की अनुभूति होती है। जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति से परे चौथी अवस्था। तुरीय + आ, आ का अर्थ है देना। उपासकों को यह अवस्था देने वाली। इस अवस्था में विराजमान।

883. **तुलना** – उस भाव के स्वरूप में जिसके कारण दो या अधिक वस्तुओं में कम या अधिक होने का या अच्छे बुरे का निर्णय होता है। तुल धातु में कर्ता में ल्युट् प्रत्यय लगाने से तुलना शब्द बन सकता है जिसका अर्थ हुआ हर चीज को तौलने वाली अर्थात सद् असद् विवेक रखने वाली। तुल् धातु का अर्थ तौलना, सोचना, विचारना, तुल्य या सदृश्य होना होता है। इस प्रकार तुलना का अर्थ हुआ ठीक ठीक अनुमान लगाने वाली। किसी भी काम करने में पूरी तरह कटिबद्ध रहने वाली। उपमा या सादृश्य स्वरूपा अर्थात जिसका ब्रह्म या शिव से सादृश्य है। समता स्वरूपिणी। वस्तुओं में गुण विशेष के कारण जो सादृश्य होता है उस सादृश्य के रूप में। जैसे सुन्दरता के कारण दो वस्तुऐं समान हों तो सुन्दरता सादृश्यता होगी। तुलनात्मक स्वरूप वाली। विश्व में तुलना करने पर सर्वश्रेष्ठ स्वरूप वाली। बराबरी का नाश करने वाली अर्थात अतुलनीया। तुलना+ आ, आ का अर्थ है नाश करना एवं तुलना का अर्थ है सादृश्य। मापने की क्रिया स्वरूपा। गुण दोषों का मूल्यांकन करने की क्रियास्वरूपा। एकाक्षरी कोश में तु का अर्थ ध्यान दिया गया है एवं ल का अर्थ भूमि, क्रिया दिया गया है। नयति से न शब्दाक्षर बन सकता है। ध्यान क्रिया की ओर ले जाने वाली या ध्यान भूमि की ओर ले जाने वाली।

884. **तुल्या** – सभी अवस्थाओं में समान रहने वाली। अच्छी, बुरी या अनुकूल, प्रतिकूल हर स्थिति में समभाव रखने वाली।

885. **तुल्यवृत्ति** – समान व्यवहार वाली। किसी के साथ भेदभाव नहीं करती हैं।

886. **तुल्यकृति** – सन्तुलित अवयवों वाली अर्थात जिनके शरीर के अंग उतने ही माप के हैं जितने होना चाहिए। तुल्य का अर्थ योग्य भी होता है। जैसे यह व्यक्ति उस लडकी के तुल्य है अर्थात योग्य है। कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र से कृति का अर्थ करने वाला कर सकते हैं। सन्तुलित कार्य करने वाली। सभी को समान मानने वाली या सभी के साथ समान व्यवहार करने वाली। सुन्दर कृतियों वाली।

887. **तुलनेशी** – मूल्यांकन की स्वामिनी। क्या अच्छा है, क्या बुरा है, कितनी अच्छाई है, कितनी बुराई है

इसका नियमन करने वाली, निर्धारण करने वाली। तुलना करने पर श्रेष्ठ सिद्ध होने वाली। मापने की क्रिया का निर्माण करने वाली। ईशी अर्थात उत्पन्न करने वाली। मापने की क्रिया करने वाली। यहाँ पर ईशी का अर्थ करने वाली किया गया है।

888. **तुलाराज्ञी** – श्रेष्ठ तुला स्वरूपा अर्थात जिसने जैसा कर्म किया वैसा फल देने वाली। राज्ञी अर्थात श्रेष्ठ। तुल्यते अनया इति तुला अर्थात जिसे तोला जाता है वह तुला है। तुलाराशि की रानी।

889. **तुलाराज्ञीत्वसूक्ष्मविद्** – श्रेष्ठ तुला के धर्म को सूक्ष्म रूप से जानने वाली। मूल्यांकन को सूक्ष्मता से करने वाली। तुला राशि की ईश्वरी होने के साथ साथ सूक्ष्म तत्वों को जानने वाली।

890. **तुम्बिका** – दुष्टों या आसुरी वृत्तियों का नाश करने वाली। तुम्ब् अर्दने धातु होती है एवं अर्दयति का अर्थ है नाशयति। अधर्म का नाश करने वाली। वीणा के समान सप्तसुरों की मूल आधार अर्थात सभी स्वरों की मूल अर्थात सभी स्वर जिससे उत्पन्न होते हैं। तुम्बी या तुम्बिका का अर्थ है वीणा। वीणा में विराजमान। लौकी की तरह अर्थात लौकी की तरह रोग या कष्ट निवारिका। लौकी की बेल की तरह अर्थात जिस प्रकार से लौकी की बेल में बहुत से लौकी लगे रहते है उसी प्रकार देवी रूपी बेल में बहुत से ग्रह नक्षत्र लगे हुए हैं। रूचि उत्पादक अर्थात उनके भक्त साधना में और अधिक तल्लीन होते जाते हैं क्योंकि देवी रूचि को और बढ़ा देती हैं। तुम्बी का अर्थ है लौकी जो रूचि उत्पादक मानी जाती है। यदि खाने की इच्छा न करे तो चिकित्सक लोग लौकी खाने की सलाह देते हैं। लौकी की तरह पोषणकर्त्री भी कह सकते हैं। तुम्बी स्वरूपा। सन्यासी लोग तुम्बी लेकर चलते थे। अतः लक्षणा शक्ति से तुम्बी लिये हुए यह अर्थ भी कर सकते हैं।

891. **तुम्बिकापात्रभोजना** – तुम्बी के पात्र में अर्थात लौकी के बने हुए पात्र में भोजन करने वाली।

892. **तुम्बिकार्थिनी** – तुम्बी (लौकी) को चाहने वाली।

893. **तुलसी** – तुलसीरूपिणी। तुलसी का वृक्ष भी देवी रूपा है। अतुलनीय। तुला का अर्थ है समानता। समानता को जिसने फेंक दिया है अर्थात जिसके सदृश कोई नहीं है। तुलाम् अस्यति इति तुलसी।

894. **तुलसीवर्या** – तुलसियों में श्रेष्ठ तुलसी के रूप को धारण करने वाली।

895. **तुलजा** – ध्यान की भूमि से उत्पन्न। ध्यान की चरमावस्था में पहुँचने पर देवी प्रकट हो जाती हैं। एकाक्षरीकोश के अनुसार तु का अर्थ है ध्यान और ल का अर्थ है भूमि। साम्यभाव या समभाव स्थापित होने पर प्रकट होने वाली। तुला का अर्थ है साम्य या समान। गीता में कहा गया है समत्वम् योग उच्यते। तुला न्याय का भी प्रतीक है। न्याय कर्म करने से अर्थात धर्म कर्म करने से प्रकट होने वाली। तुल नामक स्थान में उत्पन्न होने वाली। ऐसा कहा जाता है कि त्वरिता शब्द ही मराठी में तुलजा हुआ। त्वरिता अर्थात भक्त की पुकार सुनकर शीघ्र आ जाने वाली। अनुभूति नामक ब्राह्मण स्त्री पर जब एक राजा की बुरी नजर पड़ी तो अनुभूति ने देवी माँ को पुकारा जिससे माँ तत्काल उन तक आ गई। तुलजा भवानी स्वरूपा।

896. **तुलजेश्वरी** – तुलजा भवानी की ईश्वरी अर्थात उनकी आराध्या। तुलजा भवानी देवी के रूप में भक्तों की आराध्या।

897. **तुषाग्निव्रतसन्तुष्टा** – तुषाग्नि व्रत से सन्तुष्ट (प्रसन्न) होने वाली। तुषाग्निव्रत में भूषा की अग्नि के पास बैठकर उपासना होती है।

898. **तुषाग्निः** – आवरक बाधक शक्तियों के लिये अग्नि की तरह अर्थात् उसे जला देने वाली या नष्ट कर देने वाली। तुष चावल का छिलका होता है जो चावल को ढके रहता है। जो आत्मा की शक्ति को ढक लेता है वह मल कहलाता है, और वह तुष अर्थात् छिलके की तरह है। भूषे की अग्नि की तरह लगातार जलने वाली अर्थात

निरन्तर प्रज्वलित अर्थात हमेशा तेजस्वरूप/तेजयुक्त या प्रकाशमानस्वरूप अवस्था में रहने वाली। भूषे की अग्नि की तरह शत्रुओं को भस्म कर देने वाली अर्थात उनका नाश कर देने वाली। भूषे की अग्नि निरन्तर धीरे–धीरे जलती रहती है। तुषाग्निस्वरूपा अर्थात भूषे में जलने वाली अग्निस्वरूपा।

899. **तुषाराशिकृत्** – मिथ्या संसार को बनाने वाली। तुषा अर्थात भूषा अर्थात व्यर्थ की चीज। संसार को मिथ्या अर्थात व्यर्थ माना गया है। तुषाओं की राशि या समूह करने वाली। अज्ञान को हटाकर ढेर करने वाली अर्थात ढेर लगाने वाली। अज्ञान रूपी आवरण के समूह को उत्पन्न करने वाली। अज्ञान रूपी आवरण के समूह को नष्ट करने वाली। कृ करोति से करने वाली एवं कृती छेदने से नष्ट करने वाली अर्थ आता है। चावल का छिलका तुषा होता है। छिलका अर्थात आवरण अर्थात अज्ञान या अविद्या रूपी आवरण। सभी प्रकार के मलों का नाश करने वाली। आणव, मायिक एवं कार्मिक तीन प्रकार के मल होते हैं जो आत्मा की शक्ति को ढक देते हैं।

900. **तुषारकरशीतांगी** – चन्द्रमा या हिमकणों की तरह शीतल अंगों वाली। तुषारकर अर्थात चन्द्रमा।

901. **तुषारकरपूर्तिकृत्** – चन्द्रमा को पूरा बनाने वाली। ऐसा कहते हैं कि देवता लोग चन्द्रमा की कला का पान करते हैं और अमावस्या में चन्द्रमा खाली हो जाता है। देवी ही पूर्णिमा में चन्द्रमा को पूर्ण करती हैं अर्थात सभी कलाओं से युक्त कर देती हैं। हिमकणों द्वारा जिनकी सम्पूर्ति की जाती या चन्द्र किरणों की सम्पूर्ति करने वाली अर्थात बढ़ाने वाली। तुषार का अर्थ है ओस, बर्फ, पाला। तुषारकर का अर्थ है चन्द्रमा।

902. **तुषाराद्रि** – हिमालय पर्वतस्वरूपा अर्थात हिमालय से अभेद है जिनका। तुषार का अर्थ है हिम।

903. **तुषाराद्रिसुता** – हिमालय की कन्या पार्वती स्वरूपा।

904. **तुहिनदीधिति** – चाँदनी की किरण के समान आह्लादकारी। चन्द्रमा के समान आह्लादकारी एवं सौम्य। तुहिनदीधिति अर्थात ठण्डी किरणों वाला अर्थात चन्द्रमा। तुहिन का अर्थ ठण्डा या बर्फ है। चन्द्रमा स्वरूपा।

905. **तुहिनाचलकन्या** – हिमालय की पुत्री पार्वती से अभेद है जिनका।

906. **तुहिनाचलवासिनी** – हिमालय पर्वत पर निवास करने वाली।

907. **तुर्यवर्गेश्वरी** – चौथे वर्ग अर्थात मोक्ष रूपी वर्ग की ईश्वरी (स्वामिनी)। चतुर्वर्ग अर्थात चार वर्ग अर्थात धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। चौथे से युक्त वर्गों की ईश्वरी अर्थात उन्हें उत्पन्न करने वाली या उनकी स्वामिनी। तुर्य का अर्थ है चौथा। ऐसा वर्ग जिसमें चार सदस्य हों जैसे चार वेद, चार वर्ण, चार पुरुषार्थ आदि। यदि तुर्य वर्ग को वर्गतुर्य कहा जाय तो उसका अर्थ होगा वर्ग या समूह में चौथा अर्थात मोक्ष। मोक्ष को देने वाली।

908. **तुर्यवर्गदा** – चौथे वर्ग अर्थात मोक्ष को अपने उपासको को देने वाली। चतुर्वर्ग अर्थात चार वर्ग अर्थात धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष।

909. **तुर्यवेददा** – चौथे वेद अर्थात अथर्ववेद का ज्ञान कराने वाली या उसे प्रकट करने वाली।

910. **तुर्यवर्यात्मिका** – चौथा जो श्रेष्ठ है उसके स्वरूप वाली। तुर्य का अर्थ है चौथा, वर्य का अर्थ है श्रेष्ठ और आत्मिका का अर्थ है स्वरूप वाली। चार वर्गों में चौथा वर्ग अर्थात मोक्ष श्रेष्ठ है अतः मोक्ष स्वरूप वाली। श्रेष्ठ वाद्य स्वरूपिणी। तुर्य का अर्थ मुरज वा्द्य भी होता है। चौथा ही श्रेष्ठ है अर्थात चतुवर्ग में श्रेष्ठ मोक्ष स्वरूपा। चतुर्वर्ग या चारों वेदों के स्वरूप वाली।

911. **तुर्या** – तुरीया गति स्वरूपा या चेतना की चौथी अवस्था (सुषुप्ति से परे) स्वरूपा। वह ज्ञान जिससे मुक्ति मिल जाती है तुर्या कहलाता है। तद् ज्ञान स्वरूपा। काली, लक्ष्मी और सरस्वती से आगे चौथी अवस्था स्वरूपा अर्थात परब्रह्ममहिषी स्वरूपा। Turya is fourth state of consciousness which strings together all

the lower states-wakefulness, dreaming, deep sleep. जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति ये तीनों अवस्थायें एक साथ नहीं हो सकती किन्तु इन तीनों अवस्थाओं में साक्षी की तरह विद्यमान चौथी अवस्था तुर्या अवस्था है जो आनन्द की अवस्था है। जब आनन्द की यह अवस्था स्थाई (Permanent) हो जाती है तो वह पाँचवी अवस्था तुरीयातीत अवस्था कहलाती है।

912. **तुर्येश्वरस्वरूपिणी** – ब्रह्मा, विष्णु, महेश से ऊपर जो चौथा ईश्वर है अर्थात ब्रह्म है, उसके स्वरूप वाली। चौथा स्वरूप अर्थात परब्रह्मस्वरूपिणी। ब्रह्मा विष्णु महेश के ऊपर चौथा ब्रह्म ही हुआ।

913. **तुष्टिदा** – दुष्टों की प्रसन्नता को नष्ट करने वाली। वस्तु का पूर्ण रूप से उपभोग करने पर या काम के सही तरीके से निपटने पर जो सुख या प्रसन्नता मिलती है वह तुष्टि है। दो अवखण्डने धातु से दा बनाने पर खण्डन या नष्ट करने वाली अर्थ आता है। दा ददाति से दा का अर्थ देने वाली भी होता है। तुष्टि प्रदान करने वाली। और कुछ भी नहीं चाहिये, ऐसा भाव देने वाली। तुष्टि भाव अर्थात जो भी उपलब्ध है उससे अधिक की इच्छा न करना। तुष्टि अर्थात सन्तोष, प्रसन्नता।

914. **तुष्टिकृत्** – तुष्टि नामक गुण का निर्माण करने वाली अर्थात रचना करने वाली। तुष्टि करने वाली अर्थात सदा प्रसन्न रखने वाली। भक्तों के मनोरथ को पूरा कर उन्हें प्रसन्न करने वाली। कृत् शब्द के करना (देना) एवं छेदन करना (कृती छेदने धातु से) दोनों अर्थ होते हैं।

915. **तुष्टि** – वस्तुओं की आकांक्षा समाप्त होने पर होने वाली सुखानभुति तुष्टि है। तुष्टिः समस्तवस्तुषु अनाकांक्षा। अन्य की आकांक्षा का अभाव होने पर मन में होने वाली सुखानुभूति या भाव तुष्टि है। इस भाव के स्वरूप वाली। विषय का उपभोग करने के बाद फिर उस विषय को भोगने की इच्छा का अभाव होने पर होने वाली सुखानुभुति तुष्टि है। जो पाना था पा लिया अब और कुछ पाने की आकांक्षा नहीं, इस प्रकार के भाव होने पर अर्थात किसी भी वस्तु को पाने की इच्छा का अभाव होने पर अर्थात पूर्णता का भाव होने पर होने वाली सुखानुभुति तुष्टि है। पूर्णता का भाव आने पर होने वाली सुखानुभुति तुष्टि है। तुष्टिः विषयोपभोगम् अवाप्य तदभिलाषात् उपरमः। तुष्टिर्विषयोपभोगम प्राप्य पुनस्तदभिलाषास्तदवाप्यावाप्तम् परमम् सुखम्। श्रीमद्भागवत् के 11वें अध्याय में लिखा है कि एक भूखे व्यक्ति को कुछ खाना मिल जाये तो वह खाना पेट में जाने पर जैसी सुखानुभुति होती है, वैसी सुखानुभुति तुष्टि है। देवी या देवता देने वाले होते है अर्थात उनके पास जो होता है, उसे दे देते है। इस प्रकार लक्षणा शक्ति द्वारा इस नाम का अर्थ हुआ अपने भक्तों को तुष्टि देने वाली अर्थात तुष्टि की अवस्था देने वाली। यस्याः सकाशात् तुष्टिः भवति, सा तुष्टिः इति उच्यते। जिसकी समीपता से तुष्टि मिलती है अर्थात तुष्टि देने वाली भी तुष्टि है। सांख्य दर्शन में तुष्टि को परम लक्ष्य पाने के लिये बाधक माना गया है। सांख्य दर्शन में 9 प्रकार की तुष्टि मानी गई है जो आगे बढने में रूकावट है। इसमें व्यक्ति जो है उसी को पूर्ण मान लेता है, यद्यपि पूर्णता की अवस्था नहीं आयी है। इस कारण व्यक्ति और अधिक जानने या प्राप्त करने का प्रयास नही करता है। सन्तोष गुण स्वरूपा। तृप्ति स्वरूपा। प्रसन्नतास्वरूपा। सांख्य दर्शन में 9 प्रकार की तुष्टियाँ बताई गई हैं, तद्स्वरूपा। इनमें से 4 आध्यात्मिक तुष्टियाँ है और 5 बाह्य तुष्टियाँ हैं। (उसमें स्थित, उसका कारण, उसके समान, शब्द के अर्थ में पूर्व लिखित शब्द जोड़ देने से भी कई शब्दों का अर्थ बन जाता है, जैसे तुष्टि का अर्थ तुष्टि में स्थित, तुष्टि का कारण आदि भी हो सकता है, गौ अर्थात गौ के समान अर्थात गौ के समान सीधा।) (तुष्टि और तृप्ति में अन्तर– इच्छा की पूर्ति होने पर होने वाली प्रसन्नता तुष्टि है किसी कार्य की सही तरीके से पूरे होने पर होने वाली प्रसन्नता एवं आनन्द तुष्टि है। अर्थात जितनी आवश्यकता या जितने में पूर्णता है, उतनी पूर्णता हो जाना तुष्टि है। पूर्णता के बाद भी इतना भर देना कि अब और ग्रहण करने की गुजांइश न बने वह तृप्ति है जैसे चार रोटी खाने पर भूख मिट गयी यह तुष्टि है किन्तु भूख मिटने के बाद भी आपको इतना और खिला दिया गया कि अब उसमें और नहीं डाला जा सकता, गुजाइंश नहीं बची, यह तृप्ति है।)

916. **तूणीरद्वयपृष्ठधृष्** – पृष्ठ भाग पर दो तूणीरों या तरकशों को धारण करने वाली।

917. **तुम्बुराज्ञानसन्तुष्टा** – तुम्बुरा वाद्ययन्त्र के ज्ञान से सन्तुष्ट होने वाली। गन्धर्व स्त्री को भी तुम्बुरा कहते हैं।

918. **तुष्टसंसिद्धिदायिनी** – तुष्ट (प्रसन्न या तृप्त) होने पर सिद्धि प्रदान करने वाली।

919. **तूर्णराज्यप्रदा** – शीघ्र राज्य को देने वाली।

920. **तूर्णगद्‌गदा** – शीघ्र ही अतिशय प्रसन्न होने वाली।

921. **तूर्णपद्यदा** – शीघ्र ही विशिष्ट कवित्व शक्ति को प्रदान करने वाली।

922. **तूर्णपाण्डित्यसन्दात्री** – शीघ्र ही पाण्डित्य अर्थात श्रेष्ठ वैदुष्य को प्रदान करने वाली।

923. **तूर्णा** – वेगमयी। फुर्तीली। शीघ्र कार्य करने वाली।

924. **तूर्णबलप्रदा** – शीघ्र ही बल प्रदान करने वाली।

925. **तृतीया** – तृतीया तिथि स्वरूपा। षोडशी स्वरूपा। दस महाविद्याओं में षोडशी तीसरी महाविद्या है।

926. **तृतीयेश्वरी** – तृतीया तिथि की ईश्वरी। ईश्वरी अर्थात स्वामिनी या निर्माण करने वाली। ईश्वरी अर्थात आराध्या अर्थात इस तिथि में इनकी उपासना होती है।

927. **तृतीयातिथिपूजिता** – तृतीया तिथि में पूजित होने वाली।

928. **तृतीयाचन्द्रचूडेशी** – तृतीया तिथि के चन्द्रमा को जूड़े में धारण करने वाली। भगवान शिव को चन्द्रचूड कहते हैं क्योंकि वे चन्द्रमा को जूड़े में धारण करते हैं।

929. **तृतीयाचन्द्रभूषणा** – तृतीया के चन्द्रमा को आभूषण के रूप में धारण कर रखा है जिन्होने।

930. **तृप्ति** – पूर्ण मात्रा में कोई चीज मिल जाने पर अर्थात खाली स्थान भर जाने पर होने वाली सुखानुभूति या भाव तृप्ति है। इस भाव के स्वरूप वाली। देवी या देवता देने वाले होते है अर्थात उनके पास जो होता है, उसे दे देते है। इस प्रकार लक्षणा शक्ति द्वारा इस नाम का अर्थ हुआ अपने भक्तों को तृप्ति देने वाली अर्थात तृप्ति (पूर्णता) की अवस्था देने वाली। यस्याः सकाशात् तृप्ति : भवति, सा तृप्ति : इति उच्यते। जिसकी समीपता से तृप्ति मिलती है अर्थात तृप्ति देने वाली भी तुष्टि है। (तुष्टि और तृप्ति में एक अन्तर है कि तुष्टि बिना पदार्थो के भी हो सकती है जैसे आप की बात सुनकर मुझे बडा सन्तोष हुआ अर्थात तुष्टि हुई। तृप्ति में पदार्थ का उपभोग करना आवश्यक है, सिर्फ बातों से काम नहीं चलेगा। पितरों के तर्पण के लिए उन्हें जल या अन्न दान देना पडता है अर्थात पदार्थ देना पडता है। तर्पण अर्थात तृप्ति। अंग्रेजी में तृप्ति के लिए (saturation) शब्द आया है। जैसे किसी वाहन में पचास लोगों के बैठने की व्यवस्था है और पचास बैठा दिए गये, यह तृप्ति की अवस्था है। पचास बैठने के बाद भी कुछ और लोगों को भी बिठा दिया जाता है किन्तु अब और अधिक की गुंजाइश नहीं है, यह संतृप्ति है। इतना अधिक भर जाना कि अब और गुंजाइश नहीं, तृप्ति या संतृप्ति है।) तृप्ति स्वरूपा। इच्छा पूरी होने से प्राप्त शान्ति या आनन्द तृप्ति है। प्रसन्नता स्वरूपा।

931. **तृप्तिकरी** – तृप्ति को करने वाली। प्रसन्नता करने वाली। प्रसन्नता का निर्माण करने वाली। प्रसन्नता को देने वाली।

932. **तृप्ता** – तृप्त (शान्त, आनन्दित) रहने वाली क्योंकि इनके पास सभी कुछ है और वह भी पूर्ण मात्रा में है।

933. **तृष्णा** – तृष्णा स्वरूपा। किसी चीज की प्राप्ति के लिए आकुल करने वाली इच्छा तृष्णा है। यह प्यास, लोभ, लालच स्वरूपा है।

934. **तृष्णाविवर्धिनी** – तृष्णा (प्यास, लोभ) को बढ़ा देने वाली।

935. **तृष्णापूर्णकरी** – भक्तों की इच्छा अर्थात मनोरथों को पूर्ण करने वाली। तृष्णा को पूर्ण कर देने वाली।

936. **तृष्णानाशिनी** – तृष्णा को नष्ट कर देने वाली। सांसारिक विषयों की तृष्णा को नष्ट करने वाली, न कि ईश्वर प्राप्ति या आत्मज्ञान की तृष्णा को।

937. **तृषिता** – जो प्यासी हैं अर्थात कुण्डलिनी रूप में शिव से मिलने की प्यासी हैं। तृषित कर देने वाली। प्यासी अर्थात भक्ति की प्यासी। उन्हें सिर्फ इस बात की प्यास है कि लोग उनकी भक्ति करें। भक्तों के दुख को दूर करने की प्यास से युक्त।

938. **तृषा** – प्यास स्वरूपा। मनुष्य में ज्ञान की प्यास या विभिन्न पदार्थों की प्यास देवी स्वरूपा ही है। देवी अर्थात शक्ति अर्थात ऊर्जा। ऊर्जा ही प्राणियों, पदार्थों, गुणों, शक्ति, अवस्था, देश या स्थान, काल के रूप में परिवर्तित होता है। जो भी अस्तित्व में है, जिसका कुछ भी नाम दिया गया है वह शक्तिमय या ऊर्जामय होने के कारण देवी स्वरूपा है क्योंकि देवी का अर्थ है शक्ति या ऊर्जा। प्यासरूपिणी। प्यास नामक भाव या क्रिया (कर्म) स्वरूपिणी। मुख्य क्रिया के अतिरिक्त ऐसी क्रिया जो संज्ञा के रूप में प्रयुक्त होती है वह भाव है जैसे तैरने से स्वास्थ्य अच्छा होता है। यहाँ तैरना क्रिया से बनी संज्ञा है तथा होता है यह मुख्य क्रिया है। देवी शक्ति या ऊर्जा स्वरूपा है, प्रत्येक चीज जिसका भी अस्तित्व है वह ऊर्जा स्वरूप होने के कारण देवी स्वरूपा है। प्राणी, वस्तु, दिशा, समय, सम्बन्ध, गुण, भाव, क्रिया सबकुछ देवी स्वरूपा है। तृट् या तृषा का अर्थ लोभ या तृष्णा भी होता है। तृषा+ आ, आ का अर्थ है नाश करना। लोभ या तृष्णा का नाश करने वाली।

939. **त्रेतासंसाधिता** – त्रेता युग में विशेष रूप से संसाधित अर्थात सिद्धि की गईं।

940. **त्रेता** – त्रेता युग स्वरूपा। त्र + इता। त्र का अर्थ है जो रक्षा करने वाले हैं अर्थात भगवान शिव या भगवान विष्णु। इता अर्थात गई। शिव में गई अर्थात विराजमान। शक्ति रूप से या अर्धनारीश्वर रूप से विराजमान।

941. **त्रेतायुगफलप्रदा** – त्रेता युग का फल देने वाली। त्रेतायुग में साधकों की साधना का फल देने वाली।

942. **त्रैलोक्यपूज्या** – तीनों लोकों में पूजनीया।

943. **त्रैलोक्यदात्री** – तीनों लोकों का राज्य आदि देने वाली।

944. **त्रैलोक्यसिद्धिदा** – तीनों लोकों में सिद्धि देने वाली। केवल वही हैं जो सिद्धि देती हैं।

945. **त्रैलोक्येश्वरतादात्री** – तीनों लोकों में/तीनों लोको की ईश्वरता या स्वामित्व देने वाली।

946. **त्रैलोक्यपरमेश्वरी** – तीनों लोकों की परमेश्वरी। त्रिलोकी की सबसे बड़ी ईश्वरी। ईश्वरी अर्थात शासन करने वाली।

947. **त्रैलोक्यमोहनेशानी** – तीनों लोकों को मोहित करने की ईश्वरी या समर्थ। मोहित करने का अर्थ आकर्षित करना, मुग्ध करना, भ्रम या अज्ञान में डालना है। तीनों लोको को अज्ञान में डालने वाली ईश्वरी। त्रैलोक्य का अर्थ है त्रिलोक। त्रैलोक्य का अर्थ त्रिलोक से सम्बन्धित भी हो सकता है।

948. **त्रैलोक्यराज्यदायिनी** – तीनों लोकों का राज्य प्रदान करने वाली।

949. **तैत्रिशाखेश्वरी** – कृष्ण यजुर्वेद से सम्बन्धित शाखा की ईश्वरी। कृष्ण यजुर्वेद की तैत्रीय शाखा की ईश्वरी अर्थात उसको बनाने वाली या उसके अनुसार इनकी उपासना होती है। कृष्ण यजुर्वेद की शाखा की स्वामिनी। याज्ञवल्क्य को अपने ज्ञान का अभिमान देखकर उनके गुरू ने सारा ज्ञान उल्टी करने के लिए बोला

तो उन्होंने उल्टी कर दिया। उस उल्टी को याज्ञवल्क्य के शिष्यों ने तीतर बनकर निगल लिया और वह ज्ञान कृष्ण यजुर्वेद कहलाता है। तैत्रीय शाखा की ईश्वरी।

950. **तैत्रीशाखा / तैत्रिशाखा** – कृष्ण यजुर्वेद की तैत्रीय शाखा स्वरूपा। कृष्ण यजुर्वेद स्वरूपा।

951. **तैत्रविवेकविद्** – कृष्ण यजुर्वेद की तैत्रीयशाखा के ज्ञान को जानने वाली। ऐसा लगता है कि तित्तिर शब्द से इ अलग कर तित्र बना और उसमें अण् प्रत्यय लगाने से तैत्र शब्द बना जिसका अर्थ है कृष्ण यजुर्वेद से सम्बन्धित। पूजा की रक्षा करने वाले विवेक अर्थात ज्ञान को जानने वाली। साधना को कैसे गुप्त रखा जाता है इस प्रकार के ज्ञान को जानने वाली। एकाक्षरीकोश में तै का एक अर्थ पूजा दिया गया है, त्र का अर्थ रक्षा करने वाला दिया गया है। त+ए, त+ऐ से भी तै बन सकता है। त का अर्थ है बुद्ध, ए का अर्थ है विष्णु, ऐ का अर्थ है शारदा, शिव। एकाक्षरीकोश में त्र का अर्थ मघवन् अर्थात इन्द्र भी दिया गया है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ बुद्ध, भगवान विष्णु, माँ शारदा, भगवान शिव, इन्द्र के विवेक को जानने वाली अर्थात उन जैसा ज्ञान रखने वाली। त्रि में त्रन् प्रत्यय लगाकर भी इस शब्द को बनाया जा सकता है। तीन प्रकार के विवेक को जानने वाली अर्थात आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक इन तीन विवेको को जानने वाली। तैत्रीय शाखा के विवेक को जानने वाली। तैत्र अर्थात शिव (मंगल) की रक्षा करने वाला। तै अर्थात शिव (मंगल), पूजा, त्र अर्थात रक्षा करना।

952. **तोरणान्वितगेहस्था** – तोरण से विभूषित अर्थात अत्यधिक सुन्दर घर में रहने वाली। प्रवेश द्वार युक्त घर में विराजमान। तोरण अर्थात प्रवेश द्वार।

953. **तोरणासक्तमानसा** – तोरण (घर में प्रवेश का बड़ा दरवाजा) में आसक्त है मन जिनका। आसक्त का अर्थ है प्रेम करने वाला, अनुरक्त। अतिशय सुन्दर भवनों में मन को लगाने वाली।

954. **तोलकास्वर्णसन्दात्री** – तोलों के रूप में मापकर सोने को प्रदान करने वाली। तोलों में अर्थात कई तोलों में स्वर्ण को देने वाली।

955. **तोलकास्वर्णकङ्कणा** – कई तोले सोने से बने कंकण को धारण करने वाली। तुले हुए सोने से बने कंकण को धारण करने वाली। तोलों की मात्रा में बने सोने के कंकण धारण करने वाली अर्थात भारी सोने के कंगन धारण करने वाली। स्वर्ण तैजस तत्व का स्थूल रूप है।

956. **तोमरायुधरूपा** – तोमर आयुध से विभूषित स्वरूप वाली या इस आयुध को लिये हुए है।

957. **तोमरायुधधारिणी** – तोमर नामक आयुध को धारण करने वाली।

958. **तौर्यत्रिकेश्वरी** – तुर्य का अर्थ होता है मुरज वाद्य और तुर्यत्रिक का अर्थ हुआ वाद्य, नृत्य और गीत। वाद्य, नृत्य और गीत संगीत की ईश्वरी। नृत्य, गीत, वाद्य का जो त्रिक है उसकी ईश्वरी।

959. **तौर्यन्त्रिकी** – वाद्य, नृत्य, गीत के स्वरूप वाली। नृत्य, गीत, वाद्य के समूह को धारण करने वाली।

960. **तौर्यन्त्रिकोत्सुकी** – वाद्य, नृत्य और गीत के लिए उत्सुक। नृत्य, गीत, वाद्य के त्रिक की उत्सुकता रखने वाली।

961. **तन्त्रकृत्** – आगम शास्त्र, कोई भी शास्त्र या टोना टोटका की रचना करने वाली। तन्त्रों की रचना करने वाली। 64 तन्त्रों की रचना करने वाली। (**तन्त्र** – यह शब्द प्रायः शास्त्र (शिवप्रणीत शास्त्र), विशेष प्रकार की साधना या उपासना पद्धति, ईश्वर की उपासना में सहायक साधन या उपकरण के लिए प्रयुक्त होता है। आजकल की भाषा में प्रयुक्त होने वाली तकनीकी का पुराना शब्द तन्त्र ही है। राजधर्म, राजकर्मचारी, राज्य या शासन के लिए भी यह शब्द प्रयुक्त होता है तभी आपने सुना होगा शासनतन्त्र। तन्त्र के अन्य अर्थ हैं निश्चित सिद्धान्त, उपाय, झाड़ने फूंकने का मन्त्र, टोना–टोटका, राजकर्मचारी, राज्य, सेना, समूह, धन, सम्पत्ति, वस्त्र अधीनता, शपथ आदि। तकनीकी में कम प्रयास से अधिक परिणाम प्राप्त किया जाता है।

तन्त्र वह शास्त्र है जिसमें सृष्टि, लय, मन्त्र, यन्त्र, आश्रम, धर्म, कल्प, ज्योतिष, व्रत, राजधर्म, स्त्री–पुरुष धर्म, युवा धर्म, षट्कर्म, देवपूजा, साधना विधान आदि का वर्णन होता है। तन् धातु का अर्थ विस्तार करना होता है। जो ज्ञान का, चेतना का, शक्तियों का विस्तार कर साधक की रक्षा करता है वह विद्यातन्त्र है। तन् का अर्थ ईश्वर और प्रकृति से जोड़कर देखा जाता है। त्र का अर्थ अपने अधीन बनाना है या स्वाधीन बनाना भी होता है। वह विद्या या विधान जो ईश्वर या प्रकृति को अपने अनुकूल बनाये उसे तन्त्र कहते हैं। तन्त्र एक स्वतन्त्र शास्त्र है जो पूजा और आचारपद्धति का परिचय देते हुए इच्छित तत्वों को अपने अधीन बनाने का मार्ग दिखाता है। यह वह साधना शास्त्र है जिसमें पटल, पद्धति, कवच, सहस्रनाम एवे स्त्रोत यह पाँच अंग होते हैं। विस्तारपूर्वक तत्व को अपने अधीन करने की प्रक्रिया तन्त्र है। तन्त्र की परिभाषा है– सर्वेर्था येन तन्यन्ते त्रायन्ते च भयाज्जनान्। इति तन्त्रस्य तन्त्रत्वं तन्त्रज्ञाः परिचक्षते।। जिसके द्वारा सभी मन्त्रार्थों– अनुष्ठानों का विस्तार पूर्वक विचार ज्ञात हो तथा जिसके अनुसार कर्म करने पर लोगों की भय से रक्षा हो वह तन्त्र है। तन्त्र एवं आगम दोनों पर्यायवाची शब्द हैं पर व्यवहार में वैष्णव तन्त्र को संहिता, शैवतन्त्र को आगम तथा शाक्ततन्त्र को तन्त्र कह दिया जाता है। इसी कारण लोक में तन्त्र का अर्थ शाक्त आगमों की साधना पद्धति भी कहा गया है।)

962. **तन्त्रवत्सूक्ष्मा** – तन्तुओं के समान सूक्ष्म रूप वाली जैसे कमलनाल के तन्तु बहुत सूक्ष्म होते हैं। तन्त्र की तरह सूक्ष्म या अव्यक्त शक्ति वाली।

963. **तन्त्रमन्त्रस्वरूपिणी** – तन्त्र और मन्त्र के स्वरूप वाली। मन्त्र वे शब्द या वाक्य हैं जिनका जप देवताओं की प्रसन्नता और कामनासिद्धि के लिए किया जाता है। तन्त्र वह साधना पद्धति है जो शक्ति का विस्तार कर व्यक्ति की रक्षा करती है। तन्त्र वह साधना पद्धति है जिसमें प्रतीकों का, बीजाक्षरों का प्रयोग अभीष्ट की सिद्धि के लिए किया जाता है।

964. **तन्त्रकृत्** – विश्व की रचना करने वाली। तन् धातु का अर्थ होता है विस्तार करना। इस प्रकार तन्त्र का अर्थ हुआ विस्तार को प्राप्त। अतः तन्त्र का एक अर्थ हुआ विश्व। सूक्ष्म तन्तुओं को बनाने वाली। वस्त्र तन्तुओं से बनता है। संसार को वस्त्र माना जाए तो संसार बनाने की जो इकाईयाँ हैं अर्थात तन्तु देवी स्वरूप हैं। तन्त्र का अर्थ शास्त्र भी होता है जिसमें पूर्व पक्ष और परपक्ष भी होता है। शास्त्र की रचना करने वाली या शास्त्र का ज्ञान कराने वाली। शास्त्र की बातें सूक्ष्म होती हैं, उन्हें ज्ञात कराने वाली। रहस्यमय विद्याओं का विस्तार करने वाली।

965. **तन्त्रसम्पूज्या** – तन्त्रों के द्वारा विधिवत पूजा के योग्य।

966. **तन्त्रेशी** – तन्त्र विद्या की ईश्वरी अर्थात उत्पन्न करने वाली। ईश धातु का अर्थ शासन करना, प्रेरित करना। शासन अर्थात जिस काम के लिये वह शक्ति भर दी गई है, भरी हुई शक्ति वही काम करेगी। प्रेरित करना अर्थात करवाना या पहुँचाना। तन्त्र के ज्ञान को सुपात्रों तक पहुँचाने वाली। Tantra is revealed scripture related to the science of cosmic spritual forces.

967. **तन्त्रसम्मता** – तन्त्र के द्वारा प्रमाणित अर्थात approved। तन्त्र से प्रमाणिकता बनती है। तन्त्र विद्या के द्वारा सम्मत (तन्त्र विद्या है प्रिय जिन्हें)। यदि तन्त्रासम्मता शब्द है तो अर्थ होगा तन्त्रों में सभी प्रकार से सम्मत है। तन्त्र + आ + सम्मता। आ समन्तात् से आ का अर्थ है चारों ओर से अर्थात सभी प्रकार से। सम्मत का अर्थ है पूजित या सम्मानित। मत का अर्थ पूजा या पूजित भी होता है। तन्त्रेण आसम्मतः। आ का अर्थ भाव (सत्ता, अस्तित्व, पदार्थ) भी होता है अतः आ का कभी कभी अलग से अर्थ लगाने की जरूरत नहीं होती है क्योंकि तन्त्ररूपी सत्ता से सम्मत अर्थात तन्त्र से सम्मत। विश्वामित्र अर्थात विश्वमित्र।

968. **तन्त्रज्ञा** – आगम शास्त्र की ज्ञाता। तन्त्र की ज्ञात्री। तन्त्र का अर्थ शास्त्र (कोई भी शास्त्र), आगम शास्त्र,

विश्व, टोनाटोटका होता है। संसार को जानने वाली अर्थात संसार की छोटी–बड़ी सभी वस्तुओं एवं घटनाओं की जानकारी वाली। आज की भाषा में जिसे तकनीकी कहते हैं, पूर्व में उसे तन्त्र कहा जाता था।

969. **तन्त्रविद्** – सामान्य शास्त्रों को या विश्व को जानने वाली। तन्त्रों को जानने वाली। सभी शास्त्रों को जानने वाली। तन्त्र का अर्थ आगम शास्त्र तो है ही, सभी शास्त्रों को भी तन्त्र कहा गया है। तन्त्र अर्थात उपाय।

970. **तन्त्रसाध्या** – तन्त्र (साधना पद्धति) के द्वारा सिद्धि की जाने योग्य। सिद्धि अर्थात प्राप्ति, जानना, प्रमाणित होना, काम करने की लिए हमेशा उपलब्ध होना।

971. **तन्त्रस्वरूपिणी** – झाड़ने फूँकने का मन्त्र स्वरूपा। प्रमाण या औषधि स्वरूपा। तन्त्र के स्वरूप वाली। तन्त्र का अर्थ है कार्य करने की प्रक्रिया/प्रणाली/व्यवस्था। स्वरूप का अर्थ है अपना रूप, वास्तविक रूप अर्थात जो नष्ट न हो, किसी दूसरे की नकल नहीं, ऐसा अपना ही रूप।

972. **तन्त्रस्था** – शिव प्रणीत शास्त्रों में रहने वाली। तन्त्र में निवास करने वाली। तन्त्र उपासना सम्बन्धी शास्त्र है।

973. **तन्त्रजा** – तन्त्र से उत्पन्न (प्रकट) होने वाली। तन्त्र में वर्णित साधना पद्धति का सहारा लेकर साधना करने से प्रकट होने वाली। तन्त्र का प्रयोग करने से या उसका सहारा लेने से पैदा होने वाली।

974. **तन्त्री** – वीणा की तरह अर्थात वीणास्वरूपिणी या वीणा के समान मधुर स्वर करने वाली। तन्त्र विद्या से युक्त या विभूषित।

975. **तन्त्रभृत्** – तन्त्र नामक साधना विधि या पूजा विधान का भरण करने वाली अर्थात उसे बनाये रखने वाली अर्थात उसके अस्तित्व को बनाये रखने वाली। तन्त्र का अर्थ जगत विस्तार भी है। तन् धातु का अर्थ विस्तार करना होता है। प्रपंच या जगत को धारण करने वाली। तन्त्र को धारण या पोषण करने वाली। तन्त्र इन्हीं से जीवित है। तन्त्र विद्या को धारण करने वाली।

976. **तन्त्रमन्त्रदा** – तन्त्र और मन्त्र को प्रदान करने वाली।

977. **तन्त्राद्या** –तन्त्रों की आदि अर्थात मूल कारण। तन्त्रों (आगम ग्रन्थों) में मुख्य रूप से जिनका उल्लेख होता है। आदौ भवा इति आद्या, आदि का अर्थ मुख्य भी होता हैं। तन्त्रों में जिनका तन्त्र सबसे पहले या सर्वप्रमुख है। जिनका तन्त्र प्रथम तन्त्र है। देवी नामक तन्त्र सर्वप्रथम तन्त्र है। अन्य तन्त्र तो इनसे निकले हैं। तन्त्रों की शुरूआत इन्हीं से हुई। जिनका तन्त्र प्रथम है। बहुत से तन्त्र हैं जैसे भैरव तन्त्र, विष्णु तन्त्र पर देवी का तन्त्र सबसे पहले है। तन्त्र विद्या के कारण आदि स्वरूप वाली अर्थात सर्वाधिक पूज्य।

978. **तन्त्रगा** – तन्त्र के द्वारा/आगम शास्त्र के द्वारा जाने जाने योग्य। तन्त्र में गमन करने वाली या विराजमान। सेना के साथ गमन करने वाली। तन्त्र का एक अर्थ सेना भी होता है।

979. **तन्त्रा** – स्वयं तन्त्र स्वरूपिणी हैं या तन्त्र की शक्ति है। तन्त्र स्वरूपा। उपाय स्वरूपा। धन/सम्पत्ति/वस्त्र/मकान स्वरूपा। (यदि तन्त्री नाम है तो अर्थ होगा वीणा स्वरूपा अर्थात वीणा की तरह मधुर आवाज करने वाली)। तन्त्र+आ, आ का अर्थ है नाश करना, देना। तन्त्र विद्या को देने वाली। नकारात्मक तन्त्र प्रभाव का नाश करने वाली।

980. **तन्त्रार्च्या** – तन्त्र के द्वारा पूजा करने योग्य। तन्त्र में बताई गई विधियों के अनुसार अर्चना करने योग्य।

981. **तन्त्रसिद्धिदा** – तन्त्र सिद्धि को प्रदान करने वाली।

982. **तन्त्रविज्ञा** – तान्त्रिक विधि को विशेष रूप से जानने वाली। तन्त्र को विशेष रूप से जानने वाली। तन्त्र विद्या को विशेष रूप से जानने वाली या तन्त्र विद्या में पारंगत। आगम शास्त्रों को विशेष रूप से जानने वाली।

983. **तन्त्ररता** – तन्त्र में रमण करने वाली अर्थात तन्त्र विद्या जिन्हें अच्छी लगती है। विश्व में रमण करने वाली अर्थात विश्व में रहने वाली अर्थात विश्व को पसन्द करने वाली। तन्त्र विद्या में संलग्न रहने वाली। तन्त्र से प्रसन्न। रम् धातु से रत बनने पर रत का एक अर्थ प्रसन्न होता है।

984. **तन्त्रगोप्या** – आगम शास्त्र या तान्त्रिक विधान में जिसे गोपनीय बताया गया अर्थात कहा गया है कि इसे दूसरों को यूँ ही नहीं बताना चाहिए। तन्त्र है गोपनीय अर्थात रक्षणीय अर्थात जब तक तन्त्र में बताई विधि करते रहोगे देवी रहेंगी और यदि छोड़ दोगे तो शक्ति चली जाएंगी। तन्त्र विद्या के द्वारा गोपनीय स्वरूप को धारण करने वाली।

985. **तान्त्रिकी** – तान्त्रिक मन्त्रों द्वारा आराधनीय। तन्त्र में रहने वाली। तन्त्रशास्त्र से सम्बन्धित अर्थात तन्त्रशास्त्र के द्वारा अर्थात उसमें बताई गई विधि से उपासनीय। तन्त्र वाली अर्थात तन्त्र से जुड़ी हुई। तन्त्र में रहने वाली या तन्त्र में व्याप्त। तन्त्र विद्या से विभूषित रहने वाली।

986. **तारस्वरेण महिता** – ऊँची आवाज से पूजित। ऊँची आवाज से महत्व को प्राप्त। बैखरी या स्पष्ट उच्चारण करने वाले मन्त्रों से पूजित। उच्च स्वर के द्वारा पूजित होने वाली। स्तोत्रों का उच्चारण बोलकर होता है।

987. **तन्त्राचारफलप्रदा** – तान्त्रिक पूजा में फल देने वाली। तन्त्र या आगम शास्त्र में बताऐ गए आचार के अनुसार उपासना करने वालों को फल प्रदान करने वाली। आचार अर्थात जो विधान या नियम बताए गए हैं जैसे पूर्व दिशा में बैठो, यह आसन प्रयोग करो, यह चढ़ाओ, इतना जप करो, इतना हवन करो आदि आदि। तन्त्र के आचार का फल प्रदान करने वाली। तन्त्र के नियमों पर चलने से फल देने वाली। तन्त्र अर्थात उपाय जिससे शीघ्र इच्छित परिणाम प्राप्त होता है। सात तन्त्राचार हैं – वेदाचार, वैष्णवाचार, शैवाचार, दक्षिणाचार, वामाचार, सिद्धांताचार और कौलाचार। आचार का अर्थ है discipline, नित्य नैमित्यिक नियम, आचरण का तरीका। शास्त्रों के अनुसार जिसे करने को कहा गया है वह है आचार।

नोट – शाक्त प्रमोद ग्रन्थ में दिये गये स्तोत्र के अनुसार कुछ नाम कम प्रतीत होते हैं। अतः नामावली अपूर्ण है। तेरह नाम कम हैं। किसी किताब में 134 वें नाम तमोराशिपूर्णराशि के स्थान पर दो नाम तमोराशि और तमोनाशा दिये गए हैं। 209 वें नाम में तपोसन्ध्या और 210 वें नाम में तपोवन्ध्या शब्द दिया गया है।

श्री षोडशी जी सहस्रनामावलि



श्री षोडशी सहस्रनामावली

1. **कल्याणी** – कल्याण करने वाली, सुख देने वाली। निरोगिता को बोलने वाली अर्थात व्यक्त करने वाली अर्थात देने वाली। कल्यम् (नैरूज्यम) आणयति जीवयति इति कल्याणी। निरोगिता को जीवित करने वाली अर्थात देने वाली। कल्यम् (नैरूज्यम) आनयति अर्थात निरोगिता को भली भांति लाने वाली। कलयति सौख्यम् इति कल्यम् नैरूज्यम्। जो सुख को बनाये वह कल्य है और कल्य का अर्थ हुआ निरोगिता क्योंकि निरोगिता सुख करने वाली है। सबसे बड़ा रोग है अज्ञान क्योंकि सारे दुख अज्ञान के कारण होते हैं। अतः निरोगिता का अर्थ हुआ आत्मज्ञान प्राप्त होना। कल्याणी का अर्थ हुआ आत्मज्ञान रूपी निरोगिता या कल्याण देने वाली। कल्याणी अर्थात कल्याण करने वाली। आध्यात्मिक क्षेत्र की प्रगति को कल्याण कहते हैं। मोक्ष या आनन्द की प्राप्ति कल्याण प्राप्ति होती है। आजकल कल्याण शब्द का व्यापक अर्थ हो गया है जिस पर कल्याणकारी राज्य की संकल्पना की गई है। जीवन की सभी भौतिक आवश्यकताओं जैसे रोटी, कपड़ा, मकान, बिजली, पानी, सड़क, स्वास्थ्य, शिक्षा, मनोरंजन के साधन, रोजगार आदि जरूरी चीजों की प्राप्ति कल्याण कहलाती है। कल्याण का तात्पर्य मनुष्य को वह सब कुछ देना जिससे उसका पूरा जीवन सँवर जाए। मनुष्य के पाँचों शरीरों की आवश्यकताओं की पूर्ति करना कल्याण है। कल् धातु में यक् प्रत्यय लगाने से कल्य शब्द बनता है। कल्य का अर्थ है निरोगिता। यदि कल्य नपुंसक लिंग में हो तो अर्थ होगा प्रभात। पुल्लिंग में कल्य का अर्थ है कल्याण वचन, तैयार, निरोगिता, निपुण, जो सुनाई न दे ऐसी वाणी। कल्यम् अणति इति कल्याणी अर्थात शुभ वचन, कल्याण वचन, शुभ सूचना बोलने वाली कल्याणी हुई। कल्याणी वह है जो अच्छे शब्द बोलती है। निरोगिता को बोलने वाली अर्थात कहने वाली अर्थात आवाहन करने वाली अर्थात प्रकट करने वाली को कल्याणी कहते हैं। तात्पर्य में प्रकट करने का मतलब देना होगा। इस प्रकार निरोगिता देने वाली को कल्याणी कहते हैं। जो सुख को इकठ्ठा करे संग्रह करे अर्थात बनाये उसे कल्य कहते हैं। सुख का कलन (इकट्ठा करना/संग्रह करना/बनाना) करने वालों को कल्य कहते हैं। सुख का कलन करने के कारण कल्य निरोगिता है क्योंकि कोई भी व्यक्ति दुख का कलन (संग्रह) नहीं करेगा। इस प्रकार कल्य का अर्थ हुआ निरोगिता। कल्याणी का अर्थ कल्याण से युक्त या कल्याणस्वरूपा भी होता है। कल्याणम् अस्ति अस्याः इति कल्याणी अर्थात कल्याण जिसमें है अर्थात कल्याण से युक्त। राहु का सिर दो वस्तुएं नहीं हैं बल्कि एक ही वस्तु है उसी प्रकार देवी के सन्दर्भ में उनको यह कहना कि वे कल्याण गुण से युक्त हैं, ठीक नहीं है। अतः कल्याणस्वरूपा कहना ज्यादा उचित है। चार वर्ष की कन्या को भी कल्याणी कहते हैं। कल्याणकारी गुणों से युक्त अर्थात प्रेम, करुणा, क्षमा, शुभ संकल्प, अमोघ सत्य आदि गुणों से युक्त।

2. **कमला** – कम् जलम् अलति इति कमला अर्थात जो जल को सुशोभित करे वह कमला है। लक्ष्मी जी अपनी उपस्थिति से जल को सुशोभित करती थीं इसलिए उन्हें कमला कहते हैं। जो भगवान विष्णु को सुशोभित करे। क का एक अर्थ भगवान विष्णु भी होता है। लक्ष्मी जी से अभेद है जिनका। सर्जनात्मक चेतना (Creative consciousness) को धारण करने वाली। क का अर्थ है जल जो Creative consciouness का प्रतीक है क्योंकि जल से ही सृष्टि पैदा हुयी है। पुराणों में आया है कि सर्वप्रथम जल था। मल् धारणे धातु होती है जिससे मला का अर्थ होता है – धारण करने वाली। समस्त ज्ञान को धारण करने वाली। क का अर्थ है सिर और सिर अर्थात मस्तिष्क में ही ज्ञान को धारण किया जाता है। सिर का अर्थ है जो शरीर में सबसे ऊपर है। सिर स्थान को धारण करने वाली अर्थात् सभी देवी–देवताओं से उच्च अर्थात उनमें श्रेष्ठ।

3. **काली** – कृष्ण (काले) रंग वाली। काल (शिव) की गृहिणी। वह शक्ति या तत्व जो अपने भीतर स्थित विश्व को अपने से बाहर फेंकती है अर्थात् बाहर निकालती है। कल् क्षेपे धातु होती है जिसके अनुसार कल् धातु

को अर्थ फेंकना होता है। वह शक्ति जो सभी पदार्थों का ज्ञान करती है। कल् धातु का एक अर्थ जानना अर्थात् ज्ञान करना भी होता है। ज्ञान का एक अर्थ प्राप्त करना भी होता है। संस्कृत में गति, ज्ञान और प्राप्ति समानार्थक माने जाते है और कल् गतौ धातु से कल् धातु का अर्थ जाना, जानना एवं प्राप्त करना होता है। जो विश्व को प्राप्त करती है अर्थात् अपने भीतर समा लेती है अर्थात् संहार कर देती है। कल् संख्याने धातु भी होती है, जिसका अर्थ होता है गिनना अर्थात अलग–अलग करना। अलग–अलग होने पर ही गिनती हो सकती है। जो पदार्थों की आयु की गणना करती है अर्थात् यह निर्धारित करती है कि उसकी आयु पूरी हुई या नहीं हुई जिससे पूरी होने पर उसका अस्तित्व मिटाया जा सके। वह शक्ति जो अव्यक्त पदार्थों को एक दूसरे से पृथक करती है अर्थात् जिसके कारण यह पदार्थ यह है, यह पदार्थ वह नही है, वह पदार्थ वह है, इस प्रकार का भेद करवाती है। संख्यान का अर्थ है अन्यतो व्यतिभेदन अर्थात् दूसरे से अलग होना। काल (भगवान शिव) की पत्नी। जो समय शक्ति को उत्पन्न कर इस समय शक्ति से संसार का संचालन करती है। जो अपने उपासकों को काल (मृत्यु) के भय से मुक्त कराती है। जो काले वर्ण (रंग) वाली है। कलयति विश्वम् इति काली अर्थात् जो प्रलय काल में विश्व का संहार कर देती है।

4. **कराली** – विकराल रूप वाली। भयंकर या बड़े दाँतों वाली। शब्दकोषों में कराल का अर्थ दन्तुर, तुंग मिलता है। करम् सुखसाधनम् अलति निवारयति। दुष्ट राक्षसों के सुख साधन को दूर करने वाली। बहुत से हाथों वाली अर्थात एक साथ कई काम करने वाली। कर का अर्थ है हाथ (करने वाला) और अली का अर्थ है पंक्ति अर्थात बहुत। करोति इति करः अर्थात करने वाला।

5. **कामरूपिणी** – इच्छानुसार रूप धारण करने वाली। कामरूप देश से युक्त अर्थात कामरूप देश (आधुनिक असम राज्य) में विराजमान। कामरूप पीठ में विराजमान। यह पीठ शरीर के बाहर भी है और भीतर भी है।

6. **कामाख्या** – कामनाओं को पूरी करने वाली, यह नाम है जिसका। जिनका नाम कामा है। कामा+आख्या, कामा अर्थात काम+आ, आ का अर्थ है देना। कामनाओं (इच्छाओं) को देने वाली अर्थात पूरा करने वाली, यह नाम है जिसका। काम या कामा नाम से प्रसिद्ध अर्थात काम है आख्या/नाम/संज्ञा इसकी अर्थात जिसको काम यह बोलकर पुकारते हैं। देवी सभी लिंगों से परे है और सभी लिंगों वाली भी है, अतः चाहे काम कहो या कामा कहो, देवी पर लागू हो जाएगा।

7. **कामदा** – मनोरथों को पूर्ण करने वाली/पर्याप्त या सबकुछ देने वाली। दुष्टों की अनिष्ट कामनाओं या इच्छाओं को नष्ट करने वाली। भक्तों की इच्छाओं को शुद्ध करने वाली अर्थात पवित्र करने वाली अर्थात उनके अन्दर से पवित्र इच्छाओं को ही जन्म देने वाली। दा ददाति, दो अवखण्डने, दैप् शोधने धातु में ड प्रत्यय लगाने से बने द शब्द का देने वाली, नष्ट करने वाली, शुद्ध करने वाली अर्थ होता है।

8. **काम्या** – जो भक्तों के द्वारा चाही जाती हैं या चाही गई हैं। उपासक उनकी या उनकी कृपा की कामना करते हैं। काम्य कर्म को देने वाली अर्थात उसमें सफलता देने वाली। काम्य + आ, आ का एक अर्थ है देना। जो कर्म किसी कामना या फल की प्राप्ति के लिये किया जाये वह काम्य कर्म कहलाता है। काम्य वस्तुएं अर्थात अच्छी वस्तुओं जैसे रत्न, विद्या, धन आदि को देने वाली।

9. **कामना** – इच्छा रूपा या इच्छा को पूर्ण करने वाली। कामना+आ, आ का अर्थ है देना। कामनाओं को देना अर्थात कामनाओं को पूर्ण करना। नी धातु में ड प्रत्यय लगाने से न शब्द बनेगा जिसका अर्थ होगा ले जाने वाला। काम (शिव) को ले जाने वाली अर्थात भक्तों तक पहुँचाने वाली या भक्तों को शिव तक पहुँचाने वाली।

10. **कामचारिणी** – स्वेच्छानुसार विचरण करने वाली। शिव, कामदेव को विचरण कराने के स्वभाव वाली अर्थात उन्हें उनके कार्य में लगाने वाली। णिनि प्रत्यय स्वभाव में भी होता है। चारयितुम् शीलम अस्या से चारिणी शब्द बनेगा। इच्छाओं में विचरण करने वाली अर्थात इच्छा शक्ति स्वरूपा।

11. **कालरात्रि** – काल (मृत्यु) की भी रात्रि अर्थात संहारक। समय अर्थात दिन और रात का संहार करने वाली अर्थात प्रलय करने वाली। प्रलय में ही दिन और रात अर्थात समय नहीं होता है। रात्रि संहारिका शक्ति का प्रतीक है क्योंकि यह दिन का संहार करती है। काल (मृत्यु) का नाश करने वाली। सप्तशती रहस्य (चण्डी प्रकाशन, प्रयाग) पुस्तक में लिखा हुआ है कि दुर्गासप्तशती में वर्णित कालरात्रि में काल शब्द समय का वाचक न होकर क्रियावाची है। जिस अवस्था में सभी क्रियाएं बन्द हो जाती हैं अर्थात निष्क्रिय अवस्था स्वरूपा कालरात्रि है। कालरात्रि का अर्थ घुप अन्धेरा या बिल्कुल अँधेरा भी होता है अर्थात सर्वत्र समभाव या अद्वैत की स्थिति लाने वाली। घुप अँधेरे में चारों ओर सिर्फ अन्धकार दिखता है, इसके अलावा कोई दूसरी वस्तु नहीं दिखती अर्थात द्वैत भाव समाप्त हो जाता है। मनुष्य जीवन के 77 वर्ष के सातवें माह के सातवें दिन में होने वाली रात्रि काल रात्रि कहलाती है, उस रात्रि के स्वरूप वाली। महाप्रलय की रात्रि जिसमें ईश्वर का जगत व्यवहार अर्थात जगत से सम्बन्धित क्रियाएं समाप्त हो जाती हैं। जगत की उत्पत्ति, पालन पोषण, रक्षा आदि जगत व्यवहार समाप्त हो जाते हैं। दो रात्रियाँ होती हैं – एक है जीवरात्रि जिसमें हम प्रतिदिन रात को सोते हैं। दूसरी है कालरात्रि या ईश्वर की रात्रि अर्थात महाप्रलय की रात्रि। समय को भी अन्धकार रूप में परिवर्तित कर देने वाली अर्थात समय को सुला देने वाली। समय के सब रूप अर्थात भूतकाल, भविष्यकाल समाप्त होकर केवल वर्तमान रहता है। रहस्यार्थ है शिव कालातीत और प्रकाश स्वरूपा हैं जबकि शक्ति कालात्मक और अन्धकार स्वरूपा है। कालपुरुष का परिवर्तन करने वाली अर्थात प्रत्येक समय प्रकृति में परिवर्तन करने वाली, इसी के कारण पृथ्वी घूमती है। घनघोर रात्रि स्वरूपा अर्थात् सभी को समान भाव से देखने वाली। घनघोर रात्रि में सिर्फ अँधेरा दिखता है और छोटा–बड़ा, स्त्री–पुरुष, पास–दूर आदि भेद समाप्त हो जाते है। भेद समाप्त होना अर्थात् अद्वैत में स्थापित होना। इस प्रकार कालरात्रि का अर्थ हुआ द्वैत भाव समाप्त कर अद्वैत भाव लाने वाली।

12. **महारात्रि** – महाप्रलय की रात्रि स्वरूपा। उस रात्रि के स्वरूप वाली जिसमें ब्रह्माण्ड का प्रलय हो जाता है। महा का अर्थ है ब्रह्माण्ड और रात्रि का अर्थ है संहार करने वाली। महतः ईश्वरस्य रात्रि इति महारात्रिः अर्थात जिस रात्रि में ब्रह्मा जी का भी लय हो जाता है अर्थात प्रलयकाल वाली रात्रि महारात्रि है। मह् पूजायाम से महा का अर्थ पूजनीय भी होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ पूजनीय रात्रि स्वरूपा। मह शब्द उत्सव के लिए भी आता है अतः इस नाम का अर्थ हुआ उत्सवों वाली रात्रि स्वरूपा। कुछ लोग दीपोत्सव अर्थात दीपावली को महारात्रि मानते हैं और कुछ लोग आश्विन शुक्ल अष्टमी को महारात्रि मानते हैं।

13. **कपाली** – कपाल को धारण करने वाली। ब्रह्मा जी का पालन करने वाली। क का अर्थ स्वर्ग भी होता है अर्थात स्वर्ग का पालन करने वाले इन्द्र की शक्ति स्वरूपा। सुख का पालन करने वाली अर्थात रक्षा करने वाली। अपने भक्तों के सुख की रक्षा करती है अर्थात उनसे सुख हटने नहीं देती। क का एक अर्थ है सुख। कपाल धारण करने वाले शिव की शक्ति। कपालम् अस्य अस्ति इति कपालः (कपाल वाले अर्थात कपाल धारण करने वाले अर्थात शिव।) सामान्यतः ईकारान्त स्त्रीलिंग को पुरुष की पत्नी, माता, बहन आदि सम्बन्ध देकर अर्थ निकालते हैं किन्तु एक नियम यह भी है कि किसी गुण या विशेषता आदि को दिखाना हो तो पुरुष से सम्बन्ध दिखाने की कोई जरूरत नहीं है। अतः कपाल को धारण करने वाली, यह अर्थ भी सही है और कपाल को धारण करने वाले शिव की पत्नी, यह अर्थ भी सही है।

14. **कामरूपिणी** – अतिशय सुन्दर रूप वाली। कामदेव को सुन्दरता का प्रतीक माना गया है अतः काम का अर्थ अतिशय सुन्दर है।

15. **कौमारी** – पृथ्वी पर दुष्टों को मारने वाली। कु का अर्थ है पृथ्वी और कौ (कु की सप्तमी विभक्ति) का अर्थ है पृथ्वी पर। कुत्सित प्रवृत्तियों अर्थात दोषों को समाप्त करने वाली। कौ का अर्थ है पृथ्वी पर और मार का अर्थ है कामदेव। कामदेव को सुन्दरता का प्रतीक माना जाता है। पृथ्वी पर कामदेव के समान सुन्दर अर्थात

अत्यन्त सुन्दर। भगवान कार्तिकेय की पत्नी स्वरूपा या अभेद है जिनसे। कुमारी का अर्थ है कुमार (कार्तिकेय) की पत्नी। स्वार्थ में अर्थात बिना अर्थ बदले अण् प्रत्यय लगाने से कुमारी का कौमारी हो जायेगा। कुमारावस्था से युक्त या कुमारावस्था के गुणों को धारण करने वाली। कुमारी की तरह धर्म नियम का पालन करने वाली। जिसे माहवारी नही हुई है, वह कुमारी है पर सामान्यतः 10 वर्ष तक की कन्याओं को पूजा जाता है।

16. **करुणा** – करुणा गुण स्वरूपिणी। करुणा गुण से युक्त अर्थात करुणा या दया की मूर्ति स्वरूपा। दूसरों के दुख देखकर उसे दूर करने की इच्छा का भाव जाग्रत होना एवं साथ में दूर करने का प्रयास करना, करुणा गुण है। गुण भी ऊर्जा का एक रूप है और ऊर्जा या शक्ति का अर्थ है देवी। वह भावस्वरूपिणी जिसमें व्यक्ति किसी के दुःख देखकर स्वयं दुःखी होता और सामने वाले के दुःख को दूर करने का प्रयास करता। करुणा अस्या अस्ति इति करुणा से करुणायुक्त यह अर्थ भी निकलता है। करुणा का अर्थ हुआ – करुणा गुण, करुणा गुण से युक्त। कोमलता गुण स्वरूपा। करोति मनः आनुकूल्याय, इस प्रकार की व्युत्पत्ति करुणा शब्द के लिये की गई है तथा उनम् प्रत्यय लगाया गया है। जिस गुण के कारण व्यक्ति का मन दुखी व्यक्ति के मन के अनुकूल होता है अर्थात उसी की तरह हो जाता है। करुणा नामक वृक्ष में अंश या गुण या शक्ति रूप में विराजमान। करूण रस की शक्ति स्वरूपा। करूण + आ, एकाक्षरीकोश में आ का एक अर्थ शक्ति दिया गया है। करुण नामक तीर्थ में विराजमान। क अर्थात ब्रह्म, आत्मा, स्वर्ग, सूर्य, उदात्त (श्रेष्ठ), शुद्ध। रु अर्थात ध्वनि, शब्द। ण अर्थात ज्ञान, आनन्द। ब्रह्म सम्बन्धी उपदेशों से या श्रेष्ठ उपदेशों से आनन्दित करने वाली। रु अर्थात शब्द अर्थात उपदेश। णा अर्थात ण+आ, आ का अर्थ है देना, नाश करना। इस प्रकार णा का अर्थ हुआ ज्ञान देना, आनन्द देना। (प्रत्येक चीज जिसका अस्तित्व है, ऊर्जा रूप होने के कारण देवी का ही रूप है। प्राणी, वस्तु, गुण, सम्बन्ध, समय, दिशा, क्रिया, भाव, स्थान सब कुछ जिसका कुछ भी नाम है या अभी तक नाम नहीं दिया जा सका है, ऊर्जा का रूपान्तरण होने के कारण देवीस्वरूपा ही है।)

17. **मुक्तिः कलिकल्मषनाशिनी** – ऐसी मोक्षस्वरूपा (अर्थात मोक्ष देने वाली क्योंकि लक्षणा शक्ति से देना अर्थ भी आएगा और देवी और देवता का तात्पर्य है देने वाला) जो कलियुग के पापों को नष्ट करने वाली है। मोक्ष स्वरूपा (तात्पर्य है मुक्ति प्रदान करने वाली) और कलियुग के पापों को नष्ट कर देने वाली। (यदि श्री मुक्तिः – कलि – कल्मषनाशिनी शब्द है तो अर्थ है – श्री से सम्पन्न मोक्ष स्वरूपा और कलियुग के पापों को नष्ट करने वाली)।

18. **कात्यायनी** – कात्यायन ऋषि की पुत्री के रूप में जिन्होने अवतार लिया। कात्यैः अय्यते इति कात्यायनी अर्थात ब्रह्मनिष्ठ साधकों द्वारा जिसे प्राप्त किया जाता है। कात्य का अर्थ ब्रह्मनिष्ठ होता है। कात्य एक गोत्र का नाम है। गोत्र में गो का अर्थ है वाणी और त्र का अर्थ है रक्षा करना। इस प्रकार कात्यायनी का अर्थ है वाग्रूपिणी रक्षणकर्त्री। सरस्वती जी और लक्ष्मी जी का आश्रय। का अर्थात क (ब्रह्मा)+अ (विष्णु), अतति का अर्थ है गमन करना। कात्य अर्थात ब्रह्मा और विष्णु की ओर गमन किया है जिसने अर्थात सरस्वती जी और लक्ष्मी जी। अयन अर्थात आश्रय। क+तनि+अयन, तनि का अर्थ है विस्तार और क का अर्थ है जल। जल का विस्तार करने वाली।

19. **कराधारा** – किरणों का आधार अर्थात जिससे चारों ओर किरणें निकल रही हैं। देवी देवताओं में एक प्रबल आभामण्डल होता है। वैसे प्रत्येक पदार्थ के चारों ओर आभामण्डल होता है। हाथ है आधार जिनका, हाथ आधार का काम कर रहा है। किसके आधार का? ब्रह्माण्ड के आधार का। जिनके हाथ में समस्त ब्रह्माण्ड टिका है। क्रियाशक्ति का आधार। करोति इति करः अर्थात जो करने वाला है वह कर है।

20. **कौमुदी** – जिससे लोग पृथ्वी पर आनन्दित होते हैं। कौ का अर्थ है पृथ्वी पर और मुदी का अर्थ है आनन्दित होने वाले।

21. **कमलप्रिया** – कमल है प्रिय जिन्हें। इसी कारण उपासक इन्हें कमल का फूल चढ़ाते हैं और देवी अपने हाथों में कमल धारण किये रहती हैं तथा कमल को अपना आसन भी बनाये हुए हैं। जल है प्रिय जिन्हें। कमल का अर्थ जल भी है। कमल के गुण अर्थात निर्लिप्तता, सौन्दर्य, कोमलता, एकत्व (पंखुड़ियों को बाँध के रखना), ब्रह्म या आनन्द की ओर केन्द्रित होना पसन्द है जिन्हें। कमल सूर्य (ब्रह्म) की ओर ही केन्द्रित होता है। कमल समृद्धि और सम्पन्नता, ऐश्वर्य का प्रतीक है, ये गुण पसन्द हैं जिन्हें। कमल सृष्टि का भी प्रतीक है। अपनी सृष्टि से प्रेम करने वाली।

22. **कीर्तिदा** – अपने उपासकों को कीर्ति या यश देने वाली। कीर्ति का अर्थ है प्रसिद्धि, ख्याति।

23. **बुद्धिदा** – बुद्धि को देने वाली। बुद्धि निर्णय लेने की अन्तःकरण की शक्ति है। बुद्धि सोचने समझने और निश्चय करने की मानसिक शक्ति है।

24. **मेधा** – बुद्धि का परिष्कृत और उन्नत रूप मेधा है, तत्स्वरूपा। आजकल के आई.क्यू. के आधार पर देखे तो जिनका आई.क्यू. 100 – 110 है वे बुद्धिमान हैं और 140 से ऊपर है तो मेधावान हैं। मेधा के कारण ही व्यक्ति नई नई खोज करता है। आइंस्टीन मेधावान थे। मेधा के कारण ही व्यक्ति नये नये रास्ते निकालता है। भले ही बहुत लोगों ने इंजीनियरिंग पढ़ी हो पर मेधावान ही उसमें से कुछ नया निकालेगा। मेधावान व्यापारी ही व्यापार में नया रास्ता निकलेगा। कानून कइयों ने पढ़ा है पर नयी नयी व्याख्या मेधावान ही कर सकता है। वह बुद्धि जो तीनों दोषों (संशय, यथार्थ ज्ञान की न्यूनता, विपरीत बुद्धि) से रहित है, मेधा कहलाती है। धारणावती बुद्धि से युक्त। धारणावती बुद्धि स्वरूपा। स्मरण जिस शक्ति के कारण दीर्घ काल तक रहता है, वह मेधा है। स्मरण शक्ति अल्पकालिक भी हो सकती है पर मेधा दीर्घकालीन स्मरण शक्ति है। जिस शक्ति के कारण बुद्धि में चीजें धारित हो जाती हैं अर्थात स्मरण में आ जाती हैं वह मेधा है। ब्रह्म तत्व, आत्म तत्व आदि तत्वों का स्मरण कराने वाली शक्ति का नाम मेधा है। देवी भागवत में लिखा है कि काश्मीर देश की देवी का मेधा नाम है। ये चुतुर्भुजी त्रिनयना हैं। निरुक्त में मेधा की व्युत्पत्ति दी गई है, मतौ धीयते इति मेधा अर्थात बुद्धि में जिसे धारण किया जाता है, वह मेधा है। वेद में आत्मज्ञान को धारण करने वाली बुद्धि को मेधा कहा गया है। एकाक्षरी कोष में मे का एक अर्थ सारंग (मृग) दिया गया है, मृग को धारण करने वाली अर्थात मृग को अपने पास रखने वाली। मृग वेद का प्रतीक है, वेद अर्थात ज्ञान को धारण करने वाली।

25. **नीतिज्ञा** – नीति को जानने वाली। सभी नीतियों को जानने वाली। नीति का अर्थ है समाज को ठीक रास्ते पर ले जाने के लिए बनाये गये नियम, जनता के लिए निश्चित किये गये आचार व्यवहार।

26. **नीतिवत्सलाः** – नीति है प्रिय जिन्हें। वत्सल का अर्थ है अत्यन्त प्रिय।

27. **माहेश्वरी** – भगवान महेश्वर से सम्बन्धित अर्थात पार्वती स्वरूपा। महेश्वर (अर्थात शिव) की शक्ति स्वरूपा अर्थात पार्वती स्वरूपा। माहेश्वर सम्प्रदाय के लोगों द्वारा उपासनीया। भगवान शिव द्वारा पाणिनी को दिये गये व्याकरण के 14 सूत्र माहेश्वर कहलाते हैं। इन 14 सूत्रों में रहने वाली शक्तिस्वरूपा। अतिशय ऐश्वर्य से युक्त। भगवान शिव की संहार करने वाली शक्ति स्वरूपा। चित्त के विक्षेप को नष्ट कर प्रत्येक कार्य में एकाग्रता लाने वाली। चीजों को क्षणभंगुर बनाकर यह सीख देने वाली कि क्षणभंगुर चीजों को पाने में या उसे भोगने में समय मत खर्च करो।

28. **महामाया** – बड़े बड़े देवताओं और ऋषि – मुनियों को भी माया के प्रभाव में डालने वाली। बड़े बड़े देवताओं एवं सिद्धों को भी माया में डालने वाली अर्थात अनात्म वस्तुओं के प्रति आकर्षण पैदा करने वाली। भगवान शिव विष्णु भगवान के मोहिनी रूप को देखकर मोहित हो गये थे। विश्वामित्र, पराशर जैसे सिद्ध माया में फँस गये थे। प्रभु की सबसे बड़ी माया स्वरूपा।

29. **महातेजा** – सर्वाधिक तेज वाली। शब्द के आगे महा लगने पर सर्वाधिक, अतिशय अर्थ आता है। अतिशय तेज रूपा या अतिशय तेज से सुशोभित।

30. **महेश्वरी** – सभी देवियों में श्रेष्ठ। शब्द के आगे महा लगाने से अर्थ हो जाता है सर्वाधिक, 'से बढ़कर' या श्रेष्ठ। महेश्वर अर्थात शिव की शक्ति अर्थात पार्वती स्वरूपा। ऐश्वर्यशालियों में जो सबसे बढ़कर है। ईश्वरी अर्थात ऐश्वर्य से युक्त।

31. **महाजिह्वा** – विशाल जिह्वा वाली अर्थात काली स्वरूपा। काली जी की जिह्वा बहुत बड़ी है। महा का अर्थ है सर्वाधिक, अतिशय।

32. **महाघोरा** – अत्यधिक भयंकर रूप वाली। सर्वाधिक भयंकर रूप वाली। पूजनीय शिव की शक्ति। महा का अर्थ है पूजनीय एवं घोर का अर्थ है शिव। घोर + आ, एकाक्षरी कोष के अनुसार आ का अर्थ है शक्ति।

33. **महादंष्ट्रा** – बड़ी बड़ी डाढ़ों वाली जिससे दैत्यों को चबा देती है। विशाल दाढ़ो वाली अर्थात् विराट स्वरूपा। भगवान कृष्ण ने जब अपना विराट स्वरूप दिखाया था तो उनकी दाढ़ बहुत बड़ी थी। देवी और देवता में अभेद सम्बन्ध होता है। पार्वती जी ने भी अपनी माँ को विराट् स्वरूप दिखाया था। दाढ़ खाने का कार्य करती है, अतः दंष्ट्रा का अर्थ खाने वाली या भक्षण करने वाली। बड़े–बड़े देवताओं, ऋषियों को भी प्रलयकाल में या समय आने पर उनका भक्षण करने वाली। महा का अर्थ ब्रह्माण्ड भी होता है। प्रलय काल में ब्रह्माण्ड का भक्षण करने वाली। शुद्ध हृदय वाले भक्तों को विशाल संकट से निकालने वाली। दंष्ट्रा शब्द बड़े और नुकीले दाँतों के लिए प्रयुक्त होता है। विज्ञान की भाषा में इसे कैनाईन दाँत कहते है। मांसाहारी व्यक्ति इन दाँतों से हड्डियों में फँसे मांस को निकलते है। अतः दंष्ट्रा शब्द का अर्थ बाहर निकालने वाला किया गया है। महा का अर्थ विशाल या बड़े संकट ले लिया गया है। जिन भक्तों का हृदय बड़ा कोमल है, उन्हें विशाल संकटों से निकालने वाली।

34. **महाभुजा** – विशाल भुजाओं वाली। विशाल भुजाओं वाली अर्थात विराट् स्वरूप वाली। महाभुजा का लाक्षणिक अर्थ है बहुत बहादुर या बहुत पराक्रमी अर्थात अजेय। भुज् धातु का अर्थ रक्षा करना भी होता है। विश्व या ब्रह्माण्ड की रक्षा करने वाली। आपने महीभुज् (राजा) शब्द सुना होगा जो पृथ्वी की रक्षा करने के कारण महीभुज् कहलाता है। भुज् धातु का अर्थ उपभोग करना अर्थात खाना खाना भी है। महा का अर्थ है ब्रह्माण्ड या विश्व। प्रलयकाल में ब्रह्माण्ड का उपभोग करने वाली अर्थात उसे खा जाने वाली।

35. **महामोहान्धकारघ्नी** – महामोहरूपी अन्धकार का भी विनाश कर देने वाली। सभी प्राणियों को मोह में डालना अर्थात ममत्वभाव में डालना अर्थात संसार के बन्धन में डालना अर्थात संसार से आसक्त करना महामोह है। महा अर्थात सभी प्राणी। सारे संसार के जीवों को भोगैषणा में डालना, सांसारिक पदार्थों के भोगों से मिलने वाले सुखों की इच्छा करवाना महामोह में डालना है। महामोह वह है जिसमें इन्द्रियों के भोग से प्राप्त होने वाले सुख की इच्छा सदैव बनी रहती है। महा अर्थात सभी जीव, सदैव। मोह अर्थात इन्द्रिय भोग से प्राप्त सुख की इच्छा।

36. **महामोक्षप्रदायिनी** – सबसे श्रेष्ठ मोक्ष प्रदान करने वाली। पूर्ण मोक्ष प्रदान करने वाली। पाँच प्रकार के मोक्ष में सबसे श्रेष्ठ मोक्ष कैवल्य या सायुज्य को माना जाता है। इस प्रकार के मोक्ष में साधक ब्रह्म या अपने उपास्य देव से एक हो जाता है। किसी मत में सायुज्य को सर्वश्रेष्ठ मोक्ष माना है और किसी मत में कैवल्य को सर्वश्रेष्ठ मोक्ष माना है। जो पूजनीय है एवं मोक्ष प्रदान करने वाली हैं। प्रदान अर्थात स्थायी रूप से देना।

37. **महादारिद्र्यनाशा** – अत्यन्त दरिद्रता का नाश करने वाली। मनुष्य को जीवित रहने के लिए आधारभूत आवश्यकताएं जैसे रोटी, कपड और मकान आदि भी न मिले, उसे महादरिद्रता की अवस्था कह सकते है। कुछ लोगों के अनुसार भावहीनता एवं कुछ लोगों के अनुसार विचारों की दरिद्रता सबसे बडी दरिद्रता है। लौकिक

पदार्थो का महा अभाव ही महा दारिद्रय है। अतिशय गरीबी या दरिद्रता का विनाश कर देने वाली। जिसमें भगवान के प्रति भक्ति का उदय न हुआ हो, वह महादरिद्री है। दरिद्रता कई प्रकार की होती हैं। कोई धन से, कोई आत्मविश्वास से, कोई सम्मान से, कोई साहस से और कोई ज्ञान से दरिद्र होता है। जिनमें ये सभी दुर्गुण हों वह अतिदरिद्री या महादरिद्री है।

38. **महाशत्रुविमर्दिनी** – बहुत बड़े शत्रु का भी मर्दन या विनाश कर देने वाली। विभिन्न वरदानों को पाने के कारण असुर और राक्षस लगभग अजेय हो गये थे, अतः वे महाशत्रु हुए। भगवान से दूर गया मन महाशत्रु है। गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है कि मन ही सबसे बड़ा मित्र है और सबसे बड़ा शत्रु है। अहंकार को भी सबसे बड़ा शत्रु माना जाता है। आन्तरिक विकार अर्थात काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद मत्सर सबसे बड़े शत्रु माने गए हैं।

39. **महामाया** – मायावियों को भी माया में डाल देने वाली। बड़े बड़े मायावियों को भी माया में डालने वाली, ऐसा अर्थ भी कर सकते हैं। जो माया से पार ले जाए अर्थात अपने भक्तों पर कृपा करके माया से पार ले जाती है वह महामाया है। महा का अर्थ है 'से बढ़कर' तो महामाया का अर्थ हुआ जो माया से बढ़कर हो अर्थात जिसके अन्दर माया को पार कराने की क्षमता हो।

40. **महावीर्या** – बहुत बड़े पराक्रम से युक्त। सर्वाधिक पराक्रम वाली। महा का एक अर्थ सर्वाधिक भी होता है।

41. **महापातकनाशिनी** – पाँच महापापों को नष्ट कर देने वाली। ये महापाप हैं चोरी, हत्या, बलात्कार, सुरापान और इन चारों का साथ देने वाला। ऐसे लोग नरक के बाद भी सात जन्मों तक घोर कष्ट झेलते हैं। अत्यधिक बढ़े हुए पापों को नष्ट कर देने वाली।

42. **महामखा** – बहुत बड़े यज्ञ के स्वरूप को धारण करने वाले।

43. **मन्त्रमयी** – मन्त्र स्वरूपा। इनका शरीर मन्त्रों का बना है। मन्त्रों को देवताओं का सूक्ष्म शरीर या नाद शरीर मानते हैं।

44. **मणिपूरकवासिनी** – नाभि में स्थित मणिपुर चक्र में निवास करने वाली।

45. **मानसी** – मन से उत्पन्न। मनसा देवी की उत्पत्ति की अनेक कथाएं हैं। एक कथा के अनुसार मनसा देवी शिव के मन से उत्पन्न हुई थीं। मैना देवी को भी पितरों के मन से उत्पन्न माना गया है।

46. **मानदा** – भक्तों को सम्मान प्रदान करने वाली।

47. **मान्या** – माननीय अर्थात सम्माननीय या आदर के योग्य। पूजनीया या सम्मानीया अर्थात् देवताओं या प्राणियों द्वारा सम्मान के योग्य अर्थात् देवता आदि देवी का सम्मान या आदर करते है। शाब्दिक अर्थ तो सम्मान के योग्य है पर कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र से कृत्य प्रत्ययान्त शब्द सामान्य कारकों एवं कालों से भिन्न अर्थ भी बताते है अर्थात् सम्मान करने योग्य का अर्थ सम्मान करते हैं, भी किया जा सकता है। मा+ अन्या, मा का अर्थ है नहीं। जिनके अतिरिक्त कोई दूसरा नहीं है। देवी का अर्थ है शक्ति या ऊर्जा। हमें जो कुछ भी दिखाई देता या अनुभव में आता है, वह शक्ति या ऊर्जा का रूपान्तरण होने के कारण देवी स्वरूपा ही है। जिनके समान कोई दूसरा नही नही है, यह अर्थ भी कर सकते है। मा + न्या, मा का अर्थ है लक्ष्मी, माया। न्यास शब्द से न्या शब्दाक्षर दे सकते है। लक्ष्मी में या माया में रखी हुईं अर्थात् विराजमान।

48. **मनश्चक्षूरणेचरा** – मन की आँखों से रमणीय दिखाई देने वाली। रण का अर्थ रमणीय या सुन्दर भी होता है जैसा महेरणाय में है। चरा अर्थात दृष्टिगोचर होना। मन रूपी नेत्र के व्यवहार में विचरण करने वाली। यहाँ रण का अर्थ है कार्यकलाप।

49. **गणमाता** – गणेश जी की माता स्वरूपा। गणो की माता अर्थात उनका पालन पोषण या रक्षा करने वाली। भगवान शिव के जो अनुचर या सेवक हैं वे गण हैं।

50. **गायत्री** – अपना नाम श्रद्धापूर्वक जपने वाले की रक्षा करने वाली। गाने वाले की रक्षा करने वाली अर्थात श्रद्धापूर्वक अपना नाम जपने वालों की रक्षा करने वाली। गायत्री नामक वैदिक छन्दस्वरूपा जिसमें 24 अक्षर होते हैं। ऋग्वेद में मौजूद 24 अक्षर के गायत्री मन्त्र नाम से प्रसिद्ध मन्त्र। गा+यत्री से गायत्री नाम के अर्थ जानने का प्रयास करे तो अर्थ होगा परमेश्वर की वह शक्ति जो सर्वत्र गमनशील है और सर्वनियन्त्री है। गा का अर्थ है गमनशील और यत्री का अर्थ नियन्त्रण करने वाली कर सकते हैं। परमात्म तत्व का गायन करने वाली।

51. **गणगन्धर्वसेविता** – देवगणों और गन्धर्वों द्वारा जिनकी सेवा की जाती है। गन्धर्व देव प्रजाति के संगीतज्ञ हैं। ये स्वर्ग में रहते हैं और गाने का काम करते हैं। गन्धर्व सोम के रक्षक, रोगों के चिकित्सक, स्वर्गीय ज्ञान के प्रकाशक, सूर्य के अश्वों के वाहक कहे गये हैं। गन्धम् अर्वति इति गन्धर्वः अर्थात जो गन्ध की ओर गति करते हैं, जहाँ सुगन्ध है वहाँ पहुँच जाते हैं, गन्धर्व हैं। सेवा का अर्थ पूजा करना, मिले आदेश का पालन करना है। गुरु के प्रति सेवा के 4 रूप होते हैं – गुरु के अनकूल किए सेवा कार्य को आप्त कहते हैं, गुरु की व्यक्तिगत सेवा जैसे पैर दबाना को अंग कहते हैं, गुरु के अधिकार की वस्तुओं की निगरानी (रक्षा) करने को स्थान कहते हैं, गुरु को परब्रह्म मानकर उनका ध्यान चिन्तन करने को सद्भाव कहते हैं।

52. **गिरिजा** – पर्वत अर्थात पर्वतराज हिमालय से पैदा हुईं।

53. **गिरिशा** – पर्वत में शयन करने वाली। पर्वत अर्थात् कैलाश पर शयन करने वाली अर्थात् विराजमान रहने वाली। सिर में स्थित सहस्रार चक्र कैलाश पर्वत माना जाता है। इस सहस्रार चक्र में शयन करने वाली अर्थात विराजमान। गिरि का अर्थ है पर्वत जो ऊँचाई का प्रतीक है। चेतना के उच्चतम शिखर पर विराजमान या सर्वोच्च्व चेतना वाली। अन्य देवी– देवताओं से उच्च। गिरि अर्थात् पर्वत अर्थात जड़ता अर्थात् अज्ञान। शो तनूकरणे धातु में ड प्रत्यय लगाने से श शब्द बनेगा जिसका अर्थ है पतला या दुर्बल करने वाला। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ अज्ञान को दुर्बल करने वाली अर्थात् समाप्त करने वाली।

54. **साध्वी** – साधु स्वभाव वाली अर्थात दूसरे के कार्यों को सिद्ध करने वाली। साध्नोति परकार्यम् इति साधुः अर्थात जो दूसरे के कार्य बनाये, दूसरे की मदद करे वह साधु है। सच्चरित्रा, शुद्ध चरित वाली, पतिव्रता, पतिपरायणा। साधु धर्म का पालन करने वाली। साधु समाज का पथ प्रदर्शन करते हुए धर्म के मार्ग पर चलकर मोक्ष प्राप्त करता है। साधु सीधा, सज्जन, सद्गुणी, वीतराग, परोपकारी होता है। साधु अर्थात जो साधना में लगा हुआ है। साधु परमार्थ में लगा होकर सत्योपदेश द्वारा दूसरों का उपकार करने वाला होता है। साधु साधन/तपस्या करते हुए वेदोक्त ज्ञान को समाज को देते हैं और अपने जीवन को त्याग और वैराग्य से जीते हुए, ईश्वर भक्ति में विलीन हो जाते हैं।

55. **गिरिस्था** – वाणी में विराजमान अर्थात् वाणी में विराजमान शक्ति स्वरूपा। पर्वत पर विराजमान रहने वाली। गिरि शब्द विज्ञानमय कोश के लिए आता है। इस कोश में रहने वाली चेतना स्वरूपा। मनुष्य के पाँच शरीर या कोश होते हैं। ऊँचाई पर स्थित अर्थात ज्ञान या चेतना की ऊँचाई पर स्थित। गिरि या पर्वत ऊँचाई, कठोरता, अडिगता का प्रतीक है।

56. **गिरिवल्लभा** – पर्वत हैं प्रिय जिन्हें। पर्वत की तरह ऊँचाई पर स्थित ज्ञान या चेतना वाले लोग या अपने संकल्प से अडिग रहने वाले लोग जिन्हें बहुत पसन्द हैं। वल्लभ अर्थात अतिशय प्रिय।

57. **चण्डेश्वरी** – प्रचण्ड शक्ति वालों की भी स्वामिनी अर्थात इन सभी का मार्गदर्शन करने वाली। अतिशय शक्ति सम्पन्न। चण्ड नामक दैत्य को मारने वाली। ईश्वरी का अर्थ है उत्पत्ति करने वाली, बनाये रखने वाली और संहार करने वाली। यहाँ पर संहार करना अर्थात मारना अर्थ ले लिया।

58. **चण्डरूपा** – परब्रह्मस्वरूपा। क्रोध को परब्रह्म माना गया है क्योंकि भय के कारण ही हवा बहती है सूर्य

चमकता है और अन्य सभी अपने कार्यों में लगे रहते हैं। परब्रह्मस्वरूपिणी अर्थात जगत का मूल कारण स्वरूपिणी। भयदायक। क्रोध से युक्त। चण्ड का एक अर्थ असाधारण गुण भी होता है। असाधारण गुण जैसे सर्वज्ञता, सर्वव्यापकता, नित्यता। ये असाधारण गुण केवल ब्रह्म में हैं अतः ब्रह्म का नाम चण्ड है।

59. **प्रचण्डा** – प्रकृष्ट अर्थात बहुत अधिक क्रोध से युक्त। बहुत अधिक क्रोध करने वाली। राक्षसों या दुष्टों पर बहुत अधिक क्रोध करती हैं। प्रचण्ड का अर्थ है अधिक बलवाली क्योंकि चण्ड का एक अर्थ बल या प्रताप भी होता है। तब प्रचण्डा शब्द का अर्थ होगा अधिक बल या अधिक तेज वाली। प्रचण्ड का अर्थ तीव्र/प्रखर भी होता है तब प्रचण्डा का अर्थ होगा जो अपने कार्य कलापों को बहुत शीघ्रता से करती है। भक्तों की रक्षा या दुष्टों के विनाश का कार्य शीघ्रता से करती हैं। प्रचण्ड का अर्थ है असहनीय तब अर्थ होगा जिनका तेज दूसरे सहन नहीं कर सकते।

60. **चण्डमालिनी** – चण्ड राक्षस से उपलक्षित राक्षसों के कटे हुए शरीरों को माला के रूप में धारण करने वाली। मल धारणे धातु होती है जिसमें णिनि प्रत्यय लगाने से मालिन् और स्त्रीलिंग में मालिनी बनेगा जिसका अर्थ होगा धारण करने वाली। चण्ड का अर्थ अधिक क्रोध या बल होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ अधिक क्रोध या बल को धारण करने वाली। चण्ड का एक अर्थ असाधारण गुण भी होता है। अतः इस नाम का अर्थ हुआ असाधारण गुणों को धारण करने वाली। असाधारण गुण जैसे सर्वज्ञत्व, सर्वव्यापकत्व आदि।

61. **चर्विका** – चबा लेने वाली (शत्रुओं और राक्षसों को)। दुष्टों/राक्षसों का चर्वण (भक्षण) करने वाली। भक्तों के पापों एवं कर्म संस्कारों का भक्षण करने वाली। अच्छे कर्म एवं बुरे कर्म दोनों ही बन्धन के कारण हैं क्योंकि इन दोनों का भोगने के लिए पृथ्वी में आना पड़ता है। चर्वण का अर्थ आस्वादन करना भी होता है। अतः इस नाम का अर्थ हुआ भक्तों की भक्ति का रसास्वादन करने वाली या उनके द्वारा चढ़ाए हुए भोग पदार्थों का आस्वादन लेने वाली अर्थात चखने वाली।

62. **चर्चिकाकारा** – पूजित स्वरूप वाली। चर्च पूजायाम् धातु होती है। ऐसे स्वरूप वाली जिसकी लोगों द्वारा पूजा होती है। जिनकी बार बार चर्चा की जाती है ऐसे स्वरूप वाली। देवी के अद्‌भुत कृत्यों का बखान किया जाता है अर्थात उनका यश फैला हुआ है। चन्दन का लेप जिसमें फैला हुआ है अर्थात चन्दन का लेप लगाने वाली।

63. **चण्डिका** – महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती इन महाशक्तियों के मिलित स्वरूप वाली अर्थात चण्डिका इन तीनों महाशक्तियों का मिलित रूप है। इसी कारण दुर्गासप्तशती के प्रत्येक अध्याय के अन्त में ऊँ नमश्चण्डिकायै बोला जाता है। भयंकर क्रोध वाली। (चण्डी को ही चण्डिका कहा जाता है। चण्डी का अर्थ क्रोध करने वाली है। एक अन्य व्युत्पत्ति के अनुसार चणति चणयति अम्लरसम् ददाति से भी चण्डी बनता है। जिसका अर्थ होता है खट्‌टा करने वाली इमली। देवी के अर्थ में अर्थ होगा कि शत्रुओं के दाँतों को खट्‌टा करने वाली)। चण्डी और चण्डिका का एक अर्थ उग्र भी होता है और उग्र का तात्पर्य है दुष्ट के प्रति निर्दयता का भाव वाली। उग्र का अर्थ बेकाबू भी होता है अर्थात दुष्ट को मारने के लिए इस हद तक उतावली कि अपने और दूसरों की चिन्ता भी नहीं करती हैं।

64. **चारूरूपिणी** – मनोहर, सुन्दर रूप वाली। बृहस्पति के स्वरूप वाली। चारु का अर्थ मनोहर, बृहस्पति है।

65. **यज्ञेश्वरी** – यज्ञ में जिनकी पूजा होती है। यज्ञ का फल देने वाली। यज्ञ की ईश्वरी अर्थात यज्ञ का अधिकाधिक फल इन्हें मिलता है।

66. **यज्ञरूपा** – यज्ञ स्वरूपा। दूसरों की भलाई के लिए निःस्वार्थ भाव से किये जाने वाले कर्म यज्ञ कहलाते हैं, ऐसे कर्म के स्वरूप वाली। आप जिस वस्तु के स्वामी हैं उसे मानवता की भलाई में लगाना यज्ञ है। यज्ञम् रूपयति इति यज्ञरूपा, यज्ञ को देखने वाली अर्थात यज्ञों पर निगरानी करने वाली, यज्ञों को दिखाने वाली आदि

यह अर्थ भी यज्ञरूपा का हुआ। रूपयति का अर्थ स्वरूप बनाना अर्थात रचना करना भी होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ यज्ञों की रचना करने वाली।

67. **जपयज्ञपरायणा** – जपयज्ञ में लगी रहने वाली अर्थात हमेशा जप करने वाली। देवी हमेशा शिव नाम का जप करती रहती हैं। परायण का अर्थ लगा हुआ, अन्तिम लक्ष्य या उत्कृष्ट लक्ष्य, सार (तत्व), रक्षक, आश्रय, आश्रित है। जपयज्ञ करने वालों का अन्तिम लक्ष्य, जप यज्ञ करने वालों का आश्रय या शरणस्थली। जपयज्ञ करने वालों की रक्षा करने वाली।

68. **यज्ञमाता** – यज्ञों की माता अर्थात जननी । यज्ञों की रक्षा करने वाली। माति इति माता अर्थात जो रक्षा करे वह माता है। माता गर्भ में शिशु की रक्षा करती है अतः वह माता कहलाती है। माति के कई अर्थ हैं जिनमें से एक अर्थ है रक्षा करने वाली। वैदिक निर्वचनकोश (डा. ज्ञान प्रकाश शास्त्री) ने मातृ शब्द का अर्थ पालिका अर्थात रक्षिका बताया है जिसका तात्पर्य है कि मा धातु का एक अर्थ पालन करना या रक्षा करना भी होता है। दुर्गासप्तशती की टीकाओं में श्रीनागोजी भट्ट ने ''या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः'' इस मन्त्र की व्याख्या में मातृ शब्द का अर्थ पालिका किया है। पालन करना अर्थात रक्षा करना। शिशुम् गर्भे माति इति माता, जो गर्भ में शिशु का पालन करती है या रक्षा करती है, वह माता है।

69. **यज्ञभोक्त्री** – यज्ञ में डाले गये पदार्थों को भोगने वाली अर्थात अग्निस्वरूपा। यज्ञ के फलों को भोगने वाली। हव्य सामग्री को ग्रहण करने वाली।

70. **यज्ञेशी** – यज्ञ को अनुशासित करने वाली अर्थात नियम आदि बनाकर नियन्त्रण करने वाली। ईश् धातु का अर्थ शासन करना होता है। इससे ईशी शब्द बनाने पर शासन करने वाली अर्थात अनुशासित करने वाली अर्थात नियन्त्रण करने वाली अर्थ निकलेगा। यज्ञ सम्बन्धी नियमों को पालन कराने वाली। यह करो, यह न करो, इसे ऐसे करो इस प्रकार के नियम से नियन्त्रण होता है। यज्ञ की अधिष्ठात्री या स्वामिनी। यज्ञ करने के लिए प्रेरणा देने वाली। यज्ञ करने वाले को प्रेरणा देती है कि उसे क्या क्या करना है। यह प्रेरणा किसी गुरू के माध्यम से देती है। ईष्टे का अर्थ प्रेरयति भी होता है। ईष्टे से ईश बनाने पर प्रेरणा देने वाली अर्थ निकलेगा। (ईश में शासन करने का भाव अधिक है जबकि ईश्वर में ऐश्वर्य के मालिक होने का भाव अधिक है। अतः यज्ञेश्वरी में यज्ञ का फल जो सम्पन्नता या ऐश्वर्य होता है, देने वाली अर्थ निकलता है। ईशी और ईश्वरी दोनों की उपासना होती है। ईश का अर्थ है शासन करने वाला, ईश्वर का अर्थ है जो शासन करने वालों में श्रेष्ठ है। ईश्वर का अर्थ है शासन करने वाला एवं श्रेष्ठ गुणों से युक्त। भगवत् गीता में 16वें अध्याय में बताये गये दैवी गुण श्रेष्ठ गुण हैं। वर का अर्थ है श्रेष्ठ।)

71. **यज्ञसम्भवा** – यज्ञ से उत्पन्न होने वाली अर्थात प्रकट होने वाली। द्रौपदी की उत्पत्ति यज्ञ से हुई है। ललिता सहस्रनाम में एक शब्द आया है चिदग्निकुण्डसम्भूता जिसका अर्थ है चिदग्निकुण्ड से पैदा हुई। देवताओं ने जब यज्ञ किया तो देवी ललितात्रिपुरसुन्दरी माँ प्रकट हुई।

72. **सिद्धयज्ञा** – सफल यज्ञ स्वरूपिणी अर्थात तात्पर्य हुआ यज्ञों में सफलता देने वाली। सिद्ध का एक अर्थ सफल भी होता है। निष्काम भाव से किये जाने वाले कर्तव्य कर्म यज्ञ कहलाते हैं और देवी के सभी कर्म निष्काम भाव से किये जाने के कारण यज्ञ स्वरूप हैं। इस प्रकार सिद्धयज्ञा का अर्थ हुआ सफल कर्मों वाली अर्थात देवी जो भी कार्य करती हैं उनमें सफलता ही मिलती है। सिद्ध है यज्ञ जिनको।

73. **क्रियासिद्धि** – कर्मों की सिद्धि स्वरूपा अर्थात उपासना या शास्त्रोक्त कर्मों में जो सफलता मिलती है वह सफलता भी देवी का ही रूप है। कर्म कोई भी कर्म हो सकता है पर प्रायः इसका तात्पर्य शास्त्रोक्त कर्मों से

होता है। कार्यकलापों को सिद्ध करने करने वाली या पूरा करने वाली। (कहीं कहीं सिद्धक्रियासिद्धि शब्द है तब अर्थ होगा सिद्धों के कार्यों की सफलता स्वरूपा या सिद्धदेवियों की कार्यों की सफलता स्वरूपा)।

74. **यज्ञाङ्गी** – यज्ञ में प्रयुक्त होने वाले पदार्थों जैसे पंचगव्य, हवन सामग्री स्वरूपा। प्रत्येक पदार्थ शक्ति या ऊर्जा से बना होने के कारण शक्ति स्वरूपा है अर्थात देवी स्वरूपा है। विभिन्न प्रकार के यज्ञ जैसे अश्वमेघ, वाजपेय यज्ञ जिनके शरीर के अंग स्वरूपा हैं। यज्ञ में जाने वाली अर्थात हर यज्ञ में पहुँच जाने वाली। यज्ञानि अंगति गच्छति इयम्। जिनके अंगों में विभिन्न प्रकार के यज्ञ हैं, ऐसे भगवान वराह की पत्नी या शक्ति स्वरूपा या उस शक्ति से अभेद है जिनका। वराहरूपे यज्ञा अंगेषु अस्य अस्ति इति यज्ञांगः, तस्य स्त्री यज्ञांगी। श्रीमद्भागवत में वराह भगवान का वर्णन है कि इनका अमुक अंग अश्वमेध यज्ञ है, अमुक अंग वाजपेय यज्ञ है आदि आदि। यज्ञ जिनकी आराधना के अंग हैं अर्थात विभिन्न यज्ञों द्वारा जिनकी आराधना होती है। यज्ञाश्च अस्या आराधनांगानि।

75. **यज्ञरक्षिका** – यज्ञ की रक्षा करने वाली। यज्ञ करने वाला रक्षा मन्त्र पढ़ता है। रक्षा मन्त्र भी देवी ही हैं।

76. **यज्ञक्रिया** – यज्ञ की क्रिया स्वरूपा। यज्ञ के लिए जो भी कर्म किये जाते हैं, तत्स्वरूपा। क्रिया अर्थात कर्म। सामग्री जुटाना, मण्डप सजाना, पण्डितों को बुलाना, पूजा करना, हवन करना, ब्राह्मण भोज कराना आदि जितने भी कर्म होते हैं, तत्स्वरूपा।

77. **यज्ञा** – यज्ञस्वरूपा। ग्रहस्थों के लिए बताये गये पंचयज्ञ स्वरूपा। पंचयज्ञ हैं – ब्रह्म यज्ञ (स्वाध्याय), देवयज्ञ, पितृयज्ञ, बलिवैश्वदेव यज्ञ, अतिथि यज्ञ। भगवान विष्णु स्वरूपा। भगवान विष्णु का एक नाम यज्ञ भी है। भगवान विष्णु की शक्ति स्वरूपा। जिन वस्तुओं के आप मालिक हैं उन्हें मानवता की भलाई के लिए लगाना अर्थात दान करना ही वास्तविक यज्ञ है। ऐसे कर्म के स्वरूप वाली। अग्नि में आहुति देना यज्ञ का एक सीमित रूप है।

इज्यते इति यज्ञा। यदस्ति तज्जानाति इति यज्ञा। यज्ञान्तर्गता इति यज्ञा। यानात् ज्ञानात वा यज्ञा। यज्ञो वै विष्णु। यस्मात् ब्रह्मादीनां ज्ञानस्फूर्ति सा यज्ञा। इज्यते अत्र इति यज्ञा। इज्यते अनया इति यज्ञा। यज्ञगता यज्ञनामा। विष्णुमेव यजन्तीति यज्ञा। येन वायुना ज्ञायते इति यज्ञा। यजं यजनं नयति इति यज्ञा। जिनकी पूजा की जाती है, उनका नाम यज्ञा है। यत् अर्थात जो कुछ भी है अर्थात सबकुछ। सबकुछ जानने वाली अर्थात सर्वज्ञा। यज्ञ के अन्दर रहने वाली अर्थात विराजमान। शब्द के आगे 'मे विराजमान' लगाने से शब्द का अर्थ आ जाता है। ले जाने वाली एवं ज्ञान स्वरूपा। ले जाने वाली अर्थात पहुँचाने वाली या भक्तों को उच्च लोक में पहुँचाने वाली। यज्ञ भगवान विष्णु का नाम है। भगवान विष्णु की शक्ति स्वरूपा। यज्ञ+आ, आ का एक अर्थ है शक्ति। जिनसे अर्थात जिनके कारण ब्रह्मादि देवताओं को ज्ञान प्राप्त होता है। जिसमें ईश्वर की पूजा होती है वह यज्ञ है। जिसके द्वारा अर्थात जिस क्रिया के द्वारा ईश्वर की पूजा होती है अर्थात हवन आदि क्रिया यज्ञ है। यज्ञ में पहुँचने वाली। भगवान विष्णु की पूजा करने वाली। वायु के द्वारा जानी जाने वाली अर्थात चैतन्य स्वरूपा या चेतन के रूप में विराजमान। श्वास–उच्छ्वास क्रिया से जीवित रखने वाली अर्थात चैतन्य स्वरूपा। यज्ञ का अर्थ देवपूजा, दान, संगतिकरण है। यजन को ले जाने वाली अर्थात दान, पूजा, संगतिकरण के लिए प्रेरित करने वाली या उसके लिए आवश्यक शक्ति देने वाली। संगतिकरण अर्थात उपासक का उपास्य से मिलना। वेद के अनुसार यज्ञ वह परमसत्ता है (Supreme being) है जो विश्व (Universe) को नियन्त्रित या शासित करता है (Control or Govern) करता है। वेद में यज् धातु का अर्थ है Govern, Rule, order, regulate, जो इनको करता है वह यज्ञ है। यज् में य का अर्थ है Control। यम् का अर्थ है Order, Control । यत् का अर्थ है To use force, strive, यक्ष् का अर्थ है To keep carefully, habituation। इसी कारण यक्ष् वह जाति है जो भूमि में छिपे धन की रक्षा करती है। एक वैदिक कोष में लिखा है कि यज्ञ शब्द यम् एवं जन् दो धातुओं से मिलकर बना है।

जन् का अर्थ है उत्पन्न करना। संसार को उत्पन्न करने के कारण एवं उसे नियंत्रित करने के कारण परमात्मा को यज्ञ कहते हैं। उपयोगी वस्तु का निर्माण या उसे उत्पन्न करना यज्ञ है।

78. **यज्ञायज्ञक्रियालया** – बड़े यज्ञ और छोटे यज्ञ अर्थात प्रत्येक प्रकार के यज्ञ की क्रियाओं का घर (आधार) अर्थात इन्हीं की शक्ति से यज्ञ होते हैं। अ के छह अर्थ होते हैं जैसे नहीं, अल्प, समान आदि। अतः अयज्ञ का अर्थ अल्पयज्ञ या छोटा यज्ञ लिया गया। यज्ञ का अर्थ बड़ा यज्ञ ले लिया गया। गीता में निष्काम भाव से किये जाने वाले कर्तव्यकर्म को यज्ञ कहते हैं। अतः सकाम भाव से किये जाने वाले कर्म को अयज्ञ कह सकते हैं। इस नाम का अर्थ हुआ निष्कामभाव और सकामभाव से की जाने वाली क्रियाओं का घर अर्थात आधार। तात्पर्य है कि निष्काम और सकाम सभी प्रकार के कर्म देवी के द्वारा दी गई शक्तियों से ही होता है। आत्मोत्थान के लिए किये गये कर्म यज्ञ हैं और दूसरे कर्म अयज्ञ हैं। यज्ञ को आहुति देने वाला कर्म कह सकते हैं और अयज्ञ को जिसमें आहुति नहीं दी जाती। यज्ञ और अयज्ञ की जो क्रियाएं हैं उनकी आश्रय।

79. **जालन्धरी** – जालन्धर पीठ में स्थित शक्ति स्वरूपा। पंजाब के जालन्धर नगर में त्रिपुरमालिनी देवी का सिद्ध पीठ है। जल (अर्थात सरोवर या नदी) को धारण किये पीठ (देवस्थान) के अधिदेवता की शक्ति। यह पीठ कैलास के दक्षिण में है। जल में अण् प्रत्यय लगाने से जाल बनता है अतः कभी कभी जालन्धर पीठ भी नाम मिलता है। यदि जालन्धरी नाम है तो अर्थ होगा माया जाल को धारण किये अर्थात माया जाल को नियन्त्रित करने वाले पीठ पर स्थित। यहाँ माया असर नहीं करती अतः योगियों की पसन्दीदा जगह है जो कैलास के दक्षिण में है। यह जगह इन्द्रजाल भी धारण किए हुए होता है अतः यहाँ नानाप्रकार की कौतुक घटनाएं होती हैं। यह सम्पूर्ण जगत के नमूना (Model) या प्रतिदर्श (Sample) की तरह है जहाँ तीनों लोकों की वस्तुएं और प्राणी निकलते हुए प्रतीत होते हैं जैसे उनका निर्माण हो रहा हो। जाल का अर्थ सुरक्षा या कवच भी होता है। कुछ लोग ज्वाला/जाल से जालन्धरी शब्द बनाते हैं। ज्वाला अर्थात इतना प्रकाश है कि भगवान की माया अर्थात वस्तुओं और प्राणियों का उद्भूत होना भी इस प्रकाश में दिखाई देता है।

80. **जगन्माता** – संसार की माता। संसार की उत्पत्ति करने वाली। संसार की रक्षा करने वाली। संसार का भरण – पोषण करने वाली। माता का अर्थ रक्षा करने वाली भी होता है। संसार की लक्ष्मी अर्थात समृद्धि या शोभा स्वरूपा। एकाक्षरी कोष में मा का अर्थ लक्ष्मी और ता का अर्थ भी लक्ष्मी है, इस प्रकार माता का अर्थ लक्ष्मी या अतिशय लक्ष्मी हुआ। मा माति में क्त प्रत्यय लगाने से मात/माता बन सकता है। तब इसका अर्थ होगा जगत के रूप में मापी गई अर्थात सीमित की गई।

81. **जातवेदस्/जातवेदा** – अग्नि स्वरूपा। उत्पन्न सभी पदार्थों को जानने वाली। विद् धातु का अर्थ है जानना। उत्पन्न हुए सभी पदार्थों में विराजमान। विद् धातु का अर्थ है अस्तित्व होना अर्थात् विराजमान होना। जो स्वाभाविक रूप से ज्ञानी है अर्थात् सब कुछ जानती है। जिससे सभी वेद अर्थात् सभी विद्यायें निकली है। सभी पैदा होने पर जिसे प्राप्त किया जाता है अर्थात् अग्नि स्वरूपा। प्राचीन काल में या आज भी यज्ञ के अवसर में पवित्र वृक्ष के लकड़ियों को रगड़ कर अग्नि को प्राप्त किया जाता है। विद् धातु का एक अर्थ प्राप्त करना है। जन्म लेने वाले सभी लोग जिसे जानते हैं अर्थात परमात्मा स्वरूपा। जिसे हवि रूप धन (वित्त) प्राप्त है अर्थात ऐश्वर्यशाली या धन वाली।

82. **जगत्प्रिया** – संसार है प्रिय जिन्हें या जो संसार को प्रिय है।

83. **जितेन्द्रिया** – इन्द्रियों को जीत लिआ है जिसने अर्थात इन्द्रियों को जीत लेने वाली।

84. **जितक्रोधा** – क्रोध को जीत लिया है जिसने।

85. **जननी** – तीनों गुणों को जन्म देने वाली। दया, करुणा गुण स्वरूपा। जननी का एक अर्थ दया, करुणा

भी होता है। जगतां जननी। जनान् नयति। न जायते इति जना, तान् सर्वान् नयति। जनं जननं नयति च। समस्त विश्व को उत्पन्न करने वाली। जनयति इति जननी। लोगों का नेतृत्व करने वाली अर्थात मार्गदर्शन करने वाली या रास्ता दिखाने वाली। भक्तजनों का मार्गदर्शन करने वाली। जनान् नयति इति जननी। ज+न अर्थात जन अर्थात जो जन्म नहीं लेती है। जन+नी से जननी बनाने पर अर्थ होगा जो स्वयं जन्म नहीं लेती है और सभी का नेतृत्व करती है या क्रियाशील करती है या मार्गदर्शन करती है। जन्म को लाने वाली अर्थात उत्पत्ति को करने वाली। जन का अर्थ है जनन या जन्म।

86. **जन्मदायिनी** – सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को जन्म देने वाली। प्रकृति को, तीनों गुणों को, सभी देवताओं को जन्म देने वाली।

87. **गंगा** – निरन्तर गतिशील। निरन्तरम् गच्छति इति गंगा। मोक्षार्थियों द्वारा जिनकी शरण ली जाती है अर्थात जिनकी प्राप्ति की जाती है। मोक्षार्थिभिः गम्यते इति गंगा। गंगा को धर्मद्रवी कहा जाता है अर्थात धर्म को प्रवाहित करने वाली अर्थात प्रसारित करने वाली।

88. **गोदावरी** – गोदावरी नदी स्वरूपां। जल देने वालों या स्वर्ग देने वालों में श्रेष्ठ। गो का अर्थ जल या स्वर्ग और वरी का अर्थ है श्रेष्ठ। प्रकाश (ज्ञान या चेतना) को देने वालों में श्रेष्ठ। गो का अर्थ है किरण अर्थात प्रकाश या ज्ञान की किरण।

89. **गोमती** – गोमती नदी स्वरूपा। गुजरात के गोमती तीर्थ स्वरूपा। गायों से युक्त अर्थात जो गायों के मध्य में विराजमान है। प्रकाश (अर्थात ज्ञान या चेतना) से युक्त। चैतन्य स्वरूपा। चैतन्य को यदि सूर्य का गोला माना जाये तो चेतना उस गोले से निकलने वाली किरणें हैं। चेतना अर्थात होश (Awareness) + सक्रियता (Activity)।

90. **शतद्रुका** – जो सौ मुखों से दौड़ती है अर्थात कई धाराओं वाली सतलज नदी स्वरूपा। द्रु धातु का अर्थ है दौड़ना। शतद्रु में कन् प्रत्यय लगाने पर बिना अर्थ बदले शतद्रुक बन जाता है। ऐसा कहा जाता है कि वशिष्ठ ऋषि किसी घटना से इतने दुःखी हुए कि उन्होंने कई प्रकार से आत्महत्या करने का प्रयास किया। उन्हीं में से एक प्रयास था सतलज नदी में डूबकर आत्महत्या करना। वशिष्ठ ऋषि के तेज एवं तपस्या का सम्मान करते हुए सतलज नदी ने उन्हें नहीं डुबोया बल्कि अपने को सैकड़ों धाराओं में बाँट लिया।

91. **घर्घरा** – घर्घरा अर्थात घाघरा नदी स्वरूपा। घर्घ यह अव्यक्त शब्द करने वाली। घर्घ इति अव्यक्त शब्दम् राति। घर्घर इस शब्द वाली। घर्घरम् अस्या अस्ति। हिमालय के पर्वत द्वार से निकली हुई। घर्घ का अर्थ पर्वतद्वार होता है। पर्वतद्वार वाली अर्थात हिमालय के पर्वत द्वार से निकली हुई।

92. **वेदगर्भा** – जिनके हृदय में या अन्दर वेद है।

93. **रेचिका** – समस्त विश्व को अपने भीतर से बाहर निकालने वाली। रेचन का अर्थ होता है बाहर निकालना।

94. **समवासिनी** – सभी में समान रूप से रहने वाली। अस्तित्व की शक्ति के रूप में देवी सभी प्राणियों और वस्तुओं में समान रूप से स्थित हैं। किसी में कम या ज्यादा नहीं।

95. **सिन्धु** – प्रवाहित होने वाली। स्यन्दते इति सिन्धुः: अर्थात जो प्रवाहित होता है वह सिन्धु है अर्थात समुद्र, नदी। गुणों की समुद्र स्वरूपा। ज्ञान, धर्म, योग, बुद्धि के रूप में प्रवाहित होती है।

96. **मन्दाकिनी** – धीरे – धीरे चलने वाली। आकाश गंगा के रूप में सुशोभित होने वाली। मंदम् अकितुम् शीलम् अस्या। मन्द गति से चलना जिसका स्वभाव है।

97. **क्षिप्रा** – शीघ्रगामी अर्थात वेगवती। क्षिप्र का अर्थ है शीघ्र, जल्दी। क्षिप्रा नदी के रूप में।

98. **यमुना** – यमुना नदी के स्वरूप वाली या यमुना नदी के रूप में प्रवाहित होने वाली। यच्छति इति यमुना अर्थात जो जल दे वह यमुना है। नियच्छति का अर्थ है नियन्त्रण करना अतः यमुना का एक अर्थ हुआ पापों पर नियन्त्रण करने वाली। उपरमयति का अर्थ है शान्त करना। उपरमयति पापम् इति यमुना अर्थात पापों का शान्त करने वाली। यमुना कर्म का प्रतीक है। यमुना नदी में विराजमान। यमुना की शक्ति से युक्त। जिसके द्वारा इन्द्रियों को/मनुष्यों को नियन्त्रित किया जाता है। (यम्यते नियम्मते इन्द्रियाणि मानवाः यया)। जो सभी को मिलाकर अर्थात सभी को समाहित कर आगे बढ़ती है। यु धातु का अर्थ है मिश्रण करना। यमुना जी में बहुत सी नदियों का जल मिलता है जिससे उनमें जल की मात्रा बहुत होती है। प्रवियुती इति यमुना अर्थात जो दूसरी नदियों को अपने में मिलाती हुई आगे बढ़ती है, वह यमुना है। दूसरे देवताओं के तेज को अपने में मिलाती हुई विस्तृत होने वाली। दुर्गा सप्तशती में आया है कि पहले ब्रह्मा, विष्णु, महेश के तेज से महालक्ष्मी देवी की उत्पत्ति हुई, उसके बाद अन्य देवताओं का तेज भी मिलता गया। इस शब्द में मिश्रण अर्थ आता है क्योंकि यु धातु का अर्थ मिश्रण करना, अमिश्रण करना होता है। यमुना को यमुना इसलिए कहते हैं क्योंकि यह नदी विभिन्न नदियों के जल को अपने में मिलाती हुई आगे बढ़ती है। प्रवियुती गच्छति इति यमुना। वियुतम् गच्छति इति यमुना। देवी के सन्दर्भ में सभी भक्तों को अपने में मिलाती हुई अर्थात अपने लोक में स्थान देती हुई कार्यरत, ऐसा अर्थ कर सकते हैं।

99. **सरस्वती** – प्रवाह से युक्त अर्थात ज्ञान के प्रवाह से युक्त (सरस् अर्थात प्रवाह)। देवी या देवता देने का काम करते हैं। जिस गुण या शक्ति से युक्त होते हैं उसे अपने उपासकों को देते हैं अतः इस नाम का अर्थ हुआ– ज्ञान प्रवाहित करने वाली। गुरू शिष्य परम्परा से ज्ञान एक दूसरे में प्रवाहित करने वाली। पानी की तरह प्रवाहमयी अर्थात नीचे की ओर बहती है। गुरू ऊपर बैठते हैं, शिष्य नीचे बैठता है। सरस्वती नदी स्वरूपा या इस नदी से अभेद है जिनका। देवी देवता अपने कई रूप बना लेते हैं। मनुश्य के रूप में भी हो जाते है, प्रकाश रूप में भी हो जाते हैं, नदी रूप में भी हो जाते हैं, वृक्ष रूप में भी हो जाते है या जिस किसी भी रूप को धारण करना चाहे कर लेते हैं। ज्ञानयुक्त या शब्दज्ञान युक्त। सृ गतौ धातु से सर बनाया गया। गति के 03 अर्थ होते है ज्ञान, गमन (गति) और प्राप्ति। श्रेष्ठ मार्गगामिनी। गमन युक्त अर्थात श्रेष्ठ मार्ग में जाने वाली। श्रेष्ठ तत्व या श्रेष्ठ पति प्राप्त किया है जिसने। गतियुक्त अर्थात निष्क्रिय ब्रह्म का सक्रिय रूप। ब्रह्मा, विष्णु व महेश को गति देने वाली अर्थात सक्रिय या चेष्टायुक्त करने वाली। सरसः आवती अर्थात मूर्खता से हर तरह से रक्षा करने वाली। सरसः सरस् की पंचमी विभक्ति है। सरस् का अर्थ है जल। संस्कृत में ल और ड में अभेद है। जल को जड लिखा जा सकता है और जड का अर्थ होता है मूर्ख। Goddess of inspitration। गति (ज्ञान) की अधिष्ठात्री देवी अर्थात ज्ञान में प्रवृत्त कराने वाली, ज्ञान की रक्षा करने वाली या ज्ञान देने वाली। अधिष्ठात्री का अर्थ है किसी चीज में अच्छी प्रकार से स्थित होकर उसे क्रियाशील बनाने वाली, रक्षा करने वाली। सृ धातु का अर्थ है गति करना जिसमें असुन् प्रत्यय लगाने से सरस् शब्द बनता है। गति के ज्ञान, गमन और प्राप्ति अर्थ होते है। गति तभी हो सकती है जब अवरोध दूर हो और अज्ञान को सबसे बड़ा अवरोध माना गया है। जिससे सभी गतियाँ प्रवर्तित होती है, सब आलोक प्रकाशित होता है, अज्ञान दूर होता है, ज्ञान का विकास होता है वह सरस्वती है। गति की अधिष्ठात्री देवी, गति (ज्ञान) को प्रवर्तित कराने वाली। गद्य–पद्यादिरूप में जगत में जिसका (अर्थात् वाक् या शब्द का) प्रसारण (सृ–धातु) होता है, वह सरस्वती है। जहाँ छन्द है, वही गति सरस्वती का रूप है। जहाँ छन्द नही वह अज्ञान का रूप है। सरस् अर्थात् गति अर्थात् प्रसारण। जो सत्–चित और आनन्द की प्रसारिणी शक्ति है वह सरस्वती है।

100. **भद्रा** – कल्याणकारिणी। भदि कल्याणे धातु होती है। शिष्ट अर्थात सज्जन प्रकृति वाली। भद् रम् से भद्रा बनाने पर अर्थ होगा जिसके मिलने पर आनन्द होता है। रम् का अर्थ है आनन्द मिलना या सुख मिलना। भूतों

(प्राणियों) के द्वारा प्राप्त करने योग्य होने से कल्याण का नाम भद्र है। भूतानाम अभिद्रवणीयम् अभिलक्ष्य प्रापणीयम् इति भद्रम्। भ + द्रु+ ड > भ + द्र् + अ > भद्र। जिसके होते हुए मनुष्य आनन्दित होता है, वह कल्याणकारक भी भद्र कहलाता है। भवद् + रमु क्रीडायाम् + ड > भद् + र् + अ > भद्र। रम् का अर्थ है आनन्दित होना। जो सुपात्र व्यक्ति को ही प्राप्त होता है। भाजन (पात्र) + र (मत्वर्थे) > भज् + र् > भद्र। निरूक्त में भद्र शब्द ही ऐसी ही विपत्ति की गई है। भद्रा नक्षत्र स्वरूपा।

101. **रागा** – लाल वर्ण वाली। अनुराग या प्रेम वाली अर्थात भक्तों से प्रेम करने वाली या अपने पति शिव से प्रेम करने वाली। लेप वाली अर्थात अपने शरीर में चन्दन, केसर आदि का लेप लगाये है। रागः अस्या अस्ति इति रागा। राग का अर्थ लाल वर्ण, अनुराग, लेप है। जीवन में मिठास घोलने वाली।

102. **विपाशा** – विगत हो गये हैं पाश जिनसे। पाश (अर्थात बाँधने वाले सांसारिक धर्म) से परे हैं जो। विपाशा नदी के रूप में प्रवाहित होने वाली।

103. **गण्डकी** – गण्डकी नदी के रूप में प्रवाहित होने वाले। गण्डकी नदी की तरह पापनाशिनी, पुण्य देने वाली, गण्डकी नदी स्वरूपा। टूटी हुई हड्‌डी जोड़ने वाली। गण्ड का अर्थ भग्नास्थि अर्थात टूटी हुई हड्‌डी होती है। गण्ड का अर्थ ऊँचा स्थान भी होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ ऊँचे स्थान से निकलने के कारण आवाज करने वाली। कै शब्दे धातु से गण्डकी शब्द के की शब्दाक्षर का अर्थ होगा आवाज करना।

104. **विन्ध्यवासिनी** – विन्ध्याचल में निवास करने वाली महालक्ष्मी या दुर्गा स्वरूपा। स्थूल रूप से विन्ध्य–पर्वत पर स्थित एवं सूक्ष्म रूप से अनाहत चक्र अर्थात ह्रदय चक्र में निवास करने वाली। आगम ग्रन्थों में कुल पर्वत का तात्पर्य मूलाधारचक्र, विन्ध्यपर्वत का तात्पर्य अनाहतचक्र तथा सुमेरू पर्वत का तात्पर्य सहस्रारचक्र बताया गया है।

105. **नर्मदा** – आनन्द या सुख देने वाली। जिसे देखकर विषादग्रस्त देवताओं को सुख की अनुभूति हुई। हास परिहास युक्त वाणी देने वाली अर्थात बोलने वाली। नर्म का एक अर्थ है परिहास युक्त वाणी।

106. **ताप्ती** – ताप्ती नदी के स्वरूप वाली। ताप्ती नदी की तरह ताप अर्थात कष्टों या व्याधियों को तपाने वाली। स्वयं तपस्या में लगी हुई। तप्त शब्द होता है जिसका अर्थ है तपा हुआ। जो तपस्या में लगा हुआ है वह तपा हुआ ही है। तप्त से अण् प्रत्यय लगाने पर ताप्त शब्द बन जाएगा, जिसका अर्थ होगा तप्त से सम्बद्ध। ताप अर्थात कष्टों की नदी स्वरूपा अर्थात दुष्टों को बहुत अधिक कष्ट देने वाली। एकाक्षरीकोश में ती का अर्थ नदी, समुद्र दिया गया है। तापयति से ताप्ती बनाने पर दुष्टों को कष्ट देने वाली अर्थ निकलेगा। तापयति इति ताप्ती। दोषों को तपाने वाली अर्थात मिटाने वाली या पापों को मिटाने वाली। पवित्र करने वाली क्योंकि नदियों में स्नान करने से व्यक्ति पवित्र होता है अर्थात दोष या पाप मिटते हैं। तृ धातु+ ड प्रत्यय से त बनेगा जिसका अर्थ है पार करने वाला या पार कराने वाला। ताप्ती अर्थात ताप् + ती (पार कराने वाली)। ताप्ती का अर्थ हुआ कष्टों से पार कराने वाली। तन् धातु + ड प्रत्यय से भी त शब्द बनेगा जिसका अर्थ है विस्तार करने वाला। दुखों का विस्तार करने वाली अर्थात शत्रुओं या दुष्टों के दुखों का विस्तार करने वाली।

107. **कावेरी** – कावेरी नदीस्वरूपा। क (जल) है वेर (शरीर) जिसका वह है कावेरी। अक्षय अर्थात कभी समाप्त न होने वाले आनन्द युक्त शरीर वाली अर्थात आनन्द स्वरूपा। क का अर्थ है आनन्द या सुख। क + अ + वेरी। अ अर्थात अक्षय। क + आ, आ का एक अर्थ एकाक्षरी कोष के अनुसार भाव भी है। हर चीज भाव है अतः कभी कभी आ का अलग से अर्थ देने की आवश्यकता नहीं है।

108. **वेत्रवती** – बेतवा नदी के रूप में। इस नदी के किनारे बेंत के पेड़ हैं जिसके कारण वेत्रवती कहलाती हैं। वेत्र अर्थात बेंत से युक्त अर्थात हाथ में बेंत लिये हुए अर्थात दुष्टों को दण्ड देने वाली।

109. **सुकौशिकी** – सुन्दर शरीर वाली। कोश का अर्थ शरीर है। सुन्दर कौशिकी नदी के स्वरूप वाली।

110. **महेन्द्रतनया** – इन्द्र की पुत्री जयन्ती स्वरूपा या इन्द्र की पुत्री से अभेद है जिनका। महेन्द्र का अर्थ है महान इन्द्र अर्थात जो गुणों के कारण महान है, ऐसा इन्द्र। मह् पूजायाम् धातु से महा का अर्थ पूजनीय होता है। अतः महेन्द्र का अर्थ पूजनीय इन्द्र कर सकते हैं।

111. **अहल्या** – गौतम ऋषि की पत्नी अहल्या से अभेद है जिनका। अहल्या की तरह अतिसुन्दर। जो हल से न जोती गई हो अर्थात जिसका किसी अन्य से शारीरिक सम्बन्ध न बना हो अर्थात अक्षता या कुँवारी। कुँवारी अर्थात रजोधर्म नहीं निकला। हल का एक अर्थ विरूपता होता है जिससे हल्य का अर्थ हुआ विरूपता से उत्पन्न निन्दत्व। ऐसे विरूपताजन्य निन्दत्व से रहित अर्थात अति सुन्दर। हल्य का अर्थ जोती जाने योग्य जमीन होती है। अतः अहल्य का अर्थ बंजर जमीन। अहल्य + आ, बंजर जमीन का नाश करने वाली अर्थात उसे उपजाऊ बनाने वाली। आ का एक अर्थ है नाश करना। हल्य अर्थात हल से सम्बन्धित अर्थात हल से उत्पन्न ऊबड़ खाबड़पन। अतः अहल्या का अर्थ हुआ जिनके शरीर में विरूपता अर्थात झुर्रियाँ नहीं हैं। शंकराचार्य जी ने हल्य का एक अर्थ कपट भी दिया है। अतः अहल्या का अर्थ हुआ कपट रहित।

112. **चर्मकावती** – चम्बल नदी रूपा। ऐसा कहते हैं कि यज्ञ में मारे गये पशुओं के चमड़ों से निकला हुआ खून बहकर नदी रूप में परिवर्तित हुआ जो चमर्णवती नदी या चर्मकावती नदी कहलाती हैं।

113. **अयोध्या** – अयोध्या तीर्थस्वरूपा। जिनके साथ युद्ध नहीं किया जा सकता क्योंकि उससे जीता नहीं जा सकता। उस मन के स्वरूप वाली या उस मन वाली जिसमें युद्ध (द्वन्द्व) नहीं चल रहे होते हैं।

114. **मथुरा** – मथुरा तीर्थस्वरूपा। मधुरा ही मथुरा हो गया और मधुरा का अर्थ है मधुर स्वभाव वाली अर्थात जिसकी वाणी में मिठास हो और दूसरे से ऐसे व्यवहार करती हैं जिससे उसका मन गदगद हो जाता है। एकदूसरे के साथ नम्रता, सद्भावना के साथ प्रसन्नता व्यक्त करती हुई बात करती हैं। जहाँ दैत्यों का मन्थन होता है अर्थात जिसके द्वारा दैत्यों को मारा जाता है वह है मथुरा।

115. **माया** – अनस्तित्व में भी अस्तित्व जैसा बोध कराने वाली शक्ति। ईश्वर की शक्ति जिससे वह जगत का निर्माण करता है जगत का संचालन करता है। जो नहीं है उसके भी अस्तित्व में होने का अहसास करा देने वाली अर्थात अहसास कराने वाली शक्ति। जिसमें जगत की प्रतीति होती है अर्थात जगत की प्रतीति कराने वाली शक्ति (मीयते अनुमीयते प्रतीयते अनया इति माया)। परिच्छिन्न या सीमित करने वाली शक्ति। मीयते परिच्छिद्यते अनया इति माया। देश, काल से वस्तुओं को सीमित या खण्डित करने वाली शक्ति माया है। ब्रह्म या ईश्वर के अतिरिक्त कोई भी वस्तु हर जगह व्याप्त नहीं है और हर काल में विराजमान नहीं रहती।

116. **काशी** – प्रकाशित होने वाली अर्थात देदीप्यमान। ज्ञान से प्रकाशित। काशी अर्थात वाराणसी तीर्थ स्वरूपा। काशी तीर्थ की तरह मोक्ष देने वाली। सुख का आस्वादन कराने वाली। कम् (सुखम्) आशयति (आस्वादयति) इति काशी।

117. **काञ्ची** – कांचीपुरम तीर्थ स्वरूपा। कांची तीर्थ की तरह पुण्यदायिनी। कांची अर्थात करधनी आभूषण की तरह शोभायमान।

118. **अवन्तिका** – रक्षा करने वाली। अव् धातु का अर्थं रक्षा करना होता है। जैसे जयन्ती शब्द बनता है वैसे ही अवन्ती या अवन्तिका बनता है। उज्जयिनी तीर्थ स्वरूपा। उज्जयिनी तीर्थ के समान अर्थात पाप नाश करने वाली तथा पुण्य देने वाली।

119. **पुरी** – पूरी करने वाली अर्थात इच्छाओं को पूरी करने वाली। जो किसी आधी चीज को पूर्ण कर दे या

किसी को भर दे वह पुरी है। जगन्नाथपुरी को पुरी इसलिए कहते हैं क्योंकि वह पुरवासियों से घिरी हुई हैं। जगन्नाथ पुरी तीर्थ स्वरूपा। जगन्नाथपुरी की तरह अर्थात जगन्नाथपुरी की तरह श्रद्धालुओं के पाप नष्ट करने वाली अर्थात पुण्य देने वाली।

120. **द्वारावती** – द्वारका तीर्थस्वरूपा। द्वारकातीर्थ की तरह पुण्यदायिनी। द्वार की रक्षा करने वाली अर्थात मोक्ष द्वार की रक्षा करने वाली अर्थात कोई भी अयोग्य या अपात्र व्यक्ति यहाँ प्रवेश नहीं कर सकता। यही रक्षा करना है। द्वारम् अवति इति द्वारावती। द्वारकापुरी के समान मोक्षदायिनी। स्कन्द–पुराण में उल्लेख है कि नारद–मुनि ने जगत्–कल्याण के लिए कैलास से इन तीन और चौथी 'द्वारिका' को लाकर आनर्त्त–कुण्ड के चारों दरवाजों में इनकी प्रतिष्ठा की।

121. **तीर्था** – पार कराने वाली अर्थात संसार सागर से पार कराने वाली। तीर्थ स्थान स्वरूपा।

122. **महाकिल्बिषनाशिनी** – बड़े से बड़े पापों को नष्ट करने वाली। बहुत बड़े पाप जैसे गोवध, भ्रूण हत्या, गरीबों एवं कमजोरों को सताना, साधु सन्तों का अपमान करना, स्त्रियों पर अत्याचार करना, बेजुबान पशु–पक्षियों पर अत्याचार करना बहुत बड़े अपराध कहे गए हैं। शिव पुराण में 12 अपराधों को अक्षम्य अपराध बताया गया है जो हैं – पराई स्त्री पर बुरी दृष्टि डालना, पराये धन को अपना बनाने की कोशिश करना, कुटिल योजना बनाना, अच्छी राह छोड़कर बुरी राह अपनाना, झूठ बोलना, कटु वचन बोलना, भ्रम या अफवाह फैलाना, पाप कर्म से अर्जित धन से भोजन की व्यवस्था करना, कमजोर प्राणियों अर्थात महिलाओं, बच्चों, पशु–पक्षियों पर अत्याचार करना, चोरी–डकैती की तरह बल प्रयोग कर गलत तरीके से अधिकार जमाने की कोशिश करना, किसी को लज्जित या अपमानित करना।

123. **पद्मिनी** – पद्मिनी नायिका के गुणों से युक्त अर्थात अनेक शुभ लक्षणों से युक्त और सौन्दर्य से सुशोभित। कमल के गुणों जैसे सुन्दरता, निर्लिप्तता, कोमलता आदि गुणों से युक्त। बहुत से कमलों से घिरी हुई। बहुत से कमलों से घिरी हुई बावड़ी पद्मिनी कहलाती है।

124. **पद्मध्यस्था** – कमल के मध्य में स्थित या विराजमान होने वाली। कमल सृष्टि का प्रतीक है। कमल का अर्थ जल भी है। जल (समुद्र) के बीच विराजमान लक्ष्मी स्वरूपा या लक्ष्मी जी से अभेद है जिनका। सृष्टि के मध्य विराजमान।

125. **पद्मकिञ्जल्कवासिनी** – कमल के केसर (पराग) में निवास करने वाली।

126. **पद्मवक्त्रा** – कमल के समान सुन्दर मुख वाली अर्थात अत्यन्त सुन्दर मुख वाली।

127. **चकोराक्षी** – चकोर पक्षी के समान बहुत लाल नेत्रों वाली। चकोर पक्षी की आँख बहुत लालिमा लिये होती है। चकोर पक्षी के समान अपने पति भगवान शिव को एकटक देखने वाली आँखों वाली। ऐसा कहते हैं कि चकोर पक्षी रात्रि में चन्द्रमा को एकटक देखता रहता है।

128. **पद्मस्था** – सृष्टि में ऊर्जा या शक्ति के रूप में सर्वत्र विराजमान। समृद्धि, सम्पन्नता, ऐश्वर्य में विराजमान। कमल सृष्टि, समृद्धि, सम्पन्नता, ऐश्वर्य का प्रतीक है। कमल की तरह स्थित अर्थात संसार से निर्लिप्त। कमल के साथ अर्थात कमल हाथ में लिए स्थित। कमल में विराजमान। लक्ष्मीजी, बालात्रिपुरसुन्दरी देवी माँ, षोडशी देवी माँ कमल के आसन पर विराजमान रहती हैं।

129. **पद्मसम्भवा** – कमल से प्रकट होने वाली अर्थात लक्ष्मी से अभेद है जिनका। लक्ष्मी जी समुद्र में कमल पर प्रकट हुई थीं।

130. **ह्रीङ्कारी** – ह्रीङ्कार बीज स्वरूपा। ह्रीङ्कार बीज का उच्चारण करने वाली। सृष्टि, स्थिति और प्रलय

करने वाली। ह का अर्थ है पैदा करना, र का अर्थ है नाश करना, ई का अर्थ है पालन करना। बिन्दु (म्) का अर्थ है दुखनाश। रवण का अर्थ नाश करना या मिटाना होता है। सम्भव है इसका अंग्रेजी rub शब्द से सम्बन्ध हो। ह्रीं का अर्थ है माया की वह सर्वव्यापक अमोघ शक्ति जो दुख दूर करे। ई का अर्थ है माया, महामाया। र का अर्थ है शक्ति, ह का अर्थ है व्यापक। महामाया की शक्ति, जो शिव से युक्त है, मेरे दुखों को दूर करे। बिन्दु का अर्थ है दुख दूर करने वाला। ह का अर्थ है शिव। बीज मन्त्र में बिन्दु (अनुस्वार) के अलावा नाद भी होता है, जिसका अर्थ जगन्माता। ई का अर्थ है महामाया, र का अर्थ है प्रकृति या शक्ति, ह का अर्थ है शिव और बिन्दु (अनुस्वार) का अर्थ है दुखहरण। इस प्रकार इस बीजमन्त्र का अर्थ हुआ हे शिवयुक्त जगन्माता महामाया शक्ति मेरे दुखों को दूर करो। ह्रीं माया बीज है जिसका अर्थ है परब्रह्म (शिव और शक्ति का सामरस)। माया (ई) की अमोघ शक्ति (र) जो विश्वव्यापी (ह) है, वह दुख दूर करे (अनुस्वार)। विशेषण के रूप में ह्रीं का अर्थ होगा– दुख दूर करने वाली, माया की अमोघ शक्ति जो विश्वव्यापी है।

131. **कुण्डलाधारा** – कुण्डलों को ठीक ढंग से धारण करने वाली अर्थात कान में अच्छी प्रकार से कुण्डलों को धारण करने वाली। कुण्डले आ धारयति इति कुण्डलाधारा। आ का अर्थ है अच्छी प्रकार से। अन्यथा भी आधार का अर्थ होता है सहारा अर्थात धारण करने वाला। सुन्दर कुण्डलों से विभूषित।

132. **हृत्–पद्मस्था** – हृदय कमल में विराजमान। हृदय की तुलना कमल से की जाती है। अन्यथा भी हृदय कमल अर्थात अनाहत चक्र जिसमें 12 पंखुडियाँ होती हैं।

133. **सुलोचना** – सुन्दर/मोहक नेत्रों वाली। सुलोचना नामक अप्सरा की तरह सुन्दर।

134. **श्रीङ्कारी** – श्रीं बीज मन्त्र स्वरूपा या श्रीं बीज मन्त्र का उच्चारण करने वाली। श्रीं बीज मन्त्र से सुशोभित। श्रीङ्कार अर्थात श्रीं। श्रीं का अर्थ है धन–ऐश्वर्य–सम्पत्ति, तुष्टि–पुष्टि की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी मेरे दुखों का नाश करें। श का अर्थ है महालक्ष्मी, र का अर्थ धन–ऐश्वर्य, ई का अर्थ है तुष्टि, अनुस्वार का अर्थ है दुःख हरण। विशेषण के रूप में इस बीज मन्त्र का अर्थ होगा दुखों को दूर करने वाली, धन सम्पत्ति एवं तुष्टि पुष्टि की अधिष्ठात्री देवी।

135. **भूषणा** – विभिन्न आभूषणों से सुशोभित। भूषणानि अस्या अस्ति इति भूषणा अर्थात आभूषणों वाली अर्थात विभिन्न आभूषणों से सुशोभित।

136. **लक्ष्मी** – नीतिज्ञ को देखने वाली। लक्षयति इति लक्ष्मी। नीतिज्ञ पुरुषों को जानकर उनके पास रहती हैं। पुण्यार्थियों के द्वारा देखी जाती है। पुण्यार्थिभिः लक्ष्यते इति लक्ष्मी। जो विष्णु के शरीर को देखती है। विष्णुगात्रम् लक्षयति इति लक्ष्मी।

137. **क्लीङ्कारी** – क्लीं बीज मन्त्र स्वरूपा। क्लीं बीज मन्त्र को उत्पन्न करने वाली या इसका उच्चारण करने वाली। क्लींकार का अर्थ है क्लीं। अक्षर को अभिव्यक्त करने के लिए कार प्रत्यय लगा देते हैं जिसका कोई अर्थ नहीं होता। टकार अर्थात ट, पकार अर्थात प। क्लीं बीज का अर्थ है कामदेव स्वरूपी भगवान कृष्ण मेरे दुखों को दूर करें या सुख दें। क का अर्थ है कामदेव अथवा कृष्ण, ल का अर्थ है इन्द्र, ई का अर्थ तुष्टिभाव और अनुस्वार का अर्थ है दुखहरण या सुखदाता। इन्द्र का अर्थ ऐश्वर्य ले सकते हैं क्योंकि इन्द्र का तात्पर्य है ऐश्वर्य देने वाला। हे कामदेव स्वरूपी भगवान कृष्ण मुझे ऐश्वर्य, सन्तोष और सुख दो। यदि ल का अर्थ व्यापक लें तो क्लीं बीज मन्त्र का अर्थ होगा – हे सर्वव्यापी कृष्ण मुझे सन्तोष दो, सुख दो। कृष्ण और राधा के युग्म का एक दूसरे के प्रति आकर्षण भी क्लीं बीज का अर्थ है। क अर्थात कृष्ण, ल अर्थात राधा, ई दोनों का युग्म और बिन्दु (म्) एकदूसरे के प्रति आकर्षण है। कृष्ण और राधा का युग्मरूप मेरे दुखों को दूर करे। ई का अर्थ है युग्म रूप और बिन्दु का अर्थ है दुखहरण। कहीं पर लिखा है ल का अर्थ दिव्यतेज और ई का अर्थ है योगेश्वर या

राजराजेश्वरी, क का अर्थ है कृष्ण और बिन्दु का अर्थ है दुखहरण। इस प्रकार इस बीजमन्त्र का अर्थ हुआ योगेश्वर कृष्ण का दिव्यतेज मेरे दुखों को दूर करे।

138. **क्लेशनाशिनी** – क्लेशों को नष्ट कर देने वाली। क्लेश का अर्थ दुख, कष्ट, पीड़ा, चिन्ता, सन्ताप, झगड़ा, कलह। योगदर्शन के अनुसार अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश ये पाँच क्लेश हैं। दुख और जन्म मरण के चक्र का कारण ये 5 क्लेश हैं। अविद्या का अर्थ है किसी भी चीज का यथावत ज्ञान न होना अर्थात अनात्मा में आत्मा, दुख में सुख, अनित्य में नित्य, अपवित्र में पवित्र का भाव रखना। अस्मिता का अर्थ है अहंकार, बुद्धि और आत्मा को एक मानना, मैं और मेरी की अनुभूति। राग का अर्थ है सुख से प्रीति। द्वेष का अर्थ है दुःख से अप्रीति। अभिनिवेश का अर्थ है मृत्यु का भय और भौतिक शरीर के रक्षा की चिन्ता।

139. **हरिवक्त्रोद्भवा** – विष्णु के मुख से उत्पन्न होने वाली।

140. **शान्ता** – शान्ति से युक्त। जिनके चित्त में हलचल नहीं है। इन्द्रियों का अपने विषयों से वैराग्य होने पर होने वाली सुखानुभूति शान्ति कहलाती है। आनन्द की पराकाष्ठा अर्थात आनन्द की अन्तिम अवस्था स्वरूपा अर्थात इससे अधिक आनन्द नहीं होता है। सर्वाधिक आनन्द से युक्त। अन्त अर्थात सबसे ऊँचा या सबसे बड़ा। संसार से वैराग्य होने पर प्राप्त स्थिति शान्ति है, उससे युक्त से युक्त। आनन्दस्य परा काष्ठा। असंगतया च शान्तः। शम् का अर्थ है आनन्द और अन्त का अर्थ है पराकाष्ठा। प्रकृति से अर्थात मन, बुद्धि, इन्द्रिय, शरीर, संसार से असंगत होने पर प्राप्त अवस्था से युक्त। असंगतया च शान्ता। विकार संग से होता है, किसी से लिप्त नहीं। शिव पर निश्चय है जिनका अर्थात शिव की सेविका। श अर्थात शिव। अन्त अर्थात निश्चय। आनन्द की संसार से वैराग्य होने पर प्राप्त स्थिति अर्थात शान्ति से युक्त।

141. **हरिवक्त्रकृतालया** – विष्णु के मुख को जिसने अपना निवासस्थान बनाया है।

142. **हरिवक्त्रोपमा** – जिनकी तुलना विष्णु जी के मुख से की गई है अर्थात जो बहुत सुन्दर हैं। विष्णु जी के मुख से समानता रखने वाली। (कहीं पर हरिवक्त्रोपमा के बाद शान्ता नाम आया है। शान्ता – शान्त स्वरूप वाली अर्थात तीनों गुणों से परे या तीनों गुणों की साम्यावस्था वाली। मन जब अन्तर्मुखी होता है तो होने वाली सुखानुभूति शान्ति है। इन्द्रियाँ जब अपने विषयों से हटती है तो भीतर अनुभव में आने वाली सुखानुभूति शान्ति है। ऐसी शान्ति से युक्त व्यक्ति शान्त कहलाता है।)

143. **हाला** – मदिरा स्वरूपा अर्थात आनन्द स्वरूपा। हाला (मदिरा) अस्या अस्ति इति हाला अर्थात मदिरा वाली अर्थात मदिरापान करने वाली। दैत्यों को नष्ट करने के लिए जो मदिरा पीकर उन्मत्त हो जाती हैं। दैत्यों के वध के लिए आवश्यक था कि देवी माँ में द्वैत भाव पैदा हो। इस द्वैत भाव को पैदा करने के लिए ही मद्यपान किया गया।

144. **हरिवक्षःस्थलास्थिता** – विष्णु जी के वक्ष स्थल पर स्थित रहने वाली। लक्ष्मीजी हमेशा भगवान विष्णु के वक्षस्थल पर रहती हैं।

145. **वैष्णवी** – भगवान विष्णु की शक्तिस्वरूपा। इस शक्ति के द्वारा भगवान विष्णु सृष्टि का पालन करते हैं। वैष्णवी का अर्थ सर्वव्यापिका महाशक्ति भी है। व्यापनाद् विष्णुः अर्थात जो सर्वव्यापी हो वह विष्णु है। भगवान विष्णु के वंश में उत्पन्न त्रिकुटा देवी जो जम्मू में कटरा में स्थापित हैं। दक्षिण भारत में निःसन्तान ब्राह्मण रत्नाकर सागर के यहाँ इन्होंने जन्म लिया था। वैष्णोदेवी की इस प्रकार की कथा कही गई है। आद्याशक्ति की इच्छाशक्ति को भी वैष्णवी शक्ति माना गया है।

146. **विष्णुरूपा** – विष्णु के स्वरूप वाली। भगवान विष्णु पर दृष्टि डालने वाली अर्थात अपनी कृपा दृष्टि डालने

वाली। विष्णुम् रूपयति इति विष्णुरूपा। रूपयति का अर्थ है देखना या दिखाना। विष्णुम् रूपयति इति विष्णुरूपा अर्थात भगवान विष्णु की रचना करने वाली।

147. **विष्णुमातृस्वरूपिणी** – भगवान विष्णु की माता स्वरूपा। त्रिपुर सुन्दरी माँ से ही समस्त देवताओं की अर्थात ब्रह्मा विष्णु महेश की उत्पत्ति हुई है।

148. **विष्णुमाया** – भगवान विष्णु की माया शक्ति स्वरूपा। सर्वव्यापक माया शक्ति। विष्णु का अर्थ है सर्वव्यापक। भगवान विष्णु की दृष्टि से या नेत्र से उत्पन्न माया शक्ति। मायाशक्ति अर्थात जो अनात्म में आत्मभाव तथा आत्मा में अनात्म भाव पैदा करे। माया के कारण ही व्यक्ति किसी पदार्थ के वास्तविक स्वरूप को नहीं देख पाता और उसे केवल बाहरी आवरण ही दिखाई पड़ता है। विष्णुमाया का एक अन्य अर्थ है कि एक–एक कण में व्याप्त वह शक्ति जो प्रत्येक सत्ता को सम्मोहित किये है। विष्णु अर्थात व्यापक अर्थात एक–एक कण में स्थित।

149. **विशालाक्षी** – विशाल अर्थात बड़े नेत्रों वाली। जिसकी आँख बड़ी और सुन्दर हो। विशाल नेत्र सुन्दरता का प्रतीक हैं अर्थात विशालाक्षी का तात्पर्य है सुन्दर। विशालाक्षी नामक योगिनी से अभेद है जिनका।

150. **विशालनयनोज्ज्वला** – विशाल नेत्रों के कारण उज्जवल (सुन्दर) स्वरूप वाली। बड़े नेत्र सुन्दरता का प्रतीक होते हैं।

151. **विश्वेश्वरी** – सम्पूर्ण विश्व की ईश्वरी अर्थात सम्पूर्ण विश्व की उत्पत्ति, पालन और संहार करने वाली। सम्पूर्ण विश्व के ऐश्वर्य की स्वामिनी। ईश्वरी अर्थात ऐश्वर्य की स्वामिनी। सम्पूर्ण विश्व की आराध्या।

152. **विश्वात्मा** – सम्पूर्ण विश्व जिनका स्वरूप है। विश्व में व्याप्त। आत्मा का अर्थ निरन्तर गति करने वाला एवं व्याप्त होता है। अत सातत्य गमने से निरन्तर गति करने वाला अर्थ होता है और आप्लृ धातु से आत्मा शब्द बनाने पर व्याप्त अर्थ आता है।

153. **विश्वेशी** – विश्व पर शासन करने वाली। ईश् धातु का अर्थ है शासन करना। शासन करने वाली का अर्थ है आज्ञा देने वाली एवं उस आज्ञा का कोई उल्लंघन नहीं कर सकता है। विश्व में समस्त घटनाएं उनकी इच्छानुसार ही होंगी। विश्व का संचालन करने वाली। विश्व की स्वामिनी। विश्व को प्रेरित करने वाली अर्थात सभी प्राणियों को अपने अपने कामों में प्रेरित करने वाली। ईष्टे प्रेरयति से ईशी शब्द बनाने पर प्रेरित करने वाली अर्थ आया।

154. **विश्वरूपिणी** – सम्पूर्ण विश्व के स्वरूप वाली। विश्व को स्वरूप देना अर्थात विश्व की रचना करना जिनका स्वभाव है। रूपयति का अर्थ है स्वरूप देना या रचना करना। विश्वम् रूपयति इति विश्वरूपः। विश्वरूप में स्वभाव अर्थ में णिनि प्रत्यय लगाने से विश्वरूपिणी शब्द बना। संस्कृत व्याकरण में ताच्छील्य (स्वभाव) अर्थ में भी णिनि प्रत्यय लगता है।

155. **विश्वनाथा** – सम्पूर्ण विश्व की स्वामिनी। विश्व के द्वारा अर्थात सभी के द्वारा या विश्व के लोगों के द्वारा जिनसे प्रार्थना की जाती है। विश्वैःनाथ्यते प्रार्थ्यते इति विश्वनाथा। नाथ् धातु का एक अर्थ याचना करना, प्रार्थना करना भी होता है। भगवान विष्णु के द्वारा जिनसे प्रार्थना की जाती है। विश्व का एक अर्थ है भगवान विष्णु।

156. **शिवाराध्या** – पार्वती के रूप में जो सभी के द्वारा आराधना करने योग्य है।

157. **शिवनाथा** – शिव की स्वामिनी। शिव हैं नाथ (स्वामी) जिनके। स्वामी अर्थात अपनी इच्छानुसार चलाने वाला।

158. **शिवप्रिया** – शिव की प्रिया अर्थात शिव जिन्हें पसन्द करते हैं। शिव हैं जिन्हें प्रिय ऐसा अर्थ भी कर

सकते हैं। शिव को प्रसन्न करने वाली। शिव से प्रसन्न होने वाली। प्रीणाति इति प्रिया से प्रिया शब्द का अर्थ प्रसन्न करने वाली होता है। प्रीयते इति प्रिया से प्रिया शब्द का अर्थ प्रसन्न होने वाली होता है।

159. **शिवमाता** – शिव की माता स्वरूपा। भगवान शिव की रक्षा करने वाली। शिव का भरण – पोषण करने वाली अर्थात अन्नपूर्णा स्वरूपा। कल्याण की जननी। मा धातु का अर्थ है उत्पन्न करना, माप करना, तुलना करना, पालन करना या रक्षा करना।

160. **शिवाख्या** – शिव या शिवा है जिनकी संज्ञा अर्थात जिनका नाम शिवा है।

161. **शिवदा** – शिव को देने वाली अर्थात प्राप्त कराने वाली। कल्याण देने वाली। मोक्ष देने वाली। पापों को दुर्बल करने वाली एवं आनन्द/ज्ञान देने वाली। शो तनूकरणे धातु होती है जिससे शि का अर्थ पापों या दोषों को पतला करना लिया। व का अर्थ अमृत (मोक्ष), आनन्द, ज्ञान होता है।

162. **शिवरूपिणी** – शिव के स्वरूप को धारण करने वाली।

163. **भवेश्वरी** – संसार की रचना करने वाली। संसार के ऐश्वर्य के स्वामिनी। संसार में आराधनीय। भव का अर्थ शिव, कामदेव भी होता है। इस प्रकार भवेश्वरी का अर्थ हुआ कामदेव द्वारा आराधनीय। शिव के ऐश्वर्य की स्वामिनी अर्थात शिव के पास जितनी भी शक्तियाँ हैं उनकी स्वामिनी। शिव की ईश्वरी अर्थात शिव पर शासन करने वाली, अनुग्रह करने वाली। संसार की ईश्वरी।

164. **भवाराध्या** – शिव के द्वारा आराधनीय।

165. **भवेशी** – शिव या संसार पर शासन करने वाली। संसार को अनुशासन में रखने वाली।

166. **भवनायिका** – संसार की नायिका अर्थात संसार का मार्गदर्शन करने वाली। संसार को लेकर चलने वाली।

167. **भवमाता** – संसार की जननी। संसार का पालन पोषण करने वाली।

168. **भवागम्या** – सामान्यतः संसार के द्वारा अगम्य अर्थात संसार के द्वारा न जानी जाने योग्य या न प्राप्त करने योग्य। संसार जिनके पास पूजा के लिए या सम्मान के लिए जाता है। संसार के द्वारा जानने योग्य। भव+आ+ गम्या। आ का कभी कभी कोई अर्थ नहीं करते हैं जैसे विश्वामित्र अर्थात विश्वमित्र, आ का कभी कभी पूर्णरूप से या चारों ओर अर्थ करते हैं। शिव द्वारा पूर्ण रूप से जानने योग्य।

169. **भवकण्टकनाशिनी** – संसार के कष्टों को नष्ट करने वाली।

170. **भवप्रिया** – भगवान शिव को प्रसन्न करने वाली। प्रीणाति इति प्रिया से प्रिया का अर्थ प्रसन्न करने वाली भी होता है। सामान्यतः प्रिया अर्थात जिसे पसन्द किया जाता है। संसार को प्रसन्न करने वाली। कामदेव को प्रसन्न करने वाली। कामदेव की प्रिया (अर्थात रति) से अभेद है जिनका या रति के समान सुन्दर। शंकर की प्रिया।

171. **भवानन्दा** – शिव को आनन्द देने वाली। भवानन्द + आ, आ का अर्थ है देना।

172. **भवानी** – शिव की पत्नी या शिव को जीवन दान देने वाली। भवम् अनति आनयति जीवयति इति भवानी। अनति से अनी बना जिसका अर्थ है जीवित करना, चेष्टावान बनाना, श्वाँस लेना या जीवित रहना। भगवान शंकर द्वारा विष का पान करने पर देवी की कृपा से वे जीवित रहे थे। कामदेव को जीवित करने वाली। संसार को चेतनावान अर्थात क्रियाशील एवं सजग (awareness युक्त) करने वाली। भव का अर्थ है शिव, कामदेव, संसार।

173. **भवमोहिनी** – शिव को मोहित कर देने वाली अर्थात अपनी ओर आकर्षित करने वाली।

174. **गायत्री** – जो अपना गायन करने वालो की अर्थात श्रद्धापूर्वक उनके मन्त्र या स्तुति करने वालों की रक्षा

करती हैं, उन्हें पतन से बचाती हैं। गाते हुए परमात्मा से निकले छन्द स्वरूपा अर्थात गायत्री छन्द स्वरूपा। गायन्तम् त्रायते इति गायत्री। जो गान करने वालों अर्थात् इनका श्रद्धा पूर्वक नाम लेने वालों या जप करने वालों की रक्षा करने वाली। शंकराचार्य जी ने लिखा है ''प्राणादयो वागादयो वै गयाः''। जिसका तात्पर्य है कि गय का अर्थ है प्राण, वाणी आदि इन्द्रियाँ। जो प्राणों की रक्षा करती हैं, वह गायत्री है। जो इन्द्रियों की रक्षा करती हैं। जिसके द्वारा अर्थात् जिस छन्द या मन्त्र के द्वारा देवताओं की स्तुति की जाती है वह गायत्री है। गीयते अनया इति गायत्री (गै धातु में अत्रन् प्रत्यय लगाने से गायत्र शब्द बना जिसमें ङीष् प्रत्यय लगाने पर इस प्रकार का शब्द बनकर ऐसा अर्थ आता है)। जो गाते हुए ब्रह्मा जी के मुख से गिरी थीं अर्थात् बाहर निकली थीं (गायतो ब्राहमणो मुखात् आपतिता इति गायत्री, पत्लृ गतौ धातु का प्रयोग किया गया, गै+पत्+रक्, पत् का यक् हो गया और रक् र हुआ, ङीष् लगाया गया)। सर्वत्र विचरण करने वाली एवं सभी का नियन्त्रण करने वाली (गा + यत्री)। जिसके तीन चरण है, वह गायत्री है। त्रि + गम, गम का गाय आदेश हुआ। इस प्रकार त्रिगाय शब्द बना जिसका अर्थ हुआ तीन गमन या तीन चरण। शब्दों को आगे पीछे करने पर त्रिगाय गायत्रि हुआ एवं स्त्रीलिंग में ङीष् प्रत्यय लगाने से गायत्री हुआ। तीनों वेदों के सारभूत तीन पाद (चरण) जिसके निकले हैं। तीन चरणों वाली अर्थात गायत्री। सामवेद का गायन करने वाले को गायत्रिन् कहते है जो पुल्लिंग एकवचन में गायत्री होता है। ऐसे सामवेद के गायक से अभेद है जिनका, वह भी गायत्री है। आधुनिक वेद विज्ञान के अनुसार सूर्य से पृथ्वी की ओर आने वाली सौर ऊर्जा सावित्री है एवं पृथ्वी से वापस सूर्य की ओर लौटने वाली ऊर्जा या सौर ऊर्जा गायत्री है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ पृथ्वी से सूर्य की ओर लौटने वाली ऊर्जा। केन्द्र से परिधि की ओर जाने वाली ऊर्जा सावित्री है एवं परिधि से केन्द्र की ओर वापस लौटने वाली ऊर्जा गायत्री है। विज्ञान भी जाने और वापस लौटने के सिद्धान्त को मानता है। वेद में ब्राह्मण गण को गायत्र कहा गया है। विद्वानों को भी गायत्र कहा गया है। वहाँ लिखा है गायत्रो वा ब्राह्मण, गायत्रो विद्वान। इस प्रकार गायत्री का अर्थ ब्राह्मण की शक्ति, विद्वानों की शक्ति कर सकते है। वैदिक कोष में गय का अर्थ प्राण, धन, निवास किया गया है। प्राणों की रक्षा करने वाली अर्थात् प्राणों का बनाये रखने वाली। भक्तों के धन की रक्षा करने वाली। देवताओं के निवास स्थान या भक्तों के निवास स्थान की रक्षा करने वाली।

175. **सावित्री** – सूर्य की शक्ति स्वरूपा। विश्व को उत्पन्न करने वाली। सू प्रसवे धातु होती है। जगत को उत्पन्न करने वाले सविता (ब्रह्म) की शक्ति स्वरूपा। वेद को उत्पन्न करने वाली। सू प्रस्रवणे धातु से सू का अर्थ टपकना या बाहर निकलना होता है। जिससे प्रकाश बाहर निकलता है वह सावित्री है। जिस मन्त्र से सविता देवता अर्थात सूर्य देवता की उपासना होती है। सविता का उपासक सावित्र है। परमेश्वर का उपासक सावित्र है। पुत्रोत्पादक पिता सावित्र है। ऐसे सावित्र की शक्तिस्वरूपा। प्रकाश उत्पन्न करने वाली प्रभा सावित्री है। गायत्री मन्त्र को भी सावित्री मन्त्र कह देते है।

176. **ब्रह्माणी** – ब्रह्मा की शक्ति स्वरूपा। ब्रह्म को चेतन या सक्रिय/चेष्टावान् बनाने वाली। ब्रह्म अनति आणयति जीवयति इति ब्रह्माणी। ब्रह्म के कई अर्थ होते हैं जैसे ब्रह्म, परब्रह्म, ब्रह्मा, वेद, तपस्या आदि।

177. **ब्रह्मरूपिणी** – ब्रह्म के स्वरूप को धारण करने वाली। वेद के स्वरूप को धारण करने वाली। तपस्या के स्वरूप को धारण करने वाली।

178. **ब्रह्मेशी** – ब्रह्मा पर शासन करने वाली। ब्रह्मा को प्रेरित करने वाली अर्थात उनको उनके कर्तव्यकर्म करने के लिए उन्हें प्रेरित करने वाली। ईश् धातु का अर्थ शासन करना होता है। ईष्टे से ईश शब्द बनाने पर प्रेरित करने वाला अर्थ आता है। ब्रह्मा की ईश्वरी अर्थात ब्रह्मा की आराधनीया।

179. **ब्रह्मदा** – वेद को देने वाली अर्थात वेद का ज्ञान देने वाली। ब्रह्म का एक अर्थ वेद भी होता है। ब्रह्म को प्राप्त करा देने वाली। ब्रह्मा के रूप को धारण करने वाली।

180. **ब्रह्मा** – गतिशील चैतन्य या गतिज ऊर्जा स्वरूपा। विकास की ओर अग्रसर चेतना स्वरूपा। ब्रह्मा का अर्थ है developing consciousness मूलभूत चैतन्य (energy)दो प्रकार का है। एक है स्थिर चैतन्य (static energy) और दूसरा है गतिशील चैतन्य (kinetic energy)। चैतन्य की स्थिति में किसी भी प्रकार की कोई रचना सम्भव नहीं है। समस्त रचनाएं गतिशील चैतन्य से सम्भव हैं। इस गतिशील चैतन्य को ही पुराणों ने ब्रह्मा नाम दिया है। ब्रह्मा शब्द संस्कृत बृंह् धातु से बना है जिसका अर्थ है बढ़ना अथवा गति। अतः गतिधर्म से जो युक्त है वह ब्रह्मा है। जो ब्रह्मा के स्वरूप में है। बृंहयति इति ब्रह्मा अर्थात विस्तार करने वाली। जगत का विस्तार करने वाली। अपने भक्तों की समृद्धि का विस्तार करने वाली। अपने भक्तों का सुख या ज्ञान बढाने वाली। जगत, समृद्धि, सुख, ज्ञान आदि शब्द तो अध्याहार हैं अर्थात वाक्य को पूरा करने के लिए बाहर से लाये गये हैं। आप अपने अनुसार अन्य शब्द भी जोड़ सकते हैं। यज्ञ में ब्रह्मा नाम का पुरोहित होता है जिसका कार्य यज्ञ की रक्षा करना एवं विघ्नों से बचाना होता है। उससे अभेद है जिनका।

181. **ब्रह्माणी** – परब्रह्म की शक्ति स्वरूपा। वेद का पाठ पढ़वाने वाली, बुलवाने वाली। ब्रह्म वेदम् आणयति पाठयति इति ब्रह्माणी। ब्रह्मा को कल्पपर्यन्त जीवित रखने वाली। ब्रह्मा की ध्यानावस्था के समय या तपस्या के दौरान उनके एक भाग से जन्म लेने वाली।

182. **ब्रह्मवादिनी** – ब्रह्म तत्व या वेद तत्व को बोलने वाली या बतलाने वाली या उपदेश देने वाली।

183. **दुर्गस्था** – दुर्गम स्थान में जैसे पर्वत, वन में रहने वाली। अपने किले में रहने वाली। शरीर रूपी दुर्ग में रहने वाली अर्थात आत्मा स्वरूपा।

184. **दुर्गरूपा** – दुर्ग स्वरूपा अर्थात जिनके स्वरूप को सहज में कोई नहीं जान सकता। दुः का अर्थ है अत्यन्त कठिन और गा का अर्थ है पार करना अर्थात जिसे पार करना या पार पाना अत्यन्त कठिन है। दुर्ग से पहचानी जाने वाली। रूप्यते इति रूपा से रूपा का अर्थ होता है ज्ञापिका या बोधिका। दुर्गम् रूपयति इति दुर्गा अर्थात दुर्ग या शरीर रूपी दुर्ग का निर्माण करने वाली।

185. **दुर्गा** – जो दुख से अर्थात अत्यन्त कठिनाई से अर्थात अत्यन्त तपस्या या भक्ति से जानी जाती है। कठिन कष्टों को दूर कर देने वाली। दुर्गा+आ, दुर्गा नाम के अन्त में प्रयुक्त आ शब्द नाश करने या दूर करने के अर्थ में कभी कभी प्रयोग में आता है।

186. **दुर्गार्तिनाशिनी** – भक्तों के कठिनातिकठिन कष्टों को शान्त कर देने वाली, नाश कर देने वाली। आर्ति वह पीड़ा है जिसे दूर करने के लिए व्यक्ति व्याकुल हो जाता है अर्थात उसे एक क्षण भी नहीं रहा जाता। एक क्षण विलम्ब होने पर कुछ अनहोनी हो सकती है। द्रौपदी का चीरहरण, गजेन्द्र ग्राह प्रकरण इसके उदाहरण हैं।

187. **सुगमा** – भक्तों को सहज रूप में प्राप्त होने वाली।

188. **दुर्गमा** – दुष्टों या अभक्तों के लिए दुर्गम है अर्थात सामान्य रूप से प्राप्त नहीं होती है। कठिन साधना वालों को ही प्राप्त होती हैं।

189. **दान्ता** – दमनशील (इन्द्रिय आदि का दमन करने वाली)। बन्धन का अन्त करने वाली अर्थात भक्त को सांसारिक बन्धनों से छुटकारा दिलाने वाली। शत्रुओं के दमन (परेशान करना रूपी क्रिया) का अन्त करने वाली। उपताप का अन्त करने वाली। एकाक्षरीकोश में द का अर्थ बन्धन, दमन, उपताप दिया गया है। दान की पराकाष्ठा अर्थात अन्तिम सीमा स्वरूपा। द का अर्थ है दान।

190. **दया** – दया गुण स्वरूपा। किसी के दुख देखकर द्रवित हो जाना दया है। वह भाव जिसके कारण दूसरे को दुखी देखकर स्वयं दुखी अनुभव करने लगता है दया भाव कहलाता है। ऐसे दया भाव स्वरूपा।

191. **दोग्ध्री** – दूध दुहने वाली गाय की तरह अर्थात जिसे दुहा जाता है। तात्पर्य हुआ कि जिससे कामना पूर्ति रूप दूध को दुहा जाता है अर्थात कामनाओं की पूर्ति करने वाली। दूध देने वाली अर्थात भक्तों की कामनाओं को देने वाली अर्थात कामनाओं को पूरी करने वाली। दुहने वाली। सत्य, ज्ञान आदि को दुहती हैं अर्थात उसे निकालकर अपने भक्तों को देती हैं। दोग्ध्री का अर्थ है वह गाय, जिसे दुहा जाता है। गाय का दूध दोहने वाली को भी दोग्ध्री कहते हैं।

192. **दुरापहा** – दुःख या कष्ट को पूर्ण रूप से दूर कर देने वाली। दुर+आ+अपहा। दुर का अर्थ है दुःख या कष्ट, आ का अर्थ है समन्तात् अर्थात पूर्ण रूप से। अपहा का अर्थ है दूर करने वाली। विपत्तियों को नष्ट कर देने वाली। हन् धातु में ड प्रत्यय लगाने से जो ह शब्द बनता है उसका अर्थ है नष्ट करने वाला। ओहाक् धातू में ड प्रत्यय लगाने से जो ह शब्द बनता है उसका अर्थ है त्यागने वाला या दूर करने वाला। ह स्त्रीलिंग में हा हो गया जिसका अर्थ मारने वाली या दूर करने वाली हुआ। दुराप का अर्थ कठिनाई से प्राप्त अर्थात दुर्लभ है। दुराप+हा का अर्थ हुआ अधर्म के रास्ते पर चलने पर कठिनाई से अर्जित सिद्धियों को नष्ट कर देने वाली। कर्ण को जब सबसे ज्यादा जरूरत थी तो उसे अपनी विद्या भूल गई थी। बहुत से साधक, ऋषि मुनि अप्सराओं के कारण अपनी सिद्धि गंवा बैठे थे।

193. **दुरितघ्नी** – दुरितों को अर्थात पापों को नष्ट कर देने वाली। पापियों का संहार कर देने वाली। दुरित का अर्थ पाप, पापी दोनों होता है।

194. **दुराध्यक्षा** – कठिनाई से दिखाई देने वाली अर्थात जिसे स्पष्ट रूप से न जाना जा सके। अध्यक्ष अर्थात अधि+अक्ष्णोति, सामने देखने वाला। अध्यक्ष वह है जो बाकी सभी को देख सकता है और जिसे सभी देख सकते हैं। अध्यक्ष का अर्थ हुआ जिसे आसानी से देखा जा सकता है। बड़ी मुश्किल से दिखाई देने वाली अर्थात इन्द्रियों का विषय बनने वाली। अध्यक्ष वह होता है जो व्याप्त होकर स्थित होता है। अध्यक्ष ऊँचाई पर स्थित होने के कारण वह है जिसे सब देखते हैं। अक्षि अर्थात इन्द्रिय विषय बनना। कठिन से कठिन विषयों/समस्याओं का समाधान कर देने वाली।

195. **दुरा** – कठिनाई से प्राप्त। दुष्प्राप्या, दुख से प्राप्त होने वाली। आप्लृ धातु में ड प्रत्यय लगाने से केवल आ रहता है अतः दुख से प्राप्त होना यह अर्थ निकला। अतिशय कठिन स्वरूप वाली अर्थात जिनके स्वरूप को समझना बहुत कठिन है। दुर्गति/दुरित (बुराई) का नाश करने वाली। दुर् +आ, दुर का अर्थ है दुर्गति या बुराई। आ का अर्थ है नाश करने वाला या वाली।

196. **दुष्कृतनाशिनी** – पापों को नष्ट कर देने वाली।

197. **पञ्चास्या** – पाँच मुखों वाली। काकिनी देवी के पाँच मुख हैं और ललितासहस्रनामस्तोत्र के अनुसार उनका वास मूलाधार चक्र में माना गया है। पाँच मुख वाले भगवान शिव की शक्ति स्वरूपा।

198. **पञ्चमी** – पंचमी तिथि स्वरूपा। पंचम अर्थात भगवान शिव की शक्ति स्वरूपा। पंचम स्वरूप वाली अर्थात उत्कृष्ट या श्रेष्ठ स्वरूप वाली।

199. **पूर्णा** – पूर्ण स्वरूप वाली। देवी के पास प्रत्येक चीज है और वे भी पूर्ण मात्रा में है। देवी के पास से जितना भी कोई चीज निकले देवी तब भी पूर्ण रहती हैं। गुणपूर्णत्वात् पूर्णा। भक्तेषु गुणपूरणाच्च पूर्णा। भक्तान् स्वपुरे नयति। भक्तैः हृदयाख्ये पुरि प्रणीयते। जो गुणों से भरी हुई है अर्थात् सद्गुणों से भरी हुई है। भक्तों में

गुण भर देने वाली अर्थात् सद्गुण भर देने वाले है। भक्तों को अपने दिव्य लोक में ले जाने वाली। भक्तों के द्वारा हृदय नामक पुर में अर्थात् हृदय में ले जायी जाती है अर्थात् रखी जाती हैं।

200. **पूर्णपीठनिवासिनी** – पूर्णागिरि पीठ पर निवास करने वाली। सम्पूर्ण पीठ पर अर्थात सिद्धपीठों पर निवास करने वाली। पूर्णागिरि पर्वत पर स्थित। शैल अर्थात शिलाओं का समूह अर्थात पर्वत। कैलास के उत्तर में पूर्णागिरि पर्वत है। यह मनोकामनाओं को पूर्ण करता है। विकल्पों को समाप्त कर पूर्णता की ओर ले जाने वाला पीठ पूर्णागिरि पीठ है। पीठ अर्थात देवस्थान। देवी जी जब यहाँ आयीं तो इस क्षेत्र का कण कण उनकी प्रभा से भर गया अर्थात पूर्ण हो गया। यह स्थान दिव्यगुणों से भरा है और आश्चर्यजनक दृश्यों से भरा है।

201. **सत्वस्था** – सत्व गुण में स्थित।

202. **सत्वरूपा** – सत्व स्वरूप वाली। सत्व का एक अर्थ है प्राण या बल अतः प्राण स्वरूप वाली। सत्व गुण को स्वरूप देने वाली अर्थात रचना करने वाली। सत्वम् रूपयति इति सत्वरूपा। सत्व गुण को दिखाने वाली।

203. **सत्वगा** – सत्वगुण में रहने वाली। सत्व स्वरूप के रूप में जानी जाने वाली। सत्वरूपेण गम्यते इति सत्वगा। सात्विक लोगों में जाने वाली अर्थात उनमें विराजमान। सात्विक लोगों द्वारा प्राप्त होने वाली।

204. **सत्वसम्भवा** – सतोगुण से उत्पन्न होने वाली।

205. **रजस्था** – रजोगुण में स्थित। रज का अर्थ है धूलि। समस्त लोक देवी माँ की धूलि की तरह है अतः रज का अर्थ लोक भी है। सभी लोको में विराजमान (शक्ति या स्पन्दन के रूप में)।

206. **रजोरूपा** – रजोगुण स्वरूपा। रजःरूपयति इति रजोरूपा। रजो गुण का निर्माण करने वाली, रजो गुण को दिखाने वाली।

207. **रजोगुणसमुद्भवा** – रजोगुण से उत्पन्न होने वाली। समुद्र का विक्षोभ या मन्थन रजोगुणीक्रिया है। इससे लक्ष्मी जी पैदा हुई।

208. **तमस्था** – तमोगुण में स्थित। वराह अर्थात वराह अवतार भगवान विष्णु में शक्ति रूप से स्थित। राहु में स्थित। तमाल वृक्ष में उसके गुण या शक्ति के रूप में विराजमान। तम के कई अर्थ हैं जैसे तमोगुण, अविद्या, क्रोध, मोह, वराह, राहु, तमालवृक्ष।

209. **तमोरूपा** – तमोगुण स्वरूप वाली। यथा अवसर तमोगुणी भी हो जाती हैं। अविद्या या अज्ञान के रूप में। देव्यथर्वशीर्ष में देवी ने कहा है कि मैं ही विद्या हूँ और मैं ही अविद्या हूँ। क्रोधरूपा। राक्षसों या भक्तों के दुर्गुणों को नष्ट करते समय ऐसा रूप धारण कर लेती हैं।

210. **तामसी** – तमोगुण से युक्त। महाकाली स्वरूपा। दुष्टों के लिए क्रोधी। अन्धेरी रात स्वरूपा। तामस का अर्थ क्रोध, मोह, अज्ञान, अन्धेरी रात है। अभिमानिनी (देवी ने प्रतिज्ञा ली थी कि जो मुझे संग्राम में जीतेगा वह मेरा पति होगा, जो देवी के अभिमान को व्यक्त करता है)। तमोगुण में कुछ अच्छाई भी होती है। तमोगुण के कारण गुरूत्वाकर्षण बल होता है जिससे ऊपर फेंकी गई वस्तु नीचे वापस आ जाती है। तमोगुण के कारण ही नींद आ जाती है जिससे आराम मिलता है। यदि बुरे प्रभावों की बात की जाए तो तमोगुणी प्रभाव वाले मनुष्य में स्वार्थ, मैं व मेरा, लोभ–क्रोध, राग–द्वेष, संग्रह प्रवृति, हिंसा–प्रतिहिंसा, अहंकार का गुण स्वतः आ जाता है।

211. **तामसप्रिया** – भगवान शिव की प्रिया। तामस का अर्थ है जो तमोगुण से युक्त हो और भगवान शिव तमोगुणी देवता कहे जाते हैं। जिन्हें तामस शास्त्र पसन्द है। कुछ शास्त्र तामस शास्त्र कहे जाते हैं। कूर्म पुराण, लिंग पुराण, शिव पुराण, स्कन्द पुराण, अग्नि पुराण और मत्स्य पुराण तामस शास्त्र कहे गये हैं। वैशेषिक दर्शन, न्याय दर्शन, सांख्य दर्शन और मीमांसा दर्शन को भी तामस शास्त्र माना गया है। तमोगुणी किन्तु भक्त लोगों को अच्छी लगने वाली।

212. **तमोगुणसमुद्भवा** – तमोगुण से उत्पन्न होने वाली। तमोगुण से उत्पन्न होने वाली सृष्टि स्वरूपा। तमोगुण से सृष्टि पैदा होती है और सृष्टि ही देवी रूप है। तमोगुण वाले किन्तु भक्त उपासकों के समक्ष प्रकट हो जाने वाली। राक्षस लोग तमोगुणी होते थे फिर भी अपनी तपस्या से शिव को प्रसन्न कर लेते थे और शिव उनके समक्ष प्रकट हो जाते थे। शिव और शिवा में अभेद है। शिव का प्रकट होना शिवा का प्रकट होना है।

213. **सात्विकी** – सात्विक स्वरूप वाली। ज्ञान, शुद्धता, निर्मलता, ईमानदारी, हल्कापन से युक्त स्थिति सात्विक स्थिति कहलाती है। सात्विक व्यक्ति ज्ञानी, सद्गुणी, शान्त, सदाचारी और सुखी होता है। सतोगणी प्रभाव वाले मनुष्य में निःस्वार्थता, करुणा, दया, क्षमा, सेवा, प्रेम, दीनता, निरहंकारता, शुभ भावना, आत्मा–परमात्मा व प्रकृति में विश्वास, सबकी सेवा, सबको प्यार आदि का गुण स्वतः विद्यमान होता है।

214. **राजसी** – राजस गुणरूप वाली। क्रियाशील अवस्था, ऊर्जात्मक अवस्था राजसी अवस्था है। राजसी अर्थात हमेशा गतिमान अर्थात सक्रिय, राजसी वैभव और ठाठ बाट वाली, इच्छा और स्वप्न में बाँधने वाली। रजोगुण (धन, वस्त्र, आभूषण, स्त्रीसुख, कोठी, गाड़ी, भोजन एवं अन्य सुख भोग की वस्तुएं आदि) यह हर प्रकृति के मनुष्य को चाहिए चाहे वह सतोगुणी हो या तमोगुणी हो।

215. **कला** – कला स्वरूपा अर्थात शक्ति स्वरूपा या सुन्दर स्वरूप वाली। भगवान शिव के साथ नित्य रहने वाली शक्ति कला है। साकार जगत स्वरूपा। आँखों से दिखने वाला साकार जगत का भी एक नाम कला है। मातृका वर्ण अर्थात अक्षर स्वरूपा। वह विद्या जिसमें आत्मा परमानन्द का अनुभव करने लगे, उस उत्कृष्ट कोटि की कला या विद्या स्वरूपा। कला का अर्थ है अवयव। वह शक्ति जो अखण्ड चैतन्य को भी अवयवयुक्त बनाने अर्थात खण्डित करने का आभास दे, कला है। विशेष कार्य करने की शक्तिस्वरूपा। कला का अर्थ होता है अवयय अर्थात् इकाई। प्रत्येक विशेष कार्य करने की शक्ति को कला कहते है। दिव्य पदार्थ या दिव्य शक्ति स्वरूपा। दिव्य का अर्थ है द्युलोक में होने वाला। उपनिषद एवं पुराण में कला शब्द का प्रयोग भाग (अवयय) अर्थ के साथ–साथ एक विशिष्ट अर्थ में भी किया गया है। वहाँ दिव्य पदार्थों या दिव्य शक्तियों के अर्थ में कला शब्द का प्रयोग किया गया है। सूर्य, अग्नि, वायु आदि पदार्थ दिव्य पदार्थ है। इन पदार्थ में विद्यमान प्रकाश, दाह, और प्राण आदि शक्तियाँ भी दिव्य है। अतः सूर्य आदि दिव्य पदार्थ या सूर्य आदि दिव्य पदार्थों में विद्यमान प्रकाश आदि दिव्य शक्तियाँ कला रूप है। पदार्थ रूप या शक्ति रूप इन कलाओं में पुरुष रूप, चेतन तत्व नित्य रूप से सम्बद्ध रहता है। अतः चेतन तत्व से सम्बद्ध इस कला को चित्कला भी कहा जाता है। कला रूप दिव्य पदार्थ या दिव्य शक्तियाँ परमात्मा से ही उत्पन्न हुई है। अतः ये दिव्य पदार्थ या दिव्य शक्तियाँ पुरुष की मानी जाती है। यह पुरुष त्रिविधिरूप में दृष्टिगोचर होता हैं। अतः यह पुरुष तीन रूपों में विभक्त है – सकलपुरुष, निष्कलपुरुष और षोडशकल पुरुष। सम्भवतः दिव्य का अर्थ है – जो पंचभूतों से न बना हो अर्थात् प्रकाश स्वरूपा। Kalaa is power of consiousness by which all the 36 principles are evolved. Fractions, factors, creativity, part of a letter or word are also called Kalaa. चेतना की शक्ति जिससे शैव दर्शन में बताए गये 36 तत्वों का विकास/उद्भाव होता है, कला है। कला का अर्थ भाग, रचनात्मकता, अक्षर, अक्षर या शब्द का भाग भी है।

216. **काष्ठा** – दिक् शक्ति स्वरूपा। दिशा स्वरूपा। एक समयावधि स्वरूपा जो कला नामक समयावधि का तीसवाँ हिस्सा है। कला एक मिनट या किसी मत के अनुसार 48 सेकेण्ड या किसी अन्य मत के अनुसार 8 सेकेण्ड की समयावधि है।

217. **मुहूर्ता** – मुहूर्त समयावधि स्वरूपा। मुहूर्त अर्थात दो घड़ी या 48 मिनट का समय।

218. **निमिषा** – भक्तों के अपराध को देखकर आँख बन्द कर लेती हैं अर्थात उसे संज्ञान में नहीं लेती।

भक्तापराधान् प्रति निमिषति इति निमिषा। जितने समय में पलक झपकी जाती उतने समय के स्वरूप वाली। निमि का अर्थ है पलक। प्रलय काल में आँख बन्द कर सो जाने वाली। निमि + शी धातु। ऐसा कहा जाता है कि देवता पलक नहीं झपकते है क्योंकि पलक झपकने पर प्रलय आ जायेगी। प्रलये निमीलितनयना शेते इति निमिषा। निमि नामक राजा को नियन्त्रित करने के लिए उसके पास जाने वाले भगवान विष्णु से अभेद है जिनका। निमिं राजानं सरति नियन्तुम्। निमि राजा के वंशजों के पास भी उन्हें नियन्त्रित करने के लिए जाने वाले भगवान विष्णु से अभेद है जिनका। निमयस्तद्वंश्यास्तानपि सरति। संसार इन्हीं के द्वारा निमीलित अर्थात् निद्रा को प्राप्त होता है। जगत् निमिषति अनया। नि उपसर्ग से नयन शब्द का बोध होता है। नयनान्नीत्युपसर्गवेद्यः। जिसके कारण देवता और असुर अत्यन्त स्पर्धा में डाल दिये जाते है अर्थात् एक दूसरे से झगड़ते है। सुरासुरा नितरां मिषन्ति स्पर्धन्ते अनया, सा निमिषा इति कथ्यते। मिष धातु स्पर्धायाम्। मिष धातु का अर्थ स्पर्धा करना होता है।

219. **अनिमेषा** – जो पलक रहित है अर्थात पलक नहीं झपकती हैं। ऐसा कहते है देवता अगर पलक झपक लें तो प्रलय आ जाएगी। अनिमेष और उन्मेष एक ही हैं।

220. **अर्धमासा** – अर्द्ध मास स्वरूपा।

221. **मासा** – मास रूपी अवधि स्वरूपा। सभी कुछ ऊर्जा या शक्ति स्वरूप है। पदार्थ, प्राणी, समय, अवस्था, गुण, स्थान ऊर्जा या शक्ति का रूपान्तरण होने के कारण देवी स्वरूप हैं। आपने काल शक्ति का नाम सुना होगा।

222. **संवत्सरस्वरूपिणी** – संवत्सर के स्वरूप को धारण करने वाली। संवत्सर कालावधि स्वरूपा। संवत्सर वर्ष का नाम है।

223. **योगस्था** – योग में स्थित रहने वाली। ब्रह्म से ऐक्य की अवस्था में रहने वाली। सम भाव में स्थित रहने वाली। गीता में कहा गया है – समत्वं योग उच्यते।

224. **योगरूपा** – योगस्वरूपा। चित्तवृत्ति निरोध की अवस्थास्वरूपा। कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग जिसके स्वरूप हैं।

225. **कल्पस्था** – कल्प समयावधि के रूप में स्थित रहने वाली या कल्प पर्यन्त स्थित रहने वाली।

226. **कल्परूपिणी** – कल्पवृक्ष स्वरूपा या कल्प समयावधि स्वरूपा।

227. **नानारत्नविचित्राङ्गी** – अनेक रत्नजड़ित आभूषणों को धारण करने से सुन्दर लगने वाली। विचित्र का एक अर्थ सुन्दर भी होता है। अनेक रत्नों से जड़े आभूषणों को धारण करने से विचित्र अंगों वाली। अनेक प्रकार के रत्नों से विभूषित सुन्दर अंगों वाली। विचित्र का अर्थ है भिन्न रंगों वाली किन्तु यहाँ सुन्दर अर्थ अधिक उचित है।

228. **नानाऽऽभरणमण्डिता** – अनेक प्रकार के आभूषणों से विभूषित।

229. **विश्वात्मिका** – विश्व की आत्मा स्वरूपा अर्थात विश्व का केन्द्र हैं। आत्मा से ही प्राणी जीवित रहते हैं। विश्व में व्याप्त रहने वाली। विश्व के स्वरूप वाली। आत्मा अर्थात व्याप्त, स्वरूपा।

230. **विश्वमाता** – सम्पूर्ण संसार की माता की तरह अर्थात विश्व का भरण पोषण करने वाली। विश्व में माता की तरह आदरणीय या पूज्य। विश्व की रक्षा करने वाली। माति इति माता अर्थात जो गर्भ में शिशु की रक्षा करती है वह माता है। माति के कई अर्थों में एक अर्थ रक्षा करना भी है।

231. **विश्वपाशविनाशिनी** – संसार रूपी बन्धन या जकड़न को नष्ट कर देने वाली।

232. **विश्वासकारिणी** – विश्वास कराने वाली (हर चीज का, अपने स्वरूप, शक्ति, योग्यता का विश्वास कराने वाली)।

233. **विश्वा** – विश्वरूपा अर्थात जो विश्व के रूप में स्थित हैं। विश्व का अर्थ सभी भी होता है। इस प्रकार विश्वा का अर्थ हुआ समस्त जड़–चेतन स्वरूपा। विष्णु स्वरूपा या भगवान विष्णु की शक्ति स्वरूपा। विश्व का एक अर्थ भगवान विष्णु भी है। अनेक रूपों में गई हुई अर्थात अनेक रूपों में अवतार लेने वाली। नानावतारेषु विविधानि रूपाणि श्वयति गच्छति इति विश्वा। विविध का वि शब्दाक्षर ले लिया एवं श्वयति का श्व शब्दाक्षर ले लिया। श्वयति का अर्थ है जाता है या जाती है। संस्कृत में गति के गमन, ज्ञान और प्राप्ति अर्थ होते हैं। विशेष भक्तों (शुद्ध हृदय वाले या जिनका मन हमेशा देवी में लगा रहता है।) के पास जाने वाली अर्थात रहने वाली। विशिष्टान भक्तान् श्वयति गच्छति इति विश्वा।

234. **विश्वशक्तिविचारिणी** – विश्व की शक्ति (अर्थात विश्व को उत्पन्न करने वाली सृष्टि शक्ति, उत्पत्ति शक्ति, पालन करने की शक्ति) में विचरण करने वाली अर्थात रहने वाली। विश्व की शक्ति के रूप में जिनका चिन्तन किया जाता है।

235. **जपाकुसुमसङ्काशा** – दुपहरिया (गुड़हल) के समान लाल रंग वाली। दुपहरिया छोटा फूल होता है जो दोपहर के समय खिलता है इसका गुड़हल से मामूली अन्तर है।

236. **दाडिमीकुसुमोपमा** – अनार के पुष्प के समान लाल लाल रंग वाली।

237. **चतुरंगी** – चार वेद जिनके अंग हैं। चार आश्रम या चार वर्ण जिनके अंग हैं। चार अंगों वाली चतुरंगिनी सेना वाली। सेना के चार अंग हैं – रथ, हाथी, घोड़ा और पैदल। सुन्दर अंगों से सुशोभित।

238. **चतुर्बाहु** – चार भुजाओं को धारण करने वाली। चार भुजाएं चार दिशाओं का प्रतीक हैं। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ चारों दिशाओं वाली अर्थात सर्वव्याप्त। जिनकी शक्तियाँ प्रत्येक दिशा में व्याप्त हैं। चत्वोरोऽस्या बाहवः इति चतुर्बाहुः। चतुर्भिः अश्वैः वाह्यते चतुर्बाहुः। दैत्यान् दानवान् राक्षसान् पिशाचांश्चेति चतुरो बाधते इति चतुर्बाहुः। बाधतेर्हकार इति वैयाकरणाः। चत्वारि चक्रादीनि यस्य बाहौ। चतुर्विधा वा पुरुषार्थाः। ब कामने। तान् जुहोति ददातीति चतुर्बाहुः। पत्रं पुष्पं फलं तोयमिति चत्वारि भक्तया दत्तानि जुहोत्यादत्ते इति चतुर्बाहुः। हु दानादानयोः। चार भुजाओं वाली। चार घोड़ों द्वारा जिनको ले जाया जाता है अर्थात् उनके रथ में चार घोड़े है। दैत्य, दानव, राक्षस और पिशाच, इन चारों को दण्डित या पीड़ित करने वाले। व्याकरण के एक नियम के अनुसार ध का ह हो जाता है अतः बाह् को बाध् भी कर सकते है। जिनकी भुजाओं में चार प्रकार की वस्तुयें है अर्थात् शंख, चक्र, गदा, पद्म है। ब का अर्थ पुरुषार्थ भी है क्योंकि ब का अर्थ कामना या इच्छा भी है। चार प्रकार के पुरुषार्थ को देने वाली। भक्तों के द्वारा दिये हुए पत्र, पुष्प, फल और जल को ग्रहण करने वाली।

239. **चतुराचारवासिनी** – बुद्धिमत्तापूर्ण आचार या कुशल आचार में निवास करने वाली। श्रेष्ठ आचार को धारण करने वालों के हृदय में निवास करने वाली।

240. **सर्वेशी** – सभी की स्वामिनी अर्थात सभी पर शासन करने वाली। सभी देवताओं, प्राणियों को उनके कार्य के लिए प्रेरित करने वाली। ईष्टे प्रेरयति धातु भी होती है जिससे ईश शब्द बनाने पर प्रेरित करने वाला अर्थ होता है। ईश् धातु का अर्थ शासन करना लेने पर ईश शब्द का शासन करने वाला अर्थ होता है।

241. **सर्वदा** – सब कुछ देने वाली अर्थात भक्तों को उनके सभी अभीष्ट देने वाली। शिव को देने वाली अर्थात प्राप्त कराने वाली। शिव का एक पर्यायवाची सर्व भी है, सर्वस्मिन् तिष्ठति इति सर्वः अर्थात जो सब में विराजमान है वह सर्व है।

242. **सर्वा** – सर्वस्वरूपा। जो भी जड़ चेतन का अस्तित्व है वह देवी का ही रूप है। सभी पदार्थों (जड़ एवं चेतन दोनो) के स्वरूप वाली।

243. **सर्वदासर्वदायिनी** – हर समय सब कुछ देने वाली (भक्तों को, उपासकों को)।

244. **माहेश्वरी** – महेश्वर की शक्ति। महेश्वर अर्थात शिव की शक्ति स्वरूपा अर्थात पार्वती स्वरूपा। माहेश्वर सम्प्रदाय के लोगों द्वारा उपासनीया। भगवान शिव द्वारा पाणिनी को दिये गये व्याकरण के 14 सूत्र माहेश्वर सूत्र कहलाते हैं। इन 14 सूत्रों में रहने वाली शक्ति स्वरूपा। अतिशय ऐश्वर्य से युक्त। भगवान शिव की संहार करने वाली शक्ति स्वरूपा। चीजों को क्षणभंगुर बनाकर यह सीख देने वाली कि क्षणभंगुर चीजों को पाने में या उसमें भोगने में समय मत खर्च करो।

245. **सर्वाद्या** – समस्त जगत प्रपंच या देवी देवताओं में आदि या प्रथम स्वरूप वाली। सभी का स्रोत या मूल कारण।

246. **शर्वाणी** – शर्व (शिव) की स्त्री। जो संहार करे वह शर्व है।

247. **सर्वमङ्गला** – समस्त मंगलों से युक्त या मांगलिक चिन्हों से युक्त। सभी का मंगल करने वाली। उनकी पूजा में कोई त्रुटि भी हो जाए तो भी सभी पूजकों/उपासकों का मंगल करती हैं। मंगल का अर्थ होता है अच्छे कार्यों में भविष्य में सफलता, सभी प्रकार के विघ्नों का हरण, सुख की प्राप्ति, कष्ट की समाप्ति, रक्षा होना, ईश्वर या आनन्द की ओर गति करना, मंग (अर्थात जन्म मरण रूपी सर्प) का नाश होना। मंगम् लाति नाशयति इति मंगला। मंगल का अर्थ मोक्ष है और मोक्ष पाँच प्रकार के होते हैं। पात्रतानुसार सभी प्रकार के मोक्ष को देने वाली।

248. **नलिनी** – कमल पुष्प की तरह सुन्दर और कोमल। नलिनी का अर्थ होता है कमल। आँख कमल की तरह सुन्दर है, हाथ कमल की तरह सुन्दर हैं, मुख कमल की तरह सुन्दर है, पैर कमल की तरह सुन्दर और कोमल हैं। राजा नल वाली अर्थात राजा नल से युक्त अर्थात राजा नल जिनकी उपासना करते हैं। उपासना करने पर उपासक उपास्य से युक्त हो जाता है। कमलिनी की तरह सुशोभित होने वाली। नलिनी का अर्थ गंगा जी भी होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ गंगा स्वरूपा या गंगा से अभेद है जिनका।

249. **नन्दिनी** – प्रसन्न रहने वाली। नन्दते इति नन्दिनी। प्रसन्न या आनन्दित करने वाली। नन्दयति इति नन्दिनी। सभी को आनन्दित करने वाली। नन्दते से नन्दिनी बनाने पर प्रसन्न रहने वाली एवं नन्दयति से नन्दिनी बनाने पर प्रसन्न करने वाली अर्थ होगा। नन्दिनी गाय के स्वरूप में।

250. **नन्दा** – नन्दा तिथि स्वरूपा अर्थात प्रतिपदा तिथि स्वरूपा। इस तिथि में यात्रा के अलावा अन्य कर्म करना जैसे अध्ययन करना आदि शुभ माना जता है। आनन्द स्वरूपा। आनन्द देने वाली या समृद्धि देने वाली। नन्दयति इति नन्दा। नन्दा का अर्थ आनन्द/समृद्धि होता है। किसी नाम के आगे आ हो तो उसका अर्थ देना और नाश करना दोनों होता है। जैसे मंगला का अर्थ मंगल देने वाली और दुर्गा का अर्थ है दुर्ग अर्थात अत्यन्त कष्ट/विपत्ति का नाश करने वाली। नन्दन वन में वास करने वाली। यह भी इस नाम का अर्थ हुआ। नन्द वाली अर्थात नन्द या नन्दन वन में वास करने वाली।

251. **आनन्दा** – आनन्द स्वरूपा। सत् चित् आनन्द इन्हीं का स्वरूप है। सिद्धों के अनुसार आनन्द अनपेक्षित प्रेम (Unconditional Love) से बना है।

252. **आनन्दवर्द्धिनी** – आनन्द बढ़ाने वाली। आनन्द के कई स्तर हैं जैसे विषयानन्द, जगदानन्द, चिदानन्द, ब्रह्मानन्द आदि।

253. **सर्वभूतेषु व्यापिनी** – समस्त प्राणियों में व्याप्त रहने वाली। सर्वत्र व्याप्त हैं अतः सभी प्राणियों में भी रहती हैं।

254. **भवभारविनाशिनी** – संसार के भार को पूर्ण रूपेण नष्ट कर देने वाली। संसार के भार का तात्पर्य है संसार के कष्ट, संसार में आसक्ति, संसार की स्मृति आदि।

255. **सर्वश्रृङ्गारवेशाढ्या** – सभी प्रकार के श्रृंगारों से युक्त वेश से अतिशय सुन्दर लगने वाली।

256. **पाशाङ्कुशकरोद्यता** – पाश और अंकुश धारण किये हुए ऊपर उठे हुए हाथ वाली। पाश और अंकुश को धारण कर दैत्यों के वध के लिए उद्यत (तैयार)।

257. **सूर्यकोटिसहस्राभा** – करोड़ों सूर्यों के समान कान्ति से युक्त। यह आभा जलाती नहीं है बल्कि बहुत सुहानी होती है।

258. **चन्द्रकोटिनिभानना** – करोड़ों चन्द्रमाओं के समान सुन्दर मुख वाली। निभ का अर्थ है समान, की तरह।

259. **गणेशकोटिलावण्या** – करोड़ों गणेशों की तरह लावण्य को धारण करने वाली अर्थात सुन्दर स्वरूप वाली। मोतियों में छाया की तरलता की तरह अंगों में दौड़ने वाली कान्ति जिसमे चंचलता के साथ शीतलता भी हो, लावण्य कहलाती है।

260. **विष्णुकोट्यरिमर्दिनी** – करोड़ों विष्णुओं के समान शत्रुओं का मर्दन करने वाली या विनाश करने वाली।

261. **दावाग्निकोटिदलिनी** – करोड़ों दावाग्नियों (जंगल की आग) का नाश, संहार करने वाली, कुचलने या पीसने वाली, शान्त कर देने वाली।

262. **रूद्रकोट्युग्ररूपिणी** – करोड़ों रूद्रों के समान उग्र रूप धारण करने वाली। उग्र अर्थात बेलगाम और शत्रुओं को मार के ही दम लेने वाली, निष्ठुर।

263. **समुद्रकोटिगम्भीरा** – करोड़ों समुद्रों के समान गहराई लिये हुए। यह नाम देवी के विश्व/ब्रह्माण्ड स्वरूप को अभिव्यक्त करता है जिसमें करोड़ों समुद्र समाये हैं।

264. **वायुकोटिमहाबला** – करोड़ों वायुओं के समान अतिशय शक्तिशालिनी। आँधी पेड़ पौधों को उखाड़ देती है।

265. **आकाशकोटिविस्तारा** – करोड़ों आकाशों की तरह फैली हुई अर्थात विस्तार को लिये है।

266. **यमकोटिभयङ्करी** – करोड़ों यमराजों की तरह भयंकर।

267. **मेरूकोटिसमुच्छ्राया** – करोड़ों सुमेरू पर्वतों की तरह ऊँचाई लिये हुए।

268. **गणकोटिसमृद्धिदा** – करोड़ों देवगणों की तरह समृद्धि प्रदान करने वाली। करोड़ों गणेशों की तरह समृद्धि प्रदान करने वाली।

269. **निष्कस्तोका** – स्वर्ण बिन्दु स्वरूपा अर्थात स्वर्णिम आभा लिये कणस्वरूपा अर्थात जीवात्मास्वरूपा अर्थात स्वर्णरेता। सोने की बूँदस्वरूपा या इकाई स्वरूपा। निष्क का अर्थ है सोना और स्तोक का अर्थ है इकाई या बूँद। सोना भी यही है और सोने की इकाई भी यही हैं। सुनहरे कण के स्वरूप वाली अर्थात जीवात्मा के स्वरूप वाली। परमात्मा को अग्नि की तरह और जीवात्मा को अग्निकण की तरह माना गया है। स्वर्ण मुद्रा के स्वरूप वाली।

270. **निराधारा** – जिनका कोई आधार नहीं है। देवी सम्पूर्ण जगत का आधार हैं पर इनका कोई आधार नहीं अर्थात ये किसी पर स्थित नहीं हैं।

271. **निर्गुणा** – तीनों गुणों से परे अर्थात गुणातीत। तीन गुण है सत, रज और तम। गुणों से निर्गत अर्थात निकली हुई। तीनों गुणों (सत, रज और तम) से रहित, त्रिगुणातीता इति निर्गुणा। ज्ञानियों द्वारा जिनके गुण निर्णीत किये गये अर्थात् जाने गये या गुणों का निर्णय किया गया। ज्ञानिभिर्निर्णीतगुणाः यस्या, सा निर्गुणा इति

उच्यते। निर्णीत का निर् ले लिया। सांसारिक दोषों से रहित होने के कारण निर्गुण का अर्थ मुक्त पुरुष भी होता है। मुक्त पुरुष जिनके हैं अर्थात मोक्ष को प्राप्त व्यक्तियों को आश्रय दिये हुए। निर्गुणा मुक्ता अस्या सन्ति इति निर्गुणा। गुणरूप ब्रह्मादियों में अत्यन्त गयी हुई अर्थात् विराजमान है। गुणभूतान् ब्रह्मादीनतीता इति निर्गुणा। नियम है कि गुण का सार होने पर गुणी को भी गुण कह देते है। सार का अर्थ तत्व, सरण अर्थात गमन भी होता है। जिनमें कोई दुर्गुण नहीं है। यहाँ गुण से दुर्गुण ले लिया। जिसकी वाणी शुद्ध या दोषरहित है तथा जो ज्ञानस्वरूप है। निर्णिक्ता गावो वाचो अस्या इति निर्गुः, णश्च। इस प्रकार निर्गुण शब्द बना, स्त्रीलिंग में निर्गुणा हो गया। ण का अर्थ है ज्ञान, किन्तु अर्थ भी कर सकते है। शुद्ध शब्दार्थ स्वरूपा।

272. **गुणवर्जिता** – दुर्गुणों से रहित हैं यह अर्थ भी कर सकते हैं। सगुण साकार रूप में देवी दुर्गुणों से रहित हैं। गुणों से वर्जित हैं अर्थात सगुण और निर्गुण दोनों से परे हैं। (शब्दों के अर्थ की दृष्टि से देखा जाए तो निर्गुण का अर्थ है पहले गुण थे पर अब उन गुणों से निकल गई, जबकि गुणवर्जिता का अर्थ है गुण थे ही नहीं।)

273. **अशोका** – अशोक वृक्षरूपा। प्रत्येक चीज ऊर्जा या शक्ति है, और देवी ऊर्जा या शक्ति हैं, अतः प्रत्येक चीज देवी स्वरूपा है। अशोक + आ, आ का अर्थ है देना। अशोक वृक्ष को देने वाली अर्थात अशोक वृक्ष का अस्तित्व लाने वाली।

274. **शोकरहिता** – जो शोक से रहित हैं।

275. **तापत्रयविवर्जिता** – तीनों प्रकार के तापों (कष्टों) से रहित। दैहिक, दैविक, भौतिक तीन प्रकार के ताप या कष्ट होते हैं।

276. **वसिष्ठा** – वशियों में अर्थात इन्द्रियों को वश में करने वालों में सर्वश्रेष्ठ। वसिष्ठ जी की शक्ति स्वरूपा या वसिष्ठ जी की शक्ति से युक्त। ऊर्ध्वगामी चैतन्य स्वरूपा अर्थात वह चेतना जो परमात्मा या ईश्वर की ओर उन्मुख हो गई है। विश्वामित्र चेतना सम्पूर्ण विश्व से मित्रता चाहती है, अतः वह क्षैतिज चेतना है, जबकि वसिष्ठ ऊर्ध्वगामी चैतन्य है। संस्कृत में कई जगह श और स में अभेद होता है अतः वसिष्ठ और वशिष्ठ एक ही हैं। वशी+इष्ट, वशी आर्थात आज्ञाकारी। इस प्रकार वसिष्ठा का अर्थ हुआ शिव की आज्ञाकारिणी और उनकी प्रिया। सबसे अधिक निवास करनी वाली या मुख रूप से निवास करने वाली। तात्पर्य हुआ सर्वत्र विराजमान। उपनिषद् एवं ब्राह्मण ग्रन्थों में प्राण, वाणी एवं अग्नि के लिए यह शब्द आया है। अतः इन नाम का अर्थ हुआ वाणी स्वरूपा, प्राण स्वरूपा, अग्नि स्वरूपा। वाक् से सभी उत्पन्न हुये है अतः कारण के कार्य में सूक्ष्म रूप से विराजमान होने के कारण वाणी वसिष्ठा हुयी। अन्यथा भी सभी प्राणी अपनी–अपनी तरीके से बोलते है। अग्नि तत्व अदृश्य रूप में सर्वत्र विद्यमान है। शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ में वाणी प्राण से कहती है कि तुम वसिष्ठ हो एवं मैं वसिष्ठा हूँ। सबसे अधिक निवास कराने वाली को भी वसिष्ठा कहते है। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने विद्यादि गुणों में बसने वाली को वसिष्ठा कहा है और इसका अर्थ विदुषी किया है। अतः इस नाम का अर्थ हुआ विदुषी। जो अपने माता–पिता की आज्ञाकारिणी है एवं उन्हें परमप्रिय है।

277. **विश्वजननी** – विश्व की माता या सभी की माता। विश्व का प्रादुर्भाव करने वाली। विश्व का अर्थ सभी भी होता है। जननी का एक अर्थ दया, करुणा भी होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ विश्व में मौजूद दया/करुणा गुणस्वरूपा। विश्व के लोगों को ले जाने वाली अर्थात उनका मार्गदर्शन करने वाली, उन्हें काम में लगाने वाली या सक्रिय करने वाली। विश्व के लोगों की नायिका। विश्व+जन+नी। नी=नयति अर्थात ले जाना। विश्व का अर्थ शिव, विष्णु है एवं जननी का एक अर्थ करुणा है। शिव, विष्णु में विद्यमान करुणा गुण स्वरूपा।

278. **विश्वाख्या** – विश्वा के नाम वाली, विश्वा के नाम से प्रख्यात।

279. **विश्ववर्द्धिनी** – विश्व को बढ़ाने वाली या विस्तार करने वाली। आज का विज्ञान भी कह रहा है कि विश्व का विस्तार हो रहा है।

280. **चित्रा** – चित्रा नामक नक्षत्र स्वरूपा। यह 27 नक्षत्रों में 14वाँ नक्षत्र है। चित्रा नामक अप्सरा के समान सुन्दर। विविध रंगों से युक्त या सुशोभित। नाना प्रकार के अद्‌भुत कार्य करने वाली। अनेक रंगों वाली अर्थात प्रकृति स्वरूपा।

281. **विचित्रचित्रांगी** – अद्‌भुत सुन्दर अंगों से युक्त। चित्रांगी का अर्थ है सुन्दर अंगों वाली। चित्रांगी का अर्थ है जिसके अंग पर चित्तियाँ या धारियाँ हों। विचित्र का अर्थ है अद्‌भुत, अनोखा, साधारण से भिन्न अर्थात असाधारण।

282. **हेतुगर्भा** – सभी कारणों की कारण अर्थात आदि कारण। ब्रह्मा, पंचभूत आदि विश्व के कारण माने गये हैं पर देवी इन कारणों का भी कारण हैं अर्थात ये कारण भी देवी से पैदा हुए हैं।

283. **कुलेश्वरी** – कौलमार्ग की आराध्या अर्थात कौलमार्ग में जिनकी उपासना होती है। कुल का अर्थ कौलमार्ग, वाममार्ग, मूलाधारचक्र है। मूलाधारचक्र में विराजमान देवी स्वरूपा। मूलाधार चक्र में जिनकी उपासना होती है। कुल की ईश्वरी अर्थात अलग अलग वंशों में या कुलों में उनकी पूजा होती है। बहुत से कुलों (वंशों) की कुल देवी।

284. **इच्छाशक्ति** – इच्छ में विद्यमान शक्ति स्वरूपा। जिस शक्ति के कारण परमात्मा के भीतर अपने को अभिव्यक्त करने की चाहत जाग्रत होती है। वह शक्ति जिसके कारण परमात्मा में सृष्टि का संकल्प पैदा होता है। इस शक्ति के कारण परमात्मा अपने को सर्वथा स्वतन्त्र इच्छा सम्पन्न मानता है। वह शक्ति जिसके कारण प्राणियों में इच्छा उत्पन्न होती है। वह शक्ति जो मनुष्य का ध्यान कुछ पाने या करने की ओर ले जाती है। इच्छा के अनुसार शक्ति धारण करने वाली। इच्छाशक्ति के कारण ही परमात्मा जड़ और चेतन दोनों पदार्थों को नियन्त्रित करता है। इच्छा में ज्ञान और क्रिया दोनो का समावेश होता है। शक्ति जो इस दृश्यमान जगत में स्वेच्छा से विचरण करें, जो चाहे सो करे। इच्छा ही शक्ति है जिसे इच्छाशक्ति कह दिया गया या इच्छा में रहने वाली शक्ति इच्छाशक्ति है। इच्छा में रहने वाली वह शक्ति जिससे वह अपना काम करवा लेती है। वह शक्ति जिसके कारण इच्छा पैदा होती है।

285. **ज्ञानशक्ति** – वह शक्ति जिससे परमात्मा, मनुष्य अभिव्यक्त पदार्थों की जानकारी प्राप्त करता है। वह शक्ति जिससे किसी वस्तु की जानकारी या किसी कार्य को कैसे करना है इस बात की जानकारी होती है। वह शक्ति जिसके कारण प्राणी ज्ञान प्राप्त करते हैं। वेद्य या ज्ञेय की ओर उन्मुखता ज्ञान शक्ति है। ज्ञान के अनुसार शक्ति को धारण करने वाली। ज्ञान की सर्वोत्कृष्ट शक्ति। इस शक्ति के कारण ही ब्रह्म या परमात्मा सर्वज्ञ होता है।

286. **क्रियाशक्ति** – वह शक्ति जिससे परमात्मा अपने को अभिव्यक्त करता है। वह शक्ति जिसके कारण परमात्मा या शिव सृष्टि की उत्पत्ति, पालन, संहार, अनुग्रह और तिरोधान करता है। किसी भी आकार को ग्रहण करने की शक्ति क्रियाशक्ति है। वह शक्ति जिसके कारण प्राणी कोई भी क्रिया कर पाते हैं।

287. **शुचिस्मिता** – पवित्र या शुभ्र मुस्कान वाली जो अच्छी लगती है। मन्द मुस्कान वाली। अट्‌टहास को खराब माना जाता है।

288. **शुचिः** – स्वयं में पवित्र स्वरूपा या दूसरों को दोषरहित करने वाली। शुद्ध स्वरूपा अर्थात मिलावट से रहित। शुच् धातु का अर्थ पवित्र होना, पवित्र करना, शुद्ध होना, स्नान करना (अर्थात शुद्ध होना) दिया गया है।

सतोगुण स्वरूपा। सतोगुण को शुद्ध माना गया है। देवी या देवता, जो स्वयं में होते हैं उसे दूसरों को भी देते हैं। दूसरों में सतोगुण का विस्तार करने वाली। यस्याः सकाशात् उपासकः शुचि भवति, सा शुचिः इति उच्यते अर्थात जिसकी समीपता से उपासक शुद्ध होते हैं वह शुचि है। पवित्र, धर्मात्मा स्वरूपा। शुच् धातु में इनि प्रत्यय लगाने से शुचि शब्द बनता है। पवित्रता स्वरूपा। गुण भी ऊर्जा अर्थात शक्ति या देवी है। पवित्रता को देने वाली। शुचिः यस्याः सकाशात् इतिः शुचिः। जिसकी समीपता से पवित्रता होती है अर्थात पवित्रता देने वाली। अन्यथा भी देवी या देवता का स्वभाव देने वाला होता है। लक्षणा शक्ति से भी शुचिः का अर्थ पवित्रता देने वाला कर सकते हैं। भाला चला आ रहा है अर्थात भालाधारी चला आ रहा है, दिल्ली ने कहा अर्थात दिल्ली मे रहने वाले व्यक्ति ने कहा। यह लक्षणा है। पवित्रता में विद्यमान। किसी भी नाम का अर्थ उसमें विद्यमान या उसमें अंश रूप से या शक्ति रूप से विद्यमान, ऐसा कर सकते है। (शब्द में कारण शब्द जोड़ देने से भी उस शब्द का एक अन्य अर्थ बन जाता है, शुचि का अर्थ शुचि का कारण भी कर सकते हैं।) पवित्रयति इति पवित्रा से अर्थ होगा जो दूसरों के पाप एवं अन्य दोषों को हटा दे। पवित्र का अर्थ जो स्वयं में भी शुद्ध है। वैदिक कोश के अनुसार शु का अर्थ शीघ्र होता है क्योंकि आशु का अर्थ शीघ्र है। चि चिनोति का अर्थ चुनना, एकत्रित करना, निर्माण करना, व्यवस्थित करना होता है। इस प्रकार शुचि का अर्थ शीघ्र ही किसी भी चीज का निर्माण करने वाली हुआ। शु का अर्थ एकाक्षरी कोष में अचल अर्थात् स्थिर दिया गया है एवं चि का अर्थ बुद्धि या ज्ञान दिया गया है। इस प्रकार शुचि का अर्थ स्थिर या अचल ज्ञान स्वरूपा हुआ। आत्मज्ञान या ब्रह्मज्ञान ही स्थिर या अचल ज्ञान है।

289. **स्मृतिमयी** – स्मृतिस्वरूपा या स्मृतियों से युक्त। स्मृति का तात्पर्य है मनु स्मृति, विष्णु स्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति। वेदों की स्मृति के आधार पर लिखे गए धर्मशास्त्र स्मृति ग्रन्थ हैं। इन स्मृतियों के ज्ञान से युक्त।

290. **सत्या** – सत्य स्वरूपा। जिसका तीनों कालों में बाध न हो वह सत्य कहलाता है। सत्य की शक्ति स्वरूपा। सत्यलोक वाली अर्थात जिनका सत्यलोक में वास है। सज्जनों में रहने वाली। सत्य अर्थात जो सज्जन में रहता है। सति भवः इति सत्यः। सही लोगों में जिसका प्रादुर्भाव होता है वह सत्य है। ब्रह्म और जगत को जोड़ने वाली। उपनिषद में स का अर्थ है ब्रह्म, त् का अर्थ है मूर्त या नष्ट होने वाला जगत। यु धातु का अर्थ है जोड़ने वाला, अलग करने वाला। यु धातु में ड प्रत्यय लगाने से य शब्द बनेगा जिसका अर्थ है जोड़ने वाला। सत्य ही स्त्रीलिंग में सत्या है। अन्यथा भी एकाक्षरी कोष में आ का एक अर्थ भाव (अस्तित्व या पदार्थ) दिया गया है। सत्य + आ (भाव) = सत्या। असत्य से रहित वाणी स्वरूपा। तथ्य स्वरूपा। जो वस्तु जैसी है, वैसी ही जानना, देखना, कहना, सुनना तथ्य कहलाता है। अवितथवागिति सत्या। सृष्टि के लिये जो प्राण (प्राण वायु) एवं ब्रह्मा जी के पास जाती है अर्थात् उनमें रहती है। सत् का अर्थ है प्राण एवं ति का अर्थ है ब्रह्मा। सत् का स्, ति पूरा ले लिया तथा याति (जाती है) से य ले लिया। स्+ ति+या इति सत्या। सदिति प्राणः। तीति ब्रह्मा। सृष्टयाद्यर्थं तौ ब्रह्मवायू यातीति सत्या। जो सत्यस्वरूप है, आनन्द स्वरूप है एवं ज्ञान स्वरूप है अर्थात् सच्चिदानन्द स्वरूप है। ति का अर्थ आनन्द और य का अर्थ ज्ञान है। तीत्यानन्दः। यमिति ज्ञानम्। दोषरहित ज्ञान एवं आनन्द स्वरूपा। सत् का अर्थ है दोषरहित। सदिति निर्दुष्टं ज्ञानानन्दमयमस्य स्वरूपमिति सत्या। सती अर्थात् पतिव्रता स्त्रियों में विराजमान एवं अविनाशी। सती + अ, इति सत्य, स्त्रीलिंग में सत्या। अ अर्थात अक्षर या अविनाशी। शब्द के आगे ''में विराजमान'' लगाने से शब्द का अर्थ निकल आता है। पतिव्रता स्त्रियों में उनके पतिव्रत्य को दृढ़ करते हुए अर्थात बढ़ाने वाले एवं स्वयं में अविनाशिनी सतीषु सतीत्वं द्रढयन् स्थिता इति सती च अश्च। सत्सु गता सत्या। सज्जनों में या प्रशंसनीय चरित वालों में स्थित।

291. **श्रुतिरूपा** – वेदस्वरूपा। उस ज्ञान के स्वरूप वाली जो गुरू शिष्य परम्परा से कानों से सुनकर प्राप्त होता है। उन ग्रन्थों या ज्ञान के स्वरूप में जिनका बोध गुरू से सुनकर होता था। वेदों के अलावा उपनिषद भी श्रुति

परम्परा के अंग थे। श्रुति (वेद) है ज्ञापक जिनका। रूप्यते इति रूपा से, रूपा का अर्थ ज्ञापक भी होता है। श्रुतिम् रूपयति इति श्रुतिरूपा अर्थात वेदों को स्वरूप देने वाली अर्थात रचना करने वाली।

292. **श्रुतिप्रिया** – वेद हैं प्रिय जिन्हें या जो वेदों को प्रिय है।

293. **महासत्वमयी** – सर्वश्रेष्ठ प्राणी स्वरूपा। सत्व का अर्थ प्राणी भी होता है। अतिशय प्राण या बल से युक्त। सत्व का अर्थ प्राण या बल होता है। जो देवताओं से बढ़कर है, शक्ति, गुण, ऐश्वर्य आदि में।

294. **सत्वा** – बल स्वरूपा या बलशालिनी। शक्ति स्वरूपा। सतोगुण स्वरूपा।

295. **पञ्चतत्वोपरिस्थिता** – पाँच तत्वों के ऊपर स्थित रहने वाली। पाँच तत्व अर्थात क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर इनसे अलग या ऊपर। सृष्टि पाँच तत्वों से बनी है जबकि देवी पाँच तत्वों से नहीं बनी है, वह चिन्मात्र है या चैतन्य कणों से बनी है।

296. **पार्वती** – पर्वों की अधिष्ठात्री देवी। अधिष्ठात्री देवी का तात्पर्य है किसी चीज में विराजमान रहकर उसकी नियन्त्रक या उसमें रहकर संचालन करने वाली। पर्वों को बनाया, पर्व बन गये तो मनुष्य को चलते रहने की प्रेरणा देती हैं। इन पर्वों में कौन से यज्ञ या पूजा की जाए उसका भी निर्धारण करती हैं, पर्वों में की गई पूजा का फल देने का काम करती हैं। इच्छाशक्ति, ज्ञानशक्ति, क्रियाशक्ति रूपी तीनों पर्वों की सामरस्य शक्ति स्वरूपा। पर्वतराज हिमालय की पुत्री स्वरूपा। कल्याण के शिवोपासना अंक में पर्वत का एक अर्थ अन्तरिक्ष बताया गया है। इस प्रकार पार्वती का अर्थ हुआ अन्तरिक्ष में व्याप्त।

297. **हिमवत्पुत्री** – हिमालय की कन्या के रूप में जिन्होंने जन्म लिया।

298. **पारस्था** – संसार के पार अर्थात आगे स्थित हैं। संसार सागर से परे हैं।

299. **पाररूपिणी** – इस संसार से पार होते हुए भी संसार के किनारे को धारण किये हुए। संसार सागर के एक किनारे पर संसार है और दूसरे किनारे पर देवी या परमात्मा हैं। रूपिणी का अर्थ बनाने के स्वभाव वाली। रूपयति इति रूपः अर्थात बनाने वाला, ताच्छील्य (स्वभाव) अर्थ में णिनि प्रत्यय होता है। संसार के किनारे को बनाने के स्वभाव वाली।

300. **जयन्ती** – विजयशीला अर्थात सर्वत्र और सर्वदा विजय वाली। प्रत्येक क्षण अपने गुणों, सुन्दरता, उत्कृष्ट कार्य, शक्ति, ऐश्वर्य आदि में प्रथम स्थान पर रहती है और कोई भी उनसे आगे नहीं निकल पाता है। जय का एक अर्थ है दूसरों से आगे रहना।

301. **भद्रकाली** – कल्याण करने वाली। भद्रकाली अर्थात भद्रकारी। कारी का अर्थ है करने वाली। कल्याण करने वाली काली स्वरूपा। काली के रूप को धारण कर सबका कल्याण करने वाली। भद्रम् शुद्धात्मविज्ञानम् जीवब्रह्मैक्यरूपम् कलयति इति भ्रदकाली अर्थात शुद्ध आत्मविज्ञान को प्रतिपादित करने वाली, धारण करने वाली, जानने वाली या दूसरों को जनवाने वाली अर्थात प्राप्त कराने वाली भद्रकाली हैं।

302. **अहल्या** – कपट रहित। ललितात्रिंशती स्तोत्र में एक शब्द आया है, हल्यवर्जिता जहाँ शंकराचार्यजी ने हल्य का अर्थ कपट किया है। हल (किसी साधन या क्रिया) से उत्पन्न नहीं है जो अर्थात अनादि परम चैतन्य स्वरूपा। जो हल से अर्जित हो वह हल्य है। जिसमें हल्य अर्थात वैरूप्य नहीं है अर्थात पंचभूतात्मक पूर्ण सृष्टि स्वरूपा। जो जोता न जा सके अर्थात ब्रह्म क्षेत्र स्वरूपा। जिसमें कर्म बीज उग न सके। ईश्वर जो कर्म करते हैं उनके कर्मों को लीला कहते हैं, कर्म नहीं क्योंकि उनके कर्म निष्काम भाव से होने के कारण फल नहीं देते। अपने चरित्र से जो विचलित नहीं होती। हलति का अर्थ है चलति अर्थात विचलित होना। पत्थर होने के कारण चल नहीं पाती थीं। उणादि कोष में अहल्या शब्द की व्युत्पत्ति दी गई है – अहति व्याप्नोति इति अहल्या अर्थात

जो सर्वत्र व्याप्त है वह अहल्या है। अहः लीयते अस्याम् अर्थात जिसमें दिन लीन हो जाता है वह अहल्या है अर्थात रात्रि स्वरूपा। जड़ में भी चैतन्य रूप से अभिव्यक्त होने वाली।

303. **कुलनायिका** – कौलमार्ग का मार्गदर्शन करने वाली। कुल का एक अर्थ कौलमार्ग है। तान्त्रिक गुरू और उनके शिष्यों का एक कुल होता है, उस कुल का मार्गदर्शन करने वाली। श्रेष्ठ कुलों को चलाने वाली, उन्हें ऊपर उठाने वाली अर्थात अग्रसर करने वाली। जिन कुलों का नाम है और जो सदाचारशील हैं वे श्रेष्ठ कुल हैं।

304. **भूतधात्री** – समस्त प्राणियों को धारण करने वाली। समस्त प्राणियों का उपमाता की तरह भरण पोषण करने वाली। धात्री का अर्थ है उपमाता।

305. **भूतेशी** – समस्त प्राणियों की ईश्वरी या स्वामिनी। समस्त प्राणियों को प्रेरित करने वाली अर्थात उन्हें उनके कामों में लगाने वाली। मनुष्य का शरीर यन्त्र की तरह है और देवी ही इस यंत्र में बैठकर उसे चला रही हैं अर्थात उन्हीं की शक्ति से आँखें देख पाती हैं, हाथ हिल पाता है, पैर चल पाता है और बुद्धि सोच पाती है।

306. **भूतस्था** – प्राणियों में आत्मा, शक्ति रूप में स्थित रहने वाली। पंचमहाभूतों में शक्ति रूप से स्थित।

307. **भूतभाविनी** – पंचमहाभूतों को भावित करने वाली अर्थात उत्पन्न या प्रकट करने वाली। प्राणी अर्थात चतुर्विध प्राणियों (अण्डज, स्वेदज, जरायुज, उद्भिज्ज) को उत्पन्न या प्रकट करने वाली। पंचमहाभूतों को शक्तिसम्पन्न बनाने वाली। आयुर्वेद में भावना देना (अर्थात शक्तिसम्पन्न बनाना) शब्द आता है।

308. **महाकुण्डलिनीशक्ति** – महाकुण्डलिनी शक्ति स्वरूपा।

309. **महाविभववर्धिनी** – अतिशय वैभव को बढ़ाने वाली।

310. **हंसाक्षी** – हंसों के समान सुन्दर नेत्रों वाली। हंस सुन्दरता के प्रतीक होते हैं।

311. **हंसरूपा** – हंस के समान सुन्दर स्वरूप को धारण करने वाली। साँसों की स्वाभाविक आवाज स्वरूपा। साँस छोड़ते और लेते समय हंस ऐसी आवाज सुनाई पड़ती है। हंस को देखने वाली या हंस पर जिन्होंने दृष्टि कर रखी है। हंसम् रूपयति इति हंसरूपा।

312. **हंसस्था** – हंस पर आरूढ़ या विराजमान होने वाली। हंस नामक सन्यासियों में स्थित अर्थात उनके बहुत करीब रहती हैं।

313. **हंसरूपिणी** – हंस अर्थात सर्वश्रेष्ठ आत्मा वाली। ब्रह्मस्वरूपिणी। हंस मन्त्र के स्वरूप वाली। सांसों के साथ हंस मन्त्र निकलता है। जब व्यक्ति सांस छोड़ता है तो हम् का उच्चारण होता है और जब सांस लेता है तो सो का उच्चारण हाता है। जीवात्मा, परमात्मा, शुद्ध अर्थात माया से निर्लिप्त आत्मा हंस है।

314. **सोमाग्निमध्यस्था** – सोमाग्नि के मध्य में स्थित रहने वाली। चन्द्रमा और अग्नि के मध्य में शक्ति रूप में रहने वाली।

315. **सूर्याग्निमध्यस्था** – सूर्य के ताप के मध्य में स्थित रहने वाली। तात्पर्य है सूर्य के तेज से भी अधिक तेज वाली। सूर्य से अधिक तेज वाली होना स्वाभाविक है अन्यथा सूर्य के तेज को सहन नहीं कर सकती हैं।

316. **मणिमण्डलवासिनी** – मणियों के समूह के मध्य में निवास करने वाली। मणि द्वीप में रहने वाली।

317. **द्वादशारसरोजस्था** – बारह पंखुड़ियों के हृदय कमल में निवास करने वाली। अनाहत चक्र में निवास करने वाली।

318. **सूर्यमण्डलवासिनी** – सूर्य मण्डल में अर्थात सूर्य के गोले में निवास करने वाली।

319. **अकलङ्का** – बदनामी के दाग से रहित। देवी कोई बुरा कृत्य नहीं करती हैं अतः बुरा कृत्य से होने वाले कलंक या दाग से रहित हैं। कलंक से रहित अर्थात विशुद्ध तुरीय चैतन्य स्वरूपा।

320. **शशाङ्काभा** – चन्द्रमा की कान्ति के समान कान्ति वाली।

321. **षोडशारनिवासिनी** – सोलह पंखुड़ियों वाले कमल के मध्य में निवास करने वाली। विशुद्धि चक्र में निवास करने वाली। इस चक्र में 16 पंखुड़ियाँ हैं।

322. **डाकिनी** – राक्षसों को भयभीत करने के लिए गति करने वाली, चेष्टा करने वाली। दुष्टों को भयभीत करने के लिए विचरण करती रहती हैं। जो भक्तों के भय दूर करने के लिए चेष्टा करती है। डाय अकति इति डाकिनी। डाय का अर्थ है भय के लिए अथवा भय देने या दूर करने के लिए। अक् कुटिलायां गतौ धातु से अक् का अर्थ कुटिल गति करना है। अकति का अर्थ है गति करना, चेष्टा करना। ड का एक अर्थ शिव भी होता है। डम् प्रति अकति, अर्थातः शिव की ओर जाने वाली अर्थात शिव के साथ रहने वाली, यह भी डाकिनी का एक अर्थ हुआ। डीङ् विहायसौ गति धातु होती है जहाँ डीङ् का अर्थ आकाश में गति करना है। डीङ् धातु में ड प्रत्यय लगाने से ड बनता है। आकाशीय गति के लिए चेष्टा करने वाली अर्थात आकाश में उड़ने वाली, यह अर्थ भी डाकिनी का हुआ।

323. **राकिनी** – माता राकिनी के स्वरूप वाली। राका अर्थात पूर्णिमा की तरह शीतलता प्रदान करने वाली। रा अर्थात राग/प्रेम/धन आदि के लिए गति करती है अर्थात प्रवृत्त होती है। तात्पर्य हुआ कि लोगों को धन, प्रेम आदि इसी से मिलता है। अकति का अर्थ है चेष्टा करना अर्थात गति करना अर्थात प्रवृत्त होना। र का अर्थ अग्नि तत्व। अग्नि तत्व को जाग्रत करती हैं, सिद्ध करती हैं। अग्नि तत्व के लिए चेष्टा करती हैं अर्थात अग्नि तत्व को सिद्ध कर देती है जाग्रत कर देती है। राय अकति इति राकिनी। अग्नि तत्व सिद्ध होने पर व्यक्ति को अग्नि जला नहीं सकती। जब चाहें, अग्नि को प्रकट कर सकती हैं। एक स्थान में राकिनी शब्द का अर्थ दिया गया है। रा – राति – देने वाली, सर्वसुख देने वाली राकिणी। यह शब्द रा राति धातु से बनाया गया है जिसका अर्थ होता है देना। क्या देना, यह हम चिन्तन करके पता लगाने की कोशिश करते हैं कि कौन सा अर्थ उपयुक्त हो सकता है। राकायाम् अकति इति राकिनी अर्थात जो पूर्णिमा की रात में भ्रमण करती हैं, वह राकिनी हैं। पूर्णिमा सबसे सुन्दर है अतः सुख देती है। जो भी सुन्दर होता है वह सुख देता है। राका इव अकति अर्थात पूर्णिमा की रात की तरह (सबको सुख और शीतलता देने के लिए) भ्रमण करती है जो। राका का अर्थ है पूर्णिमा। र का अर्थ अग्नि भी होता है तब र रूपेण अकति इति राकिनी। अर्थात जो अग्नि के रूप में विचरण करती है अर्थात स्पन्दित होती है, अर्थात व्याप्त होती है वह है राकिणी। अग्नि स्थूल और सूक्ष्म दोनों हैं। सूक्ष्म अग्नि सब जगह है, लकड़ी में, समुद्र में सभी जगह। अग्नि रूप (सूक्ष्म रूप में) में सभी जगह स्पन्दन करने वाली।

324. **लाकिनी** – सभी दुखों को/कष्टों को लीन कर देने वाली अर्थात दूर कर देने वाली। लीयते अकम् अस्याम् इति लाकिनी। अकम् का अर्थ है कष्ट या दुख। पृथ्वी तत्व के लिए चेष्टा करने वाली अर्थात पृथ्वी तत्व को जाग्रत, प्रकाशित, सिद्ध करने वाली। ल का अर्थ है पृथ्वी तत्व । अकति का अर्थ है चेष्टा करना। पृथ्वी तत्व के सिद्ध हो जाने पर वह उन्हें खींच नहीं सकता तुम चट्टानों को भी बिना अवरोध के पार कर जाओगे। किसी स्थान में लाकिनी का अर्थ दिया गया है अविद्या को चूसकर विद्या देने वाली। ला धातु का अर्थ है चूसना। चूसने की स्वभाव वाली लाकिनी होती है।

325. **काकिनी** – काकिनी का रूप धारण करने वाली अर्थात काकिनी के स्वरूप वाली। काय अकति इति काकिनी। अमृत के लिए चेष्टा करती है अर्थात पीती है वह है काकिनी। सहस्रार से टपके अमृत के लिए चेष्टा करती हैं अर्थात अमृत को पीती हैं इसलिए इसका नाम काकिनी हैं। इस अमृत का पान करने के कारण इसकी आँखें नशीली हैं। क = अमृत, काय अकति इति काकिनी से भी इसका अर्थ निकल सकता है। संस्कृत में ककु

धातु का अर्थ होता है कामना करना। इसके रूप ककते इस प्रकार चलते हैं। कामना करने के लिए चेष्टा करने वाली। क्या कामना करती है, दूसरों की कामना पूर्ति हो, यह कामना करती है। देवी के पास सब कुछ है, कुछ अभाव नहीं, अतः उसकी कामना अपने लिए नहीं हो सकती। सभी की मनोकामना पूरी करने वाली यह अर्थ हुआ। काकयते/काकयति इति काकी, काकी में णिनि प्रत्यय लगाने से काकिन् बना, स्त्रीलिंग में काकिनी। काकयते का अर्थ है कामना करवाती है। इस प्रकार काकिनी का अर्थ हुआ कामना करवाने वाली अर्थात कामना पूरी करने वाली। ककते इति काकी से भी काकिनी बना। ककते का अर्थ है कामना करना। संस्कृत में कक् धातु का अर्थ है शब्द करना, कामना करना, अभिमान करना। काकवत् अकति अर्थात कौवों की तरह गति या चेष्टा करने वाली अर्थात हमेशा सचेष्ट रहने वाली। काक का अर्थ है कौवा जो हमेशा सचेष्ट रहता है। किसी किताब में काकिनी का अर्थ दिया गया है नाद तत्व को जगाने वाली। कै का अर्थ है शब्द करना। सभी शब्दों का मूलरूप जो नाद है उसको अर्थात् नादतत्व को जगाने वाली काकिनी होती है। इसलिए उसके चार मुँह चार वेद होते हैं। काकयते/काकयति इति काकी शब्द बना। जो कामना करवाती है अर्थात तात्पर्य में अर्थ हुआ जो कामना पूरी करती है। पहले काकिन् शब्द बना उसके बाद काकिनी बना। क = ब्रह्म = आनन्द, काय अकति अर्थात जो अमृत के लिए चेष्टा करती है या विचरण करती है। देवीनामविलास में लिखा है कि अमृत पीने से इन देवी की आँखें घूर्णित हैं। अमृत के लिए चेष्टा करने का तात्पर्य है कि जो अमृत का पान करती है। पीने की क्रिया भी एक चेष्टा करना है। देवीनामविलास में श्लोक का अर्थ है सर्वोच्च अमृत के रस के आस्वादन से घूर्णित। नशे में आँखें झूमने लगती है अलसाई सी होती हैं। अमृत रस आस्वाद से घूर्णित नयनों से जानने योग्य। ज्ञान रूपी शरीर वाली। उनके नयनों से ही पता चलता है कि वह काकिनी है। काक+इनि से काकिनी बन सकता है जहाँ इसका अर्थ होगा कौओं से युक्त अर्थात जिसके आस पास कौए रहते हैं। धूमावती देवी कौओं से युक्त हैं, उनका वाहन कौआ चलाता है।

326. **शाकिनी** – शाक अर्थात शक्ति/बल से युक्त। शाक शक्ति या बल का प्रतीक है। शाक सब्जी को अपने शरीर में धारण करने वाली शाकम्भरी कहलाती हैं। जिनका शाक को धारण करने वाली शाकम्भरी शक्ति से अभेद है। कर्म का नाश करने वाली। कर्मों को चूस लेने वाली। ऐसा लगता है अंग्रेजी में suck संस्कृत के शक जैसा है, संस्कृत में शो तनूकरणे धातु होती है जिसका अर्थ है पतला करना अर्थात सोख लेना। कभी कभी निम्न आत्माओं को भी शाकिनी कह देते हैं जो खून आदि को चूस कर व्यक्ति को बेहद पतला, कमजोर कर देती हैं देवी के प्रसंग में इसका अर्थ होगा कर्मों को चूस लेने वाली या जन्म मरण का हेतु रूप कर्मों को नष्ट कर सोख लेने वाली। जो दिगम्बरा है और सभी दिशाओं में श्रेष्ठ रूप से व्याप्त है और जिसकी आराधना करने पर स्तुति करने वाला शिवत्व को प्राप्त करते हैं। समस्त प्राणियों में अधिष्ठित (विश्व रूप से स्थित) जन्म मरण के हेतु रूप कर्मों का नाश करने वाली वह भगवती शाकिनी स्वर्ग में विहार करने का सुख देने वाली है। सारे भोगों की अधिष्ठात्री अर्थात स्वामिनी। अधिष्ठाता का अर्थ है जो उसमें रहते हुए उसका मालिक हो तथा जिसके कारण उस वस्तु में क्रिया होती हो, अधिष्ठाता के बिना उसकी सत्ता नहीं है, सत्ता का मालिक। शाक का अर्थ शक्ति भी होता है इस प्रकार शाकिनी का अर्थ अत्यन्त या सर्वाधिक शक्तिशालिनी। संस्कृत में कई जगह स के स्थान पर श और श के स्थान पर स प्रयोग हो सकता है। अतः सो अन्तकरणे एवं शो अन्तकरणे दोनों हो सकता है। (यदि साकिनी नाम है तो अर्थ होगा – जो शान्ति के लिए चेष्टा करती हैं या गति करती हैं। कहने का तात्पर्य है शान्ति लाने वाली। सायै अकति इति साकिनी। सा का अर्थ है शान्ति। अन्त करने के लिए हमेशा क्रियाशील या गतिशील रहने वाली ऐसा अर्थ भी कर सकते हैं। संस्कृत में धातु होती है शो अन्तकरणे। संस्कृत में कई बार श और स में अभेद होता है। हर पल सृष्टि स्थिति अन्त हो रहा है। हमारे शरीर में हर पल नई कोशिकाएं बन रही हैं जो कुछ समय तक विराजमान रहतीं हैं तथा कुछ समय बाद मर जाती हैं। साक शब्द का अर्थ सर्प भी है। सर्पाकार में स्थित कुण्डलिनी को यहाँ साकिनी कहा गया है। सा इव अकति। सा का अर्थ है चन्द्रमा।

चन्द्रमा की तरह भ्रमण करने वाली। चन्द्रमा शीतलता और सुख देता है। भक्तों के लिए (चन्द्रमा की तरह शीतलता और सुख देने के लिए) भ्रमण करने वाली। सा का अर्थ है लक्ष्मी। सा भूत्वा अकति अर्थात जो लक्ष्मी रूप में विचरण करती है)।

327. **हाकिनी षट्‌चक्रेषु निवासिनी** – भव बन्धन को काटने वाली और छह चक्रों में निवास करने वाली। हाक् धातु का अर्थ है काटना। अपनी शक्ति को दिखलाती हुई छह चक्रों में निवास करने वाली। हाकिनी का अर्थ आकाश तत्व को जाग्रत या सिद्ध करने वाली, भी कर सकते हैं। ह का अर्थ है आकाश तत्व। कहीं पर लिखा है कि हाकिनी का अर्थ है जो लौकिक भोग आदि का त्याग कर चुकी है एवं अपने साधकों को लौकिक भोग आदि का त्याग कराके परमानन्द तत्व की ओर सहस्रार में ले जाती हो। हा धातु का अर्थ है त्याग करना। अतः हाकिनी इस नाम का प्रयोग त्यागशीलता के अर्थ में भी होता है। यहाँ त्याग का अर्थ है लौकिक भोग आदि का त्याग। ये ऐहिक भोग अशाश्वत होते हैं, इनको त्याग करने के बाद ही शाश्वत सुख की प्राप्ति होती है। हाकिनी के रूप में श्रीमाता ललिताम्बा साधकों को परमानन्द तत्व की ओर सहस्रार में ले जाती है। हाकिनी अर्थात त्यागशील या अपने भक्तों से त्याग कराने वाली। देवीनामविलास ग्रन्थ में हाकिनी का अर्थ वैद्यों की देवता बताया गया है। जब तक हाकिनी की दया नहीं होती तब तक कोई विद्वान व्यक्ति भी अमृतसिद्धि नहीं प्राप्त करता। अनेक औषधियों के निर्माण की विधि को जानकार भी जब तक गुरू से व्यवहार में अर्थात प्रयोगात्मक रूप से वह चीज न हस्तगत की जाए तब तक रसायन की सिद्धि नहीं होती।

328. **सृष्टि–स्थितिविनाशिनी** – जगत की सृष्टि, कुछ समय तक ठहराव एवं बाद में पूर्ण नाश करने वाली। जगत की सृष्टि करती है, बनाये रखती हैं और फिर विनाश कर देती हैं।

329. **सृष्टयन्ता** – प्रलय काल में सृष्टि का अन्त कर देने वाली।

330. **सृष्टिकारिणी** – सृष्टि कर देने वाली अर्थात सृष्टि की रचना करने वाली। विश्व/प्रकृति की रचना करने वाली।

331. **श्रीकण्ठप्रिया** – विष्णु को प्रिय, विष्णु जी को अच्छी लगती हैं। श्रीकण्ठ विष्णु जी का नाम है। भगवान शिव की प्रिय अर्थात उन्हें अच्छी लगने वाली। शिव को प्रसन्न करने वाली।

332. **हृत्‌कण्ठा** – सुन्दर हृदय और सुन्दर कण्ठ से युक्त।

333. **नन्दाख्या** – नन्दा है संज्ञा या नाम जिसका। जो आनन्दित करे वह नन्दा है।

334. **बिन्दुमालिनी** – गोलाकार आकृति वाले ग्रह नक्षत्रों को धारण किये हुये अर्थात् ब्रह्माण्ड स्वरूपा या आकाश स्वरूपा। सभी ग्रह नक्षत्र बिन्दु के आकार या गोलाकार आकार में दिखते है। मल् धारणे धातु से शब्द के आगे माला/माली/मालिनी शब्द लगने पर धारण करने वाला अर्थ आता है। गोलाकार आकृति वाले ग्रह नक्षत्रों को माला के रूप में धारण करने वाली अर्थात् उनसे सुशोभित। बिन्दु से युक्त अर्थात् श्रीयन्त्र स्वरूपा। श्रीयन्त्र में सबसे ऊँचाई पर बिन्दु होता है। बिन्दु का अर्थ शिव या विद्वान भी होता है। शिव से या विद्वानों से माला की तरह सुशोभित। मोतियों की माला को धारण करने वाली। बिन्दु के आकार अर्थात गोल आकार वाले मोती होते हैं। अतः बिन्दु का अर्थ मोती लिया गया है। बिन्दु को अर्थात श्रीचक्र के बिन्दु को सुशोभित करने वाली। माला जिसे पहनाई जाती है, उसे सुशोभित करती है। बिन्दु को धारण करने वाली अर्थात श्रीयन्त्रस्वरूपा। मल धारणे धातु होती है। अतः मालिनी का अर्थ धारण करने वाली हो जाता है। शिव और शक्ति के मिलन से नाद और बिन्दु उत्पन्न होते हैं। नाद से समस्त शब्द (नाम) एवं बिन्दु से समस्त रूप उत्पन्न होते हैं और यह जगत नाम रूपात्मक है। आकार या रूप के स्रोत बिन्दु को धारण करने वाली, इस नाम का यह अर्थ हुआ। घनीभूता, अदृष्टा, सभी शक्तियों से युक्त सूक्ष्मतम् कण बिन्दु है जिससे सारे विश्व की उत्पत्ति होती है। Bindu

is undivided light of consciousness. यह बिन्दु इलेक्ट्रान प्रोटॉन आदि से भी छोटा है अर्थात सबसे छोटा है। जब कहा जाता है कि छोटे से छोटा एवं बड़े से बड़ा तो उसका तात्पर्य होता है आकार में सबसे छोटा किन्तु बल में सबसे बड़ा। ऐसे बिन्दु को धारण करने वाली। पराशक्ति से ही बिन्दु की उत्पत्ति हुई है अतः पराशक्ति ही बिन्दु को धारण किये हुये है। दोनों भौं के बीच के स्थान अर्थात् आज्ञा चक्र से निकलने वाले तेज को भी बिन्दु कहते है। ऐसे तेज को धारण करने वाली। मल् धारणे धातु से माला, माली या मालिनी शब्द बनाने पर धारण करने वाली अर्थ आता है। बिन्दु का अर्थ अनुस्वार भी है, बिन्दुमालिनी अर्थात अनुस्वार को धारण करने वाली अर्थात बीज मन्त्र स्वरूपा या जिनके मन्त्र में बहुत से बीज मन्त्र हैं। माला का अर्थ समष्टि भी होता है अर्थात बहुत से बीज मन्त्रों से युक्त मन्त्रों वाली।

335. **चतुष्षटिकलाधारा** – चौंसठ कलाओं की आधार (बुनियाद, नींव, आश्रय)। चौसठ कलाओं को पूर्णरूपेण धारण करने वाली। आ अर्थात पूर्ण रूप से, धारा अर्थात धारण करने वाली।

336. **देहदण्डसमाश्रिता** – शरीर रूपी डण्डे में रहने वाली आत्मा स्वरूपा। शरीर जो दण्ड की तरह है, उसका सहारा लिए हुए अर्थात अवतार के लिए साकार रूप धारण करने वाली।

337. **माया** – एक अखण्ड सत्ता में नानात्व का भेद कराने वाली शक्ति। अहम् और इदम् में भेद करने वाली शक्ति माया है। अन्यत्र अन्याकार अवभासिनी शक्ति माया है अर्थात वह शक्ति जिसके कारण व्यक्ति आत्मा में अनात्मा और अनात्मा में आत्मा समझने लगता है अर्थात शरीर को ही आत्मा समझने लगता है, क्षणभंगुर पदार्थों में ममत्व भाव विकसित कर लेता है। ईश्वर की अव्यक्त शक्ति जो जीव को ईश्वर से विमुख करती है तथा जिसके कारण मनुष्य सांसारिक पदार्थों, प्राणियों से आसक्त हो जाता है उसके प्रति राग या ममत्व भाव विकसित कर लेता है, माया है। वह शक्ति जिससे ईश्वर अपने को छिपा लेता है। ईश्वर की वह शक्ति जिससे वह जगत का निर्माण पालन व संहार करता है। असत्य में सत्य की प्रतीति कराने वाली शक्ति। ईश्वर की वह शक्ति जो सृष्टि का मूल कारण है तथा इसी से सृष्टि बनी रहती है। माया अर्थात अज्ञान या अविद्या। माया अर्थात जादू या इन्द्रजाल स्वरूपा। ब्रह्म की वह शक्ति जो सत्य छिपाती है, माया है।

338. **काली** – जगत के प्राणियों एवं पदार्थों के आयु की गणना करने वाली। कलयति का एक अर्थ गिनती करना भी होता है। आयु की गणना इसलिए करती हैं जिससे यह निर्धारित किया जा सके कि पदार्थ (जड़ या चेतन) को कितने समय तक अस्तित्व में रहना है।

339. **धृति** – वह शक्ति जिसके कारण व्यक्ति में धैर्य नामक गुण आता है। धैर्य स्वरूपा। धैर्य अर्थात कठिन परिस्थितियों से विचलित न होने का गुण या स्वभाव स्वरूपा। दृढ़ निश्चयस्वरूपा अर्थात् सत्य या ब्रह्म की प्राप्ति के निश्चय से कभी न हटने वाला भाव या गुण स्वरूपा। विपत्ति आने पर या ईश्वर प्राप्ति के प्रयास असफल होने पर भी अपने सिद्धान्तों को न छोड़ने वाला भाव या गुण धैर्य या धृति कहलाता है।

340. **मेधा** – धारणावती बुद्धि के रूप में। इसी शक्ति के कारण हमें चीजें याद रहती हैं। वह शक्ति जिसके कारण स्मृति देर तक संग्रहीत रहती है मेधा है। स्मृति स्वयं में अल्पकालिक भी हो सकती है। जिस विषय का विचार चल रहा है उस विषय की सम्पूर्ण विचार क्षमता मेधा है। वह शक्ति जिसके आधार पर स्मरण शक्ति का टिकाव होता है मेधा है। मेधा शक्ति प्रबल हो तो स्मरण शक्ति प्रबल होती है। आशुग्रहणबुद्धि अर्थात ऐसी बुद्धि स्वरूपा जिससे कोई भी चीज तुरन्त पकड़ में आ जाती है। मेधा+आ=मेधा, आ का अर्थ है देना। आशुग्रहण बुद्धि देने वाली। कण्डवादिगण में मेधा का अर्थ आशुग्रहण दिया गया है। मेधृ धातु का अर्थ संगमन, हिंसा भी दिया गया है। संगमन का अर्थ है परस्पर मिलकर ज्ञान प्राप्त करना, सहयोग से समाज में गतिशील होना, समान रूप से भोग्य पद्धार्थो को प्राप्त करना, मिलकर देवपूजा करना, सात्विक दान लेना, भौतिक पदार्थो की वैज्ञानिक रीति से संगमन कर लोकहित में सदुपयोग करना। देवपूजा में भी संगतिकरण शब्द आता है। हिंसा का अर्थ हुआ कि

समाज के विघातक तत्वों की हिंसा करने वाली अर्थात सामाजिक संतुलन बनाएं रखने वाली। व्यक्ति और समाज के पारस्परिक हितों के विघातक तत्वों की हिंसा करने वाली। शंकराचार्य जी के अनुसार मेधा का अर्थ है– सर्वज्ञानलक्षणा बुद्धि अर्थात सारा ज्ञान है लक्षण जिसका, ऐसी बुद्धि स्वरूपा अर्थात सर्वज्ञानमयी। मेधृ संगमन धातु है और संगमन का एक अर्थ है जोड़ना। जीवात्मा को परमात्मा से जोड़ने वाली। मेधृ धातु का अर्थ हिंसा करना भी है। मोक्ष या परमात्मा के रास्ते आने वाले सभी विघ्नों की हिंसा करने वाली।

मेधृ संगमने धातु होती है। संगमन का अर्थ होता है जोडना, साथ–साथ चलना। ऐसी बुद्धि स्वरूपा जो व्यक्ति को समाज के अनुकूल चलाती है। ऐसी शक्ति या ऐसी बुद्धि स्वरूपा जो समाज के विघटनकारी तत्वों या नकारात्मक शक्तियों की हिंसा करती है। संगच्छन्ते अस्याम् इति मेधा अर्थात जिसमें सभी जाते है, अच्छे–बुरे चाहे जो हो, यदि शरणागत होते है तो इन्हें आश्रय दिया जाता है। अन्यथा भी जब समस्त जड़ चेतन पदार्थ उन्ही में है तो सभी उन्ही में आते–जाते है। बुद्धि में जिसे धारण किया जाता है अर्थात ऐसे विचार या भावनास्वरूपा जिसे बुद्धि में धारण किया जाता है। मतौ धीयते इति मेधा। मति में धा धातु लगाकर क प्रत्यय लगाया जाता है जिसमें मति का मे हो जाता है। धनी लोग बार–बार धन का ही विचार करते है अर्थात धन के विचार को धारण करते है। कैसे आमदनी बढ़ानी है, व्यापार बढाना है, धन को कहाँ लगाना है, कहाँ दान देना है इस प्रकार के विचार करते रहते है अतः मेधा का अर्थ धन भी है। दक्ष प्रजापति की एक कन्या का नाम भी मेधा है जिनका विवाह धर्म के साथ हुआ था। 16 मातृकाओं में एक मातृका का नाम मेधा है, उसे मातृका के स्वरूप वाली या उस मातृका से अभेद है जिनका। एकाक्षरी कोष में मे का अर्थ सारंग (मृग) दिया गया है। मृग वेद का प्रतीक है। मृग (वेद या वेद का ज्ञान) को धारण करने वाली।

341. **क्षुधा** – भूख स्वरूपा। जिस शक्ति के कारण मनुष्य को भूख का आभास होता है। भोजन या ज्ञान या आत्मज्ञान किसी की भी क्षुधा हो सकती है।

342. **तुष्टि** – अन्य की आकांक्षा का अभाव होने पर मन में होने वाली सुखानुभूति या भाव तुष्टि है। इस भाव के स्वरूप वाली। देवी या देवता देने वाले होते है अर्थात उनके पास जो होता है, उसे दे देते हैं। इस प्रकार लक्षणा शक्ति द्वारा इस नाम का अर्थ हुआ अपने भक्तों को तुष्टि देने वाली अर्थात तुष्टि की अवस्था देने वाली। यस्याः सकाशात् तुष्टिः भवति, सा तुष्टिः इति उच्यते। जिसकी समीपता से तुष्टि मिलती है अर्थात तुष्टि देने वाली भी तुष्टि है। सांख्य दर्शन में 9 प्रकार की तुष्टि मानी गई है जो आगे बढ़ने में रूकावट है। इसमें व्यक्ति जो है उसी को पूर्ण मान लेता है, यद्यपि पूर्णता की अवस्था नहीं आयी है। इस कारण व्यक्ति और अधिक जानने या प्राप्त करने का प्रयास नही करता है। वह शक्ति जिसके कारण व्यक्ति, जो भी उपलब्ध है, उससे अधिक की इच्छा नहीं करता। वह शक्ति या गुण जिससे व्यक्ति सदा प्रसन्न रहता है। सन्तोष, तृप्ति, प्रसन्नता स्वरूपा। तुष्टि स्वरूपा अर्थात भक्तों को सन्तुष्ट कर देने वाली। तुष्टि अर्थात सदा प्रसन्न रहना। तुष्टि नामक गुण देने वाली। देवी या देवता देने का कार्य करते हैं। तुष्टि नामक गुण में विराजमान। जो आपके पास है, उसके अलावा अन्य चीजों में उदासीनता एवं तुच्छ बुद्धि, तुष्टि है। शब्द के आगे ''में विराजमान'' या ''का कारण'' लगा देने से भी शब्द का अर्थ निकल आता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ तुष्टि नामक गुण में विराजमान। तुष्टि का कारण अर्थात तुष्टि देने वाली।

343. **महाद्युति** – श्रेष्ठ प्रकाश वाली या श्रेष्ठ प्रकाश से युक्त। सर्वाधिक या अतिशय प्रकाश वाली। महा का अर्थ अतिशय, सर्वाधिक होता है।

344. **हिङ्गुला** – सिन्दूर (ईंगुर) को धारण करने वाली। हिङगुम् लाति ग्रह्णाति इति हिङगुला। हींग के गुण को धारण करने वाली अर्थात रोग निवारिका अर्थात संसार के कष्टरूपी रोगों का निवारण करने वाली। हिंगुल

वृक्ष के समान फलों से हमेशा लदी हुई, हमेशा पुष्पित रहने एवं मधुर सुगन्ध निकालने वाली। फलों से लदे होने का तात्पर्य है भक्तों को हमेशा फल देने वाली और पुष्पित होने का तात्पर्य है हमेशा प्रसन्न रहने वाली। मणिद्वीप, जो देवी का निवास स्थान है, में हिंगुल वृक्ष पाया जाता है जो हमेशा फल से लदा रहता है, हमेशा पुष्पित और पल्लवित रहता है तथा इससे मीठी सुगन्ध निकलती है जो द्वीप के कण कण में फैल जाती है। हींग के गुण को धारण करने वाली अर्थात हींग की तरह रोग निवारिका अर्थात कष्टों को दूर करने वाली। हींग के वर्ण को धारण करने वाली। हिंगु का अर्थ होता है हींग। ला आदाने से ला का अर्थ हुआ ग्रहण करना। सिंदूर की तरह लाल आभा वाली। हिङ्गुल का एक अर्थ सिन्दूर भी होता है। हिंगुल शब्द का सिन्दूर (ईगुर), हींग अर्थ होता है। हिंगु का अर्थ है हींग, जतुक (लाक्षा), सिन्दूर। लाक्षा से महावर बनता है जिसे महिलाएं पैरों में लगाती हैं। हिंगुम् लाति धारयति अर्थात जो महावर को लगाऐ हुए हैं वह हिंगुला है। हिमम् गच्छति, गमयति इति हिंगु। गम् धातु में डु प्रत्यय लगाने से भी गु शब्द बन सकता है, तब हिंगु का अर्थ होगा बर्फ या शैत्य। डित् प्रत्यय लगाने से टि अर्थात गम् के अम् का लोप हो जाता है। शैत्य से तात्पर्य मस्तिष्क की जड़ता, दरिद्रता से है। पैसे में गर्मी होती है, यह अपने सुना होगा। गरीबी या दरिद्रता का तात्पर्य है ठण्डापन। मस्तिष्क ठण्डा हो गया अर्थात काम नहीं करता अर्थात मस्तिष्क की जड़ता या मूर्खता। लाति का अर्थ धारयति भी होता है और नाशयति भी होता है। इस प्रकार हिंगुला का अर्थ हुआ दरिद्रता, मस्तिष्क की जड़ता का नाश करने वाली, हटाने वाली।

345. **मङ्गला** – मंगल को देने वाली। भविष्य के अच्छे कार्यों में सफलता एवं सुरक्षा ये मंगल के मुख्य पहलू होते हैं। जिनका नाम लेने से अच्छे कार्य बन जाते हैं वह मंगला है। सुख को लाने वाली एवं दुख गलाने वाली। मंगम् (सुखम्) लाति इति मंगला, मम् (दुखम्) गलति इति मंगला। जिनका नाम लेने से सभी अच्छे कार्यों में सफलता प्राप्त होती है वह मंगला हैं। मम्+गिरण से भी अर्थ निकलता है। तब अर्थ होगा अनर्थों या कष्टों को निगलने वाली। मस्ज् धातु से मस्जयति रूप होता है जिससे भी मंगला शब्द बन सकता है। तब अर्थ होगा भक्तों के पापों को धो डालने वाली। माम् गम अर्थात मुझे प्राप्त हो, जिसके बारे में ऐसी चाहना होती है। मंगल अर्थात शुभ, शिव रूप। चंचल गति का नाश करने वाली अर्थात् मन की चंचल गति का नाश करने वाली। मगि चपलायाम् गतौ। मग् धातु का अर्थ चंचल गति एवं लाति का अर्थ नाश करना। ज्ञानात्मिका वाक् स्वरूपा। मं का अर्थ है ज्ञान, गलम् का अर्थ है कण्ठम्/सुनादम्। ज्ञानयुक्त अच्छी वाणी को धारण करने वाली। लाति का अर्थ है धारण करना। मंगल + आ। मंगल का अर्थ है मोक्ष और आ का अर्थ है देना। मोक्ष देने वाली मंगला है। मंगल का अर्थ हर्ष, सम्पत्ति, कल्याण भी है। इस प्रकार मंगला का अर्थ हुआ हर्ष देने वाली। सम्पत्ति (भौतिक और आध्यात्मिक दोनो सम्पत्ति) देने वाली। कल्याण देने वाली। मंगल होना अर्थात् भावी जीवन में विध्न, कष्ट का अभाव होना, सुरक्षा होना एवं कार्य में सफलता मिलना अर्थात् ग्रहों का अनुकूल होना। इन सब चीजों को देने वाली मंगला है। मं का अर्थ है ज्ञान और गल का अर्थ है सुन्दरकंठ या सुनाद, इस प्रकार मंगला का अर्थ हुआ ज्ञानयुक्त सुन्दर नाद वाली या कण्ठ वाली।

346. **सीता** – जनक पुत्री सीता से अभेद है जिनका या सीता के समान पतिव्रता। खेत की पंक्ति अर्थात सीर से उत्पन्न सीता से अभेद है जिनका। सीराग्रतो जाता इति सीता। उणादिकोष में सीता शब्द की व्युत्पत्ति दी गई है–स्यति कर्मसमाप्तिम् करोति इति सीता अर्थात जो कर्म की समाप्ति करती है अर्थात जो जिस काम को आरम्भ करती है उसे हर हालत में पूरा करती हैं, सीता है। प्रतीकों के आधार पर सीता को पवित्र बुद्धि, पवित्र सोच का प्रतीक माना गया। इस प्रकार सीता का अर्थ हुआ पवित्र बुद्धि या पवित्र सोच स्वरूपा। कृषि क्षेत्र की अधिष्ठात्री देवी।

347. **सुषुम्नामध्यगामिनी** – सुषुम्नानाड़ी के मध्य में गमन करने वाली अर्थात कुण्डलिनी शक्ति स्वरूपा।

348. **परघोरा** – शत्रुओं के लिए अत्यधिक भयंकर रूप धारण करने वाली। पर का अर्थ है शत्रु।

349. **करालाक्षी** – राक्षसों के लिए विकराल (भयंकर) नेत्र को धारण करने वाली। अपनी विशेष आकृति या नेत्रों से अग्नि निकलने के कारण वे नेत्र भयंकर लगते हैं।

350. **विजया** – विशेष जीत वाली या स्थाई जीत वाली। बड़े बड़े दैत्यों, जो वरदान के कारण लगभग अमर थे, उन पर जीत हासिल करने वाली। एक बार जीत हासिल कर ली तो पराजित व्यक्ति दुबारा लड़ने की सोच भी नहीं सकता, यह है स्थाई जीत। वि अर्थात विश्व अर्थात सभी जगह, सभी जगह अर्थात सभी पर जीत हासिल करने वाली। बिना किसी की सहायता से जीत प्राप्त करने वाली। विना शब्द से वि ले लिया

351. **जयदायिनी** – जीत देने वाली। अपने उपासको को जीवन संग्राम में जीत का वरदान देने वाली।

352. **हृतपद्मनिलया** – हृदय कमल में निवास करने वाली। हृदय कमल अर्थात अनाहत चक्र जिसमें 12 पंखुड़ियाँ होती हैं।

353. **भीमा** – भीम (शिव) की शक्ति स्वरूपा। भीम के समान अत्यधिक बलवान एवं विशालकाय। भीम शब्द बल और विशालता का प्रतीक है। भयंकर रूप वाली। दुष्टों पर क्रोध करने वाली। भीम कोपे धातु होती है। जिससे सभी भयभीत होते हैं। विभ्यति यस्याः सर्वे, सा भीमा इति उच्यते। अग्न्यादयो अस्याः विभ्यति। भयात् अस्याः अग्निस्तपति। जिसके भय से अग्नि, सूर्य, वायु आदि देवता अपने कार्य को सुचारू रूप से करते हैं उस परमसत्ता का नाम भीम या भीमा है। जो शत्रुओं के लिए भयंकर है। शत्रुभयंकरत्वात् भीमा। जो धर्मभीरू हैं अर्थात धर्म से विचलित होने पर डरते हैं अर्थात धार्मिक हैं उन्हें सम्मान देने वाली। भीरून् (धर्मभीरून्) मानयति इति भीमा। संस्कृत में कभी कभी आरम्भ का अ अक्षर छूट जाता है, अतः भीमा का अर्थ अभीमा भी कर सकते हैं अर्थात जो सज्जनों के लिए भयंकर नहीं है। भीम अर्थात शिव में विराजमान। भयोत्पादक पदार्थों जैसे नृसिंह आदि के अन्दर विचरण करने वाली। भीमान्तर्यामी भीमा। भक्तों को डरो मत, ऐसा विश्वास दिलाने वाली। भी अर्थात भय, मा अर्थात नहीं। भीः मा इति प्रत्यायन् अभयदा भीमा। भय का निर्माण करने वाली अर्थात दुष्टों के लिए भय का निर्माण करने वाली या देने वाली। भियं माति निर्माति। सज्जनों के भय का नाश करने वाली। भियम् माति नाशयति इति भीमा। दुष्टों में भय का निर्माण करने वाला पैदा करने वाला एवं सज्जनों के भय को नाश करने वाला।

354. **महाभैरवनादिनी** – बहुत भयंकर गर्जना करने वाली। भै अर्थात भयंकर, रव अर्थात शब्द या आवाज।

355. **आकाशलिङ्गसम्भूता** – तारक लिंग में सम्यक् सत्ता है जिनकी। तारक लिंग को आकाश लिंग तथा हाटकेश्वर लिंग को पाताल लिंग कहते हैं। भू सत्तायाम् धातु होती है। रामेश्वरम में हनुमान जी द्वारा कैलाश से लाए गए शिवलिंग जो हनुमान शिवलिंग के नाम से प्रसिद्ध है, वह भी आकाश शिवलिंग माना जाता है। आकाश लिंग से उत्पन्न होने वाली।

356. **भुवनोद्यानवासिनी** – भुवन अर्थात 14 लोकों रूपी उद्यान में निवास करने वाली।

357. **महत्सूक्ष्मा** – अतिशय सूक्ष्म। परमात्मा के बारे में कहा जाता है कि वह अणु से भी सूक्ष्म हैं।

358. **कङ्काली** – कंकाल (अस्थिपंजर) के भयंकर रूप को धारण करने वाली। कंक पक्षियों से सुशोभित। कंकैः अल्यते। कंक श्मशान में रहने वाला एक पक्षी है। कंक नामक पक्षियों के भीतर रहने वाली। कंकेषु आलयः निवासः यस्या सा। दुष्टों के सुख का नाश करने वाली। कम् सुखम् कालयति नाशयति। सज्जनों को सुख देने वाली।

359. **भीमरूपा** – भयंकर रूप वाली। उग्र रूप वाली। भीमम् (शिवम्) रूपयति अर्थात शिव को देखने वाली या शिव पर दृष्टि डालने वाली। शिव को स्वरूप देने वाली अर्थात उनकी भी रचना करने वाली।

360. **महाबला** – अतिशय बल शालिनी। सर्वाधिक बल वाली। शब्द के आगे महा लगने पर सर्वाधिक, अतिशय अर्थ आते हैं।

361. **मेनकागर्भसम्भूता** – मेनका के गर्भ से उत्पन्न होने वाली पार्वती से अभेद है जिनका। पार्वती जी की माँ का नाम मेनका था।

362. **तप्तकाञ्चनसन्निभा** – तपाए गये सोने के समान चमकने वाली। तपाया गया सोना शुद्ध और उज्जवल होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ तपाये गये सोने के समान उज्जवल।

363. **अन्तरस्था** – हृदय के मध्य में विराजमान या निवास करने वाली।

364. **कूटबीजा** – श्री विद्या मन्त्र के तीनों कूट बीजों के स्वरूप वाली। कूट का तात्पर्य है वर्ण समुदाय। इन कूटों (वर्णसमुदायों) में रहने वाली बीज मन्त्रों के स्वरूप वाली। श्रीविद्या मन्त्र के तीन भाग किये गये हैं जो तीन कूट या तीन वर्ण समुदाय हैं। कूट विद्या के भी बीज है जिसमें। जिनके अर्थ गूढ़ हैं, समझना कठिन है ऐसे बीजमन्त्रों वाली। मन्त्र देवी का नाद शरीर होता है और देवी मन्त्र रूप में भी हैं। कूट का अर्थ प्रधान या श्रेष्ठ भी होता है। श्रेष्ठ बीज मन्त्रों वाली। विशुद्ध व्यंजन अक्षर को भी कूट कहते हैं।

365. **चित्रकूटाचलवासिनी** – चित्रकूट पर्वत पर निवास करने वाली।

366. **वर्णाख्या** – अक्षर नाम वाली। मातृकाक्षर भी देवी का रूप है। साकार रूप में वर्णों से युक्त शरीर वाली अर्थात जिनका शरीर वर्णों से बना है। सुन्दर स्वरूप वाली।

367. **वर्णरहिता** – निराकार रूप में वर्णों से रहित। ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि वर्णों से रहित अर्थात चैतन्य स्वरूपा। चैतन्य या आत्मा न तो ब्राह्मण है, न क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र है।

368. **पञ्चाशद्वर्णभेदिनी** – पचास वर्णों या अक्षरों के प्रकारों वाली।

369. **विद्याधरी** – विद्या को धारण करने वाली। स्त्री देवता के मन्त्र को विद्या कहते है। उस विद्या को धारण करने वाली। विद्याधर नामक देवताओं की शक्ति स्वरूपा या उनकी पत्नियों से अभेद है जिनका।

370. **लोकधात्री** – सम्पूर्ण लोकों को धारण करने वाली। सम्पूर्ण लोकों का माता के समान भरण पोषण करने वाली।

371. **अप्सरा** – अप्सरा स्वरूपा अर्थात दिव्य आकृति या विलक्षण सौन्दर्य वाली। जल में विचरण करने वाली। अप्सु सरति इति अप्सरा। अप्सु अर्थात जल में, सरति अर्थात गति करता/करती है। अप्स का अर्थ है रूप, र मतुप् (युक्त) अर्थ में है। रूपवती अर्थात अत्यन्त सुन्दर।

372. **अप्सरः प्रिया** – अप्सराओं को प्रिय है अर्थात अप्सरा जिन्हें पसन्द करती हैं।

373. **दीक्षा** – दीक्षा स्वरूपा। यज्ञ करने की अधिकारिता दिलाने वाली। दीक्षा से ही कोई व्यक्ति यज्ञ करने का अधिकारी होता है। गुरूमन्त्र स्वरूपा। दीक्षा क्रिया भी देवी ही हैं। समस्त क्रियाऐं, गुण, समय देवी का स्वरूप हैं क्योंकि सभी कुछ शक्ति स्वरूप है। ज्ञान का दान एवं पापों का क्षय करने वाली। दी से दान एवं क्षा से क्षय का बोध होता है।

374. **दाक्षायणी** – दक्ष की पुत्री सती से अभेद है जिनका।

375. **दक्षा** – प्रत्येक कार्य करने में निपुण। दक्ष् धातु का अर्थ शीघ्र करना, बढ़ना भी होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ प्रत्येक कार्य को शीघ्र करने वाली। भक्तों की रक्षा में शीघ्रता करने वाली। राक्षसों के विनाश में शीघ्रता करने वाली। बढ़ने वाली अर्थात समृद्धि के रूप में या सिद्धि के रूप में या विश्व के रूप में बढी हुई। दक्षयति इति दक्षा से अर्थ होगा वृद्धि करने वाली अर्थात इस नाम का अर्थ हुआ भक्तों की सम्पत्ति बढ़ाने वाली। जो बहुत उदार चित्त वाली है अर्थात भक्तों का कुछ भी बुरा नहीं होने देती। दक्ष स्वरूपा अर्थात प्रत्येक कार्य करने में निपुण। सृष्टि, स्थिति और पालन कर्म में देवी की दक्षता सबको विदित है। भक्त की रक्षा करने के लिए

शीघ्रता करने वाली। भक्त की मनोकामना पूरा करने के लिए शीघ्रता करने वाली। दक्ष वृद्धौ शीघ्रार्थे धातु होती है। भक्त की समृद्धि करने वाली। दक्ष प्रजापति में या निपुण लोगों में जाने के कारण अर्थात् विराजमान होने के कारण इन्हें दक्षा कहा जाता है। दानियों में निवास करने वाली। सर्वकार्येषु दक्षते इति दक्षा। ददाति क्षपयति च। द्यति क्षमते च। कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथाकर्तुम् समर्थो दक्षा। रमाया दक्षभागे स्थितत्वाद् दक्षा। दक्षगतस्तन्नामा दक्षा। दातृषु क्षियति निवसतीति दक्षा। क्षि निवासे। जो सभी कार्यों में निपुण है अर्थात् सृष्टि, पालन, संहार आदि सभी कार्यों में निपुण है। जो भक्तों के मनोरथों को देने वाली एवं उनके पापों तथा दोषों को नष्ट करने वाली है। जो पापों या दुष्टों को नष्ट करने वाली हैं एवं भक्तों का क्षमा करने वाली हैं। जो प्रत्येक कार्य कर सकती हैं, जो करने योग्य नही है उसे नही करती हैं या यदि इच्छा न करे तो नहीं भी करता है, कुछ का कुछ भी कर देती हैं। पाप आदि न करने योग्य है अतः नही करती या इच्छा नहीं तभी भी नही करती। जो शास्त्रानुरूप नही है वे अकर्म है, उन्हें नही करती। अन्यथा करने का तात्पर्य है कि प्रकृति के नियमों के विपरीत भी कर सकती हैं जैसे अहल्या को पत्थर से नारी बना देने वाली राम की शक्ति ने किया था। वो चाहे तो पानी में अग्नि के गुण पैदा कर सकती हैं और अग्नि में पानी के गुण पैदा कर सकती हैं। लक्ष्मी जी के दांयी ओर स्थित होने के कारण भगवान विष्णु दक्ष है, उनसे अभेद है जिनका। दक्ष नामक प्रजापति में विराजमान। दानियों में बैठती हैं या विराजमान रहती हैं, तभी दानी दान कर पाते है।

376. **दक्षयज्ञविनाशिनी** – दक्ष के यज्ञ को नष्ट कर देने वाली। वीरभद्र आदि शिवगणों ने यज्ञ नष्ट किया था पर यह यज्ञ उन शिव गणों में रहने वाली शक्ति ने नष्ट किया था। सती ही उस यज्ञ ध्वंस का कारण बनी थी।

377. **यशः–पूर्णा** – यश से परिपूर्ण।

378. **यशोदा** – यश को देने वाली।

379. **यशोदागर्भसम्भवा** – यशोदा के गर्भ से उत्पन्न होने वाली। यशोदा के गर्भ से कन्या ने जन्म लिया था जो देवी स्वरूपा थी। इस कन्या को देवकी के पास पहुँचाया गया था और कंस ने इन्हें पत्थर में पटक कर मारना चाहा। यह कन्या देवीरूपा थीं अतः कंस के हाथ से छिटक कर आकाश में उड़ गईं और इन्होंने कंस के मारे जाने की भविष्यवाणी कर दी थी। दुर्गासप्तशती में यशोदा के गर्भ से उत्पन्न नन्दा देवी का उल्लेख है जो शुम्भ निशुम्भ को मारती हैं।

380. **देवकी** – देवताओं के सुख का कारण अर्थात देवताओं को सुखी या आनन्दित करने वाली। क का अर्थ है सुख या आनन्द। माता देवकी स्वरूपा अर्थात कृष्ण की माँ देवकी स्वरूपा। देवताओं को शक्ति सम्पन्न करने वाली। देवान् शक्तिसम्पन्नान् करोति इति देवकी।

381. **देवमाता** – देवताओं की माता अदिति स्वरूपा। देवताओं की रक्षा करने वाली। माता का पूज्य अर्थ भी होता है। देवताओं में पूज्य या सम्माननीय। मा का अर्थ है लक्ष्मी और ता का अर्थ है लक्ष्मी इस प्रकार माता का अर्थ हुआ लक्ष्मी। देवताओं की लक्ष्मी स्वरूपा।

382. **राधिकाकृष्णवल्लभा** – राधिका और कृष्ण को अच्छी लगने वाली। राधिका जो कृष्ण की अतिशय प्रिय थी, तत्स्वरूपा।

383. **अरून्धती** – रूकावट रहित ऊर्ध्व चेतना स्वरूपा। जिसके व्रत या नियम को कोई रोक न सके। जो अपने पति की आज्ञा का प्रतिकार नहीं करती हैं। अचछे कार्यों को बाधित नहीं करती हैं। रुध् का अर्थ है बन्धन और अरुध् का अर्थ है मुक्ति। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ अपने उपासकों को मुक्ति को देने वाली। तन् धातु का अर्थ विस्तार करना, देना होता है। तन् धातु में ड प्रत्यय लगाने से बने त शब्द का अर्थ विस्तार करने वाली, देने वाला होता है। अरुष् का अर्थ है घाव जिससे अरुन्धति शब्द बन सकता है। तब इस नाम का अर्थ

होगा जो घावों अर्थात दुःखों का भर दे। जो अपने पति को मन, वचन और कर्म से रोकती (Resist) नहीं करती। आध्यात्मिक अर्थ होगा जिसके पाँचों शरीर आत्मा के साथ संरेख (Align) रहते है अर्थात् पाँचों शरीर आत्मा की दिशा में ही कार्यरत रहते है। अरोधनशीला अर्थात् सबको मुक्त करने वाली। अरूष अर्थात् घाव को भरने वाली औषधि को अरून्धती कहते है। इस औषधि की तरह जीवों के कष्टों को दूर करने वाली।

384. **शची** – स्पष्ट वाणी बोलने वाली। शच् व्यक्तायाम् वाचि धातु होती है जिसका अर्थ है स्पष्ट बोलना। शच् धातु में इन् प्रत्यय लगा तो शचि बना। शचि में ङीष् प्रत्यय लगाने से शची बना। शचि और शची दोनों के एक ही अर्थ दिये गये हैं। वेद में शचि शब्द बुद्धि, शक्ति, वाणी के लिए प्रयोग किया गया। इस प्रकार उत्तम वाणी स्वरूपा अर्थ कर सकते हैं। इन्द्राणी स्वरूपा या इन्द्राणी से अभेद है जिनका।

385. **इन्द्राणी** – इन्द्र की पत्नी स्वरूपा। इन्द्र की पत्नी से अभेद है जिनका।

386. **गान्धारी** – गान्धारी स्वरूपा। पृथ्वी को धारण करने वाली। वाणी को धारण करने वाली चेतना शक्ति स्वरूपा। महाभारत की गान्धारी की तरह पतिव्रता। किरण अर्थात ज्ञान की किरण अर्थात ज्ञान को धारण करने वाली चैतन्य स्वरूपा। गो का अर्थ है पृथ्वी, वाणी, किरण। गान्धारी नाड़ी में शक्तिरूप में विराजमान।

387. **गन्धमालिनी** – गन्ध धारण करने वाली अर्थात विविध प्रकार की गन्धों से सुशोभित या विभूषित। माला शोभा बढ़ाती है। मल धारणे धातु से मालिनी का अर्थ है धारण करने वाली।

388. **ध्यानातीता** – ध्यान से भी अतीत अर्थात जिन्हें ध्यान से नहीं जाना जा सकता। साधारण ध्यान से नहीं जाना जा सकता।

389. **ध्यानगम्या** – ध्यान के द्वारा बोध किये जाने योग्य अर्थात ध्यान के द्वारा जो प्राप्त की जाती है। सिद्ध या योग्य गुरु के द्वारा सिखाये गए विशेष ध्यान से जानी जाने योग्य।

390. **ध्यानज्ञा** – ध्यान के तत्व या रहस्य को जानने वाली। ध्यान के द्वारा ज्ञात होने वाली।

391. **ध्यानधारिणी** – ध्यान को धारण करने वाली अर्थात स्वयं ध्यान करती हैं।

392. **लम्बोदरी** – लम्बे या बड़े उदर वाली क्योंकि सारा ब्रह्माण्ड उनके उदर में है अर्था भीतर है। विराट स्वरूपा। सभी विद्याओं का कोष अर्था जिनमें सभी विद्यायें विद्यमान हैं जिसे प्रतीक की भाषा में कह दिया जाता है कि उनका उदर लम्बा है। गणेश जी ने शिव जी के डमरू से वेद सीखा, पार्वती जी की नूपुर से नृत्य सीखा इस प्रकार अनेक विद्याओं को धारण करने से उन्हें लम्बोदर कहा गया। लम्बोदर अर्थात गणेश की शक्तिस्वरूपा या भगवान गणेश की पत्नी से अभेद है जिनका। अत्यन्त उदार। पेट उदारता का प्रतीक है। पेट भोजन को पचाकर उत्पन्न शक्ति या ऊर्जा को शरीर के विभिन्न अंगों में देता है, दूसरों को देने का नाम ही उदारता है। बड़ी से बड़ी गुप्त बातों को पचाने वाली अर्थात् उसे प्रकट नहीं करती है। पेट पचाने का कार्य करता है। अच्छी और बुरी दोनों प्रकार की परिस्थितियों अर्थात् सुख–दुख, राग–द्वेष आदि सबको पचा लेने वाली अर्थात् सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार की शक्तियों को पचा लेने वाली।

393. **लम्बोष्ठी** – लम्बे लम्बे ओठों वाली। लम्बे अर्थात बड़े ओंठ इसलिए हैं जिससे युद्ध में राक्षसों को चट कर पायें।

394. **जाम्बवन्ती** – श्रीकृष्ण की पत्नी जाम्बवतीस्वरूपा। जामुन के वर्ण वाली। शब्दकल्पद्रुम में लिखा है जम्बोः वर्णम जाम्बवम्, तद् अस्या अस्ति इति जाम्बवती।

395. **जलोदरी** – जिनके उदर में जल है। जल का अर्थ जीवन भी होता है। जिनके उदर में अर्थात जिनके

भीतर जीवन है अर्थात सभी जीवित प्राणी अर्थात सारा संसार है। जलोदर एक रोग का नाम है। शत्रुओं को जलोदर नामक रोग से पीड़ित करने वाली। जल (जीवन) है जिनके उदर (पेट) में अर्थात् जीवन अर्थात् सभी प्राणियों को जन्म देने वाली। पेट से ही बच्चा पैदा होता है अतः उदर का अर्थ है जन्म देने वाला। जल से ही सारी सृष्टि पैदा होती है अतः जल को सृष्टि पैदा करने का उपादान कारण कह सकते है अर्थात् जल उन तत्वों का प्रतीक है जिससे सृष्टि पैदा होती है। एक नियम है कि किसी एक मुख्य तत्व को बोलने से बाकी सारे तत्वों का भी बोध हो जाता है। इस नाम का अर्थ हुआ सृष्टि निर्माण के उपादान कारण को जन्म देने वाली या अपने भीतर धारण करने वाली। जलोदर नाम का एक रोग भी होता है। जलोदरा = जलोदर + आ, आ का अर्थ देना भी होता है और नाश करना भी होता है। अपने भक्तों के जलोदर नामक रोग का नाश करने वाली। दुष्टों को जलोदर नामक रोग देने वाली। यह देखा गया है कि कभी–कभी ईकारान्त शब्दों का वही अर्थ हो जाता है जो आकारान्त शब्दों का। अतः जलोदरी को वही अर्थ हो जायेगा जो जलोदरा का है।

396. **महोदरी** – विशाल उदर वाली क्योंकि सारा ब्रह्माण्ड इनके भीतर है। महा का एक अर्थ ब्रह्माण्ड है।

397. **मुक्तकेशी** – खुले हुए केशों वाली। मानव द्वारा निर्मित नियमों से बँधी हुई नहीं हैं अर्थात प्रकृति स्वरूपा। शरीर में सुषुम्ना नाड़ी में स्थित। तीनों ग्रन्थियों अर्थात् ब्रह्म ग्रन्थि, विष्णु ग्रन्थि एवं रूद्र ग्रन्थि को नष्ट कर जीवात्मा को मुक्त करने वाली। केश अर्थात् बाल शरीर से जुड़ा रहता है। अतः इन तीनों ग्रन्थियों को केश कह सकते है। मुक्त हो जाते हैं केश जिनकी शक्तियों से। किये गये कर्मों के संस्कार, जो विभिन्न कोषों में जमा हो जाते है उन्हें मुक्त करने वाली अर्थात् व्यक्ति को उन संस्कारों से मुक्त कराने वाली। केश का अर्थ सूर्य की किरण भी है। मुक्त होती है किरणें अर्थात् बाहर निकलती है किरणें जिनके द्वारा अर्थात् सूर्य का नाम मुक्तकेश हुआ। सूर्य की शक्ति स्वरूपा। केश या बाल बाहर की ओर आगे बढ़ते है। केश बाहर की ओर जाने वाले विचारों (Outgoing thoughts) का प्रतीक माना जा सकता है। इन बाह्य विचारों से मुक्त करने वाली अर्थात् उपासकों को अन्तर्मुखी बनाने वाली।

398. **मुक्तकामार्थसिद्धिदा** – मुक्त हुए लोगों की इच्छाओं और अर्थों की सिद्धि कर देने वाली। काम और अर्थ से मुक्तों को सिद्धि देने वाली।

399. **तपस्विनी** – तपस्या में निरत रहने वाली अर्थात लगी रहने वाली। देवी ब्रह्मचारिणी तपस्या में लगी रहती हैं। पार्वती जी ने भगवान शिव को पाने के लिए घोर तपस्या की थी।

400. **तपोनिष्ठा** – निष्ठा का अर्थ श्रद्धाभाव, विश्वास, निश्चय भी होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ जिसका तपस्या में श्रद्धाभाव है। जिसने तपस्या करने का व्रत ले रखा है। तप में है निष्ठा जिनकी। इधर उधर निष्ठा नहीं जाती। निष्ठा का अर्थ है स्थिति, ठहराव या व्रत। तपोनिष्ठा का अर्थ हुआ जिसकी तपस्या में स्थिति या ठहराव है अर्थात हमेशा तपस्या में लगी हुई।

401. **सुपर्णा** – सुन्दर पत्तों को ग्रहण करने वाली। सुन्दर पत्तों वाली अर्थात इनकी पूजा में सुन्दर पत्ते चढ़ाये जाते हैं। बिना कटे फटे एवं स्वच्छ बेलपत्र देवी की पूजा में प्रयोग होते हैं। पार्वती। पार्वती जी ने तपस्या के दौरान आरम्भ में पत्तों को ग्रहण किया था, बाद में पत्तों का भी त्याग करने से अपर्णा कहलाई। प्रलय काल में भगवान विष्णु बालमुकुन्द स्वरूप में एक सुन्दर पत्ते के ऊपर पड़े रहते हैं, इस पत्ते के स्वरूप वाली। जीवात्मा या परमात्मा स्वरूपा। उपनिषद में आया है द्वा सुपर्णौ सयुजा..... जहाँ सुपर्ण का अर्थ जीवात्मा या परमात्मा है। जीवात्मा स्वरूपा। शतपथ ब्राह्मण में सुपर्ण को जीवात्मा का प्रतीक माना गया है। जिनका प्रीणन (प्रीति) सुन्दर है अर्थात श्रेष्ठ है। शोभनम् पर्णं प्रीणनं यस्या इति सुपर्णा। सु + पृण प्रीणने (तुदादि गण की धातु) + अच् प्रत्यय + टाप् प्रत्यय। सुन्दर श्रेष्ठ आनन्दस्वरूपा। सुष्ठु परानन्दश्च सुपर्णा। पर् से पर ले लिया, ण का अर्थ आनन्द होता

है। मोक्ष को प्राप्त हो चुके लोगों में सुख को पूर्ण करने वाले अर्थात भरने वाले। मुक्तेषु सुखपूरणात् इति सुपर्णा। जिनके द्वारा केवल मुक्त पुरुषों को ही नहीं अपितु अन्य लोगों अर्थात भक्तों को सुख से पूर्ण किया जाता है। अन्येषामपि सुपरः णः आनन्द यया स सुपर्णा। अच्छाईयों से भरी हुई। अच्छी प्रकार से पूर्ण होने के कारण सुपर्ण है अर्थात जिनके पास सभी चीजे है, और वे सभी चीजे पूर्ण मात्रा में है। सुपूर्णात्वात् सुपर्णा। श्रेष्ठ आनन्द स्वरूप और बलस्वरूपा या श्रेष्ठ आनन्द और बल वाली। सु परः णः आनन्दः, णः बलरूपश्च। सुख का पान कराने वाले अर्थात उपभोग कराने वाले वेद के द्वारा जिनकी स्तुति की जाती है। सुखपानात् सुपः, वेदै रण्यते स्तूयते इति सुपर्णा। सुख या आनन्द का पान करने वाले मुक्त पुरुषों के द्वारा जिनकी स्तुति की जाती है। सुपैः मुक्तैः रण्यत इति वा सुपर्णाः। बाज के समान शीघ्रगामी। सुपर्ण का एक अर्थ बाज है। पर्ण का अर्थ पृ पालनपूरणयोः से पालन करने वाला भी होता है। इस प्रकार सुपर्णा का अर्थ हुआ श्रेष्ठ पालन करने वाली शक्ति स्वरूपा। सुन्दर पालन करने वाले पदार्थ या सुन्दर पूर्ति करने वाले पदार्थ सुपर्ण है। ऐसे पदार्थों को देने वाली। सुपर्ण + आ, आ का अर्थ है देना।

402. **धर्मवासिनी** – धर्म में निवास करने वाली। कर्तव्य योग्य कर्मों को करना एवं अकर्तव्य योग्य कर्मों को न करना ही धर्म है।

403. **बाणचापधरा** – बाण और धनुष को धारण करने वाली। धनुष और बाण स्थितिज ऊर्जा और गतिज ऊर्जा के प्रतीक हैं। बाण कर्मन्द्रिय, क्रियाशक्ति, ज्ञान (Spiritual insight) का प्रतीक है। चित्त से विचार निकलते है अर्थात् चित्त धनुष है एवं विचार बाण है। ओम् या मन्त्र भी बाण है क्योंकि मन्त्र इष्ट देवी–देवता तक पहुँचते है।

404. **धीरा** – शान्त और अविचल स्वभाव वाली। जिसमें धैर्य हो अर्थात जो जल्दी घबरा न जाए और जिसका चित्त दृढ़ और शान्त हो। धीर का अर्थ गम्भीर, सुन्दर, बलवान या ताकतवर भी होता है। बुद्धि को देने वाली। धी अर्थात बुद्धि और राति अर्थात देना।

405. **पाञ्चाली** – पाँचाली द्रौपदी स्वरूपा। द्रौपदी से अभेद है जिनका। पंचमहाभूतों या पंचप्राणों की समष्टि शक्ति स्वरूपा। पंचभिः अल्यते, जो पाँच पाण्डवों से सुशोभित हैं। जो पाँच प्राणों से सुशोभित हैं।

406. **पञ्चमप्रिया** – जिसे संगीत का पंचम राग प्रिय है अर्थात अच्छा लगता है। पंचम राग रागों में बहुत अच्छा राग माना जाता है। सदाशिव की प्रिया अर्थात जो सदाशिव को अच्छी लगती है। प्रीयते इति प्रिया से प्रिया का अर्थ प्रसन्न रहने वाली, प्रीणाति इति प्रिया से प्रिया का अर्थ प्रसन्न करने वाली होता है। सदाशिव से प्रसन्न रहने वाली या सदाशिव को प्रसन्न करने वाली। ब्रह्मा, विष्णु, महेश, ईश पलंग के चार पाएं है और सदाशिव रूपी फलक के ऊपर देवी त्रिपुरसुन्दरी का वास है। पंचम अर्थात शिव की प्रिया। ब्रह्मा, विष्णु, रूद्र, ईश्वर ओर सदाशिव इन पाँच प्रमुख देवों में सदाशिव को पाँचवे नाम के रूप में बोला गया है। इसका तात्पर्य छोटा या बड़ा से नहीं है।

407. **गुह्याङ्गी** – गोपनीय या गुप्त अंगों वाली अर्थात जिसके अवयव या जिसका साकार रूप लोगों को दिखता नहीं है। केवल ज्ञानी या सच्चे भक्त को ही देवी के साकार रूप के दर्शन हो सकते हैं। गुह्य का एक अर्थ शिव भी है। तब इस नाम का अर्थ होगा शिव के अंग स्वरूपा अर्थात शिव के वामांग स्वरूपा। श्रेष्ठ अंगों वाली। गुह्यांग सभी के होते हैं अतः यहाँ गुह्य से तात्पर्य सुन्दर से है। जिसके अंग छिपे हुए हैं अर्थात जिसका शरीर कपड़ों से ढका हुआ है। गोपनीय (रहस्यपूर्ण) शास्त्रों में जाने वाली अर्थात विराजमान। गुह्यम् अंगति गच्छति इति गुह्यांगी।

408. **सुभीमाङ्गी** – अतिशय भयंकर अंगों वाली। भीम का अर्थ बहुत बड़ा भी होता है। सुन्दर और विशाल

अंगों वाली। सुन्दर शिवा स्वरूपा। भीम भगवान शिव का नाम है अतः भीमांगी का अर्थ हुआ शिव के अंग स्वरूपा या जो शिव की ओर गई अर्थात शिवा या पार्वती। अंगति अर्थात गच्छति अर्थात जाती है।

409. **गुह्यतत्वा** – अविनाशी सत्ता जिसे जानना कठिन है, जिसका तात्पर्य समझना बहुत कठिन है या जो छुपाने योग्य है। जगत का मूल कारण जिसे जानना कठिन है। जिनका वास्तविक रूप, सार, मुख्य अंश गोपनीय है अर्थात सभी को पता नहीं है। गोपनीय तत्वों से युक्त। रहस्यमय तत्वों से युक्त।

410. **निरञ्जना** – निरंजन स्वरूपा अर्थात सभी दोषों से रहित। अंजन का अर्थ दोष या आवरण है। माया, शरीर और इन्द्रिय रूपी आवरणों से रहित। अज् गतौ धातु भी होती है तब निरंजना का अर्थ होगा जिसका मन ऐन्द्रिक विषयों में नहीं जाता है। आत्मबोध नामक ग्रन्थ में चित्त में जमा संस्कार को अंजन (मलिनता) कहा गया है। इस प्रकार निरंजना का अर्थ हुआ चित्त के संस्कारों से रहित। निर्दोष, माया से रहित ब्रह्म। अंजन अर्थात् दोष। शरीर में विद्यमान सभी संस्कारों से रहित अवस्था निरंजन अवस्था कहलाती है। हम जगत में जो कुछ भी देखते है या करते है, यदि आसक्ति है तो फोटो की तरह वह हमारे शरीर में खिंच जाता है अर्थात् जम जाता है तथा भविष्य में अपने अनुसार मनुष्य से कार्य कराने लगता है। निःशेषेण अंजते व्यक्तीकरोति अनया इति निरंजना अर्थात वह शक्ति जो ब्रह्म को पूरी तरह से अभिव्यक्त कर देती है या प्रकट कर देती है, निरंजना है। निरंजन ज्ञान स्वरूपा अर्थात वह ज्ञान जिसमें ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय विलीन हो जाते है।

411. **अशरीरा** – शरीर से रहित (निराकार रूप में)।

412. **शरीरस्था** – सगुण रूप में शरीर रूप में स्थित रहने वाली। शरीर में स्थित आत्मा स्वरूपा।

413. **संसारार्णवतारिणी** – संसार रूपी सागर से पार लगा देने वाली।

414. **अमृता** – अमृत स्वरूपा। जिनकी कभी मृत्यु नहीं होती। अमृता अर्थात गिलोय के समान सर्वरोगनिवारिका। नित्यमुक्तत्वादमृता। न विद्यते मृतं मृतिः अस्या। अं अकरावाच्यं स्वात्मानमेव ऋता गता। स्वे महिम्नि प्रतिष्ठिता। अन्तकत्वादम् ऋतश्च। अनुस्वारवाच्यत्वादम्, ऋकारवाच्य ऋत इति ऋतम्भरा। जो हमेशा से ही मुक्त है अर्थात् पहले से ही मुक्त है। ऐसा नहीं है कि जीवन में आने के बाद मुक्त हुईं है। जिनकी मौत नहीं होती है। मृत अर्थात् मृति अर्थात् मृत्यु। अकार से उन्हीं का बोध होता है और अकार में जो गई हुईं हैं। अकार विषय को प्राप्त या अ अक्षर में स्थिर। अपनी ही महिमा में स्थिर। जो सबका अन्त करने वाली हैं एवं सत्य स्वरूप हैं। अनुस्वार से बोधित होने के कारण अम्, और ऋकार से बोधित होने के कारण ऋत है। अनुस्वार और ऋत (सत्य) को धारण करने वाली।

415. **निष्कला** – कलाओं से रहित अर्थात इकाइयों या अंगों या अवयवों से रहित। अवययरहित अर्थात् निगुण निराकर अखण्ड सत्ता अर्थात् निगुण निराकार ब्रह्म स्वरूपा। कला का अर्थ होता है अवयय। पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँचों कर्मन्द्रियाँ, पाँचों महाभूत (क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर) एवं मन, ये 16 अवयय या कला कहे गये है। निर्गुण निराकार गुण में ये अवयय या कलायें नहीं होती है। श्रुति में पुरुष (ब्रह्म या परमात्मा) के तीन रूप प्रदर्शित हुए हैं– सकलपुरुष, निष्कलपुरुष और षोडशकल पुरुष। कलायुक्त पुरुष की संज्ञा निष्कलपुरुष है। श्वेताश्वतरोपनिषद् में कलाहीन पुरुष को निष्कल पुरुष कहा है– 'निष्कलं निष्क्रियं शान्तं निरवद्यं निरंजनम्। पुरुष (ब्रह्म या पराशक्ति) अपने मूलरूप में निष्कल है। वह केवल सत्चित और आनन्दरूप है। पुरुष अपने इस रूप में निष्क्रिय, शान्त, निर्दोष और निर्मल होता है। सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्ववर्ती पुरुष निष्कल पुरुष है और सृष्टि की उत्पत्ति की ओर उन्मुख पुरुष सकलपुरुष है। जब पुरुष प्रकृति के साथ संयुक्त होकर सृष्टि का निर्माण करता है तब निष्कल पुरुष सकल पुरुष का रुप धारण करता है। पुरुषसूक्त में प्रदर्शित पुरुष निष्कल पुरुष हैं और निष्कल पुरुष से उत्पन्न विराट् पुरुष सकल पुरुष है। पुरुष (ब्रह्म या पराशक्ति) द्वारा उत्पन्न दिव्य पदार्थों या

दिव्य शक्तियों की संज्ञा कला है। यद्यपि पुरुष द्वारा उत्पन्न पदार्थ अनेक है तथापि शास्त्रविदों में केवल मुख्य–मुख्य षोडश पदार्थों या शक्तियों को ही कला की संज्ञा प्रदान की है। 16 की संज्ञा को पूर्ण संज्ञा कहा जाता है।

416. **भद्रा** – कल्याणकारिणी। योग्य या पात्र को ही मिलने वाली। भाजन (पात्र) से भद्रा शब्द बनायेंगे तब अर्थ निकलेगा योग्य या पात्र को मिलने वाली। भद् रम् से भद्रा बनने पर अर्थ होगा जिसके मिलने पर आनन्द की प्राप्ति होती है। रम् का अर्थ है अच्छा लगना या आनन्दित होना।

417. **सकला** – समस्त पदार्थों (जड़ एवं चेतन दोनों) के रूप वाली। समस्त रूप/अस्तित्व जिनका रूप हैं। कला सहित अर्थात् अवययों सहित अर्थात् सगुण साकार रूप धारण करने वाली। देवी निर्गुण निराकर रूप में तो है ही, सगुण साकार रूप भी धारण करती है। शरीर के विभिन्न अंग अवयय या कला है। जिस तरह से मनुष्य के अवयय या अंग होते है उसी प्रकार से देवी भी सगुण साकार रूप को धारण कर लेती है। भगवती 'कला–सहिता' है। 'छान्दोग्य उपनिषद्' में जाबाल ने सत्यकाम को 16 कला–धारी पुरुष के विषय में बताया है। वहाँ कहा है कि 'ब्रह्म' (पुरुष) के चार विभाग है। प्रत्येक विभाग के चार भाग है। प्रथम विभाग के चार भाग चार चक्र हैं। जो उनकी पूजा करता है, वह यशस्वी होता है। द्वितीय विभाग के चार भाग है– पृथ्वी, आकाश, अवकाश, और सागर। इनकी पूजा करने वाला दिग्–विजयी होता है। तृतीय विभाग के चार भाग है– अग्नि, सूर्य, चन्द्र और विद्युत, जिनकी पूजा करने से व्यक्ति तेजस्वी होता है। चतुर्थ विभाग के चार भाग है– श्वास, दृष्टि, श्रोतृ और मन, जिनकी पूजा करने वाला आनन्दमय रहता है। सृष्टिकर्ता ब्रह्मा इन सोलहों भागों के नियामक हैं। पूजन की सुविधा के लिए भक्तों द्वारा 64 कलाओं से युक्त देवी माँ की भावना की जाती है, अथवा भगवती की 64 कलाएँ है। 16 कलाओं से युक्त चन्द्रमा को भी सकला कह सकते है। कला का अर्थ आनन्द का उल्लास भी है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ आनन्द के उल्लास से युक्त। अलग–अलग काम करने की अलग–अलग शक्तियाँ होती है और ऐसी प्रत्येक शक्ति को कला कहते हैं। कला का अर्थ आत्मशक्ति भी है। नृत्य, संगीत, गायन, चित्रकारी आदि भी कलायें कही जाती हैं, जो 64 है। ब्रह्म या परमात्मा के सगुण साकार रुप में जो 16 कलायें कही गई है उनके नामों को लेकर विद्वानों मे मतभेद है। देव से लेकर कीट पतंग तक सभी जीव मायातत्व में हैं, वे सकल हैं। इनमें विराजमान शक्ति सकला है। इन्हें अपनी आत्मा का बोध नहीं होता और इनमें भेद बुद्धि बनी रहती है।

418. **कृष्णपिङ्गला** – कृष्ण और पीले रंग या स्वरूप वाली। बाल काले हैं एवं शरीर से स्वर्ण की तरह पीली आभा निकलती है।

419. **चक्रप्रिया** – चक्र नामक आयुध है प्रिय जिन्हें। भगवान विष्णु की प्रिय। चक्रम् (सुदर्शन चक्रम्) अस्य अस्ति इति चक्रः (चक्र वाले अर्थात चक्र धारण करने वाले)। इस प्रकार चक्रः का अर्थ हुआ भगवान विष्णु।

420. **चक्राह्वा** – चक्र (या चक्रा) है संज्ञा या नाम जिनका अर्थात जिन्हें चक्र नाम से बुलाया जाता है। आहूयते अनया इति आह्वा। चक्र (या चक्रा) नाम से बुलायी जाती हैं। चक्र संज्ञा को धारण करने वाली। चक्र के समान अमोघ। चक्र शत्रु को मारकर ही वापस आता है। श्रीचक्र में आवाहन किया जाता जिनका।

421. **पञ्चचक्रादिदारिणी** – पंचभूतात्मक पाँच चक्रों अर्थात मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत और विशुद्धि चक्र को प्रथम भेदन करने वाली। मूलाधार चक्र (पृथ्वी तत्व), स्वाधिष्ठान चक्र (जलतत्व) मणिपुर चक्र (अग्नितत्व), अनाहत चक्र (वायुतत्व) और विशुद्धि चक्र (आकाश तत्व), इस प्रकार चक्रों का तत्वों से सम्बन्ध है। पंचचक्र रूपी शस्त्र को नष्ट करने वाली। ज्योतिष में बताए गए पंचशलाकाचक्र के कुप्रभावों को नष्ट करने वाली। नक्षत्रों में वेध (संघर्ष) के कारण किसी मुहूर्त में किया गया विवाह, वधू प्रवेश, दान आदि शुभ कर्मो का पति – पत्नी, माता, पिता, श्वसुर या अन्य रिश्तों पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

422. **पद्मरागप्रतीकाशा** – कमल के लाल रंग के समान कान्ति वाली। पद्मराग मणि के समान गहरे लाल रंग वाली। प्रतिकाश का अर्थ है सदृश।

423. **निर्मलाकाशसन्निभा** – स्वच्छ आकाश के समान आभा वाली।

424. **अधःस्था** – अधोलोक अर्थात पाताल आदि में भी निवास करने वाली।

425. **ऊर्ध्वरूपा** – अग्नि स्वरूपा। अग्नि की गति ऊपर की ओर ही होती है। अतः अग्नि ऊर्ध्व गति स्वरूपा है। ऊर्ध्व स्वरूप वाली अर्थात आकाश में स्थित। आकाश है स्वरूप जिसका।

426. **ऊर्ध्वपद्मनिवासिनी** – ऊर्ध्व पद्म अर्थात आकाश रूपी कमल में निवास करने वाली।

427. **कार्यकारणकर्तृत्वे शश्वद्रूपेषुसंस्थिता** – कार्य और कारण के कर्तृत्व में (कर्तापन में) निरन्तर रहने वाले स्वरूप में स्थित। कार्य, कारण, कर्ता भाव में निरन्तर रहने वाले स्वरूप वाली। तात्पर्य है संसार में प्रति क्षण कर्म हो रहा है। कर्म हो रहा है तो उसका कोई कर्ता भी होगा। प्रजापति ने तप किया का अर्थ है कि वह तप आज भी हो रहा है।

428. **रसज्ञा** – रस को जानने वाली। रस से तात्पर्य कटु, अम्ल, तिक्त, मधुर आदि षड्रसों से है। रस आनन्द को भी कहते हैं। साहित्य में श्रृंगार, करूण, वीर आदि नौ रस हैं।

429. **रसमध्यस्था** – रसों के मध्य में रहने वाली।

430. **गन्धस्था** – गन्ध में रहने वाली।

431. **गन्धरूपिणी** – गन्धस्वरूपा। गन्ध जिसका रूप है। गन्ध रूप वाली अर्थात गन्ध के रूप को धारण करने वाली। रूप अर्थात मूर्त या दृश्य या अनुभवगम्य बात।

432. **परब्रह्मस्वरूपा** – परब्रह्म है जिसका अपना रूप। परब्रह्म है जिसका वास्तविक रूप। परब्रह्म है जिसका मूल रूप। परब्रह्म स्वरूपा। मन, बुद्धि और इन्द्रियों की पकड़ से बाहर, परमसत्ता जो सबसे बड़ा है, परब्रह्म है। ब्रह्म का अर्थ होता है जो स्वयं में बड़ा हो और दूसरों को बड़ा करे। बृंहति बृंहयति इति ब्रह्म। पर का अर्थ है परे अर्थात मन, बुद्धि और इन्द्रियों की पकड़ से बाहर। परब्रह्म अर्थात सबसे बड़ी सत्ता। परब्रह्म के गुणों वाली। स्वरूप का एक अर्थ गुण (प्रभाव) भी होता है। कार्य ब्रह्म एवं कारण ब्रह्म से परे की अवस्था वाला ब्रह्म। विश्व से परे स्थित ब्रह्म। पुरुष सूक्त में आया है कि इस विश्व में ब्रह्म का केवल एक चौथाई हिस्सा ही आया है और शेष तीन चौथाई हिस्सा इस विश्व से परे है। इस विश्व से परे ब्रह्म का जो हिस्सा है वह परब्रह्म है। जो ब्रह्म कार्य ब्रह्म एवं कारण ब्रह्म से परे है। स्थूल पदार्थ एवं सूक्ष्म पदार्थ से युक्त जो चैतन्य है वह कार्य ब्रह्म है। जैसे घड़े में मिट्टी स्थूल है एवं आकाश सूक्ष्म है, इससे युक्त जो चैतन्य है वह कार्य ब्रह्म है। कार्य को बनाने वाली शक्ति से युक्त जो चैतन्य है वह कारण ब्रह्म है। कार्य को बनाने वाली माया शक्ति से युक्त ब्रह्म कारण ब्रह्म होगा। तात्पर्य है उत्पादिनी शक्ति से युक्त चैतन्य कारण ब्रह्म है। जो शुद्ध चैतन्य है अर्थात् जिसमें कार्य एवं कारण दोनों का संयोग नही है, वह परब्रह्म है।

433. **परब्रह्मनिवासिनी** – परब्रह्म में निवास करने वाली। शक्ति परब्रह्म में उसी प्रकार रहती है जैसे दूध में पानी।

434. **शब्दब्रह्मस्वरूपा** – शब्दब्रह्म स्वरूप वाली। शिव और शक्ति के मिलने से जो प्रथम नाद उत्पन्न होता है वह शब्द ब्रह्म है। शारदा तिलक ग्रन्थ के प्रथम पटल में लिखा है – समस्त प्राणियों के भीतर चैतन्य रूप से विद्यमान अखण्ड नाद शब्दब्रह्म है। शब्दब्रह्म अनाहत नाद है जो बिना किसी कारण से उत्पन्न होता है। शब्द ब्रह्म बिना आघात का शब्द है। यह बिना उच्चारण का चिन्तन है, यह न तो ऊँ है, न तो मन्त्र है, न तो बीज है,

न अक्षर है। यह नौ प्रकार के नादों से परे है। कहीं पर लिखा है कि वेद आदि शास्त्रों के शब्दों में विद्यमान ब्रह्म शब्द ब्रह्म है जबकि मूर्ति में विद्यमान ब्रह्म परब्रह्म है। ब्रह्म का नादात्मक रूप (Vibratory Form) शब्द ब्रह्म है। कहीं पर परावाणी को शब्द ब्रह्म कहा गया है। परावाणी चैतन्य (consiousness) या ब्रह्म से जरा भी अलग नहीं होती, यहाँ तक की सूक्ष्म या विचार रूप में भी अभिव्यक्त नहीं होती। परावाणी consiousness की वाणी के रूप में अभिव्यक्त होने की इच्छा या urge मात्र है। कहीं पर वेद आदि शास्त्रों के शब्दों में स्थित चैतन्य शक्ति को शब्द ब्रह्म कहा गया है। सृष्टि में व्याप्त अनाहत नाद या ध्वनि। ब्रह्म अर्थात् सर्वत्र व्याप्त, शब्द अर्थात् ध्वनि। शब्दब्रह्म पारलौकिक ब्रह्माण्डीय ध्वनि (Transcedental Cosmic sound) है। ब्रह्म की प्रथम अभिव्यक्ति, शब्द या ध्वनि के रूप में होती है जो अनाहत प्रकृति की होती है, जिसे शब्दब्रह्म कहते है। यह ध्वनि ओम् की ध्वनि है। इसी से समस्त जगत की उत्पत्ति मानी गई है। सभी शब्दों के मूल में यही ध्वनि है अर्थात् मूल रूप से सभी शब्द समान है। कम्पन के कारण ही शब्द या ध्वनि अलग–अलग सुनाई पड़ती है या कम्पन के कारण ही शब्दों या ध्वनि में अन्तर पाया जाता है। शब्द के द्वारा ही जीव ब्रह्म से जुड़ता है। विभिन्न मन्त्र या ओम् का मन्त्र जपने की सलाह इसी कारण दी जाती है क्योंकि ध्वनि से ही जीवात्मा और परमात्मा का जुड़वा है। इस प्रकार ओम् शब्दब्रह्म है। वेद ओम् का विस्तार है अतः वेद को भी शब्दब्रह्म कहते है।

435. **शब्दस्था** – वेदमन्त्र में स्थित है। शब्द में स्थित। वेदस्वरूपिणी। सूक्ष्म शब्द या स्थाई शब्द या शब्दब्रह्म में स्थित। अनाहत नाद हमेशा गूँजता रहता है। वह स्थूल शब्द की तरह क्षणिक नहीं है।

436. **शब्दवर्जिता** – स्थूल शब्दों से रहित। शब्द भी स्थूल और सूक्ष्म दो प्रकार के हैं। स्थूल शब्द क्षणिक होने के कारण देवी उनसे अलग हैं। शब्दों से रहित। शब्दों का मूल अर्थात जहाँ शब्द नहीं है जो केवल ज्योति मात्र है। अ, क, च, त, प जो ध्वनियाँ हैं उनका मूल कारण। शब्द से रहित या परे अर्थात शास्त्र जिनके बारे में नेति नेति कहते हैं।

437. **सिद्धिः** – अष्ट सिद्धि अर्थात अणिमा, लघिमा, महिमा आदि सिद्धि स्वरूपा। सिद्धि की अर्थ अतिप्राकृतिक शक्ति, किसी कार्य में महारथ होना, दक्षता होना, कार्य की सफलता। गणेश जी की सिद्धि नामक पत्नी से अभेद है जिनका। ज्ञानानन्दरूपत्वात् सिद्धिः। ज्ञानं च सुखं च हि चरमा सिद्धिः। सर्वसिद्धिकारणत्वात् सिद्धिः। सर्वसाधनसिद्धिरूपा इयम्। ज्ञान स्वरूपा या आनन्द स्वरूपा। ज्ञान, आनन्द को ही सबसे बड़ी सिद्धि माना गया है क्योंकि मनुष्य जो भी कार्य करता है वह आनन्द की प्राप्ति एवं ज्ञान की प्राप्ति के लिये ही करता है। शब्द के आगे ''का कारण'' एवं ''मे विराजमान'' शब्द लगा देने से भी उस शब्द का अर्थ निकल आता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ सभी सिद्धियों (अलौकिक शक्तियाँ, कार्य में सफलता) की कारण अर्थात् उसे देने वाली। अणिमा लघिमा आदि सिद्धियों में विराजमान। प्रत्येक साधन से जिनको अन्ततः प्राप्त किया जाता है अर्थात् प्रत्येक साधन का लक्ष्य।

438. **बुद्धि** – बुद्धि स्वरूपा। मनुष्यों में निर्णय लेने वाली शक्ति स्वरूपा। गणेश जी की बुद्धि नामक पत्नी से अभेद है जिनका। बुद्धि में विराजमान। शब्द के आगे ''में विराजमान'' लगाने से शब्द का अर्थ आ जाता है। उपासकों को श्रेष्ठ बुद्धि देने वाली। शब्द के आगे ''का कारण'' लगाने से शब्द का अर्थ आ जाता है। बुद्धि का कारण अर्थात् बुद्धि देने वाली।

439. **पराबुद्धि** – उत्तमोत्तम बुद्धि वाली।

440. **सन्दीप्तिर्मध्यसंस्थिता** – ऐसी सन्दीप्ति जो बीच में स्थित है अर्थात हृदय देश में रहने वाली प्रकाश स्वरूपिणी।

441. **स्वगुह्या** – अपने गोपनीयस्वरूप में स्थित। जो दूसरों के द्वारा गुप्त नहीं है अर्थात छिपाई नहीं गई है। यह स्वयं छिपी हुई है। धन आदि को दूसरे लोग छिपाते हैं। इसने अपने आपको स्वयं माया के परदे से छुपा लिया। गुह् धातु का अर्थ रक्षा अर्थ में भी है। तब इस नाम का अर्थ होगा जो स्वयं अपनी रक्षा करती है।

442. **शाम्भवीशक्ति** – शंकर की शक्ति स्वरूपा। शाम्भव अर्थात शम्भु से सम्बन्धित।

443. **तत्वस्था** – तत्व में स्थित। पंचमहाभूत रूपी तत्वों में या शैव दर्शन के 36 तत्वों में विराजमान।

444. **तत्वरूपिणी** – ब्रह्माण्ड का सार स्वरूपा। ब्रह्म स्वरूपा। जगत के मूल कारण के स्वरूप वाली।

445. **शाश्वती** – हमेशा बनी रहने वाली अर्थात भूत, भविष्य, वर्तमान में रहने वाली। शश्वत् सदा भवति इति शाश्वती। शश्वत् एकरूपा। आनन्दरूपो अश्वो हयग्रीवः, ततश्च जगति। शः आनन्दः अतश्च। श+अश्व+ती। जो सदैव रहती है अर्थात् जिनका अस्तित्व सदैव रहता है। जो हमेशा एकरूपा रहती है। भगवान विष्णु का नाम शाश्वत है और उनके इस नाम का एक विग्रह किया गया है– आनन्दरूपो अश्वो हयग्रीवः, ततश्च जगति। जो आनन्द स्वरूप अश्व (घोड़ा) हयग्रीव अवतार है तथा जगत में व्याप्त है वे भगवान विष्णु शाश्वत है। ऐसे शाश्वत भगवान विष्णु की पत्नी से अभेद है जिनका। श का एक अर्थ आनन्द होता है। तत का अर्थ है फैला हुआ या व्याप्त। इस तत शब्द से शाश्वत शब्द का अन्तिम त अक्षर ले लिया है। जिससे शीघ्र ही आनन्द की प्राप्ति होती है उनका नाम भी शाश्वत या शाश्वती है। अतः का अर्थ है जिससे और यह पंचमी विभक्ति है। श+आशु+त/ती। आशु का अर्थ है शीघ्र। शान्ति और बल का विस्तार करने वाली। अपने भक्तों को सौभाग्य/आनन्द/कल्याण एवं बल का विस्तार करने वाली या देने वाली। एकाक्षरी कोष में श का अर्थ शान्ति, सौभाग्य, शिव (कल्याण) आदि अर्थ दिये गये है। अश्व का अर्थ है घोड़ा जो शक्ति या बल का प्रतीक है। अतः अश्व शब्द से शक्ति या बल अर्थ लिया गया है। तन् धातु में ड प्रत्यय लगाने से त शब्द बनता है जिसका अर्थ है विस्तार करने वाला, देने वाला, निर्माण करने वाला। स्त्रीलिंग में त का ती हो गया है। अन्यथा भी ती का अर्थ ख्याति दिया गया है। तब इस नाम का अर्थ हो गया शान्ति एवं शक्ति के रूप में जिनकी ख्याति है।

446. **भूतमाता** – प्राणीमात्र अर्थात सभी प्राणियों की मातास्वरूपा अर्थात उनका पालन करने वाली।

447. **महाभूताधिपप्रिया** – महाभूतों के अधिप शंकर जी की प्रिया। प्रिया का अर्थ प्रसन्न करने वाली भी होता है, तब इस नाम का अर्थ होगा महाभूतों के अधिप शंकर जी को प्रसन्न करने वाली।

448. **शुचिप्रेता** – पवित्रता को प्रकृष्ट रूप से गई अर्थात पूर्ण या सर्वतोभावेन पवित्र। प्र अर्थात प्रकृष्ट रूप से और इता अर्थात गई। विशुद्ध आत्मा स्वरूपा। प्रेत अर्थात आत्मा।

449. **धर्मसिद्धि** – धर्म की सिद्धि स्वरूपा। धर्म का पालन करने द्वारा ही उन्हें पाया जा सकता है। धर्म से है सिद्धि (प्राप्ति) जिसकी।

450. **धर्मवृद्धि** – धर्म की वृद्धि स्वरूपा अर्थात सत्य, अहिंसा, न्याय या समाज को स्थिर रखने वाले जीवन मूल्यों को बढ़ाने वाली। वेदविहित कर्म को भी धर्म कहते हैं। इनकी वृद्धि स्वरूपा अर्थात इनको बढ़ाने वाली। धर्म के द्वारा उनके स्वरूप की वृद्धि होती है।

451. **पराजिता** – भक्तों की भक्ति से पराजित होने वाली अर्थात उनके वश में हो जाने पर भी। शत्रुओं के द्वारा अजित अर्थात न जीती गई। पर का अर्थ है शत्रु। परैः अजिता इति पराजिता। सभी को पराजित करने वाली। पर अर्थात दूसरों या शत्रुओं को पराजित करने वाली।

452. **कामसन्दीपनी** – कामनाओं या इच्छाओं को बढ़ाने वाली। वेद में प्रार्थना की गई है कि मुझे कामनाओं वाला बनाएं। सम्भोग इच्छा को बढ़ाने वाली। काम को जगा देने वाली।

453. **कामा** – इच्छा स्वरूपिणी। कामदेव की शक्ति स्वरूपा। काम + आ, आ का अर्थ है नाश करना। इच्छाओं को नाश करने वाली अर्थात अपने भक्तों को इच्छा रहित बनाने वाली जिससे वे मन के पार चले जायें एवं उन्हें मोक्ष मिल जाये। सर्वेः काम्यते इति कामा। सभी के द्वारा जिनकी कामना की जाती है अर्थात जिनकी कृपा पाने की कामना की जाती है। अमम् अमितम् कम् सुखम् अस्या इति कामा अर्थात जिनका सुख या आनन्द असीमित है।

454. **सदाकौतूहलप्रिया** – सदैव कौतूहल है प्रिय जिन्हें। ऐसे कार्य जिनमें आश्चर्य हो, कौतूहलयुक्त कार्य कहलाये जाएंगे। कौतुहल का तात्पर्य है किसी वस्तु के देखने या सुनने की प्रबल इच्छा, उत्कण्ठा, आश्चर्य।

455. **जटाजूटधरा** – जटाजूटों को धारण करने वाली। जटाओं को लपेट कर बनाया गया जूड़ा जटाजूट है। कूटिलरूपा माया को धारण करने वाली अर्थात् उसे वश में किये हुए। जटाजूट का अर्थ है जटाओं का समूह, जटायें तिरछी या वक्र होती है और माया भी बड़ी कूटिल होती है। माया के अनेक रूप होते है अतः समूह शब्द बोला गया। श्रृखंलाबद्ध धर्म को धारण करने वाली। जटाओं के घेरे एक दूसरे से लिपटे रहते है अर्थात् जुड़े रहते है। श्रृखंलाबद्ध धर्म की स्वामिनी अर्थात् इसे लोगों के समक्ष बताने वाली अर्थात् किस समय क्या करना चाहिए यह बताने वाली। बाल्यावस्था में यह ठीक है, युवावस्था में यह ठीक है, वृद्धावस्था में यह ठीक है। धर्म की श्रृखंला पर आघात पहुँचने से या इसका अतिक्रमण होने से प्राण शक्ति कुपित हो जाती है अर्थात् अनर्थ होने लगते है या दुखों का सामना करना पड़ता है। सब चीजें एक दूसरे से जुड़ी हैं अर्थात विभिन्न काल एवं परिस्थिति में बताये गये कर्त्तव्य भी एक दूसरे से जुड़े हैं।

456. **मुक्ता** – मुक्त स्वरूपा। देवी जन्म – मरण के बन्धन से या संसार के बन्धन से मुक्त हैं। मुक्त पुरुषों वाली अर्थात मुक्त पुरुषों को अपने लोक में आश्रय देने वाली।

457. **सूक्ष्मा** – सूक्ष्म स्वरूपा अर्थात जिनका मूल रूप इन्द्रियों की पकड़ में नहीं आता है। वह रूप जो आँखों से न दिखाई दे और अन्य इन्द्रियों की पकड़ में न आए सूक्ष्म रूप है। स्थूलेन्द्रियागोचरत्वात् सूक्ष्मा। सुखदा उत्तमा क्ष्मा अनया। सूरीन् क्षमते इयम्। अणोरणीयान् जीवस्याप्यन्तर्यामी। स्थूल इन्द्रियों से ग्रहण नहीं होने वाली अर्थात् जिनका ज्ञान नही हो सकता। जिनके द्वारा पृथ्वी सुख देने वाली एवं उत्तम होती है। पृथ्वी से ही हमें अन्न, जल, रहने का स्थान, अनेक प्रकार के रत्न मिलते हैं अतः पृथ्वी प्राणियों के लिए सुखदयी एवं उत्तम है। पृथ्वी में इन सभी गुणों को पैदा करने वाली शक्ति देवी ने ही दी है। ज्ञानियों या विद्वानों के अपराधों को क्षमा करने वाली। जीवात्मा को सबसे छोटा माना जाता है उसके अन्दर भी रहने वाली या गति करने वाली अर्थात् जो जीवात्मा से भी छोटी है।

458. **शक्तिविभूषणा** – शक्ति से विभूषित। शक्ति नाम का एक आयुध भी होता है। लक्ष्मण जी को मेघनाद ने शक्ति मारी थी।

459. **द्वीपिचर्मपरिधाना** – व्याघ्र चर्म के वस्त्र वाली अर्थात व्याघ्र के चर्म को पहनने या धारण करने वाली।

460. **चीरवल्कलधारिणी** – वस्त्र के रूप में वल्कल (पेड़ की छाल) को धारण करने वाली। चीर का अर्थ है वस्त्र। चीर के रूप में वल्कल वस्त्र धारण करने वाली।

461. **त्रिशूलडमरूधरा** – त्रिशूल और डमरू को धारण करने करने वाली।

462. **नरमालाविभूषणा** – मनुष्यों की मुण्डमालाओं का है आभूषण जिनका।

463. **अत्युग्ररूपिणी** – अतिशय उग्र रूप धारण करने वाली। उग्र का अर्थ है दुष्टों के प्रति निर्दय, जो बेकाबू हो, हिंसक हो अर्थात मारकर ही दम ले।

464. **उग्रा** – उग्र स्वरूप वाली। शक्तिशाली या ताकतवर। उग्र शब्द उच् धातु से बना है जिसका अर्थ है एकत्रित होना। ऊर्जा जब एकत्रित होती है तो अधिक ताकतवर होती है। वायु जब इकठ्ठी होती है संकीर्ण या संपीडित होती है तो ज्यादा ताकतवर होती है। जो अपने पति शिव से या भक्तों से जुड़ी रहती हैं। उच् धातु का अर्थ है एकत्रित होना या जुड़ा होना। जो दुष्टों राक्षसों के लिए हिंसक या हमलावर हो। आपने उग्र भीड़ का नाम सुना होगा जिसका अर्थ है कि भीड़ हिंसक, हमलावर हो गई तथा अपने ऊपर नियन्त्रण खो दिया। भयंकर या डरावना। भयंकर या डरावना घोरा शब्द का भी अर्थ होता है। निर्दयी या क्रूर जिसे राक्षसों के प्रति कोई दया या करुणा नहीं है। उत् ग्रह्णाति इति उग्रा अर्थात जो ऊपर की ओर ग्रहण करती है अर्थात अपने भक्तों को ऊपर के लोक में ग्रहण करती है अर्थात ऊपर के लोक में भेजने वाली। उच्चान् अति ग्रसति इति उग्रा। बड़े बड़े देवताओं एवं तपस्वियों का भी भक्षण कर लेती हैं, यदि उनकी आयु पूरी हो गयी हो या प्रलयकाल आ गया हो। उचते समवेतो भवति इति उग्रा अर्थात जो जुड़ती हैं वे उग्रा हैं। सामान्यतः क्रोध से जुड़ने के अर्थ को लेकर उग्र का अर्थ क्रोधी किया जाता है। जो अपने भक्तों से जुड़ी रहती हैं अर्थात उनसे दूर कभी नहीं जाती। शीघ्र प्रसन्न होने वाली या क्रोधित होने वाली। ऐसे देवी देवता जो तुरन्त ही प्रसन्न या नाराज हो जाते हैं उन्हें उग्र देवता कहते हैं। उ का अर्थ है क्रोध। भक्त के क्रोध को ग्रसित करने वाली अर्थात् समाप्त करने वाली। तात्पर्य है क्रोध नामक दुर्गुण समाप्त करने वाली। उत्पात (भूकम्प, महामारी आदि) को ग्रसित करने वाली अर्थात् नष्ट करने वाली। उत्पात का उ अक्षर ले लिया। उ के अन्य कई अर्थ है जैसे शिव, शक्ति, बन्धन, लोभ आदि। भगवान शिव को निगलने वाली अर्थात् धूमावती देवी स्वरूपा या धूमावती देवी से अभेद है जिनका। दुष्टों की शक्ति का नाश करने वाली। बन्धन का नाश करने वाली अर्थात् मोक्ष देने वाली। लोभ नामक दुर्गुण का नाश करने वाली। उग्रा का अर्थ तेजस्विनी भी है।

465. **कल्पान्तदहनोपमा** – कल्प के अन्त में प्रज्ज्वलित अग्नि के समान कान्ति वाली।

466. **त्रैलोक्यसाधिनी** – त्रिलोकी में होने वाले पदार्थो को प्राप्त करा देने वाली। त्रैलोक्य का अर्थ है त्रिलोकी में होने वाला अर्थात वहाँ होने वाला ऐश्वर्य सुख आदि। तीनों लोकों को चलाने वाली।

467. **साध्या** – साधना करने योग्य। साध्य मन्त्र की शक्तिस्वरूपा। वह मन्त्र जिसको सिद्ध करने के लिए निर्धारित संख्या से अधिक संख्या में जप करना होता है, साध्य मन्त्र कहलाता है। साध्य देवताओं वाली अर्थात साध्य देवताओं की उपासनीया।

468. **सिद्धि** – गणेश जी की सिद्धि नामक पत्नी से अभेद है जिनका। दक्ष प्रजापति की एक कन्या जिसका विवाह धर्म से हुआ था। कार्य में सफलता या पूर्णता स्वरूपा। कार्य में सफलता या पूर्णता इन्हीं के कारण होती है। मुक्ति या मोक्ष स्वरूपा। किसी काम में अद्भुत प्रवीणता या निपुणता।

469. **साधकवत्सला** – साधक भक्त हैं अतिशय प्रिय जिन्हें।

470. **सर्वविद्यामयी** – समस्त विद्याओं से विभूषित।

471. **सारा** – सार तत्व वाली अर्थात मुख्य तत्व स्वरूपा जो कभी नष्ट नहीं होता। सार का अर्थ है वस्तु का स्थिरांश।

472. **असुराणां विनाशिनी** – असुरों का विनाश करने वाली।

473. **दमनी** – दुष्टों का दमन करने वाली। भगवान शिव की गृहिणी। भगवान विष्णु की गृहिणी से अभेद है जिनका। दमन का एक अर्थ भगवान शिव, भगवान विष्णु है। शत्रुओं को दबाने या रोकने वाली। युद्ध कर्ता। अपने उपासकों को इन्द्रिय निग्रह को प्राप्त कराने वाली अर्थात उन्हें इन्द्रिय निग्रह करने की शक्ति देने वाली।

दमं इन्द्रियनिग्रहं नयति प्रापयति। मनन शक्ति को देने वाली। मन का नाश करने वाली अर्थात अपने भक्तों को मन से परे ले जाने वाली। मनं मननं द्यति ददाति च।

474. **दामिनी** – बिजली की तरह चमकने वाली। देदीप्यमान कान्ति वाली।

475. **दान्ता** – दान्ता नामक अप्सरा की तरह सुन्दर। तपस्या के कष्ट को सहने वाली। अमरकोश में दान्त का अर्थ तपःक्लेशसहः बताया है। दमनशील। अपनी इन्द्रियों का दमन करने वाली अर्थात वश में करने वाली। बन्धन का अन्त करने वाली अर्थात भक्त को सांसारिक बन्धनों से छुटकारा दिलाने वाली। शत्रुओं के दमन (परेशान करना रूपी क्रिया) का अन्त करने वाली। उपताप का अन्त करने वाली। एकाक्षरीकोश में द का अर्थ बन्धन, दमन, उपताप दिया गया है।

476. **दया** – दया स्वरूपा। वह भाव जिससे अपने से कमजोर व्यक्ति के कष्टों को दूर करने की इच्छा होती है। इस भाव के स्वरूप वाली। अमरकोश के अनुसार जिससे दूसरे की रक्षा की जाए ऐसे भाव को दया कहते हैं। दयते रक्ष्यते अनया इति दया। दया का अर्थ सह अनुभूति भी है अर्थात दूसरे के कष्ट को अपना कष्ट और दूसरे के सुख को अपना सुख समझने की अनुभूति। सहानुभूति को भी दया कहते हैं अर्थात उस भाव के स्वरूप वाली जिसमें दूसरों के दुख से दुखी एवं दूसरों के सुख से सुखी अनुभव होता है। दक्ष प्रजापति की सन्तान जिसका विवाह धर्म से हुआ।

477. **दोग्ध्री** – दुह् प्रपूरणे धातु से अर्थ होगा भरने वाली अर्थात जो अपने भक्तों के घर को दूध या दूध से उपलक्षित सभी पदार्थ जैसे दही, घी आदि से भर देती हैं। दूध देने वाली अर्थात दूध से भरने वाली। जो दुही जाती हैं अर्थात मनोकामना के लिए जिसका दोहन किया जाता है। जिसको दुहा जाए अर्थात उपासक लोग मनोकामना की पूर्ति के लिए जिसे दुहते हैं। मनोकामना पूरी करने वाला दूध। श्रेष्ठ गुणों का दोहन करने वाली। दूध से भरने वाली अर्थात दूध से उपलक्षित सभी पौष्टिक या लाभदायक पदार्थों को देने वाली। दुह् प्रपूरणे धातु होती है। इहलौकिक कामना के लिए जिसका दोहन किया जाता है। पारलौकिक कामना के लिए जिसका दोहन किया जाता है।

478. **दुरापहा** – दुर्दिन को पूर्ण रूप से दूर कर देने वाली। दुरात्माओं को पूर्ण रूप से हटा देने वाली या दूर कर देने वाली। दुराप का अर्थ कठिनाई से प्राप्त अर्थात दुर्लभ। भगवान की भक्ति दुर्लभ मानी गई है। भक्ति के पास जाने वाली। हन्ति गच्छति अर्थात हन् धातु में ड प्रत्यय लगाने से ह बनेगा जिसका अर्थ है जाने वाली। कठिनाई को दूर कर देने वाली। दुराप अर्थात कठिनाई से प्राप्त अर्थात कठिन। हा अर्थात दूर करने वाली। पापों को नष्ट कर देने वाली। बहुत अधिक मेहनत करके प्राप्त की गई बीमारी को दूर करने वाली। आज का विज्ञान कहता है कि अधिकांश बीमारियाँ मानसिक हैं। बहुत दिनों तक प्रतिकूल सोचने से बीमारी आती है अतः बीमारी दुर्लभ हुई। कठिन तपस्या से प्राप्त सिद्धि को नष्ट करने वाली जैसे कर्ण की सिद्धि उस समय काम नहीं आई जब उन्हें सबसे अधिक जरूरत थी।

479. **अग्निजिह्वोपमा** – अग्नि की लपट की तरह लपलपाती या प्रदीप्त, दूसरों को असह्य अर्थात दूसरे उसके पास नहीं आ सकते। अग्नि की लपट की तरह दीप्तिमती, अग्नि की लपट की तरह ऊर्ध्वगामी अर्थात सबसे ऊपर रहने वाली। अग्नि की लपट ही अग्नि की जिह्वा है। अग्नि की जिह्वा के सदृश स्वरूप वाली।

480. **घोराघोरघोरतराननना** – भयंकर, सामान्य और अतिशय भयंकर मुख धारण करने वाली। अघोर का अर्थ है सामान्य। घोरतर का अर्थ है अतिशय भयंकर। घोर (भयंकर रूप) और घोरातिघोर (अतिशय भयंकर) मुख वाली।

481. **नारायणी** – भगवान नारायण स्वरूपा। भगवान नारायण (विष्णु) की शक्ति स्वरूपा। मनुष्यों के समूहों का आधार अर्थात सभी प्राणियों का आधार अर्थात जीव मात्र का आश्रय। नराणाम् समूहः नारः, तस्य अयनम् अर्थात सभी प्राणियों का आश्रय। विशिष्ट ज्ञान का आधार या विज्ञान है आधार जिसका। नारम् विज्ञानम् तस्य अयनम्

आधारो यस्याः सा नारायणी। विशिष्ट ज्ञान से प्राप्त होने वाली परम सत्ता। जल (समुद्र) है आश्रय (शैय्या) जिसकी। जल का आश्रय या जल है आश्रय जिनका, दोनों अर्थ हो सकते हैं। नार का एक अर्थ है जल। ब्रह्म से उत्पन्न तत्व का आश्रय नारायणी हैं। नर (ब्रह्म) से उत्पन्न तत्व नार है। वे तत्व हैं आश्रय जिनके। नार का अर्थ ज्ञान है इसी कारण नारद को नारद कहते हैं। ज्ञान का आश्रय यह भी नारायणी का अर्थ हुआ। जो गुणों में नारायण (विष्णु) के समान है अर्थात् उनके समान यश, तेज, रूप (सौन्दर्य) आदि में उनके समान है। जो भगवान नारायण अर्थात् विष्णु की शक्ति स्वरूपा है/पत्नी स्वरूपा या उनकी पत्नी से अभेद है जिनका। नार शब्द का अर्थ सारूप्य–मुक्ति है, अयन अर्थात् आश्रय। इस मुक्ति का आश्रय अर्थात् देने वाला। किये हुये पाप को भी नार कहते है। अयन का अर्थ होता है गमन। किये हुये पापों का गमन जिनसे होता है वे नारायणी है अर्थात् पूर्व में किये हुये सभी पापों को नष्ट करने वाली। नार का अर्थ है पुण्यमोक्ष एवं अयन का अर्थ है अभीष्ट ज्ञान। मोक्ष एवं ज्ञान जिससे हो अर्थात् इसे देने वाली। अयन का अर्थ होता है गमन (गति) और गति का अर्थ ज्ञान तथा प्राप्ति भी होता है। ब्रह्मबैवर्त पुराण में नारायण शब्द के इस प्रकार के अर्थ दिये गये है। (भगवान विष्णु के नारायण नाम का कई प्रकार से विग्रह किया गया है जैसे – जल है रहने का स्थान या गन्तव्य स्थान जिनका। नारं नीरम् अयनम् अस्या इति नारायणी। मनुष्यों के द्वारा बनाये हुए मन्दिर आदि या जल से पैदा हुए तत्व (पदार्थ) हैं नार, उन सभी का है निवास स्थान या मार्ग जो, वह है नारायण। नाराणि, नरात् जातानि, तत्वानि नाराणि। तेषाम् अयम् अयनः। दोषों का निवास स्थान नहीं है जो अर्थात जिनके कोई दोष नहीं है। अराः दोषाः तेषाम् अयनो न भवति इति नारायणः। न रमणीया इति अराः। अतः अराः का अर्थ है जो रमणीय न हो अर्थात दोष। अराः दोषाः तेषाम् अयनो न भवति इति नारायणः। अरा का अर्थ है दोष तो नारा का अर्थ हुआ गुण। जो गुणों का घर है अर्थात जिनमें अच्छे गुण हैं। नारा गुणास्तेषाम् अयनम् च। जो मनुष्यों में तत्व के रूप में गये हैं वे हैं नारा या देवता। देवताओं का निवास स्थान। चक्षु में सूर्य देवता, कान में आकाश देवता रहते हैं। नारः नरेषु गतास्तत्वमानिनः सुराः, तेषाम् अयम् अयनः। मुक्त पुरुषों के रहने का स्थान, गन्तव्य, मार्ग। मुक्त पुरुषों का आश्रय। नारा मुक्ताः तेषाम् अयन। मनुष्यों के समुदाय के द्वारा जाना जाता है या प्राप्त किया जाता है। नर समुदायो नारं, तेन अयते, तस्य अयम् अयनम् पन्था। मनुष्य के समुदाय का रास्ता, गन्तव्य स्थान या लक्ष्य। निर्दोष ज्ञान के द्वारा जिनको जाना जाता है। नारं निर्दोषं ज्ञानम, तेन अयते गम्यते। निर्दोषत्वात् नारश्चा अयम् सर्वेषाम् अयनश्च च। जो निर्दोष है वह है नार। ऐसा निर्दोष जो सभी का आश्रय है। मनुष्यों का गन्तव्य या लक्ष्य या मार्ग या आश्रय। इनमें से अधिकांश अर्थ नारायणी के अर्थ में भी घटित हो जायेंगे।)

482. **नारसिंही** – नरसिंह स्वरूपा। नरसिंह भगवान की शक्ति स्वरूपा। सिंह जानवरों में सर्वश्रेष्ठ होता है और मनुष्य कई प्राणियों में श्रेष्ठ माना जाता है। मनुष्य को उसकी सर्वोच्च स्थिति में लाने वाली अर्थात आत्म स्वरूप में स्थापित करने वाली।

483. **नृसिंहहृदये स्थिता** – नरसिंह भगवान के हृदय में स्थित रहने वाली।

484. **योगेश्वरी** – श्रीकृष्ण की गृहिणी स्वरूपा। योग विद्या में पूर्ण समर्थ अर्थात पारंगत। योग विद्या की रचना करने वाली।

485. **योगरूपा** – योग स्वरूपा। कर्म योग, भक्ति योग, ज्ञानयोग, हठ योग, जप योग आदि सभी उन्हीं के योग हैं। योगं रूपयति इति योगरूपा अर्थात योग की रचना करने वाली। योग है ज्ञापक जिसका अर्थात योग से ज्ञात होने वाली या योग के रूप में दिखलाई देने वाली। रूप्यते इति रूपा अर्थात जो दिखाई दे अर्थात ज्ञापक अर्थात चिन्ह या लक्षण। योग में व्याप्त लक्षणों या गुणों से ज्ञापित होने वाली। जो योग के लक्षण या गुण हैं, वे देवी में भी हैं।

486. **योगमाता** – योग–विद्या की जननी। योग–विद्या की रक्षा करने वाली। माति रक्षति शिशुम् स्वगर्भे इति माता अर्थात जो अपने गर्भ में शिशु की रक्षा करती है, वह माता है। अतः माता का अर्थ रक्षा करने वाली भी होता है।

487. **योगिनी** – योग–विद्या से युक्त अर्थात योग–विद्या में पारंगत या योग–विद्या का निरन्तर अभ्यास करने वाली। भक्त को भगवान से जोड़ने वाली। योगी लोग जिसे प्राप्त करना चाहते हैं। योगिभिः नीयते या सा योगिनी। योगी लोग जिसे प्राप्त करना चाहते हैं अर्थात मुक्ति स्वरूपा। योगिनी योग सम्पदा से युक्त ऐसी देवयोनि है जिनके पास अनेक यौगिक शक्तियाँ जैसे आकाश गमन, परकाया प्रवेश आदि होती है। योगिनी मनुष्यों का उत्कर्ष करती है तथा सदगति देती है। ये अनेक शरीर धारण कर सकती है। इनमें दैवी सम्पदा होती है। एक स्थान पर लिखा है कि योगिनी योनिमुद्रा का अभ्यास करती हैं एवं भगवती पार्वती के चरण–कमलों की सेवा करती है। ये अवतार नहीं है पर पार्वती जी की सेवा करती है। योगिनियाँ मनुष्य को सदगति देती है जबकि यक्षिणी नुकसान भी पहुँचा सकती है। एक स्थान पर लिखा है कि योगिनी आदि शक्ति की अवतार है, जो पार्वती जी के साथ हमेशा रहती है और उनकी सेवा करती है। आदि शक्ति जी अर्थात पार्वती जी। योग अर्थात जोड़ना, शायद हमेशा पार्वती जी के साथ रहने के कारण भी इन्हें योगिनी कहा जाता हो अन्यथा योगिनी का अर्थ होता है योग शक्तियों से युक्त या जो प्रतिदिन योग का अभ्यास करती हो। पार्वती जी ने घोर दानवों से युद्ध करने के लिए इन योगिनियों को पैदा किया था। योगिभिः नीयते प्राप्यते इति योगिनी। योगियों द्वारा जिसे प्राप्त किया गया है अर्थात मुक्ति स्वरूपा। ज्ञान योग/कर्म योग/भक्ति योग आदि जिनके लिए उपयुक्त है अर्थात् इन योगों के द्वारा जिनसे जुड़ा जाता है। सभी सद्गुणों से नित्य योग वाली अर्थात् ये गुण इनमें कभी नहीं होते। योग का अर्थ गुण भी है क्योंकि इनके द्वारा जुड़ा जाता है। ये गुण जिनके है अर्थात् जिनमें रहते है। ध्यान योग के द्वारा जाने जाने वाली या प्राप्त किये जाने वाली। ज्ञानभक्त्यादयः सर्वेपि उपाया एतदर्था इति इयम् योगिनी। सर्वैः गुणैः नित्ययोगिनी। युज्यन्ते इति योगा ज्ञानादयो गुणाः। ते अस्या सन्ति इति योगिनी। ध्यान योगेन गम्या इयम्।

488. **खेचरी** – गगन/आकाश में विचरण करने वाली। योग की खेचरी मुद्रा स्वरूपा जिसमें जिह्वा को मोड़कर कपाल के छिद्र में प्रवेश कराया जाता है।

489. **खचरी** – वह शक्ति जिससे सभी इन्द्रियाँ कार्य करने लायक होती हैं अर्थात अपने विषयों का ग्रहण करती हैं। ख का अर्थ है इन्द्रिय। सूर्य रूप में विचरण करने वाली या सूर्य में स्थिति होकर विचरण करने वाली। ख का एक अर्थ सूर्य है। उपासकों को सुख पहुँचाने वाली या स्वर्ग प्राप्ति कराने वाली। ख का अर्थ सुख और स्वर्ग है।

490. **खेला** – क्रीड़ा स्वरूपा। जगत की उत्पत्ति, स्थिति और संहार देवी की क्रीड़ा है।

491. **निर्वाणपदसंश्रया** – मोक्ष पद की आधार या आश्रय स्वरूपा। वाण अर्थात शरीर। निर्वाण में शरीर रहते हुए भी विदेहपना अनुभूति होती है जो आनन्द की अवस्था है।

492. **नागिनी** – मूलाधारचक्र में स्थित कुण्डलिनी के रूप में। मूलाधारचक्र में स्वयंभू लिंग को साढ़े तीन फेरे में लपेटे हुए धवलवर्णा सर्पाकार कुण्डलिनी होती है। नाग देवता स्वरूपिणी। नागिनी रूपा। शिव की नागों के प्रति प्रीति देखकर जो स्वयं नागिनी रूप में परिवर्तित हो गई, ऐसा देवीनामविलास में लिखा है।

493. **नागकन्या** – नाग की कन्या। नाग वंश में दिव्य शक्ति से सम्पन्न उत्पन्न कन्या। मनसा देवी स्वरूपा। अर्जुन की पत्नी उलूपी स्वरूपा। नाग वंश में उत्पन्न श्रेष्ठ दिव्य शक्तियों से युक्त कन्या स्वरूपा। मनसा देवी या जरत्कारू। पर्वतराज हिमालय की पुत्री। नग का अर्थ है पर्वत। बिना अर्थ बदले अर्थात स्वार्थ में कन् प्रत्यय लगाने से नाग बनता है अतः नाग का अर्थ भी पर्वत हुआ। नागराज की पुत्री। गोपियों में अंश रूप में विद्यमान।

गोपियां नागकन्या कहलाती हैं। नाग आठ होते हैं अतः योग के आठ साधनों से अर्थात अष्टांगयोग से प्राप्त होने वाली। कन्या अर्थात पुत्री अर्थात प्राप्त होने वाली।

494. **सुवेशा** – सुन्दर वेश वाली। सुन्दर वस्त्रों को धारण किये हुये। सुन्दर निवास स्थान वाली। सु + व + ईशा अर्थात् सुन्दर (श्रेष्ठ) ज्ञान से युक्त ईश्वरी, व का अर्थ है ज्ञान। आत्म ज्ञान या ब्रह्म ज्ञान या वेद ज्ञान ही सर्वश्रेष्ठ ज्ञान है।

495. **नागनायिका** – नागवंश का मार्गदर्शन करने वाली। नागों की नायिका। नागों में सर्वश्रेष्ठ रमणी रूप धारण करने वाली।

496. **विषज्वालावती** – विष की ज्वालाओं को धारण करने वाली।

497. **दीप्ता** – प्रदीप्त या देदीप्यमान कान्ति वाली। जिसका यश चारों ओर फैला है। दीप्ति का अर्थ है अति विस्तीर्ण कान्ति। साहित्य दर्पण के अनुसार युवावस्था, रूप (शारीरिक अंगों की आकृति) एवं सुखोपभोग के कारण जो शारीरिक सौन्दर्य होता है उसे शोभा कहते हैं। जब काम भाव के भी उद्रेक (वृद्धि) का शोभा में समावेश हो जाए तो उसे कान्ति कहते हैं। ऐसा कहते हैं कि युवावस्था में काम भाव का असर होने पर व्यक्ति के चेहरे में एक प्रकार की चमक आ जाती है। जब कान्ति अति विस्तीर्ण हो जाती है तो उसे दीप्ति कहते हैं।

498. **कलाशतविभूषणा** – सैकड़ों ब्रह्माण्ड से विभूषित। कला का अर्थ साकार जगत भी होता है। सैकड़ों स्वरूपों से विभूषित। देवी के अनेक रूप हैं। प्रत्येक नारी देवी का स्वरूप मानी गई है। कला का अर्थ स्वरूप या इकाई भी होता है। सैकड़ों इकाइयों (अंशावतारों) से विभूषित। यहाँ सैकड़ों का अर्थ हे अनन्त। सैकड़ों कलाओं से विभूषित रहने वाली। कला का अर्थ आत्मशक्ति, सौन्दर्य कर सकते हैं। कला व्यक्त शक्ति है। कला का अर्थ गुण ले सकते हैं तब अर्थ होगा सैकड़ों अर्थात अनन्त गुणों से विभूषित। शारीरिक कला अर्थात रूप सौन्दर्य और मानस कला अर्थात मनोभाव या गुण।

499. **तीव्रवक्त्रा** – तेज मुख वाली अर्थात तेजी से बोलने वाली अर्थात तुरन्त या हाजिर जवाब। उन्हें सोचना नहीं पड़ता। प्रत्युत्पन्न मति वाली। अतिशय भयंकर मुख वाली। प्रचण्ड शब्दों को बोलने वाली अर्थात् भयभीत करने वालों शब्दों को बोलने वाली। युद्ध में हुंकार आदि शब्दों को बोलने वाली जिससे दैत्य डरते है। तीव्र गति से या बहुत तेजी से बोलने वाली। असह्य तेज से युक्त मुख वाली अर्थात् उनके तेज को दूसरों के द्वारा सहन नही किया जा सकता अर्थात् झेला नहीं जा सकता।

500. **महावक्त्रा** – विशाल मुख वाली। विशाल मुख वाली। पूजनीय या अच्छे शब्दों को बोलने वाली। मंगलकारी या कल्याणकारी शब्दों को बोलने वाली। मह् पूजायाम् धातु होती है। वदति अनेन इति वक्त्र्, जिसके द्वारा बोला जाता है वह वक्त्रा या मुख है। इस प्रकार वक्त्र का अर्थ है बोलने वाला। वेद वाणी को बोलने वाली क्योंकि सबसे महान या पूजनीय वेद वाणी ही है।

501. **नागकोटित्वधारिणी** – नागों के कई प्रकारों या विधाओं को धारण करने वाली। कोटि का एक अर्थ है विधा या प्रकार अर्थात कोटित्व का अर्थ है नानात्व। करोड़ों नागों की शक्ति को धारण करने वाली। कोटित्व का अर्थ है शक्ति।

502. **महासत्वा** – अतिशय बल वाली। सर्वाधिक बल वाली। महा का अर्थ अतिशय, सर्वाधिक।

503. **धर्मज्ञा** – धर्म को जानने वाली। कर्तव्य और अकर्तव्य का ज्ञान धर्म है। धर्म वह है जो समाज को धारण करे अर्थात समाज का अस्तित्व बनाये रखे। सत्य, अहिंसा, परोपकार, न्याय आदि जीवन मूल्य धर्म हैं।

504. **धर्मातिसुखदायिनी** – धर्म के द्वारा अतिशय सुख देने वाली।

505. **कृष्णमूर्द्धा** – काले सिर वाली अर्थात जिनके बाल काले हैं ऐसे सिर वाली। सुन्दर काले लम्बे या घुंघराले बालों से विभूषित।

506. **महामूर्द्धा** – विशाल है मस्तक जिनका अर्थात आकाश स्वरूपी मस्तक वाली। विराट स्वरूप में कहा गया है कि आकाश ब्रह्म का मस्तक है। सर्वश्रेष्ठ। महा का अर्थ है सर्व और मूर्धा का अर्थ है श्रेष्ठ।

507. **घोरमूर्द्धा** – भयंकर मस्तक है जिनका अर्थात दैत्यों को भयभीत करने के लिए जिनका मस्तक भयंकर है। मूर्द्धा का अर्थ मस्तक। अतिशय श्रेष्ठता को लिये। भयानक अर्थ से श्रेष्ठता बाधित होती है, जो भयानक है वह श्रेष्ठ कैसे हो सकता है। घोर का अर्थ है भयानक के बजाय अतिशय लिया गया।

508. **वरानना** – श्रेष्ठ या सुन्दर मुख वाली। जिनके मुख में कुमकुम, केसर या हल्दी लगी हुयी है। वर का अर्थ है कुमकुम, केसर, हल्दी। कुमकुम, केसर अर्थात लाल अर्थात रजोगुण। हल्दी अर्थात पीला अर्थात पृथ्वी अर्थात स्थिति शक्ति, रक्षा शक्ति, मंगलकारी गुण। तात्पर्य हुआ इन गुणों को धारण करने वाली। नियम है कि मुख्य अंग बोलने से सभी का बोध हो जाता है। मुख बोलने से सारे शरीर का भी बोध हो जाता है।

509. **सर्वेन्द्रियमनोन्मत्ता** – सभी इन्द्रियों को मन के द्वारा उन्मत्त अर्थात जाग्रत करने वाली, संचालित करने वाली। उन्मत्त का अर्थ यहाँ पर पागल नहीं होगा। मदि हर्षे धातु होती है। उससे उन्मत्त का अर्थ होगा अधिक हर्ष वाली। सभी इन्द्रियों पर शासन करने वाले अतिप्रसन्न मन वाली। जिसकी सभी इन्द्रियाँ और मन अतिप्रसन्न हैं। उन्मत्त अर्थात उत्कृष्ट ज्ञान वाला बना देना अर्थात अधिक जाग्रत कर देना। मन ज्ञाने धातु में क्त प्रत्यय लगाने से मत्त शब्द बन सकता है। सभी इन्द्रियों में उन्मत्त अर्थात जाग्रत मन के स्वरूप वाली। जब मन शामिल होता है तभी इन्द्रियाँ विषय को ग्रहण करती हैं। सभी इन्द्रियों में जो श्रेष्ठ मन है, उस मन के कारण उन्मत्त। उन्मत्त का एक अर्थ है उचित अनुचित के विवेक से हटकर चाहे जो कुछ कर बैठे।

510. **सर्वेन्द्रियमनोमयी** – सभी इन्द्रियों और मन से युक्त, सभी इन्द्रियों और मन के स्वरूप वाली।

511. **सर्वसङ्ग्रामजयदा** – सभी प्रकार के संग्रामों में जय/विजय को देने वाली।

512. **सर्वप्रहरणोद्यता** – सभी प्रकार के अस्त्र शस्त्र (हथियार) के प्रहार के लिए उद्यत।

513. **सर्वपीडोपशमनी** – सभी प्रकार की पीड़ाओं को शान्त कर देने वाली।

514. **सर्वारिष्टनिवारिणी** – सभी प्रकार के अरिष्टों का निवारण कर देने वाली।

515. **सर्वैश्वर्यसमुत्पन्ना** – सभी ईश्वरों के समूह से उत्पन्न। सभी देवताओं से सम्बद्ध तेज से उत्पन्न। ऐश्वर्य का अर्थ ईश्वर से सम्बद्ध या ईश्वर का समूह भी होता है। दुर्गासप्तशती में आया है कि सभी देवताओं का तेज मिलकर एक नारी रूप में परिवर्तित हुआ जो महालक्ष्मी स्वरूप है। सभी प्रकार का ऐश्वर्य जिनसे उत्पन्न होता है यह अर्थ भी कर सकते हैं। सभी प्रकार के ऐश्वर्यों से उत्पन्न होने वाली या भक्तों के लिए सभी प्रकार के ऐश्वर्यों को उत्पन्न करने वाली। षडैश्वर्य अर्थात भग, धर्म, यश, श्री, ज्ञान, वैराग्य। अष्टैश्वर्य अर्थात अष्ट लक्ष्मी।

516. **सर्वग्रहविनाशिनी** – सभी प्रकार के पाप ग्रहों को पूर्ण रूपेण नष्ट कर देने वाली अर्थात उनके प्रभावों का पूर्ण नाश करने वाली।

517. **मातङ्गी** – मातंगी स्वरूपा। मतम् गमयति अर्थात विचार को ले जाने वाली अर्थात विचार का बोध कराने वाली, विचारों को अभिव्यक्त करने वाली अर्थात वैखरी वाणी स्वरूपा। विचार में प्रवेश किया है जिसने। मतंग (हाथी) को जन्म देने वाली।

518. **मत्तमातङ्गी** – प्रसन्नता से भरी हुई मदशील अंगों वाली। मत्त अर्थात प्रसन्नता से भरी हुई। मातंगी अर्थात मदशील अंगों वाली। मदशील अंग का तात्पर्य है कि नशा जैसा, आनन्द की अनुभूति लिये हुए और बाहरी

दुनिया से सुधबुध खोये हुए अपने में मस्त। मदोन्मत्त मातंगी के स्वरूप को धारण करने वाली। हाथी मदमस्त चाल से चलता है अर्थात झूमता हुआ, सिर्फ नीचे पृथ्वी पर देखता हुआ, बाहर हो रही किसी भी गतिविधि से बेपरवाह एवं अपने भीतर आनन्द को अनुभव करता हुआ, इस प्रकार चलता है।

519. **मातङ्गीप्रियमण्डला** – मतंग ऋषि से पूजित ऐसी देवी, जिन्हें समूह पसन्द है। समूह अर्थात अष्टमातृकाओं के समूह या नित्या देवियों के समूह या कन्याओं के समूह। दुर्गासप्तशती के एक ध्यान मन्त्र में आता है कि देवी हाथ में तलवार धारण किये हुए कन्याओं से घिरी हुई हैं। जिन मातंगी माता को समस्त भक्त मंडल/समूह प्रिय है।

520. **अमृतोदधिमध्यस्था** – क्षीर सागर के मध्य में स्थित। क्षीर सागर अर्थात जहाँ से अमृत निकला। अमृत का समुद्र अर्थात क्षीर सागर क्योंकि इसमें अमृत पाया जाता है।

521. **कटिसूत्रैरलङ्कृता** – यज्ञोपवीत से अलंकृत या सुशोभित। कटिसूत्र का एक अर्थ है यज्ञोपवीत। कमर में भव्य आभूषण के रूप में धारण किये सूत्रों से सुशोभित।

522. **प्रवालवसनाम्बुजा** – मूंगे के समान लाल वस्त्र वाली और कमल वाली। पहने हुए वस्त्र लाल हैं और जिस कमल पर विराजमान हैं वह लाल है, जो कमल हाथ में लिए हैं वह भी लाल है। नये वस्त्रकमल वाली अर्थात नये सुन्दर वस्त्र वाली। प्रवाल का अर्थ है नया पत्ता अतः यहाँ नया अर्थ लिया। जैसे चरण कमल वैसे ही वसन कमल। अम्बुज अर्थात कमल अर्थात सुन्दर। कमल सुन्दरता का प्रतीक है।

523. **मणिमण्डलमध्यस्था** – मणियों के समूह के बीच अर्थात मणि–द्वीप में मणियों के समूह के बीच रहने वाली। मणि–द्वीप के बीच में सुशोभित (विराजमान होकर)। मध्य में मणियों की माला से सुशोभित या उन्हें धारण करने वाली।

524. **ईषत्प्रहसितानना** – मन्द मुस्कान से सुशोभित मुख वाली।

525. **कुमुदा** – कुमुद स्वरूप वाली अर्थात, कुमुद की तरह सफेद और सुगन्ध वाली। कुमुद पुष्पों वाली अर्थात कुमुद पुष्पों से सुशोभित। कुमुदानि पुष्पाणि यस्या सा। पृथ्वी में प्रसन्नता स्वरूपा या प्रसन्नता देने वाली। कु अर्थात पृथ्वी अर्थात स्थिरता। स्थायी प्रसन्नता देने वाली। कुमुद + आ, आ का अर्थ है देना, मुद का अर्थ है प्रसन्नता।

526. **ललिता** – कोमलता युक्त सुन्दरता वाली। देवी के सभी अंग मृदु अर्थात कोमल हैं। आनन्दप्रदा सुन्दरता वाली। अतिशय लालित्य स्वरूपा। जिस प्रकार छोटी बच्ची डाँटने के बाद भी अपनी चंचलता नहीं छोड़ती उसी प्रकार ललितास्वरूपा अपनी चंचलता नहीं छोड़ती अर्थात जो सभी को प्रिय लगे। जो अपने सौन्दर्य के द्वारा सभी को प्रिय लगे, मोहित करे वह है ललिता। क्रीड़ा करने वाली अर्थात सृष्टि, पालन, रक्षण, संहार, अपने को माया के पर्दे से छुपाकर भक्तों से आँख मिचौली का खेल करना देवी की क्रीड़ा है। अतिशय सुन्दर और अतिशय सुन्दर हावभाव वाली। हावभाव का अर्थ है चेष्टाएं/सुन्दर चेष्टाएं/अच्छी लगने वाली चेष्टाएं।

527. **लोला** – चंचल। चंचलता के कारण अतिशय सुन्दर लगने वाली। यहाँ चचंलता सुन्दरता के अर्थ में है।

528. **लाक्षालोहितलोचना** – लाक्षा की तरह लाल लाल नेत्रों वाली।

529. **दिग्वासा** – दिशाएं है निवास जिनका अर्थात समस्त दिशाओं में निवास करने वाली।

530. **देवदूती** – देवता को दूत बनाने वाली। दुर्गा जी ने भगवान शिव को दूत बनाकर शुम्भ असुर के पास भेजा था। देवताओं की दूती। देवताओं के लिए दूती का काम करने वाली। दूती मिलाने का या संदेश देने का काम करती है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ भगवान शिव से मिलाने वाली।

531. **देवदेवाधिवेदवता** – महादेव से भी श्रेष्ठ देवता स्वरूपा। समस्त श्रेष्ठ देवताओं से भी श्रेष्ठ देवता। देवदेव का अर्थ सामान्यतः महादेव को माना जाता है। देवदेव का अर्थ जिनकी देवता लोग स्तुति करते हैं अर्थात ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश और इन्द्र।

532. **सिंहोपरिसमारूढा** – सिंह के ऊपर अच्छी प्रकार से विराजमान रहने वाली।

533. **हिमाचलनिवासिनी** – हिमाचल (हिमालय) पर निवास करने वाली।

534. **अट्टाट्टहासिनी** – वेग पूर्वक अट्टाट्हास करने वाली। अट्टाट्टहास अर्थात खिलखिलाकर हंसना।

535. **घोरा** – भयंकर रूप वाली। दुष्टों के लिए बहुत बुरी। घोर का एक अर्थ बहुत बुरा भी होता है। दुष्टों और राक्षसों के लिए अतिशय भयंकर रूप वाली। घोर शब्द में भयंकरता अर्थ निहित होता है। दुष्टों को भय देने वाली। रात्रि स्वरूपा क्योंकि घोर का एक अर्थ रात्रि भी है। हन्ति विनाशयति इति घोरा अर्थात जो असुरों दुष्टों का नाश करे वह घोर है। हन्ति के ह का घ हो जाता है (संस्कृत के नियमानुसार)। घोर भगवान शिव का भी नाम है। इस प्रकार घोरा का अर्थ हुआ शिव की शक्ति स्वरूपा। जब हम घोर कर्म कहते हैं तो उसका अर्थ होता है बुरा या अतिबुरा कर्म। अतः घोरा का अर्थ है दुष्टों या राक्षसों के लिए बुरी या अतिबुरी। (घोर और उग्र में अन्तर– घोर सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों होता है। किसी भी चीज की अति अर्थात आधिक्य घोर है जैसे घोर तपस्या। इसका परिणाम प्रायः भयंकर होता है। अतः यह भयंकर के अर्थ में प्रयुक्त किया जाने लगा। हन् (मारना) धातु से भी घोर शब्द बनता है। घोर शब्द विशाल, श्रेष्ठ/उदात्त (sublime) बहुत अधिक प्रभावशाली, शक्तिशाली अर्थ में भी आता है। उग्र शब्द भयंकर+हमलावर/हिंसक के अर्थ में आता है। जो सामने वाले पर हिंसा करने पर उतारू हो, उसकी बिल्कुल न सुने भले ही सामने वाला शान्ति का प्रस्ताव लेकर आया हो, ऐसा व्यक्ति उग्र है। यह व्यक्ति सामने वाले की हर बात को काटने का प्रयास करेगा। आपने उग्र भीड़ शब्द सुना होगा जिसका तात्पर्य है कि वह हमला या हिंसा करने पर उतारू है। शीघ्र नाराज या प्रसन्न होन वाले देवता को भी उग्र कहा जाता है।)

536. **घोरदैत्यविनाशिनी** – भयंकर दैत्यों का पूर्ण नाश कर देने वाली।

537. **अत्युग्ररक्तवस्त्राभा** – अत्यधिक लाल वस्त्रों के समान आभा वाली। अत्युग्र का अर्थ है बहुत अधिक या ताजा। अत्यन्त उग्र रक्तरंजित वस्त्रों की कान्ति के समान कान्ति वाली अर्थात लाल लाल कान्ति वाली। यहाँ उग्र शब्द अधिक के अर्थ में आया है। अति+उग्र (अधिक) = अत्यधिक।

538. **नागकेयूरमण्डिता** – सर्परूपी बाजूबंद से सुशोभित।

539. **मुक्ताहारलतोपेता** – मोतियों की हार रूपी लता से युक्त अर्थात सुशोभित। हार को ही लता बोल दिया गया। हारों ने लताओं का रूप धारण कर लिया। लता फैलती है, हार भी फैलते हैं।

540. **तुङ्गपीनपयोधरा** – अत्यधिक उन्नत और स्थूल स्तनों वाली। स्थूल का अर्थ है जो थुलथुल न हो।

541. **रक्तोत्पलदलाकारा** – लाल कमल की पंखुड़ियों के समान आकार (स्वरूप) है जिसका अर्थात लाल वर्ण वाली।

542. **मदाघूर्णितलोचना** – मद के कारण अर्थात मदिरा पीने से जिनके नेत्र बड़ी तेजी से चल रहे हैं।

543. **समस्तदेवतामूर्ति** – समस्त देवताओं के आकार में। समस्त देवताओं में प्रधान। यहाँ मूर्ति का अर्थ प्रधान ले लिया गया क्योंकि मन्दिरों में मूर्ति ही प्रधान होती है।

544. **सुरारिक्षयकारिणी** – असुरों का विनाश करने वाली।

545. **खड्गिनी** – विशाल तलवार को धारण करने वाली। भेदनकारी शक्ति रखने वाली अर्थात द्वैत भाव करने वाली। खडि भेदने धातु होती है। जगत कायम रहे इसके लिए द्वैत भाव होना जरूरी है अन्यथा सभी सन्यासी और वैरागी हो जाऐंगे। ज्ञानरूपी खड्ग को धारण करने वाली जिससे अज्ञान रूपी अन्धकार को काटा जाता है। भौतिक तलवार को धारण करने वाली। दैहिक शक्ति से युक्त। हिन्दी कवियों ने तलवार को दैहिक शक्ति का प्रतीक माना है। रामधारी सिंह दिनकर की कविता है कलम और तलवार। इसमें कलम को ज्ञान शक्ति का तथा तलवार को दैहिक शक्ति का प्रतीक माना गया है। (शौर्य से युक्त। खड्ग या तलवार शौर्य का प्रतीक है। ज्ञान शक्ति से युक्त। चूँकि ज्ञान से अज्ञान को काटा जाता है अतः खड्ग ज्ञान का भी प्रतीक है। शारीरिक बल से युक्त। प्रसिद्ध हिन्दी कविता कलम और तलवार में तलवार को शारीरिक बल का एवं कलम को बौद्धिक बल का प्रतीक माना गया है।)

546. **शूलहस्ता** – हाथ में शूल लिये हुए। शूल बरछी के आकार का एक आयुध है। हाथ में त्रिशूल लिये हुए। शूल का एक अर्थ त्रिशूल भी होता है। त्रिशूल तीनो दुखों की विघातक शक्ति का प्रतीक है। त्रिशूल तीनों गुणों या इच्छाज्ञान क्रिया इन तीनों शक्तियों का भी प्रतीक है। धारण करना अर्थात स्वामित्व रखना अर्थात नियन्त्रण करना है।

547. **चक्रिणी** – चक्र को धारण करने वाली। चक्र नामक आयुध से भूषित। सेना से युक्त। चक्र का अर्थ सेना भी होता है अर्थात असुरों के साथ साथ युद्ध में देवी के साथ उनकी सेना भी होती है। चक्र का अर्थ यन्त्र भी है। अतः चक्रिणी का अर्थ यन्त्रों से युक्त भी होगा। रक्षा शक्ति से युक्त। भगवान विष्णु चक्र के द्वारा अपने भक्तों की रक्षा करते है। अतः चक्र रक्षा शक्ति का प्रतीक है। रक्षा या पालन सतोगुण है। अतः यह सतोगुण का भी प्रतीक है। चक्र भेदन करने का भी काम करता है। अतः यह संहारिका शक्ति या तमोगुण का भी प्रतीक है। सुषुम्ना नाड़ी में चक्रों का भेदन करने वाली शक्ति अर्थात् कुण्डलिनी शक्ति स्वरूपा। सातों चक्रों से युक्त सुषुम्ना नाडी स्वरूपा। चक् धातु में र प्रत्यय लगाने से भी चक्र बनता है जिसका अर्थ होता है शत्रुओं अर्थात् विजातीय पदार्थों को ताड़न करने वाली। ऐसी ताड़न करने वाली शक्ति से युक्त। यदि कृ धातु से चक्र शब्द बनाये तो इसका अर्थ होगा काम करने का उपकरण अर्थात् जिससे कोई कार्य सम्पादित होता है। चक्रिणी का अर्थ हुआ कार्य करने के लिए आवश्यक उपकरणों या साधनों से युक्त। मन को भी चक्र कहा गया है। मन को धारण करने वाली अर्थात् मन की स्वामिनी अर्थात् मन की चंचलता को नियन्त्रित करने वाली। किसी चीज को धारण करने वाला उस चीज का स्वामी होता है। मन की चंचलता से रहित या मन को भी नियन्त्रित करने वाली। चक्र का अर्थ यन्त्र भी है। अतः इस नाम का अर्थ हुआ यन्त्र वाली अर्थात् जिनकी पूजा में यन्त्र का प्रयोग होता है। श्रीयन्त्र सर्वश्रेष्ठ यन्त्र है क्योंकि इसमें सभी देवी देवताओं का वास है।

548. **चक्रमालिनी** – चक्र नामक आयुध धारण करने वाली। मल् धारणे धातु में णिनि प्रत्यय लगाने पर पुल्लिंग में माली एवं स्त्रीलिंग में मालिनी शब्द बनता है जिसका अर्थ है धारण करने वाली। सेना से सुशोभित। चक्र का अर्थ सेना भी होता है। अनेक चक्रों को धारण करने वाली। चक्र से सुशोभित। माला शोभा बढ़ाने का काम करती है। चक्र का अर्थ यन्त्र भी है। अतः इस नाम का अर्थ हुआ यन्त्रोंवली अर्थात् जिनकी पूजा में कई प्रकार के यन्त्रों का भी प्रयोग होता है।

549. **शङ्खिनी** – शंख को धारण करने वाली। नादशक्ति को धारण करने वाली। शंख नाद–शक्ति का प्रतीक है। शंख प्रायः सफेद रंग के होते हैं जो सतोगुण का प्रतीक है। इस प्रकार शंखिनी का अर्थ हुआ सतोगुण से युक्त। शंख ज्ञान के उभरने या ज्ञान की वृद्धि का भी प्रतीक है। नाद शक्ति से युक्त। जलतत्व से युक्त। सतोगुण से युक्त। शंख से आवाज निकलती है अतः यह नाद शक्ति, अनाहत नाद, शब्दब्रह्म का प्रतीक है। शंख जल से निकलता है अतः यह जलतत्व का प्रतीक है। जल अर्थात जीवन।

550. **चापिनी** – धनुष को धारण करने वाली। उपनिषद में मन की उपमा धनुष से की गई है क्योंकि इससे विचार रूपी बाण निकलते हैं। इस प्रकार चापिनी का अर्थ हुआ उत्तम मन या चित्त वाली। मुण्डकोपनिषद् में ऊँ को धनुष माना गया है क्योंकि ऊँ को धनुष की तरह लम्बा खींचा जा सकता है अर्थात बोला जा सकता है।

551. **बाणा** – बाण को धारण करने वाली अर्थात धनुष को धारण करने वाली। बाण और धनुष क्रियाशक्ति का प्रतीक है। धनुष स्थितिज ऊर्जा का और बाण गतिज ऊर्जा का प्रतीक है। पंचबाण पंचतन्मात्रा का प्रतीक है। बाण स्वरूपा। गतिज ऊर्जास्वरूपा। उत्तम या स्वस्थ विचारस्वरूपा क्योंकि विचार रूपी बाण चित्तरूपी धनुष से निकलते हैं। प्रत्येक चीज ऊर्जा से बनी हुई है। ऊर्जा का अर्थ है शक्ति या देवी। बाणों से युक्त। बाणाः अस्या सन्ति इति बाणः, बाणः का अर्थ हुआ बाण वाला अर्थात बाणों से युक्त। स्त्रीलिंग में बाणा हो गया। इस नाम का अर्थ जीवात्मास्वरूपा भी है। मुण्डकोपनिषद में कहा गया है कि जीवात्मारूपी बाण को परमात्मा रूपी लक्ष्य में बेधना चाहिए।

552. **वज्रिणी** – वज्र को धारण करने वाली। चरित्र की दृढ़ता वाली। वज्र कठोर होता है अतः यह चरित्र की दृढ़ता का प्रतीक है। वज्र का एक अर्थ हीरा है जो सबसे अधिक कठोर माना जाता है।

553. **वज्रदण्डिनी** – वज्र के समान कठोर दण्ड धारण करने वाली। वज्र के दण्ड से युक्त अर्थात वज्र के द्वारा दण्ड देने वाली।

554. **आनन्दोदधिमध्यस्था** – आनन्द रूपी सागर के मध्य में विराजमान रहने वाली।

555. **कटिसूत्रधारा परा** – (अतिशय सुन्दर/श्रेष्ठ) कमर के सूत्र (कटिसूत्र) धारण करने वाली सर्वश्रेष्ठ स्वरूप वाली। परा का अर्थ है श्रेष्ठ।

556. **नानाभरणदीप्ताङ्गी** – अनेक प्रकार के आभूषणों से देदीप्यमान अंगों वाली।

557. **नानामणिविभूषिता** – अनेक प्रकार की मणियों से विभूषित या अलंकृत।

558. **जगदानन्दसम्भूता** – संसार के आनन्द से प्रकट होने वाली या संसार के आनन्द के लिए प्रकट होने वाली। संसार के आनन्द के रूप में सम्यक् सत्ता वाली। भू सत्तायाम् धातु होती है।

559. **चिन्तामणिगुणान्विता** – चिन्तामणि के गुणों से युक्त। चिन्तामणि एक रत्न है जिससे जो अभिलाषा की जाए, वह उसे पूर्ण कर देता है, अतः लोगों की कामनाओं को पूरी करने वाले गुणों से युक्त, यह अर्थ हुआ।

560. **त्रैलोक्यनमिता** – जिनके समक्ष तीनों लोक झुकते हैं।

561. **तुर्या** – चतुर्थ या तुरीयावस्था वाली। इस अवस्था में आनन्द की अनुभूति होती है। यदि तुरीयातीत अवस्था हो तो आनन्द स्थाई हो जाता है।

562. **चिन्मयानन्दरूपिणी** – चिन्मयानन्द स्वरूप वाली। चैतन्य युक्त होने पर होने वाले आनन्द के स्वरूप वाली।

563. **त्रैलोक्यनन्दिनीदेवी** – तीनों लोकों को आनन्दित करने वाली देवी।

564. **दुःख – दुःस्वप्ननाशिनी** – दुख और दुःस्वप्नों को नष्ट कर देने वाली।

565. **घोराग्निदाहशमनी** – अतिशय प्रचण्ड अग्नि के दाह को शान्त कर देने वाली। घोर का अर्थ बहुत अधिक या बहुत बुरा भी होता है।

566. **राज्यदेवार्थसाधिनी** – राज्य के देवताओं या राजाओं को सभी प्रकार की धन सम्पत्तियों से युक्त कर देने वाली। अर्थ अर्थात धन, साधिनी अर्थात प्राप्त कराने वाली।

567. **महाऽपराधराशिघ्नी** – बहुत बड़े अपराधों के समूह को नष्ट कर देने वाली। बडे बडे अपराधों से होने वाले पापों को विनष्ट कर देने वाली।

568. **महाचौरभयापहा** – भयंकर चोरों के भय को दूर कर देने वाली। अपहा का अर्थ है दूर करने वाली।

569. रागादि दोषरहिता – राग आदि दोषों से रहित। राग, द्वेष, काम, क्रोध, लोभ, मोह ये छह दोष हैं।

570. **जरामरणवर्जिता** – बुढ़ापे और मृत्यु से वर्जित अर्थात परे। इन्हें न तो बुढ़ापा आता है और न ही इनकी मृत्यु होती है।

571. **चन्द्रमण्डलमध्यस्था** – चन्द्र मण्डल के मध्य में सुशोभित होने वाली। मण्डल अर्थात गोला।

572. **पीयूषार्णवसम्भवा** – अमृत सागर अर्थात क्षीर सागर से उत्पन्न होने वाली।

573. **सर्वदेवैः स्तुता देवी** – सभी देवताओं के द्वारा स्तुत की गई देवी।

574. **सर्वसिद्धैनमस्कृता** – जिनको सभी प्रकार के सिद्धों द्वारा प्रणाम किया गया अर्थात किया जाता है। कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र से कृत्य प्रत्यय कभी कभी उन कालों से एवं उन कारकों से भिन्न अर्थ देते हैं जिनमें सामान्यतः अर्थ दिया जाता है। नमस्कृता का सामान्य अर्थ है नमस्कार की गई, इस सूत्र से नमस्कार किया जाता है, नमस्कार किया जाएगा, ऐसा अर्थ भी निकल सकता है।

575. **अचिन्त्यशक्तिरूपा** – अपार शक्ति स्वरूपा। जिनकी शक्ति के विषय में चिन्तन भी नहीं किया जा सकता इतनी शक्ति वाली।

576. **मणिमन्त्रमहौषधी** – मणि, मन्त्र, औषधि के स्वरूप वाली। मणि, मन्त्र और औषधि में शक्ति रूप से विद्यमान तभी ये तीनों असर कर पाते हैं। प्राचीन काल में ग्रहों की शान्ति के लिए या बीमारियों के लिए इन तीनों साधनों का प्रयोग किया जाता था। मणिमन्त्र और महौषधि के सदृश प्रभाव वाली। इनका उपयोग तीनों प्रकार के दुखों को दूर करने के लिए होता है। तीनों प्रकार के दुखों को दूर करने के लिए मणि, मन्त्र और औषधि के स्वरूप में।

577. **अस्तिस्वस्तिमयी बाला** – नित्य जिसमें कल्याण हो ऐसी बालिका स्वरूप वाली अर्थात जिसमें हमेशा कल्याण रहता हो ऐसी बाला त्रिपुर सुन्दरी स्वरूपा। हमेशा अस्तित्ववान और कल्याण से युक्त बाला त्रिपुर सुन्दरी स्वरूपा। अस्ति और स्वस्ति से युक्त बाल स्वरूपा। अस्ति का अर्थ है जो हमेशा रहे और स्वस्ति का अर्थ है कल्याणकारक।

578. **मलयाचलवासिनी** – मलयाचल पर निवास करने वाली। मलयाचल दक्षिण भारत में केरल से सम्बन्धित है। मलयागिरि चन्दन अर्थात सफेद चन्दन।

579. **धात्री** – धारण करने वाली। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को धारण करने वाली। धात्री का अर्थ माता, उपमाता है। अतः इस नाम का अर्थ हुआ माता, उपमाता की तरह भक्तों का पालन – पोषण करने वाली। धात्री का अर्थ आँवला भी होता है जो बहुत से रोगों को ठीक करने के लिए प्रयुक्त होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ आँवले की तरह सर्वरोगनिवारिका या सभी कष्टों को दूर करने वाली। विश्व को धारण करने वाली अर्थात जो विश्व को सहारा दिए हुए है या टिकाए हुए है। धारकत्वाद् धात्री। प्राणियों का पोषण करने वाली अर्थात जीवित और स्वस्थ्य रहने के लिए आवश्यक भोज्य पदार्थ, हवा, पानी आदि देता रहता है। दधाति धारयति पोषयति चेति धाता। सभी मनोरथों को देने वाली। सर्वाभीष्टदात्री इति धात्री। धाञ् दाने धातु भी होती है। शुभ अर्थात मंगल या अच्छाइयों का पान करने से या दूसरों को पिलाने से भी इन्हें धात्री कहा जाता है। शुभस्य धयनात् पानात् वा धात्री। धेट् पाने। अच्छाइयों का पान करते है अर्थात अच्छाइयों को धारण किये हुए है अर्थात इनको अच्छी

लगती है। ब्रह्मा में गई हुई अर्थात उनमें शक्ति या अंश रूप में विराजमान। धाता का अर्थ है ब्रह्मा में स्थित, अतः धत्री का अर्थ भी हुआ ब्रह्मा में स्थित। धातरि गताश्च तन्नामा। एक नियम है कि शब्द के आगे ''में विराजमान'' या ''का कारण'' लगाने से भी अर्थ निकल आता है। ब्रह्मा का कारण अर्थात ब्रह्मा जी को भी उत्पन्न करने वाली। अधाता को भी धाता कह देते है क्योंकि संस्कृत में कुछ शब्दों के आगे अ नहीं लगा होता है जैसे अपिधान की जगह केवल पिधान कह दिया जाता है। इस प्रकार धात्री का अर्थ हुआ जिसे किसी अन्य ने धारण नही किया है। अधात्री का एक अन्य अर्थ है कि जो ब्रह्मा से भी से बढकर है अर्थात श्रेष्ठ है। अधिको धाता इति अधाता, स्त्रीलिंग में अधात्री। धात्री का अर्थ आँवला भी है। शब्द के आगे ''के समान '' लगाने से भी शब्द का अर्थ निकल आता है। हमें गुण, कर्म आदि में समानता देखनी होती है। इस प्रकार धात्री का अर्थ हुआ– आँवला के समान अर्थात आँवला के समान रोग निवारिका अर्थात कष्टनिवारिका।

580. **विधात्री** – समस्त विश्व की रचना करने वाली। विधाता का अर्थ है रचना करने वाला। वि अर्थात विश्व अर्थात सभी। इस प्रकार विधात्री का अर्थ हुआ सभी का पालन पोषण करने वाली। विधाता अर्थात ब्रह्मा की पत्नी। विश्व की रचयित्री। विशेषरूप से देने वाली अर्थात मोक्ष देने वाली। विशेष अर्थात जो दूसरों से हटकर हो। मोक्ष सभी से हटकर या बढकर है। विशेषतो धात्री मोक्षदानेन। धाञ् दाने धातु भी होती है। कर्मों का उचित फल करने वाली अर्थात देने वाला। कर्मणाम् उचितम् फलं विदधाति करोति। जिसने जैसा कर्म किया है, वैसा फल पायेगा। विविध प्रकार के विश्वों की रक्षा करने वाली। त्री अर्थात रक्षा करने वाली। बहुविधा का विधा शब्द एवं आतनोति, अतति से त शब्द लेकर के भी अर्थ कर सकते हैं। विदधाति का अर्थ है करोति अर्थात करना अर्थात् देना। अनेक प्रकार के जगत को विस्तार देने वाले। विधा अर्थात् बहुविधा। अनेक प्रकार के विश्व में गति करने वाले अर्थात् उसमें विराजमान। गति का अर्थ संचालन करना या स्पन्दन करना भी है। अनेक प्रकार के जगत को संचालित करने वाले। नाना प्रकार के जगत को विस्तारित करने वाली या उसमें निरन्तर गति करने वाली। गति करना अर्थात उसमें विराजमान होना, स्पन्दन करना या संचालित करना। बहुविधां जगतीम् आतनोति, अतति च। बहुविधायाः संसृतेस्तारयति। अनेक प्रकार की सन्ततियों को तार देने वाली। बहुविधा से विधा शब्द ले लिया एवं तारयति से त्री बना दिया। जिनके द्वारा विभिन्न प्रकार की संसार की गतियाँ (योनियाँ) तर जाती है। विविधा संसारगतीः तरन्ति अनया। गजेन्द्र को मोक्ष दे दिया। कबूतर ने अमृत कथा सुनी थी। जटायु को मोक्ष मिला था। तात्पर्य है कि केवल मनुष्य ही नहीं, अन्य योनियों को भी तार देती हैं। विश्च धात्री च। जो ज्ञानस्वरूपा हैं एवं विश्व को धारण करने वाली हैं। व का अर्थ ज्ञान होता है। विश्व को धारण करने वाली हैं। विश्वम् धाता च विधाता। (विधाता नाम भगवान विष्णु का भी है जिसका विग्रह किया गया है–केवल गरूड ही इनको धारण नही करते बल्कि वास्तव में ये गरूड को धारण करते है। न केवलम विः पक्षी गरूडः एनं धत्ते। किन्तु वस्तुतः अयमेव तमपि धत्ते)। ब्रह्मा जी के अन्दर स्थित या इनके हृदय में गति करने वाली या विराजमान। ब्रह्मा जी के हृदय में वास करने वाली। विधातुः अन्तर्यामी तन्नामा। मुक्त पुरुषों को विशेष रूप से धारण करने वाले अर्थात उनका पोषण करने वाली। बन्धन से मुक्त पुरुषों को विशेष रूप से पोषण करने वाली या धारण करने वाली। विशेषेण धत्ते पोषयति मुक्तान्। 'यो नः पिता जनिता यो विधाता', यह शास्त्र में लिखा है। आत्मा के रूप में एवं शक्ति के रूप में गरूड में प्रविष्ट होकर उसे धारण किये गये है अतः उनका अस्तित्व बनाये हुये है। वि अर्थात पक्षी या गरूड़ क्योंकि वह पक्षीराज हैं। राजा को बोलने से प्रजा का भी बोध हो जाता है अर्थात गरूड़ सभी पक्षियों का प्रतिनिधित्व कर रहा है। धात्री का अर्थ है आँवला, विशिष्टप्रेम से वि अक्षर ले लिया इस प्रकार विधात्री का अर्थ हुआ विशिष्ट प्रेम है जिनका धात्री (आँवला) के प्रति अर्थात आँला को बहुत अधिक पसन्द करने वाली। वि अर्थात विगत या विहीन। धात्री से विहीन अर्थात जिनका पोषणकरने वाला दूसरा कोई नहीं है। जो सबकी पोषिका हैं उनका पोषण करने वाला कोई दूसरा नहीं है।

581. **संहारी** – प्रलय काल में समस्त विश्व का संहार करने वाली। दुष्टों या पापों या आसुरी वृत्तियों का संहार करने वाली।

582. **रतिज्ञा** – रति की ज्ञाता। सर्वोत्तम रति को जानने वाली। रति (भक्ति) को जानने वाली। शिव ताण्डवस्तोत्र में रति का अर्थ भक्ति किया गया है।

583. **रतिदायिनी** – रति शक्ति (रमण करने की शक्ति अर्थात सम्भोग शक्ति) को प्रदान करने वाली। भक्ति को देने वाली।

584. **रुद्राणी** – रूद्र की पत्नीस्वरूपा। रुद्र अर्थात शिव को चेष्टावान बनाने वाली। अनति अर्थात प्राणित करना अर्थात चेष्टावान बनाना। शरीर की क्रियायें या चेष्टायें प्राण के कारण ही होती हैं। प्राण तभी काम कर पाता है जब आत्मा से उसे शक्ति मिले। रुद्र अर्थात शिव को जीवित रखने वाली। रूद्रम् अणति जीवयति इति रुद्राणी। विष पीने के बाद भी देवी की कृपा से शिव जीवित रहे थे। संहारिका शक्ति स्वरूपा क्योंकि रुद्र संहार के देवता हैं।

585. **रूद्ररूपा** – भयंकर रूप को धारण करने वाली (शत्रुओं और दैत्यों के समक्ष)। रुद्रम् रूपयति अर्थात शिव पर दृष्टि डालने वाली या शिव को दिखाने वाली अर्थात शिव का साक्षात्कार कराने वाली।

586. **रूद्ररौद्रार्तिनाशिनी** – रूद्र के भयंकर कष्टों को दूर कर देने वाली। शिव जी ने जब हलाहल विष पिया तो उन्हें भयंकर कष्ट हुआ था।

587. **सर्वज्ञा** – सब कुछ जानने वाली। प्रत्येक पदार्थ की प्रत्येक चीज और तीनों कालों को जानने वाली।

588. **धर्मज्ञा** – धर्म को जानने वाली। पदार्थों के नित्य लक्षण, जीवन मूल्य, कर्तव्य अकर्तव्य का ज्ञान धर्म है।

589. **रसज्ञा** – रसों को जानने वाली। रस अर्थात आन्नद का अनुभव करने वाली। मधुर, तिक्त आदि षड्रसों और साहित्य के श्रृंगार, करुण आदि नौ रसों को जानने वाली।

590. **दीनवत्सला** – दीन भक्त हैं प्रिय जिन्हें। दीन अर्थात जो अहंकार से रहित हो, दुर्गुण से रहित हों। तन, मन, धन सब तेरा इस धारणा वाले व्यक्ति जिन्हें बहुत प्रिय हैं।

591. **अनाहता** – अनाहत नाद स्वरूपा। अनाहत स्वरूप वाली अर्थात जिन्हें आहत नहीं किया जा सकता अर्थात चोट नहीं पहुँचायी जा सकती।

592. **त्रिनयना** – तीन नेत्रों वाली। देवी के आकाश रूप में सूर्य, चन्द्र और अग्नि तीन नेत्र हैं। जिसे तीनों काल का ज्ञान हो। जिसे तीनों वेद का ज्ञान हो। नेत्र का अर्थ है ज्ञान, प्रकाशक (अभिव्यक्त करने वाला या बताने वाला)। भक्ति, ज्ञान और वैराग्य तीनों की प्रकाशिका अर्थात गुरू रूप में या शास्त्र के रूप में इन्हें शिष्यों को बताने वाली। ब्रह्माण्ड या आकाश के रूप में जिनके सूर्य, चन्द्र और अग्नि ये तीन नेत्र हैं। दिन में सूर्य, रात में चन्द्र एवं सन्ध्याकाल में अग्नि प्रकाश करते हैं।

593. **निर्भारा** – भार तत्व से रहित अर्थात भारपन से रहित। भार का एक अर्थ आश्रय है, तब निर्भारा का अर्थ हुआ जिनका कोई आश्रय नहीं है अर्थात जो किसी पर निर्भर नहीं है। समस्त देवता और भक्त जिनपर निर्भर हैं। भ्रियते इति भारः अर्थात जिसका भरण किया जाए वह भार है। देवी सबका भरण करती हैं, उनका भरण किसी के द्वारा नहीं होने पर वे निर्भारा हैं। जो चिन्ता के भार से रहित हैं। यदि कोई चीज प्राप्त नहीं है तभी उसकी चिन्ता होती है। देवी को सब कुछ प्राप्त है अतः चिन्ता रहित होने से वे निर्भारा हैं।

594. **निर्वृत्तिःपरा** – परम तृप्ति स्वरूपा अर्थात जिससे आगे तृप्ति नहीं है अर्थात मोक्ष स्वरूपा। निर्वृत्ति का अर्थ है तृप्ति। (यदि निवृत्तिपरा नाम होता तो अर्थ होता – निवृत्ति में ही रहने वाली। निवृत्ति स्वरूपा। संसार के सभी कार्यकलापों से परे।)

595. **पराऽघोरा** – जो पर (श्रेष्ठ) हैं और अघोर स्वरूप (भयंकरता रहित) वाले हैं।

596. **करालाक्षी** – शत्रुओं के लिए विकराल अर्थात भयंकर नेत्रों को धारण करने वाली।

597. **सुमति** – सुन्दर अर्थात श्रेष्ठ बुद्धि वाली। सभी अच्छाइयों से युक्त। (यदि सुमती नाम है तो अर्थ होगा सुन्दर अर्थात श्रेष्ठ विचारों, सिद्धान्तों वाली। मत का अर्थ होता है विचार, ज्ञान, सिद्धान्त। यदि सु का अर्थ अच्छाई लें और मतुप् (युक्त) प्रत्यय लगायें तो अर्थ होगा सभी अच्छाइयों से युक्त।

598. **श्रेष्ठदायिनी** – श्रेष्ठ पदार्थों, गुणों, विद्याओं आदि को देने वाली।

599. **मन्त्रालिका** – अनेक प्रकार के मन्त्रों से अलंकृत या सुशोभित। अलिक अर्थात अलि अर्थात पंक्ति या समूह। बिना अर्थ बदले कन् प्रत्यय लगाने से अलि ही अलिक हो जाता है।

600. **मन्त्रगम्या** – मन्त्रों के द्वारा जो जानी जा सकती है या प्राप्त की जा सकती है।

601. **मन्त्रमाला** – जिनमें सभी प्रकार के मन्त्र विराजमान हैं। मन्त्रों की समष्टि स्वरूपा। माला का एक अर्थ समष्टि भी है। मन्त्रों से सुशोभित। माला शोभा बढ़ाती है। बीज अक्षरों से अधिक संख्या वाले मन्त्र मालामन्त्र कहलाये जाते हैं, उन मन्त्रों के स्वरूप वाली।

602. **सुमन्त्रिणी** – अच्छे विचार या मन्त्रणा देने वाली।

603. **श्रद्धानन्दा** – श्रद्धा करने वालों को आनन्द प्रदान करने वाली।

604. **महाभद्रा** – अतिशय कल्याणकारिणी। अतिशय सभ्य और शिष्ट। सर्वाधिक कल्याण कारिणी। सर्वाधिक सभ्य और शिष्ट। महा का अर्थ अतिशय, सर्वाधिक होता है।

605. **निर्द्वन्द्वा** – द्वन्दों से परे अर्थात सुख – दुख, लाभ – हानि आदि द्वन्द्वों से परे। देवी माँ अद्वैत स्वरूपा हैं जहाँ कोई दो नहीं होते। जो दो या नानात्व दिखाई देता है वह भी उन्हीं का स्वरूप है अतः द्वैत नाम की कोई चीज नहीं है।

606. **निर्गुणात्मिका** – निर्गुण स्वरूप वाली। निर्गुण में व्याप्त। आत्मिका का अर्थ है स्वरूप, व्याप्त।

607. **धरिणी** – धारण करने वाली अर्थात पृथ्वी स्वरूपा। वस्तु मात्र को एवं प्राणी मात्र को धारण करने वाली।

608. **धारिणीपृथ्वी** – अपने अंगों के द्वारा धारण कराने वाली पृथ्वी। पृथ्वी के अंग हैं जल और वनस्पति। जल और वनस्पति में अनेक जीव जन्तुओं का वास होता है अर्थात जल और वनस्पति अनेक जीव जन्तुओं को धारण करने वाले हैं। अपने गुणों जैसे क्षमाशीलता, स्थिरता आदि को भक्तों में धारण कराने वाली अर्थात भक्तों में प्रवेश कराने वाली।

609. **धराधात्री** – पृथ्वी को धारण करने वाली। सम्पूर्ण पृथ्वी अर्थात पृथ्वी के सभी प्राणियों का पालन अर्थात भरण पोषण करने वाली।

610. **वसुन्धरा** – पृथ्वी स्वरूपा। समस्त धनों को धारण करने वाली।

611. **मेरुमन्दरमध्यस्था** – सुमेरू और मन्दराचल के मध्य में स्थित रहने वाली। समुद्र मन्थन में मन्दराचल की मथानी बनाई गई थी।

612. **स्थिति** – स्थिति स्वरूपा। जगत का ठहराव स्वरूपा। संसार को स्थिरता देने वाली। पालन शक्ति स्वरूपा। ईश्वर की तीन शक्तियाँ हैं – सृष्टि, स्थिति (पालन) और संहार। वह शक्ति जो पदार्थों को कुछ समय तक अस्तित्ववान बना के रखती है। यह शक्ति जब तक पदार्थ में रहती है, उसका अस्तित्व रहता है। Continued existence के स्वरूप में।

613. **शङ्करवल्लभा** – शंकर की प्रिया। वल्लभ का अर्थ है अतिशय प्रिय। शंकर जी जिन्हें बहुत चाहते हैं।

614. **श्रीमती** – शोभा और सम्पत्ति से युक्त। श्रेष्ठत्व से युक्त।

615. **श्रीमयी** – श्री स्वरूपा। श्री का अर्थ है सर्वविध सम्पत्ति, आध्यात्मिक और भौतिक दोनों प्रकार की सम्पत्ति।

616. **श्रेष्ठा** – सबसे उत्तम (ज्ञान, विज्ञान,शक्ति सुन्दरता आदि में)।

617. **श्रीकरी** – धन सम्पत्ति करने वाली अर्थात धन सम्पत्ति देने वाली।

618. **भावभाविनी** – सभी पदार्थों को उत्पन्न करने वाली या सभी सत्तावान को सत्तावान बनाने वाली। भाव अर्थात पदार्थ अर्थात द्रव्य जो वैशेषिक दर्शन में बताये गये हैं। भावों को विभावित (विचार करना) करने वाली अर्थात विचार कर निर्णय देने वाली। सभी मनोभावों को उत्पन्न करने वाली।

619. **श्रीदा** – शोभा/सम्पत्ति को देने वाली। श्रेष्ठत्व देने वाली।

620. **श्रीमा** – श्रेष्ठ लक्ष्मी स्वरूपा या शोभा युक्त लक्ष्मी स्वरूपा। मा का अर्थ है लक्ष्मी, श्री का अर्थ है श्रेष्ठ, शोभा। श्रेष्ठ ज्ञान से युक्त। मा अर्थात प्रमा अर्थात ज्ञान।

621. **श्रीनिवासा** – श्री अर्थात शोभा सम्पत्ति और पद्म का निवास स्थान।

622. **श्रीमती** – राधा स्वरूपा या राधा से अभेद है जिनका। राधा का एक नाम श्रीमती है। श्री का अर्थ है विभूति, ऐश्वर्य, कान्ति, यश, बिल्व वृक्ष, कमल इन सबसे युक्त श्रीमती हैं। यश से युक्त अर्थात यशस्विनी, कान्ति से युक्त, बिल्व वृक्ष से युक्त अर्थात उसमें रहने वाली, कमल से युक्त अर्थात कमल में विराजमान या हाथ में कमल धारण किए हुए, ऐश्वर्य से युक्त। (यदि श्रीवती नाम है तो अर्थ होगा – लक्ष्मी की तरह आचरण करने वाली। श्री का अर्थ है लक्ष्मी। पहले नाम धातु श्रीव बनाऐंगे, श्रीव नाम धातु से शतृ प्रत्यय लगाने से श्रीवत् बना, श्रीवत् में ङीप् प्रत्यय लगाने से श्रीवती बनता है। श्री से युक्त।)

623. **श्रीमताङ्गतिः** – लक्ष्मीवान की गति अर्थात लक्ष्य या प्राप्तव्या। श्रीमान लोग जहाँ तक पहुँचते हैं। श्री से युक्त लोगों की एक मात्र गति अर्थात उनको चलाने वाली, दिशा–निर्देश देने वाली, मोक्ष देने वाली।

624. **उमा** – उ अर्थात शिव को मापती है अर्थात भगवान शिव को आकारवान बनाती है अर्थात निर्गुण निराकार शिव को सगुण साकार में परिवर्तित कर देती है। पार्वती स्वरूपा। उत्तम चित्तवृत्ति स्वरूपा। उ अर्थात उत्तम और मा अर्थात चित्तवृत्ति। शिव की शोभा स्वरूपा। मा अर्थात लक्ष्मी अर्थात शोभा। प्रणव अर्थात ऊँ की सार स्वरूपा। जिनकी माँ ने उनके लिए कहा कि तपस्या मत करो। उ अर्थात तपस्या, मा अर्थात नहीं। पार्वती जी को उनकी माँ ने तपस्या करने से रोका था। उ अर्थात सम्बोधन अर्थात हे पुत्री, मा अर्थात नहीं अर्थात नहीं करो अर्थात तपस्या नहीं करो। कुछ लोगों के अनुसार उ अर्थात तपस्या।

625. **सारङ्गिणीकृष्णा** – हिरण/मयूर/हंस से युक्त एवं आकर्षक (सन्दर) स्वरूप वाली। बादल की तरह कृपा बरसाने वाली एवं आकर्षक (सन्दर) स्वरूप वाली। सारंग धनुष को धारण करने वाली और काले रंग वाली। सारंग के कई अर्थ हैं जैसे बादल, हिरण, मयूर, हंस, धनुष आदि। सारंग एक वाद्य का भी नाम है। सारंग वाद्य से युक्त एवं आकर्षक स्वरूप वाली। बादल से युक्त अर्थात आकाश स्वरूपा अर्थात अनन्त स्वरूपा, यह भी सारंगिणी का अर्थ हो सकता है। कृष्णा का अर्थ है – जो अपने रूप सौन्दर्य के कारण दूसरों को अपनी ओर खींचे। द्रौपदी गोरी थीं और उन्हें कृष्णा कहते हैं। पापों को खींचने वाली अर्थात खींचकर नष्ट करने वाली भी कृष्णा हैं। चितकबरे होते हुए भी जो कृष्ण वर्ण वाली है।

626. **कुटिला** – दुष्टों के लिए कुटिल अर्थात टेढ़ी। कुटिल अर्थात वक्र अंग जो सुन्दरता का भी प्रतीक है।

बाल कुटिल होकर सुन्दर लगते हैं। भगवान कृष्ण तीन जगह से टेढ़े हैं इस प्रकार इस नाम का अर्थ सुन्दर भंगिमा वाली भी हो सकता है। दुष्टों के लिए कुटिल रूप धारण करने वाली।

627. **कुटिलालका** – टेढ़े मेढ़े घुँघराले बालों वाली।

628. **त्रिलोचना** – तीन नेत्रों वाली। निराकार रूप में अर्थात आकाश रूप में सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि जिनके तीन नेत्र हैं। तीनों लोकों में जिनकी चर्चा है। तीनों वेदों में जिनकी चर्चा है। लोचृ भाषणे धातु होती है। भाष्यते अर्थात बोली जाती है अर्थात चर्चा की जाती है। त्रिषु लोच्यते इति त्रिलोचना। तीनों प्रमुख देवों अर्थात ब्रह्मा, विष्णु और महेश के द्वारा जिनका स्मरण किया जाता है।

629. **त्रिलोकात्मा** – तीनों लोकों में व्याप्त। आत्मा का एक अर्थ व्याप्त भी होता है। तीनों लोकों की सार स्वरूपा या मुख्य तत्व स्वरूपा। तीनों लोकों को चेतन बनाने वाली। आत्मा से ही चैतन्य (सक्रियता, बोध, होश, Awareness) आती है।

630. **पुण्यपुण्या–प्रकीर्तिता** – अतिशय पुण्य की संज्ञा वाली अर्थात अतिशय पुण्य वाली नाम से कहीं गई।

631. **अमृता** – अमृतस्वरूपा। अमृत देने वाली। अमृत+आ, आ का अर्थ देना या नाश करना होता है। नित्यमुक्तत्वादमृता। न विद्यते मृतं मृतिः अस्या। अं अकरावाच्यं स्वात्मानमेव ऋता गता। स्वे महिम्नि प्रतिष्ठिता। अन्तकत्वादम् ऋतश्च। अनुस्वारवाच्यत्वादम्, ऋकारवाच्य ऋत इति ऋतम्भरा। जो हमेशा से ही मुक्त है अर्थात् पहले से ही मुक्त है। ऐसा नहीं है कि जीवन में आने के बाद मुक्त हुई है। जिनकी मृत्यु नहीं होती है। मृत अर्थात् मृति अर्थात् मृत्यु। अकार से उन्हीं का बोध होता है और जो अकार में गईं अर्थात विराजमान या स्थित। अकार विषय को प्राप्त या अ अक्षर में स्थित। अपनी ही महिमा में स्थित। जो सबका अन्त करने वाली हैं एवं सत्य स्वरूपा हैं। अनुस्वार से बोधित होने के कारण अम्, और ऋकार से बोधित होने के कारण ऋत है। अनुस्वार और ऋत (सत्य) को धारण करने वाली।

632. **सत्यसङ्कल्पा** – सत्य संकल्प वाली। जो संकल्प करती हैं वह सत्य घटित हो जाता है।

633. **सासत्या** – देवी जो सत्य स्वरूप है। शक्ति जो सत्य स्वरूप है। एकाक्षरी कोष में सा का अर्थ देवी, शक्ति दिया गया है। सा परोक्ष के लिए प्रयुक्त होता है अर्थात जो यहाँ पर नहीं है अर्थात वर्तमान में नहीं है। सासत्या यह शब्द तत् त्वम् असि की तरह है। सासत्या का अर्थ स्पष्ट करने के लिए हमें असि शब्द अपने से लेना पड़ेगा जिसका अर्थ है वर्तमाकालिक सत्य। सा अर्थात परोक्ष, पूर्वकालिक। इस प्रकार सासत्या का अर्थ हुआ जो पूर्वकालिक सत्य है और वर्तमानककालिक सत्य भी है। जहाँ सा होता है वहाँ या भी होता है जैसे सा विद्या या विमुक्तये स्यात्। इस प्रकार सासत्या का अर्थ हुआ वह सत्य जो सब कुछ देने में समर्थ है। वह देवी जो सत्य है एवं सदैव स्थित रहने वाली। सा का अर्थ है वह देवी जो सत्य है।

634. **ग्रन्थिभेदिनी** – पापों की ग्रन्थियों को नष्ट करने वाली। दुरूह शास्त्रों को सहज में समझाने वाली। हृदयग्रन्थि को भेदने वाली।

635. **परेशी** – शत्रुओं पर शासन करने वाली अर्थात उनको नियन्त्रित करने वाली। शत्रुओं का संहार करने वाली। ईश अर्थात ईश्वर अर्थात जो सृष्टि, पालन और संहार करे। पर का एक अर्थ है शत्रु। परलोक में भी ईश्वर के धर्म का निर्वाह करने वाली। परलोक पर शासन करने वाली।

636. **परमासाध्या** – श्रेष्ठ उपासनीया। जो प्राप्त करने योग्य वस्तुओं में सर्वश्रेष्ठ हैं। परम साध्य स्वरूपा। पाने योग्य वस्तुओं में सर्वश्रेष्ठ है। यदि परमासाध्या एक शब्द है तो अर्थ होगा अति असाध्य अर्थात प्राप्त न होने वालों में सबसे ऊपर या सबसे कठिन।

637. **पराविद्या** – उत्कृष्ठतम अध्यात्म विद्या स्वरूपा। जिस विद्या से अक्षर ब्रह्म का ज्ञान हो। श्रेष्ठ ज्ञान जिससे स्वयं का परम सत्ता का ज्ञान हो पराविद्या है।

638. **परात्परा** – श्रेष्ठ देवताओं में भी श्रेष्ठ अर्थात सर्वश्रेष्ठ। पर का अर्थ है श्रेष्ठ देवता। पर से भी परे अर्थात सर्वोत्कृष्त स्वरूप वाली।

639. **सुन्दराङ्गी** – सुन्दर अंगों वाली।

640. **सुवर्णाभा** – सोने के समान कान्ति वाली।

641. **सुरासुरनमस्कृता** – देवताओ और दैत्यों के द्वारा जिन्हें प्रणाम किया जाता है।

642. **प्रजा** – अधिक रूप में (अनेक रूपों में) उत्पन्न या प्रकट होने वाली। एक ही देवी शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, सरस्वती, लक्ष्मी, काली आदि अनेक रूपों में प्रकट होती हैं। प्रकृष्टम् जायते इति प्रजा। सन्तति को बढ़ाने वाली। प्रजा+आ, आ का अर्थ है देना, उत्पन्न करना।

643. **प्रजावती** – प्रजाओं से युक्त। देवता, मनुष्य, पशु – पक्षी सभी देवी माँ की प्रजा हैं।

644. **धान्या** – धान्य स्वरूप वाली। धान्य मांगलिक होता है अर्थात मांगलिक स्वरूपा। धान्य को देने वाली। धान्य+आ, आ का अर्थ है देना।

645. **धनधान्यसमृद्धिदा** – धन और धान्य रूप समृद्धि को देने वाले।

646. **ईशानी** – सभी विद्याओं/सम्पत्तियों/गुणों की अधिष्ठात्री या स्वामिनी। सम्पूर्ण आधिपत्य इन्हीं का है। स्वामिनी या मालकिन अर्थात जिसको चाहे दे चाहे न दे, चाहे तो वापस बुला ले। स्वामी अर्थात अपनी इच्छानुसार दूसरों को चलाने वाली। कितना देना है यह सब इन्हीं के हाथों में है। ईशानी का अर्थ शासन करने वाला भी होता है। ईश अर्थात शासन करने वाला एवं ईशान अर्थात सर्वव्यापक या व्यापक शासन करने वाला। (शिव में स्थित या विराजमान रहने के कारण देवी को ईशानी कहते है। यह नियम है कि जो जहाँ रहता है उस स्थान के नाम पर ही उस व्यक्ति का नाम कर दिया जाता है। शासन करने के कारण जिन्हें ईशानी कहते है अर्थात् पूरे विश्व में शासन करने वाला। शासन का अर्थ है अपनी आज्ञा का पालन करवाना, अपने अनुसार घटनाओं को घटित कराना, अनुग्रह और निग्रह करना। अनुग्रह का अर्थ है पुरस्कार देना, कृपा दिखाना एवं निग्रह का अर्थ है गलत करने पर दण्ड देना। शासन करने वाले इन्द्र आदि देवताओं में भी चेष्टा पैदा करने वाली अर्थात् उन्हें सक्रिय बनाने वाली अर्थात् कर्त्तव्य के प्रति ले जाने वाली। ईशान् अनति जीवयति चेष्टावान करोति इति ईशानी। प्राणों का भी शासक। अन् का अर्थ है प्राण। अन (माता, प्राण वायु) भी जिनके कारण शासन करता है, अर्थात् माता डाँटती फटकारती या सिखाती है। ऐसा शासन करने वाला जो माता की तरह भी है। दुर्गा सप्तशती में अना का एक अर्थ माता दिया गया हैं।

647. **भुवनेशानी** – 14 भुवनों के भीतर रहकर अर्थात अन्तर्व्याप्त रहकर उसे संचालित करने वाली। 14 भुवनों की स्वामिनी अर्थात 14 भुवनों में सब कुछ इनके अनुसार चलेगा। (भुवनेशी एवं भुवनेश्वरी के अर्थों में अन्तर– इन दो नामों में अन्तर जानने के लिए ईश और ईश्वर शब्द के अर्थ में अन्तर जानना आवश्यक है। सामान्यतः ईश और ईश्वर का एक ही अर्थ माना जाता है पर इसमें यह अन्तर कर सकते है कि ईश का अर्थ है शासन करने वाला एवं ईश्वर का अर्थ है शासन करने वालों में श्रेष्ठ। ईश्वर का अर्थ शासन करने वाला एवं गुणों में श्रेष्ठ, यह भी कर सकते है। गीता में सोलहवें अध्याय में जो दिव्य गुण बताये गये है वे ही श्रेष्ठ गुण है। ईश्वर का अर्थ ऐश्वर्य का स्वामी भी होता है। ऐश्वर्य का अर्थ है सम्पन्नता+शक्ति। ऐश्वर्य का अर्थ है जो ईश्वर से सम्बन्धित है अर्थात् दिव्य वस्तुयें एवं दिव्य शक्तियाँ। शासन का अर्थ होता है अपनी इच्छानुसार घटनाओं को

घटित कराना, शासन का अर्थ है आदेश देना और उस आदेश का उसके अधीनस्थ उल्लंघन नहीं कर सकते। शासन अनुग्रह (कृपा या पुरस्कार) एवं निग्रह के आधार पर चलता है। शासन करने के लिए नियमों को बनाना भी आवश्यक है, यही कारण है कि प्रकृति के नियम, कर्म के नियम बनाये गये है। प्रकृति के नियम जैसे जल यही कार्य करेगा अर्थात् ऊपर से नीचे प्रवाहित होगा, शीतलता देगा आदि। कर्म के नियम अर्थात् जो जैसा करेगा तद्नुरूप भविष्य में पायेगा। ईश धातु का अर्थ है शासन करना, प्रेरित करना। प्रेरित करने का अर्थ है काम में लगाना, चेष्टावान बनाना, शक्ति सम्पन्न बनाना। इस प्रकार भुवनेशी का अर्थ हुआ 14 भुवनों पर शासन करने वाली। भुवनेश्वरी का अर्थ हुआ 14 भुवनों पर शासन करने वाली एवं श्रेष्ठ गुणों से युक्त। भुवनेशी का अर्थ हुआ 14 भुवनों को प्रेरित करने वाली अर्थात् संचालित करने वाली या उन्हें क्रियायुक्त बनाने वाली। भुवनेश्वरी का अर्थ हुआ 14 भुवनों में शासन करने वालों में श्रेष्ठ, 14 भुवनों के ऐश्वर्य की स्वामिनी, 14 भुवनों के प्राणियों की आराध्या। ईश्वर श्रेष्ठ गुणों से युक्त होने के कारण आराध्या भी होता है। ईश भी आराध्या होता है। आज के समय में देखा जाये तो राज्यों के मुख्यमन्त्री या केन्द्र सरकार के मन्त्री ईश कहे जा सकते है एवं इन सबसे ऊपर अर्थात् प्रधानमन्त्री को ईश्वर कहा जा सकता है। शासन करने वाला दुष्ट व्यक्ति भी ईश कहा जायेगा पर उसे ईश्वर नहीं कहेगें। ईश्वर उसी को कहेगें जो शासन करने के अतिरिक्त श्रेष्ठ गुणों वाला भी है।)

648. **भवानी** – भव या शिव की स्त्री या पत्नी। भवम् अनति आनयति जीवयति इति भवानी। शिव को जीवित रखने वाली। शिवजी के द्वारा विषपान करने पर देवी की कृपा से ही वह जीवित रहे थे। भव का अर्थ विश्व, कामदेव भी होता है। विश्व को चेतन बनाने वाली। कामदेव को जीवित करने वाली।

649. **भुवनेश्वरी** – 14 भुवनों की आराध्या। सभी भुवनों की उत्पत्ति, पालन और संहार करने वाली। 14 भुवनों के ऐश्वर्य की स्वामिनी। 14 भुवनों की ईश्वरी या मालकिन। (भुवनेशी और भुवनेश्वरी का लगभग एक ही अर्थ होता है, फिर भी अन्तर करना हो ता कह सकते हैं – भुवनेशी अर्थात भुवनों का नियन्त्रण करने वाली और भुवनेश्वरी अर्थात भुवनों की आराध्या या भुवनों के ऐश्वर्य की स्वामिनी। भुवनेशी जगत में अन्तर्व्याप्त हैं और भुवनेश्वरी अन्तर्व्याप्त होने के साथ साथ दूसरे लोक में भी साकार रूप में उपस्थित हैं)। ईश् का अर्थ प्रेरित करना भी होता है। भुवनों को प्रेरित करने वाली अर्थात वहाँ के प्राणियों को अपने काम में लगान वाली। ईश में शासन करने का भाव है एवं ईश्वर में शासन करने के साथ–साथ प्रेम का गुण एवं ऐश्वर्य की स्वामिनी अर्थ भी आता है।

650. **अनन्तानन्तमहिता** – अनन्त से भी अनन्त अर्थात असंख्य रूप में पूज्यता लिये हुए।

651. **जगत्सारा** – जगत का मूल तत्व अर्थात जगत जिनसे बना है। जगत की एकमात्र सार तत्व अर्थात इनकी सत्ता हमेशा बनी रहेगी। सार का अर्थ है स्थिरांश। जगत के नष्ट होने के बाद भी देवी का अस्तित्व रहेगा।

652. **जगद्भवा** – जगद की उत्पत्ति है जिससे अर्थात जगत को उत्पन्न करने वाली। भव का अर्थ है उत्पत्ति। जगत् भवा यस्याः सा। भव का अर्थ सत्ता भी है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ जगत रूपी सत्ता स्वरूपा अर्थात जगत् स्वरूपा। भव का एक अर्थ कारण भी है, इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ जगत का कारण। जगत में सर्वश्रेष्ठ रूप से उत्पन्न होने वाली।

653. **अचिन्त्यात्मा** – जिनकी निरन्तर गति (निरन्तर स्पन्दन) चिन्तन या ध्यान से परे है अर्थात चिन्तन या ध्यान नहीं किया जा सकता। आत्मा अर्थात सतत् गति वाला। अचिन्त्य स्वरूप वाली अर्थात ऐसे स्वरूप वाली जिसका कोई चिन्तन नहीं कर सकता। अचिन्त्य का अर्थ शिव, पारद भी दिया गया है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ शिव स्वरूपा या पारद स्वरूपा।

654. **अचिन्त्यशक्ति** – जिनकी सम्पूर्ण शक्ति पर कोई चिन्तन नहीं कर सकता।

655. **चिन्त्या/चिन्त्यस्वरूपिणी** – विचार या ध्यान किए जाने योग्य स्वरूप वाली अर्थात साकार स्वरूप वाली। लोग जिनके स्वरूप का ध्यान करते हैं, चिन्तन करते हैं विचार करते हैं। बिल्कुल मग्न, तद्रूपा।

656. **अचिन्त्यस्वरूपिणी** – जिनका स्वरूप अर्थात रूप सौन्दर्य चिन्तन या ध्यान से परे है। जिनके स्वरूप का कोई चिन्तन नहीं कर सकता। इतना विलक्षण है स्वरूप।

657. **ज्ञानगम्या** – ज्ञान के द्वारा जानी जाने योग्य।

658. **ज्ञानमूर्ति** – ज्ञान की साक्षात मूर्ति। किसी विषय के बहुत बड़े ज्ञाता को अभिव्यक्त करने के लिए कभी कभी शब्द के पीछे मूर्ति लगा देते हैं जैसे वेदमूर्ति, अतः ज्ञानमूर्ति नाम का तात्पर्य हुआ सर्वज्ञ। मूर्ति का अर्थ है शरीर या आकार। ज्ञान जिनका शरीर या आकार है।

659. **ज्ञानिनी** – ज्ञानवती या ज्ञान से युक्त। ज्ञानशक्ति से युक्त। किसी भी विषय को जानने की शक्ति ज्ञानशक्ति है।

660. **ज्ञानशालिनी** – ज्ञान से सुशोभित। शब्द के बाद में शालिनी लगने से चमकता हुआ अर्थात सुशोभित अर्थ होता है।

661. **असिता** – जो शुभ्र नहीं है। (सृष्टि के विनाश और राक्षसों के विनाश के समय जो कृष्ण रूप धारण कर लेती है अर्थात काली बन जाती है।)

662. **घोररूपा** – भयंकर रूप धारण करने वाली। घोर का एक अर्थ शिव है और रूपयति का अर्थ है देखती है। इस प्रकार घोररूपा का अर्थ शिव पर दृष्टि करने वाली। बहुत बड़ा रूप धारण करने वाली। दुष्टों और राक्षसों के लिए अतिशय भयंकर रूप वाली। घोर शब्द में भयंकरता अर्थ निहित होता है। दुष्टों को भय देने वाली। रात्रि स्वरूपा क्योंकि घोर का एक अर्थ रात्रि भी है। हन्ति विनाशयति इति घोरा अर्थात जो असुरों दुष्टों का नाश करे वह घोर है। हन्ति के ह का घ हो जाता है, संस्कृत के नियमानुसार। घोर भगवान शिव का भी नाम है। इस प्रकार घोरा का अर्थ हुआ शिव की शक्ति स्वरूपा। जब हम घोर कर्म कहते हैं तो उसका अर्थ होता है बुरा या अतिबुरा कर्म। अतः घोरा का अर्थ है दुष्टों या राक्षसों के लिए बुरी या अतिबुरी हुआ।

663. **सुधाधारा** – अमृत की धारा स्वरूपा।

664. **सुधावहा** – अमृत को वहन या धारण करने वाली। देवताओं को या श्रेष्ठ भक्तों को अमृत तत्व पहुँचाने वाली।

665. **भास्करी** – प्रभा को या प्रकाश को करने वाली। भास्कर (अर्थात शिव) की गृहिणी। ज्ञान को प्रकाश स्वरूपा मानते हैं अतः ज्ञान को करने वाले भगवान शिव भास्कर है। भास्कर अर्थात सूर्य की शक्ति से अभेद है जिनका।

666. **भास्वरी** – देदीप्यमान रूप वाली अर्थात चमकने वाली।

667. **भीतिर्भास्वदक्षानुशायिनी** – ऐसी भय स्वरूपा जो जाग्रत इन्द्रियों में रहती हैं। भास्वत अर्थात दीप्तिमान अर्थात जाग्रत। भीतिः भास्वदक्षा अनुशायिनी, प्रकाश युक्त अर्थात जाग्रत इन्द्रियों में रहने वाली भय स्वरूपिणी। भय अर्थात यह भाव कि कोई चीज गलत न हो जाए जैसे राजा को किसी चीज का भय नहीं पर परलोक का भय है कि परलोक न बिगड़ जाए। अनुशय का अर्थ शयन करना अर्थात रहना या कृपा करना होता है। भय की स्थिति के होने पर देदीप्यमान नेत्रों से कृपा करने वाली, यदि भक्त साधक भयभीत दिखाई दें। शायिनी का अर्थ है सोने वाली अर्थात लेटने वाली अर्थात रहने वाली। दुष्टों की आँखों में भय के रूप में स्थित।

668. **अनसूया** – असूया से रहित। गुणों में भी दोष ढूँढ़ना असूया है।

669. **क्षमा** – क्षमा गुण स्वरूपा। दण्ड देने का सामर्थ्य होने के बावजूद अपराध करने वाले पर प्रतिक्रिया न करना और मन में यह भाव रखना कि हे प्रभु इसे दण्ड न मिले, क्षमा गुण है। क्षमाशील। क्षमा यस्या सा क्षमा अर्थात क्षमा वाली। सर्वसमर्थ। क्षम का अर्थ समर्थ भी होता है। सभी स्थानों में समर्थ। प्रत्येक कार्य करने में समर्थ। कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथाकर्तुम् में समर्थ। भक्तों के अपराधों को सहन करने वाली अर्थात उसका फल नहीं देती हैं। भक्तानां अपराधनम् क्षमते। क्षमते इति क्षमा अर्थात जो समर्थ है अर्थात सब कुछ करने में समर्थ है। योग्यता या सामर्थ्य से युक्त। आपने सक्षम शब्द सुना होगा। क्षेम (कल्याण या श्रेय) का निर्माण करने वाली अर्थात देने वाली। मा धातु का अर्थ है निर्माण करना। निर्माण किसी उद्देश्य से ही किया जाता है। यहाँ भक्तों को देने के लिए, ऐसा कल्पित कर लिया गया। भक्तों के लिए उत्तम आवास का निर्माण करने वाली अर्थात देने वाली। एकाक्षरीकोश में क्ष के अर्थ हैं– क्षेम, क्षय (निवास), राक्षस। मी हिंसायाम् धातु में ड प्रत्यय लगाने से म शब्द बनेगा जिसका अर्थ है हिंसा करने वाला। इस प्रकार क्षमा का अर्थ हुआ जो राक्षसों की हिंसा करती है अर्थात उन्हें समाप्त कर देती है।

670. **लज्जा** – लज्जा स्वरूपा। अकरणीय कर्मों में होने वाली स्वाभाविक संकोच वृत्ति लज्जा है।

671. **दुर्लभाभरणात्मिका** – दुर्लभ आभूषणों के स्वरूप वाली। आत्मा का अर्थ व्याप्त भी है। दुर्लभ आभूषणों में शक्ति, सुन्दरता के रूप में व्याप्त।

672. **विश्वघ्नी** – प्रलय के समय संसार को नष्ट कर देने वाली।

673. **विश्ववीरा** – विश्व में एकमात्र वीर। वीर अर्थात जो पराक्रम दिखाये। इनके समान कोई वीर नहीं।

674. **विश्वाशा** – विश्व की आशा स्वरूपा। सुख, समृद्धि, भक्ति के लिए सम्पूर्ण विश्व इन्हीं से आशा करता है।

675. **विश्वसंस्थिता** – सम्पूर्ण विश्व में भलीभाँति स्थित अर्थात सर्वव्यापक। शक्ति या ऊर्जा के रूप में देवी पूरे विश्व में प्रत्येक कण में व्याप्त हैं। सम्पूर्ण विश्व को संस्थापित करने वाली या सम्पूर्ण विश्व की संस्था स्वरूपा।

676. **शीलस्था** – शील (सदाचार) में शक्ति, गुण के रूप में स्थित रहने वाली। उत्तम आचरण में स्थित।

677. **शीलरूपा** – सदाचार को दिखाने वाली। शील का अर्थ है सदाचार, रूपयति का अर्थ है देखना, दिखाना। शील स्वरूपा। उत्तम आचरण के रूप वाली। शीलम् रूपयति इति शीलरूपा अर्थात सदाचार का निर्माण करने वाली। जो सद्गुण आचार में आ गए हों, शील कहलाते हैं।

678. **शीला** – साक्षात शील (सदाचार) स्वरूपा। शील + आ, आ का अर्थ है देना। उत्तम स्वभाव देने वाली। शील का अर्थ उत्तम आचरण या उत्तम स्वभाव होता है।

679. **शीलप्रदायिनी** – शील को प्रदान करने वाली। उत्तम स्वभाव देने वाली। प्रदान अर्थात स्थाई रूप से देना।

680. **बोधनी** – बोध (ज्ञान) को ले जाने वाली अर्थात पहुँचाने वाली अर्थात भक्तों तक पहुँचाने वाली अर्थात भक्तों को देने वाली। बोधम् नयति इति बोधनी। (यदि बोधिनी शब्द है तो अर्थ होगा – ज्ञान से युक्त, बोध+इनि इति बोधिनी अर्थात बोध से युक्त। यदि बोधयति से बोधिनी शब्द बनाये तो अर्थ होगा ज्ञान कराने वाली अर्थात ज्ञान देने वाली)। ज्ञान को प्रेरित करने वाली।

681. **बोधकुशला** – बोध या ज्ञान में दक्ष।

682. **रोधिनीबोधिनी** – इन्द्रियों को सांसारिक विषयों से हटाने वाली और ज्ञान के द्वारा परमतत्व का बोध कराने वाली।

683. **विद्योतिनी** – प्रकाशित होने वाली या चमकने वाली।

684. **विचित्रात्मा** – आश्चर्य में डालने वाले स्वरूप वाली। आत्मा अर्थात स्वरूप। स्त्री होते हुए भी राक्षसों का वध करना, शेर पर सवार होना, आकाश में युद्ध करना, कई हाथ होना ये सब आश्चर्य में डालने वाले कृत्य हैं। विचित्र हृदय/स्वभाव वाली अर्थात कभी भक्त पर कृपा और कभी दैत्य पर क्रोध करती हैं।

685. **विद्युत्पटलसन्निभा** – बिजली के समूह के समान प्रकाश वाली। पटल का अर्थ है समूह। जैसे हजारों सूर्यों की तरह कान्ति वाली उसी प्रकार हजारों बिजलियाँ एक साथ चमक उठें तो जैसी कान्ति होगी उस तरह की कान्ति वाली।

686. **विश्वयोनिः** – सम्पूर्ण संसार की कारण।

687. **महायोनिः** – महा का अर्थ सर्वाधिक या सबसे बढ़कर होता है इस प्रकार महायोनि का अर्थ हुआ सबसे बड़ा कारण। कारणों की भी कारण। महा का अर्थ होता है 'से बढ़कर' अर्थात जो योनि (कारण) से बढ़कर है अर्थात जो कारणों की भी कारण हैं। महा का अर्थ ब्रह्मा भी होता है इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ ब्रह्मा की कारण अर्थात ब्रह्मा को उत्पन्न करने वाली। सभी योनियों की एकमात्र आधार होने के कारण महायोनि या महाकारण। सभी कारणों की कारण। सभी योनियों की योनि।

688. **कर्मयोनिः** – कर्म है योनि जिसकी अर्थात कर्म से उत्पन्न होने वाली अर्थात अनुभव में आने वाली या प्रकट होने वाली। भगवान को पाना है तो कोई न कोई कर्म जरूर करना पड़ेगा चाहे भक्ति योग रूपी कर्म हो, चाहे अन्य साधना रूपी कर्म हो। भारतीय दर्शन में कर्म से तात्पर्य वैदिक कर्म, या वेद विहित कर्म, श्रौतयाग माना गया है। इस प्रकार के कर्मों का पालन करने से देवी प्रकट हो जाती हैं। जिसकी प्रकृति कर्म ही है। योनि का यहाँ पर अर्थ है प्रकृति।

689. **प्रियात्मिका** – प्रिय स्वरूप वाली अर्थात जो स्वरूपतः प्रिय है। प्रिय अर्थात जो मन को प्रसन्न करे। प्रीति स्वरूपा। सुन्दर स्त्री स्वरूपा। अनिन्द्य चरित वाली स्त्रियों के स्वरूप वाली। प्रिया अर्थात जो अच्छी लगती है अर्थात सुन्दर स्त्री या अनिन्द्य चरित वाली स्त्री। जिनका हृदय (आत्मा) अतिशय प्रिय या अच्छा है।

690. **रोहिणी** – रोहिणी नक्षत्र स्वरूपा। बढ़ने के स्वभाव वाली अर्थात विश्व के रूप में बढ़ने वाली। स्वभाव अर्थ में णिनि प्रत्यय लगता है। रुह्+णिनि। सभी कामनाओं को पूरा करने वाली। कौषीतकी ब्राह्मण में यही अर्थ दिया गया है। रूह्यन्ते प्राप्यन्ते इति रोहः अर्थात रोह का अर्थ हुआ कामना या मनोकामना। रोह में णिनि प्रत्यय लगाने से रोहिन् शब्द बनेगा जो स्त्रीलिंग एक वचन में रोहिणी होगा। पूर्व जन्म के संचित कर्मरूपी बीजों को उगाने वाली अर्थात उनका फल देने वाली। रोहयन्ति बीजानि प्राग्जन्मसंचितानि। रूह्+इनन्+ङीप्। रोहणम् शीलम् यस्या। जिसका स्वभाव वृद्धि का है अर्थात जगत के रूप में वृद्धि को प्राप्त होने वाली। णिनि प्रत्यय कभी कभी स्वभाव अर्थ में भी होता है।

691. **रोगशमनी** – रोगों को शान्त कर देने वाली।

692. **महारोगज्वरापहा** – बहुत बड़े और प्रायः असाध्य रोग रूपी दुःख/शोक को दूर करने वाली। ज्वर का एक अर्थ दुःख, शोक भी है। आयुर्वेद में आठ रोगों को महारोग बताया गया है। ये हैं उन्माद, राजयक्ष्मा, श्वास रोग, त्वक् दोष (कुष्ठ), मधुमेह, अश्मरी, उदर रोग (संग्रहणी) और भगन्दर। आज के समय में कोरोना, एड्स, कैंसर आदि को महारोग कह सकते हैं। महामारियाँ महारोग हैं। बहुत बड़े बुखार जैसे रोगों को भी दूर कर देने वाली।

693. **रसदा** – आनन्द (रस) को देने वाली।

694. **पुष्टिदा** – पुष्टि अर्थात बल या मजबूती को देने वाली।

695. **पुष्टिः** – पुष्टि स्वरूपा। वह शक्ति जिसके कारण शरीर और आत्मा पुष्ट होती है, पुष्टि है। यस्याः सकाशात् पुष्टिः भवति, स पुष्टिः। जिसकी समीपता से अर्थात जिसके कारण पुष्टि होती है वह पुष्टि है। पुष्ट होना अर्थात बढ़ना और मजबूत होना। पुष्टि में अंश रूप से विद्यमान। पुष्टि नामक गुण में विराजमान। शब्द के आगे ''में विराजमान'' लगाने से शब्द का अर्थ निकल आता है।

696. **मानदा** – मान अर्थात सम्मान देने वाली।

697. **मानवप्रिया** – जो मनुष्य को प्रिय है या जिन्हें मनुष्य प्रिय हैं। प्रिय अर्थात जो मन को प्रसन्न करे, मन को अच्छा लगे।

698. **कृष्णाङ्गवाहिनी** – आकर्षित करने वाले अंगों को धारण करने वाली। काले रंग के अंगों को धारण करने वाली। श्री कृष्ण द्वारा शिरोधार्य काले अंग को लिये हुए।

699. **कृष्णा** – भगवान कृष्ण की शक्ति स्वरूपा। कृष्णा अर्थात द्रौपदी स्वरूपा या द्रौपदी से अभेद है जिनका। कृष्णा का अर्थ काले रंग वाली भी होता है। जो आकृष्ट करे वह कृष्णा है। द्रौपदी काली नहीं किन्तु गोरी थी। अपने रूप गुणों से आकृष्ट करने के कारण वे कृष्णा हैं। जो पापों को आकर्षित करे अर्थात आकर्षित कर खत्म कर दे वह कृष्ण है। सौन्दर्यसारतया सर्वलोककर्षणात् कृष्णा। नियमनादि कर्षणाच्च कृष्णा। संसारान्मुक्तिं प्रति कर्षणाच्च। कृष्णवर्णत्वाच्च। कृषेर्भूमेः णः आनन्दो यया सा च कृष्णा। अथ च कृषिर्भूवाचकः सत्तावचन इत्यर्थः। णश्च निर्वृत्तिवाचकः तेन सदानन्दा कृष्णा। सौन्दर्य का सार होने के कारण अर्थात सौन्दर्य का मूल होने के कारण या मुख्य सौन्दर्य होने के कारण सभी लोगों को अपनी ओर खींचने वाली। नियम है कि जो जो वस्तु सुन्दर है वह दूसरे को आकृष्ट करती है। मुख्य सौन्दर्य तो देवी ही हैं, बाकी तो सौन्दर्य के छीटें मात्र हैं। नियमन आदि के द्वारा सबको खींचकर रखने वाली अर्थात मर्यादा के भीतर ही खींचकर रखने वाली। कृष् से खींचना अर्थ लिया और नियमन शब्द का न अक्षर ले लिया। संसार से मुक्ति की ओर खींचकर ले जाने वाली। जिनका रंग साँवला अर्थात काला है। जिनके कारण भूमि का आनन्द है अर्थात भूमि या पृथ्वी आनन्दित या प्रसन्न हो जाती है। भूमि से तात्पर्य पृथ्वी या तीर्थों की जगह ले सकते हैं। जब देवी धरती पर अवतार लेती हैं तो धरती प्रसन्न या आनन्दित हो जाती है। सीता, राधा के रूप में अवतार लिया है। भगवान विष्णु का अवतार लेना भी देवी का ही अवतार है क्योंकि उनमें और शक्ति में कोई भेद नहीं है। कृष् अर्थात भू अर्थात सत्ता। ण अर्थात आनन्द, निवृत्ति। सत्ता अर्थात हमेशा रहने वाली। इस प्रकार कृष्णा का अर्थ हुआ हमेशा रहने वाले आनन्द स्वरूपा या हमेशा आनन्दित रहने वाली। कृषि शब्द उत्कृष्टवाची है, ण सद्भक्ति का वाचक है एवं अ/आ दाता अर्थ देता है। कृषि शब्द परानन्द के अर्थ में भी आता है। उनके दास्य कर्म में ण का प्रयोग होता है। उन दोनों के दाता जो देवता है वे कृष्णा है। उत्कृष्ट भक्ति देने वाली। परानन्दा एवं ज्ञान को देने वाली। ण का अर्थ ज्ञान भी होता है। भक्तों के कोटि जन्मार्जित पापों और क्लेशों में कृषि का तथा उसके नाश में ण शब्द का प्रयोग होता है। इस प्रकार कृष्णा का अर्थ हुआ कोटिजन्मार्जित पापों अर्थात् पूर्व जन्म में किये हुये पापों का नाश करने वाली।

700. **अकला** – अवयव या इकाई से रहित अर्थात अखण्ड चैतन्य सत्ता अर्थात ब्रह्म स्वरूपा। कला का अर्थ है इकाई या अवयव। अकला अर्थात निर्गुण निराकार ब्रह्म। कला से अतीत या परे। जिस विद्या के द्वारा आत्मा परमानन्द को प्राप्त होती है ऐसी विद्या परमाकला कहलाती है और उस कला से भी जो परे हैं।

701. **कृष्णसहोदरा** – भगवान कृष्ण की सगी बहन। ललिता सहस्रनाम स्तोत्र में ललितात्रिपुरसुन्दरी देवी माँ को भगवान विष्णु की बहन कहा गया है।

702. **शाम्भवी** – भगवान शिव की शक्ति स्वरूपा या शिव की शक्ति से युक्त। योग की शाम्भवी मुद्रा स्वरूपा। इस मुद्रा में अधखुले नेत्रों से नाक के अग्रभाग या भ्रूमध्य को देखा जाता है।

703. **शम्भुरूपा** – शिव स्वरूपा। शिव पर दृष्टि करने वाली। रूपयति का अर्थ है देखना।

704. **शम्भुस्था** – शिव में स्थित रहने वाली (शक्ति रूप में) या अर्द्धनारीश्वर रूप में स्थित।

705. **शम्भुसम्भवा** – जिनसे शिव की भी उत्पत्ति होती है।

706. **विश्वोदरी** – सम्पूर्ण विश्व है उदर में जिनके अर्थात जिनके भीतर सारा विश्व समया हुआ है।

707. **योगमाता** – योगों की या योगविद्या की माता अर्थात योग विद्या इन्हीं से प्रकट हुआ है। योग विद्या या योग शास्त्र में जिन्हें माता की तरह आदरणीया या सम्माननीया माना जाता है।

708. **योगमुद्रा** – योग में अभ्यास की जाने वाली विभिन्न मुद्राओं के स्वरूप वाली। योग की समस्त मुद्राओं से विभूषित। अंगुलियों को मोड़कर (जैसे ज्ञानमुद्रा आदि) या अन्य शारीरिक चेष्टाओं (जैसे खेचरीमुद्रा, शाम्भवीमुद्रा, वज्रोलीमुद्रा आदि) से योग की मुद्रा बनती है।

709. **सुयोगिनी** – श्रेष्ठ योगी अर्थात भगवान शिव की गृहिणी। अच्छे प्रकार से जुड़ी हुई अर्थात भगवान शिव से अच्छी प्रकार से जुड़ी हुई अर्थात कभी न अलग होने वाली। अर्धनारीश्वर रूप में देवी माँ शिव से अच्छी प्रकार जुड़ी हैं। सुन्दर योग से युक्त।

710. **वागीश्वरी** – वाणी के ऐश्वर्य की स्वामिनी। ऐश्वर्य अर्थात समृद्धि और शक्ति। शक्ति अर्थात ऐसी वाणी बोलना कि सुनने वाले को प्रभावित कर दे, यह कुछ भी उत्पन्न कर सकती है और कुछ भी घटित करा सकती है। जो भी बोलती है, बोलने मात्र से उत्पन्न करा देती है। समृद्धि अर्थात शब्द भण्डार अर्थात एक ही चीज को कई शब्दों या कई प्रकार के वाक्यों से कह डालना। ईश्वरी अर्थात उत्पन्न करने वाली। वाणी को उत्पन्न करने वाली शक्ति। देवी की कृपा से ही प्राणी वाणी उत्पन्न कर पाते हैं अर्थात बोल पाते हैं। वाणी की ईश्वरी अर्थात सर्वश्रेष्ठ वाणी से विभूषित। सरस्वती स्वरूपा। (प्रकृति में वाणी का संचार करने वाली। ऐसा कहते हैं कि ब्रह्मा ने जब सृष्टि बनाई तो वह मूक थी। ब्रह्मा जी ने उसमें गति देने के लिए जब सरस्वती देवी से कहा तो उन्होंने जैसे ही अपनी वीणा के तार को स्पर्श किया, समूची सृष्टि में वाणी का प्रवाह हो गया। मनुष्य, पशु–पक्षी बोलने लगे, नदियाँ, समुद्र, बादल आदि भी आवाज करने लगे। अतः इस कारण भगवती सरस्वती को वागीश्वरी की उपाधि मिली। वाक् शक्ति देने वाली, ईश्वर अर्थात जो देता है, उत्पन्न करता है, पालन करता है, संहार करता है। वाणी के ऐश्वर्य की स्वामिनी अर्थात इनसे बेहतर कोई नहीं बोल सकता। ईश्वर का अर्थ होता है ऐश्वर्य से युक्त और ऐश्वर्य का अर्थ होता है शक्ति और समृद्धि। वाणी में शक्ति है अर्थात जो बोल देती है वो घटित होता ही है। ऋषि–मुनि के वरदान और श्राप इसी शक्ति के कारण घटित हो पाते थे। सरस्वती जी अगर बोल दें कि मरूस्थल में नदी प्रवाहित हो जाए तो होने लगेगी क्योंकि उनकी वाणी में शक्ति है। ईश्वर वह है जो कुछ भी कर सके। अपनी वाणी की ताकत से कुछ भी कर सकने वाली वागीश्वरी हैं। ऐश्वर्य में समृद्धि भी आती है। अतः इस नाम का तात्पर्य हुआ कि एक ही बात को कई प्रकार से कह सकने का सामर्थ्य रखने वाली या जिनके पास अकूत शब्दभण्डार है। वाणी की स्वामिनी अर्थात् उनसे अच्छा कोई नहीं बोल सकता।)

711. **योगनिद्रा** – योग की एक विशेष मुद्रा के स्वरूप वाली। यह एक प्रकार की ध्यान मुद्रा है जिसे जमीन पर लेटकर किया जाता है। इस योग में आध्यात्मिक नींद ली जाती है। योगनिद्रा आध्यात्मिक नींद है जो जागते हुए सोने की अवस्था है। यह सोने और जागने के बीच की स्थिति है। यह स्वप्न और जाग्रत के बीच की अवस्था है। यह अर्धचेतन की अवस्था है। योगनिद्रा स्वरूपा अर्थात योगनिद्रा की अवस्था स्वरूपा। यह अवचेतन मन तक पहुँचने का तरीका है। ईश्वर का अनासक्त भाव से संसार की रचना, पालन, संहार कार्य योगनिद्रा कहा जाता है। मनुष्य के सन्दर्भ में अनासक्त हो संसार में व्यवहार करना योगनिद्रा कहलाया जाता है। सोने व जागने के

बीच की अवस्था योगनिद्रा है। इसमें एक ओर शरीर को आराम मिलता है, दूसरी ओर नवीन ऊर्जा का संरक्षण होता है। प्रलय और उत्पत्ति के बीच ब्रह्मा की चिरनिद्रा अवस्था योगनिद्रा है।

712. **योगिनीकोटिसेविता** – करोड़ों योगिनियों द्वारा जिनकी सेवा की जाती है। सेवा का अर्थ पूजा एवं आज्ञा पालन है। आज्ञा मिलते ही उसके पालन में लग जाना भी सेवा है। योगिनी अर्थात योगाभ्यासिनी, तपस्विनी, देवी की सेविका।

713. **कौलिका** – कौल से युक्त अर्थात कौलों के द्वारा उपासिता। कौल वे हैं जो शिव शक्ति में अभेद मानते हैं और कुण्डलिनी साधना में सुषुम्नानाड़ी में मूलाधारचक्र में स्थित कुण्डलिनी शक्ति को सहस्रार चक्र में स्थित शिव से मिलाने का अभ्यास करते हैं। कुछ कौल पूजा में पंचमकार का प्रयोग करते हैं तथा एक घेरा में साधक साधिकाओं के जोड़े में बैठकर देवी की उपासना करते हैं। शिव और शक्ति एक गोत्र या कुल है, उसमें पैदा हुए कौल हैं। कौल+ठक् इति कौलः, कौलस्य इयम् इति कौलिका। कुल से अर्थात परम्परा से आई हुई अर्थात कुल परम्परा से जिनकी पूजा होती है, यह अर्थ भी कौलिका का हो सकता है। अतिशय कुलीन अर्थात अच्छे वंश में उत्पन्न होने वाली। शैवदर्शन में 36 तत्व बताये गये हैं अर्थात विश्व 36 तत्वों का कुल (समूह) है। इन सभी तत्वों में विद्यमान रहने वाली शक्ति जो इन तत्वों में (अर्थात कुल या समूह में) व्याप्त होने के साथ–साथ इससे परे भी है, वह शक्ति कौलिका है। वह शक्ति जो विश्वव्यापी एवं विश्वोत्तीर्ण दोनों है, कौलिका शक्ति है। कौलिका शक्ति में कुल एवं अकुल दोनों के गुण हैं। कौल मार्ग मानता है कि सभी को एकीकृत (Integrate) करने वाली कोई शक्ति है। कुल मार्ग जिसका है अर्थात कुल मार्ग से प्रसन्न होने वाली या कुल मार्ग से पूजी जाने वाली। कुल मार्ग में पूजा के दौरान (अन्य समय में नहीं) वाम मार्ग की तरह साधना होती है अर्थात पंचमकारों का प्रयोग होता है। कुल का अर्थ होता है समूह। कौलमार्गी समूह में पूजा करते हैं। कुल का अर्थ मूलाधारचक्र भी होता है। मूलाधारचक्र से कुण्डलिनीशक्ति को उठाकर सहस्रारचक्र में ले जाकर वहाँ स्थित शिव से मिलाने का अभ्यास करने वाले साधक कौलमार्गी हैं। कौलमार्गी अद्वैत के सिद्धान्त का पालन करते हैं अर्थात उनके लिए महल और श्मशान, स्वर्ण और पत्थर एक ही हैं।

714. **नन्दकन्या** – नन्द की कन्या अर्थात यशोदा की पुत्री जिसे भगवान कृष्ण के स्थान पर देवकी के पास छोड़ा गया था। यह कन्या साक्षात देवी स्वरूपा थीं। जब कंस ने इन्हें पत्थर पर पटक कर मारना चाहा तो ये आकाश में उड़ गईं और इन्होंने कंस से कहा कि तुझे मारने वाला पैदा हो गया है और तेरी मृत्यु अवश्य होगी। दुर्गासप्तशती के अनुसार शुम्भ – निशुम्भ को मारने वाली देवी जो नन्दगोप के घर में यशोदा के गर्भ से पैदा हुई थी और विन्ध्याचल में जिनका निवास था। नन्द के घर को उजाला करने वाली। कनि दीप्तौ धातु से कन्या शब्द बनता है जिसका अर्थ है प्रकाश या चमक पैदा करने वाली।

715. **शृङगारपीठवासिनी** – सजावट से युक्त अर्थात सजे धजे रहने के स्थान में रहने वाली। पीठ अर्थात रहने का स्थान। ब्रज में स्थित श्रृंगार मण्डल में निवास करने वाली। ब्रज में एक जगह है जहाँ भगवान कृष्ण ने राधा का श्रृंगार किया था जिसे श्रृंगार मण्डल कहते हैं। श्रृंगार पीठ शिव शक्ति के मिलने का स्थान है जिसे कामकला पीठ कहते हैं। सहस्रारचक्र के अन्तर्गत 12 दल से बना श्वेत कामकला पीठ हैं जिसे श्रृंगारपीठ कहते हैं जो शक्ति का परमधाम है। वरिवस्या–रहस्य ग्रन्थ के 16 वें श्लोक में इसका वर्णन है। प्रकाशस्वरूप शिव, विमर्शस्वरूपा शक्ति में प्रविष्ट होकर बिन्दु का रूप धारण कर लेते हैं। शक्ति भी शिव में प्रविष्ट होती है तो बिन्दु फूल जाता है जिससे नाद (स्त्रीतत्व) निर्गत होता है। बिन्दु और नाद दोनों मिलकर मिश्र बिन्दु के रूप में परिणत होते हैं यह मिश्र बिन्दु, जिसमें स्त्रीशक्ति और पुरुष शक्ति दोनों का योग है, काम कहलाता है। काम का अर्थ है स्त्रीपुरुष का मिलन। श्रृंग का अर्थ होता है काम का अंकुरण। श्वेत बिन्दु (शिव का प्रतीक), रक्तबिन्दु

(शक्ति का प्रतीक) और मिश्रबिन्दु तीनों मिलकर एक अखण्ड पदार्थ बनाते हैं जिसे कामकला कहते हैं। इसी से नाम–रूपात्मक जगत की सृष्टि होती है। श्रृंगारपीठ (श्रंगेरी पीठ) में निवास करने वाली।

716. **क्षेमङ्करी** – कल्याण करने वाली। जीवन के सभी आवश्यकताओं (रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, बिजली, पानी, स्वास्थ्य, मनोरंजन आदि) की पूर्ति एवं आध्यात्मिक लक्ष्य अर्थात मोक्ष या आनन्द की प्राप्ति कल्याण है।

717. **सर्वरूपा** – समस्त पदार्थो (जड़ और चेतन दोनों) के रूप वाली। विश्व के समस्त रूपों अर्थात सभी जड़ एवं चेतन रूपों को धारण करने वाली।

718. **दिव्यरूपा** – प्रकाशमान या चमकीले स्वरूप वाली अर्थात देखने में खूब साफ, सुन्दर दिखने वाली। दिव् धातु का एक अर्थ प्रकाश करना चमकना है। दिव्य रूप अर्थात अलौकिक रूप को धारण करने वाली। देवलोक से सम्बन्धित रूप वाली। अतिरमणीय अर्थात अतिसुन्दर, मनोहर रूप वाली। जो पंचतत्वों से न बने बल्कि चैतन्यकणों से बने अर्थात प्रकाश या ऊर्जा से बने ऐसे रूप वाली।

719. **दिगम्बरी** – दिशाएं ही है वस्त्र जिनके अर्थात सर्वव्यापक। दिगम्बर अर्थात भगवान शिव की गृहिणी। अम्बर अर्थात वस्त्र अर्थात शरीर की रक्षा करने वाला। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ दिशाओं की रक्षा करने वाली।

720. **धूम्रवक्त्रा** – जिनके मुख में धुँआ सुशोभित हो रहा है। धूमावती देवी से अभेद है जिनका।

721. **धूम्रनेत्रा** – धूम्र वर्ण के नेत्रों वाली। जिसकी आँखों का रंग धुँएं जैसा है अर्थात लालिमा लिये काले रंग वाला है। धूम का अर्थ है धुँआं और धूम्र का अर्थ है धुँऐं जैसा वर्ण। दुर्गासप्तशती में धूम्रलोचन असुर का उल्लेख है जो आलस्य का प्रतीक है। धूम्रनेत्र+आ, आ का अर्थ है नाश करना। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ आलस्य का नाश करने वाली। नेत्र का अर्थ प्रकाशिका या नेतृत्व करने वाला या ज्ञान भी होता है। धूम्र का एक अर्थ है शिव। शिव के ज्ञान स्वरूपिणी या शिव का भी मार्गदर्शन करने वाली या उनके आगे चलने वाली। धूम्र अर्थात अपने भीतर सत्य को छुपाये हुए असत् सत्ता, जैसे धुँआ अपने भीतर अग्नि को छिपाय रहता है। तात्पर्य हुआ अपने उपासकों को माया से ढके सत्य या ब्रह्म का साक्षात्कार कराने वाली या दिखाने वाली। अज्ञान रूपी या अन्य समस्याओं के रूप में जो अन्धकार है उसमें प्रकाश करने वाली अर्थात रास्ता दिखाने वाली। अग्नि के समान नेत्रों वाली अर्थात प्रदीप्त या तेजयुक्त नेत्रों वाली। धूमम् राति इति धूम्रः, जो धुँएं को देता है वह धूम्र है अर्थात अग्नि। तेज से सामने वाला व्यक्ति दब जाता है और वह जो सोचकर आया था, कर नहीं पाता है। जैसे जब भगवान कृष्ण दुर्योधन के पास गये तो दुर्योधन उन्हें बन्दी बनाना चाहता था पर वह ऐसा नहीं कर पाया। सामने वाले व्यक्ति की इच्छा धरी की धरी रह जाती है। व्यक्त एवं अव्यक्त दोनों शक्तियों या तत्वों या पदार्थों को जानने वाली। मनुष्य के प्रारब्ध एवं संचित दोनों कर्मों को जानने वाली। नेत्र अर्थात देखने वाला अर्थात जानने वाला। धूम्र में लालिमायुक्त काला रंग होता है। लाल रंग रजोगुण का प्रतीक है एवं काला रंग तमोगुण का प्रतीक है। रजोगुण अर्थात क्रियाशीलता एवं तमोगुण अर्थात जड़ता। इसी कारण रजोगुण या लाल रंग से व्यक्त या प्रकटित तत्व लिया गया एवं तमोगुण या काले रंग से अव्यक्त या अप्रकटित तत्व लिया गया। व्यक्त अर्थात भौतिक पदार्थ एवं अव्यक्त (अदृश्य) चेतन तत्व या आत्म तत्व को जानने वाली।

722. **धूम्रकेशी** – धूम्र वर्ण के केशों वाली। जिनके केश धुँऐं के रंग जैसे हैं अर्थात लालिमा लिये काले रंग वाले हैं।

723. **धूसरा** – धूसर वर्ण वाली अर्थात पूरा शरीर धूसर है। धूल के रंग वाली या धूल से लिपटी हुई। कन्या रूप में खेलते समय धूल से लिपटी हुई। धूसर वर्ण मटमैला, कुछ पाण्डु होता है अर्थात पीलापन लिए सफेद होता है।

724. **पिनाकी** – पिनाक धनुष को धारण करने वाली। पिनाक धनुष धारण करने वाले भगवान शिव की पत्नी। पिनाकम् अस्य अस्ति इति पिनाकः (पिनाक वाला अर्थात पिनाक धनुष धारण करने वाला)। पाति रक्षति इति पिनाकः, स्त्रीलिंग में पिनाकी। भक्तों की रक्षा करने वाली। पा रक्षणे धातु उणादि आक् प्रत्यय लगाने, बीच में नुट् (न्) का आगम होकर एवं पा का पि होकर यह शब्द बना। कई बार ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्द अकारान्त पुल्लिंग की पत्नी, माता, बहन आदि होते हैं। एक नियम यह भी है कि यदि कोई गुण या विशेषता या कर्म बताना हो तो पुरुष से सम्बन्ध दिखाने की आवश्यकता नहीं है। जैसे भैरवी शब्द का अर्थ भैरव की पत्नी भी हो सकता है और भयंकर शब्द करने वाली भी हो सकता है। जिनकी स्तुति की जाती है, यह भी पिनाकी का एक अर्थ होता है। पनाय्यते स्तूयते इति पिनाकी। पन् स्तुतौ धातु में उणादि आक् प्रत्यय लगाने से एवं प का पि करने से पुल्लिंग में पिनाक एवं स्त्रीलिंग में पिनाकी होगा।

725. **रूद्रवेताली** – भगवान शिव की द्वारपाल। भगवान शिव के घर का सबकुछ देखने वाली होने के कारण उनकी द्वारपाल या रक्षिका है। भयंकर वेताल का रूप धारण करने वाली। भगवान शिव ने अपेन बाल से वेताल को उत्पन्न किया था जो शिव गणों में सबसे अधिक शक्तिशाली होते हैं। भयंकर चेहरा, डरावनी आँखें, पैर नहीं बल्कि मछली की तरह पैर, इस प्रकार की इनकी आकृति चित्रों में देखी गई है। वेताल जो शव को कन्धे में लेकर चलता है। शिव के वेताल नामक गण की शक्ति। रूद्र वेताल अर्थात भयंकर वेताल के रूप को धारण करने वाली। शिव को अपने ताल में नचाने वाली वेताली हैं। शव पर अधिकार रखने वाला वेताल है। वेत अर्थात व (वायु) चला गया है जिसका अर्थात शव। अलति अर्थात सुशोभित करना। शव को सुशोभित करना अर्थात शव पर अधिकार करना। वि अर्थात अनिश्चित, तु अर्थात ग्रहण करना। जिस आत्मा का निश्चित नहीं है कि वह किसके शरीर को ग्रहण कर ले, मनुष्य, पशु, पक्षी किसके शरीर पर अधिकार कर ले।

726. **महावेतालरूपिणी** – बहुत बड़े वेताल के रूप को धारण करने वाली। पूजनीय वेताल का रूप धारण करने वाली अर्थात जो वेताल लोगों का भला करता है उस रूप को धारण करने वाली। पूना के पास वेताल मन्दिर है, वहाँ तो एक वेताल पहाड़ी है, गोआ में और गढ़वाल में भी वेताल मन्दिर है। मह् पूजायाम् धातु से महा बनाने पर पूजनीय अर्थ आता है। वेताल शिव के गणों के अधिप हैं।

727. **तपिनी** – तपने वाली अर्थात तपस्या से तपने वाली अर्थात तपस्या करने वाली। तपस्या से युक्त या तपस्या स्वरूपा। सूर्य की कन्या का नाम भी तपिनी है, तद् स्वरूपा। तपिनी ही ताप्ती नदी के रूप में है।

728. **तापिनी** – शत्रुओं, दुष्टों, राक्षसों का तपा देने वाली अर्थात कष्ट देने वाली। तापयति इति तापिनी।

729. **दीक्षा** – ज्ञान देने वाली एवं पापों का क्षय करने वाली। दीक्षा में दी शब्दाक्षर देने के लिए एवं क्ष शब्दाक्षर क्षय करने के लिए आया है। गुरू जब शिष्य को दीक्षा देता है तो शिष्य को ज्ञान मिलता है और उसके पापों का क्षरण होता हैं दीक्षा स्वरूपा। दीक्षा+आ, आ का अर्थ है देना अर्थात गुरु रूप में दीक्षा देने वाली। न्यास प्रक्रिया में देवी, देवता को बुलाने पर उनका साधक से अभेद हो जाता है, उस स्थिति में गुरु का देवी से अभेद हो जाता है। गुरू मन्त्र स्वरूपा।

730. **विष्णुविद्यात्मनाश्रिता** – वैष्णव ज्ञान में स्वरूपतः रहने वाली। विष्णु विद्या में स्वयं से आश्रित है। जो व्याप्त होकर स्थित है वह है विष्णु। विश्व की रचना करके उसमें प्रवेश हो जाना यह विष्णु विद्या है। विष्णु की विद्या (माया, ज्ञान, बुद्धि) को हृदय में धारण करने वाली।

731. **मन्थरा** – कोष (खजाना), दुर्ग (किला) वाली अर्था त इनसे युक्त या ये देवी के पास हैं। मन्थर शब्द का अर्थ कोष (खजाना), दुर्ग (किला) है। मन्द गति वाली अर्थात अदृश्य गति वाली या ऐसी गति स्वरूपा। बीज अंकुरित होते हैं, वृक्ष बढ़ते हैं पर हमें दिखाई नहीं देता। मन्थयति क्लेशयति इति मन्थरा अर्थात दुष्टों को या

आसुरी वृत्तियों को क्लेश देने वाली। संसार के पदार्थों में होने वाली धीमी गति स्वरूपा। धीरे धीरे गति वाली। हम प्रत्येक दिन सूर्य उदय और सूर्यास्त देखते हैं जिस समय हम सूर्य देख रहे होते हैं उस समय उसकी गति नहीं दिखाई देती। हमारे शरीर या अन्य पदार्थों में होने वाली वृद्धि या क्षय देखने के समय नहीं दिखाई देती। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ संसार के पदार्थों में होने वाली वृद्धि या क्षय स्वरूपा जो दिखाई नहीं देती है। मन्थरा स्वरूपा अर्थात धीरे धीरे गति करने वाली।

732. **जठरा** – पेट वाली अर्थात ऐसे पेट वाली जिसके भीतर सारा संसार है। जो पेट की तरह है अर्थात पेट की तरह सब कुछ पचा लेती है, खा जाती है। पूरे विश्व को प्रलय काल में पेट की तरह खा जाती है। प्रशस्तम् जठराग्नि से सुशोभित। जठर का अर्थ पेट, शरीर है। पेट वाली या शरीर वाली अर्थात सगुण साकार रूप लिए हुए।

733. **तीव्राग्निजिह्वा** – तीव्र अग्नि है जिह्वा में जिनके।

734. **भयापहा** – भक्तों के भयों को दूर कर देने वाली।

735. **पशुघ्नी** – जन्म मरण के बन्धन में बँधे प्राणियों का जीवन काल पूरा होने पर उन्हें मारने वाली अर्थात मृत्यु देने वाली। पशु अर्थात जो बाँधा जाए अर्थात जो जन्म मरण के बन्धन में बँधा हो। छोटे कीट पतंगों से लेकर ब्रह्मा तक सभी पशु हैं। पशु का अर्थ मूर्ख या विवेकहीन भी होता है। विवेकहीन असुरों, दैत्यों को युद्ध में मारने वाली। पशुओं (दैत्यों) को नष्ट कर देने वाली। पशु वह है जो पाशों से अर्थात बन्धन से बँधा है। पशु भेद करना नहीं जानता कि वह साधु को मार रहा है या दुष्ट को, अतः वह विवेकहीन है।

736. **पशुपाला** – पशुओं (जीवों) को पालन करने वाली।

737. **पशुहा** – विवेकहीन मनुष्यों को अर्थात कदाचारियों को अपने भक्तों से दूर कर देने वाली। दुष्ट दैत्यों अर्थात पशुओं को दूर कर देने वाली। मूर्ख या विवेकहीन लोगों को दूर कर देने वाली अर्थात उन्हें उनकी मूर्खता या विवेकहीनता से छुटकारा दिलाने वाली। ओहाक् त्यागे धातु से हा शब्दाक्षर बनाने पर त्याग करना या दूर करना अर्थ आता है। पशु का अर्थ है पशु भाव वाले साधक। पशुभाव के अतिरिक्त वीरभाव या दिव्यभाव भी होता है, किन्तु ऐसे साधकों में उन भावों का अभाव है। लज्जा, घृणा आदि अष्टपाशों से युक्त व्यक्ति भी पशु हैं। जड़तापूर्वक काम करने वाले भी पशु हैं। सबको समान भाव से देखने वाले भी पशु हैं। ब्रह्मा से लेकर स्थावर पर्यन्त तक सभी प्राणी पशु हैं।

738. **पशुवाहिनी** – पशु अर्थात सिंह है वाहन जिसका।

739. **पितामाता** – पिता माता स्वरूपा। जो पिता और माता के स्वरूप में है। कहा जाता है कि त्वमेव माता च पिता त्वमेव। ईश्वर माता, पिता, बन्धु, सखा, धन सबकुछ है। ईश्वर स्त्रीलिंग भी है, पुल्लिंग भी है और नपुंसकलिंग भी है या इन तीनों से रहित है।

740. **धीरा** – धीर स्वभाव वाली अर्थात खराब या प्रतिकूल समय में अपना सन्तुलन नहीं खोती हैं। शान्त, अविचल, दृढ़ प्रतिज्ञ चित्त वाली। धीम् राति इति धीरा अर्थात बुद्धि देने वाली।

741. **पशुपाशविनाशिनी** – प्राणियों के जन्म – मरण रूपी पाश का पूर्ण नाश कर देने वाली। ऐसे प्राणी जो देवी की शरण में आते हैं उनका जन्म – मरण रूपी पाश समाप्त हो जाता है। अज्ञानता के बन्धन को नष्ट कर देने वाली।

742. **चन्द्रप्रभा** – चन्द्र के समान कान्ति वाली।

743. **चन्द्ररेखा** – चन्द्रमा के समान सुन्दरता से युक्त। लेख्यते इति लेखा/रेखा। जिसका लेंखांकन किया जाए वह रेखा है। लेखा या रेखा का तात्पर्य सुन्दरता से है, न कि पतलेपन से। लेखांकन या रेखांकन सुन्दर चीजों

का ही होता है अर्थात रेखा का अर्थ सुन्दर होता है। कहीं कहीं रेखा का अर्थ रेखा की तरह पतली और लम्बी अर्थात सुन्दर लेते हैं।

744. **चन्द्रकान्तिविभूषिणी** – चन्द्रमा की कान्ति (चन्द्रिका) से सुशोभित।

745. **कुङ्कुमाङ्कितसर्वाङ्गी** – जिनके सम्पूर्ण शरीर में कुमकुम का लेप लगा है। कुमकुम लाल रंग होने के कारण रजोगुण का प्रतीक है और रजो गुण क्रियाशीलता एवं उत्पन्न करने वाली शक्ति का प्रतीक है। हमेशा स्पन्दन करने वाली एवं प्रतिपल कुछ न कुछ निर्माण करने वाली।

746. **सुधा** – अमृत स्वरूपा। धेट् पाने धातु होती है, जो अच्छी तरह पी जाए अर्थात जिसकी कथा का अच्छे प्रकार से पान किया जाता है अर्थात कानों से सुनी जाती है। इसे पीने में सुख मिलता है। एकाक्षरीकोश में धा का अर्थ बुद्धि दिया गया है। सु अर्थात सुष्ठु। इस प्रकार सुधा का अर्थ हुआ उत्तम बुद्धि स्वरूपा या उत्तम बुद्धि धारण करने वाली। अन्न स्वरूपा। वेद में जिस अन्न को देवताओं को चढ़ाया जाता है उसे सुधा कहा गया है। सुष्ठु दधाति पुष्णाति। अच्छी प्रकार से या रूचि से पुष्ट (वृद्धि और मजबूती) करने वाली।

747. **सद्गुरूलोचना** – सद्गुरू की दृष्टि वाली। सदगुरू द्वारा जिनकी चर्चा की जाती है। लोचृ भाषणे धातु होती है। सद्गुरू में रहने वाला ज्ञान स्वरूपा। लोचन ज्ञान का भी प्रतीक है।

748. **शुक्लाम्बरधरादेवी** – शुभ्र वस्त्र को धारण करने वाली देवी अर्थात सरस्वतीस्वरूपा। सतोगुण को धारण करने वाली अर्थात इस गुण से होने वाले कार्यों को करने वाली। सतोगुण का रंग सफेद होता है।

749. **वीणापुस्तकधारिणी** – वीणा और पुस्तक को धारण करने वाली। नाद शक्ति/अनाहत नाद एवं ज्ञान को धारण करने वाली।

750. **ऐरावतपद्मधरा** – ऐरावत पर हाथ में कमल लेकर सुशोभित होने वाली। इन्द्राणी स्वरूपा। सूक्ष्म बुद्धि एवं ऐश्वर्य को धारण करने वाली। ऐरावत अर्थात हाथी जो सूक्ष्म बुद्धि का प्रतीक है। पद्म ऐश्वर्य या सम्पन्नता का प्रतीक है।

751. **श्वेतपद्मासनस्थिता** – शुभ्र कमल के आसन पर विराजमान। सतोगुण में विद्यमान। सफेद रंग सतोगुण का होता है।

752. **रक्ताम्बरधरा** – लाल वस्त्रों को धारण करने वाली। रजोगुण को धारण करने वाली अर्थात रजोगुण द्वारा होने वाले कार्यों को करने वाली। रजोगुण का रंग लाल होता है

753. **रक्तपद्मविलोचना** – लाल कमल के समान नेत्रों वाली।

754. **दुस्तरा** – जिससे पार पाना कठिन है अर्थात जिसको सम्पूर्ण रूप से जानना लगभग असम्भव है। आप समुद्र के किनारे खड़े हैं तो आप समुद्र को एक सीमा तक देख सकते हैं, उसके दूसरे किनारे को नहीं देख सकते। इसी प्रकार भगवती के उपासक भक्ति या उपासना द्वारा देवी के स्वरूप को कुछ हद तक ही जान सकते हैं, पूर्णतः नही। कठिनाई से पार की जाने योग्य अर्थात जिनका अतिक्रमण करना लगभग असम्भव है, उनसे सुन्दरता, शक्ति, ऐश्वर्य आदि में आगे बढ़ना लगभग असम्भव है। सहज में प्राप्त न होने वाली।

755. **तारिणी** – संसार सागर से पार कर देने वाली। विपत्तियों से पार करा देने वाली। दुविधा या असमंजस की स्थिति से पार करा देने वाली। वह शक्ति जो सुषुम्ना नाड़ी में कुण्डलिनी को मस्तिष्क (सुषुम्ना नाड़ी के अन्तर्गत) में स्थित अमृतसरोवर या आनन्द सरोवर से पार करा देती है। आज्ञा चक्र से ऊपर एवं सहस्रार चक्र से थोड़ा नीचे अमृतसरोवर या आनन्द सरोवर होता है जिसमें सहस्रार चक्र से टपकने वाला आनन्द या अमृत रहता है। तार (ऊँ) के द्वारा जिन्हें हृदय में लाया जाता है अर्थात प्रकट रूप में धारण किया जाता है। तारेण हृदि

नीयते इति तारिणी। ऊँ मन्त्र के जप से या इस मन्त्र की साधना के द्वारा देवी सक्रिय रूप से हृदय में बैठ जाती हैं। ऊर्जा रूप में देवी सभी जगह व्याप्त हैं, कहीं कहीं सुषुप्त अवस्था में और कहीं जागृत अवस्था में। संसार सागर से पार कराने वालों या दुखों से पार कराने वालों का भी नेतृत्व करने वाली अर्थात उन्हें पार कराने की शक्ति देने वाली। ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि देवताओं को भक्तों को संसार सागर से पार कराने की जो शक्ति मिली है वह भी देवी द्वारा प्राप्त है। भगवान शिव विष पान से पीड़ा अनुभव कर रहे थे तो देवी ने उन्हें बच्चा बनाकर स्तानपान कराकर उनका सारा कष्ट हर लिया था। संसार सागर से पार कराने वाली। तारयति संसारात् इति तारिणी। संसार सागर से पार कराने वाले अन्य देवी देवताओं का भी नेतृत्व करने वाली अर्थात उन्हें पार कराने की शक्ति देने वाली। तारकानपि नयति इति तारिणी। रामायण के प्रसंग में वानरों को समुद्र से पार कराने वाली भगवान राम की आत्मा स्वरूपा या भगवान राम के स्वरूप वाली। कपीन् उदधेः तारयति रामात्मना। वानरों का नेतृत्व करने वाली अर्थात उन्हें पार कराने वाली शक्ति देने वाली। तारं कपिं नयति। स्वयं में सर्वत्र व्याप्त हैं एवं जीवों के दोषों को हटाने वाली हैं। स्वयं तता, जीवेषु अरम् दोषं नयति अपनयति।

756. **तारा** – तारा देवी स्वरूपा। नक्षत्र स्वरूपा। ऊँ स्वरूपा। ऊँ को तार भी कहते हैं। ऊँ की शक्ति स्वरूपा। समुद्र में आने वाले संकटों (जैसे तूफान आदि) से पार करा देने वाली। ऐसा कहा जाता है कि जल सम्बन्धी संकट आने पर तारा देवी का नाम लेना चाहिए। तारा अर्थात तूर्णफलप्रदा। अतः तारा का अर्थ है शीघ्र फल देने वाली।

757. **तरूणी** – हमेशा नवयुवती के रूप में विराजमान रहने वाली। 16–32 वर्ष की अवस्था तरुणावस्था है।

758. **ताररूपिणी** – संसार सागर से पार करने के स्वरूप वाली या ओंकार स्वरूपा।

759. **सुधाधारा** – अमृत की धारा प्रवाहित करने वाली। अमृत की आधारस्वरूपा।

760. **धर्मज्ञा** – धर्म को जानने वाली। धर्म का अर्थ है वस्तु, प्राणी में रहने वाल नित्य स्वभाव या गुण जैसे आँख का धर्म है देखना, दुष्ट का धर्म है दुःख देना। वेदविहित यज्ञादिकर्मों का विधिपूर्वक अनुष्ठान धर्म है। वह कर्म जिसका किसी परिस्थिति में करना आवश्यक और उचित हो, धर्म कहलाता है। वह कृत्य जिसका फल शुभ (स्वर्ग या उत्तम लोक की प्राप्ति हो) धर्म कहलाता है जैसे अग्निहोत्र। मान्यग्रन्थ, आचार्य, ऋषि आदि द्वारा निर्दिष्ट कर्म जो पारलौकिक सुख की प्राप्ति के लिए किया जाए वह धर्म है।

761. **धर्मसङ्घोपदेशिनी** – धर्म संघ का उपदेश देने वाली। संघ का अर्थ है समूह।

762. **भगेश्वरी** – ऐश्वर्य की स्वामिनी या ईश्वरी। ऐश्वर्य इनके अधिकार क्षेत्र में आता है। ऐश्वर्य को उत्पन्न करने वाली। स्त्री की योनि में विद्यमान ईश्वरी अर्थात दैवी शक्ति। यन्त्र के त्रिकोण में विद्यमान ईश्वरी।

763. **भगाराध्या** – सूर्य के द्वारा आराधनीय। ऐश्वर्य के द्वारा आराधनीय अर्थात ऐश्वर्य (संपन्नता) को सूचित करने वाले दुर्लभ पदार्थों के द्वारा आराधनीय अर्थात ये पदार्थं देवी की आराधना में चढ़ाये जाते हैं। ऐश्वर्यशाली देवताओं और मनुष्यों के द्वारा आराधना के योग्य। सूर्यमण्डल में आराधना करने योग्य। ध्यान के द्वारा साधक ऐसा करते है। भग अर्थात सूर्य।

764. **भगिनी** – भग या ऐश्वर्य से युक्त। भग+इनि। भग में ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान, वैराग्य ये छह अंग होते हैं। कई बार भग के लिये ऐश्वर्य शब्द कह दिया जाता है क्योंकि यह सबसे प्रधान अंग है। ऐश्वर्य का अर्थ होता है शक्ति + सम्पन्नता अर्थात अणिमा, लघिमा आदि अष्ट सिद्धि रूप शक्ति + अष्ट लक्ष्मी रूप सम्पन्नता। ऐश्वर्य अर्थात ऐसी शक्ति जिससे किसी भी इच्छा में रुकावट नहीं होती। सूर्य से युक्त, सूर्य इनकी एक आँख है। भाग्यशाली स्त्री स्वरूपा। शिव से युक्त। भग का अर्थ है ऐश्वर्य, सूर्य, शिव, भाग्य। भगिनी स्वरूपा अर्थात ऐश्वर्य शालिनी बहन स्वरूपा। कल्याणकारिणी। कुण्डलिनी शक्ति स्वरूपा जिसे जीवात्मा की बहन (भगिनी) माना जाता है।

765. **भगनायिका** – ऐश्वर्यशाली लोगों और देवताओं की नायिका। नायिका का अर्थ है प्रधान अर्थात सही रास्ते पर ले जाने वाली, मार्ग दर्शन करने वाली।

766. **भगबिम्बा** – ऐश्वर्य से पहचानी जाने वाली। बिम्ब एक प्रकार के प्रतीक होते हैं। ऐश्वर्य जिनकी छाया या आभास है। बिम्ब का अर्थ छाया या आभास भी होता है। जिनमें या जिनके व्यक्तित्व में ऐश्वर्य प्रतिबिम्बित हो रहा है।

767. **भगक्लिन्ना** – ऐश्वर्य के कारण दिल में दया वाली क्योंकि सभी कुछ देने में समर्थ है। ऐश्वर्य के द्वारा आर्द्र अर्थात गदगद हृदय वाली। ऐश्वर्य के कारण आर्द्र अर्थात सम्पन्नता वाली। गरीबी सूखापन वाली है तथा अमीरी गीलापन वाली है। ऐसा कहते हैं कि जहाँ गाँवों में पशु सम्पत्ति होती है वहाँ प्रत्येक दिन उत्सव की तरह है अर्थात खूब खाने पीने को मिलता है।

768. **भगयोनिः** – ऐश्वर्य की कारण। ऐश्वर्य की उत्पत्ति इन्हीं से होती है। ऐश्वर्यशालिनी योनि से सम्पन्न।

769. **भगप्रदा** – उपासकों को ऐश्वर्य प्रदान करने वाली। प्रदान अर्थात स्थायी दान।

770. **भगेशी** – ऐश्वर्य को प्रेरित करने वाली अर्थात अपने भक्तो तक पहुँचाने वाली। ईष्टे से ईश बनाने पर प्रेरित करना अर्थ आता है। ऐश्वर्य पर शासन करने वाली अर्थात नियन्त्रण करने वाली अर्थात यह निर्धारित करने वाली कि किसे कितना, किस प्रकार का, कितने दिन तक ऐश्वर्य देना है। भग का अर्थ सूर्य भी होता हैं। सूर्य को प्रेरित करने वाली अर्थात सूर्य को अपने कार्य में लगा देने वाली। सूर्य पर शासन करने वाली। यह सुनिश्चित करने वाली कि सूर्य अपने कर्तव्य से कहीं भटक न जाए। ऐश्वर्य की भी ईश्वरी। ईश्वर ईश से ज्यादा व्यापक है अर्थात ईश थोड़ा छोटा है। ईश और ईश्वर दोनों में शासन करने का, नियन्त्रण करने का अर्थ है पर ईश्वर में शासन के अलावा ऐश्वर्य पर भी जोर है। ईश्वर प्रेममय एवं अनिर्वचनीय भी होता है।

771. **भगरूपा** – ऐश्वर्य है रूप जिनका अर्थात ऐश्वर्य स्वरूप वाली। सूर्य स्वरूपा, शिव स्वरूपा। रूपयति का अर्थ देखना, दिखाना, निर्माण करना है। शिव पर दृष्टि डालने वाली। शिव को दिखाने वाली अर्थात अपने भक्तों को शिव का दर्शन कराने वाली। भग (सूर्य) का निर्माण करने वाली। ऐश्वर्य है ज्ञापक जिनका। ऐश्वर्य है भूति या विभूति जिनकी। रूप का अर्थ ज्ञापक, भूति भी होता है।

772. **भगगुह्या** – जननेन्द्रिय की तरह गोपनीय। भग स्त्री की योनि है। अतिशय ऐश्वर्य से युक्त होते हुए भी गोपनीय स्वरूप वाली। जिनका ऐश्वर्य (शक्ति, समृद्धि, सामर्थ्य) रहस्यमय है। वे क्या कर सकती हैं, किसी को पता नहीं अर्थात उनका पूर्ण सामर्थ्य लोगों के समक्ष प्रकट नहीं है।

773. **भगावहा** – ऐश्वर्य को धारण करने वाली। ऐश्वर्य को अपने उपासकों तक अच्छर प्रकार से पहुँचाने वाली। सूर्य (अर्थात ज्ञान का प्रकाश) को अच्छी प्रकार से धारण करने वाली। भग को आनन्द का देवता कहते हैं। आनन्द के कारणों अर्थात आनन्द को अपने में स्थायी रूप से धारण करने वाली।

774. **भगोदरी** – ऐश्वर्य है जिनके उदर में (अर्थात भीतर)। जिनके उदर में ऐश्वर्य का निवास है। आनन्द के देवता/कारण भी जिनके भीतर हैं।

775. **भगानन्दा** – ऐश्वर्य से आनन्दित होने वाली। ऐश्वर्य देकर भक्तों को आनन्दित करने वाली। आनन्दते से आनन्दा शब्द बनने पर आनन्दित होने वाली और आनन्दयति से आनन्दा शब्द बनने पर आनन्दित करने वाली अर्थ होगा।

776. **भगस्था** – ऐश्वर्य में स्थित। सूर्य मण्डल में स्थित (शक्ति रूप से)। भगवान शिव में स्थित (शक्ति रूप से या अर्द्धनारीश्वर रूप से)।

777. **भगशालिनी** – ऐश्वर्य से चमकने वाली अर्थात विभूषित। शालिनी अर्थात चमकने वाली।

778. **सर्वसंक्षोभिणी शक्ति** – सभी को क्षोभित करने वाली अर्थात शान्त मन में हलचल पैदा करने वाली शक्ति। सभी प्राणियों को क्षुब्ध कर रतिक्रीड़ा के लिए उन्मुख करने वाली। सभी दैत्यों को संक्षुब्ध करने वाली शक्ति से युक्त। संक्षुब्ध करने का तात्पर्य है विरोधियों, दैत्यों को हिला देना। सभी प्राणियों में अशान्ति या विकार ला देने वाली शक्ति। कोई भी व्यक्ति अपने को जितेन्द्रिय होने का दावा नहीं कर सकता। व्यक्ति के पास सब कुछ होने के बाद भी वह क्षुब्ध अर्थात बेचैन या व्याकुल अनुभव करता है कि कुछ अभाव है। इस प्रकार व्याकुलता पैदा करने वाली शक्ति। यह अभाव आत्मतत्व के साक्षात्कार का अभाव है। जब तक व्यक्ति अपने स्वरूप का अनुभव नहीं करेगा, बेचैन रहेगा चाहे सारी दुनिया का राजा बना दिया जाए। अभाव होने पर ही बेचैनी आती है और पूर्णता या तृप्ति आत्मतत्व का साक्षात्कार आने पर ही आती है। सभी के अन्दर सब कुछ होने के बाद भी व्याकुलता (कुछ अर्थात आत्मतत्व के साक्षात्कार के अभाव के कारण) पैदा करने वाली।

779. **सर्वविद्राविणी** – सभी आसुरी शक्तियों को खदेड़ देने वाली। द्रावयति का अर्थ है भगा देना, खदेड़ देना। सभी असुरों, राक्षसों, विरोधियों को भगा देने वाली। सभी पर दया या करुणा करने वाली। द्रवित होना अर्थात हृदय का पिघलना अर्थात करुणा दिखाना।

780. **मालिनी** – सुन्दर मालाओं से विभूषित। पुष्पों, रत्नों या नरमुण्डों की माला धारण किए हुए।

781. **माधवी** – माधवीलता के समान सुन्दर और सुगन्धित। श्रीकृष्ण की प्रिया राधा से अभेद है जिनका। माधव का अर्थ है श्रीकृष्ण। मा च भूत् अन्यो धवो अस्या। जिनका कोई दूसरा स्वामी नहीं है। मानां सर्ववचसाम् इयम् धवा। ''वाचो मा मातरा स्मृता'' ऐसा शास्त्रों में लिखा है। सभी प्रकार की वाणियों की स्वामिनी। मा का एक अर्थ वाणी भी है। धव का अर्थ है स्वामी। प्रमायाः धवा। बुद्धि की स्वामिनी अर्थात उस पर शासन करने वाली या नियन्त्रण करने वाली। मधुविद्यावेद्या। उपनिषद में दी गई मधु विद्या के द्वारा जानने योग्य। मधु में ''तस्य इदम्'' सूत्र से अण् प्रत्यय लगाकर माधव बनेगा जो स्त्रीलिंग में माधवी होगा। मायै अपरोक्षज्ञानाय हृदि धीयते, अन्ते वीयते गम्यते च माधवः/माधवी। अपरोक्ष ज्ञान के लिए जिन्हें हृदय में धारण किया जाता है और अन्त में जिन्हें जाना जाता है।

782. **माध्वी** – वासन्तिक शोभा से विभूषित। मधुर स्वभाव वाली। जिनकी हर चीज मधुर है। शरीर के अंग मधुर हैं उनकी वाणी मधुर अर्थात मिठास युक्त है। मधुर अर्थात जो दूसरों को अच्छा लगे। मधुराष्टक स्तोत्र प्रसिद्ध है। अमृतमयी मधु विद्या अर्थात् आत्म विद्या से युक्त। मधुर ज्ञान का मधुकरों के समान सेवन करने वाली। मधुर वचन बोलने वाली या मधुर आचरण करने वाली। मधुर वचन, आचरण से तात्पर्य है जिससे दूसरों को सुख मिले। आनन्दप्रद अन्नादि या उपनिषद ज्ञान के योग्य। मधुरूप आत्मा को धारण करने वाली। मधुर, रसमय और उत्तम फल जनक। मधु और सोम मिश्रित पेय वाली अर्थात् पान करने वाली।

783. **मधुरूपा** – मधुविद्या (आत्मविद्या) स्वरूपा। मधुर रूप को धारण करने वाली। बसन्त को देखने वाली। रूपयति का अर्थ है देखना। मन्यते स्वजनम् स्नेहम इति मधुः। जो भक्त के स्नेह को जानती है अर्थात अनुभव करती है। मत्तान् धुनोति इति मधुः। अहंकारी को नष्ट करने वाली। आनन्दरूपत्वात मधु। आनन्द स्वरूप होने के कारण मधु हैं। मदनिधिर्मधुः, हर्ष की निधि। आनंदनिधि इति मधुः। आनन्द की समुद्र।

784. **महोत्कटा** – अतिशय उत्कट (शत्रुओं/राक्षसों के लिए भयंकर स्वरूप वाली)।

785. **भेरूण्डा** – भयदायक रूण्ड स्वरूप है जिनका। जिनका रूण्ड अर्थात सिर से नीचे का हिस्सा भयदायक है। भेरूण्डा पक्षी की तरह बहुत शक्तिशाली, बहुत ऊँचाई पर स्थित और अपने लक्ष्य पर एकाग्र। पुराण में भेरूण्डा नामक एक पक्षी है जो अपने पंजों में हाथी तक को दबाये रहता है। इसके दो मुख हैं और यह बहुत

ऊँचाई पर स्थित है तथा बहुत ऊँचाई से भी अपने शिकार को देख लेता है। ऊँचाई पर स्थित अर्थात आत्म स्वरूप पर स्थित। दूर से शिकार देख लेना अर्थात लक्ष्य पर एकाग्रता।

786. **चन्द्रिका** – आह्लादिनी अर्थात आनन्द देने वाली। चदि आह्लादने धातु होती है। आह्लाद अर्थात हृदय की खुशी।

787. **ज्योत्स्ना** – चमकने वाली/देदीप्यमान कान्ति वाली। ज्योति अस्ति अस्याम्। चाँदनी की तरह शीतलता, शान्ति और प्रसन्नता देने वाली। ज्ञान या चैतन्य के प्रकाश से युक्त या चैतन्य (ज्ञान) स्वरूपा।

788. **विश्वचक्षुस्तमोऽपहा** – सम्पूर्ण संसार की नेत्र स्वरूपा और उस नेत्र द्वारा अन्धकार को नष्ट कर देने वाली।

789. **सुप्रसन्ना** – अतिशय प्रसन्न रहने वाली।

790. **महादूती** – बहुत बड़े दौत्य कर्म को सम्पन्न करने वाली अर्थात बहुत बड़ी दूती। ब्रह्मा का सन्देश पहुँचाने वाली। महा अर्थात ब्रह्मा। ईश्वर क्या चाहता है, मनुष्य कैसा व्यवहार करे इसे शास्त्रों या गुरू के माध्यम से बतलाने वाली।

791. **यमदूतीभयङ्करी** – यम की दूती अतः भयंकरी।

792. **उन्मादिनी** – भक्तों को अतिप्रसन्न करने वाली और दुष्टों और राक्षसों को पागल बना देने वाली। मदि हर्षे धातु होती है, उत् का अर्थ है अधिक । इस प्रकार उन्माद का अर्थ अधिक प्रसन्नता है। व्यवहार में उन्माद शब्द पागलपन के लिए होता है। उन्माद से युक्त। राक्षसों को नष्ट करने के लिए उन्माद को धारण करने वाली। मद अर्थात अहंकार से युक्त। यदि अहंकार न धारण किया जाए तो दैत्यों का विनाश नहीं हो सकता क्योंकि दैत्यों के विनाश के लिए उन्हें अपने से अलग मानना जरूरी है अर्थात द्वैत भाव लाना जरूरी है जो अहंकार से ही आता है। उन्मत्त अवस्था नशा से युक्त अवस्था जैसी होती है। भीतर से आन्नदित और दुनिया का होश नहीं। उन्मत्त व्यक्ति को, वह क्या बोल रहा है या क्या कर रहा है, इसका होश नहीं रहता।

793. **महारूपा** – बहुत विशाल रूपों वाली या अनेक रूपों वाली। सर्वाधिक विशाल रूप वाली। पूज्य स्वरूप वाली। महा का अर्थ अतिशय, सर्वाधिक, पूज्य होता है।

794. **दिव्यरूपा** – प्रशंसनीय या स्तुत्य रूप वाली। दिव् धातु का अर्थ स्तुति करना भी होता है। देवलोक या स्वर्ग में होने वाले रूप वाली। अप्राकृत तत्वों से बने रूप वाली अर्थात इनका शरीर चैतन्य का ही बना है, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश इन पाँच तत्वों से नहीं बना है। दिव्य स्वरूप वाली। दिव्य स्वरूप इस लोक में सामान्यतः नहीं मिलता है पर इस लोक में हो भी सकता है। अलौकिक रूप वाली। देवी जिस रूप में दर्शन देती है वह दिव्य या अलौकिक हुआ। जिनमें देवताओं की तरह गुण, रूप आदि हों उन्हें दिव्य पुरुष कह देते हैं। दिव्य अर्थात देवताओं से सम्बन्धित। दीव्यति इति दिव्यः अर्थात जो अपने से प्रकाश या चमक निकाले वह दिव्य है अर्थात दिव्य/दिव्या का अर्थ है चमकयुक्त।

795. **सुरार्चिता** – देवताओं द्वारा पूजित।

796. **चैतन्यरूपिणी** – चैतन्य स्वरूपा। चैतन्य को प्रकाश या ऊर्जा के रूप में कल्पित कर सकते हैं। चेतना का भाव (कारण) चैतन्य है। चैतन्य को सूर्य के गोले की तरह एवं चेतना को उस गोले से निकलने वाली किरणों की तरह देख सकते हैं।

797. **नित्या** – सदैव रहने वाली, शाश्वत सत्ता वाली। नित्य अर्थात जिसका तीनों कालों में अस्तित्व है। नित्य कर्म स्वरूपा अर्थात प्रतिदिन होने वाले कर्म स्वरूपा। नित्य का एक अर्थ है प्रतिदिन होने वाला। सागर (समुद्र)

स्वरूपा या सागर की शक्ति स्वरूपा। नित्य का एक अर्थ सागर भी है। कभी कभी अनित्य चीजों के लिए भी नित्य का प्रयोग कर देते हैं क्योंकि वह किसी की तुलना में अधिक नित्य है जैसे पृथ्वी।

798. **क्लिन्ना काममदोद्धता** – आर्द्रता लिये हुए और काम के मद से अत्यन्त उद्धत हो जाने वाली। आर्द्रता का अर्थ है भक्तों पर अत्यधिक कृपा या दया से युक्त। उद्धत का अर्थ है सहजता छोड़ देने वाली, उस समय कामासक्त दिखाई देती है। उद्धत का अर्थ है मर्यादा, नियम तोड़ देना तथा उसकी कोई ग्लानि भी न हो।

799. **मदिरानन्दकैवल्या** – मदिरा से होने वाले आनन्द जैसे आनन्द वाली मोक्षावस्था स्वरूपा। मदिरा पीने से आदमी आनन्द में तो होता है पर बाकी सब चीजें भी भूल जाता है। कैवल्यरूपी मोक्षावस्था में भी व्यक्ति सब कुछ भूल कर आनन्द की अवस्था में रहता है। मदिरा के आनन्द से मोक्ष स्वरूप धारण करने वाली।

800. **मदिराक्षी** – मादक नेत्रों वाली अर्थात नशीले नेत्रों वाली। मादक नेत्र अर्थात अपने में डूबी, कुछ अलसाई जैसी, अपने में मस्त, बाहरी दुनिया से जैसे सम्बन्ध टूटा हो किन्तु दूसरे लोगों को आकर्षित करने वाली। नेत्रों में सहजता नहीं है।

801. **मदालसा** – आनन्द के नशे में अपनी ही स्थिति में स्थित। आलसी व्यक्ति गति नहीं करता अर्थात अपने में ही रहता है। मद से अलसाई हुई अर्थात सहज स्थिति से हटकर या शराब पीकर जैसी स्थिति होती है वैसी स्थिति वाली। मदालसा की तरह अपने शरणागतों को ब्रह्मज्ञान देने वाली।

802. **सिद्धेश्वरी** – सिद्धों की ईश्वरी अर्थात सिद्ध जिनकी उपासना करते हैं। सिद्ध अर्थात पूर्णत्व को प्राप्त, अतिलौकिक शक्तियों से युक्त।

803. **सिद्धविद्या** – जिनका मन्त्र सिद्ध माना जाता है अर्थात कोई भी उसे जप सकता है। उस मन्त्र में यह नहीं देखा जाता कि यह शत्रु मन्त्र है या मित्र है, सुसाध्य मन्त्र है या सुसिद्ध मन्त्र है। स्त्री देवता के मन्त्र को विद्या कहते हैं। सिद्ध मन्त्र को थोड़ा सा भी जपने पर वह अपना असर दिखाने लगता है। समस्त विद्याएं हैं सिद्ध जिनको। सिद्ध लोग जिस स्त्री देवता के मन्त्र को जपते हैं वह सिद्ध विद्या है।

804. **सिद्धाद्या** – आदि काल से ही जो सिद्ध स्वरूप रही हैं अर्थात मंगल स्वरूप रहीं हैं। कात्यायन व्याकरण के प्रथम सूत्र में ही सिद्ध, मंगल एवं नित्य को पर्यायवाची माना गया है। सिद्धों में आदि या प्रथम या सर्वोपरी।

805. **सिद्धसम्भवा** – सिद्धों के समक्ष प्रकट हो जाने वाली। सिद्धों को उत्पन्न करने वाली या स्वयं सिद्ध से उत्पन्न होने वाली। सिद्धों में सम्यक् रूप से अस्तित्व वाली। भू सत्तायाम् धातु होती है।

806. **सिद्धर्द्धिः** – सिद्ध उपासकों की समृद्धि स्वरूपा। सिद्ध उपासकों की सफलता स्वरूपा। सिद्ध का अर्थ पूर्ण भी होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ पूर्ण ऋद्धि स्वरूपा अर्थात जिसके पास सभी प्रकार की ऋद्धियाँ हैं और वे भी पूर्ण मात्रा में हैं। जिनको ऋद्धियाँ सिद्ध हैं। ऋद्धि अर्थात wealth + glamour। ऋद्धि अर्थात अधिक मात्रा में भौतिक सम्पत्ति का होना।

807. **सिद्धमाता** – सिद्धों की माता या जननी। सिद्धों का पालन पोषण करने वाली। सिद्धों में माता की तरह पूज्या या आदरणिया।

808. **सिद्धिःसर्वार्थसिद्धिदा** – स्वयं सिद्धस्वरूप वाली और अपने भक्तों को सभी प्रकार की सिद्धि देने वाली।

809. **मनोमयी** – मन स्वरूपा। मनोमय कोष स्वरूपा या मनोमय कोष में विराजमान चेतना स्वरूपा।

810. **गुणातीता** – तीनों गुणों से परे। गुणी को भी गुण बोलते हैं क्योंकि गुणः अस्य अस्ति इति गुणः। गुणों के प्रभाव में जब तक व्यक्ति है तब तक देवी माँ की प्राप्ति नहीं होगी। यदि गुण का अर्थ दुर्गुण लें तो अर्थ होगा दुर्गुणियों से दूर।

811. **परम् ज्योतिः स्वरूपिणी** – श्रेष्ठ ज्योति स्वरूपा अर्थात आत्म तत्व की ज्योति स्वरूपा। यह ज्योति स्वयं प्रकाशित है जबकि अन्य प्रकाशमान वस्तुएं इन्हीं की ज्योति से प्रकाश लेते हैं। ज्ञान का स्रोत, ज्ञान भी इन्हीं से कहीं जाता है, ज्ञान प्रकाश स्वरूप है।

812. **परेशी** – शत्रुओं पर शासन करने वाली अर्थात उनका नियन्त्रण करने वाली। श्रेष्ठ ईश्वरी या श्रेष्ठ शासन करने वाली या शासन करने वालों में श्रेष्ठ।

813. **परगापारा** – श्रेष्ठ ज्ञान स्वरूपा और जिसका तट नहीं है (असीम)। परगा + अपारा। पर अर्थात श्रेष्ठ (ब्रह्म) तक पहुँची हुई और असीम। गा का अर्थ जाना, ज्ञान होता है। अपारा अर्थात तट नहीं है अर्थात असीम है। शत्रुओं से पार पाने वाली जिसका तट नहीं है। एकाक्षरी कोष में पा का अर्थ लक्ष्मी, अमृत, पानी की धारा दिया गया है। राति का अर्थ है देना। इस प्रकार पारा का अर्थ लक्ष्मी अर्थात धन सम्पदा देने वाली। अमृत देने वाली अर्थात अमृत तत्व देने वाली, पानी की धारा देने वाली अर्थात बादल स्वरूपा। इस प्रकार इस नाम का अर्थ श्रेष्ठ ज्ञान स्वरूपा एवं अमृत्व को देने वाली कर सकते हैं। परगा + पारा।

814. **परासिद्धि** – श्रेष्ठतम सिद्धि स्वरूपा। इन्हें प्राप्त करने के बाद कुछ प्राप्त करना नहीं रहता अतः सर्वश्रेष्ठ सिद्धि हुई। सत्–चित्–आनन्द स्वरूप की प्राप्ति ही सर्वश्रेष्ठ सिद्धि है।

815. **परागति** – परम पद/अवस्था स्वरूपा अर्थात मोक्ष स्वरूपा। गति का अर्थ है स्वरूप या स्थान। गति का अर्थ अवस्था, दशा, सहारा, शरणस्थल है। सर्वश्रेष्ठ सहारा या शरण स्थली स्वरूपा।

816. **विमला** – अतिशय निर्मल/सभी प्रकार के मलों से रहित। विगता मला यस्या सा अर्थात जिससे मल निकल गए हैं। छल, कपट से रहित शुद्ध चित्त वाली। नकुलीश पाशुपत दर्शन के अनुसार पाँच प्रकार के मल (दोष) है, इनसे रहित। आत्माश्रितो दुष्टभावो मलः। आत्मा की शक्ति को रोकने वाले तत्व मल है। ये है– (1) मिथ्याज्ञान, (2) अधर्म, (Demerit), (3) आसक्ति हेतु (Cause of Attachment), (4) च्युति (सदाचार से हट जाना), (5) पशुत्वमूल (जीव प्राप्त करने के अनादि संस्कार)। शैव दर्शन में भी तीन प्रकार के मल माने गये है जो है आणव मल, कार्मिक मल, मायिक मल, जिससे आत्मा की ज्ञान शक्ति, क्रिया शक्ति, इच्छा शक्ति बाधित हो जाती है। इन मलों या तत्वों के कारण ही हम अपनी पूरी शक्ति से कार्य नही कर पाते हैं। मल के कारण आत्मा पूरी तरह से प्रकाशित नहीं हो पाती है।

817. **मोहिनी** – मोहित कर देने वाली। अपने रूप/गुणों से आकर्षित कर देने वाली।

818. **आद्या** – सर्वप्रथम होने वाली। आदौ भवः इति आद्या। सबका स्रोत। सबका आदि होने से सबका स्रोत भी हैं। सबसे पहले होने वाली अर्थात् सबसे पहले जिनका अस्तित्व था एवं जो सभी की स्रोत है। सभी प्रकारों में अर्थात् सभी रूपों में होने वाली अर्थात् अंश या शक्ति रूप में विराजमान। आदि का अर्थ प्रकार होता है। देवी अलग–अलग रूपों में अवतार लेती है और हर रूप में वे शक्ति रूप में विद्यमान रहती है। प्रधान कारणों में विराजमान अर्थात् सृष्टि के प्रधान कारण जैसे पंचभूत, ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि में शक्ति रूप में विराजमान। आदि का अर्थ प्रधान या मुख्य भी होता है।

819. **मधुपानपरायणा** – शत्रुओं को नष्ट करते समय मधुपान में लग जाने वाली या लीन हो जाने वाली।

820. **वेदवेदाङ्गजननी** – चार वेद और छह वेदांगों को जन्म देने वाली।

821. **सर्वशास्त्रविशारदा** – समस्त शास्त्रों में पारंगत।

822. **सर्वदेवमयीविद्या** – सभी देवताओं की शक्ति से युक्त मन्त्र स्वरूपा। स्त्रीदेवता के मन्त्र को विद्या कहते हैं। ऐसा कहते हैं कि श्रीविद्या में सभी देवताओं के मन्त्रों की शक्ति समाहित है। सभी देवताओं वाली विद्या

स्वरूपा। विद्या का अर्थ ज्ञान भी है तो इसका अर्थ हुआ सभी देवताओं में रहने वाली विद्या स्वरूपा। सर्वदेवमयी विद्या के स्वरूप को धारण करने वाली। ऐसी विद्या जिसमें सभी देवताओं का समाहार हो जाता है अर्थात श्रीविद्या स्वरूपा।

823. **सर्वशास्त्रमयी** – समस्त शास्त्रस्वरूपा।

824. **सर्वज्ञानमयी देवी** – सर्वज्ञान स्वरूपा देवी या सभी प्रकार के ज्ञान से युक्त देवी।

825. **सर्वधर्ममयीश्वरी** – पदार्थों के सभी धर्मों से युक्त ईश्वरी। सभी पदार्थों में सर्वाधिक आवश्यक गुण धर्म कहलाता है। अग्नि का धर्म है जलाना, पानी का धर्म है शीतल करना, हवा का धर्म है बहना। देवी के अन्दर सभी प्रकार के धर्म हैं अर्थात उनमें विरोधी धर्म भी हैं अर्थात जलाने वाला गुण भी है और शीतल करने वाला गुण भी है। मनुस्मृति में धर्म के जितने भी लक्षण बताये गये हैं जैसे धृति, क्षमा, दम, अस्तेय आदि सभी गुण देवी के अन्दर मौजूद हैं। इन्द्र का धर्म कुछ और है, अग्नि का धर्म कुछ और है, यम का धर्म कुछ और है, इन सभी धर्मों से युक्त। सर्वधर्ममय होने के कारण अर्थात सर्वधर्मयुक्त होने के कारण सबकी ईश्वरी।

826. **सर्वयज्ञमयी** – समस्त यज्ञों के स्वरूप वाली। सभी यज्ञ इन्हीं के स्वरूप हैं। पंचयज्ञ स्वरूपा। पंचयज्ञ हैं – ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, वैश्वदेवयज्ञ, अतिथियज्ञ। अवधि के अनुसार होने वाले सभी यज्ञों के स्वरूप वाली जैसे एक दिन का यज्ञ, दो दिन का यज्ञ, वर्ष भर का यज्ञ आदि।

827. **यज्ञा** – यज्ञ स्वरूपा। गीता के अनुसार निष्काम भाव से समाज के हित में किये जाने वाले या परोपकार के लिए किये जाने कर्म यज्ञ हैं। आहुति डालने वाला कर्म भी यज्ञ है। गृहस्थों के लिए नियत पंचयज्ञ भी यज्ञ कहलाते हैं। आप जिस चीज के स्वामी हैं उसे मानवता की भलाई में लगाना यज्ञ कर्म है। आत्मोत्थान के लिए किये जाने वाले सभी कर्म यज्ञ कहलाते हैं। जिसमें यजुर्वेद के मन्त्रों से आहुतियाँ दी जाती है वह हवन कर्म यज्ञ है, ऐसे यज्ञ से अभेद है जिनका। जो यजुर्वेद के मन्त्रों से उन्न (क्लिन्न, परिपूर्ण) होता है, वह कर्म यज्ञ है ऐसे कर्मों से अभेद है जिनका। (यजुष् + उन्दी क्लेदने + क्त > यजुष् + उन्न > यज् + न > यज्ञ)। जिनसे किसी विशिष्ट फल की याचना (प्रार्थना) की जाती है अथवा देवता जिनकी याचना करते है। (याचृ याच्ञायाम् + नङ् > याच्ञा + अच् > याच्ञ > यच्ञ > यज्ञ। जिस कर्म में काले मृग के चर्म आसनी के रूप में प्रयुक्त होते है ऐसे कर्म यज्ञ है, उस कर्म के स्वरूप वाली। (अजिन + युजिर् योगे + घञ् > युज् + अजिन + अ > यज् + न् + अ > यज्ञ। अजिन का अर्थ है कृष्णमृग के चर्म। यजुर्वेद के मन्त्र जिस कर्म को सम्पूर्णता की ओर ले जाते है उस कर्म को यज्ञ कहते है, ऐसे यज्ञ के स्वरूप वाली। (यज्ष् + णीञ् प्रापणे + ड > यज् + न् + अ > यज्ञ)। निरूक्त में यज्ञ शब्द की इसी प्रकार की व्युत्पत्तियाँ दी गयी है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने यज्ञ की जो व्युत्पत्तियाँ दी है वे इस प्रकार है– यजति संगच्छन्ति येन। इज्यते असौ इति यज्ञः। यो यजति सत्येन संगच्छते।

828. **सर्वमन्त्राधिकारिणी** – सभी प्रकार के मन्त्रों पर अधिकार रखने वाली। चाहे जो मन्त्र जपें, अनुकूल फल ही आएगा। मनुष्यों में कुछ मन्त्र अनुकूल होते हैं और कुछ प्रतिकूल होते हैं अर्थात किसी मन्त्र का फल प्रतिकूल भी होता है।

829. **सर्वसम्पत्प्रतिष्ठात्री** – सभी प्रकार की सम्पत्तियों की प्रतिष्ठात्री (नीव डालने वाली) अर्थात सभी सम्पत्तियाँ जिनके आश्रित हैं या जिनमें रहती हैं।

830. **सर्वविद्राविणीपरा** – सभी दुष्टों को दूर भगा देने वाली। सभी प्रकार की तान्त्रिक/यान्त्रिक/मान्त्रिक विधाओं को दूर भगाने या खदेड़ने वाली, करने वाली सर्वश्रेष्ठ शक्ति स्वरूपा।

831. **सर्वसंक्षोभिणी देवी** – सभी के अन्दर भावना (emotion) पैदा करने की शक्ति। सभी को आन्दोलित अर्थात चंचल बना देने वाली अर्थात सभी के मन में कुछ न कुछ विकार पैदा करने वाली। कोई भी व्यक्ति दावा नहीं कर सकता कि वह जितेन्द्रिय है क्योंकि देवी की शक्ति ने सभी को संक्षुब्ध कर रखा है। सभी प्रकार की आभिचारिक क्रियाओं को नष्ट कर देने वाली देवी। संक्षुब्ध अर्थात पूर्व अवस्था का नाश। सभी कणों में हलचल करने वाली अर्थात स्पन्दन करने वाली, हिलाने डुलाने वाली। ब्रह्माण्ड के प्रत्येक कण में स्पन्दन हो रहा है। संक्षोभण का अर्थ है आन्दोलित करना, डराना, चंचलता। समस्त वस्तुओं में उथल पुथल मचाने वाली। जैसे दही मथा जाता है वह दही का संक्षोभण होता है। संक्षोभण गति का आधिक्य है और यह उथल पुथल वाली गति होती है। तालाब में पत्थर मारते हैं तो तरंगे उठती हैं यह संक्षोभण है। शरीर, मन, वस्तु, ग्रह, नक्षत्र इन सभी में गति है तो कभी कभी इनकी गतियों में उथल पुथल मचा देती हैं।

832. **सर्वमङ्गलकारिणी** – सभी प्रकार के मंगलों की कारण स्वरूपा। दुर्घटना से बचाव, विघ्न समाप्त कर अच्छे कार्यों की सफलता देना, अनुष्ठान/कथा रूपी आयोजन करना, मोक्ष या ईश्वर की ओर गति करना आदि मंगल के प्रकार हैं। ब्रह्मवैवर्त पुराण में हर्ष, सम्पत्ति और कल्याण को मंगल कहा गया है। इन तीनों प्रकार के मंगलों को देने वाली। कल्याण का अर्थ है मोक्ष या आनन्द, आत्म ज्ञान या आध्यात्मिक क्षेत्र में तरक्की। तीन प्रकार के कष्ट होते हैं आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक। मंगल का अर्थ है मम् (कष्ट) को गलाना। तीन प्रकार के कष्ट होते हैं अतः तीन प्रकार के मंगल भी मान सकते हैं जो हैं आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक। सभी प्रकार के मंगल को करने वाली। भविष्य में इन्द्रियों और मन को अच्छी लगने वाली घटनाएं घटित हों या अभीप्सित वस्तुएं प्राप्त हों यह भी मंगल का अर्थ होता है। कार्यों में विघ्न न पड़े, इसी कारण गणेश जी को मंगलमूर्ति कहते हैं। हर्ष का तात्पर्य है अभीप्सित वस्तुएं मिलने से मिलने वाली खुशी। इन सारे मंगलों को देने वाली। मंगल शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है सुख को लाना एवं दुख को गलाना। मंगल प्रायः इन्द्रिय और मन की खुशी से सम्बन्धित रहता है। सारे मंगल को देने वाली अर्थात हर्ष, सम्पत्ति, कल्याण, भविष्य में सफलता, अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण देने वाली। मंगल का एक लक्षण है अच्छे कार्यों में भविष्य में सफलता।

833. **त्रैलोक्याकर्षिणी देवी** – तीनों लोकों को आकर्षित करने वाली देवी। तीनों लोकों के समस्त प्राणियों को अपनी ओर खींचने वाली। व्यक्ति कभी न कभी भगवान का नाम लेता है। कोई शक्ति है जो ऐसा करवा रही है। भगवान का नाम लेना अर्थात भगवान की तरफ आकर्षित होना। दूर स्थित व्यक्ति को पास बुलाना आकर्षण है।

834. **सर्वाह्लादनकारिणी** – सभी उपासकों को हृदय की खुशी देने वाली। आह्लाद का तात्पर्य है हृदय की खुशी। इसमें उल्लास भी शामिल होता है। सभी को आनन्दित करने वाली या आनन्दित करने की कारण स्वरूपा। सबको आह्लाद (आनन्द) में डुबोने वाली। अब और कुछ भी नहीं चाहिए, आनन्द में डूबे हैं, इसी की अनुभूति चाहिए, और कुछ भी अनुभति नहीं चाहिए। आनन्द की ऊर्जा ही मुख्य ऊर्जा है, भूख प्यास आदि की ऊर्जा इसी से आती है।

835. **सर्वसम्मोहिनीदेवी** – त्रिलोक में रहने वाले सभी लोगों को सम्मोहित करने वाली अर्थात उनके अन्दर ममत्व पैदा करने वाली। सभी को सम्मोहित करने वाली ऐश्वर्यशालिनी शक्ति। सभी को सम्मोहित करने वाली। मोहित होना अर्थात मोहग्रस्त होना अर्थात अपना विवेक खो देना। वही व्यक्ति अच्छा है दूसरा कुछ भी नहीं। विवेक खो देना जिसे व्यवहार में कहते हैं फिदा हो जाना। सम्मोहित होना – मोहित में सम् उपसर्ग लगा अर्थात तीव्रता/intensity बढ़ेगी। व्यवहार में ऐसा देखा जाता है अर्थात कोई न कोई ऐसी शक्ति अवश्य होगी जो यह सब कराती है। उस शक्ति का नाम है सर्वसम्मोहिनी। सभी भक्तों को बाकी सभी चीजों को भुलाकर चेतना की आनन्दपूर्ण अवस्था का अनुभव कराने वाली। देवी माँ के अलावा ऐसा व्यक्ति अन्य कोई चीज नहीं सोचेगा।

जिससे सम्मोहित होते हैं, उसके अलावा सब भूल जाते हैं और आनन्द की अनुभूति होती है। सम्मोहन व्यक्ति के गुण, रूप, चरित्र, कृत्य के कारण होता है। (वशीकरण में वश में करने वाला व्यक्ति अपनी शक्ति को सामने वाले व्यक्ति में प्रवेश कराकर बलपूर्वक उससे अपनी इच्छानुसार कार्य कराता है, जबकि सम्मोहन में ऐसा नहीं है।)

836. **सर्वस्तम्भनकारिणी** – सभी शत्रुओ का स्तम्भन करने वाली अर्थात उनकी गतिविधियों पर रोक लगा देने वाली। सभी लोकों का स्तम्भन करने वाली अर्थात उन्हें अपने स्थान पर रोके रखने वाली। सभी को स्तम्भित अर्थात चेष्टा शून्य कर देने वाली। समस्त क्रियाओं का स्तम्भन करने वाली अर्थात रोक देने वाली जैसे चलता हुआ व्यक्ति खम्बे की तरह रूक जाएगा, बोलता हुआ व्यक्ति का बोलना रूक जाएगा। ब्रह्माण्ड के सभी ग्रह, धरती आदि इसी शक्ति के कारण गिर नहीं पाते।

837. **त्रैलोक्यजृम्भिणी देवी** – जिसकी जम्हाई लेने मात्र से तीनों लोक पैदा हो जाते हैं, ऐसी देवी। विराट् स्वरूप में कहा गया है कि तालु स्वर्गलोक है, जिह्वा पृथ्वी लोक है और जिह्वा के नीचे का हिस्सा पाताल लोक है। ऐसा कहा जाता है कि नेत्रों के उन्मेष से सृष्टि और निमेष से प्रलय होता है। जम्हाई में मुँह फैलता है अतः यह विकसित करने का भी प्रतीक है। त्रिलोक की सभी चीजों का विस्तार करने वाली। विकास करने वाली जैसे कली को फूल बना दिया। ऐसी देवी जिनके जम्हाई लेने पर तीनों लोक प्रभावित हो जाते हैं। सभी को ऐसी स्थिति में ला देती है कि वह अपने को विचार करने में असमर्थ पाता है। ज्रम्भण कहते हैं जम्हाई को जिससे शरीर में आलस्य आता है और यह निद्रा आने की पूर्वावस्था है। जम्हाई लेने के समय व्यक्ति विचार नहीं कर पाता। त्रैलोक्य का अर्थ त्रिलोक एवं त्रिलोक से सम्बन्धित दोनो होता है।

838. **सर्ववशङ्करी** – सबको वश में करने वाली। शक्ति जो सभी व्यक्ति की बुद्धि वृत्ति को अपने वश में कर लेती है जिससे व्यक्ति स्वतन्त्र रूप से निर्णय नहीं ले पाता। सभी उपासकों पर स्वामित्व ले लेने वाली। व्यक्ति चेतना से अर्थात देवी माँ से जुड़ा अनुभव करता है और बाहरी प्रभाव तथा भौतिक जीवन की घटनाएं कोई प्रभाव नहीं डालती हैं। कोई गाली दे रहा है या आलोचना कर रहा है, उसे कोई फर्क नहीं पड़ता है। देवी भक्त के शरीर में प्रवेश कर उसे नियन्त्रित करती हैं। भक्त का शरीर गाड़ी बन जाता है और देवी माँ उस गाड़ी को चलाने वाली ड्राइवर बन जाती हैं।

839. **त्रैलोक्यरञ्जिनी देवी** – तीनों लोकों को अर्थात उनमें स्थित प्राणियों को मन की खुशी देने वाली देवी। तीनों लोकों को आनन्दित कर देने वाली। रंजनी का अर्थ है आनन्दित कर देने वाली। सभी को रागी बना देने वाली अर्थात विषयों में आसक्त कर देने वाली। रंजन कहते हैं राग को एवं आसक्ति ही राग है। सर्वरंजिनी शक्ति व्यक्ति को इस प्रकार रागी बना देती हैं कि व्यक्ति विषय में आसक्त होकर हित और अहित का विचार करने और विषय को छोड़ने में अपने को असमर्थ जान पाता है। सभी को मन की खुशी देने वाली। रंजन का सम्बन्ध मन से है तभी मनोरंजन शब्द बना।

840. **सर्वसम्पत्तिदायिनी** – सभी प्रकार की सम्पत्तियों को प्रदान करने वाली। भौतिक सम्पत्ति और आध्यात्मिक सम्पत्ति दोनों को देने वाली। चल सम्पत्ति और अचल सम्पत्ति दोनों को देने वाली। वेदान्त में बताए गये षट् सम्पत्ति देने वाली। शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा और समाधान ये षट् सम्पत्ति हैं। गीता में बताय गये दिव्य गुणों अर्थात सात्विक गुणों रूपी सम्पत्ति देने वाली। भगवान का नाम सबसे बड़ी सम्पत्ति माना गया है जिसे सर्वसम्पत्ति कह सकते हैं। समाधि को भी सम्पत्ति माना गया है। बुद्धि भी सम्पत्ति है। कुछ लोग साँस को अर्थात प्राण को सर्वसम्पत्ति अर्थात परम सम्पत्ति मानते हैं। सर्व का एक अर्थ परम भी होता है।

841. **सर्वमन्त्रमयी** – सभी प्रकार के मन्त्रों के स्वरूप वाली अर्थात सभी मन्त्र देवी के स्वरूप हैं। सभी प्रकार की मन्त्र शक्ति से युक्त।

842. **सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करी** – सभी प्रकार के दुख – द्वन्दों को नष्ट कर देने वाली। द्वन्द्व का अर्थ होता है दो का जोड़ा जैसे सर्दी – गर्मी, लाभ – हानि, सुख – दुख ऐसे अनुकूल प्रतिकूल के जोड़ों को नष्ट करने वाली। द्वन्द्व को झगड़ा भी कहते हैं। सभी झगड़ों को समाप्त करने वाली। सारे भेदों (dualities) को मिटा देने वाली। व्यक्ति किसी को छोटा बड़ा नहीं समझता है। दूसरे को वही दोगे जो तुम खुद प्रयोग कर रहे हो। ऐसा नहीं है कि भिखारी आने पर उसे बासी रोटी दे दोगे।

843. **सर्वसिद्धिप्रदा देवी** – सभी प्रकार की सिद्धियों को प्रदान करने वाली। अणिमा, लघिमा आदि अष्ट सिद्धियाँ हैं।

844. **सर्वसम्पत्प्रदायिनी** – सभी प्रकार की सम्पत्तियों को प्रदान करने वाली। चल और अचल दोनों प्रकार की सम्पत्ति देने वाली। भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार की सम्पत्ति प्रदान करने वाली।

845. **सर्वप्रियङ्करी देवी** – सभी लोगों का प्रिय करने वाली देवी। जो दूसरों के मन को अच्छा लगे तथा उसके लिए हितकारी भी हो वह प्रिय है।

846. **सर्वमङ्गलकारिणी** – उपासना करने वाले सभी लोगों का अच्छा करने वाली अर्थात उपासना में कुछ त्रुटि हो भी जाए तो भी अच्छा परिणाम देती है। सभी प्रकार के मंगलों को करने वाली अर्थात सभी प्रकार के कष्ट को दूर करने वाली, सुखों को देने वाली।

847. **सर्वकामप्रदा** – सभी प्रकार की इच्छाओं को पूर्ण कर देने वाली।

848. **सर्वदुःखविमोचिनी** – सभी प्रकार के दुखों से छुटकारा दिला देने वाली। दैहिक, दैविक और भौतिक तीनों प्रकार के दुख या आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक तीनों प्रकार के दुखों को दूर करने वाली। शरीर और मन को होना वाला कष्ट जिसके लिए दूसरा व्यक्ति जिम्मेदार नहीं है, आध्यात्मिक कष्ट है। आत्मा का अर्थ केवल आत्मा नहीं है, बल्कि शरीर भी होता है। महामारी, भूकम्प आदि आपदाओं को आधिदैविक कष्ट कहते हैं। पंचभूतों से बने प्राणियों या वस्तुओं से होने वाले कष्ट को आधिभौतिक दुख कहते हैं जैसे साँप का काटना।

849. **सर्वमृत्युप्रशमनी** – सभी प्रकार की मृत्युओं जैसे अकाल मृत्यु आदि को पूर्ण रूप से शान्त कर देने वाली। सभी प्रकार की मृत्यु को पूरी तरह से शमन अर्थात शान्त करने वाली। आठ प्रकार की मृत्यु बताई गई हैं, जो हैं – 1 व्यथा (निरन्तर क्लेश) 2 लगातार शत्रुओं से घिरा रहना 3 सदा दुखों से ग्रस्त रहना 4 हर समय हर जगह लज्जित होना 5 अनवरत शोक से पीड़ित रहना (निकट सम्बन्धियों की मृत्यु होना) 6 भरी सभा में अपमानित होना 7 हमेशा रोगग्रस्त रहना 8 शरीर से प्राण निकलना। मृत्यु के 101 स्वरूप होते हैं लेकिन मुख्य आठ प्रकार की होती है जिसमें बुढ़ापा, रोग, दुर्घटना, अकस्माती आघात, शोक, चिन्ता और लालच मृत्यु के स्वरूप हैं। मृत्यु एक परम पवित्र मंगलकारी देवी हैं। सामान्य भाषा में किसी भी जीवात्मा अर्थात प्राणी के जीवन के अन्त को मृत्यु कहते हैं। मृत्यु सामान्यतः वृद्धावस्था, लालच, मोह, रोग, कुपोषण के परिणामस्वरूप होती है।

850. **सर्वविघ्नविनाशिनी** – सभी प्रकार के विघ्नों को विनष्ट कर देने वाली। सारे विघ्नों को दूर करने वाली। योग दर्शन में साधना के क्षेत्र में अनेक प्रकार के विघ्न या अन्तराय बताए गए हैं। योगदर्शन में नौ प्रकार के विघ्न बताए गए हैं 1 व्याधि 2 स्त्यान अर्थात संकोच 3 संशय 4 प्रमाद अर्थात लापरवाही 5 आलस्य 6 अविरति अर्थात विषयों में प्रवृत्ति 7 भ्रांति दर्शन अर्थात उल्टा ज्ञान जैसे जड़ में चेतन और चेतन में जड़ की बुद्धि 8 अलब्ध भूमिकत्व अर्थात समाधि की अप्राप्ति 9 अनवस्थितत्व अर्थात समाधि होने पर भी चित्त का स्थिर न होना। इसके अलावा भी पाँच और विघ्न बताए गए हैं। ये हैं 10 तीनों प्रकार के दुख 11 दौर्मनस्य अर्थात इच्छा पूरी नहीं होने पर मन का उदास हो जाना या मन में क्षोभ उत्पन्न होना 12 अंगमेजयत्व अर्थात शरीर के अंगों का काँपना 13 श्वास लेने में कठिनाई या तीव्रता होना 14 प्रश्वास श्वास छोड़ने में कठिनाई या तीव्रता होना। जैन

दर्शन में पाँच प्रकार के विघ्न या अन्तराय बताए गए हैं वे हैं – दानान्तराय, लाभान्तराय, भोगान्तराय, उपभोगान्तराय, वीर्यान्तराय। विनाश अर्थात पूर्ण नाश।

851. **सर्वाङ्गसुन्दरी माता** – समस्त अंगों से सुन्दर लगने वाली मातृ स्वरूपा।

852. **सर्वसौभाग्यदायिनी** – सभी प्रकार के सौभाग्य को देने वाली। सभी प्रकार के सौभाग्य का तात्पर्य है चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति। सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति भी सर्वसौभाग्य की प्राप्ति है। सुख, अच्छा भाग्य, सुन्दरता, अच्छी विद्याऐं, स्वास्थ्य आदि की प्राप्ति भी सौभाग्य कहलाती है। इहलोक और परलोक में जिन वस्तुओं की प्राप्ति मनुष्य चाहता है वे सौभाग्य कहलाती हैं। सौभाग्य सूचक कुछ वस्तुऐं भी होती हैं उन सभी वस्तुओं को देने वाली। सौभाग्य अर्थात निःश्रेयस (मोक्ष या संसार सागर से पार करना), अभ्युदय, सुन्दरता, यश, ऐश्वर्य (राज करना, शक्तिसम्पन्न होना)। सबसे बड़ा सौभाग्य है संसार सागर पार करना। धन – सम्पत्ति, धान्य, पुत्र, पौत्र, मित्र और परिवार के अन्य रिश्ते, नौकर–चाकर, पशु, गाड़ी, विद्या, प्रसन्नता की प्राप्ति सौभाग्य है। चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति सौभाग्य है। सातों सुख की प्राप्ति सौभाग्य है। कम परिश्रम पर चीजों को प्राप्त करना या सफलता प्राप्त करना सौभाग्य है। दुर्घटनाओं से या बुरी खबरों से बचना सौभाग्य है।

853. **सर्वज्ञा** – सब कुछ जानने वाली। जिन्हें कुछ भी अज्ञात नहीं है। शिव स्वरूपा या शिव की शक्ति स्वरूपा। सर्वज्ञ का एक अर्थ शिव, देवता है। सर्वज्ञा नामक योगिनी से अभेद है जिनका।

854. **सर्वशक्ति** – सभी प्रकार की शक्तियों से युक्त। परम शक्तिस्वरूपा। सर्व का एक अर्थ परम भी है।

855. **सर्वैश्वर्यफलप्रदा** – सभी प्रकार के ऐश्वर्यों के फलों को प्रदान करने वाली। ऐश्वर्य का अर्थ शक्ति और सम्पन्ता होती है। कुछ भी कर सकने की सामर्थ्य ऐश्वर्य है। षडैश्वर्य या अष्टैश्वर्य रूपी फल देने वाली। सभी ऐश्वर्य देने वाली। षडैश्वर्य कहे जाते हैं जिन्हें षड्भग भी कहा जाता है। भग(ऐश्वर्य), ज्ञान, बल, श्री, यश, वैराग्य आदि जिनके कारण भगवान को भगवान कहते हैं वह षड्–ऐश्वर्य कहलाता है। पूरे समूह का नाम भी ऐश्वर्य है तथा इस समूह के अन्तर्गत आये एक अंग का नाम भी ऐश्वर्य है जिसमें कोई दिक्कत नहीं है। जैसे वाशिंगटन राज्य का भी नाम है तथा इस राज्य के अन्दर आये हुए एक शहर का भी नाम है। अष्टलक्ष्मी को भी सर्वैश्वर्य कहा जाता है।

856. **सर्वज्ञानमयी देवी** – सभी प्रकार के ज्ञानों से युक्त देवी। आध्यात्मिक ज्ञान, शास्त्रों का ज्ञान, सांसारिक ज्ञान, सभी प्रकार के ज्ञानों से युक्त। परम ज्ञान स्वरूपा देवी।

857. **सर्वव्याधिविनाशिनी** – सभी प्रकार की व्याधियों को नष्ट कर देने वाली। सभी प्रकार की व्याधियों से तात्पर्य है – वात, पित्त, कफ से उत्पन्न व्याधि।

858. **सर्वाधारस्वरूपा** – समस्त विश्व/जीवों/ब्रह्माण्ड की आधार स्वरूपा। समस्त ब्रह्माण्ड जिस पर टिका हुआ है।

859. **सर्वपापहरा** – सभी प्रकार के पापों को हर लेने वाली। पाप कई प्रकार के हैं पर पंच महापाप प्रसिद्ध हैं।

860. **सर्वानन्दमयी देवी** – सभी प्रकार के आनन्दों के स्वरूप वाली। सभी प्रकार के आनन्दों से परिपूर्ण। सभी प्रकार के आनन्दों के स्वरूप वाली। तैत्तरीय उपनिषद में 11 प्रकार के आनन्द बताए गये हैं। वेदों का अध्ययन कर लेने वाले सदाचारी एवं सुदृढ़ इन्द्रियों वाले एक युवा राजा, जो शासन करने में अतिकुशल तथा सब प्रकार से बलवान हों अर्थात सार्वभौमनृपति हों, को प्राप्त होने वाले आनन्द को भूलोक का आनन्द या मानुषानन्द कहते हैं। उसका सौ गुना आनन्द मनुष्यगन्धर्वों को होता है। उसका भी सौ गुना आनन्द देवगन्धर्वों को होता है। उसका भी सौ गुना आनन्द चिरस्थाई पितृ लोक को प्राप्त हुए पितरों को होता है, उसका भी सौ गुना आनन्द

आजानज नामक देवों का आनन्द होता है, उसका भी सौ गुना आनन्द कर्मदेवों का होता है उसका भी सौ गुना आनन्द एक देवता का होता है। उसका भी सौ गुना आनन्द एक इन्द्र का होता है, उसका भी सौ गुना आनन्द एक बृहस्पति को होता है, उसका भी सौ गुना आनन्द एक प्रजापति को होता है। प्रजापति के आनन्द का सौ गुना एक ब्रह्मा का आनन्द होता है और उससे भी ऊपर सर्वोपरि आनन्द ब्रह्मलोक का आनन्द होता है। इस प्रकार मानुषानन्द, मनुष्यगन्धर्व का आनन्द, देवगन्धर्व का आनन्द, स्थाई पितरों का आनन्द, आजानज नामक देवों का आनन्द, कर्मदेवों का आनन्द, देवता का आनन्द, इन्द्र का आनन्द, बृहस्पति का आनन्द, ब्रह्मा का आनन्द, ब्रह्मलोक का आनन्द, ये 11 आनन्द हैं। सम्पूर्ण आनन्द स्वरूपा, पूर्ण तुष्टि स्वरूपा (व्यष्टियों में भी पूर्ण है)। कश्मीर के त्रिक दर्शन के अनुसार छह प्रकार के आनन्द होते हैं जो हैं – निजानन्द, निरानन्द, परानन्द, ब्रह्मानन्द, महानन्द और चिदानन्द (जगतानन्द)। इनमें से जगदानन्द को छोड़ शेष सारे आनन्द अधूरे माने जाते हैं क्योंकि उन सब में विश्वमयता का बहिष्कार पाया जाता है। जगदानन्द की भूमिका में विश्वमयता किसी भी प्रकार से हेय नहीं, अतः इस भूमिका को प्राप्त करने के लिए भी विश्वमयता को दुखपूर्ण या भ्रान्ति समझकर छोड़ देने की कोई आवश्यकता नहीं है। इस आनन्द की भूमिका में रममाण आत्मा के लिए विश्वमयता भी वैसी ही आनन्दमयी है जैसा कि विश्वोत्तीर्णता। स्वामी रामकृष्ण परमहंस आनन्द के 3 प्रकार बताते हैं जो हैं – विषयानन्द, भजनानन्द एवं ब्रह्मानन्द।

861. **सर्वेच्छाया – स्वरूपिणी** – सभी लोगों की इच्छाओं के स्वरूप वाली।

862. **सर्वलक्ष्मीमयी विद्या** – समस्त लक्ष्मियों से युक्त विद्या के स्वरूप वाली अर्थात ऐसी विद्या जिसमें अष्ट लक्ष्मी की सिद्धि या प्राप्ति हो जाती है। स्त्री देवता के मन्त्र को विद्या कहते हैं। उस मन्त्र के स्वरूप वाली जिससे सभी लक्ष्मियों अर्थात अष्ट लक्ष्मियों की प्राप्ति हो जाती है।

863. **सर्वेप्सितफलप्रदा** – सभी प्रकार के इच्छित फलों को प्रदान करने वाली।

864. **सर्वारिष्टप्रशमनी** – सभी प्रकार के अरिष्टों (कष्टों या बाधाओं) को शान्त करने वाली। ग्रहों के द्वारा जनित कष्ट सर्वारिष्ट कहलाये जा सकते हैं।

865. **परमानन्ददायिनी** – सर्वोच्च आनन्द को देने वाली। ब्रह्म/आत्मा के अनुभव/ज्ञान से होने वाले आनन्द को देने वाली अर्थात आत्मसाक्षात्कार या ब्रह्मसाक्षात्कार कराने वाली। परमानन्द प्रदान करने वाली।

866. **त्रिकोणनिलया** – श्रीयन्त्र में स्थित त्रिकोण में है आवास जिसका।

867. **त्रिस्था** – तीन गुणों अर्थात सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण में स्थित (शक्ति या ऊर्जा रूप में स्थित)। वेद त्रयी में स्थित। ब्रह्मा, विष्णु, महेश के रूप में स्थित।

868. **त्रिमात्रा** – ओम स्वरूपा। ओम् की तीन मात्राएं कहीं गई हैं। वैद्युत, तामसी और निर्गुणी मात्रा। प्लुत स्वर स्वरूपा। ह्रस्व स्वर की एक मात्रा एवं दीर्घ स्वर की दो मात्रा होती है। तीन गुणों की जननी। ब्रह्मा, विष्णु महेश की जननी।

869. **त्रितनुस्थिता** – तीनों शरीरों में स्थित रहने वाली। ब्रह्मा, विष्णु और महेश के शरीर में स्थित रहने वाली। तीन स्वरूपों अर्थात महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती के स्वरूप में स्थित रहने वाली। स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर में स्थित रहने वाली।

870. **त्रिवेणी** – त्रिवेणी स्वरूपा। वेणी का अर्थ धारा भी होता है। तीन धाराओं के स्वरूप में अर्थात गंगा, जमुना और सरस्वती की धाराओं के स्वरूप में है जो। जो तीन गुणों या तीन देवियों के स्वरूप में है, मानो तीनों से चोटी की तरह इकठ्ठी हैं।

871. **त्रिपथा** – तीन मार्गों में बहने वाली गंगा स्वरूपा। आकाश, पृथ्वी और पाताल में तीन मार्गों से प्रवाहित होने वाली। प्राण स्वरूपा क्योंकि प्राण तीन रास्तों से अर्थात इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना नाड़ियों से प्रवाहित होता है।

872. **त्रिगुण्या** – तीन गुणों से युक्त।

873. **त्रिमूर्ति** – तीन मूर्तियों वाली अर्थात महाकाली , महालक्ष्मी, महासरस्वती स्वरूपा या ब्रह्मा, विष्णु, महेश के स्वरूप में।

874. **त्रिपुरेश्वरी** – त्रिपुर (शिव) की ईश्वरी अर्थात स्वामिनी।

875. **त्रिधामिनी** – तीन प्रकार के तेजों से युक्त।

876. **त्रिदशाध्यक्षा** – देवताओं की अध्यक्षा अर्थात उनके कार्यकलापों पर निगरानी रखने वाली और नियन्त्रण करने वाली। देवता हमेशा तीसरी अवस्था अर्थात युवावस्था में रहते हैं इसलिए उन्हें त्रिदश कहा गया है। त्रि का अर्थ तीन, तीसरा दोनो होता है। बालपन, कौमार्य और युवावस्था इन तीन अवस्थाओं वाले होने से देवता को त्रिदशा कहते हैं। बाल हनुमान जी, बाला त्रिपुर सुन्दरी, कुमार कार्तिकेय आदि बाल और कुमारावस्था के देवता हैं। तीन प्रकार की दशाओं अर्थात बाल, युवा, वृद्ध की अवस्था की व्यवस्था करने वाली।

877. **त्रिवित्** – तीनों वेदों को जानने वाली। तीनों कालों अर्थात भूतकाल, वर्तमान एवं भविष्य को जानने वाली। तीनों विद्याओं अर्थात परा, अपरा एवं परापरा विद्या को जानने वाली। प्राणियों की प्रमुख तीन अवस्थाओं अर्थात जन्म, स्थिति एवं मरण को जानने वाली। स्थिति अर्थात कितने समय तक जीवित रहेगा।

878. **त्रिपुरवासिनी** – त्रिपुर में या तीनों लोकों में निवास करने वाली।

879. **त्रयीविद्या** – त्रयी विद्या अर्थात वेदत्रयी विद्या के स्वरूप वाली। वेदत्रयी अर्थात ऋक्, यजु और सामवेद।

880. **त्रिशिरा** – तीन शिरों वाली। ललिता सहस्रनामस्तोत्र के अनुसार मणिपुर चक्र में स्थित देवी लाकिनी के तीन सिर हैं। अन्यथा भी त्रिशिरा नाम की देवी हैं जिनके मन्त्र और स्तोत्र की साधना की जाती है। इनके तीन सिर हैं।

881. **त्रैलोक्या** – त्रिलोक में रहने वाली। त्रिलोक की स्वामिनी। त्रिलोक में अच् प्रत्यय लगाने से त्रैलोक्य बनता है। जिसमें तीन लोक हैं। तीनों लोकों में होने वाली। तीन लोकों की शक्ति से युक्त, तीनों लोकों को जन्म देने वाली। शब्दकल्पद्रुम के अनुसार त्रैलोक्य का तीन लोक, तीन लोकों में होने वाला दोनों प्रकार का अर्थ है।

882. **त्रिपुष्करा** – तीन कमलों वाली अर्थात हाथ, पैर और मुख रूपी कमल वाली। आपने हस्तकमल, चरण कमल और मुख कमल यह नाम सुना होगा। देवी के ये अंग कमल की तरह सुन्दर होते हैं अतः इन्हें भी कमल कहा जाता है। हाथों में तीन या तीन प्रकार के कमलों से सुशोभित। त्रिपुष्कर योग स्वरूपा। ज्योतिष के इस योग में आप जो भी काम करते हैं उसका तीन गुना फल मिलता है। उस समय के रूप में जिसमें तीन गुना फल मिलता है। तीन प्रकार से विकसित करने वाली अर्थात आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक विकास करने वाली।

883. **त्रिकोटरस्था** – तीन रहने के स्थान में स्थित अर्थात तीनों लोकों में स्थित। कोटर का अर्थ है पेड़ का वह खोखला भाग जिसमें कुछ जीव जन्तु रहते हैं। यहाँ पर रहने का स्थान अर्थ ले लिया। शरीर के भीतर तीन खोखले स्थान हैं जो हैं मूलाधार चक्र में एक कुण्ड जिसमें कुण्डलिनी शक्ति रहती है, हृदय गुफा जिसमें आत्मा रहती है और मस्तिष्क में पीयूष ग्रन्थि के पास एक जगह है जहाँ पर भी कुछ लोग आत्मा का निवास मानते हैं। इन तीनों स्थानों पर रहने वाली चैतन्य स्वरूपा, यह इस नाम का अर्थ हुआ। तीन कोटरों में स्थित रहने वाली अर्थात तीन धसी हुई आँखों वाली।

884. **त्रिविधा** – तीन प्रकार के स्वरूप वाली। सतोगुणी, रजोगुणी और तमोगुणी स्वरूप वाली।

885. **त्रिपुरा** – तीन पुरुषार्थों अर्थात धर्म, अर्थ और काम को पूर्ण करने वाली अर्थात देने वाली। तीन प्रमुख देवों अर्थात ब्रह्मा, विष्णु और महेश के पहले की हैं। तीन पुरों अर्थात इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना में रहने वाली। पुरा काल में ब्रह्मा, विष्णु और महेश के द्वारा जिनकी स्तुति की गई।

886. **त्रिपुरात्मिका** – त्रिपुर अर्थात शिव के स्वरूप वाली। त्रिपुर अर्थात इडा, पिंगला और सुषुम्ना नाड़ी के स्वरूप वाली। त्रिपुर (शिव) में शक्ति रूप से व्याप्त। त्रिपुर (शिव) के तेज से युक्त, यहाँ आत्मिका का अर्थ है तेज या शक्ति। तीनों लोकों की आत्मा स्वरूपा। तीनों लोकों में व्याप्त। आत्मा शब्द अत् सातत्यगमने धातु से बनने पर निरन्तर गति करने वाला अर्थ होता है और आप्लृ धातु से बनने पर व्याप्त अर्थ देता है।

887. **त्रिपुराश्री** – त्रिपुर अर्थात तीन लोकों की शोभा से युक्त। तीनों लोकों का आश्रय अर्थात शरणस्थली।

888. **त्रिजननी** – तीन तत्वों अर्थात तीन गुणों को जन्म देने वाली। तीनों लोकों में विराजमान दया या करुणा गुण स्वरूपा। जननी का एक अर्थ है करुणा या दया। तीनों लोकों के प्राणियों को ले जाने वाली अर्थात सन्मार्ग में ले जाने वाली। त्रि+जन+नी। तीनों लोकों को जन्म देने वाली। तीनों अवस्थाओं को जन्म देने वाली।

889. **त्रिपुरा त्रिपुरसुन्दरी** – ऐसी त्रिपुरा जो त्रिपुरसुन्दरी भी हैं। त्रिपुरा स्वरूपा और त्रिपुर सुन्दरी स्वरूपा। जो तीनों प्रमुख देवताओं से पहले की हैं और तीनों लोकों में सबसे सुन्दर हैं।

890. **महामाया** – बड़े बड़े देवताओं और ऋषि – मुनि और तपस्वियों तक को माया में डालने वाली अर्थात संसार की तरफ खिचाव पैदा करने वाली। अति विशाल या विश्व मोहिनी माया जिनके अधीन है। महती विश्वमोहिनी माया यदधीना सा महामाया। जिनकी माया महती अर्थात दुस्तर है अर्थात उसे पार करना बेहद कठिन है। जो माया से बढ़कर है अर्थात शरणागत होने पर भक्त को माया से पार करा देती हैं। जो मायावियों को भी माया में डाल देती हैं। जिन्हें ईश्वर से मिलने की इच्छा नहीं है उन सभी लोगों को भोगों में फँसाये रखने वाली। महा का अर्थ है सभी। माया अर्थात जो वस्तु के वास्तविक स्वरूप को ढक देती है, उसे दूसरे रूप में दिखाती है। परिणाम यह होता है कि व्यक्ति संसार को सत्य मानकर उसमें फँस जाता है। माया का अर्थ अस्तित्व का अभाव नहीं है। माया का अर्थ है, जो है, उसे उसके वास्तविक रूप में न देखपाना क्योंकि माया का पर्दा पड़ा है। सभी पदार्थ चेतन तत्व से बने होते है पर हमें उन पदार्थो में वह चेतन तत्व नहीं दिखाई देता और हम बाहर से दिखने वाले आकार को ही वास्तविकता मान लेते है। माया का अर्थ ज्ञान, इच्छा, महिमा (यश) भी होता है। जिनका ज्ञान, इच्छा, महिमा (यश) विशाल है। जिनकी बुद्धि विशाल है और शुभ या मंगल को धारण करने वाली है। महती मा प्रमा यस्य स महामा। अया शुभावहा च। विशाल बुद्धि को धारण करने वाली या श्रेष्ठ बुद्धि को अपने भक्तों तक पहुँचाने वाली। महामा का अर्थ हुआ विशाल बुद्धि। अया का अर्थ है शुभावहा अर्थात शुभ को धारण करने वाली या भक्तों को पहुँचाने वाली। महती मा प्रमा यस्या स महामा। अया शुभावहा। महामाया श्रेष्ठ, अच्छाईयों या ज्ञान को धारण करने वाली या उसे भक्तों तक पहुँचाने वाली। मा का अर्थ है ज्ञान या वाक्। महती मा वागोङ्कारः। ताम् इयम् अयते। जो महती वाणी अर्थात ऊँ को गई है जो अर्थात उसमें विराजमान या उसको प्राप्त किया है जिसने।

891. **महामेधा** – धारणावती बुद्धि में जिनसे बढ़कर कोई नहीं। अतिशय बुद्धिमती। वह बुद्धि जो तीनों दोषों (संशय, यथार्थ ज्ञान की न्यूनता, विपरीत बुद्धि) से रहित है, मेधा कहलाती है।

892. **महाचक्षुः** – महान ज्ञान से युक्त। चक्षु का अर्थ है ज्ञान।

893. **महोक्षजा** – विशाल बैल या गुणों/शक्तियों में महान (पूजनीय) बैल अर्थात नन्दीश्वर के समक्ष प्रकट हो

जाने वाली। मह् पूजायाम् धातु से महा का अर्थ पूजनीय भी हो जाता है। एकाक्षरी कोष में जा का अर्थ वाहिनी दिया गया है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ नन्दीश्वर में सवारी करने वाली। जिनका तेज कभी क्षीण नहीं होता। महः न क्षीयते जातु यस्या सा, जातु का अर्थ है कभी। महावृषभ नन्दी भी जिससे जन्म लेता है। उक्ष अर्थात बैल अर्थात धर्म। बड़े धर्म से अर्थात परम धर्म से अर्थात वेद विहित धर्म से प्रकट हो जाने वाली। इन धर्मों का पालन करने से देवी प्रकट हो जाती हैं। अतिशय विशिष्ट शक्ति से जन्म लेने वाली। उक्ष का अर्थ है बैल जो शक्ति का प्रतीक है।

894. **महावेधा** – ब्रह्मा से भी बढ़कर है अर्थात ऊपर है। तात्पर्य हुआ ब्रह्मा जी की भी रचना करने वाली। महाज्ञान स्वरूपिणी। वेधस् का अर्थ है ज्ञान।

895. **पराशक्ति** – श्रेष्ठ या उत्तमोत्तम शक्ति वाली। सभी शक्तियाँ इन्हीं से पैदा हुयीं हैं, कारण हमेशा कार्य से श्रेष्ठ होता है। यह ब्रह्म में समायी हुई शक्ति है जिसका ब्रह्म से अभेद है। कर्तुम्–अकर्तुम्–अन्यथाकर्तुम् तीनों की सामर्थ्य रखने वाली।

896. **पराप्रज्ञा** – सर्वोच्च प्रज्ञा स्वरूपा। उत्तमोत्तम बुद्धिस्वरूपा, प्रज्ञा अर्थात उत्कृष्ट बुद्धि। प्रकृष्टम् जानाति यया इति प्रज्ञा अर्थात जिससे श्रेष्ठ वस्तुओं को जाना जाता है, ऐसी बुद्धि प्रज्ञा है। प्रजानाति इति प्रज्ञा अर्थात जो बहुत अधिक जानती है वह प्रज्ञा है अर्थात प्रज्ञा का अर्थ हुआ विदुषी। इस प्रकार पराप्रज्ञा का अर्थ हुआ सर्वोच्च विदुषी अर्थात विदुषियों में जो सबसे ऊपर है। ब्रह्म का ज्ञान कराने या प्राप्त कराने वाली बुद्धि स्वरूपा। परा और अपरा दो प्रकार की बुद्धि हो सकती हैं जो पारलौकिक और इहलौकिक जीवन से सम्बन्धित हो सकती हैं। पारलौकिक जीवन से सम्बन्धित बुद्धि स्वरूपा यह इस नाम का अर्थ हो सकता है। उत्तमोत्तम प्रज्ञा वाली। सविकल्पक समाधि की दशा में जीव और ब्रह्म की अखण्डता का अनुभव कराने वाली मानसिक शक्ति प्रज्ञा है। प्रज्ञा जीव और ब्रह्म की अखण्ड एकता का अनुभव कराती है।

897. **परम्परा** – पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही पूजा पद्धति स्वरूपा। परम्परा से चली आने वाली अर्थात पीढ़ी दर पीढ़ी चली आने वाली अर्थात जो हमेशा से हैं सनातन है। पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही प्रथा, व्यवहार (पूजा पद्धति) परम्परा है। अटूट सिलसिला परम्परा है।

898. **महालक्ष्या** – बहुत बड़े लक्ष्य वाली। विश्व का निर्माण, पालन और संहार करना बहुत बड़ा लक्ष्य होता है। बड़े बड़े महात्माओं या तपस्वियों द्वारा देखने योग्य अर्थात वे ही इसे देख पाते हैं। महान लक्ष्य वाली अर्थात मोक्ष है विषय जिनका। महा का एक अर्थ ब्रह्माण्ड, विश्व भी होता है।

899. **महाभक्ष्या** – सम्पूर्ण संसार या ब्रह्माण्ड प्रलय के समय जिनका भक्ष्य अर्थात खाद्य पदार्थ हो जाता है। महा का एक अर्थ ब्रह्माण्ड भी होता है।

900. **महाकक्ष्या** – विशाल महल या अन्तःपुर वाली। जिनका घेरा या महल का प्राचीर बहुत बड़ा है। कक्ष्या का अर्थ है महल या अन्तःपुर, घेरा या प्राचीर। योग उपनिषद शब्दकोष में कक्ष्य का अर्थ गुप्त, रहस्य लिखा है। अत्यन्त गुप्त। अत्यन्त रहस्यपूर्ण। सर्वाधिक गुप्त। सर्वाधिक रहस्यपूर्ण। जो कक्ष (कमरा) के अन्दर रखने लायक हो अर्थात गोपनीय वह कक्ष्य है। रहस्य वह होता है जिसे बुद्धि से न जाना जा सके। पूर्णतया शरणागत होने से अर्थात अपना प्रयास छोड़ देने से, अपने को शक्तिहीन समझकर जब व्यक्ति ईश्वर में अपने आपको छोड़ देता है, तब वह उस रहस्य का अनुभव कर सकता किन्तु बुद्धि से नहीं जान सकता। ब्रह्म सबसे गुप्त एवं रहस्यपूर्ण है। कण कण में विद्यमान है फिर भी अनुभव में नहीं आता। महाकक्ष के अनुकूल या हितकारी। विशाल स्थान वाली, जिसमें सबकुछ समाया रहता है। महान कक्ष्य वाली। सब कुछ धारण करने की क्षमता से युक्त। (कक्ष्या का अर्थ – उत्तम कसे–कसाये घोड़े से युक्त अर्थात् उस पर विराजमान या उस पर विराजमान होकर चलने वाली।

वैदिक कोष में कक्ष्य का अर्थ उत्तम कसा कसाया अश्व अर्थात रस्सियों से, जीन या काठी से युक्त घोड़ा कक्ष्या है। वैदिक कोष मे कक्ष्या का अर्थ घोड़े की जिन कसने की रस्सी, अंगुलियाँ भी दिया गया है। कक्षे भवः इति कक्ष्या, कक्ष में यत् प्रत्यय लगाने से पुल्लिंग में कक्ष्या एवं स्त्रीलिंग में कक्ष्या बनेगा। कक्ष्या का अर्थ है काँख, छिपने का स्थान, वन का मध्य भाग, सूखे वृक्षों का जंगल, लता, घास, विद्यालयों की कक्षा। काँख में होने वाली अर्थात् काँख में विद्यमान शक्ति। हर अंग की अधिष्ठात्री देवी होती है जिससे वह अंग कार्य करता है। छिपने वाले स्थान अर्थात् हृदय में रहने वाली। स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनुसार विद्यालयों की कक्षा में होने वाली अर्थात् इन कक्षाओं में दिये जाने वाले ज्ञान को कक्ष्या कहते है, इस ज्ञान के स्वरूप वाली।) मह् पूजायाम् धातु से महा का अर्थ पूजनीय या सम्माननीय कर सकते हैं।

901. **अकलेश्वरी** – अखिल कलाओं की अर्थात समस्त कलाओं की ईश्वरी। अकला अर्थात अवयव रहित या अंग रहित ऐसी ईश्वरी। समस्त निराकार और निर्गुण तत्वों, जो दिखाई नहीं देते, उनकी स्वामिनी। कला का अर्थ साकार सृष्टि होता है अर्थात जो आँखों से दिखाई देता है।

902. **कलेश्वरी** – सम्पूर्ण साकार जगत की ईश्वरी। कला का एक अर्थ साकार जगत भी होता है। कल्यते इति कला अर्थात जिसकी गिनती की जा सकती है। साकार जगत में पदार्थों को गिना जा सकता है इसलिए साकार जगत कला है। सगुण तत्वों (कलाएं, जो दिखलाई देती हैं) उनकी ईश्वरी। कला का अर्थ है परमेश्वर की व्यक्त शक्ति। चौसठ कलाओं को उत्पन्न करने वाली या उनकी स्वामिनी या उनमें दक्ष।

903. **कलानन्दा** – कलाओं से आनन्दित। चौसठ कलाओं का अनुभव करके आनन्दित होने वाली। अनिर्वचनीय आनन्द वाली, कल+आनन्दा। कल का अर्थ है अव्यक्त शब्द अतः यहाँ पर कल का अर्थ अनिर्वचनीय ले लिया गया। कला का एक अर्थ शिव भी है। कला+आनन्दा, शिव की तरह आनन्द वाली अर्थात आदि से अन्त तक आनन्द ही रहता है अर्थात हमेशा आनन्द रहता है या शिव अर्थात श्रेष्ठ अर्थात श्रेष्ठ आनन्द वाली। कुछ सुख आरम्भ में सुख देते हैं किन्तु बाद में दुखदायी होते हैं, यहाँ पर ऐसा नहीं है। चन्द्रकला की तरह शान्ति सुख देने वाले आनन्द स्वरूपा। कला अर्थात चन्द्रकला अर्थात चन्द्रमा की रोशनी।

904. **कलेशी** – कलाओं को प्रेरित करने वाली अर्थात उन्हें अपने भक्तों तक पहुँचाने वाली। कलाओं पर शासन करने वाली अर्थात उन पर नियन्त्रण करने वाली। अपने भक्त को कौन सी कला देनी है, कितनी देनी है, किस शर्त पर देनी है यह सब निर्धारित करना नियन्त्रण करना या शासन करना है। ईष्टे प्रेरयति से ईश शब्द बनाने पर प्रेरित करने वाला अर्थ होता है। प्रेरित करना अर्थात प्रेरित कर भक्तों तक पहुँचाने वाली। ईश धातु का सामान्य अर्थ शासन करना होता है। कलाओं की स्वामिनी अर्थात कलाओं पर पूर्ण अधिकार है जिन्हें। कलाओं की ईश्वरी अर्थात चौसठ कलाओं को पैदा करने वाली, इन्हें भक्तों तक पहुँचाने वाली।

905. **कलसुन्दरी** – अवर्णनीय या अनिर्वचनीय सुन्दरता वाली। कल अव्यक्त शब्द को कहते हैं अर्थात जिसका वर्णन न किया जा सके। कल मधुरता या कोमलता को भी कहते हैं। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ मधुरता या कोमलता लिये सुन्दरता वाली। माधुर्ययुक्त सुन्दरता वाली। अतिशय सुन्दर रूप वाली। जिसका बखान नहीं किया जा सकता या शब्दो में वर्णन नहीं किया जा सकता, ऐसी सुन्दरता वाली।

906. **कलशा** – शुभ कलश स्वरूप वाली। नवरात्रि में कलश में देवी देवताओं का आवाहन किया जाता है। के लसति अर्थात जल में सुशोभित। संस्कृत में कभी कभी श और स में अभेद होता है। समृद्धि और सम्पत्ति देने वाली। कलश समृद्धि और सम्पत्ति का प्रतीक है। कलश + आ, आ का अर्थ है देना। कलश में जल भरा जाता है और यह जल धर्मरूपी द्रव है। धर्म रूपी द्रव देने वाली अर्थात् व्यक्ति को धार्मिक बनाने वाली या सही रास्ते पर ले जाने वाली। कलश, कुम्भ, कपाल, कमण्डलु आदि शब्द अमृत (आनन्द या मोक्ष), सृष्टि निर्माण करने वाले

तत्व के भी प्रतीक हैं। ईश्वर कलश आदि लिये हुए है तो इसका तात्पर्य है कि आनन्द रूपी द्रव से भरे पात्र को लिये है या सृष्टि निर्माण करने वाले तत्व को लिये है। के जले लसति इति कलसा, जो जल में सुशोभित है अर्थात् विराजमान है। लक्ष्मी जी समुद्र में भगवान विष्णु के साथ शेषनाग में विराजमान रहती है। संस्कृत में कभी–कभी स एवं श में अभेद होता है। जल की कला (मात्रा) में शयन है जिनका अर्थात जल में विराजमान। कला अर्थात साकार सृष्टि में विराजमान।

907. **कलशेशी** – ब्रह्माण्ड रूपी कलश की स्वामिनी। कलश में आवाहन की जाने वाली ईश्वरी। जल युक्त घड़े से सुशोभित, विश्व रूपी कलश की ईश्वरी। कलश की ईश्वरी अर्थात कलश में जिनकी स्थापना की जाती है। सुन्दर शोभा की ईश्वरी। कल अर्थात सुन्दर। शुभ् धातु में ड प्रत्यय लगाने से श शब्दाक्षर बनेगा, जिसका अर्थ शोभा कर सकते हैं।

908. **कुम्भमुद्रा** – योग में कुम्भक शारीरिक स्थिति के स्वरूप वाली। पूरक में साँस खीचते हैं, कुम्भक में रोकते हैं और रेचक में साँस निकालते हैं। योग की कुम्भ मुद्रा स्वरूपा। इस मुद्रा में एक हाथ की चार अंगुली भीतर कर देते हैं और उस पर दूसरे हाथ की चार अंगुलियाँ रख देते हैं, दोनों अंगूठे ऊपर की ओर मिले रहते हैं।

909. **कृशोदरी** – पतली कमर वाली। तात्पर्य है अति सुन्दर।

910. **कुम्भपा** – ब्रह्माण्ड रूपी घड़े की रक्षा करने वाली। शरीर भी घड़ा है। शरीर की रक्षा करने वाली। शरीर को पी जाने वाली अर्थात नष्ट करने वाली। घड़े के जल को पीने वाली। भगवान विष्णु का पालन करने वाली या रक्षा करने वाली। (कुम्भ का अर्थ किया गया है भगवान विष्णु, जो पृथ्वी को या विश्व को भर देता है, अपनी–अपनी शक्ति से। भूमि में होने वाला अर्थात् अवतार लेने वाला। कु के आगे जो म् है वह बिन्दु रूप है जिसका अर्थ अवधारण (एव यही) अर्थ में होता है। जिसके द्वारा पृथ्वी का अस्तित्व होता है। पृथ्वी को प्रकाशित करता है। प्रकाशित करना अर्थात् दृश्य बनाने वाला या अभिव्यक्त करने वाला। दुष्टों को विदीर्ण करने वाला अर्थात् नाश करने वाला। भ धातु का अर्थ प्रकाशित करना भी होता है और भ विदारणे से विदीर्ण करना भी होता है। घड़े में विराजमान। किसी भी शब्द के बाद "मे विराजमान" लगाने से उस शब्द का अर्थ आ जाता है। पूजा में कलश में देवी का आवाहन होता है। घड़े में जल होता है अतः इस नाम का अर्थ हुआ जल स्वरूपा या जीवन स्वरूपा। जल का एक अर्थ जीवन भी होता है। भूमि को विदीर्ण करने वाला। बीज जमीन के भीतर होता है और जमीन को विदीर्ण करके ही अंकुरित होता है। बीज में ईश्वर की शक्ति ही होती है। बीज के द्वारा विदीर्ण करना अर्थात् ईश्वर की शक्ति के द्वारा विदीर्ण करना होता है। शक्ति का अर्थ है देवी। वराह अवतार में भी भगवान विष्णु दाढ़ों में पृथ्वी को लेकर आये थे। कु का अर्थ है भूमि अर्थात् मूलाधार चक्र। मूलाधार चक्र का भेदन कर कुण्डलिनी शक्ति सुषुम्ना नाडी में ऊपर चढ़ती है अतः इस शब्द का अर्थ मूलाधार चक्र को भेदन कर ऊपर की ओर गतिमान कुण्डलिनी शक्ति स्वरूपा है।)

911. **कुम्भमध्येशी** – भगवान विष्णु के हृदय में रहने वाली ईश्वरी। भगवान विष्णु का एक नाम कुम्भ है। ब्रह्माण्डरूपी घड़े के मध्य में रहने वाली ईश्वरी अर्थात ब्रह्माण्ड में व्याप्त ईश्वरी। कुम्भ के मध्य भाग की ईश्वरी।

912. **कुम्भानन्दप्रदायिनी** – भरपूर अर्थात पूर्ण आनन्द प्रदान करने वाली। आपने सुना होगा घड़े भर भर कर देना। इस प्रकार कुम्भ शब्द भरपूर या पूर्णता का प्रतीक है। कुम्भ शब्द जगत का या ब्रह्माण्ड का भी प्रतीक है। जगतानन्द देने वाली यह अर्थ भी निकल सकता है। कुम्भ से होने वाले आनन्द को देने वाली। कुम्भ या कलश शुभ या कल्याणकारी होता है।

913. **कुम्भजानन्दनाथा** – अगस्त्य ऋषि के आनन्द की स्वामिनी अर्थात अगस्त्य ऋषि को आनन्द देने वाली। स्वामी अपने अधीन व्यक्ति को वेतन एवं अन्य सुख सुविधाएं देता है। नाथ का अर्थ रक्षक, धारण करने वाला भी

होता है। अगस्त्य ऋषि के आनन्द की रक्षा करने वाली या अगस्त्य ऋषि के आनन्द को धारण करने वाली। अधीन व्यक्ति में जो होगा वह उसके स्वामी में भी होगा और अधिक मात्रा में होगा, तभी स्वामी अनुग्रह कर अधीन व्यक्ति को वह चीज दे पाता है। नाथ् धातु का अर्थ प्रार्थना करना भी होता है। नाथ्यते प्रार्थ्यते। अगस्त्य ऋषि के द्वारा आनन्द के लिए जिनसे प्रार्थना की जाती हैं। अगस्त्य ऋषि से होने वाले आनन्द की स्वामिनी। कुम्भज अर्थात अगस्त्य, वशिष्ठ। कुम्भजानन्द नामक ऋषि की स्वामिनी।

914. **कुम्भजानन्दवर्द्धिनी** – अगस्त्य ऋषि के आनन्द को बढ़ाने वाली या अगस्त्य ऋषि के आनन्द से बढ़ने वाली।

915. **कुम्भजानन्दसन्तोषा** – अगस्त्य ऋषि को आनन्द तथा सन्तोष देने वाली। सन्तोषयति इति सन्तोषा। अगस्त्य ऋषि के आनन्द को देखकर सन्तुष्ट (प्रसन्न) होने वाली। अगस्त्य ऋषि से होने वाले आनन्द से सन्तुष्ट रहने वाली।

916. **कुम्भजतर्पिणीमुदा** – कुम्भज अर्थात अगस्त्य ऋषि के द्वारा दिये गये तर्पण से प्रसन्न या आनन्दित होने वाली।

917. **वृत्ति** – आजीविका स्वरूपा। मन का व्यापार या क्रिया स्वरूपा। आजीविका स्वरूपा Embodiment of profession and career. वर्तते अनया इति वृत्ति, जिससे जीवन में स्थिरता आती है या जिस शक्ति से पदार्थ कुछ समय तक अस्तित्व में रहते हैं वह शक्ति वृत्ति है, तद्स्वरूपा।

918. **वृत्तीश्वरी** – आजीविका की ईश्वरी अर्थात आजीविका देने वाली।

919. **अमोघा** – अमोघ दर्शन वाली अर्थात इनका दर्शन व्यर्थ नहीं होता बल्कि सफल ही होता है। देवी कुछ न कुछ अवश्य देती हैं। जिनकी साधना व्यर्थ नहीं जाती।

920. **विश्ववृत्यन्तर्पिणी** – विश्व में व्याप्त भगवान विष्णु को सन्तुष्ट करने वाली। अन्त के अ से विष्णु अर्थ ले लिया। अ के बाद मुम् का आगम मान लिया जिससे अम् अर्थात अन् हो गया। यदि विश्ववृत्यन्ततर्पिणी नाम है तो अर्थ होगा – विश्व में स्थित होकर परम तृप्ति देने वाली। विश्ववृत्ति+ अन्त+तर्पिणी। विश्ववृत्ति का अर्थ है विश्व में रहना, अन्त अर्थात परम। सांसारिक इच्छाओं को पराकाष्ठा तक पूरी करने वाली यह अर्थ भी हो सकता है। विश्ववृत्ति अर्थात सांसारिक इच्छा, अन्त अर्थात पराकाष्ठा। विश्व की वृत्ति के अन्त में तृप्त होने वाली। वृत्ति का यहाँ पर अर्थ है व्यवहार/कार्यकलाप/पूजा/आदर सम्मान/सम्मान।

921. **विश्वशान्तिः** – विश्व की शान्ति स्वरूपा, तात्पर्य हुआ विश्व को शान्ति प्रदान करने वाली। लक्षणा शक्ति से यह अर्थ निकला। देवता देने का काम करते हैं, यदि वे वह चीज न दे जो उनके पास है तो वे देवता नहीं हैं। अन्यथा भी विश्वशान्तिः यस्याः सकाशात् इति विश्वशान्तिः, ऐसी व्युत्पत्ति कर सकते हैं। तब इसका अर्थ होगा – जिसकी समीपता से विश्वशान्ति होती है अर्थात विश्वशान्ति देने वाली।

922. **विशालाक्षी** – विशाल नेत्रों वाली अर्थात अतिसुन्दरी। विशाल नेत्र सुन्दरता के परिचायक हैं।

923. **मीनाक्षी** – मछली के समान अर्थात सुन्दर नेत्रों वाली। कम चौड़ी किन्तु लम्बी आँखों वाली।

924. **मीनवर्णदा** – पिंगल वर्ण देने वाली अर्थात पिंगल वर्ण का बना देने वाली। धूम्र वर्ण देने वाली। स्निग्ध वर्ण देने वाली। मीन का अर्थ पिंगल, धूमावती, स्निग्ध भी है। धूम्र वर्ण को खण्डित करने वाली, यहाँ दा शब्दाक्षर दो अवखण्डने धातु का है। शुभ वर्णों को देने वाली। मीन शुभ प्रतीक माना जाता है। सुन्दर वर्ण अर्थात रंग रूप देने वाली।

925. **विश्वाक्षी** – विश्व की चक्षु स्वरूपा/विश्व को देखती हैं। साक्षी की तरह विश्व की प्रत्येक गतिविधि को देखने वाली। विश्व में चेतना या शक्ति के रूप में व्याप्त। अक्षु व्याप्तौ धातु से अक्षी का अर्थ व्यापक होता है।

926. **दुर्धरा** – दैत्यों के संहार के समय या युद्ध लड़ते समय दुर्धर स्वरूप धारण करने वाली। दुर्धर का अर्थ है जिसे दबाया न जा सके।

927. **धूमा** – धूम से उपलक्षित अग्नि की तरह भक्तों के पापों और विघ्नों को समाप्त कर देने वाली। धूम्र स्वरूपा अर्थात धूमावती देवी से अभेद है जिनका।

928. **इन्द्राक्षी** – देखने मात्र से अपने भक्तों को ऐश्वर्य देने वाली। इन्द्र ऐश्वर्य का प्रतीक है। ऐश्वर्य का अर्थ होता है शक्ति + सम्पन्नता अर्थात अष्ट सिद्धि रूप शक्ति + अष्ट लक्ष्मी रूप सम्पन्नता। अक्षि अर्थात आँख, जो देखने का कार्य करती है। इन्द्र के समान हजार नेत्र वाली। कहीं कहीं पर सौ नेत्रों वाली भी लिखा पाया गया है। अतिशय सुन्दर नेत्रों वाली। इन्द्र की तरह आँखों वाली अर्थात इन्द्र की तरह सौ आँखों वाली। अहल्या के प्रकरण में गौतम ऋषि ने इन्द्र को श्राप दे दिया था कि इसके शरीर में सौ योनि के चिन्ह हो जाए। तत्पश्चात इन्द्र ने पराशक्ति की उपासना की। महाकाली, महालक्ष्मी एवं महासरस्वती तीनों स्वरूप मिलकर के एक नये स्वरूप में परिवर्तित हो गये, जिसने इन्द्र की तपस्या से प्रसन्न होकर इन्द्र के शरीर में मौजूद सौ यानियों को सौ आँखों में परिवर्तित कर दिया, साथ में इन्द्र के शरीर में मौजूद सौ आँखों को अपने में भी ले लिया। इस तरह से उनकी भी सौ आँखें हो गयी इन्द्र की तरह सौ आँखों वाली होने के कारण इन्हें इन्द्राक्षी कहते हैं। इन्द्र के समक्ष पराशक्ति का जो रूप प्रकट हुआ था वह महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती द्वारा आपस में मिलकर नया रूप धारण करने वाला था। इन्द्रम् अक्ष्णोति व्याप्नोति इति इन्द्राक्षी अर्थात जो इन्द्र में व्याप्त है (शक्ति रूप में), वह इन्द्राक्षी है।

929. **विष्णुसेविता** – भगवान विष्णु के द्वारा जिनकी सेवा की जाती है। सेवा का अर्थ है पूजा करना या प्राप्त आदेश का पालन करने में जुट जाना।

930. **विरञ्चिसेविता** – भगवान ब्रह्मा के द्वारा जिनकी सेवा की जाती है।

931. **विश्वा** – विश्वस्वरूपिणी अर्थात विश्व जिनका स्वरूप है। विश्व का एक अर्थ सभी भी होता है। सभी पदार्थों (जड़ और चेतन) के स्वरूप वाली। विश्व का अर्थ भगवान विष्णु भी है। भगवान विष्णु के स्वरूप वाली या भगवान विष्णु की शक्ति स्वरूपा। गुणों से अर्थात् सद्गुणों से पूर्ण या भरी हुई। विश्व, सब, पूर्ण ये शब्द पर्यायवाची है। विश्वं सर्वं पूर्णमित्येकार्थानि पदानि। विश्वं गुणैः पूर्णा। शास्त्र में लिखा है 'विश्वनामा स भगवान् यतः पूर्णगुणः प्रभुः' इति हि स्मरन्ति। वायु की नियामिका अर्थात् उसे नियन्त्रण में रखने वाली। विश्व का एक अर्थ वायु भी है। विश्व इति वायुः, नियम्यतया, सः अस्या अस्ति इति विश्वा। जीवों का नियन्त्रण करने वाली। विश्व का अर्थ जीव भी होता है। स्थावर जगत और जंगम जगत भी विश्व कहलाता है। यह विश्व जिनका है अर्थात् इस विश्व का नियन्त्रण करने वाली। विश्वमिति चराचरात्मकं जगत्। तदापि अनया नियम्यमिति विश्वा। सभी का नियन्त्रण करने वाली। विश्वमिति सर्वम्। सर्वम् अपि अनया नियम्यमिति विश्वा। आपने प्रविष्ट शब्द सुना होगा, उससे विष् शब्द ले लिया, व का अर्थ ज्ञान होता है। विष्+व, विश्व हो गया। सभी जगह व्याप्त ज्ञान स्वरूपा। सर्वत्र विष्टं व ज्ञानरूपं चेति विश्वा। सभी में विशेष रूप से गति करने वाली अर्थात् स्पन्दन करने वाली। विशेषेण श्वयतीति सर्वगता विश्वा। कण कण में स्पन्दन हो रहा है और यह स्पन्दन देवी अर्थात शक्ति अर्थात् ऊर्जा के द्वारा ही किया जाता है। श्वयति का अर्थ है गच्छति अर्थात् गमन करती है या क्रिया करती है। भक्ति के कारण विशेष भक्तों के उद्धार (कष्टों से बाहर निकलना) के लिए उनके पास दौड़ी चली आती है। भक्त्या विशिष्टानुद्धर्तुं श्वयति धावतीति विश्वा। अवतारों में विविध रूपों को प्राप्त करने वाली। नानावतारेषु विविधानि रूपाणि श्वयति गच्छतीति विश्वा। गति का अर्थ गमन, प्राप्त करना एवं जानना होता है। ज्ञानी लोक जिनके कारण ज्ञान प्राप्त

कर पाते है या जान पाते है। वयः ज्ञानिनः श्वयन्ति अवगच्छति अनया इति विश्वा। वि का अर्थ है ज्ञानी जिसके रूप वि, वी, वयः इस प्रकार चलेगें। वयः ज्ञानिनः श्वयन्ति अवगच्छन्ति अनया इति विश्वा। जिनके द्वारा लोग अनेक प्रकार की वृद्धि को प्राप्त करते है। तया अवगमेन विविधं श्वयन्ति वर्धन्ते अनया विश्वा। जिनके द्वारा जड़ से विशिष्ट जो चेतन पदार्थ है, सक्रिय अर्थात् गतिशील होते हैं। जडेम्यो विशिष्टं चेतनजातं श्वयति चलति अनया इति विश्वा। जड़ से विशिष्ट (हटकर या अलग) चेतन पदार्थ ही होगा। विशिष्ट का वि ले लिया है एवं श्वयति का श्व शब्द ले लिया है जिससे पुल्लिंग में विश्व एवं स्त्रीलिंग में विश्वा बना।

932. **ईशाना** – शिव स्वरूपा। विश्व पर शासन करने वाली, नियन्त्रण करने वाली। विश्व में होने वाली घटनाऐं देवी की चाहत एवं उनके बनाये गये नियमों के अनुसार होंगी। ईश का अर्थ शासन करने वाला एवं ईशान का अर्थ व्यापक रूप से शासन करने वाला होता है। ब्रह्मवैवर्त पुराण में इस शब्द का अर्थ दिया गया है अपने उपासकों को सम्पूर्ण सिद्धियों को देने वाली। ईशाना शब्द सम्पूर्ण सिद्धियों का वाचक है एवं आ शब्द दाता का वाचक है। ईशान + आ।

933. **ईशवन्दिता** – शिव जी के द्वारा वन्दित। पूजा के आरम्भ में इष्ट देवता के गुणों का बखान करना, नमस्कार करना वन्दना कहलाती है।

934. **महाशोभा** – अतिशय विशिष्ट शोभा स्वरूपा। सर्वाधिक सुन्दरता वाली। शोभा का अर्थ सुन्दरता, कान्ति (चमक या दीप्ति), उत्तम गुण। महा का अर्थ अतिशय, सर्वाधिक है।

935. **महालोभा** – सर्वाधिक लोभनीय अर्थात लोगों द्वारा प्राप्त की जाने की इच्छा वाली। धन–सम्पत्ति, शक्ति, ज्ञान ये क्रमशः लक्ष्मीजी, कालीजी और सरस्वतीजी के रूप हैं, जिन्हें व्यक्ति हर हालत में प्राप्त करना चाहता है। इतनी सुन्दर है कि वह लोभनीय है अर्थात दूसरे उस पर आकर्षित होते हैं। देवी के पास सब कुछ है अतः वस्तु के सन्दर्भ में लोभी नहीं कही जा सकती हैं। शिव का लोभ करने वाली अर्थात शिव की प्राप्ति की इच्छा करने वाली। पापों के विषय मे अतिशय लोभ करने वाली अर्थात जो निष्पाप हैं। चूँकि पाप नहीं है इसलिए पाप का लोभ करती है।

936. **महामोहा** – सारे संसार को सांसारिक पदार्थों से आसक्ति कराने वाली या सांसारिक पदार्थों में राग उत्पन्न करने वाली। सारे संसार में ममत्व की भावना पैदा करने वाली। मोह का अर्थ है राग, ममत्व, सांसारिक पदार्थों में आसक्ति। महा शब्द से सारा संसार ले लिया गया है। महामोह स्वरूपा। जिसे कोई मोहित न कर सके पर जो सारे संसार को मोह में डाल दे। महामोह + आ, राग का नाश करने वाली। इन्द्रियों की विषयों के प्रति उत्कट कामना का नाश करने वाली। महामोह का अर्थ है राग, इन्द्रियों की विषयों के प्रति उत्कट कामना। सांख्य दर्शन में दस प्रकार के महामोह बताए गये हैं जो इन्द्रियों की अपने अपने विषयों के प्रति आसक्ति है तो पाँच प्रकार की हुई, लौकिक और पारलौकिक भेद से दस प्रकार की विषयों के प्रति आसक्ति महामोह है। वहाँ माता, पिता, पत्नी, पुत्र, पुत्री, भाई, बहन, गुरु, मित्र, शत्रु इनके प्रति होने वाला अति आकर्षण महामोह है। शत्रु को भी व्यक्ति बार बार सोचता है। महामोह + आ, आ का अर्थ नाश करना, देना दोनों होता है। राग को देने वाली, यह अर्थ भी हो सकता है।

937. **महेश्वरी** – देवियों में श्रेष्ठ। जब किसी शब्द के आगे महा लगा होता है तो उसका अर्थ होता है अन्य सभी से श्रेष्ठ। पार्वती स्वरूपा। महेश्वर भगवान शिव की पत्नी या शक्ति। संहारिका शक्ति। पूजनीया देवी। मह् पूजायाम् से महा का अर्थ है पूजनीया।

938. **महाभीमा** – अतिशय भयंकर रूप वाली। सर्वाधिक भयंकर रूप वाली। भीम का अर्थ शिव अतः भीमा का अर्थ हुआ शिवा। मह् पूजायाम् धातु से महा का अर्थ पूजनीय हुआ। अतः महाभीमा का अर्थ है सर्वाधिक पूजनीय।

939. **महाक्रोधा** – अतिशय क्रोध करने वाली (असुरों दैत्यों पर)। सर्वाधिक क्रोध वाली। महा का अर्थ अतिशय, सर्वाधिक होता है।

940. **मन्मथा** – काम देव स्वरूपा। मन को मथने वाली अर्थात मन को विकार युक्त करने वाली। जो नहीं करना चाहिए उसके करने का भाव पैदा करना विकार युक्त करना है। मन को चंचल कर देने वाली। मन स्थिर नहीं रहता। मन को मथना अर्थात हिलाना अर्थात भड़काना या उत्तेजित करने वाला, यह मन्मथ (कामदेव) का अर्थ होता है। मन का प्रेम/काम के प्रति मथना।

941. **मदनेश्वरी** – कामदेव की ईश्वरी अर्थात उनकी आराध्या।

942. **महानला** – प्रचण्ड प्रलयाग्निस्वरूपा। ब्रह्माण्ड के लिए अग्निस्वरूपा अर्थात प्रलयकाल में ब्रह्माण्ड को भस्म कर देने वाली। महा का एक अर्थ ब्रह्माण्ड है।

943. **महाक्रोधा** – पूजनीय क्रोध वाली अर्थात ऐसे क्रोध वाली जिसका आदर किया जाता है। देवी अपने क्रोध से दुष्टों का संहार करती हैं अर्थात मानवता का भला करती हैं जिससे उनका क्रोध पूजनीय या आदर के योग्य हो जाता है। अतिशय क्रोध करने वाली।

944. **विश्वसंहारताण्डवा** – विश्व के संहार के समय ताण्डव नृत्य करने वाली। शिव में रहने वाली शक्ति ही क्रिया करती है और शक्ति का अर्थ है देवी। शिव ने नृत्य किया अर्थात शिव में स्थित शक्ति (देवी) ने नृत्य किया अर्थात देवी ने नृत्य किया।

945. **सर्वसंहारवर्णेशी** – सभी वर्णों में अन्तिम वर्ण अर्थात क्ष वर्ण की ईश्वरी अर्थात उसे पैदा करने वाली। मातृका न्यास में एक संहार न्यास होता है जिसमें सभी वर्णों में अनुस्वार लगाया जाता है जैसे अं, आं, इं आदि संहार मातृका न्यास के सभी वर्णों की ईश्वरी। ईश्वरी अर्थात शक्ति, इन वर्णों में रहने वाली शक्ति। यहाँ सर्व का सम्बन्ध वर्ण से करेंगे। सभी का संहार करने वाले तामसी गुण का रंग अर्थात काले रंग से युक्त ईश्वरी। षोडशी देवी का काली देवी या अन्य देवियों से अभेद होता है जिससे अन्य देवियों के नाम भी इन्हीं देवी का नाम होता है।

946. **सर्वपालनतत्परा** – सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के पालन करने में तत्पर रहने वाली। पालन में भरण – पोषण और रक्षण कर्म आते हैं।

947. **सर्वादिः सृष्टिकर्त्री** – सर्वप्रथम होने वाली और सृष्टि करने वाली।

948. **शिवाद्या** – आदि शिवास्वरूपा। शिव से पहले की जो हैं अर्थात शिव से पहले जिनका अस्तित्व है।

949. **शम्भुस्वामिनी** – शम्भु अर्थात शिव की स्वामिनी। शिव पर अपना अधिकार रखने वाली। शिव उनके हर आदेश का पालन करते हैं।

950. **महानन्देश्वरी** – महान आनन्द को उत्पन्न करने वाली या देने वाली। ईश्वरी अर्थात उत्पन्न करने वाली या देने वाली। महा आनन्द अर्थात सर्वाधिक आनन्द जो मोक्ष प्राप्त होने पर या ईश्वर की प्राप्ति होने पर ही होता है। अतिशय आनन्द को प्रदान करने में सर्वाधिक सक्षम।

951. **मृत्यु** – मृत्युस्वरूपा। शरीर से जीवात्मा निकलने की क्रिया स्वरूपा। भगवान यमराज स्वरूपा या यमराज से अभेद है जिनका। भगवान विष्णुस्वरूपा, भगवान ब्रह्मास्वरूपा। कामदेव स्वरूपा। माया स्वरूपा। कलि स्वरूपा।

952. **महास्पन्देश्वरी** – सर्वाधिक स्पन्दन करने वाली अर्थात प्रत्येक क्षण स्पन्दन करने वाली। महास्पन्दस्वरूपा देवी। ब्रह्माण्ड के कण – कण में स्पन्दन पैदा करने वाली। महा अर्थात ब्रह्माण्ड, ईश्वरी अर्थात उत्पन्न करने वाली।

953. **सुधा** – जिनका सुख पूर्वक पान किया जाता है अर्थात जिनकी कथामृत का सुख पूर्वक पान किया जाता है। धेट् पाने धातु होती है। अमृत स्वरूपा। उत्तम भरण – पोषण करने वाली शक्ति सुधा है। सु अर्थात सुष्ठु अर्थात उत्तम। एकाक्षरीकोश में धा का अर्थ बुद्धि दिया गया है। इस प्रकार सुधा का अर्थ उत्तम बुद्धि या श्रेष्ठ बुद्धि स्वरूपा हुआ।

954. **पर्णा** – जिसके द्वारा श्रेष्ठ आनन्द प्राप्त होता है। परः णः (आनन्दः) यया सा पर्णा इति उच्यते। पूरणात् पूर्णा अर्थात सुख या आवश्यक चीजों को भरने वाली अर्थात भक्तों को इनसे पूर्ण करने वाली। प अक्षर से बोधित देवताओं द्वारा जिनकी स्तुति की जाती है। पैः रण्यते स्तूयते या सा पर्णा इति उच्यते। प अक्षर से बोधित देवता हैं शिव, अग्नि, पवन, कुबेर, पर्वत, जल आदि। पत ऐश्वर्ये धातु में न प्रत्यय लगाने से पर्ण शब्द बनता है जिसका अर्थ हुआ ऐश्वर्यशाली। पत्लृ गतौ धातु में न प्रत्यय लगाने से बने पर्ण शब्द का अर्थ है गमन करने वाली अर्थात भक्तों की ओर जाने वाली। अन्तिम दो विग्रह निरूक्त से लिये गये हैं। पर्ण का अर्थ पत्ता है क्योंकि वह गिरता है। पत्ते की तरह भक्तों की पुकार पर अपने उच्च लोक से नीचे के लोक में आ जाने वाली। उच्च लोक से निम्न लोक में आना ही गिरना है। श्रेष्ठ पत्र या पत्ता स्वरूपा। पत्ता स्वरूपा अर्थात पत्ते की तरह हरे रंग वाली जैसे हरित वर्ण वाली तारा होती हैं। पत्ता अन्तिम छोर होता है वृक्ष का अर्थात देवी परा हैं अर्थात जिससे आगे कुछ नहीं है। पिपर्ति पालयति जो पालन करती है अर्थात भरती है या पूर्ण करती है। पलाश वृक्ष की तरह रोगोपहारी अर्थात कष्टों का निवारण करने वाली। पर्ण का एक अर्थ पलाश भी होता है।

955. **अपर्णा** – तपस्या के दौरान पत्ते तक को भी नहीं खाने वाली। जिनमें कोई ऋण नहीं बचा है। अपगता ऋणा यस्या इति अपर्णा।

956. **परावर्णा** – श्रेष्ठ वर्ण स्वरूपा। सूक्ष्म ऊँ स्वरूपा। स्थूल ऊँ का भी कारण सूक्ष्म ऊँ है और ऊँ को सर्वश्रेष्ठ वर्ण कहते हैं। परावाक् स्वरूपा, परावाक् में गुप्त रूप से स्थित। अतिशय उत्कृष्ट वर्ण वाली।

957. **अपर्णेशी** – अपर्णा की भी ईश्वरी अर्थात पार्वती जी जिनकी उपासना करती थीं। पार्वती जी को प्रेरित करने वाली। पार्वती जी को तपस्या के लिए प्रेरित करने वाली। ईष्टे प्रेरयति से ईश शब्द बनाने पर प्रेरणा देने वाली अर्थ निकलेगबा।

958. **पर्णमानसा** – हरे भरे पत्ते अर्थात प्रफुल्लित मन वाली। सुन्दर सात्विक पर्ण या पत्ते जिन्हें हैं प्रिय।

959. **वराही** – भगवान वराह की शक्ति स्वरूपा। भगवान वराह द्वारा पृथ्वी को समुद्र से ऊपर उठाने की तरह कुण्डलिनी शक्ति को मूलाधारचक्र से ऊपर उठाकर सहस्रारचक्र में लाने वाली। भगवान वराह की शक्ति से युक्त अर्थात जो शक्ति भगवान वराह में है वह इनके अन्दर भी है। वराह की तरह अपने भक्तों के अहंकार को खोद डालने वाली अर्थात बाहर कर देने वाली। वराह या सुअर जमीन को खोदता है। वर का का अर्थ है श्रेष्ठ, श्रेष्ठ भक्तों का आहरण करने वाली अर्थात अपने लोक में बुला लेने वाली। नकारात्मक वृत्तियों को नष्ट करने वाली। हन् धातु में ड प्रत्यय लगाने से ह का अर्थ नष्ट करने वाला होगा। ओहाक् त्यागे धातु में ड प्रत्यय लगाने से ह का अर्थ दूर करने वाला होगा।

960. **तुण्डदा** – राक्षसों के मुख को तोड़ने वाली। तुण्ड अर्थात मुख और दो अवखण्डने धातु से दा शब्दाक्षर आया। भक्तों के मुख को शुद्ध करने वाली यहाँ दा शब्दाक्षर दैप् शोधने धातु से आया। तुण्ड या थूथन के द्वारा राक्षसों को विदीर्ण कर देने वाली। वराह अवतार में थूथन का प्रयोग होता है। शब्द के अन्त में स्थित दा दो अवखण्डने धातु का है, न कि दा ददाति का।

961. **तुण्डा** – गलत रास्ते पर चलने वालों को दण्ड देने वाली। तुण्डयति इति तुण्डा।

962. **गणेशी** – देव–गणों की ईश्वरी अर्थात देवगणों पर शासन करने वाली, उन्हें काम में लगाने वाली, नियन्त्रित करने वाली। देवगणों को या शिव के सेवकों को उनके कर्तव्य के प्रति प्रेरित करने वाली अर्थात उनके कर्तव्य में लगाने वाली।

963. **गणनायिका** – देवगणों की नायिका अर्थात उनका मार्गदर्शन करने वाली। देवगणों को विजय पथ की ओर ले जाने वाली।

964. **वटुका** – प्रलय काल में संसार को आवेष्टित (घेरना) करने वाली। वट् वेष्टने धातु होती है। ब्रह्मचारियों को उपदेश देने वाली। वटून् कायति उपदिशति इति वटुका। बटुक अर्थात बाल स्वरूपा। बाला त्रिपुर सुन्दरी बाल स्वरूपा हैं। बटुक भैरव की शक्ति स्वरूपा। बटुक भैरव का रूप धारण करने वाली।

965. **वटुकेशी** – बटुक भैरव को अनुशासित करने वाली अर्थात कर्तव्य करने के लिए आदेश देने वाली। बटुक भैरव को उनके कर्तव्य के प्रति प्रेरित करने वाली। बटुक भैरव की ईश्वरी अर्थात उनकी आराध्या।

966. **क्रौञ्चदारणजन्मदा** – क्रौंच पर्वत का दारण करने वाले अर्थात भगवान कार्तिकेय को जन्म देने वाली।

967. **क–ए–इ–ल–महामाया** : –क–ए–इ–ल ह्रीं बीज स्वरूपा या इन नामों वाली। महामाया का अर्थ है ह्रीं बीज। इस मन्त्र का अर्थ है – हे ईश्वर! मुझे ऐसी वाणी शक्ति प्रदान कीजिए, जिससे मैं विश्व की उत्पत्ति कारक माया के दिव्य गुण गा सकूँ। एक अन्य अर्थ है– प्रकाशिका वाणी सर्वत्र व्याप्त है। क का अर्थ है सूर्य अर्थात प्रकाशक। सरस्वती के बीज में ए आता है। तात्पर्य है ऐसी प्रकाशित वाणी दीजिएगा। ई कीर्ति का बोधक है। महामाया अर्थात ह्रीं जिसका अर्थ है – माया (ई) की अमोघ शक्ति (र) जो विश्वव्यापी (ह) है, वह दुख दूर करे (अनुस्वार)। विशेषण के रूप में ह्रीं का अर्थ होगा– दुख दूर करने वाली, माया की अमोघ शक्ति जो विश्वव्यापी है।

968. **ह–स–क–ह–ल–माया** : –ह–स–क–ह– ल ह्रीं बीज स्वरूपा। माया बीज है ह्रीं। इस मन्त्र का अर्थ है – हे शिव–शक्ति रूप ईश्वर! मेरी सम्पूर्ण कामनाएं पूर्ण रूप से और विश्व की सम्पूर्ण क्रिया तथा माया किस प्रकार सिद्ध होती हैं, वह मार्ग आप दिखाइये। हे शक्ति युक्त ईश्वर! आपकी माया हमें दिव्य सृष्टि रूप से दर्शन दे अर्थात् आपकी शक्तिमय माया का हमें दर्शन हो। ह का एक अर्थ है आकाश अर्थात अनन्त। क का अर्थ है ब्रह्मा, सिर, सूर्य। ह स अर्थात हास, प्रसन्नता। प्रसन्नतायुक्त सिर अर्थात आनन्दमय। ल का एक अर्थ है ज्ञान, नेत्र, चैतन्य। दूसरे कूट का अर्थ कर सकते है– अनन्त आनन्द, अनन्त ज्ञान से युक्त ब्रह्म अर्थात शिव शिवा का समावेशी रूप। इस कूट का अर्थ शौर्य–धन–नारी एवं कीर्ति का आधिक्य भी होता है। इसका नाम ही कामराज कूट है अर्थात कामनाओं को पूरा करने वाला। क कामिनी आदि काम्य विषयों का सूचक है।

969. **दिव्यनामा** – अनेक दिव्य नामों वाली। दिव्य नाम का तात्पर्य है लोकातीत, स्वर्ग में होने वाला, मनोहर, सुन्दर, बहुत बढ़िया। सुनने में या देखने में मन प्रसन्न हो जाए।

970. **सदाकामा** – अपने भक्तों के सम्बन्ध में सदैव कामनाओं को देने वाली अर्थात पूर्ण करने वाली। काम + आ = कामा, आ का अर्थ है देना।

971. **श्यामा** – श्याम वर्ण या स्वरूप वाली अर्थात काली से अभेद है जिनका। राधा स्वरूपा। भगवान श्याम (कृष्ण) के साथ हमेशा रहने से राधा को श्यामा कहा जाता है। 16 वर्ष की तरूणी/युवती स्वरूपा। 16 वर्ष की तरूणी को श्यामा कहते हैं। तरूणावस्था ही युवावस्था है। श्यामा का अर्थ अमृता या गिलोय भी कहते हैं जो कई रोग दूर करने वाली औषधि है। अतः श्यामा का अर्थ हुआ गिलोय की तरह रोगों अर्थात कष्टों को दूर करने वाली है। श्यामा तुलसी के स्वरूप वाली। उस अवस्था वाली प्रकृति के स्वरूप वाली जिसमें सतोगुण, रजोगुण

एवं तमोगुण सम प्रमाण में मिलते है। इस अवस्था में प्रकृति का रंग श्याम अर्थात् काला होता है। सतोगुण का श्वेत, रजोगुण का रंग लाल एवं तमोगुण का रंग काला होता है। अतिसुन्दरी, तरूणावस्था से युक्त। श्यामा शब्द तारूण्य का द्योतक है और देवी के नवयौवन एवं सौन्दर्य का सूचक है।

972. **रामा** – भगवान राम की शक्ति स्वरूपा। स्त्री स्वरूपा। योगी लोग जिनमें चित्त लगाते हैं अर्थात ध्यान लगाते हैं। रमन्ते योगिन्यः यस्याम्, सा रामा।

973. **रमा** – लक्ष्मी स्वरूपा। भगवान विष्णु के साथ क्रीड़ा करने वाली। रमु क्रीड़ायाम् धातु होती है। रमति का अर्थ क्रीड़ा करना अतः रमा का अर्थ है कीड़ा करने वाली। जगत की उत्पत्ति, पालन और संहार देवी के लिए क्रीड़ा है।

974. **रसा** – स्वाद में आने वाले षड्रस स्वरूपा। आनन्द स्वरूपा। पृथिवी स्वरूपा। रस का अर्थ आनन्द, पृथ्वी है।

975. **स–क–ल–ह्रीं–तत्स्वरूपा** : –स–क–ल–ह्रीं इन बीज मन्त्रों के स्वरूप वाली या इन बीज मन्त्रों के समुदाय के स्वरूप वाली। तृतीय कूट का अर्थ है– जगत ब्रह्म है। जीवात्मा ही परमात्मा (ब्रह्म) है। ह्रीं माया बीज है जिसका अर्थ है परब्रह्म (शिव और शक्ति का सामरस)। ब्रह्म स्वरूपिणी देवी अनन्त आनन्दमय एवं ज्ञानमय है, तथा सारा जगत ब्रह्ममय है। वरिवस्या रहस्य ग्रन्थ में बहुत से अर्थ दिये हैं, वहाँ देखा जा सकता है।

976. **श्रीं–ह्रीं–नामादि–रूपिणी** : –श्रीं–ह्रीं बीज मन्त्र रूपी नाम आदि के स्वरूप वाली। ये बीज मन्त्र ही जिनके नाम है, आदि लगाने का तात्पर्य है इन जैसे और बीज मन्त्र भी इनके नाम हैं। श्रीं–ह्रीं जिनके नाम के आदि रूप हैं अर्थात प्रथम स्वरूप हैं। श्रीं–ह्रीं इन नामों के रूप वाली।

977. **कालज्ञा** – काल को जानने वाली।

978. **कालहामूर्ति** – काल को भी मारने वाले शरीर/आकृति वाली देवी। भक्तों के प्रतिकूल या अशुभ समय को समाप्त करने वाले शरीर वाली देवी। ऐसी मूर्ति जो समयजन्य विपदाओं जैसे ईति (अनावृष्टि, महामारी आदि षड् ईतियाँ) आदि विपदाओं को विनष्ट करती हैं। मूर्ति का अर्थ है स्वरूप, आकृति, शरीर।

979. **सर्वसौभाग्यदामुदा** – प्रसन्न होने पर अपने भक्तों को सभी सौभाग्य देने वाली। इहलोक एवं परलोक की वस्तुएं जिन्हें मनुष्य प्राप्त करना चाहता है, जिससे खुशी मिले पर पतन न हो, सौभाग्य है। सभी सौभाग्य को प्रसन्नता पूर्वक देने वाली। चार पुरुषार्थ को भी सर्वसौभाग्य कहते हैं। सभी को आनन्दपूर्वक सौभाग्य प्रदान करने वाली।

980. **उर्वा** – बहुत विशाल। जो आकार, गुण, शक्ति, ऐश्वर्य आदि में सबसे विशाल है। अतिशय विस्तृत स्वरूप वाली। उर्वा का अर्थ है विशाल, बहुत बड़ा। भूमि वाली अर्थात जिसके पास बहुत भूमि हो। सारा ब्रह्माण्ड रूपी भूमि वाली। उर्वी (पृथ्वी) अस्या अस्ति इति उर्वः, स्त्रीलिंग में उर्वा। उर्वी+अच् – उर्वः।

981. **उर्वेश्वरी** – राजाओं की ईश्वरी या जिनके पास बहुत जमीन है (बड़े किसान) की आराध्या। राजाओं के पास बहुत जमीन होती थी। जिनमें आधिक्य हो उनकी ईश्वरी अर्थात स्वामिनी। उर्व का अर्थ है जिनमें गुण, शक्ति, आकार, ऐश्वर्य आदि आधिक्य में हों। एक कक्षा में दो विद्यार्थी हैं और उनमें से एक सबसे होशियार है तो कहेगे कि उसे सबसे अधिक बनाने का काम उर्वेश्वरी ने किया है। सम्पूर्ण विश्व की ईश्वरी।

982. **खर्वा** – खर्व अर्थात छोटा स्वरूप वाली। तारादेवी नाटे कद की हैं। खर्वयति नाशयति इति खर्वा अर्थात जो अहंकार या अन्य आसुरी गुणों का नाश कर देती है।

983. **खर्वपर्वा** – कम कालमान वाली तिथि स्वरूपा जैसे चतुर्दशी युक्त अमावस्यास्वरूपा, यहाँ अमावस्या की

अवधि कुछ कम हो गयी। अणु से भी अणु और महान से भी महान। खर्व का अर्थ है बौना अर्थात छोटा और पर्व का अर्थ है पूरा अर्थात बड़ा। विशेष पर्वों से युक्त रहने वाली। संसार की सभी पदार्थों/प्राणियों का सूक्ष्म सन्धि स्थान है। प्रत्येक अस्तित्व उनसे जुड़ा है। खर्व अर्थात सूक्ष्म और पर्व अर्थात सन्धि स्थल।

984. **खगेश्वरी** – पक्षियों की स्वामिनी। आकाश में विचरण करने वाले ग्रह, नक्षत्रों पर शासन करने वाली, संचालित करने वाली।

985. **गरुडा** – गरुड़ स्वरूपा। भगवान गरुड़ की शक्ति स्वरूपा। डः गीर्यते अनया। जिसके द्वारा जड़गुण अर्थात् जड़ता या अविद्या या तमोगुण या थकावट निगल ली जाती है अर्थात् जड़ता को समाप्त करने वाली। एकाक्षरी कोष में ड का अर्थ जड़, भय दिया गया है। भय को निगलने वाली अर्थात् उसका नाश करने वाली। गरुड पक्षीराज है तथा यह वेद एवं धर्म का प्रतीक है। भगवान विष्णु को गरुड पर सवार कहा गया है जिसका अर्थ है कि वे वहाँ रहते है जहाँ ज्ञान होता है या धर्म का पालन होता है। तात्पर्य है ज्ञानियों एवं धार्मिक लोगों के हृदय में रहने वाली। गरुड गुरू–श्रेष्ठ माना गया है अर्थात् उपदेश देने वालों में श्रेष्ठ अर्थात सबसे उच्च का ज्ञान अर्थात ब्रह्मज्ञान या आत्मज्ञान देने वाला। गरुड ने सीता जी को बचाने का प्रयास किया था। अतः गरुड को शुभ विचार या शुभ संकल्प का भी प्रतीक माना गया है। गरुड + आ, आ का अर्थ है देना। वेद अर्थात् सर्वश्रेष्ठ ज्ञान देने वाली। शुभ संकल्प देने वाली। उच्च विचार स्वरूपा या उच्च विचार देने वाली। गरूड़ उच्च विचार का प्रतीक है।

986. **गारूडीमाता** – विष हरने वाले जानकारों की माता (रक्षिका)। जो लोग मन्त्रों का प्रयोग करके विष का प्रभाव खत्म करते हैं वे गारूड़ी कहलाते हैं। गारूडिन् शब्द होता है जो पुल्लिंग एक वचन में गारूड़ी होता है। गरुड़ की माता स्वरूपा।

987. **गरुडेश्वरपूजिता** – गरुड़ेश्वर (भगवान विष्णु) के द्वारा पूजित। भगवान गरुड़ द्वारा पूजित। ईश्वर का अर्थ भगवान भी है।

988. **अन्तरिक्षान्तरा** – अन्तरिक्ष के मध्य में निवास करने वाली।

989. **पदा** – शब्द स्वरूपा या शब्द की शक्ति स्वरूपा। ऊँ स्वरूपा। ईश्वर सम्बन्धी गीत स्वरूपा। वेद पढ़ने का एक ढंग होता है जिसे पद पाठ कहते हैं, तद्स्वरूपा। श्रेष्ठ पदों से युक्त। जिनके पैरों में धन सम्पत्ति का निवास है।

990. **प्रज्ञा** – प्रज्ञा बुद्धि का वह प्रौढ़ स्वरूप या सूक्ष्म स्वरूप है, जो समाधि से प्राप्त होता है, बुद्धि के इस स्वरूप वाली। इससे मनुष्य सूक्ष्म तत्व की पकड़ करने में समर्थ होता है। प्रकृष्ट ज्ञान से युक्त। बुद्धि के इन स्वरूपों वाली। प्रकृष्टम् ज्ञायते अनया अर्थात जिस मानसिक शक्ति से श्रेष्ठ वस्तुओं का ज्ञान होता है वह प्रज्ञा है। प्रज्ञा का अर्थ विदुषी भी है। प्रजानाति इति प्रज्ञा।

991. **प्रज्ञानदापरा** – ब्रह्म का ज्ञान दिलाने वाली ऐसी श्रेष्ठ शक्ति या श्रेष्ठ विद्या स्वरूपा। प्रज्ञान का अर्थ चैतन्य या ब्रह्म होता है। प्रकृष्ट ज्ञान को देने के कारण श्रेष्ठ।

992. **विज्ञाना** – विशेष ज्ञान स्वरूपा। वैदिक ज्ञान स्वरूपा। मीमांसा दर्शन में वेद के ज्ञान को विज्ञान कहा गया है। किसी भी विषय का अनुभवजन्य पूरा और अच्छा ज्ञान विज्ञान है। विशेष रूप से प्राप्त ज्ञान जो क्रमबद्ध तरीके से एकत्रित होता है वह विज्ञान है। बौद्ध धर्म के अनुसार विज्ञान का अर्थ आत्मा या ब्रह्म है। एक मत आत्म ज्ञान को ज्ञान कहता है और अन्य ज्ञान को विज्ञान कहता है। विशेष अर्थात हटकर या अलग। जो ज्ञान आत्म ज्ञान से अलग है वह विशेष ज्ञान हुआ। दूसरा मत अनुभवयुक्त ज्ञान को या आत्म ज्ञान को विज्ञान कहता

है। यहाँ विशेष का अर्थ अनुभव ले लिया। अतः इस नाम का अर्थ हुआ आत्मज्ञान स्वरूपा। विज्ञान + आ, आ का अर्थ है देना। उपासकों को विशेष ज्ञान देने वाली।

993. **विश्वविज्ञाना** – सब कुछ जानने वाली। विश्वम् विजानाति इति विश्वविज्ञाना। विश्व का विज्ञान जिसके पास है अर्थात विश्व को जानने वाली। विश्व की विज्ञान स्वरूपा।

994. **अन्तराक्षा** – अपने भीतर की ओर देखने वाली आँखों वाली। सामान्यतः व्यक्ति की आँखें बाहर की ओर देखती हैं। भक्तों के भीतर तक देखने वाली आँखों वाली। भीतर की ओर इन्द्रियों वाली अर्थात अन्तर्मुखी। अन्तःकरण में स्थित विशेष ज्ञान से युक्त।

995. **विशारदा** – अनेक विद्याओं में पारंगत। किसी विषय का विद्वान या विशेषज्ञ या जिसने अनेक विद्याओं का अर्जन किया है विशारद कहलाता है।

996. **अन्तर्ज्ञानमयी** – अन्तर्ज्ञान से युक्त। अन्तर्ज्ञान (आत्मज्ञान) से युक्त या आत्मज्ञानस्वरूपा। अन्तर्ज्ञान का अर्थ है आत्मज्ञान, अन्तःकरण की चेतना। अन्तर्ज्ञान मन में होने वाला ज्ञान है जो स्वतः स्फुरित ज्ञान है, जिसे intuition कहते हैं। सहजज्ञान, मन में आने वाला सहज स्वाभाविक ज्ञान जिससे कोई बात अनायास समझ में आ जाती है, अन्तर्ज्ञान है, ऐसे ज्ञान के स्वरूप वाली या ऐसे ज्ञान से युक्त।

997. **सौम्या** – सौम्यस्वरूपा। सौम्य का अर्थ है जो शान्त, शीतल, नम्र और सुन्दर हो। सोम (चन्द्रमा) से सौम्य शब्द बना है और चन्द्रमा शान्त, शीतल, सुन्दर होता है। सौम्य अर्थात चन्द्रमा की तरह अतिशान्त।

998. **मोक्षानन्दविवर्द्धिनी** – मोक्ष भी कई प्रकार के होते हैं – सालोक्य, सामीप्य, सार्ष्टि, सायुज्य और कैवल्य। सायुज्य और कैवल्य को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ उच्च स्तर के मोक्ष के आनन्द को देने वाली। मोक्ष जैसे आनन्द को बढ़ाने वाली। मोक्ष के आनन्द को बढ़ाने वाली अर्थात बहुतों को मोक्ष का आनन्द देने वाली।

999. **शिवशक्तिमयी शक्ति** – शिव की शक्ति से युक्त है शक्ति जिनकी। ऐसी शक्ति स्वरूपा जो शिव की पराशक्ति से युक्त है।

1000. **एकानन्दप्रवर्तिनी** – उपासक को ब्रह्म के आनन्द को दिलाने वाली या पहुँचाने वाली। एक का अर्थ है ब्रह्म या परमात्मा। प्रवर्तन का अर्थ होता है आरम्भ करना या लागू करना, तात्पर्य हुआ दिलाना या पहुँचाना। परमानन्द का प्रवर्तन करने वाली।

1001. **श्रीमाता** – श्रेष्ठ माता स्वरूपा। संसार की माता को अपनी सन्तान का दुख दूर करने के लिए प्रयास करना पड़ता है और इस बात की प्रत्याभूति (Guarantee) नहीं कि वह दुख दूर हो जाए किन्तु देवी माँ चाहने मात्र से अपनी सन्तानों का दुख दूर कर देती हैं। श्री का अर्थ है श्रेष्ठ। लक्ष्मी जी की माता यह अर्थ भी कर सकते हैं। सबको आश्रय देने वाली माता। श्री का अर्थ है जो आश्रय दे अर्थात शरणस्थली।

1002. **पराविद्या** – जिस विद्या से अक्षर ब्रह्म का ज्ञान होता है। परम सत्य या स्वयं को जानने की विद्या पराविद्या है। जिस विद्या से आत्मस्वरूप का ज्ञान होता है वह परा विद्या है। स्त्री देवता के मन्त्र को भी विद्या कहते हैं इस प्रकार पराविद्या वह मन्त्र है जिसको जपने से ब्रह्म का साक्षात्कार हो जाता है या आत्मसाक्षात्कार हो जाता है। विद्या वह ज्ञान है जिससे मोक्ष मिले। अध्ययन या शिक्षा से प्राप्त या किसी विषय के व्यवस्थित ज्ञान को भी विद्या कहते हैं। श्री पराविद्या रूप से विभूषित।

1003. **सिद्धाश्री** – सिद्धों की पूर्ण श्री या पूर्ण शोभा सम्पत्ति। आश्री, आ का अर्थ है समन्तात् या पूर्ण। सिद्धों की शोभा या लक्ष्मी। एकाक्षरीकोश में आ का अर्थ भाव (सत्ता, पदार्थ) दिया गया है। प्रत्येक चीज भाव है अतः अलग

से भाव लिखने की जरूरत नहीं है। अतः इस नाम का अर्थ हुआ सिद्धों की शोभा स्वरूपा। सिद्ध+आ+श्री।

1004. **सिद्धसागरा** – नित्य ब्रह्मस्वरूपा। सिद्ध का अर्थ है नित्य, वेदों या उपनिषदों में समुद्र को ब्रह्म का प्रतीक माना गया है। जैसे समुद्र अनन्त जल कणों का समूह है उसी प्रकार ब्रह्म या परमात्मा भी अनन्त जीवात्माओं का समूह है। मंगलों की समुद्र स्वरूपा अर्थात सभी मंगल इनके पास हैं। भक्तों को सभी प्रकार का मंगल देने वाली। सागर+आ, आ का एक अर्थ देना है। (शब्दकल्पद्रुम में दुर्गा नाम की व्युत्पत्ति के समय आ का अर्थ देना, नाश करना दिया गया है)। कातन्त्र व्याकरण के प्रथम श्लोक में ही सिद्ध का अर्थ मंगल, नित्य किया गया है)। सिद्धों की प्राप्ति स्थल या लक्ष्य स्वरूपा। नदियाँ समुद्र में जाती है अर्थात नदियों का लक्ष्य समुद्र है। इस प्रकार समुद्र लक्ष्य का प्रतीक है। सफल लोगों की समूह स्वरूपा अर्थात बहुत से सफल लोगों वाली अर्थात उनके द्वारा उपासनीय। सिद्धों के समूह स्वरूपा। सिद्धों के समूह वाली अर्थात सिद्धों का समूह जिनकी उपासना करता है या कभी कभी इनके साथ चलता है। सिद्धसागरा यस्या सा सिद्धसागरा (सिद्धों के समुद्र अर्थात समूह वाली।)। पाणिनि की तपस्या से प्रसन्न होकर जब भगवान शंकर उनके समक्ष प्रकट हुए तो उनके साथ सिद्धों का समूह भी था। देवी देवताओं की उपासना में आरम्भ में दिव्यौघ, सिद्धौघ, मानवौघ आदि शब्द आते हैं। ओघ का अर्थ समूह होता है। सफलताओं की समुद्र स्वरूपा। सिद्धि का अर्थ सफलता और सिद्ध का अर्थ सफल लोग। अलौकिक शक्तियों की समुद्र अर्थात भण्डार। सिद्ध का एक अर्थ अलौकिक शक्ति भी है। अनगिनत सिद्धों वाली अर्थात अनगिनत सिद्ध जिनकी उपासना करते हैं। सृष्टि अनन्त काल से चल रही है और हर युग में बहुत से सिद्ध रहे हैं, इस प्रकार देवी अनन्त सिद्धों वाली हो जाती हैं। सागर से अनन्त या अनगिनत अर्थ ले लिया गया। सिद्धों की समुद्र स्वरूपा अर्थात जिनमें बहुत सारे सिद्धों का वास है। सिद्ध का एक अर्थ नित्य, पूर्ण भी होता है। नित्य रहने वाले समुद्र के स्वरूप वाली। पूर्ण है दैवी गुणों का भण्डार जिनमें। सागर अर्थात भण्डार।

1005. **सिद्धलक्ष्मी** – पूर्णत्व और धन सम्पत्ति देने वाली। सिद्धत्व और धन सम्पत्ति देने वाली। सिद्ध से यहाँ पूर्णत्व या सिद्धत्व लिया गया है और लक्ष्मी से धन सम्पत्ति अर्थ लिया गया है।

1006. **सिद्धविद्या** – सिद्ध लोग जिनके मन्त्र का जाप करते हैं। स्त्रीदेवता के मन्त्र को विद्या कहते हैं। सिद्धविद्या स्वरूपा। कहने का तात्पर्य है कि इनके मन्त्र को जपने के लिए शत्रु मन्त्र या मित्र मन्त्र, ऋणी चक्र या धनी चक्र, नक्षत्रों आदि का विचार नहीं करना पड़ता है अर्थात इनके मन्त्र को कोई भी जप सकता है। स्त्री देवता के मन्त्र को विद्या कहते है। अविद्या या अज्ञान को नष्ट करने वाले तत्वज्ञान (शुद्ध विद्या या यथार्थ विद्या) को सिद्ध विद्या कहते हैं। ऐसे तत्वज्ञान के स्वरूप वाली। अविद्या का अर्थ है अज्ञान से मिश्रित ज्ञान, जो जैसा है उसे वैसा न समझ पाना या जान पाना। अज्ञान का अर्थ ज्ञान का अभाव नहीं, बल्कि अल्पज्ञान है। जैसे आपको यह मालूम है कि अमुक दवा दूध के साथ लेना है तो सामान्य ज्ञान आपको है। आपको यह नहीं पता कि दवा की कितनी मात्रा को कितने दूध से मिलाना है तो विशेष ज्ञान का अभाव हुआ। इस प्रकार के अल्पज्ञान को अज्ञान कहते हैं।

1007. **सिद्धा** – सिद्ध स्वरूपा। अष्ट सिद्धियों से युक्त। जिनका अस्तित्व अपने से है, किसी दूसरे से न तो उत्पन्न हुआ है और न ही उन पर निर्भर है।

1008. **सिद्धेश्वरी सुधा** – सिद्धों की ऐसी ईश्वरी जो अविनाशी सत्ता है। सिद्धों की भी ईश्वरी तथा अमृत स्वरूपा। सिद्धेश्वरी अर्थात सिद्ध जिनकी उपासना करते हैं। अमृत अर्थात अविनाशी सत्ता। सुधा अर्थात जिसका अच्छी तरह अर्थात सुख पूर्वक (चाव से) पान किया जाता है।

श्री भुवनेश्वरी सहस्रनामावलि



श्री भुवनेश्वरी सहस्रनामावली
(भकारादि भुवनेश्वरीसहस्रनामावली)

1. **भुवनेशी** – चौदह भुवनों पर शासन करने वाली। चौदह भुवनों की शासिका। चौदह भुवनों (लोकों) पर नियन्त्रण करने वाली। चौदह भुवनों को प्रेरित करने वाली अर्थात इन भुवनों मे रहने वाले प्राणियों को काम में लगाने वाली। ईश् धातु का अर्थ शासन करना, प्रेरित करना होता है। सभी उनके आदेश का पालन करते हैं। भुवनों के भीतर प्रविष्ट होकर अपनी शक्ति से भुवनों को चलाने वाली। (भुवनेश्वरी का अर्थ है चौदह भुवनों की स्वामिनी या उनको संचालित करने वाली, सभी भुवनों के ऐश्वर्य की स्वामिनी। ईश और ईश्वर एक ही होता है पर ईश में शासन करने का भाव है जबकि ईश्वर में शासन करने का भाव तो है ही साथ में ऐश्वर्य का भी भाव है। कल्याण के गणेश अंक में एक जगह लिखा है कि ईश का अर्थ है अन्तर्व्याप्त होकर प्रेरित करने वाला या संचालित करने वाला। इस प्रकार भुवनेशी का अर्थ हुआ जो संसार के भीतर व्याप्त होकर संसार को प्रेरित कर रही है, संचालित कर रही है। भुवनेश्वरी संसार के भीतर रहकर भी और अपने दिव्य लोक में रहकर भी अर्थात संसार से पृथक रहकर भी संसार को चला सकती हैं। ईश्वर में प्रेम एवं करुणा का भाव होता है जो ईश में होना अनिवार्य नहीं है। ईश्वर अनिर्वचनीय भी होता है।) (भुवनेशी एवं भुवनेश्वरी के अर्थों में अन्तर– इन दो नामों में अन्तर जानने के लिए ईश और ईश्वर शब्द के अर्थ में अन्तर जानना आवश्यक है। सामान्यतः ईश और ईश्वर का एक ही अर्थ माना जाता है। ईश् धातु में शील (स्वभाव) अर्थ में वरच् प्रत्यय लगाने से ईश्वर शब्द बनता है। ईश का अर्थ हुआ शासन करने वाला, ईश्वर का अर्थ हुआ शासन करने का स्वभाव है जिसका अर्थात शासन तो करता ही है, उसके स्वभाव में भी शासन करने की प्रवृत्ति है। ईश और ईश्वर में यह भी अन्तर कर सकते है कि ईश का अर्थ है शासन करने वाला एवं ईश्वर का अर्थ है शासन करने वालों में श्रेष्ठ। ईश्वर का अर्थ शासन करने वाला एवं गुणों में श्रेष्ठ, यह भी कर सकते है। गीता में सोलहवें अध्याय में जो दिव्य गुण बताये गये है वे ही श्रेष्ठ गुण है। ईश्वर का अर्थ ऐश्वर्य का स्वामी भी होता है। ऐश्वर्य का अर्थ है सम्पन्नता+शक्ति। ऐश्वर्य का अर्थ है जो ईश्वर से सम्बन्धित है अर्थात् दिव्य वस्तुयें एवं दिव्य शक्तियाँ। शासन का अर्थ होता है अपनी इच्छानुसार घटनाओं को घटित कराना, शासन का अर्थ है आदेश देना और उस आदेश का उसके अधीनस्थ उल्लंघन नहीं कर सकते। शासन अनुग्रह (कृपा या पुरस्कार) एवं निग्रह (दण्ड) के आधार पर चलता है। शासन करने के लिए नियमों को बनाना भी आवश्यक है, यही कारण है कि प्रकृति के नियम, कर्म के नियम बनाये गये है। प्रकृति के नियम जैसे जल यही कार्य करेगा अर्थात् ऊपर से नीचे प्रवाहित होगा, शीतलता देगा आदि। कर्म के नियम अर्थात् जो जैसा करेगा तद्नुरूप भविष्य में पायेगा। ईश धातु का अर्थ है शासन करना, प्रेरित करना। प्रेरित करने का अर्थ है काम में लगाना, चेष्टावान बनाना, शक्ति सम्पन्न बनाना। इस प्रकार भुवनेशी का अर्थ हुआ 14 भुवनों पर शासन करने वाली। भुवनेश्वरी का अर्थ हुआ 14 भुवनों पर शासन करने वाली एवं श्रेष्ठ गुणों से युक्त। भुवनेशी का अर्थ हुआ 14 भुवनों को प्रेरित करने वाली अर्थात् संचालित करने वाली या उन्हें क्रियायुक्त बनाने वाली अर्थात उनके प्राणियों को एवं अन्य पदार्थों को क्रियाशील बनान वाली। भुवनेश्वरी का अर्थ हुआ 14 भुवनों में शासन करने वालों में श्रेष्ठ, 14 भुवनों के ऐश्वर्य की स्वामिनी, 14 भुवनों के प्राणियों की आराध्या। ईश्वर श्रेष्ठ गुणों से युक्त होने के कारण आराध्या भी होता है। ईश भी आराध्या होता है। आज के समय में देखे जाये तो राज्यों के मुख्यमंत्री या केन्द्र सरकार के मन्त्री ईश कहे जा सकते है एवं इन सबसे ऊपर अर्थात् प्रधानमन्त्री को ईश्वर कहा जा सकता है। शासन करने वाला दुष्ट व्यक्ति भी ईश कहा जायेगा पर उसे ईश्वर नहीं कहेगें। ईश्वर उसी को कहेगें जो शासन करने के अतिरिक्त श्रेष्ठ गुणों वाला भी है।) (भुवनेश्वरी एवं भुवनेशी –

भुवनेश्वरी का अर्थ है 14 भुवनों में शासन करने के स्वभाववाली, जबकि भुवनेशी का अर्थ है 14 भुवनों में शासन करने वाली।)

2. **भुवाराध्या** – पृथ्वी पर सबकी आराधना के योग्य। भुव का एक अर्थ है पृथ्वी। अग्नि के द्वारा आराधना करने योग्य। भुव का एक अर्थ अग्नि भी है।

3. **भवानी** – भव अर्थात शंकर की पत्नी पार्वती। भगवान शिव को जीवित रखने वाली। भवम् आनयति जीवयति इति भवानी। हलाहल विष पीने के बावजूद भगवान शिव देवी की कृपा से ही जीवित रहे थे। भव का अर्थ संसार, कामदेव भी होता है। अतः इस नाम का अर्थ हुआ कामदेव को जीवित करने वाली, संसार को चेतन बनाने वाली।

4. **भयनाशिनी** – उपासकों के भयों को नष्ट कर देने वाली।

5. **भवरूपा** – संसारस्वरूपा। संसार, कामदेव का निर्माण करने वाली। रूपयति का अर्थ है निर्माण करना, देखना, दिखाना। भगवान शिव पर दृष्टिपात करने वाली। भव का अर्थ है शिव, संसार, कामदेव। रूप्यते इति रूपा से रूपा का अर्थ ज्ञापिका या सूचित करने वाली भी होता है। संसार है ज्ञापक जिसका। शंकराचार्य जी ने ललिता त्रिंशती स्तोत्र के अन्तर्गत ललनारूपा नाम में रूप का अर्थ ज्ञापक, भूति या विभूति भी किया है। संसार है भूति या विभूति जिनकी। विभूति का अर्थ है किसी वर्ग की उत्तम रचना। श्रीमद्भगवत् गीता में विभूति योग नामक अध्याय है।

6. **भवानन्दा** – समस्त संसार को आनन्द देने वाली। आनन्द + आ, आनन्द के बाद जो आ है उसका अर्थ देना भी होता है और नाश करना भी होता है। कहीं पर देना अर्थ और कहीं पर नाश करना अर्थ लगाते हैं। जैसे मंगला का अर्थ है मंगल देने वाली एवं दुर्गा का अर्थ है दुर्ग (विपत्ति) का नाश करने वाली।

7. **भवसागरतारिणी** – संसार सागर से तार देने वाली अर्थात पार करा देने वाली अर्थात जन्म–मरण के चक्र से पार करा देने वाली।

8. **भवोद्भवा** – शिव से प्रकट होने वाली। संसार में आविर्भूत।

9. **भवरता** – सांसारिक कार्यों या भगवान शिव की सेवा में संलग्न रहने वाली। शिव, कामदेव से प्रसन्न। भव अर्थात शिव, कामदेव, संसार। रता अर्थात प्रसन्न। भगवान शिव के प्रति प्रीति है जिनकी अर्थात भगवान शिव जिन्हें अच्छे लगते हैं। रता का शाब्दिक अर्थ है संलग्न होना किन्तु रम् धातु से रत बनाने पर अर्थ होगा प्रसन्न या किसी के प्रति अच्छी अनुभूति करने वाला।

10. **भवभारनिवारिणी** – संसार के भार का निवारण कर देने वाली। कर्मों का भार, कष्टों का भार, उत्तरदायित्व का भार, ये संसार के भार हैं। शक्तिपात में गुरु जब शिष्य के कर्म भस्म करता है तो उस शिष्य को हल्कापन महसूस होता है जिसका तात्पर्य है कि कर्मों के संस्कार में भार होता है।

11. **भव्याना** – सुन्दर चीजो का प्राण या जीवन अर्थात सौन्दर्य स्वरूपा। अन का अर्थ होता है प्राण। भव्य का अर्थ होता सुन्दर जो मन को प्रभावित भी करे। सुन्दर चीजों का प्राण सौन्दर्य होता है। सुन्दर पदार्थों की प्राण स्वरूपा अर्थात उनमें सौन्दर्य का गुण लाने वाली। भव्य का अर्थ है सुन्दर और प्रभावशाली। मंगल सूचक पदार्थों की प्राण स्वरूपा। भव्य नामक वृक्ष (भलता, नीम, करेला) को प्राणित करने वाली अर्थात जीवित रखने वाली। आनयति का अर्थ है जीवयति। अन का अर्थ प्राण देने वाला होता है क्योंकि अन् प्राणने धातु होती है। सौन्दर्य को जीवित रखने वाली अर्थात बनाये रखने वाली। आनयति का अर्थ है जीवयति। सौन्दर्य की प्राण स्वरूपा। जब तक देवी हैं तब तक सौन्दर्य है। अनति का अर्थ है सांस लेना अर्थात अन का अर्थ है प्राण। (यदि भव्यास्या नाम है तो अर्थ होगा सुन्दर मुख वाली।) अन का अर्थ है जीवन, प्राण, चेष्टा। प्राणों से ही शरीर चेष्टा करता है।

12. **भव्यनयना** – सुन्दर नेत्रों वाली। वह सुन्दर जो आकर्षक एवं अद्भुत हो भव्य कहलाता है। भव्य वह है जिसका रूप, आकार बहुत प्रभावशाली हो, जो मन को मोह ले, जिसके प्रति हमारे मन में सम्मान की भावना जागृत हो जाए।

13. **भव्यरूपा** – सुन्दर रूप वाली। रूप वह है जो आँखों से दिखे। आँखों से दिखने वाली ऐसी आकृति स्वरूपा जो सुन्दर हो। भव्य का अर्थ है सुन्दर और प्रभावशाली, प्रसन्न। प्रसन्न रूप वाली अर्थात जिसके चेहरे पर प्रसन्नता है।

14. **भवौषधि** – संसार के समस्त रोगों की औषधि अर्थात संसार के सभी कष्टों का निवारण करने में समर्थ।

15. **भव्याङ्गना** – अतिशय सुन्दर प्रशस्त अंगों से युक्त स्त्रीस्वरूपा।

16. **भव्यकेशी** – सुन्दर केशों वाली।

17. **भवपाशविमोचिनी** – संसार के पाशों (बन्धनों) से छुटकारा दिलाने वाली।

18. **भव्यासना** – सुन्दर आसन पर विराजमान होने वाली।

19. **भव्यवस्त्रा** – सुन्दर वस्त्रों से विभूषित।

20. **भव्याभरणभूषिता** – सुन्दर आभूषणों से विभूषित।

21. **भगरूपा** – ऐश्वर्य (शक्ति और सम्पन्नता का मिलित रूप) स्वरूपा।

22. **भगानन्दा** – ऐश्वर्य से आनन्दित होने वाली।

23. **भगेशी** – ऐश्वर्य की स्वामिनी अर्थात सारा ऐश्वर्य इनके पास है। ऐश्वर्य को प्रेरित करने वाली अर्थात प्रेरित कर उपासकों तक भेजने वाली। ईष्टे का अर्थ है प्रेरयति, अतः ईशी का अर्थ हुआ प्रेरित करने वाली। ऐश्वर्य पर अनुशासन करने वाली अर्थात यह निर्धारित करने वाली कि किसे कितना, किस प्रकार का, कब तक ऐश्वर्य मिलेगा। ईश् धातु का अर्थ है शासन करना।

24. **भगमालिनी** – ऐश्वर्य की मालाओं से विभूषित अर्थात सभी प्रकार के ऐश्वर्य से विभूषित। भग का अर्थ सूर्य भी होता है अर्थात सभी सूर्यों की माला को धारण करने वाली अर्थात आकाश स्वरूपा।

25. **भगविद्या** – ऐश्वर्य देने वाली विद्या स्वरूपा। ऐश्वर्य को प्राप्त करने वाली विद्या स्वरूपा। ऐश्वर्य की विद्या स्वरूपा या ऐसी विद्या से युक्त। वह ज्ञान जिससे ऐश्वर्य मिलता है इनके पास ही है। वह ज्ञान जिससे ऐश्वर्य मिलता है तत्स्वरूपा।

26. **भगवती** – सभी प्रकार के ऐश्वर्य से युक्त। छह भग या ऐश्वर्य माने गये हैं। धर्म, यश, श्री, ज्ञान, वैराग्य और ऐश्वर्य (शक्ति)। ये छः पूर्णरूप से केवल भगवान के पास होते हैं। आंशिक रूप से ऋषि मुनियों के पास भी होते हैं, तभी उनके आगे भी भगवान शब्द लगा देते हैं।

27. **भगक्लिन्ना** – ऐश्वर्य के कारण आर्द्र अर्थात सम्पन्नता से युक्त। गरीबी सूखी मानी गई है और अमीरी गीली मानी गई है। कहते हैं कि जिसके घर में पशु हों तो वहाँ पर प्रत्येक दिन उत्सव होता है क्योकि प्रत्येक दिन अच्छा खाने पीने को मिलता है। क्लिन्न का अर्थ आर्द्र या गीला होना होता है जिसका अर्थ दयालु होना भी लिया जाता है। ऐश्वर्य के कारण दयालु हृदय वाली क्योंकि उनके पास देने के लिए सब कुछ है। ऐश्वर्य से आर्द्र या दयालु हृदय वाली।

28. **भगावहा** – ऐश्वर्य को धारण करने वाली। ऐश्वर्य को बुलाने वाली, बुलाती हैं जिससे उन्हें उपासको तक भेजा जा सके।

29. **भगाङ्कुरा** – ऐश्वर्य का आरम्भ। ऐश्वर्य/भाग्य की प्रथम अवस्था स्वरूपा। बीज से सर्वप्रथम अंकुर पैदा होता है। अंकुर को प्रथमावस्था के अलावा कारण भी मान सकते हैं। भग यदि एक वृक्ष है तो उसका प्रथम कारण देवी हैं। ऐश्वर्य की कारण।

30. **भगक्रीड़ा** – ऐश्वर्य से खेल खेलने वाली अर्थात अपने ऊपर एवं दूसरों को भी देने के लिए बहुत सारा ऐश्वर्य प्रयोग करने वाली। आपने सुना होगा कि वह व्यक्ति पैसे से खेल रहा है अर्थात अपने ऊपर भी बहुत पैसा खर्च कर रहा है और दूसरों को भी बहुत पैसा दे रहा है। ऐश्वर्य का प्रयोग करने से जो शोभा सम्पन्न है। जिनका आचरण ऐश्वर्यशाली अर्थात वैभवशाली लोगों जैसा है अर्थात बड़ा द्वीप, बड़ा भवन, बहुत सारे सेवक, अद्भुत पेड़ पौधे, चलने के लिए पुष्पक विमान आदि। अपने ऊपर भी ऐश्वर्य को खर्च करती हैं और दूसरों को भी खूब देती है जिसे आजकल की भाषा में कहा जाता है कि व्यक्ति पैसे उड़ा रहा है। लौकिक ऐश्वर्य से खेल खेलने वाली। ऐश्वर्य में क्रीड़ा करने वाली। (क्रीड़ा में जो कर्म किये जाते है उसमें कर्तृत्व भाव होता है और अपना मनोरंजन भी होता है भले ही दूसरों को भी सुख मिले। जबकि लीला में कर्तृत्व भाव का अभाव होता है और दूसरों को सुख मिलने का भाव होता है। जब आप किसी को इस प्रकार दें कि यह भाव न रहा कि मैने दिया तो यह लीला कहलाई जाएगी। लीला को आज की भाषा में बेहद आसान काम या बायें हाथ का खेल कह सकते हैं।) भग का अर्थ स्त्रीयोनि भी है। इस प्रकार भगक्रीड़ा का अर्थ हुआ स्त्री के साथ होने वाले सुरत या सम्भोग क्रीड़ा स्वरूपा। प्रत्येक प्रकार की क्रिया देवी का रूप है उसे हम भले ही अच्छा कहें या खराब कहें। दुनिया में कोई भी चीज ऐसी नहीं जिसमें कम से कम एक उपयोगिता न हो। काम न हो तो सन्तान न होगी, क्रोध न हो तो शासन नहीं चलेगा, लोभ न हो तो विद्या नहीं बढ़ेगी और मोह न हो तो सन्तान की परवरिश न होगी। सम्भव है कुछ लोगों को इस प्रकार का अर्थ देने में बहुत खराब लग रहा हो पर वास्तविकता से मुँह नहीं मोड़ा जा सकता। भग का अर्थ शिव भी होता है इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ शिव के साथ क्रीड़ा करने वाली अर्थात घूमना फिरना, आँख मिचौली का खेल करना, श्रृंगार रस की क्रीड़ा करना, शिकार करना, घोड़े पर जाना, शतरंज खेलना आदि सभी प्रकार की क्रीड़ा करने वाली।

ऐश्वर्य से खेलने वाली अर्थात ऐश्वर्य लुटाने वाली, बरसाने वाली। क्रीड़ा physical exertion, set of rules, skill से सम्बन्धित है। ऐश्वर्य में अपने आपको इस तरह व्यस्त किये है कि उससे देवी का मनोरंजन होता है। लीला में कर्तत्व भाव नहीं होता पर क्रीड़ा में होता है। लीला में भी मनोविनोद होता है और क्रीड़ा में भी होता है। लीला में कोई नियम नहीं होते जबकि क्रीड़ा में नियम होते हैं तभी प्रत्येक खेल का कोई न कोई नियम होता है। क्रीड़ा में ऐसा लगता है जैसे कुछ प्रयास किया जा रहा है जबकि लीला में ऐसा लगता है जैसे बिना प्रयास के सब कुछ होता जा रहा है। (लीला और क्रीडा दोनों में आनन्द या खुशी मिलती है। क्रीडा में सभी प्रतिभागियों को घटना या परिणाम का कारण पता होता है। लीला में केवल भगवान को कारण पता होता है कि ऐसा क्यों हुआ। अन्य प्रतिभागियों को कारण नहीं पता होता है। कार्य कारण सम्बन्ध से घटित होने वाली सभी घटनाएं ईश्वर की क्रीडा हैं।)

31. **भगाद्या** – सर्वप्रथम ऐश्वर्य वाली अर्थात ऐश्वर्यवानों में सर्वप्रथम जिसका अस्तित्व था। सभी ऐश्वर्य जहाँ से प्रारम्भ होते हैं। समस्त ऐश्वर्यों में सर्वप्रथम।

32. **भगमंङ्गला** – ऐश्वर्य रूप से मांगलिक है। ऐश्वर्य से अपने उपासको का मंगल अर्थात हित करती हैं। ऐश्वर्य रूपी मंगल देने वाली। ऐसी मंगला जो भग है। भग का अर्थ है ऐश्वर्य (शक्ति), धर्म, यश, श्री, ज्ञान, वैराग्य। सामान्यतः भग का अर्थ ऐश्वर्य माना जाता है और ऐश्वर्य का अर्थ सम्पन्नता और शक्ति माना जाता है। ऐश्वर्यों से मंगल की वर्षा करने वाली। शक्ति अर्थात अणिमा–लघिमा आदि अष्ट सिद्धियाँ, सम्पन्नता अर्थात अष्ट लक्ष्मी।

33. **भगलीला** – ऐश्वर्य से लीला करने वाली अर्थात बायें हाथ के खेल की तरह अपने उपासकों को दे देती हैं जिससे उन्हें सुख मिले। लीला में अपने को सुख मिले यह भाव नहीं रहता। भगवान कृष्ण ने सुदामा से चने खाकर उनकी झोपड़ी को राजमहल में परिवर्तित कर दिया था जो सारे ऐश्वर्यों अर्थात धन धान्य, नौकर चाकर, पशु, वाहन, सुख सुविधाओं से युक्त था। यह लीला है अर्थात बिना प्रयास के इशारे मात्र से दूसरे को ऐश्वर्य प्रदान कर सुख दे दिया और भगवान कृष्ण में जरा भी कर्तृत्व भाव नहीं रहा अर्थात यह भाव नहीं रहा कि मैने किया। कृष्ण ने किया अर्थात कृष्ण की शक्ति ने किया क्योंकि शक्ति ही सब कुछ करती है। शिव ने राक्षस को मारा अर्थात शिव की शक्ति ने राक्षस को मारा। क्रीड़ा में कर्तृत्व भाव रहता है किन्तु लीला में नहीं। उपासको को अनायास ही अर्थात बिना परिश्रम के एवं बिना कर्तृत्व भाव के तथा उपासको को सुख देने के लिए ऐश्वर्य देने वाली यह भगलीला का अर्थ हुआ। ऐश्वर्यों के द्वारा लीला करने वाली अर्थात तरह तरह तरह की क्रियाऐं करने वाली। कर्म और लीला में अन्तर होता है। कर्म का पाप पुण्य होता है क्योंकि वह कर्तृत्व भाव से मन में बैठे संस्कारों से प्रेरित होकर किया जाता है। लीला का उद्‌देश्य जगत का भला करना, जगत को सिखाना ही होता है और वह अपने शुभ संकल्पों से ही प्रेरित होता है। अतः इसमें काई पाप पुण्य नहीं लगते। लीला अर्थात बेहद आसानी से, बायें हाथ के खेल की तरह करना। भगलीला अर्थात ऐश्वर्य को सोचने मात्र से किसी के लिए पैदा कर देना, उसमें वृद्धि कर देना। लीला का अर्थ सौन्दर्य भी होता है। भग लीला अर्थात ऐश्वर्य के कारण सुन्दरता वाली। ऐश्वर्य अर्थात क्रीम पाउडर तेल आदि उपभोग करने वाले भौतिक पदार्थ। इनका प्रयोग करके सुन्दरता वाली।

ऐश्वर्य जिनके लिए लीला है अर्थात बहुत सहज है या बायें हाथ के खेल की तरह है या मन बहलाने की चीज है। ऐश्वर्य को पैदा करना, कितना भी पैदा करना, किसी को भी दे देना, बेहद सरल जैसे इशारे मात्र की चीज हो जैसे भगवान कृष्ण ने इधर सुदामा के चने खाये और उधर आलीशान घर खड़ा कर दिया। लीला अर्थात बहुत सरल, बायें हाथ का खेल, मन बहलाना, display of behavior कही पर लिखा है लीला अर्थात illusory तरीके से कुछ पैदा करना अर्थात पैदा करने का आभास देना। बायें हाथ के खेल की तरह अर्थात इशारे मात्र से जितना चाहो ऐश्वर्य पैदा कर देने वाली या किसी को दे देने वाली। लीला का अर्थ नाटक भी होता है। ऐश्वर्य को पैदा करने का आभास देने वाली। ऐश्वर्य से मनो – विनोद हासिल करने वाली। ऐश्वर्य के कारण सौन्दर्य वाली। ऐश्वर्य का अर्थ उपभोग करने वाला पदार्थ भी होता है अर्थात शरीर में लगाया जाने वाला उबटन, तेल, क्रीम आदि भी ऐश्वर्य है। इनको लगाने से और अधिक सुन्दर दिखने वाली यह भगलीला का अर्थ हो सकता है क्योंकि लीला का एक अर्थ सौन्दर्य है। लीला में कर्तत्व का अभिमान नहीं होता और अपने सुख की चाहत भी नहीं होती क्योंकि उनके पास तो सब कुछ है। दूसरों को देना, ज्ञान आदि देना, कुछ सीख देना, वस्तुऐं देना यही लीला है, जो भगवान करते हैं। लीला से भगवान समाज को कुछ सिखाना चाहते हैं।

34. **भगप्रीता** – ऐश्वर्य में या ऐश्वर्य से प्रसन्न रहने वाली। ऐश्वर्यपूर्ण जो यज्ञादि करते हैं उनसे प्रसन्न रहने वाली। ऐश्वर्यपूर्ण यज्ञ जिसमें बहुत खर्च होता है और वह खर्च सजावट और सामग्री आदि के द्वारा दूसरों को दिखता भी है। ऐश्वर्यों से सभी को आनन्दित करने वाली या स्वयं प्रसन्न रहने वाली। प्रीता का अर्थ प्रसन्न रहने वाली एवं प्रसन्न करने वाली दोनो हैं।

35. **भगसंपद्** – ऐश्वर्य की सम्पत्तियों से विभूषित। ऐश्वर्य रूपी सम्पत्ति स्वरूपा।

36. **भगेश्वरी** – ऐश्वर्यों की ईश्वरी अर्थात पैदा करने वाली या देने वाली।

37. **भगालया** – ऐश्वर्यों की आश्रयस्थान या निवास स्थान।

38. **भगोत्साहा** – ऐश्वर्य के द्वारा व्यक्ति को उत्साहित रखती हैं। जिसके पास पैसे नहीं होते हैं उसका चेहरा

बुझा हुआ होता है और जिसके पास धन धान्य खूब होता है उसका चेहरा खिला हुआ होता है और वह उत्साहित होता है। ऐश्वर्य होने के कारण उत्साहित रहने वाली। ऐश्वर्य का एक अर्थ शक्ति भी होता है। ऐश्वर्य का एक अर्थ सम्पन्नता भी होता है। जहाँ शक्ति और सम्पन्नता होगी वहाँ उत्साह आना स्वाभाविक है। ऐश्वर्य के द्वारा उत्साह को धारण करने वाली।

39. **भगस्था** – ऐश्वर्य में स्थित रहने वाली। सूर्यमण्डल में स्थित रहने वाली। भग का एक अर्थ है सूर्य।

40. **भगपोषिणी** – ऐश्वर्यों का पोषण करने वाली अर्थात बढ़ाने वाली। सूर्य मण्डल को पुष्ट करने वाली।

41. **भगोत्सवा** – ऐश्वर्य से आनन्दित होने वाली। उत्सव में आनन्द का अनुभव होता है।

42. **भगविद्या** – ऐश्वर्य को जानने की तरकीब स्वरूपा। विद्यते अनया इति विद्या अर्थात जिससे जाना जाए वह विद्या है। ऐश्वर्य की विद्या स्वरूपा। ऐश्वर्य विद्या वाली, भगविद्या यस्या सा। ऐश्वर्य को देने वाली विद्याओं से विभूषित। ऐश्वर्य रूपी विद्याओं को देने में पारंगत।

43. **भगमाता** – ऐश्वर्यों की माता अर्थात उन्हें उत्पन्न करने वाली या उनकी रक्षा करने वाली।

44. **भगस्थिता** – उच्च कोटि के ऐश्वर्य में स्थित।

45. **भगशक्ति** – ऐश्वर्य रूपी शक्ति स्वरूपा। आपने धन बल का नाम सुना होगा। ऐश्वर्य का एक अर्थ सम्पन्नता भी है। अष्टसिद्धियाँ एवं अष्ट लक्ष्मियाँ अष्टैश्वर्य हैं। ऐश्वर्य की शक्ति स्वरूपा अर्थात ऐश्वर्य इन्हीं से उत्पन्न होता है। शक्ति वह है जो कुछ उत्पन्न करे। ऐश्वर्य की शक्ति स्वरूपा या ऐश्वर्य की शक्ति से युक्त। ऐश्वर्य में रहने वाली ऊर्जा स्वरूपा। शक्ति अर्थात ऊर्जा और प्रत्येक चीज ऊर्जा से बनी है।

46. **भगनिधिः** – ऐश्वर्य की खजाना। खजाने से ही सब कुछ निकलता है अर्थात देवी से ही ऐश्वर्य निकलकर दूसरों तक पहुँचता है। देवी ऐसी खजाना है जो कभी कम नहीं होता अर्थात उतना ही बना रहता है अर्थात हमेशा पूर्ण रहता है।

47. **भगपूजा** – ऐश्वर्य के द्वारा पूजित। धनी लोग कीमती सामान जैसे सोने चाँदी के छत्र, हार या अन्य कीमती चीजें चढ़ाते हैं। ऐश्वर्य को सम्मान देने वाली यह अर्थ भी हो सकता है। ऐश्वर्य ही है पूजा स्वरूप जिसका। भग देवता या सूर्य देवता के द्वारा पूजित। ऐश्वर्य के द्वारा पूजा स्वरूपा। धनी लोग देवी को दुर्लभ, कीमती तरह तरह की चीजें चढ़ाते हैं जो ऐश्वर्य द्वारा पूजा करना हुआ। ऐश्वर्य का अर्थ अष्टसिद्धि भी होता है एवं अष्टलक्ष्मी भी होता है। सामान्यतः ऐश्वर्य का अर्थ है शक्ति और सम्पन्नता।

48. **भगेषणा** – ऐश्वर्य की इच्छा से युक्त। मेरे भक्त ऐश्वर्यवान हों, ऐसी इच्छा वाली।

49. **भगास्वपा** – भाग्य में हमेशा जागते रहने वाली। अस्वपा का अर्थ है न सोने वाली। भाग्य रूप से सदैव जागती हैं। ऐश्वर्य में पूर्ण रूप से लेटी हुई अर्थात स्थिर। भग+आ+स्वपा। आ का अर्थ है समन्तात् अर्थात चारों ओर से। स्वपा अर्थात सोई हुई या लेटी हुई। (यदि भगस्वापा नाम है तो अर्थ होगा ऐश्वर्य में शयन करने वाली। ऐश्वर्य ही है निद्रा जिसकी। लोग लौकिक ऐश्वर्य में मोहित रहते हैं)।

50. **भगाधीशा** – ऐश्वर्यों की श्रेष्ठ स्वामिनी। स्वामिनी अर्थात ऐश्वर्य की मालकिन अर्थात जिसे चाहे उसे देने वाली। ऐश्वर्य का अधिकार क्षेत्र इन्हीं का है।

51. **भगार्च्या** – ऐश्वर्यों के द्वारा अर्थात धन सम्पत्ति आदि द्वारा पूजनीया। पूजा में कई बार श्रद्धालु कीमती चीजें चढ़ाते हैं। पूजा और अर्चना में अन्तर है। अर्चना में वे सारी चीजें विधि – विधान से चढ़ानी होती हैं जिनका शास्त्रों द्वारा निर्देश दिया गया है। पूजा में उपलब्ध चीजें चढ़ाकर भगवान का स्तुतिपाठ किया जाता है। यदि सामग्री उपलब्ध नहीं है तब भी पूजा हो जाती है।

52. **भगसुन्दरी** – ऐश्वर्य के कारण सुन्दर स्वरूप वाली। जिनके पास ऐश्वर्य (शक्ति और सम्पन्नता है) होती है उनके चेहरे पर चमक देखी जाती है।

53. **भगरेखा** – भाग्य को लिखने वाली। रेख्यते अनया इति रेखा अर्थात जिसके द्वारा लिखा जाता है वह रेखा है। रेखा या लेखा का अर्थ हुआ रेखांकित करने वाला अर्थात चित्र बनाने वाला अर्थात लिखने वाला। लेखा या रेखा का एक अर्थ हुआ लिखने वाला रेखांकित करने वाला, चित्रित करने वाला। भग का एक अर्थ भाग्य भी होता है। अपने उपासकों का अच्छा भाग्य लिखने वाली। ऐश्वर्य की सीमा अर्थात ऐश्वर्य की पराकाष्ठा। ऐश्वर्य की रेखा से विभूषित अर्थात उनके हाथ में ऐश्वर्य की रेखा है।

54. **भगस्नेहा** – भाग्य वालों से स्नेह करने वाली। उपासक ही भाग्य वाले होते हैं। भगवान से प्रेम जगना ही भाग्य का जगना होता है। ऐश्वर्य से स्नेह रखने वाली।

55. **भगस्नेहविवर्धिनी** – ऐश्वर्य के प्रति स्नेह अर्थात आकर्षण को विशेष रूप से बढ़ाने वाली अर्थात ऐश्वर्य प्राप्ति की इच्छा को जगाने वाली। ऐश्वर्य के द्वारा प्रेम को बढ़ाने वाली।

56. **भगिनी** – ऐश्वर्य वाली अर्थात ऐश्वर्य से युक्त। ऐश्वर्य से युक्त। सूर्य मण्डल से युक्त अर्थात सूर्य में वास है या सूर्य जिनकी एक आँख है। भगवान शिव से युक्त अर्थात भगवान शिव के साथ रहने वाली। भग का एक अर्थ है सूर्य, शिव।

57. **भगबीजस्था** – ऐश्वर्य के बीज (कारण) में स्थित रहने वाली।

58. **भगभोगविलासिनी** – ऐश्वर्य से प्राप्त भोगों से विशेष रूप से शोभा सम्पन्न दिखने वाली। लस् धातु का अर्थ है शोभा सम्पन्न दिखना। भोग का अर्थ भोग सामग्री या आराम देने वाले उपकरण भी होता है। ऐश्वर्य से प्राप्त उपकरणों से व्यवहार करने वाली अर्थात प्रयोग करने वाली। ऐश्वर्य के भोगों से विलास करने वाली अर्थात मनोरंजन करने वाली।

59. **भगाचारा** – पारलौकिक ऐश्वर्य अर्थात मोक्ष के लिए है आचार जिनका। यहाँ पर आचार का अर्थ पूजा पद्धति ले सकते हैं। जिनकी पूजा से पारलौकिक ऐश्वर्य प्राप्त होता है। ऐश्वर्यवान अर्थात सम्पन्न और शक्तिशाली लोग जिस प्रकार का आचरण करते हैं उस आचरण के स्वरूप वाली। यहाँ पर आचार का अर्थ आचरण ले सकते हैं। ऐश्वर्य के आचरण से युक्त। ऐश्वर्यशाली व्यक्ति ऐश्वर्य के होने के कारण जिस तरह का आचरण करते हैं वैसे आचरण से युक्त। ऐश्वर्य ही है आचरण जिसका।

60. **भगाधारा** – समस्त ऐश्वर्य की आधार अर्थात ऐश्वर्य यहीं जन्म लेते हैं और यहीं टिकते हैं।

61. **भगाचारा** – लौकिक ऐश्वर्य के लिए होता है आचार जिनका अर्थात पूजा जिनकी। जिनकी पूजा से लौकिक ऐश्वर्य मिलता है। ऐश्वर्य को दो भागों में बाँट सकते हैं भोग अर्थात लौकिक ऐश्वर्य एवं मोक्ष अर्थात पारलौकिक ऐश्वर्य। भोग और मोक्ष ही ऐश्वर्य हैं। (यदि भगाकारा शब्द होता तो अर्थ होता ऐश्वर्य की आकृति वाली अर्थात सभी ऐश्वर्य इन्हीं के रूप में हैं। ऐश्वर्य (भग) के आकार वाली।)

62. **भगाश्रया** – ऐश्वर्य का आश्रय अर्थात ऐश्वर्य जिनपर आश्रित है। ऐश्वर्य का आश्रय लेने वाली अर्थात ऐश्वर्य को धारण करने वाली या ऐश्वर्य को अपने आसपास रखने वाली।

63. **भगपुष्पा** – भाग्य या ऐश्वर्य को पुष्पित करने वाली अर्थात विकसित करने वाली अर्थात बढ़ाने वाली। पुष्प विकास अर्थात आधिक्य का प्रतीक है। पुष्प प्रसन्नता का प्रतीक है। ऐश्वर्य के पुष्पों से विभूषित।

64. **भगश्रीदा** – ऐश्वर्य रूपी सम्पत्ति को देने वाली।

65. **भगपुष्पनिवासिनी** – ऐश्वर्य रूपी पुष्पों में निवास करने वाली। भग स्त्रियों की योनि को भी कहते हैं और

वहाँ उत्पन्न होने वाला रजोधर्म भगपुष्प कहलाता है, उसमें रहने वाली। शक्ति या ऊर्जा रूप में देवी सभी जगह रहती हैं। वास्तव में प्रत्येक पदार्थ देवी रूपा है। जड़ वस्तु, गुण, सम्बन्ध, दिशा, अवस्था, समय आदि सभी ऊर्जा या शक्ति के रूपान्तरण हैं। शक्ति या ऊर्जा का अर्थ है देवी। इस प्रकार प्रत्येक पदार्थ को देवी रूपा कहा जा सकता है।

66. **भव्यरूपधरा** – अतिशय सुन्दर अर्थात भव्य रूप धारण करने वाली। रूप वह है जो आँखों से दिखाई दे।

67. **भव्या** – अतिशय सुन्दर स्वरूप वाली। ऐसी सुन्दरता जो दूसरों को प्रभावित करे तथा दूसरों में आदर का भाव जाग्रत हो, भव्यता कहलाती है। अधिक सुन्दर, आकर्षक और अद्भुत रूप वाली। सुन्दर और भव्य में थोड़ा अन्तर होता है। भव्य में सुन्दरता अधिक होती है और साथ में वह आकर्षक भी होता है। आश्चर्य या अदभुत होने का भी गुण होता है भव्य मे।

68. **भव्यपुष्पैरसंस्कृता** – सुन्दर पुष्पों से अतिसंस्कृत अर्थात सब ओर से भव्य पुष्पों से लदी है। अ का अर्थ यहाँ ''नहीं'' नहीं है बल्कि अति है। (यदि भव्यपुष्पैरलंकृता नाम है तो अर्थ है अतिशय सुन्दर या भव्य पुष्पों में सुशोभित या अलंकृत)। लौकिक पुष्पों अर्थात मुर्झाये हुए पुष्पों से असंस्कृत अर्थात अनलंकृत अर्थात न धारण किये हुए। देवी दिव्य पुष्पों को धारण करती हैं जो कभी मुर्झाते नहीं है। भव्य शब्द लौकिकता से सम्बन्ध रखता है।

69. **भव्यलीला** – जिसकी शिव के प्रति की गईं श्रृगारिक चेष्टाऐं बहुत सुन्दर हैं। लीला का एक अर्थ श्रृंगारिक चेष्टा भी होता है। दूसरों का कल्याण करने वाले क्रिया – कलाप जो बहुत सुन्दर हैं तथा देवी के लिए बायें हाथ का खेल हैं। लीला में दूसरों का कल्याण करना, दूसरों को खुश करने का भाव होता है तथा लीला ऐसा कार्यकलाप है जो करने वाले के लिए बायें हाथ के खेल की तरह बेहद आसान होता है। आनन्दित करने वाले बहुत से हैं क्रिया कलाप जिनके। अतिशय सुन्दर लीलाओं वाली।

70. **भव्यमाला** – अतिशय सुन्दर माला से विभूषित।

71. **भव्याङ्गी** – भव्य अर्थात सुन्दर गुण वालों के पास जाने वाली या सुन्दर गुण वालों को अपनाने वाली स्वीकार करने वाली। अंगति का अर्थ है जाना, अंगयति का अर्थ है स्वीकार करना। अंगति और अंगयति दोनों से अंगी शब्द बन जाता है। अतिशय सुन्दर अंगों वाली यह अर्थ भी है किन्तु एक अन्य नाम में भव्यांगिका आया है अतः एक ही अर्थ दो बार न आये, सुन्दर अंगों वाली यह अर्थ भव्यांगिका के लिए रखते हैं।

72. **भव्यसुन्दरी** – श्रेष्ठ सुन्दरता वाली। भव्य का एक अर्थ है श्रेष्ठ। मंगलसूचक सुन्दरता वाली। भव्य अर्थात मंगलसूचक। प्रसन्न और सुन्दरी। भव्य अर्थात प्रसन्न। जो सुन्दर होने के कारण दूसरे के चित्त को आकर्षित करती है। सुष्ठु उनत्ति इति सुन्दरी। जो चित्त को अच्छी तरह से पिघलाए अर्थात आकर्षित करे, वह सुन्दरी है। भव्य (सुन्दर) स्वरूप वाली। ऐसी सुन्दरता जो दूसरों को प्रभावित करे, जिसमें आकर्षण हो और जिसके प्रति सम्मान की भावना जागे, जो मन को आकर्षित करे भव्यता है।

73. **भव्यशीला** – श्रेष्ठ स्वभाव वाली। श्रेष्ठ चाल चलन, आचरण वाली। भव्य अर्थात श्रेष्ठ, शील अर्थात स्वभाव, आचरण, आदत, चरित्र, स्वभाव, सौन्दर्य। भव्य शील या आचार को धारण करने वाली। आचरण जो स्वभाव में आ जाता है वह शील है।

74. **भव्यलीला** – सुन्दर क्रियाकलापों वाली जिससे दूसरों को प्रसन्नता मिलती है। दूसरों का मनोरंजन होता है। लीला में ये क्रिया–कलाप दूसरों को दिखते हैं। अतिशय सुन्दर भव्य लीलाओं से युक्त। उचित या योग्य लीलाओं वाली। लीला अर्थात ऐसी प्रसन्नकारक घटना जिसका कारण केवल ईश्वर को ज्ञात होता है। एक मुट्ठी चावल मात्र से भगवान कृष्ण ने सुदामा की झोपड़ी राज महल में परिवर्तित कर दी, कैसे परिवर्तित हो गई,

यह केवल भगवान कृष्ण जानते हैं। भीतरी आनन्द या प्रसन्नता जब हिलोर मारने लगे तो उसका रूपान्तरण इन लीला रूपी घटनाओं में होता है। लीला का अर्थ इतिहास के आदर्श पात्रों के अनुसार रंगमंच में वैसी ही वेशभूषा पहन कर वैसा आचरण करना भी होता है। लींङ् श्लेषणे धातु से ली बना जिसका अर्थ है लयन अर्थात एक हो जाना, मिल जाना। ला अर्थात धारण करना। रंगमंच वाला पात्र भगवान राम से एक हो जाता है जिसके कारण वह क्रिया–कलाप लीला कहलाती है। भगवान किसी का भी रूप धारण कर ऐसा कर सकते हैं कि सामने वाले को पता भी न चले। भगवान विष्णु ने वृन्दा के समक्ष वृन्दा के पति का ऐसा रूप धारण किया था कि उन्हें पता भी नहीं चला। इन्द्र ने भी अहल्या के समक्ष ऐसा रूप धारण किया था। देवताओं द्वारा कुछ करना अर्थात उनके अन्दर रहने वाली शक्ति द्वारा कुछ करना है अर्थात देवी द्वारा कुछ करना है। अन्यथा भी भगवान कृष्ण और राधा, शिव और पार्वती को एक ही माना जाता है।

75. **भव्याक्षी** – श्रेष्ठ अर्थात अतिशय सुन्दर आँखों वाली। मंगलसूचक आँखों वाली। भव्य स्थानों में व्याप्त। भव्य पदार्थों में व्याप्त। अक्षु व्याप्तौ धातु होती है।

76. **भव्यनाशिनी** – सुन्दर वस्तुओं का भी विनाश कर देने वाली। हर वस्तु की आयु होती है चाहे वह कितनी भी सुन्दर क्यों न हो।

77. **भव्याङ्गिका** – सुन्दर अंगों वाली। प्रभावशाली सौन्दर्य से युक्त अंगों वाली। ऐसी सुन्दरता जो दूसरे के मन में प्रभाव एवं आदर भाव पैदा करे भव्यता कहलाती है। अति सुन्दर अंगों से सुशोभित। अंगी और अंगिका में यह अन्तर कर सकते हैं कि अंगिका अर्थात छोटे अंग एवं अंग अर्थात कोई सा भी अंग।

78. **भव्यवाणी** – श्रेष्ठ वाणी वाली। मंगलसूचक वाणी वाली। सुन्दर वाणी वाली अर्थात जो आकर्षक हो तथा दूसरों पर प्रभाव पैदा करे ऐसी वाणी वाली।

79. **भव्यकान्ति** – प्रभावशाली सुन्दर कान्ति वाली। अति सुन्दर कान्ति वाली। स्वरूप की उज्जवलता कान्ति है। कान्ति ऐसी चमक है जो देखने वाले को वश में कर ले या उसके अन्दर प्रेम का उद्‌दीपन कर दे।

80. **भगालिनी** – ऐश्वर्य की पंक्ति वाली। भाग्य की श्रृंखला वाली। एक के बाद एक आना श्रृंखला है। हर प्रकार का भाग्य इनके पास है। ऐश्वर्य से सुशोभित। ऐश्वर्य स्वरूपा। ऐश्वर्य की मालाओं से सुशोभित। अल का अर्थ है सुशोभित होना।

81. **भव्यत्रपा** – सुन्दर लज्जा से युक्त। ऐसी लज्जा जिससे दूसरे प्रभावित होते हैं और पसन्द करते हैं। अनुचित कार्य करने में जो स्वाभाविक संकोच होता है, वह लज्जा है।

82. **भव्यनदी** – सुन्दर नदी स्वरूपा। सुन्दर अव्यक्त शब्द करने वाली। नदी वह है जो अव्यक्त शब्द करती है। नद् धातु का अर्थ है अव्यक्त शब्द करना। अव्यक्त शब्द अर्थात जो ध्वनिरूप में तो हो पर उसके अनुरूप कोई अर्थ (वस्तु) न हो।

83. **भव्यभोगविहारिणी** – सुन्दर भोगों से युक्त होकर विहार करने वाली अर्थात घूमती फिरती रहती हैं। सांसारिक कार्य करना, उठना – बैठना, घूमना फिरना विहार है। भोग अर्थात सांसारिक सुख देने वाले पदार्थ। सुन्दर से सुन्दर दिव्य भोगों में विचरण करने वाली अर्थात शक्ति या गुण के रूप में उनमें रहने वाली। विहार करना अर्थात मन बहलाव के लिए धीर–धीरे चलना, टहलना, घूमना, क्रीड़ा करना, गति करना, सम्भोग करना।

84. **भव्यस्तनी** – सुन्दर अर्थात सुडौल स्तनों वाली।

85. **भव्यमुखी** – सुन्दर मुख वाली। ऐसी सुन्दरता जो दूसरों को प्रभावित करे तथा दूसरे के अन्दर आदर का भाव जाग्रत हो, भव्यता कहलाती है।

86. **भव्यगोष्ठी** – सुन्दर (जहाँ कुतर्क न हो) वाणी में रहने वाली। सुन्दर वाणी में स्थित। गो का अर्थ है वाणी। सुन्दर गोष्ठी (सभा) स्वरूपा।

87. **भयापहा** – भक्तों के भयों को दूर कर देने वाली, नष्ट कर देने वाली।

88. **भक्तेश्वरी** – भक्तों की ईश्वरी अर्थात उन्हें पालने या रक्षा करने वाली। भक्तों की आराध्या। ईश्वरी का एक अर्थ है जिनकी आराधना की जाती है।

89. **भक्तिकरी** – भक्ति को करने वाली अर्थात भक्तों की भक्ति को बढ़ाने वाली।

90. **भक्तानुग्रहकारिणी** – भक्तों पर कृपा करने वाली।

91. **भक्तिदा** – भक्ति को देने वाली। जो पात्र है उन्हीं को भक्ति देती है और भक्ति देना सबसे अमूल्य वरदान है क्योंकि इससे भगवान भी वश में हो जाते हैं। भक्ति का वरदान भगवान बहुत मुश्किल से देते हैं। भक्ति का अर्थ है ईश्वर के प्रति परमप्रेम।

92. **भक्तिजननी** – भक्ति की माता अर्थात भक्ति नामक भाव को पैदा करने वाली।

93. **भक्तानन्दविवर्धिनी** – भक्तों के आनन्द को बढ़ाने वाली।

94. **भक्तिप्रिया** – भक्ति है प्रिय जिन्हें अर्थात जो भक्ति को पसन्द करती हैं।

95. **भक्तिरता** – भक्ति में ही रमण करती है अर्थात भक्ति में ही रहने वाली। जहाँ भक्ति होती है उसके पास अवश्य रहती हैं। भक्ति से प्रसन्न रहने वाली। रम् धातु से रत बनाने पर प्रसन्न होना या अच्छा लगना अर्थ आता है। भक्ति जिन्हें अच्छी लगती है। भक्ति में स्थित रहने वाली।

96. **भक्तिभावविहारिणी** – भक्ति भाव में विचरण करने वाली अर्थात विराजमान रहने वाली।

97. **भक्तिशीला** – भक्ति के स्वभाव वाली।

98. **भक्तिलीला** – भक्ति ही है लीला जिनकी अर्थात भक्तिरूपी क्रिया कलाप वाली। भक्त जो भक्ति रूपी क्रिया कलाप करता है वह देवी के द्वारा किया जाने वाला क्रिया कलाप है क्योंकि न्यास प्रक्रिया के कारण भक्त और देवी में अभेद होता है। भक्ति के द्वारा दूसरों को प्रसन्नता देने वाली। भक्ति जिनके लिए सहज है अर्थात बायें हाथ का खेल है अर्थात भक्ति करने का कर्तृत्वभाव नहीं है अर्थात अपने आप होने लगती है। लीला में कर्तृत्व का भाव नहीं होता एवं लीला का उद्देश्य दूसरे के काम बनाना, दूसरों को सुख पहुँचाना है। क्रीड़ा में कर्तृत्व भाव रह सकता है और स्वयं का मनोरंजन भी होता है। भक्ति में रहने वाली। भक्ति ही है क्रीड़ा जिसकी, भक्ति रूप क्रीड़ा करने वाली। भक्ति में क्रीड़ा करने वाली। भक्ति की लीलाओं को करने वाली अर्थात भक्ति से सम्बन्धित विविध लीलाओं को करने वाली।

99. **भक्तेशी** – भक्तों की स्वामिनी अर्थात उनकी रक्षा करने वाली एवं उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली, उसे देने वाली। भक्तों पर शासन करने वाली अर्थात आज्ञा देकर अपनी इच्छानुसार उनसे कार्य कराने वाली, नियन्त्रण करने वाली। भक्तों को प्रेरित करने वाली अर्थात उन्हें कर्तव्य कर्मों के लिए या भक्ति के लिए प्रेरित करने वाली अर्थात लगाने वाली।

100. **भक्तिपालिनी** – भक्ति का पालन करने वाली अर्थात बढ़ाने वाली। भक्ति की रक्षा करने वाली अर्थात इसके अस्तित्व को कभी समाप्त नहीं होने देती हैं। पाल रक्षणे धातु होती है।

101. **भक्तिविद्या** – भक्ति का ज्ञान कराने वाली। विद्या अर्थात ज्ञान कराने वाली, विद्यते अनया इति विद्या अर्थात जिसके द्वारा जाना जाता है। भक्ति को जानने वाली या भक्ति रूपी विद्या स्वरूपा। भक्ति की विद्या से

युक्त अर्थात उन्हें पता है कि भक्ति कैसे की जाती है। विद्या अर्थात ज्ञान। विद्या अर्थात जो चेतना को उठा दे या भक्त को भगवान की ओर ले जाए। भक्ति के द्वारा ब्रह्म चेतना तक ले जाने वाली या भगवान तक ले जाने वाली। भक्ति भी देवी का एक रूप है।

102. **भक्तविद्या** – भक्तों की विद्यास्वरूपा अर्थात भक्तों के पास जो विद्याऐं हैं वे उन्हीं की हैं और उन्हीं से सम्बन्धित हैं।

103. **भक्ति** – भक्ति स्वरूपा। ईश्वर के प्रति अत्यन्त अनुराग, श्रद्धा, स्नेह भक्ति है।

104. **भक्तिविनोदिनी** – भक्ति से या भक्ति में विनोद करने वाली। इनका विनोद भक्ति रूप में ही होता है। भक्ति से प्रसन्न होने वाली। विनोद का अर्थ है प्रसन्नता, हर्ष, मनोरंजन, हँसी, कौतुहल, खेलकूद, उत्सुक्ता, मन बहलाव, हँसी – मजाक।

105. **भक्तिरीति** – परम्परा से चली आ रही भक्तिस्वरूपिणी। रीति का अर्थ है परम्परागत रूप से चली आने वाली। भक्ति है रीति जिनकी। जिनकी रीति या पहचान या सिद्धान्त भक्ति है।

106. **भक्तिप्रीति** – भक्ति में है प्रीति (प्रसन्नता) जिनकी।

107. **भक्तिसाधनसाधिनी** – भक्ति के साधन को प्राप्त कराने वाली अर्थात उपलब्ध कराने वाली। साधिनी अर्थात प्राप्त कराने वाली। भक्ति के साधन हैं शरीर, ढोलक, मँजीरा, चन्दन, शंख, आरती, चावल आदि। भक्ति रूपी साधन को साधने वाली अर्थात भक्ति रूप साधन को सिद्ध करने करने वाली। भक्ति रूपी साधन को प्रशस्त करने वाली या बताने वाली। भक्ति के साधन को सिद्ध करने वाली। कैसे प्राप्त की जा सकती है या सिद्ध की जा सकती है? पूजा, पाठ, स्तोत्र या हवन द्वारा, यह सब साधन है।

108. **भक्तिसाध्या** – भक्ति से सिद्ध हो जाने वाली अर्थात प्राप्त हो जाने वाली या वश में हो जाने वाली। कृपा की बारिश करने वाली। सिद्ध होने पर आपके कार्य करने लगती है। सिद्ध होने का तात्पर्य है कार्य करने के लिए हमेशा उपलब्ध रहना।

109. **भक्तसाध्या** – भक्तों के द्वारा साध्या या प्राप्त होने योग्य।

110. **भक्तिराली** – –ऐसी भक्ति स्वरूपा जो भक्तों को सुशोभित करती है। अल् अलति का अर्थ भूषित करना है। आलयति इति आली अर्थात जो सुशोभित करे। भक्ति से भक्त सुशोभित होता है। भक्तिः + आली से भक्तिराली शब्द बन सकता है। ऐसी भक्ति स्वरूपा जो पूर्ण रूप से या चारों ओर से सुशोभित होती है। आ (चारों ओर से या पूर्ण रूप से)+अली (अल भूषणे धातु से सुशोभित होने वाली अर्थ आएगा)। भक्ति देने वाली और सहेली की तरह। भक्ति देने वाली और हमेशा साथ रहने वाली। देवी सच्चे भक्तों के साथ हमेशा रहती है। यहाँ रहने का तात्पर्य प्रकट रूप से रहने अर्थात जिनकी कृपा दिख भी रही है, इससे है। अन्यथा देवी हमेशा सर्वत्र रहती है। भक्ति देने वाली और मित्रवत् व्यवहार करने वाली। भक्तिम् राति इति भक्तिरा। आली का अर्थ होता है सहेली अर्थात जो हमेशा साथ रहती है। सहेली का अर्थ है मित्र और मित्र का अर्थ है जो मुसीबत में काम आये, बुराई से बचाए और अच्छाई की ओर ले जाये, दुख हटाए और सुख देना सुनिश्चित करें। यह अर्थ भक्तिरा+आली से बनाया गया है। यदि भक्तिः+आली से शब्द बनाये तो अर्थ होगा भक्ति है सहेली जिनकी। आली का अर्थ पक्ति अर्थात समूह भी होता है। नवधा भक्ति स्वरूपा क्योंकि नवधा भक्ति नौ प्रकार की भक्तियों का समूह है। जो भक्ति देने में लगी हुई हैं। रा दाने से रा का अर्थ देना हुआ, लींङ् स्लेष्णे धातु से ली का अर्थ चिपकना अर्थात लगी हुई हुआ। जो समस्त भक्तियों के स्वरूप वाली है। भक्ति की श्रेणी है अर्थात हर प्रकार की भक्ति के स्वरूप वाली। भक्ति के नौ रूप हैं जो हैं – श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वन्दन, दास्य, सख्य, आत्मनिवेदन।

111. **भवेश्वरी** – संसार की ईश्वरी अर्थात जिनका संसार पर स्वामित्व है या संसार पर शासन करने वाली। संसार जिनकी आराधना करता है अर्थात संसार के प्राणियों द्वारा जिनकी आराधना की जाती है। (यदि भटेश्वरी नाम है तो अर्थ होगा योद्धाओं की अराध्या, स्वामिनी।)

111. **भटविद्या** – योद्धाओं की विद्या अर्थात युद्ध विद्या स्वरूपा।

112. **भटानन्दा** – योद्धाओं को आनन्द देने वाली। योद्धओं को अनुभव होने वाले आनन्द स्वरूपा।

113. **भटस्था** – योद्धाओं के हृदय में विराजमान रहने वाली।

114. **भटरूपिणी** – योद्धा स्वरूपिणी। देवी संग्राम में असुरों से युद्ध करती हैं। इस प्रकार वे योद्धा हुई।

115. **भटमान्या** – योद्धा के द्वारा माननीय या सम्माननीय।

116. **भटस्थान्या** – भटस्था + अन्या। वीर में रहने वाली शक्ति के अलावा कोई दूसरी शक्ति अर्थात विजय देने वाली शक्ति। हर एक व्यक्ति में शरीर में शक्ति होती ही है। यदि उसने देवी की आराधना की तो देवी उसके शरीर में रहने वाली शक्ति के अलावा दूसरी शक्ति हुई जिसने उसे विजयी होने का वरदान दिया। वीरों के स्थान में रहने वाली अर्थात वीरों में रहने वाली शक्ति स्वरूपा। भटस्था+ अन्या, भटस्थों में द्वितीया। योद्धा या वीरों में रहने वाली। भटों के मध्य में स्थान रखने वाली।

117. **भटस्थाननिवासिनी** – छावनी या युद्ध मैदान में रहने वाली। योद्धाओं के स्थान अर्थात शिविर में निवास करने करने वाली।

118. **भटिनी** – स्वंय ही वीर गुणों से युक्त है। भटस्वरूपिणी अर्थात योद्धा स्वरूपिणी।

119. **भटरूपेशी** – जो योद्धा के रूप वाले हैं उनकी ईशी अर्थात अनुशासन करती हैं। उन्हें प्रेरित करती हैं, उत्साहित करती हैं, विजय दिलाती है। ईश् धातु का अर्थ है शासन करना जिससे ईशी शब्द बनाने पर अर्थ होगा शासन करने वाली। ईष्टे प्रेरयति से ईशी शब्द बनाने पर अर्थ होगा प्रेरित करने वाली। युद्ध करने वाले सैनिकों की ईश्वरी अर्थात ये सैनिक इनकी उपासना करते हैं। योद्धाओं की शासिका।

120. **भटरूपविवर्धिनी** – वीर रूप अर्थात वीरता को बढ़ाने वाली। योद्धाओं के रूप को बढ़ाने वाली।

121. **भटवेशी** – योद्धाओं के वेश को धारण कर लेने वाली।

122. **भटेशी** – योद्धाओं की ईश्वरी अर्थात योद्धाओं पर शासन करने वाली। योद्धाओं को प्रेरित करती हैं, उनका मार्गदर्शन करती हैं।

123. **भगभाग्** – ऐश्वर्य को धारण करने वाली या ऐश्वर्य से युक्त। ऐश्वर्य की भाजन अर्थात धारण करने वाली। ऐश्वर्य को धारण करने वाली।

124. **भवसुन्दरी** – भगवान शिव की गृहिणी। (यदि भगसुन्दरी नाम है तो अर्थ है – ऐश्वर्य के कारण सुन्दर। जो अनुग्रह और निग्रह करने में समर्थ है वह है ईश्वर। लौकिक और पारलौकिक ऐश्वर्य के कारण सुन्दर। ऐश्वर्य के द्वारा सुन्दर लगने वाली)।

125. **भटप्रीत्या** – योद्धाओं के प्रति उच्चकोटि की अर्थात बहुत अधिक प्रीति (स्नेह) रखने वाली। प्रीति + आ इति प्रीत्या। एकाक्षरी कोष में आ का अर्थ उदात्त दिया गया है और उदात्त का अर्थ हे श्रेष्ठ, उच्चकोटि की। वीर योद्धाओं में प्रीति है जिनकी अर्थात वीरों से प्रीति करने वाली। वीर की प्रीतिस्वरूपिणी या वीरों से प्रीति रखने वाली। जैसे हत्या शब्द बनता है वैसे ही प्रीत्या शब्द बना। योद्धाओं के लिए प्रीति को उत्पन्न करने वाली या बरसाने वाली। भटप्रीति + आ, आ का अर्थ देना। योद्धाओं को प्रीति देने वाली।

126. **भटरीत्या** – योद्धाओं की श्रेष्ट परम्परा वाली। रीति अर्थात चला आ रहा नियम, चला आ रहा आचार। रीति का अर्थ मार्ग भी होता है। भटों अर्थात वीरों के मार्ग पर चलने वाली। परम्परया वीर गुण वाली। रीत्या का अर्थ है श्रेष्ठ रीति। रीति + आ (उदात्त या श्रेष्ठ) इति रीत्या। योद्धाओं की रीति अर्थात बहादुरी के स्वरूप वाली। भटरीति + आ, योद्धाओं को श्रेष्ठ मार्ग देने वाली। आ का अर्थ है देना।

127. **भटानुग्रहकारिणी** – योद्धाओं पर कृपा करने वाली।

128. **भटैराध्या** – योद्धाओं द्वारा स्तुति की जाने योग्य या प्रसन्न किये जाने योग्य या उनकी वन्दनीया। राध् धातु आराधना अर्थ में होती है। राध्या का अर्थ वही है जो आराध्या का। आराध्या में आ जुड़ने से सर्वतोभावेन अर्थ और आ जाता है। भटैः राध्या। रो रि सूत्र से विसर्ग के र का लोप हो गया। (यदि भटाराध्या नाम है तो अर्थ है – योद्धाओं के द्वारा आराधनीय। वीरों की आराध्या। वीर बहादुर जो युद्ध लड़ते हैं वे भट हैं)।

129. **भटबोध्या** – योद्धाओं के द्वारा जानने योग्य।

130. **भटबोधविनोदिनी** – वीरों के ज्ञान से विशेष रूप से प्रसन्न रहने वाली। वीरों का ज्ञान अर्थात मैं वीर हूँ ऐसा ज्ञान। वीर पुरुष की वीरता के ज्ञान में विनोद करती है अर्थात उसी से मनोरंजन करती है। योद्धाओं के ज्ञान को आनन्दित करने वाली अर्थात उनके ज्ञान से आनन्दित होने वाली।

131. **भटैः सेव्या** – योद्धाओं द्वारा सेवा करने योग्य अर्थात पूजा करने योग्य। पूजा नियमित रूप से करने वाली चीज है पर युद्ध में जाने के पहले अवश्य करते थे। भटों के द्वारा सेवा करने योग्य, सभी तरह की सेवा करने योग्य।

132. **भटवरा** – योद्धाओं में श्रेष्ठ। वर का अर्थ है श्रेष्ठ।

133. **भटार्च्या** – योद्धा के रूप में अर्चनीय। देवी स्वयं में वीर योद्धा हैं और देवी की वीर योद्धा के रूप में अर्चना की जाती है। देवी का एक नाम है एकवीरा अर्थात अद्वितीय वीर है। योद्धाओं द्वारा पूजनीय।

134. **भटबोधिनी** – भट अर्थात योद्धा को ज्ञान कराने वाली अर्थात उन्हें यह अहसास दिलाने वाली कि आप यह करने में समर्थ हैं। योद्धाओं को ज्ञान या बोध देने वाली। बोधयति से बोधिनी बनाने पर ज्ञान देने वाली अर्थ आएगा।

135. **भटकीर्त्या** – वीरों को कीर्ति देने वाली। कीर्ति + आ, आ का एक अर्थ है देना। वीरों की श्रेष्ठ कीर्ति स्वरूपा। कीर्ति + आ (उदात्त या श्रेष्ठ) इति कीर्त्या। वीरों के द्वारा कीर्तनीय। वीर इनके यश का गान करते हैं। वीरों की कीर्ति स्वरूपा। भटों या योद्धाओं या वीरों की कीर्तिस्वरूपिणी। कीर्ति अर्थात गुणों का वर्णन।

136. **भटकला** – योद्धाओं की कला (निपुणता, युद्ध में लडने की निपुणता स्वरूपा) स्वरूपा। योद्धाओं की कला स्वरूपा अर्थात बहादुरी स्वरूपा। योद्धाओं में जो जो कला है अर्थात हुनर है, तत्स्वरूपा।

137. **भटपा** – योद्धाओं की रक्षा करने वाली। पाति का अर्थ है रक्षा करना जिससे पा शब्दाक्षर बना। पाति इति पा, पा का अर्थ है रक्षा करने वाली।

138. **भटपालिनी** – योद्धाओं का पालन पोषण करने वाली।

139. **भटैश्वर्या** – योद्धाओं की ऐश्वर्य स्वरूपा अर्थात उनकी शक्ति और सम्पन्नता स्वरूपा।

140. **भटाधीशा** – योद्धाओं की अधीश्वरी अर्थात स्वामिनी। मालिक जैसा कहेगा वैसा सेवक मानेगा, करेगा। योद्धा वही करेंगे जो देवी चाहती हैं। योद्धाओं को अपनी इच्छानुसार चलाने वाली।

141. **भटेक्षा** – योद्धाओं की दृष्टि स्वरूपा। योद्धाओं की दृष्टि चौकन्ना और सावधान वाली होती है।

142. **भटतोषिणी** – योद्धाओं को सन्तुष्ट कर देने वाली। योद्धाओं के लिए आवश्यक वीरता आदि गुण या आवश्यक सामग्रियाँ देकर उन्हें सन्तुष्ट करती हैं।

143. **भटेशी** – योद्धाओं को उनके कर्तव्य के लिए प्रेरित करने वाली। ईश् धातु का अर्थ प्रेरयति भी होता है। योद्धाओं पर शासन करने वाली अर्थात नियन्त्रित करने वाली अर्थात उन्हें मार्ग से भटकने नहीं देती। ईश् धातु का प्रयोग शासन करना अर्थ में होता है। योद्धाओं की ईश्वरी। योद्धाओं पर स्वामित्व रखने वाली।

144. **भटजननी** – योद्धाओं की माता। अच्छे योद्धाओं को जन्म देने वाली। पार्वती जी के पुत्र कार्तिकेय और गणेश जी श्रेष्ठ योद्धा थे।

145. **भटभाग्यविवर्धिनी** – योद्धाओं के भाग्य को बढ़ाने वाली। उपासना करने वाले योद्धाओं का भाग्य बढ़ता है अर्थात वे जीत हासिल करते हैं एवं उनकी रक्षा होती है।

146. **भटमुक्ति** – योद्धाओं के लिए मुक्तिस्वरूपा अर्थात योद्धाओं को मोक्ष देने वाली। भटमुक्तिः यस्याः सकाशात् इति भटमुक्तिः अर्थात जिसकी समीपता से योद्धाओं को मुक्ति मिलती है अर्थात योद्धाओं को मुक्ति देने वाली।

147. **भटयुक्ति** – योद्धाओं की युक्ति अर्थात जीतने के उपाय स्वरूपा।

148. **भटप्रीतिविवर्धिनी** – योद्धाओं की प्रसन्नता को बढ़ाने वाली अर्थात योद्धाओं को और अधिक प्रसन्न करने वाली।

149. **भाग्येशी** – भाग्यों की ईश्वरी अर्थात भाग्य देने वाली, बढ़ाने वाली। भग्य को प्रेरित करने वाली अर्थात श्रेष्ठ भाग्य को अपने भक्तों तक पहुँचाने वाली।

150. **भाग्यजननी** – भाग्य की माता अर्थात भाग्य बनाने वाली।

151. **भाग्यस्था** – भाग्य में निवास करने वाली।

152. **भाग्यरूपिणी** – भाग्य के रूप को धारण करने वाली। भाग्य के गुणों (प्रभाव) से युक्त। रूप का एक अर्थ गुण, लक्षण भी होता है। भाग्य का अर्थ जो भाग करने अर्थात हिस्सा करने योग्य हो। एक परम सत्ता ही विभिन्न ग्रहों, नक्षत्रों आदि के रूप में बट जाती है अर्थात हिस्सा वाली हो जाती है। भाग्य स्वरूपा। भक्त के लिए भाग्यविधाता अर्थात अचानक से अच्छा देने वाली जिससे भक्त को खुशी मिले और उसका भला भी हो। भक्त को अचानक से अच्छा फल देने वाली। भाग्य अर्थात पूर्व में किये गये कर्मों का फल। भाग्य वह अवश्यम्भावी दैवीय विधान है जिसके अनुसार प्रत्येक पदार्थ और विशेष कर मनुष्य के सब कार्य – उन्नति, अवनति, नाश आदि पहले से ही निश्चित रहते हैं और जिससे अन्यथा कुछ नहीं हो सकता। भाग्य का अर्थ उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र भी है अतः इस नाम का अर्थ हुआ जो उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र के रूप में है।

153. **भावना** – भावना रूपा अर्थात हृदय में आने वाले मानस धर्म स्वरूपा। हृदय के धर्म वाणी से व्यक्त नहीं किये जा सकते। सामान्यतः भाव और भावना को एक ही माना जाता है पर इनमें सूक्ष्म अन्तर है। आन्तरिक उद्दीपन (जैसे विचार) या बाह्य उद्दीपन (जैसे कोई वस्तु या व्यक्ति/ प्राणी) के आने पर तत्काल में मन मे जो उठता है वह भाव है। भाव उठते हैं चले जाते हैं। पर यदि यही भाव लम्बे समय तक या बार बार आकर स्थाईपना ले लें तो वह भावना हो जाती है। किसी प्राणी को देखकर क्रोध का भाव आ सकता है। बार बार क्रोध का भाव आने पर स्थायित्व ग्रहण कर बैर की भावना आ जाती है। एक अनुसन्धान संस्थान में भावना और भाव में अग्रलिखित तरीके से अन्तर बताया है। भावनाऐं भौतिक जीवन से सम्बन्धित संवेदनाऐं होती हैं। वे मूलतः हमारे बाह्य मन की वृत्तियाँ होती हैं। इन भावनाओं के कारण हम सुख अथवा दुख अनुभव करते हैं और उनका सम्बन्ध

हमारे छोटे मैं से होता है, इसलिए भावनाओं के उभरने पर हम अपने पाँच इन्द्रियों, मन और बुद्धि से एक रूप हो जाते हैं। अधिक भावना प्रधान हो जाने पर हम भौतिक अस्तित्व में फंस जाते हैं और उस समय हमें अपने अस्तित्व का अधिक बोध होने लगता है। इसलिए भावना प्रधानतः हमें ईश्वर से अधिक दूर ले जाती है। दूसरी ओर भाव वह स्थिति है जिसमें हम ईश्वर के आन्तरिक सान्निध्य में रहते हैं। यह स्थिति हमारे चित्त से सम्बन्धित होती है। जब भाव जाग्रत हो जाता है उस समय हम अपने भौतिक अस्तित्व के परिचय से ऊपर उठते हैं, इस स्थिति में हम अपने छोटे मैं से हटकर बड़े मैं से तादात्म्य पाते हैं। भाव हमें आनन्द की अनुभूति देता है। सर्वोच्च सुख को आनन्द कहते हैं जो सुख और दुख से परे है। भाव जाग्रत होने पर अहं में न्यूनता आ जाती है, देह बुद्धि कम हो जाती है। जब भाव जाग्रत होता है तो आनन्द के अश्रुओं के रूप में सात्विक भाव प्रकट होते हैं और उस समय व्यक्ति को अपने अस्तित्व का अनुभव नहीं होता है। दूसरों में ईश्वर की अनुभूति करते है और उनसे अपेक्षा रहित प्रेम करते हैं। भाव जाग्रत होने पर ठण्डे आँसू बहते है और भावना जाग्रत होने पर ऊष्ण अश्रु बहते हैं। भाव जाग्रत होने पर रोना शान्ति से होता है जबकि भावना जाग्रत होने पर व्यक्ति सिसक सिसक कर रोता है। भाव जागृति अर्थात ईश्वर से एकरूप होना, इसलिए उस स्थिति से बाहर आने पर व्यक्ति अपने ''बड़े मैं'' ईश्वर से तादात्म्य में रहने के कारण उसकी संकुचित वृत्ति घटने लगती है और वह अधिक स्थिर हो जाता है। आध्यात्मिक प्रगल्भता बढ़ती है और आध्यात्मिक साधना एवं मोक्ष प्राप्ति के ध्येय के विषय में उसकी बुद्धि का निश्चय हो जाता है। किसी के मत के अनुसार मूल भावनाऐं छह हैं जो हैं – दुख, खुशी, आश्चर्य, घृणा, भय और क्रोध। काव्य में भाव शब्द की व्युत्पत्ति दी गई है – भवति इति भावः अर्थात जो हृदय में निश्चित रूप से रहते हैं वह भाव है।

154. **भावकुशला** – भावों को दिखाने में कुशल। भाव अर्थात प्रेम, करूणा, क्रोध, उत्साह, श्रृंगार, श्रृंगारादि नौ रस के नौ स्थाई–भाव, इसके अतिरिक्त व्यभिचारीभाव (संचारी भाव) तथा विभाव–अनुभाव भी होते हैं। भाव का अर्थ पदार्थ भी होता है इस प्रकार अर्थ हुआ कि किसी भी प्रकार के पदार्थ को उत्पन्न करने में निपुण। जितनी कलाऐं उतने भाव है पदार्थ में। भावों में कुशल।

155. **भावदा** – सद्भाव अर्थात सद्गुणों को देने वाली। भावों को प्रदान करने वाली अर्थात जो रूखी नहीं है। विषय/पदार्थों को देने वाली। मन में ख्याल, विकार, प्रवृत्ति उत्पन्न करने वाली। भाव का अर्थ पदार्थ भी हैं। दुनिया के पदार्थों का नाश करने वाली। द्यति खण्डयति से जब दा शब्दाक्षर बनाएंगे तो खण्डन करना अर्थात नाश करना अर्थ आएगा।

156. **भाववर्धिनी** – भावों को बढ़ाने वाली अर्थात भक्ति भाव बढ़ाने वाली।

157. **भावरूपा** – भावस्वरूपा। भाव का अर्थ है प्रेम। भाव अर्थात ईश्वर/देवता के प्रति होने वाली श्रद्धा या प्रेम जिसे भक्ति भाव कहते हैं। भगवान भाव के भूखे हैं। प्रेम/मन से उत्पन्न होने वाले विचार या ख्याल भाव हैं। भाव का एक अर्थ प्रेम भी होता है। भाव वह स्थिति है जिसमें हम ईश्वर के आन्तरिक सान्निध्य में रहते हैं। भावजागृति मूलतः वह स्थिति होती है जहाँ हम स्वयं में और दूसरों में ईश्वर का अनुभव करते हैं। इस स्थिति में हमे स्वयं के अस्तित्व का भान अल्प होता है। इस अवस्था में दूसरों के प्रति अपेक्षा रहित प्रेम का अनुभव करते हैं। साहित्य में स्थाई भाव, व्यभिचारी भाव, संचारी भाव का नाम सुना होगा। जो भावना स्थिर और स्थाई होती है वह स्थाई भाव होते हैं। नौरस के नौ भाव होते हैं। रति, शोक, हास, उत्साह, भय, क्रोध, आश्चर्य, निर्वेग या शान्ति, जुगुप्सा ये भाव है जो मनुष्य के मन में रहने वाले तत्व हैं जो यथावसर प्रकट होते हैं।

158. **भावरसा** – भाव (प्रेम) के द्वारा आनन्द प्रदान करने वाली।

159. **भावान्तरविहारिणी** – भावों के अन्दर विचरण करने वाली। भाव अर्थात प्रेम, करुणा, क्रोध आदि मनोभाव। भाव का अर्थ पदार्थ भी होता है अर्थात जड़ और चेतन सभी पदार्थ। भाव का अर्थ सत्ता या अस्तित्व भी होता है।

160. **भावाङ्कुरा** – पदार्थ या मानसिक भावों का आरम्भ अर्थात कारण। भावों की कारण अर्थात उत्पन्न करने वाली। अंकुर का अर्थ प्रथम सोपान या अवस्था है। चूँकि अंकुर से ही पौधा बनता है इसलिए अंकुर का प्रयोग कारण अर्थ में भी होता है। मानसिक भाव अर्थात मानसिक विचार, काम, क्रोध, करुणा आदि मनोभाव।

161. **भावकला/भाग्यकला** – सारे पदार्थों में स्थित शक्ति स्वरूपा। भाव का अर्थ है पदार्थ। कला का अर्थ है शक्ति जो उसका जीवन है। भावों के सर्वश्रेष्ठ स्वरूप को धारण करने वाली। भाग्य की अंश स्वरूपा। कला धीरे धीरे बढ़ती है अर्थात धीरे धीरे बढ़ने वाले भाग्य के रूप में। भाग्य रूप में वृद्धि को प्राप्त कला बढ़ती है। (भाग्यकला अर्थात भाग्य के लिए प्रकाश स्वरूपा अर्थात भाग्य को चमकाने वाली या बढ़ाने वाली। कला अर्थात जो प्रकाशित करे अर्थात प्रकाश। भाग्य की इकाई स्वरूपा।)

162. **भावस्थाननिवासिनी** – भावस्थान अर्थात ह्रदय में निवास करने वाली।

163. **भावातुरा** – भक्ति भाव के लिए आतुर रहने वाली। आतुर का अर्थ है उतावला, अधीर, विकल, बेचैन।

164. **भावधृता** – भावों को धारण किया है जिन्होंने। भक्तों का कल्याण हो, धर्म का साम्राज्य हो, लोक का कल्याण हो ऐसे भावों को धारण किये रहती हैं।

165. **भावमध्यव्यवस्थिता** – भावों के मध्य निश्चित रूप से निवास करने वाली।

166. **भावऋद्धिः** – पदार्थों की वृद्धि स्वरूपा। लक्षणा से अर्थ हुआ पदार्थों की वृद्धि करने वाली। मन में उठने वाले सद्भावों की वृद्धि स्वरूपा। लक्षणा से या तात्पर्य से अर्थ हुआ सद्भाव को बढ़ाने वाली। भावों के द्वारा ऋद्धि को प्रदान करने वाली। ऋद्धि का अर्थ है लौकिक सम्पत्ति, बढ़ती, समृद्धि।

167. **भावसिद्धिः** – भावों के द्वारा सिद्धि या सफलता प्रदान करने वाली। भाव का अर्थ विचार भी होता है कहते हैं कि विचार ही पदार्थ और घटना बन जाते हैं यदि उसे बार बार कई दिनों तक सोचते रहे।

168. **भावादि** – भावों की उत्पत्ति का मूल कारण। आदि अर्थात मूल कारण। भावों की आदि स्वरूपा। भाव यहीं से शुरु होते हैं, भावों का प्रथम सोपान। भाव अर्थात भक्ति, श्रद्धा, विश्वास।

169. **भावभाविनी** – भावों के द्वारा जिनकी भावना की जाती है अर्थात ह्रदय में ध्यान किया जाता या ह्रदय में रखा जाता है।

170. **भावालया** – भाव है आलय या निवास स्थान जिनका। भक्ति, श्रद्धा जैसे श्रेष्ठ भावों में निवास करने वाली।

171. **भावपरा** – पदार्थमात्र में अर्थात सभी पदार्थों में रहने वाली। पृ पूरणे धातु से भी परा बन सकता है। इस प्रकार अर्थ होगा पदार्थों को पूरा करने वाली। भावों में संलग्न रहने वाली।

172. **भावसाधनतत्परा** – विचार बनाने में लगी हुई। पदार्थ बनाने में लगी हुई। भाव रूपी साधन में तत्पर रहने वाली। भक्तिभाव रूपी साधन करने वाले लोगों की भावना ग्रहण करने में हमेशा तैयार रहने वाली।

173. **भावेश्वरी** – भावों की ईश्वरी अर्थात भावों को पैदा करने वाली। करूणा, भावुकतामय (romantic) प्रेम, विषाद, वीरता, श्रृंगार, रति, शोक, हास, दुख, वैराग्य, भय, सुख, शान्ति आदि भावों को पैदा करने वाली।

174. **भावगम्या** – प्रेम के द्वारा प्राप्त की जाने योग्य। केवल प्रेम या भक्ति नहीं अन्य भावों से भी यहाँ तक कि घृणा, क्रोध आदि भावों से भी प्राप्त की जाने योग्य। रावण भगवान राम से शत्रुता रखता था पर इसी शत्रुता भाव के चलते वह भगवान राम को याद करता था जिससे उसे मुक्ति मिली। शिशुपाल भगवान कृष्ण से घृणा करता था, इस घृणा के कारण वह कृष्ण को याद भी करता था जिससे उसे मुक्ति मिली। श्रद्धा/भक्ति/स्नेह /प्रेम द्वारा प्राप्त करने योग्य या जानने योग्य। भावों के द्वारा जानने योग्य। भाव और भावना में सूक्ष्म अन्तर है पर

सामान्य तौर पर दोनों को एक माना जाता है। मूल रूप से छह भावनाऐं हैं – खुशी, दुख, आश्चर्य, घृणा, भय, जुगुप्सा। भावना भौतिक जीवन से सम्बन्धित संवेदनाये होती है और बाह्य मन की वृत्तियाँ हैं इन भावनाओं के कारण हम सुख दुख अनुभव करते हैं। सांसारिक भावना प्रधान व्यक्ति भौतिक अस्तित्व में फँस जाता है और ईश्वर से दूर हो जाता है जबकि शुद्ध भावना जैसे बिना अपेक्षा के प्रेम आदि से ईश्वर से जुड़ जाता है। भाव जब गहराई में घुस जाते हैं अर्थात जम जाते हैं तो वह भावना हो जाती है।

175. **भावस्था** – भावों मे निवास करने वाली अर्थात भक्ति भाव में निवास करने वाली। पदार्थों के जायते, अस्ति, वृद्धि, विपरिणाम (वृद्धि रुक जाना), ह्रास, मृत्यु आदि षड्भाव होते हैं। इन्हें तीन भावों में अर्थात प्रतिष्ठा (स्थिति), आगति (उत्पत्ति) एवं गति (संहार) भी दिखाया जाता है। इन भावों में रहने वाली।

176. **भावगर्विता** – जो भावों से गर्वित है अर्थात जिसमें भावों का गुरूत्व है अर्थात अच्छे या ऊँचे विचारों वाली। भाव से गर्वित अर्थात गरिष्ठ या गम्भीर स्वरूप धारण करने वाली।

177. **भाविनी** – भाव से युक्त अर्थात शिव के प्रति श्रृंगार चेष्टा से युक्त। भाविनी का एक अर्थ सुन्दर, शीलवान और पतिव्रता स्त्री भी होता है। सुन्दर स्वरूप वाली। सामान्यतः इसका अर्थ होता है भविष्य में होने वाली किन्तु जब भव्य से यह शब्द बनायेंगे तो अर्थ होगा सौन्दर्य से युक्त। होने वाली अर्थात अवश्यम्भावी। भविष्य में होने वाली घटना स्वरूपिणी। भाव से युक्त या भावों की भावना करने वाली।

178. **भावरमणी** – भावों के द्वारा अतिशय सुन्दर स्वरूप वाली। भावों में रमण करने वाली अर्थात श्रद्धा, भक्ति, करूणा, प्रेम आदि श्रेष्ठ भावों में विराजमान रहने वाली।

179. **भारती** – सरस्वती स्वरूपा। ज्ञान में रत रहने वाली अर्थात लगी रहने वाली। भा का अर्थ है प्रकाश अर्थात ज्ञान। रती का अर्थ है लगी रहने वाली। रम् धातु से रत बनाने पर प्रसन्न या अच्छा अनुभव करने वाला भी अर्थ निकलता है। इस प्रकार भारती का अर्थ हुआ प्रकाश से अर्थात ज्ञान से प्रसन्न होने वाली। जिन्हें ज्ञान अच्छा लगता है।

180. **भारतेश्वरी** – कान्तिमान लोगों अर्थात अच्छे लोगों की आराध्या। भा अर्थात कान्ति में रत अर्थात कान्तिमान। भा अर्थात प्रकाश अर्थात ज्ञान। ज्ञान में लगे हुए अर्थात ज्ञानी लोगों की आराध्या। भारत की ईश्वरी।

181. **भागीरथी** – गंगा स्वरूपा। राजा भगीरथ जिन्हें तपस्या के द्वारा लाये थे, वह भागीरथी कहलाई जाती हैं। गंगा जी को राजा भगीरथ द्वारा भगवान शंकर की जटाओं से तपस्या द्वारा लाया गया अतः उन्हें भागीरथी कहा गया।

182. **भाग्यवती** – भाग्य से युक्त। चाही हुई चीजों का घटित होना एक प्रकार का भाग्य है और देवी जो चाहती हैं वैसा होता है।

183. **भाग्योदयकरीकला** – भाग्योदय करने वाली शक्ति स्वरूपा। कला का एक अर्थ शक्ति होता है। (शाक्तप्रमोद ग्रन्थ में भाग्योदयकरीकला को एक नाम लिखा गया है, किसी अन्य ग्रन्थ में भाग्योदयकरी को एक नाम एवं भाग्योदय कला को दूसरा नाम लिखा गया है। तब (1) भाग्योदयकरी का अर्थ है भाग्योदय करने वाली एवं (2) भाग्योदयकला का अर्थ है भाग्योदय की कला अर्थात भाग्योदय को बढ़ाने वाली। कला धीरे धीरे बढ़ती है। भाग्योदय करने की प्रथम रेखा या सोपान। कला का अर्थ है अंश या प्रथम रेखा जो आगे वृद्धि को प्राप्त होता है। भाग्योदय की कला अर्थात भाग्योदय को विशिष्ट स्वरूप देने वाली, उसे सुन्दर बनाने वाली। भाग्योदय करने वाली शक्ति यह अर्थ भी कर सकते हैं क्योंकि कला का एक अर्थ शक्ति भी होता है।)

184. **भाग्याश्रया** – भाग्य है आश्रय जिनके। व्युत्पत्ति से भाग्य के आश्रय रहने वाली, यह अर्थ भी निकलता है पर देवी भाग्य से ऊपर हैं अतः पहला अर्थ ज्यादा ठीक है।

185. **भाग्यमयी** – भाग्य स्वरूपा। उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र का एक नाम भी भाग्य है, इस नक्षत्र के स्वरूप वाली। भाग्य से युक्त।

186. **भाग्या** – पारलौकिक भाग्य स्वरूपा। भाग्य स्वरूपा। दो बार भाग्य शब्द आया है। एक में लौकिक भाग्य अर्थ लिया और दूसरे में पारलौकिक भाग्य अर्थ लिया जिससे दोनों के अर्थों में अन्तर बना रहे।

187. **भाग्यफलप्रदा** – भाग्य के फल को प्रदान करने वाली।

188. **भाग्यचारा** – भाग्य को करने वाली अर्थात भाग्य को बढ़ाने वाली। यदि भाग्याचारा शब्द है तो अर्थ होगा– भाग्य को सम्पूर्ण रूप से करने वाली अर्थात भाग्य बढ़ाने वाली। आ+चरति। आ का अर्थ है समन्तात् अर्थात पूर्ण रूप से और चरति का अर्थ है करोति अर्थात करना। एकाक्षरी कोष में आ का अर्थ भाव (पदार्थ या सत्ता) बताया गया है, अतः आ का सम्पूर्ण अर्थ यदि नहीं लिखना चाहो तो भी ठीक है क्योंकि प्रत्येक चीज भाव है। भाग्य नामक पदार्थ को करने वाली अर्थात भाग्य को करने वाली। इसी कारण कई बार आ का अलग से कोई विशेष अर्थ देने की जरूरत नहीं पड़ती जैसे विश्वामित्र अर्थात विश्वमित्र। यदि भाग्यचारा नाम है तो अर्थ है– जो भाग्य में विचरण करती हैं अर्थात वहाँ रहती है।

189. **भाग्यसारा** – भाग्य की सार अर्थात देवी की प्राप्ति ही असली भाग्य है। भाग्य की शक्ति या बल स्वरूपा। सार का अर्थ है प्रमुख अंश या मुख्य भाग, काम का, असली, निष्कर्ष, असली तत्व, शक्ति, बल। जिनके मिलने पर अन्य कुछ भी प्राप्तव्य नहीं है। भाग्य के रूप में अन्य वस्तु मिलने पर वे नष्ट हो जाती हैं किन्तु देवी स्थाई रहती हैं अर्थात हमेशा उपासक के पास रहती हैं। सार का अर्थ है स्थिर अंश।

190. **भाग्यधारा** – भाग्य की प्रवाह स्वरूपा अर्थात जिस पर कृपा करती हैं उनका भाग्य धारा की तरह निरन्तर आगे बढ़ता रहता है। भाग्य की धारा स्वरूपा अर्थात निरन्तर बहने वाले भाग्य स्वरूपा। भाग्य की धारा स्वरूपा अर्थात बहाने वाली।

191. **भाग्यदा** – भाग्य को देने वाली। भक्तों के दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदलने वाली।

192. **भाग्येश्वरी** – भाग्य की ईश्वरी अर्थात भाग्य पर स्वामित्व रखने वाली अर्थात भाग्य इनके अधीन रहता है। भाग्य को इनके अनुसार चलना होगा। दुर्भाग्यशाली को भी सौभाग्यशाली बना सकती हैं।

193. **भाग्यनिधि** – भाग्य की निधि या खजाना। विविध या सब तरह के भाग्य से युक्त।

194. **भाग्या** – लौकिक भाग्य स्वरूपा। भाग्य स्वरूपा अर्थात साक्षात भाग्य। वह निश्चित और अटल दैवीय विधान जिसके अनुसार मनुष्य के सब कार्य पहले से ही नियत किये हुए माने जाते हैं और जिसका स्थान ललाट माना गया है। जिसका विभाजन किया जा सके वह भाग्य है अर्थात जो कई रूपों में प्रकट होती है।

194. **भाग्यसुमातृका** – भाग्य की अच्छी तरह से रक्षा करने वाली। मातृका अर्थात माता। माता का अर्थ है जो गर्भ में अपने शिशु की रक्षा करती है, माति गर्भे शिशुम् इति माता, अतः माता का अर्थ है रक्षा करने वाला। भाग्य के लिए सुन्दर माता का स्वरूप धारण करने वाली। मा माति धातु का सामान्यतः अर्थ माप करना, तुलना करना, निर्माण करना मिलता है। वैदिक निर्वचन कोष (श्री ज्ञान प्रकाश शास्त्री) में मातृ का अर्थ रक्षिका, पालिका किया गया है और उन्होंने देवमातृका का उदाहरण भी दिया है, जिसका अर्थ है प्रकृति रूपी देवी द्वारा रक्षित य पालित या पोषित भूमि। इससे स्पष्ट होता है कि माति का अर्थ रक्षा करना, पालन करना, पोषण करना भी होता है। धातुओं के अनेक अर्थ होते हैं, शब्दकोषों में उन अर्थों को दे दिया जाता है जो सामान्यतः प्रचलन में होते हैं। भाग्य की सुन्दर वर्णमाला स्वरूपा अर्थात लेख स्वरूपा। वर्णमाला से ही कोई लेख हो सकता है। तात्पर्य हुआ कि अच्छा भाग्य लिखने वाली। देवताओं के पास जो होता है, वह दूसरों को दे देते है। माता का अर्थ उत्पन्न

करने वाली या देने वाली भी होता है। अच्छे भाग्य के लिए सुन्दर (श्रेष्ठ या उदार) माता की तरह अर्थात अच्छा भाग्य देने वाली। भाग्य के आगे सु नही लगा है पर जब कोई चीज लिखी जाती है तो हम अर्थ की संगति के लिए प्रायः अच्छे सन्दर्भ में अर्थ लेते है। भाग्य देने वाली अर्थात अच्छा भाग्य देने वाली, ऐसा अर्थ करेगें।

195. **भाग्येक्षा** – भाग्य को देखने वाली अर्थात उस पर नजर रखने वाली। भाग्यम् ईक्ष्यते यया सा भाग्येक्षा। देवी को प्रत्येक व्यक्ति का भाग्य दिखाई देता है अर्थात उसके साथ क्या होने वाला है, पता रहता है।

196. **भाग्यना** – भाग्य की नाभि स्वरूपा अर्थात भाग्य का बीज या भाग्य जिससे पैदा होता है। नाभि अर्थात वहीं से सारी शक्ति मिलती है। नाभि अर्थात सन्तुलन अर्थात भाग्य को सन्तुलित रखने वाली। एकाक्षरी कोश में ना का अर्थ नाभि बताया गया है। भाग्यम् नयति इति भाग्यना अर्थात जो भाग्य की तरफ ले जाती है अर्थात जो भाग्य को प्राप्त कराती है। भाग्य का अर्थ है दैवात् सबकुछ प्राप्त होना। भाग्यम् अनिति अर्थात भाग्य का प्राणन करती, भाग्य को प्राणयुक्त करती है अर्थात भाग्य को बढ़ाती है या प्रयोग करने लायक बनाती है। भाग्य स्वरूपिणी। जैसे युच् प्रत्यय लगाने से रचना शब्द बनता है वैसे ही भाग्यना शब्द बना। आधिदैविक, आधिभौतिक और आधिदैहिक भाग्य स्वरूपा। भाग्य का एक अर्थ सम्पत्ति भी होता है अतः सम्पत्ति स्वरूपा। भज्यते अनया इति भाग्य अर्थात जिसके द्वारा सेवन किया जाए या जिसका सेवन होता है वह भाग्य है। सम्पत्ति का सेवन होता है अतः सम्पत्ति भाग्य है। भाग्य को लाने वाली। भाग्यम् नीयते या सा भाग्यना।

197. **भाग्यभाग्यदा** – भक्तों को भाग्य का भी भाग्य देने वाली अर्थात महाभाग्य देने वाली अर्थात बहुत श्रेष्ठ भाग्य देने वाली। भाग्य को भी भाग्य प्रदान करने वाली अर्थात भाग्यों की भी भाग्य।

198. **भाग्यमातृका** – भाग्यों की माता या जननी। उपासकों के लिए अच्छे भाग्य को पैदा करने वाली अर्थात उन्हें अच्छा भाग्य देने वाली।

199. **भाग्येक्षा** – भाग्य का विवेचन करने वाली या भाग्य पर विचार करने वाली। भाग्यरूपी आँखों वाली। भाग्य का निरीक्षण करने वाली। ईक्षण का अर्थ है दर्शन करना, विचार करना, विवेचन करना।

200. **भाग्यमनसा** – भाग्य ही है मन जिसका। ऐश्वर्य में मन लगता है जिसका। भाग्य के हृदय वाली। मन का अर्थ है हृदय। वामन आप्टे के संस्कृत हिन्दी शब्दकोष में मानसम् का अर्थ मन, हृदय किया है।

201. **भाग्यादि** – इसी से भाग्य शुरू होता है। भाग्य का प्रथम सोपान।

202. **भाग्यमध्यगा** – भाग्य के मध्य में विचरण करने वाली या विराजमान।

203. **भ्रातेश्वरी** – ज्यादा चमक वाली ईश्वरी। दीप्तिमती ईश्वरी। यहाँ भ्रात शब्द दिया गया है जिसका अर्थ है अधिक चमकने वाला। यदि भ्रातृ शब्द होता तो अर्थ भाई होता। यहाँ भ्रातृ+ईश्वरी नहीं है। भ्रातृ शब्द भ्रा दीप्तौ से बना है अर्थात जिसे देखकर बहन प्रसन्न होती है। यदि भ्रातृेश्वरी शब्द है तो अर्थ होगा भाइयों की तरह हित या कल्याण करने वालों की ईश्वरी। कल्याण करने वालों की ईश्वरी। (यदि भ्रात्रीश्वरी नाम है तो अर्थ है बन्धुत्व भाव रखने वालों की ईश्वरी। जो भ्राता भी है और ईश्वरी भी है। भ्राता/भ्रातृ का अर्थ है जो सहायक हो और हर मुसीबत में काम आये। ईश्वरी का अर्थ है जो सब कुछ करने में समर्थ हो। भ्राज् दीप्तौ धातु से शब्द बनाने पर अर्थ होगा दीप्तिमती ईश्वरी। भरण पोषण करने वालों की ईश्वरी)।

204. **भ्रातृवती** – भाइयों से युक्त या भाई वाली। शास्त्रों में जिस स्त्री का भाई होता है उसे अच्छा माना जाता है। (यदि भ्रातृमती नाम है तो भी अर्थ है – भाई वाली। भाई वाली कन्या या स्त्री शुभ या मंगलकारिणी होती है, अतः मंगलकारिणी। भरण पोषण के गुणों से युक्त, ये अर्थ होंगे)।

205. **भ्रात्र्यम्बा** – ऐसी अम्बा जो भाई की तरह शोभा युक्त/स्नेह करने वाली। भाति का अर्थ है शोभा युक्त

होना जिससे भातृ शब्द बना। भाई वह है जो अपने भाई बहनों से स्नेह करे प्यार करें। मनुष्य के सद्गुणों दीप्ति, यश कीर्ति की रक्षा करने वाली माँ। भातृ+अम्बा। भा का अर्थ है दीप्ति, सद्गुण, उज्जवलता या यशकीर्ति। (यदि भ्रात्रंबा नाम है तो अर्थ है बन्धुत्व भाव वाली माता। भरण पोषण करने वालों की माता)।

206. **भ्रातृपालिनी** – बड़े भाई के समान सभी का पालन करने वाली। जैसे बड़ा भाई अपने छोटे भाई बहनों का पालन करता है वैसे ही देवी भी पालन करती हैं। बन्धुत्व भाव रखने वालों का पालन करने वाली। जो व्यक्ति भाई के गुणों से युक्त है उनका पालन करने वाली। भरण पोषण करने वालों की पालनकर्त्री। यदि भ्रातपालिनी शब्द है तो अर्थ होगा–चमकने वालों की रक्षा करने वाली। ज्ञान/सद्गुणों/अच्छे आचरण से चमकने वालों की रक्षा करने वाली।

207. **भ्रातृस्था** – भाइयों की पारस्परिक प्रेम के मध्य में स्थित रहने वाली। बन्धुत्व भाव रखने वालों के भीतर स्थित। जो भाई के गुणों से युक्त हैं, उनमें स्थित। भरण पोषण करने वालों के हृदय में निवास करने वाली। यदि भ्रातस्था शब्द है तो अर्थ होगा – प्रकाशित होने वाली वस्तुओं में स्थित। प्रकाशित होने वाली वस्तुओं में दीप्ति के रूप में स्थित है।

208. **भ्रातृकुशला** – भाई की तरह व्यवहार करने में कुशल अर्थात अपने से जुड़े लोगों को प्यार या स्नेह करने में कुशल। भरण पोषण करने वालों के लिए दक्ष या चतुर।

209. **भ्रामरी** – निरन्तर भ्रमण करने वाली। भ्रमरों से युक्त देवी, जिसके चारों हाथों से भ्रमर निकल रहे हों और ये भ्रमर उसके शरीर से चिपके हुए की तरह दिख रहे हों ऐसी देवी भ्रामरी हैं जिन्होनें अरूणासुर का वध किया था। भ्रमर का रूप धारण कर अवतार लेने वाली जिसने अरूणासुर का वध किया था। भ्रामरी प्राणायाम स्वरूपा।

210. **भ्रमराम्बिका** – भ्रमण करने वाले लोगों की माता। भ्रमण करने वाले अर्थात साधु, सन्त, भक्त आदि। माता अर्थात पालन – पोषण, देखभाल करने वाली। ब्राह्मण भ्रमण करने से पूजित होता है।

211. **भिल्लरूपा** – भील अर्थात जंगलों में साधना करने वाली विशेष जाति के स्वरूप वाली। वनों में भ्रमण करने वाले भक्तों के स्वरूप को धारण करने वाली।

212. **भिल्लवती** – भीलों से युक्त अर्थात उपासित। उपासना करने वाला स्वयं उपास्य का रूप धारण कर लेता है। अभेद स्वरूप वाली अर्थात ब्रह्म स्वरूप वाली यह अर्थ भी निकलता है। भिद् + लुनाति/लाति, छेद या दोष को समाप्त करने वाली अर्थात भेद को समाप्त करने वाली अर्थात अभेद स्वरूपा अर्थात ब्रह्म स्वरूपा। भीलों की साधना के गुणों से युक्त।

213. **भिल्लस्था** – अभेद में स्थित। भिल्ल शब्द की व्युत्पित्त पूर्व नाम में बता दी गई है। साधना करने वाले भीलों के हृदय में रहने वाली।

214. **भिल्लपालिनी** – साधना करने वाले भीलों का पालन पोषण करने वाली।

215. **भिल्लमाता** – भील जनजाति के स्त्री पुरुषों को जन्म देने वाली। साधना करने वालें भीलों की माता अर्थात रक्षिका।

216. **भिल्लधात्री** – साधना करने वाले भीलों को धारण करने वाली अर्थात उनकी रक्षा, बढ़ाना और उनका पालन पोषण करने वाली। अभेद को धारण करने वाली। भीलों की रक्षा करने वाली। धात्री का अर्थ है उपमाता अर्थात रक्षा करने वाली।

217. **भिल्लनी** – दुष्टों को भेदने वाली। दैत्यों का वध करने के लिए भिल्ल रूप वाली अर्थात भील जनजाति की स्त्री जैसी होने वाली। भिल्ल जाति में उत्पन्न स्त्री जैसी। भिद् छेदने धातु से भिल्ल शब्द बना, पशुओं को

मारना, काटना जिनका धर्म है ऐसी जंगल में रहने वाली जाति। भिल्लनी स्वयं में पशुओं को मारने, छेदने का काम करती है। (यदि भिल्लिनी नाम है तो अर्थ है मारना, भेदन करना जिस भिल्ल का काम है उस भिल्ल की स्त्री। यहाँ आवश्यक नहीं कि वह स्वयं पशुओं को मारने का कार्य करे। पहले भिल्ली शब्द बनायेगे फिर भिल्लिनी बनेगा। महिला भील साधक के स्वरूप वाली)।

218. **भिल्लकेश्वरी** – भिल्ल भक्तों की ईश्वरी। ईश्वरी अर्थात आराध्या, स्वामिनी। भील जंगलों और पहाड़ों में रहने वाली एक जनजाति है।

219. **भिल्लकीर्ति** – भील साधक भक्तों द्वारा जिनकी कीर्ति की जाती है अर्थात कीर्तन या गुणगान किया जाता है।

220. **भिल्लकला** – ब्रह्म में दीप्त होने वाली। कला वह है जो दीप्त हो। भीलों की विशिष्ट कला स्वरूपा अर्थात सुन्दर स्वरूप वाली। भील का वह साधन जिसके द्वारा परमात्मा को प्राप्त हुआ जाता है, तत्स्वरूपा। भिल्ल अर्थात वह जंगली जाति जो जंगलों में साधना करती है। कला अर्थात वह साधन जिसके द्वारा साधक परमात्मा को शीघ्र प्राप्त कर लेता है अर्थात परमानन्द को प्राप्त कर लेता है।

221. **भिल्लमन्दरवासिनी** – मन्दर का अर्थ स्वर्ग भी होता है। भीलों के स्वर्ग समान घर में निवास करने वाली। सभी भीलों में मन्द गति से वास करने वाली अर्थात स्पष्ट रूप से नहीं दिखती इस रूप में वास करने वाली। (यदि भिल्लमन्दिरवासिनी नाम है तो अर्थ है – भीलों के मन्दिरों में निवास करने वाली)।

222. **भिल्लक्रीड़ा** – भीलों की तरह स्वेच्छा से अपना दैनन्दिन व्यवहार करने वाली। जंगलों में रहने वाली भील जाति में अनुशासन नहीं होता और स्वेच्छा से, जो मन में आये कार्य कलाप करते रहते हैं। भीलों की क्रीड़ा स्वरूपा। अपने मनोरंजन के लिए भीलों द्वारा किये जा रहे कार्यकलाप स्वरूपा जैसे ढ़ोल बजाना, नृत्य करना, शिकार करना जिनसे भक्तों का मनोरंजन होता हो।

223. **भिल्ललीला** – भीलों के समान श्रृंगारिक चेष्टा, मनोरंजन, सौन्दर्य करने वाली। क्रीड़ा और लीला दोनों से मनोरंजन या प्रसन्नता होती है। किन्तु लीला में दूसरे को प्रसन्नता देने का भाव अधिक रहता है, लीला में दूसरों के हित करने का भाव ज्यादा रहता है। लीला में अहम् भाव या अहम् कर्तृत्व नहीं होता है। श्रृंगारपरक चेष्टा और सौन्दर्य का सम्बन्ध लीला से है। लीला अर्थात बहुत सहजता अर्थात बाय हाथ का खेल अर्थात बेहद आसानी से। भीलों द्वारा दिखाई जाने वाली श्रृंगार चेष्टा स्वरूपा। लीला का एक अर्थ श्रृंगार चेष्टा भी है। भीलों के कार्य कलाप के रूप में जैसे भील पशुमारण का कर्म करते हैं वैसे ही यह युद्ध भूमि में दैत्यों को मारने का काम करती है। क्रीड़ा और लीला दोनों कार्य कलाप हैं पर क्रीड़ा में स्वयं के मनोरंजन का भाव अधिक है जबकि लीला में दूसरे के कल्याण का भाव अधिक है। लीला अर्थात बहुत सहज अर्थात बायें हाथ का खेल ऐसा कार्यकलाप। भीलों को बहुत ही सहज लगने वाले कार्यकलाप स्वरूपा ऐसा अर्थ कर सकते हैं। सारे संसार की अर्थात प्रकृति द्वारा किये जा रहे अभिनय स्वरूपा। भीलों की लीला स्वरूपा। भील जिनके चरित्र की लीला करते हैं अर्थात रंगमंच पर वैसी ही वेशभूषा पहन कर वैसा ही चरित्र दिखाने की कोशिश करते हैं। लीला में कार्यकारण सम्बन्ध नहीं होता पर यह सम्बन्ध क्रीड़ा में होता है। लीला अर्थात बहुत ही आसान तथा कोई बल न लगाना पड़े। संसार में जो घटनाएं कार्यकारण सम्बन्ध से पता हैं वे क्रीड़ाएं हैं, लीला नहीं। लीला में तो कारण केवल भगवान या पूर्ण पुरुष को पता होता है पर क्रीड़ा में सभी भागेदारियों को पता होता है। लीला भगवान के आनन्द की स्वाभाविक तरंग है। लीला केवल पूर्ण के द्वारा की जा सकती है।

224. **भिल्लार्च्या** – साधक भीलों द्वारा पूजा करने योग्य।

225. **भिल्लवल्लभा** – भिल्लसाधकों की प्रिया अर्थात भिल्ल साधक जिन्हें पसन्द करते हैं। वल्लभ अर्था त

अतिशय प्रिय।

226. **भिल्लस्नुषा** – भील की पुत्रवधू के समान व्यवहार करती हैं अर्थात कोई घूँघट आदि नहीं करती, लज्जा नहीं करती हैं। भील स्त्रियाँ पर्दा आदि नहीं करती हैं जबकि शहरों और नगर की स्त्रियाँ शिष्टता वश घूँघट आदि करती हैं। भीलों की पुत्रवधूस्वरूपा अर्थात उन्हें अत्यन्त प्रिय। पुत्रवधू प्रिय मानी जाती है। भिल्ल भक्तों की बहू या पुत्रवधू। ऐसी बहू या पुत्रवधू से अभेद है जिनका। भीलों की कामनाओं को पूरा करने वाली। स्नुषा का अर्थ कामनाओं को पूरी करने वाली भी ले सकते हैं। भील की पुत्रवधू में भी अंश रूप से विद्यमान।

227. **भिल्लपुत्री** – भिल्ल साधकों की पुत्री से अभेद है जिनका। स्त्री का हर रूप देवी स्वरूपा है। भिल्ल जाति की पुत्रियों में अंश रूप से विद्यमान। समस्त भील हैं पुत्र जिनके। भिल्लाः पुत्राः सन्ति यस्याः सा भिल्लपुत्री। भील जाति के भक्तों की पीढ़ी को पुम् नामक नर्क से बचाने वाली अर्थात ऐसे नर्क के कष्टों से बचाने वाली।

228. **भिल्लनी** – भीलों को ले जाने वाली अर्थात उन्हें सन्मार्ग देने वाली या उनका मार्गदर्शन करने वाली। नी धातु में ड प्रत्यय लगान से न शब्द बनता है जिसका अर्थ है ले जाने वाला। भील रूप धारी शिव को लाने वाली अर्थात उन्हें उनके काम में लगाने वाली। भील रूप धारी शिव को लाने वाली अर्थात उन्हें पति रूप में लाने वाली। महिला भिल्ल स्वरूपा। प्रत्येक स्त्री देवी का स्वरूप है।

229. **भिल्लपोषिणी** – भील भक्तों का पालन पोषण करने वाली।

230. **भिल्लपौत्री** – भील भक्तों की पौत्री स्वरूपा। समस्त नारियाँ देवी का रूप मानी गई हैं, अतः पौत्री भी देवी स्वरूपा हुईं। भील भक्तों की पौत्री में भी अंश रूप से विद्यमान। एकाक्षरी कोष में औ का अर्थ पृथ्वी दिया गया है और पृथ्वी से पृथ्वी तत्व से बने मकान आदि का भी बोध होता है। भील भक्तों के मकान आदि सम्पत्तियों की रक्षा करने वाली। भिद् धातु से भिल्ल शब्द का अर्थ हुआ जो छेदन करे अर्थात दुष्टों का छेदन करने वाली। भील भक्तों की दो पीढ़ियों को पुम् नामक नर्क से बचाने वाली अर्थात इस नर्क की पीड़ा उन दो पीढ़ियों अर्थात कई पीढ़ियों पर नहीं पड़ता है। भील भी जिनके पौत्र हैं। ब्रह्मा जी को पितामह कह दिया जाता है, उसी प्रकार देवी को भी मातामह कहा जा सकता है।

231. **भिल्लगोष्ठी** – भील भक्तों की वाणी में स्थित। गो का एक अर्थ वाणी भी होता है। भील भक्तों की संगोष्ठी स्वरूपा।

232. **भिल्लाचारनिवासिनी** – भीलों के आचारों में निवास करने वाली। जंगलों और पहाड़ों में रहना, शिकार करना, संयुक्त परिवार में रहना, कृषि करना, पशुपालन करना, ढोल बजाना, बहुविवाह ये भीलों के आचार हैं और भगवान शिव को अपना आराध्य मानते हैं। शिव की आराधना भी भीलों का एक आचार है। भील जनजाति में भील युवक को विवाह योग्य तभी समझा जाता है जब वे आज्ञाकारी, कठोर, परिश्रमी, मितव्ययी, ऋणहीन हों। पत्नी की मृत्यु के बाद उसकी छोटी बहन से विवाह कर लिया जाता है तथा देवर भौजाई के विवाह का भी प्रचलन है। भील जनजाति अपने को महादेव अर्थात शिव की सन्तान मानते हैं। एक पैराणिक कथा के अनुसार महादेव जी जंगल में विचरण कर रहे थे और वहाँ उनकी भेंट एक स्त्री से हुई जिस पर महादेव जी मोहित हो गये और उससे विवाह कर लिया। उस स्त्री से अनेक सन्ताने हुई और उनमे से एक सन्तान अत्यन्त कुरूप और भ्रष्ट थी जिसने अपने पिता के बैल का वध कर दिया। इस अपराध के दण्ड स्वरूप वह घर से निकाल दिया गया तथा जंगलों और पर्वतों में भटकता रहा उसी के वंशज भील कहलाते हैं।

233. **भिल्लपूज्या** – भील भक्तों द्वारा पूजनीय।

234. **भिल्लवाणी** – सिद्ध भील भक्तों की वाणी स्वरूपा।

235. **भिल्लानी** – भीलों को जीवित रखती है या भीलों की प्राण स्वरूपा। अनति का अर्थ है जीवित रखना। आनयति अर्थात जीवयति अर्थात जीवित रखना। टेढ़ीगढ़वाल में स्थित भिल्लांगना नदी स्वरूपा। भीलों की स्त्री स्वरूपा। सिद्ध भील स्त्रियों के दिव्य स्वरूप वाली।

236. **भिल्लभीतिहा** – भील भक्तों के भय को नष्ट कर देने वाली।

237. **भीतस्था** – डरे हुए दैत्यों, असुरों में भय के रूप में स्थित। कोई भी व्यक्ति जो डरा हो उसमें भय के रूप में स्थित। भयभीत होने वाले भक्तों के अन्तःकरण में रहने वाली।

238. **भीतजननी** – जो भय से युक्त है, अर्थात सभी प्राणियों को जन्म देने वाली। सभी प्रणियों में भय पाया जाता है अतः भयभीत का अर्थ सभी प्राणी हो सकता है। अपने कर्तव्य मार्ग से हटने वाले भयभीत भक्तों की माता। अधार्मिकों को, दुष्टों को भययुक्त करने वाली। पाप की सजा मिलेगी ऐसा जानकर अधर्मी भययुक्त हो जाते हैं। भीत का शाब्दिक अर्थ है डरा हुआ पर क्त प्रत्यय कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र से दूसरे अर्थ भी देता हैं अर्थात यह अर्थ भी होता है कि दुष्टों में भी भय उत्पन्न करने वाली। जननी अर्थात माता अर्थात रक्षा करने वाली। दुष्टों से जो भयभीत हैं, उनकी रक्षा करने वाली। भय पैदा करने वाली (दुर्जनों के लिए)।

239. **भीतिः** – दैत्यों के लिए भयस्वरूपा। जो दैत्यों एवं कुमार्गगामियों में भय के रूप में स्थित होती है। भय स्वरूपा। अनुचित मार्ग पर चलने वाले भक्तों के लिए भय दिखलाने वाली। संस्कृत में भीरू शब्द का इस्तेमाल स्त्री के लिए किया जाता है क्योंकि वे गलत काम करने से डरती हैं। (यदि भीती नाम है तो अर्थ है तो अर्थ होगा डरी हुई की स्त्री। पहले भीत शब्द बनायेगे जिसका अर्थ है डरा हुआ। भीती का अर्थ है डरे हुए की स्त्री। डरे हुए की स्त्री का नाटक करने वाली क्योंकि देवी तो भय के ऊपर हैं। हर रूप में देवी हैं चाहे भयदायक रूप हो या भयभीत होने वाला रूप हो। एकाक्षरी कोष में ती का अर्थ नदी या समुद्र दिया गया है। इस प्रकार भीती का अर्थ हुआ दुष्टों के लिए भय की नदी या भय का समुद्रस्वरूपा अर्थात दुष्टों को बहुत अधिक भय देने वाली।)।

240. **भीतिविनाशिनी** – भक्तों के भय को पूर्ण रूप से अदृश्य कर देने वाली। नश् अदर्शने धातु होती है अर्थात अब वह भय देखने में नहीं आयेगा और उसका एहसास नहीं होगा। अपने भक्तों की सांसारिक भीतियों अर्थात भयों को नष्ट कर देने वाली।

241. **भीतिदा** – दुष्टों/राक्षसों को भय प्रदान करने वाली।

242. **भीतिहा** – भक्तों के भय को नष्ट/दूर कर देने वाली। हन् धातु से हा बनाने पर मारना या नष्ट करना अर्थ होगा। ओहाक् त्यागे धातु से हा शब्दाक्षर बनाने पर हा का अर्थ होगा – त्यागने वाली या दूर करने वाली। भय की ओर जाने वाली अर्थात भयदायक स्थानों या राक्षसों को उनके संहार के लिये जाने वाली।

243. **भीत्या** – भीति या भय स्वरूपा। अभक्तों के लिए भय स्वरूपा। जैसे हति और हत्या एक है, हति शब्द प्रयोग में नहीं आ रहा है पर उसका अर्थ भी हत्या है, उसी प्रकार भीति (भय) ही भीत्या है। भीति + आ, आ का अर्थ है देना, नाश करना। देना अर्थ लें तो भीत्या का अर्थ होगा कुमार्गगामियों को भय देने वाली। यदि आ का अर्थ उदात्त मानें तो भीत्या का अर्थ होगा उदात्त भय स्वरूपा अर्थात बहुत अधिक तीव्रता वाले भय स्वरूपा।

244. **भीत्याकारविहारिणी** – भय की आकृति धारण कर घूमती रहती हैं अर्थात कोई अधर्मी दुष्ट दिखे तो उस पर चिपक जाने वाली जिससे उन्हें दण्ड दिया जा सके। भय की आकृति में विहार करने वाली अर्थात विराजमान रहने वाली अर्थात दैत्यों को भयानक दिखने वाली। दुष्ट दैत्यों/अभक्तों के लिए भीति या भय के आकार को धारण कर विचरण करने वाली।

245. **भीतेशी** – भय युक्त लोगों के द्वारा आराधनीया। ईश अर्थात जिसकी आराधना की जाती है। भय निवारण के लिए लोग जिनकी आराधना करते हैं। दुष्टों से डरे हुए हैं जो, उनकी उपासनीया। भय को नष्ट कर देने वाली ईश्वरी। डरे हुए व्यक्ति को प्रेरित करने वाली अर्थात बताने वाली कि वे क्या करें। ईष्टे का एक अर्थ प्रेरित करना भी है।

246. **भीतिशमनी** – भय को शान्त कर देने वाली।

247. **भीतस्थाननिवासिनी** – भयदायक या भययुक्त स्थान अर्थात श्मशान में निवास करने वाली। भय के निवारण हेतु भयों के स्थान पर निवास करने वाली।

248. **भीतिरीत्या** – दुष्टों के लिए भय की एक श्रेष्ठ धारा अर्थात चली आ रही श्रेष्ठ धारा स्वरूपा अर्थात दुष्टों को भय देने वाली। रीति का अर्थ है परम्परा, शैली, धारा। भय की लक्षण स्वरूपा अर्थात इन्हें देखते ही दैत्य भयभीत हो जाते हैं। जैसे हत्या शब्द होता है ऐसे ही रीत्या शब्द भी बनता है। भीति की रीति के स्वरूप वाली अर्थात भक्तों के भय की रीति धारण करने वाली अर्थात निवारण करने वाली। रीति + आ इति रीत्या, एकाक्षरी कोष में आ का अर्थ है उदात्त (श्रेष्ठ), अतः रीत्या का अर्थ हुआ श्रेष्ठ रीति।

249. **भीतिकला** – भय की शक्ति को नष्ट करने वाली। कला + आ, कला का अर्थ शक्ति एवं आ का अर्थ हे नाश करना। भय की अंश स्वरूपा। भय का प्रथम सोपान स्वरूपा अर्थात यहीं से भय शुरू होता है। भीति (अर्थात भय) निवारण की अद्‌भुत कला अर्थात शक्ति स्वरूपा। कला अर्था अंश। भय के जितने भी अंश हैं उनके स्वरूप वाली।

250. **भीतीक्षा** – जिसको दानव भय से देखते हैं। भीत्या ईक्ष्यते इति भीतीक्षा। जो भक्तों के भयों को देखती है अर्थात भक्तों के भयों को देखकर उसे दूर करती है। भीति+ईक्षा। भय इनकी तरफ देखता है कि कहीं आ तो नहीं नहीं रही हैं। यदि आ रही हो तो भाग जाओ। भय के रूप में दिखने वाली। भय को देखने वाली अर्थात भयंकर भय को देखकर उसे निवारण करने वाली। (यदि भीतिक्षा नाम है तो अर्थ होगा भय को सहन करने वाली, भी+तिक्षा, भी का अर्थ है भय और तिक्षा का अर्थ है सहन करना, तिज निशाने धातु होती है जिसका अर्थ होता है तीक्ष्ण होना पर आत्मनेपदी में तितिक्षते का अर्थ होता है सहन करना। आपने तितिक्षा का नाम सुना होगा)।

251. **भीतिहारिणी** – भक्त के भय को हटा देने वाली अर्थात भक्त के भय को भक्त के पास से दूर ले गई हैं। अब वह भय भक्त के पास नहीं है। उपासकों के भय को दूर कर देने वाली।

252. **भीमेशी** – भीमा च ईशी च अर्थात जो स्वयं भयंकरता करने वाली हैं और जगत पर शासन या अनुशासन करने वाली हैं। भीम का अर्थ शिव भी होता है अर्थात शिव पर शासन करने वाली अर्थात शिव को कुछ करने का आदेश दे सकती हैं तथा शिव उसे मना नहीं कर सकते। भयंकर रूप को धारण करने वालों की ईश्वरी।

253. **भीमजननी** – शत्रुओं के लिए भयंकर रूप को प्रकट करने वाली। महाभारत के भीम को जन्म देने वाली माता कुन्ती स्वरूपा या कुन्ती से अभेद है जिनका।

254. **भीमा** – भीम अर्थात शिव की शक्ति। शिव का एक नाम भीम भी है। भयंकर स्वरूप वाली। अधिक बलवाली। विशाल आकार वाली। भीम शब्द अधिक बल एवं विशालता का भी प्रतीक है।

255. **भीमनिवासिनी** – शिव के साथ निवास करने वाली। कैलास में शिव रहते हैं और देवी भी रहती हैं। इस नाम का अर्थ बिना अर्द्धनारीश्वर रूप में भी कर सकते हैं और अर्द्धनारीश्वर रूप में भी कर सकते हैं। भयंकर स्थानों अर्थात दुर्गम स्थानों पर निवास करने वाली।

256. **भीमेश्वरी** – शिव की आराध्या। शिव के ऐश्वर्य की स्वामिनी। ईश्वरी का एक अर्थ ऐश्वर्य की स्वामिनी भी होता है। भयंकर दैत्यों पर भी शासन करने वाली अर्थात उनपर हुकुम चलाने वाली, आदेश देने वाली।

257. **भीमरता** – रता का अर्थ प्रसन्न भी होता है क्योंकि रम् धातु से भी रत बन सकता है। शिव से प्रसन्न या शिव द्वारा प्रसन्न की गई। भय में रमण करने वाली अर्थात रहने वाली। दुष्ट दैत्यों के लिए भयंकर रूप को धारण कर संलग्न रहने वाली। शिव में रत अर्थात लगी हुई अर्थात शिव के साथ हमेशा रहने वाली। अर्द्धनारीश्वर रूप में वे शिव के साथ हमेशा रहती हैं।

258. **भीमाङ्गी** – दुष्ट दैत्यों के लिए भयंकर अंगों को धारण करने वाली। भयंकर दाढ़, बड़े बड़े दाँत, लाल नेत्र आदि अंग दुष्टों को भयभीत करते हैं।

259. **भीमपालिनी** – शिव का पालन करने वाली अर्थात रक्षा करने वाली। पालन करना अर्थात पोषण करना अर्थात शिव के लिए खाने पीने की व्यवस्था करना। पालन करने में रक्षा करना अर्थ भी आ जाता है। शिव की रक्षा करने वाली। विष पीने के बाद भी भगवान शिव सुरक्षित रहे थे क्योंकि देवी ने उनकी रक्षा की थी। भय की रक्षा करने वाली। जिससे डर हो वह है भीम। भयंकर रूप को धारण कर दुष्ट दैत्यों का संहार कर संसार का पालन करने वाली अर्थात रक्षा करने वाली।

260. **भीमनादी** – भयंकर नाद करने वाले शंकर जी की पत्नी। भीमनाद अर्थात शंकर। भीमनादी अर्थात शंकर जी की पत्नी। दुष्ट दैत्यों राक्षसों के समक्ष युद्ध में भयंकर गर्जन करने वाली। (यदि भीमनादा शब्द है तो अर्थ है स्वयं भयंकर नाद करने वाली। यहाँ शंकर जी की पत्नी होना आवश्यक नहीं है।)

261. **भीमतन्त्री** – शिव के लिए वीणा स्वरूपा। जैसे वीणा गोद में रखी जाती है, वैसे ही देवी कभी कभी भगवान शिव की गोद में बैठती हैं। शिव के लिए वीणा की तरह गुणानुवाद करने वाली अर्थात शिव के गुणों का बखान करने वाली। भय की वीणा स्वरूपा अर्थात इनका घोष भयजनक है। भय की श्रेणी स्वरूपा। श्रेणी अर्थात एक के बाद दूसरा, दूसरे के बाद तीसरा। शत्रुओं के लिए भयंकर तन्त्र से युक्त अर्थात भयकारी तन्त्र विद्या को धारण करने वाली।

262. **भीमैश्वर्यविवर्धिनी** – शिव के ऐश्वर्य को बढ़ाने वाली। भीम का एक अर्थ शिव भी है। भगवान शिव के पास जो भी है, जिसके वे स्वामी हैं वह ऐश्वर्य है। नन्दी बैल, सर्प, सेवकगण, सन्तान आदि उनके पास जो कुछ भी है वह उनका ऐश्वर्य है। भक्तों के विशाल ऐश्वर्य को और अधिक बढ़ाने वाली। भीम शब्द विशालता का भी सूचक है। भयंकर रूप को धारण कर भक्तों के ऐश्वर्य को बढ़ाने वाली।

263. **भीमगोष्ठी** – भगवान शिव की वाणी में निवास करने वाली। भीम अर्थात शिव और गो अर्थात वाणी। कल्याणकारी अर्थात अच्छी वाणी में स्थित रहने वाली। भीम अर्थात शिव अर्थात कल्याणकारी। भयोत्पादक गोष्ठी स्वरूपा। भयंकर वाणी में रहने वाली। दुष्ट दैत्यों के वध के लिए भयदायक गोष्ठी का आयोजन करने वाली। (यदि भीमगोष्ठीनिवासिनी नाम है तो अर्थ होगा – भगवान शिव की वाणी में विराजमान रहने वाली। गो का अर्थ है वाणी, गोष्ठी का अर्थ है वाणी में विराजमान, निवासिनी का अर्थ है रहने वाली)।

264. **भीमधात्री** – दुष्ट दैत्यों के संहार के लिए भयंकर रूप धारण करने वाली। भगवान शिव का भरण – पोषण करने वाली।

265. **भीमविद्याविनोदिनी** – भगवान शिव की विद्याओं में विनोद करने वाली अर्थात उनसे अपना मनोरंजन करने वाली। उन्हें पढकर तथा सुनकर तथा चर्चा में उनका मन प्रसन्न होता है। चौदह या अठारह विद्याऐं कही गईं है और सभी विद्याओं के आदि जन्मदाता भगवान शिव हैं। अतिशय भयंकर दुष्ट दैत्यों के लिए अतिशय भयंकर तन्त्र विद्या में विनोद करने वाली।

266. **भीमविक्रमदात्री** – भगवान शिव को पराक्रम देने वाली। पराक्रम होने पर ही भगवान शिव त्रिपुरासुर को

परास्त कर पाए थे। अपने भक्तों को विशाल अर्थात बहुत अधिक विक्रम अर्थात पराक्रम प्रदान करने वाली। भीम बल और विशालता का प्रतीक है।

267. **भीमविक्रमवासिनी** – भगवान शिव में पराक्रम गुण के रूप में निवास करने वाली। भयंकर पराक्रम करने वाले या विशाल पराक्रम करने वाले भक्तों के हृदय में निवास करने वाली। भीम शब्द विशालता अर्थात बहुत अधिक का प्रतीक है।

268. **भीमानन्दकरीदेवी** – शिव या महाभारत के भीम को आनन्द प्रदान करने वाली देवी। उद्दाम अर्थात अत्यधिक आनन्द को देने वाली देवी। यहाँ भीम का अर्थ उद्दाम या अत्यधिक होगा। अपने भक्तों को अतिशय आनन्द प्रदान करने वाली। भीम का अर्थ भयंकर होता है किन्तु प्रसंग के अनुसार अतिशय अर्थ भी हो सकता है क्योंकि भीम विशालता का प्रतीक है। (शाक्तप्रमोद में भीमानन्दकरीदेवी नाम है किन्तु किसी अन्य किताब में भीमानन्दकरी को अलग नाम बनाया गया एवं भीमदेवी को अलग नाम बनाया गया। भीमदेवी का अर्थ है दुष्ट दैत्यों के लिए भयंकर रूप धारण करने वाली। महाभारत के भीम की इष्ट देवी)।

269. **भीमानन्दविहारिणी** – दुष्ट दैत्यों को भयभीत करने के लिए भयंकर रूप धारण कर आनन्दपूर्वक विचरण करने वाली।

270. **भीमोपदेशिनी नित्या** – कल्याणकारी अर्थात अच्छा उपदेश करने वाली या कठिन साधना का उपदेश करने वाली एवं हमेशा रहने वाली। भीम अर्थात शिव अर्थात कल्याणकारी। दुर्गा सप्तशती में आया है कि अन्तःप्रेरणा से सुरत अपने शरीर से माँस निकालकर हवन करने लगे थे। दुष्ट दैत्यों के लिए उनके विनाशकारक अतिशय भयंकर उपदेश को देने वाली। (शाक्तप्रमोद में भीमोपदेशिनी नित्या को एक नाम बताया गया है जबकि अन्य पुस्तक में भीमोपदेशिनी को एक नाम एवं भीमनित्या को अलग नाम बताया गया है। भीमनित्या – दुष्ट दैत्यों के लिए सदैव भयंकर रूप धारण करने वाली)।

271. **भीमभाग्यप्रदायिनी** – भगवान शिव को श्रेष्ठ भाग्य देने वाली। शिव को पार्वती जी मिलीं, यह शिव का सबसे बड़ा भाग्य है। कालकूट विष पीने के बाद भी शिव जीवित रहे यह भी उनका बहुत बड़ा भाग्य है। अधिक या अतुलित भाग्य देने वाली। भक्तों को श्रेष्ठ भाग्य प्रदान करने वाली। भीम का अर्थ भयंकर होता है किन्तु प्रसंग के अनुसार यहाँ पर श्रेष्ठ या अधिक अर्थ लिया गया है। भीम अर्थात अधिक बलवान या विशाल आकार वाला।

272. **भीमसिद्धि** – शिव में विराजमान सिद्धि स्वरूपा। कल्याणकारी सिद्धि स्वरूपा। भीम अर्थात शिव अर्थात कल्याणकारी। अतुलित या अचिन्त्य सिद्धि स्वरूपा या सिद्धि देने वाली। श्रेष्ठ सिद्धि स्वरूपा अर्थात श्रेष्ठ सिद्धि को प्रदान करने वाली।

273. **भीमऋद्धि** – शिव के अधिक मात्रा के सुखसाधन स्वरूपा। ऋद्धि का अर्थ है अधिक मात्रा में सुखसाधन का होना। श्रेष्ठ ऋद्धि अर्थात अतिशय ऋद्धि स्वरूपा या उसे प्रदान करने वाली। ऋद्धि का अर्थ है प्रचुर या अधिकाधिक धन धान्य, भौतिक सम्पत्तियाँ।

274. **भीमभक्तिविवर्धिनी** – शिव के प्रति भक्तों की भक्ति बढ़ाने वाली। श्रेष्ठ भक्ति को बढ़ाने वाली। भीम शब्द विशालता का प्रतीक है जो श्रेष्ठता अर्थ भी देता है।

275. **भीमस्था** – शिव में शक्ति रूप में स्थित। शिव के साथ स्थित अर्थात शिव के साथ अर्द्धनारीश्वर रूप में स्थित। अतिशय श्रेष्ठ स्थान में निवास करने वाली या अतिशय दुर्गम स्थान जहाँ कोई पहुँच नहीं पाता वहाँ निवास करने वाली।

276. **भीमवरदा** – शिव को वरदान देने वाली। कल्याणकारी अर्थात श्रेष्ठ वरों को प्रदान करने वाली। भीम अर्थात शिव अर्थात कल्याणकारी।

277. **भीमधर्मोपदेशिनी** – शैव धर्म का उपदेश देने वाली। विशाल अर्थात श्रेष्ठ धर्मों का उपदेश करने वाली। भीम विशालता का प्रतीक है।

278. **भीष्मेश्वरी** – शिव की भी आराध्या। शिव पर भी शासन करने वाली अर्थात शिव को आदेशित करने वाली और शिव उस आदेश का उल्लंघन नहीं कर सकते। महाभारत के भीष्म की भी आराध्या। अतिशय श्रेष्ठ ऐश्वर्य से सम्पन्न रहने वाली।

279. **भीष्मभृति** – अधिक या पर्याप्त भरण पोषण करने वाली। भृति का अर्थ है भरण – पोषण। भीष्म एवं भीम का एक ही अर्थ है। भीम का एक अर्थ विशालकाय अर्थात अधिक भी होता है। शिव का भरण – पोषण करने वाली अन्नपूर्णा स्वरूपा। भीष्म शिव का भी एक नाम है। भीष्म अर्थात शिव अर्थात कल्याणकारी। अतः अच्छी नौकरी या व्यवसाय दिलाने वाली। अच्छी नौकरी या वृत्ति रूपा। अच्छी नौकरी या वृत्ति दिलाने वाली। ऊँचे पद वाला, अधिक ताकत पाने के कारण भयजनक भी हो जाता है। भक्तों को श्रेष्ठ जीविका प्रदान करने वाली।

280. **भीष्मबोधप्रबोधिनी** – शिव सम्बन्धी ज्ञान को उद्बोधित करने वाली अर्थात प्रबोधित या जगाने वाली। अज्ञान हटाकर जगाने वाली अर्थात देने वाली। प्रबोधन का अर्थ है सोये हुए को उठाना अर्थात जो अज्ञान में सो रहा है उसे ज्ञान देकर जगाना। कल्याणकारी ज्ञान अर्थात श्रेष्ठ ज्ञान का उपदेश देने वाली।

281. **भीष्मश्री** – शिव की शोभा स्वरूपा। अति उत्कृष्ट लक्ष्मी स्वरूपा। यहाँ भीष्म का अर्थ अति उत्कृष्ट भी हो सकता है क्योंकि भीष्म अर्थात शिव अर्थात सबसे उत्कृष्ट। प्रचुर सम्पत्ति प्रदान करने वाली।

282. **भीष्मजननी** – भीष्म को पैदा करने वाली गंगा जी से अभेद है जिनका। कल्याणकारी गुणों की जननी। भीष्म का एक अर्थ शिव है और शिव का एक अर्थ है कल्याणकारी। श्रेष्ठ गुणों की जननी।

283. **भीष्मज्ञानोपदेशिनी** – शिव अर्थात कल्याणकारी ज्ञान का उपदेश करने वाली। उत्कृष्ट ज्ञान का उपदेश देने वाली। श्रेष्ठ ज्ञान का उपदेश देने वाली। महाभारत के भीष्म को ज्ञान का उपदेश देने वाली गंगा माता से अभेद है जिनका।

284. **भीष्मस्था** – शिव में शक्ति रूप से स्थित। गुणों की उत्कृष्ट अवस्था जैसे दया, वीरता आदि में निवास करने वाली। श्रेष्ठ स्थान या भयंकर दुर्गम स्थान पर निवास करने वाली।

285. **भीष्मतपसा** – शिव के लिए तप करने वाली। भीम अर्थात भीष्म अर्थात शिव। भीष्माय तपः अस्या अस्ति इति भीष्मतपस्। तपस्+अच्+टाप् इति तपसा। अतिशय कठोर तपस्या करने वाली।

286. **भीष्मेशी** – भयंकर दानवों पर शासन करने वाली अर्थात नियन्त्रित करने वाली। ईश का अर्थ शासन करने वाला, उत्पत्ति, पालन संहार करने वाला होता है। कल्याण/उत्कृष्ट गुणों से युक्त लोगों की ईश्वरी। भीष्म का अर्थ भयदायक के अलावा कल्याण या उत्कृष्टता ले सकते हैं क्योकि भीष्म अर्थात शिव अर्थात सबसे उत्कृष्ट अर्थात कल्याण है। अतिशय श्रेष्ठ गुणों से विभूषित।

287. **भीष्मतारिणी** – भयंकर या कठिन संसार सागर से पार कर देने वाली। शिव को जहर के प्रभाव से तार देने वाली। हलाहल विष पीने के बाद भी शिव देवी की कृपा के कारण सुरक्षित रहे थे।

288. **भीष्मलीला** – जिनके क्रियाकलाप या चरित्र भयंकर हैं। दूसरों के कल्याण के लिए जो क्रियाकलाप किये जाते हैं वे लीला हैं। क्रीड़ा में स्वयं आनन्द मिलता है जबकि लीला में दूसरों को कल्याण करने का भाव ज्यादा रहता है। लीला अर्थात बहुत सहज जिसे आमभाषा में कहते हैं बायें हाथ का खेल। राक्षसों को काटना, रक्त पीना आदि क्रियाकलाप भयंकर हैं। दैत्यों के लिए भयंकर लीला करने वाली। छिन्नमस्ता स्वरूप को धारण करना भयंकर लीला ही है। अतिभयंकर या अतिशय सुन्दर लीलाओं को करने वाली।

289. **भीष्मशीला** – भयंकर स्वभाव वाली। श्रेष्ठ गुणों से विभूषित या श्रेष्ठ आचार से विभूषित।

290. **भीष्मरोदिनिवासिनी** – भयंकर रूदन में निवास करने वाली। जब किसी की मृत्यु होती है तब जो रूदन होता है वह भयंकर होता है। कहने का तात्पर्य है कि देवी श्मशानवासिनी हैं। भयंकर रोदन में वास करने वाली। जहाँ कहीं विपत्ति आती है तो रोदन होता है यह रोदन भी देवी की अप्रसन्नता से होता है। इस रूदन में वास करने वाली। (यदि भीष्मारोधोनिवासिनी नाम है तो अर्थ होगा – भयकारी रूकावट में रहने वाली। बाँध आदि में जो रूकावट होती है वह भयंकर होती है अतः बाँध आदि में निवास करने वाली। भयंकर नदी के तटों पर निवास करने वाली। रोध का अर्थ है तट)।

291. **भीष्मश्रया** – शिव का आश्रय लिये हुए। भीष्म का एक अर्थ शिव भी है और शिव का अर्थ है कल्याण अर्थात अच्छाई। अच्छाई की उत्कृष्ट अवस्था में रहने वाली। अत्यन्त भय में भी रहने वाली। इन्हीं के भय के कारण सभी अपना अपना काम करते हैं। श्रेष्ठ भक्त हैं आश्रय जिनके। श्रेष्ठ भक्तों के यहाँ निवास करने वाली।

292. **भीष्मवरा** – भय पैदा करने वाली और श्रेष्ठ। भयदायक भूतगणों में श्रेष्ठ अर्थात सर्वाधिक भयदायक। शिवजी के भूतगण भयदायक ही हैं। भूत का अर्थ प्राणी मात्र या मृतात्मा भी है। श्रेष्ठ भय स्वरूपा। परलोक का भय श्रेष्ठ भय माना जाता है। भयदायक एवं श्रेष्ठ वरों को प्रदान करने वाली।

293. **भीष्महर्षविवर्धिनी** – शिव के आनन्द को बढ़ाने वाली। कल्याणकारी या श्रेष्ठ आनन्द को बढ़ा देने वाली। भीष्म अर्थात शिव अर्थात कल्याण।

294. **भुवना** – भुवन अर्थात चौदह लोक स्वरूपा। चौदह भुवन देवी के रूप हैं। देवी शक्ति या ऊर्जा स्वरूप हैं। प्रत्येक वस्तु या लोक ऊर्जा या शक्ति से बने होने के कारण देवी स्वरूपा हैं।

295. **भुवनेशानी** – चौदह भुवनों की स्वामिनी या उनपर शासन करने वाली अर्थात अपने आदेश और इच्छा से जगत को चलाने वाली। जगत की प्रत्येक घटना उनके अनुसार ही घटित होगी। ईशान अर्थात व्यापक स्तर पर क्षेत्र में शासन करने वाला, ईश अर्थात शासन करने वाला।

296. **भुवनानन्दकारिणी** – जगतानन्द को उत्पन्न करने वाली अर्थात सुपात्रो को देने वाली। आनन्द के कई प्रकार है और उनमें से एक है जगतानन्द। समस्त लोकों में रहने वाले भक्तों को आनन्द देने वाली।

297. **भुविस्था** – पृथ्वी पर स्थित रहने वाली।

298. **भुविरूपा** – पृथ्वी स्वरूपा।

299. **भुविभारनिवारिणी** – पृथ्वी के भार को दूर करने वाली।

300. **भुक्तिस्था** – विविध प्रकार के भोगों में स्थित रहने वाली।

301. **भुक्तिदा** – सुखजनक वस्तुओं को देने वाली। भोगों को प्रदान करने वाली। दुष्टों के भोगों को नष्ट करने वाली। यहाँ भुक्तिदा का शब्दाक्षर दा, दो अवखण्डने का है।

302. **भुक्ति** – उपभोग क्रिया स्वरूपा अर्थात इन्द्रियों से अनुभव की जाने वाली क्रिया स्वरूपा। आवश्यक नहीं है कि यह आँख से दिखे। भोजन क्रिया स्वरूपा। भुक्ति या भोग स्वरूपा। भुक्ति का अर्थ है विषयोपभोग, लौकिक सुख।

303. **भुक्तेशी** – जो भोग कर चुके हैं, उनपर अनुशासन करने वाली। जैसे पठितः का अर्थ है जिसने पढ़ लिया उसी प्रकार भुक्त का अर्थ है जिसने भोग कर लिया। कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र से कृत्य प्रत्यय सामन्यतः प्रयोग किए जाने वाले कारक एवं काल से भिन्न कारक एवं काल का अर्थ बता सकते हैं। जिन्होंने पहले अनुभव कर

लिया, आज भी अनुभव कर रहे हैं वे हैं भुक्तभोगी। शासन या अनुशासन का अर्थ हुआ उचित मार्ग पर रखने वाली, भटकने नहीं देती। ठीक रास्ते पर लगाती हैं। भोगों की ईश्वरी अर्थात भोगों को देने वाली।

304. **भुक्तिरूपिणी** – आँखों से दिखने वाली उपभोग क्रिया स्वरूपा। रूप वह है जो आँखों से दिखाई दे। भुक्ति और भुक्तिरूपिणी ये दोनों शब्द मोटेतौर पर एक ही अर्थ देते हैं पर थोड़ा अन्तर किया गया है। भोग का स्वरूप धारण करने वाली। भुक्ति का अर्थ है भोजन, आहार, ग्रहों का किसी राशि में एक एक अंश करके गमन या भोग। ब्रह्माण्ड की सीमा स्वरूपिणी।

305. **भुक्तेश्वरी** – जिन्होंने भोग कर लिया अर्थात अनुभव कर लिया उनकी आराध्या। भोगों को प्राप्त करने वाले लोगों की ईश्वरी।

306. **भुक्तिदात्री** – कर्म फल का भोग देने वाली। भोगों को देने वाली।

307. **भक्तिराकाररूपिणी** – ऐसी भक्ति जिसने आकार धारण किया है अर्थात शरीर धारिणी भक्ति स्वरूपा। (यदि भुक्तिः एवं भुक्त्याकाररूपिणी ये नाम अलग अलग होते जैसा कुछ किताबों में है तो इन दोनों नामों का अर्थ होता– (1) भुक्तिः – भोग स्वरूपा। (2) भुक्त्याकाररूपिणी – विभिन्न प्रकार के भोगों के स्थूल स्वरूप वाली।

308. **भुजङ्गस्था** – सर्प पर अर्थात शेषनाग पर विराजमान रहने वाली। भगवान विष्णु के साथ लक्ष्मी जी भी विराजमान रहती हैं, उन लक्ष्मी जी से अभेद है जिनका।

309. **भुजङ्गाकाररूपिणी** – कुण्डलिनी रूप में सर्पाकार आकृति धारण करने वाली। मूलाधारचक्र में कुण्डलिनी होती है, जो देवी का स्वरूप है। भुजंग के आकार के स्वरूप वाली अर्थात शत्रुओं के समक्ष कुटिल चाल चलने वाली।

310. **भुजङ्गी** – दैत्यों दुष्टों के लिए कालसर्पिणी है अर्थात उन्हें डसने वाली या मारने वाली है। भुजंगी स्वरूपा अर्थात स्त्री भुजंग स्वरूपा।

311. **भुजगावासा** – शेषनाग में निवास करने वाली। भगवान विष्णु का वास है शेषनाग पर। लक्ष्मी जी भी विष्णु जी की सेवा में शेषनाग में रहती हैं। लक्ष्मी जी से अभेद है जिनका। सर्पलोक में निवास करने वाली अर्थात पाताल लोक में निवास करने वाली।

312. **भुजङ्गानन्ददायिनी** – श्रेष्ठ सर्पों को आनन्द प्रदान करने वाली।

313. **भूतेशी** – प्राणियों पर शासन करने वाली। अपने बनाये हुए नियमों के अनुसार प्राणियों को चलाने वाली। यही अनुशासन या शासन का अर्थ है। ब्रह्माण्ड में वही होगा जो देवी चाहेंगी। प्राणियों की ईश्वरी। प्राणियों के शरीर के अन्दर रहते हुए सभी कार्य देवी ही करती हैं। मनुष्य निमित्त मात्र है।

314. **भूतजननी** – प्राणियों की माता अर्थात उन्हें जन्म देने वाली।

315. **भूतस्था** – प्राणियों में स्थित रहने वाली।

316. **भूतरूपिणी** – जो प्राणियों के स्वरूप में है। चतुर्विध प्राणी होते हैं, वे हैं – जरायुज, अण्डज, स्वेदज और उद्भिज्ज।

317. **भूतेश्वरी** – पंचमहाभूतों पर अनुशासन करने वाली या उन्हें नियन्त्रण करने वाली। कम, ज्यादा, कितना करना है, कितना मिलाना है, सृष्टि के लिए ये सब निर्धारित करती हैं। प्राणियों की आराध्या। प्राणियों की ईश्वरी।

318. **भूतलीला** – प्राणी मात्र से लीला कराने वाली अर्थात उन्हें सक्रिय या संचालित करती हैं। प्राणी जो लीला

या क्रीड़ा करते हैं वह सब शक्ति द्वारा ही होती है और शक्ति ही देवी हैं। प्राणियों के लिए विविध प्रकार की लीलाओं को करने वाली।

319. **भूतवेशकरी सदा** – प्राणियों के विविध वेशों को धारण करने वाली एवं हमेशा रहने वाली। सदैव प्राणियों के विविध वेशों को धारण करने वाली अर्थात विभिन्न प्रकार के प्राणी उनके वेश हैं क्योंकि देवी उनके भीतर स्थित आत्म स्वरूपा है।

320. **भूतदात्री** – सृष्टि निर्माण के लिए पंचमहाभूतों को देने वाली। मूल द्रव्य जिनसे सृष्टि बनती है को देने वाली अर्थात अस्तित्व में लाने वाली। कोई भी जड़ या चेतन पदार्थ, उसे अस्तित्व में लाने वाली। सत्य को देने वाली। कार्तिकेय को देने वाली। कृष्ण पक्ष को देने वाली। भूत का अर्थ है पंचमहाभूत, पदार्थ, सत्य, प्राणी, कार्तिकेय, कृष्ण पक्ष। उपासकों को सन्तान, सेवक, परिवारीजन, पशु पक्षी के रूप में प्राणी देने वाली। प्राणियों के लिए विविध भोगों को प्रदान करने वाली।

321. **भूतकेशी** – प्राणी मात्र है केश स्वरूप जिनका। जिस प्रकार केश अंग में होते हैं उसी प्रकार समस्त प्राणी देवी में उगे हुए हैं।

322. **भूतधात्रीमहेश्वरी** – प्राणियों को धारण करने वाली सर्वश्रेष्ठ आराध्या। (शाक्तप्रमोद में भूतधात्रीमहेश्वरी को एक नाम बताया गया है जबकि अन्य पुस्तक में भूतधात्री को अलग नाम एवं भूतमहेश्वरी को अलग नाम बाताया गया है। यदि दोनों नाम अलग हैं तब अर्थ है – (1) भूतधात्री – प्राणियों को धारण करने वाली। (2) भूतमहेश्वरी – प्राणियों की महेश्वरी अर्थात सर्वश्रेष्ठ आराध्या)।

323. **भूतरीत्या** – प्राणियों को रीति (परम्परा) देने वाली। रीति + आ, आ का अर्थ है देना। प्राणियों की श्रेष्ठ रीति या श्रेष्ठ परम्परा स्वरूपा। प्राणियों की परम्परा प्रवाह स्वरूपा। एक से दूसरा, दूसरे से तीसरा इस प्रकार प्राणियों का प्रवाह चलता रहता है और यह प्रवाह शक्ति ही है। प्राणियों के लिए विविध प्रकार की रीति रिवाज धारण करने वाली।

324. **भूतपत्नी** – प्राणियों को पालने वाली, रक्षा करने वाली। पालन करने में रक्षा करना अर्थ भी आ जाता है। पत्नी अर्थात रक्षा करने वाली, पालने वाली। उनके शरीर और मन के लिए आवश्यक खाद्य पदार्थो, पेय पदार्थों, वस्त्र, रहने की जगह देकर उनका पालन पोषण करने वाली।

325. **भूतलोकनिवासिनी** – प्राणियों के लोक में निवास करने वाली। प्राणी केवल पृथ्वी में ही नहीं रहते बल्कि अन्य लोकों में भी रहते हैं। प्राणी लोक में निवास करने वाली। प्राणियों के लोक में निवास करने वाली।

326. **भूतसिद्धि** – प्राणियों की अपने कार्य में सफलता स्वरूपा अर्थात लक्षणा से अर्थ निकलता है कि प्राणियों को अपने कार्य में सफलता देने वाली। प्राणियों को सिद्धि अर्थात सफलता देने वाली। भूतसिद्धिः यस्या सकाशात् सा भूतसिद्धिः। जिसकी समीपता से भूतसिद्धि होती है अर्थात भूतसिद्धि करने वाली अर्थात प्राणियों को सफलता देने वाली।

327. **भूतऋद्धि** – प्राणियों की वृद्धि स्वरूपा। अधिक मात्रा में सुख साधनों का होना ऋद्धि है। जब घर में बहुत कुछ आ जाए अन्न, धन की वृद्धि हो जाए तो कहते हैं कि ऋद्धि आ गई। प्राणियों को ऋद्धि अर्थात भौतिक सम्पन्नता देने वाली। भूतऋद्धिः यस्या सकाशात् सा भूतऋद्धिः।

328. **भूतानन्दनिवासिनी** – प्राणियों के आनन्द स्थान में निवास करने वाली।आनन्द स्थान का अर्थ है हृदय या आनन्दमय कोश।

329. **भूतकीर्ति** – प्राणियों के लिए कीर्ति स्वरूपा अर्थात कीर्ति देने वाली।

330. **भूतलक्ष्मी** – प्राणियों के लिए लक्ष्मी स्वरूपा अर्थात धन, सम्पदा, शोभा स्वरूपा या इन्हें देने वाली। प्राणियों में रहने वाली शोभास्वरूपा। लक्ष्मी का एक अर्थ है शोभा। प्राणियों की लक्ष्य स्वरूपा। लक्ष्मी अर्थात लक्ष्य स्वरूपा।

331. **भूतभाग्यविवर्धिनी** – प्राणियों के भाग्य को बढ़ाने वाली।

332. **भूतार्च्या** – प्राणियों के द्वारा पूजन के योग्य। अर्चना का तात्पर्य है कि भौतिक पदार्थों को किसी विग्रह में चढ़ाना और स्तुति करना। पूजा में तो पदार्थ कम होने से काम चल जाता है पर अर्चना में शास्त्र में जितने पदार्थों का विधान है उतने सभी पदार्थ होना चाहिए।

333. **भूतरमणी** – प्राणियों के अन्दर रमण करने वाली अर्थात विचरण करने वाली, विराजमान रहने वाली।

334. **भूतविद्याविनोदिनी** – भूतविद्या से विनोद करने वाली, अपना मनोरंजन करने वाली। भूत प्रेतों को हटाने या दूर करने की विद्या भूत विद्या है, जिसका अनुष्ठान कुछ प्राणी करते हैं। इस क्रिया को देखकर देवी आनन्दित होती हैं। प्राणियों को अपनी श्रेष्ठ विद्या द्वारा आनन्द देने वाली।

335. **भूतपौत्री** – प्राणियों की पौत्री स्वरूपा। हर रिश्ता शक्ति या देवी ही है। वेदों में प्रार्थना की गई है कि हमें इतनी आयु दो कि हम पुत्र की सन्तान देख सकें। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ कि प्राणियों के पुत्रों/पुत्रियों को सन्तान देने वाली। भूतपौत्री यस्याः सकाशात् सा भूतपौत्री। प्राणियों को पवित्र करने वाली। जो उनकी उपासना करते उन्हें पवित्र कर देती हैं। प्राणियों की पौत्री स्वरूपा। सभी स्त्रियाँ देवी का रूप मानी गई हैं। प्राणियों की पौत्री में अंश रूप में विद्यमान।

336. **भूतपुत्री** – प्राणियों की पुत्री स्वरूपा। पुत्री भी देवी का रूप है क्योंकि सभी कन्याऐं एवं स्त्रियाँ देवी का रूप मानी गई हैं। प्राणियों की पुत्री में अंश रूप में विद्यमान। देवी सर्वव्यापक हैं।

337. **भूतभार्याविधेश्वरी** – प्राणियों में पत्नियों के प्रकारों की स्वामिनी अर्थात जितनी भी प्रकार की पत्नियाँ होती हैं उनकी स्वामिनी। विधा का अर्थ है प्रकार। प्राणियों का भरण पोषण करने वाली होकर नियम निर्माण करने में सक्षम। भार्या का अर्थ है भरण पोषण करने वाली एवं ईश्वरी का अर्थ है सक्षम। (अन्य पुस्तकों में भूतभार्या को अलग नाम एवं भूतविधीश्वरी को अलग नाम बताया गया है। (1) भूतभार्या– प्राणियों में भार्या का रूप भी वही हैं। हर रिश्ता देवी है। प्रत्येक स्त्री देवी का रूप है। प्राणियों की भार्या स्वरूपा अर्थात उनकी शक्ति स्वरूपा। भार्या का अर्थ भरण पोषण करने वाली भी है अतः भूतभार्या का अर्थ होगा प्राणियों का भरण पोषण करने वाली। यदि भूतभार्याविघ्नेश्वरी शब्द है तो अर्थ होगा कि वह प्राणियों की ऐसी भार्या है जो विघ्नों को दूर करें। (2) भूतविधीश्वरी– प्राणियों के लिए विधि अर्थात नियम निर्माण करने में सक्षम। ईश्वरी का अर्थ है सक्षम या समर्थ रहने वाली।

338. **भूपस्था** – राजा में निवास करने वाली। (यदि भूतस्था नाम है तब अर्थ है – प्राणियों में विराजमान रहने वाली अर्थात आत्मा स्वरूपा)।

339. **भूपरमणी** – राजा के साथ रमण करने वाली अर्थात प्रसन्नतापूर्वक विचरण करने वाली। (यदि भूतरमणी नाम है तो अर्थ है प्राणियों में रमण करने वाली अर्थात सुखपूर्वक स्थित या विराजमान रहने वाली)।

340. **भूपेशी** – राजाओं पर शासन करने वाली या राजाओं पर नियन्त्रण करने वाली। (यदि भूतेशी नाम है तो अर्थ है प्राणियों की ईश्वरी अर्थात उनके भीतर रहकर उनका संचालन करने वाली, मार्गदर्शन करने वाली)।

341. **भूपपालिनी** – राजाओं का पालन करने वाली अर्थात उनकी रक्षा करने वाली। (यदि भूतपालिनी नाम है तो अर्थ है प्राणियों का पालन पोषण करने वाली)।

342. **भूपमाता** – राजाओं की माता अर्थात श्रेष्ठ राजाओं को उत्पन्न करने वाली। राजाओं की रक्षा करने वाली।

माति इति माता। माति का एक अर्थ रक्षा करना भी है।

343. **भूपनिभा** – राजाओं के समान तेज वाली। निभ का अर्थ है प्रकाश, चमक, तुल्य या समान।

344. **भूपैश्वर्यप्रदायिनी** – राजाओं का ऐश्वर्य प्रदान करने वाली। ऐश्वर्य का अर्थ है शक्ति और सम्पन्नता।

345. **भूपचेष्टा** – राजाओं की चेष्टा स्वरूपा। यहाँ चेष्टा का अर्थ परिश्रम, उद्योग या इच्छा, कामना। सामान्यतः अंगों की वह गति या अवस्था जिससे मन का भाव या विचार प्रकट हो, चेष्टा कहलाती है।

346. **भूपनेष्ठा** – पृथ्वी पर की जाने वाली स्तुति में स्थित। भू+पने+ष्ठा। पन स्तुति धातु होती है। पृथ्वी पर स्तुति या पूजा के लिए इष्ट हैं जो। भूपन+ष्ठा। राजा का कर्म या राजकर्म या राजधर्म में स्थित। भूपन नाम धातु से भी यह शब्द बन सकता है। भूपनम् का अर्थ होगा राजकर्म अर्थात राजधर्म। (यदि भूपनिष्ठा नाम होता तो अर्थ है – राजाओं में रहने वाली निष्ठा स्वरूपा)।

347. **भूपभावविवर्धिनी** – राजा के भाव (क्रिया) को बढ़ाने वाली। मैं राजा बनूँ अर्थात औरों से श्रेष्ठ हो जाऊँ, इस प्रकार की भावना को बढ़ाने वाली। राजाओं के विविध प्रकार के भावों को बढ़ाने वाली। भाव का अर्थ विभूति, पदार्थ भी होता है अर्थात राजा की विभूति या पदार्थों को बढ़ाने वाली। भाव का अर्थ संसार या जगत भी होता है। अतः राजा के संसार को बढ़ाने वाली।

348. **भूपभगिनी** – राजाओं की बहन स्वरूपा अर्थात रक्षा बन्धन करती है अर्थात राजा की रक्षा करती है। (यदि भूपस्वसा नाम होता तब भी यही अर्थ होता अर्थात राजभगिनी स्वरूपा अर्थात राजाओं की बहन स्वरूपा अर्थात रक्षा बंधन करती हैं अर्थात राजा की रक्षा करती हैं। राजाओं की भगिनी या बहन स्वरूपा)।

349. **भूपभूरी** – राजाओं से भी अधिक अर्थात राजाओं से भी बढ़कर। शक्ति और गुणों में राजाओं से भी बढ़कर है। राजाओं से भी अधिक अर्थात बड़ी। राजाओं में जो आधिक्य है वह देवी ही हैं। पृथ्वी का पालन करने के कारण राजा को भूप कहते हैं। राजाओं को प्रचुर ऐश्वर्य देने वाली।

350. **भूपपौत्री तथा वधूः** – राजा की पौत्री एवं वधू स्वरूपा। पौत्री और वधू तो उपलक्षण मात्र हैं जो समस्त राजवंश की स्त्रियों को द्योतित करती हैं। राजवंश की स्त्रियों के स्वरूप वाली। राजाओं के पौत्री स्वरूपा एवं वधू स्वरूपा। (यदि भूपपौत्री अलग नाम होता एवं भूपवधू अलग नाम होता जैसा कुछ किताबों में है तो अर्थ होता – (1) भूपपौत्री – राजाओं की पौत्री स्वरूपा अर्थात उनमें विद्यमान। स्त्री का हर रूप देवी का रूप है। (2) भूपवधू – राजाओं की वधू स्वरूपा।

351. **भूपकीर्ति** – राजाओं की कीर्ति स्वरूपा। राजाओं को मिलने वाली कीर्ति देवी स्वरूपा ही हैं।

352. **भूपनीति** – राजाओं की नीति स्वरूपा। राजा और प्रजा की रक्षा के लिए निर्धारित व्यवस्था नीति है। राज्य की रक्षा के लिए ठहराई हुई विधि नीति है। लोक या समाज के कल्याण के लिए उचित ठहराया हुआ आचार व्यवहार नीति है।

353. **भूपभाग्यविवर्धिनी** – राजाओं के भाग्य को बढ़ाने वाली। प्रजा उनको चाहे, राज्य में धन धान्य की वृद्धि हो, शत्रुओं से आक्रमण का खतरा न हो, प्रजा खुश रहे, राजा का भरापूरा परिवार हो यह सब राजा के भाग्य की वृद्धि होती है।

354. **भूपक्रिया** – राजकर्म स्वरूपा। शासन करना, प्रजा पालन करना अर्थात प्रजा का भरण पोषण करना, राज्य को बाहरी आक्रमण एवं आन्तरिक उपद्रवों से बचाना, न्याय करना, प्रजा में पढ़ाई की व्यवस्था करना ये राजा के कर्म हैं। राजाओं की विविध क्रिया स्वरूपा।

355. **भूपक्रीड़ा** – राजाओं के ऐसे क्रियाकलाप जिनसे उनका मनोरंजन होता हो, तद्स्वरूपा। जैसे सामान्य

मनोविनोद के लिए उद्यान में घूमना, शिकार करने जाना, चौपड़ खेलना, नृत्य गायन करवाना यह राजा की क्रीड़ा हैं। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करना एवं प्रजा में संसाधन जुटाना भी किसी राजा के लिए क्रीड़ा हो सकती है। राजाओं के लिए क्रीड़ा स्वरूपा।

356. **भूपमन्दरवासिनी** – राजाओं के स्वर्ग अर्थात राजमहल में निवास करने वाली। मन्दर का अर्थ है स्वर्ग। (यदि भूपमन्दिरवासिनी नाम है तो अर्थ है – राजमहल में रहने वाली। राजाओं के मन्दिर या घरों में निवास करने वाली)।

357. **भूपार्च्या** – राजाओं के द्वारा अर्चनीय अर्थात पूजनीय।

358. **भूपसंराध्या** – राजाओं के द्वारा सम्यक् आराधना करने योग्य। सम्यक् आराधना अर्थात विधिवत अराधना।

359. **भूपभोगविवर्धिनी** – राजाओं के भोगों को बढ़ाने वाली। भोग का अर्थ है इन्द्रियों की सुखद अनुभूति या सुख देने वाले सांसारिक पदार्थ।

360. **भूपाश्रया** – समस्त राजाओं की आश्रय स्वरूपा अर्थात उन्हें आश्रय देने वाली।

361. **भूपकाला** – राजाओं के लिए काल स्वरूपा अर्थात आयु पूरी होने पर अपने तरीके से प्राण ले लेती हैं। (यदि भूपकला नाम है तो अर्थ है – राजाओं की विशिष्ट कला स्वरूपा। कला का अर्थ है सुन्दर स्वरूप, शोभा, शक्ति)।

362. **भूपकौतुकदण्डिनी** – राजाओं के द्वारा कौतुक के लिए जो दण्ड दिया जाता था उस दण्ड के स्वरूप वाली। राजा दो प्रकार से दण्ड देता था। एक तो सीधे दण्ड देता था और दूसरे सब लोगों के सामने दण्ड देता था। सब लोगों को दिखाकर दण्ड देता था जिससे लोगों का मनोरंजन हो। यह कौतुक दण्ड कहलाता था। राजा के लिए हर्ष प्रदान करने वाले दण्ड स्वरूपा। राजा अपराधियों को जब दण्डित करता है तो न्याय देने के कारण उसे प्रसन्नता होती है। राजा की यह प्रसन्नता देवी स्वरूप है। राजाओं के विविध प्रकार के कौतूहलों को बढ़ाने वाली।

363. **भूषणस्था** – सुन्दर आभूषणों में विराजमान रहने वाली।

364. **भूषणेशी** – श्रेष्ठ आभूषणों को प्रेरित कर उन्हें पात्रों तक भेजने वाली। ईष्टे प्रेरयति धातु होती है। श्रेष्ठ महापुरुषों की ईश्वरी। भूषण अर्थात आभूषण अर्थात श्रेष्ठ जन। यदि कोई व्यक्ति श्रेष्ठ निकलता है तो कह देते हैं कि यह परिवार या समाज का भूषण है।

365. **भूषा** – जो विश्व की शोभा बनाती है अर्थात विश्व को शोभा सम्पन्न करती है। भूष अलंकरणे धातु होती है। भूषा का अर्थ आभूषण भी होता है। भूषा अस्या अस्ति इति भूषा अर्थात जो आभूषण वाली हैं अर्थात जो आभूषण धारण किये हैं वह भूषा है। अलंकार की तरह या अलंकार स्वरूपा। अलंकार की तरह शोभा सम्पन्न या सुन्दर। आभूषण स्वरूपा। अलंकृत/सजाने की क्रिया स्वरूपा। कान्ति स्वरूपा।

366. **भूषणधारिणी** – विविध प्रकार के आभूषणों/गुणों को धारण करने वाली।

367. **भूषणाधारधर्मेशी** – सोना या चाँदी के आधार धर्म (चमक या शोभा) की ईश्वरी अर्थात आभूषणों को चमक या शोभा देने वाली। भूषण (श्रेष्ठ गुणों) की जो आधार है अर्थात धर्म है। उनकी ईश्वरी।

368. **भूषणाकाररूपिणी** – आभूषण की नाना आकृतियों से रूपित अर्थात सुशोभित। हर लोक, हर व्यक्ति को सुशोभित करने वाला। श्रेष्ठ गुणों के स्वरूप वाली।

369. **भूपताचारनिलया** – भूपत अर्थात राजा का भाव या कर्म। राजा सम्बन्धी आचार में रहने वाली। राजा के

आचार हैं अनुग्रह और निग्रह। श्रेष्ठ महापुरुषों के आचारों का आधार रहने वाली। राजा को भूपत एवं भूपति दोनों कहते हैं। पृथ्वी का ऐश्वर्य जिसके पास है अर्थात भूपत अर्थात राजा। पा रक्षणे से भूपति अर्थ बनेगा अर्थात पृथ्वी या राज्य की जो रक्षा करे वह भूपति है।

370. **भूपताचारभूषिता** – पार्थिव ऐश्वर्य से होने वाले आचार से अलंकृत अर्थात पार्थिव ऐश्वर्य से सजीधजी, आचार अर्थात बर्ताव। कहते हैं टका है तो टक टका। जिसके पास ऐश्वर्य होता है वह अच्छे घर में रहता है, अच्छे कपड़े पहनता है, आभूषण पहनता है यही उसका आचार है। पत का अर्थ है ऐश्वर्य। भूपत राजा को भी कहते है क्योकि उसके पास पृथ्वी का ऐश्वर्य होता है। राजाओं के श्रेष्ठ आचारों से विभूषित।

371. **भूपताचाररचना** – राजधर्म की रचना स्वरूपा या राजधर्म की रचना करने वाली। राजाओं के जो श्रेष्ठ आचार हैं, उन्हीं से जिनकी रचना हुई।

372. **भूपताचारमण्डिता** – राजाओं के श्रेष्ठ आचारों से सुशोभित या अभिमण्डित।

373. **भूपताचारधर्मेशी** – राजाओं के आचार अर्थात राजधर्म रूपी धर्म की ईश्वरी। ईश्वरी अर्थात राजधर्म को बनाने वाली, नियन्त्रण करने वाली यह देखने वाली कि राजधर्म का पालन हो रहा है या नहीं। यदि पालन हो रहा तो अनुग्रह करने वाली और यदि नहीं, तो दण्ड देने वाली। राजा का आचार अर्थात राजधर्म। राजधर्म अर्थात प्रजा का पालन करना, शत्रु के आक्रमण से राज्य की रक्षा करना, अनुग्रह एवं निग्रह करना, राज्य में हो रहे उपद्रव से निपटना आदि। महाभारत में राजधर्म पर विस्तृत चर्चा की गई है। राजाओं के श्रेष्ठ आचार हैं, उन आचारों के चरित वाली। चरित अर्थात जीवन। उन आचारों को जीवन में धारण करने वाली।

374. **भूपताचारकारिणी** – राजाओं से राजधर्म करवाने वाली। भूपताचार का अर्थ है राजधर्म। जनता की रक्षा करना, युद्ध में शत्रुओं को जवाब देना, राज्य में होने वाले उपद्रवों का सामना करना, अनुग्रह और निग्रह भी राजधर्म है। अनुग्रह अर्थात सज्जनों पर अनुकम्पा और निग्रह अर्थात दुष्टों को दण्ड देना।

375. **भूपताचारचरिता** – राजधर्म के व्यवहार वाली अर्थात जो राजधर्म करती हैं। अनुग्रह और निग्रह रूपी राजधर्म करने वाली। चरित अर्थात व्यवहार। राजधर्म अर्थात प्रजा का पालन, उनकी रक्षा आदि। सारा ब्रह्माण्ड उनका राज्य है।

376. **भूपताचारवर्जिता** – राजाओं के अनुचित आचारों से रहित। राजा को भूपत एवं भूपति दोनों कहते हैं। पृथ्वी का ऐश्वर्य जिसके पास है अर्थात भूपत अर्थात राजा। पा रक्षणे से भूपति अर्थ बनेगा अर्थात पृथ्वी या राज्य की जो रक्षा करे वह भूपति है।

377. **भूपताचारवृद्धिस्था** – राजाओं के श्रेष्ठ आचार से होने वाली समृद्धि में विराजमान रहने वाली।

378. **भूपताचारवृद्धिदा** – राजाओं के श्रेष्ठ आचारों को बढ़ाने वाली।

379. **भूपताचारकरणा** – राजधर्म की साधन स्वरूपा। राजाओं के श्रेष्ठ आचरण, उनको सिद्ध करने वाली अर्थात उनकी हेतु या कारण है।

380. **भूपताचारकर्मदा** – राजधर्म ही है कर्म, उसको देने वाली। राजधर्म रूपी कर्म को देने वाली। राजाओं के जो श्रेष्ठ आचार हैं, उन आचारों के अनुसार जो कर्म हैं, उन कर्मों के फलों को देने वाली।

381. **भूपताचारकर्मेशी** – राजाओं के जो आचार हैं(अर्थात राजधर्म), उन आचारों के अनुसार किये गये कर्म की ईश्वरी। राजा को भूपत एवं भूपति दोनों कहते हैं। पृथ्वी का ऐश्वर्य जिसके पास है अर्थात भूपत अर्थात राजा। पा रक्षणे से भूपति अर्थ बनेगा अर्थात पृथ्वी या राज्य की जो रक्षा करे वह भूपति है।

382. **भूपताचारकर्मदा** – राजाओं के जो आचार हैं, उनके अनुसार कर्मों का विधान करने वाली। राजा को

भूपत एवं भूपति दोनों कहते हैं। पृथ्वी का ऐश्वर्य जिसके पास है अर्थात भूपत अर्थात राजा। पा रक्षणे से भूपति अर्थ बनेगा अर्थात पृथ्वी या राज्य की जो रक्षा करे वह भूपति है।

383. **भूपताचारदेहस्था** – पृथ्वी पर ऐश्वर्य युक्त आचरण वाले देह अर्थात श्रेष्ठ लोगों के आचरण में रहने वाली। यहाँ देह का अर्थ लोग लगा लिया। पत ऐश्वर्ये धातु होती है। बड़े बड़े लोगों का रहन सहन उनके शरीर द्वारा किये गये आचरण में स्थित रहने वाली। राजाओं के जो आचार हैं, उन आचारों के अनुसार शरीर में स्थित रहने वाली।

384. **भूपताचारकर्मिणी** – पृथ्वी पर ऐश्वर्य युक्त कर्म के स्वरूप वाली। शक्ति और पैसे वाले लोग जैसा कर्म करते हैं वैसा ही देवी के द्वारा इस पृथ्वी पर किया जाता है। पत ऐश्वर्ये धातु होती है। राजधर्म ही है एक आचार, उसका निर्वाह करने वाली। कर्मिणी का अर्थ है कर्म करने वाली। राजाओं के जो आचार हैं, उन आचारों के अनुसार, कर्म सिद्धान्त की स्थापना करने वाली।

385. **भूपताचारसिद्धिस्था** – राजधर्म को निभाना है सिद्धि या सफलता। इस सफलता या सिद्धि में स्थित। राजधर्म है एक सिद्धि। राजधर्म की सफलता में स्थित। राजाओं के जो आचार हैं, उनसे प्राप्त होने वाली जो सिद्धियाँ, उन सिद्धियों में स्थित रहने वाली।

386. **भूपताचारसिद्धिदा** – राजाओं के जो आचार हैं अर्थात जो राजधर्म है, उनके अनुसार सिद्धि या सफलता को प्रदान करने वाली। पृथ्वी के ऐश्वर्य कर्म रूपी सिद्धि देने वाली।

387. **भूपताचारधर्माणी** – पृथ्वी पर ऐश्वर्य युक्त आचार ही है एक धर्म, तद्स्वरूपा। पत ऐश्वर्ये धातु होती है। कर्म व्यक्ति करता है जबकि धर्म स्वाभाविक है। राजधर्म रूपी धर्म वाली। राजाओं के जो आचार हैं, उनके अनुसार धर्म को धारण करने वाली।

388. **भूपताचारधारिणी** – राजाओं के जो श्रेष्ठ आचार हैं, उनको धारण करने वाली। पृथ्वी के ऐश्वर्य युक्त आचरण को धारण करने वाली।

389. **भूपतानन्दलहरी** – राजा के आनन्द की तरंग या नदी स्वरूपा। पृथ्वी के ऐश्वर्य और आनन्द की तरंग या नदी स्वरूपा। पत का अर्थ ऐश्वर्य भी होता है। राजा को भूपत एवं भूपति दोनों कहते हैं। पृथ्वी का ऐश्वर्य जिसके पास है अर्थात भूपत अर्थात राजा। पा रक्षणे से भूपति अर्थ बनेगा अर्थात पृथ्वी या राज्य की जो रक्षा करे वह भूपति है। (यदि भूपताचारनन्दलहरी नाम है तो अर्थ है राजधर्म ही है आनन्द सागर, तत्स्वरूपा। लहरी का अर्थ है तरंग, नदी, समुद्र। राजाओं के जो आनन्द हैं उनकी लहरी स्वरूपा अर्थात उनको बढ़ाने वाली या रखने वाली)।

390. **भूपतेश्वररूपिणी** – श्रेष्ठ राजा के रूप को धारण करने वाली। ईश्वर का अर्थ श्रेष्ठ भी होता है। राजाओं के ईश्वरी स्वरूप को धारण करने वाली।

391. **भूपतेर्नीतिनीतिस्था** – राजाओं की नीति अर्थात राजनीति में नीति के रूप में स्थित। राजा की जो नीतियाँ हैं उसमें सद्नीति अर्थात अच्छी नीति के रूप में स्थित। जो राजा बुरी नीतियाँ बनाते हैं उन्हें जनता पसन्द नहीं करती अतः राजा की दोनों प्रकार की नीतियों में जो अच्छी नीति है वह देवी का स्वरूप है। राजाओं की प्रत्येक नीति में स्थित रहने वाली। दो बार नीति का प्रयोग हुआ है अतः अर्थ हुआ प्रत्येक नीति। (कुछ पुस्तकों में भूपतेर्नीति एवं भूपतेर्नीतिस्था को अलग अलग नाम बताया है। अर्थ इस प्रकार होगा। (1) भूपतेर्नीति – राजाओं की नीति स्वरूपा। (2) भूपतेर्नीतिस्था – राजाओं की नीति में निवास करने वाली।

392. **भूपतिस्थानवासिनी** – राजाओं के स्थान में निवास करने वाली। राजसभा या उनके महल राजा के स्थान हैं।

393. **भूपतिस्थानगीर्वाणी** – राजसभा में बोली जाने वाली देववाणी स्वरूपा। राजाओं के स्थान में जिस भाषा का प्रयोग होता है तद्स्वरूपा। राजा, नागरिक, पढ़े लिखे शिष्ट लोगों की, बड़े लोगों की अलग भाषा होती है और गँवार या अशिष्ट लोगों की अलग भाषा होती है। राजाओं के स्थान में संस्कृत भाषा अर्थात श्रेष्ठ भाषा के रूप में स्थित या बोली जाने वाली।

394. **भूपतेर्वरधारिणी** – राजा का वर धारण करने वाली अर्थात राजा के लिए वरधारण करने वाली अर्थात राजा को वर देने वाली। दुर्गासप्तशती में आया है कि देवी ने राजा सुरथ को वरदान दिया था। राजाओं के द्वारा उपासना किये जाने पर उन्हें वरदान देने वाली। राजाओं के वरों को धारण करने वाली।

395. **भेषजानन्दलहरी** – औषधि या आयुर्विज्ञान से होने वाले आनन्द की तरंग स्वरूपा। लहरी का अर्थ है तरंग, सदा प्रसन्न रहने वाला।

396. **भेषजानन्दरूपिणी** – औषधि से होने वाले आनन्द के स्वरूप को धारण करने वाली।

397. **भेषजानन्दमहिषी** – औषधि की आनन्दमहिषी। महिषी अर्थात रानी, विशेष कर पटरानी। भव रोग दूर करने के लिए औषध स्वरूपा और आनन्दों में सर्वोपरि। महिषी अर्थात महारानी जो सर्वोपरि होती है। औषधि से होने वाले आनन्द के कारण श्रेष्ठ स्वरूप वाली।

398. **भेषजानन्दरूपिणी** – औषधि से होने वाले आनन्द के स्वरूप वाली। (यदि भेषजानन्दधारिणी नाम है तो अर्थ होगा – औषधि से होने वाले आनन्द को धारण करने वाली)।

399. **भेषजानन्दकर्मेशी** – औषधि से होने वाली निरोगिता, उससे होने वाले आनन्द रूपी कर्म पर शासन करने वाली। आनन्द कर्म को कम ज्यादा कितना करना है यह निश्चित करती है। आनन्द ही कर्म है और उस आनन्द रूपी कर्म की ईश्वरी। औषधि से होने वाले आनन्द के जो कर्म (स्वरूप) हैं उनकी ईश्वरी।

400. **भेषजानन्ददायिनी** – औषधि से होने वाले आनन्द को प्रदान करने वाली। रोग ठीक होने पर आनन्द होता है। कहा भी गया है प्रथम सुख निरोगी काया।

401. **भैषजी** – औषधि स्वरूपा। चिकित्सिका स्वरूपा। जन्म मरण रूपी रोग सबसे बड़ा रोग है उसकी भी चिकित्सा करने वाली। भेषज अर्थात औषधि को जानने वाली। भेषजम् का अर्थ है औषधि। जब भेषजम् से भैषजी बनायेंगे तब अर्थ होगा औषधि स्वरूपा। भिषक् का अर्थ है चिकित्सक। भिषक् से भैषजी बनायेंगे तब शब्द बनेगा भैषजी अर्थात चिकित्सिका। (यदि भैषज्या नाम है तो अर्थ है औषधि स्वरूप)। भिषक् अर्थात वैद्य या चिकित्सक। भेषज अर्थात भैषज अर्थात दवा, औषधि, चिकित्सा।

402. **भैषजाकन्दा** – औषधि रूप में प्रयुक्त होने वाले लहसुन आदि पदार्थों के स्वरूप वाली। आयुर्वेद के विशेष गुणों के कारण मधुर स्वरूपा।

403. **भेषजस्थानवासिनी** – जिन स्थानों पर औषधि होती है वहाँ रहने वाली। आरोग्यदायक निवासों पर निवास करने वाली।

404. **भेषजेश्वररूपा** – श्रेष्ठ औषधियों के स्वरूप वाली। यहाँ ईश्वर का अर्थ है श्रेष्ठ। सर्वानन्दप्रद औषधि के सुखदायक स्वरूप वाली।

405. **भेषजेश्वरसिद्धिदा** – श्रेष्ठ औषधियों द्वारा निरोगिता आदि सिद्धियों को देने वाली।

406. **भेषजेश्वरधर्मेशी** – श्रेष्ठ औषधियों के धर्म की अनुशासिका। सबसे उत्तम औषधि या उत्तम औषधियों में रहने वाले धर्म (रोगनाशकत्व और अमृतत्व) पर शासन करने वाली। ईश अर्थात निरोगिता रूपी धर्म देवी के कारण है। श्रेष्ठ औषधियों के जो अपने धर्म/गुण हैं उनकी ईश्वरी। यदि भिषजेश्वरधर्मेशी होता तो अर्थ होता –

वैद्यों की अधिकारी या श्रेष्ठ या बड़े वैद्य के धर्म की ईशी अर्थात अनुशासिका या शासिका। वैद्यों का धर्म है बीमार को स्वस्थ करना। ईशी का अर्थ है कि बीमारों को ठीक करना इनके हाथ में है। ठीक करना, न करना, कुछ ही ठीक करना, सब इनके हाथ में है। भेषज का अर्थ है औषधि या दवा, जबकि भिषक्/भिषज् का अर्थ है चिकित्सक या वैद्य।

407. **भेषजेश्वरकर्मदा** – उत्तम औषधि के रोगनाशकत्व रूपी कर्म को देने वाली अर्थात इस औषधि में रोगनाशक धर्म का आधान (डालना, धारण कराना) देवी ही करती हैं। भगवान शिव को उनके कार्य में लगाने वाली। रूद्री में आया है कि भगवान शिव वैद्यों के वैद्य हैं। चन्द्रमा को भी भेषजेश्वर कहा जा सकता है अर्थात औषधियों के ईश्वर कहा जाता है। श्रेष्ठ औषधियों के अनुसार उनसे होने वाले लाभों को प्रदान करने वाली।

408. **भेषजेश्वरकर्मेशी** – उत्तम औषधि के कर्म अर्थात रोगनाशक रूपी कर्म की कारण स्वरूपा। श्रेष्ठ औषधियों के जो कर्म फल हैं, उनकी ईश्वरी। भेषज का अर्थ है दवा या औषधि जबकि भिषक् या भिषज् का अर्थ है वैद्य या चिकित्सक।

409. **भेषजेश्वरकर्मिणी** – उत्तम औषधि का जो कर्म है उस कर्म वाली अर्थात रोग नाश करने के कर्म वाली। श्रेष्ठ औषधियों के कर्मफल रूप को धारण करने वाली। ईश्वर अर्थात श्रेष्ठ या उत्तम।

410. **भेषजाधीशजननी** – श्रेष्ठ औषधियों को जन्म देने वाली। यहाँ पर अधीश का अर्थ श्रेष्ठ ले लिया गया। श्रेष्ठ औषधियों के ईश्वर चन्द्रमा की जननी या शिव की जननी। भेषज का अर्थ है औषधि। (यदि भिषजाधीश जननी हो तो अर्थ होगा श्रेष्ठ वैद्यों को उत्पन्न करने वाली अर्थात जन्म देने वाली। जन्म के समय से ही डाक्टर बनने वाला गुणसूत्र डाल देती हैं अर्थात जन्म से ही डाक्टर बनने की प्रतिभा दिख जाती है। भिषक् का अर्थ वैद्य या चिकित्सक है। स्वार्थ में अर्थात बिना अर्थ बदले अण् प्रत्यय लगाने से भैषज बनता है। जो अर्थ भिषक् है वही भिषज का है)।

411. **भेषजाधीशपालिनी** – औषधियों के अधीश चन्द्रमा का भी पालन पोषण करने वाली। बड़े बड़े चिकित्सकों का पालन या रक्षा करने वाली।

412. **भेषजाधीशरचना** – बड़े बड़े चिकित्सकों को बनाने वाली। रचयति इति रचना। अच्छी पढ़ाई, गुरू आदि के द्वारा श्रेष्ठ वैद्य या चिकित्सक बनाती हैं। औषधियों के अधीश चन्द्रमा की रचना करने वाली।

413. **भेषजाधीशमङ्गला** – औषधियों के अधीश चन्द्रमा को मंगल या आनन्द देने वाली। मंगल+आ, मंगला। आ का अर्थ है देना।

414. **भेषजारण्यमध्यस्था** – औषधियों के जंगल या वन के मध्य में विराजमान रहने वाली।

415. **भेषजारण्यरक्षिणी** – औषधियों के वन की रक्षा करने वाली।

416. **भैषज्यविद्या** – चिकित्सा विद्या स्वरूपा। आयुर्वेद विद्या स्वरूपा। आरोग्यकारिणी विद्या स्वरूपा। आयुर्वेद स्वरूपा। भैषज्य अर्थात दवा, चिकित्सा, आरोग्यदायक शक्ति।

417. **भैषज्या** – आरोग्य दायक शक्ति देने वाली। भैषज्य+आ, भैषज्य का अर्थ है आरोग्यदायक शक्ति, औषधि। आ का अर्थ है देना। आरोग्य दायक शक्ति स्वरूपा, चिकित्सा स्वरूपा। औषधि या दवा स्वरूपा। आयुर्वेद स्वरूपिणी देवी।

418. **भैषज्येप्सितदायिनी** – औषधि के द्वारा ईप्सित अर्थात निरोगिता देने वाली। आयुर्वेद से होने वाली जो इच्छाऐं या फल हैं उनको देने वाली।

419. **भैषज्यस्था** – औषधि में शक्ति रूप से स्थित या रोग निवारक गुण के रूप में स्थित। आयुर्वेद में स्थित

रहने वाली अर्थात उसमें रहने वाली रोगहारिणी शक्ति या रोगहारिणी ज्ञान स्वरूपा। भैषज्य का अर्थ औषधि भी है और चिकित्सा कर्म भी है। जो भिषक् (वैद्य) का है अर्थात भिषक् से सम्बन्धित है वह भैषज्य है अर्थात दवा, चिकित्सा कर्म भैषज्य है। आरोग्यकारिणी विद्या में स्थित रहने वाली।

420. **भैषजेशी** – वैद्यों की आराध्या। वैद्यों पर अनुशासन करने वाली अर्थात सम्यक् विचार देने वाली। शासन करने का अर्थ है उनके मन में सम्यक् विचार पैदा करना कि यह औषधि सही है या नहीं है, कितनी मात्रा देनी है कब तक देनी है आदि। औषधियों को पैदा करने वाली। आयुर्वेद की विद्याओं की ईश्वरी या आयुर्वेद की सभी शाखाओं की ईश्वरी।

421. **भैषज्यानन्दवर्धिनी** – औषधियों से होने वाले आनन्द को बढ़ाने वाली। आयुर्वेद से होने वाले आनन्द को बढ़ाने वाली।

422. **भैरवी** – भयंकर रव करने वाले अर्थात नाद या शब्द करने वाले भैरव की पत्नी। साधक की बाधाओं को भयभीत करने वाली। साधक के भयों को भगाने वाली। भैरव स्वरूपा। भैरव (अर्थात शिव) की शक्ति स्वरूपा। व का अर्थ है वमन अर्थात बाहर निकालना अर्थात उत्पत्ति करना। भ का अर्थ है भरण अर्थात पालन करना। र का अर्थ है रवण अर्थात नाश करना। उत्पत्ति, पालन और नाश करने वाली है। भैरम् (दुःखसमूहम्) वान्ति (हिनस्ति) इति भैरवी अर्थात दुःख समूह को नष्ट करने वाली। (संस्कृत में व्याकरण में स्त्रीलिंग प्रकरण में ङीष् प्रत्यय लगाने से ईकारान्त शब्द का अर्थ उस पुरुष की पत्नी हो जाता है जैसे गोपी अर्थात गोप की पत्नी।)

423. **भैरवाचारा** – भैरव को खुश करने के लिए किये जाने वाले कार्यकलाप स्वरूपा जैसे तीन प्रकार का अर्थात सात्विक, राजसिक और तामसिक ध्यान करना, विशेष आसन में बैठना, विशेष भोग लगाना इस प्रकार भैरव या शिव को खुश करने की पूजा पद्धति स्वरूपा। भैरवाचार से युक्त। दुष्टों को भयभीत करने वाले क्रियाकलाप स्वरूपा। भैरव अर्थात दिव्य क्रोध। भैरव शिवजी का भी नाम है और भैरव शिवजी के अंश या स्वरूप भी हैं।

424. **भैरवाकाररूपिणी** – भैरव अर्थत शिव के आकार के समान रूप को धारण करने वाली।

425. **भैरवाचारचतुरा** – दुष्टों/दैत्यों को भयभीत करने वाले आचार (क्रियाकलाप) करने में चतुर। भैरव के जो आचार हैं उनमें दक्ष अर्थात जो भैरवाचार का पालन करने में निपुण है।

426. **भैरवाचारमण्डिता** – भैरव के मुख्य अनिवार्य कर्तव्य अर्थात दुष्टों को भयभीत करना, इससे सुशोभित। शास्त्रों में जिन कर्मों को करने या न करने का निर्देश होता है उन्हें आचार कहते हैं। भैरवाचार से सुशोभित या अभिमण्डित।

427. **भैरवा** – स्वयं भयंकर नाद करने वाली। (यहाँ भैरव की पत्नी होना अनिवार्य नही है)। यदि भैरवी होता तो भैरव या शिव की पत्नी अर्थ हो सकता था।

428. **भैरवेशी** – भैरव की ईश्वरी अर्थात भैरव की आराध्या। भैरव शिवजी का भी नाम है। भैरव शिव के अंश या स्वरूप भी हैं। शिव को प्रेरित करने वाली अर्थात उन्हें सृष्टि के लिए प्रेरित करने वाली या उनके कर्तव्य कर्म में लगाने वाली।

429. **भैरवानन्ददायिनी** – भैरव अर्थात शिव को आनन्द प्रदान करने वाली।

430. **भैरवानन्दरूपेशी** – शिव के लिए आनन्दस्वरूपा ईश्वरी अर्थात शिव को आनन्द देने वाली ईश्वरी। भैरव का अर्थ शिव भी है और भैरव नाम के देवता, जो शिव के अंश है, भी है। शिव के आनन्द के स्वरूप की स्वामिनी अर्थात आनन्द को निर्मित करने वाली या उसे देने वाली। भैरव से होने वाले आनन्द का जो स्वरूप है, उसकी ईश्वरी अर्थात प्रदाता।

431. **भैरवानन्दरूपिणी** – भैरव के आनन्द के रूप में। शिव के आनन्द के रूप वाली।

432. **भैरवानन्दनिपुणा** – शिव को आनन्द देने में निपुण। भयंकर आवाज से आनन्दित होने में निपुण। भैरव का एक अर्थ शिव है। भै का अर्थ है भयंकर, रव का अर्थ है आवाज। भैरव से होने वाले आनन्द में निपुण।

433. **भैरवानन्दमन्दिरा** – शिव को आनन्द देने के लिए जिसका मन्दिर है। शंकर जी, जो आनन्द स्वरूप हैं, उनके मन्दिर अर्थात निवास स्थान में स्थित। भैरवानन्द नामक शाक्त आचार्य के मन्दिर अर्थात निवास स्थान में रहने वाली। भैरव से होने वाले आनन्द की आधार या आश्रय।

434. **भैरवानन्दतत्वज्ञा** – भैरवानन्द नामक आचार्य को तत्व (ब्रह्मज्ञान या आत्मज्ञान) का ज्ञान कराने वाली। ज्ञापयति से ज्ञा बनायेंगे तो ज्ञान कराने वाली अर्थ आ जाएगा। शिव से होने वाले आनन्द के तत्व (रहस्य) को जानने वाली अर्थात यह आनन्द किससे बना, कैसे मिलता है, किसने बनाया आदि जानने वाली। सिद्धों के अनुसार आनन्द अपेक्षा रहित प्रेम unconditional love से मिलकर बनता है। शिव जो आनन्द स्वरूप हैं उनके तत्व को जानने वाली। भैरव या शिव से होने वाले जो आनन्द है उनके तत्व को जानने वाली।

435. **भैरवानन्दतत्परा** – आनन्दस्वरूप शिव से जुड़ी हुई या भैरवानन्द नामक उपासक से जुड़ी हुई। शिव आनन्द स्वरूप हैं। शिव से होने वाले आनन्द में तल्लीन रहने वाली। आनन्द स्वरूप शिव के लिए तत्पर अर्थात उनकी प्रत्येक चीज के लिए हमेशा तैयार रहने वाली या उनके साथ रहने को हमेशा तैयार या भगवान शिव का कार्य करने के लिए हमेशा तैयार। भैरव या शिव से होने वाले आनन्द में तत्पर रहने वाली।

436. **भैरवानन्दकुशला** – शिवानन्दरूपी भूमि पर विचरण करने वाली अर्थात विराजमान रहने वाली। शिव के साथ एक होने पर मिलने वाला आनन्द भैरवानन्द अर्थात शिवानन्द है। भैरव का एक अर्थ शिव भी है। कु अर्थात पृथ्वी, शल गतौ धातु होती है। इस प्रकार कुशल का अर्थ है भूमि पर विचरण करने वाला। भैरवानन्दनिपुणा और भैरवानन्दकुशला दोनों के लगभग एक ही अर्थ हैं फिर भी कुछ अन्तर करने का प्रयास किया गया है। भैरव से होने वाले आनन्द में दक्ष।

437. **भैरवानन्दनीतिदा** – भैरवानन्द नामक उपासक को ठीक मार्ग बताने वाली अर्थात पूजा का सही मार्ग देने वाली। नीति का अर्थ है मार्ग। भैरव से होने वाला जो आनन्द है उसकी नीति को देने वाली अर्थात बताने वाली।

438. **भैरवानन्दप्रीतिस्था** – भैरवानन्द नामक उपासक या आचार्य की भक्ति में स्थित रहने वाली। शिव के आनन्द की भक्ति में स्थित रहने वाली। भैरव से होने वाला जो आनन्द है उससे होने वाली प्रसन्नता में स्थित।

439. **भैरवानन्दप्रीतिदा** – भैरव से होने वाला जो आनन्द है उससे होने वाली प्रसन्नता को देने वाली।

440. **भैरवानन्दमहिषी** – शंकर जी को आनन्दित करने वाली महिषी अर्थात महारानी। आनन्द स्वरूप ब्रह्म की महिषी। भैरव की आनन्द महिषी। भैरव का अर्थ शंकर जी भी होता है एवं ब्रह्म भी होता है। भैरवानन्द अर्थात शंकर जी की महारानी अर्थात पत्नी। भैरव अर्थात शिव जो आनन्द स्वरूप हैं इसलिए उन्हें भैरवानन्द कहते हैं। भैरव से होने वाले आनन्द में प्रधानता रखने वाली।

441. **भैरवानन्दमालिनी** – भैरव से होने वाला जो आनन्द है, उसकी मालाओं को धारण करने वाली। भैरव से होने वाले आनन्द के सभी रूपों को धारण करने वाली। माला में कई फूल होते हैं अतः सभी आनन्द अर्थ लिया गया है। माला का अर्थ समष्टि भी होता है। मल धारणे धातु भी होती है जिससे मालिनी का अर्थ धारण करने वाला भी होता है।

442. **भैरवानन्दमतिदा** – भैरव से होने वाला जो आनन्द है, उस आनन्द को प्राप्त करने के लिए बुद्धि को प्रदान करने वाली।

443. **भैरवानन्दमातृका** – भैरव से होने वाला जो आनन्द है उसकी माता अर्थात जननी या रक्षा करने वाली।

444. **भैरवाधारजननी** – शिव के आधार अर्थात कैलाश पर्वत की उत्पत्ति करने वाली। भैरव के आधार को जन्म देने वाली।

445. **भैरवाधाररक्षिणी** – शिव के आधार अर्थात कैलाश पर्वत की रक्षा करने वाली। जैसे क्षेत्रपाल कई स्थानों की रक्षा करते हैं उसी प्रकार देवी भी कैलाश पर्वत की रक्षा करती हैं। भैरव के आधार की रक्षा करने वाली।

446. **भैरवाधाररूपेशी** – शिव के आधार अर्थात कैलास के उज्जवल रूप की ईशी अर्थात उज्जवल रूप को बनाये रखने वाली। ईश का एक अर्थ बनाये रखने वाला है। जो सृष्टि करे, कुछ समय तक बनाये रखे एवं संहार करे वह ईश या ईश्वर है। भैरव के आधार का जो स्वरूप है उसकी ईश्वरी।

447. **भैरवाधाररूपिणी** – शिव के आधार अर्थात कैलास पर्वत के स्वरूप वाली। भैरव का जो आधार है उसके रूप को धारण करने वाली।

448. **भैरवाधारनिचया** – कैलास पर्वत है निश्चित रूप से धन जिसका या काम की चीज। चिनोति से चय शब्द बनता है। जिसको चुन चुन कर इकठ्ठा किया जाता है वह चय है। चय का तात्पर्य धन या बहुत कीमती चीज है क्योंकि यह धीरे धीरे चुनचुनकर इकट्ठा किया जाता है। नि अर्थात नितराम्। भगवान शिव जहाँ जहाँ रहते हैं उन सबका समूह स्वरूपा। कैलास पर्वत, वाराणसी, द्वादश ज्योतिर्लिंग, अरूणाचल पर्वत, प्रत्येक शिवलिंग, नर्मदा, भक्तों का हृदय और घर आदि सभी उनके आधार अर्थात रहने का स्थान हैं। भैरव का जो आधार है उसका पुंज या समूह स्वरूपा।

449. **भैरवाधारनिश्चया** – कैलाश पर्वत पर रहने का निश्चय है जिसका। भैरवाधार अर्थात शंकर का आधार अर्थात कैलाश पर्वत। शंकर के आधार (अर्थात उनके टिकने का स्थान), के एकमात्र निश्चय वाली। आधार अर्थात जिसके आश्रय में कोई रहे। शंकर जी के आधार निश्चय वाली अर्थात शंकर जी इन्ही के आधार या आश्रम में रहते हैं। भैरव का जो आधार है, उसका निश्चय रखने वाली।

450. **भैरवाधारतत्वज्ञा** – शंकर जी के आश्रय अर्थात कैलाश के तत्व को जानने वाली। घर के तत्व को जानना अर्थात उसके माहौल को जानना कि कौन कब उठता है, किसे क्या पसन्द है। शिव का आधारतत्व का अर्थ है लोक कल्याण के उपाय, उसे जानने वाली। भैरव का जो आधार है, उसके तत्व को जानने वाली।

451. **भैरवाधारतत्वदा** – भैरव का जो आधार है, उसके तत्व या सार को देने वाली अर्थात अस्तित्व में लाने वाली। तत्व अर्थात मूल कारण जिससे भैरवाधार (कैलाश) बना।

452. **भैरवाश्रयतन्त्रेशी** – शंकर जी के आश्रय तन्त्र की ईश्वरी। तन्त्र का अर्थ विस्तार भी होता है अर्थात उनके परिसर या आश्रम अर्थात कैलास में जो कुछ भी है वह तन्त्र (या फैलाव) का हिस्सा है। गंगा जी, सर्प, बैल आदि सभी तन्त्र के अन्तर्गत हैं। ईश्वरी अर्थात मालकिन अर्थात पूरा तन्त्र इनके अधीन है। ये सभी पर शासन करती हैं। भैरव का जो आश्रय है, उससे होने वाले तन्त्र की ईश्वरी।

453. **भैरवाश्रयमन्त्रिणी** – शिव के आश्रय अर्थात स्थान पर मन्त्रस्वरूप वाली। शिव का आश्रय लेने वाले लोगों के लिए मन्त्रस्वरूप वाली। वैसे घर का वह व्यक्ति जो secrecy बनाये रखता है, बातों को गुप्त रखता है, मन्त्री या मन्त्रिणी होता है। भैरव का जो आश्रय है मन्त्रशक्ति, उससे युक्त रहने वाली। भैरव अर्थात शिव का आश्रय है कैलाश।

454. **भैरवाश्रयरचना** – भैरव का जो आश्रय है उसकी रचनास्वरूपा अर्थात स्थूलकृति या स्थूल रचना स्वरूपा। भैरव अर्थात शिव का आश्रय है कैलाश।

455. **भैरवाश्रयरञ्जिता** – भैरव का जो आश्रय है, उससे आनन्दित रहने वाली।

456. **भैरवाश्रयनिर्द्धारा** – शंकर जी के घर का निर्धारण करने वाली अर्थात निश्चय करने वाली। यहाँ रहो, कैलाश में रहो ऐसा निश्चय करने वाली। (अन्य किताबों में इस स्थान पर जो नाम दिया गया वह है भैरवाश्रयनिर्भारा – शंकर जी के आश्रय (अर्थात कैलाश) का सारा भार वहन करने वाली, ढोने वाली। भैरव के आश्रय पर निर्भर रहने वाली। (यदि भैरवाश्रयनिर्भरा नाम है तब अर्थ होगा शंकर जी के आश्रय में (अर्थात कैलाश) पर निर्भर रहने वाली अर्थात वे यहीं पर रहती हैं, कहीं और जाती नहीं है, यही पर जीवन निर्वाह करती हैं)।

457. **भैरवाश्रयनिर्भरा** – शंकर जी के आश्रय को या घर को आत्यन्तिक रूप से भरण करने वाली अर्थात पुष्ट करने वाली। शंकर जी के घर में अर्थात आश्रय में निर्भर अर्थात वहाँ रहने वाली। (अन्य किताबों में जो नाम दिया गया वह है भैरवाश्रयनिर्धारा – शंकर जी के आश्रय (अर्थात कैलाश) का निर्धारण करने वाली अर्थात कैलाश में क्या होना चाहिए क्या नहीं, इसका निर्धारण करती हैं। भैरव के आश्रय की धारा पर चलने वाली या धारा को बहाने वाली)।

458. **भैरवाश्रयनिर्द्धारा** – शंकर जी के आश्रय में रहती हुई निर्धारण करती हैं अर्थात निर्णय लेती हैं कि कौन पुरुष क्या कर रहा है उस कर्म का उसे कितना पुण्य या पाप फल मिलेगा। (अन्य किताबों में जो नाम दिया गया वह है – भैरवाश्रयनिर्धरा जिसका अर्थ है – शंकर जी के स्थान अर्थात कैलाश को नितान्त रूप से धारण करने वाली अर्थात उस स्थान का भार ढोने वाली। भैरव के आश्रय कों निश्चित रूप से धारण करने वाली। (भैरवाश्रयनिर्हरा नाम है तब अर्थ होगा शंकर जी के आश्रय को निहारने वाली अर्थात देखने वाली अर्थात आश्रय की देखभाल करने वाली।)।

459. **भैरवाश्रयनिर्द्धरा** – भैरव अर्थात शंकर जी के आश्रय को या घर को नितान्त रूप से धारण करने वाली अर्थात वहाँ अविचल रूप से रहने वाली।

460. **भैरवानन्दबोधेशी** – भैरव से होने वाले आनन्द का बोध कराने में सक्षम। (यदि भैरवाश्रयबोधेशी नाम है तब अर्थ है भैरव जिस ज्ञान पर आश्रित हैं उस ज्ञान की ईश्वरी। भैरव अर्थात शिव, आश्रय अर्थात घर और बोध अर्थात ज्ञान)।

461. **भैरवानन्दबोधिनी** – भैरव के आनन्द का प्रबोध कराने वाली अर्थात बताने वाली। (यदि भैरवाश्रयबोधिनी नाम है तब अर्थ है भैरव जिस ज्ञान पर आधारित हैं उस ज्ञान के स्वरूप वाली। भैरव का जो आश्रयबोध है या सत्ताबोध है, तत्स्वरूपा।)।

462. **भैरवानन्दबोधस्था** – भैरव के आनन्द रूपी ज्ञान में स्थित रहने वाली। शिव के आनन्दरूपी ज्ञान में स्थित।

463. **भैरवानन्दबोधदा** – उपासकों को आनन्दस्वरूप शिव का ज्ञान कराने वाली अर्थात शिव से सायुज्य कराने वाली। शिव के आनन्द का बोध प्रदान करने वाली अर्थात ज्ञान कैसे मिलेगा, यह बताने वाली। ज्ञान होने पर आनन्द और बढ़ जाता है। भैरव से होने वाले आनन्द के बोध को प्रदान करने वाली। शिव से होने वाले आनन्द के बोध को प्रदान करने वाली।

464. **भैरव्यैश्वर्यवरदा** – भैरवी च असौ ऐश्वर्यवरदा। भैरव (शंकर जी) की ऐसी पत्नी जो भक्तों को ऐश्वर्य का वरदान देती हैं। (यदि भैरवानन्दवरदा नाम होता तो अर्थ होता – भैरवानन्द नामक आचार्य को या अपने उपासक को वरदान देने वाली। शिव के लिए आनन्द रूपी वरदान देने वाली। अपने उपासको को शिव के आनन्द का वरदान देने वाली। भैरव से होने वाले आनन्द का वरदान देने वाली)।

465. **भैरव्यैश्वर्यदायिनी** – शंकर जी की ऐसी पत्नी जो शंकर जी को या अपने भक्तों को ऐश्वर्य देती हैं। (यदि भैरवानन्ददायिनी नाम है तो अर्थ होगा – अपने उपासकों को शिवानन्द या मोक्षानन्द देने वाली। शिव से मिलने पर होने वाले आनन्द को देने वाली। भैरव से होने वाले आनन्द को प्रदान करने वाली)।

466. **भैरव्यैश्वर्यरचना** – भैरवी के ऐश्वर्य की रचना करने वाली अर्थात भैरवी को ऐश्वर्ययुक्त बनाने वाली। भैरवी+ऐश्वर्यरचना। शिव के ऐश्वर्य की रचना स्वरूपा अर्थात निर्मिति स्वरूपा। शिव के ऐश्वर्य की रचना करने वाली। भैरवी का जो ऐश्वर्य है, उसकी रचना स्वरूपा। भैरव्य + ऐश्वर्यरचना इस व्युत्पत्ति से अर्थ हुआ भैरव (शिव) के लिए हितकारी ऐश्वर्य की रचना करने वाली। भैरव्य का अर्थ है भैरव के लिए हितकारी।

467. **भैरव्यैश्वर्यैवर्धिनी** – ऐसी भैरवी जो भक्तों के ऐश्वर्य को बढ़ाने वाली है। भैरवी च असौ ऐश्वर्यवर्द्धिनी। भैरवी के ऐश्वर्य को बढ़ाने वाली। भैरव (शिव) के लिए हितकारी ऐश्वर्य की वृद्धि करने वाली। ऐश्वर्य का तात्पर्य है शक्ति और सम्पन्नता। शक्ति और सम्पन्नता दोनों हो, तो ऐश्वर्य होना कहा जाता है। भैरवी+ऐश्वर्यवर्द्धिनी, भैरव्य+ ऐश्वर्यवर्द्धिनी इन दोनों प्रकार से अर्थ निकल सकता है। भैरव्य का अर्थ भैरव (शिव) के लिए हितकारी।

468. **भैरव्यैश्वर्यसिद्धिस्था** – भैरवी के ऐश्वर्य की सफलता (प्राप्ति) में स्थित अर्थात सफलता प्राप्त कराने वाली। भैरवी के ऐश्वर्य की जो सिद्धि है, उसमें स्थित रहने वाली। शिव के लिए हितकारी ऐश्वर्य की प्राप्ति में स्थित।

469. **भैरव्यैश्वर्यसिद्धिदा** – ऐसी भैरवी जो ऐश्वर्य की सिद्धि देने वाली है अर्थात ऐश्वर्य की प्राप्ति कराने वाली है। भैरवी को ऐश्वर्य की सिद्धि (प्राप्ति) देने वाली। भैरवी का जो ऐश्वर्य है, उसकी सिद्धि देने वाली अर्थात उपासकों को भैरवी के ऐश्वर्य की प्राप्ति कराने वाली। शिव के लिए हितकारी ऐश्वर्य की सिद्धि देने वाली अर्थात ऐश्वर्य को प्राप्त कराने वाली।

470. **भैरव्यैश्वर्यसिद्धेशी** – भैरवी+ऐश्वर्यसिद्धेशी। ऐसी भैरवी रूपी ईश्वरी जिनको ऐश्वर्य सिद्ध है। ऐश्वर्य सिद्ध होने का तात्पर्य है कि जब चाहे तब इच्छानुसार ऐश्वर्य प्राप्त कर लें। भैरवी के ऐश्वर्य की जो सिद्धि है उसकी ईश्वरी।

471. **भैरव्यैश्वर्यरूपिणी** – भैरवी के ऐश्वर्य के स्वरूप वाली। ऐसी भैरवी जो ऐश्वर्य रूपा है। भैरवी अर्थात भयंकर नाद करने वाली जिससे आसुरी शक्तियाँ भयभीत हो जाएं। भै अर्थात भयंकर और रव अर्थात नाद। भैरवी का एक अर्थ है जो सृष्टि, पालन और संहार करे। भ अर्थात भरण अर्थात पालन। र अर्थात रवण अर्थात संहार। व अर्थात वमन अर्थात बाहर आना अर्थात सृष्टि होना।

472. **भैरव्यैश्वर्यसुपथा** – भैरवी का ऐश्वर्य ही है जिनका सुन्दर मार्ग। ऐसी भैरवी जो ऐश्वर्य का सुन्दर पथ है अर्थात जिससे होकर ऐश्वर्य उपासकों तक पहुँचता है अर्थात जिसकी कृपा से ऐश्वर्य उपासकों तक पहुँचता है।

473. **भैरव्यैश्वर्यसुप्रभा** – भैरवी का ऐश्वर्य है जिनकी सुन्दर कान्ति। ऐसी भैरवी जो ऐश्वर्य की सुन्दर कान्ति भी है।

474. **भैरव्यैश्वर्यवृद्धिस्था** – भैरवी के ऐश्वर्य की जो वृद्धि या बढ़ोत्तरी है, उसमें स्थित रहने वाली। ऐसी भैरवी जो ऐश्वर्य की वृद्धि में स्थित है।

475. **भैरव्यैश्वर्यवृद्धिदा** – भैरवी के आराधना से होने वाला (प्राप्त होने वाला) ऐश्वर्य की वृद्धि करने वाली। ऐसी भैरवी जो ऐश्वर्य की वृद्धि देने वाली है। भैरवी च असौ ऐश्वर्यवृद्धिदा।

476. **भैरव्यैश्वर्यकुशला** – ऐसी भैरवी जो ऐश्वर्य को प्राप्त कराने में निपुण है। भैरवी का जो ऐश्वर्य है उसमें कुशल।

477. **भैरव्यैश्वर्यकामदा** – ऐसी भैरवी जो ऐश्वर्य प्राप्ति की इच्छा देने वाली है। उपासको में ऐश्वर्य प्राप्ति की इच्छा पैदा करने वाली। ऐश्वर्य प्राप्ति की इच्छा देना अर्थात ऐश्वर्य प्राप्ति करा देना यह अर्थ भी कर सकते हैं। भैरवी च असौ ऐश्वर्यकामदा इति भैरव्यैश्वर्यकामदा। भैरवी का जो ऐश्वर्य है, उस ऐश्वर्य द्वारा इच्छानुसार फल देने वाली।

478. **भैरव्यैश्वर्यसुलभा** – ऐसी भैरवी जिसकी कृपा से ऐश्वर्य सुलभ हो जाता है। पंचमी बहुब्रीहि समास से ऐसा अर्थ निकलेगा। भैरवी का जो ऐश्वर्य है, उस ऐश्वर्य के कारण जो सुलभ है।

479. **भैरव्यैश्वर्यसम्प्रदा** – भैरवी के ऐश्वर्य को सम्यक् रूप से प्रदान करने वाली। सम्यक् का अर्थ है पूरा, सही, शुद्ध। (यदि भैरव्यैश्वर्यवरदा नाम है तब अर्थ होगा शंकर जी की ऐसी प्रिया जो ऐश्वर्य को देने वाली है। भैरवी अर्थात शंकर जी की प्रिया।)।

480. **भैरव्यैश्वर्यविशदा** – ऐसी भैरवी जिसका ऐश्वर्य शुद्ध है या स्वच्छ है। भैरवी च असौ ऐश्वर्यविशदा। शंकर जी के लिए हितकारी विशुद्ध ऐश्वर्य वाली। भैरव्य अर्थात भगवान शिव के लिए हितकारी। शंकर जी की ऐसी प्रिया जो ऐश्वर्य के कारण स्वच्छ हैं अर्थात बेदाग हैं। उनपर कोई कलंक नहीं है। भैरवी के ऐश्वर्य को विशद (साफ या स्वच्छ) करने वाली।

481. **भैरव्यैश्वर्यविक्रिता** – ऐसी भैरवी जो भगवान शिव के ऐश्वर्य के कारण बिक गई है अर्थात भगवान शंकर को समर्पित हो गई है अर्थात उनके शरणागत हो गई है। भैरवी च असौ ऐश्वर्यविक्रिता। विक्रीता शब्द होना चाहिए पर पृषोदरादि नियम से विक्रिता हो गया होगा। शंकर जी की पत्नी जो मानों ऐश्वर्य को बेच रही हों। उपासना दो और ऐश्वर्य ले जाओ अर्थात उपासना करो और बदले में ऐश्वर्य ले जाओ। विक्रित का शाब्दिक अर्थ है जो बेचा गया। क्त प्रत्यय का प्रयोग कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र से दूसरे अर्थों में भी होता है। अतः विक्रिता का अर्थ बेचने वाली भी कर सकते हैं। (यदि भैरव्यैश्वर्यविक्रिया नाम होता, तो अर्थ होता – शंकर जी की ऐसी प्रिया जो उनके ऐश्वर्य की विशेष क्रिया स्वरूप हैं। भैरवी अर्थात शंकर जी की प्रिया। भैरवी का जो ऐश्वर्य है, उससे विशेष क्रियाओं को सम्पन्न करने वाली)।

482. **भैरव्यैश्वर्यविनया** – ऐसी भैरवी जो ऐश्वर्य प्राप्त कराकर भी विनम्रता देती है। सामान्यतः ऐश्वर्य प्राप्त होने पर व्यक्ति उद्धत (मर्यादाहीन) हो जाता है। भैरवी का जो ऐश्वर्य है, उस ऐश्वर्य के कारण विनम्र स्वरूप धारण कर देने वाली।

483. **भैरव्यैश्वर्यवेदिता** – ऐसी भैरवी जो ऐश्वर्यों को जानने वाली है। यदि वेदिता की जगह वेदयिता होता तो अर्थ होता ऐश्वर्य को जनवाने वाली। ऐश्वर्य को जानने का तात्पर्य है कि ऐश्वर्य क्या है, कितने प्रकार का है, कैसे प्रयोग करना है और कैसे प्राप्त करना है इन सबको जानने वाली। भैरवी का जो ऐश्वर्य है, उसके द्वारा जानी गई या जानने योग्य।

484. **भेरव्यैश्वर्यमहिमा** – ऐसी भैरवी जिसके ऐश्वर्य का महत्व है। महिमा अर्थात महत्व अर्थात दूसरों से बढ़कर। जिनका ऐश्वर्य दूसरों से अधिक है। भैरवी का जो ऐश्वर्य है, वह ऐश्वर्य ही है महिमा जिनकी।

485. **भैरव्यैश्वर्यमानिनी** – ऐसी भैरवी जिसे अपने ऐश्वर्य पर मान है अर्थात अभिमान है। मैं ऐश्वर्य वाली हूँ, मेरा ऐश्वर्य दूसरों से बढ़कर है ऐसा अभिमान है जिसे। भैरवी का जो ऐश्वर्य है, उसके द्वारा जो विशेष रूप से माननीया हो रही है अर्थात सम्मान को प्राप्त हो रही है।

486. **भैरव्यैश्वर्यनिरता** – ऐसी भैरवी जो ऐश्वर्य में ही निरत (संलग्न) रहती है अर्थात ऐश्वर्य से हमेशा जुड़ी रहती हैं, ऐश्वर्य से कभी अलग नहीं होती। भैरवी के ऐश्वर्य में निरत रहने वाली अर्थात लगी रहने वाली।

487. **भैरव्यैश्वर्यनिर्मिता** – ऐसी भैरवी जो ऐश्वर्य के द्वारा निर्मित हैं अर्थात जिनका शरीर ऐश्वर्य (शक्ति या ऊर्जा) से बना हुआ है। निर्मित का अर्थ जो बना हुआ है। यह कर्म में क्त प्रत्यय लगने से बना। कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र से बहुलम के कारण कर्म में प्रयुक्त प्रत्यय कभी कभी कर्ता का अर्थ भी देने लगते हैं। इस प्रकार निर्मिता का अर्थ निर्माण करने वाली भी कर सकते हैं। वह भैरवी जो ऐश्वर्य का निर्माण करती हैं, ऐसा अर्थ निकल सकता है। मिति का अर्थ अनुमान या ज्ञान भी होता है। वह भैरवी जिसके ऐश्वर्य का अच्छी प्रकार से अनुमान या आभास होता है। भैरवी के ऐश्वर्य से जो विशेष स्वरूप को धारण कर लेती हैं।

488. **भोगेश्वरी** – भोग की स्वामिनी अर्थात भोग पदार्थों की मालकिन। भोग पदार्थों का प्राप्त होना इनकी इच्छा और अनुमति पर ही निर्भर है। भोग का अर्थ ऐन्द्रिक सुख देने वाले पदार्थ या ऐन्द्रिक अनुभूति रूपी क्रिया है। भोगेशी शब्द भी आगे आया है। अर्थ में अन्तर करने के लिए भोगेश्वरी में भोग का अर्थ सांसारिक पदार्थ ले लेते हैं जबकि भोगेशी में भोग का अर्थ ऐन्द्रिक अनुभूति रूपी क्रिया ले लेते हैं। भोगों की ईश्वरी। ईश्वरी अर्थात रचना करने वाली, देने वाली, बनाये रखने वाली, नाश करने वाली।

489. **भोगमाता** – भोगों की माता अर्थात जननी। उपभोग क्रिया की रचना करने वाली। सांसारिक सुखों को देने वाले पदार्थों की रचना करने वाली। माति गर्भे पालयति रक्षयति माता अर्थात जो प्रारम्भिक अवस्था में शिशु का पालन करे, रक्षा करे वह माता है। सांसारिक सुखों या सांसारिक सुख देने वाले पदार्थों की रक्षा करने वाली अर्थात उपासकों को उनकी उपलब्धता हमेशा बनाये रखने वाली। भोगों की माता अर्थात जननी।

490. **भोगस्था** – उपभोग क्रिया अर्थात इन्द्रियों से अनुभव करने वाली क्रिया में स्थित। देवी शक्ति या ऊर्जा स्वरूप हैं जिसकी स्वाभाविक परिणति क्रिया में होती है। देवी क्रियास्वरूप हैं अर्थात क्रिया में स्थित हैं। भोग का अर्थ क्रिया के अलावा सांसारिक सुख देने वाले पदार्थ भी है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ उपभोग देने वाले पदार्थ में स्थित। पदार्थों में शक्ति या ऊर्जा रूप में स्थित। भोगों में विराजमान रहने वाली या स्थित रहने वाली।

491. **भोगरक्षिणी** – उपभोग क्रिया या सांसारिक पदार्थों की हर अवस्था और समय में रक्षा करने वाली अर्थात बनाये रखने वाली। जबसे संसार बना है उपभोग क्रिया एवं ऐन्द्रिक सुख देने वाले पदार्थों का अस्तित्व रहा है। भोगों की रक्षा करने वाली अर्थात इस लोक के भोगों या स्वर्ग के भोगों की रक्षा करने वाली अर्थात अपने उपासकों को देने वाली। भोगों की रक्षा करने वाली अर्थात व्यक्ति को मिले भोगों को सुरक्षित करने वाली।

492. **भोगक्रीड़ा** – भोगों में क्रीड़ा करने वाली अर्थात उनका उपभोग कर प्रसन्न होने वाली, अपना मनोरंजन करने वाली। अपने आस पास भोग पदार्थों की रचना कर उन्हें देखकर या अनुभव कर अपना मनोरंजन करने वाली। क्रीड़ा अर्थात खिलौने बनाये, कुछ समय तक प्रयोग किया और बाद में बिगाड़ दिया। भोगक्रीड़ा अर्थात किसी को धन सम्पत्ति दी, कुछ समय तक रहने दी और फिर मिटा दी। क्रीड़ा में कुछ शारीरिक चेष्टा होती है जिससे मनोरंजन, आमोद प्रमोद या हर्ष होता है। क्रीड़ा अर्थात किसी गतिविधि में व्यस्त हो जाना जिससे मनोरंजन हो या प्रसन्नता मिले।

493. **भोगलीला** – चराचर जगत द्वारा जो भोग या उपभोग की क्रिया की जा रही है उस क्रिया के स्वरूप में। क्रिया शक्तिस्वरूपा है। भोगों की लीला। लीला से ही भोगों को उपलब्ध करा देने वाली। दूसरों को भोग उपलब्ध कराना उनके लिए बच्चों के खेल की तरह सुलभ है। लीला प्रायः दूसरों को खुश करने के लिए होती है और जो यह लीला करता है उसके लिए यह बायें हाथ के खेल की तरह होता है अर्थात बहुत आसान होता है। धन–सम्पत्ति, घर, सुख आदि देना जिसके लिए बच्चों के खेल की तरह है या ऐसा कर मन बहलाती हैं। भोग का अर्थ है सुख, दुख, सुखदुखानुभूति, धन – सम्पत्ति, सम्भोग, घर। लीला का अर्थ श्रृंगारचेष्टा, सौन्दर्य भी है। धन सम्पत्ति से आनन्दित या हर्षित होने वाली। कही पर लिखा है लीला अर्थात illusory तरीके से कुछ पैदा

करना अर्थात पैदा करने का आभास देना। (लीला अर्थात ऐसी क्रिया जिसके रहस्य या कारण का ज्ञान केवल ईश्वर को होता है, लीला वही कर सकता है जो पूर्णकाम हो अर्थात जिसे सब प्राप्त है, ऐसा व्यक्ति केवल मनोरंजन के लिए क्रिया करेगा। खेल तो वह है जिसमें सभी भागीदारों को खोल के नियम अर्थात घटने वाली घटनाओं के कारण का पता रहता है। लीला अर्थात बहुत ही आसान एवं जिसे करने पर किसी प्रकार का प्रयास न करना पड़े। भगवान के द्वारा की हुई अनेक क्रियाएं लीला हैं क्योंकि उन घटनाओं के कारण नहीं पता। जिन घटनाओं के कार्य कारण सम्बन्ध पता होते हैं, वे क्रीड़ा हो सकते हैं पर लीला नहीं। भगवान के द्वारा सृष्टि करना, पालन करना, संहार करना, इन कारणों का पता केवल ईश्वर के पास रहता है।)

494. **भोगेशी** – भोग क्रिया पर अनुशासन करने वाली। भोग क्रिया का अर्थ है ऐन्द्रिक सुख, अनुभव। भोग का अर्थ उपभोग करना, ऐन्द्रिक अनुभव लेना भी होता है और सांसारिक सुख देने वाले पदार्थ भी होता है अर्थात भोग क्रिया भी है और पदार्थ भी है। शासन करना या अनुशासन करने का तात्पर्य है कि ऐन्द्रिक सुख देना है या नहीं देना है, कितना देना है, कौन सा देना है, कब तक देना है यह निर्धारित करना। ईश् का अर्थ शासन करना होता है और ईष्टे का अर्थ प्रेरित करना होता है। भोग पदार्थों को प्रेरित करने वाली अर्थात उपासकों तक भोगों को प्रेरित कर पहुँचाने वाली। भोगों की ईश्वरी। ईश्वरी अर्थात देने वाली या रक्षा करने वाली या अधिकारिणी।

495. **भोगवर्धिनी** – भोगों को बढ़ाने वाली। उपासकों की उपासना से खुश होकर उन्हें और अधिक भोग पदार्थों को देने वाली या ऐन्द्रिक सुखों के उपभोग की वृद्धि करने वाली। भोग भी इहलौकिक भोग एवं पारलौकिक भोग के प्रकार वाले होते हैं। स्वर्ग आदि में ऐन्द्रिक सुख पृथ्वी में होने वाले सुख से बढ़कर होता है।

496. **भोगांगी** – जिनके अंग विभिन्न विषयों या पदार्थों का उपभोग/ऐन्द्रिक अनुभूति करने वाले हैं। प्राणी जितने भी अंगों से भोग करता है वे सारे अंग देवी में है। देवी के विराट् स्वरूप में भोग करने वाले समस्त अंग होंगे। अंगति का अर्थ जाना भी होता है। इस प्रकार भोगांगी का अर्थ हुआ भोग की ओर जाने वाली या भोगों तक पहुँचाने वाली। भोगों को दिलाने वाली। अंगति अर्थात जाने वाली और अंगयति अर्थात ले जाने वाली, पहुँचाने वाली या दिलाने वाली। अंगति इति अंगी से जाने वाली अर्थ निकलेगा और अंगयति इति अंगी से दिलाने वाली या पहुँचाने वाली अर्थ निकलेगा। भोगों की अंगस्वरूपा।

497. **भोगरमणी** – भोगों से सुख प्राप्त करने वाली। भोग में रमण करने वाली अर्थात स्थित रहने वाली। रमण करना अर्थात सुख का अनुभव करना, वहाँ स्थित होना। भोगों में रमण या विचरण करने वाली या विराजमान (settled) रहने वाली। भोग में जिनका मन टिका हुआ है अर्थात उनके मन को अच्छा लगता है।

498. **भोगाचारविचारिणी** – भक्तों द्वारा किए जा रहे भोग के उपयोग (उपभोग) पर विचार करने वाली अर्थात यह सोचने वाली कि उस भोग का प्रयोग नीतियुक्त हो रहा है या नीति विरूद्ध हो रहा है, स्वार्थ में प्रयोग हो रहा या परोपकार में है। भोग अर्थात भेब्य पदार्थ एवं आचार अर्थात प्रयोग या उपभोग। भोग क्रिया पर विचार करने वाली। भोग क्रिया में विचरण करने वाली अर्थात रहने वाली। चर् धातु से चारिणी बनने पर विचरण करना अर्थ निकलता है। चर् धातु से पहले चारिन् शब्द बनाएंगे। स्त्रीलिंग में चारिणी शब्द बनेगा और चारी से चारिणी बनेगा। आचार का अर्थ है क्रिया। भोगों का आचार विचार करने वाली।

499. **भोगाश्रया** – भोगों की आधार स्वरूपा। आधार या आश्रय अर्थात इन पर ही भोग टिके हुए हैं। ये रहें तो भोग सम्भव है और ये हट जाएं तो भोग गिर जाएं अर्थात समाप्त हो जाएं। इनकी अनुपस्थिति से न तो भोग पदार्थ रहेंगे और न उपभोग क्रिया रहेगी। इन्द्रियाँ और मन तभी उपभोग कर पाती है जब उन्हें आत्मा रूपी आश्रय रहता है। जीवात्मा के निकलने पर आप मृत व्यक्ति के मुँह में खाद्य सामग्री रखें तो वह खा नहीं पाएगा। अच्छे गीत सुनाएं तो वह श्रवण का उपभोग नहीं कर पाएगा। आप मुलायम वस्त्र से छुएं तो वह स्पर्श सुख अनुभव नहीं कर पाएगा।

500. **भोगवती** – सांसारिक पदार्थों से युक्त। इनके पास सभी सांसारिक पदार्थ हैं क्योंकि सारा संसार इनके भीतर है। धर्म, अर्थ और काम का उपभोग करने वाली। प्राणी उपभोग करते हैं अर्थात प्राणी में रहने वाली आत्मा उपभोग करती है और आत्मा ही परमात्मा अर्थात देवी का स्वरूप है। भोगों से युक्त।

501. **भोगिनी** – भोग करने वाले की गृहिणी। भोगी वह है जो ऐन्द्रिक उपभोग करे और भोगिनी भोगी की पत्नी हुई। पदार्थों के उपभोग क्रिया वाली। भोगवती में पदार्थ अर्थ ले लिया और भोगिनी में उपभोग क्रिया अर्थ ले लिया जिससे दोनों शब्दों के अर्थ में अन्तर बना रहे। भोग वाली या भोग करने वाली। भोग स्वरूपा।

502. **भोगरूपिणी** – उपभोग क्रिया या ऐन्द्रिक सुख देने वाले पदार्थ के रूप में। रूपयति से भी रूपिणी बना सकते हैं तब अर्थ होगा भोग पदार्थों को दिखाने वाली। रूप अर्थात जो आँखों से दिखे। जिनका भोग आँखों से दिखाई देता है। भोगों का रूप धारण करने वाली।

503. **भोगाङ्कुरा** – भोगों की कारण अर्थात भोगों की जन्मदात्री। भोगों की प्रारम्भिक अवस्था स्वरूपा। अंकुर बीज के विकास की पहली अवस्था है और इसे वृक्ष का कारण भी माना जा सकता है। भोगों की कारणभूता। जिनके कारण भोग लोगों को प्राप्त होते हैं।

504. **भोगविधा** – भोगों के जितने भी प्रकार होते हैं अर्थात जितने भी रूप होते हैं उनके स्वरूप वाली। भोग का अर्थ ऐन्द्रिक अनुभूति देने वाले पदार्थ भी है और ऐन्द्रिक अनुभूति रूपी क्रिया भी है। भोग के प्रकार के स्वरूप वाली। चार प्रकार के भोग हैं। भक्ष्य, लेह्य, पेय, चोष्य। विविध प्रकार के भोगों की विधा या प्रकार।

505. **भोगाधारनिवासिनी** – भोगों के आधार में निवास करने वाली। आधार अर्थात जिसके बिना कोई चीज टिक नहीं सकती, अस्तित्व में रह नहीं सकती। भोग का तात्पर्य है सुख का आस्वादन या सुख देने वाले पदार्थ।

506. **भोगाम्बिका** – ऐसी अम्बिका जो उपभोग क्रिया करती हैं। देवी आत्मस्वरूपा हैं। इन्द्रियाँ और मन जो उपभोग करता है अनुभव करता है वह वास्तव में आत्मा ही उपभोग करता है।

507. **भोगरता** – भोगों में संलग्न रहने वाली या अत्यधिक प्रसन्न रहने वाली। रत का एक अर्थ है प्रसन्न।

508. **भोगसिद्धिविधायिनी** – भोगों की सिद्धि करने वाली अर्थात प्राप्त कराने वाली।

509. **भोजस्था** – भोजपत्र पर विराजमान रहने वाली।

510. **भोजनिरता** – विविध प्रकार के भोजनों में संलग्न रहने वाली।

511. **भोजनानन्ददायिनी** – भोजन के आनन्द को देने वाली। भोजन क्रिया से मिलने वाला आनन्द देवी के कारण होता है।

512. **भोजनानन्दलहरी** – भोजन के आनन्द की लहरी अर्थात धारा अर्थात आनन्द को बहाने वाली। लहरी का अर्थ मौज या लहर, लहरी का अर्थ मौज या आनन्द लेने वाला भी होता है अर्थात मनमौजी। भोजन के आनन्द का मौज लेने वाली।

513. **भोजनान्तर्विहारिणी** – भोजन के मध्य में विराजमान रहने वाली।

514. **भोजनानन्दमहिमा** – अच्छे भोजन करने से होने वाले आनन्द की महिमा (महत्व स्वरूपा)। महिमा का तात्पर्य है कि भोजन से मिलने वाला आनन्द इन्ही के कारण है। महिमा या महत्व का एक अर्थ यह भी है कि इनको भोजन से मिलने वाला आनन्द दूसरों को मिलने वाले आनन्द से बढ़कर है। भोजन के आनन्द से महिमा युक्त।

515. **भोजनानन्दभोग्यदा** – भोजन के आनन्द और विविध प्रकार के भोग योग्य पदार्थों को देने वाली।

516. **भोजनानन्दरचना** – भोजन के आनन्द की रचना करने वाली अर्थात उसकी विधात्री। भोजन से मिलने वाले आनन्द की उत्पत्ति शक्ति अर्थात भोजन से मिलने वाला आनन्द देवी के कारण होती है।

517. **भोजनानन्दहर्षिता** – भोजन के रसास्वाद से हर्षित होने वाली। रस का अर्थ आनन्द है।

518. **भोजनाचारचतुरा** – भोजन के आचार में दक्ष। शास्त्र में बताया गया विधान आचार है। भोजन बनाने एवं खाने के लिए चतुर हैं।

519. **भोजनाचारमण्डिता** – अच्छे प्रकार से भोजन करने के कारण जो सुशोभित या अच्छी लगती हैं। आचार अर्थात क्रियाविधि। अच्छे प्रकार से या सलीके से भोजन करने से देवी और अधिक सुन्दर लगने लगती हैं। भोजन के आचार से अभिमण्डित या अलंकृत।

520. **भोजनाचारचरिता** – भोजन की क्रिया है चरित जिसका। भक्षण क्रिया है चरित जिसका। भोजन के आचार से सुन्दर है रहन सहन या जीवन जिनका।

521. **भोजनाचारचर्चिता** – जिनके भोजन का आचार चर्चित है। भोजनाचार अर्थात भोजन करना, आचार्यते अर्थात क्रियते। क्या क्या भोजन करती हैं अर्थात उन्हें क्या क्या चढ़ाना चाहिए यह चर्चित है अर्थात शास्त्रों में वर्णित है। आचार अर्थात शास्त्रों में कहे गये विधि निषेध कर्म अर्थात क्या करना है और क्या नहीं करना है। देवी को भोजन के रूप में क्या चढ़ाना चाहिए और क्या नहीं चढ़ाना चाहिए वह शास्त्रों में वर्णित है। क्या भक्ष्य है, क्या अभक्ष्य है, किस ऋतु में कैसा खाना खाना चाहिए, ब्राह्मणों को कैसा खाना चाहिए, सतोगुणी को कैसा खाना चाहिए, इस प्रकार के विचारों से ओतप्रोत। ऐसे ज्ञान का निर्धारण जिनके द्वारा हुआ है। भोजन के आचार से चर्चित। श्रेष्ठ तरीके से भोजन करने वाली के रूप में प्रसिद्ध।

522. **भोजनाचारसम्पन्ना** – भोजन के आचार से संयुक्त। आचार अर्थात क्रिया। भोजन करने की क्रिया भोजनाचार है। शास्त्र में जिस प्रकार करने की विधि बताई गई है वह है आचार, उस आचार से युक्त अर्थात उसे जानने वाली।

523. **भोजनाचारसंयुता** – भोजन के आचार (तौर तरीके से की जाने वाली क्रिया) से सम्यक् रूप से युक्त। तात्पर्य है विधान के अनुसार भोजन क्रिया करने वाली।

524. **भोजनाचारचित्तस्था** – भोजन करने के लिए प्रवृत्ति है जिस चित्त में उसमें स्थित। पहले मन ही इच्छा करता बाद में इन्द्रियां सक्रिय होती हैं। भोजन की क्रिया के लिए मन या रूचि में स्थित। भोजन के आचार से चित्त अर्थात हृदय में विराजमान रहने वाली।

525. **भोजनाचाररीतिदा** – भोजन की जो भक्षण क्रिया है वह है परम्परा या शैली, उस शैली को देने वाली। भोजन करने के लिए परम्परागत व्यवहार देने वाली। भोजन क्रिया प्रत्येक दिन की जाती है अतः वह परम्परा या रीति हो जाती है। भोजन की क्रिया (आचार) की शैली अर्थात किस प्रकार करना है उसे देने या सिखाने वाली। प्रकृति सभी को भोजन करना सिखा देती है। भोजन के आचार की रीति अर्थात प्रकार अर्थात विधि को देने वाली।

526. **भोजनाचारविभवा** – जिनके भोजन करने का ढंग है श्रेष्ठ। विभव का अर्थ होता है धन जो श्रेष्ठता का प्रतीक है। भोजन करना ही है वैभव जिसका। भोजन के आचार से युक्त है वैभव जिनका।

527. **भोजनाचारविस्तृता** – भोजन के रूप में विस्तृत अर्थात विस्तृत भोजन वाली। पूरा ब्रह्माण्ड खा जाती हैं। दुर्गा–सप्तशती में आया है कि देवी पूरी की पूरी सेना खा जाती हैं अर्थात बहुत विस्तार वाले भोजन वाली। आज की शब्दावली में कहें तो अर्थ होगा जिनके भोजन की सूची (List) बहुत लम्बी है अर्थात उन्हें बहुत सारी चीजें

चढ़ानी पड़ती हैं। आपने छप्पन भोग सुना होगा। भोजन के करने का विस्तार पूर्वक चर्चा या निर्धारण जिनके द्वारा हुआ है। भोजन सम्बन्धी आचार के विस्तृत वर्णन वाली अर्थात जिन्होंने विस्तार पूर्वक भोजन के आचार के सम्बन्ध में शास्त्रों के माध्यम से बताया है। कैसे खाना चाहिए, क्या खाना चाहिए क्या नहीं, रोगी होने पर क्या खाना चाहिए, किस ऋतु में क्या खाना चाहिए, किस प्रकार के व्यक्ति को क्या खाना चाहिए इन सबका विस्तृत वर्णन जिस शास्त्र में हुआ है उस शास्त्र के स्वरूप वाली या उस शास्त्र के स्वरूप को धारण करने वाली। भोजन के आचार से विस्तृत है चरित्र जिनका।

528. **भोजनाचाररमणी** – भोजन की क्रिया से आनन्दित होने वाली। भोजन के आचार से आनन्दित होने वाली।

529. **भोजनाचाररक्षिणी** – भोजन करने के व्यवहार (नियम) की रक्षा करने वाली। रक्षा कैसे करेंगी, कैसे कहेंगी? इसका उत्तर है कि कहकर कहेंगी, शास्त्रों के माध्यम से कहकर या अन्तःकरण से प्रेरणा देकर। शास्त्र देववाणी होते है और इसे किसी राजा ने नहीं बनाया है। दूसरों से भोजन सम्बन्धी नियम का पालन कराकर रक्षा करती हैं। भोजन के आचार की रक्षा करने वाली। भोजन के स्वरूप की रक्षा करने वाली अर्थात पालन करने वाली। कैसा भोजन करना चाहिए, कब करना चाहिए, किस प्रकार करना चाहिए यह सब बताकर रक्षा करने वाली या पालन करवाने वाली। (स्वयं का आचरण आचार है, दूसरों के साथ किया गया व्यवहार, व्यवहार कहलाता है।)

530. **भोजनाचारहरिणी** – भोजन करना रूपी आचार को हरने वाली अर्थात गरीबों को भोजन से वंचित भी यही करती हैं। पूर्व पाप कर्मों के कारण भोजन करने की क्रिया को हर लेती हैं। देवी समृद्धि भी देती हैं और गरीबी भी देती हैं। भोजन के आचार का हरण करने वाली।

531. **भोजनाचारभक्षिणी** – आचार पूर्वक भोजन करने वाली अर्थात सही क्रियाविधि से भोजन करने वाली। भोजन के आचार (क्रिया या क्रियाकलाप) को ग्रहण करने वाली।

532. **भोजनाचारसुखदा** – भोजन के आचार से सुख को प्रदान करने वाली। भोजन क्रिया द्वारा प्राणियों को सुख देने वाली। क्रिया अर्थात शक्ति अर्थात देवी।

533. **भोजनाचारसुस्पृहा** – भोजन के आचार की अत्यधिक अभिलाषा रखने वाली।

534. **भोजनाहारसुरसा** – भोजन करने में अच्छे प्रकार का स्वाद लेने वाली। आहार अर्थात भोजन करना रूपी क्रिया। भोजन ही है आहार (खाना) उससे अच्छा स्वाद लेने वाली। भोजन के आहार में सुन्दर रस को ग्रहण करने वाली।

535. **भोजनाहारसुन्दरी** – जिनका भोजन और भोजन की क्रिया सुन्दर है। आहार और भोजन का एक ही अर्थ होता है और हम आहार को भोजन क्रिया के रूप में ले रहे हैं। आपने दुकानों में सजा हुआ भोजन देखा होगा यही भोजन की सुन्दरता है। भोजन के आहार को सुन्दरता से (सलीके से, विधिपूर्वक) ग्रहण करने वाली। भोजन के आहार के समय सुन्दर रूप धारण करने वाली।

536. **भोजनाहारचरिता** – भोजन का आहार (करना) चरित है जिनका अर्थात उसे करना ही करना है। चरितार्थ अर्थात सफल होना अर्थात ऐसा होना ही है। आहार अर्थात भोजन करना रूपी क्रिया। प्रलय काल में संसार का भक्षण करना ही करना है अर्थात यह करना पूर्णतया निश्चित है। भोजन में जो आहार (खाद्य पदार्थ) लिया जाता है उससे जिनका जीवन सिद्ध होता है अर्थात सफल या निर्धारित होता है। भोजन के आहार में जिनकी विशेष चरित या रूचि देखी जाती है।

537. **भोजनाहारचञ्चला** – भोजन के आहार करते समय चंचल स्वभाव वाली अर्थात यह भी खायेंगी, वह भी खायेंगी।

538. **भोजनास्वादविभवा** – भोजन के आस्वादन में श्रेष्ठता वाली अर्थात विधिपूर्वक या खूब चबा चबा कर खाने वाली। वैभव श्रेष्ठता का प्रतीक है। भोजन में जो आस्वाद है, वह स्वाद ही है धन जिसका। भोजन में स्वाद देवी के कारण ही आता है। बीमार व्यक्ति को कई बार भोजन में स्वाद नहीं मिलता। भोजन के आस्वादन में वैभव दिखलाने वाली अर्थात वैभव सम्पन्न भोजन का रस या आनन्द लेने वाली।

539. **भोजनास्वादवल्लभा** – भोजन का रसास्वाद प्रिय है जिन्हें।

540. **भोजनास्वादसन्तुष्टा** – भोजन के आस्वादन से सन्तुष्ट रहने वाली।

541. **भोजनास्वादसम्प्रदा** – भोजन के रसास्वाद को सम्यक् रूप से प्रदान करने वाली।

542. **भोजनास्वादसुपथा** – भक्तों द्वारा किये जा रहे भोजन के आस्वाद (चखना) को बहुत अनुकूल बनाने वाली अर्थात स्वास्थ्यप्रद बनाने वाली। पथ्य अर्थात स्वास्थ्य के लिए हितकारी। भोजन के आस्वादन में सुन्दर मार्ग का आश्रय लेने वाली।

543. **भोजनास्वादसंश्रया** – भोजन के आस्वाद का सम्यक् आश्रय लेने वाली अर्थात प्राणियों के द्वारा भोजन के स्वाद में रहने वाली अर्थात स्वादरूपिणी। भोजन के आस्वादन में आनन्द लेने वाली।

544. **भोजनास्वादनिरता** – भोजन के रसास्वादन में संलग्न रहने वाली। भोजन के रसास्वाद से अति प्रसन्न। नि अर्थात अधिक एवं रत अर्थात प्रसन्न।

545. **भोजनास्वादनिर्णिता** – जिनके भोजन का स्वाद वर्णित है शास्त्रों के रूप में। भोजन की स्वादिष्ट चीजों में कौन सी चीजें देवी को देनी है यह शास्त्र में वर्णित है। भोजन का स्वाद (अच्छा खराब स्वाद) उसका निर्णय जिसके अधीन है। भोजन के स्वाद में निर्णय लेने वाली अर्थात अच्छा स्वाद या खराब स्वाद आदि का निर्णय लेने वाली। कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र से निर्णित का अर्थ विशेष परिस्थितियों में निर्णय करने वाला भी कर सकते हैं यद्यपि शब्द कोशों में ऐसा अर्थ नहीं मिलता है। भोजन के आस्वाद का निर्णय या निश्चय करने वाली। भोजन के रसास्वादन में सम्यक् अर्थात सही निर्णय लेने वाली।

546. **भौक्षरा** – भगवान विष्णु को भी आश्रय देने वाली। एकाक्षरीकोश में भौ का अर्थ रमापति अर्थात भगवान विष्णु दिया गया है। क्ष अर्थात निवास। राति (देता है) से रा अक्षर ले लिया। भ+ओ+क्षरयति इति भौक्षरा। भय और जीवों का नाश करने वाली। प्राणियों की आयु पूरी होने पर या प्रलयकाल आने पर उनका नाश कर देती हैं। एकाक्षरीकोश के अनुसार भ का अर्थ भय एवं ओ का अर्थ है जीव। नित्य (अविनाशी) और विनाशी दोनों तत्वों में विराजमान। भौ अर्थात विष्णु जी अर्थात अविनाशी। क्षर अर्थात जिसका नाश होता है। विष्णु जी के समस्त प्राणी वाली। क्षर अर्थात प्राणी। भूमि रूपी शरीर वाली। क्षर शरीर को भी कहते हैं। भूमि या स्थान देने वाली। भूक्षर में स्वार्थ में अण् प्रत्यय लगाने से भौक्षर बना। क्षर का अर्थ नाश भी होता है और मधुक्षर से स्रवण अर्थ भी होता है। स्रवण अर्थात गति या देना। भौ अर्थात विष्णु और क्षर अर्थात जीवात्मास्वरूपा अर्थात परमात्मा और जीवात्मा स्वरूपा। कल्याणकारी मन्त्र स्वरूप अक्षरों से सुशोभित। भोगों को देने वाली यह अर्थ भी हो सकता है। भुक्ष से तद्धित प्रत्यय लगाकर भौक्ष बना। भौक्षम् राति इति भौक्षरा। भोगों को देने वाली। जन्म मृत्यु से बँधी हुई। भू का अर्थ है उत्पन्न होना अर्थात जन्म और क्षर का अर्थ है नाश या मृत्यु।

547. **भौक्षरेशानी** – अविनाशी और विनाशी दोनों तत्वों पर शासन करने वाली। भौ अर्थात विष्णु जी अर्थात अविनाशी। कल्याणकारी अक्षरों की ईश्वरी। जन्म और मृत्यु के बन्धन में जो वस्तुऐं और प्राणी जुड़े हैं उनकी ईश्वरी अर्थात उन पर नियन्त्रण करने वाली।

548. **भौकाराक्षररूपिणी** – विष्णु जी में अविनाशी रूप से स्थित रहने वाली। भौकार अर्थात विष्णु जी। विष्णु

के आकार में अविनाशी स्वरूप वाली। एकाक्षरी कोश के अनुसार भौ अर्थात विष्णु। विष्णु जी में अविनाशी रूप में रहने वाली या अविनश्वर विष्णु में स्थित रहने वाली। विष्णु जी मूलरूप में अविनश्वर है पर जब अवतार लेते हैं तब नश्वर हो जाते है। भौ, का, र अक्षर स्वरूप वाली। ब्रह्मा, विष्णु, रूद्ररूपिणी अर्थात उत्पत्ति, स्थिति और नाश करने वाली अविनाशी स्वरूपा। भौ अर्थात विष्णु, का अर्थात ब्रह्मा और र अर्थात शिव। आनन्द/आदर के लिए प्रयुक्त होने वाले अक्षरों के स्वरूप को धारण करने वाली। भौ ध्वनि को निरूपित करने वाले अक्षर के स्वरूप वाली। भौ इस आकृति के अक्षर के रूप वाली। विष्णु के स्वरूप में अविनाशी रूप वाली। भौकार अर्थात विष्णु जी का स्वरूप।

549. **भौक्षरस्था** – अविनश्वर और नश्वर पदार्थ मात्र में स्थित। भौ अर्थात विष्णु जी अर्थात अविनश्वर। श्रेष्ठ अक्षर में स्थित रहने वाली। जन्म और मृत्यु दोनों में रहने वाली। भू से भौ बना। भू का अर्थ है जन्म और क्षर का अर्थ है नाश अर्थात मृत्यु।

550. **भौक्षरादा** – भूमि रूपी शरीर को अच्छी तरह देने वाली। क्षर अर्थात शरीर। आदा अर्थात आ (समन्तात् अर्थात चारों ओर से, पूर्ण) ददाति अर्थात चारों ओर से या भलीभाँति देने वाली। विष्णु के शरीर को देने वाली अर्थात विष्णु का शरीर भी इन्हीं से उत्पन्न हुआ। भौ का अर्थ है विष्णु और क्षर का अर्थ है शरीर। कल्याणकारी मन्त्रों को देने वाली। (यदि भौक्षरादि नाम है तो अर्थ है अविनश्वर और नश्वर का आदि या मूल)। जन्म और मृत्यु दोनों का सम्पूर्ण रूप से खण्डन अर्थात नाश करने वाली। यहाँ शब्द के अन्त में दा दो अवखण्डने का है, न कि दा ददाति का। भू से भौ बना। भू का अर्थ है जन्म और क्षर का अर्थ है नाश अर्थात मृत्यु।

551. **भौक्षरस्थानवासिनी** – नित्य (अविनाशी) और अनित्य (विनाशी) स्थान में रहने वाली। भूमि रूपी शरीर ही है स्थान, उस स्थान में निवास करने वाली। कल्याणकारी स्थानों में निवास करने वाली। जन्म और मृत्यु के स्थान में रहने वाली अर्थात पृथ्वी में रहने वाली।

552. **भङ्कारी** – भम् की ध्वनि का उच्चारण करने वाली। श्रेष्ठ कल्याणकारी ध्वनि का उच्चारण करने वाली।

553. **भर्मिणी** – स्वर्ण वाली अर्थात स्वर्ण से युक्त। स्वर्ण की कान्ति से युक्त। स्वर्णमयी। भर्मन् का अर्थ तेज या स्वर्ण होता है। भृ भरणे धातु होती है अर्थात वृत्ति स्वरूपा या भरण करने वाली। भरण क्रिया रूपा। सारे संसार का पालन पोषण या भरण पोषण करने वाली।

554. **भर्मी** – स्वर्ण स्वरूपा। तेजस्विनी। लोक कल्याण के लिए समस्त संसार में भ्रमण करने वाली। भर्म अर्थात भरणीय अर्थात भरण करने योग्य अर्थात संसार रूपा।

555. **भस्मेशी** – भस्म स्वरूपा ईश्वरी। भस्मों की ईश्वरी अर्थात सभी प्रकार की श्रेष्ठ धातुओं, श्रेष्ठ सम्पत्तियों की ईश्वरी।

556. **भस्मरूपिणी** – स्वयं भस्म स्वरूपा है। इस भस्म का शिवजी द्वारा धारण करना आवश्यक नहीं है। श्रेष्ठ सम्पत्ति रूपिणी। सोना, चाँदी आदि धातु रूपा। शंकर जी के आभूषण स्वरूपा उनके शरीर में लगने वाली भस्मरूपा। भस्म के रूप को धारण करने वाली। रूप का अर्थ गुण (प्रभाव) भी होता है।

557. **भङ्कारा** – नक्षत्रों को बनाने वाली। दीप्तिमान वस्तुओं को बनाने वाली। भ का अर्थ है नक्षत्र। भम् भम् ध्वनि करने वाली। भम् का अर्थ है स्वयं प्रकाश। प्रकाशित करने वाली अर्थात व्यक्ति को तेजस्वी बनाने वाली। भम् वह तत्व है जिसके व्यक्ति में आने पर वह तेजस्वी हो जाता है। सूर्य इसी भम् के कारण इतना अधिक प्रकाशित है कि वह प्रकाशक बन गया है।

558. **भञ्चना** – नक्षत्रों को बनाने वाली एवं नाश करने वाली। भम् चिनोति च नाशयति च। भंचना के च का

सम्बन्ध चिनोति से एवं ना का सम्बन्ध नाशयति से। चिनोति अर्थात चुनना अर्थात बनाना। दीप्तिमान नक्षत्रों द्वारा पूजित। भ का अर्थ नक्षत्र और दीप्ति होता है। अञ्च धातु का अर्थ पूजा करना होता है। नक्षत्रों की गति स्वरूपिणी। भ का अर्थ है नक्षत्र। अञ्च धातु का अर्थ पूजा भी होता है और गति भी होता है। नक्षत्रों को चयन करने वाली। भम् का अर्थ है नक्षत्र और चिनोति से चना बना।

559. **भस्मा** – शिव जी द्वारा धारण की गई भस्म स्वरूपा। शिव जी अलंकार के रूप में भस्म को धारण करते हैं। भज्यते सेव्यते से भस्म शब्द बना। इस नाम में वह भस्म जो शिव जी द्वारा धारण की गई है अर्थ है। शंकर जी के शरीर में लगने वाली राख स्वरूपा। हवन के बाद पैदा हुई पवित्र राख स्वरूपा। भस्म स्वरूपा।

560. **भस्मस्था** – सोना, चाँदी में स्थित। भस्म में स्थित रहने वाली। भस्म का एक अर्थ सोना, चाँदी होता है। आपने स्वर्ण भस्म या चाँदी के भस्म का नाम सुना होगा।

561. **भस्मवासिनी** – आयुर्वेद में बनने वाली भस्म में वास करने वाली। भस्म में निवास करने वाली। ऊर्जा, शक्ति, आरोग्य शक्ति के रूप में भस्म में वास करने वाली।

562. **भक्षरी** – भोजन को देने वाली। भक्ष अर्थात भोजन, राति अर्थात ददाति अर्थात देना। भ अर्थात नक्षत्रों को समाप्त करने वाली या उसका नाश करने वाली। क्षरी अर्थात नाश करने वाली। प्रलय काल में सभी कुछ समाप्त हो जाता है। प्रलय काल के समय सम्पूर्ण संसार को अपने में समेट लेने वाली।

563. **भक्षराकारा** – जिससे नक्षत्र निकलते हैं उस आकार वाली। भ का अर्थ है नक्षत्र। क्षरण अर्थात किसी चीज से निकलना जैसे पेड़ से दूध का क्षरण होना, गाय से दूध निकलता है इसलिए उसे क्षीर कहते हैं। तात्पर्य है कि देवी नक्षत्र निकलने का स्थान है। क्षर का अर्थ नाश भी होता है। तब इस नाम का अर्थ होगा नाशवान नक्षत्र के आकार वाली। भोजन देना है आकार जिसका अर्थात भोजन देने रूपी क्रिया स्वरूपा। भक्ष अर्थात भोजन, राति अर्थात ददाति अर्थात देना। सम्पूर्ण विश्व के भक्षण के लिए विशेष आकार स्वरूप को धारण करने वाली।

564. **भक्षरस्थानवासिनी** – भक्षण क्रिया जहाँ दी जाती है (अर्थात रसोई घर), उस स्थान में रहने वाली। प्रलय काल में विश्व को अपने में समाहित करने वाले स्थान पर रहने वाली।

565. **भक्षराढ्या** – पर्याप्त भोजन देने के गुणों से समृद्ध या गुणों वाली। भक्ष अर्थात भोजन, रा शब्दाक्षर राति से बना जिसका अर्थ है देना। सम्पूर्ण संसार को अपने में समाहित करने में आढ्य (सम्पन्न)। भक्षम् राति इति भक्षरः।

566. **भक्षरेशी** – भ जो क्षर है उनकी ईश्वरी अर्थात नाशवान नक्षत्रों की स्वामिनी। नक्षत्रों की गति की स्वामिनी। भ का अर्थ नक्षत्र, क्षर का अर्थ नाश भी होता है और स्रवण भी होता है। जैसे मधुक्षर अर्थात शहद का टपकना अर्थात शहद की गति। सम्पूर्ण संसार को अपने में समाहित करने की शक्ति स्वरूपा। ऐसी भस्म जो ईश्वरी भी है अर्थात ईश्वर की तरह कार्य करती है। साधारण भस्म नहीं है।

567. **भरूपा** – नक्षत्र स्वरूपा। शिव स्वरूपा। सूर्य स्वरूपा। चन्द्र स्वरूपा। शुक्र स्वरूपा। अग्नि स्वरूपा। दीप्ति या शोभा स्वरूपा। भय स्वरूपा। एकाक्षरी कोश में भ अक्षर के शिव, सूर्य, चन्द्र, अग्नि, नक्षत्र, शोभा, दीप्ति, भय, भ्रमर ये अर्थ दिये गये हैं।

568. **भस्वरूपिणी** – शिवरूपी धन के रूप वाली। भ का अर्थ है शिव और स्व का अर्थ है धन। नक्षत्र के अपने स्वरूप वाली। भ का अर्थ है नक्षत्र और स्व का अर्थ है अपना। नक्षत्र स्वरूप वाली या दीप्ति स्वरूप वाली। ब्रह्माण्ड में जहाँ भी दीप्ति है वह देवी का ही स्वरूप है। विशेष कान्ति को धारण करने वाली।

569. **भूधरस्था** – पर्वतों पर निवास करने वाली।

570. **भूधरेशी** – पर्वत पर रहने वाले शिव की पत्नी। भूधर अर्थात पर्वत और ईश अर्थात शिव। ईश या ईश्वर

का सामान्य अर्थ भगवान होता है किन्तु यदि एक भगवान लेना हो तो उसका तात्पर्य भगवान शिव होता है। भूधरेश अर्थात पर्वत पर रहने वाले शिव। हिमालय पर्वत पर स्थित रहने वाली देवी। यहाँ ईशी का अर्थ देवी या शक्ति किया गया है। पर्वतों की ईश्वरी।

571. **भूधरी** – पृथ्वी को धारण करने वाली। पृथ्वी को धारण करने वाले पर्वत की शक्ति स्वरूपा। भूधर भगवान शिव को भी कहते हैं। शिव की शक्ति स्वरूपा।

572. **भूधरेश्वरी** – हिमालय के ऐश्वर्य की स्वामिनी। भूधर अर्थात पर्वत अर्थात हिमालय। हिमालय को समृद्ध करने वाली। हिमालय का ऐश्वर्य बढ़ाने वाली। ईश्वरी अर्थात ऐश्वर्य की स्वामिनी अर्थात ऐश्वर्य देने वाली। स्वामिनी होगी तभी वह दूसरों को दे सकेगी। देवी या देवता का प्रयोजन ही अभीष्ट को देना होता है। देवी या देवता भक्तों से प्रसन्न होने पर उन्हें कुछ अवश्य देते हैं। श्रेष्ठ पर्वतों की ईश्वरी। पर्वत की आराध्या अर्थ भी निकलता है पर एक अन्य नाम भूधराधीशाराध्या भी दिया गया है, जिसके कारण यह अर्थ उस नाम के लिए छोड़ दिया जा रहा है जिससे नाम के अर्थ में दोहराव न हो।

573. **भूधरानन्दरमणी** – हिमालय पर्वत को आनन्दित करने वाली। पर्वतों के आनन्द में रमण या विचरण करने वाली।

574. **भूधरानन्दपालिनी** – कैलाश पर्वत पर आनन्दित होने वाले भगवान शिव का पालन करने वाली अर्थात उनकी रसोई का जिम्मा लिये हुए अर्थात उनके लिए खाने पीने की व्यवस्था करने वाली। पालन में रक्षा अर्थ भी आता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ कैलाश पर्वत पर आनन्दित होने वाले भगवान शिव की रक्षा करने वाली। पर्वतों के आनन्द का पालन पोषण करने वाली या रखवाली करने वाली।

575. **भूधरानन्दजननी** – हिमालय के हृदय में आनन्द को उत्पन्न करने वाली। हिमालय पार्वती जी के पिता थे। पर्वतों के आनन्द को प्रकट करने वाली।

576. **भूधरानन्दवासिनी** – हिमालय में रहना ही जिसका आनन्दवास है अर्थात हिमालय पर्वत पर या कैलाश पर्वत पर आनन्दपूर्वक रहने वाली। पर्वत में हवा पानी शुद्ध होता है, बारिश से ऊपर की गन्दगी बह जाती है। शुद्धता और पवित्रता के कारण पर्वत में आनन्द मिलता है। पर्वतों के आनन्द में निवास करने वाली।

577. **भूधरानन्दरमणी** – पर्वत (कैलाश) पर आनन्दित होने वाले अर्थात भगवान शिव की रमणी (श्रीमती)। रमयति इति रमणी से रमणी का अर्थ होगा प्रसन्न करने वाली। कैलाश पर्वत पर आनन्दित होने वाले भगवान शिव को प्रसन्न रखने वाली यह अर्थ भी निकलता है। कैलाश पर आनन्द से रमण करने वाले शंकर जी की पत्नी। पर्वतों के आनन्द की रमणी या प्रियतमा।

578. **भूधरानन्दरक्षिता** – हिमालय द्वारा खुशी खुशी रक्षा की गई जिनकी। हिमालय के घर पैदा हुई थी और हिमालय ने खुशी खुशी इनका पालन किया था अर्थात रक्षा की थी। पर्वतों के आनन्द के द्वारा संरक्षित। रक्षित का सामान्य अर्थ है जिसकी रक्षा की गई है। यदि तृच् प्रत्यय लगाकर रक्षिता बनाये तो अर्थ होगा रक्षा करने वाली। भूधर अर्थात हिमालय के आनन्द की रक्षा करने वाली।

579. **भूधरानन्दमहिमा** – कैलाश पर्वत पर आनन्दित होने वाले शिव की महिमा स्वरूपा अर्थात महिमा देने वाली अर्थात दूसरों से श्रेष्ठ करने वाली। महिमा अर्थात महिमा+आ, आ का अर्थ है देना। भगवान शिव महादेव कहलाते हैं अर्थात बाकी देवताओं से बढ़कर हैं, यही उनकी महिमा है। इस महिमा को देने वाली देवी जी हैं। महिमा या महत्व का अर्थ होता है जो दूसरों से बढ़कर हो या जिसके कारण बहुत अधिक प्रभाव पड़ता हो। पर्वत पर होने वाले आनन्द की महिमा (महत्व) स्वरूपा अर्थात पर्वत पर मिलने वाला आनन्द दूसरी जगहों से मिलने वाले आनन्द

से बढ़कर होता है। हिमालय का आनन्दपूर्वक महिमा मण्डित करने वाली। शिव सहस्रनाम के अनुसार भूधर शिव जी का भी नाम है। शिवजी का आनन्दपूर्वक महत्व इनके कारण है। पर्वतों के आनन्द की महिमा से युक्त।

580. **भूधरानन्दमन्दिरा** – हिमालय के आनन्द की आश्रय अर्थात हिमालय को आनन्द इन्हीं के कारण मिलता है। पर्वतों के आनन्द की आश्रय स्थान। पर्वतों में मिलने वाले आनन्द का आश्रय अर्थात आनन्द इन्हीं के कारण होता है।

581. **भूधरानन्दसर्वेशी** – हिमालय की सम्पूर्ण रूप से ईश्वरी अर्थात उन्हें सभी प्रकार के आनन्द का अनुभव कराने वाली। कैलाश पर्वत पर आनन्दित होने वाले शिव की सर्वतोभावेन (सम्पूर्ण रूप से) ईशी अर्थात शासन करने वाली। भगवान शिव पर पूरी तरह से शासन करती हैं अर्थात प्रत्येक क्षेत्र में उनको कुछ भी करने का निर्देश दे सकती हैं। क्या देना, कौन सा देना, कब देना यह सब निर्धारित करती हैं। पर्वतों को आनन्दित करने में सर्वेसर्वा।

582. **भूधरानन्दसर्वसूः** – पर्वताकार आनन्द अर्थात बड़े से बड़े सभी आनन्दों की उत्पादिका अर्थात जन्म देने वाली। पर्वतों में सभी को आनन्द देने वाली। सू का अर्थ है जन्म देना। हिमालय के आनन्द को हर प्रकार से उत्पन्न करने वाली अर्थात अपने पिता हिमालय को सभी प्रकार के आनन्द देने वाली। भूधर का अर्थ शिव भी होता है।

583. **भूधरानन्दमहिषी** – पर्वताकार आनन्द अर्थात बड़े से बड़े आनन्द की पटरानी अर्थात उनपर अपना स्वामित्व रखने वाली। भूधरानन्द की पटरानी। भूधर अर्थात पर्वत। भूधर का अर्थ हिमालय पर्वत या शिव भी ले सकते हैं।

584. **भूधरानन्ददायिनी** – हिमालय को आनन्द देने वाली। भूधर अर्थात पर्वत अर्थात हिमालय। हिमालय के यहाँ बेटी के रूप में जन्म लेकर उन्होंने अपने पिता को आनन्द दिया। शिव सहस्रनाम के अनुसार भूधर का अर्थ शिव भी होता है। अतः इस नाम का अर्थ शिव को आनन्द देने वाली भी होगा। भूधरानन्द को प्रदान करने वाली। भूधर अर्थात पर्वत अर्थात बड़ा आकार। पर्वताकार अर्थात बड़े से बड़े आनन्द को प्रदान करने वाली।

585. **भूधराधीशधर्मेशी** – हिमालय के धर्म की ईश्वरी अर्थात हिमालय उनके निर्देश में काम करते हैं। हिमालय राजा थे अतः उनका धर्म है राजधर्म। राजधर्म अर्थात प्रजा की रक्षा करना, शत्रु के आक्रमण से बचाना, लोगों के साथ न्याय करना, राज्य में होने वाले उपद्रवों से निपटना, अनुग्रह एवं निग्रह करना। अनुग्रह अर्थात कृपा और निग्रह अर्थात दण्ड। हिमालय देश की रक्षा भी करता है अतः रक्षा करना एक धर्म है। (यदि भूधरानन्दधर्मेशी नाम है तब अर्थ है – बड़ा आनन्द ही है धर्म, उसकी ईश्वरी अर्थात देने वाली। भूधरानन्द अर्थात पर्वताकार आनन्द अर्थात बड़ा आनन्द जैसे भीमानन्द का अर्थ भयंकर आनन्द नहीं बल्कि बड़ा आनन्द होगा। भूधरानन्द के धर्म की ईश्वरी)।

586. **भूधरानन्दधर्मिणी** – हिमालय के धर्म अर्थात राजधर्म के स्वरूप वाली। धर्म या राजधर्म देवी का ही स्वरूप है। बड़ा आनन्द ही है धर्म या स्वभाव जिसका। पर्वताकार आनन्द अर्थात बड़ा आनन्द। भूधरानन्द के धर्म को धारण करने वाली।

587. **भूधराधीशधर्मेशी** – हिमालय के धर्म अर्थात राजकर्म की ईश्वरी। यहाँ धर्म का अर्थ कर्म से है। ईश्वरी अर्थात मार्गदर्शन करने वाली, राजा को रास्ता दिखाने वाली। राजा को शुभ कार्य में प्रवृत्त करने वाली। राजा लोग इष्ट देवी के सहारे रहते थे। इष्ट का ध्यान कर ही कर्म करते थे। (यदि भूधरानन्दधर्मेशी नाम है तब अर्थ है पर्वत पर निवास करने से होने वाले आनन्द धर्म की ईश्वरी। ईश्वरी अर्थात आनन्द इनके अनुशासन में रहता है अर्थात देना, नहीं देना, कितना देना आदि यह सब देवी ही निर्धारित करती हैं। शिव जी पर्वत पर निवास करते हैं और पार्वती जी भी वहीं निवास करती हैं जहाँ रहने वाले सभी को आनन्द की अनुभूति होती है अन्यथा भी पहाड़ों पर रहने वाले लोगों को विशेष आनन्द की अनुभूति होती है। पर्वताकार आनन्द अर्थात बड़े से बड़े आनन्द के स्वभाव की ईश्वरी। भूधराधीश के धर्म की ईश्वरी। भूधराधीश अर्थात पर्वतों के अधिपति)।

588. **भूधराधीशसिद्धिदा** – हिमालय पर्वत को सिद्धि देने वाली। भूधराधीश को सिद्धि देने वाली।

589. **भूधराधीशकर्मेशी** – पर्वतराज के कर्मों की ईश्वरी। यहाँ पर ईश्वरी का अर्थ है मार्गदर्शन करने वाली, कर्मों का फल देने वाली।

590. **भूधराधीशकामिनी** – कैलाश पर्वत के अधिपति भगवान शिव की कामिनी अर्थात शिव द्वारा इच्छिता या शिव जिन्हें बहुत अधिक चाहते हैं। पर्वतराज हिमालय की कामिनी या प्रियतमा।

591. **भूधराधीशनिरता** – कैलाश पर्वत के अधिपति भगवान शिव के साथ अधिक जुड़ी हुई या शिव पर अधिक मन लगता है या अधिक प्रसन्न होती हैं। नि अर्थात नितराम् अर्थात अधिक। रत अर्थात लगा हुआ या जुड़ा हुआ, किसी पर प्रसन्न होने वाली। रम् धातु से रत बनने पर प्रसन्न होने वाली अर्थ निकलेगा। पर्वतराज में निरत रहने वाली।

592. **भूधराधीशनिर्णिता** – हिमालय के द्वारा आत्यन्तिक रूप से ले जाई गई या जानी गई। हिमालय ने पहले पहल जाना था। नितराम् नीता अर्थात पूर्णरूप से लाई गयी या पहले पहल लाई गई। देवी ने हिमालय के घर में जन्म लिया था, यही हिमालय द्वारा लाना हुआ। सामान्यतः निर्णीता शब्द होता है जिसका अर्थ है निश्चित की गई या नितान्त रूप से लाई गई। नी धातु में डितच् प्रत्यय लगाने से निता शब्द भी बन जाएगा और नी धातु से बनने के कारण उसका अर्थ भी वही होगा जो नीता का। (यदि भूधराधीशनिर्णीता नाम है तब अर्थ है – पर्वतराज हिमालय के द्वारा अपने घर लायी गई। नी धातु से निर्णीत बना जिसका अर्थ है ले जाना। पर्वतराज के द्वारा सम्मानित)।

593. **भूधराधीशनीतिस्था** – पर्वतराज हिमालय की नीति में विराजमान रहने वाली। कैलास पर्वत के अधिपति भगवान शिव की नीति में स्थित।

594. **भूधराधीशनीतिदा** – पर्वतराज हिमालय को अच्छी नीतियाँ देने वाली। पर्वतराज के माध्यम से विविध प्रकार की नीतियों को प्रदान करने वाली। कैलास पर्वत के अधिपति भगवान शिव को अच्छी नीति देने वाली।

595. **भूधराधीशभाग्येशी** – पर्वतराज हिमालय के भाग्य की ईश्वरी। ईश्वरी या स्वामिनी अर्थात कितना देना, किस प्रकार का देना, कब तक देना आदि निर्धारित करने वाली। कैलास पर्वत के अधिपति भगवान शिव के भाग्य की स्वामिनी।

596. **भूधराधीशभामिनी** – कैलाश पर्वत के अधिपति भगवान शिव की सुन्दर पत्नी। भामिनी क्रोध करने वाली सुन्दर स्त्री को कहते हैं पर यह क्रोध नकारात्मक क्रोध नहीं बल्कि रूठने वाला क्रोध होता है। प्रायः सुन्दर स्त्रियाँ ही रूठती हैं। पर्वतराज की सुन्दरी स्त्री। भामिनी ऐसी सुन्दर स्त्री होती है जो क्रोध भी करती है।

597. **भूधराधीशबुद्धिस्था** – पर्वतराज हिमालय की बुद्धि में विराजमान रहने वाली। कैलास पर्वत के अधिपति भगवान शिव की बुद्धि में स्थित।

598. **भूधराधीशबुद्धिदा** – पर्वतराज हिमालय को बुद्धि देने वाली। कैलास पर्वत के अधिपति भगवान शिव को बुद्धि देने वाली।

599. **भूधराधीशवरदा** – पर्वतराज हिमालय को वरदान देने वाली। कैलास पर्वत के अधिपति भगवान शिव को वरदान देने वाली।

600. **भूधराधीशवन्दिता** – पर्वतराज हिमालय के द्वारा वन्दित। वन्दना का तात्पर्य है प्रणाम करना एवं गुणों तथा यश का बखान करना।

601. **भूधराधीशाराध्या** – पर्वतराज हिमालय के द्वारा आराधना करने योग्य (यदि भूधराधीशसंराध्या नाम है तब अर्थ होगा – पर्वतराज के द्वारा सम्यक् आराधना करने योग्य। सम्यक् अर्थात सही तरीके से, पूर्ण रूप से।)

602. **भूधराधीशचर्चिता** – पर्वतराज हिमालय के द्वारा जिनकी विशेष प्रकार से चर्चा की गई। पर्वत राज हिमालय के द्वारा जिनकी पूजा की गई। चर्च् धातु का अर्थ पूजा करना भी होता है।

603. **भंगेश्वरी** – सौन्दर्य की अनुशासिका। अनुशासिका का तात्पर्य है नियन्त्रण करना, किसे कितना देना, किस प्रकार का देना, कब देना, कब तक देना आदि निर्धारित करना। वक्रोक्तिरीति से कथनों में अर्थात कथन करने में सर्वश्रेष्ठ या समर्थ। तरंग की ईश्वरी। संसार भी एक तरंग के समान है। संसार रूपी तरंग की ईश्वरी। भंग का अर्थ है तरंग।

604. **भंगमयी** – सौन्दर्य से युक्त। तरंगों वाली। भंग के तरंग पराजय, छेद या नाश अर्थ है। पूरा विश्व एक प्रवाह है तरंग है। संसार सागर है उसकी तरंग होती है। तरंग अर्थात गति वाली, निरन्तर गति वाली। वक्रोक्ति स्वरूपा। भंग अर्थात भंजन करना, दूसरे को निम्न करता है अर्थात सुन्दर है। भम् गमयति, शोभाम् बोधयति इति भंगा। भ का अर्थ है चमक या शोभा। शोभा को बोध कराता है अर्थात सुन्दर। भंग अर्थात ब्रह्मबोध कराने वाला अर्थात ब्रह्मज्ञान कराने वाला। मोनियर विलियम्स के संस्कृत – अंग्रेजी शब्दकोष में भंग का अर्थ भांग भी दिया है। भंगमयी का अर्थ हुआ भांग से युक्त। पूजा में भांग चढ़ाने से देवी भांग से युक्त हो गई। भगवान शिव को भांग चढ़ाई जाती है, पर शिव और शिवा में अभेद है। इस कारण शिवा भी भांग से युक्त हो गई।

605. **भंगस्था** – सुन्दरता में रहने वाली। शब्दकल्पद्रुम में भंग का एक अर्थ दिया है विच्छित्ति, जिसका अर्थ है सुन्दरता। भंग अर्थात टेढ़ापन। भगवान कृष्ण टेढ़े खड़े होते थे जो उनकी सुन्दरता को बढ़ा देती थी। भाव भंगिमा भी सुन्दरता का प्रतीक है। इस प्रकार भंग शब्द का अर्थ सुन्दरता ले सकते हैं। तरंगों में रहने वाली। भंग का एक अर्थ तरंग भी है। सुन्दर स्वरूप में स्थित रहने वाली। भांग में गुण, शक्ति के रूप में स्थित। भांग में नशा चढ़ाने का गुण या शक्ति होती है।

606. **भंगरूपिणी** – सुन्दर रूप को धारण करने वाली। तरंग के रूप में है जो।

607. **भंगाक्षता** – भंग होते हुए भी अक्षत हैं अर्थात विश्व का नाश होते हुए भी जो स्वयं में अविनाशी है। सुन्दर अक्षतों से सुशोभित होने वाली। पूजा में सुन्दर अक्षत चढ़ाते हैं। भंग अर्थात भंगिमा युक्त अर्थात सुन्दर।

608. **भंगरता** – भेद करने में लगी हुई। भंग का अर्थ भेद होता है। संसार में किन्हीं दो प्राणियों या पदार्थों में हूबहू एकरूपता नहीं होगी, कुछ न कुछ भेद अवश्य होगा और यह भेद शक्ति अर्थात देवी ने किया है। भंगिमा का अर्थ सौन्दर्य होता है इस प्रकार भंग का अर्थ भी सौन्दर्य हुआ। सौन्दर्य के प्रति प्रीति रखने वाली या सौन्दर्य से प्रसन्न होने वाली। रम् धातु से रत बनाने पर प्रसन्न होने वाली अर्थ निकलता है। सौन्दर्य में लीन। वक्रोक्ति आदि सुन्दर प्रकारों में संलग्न रहने वाली।

609. **भंगार्च्या** – सुन्दर लोगों द्वारा पूजनीय या सुन्दर ढ़ंग से पूजनीय। सुन्दर स्थितियों द्वारा पूजा करने योग्य।

610. **भंगरक्षिणी** – सुन्दरता की रक्षा करने वाली। जगत प्रवाह की रक्षा करने वाली। वक्रोक्ति आदि सुन्दर वाग् व्यवहारों की रक्षा करने वाली।

611. **भंगावती** – भंगों वाली या तरंगों वाली। देवी में शुभ तरंगे आती रहती हैं। देवी को अगर प्रकृति के रूप में लें तो आने जाने वाली ऋतुऐं तरंगे ही हैं। भंगा का एक अर्थ गांजा या विजया भी होता है। विजय वाली या जीत वाली। हमेशा जीतने वाली। शंकर जी भांग से युक्त हैं। देवी का शिव से अभेद है अर्थात यह भी भांग से युक्त है। विविध भाव भंगिमाओं से युक्त रहने वाली। भंग+अवती अर्थात सुंदरता की रक्षा करने वाली। अवती का अर्थ है रक्षा करना। भंग+आवती अर्थात सुन्दरता की पूर्ण रूप से रक्षा करने वाली। आ का अर्थ एकाक्षरी कोष में भाव (सत्ता या पदार्थ) बताया गया है। प्रत्येक चीज सत्ता है। अतः सुन्दरता की पूर्ण रूप से रक्षा करने वाली

अर्थ भी सही है और सुन्दरता की रक्षा करने वाली अर्थ भी सही है। भांगरूपी पदार्थ से युक्त अर्थात भांग से युक्त। यहाँ पर आ का कोई अर्थ देने की जरूरत नहीं है क्योंकि प्रत्येक चीज पदार्थ है। भांग से युक्त यह अर्थ कर सकते हैं। विश्वामित्र अर्थात विश्वमित्र।

612. **भंगलीला** – जिनकी लीलाऐं सुन्दर हैं। सुन्दर लीलाओं से सुशोभित।

613. **भंगभोगविलासिनी** – भांग का सेवन करने से आनन्द लेने वाली। मोनियर विलियम्स के शब्दकोश में भंग का अर्थ भांग दिया गया हुआ है। भोग अर्थात उपभोग अर्थात सेवन। भांग के भोग को लगाकर विलास करने वाली अर्थात रासलीला या मनोरंजन करने वाली। भंग का अर्थ टूटना होता है। दैत्यों के टूटने के बाद ऐश्वर्य का भोग करने वाली। सुन्दर भोगों में विलास करने वाली।

614. **भंगरंगप्रतिकाशा** – भांग का रंग (आनन्द) चढ़ जाने पर जैसा रूप होता है उसके सदृश। प्रतिकाश का अर्थ है सदृश। भांग का रंग (स्वरूप) उसके समान रंग रूप वाली। भांग के नशे के रंग में रंग जाने वाली। प्रति अर्थात समान और काश अर्थात प्रकाशित होना अर्थात दिखना। सुन्दर रंगों के समान सुशोभित होने वाली।

615. **भंगरंगनिवासिनी** – सुन्दर रंगों में निवास करने वाली।

616. **भंगाशिनी** – सुन्दर कान्तियुक्त शरीर को व्याप्त करने वाली। भंग अर्थात सुन्दरता। अशू व्याप्तौ धातु से अशिनी बनाने पर व्याप्त करने वाला अर्थ निकलेगा। भांग का सेवन करने वाली। शिव जी भांग का सेवन करते हैं। शिव जी से अभेद होने के कारण माना जाएगा कि देवी भी भांग का सेवन करती हैं। पापों दोषों को नष्ट कर देने वाली या खा जाने वाली।

617. **भंगमूली** – सौन्दर्य का कारण। शरीरों में, पदार्थों में जो सौन्दर्य बनता है उसका कारण। सुन्दर है आदि जिनका अर्थात जो शुरू से सुन्दर है। देवी तो नित्य हैं पर किसी को जब सर्वप्रथम दिखा तो वह मूल या आदि हो गया। (यदि भंगमूल्या नाम है तब अर्थ है – सुन्दर मूल्यों से सुशोभित। भंग भंगिमा से अर्थ सुन्दर अर्थ भी होता है। मूल्य का अर्थ है उपयोगिता। भंग है मूल जिसका। भंग (अर्थात सुन्दर) मूल्यों वाली अर्थात सौन्दर्य ही है मूल जिनका अर्थात अधिक सौन्दर्य वाली)।

618. **भंगभोगविधायिनी** – सुन्दर भोगों की रचना करने वाली।

619. **भंगाश्रया** – सौन्दर्य का आश्रय अर्थात सौन्दर्य तभी तक रहेगा जब तक इसका सहारा रहेगा। आश्रय छूटा तो सौन्दर्य गया। आश्रय (अर्थात आत्मा) निकलने से सुन्दर शरीर का सौन्दर्य निकल जाता है और वह दुर्गन्ध करने लगता है। तरंग या विजय या सुन्दरता में रहने वाली। सुन्दर स्वरूप को धारण करने वाली।

620. **भंगबीजा** – संसार के सुन्दर तत्वों की कारण। संसार रूपी तरंगों की उत्पत्ति का कारण। भंग अर्थात तरंग और बीज अर्थात कारण।

621. **भंगबीजांकुरेश्वरी** – भेद के बीजांकुर (कारण) की ईश्वरी (शक्ति या करने वाली)। तात्पर्य हुआ भेद का अंकुर पैदा करने वाली अर्थात भेद डालने वाली। हम प्राणियों और पदार्थों में भेद देखते हैं अर्थात नानात्व देखते हैं जिसके कारण संसार बना रहता है। यदि बाहरी आवरण से दिखने वाले भेद न दिखें और उनके भीतर रहने वाला चैतन्य दिखे तो नानात्व खत्म होकर व्यक्ति को मोक्ष मिल जाएगा। सुन्दर कारणों की भी कारण।

622. **भंगयन्त्रचमत्कारा** – सुन्दर यन्त्रों के द्वारा चमत्कार को कर देने वाली जैसे मन्त्रों से विभिन्न चमत्कार होते हैं अर्थात आश्चर्यजनक कार्य होते हैं उसी प्रकार यन्त्रों से भी चमत्कार होते हैं।

623. **भंगयन्त्रेश्वरी** – सुन्दर यन्त्रों की ईश्वरी अर्थात शरीर रूपी यन्त्र को अपने आत्मस्वरूप द्वारा चलाने वाली।

624. **भंगयन्त्रविमोहिस्था** – मोह को प्राप्त सुन्दर शरीर रूपी यन्त्र में स्थित अर्थात शरीर में चैतन्य आत्मा के रूप में स्थित। भंग अर्थात सुन्दर, शरीर को यन्त्र कहा गया है क्योंकि इससे बहुत से काम लेते हैं, विमोहि का अर्थ है मोह को प्राप्त। सुन्दर शरीर रूपी यन्त्र के विशेष रूप से मोह की गुण/ क्रिया में रहने वाली। सुन्दर शरीर में जो विशेष आकर्षण उससे विशेष रूप से मोहित होने की क्रिया में रहने वाली। विमोहिन शब्द है। जिसमें विशेष मोह या आकर्षण हो वह विमोहिन है। (यदि भंगयन्त्रविमोहस्था नाम है तब अर्थ है – भांग पीने से यन्त्रित अर्थात लायी गई विमोह अवस्था में भी विराजमान। भांग पीने से चित्त विमोहित हो जाता है। यन्त्र अर्थात चित्त को चलाने वाला। विमोह अवस्था अर्थात होश में नहीं रहना, उस काल की स्मृति नहीं रहती। क्या बोला होश नहीं रहता। सुन्दर यन्त्रों के द्वारा जो मोहन सम्मोहन उत्पन्न किया जाता उसमें विराजमान रहने वाली)।

625. **भंगयन्त्रविनोदिनी** – सुन्दर शरीर के साथ खेलती हैं या उनसे विनोद करती (मनोरंजन, मनबहलाव) हैं। जैसे व्यक्ति खिलौनों को फेंकता है उसी प्रकार देवी ने विभिन्न शरीरों की रचना कर संसार में खिलौने के रूप में फेंक दिया है। मिट्‌टी के खेल में मिट्‌टी से कोई चीज बनाते हैं, कुछ समय तक रखते हैं फिर मिटा देते हैं उसी प्रकार देवी ने भी खिलौने के रूप में विभिन्न शरीरों का निर्माण कर संसार में बनाया और उसके साथ खेलकर अपना मनोरंजन कर रही है। विनोद करना अर्थात मनोरंजन करना या क्रीड़ा करना या खुश होना या मजाक करना या मन बहलाना। सुन्दर यन्त्रों के द्वारा मनोविनोद करने वाली। ब्रह्माण्ड में जड़ चेतन जो भी पदार्थ हैं जैसे ग्रह, नक्षत्र, प्राणी, पौधे, पत्थर, पानी, वायु सभी देवी के खिलौने हैं जिससे वह खेल खेला करती हैं।

626. **भंगयन्त्रविचारस्था** – सुन्दर यन्त्रों के सम्बन्ध में विचारों में निमग्न रहने वाली।

627. **भंगयन्त्रविचारिणी** – सुन्दर शरीर रूपी यन्त्र में विचरण करने वाली अर्थात विराजमान रहने वाली या एक शरीर से दूसरे शरीर में जाने वाली। चर् धातु में णिनि प्रत्यय लगाने से चारिन् बना और चारिन् ही चारिणी हो जाता है। सुन्दर शरीर विषयक विचार करने वाली। भंगिमा का अर्थ सौन्दर्य है अतः भंग का अर्थ सुन्दर किया गया। शरीर को एक यन्त्र माना गया है। भांग से होने वाली शरीर में हो रही क्रिया पर विचरण करने वाली या विहार करने वाली। भांग के द्वारा नियन्त्रित या यत्न विशेष। सुन्दर यन्त्रों के द्वारा विविध प्रकार के विचारों को करने वाली।

628. **भंगयन्त्ररसानन्दा** – सुन्दर शरीर में आस्वाद का आनन्द उठाने वाली। शरीर भी एक यन्त्र है और देवी के लिए ब्रह्माण्ड भी एक यन्त्र है। सुन्दर ब्रह्माण्ड रूपी यन्त्र में आस्वाद का आनन्द उठाने वाली। सुन्दर यन्त्रों से होने वाला जो रस या प्रीति है, उसमें आनन्दित रहने वाली।

629. **भंगयन्त्ररसेश्वरी** – सुन्दर शरीर रूपी यन्त्रों में रसों को नियन्त्रित करने वाली। रस से तात्पर्य मधुर, कटु आदि षड्रस हैं या सप्त धातुओं को भी रस कहा जाता है। नियन्त्रित करना अर्थात उत्पन्न करना, अमुक मात्रा में देना, कितना देना है, कितना नहीं देना है आदि। भांग का यन्त्र अर्थात भांग के द्वारा उत्पन्न हलचल से उत्पन्न रस या नशे की ईश्वरी अर्थात उस पर अनुशासन करने वाली। सुन्दर यन्त्रों से होने वाले रसों की ईश्वरी।

630. **भंगयन्त्ररसस्वादा** – सुन्दर शरीरों में रस का स्वाद लेने वाली। शरीर को एक यन्त्र माना गया है और भंग का एक अर्थ है सुन्दर। (यदि भंगयन्त्ररसास्वादा नाम है तब अर्थ है – सुन्दर यन्त्रों में होने वाले रस का आस्वाद लेने वाली अर्थात यन्त्र रूप में पूजित होने वाली। सुन्दर शरीरों में रस का आस्वादन लेने वाली। शरीर भी एक यन्त्र है। विश्वरूपी यन्त्र के नाश में भी रस का आस्वाद लेने वाली। भंग अर्थात नाश। भंग का अर्थ कुटिल होना होता है और बाँके या भंगिमा का अर्थ भी कुटिलता में होने वाला सौन्दर्य है। अतः भंग का अर्थ सुन्दर लिया गया है। सुन्दर यन्त्रों के द्वारा होने वाले रसो के आस्वादन से होने वाले आनन्द स्वरूपा)।

631. **भंगयन्त्ररसस्थिता** – सुन्दर यन्त्रों से उत्पन्न होने वाले रस या प्रीति या आनन्द में निवास करने वाली।

632. **भंगयन्त्ररसाधारा** – सुन्दर शरीर रूपी यन्त्र में आस्वाद लेने का आधार अर्थात आत्मस्वरूपा। यद्यपि इन्द्रियाँ और मन आस्वाद लेते हैं पर चैतन्य आत्मा के बिना इन्द्रियाँ और मन निष्क्रिय हैं। अतः आत्मा ही आस्वाद लेने का आधार है। आधार का अर्थ है जिसके बिना कोई चीज हो नहीं सकती या कार्य नहीं कर सकती। भांग के द्वारा उत्पन्न हलचल ही है एक रस, उसकी आधार अर्थात उसे करने वाली। सुन्दर यन्त्रों से होने वाले रस या प्रीति या आनन्द की आधार स्वरूपा।

633. **भंगयन्त्ररसाश्रया** – भांग निकालने वाले यन्त्र से निकलने वाले रस का आश्रय लेने वाली अर्थात उसका भोग करने वाली या उसे पीने वाली। भांग घोटने वाले यन्त्र से निकाले गये रस में आनन्दित होने वाली। शाब्दिक अर्थ तो है उस रस में रहने वाली। तभी रहेगा जब आनन्द की अनुभूति होगी। सुन्दर यन्त्रों से होने वाले रस की आश्रय या आधार स्थान या सहारा।

634. **भूधरात्मजरूपेशी** – हिमालय की पुत्री के रूप के समान ईश्वरी। भूधर अर्थात पर्वत अर्थात हिमालय। संस्कृत में समास में आत्मजा का आत्मज हो जाता है अतः आत्मज का अर्थ पुरुष सन्तान या स्त्री सन्तान दोनों ले सकते हैं यदि वे समास का हिस्सा हों। भूधर अर्थात पर्वत। पर्वत का बेटा पर्वत। इस प्रकार भूधरात्मज का अर्थ हुआ पर्वत। पर्वत के सौन्दर्य की स्वामिनी अर्थात सौन्दर्य पैदा करने वाली या सौन्दर्य देने वाली यह अर्थ इस नाम का हुआ। हिमालय रूपी पर्वत के पुत्र मैनाक पर्वत को रूप देने वाली। ईश अर्थात ईश्वर अर्थात देने वाला। पर्वत हिमालय के पुत्र मैनाक का रूप धारण करने वाली।

635. **भूधरात्मजरूपिणी** – हिमालय की कन्या स्वरूपा। आत्मज पुल्लिंग है, आत्मजा स्त्रीलिंग है। समास में स्त्रीलिंग को पुल्लिंग बना दिया जाता है। अतः आत्मज का अर्थ आत्मजा हुआ। मैनाक पर्वत के पुत्र क्रौंच पर्वत के रूप में। पर्वतराज के पुत्र के रूप को धारण करने वाली।

636. **भूधरात्मजयोगेशी** – हिमालय की पुत्री के योग की ईश्वरी। शिव सहस्रनाम के अनुसार शिवजी का एक नाम भूधर भी है। शिवजी के पुत्र अर्थात गणेश जी/कार्तिकेय जी के योग की ईश्वरी। पर्वतराज के पुत्र के योग की ईश्वरी।

637. **भूधरात्मजपालिनी** – शिव के पुत्र गणेश/ कार्तिकेय जी का पालन करने वाली। भूधर का एक अर्थ शिव भी है। पर्वतराज के पुत्र का पालन पोषण करने वाली। हिमालय की पुत्री के रूप में है और जगत का पालन करने वाली है।

638. **भूधरात्मजमहिमा** – हिमालय की पुत्री के रूप में जिसका यश है। हिमालय की पुत्री, जिसकी महिमा अर्थात यश बहुत बड़ा है। पर्वतराज के पुत्र की महिमा अर्थात सभी प्रकार की श्रेष्ठता धारण करने वाली। महिमा अर्थात महत्व अर्थात दूसरों से बढ़कर होना।

639. **भूधरात्मजमालिनी** – हिमालय पर होने वाले कमल की मालाओं को धारण किये हुए। आत्मज अर्थात उत्पन्न होने वाला। हिमालय पर स्थल कमल होता है। वह पर्वतराज हिमालय कन्या जो माला को धारण किये है। पर्वतराज के पुत्र के लिए विविध मालाओं से युक्त रहने वाली।

640. **भूधरात्मजभूतेशी** – पर्वतराज हिमालय की कन्या जो समस्त प्राणियों की उपासनीया है। समास में आत्मजा आत्मज हो जाता है, स्त्रीलिंग पुल्लिंग हो जाता है। अतः आत्मज का अर्थ आत्मजा या कन्या लिया गया है। पर्वतराज हिमालय के पुत्र अर्थात मैनाक पर्वत के प्राणों की ईश्वरी अर्थात रक्षा करने वाली। भूत का एक अर्थ प्राण, आत्मा भी होता है। पर्वतराज के पुत्र के ऐश्वर्यों की ईश्वरी।

641. **भूधरात्मजरूपिणी** – हिमालय की आत्मा स्वरूपिणी। पर्वतराज हिमालय के पुत्र मैनाक पर्वत के रूप में। मैनाक पर्वत के पुत्रक्रौंच पर्वत के रूप में। पर्वतराज के पुत्र के स्वरूप को धारण करने वाली।

642. **भूधरात्मजसिद्धिस्था** – पर्वतराज के पुत्र की सिद्धि में स्थित रहने वाली। शिव के पुत्र गणेश जी/कार्तिकेय जी की सिद्धि में रहने वाली। सिद्धि अर्थात अलौकिक शक्ति, किसी चीज में महारथी होना, कार्य में सफलता।

643. **भूधरात्मजसिद्धिदा** – पर्वतराज के पुत्र को सिद्धि प्रदान करने वाली। भगवान शिव के पुत्र गणेश/कार्तिकेय को सिद्धि प्रदान करने वाली।

644. **भूधरात्मजभावेशी** – भूधर अर्थात हिमालय की सन्तति का जो भाव है ऐसी ईश्वरी अर्थात हिमालय की सन्तति के रूप में होने वाली ईश्वरी। भाव अर्थात के रूप में होने वाला। पर्वतराज के पुत्र के भावों की ईश्वरी अर्थात उनके भाव चिन्तन सुन्दर होते हैं, वही पैदा करती हैं। सुन्दर चिन्तन को पैदा करने वाली। भूधर (शिव) के पुत्रों के भावों की ईश्वरी।

645. **भूधरात्मजभाविनी** – भगवान शिव के पुत्रों को उत्पन्न करने वाली। हिमालय की सन्तान के रूप में होने वाली। भाविनी अर्थात होने वाली। पर्वतराज हिमालय की सन्तति के रूप में होने वाली। पर्वतराज के भावों को धारण करने वाली।

646. **भूधरात्मजभोगस्था** – हिमालय पर उत्पन्न होने वाली उपयोगी वस्तुओं में या आस्वाद ली जाने वाली वस्तुओं में शक्ति या ऊर्जा रूप में स्थित। हिमालय में जो कन्दमूल फल होते हैं उनका आस्वादन लिया जाता है अतः वे भोग पदार्थ हैं। उनमें शक्ति या ऊर्जा रूप में स्थित। भोग अर्थात वे पदार्थ जो इन्द्रियों द्वारा ग्रहण किये जाते हैं, अर्थात खाये पिये जाते हैं या सूँघे जाते है या देखे जाते हैं या छुए जाते हैं। भोग का अर्थ सुखानुभूति भी होता है और सुख का अनुभव कराने वाले सांसारिक पदार्थ भी होता है। पर्वतनन्दिनी अर्थात हिमालय की पुत्री के रूप में होने वाले भोग अर्थात क्रियाकलाप में रहने वाली। बचपन से लेकर तरूणावस्था तक, जो उनके क्रियाकलाप या जीवनचर्या हैं, वे भोग हैं। पर्वतराज के भोगों में स्थित रहने वाली।

647. **भूधरात्मजभोगदा** – भूधर (शिव) के पुत्रों को भोग देने वाली। पर्वतराज के पुत्र को भोगों को प्रदान करने वाली।

648. **भूधरात्मजभोगेशी** – पर्वत पर उत्पन्न होने वाले खाने योग्य पदार्थों की ईश्वरी। ईशी अर्थात शासन करने वाली अर्थात उत्पन्न होना, न होना, कितना होना, उसकी गुणवत्ता क्या है, कितना लाभदायी है यह सब निर्धारित करने वाली। पर्वतराज के पुत्र के भोगों की ईश्वरी।

649. **भूधरात्मजभोगिनी** – पर्वतनन्दिनी के रूप में भोग करने वाली। भोग अर्थात सुखानुभूति अर्थात क्रियाकलाप या आनन्दयुक्त क्रियाएं। पुत्री के रूप में व्यवहार करने वाली। पर्वतराज के पुत्र को भोगों को प्रदान करने वाली।

650. **भव्या** – अतिशय भव्य या सुन्दर स्वरूप वाली। ऐसी सुन्दरता जो दूसरों पर प्रभाव डाले तथा दूसरे जिसको आदर की दृष्टि पर देखते हों, भव्यता कहलाती है।

651. **भव्यतरा** – भव्य से भी भव्य अर्थात सुन्दर से भी सुन्दर।

652. **भाव्याभाविनी** – ध्यान करने योग्य सुन्दर महिला स्वरूपा। जो ध्यान करने योग्य हो और सुन्दर भी हो। भाविनी का एक अर्थ है सुन्दर स्त्री। सुन्दर स्त्रियों में सुन्दर अर्थात औरों से अधिक सुन्दर। सुन्दर होने वाली अर्थात सुन्दर दिखाई देने वाली। अतिशय भव्य स्वरूप वाली और श्रेष्ठ तत्वों की भावना करने वाली अर्थात चिन्तन करने वाली।

653. **भववल्लभा** – शिव की प्रियतमा।

654. **भावातिभावा** – जो भाव स्वरूपा भी है और भाव से परे भी हैं। जो पदार्थ स्वरूपा भी है और पदार्थ से परे भी हैं। पुरुष सूक्त में आया है कि यह जगत परमात्मा का एक चौथाई अंश है और वह तीन चौथाई अंश में इससे परे हैं अर्थात परमात्मा विश्व स्वरूप भी है और विश्व के परे भी है। भवति इति भावः, जो भी पैदा होता है अर्थात जिसका अस्तित्व है वह भाव है। भाव का अर्थ है पदार्थ, वैशेषिक दर्शन में बताए गये द्रव्य, गुण, कर्म आदि छह भाव या पदार्थ हैं। भाव का अर्थ मनोभाव भी है अर्थात प्रेम, घृणा, करूणा, हास्य आदि भाव स्वरूपा। संस्कृत के नाट्य ग्रन्थों में स्थाई भाव, व्यभिचारी भाव, संचारी भाव आदि का उल्लेख है। भावों में भी जो अतिशय श्रेष्ठ भाव है तद्स्वरूपा। भावों में भी अतिशय श्रेष्ठ भावों वाली।

655. **भावाख्या** – भाव है नाम जिनका अर्थात जिन्हें भाव कहकर या भाव नाम से पुकारा जाता है। भाव है हृदय का दर्द, किसी के प्रति हृदय का दर्द। भाव के द्वारा जिनके स्वरूप को कहा गया है या समझा गया है। भाव की संज्ञा से विभूषित।

656. **भातिभा** – जो प्रकाश की भी प्रकाश हो अर्थात समस्त प्रकाशों का कारण हों। सूर्य आदि में भी जिनके कारण प्रकाश आता हो वह भातिभा है। उपनिषदों में है कि वाणी स्वयं नहीं बोलती बल्कि शक्ति से प्रेरित होकर बोलती है। भा दीप्तौ से क्तिन् प्रत्यय लगाने से भाति बना और भाति का अर्थ है प्रकाश। सुशोभित होने वाली शोभा स्वरूपा। भा+क्तिन्। जो सुशोभित होती है वह है भाति। कान्ति के द्वारा अतिशय सुशोभित होने वाली।

657. **भीतिभान्तिका** – भय के आभास को भी दूर कर देने वाली। भय को अपने तेज के द्वारा समूल समाप्त कर देने वाली। भय रूप का जो प्रकाश (उद्गम) है, उसको मिटाने वाली। यहाँ प्रकाश का अर्थ है उद्गम। भय को उद्गम से मिटाने वाली अर्थात भय की उत्पत्ति मिटाने वाली अर्थात भय को जड़ से समाप्त करने वाली।

658. **भासान्तिभासा** – सौन्दर्य में जो अन्तिम सौन्दर्य है अर्थात इनसे आगे/इनसे बढ़कर कोई सौन्दर्य नहीं है अर्था जो सबसे सुन्दर हैं। प्रकाश की भी बड़ी बहनरूपी प्रकाश वाली। अन्ति का अर्थ है बड़ी बहन। अन्तिभासा का अर्थ है बड़ी बहन रूपी प्रकाश। तात्पर्य हुआ प्रकाशों का भी प्रकाश। भास का अन्त करने वाली भास अर्थात अन्तिम प्रकाश स्वरूपा। प्रकाशों में अन्तिम प्रकाश अर्थात सर्वोच्च प्रकाश या चमक स्वरूपा। इससे आगे चमक नहीं है। अपने तेज के द्वारा अतिशय सुशोभित होने वाली।

659. **भासस्था** – कान्ति में अर्थात सुन्दर स्वरूप में स्थित रहने वाली।

660. **भासामा** – दीप्ति या द्युति के साथ रहने वाली। भास + अमा, अमा अव्यय है जिसका अर्थ है साथ साथ। दीप्ति लक्ष्मी या उज्जवल लक्ष्मी स्वरूपा। मा का अर्थ है लक्ष्मी। अपने द्युति या दीप्ति से लक्षित होने वाली लक्ष्मी स्वरूपा। विशेष कान्ति से सुशोभित या विशेष कान्ति वाली। भासा का अर्थ है विशेष कान्ति और मा का अर्थ है सुशोभित ।

661. **भास्करोपमा** – सूर्य से उपमा दी जाने योग्य अर्थात सूर्य के तेज से उपमा दी जाने योग्य।

662. **भास्करस्था** – सूर्य में स्थित रहने वाली।

663. **भास्करेशी** – सूर्य पर अनुशासन करने वाली या सूर्य को प्रेरित करने वाली। ईष्टे से ईशी बनाने पर प्रेरित करने वाली अर्थ निकलता है अर्थात जो सूर्य को अपना कर्तव्य करने के लिए प्रेरित करती है।

664. **भास्करैश्वर्यवर्धिनी** – सूर्य के ऐश्वर्य को बढ़ाने वाली। ऐश्वर्य का अर्थ शक्ति, शोभा, सम्पन्नता है।

665. **भास्करानन्दजननी** – सूर्य के आनन्द को देने वाली या पैदा करने वाली।

666. **भास्करानन्ददायिनी** – सूर्य को आनन्द प्रदान करने वाली।

667. **भास्करानन्दमहिमा** – सूर्य के आनन्द की महिमा। महिमा का अर्थ है महत्व या विशालता अर्थात जो

दूसरों से बढ़कर है। सूर्य का आनन्द है प्रकाश करना। भास्कर अर्थात प्रकाश करने वाला अर्थात चैतन्य अर्थ भी हो सकता है। चिदानन्द की महिमा अर्थात विशालता या महत्व स्वरूपा। महिमा या महत्व का तात्पर्य है जो दूसरों से बढ़कर हो या जिसका दूसरों पर अधिक प्रभाव पड़ता हो। सूर्य के आनन्द की महिमा (श्रेष्ठ तत्व) स्वरूपा।

668. **भास्करानन्दमातृका** – सूर्य के आनन्द की माता स्वरूपा अर्थात जननी।

669. **भास्करान्दनैश्वर्या** – सूर्य के द्वारा होने वाली प्रसन्नता स्वरूपी ऐश्वर्य (समृद्धि) वाली। आनन्दयति इति आनन्दनः। सूर्य को आनन्दित करने वाले ऐश्वर्य वाली अर्थात सूर्य को समृद्ध करने वाले ऐश्वर्य वाली। आनन्दनम् अर्थात आनन्दित करना। आनन्द टुनदि समृद्धौ से बन सकता है अतः आनन्द का अर्थ समृद्धि भी किया गया है। सूर्य की शक्ति के पुत्र वैवस्वत मनु के ऐश्वर्य के स्वरूप वाली। सूर्य की शक्ति के पुत्र यमराज के ऐश्वर्य के स्वरूप वाली। चमक पैदा करने वाले से उत्पन्न ऐश्वर्य युक्ता। भास्करा (सूर्य की शक्ति)+नन्दन (पुत्र) + ऐश्वर्या। भास्कर का अर्थ है चमक, नन्दन का अर्थ है पुत्र अर्थात उत्पन्न, पैदा हुआ। भास्कर का अर्थ ज्ञान देने वाला हो सकता है क्योंकि प्रकाश का अर्थ है ज्ञान। ज्ञानी से उत्पन्न होता है ज्ञान। ज्ञानरूपी ऐश्वर्य से युक्त, यह अर्थ हो सकता है। ज्ञानरूपी ऐश्वर्य देने वाली यह अर्थ भी हो सकता है क्योंकि ऐश्वर्या अर्थात ऐश्वर्य+आ, आ का एक अर्थ होता है देना। सूर्य के आनन्द को बढ़ाने में जिनका ऐश्वर्य कारण होता है।

670. **भास्करानन्दनेश्वरा** – सूर्य के आनन्दन की स्वामिनी। सूर्य का आनन्दन है प्रकाश करना। स्वामिनी अर्थात देवी के कारण ही सूर्य ऐसा कर पाता है। स्वामिनी अर्थात मालकिन होने के कारण जो दूसरों को दे। सूर्य को प्रकाश करने की शक्ति देवी ही देती हैं क्योंकि वे मालकिन हैं। चमक उत्पन्न करने वाली ईश्वरी। सूर्य को आनन्द देने में अतिशय सक्षम।

671. **भास्करानन्दसुपथा** – सूर्य को आनन्द देने के लिए सुन्दर मार्ग की रचना करने वाली।

672. **भास्करानन्दसुप्रभा** – भास्कर का अर्थ प्रकाश करने वाला अर्थात ज्ञान रूपी प्रकाश करने वाला अर्थात ज्ञान करने/कराने वाला कर सकते हैं। ज्ञान कराने वाले आनन्द की सुन्दर कान्ति स्वरूपा। ज्ञान में भी दीप्ति या चमक होती है। सूर्य की आनन्द देने वाली सुन्दर कान्ति से युक्त। सूर्य से होने वाली प्रसन्नता रूपी सुन्दरी अर्थात अच्छी दीप्ति वाली। सूर्य के आनन्द के लिए जो सुन्दर कान्ति से युक्त रहती हैं।

673. **भास्करानन्दनिचया** – सूर्य के आनन्द की समूह स्वरूपा।

674. **भास्करानन्दनिर्मिता** – सूर्य का जो आनन्द है उसके द्वारा निर्मित। कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र के अनुसार कर्म या भाव में लगे प्रत्यय कभी कभी कर्ता का अर्थ भी देने लगते हैं। इस प्रकार निर्मिता का अर्थ निर्मात्री कर सकते हैं। तब अर्थ होगा सूर्य के आनन्द का निर्माण करने वाली। सूर्य के आनन्द से निर्मित है स्वरूप जिनका।

675. **भास्करानन्दनीतिस्था** – प्रकाशकारी आनन्द के मार्ग में स्थित। तमोगुणी को भी आनन्द मिलता है पर यह शब्द तमोगुण से भिन्न आनन्द के लिए है। प्रकाश वाले आनन्द तक पहुँचाने वाले मार्ग में स्थित। नीति का अर्थ है मार्ग। सूर्य का आनन्द, वही है नीति उसमें स्थित अर्थात सूर्य की आनन्दरूपी नीति में स्थित। टुनदि समृद्धौ धातु भी होती है जिससे आनन्द बन सकता है।सूर्य की समृद्धि देने वाली नीति में स्थित रहने वाली। सूर्य की आनन्द नीति में रहने वाली। चमक, वही है आनन्द, इस प्रकार की नीति में स्थित अर्थात उज्जवल या बहुत अच्छी नीति में स्थित। सूर्य के आनन्द की नीति में स्थित रहने वाली।

676. **भास्करानन्दनीतिदा** – शिव के आनन्द के उपाय को देने वाली। ज्ञान करने वाले आनन्द के उपाय को देने वाली। नीति का एक अर्थ उपाय भी है। भास्कर का अर्थ सूर्य, शिव होता है। सूर्य को समृद्धि देने वाली

नीति को देने वाली। उज्जवल नीति देने वाली। चमकीले आनन्द की नीति देने वाली। चमक वही है आनन्द, तत्स्वरूपा नीति को देने वाली। सूर्य के आनन्द की नीति को प्रदान करने वाली।

677. **भास्करोदयमध्यस्था** – सूर्य के उदय के समय मध्य में स्थित रहने वाली।

678. **भास्करोदयमध्यगा** – सूर्य के उदित होने पर उसके बिम्ब (गोला) के मध्य में स्थित। सूर्योदय के समय में मध्य में विचरण करने वाली।

679. **भास्करोदयतेजःस्था** – सूर्य के उदय के समय जो तेज प्रकट होता है उसमें स्थित रहने वाली।

680. **भास्करोदयतेजसा** – सूर्य के उदित होने पर होने वाले तेज की जैसी। सूर्योदय के समय जो तेज है, उस तेज को धारण करने वाली।

681. **भास्कराचारचतुरा** – सूर्य की तरह आचार में चतुर। सूर्य का आचार है अन्धकार दूर करना, भय दूर करना, ठण्ड मिटाना। अन्धकार या ठण्ड दूर करना अर्थात दरिद्रता मिटाना। सूर्य के आचार में चतुर या दक्ष।

682. **भास्काचारचन्द्रिका** – सूर्य के मुख्य क्रियाकलाप द्वारा सुख देने वाली। आचार का अर्थ है क्रियाकलाप। चन्द्रिका अर्थात जो शीतलता दे, सुख दे। प्रकाश करना, शीतलता दूर करना, भय दूर करना और जगत को अनुप्राणित करना अर्थात जगत का प्राण स्वरूप बनना, ये सूर्य के मुख्य कार्य हैं। सूर्य के मुख्य क्रियाकलाप को सुख देने वाली। सूर्य के आचार, उसकी चन्द्रिका अर्थात उसकी तरह उज्जवल स्वरूप वाली। सूर्य के आचार को आनन्द देने वाली। चाँदनी आह्लादित करती है।

683. **भास्कराचारपरमा** – प्रकाश देने में सर्वश्रेष्ठ। सूर्य का आचार है प्रकाश देना। परमा का अर्थ है सर्वश्रेष्ठ। सूर्य का आचार अर्थात प्रकाशित करने में जो सर्वश्रेष्ठ है। (यदि भास्कराचारपरभा नाम है तब अर्थ है – सूर्य का आचार है प्रकाशित करना, उस प्रकाश करने के लिए श्रेष्ठ प्रकाश स्वरूपा। सूर्य के आचार में विशेष रूप से चमकने वाली। पर का अर्थ है उत्कृष्ट या विशेष रूप से)।

684. **भास्काचारचण्डिका** – सूर्य के प्रचण्ड तेज के समान दुष्टों को सन्तप्त कर देने वाली। मई, जून में सूर्य असह्य हो जाता है उसी प्रकार देवी भी दुष्टों के प्रति असह्य हो जाती हैं। सूर्य के आचार की चण्डिका देवी अर्थात सर्वतेजस्विनी स्वरूपा।

685. **भास्काचारपरमा** – सूर्य के आचार की तरह श्रेष्ठ। सूर्य के श्रेष्ठ आचार हैं, उन आचारों में सर्वोत्कृष्ट।

686. **भास्काचारपारदा** – सूर्य के आचार की तरह पार लगा देने वाली अर्थात किनारा देने वाली। अभाव या दरिद्रता ही अन्धकार है जिससे पार लगा देती हैं। सूर्य के श्रेष्ठ आचार हैं, उसकी अन्तिम सीमा को देने वाली अर्थात चरम स्थिति प्रदान करने वाली।

687. **भास्काचारमुक्तिस्था** – प्रकाशित करना रूपी कर्म से प्राप्त मुक्ति में स्थित अर्थात अज्ञान रूपी अन्धकार को दूर करने पर प्राप्त मुक्ति में स्थित। सूर्य के जो आचार हैं, उनके द्वारा मुक्ति में स्थित रहने वाली।

688. **भास्काचारमुक्तिदा** – ज्ञान प्राप्त करने के लिए जो आचार (विधि विधान) हैं उनके द्वारा मुक्ति देने वाली। ज्ञान प्राप्त कराने के मार्ग वाली। ज्ञान मार्ग पर चलने वालों को मुक्ति देने वाली। यहाँ आचार का अर्थ मार्ग करते हैं। ज्ञान करने वाले के आचार से मुक्ति देने वाली। सूर्य के श्रेष्ठ आचार को करने वालों को मुक्ति देने वाली। सूर्य समय का ध्यान रखता है, प्रकाश देता है अतः सूर्य के समान अनुशासन, कर्तव्य पालन, यम नियम, प्रकाश (ज्ञान) में रहना और दूसरों को प्रकाशित करना, इस प्रकार के आचार वालों को मुक्ति देने वाली। सूर्य के आचार की तरह मुक्ति को देने वाली। सूर्य का आचार है अन्धकार को दूर कर प्रकाशित करना। अज्ञान के अन्धकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश फैलने से मुक्ति मिलती है। सूर्य के आचार के द्वारा मुक्ति प्रदान करने वाली।

689. **भास्काचारसिद्धिस्था** – सूर्य के आचार अर्थात प्रकाशित करने के कर्म रूपी सिद्धि में स्थित अर्थात ज्ञानोपलब्धि में स्थित। भास्कर अर्थात प्रकाशित करना, आचार अर्थात कर्म या क्रियाकलाप, सिद्धि अर्थात उपलब्धि। सूर्य के आचार के द्वारा सिद्धि में स्थित रहने वाली।

690. **भास्काचारसिद्धिदा** – सूर्य के आचार के द्वारा सिद्धि को प्रदान करने वाली।

691. **भास्कराचरणाधारा** – सूर्य के आचरण की मूल, बुनियाद अर्थात सूर्य का आचरण इन्हीं पर टिका है। सूर्य का आचरण प्रकाश देना, उदित होना, अस्त होना आदि है। सूर्य के आचरण की आधार स्वरूपा।

692. **भास्कराचरणाश्रिता** – सूर्य के आचरण में रहने वाली या सूर्य के आचरण से साधर्म्य है जिसका। आश्रित का एक अर्थ साधर्म्य, शरणागत दिया गया है। सूर्य का आचरण जिन पर आश्रित है अर्थात सूर्य के आचरण की आधार स्वरूपा।

693. **भास्कराचारमन्त्रेशी** – सूर्य का आचार है संसार को प्रकाशित करना, प्रकाशित करना है एक प्रकार का मन्त्र या formula, उस मन्त्र की ईश्वरी अर्थात इस मन्त्र पर नियन्त्रण करने वाली। प्रकाशित करना, नहीं करना, कितना करना यह सब देवी के हाथ में हैं अतः उन्हें देवी कहा गया है। सूर्य का आचार है प्रकाशित करना। भास्कराचार ही है एक मन्त्र, उस मन्त्र की ईश्वरी अर्थात उस पर शासन करने वाली। सूर्य जो प्रकाशित करते हैं, इन्हीं के अनुशासन में करते हैं। सूर्य के आचरण के मन्त्रों की ईश्वरी। सूर्य के आचार के मन्त्रों की ईश्वरी।

694. **भास्कराचारमन्त्रिणी** – प्रकाश करना रूपी कर्म की अर्थात ज्ञान की प्राप्ति की मन्त्र स्वरूपा या ऐसे मन्त्र को जानने वाली। इनके मन्त्र को जपने से ज्ञान की प्राप्ति होती है अर्थात अज्ञान रूपी अन्धकार दूर होकर प्रकाश होता है। सूर्य का आचार है उसके द्वारा प्रकाशित करना। प्रकाश करना है एक प्रकार का मन्त्र, तत्स्वरूपिणी। सूर्य के आचरण की मन्त्रणा देने वाली।

695. **भास्कराचारवित्तेशी** – प्रकाशित करने के क्रियाकलाप रूपी धन की ईश्वरी या उस पर शासन करने वाली। ईशी अर्थात शासन करने वाली। किसको ज्ञान देना है, नहीं देना है, कितना देना है, कब देना है इन सबका करना शासन करना या अनुशासन करना है। प्रकाशित करने का अर्थ है अज्ञान दूर कर ज्ञान देना। ज्ञान का प्रकाश होता है। आचार का अर्थ है क्रियाकलाप। सूर्य का आचार (प्रकाशित करना) है एक वित्त, उसकी ईश्वरी। सूर्य के आचरण के वित्त विभाग अर्थात धन धान्य की ईश्वरी।

696. **भास्कराचारचित्रिणी** – प्रकाशित करने के कर्म का चित्रण करने वाली अर्थात ज्ञान को बनाने वाली। उस ज्ञान को बनाती हैं जिससे मुक्ति मिले। चित्रण करना अर्थात रेखांकन करना अर्थात बनाना। सूर्य के आचार का चित्रण करने वाली। सूर्य का आचार प्रकाशित करना, ठण्ड दूर करना और भय दूर करना है।

697. **भास्कराधारधर्मेशी** – सूर्य का आधार है उसकी किरणें और उनका धर्म है प्रकाश करना। सूर्य के आधारधर्म अर्थात प्रकाश करने की क्रिया की ईश्वरी अर्थात करने वाली। सूर्य का आचार ही है एक धर्म, उस धर्म की ईश्वरी। धर्म का अर्थ है स्वभाव, सूर्य का स्वभाव है जगत को प्रकाशित करना। सूर्य इन्हीं के अनुशासन में जगत को प्रकाशित करता है। सूर्य के आधार के धर्म या स्वभाव की ईश्वरी।

698. **भास्कराधारधारिणी** – सूर्य का आधार हैं किरणें, उन किरणों को धारण करने वाली अर्थात भास्कर की प्रवाहस्वरूपा।

699. **भास्कराधाररचना** – सूर्य के किरणों की रचना करने वाली। सूर्य का आधार उसकी किरणें हैं। भास्कर का अर्थ प्रकाशित करने वाला अर्थात चैतन्य स्वरूपा। चैतन्य का आधार शरीर है क्योंकि चैतन्य आत्मा शरीर में ही रहती है। शरीर की रचना करने वाली। सूर्य के आधार की रचना करने वाली।

700. **भास्कराधाररक्षिता** – सूर्य की किरणों के द्वारा रक्षित, यह साधारण अर्थ हुआ किन्तु इससे देवी का माहात्म्य कम होता है। अतः सूर्य की किरणों की रक्षा करने वाली यह अर्थ ज्यादा ठीक है। कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र से रक्षिता का अर्थ रक्षा करने वाली भी कर सकते हैं क्योंकि यह सूत्र कर्म और भाव को कर्ता के अर्थ में प्रयोग करने की अनुमति देता है। एक काल में प्रयुक्त वाक्य को दूसरे काल में प्रयुक्त करने की अनुमति देता है। सूर्य का आधार उसकी किरणे हैं। सूर्य के आधार के द्वारा संरक्षित।

701. **भास्कराधारकर्माणी** – सूर्य के आधार (सूर्य किरण) के कर्मवाली अर्थात सूर्य किरण के समान प्रकाशित करने वाली। अन्धकार मिटाना और प्रकाश करना सूर्य का कार्य है। यह उनका आधार कर्म है। जिनके श्रेष्ठ कर्म सूर्य के समान प्रकाश अर्थात तेजस्विता लिये हैं। सूर्य के आधारभूत कर्मों से विभूषित। सूर्य के आधारभूत या basic कर्म हैं – प्रकाशित करना, ठण्ड अर्थात दुख मिटाना, गर्मी करना, भय मिटाना। प्रकाशित करने में भौतिक प्रकाश भी आ जाता है और ज्ञान का प्रकाश भी आ जाता है। ज्ञान का आधार बनाना ही है कर्म जिसका। ज्ञानरूपी आधार ही है कर्म जिसका। सूर्य किरणों को स्थापित करने वाली। सूर्य का आधार उसकी किरणें हैं। वह शक्ति जिसके कारण सूर्य निरालम्ब घूमते रहते हैं अर्थात बिना सहारे के घूमते हैं, भास्कराधार है। यही है एक कर्म, उस कर्म के स्वरूप वाली अर्थात निरालम्ब रूप से घूमनारूपी कर्म वाली। ग्रहों की तरह सूर्य में भी आकर्षण होता है जिससे वे एक – दूसरे से भिड़ते नहीं है, यह भी सूर्य का आधार होने का अर्थ है। सूर्य निरालम्ब रूप से आकाश में रहता हुआ दिखाई देता है, उसका निरालम्ब घूमना भी एक आधार है। सूर्य का क्षेत्र या परिधि भी उसका आधार है। सूर्य के आधार को कर्म के रूप में बदलने वाली या प्रस्तुत करने वाली।

702. **भास्कराधारकर्मदा** – भौतिक प्रकाश, प्रकाश देने वाली या ज्ञान का प्रकाश देने वाली। सूर्य का आधार है उसकी किरणें। भास्काराधारकर्म है प्रकाश देना क्योंकि सूर्य की किरणों का काम है प्रकाश देना। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ प्रकाश देने वाले कर्म को करने वाली। प्रकाश (ज्ञान) के आधार कर्म अर्थात बेसिक कर्मों को देने वाली अर्थात निर्धारित करने वाली कि तुम्हारा कर्तव्य यह है, तुम्हें यह करना है। ज्ञान रूपी प्रकाश करने के आधार कर्म अर्थात ध्यान चिन्तन आदि को देने वाली। ब्रह्म की प्राप्ति के लिए भी ध्यान चिन्तन आदि किया जाता है। सूर्य जिन कर्मों का आधार लेता है उनको देने वाली। सूर्य के आधारभूत कर्मों को देने वाली। सूर्य के निरालम्ब रूप में आकाश में रहने रूपी कर्म देने वाली। सूर्य के आधार को कार्यरूप देने वाली। अन्तरिक्ष को यदि सूर्य का आधार माना जाए तो अर्थ हो गया अन्तरिक्ष को उनके कर्मों और कर्तव्यों का बोध कराने वाली।

703. **भास्कराधाररूपेशी** – सूर्य की किरणें जो दिखाई दे रही हैं उनकी ईश्वरी अर्थात स्वामिनी। सूर्य की किरणों में शक्ति देवी के कारण ही है। सूर्य का आधार उसकी किरणें हैं। सूर्य के आधार का जो स्वरूप है उसकी ईश्वरी।

704. **भास्कराधाररूपिणी** – सूर्य के आधार के स्वरूप वाली। सूर्य का आधार है उसकी किरणें अर्थात किरणों के स्वरूप वाली। गुरूत्वाकर्षण शक्ति को भी सूर्य का आधार कह सकते हैं जिसके कारण सूर्य आकाश में टिका हुआ है। सूर्य को टिकाये रखने की शक्तिस्वरूपा।

705. **भास्कराधारकाम्येशी** – प्रकाश की किरणों के समान चाही जाने वाली ईश्वरी। प्रकाश या प्रकाश की किरणों को सभी चाहते हैं। सूर्य की किरणें सूर्य का आधार मानी जाती है। यद्यपि किरणें सूर्य से अलग नहीं है फिर भी निकलने के कारण इन्हें कल्पना से अलग मानकर सूर्य के आधार के रूप में देखा जाता है। सूर्य के समान तेजस्वी होने के आधार पर अर्थात तेजस्वी होने के कारण चाही गई ईश्वरी। सूर्य के निरालम्ब रहने की कामना की ईश्वरी। सूर्य की शक्ति, गुरुत्वाकर्षण शक्ति जिसके कारण वह आकाश में स्थित है सूर्य का आधार है। सूर्य के आधार के द्वारा जो जो लोग चाहे गये हैं, उनकी ईश्वरी।

706. **भास्कराधारकामिनी** – सूर्य के किरणों के समान उज्जवल वर्ण वाली सुन्दरी स्त्री। सूर्य का आधार है उसकी किरणें और कामिनी का अर्थ है सुन्दर स्त्री। सूर्य के आधार पर अर्थात सूर्य के कारण अर्थात सूर्य के तेज के कारण लोगों द्वारा चाही गई। सूर्य के आधार की सुन्दरी अर्थात रमणीस्वरूपा।

707. **भास्कराधारसांशेशी** – किरणों सहित सूर्य की ईश्वरी या स्वामिनी। भास्कराधार का अर्थ हुआ किरण। अंश का अर्थ है सूर्य, सांश का अर्थ हुआ सूर्य सहित। इस प्रकार भास्कराधारसांश का अर्थ हुआ सूर्य सहित किरणें। सूर्य के आधार अर्थात तेज पर सभी अंशों से युक्त और ईश्वरी। सूर्य के आधारांश की ईश्वरी।

708. **भास्कराधारसांशिनी** – किरणों सहित सूर्य वाली। पिछले नाम में भास्काराधारसांश का अर्थ स्पष्ट कर दिया गया है। अंश का अर्थ सूर्य भी है और किरण भी क्योंकि किरण इकाई है। भास्कराधार का अर्थ हुआ किरण और सांश का अर्थ हुआ किरणों सहित, भास्काराधार और सांश दोनों को मिलाने पर बने भास्काराधारसांशनि शब्द का अर्थ हुआ हजारों लाखों किरणों वाली। सूर्य के तेज के श्रेष्ठ अंशों से युक्त। यह अर्थ भी हो सकता है। भास्कराधार अर्थात सूर्य का तेज। सूर्य के आधार के अवयवों वाली अर्थात आधारस्वरूपा। सूर्य के आधार को प्रकट करने वाली।

709. **भास्कराधारधर्मेशी** – सूर्य की किरणों के धर्म की ईशी अर्थात सूर्य की किरणों के धर्म को बनाये रखने वाली। ईश्वर अर्थात जो उत्पन्न करे, बनाये रखे और संहार करे। सूर्य की किरणों का धर्म है जल को ग्रहण कर कई गुना कर बरसात के रूप में वापस करना। सूर्य की किरणों का धर्म है प्रकाश करना। सूर्य के आधार का जो धर्म है उसकी ईश्वरी।

710. **भास्कराधारधामिनी** – सूर्य के किरणों की तेज वाली। धाम अर्थात तेज। सूर्य का आधार उसकी किरणें हैं। सूर्य का आधार–धाम, सूर्य का आधार है किरणें अर्थात किरणों के तेज वाली। सूर्य का आधार है किरणें। सूर्य के आधार की सर्वश्रेष्ठ शक्ति।

711. **भास्कराधारचक्रस्था** – सूर्य किरणों की गोलाई में स्थित। चक्र अर्थात गोलाई। भास्कराधार अर्थात सूर्य का आधार अर्थात सूर्य की किरणें। सूर्य के आधार की रक्षा के लिए जो चक्र आयुध हैं, उनमें निवास करने वाली।

712. **भास्कराधारचक्रिणी** – सूर्य की किरणों के समूह वाली अर्थात सूर्य की किरणों का समूह जिनमें हैं। चक्र अर्थात समूह। सूर्य को देवी की आँख कहा जाता है इसलिए उनमें सूर्य की किरणों का समूह होना स्वाभाविक है। सूर्य के आधार की रक्षा करने के लिए चक्र को धारण करने वाली।

713. **भास्करेश्वरक्षत्रेशी** – सूर्य भगवान के राष्ट्र पर शासन करने वाली। सूर्य भगवान के बल/राष्ट्र/धन/शरीर की स्वामिनी। क्षत्र का अर्थ है क्षत्रिय, बल, राष्ट्र, धन, शरीर, जल, तगर का पेड़। क्षत्र अर्थात जो बुराई से रक्षा करे। सूर्य भगवान के प्रकरण में अर्थ होगा दुखों अर्थात अन्धकार, ठण्ड और भय से रक्षा करे। यदि भास्करेश्वरछत्रेशी नाम है तो अर्थ होगा – सूर्य भगवान द्वारा धारण किये गये छत्र (छातानुमा वस्तु) की ईश्वरी या स्वामिनी या उस छत्र में शक्ति रूप में स्थित। उस छत्र में रक्षा करने की जो शक्ति है वह देवी जी ही हैं। सूर्य भगवान, वही हैं एक प्रकार के छत्र, उनकी ईश्वरी। सूर्य भगवान रूपी छत्र की सत्ता जिनके कारण है। ईश्वरी का अर्थ है जिनके कारण सत्ता है। (यदि भास्करेश्वरक्षेत्रेशी नाम है तो अर्थ है – सूर्य के स्वामी के क्षेत्र की ईश्वरी)।

714. **भास्करेश्वरक्षत्रिणी** – सूर्य भगवान के बल, धन से युक्त। सूर्य भगवान की रक्षा करने वाली। भास्कर अर्थात सूर्य और ईश्वर अर्थात भगवान। यदि भास्करेश्वरछत्रिणी नाम है तो अर्थ होगा – सूर्य भगवान को छत्र के रूप में धारण करने वाली। सूर्य भगवान इनके छत्र के रूप में हैं। (यदि भास्करेश्वरक्षेत्रिणी नाम है तब अर्थ है – सूर्य के जो ईश्वर हैं उनकी क्षेत्रस्वरूपा)।

715. **भास्करेश्वरजननी** – सूर्य भगवान को पैदा करने वाली। जननी अर्थात माता, माति इति माता अर्थात जो रक्षा करे वह माता है। सूर्य भगवान की रक्षा करने वाली।

716. **भास्करेश्वरपालिनी** – सूर्य भगवान का पालन पोषण करने वाली। ईश्वर का अर्थ है भगवान। भास्करेश्वर का अर्थ है सूर्य ही हैं ईश्वर अर्थात सूर्य भगवान।

717. **भास्करेश्वरसर्वेशी** – सूर्य भगवान पर सर्वतोभावेन अनुशासन रखने वाली अर्थात पूरे 24 घण्टे उन पर नियन्त्रण रखती हैं जिससे सूर्य भगवान एक पल के लिए भी अपने कर्तव्य से विमुख नहीं होते। सूर्य के जो ईश्वर हैं या स्वामी हैं उनकी सर्वश्रेष्ठ ईश्वरी। सूर्य के ईश्वर या स्वामी की निद्रा स्वरूपा। सूर्य के ईश्वर ब्रह्मा, विष्णु और शिव हैं।

718. **भास्करेश्वरशर्वरी** – सूर्य भगवान को भी अस्त करने वाली। शर्वरी अर्थात रात्रि जिसमें सूर्य भगवान अस्त हो जाते हैं। सूर्य के ईश्वर या स्वामी की निद्रा स्वरूपा। सूर्य के ईश्वर ब्रह्मा, विष्णु और शिव हैं।

719. **भास्करेश्वरसद्भीमा** – सूर्य भगवान की तरह अच्छाई के लिए दुष्टों को भय देने वाली अर्थात जगत हित के लिए दुष्टों को भय देने वाली। यदि भास्कराधारसद्भीमा नाम है तो अर्थ होगा सूर्य की किरणों के स्वरूप वाली जो जगत हित के लिए दुष्टों को भय देने वाली हैं। भास्कराधार अर्थात सूर्य की किरणें। भीमा अर्थात दुष्टों को भय देने वाली। भीम अर्थात विष्णु या शिव भी होता है। सूर्य के स्वामी के सत्तत्वों को लेकर राक्षसों के वध के लिए भयंकर रूप को धारण करने वाली।

720. **भास्करेश्वरसन्निभा** – सूर्य भगवान के समान अर्थात सूर्य भगवान के समान देदीप्यमान या प्रकाश वाली।

721. **भास्करेश्वरसुपथा** – भास्कर का अर्थ ज्ञान करने वाला अर्थात शिव कर सकते हैं। ईश्वर का अर्थ भी शिव माना जाता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ ज्ञान करने वाले शिव तक जाने का मार्ग स्वरूपा अर्थात शिव तक पहुँचाने का मार्ग दिखाती है या बताती हैं। सूर्य भगवान के सुन्दर मार्ग पर चलने वाली। सूर्य की दिव्य कान्ति के प्रकाश का संगमन करने वाली। सूर्य भगवान की तरह सुन्दर मार्ग पर चलने वाली।

722. **भास्करेश्वरसुप्रभा** – सूर्य भगवान के समान सुन्दर कान्ति से युक्त। ईश्वर का अर्थ है भगवान।

723. **भास्करेश्वरयुवती** – सूर्य भगवान के समान युवती अर्थात युवावस्था के स्वरूप को धारण करने वाली।

724. **भास्करेश्वरसुन्दरी** – सूर्य के स्वामी की सुन्दरी। सूर्य के स्वामी हैं भगवान शिव और उनकी सुन्दरी अर्थात पत्नी पार्वती स्वरूपा।

725. **भास्करेश्वरमूर्तेशी** – सूर्य भगवान के साक्षात स्वरूप की ईश्वरी। मूर्त अर्थात साक्षात स्वरूप। भास्करेश्वर अर्थात सूर्य के स्वामी के सदृश मूर्ति में स्थित होने वाली ईश्वरी।

726. **भास्करेश्वरमूर्तिनी** – सूर्य भगवान की मूर्ति के प्रति ले जाने वाली अर्थात देवयानमार्ग स्वरूपा। मूर्तिनी में नी शब्दाक्षर नयति से आया है। सूर्य भगवान की मूर्ति को गति देने वाली। नयति का अर्थ गति देना कर सकते हैं। नयति का अर्थ आकार देना भी कर सकते हैं इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ सूर्य भगवान की मूर्ति को आकार देने वाली, स्वरूप देने वाली अर्थात निर्माण करने वाली। श्रेष्ठ प्रकाश करने वाले की साक्षात प्रतिमूर्ति स्वरूपा। यह अर्थ भी कर सकते हैं और यहाँ पर ईश्वर का अर्थ है श्रेष्ठ। सूर्य भगवान की मूर्ति स्वरूपा।

727. **भास्करेश्वरमित्रेशी** – ज्ञान करने वाले शिव के मित्र अर्थात कुबेर की ईश्वरी। भास्कर का अर्थ है ज्ञान रूपी प्रकाश करने वाला, ईश्वर का अर्थ है शिव, मित्र अर्थात शिव के मित्र अर्थात कुबेर, ईश्वरी अर्थात आराध्या। सूर्य भगवान के मित्रों की स्वामिनी/आराध्या।

728. **भास्करेश्वरमन्त्रिणी** – सूर्य भगवान के साथ या भगवान शिव के साथ मन्त्रणा करने वाली। सूर्य भगवान या भगवान शिव को मन्त्रणा (परामर्श) देने वाली। सूर्य भगवान के मन्त्रों से विभूषित।

729. **भास्करेश्वरसानन्दा** – सूर्य भगवान के समान आनन्द वाली। सानन्द में स का अर्थ समान लिया गया है। सूर्य भगवान के समान आनन्दपूर्वक विचरण करने वाली।

730. **भास्करेश्वरसाश्रया** – सूर्य भगवान की सदैव आश्रया। साश्रया में स का अर्थ सदैव ले लिया गया है। सूर्य भगवान की तरह श्रेष्ठ आश्रय से युक्त।

731. **भास्करेश्वरचित्रस्था** – सूर्य भगवान की रंग बिरंगी आभा में स्थित। इन्द्र धनुष में स्थित। चित्र का अर्थ होता है विभिन्न रंगों वाला और सूर्य भगवान में सात रंग होते हैं। सूर्य भगवान के समान चित्र में स्थित रहने वाली।

732. **भास्करेश्वरचित्रदा** – सूर्य भगवान को सात रंग अर्थात चित्र देने वाली। शक्ति होने के कारण विभिन्न रंग देती हैं। भास्करेश्वर का अर्थ सूर्य ही है ईश्वर अर्थात सूर्य भगवान या सूर्य देव कर सकते हैं। वैसे ब्रह्मा जी से सूर्य की उत्पत्ति होने के कारण ब्रह्मा जी भी सूर्य के ईश्वर कहलाए जायेंगे। भगवान शिव को भी सूर्य का ईश्वर कहते हैं। विराट पुरुष अर्थात भगवान विष्णु के नेत्र से पैदा होने के कारण विष्णु भगवान भी भास्करेश्वर हैं। भास्करेश्वर के समान अतिशय सुन्दर स्वरूप और धन सम्पत्ति आदि को देने वाली। भास्कर अर्थात प्रकाश करने वाला। भगवान शिव ज्ञान का प्रकाश करने वाले हैं अर्थात उनका नाम भी भास्कर है।

733. **भास्करेश्वरचित्रेशी** – सूर्य भगवान में जो नाना वर्ण हैं उनकी ईश्वरी अर्थात उस पर अनुशासन करने वाली। अनुशासन का अर्थ है कि ये वर्ण हों या न हों, इनके अधिकार या इच्छा पर हैं इनकी इच्छा हो तो वर्ण रहें, न इच्छा हो तो मिट जायें। चित्र का अर्थ अद्‌भुत कार्य भी होता है सूर्य की किरणों से जल की बूंद भी मोती बन जाती है, यह आश्चर्य ही है। भास्करेश्वर के समान चित्र में स्थित ईश्वरी स्वरूपा।

734. **भास्करेश्वरचित्रिणी** – सूर्य भगवान को रेखांकित करने वाली अर्थात बनाने वाली, निर्माण करने वाली। सूर्य भगवान को दिखाने वाली। चित्रित करने वाली अर्थात दिखाने वाली। भास्करेश्वर के समान सुन्दर चित्र वाली।

735. **भास्करेश्वरभाग्यस्था** – सूर्य भगवान की तरह भाग्य में स्थित रहने वाली।

736. **भास्करेश्वरभाग्यदा** – सूर्य भगवान के समान भाग्य को देने वाली।

737. **भास्करेश्वरभाग्येशी** – सूर्य भगवान के कर्म या क्रियाकलाप जिनके अधीन हैं अर्थात सूर्य भगवान के क्रियाकलापों की शक्तिस्वरूपा। कर्म ही भाग्य बनता है इसलिए भाग्य का अर्थ कर्म लिया गया है। सूर्य भगवान का भाग्य है चमकना, उत्तरायण, दक्षिणायन होना। जिसका उपभोग या उपयोग किया जाता है वह है भाग्य। भास्करेश्वर के समान भाग्यों की ईश्वरी।

738. **भास्करेश्वरभाविनी** – सूर्य भगवान को बनाने वाली अर्थात निर्माण करने वाली। भास्करेश्वर के समान उच्च कोटि के भावों को धारण करने वाली।

739. **भास्करेश्वरकीर्त्येशी** – सूर्य भगवान की श्रेष्ठ कीर्ति की ईश्वरी या स्वामिनी अर्थात देने वाली। कीर्ति+आ इति कीर्त्या, एकाक्षरी कोष में आ का एक अर्थ उदात्त (श्रेष्ठ) दिया गया है। सूर्य भगवान द्वारा कीर्तनीय ईश्वरी या देवी या शक्ति। सूर्य भगवान की कीर्ति की ईश्वरी अर्थात उनकी कीर्ति करने वाली या बनाने वाली। देवी सूर्य भगवान में शक्ति रूप में विराजमान होती हैं जिससे उनकी कीर्ति बनती है। कीर्त्या+ईशी इति कीर्त्येशी। कीर्त्या अर्थात कीर्ति। भास्करेश्वर के समान विभिन्न प्रकार की कीर्तियों की स्वामिनी।

740. **भास्करेश्वरकीर्तिनी** – सूर्य भगवान का यशोगान करने वाले की गृहिणी। कीर्तयति इति कीर्तनः अर्थात जो कीर्तन करे यशोगान करे। कीर्तनः की गृहिणी कीर्तिनी। भास्कर का अर्थ प्रकाश करने वाला अर्थात शिव भी कर सकते हैं क्योंकि शिव ही ज्ञान का प्रकाश करते हैं या सूर्य भगवान शिव की शक्ति से ही प्रकाशित कर पाते हैं। प्रकाश करने वाले शिव की गृहिणी यह अर्थ हुआ। भास्करेश्वर की कीर्ति का कार्य करने वाली।

741. **भास्करेश्वरकीर्तिस्था** – सूर्य भगवान की कीर्ति में निवास करने वाली। भगवान शिव की कीर्ति में निवास करने वाली।

742. **भास्करेश्वरकीर्तिदा** – सूर्य भगवान को कीर्ति देने वाली। प्रकाश करने वाले भगवान शिव को कीर्ति देने वाली। भास्कर का अर्थ है प्रकाश करने वाला और भगवान शिव आध्यात्मिक प्रकाश करने के कारण भास्कर हैं।

743. **भास्करेश्वरकरूणा** – सूर्य भगवान की करूणास्वरूपा। सूर्य भगवान में रहने वाला करूणा गुण देवी का ही स्वरूप है।

744. **भास्करेश्वरकारिणी** – सूर्य भगवान को उत्पन्न करने वाली, उनके कार्य में लगाने वाली या उनकी विभिन्न श्रेष्ठ कार्यों को सम्पन्न करने वाली।

745. **भास्करेश्वरगीर्वाणी** – सूर्य भगवान की देवी या ईश्वरी अर्थात सूर्य भगवान की उपास्या। गीर्वाणी का अर्थ है देवी। सूर्य भगवान की देवी अर्थात इष्ट देवी। गीर्वाण का अर्थ देवता भी होता है। सूर्य भगवान की तरह संस्कृत वाणी वाली।

746. **भास्करेश्वरगारूडी** – सूर्य भगवान के उस मन्त्र के स्वरूप वाली जो विष को उतारता है अर्थात विष को निर्विष करता है। गारूड़ी वह विद्या या मन्त्र है जिससे जहर का असर खत्म होता है। भगवान शिव के उस मन्त्र के स्वरूप वाली जो सांसारिक विष या कष्टों को खत्म करता है। सूर्य भगवान की तरह गारूडी शक्ति से युक्त अर्थात गरूड की शक्ति से युक्त।

747. **भास्करेश्वरदेहस्था** – सूर्य भगवान के शरीर में स्थित।

748. **भास्करेश्वरदेहदा** – सूर्य भगवान को सुन्दर शरीर देने वाली। सूर्य भगवान का केवल गोलाकार रूप ही नहीं होता बल्कि अन्य देवी देवताओं की तरह उनके भी हाथ पैर आदि अंग हैं।

749. **भास्करेश्वरनादस्था** – सूर्य भगवान से निकलने वाले नाद या ध्वनि में स्थित। ऐसा कहते हैं कि सूर्य भगवान से ओम् की ध्वनि निकलती हैं या तान्त्रिक मन्त्र सूर्य भगवान से निकलने वाला नाद है।

750. **भास्करेश्वरनादिनी** – सूर्य भगवान के समान नाद करने वाली या अव्यक्त शब्द करने वाली। नद् अव्यक्त शब्द या ध्वनि होती है। सूर्य भगवान में हो रहे अव्यक्त शब्द वाली। सूर्य भगवान में तेजी से दिव्य नाद या स्वरों का उच्चारण करने वाली। सूर्य भगवान की तरह वेद–मन्त्रों की ध्वनि करने वाली।

751. **भास्करेश्वरनादेशी** – सूर्य भगवान में होने वाला नाद, उसकी ईश्वरी। अपने आप होने वाली अव्यक्त ध्वनि नाद है। ईश्वरी का अर्थ है उत्पन्न करने वाली या अनुशासित करने वाली। अनुशासित अर्थात कितना कम या ज्यादा करना है या नहीं करना है उसका निर्धारण करने वाली। सूर्य भगवान का जो नाद है अर्थात मन्त्र की ध्वनि है उसकी ईश्वरी अर्थात पैदा करने वाली।

752. **भास्करेश्वरनादिनी** – सूर्य भगवान से निकलने वाले नाद के स्वरूप वाली। सूर्य भगवान की तरह गर्जना करने वाली।ऐसा कहते हैं कि सूर्य के गोले से निरन्तर ध्वनि निकलती है जो उनके तान्त्रिक मन्त्र की तरह है।

753. **भास्करेश्वरकोशस्था** – सूर्य भगवान के कोश में निवास करने वाली। कोश का अर्थ है खजाना, तलवार की म्यान, शरीर आदि।

754. **भास्करेश्वरकोशदा** – सूर्य भगवान को कोश (रक्षा) देने वाली अर्थात सूर्य भगवान की रक्षा करने वाली। कोश का एक अर्थ म्यान होता है जो रक्षा का प्रतीक है। म्यान तलवार की चारों ओर से रक्षा करती है। सूर्य भगवान को कोशों अर्थात विभिन्न शरीरों को देने वाली।

755. **भास्करेश्वरकोशेशी** – सूर्य भगवान के कोशों अर्थात बाहरी आवरणों की स्वामिनी। ईशी का अर्थ रचना करने वाली भी कर सकते हैं अर्थात सूर्य भगवान के बाहरी आवरणों की रचना करने वाली।

756. **भास्करेश्वरकोशिनी** – सूर्य भगवान रूपी कोश वाली अर्थात सूर्य भगवान जिनके रक्षक हैं या जिनके बाहरी आवरण हैं। कोश बाहर का आवरण होता है। सूर्य के गोले के केन्द्र में देवी का वास होता है अतः सूर्य का गोला देवी के लिए कोश हुआ अर्थात बाहरी आवरण या बाहरी रक्षा कवच हुआ।

757. **भास्करेश्वरशक्तिस्था** – सूर्य भगवान की शक्ति में विराजमान।

758. **भास्करेश्वरशक्तिदा** – सूर्य भगवान की तरह विलक्षण शक्तियों को अपने भक्तों को देने वाली। सूर्य भगवान को शक्ति देने वाली।

759. **भास्करेश्वरतोषेशी** – सूर्य भगवान को तुष्ट करने वाली। ईशी अर्थात देने वाली। सूर्य भगवान की तरह सन्तोष की ईश्वरी। सूर्य भगवान के सन्तोष की ईश्वरी।

760. **भास्करेश्वरतोषिणी** – भगवान शिव को अपने क्रियाकलाप से सन्तुष्ट करने वाली। सूर्य भगवान को अपने क्रियाकलाप से सन्तुष्ट करने वाली। सूर्य भगवान की तरह अपने भक्तों को सन्तुष्ट करने वाली।

761. **भास्करेश्वरक्षेत्रेशी** – सूर्य भगवान की परिधि की मालकिन। इस क्षेत्र या परिधि पर देवी का अधिकार है। सूर्य भगवान की तरह समस्त क्षेत्रों अर्थात स्थानों की ईश्वरी।

762. **भास्करेश्वरक्षेत्रिणी** – सूर्य भगवान के लिए खेत की तरह अर्थात शरीर की तरह। शरीर को खेत कहते हैं क्योंकि इसमें कर्मों की फसल उगती है। जीवात्मा सूर्य है। उस सूर्य का खेत यह शरीर हुआ। शरीर भी ऊर्जा या शक्ति से बनता है और ऊर्जा या शक्ति ही देवी हैं। कहने का तात्पर्य है कि ब्रह्माण्ड रूपी शरीर या चतुर्विध प्राणियों का शरीर भी देवी ही हैं। भगवान सूर्य के क्षेत्र में निवास करने वाली अर्थात सूर्य की प्रभा/तेज या कान्ति में रहने वाली। सूर्य मण्डल में रहने वाली।

763. **भास्करेश्वरयोगस्था** – सूर्य भगवान की तरह योग में स्थित रहने वाली। गीता में भगवान ने कहा था कि मैंने सूर्य को कर्मयोग सिखाया था।

764. **भास्करेश्वरयोगदा** – सूर्य भगवान को योग विद्या देने वाली। सूर्य भगवान की तरह योग विद्या को प्रदान करने वाली।

765. **भास्करेश्वरयोगेशी** – सूर्य भगवान की तरह योग विद्या की स्वामिनी। गीता में आया है कि भगवान श्री कृष्ण ने पहले सूर्य भगवान को कर्म योग की शिक्षा दी थी जिसके कारण सूर्य भगवान योग में पारंगत हो गये थे अर्थात योग के स्वामी हो गये थे।

766. **भास्करेश्वरयोगिनी** – सूर्य भगवान के साथ जुड़ी रहने वाली। सूर्य भगवान के साथ जुड़ने वाली। सूर्य भगवान से जुड़ी हुई। सूर्य भगवान के साथ हमेशा रहने वाली अर्थात उनसे कभी अलग नहीं होती। सूर्य भगवान में एकाकिनी रूप से रहने वाली अर्थात अकेली रहने वाली। योगी लोग अकेले रहते हैं। सूर्य भगवान की तरह योगिनी के रूप को धारण करने वाली।

767. **भास्करेश्वरपद्मेशी** – सूर्य भगवान की लक्ष्मी (या शोभा) की ईश्वरी। ईशी अर्थात अनुशासित करने वाली

अर्थात यह निर्धारित करने वाली कि कितनी एवं किस प्रकार की सुन्दरता देनी है। ईशी का साधारण अर्थ देने वाली भी कर सकते हैं।

768. **भास्करेश्वरपद्मिनी** – भगवान शिव के लिए अत्यन्त सुन्दर महिला स्वरूपा। सामुद्रिक शास्त्र में पद्मिनी अनेक गुणों से युक्त सुन्दर महिला है जिसके शरीर से कमल की तरह गन्ध निकलती है। सूर्य भगवान की मानों पद्मिनी नायिका की तरह सुन्दर स्त्री हैं। सूर्य भगवान के द्वारा विकसित पद्मों की शोभा स्वरूपा हैं। सूर्य भगवान की पद्मिनी शक्ति से युक्त। पद्मिनी का अर्थ है सर्वश्रेष्ठ नारी। वह तालाब जिसमें बहुत से कमल हों पद्मिनी कहलाता है अर्थात पद्मिनी का अर्थ है कमलों से भरी हुई या घिरी हुई। देवी के शरीर में बहुत से कमल हैं जैसे करकमल, चरणकमल, मुखकमल, नेत्रकमल इस प्रकार देवी भी पद्मिनी हुईं क्योंकि बहुत से कमलों से युक्त है।

769. **भास्करेश्वरहृद्बीजा** – सूर्य भगवान के लिए बीजाक्षरों वाले हृदय मन्त्र स्वरूपा। प्रत्येक देवता का एक हृदय मन्त्र अर्थात मुख्य मन्त्र होता है। भगवान शिव के लिए बीजाक्षरों वाले हृदय मन्त्र के स्वरूप वाली। सूर्य भगवान के हृदय बीज स्वरूपा। सूर्य भगवान के तान्त्रिक मन्त्र में ओम् के बाद जो बीज मन्त्र दिये गये हैं वे हृदय भी हैं। सूर्य भगवान के हृदय कमल में निवास करने वाली।

770. **भास्करेश्वहृद्वरा** – भगवान शिव की श्रेष्ठ हृदय स्वरूपा अर्थात परमप्रिया। वरा का अर्थ है श्रेष्ठ। सूर्य भगवान के हृदय में श्रेष्ठ स्वरूप द्वारा विराजमान रहने वाली। वर का अर्थ है श्रेष्ठ।

771. **भास्करेश्वरहृद्योनि** – भगवान शिव के हृदय की कारण। हृदय का अर्थ मुख्य लें तो अर्थ होगा भगवान शिव का मुख्य कारण। भगवान शिव के अस्तित्व में देवी जी मुख्य कारण हैं। सूर्य भगवान के मुख्य कारण। हृदय शरीर का मुख्य अंग होता है अतः हृद का अर्थ मुख्य लिया गया है। सूर्य भगवान के हृदय स्तोत्र की कारण। हर देवता का एक हृदय स्तोत्र होता है। सूर्य भगवान की तरह हृदय में विराजमान समस्त संसार की कारण रूपा।

772. **भास्करेश्वरहृत्द्युति** – भगवान शिव के हृदय की कान्ति स्वरूपा। सूर्य भगवान के हृदय की कान्ति स्वरूपा।

773. **भास्करेश्वरबुद्धिस्था** – भगवान शिव की बुद्धि में विराजमान रहने वाली। सूर्य भगवान की बुद्धि में विराजमान रहने वाली।

774. **भास्करेश्वरसद्विधा** – शिव के श्रेष्ठ स्वरूप वाली। शिव के बहुत से रूप हैं, एकादश रूद्र प्रसिद्ध हैं। सम्भवतः वह रूप जो दुष्टों का नाश करे श्रेष्ठ रूप होता होगा। सूर्य भगवान के श्रेष्ठ स्वरूप वाली। द्वादश सूर्य प्रसिद्ध हैं वैसे कहा जाता है अनन्त सूर्य हैं। विधा का अर्थ है प्रकार। सूर्य भगवान में जो सद्जल है तत्स्वरूपा। सद्जल का अर्थ है जिससे सृष्टि होती है। विधा का एक अर्थ जल भी होता है। वेद में आया है आपो वै विधा। सूर्य भगवान की तरह श्रेष्ठ विधाओं से विभूषित।

775. **भास्करेश्वरसद्वाणी** – सूर्य भगवान की तरह श्रेष्ठ वाणी से युक्त। भगवान शिव की तरह श्रेष्ठ वाणी से युक्त।

776. **भास्करेश्वरसद्वरा** – भगवान शिव की मन, वचन, कर्म से अच्छाई स्वरूपा श्रेष्ठता वाली या उनमें श्रेष्ठता के रूप में रहती है। वरा का अर्थ है श्रेष्ठता या अच्छाई। सद् का अर्थ है – सद्भाव, साधुभाव, प्रशस्त, मन, वचन, कर्म से अच्छाई। सूर्य भगवान की तरह श्रेष्ठ वरों को प्रदान करने वाली।

777. **भास्करेश्वरराज्यस्था** – भगवान शिव के राज्य में निवास करने वाली। सूर्य भगवान के राज्य में निवास करने वाली।

778. **भास्करेश्वरराज्यदा** – सूर्य भगवान की तरह प्रकाश वाले अर्थात चमकीले राज्य को देने वाली। निष्कण्टक राज्य को देने वाली। सूर्य के सामने किसी का तेज टिकता नहीं है अतः निष्कण्टक अर्थ भी ले सकते हैं। सूर्य भगवान की तरह भक्तों को राज्य प्रदान करने वाली।

779. **भास्करेश्वरराज्येशी** – सूर्य भगवान के राज्य का शासन करने वाली, नियन्त्रण करने वाली। सूर्य भगवान के राज्य की ईश्वरी अर्थात आराध्या या राज्य की रक्षा करने वाली।

780. **भास्करेश्वरपोषिणी** – सूर्य भगवान को पुष्ट करने वाली। सूर्य भगवान की तरह भक्तों का पालन पोषण करने वाली।

781. **भास्करेश्वरज्ञानस्था** – सूर्य की तरह सर्वोच्च ज्ञान में स्थित। सूर्य का प्रकाश सर्वोच्च माना जाता है। सूर्य भगवान की तरह ज्ञान में विराजमान रहने वाली।

782. **भास्करेश्वरज्ञानदा** – सूर्य भगवान की तरह भक्तों को ज्ञान देने वाली। सूर्य भगवान को ज्ञान देने वाली।

783. **भास्करेश्वरज्ञानेशी** – सूर्य भगवान के ज्ञान की स्वामिनी। सूर्य भगवान की तरह भक्तों के ज्ञान की स्वामिनी।

784. **भास्करेश्वरगामिनी** – सूर्य भगवान की तरह गति करने वाली। सूर्य भगवान की तरह भक्तों के समीप पहुँचने वाली या उन्हें दर्शन देने वाली।

785. **भास्करेश्वरलक्षेशी** – भगवान शिव के प्रयोजन या लक्ष्य की स्वामिनी अर्थात देने वाली अर्थात पूरा करने वाली। इनके बिना भगवान शिव का लक्ष्य या प्रयोजन पूरा नहीं हो सकता। स्वामिनी अर्थात किसी चीज की स्वामिनी अर्थात इच्छा होने पर उस चीज को दूसरों को देने वाली। सूर्य भगवान के लक्ष्य हैं अन्धकार को मिटाना, भय दूर करना और ठंड मिटाना, उन लक्ष्यों की ईश्वरी। सूर्य भगवान की तरह लाखों भक्तों की स्वामिनी। लाखों अर्थात अनन्त सूर्य भगवान की ईश्वरी। अनन्त ब्रह्माण्ड में अनन्त सूर्य हैं। यहाँ लाख का अर्थ अनन्त है।

786. **भास्करेश्वरक्षालिता** – सूर्य भगवान के समान उज्ज्वल वर्ण वाली या शुद्ध। सूर्य भगवान को स्वच्छ करने वाली अर्थात प्रकाशित करने वाली। सूर्य भगवान की तरह भक्तों के पाप को धोने वाली। सूर्य भगवान कोढ़ जैसे रोग जो पाप के कारण होते हैं दूर कर देते हैं। सूर्य भगवान की तरह भक्तों को प्रशस्त रूप देने वाली। क्षालिता का अर्थ है धोई गयी अर्थात शुद्ध अर्थात श्रेष्ठ गुणों से विभूषित।

787. **भास्करेश्वरलक्षिता** – भगवान सूर्य के द्वारा लक्षित अर्थात भगवान सूर्य के द्वारा जिन्हें लक्ष्य बनाया गया अर्थात देखा गया या जाना गया। भगवान शिव के द्वारा लक्षित अर्थात भगवान शिव द्वारा जिन्हें लक्ष्य बनाया गया अर्थात देखा गया या जाना गया। सूर्य भगवान की तरह भक्तों द्वारा दर्शन की गई।

788. **भास्करेश्वररक्षिता** – भगवान शिव द्वारा रक्षित अर्थात भगवान शिव इनके पहरेदार हैं। भास्कर अर्थात प्रकाश करने वाला। आध्यात्मिक प्रकाश या ज्ञान का प्रकाश शिव द्वारा होता है और भौतिक प्रकाश सूर्य द्वारा होता है। सूर्य में भी प्रकाशित करने की शक्ति शिव की शक्ति के कारण होती है इस प्रकार भगवान शिव ही प्रकाश करने वाले हुए। शिव और शक्ति में कोई भेद नहीं है। शक्ति ने किया अर्थात शिव ने किया। सूर्य भगवान के द्वारा रक्षित। सूर्य भगवान के समान रक्षा करने वाली। सूर्य भगवान की रक्षा करने वाली। कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र से बहुलम् के कारण क्त प्रत्ययान्त शब्द कभी कभी कर्ता अर्थ भी देने लगता है अर्थात कर्म में प्रयुक्त शब्द या भाव में प्रयुक्त शब्द कर्ता अर्थ भी देने लगते हैं। रक्ष में तृच् प्रत्यय लगाने से रक्षा करने वाला अर्थ निकल आता है। सूर्य भगवान द्वारा रक्षित। सूर्य भगवान की तरह भक्तों की रक्षा करने वाली। सूर्य भगवान की तरह अभक्तों से रक्षित अर्थात उनसे दूर।

789. **भास्करेश्वरखड्गस्था** – सूर्य भगवान की तीव्र कृपाण अर्थात तलवार में स्थित रहने वाली।

790. **भास्करेश्वरखड्गदा** – सूर्य भगवान के समान चमकीले खड्ग को देने वाली। अन्धकार को दूर करने वाले सूर्य के समान ज्ञान रूपी खड्ग को देने वाली। सूर्य भगवान को तलवार नामक आयुध देने वाली। सूर्य भगवान की तरह भक्तों को खड्ग आदि आयुध प्रदान करने वाली।

791. **भास्करेश्वरखड्गेशी** – भगवान शिव के खड्गमाला स्तोत्र की स्वामिनी अर्थात उस स्तोत्र का फल देने वाली। विभिन्न देवी देवताओं के खड्गमाला मन्त्र या खड्गमाला स्तोत्र होते हैं। जो तलवार की माला के समान उपासकों के समस्त संचित कर्मों को काट देती है। यह स्तोत्र अपने भक्तों की सभी शत्रुओं, खतरों और कष्टों से वैसी ही रक्षा करता है जैसे तलवार की माला। जो अपने उपासकों को तलवार की माला देती हैं अर्थात उसके शरीर, कष्टों एवं खतरों से रक्षा करती हैं। भगवान सूर्य के द्वारा धारण की हुई तलवार की ईशी अर्थात उसमें शक्ति रूप में विराजमान या उस तलवार की शक्ति स्वरूपा। प्राधान्येन व्यपदेशः सूत्र से प्रधान या मुख्य का उल्लेख करने से उससे सम्बन्धित दूसरी चीजों का भी ग्रहण हो जाता है। तलवार कहने से दूसरे आयुधों का भी ग्रहण हो जाता है क्योंकि तलवार मुख्य आयुध है। सूर्य भगवान की तरह खड्ग की ईश्वरी। सूर्य भगवान ही है एक खड्ग, उसकी ईश्वरी। सूर्य भगवान के तलवार नामक विशेष आयुध की स्वामिनी। तलवार से रक्षा होती है।

792. **भास्करेश्वरखड्गिनी** – सूर्य भगवान की तरह तलवार को धारण करने वाली। सूर्य भगवान की तलवार में निवास करने वाली।

793. **भास्करेश्वरकार्येशी** – सूर्य भगवान के कार्यों की स्वामिनी अर्थात देवी के बिना अर्थात देवी की शक्ति के बिना सूर्य भगवान कोई कार्य नहीं कर सकते।

794. **भास्करेश्वरकामिनी** – प्रकाश करने वाले ईश्वर या सूर्य भगवान द्वारा चाही गई। सूर्य भगवान की गृहिणी। सूर्य भगवान की सर्वश्रेष्ठ शक्ति।

795. **भास्करेश्वरकायस्था** – सूर्य भगवान के शरीर में निवास करने वाली (शक्ति रूप में)।

796. **भास्केश्वरकायदा** – सूर्य भगवान को सुन्दर शरीर या स्वरूप देने वाली।

797. **भास्करेश्वचक्षुःस्था** – सूर्य भगवान के नेत्रों में स्थित रहने वाली।

798. **भास्करेश्वरचक्षुषा** – सूर्य भगवान की दृष्टि स्वरूपा अर्थात सूर्य भगवान इन्हीं के कारण जगत को प्रकाशित कर पाते हैं। इन्द्रियों में नेत्र को सर्वश्रेष्ठ इन्द्रिय माना गया है। सूर्य भगवान की तरह दृष्टि वाली अर्थात दर्शन या ज्ञान वाली या प्रकाश वाली। सूर्य भगवान की चक्षु स्वरूपिणी अर्थात इनकी शक्ति से ही सूर्य भगवान देख पाते हैं। सूर्य भगवान के दिव्य ज्ञान से युक्त रहने वाली। यहाँ चक्षु का अर्थ नेत्र अर्थात ज्ञान है।

799. **भास्करेश्वरसन्नाभा** – सूर्य भगवान की उत्तम आभा स्वरूपा या सूर्य भगवान की उत्तम आभा को धारण करने वाली। आकारान्त शब्द में वाली (से युक्त) एवं स्वरूपा दोनों अर्थ निकल जाते हैं। जैसे घण्टा का अर्थ हुआ घण्टा वाली अर्थात घण्टा को धारण करने वाली, घण्टा अस्या अस्ति इति घण्टा। इस व्युत्पत्ति का अर्थ हुआ जिसका घण्टा है अर्थात घण्टा वाली अर्थात घण्टा धारण करने वाली। सूर्य भगवान की अच्छी नाभि स्वरूपिणी या अच्छे मध्य बिन्दु वाली। नाभि शब्द समास के अन्त में प्रयोग होने पर नाभ भी हो जाता है। सूर्य भगवान की तरह दीप्ति, अच्छे मध्य भाग वाली। सूर्य भगवान से चमक और सत् से अच्छा अर्थ लिया गया। सत् नाभौ यस्या सा। जिसकी नाभि या मध्य भाग में सत् है। सूर्य भगवान के समान आभा वाली। सूर्य भगवान की अद्वितीय शक्ति।

800. **भास्करेश्वरसार्चिता** – सूर्य भगवान द्वारा सदैव पूजित। स का अर्थ सदैव, सम्पूर्ण, समान आदि अर्थ निकल सकते हैं। सूर्य भगवान के द्वारा जो सम्पूर्ण रूप से अर्थात विधिवत पूजित हुईं।

801. **भ्रूणहत्याप्रशमिनी** – भ्रूण हत्या को शान्त करने वाली अर्थात लोगों को प्रेरणा देने वाली कि भ्रूण हत्या न करें।

802. **भ्रूणपापविनाशिनी** – भ्रूण हत्या से सम्बन्धित पापों को पूर्ण रूपेण नष्ट करने वाली।

803. **भ्रूणदारिद्र्यशमनी** – भ्रूण हत्या से होने वाली दरिद्रता को शान्त करने वाली। हो सकता है भ्रूण हत्या रूपी कर्म का फल दरिद्रता हो।

804. **भ्रूणरोगविनाशिनी** – भ्रूण सम्बन्धी रोगों को नष्ट करने वाली। गर्भावस्था की समस्याऐं हो सकती हैं। जन्म से पहले भ्रूण में कई बीमारियाँ हो सकती हैं। भ्रूण प्राणी के विकास की प्रारम्भिक अवस्था है। मानव में तीन मास की गर्भावस्था के पश्चात भ्रूण को गर्भ की संज्ञा दी जाती है।

805. **भ्रूणशोकप्रशमनी** – भ्रूण हत्या से होने वाले शोक आदि दोषों को पूर्णतया शान्त करने वाली। भ्रूण के स्वतः नष्ट हो जाने पर भी उत्पन्न होने वाले शोक को दिव्यज्ञान देकर या अध्यात्मज्ञान देकर पूरी तरह से शान्त करने वाली।

806. **भ्रूणदोषनिवारिणी** – भ्रूण सम्बन्धी दोषों को दूर करने वाली। पेट में पल रहे भ्रूण में कुछ शारीरिक अपूर्णता या कमी रह गई हो तो देवी की आराधना से दूर हो जाती है। तात्पर्य है कि देवी के उपासकों के गर्भ में पल रहा भ्रूण एकदम स्वस्थ रहता है। दोष का अर्थ कमी या अपूर्णता ही नहीं बल्कि अपराध या अवगुण भी होता है। भ्रूण हत्या से पाप लगता है। भ्रूण हत्या एक अपराध है, एक अवगुण है।

807. **भ्रूणसन्तापशमनी** – भ्रूण हत्या आदि से होने वाले सन्तापों (दुख या कष्ट) को शान्त करने वाली। भ्रूण हत्या महापाप है जिससे मनुष्य को अत्यन्त कष्ट मिलते हैं। उन कष्टों की शान्ति देवी की उपासना से ही हो सकता है। गरूड़ पुराण में भ्रूण हत्या करने वालों को बहुत बड़ी सजा देने का प्रावधान किया गया है। अश्वत्थामा ने जब अभिमन्यु की पत्नी उत्तरा के गर्भ की हत्या की तो भगवान श्रीकृष्ण बहुत क्रोधित हो गये और उन्होंने कहा था अश्वत्थामा का पाप अन्य सभी पापों में सबसे बड़ा महा–पाप है क्योंकि अश्वत्थामा ने एक अजन्मे शिशु की हत्या की थी।

808. **भ्रूणविभ्रमनाशिनी** – भ्रूण सम्बन्धी सन्देह को दूर करने वाली। भ्रूण जीवित रहेगा कि नहीं, उसमें कुछ विकृति तो नहीं आ जाएगी इस सम्बन्ध में होने वाले सन्देहों को दूर करने वाली। आशा रूपी भ्रान्ति का नाश करने वाली। भ्रूण का एक अर्थ आशा भी है। भ्रूण दोष से होने वाले विभ्रम (विशेष प्रकार का भ्रम या आशंका या पाप) को नष्ट करने वाली। विभ्रम का अर्थ भ्रान्ति भी है और अदा भी है। अदा अर्थात स्त्रियों के श्रृंगारपरक हावभाव जिससे वे पुरुषों को अपनी तरफ खींचने का प्रयास करती हैं। अपने अंगों को तिरछा कर अर्थात विशेष मुद्रा में कर फोटो आदि खिंचाना, भौं से इशारा करना, चूड़ी आदि बजाना या हाथ से इशारा करना आदि सभी श्रृंगारपरक अदाएं हैं।

809. **भवाब्धिस्था** – संसार सागर में निवास करने वाली।

810. **भवाब्धीशा** – संसार रूपी समुद्र की ईश्वरी अर्थात उपासनीया। संसार सागर के प्राणियों द्वारा उपासनीया। संसार सागर में शासन करने वाली अर्थात सब कुछ उनकी इच्छानुसार घटित होगा। संसार सागर को प्रेरित करने वाली अर्थात उन्हें अपने कामों में लगाए रखने वाली।

811. **भवाब्धिभयनाशिनी** – संसार सागर के भयों या संसार सागर में होने वाले भयों को नष्ट कर देने वाली।

812. **भवाब्धिपारकरणी** – संसार सागर से पार करा देने वाली। कभी–कभी ण्यन्त धातु अणयन्त धातु का एवं अण्यन्त धातु ण्यन्त धातु का अर्थ देने लगती है।

813. **भवाब्धिसुखवर्धिनी** – संसार रूपी समुद्र में सुखों को बढ़ाने वाली।

814. **भवाब्धिकार्यकरणी** – संसार सागर है एक प्रकार का कार्य, उस कार्य को करने वाली अर्थात उसका निर्माण करने वाली। संसार रूपी समुद्र के विविध कार्यो को सम्पन्न करने वाली।

815. **भवाब्धिकरूणानिधि** – संसार रूपी समुद्र की करूणानिधि अर्थात करूणा का भण्डार। उनके हृदय में करूणा का भण्डार मौजूद है जिससे वे संसार सागर में दुखी व्यक्तियों को उनके कष्ट से उबारने का प्रयास करती हैं।

816. **भवाब्धिकालशमनी** – संसार सागर में अकालमृत्यु के योग को शान्त करने वाली। संसार रूपी समुद्र के कालों या कालजन्य दोषों को शान्त करने वाली। इस संसार में जो भी आकृति आती है वह देश और काल के साँचे में आती है। ऐसा लगता है कि भवाब्धि से देश का बोध हो रहा है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ देश और काल को शान्त करने वाली अर्थात आकार से परे अवस्था में ले जाने वाली अर्थात निराकार अवस्था में ले जाने वाली अर्थात मोक्ष देने वाली।

817. **भवाब्धिवरदायिनी** – संसार रूपी समुद्र में लोगों को वर प्रदान करने वाली।

818. **भवाब्धिभजनस्थाना** – संसार सागर में एकमात्र भजनीया अर्थात भजन करने योग्य अर्थात जिसका भजन करना चाहिए। संसार सागर में सेवनीय या उपासनीय स्वरूपा। भज सेवायाम् धातु होती है। स्थान अर्थात पात्र या स्वरूप। संसार सागर में किये जाने वाले भजन के लिए पात्र स्वरूपा जैसे बहुत से तीर्थ होते हैं। संसार रूपी समुद्र के भजनों में स्थित रहने वाली।

819. **भवाब्धिभजनस्थिता** – संसार सागर के भजनों में स्थित रहने वाली।

820. **भवाब्धिभजनाकारा** – संसार रूपी समुद्र में भजन स्वरूपा।

821. **भवाब्धिभजनक्रिया** – संसार रूपी समुद्र में भजन रूपी क्रिया से युक्त या क्रिया स्वरूपा।

822. **भवाब्धिभजनाचारा** – संसार रूपी समुद्र में भजन ही है आचार जिनका अर्थात जो भजन करती रहती हैं। आचार अर्थात आचरण या नित्य नैमित्यिक नियम। भजन करना जिनका नित्य नैमित्तिक नियम है।

823. **भवाब्धिभजनाङ्कुरा** – संसार सागर में भजन की प्रथम सोपान अर्थात इन्हीं से भजनों का विकास हुआ। संसार रूपी समुद्र में भजन की कारण।

824. **भवाब्धिभजनानन्दा** – संसार रूपी समुद्र में भजन से आनन्दित होने वाली या भजनानन्द स्वरूपा।

825. **भवाब्धिभजनाधिपा** – संसार सागर में जो भजन हैं उनकी स्वामिनी अर्थात उनकी रक्षिका एवं उनका अस्तित्व बनाए रखने वाली। संसार रूपी समुद्र में विविध प्रकार के भजनों की स्वामिनी अर्थात उन्हें सभी भजन याद हैं। भज् सेवायाम् से भजन का अर्थ पूजन क्रिया, सेवा अर्थात सांसारिक कार्य कलाप भी होता है।

826. **भवाब्धिभजनैश्वर्या** – संसार सागर में भजन रूपी ऐश्वर्य वाली। संसार सागर में भजन के द्वारा भक्तों को ऐश्वर्य प्रदान करने वाली। संसार रूपी समुद्र में भजनों के ऐश्वर्य के स्वरूप वाली।

827. **भवाब्धिभजनैश्वरी** – संसार रूपी समुद्र में होने वाले भजनों की ईश्वरी अर्थात उन्हें पैदा करने वाली। भक्तों के मानस से उन भजनों को प्रकट कर देने वाली।

828. **भवाब्धिभजनासिद्धि** – संसार सागर के भजन (सेवन) करने वालों के लिए असिद्धि स्वरूपा अर्थात जो संसार सागर में फंसे रहते हैं उनके लिए असफलता स्वरूपा। संसार सागर में भजन करने से सिद्धि तक पहुँचाने वाली। यहाँ आसिद्धि का अर्थ सिद्धि तक किया गया। संसार सागर में भजन से सिद्ध होने वाली। संसार रूपी समुद्र में भजनों के द्वारा विधिवत सिद्धि देने वाली। जो भजन करते है, उन्हें सिद्धि देती हैं।

829. **भवाब्धिभजनारतिः** – संसार रूपी समुद्र में जिन्हें भजनों से अच्छी तरह या विधिवत प्रेम है। आरति अर्थात अच्छी तरह प्रेम है। आ का अर्थ है समन्तात् अर्थात पूर्ण रूप से।

830. **भवाब्धिभजनानित्या** – संसार सागर में भजनों वाली एवं नित्य स्वरूप वाली। भजनों वाली अर्थात जिनके भजन गाये जाते हैं। संसार सागर में जो भजन के लिए सम्पूर्ण नित्य है अर्थात नित्य ही भजनीय है। आ+नित्या अर्थात सम्पूर्ण नित्य। संसार सागर में सेवा के लिए नित्यस्वरूपिणी अर्थात नित्य उपासनीया। संसार रूपी समुद्र में भजन के द्वारा जिनके नित्य स्वरूप का चिन्तन किया जाता है।

831. **भवाब्धिभजनानिशा** – संसार सागर में भजन के लिए दिनस्वरूपिणी। अनिशा अर्थात दिन। अनिशा का अर्थ निरन्तर भी होता है अर्थात संसार सागर में निरन्तर भजन करने योग्य। संसार सागर का सेवन, उसके लिए सम्पूर्ण रात्रि स्वरूपा। आनिशा अर्थात सम्पूर्ण रात्रि स्वरूपा अर्थात संहार करने वाली। संसार सागर में जो भजन या सेवन है, उस सेवन से प्राप्त होने वाला प्रकाश स्वरूपिणी या ज्ञान स्वरूपिणी। अनिश का अर्थ है प्रकाश। संसार सागर में भजन से अत्यन्त या पूर्ण शान्ति देने वाली। आ का अर्थ है समन्तात् अर्थात पूर्ण रूपेण और निशा का अर्थ है शान्ति देने वाली क्योंकि रात्रि में सभी को शान्ति मिलती है। संसार रूपी समुद्र में निरन्तर भजनों से प्रेम रखने वाली। अनिश अर्थात निरन्तर।

832. **भवाब्धिभजनानिम्ना** – संसार सागर में भजन के लिए अनिम्न अर्थात उन्नत अर्थात श्रेष्ठ। तात्पर्य है कि श्रेष्ठ होने के कारण उन्हीं का भजन करना चाहिए। संसार सागर में भजन से अ़निम्न गति अर्थात उच्च गति या अभ्युदय देने वाली। यदि निम्रा शब्द होता तो अर्थ होगा संसार सागर में भजन के लिए गंभीर या गहरी। संसार रूपी समुद्र में भजनों में निरन्तर निमग्न रहने वाली।

833. **भवाब्धिभवभीतिहा** – संसार सागर में होने वाले भय को नष्ट करने वाली। भवभीति का अर्थ है होने वाला भय। संसार सागर में सांसारिक भय को नष्ट कर देने वाली। सांसारिक भय अर्थात विभिन्न कष्ट, मृत्यु, विपरीत परिस्थिति, बीमारी, कर्ज आदि भय।

834. **भवाब्धिभजनाकाम्या** – संसार सागर में भजन के द्वारा सम्पूर्ण रूप से काम्य या प्रापणीय। आकाम्या, आ का अर्थ है सम्पूर्ण रूप से। संसार रूपी सागर में भजनों के द्वारा सम्पूर्ण रूप से चाही जाने योग्य अर्थात चाही गई।

835. **भवाब्धिभजनाकला** – संसार सागर में भजन की सम्पूर्ण शक्ति। आ+कला, आ का अर्थ है सम्पूर्ण और कला का अर्थ है शक्ति। एकाक्षरी कोष में आ का अर्थ भाव (अस्तित्व, पदार्थ) भी होता है। प्रत्येक चीज पदार्थ या सत्ता है, अतः आ का कोई अलग अर्थ देने की आवश्यकता नहीं है अतः संसार सागर में भजन की शक्ति स्वरूपा, यह अर्थ कर सकते हैं। यहाँ सम्पूर्ण शब्द लिखने की आवश्यकता नहीं है। सम्पूर्ण वाला अर्थ भी सही है और बिना सम्पूर्ण वाला अर्थ भी सही है। विश्वामित्र अर्थात विश्वमित्र। संसार सागर में भजन का आकलन या मूल्यांकन करने वाली। किसने कब – कब भजन किया, मन से किया या बेमन से किया, भजन में भाव थे या नहीं, भजन सकाम था या निष्काम था आदि आकलन करने वाली। संसार सागर में भजन के द्वारा ज्ञात होने वाली। आकलित अर्थात परिगणित अर्थात पता चलना। संसार रूपी सागर में भजनों को सम्पूर्ण कला का स्वरूप देने वाली। कला अर्थात सुन्दर रूप।

836. **भवाब्धिभजनाकीर्ति** – संसार रूपी सागर में भजनों द्वारा जिनकी कीर्ति चारों ओर फैल रही है। आकीर्ति अर्थात चारों ओर फैलने वाली कीर्ति या सम्पूर्ण कीर्ति या श्रेष्ठ कीर्ति। आ का अर्थ है सम्पूर्ण रूप से अर्थात चारों ओर से और कीर्ति का अर्थ है यश।

837. **भवाब्धिभजनाकृता** – संसार सागर में भजन के लिए सम्पूर्ण रूप से बनाई गई अर्थात भजन के लिए

स्थापित की गई अर्थात जिनका भजन करना चाहिए। आ+कृता, आ का अर्थ है सम्पूर्ण रूप से। संसार सागर में जिनका भजन सम्पूर्ण रूप से पुण्यकारी है। पिछले नामों में स्पष्ट किया जा चुका है कि आ में सम्पूर्ण अर्थ दिए बिना भी अर्थ निकल सकता है अर्थात आ का कोई अर्थ देने की जरूरत नहीं है। आपने सुकृत का नाम सुना होगा जो पुण्य के लिए प्रयोग होता है। संसार सागर में भजन के द्वारा स्वरूप ग्रहण करने वाली अर्थात भक्तों के द्वारा भजन करते करते साकार रूप में प्रकट हो जाती हैं। संसार सागर में होने वाली उपासना क्रिया रूपी पुण्य स्वरूपिणी। संसार सागर में होने वाले भजन की आकृति स्वरूपा अर्थात उपासना जन्य पुण्यस्वरूपिणी या उपासना स्वरूपिणी। आकृत का अर्थ सुकृत अर्थात पुण्य लिया गया। संसार रूपी सागर में भजनों के द्वारा जो कृतार्थ हो रही है अर्थात कृतकृत्य हो रही हैं।

838. **भवाब्धिशुभदा नित्या** – संसार रूपी सागर में शुभ देने वाली और हमेशा रहने वाली। (कुछ किताबों में भवाब्धिशुभदा को एक नाम एवं भवाब्धिनित्या को दूसरा नाम माना है। भवाब्धिशुभदा का अर्थ है संसार रूपी सागर में शुभ या मंगल या कल्याण को देने वाली एवं भवाब्धिनित्या का अर्थ है संसार रूपी सागर में जो नित्य स्वरूप वाली हैं)। शुभ का अर्थ है सुख, सद्गुणों से युक्त होना, व्यक्ति और संसार एक दूसरे से प्यार करे अर्थात कोई कटुता न हो, अभाव दूर हों, परमलक्ष्य की ओर अग्रसर करने में सहायक हों, तत्वज्ञान प्राप्त हो, अभ्युदय और निःश्रेयस प्राप्त हो।

839. **भवाब्धिशुभदायिनी** – संसार सागर में शुभ को प्रदान करने वाली। शुभ का अर्थ है आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रगति। शुभ का अर्थ है तत्व ज्ञान। मोक्ष और अभ्युदय को देना शुभ है। जो परमलक्ष्य अर्थात मोक्ष में सहायक हो वह शुभ है। जिससे किसी अभाव की पूर्ति हो वह शुभ है। रोटी खाने से भूख रूपी अभाव की पूर्ति होती है अतः वह शुभ है। जो बड़े अच्छे लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक है वह शुभ है। परिणाम में जो अच्छा हो भले ही वर्तमान में अच्छा न लगता हो वह शुभ है। कड़वी दवाई जो रोग को ठीक कर दे, माता पिता एवं गुरूजनों की डाँट जो अच्छा इन्सान बना दे वह भी शुभ है। दुष्टों और राक्षसों का नाश भी शुभ है क्योकि इससे बड़े एवं अच्छे लक्ष्य अर्थात शान्ति की स्थापना होने में सहायता मिलती है। शुभ का अर्थ है सुख, सम्पत्ति, दुनिया तुम्हे चाहे और तुम दुनिया से प्यार करो अर्थात कोई शत्रुता न हो।

840. **भवाब्धिसकलानन्दा** – संसार सागर के सभी प्रकार के आनन्द को प्रदान करने वाली।

841. **भवाब्धिसकलाकला** – संसार सागर में कलापर्यन्त सम्पूर्ण स्वरूप वाली अर्थात जिनके स्वरूप में सभी इकाइयाँ हैं। कला का अर्थ इकाई होता है आकला का अर्थ कला पर्यन्त हुआ। आसमुद्र का अर्थ समुद्र पर्यन्त अतः आकला का अर्थ कलापर्यन्त हुआ। सकल का अर्थ है सम्पूर्ण। संसार सागर में सम्पूर्ण शक्ति स्वरूपा। सकला का अर्थ है सम्पूर्ण, कला का अर्थ है शक्ति। संसार सागर में सम्पूर्ण कलाओं की कला। संसार रूपी सागर में सभी प्रकार की शक्तियों या सिद्धियों के स्वरूप वाली। कला का एक अर्थ शक्ति भी होता है। संसार रूपी सागर में समस्त अक्षरों के स्वरूप वाली। कला का एक अर्थ मातृकाक्षर भी होता है।

842. **भवाब्धिसकलासिद्धि** – संसार सागर में कलाओं से सहित सम्पूर्ण सिद्धि वाली। आसिद्धि का अर्थ है सम्पूर्ण सिद्धि। कला अर्थात इकाई। संसार रूपी सागर में सभी श्रेष्ठ सिद्धि स्वरूपा। आसिद्धि अर्थात सम्पूर्ण सिद्धि अर्थात श्रेष्ठ सिद्धि। कुछ सिद्धियाँ मनुष्य का पतन कराती हैं अतः उन्हें श्रेष्ठ सिद्धि नहीं कह सकते। अणिमा, लघिमा आदि अष्ट सिद्धि स्वरूपा। आसिद्धि अर्थात सम्पूर्ण सिद्धि अर्थात श्रेष्ठ सिद्धि।

843. **भवाब्धिसकलानिधि** – संसार सागर में कलाओं सहित सम्पूर्ण निधि स्वरूपा। कलाऐं भी पूरी हैं और निधि भी पूरी है। कला का एक अर्थ इकाई होता है। संसार रूपी सागर में सभी प्रकार की श्रेष्ठ निधियों से विभूषित। आनिधि अर्थात सम्पूर्ण निधि अर्थात श्रेष्ठ निधि।

844. **भवाब्धिसकलासारा** – संसार सागर में सम्पूर्ण तत्वस्वरूपिणी। आ+सारा, आ का अर्थ है सम्पूर्ण। सार किसी पदार्थ का मुख्य, असली भाग या मूल अंश होता है, सबसे आवश्यक अंश होता है। किसी पदार्थ के सब तत्वों का मुख्य आशय। तत्व ऐसा पदार्थ है जिसमें दूसरे पदार्थ का मेल नहीं होता। किसी कार्य आदि का प्रारंभिक अंश या जिससे उस पदार्थ की सृष्टि हुई वह तत्व कहलाता है। तत्व अर्थात जिससे संसार बना। संसार रूपी सागर में सम्पूर्ण सार स्वरूपा।

845. **भवाब्धिसकलात्र्थदा** – भवसागर में सभी मनोरथों को देने वाली। भव सागर के सभी अर्थ अर्थात चारों पुरुषार्थों को देने वाली। भव सागर के सभी प्रयोजनों को देने वाली। अर्थ का अर्थ प्रयोजन भी होता है। सात सुख जैसे निरोगी काया, घर में माया, सुलक्षणा नारी, आज्ञाकारी पुत्र, सुन्दर घर, अपने देश में वास और बहुत सारे मित्र ये प्रयोजन भी अर्थ हैं। प्रयोजन या अर्थ का तात्पर्य है जिनके लिए लोगों की प्रवृत्ति होती है। सात सुखों में प्रवृत्ति होती है अतः ये सात चीजें मनुष्य के अर्थ या प्रयोजन हैं। इस नाम में थ के पहले त आया है। अचो रहाभ्याम् द्वे सूत्र से थ दो बार हुआ और पहले थ को त हो गया। संसार रूपी सागर में सभी प्रकार के अर्थों या पदार्थों को प्रदान करने वाली। अर्थ का तात्पर्य वस्तु या पदार्थ भी है। संसार रूपी सागर में चारों पुरुषार्थों को देने वाली।

846. **भवाब्धिभवनामूर्ति** – संसार सागर रूपी भवन में अमूर्ति रूप में अर्थात निराकार रूप में रहने वाली। संसार सागर रूपी भवन में रहने वाली सम्पूर्ण मूर्ति स्वरूपा। आमूर्ति अर्थात सम्पूर्ण मूर्ति। संसार सागर रूपी घर में अमूर्त या निराकार रूप में रहने वाली। संसार सागर रूपी भवन में विद्यमान सभी आकृतियों के स्वरूप वाली। आ+मूर्ति। आ का अर्थ है सम्पूर्ण या सभी। संसार रूपी सागर के समस्त भवनों के स्वरूप वाली।

847. **भवाब्धिभवनाकृति** – संसार रूपी घर ही है आकृति जिनकी अर्थात जो विश्वरूपा हैं। संसार रूपी सागर के समस्त भवनों की आकृति या स्वरूप वाली। संसार सागर रूपी भवन में जो भी आकार या आकृतियाँ हैं उसके स्वरूप वाली। जड़ पदार्थ या चेतन पदार्थ जो आकारवान हैं वे देवी का ही रूप हैं। प्रत्येक चीज ऊर्जा या शक्ति की बनी है और देवी का तात्पर्य है ऊर्जा या शक्ति। अतः प्रत्येक जड़ या चेतन पदार्थ शक्ति रूपा अर्थात देवी रूपा हुआ।

848. **भवाब्धिभवनाभव्या** – संसार रूपी भवन स्वरूपा जो सम्पूर्ण रूप से या अतिशय भव्य अर्थात सुन्दर है। आभव्या में आ का अर्थ है सम्पूर्ण रूप से। पिछले नामों में स्पष्ट किया जा चुका है कि आ का कोई अर्थ दिए बिना भी काम चल जाता है।

849. **भवाब्धिभवनाम्भसा** – संसार सागर रूपी भवन की जल स्वरूपा अर्थात जीवन स्वरूपा। कोई भी भवन हो वह जल के बिना अधूरा है। अम्भस् का अम्भसा हो गया। एक नियम के अनुसार हलन्त अन्त वाले शब्द आकारान्त शब्द भी हो जाते हैं।

850. **भवाब्धिमदनारूपा** – संसार सागर में जो कामदेव के समान सुन्दर स्वरूप धारण करने वाली है। कामदेव को सबसे सुन्दर माना गया है। रूप वह है जो आँखों से दिखाई दे।

851. **भवाब्धिमदनातुरा** – संसार सागर में प्रसन्नता के लिए आतुर या बेचैन। तात्पर्य है कि सदैव प्रसन्न रहती हैं, उन्हें प्रसन्नता का रोग लगा है। मदि हर्षे धातु होती है। आतुर का अर्थ उतावला, बेचैन, बीमार। आतुरालय का अर्थ होता है बीमारों का घर अर्थात अस्पताल। संसार रूपी समुद्र में जो काम के प्रभाव से बीमार अर्थात प्रभावित है। शिव से मिलने के लिए जो बेचैन या उतावली है। मूलाधार चक्र में स्थित कुण्डलिनी शक्ति सहस्रार चक्र में स्थित शिव से मिलने के लिए उतावली रहती है। मदन का अर्थ है कामदेव अर्थात कामभाव अर्थात विपरीत लिंगी से मिलने की इच्छा।

852. **भवाब्धिमदनेशानी** – संसार रूपी सागर में कामदेव की ईशानी अर्थात लोगों मे जो कामभाव होता है उस पर शासन करने वाली या नियन्त्रण करने वाली।

853. **भबाब्धिमदनेश्वरी** – संसार रूपी सागर में कामदेव की ईश्वरी अर्थात लोगों में कामभाव पैदा करने वाली या देने वाली। ईश्वरी के कई अर्थों में एक अर्थ है उत्पन्न करने वाली, देने वाली। संसार सागर में प्राणियों को कामशक्ति देने वाली।

854. **भवाब्धिभाग्यरचना** – संसार सागर में जो भाग्य है अर्थात शुभ अशुभ कर्म हैं या शुभ अशुभ कर्मों का फल है उसकी रचना स्वरूपा या रचना करने वाली। संसार रूपी सागर के भाग्य की सृष्टि स्वरूपा या करने वाली। संसार सागर में मनुष्यों के ललाट या हथेली में भाग्य रेखा बनाने वाली।

855. **भवाब्धिभाग्यदा सदा** – संसार रूपी सागर में भाग्य को प्रदान करने वाली एवं हमेशा रहने वाली। हमेशा संसार रूपी सागर में भाग्य को प्रदान करने वाली। अपने भक्तों का भाग्य बढ़ा देने वाली। भाग्य अर्थात दैववशात् कुछ मिल जाना

856. **भवाब्धिभाग्यदाकूला** – संसार रूपी सागर में असीम या अपार भाग्य देने वाली। अकूल का अर्थ है तट रहित अर्थात असीम या अपार। संसार रूपी सागर में भाग्य देने वाला जो सम्पूर्ण तट है अर्थात श्रेष्ठ तट है, तद् स्वरूपा। आकूला में आ का अर्थ सम्पूर्ण अर्थात श्रेष्ठ लिया गया। यदि भवाब्धिभाग्यदाकुला शब्द है तो अर्थ होगा – संसार रूपी सागर में भाग्य को देने के लिए व्याकुल रहने वाली।

857. **भवाब्धिभाग्यनिर्भरा** – संसार रूपी सागर में संसार के सभी प्राणी जिस पर अपने भाग्य के लिए निर्भर होते हैं।

858. **भवाब्धिभाग्यनिरता** – संसार सागर के शुभाशुभ कर्म के साथ आत्यन्तिक रूप से या अत्यधिक रूप से जुड़ी हुई। संसार में पदार्थ और क्रिया ये दो चीजें हैं। पदार्थ भी ऊर्जा का रूपान्तरण हैं और क्रिया भी ऊर्जा का रूपान्तरण है। ऊर्जा या शक्ति ही देवी हैं। इस प्रकार प्रत्येक कर्म करने वाली देवी ही हुईं क्योंकि शक्ति ही कर्म करती है, अतः देवी का कर्म से जुड़ा होना सिद्ध हुआ। संसार रूपी सागर के भाग्य में निरत या संलग्न रहने वाली। पूर्व में किये गये अच्छे या बुरे कर्म भविष्य के लिए भाग्य बनते हैं इसलिए भाग्य का अर्थ शुभ अशुभ कर्म लिया जा सकता है।

859. **भवाब्धिभाग्यभाविता** – संसार सागर में भाग्य (प्राप्ति) के लिए जिनका ध्यान किया जाता है अर्थात पूजा की जाती है या जिन्हें पुकारा जाता है।

860. **भवाब्धिभाग्यसंचारा** – संसार सागर में शुभाशुभ कर्मों में चलने वाली अर्थात आवागमन करने वाली। तात्पर्य है कि शुभाशुभ कर्म को कराने वाली देवी ही हैं। संसार रूपी सागर में भाग्यों को संचालित करने वाली या भाग्यों मे संचरण करने वाली।

861. **भवाब्धिभाग्यसञ्चिता** – संसार सागर में शुभाशुभ कर्म में सम्यक् (पूर्णरूप से या अच्छी तरह से या सही तरीके से या सचमुच में या सब प्रकार से) रूप से एकत्रित हैं अर्थात स्थित हैं। चिनोति से चिता बनता है। चिति संज्ञाने धातु से यदि चिता शब्द बनायें तो इस नाम का अर्थ होगा संसार सागर में शुभाशुभ कर्म को सम्यक् तरीके से जानने वाली या शुभाशुभ कर्म से जानी गई। चिता क्त प्रत्यय लगाने से बनता है जो कर्म या भाव में होता है। कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र से कृत्य प्रत्यय कभी कभी कर्ता अर्थ भी दे देते हैं। संसार सागर में भाग्यों का संचय करने वाली अर्थात भक्तों के भाग्य का संचय करने वाली अर्थात बढ़ाने वाली।

862. **भवाब्धिभाग्यसुपथा** – संसार रूपी सागर के भाग्य की श्रेष्ठ मार्ग स्वरूपा। संसार सागर में शुभ कर्म के लिए सुन्दर मार्गस्वरूपिणी या सुन्दर मार्ग वाली। भाग्य में शुभ और अशुभ दोनों कर्म होते हैं किन्तु सुपथा को देखते हुए यहाँ केवल शुभ कर्म लिया गया।

863. **भवाब्धिभाग्यसुप्रदा** – संसार रूपी सागर में भाग्य को सुख पूर्वक देने वाली या शोभा युक्त भाग्य देने वाली। सु का अर्थ है सुखप्रद या शोभा। संसार रूपी सागर के सुन्दर भाग्य को प्रदान करने वाली। भाग्य अर्थात पूर्व में किये हुए कर्मों का फल जिससे मनुष्य की उन्नति या अवनति निर्धारित होती है, क्या मिलना, नहीं मिलना निर्धारित होता है।

864. **भवाब्धिभाग्यरीतिज्ञा** – संसार सागर के शुभाशुभ कर्म की शैली को जानने वाली। रीति का अर्थ है काम करने का एक विशेष ढंग या तरीका या कायदा। इस प्रकार करोगे तो ऐसा भाग्य होगा, ऐसा करोगे तो शुभ होगा, ऐसा करोगे तो अशुभ होगा यह जानने वाली। संसार रूपी सागर में भाग्य की रीति (प्रकार) को जानने वाली। भाग्य का अर्थ है किस्मत, वह अवश्यंभावी दैवीय विधान जिसके अनुसार प्रत्येक पदार्थ और विशेषता मनुष्य के सब कार्य उन्नति अवनति पहले से निश्चित होती है। संसार में आकर किये जाने वाले अच्छे या बुरे कर्मों का हमारी आत्मा में संस्कार बनता है और यही संस्कार भाग्य या कर्म कहलाते हैं जो हमें सुख या दुख देते हैं।

865. **भवाब्धिभाग्यनीतिदा** – संसार सागर में भाग्य की नीति अर्थात व्यवहार की रीति अर्थात मार्ग अर्थात आचार पद्धति को प्रदान करने वाली। नीति का एक अर्थ कार्य की सिद्धि के लिए किया जाने वाला उपाय या युक्ति। यदि अच्छा भाग्य चाहिए तो ऐसा कर्म करना होगा इस प्रकार का उपाय बताने वाली।

866. **भवाब्धिभाग्यरीत्येशी** – संसार सागर में शुभाशुभ कर्म के मार्ग की नियामिका। रीत्या+ईशी, रीत्या अर्थात रीति अर्थात मार्ग। नियामक अर्थात नियम बनाने वाली या तैनात करने वाली। नियामिका अर्थात नियन्त्रण करने की शक्ति स्वरूपा। संसार रूपी सागर में भाग्य की रीति की ईश्वरी। नियम बनाकर वैध या अवैध यह निर्धारित करने वाली। पूर्व में किया हुआ कर्म ही भाग्य बनता है। अतः भाग्य का कर्म अर्थ ले लिया गया है।

867. **भवाब्धिभाग्यरीतिनी** – संसार सागर में शुभ कर्म के मार्ग में ले जाने वाली। भाग्य अर्थात शुभ कर्म, रीति अर्थात मार्ग, नयति से नी बना जिसका अर्थ ले जाना है। संसार रूपी सागर में भाग्य की रीति स्वरूपा। पूर्व में किया हुआ कर्म ही भाग्य बनता है। अतः भाग्य का कर्म अर्थ ले लिया गया है।

868. **भवाब्धिभोगनिपुणा** – संसार रूपी सागर में भोगों को देने में दक्ष। भोग का अर्थ सुख, विलास, सुख दुख का अनुभव, उपयोग में लाना, नैवेद्य या प्रसाद, उपभोग करने वाले पदार्थ, ऐन्द्रिक अनुभव हैं।

869. **भवाब्धिभोगसम्प्रदा** – संसार सागर में विविध प्रकार के भोगों को विधिवत् प्रदान करने वाली।

870. **भवाब्धिभाग्यगहना** – संसार सागर में दुर्गम्य भाग्य स्वरूपा अर्थात जिसकी उम्मीद भी नहीं की जा सकती ऐसा ऐसा भाग्य अपने उपासकों को दे देती हैं। संसार रूपी सागर में भाग्य में जो दुर्गम्यता है तद् स्वरूपा। दुर्गम्य अर्थात जिसे समझना कठिन हो या जहाँ जाना कठिन हो। संसार रूपी सागर में भाग्य की गहनता अर्थात गम्भीरता को धारण करने वाली।

871. **भवाब्धिभोग्यगुम्फिता** – संसार रूपी सागर में भोग किये जाने वाले विभिन्न पदार्थों से लिपटी हुई।

872. **भवाब्धिभोगगान्धारी** – संसार सागर के भोग रूपी भूमि को धारण करने वाली। गा अर्थात भूमि। भोग का अर्थ ऐन्द्रिक अनुभूति रूपी क्रिया या सांसारिक सुख देने वाले पदार्थ दोनों हैं। संसार रूपी सागर में आस्वादन किये जाने वाले। गान्धार स्वर् तद् स्वरूपा। संसार सागर के भोगों के लिए गान्धार नामक संगीत के स्वर वाली अर्थात श्रेष्ठ भोगों वाली।

873. **भवाब्धिभोगगुम्फिता** – संसार सागर में उपभोग क्रिया से गुँथी हुई अर्थात जुड़ी हुई। दो नाम पहले भोग्य शब्द आया है जबकि इस नाम में भोग शब्द आया है। संसार सागर में जितने भी भोग है उन भोगों से गुम्फित (गूँथी हुई/जुड़ी हुई) अर्थात एक से एक अच्छे भोग उनसे जुड़े हुए हैं अर्थात एक से एक अच्छे भोगों वाली। संसार सागर के जितने भी भोग हैं उनका गुम्फन करने वाली अर्थात ग्रथित करने वाली अर्थात भक्तों को देने वाली।

874. **भवाब्धिभोगसुरसा** – संसार सागर के भोगों के लिए सुन्दर रस स्वरूपा। भोग पदार्थ से या उपभोग क्रिया से मिलने वाला रस या आनन्द देवी ही हैं। प्रत्येक चीज ऊर्जा या शक्ति है एवं देवी ऊर्जा या शक्ति है।

875. **भवाब्धिभोगसुस्पृहा** – संसार रूपी सागर में विविध प्रकार के भोगों को प्रदान करने के लिए श्रेष्ठ इच्छा रखने वाली।

876. **भवाब्धिभोगग्रथिनी** – संसार सागर में भोगों को ग्रथित करने वाली अर्थात जोड़ने वाली अर्थात जुटाने वाली। ग्रन्थ को ग्रन्थ इसलिए कहते हैं क्योंकि उसके पृष्ठ एकदूसरे से जुड़े रहते हैं यही ग्रथना है। संसार रूपी सागर में भोगों के ग्रन्थन (रचना/सुरक्षित) करने में चतुर अर्थात भोगों को गूथने वाली रखने वाली और संरक्षित करने वाली।

877. **भवाब्धिभोगयोगिनी** – संसार रूपी सागर के भोगों के लिए योगिनी स्वरूपा अर्थात भोगों के साथ जोड़ देने वाली, प्राप्त करा देने वाली। भोग अर्थात सुख, सम्पत्ति, उपभोग के पदार्थ, ऐन्द्रिक अनुभव या उपभोग क्रिया।

878. **भवाब्धिभोगरसना** – संसार रूपी सागर के भोगों का आस्वाद लेने वाली। रसना अर्थात जीभ अर्थात आस्वादन करने वाली।

879. **भवाब्धिभोगराजिता** – संसार सागर के भोगों से सुशोभित। भोग का अर्थ है सांसारिक पदार्थ या भोज्य पदार्थ, सुख दुख का अनुभव, धन सम्पत्ति, कुल मिलाकर ऐन्द्रिक अनुभव एवं ऐन्द्रिक अनुभव कराने वाले पदार्थ भोग हैं।

880. **भवाब्धिभोगविभवा** – संसार सागर में जो भोग हैं, वे ही देवी के वैभव अर्थात धन हैं। छह प्रकार के सुख जो शास्त्रों में कहे गये हैं उसे भोग कह सकते हैं। संसार रूपी सागर के लिए जो भोग हैं, वही है वैभव जिनका। वैभव अर्थात शक्ति, सामर्थ्य एवं धन होने की अवस्था। धन की भी शक्ति होती है।

881. **भवाब्धिभोगविस्तृता** – संसार रूपी सागर में विस्तृत भोग स्वरूपा अर्थात विविध भोगों वाली। संसार रूपी सागर के विविध भोग हैं, उन भोगों की सिद्धि के लिए या देने के लिए विशाल हृदय को धारण करने वाली।

882. **भवाब्धिभोगवरदा** – संसार सागर में भोगों के लिए वरदान देने वाली अर्थात यह वरदान देने वाली कि उपासक को भोग प्राप्त हों।

883. **भवाब्धिभोगवन्दिता** – संसार सागर में भोगों की प्राप्ति के लिए वन्दित। वन्दना का अर्थ है अपने इष्ट देवी देवता के गुणों का गुणगान करना एवं उन्हें प्रणाम करना। संसार सागर में जिन लोगों को भोग प्रदान किया गया है उनके द्वारा वन्दित। भोगः अस्य अस्ति इति भोगः अर्थात भोगः का एक अर्थ भोग वाला अर्थात जिसके पास सांसारिक पदार्थ हैं या जिन्होंने ऐन्द्रिक अनुभव लिया है।

884. **भवाब्धिभोगकुशला** – संसार सागर के प्राणियों के लिए जो भोग हैं, उन भोगों को प्रदान करने के लिए दक्ष या कुशल। भोग का अर्थ है सुखानुभूति, सुख देने वाले पदार्थ।

885. **भवाब्धिभोगशोभिता** – संसार सागर के विभिन्न प्रकार के भोगों (धन – सम्पत्ति, सुखानुभूति, सुख देने

वाले पदार्थ) से सुशोभित। चूँकि विश्व देवी का ही रूप है अतः विश्व में जितने भी भोग हैं वे देवी में स्थित भोग कहलाऐ जाऐंगे।

886. **भवाब्धिभेदजननी** – संसार रूपी सागर में विविध प्रकार के भेदों (पार्थक्य) को उत्पन्न करने वाली। कोई भी दो पदार्थ ले लो, उनमें कुछ न कुछ भेद अवश्य होगा और देवी उस भेद को पैदा करने वाली है।

887. **भवाब्धिभेदपालिनी** – संसार रूपी सागर के विविध प्रकार के भेदों का पालन करने वाली अर्थात रक्षा करने वाली अर्थात बनाये रखने वाली। प्रत्येक पदार्थ दूसरे पदार्थों से कुछ न कुछ पार्थक्य अवश्य रखता है। पदार्थो की संख्या अनन्त है इसलिए भेद भी अनन्त हैं।

888. **भवाब्धिभेदरचना** – संसार रूपी सागर में भेदों की रचना स्वरूपा। विभिन्न प्रकार के भेदों की जो निर्मिति है, तत्स्वरूपा। सभी प्रकार के भेद लाभकारी या हानिकारक। (भेद अर्थात गुण, दोष, प्रकार, मनमुटाव आदि)। भवाब्धिभेदरचना – संसार सागर में पार्थक्य की रचना स्वरूपा। कोई भी दो प्राणी या पदार्थ ले लें उनमें कुछ न कुछ पार्थक्य अवश्य है। यदि भवाब्धिमेदरचना नाम है तो अर्थ है संसार सागर में श्रेष्ठ स्वरूप वाली। मेद का अर्थ श्रेष्ठ होता है। यहाँ रचना का अर्थ स्वरूप है न कि कृति। यदि भवाब्धिमेदरचना नाम है तो अर्थ होगा – संसार सागर में पृथ्वी की रचना स्वरूपा। मेदिनी अर्थात पृथ्वी। मधुकैटभवध से उत्पन्न मेद अर्थात चर्बी से पृथ्वी की रचना हुई।

889. **भवाब्धिभेदरक्षिता** – संसार सागर के एक दूसरे को अलग करने वाले भेद नामक पदार्थ की रक्षा करने वाली। रक्षित का अर्थ जिसकी रक्षा की गई होती है पर तृच् प्रत्यय लगाने से रक्षा करने वाला अर्थ भी होता है। संसार रूपी सागर के भेदों की रक्षा करने वाली। देवी माँ भेदों से रक्षित क्या होंगी, वे तो भेदों की रक्षा करेंगी। भवाब्धिभेदरक्षिता–संसार सागर में किन्हीं भी दो पदार्थों के बीच के भेद के रूप में रखी गई। यदि भवाब्धिमेदरक्षिता नाम है तो अर्थ होगा–संसार सागर में श्रेष्ठ रूप से जिसकी रक्षा हो अर्थात अत्यन्त रक्षणीया। श्रेष्ठ होने के कारण रक्षिता या गोपनीया। गुपू रक्षणे धातु होती है। मेद का अर्थ है श्रेष्ठ। रक्षित का अर्थ होता है जिसकी रक्षा की गई हो पर तृच् प्रत्यय लगाने से रक्षिता का अर्थ रक्षा करने वाला भी होता है। तब इसका अर्थ होगा संसार सागर में श्रेष्ठ लोगों की रक्षा करने वाली। भवाब्धिमेदरक्षिता – संसार सागर में मेद या पार्थिव तत्व के रूप में रखी हुई अर्थात बनाई गई। मेदः रक्षिता यया सा। रक्षित अर्थात बनाई, रखी। मेदिनी का अर्थ है पृथ्वी।

889. **भवाब्धिभेदनियता** – संसार सागर में पदार्थों के बीच भेद को नियत करने वाली अर्थात नियन्त्रण करने वाली। चाहे जड़ पदार्थ हो चाहे चेतन पदार्थ, हो किन्हीं भी दो पदार्थों में एकरूपता नहीं है उनमें कुछ न कुछ भेद या पार्थक्य अवश्य है। नियत शब्द के कई अर्थ होते हैं जिनमें से एक अर्थ है स्थापित करना, नियम द्वारा स्थिर करना, सुनिश्चित करना, आवंटित करना या निर्माण करना। सुनिश्चित करना, नियन्त्रण करना भी एक अर्थ होता है। संसार रूपी सागर के विविध प्रकार के भेदों को नियत या निश्चित करने वाली।

890. **भवाब्धिभेदनिस्पृहा** – संसार रूपी सागर के भेदों के प्रति उदासीन या तटस्थ रहने वाली। भेद बाहरी आवरण का होता है और सार रूप में या तत्व रूप में सारे पदार्थ चैतन्य के ही बने होते हैं। देवी चैतन्य स्वरूपा हैं और उन्हें हर पदार्थ का चैतन्य दिखता है जिसके कारण बाहरी आवरण उनके लिए अप्रासंगिक हैं।

891. **भवाब्धिभेदरचना** – संसार रूपी सागर में होने वाले भेदों की रचना करने वाली। किन्हीं भी दो पदार्थों के बीच में भेद या पार्थक्य होता है।

892. **भवाब्धिभेदरोषिता** – संसार सागर में होने वाले वैमनस्यता या आपसी शत्रुता को देखकर क्रोध करने वाली। संसार रूपी सागर के अनुचित भेदों पर चलने वालों के प्रति रोष (क्रोध) करने वाली। संसार सागर में नानात्व को देखने वालों से क्रोध करने वाली। भेद का अर्थ द्रोह/विद्वेष एवं हार या पराजय भी होता है। अतः

इस नाम का अर्थ हुआ संसार सागर में विद्वेष पर क्रोध करने वाली। संसार सागर में पराजय पर क्रोध करने वाली। भेद राजनीति का एक उपाय भी है जिसमें शत्रु पक्ष के लोगों को बहकाकर अपनी ओर मिला लिया जाता है या उनमें परस्पर द्वेष पैदा कर दिया जाता है। द्वेष का अर्थ है वैमनस्यता, शत्रुता, विरोध। संसार सागर में दिख रहे पार्थक्य में रंगी हुई या लिपी हुई। रोषित का अर्थ क्रोधित होता है पर रूषित का अर्थ अलंकृत या लिपा हुआ होता है। हिन्दी शब्दकोश में लिखा है कि रोषित का अर्थ है चमकता हुआ अर्थात अलंकृत। संस्कृत में कभी कभी श और ष में अभेद होता है। इस प्रकार रोषित का अर्थ अलंकृत या चमकता हुआ कर सकते हैं।

893. **भवाब्धिभेदराशिघ्नी** – संसार का भेद समूह नष्ट करने वाली अर्थात जगत में दिख रहे नानात्व को नष्ट करने वाली। सर्वम् खलु इदम् ब्रह्म का भाव जगाने वाली। संसार रूपी सागर के विविध प्रकार के पाप समूह हैं, उन पाप समूहों को नष्ट कर देने वाली।

894. **भवाब्धिभेदराशिनी** – संसार सागर के भेदों की राशि या पुंज वाली। देवी संसार सागर रूपा हैं इसलिए भेदों का समूह देवी में ही विराजमान माना जाएगा। संसार रूपी सागर के विविध प्रकार के भेद, वे समूह के रूप में जिनमें स्थित है।

895. **भवाब्धिभेदकर्मेशी** – संसार सागर के वस्तुमात्र में भेद करने वाली क्रिया की ईश्वरी अर्थात नियन्त्रक। वैशेषिक दर्शन में एक पदार्थ को दूसरे पदार्थ से भेद करने वाला पदार्थ विशेष कहलाता है। संसार सागर के भिन्न भिन्न कर्मों अर्थात क्रियाओं का निर्माण करने वाली। हर आदमी के अलग अलग कर्म हैं। एक व्यक्ति एक समय में कुछ कर रहा होता है दूसरा व्यक्ति उससे भिन्न कर्म करता है। संसार रूपी सागर के भेदों के जो विविध कर्म हैं, उनकी ईश्वरी।

896. **भवाब्धिभेदकर्मिणी** – संसार सागर में हो रहे भिन्न भिन्न कर्मों वाली अर्थात जो भिन्न भिन्न कर्म हो रहे हैं, वे देवी के ही कर्म हैं। कर्म अर्थात क्रिया जिसके लिए शक्ति जरूरी है और देवी शक्ति का रूप हैं। संसार का भेद करने वाली। संसार में नानात्व दिखाने वाली माया स्वरूपा। भेदकर्मिणी का अर्थ है भेद ही है कर्म या क्रिया। नानात्व को मिटाने वाली भी यह देवी हैं और नानात्व दिखाने वाली भी यह देवी हैं। संसार रूपी सागर के जो विविध प्रकार के भेद हैं, उन भेदों को कर्म का रूप प्रदान करने वाली। कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र से कर्मिणी का अर्थ करने वाली कर सकते हैं। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ संसार सागर में पदार्थों के बीच पार्थक्य को करने वाली।

897. **भद्रेशी** – कल्याण करने के लिए प्रेरित करने वाली। ईष्टे का अर्थ प्रेरयति है। भद्र का अर्थ कल्याण भी होता है और कल्याण करने वाला भी होता है। भगवान शिव को उनके कार्य के लिए अर्थात शिव के लिए निर्धारित कार्य के लिए प्रेरित करने वाली। भद्र का एक अर्थ है शिव।

898. **भद्रजननी** – कल्याण को पैदा करने वाली अर्थात कल्याण की माता। चन्दन, एक विशेष प्रकार का हाथी, एक विशेष प्रकार का नाग, खंजन पक्षी, सुमेरू पर्वत, स्वर साधन की एक प्रणाली, कदम्बवृक्ष, सोना या स्वर्ण आदि भद्र के पर्यायवाची हैं। इनको पैदा करने वाली। भद्र का अर्थ अनुकूल या प्रिय भी होता है इस प्रकार अनुकूल या अच्छे समय को पैदा करने वाली यह अर्थ भी निकलता है।

899. **भद्रा** – जो शिष्ट, सभ्य और सुशिक्षित है। सबके साथ उचित एवं अच्छा व्यवहार करने वाली। कल्याण स्वरूपा। (कल्याण – जो सुख को इकट्ठा करे संग्रह करें अर्थात बनाये उसे कल्य कहते हैं। सुख का कलन (इकट्टा करना/संग्रह करना/बनाना) करने वालों को कल्य कहते हैं। सुख का कलन करने के कारण कल्य निरोगिता है क्योंकि कोई भी व्यक्ति दुख का कलन (संग्रह) नहीं करेगा। इस प्रकार कल्य का अर्थ हुआ निरोगिता। कल्यम् आणयति इति कल्याणम्। आणयति अर्थात बोलना, व्यक्त करना, आवाहन करना, प्रकट करना। कल्यम्

अणति। निरोगिता को बोलने वाली अर्थात कहने वाली अर्थात आवाहन करने वाली अर्थात प्रकट करने वाली को कल्याणी कहते हैं। प्रकट करने का मतलब देना होगा। इस प्रकार निरोगता देने वाली को कल्याणी कहते हैं। मधुर बोलने वाली को कल्याणी कहते हैं। कल का अर्थ है मधुर और अणति का अर्थ है बोलना। अव्यक्त ध्वनि अर्थात अर्थ स्पष्ट न हो। प्रभात अर्थ में भी कल्य होता है। कल्य का अर्थ है सज्ज अर्थात तैयार, निरोगिता, Expert (दक्षतायुक्त), कल्याण वचन या स्वस्ति वचन। कल्य अर्थात सुख। कल्य, कल + यत् प्रत्यय)।

900. **भद्रनिवासिनी** – कल्याणमय स्थानों अर्थात पवित्र, साफ, सुन्दर स्थानों में निवास करने वाली। अच्छे लोगों में विशेष रूप से स्थित रहने वाली।

901. **भद्रेश्वरी** – विविध प्रकार के कल्याणों की ईश्वरी अर्थात उत्पत्ति करने वाली, रक्षा करने वाली। भद्र जनों अर्थात अच्छे लोगों, सज्जन लोगों की ईश्वरी अर्थात आराध्या। शिव की आराध्या। भद्र अर्थात कल्याण अर्थात जीवन के सभी पक्षों की पूर्ति करना। कल्याण की ईश्वरी अर्थात कल्याण पैदा करने वाली, कल्याण देने वाली। कल्याण का अर्थ है आनन्द, मोक्ष, आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रगति। आजकल कल्याण शब्द का व्यापक अर्थ हो गया है जिस पर कल्याणकारी राज्य की संकल्पना की गई है। रोटी, कपड़ा, मकान, बिजली, पानी, सड़क, स्वास्थ्य, शिक्षा, मनोरंजन के साधन, रोजगार आदि जरूरी चीजों की प्राप्ति कल्याण कहलाती है। कल्याण का तत्पर्य मनुष्य को वह सब कुछ देना जिससे उसका पूरा जीवन सँवर जाए। मनुष्य के पाँचों शरीरों की आवश्यताओं की पूर्ति करना कल्याण है। जो सुख को इकट्ठा करे संग्रह करें अर्थात बनाये उसे कल्य कहते हैं। सुख का कलन (इकठठा करना/संग्रह करना/बनाना) करने वालों को कल्य कहते हैं। सुख का कलन करने के कारण कल्य निरोगिता है क्योंकि कोई भी व्यक्ति दुख का कलन (संग्रह) नहीं करेगा। कल्यम् नैरुज्यम आणयति आनयति इती कल्याणी। इस प्रकार कल्य का अर्थ हुआ निरोगिता। कल्यम् आणयति इति कल्याणम्। आणयति अर्थात बोलना, व्यक्त करना, आवाहन करना, प्रकट करना। निरोगिता को बोलने वाली अर्थात कहने वाली अर्थात आवाहन करने वाली अर्थात प्रकट करने वाली को कल्याणी कहते हैं। तात्पर्य में प्रकट करने का मतलब देना होगा। इस प्रकार निरोगिता देने वाली को कल्याणी कहते हैं। कल अर्थात अव्यक्त ध्वनि अर्थात अर्थ स्पष्ट न हो। प्रभात अर्थ में भी कल्य होता है। सज्जा अर्थात तैयार, निरोगिता, Expert (दक्षतायुक्त), कल्याण वचन या स्वस्ति वचन। कल्य अर्थात सुख। कल्य = कलि+ यत् प्रत्यय।

902. **भद्रवती** – सुख, समृद्धि, कुशलता रूपी कल्याण से युक्त। कल्याण में सभी प्रकार के आनन्द, मोक्ष, जीवन के सभी पक्षों की आवश्यकताओं जैसे रोटी कपड़ा, मकान, बिजली, पानी, सड़क, स्वास्थ्य शिक्षा सभी आ जाता है। मनुष्य के पाँचों शरीरों की आवश्यकता की पूर्ति। कल्याण करना अर्थात पूरा जीवन सँवर जाना अर्थात किसी भी चीज की कोई कमी नहीं। आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रगति कल्याण है। कल्याण से युक्त अर्थात कल्याण जिसके साथ रहता है। जिसके साथ अच्छाई रहती है।

903. **भद्रस्था** – कल्याणों में स्थित या निवास करने वाली। कल्याण का अर्थ पिछले नामों में स्पष्ट किया जा चुका है।

904. **भद्रदायिनी** – सोना, चाँदी देने वाली। भद्र का एक अर्थ सोना, चाँदी भी होता है। शिव को देने वाली अर्थात शिव को प्राप्त कराने वाली। भद्र का एक अर्थ शिव भी है। कल्याण को देने वाली। निरूक्त के अनुसार भद्, रम् से भद्र बनता है। जिसका अर्थ है जिसकी प्राप्ति में आनन्द हो वह कल्याण है। रम् अर्थात आनन्दित होना। भाजन से भी भद्र बनता है अर्थात जो पात्रों को अर्थात सुपात्रों को प्राप्त हो वह भद्र है। भज् सेवायाम् + द्रु (गति) से भी भद्र शब्द बनता है अर्थात जो सेवन करने योग्य और प्राप्त करने योग्य है वह भद्र है। भद्र का अर्थ समीचीन फल देने वाला भी होता है।

905. **भद्ररूपा** – कल्याणस्वरूपा। मंगलमय मूर्ति स्वरूपा। रूपयति का अर्थ रचनाक रना, देखना, दिखाना होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ भद्र जनों की रचना करने वाली। भद्र है विभूति (अभिव्क्त वस्तु) जिनकी। सज्जनों को देखने वाली अर्थात उन पर कृपा दृष्टि डालने वाली। सज्जन पुरुष के समान है जो अर्थात उनकी तरह ही आचरण करती हैं। रूप का अर्थ ज्ञापक भी होता है। रूपयति का अर्थ रचना करना, देखना, दिखाना आदि है।

906. **भद्रमयी** – भद्र पुरुषों से युक्त अर्थात जिसकी साधना में लोग लगे रहते हैं। कल्याणमयी। कल्याण स्वरूपा या कल्याण से युक्त। सुख, समृद्धि, कुशलता (अनिष्टता से रहित) से युक्त।

907. **भद्रदा** – कल्याण या भलाई को देने वाली अर्थात प्राप्त कराने वाली। दुष्टों के कल्याण का नाश करने वाली। यहाँ दो अवखण्डने से दा शब्द आया तभी दा का अर्थ खण्डन या नाश करना निकला। कल्याण को देने वाली या करने वाली। कल्याण अर्थात आध्यात्मिक पक्ष एवं भौतिक पक्ष की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली। भगवान का नाम लेना, उनकी साधना करना, ध्यान करना, आत्मा के आनन्द की प्राप्ति का प्रयास करना, अपने स्वरूप में स्थित होने का प्रयास करना, आत्मज्ञान प्राप्ति में अग्रसर होना यह आध्यात्मिक पक्ष की पूर्ति करना है। आजकल आध्यात्मिक पक्ष के साथ भौतिक पक्ष भी जोड़ दिया गया है किन्तु पूर्व में आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रगति को ही कल्याण कहते थे।

908. **भद्रभाषिणी** – श्रेष्ठ, प्रिय, अनुकूल वचनों को बोलने वाली। कल्याण से युक्त वचनों को बोलने वाली। जिनसे दूसरे का भला हो ऐसे वचनों को बोलने वाली। विनम्रता से, शालीनता से, शिष्टता से बोलने वाली।

909. **भद्रकर्णा** – कल्याणकारिणी बातों को अर्थात अच्छी बातों को सुनने वाली। अच्छे कानों वाली अर्थात अच्छा ही सुनने वाली। शास्त्रों में लिखा है कि खराब बात होने पर या तो कान बन्द कर लें या वहाँ से उठ कर चला जाए। कर्ण का अर्थ पतवार भी होता है। अच्छी पतवारस्वरूपा अर्थात संसार सागर से पार लगाने में जो एक अच्छी पतवार अर्थात सक्षम पतवार है।

910. **भद्रवेशा** – कल्याणकारी वेश अर्थात सुन्दर और अनुकूल वेश को धारण करने वाली।

911. **भद्राम्बा** – शिष्ट और सभ्य लोगो द्वारा पुकारी जाने वाली। अम्ब्यते इति अम्बा अर्थात जो पुकारी जाती है वह अम्बा है। कल्याणों की माता या जननी। माता का अर्थ रक्षा करने वाली भी होता है। शिष्ट और सभ्य पुरुषों की रक्षा करने वाली। कल्याण गुण से युक्त लागों की रक्षा करने वाली।

912. **भद्रमन्दिरा** – जिनका मन्दिर सुन्दर, कल्याणप्रद है। इनके मन्दिर में जाने पर भक्तों का कल्याण ही होता है। कल्याणों की मन्दिर अर्थात आश्रय स्थान या निवास स्थान।

913. **भद्रक्रिया** – कल्याणकारी क्रियाओं को करने वाली। धर्म के रास्ते पर चलने वालों की रक्षा करना, अधर्मियों का नाश करना, कल्याणकारी क्रिया ही है। जीवनोपयोगी अन्न, शाक पैदा करना, गुरुं और शास्त्र के माध्यम से आत्म तत्व का ज्ञान कराना कल्याणकारी क्रिया ही है।

914. **भद्रकला** – कल्याण का अवयव या अंश रूपा। कला का अर्थ शक्ति भी होता है। कल्याण करने वाली शक्ति। कल्याणकारी कलाओं से युक्त अर्थात विविध श्रेष्ठ क्रियाओं से युक्त।

915. **भद्रिका** – भद्रम् करोति अर्थात भलाई या कल्याण करने वाली।

916. **भद्रवर्धिनी** – सज्जन लोगों को बढ़ाने वाली अर्थात उनकी उन्नति करने वाली। कल्याण को बढ़ाने वाली।

917. **भद्रक्रीड़ा** – जिनकी क्रीड़ा भी शिष्ट है। शिव के साथ क्रीड़ा या मनोरंजन करने वाली। शिवजी का एक नाम भद्र भी है। विविध प्रकार की कल्याणमयी क्रीड़ाओं को करने वाली।

918. **भद्रकला** – शिव की कला स्वरूपा। शिव की शक्ति स्वरूपा। शिव का एक नाम भद्र भी है। कल्याणकारी विविध मनोरंजनादि कार्यों को सम्पन्न करने वाली। अच्छाई की इकाई स्वरूपा। अच्छाई भी देवी हैं और अच्छाई का अंश भी देवी हैं। कला का अर्थ है अंश या इकाई। अच्छाई का कलन करने वाली अर्थात गिनती करने वाली। वे देखती हैं कि कहाँ कहाँ अच्छाइयाँ हैं जिससे उनकी कृपा वहाँ तक पहुँच सके। भद्र का अर्थ शिष्ट और सभ्य भी होता है। कला का अर्थ शक्ति है। इस प्रकार भद्रकला का अर्थ सभ्य और शिष्ट लोगों की शक्ति स्वरूपा।

919. **भद्रलीलाभिलाषिणी** – शिव की लीलाओं की इच्छा रखने वाली। भद्र का एक अर्थ शिव भी होता है। विविध प्रकार की कल्याणकारी लीलाओं की इच्छा रखने वाली। उनकी लीला देखना अच्छा लगता है।

920. **भद्राङ्कुरा** – अच्छाई या कल्याण की प्रथम सोपान। अच्छाई की प्रथमावस्था अर्थात यहीं से अच्छाई शुरू होती है। श्रेष्ठ कल्याणों की कारण।

921. **भद्ररता** – शिव से प्रसन्न। सज्जन पुरुषों से प्रसन्न। रता का एक अर्थ है प्रसन्न। कल्याणकारी कार्यों में लगी रहने वाली। कल्याण में जुड़ी हुई अर्थात कल्याणकारी कार्य करने में लगी हुई। भद्र पुरुष अर्थात शिष्ट और सभ्य पुरुषों के साथ लगी रहने वाली अर्थात उनके साथ रहने वाली।

922. **भद्राङ्गी** – कल्याणकारी अंगों अर्थात सुन्दर अंगों से सुशोभित रहने वाली। भद्र का एक अर्थ सुन्दर भी होता है। कल्याण की ओर जाने वाली। भद्रम् अंगति इति भद्रांगी। अंगति अर्थात गच्छति अर्थात जाती है। कल्याण को प्राप्त कराने वाली। भद्रम् अंगयति इति भद्रांगी।

923. **भद्रमन्त्रिणी** – कल्याणकारी मन्त्रों से युक्त या विभूषित। कल्याणकारी (जिसमें हित हो) मन्त्रणा अर्थात परामर्श या सलाह देने वाली।

924. **भद्रविद्या** – अच्छे लोगों में रहने वाली विद्या या ज्ञान स्वरूपा। भद्र का एक अर्थ शिव भी होता है इस प्रकार भद्र विद्या का शिव सम्बन्धी ज्ञान भी हुआ।

925. **भद्रविद्या** – कल्याणकारी विद्या स्वरूपा। मोक्षप्रद विद्या से युक्त। स्वयं में अच्छी विद्या। अच्छाई को देने वाली या अच्छाई की ओर ले जाने वाली विद्या।

926. **भद्रवाक्** – जिनके शब्द या कथन या बोल या ध्वनि अच्छे हों अर्थात उनमें अच्छाई हो। यहाँ वाक् शब्द संज्ञा के रूप में लिया गया। कल्याणकारिणी वाणी स्वरूपा। यहाँ वाणी संज्ञा के रूप में ली गई। जिसकी वाणी को सुनकर दूसरों को आनन्द मिले, प्रेम का भाव जागृत हो, सम्मान का भाव जागृत हो वह भद्रवाक् है। कल्याणकारी वाणी स्वरूपा

927. **भद्रवादिनी** – स्वयं में अच्छा बोलने वाली। कल्याणकारी वाक्यों को बोलने वाली। हितकारी, मंगलकारी वाक्यों को बोलने वाली। विनम्रता युक्त एवं शिष्टता से बोलने वाली।

928. **भूपमंगलदा** – राजाओं को मंगल प्रदान करने वाली। मंगल का अर्थ है सुख देना और कष्ट हरना। मंगम् सुखम् लाति एवं मम् (दुखम्/कष्टम्) गलति। अच्छे कार्य की सफलता के लिए विभिन्न बाधाओं का हटाना। अच्छे कार्य में सफलता प्रदान करना। अभीष्ट वस्तु की निष्कण्टक तरीके से प्राप्ति होना। मगि गतौ धातु से मंगल बनने पर अर्थ होगा आगे की ओर बढ़ना अर्थात उन्नति की ओर अग्रसर होना। पापों का धुलना (मस्ज् धातु से मंगल बनने पर यह अर्थ होगा)। मंगम् जन्ममरणरूपसर्पम् लाति नाशयति इति मंगला अर्थात जो जन्म मरण रूप सर्प का नाश करती है वह है मंगला अर्थात मोक्ष देने वाली। जीवन की सुरक्षा, हर्ष, सम्पत्ति, कल्याण, अच्छे कार्यों में भविष्य में सफलता सब मंगल है। जिनका नाम लेने से अच्छे कार्यों में भविष्य में सफलता मिलती है, वे मंगला हैं।

929. **भूपा** – राजास्वरूपा। राजोचित समस्त श्रेष्ठ गुणों से युक्त।

930. **भूलता** – पृथ्वी की लता स्वरूपा अर्थात लता की तरह सर्वत्र फैली हुई या व्याप्त।

931. **भूमिवाहिनी** – पृथ्वी को धारण करने वाली।

932. **भूपभोगा** – राजाओं के भोग के स्वरूप वाली या राजाओं के भोग (सुखानुभूति की क्रिया एवं सुख देने वाले सांसारिक पदार्थ) को प्रदान करने वाली। भोग+आ, भोगा। नाम के अन्त में आ लगा हो तो उसका अर्थ देना भी होता है जैसे मंगला अर्थात मंगल देने वाली एवं नष्ट करना भी होता है जैसे दुर्गा अर्थात विपत्ति नष्ट करने वाली।

933. **भूपशोभा** – राजाओं की कान्ति/दीप्ति /शोभा स्वरूपा।

934. **भूपाशा** – राजाओं की आशा स्वरूपा।

935. **भूपरूपदा** – राजा का स्वरूप प्रदान करने वाली अर्थात राजा बनाने वाली। राजाओं को सुन्दर रूप प्रदान करने वाली।

936. **भूपाकृति** – भूमि की रक्षा करने की आकृति वाली। राजाओं की सुन्दर आकृति स्वरूपा या राजाओं को सुन्दर आकृति देने वाली। राजाओं में देवता का अंश होता है और राजा को पृथ्वी के देवता कहते हैं।

937. **भूपति** – भूमि की रक्षा करने वाली अर्थात राज्य की रक्षा करने वाली। राजशक्तिस्वरूपा।

938. **भूपश्री** – राजाओं की राजलक्ष्मी स्वरूपा। राजाओं के यहाँ जो धन सम्पत्ति होती है और राज्य के जो अंग होते हैं वे राज्यलक्ष्मी हैं।

939. **भूपश्रेयसी** – राजाओं का कल्याण करने वाली। आत्मा की ओर अग्रसर करना, सभी आवश्यक चीजों को देना, राज्य को खुशहाल एवं मजबूत बनाना कल्याण करना है।

940. **भूपनीति** – राजाओं की नीति स्वरूपा। नीति अर्थात राजाओं द्वारा बनाये गये नियम, सिद्धान्त, आचार व्यवहार, सदाचार, योजनाऐं जिससे देश की रक्षा होती है और व्यवस्था बनी रहती है। राष्ट्र की उन्नति के लिए बनाये गये आचार व्यवहार, नियम, सिद्धान्त। नीति अर्थात ठीक रास्ते पर ले जाने की क्रियाऐं, नियम, जनता के लिए निश्चित किये गये आचार व्यवहार। योजनाओं से समाज का हित होता है।

941. **भूपरीति** – राजाओं की रीति रिवाज स्वरूपा। राजाओं के परम्परा से चले आ रहे नियम अर्थात निश्चित नियम स्वरूपा। राजा की तरह कार्यशैली वाली अर्थात व्यवहार करने वाली। रीति का अर्थ होता है शैली। राजा के प्रधानतः दो कार्य होते हैं। अनुग्रह अर्थात किसी पर कृपा करना या छोड़ना और निग्रह अर्थात किसी को पकड़ कर बन्द करना। जनता का पालन पोषण करना, आन्तरिक उपद्रवों से रक्षा करना, बाहरी आक्रमण से राज्य की रक्षा करना, न्याय देना, शिक्षा की व्यवस्था करना ये मुख्य कार्य राजाओं के लिए शास्त्रों में बताये गये हैं।

942. **भूपभीति** – राजा भी जिससे डरते हैं अर्थात राजा को होने वाला भय स्वरूपा। राजाओं के शत्रुओं के लिए भय स्वरूपा।

943. **भयङ्करी** – शत्रुओं के लिए भयंकर या कुमार्गगामियों के लिए भयंकर अर्थात भयभीत करने वाली।

944. **भवदानन्दलहरी** – होने वाले आनन्द अर्थात सत्तावान (नित्य सत्ता वाला जिसका नाश नही हो) आनन्द के समुद्र स्वरूपा। लहरी अर्थात जिसमें लहरें उठती हों। संसार की आनन्द लहरी। भवत् का अर्थ है वर्तमान में मौजूद।

945. **भवदानन्दसुन्दरी** – जो हो रहा है अर्थात वर्तमानकालिक आनन्द के सौन्दर्य वाली। भवत् + आनन्द।

भवदानन्द को सदानन्द भी कह सकते हैं अर्थात सदानन्द की श्रीमती। सत् चित् आनन्द को आपने सुना होगा। जो सत् है वही भवत् है अर्थात सत्तावान, नित्यसत्ता वाली, जिसका नाश नही हो वह भवत् या सत् है। संसार के आनन्द के लिए सुन्दर रूप धारण करने वाली। भवत् का अर्थ है वर्तमान में मौजूद।

946. **भवदानन्दकरणी** – शब्दकल्पद्रुम के अनुसार भाति विद्यते इति भवत् अर्थात जो वर्तमान है अर्थात जो विद्यमान है मौजूद है। विद्यमान या मौजूद सभी प्रकार के आनन्दों को करने वाली।

947. **भवदानन्दवर्धिनी** – विद्यमान या मौजूद आनन्दों को बढ़ाने वाली।

948. **भवदानन्दरमणी** – होते हुए आनन्द में रमण करने वाली अर्थात विराजमान रहने वाली। भवत् (अर्थात वर्तमान में जो हो रहा है), उस आनन्द में रमण करने वाली अर्थात उसमें लगी हुई या उसमें रहने वाली सदानन्द रूपी ब्रह्म का मन जिसमें लगा रहता है। होने वाले आनन्द या सदानन्द में जिसका मन लगा रहता है। संसार के आनन्दों में रमण करने वाली या विराजमान रहने वाली। सत्चिदानन्द का नाम आपने सुना होगा। वहाँ सत् का तात्पर्य भवत् है। भवदानन्द का अर्थ हुआ सदानन्द जिसमें से चित् शब्द हट गया। सदानन्द का तात्पर्य ब्रह्म ही है। इस प्रकार भवदानन्द रमणी का अर्थ हुआ परब्रह्म की गृहिणी। अन्यथा भी आगे का शब्द एवं पीछे का शब्द लिखने से बीच का शब्द अपने आप आ जाता है अर्थात सदानन्द में चित् भी शामिल है।

949. **भवदानन्ददायिनी** – विद्यमान या मौजूद आनन्दों को प्रदान करने वाली। निरन्तर होने वाले आनन्द को देने वाली।

950. **भवदानन्दजननी** – होते हुए अर्थात जो निरन्तर हो रहा है, अभी समाप्त नहीं हुआ, ऐसे आनन्द को पैदा करने वाली। वर्तमान के आनन्द को पैदा करने वाली। यदि कोई क्रिया आरम्भ की जा चुकी है किन्तु उसका समापन नहीं हुआ है तो उसे वर्तमान काल की क्रिया कहते हैं। निरन्तर होने वाले आनन्द को पैदा करने वाली। विद्यमान या मौजूद आनन्दों की माता।

951. **भवदानन्दरूपिणी** – निरन्तर होने वाले आनन्द के स्वरूप वाली। वर्तमान अर्थात मौजूद संसार के विविध प्रकार के आनन्दों के स्वरूप को धारण करने वाली। त्रिकग्रन्थों में निजानन्द, निरानन्द, परानन्द, ब्रह्मानन्द, महानन्द और जगदानन्द ये छह आनन्द की भूमियाँ वर्णित की गई हैं। इनमें से जगदानन्द को छोड़कर सारे आनन्द अधूरे माने जाते हैं क्योंकि उन सबमें विश्वमयता का बहिष्कार पाया गया है।

नोट – शाक्तप्रमोद ग्रन्थ में दिये गये भुवनेश्वरी सहस्रनाम स्तोत्र के अनुसार उपरोक्त नाम लिखे गये हैं। स्पष्ट है कि कुछ नाम कम पड़ रहे हैं जिससे हजार की संख्या पूरी नहीं हुई

श्री छिन्नमस्ता

सहस्रनामावलि



श्रीछिन्नमस्ता - सहस्रनामावलि

1. **प्रचण्डचण्डिका** – अत्यधिक क्रोध वाली। प्रचण्ड का अर्थ अत्यधिक क्रोध होता है पर यहाँ पर अत्यधिक अर्थ होगा। अतिशीघ्र ब्रह्मपद या सदाशिव पद प्राप्त कराने वाली। प्रचण्ड अर्थात तेजी से, चण्डी या चण्डिका का अर्थ होता है ब्रह्म। देवी की कृपा कटाक्ष से उपासक को अतिशीघ्र सदाशिव पद प्राप्त हो जाता है। अत्यधिक तीक्ष्ण परब्रह्ममहिषी। प्रचण्ड अर्थात अत्यधिक तीक्ष्ण। चण्डिका का अर्थ है ब्रह्म की गृहिणी। प्रचण्ड रूप को धारण करने वाली चण्डी देवी।

2. **चण्डा** – उग्रता, घोरता लिए हुए, उग्र स्वभाव वाली। शिव, कार्तिकेय की शक्ति। चण्ड नामक शिवगण की शक्ति। कठोर या कठिन। चण्ड का एक अर्थ शिव, कार्तिकेय, चण्ड नामक शिवगण, कठोर या कठिन है। भयंकर स्वरूप वाली। अत्यधिक क्रोध वाली। सामान्य क्रोध क्रोध होता है और अधिक क्रोध चण्ड कहलाता है। एकाक्षरीकोश में चं के अर्थ सुख, विमल (निर्दोष), रूधिर, भ्रमण दिया गया है। डप्, डिप् धातु का अर्थ संघात करना (एकत्रित करना), फेंकना दिया गया है। इस धातु में ड प्रत्यय लगाने से टि अर्थात अप्, इप, का लोप होकर ड बनेगा जिसका अर्थ है एकत्रित करने वाला, फेंकने वाला। स्त्रीलिंग में डी या डा होगा जिसका अर्थ होगा–एकत्रित करने वाली, फेंकने वाली। इस प्रकार चण्डा का अर्थ होगा दुष्टों के सुख को फेंकने वाली अर्थात समाप्त करने वाली। भक्तों के लिए सुख एकत्रित करने वाली अर्थात एकत्रित कर उन्हें देने वाली अर्थात भक्तों को सुख देने वाली। एकाक्षरीकोश में डा का अर्थ रमा भी दिया गया है। इस प्रकार चण्डा का अर्थ हुआ निर्दोष लक्ष्मी स्वरूपा।

3. **चण्डदेवी** – तीक्ष्ण प्रकृति वाली देवी अर्थात जिनका तेज असहय है। चण्ड का अर्थ ताप या गर्मी है। ताप का अर्थ तेज ले सकते हैं। अत्यधिक ताप/गर्मी वाली अर्थात सूर्य स्वरूपा देवी। दैत्यों के संहार के समय चण्ड अर्थात क्रूर रूप धारण करने वाली देवी।

4. **अविनाशिनी** – जिनका कभी विनाश नहीं होता।

5. **चामुण्डा** – चण्ड मुण्ड का विनाश करने वाली। जो सुख और बुद्धि में सर्वोपरि है। च का अर्थ सुख और बुद्धि होता है। मुण्ड का अर्थ है सिर जो शरीर के ऊपरी भाग में होता है अतः मुण्ड का अर्थ ऊपर (सर्वोपरि) भी लिया जाता है।

6. **सुचण्डा** – यद्यपि सुन्दर पर तीखी स्वभाव वाली। शोभना च चण्डा च इति, चण्डा अर्थात तीव्र या तीक्ष्ण। सुन्दर चण्ड स्वरूप वाली। चूँकि अपने क्रोध से दुष्टों को मारकर धर्म की स्थापना करती हैं। अतः इनका क्रोध भी सुन्दर है क्योंकि परिणाम में सुन्दर है। सुन्दर अधिक क्रोध वाली।

7. **चपला** – फुर्तीली। बिजली की तरह अत्यन्त गौर वर्ण वाली। बिजली की तरह शत्रुओं पर झपट्टा मारने वाली। चपला का अर्थ चंचल, फुर्तीली, बिजली होता है। चंचल प्रकृति वाली। शत्रुओं के संहार के समय चंचल बन जाती है।

8. **चारूदेहिनी** – सुन्दर शरीर वाली।

9. **ललज्जिह्वा** – जीभ को लपलपाने वाली।

10. **चलद्रक्ता** – बहते हुए खून से युक्त। इनका चित्र देखने से स्पष्ट होगा कि गले से तीन खून की धाराऐं निकल रही हैं।

11. **चारूचन्द्रनिभानना** – सुन्दर चन्द्रमा के समान मुख वाली अर्थात सुन्दर, शीतलता देने वाले और

प्रकाशमान मुख वाली। निभ का अर्थ है सदृश, तुल्य, प्रकाश, चमक। सुन्दर चन्द्रमा के प्रकाश के समान प्रकाश वाले मुख वाली।

12. **चकोराक्षी** – चकोर पक्षी की तरह एकटख आँखों वाली अर्थात शिव को निर्निमेष या एकटख होकर देखती हैं। चकोर पक्षी रात में चन्द्रमा को एकटख होकर देखता है। चकोर पक्षी की तरह लाल आँखों वाली। चकोर पक्षी की चोंच और आँख बहुत लाल होती है। चकोर की आँख जैसी आँख वाली अर्थात सुन्दर आँख वाली। चकोर के समान सुन्दर नेत्रों वाली।

13. **चण्डनादा** – प्रचण्ड गर्जना करने वाली अर्थात बहुत जोर से गर्जना करने वाली।

14. **चञ्चला** – देवी लक्ष्मी स्वरूपा। अतिशय चंचल प्रकृति वाली लक्ष्मी जी से अभेद है जिनका। लक्ष्मी जी कभी एक जगह पर स्थिर नहीं रहती हैं।

15. **मनोन्मदा** – भक्तों के मन को उन्मत्त (मतवाला) बना देने वाली। उन्मत्त का अर्थ है मतवाला अर्थात बहुत प्रसन्न और निश्चिन्त, जिसे बाहरी दुनिया से मतलब नहीं है। दुष्टों या राक्षसों के मन को उन्मत्त अर्थात पागल बना देने वाली।

16. **चेतना** – उस शक्ति के स्वरूप में जिसके कारण प्राणी मात्र में हलचल होती तथा इन्द्रियाँ काम करती हैं। जीवात्मा से निकलने वाली शक्ति जो शरीर के अंगों के माध्यम से सांसारिक कार्य करती है, चेतना है। जीवात्मा या चैतन्य को सूर्य का गोला मानें तो चेतना उस सूर्य से निकली हुई किरण की तरह है। चेतना के कारण ही व्यक्ति बाहर और भीतर के पदार्थों और घटनाओं का बोध कर पाता है और उसके अंग कार्य कर पाते हैं तथा उपस्थित हुई स्थिति पर प्रतिक्रिया करते हैं। चेतना के कारण ही क्रियाशीलता, बोध, होश (awareness) आता है। शक्ति जिसके कारण मनुष्य सजगता/होश awareness एवं क्रिया प्रतिक्रिया कर पाता है। चेतना के दो प्रमुख कार्य होते है जो है awareness तथा क्रिया प्रतिक्रिया करना। दुर्गा सप्तशती के 5वें अध्याय में यह शब्द आया है जहाँ व्याख्याकारों ने इसकी कई तरह से व्याख्या की है। एक व्याख्या के अनुसार जीवधारी प्राणियों में जिसके कारण नाड़ी में स्पन्दन होता है अर्थात् व्यक्ति जीवित रहते है वह चेतना है। अन्तःकरण में मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार होते है। चित्त को भी चेतना कह दिया जाता है। किसी के मत के अनुसार चित्त नहीं बल्कि चित्त में रहने वाला अलग प्रकार की वृत्ति (Activity) या क्रियाकलाप चेतना है। वैशेषिक दर्शन में बुद्धि और चेतना को पर्यायवाची माना है पर सांख्य दर्शन में ऐसा नही माना गया। उसके अनुसार चेतना बुद्धि का एक कार्य या एक धर्म या एक Activity। चित्त में रहने वाली शक्ति चेतना है। बुद्धि को सूर्य की तरह स्वयं प्रकाशित है। उन्हीं व्याख्याओं में एक व्याख्या के अनुसार निर्विकल्प ज्ञान को चेतना कहा गया है। निर्विकल्प ज्ञान अर्थात् अभेद ज्ञान या पुंज रूप में होने वाला ज्ञान। जब ध्यान में ध्यान की वस्तु हट जायें तो केवल एक अनुभूति या awareness होती है वह चेतना है। व्याकरण में निर्विकल्प उसे कहा गया है जिसमें आप अलग–अलग न कर सको जैसे पशु, यह निर्विकल्प की श्रेणी में आयेगा, क्योंकि उसमें गाय, बैल आदि को अलग नहीं किया गया। यदि कहा जाये गाय या घोड़ा तो वह सविकल्प श्रेणी में होगा। जैसे कहा जाये हिन्दू तो वह किसी के सापेक्ष निर्विकल्प होगा, किन्तु कहा जाये ब्राह्मण तो वह सविकल्प श्रेणी में होगा। Awareness एवं consciousness को सामान्यत पर्यायवाची माना जाता है पर Awareness चीजों को उत्पन्न नहीं कर सकती, किन्तु consciousness चीजों को उत्पन्न कर सकती है। Conscioueness = Awareness + Creativity। चैतन्य एवं चेतना में वहीं अन्तर है जो सूर्य के गोले एवं उससे निकलने वाली किरण में है। चैतन्य सूर्य के गोले की तरह है जिसमें बहुत से आत्मा के गुण विद्यमान है। चेतना सूर्य से निकली हुई किरणों

की तरह है। ज्ञान जब क्रिया करने लगता है, प्रकट होने लगता है तब चेतना कहलाता है। चेतनाहीन होने का अर्थ है ज्ञान, awareness का अनुभव न होना।

17. **चितिसंस्था** – चैतन्य (परब्रह्म) में स्थाई रूप से स्थित रहने वाली। परब्रह्म को पुल्लिंग में चित् और स्त्रीलिंग में चिति कहते हैं। चिति परब्रह्म में व्याप्त शक्ति है तथा वह ब्रह्म से उसी प्रकार अलग नहीं है जैसे दूध में पानी।

18. **चित्कला** – ब्रह्म की शक्ति स्वरूपा। कला का एक अर्थ है शक्ति। चैतन्य का अंश या अवयव स्वरूपा अर्थात चैतन्य स्वरूपा। चित का अर्थ है ब्रह्म, चैतन्य। कला का अर्थ है अवयव, सूक्ष्म शक्ति, सौन्दर्य। ब्रह्म का अंश स्वरूपा अर्थात जीवात्मा स्वरूपा। सभी प्राणियों में जीवात्मा है जो देवी का रूप है। जीवों के अन्तःकरण में प्रकाश रूप में रहने वाली ब्रह्मचेतना चित्कला है। गीता के 15 वें अध्याय और 7वें अध्याय के अनुसार जीव के अन्तःकरण में जो चैतन्य का अंश है, उस रूप में। चैतन्य की सुन्दर कला से सुशोभित। कला अर्थात अंश, विशिष्ट रचना की शक्ति। ब्रह्म की अंश स्वरूपा। चित् का अर्थ है ब्रह्म और कला का अर्थ है अंश। Energy of consciousness. जिसमें चित् (ब्रह्म, सत्–चित्– आनन्द तत्व) आंशिक रूप से विद्यमान है। कला का अर्थ है अंश जो unconditioned consciousness का अंश है। चेतन तत्व से सम्बद्ध कला। उपनिषद एवं पुराण में कला शब्द का प्रयोग दिव्य पदार्थ एवं दिव्य शक्ति के लिए किया गया है। सूर्य, अग्नि और वायु आदि पदार्थ दिव्य पदार्थ हैं। इन पदार्थ में विद्यमान प्रकाश, दाह और प्राण आदि दिव्य शक्तियाँ भी कला है। कला का अर्थ कर्तृत्वशक्ति भी है। ब्रह्म की क्रियाशक्ति। कला शक्ति के कारण ही व्यक्ति कुछ करने के लिए प्रेरित होता है।

19. **ज्ञानरूपिणी** – पदार्थ की वास्तविक जानकारी स्वरूपा। वास्तविक जानकारी अर्थात पदार्थ जैसा है वैसा ही ज्ञात करना। वेदान्त दर्शन में ज्ञान को आत्मा का स्वरूप माना गया है, इसे ही चित् या सम्वित् कहते हैं। ज्ञान के स्वरूप वाली। वस्तु और विषय की वह भावना (जानकारी/प्रतीति) जो मन और आत्मा को होती है या विषयों का इन्द्रियों से सम्पर्क होने पर होती है बशर्ते इन्द्रियाँ मन से और मन आत्मा से जुड़ा हो। किसी विषय या घटना की सम्पूर्ण जानकारी ध्यान है अर्थात अब और जानना शेष नहीं है। वह शक्ति जिसके कारण व्यक्ति को अपने भीतर और बाहर का बोध होता है ज्ञानशक्ति है।

20. **महाभयङ्करीदेवी** – अतिशय भयंकर देवी। सर्वाधिक भयंकर देवी। शब्द के आगे महा लगने पर महा का अर्थ सर्वाधिक, अतिशय, पूजनीय होता है।

21. **वरदाभयधारिणी** – वरद मुद्रा और अभय मुद्रा को धारण करने वाली।

22. **भयाढ्या** – भयभीत रहने वाली अर्थात अत्यन्त सुन्दरी। स्त्रियों को स्वभाव से भयशील माना गया है। भया का अर्थ कान्ति को प्राप्त भी कर सकते हैं। भ अर्थात कान्ति, या अर्थात यात अर्थात प्राप्त। भम् कान्तिम् याता इति भया। आढ्या अर्थात समृद्ध। कान्ति को प्राप्त होने से सम्पन्न अतः कान्ति से समृद्ध। भय के कारण अत्यधिक प्रभुत्वसम्पन्न।

23. **भवरूपा** – शिव या संसार के स्वरूप वाली। शिव या संसार है ज्ञापक जिसका अर्थात शिव या संसार से पता चलता है जिनका। रूपा का एक अर्थ ज्ञापिका भी होता है। रूप्यते इति रूपा (ज्ञापिका)। शिव, संसार की रचना करने वाली। भवम् रूपयति इति भवरूपा। रूपयति का अर्थ है स्वरूप देना अर्थात रचना करना।

24. **भवबन्धविमोचिनी** – संसार के बन्धनों से छुटकारा दिलाने वाली अर्थात जन्म और मृत्यु के चक्र से बन्धन दिलाने वाली। बन्धन अर्थात संसार से बन्धे रहना अर्थात संसार में बार बार जन्म लेना।

25. **भवानी** – शिव को जीवन दान दिलाने वाली। भवम् अनति जीवयति इति भवानी। विष पीने के बाद भी

शिव देवी की कृपा से जीवित रहे थे। संसार की रचना करने वाली। प्राण देना अर्थात जीवित करना, जीवित रखना।

26. **भुवनेशी** – चौदह भुवनों पर शासन करने वाली या उन्हें चलाने वाली, संचालित करने वाली। कौन सा नियम बनाना है, ऐसी स्थिति होने पर किस प्रकार की घटनाएं घटित होंगी, किसे कौन सा काम करना है, यह निर्धारित करने वाली। संसार को प्ररित करने वाली अर्थात संसार में रहने वाले प्राणियों को उनके काम के लिए प्रेरित करने वाली अर्थात उन्हें अपने अपने काम में लगाने वाली।

27. **भवसंसारतारिणी** – अस्तित्व में दिखने वाले अर्थात वर्तमान या मौजूद संसार से पार कराने वाली। भव का अर्थ अस्तित्व में दिखाई देने वाला अर्थात मौजूद। भव का अर्थ जन्म भी होता है। जहाँ जन्म होगा वहाँ मृत्यु भी होगी। जन्म और मरण की घटना से युक्त संसार से पार कराने वाली। तात्पर्य है मोक्ष दिलाने वाली। संसरति इति संसारः, अर्थात जो निरन्तर गतिशील हो वह संसार है।

28. **भवाब्धि** – संसार सागर रूपा।

29. **भवमोक्षा** – संसार से मोक्ष दिलाने वाली। जन्म मरण के बन्धन से छुड़ाने वाली। भवति इति भवः। भगवान शिव को उनके कष्टों से छुटकारा दिलाने वाली। भगवान शिव ने जब विष पी लिया था तो उन्हें बहुत छटपटाहट हुई जिसे देवी ने ही दूर किया था। भवमोक्ष + आ, आ का अर्थ है देना। शिव को या कामदेव को मोक्ष देने वाली। भव का अर्थ है शिव, कामदेव, संसार।

30. **भवबन्धविघातिनी** – संसार के बन्धन को मार देने वाली अर्थात समाप्त कर देने वाली। संसार का बन्धन होता है जन्म मरण का बन्धन। जन्म मरण के बन्धन का नाश करने वाली। मोक्ष का अर्थ है छुटकारा दिलाना और विघात का अर्थ है नाश करना। यह पिछले नाम से अन्तर हुआ। संसार के बन्धन को तोड़ने वाली। सांसारिक दुखों और कष्टों को भी भवबन्धन कहते हैं। इन्हें नाश करने वाली। ईश्वर के अलावा अन्य संसारी वस्तुओं और प्राणियों में, स्त्री, पुत्र आदि में मन का लगा रहना भव बन्धन है।

31. **भागीरथी** – राजा भगीरथ की तपस्या से आई गंगा जी से अभेद है जिनका। जिनका रथ सुन्दर है। भग के अन्तर्गत श्री भी आता है और जिसका एक अर्थ है सुन्दरता। शरीर के लिए भी रथ शब्द का प्रयोग होता है।

32. **भगस्था** – ऐश्वर्य में स्थित रहने वाली। स्त्रीयोनि में भी शक्ति के रूप में स्थित रहने वाली। भग का अर्थ है ऐश्वर्य, स्त्रीयोनि। भग का अर्थ है ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान, वैराग्य। ऐश्वर्य अर्थात शक्ति + सम्पन्नता। ऐश्वर्य अर्थात ईश्वर से सम्बन्धित पदार्थ एवं शक्तियाँ। ऐश्वर्य अर्थात शक्तियाँ जिसे सभी इच्छायें पूरी हों।

33. **भाग्यभोग्यप्रदायिनी** – भाग्य और भोग लायक पदार्थों को प्रदान करने वाली।

34. **कमला** – अपनी उपस्थिति से जल को सुशोभित करने वाली। कम् जलम् अलति इति कमला।

35. **कामदा** – मनोरथों या इच्छाओं को देने वाली अर्थात उन्हें पूर्ण करने वाली।

36. **दुर्गा** – पार न पाई जाने वाली कठिन विपत्तियों का नाश करने वाली। दुर्ग+ आ, दुर्ग का अर्थ है किले के समान कठिन विपत्तियाँ और आ का अर्थ नाश करना एवं देना दोनों होता है। दुखेन गम्यते इति दुर्गा अर्थात जो अति कष्ट प्रद साधनों से जैसे अष्टांग योग या तपस्या से पाई जाती हैं।

37. **दुर्गबन्धविमोचिनी** – जिन बन्धनों से छूटना मुश्किल है उनको पूर्णतया खोलने वाली या उनसे छुटकारा दिलाने वाली। दुर्ग अर्थात बहुत कठिन अर्थात जिससे पार पाना कठिन है। दुर्ग में प्रवेश करना और दुर्ग से निकलना बहुत कठिन होता है। संसार के कठिन बन्धनों से छुटकारा दिलाने वाली।

38. **दुर्दर्शनी** – शत्रुओं/दैत्यों के लिए जिनके दर्शन अत्यधिक कठिन हैं। अभक्तों और दूषित हृदय वालों को जिनका दर्शन अत्यन्त कठिन है।

39. **दुर्गरूपा** – दुर्ग स्वरूपा अर्थात जहाँ पहुँचना किसी के लिए लगभग असम्भव है अर्थात बहुत कठिन है।

40. **दुर्ज्ञेया** – कठिनाई से जानने योग्य। कड़ी तपस्या या प्रगाढ़ भक्ति से ही जिन्हें जाना जा सकता है।

41. **दुर्गनाशिनी** – दुर्ग नामक दैत्य का नाश करने वाली। विपत्ति, संकट का नाश करने वाली। दुर्ग का एक अर्थ है विपत्ति, संकट। कठिन कष्टों अर्थात जिनसे पार पाना बेहद कठिन हो ऐसी मुश्किलों या कष्टों का नाश करने वाली। दुष्ट दैत्यों के किलो को नष्ट करने वाली। दुर्ग के समान लगभग अभेद्य कष्टों का नाश करने वाली।

42. **दीनदुःखहरा** – दीनों के दुखों को हर लेने वाली। दीन का अर्थ है दरिद्र, गरीब, दुखित, उदास (मन में उत्साह नहीं)। तन मन धन सब तेरा इन भावों वाले व्यक्ति भी दीन कहलाते हैं।

43. **नित्या** – सदैव रहने वाली, नित्य स्थिति वाली। तीनों कालों में जिनका अस्तित्व रहता है तथा जिनकी कभी मृत्यु नहीं होती। नित्य (शिव, विष्णु) की शकित स्वरूपा। नित्य + आ = नित्या। एकाक्षरी कोष में आ का एक अर्थ शक्ति दिया गया है। परमाणु रूप वाली पृथ्वी स्वरूपा। वैशेषिक दर्शन में परमाणु रूप पृथ्वी को नित्य एवं अन्य रूप को अनित्य माना है। एकाक्षरीकोश में नि के कई अर्थ दिये गये हैं जैसे निश्चय, दान, मोक्ष, कौशल आदि। त्या के अर्थ हैं धरणी, नदी। जो निश्चय की नदी है अर्थात जिनमें निश्चय ही निश्चय है अर्थात संशय से रहित। दान की नदी अर्थात दान के रूप में प्रवाहित होने वाली अर्थात निरन्तर दान देने में लगी हुई। ऐसे शब्द ले सकते हैं जो नि से शुरू हुए हैं। नि का अर्थ नि से आरम्भ होने वाले शब्द कर सकते हैं। नित्य लक्ष्मी से नित्या शब्द ले सकते हैं। नित्या+आ, आ का अर्थ है देना। भक्तों को नित्य अर्थात स्थाई लक्ष्मी देने वाली। नित्य का अर्थ अधिक स्थाई वस्तु भी होता है। अधिक स्थाई वस्तुओं की शक्ति स्वरूपा। एकाक्षरी कोश में आ का एक अर्थ शक्ति दिया गया है। नित्य नाम है ब्रह्म, शिव एवं विष्णु का। शिव की शक्ति स्वरूपा। ब्रह्म की शक्ति स्वरूपा। विष्णु की शक्ति स्वरूपा।

44. **नित्यशोकविनाशिनी** – न मिटने वाले शोकों को पूर्णरूप से नष्ट करने वाली। जैसे किसी का जवान बेटा मर गया, प्रेमिका ने धोखा दे दिया, शत्रुओं ने देश को गुलाम कर दिया आदि ऐसे दुःख हैं जो लोगों को जीवन पर्यन्त कष्ट देते हैं। सदैव शोकों को नष्ट कर देने वाली। यहाँ पर नित्य का सम्बन्ध विनाशिनी से लगायेंगे।

45. **नित्यानन्दमयीदेवी** – सदैव रहने वाले आनन्द स्वरूपा देवी।

46. **नित्यकल्याणरूपिणी** – अविनाशी कल्याण के रूप को धारण करने वाली।

47. **सर्वार्थसाधनकरी** – सभी प्रकार के अर्थों अर्थात प्रयोजनों को सिद्ध कर देने वाली। चारों पुरुषार्थों को सिद्ध कर देने वाली। इन्द्रिय के विषय को भी अर्थ कहते हैं अर्थात इन्द्रिय से सम्बन्धित सभी प्रकार के भोगों को सिद्ध करने वाली अर्थात देने वाली। सर्व का एक अर्थ परम भी होता है। परम पुरषार्थ अर्थात मोक्ष की प्राप्ति कराने वाली।

48. **सर्वसिद्धिस्वरूपिणी** – अणिमा, लघिमा आदि सभी सिद्धियों के स्वरूप वाली।

49. **सर्वक्षोभणशक्ति** – सभी को संक्षुब्ध करने की शक्ति से युक्त। सभी के अन्दर इच्छाओं, कामनाओं, मनोभावों और भावनाओं (emotions) का वेग पैदा कर उनमें हलचल पैदा करने वाली। प्राणियों के अन्दर कामवासना जगाकर उन्हें क्षुब्ध करने वाली।

50. **सर्वविद्राविणी** – सभी शत्रुओं, दुष्टों को पूर्णरूपेण भगा देने वाली। द्रु धातु का अर्थ है गति करना,

दौड़ना। द्रावयति का अर्थ है दौड़ाना, भगाना, खदेड़ना। द्रवति से द्रावी बनाने पर द्राविणी का अर्थ दया करने वाली होगा। आपने हृदय द्रवित हुआ शब्द सुना होगा। सभी के प्रति विशेष या पूर्ण दया दिखाने वाली।

51. **परा** – श्रेष्ठ स्वरूप वाली। जो गुणों और शक्ति में देवताओं से श्रेष्ठ है। लोगों की पहुँच से बाहर है। परावाणी के स्वरूप में है। मूलाधार चक्र में वाणी का प्रथम अंकुरण जिस रूप में होता है वह परावाणी होती है। यह इतना सूक्ष्म होता है कि ध्यान में भी नहीं लाया जा सकता। पश्यन्ती वाणी तो प्रकाशनुमा होती है पर यह परावाणी तो उसके पूर्व की अवस्था है।

52. **सर्वरञ्जनशक्ति** – सभी को प्रसन्न करने वाली शक्ति से युक्त या शरीर स्वरूपा। मन को प्रसन्न करना मनोरंजन कहलाता है।

53. **सर्वोन्मादस्वरूपिणी** – सभी प्रकार के उन्मादों के स्वरूप वाली। उन्माद के प्रायः दो अर्थ होते हैं – अधिक प्रसन्न, पागल। इन दो रूपों के उन्माद के स्वरूप वाली। विक्षिप्तता या पागलपन के सन्दर्भ में आयुर्वेद ने उन्माद के छह भेद किये हैं – वातज, पित्तज, कफज, आधिज (मनोव्यथा से उत्पन्न), सन्निपातज और विषज। उन्माद में अधिक खुश होता है, अत्यधिक आत्म विश्वास आता है, तेजी से विचार आते हैं, बड़ी बड़ी बातें करता है। जबकि अवसाद में व्यक्ति दुखी होकर कामों में रूचि कम कर देता है। विक्षिप्तता वाले उन्माद में मन और बुद्धि का सन्तुलन बिगड़ जाता है और मस्तिष्क असन्तुलित हो जाता है और व्यक्ति बिना सोचे अण्ड बण्ड बकता है और उसे होश नहीं रहता कि वह क्या कह रहा है और क्या कर रहा है। वह लड़खड़ाता है। अधिक प्रसन्नता वाले उन्माद में व्यक्ति आनन्द में इस प्रकार डूबता है कि बाहरी दुनिया का उसे होश नहीं रहता है। वह मस्त है, निश्चिन्त है। उन्मत्त के ये ही दो अर्थ प्रसिद्ध हैं। उन्माद अर्थात अत्यधिक प्रेम या अनुराग।

54. **सर्वज्ञा** – सब कुछ जानने वाली। भूत, वर्तमान, भविष्य सब उन्हें पता है। प्रत्येक पदार्थ का मूल से सिर तक सभी कुछ जानने वाली, उसका भूत भविष्य सभी कुछ जानने वाली।

55. **सिद्धिदात्री** – सिद्धि को देने वाली। भक्तों की साधना पूर्ण होने पर उन्हें सिद्धि (अतिप्राकृतिक शक्ति) या कार्यों में सफलता देती हैं।

56. **सिद्धिविद्यास्वरूपिणी** – सफलता कैसे प्राप्त होती है, इस ज्ञान के स्वरूप वाली अर्थात सफलता की कुंजी। सिद्धि का कारण अर्थात सिद्धि देने वाली एवं विद्या स्वरूपिणी। शब्द के आगे 'का कारण' लगाने से भी शब्द का अर्थ आ जाता है।

57. **सकला** – सम्पूर्ण कलाओं से युक्त। सभी कलाओं वाली अर्थात 64 कलाओं वाली अर्थात 64 कलाओं में पारंगत। कला का अर्थ अवयव या इकाई भी होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ अंगो के अवयवों वाली अर्थात सगुण साकार रूप वाली। मूर्त रूप वाली जिसकी लम्बाई, चौड़ाई, मोटाई है। कला सहित अर्थात् अवययों सहित अर्थात् सगुण साकार रूप धारण करने वाली। देवी निर्गुण निराकर रूप में तो है ही, सगुण साकार रूप भी धारण करती है। शरीर के विभिन्न अंग अवयय या कला है। जिस तरह से मनुष्य के अवयय या अंग होते है उसी प्रकार से देवी भी सगुण साकार रूप को धारण कर लेती है। भगवती 'कला–सहिता' है। 'छान्दोग्य उपनिषद्' में जाबाल ने सत्यकाम को 16 कला–धारी पुरुष के विषय में बताया है। वहाँ कहा है कि 'ब्रह्म' (पुरुष) के चार विभाग है। प्रत्येक विभाग के चार भाग है। प्रथम विभाग के चार भाग चार चक्र हैं। जो उनकी पूजा करता है, वह यशस्वी होता है। द्वितीय विभाग के चार भाग है– पृथ्वी, आकाश, अवतार, और सागर। इनकी पूजा करने वाला दिग्–विजयी होता है। तृतीय विभाग के चार भाग है– अग्नि, सूर्य, चन्द्र और विद्युत, जिनकी पूजा करने से व्यक्ति तेजस्वी होता है। चतुर्थ विभाग के चार भाग है– श्वास, दृष्टि, श्रोतृ और मन, जिनकी पूजा करने वाला आनन्दमय रहता है। पूजन की सुविधा के लिए भक्तों द्वारा 64 कलाओं से युक्त देवी माँ की भावना

की जाती है। अथवा भगवती की 64 कलाएँ है। 16 कलाओं से युक्त चन्द्रमा को भी सकला कह सकते है। कला का अर्थ आनन्द का उल्लास भी है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ आनन्द के उल्लास से युक्त। अलग–अलग काम करने की अलग–अलग शक्तियाँ होती है और ऐसी प्रत्येक शक्ति को कला कहते हैं। कला का अर्थ आत्मा शक्ति भी है। नृत्य, संगीत, गायन, चित्रकारी आदि भी कलायें कही जाती है जो 64 है। ब्रह्म या परमात्मा के सगुण साकार रुप में जो 16 कलायें कही गई है उनमें नामों को लेकर विद्वानों मे मतभेद है।

58. **निष्कला** – निराकार रूप में जिनका कोई अवयव या अंश नहीं है। यदि निष् का अर्थ निष्कलंक लें तो अर्थ होगा निष्कलंक कलाओं वाली। सभी प्रकार की कलाओं से उत्कृष्ट कोटि की कला से युक्त अर्थात सामान्य कला नहीं रखती।

59. **सिद्धा** – सिद्ध स्वरूप वाली अर्थात सभी प्रकार की सिद्धियों उनके पास हैं। अणिमा, लघिमा, महिमा आदि अष्ट सिद्धियाँ प्रसिद्ध हैं। जो पूर्णत्व (मोक्ष) को प्राप्त है। जो अपने अस्तित्व के लिए किसी पर निर्भर नहीं है।

60. **कलातीता** – सभी कलाओं से परे। साकार जगत को भी कला कहते है। जा साकार जगत से परे हैं। इन्द्रियों से परे। कला का एक अर्थ इन्द्रिय भी होता है।

61. **कलामयी** – सभी प्रकार की कलाओं से युक्त। 64 कलाओं से युक्त। सूर्य की दस कला, अग्नि की 12 व चन्द्र की 16 कलाओं से युक्त। कला अर्थात आत्मिक शक्ति या कार्य करने की शक्ति। विशेष कार्य करने की शक्ति को कला कहते हैं। जैसे किसी के पास दस कलाएं हैं तो इसका तात्पर्य है कि वह दस प्रकार के कार्य कर सकता है। प्रत्येक कार्य के लिए नियत शक्ति कला है।

62. **कुलज्ञा** – कौलमार्ग या वाममार्ग की ज्ञाता। कुल का एक अर्थ कौलमार्ग या वाममार्ग होता है। श्रेष्ठ कुलों द्वारा जानने योग्य। तान्त्रिक गुरू और उनके शिष्यों का एक कुल होता है।

63. **कुलरूपा** – श्रेष्ठ कुल के स्वरूप वाली। कौल मार्ग है ज्ञापक जिसका। रूप का एक अर्थ है ज्ञापक। ज्ञापक अर्थात ज्ञान या बोध कराने वाला, परिचय देने वाला। कौल मार्ग से ही जिसका ज्ञान होता है। कुल का एक अर्थ है कौल मार्ग, ब्रह्माण्ड, शरीर, मूलाधार चक्र। कौल मार्ग की रचना करने वाली। ब्रह्माण्ड या विश्व की रचना करने वाली। कुलम् रूपयति इति कुलरूपा। रूपयति अर्थात रचना करना।

64. **चक्षुरानन्ददायिनी** – नेत्रों को आनन्द प्रदान करने वाली।

65. **कुलीना** – श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न होने वाली। पवित्र या शुद्ध। कुलीन का एक अर्थ है उच्चकुल में उत्पन्न अर्थात खानदानी। कुलीन का एक अर्थ पवित्र या शुद्ध भी होता है। जब हम कहते हैं कुलीन जल तो इसका अर्थ होता है शुद्ध या पवित्र जल। पृथ्वी में व्याप्त। कु अर्थात पृथ्वी। लीन अर्थात व्याप्त।

66. **सामरुपा** – सामवेद स्वरूपा या शान्त स्वरूपा। सामवेद है ज्ञापक जिसका अर्थात सामवेद है ज्ञान या परिचय कराने वाला साधन। सामवेद को स्वरूप देने वाली अर्थात उसकी रचना करने वाली।

67. **कामरूपा** – इच्छानुसार रूप धारण करने वाली। सुन्दर रूप वाली। कामदेव सुन्दरता का प्रतीक होता है।

68. **मनोहरा** – मन को हर लेने वाली अर्थात अतिसुन्दर।

69. **कमलस्था** – कमल में विराजमान रहने वाली। कमल की तरह निर्लिप्त स्थित। कमल (जल) में विराजमान।

70. **कञ्जमुखी** – कमल के समान सुन्दर मुख वाली।

71. **कुञ्जरेश्वरगामिनी** – श्रेष्ठ गज पर सवार होकर चलने वाली। यहां ईश्वर का अर्थ है श्रेष्ठ। इन्द्राणी स्वरूपा या इन्द्राणी से अभेद है जिनका। इन्द्राणी ऐरावत पर चलती हैं।

72. **कुलरूपा** – कुण्डलिनी शक्ति के रूप में, जो मूलाधारचक्र में विराजमान होती है। कुल का एक अर्थ कुण्डलिनी शक्ति भी है। तान्त्रिक गुरू और उनके शिष्यों का एक कुल होता है, उस कुल के स्वरूप वाली। कुल का अर्थ मूलाधारचक्र भी होता है। अतः इस नाम का अर्थ हुआ मूलाधारचक्र स्वरूपा। मूलाधार चक्र में विराजमान। कुल का अर्थ ब्रह्माण्ड, शरीर, शक्ति के उपासक हैं। kula is undifferentiated energy of force. Kula is Shakti manifesting herself in 36 tatwa. Kula is transcendental light of consciousness.

73. **कोटराक्षी** – धसी हुई नेत्रों वाली। धूमावती देवी के ध्यान में इस प्रकार की कल्पना की गई है। ह्रदय रूपी कोटर (गुफा) में वयाप्त। अक्षु व्याप्तौ धातु होती है।

74. **कमला** – लक्ष्मी से अभेद है जिनका। कमल वाली अर्थात कमल में विराजमान या हाथ में कमल लिए हुए। कमलम् अस्या अस्ति इति कमला (कमल वाली)।

75. **ऐश्वर्यदायिनी** – ऐश्वर्य को प्रदान करने वाली। सम्पत्ति और शक्ति को मिलाकर ऐश्वर्य कहते है अर्थात ऐश्वर्य में सभी प्रकार की संपत्तियाँ और शक्तियाँ आती हैं। ऐश्वर्य अर्थात अष्ट लक्ष्मी + अष्ट सिद्धि।

76. **कुन्ती** – पाण्डवों की माँ कुन्ती से अभेद है जिनका। कुन्त अर्थात भाला को लिये हुए। कुम् उनत्ति विदारयति भेदयति। कुम् का अर्थ है भूमि, शरीर। भूमि का विदारण करने वाली। विचार भूमि का विदारण करने वाली अर्थात बुद्धि स्वरूपा। इस प्रकार कुन्ती का अर्थ हुआ बुद्धि–शक्ति स्वरूपा। अपने प्रयास से जिन्होंने सिर को ठंडे मिजाज का रखा है। क अर्थात सिर, उन्द अर्थात गीला अर्थात शीतल, ई अर्थात शक्ति अर्थात प्रयास। पृथ्वी तत्व का विस्तार करने वाली अर्थात् जगत का विस्तार करने वाली। कु का अर्थ है पृथ्वी, तन् धातु में ड प्रत्यय लगाने से त शब्द बनता है जिसका अर्थ है विस्तार करने वाला। पृथ्वी से समस्त ब्रह्माण्ड का बोध होता है। पृथ्वी तत्व से क्रियाओं का विस्तार करने वाली अर्थात पार्थिव तत्व से या पार्थिव तत्व को विस्तारित करने वाली। जन्म, अस्ति, वृद्धि, विपरिणाम, क्षय, नाश ये छह भाव होते हैं। कु अर्थात पृथ्वी। क+उन्द्+ई अर्थात जिसने प्रयास (शक्ति) से अपने सिर को गीला अर्थात कोमल भाव वाला या दयालु बना रखा है। क अर्थात सिर, उन्द् अर्थात गीला, ई अर्थात शक्ति या प्रयास।

77. **ककुद्मिनी** – उन्नत स्थान पर विराजमान। बैल में गर्दन के पास ऊपर उठा हुआ मांस ककुद कहलाता है। अतः समानता के आधार पर ककुद् का अर्थ उन्नत ले लिया गया है। उभरे हुए अंगों वाली अर्थात सुन्दर स्वरूप वाली।

78. **कुल्ला** – इन्द्रिय समूह को पुष्ट करने वाली। कुलम् समूहम् लालयति इति कुल्ला। विद्याओं के समूह द्वारा जिनकी उपासना की जाती है। जो कुल को बढ़ाती हैं। कुल अर्थात समूह।

79. **कुरूकुल्ला** – विद्याओं के समूह द्वारा जिनकी उपासना की जाती है वह है कुल्ला और उस कुल्ला द्वारा भी जिनकी उपासना की जाती है वह देवी हैं कुरूकुल्ला। कर्ता होने के कारण विभिन्न कुलों को लाने वाली अर्थात उत्पन्न करने वाली। कुरू की व्युत्पत्ति है – करोति इति कुरू अर्थात करने वाला अर्थात कर्ता। कुल से तात्पर्य सृष्टिकुल, स्थितिकुल या संहारकुल से है। कुल से तात्पर्य गाणपत्यकुल, शैवकुल, वैष्णवकुल, शाक्तकुल, सौरकुल से है। इन विभिन्न कुलों को उत्पन्न करने वाली, उनको पोषित करने वाली। कर्ता होने के कारण कुलों का लालन करने वाली। कर्तृत्व शक्ति से युक्त होकर कुल को बढ़ाने वाली। जो कर्तृत्वशक्ति से युक्त है और कुल को बढ़ाने वाली है। क्रियते अनया इति कुरू। ज्ञान परम्परा को लाने वाली (उत्पन्न करने वाली) या ज्ञान परम्परा का विनाश करने वाली। कुल्ला का अर्थ है वंश परम्परा, चूँकि ज्ञान गुरू शिष्य परम्परा से लाया जाता है अतः कुल्ला का अर्थ

ज्ञान परम्परा भी होता है। कुरू का अर्थ है करने वाला। कुल्ला में ला का अर्थ लाना भी होता है और नाश करना भी होता है। शास्त्रोक्त विधानपूर्वक कर्म से जो वंश को ऊँचाई की ओर/मोक्ष की ओर/सात्विकता की ओर ले जाए। कुरू का अर्थ कर्म है, जो कर्म विधानपूर्वक शास्त्रोक्त रूप से किये जाए। कुरूक्षेत्र शब्द आपने सुना होगा वहाँ कुरू का अर्थ कर्म से है। क्रियाओं को करती हुई जो कुल को बढ़ाती हैं। अपने भक्तों पर स्नेह करती हुई उन्हें प्रेम, ऐश्वर्य, सामाजिक सम्मान आदि देने वाली। प्रायः प्यार पाने के लिए लोग कुरूकुल्ला देवी की उपासना करते हैं। कुरू का अर्थ है करने वाली या बढ़ाने वाली अर्थात क्रियाओं को करती हुई।

80. **करालिका** – शत्रु संहार के समय अतिशय विकराल अर्थात भयंकर रूप धारण करने वाली।

81. **कामेश्वरी** – कामेश्वर शिव की शक्ति स्वरूपा। कामदेव की आराध्या। सुन्दरता में जो सर्वश्रेष्ठ है। काम सुन्दरता का प्रतीक है और ईश्वर सर्वश्रेष्ठता का प्रतीक है। काम शक्ति को पैदा करने वाली। भोग पदार्थों को प्रेरित करने वाली अर्थात उन्हें प्रेरित कर अपने उपासकों तक पहुँचाने वाली। काम का एक अर्थ भोगपदार्थ है। ईष्टे का अर्थ प्रेरयति भी होता है।

82. **काममाता** – कामदेव की रक्षा करने वाली। शिव के तीसरे नेत्र से जलने के बाद भी देवी की कृपा से कामदेव जीवित हो उठे थे।

83. **कामतापविमोचिनी** – कामदेव या कामशक्ति के ताप (कष्ट/वेग) से छुटकारा दिलाने वाली। शिव को कष्ट से छुटकारा दिलाने वाली। विषपान करने से हुए कष्ट को देवी ने ही शान्त किया था।

84. **कामरूपा** – सुन्दर स्वरूप वाली। कामदेव सुन्दरता का प्रतीक हैं। इच्छानुसार रूप धारण करने वाली।

85. **कामसत्वा** – कामदेव की जीवनी शक्ति या प्राणशक्ति के स्वरूप वाली। सत्व का अर्थ जीवनी शक्ति/चैतन्य/प्राणशक्ति होता है। सत्व का अर्थ बल भी होता है। कामदेव में रहने वाले बल के स्वरूप वाली। काम की शक्ति के स्वरूप वाली। सत्व का अर्थ प्राणी भी होता है, काम का अर्थ है इच्छा अतः इस नाम का अर्थ हुआ इच्छानुसार किसी भी प्राणी का स्वरूप धारण करने वाली। इच्छा स्वरूपा अर्थात इच्छा का रूप धारण करने वाली। सत्व का यहाँ पर अर्थ स्वरूप है। इच्छा जिसका स्वाभाविक गुण, मूल तत्व या अन्तः प्रकृति है, खासियत है। सत्व का अर्थ है मूल तत्व, चित्त की प्रवृत्ति, स्वाभाविक गुण या लक्षण।

86. **कामकौतुककारिणी** – इच्छानुसार मनोरंजन करने वाली। कौतुक का एक अर्थ मनोरंजन भी होता है। इच्छानुसार खेल – तमाशा, विनोद, आश्चर्य दिखलाने वाली। काम के कौतूहल को करने वाली। काम का अर्थ मैथुन इच्छा भी होता है और कौतुक का अर्थ है उत्सुकता या आतुरता। कुण्डलिनी रूप में जो सहस्रारचक्र में विराजमान शिव से मिलन के लिए उत्सुकता या आतुरता करने वाली अर्थात रखने वाली। One who creates the eagerness of desire.

87. **कारूण्यहृदया** – करूणा से युक्त है हृदय जिनका।

88. **क्रींनमः** – क्रींनमः मन्त्र के स्वरूप में।

89. **क्रींमन्त्ररूपा** – क्रीं इस बीज मन्त्र के रूप में। क्रीं इस बीज मन्त्र का अर्थ है – हे ब्रह्मशक्तियुक्त महामाया काली मेरे दुःखों को दूर करो। क का अर्थ है काली, र का अर्थ है ब्रह्म, ई का अर्थ है महामाया और बिन्दु या अनुस्वार का अर्थ है दुःख हरना।

90. **कोटरा** – दुर्ग की तरह रक्षा देने वाली। कोट अर्थात दुर्ग जो रक्षा का प्रतीक है, कोटम् राति इति कोटरा अर्थात रक्षा को देने वाली। कोटर अर्थात खोखली जगह में रहने वाली। वैष्णो देवी का वास गुफा अर्थात खोखली जगह में है। मूलाधार, हृदय या पीनियलग्लैण्ड में विद्यमान रिक्त स्थान में विद्यमान।

91. **कौमोदकी** – पृथ्वी पर आनन्द को करने वाली। कु का अर्थ है पृथ्वी और कौ का अर्थ है पृथ्वी पर। कौमोदकी गदा को धारण करने वाली। लक्षणा शक्ति से अर्थ हुआ – जो गदा की तरह है अर्थात शत्रुओं को नष्ट करने वाली है। कामोदकी एक गदा का नाम है।

92. **कुमुदिनी** – कुमुदनी स्वरूपा। कुमुदनी के समान धवल वर्ण वाली।

93. **कैवल्या** – मोक्ष स्वरूपा। मोक्षावस्था भी देवी का रूप है। केवल का अर्थ है प्रकृति ने जिसे छोड़ दिया है अर्थात जो अकेला हो गया है अर्थात जो स्वयं में स्थित है। ऐसी मुक्ति कैवल्य कहलाती है। कैवल्य + आ, आ का अर्थ है देना। इस प्रकार कैवल्या का अर्थ हुआ कैवल्य नामक मोक्ष देने वाली। Aloneness. Isolstion from influence of prakriti or maya.

94. **कुलवासिनी** – देह या शरीर में निवास करने वाली जीवात्मा स्वरूपा। सुन्दर भवन में निवास करने वाली। ब्रह्माण्ड या संसार में निवास करने वाली। कुल का अर्थ देह, भवन, ब्रह्माण्ड या संसार है। मूलाधारचक्र मे कुण्डलिनी के रूप में निवास करने वाली। श्रेष्ठ कुल में निवास करने वाली।

95. **केशवी** – सुन्दर केशों वाली। सुन्दर काले लम्बे बालों वाली या सुन्दर घुँघराले बालों वाली। कृष्ण की शक्ति रूवरूपा। के का अर्थ है प्राण और शव धातु का अर्थ है गति करना। प्राणों में गति करने वाली। सूर्यकिरणाः केशा उच्यन्ते। तेषु वर्तमानो इयं जगद् वर्तयति। कश्च ईशस्य केशौ ब्रहम्रूद्रौ, सृष्टिसंहारयोर्वर्तयतीति च। कृष्णरूपेण केशिनं हतवानिति च। उतरने के लिए सफेद और काले केशों को फैलाती हैं, यहाँ सफेद के से तात्पर्य दिन के समय सूर्य की सफेद किरणें हैं एवं काले केश से तात्पर्य रात की काली किरणों से है। केश का अर्थ सूर्य की किरण भी होता है। उन किरणों में रहते हुए संसार का व्यवहार करती हैं अर्थात संसार को चला रही हैं। क अर्थात ब्रह्मा एवं ईश अर्थात रूद्र। ब्रह्मा और रूद्र में रहते हुए व्यवहार कराती हैं अर्थात सृष्टि और संहार का कार्य करवाती हैं। व्यवहार करना अर्थात कार्य करना।

96. **केशवाराध्या** – केशव अर्थात श्रीकृष्ण के द्वारा आराधनीय।

97. **केशिदैत्यनिषूदिनी** – केशि नामक दैत्य का वध कर देने वाली। भगवान विष्णु के शरीर में स्थित शक्ति ही दैत्यों का वध एवं अन्य कार्य करती है। बाल बाहर को उगते या बढ़ते हैं अर्थात केशि शब्द बाहर की ओर जाने वाले विचारों के लिए भी आता है। outgoing thoughts रूपी दैत्य को नष्ट करने वाली।

98. **क्लेशहा** – क्लेशों को नष्ट कर देने वाली। क्लेश का अर्थ है लड़ाई, झगड़ा, कष्टपूर्ण मानसिक स्थिति या मनोव्यथा।

99. **क्लेशरहिता** – क्लेशों से रहित। क्लेश का अर्थ है दुख, कष्ट या वेदना।

100. **क्लेशसंघविनाशिनी** – क्लेशों के समूहों को नष्ट कर देने वाली। योगदर्शन में बताये गये पाँच क्लेश, क्लेश संघ हैं। ये पाँच क्लेश हैं – अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश। पंच क्लेश के नाम से योगदर्शन में प्रसिद्ध है।

101. **कराली** – दैत्यों के लिए भयंकर स्वरूपा। हाथो की पंक्ति स्वरूपा अर्थात एक साथ अनेकों हाथों से कार्य करने वाली।बाहर निकले दाँतों वाली अर्थात मुख बन्द करने पर भी दाँत बाहर रहते हैं। कराली का एक अर्थ दन्तुर है। अग्नि की जिह्वा स्वरूपा, अग्नि की सात जिह्वाओं में एक जिह्वा का नाम कराली है।

102. **करालास्या** – दैत्यों के समक्ष भयंकर मुख को धारण करने वाली।

103. **करालासुरनाशिनी** – विकराल अर्थात भयंकर असुरों का नाश कर देने वाली। बुरी वृत्तियों को अर्थात दोषों को नष्ट करने वाली।

104. **करालचर्मासिधरा** – बहुत तीखी पैनी तलवार और कठोर ढाल को धारण करने वाली। मजबूत या चमकती हुई ढाल और तलवार को धारण करने वाली। कराल का अर्थ भयंकर होता है। भयंकर ढाल अर्थात बहुत मजबूत और चमकती हुई, यह अर्थ करना ही उचित होगा। भयंकर ढाल अर्थात तलवार को धारण करने वाली।

105. **करालकुलनाशिनी** – दैत्यों के भयंकर वंशों का विनाश कर देने वाली।

106. **कङ्किनी** – कंक पक्षी से युक्त या घिरी हुई। कंक पक्षी श्मशान में होते हैं। कही पर सफेद चील को कंक कहा गया है।

107. **कङ्कनिरता** – सुख देने वालों से अत्यंत प्रसन्न। रत अर्थात प्रसन्न। लोगों की मदद कर उन्हें सुख पहुँचाने वालों से अत्यंत प्रसन्न। सुख देने में लगी हुई। कम् सुखम् करोति इति कंकः। कंक पक्षी के साथ स्थित। कंक पक्षी में निरत रहने वाली अर्थात लगी हुई अर्थात पास रहने वाली।

108. **कपालवरधारिणी** – श्रेष्ठ कपाल को धारण करने वाली। वर का अर्थ है श्रेष्ठ। पूर्ण वैराग्य या परिपक्व वैराग्य को धारण करने वाली। कपाल वैराग्य का प्रतीक है। वर अर्थात श्रेष्ठ अर्थात पूर्ण या परिपक्व।

109. **खड्गहस्ता** – तलवार को हाथ में धारण करने वाली।

110. **त्रिनेत्रा** – तीन नेत्रों वाली। शरीर धारण की हुई अवस्था में माथे में भी तीसरा नेत्र होता है। आकाश रूप में सूर्य, चन्द्र और अग्नि उनके तीन नेत्र हैं। नेत्र का अर्थ ज्ञान भी होता है। इस प्रकार त्रिनेत्रा का अर्थ हुआ जिन्हें भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों कालों का ज्ञान है। जिन्हें तीनों वेदों का ज्ञान है। नेत्र का अर्थ प्रकाशक भी होता है। ज्ञान, भक्ति और वैराग्य तीनों मार्गों को प्रकाशित करने वाली अर्थात लोगों को बतलाने वाली।

111. **खण्डमुण्डासिधारिणी** – काटे गये मुण्ड (सिर) और तलवार को धारण करने वाली। जिस तलवार से काटा गया उस तलवार को धारण करने वाली।

112. **खलहा** – खलो को अर्थात दुष्टों को त्यागने वाली अर्थात दूरी बनाये रखने वाली। ओहाक् त्यागे धातु से हा बनाने पर त्यागना अर्थ आता है। हन् धातु से हा बनाने पर मारना अर्थ भी आता है। इस नाम का अर्थ दुष्टों को मारने वाली भी है किन्तु यह अर्थ अगले नाम के लिए आरक्षित कर दिया गया है जिससे अर्थों में पुनरूक्ति न हो।

113. **खलहन्त्री** – दुष्टों का वध कर देने वाली। ब्रह्मज्ञान धारण करने वाले व्यक्ति के पास जाने वाली अर्थात प्रकट शक्ति रूप से रहने वाली। ख अर्थात ब्रह्म, ल अर्थात धारण करने वाला, हन् धातु का अर्थ है हिंसा करना, गति करना।

114. **क्षरती** – टपकती हुई अर्थात सहस्रारचक्र से टपकते हुए अमृत के स्वरूप वाली। टपकती हुई अर्थात टपकते हुए रक्त के स्वरूप वाली। छिन्नमस्ता देवी के शरीर से रक्त टपक रहा है और टपकता हुआ रक्त भी शक्ति अर्थात देवी है। धीरे धीरे क्षरण होने वाले विश्व या पदार्थ के स्वरूप वाली। विनाश स्वरूपा। विश्व का नाश भी यही है। विनाशशील। हर वस्तु का हर समय नाश हो रहा है। वस्तुओं का विनाश करना जिसका स्वभाव है। दुष्ट दैत्यों का क्षरण देने वाली अर्थात विनाश कर देने वाली।

115. **सदाखगती** – सदैव आकाश मार्ग से विचरण करने वाली। (यदि सदा और खगती के बीच में अन्तराल है तो अर्थ होगा ऐसी हमेशा अस्तित्व में रहने वाली जो आकाश में गति करती है।)

116. **गङ्गा** – निरन्तर गमनशील। निरन्तरम् गच्छति इति गंगा। मोक्षार्थियों द्वारा जिनका आश्रय लिया जाता है। गम्यते मोक्षार्थिभिः या सा गंगा।

117. **गौतमपूज्या** – गौतम ऋषि द्वारा पूजनीय।

118. **गौरी** – चित्त को आकर्षित करने वाली सुन्दरता वाली। गुरते उद्युंक्ते अर्थात जो चित्त को ऊपर उठाये वह गौरी है। चित्त को ऊपर उठाने का अर्थ है देखने वाले को आकार्षित करना। गौरवर्ण पूर्णता का भी प्रतीक है। इस प्रकार गौरी का अर्थ पूर्ण शक्ति स्वरूपा हुआ। सामान्य अर्थ गौरवर्ण वाली होता है। गूङ् शब्दे धातु से गौरी शब्द की व्युत्पत्ति गूयते अव्यक्तम् गुप्तम् शब्द्यते मनसा गृहयते ध्यायते इति गौरी अर्थात अव्यक्त शब्द करने वाली अर्थात सूक्ष्म शब्द करने वाली गौरी हैं। सूक्ष्म शब्द अर्थात जो दूसरों को न सुनाई पड़े, परा, पश्यन्ती और मध्यमा ये तीन वाणियां सूक्ष्म हैं। अव्यक्त शब्द को मन से ग्रहण करने वाली।

119. **गन्धर्ववासिनी** – गन्धर्व लोक में निवास करने वाली।

120. **गन्धर्वा** – गन्धर्व स्वरूपा अर्थात गन्धर्व के रूप को भी धारण करने वाली। गन्धर्वों की शक्ति स्वरूपा। गन्धर्व पौराणिक उपदेवता हैं जो स्वर्ग में गाने का काम करते हैं। गन्धम् अर्वति प्राप्नोति इति गन्धर्वा अर्थात दूर से ही गन्ध को ग्रहण कर लेने वाली। प्रत्यक्ष ज्ञान के द्वारा मनुष्य को जो भावानुभूति होती है, उसे पुराणों में गन्धर्व कहा गया है। भाव की अनुभूति के आधार पर ही उन्हें भिन्न–भिन्न नामों से पुकारा गया है। उदाहरण के लिए विषय वासनाओं का उपभोग करने पर मनुष्य को आनन्द भाव की जो अनुभूति होती है, उस अनुभूति के आधार पर गन्धर्व को हू हू नाम दिया गया है। इस प्रकार गन्धर्वा का अर्थ हुआ भावानुभूति देने वाली अर्थात कराने वाली। गन्धर्व+आ, आ का अर्थ है देना।

121. **गगणाराध्या** – गणपति के गणों के द्वारा आराध्य। ग अर्थात गणपति, गण अर्थात समूह अर्थात सेवक समूह। विशेष गणों के द्वारा आराधना के योग्य।

122. **गणा** – गणस्वरूपा अर्थात देवताओं के गण या समूह के स्वरूप में।

123. **गन्धर्वसेविता** – गधर्वों द्वारा सेवा की जाने वाली। सेवा का अर्थ पूजा करना एवं मिले हुए आदेश का पालन करना है।

124. **गणत्कारगणादेवी** – गिनने वालों की भी गिनती करने वाली देवी। गणत्कार अर्थात गिनने वाला। गिनती के स्वरूप में गणनीय देवी। गणत् अर्थात गिनती, कार अर्थात स्वरूप। गणा अर्थात गणनीय अर्थात आज के अति महत्वपूर्ण व्यक्ति (V.I.P.), जिसे भीड़ में गिना जा सके, पृथक किया जा सके। गिनती के स्वरूप में गिनी हुई अर्थात गणनीय देवी। जैसे चीत्कार उसी प्रकार गणत्कार, अर्थात गणत् इस प्रकार की अनुकरणात्मक शब्द की ध्वनि करने वाली गणनीय देवी। गणत् शब्द का उच्चारण करने वाली श्रेष्ठ देवी। तन्त्र में गणत् का उच्चारण करने वाली।

125. **निर्गुणा** – सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण तीनों गुणों से परे। निम्न गुणों से परे अर्थात उच्च गुणों वाली। तीनों गुणों (सत, रज और तम) से रहित, त्रिगुणातीता इति निर्गुणा। जिनमें कोई दुर्गुण नहीं है। यहाँ गुण से दुर्गुण ले लिया। ज्ञानियों द्वारा जिनके गुण निर्णीत किये गये अर्थात् जाने गये या गुणों का निर्णय किया गया। ज्ञानिभिर्निर्णीतगुणः यस्या सा। निर्णीत का निर् ले लिया। सांसारिक दोषों से रहित होने के कारण निर्गुण का अर्थ मुक्त पुरुष भी होता है। मुक्त पुरुष जिनके हैं अर्थात मोक्ष को प्राप्त व्यक्तियों को आश्रय दिये हुए। निर्गुणा मुक्ता अस्या सन्ति इति निर्गुणा। गुण रूप ब्रह्मादियों में अत्यन्त गयी हुई अर्थात् विराजमान है। गुणभूतान् ब्रह्मादीनतीता इति। नियम है कि गुण का सार होने पर गुणी को भी गुण कह देते है। सार का अर्थ तत्व, सरण अर्थात गमन भी होता है। जिसकी वाणी शुद्ध या दोषरहित है तथा जो ज्ञानस्वरूप है। ण का अर्थ है ज्ञान, किन्तु अर्थ भी कर सकते है। शुद्ध शब्दार्थ स्वरूपा। निर्णिक्ता गावो वाचो अस्या इति निर्गुः, णश्च।

126. **गुणात्मिका** – प्रकृति के रूप में तीनों गुणों के स्वरूप वाली या तीनों गुणों से युक्त। तीनों गुणों में व्याप्त। आत्मा का अर्थ निरन्तर गति करने वाली, व्याप्त होता है। आप्लृ धातू से आत्मा शब्द बनाने पर व्याप्त अर्थ आता है।

127. **गुणता** – गुणों के स्वभाव वाली। गुणों के भाव को धारण करने वाली। भाव अर्थात वृत्ति या प्रवृत्ति या व्यवहार या झुकाव। सद्गुण समूह स्वरूपिणी। तल् प्रत्यय लगाने से कभी–कभी समूह अर्थ होता है जैसे जनता अर्थात लोगों का समूह। गुणों की विशेषताओं के स्वरूप वाली। तन् धातु में ड प्रत्यय लगाने से त शब्द बनेगा जिसका अर्थ है विस्तार करने वाला, निर्माण करने वाला, देने वाला। स्त्रीलिंग में ता या ती हो गया। अपने भक्तों में गुणों अर्थात सद्गुणों की वृद्धि करने वाली। तीनों गुणों का निर्माण करने वाली।

128. **गुणदात्री** – गुणों को प्रदान करने वाली। उपासकों को श्रेष्ठ गुण प्रदान करने वाली। प्रकृति को तीनों गुणों (सत, रज और तम) को प्रदान करने वाली।

129. **गुणगौरवदायिनी** – गुणों और गौरव को प्रदान करने वाली। गुणों में गौरव देने वाली अर्थात उत्कृष्ट कोटि के सद्गुणों को देने वाली या सद्गुणों की तीव्रता और परिणाम को बढ़ाने वाली।

130. **गणेशमाता** – गणेंश जी की रक्षा करने वाली। गणेश जी के लिए माता की तरह आदरणिया। गणेश जी की माता पार्वती से अभेद है जिनका।

131. **गम्भीरा** – गम्भीर स्वभाव वाली। उनके भीतर क्या चल रहा है कोई नहीं जान सकता है। जिनके गुण, शक्तियाँ अदृश्य जैसी हैं अर्थात ज्ञात नहीं है। पानी गहरा (गम्भीर) हो तो तलहटी की चीजें नहीं दिखती हैं।

132. **गगणा** – गणेश के समूह की शक्ति स्वरूपा। गणेश जी के कई रूप हैं। अष्टविनायक अर्थात गणेश जी के 8 रूप प्रसिद्ध हैं। ग नामक बीज मन्त्र के वैशिष्ट्य से विभूषित।

133. **ज्योतिकारिणी** – ज्योति कर देने वाली अर्थात प्रकाश फैला देने वाली।

134. **गौरांगी** – गौर वर्ण के अंगों वाली।

135. **गया** – गया तीर्थ की तरह मुक्ति देने वाली। ग का अर्थ ज्ञान और यात का अर्थ प्राप्त होता है। गम्यते इति गा। ज्ञान को प्राप्त या ज्ञानस्वरूपिणी यह अर्थ भी गया का हुआ। गय का अर्थ प्राण भी होता है। इस प्रकार गया का अर्थ प्राण स्वरूपिणी या प्राण की शक्ति स्वरूपा हुआ। प्राण निरन्तर गति करता है अतः उसका नाम गया है। प्राण में ही ज्ञान होता है। गया तीर्थ स्वरूपा।

136. **गम्या** – (सज्जनों और भक्तों द्वारा) प्राप्त करने योग्य, जानने योग्य।

137. **गौतमस्थानवासिनी** – गौतम ऋषि के स्थान अर्थात आश्रम में निवास करने वाली।

138. **गदाधरप्रिया** – विष्णु जी की प्रिया स्वरूपा अर्थात विष्णु जी जिन्हें अधिक स्नेह या प्रेम करते हैं। प्रिय का अर्थ जिसके प्रति अधिक स्नेह या प्रेम हो, मन को अच्छा लगने वाला। प्रीणाति इति प्रियः, इस व्युत्पत्ति से प्रिय का अर्थ है प्रसन्न करने वाला अतः इस नाम का अर्थ हुआ भगवान विष्णु को प्रसन्न करने वाली, उनकी इच्छाओं को पूरा करने वाली और उनका हित करने वाली। गदा शब्द आदिविद्या, विघ्नों को चूर्ण करने की शक्ति का प्रतीक है। वेद या ज्ञानियों से प्रसन्न रहने वाली। स्पष्ट एवं सही बोलने वालों से प्रसन्न रहने वाली। पवित्रता को धारण करने वालों से प्रसन्न रहने वाली। प्रीयते इति प्रिया से प्रिया का अर्थ प्रसन्न रहने वाली एवं प्रीणाति इति प्रिया से प्रिया का अर्थ प्रसन्न करने वाली होता है। (विष्णु सहस्रनाम में गदाधर शब्द की एक टीका इस प्रकार से लिखी गई है– गदां पवमानात्मिकां धरन् गदाधरः। गदमनुजं प्रीत्या धरति इति गदाधरः। अथच ये गदन्ति ते गदाः। वेदाश्च ज्ञानिनश्च। तेषाम् अयम् आधारः। संसाराख्यं गदम् आधरयति इति गदाधरः। पवित्र करने वाले स्वरूप को धारण करने वाला। यहाँ गदा का अर्थ है पवित्र स्वरूप। गद नामक अनुज को प्रसन्नता पूर्वक धारण करने वाला। जो स्पष्ट या सही वाणी बोलते हैं, वे हैं गद। स्पष्ट और सही वाणी बोलने वाले हैं वेद और ज्ञानी। ज्ञानियों और वेद का आधार है जो। संसार नामक रोग को निम्न करने वाला या हटाने वाला। गद का अर्थ है रोग।)

139. **ज्ञेया** – जानने योग्य।

140. **ज्ञानगम्या** – ज्ञान के द्वारा समझी जाने वाली।

141. **गुहेश्वरी** – गुह्य अर्थात कार्तिकेय की ईश्वरी अर्थात आराध्या।

142. **गायत्री** – गायन करने वालों अर्थात उनके नाम का श्रद्धा पूर्वक एवं एकाग्रतापूर्वक उच्चारण करने वालों की रक्षा करने वाली। गय का अर्थ प्राण का बल भी होता है। इस प्रकार गायत्री का अर्थ हुआ प्राणों के बल की रक्षा करने वाली।

143. **गुणवती** – श्रेष्ठ गुणों से युक्त।

144. **गुणातीता** – दुर्गुणों से परे। अपनी परावस्था में तीनों गुणों अर्थात सत रज और तम इन तीनों गुणों से परे।

145. **गुणेश्वरी** – गुणों की स्वामिनी। सत रज और तम तीनों गुणों को पैदा करने वाली।

146. **गणेशजननीदेवी** – गणेश जी को जन्म देने वाली देवी। गणेश जी में करुणा, कृपा के रूप में स्थित देवी। जननी का एक अर्थ करुणा, कृपा है। गुण भी ऊर्जा या शक्ति का रूप होने के कारण देवी रूप हैं क्योंकि देवी शक्ति या ऊर्जा रूप हैं।

147. **गणेशवरदायिनी** – गणेश जी को वरदान देने वाली।

148. **गणाध्यक्षनुतायै नित्या** – ऐसी नित्या देवी जिनको गणेश जी द्वारा प्रणाम किया गया। नित्या अर्थात जिनका सदैव अस्तित्व रहता है। गणेश जी के द्वारा जिनको प्रणाम किया गया, स्तुति की गई और जो सदैव रहने वाली हैं।

149. **गणाध्यक्षप्रपूजिता** – गणेश जी के द्वारा अच्छी तरह जिनकी पूजा की गई अर्थात पूजा की जाती है।

150. **गिरीशरमणीदेवी** – शिव जी की रमणी देवी अर्थात सुन्दरी देवी अर्थात पार्वती।

151. **गिरीशपरिवन्दिता** – शिव जी के द्वारा अच्छी तरह से वन्दित। वन्दना का अर्थ है सिर झुका कर प्रणाम करना एवं गुणों का गान करना।

152. **गतिदा** – गति अर्थात मोक्ष को प्रदान करने वाली।

153. **गतिहा** – आवागमन रूपी गति या दुर्गति का नाश करने वाली। अनेक योनियों में जन्म लेना और मृत्यु को प्राप्त होना आवागमन रूपी गति है। हा शब्द यदि हन् धातु से बनायेंगे तो उसका अर्थ मारना अर्थात नाश करना है। हा शब्द यदि ओहाक् त्यागे धातु से बना है तो उसका अर्थ त्यागना होगा। वृत्रहा का अर्थ है वृत्तासुर को मारने वाली। अनिष्ट मार्ग की गतियों को नष्ट कर देने वाली।

154. **गीता** – भक्तों के द्वारा जिनके चरित का गान किया जाता है। सभी के द्वारा गायी गई हैं।

155. **गौतमी** – गौतम ऋषि की पत्नी अहल्या से अभेद है जिनका।

156. **गुरूसेविता** – बृहस्पति या श्रेष्ठ लोगों द्वारा सेवित। यहाँ सेवा का अर्थ पूजा अर्थात चन्दन चावल, पुष्प चढ़ाना या पंचोपचार आदि क्रिया करना है। श्रेष्ठ जनों द्वारा सेवा की जाने वाली। सेवा अर्थात पूजा, आज्ञापालन।

157. **गुरूपूज्या** – बृहस्पति द्वारा पूजनीया अर्थात सम्माननीया। गुरूजनों अर्थात श्रेष्ठ जनों द्वारा पूजनीया।

158. **गुरूयुता** – गौरवपूर्ण गुणों से युक्त अर्थात ज्ञान एवं अन्य विशाल गुणों से युक्त। गुरू का अर्थ भारी भी

होता है। गुणों में भारी हो या वजन में भारी हो, दोनों गुरू का अर्थ होता है। गुरू की शक्ति से युक्त। गुरू साक्षात परब्रह्म माना गया है अतः गुरूयुता का अर्थ हुआ परब्रह्म की शक्ति से युक्त।

159. **गुरूसेवनतत्परा** – अपने गुरूजनों की सेवा करने में तत्पर। देवी का कोई गुरू नहीं हो सकता किन्तु जब मनुष्य का अवतार लेती हैं तो उस अवतार में गुरू होते हैं जैसे पार्वती जी को नारद जी ने मार्गदर्शन दिया था।

160. **गन्धद्वारा** – श्रेष्ठ गन्धों द्वारा पूजा की जाने योग्य। जिनके महल के द्वार चन्दन आदि सुगन्धित लकड़ियों के बने होते हैं।

161. **गन्धाढ्या** – सुगन्ध से समृद्ध। पूजा के दौरान देवी को इत्र आदि सुगन्धित पदार्थ चढ़ाते हैं इस प्रकार वे गन्ध से युक्त हो जाती है। श्रेष्ठ गन्धों से विभूषित।

162. **गन्धात्मन्** – गन्ध के स्वरूप में अर्थात गन्धस्वरूपिणी। गन्धात्मा शब्द होना चाहिए पर कभी कभी अविभक्ति शब्द अर्थ के अनुसार होते हैं। अपने में श्रेष्ठ गन्धों को धारण करने वाली।

163. **गन्धकारिणी** – श्रेष्ठ गन्ध को करने वाली अर्थात फैलाने वाली।

164. **गीर्वाणपतिसम्पूज्या** – देवताओं के स्वामी इन्द्र द्वारा भलीभाँति पूजनीय। देवताओं की वाणी बाण की तरह असर करती है, अतः देवताओं को गीर्वाण कहा जाता है, गी का अर्थ है वाणी।

165. **गीर्वाणपतितुष्टिदा** – इन्द्र को तुष्टि (तृप्ति) प्रदान करने वाली। तृप्ति अर्थात आकांक्षा का अभाव अर्थात यह भाव कि अब और कुछ नहीं चाहिए।

166. **गीर्वाणाधीशरमणी** – इन्द्र की रमणी अर्थात प्रियतमा या पत्नी से अभेद है जिनका।

167. **गीर्वाणाधीशवन्दिता** – इन्द्र के द्वारा वन्दित। वन्दना का अर्थ है प्रणाम+ जिसको प्रणाम किया जा रहा है उसके गुणों का बखान। गीर्वाण अर्थात देवता। देवता की वाणी बाण की तरह काम करती है।

168. **गीर्वाणाधीश संसेव्या** – इन्द्र के द्वारा सम्यक् रूप से सेवा करने योग्य।

169. **गीर्वाणाधीशहर्षदा** – इन्द्र को हर्ष देने वाली। अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति होने पर मिलने वाली खुशी हर्ष है।

170. **गानशक्ति** – गीत गाने की शक्ति स्वरूपा। गीत गाने में कीर्तन गाना या स्तुति गाना भी आ जाता है।

171. **गानगम्या** – स्तुति गान के द्वारा जानने योग्य। गीतों के द्वारा जानने योग्य। संकीर्तन के द्वारा प्राप्त किये जाने योग्य। संकीर्तन भी ईश्वर प्राप्ति का एक साधन है। चैतन्य महाप्रभु भगवान का कीर्तन करते थे।

172. **गानशक्तिप्रदायिनी** – गीत गाने की शक्ति को प्रदान करने वाली। इन्हीं की कृपा से व्यक्ति अच्छा गायक बनता है।

173. **गानविद्या** – गीत गाने की विद्या अर्थात कला स्वरूपा। गान विद्या स्वरूपा। सभी विद्याऐं शक्तिस्वरूपा है और देवी ही शक्ति हैं।

174. **गानसिद्धा** – गान से सिद्ध अर्थात प्राप्त। गान का अर्थ यहाँ पर स्तुति या कीर्तन से है। उनके रमणीय स्वरूप का, गुणों का, यश का कीर्तन करना गान है। गान विद्या में सिद्ध।

175. **गानसन्तुष्टमानसा** – गायन से सन्तुष्ट हृदय वाली। मानस का अर्थ है मन, हृदय।

176. **गानातीता** – गान मात्र तक सीमित नहीं है अर्थात उनसे भी आगे हैं। कहने का तात्पर्य है कि जितने गुण उनके बारे में बोले गए हैं उनसे भी आगे हैं अर्थात अन्य गुण भी उनके अन्दर हैं। गान से परे।

177. **गानगीता** – गीतों के द्वारा जिनके विषय में गाया गया अर्थात गाया जाता है। गुण चरितों को गाया जाता है।

178. **गानहर्षप्रपूरिता** – गीत गाने के आनन्द से परिपूर्ण।

179. **गन्धर्वपतिसंहृष्टा** – गन्धर्वों के पति के द्वारा अर्थात स्वामी या राजा के द्वारा आनन्दित रहने वाली।

180. **गन्धर्वगुणमण्डिता** – गन्धर्वों के गुणों से सुशोभित।

181. **गन्धर्वगणसंसेव्या** – गन्धर्व गणों द्वारा भलीभाँति (विधिवत) सेवा करने योग्य।

182. **गन्धर्वगणमध्यगा** – गन्धर्व समूह के मध्य में विचरण करने वाली।

183. **गन्धर्वगणकुशला** – गन्धर्व समूह की भूमि में अर्थात गन्धर्व लोक में विचरण करने वाली। कु अर्थात भूमि, शलति अर्थात गति करना। गन्धर्व समूह जिसमें कुशल होते हैं, वह वाली अर्थात गायन में कुशल है जो। गन्धर्व समूह को कुशल क्षेम देने वाली। कुशला अर्थात कुशल + आ, आ का अर्थ है देना। गन्धर्वों की योग्यता या शक्ति उनका गायन है, उसमें कुशल हैं जो। गन्धर्व समूह के मध्य में कुशलतापूर्वक स्थित रहने वाली। नाम धातु से यदि कुशलयति शब्द बनायें तब गन्धर्वसमूह अर्थात गन्धर्वों की कुशलता करने वाली अर्थ निकलेगा।

184. **गन्धर्वगणपूजिता** – गन्धर्व समूह के द्वारा पूजित। पूजा अर्थात उपलब्ध पदार्थों को चढ़ाना एवं स्तुतिगान करना।

185. **गन्धर्वगणनिरता** – गन्धर्व नामक देव योनि के समूहों से अत्यन्त लगी हुई अर्थात इनके समूह में भी विराजमान अर्थात जुड़ी हुई। गन्धर्व गान विद्या का प्रतीक है। गायन विद्या के जानकारों के साथ अत्यन्त रूप से जुड़ी हुई अर्थात साथ रहने वाली। जो लोग गाते हैं अर्थात भगवान के गुणों का गान करते हैं वहाँ रहती है या उनके साथ रहती हैं। गन्धर्व के मध्य में विचरण करने वाली या रहने वाली। रत का अर्थ प्रसन्न भी होता है। गन्धर्व समूहों से अतिशय प्रसन्न, यह भी इस नाम का अर्थ हुआ।

186. **गन्धर्वगणभूषिता** – गन्धर्व के समूह से विभूषित या सुशोभित।

187. **घर्घरा** – घर्घ इस प्रकार की अव्यक्त ध्वनि करने वाली। घर्घम् राति इति घर्घरा। अव्यक्त शब्द का मतलब होता है कि शब्द तो हो पर उस शब्द के अनुरूप वस्तु न हो। घर्घर ध्वनि करने वाली। घर्घरम् अस्या अस्ति इति घर्घरा। हिमालय के पर्वतद्वार से निकली हुई घर्घरा या घाघरा नदी स्वरूपा। घर्घर का एक अर्थ पर्वतद्वार होता है। घर्घरा अर्थात पर्वत द्वार वाली (घर्घरम् अस्या अस्ति) अर्थात पर्वत द्वार से निकलने वाली।

188. **घोररूपा** – भयंकर रूप को धारण करने वाली। शिव पर दृष्टि डालने वाली। रूपयति का अर्थ है देखना। घोरम् (शिवम्) रूपयति इति घोररूपा। शिव को दिखाने वाली अर्थात शिव का साक्षात्कार कराने वाली। रूपयति अर्थात दिखाना। रूप्यते इति रूपा से रूपा का अर्थ ज्ञापिका या बोधिका होता है। भयंकरता से जिनका बोध होता है अर्थात पता चल जाता है कि ये देवी छिन्नमस्ता ही हैं। रूप का अर्थ होता है सुन्दर जो सुख देता है। घोर का अर्थ है शिव। शिव को सुख देने वाली।

189. **घोरघुर्घुरनादिनी** – भयंकर रूप से घुर्घुर की आवाज करने वाली।

190. **घर्मबिन्दुसमुद्भूता** – घर्म के बिन्दु से उत्पन्न होने वाली अर्थात धूप के पसीने से उत्पन्न होने वाली। घर्म का अर्थ है धूप और यहाँ पर बिन्दु का अर्थ है पसीना। नर्मदा जी की उत्पत्ति की अनेक कथाओं में एक कथा के अनुसार भगवान शिव के पसीने से नर्मदा जी की उत्पत्ति हुई थी।

191. **घर्मबिन्दुस्वरूपिणी** – धूप से उत्पन्न होने वाले बिन्दु अर्थात पसीने के बूँद के स्वरूप वाली अर्थात पसीने के बूँद की तरह ऊष्ण प्रकृति वाली। घर्म का अर्थ धूप या आतप और इसी से हिन्दी शब्द घाम बना। घर्म अर्थात धूप के बिन्दु के स्वरूप वाली।

192. **घण्टारवा** – घण्टे की तरह आवाज करने वाली। युद्ध भूमि में गरजती होंगी। घण्टा की ध्वनि से प्रसन्न होने वाली। देवी के नाम में वाद्य अनाहतनाद के प्रतीक होते हैं। अनाहतनाद करने वाली अर्थात शब्दब्रह्म स्वरूपा। मनुष्यों को प्रेरित करने वाली कि वे अनाहतनाद सुनने का और उससे एक रूप होने का प्रयास करें जिससे सत्‌चिदानन्द की अवस्था प्राप्त हो।

193. **घनरवा** – बादल की तरह आवाज वाली अर्थात बादल की तरह गरजने वाली। युद्धभूमि में गरजती होंगी। घोर गर्जन करने वाली।

194. **घनरूपा** – बादलस्वरूपिणी अर्थात बरसकर उत्पादन करने वाली अर्थात कल्याण करने वाली। बादल की तरह रूप वाली अर्थात सांवले रूप वाली। बहुत विशाल रूप वाली। बादल के स्वरूप वाली।

195. **घनोदरी** – सटे हुए उदर वाली अर्थात पतले उदर वाली अर्थात सुन्दर। स्त्रियों में पेट का पतला होना सुन्दरता की निशानी है। घना अर्थात सटा हुआ अर्थात मुष्टिकग्राह्य अर्थात जो मुट्ठी में आ जाए। बादल की तरह साँवले रंग के उदर वाली। जिस प्रकार बादल पानी बरसाते हैं उसी प्रकार मनोकामना बरसाने वाली अर्थात भक्तों की मनोकामना पूरी करने वाली। बादल का अर्थ बादल जैसा भी होता है। यदि शब्द के आगे ''की तरह'' नहीं लिखा तब भी की तरह वाला अर्थ निकाल सकते हैं। विशाल उदर वाली।

196. **घोरसत्वा** – दुष्टों के लिए भयकारी प्राणी के स्वरूप वाली। घोर अर्थात भयंकर एवं सत्व अर्थात प्राणी। दुष्टों को भय देने वाले प्राण वाली या भयंकर शरीर वाली। सत्व का अर्थ प्राण, प्राणी (creature) भी होता है। अतिशय बल वाली अर्थात अतिशय शक्तिशालिनी।

197. **घनदा** – विपत्ति के बादल को नष्ट करने वाली। घनम् दारयति इति घनदा। घन अर्थात घनघोर अँधेरा अर्थात विपत्ति। वर्षा ऋतु के बादल शरद ऋतु में नष्ट हो जाते हैं। वृष्टि को देने वाली अर्थात बारिश करने वाली या जीवन को देने वाली। वर्षा या जल जीवन का भी प्रतीक है। परमानन्द को देने वाली। बादल को देने वाली अर्थात बादलों का निर्माण करने वाली।

198. **घण्टानादविनोदिनी** – घण्टा की ध्वनि से विनोद करने वाली अर्थात प्रसन्न करने वाली या आनन्दित करने वाली या मनोरंजन करने वाली।

199. **घोरचाण्डालिनी** – भयंकर चाण्डाल के स्वरूप को धारण करने वाली। उच्छिष्ठ चाण्डालिनी देवी का नाम आपने सुना होगा।

200. **घोरा** – दुष्टों और राक्षसों के लिए अतिशय भयंकर रूप वाली। घोर शब्द में भयंकरता अर्थ निहित होता हैं। दुष्टों को भय देने वाली। रात्रि स्वरूपा क्योंकि घोर का एक अर्थ रात्रि भी है। हन्ति विनाशयति इति घोरा अर्थात जो असुरों दुष्टों का नाश करे वह घोर है। हन्ति के ह का घ हो जाता है (संस्कृत के नियमानुसार)। घोर भगवान शिव का भी नाम है। इस प्रकार घोरा का अर्थ हुआ शिव की शक्ति स्वरूपा। जब हम घोर कर्म कहते हैं तो उसका अर्थ होता है बुरा या अतिबुरा कर्म। अतः घोरा का अर्थ है दुष्टों या राक्षसों के लिए बुरी या अतिबुरी हुआ। घोर अर्थात भयंकर स्वरूप वाली। (यह शब्द बगलामुखी नामावली में देखें।)

201. **घोरचण्डविनाशिनी** – भयंकर चण्ड नामक दैत्य का पूर्ण नाश करने वाली। अत्यधिक क्रोध का पूर्ण नाश करने वाली। घोर शब्द अत्यधिक के अर्थ में आता है, किसी चीज की अत्यधिक मात्रा अधिकांशतः भयंकरता में परिवर्तित हो जाती है। चण्ड का अर्थ है अधिक क्रोध।

202. **घोरदानवदमनी** – भयंकर दानवों का दमन कर देने वाली। दमन का अर्थ है दबाना, कुचलना, पीसना, रोकना। दानव शब्द बुरी वृत्तियों या दोषों के लिए प्रतीक रूप में आता है।

203. **घोरदानवनाशिनी** – भयंकर दानवों का नाश कर देने वाली। नाश अर्थात अदर्शन, नष्ट करना। नश् अदर्शने धातु होती है।

204. **घोरकर्मादिरहिता** – क्रूरतायुक्त, अत्यन्त निर्दयी, दुष्टता युक्त कर्म या इन जैसे अन्य जो कर्म हैं उनसे रहित। आदि का अर्थ है इत्यादि अर्थात इन जैसे और जितने भी कर्म हो सकते हैं। घोर कर्म का अर्थ है extremely cruel, etrocious, extreme heinous, enormous, wicked धर्मविरूद्ध या पाप करने वाले कर्मों से रहित अर्थात ऐसा कर्म नहीं करती हैं। भयंकर कर्मादि के बन्धनों से रहित। घोर कर्म से तात्पर्य अत्याचार, क्रूरता, उद्दण्डता, नृशंसता, भारी दुष्टता, महापाप, अतिपाप, अतिदुष्ट व्यवहार से है।

205. **घोरकर्मनिषेविता** – घोर मन्त्र से सम्बन्धित कर्म काण्ड के द्वारा जिनकी सेवा अर्थात पूजा की गई। यहाँ कर्म का अर्थ कर्मकाण्ड ले सकते हैं। घोर कर्म अर्थात भयंकर कर्म अर्थात श्मशान में होने वाले कर्मकाण्ड के द्वारा सेवित अर्थात पूजित। इस प्रकार के कर्म साधक के अलावा अन्य व्यक्तियों को भयंकर लगते हैं। श्रेष्ठ कर्मों द्वारा जिनका सेवन किया जाता है। घोर का अर्थ है शिव और शिव का अर्थ है श्रेष्ठ। मोनियर विलियम्स के शब्दकोश में घोर का एक अर्थ sublime दिया गया है जिसका अर्थ होता है उदात्त अर्थात अतिश्रेष्ठ।

206. **घोरतत्वमयी देवी** – भयभीत करने वाले कारणों से युक्त देवी। सिर में कटे सिर की माला है, कांची में कटे हुए हाथ हैं, हाथ में खप्पर है ये सब भयभीत करने वाले तत्व या कारण हैं। शिव तत्व से युक्त देवी। शिव तत्व स्वरूपा देवी। घोर का एक अर्थ शिव अर्थात कल्याणकारी होता है। शिव और शक्ति परस्पर मिले होते हैं इस प्रकार दोनों में एक दूसरे के तत्व होते हैं। श्रेष्ठ तत्वों से युक्त देवी। घोर मन्त्र के अर्थ के सार स्वरूपा देवी।

207. **घोरतत्वविमोचिनी** – भयावह तत्वों (प्राणियों या कारणों) से मुक्ति दिलाने वाली। भयंकर कर्म बन्धनों से मुक्ति देने वाली।

208. **घोरकर्मादिरहिता** – उस स्वरूप वाली जिसके पूजा विधान में आरम्भ में भयानक लगने वाला कर्म नहीं होता अर्थात वामगार्मी कर्म नहीं होता अर्थात सौम्य स्वरूप वाली। आजकल गृहस्थ लोग जैसी सात्विक पूजा करते हैं वैसी ही उनके लिए की जाती है। देवी इच्छा करने पर कोई भी रुप धारण कर लेती हैं अतः नामों में विरोध दिखने पर आश्चर्य नहीं होना चाहिए अन्यथा भी किसी विशेष कार्य के लिए उन्होंने एक रूप धारण किया और दूसरे कार्य के लिए दूसरा रूप धारण किया और सभी रूप एक ही शक्ति के रूपान्तरण होने के कारण एक ही हैं। जिन कर्मों से दूसरे लोगों को भय लगता है, उन कर्मों से दूर। भयंकर कर्मादि से रहित।

209. **घोरकर्मादिपूरिता** – आरम्भ में भयानक दिखने वाली पूजा कर्म से जिनकी पूजा सम्पन्न होती है या पूर्णता को प्राप्त होती है। शुरू में भयंकर दिखने वाले विधान करते रहेंगे और बाद में सौम्य विधान करते होंगे। कल्याणकारी, बहुत श्रेष्ठ कर्मों से आरम्भ से ही परिपूर्ण। (जब कोई चीज अत्यधिक मात्रा में हो जाती है जिससे वह भयावह लगने लगती है तो उसे घोर कहा जाता है। घोर शब्द सकारात्मक और नकारात्मक दोनो अर्थों में होता है जैसे घोर पाप, घोर तपस्या। इस प्रकार घोर का अर्थ है अत्यधिक मात्रा। यदि भयंकरता के साथ हिंसा या धमकी का भी भाव आ जाए तो वह उग्रता कहलाती है।)

210. **घोरकर्मादिनिरता** – भयभीत करने वाले कर्म में पहले अत्यन्त रूप से जुड़ी हुई अर्थात आरम्भ में जिस पूजा कर्म में वामगार्मी साधना होती है उससे अत्यन्त रूप से जुड़ी हुई। मांस, शव, खोपड़ी, खून आदि विधान दूसरों को भय पैदा करते हैं। आदि अर्थात आरम्भ में, सम्भव है कि आरम्भ में भयभीत करने वाली पूजा करते हो और बाद में सौम्य पूजा करते हों। वामगार्मी पूजा भी देवी तक पहुँचती हैं अतः देवी इस भयंकर कर्म से जुड़ी हैं। दूसरों को भयावह लगने वाले पूजारूपी घोर कर्म में पहले से ही अत्यन्त रूप से लगी हुई। घोर कर्म अर्थात

जिनसे अन्य लोग डर जाते हैं उससे अत्यन्त प्रीति करने वाली। नि अर्थात नितराम् अर्थात अत्यन्त, रम् से रत बनाने पर अच्छा लगना अर्थ हो जाता है। श्मशान में वामगार्मी साधनाओं में जो माँस भक्षण, बलि, शव के साथ क्रिया करना आदि क्रियाऐं ऐसी क्रियाऐं हैं जिससे साधक के अलावा अन्य लोगों को काफी डर लगता है। कल्याणकारी इस प्रकार के कर्मों में शुरू से ही अत्यन्त रूप से लगी हुई। घोर अर्थात शिव अर्थात कल्याणकारी। अतिशय श्रेष्ठ कर्मों में निरत रहने वाली अर्थात लगी रहने वाली। घोर का एक अर्थ शिव, पूर्ण, अत्यन्त प्रभावशाली अर्थात परिणाम पैदा करने वाला होता है जिससे कल्याणकारी, श्रेष्ठ अर्थ निकलता है। घोर का एक अर्थ मोनियर विलियम्स के शब्दकोश में sublime दिया गया है जिसका अर्थ होता है अतिश्रेष्ठ। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ श्रेष्ठ कर्मों या अन्य विधानों से अति प्रसन्न।

211. **घोरकर्मप्रवर्धिनी** – वाममार्गी कर्म को प्रकृष्ट रूप से बढ़ाने वाली अर्थात उसको प्रोत्साहित करने वाली या इसका गुरूओं एवं शास्त्रों के माध्यम से प्रचार करने वाली। कल्याणकारी अर्थात श्रेष्ठ कर्मों को बढ़ा देने वाली अर्थात सिद्ध कर देने वाली। घोर मन्त्र के द्वारा कर्मकाण्ड को बढ़ावा देने वाली या प्रोत्साहित करने वाली।

212. **घोरभूतप्रमथनी** – भयंकर दुष्ट प्राणियों का पूर्ण रूपेण मन्थन कर देने वाली अर्थात पूर्ण रूप से नाश कर देने वाली या मार देने वाली। श्मशान के घोर प्राणी (साधक या उपासक) को शुरू में डरा देने वाली। प्रमथन का एक अर्थ नाश करना, मारना, पीड़ित या दुःखी करना, वध करना भी होता है।

213. **घोरवेतालनाशिनी** – भयंकर दुष्ट बेतालों का विनाश कर देने वाली। नश् अदर्शने धातु होती है जिसका तात्पर्य हुआ कि अदर्शन कर देती हैं अर्थात वहाँ से भगा देती हैं अर्थात ऐसे भयंकर बेताल वहाँ रहते ही नहीं। वेताल वे प्राणी हैं जिनका शव पर अधिकार है। जब तक वेताल का शव पर अधिकार रहता है, तब तक शव सड़ता नहीं है।

214. **घोरदावाग्निदमनी** – भयंकर दावाग्नि (जंगल की आग) को शान्त कर देने वाली। दमन अर्थात बिठा देना, नीचे कर देना, नियन्त्रण कर देना। भयानक अर्थात जो लोगों को कष्ट दे।

215. **घोरशत्रुनिषूदिनी** – भयंकर शत्रुओं का विनाश कर देने वाली।

216. **घोरमन्त्रयुता** – पूर्ण अर्थात श्रेष्ठ मन्त्रों से युक्त। ऐसे मन्त्र से जुड़ी हुई। मन्त्र देवता के सूक्ष्म शरीर होते हैं जिसमें देवता का वास होता है इस प्रकार देवता का मन्त्र से जुड़ना हो जाता है। अन्यथा भी मन्त्रों के द्वारा देवी देवताओं की उपासना होने से देवी देवता मन्त्र से जुड़े रहते हैं। देवी देवता को बुलाने के लिए मन्त्र को पकड़ना होता है क्योंकि देवी देवता मन्त्र से जुड़े होते हैं। मन्त्र को पकड़ लिया तो देवी देवताओं को भी पकड़ना हो जाता है। अत्यन्त प्रभावशाली मन्त्रों से युक्त। शिव मन्त्र से युक्त। घोर का साधारण अर्थ भयंकर होता है पर शब्दकोशों में इसका अर्थ पूर्ण, शिव, अत्यन्त प्रभावशाली मिल जाता है। पूर्ण या शिव का अर्थ श्रेष्ठ या कल्याणकारी कर सकते हैं। शिव का अर्थ कल्याण होता है। कहते हैं घोर कलयुग आ गया इसका मतलब है पूर्ण कलयुग आ गया। घोर का एक अर्थ मोनियर विलियम्स के शब्दकोश में sublime दिया गया है जिसका अर्थ होता है अतिश्रेष्ठ।

217. **घोरमन्त्रप्रपूजिता** – उच्च कोटि के अर्थात अति श्रेष्ठ मन्त्रों से अच्छी प्रकार से पूजी गई। पूर्ण/अधिक प्रभावशाली/श्रेष्ठ मन्त्रों के द्वारा विशेष रूप से पूजी गई। घोर अर्थात शिव, अधिक प्रभाव या असर करने वाला, तीव्र मन्त्र अर्थात उग्र मन्त्र, पूर्ण मन्त्र। कहते हैं घोर कलयुग आ गया अर्थात पूरा कलयुग आ गया, बहुत ही अनर्थ हो रहा। श्रेष्ठ मन्त्रों के द्वारा पूजी गयी। घोर अर्थात sublime अर्थात उदात्त अर्थात उच्च कोटि का, ऊँचे स्थान का, श्रेष्ठ।

218. **घोरमन्त्रमनोऽभिज्ञा** – घोर मन्त्र के ज्ञान (अर्थ) को जानने वाली। मन का अर्थ ज्ञान अर्थात अर्थ होता

है। मन्त्रार्थ जानने वाली। रूद्राध्यायी में एक मन्त्र आता है ऊँ अघोरेभ्यो अथ घोरभ्यः घोरघोरतरेभ्यः......., इस मन्त्र को घोर मन्त्र कह सकते हैं। श्रेष्ठ/पूर्ण/अधिक प्रभावशाली मन्त्रों के द्वारा जिनके मन की जानकारी हो जाती है। पूर्ण या श्रेष्ठ या घोर मन्त्र के उपासक के मन को सम्पूर्ण रूप से जानने वाली। श्रेष्ठ मन्त्रों के द्वारा मन को समझने वाली।

219. **घोरमन्त्रफलप्रदा** – श्रेष्ठ/पूर्ण/अधिक प्रभावशाली मन्त्रों के फलों को देने वाली। घोर का एक अर्थ मोनियर विलियम्स के शब्दकोश में sublime दिया गया है जिसका अर्थ होता है अतिश्रेष्ठ।

220. **घोरमन्त्रनिधि** – श्रेष्ठ/पूर्ण/अधिक प्रभावशाली मन्त्रों की खजाना स्वरूपा। घोर का एक अर्थ मोनियर विलियम्स के शब्दकोश में sublime दिया गया है जिसका अर्थ होता है अतिश्रेष्ठ। घोर का अर्थ जोर से अर्थात वाचिक उच्चारण से किया जाने वाला भी होता है।

221. **घोमन्त्रकृतास्पदा** – श्रेष्ठ/पूर्ण/अधिक प्रभावशाली मन्त्रों में जिसने स्थान बनाया अर्थात घोर मन्त्र में स्थित। घोर मन्त्रों के द्वारा अपना स्थान बनाने वाली।

222. **घोरमन्त्रेश्वरी देवी** – घोर मन्त्र या सिद्ध मन्त्र की ईश्वरी देवी। घोर का एक अर्थ मोनियर विलियम्स के शब्दकोश में sublime दिया गया है जिसका अर्थ होता है अतिश्रेष्ठ। घोर का एक अर्थ है उच्च स्वर में बोला गया।

223. **घोरमन्त्रार्थमानसा** – श्रेष्ठ/पूर्ण/अधिक प्रभावशाली मन्त्रों के अर्थ के मन वाली अर्थात अर्थ को मन में रखने वाली। रूद्राध्यायी में आया है नमस्ते रूद्र मन्यवे। श्रेष्ठ मन्त्र से परिपूर्ण हृदय वाली। अर्थ अर्थात पूर्ण अर्थात जो निरर्थक नहीं है अर्थात भाव लिए है। घोर मन्त्र का अर्थ उच्च स्वर में बोला गया मन्त्र भी है।

224. **घोरमन्त्रार्थतत्वज्ञा** – घोर मन्त्र का जो अर्थ है, उसका जो सार है अर्थात असली सार उसको जानने वाली अर्थात घोर मन्त्र के अर्थ के सार को जानने वाली। अर्थ अधिक मात्रा में होगा और सार उससे बहुत कम मात्रा में होगा। सार के बिना वस्तु का अस्तित्व नहीं। घोर/पूर्ण/अधिक प्रभावशाली/श्रेष्ठ मन्त्रों/सिद्ध मन्त्र के अर्थ के तत्व को जानने वाली। घोर मन्त्र का अर्थ उच्च स्वर में बोला गया मन्त्र भी है।

225. **घोरमन्त्रार्थपारगा** – श्रेष्ठ/पूर्ण/अधिक प्रभावशाली मन्त्रों के अर्थ के पार तक जाने वाली अर्थात सम्पूर्ण रूप से जानने वाली अर्थात उस अर्थ में पारंगत अर्थात विदुषी। गम् धातु का अर्थ जाना भी होता है और जानना भी होता है। सिद्ध मन्त्र के अर्थों में पारंगत।

226. **घोरमन्त्रार्थविभवा** – घोर मन्त्र का अर्थ ही है इनका अर्थात देवी का धन। पूर्ण/अधिक प्रभावशाली/श्रेष्ठ मन्त्रों/सिद्ध मन्त्रों के अर्थ से विशेष वैभव सम्पन्न।

227. **घोरमन्त्रार्थबोधिनी** – पूर्ण/अधिक प्रभावशाली/श्रेष्ठ मन्त्रों/सिद्ध मन्त्रों के अर्थ को जानने वाली। घोर का सामान्य अर्थ भयंकर होता है पर पूर्ण/अधिक प्रभावशाली/श्रेष्ठ/शिव (कल्याणकारी) अर्थ करना अधिक ठीक है।

228. **घोरमन्त्रार्थनिचया** – पूर्ण/अधिक प्रभावशाली/श्रेष्ठ मन्त्रों/सिद्ध मन्त्रों के अर्थ समूह के स्वरूप वाली।

229. **घोरमन्त्रार्थजन्मभू** – पूर्ण/अधिक प्रभावशाली/श्रेष्ठ मन्त्रों/सिद्ध मन्त्रार्थ की जन्मभूमि अर्थात जन्म देने वाली। घोर का अर्थ जोर से अर्थात वाचिक उच्चारण से किया जाने वाला भी होता है। मन्त्र को वाचिक रूप से या जोर से उच्चारण करने पर उसके अर्थ की जन्मभूमि।

230. **घोरमन्त्रजपरता** – पूर्ण/अधिक प्रभावशाली/श्रेष्ठ मन्त्र के जप में लगी हुई अर्थात स्वयं भी जप करने वाली। सिद्ध मन्त्र के जप में निरत रहने वाली अर्थात लगी रहने वाली।

231. **घोरमन्त्रजपोद्यता** – पूर्ण/अधिक प्रभावशाली/श्रेष्ठ/सिद्ध मन्त्र के जप करने के लिए तैयार। जोर से या वाचिक तरीके से मन्त्र जप करने के लिए तैयार।

232. **ङकारवर्णनिलया** – ङ वर्ण है आश्रय जिसका अर्थात इस वर्ण में रहने वाली।

233. **ङकाराक्षरमण्डिता** – ङ अक्षर से अभिमंडित या अलंकृत।

234. **ङकारापररूपा** – ङ वर्ण है अपर (दूसरा या कम श्रेष्ठ) रूप जिसका। अपर का अर्थ है दूसरा, निकृष्ट, साधारण, कम श्रेष्ठ।

235. **ङकाराक्षररूपिणी** – ङ अक्षर के स्वरूप वाली।

236. **चित्ररूपा** – आश्चर्य में डालने वाले स्वरूप वाली। आश्चर्यजनक या विस्मयकारी स्वरूप वाली। सुन्दर रूप वाली।

237. **चित्रनाडी** – सुषुम्नानाड़ी में स्थित चित्रा नाड़ी के स्वरूप वाली। विस्मयकारी नाड़ी स्वरूपा। सुन्दर नाड़ी से युक्त। चित्रा नामक नाड़ी में विराजमान। नियम है कि शब्द के आगे 'में विराजमान' लगाने से शब्द के अन्य अर्थ आ जाते हैं।

238. **चारुकेशी** – सुन्दर बालों वाली।

239. **चयप्रभा** – पुंजित प्रभा वाली अर्थात इकठ्ठी हुई प्रभा वाली। प्रभा अर्थात अधिक दीप्ति या कान्ति या प्रकाश। चय अर्थात समूह। विभिन्न देवताओं के तेज से मिलने पर महालक्ष्मी देवी की उत्पत्ति हुई थी इसलिए वे पुंजित प्रभा वाली हुई। दुर्गासप्तशती में महिषासुर वध प्रकरण में इसका वर्णन है।

240. **चञ्चला** – लक्ष्मी स्वरूपा। वायु स्वरूपा। चंचल प्रकृति वाली। जो एक स्थान पर न टिके। भक्तों की मदद करने के लिए हमेशा बेचैन रहने वाली। चमकती बिजली की तरह अर्थात उनकी तरह श्वत वर्ण वाली या शुत्रुओं पर अतिशीघ्र झपट्टा मारने वाली। लगातार स्पन्दन करने में लगी हुई। परमाणुओं में जो स्पन्दन होता है वह देवी या शक्ति के कारण होता है।

241. **चञ्चलाकारा** – चंचल है आकृति जिसकी। जो बराबर गतिशील हो अर्थात जिसमें बराबर स्पन्दन होता रहे। जो एक स्थिति में न रहता हो जैसे चन्द्रमा।

242. **चारुरूपा** – सुन्दर रूप वाली।

243. **चण्डिका** – महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती के मिलित रूप वाली अर्थात जिनमें इन तीनों देवियों का स्वरूप समाया है। यही कारण है कि दुर्गा सप्तशती के पाठ में प्रत्येक अध्याय के अन्त में ऊँ नमश्चण्डिकायै कहते हैं। उग्र ब्रह्म स्वरूपा। चण्ड का अर्थ होता है अधिक क्रोध। क्रोध ब्रह्म का अनिवार्य अंग है क्योंकि उसके क्रोध से भयभीत होकर हवा चलती है, सूर्य सही समय पर उगता है और अन्य देवी देवता समय पर अपना काम करते हैं। अतः क्रोध को ब्रह्म स्वरूप मान लिया गया है। चण्ड का अर्थ असाधारण गुण या असाधारण लक्षण भी होता है। असाधारण गुण जैसे सर्वव्यापकता, सर्वज्ञता, तीनों कालों में विद्यमान रहना आदि। ये असाधारण गुण केवल ब्रह्म में रहते हैं। अतः ब्रह्म को असाधारण गुण वाला अर्थात चण्डिका कहते हैं। क्रोध वाली अर्थात दुष्ट राक्षसों पर क्रोध करने वाली। चण्ड मुण्ड के युद्ध में अधिक कोपवती होने के कारण दुर्गा का नाम चण्डिका है। अत्यधिक क्रोध युक्ता। दुष्ट दैत्यों पर अधिक क्रोध करने वाली।

244. **चतुर्वेदमयी** – चारों वेदों के ज्ञान से युक्त।

245. **चण्डा** – चण्ड का अर्थ बल या प्रताप भी होता है अतः चण्डा का एक अर्थ हुआ अधिक बल वाली या

अधिक प्रताप वाली। दुर्दमनीय क्योंकि इनसे अधिक बल किसी के पास नहीं है। ब्रह्म स्वरूपा। चण्ड का अर्थ है अधिक क्रोध और क्रोध को ब्रह्म का रूप माना गया है। चण्ड का एक अर्थ असाधारण गुण भी होता है। असाधारण गुण जैसे सर्वज्ञता, सर्वव्यापकता आदि, ये असाधारण गुण केवल ब्रह्म में हो सकते हैं अतः चण्ड का अर्थ हुआ असाधारण गुण वाला अर्थात ब्रह्म। चण्ड नामक शिव के गण की शक्ति। अधिक क्रोध युक्त।

246. **चाण्डालगणमण्डिता** – चाण्डाल समूह से युक्त अर्थात घिरी हुई।

247. **चाण्डालच्छेदिनी** – दुष्ट चाण्डालों को नष्ट कर देने वाली।

248. **चण्डतापनिर्मूलकारिणी** – भयंकर दुखों को या कष्टों को जड़ से समाप्त करने वाली। ताप का अर्थ है दुख या कष्ट। यहाँ चण्ड का अर्थ है भयंकर, तीव्र, अत्यन्त उत्कट। बढ़े हुए कष्ट या ताप को निर्मूल करने वाली या नष्ट कर देने वाली।

249. **चतुर्भुजा** – चार भुजाओं वाली। चार पुरुषार्थ का उपभोग कराने वाली अर्थात सेवन कराने वाली अर्थात प्राप्त कराने वाली। भुज् धातु के णिजन्त रूप भोजयति के सन्दर्भ में भुजा का अर्थ होगा – उपभोग कराने वाली।

250. **चण्डरूपा** – ब्रह्म को दिखाने वाली अर्थात ब्रह्म का साक्षात्कार कराने वाली। चण्डम् (ब्रह्म) रूपयति इति चण्डरूपा। ब्रह्म स्वरूपा। अधिक क्रोध युक्त दिखने वाली।

251. **चण्डमुण्डविनाशिनी** – चण्ड और मुण्ड नामक राक्षसों का विनाश करने वाली। क्रोध और बदला लेने के अवगुणों का पूर्ण नाश करने वाली। चण्ड क्रोध का और मुण्ड बदला का प्रतीक है। दृप्तिवृत्ति (चण्ड) और खण्डाकार वृत्ति (मुण्ड) का पूर्ण नाश करने वाली। दृप्तिवृत्ति के द्वारा धर्म का उल्लंघन होता है, सद्विवेक नष्ट होता है। खण्डाकार वृत्ति व्यवसायात्मिका बुद्धि है अर्थात यह असार पदार्थों में निश्चय करती है, असार पदार्थों में मन को ले जाती है।

252. **चन्द्रिका** – चाँदनी के समान आह्लादिनी। हृदय की खुशी को आह्लाद कहते हैं।

253. **चन्द्रकीर्ति** – चन्द्रमा के समान उज्जवल कीर्ति वाली, सुखद, शीतल कीर्ति वाली। चन्द्रमा के समान धवल कीर्ति वाली।

254. **चन्द्रकान्ति** – चन्द्रमा के समान कान्ति वाली। यह कान्ति सुखद और सौम्य कही जाती है।

255. **चन्द्रास्या** – चन्द्रमा के समान मुख वाली अर्थात सुन्दर मुख वाली।

256. **चन्द्ररूपा** – चन्द्रमा के रूप में है जो। चन्द्रमा को स्वरूप देने वाली अर्थात चन्द्रमा का निर्माण करने वाली। चन्द्रम् रूपयति इति चन्द्ररूपा।

257. **चन्द्रमौलिस्वरूपिणी** – शिव के स्वरूप वाली। चन्द्रमा है मस्तक पर जिसके अर्थात शिव।

258. **चन्द्रमौलिप्रिया** – शिव की प्रिया हैं जो अर्थात शिव जी जिन्हें बहुत प्रेम करते हैं।

259. **चन्द्रमौलिसन्तुष्टमानसा** – शिव के द्वारा जिनका हृदय सन्तुष्ट (प्रसन्न) रहता है।

260. **चकोरबन्धुरमणी** – चन्द्रमा की रमणी अर्थात पत्नी। 27 नक्षत्रों को चन्द्रमा की पत्नी कहा जाता है पर चन्द्रमा रोहिणी को सबसे अधिक प्रेम करते थे। अतः रोहिणी नक्षत्र में चन्द्रमा उच्च का कहा जाता है। रोहिणी का अर्थ है बढ़ना जिसक स्वभाव है। चकोर बन्धुओं के समान रमणीक।

261. **चकोरबन्धुपूजिता** – चन्द्रमा के द्वारा पूजित। चकोर पक्षी रात को चन्द्रमा को एकटख देखता रहता है अतः चकोरबन्धु का अर्थ चन्द्रमा हुआ।

262. **चक्ररूपा** – सुदर्शन चक्र के रूप में। हाथ में चक्र नामक आयुध के रूप में। चक्रम् रूपयति अर्थात चक्र

आयुध को दिखाने वाली, यह अर्थ भी चक्ररूपा का है। चक्र का निर्माण करने वाली। रूप्यते इति रूपा से रूपा का अर्थ ज्ञापिका या बोधिका होता है। चक्र से बोध होता है जिनका। चक्र धारण रूप देखकर पता चल जाता है कि ये देवी ही हैं। कालचक्ररूपा। संसार चक्ररूपा। शत्रुओं, अज्ञान को छिन्नभिन्न करने वाली शक्ति के रूपवाली।

263. **चक्रमयी** – चक्र से युक्त अर्थात हाथ में चक्र नामक आयुध धारण किये हुए। रक्षा शक्ति से युक्त। भगवान विष्णु चक्र के द्वारा अपने भक्तों की रक्षा करते है। अतः चक्र रक्षा शक्ति का प्रतीक है। रक्षा या पालन सतोगुण है। अतः यह सतोगुण का भी प्रतीक है। चक्र भेदन करने का भी काम करता है। अतः यह संहारिका शक्ति या तमोगुण का भी प्रतीक है। सुषुम्ना नाड़ी में चक्रों का भेदन करने वाली शक्ति अर्थात् कुण्डलिनी शक्ति स्वरूपा। सातों चक्रों से युक्त सुषुम्ना नाड़ी स्वरूपा। चक्र का अर्थ यन्त्र भी है। अतः इस नाम का अर्थ हुआ यन्त्रों वाली अर्थात् जिनकी पूजा में यन्त्र का भी प्रयोग होता है। चक् धातु में र प्रत्यय लगाने से भी चक्र बनता है जिसका अर्थ होता है शत्रुओं अर्थात् विजातीय पदार्थों को ताड़न करने वाली। ऐसी ताड़न करने वाली शक्ति से युक्त। यदि कृ धातु से चक्र शब्द बनायें तो इसका अर्थ होगा काम करने का उपकरण अर्थात् जिससे कोई कार्य सम्पादित होता है। चक्रमयी या चक्रिणी का अर्थ हुआ कार्य करने के लिए आवश्यक उपकरणों या साधनों से युक्त। मन को भी चक्र कहा गया है। मन को धारण करने वाली अर्थात् मन की स्वामिनी अर्थात् मन की चंचलता को नियन्त्रित करने वाली। किसी चीज को धारण करने वाला उस चीज का स्वामी होता है। मन की चंचलता से रहित या मन को भी नियन्त्रित करने वाली।

264. **चक्राकारस्वरूपिणी** – यन्त्र के आकार के स्वरूप वाली। चक्र का अर्थ यन्त्र होता है और प्रत्येक देवी देवता के कोई न कोई यन्त्र होते हैं। मूलाधारचक्र, स्वाधिष्ठानचक्र, मणिपुरचक्र आदि सात चक्रों के स्वरूप वाली। ये चक्र भी देवी का ही रूप हैं। चक्र के आकार के समान स्वरूप वाली।

265. **चक्रपाणिप्रिया** – विष्णु जी को प्रिय लगने वाली।

266. **चक्रपाणिप्रीतिदायिनी** – विष्णु जी को प्रसन्नता देने वाली।

267. **चक्रपाणिरसाभिज्ञा** – विष्णु जी के आनन्द को जानने वाली।

268. **चक्रपाणिवरप्रदा** – विष्णु जी को वरदार देने वाली।

269. **चक्रपाणिवरोन्मत्ता** – विष्णु जी के वर से उन्मत्त (अति प्रसन्न) हो जाने वाली। विष्णु जी द्वारा दिए गये उपहार से अति प्रसन्न।

270. **चक्रापाणिस्वरूपिणी** – जिनका अपना रूप हाथ में चक्र धारण किए हुए है। विष्णु जी के स्वरूप वाली।

271. **चक्रपाणीश्वरी** – विष्णु जी की भी ईश्वरी अर्थात विष्णु जिनकी उपासना करते हैं।

272. **नित्यं चक्रपाणिनमस्कृता** – सदैव विष्णु जी द्वारा जिनको नमस्कार किया जाता है।

273. **चक्रपाणिसमुद्भूता** – विष्णु जी से समुत्पन्न अर्थात उत्पन्न होने वाली। गंगा स्वरूपा क्योंकि गंगा जी की उत्पत्ति विष्णु भगवान के पैर से मानी गई है। विष्णु जी में सम्यक् रूप से स्थित। भू सत्तायाम् धातु होती है जिससे स्थित अर्थ या सत्ता अर्थ आता है।

274. **चक्रपाणिगुणास्पदा** – विष्णु के गुणों का धाम अर्थात घर या स्थान। विष्णु के गुण हैं जैसे दया, उदारता, शरणागत रक्षण आदि। विष्णु जी के गुणों से विभूषित।

275. **चन्द्रावली** – चन्द्रावली नामक आभूषण की तरह सुन्दर। चन्द्रावली एक आभूषण का नाम है जिसमें अनेक चन्द्रमा की आकृतियाँ रहती हैं। अनेक चन्द्रमाओं से सुशोभित। अवली का अर्थ है पंक्ति।

276. **चन्द्रवती** – चन्द्रमा से युक्त अर्थात विभूषित। मस्तक में चन्द्रमा है, आकाश रूप में चन्द्रमा उनका एक नेत्र है। आह्लादकारी गुणों से युक्त। चदि आह्लादे धातु होती है जिससे बने चन्द्र शब्द का अर्थ आह्लाद (ह्रदय की खुशी) देने वाला होता है।

277. **चन्द्रकोटिसमप्रभा** – करोड़ों चन्द्रमाओं के समान सुन्दर कान्ति वाली।

278. **चन्द्रनार्चितापादाब्जा** – चन्द्रमा के द्वारा जिनके चरण कमल पूजित हैं।

279. **चन्दनान्वितमस्तका** – जिनके मस्तक पर चन्दन का लेप किया गया है।

280. **चारूकीति** – सुन्दर या श्रेष्ठ कीर्ति वाली। प्रशंसा पाने वाली।

281. **चारूनेत्रा** – सुन्दर नेत्रों वाली।

282. **चारूचन्द्रविभूषणा** – सुन्दर चन्द्रमा हैं आभूषण जिनका।

283. **चारूभूषा** – सुन्दर आभूषणों से विभूषित।

284. **चारूवेशा** – सुन्दर वस्त्र वाली अर्थात सुन्दर वस्त्र धारण किए हुए।

285. **चारूवेशप्रदायिनी** – सुन्दर वस्त्र को प्रदान करने वाली।

286. **चारूभूषाभूषिताङ्गी** – सुन्दर आभूषणों से अलंकृत/विभूषित हैं अंग जिनके।

287. **चतुर्वक्त्रवरप्रदा** – ब्रहमा को वरदान देने वाली।

288. **चतुर्वक्त्रसमाराध्या** – ब्रहमा के द्वारा विधिवत आराधना करने योग्य। वक्त्र का अर्थ होता है मुख। ब्रह्माजी के चार मुख होते हैं अतः वे चतुर्वक्त्र कहलाये जाते हैं।

289. **चतुर्वक्त्रसमाश्रिता** – चारों मुखों में स्थित वेदस्वरूपा। आश्रित अर्थात वहाँ रहने वाली। ब्रह्मा जी के चारों मुखों से चार वेद निकले थे। ब्रह्मा के द्वारा समाश्रित या ब्रह्मा हैं जिनके आश्रित।

290. **चतुर्वक्त्रा** – चार मुखों वाली। काकिनी देवी स्वरूपा। ललिता सहस्रनाम में आया है कि स्वाधिष्ठान चक्र में विराजमान देवी काकिनी के चार मुख हैं। चार मुख वाले ब्रह्मा जी की शक्ति स्वरूपा।

291. **चतुर्बाहु** – चार भुजाओं वाली। योग में बताये गये चार प्रकार के विघ्नों को रोकने वाली। समाधि लगने में बाधा के रूप में चार दोष मुख्य हैं – विक्षेप (चंचलता), लय (निद्रा – आलस्य), कषाय (अन्तःकरण की अशुद्धि) और रसास्वाद (ध्यानावस्था में जो सुख मिलता है उसमें अटक जाना)। बाहु वह है जो किसी को रोक देता है। चारों दिशाओं वाली अर्थात सर्वव्यापी। चार भुजाऐं चार दिशाओं का प्रतीक हैं।

292. **चतुर्थी** – चतुर्थी तिथि स्वरूपा। चतुर्थी तिथि में विराजमान। इस तिथि में इनकी पूजा होती है। चतुर्थी तिथि का कारण अर्थात चतुर्थी तिथि को उत्पन्न करने वाली। नियम है कि शब्द के आगे 'मे विराजमान', 'का कारण', 'के समान' लगाने से शब्द के अन्य अर्थ निकल आते हैं।

293. **चतुर्दशी** – चतुर्दशी तिथि स्वरूपा। चतुर्दशी तिथि में विराजमान। इस तिथि में इनकी पूजा होती है। चतुर्दशी तिथि का कारण अर्थात चतुर्थी तिथि को उत्पन्न करने वाली।

294. **चित्रा** – आश्चर्यजनक कार्य करने वाली। विभिन्न वर्णों वाली अर्थात प्रकृति स्वरूपा। सुन्दर स्वरूप वाली। विभिन्न या भांति – भांति के अद्भुत कार्य करने वाली।

295. **चर्मण्वती** – चम्बल नदी स्वरूपा। ऐसा कहते हैं कि रन्तिदेव एवं अन्य राजाओं के द्वारा यज्ञ में बलि के रूप में मारे गये पशुओं से निकले रक्त से यह नदी बनी थी। चर्मण अर्थात चमड़ा, चमड़े को काटने से खून निकलता था। सुन्दर मृग आदि के चर्म को धारण करने वाली।

296. **चैत्री** – चित्रा नक्षत्र में होने वाली पूर्णिमा के समान सुन्दर। चित्रा नक्षत्र से युक्त या इस नक्षत्र में पैदा हुई या इस नक्षत्र से सम्बन्धित।

297. **चन्द्रभागा** – चन्द्रभागा नदी स्वरूपा। चन्द्रभागा नदी की तरह रोग या कष्ट निवारिणी। चन्द्रमा ने गुरू बृहस्पति की पत्नी तारा से अवैध सम्बन्ध बनाये थे जिससे बृहस्पति ने चन्द्रमा को श्राप दिया था कि क्षय रोग हो जाए। चन्द्रमा के द्वारा गिड़गिड़ाने पर बृहस्पति ने कहा था कि चन्द्रभागा की उपासना करो तो यह रोग दूर होगा। इस प्रकार चन्द्रभागा नदी क्षय रोग अर्थात असाध्य रोग को दूर करने वाली नदी है। चन्द्रभागा नदी स्वरूप।

298. **चम्पका** – चम्पा पुष्प स्वरूपा। चम्पा पुष्प के समान सुन्दर एवं सुगन्ध से युक्त। चम्पयति सद्गन्धम गच्छति इति चम्पा, चम्पा एव चम्पका। अच्छी गन्ध को प्राप्त किये हुए। गच्छति अर्थात प्राप्नोति। चम्पयति विष नाश्यति इति चम्पा। विष का नाश करने वाली।

299. **चतुर्दशयमाकारा** – यम के 14 रूपों वाली।

300. **चतुर्दशयमानुगा** – 14 यम जिनके पीछे – पीछे चलते हैं।

301. **चतुर्दशयमप्रीता** – 14 यमों के द्वारा पूजित होने पर उनपर प्रसन्न होने वाली। 14 यमों को जो प्रिय हैं। प्रीति अर्थात प्रसन्न।

302. **चतुर्दशयमप्रिया** – 14 यमों को जो प्रिय हैं अर्थात इन यमों का अच्छी लगती हैं।

303. **छलस्था** – दुष्टों के साथ ही जाने वाली छल क्रिया में स्थित रहने वाली। असुरों पर जो अधर्म के प्रतीक हैं, विजय प्राप्त करने के लिए छल क्रिया का सहारा लेना होता है। शठे शाठ्यम समाचरेत्। भगवान विष्णु ने मोहिनी का रूप धारण कर देवताओं को अमृत एवं असुरों को वारूणी पिलाकर छल किया था। कपट विद्या अर्थात इन्द्रजाल में निवास करने वाली।

304. **छिद्ररूपा** – ब्रह्मरन्ध्र में जिसका रूप है अर्थात ब्रह्मरन्ध्र में रहने वाली। छिद्रे रूपम् यस्या सा। ब्रह्मरन्ध्र स्वरूपा। दुष्टों में छिद्र (दोष) का स्वरूप धारण करने वाली जिससे उन्हें मारा जा सके।

305. **छद्मदा** – कपट बुद्धि देने वाली (बुराइयों से निपटने के लिए देवताओं को कपट बुद्धि देने वाली)। भगवान विष्णु ने बलि के प्रसंग में, वृन्दा के पति के प्रसंग में, समुद्र मन्थन के बाद अमृत वितरण के समय, असुरों से निपटने के लिए कपट विद्या का सहारा लिया था। इन्द्रजाल विद्या को देने वाली। दैत्य नष्ट हों इसके लिए देवताओं को कपट विद्या देने वाली। दो अवखण्डने से भी दा शब्दाक्षर बन सकता है, तब इस नाम का अर्थ होगा कपटियों के कपट को खण्डित करने वाली अर्थात नष्ट कर देने वाली।

306. **छद्मराजिका** – दुष्टों के लिए मानो छद्म (छलछद्म) की पंक्ति है। उन्हें दण्ड देने के लिए बहुत से छल करती है। राजिका अर्थात पंक्ति। पंक्ति अर्थात बहुत सी इकाइयाँ। इन्द्रजाल विद्या से सुशोभित होने वाली।

307. **छिन्नमस्ता** – जिनका मस्तक कटा हुआ है। इन्होंने अपने कटे मस्तक को अपने हाथ में ले रखा है। जिनका मस्तक छिन्न है अर्थात् जो मस्तक से परे है अर्थात् मन, बुद्धि और शरीर से परे है। तात्पर्य है कि यह देवी मन, बुद्धि और शरीर के पार की अवस्था है। मनुष्य जब मन, बुद्धि और शरीर से पार होता है तब इनकी प्राप्ति होती है। सहस्रार चक्र विदीर्ण करने वाली। मस्तक के ऊपरी भाग में ही सहस्रार चक्र होता है। छिन्नमस्त + आ, आ का अर्थ है देना। छिन्नमस्त की स्थिति देने वाली अर्थात् सहस्रार चक्र विदीर्ण करने वाली। कुण्डलिनी साधना में जब साधक का सहस्रार चक्र विदीर्ण होता है तभी मोक्ष की प्राप्ति होती है। बच्चों जैसी मासूमियता या निर्दोषिता लिये हुये। मस्तक से ही विचार होता है और छोटे बच्चे बहुत विचार नहीं करते और बड़े पवित्र होते

हैं। विचारशून्यता होने पर ही कुण्डलिनी शक्ति ऊपर उठ पाती है जो छिन्नमस्ता के ध्यान चित्र से स्पष्ट है। उस विद्या के स्वरूप वाली जिसमें किसी का सिर विदीर्ण कर दिया जाता है। राजा जनक की सभा में याज्ञवल्क्य ने अपने विरोधी का सिर इस विद्या का प्रयोग करते हुए काट दिया था। सूर्य से निकले हुए तेज के स्वरूप वाली। सूर्य से निकला बहुत सा तेज प्रकृति की वस्तुओं जैसे वृक्षों, सब्जियों में समा जाता है और सूर्य के अस्त होने के बाद भी वह सूर्य की ओर नहीं लौटता। सूर्य ऐसे तेज का मस्तक है।

308. **छिन्ना** – जिनके कपाल का भेदन हो रखा है। जिनके आज्ञा चक्र का भेदन हो रखा है। जिन साधकों का कपाल भेदन हो गया है उनकी शक्ति स्वरूपा या उन साधकों से अभेद है जिनका। छिन्ना अर्थात वारांगना अर्थात सुन्दर स्वरूप वाली। वारांगना या वेश्या सुन्दर मानी जाती है। एक पदार्थ से दूसरे पदार्थ में भेद के रूप में स्थित या भेद करने वाली। छेदन का अर्थ भेदन भी होता है। वैशेषिक दर्शन में विशेष नाम का पदार्थ बताया गया है जो दो परमाणुओं के बीच भेद करता है। उत्तरपदलोपी समास मानते हुए छिन्ना को छिन्नमस्त कह सकते है। सर्वव्यापी पदार्थों जैसे आकाश, वायु आदि का मस्तक नही होता है अर्थात् कोई अंग नही होता है। एक नियम है कि प्रमुख हिस्से का नाम लेने से बाकी सभी का बोध हो जाता है। मस्तक शरीर का प्रधान अंग है, इसको कहने से शरीर के सभी अंगों का बोध हो जाता है। इस प्रकार छिन्ना का अर्थ हुआ जो सर्वव्यापक है। मस्तक में ही विचार होते है, इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ जो विचार रहित है अर्थात् हमेशा वर्तमान में विद्यमान रहती है। बच्चे ज्यादा सोचते–विचारते नही है जिसके कारण उनमें मासूमियता रहती है। इस कारण छिन्नमस्त का अर्थ बच्चों जैसी मासूमियता रखने वाली भी होता है। शब्दकोष में छिन्ना का अर्थ वैश्या दिया गया है जिसका अर्थ है सभी के द्वारा उपभोग की जाने वाली योग्य। देवी के सन्दर्भ में छिन्ना का अर्थ होगा जो भी उन्हें याद करता है उनके पास मदद करने के लिए चली आती है। किसी से अलग हुयी चीज को भी छिन्न कहते है। इस नाम का अर्थ हुआ सूर्य के उस प्रकाश या तेज के स्वरूप वाली जो उससे अलग हो चुका है। सूर्य का प्रकाश विभिन्न पदार्थों में पड़ता है और ये पदार्थ उस प्रकाश या तेज को शोषित करते है। अधिकांश प्रकाश या ऊष्मा सूर्यास्त के पहले सूर्य में वापस लौट जाती है पर कुछ प्रकाश या तेज या ऊष्मा ऐसी भी होती है कि सूर्यास्त के बाद भी नहीं लौट पाती है और वह उस पदार्थ का अंग बन जाती है। इस प्रकार अलग हुये तेज को भी छिन्न कहते हैं। जो समाज से अलग है अर्थात् कोई भी उसके समान नही है, वह छिन्ना है।

309. **छिन्नमुण्डविधारिणी** – कटे हुए सिर को विशेष रूप से धारण करने वाली।

310. **जयदा** – अपने उपासकों को जीत दिलाने वाली। अपने उपासकों को जीत का वरदान देने वाली। अपने उपासकों को दूसरों से उत्कृष्ट बनाने वाली। गुण, शक्ति, सौन्दर्य, ऐश्वर्य आदि में अपने उपासकों को दूसरों से उत्कृष्ट बनाने वाली। जय का एक अर्थ सर्वोत्कृष्ट होना भी है।

311. **जयरूपा** – वशीकरण विद्या स्वरूपा। महाभारत ग्रन्थ स्वरूपा। जय का एक अर्थ वशीकरण, महाभारत ग्रन्थ है। विपक्षी पर जीत की घटना स्वरूपा। जीत के रूप वाली।

312. **जयन्ती** – जीतती हुई अर्थात प्रत्येक क्षण हर चीज में दूसरों से आगे रहती हैं। सौन्दर्य, पराक्रम, ऐश्वर्य आदि प्रत्येक चीज में प्रत्येक क्षण देवी दूसरों से आगे रहती हैं। जय के स्वभाव वाली अर्थात सबको जीत लेने वाली। जयन्ती अर्थात जिसका मन पर शासन और नियन्त्रण है।

313. **जयमोहिनी** – जय से मोहित करने वाली अर्थात जब युद्ध में जीतती हैं तो लोग मोहित हो जाते हैं। जिनकी जीत भी लोगों को मोहित करती है। राक्षसों पर जीत हासिल करती हैं जिससे देवता एवं अन्य लोग आकृष्ट होते हैं। जय से मोहित करने वाली। जय नामक राजा के द्वारा प्रसन्न की गई। विजय के द्वारा सबको मोहित करने वाली।

314. **जया** – जया तिथि स्वरूपा। जय + आ अर्थात भक्तों को जीत देने वाली, जीत का वरदान देने वाली। आ का अर्थ देना या नाश करना होता है। पार्वती जी की सहेली जया से अभेद है जिनका।

315. **जीवनसंस्था** – जीविका या जीवित रहने के साधन में भलीभाँति स्थित। जीवन का अर्थ जल भी होता है। इस प्रकार जल में भलीभाँति स्थित। जीवन को संस्थिति देने वाली अर्थात सुरक्षित करने वाली या रखने वाली।

316. **जालन्धरनिवासिनी** – जालन्धर पीठ पर निवास करने वाली। हृदय चक्र पर निवास करने वाली। हृदय में बहुत सी नाड़ियों का जाल होता है जालों को धारण करने वाला जालन्धर है।

317. **ज्वालामुखी** – ज्वाला है मुख में जिसके। ज्वालामुखी देवी स्वरूपा या उनसे अभेद है जिनका। यह देवी ज्वाला या ज्योति के रूप में हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा में हैं।

318. **ज्वालादात्री** – प्रकाश देने वाली। जगत को अग्नि या प्रकाश देने वाली। तेज को प्रदान करने वाली।

319. **जाज्वल्यदहनोपमा** – जलती हुयी अग्नि की उपमा (तुलना) है जिनकी अर्थात जलती हुयी अग्नि के समान है जो। जलती अग्नि के समान शत्रुओं को भस्म कर देती है। जली अग्नि के समान स्वर्णिम आभा लिए हुए।

320. **जगद्वन्द्या** – संसार के द्वारा वन्दनीय। वन्दना का अर्थ है नमस्कार करना और गुणों का गान करना।

321. **जगत्पूज्या** – संसार के द्वारा पूजनीय। दैनिक स्तुति और जो भी सामग्री उपलब्ध है, उसे चढ़ाना पूजा कहलाती है। पूजा और अर्चना में यह भेद है कि अर्चना में शास्त्रों मे जो जो सामग्री बताई गई है वह सब चढ़ाना होता है। जबकि पूजा में जो उपलब्ध है वह चढ़ाये, यदि उपलब्ध नहीं है तो भी काम चल जाएगा। पूजा स्थूल और मानसिक दोनों होती है। विभिन्न सामग्रियों को चढ़ाना पूजा है।

322. **जगत्त्राणपरायणी** – संसार की रक्षा करने में संलग्न रहने वाली।

323. **जगती** – सम्पूर्ण विश्व स्वरूपा। जगती छन्द स्वरूपा। निरन्तर गति करने वाली। कण–कण में स्पन्दन रूपी गति हो रही है। इस गति को करने वाली। गति का अर्थ क्रिया भी ले सकते है। तब इस नाम का अर्थ होगा जो निरन्तर क्रियाशील है। गम् धातु में यङ् प्रत्यय लगाने से यह शब्द बनेगा जो निरन्तरता या बहुत अधिक को बोध कराता है। जो अन्य सभी देवी–देवताओं से बहुत आगे तक गई है अर्थात् उन सबसे बढ़कर है। सृष्टि स्वरूपा। जगत का अर्थ है सृष्टि जिसे स्त्रीलिंग में जगती कहेंगे। सर्वप्रेरक गति देने वाली काल शक्ति को भी वेद में जगती कहा गया है। जो बहुत दूर तक गयी है अर्थात् बहुत विशाल। वेद का जगती छन्द स्वरूपा। जलचर से ज लिया एवं गति लिया। जलचर तरंगों के समान गति होने के कारण अर्थात् उच्च–निम्न उच्चारण रूप गति होने से इस छन्द को जगती छन्द कहते है। जो अन्य छन्दों से आगे गया है अर्थात् बहुत बड़ा है अतः जगती है। बहुधा स्तूयमान परमेश्वर ने इसका उपदेश किया था अतः इसका नाम जगती है। गॄ शब्दे धातु से एवं गल स्रवणे+अति > जग + अत् > जगत+ ङीष् करके ऐसा अर्थ आया। जिसमें जगत आश्रित है अर्थात् समस्त जगत को चलाने वाली। वैदिक कोष में जगती के अन्य कई अर्थ दिये गये है जैसे आत्मा, ब्रह्म, पृथ्वी, पशु, वैश्य, द्यौ, प्रतीची दिशा, आदित्य की पत्नी, यश। पशु, पृथ्वी, वैश्य, यश आदि सभी निरन्तर या बहुत अधिक गमन करते है इस कारण उन्हें जगती कहा गया है। जीवात्मा भी निरन्तर गति करती है अतः इसे भी जगती कहा गया है।

324. **जगदाधारा** – सम्पूर्ण संसार की आधार स्वरूपा अर्थात सारा संसार उन्हीं पर टिका है।

325. **जन्ममृत्युजरापहा** – जन्म मृत्यु और बुढ़ापे को नष्ट कर देने वाली।

326. **जननी** – जन्म देने वाली। जगत माता। कृपा या दया स्वरूपा। जननी का एक अर्थ कृपा या दया। जूही पुष्प की तरह सुन्दर और सुगन्धित। जननी का एक अर्थ जूही है। जटामांसी/कुटकी वनौषधि की तरह

रोगनिवारिका अर्थात कष्टों को दूर करने वाली। जननी का एक अर्थ जटामांसी, कुटकी है। जगतां जननी। जनान् नयति। न जायते इति जना, तान् सर्वान नयति। जनं जननं नयति च। समस्त विश्व को उत्पन्न करने वाली। जनयति इति जननी। लोगों का नेतृत्व करने वाली अर्थात मार्गदर्शन करने वाली या रास्ता दिखाने वाली। भक्तजनों का मार्गदर्शन करने वाली। जनान् नयति इति जननी। ज+न अर्थात जन अर्थात जो जन्म नहीं लेती है। जन+नी से जननी बनाने पर अर्थ होगा जो स्वयं जन्म नहीं लेती है, सभी का नेतृत्व करती है या क्रियाशील करती है या मार्गदर्शन करती है। जन्म को लाने वाली अर्थात उत्पत्ति को करने वाली। जन का अर्थ है जनन या जन्म।

327. **जन्मभूमि** – सम्पूर्ण विश्व का आधार अर्थात सारा विश्व इसी से उत्पन्न होता है। जन्मभूमि श्रेष्ठता का भी प्रतीक है क्योंकि जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी कहा गया है अर्थात माता और जन्म भूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है। जन्मभूमि का अर्थ हुआ जो जन्मभूमि की तरह श्रेष्ठ है। जन्म का उद्भव स्थान। जड़, चेतन सभी पदार्थों के जन्म की कारण या आधार। जन्म भूमि स्वरूपा। जिस स्थान पर देवी अवतार लेती हैं वह स्थान भी देवी स्वरूपा है।

328. **जन्मदा** – जन्म देने वाली। आयु देने वाली। जन्म का एक अर्थ आयु भी है।

329. **जयशालिनी** – जय के स्वभाव वाली। जय के कारण चमकती हुई अर्थात चेहरे में चमक है। शालिनी का अर्थ चमकवाला भी होता है।

330. **ज्वररोगहरा** – ज्वर अर्थात बुखार जैसे रोगों को हरने वाली।

331. **ज्वाला** – अग्नि की लपट स्वरूपा। स्वयं ज्वाला स्वरूपा है। अग्निशिखा स्वरूपा। बहुत अधिक गर्मी या ताप स्वरूपा। दग्धान्न स्वरूपा। blazing one.

332. **ज्वालामालाप्रपूरिता** – ज्वाला की मालाओं से भरी है अर्थात चारों ओर ज्वालाओं से घिरी है। ज्वालाओं की माला से परिपूर्ण या विभूषित। surrounded by flame.

333. **जम्भारातीश्वरी** – इन्द्र की स्वामिनी। इन्द्र की अराध्या। जम्भ + अराति (शत्रु), जम्भ नामक असुर को इन्द्र ने मारा था।

334. **जम्भारातिवैभवकारिणी** – इन्द्र के वैभव को करने वाली। वैभव अर्थात समृद्धि, शान–शौकत, ठाठ बाट।

335. **जम्भारातिस्तुता** – इन्द्र के द्वारा जिनकी स्तुति की गई।

336. **जम्भारातिशत्रुनिषूदिनी** – इन्द्र के शत्रुओं को नष्ट कर देने वाली।

337. **जयदुर्गा** – जय प्रदान करने वाली दुर्गा। दुर्गा अर्थात जिसे अत्यन्त कठिनाई से, तपस्या आदि करके जाना जाता है या प्राप्त किया जाता है। दुर्गा अर्थात वह शक्ति जो दुर्ग (संकट या विपत्ति) का नाश करती है। दुर्गा का विजयी स्वरूप।

338. **जयाराध्या** – पार्वती की सहेली जया के द्वारा आराधनीय। देवी के जयास्वरूप द्वारा आराधना करने योग्य।

339. **जयकाली** – हर जगह जीत प्राप्त करने वाली काली स्वरूपा। विजयशील काली से अभेद है जिनका।

340. **जयेश्वरी** – विजय की ईश्वरी अर्थात विजय देने वाली। जिसको चाहें जिता दें किसी भी क्षेत्र में। किसी क्षेत्र में सफलता भी जीत है।

341. **जयतारा** – हर क्षेत्र में जीत हासिल करने वाली तारा देवीस्वरूपा। विजयशील तारा देवी। जीत या जय का अर्थ दूसरों से बढ़कर होना है। तारा अर्थात संसार सागर से या दुखों के समुद्र से पार कराने वाली शक्ति।

342. **जयातीता** – जय से भी आगे अर्थात जो जय तक ही सीमित नहीं है। सभी को जीत लो तब भी उन्हें नहीं पा पाओगे, जैसे बुद्धि से परे अर्थात बुद्धि पकड़ नहीं पाएगी। एक प्रकार से अनिर्वचनीय अर्थ निकलता है। जय से भी परे या आगे।

343. **जयशङ्करवल्लभा** – जीतने वाले भगवान शिव की अत्यन्त प्रिय। वल्लभा का अर्थ है अत्यन्त प्रिय। जयशील अर्थात जय के स्वभाव वाली पार्वती स्वरूपा।

344. **जलदा** – जल प्रदान करने वाली। जीवन को देने वाली। जल का अर्थ जीवन भी होता है। वर्षा या बादल या नदी या समुद्र या तालाब या झील के रूप में जल देने वाली।

345. **जह्नुतनया** – गंगा से अभेद है जिनका।

346. **जलधित्रासकारिणी** – समुद्र को भय देने वाली। समुद्र में बड़वाग्नि द्वारा जल का सन्तुलन रखती हैं या जल को त्रास देती हैं। बाढ़ आदि द्वारा त्रास देती हैं।

347. **जलधिव्याधिदमनी** – समुद्र की व्याधि अर्थात बाढ़ आदि का दमन (कुचलना, रोकना, नियन्त्रण करना) करने वाली।

348. **जलधिज्वरनाशिनी** – समुद्र के ज्वर (कष्ट जैसे बाढ़ आदि) को नष्ट कर देने वाली।

349. **जङ्गमेश्वरी** – जंगम प्राणियों की ईश्वरी। जंगम का अर्थ है चलने फिरने वाले प्राणी, वस्तु जिसे एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाया जा सकता हो।

350. **जाड्यहरा** – मूर्खता अर्थात जड़ता का हरण करने वाली।

351. **जाड्यसङ्घनिवारिणी** – मूर्खों की संगति से रोकने वाली अर्थात मूर्खों की संगति से दूर करने वाली या बचाने वाली। जड़ता के साथ को दूर कर देने वाली अर्थात जड़ता जन्य दोषों का निवारण करने वाली।

352. **जाड्यग्रस्तजनातीता** – जड़ता अर्थात मूर्खता से ग्रस्त लोगों से दूर रहने वाली।

353. **जाड्यरोगनिवारिणी** – मूर्खता रूपी रोग का निवारण करने वाली।

354. **जन्मदात्री** – सभी विद्याओं को जन्म देने वाली। आयु देने वाली, जन्म का एक अर्थ आयु भी है। जन्म देने वाली। समस्त सृष्टि को, समस्त देवताओं को, तीनों गुणों को जन्म देती हैं।

355. **जन्महन्त्री** – जन्म का हरण करने वाली अर्थात मृत्यु देने वाली। एक समयावधि के बाद जीवों का प्राण हर लेती हैं। हन्त्री का अर्थ हिंसा करने वाली, गमन करने वाली होता है।

356. **जयघोषसमन्विता** – जय की ध्वनि से युक्त रहने वाली।

357. **जपयोगसमायुक्ता** – जप रूपी योग (अनुष्ठान) में भलीभाँति जुड़ी हुई अर्थात उसे करने वाली या जहाँ पर जप हो रहा है वहाँ विराजमान रहने वाली। जपयोग से विभूषित होने वाली। जप भगवान के नाम या मन्त्र की पुनरावृत्ति है। जब इस जप में मन लग जाए तो वह जपयोग हो जाता है।

358. **जपयोगविनोदिनी** – जपयोग से प्रसन्न होने वाली।

359. **जपयोगप्रिया** – जपयोग है प्रिय जिन्हें। जिन्हें जपयोग पसन्द है।

360. **जाप्या** – मन्त्र रूप में जपने योग्य।

361. **जपातीता** – जप से भी आगे हैं अर्थात जप तक ही सीमित नहीं है। कहने का तात्पर्य है कि वाचिक, उपांशु और मानसिक जप से भी पकड़ में नहीं आती। जब मनुष्य जप से भी परे की स्थिति में पहुँच जाता है तब प्राप्त कर पाता है। जो जप से ऊपर हैं या जप से आगे हैं या जप से श्रेष्ठ हैं।

362. **जयस्वना** – जय ध्वनि करने वाली। जिनके लिए लोग जय जय कार करते हैं।

363. **जायाभावस्थिता** – सन्तान उत्पन्न करने की क्रिया में स्थित। जाया अर्थात जो सन्तान पैदा करे ऐसी पत्नी। भाव अर्थात क्रिया। पत्नी के भाव में स्थित अर्थात पत्नी की तरह सबको सहायता करने वाली। कुण्डली का सातवाँ भाव जाया भाव कहलाता है।

364. **जाया** – भार्या स्वरूपा। शिव जी की भार्या हैं।

365. **जायाभावप्रपूरिणी** – सन्तानोत्पत्ति की क्रिया अर्थात सन्तानोत्पत्ति को प्रकृष्ट रूप से पूरा करने वाली। प्रकृष्ट अर्थात निश्चित ही, शीघ्र, तुरन्त। अन्य देवता भी सन्तान देते हैं पर देवी माँ निश्चित ही या अधिक शीघ्र सन्तान देती हैं। जाया के भाव से परिपूर्ण रहने वाली।

366. **जपाकुसुमसंकाशा** – मूल (original) गुड़हल के सदृश दिखाई देने वाली या प्रकाशित होने वाली। गुडहल के फूल के समान लाल रंग वाली।

367. **जपाकुसुमपूजिता** – गुड़हल के फूल के द्वारा संपूजित।

368. **जपाकुसुमसम्प्रीता** – गुड़हल के फूल से सम्यक् रूप से प्रसन्न होने वाली।

369. **जपाकुसुममण्डिता** – गुड़हल के फूल से अलंकृत।

370. **जपाकुसुमवद्भासा** – प्रतिरूप (duplicate) गुड़हल के फूल की तरह कान्ति वाली। जपाकुसुमवत का अर्थ है जो गुड़हल की तरह हो अर्थात प्रतिरूप (duplicate) गुड़हल। इस नाम और 366 वें नाम के अर्थ में यही अन्तर है।

371. **जपाकुसुमरूपिणी** – गुड़हल के फूल के समान रूप वाली अर्थात गुड़हल की लालिमा को लिये हुए शरीर वाली। गुड़हल के फूल के निर्माण करने के स्वभाव वाली। रूपयति अर्थात निर्माण करना। स्वभाव अर्थ में णिनि प्रत्यय लगता है।

372. **जमदग्निस्वरूपा** – परशुराम के पिता जन्मदिन के स्वरूप में हैं जो। जमदग्नि के वास्तविक गुणों वाली अर्थात ऐसे गुण या लक्षण देवी में भी हैं। स्वरूप अर्थात वास्तविक गुण अर्थात सार, जिसे अलग नहीं किया जा सकता और जो हमेशा रहते हैं। जमत् + अग्नि अर्थात खाती इुई अग्नि अर्थात लगातार जलती हुई अग्नि के स्वरूप वाली। स्वरूप का अर्थ शरीर भी कर सकते हैं। जलती हुई अग्नि मानो उनका शरीर हो। यमत् + अग्नि, यमत् अर्थात नियन्त्रित और अग्नि अर्थात चेतना। नियन्त्रित चेतना रूवरूपा। यमत् और जमत् का एक ही अर्थ होता है।

373. **जानकी** – राजा जनक की पुत्री सीतास्वरूपा या सीता से अभेद है जिनका। जानकी अर्थात सीता जी के स्वरूप में। जनक से अर्थात पिता से सम्बन्धित।

374. **जनकात्मजा** – परमपिता ब्रह्मा जी के द्वारा अपने भीतर से उत्पन्न अर्थात प्रकट की गई अर्थात प्रकृति स्वरूपा। पवित्रता पैदा करने वाले की सन्तान अर्थात पवित्र सोच स्वरूपा। सीता जी पवित्र सोच अर्थात पवित्र मन और पवित्र बुद्धि का प्रतीक मानी जाती हैं। जनक का अर्थ है पैदा करने वाला। पवित्रता शब्द स्वयं से जोड़ा गया क्योंकि सीता जी पवित्र सोच की प्रतीक मानी जाती है। राजा जनक के द्वारा स्वयं से उत्पन्न। आत्मना जाता, राजा जनक ने ही हल चलाया था, दूसरे ने नहीं अतः स्वयं के द्वारा उत्पन्न सन्तान यह अर्थ निकला। जनक की पुत्री सीता जी से अभेद है जिनका। जनक में स्वस्वरूप से विराजित। बटुकभैरव के 108 नाम में एक नाम आया है भूधरात्मजा, वहाँ अर्थ दिया गया है भूधर में स्वस्वरूप से विराजित। राजा जनक में स्वरूप से

विराजित। एकाक्षरी कोष में जा का अर्थ वाहिनी दिया गया है अतः विराजित अर्थ आया। सबके जनक हैं ब्रह्मा। अतः जनक का अर्थ ब्रह्मा ले सकते हैं। ब्रह्मा से उत्पन्न प्रकृति स्वरूपा, यह इस नाम का अर्थ हो सकता है। अपने पिता में स्वस्वरूप से विराजित। आत्म अर्थात स्वस्वरूप। एकाक्षरीकोश में जा का अर्थ शैय्या, ज का अर्थ विस्तार दिया गया है। किसी चीज में विस्तार है या शैय्या है अर्थात विराजमान है। जप् धातु में ड प्रत्यय लगाने से ज बनेगा जिसका अर्थ है जप् करने वाला। आत्मा का अर्थ मन भी होता है। जनक का अर्थ ब्रह्म, ब्रह्मा कर सकते हैं क्योंकि इन्हीं से सृष्टि की उत्पत्ति होती है। जनकात्मैः जप्यते इति जनकात्मजा। ब्रह्म में है मन जिनका अर्थात ब्रह्मनिष्ठ साधकों द्वारा जिनको जपा जाता है अर्थात स्तुति की जाती है पूजा की जाती है।

375. **झंझावातप्रमुक्तां** – तूफानों से विशेष रूप से मुक्त अर्थात शान्त। तूफान विपत्ति का प्रतीक अतः अर्थ निकला विपत्ति से रहित। झंझावट से युक्त रहने वाले अंगों वाली। झंझा अर्थात जिसमें आँधी और पानी दोनों हैं।

376. **झोरझङ्कारवासिनी** – विस्तृत ज्ञान के लिए किये जाने वाले शब्द में निवास करने वाली। झ + उरस्, झ का अर्थ ज्ञान और उरस् का अर्थ वक्ष स्थल जो विशालता का प्रतीक हैं। संस्कृत में र और ल में अभेद होता है। इस प्रकार झोर एवं झोल समान होंगे। झ + ओल, उन्दी क्लेदने से ओल बन सकता है, उन्दी का अर्थ है गीला होना इस प्रकार ओल का अर्थ हुआ गीला, झोल का अर्थ हुआ गीला अर्थात सार्थक ज्ञान। हिन्दी शब्दकोष में झोर का एक अर्थ तरल पदार्थ दिया गया है। सार्थक ज्ञान के लिए किये जाने वाले शब्द में निवास करने वाली। कर्णकटु अर्थात भयंकर झंकार की ध्वनि में निवास करने वाली। एकाक्षरी कोष के अनुसार झो का अर्थ है कान और र का अर्थ है तीक्ष्ण इस प्रकार झोर का अर्थ हुआ कर्ण के लिए तीक्ष्ण अर्थात् कर्णकटु।

377. **झङ्कारकारिणी** – पायल पहन कर चलने पर झम् झम् की ध्वनि अर्थात झंकार करने वाली। झंकार ध्वनि को करने वाली अर्थात पैदा करने वाली। झम् झम् के स्थान पर झन् झन् भी लिख सकते हैं।

378. **झञ्झावातरूपा** – झंझावत के स्वरूप में। झंझावत अर्थात जिसमें आँधी और पानी दोनों हों। देवी प्रकृति स्वरूप हैं अतः झंझावात भी उन्हीं का रूप है। कुण्डलिनी शक्ति ऊपर उठने पर या ध्यान की उच्च अवस्था में गर्जन (Thunder) की आवाज सुनाई पड़ती है।

379. **झङ्करी** – झम् ध्वनि करने वाली। हथियारों की आवाज से झम् ध्वनि करने वाली। झं का अर्थ हथियारों की आवाज, धातुओं के टुकड़ों की आवाज, झांझ की आवाज है। झं का अर्थ मैथुन भी है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ कुण्डलिनी शक्ति के रूप में सहस्रार चक्र में शिव से मिलने वाली। वन, भोग का निर्माण करने वाली। झं का अर्थ वन, भोग भी दिया गया है।

380. **ञकाराणुस्वरूपा** – ञकार के सूक्ष्म स्वरूप वाली। ज्ञान, गायन के सूक्ष्म स्वरूप वाली। ञ का अर्थ एकाक्षरी कोष में ज्ञान, गायन दिया गया है।

381. **टवट्टंकारनादिनी** – धनुष की तरह टन् टन् ध्वनि रूपी आवाज करने वाली। टंकार अर्थात टन् टन् की ध्वनि। धनुष की प्रत्यंचा हिलने पर टंकार शब्द होता है। ट का अर्थ है धनुष व का अर्थ है की तरह और ट का अर्थ है ध्वनि। टवट्टम् ऐसा शब्द करने वाली। धनुष की ध्वनि की तरह नाद या शब्द करने वाली। ट वर्ग के टंकार के समान गर्जन करने वाली।

382. **टङ्कारी** – टंकार वाली अर्थात टंकार धनुष वाली अर्थात धनुष धारण करने वाली। टंकारम् अस्या अस्ति इति टंकारः, स्त्रीलिंग में टंकारी, टंकार है जिसका अर्थात टंकार वाली। टंकार धनुष से ही होता है अतः तात्पर्य हुआ धनुष वाली अर्थात धनुष धारण करने वाली। बाण छोड़ने के बाद डोरी में जो ध्वनि सुनाई पड़ती है तथा संगीत के उपकरणों की डोरी खीचने के बाद होने वाली ध्वनि टंकार है। संगीत के वाद्य को बजाने वाली। twanging sounds वाली। टम् ध्वनि करने वाली। भक्तों के पापों को काटने की छेनी स्वरूपा।

383. **टकुवाणी** – अव्यक्त शब्दरूपा वाणी। एकाक्षरी कोष में ट का अर्थ टंकार अर्थात अव्यक्त शब्द बताया गया है। कु का अर्थ है शब्द। व्याख्यात्मक वाणी स्वरूपा। स्पष्ट करने वाली या रहस्य को प्रकट करने वाली स्वरूपा। टंक या टीकृ धातु से टकु शब्द बन सकता है। टीकृ धातु से ही टीका टिप्पणी शब्द बना जिसका अर्थ है व्याख्या करना। टंकते का अर्थ है जहाँ पर रेखांकित करते हैं। टीकृ + डकुच् प्रत्यय लगाने से यह टकु शब्द बना। टि अर्थात ईकृ का लोप हुआ क्योंकि डादि प्रत्यय है। टंक (श्रेष्ठ वाणी) से विभूषित। वाद्य पीटने से निकलने वाली वाणी की तरह वाणी से विभूषित। ट का अर्थ है ताडन या पीटना। कु का अर्थ है वाणी।

384. **ठकाराक्षररूपिणी** – ठकार अक्षर के स्वरूप वाली। एकाक्षरीकोश के अनुसार ठ का अर्थ शिव, शून्य, चन्द्रमण्डल, ध्वनि दिया है। ठकार अक्षर की आकृति या दृश्य रूप वाली। रूप का अर्थ गुण, विशेष्ता, लक्षण भी होता है। ठकार अक्षर से जिन गुणों या लक्षणों का बोध होता है उनसे युक्त। (स्वरूप अर्थात सच्चा रूप या स्वयं का रूप, प्रत्येक अंश समान हो। कृष्णरूपिणी अर्थात कृष्ण के रूप को धारण किये हुए, आवश्यक नहीं कि हर चीज समान हो। कृष्णस्वरूपिणी अर्थात जिनका प्रत्येक अंश, हर चीज कृष्ण के समान है।)

385. **डिण्डिमा** – डिम् डिम् घोष स्वरूपा।

386. **डिम्भा** – बालस्वरूपिणी। डिम्भ का अर्थ होता है बच्चा। छोटे बच्चे की तरह अच्छा लगने वाली। सुन्दर स्वरूप वाली। डिम्भ का अर्थ है छोटा बच्चा और छोटा बच्चा देखने में अच्छा लगता है। डिभि धातु का अर्थ पवित्र करना होता है इस प्रकार डिम्भा का अर्थ हुआ पवित्र करने वाली। डिम्भयति का अर्थ होता है शोधयति, संकोचयति। प्रलयकाले संसारम् संकोचयति। प्रलय काल में संसार को समाप्त करने वाली। डि का अर्थ गौरी भी होता है। डिम् भजते इति डिम्भा अर्थात गौरी का भजन करने वाली या वाले डिम्भा या डिम्भ हुए, उनमें विराजमान।

387. **डिण्डुडिण्डिमवादिनी** – डिण्डु और डिण्डिम ऐसा शब्द करने वाली। डिण्डु और डिण्डिम ये दोनो अव्यक्त शब्द है। डिण्डु (डुग्गी) के द्वारा डिम् डिम् वादन करने वाली अर्थात सूचना देने वाली। एक स्थान पर डिण्डुडिण्डिम का अर्थ अंग्रेजी में small drum लिखा गया है।

388. **ढक्कामयी** – ढोल की ध्वनि से युक्त। डमरू से युक्त। ढक्का बड़ा ढोल या डमरू होता है, शिव जी ने डमरू बजाया तो नृत्य के दौरान पाणिनी के चौदह सूत्र निकले।

389. **ढिलमयी** – पक्षियों के समूह से युक्त या पक्षियों के समूह के कलरव से युक्त। एकाक्षरी कोष में ढि का अर्थ है एक पक्षी और ल का अर्थ है सम्मुच्चय। सूर्य चन्द्रमा से युक्त। एकाक्षरीकोष में ढि का एक अर्थ है पल। ल का अर्थ है आधार। कृष्णपक्ष और शुक्लपक्ष का आधार सूर्य चन्द्रमा होता है। पक्ष का आधार स्वरूपा अर्थात समय का आधार स्वरूपा भी कह सकते हैं। भेजने वाली क्रिया से युक्त अर्थात भेजने वाली। परमधाम में भेजने वाली या वहाँ भेजने वाली जहाँ उपासक इच्छा करता है। ढौकृ गतौ धातु से कोई प्रत्यय लगाने पर ढिल शब्द बन सकता है।

390. **नृत्यशब्दविलासिनी** – नृत्य में होने वाले शब्द से प्रसन्न होने वाली, आनन्दित होने वाली। पैर में पायल आदि पहनने पर शब्द होते हैं। यदि हम शब्द का अर्थ गायन लें तो इस नाम का अर्थ होगा नृत्य और गायन से प्रसन्न होने वाली। नृत्य शब्द में विलास करने वाली अर्थात सुन्दर रूप में विचरण करने वाली या नृत्य करने वाली। विलास का अर्थ प्रसन्नता, हर्ष, प्रफुल्लता, आनन्द, विषयानन्द है। विलासिनी अर्थात आनन्द की अनुभूति करते हुए मन्द मुस्कान लिए गमन करने वाली।

391. **ढक्का** – डमरू स्वरूपा या डमरू से युक्त। शिव जी ने नृत्य करते हुए ढक्का अर्थात डमरू को चौदह

बार बजाया तो पाणिनी के 14 सूत्र निकले। अनाहतनाद स्वरूपा। देवी देवताओं के नाम में प्रयुक्त वाद्य अनाहतनाद के प्रतीक होते हैं।

392. **ढक्केश्वरी** – डमरू की ईश्वरी अर्थात उसे बजाने में श्रेष्ठ। जैसा चाहें वैसा बजाएं। ईश्वर अर्थात श्रेष्ठ।

393. **ढक्काशब्दरूपा** – ढक्का वाद्य (ढोल, डमरू) की ध्वनि स्वरूपा।

394. **ढक्कानादप्रिया** – डमरू या बड़े ढोल की आवाज है प्रिय जिन्हें अर्थात जिन्हें ऐसी आवाज बहुत पसन्द है। प्रीयते इति प्रिया, ऐसी व्युत्पत्ति से प्रिया का अर्थ प्रसन्न होने वाली एवं प्रीणाति इति प्रिया से प्रिया का अर्थ प्रसन्न करने वाली होता है। डमरू की आवाज से प्रसन्न होने वाली।

395. **ढक्कानादसन्तुष्टमानसा** – डमरू की आवाज से जिनका हृदय सन्तुष्ट हो जाता है प्रसन्न हो जाता है।

396. **णकारा** – णकार अर्थात ण अक्षर स्वरूपा। ध्वनि करने वाली। ज्ञान, मोक्ष करने वाली अर्थात देने वाली। एकाक्षरी कोष में ण का अर्थ ध्वनि, ज्ञान, मोक्ष लिखा है। कार का अर्थ करने वाला या कराने वाला है।

397. **णाक्षरमयी** – ण अक्षर से युक्त है।

398. **णाक्षरादिस्वरूपिणी** – अविनाशी ज्ञान है आदि स्वरूप जिनका। ण का अर्थ है ज्ञान और अक्षर का अर्थ है अविनाशी। ण अक्षर से आदि स्वरूप को धारण करने वाली।

399. **त्रिपुरा** – तीन देवताओं अर्थात ब्रह्मा विष्णु महेश से पहले की है जो। तीन पुरों अर्थात तीन लोकों में निवास करने वाली।

400. **त्रिपुरमयी** – त्रिपुर अर्थात शिव से युक्त।

401. **त्रिशक्ति** – तीन शक्तियों अर्थात महकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती के स्वरूप वाली। तीन हैं शक्ति जिनकी अर्थात इन तीन शक्तियों से युक्त।

402. **त्रिगुणात्मिका** – तीन गुणों अर्थात सतो गुण, रजो गुण और तमो गुण के स्वरूप वाली या इन गुणों से युक्त।

403. **तामसी** – तमोगुण से युक्त काली स्वरूपा। तामसी नदी स्वरूपा। तमोगुण के स्वरूप वाली।

404. **त्रिलोकेशी** – तीनों लोकों की ईश्वरी अर्थात उन पर शासन करने वाली। इन लोकों में वही घटित होगा जो देवी चाहेंगी।

405. **त्रिपुरा** – तीन पुरुषाथों अर्थात धर्म, अर्थ, काम को पूरा करने वाली।

406. **त्रयीश्वयरी** – वेदत्रयी अर्थात ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद की स्वामिनी, इनकी ज्ञाता। तीनों वेदों की जननी।

407. **त्रिविद्या** – तीन वेदों के ज्ञान स्वरूपा। लौकिक विद्या, योग विद्या या आत्म विद्या के स्वरूप में। तीन पक्षों अर्थात आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक से सम्बन्धित विद्याओं के स्वरूप वाली। परा विद्या, अपरा विद्या और परापरा विद्या स्वरूपा। तीन प्रकार की विद्याऐं होती है –

1. लौकिक विद्या – जिसे हम स्कूल कालेज में पढ़ते हैं। यह विद्या केवल पेट भरने की विद्या है।
2. योग विद्या – इस लोक और परलोक के रहस्य जानने की विद्या।
3. आत्म विद्या – आत्मा परमात्मा की विद्या। परमात्मा के साक्षात्कार की विद्या, परमात्मा के साथ एकता की विद्या।

लौकिक विद्या शारीरिक सुविधा के उपयोग में आती है। योग विद्या से इस लोक एव परलोक के रहस्य

खुलने लगते हैं एवं आत्म विद्या से परमात्मा के साथ एकता हो जाती है। जीवन में इन तीनों ही विद्याओं की प्राप्ति होनी चाहिए। लौकिक विद्या प्राप्त कर ली किन्तु योग विद्या नहीं तो जीवन में लौकिक चीजें बहुत मिलेंगी किन्तु भीतर शान्ति नहीं होगी। अशान्ति होगी, दुराचार होगा। लौकिक विद्या को पाकर थोड़ा कुछ सीख लिया, बम बनाना सीख गये फिर भी हृदय में अशान्ति की आग जलती रहेगी। योग विद्या एवं ब्रह्म विद्या के अभ्यास से लौकिक विद्या भी आसानी से आ जाती है। तीन प्रकार के वेदों के ज्ञान को जानने वाला त्रिविद्या कहलाता है। तीन प्रकार के वेदों में स्थित ज्ञान त्रिविद्या है।

408. **त्रिरूपा** – तीन रूपों में रहने वाली। इच्छाशक्ति, ज्ञानशक्ति और क्रिया शक्ति के रूप में। ब्रह्मा विष्णु महेश के रूप में। तीनों वेदों का या तीनों शक्तियों का निर्माण करने वाली। रूपयति का अर्थ है निर्माण करना।

409. **त्रिनेत्रा** – तीन नेत्रों वाली। भूतकाल, वर्तमान काल एवं भविष्यकाल को जानने वाली। नेत्र का अर्थ जानने वाला भी होता है। देखने वाल अर्थात जानने वाली। त्रिनेत्र अर्थात भगवान शिव की शक्ति स्वरूपा।

410. **त्रिरूपिणी** – तीन रूपों वाली। महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती के रूप में। प्रकृति रूप में सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण के रूप में। शैवदर्शन के अनुसार आज्ञाचक्र एवं ब्रह्मरन्ध्र के बीच तीन आकाश हैं जो हैं शक्ति, व्यापिनी और समना, उनके स्वरूप वाली।

411. **तारिणी** – संसार सागर से पार कर देने वाली।

412. **तरला** – तरल स्वभाव अर्थात चंचल स्वभाव वाली। करुणामयी, तरल अर्थात आर्द्र अर्थात करूणायुक्त। तर, एवं ला (धारण करने वाली, नाश करने वाली) तरला के अन्य अर्थ किये जा सकते हैं। आर्द्र गुण को धारण करने वाली अर्थात स्नेह या प्रेम से भरी हुई। भरा पूरा, वृक्ष, गति, नाव, अग्नि आदि भी तर के अर्थ हैं।

413. **तारा** – ॐ (तार) की शक्ति स्वरूपा।

414. **तारकारिप्रपूजिता** – कार्तिकेय द्वारा विशेष रूप से या पूर्ण रूप से पूजित।

415. **तारकारिसमाराध्या** – कार्तिकेय द्वारा आराधना करने योग्य।

416. **तारकारिवरप्रदा** – कार्तिकेय को वरदान देने वाली।

417. **तारिकारिप्रसू** – कार्तिकेय को जन्म देने वाली।

418. **तन्वी** – कृशांगी अर्थात् सुन्दर। कृशांगी अर्थात पतली और कोमल, जो सुन्दरता का प्रतीक है।

419. **तरूणी** – नवयुवती स्वरूपा। भाव प्रकाश ग्रन्थ में लिखा हैं कि 16 – 32 वर्ष की अवस्था तरूणावस्था/युवावस्था होती है। तरुणी (गुलाब सेवती) नामक वनौषधि की तरह अर्थात इस वनौषधि की तरह रोग निवारिका अर्थात कष्टों को दूर करने वाली।

420. **तरलप्रभा** – चंचलकान्ति से युक्त।

421. **त्रिरूपा** – तीन गुणों के रूप में। तीन अवस्थाओं अर्थात् ठोस द्रव गैस के रूप में। तीन अवस्थाओं अर्थात् जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति के रूप में। तीनों लोकों का निर्माण करने वाली। रूपयति अर्थात निर्माण करना। शक्ति के तीन रूपों वाली। यह रूप है आधिभौतिक (स्थूल), आधिदैविक (सूक्ष्म), आध्यात्मिक (ज्ञान या कारण)। मोक्ष के तीन उपायों के स्वरूप वाली। मोक्ष पाँच है पर सालोक्य, सामीप्य और सारूप्य को एक वर्ग में माना जाता है। दूसरा वर्ग सायुज्य तथा तृतीय वर्ग कैवल्य।

422. **त्रिपुरगा** – त्रिपुर (तीन लोक) में जाने वाली या उसे प्राप्त करने वाली। त्रिपुर अर्थात् इडा, पिंगला और सुषुम्ना नाड़ी में विचरण करने वाली।

423. **त्रिशूलवरधारिणी** – श्रेष्ठ त्रिशूल को धारण करने वाली। त्रिशूल के कई अर्थ हैं – त्रिविध दुखों के विघातक, शिवः, शान्तः, शाम्बः अर्थात भगवान शंकर के त्रिविध रूप। गुण, कर्म, स्वभाव। त्रिविध नाद ब्रह्म अर्थात पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी। परा, अपरा और परापरा। इच्छा, ज्ञान, क्रिया। शिव के तीन शक्तियाँ अर्थात उत्पादक, पालक और संहारक। ब्रह्म के वाचक ओंकार के तीन अक्षर अर्थात अ, उ और म। शान्ति, वैराग्य और बोध। मूलाधार चक्र को संवेष्टित करने वाली तीन प्रमुख नाड़ियाँ अर्थात इडा, पिंगला और सुषुम्ना। वर का अर्थ श्रेष्ठ, वरदान देने वाली मुद्रा कर सकते हैं। जैसे श्रेष्ठ तीन शक्तियों को धारण करने वाली। तीनों दुखों की विघातक शक्तियों को तथा वरदान मुद्रा को धारण करने वाली।

424. **त्रिशूलिनी** – त्रिशूल से युक्त। निर्गुण और सगुण दोनो रूपों को धारण किये हुए। त्रिशूल में आगे निकले हुए तीन नोक सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण के प्रतीक हैं। ये तीनों नोक पीछे मिलते हैं जहाँ एक गोलाकार चिन्ह होता है। यह गोलाकार चिन्ह शून्य अर्थात निर्गुण ब्रह्म का प्रतीक है। तीन गुण सगुण के प्रतीक हुए। इस प्रकार त्रिशूल सगुण और निर्गुण दोनों ब्रह्म का प्रतीक है। त्रिशूल की आकृति ऊँ की तरह होती है अतः त्रिशूलिनी का अर्थ होगा ऊँ से युक्त अर्थात जिनके मन्त्र में ऊँ भी होता है।

425. **तन्त्रमयी** – तन्त्र विद्या से विभूषित। तन्त्र विद्या स्वरूपा। मयी का अर्थ युक्त भी होता है और स्वरूपा भी होता है।

426. **तन्त्रशास्त्रविशारदा** – तन्त्र शास्त्र में पारंगत।

427. **तन्त्ररूपा** – तन्त्रस्वरूपा। तन्त्र वह शास्त्र है जिसमें मनुष्य की शक्ति, ज्ञान का विस्तार कर उसकी रक्षा की जाती है।

428. **तपोमूर्ति** – तपस्या की मूर्ति स्वरूपा या तपस्या वाली।

429. **तन्त्रमन्त्रस्वरूपिणी** – तन्त्र और मन्त्र के स्वरूप वाली। मन्त्र वे शब्द समूह हैं जिनका बार बार उच्चारण किया जाता है जिससे देवता प्रसन्न हो या कोई सिद्धि प्राप्त हो। तन्त्र हिन्दुओं की साधना पद्धति है जिसमें प्रतीकों और बीजाक्षरों का प्रयोग अभीष्ट सिद्धि के लिए किया जाता है। यह कर्मकाण्डयुक्त पारम्परिक विद्या है। वह शास्त्र जो मनुष्य की शक्ति, ज्ञान बढ़ाकर उसकी रक्षा करता है तन्त्र है। तन् अर्थात विस्तार करना और त्र अर्थात रक्षा करना। कोई भी काबीलियत या तकनीकी तन्त्र है। तन्त्र परम अनुशासन है अर्थात अपने शरीर और मन का उस प्रकार से प्रयोग कर लेना जैसे मनुष्य दूसरे उपकरणों का प्रयोग करता है। तकनीकी जैसे यहीं से बैठे बैठे विदेश में मोबाइल से बात कर लेना। मोबाइल से बात करना भी एक प्रकार का तन्त्र है।

430. **तडित्** – विद्युत के रूप में अर्थात बिजली भी देवी ही है क्योंकि प्रत्येक चीज ऊर्जा या शक्ति की बनी हो और ऊर्जा या शक्ति का अर्थ है देवी। बिजली की तरह शत्रुओं को ताड़ित करने वाली अर्थात आघात करने वाली, टूट पड़ने वाली। बिजली की तरह अत्यन्त गौर वर्ण वाली।

431. **तडिल्लताकारा** – बिजली की तरह कोणीय रेखा वाली। यह नाम कहना चाहता है कि देवी बिजली के समस्त गुणों जैसे चमक, लक्ष्य की समाप्ति (देवी के सन्दर्भ में शत्रुनाश), कड़कना, डराना आदि को रखने वाली। बिजली रेखा की आकृति रखती है पर यह सीधी रेखा नहीं है। लता की तरह शाखाऐं होती है इस रेखा में मूल से निकलकर ऊपर या नीचे जाती है बिजली। कई शाखाऐं होना एवं ऊपर या नीचे जाने के कारण बिजली को लता कह दिया जाता है। तडिल्लता का अर्थ हुआ लता की आकृति वाली बिजली। तडिल्लता या विद्युल्लता का अर्थ केवल बिजली भी होता है। बिजली रूपी लता के आकार वाली। तात्पर्य है बिजली जैसी चमक वाली। बिजली को देखा नही जा सकता क्योंकि उसकी चमक ऐसी है कि आँखें चौंधिया जाएं। देवी स्त्रीलिंग हैं और लता भी स्त्रीलिंग है इसलिए देवी के लिए लता शब्द प्रयोग किया गया है। दुर्गासप्तशती में ध्यान में शब्द आया

है विद्युत्दामसमप्रभाम्। तडित्लता के समान सुन्दर आकृति वाली। तडिल्लता+कारा, इस सन्धि विच्छेद से इस नाम का अर्थ हुआ बिजली को पैदा करने वाली।

432. **तत्वज्ञानप्रदायिनी** – तत्व ज्ञान को प्रदान करने वाली। तत्वज्ञान का अर्थ है ब्रह्मज्ञान या आत्मज्ञान। तत्व ज्ञान किताबी या तार्किकज्ञान नहीं है बल्कि अनुभूतिपरक ज्ञान है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का तत्व है ब्रह्म या आत्मा।

433. **तत्वज्ञानेश्वरी देवी** – तत्व ज्ञान की ईश्वरी देवी। ईश्वरी अर्थात् पैदा करने वाली या देने वाली।

434. **तत्वज्ञानप्रमोदिनी** – तत्व ज्ञान के द्वारा लोगों को आनन्दित करने वाली या आनन्दित होने वाली। मोदते से मोदिनी बनाने पर प्रसन्न/आनन्दित होने वाली अर्थ आएगा और मोदयति से मोदिनी बनाने पर प्रसन्न/आनन्दित करने वाली अर्थ आएगा।

435. **त्रयीमयी** – वेदत्रयी स्वरूपा अर्थात् ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद स्वरूपा। गद्यात्मक, पद्यात्मक और गद्यपद्यात्मक रूप वाले वेद स्वरूपा। भू भुवः स्वः इनको भी त्रयी बोलते हैं।

436. **त्रयीसेव्या** – वेदत्रयी द्वारा सेवनीय अर्थात पूजनीय।

437. **त्र्यक्षरी** – तीन अक्षरों वाले ओम् स्वरूपा। ह, र, ई, अक्षरों से युक्त मायाबीज स्वरूपा।

438. **त्र्यक्षरेश्वरी** – ऊँ स्वरूपा ईश्वरी। ऊँ में अ, उ और म इस प्रकार की तीन ध्वनियाँ होती हैं। भूः भुवः स्वः इन तीन अक्षरों की ईश्वरी या तीन अक्षरों के स्वरूप वाली ईश्वरी। त्र्यक्षरी मन्त्र के स्वरूप वाली ईश्वरी। बालात्रिपुरसुन्दरी का मन्त्र त्र्यक्षरी है एवं अन्य बहुत से मन्त्र भी त्र्यक्षरी है। कहीं कहीं पर जितने स्वर होते हैं उतने अक्षर माने जाते हैं। बाला त्रिपुरसुन्दरी देवी के त्र्यक्षरी मन्त्र में यद्यपि चार अक्षर हैं किन्तु तीन ही स्वर होने के कारण त्र्यक्षरी मन्त्र कहलाया जाता है। तीन अक्षरों की स्वामिनी या ज्ञाता। उन्हें बतलाने वाली या उनके द्वारा सिद्धि प्रदान करने वाली।

439. **तापविध्वंसिनी** – दुखों का विशेष रूप से ध्वंस करने वाली अर्थात नाश करने वाली। तीनों प्रकार के तापों को नष्ट कर देने वाली।

440. **तापसंघनिर्मूलकारिणी** – दुखों के समूह को जड़ से समाप्त करने वाली। तीनों प्रकार के तापों को नष्ट कर देने वाली।

441. **त्रासकर्त्री** – दुष्टों या अधर्मियों को त्रास करने वाली या कष्ट करने वाली।

442. **त्रासहन्त्री** – किसी भी प्रकार के भय को मारने वाली। भक्तों के ताप समूह या कष्टों को जड़ से नष्ट कर देने वाली।

443. **त्रासदात्री** – दैत्यों या असुरों को त्रास या कष्ट देने वाली।

444. **त्रासहा** – किसी भी प्रकार के भय को हटाने वाली। ओहाक् त्यागे से हा शब्दाक्षर का अर्थ त्याग करना अर्थात हटाना हुआ। देवताओं के त्रास या कष्ट को नष्ट कर देने वाली।

445. **तिथीशा** – तिथियों की ईश्वरी अर्थात् तिथियों को बनाने वाली या तिथियों में इनकी पूजा होती है।

446. **तिथिरूपा** – तिथि स्वरूपा।

447. **तिथिस्था** – तिथियों में विराजमान रहने वाली।

448. **तिथिपूजिता** – तिथियों पर पूजित अर्थात् इनकी पूजा होती है।

449. **तिलोत्तमा** – जिनके शरीर का एक – एक कण उत्तम हैं अर्थात् सर्वांग सुन्दरी। तिलोत्तमा अप्सरा की तरह अत्यन्त सुन्दर।

450. **तिलदा** – वैदिक धान्य तिल को देने वाली अर्थात अपने उपासको को तिल से उपलक्षित सभी वैदिक धान्यों को देने वाली। तिल काला होता है जो दोष या बुराई का प्रतीक है। दो अवखण्डने से शब्दाक्षर दा बनाया जा सकता है। इस प्रकार तिलदा का अर्थ हुआ दोषों को समाप्त करने वाली। तिल के समान सूक्ष्म दृष्टि देने वाली। सौन्दर्य को देने वाली।

451. **तिलप्रीता** – तिलों से प्रेम करने वाली।

452. **तिलेश्वरी** – सूक्ष्मभावों की ईश्वरी। तिल सूक्ष्मता एवं स्नेह (तेल) का प्रतीक है। सूक्ष्म भावों को पैदा करने वाली। स्नेह या सौहार्द्र को पैदा करने वाली। तिलों की स्वामिनी। तिल श्रेष्ठता का द्योतक है। श्रेष्ठ वस्तु/श्रेष्ठ स्वरूपा को तिल कह सकते हैं। श्रेष्ठता को वितरित करने वाली अर्थात् अपने भक्तों को देने वाली।

453. **त्रिगुणा** – तीन गुणों की शक्ति स्वरूपा। तीन गुणों के स्वरूप वाली। तीन गुणों से युक्त। सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण से युक्त।

454. **त्रिगुणाकारा** – त्रिगुणों से अर्थात् त्रिगुणों के कारण आकार वाली।

455. **त्रिपुरी** – त्रिपुर अर्थात शिव की पत्नी। परशिव के शरीर के तीन भाग या पुर होते हैं। ये तीन भाग हैं ब्रह्मा, विष्णु और महेश। त्रिपुरसुन्दरी देवी से है अभेद जिनका।

456. **त्रिपुरात्मिका** – त्रिपुरा या त्रिपुरसुन्दरी देवी के स्वरूप वाली या उनके स्वरूप से युक्त। तीनों लोको में सतत गमन करने वाली। तीनों लोकों में व्याप्त। अत सातत्यगमने धातु से आत्मा या आत्मिका का अर्थ निरन्तर गति करने वाली होता है। आप्लृ धातु से आत्मा शब्द बनाने पर व्याप्त अर्थ आता है।

457. **त्रिकूटा** – तीन कूटों वाली या तीन श्रेष्ठ स्थान वाली। कूट का अर्थ है श्रेष्ठ स्थान। जिनके मन्त्र में तीन वर्ण समुदाय है। कूट अर्थात वर्ण समुदाय। मन्त्र में जितने अक्षर हैं उनकों तीन भागों में बाँट दिया गया और प्रत्येक भाग को कूट कह दिया गया। त्रिगुणात्मिका प्रकृति स्वरूपा। लंका त्रिकूट पर्वत पर स्थित है। त्रिकूट पर्वत सत, रज तथा तम नामक त्रिगुणात्मिका प्रकृति को इंगित करता है। तीन गुणों से युक्त शरीर को भी त्रिकूट बोलते हैं।

458. **त्रिकूटाकारा** – त्रिकूट के आकार वाली अर्थात् त्रिकूट पर्वत के स्वरूप वाली। तीन वर्ण समुदाय के मन्त्र के आकार वाली। श्रीविद्या मन्त्र के तीन भाग हैं जो कूट कहलाते हैं। त्रिकुट और त्रिकूट एक ही हैं। तीन चोटियों वाला पर्वत त्रिकूट कहलाता है। कुब्जिका तन्त्र में त्रिकूट नामक पवित्र पर्वत का उल्लेख किया गया है। सूक्ष्म शरीर के ऊपरी छोर पर बारह के अन्त में स्थित, जो सिर के ऊपर बारह अंगुल चौड़ा होता है। मेरूपर्वत के आधार पर स्थित एक पर्वत का नाम भी त्रिकूट है। लंका को भी त्रिकूट पर्वत के ऊपर स्थित माना गया। कोंकण क्षेत्र में भी एक त्रिकूट नाम का पर्वत है।

459. **त्रिकूटाचलमध्यगा** – त्रिकूट पर्वत के मध्य में स्थित रहने वाली। वैष्णो देवी का मन्दिर त्रिकूट पर्वत में है।

460. **त्रिजटा** – तीन जटाओं वाली या सुन्दर जटाओं वाली। तीन सुन्दर का उपलक्षक है। अवचेतन स्तर पर विद्यमान ज्ञानशक्ति। त्रिजटा शब्द त्रि और जटा नामक दो शब्दों के मेल से बना है। त्रि शब्द तॄ धातु का प्रच्छन्न (छिपा हुआ) स्वरूप है जिसका अर्थ है तैरना या बहना। जटा शब्द भी जरा शब्द का प्रच्छन्न स्वरूप है और इसका अर्थ है पुरानी। अतः अवचेतन मन (चित्त) के स्तर पर विद्यमान किसी ऐसी ज्ञानशक्ति को त्रिजटा कहा जा सकता है जो तैरती हुई या बहती हुई अकस्मात चेतन मन के स्तर पर प्रकट हो जाती है और किसी न किसी रूप में उपस्थित हुए विषाद विशेष में मनुष्य की सहायक हो जाती है। उस अवस्था के स्वरूप वाली जिसमें ध्यान, ध्येय और ध्यातृ एक हो जाते हैं। जट् संघाते धातु होती है और संघात का अर्थ है इकट्ठा होना।

461. **त्रिनेत्रा** – तीन नेत्रों वाली। आकाश स्वरूप में जिनके तीन नेत्र हैं – सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि। नेत्र का अर्थ ज्ञान भी होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ तीनों वेदों का ज्ञान रखने वाली। नेत्र का अर्थ प्रकाशक भी होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ गुरु या शास्त्र के रूप में ज्ञान, भक्ति और वैराग्य इन तीनों भगवत्प्राप्ति के मार्ग का प्रकाशन करने वाली, बतलाने वाली।

462. **त्रिनेत्रवरसुन्दरी** – तीन श्रेष्ठ नेत्रों से सुन्दर लगने वाली। वर का अर्थ है श्रेष्ठ।

463. **तृतीया** – तृतीय स्वरूप वाली। महाविद्याओं में तीसरे क्रम में षोडशी देवी हैं, उन षोडशी देवी से अभेद है जिनका।

464. **त्रिवर्षा** – तीन वर्ष वाली अर्थात् तीन वर्ष की कन्या के स्वरूप में। दस वर्ष तक की कन्याएँ पूजनीय हैं।

465. **त्रिविधा** – तीन प्रकारों वाली। कायिक, वाचिक और मानसिक या तीन प्रकार के व्रतों के स्वरूप में या तीन प्रकार के पुण्यों के स्वरूप में या तीन प्रकार के स्नान के स्वरूप में या तीन प्रकार के दान के रूप में जैसे – सात्विक दान, राजसी दान, तामसिक दान के रूप में। तीन गुणों अर्थात् सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण के रूप में। जिसके तीन अंग है। तीन प्रकार की विधाओं से युक्त।

466. **त्रिमतेश्वरी** – तीन मतों की ईश्वरी। तीन सिद्धान्त अर्थात द्वैतवाद, अद्वैतवाद और विशिष्ट अद्वैतवाद को जन्म देने वाली। आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक इन तीन मतों को जन्म देने वाली।

467. **त्रिकोणस्था** – यन्त्र के त्रिकोण के मध्य में स्थित देने वाली। शिव शक्ति के मिलन से नाद होता है। नाद घनीभूत होकर बिन्दु होता है जो संसार को धारण किये हुए बीज की तरह है। इस बिन्दु का पहला विस्तार त्रिकोण होता है। कारण कार्य में रहता है अतः देवी भी इस त्रिकोण में रहती हैं। द्यु, अंतरिक्ष और भू इसे त्रिकोण कहते हैं क्योंकि सारा विश्व इस त्रिकोण में है, इस त्रिकोण में विराजमान। मन, बुद्धि और हृदय शरीर का त्रिकोण है, शरीर के इस त्रिकोण में विराजमान।

468. **त्रिकोणेशी** – यन्त्र के त्रिकोण अर्थात् त्रिभुज की ईश्वरी अर्थात् इनकी उपासना वहाँ पर होती है। त्रिकोण को प्रेरित करने वाली अर्थात श्री यन्त्र के त्रिकोण को साधक तक पहुँचाने वाली अर्थात साधक के शरीर से अद्वैत स्थापित करने वाली। श्री यन्त्र के त्रिकोण की पूजा के लिए साधक को प्रेरित करने वाली। ईश धातु का अर्थ शासन करना, प्रेरित करना होता है।

469. **त्रिकोणयन्त्रमध्यगा** – त्रिकोणयन्त्र के मध्य में निवास करने वाली।

470. **त्रिसन्ध्या** – तीन सन्ध्याओं के स्वरूप वाली या तीन सन्ध्याओं से युक्त। तीन पूजा करने के काल के स्वरूप वाली। समय या काल भी देवी का रूप हैं। प्रातः काल मध्याह्न काल और सायंकाल।

471. **त्रिसन्ध्याार्च्या** – तीन सन्ध्याकाल में पूजा करने योग्य।

472. **त्रिपदा** – तीन चरणों वाले गायत्री मन्त्र से अभेद है जिनका। तीन प्रमुख स्थानों से अर्थात तीन पीठों से युक्त। तीनों अवस्थाओं में रहने वाली चैतन्य स्वरूपा अर्थात् आत्मा स्वरूपा। तीन अवस्थायें है जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति। (विष्णु सहस्रनाम में भगवान विष्णु के त्रिपद नाम की व्याख्या एक टीकाकार द्वारा अग्रलिखित की गई है– त्रीणि पदानि अनन्तासनवैकुण्ठनारायणपुराण्यस्य। अकारोकारमकारा वा। तिस्रो व्याहृतयो वा नारायणाष्टाक्षरगतानि वा त्रीणि पदानि। त्रिपदया गायत्र्या चायमेव प्रतिपाद्यः। त्रयो वेद वा पदान्यवगतिस्थानान्यस्य। त्रिभिर्वेदैः त्रिभिः सात्विरराजसतामसैः त्रिधा पद्यते। त्रिषु लोकेषु पद्यते। त्रिविक्रमत्वाच्चायं त्रिपदः। जिनके रहने के तीन स्थान हैं। शेषनाग, बैकुण्ठ एवं नारायणपुर अर्थात विष्णुपुर। भगवान सर्वव्यापक हैं पर इन तीन स्थानों में प्रकट रूप से रहते हैं। ऊँ के तीन अक्षर अर्थात अ, उ और म में रहने वाले। तीन व्याहृतियों भू, भुवः, स्वः में रहते हैं। वि एवं अ उपसर्ग सहित हृ का अर्थ कहना या बोलना

होता है। विशेष रूप से ब्रह्मा जी के मुख से निकले थे या बोले गये थे। भगवान नारायण के अष्टाक्षर मन्त्र में विराजमान। सम्भवतः यह मन्त्र तीन भागों में विभाजित होगा। तीन पदों वाली अर्थात गायत्री के द्वारा प्रतिपाद्य अर्थात जिनके बारे में बताया जाता है। त्रिपदा का एक अर्थ गायत्री भी होता है। तीन वेद इनके जानने के स्थान हैं। सात्विक, राजसिक और तामसिक इन तीन प्रकार से प्राप्त किये जाते हैं अर्थात उपासना की इन तीन प्रकार की विधियों से प्राप्त किये जाते हैं। गति का अर्थ प्राप्त करना, जानना भी होता है। तीनों लोकों में विचरण करते हैं या स्थित हैं। तीन पदों का प्रयोग करने से या तीन पदों से चलने से भी इन्हें त्रिपदा कहा जाता है जैसा कि वामन अवतार में इन्होंने किया था।)। पद का अर्थ स्थान, कार्य (उपक्रम) है। सत्–चित्–आनन्द, "सत्यं–शिवं–सुन्दर, सत–रज–तम, ईश्वर–जीव–प्रकृति, भूलोक–भुवलोक –स्वःलोक का विस्तार त्रिपदा है। पदार्थों में ठोस, द्रव, वाष्प, प्राणियों में जलचर, थलचर, नभचर, सृष्टिक्रम के उत्पादन–अभिवर्द्धन–परिवर्तन गायत्री के तीन उपक्रम है। सर्दी, गर्मी, वर्षा की ऋतुएँ, दिन–रात्रि और संध्याकाल, प्राणग्नि–कालाग्नि और योगाग्नि के रूप में त्रिपदा की ऊर्जा व्याप्त है। ॐ के अ उ और म् मानों जिसके तीन चरण है। भूः–भुवः–स्वः मानो जिसके तीन पद या चरण हैं। ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग के अन्तर्गत संसार की समस्त विचार सम्पदा और भाव विविधता त्रिपदा गायत्री की परिधि में सन्निहित है। पद का अर्थ है स्थान, शब्द, कर्म। उपरोक्त नाम कहीं पर स्थान के लिए हैं, कहीं पर शब्द के लिए हैं एवं कहीं पर कर्म के लिए हैं। पद रखना अर्थात कदम रखना अर्थात यत्न करना अर्थात कर्म करना। तीन स्थानों में रहने वाली, तीन प्रमुख कर्म करने वाली, तीन शब्दों से बोली जाने वाली।

473. **त्रिपदास्पदा** – तीनों लोकों में घर है जिनका। पद अर्थात स्थान, यहाँ पर लोक ले लिया गया। आस्पद अर्थात घर। तीनों लोकों में रहने वाली। भगवान विष्णु ने अपने तीन पद से तीनों लोकों का नाप लिया था। गायत्री मन्त्र में शक्ति या चैतन्य के रूप में रहने वाली। भूः, भुवः, स्वः इन तीनों व्याहृतियों में चैतन्य या शक्ति के रूप में रहने वाली। ब्रह्मा जी के मुख से सर्वप्रथम ॐ एवं अथ शब्द निकला। इसके बाद तीनों व्याहृतियाँ निकलीं। तीन पदों के स्थानों का आश्रय लेने वाली।

474. **स्थानस्थिता** – श्रेष्ठ स्थान अर्थात् तीर्थ या मन्दिर में स्थित रहने वाली। पवित्र जगहों पर रहने वाली।

475. **स्थलस्था** – श्रेष्ठ स्थल जैसे गंगा तट आदि में स्थित रहने वाली।

476. **धन्यस्थलनिवासिनी** – बेहतर स्थान या महनीय स्थान या अच्छे स्थान में रहने वाली। धनी जगहों में निवास करने वाली। जो जगह भक्ति के धन से या साधना के धन से या तपस्या के धन युक्त है, उन जगहों पर रहने वाली। धन्य का शाब्दिक अर्थ होता है धनाय हितः अर्थात धन के लिए हितकारी। अर्थान्तर में धन्य शब्द दूसरे अर्थों में प्रयोग होने लगा। आप धन्य हैं अर्थात् औरों से अधिक बेहतर हैं (better) हैं। श्रेष्ठ स्थानों पर निवास करने वाली।

477. **थकाराक्षररूपा** – थकार अक्षर के रूप वाली। एकाक्षरीकोश के अनुसार थ का अर्थ है भय से रक्षा करने वाली, गणेश, कृष्ण, शंकर, भूधर (पर्वत)।

478. **स्थूलरूपा** – स्थूल स्वरूप वाली अर्थात् जिन्हें नेत्र देख सकते हैं एवं अन्य इन्द्रियाँ अनुभव कर सकती हैं।

479. **स्थूलहस्ता** – विशाल या ताकतवर हाथ वाली। स्थूल का अर्थ विशाल , मोटा या मजबूत होता है।

480. **स्थूला** – विशाल आकार वाली। फूले हुए अंगों वाली। स्थूल आकृति वाली। बलवान या पुष्ट। स्थूल का अर्थ है मोटा या घना। जो स्पष्ट हो। मोटा, भारी, मांसल, विशाल, पुष्ट, बलवान ये स्थूल के पर्यायवाची हैं। जिन पदार्थों का इन्द्रियाँ द्वारा ग्रहण किया जा सके वे स्थूल हैं।

481. **स्थैर्यरूपप्रकाशिनी** – स्थिरता के स्वरूप को प्रकाशित करने वाली। वस्तुओं में उसके स्थिरभाव को या

स्थिर रूप को दिखाने वाली। प्रकाशिनी का अर्थ है लोगों के समक्ष दिखाना, व्यक्त करना। पृथ्वी चल रही है पर हमें स्थिर दिखाई पड़ती है, पेड़ – पौधे प्रतिक्षण बढ़ रहे हैं पर हमें उनकी वृद्धि नहीं देती है, हमारा शरीर प्रतिक्षण परिवर्तित हो रहा है पर हमें नहीं दिखाई पड़ रहा है। अपने दृढ़ (मजबूत) या ठोस/धीरता युक्त रूप को लोगों के समक्ष दिखाने वाली। धैर्यवान रूप को लोगों के समक्ष दिखाने वाली। स्थिरता के रूप को प्रकाशित करने वाली अर्थात देने वाली। अपने firm mind वाले रूप को प्रकाशित करने वाली। स्थैर्य का अर्थ है firmness of mind. जे काम शुरू कर दिया उसमें स्थिर रहती हैं अर्थात करती ही करती हैं चाहे अनुकूल परिणाम आये या प्रतिकूल परिणाम आये।

482. **दुर्गा** – कष्टयुक्त साधनों या प्रयत्नों से प्राप्त की जाने वाली। दुखेन गम्यते इति दुर्गा। तपस्या, शुद्ध भक्ति या अष्टांगयोग आदि कठिन साधनों से प्राप्त की जा सकती हैं। दुर्ग + आ, दुर्ग का अर्थ है किले के समान विपत्ति अर्थात् अत्यन्त कठिन विपत्ति जिससे पार पाना अब लगभग असम्भव है। आ का अर्थ देना भी होता है एवं नाश करना भी होता है। अत्यन्त कठिन विपत्ति का नाश करने वाली। जो शरीर रूपी दुर्ग में आत्मा के रूप में स्थित है, यह भी दुर्गा शब्द का अर्थ है।

483. **दुर्गार्तिहन्त्री** – अत्यन्त कठिन पीड़ाओं या कष्टों को नष्ट कर देने वाली। आर्ति अर्थात ऐसा कष्ट जिससे व्यक्ति व्यथिथ हो जाता है और उससे तुरन्त छुटकारा चाहता है, एक पल का विलम्ब भी बहुत बड़ा अनिष्ट कर सकता है।

484. **दुर्गबन्धविमोचिनी** – कठिन बन्धनों से या अत्यन्त कठिन सांसारिक बन्धनों से छुटकारा दिलाने वाली। सांसारिक बन्धनों से छुटकारा आसान काम नहीं। शत्रुओं ने पकड़ लिया या निरपराध होने के बाद भी जेल/कारावास में डाल दिया यह भी दुर्ग बन्धन है।

485. **देवी** – प्रकाशशील अर्थात् इनका स्वरूप प्रकाश से बना है और शरीर से प्रकाश निकल रहा है। क्रीड़ा करने वाली। दिव् धातु का अर्थ प्रकाश करना, क्रीड़ा करना है। सृष्टि करना, पालन करना और संहार करना देवी की क्रीड़ा है। अपने को माया के पर्दे में छुपाकर भक्तों के साथ आँख मिचौली करना यह भी देवी की क्रीड़ा है।

486. **दानवसंहन्त्री** – दानवों का संहार कर देने वाली।

487. **दनुजेशनिषूदिनी** – दैत्यराजों का विनाश कर देने वाली।

488. **दारापत्यप्रदा नित्या** – स्त्री – पुत्रों को प्रदान करने वाली और सदैव रहने वाली।

489. **शङ्करार्धाङ्गधारिणी** – शंकर के अर्धांग को धारण करने वाली अर्थात पार्वती स्वरूपा।

490. **दिव्याङ्हा** – दुष्टों या अहंकारी के अत्यन्त सुन्दर अंग का नाश करने वाली अर्थात इनको बिगाड़ देने वाली। दिव्य का अर्थ है स्वर्ग में होने वाला या रहने वाला, सुन्दर, मनोहर। मनुष्य में भी यदि कोई सुन्दर, श्रेष्ठ, गुणवान हो तो उसे भी दिव्य कह देते हैं। दुष्टों के देदीप्यमान अंगों का नाश करने वाली। हन्ति से हा शब्दाक्षर बना जिसका अर्थ है नाश करने वाली। आजकल दिव्यांग शब्द विकलांग के लिए प्रयोग होता है। अंगों की विकलता का नाश करने वाली। यह अर्थ निकला।

491. **देवमाता** – देवताओं की माता स्वरूपा अर्थात् उनका पालन या रक्षण करने वाली।

492. **देवदुष्टविनाशिनी** – देवताओं से दुष्टता रखने वाले का विनाश करने वाली। जीत की इच्छा रखने वाले दुष्टों का विनाश करने वाली। दिव् धातु का एक अर्थ विजिगीषा होता है जिसका अर्थ है जीत की इच्छा रखना। असाधारण शक्ति वाले बड़े – बड़े श्रेष्ठ दैत्यों का विनाश करने वाली। यहाँ देव शब्द असाधारण शक्ति के अर्थ में ले लिया गया है।

493. **दीनदुखहरा** – दीनों के दुखों को हर लेने वाली। दीन अर्थात दरिद्र, गरीब, दुखों से सताये हुए।

494. **दीनतापनिर्मूलकारिणी** – दीन – दुखियों के दुखों को निर्मूल कर देने वाली अर्थात जड़ से रहित कर देने वाली अर्थात पूर्णतः समाप्त कर देने वाली।

495. **दीनमाता** – दीनों की माता अर्थात उनका पालन – पोषण करने वाली। दीन अर्थात दरिद्र, गरीब, दुखों से सताये हुए।

496. **दीनसेव्या** – जो अहंकार से दीन है उनके द्वारा सेवा करने योग्य अर्थात पूजा करने योग्य। दीन पुरुषों/भक्तों द्वारा सेवा करने योग्य। दीन अर्थात तन, मन, धन सब तेरा इस भाव वाले।

497. **दीनदम्भविनाशिनी** – जो आचरण से पतित हैं, आध्यात्मिक ज्ञान से हीन हैं, सद्गुणों से दीन है उनके अहंकार का पूर्ण नाश करने वाली। दीनता और दम्भ का नाश करने वाली।

498. **दनुजध्वंसिनी** – दैत्यों का ध्वंस या टुकड़े टुकड़े कर देने वाली। घ्वंस में कोई वस्तु इस प्रकार टुकड़े टूकड़े हो जाती है कि अब वे कोई काम करने लायक नहीं होतीं। नाश में चीजें अदृश्य हो जाती हैं क्योंकि नश् अदर्शने धातु होती है।

499. **देवी** – जिनकी स्तुति की जाती है। दिव् धातु का एक अर्थ स्तुति करना भी होता है। दिव्य (देवलोक/स्वर्गलोक में होने वाले अर्थात श्रेष्ठ) गुणों जैसे सत्य, ईमानदारी, करुणा, दान, दया आदि से युक्त।

500. **देवकी** – देवताओं को शक्तिसम्पन्न करने वाली। देवान् शक्तिसम्पन्नान् करोति इति देवकी। कृष्ण की माता देवकी स्वरूपा। दिव्य स्वरूप वाली। देव में बिना अर्थ बदले कन् प्रत्यय लगाने से देवक बनता है जो स्त्रीलिंग में देवकी बन गया। देव का अर्थ है दिव्य स्वरूप अर्थात् देवकी का अर्थ भी दिव्य स्वरूप वाला। देवक राजा की कन्या स्वरूपा या कश्यप ऋषि की पत्नी स्वरूपा। दिव्य अर्थात अति सुन्दर, मनोहर, स्वर्गलोक में होने वाला। देवताओं को सुखी बनाने वाली। क का एक अर्थ सुख होता है।

501. **देववल्लभा** – देवताओं को अत्यन्त प्रिय लगने वाली। वल्लभ का अर्थ है अत्यन्त प्रिय।

502. **दानवारिप्रिया** – देवताओं की अतिशय प्रिया अर्थात् उन्हें अच्छी लगती हैं।

503. **दीर्घा** – विशाल स्वरूप वाली। विशाल आकार वाली स्थूलता में भी बड़ी है।

504. **दानवारिप्रपूजिता** – देवताओं के द्वारा अच्छी तरह से पूजी गई अर्थात पूजी जाने वाली। कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र से कृत्य प्रत्यय दूसरे कारकों का भी अर्थ देते हैं। पूजित का अर्थ हुआ जिनकी पूजा की गई किन्तु इस सूत्र से जिनकी पूजा की जाती है, यह अर्थ भी होगा।

505. **दीर्घस्वरा** – खींचकर उच्चारण किये गये स्वरों वाली। दो मात्रा वाले स्वरों वाली। आजकल की भाषा में बात करे तो दो सेकेण्ड का समय जिस स्वर के उच्चारण में लगे वह दीर्घ स्वर है। तेज स्वर वाली अर्थात् तेजी से हुंकार भरने वाली।

506. **दीर्घतन्तु** – लम्बी परम्परा स्वरूपा। अनादिकाल से चला आ रहा है अस्तित्व जिनका अर्थात आदि अन्त का पता नहीं है। दीर्घ तन्तु का शाब्दिक अर्थ है लम्बा धागा, जिसका तात्पर्य हुआ लम्बी परम्परा। विशाल शरीर वाली।

507. **दीर्घदुर्गतिनाशिनी** – बहुत बड़ी दुर्गति का विनाश कर देने वाली। अत्यन्त दरिद्रता, गलत संगति, निम्न योनि में जाना दुर्गति है।

508. **दीर्घनेत्रा** – लम्बे नेत्रों वाली अर्थात सुन्दरी। जिसके नेत्र लम्बे होते हैं वह सुन्दरी मानी जाती है। दीर्घ

अर्थात लम्बा और विशाल (अर्थात चौड़ा)। नेत्र शब्द का अर्थ ले जाने वाला, ज्ञानी या ज्ञान भी होता है। देखना अर्थात ज्ञान करना। नेत्र देखने वाले होते हैं अर्थात ज्ञानी होते हैं। विशाल जानने वाली अर्थात सर्वज्ञ।

509. **दीर्घचक्षुष्** – लम्बा देखती हैं अर्थात लम्बा सोचती हैं अर्थात परम विदुषी। लम्बा देखती हैं अर्थात भूत, भविष्य, वर्तमान सब देख लेती है।

510. **दीर्घकेशी** – बड़े – बड़े बालों वाली, सुन्दर बड़े – बड़े घुंघराले बालों वाली।

511. **दिगम्बरी** – दिशाएं ही हैं वस्त्र जिनके अर्थात सभी ओर व्याप्त। दिशाओं की रक्षा करने वाली। वस्त्र शरीर की रक्षा करते हैं अतः वस्त्र का अर्थ रक्षक भी है।

512. **दिगम्बरप्रिया** – शिवप्रिया। भगवान शिव को दिगम्बर कहते हैं।

513. **दान्ता** – इंद्रियों पर दमन करने वाली अर्थात इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाली। दान्त नामक अप्सरा की तरह अत्यन्त सुन्दर।

514. **दिगम्बरस्वरूपिणी** – महादेव के स्वरूप को धारण किए हुए। जिसका प्रत्येक अंश शिव के समान है। माया रूपी वस्त्र से रहित स्वरूप वाली। दिगम्बर का स्वरूप रखने वाली। शिव के स्वभाव को धारण करने वाली। स्वरूप का अर्थ है स्वभाव और स्वभाव का तात्पर्य होता है किसी वस्तु में रहने वाला आवश्यक गुण जो उससे अलग नहीं हो सकता।

515. **दुःखहीना** – दुःखों से रहित। आधिदैविक, आधिदैहिक, आधिभौतिक इन सभी प्रकार के दुःखों से रहित।

516. **दुःखहरा** – दुःखों को हर लेने वाली। आध्यात्मिक, आधिभौतिक एवं आधिदैविक तीन प्रकार के दुःख होते हैं।

517. **दुःखसागरतारिणी** – दुःख रूपी सागर से पार करा देने वाली।

518. **दुःखदारिद्र्यशमनी** – दुःख और दरिद्रता को शान्त कर देने वाली। अष्ट लक्ष्मी का विपरीत अष्ट दरिद्रता है।

519. **दुःखदारिद्र्यकारिणी** – राक्षसों और अभक्तों को दुःख और दरिद्रता से युक्त कर देने वाली।

520. **दुःखदा** – दुष्ट और दैत्यों को दुःख देने वाली।

521. **दुःसहा** – दुष्टों/अभक्तों/राक्षसों के लिए असहनशील अर्थात ये देवी के क्रोध को सहन नहीं कर सकते हैं या देवी का तेज इतना ज्यादा है कि सहने लायक नहीं है।

522. **दुष्टखण्डनैकस्वरूपिणी** – दुष्टों को खण्डित करने का है एकमात्र स्वरूप जिनका।

523. **देववामा** – देवताओं में सबसे सुन्दर। वमति उद्गिरति सौन्दर्यम् इति वामा। जो सौन्दर्य को निकालती है अर्थात अति सुन्दर, जो झलकती भी है। यदि देव का अर्थ महादेव लें तो अर्थ होगा महादेव की पत्नी।

524. **देवसेव्या** – देवताओं के द्वारा सेवा या पूजन करने योग्य।

525. **देवशक्तिप्रदायिनी** – देवताओं को शक्ति प्रदान करने वाली।

526. **दामिनी** – बिजली की तरह अत्यन्त चमकने वाली। अतिशय देदीप्यमान या चमकने वाली। बिजली की तरह शत्रुओं पर टूट पड़ने वाली। लक्ष्य पर टूट पड़ना बिजली का एक गुण है।

527. **दामिनीप्रीता** – बिजली की चमक के समान प्रसन्नता वाली। बिजली की आवाज सुनकर प्रसन्न होने वाली। बिजली की तरह प्रसन्न अर्थात उज्ज्वल। पुष्प विकसित होते हैं तो कहा जाता है कि वो प्रसन्न हैं। बिजली को भी जो अतिशय प्रिय हैं। प्रीत अर्थात हर्षयुक्त, प्रसन्न।

528. **दामिनीशतसुन्दरी** – सैकड़ों बिजलियें की चमक के समान सन्दर। सैकड़ों बिजलियों के समूह मे भी, उनसे अधिक सुन्दर लगने वाली।

529. **दामिनीशतसंसेव्या** – बिजली की चमक के समान सुन्दर सैकड़ों कन्याओं द्वारा भलीभांति सेवा करने योग्य, पूजा करने योग्य। सैकड़ों दामिनियों अर्थात बिजलियों द्वारा सेवा करने योग्य।

530. **दामिनीदामभूषिता** – बिजली की तरह उज्जवल मालाओं से आभूषित। विद्युत समूह की कान्ति से विभूषित।

531. **देवताभावसन्तुष्टा** – जो देवता भाव रखते उनसे सन्तुष्ट रहने वाली। देवता भाव का तात्पर्य दूसरों को देने के भाव से भी है। देवता का भाव अर्थात देवताओं के लिए आहूतियाँ देना। देवता के लिए क्रिया करना अर्थात हवन करना देवता भाव है। भाव अर्थात क्रिया। देवताओं के भावों से सन्तुष्ट रहने वाली।

532. **देवताशतमध्यगा** – सैकड़ों देवताओं के मध्य में जाने वाली अर्थात रहने वाली।

533. **दयार्द्रा** – दया से आर्द्र हृदय वाली। जल से सूखे वृक्ष हरे भरे हो जाते हैं और दया के कारण व्यक्ति किसी के मुर्झाये चेहरे को हरा भरा अर्थात प्रसन्न करता है अतः दया को आर्द्र माना गया है। दूसरे के दुख को देखकर उसे दूर करने की इच्छा जिस भाव के कारण होती है, वह भाव दया है।

534. **दयारूपा** – दया स्वरूपा। दूसरे की अनुभूतियों की सह अनुभूति दया है। दया को दिखाने वाली। दयाम् रूपयति इति दयारूपा। दया गुण का निर्माण करने वाली। रूपयति का अर्थ देखना, दिखाना, निर्माण करना होता है।

535. **दया** – दया स्वरूपा। दूसरों के दुःख को दूर करने की इच्छा दया है।

536. **दानपरायणा** – दान में लगी रहने वाली। देवी सिर्फ देती हैं।

537. **दयाशीला** – दया के स्वभाव वाली।

538. **दयासारा** – दया है सार (मूल स्वभाव) जिसका। दया की शक्ति स्वरूपा। वह परमावश्यक तत्व जिसके कारण दया दया है अर्थात दया का अस्तित्व है। दया की सार स्वरूपा। वह आन्तिरक परमावश्यक तत्व जिसके कारण दया दया है और दया का अस्तित्व है।

539. **दयासागरसंस्थिता** – दया के समुद्र में स्थित होने वाली।

540. **दशविद्यात्मिका** – दश महाविद्याओं में आत्मा रूप से स्थित। अतति सततगमने धातु से आत्मा शब्द बना। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ दश महाविद्याओं में निरन्तर गति करने वाली अर्थात दश महाविद्याओं में ये निरन्तर स्पन्दित हो रही है। दश महाविद्या के स्वरूप वाली। आत्मिका का अर्थ है स्वरूपा। दस महाविद्याओं में व्याप्त। आत्मा का एक अर्थ व्याप्त भी होता है।

541. **देवी** – जो आनन्दित रहती हैं। दिव् धातु का एक अर्थ मोद भी है।

542. **दशविद्यास्वरूपिणी** – दश महाविद्या के स्वरूप वाली। काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, त्रिपुर भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी और कमला ये दस महाविद्याएं हैं।

543. **धरणी** – पृथ्वी स्वरूपा।

544. **धनदा** – धन को प्रदान करने वाली।

545. **धात्री** – सबका भरण पोषण करने वाली या सबको धारण करने वाली।

546. **धन्या** – धन्यवाद के योग्य। सभी लोगों के द्वारा जिनके लिए धन्य – धन्य अर्थात तुम्हारी जय हो ऐसे शब्द निकलते हैं। सभी प्रकार के धन से युक्त।

547. **धन्यपरा** – धनी लोगों से जुड़ी हुई अर्थात उनके पास रहती हैं। धन का आधिक्य हो, विद्या का आधिक्य

हो या धन कहलाने वाले किसी भी पदार्थ का आधिक्य हो उनसे जुड़ी हुई। जब कृपा करती है अर्थात व्यक्ति से जुड़ती हैं तभी व्यक्ति धनी होता है। धन्य का अर्थ है धन से युक्त अर्थात धनी। धन्य उसे भी कहते हैं जो पुण्य कर्म करता है। परा का अर्थ है उत्तम या श्रेष्ठ। इस प्रकार धन्यपरा का अर्थ हुआ पुण्यकर्म करने वालों में उत्तम या श्रेष्ठ। आधिक्य के साथ जुड़ी हुई हैं। आधिक्य जो महनीय या पूजनीय हो धन्य है। जब कोई व्यक्ति अन्य लोगों से अधिक अच्छा होता है गुणों या शक्ति आदि में तो उसे धन्य कहते हैं। धन्य अर्थात दूसरों से बेहतर। सभी के द्वारा धन्य कही जाने वाली या धन्य के गुणों को धारण करने वाली।

548. **शिवा** – परम शान्त स्वरूपा। शिव की धर्मपत्नी पार्वती से अभेद है जिनका। वश् कान्तौ धातु से वशि शब्द बनता है जो वर्णों को उल्टापुल्टा करने पर शिव बन जाता है। कान्ति का एक अर्थ इच्छा होता है। इस प्रकार शिवा का अर्थ हुआ शिव की इच्छा स्वरूपा। भक्तों का कल्याए हो, ऐसी इच्छा स्वरूपा। शिव या शिवा का अर्थ मोक्ष भी होता है अतः शिवा का अर्थ हुआ मोक्ष देने वाली। शिव (मोक्ष) + आ, आ का अर्थ है देना। शिव का अर्थ कल्याण भी है। शिव +आ, कल्याण देने वाली अर्थात कल्याण करने वाली।

549. **धर्मरूपा** – धर्म के स्वरूप वाली। क्या करना चाहिए क्या नहीं करना चाहिए, उसको बताने वाली। वे गुण जो समाज को बांधे रखते हैं, धर्म है। शास्त्रों में विहित आचरण धर्म है। मनु द्वारा बताये गए दस जीवन मूल्य जो धृति, क्षमा, दम, अस्तेय आदि हैं, धर्म हैं।

550. **धनिष्ठा** – धनिष्ठा नक्षत्र से युक्त। धन में स्थित।

551. **धेया** – पीने योग्य दूध वाली अर्थात जिनका दूध पीने योग्य है अर्थात प्राणियों को पुष्टिकारक पदार्थ देने वाली। धेय का अर्थ है जो पीने योग्य हो। स्तनपान करने योग्य अर्थात प्राणी जिनका स्तनपान करते हैं। स्तनपान करने योग्य माता। तात्पर्य हुआ प्राणियों का पोषण करने वाली। धेट् पाने धातु से धेय शब्द बना। ध्यान करने योग्य। धा धारणे धातु से व्याकरण के नियमों से धेय शब्द बन सकता है जिसका अर्थ है धारण करने योग्य अर्थात ध्यान करने योग्य।

552. **धीरगोचरा** – धैर्य गुण वाले साधकों को दिखलाई देने वाली। विद्वान/तपस्वियों को दिखलाई देने वाली या दर्शन देने वाली। धी अर्थात बुद्धि, र मतुप् अर्थ में प्रयुक्त हो सकता है। इस प्रकार धीर का अर्थ बुद्धि से युक्त अर्थात विद्वान हुआ।

553. **धर्मराजेश्वरी** – धर्मराज की ईश्वरी अर्थात धर्मराज (यमराज या युधिष्ठिर) की उपासनीया या प्रेरणा देने वाली।

554. **धर्मकर्मरूपा** – वेद में बताए गए कर्मकाण्ड, कर्तव्य, अकर्तव्य, विधि निषेध कर्म रूपा। धर्म कर्म के स्वरूप वाली। जो कर्म नैतिक रूप से उत्कृष्ट, भला, नेक हो वह धर्मकर्म है।

555. **धनेश्वरी** – सभी प्रकार के धनों की ईश्वरी अर्थात अपने उपासकों को देने वाली। गोधन, गजधन, वाजिधन, रतनधन, सन्तोषधन आदि सात प्रकार के धनों को देने वाली। धन की स्वामिनी।

556. **धनुर्विद्या** – धनुर्विद्या स्वरूपा। उस वेद के स्वरूप वाली जिसमें धनुर्विद्या है।

557. **धनुर्गम्या** – युद्ध भूमि में धनुष के द्वारा पहचानी जाने वाली अर्थात धनुष को धारण करने वाली। इनके हाथ में धनुष देखकर जान लिया जाता है कि ये देवी ही हैं। धनुष के द्वारा जानने योग्य अर्थात पहचानने योग्य। धनुष तो उपलक्षण है सभी आयुधों का अर्थात सभी आयुधों से सजी हुई वीरांगना के रूप में पहचानने योग्य। एक बार तुलसी दास जी जब भगवान श्री कृष्ण के समक्ष थे तब उन्होने अपना सिर नहीं झुकाया और कहा यह सिर तो धनुषधारी भगवान राम के समक्ष झुकेगा। तब भगवान श्रीकृष्ण ने धनुष धारण किया और तब तुलसीदास जी

ने उनको प्रणाम किया। परिश्रम या उद्योग स प्राप्त होने वाली। धनुष शब्द युद्ध में वीरता अर्थात परिश्रम का प्रतीक है।

558. **धनुर्धरवरप्रदा** – श्रेष्ठ धनुर्धरों को या योद्धाओं को वर प्रदान करने वाली।

559. **धर्मशीला** – धर्म के स्वभाव वाली।

560. **धर्मलीला** – धर्माचार वाली। लीला का अर्थ है आचरण। धर्मानुरूप या शास्त्रानुरूप है आचरण जिनका। वेदोपदिष्ट कर्मकाण्ड में होने वाली क्रिया स्वरूप। यहाँ धर्म का अर्थ है वेदोपदिष्ट कर्मकाण्ड और लीला का अर्थ है क्रियाकलाप। धर्म पूर्वक हैं लीलाऐं जिनकी अर्थात जिनकी लीलाएं धर्म के लिए हैं।

561. **धमकर्मविवर्जिता** – वेदोपदिष्ट कर्मकाण्ड से विशेष रूप से पृथक् अर्थात उनसे ऊपर या परे। यहाँ विवर्जित का अर्थ पृथक लिया गया। लौकिक धर्मों और कर्मों से परे। यदि विवर्जित के वि का अर्थ विगत लिया जाए तो अर्थ होगा जो अलग नहीं है। वर्जित अर्थात अलग, वि अर्थात विगत अर्थात नहीं। तात्पर्य हुआ वेदोपदिष्ट कर्म काण्ड से अलग नहीं है जो।

562. **धर्मदा** – धर्म को प्रदान करने वाली अर्थात धर्म को बताने वाली। धर्म और धर्म के फलों को बतलाने वाली। सत्संग का अवसर देने वाली। धर्मोपनिषद् को देने वाली अर्थात समाज में इनका अस्तित्व लाने वाली। धर्म का एक अर्थ सत्संग, धर्म नामक उपनिषद।

563. **धर्मनिरता** – धर्म में संलग्न रहने वाली अर्थात उसका पालन करने वाली। धर्म से अति प्रसन्न (नि अर्थात नितराम्, रत् अर्थात प्रसन्न)।

564. **धर्मपाखण्डखण्डिनी** – धर्म के विषय में पाखण्डों का खण्डन करने वाली। धर्म की आड़ में हो रहे पाखण्डों का खण्डन करने वाली। पाखण्ड का अर्थ है वेदविरुद्ध आचार, छल, धोखा, नीचता, शरारत, बनावटी धार्मिकता दिखाना, कपट, बगलाभगत होना।

565. **धर्मेशी** – धर्म की ईश्वरी अर्थात धर्म में प्रेरित करने वाली या धर्म की रक्षा करने वाली। ईष धातु का अर्थ प्रेरयति भी होता है।

566. **धर्मरूपा** – धर्म स्वरूपा। प्रत्येक प्राणी और वस्तु में जो धर्म (परमावश्यक गुण या अपरिहार्य गुण) है या स्वभाव है वह देवी का ही रूप है जैसे अग्नि की दाहकता। धर्म से ज्ञापक अर्थात धर्म से जानी जाने वाली। रूप या रूपा का अर्थ ज्ञापक तथा ज्ञापिका भी होता है। रूप्यते अनया इति रूपा अर्थात जो किसी को जनवा दे या उसकी जानकारी हासिल करवा दे।

567. **धर्मराजवरप्रदा** – धर्मराज युधिष्ठिर को वर प्रदान करने वाली।

568. **धर्मिणी** – धर्म युक्त। धर्म का तात्पर्य जीवन मूल्यों से है। धर्म का तात्पर्य मनु द्वारा बताये गये सत्य, अहिंसा आदि दस लक्षणों से है। ये साधारण धर्म है अर्थात सभी आश्रमों में रहने वालों के लिए अनिवार्य है। धर्म वस्तु, व्यक्ति में रहने वाले गुण/विशेषता हैं जो उसके साथ सदा रहे, कभी अलग न हों जैसे आँख का धर्म है देखना, अग्नि का धर्म है जलाना। मान्य ग्रन्थ/ऋषि/आचार्य द्वारा निर्दिष्ट कृत्य जिससे पारलौकिक सुख मिले, धर्म है। वह कृत्य या विधान जिसका फल शुभ (स्वर्गलोक या अन्य उत्तम लोकों की प्राप्ति) है, धर्म कहलाता है। इसी कारण हवन, व्रत, यज्ञ आदि कर्म धर्म कहलाते हैं। मीमांसा दर्शन के अनुसार वेदविहित यज्ञादि कर्मों का अनुष्ठान धर्म है। जैमिनी के अनुसार जिन कर्मों को करने की प्रेरणा वेद आदि शास्त्रों में है, वे धर्म है।

569. **धर्मगेहस्था** – धर्म रूपी भवन में स्थित रहने वाली।

570. **धर्माधर्मस्वरूपिणी** – धर्म और अधर्म होने के स्वरूप वाली। देव्यथर्वशीर्ष में लिखा है कि मैं ही विद्या हूँ, मैं ही अविद्या हूँ।

571. **धनदा** – धन को देने वाली। लौकिक और पारलौकिक अर्थात भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार के धनों को देने वाली।

572. **धनदप्रीता** – कुबेर को प्रसन्न करने वाली। कुबेर से प्रसन्न।

573. **धनधान्यसमृद्धिदा** – धन और धान्य रूपी समृद्धि को प्रदान करने वाली।

574. **धनधान्यसमृद्धिस्था** – धन और धान्य समृद्धि में निवास करने वाली।

575. **धनधान्यविनाशिनी** – राक्षसों और अधर्मियों के धन धान्य का पूर्ण रूप से नाश कर देने वाली।

576. **धर्मनिष्ठा** – धर्म में निष्ठा (आदरपूर्ण भाव, दक्षता, स्थिति या ठहराव।) रखने वाली। युधिष्ठिर, सत्संग, आत्मा में निष्ठा रखने वाली। धर्म का अर्थ युधिष्ठिर, सत्संग, आत्मा भी मिलता है। वह कर्म जिसका करना किसी सम्बन्ध, स्थिति, गुणों के विचार से उचित और आवश्यक हो, जो समाज के लिए, कार्य विभाग के लिए आवश्यक हो धर्म है। वर्ण, आश्रम के अनुसार जो आचार या कर्म बताए गयें हैं वे धर्म है। वह कर्म जो समाज की स्थिति के लिए आवश्यक है, जिससे समाज की रक्षा हो, सुख शान्ति हो, परलोक में भी उत्तम गति मिले वह धर्म है। धर्म का सामान्य अर्थ कल्याणकारी कर्म, सत्कर्म, सदाचार, परस्पर व्यवहार सम्बन्धी नियम हैं।

577. **धर्मधीरा** – धर्म के विषय में बुद्धि वाली। धी अर्थात बुद्धि, र अर्थात मतुप् प्रत्यय अर्थात युक्त अर्थ। धर्म में अविचल, अटल, दृढ़। धर्म के विषय में धीर या गंभीर। (धर्म शीला का अर्थ है धर्माचरण के स्वभाव वाली। वेद में जो कर्त्तव्य अकर्तव्य बताए गये हैं, कर्मकाण्ड बताऐ गये हैं वे धर्म है।)

578. **सदाधर्ममार्गरता** – सदैव धर्म के मार्ग में संलग्न रहने वाली (यदि सदा धर्ममार्गरता नाम है तो अर्थ होगा ऐसी सदैव अस्तित्व वाली जो धर्म मार्ग में रमण करने वाली है)।

579. **धर्मबीजकृतस्थाना** – वेदों को स्थान बनाया है जिसने अर्थात वेदों में रहने वाली। धर्म का बीज वेद है क्योंकि सारे धर्मशास्त्र वेदों पर आधारित हैं। धर्म के कारण/बीज में स्थान बनाने वाली अर्थात सभी धर्म उन्हीं से आविर्भाव हुए।

580. **धर्मबीजसुरक्षिणी** – वेदों की सुन्दर प्रकार से अर्थात अच्छी प्रकार से रक्षा करने वाली। धर्म का मूल वेदों में हैं अतः धर्मबीज का अर्थ हुआ वेद। सारे धर्मशास्त्र अन्ततोगत्वा वेद पर आधारित हैं। धर्म के बीज की अच्छी तरह रक्षा करने वाली।

581. **धर्मबीजेश्वरी** – धर्म के बीज (वेद, स्मृति, महाकाव्य) में बताये गये मार्ग से आराधना करने योग्य। जितने भी धर्मशास्त्र हैं उनका आधार वेद, स्मृति या महाकाव्य है अतः इन्हें (वेद, स्मृति महाकाव्य) धर्म का बीज कहते हैं। यमराज के द्वारा उपासनीया। धर्मराज का एक अर्थ यमराज भी होता है। यमराज की इष्ट देवी। धर्म के कारण की ईश्वरी।

582. **धर्मबीजरूपा** – धर्म की बीज या कारण स्वरूपा।

583. **धर्मगा** – धर्म में विचरण करने वाली अर्थात विराजमान रहने वाली। धर्म के पीछे जाने वाली अर्थात उसका अनुसरण करने वाली, पालन करने वाली।

584. **धर्मबीजसमुद्भूता** – धर्म के बीज में सम्यक् रूप से स्थित। भू सत्तायाम् धातु होती है। उद्भूत का अर्थ केवल प्रकट होना ही नहीं होता बल्कि भू सत्तायाम धातु से सम्यक् रूप से स्थित होना भी होता है। धर्म के

बीज से तात्पर्य वेद, स्मृति, महाकाव्य से है या मनु द्वारा बताये गये धर्म के दस लक्षणों से है। धर्म के बीज से उत्पन्न होने वाली। जो लोग धर्म का पालन करते हैं उनके समक्ष प्रकट हो जाने वाली।

585. **धर्मबीजसमाश्रिता** – धर्म के बीज का आश्रय लेने वाली अर्थात वेद, स्मृति आदि ग्रन्थों में रहने वाली।

586. **धराधरपतिप्राणा** – पर्वतों के स्वामी हिमालय की प्राण स्वरूपा अर्थात अत्यन्त प्रिय।

587. **धराधरपतिस्तुता** – हिमालय के द्वारा स्तुति की गई जिनकी। जिनके लिए श्रद्धापुर्वक स्तोत्र पाठ किया गया।

588. **धराधरेन्द्रनुजा** – पर्वतराज हिमालय की पुत्री पार्वती से अभेद है जिनका। इन्द्र अर्थात श्रेष्ठ, धराधर अर्थात पर्वत, पर्वतों में श्रेष्ठ अर्थात हिमालय।

589. **धराधरेन्द्रवन्दिता** – पर्वतराज हिमालय द्वारा जिनकी वन्दना की गई। वन्दना का अर्थ है सर झुकाकर प्रणाम करना और गुणों का गान करना।

590. **धराधरेन्द्रगेहस्था** – हिमालय के घर में निवास करने वाली।

591. **धराधरेन्द्रपालिनी** – पर्वतराज हिमालय का पालन पोषण करने वाली।

592. **धराधरेन्द्रसर्वार्तिनाशिनी** – पर्वतराज हिमालय की सभी प्रकार की विपत्तियों/कष्टों को नष्ट करने वाली।

593. **धर्मपालिनी** – धर्म का पालन करने वाली। धर्म की रक्षा करने वाली। पालन में रक्षा अर्थ भी सम्मिलित होता है। धर्म की रक्षा करने के लिए भगवान विष्णु अवतार लेते हैं और उनके साथ उनकी शक्ति भी रहती हैं। जब हम कहते हैं कि भगवान विष्णु ने अमुक कार्य किया तो उसका तात्पर्य उनकी शक्ति ने किया होता है।

594. **नवीना** – हर समय नया रूप धारण करने वाली अर्थात प्रकृति स्वरूपा। सदैव नवीन रहने वाली।

595. **निर्मला** – निर्मल स्वरूप वाली। उनके अन्दर किसी प्रकार के मल या दोष नहीं है।

596. **नित्या** – नित्य स्वरूप वाली। तीनों कालों में अपने अस्तित्व को बनाये रखने वाली तथा जिसका तीनों कालों में कभी भी नाश नहीं होता।

597. **नगराजप्रपूजिता** – हिमालय द्वारा विधिवत पूजित।

598. **नागेश्वरी** – नागेश्वर अर्थात भगवान शिव की गृहिणी। नागराज वासुकि भगवान शिव के परम भक्त थे, नागों का धर्म शैव धर्म होता है और भगवान शिव उनके आराध्य होते हैं। नाग अर्थात पर्वत अर्थात हिमालय की ईश्वरी।

599. **नागमाता** – नागों की माता मनसा देवी से जिनका अभेद सम्बन्ध है। नागों की माता कद्रू से अभेद है जिनका।

600. **नागकन्या** – नागों की कन्या अर्थात नाग वंश में उत्पन्न श्रेष्ठ दिव्य गुणों वाली। योग के आठ साधनों से जिनको प्राप्त किया जा सकता है। अष्ट नाग प्रसिद्ध है जो योग आठ साधनों का प्रतीक हैं। नागवंश को प्रकाशित करने वाली, नागवंश में उजाला देने वाली। कनि दीप्तौ धातु होती है जिससे कन्या शब्द बना है।

601. **नग्निका** – नग्न स्वरूप वाली अर्थात मायारूपी कपड़ा नहीं पहनती हैं। माया रूपी वस्त्र से रहित अर्थात माया के प्रभाव से रहित। अनन्त स्वरूपा क्योंकि अनन्त को ही वस्त्र नहीं पहनाये जा सकते। कन्या रूप स्वरूपा अर्थात उस अवस्था के स्वरूप वाली जब यौवन के चिन्ह अंकुरित नहीं हुए हैं (Dictionary of vedic rituals में यही अर्थ किया गया है)। देवी इच्छानुसार कोई सा भी रूप धारण कर सकती हैं। नग्निका अर्थात सर्वव्यापी

तभी वस्त्र नहीं पहनाये जा सकते। बहुत छोटी बालिका के स्वरूप वाली क्योंकि छोटे बच्चे कभी कभी कपड़े नहीं पहनते हैं।

602. **निर्लेपा** – लेप रहित अर्थात संसार की आसक्ति से रहित। जो कर्मों के लेप से पृथक है। कर्म करती हुई भी कर्म की आसक्ति से रहित है जिसके कारण उनमें कर्म–संस्कार (लेप) नहीं आता।

603. **निर्विकल्पा** – विकल्पों से रहित। संकल्प विकल्प से रहित। उनका कोई विकल्प (substitute) नहीं है। देवी कल्पना से रहित हैं अर्थात उनका वास्तव में अस्तित्व हैं।

604. **निर्लोमा** – जहाँ पेड़ – पौधे, घास – फूस नहीं होते उस स्थान वाली अर्थात उस स्थान में रहने वाली। कैलास पर्वत में घास फूस रूपी लोम नहीं होते। लोम दोष का भी प्रतीक है इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ जो दोषों से रहित है। दोष या कलंक रहित। लोम अर्थात रोमा। स्त्रियों में दाढ़ी मूँछ होना दोष है। शाब्दिक अर्थ हुआ दाढ़ी मूँछ से रहित पर लगभग सभी स्त्रियाँ ऐसी ही होती हैं। रोम रहित अर्थात अतिशय सुन्दर।

605. **निरूपद्रवा** – किसी भी प्रकार की बाधा, पीड़ा, आन्तरिक अशान्ति से रहित। उपद्रवों से रहित अर्थात शान्त। मन की हलचल से रहित। बाधा, पीड़ा, आन्तरिक अशान्ति, शोर – गुल, लड़ाई – झगड़ा, प्राकृतिक उत्पात आदि उपद्रव हैं।

606. **निराहारा** – आहार न करने वाली।

607. **निराकारा** – आकार से रहित। मूल अवस्था में देवी आकार से रहित हैं।

608. **निरञ्जनस्वरूपिणी** – दोष रहित स्वरूप वाली। माया, इन्द्रियों, शरीर से रहित। एक ग्रन्थ में कारण शरीर में रहने वाले संस्कार दोष या अंजन माने गये हैं। ऐसे संस्कारों से रहित स्वरूप वाली। जिसे किसी भी वस्तु को देखने के लिए अंजन विद्या की आवश्यकता नहीं होती, वह निरंजना हैं। तन्त्र में एक अंजन विद्या होती है जिसमें नाखून में काजल लगाकर आप जो भी देखना चाहें देख सकते हैं। देवी अन्तःचक्षु से सब कुछ देख लेती हैं। अन्यथा भी जब सब कुछ उनके अन्दर है तो वे सब कुछ देख लेती है।

609. **नागिनी** – कुण्डलिनी स्वरूपा। मूलाधार चक्र में धवल वर्ण की सर्पाकार आकृति लिये कुण्डलिनी होती है। नागस्वरूपा। जिस नाग को शिव धारण किये हैं उसके स्वरूप को धारण करने वाली। जो सर्प के रूप में या कुण्डलिनी शक्ति के रूप में है।

610. **नागविभवा** – नागों के वैभव से युक्त।

611. **नागराजपरिस्तुता** – नागराज वासुकी के द्वारा सभी प्रकार से स्तुति की जाने वाली। शेषनाग, अनन्त नाग और तक्षक नाग भी श्रेष्ठ नाग कहलाते हैं। नागराज से इन तीनों नागों को भी ले सकते हैं।

612. **नागराजगुणज्ञा** – नागराज के गुणों को जानने वाली।

613. **नागराजसुखप्रदा** – नागराज वासुकी को अतिशय सुख प्रदान करने वाली।

614. **नित्यं नागलोकगता** – सदैव नागलोक में स्थित रहने वाली।

615. **नागलोकनिवासिनी** – नागलोक में निवास करने वाली।

616. **नागलोकेश्वरी** – नागलोक की स्वामिनी।

617. **नागभगिनी** – नागों की बहन स्वरूपा। नागों के साथ बहन की तरह व्यवहार करने वाली। नाग अर्थात पर्वत। पर्वत का पुत्र पर्वत होता है। हिमालय का पुत्र मैनाक है और पार्वती जी हिमालय की पुत्री हैं। इस प्रकार मैनाक पर्वत की बहन पार्वती स्वरूपा यह इस नाम का अर्थ हुआ। नग का अर्थ है पर्वत, अर्थ में बदलाव बिना

अण् प्रत्यय लगाया जा सकता है जिससे नग का नाग हो जाता है और नाग का भी वही अर्थ होता है जो नग का अर्थात नाग का अर्थ भी पर्वत हो सकता है।

618. **नागपूजिता** – नागों के द्वारा पूजित। पर्वत अर्थात पर्वतराज हिमालय द्वारा पूजित।

619. **नागमध्यस्थिता** – नागों के मध्य में स्थित रहने वाली।

620. **नागमोहसंक्षोभदायिनी** – नागों में स्नेह (प्रेम) और चंचलता (उल्टा – पुल्टा होना) देने वाली। नाग नागिन का प्रेम सभी जानते हैं और साँप चंचल भी होता है। नागों को मोहित कर उन्हें संक्षुब्ध करने वाली। मोह को नष्ट करने वाली।

621. **नृत्यप्रिया** – जिन्हें नृत्य अच्छा लगता है।

622. **नृत्यवती** – नृत्य कला से युक्त अर्थात इस कला को जानने वाली पारंगत।

623. **नृत्यगीतपरायणा** – नृत्य और गीत में लगी रहने वाली।

624. **नृत्येश्वरी** – नृत्य की ईश्वरी। इस विद्या को पैदा करने वाली या इस विद्या की सर्वश्रेष्ठ जानकर।

625. **नर्तकी** – नाचने वाली। देवी के नृत्य को लास्य नृत्य कहते हैं जो मधुर प्रकृति का होता है। प्रकृति में होने वाली सभी घटनाएं देवी का नृत्य हैं।

626. **नृत्यरूपा** – नृत्य या नाचने की विद्या के रूप में। नृत्य के द्वारा ज्ञापक या बोधक। रूपा का एक अर्थ होता है ज्ञापिका। नृत्य को देखने वाली, नृत्य की रचना करने वाली। रूपयति का अर्थ देखना, दिखाना, रचना करना होता है।

627. **निराश्रया** – स्वयं आश्रय से रहित हैं।

628. **नारायणी** – भगवान नारायण अर्थात विष्णु जी की शक्ति स्वरूपा। नार (अर्थात सभी मनुष्यों अर्थात सभी प्राणियों) के भीतर रहने वाली आत्मा के रूप में। नार (प्राणी) है आश्रय जिनके। सभी प्राणियों का आश्रय।

629. **नरेन्द्रस्था** – राजाओं के मध्य स्थित रहने वाली। राज्यलक्ष्मी के रूप में राजाओं के पास रहने वाली। राजाओं के पास जो धन सम्पदा आदि होती है वह लक्ष्मी है, इसके अलावा भी राज्यलक्ष्मी की भी शरीर रूप में अर्थात हाथ, पैर, मुख से युक्त आकृति के रूप में भी पूजा की जाती है।

630. **नरमुण्डास्थिमालिनी** – मनुष्यों के मुण्डों और अस्थियों की माला पहनने वाली।

631. **नित्यनरमांसप्रिया** – जिन्हें सदैव ही है मनुष्य का मांस प्रिय। एक मत के अनुसार काम, क्रोध, लोभ, मोह ही मांस है। कहीं कहीं पर द्वन्द्व (सर्दी – गर्मी, सुख – दुख आदि) को मांस कहा गया है।

632. **सदा नररक्तप्रिया** – हमेशा दुष्ट मनुष्यों के रक्त को पसन्द करने वाली। सदैव दुष्ट मनुष्यों के रक्तपान से प्रसन्न। मनुष्यों में जो अनुराग (भक्ति) है उसे सदा पसन्द करने वाली। रक्त का एक अर्थ अनुराग भी होता है।

633. **नरराजेश्वरी** – मनुष्य राजाओं की ईश्वरी या स्वामिनी। उन्हें प्रेरित करने वाली (अन्तःकरण के माध्यम से या शास्त्रों के माध्यम से सही गलत बताकर)।

634. **नारीरूपा** – नृणाति सन्मार्गे इति नारी अर्थात जो परिवार को या समाज को सन्मार्ग में ले जाए वह नारी है। नारी को देखने वाली (अर्थात देखकर कृपा करने वाली या देखभाल करने वाली) यह अर्थ भी हो सकता है क्योंकि रूपयति का अर्थ देखना है। न+अरि, जिसका कोई शत्रु नहीं, वह नारी है।

635. **नारीस्वरूपिणी** – नारी के स्वरूप वाली। जिनका प्रत्येक अंश नारी की तरह है। स्वरूप में प्रत्येक अंश समान होता है। स्वरूप का अर्थ स्वभाव (हमेशा रहने वाले मुख्य गुण) भी होता है। नारी के स्वभाव से युक्त। स्वरूप का अर्थ शरीर भी होता है। नारी के शरीर वाली। नारी जिसका अपना ही रूप है, उस रूप से युक्त।

636. **नारीगणार्चिता** – स्त्रियों के समूह के द्वारा पूजित।

637. **नारीमध्यगा** – स्त्रियों के मध्य में विचरण करने वाली या विराजमान।

638. **नूतनाम्बरा** – नवीन वस्त्रों को धारण करने वाली।

639. **नर्मदा** – सुख देने वाली। जिन्हें देखकर विषादग्रस्त देवताओं को सुख की अनुभूति हुई।

640. **नदीरूपा** – नदी स्वरूपा। अव्यक्त नाद करने वाली। ऐसा शब्द कि कोई आवाज तो हो पर उस आवाज के अनुरूप कोई वस्तु न हो तो वह अव्यक्त शब्द कहलाता है। नद् धातु का अर्थ अव्यक्त शब्द करना है।

641. **नदीसंगमसंस्थिता** – नदियों के संगम पर भली भाँति स्थित रहने वाली।

642. **नर्मदेश्वरसंप्रीता** – शिव से अतिप्रसन्न। शिव के द्वारा अतिप्रसन्न की गई।

643. **नर्मदेश्वररूपिणी** – शिव के स्वरूप में है जो।

644. **पद्मावती** – लक्ष्मी स्वरूपा। कमलों से युक्त।

645. **पद्ममुखी** – कमल के समान सुन्दर मुख वाली।

646. **पद्मकिंजल्कवासिनी** – कमल के केसर में निवास करने वाली (गुण या सुगन्ध रूप में)।

647. **पट्टवस्त्रपरिधाना** – रेशमी वस्त्र धारण करने वाली। श्रेष्ठ वस्त्रों को धारण करने वाली। (यदि पट्टवस्त्रपराधीना यह नाम है तो अर्थ होगा रेशमी वस्त्र के अधीन रहने वाली अर्थात रेशमी वस्त्र पसन्द करती हैं अर्थात रेशमी वस्त्र से प्रसन्न होने वाली।) सीधे वस्त्र अर्थात जिनमें सिकुडन नहीं है, ऐसे वस्त्र धारण करने वाली।

648. **पद्मरागविभूषिता** – पद्मराग मणि से विभूषित। कमल के लेप से विभूषित। राग का अर्थ लेप भी होता है।

649. **परमा** – श्रेष्ठतम स्वरूप वाली। गुण, शक्ति, सौन्दर्य, ऐश्वर्य में सर्वश्रेष्ठ।

650. **नित्यं प्रीतिदा** – सदैव प्रसन्नता को देने वाली।

651. **प्रेतासननिवासिनी** – प्रेतरूपी आसन पर निवास करने वाली।

652. **परिपूर्णरसोन्मत्ता** – अमृतपान से अति प्रसन्न। अमृत में ही सभी रस होते हैं। परिपूर्ण अमृत (Complete Nector) से अति हर्षित या आनन्दित। परिपूर्ण ब्रह्म के रस से उन्मत्त अर्थात आनन्दित या मस्त। परिपूर्ण अर्थात योगावस्था वाली अर्थात अर्द्धनारीश्वर रूप अर्थात मोक्षावस्था। सभी प्रकार के रसों से परिपूर्ण या उन रसों से उन्मत्त हो जाने वाली।

653. **प्रेमविह्वलवल्लभा** – देवी माँ के प्रेम में आत्मविभोर, ऐसे भक्तों की अत्यन्त प्रिय अर्थात ऐसे भक्तों को देवी बहुत अच्छी लगती हैं। ऐसे भक्तों से अत्यन्त प्रेम करने वाली, ऐसा अर्थ भी कर सकते हैं। विह्वल का अर्थ है आत्मविभोर अर्थात अपनी भी सुधबुध न रहे। प्रेम से विह्वल (मग्न या डूबा हुआ) पति को प्रिय लगने वाली पार्वती से अभेद है जिनका। भक्ति में डूबे हुए भक्त हैं प्रिय जिन्हें। भक्ति में डूबे हुए भक्तों को अच्छी लगने वाली। विह्वल अर्थात अपनी सुध नहीं, आत्म विभोर हो गये डूब गये, अत्यन्त प्रेम या भक्ति वाली।

654. **पवित्रासवनिष्पूता** – दिव्य मदिरा का पान करने से दोष रहित दिखने वाली। दिव्य मदिरा अर्थात सोमरस आदि की बनी हुई मदिरा या मन्त्रों से अभिमन्त्रित की गई मदिरा। वास्तव में देवी में कोई दोष नहीं पर

दिखावटी दोष जैसे क्रोध आदि दिखने वाले दोष हैं वे भी दूर हो जाते हैं क्योंकि देवी आनन्द में डूब जाती हैं। पवित्र आसव के पान के कारण सर्वथा या सदैव पवित्र हो गयी हैं।

655. **प्रेयसी** – शंकर जी की अतिशय प्रिय। शंकर जी जिन्हें बहुत चाहते हैं।

656. **परमात्मिका** – परमात्म स्वरूपा। जिससे अन्य आत्माऐं पैदा होती हैं, वह परमात्मा हैं। परमात्मा ही परमात्मिका है। जीवात्मा भी सत्‌चित्‌आनन्द होती है पर उसका चैतन्य और आनन्द पूरी तरह जाग्रत नहीं होता जिसे साधना के द्वारा पूरा जाग्रत करना पड़ता है।

657. **नित्यं प्रियव्रतपरा** – जिन्हें नियम पालन, तपस्या प्रिय है उनके साथ हमेशा लगी रहने वाली अर्थात उन पर कृपा करने वाली। पॄ पालने धातु से परा बनाने पर पोषण करने वाली अर्थ आयेगा। तब अर्थ होगा ऐसे लोगों का पोषण करने वाली। व्रत का अर्थ है नियम पालन करना, तपस्या करना। परा का अर्थ ऐसे लोगों के प्रति उच्च भाव रखने वाली भी कर सकते हैं। प्रियव्रत नाम का राजा भी था। सदैव जिन्हें प्रतिज्ञा प्रिय है, उनके साथ रहने वाली। सदैव प्रिय लगने वाले श्रेष्ठ व्रत को करने वाली। व्रत का अर्थ पूजा के सम्बन्ध में निराहार रहने से भी है और प्रतिज्ञा से भी है।

658. **परमप्रेमदायिनी** – अतिशय प्रेम को प्रदान करने वाली। श्रेष्ठ भक्ति प्रदान करने वाली।

659. **पुष्पप्रिया** – पुष्प हैं प्रिय जिन्हें। जिन्हें प्रसन्नता प्रिय है। जिन्हें विकास प्रिय है। पुष्प प्रसन्नता, विकास का प्रतीक है।

660. **पद्मकोशा** – पद्मकोशों वाली (पद्मकोशाः यस्या सन्ति सा) अर्थात कमल के आकार वाले कोशों अर्थात षटचक्रों (मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर आदि) में निवास करने वाली। कमलों के मध्य भाग में स्थित रहने वाली।

661. **पद्मधर्मनिवासिनी** – कमल के गुणों में रहने वाली। कमल के धर्म वाले घरों में अर्थात सुन्दर और सुरभित घरों में रहने वाली। कमल का धर्म है सुन्दर और सुरभित होना। कमलों के धर्म (सौन्दर्य) में निवास करने वाली।

662. **फेत्कारिणीतन्त्ररूपा** – फेत्कारिणी तन्त्र के स्वरूप वाली। फेत्कारिणी तन्त्र में कृत्यारूपी महाकाली से सम्बन्धित विधान हें। यह तन्त्र कृत्या देवी का तन्त्र है, जो अभिचार कर्म की देवी हैं। इस तन्त्र में अभिचार के प्रयोग दिये गये हैं। फे का अर्थ है रूत् (रूदन या क्रन्दन)। रोते हुए भयंकर नाद करने वाली अर्थात कृत्या देवी स्वरूपा जो उग्र स्वरूप वाली महाकाली ही हैं। इस प्रकार फेत्कारिणी तन्त्र महाकाली से सम्बन्धित तन्त्र हुआ।

663. **फेरूफेरवादिनी** – श्रृंगाल के फेरव (नाद या आवाज) की तरह नाद करने वाली या उस नाद में रहने वाली। युद्ध के अवसर पर इस प्रकार की गर्जना करती होंगी जिससे शत्रु पक्ष डर जाता होगा। गीदड़ में भी अंश रूप से देवी रहती हैं क्योंकि वे सभी की आत्मा हैं।

664. **वंशिनी** – श्रेष्ठ वंश से युक्त । (यदि वशिनी शब्द है तो अर्थ है सबको वश में करने वाली।)। वंश का अर्थ परिवार, सन्तान होता है। सन्तान से युक्त क्योकि पार्वती जी की न केवल गणेश और कार्तिकेय सन्तान है बल्कि पूरा विश्व सन्तान है। वंश का अर्थ बांसुरी, फूल भी होता है। अतः इस नाम का अर्थ हुआ बाँसुरी से युक्त अर्थात बाँसुरी लिये हुए अर्थात फूल धारण किये हुए।

665. **वेशरूपा** – घर स्वरूपा अर्थात सभी जिनके अन्दर वास करते हैं। ब्रह्माण्ड देवी के भीतर है अतः सभी प्राणी देवी के भीतर वास करते हैं। वैश्या की तरह सजी धजी। वेश का अर्थ है घर, वैश्या। सुन्दर स्वरूप वाली। वेश अर्थात चीज। विशन्ति नयने मनांसि यत्र अर्थात जिसमें नेत्र और मन घुस जाते हैं।

666. **बगला** – बगलामुखी देवी स्वरूपा। अमृत को निर्विघ्न लाने वाली। ब अर्थात व अर्थात अमृत। ग अर्थात गणेश जी अर्थात विघ्नरहित। लगाम लगाने वाली (शत्रुओं पर)। वल्गा का अर्थ लगाम होता है। लगाम लगाना

या नियन्त्रण करना। बगला शब्द वल्गा से बना है जिसका अर्थ है शत्रुओं द्वारा किया जाने वाला अभिचार कर्म। जो देवी अभिचार कर्म को नष्ट कर देती हैं वह हैं बगला। बगला अर्थात बगला + आ, आ का अर्थ है नाश करना एवं देना दोनों होता है। वारूणी देवी, सिद्धिदा देवी और भूमि देवी की शक्तियों से युक्त। ब अर्थात व अर्थात वारूणी देवी, ग अर्थात गणेश अर्थात सिद्धि देने वाले, ल अर्थात भूमि। वर्ण के आगे पीछे होने से वलगा शब्द बगला हो गया। वलगा का अर्थ है अभिचार कर्म करने की शक्ति जिसे कृत्या भी कहते हैं। कृत्या वह शक्ति है जिसका सहारा लेकर तान्त्रिक अपने शत्रुओं का संहार करते हैं। इस कार्य हेतु भूमि में गड़े नाखून, बाल, हड्डी आदि भी वलगा है। तान्त्रिक लोग शत्रुओं के नाखून, बाल, कपड़े मिल जाने पर उन पर क्रिया करते हैं। बगलामुखी शब्द में मुखी शब्द का अर्थ नाश करना या बाहर निकालना है। खनु अवदारणे धातु होती है जिससे मुखी शब्द बनकर नाश करना अर्थ देता हैं। मुखः का अर्थ निःसरणम, उपाय होता है अर्थात बाहर निकालना या उपाय। उपाय अर्थात इलाज करना। बगला + आ, से भी बगला शब्द बनता हैं। वहाँ अर्थ होगा शत्रुओं के द्वारा किये गये अभिचार कर्म का नाश करने वाली। आ का अर्थ नाश करना। बगलामुखी का अर्थ भी शत्रु द्वारा किये गये अभिचार कर्म का नाश करने वाली। यहाँ मुखी का अर्थ नाश करने वाली या बाहर निकालने वाली या उपाय स्वरूपा है। बगला अर्थात वलगा। वलगा से बगला बना। अक्षर आगे पीछे होने से ऐसा हुआ। वृणोति से वर बना। वर अर्थात वल। र और ल में अभेद है। वृण्वन् गच्छति इति वरः जो ढकती हुई जाती है वह वरग या बलग है। शत्रु को मारने के लिए प्रयोग की गई कृत्या शत्रु को ढकती हुई जाती है अर्थात शत्रु को पता नहीं चलता, शत्रु को ढक देती है अर्थात उसे उबरने नहीं देती। वलग + आ, आ का अर्थ है नाश करना इस प्रकार वलगा का अर्थ हुआ कृत्या को नाश करने वाली।

667. **वामरूपिणी** – दुष्टों के लिए क्रूर या कठोर रूप वाली। वाम का एक अर्थ क्रूर या कठोर होता है। शिव के बायीं ओर स्थित रूप वाली। वामदेव शिव के स्वरूप वाली। वाममार्ग स्वरूपा। (यदि वामारूपिणी शब्द है तो अर्थ है अतिशय सुन्दर रूप वाली। वमति उद्गिरति सौन्दर्यम् स्नेहम् इति वामा। जो अपने भीतर से सौन्दर्य या स्नेह को उगलती है वह वामा है)।

668. **वङ्गयी** – बंगाल देश से युक्त अर्थात बंगाल राज्य के लोगों द्वारा पूजी गई या पूजी जाने वाली।

669. **वसुधा** – पृथ्वी स्वरूपा। लौकिक/अलौकिक सभी सम्पत्तियों को धारण करने वाली।

670. **वृष्या** – जिस पर बरसाया जा सके अर्थात जिसके ऊपर फूल आदि की बरसात की जा सके। वृष अर्थात बैल, वृष्य अर्थात स्त्री पुरुष का सहवास। वृष्या का अर्थ वर्षितुम योग्या होगा अर्थात जिस पर बरसाना चाहिए। कृत्य ल्युटो बहुलम् से कृत्य् प्रत्यय जो कर्म या भाव में होता है, बहुलम् शब्द के कारण कर्ता का अर्थ भी देने लगता है अतः अर्थ हुआ मनोरथों को पूरा करने वाली। धर्म स्वरूपा।

671. **वाग्भवाख्या** – ऐं मन्त्र है आख्या जिनकी अर्थात सरस्वती नाम वाली।

672. **वरानरा** – श्रेष्ठ नर स्वरूपा या नरों मे जो श्रेष्ठ है। जब मनुष्य अवतार ले तो सर्वश्रेष्ठ मनुष्य स्वरूपा। वर+आ+नरा। कभी कभी आ का कोई अर्थ नहीं होता है जैसे विश्वामित्र में या विश्वादेव में। फिर भी यदि आ का अर्थ लेना हो तो सम्पूर्ण अर्थ ले सकते हैं। श्रेष्ठ और सम्पूर्ण मनुष्य की शक्ति स्वरूपा। वर (श्रेष्ठ)+आ (सम्पूर्ण)+नर, ऐसा मनुष्य केवल भगवान शिव हो सकते हैं। (यदि वरानना नाम है तो अर्थ होगा श्रेष्ठ मुख वाली।)

673. **बुद्धिदा** – बुद्धि को देने वाली। श्रेष्ठ बुद्धि देने वाली।

674. **बुद्धिरूपा** – बुद्धि स्वरूपा। बुद्धि अन्तःकरण की वह शक्ति है जो निर्णय करती है, निश्चय करती है। बुद्धिम् रूपयति अर्थात जो श्रेष्ठ बुद्धि को दिखाये, निर्माण करे वह बुद्धिरूपा है।

675. **विद्या** – उस ज्ञान के रूप में जो मोक्ष देवे। विद्या वह ज्ञानरूपी साधन है जिससे मोक्ष मिलता है।

676. **वादस्वरूपिणी** – शास्त्रार्थ के स्वरूप वाली। शास्त्रार्थ में पूर्व पक्ष और उत्तरपक्ष होता है। वाद विवाद अर्थात बोलने की शक्ति स्वरूपिणी।

677. **बाला** – बाल स्वरूप वाली अर्थात मनोभावन सुन्दर स्वरूप वाली। बलयति इति बाला अर्थात जो अपने भक्तों को बल प्रदान करती है।

678. **वृद्धमयीरूपा** – सबसे पुरानी रूप में दिखाई देने वाली। रूप वह है जो आँखों से दिखता है। आयु, ज्ञान, विद्या आदि से वृद्ध रूप धारण करने वाली। धूमावती देवी के ध्यान में देवी वृद्ध जैसी दिखती हैं जो भूख प्यास से व्याकुल हैं और जिनके शरीर से कान्ति गायब है। ध्यान मन्त्र का अर्थ पढ़ने से यह रूप स्पष्ट हो जाता है।

679. **वाणी** – सरस्वती स्वरूपा। वाणी मुख से उच्चरित सार्थक शब्द है, जिसे वक्ता या दूसरा सुन सकता है। प्रायः वैखरी वाक् को वाणी कहा जाता है। वाणी में ध्वनि होती है जबकि वाक् के प्रारम्भिक तीन स्तरों में ध्वनि नहीं होती। वाणी = वाक् + ध्वनि। हम इस प्रकार भी बोल सकते हैं जिसमें आवाज न निकले जैसा कि गूँगा करता है, उसको देखने से ऐसा लगता है कि वह बोल रहा है पर आवाज नहीं होती। बोलने का यह तरीका जिसमें आवाज नहीं आती वह है वाक्। जब इसमे ध्वनि या आवाज भी मिल जाती है तो वह स्वयं को एवं दूसरों को सुनाई पड़ती है। कहने का तात्पर्य है परा, पश्यन्ती एवं मध्यमा वाक् है एवं वैखरी वाक् वाणी है।

680. **वाक्यनिवासिनी** – वाक्यों में निवास करने वाली। वेदों के एवं श्रेष्ठ ग्रन्थों के वाक्यों में निवास करने वाली।

681. **वरूणा** – वरूण देव की शक्ति स्वरूपा। वरूणा नदी स्वरूपा। वारयति पापेभ्यः इति वरूणा अर्थात भक्तों को पापों से दूर करने वाली।

682. **वाग्वती** – वाणी की शक्ति से युक्त। वाक्शक्ति से युक्त या वाक्शक्ति स्वरूपा।

683. **वीरा** – वीर/बहादुर। अपने क्षेत्र में ज्ञान में अद्वितीय शक्ति सम्पन्न। जिन महिलाओं के पति एवं पुत्र होते हैं उन्हें वीरा कहा जाता है। पार्वती जी के पति भगवान शिव हैं और उनके दो पुत्र भी हैं अतः वे वीरा हुईं।

684. **वीरभूषणभूषिता** – वीरों के आभूषण अर्थात वीरता या शौर्य गुण से सुशोभित।

685. **वीरभद्रार्चितपदा** – शूरवीर और सज्जनों द्वारा जिनके चरणों की पूजा की जाती है।

686. **वीरभद्रप्रसू** – वीर और सज्जन पुरुषों को जन्म देने वाली। पार्वती जी ने गणेश जी एवं कार्तिकेय जी को जन्म दिया।

687. **वेदमार्गरता** – वेदमार्ग से लगी हुई अर्थात वेदमार्ग पर चलने वाली। वेदमार्ग से प्रसन्न रहने वाली।

688. **वेदमन्त्ररूपा** – वेद मन्त्र स्वरूपा।

689. **वषट्प्रिया** – वषट् मन्त्र है प्रिय जिन्हें। कुछ देवताओं को हविर्दान में यह मन्त्र बोलते हुए हविर्दान किया जाता है।

690. **वीणावाद्यसमायुक्ता** – वीणा नामक वाद्य से अच्छी प्रकार जुड़ी हुई अर्थात इसे हमेशा साथ लिये रहती हैं।

691. **वीणावाद्यपरायणा** – वीणा नामक वाद्य में लगी हुई अर्थात वीणा को बजाने में लगी रहने वाली।

692. **वीणारवा** – वीणा की तरह शब्द करने वाली। वीणा की ध्वनि स्वरूपा।

693. **वीणाशब्दरूपा** – वीणा से उत्पन्न शब्दों के स्वरूप वाली। वीणा के शब्द के स्वरूप वाली।

694. **वैष्णवी** – विष्णु की शक्ति। जगत में व्याप्त शक्ति स्वरूपा। विष्णु का अर्थ है जो सभी जगह व्याप्त है।

695. **वैष्णवाचार निरता** – वैष्णवों के आचार से अत्यन्त प्रेम करने वाली। रम् धातु से रत बनाने पर प्रेम करने वाला अर्थ निकलता है। वैसे सामान्यतः निरत का अर्थ लगा हुआ होता है किन्तु अगले नाम में तत्पर आने से यह अर्थ उस नाम के लिए छोड़ दिया गया है। वैष्णव के आचार हैं शुद्ध परिपाटी से या शुद्ध पद्धति से पूजा करना। वैष्णवों के आचार में अधिक रमण करती हैं अर्थात विशेष रूप से रहने वाली अर्थात विशेष रूप से समीप रहती हैं। वैष्णव आचार में लगी हुई अर्थात वैष्णव संप्रदाय में जो पूजा पद्धति साधना बताई गई है उसे पसन्द करने वाली। जिनकी चरण/ सेवा पूजा मे वैष्णवाचार लगे रहते हैं।

696. **वैष्णवाचारतत्परा** – वैष्णव विधि से पूजन के साथ तत्पर अर्थात पूजा ग्रहण करने के लिए तैयार। वैष्णव के आचार में लगी रहने वाली।

697. **विष्णुसेव्या** – भगवान विष्णु द्वारा सेवा के योग्य अर्थात पूजा के योग्य।

698. **विष्णुपत्नी** – विष्णु जी की पत्नी लक्ष्मी जी से अभेद है जिनका। भगवान विष्णु की रक्षा करने वाली। पा पाति धातु से पति और पत्नी का अर्थ रक्षा करने वाला, रक्षा करने वाली हो जाता है।

699. **विष्णुरूपा** – विष्णु स्वरूपा। विष्णुम् रूपयति। भगवान विष्णु पर दृष्टि डालने वाली। भगवान विष्णु को दिखाने वाली अर्थात उनका साक्षात्कार कराने वाली। भगवान विष्णु को स्वरूप देने वाली अर्थात उनका निर्माण करने वाली।

700. **वरानना** – श्रेष्ठ सुन्दर मुख वाली।

701. **विश्वेश्वरी** – सम्पूर्ण विश्व की स्वामिनी या मालकिन। सम्पूर्ण विश्व के ऐश्वर्य की स्वामिनी।

702. **विश्वमाता** – सम्पूर्ण विश्व की जननी। सम्पूर्ण विश्व की रक्षा करने वाली एवं पोषण करने वाली।

703. **विश्वनिर्माणकारिणी** – सम्पूर्ण विश्व का निर्माण करने वाली।

704. **विश्वरूपा** – विश्व स्वरूपा अर्थात सम्पूर्ण उन्हीं का स्वरूप हैं। विष्णु के रूप को धारण करने वाली। विश्व का एक अर्थ है भगवान विष्णु।

705. **विश्वेशी** – विश्व की ईश्वरी अर्थात उसे संचालित करने वाली। सम्पूर्ण विश्व पर शासन करने वाली। शासन में आदेश दिया जाता है जिसे हर कोई पालन करता है। शासन में नियम कानून बनाये जाते हैं जिसे हर कोई पालन करता है। शासन में अनुग्रह (कृपा) और निग्रह (दण्ड) का सिद्धान्त होता है।

706. **विश्वसंहारकारिणी** – प्रलय काल में सम्पूर्ण विश्व का संहार करने वाली।

707. **भैरवी** – भैरम् वदन्ति अर्थात डरावने शब्द करने वाली। डरावने शब्द जैसे छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि आदि शब्द। भैरवी स्वरूपा अर्थात बहुत उद्यमशील। भैरम् (भयसमूहम) वाति (हिनस्ति) इति भैरवी अर्थात भयसमूह का नाश करने वाली। भैरवी का अर्थ भैरव की पतनी एवं भयंकर शब्द करने वाली दोनों हो सकता है। यदि गुण या कर्म के कारण किसी शब्द को स्त्रीलिंग में रखना है तो उसके लिए पत्नी होना अनिवार्य नहीं है।

708. **भैरवाराध्या** – भैरव के द्वारा आराधना करने योग्य।

709. **भूतभैरवसेविता** – भूतों और भैरव द्वारा संसेवित। भूत का अर्थ प्राणी और भूतप्रेत दोनों ले सकते है।

710. **भैरवेशी** – भैरव की ईश्वरी अर्थात उन पर शासन करने वाली, उन्हें आदेश देकर अपने अनुसार चलाने वाली।

711. **भीमा** – भयंकर रूप वाली। जिससे दैत्य या दुष्ट डरते हैं, वह भीम है। विभेति अस्मात् सः भीमः स्त्रीलिंग में भीमा। भीमा का अर्थ शिव भी होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ शिव की शक्तिस्वरूपा।

712. **भैरवेश्वरतुष्टिदा** – भैरव के ईश्वर शिव को तुष्टि प्रदान करने वाली। ईश्वर अर्थात आराध्य।

713. **भैरवाधीशपालिनी** – भैरव के अधीश शिव का पालन पोषण करने वाली। अधीश अर्थात स्वामी या मालिक। भगवान शिव की रसोई देवी ही संभाले हुए है जिसके द्वारा भगवान शिव का पालन होता है।

714. **भैरवाधीशरमणी** – शिव को आनन्दित करने वाली।

715. **भीमेश्वरी** – शिव की आराधनीया। भीम अर्थात भयानक लोगों या वीर योद्धाओं की ईश्वरी। भीमा च असौ ईश्वरी, इस व्युत्पत्ति से अर्थ हुआ जो शिव की गृहिणी भी हैं और ईश्वरी भी हैं। ईश्वरी का अर्थ है कर्तुम्, अकर्तुम् और अन्यथाकर्तुम् में समर्थ होना।

716 **भीममाता** – भीम की माता या वीर बहादुर पुरुषों की माता। भगवान शिव का पालन पोषण करने वाली। उणादि कोष में माता का अर्थ दिया गया है, जो सत्कार करती है। माति सत्कारयति इति माता। भगवान शिव का सत्कार करने वाली। महाभारत के भीम की माता कुन्ती के स्वरूप वाली।

717. **भीमशब्दपरायणा** – भयंकर शब्द करने में लगी हुईं। शत्रुओं के समक्ष भयंकर रूप से गर्जना करने वाली।

718. **भीमरूपा** – शिव को देखने वाली, शिव को दिखाने वाली अर्थात शिव का साक्षात्कार कराने वाली। भीमम् रूपयति इति भीमरूपा। रूप अर्थात जो आँखों से दिखता है। जिनका डरावना रूप आँखों से दिखता है। जो स्वयं डरावनी हैं। भयानक या भयंकर रूप वाली।

719. **भीमेशी** – शिव पर शासन या अनुशासन करने वाली। शासन करने का तात्पर्य है कि शिव देवी के आदेश का हमेशा पालन करेंगे। देवी जो कहेंगी वैसा ही करेंगे और कभी मनाही नहीं करेंगे। ईष्टे का अर्थ प्रेरयति भी होता है तब अर्थ होगा जो शिव को निर्धारित कार्य में प्रेरित करने वाली है। भीम की ईश्वर अर्थात आराध्या। वीर योद्धाओं की ईश्वरी।

720. **भीमा** – भीम अर्थात शिव की गृहिणी या शक्ति। महाभारत के भीम की शक्तिस्वरूपा।

721. **भीमवरप्रदा** – भीम को वरदान देने वाली। भक्तों को श्रेष्ठ या बड़ा वरदान देने वाली। भीम विशालता या बड़े होने का प्रतीक है।

722. **भीमपूजितपादाब्जा** – भीम के द्वारा जिनके चरणकमलों की पूजा की गई। शिव के द्वारा पूजित चरण कमलों वाली। महाभारत के भीम के द्वारा पूजित चरण कमलों वाली।

723. **भीमभैरवपालिनी** – भयंकर रूप वाले भैरव का पालन करने वाली।

724. **भीमासुरध्वंसकरी** – भयंकर असुरों का ध्वंस करने वाली। ध्वंस का अर्थ है वहीं पर नष्ट करना या इस प्रकार टुकड़े टुकड़े कर देना कि वह दुबारा से अपना कार्य न कर सके। ध्वंस में वहीं पर टुकड़े टुकड़े किये जाते हैं जबकि नाश में नश् अदर्शने सूत्र से वह चीज ओझल हो जाती है अर्थात जहाँ से आयी है वहाँ वापस चली जाती है।

725. **भीमदुष्टविनाशिनी** – भयंकर दुष्टों का विनाश कर देने वाली।

726. **भुवना** – 14 भुवनस्वरूपा या चौदह भुवनों की शक्ति स्वरूपा। त्रिभुवन स्वरूपा। भुवनानि अस्याः सन्ति इति भुवना अर्थात भुवनों वाली अर्थात 14 भुवनों की स्वामिनी।

727. **भुवनाराध्या** – 14 भुवनों में आराधनीय। तीनों लोकों अर्थात वहाँ के लोगों द्वारा आराधना करने योग्य।

आराधना अर्थात समग्र रूप से अर्थात अपना सम्पूर्ण लगाकर ईश्वर को प्रसन्न करने की क्रिया। आ का अर्थ है समग्र रूप से, राध् धातु का अर्थ है प्रसन्न करना या अनुकूल बनाना। आराधना में व्यक्ति अपने को भूलकर ईश्वर में लीन हो जाता है, वही अपना सर्वस्व अर्पण है।

728. **भवानी** – संसार या शिव का जीवन दान देने वाली। भवम् अनति आनयति जीवयति अर्थात शिव को जीवित करने वाली। संसार, कामदेव और शिव की रचना करने वाली। पार्वती।

729. **सदा भूतिदा** – भक्तों को हमेशा ऐश्वर्य देने वाली। सदैव ऐश्वर्य को प्रदान करने वाली। ऐश्वर्य का अर्थ होता है जो ईश्वर से सम्बन्धित हो अर्थात ईश्वर से सम्बन्धित धन सम्पदा, शक्ति, ज्ञान आदि।

730. **भयदा** – दुष्टों, राक्षसों को भय देने वाली। दुष्टों/राक्षसों को भय देने वाली।

731. **भयहन्त्री** – उपासको के भय का नाश करने वाली। भक्तों के भयों को नष्ट कर देने वाली।

732. **अभया** – जो भय से रहित हैं। भक्तों को अभय देने वाली। अभय + आ, आ का अर्थ देना भी होता हैं और नाश करना भी होता है। अभय स्वरूपा।

733. **भयरूपिणी** – दुष्टों असुरों के लिए भय स्वरूपा। उनके भीतर व्याप्त भय का भाव भी देवी का एक रूप है। दुष्टों/राक्षसों के लिए भय रूप धारण करने वाली।

734. **भीमनादाविह्वला** – राक्षसों के द्वारा किए गये भयंकर नाद (गर्जना) से अविह्वल अर्थात न डरने वाली। भयंकर गर्जना वाली एवं सम्पूर्ण रूप से विह्वल (क्षुब्ध अर्थात क्रोधित, अशान्त) स्वरूप वाली। दुष्टों को मारने के लिए क्रोधित एवं अशान्त हो जाती हैं। उन्हें शान्ति तभी मिलती है जब दुष्ट मारे जाते हैं। आ+ विह्वल अर्थात सम्पूर्ण रूप से विह्वल। विह्वल अर्थात दुष्टों को मारने में अत्यन्त उत्सुक। प्रेम से ओतप्रोत, किसी भी रस से ओतप्रोत। वीर रस से ओतप्रोत। भयंकर गर्जना करने से विह्वल हो जाने वाली। विह्वल का अर्थ है अस्त व्यस्त होना या सहज स्वरूप खो देना। भीमनाद + अह्विल से भी अर्थ निकल सकता है तब अर्थ होगा भयंकर शब्दों से भी जो त्रस्त नहीं होती अर्थात डरती नहीं है।

735. **भयभीतिविनाशिनी** – अत्यन्त भय या महाभय का विनाश करने वाली। भय और भीति दोनों का एक ही अर्थ है। दोनों शब्द का प्रयोग होने से पहले शब्द का अर्थ अत्यन्त हो गया। भयंकर भय या अतिशय बढ़े हुए भय को नष्ट कर देने वाली।

736. **मत्ता** – सोम पान आदि करने पर मत्त हो जाने वाली। मत्त का अर्थ है हर्ष या आनन्द से भरी हुई, फूली हुई।

737. **प्रमत्तरूपा** – अतिशय मस्त हो जाने वाले स्वरूप वाली।

738. **मदोन्मत्तरूपिणी** – बल के अभिमान से उन्मत्त अर्थात भरी हुई या पूर्ण। मद अर्थात अभिमान। उन्मत्त अर्थात भरी हुई, फूली हुई, पूर्ण। मद से उन्मत्त रूप वाली।

739. **मान्या** – शिव की शक्तिस्वरूपा, विष्णु की शक्तिस्वरूपा। मैत्रावरूण की शक्तिस्वरूपा। मान्य का एक अर्थ शिव, विष्णु, मैत्रावरूण होता है। मानने योग्य, सम्मान के योग्य, आदर के योग्य, पूजनीय। प्रार्थनीय।

740. **मनोज्ञा** – अतिशय सुन्दर। मनोहर। मनः जानाति। मन इसको जानता है अर्थात मन इसको पसन्द करता है। मन को जानता है अर्थात मन को अच्छा लगता है। यहाँ जानना अच्छा लगने का अर्थ दे रहा है।

741. **माना** – मान स्वरूप वाली। मान या सम्मान स्वरूपा। मान + आ, आ का अर्थ देना एवं नाश करना होता है। अपने उपासकों को सम्मान देने वाली एवं दुष्टों तथा अधर्मियों के सम्मान का नाश करने वाली।

742. **मङ्गला** – हर्ष, सम्पत्ति और कल्याण देने वाली। मंगल + आ, आ का अर्थ है देना, नाश करना। ब्रह्मवैवर्त पुराण में मंगल का अर्थ हर्ष, सम्पत्ति और कल्याण बताया गया है। जिसका नाम लेने से अच्छे कार्य को शुरू करने पर वह काम बन जाता है, मंगला कहलाती हैं।

743. **मनोहरा** – मन को हर लेने वाली अर्थात अति सुन्दर।

744. **माननीया** – जो सम्मान करने योग्य हो अर्थात सम्माननीय, पूजनीय, आदरणीय। अतिशय मान अर्थात सम्मान के योग्य।

745. **महापूज्या** – बड़े देवताओं अर्थात ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि के द्वारा पूजा करने योग्य। अतिशय पूजा के योग्य।

746. **महिषीदुष्टमर्दिनी** – ऐसी महारानी (पटरानी) जो दुष्टों का मर्दन करती हैं। महिषी च असौ दुष्टमर्दिनी, यह व्युत्पत्ति होगी। पापियों और दुष्टों का मर्दन करने वाली।

747. **महिषासुरहन्त्री** – महिषासुर का संहार करने वाली अर्थात मार देने वाली। महिषासुर क्रोध का प्रतीक है। किसी के अनुसार महिषासुर चित्त की विक्षेप शक्ति का प्रतीक है क्योंकि जिस प्रकार से महिषासुर हर क्षण अपने रूप बदलता है, उसी प्रकार से चित्त भी क्षण क्षण में अपना रूप बदलता है।

748. **मातङ्गी** – मदशील अंगों वाली। मदशील अर्थात आनन्दयुक्त, हल्का सा झूमते हुए बाहरी दुनिया से बेखबर। मतंग ऋषि के आश्रम में मतंग ऋषि की कन्या के रूप में इन्होंने अवतार लिया था। मत अर्थात विचार को प्रकट करने वाली अर्थात वैखरी वाणी स्वरूपा। मतम् गमयति इति मातंगी।

749. **मयवासिनी** – मय दानव के स्थान पर निवास करने वाली।

750. **माध्वी** – मधुविद्या अर्थात आत्मविद्या स्वरूपा। माधवी लता स्वरूपा। माध्वी नाम की नदी स्वरूपा, जिसका उल्लेख पुराणों में है। महुऐ से या मधु से बनाई गई शराब की तरह अर्थात इस शराब की तरह लोगों को मदमस्त करने वाली। (बगलामुखी नामावली में देखें।)

751. **मधुमयी** – बसन्त के सौन्दर्य से युक्त।

752. **मुद्रा** – प्रसन्नता देने वाली। मुदम् राति इति मुद्रा। मुद्रा स्वरूपा। सात्विक मुद्राओं को धारण करने वाली। मुद्रा का अर्थ देवताओं को प्रसन्न करने वाली एवं दुष्टों को खदेड़ने वाली भी होता है। मु से मोदति अर्थ निकलता है एवं द्रा से द्रावयति अर्थात खदेड़ना अर्थ निकलता है। मु का अर्थ बन्धन होता है। बन्धन को भगा देने वाली अर्थात समाप्त कर देने वाली। मूञ् बन्धने धातु होती है। अंगूठी धारण किये हुए। मुद्रा अस्या अस्ति इति मुद्रा। मुद्रा का एक अर्थ है अंगूठी। अंगूठी धारण किये हुए। मुद्रा नामक कर्णाभूषण धारण किये हुए। मुद्रा अस्या अस्ति इति मुद्रा। जिसने सारे संसार को मुद्रित कर रखा है। तुर्य चेतना में विश्व को मुहरबन्द करने वाली दशा या अवस्था स्वरूपा। शरीर के अंगों के विन्यास जिसे मुद्रा कहते हैं, उसमें विराजमान। वह युक्ति जो आत्म साक्षात्कार का आनन्द देती है। जो आध्यात्मिक चेतना का आनन्द देती है। कुछ अवयवों और इन्द्रियों का विशेष नियन्त्रण जिससे ध्यान और समाधि में मदद मिलती है। मुदम् राति ददाति वितरति इति मुद्रा। मुद अर्थात आनन्द के वितरण के कारण इसे मुद्रा कहते हैं। मुम् बन्धं द्रावयति इति मुद्रा अर्थात पाश या बन्ध को नष्ट करने वाली। मुद्रयति इति मुद्रा। विश्व की भीतरी तुरीया सत्ता में मुद्रित अर्थात मोहरबन्द होने के कारण इसे मुद्रा कहते हैं।

753. **मुद्रिकामन्त्ररूपिणी** – प्रसन्नता देने वाली और मन्त्रस्वरूपिणी। मुदम् राति इति मुद्रा, मुद्रिका। जो प्रसन्नता दे वह मुद्रा या मुद्रिका है। मुद्रिका च असौ मन्त्ररूपिणी। विशेष प्रकार की शारीरिक चेष्टा या हाथों की उंगलियों को विशेष प्रकार से मोड़ने पर भी मुद्रा बनती है जिससे देवता प्रसन्न होते हैं। ऐसी मुद्रा करने के

दौरान बोले जाने वाले मन्त्र के स्वरूप वाली। मुद्रिका और मन्त्र के स्वरूप वाली। खेचरी, वज्रोली मुद्रा में हाथ की अंगुलियों का प्रयोग नहीं होता।

754. **महाविश्वेश्वरीदूती** – महाशिव की गृहिणी और उनका दौत्यकर्म करने वाली अर्थात शिव के सन्देश को लोगों को बताने वाली। महाविश्वेश्वर का अर्थ है शिव। श्रेष्ठ विश्वेश्वरी भगवती दुर्गा की दूती अर्थात उनका सन्देश पहुँचाने वाली। गुणों से महान एवं विश्व की स्वामिनी पराशक्ति की दूती।

755. **मौलिचन्द्रप्रकाशिनी** – मस्तक पर स्थित चन्द्रमा से प्रकाशित करने वाली। मौलि अर्थात मस्तक, सिर।

756. **यशः स्वरूपिणी देवी** – साक्षात यश के स्वरूप को धारण करने वाली देवी।

757. **योगमार्गप्रदायिनी** – योग मार्ग को प्रदान करने वाली अर्थात अपने भक्तों को योग मार्ग का रास्ता दिखाती हैं।

758. **योगिनी** – भक्त को भगवान से मिलाने वाली। योग विद्या में पारंगत। योग विद्या का अभ्यास करने वाली।

759. **योगगम्या** – योग के द्वारा जानने योग्य।

760. **याम्येशी** – रात्रि की ईश्वरी। रात्रि में जिनकी उपासना होती है। याम्या रात्रि के लिए रूढ़ हैं।

761. **योगरूपिणी** – योग के स्वरूप वाली। भक्ति योग, ज्ञानयोग, कर्मयोग आदि देवी के ही रूप हैं। व्यक्ति पदार्थ, अवस्था, समय सभी कुछ शक्ति का रूपान्तरण हैं और शक्ति ही देवी हैं।

762. **यज्ञाङ्गी** – यज्ञों के अंगों से युक्त। यज्ञ रूपी अंगों से युक्त। विभिन्न प्रकार के यज्ञ जिनके अंग हैं। यज्ञों में प्रयुक्त सामग्री जैसे हवन सामग्री, घी, नैवेद्य आदि अंग हैं जिनके।

763. **योगमयी** – योग से युक्त। ब्रह्म से ऐक्य योगावस्था है। जिनकी चित्तवृत्ति का निरोध हो गया है वह ऐक्य की स्थिति में है।

764. **जपरूपा** – जपस्वरूपा। जपम् रूपयति अर्थात जप को देखती है, पालन करती है, विचार करती है। भगवान के नाम और मन्त्र की पुनरावृत्ति जप है। जप है ज्ञापक जिनका अर्थात जप से जिनका बोध होता है। रूप्यते इति रूपा से रूपा का अर्थ ज्ञापिका यो बोधिका भी होता है।

765. **जपात्मिका** – जप में व्याप्त। आत्मा या आत्मिका का अर्थ व्याप्त भी होता है। जिनका हृदय जप में निवास करता है। आत्मा अर्थात हृदय। जप में निरन्तर गति करने वाली। आत्मा शब्द अत् सातत्यगमने धातु से बना है अतः आत्मा का अर्थ निरन्तर गति करने वाला होता है। यही कारण है कि निरन्तर गति करने वाला अर्थ निकाला गया है। जप में व्याप्त। आप्लृ धातु से आत्मा शब्द बनाने पर आत्मा का व्याप्त अर्थ आता है।

766. **युगाख्या** – युग की संज्ञा या नाम से विभूषित।

767. **युगान्ता** – युग का अन्त कर देने वाली (प्रलय काल में)।

768. **योनिमण्डलवासिनी** – कारणों के समूह में रहने वाली क्योंकि देवी सभी कारणों की कारण हैं। कारण हमेशा कार्य में रहता है। पंचमहाभूत, पंचतन्मात्र, ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि जितने भी ज्ञात कारण हैं उन सभी में रहने वाली क्योंकि देवी की तुलना में सभी कारण देवी के कार्य हुए और देवी उनका कारण हैं। भिन्न भिन्न वस्तुओं के भिन्न भिन्न कारण होते हैं और देवी ऊर्जा या शक्ति रूप में सभी कारणों में रहती हैं। योनि का अर्थ यदि स्त्री लिया जाए तो अर्थ होगा स्त्री समूह में रहने वाली। योनि मंडल (कारण शरीर) में निवास करने वाली। देव्यथर्वशीर्ष में योनि का अर्थ कारण शरीर बताया गया है।

769. **अयोनिजा** – कारण से रहित होकर प्रकट होने वाली अर्थात जिनका कारण नहीं है अर्थात जो किसी की योनि अर्थात किसी के शरीर से उत्पन्न नहीं होती हैं।

770. **योगनिद्रा** – योग में बताई गई योग निद्रा स्वरूपा। यह जागृत और स्वप्न के बीच की अवस्था है जिसे लेटकर के ही किया जाता है। योग की स्थिति में होने के कारण संसार से निद्रित हैं अर्थात हटी हुई हैं अर्थात संसार का होश नहीं है। योग अर्थात ब्रह्म से ऐक्य। युजिर् समाधो धातु से योग का अर्थ समाधि भी होता है। चित्तवृत्ति निरोध या ब्रह्म से ऐक्य योग है। समाधि की अवस्था में होने के कारण संसार से निद्रित अर्थात संसार का होश (awareness) नहीं।

771. **योगानन्दप्रदायिनी** – योग के आनन्द को प्रदान करने वाली। जीवात्मा और परमात्मा से ऐक्य योग है।

772. **रमा** – मन और नेत्र जिसमें रमते हैं अर्थात लगते हैं, टिकते हैं। लक्ष्मी स्वरूपा। रमति इति रमा अर्थात जो क्रीड़ा करती है वह रमा है। जगत की उत्पत्ति, पालन और संहार देवी की क्रीड़ा है।

773. **रतिप्रिया नित्या** – कामदेव की पत्नी रति की प्रिय हैं एवं जिनका अस्तित्व सदैव रहने वाला है। (यदि नित्यं रतिप्रिया है तो अर्थ होगा जिन्हें नित्य भक्ति पसन्द है। शिव ताण्डव स्तोत्र में रति का अर्थ भक्ति दिया गया है। सदैव ही कामदेव की पत्नी की प्रिया है अर्थात कामदेव की पत्नी जिन्हें हमेशा पसन्द करती हैं)।

774. **रतिरागविवर्धिनी** – भक्तों के हृदय में भक्ति एवं प्रेमियों के हृदय में प्रेम बढ़ाने वाली। प्रेम के राग/अनुराग को बढ़ाने वाली। भक्ति के प्रति राग को बढ़ाने वाली। राग का अर्थ है अनुराग, प्रीति, प्राप्त करने की इच्छा।

775. **रमणी** – जिसका साथ होने पर आनन्द की अनुभूति होती है। ऐसे सुन्दर रूप वाली जिसमें मन दौड़ता है, जिसमें मन रमण करने लगता है, मन को हर लेने वाली। रमु क्रीडायाम धातु भी होती है तब अर्थ होगा भक्तों के साथ खेल खेलने वाली। अपने को माया में छिपाकर छुपा – छिपी खेलती है। जगत की उत्पत्ति, पालन, सहार रूपी खेल खेलने वाली।

776. **राससम्भूता** – रास लीला से उत्पन्न आनन्द स्वरूपा। रास लीलाओं अर्थात प्रेम लीलाओं से प्रकट होने वाली। प्रेम के रूप में भलीभाँति स्थित। सभी आनन्दों के समूह में सम्यक रूप से सत्ता वाली अर्थात रहने वाली। रसानाम समूहः रासः अर्थात सभी रसों (आनन्दों) का समूह रास है। रास लीला का लोगों द्वारा गलत अर्थ लगाया जाता है। इस लीला में भगवान अपने भक्तों को आनन्द देने के लिए आये हैं और खुशी का सबसे ऊँचा शिखर नृत्य होता है क्योंकि खुशी में ही आदमी नाचता है। रास लीला ब्रह्म और जीव के मिलन का, भक्त और भगवान के मिलन का प्रतीक है जिसमें भगवान अपनी खुशियाँ भक्तों को बाँटते हैं।

777. **रम्या** – रमणीय आकृति वाली। ऐसी सुन्दरता वाली जिनमें मन रमण करने लगे, लगने लगे। बिना आभूषणों के प्राकृतिक रूप से ऐसी सुन्दरता वाली कि नेत्र और मन खिंच जाएं। रन्तुम् योग्या इति रम्या।

778. **रासप्रिया** – रास है प्रिय जिन्हें। रास अर्थात रस (आनन्द) का समूह। लास्य नृत्य प्रिय है जिसे। रास का एक अर्थ लास्य नृत्य भी हेता है। रास का अर्थ है विलास, आनन्दमय क्रीड़ा। रास गोपियों का एक नृत्य विशेष है जिसमें गोपिया घेरा बनाकर नाचती हैं और हर दो गोपियों के बीच में भगवान कृष्ण होते हैं। हर गोपी को लगता है कि कृष्ण उन्हीं के साथ है जबकि वे सभी के साथ थे।

779. **रसा** – आनन्दस्वरूपा या पृथिवी स्वरूपा।

780. **रणोत्कण्ठा** – रण अर्थात युद्ध के लिए उत्कण्ठित रहने वाली। उत्कण्ठित का अर्थ है उत्सुक, उत्साहित, चाव से भरा हुआ।

781. **रणोस्था** – युद्ध भूमि में शिव के साथ शक्ति रूप में स्थित। रण+उ (शिव)+स्था। यदि रणस्था नाम है तो अर्थ होगा रण अर्थात युद्ध भूमि में विराजमान या स्थित। वेद में महेरणाय शब्द आया है जहाँ रण का अर्थ रमणीय किया गया है। रमणीय शिव में स्थित, ऐसा अर्थ होगा।

782. **वरारंगप्रदायिनी** – ऐसी श्रेष्ठ देवी जो मनोरंजन (प्रसन्नता) देती हैं। वरा च असौ रंगप्रदायिनी। रंजयति इति रंगः।

783. **रेवती** – रेवती नक्षत्र स्वरूपा। बलराम की पत्नी से अभेद है जिनका। रेवृ+अतच् प्रत्यय से पुल्लिंग में रेवत और स्त्रीलिंग में रेवती बनेगा। रेवृ अर्थात हल्लागुल्ला करना । युद्ध भूमि में शत्रु को ललकारने वाली। र+इ+वती। र अर्थात अग्नि, इ अर्थात इला अर्थात पृथ्वी। जो शत्रुओं या दुष्टों के लिए अग्नि की तरह एवं उपासकों के लिए पृथ्वी की तरह है अर्थात क्षमा करने वाली। र अर्थात धन, इ अर्थात वाणी, जो लक्ष्मी और सरस्वती दोनों से युक्त है। सम्बुद्धि या श्रेष्ठ बुद्धि से युक्त। एकाक्षरी कोष में रे का अर्थ सम्बुद्धि दिया गया है।

784. **रणजैत्री** – युद्ध भूमि में विजय प्रदान करने वाली।

785. **रसोद्भूता** – आनन्द रस से उत्पन्न होने वाली।

786. **रणोत्सवा** – जिनके लिए रण (युद्ध) उत्सव हो जाता है अर्थात रण में जो आनन्दित होती है।

787. **लता** – लता स्वरूपा अर्थात फैलने वाली अर्थात सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त होने वाली। लता अर्थात लपेटने वाली। जो विश्व को लपेटे हुए है अर्थात विश्व जिनके अन्दर है।

788. **लावण्यरूपा** – अतिशय सुन्दर रूप वाली। मोतियों के अन्दर जिस प्रकार छाया की तरलता होती है, उसी प्रकार की तरलता यदि शरीर के अंगों में हो तो वह लावण्यता कहलाती है। घ्वन्यालोक के अनुसार एक अंग से नहीं बल्कि सम्पूर्ण अंगों से लावण्यता आती है। लावण्य ऐसी सुन्दरता है जो निर्दोष एवं पारदर्शी होती है अर्थात सामने रखी वस्तु की छाया या प्रतिबिम्ब उसके भीतर मानो तरल होती है अर्थात हिलती डुलती है। जिस सुन्दरता में मोतियों की सीप की तरह झिलमिलाहट एवं ठंडक होती है वह लावण्यता कहलाती है। गुणयुक्त सुन्दरता लावण्यता है। लवण अर्थात नमक। नमक से भोजन स्वादिष्ट हो जाता है उसी प्रकार गुणों से शरीर की सुन्दरता बढ़ जाती है।

789. **लवणाब्धिस्वरूपिणी** – लवणयुक्त समुद्र अर्थात खारे पानी के समुद्र स्वरूपा। पुराणों में सात समुद्रों में से एक समुद्र यह भी है। ब्रह्मवैवर्त पुराण में लिखा है कि श्रीकृष्ण की पत्नी विरजा के गर्भ से सात पुत्र हुए जो सात समुद्र बने। इनमें से एक पुत्र के रोने के कारण थोड़ी देर के लिए कृष्ण का वियोग हो गया। इस पर विरजा ने उसे शाप दिया कि तू लवण समुद्र (नमक युक्त समुद्र) होगा और तेरा जल कोई न पिएगा।

790. **लवङ्गकुसुमाराध्या** – लौंग के पुष्पों द्वारा आराधना करने योग्य। लौंग के पुष्प को पूजा में चढ़ाते हैं या लौंग से हवन किया जाता है।

791. **लोलजिह्वा** – चंचल या लपलपाती जीभ वाली।

792. **लेलिहा** – भक्तों के दुखों को सर्वतोभावेन अर्थात अत्यन्त रूप से चाटने वाली अर्थात समाप्त करने वाली। असुरों की सम्पत्ति को, ऐश्वर्य को अत्यन्त रूप से चाट जाने वाली। लिह् धातु में यङ्लुगन्त प्रत्यय करने से ललिह शब्द बनता है जिसका स्त्रीलिंग लेलिहा है। विश्व को बार बार चाट लेने वाली अर्थात प्रलय करने वाली। यङ्लुगन्त प्रत्यय लगाने से अत्यन्त या बार बार अर्थ आता है। तन्त्र की एक मुद्रा का नाम लेलिहा है। इस मुद्रा में हथेली की अनामिका एवं अंगूठा के अग्र भाग को मिला लिया जाता है और बाकी तीनों अंगुली सीधी कर दी जाती हैं। दोनों हाथों में ऐसा करना होता है और फिर दोनों हाथों को हृदय के पास सामने रखा जाता है। तन्त्र में अंगुलियों की एक प्रकार की मुद्रा है।

793. **वशिनी** – सभी को वश में कर लेने वाली। शमी वृक्ष स्वरूपा। शिव की पत्नी स्वरूपा या स्त्री स्वरूपा। वशिनी का अर्थ शमी का पेड़, स्त्री, पत्नी होता है।

794. **वनसंस्था** – वन में विराजमान रहने वाली। वन–देवियों के रूप में वन में विराजमान।

795. **वनपुष्पप्रिया** – वन के फूल हैं प्रिय जिन्हें।

796. **वरा** – श्रेष्ठ स्वरूप वाली या अंगों वाली। जो गुणों, शक्ति, ऐश्वर्य में दूसरों से श्रेष्ठ है। वर का अर्थ होता है श्रेष्ठ।

797. **प्राणेश्वरी** – प्राणों की ईश्वरी अर्थात उसे देने वाली या पुष्ट बनाने वाली।

798. **बुद्धिरूपा** – त्रिगुणात्मिका प्रकृति के पहले विकार स्वरूपा। सांख्य दर्शन में सृष्टि के विकास क्रम में प्रथम विकार महत् अर्थात बुद्धि को बताया गया है। भगवान गणेश की पत्नी बुद्धि स्वरूपा। गणेश की एक पत्नी का नाम सिद्धि है। दूसरी पत्नी का नाम कुछ लोग बुद्धि लेते हैं और कुछ लोग ऋद्धि लेते हैं। बुद्धिम् रूपयति इति बुद्धिरूपा। श्रेष्ठ बुद्धि को दिखाने वाली। बुद्धि को स्वरूप देने वाली अर्थात बुद्धि की रचना करने वाली। बुद्धि का तात्पर्य है विवेक, स्मृति, समझ, अक्ल, मति। समझ वालों को मार्गदर्शन करने वाली।

799. **बुद्धिदात्री** – गणेश जी को बुद्धि नामक पत्नी देने वाली। बुद्धि को ब्रह्मा जी के दिमाग से उत्पन्न बताया गया है तथा गणेश और बुद्धि की सन्तान लाभ है। समझ या मनीषा देने वाली। बुद्धि को प्रदान करने वाली। बुद्धि अन्तःकरण की शक्ति है जिसके द्वारा मनुष्य उपस्थित विषय पर ठीक ठीक विचार या निर्णय करता है।

800 **बुधात्मिका** – विद्वान के स्वरूप वाली अर्थात विदुषी। ज्ञान स्वरूप वाली। विद्वानों में व्याप्त। विद्वानों में निरन्तर गई हुई। आत्मा शब्द का अर्थ निरन्तर गति करने वाली, व्याप्त होता है।

801. **शमनी** – अन्तःकरण का शमन करने वाली अर्थात शान्त करने वाली। शत्रुओं का शमन करने वाली अर्थात नाश करने वाली। शान्त स्वरूप वाली।

802. **श्वेतवर्णा** – सफेद वर्ण वाली सरस्वती या गौरी देवी से अभेद है जिनका।

803. **शाङ्करी** – शंकर की शक्ति या पार्वती।

804. **शिवभाषिणी** – शिव के नाम का उच्चारण या जप करने वाली।

805. **शाम्यरूपा** – शान्ति स्वरूप वाली। शाम्य का अर्थ है शान्ति, बन्धुत्व (भाईचारा) शम से सम्बन्धित, शाम का भाव। शान्त करने योग्य रूप वाली। भक्ति से इनके उग्र रूप को शान्त कर लिया जाता है।

806. **शक्तिरूपा** – शक्तिस्वरूपिणी। शक्ति का तात्पर्य है कार्य करने की उत्पादन क्षमता। शक्ति वह शारीरिक गुण या धर्म है जिसके द्वारा अंगों का संचालन या दूसरे कार्य होते हैं। योग्यता, क्षमता या काबिलियत भी शक्ति है। देवी देवताओं में पाया जाने वाला एक विशेष गुण भी शक्ति है।

807. **शक्तिबिन्दुनिवासिनी** – शक्ति यन्त्र के बिन्दु में निवास करने वाली। श्रीयन्त्र, लक्ष्मी यन्त्र, भैरवी यन्त्र, छिन्नमस्ता यन्त्र आदि जो शक्ति यन्त्र होते हैं उनके केन्द्र बिन्दु में निवास करने वाली। शक्ति के केन्द्र में निवास करने वाली। शक्ति ही है एक बिन्दु (मुख्य केन्द्र, target) उसमें निवास करने वाली। शक्ति रूपी बिन्दु में निवास करने वाली। शक्ति वर्ण में बिन्दु के रूप में निवास करने वाली। स्वर शिव वर्ण है और व्यंजन शक्ति वर्ण हैं। वर्णों में ऊपर अनुस्वार या बिन्दु लगाने से वे बीजमन्त्र बन जाते हैं। बिन्दु देवीशक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। शिवशक्ति मिलन से एक परबिन्दु पैदा होता है जो केन्द्र में होता है तथा जिससे त्रिकोण बनता है। शक्ति निर्माण के प्राथमिक त्रिकोण में एक कोण में स्थित बिन्दु शक्ति बिन्दु कहलाता है जो गतिमान होता है। अन्य दो बिन्दु शिव बिन्दु और शिवशक्ति मिश्र बिन्दु होते हैं। शिवबिन्दु स्थिर होता है। शक्ति निर्माण के प्रथम त्रिकोण के गतिमान शक्तिबिन्दु में रहने वाली।

808. **सर्वेश्वरी** – सभी की ईश्वरी। ईश्वरी अर्थात पालन पोषण करने वाली। जन्म देना, पालन पोषण करना और संहार करना ईश्वर के कार्य हैं।

809. **सर्वदात्री** – सब कुछ प्रदान करने वाली। उपासकों को उनके सभी अभीष्ट या सभी मनोकामनाऐं देने वाली।

810. **सर्वमाता** – सभी की जननी। जड़ और जंगम सभी पदार्थों को उत्पन्न करने वाली हैं।

811. **शर्वरी** – रात्रि स्वरूपा। शिव को देने वाली अर्थात शिव का साक्षात्कार कराने वाली। शर्वम् (शिवम्) राति इति शर्वरी। दुष्टों की चेष्टाओं को नष्ट करने वाली। श्रृणाति चेष्टानि अस्याम् इति शर्वरी।

812. **शाम्भवी** – शम्भु अर्थात शिव से सम्बन्धित। पार्वती स्वरूपा। योग की शाम्भवी मुद्रा स्वरूपा। भगवान शिव ने यह मुद्रा पार्वती जी को सिखाई थी जिससे वे और अधिक सजग रह सकें।

813. **सिद्धिदा** – भक्तों एवं उपासकों को सिद्धियाँ देने वाली। सिद्धि का अर्थ है अतिप्राकृतिक शक्तियाँ।

814. **सिद्धा** – अति प्राकृतिक शक्तियों से युक्त। अणिमा, लघिमा, महिमा आदि अष्ट सिद्धियों से युक्त। पूर्णत्व (मोक्ष) को प्राप्त। जो अपने अस्तित्व के लिए दूसरे पर निर्भर नहीं है।

815. **सुषुम्ना** – अधिक सुन्दर ढंग से कथन करने वाली। म्ना कथने धातु होती है। सुषुम्ना नाड़ी स्वरूपा। इसमे सुषु शब्द होता है। म्ना का अर्थ है कहना। सुषुम्नानाड़ी में विराजमान।

816. **स्वरभासिनी** – स्वतः प्रकाशमान। स्वयं राजते इति स्वरः। स्वर वर्ण किसी के अधीन नहीं होते पर व्यंजन स्वर के अधीन होते हैं इसी कारण स्वर को स्वर कहा जाता है। स्वर्ग लोक को प्रकाशित करने वाली। वेद विद्या के द्वारा देदीप्यमान होने वाली या बोलने वाली। वेद तीन स्वरों से बोले जाते हैं जो हैं, उदात्त, अनुदात्त और स्वरित।

817. **सहस्रदलमध्यस्था** – सहस्रारचक्र के मध्य में स्थित। हजारों कमल दलों के बीच निवास करने वाली।

818. **सहस्रदलवर्तिनी** – सहस्रारचक्र की प्रत्येक पंखुड़ी मे विराजमान। हजारों कमल दलों में स्थित होकर व्यवहार करने वाली।

819. **हरप्रिया** – शिव की प्रिया अर्थात शिव जी जिनको बहुत अधिक पसन्द करते हैं।

820. **हरध्येया** – शिव के द्वारा ध्यान करने योग्य।

821. **हुंकारबीजरूपिणी** – हुंकार ध्वनि या हुम् बीज के स्वरूप वाली। क्रोध की अवस्था में हुम बीज का उच्चारण होता है।

822. **लंकेश्वरी** – लंका की ईश्वरी अर्थात लंका में जिनकी उपासना होती है। हृदय को भी लंका कहते हैं। हृदय में विराजमान परमात्मा स्वरूपा।

823. **तरला** – बहते हुए द्रव की तरह अर्थात दयार्द्र या करुणामयी। चमक वाली या कान्तिवान। हार वाली या घोड़ा वाली। उत्तम हार पहने हुए। अच्छे घोड़े पर सवारी करने वाली। तरल का एक अर्थ हार, घोड़ा है। चंचल प्रकृति वाली अर्थात हमेशा स्पन्दनशील। चंचल प्रकृति वाली अर्थात सुन्दरी। चंचल स्त्रियाँ सुन्दर मानी जाती हैं। चंचल स्वभाव वाली।

824. **लोममांसप्रपूजिता** – लोम (शरीर के रोएं) और माँस द्वारा अच्छी प्रकार से पूजित। रूद्राध्यायी के सप्तम अध्याय में आया है कि लोम की आहूति देते हैं, माँस की आहूति देते हैं। इस मन्त्र को पढ़ना ही शिव की (अर्थात शक्ति की) पूजा करना है। सम्भव है कि इस मन्त्र से पहले हवन किया जाता होगा। ऐसा कहा जाता है कि

गृहस्थ को घर में इस मन्त्र को नहीं पढ़ना चाहिए। देवी की पूजा में जब माँस चढाया जाता होगा तो माँस के साथ रोएं भी आ जाते होंगे। पूजा करने योग्य।

825. **क्षेम्या** – क्षेम/कल्याण से युक्त कल्याणकारिणी। कुशल मंगल से युक्त अर्थात इसे देने वाली।

826. **क्षेमकरी** – कल्याण करने वाली। आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रगति, मोक्ष और जीवन की सभी आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति जैसे रोटी, कपड़ा और मकान, बिजली, पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि की पूर्ति कल्याण करना कहलाता है।

827. **क्षामा** – दुबली पतली अर्थात सुन्दर। पृथ्वी, धरती, भूमि स्वरूपा। क्षाम का एक अर्थ भगवान विष्णु है। इस प्रकार क्षामा का अर्थ भगवान विष्णु की शक्ति स्वरूपा

828. **क्षीरबिन्दुस्वरूपिणी** – दुग्ध ही है सार, उस सार के स्वरूप वाली। गाय का सार उसका दूध होता है। क्षीर सागर में बूँद स्वरूपा अर्थात हर इकाई भी वही है। श्रेष्ठ दुग्ध के बूँद के स्वरूप वाली। दूध के सागर की बिन्दु भी यही है। बिन्दु का अर्थ जानने वाला या ज्ञाता भी होता है। क्षीर अर्थात दूध अर्थात अमृत। अमृत तत्व को जानने वाले स्वरूप वाली। औषधियों मे जो अमृत तत्व होता है उसे जानने वाली।

829. **क्षिप्तचित्तप्रदा** – भटकने वाले चित्त को अच्छी प्रकार से नष्ट करने वाली अर्थात एकाग्रचित्त बनाने वाली। प्रदा में दा शब्दाक्षर दो अवखण्डने का है। क्षिप्त का अर्थ यदि फैला हुआ अर्थात विकसित लें तो इस नाम का अर्थ हो गया फैले हुए अर्थात विकसित चित्त को देने वाली अर्थात चित्त का विस्तार करने वाली।

830. **नित्या क्षौमवस्त्रविलासिनी** – ऐसी सदैव अस्तित्व में रहने वाली जो रेशमी वस्त्रों से विशेष रूप से शोभायमान है। लसति का अर्थ शोभायमान होना है और वि का अर्थ है विशेष रूप से। क्षौम का अर्थ है रेशमी वस्त्र। नित्य रेशमी वस्त्रों को धारण कर विलास करने वाली या विचरण करने वाली। नित्य का अर्थ समुद्र, भगवान विष्णु भी होता है। इस प्रकार नित्या का अर्थ समुद्र स्वरूपा, समुद्र की शक्ति, भगवान विष्णु की शक्ति भी है। प्रतिदिन होने वाले कर्म भी नित्य कर्म कहलाते हैं। नित्या का एक अर्थ मनसा देवी भी दिया गया है। श्रीयन्त्र के पूजन में आवरण देवियों के रूप में भी 16 नित्या देवियाँ हैं जों श्री यन्त्र की रक्षा करती हैं।

831. **छिन्ना** – जिनकी सांसारिक बाधायें छिन्न है अर्थात कटी हुई हैं। उन बाधाओं से रहित। कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र से कभी कभी क्त प्रत्यय कर्ता अर्थ देने लगता है, इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ भक्तों की विपत्तियों को छिन्न करने वाली। जिन साधकों की तीनों ग्रन्थियां (ब्रह्मा ग्रन्थि, विष्णु ग्रन्थि और रूद्र ग्रन्थि) कट गई हैं उनकी शक्ति स्वरूपा। जिन साधकों का कपाल भेदन हुआ है उनसे अभेद है जिनका। जिन साधकों के कपाल में स्थित आज्ञाचक्र का भेदन हो चुका है उनसे अभेद है जिनका। छिन्न + आ, आ का अर्थ है नाश करना। फोड़ा या इस जैसी बीमारी का नाश करने वाली। छिन्न का एक अर्थ फोड़ा भी है।

832. **छिन्नरूपा** – छिन्न मन्त्र स्वरूपा। मन्त्र से संयुक्त वर्णों में किसी वर्ण का छूट जाना छिन्न मन्त्र है। अच्छा बुरा जो भी हो, सब ऊर्जा या शक्ति का रूपान्तरण होने के कारण देवी रूप ही हैं क्योंकि देवी का तात्पर्य है शक्ति या ऊर्जा। छिन्न मन्त्र का निर्माण करने वाली। छिन्न बन्धन वाली अर्थात जिन्हें माया या अज्ञान का बन्धन नहीं है। सूर्य से कटे हुए अर्थात अलग हुए तेज स्वरूपा। सूर्य के तेज का एक हिस्सा सूर्य से अलग होकर पदार्थों में जैसे फल, सब्जी आदि में शोषित हो जाता है। जिनका मस्तक कटा हुआ है।

833. **क्षुधा** – भूख की शक्ति स्वरूपा अर्थात वह शक्ति जिसके कारण लोगों को भूख लगती है।

834. **क्षौत्काररूपिणी** – चूरा स्वरूप बनाने वाली अर्थात चूरा बना देने वाली। शत्रुओं का चूरा बना देने वाली। क्षुद् धातु में विण् प्रत्यय या अन्य किसी सर्वापहारी प्रत्यय को लगाने से क्षौद् बनेगा और सन्धि में क्षौद् का क्षौत्

हो जाएगा। विनाश करने वाली, इस स्वरूप वाली। चूरा करना अर्थात विनाश करना, इस स्वरूप वाली। क्षुद् धातु से विण् प्रत्यय लगाने से क्षौद् बनता है जिसका अर्थ हो गया प्रलय काल में चूरा स्वरूपा। चूरा करने की क्रिया करने वाली। क्षय (विनाश) के लिए ओत्कार का उच्चारण करने वाली। क्ष + ओत्कार + रूपिणी। क्षौ का अर्थ धरती भी होता है। धरती का निर्माण करने वाली, ऐसे स्वरूप वाली।

835. **सर्ववर्णमयी देवी** – सभी प्रकार के वर्णों (अक्षर, रंग) से युक्त देवी। प्रकृति स्वरूपा देवी अर्थात सभी रंगों से युक्त देवी। मन्त्रस्वरूपा देवी अर्थात सभी अक्षरों से युक्त देवी।

836. **सर्वसम्पत्प्रदायिनी** – सभी प्रकार की भौतिक सम्पत्तियों को प्रदान करने वाली। सभी प्रकार की चल सम्पत्तियों को प्रदान करने वाली।

837. **सर्वसम्पत्प्रदात्री** – सभी प्रकार की आध्यात्मिक सम्पत्तियों के प्रदान करने वाली। सभी प्रकार की अचल सम्पत्तियों को प्रदान करने वाली।

838. **सम्पदापदभूषिता** – समृद्धि के स्थान पर सुशोभित। सम्पत्तियों के पद से विभूषित। सम्पद्यते या सा सम्पदा। जिसे प्राप्त किया जाता है वह सम्पदा है। जिसे जीविका के लिए प्राप्त किया जाता है वह सम्पदा है।

839. **सत्वरूपा** – सतोगुण स्वरूपा। प्राणस्वरूपा। बल या शक्तिस्वरूपा।

840. **सर्वार्था** – सभी प्रकार के अर्थों अर्थात सम्पत्तियों से युक्त। चारों पुरुषार्थों से युक्त। चारों पुरुषार्थों के स्वरूप वाली। सर्वार्थ + आ, आ का अर्थ है देना अतः सर्वार्था का अर्थ हुआ सभी पुरुषार्थों को देने वाली।

841. **सर्वदेवप्रपूजिता** – सभी देवताओं द्वारा सम्यक् रूप से पूजित।

842. **सर्वेश्वरी** – सभी की ईश्वरी अर्थात सभी का पालन पोषण करने वाली। समय आने पर सभी को मृत्यु की गोद में सुलाने वाली।

843. **सर्वमाता** – सभी की माता अर्थात सभी की रक्षा करने वाली। माति इति माता अर्थात जो सभी की रक्षा करे वह माता है। भगवान शिव का सत्कार करने वाली। सर्व का एक अर्थ है शिव। माति सत्कारयति इति माता।

844. **सर्वज्ञा** – सब कुछ जानने वाली। प्रत्येक प्राणी या वस्तु की प्रत्येक चीज को जानने वाली। तीनों कालों को एवं इन कालों में घटित होने वाली घटनाओं को जानने वाली।

845. **सुरसात्मिका** – सुन्दर रस से युक्त हृदय वाली। आत्मा का अर्थ हृदय भी होता है। रस अर्थात प्रीति।

846. **सिन्धु** – जो प्रवाहित होती है अर्थात दिव्य गुणों के प्रवाहस्वरूपा। स्यन्दते इति सिन्धुः। नदी या समुद्र स्वरूपा।

847. **मन्दाकिनी** – मन्द मद गति करने वाली। आकाश गंगा स्वरूपा।

848. **गङ्गा** – निरन्तर बहने या चलने वाली। निरन्तरम् गच्छति इति गंगा। पुण्यार्थिभिः गम्यते इति गंगा। पुण्य की चाहना वाले जिनका आश्रय लेते है। गाम् (ज्ञानम्) गमयति इति ज्ञानी। ज्ञान प्राप्त कराने वाली।

849. **नदीसागररूपिणी** – नदी और समुद्र के स्वरूप वाली।

850. **सुकेशी** – सुन्दर केशों वाली अर्थात लम्बे काले बालों वाली। सुन्दर घुंघराले अच्छे बालों वाली।

851. **मुक्तकेशी** – खुले हुए बालों वाली। मानव द्वारा बनाये गये नियमों से बँधी हुई नहीं है अर्थात प्रकृति स्वरूपा।

852. **डाकिनी** – दुष्टों को भय देने के लिए गति या चेष्टा करने वाली। डाय अकति इति डाकिनी। डाय अर्थात

भय के लिए एवं अकति अर्थात गति करती है, चेष्टा करती है। दुष्टों को भयभीत करने के लिए विचरण करती रहती हैं। अकति का अर्थ है कुटिल गति करना।

853. **वरवर्णिनी** – श्रेष्ठ वर्णन करने योग्य। सुन्दर ढंग से वर्णन की जाने वाली या बोली जाने वाली अर्थात सर्वांगसुन्दरी। सुन्दरी महिलाओं को वरववर्णिनी भी कहा जाता है। श्रेष्ठ अर्थात अतिशय सुन्दर अंगों या रंगों से युक्त। वर्ण का अर्थ अंग एवं रंग होता है।

854. **ज्ञानदा** – ज्ञान को देने वाली। आत्मज्ञान देने वाली।

855. **ज्ञानगगना** – आकाश असीम होता है। ज्ञान में आकाश की तरह अर्थात असीम ज्ञान वाली अर्थात सर्वज्ञ। ज्ञान की अतिशय ऊँचाई पर स्थित रहने वाली।

856. **सोममण्डलवासिनी** – सोममण्डल में निवास करने वाली। चन्द्रमा का गोला या Disc ही सोममण्डल है।

857. **आकाश निलया** – आकाश है निवास जिनका। आकाश भी जिनमें रहता है।

858. **नित्यं परमाकाशरूपिणी** – सदैव परमाकाश के स्वरूप वाली। जिसमें सभी आकाश समाहित होते हैं अर्थात जो आकाश का भी आकाश है वह परमाकाश है। इसी परमाकाश से अन्य आकाशों की उत्पत्ति हुई है। परमाकाश ही ब्रह्म स्वरूपा है। अक्षर अर्थात अविनाशी आकाश जिसमें सारी ऋचाऐं विद्यमान है जिसमें सारे देवी देवताओं का वास है, परमाकाश है। परमाकाश का उल्लेख बृहवच् उपनिषद में है। मण्डल ब्राह्मण उपनिषद के अनुसार सूर्य की चमक और आनन्द को मिलाकर परमाकाश कहते हैं। five forms of space (Ether) as akash / parakash/ mahakash /suryakash / parmakash. The akash space is of the nature of darkness. The parakash states text is of the nature of the fire of deluge & the fire radiance is mahakash. The suryakash is the space in the brightness of Sun & the brightness combined with the bliss is parmakash- Mandala brahmana upnishad.

859. **अन्नपूर्णा** – अन्न अर्थात खाद्य पदार्थों को उपलब्ध कराने वाली।

860. **महानित्या** – सर्वाधिक नित्य स्वरूप वाली। कभी कभी अपेक्षाकृत अधिक स्थाई पदार्थों के लिए नित्य शब्द का प्रयोग कर देते हैं। जैसे समुद्र नित्य है पृथ्वी नित्य है। प्रलयकाल में सबका नाश होता है, शिव और शक्ति को छोड़कर। शिव और शक्ति एक ही हैं। इस प्रकार देवी सर्वाधिक नित्य स्वरूपा हुई।

861. **महादेवरसोद्भवा** – महादेव के आनन्द से उत्पन्न होने वाली।

862. **मङ्गला** – दुख गलाने वाली एवं सुख देने वाली। मम् (दुखम) गलति इति मंगला। मंगम् (सुखम्) लाति इति मंगला। जिनका नाम लेने से सभी अच्छे कार्य बन जाते हैं, वे मंगला हैं। अच्छे अभीष्ट कार्यों को पूरा करने वाली।

863. **कालिका** – काले मेघ के समान कामनाओं की वर्षा करने वाली अर्थात कामनाओं को पूरा करने वाली। कालिका का एक अर्थ मेघ की काली घटा भी होती है। समय पर नियन्त्रण करने वाली। आपने भूतकालिक, वर्तमान कालिक एवं भविष्य कालिक नाम सुना होगा। कलयति घातयति दण्डयति असुरान इति कालिका। असुरों पर आघात करने वाली, उन्हें दण्ड देने वाली। कलयति प्रेरयति जनान् नानाकर्मसु इति कालिका अर्थात लोगों को अनेक कर्मों में प्रेरित करने वाली कालिका है।

864. **चण्डा** – चण्ड नामक दैत्य का नाश करने वाली। चण्ड + आ, आ का अर्थ है नाश करना। गर्मी या ताप को देने वाली। चण्ड + आ, चण्ड का अर्थ है गर्मी और आ का अर्थ है देना। सफेद दूब वाली अर्थात इनकी पूजा में सफेद दूब चढ़ाई जाती है। चण्ड का एक अर्थ है सफेद दूब। चण्डः अस्य अस्ति इति चण्डः, स्त्रीलिंग में चण्डा है। अतिशय क्रोध वाली। सामान्य क्रोध को क्रोध एवं बढ़े हुए क्रोध को चण्ड कहते हैं। भयंकर रूपवाली। बल या प्रताप से युक्त। चण्ड का एक अर्थ बल या प्रताप भी होता है।

865. **चण्डनादातिभीषणा** – प्रचण्ड नाद के द्वारा अत्यधिक भयंकर लगने वाली।

866. **चण्डासुरस्य मथनी** – चण्ड नामक असुर को मथने वाली अर्थात वध कर देने वाली, मार देने वाली, नष्ट कर देने वाली। चण्ड असुर अधिक क्रोध का प्रतीक है।

867. **चामुण्डा** – चण्ड और मुण्ड का नाश करने वाली। जो बुद्धि और सुख में सर्वोपरि है। च का अर्थ बुद्धि और सुख होता है, मुण्ड या सिर शरीर का सबसे ऊपरी भाग है।

868. **चपलात्मिका** – बिजली में व्याप्त। आत्मा का एक अर्थ है व्याप्त। बिजली के स्वभाव की तरह अर्थात बिजली की तरह तीव्र गति करने वाली, तुरन्त झपट्टा मारकर शत्रुओं पर प्रहार करने वाली। चंचल स्वभाव वाली। आत्मिका अर्थात स्वभाव वाली। चपला का अर्थ बिजली, फुर्तीली भी होता है। इस नाम का अर्थ हुआ बिजली के स्वरूप वाली या फुर्तीली स्वरूप वाली।

869. **चण्डी** – चण्डवृत्ति वाली अर्थात अत्यन्त जिद्दी, हठी और विद्रोही। राक्षसों को मारकर ही दम लेगी, उनकी जिद है कि उनका विवाह उसी से होगा जो उन्हें युद्ध में हराएगा। असाधारण गुणों वाली। चण्ड का अर्थ असाधारण गुण भी होता है। असाधारण गुण जैसे सर्वव्यापकत्व, सर्वज्ञत्व, अविनाशी होना। ये गुण केवल ब्रह्म में हो सकते हैं। अत्यधिक क्रोध या ब्रह्म स्वरूपा। शास्त्रों में क्रोध को ब्रह्म का रूप माना गया है क्योंकि इसी क्रोध के भय के कारण सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, हवा, अग्नि अपने – अपने कार्यों में लगे रहते हैं। चण्ड का अर्थ शिव, कार्तिकेय भी मिलता है। शिव की गृहिणी, यह चण्डी का अर्थ हुआ। कार्तिकेय की गृहिणी से एक हो जाने वाली जब कार्तिकेय की गृहिणी देवी का आवाहन करती हैं, न्यास करती हैं।

870. **चामरकेशी** – चमर की तरह बालों वाली। चमर एक पशु के पूँछ के बाल होते हैं।

871. **चलत्कुण्डलधारिणी** – हिलते हुए कुण्डलों को धारण करने वाली।

872. **नित्यं मुण्डमालाधरा** – सदैव मुण्ड मालाओं (कटे सिरों) को धारण करने वाली। सभी अक्षरों को माला के रूप में धारण करने वाली। शास्त्रों में अक्षरों की तुलना मुण्डमाला से की गई है।

873. **खण्डमुण्डविलासिनी** – टुकड़े किये गये मुण्डों से विशेष शोभा वाली। टुकड़े किये गये अर्थात धड़ से अलग किये गये। वि अर्थात विशेष, लसति अर्थात सुशोभित होना। इन मुण्डों को गले में पहनने पर सुशोभित हो जाती हैं। काटे गये मुण्डों के द्वारा आनन्दित होने वाली।

874. **खड्गहस्ता** – हाथ में तलवार लिये हुए।

875. **मुण्डहस्ता** – हाथ में शत्रु के कटे हुए सिर को लिये हुए।

876. **वरहस्ता** – वर मुद्रा को धारण किये हुए।

877. **वरप्रदा** – भक्तों को वरदान देने वाली।

878. **नित्यं असिचर्मधरा** – सदैव तलवार और ढाल को धारण करने वाली।

879. **पाशाङ्कुशधरा परा** – पाश और अंकुश को धारण करने वाली श्रेष्ठ देवी। राग को पाश कहा गया है। पाश वशीकरण शक्ति का प्रतीक है। इच्छा एवं राग को भी पाश कहा गया है। मनुष्य में राग और इच्छा डालकर उसे संसार से बांधे रहती है। राग शक्ति या इच्छा शक्ति से युक्त। इन्द्रियों के विषय को भी पाश कहते है। घृणा, लज्जा, जुगुप्सा, कुल, शील आदि अष्ट पाश भी पाश कहे जाते है। जन्म मरण रूपी पाश संसार रूपी पाश। क्रोध को अंकुश कहा गया है। जैसे अंकुश से हाथी को नियन्त्रित किया गया है उसी प्रकार क्रोध दिखाकर अधीनस्थों को नियन्त्रित किया जाता है।

880. **शूलहस्ता** – त्रिशूल को हाथ में धारण करने वाली। शूल वरछी के आकार का एक आयुध होता है। शूल को त्रिशूल के अर्थ में भी प्रयोग किया जाता है। शूल का अर्थ लम्बा काँटा भी होता है।

881. **शिवहस्ता** – कल्याण मुद्रा को धारण करने वाली।

882. **घण्टानादविलासिनी** – घण्टा की ध्वनि से आनन्दित होने वाली। घण्टा की ध्वनि से विशेष सुशोभित होने वाली।

883. **धनुर्बाणधरा** – धनुष और बाण को धारण करने वाली।

884. **आदित्या** – अदिति के पुत्र सूर्य स्वरूपा। अदिति के पुत्र देवता के स्वरूप में हैं। सूर्य की शक्तिस्वरूपा। आदित्य + आ, एकाक्षरी कोष में आ का एक अर्थ शक्ति भी दिया गया है।

885. **नागहस्ता** – नाग को हाथ में धारण करने वाली।

886. **नगात्मजा** – पर्वत की पुत्री अर्थात पर्वतराज हिमालय की पुत्री पार्वती स्वरूपा।

887. **महिषासुरहन्त्री** – क्रोध नामक या चित्त की विक्षेप शक्ति नामक महिषासुर का हनन करने वाली। जैसे महिषासुर हर क्षण अपना रूप बदलता है उसी प्रकार चित्त हर क्षण एक जगह से दूसरी जगह जाता है अर्थात अपना रूप बदलता है। महिषासुर को कहीं कहीं पर मोह या अज्ञान का भी प्रतीक माना गया है। जिस प्रकार महिषासुर बार बार रूप बदलता है उसी प्रकार मोह या अज्ञान भी रूप बदलता है। मोह या अज्ञान आसुरी दल अर्थात अधर्मों का नेता है। मोह/अज्ञान सात प्रकार का है जो है – बीज, जाग्रत, महाजाग्रत, जाग्रतस्वप्न, स्वप्न, स्वप्नजाग्रत, सुषुप्ति।

888. **रक्तबीजविनाशिनी** – रक्तबीज नामक असुर का पूर्ण नाश करने वाली। इच्छाओं का या सविकल्प मन का पूर्ण नाश करने वाली। रक्तबीज की बूँद गिरने से नए रक्तबीज पैदा हो जात थे, उसी प्रकार एक इच्छा पूरी हुई कि दूसरी इच्छा पैदा हो जाती है। एक कर्म का भुगतान करने के बदले नए कर्मों को पैदा करने की वृत्ति का पूर्ण नाश करने वाली। जैसे प्रारब्ध के अनुसार कोई व्यक्ति शत्रु बनकर आपके कर्म को चुकता करने आया और आपने बदले की भावना से और बहुत से पाप कर दिए। इस प्रकार आपका एक कर्म निपटा, पर आपने बहुत से नए सकाम कर्म पैदा कर लिए जिसका भुगतान आपको करना होगा। यही रक्तबीजों का पैदा होना है।

889. **रक्तरूपा** – रक्त स्वरूपा अर्थात लाल रंग वाली। क्रोध में लाल लाल मुखमण्डल वाली। रक्तम् रूपयति इति रक्तरूपा अर्थात रक्त को स्वरूप देने वाली अर्थात उसका निर्माण करने वाली।

890. **रक्तगात्रा** – जिनका सम्पूर्ण शरीर लाल लाल हो जाता है जब अतिशय क्रोध में होती हैं।

891. **रक्तहस्ता** – लाल हाथों वाली।

892. **भयप्रदा** – दुष्ट दैत्यों (राक्षसों) को भय प्रदान करने वाली।

893. **असिता** – कृष्ण अर्थात काले रंग को धारण करने वाली। सभी अवतार देवी का रूप हैं और किसी अवतार में देवी कृष्ण वर्ण वाली हैं। अन्यथा भी देवी इच्छानुसार ऐसा रूप धारण कर सकती हैं।

894. **धर्मधरा** – धर्म को धारण करने वाली अर्थात पालन करने वाली।

895. **पाशाङ्कुशधरा परा** – पाश और अंकुश को धारण करने वाली श्रेष्ठ देवी।

896. **नित्या धनुर्बाणधरा** – ऐसी सदैव अस्तित्व वाली जो धनुष और बाण को धारण करने वाली है। यदि नित्यं धनुर्बाणधरा नाम है तो अर्थ होगा सदैव धनुष और बाण को धारण करने वाली।

897. **धूम्रलोचननाशिनी** – धूम्रलोचन का नाश करने वाली। धूम्रलोचन आलस्य का प्रतीक है अतः आलस्य को नष्ट करने वाली।

898. **परस्था** – श्रेष्ठ स्थिति में रहने वाली। उच्चतम स्थिति में रहने वाली।

899. **देवतामूर्ति** – देवताओं की आकृति स्वरूपा अर्थात देवताओं का आकार, शक्ल, शरीर धारण करने वाली। मूर्ति का अर्थ है आकृति, आकाश, शक्ल, शरीर, देह।

900. **शर्वाणी** – शर्व अर्थात शिव की पत्नी पार्वतीस्वरूपा। शृणाति से शर्व बना जिसका अर्थ है संहार करने वाला।

901. **शारदा परा** – बुद्धिगत मलिनता नष्ट करने वाली श्रेष्ठ देवी। उत्कृष्ट कोटि की बुद्धि रखने वाली उच्च कोटि की देवी। परा अर्थात श्रेष्ठ। शारम् द्यति इति शारदा। शार का अर्थ है मलिनता। बरसात के पहले पानी के साथ जो गन्दगी बहती है वह शार है। दो अवखण्डने धातु से शारदा का दा शब्दाक्षर बना।

902. **नानावर्णविभूषाङ्गी** – अनेक रंगों के आभूषणों से विभूषित हैं अंग जिनके।

903. **नानारागसमापिनी** – सांसारिक रागों को अर्थात सांसारिक आसक्ति को मिटाने वाली। संगीत के सात स्वरों की अन्तिम सीमा स्वरूपा अर्थात संगीत के अन्तिम स्वर भी देवी ही हैं। अनेक लालिमाओं (खून की धाराओं) को सम्यक् रूप से प्राप्त करने वाली। आप्नोति का अर्थ होता है प्राप्त करना। समापिनी का एक अर्थ सम्यक् रूप से प्राप्त करने वाली कर सकते हैं। अनेक प्रकार के रागों/ गीतों/संगीत को परिपूर्ण कर देने वाली।

904. **पशुवस्त्रपरीधाना** – पशुवस्त्र अर्थात मृग चर्म को वस्त्र के रूप मे पहनने वाली।

905. **पुष्पायुधधरा परा** – पुष्प के अस्त्रों को धारण करने वाली श्रेष्ठ स्वरूप से युक्त।

906. **मुक्तारञ्जितमालाढ्या** – मोतियों से सुशोभित प्रचुर मात्रा में मालाओं से सम्पन्न अर्थात मालाओं को धारण कर विराजमान रहने वाली।

907. **मुक्ताहारविलासिनी** – मोतियों के हार से आनन्दित होने वाली, सुशोभित होने वाली।

908. **स्वर्णकुण्डलभूषा** – सोने से निर्मित कुण्डलों से विभूषित रहने वाली।

909. **स्वर्णसिंहासनस्थिता** – स्वर्ण निर्मित सिंहासन पर रहने वाली या विराजमान रहने वाली।

910. **सुन्दराङ्गी** – सुन्दर अंगों वाली अर्थात समस्त सुन्दर अंगों से सुशोभित।

911. **सुवर्णाभा** – सोने के समान कान्ति से देदीप्यमान या चमकने वाली।

912. **शाम्भवी** – योग की शाम्भवी मुद्रा स्वरूपा। शाम्भवी मुद्रा में आँखे अधखुली रखते हुए दोनों भौं के बीच में देखने का प्रयास किया जाता है। भगवान शिव की शक्ति स्वरूपा।

913. **शकटात्मिका** – शरीर रूपी गाड़ी में रहने वाली आत्मा स्वरूपा। शरीर आत्मा को ढोता है अतः वह गाड़ी हुआ। शरीर स्वरूपा या विश्व स्वरूपा यह भी कह सकते हैं। विश्व सभी प्राणियों को ढो रहा है अतः वह भी गाड़ी कहलाया जाता सकता है। गाड़ी की आत्मा स्वरूपा अर्थात चैतन्य आत्मा स्वरूपा। शरीर को यन्त्र माना गया है और उसमें रहने वाला चैतन्य अंश शरीर को चलाने वाला है। ब्रह्माण्ड को एक यन्त्र या गाड़ी मानें तो देवी ब्रह्माण्ड को चलाने वाला परम चैतन्य स्वरूपा हैं। यदि आत्मिका का अर्थ स्वरूप लें तो अर्थ होगा गाड़ी के स्वरूप वाली। प्राणियों के शरीर या ब्रह्माण्ड रूपी शरीर के स्वरूप वाली। संसार सागर से दूर ले जाने वाली गाड़ी स्वरूपा भी अर्थ कर सकते हैं। गाड़ी के समान स्वरूप वाली। शकट का अर्थ है गाड़ी।

914. **सर्वलोकेशविद्या** – परब्रह्म को जानने का साधन या उपाय। विद्यते अनया इति विद्या। परब्रह्म को जनवाने वाली। सर्वलोकेश का अर्थ हुआ परब्रह्म। समस्त लोकों में सर्वश्रेष्ठ विद्या के स्वरूप में विराजमान।

915. **मोहसम्मोहकारिणी** – मोह और सम्मोह को करने वाली अर्थात फैलाने वाली। मोह करना अर्थात अज्ञान युक्त या ज्ञान शून्य करना या कुछ का कुछ समझ लेना या स्नेह, प्रेम, लगाव। सम्मोह करना अर्थात अधिक आकर्षण पैदा करना। मोह जाल को भी सम्मोहित करने वाली अर्थात मोह की प्रवृत्ति को नष्ट कर देने वाली। ज्ञानियों को मोह (अज्ञान) में डालने वाली और युद्ध में दैत्यों को सम्मोहित (वास्तविक ज्ञान से भटकाना, वशीकरण) करने वाली, तात्पर्य है अज्ञान में डालने वाली और वशीकरण करने वाली। गलत ज्ञान और आकर्षण करने वाली। मोह अर्थात अज्ञान या गलत ज्ञान। जैसे शरीर को आत्मा मान लेना, संसार को सत्य मान लेना, अपने को कर्ता मान लेना आदि। शरीर में रहने वाली शक्ति ही सब कार्य करती है पर आप कहते है कि मैनें किया जो अज्ञान है। यहाँ पर सम्मोह का अर्थ क्षणभंगुर प्राणियों या पदार्थो में आकर्षण या आसक्ति कह सकते हैं। एक स्थान पर पढ़ने को मिला है कि वास्तविकता का पता नहीं होना, मोह है किन्तु उस वास्तविकता में गलत का आरोप कर उसे ही सत्य मान लेना सम्मोह है। मैं कौन हूँ, पता नहीं, यह मोह है। मैं शरीर हूँ (जो गलत धारणा है) यह धारणा सम्मोह है।

916. **श्रेयसी** – अधिक कल्याण करने वाली। कल्याणकारिणी। श्री सेवायाम् धातु से ईयस् प्रत्यय लगाया गया। श्रेष्ठ गुणों से युक्त।

917. **सृष्टिरूपा** – सृष्टि स्वरूपा। सम्पूर्ण सृष्टि का निर्माण करने वाली। सृष्टिम रूपयति इति सृष्टिरूपा।

918. **छिन्नच्छद्ममयी** – स्वयं कपट रहित है। छिन्न का अर्थ है कटा हुआ अर्थात रहित। कपटियों के कपट को छिन्न कर दिया है जिसने, ऐसे स्वरूप वाली। जिसके द्वारा छलकपट काट दिया गया है अर्थात छलकपट से रहित स्वरूप वाली। छिन्नमस्ता होते हुए दुष्ट दैत्यों के लिए छद्म स्वरूप को धारण करने वाली।

919. **छला** – दैत्यों को छल लेने वाली या ठग लेने वाली। छल+आ, आ का अर्थ है देना, नाश करना। छल का नाश करने वाली।

920. **छिन्नमुण्डधरा नित्या** – राक्षसों के कटे सिर को धारण करने वाली ऐसी नित्य स्वरूप वाली। (यदि नित्यं छिन्नमुण्डधरा नाम है तो अर्थ होगा – सदैव कटा मस्तक अर्थात सिर को धारण करने वाली)।

921. **नित्यानन्दविधायिनी** – सदैव आनन्द को करने वाली।

922. **नन्दा** – आनन्द देने वाली। नन्दयति इति नन्दा। प्रसन्न या सुखी होने वाली (नन्दते इति नन्दा)।

923. **पूर्णा** – परिपूर्ण स्वरूप वाली। सम्पूर्ण कलाओं से युक्त अर्थात उनके पास किसी भी कला या शक्ति की कमी नहीं है। उनके पास प्रत्येक चीज है और हर चीज पूर्ण मात्रा में है।

924. **रिक्ता** – माया के प्रभाव से शून्य। दुर्गुणों से शून्य। मायाजन्य सांसारिक प्रपंचों से शून्य।

925. **तिथिः** – विस्तार करने वाली अर्थात भक्तों की समृद्धि का विस्तार करने वाली, जगत का विस्तार करने वाली। तन् धातु में इथिन् प्रत्यय लगाने से तिथि शब्द बनता है। जो चन्द्रकला का विस्तार करती है उसे तिथि कहते हैं, तनोति विस्तारयति इति तिथि। तन्यते विस्तार्यते चन्द्रकलया अर्थात जो चन्द्रकला के द्वारा विस्तार को प्राप्त होती है। कला अर्थात चन्द्रमा का अंश या आकार। अत् सातत्यगमने में इथिन् प्रत्यय लगाने से अतिथि शब्द बनता है जिसका अर्थ होता है निरन्तर गमन करने वाला। अतिथि या मेहमान टिकते नहीं हैं। संस्कृत में कभी कभी आरम्भ का अ अक्षर छोड़ दिया जाता है इस प्रकार तिथि का अर्थ हुआ निरन्तर गति करने वाली। देवी के प्रसंग में अर्थ होगा जो तिथिकी तरह निरन्तर गति करती है अर्थात कार्यशील है। तिथि स्वरूपा। तिथियों

में विराजमान। तिथि का कारण अर्थात उत्पन्न करने वाली। कभी कभी शब्द के का अक्षर छोड़ दिया जाता है। अतिथि स्वरूपा।

926. **पूर्णषोडशी** – पूर्ण 16 वर्षीया। सभी कलाओं से युक्त षोडशी। सभी शक्तियों से युक्त षोडशी।

927. **कुहू** – अमावस्या स्वरूपा। आश्चर्य पैदा करने वाले कार्य करने वाली। कुह् विस्मापयति धातु होती है। कुहू नामक नाड़ी में विराजमान।

928. **संक्रान्तिरूपा** – सक्रांतिस्वरूपा। सूर्य के एक राशि से दूसरे राशि मे ंजाने को संक्रान्ति कहते हैं अर्थात इस नाम का अर्थ हुआ संक्रान्ति नामक क्रिया स्वरूपा। सूर्य के एक राशि से दूसरी राशि में जाने के समय को संक्रान्ति कहते हैं।

929. **पञ्चपर्वविलासिनी** – पंच पर्वों में अधिक शोभायमान होती है या प्रसन्न होती हैं। अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या, पूर्णिमा और संक्रान्ति ये पचंपर्व कहे जाते हैं। दीपावली में धनतेरस से लेकर भाईदूज तक के पाँच दिनों में पड़ने वाले पर्व भी पंचपर्व कहलाते हैं। प्रमुख पाँच पर्वों में विलास करने वाली या विचरण करने वाली।

930.. **नित्यं पञ्चबाणधरा** – निरन्तर पाँच कामदेव के बाणों को धारण करने वाली। सम्मोहन, उन्मादन, स्तम्भन, शोषण और तापन ये कामदेव के पाँच बाण हैं।

931. **पञ्चमप्रीतिदा परा** – पंचम राग से प्रसन्न होकर उपासकों को प्रसन्नता देवी वाली श्रेष्ठ देवी स्वरूपा। पंचम राग को अधिक वरीयता देती हैं। सर्वश्रेष्ठ प्रीति को प्रदान करने के कारण श्रेष्ठ स्वरूप वाली। पंचमकारों में मैथुन पाँचवा है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ मैथुन के द्वारा प्रसन्नता देने वाली श्रेष्ठ शक्ति। मैथुन अर्थात सहस्रार चक्र में कुण्डलिनी (देवी) का शिव से मिलन।

932. **पञ्चपत्राभिलाषा** – पवित्र पाँच पत्रों की इच्छा रखने वाली। आम, पीपल, बरगद, पाकड़, गूलर के पत्ते पंचपल्लव कहे गये हैं। एक अन्य मत में कदम्ब, पीपल, आम, जामुन और गूलर इनके पत्ते पंचपल्लव कहे गये हैं। एक अन्य मत में पीपल, आम, बरगद, गूलर, पाकड़ इनको पंचपल्लव माना गया है। एक अन्य मत में आम, कैथा, बिजौरा, जामुन और बेल के पत्ते पंचपल्लव कहे गये हैं।

933. **पञ्चामृतविलासिनी** – पंचामृत से क्रीड़ा करने वाली अर्थात उपभोग करने वाली अर्थात उपभोग कर उनसे प्रसन्न होने वाली। विलासिनी अर्थात विशेष शोभायमान होने वाली। प्रसन्नता ही शोभा है। गाय का दूध, दही, घी, शहद और चीनी मिलाकर पंचामृत बनता है। पंचामृत से आनन्दित होने वाली।

934. **पाञ्चाली** – द्रौपदी से अभेद है जिनका। पाँच प्राणों की समष्टि शक्ति स्वरूपा। पाँच महाभूतों की समष्टि शक्ति स्वरूपा। पंचा प्राणा अलन्ति इमम् इति पांचाली। पंच प्राणों से सुशोभित। पंचभिः अलिता।

935. **पञ्चमीदेवी** – पंचमी देवी के रूप में पूजनीय। पंचम भगवान शिव को कहते हैं उनकी शक्ति/पत्नी पंचमी होंगी। पंचमी तिथि मे पूजित देवी।

936. **पञ्चरक्तप्रसारिणी** – सुन्दर रक्त अर्थात शुद्ध रक्त को बढ़ाने वाली। शुद्ध रक्त की कमी नहीं होने देतीं। पंच का एक अर्थ सुन्दर भी होता है। यहाँ सुन्दर का अर्थ है शुद्ध, जिसमें विषैले तत्व न हो। पाँच पदार्थों में शक्ति रूप में स्थित होकर खून को बढ़ाने वाली। अनार, सेब, चुकन्दर, अंगूर, गाजर इन पाँच फलों द्वारा रक्त बढ़ाने वाली। इनकी भी शक्ति रूप में देवी ही हैं। पाँच रंगों के खून को बढ़ाने वाली। मनुष्य का खून लाल होता हैं पर अन्य जीव जन्तु भी है जिनके रंग लाल से भी भिन्न होते हैं। लाल, नीला, पीला, नारंगी (औरेंज), रंगहीन या सफेद ये पाँच रंग के रक्त कहे गये हैं। पाँच प्रकार के श्रेष्ठ रक्तों का प्रसार करने वाली। फैलने वाले अर्थात शरीर में बहने वाले रक्त को बढ़ाने वाली। पंच का अर्थ विस्तीर्ण होना होता है जिससे प्रपंच शब्द बना है। पंच

का अर्थ सुन्दर भी होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ सुन्दर अर्थात शुद्ध रक्त को बढ़ाने वाली। जिसमें चीनी कम या ज्यादा न हो, कोई बीमारी करने वाले कीटाणु न हों, ऐसा शुद्ध रक्त सुन्दर रक्त है। शेर को पंचानन कहते हैं क्योंकि उसका मुख बड़ा होता है। पंच का अर्थ विस्तृत अर्थात बड़ा है। चार पंजे भी मुख की तरह शिकार को काटते हैं अतः एक मुख और चार पंजे मिलाकर भी शेर को पंचानन कहते हैं।

937. **नित्यं पञ्चबाणधरा** – सदैव पाँच बाणों को धारण करने वाली। शास्त्रों में पंचतन्मात्रा को पंचबाण कहा गया है। पाँच महाभूतों के सूक्ष्म या अतीन्द्रिय रूप को तन्मात्रा कहते हैं। ये महाभूत हैं – शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध। पंचतन्मात्रा विशुद्ध होती है अर्थात किसी एक तन्मात्रा में दूसरी तन्मात्रा का मिश्रण नहीं होता है। इसी कारण इसका नाम तन्मात्र अर्थात ''केवल वही'' रखा गया है। कामदेव के पाँच पुष्प बाणों में अरविन्द (लाल कमल), अशोक, आम, नवमल्लिका, नीलोत्पल आते हैं।

938. **नित्यदात्री** – भक्तों को सदैव देने वाली। जो चीजें उनके लिए लाभकारी हैं, उन्हें देने वाली।

939. **दयापरा** – सदैव दया करने में लगी रहने वाली। दूसरों के दुख को दूर करने का भाव दया कहलाता है। दया को उच्च या श्रेष्ठ मानने वाली। समास में बाद में परा होने पर एक अर्थ किसी को उच्च भाव देना भी होता है। (यदि परा की जगह पारा हो तो अर्थ होगा दया के उस पार क्योकि दया उनसे निकलती है, दया नामक गुण से परे)।

940. **पललादिप्रिया नित्या** – सदैव जिसे माँस प्रिय है और नित्य रूप में रहने वाली है। पलल का अर्थ है मांस। पलल का एक अन्य अर्थ है तिल और गुड़ अथवा चीनी के योग से बनाया हुआ लड्डू। पलल का अर्थ तिल का फूल, दूध, शव भी होता है।

941. **पशुगम्या** – प्राणियों से जानी जाने योग्य। प्राणी चेतन होते हैं अतः एक महाचैतन्य अवश्य होगा जो अन्य सभी चैतन्य का कारण हो। महाचैतन्य ही देवी हैं। पशु वह है जो जन्ममरण के बन्धन में बँधा हो। जन्म मरण के बन्धन में बसे प्राणी ही हैं जिनके बोध का कारण। (यदि अपशुगम्या – नाम है तो अर्थ होगा – देवताओं द्वारा जानने योग्य अर्थात देवत्व भाव लाकर ही जिन्हें जाना जा सकता है या प्राप्त किया जा सकता है। कहा गया है देवो भूत्वा देवम् यजेत्, इसी कारण पूजा के प्रारम्भ में न्यास किया जाता है। मृत्यु लोक के सभी लोग पशु हैं क्योंकि वे जन्ममरण के बन्धन में हैं। पशु लोहे की जंजीर द्वारा बन्धन में होता है उसी प्रकार मनुष्य भी जन्म मरण रूपी जंजीर से बंधा हुआ है। जो पशु नही है अर्थात देवस्वरूप हैं उनके द्वारा प्राप्त करने योग्य)।

942. **परेशिता** – परम ईश्वरी। श्रेष्ठ ईश्वरी। परा अर्थात श्रेष्ठ, ईशिता अर्थात ईश्वरी। शत्रुओं का दमन करने वाली। शत्रुओं पर शासन करने वाली अर्थात नियन्त्रण करने वाली। यहाँ पर पर का अर्थ शत्रु एवं ईशिता का अर्थ शासन करने वाली। ईश् धातु में तृच् प्रत्यय लगाने से ईशिता शब्द बनेगा, तभी शासन करने वाली, यह अर्थ आएगा।

943. **परा** – पराविद्या स्वरूपा। ऐसी विद्या जो उस वस्तु का ज्ञान (अनुभव) कराए जो सब गोचर पदार्थों से परे हो, पराविद्या है। गंगा नदी स्वरूपा क्योंकि गंगा जी का एक नाम परा है। परा नामक नदी स्वरूपा। श्रेष्ठ स्वरूप वाली। परा वाणी स्वरूपा। जो अन्य देवी देवताओं से श्रेष्ठ हैं (गुण, कर्म, सौन्दर्य, शक्ति एवं अन्य सभी चीजों में)।

944. **पररहस्या** – दूसरों के लिए या शत्रुओं के लिए जिनका व्यक्तित्व रहस्यपूर्ण है अर्थात वे उनके व्यक्तित्व को समझ नहीं पाते।

945. **परमप्रेमविह्वला** – अतिशय प्रेम से विह्वल (व्याकुल) हो जाने वाली। विह्वल का अर्थ अपने इष्ट में मग्न हो जाना या डूब जाना भी होता है जिससे अन्य विषयों का भान न रहे।

946. **कुलीना** – खानदानी व्यक्ति या अच्छे घराने के व्यक्ति की तरह स्वभाव या आचरण वाली। राजा (हिमालय) का घर कुलीन घर ही कहलाया जाएगा। पवित्र, स्वच्छ अर्थात जिसका आसन पवित्र है। पृथ्वी में व्याप्त। कु अर्थात पृथ्वी और लीन अर्थात व्याप्त। श्रेष्ठ कुल में जन्म लेने वाली। श्रेष्ठ कुले भवः इति कुलीना। शक्तिपूजकों वाली। कुलीन नामक बंगाली ब्राह्मण वाली अर्थात ऐसे ब्राह्मणों से पूजित। कुलीना अस्या अस्ति इति कुलीना। अच्छी नस्ल के घोड़ों वाली अर्थात उनके पास अच्छी नस्ल के घोड़े हैं।

947. **केशिमार्गस्था** – जगत के सार स्वरूपा शिव के मार्ग में स्थित अर्थात शिव का मार्ग बताने वाली। एकाक्षरीकोश में के का अर्थ सार और शि का अर्थ शिव बताया गया है। क का अर्थ है जल, अतः के का अर्थ हुआ जल में, शि का अर्थ है स्वाप अर्थात शयन करना। केशि का अर्थ हुआ जल में शयन करने वाला अर्थात भगवान विष्णु। भगवान विष्णु के मार्ग में स्थित अर्थात भगवान विष्णु के मार्ग को बताने वाली। सूर्य और शिव तक पहुँचाने वाले मार्ग में स्थित। एकाक्षरीकोष में के का अर्थ सूर्य और शि का अर्थ शिव दिया है। क+इ+शि। यदि ऐसा करें तो अर्थ होगा ब्रह्मा, विष्णु, कामदेव और शिव तक जाने वाले मार्ग में स्थित। क का अर्थ है ब्रह्मा, विष्णु। इ का अर्थ है कामदेव। अत्यधिक सुन्दर मार्ग में रहने वाली।

948. **कुलमार्गप्रकाशिनी** – कौलमार्ग /वाममार्ग /कुण्डलिनीयोग से सम्बन्धित मार्ग को प्रकाशित करने वाली अर्थात लोगों के समक्ष दिखाने वाली अर्थात लोगों के बीच लाने वाली। मार्ग का अर्थ साधन भी होता है। कुल का अर्थ कुण्डलिनी, कौलमार्ग, वाममार्ग है। श्रेष्ठ वंशों के मार्गों को प्रकाशित करने वाली।

949. **कुलाकुलस्वरूपा** – शक्ति और शिव दोनों के स्वरूप वाली। अर्द्धनारीश्वर रूप में बायें भाग में शक्ति और दायें भाग में शिव है। कुल अर्थात शक्ति, अकुल अर्थात शिव। कुल मार्ग एवं दक्षिण मार्ग दोनों के स्वरूप वाली। कुल से युक्त भी है रहित भी है इस प्रकार के स्वरूप वाली।

950. **कुलार्णवमयी** – श्रेष्ठ समुद्र के स्वरूप से युक्त। कुलार्णव तन्त्र के स्वरूप वाली।

951. **कुला** – कुल मार्ग वाली अर्थात कुल मार्ग में उपासनीया। श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न होने वाली। कुल अर्थात मूलाधार चक्र की शक्ति स्वरूपा।

952. **रूक्मा** – स्वर्णमयी। स्वर्ण के समान चमकने वाली। रूक्म अर्थात स्वर्ण।

953. **कालरूपा** – कालस्वरूपिणी अर्थात मृत्यु स्वरूपा। काल का निर्माण करने वाली। रूपयति का अर्थ रचना करना। काल है बोधक जिनका।

954. **कालकम्पनकारिणी** – काल को भी कँपा या हिला देने वाली अर्थात समाप्त कर देने वलाी।

955. **विलासरूपिणी** – आनन्दस्वरूपा। सौन्दर्यस्वरूपा। शिव के प्रति प्रेमसूचक शारीरिक चेष्टाओं से युक्त स्वरूप वाली। आनन्दमय क्रीड़ा स्वरूपा या मनोविनोदस्वरूपा। विषयानन्द स्वरूपा, सुखोपभोग स्वरूपा। स्त्रियों के प्रेमसूचक क्रियाओं के स्वरूप वाली। विलास (हाव भाव) स्वरूपिणी अर्थात इससे परिपूर्ण रहने वाली। विलास का अर्थ आनन्द, हर्ष, सुखोपभोग, सौन्दर्य, क्रीड़ा, प्रणय क्रीड़ा, स्त्री की पुरुषों के प्रति अनुराग सूचक चेष्टा है।

956. **भद्रा** – सज्जन और शिष्ट। जिसकी प्राप्ति पर आनन्द की अनुभूति होती है (भद्, रमन्ते, इन दो शब्दों से यह अर्थ निकला)। अतिशय कल्याणकारी।

957. **कुलाकुलनमस्कृता** – श्रेष्ठ कुलों और दुष्ट कुलों अर्थात देवता और दैत्यों द्वारा प्रणाम या नमस्कार की जाने वाली।

958. **कुबेरवित्तधात्री** – कुबेर की धन सम्पत्ति आदि को धारण करने वाली।

959. **कुमारजननी परा** – कार्तिकेय की माता जो श्रेष्ठ भी हैं।

960. **कुमारीरूपसंस्था** – कुमारी के रूप में स्थित रहने वाली। कुमारत्व रूप सम्पन्ना कन्याकुमारी।

961. **कुमारीपूजनाम्बिका** – कुमारी के रूप में जिनका पूजन किया जाता है ऐसी माँ। अम्बिका अर्थात स्नेह से भरी हुई माँ।

962. **कुरंगनयना देवी** – हरिण के समान चंचल नेत्रों वाली देवी।

963. **दिनेशास्यापराजिता** – सूर्य के समान देदीप्यमान मुख को धारण करने वाली और किसी के द्वारा पराजित न होने वाली। दिनेश (सूर्य) + आस्य (मुख) + अपराजिता।

964. **कुण्डली** – कुण्डल धारण करने वाले शिव की पत्नीस्वरूपा। कुण्डलिनी शक्ति से युक्त। कुण्डलम् अस्य अस्ति इति कुण्डलः (कुण्डल वाला अर्थात कुण्डल धारण करने वाला)। स्त्रीलिंग मे कुण्डली। स्वयं कुण्डल धारण किए हुए, यह अर्थ भी कर सकते हैं। पुम्योग से ङीष् प्रत्यय लगाने से शिव की पत्नी अर्थ आयेगा और बिना पुम्योग के भी अर्थात गुण या विशेषता बताने के लिए गौरादिभ्यः... इस सूत्र का प्रयोग किया जा सकता है।

965. **कदलीसेना** – केला की तरह कोमल और सेना की तरह कठोर (निष्ठुर)। महापुरुषों के बारे में कहा जाता है कि उनका चित्त फूल की तरह कोमल एवं वज्र से अधिक कठोर होता है। हिन्दी शब्दकोष में लिखा है कि सेना यह शब्द सेवन से बना। यदि ऐसा है तो इस नाम का अर्थ हुआ केले का सेवन करने वाली अर्थात प्रयोग करने वाली या खाने वाली।

966. **कुमार्गरहिता** – कुमार्ग से रहित अर्थात श्रेष्ठ मार्ग पर चलने वाली।

967. **वरा** – श्रेष्ठा (रूप, गुण, शक्ति, ऐश्वर्य सभी में)। त्रिफला, गुरुच, हल्दी की तरह सर्वरोगहारी अर्थात सभी कष्टों को दूर करने वाली। गुड़हल वाली अर्थात पूजा में गुड़हल चढ़ने से गुड़हल युक्त हो जाती हैं। मद्य वाली अर्थात अवसर आने पर मद्यपान भी करती है। वरा का अर्थ है त्रिफला, गुरूच, हल्दी, गुड़हल, मद्य।

968. **अनन्तरूपा** – अगणित या अनन्त रूपों वाली।

969 **अनन्तसंस्था** – अनन्त रूपों में स्थित रहने वाली। भगवान विष्णु में अच्छी प्रकार से स्थित।

970. **आनन्दसिन्धुवासिनी** – आनन्द रूपी सागर में निवास करने वाली।

971. **इलास्वरूपिणी देवी** – पृथ्वी के स्वरूप वाली देवी। गाय के स्वरूप वाली देवी।

972. **ईईभेदभयङ्करी** – काम और मोह के रूप में भय करने वाली। एकाक्षरी कोष में इ का अर्थ काम, कामबाण, कोपोक्ति और ई का अर्थ माया, मोह, नृसिंह अस्त्र दिया गया है। भेद अर्थात प्रकार या रूप। कामदेव के विभिन्न प्रकार हैं उनके लिए भयंकर रूप रखने वाली।

973. **इङ्गला** – पृथ्वी, ज्ञान धारण करने वाली। इंग का एक अर्थ है पृथ्वी, ज्ञान। गति के कारण सुशोभित। इंगेन लसति। गति प्रदान करने वाली, संसार गतिमान होने के कारण सुन्दर लगता है। गतिमान संसार की गति को नाश करने वाली। लाति का अर्थ ग्रहण करना भी होता है और नाश करना भी होता है। इम् इस बीज मन्त्र का उच्चारण करने वाली। गृ धातु में अच् प्रत्यय लगाने से गर बनता है जिसका अर्थ है बोलने वाला। संस्कृत में र और ल में अभेद होता है। गर अर्थात गल अर्थात बोलने वाला। इशारों को भी ग्रहण करने वाली अर्थात समझने वाली। आपको बोलने की आवश्यकता नहीं, आपके चेष्टा मात्र से या इशारा मात्र से देवी सब समझ जाती हैं। इंगित करना अर्थात इशारा करना। जो आश्चर्यजनक स्थिति को धारण करने वाली है। अद्‌भुत शक्ति से युक्त है।

974. **पिङ्गला नाड़ी** – पिंगलानाड़ी स्वरूपा।

975. **इकाराक्षररूपिणी** – इकार अक्षर के रूप वाली। काम शक्ति से युक्त। इकार का अर्थ है कामदेव या इच्छा शक्ति।

976. **उमा** – पार्वती स्वरूपा। उ अर्थात शिव को मापने वाली अर्थात सीमित करने वाली। सगुण साकार रूप होते ही शिव सीमित हो जाते हैं अर्थात मापने लायक हो जाते हैं। जिनके लिए उनकी माँ ने कहा तपस्या नहीं करो। उ अर्थात सम्बोधन अर्थात हे पुत्री, मा अर्थात नहीं अर्थात नहीं करो अर्थात तपस्या नहीं करो। उ अर्थात तपस्या, मा अर्थात नहीं। कुछ लोगों के अनुसार उ अर्थात तपस्या।

977. **उत्पत्तिरूपा** – सृष्टिरूपा। जन्म देने की क्रिया स्वरूपा। सृष्टि अर्थात समस्त संसार को स्वरूप देने वाली अर्थात निर्माण करने वाली। उत्पत्तिम् रूपयति इति उत्पत्तिरूपा।

978. **उच्चभावविनाशिनी** – अपने को ऊपर समझने के भाव अर्थात अहंकार को पूर्णतया नष्ट कर देने वाली। उच्च कोटि के या बढे हुए कामादि विकारों को समाप्त कर देने वाली।

979. **ऋग्वेदा** – ऋग्वेद स्वरूपा। जिसमें भगवान की स्तुति की जाती है अर्थात जिस वेद में भगवान के स्तुतिपरक मन्त्र हैं वह ऋगवेद हैं। ऋच्यते स्तूयते यत् तत् ऋक्, जिसके द्वारा स्तुति की जाती है वे मन्त्र या स्तोत्र ऋक् कहलाते हैं।

980. **निराराध्या** – निरन्तर आराधना करने योग्य। निरन्तर का अर्थ है प्रत्येक दिन अर्थात एक भी दिन का अन्तराल न हो। अत्यन्त आराधनीया अर्थात एकमात्र आराधनीया। आपने निरा दूध यह शब्द सुना होगा। साधारण लोगों द्वारा जिनकी आराधना नहीं की जा सकती। एकाग्ररूप से आराधना करने योग्य। निर् का अर्थ है निकला हुआ, आराधना से निकली हुई, यह अर्थ करना ठीक नहीं है। अतः निर् से नितराम् लेना बेहतर है। नितराम् अर्थात पूर्ण रूप से अर्थात एकाग्रचित्त होकर।

981. **यजुर्वेदप्रपूजिता** – यजुर्वेद के मन्त्रों द्वारा विशेष रूप से पूजित होने वाली।

982. **सामवेदेन संगीता** – सामवेद के द्वारा जिनका सम्यक् रूपेण यशोगान किया गया है। सामवेद के द्वारा संगीत के रूप में धारण की जाने वाली।

983. **अथर्ववेदभाषिणी** – अथर्ववेद में स्थित ज्ञान को बताने वाली। चारों वेदों में अथर्ववेद को श्रेष्ठ माना गया है। अथर्ववेद द्वारा लौकिक व्यवहारों को बताने या निर्देश देने वाली या करने वाली।

984. **ऋकाररूपिणी** – ऋ आकृति के स्वरूप वाली। कार का अर्थ भी स्वरूप होता है। ऋ का स्वरूप हैं, ऐसे स्वरूप वाली अर्थात ऋ आकृति के स्वरूप वाली। छिन्नमस्ता देवी का सिरा कटा हुआ है, अतः उनकी आकृति ऋकार जैसी है। एकाक्षरीकोश के अनुसार ऋ का अर्थ है देवमाता या अदिति, सूर्य, दान, धर्म आदि। अदिति स्वरूपा। सूर्य स्वरूपा।

985. **ऋक्षा** – तारामण्डल स्वरूपा।

986 **निरक्षरस्वरूपिणी** – अव्यक्त स्वरूप वाली। परावाणी में वाणी अव्यक्त होती है अर्थात अ, क, च, त, ट, प आदि आकृतियाँ नहीं बनती हैं। उस परावाणी के स्वरूप वाली। अव्यक्त ब्रह्मरूपिणी। अक्षरों द्वारा जिन्हें नहीं बताया जा सकता।

987. **अहिदुर्गासमाचारा** – अपने द्वीप में श्रेष्ठ आचार करने वाली। अहि का एक अर्थ जल होता है। दुर्ग कई प्रकार के होते हैं जिसमें से एक दुर्ग जल–दुर्ग है अर्थात द्वीप है। ऐसा दुर्ग जिसके चारों ओर जल हो वह जलदुर्ग है। द्वीप ही ऐसा जलदुर्ग हो सकता है। देवी का वास मणिद्वीप में माना गया है अर्थात उसके चारों ओर जल होगा। समाचार का एक अर्थ शिष्टाचार या अच्छा व्यवहार है। उस दुर्ग के लिए निर्धारित सम्यक् आचार या

कायदा कानूनों का पालन करने वाली। सर्पाकार दुर्ग के लिए निर्धारित कायदे कानून को करने वाली। साँप रूपी दुर्ग के समान व्यवहार करने वाली। साँप को लाँघना बहुत कठिन है अतः वह दुर्ग के समान हैं। साँप रूपी दुर्ग के लिए निर्धारित आचार वाली अर्थात उसके पास जाना नहीं चाहिए। तात्पर्य है कि देवी को जानना पहचानना कठिन है। जिसके पास कठिनाई से जाया जाता है वह दुर्ग है। दुखेन गच्छति यत्र इति दुर्गः। सर्प के कारण दुर्गम स्वरूप वाली हैं और देदीप्यमान होने के कारण जो श्रेष्ठ आचार को धारण करने वाली है। साँप की तरह कठिन हैं जिसकी पूजा पद्धति। दुर्ग अर्थात किला जहाँ लोग जा नहीं सकते लाँघ नहीं सकते। साँप को भी वर्जित करके चलते हैं। अतः साँप भी दुर्ग की तरह है। साँप जिस प्रकार भय देने वाला है वैसे ही इनकी पूजा पद्धति भी भय देने वाली है अर्थात कठिन है। साँप से निपटने में जरा भी गलती की तो साँप काट देगा। इसी प्रकार इनकी सकाम पूजा पद्धति में जरा भी गडबड़ की तो नुकसान हो सकता है। पूजा पद्धति में चण्डी, सपिण्डी और कुषकुण्डी बहुत कठिन माने गये हैं अर्थात उनमें बहुत सावधानी की जरूरत है क्योंकि गड़बड़ होने पर गलत परिणाम आ सकता है। समाचार का अर्थ है पूजा पद्धति।

988. **इकारार्णस्वरूपिणी** – इकार अक्षर के स्वरूप वाली अर्थात समस्त कामनाओं के स्वरूप वाली। देवता देने का काम करत है अतः तात्पर्य हुआ समस्त कामनाओं को पूर्ण कर देने वाली। इकार अर्थात इच्छा या कामना।

989. **ओंकारा** – ओंकार स्वरूप वाली अर्थात जो सबकी रक्षा करती है। अवति इति ओम्।

990. **प्रणवस्था** – जिनके प्रकृष्ट या उत्कर्ष की स्तुति की जाती है ऐसे शिव में शक्ति रूप से रहने वाली। प्र+नु (स्तुति) + स्था। प्रणव अर्थात ओम् में विराजमान रहने वाली। वेद जिसकी स्तुति करते हैं, वह प्रणव है। जो प्रकृष्ट रूप से नया है, वह प्रणव है। जो श्रेष्ठ आनन्द एवं ज्ञान से युक्त है, वह प्रणव है। प्र अर्थात प्रकृष्ट अर्थात श्रेष्ठ, ण अर्थात आनन्द, व अर्थात ज्ञान। (भगवान विष्णु का एक नाम प्रणव है जिसकी व्याख्या एक टीकाकार द्वारा अग्रलिखित तरीके से की गई है – प्रणुवन्ति वेदाः सर्वे च शब्दा एनमिति प्रणवः। प्रकृष्टश्च नवश्च नित्यनूतनश्च। प्रकृष्टं णं बलमानन्दं वा वाति वाययति वा प्रणवः। वा गतौ। प्रकृष्टो ण आनन्दः प्रकृष्टं च वं ज्ञानमस्य। सर्वेऽप्येनं प्रणुवन्ति। प्रणवप्रतिपाद्यश्चायम्। प्र च णश्च वरत्वाद् वश्च। प्रणम इति नाम केचिदत्र पठन्ति। प्रणवे वाच्यतया स्थितः प्रणवः। सर्वे प्रणमन्त्येनमिति प्रणवः। सर्वैः प्रणूयत इति प्रणवः। सर्वो वेदः यस्य प्रकृष्टो नवः स्तुतिः। सभी वेद और शब्द इनके लिए विशेष रूप से झुकते है अर्थात् नमस्कार करते है। जो श्रेष्ठ भी है और नित्य नये भी है। श्रेष्ठ बल के रूप में वहन करते है अर्थात् गति करते है। श्रेष्ठ आनन्द के रूप में गति करते है। श्रेष्ठ बल को या श्रेष्ठ आनन्द को पहुँचाते है अर्थात् अपने भक्तों को देते है। ण का अर्थ है बल, आनन्द। वाति का अर्थ है गति करते है एवं वाययति का अर्थ है पहुँचाते है। जिनका श्रेष्ठ आनन्द है एवं श्रेष्ठ ज्ञान है। व का अर्थ है ज्ञान एवं प्र का अर्थ है प्रकृष्ट अर्थात् श्रेष्ठ। सभी अर्थात् देवी, देवता, असुर, किन्नर, मनुष्य आदि इनके समक्ष झुकते है अर्थात् नमस्कार करते है। प्रणव अर्थात् ओम् से वाच्य। जो श्रेष्ठ है। आनन्द स्वरूप है एवं ज्ञान स्वरूप है। प्रणम् का भी अर्थ होगा अच्छी प्रकार से नमस्कार किया जाता है प्राणियों के द्वारा। प्रणव अर्थात् ओम् में वाच्य के रूप में स्थित। जिन्हें सभी प्रणाम करते है। सभी के द्वारा जिनकी स्तुति की जाती है। सभी वेद जिनकी श्रेष्ठ स्तुति है। नव का अर्थ है स्तुति क्योंकि नु स्तुतौ धातु होती है।)

991. **ओंकारादिस्वरूपिणी** – ईश्वर के जो ओंकार आदि स्वरूप हैं उनके स्वरूप वाली।

992. **अनुलोमविलोमस्था** – अनुलोम विलोम प्राणायाम में स्थित रहने वाली।

993. **थकारवर्णसम्भवा** – थकार वर्ण से उत्पन्न होने वाली। एकाक्षरी कोष में थ का अर्थ पर्वत, कृष्ण दिया गया है। पर्वत अर्थात हिमालय से उत्पन्न। विष्णु (कृष्ण) से उत्पन्न गंगास्वरूपा या गंगा जी से अभेद है जिनका।

994. **पञ्चाशद्वर्णबीजाढ्या** – 50 बीजमन्त्रों से सम्पन्न रहने वाली। प्रत्येक वर्णाक्षर में अनुस्वार लगाने से वह बीजमन्त्र बन जाता है।

995. **पञ्चाशन्मुण्डमालिका** – 50 मुण्डों की माला से सुशोभित होने वाली। आगम ग्रन्थों में 50 अक्षरों को 50 मुण्ड अर्थात सिर माना गया है।

996. **प्रत्येकादशसंख्या** – प्रत्येक रूद्र के स्वरूप वाली। एकादश रूद्र होते हैं अतः एकादश संख्या रूद्र का प्रतीक है। प्रत्येक + आदश संख्या, प्रत्येक दस के गुणन से प्राप्त संख्या स्वरूपा अर्थात 10, 100, 1000, 10000.. .. आदि संख्या के स्वरूप वाली। श्रेष्ठ 11 संख्याओं से युक्त। रूद्र के साथ रहने वाली। एकादश रूद्र होते हैं अतः एकादश संख्या से तात्पर्य रूद्र से है। प्रति का अर्थ विपरीत भी होता है और साथ – साथ भी होता है। यदि विपरीत अर्थ लें तो अर्थ होगा रूद्र के विपरीत अर्थात रूद्र के क्रोधी स्वभाव के विपरीत अर्थात शान्त स्वभाव वाली। रोदयति इति रूद्रः अर्थात जो दुष्टों को रूला दे वह रूद्र है। रूत् द्रावयति इति रूद्रः अर्थात जो रोदन या दुर्दशा को भगा दे अर्थात हटा दे वह रूद्र हैं।

997. **षोडशी** – सोलह स्वरों में रहने वाली शक्ति स्वरूपा। सोलह वर्षीय कन्या के स्वरूप वाली।

998. **छिन्नमस्तका** – अहंकार से रहित। अहंकार मस्तक में होता है, जब मस्तक ही नहीं रहा तो अहंकार भी नहीं रहा। कटे हुए मस्तक वाली अर्थात मन और शरीर से जो परे हो गई है। विषयों के संसर्ग से रहित। रूप, रस, गन्ध, स्पर्श आदि विषयों का सम्बन्ध तभी होता है जब उसके साथ मन भी जुड़ा हो। मस्तक न रहने का तात्पर्य है कि मन अब नहीं जुड़ा अर्थात विषयों से सम्पर्क नहीं रहा। उस विद्या के स्वरूप वाली जिसके कारण साधक सामने खड़े व्यक्ति अर्थात लक्षित व्यक्ति का सिर धड़ से अलग कर सकता है। राजा जनक की सभा में ऋषि याज्ञवल्क्य ने शाकल्य का मस्तक धड़ से अलग कर दिया था। सूर्य के उस तेज के स्वरूप वाली जो उससे हटकर अन्न या वृक्षों में या अन्य पदार्थों में शोषित हो जाता है अर्थात सूर्यास्त के बाद भी वह सूर्य में नहीं लौटता।

999. **षडङ्गयुवतीपूज्या** – वेदरूपी युवती द्वारा पूजनीय। वेद के छह अंग होते है इसलिए उसे षडंगा कहते हैं। छह अंगों वाली युवती के द्वारा पूजन करने योग्य। दो पैर, दो हाथ, मध्य का भाग और सिर, वे छह अंग होते हैं। षड्ंग युक्त युवती के रूप में पूज्य। साकार रूप में मनुष्य के समान षडंग रूप वाली होती हैं। षडंग के प्रयोग से पूज्य। युवती अर्थात प्रयोग। पेड़ के षडंग अर्थात जड़, तना, पत्ती, फूल, बीज और फल इनके द्वारा प्रयोग कर युवती द्वारा पूजन करने योग्य।

1000. **षडङ्गरूपवर्जिता** – वेदस्वरूप होने के कारण रूप से रहित अर्थात निराकार रूप वाली। वेद श्रुति होते है अर्थात शब्दात्मक होते हैं। उनके शब्दों को गुरूशिष्य परम्परा से सुना जाता है पर शब्दों को आँखों से नहीं देखा जा सकता। किताबों में लिखे हुए शब्द वास्तव में शब्द नहीं हैं बल्कि शब्द के प्रतीक हैं क्योंकि शब्द तो ध्वनि होता है। यदि राम बोला गया तो बोली गई ध्वनि राम तो सभी के लिए समान होगी पर हिन्दी, अंग्रेजी या अन्य भाषाओं में अलग – अलग तरीके से राम लिखा जाएगा अतः किताबों में लिखा हुआ शब्द शब्द नहीं बल्कि शब्दों का प्रतीक है। यदि वह शब्द होता तो प्रत्येक व्यक्ति एक ही जैसा लिखता भले ही वह किसी भी देश का हो। निराकार अवस्था में षडंग (दो पैर, दो हाथ, मध्य का भाग, सिर) की आकृति से रहित। रूप अर्थात आकृति। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर विकार युक्त छह अंगों से रहित।

1001. **षड्वक्त्रसंश्रिता नित्या** – कार्तिकेय जी जिन पर अच्छी प्रकार आश्रित हैं या निर्भर हैं। कार्तिकेय जी द्वारा सम्यक् प्रकार से सेवित अर्थात पूजित। श्री का अर्थ सेवा अर्थात पूजा भी होता है। कार्तिकेय जी में आश्रित अर्थात उनमें शक्ति रूप से रहने वाली। षडानन अर्थात कार्तिकेय के द्वारा नित्य स्तुति की जाने के योग्य।

1002. **विश्वेशी** – विश्व पर शासन करने वाली। विश्व का संचालन करने वाली। घटनाऐं किस प्रकार घटेगी उसे निर्धारित करने वाली।

1003. **षडङ्गदालया** – छह प्रकार के रोगों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर) का आश्रय। छह रसों के कारण होने वाले रोगों का आश्रय। छह रसों के असन्तुलित होने पर उत्पन्न रोगों में स्थिर। आज छह ऐसी बीमारियाँ हैं जो पता नहीं चलतीं कि कब हो जाए। ये हैं मोटापा, डायबिटीज, सिजोफ्रेनिया, स्तन कैंसर, ओसीडी और प्रोस्टेड कैंसर। छह प्रकार के श्रेष्ठ तत्वों से युक्त। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर इन छह रोगों को सम्पूर्ण रूप से लय करने वाली अर्थात समाप्त करने वाली। आ अर्थात समन्तात् अर्थात पूर्ण रूप से। लयति अर्थात लय करना। गद का अर्थ है रोग।

1004. **मालामन्त्रमयी** – मालामन्त्रस्वरूपा। मालामन्त्र से युक्त अर्थात उससे सुशोभित। बीस अक्षरों से अधिक अक्षरों के मन्त्र माला मन्त्र कहलाते हैं। देवी के कई मन्त्र बीस अक्षरों से अधिक के हैं। शतनाम स्तोत्र, सहस्रनाम स्तोत्र आदि भी माला मन्त्र हैं।

1005. **मन्त्रजपमाता** – मन्त्र जप की माता अर्थात जननी।

1006. **मदालसा** – मदालसा स्वरूपा। हर्ष से अलसाई हुई जैसी। जब असुरों पर जीत हासिल करती हैं तो जो हर्ष होता है उससे अलसाई हुई जैसी। जब उनके पति शिव असुरों को मारते हैं तो उससे हर्षित होकर अलसाई हुई जैसी।

1007. **सर्वविश्वेश्वरीशक्ति** – सम्पूर्ण विश्व की सर्वश्रेष्ठ शक्ति।

1008. **सर्वानन्दप्रदायिनी** – सभी प्रकार के आनन्दों को प्रदान करने वाली या सभी को श्रेष्ठ आनन्द देने वाली। तैत्तरीय उपनिषद में 11 प्रकार के आनन्द बताऐ गये हैं। वेदों का अध्ययन कर लेने वाले सदाचारी एवं सुदृढ इन्द्रियों वाले एक युवा राजा, जो शासन करने में अतिकुशल तथा सब प्रकार से बलवान हो अर्थात सार्वभौमनृपति हो, को प्राप्त होने वाले आनन्द को भूलोक का आनन्द या मानुषानन्द कहते हैं। उसका सौ गुना आनन्द मनुष्य गन्धर्वों को होता है। उसका भी सौ गुना आनन्द देव–गन्धर्वों को होता है। उसका भी सौ गुना आनन्द चिरस्थाई पितृलोक को प्राप्त हुए पितरों को होता है, उसका भी सौ गुना आनन्द आजानज नामक देवों का आनन्द होता है, उसका भी सौ गुना आनन्द कर्मदेवों का होता है उसका भी सौ गुना आनन्द एक देवता का होता है। उसका भी सौ गुना आनन्द एक इन्द्र का होता है, उसका भी सौ गुना आनन्द एक बृहस्पति को होता है, उसका भी सौ गुना आनन्द एक प्रजापति को होता है। प्रजापति के आनन्द का सौ गुना एक ब्रह्मा का आनन्द होता है और उससे भी ऊपर सर्वोपरि आनन्द ब्रह्मलोक का आनन्द होता है। इस प्रकार मानुषाननद, मनुष्यगन्धर्व का आनन्द, देव गन्धर्व का आनन्द, स्थाई पितरों का आनन्द, आजानज नामक देवों का आनन्द, कर्मदेवों का आनन्द, देवता का आनन्द, इन्द्र का आनन्द, बृहस्पति का आनन्द, ब्रह्मा का आनन्द, ब्रह्मलोक का आनन्द। सम्पूर्ण आनन्द स्वरूपा, पूर्ण तुष्टि स्वरूपा (व्यष्टियों में भी पूर्ण है)। कश्मीर के त्रिक दर्शन के अनुसार छह प्रकार के आनन्द होते हैं जो हैं – निजानन्द, निरानन्द, परानन्द, ब्रह्मानन्द, महानन्द और चिदानन्द (जगतानन्द)। इनमें से जगदानन्द को छोड़ शेष सारे आनन्द अधूरे माने जाते हैं क्योंकि उन सब में विश्वमयता का बहिष्कार पाया जाता है। जगदानन्द की भूमिका में विश्वमयता किसी भी प्रकार से हेय नहीं है, अतः इस भूमिका को प्राप्त करने के लिए भी विश्वमयता को दुख पूर्ण या भ्रान्ति समझकर छोड़ देने की कोई आवश्यकता नहीं है। इस आनन्द की भूमिका में रममाण आत्मा के लिए विश्वमयता भी वैसी ही आनन्दमयी है जैसाकि विश्वोत्तीर्णता। स्वामी रामकृष्ण परमहंस के अनुसार आनन्द के तीन प्रकार हैं जो हैं – विषयानन्द, भजनानन्द एवं ब्रह्मानन्द।

श्री त्रिपुर भैरवी जी सहस्रनामावलि



त्रिपुर-भैरवी सहस्रनामावलि

1. **त्रिपुरा** – तीन प्रमुख देवों अर्थात ब्रह्मा, विष्णु और महेश से पहले की हैं अर्थात इनका अस्तित्व तीन प्रमुख देवों से पहले का है। तीन पुरुषार्थों अर्थात धर्म अर्थ और काम की पूर्ति करने वाली अर्थात उसे देने वाली। इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना नाड़ी स्वरूपा तीन पुरों में शक्ति रूप में निवास करने वाली। मन, बुद्धि और चित्त को भी त्रिपुरा कहा गया है, इनमें रहने वाली। पुर अर्थात रहने का स्थान। ब्रह्मी, रौद्री, वैष्णवी ये तीनों शक्तियाँ ही जिनका पुर अर्थात शरीर है। तीन पुरुषार्थों अर्थात धर्म, अर्थ और काम को पूरा करने वाली अर्थात देने वाली। महा–विद्याओं में तीसरी महा–विद्या षोडशी का नामान्तर। जिसका मण्डल त्रिकोण है, जिसका भूपुर तीन रेखाओं वाला है, जिसका मन्त्र भी तीन अक्षरों का है, जिसके रूप (स्थूल, सूक्ष्म, पर) तीन है, जो तीन प्रकार की कुण्डली शक्ति और तीन देवताओं की सृष्टि करती है और जिसके सबकुछ तीन–तीन ही है वह त्रिपुरा है। तीन स्थानों (भूर्भवः स्वः) में रहने वाली। तीन लोक, तीन देव, तीनों लोकों के तीनों पावकों, तीन ज्योति, तीन वर्ग, तीन गुण, तीन शब्द, तीन दोष, तीन आश्रम, तीन काल, तीन अवस्था, पितर–दिन–रात और तीन मात्रा (अ, उ, म) के रूप वाली। पराशक्ति के तीन रूप होने के कारण उन्हें त्रिपुरा कहते है। तीन रूप है महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती। तीनों लोकों को पूर्ण कर देने के कारण भी उनका नाम त्रिपुरा है। पुराकाल में ब्रह्मा–विष्णु–महेश आदि देवों ने जिनकी अर्चना की, इसलिए देवताओं में जिनका नाम त्रिपुरा दिया। तीन अक्षरों के मन्त्र के द्वारा जिनकी उपासना करने पर भक्तों की मनोकामनाओं को पूरा करने वाली। यह मन्त्र है बालात्रिपुरासुन्दरी देवी का मन्त्र जिसमें तीन बीज मन्त्र है। बालात्रिपुरासुन्दरी देवी उनका बाल्य रूप है या उन्हीं की सन्तान है। तीन मन्त्रों के द्वारा उपासना करने पर भक्तों की मनोकामनाओं को पूरा करने वाली। बाला, ललिता एवं षोडशी देवी के मन्त्र तीन मन्त्र हैं जो एक ही शक्ति के अवस्थानुसार मन्त्र हैं।

2. **परमा** – सर्वश्रेष्ठ। ज्ञान, बुद्धि, शक्ति आकार में सबसे बड़ी हैं।

3. **ईशानी** – शासन करने वाली अर्थात उनके आदेशों के अनुसार ब्रह्माण्ड की प्रत्येक घटनाऐं घटित हो रही हैं। सूर्य का समय से निकलना, पानी का बहना, हवा का चलना, अग्नि का जलाना आदि सभी इन्हीं के आदेशों का पालन है। प्राकृतिक नियम देवी के ही आदेश है।

4. **योगसिद्धि** – योग की अणिमा, लघिमा, महिमा आदि सिद्धियों के स्वरूप वाली।

5. **निवासिनी** – कण कण में निवास करने वाली। अपने नित्य धाम में निवास करने वाली। भक्तों के हृदय में निवास करने वाली। श्रेष्ठ स्थानों, मन्दिरों आदि में निवास करने वाली (यदि योगसिद्धिनिवासिनी एक शब्द है तो अर्थ होगा योग की अणिमा, लघिमा, महिमा आदि सिद्धियों में जिनका वास है)।

6. **सर्वमन्त्रमयी** – सभी मन्त्र जिनके स्वरूप हैं अर्थात सभी मन्त्रों के स्वरूप वाली। सभी प्रकार के मन्त्रों से युक्त अर्थात उनकी शक्तियों से युक्त।

7. **देवी** – प्रकाशशीला। जो प्रकाशस्वरूपा है और जिनके चारों ओर प्रकाश निकल रहा है। दिव् धातु का एक अर्थ है प्रकाशित होना।

8. **सर्वसिद्धिप्रवर्तिनी** – सभी सिद्धियों की आरम्भ या मूल कारण। सर्वप्रथम इन्होंने ही किसी को सिद्धियाँ दी होंगी। आदि आचार्य या जिसने किसी काम को सर्वप्रथम शुरू किया वह प्रवर्तक कहलाया जाता है। सभी प्रकार की सिद्धियों को प्रवर्तन (आरम्भ, लागू करना, Enforce) करने वाली या संचालित करने वाली। देवी/देवता अर्थात देने वाला, जो भी इनके पास है उसे देने वाली। अतः इस नाम का अर्थ सभी सिद्धियों को देने वाली भी कर सकते हैं।

9. **सर्वाधारमयीदेवी** – सभी की आधारस्वरूपा अर्थात तीनों लोकों की या सभी प्राणियों की आधार स्वरूपा देवी।

10. **सर्वसम्पद्प्रदा** – सभी प्रकार की सम्पत्तियों को देने वाली। भौतिक/लौकिक सम्पत्ति जैसे जमीन, जायदाद, रूपया, पैसा या आध्यात्मिक सम्पत्ति जैसे भगवान का नाम, आत्मसाक्षात्कार का ज्ञान या ब्रह्मविद्या का ज्ञान देने वाली। आठों प्रकार की लक्ष्मी को देने वाली। वेदान्त में बताई गई शम, दम आदि षट् सम्पत्ति को प्रदान करने वाली। प्रदान का अर्थ है स्थाई रूप से देना।

11. **शुभा** – शुभ स्वरूप वाली अर्थात कल्याणकारी। शुभ देने वाली अर्थात अभाव की पूर्ति करने वाली। शुभ + आ, आ का अर्थ देना भी होता है और नाश करना भी होता है। यहाँ देना अर्थ भी आ गया। तत्वज्ञान साधिका अर्थात तत्वज्ञान (आत्मज्ञान या ब्रह्मज्ञान) प्राप्ति कराने वाली। अभ्युदय और मोक्ष देने वाली। किसी अभाव की पूर्ति होना शुभ है। अतः रोटी, कपड़ा और मकान शुभ है। किसी अच्छे और बड़े लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक होना शुभ है। राक्षसों के मारने से मानवता सुरक्षित रहती है अतः यह शुभ है। माता पिता की डाँट, कड़वी दवाई से व्यक्ति अच्छा बनता है या स्वस्थ होता है अतः ऐसी डाँट या कड़वी दवाई भी शुभ है। बड़े लक्ष्य जैसे ईश्वर प्राप्ति या मोक्ष प्राप्ति हेतु सत्संगति मिलना या साधना करना शुभ है क्योंकि ये बड़े लक्ष्य प्राप्ति में सहायक है। सुख की प्राप्ति, सद्गुणों से युक्त होना, व्यक्ति एवं संसार का एकदूसरे के प्रति मैत्री या प्रेमभाव होना शुभ है, इन्हें देने वाली।

12. **योगिनी** – योग विद्या से युक्त अर्थात योग में पारंगत अर्थात योगविद्या का अभ्यास करने वाली। भक्त को भगवान से जोड़ने वाली। चौंसठ यागिनी स्वरूपा।

13. **योगमाता** – योगविद्या की जननी। योग विद्या की रक्षा करने वाली अर्थात उसे बनाये रखने वाली। शिशुम् माति पाति गर्भे इति माता अर्थात जो गर्भ में शिशु की रक्षा करती है, वह माता है। अतः माता का अर्थ रक्षा करने वाली होता है। योगम् अस्य अस्ति इति योगः, अतः योग का अर्थ योग वाला या योगी भी हो सकता है। योगियों के लिए माता के समान आदरणीया। यहाँ माता का अर्थ आदरणीया लिया गया।

14. **योगसिद्धिप्रवर्तिनी** – जीवात्मा और परमात्मा के बीच ऐक्य कराना रूपी योग की सिद्धि की शुरूआत करने वाली अर्थात आधार अर्थात देने वाली। प्रवर्तन का अर्थ है आरम्भ करना, लागू करना। योग के द्वारा सिद्धि का प्रवर्तन करने वाली।

15. **योगिध्येया** – योगियों के द्वारा ध्यान करने योग्य।

16. **योगमयी** – योग से युक्त अर्थात योग की सिद्धियों/शक्तियों से युक्त। योग के ज्ञान को पहुँचाने वाली अर्थात सुपात्रों तक पहुँचाने वाली। योग+ म (ज्ञान), यापयति इति या/यी (पहुँचाने वाली)। योग के ज्ञान में स्थित। याति का अर्थ है गच्छति, गच्छति अर्थात जाती है या विराजमान रहती है।

17. **योगा** – योगस्वरूपा अर्थात कर्मयोग, भक्ति योग, ज्ञान योग, सांख्य योग, ध्यान योग आदि योगों के स्वरूप वाली।

18. **योगनिवासिनी** – योग में निवास करने वाली। कर्मयोग, भक्तियोग, राजयोग आदि में शक्ति रूप से रहने वाली।

19. **हेला** – श्रृंगार चेष्टा वाली अर्थात श्रंगार चेष्टा करने वाली। हेला (श्रंगार चेष्टा) अस्या अस्ति इति हेला। अपने पति शिव के प्रति श्रृंगार चेष्टा वाली। अंगों की ऐसी चेष्टा कि उससे भीतर छिपे प्रेमभाव का आसानी से दूसरों को पता चल सके हेला कहलाती है। जैसे सिर झुका होना, आँखों का इशारा होना आदि। क्रीड़ा करने

वाली अर्थात हंसी – मजाक के भाव वाली। हास को धारण करने वाली। एकाक्षरीकोश में हे का एक अर्थ हास, सम्बुद्धि दिया गया है। लाति इति ला से ला का अर्थ धारण करने वाली होता है। लाति का अर्थ नाशयति भी होता है। एकाक्षरीकोश में हे के अर्थ अनर्थ, कष्ट भी दिया गया है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ अनर्थों एवं कष्टों का नाश करने वाली भी होता है।

20. **लीला** – अपने पति शिव की वेषभूषा, बातचीत, अन्य आचार के नकल करने रूपी लीला को करने वाली। लीला करने वाली। रहस्यपूर्ण कार्य या विचित्र कार्य करने वाली जैसे समुद्र के खारे पानी के किनारे होने वाले नारियल का पानी मीठा होता है जो रहस्यपूर्ण है। लीला के कई अर्थों में एक अर्थ है रहस्यपूर्ण कार्य या विचित्र कार्य। जिसे हम बहुत आसान या बायें हाथ का खेल कहते हैं ऐसे कार्यकलाप भी लीला कहलाते हैं। भगवान के वे कृत्य जिनका उद्देश्य दूसरों को सुख पहुँचाना हो, जिसमें जरा भी कर्तृत्वभाव न हो लीला कहलाती है। आनन्द के कारण जो कृत्य स्वाभाविक रूप से होते हैं जिसमें कर्म दोष नहीं होता वह लीला है। भीतरी आनन्द की अभिव्यक्ति जिन कृत्यों में होती है, वे कृत्य लीला कहलाए जाते हैं। कालिया नाग का दमन, गोवर्धनपर्वत ऊपर उठाना, द्रौपदी के चीर को बढ़ाते रहना, विराट् स्वरूप दिखाकर जीवन और मृत्यु के रहस्य को बताना, गुरू के मृत पुत्र को जीवित करना ये सब भगवान कृष्ण की लीला हैं क्योंकि ये सब उनके लिए बायें हाथ के काम की तरह बेहद आसान है और इससे दूसरों को सुख पहुँचता है। Lila or sport of brahman is created out of bliss, by bliss, for bliss. Lila indicates a spontaneous sportive activity of Brahman. लीला का अर्थ है विचित्र काम। लीला का अर्थ है मनोरंजन के लिए किया जाने वाला काम। (लीला अर्थात ऐसी क्रिया जिसके रहस्य या कारण का ज्ञान केवल ईश्वर को होता है, लीला वही कर सकता है जो पूर्णकाम हो अर्थात जिसे सब प्राप्त है, ऐसा व्यक्ति केवल मनोरंजन के लिए क्रिया करेगा। खेल तो वह है जिसमें सभी भागीदारों को खोल के नियम अर्थात घटने वाली घटनाओं के कारण का पता रहता है। लीला अर्थात बहुत ही आसान एवं जिसे करने पर किसी प्रकार का प्रयास न करना पड़े। भगवान के द्वारा की हुई अनेक क्रियाएं लीला हैं क्योंकि उन घटनाओं के कारण नहीं पता। जिन घटनाओं के कार्य कारण सम्बन्ध पता होते हैं, वे क्रीड़ा हो सकते हैं पर लीला नहीं। भगवान के द्वारा सृष्टि करना, पालन करना, संहार करना, इन कारणों का पता केवल ईश्वर के पास रहता है।)

21. **क्रीड़ा** – आमोद प्रमोद करने वाली। क्रीड़ा का एक अर्थ है आमोद प्रमोद। खेल खेलने वाली। अपने मनोरंजन के लिए कृत्य करने वाली। जैसे बच्चे मिट्टी से घर बनाते हैं, कुछ समय तक रखते हैं और बाद में मिटा देते हैं उसी प्रकार देवी भी जगत की सृष्टि, स्थिति और संहार रूपी खेल खेलती हैं। जगत का निर्माण स्थिति और संहार रूपी खेल खेलने वाली। क्रीड़ा में स्वयं के मनोरंजन का भाव होता है जबकि लीला में दूसरे को सुख पहुँचाने का भाव होता है। ऐसा कहते हैं कि ग्रह, नक्षत्र, प्राणी, पेड़ पौधे भगवान के खिलौने हैं और भगवान उनसे खेलते हैं। अपने को माया के परदे में छिपाकर लुकाछिपी का खेल खेलती हैं।

22. **काला** – काल स्वरूपा। काल का अर्थ समय भी है और मृत्यु भी है। समय और मृत्यु की शक्ति स्वरूपा। एकाक्षरीकोश की मदद से काला के कई अर्थ निकाले जा सकते हैं। का का अर्थ भूमि, शोभा दिया गया है। लाति इति ला अर्थात धारण करने वाली। भूमि को धारण करने वाली। शोभा को धारण करने वाली। ऐसे शब्दों को लेकर जिनका आरम्भ का या ला से होता है या ये अक्षर अन्त में हैं, को लेकर के भी अन्य अर्थ किये जा सकते हैं।

23. **रूपप्रवर्तिनी** – रूपमय जगत अर्थात जो देखने में आता है, का आरम्भ करने वाली अर्थात रचना करने वाली। विविध विद्याओं, विषयों, दर्शनों, शास्त्रों का प्रवर्तन करने वाली अर्थात आरम्भ करने वाली या उन्हें पैदा

करने वाली या संचालित करने वाली। (यदि कालरूपप्रवर्तिनी एक नाम हो तो अर्थ होगा सबको ग्रहण करने वाला काल एवं रूप की आधार अथवा निरन्तर गतिमान समय और रूपमय जगत की आधार अर्थात सर्वप्रथम रचना करने वाली)।

24. **कालमाता** – काल की भी माता अर्थात जननी। भगवान शिव की रक्षिका। शिव को विषपान की पीड़ा से बचाया था। तन् धातु में ड प्रत्यय लगाने त बनता है जो स्त्रीलिंग में ता या ती हो जाएगा जिसका अर्थ है विस्तार करने वाली, देने वाली या निर्माण करने वाली। एकाक्षरीकोश से म या मा के अर्थ लिये जा सकते हैं। आ का अर्थ समन्तात् (चारों ओर से या पूर्ण रू से) होता है। एकाक्षरीकोश में आ का अर्थ भाव, शक्ति दिया गया है। चूँकि प्रत्येक चीज भाव या अस्तित्व है अतः कभी कभी आ का कोई अलग अर्थ देने की जरूरत नहीं होती जैसे विश्वामित्र का अर्थ है विश्वमित्र, पद्मावती का अर्थ है पद्मवती। एक अर्थ हुआ समय के मान का निर्माण करने वाली या विस्तार करने वाली। म का एक अर्थ ज्ञान भी है। एकाक्षरीकोश से कई अर्थ लेकर काल माता शब्द के बहुत से अर्थ निकाले जा सकते हैं।

25. **कालरात्रि** – काल की रात्रि स्वरूपा अर्थात काल का भी संहार करने वाली। समय का नाश करने वाली अर्थात केवल वर्तमान काल स्वरूपा। यम का नाश करने वाली। प्रलय की रात्रि भी कालरात्रि कहलाती है। (कालरात्रि शब्द इस स्तोत्र में कई जगह आया है, इसके कई अर्थ करने का प्रयास किया गया है जो अग्र लिखित हैं – काल (मृत्यु) का भी संहार करने वाली। काल (शिव) को रात्रि के समान सुख देने वाली। रात्रि विश्रान्ति देने वाली होती है जिससे सुख मिलता है। कालपुरुष में परिवर्तन करने वाली। पृथ्वी का घूमना आदि निश्चित करने वाली। काल (शनि) की पीड़ा नष्ट करने वाली। काल के अर्थ शनि, समय, मृत्यु दिये गए है। रात्रि को संहारिका शक्ति कहते है क्योंकि यह दिन अर्थात प्रकाश का नाश करती है। रात्रि को सुख देने वाली भी कहते है क्योंकि सोने या विश्राम करने से सुख मिलता है। शिव को सुख देने वाली। काल अर्थात मृत्यु के भय का नाश करने वाली अर्थात दूर करने वाली। खराब समय को नष्ट करने वाली। यमराज की एक बहन का नाम भी कालरात्रि है, उनसे अभेद है जिनका। ब्रह्माण्ड पुराण में एक वर्ण शक्ति का नाम भी कालरात्रि बताया गया है। जितने स्थानों में यह शब्द आया है, वहाँ एक एक अर्थ लिख दिये जाने पर अर्थों में भिन्नता बनी रहेगी।) भक्ति रहित मनुष्यों या नास्तिक लोगों के लिए मृत्यु के समान भयंकरी। कालरात्रि घनघोर रात्रि है जो भयंकरता का प्रतीक है। रात्रि शब्द सुख देने वाली या संहार करने वाली शक्ति का भी बोधक है। रात्रि में सोने से मनुष्य को विश्राम या सुख मिलता है अतः रात्रि सुखदायी है। रात्रि दिन का नाश करती है अर्थात् यह विनाशिका शक्ति को भी बोधक है। काल का अर्थ है शिव। शिव को सुख देने वाली। काल का अर्थ है मृत्यु, समय, सीमितता (limitation)। भक्तों के लिए मृत्यु का भयं समाप्त करने वाली। खराब समय का भय नाश करने वाली। कालपुरुष में परिवर्तन करने वाली। पृथ्वी का घूमना आदि निश्चित करने वाली। काल (शनि) की पीड़ा नष्ट करने वाली। काल के अर्थ शनि, समय, मृत्यु दिये गए है। रात्रि को संहारिका शक्ति कहते हैं क्योंकि यह दिन अर्थात प्रकाश का नाश करती है। रात्रि को सुख देने वाली भी कहते है क्योंकि सोने या विश्राम करने से सुख मिलता है। शिव को सुख देने वाली। काल अर्थात मृत्यु के भय का नाश करने वाली अर्थात दूर करने वाली। खराब समय को नष्ट करने वाली। यमराज की एक बहन का नाम भी कालरात्रि है। ब्रह्मांड पुराण में एक वर्ण शक्ति का नाम भी कालरात्रि बताया गया है। घनघोर रात्रि स्वरूपा अर्थात् सभी को समान भाव से देखने वाली। घनघोर रात्रि में सिर्फ अंधेरा दिखाता है और छोटा–बड़ा स्त्री, पुरुष पास–दूर आदि भेद समाप्त हो जाते है। भेद समाप्त होना अर्थात् अद्वैत में स्थापित होना। द्वैत भाव समाप्त कर अद्वैत भाव लाने वाली। (इस स्तोत्र में कई जगह कालरात्रि शब्द आया है, अतः कई अर्थ दे दिये गये हैं। अलग अलग नामों में अलग अलग अर्थ लिखे जा सकते हैं।)।

26. **काली** – उत्पन्न हुए सभी पदार्थों की आयु की गणना करने वाली। कलयति का अर्थ है गणना करना। कलयति इति काली। आयु की गणना करना अर्थात किसे कितने समय तक जीवित रहना है यह निर्धारित करना। एकाक्षरीकोश से क या का के अर्थ ले सकते हैं। लाति इति ला/ली से धारण करने वाली या नाश करने वाली अर्थ आते हैं। अतः कई अर्थ निकाले जा सकते हैं।

27. **कमलवासिनी** – कमल में निवास करने वाली लक्ष्मीजी से अभेद हैं जिनका। कमल वन में निवास करने वाली।

28. **कमला** – जल को सुशोभित करने वाली। कम् (जलम्) अलति इति कमला। अपनी उपस्थिति से जल को सुशोभित करने वाली लक्ष्मी जी से अभेद हैं जिनका। कम् विष्णुम् अलति अर्थात जो अपनी उपस्थिति से भगवान विष्णु को सुशोभित करती है वह कमला है।

29. **कान्तिरूपा** – कान्ति (प्रकाश या दीप्ति) का निर्माण करने वाली। कान्तिम् रूपयति इति कान्तिरूपा। रूपयति का अर्थ है स्वरूप देना अर्थात निर्माण करना। कान्ति है ज्ञापक या बोधक जिनकी अर्थात कान्ति से जिनका बोध होता है। ऐसी कान्ति है अर्थात यह देवी की ही कान्ति होगी। रूपा का एक अर्थ ज्ञापक/बोधक भी होता है। रूप्यते ज्ञाप्यते यया इति रूपा। इच्छा स्वरूपा। कान्ति का एक अर्थ इच्छा है। स्वरूप की उज्जवलता स्वरूपा। विशिष्ट कान्ति से देदीप्यमान। जिसकी कान्ति अर्थात प्रकाश दिखती है। रूप अर्थात जो आँखों से दिखाई दे। (नोट – यह नाम इस स्तोत्र में कई जगह आया है। इसके अन्य अर्थ इस प्रकार हैं – इच्छास्वरूपा। चन्द्रमा की पत्नी स्वरूपा। चन्द्रमा की 16 कलाओं में से एक कला। सौन्दर्य या छवि। शरीर का वह प्रकाश जो दूसरों को आकर्षित करे या वश में करे। मन और शरीर शान्त हो उस अवस्था में शरीर से निकलने वाला प्रकाश। श्रद्धा और सतोगुण हो तो शरीर से निकलने वाला प्रकाश। प्रेम को उद्दीपित करे वह शारीरिक सौन्दर्य भी कान्ति है। इनमें से एक एक अर्थ अन्य जगह आये हुए कान्ति शब्द के अर्थ के रूप में रख सकते हैं)। क+अन्ति=कान्ति। एकाक्षरी कोश में क के कई अर्थ दिये गये है जैसे ब्रह्म, सुख, सूर्य, स्वर्ग आदि। अन्ति का अर्थ है समीप या पास। जो ब्रह्म के अत्यन्त समीप है अर्थात साथ–साथ रहती है। जो सुख के अत्यन्त समीप है अर्थात आनन्दमयी है। जो स्वर्ग के अत्यन्त समीप है अर्थात स्वर्ग में रहने वाली है। जो सूर्य के अत्यन्त समीप है अर्थात सूर्य पर उनकी कृपा बराबर रहती है। का+अन्ति=कान्ति, एकाक्षरी कोश में का के अर्थ दुर्गा, भूमि दिए गए है। जो दुर्गा जी के अत्यन्त समीप है। जो भूमि के अत्यन्त समीप है अर्थात उस पर रहती है। ऐसी आभा या सौन्दर्य जिसके कारण किसी के मुख मंडल को निहारने का मन करता है। जिसके कारण अर्थात जिसके रूप को देखकर मन स्वतः आकर्षित और प्रसन्न होता है। रूप वह है जो सुन्दर है अर्थात सुख देता है। कान्तिरूपा अर्थात गुणों की कान्ति से युक्त पुरुषों को सुख देने वाली।)

शोभा, कान्ति, दीप्ति, द्युति, आभा और प्रभा में अन्तर – यौवन, रूप अंगों की आकृति आदि के कारण जो शारीरिक सौन्दर्य है वह शोभा है। शोभा की परिभाषा साहित्य दर्पण एवं नाट्य शास्त्र में इस प्रकार दी गई है– रूप (शरीर के अंगों की बनावट), यौवन, आत्मशक्ति एवं पौष्टिक खाना खाने से जो शारीरिक सौन्दर्य होता है वह शोभा है। शोभा natural beauty है। पुरुष के सन्दर्भ में शोभा का प्रयोग उनके कुछ विशेष गुणों के लिए किया गया है। शोभा अर्थात distinguished merit. पुरुष के सन्दर्भ में शोभा (brilliant charactor) की परिभाषा है skill in various things, heroism, energy evarsion to mean activity emulation of best virtue. शोभा शब्द शुभ् धातु से बना है जिसका अर्थ है चमकना। शोभा के लिए अन्य शब्द हैं– beauty handsomeness, comeliness, graceful expression. कान्ति की परिभाषा इस प्रकार दी गई है–कामभाव या प्रेमभाव के उदय होने पर बढ़ी हुई शोभा (शारीरिक सौन्दर्य) कान्ति

है। ऐसा कहते हैं कि मनुष्य में या अन्य प्राणियों में कामभाव जाग्रत होने पर उसकी शरीरिक सुन्दरता और बढ़ जाती है। इसके कारण वह सामने वाले व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करता है। ऐसा शारीरिक सौन्दर्य जो सामने वाले व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करे, कान्ति है। कान्ति के कारण आकर्षण केवल प्रेमी प्रेमिका के रूप में ही नहीं होता, अन्य सम्बन्धों जैसे उपास्य–उपासक, माता–पिता, भाई–बहन, मित्र आदि के रूप में भी होता है। यही कारण है कि देवी–देवताओं के नाम में भी कान्ति शब्द का प्रयोग आता है। ऐसा बढ़ा हुआ शारीरिक सौन्दर्य जो सामने वाले व्यक्ति के अन्दर भी प्रेम का भाव जाग्रत कर दे, उसे अपनी ओर आकर्षित करे कान्ति है। इसके लिए बेहतर अंग्रेजी शब्द charming beauty होगा। ऐसा कहते हैं कि जब इन्द्रियाँ और मन शान्त होते हैं तो व्यक्ति के शरीर से कान्ति निकलती है। जब सत्वगुणों का आधिक्य होता है तो कान्ति अर्थात दूसरे को अपनी ओर आकर्षित करने वाली चमक या प्रभा निकलती है। कान्ति का अर्थ इच्छा भी होता है। देखने वाले व्यक्ति के अन्दर कान्ति युक्त व्यक्ति को प्राप्त करने की इच्छा होती है। चन्द्रमा की एक पत्नी का नाम भी कान्ति है। कान्ति के लिए charming beauty, radiance शब्द आता है।

दीप्ति की परिभाषा साहित्यदर्पण एवं नाट्यशास्त्र में इस प्रकार दी गई है– अतिविस्तीर्ण कान्ति दीप्ति है। जो अधिक तेजी से या अधिक मात्रा में आकर्षित करे वह बढ़ा हुआ शारीरिक सौन्दर्य जिसमें प्रेम भी सम्मिलित है, दीप्ति है। दीप्ति अर्थात extreme loveliness. High degree of charm is called radiance (दीप्ति) योग में कहा गया है नाड़ियों की शुद्धि होने पर या प्राणायाम सिद्ध होने पर शरीर में जो तीव्र चमक आ जाती है, वह दीप्ति है। दीप्ति अर्थात radiation, great brilliance. जैन ग्रन्थ में आभा मण्डल को बनाये रखने वाली शक्ति दीप्ति कही गई है। अतः दीप्ति का अर्थ है power of retention of aura. अंग्रेजी में दीप्ति के लिए radiation, great brilliance, flash, flame, refulgence शब्द बेहतर शब्द हैं। प्रभा में भी flash शब्द आता है पर दीप्ति में flash और flame पर अधिक जोर दिया गया है। दीप्ति का प्रयोग ज्ञान के सन्दर्भ में भी होता है। दीप्ति का एक अर्थ feeling of enlightment है। कोई चीज दीप्त हुई अर्थात flash में पता चला। चकाचौंध का अर्थ है आँखें देख पाने में सक्षम नहीं है और बन्द हो जाती हैं। इस प्रकार दीप्ति में चकाचौंध करने वाली चमक भी है। दीप्ति शब्द का उद्दीप्त और दीपक से सम्बन्ध है। दीप्ति भड़कीला प्रकाश, चकाचौंध करने वाला प्रकाश है। दीपक की तरह स्वयं को प्रकाशित करता है और दूसरे को भी प्रकाशित करता है।

द्युति शब्द विष्णुसहस्रनाम में आया है और वहाँ पर एक शब्द आया है ओजस्तेजोद्युतिधरः। द्युति शब्द द्युत् एवं दिव् दोनों धातुओं से बन सकता है और दोनों धातुओं का अर्थ है चमकना। यहाँ जितने भी शब्द आये हैं उन सबमें कुछ न कुछ चमक अवश्य है पर वे चमक के साथ कुछ और भी कर रहे होते हैं जैसे प्रभा चारों ओर रोशनी भरती है, दीप्ति चकाचौंध भी कर सकती है, कान्ति अपनी ओर आकर्षित करती है। द्युति शब्द सिर्फ चमक की ओर इशारा कर रहा है अर्थात द्युति का अर्थ चमक कर सकते हैं। द्योतनात् इति द्युति से द्युति का अर्थ निकलता है कि वस्तुओं को प्रकाशित करने वाली शक्ति या ऊर्जा द्युति है। जो ऊर्जा या शक्ति आँखों से जुड़कर किसी वस्तु को अभिव्यक्त कर दे अर्थात दिखा दे या ज्ञान करा दे वह द्युति है। एक स्थान पर यह पढ़ने को मिला है कि आत्मा जिस आकाश में स्थित है उसके सबसे समीप की रोशनी या प्रकाश द्युति है, सम्भवतः द्यु का अर्थ आकाश लेकर ऐसा अर्थ निकाला गया हो। वहाँ स्थूल शरीर के बल को ओज कहा गया है एवं सूक्ष्म शरीर की शक्ति को तेज कहा गया है तथा कारण शरीर में रहने वाली ज्योति या प्रकाश को द्युति कहा गया है। मेरी भव बाधा हरौ राधा नागरि सोये, जा तन की झाईं परे श्याम हरित द्युति होए। सम्भवतः ईश्वर के सबसे नजदीक प्रकाश या रोशनी को द्युति कहते हैं।

प्रभा में प्र का अर्थ प्रकृष्ट अर्थात बहुत अधिक है और भा का अर्थ है रोशनी या प्रकाश अतः प्रभा का अर्थ हुआ बहुत अधिक मात्रा में फैली हुई रोशनी अर्थात चारों ओर फैली हुई रोशनी/प्रकाश। सूर्य, चन्द्रमा या अन्य नक्षत्र चारों ओर बहुत अधिक मात्रा में रोशनी या प्रकाश फैलाते हैं अतः उनके लिए प्रभा शब्द का प्रयोग करना उचित होगा। प्रभा अर्थात बहुत दूर तक चारों ओर फैली हुई रोशनी या प्रकाश। आपने आदित्यप्रभा, सम्प्रभा ऐसे शब्दों को सुना होगा। अंग्रेजी में इसके लिए splendor शब्द करना उचित रहेगा। अंग्रेजी शब्दकोशों में `splendor शब्द का अर्थ diffusing, shedding of light किया गया है अर्थात वह प्रकाश या रोशनी जो स्रोत से निकलकर फैल जाए और अपने चारों ओर की जगह भर दे। प्रभा अर्थात spreading/ scattering of light in many direction, light is not concentrated. प्र का अर्थ प्रारम्भ भी लेते हैं अतः रोशनी या प्रकाश के प्रारम्भ को भी प्रभा कह देते हैं। प्रभातकाल, यह नाम सम्भवतः इसी लिए पड़ा होगा।

प्रभा के लिए efflulgence, blaze शब्द ठीक है। efflulgence is brightness taken to extreme. You may be dazelled, stunned by it or even overcome by it. आभा के लिए lustre, tint, shade शब्द ठीक है। आभा एक प्रकार से कोमल चमक या मुलायम चमक है। lustre is gentle shining of light. कहीं पर lustre का अर्थ very shining भी किया गया है। वह शक्ति या तत्व जिसके योग से वस्तुओं आदि का रूप आँख को दिखता है, आभा है (कुछ लोग यह परिभाषा दीप्ति के लिए भी करते हैं।)। light (रोशनी) वह है जो चीजों को दृश्य बनाती है। brightness is intensity of light, perceived lumination. आभा अर्थात चारों ओर से निकलने वाला प्रकाश जो व्यक्ति या वस्तु से कुछ आगे तक होता है, कितना आगे तक जाएगा, यह शुद्धता और पवित्रता पर निर्भर करता है। आपने आभामण्डल या aura का नाम सुना होगा। आ अर्थात समन्तात् अर्थात चारों ओर से अर्थात शरीर के चारों ओर से निकलने वाला प्रकाश। देवी देवताओं के चेहरे के चारों ओर ring के रूप में एक गोला सा दिखाई देता है जो उनके अन्दर की ऊर्जा का प्रकटीकरण है। वस्तु में पूरी वस्तु के चारों ओर एवं मनुष्य में प्रायः चेहरे के चारों ओर दिखाया जाता है।

वह अदृश्य प्रकाश या ऊर्जा जो मनुष्य या वस्तु को चारों ओर से घेरे रहती है, आभा है। आ का अर्थ है समन्तात् अर्थात चारों ओर से और भा का अर्थ है रोशनी, प्रकाश। आपने आभामण्डल या aura का नाम अवश्य सुना होगा। संस्कृत में आ का अर्थ ईषत् अर्थात कुछ भी होता है। अतः आभा शब्द कुछ या कम मात्रा में चमकते हुए प्रकाश को भी कहते हैं। आभायन या आभाकरण को अंग्रेजी में tinging कहते हैं। आभा को अंग्रेजी में में tinge, shade, lustre, shining भी कहते हैं।

प्रभा और द्युति में अन्तर क्या है। प्रभा अधिक तीक्ष्ण हो सकती है एवं फैलती भी है। सूर्य की प्रभा पूरे लोक में फैलती है, पर अन्धकार में अनुपस्थित हो जाती है। द्युति सर्वव्यापक है और अन्धकार में भी रहती है। द्युति की रोशनी प्रभा की तरह तीक्ष्ण नहीं होती। द्युति और प्रभा दोनों पूरे आकाश में फैलते हैं पर द्युति चकाचौंध वाला नहीं है। व्यापकता और तीक्ष्णता में प्रभा का स्थान सर्वोपरि है किन्तु व्यापकता और अतीक्ष्णता में द्युति का स्थान सर्वोपरि है। कही पर द्युति के लिए splendor, illumination, radiance शब्द आये हैं। छटा के लिए halo शब्द आया है। shining is sending out or reflecting of light(रोशनी या प्रकाश)। प्रभा अर्थात shining brightly. यहाँ जो शब्द प्रयोग किये गये गए हैं उनमें चमक तो है ही। भा दीप्तौ धातु है अतः प्रभा दीप्ति से तो बढ़कर है। प्र अर्थात प्रकृष्ट अर्थात श्रेष्ठ अर्थात बढ़कर।

30. **कामराजेश्वरी** – कामदेव ने श्रीविद्या के जिस मन्त्र का जप किया वह कामराज विद्या है और इस मन्त्र की उत्पत्ति करने वाली देवी हैं। कामदेव की भी राजेश्वरी अर्थात कामविद्या या समस्त इच्छाओं की भी राजेश्वरी। सुन्दरता में जो राजा है अर्थात सर्वश्रेष्ठ है अर्थात कामदेव यह कामराज का अर्थ हुआ। कामदेव की आराध्या। कामानाम् राजः अर्थात कामनाओं को पूरा करने वाला कोई भी भगवान, उनकी आराध्या। कामराज अर्थात सर्वसुन्दर। सर्वसुन्दरों की ईश्वरी। काम शब्द सुन्दरता का प्रतीक है। कामराज विद्या की ईश्वरी।

31. **क्रिया** – जिससे कुछ किया जाता है ऐसी चेष्टा या प्रयत्न स्वरूपा। किसी काम को करने की विधि या ढंग स्वरूपा। व्याकरण के उस शब्द के रूप में जिससे किसी कार्य या व्यापार का होना पता चले। नित्यकर्म (सन्ध्या, तर्पण, स्नान) या श्राद्ध, प्रायश्चित कर्म स्वरूपा। क्रिया अस्या अस्ति इति क्रिया अर्थात किया वाली अर्थात संसार की समस्त क्रियाओं को करने या कराने वाली। क्रिया स्वरूपा। कर्मस्वरूपा। क्रिया का एक अर्थ कर्म भी होता है। कुण्डलिनी जागरण के अभ्यास में शरीर में होने वाली स्वाभाविक हरकत भी क्रिया है। कर्मण्यता स्वरूपा। भगवान कृष्ण की 16 कलाओं में से एक कला का नाम क्रिया है। जिस शक्ति के कारण व्यक्ति कर्म करने के लिए प्रेरित होता है। भगवान कृष्ण इच्छामात्र से सारा कार्य कर सकते है पर सामान्य मनुष्य की तरह कर्म करते हुए दिखाई देते है। मन्दिरों के निर्माण एवं उनकी मूर्ति की स्थापना या अभिषेक सम्बन्धी गतिविधि को भी क्रिया कहते हैं। पंचरात्रागम में क्रिया की यही परिभाषा दी गई है। सन्दर्भ के अनुसार परिभाषाएं बदलती रहती है। कुण्डलिनी जागरण की साधना करते समय शरीर में होने वाली स्वाभाविक हरकत या हिलना डुलना भी क्रिया है। क्रिया योग स्वरूपा। यह एक प्रकार की साधना विधि है। क्रिया योग स्वरूपा। पतंजलि के योग दर्शन में लिखा है कि तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान इन तीनों का योग अर्थात इन तीनों को करना क्रिया योग है। तपस्या शारीरिक क्रिया है, स्वाध्याय वाचिक क्रिया है एवं ईश्वर प्रणिधान मानसिक क्रिया है। महावतार बाबा जी द्वारा प्रचारित की गई क्रिया योग साधना स्वरूपा। गीता में भगवान कृष्ण ने जब कहा कि यह ज्ञान उनसे सूर्य को दिया गया तो क्रिया योग से ही तात्पर्य था।

32. **कटु** – दैत्यों के लिए कटु अर्थात कड़वी है। कटु अर्थात कड़वे स्वरूप वाली। दैत्यों के संहार के समय कड़वे रूप को धारण कर लेती हैं। कटु रस सभी रसों पर हावी हो जाता है अर्थात देवी सभी देवताओं पर हावी हैं अर्थात उनसे बढ़कर है। सुख देने में निपुण। क का अर्थ है सुख, स्वर्ग। पटु शब्द का टु ले लिया। इस प्रकार से शब्दों के अर्थ निकाले जाते हैं।

33. **कपटकेशा** – सुन्दर काले काले घुँघराले बालों वाली। कपट अर्थात जो सीधा न हो, उल्टा अर्थात घुँघराला अर्थ होगा। छल रूपी केशों वाली। केशों से ढ़की हुई। देवी सबको नहीं दिखाई देतीं हैं अर्थात ढ़की हुई हैं। दुनिया के छल कपट, वही हैं केश जिनके।

34. **कपटा** – माया द्वारा असलियत छिपाकर दूसरे रूप में स्थित। असलियत को छिपाकर माया रूप में स्थित। रावण साधु वेश में सीता जी के पास भीख माँगने आया था, हनुमान जी ब्राह्मण का रूप धारण करके भगवान राम – लक्ष्मण से मिलने आये थे, यह कपटरूप है। कपट स्वरूपा। दैत्यों या राक्षसों के विनाश के लिए कपट रूप धारण कर लेती हैं। कपट+आ, आ का अर्थ देना भी होता है और नाश करना भी होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ कपट का नाश करने वाली।

35. **कुलटाकृति** – हर कुल में भ्रमण करने वाली आकृति वाली। हर परिवार में देवी की मूर्ति या फोटो होती है और स्त्रियाँ तो देवी का ही रूप मानी गई हैं। प्रत्येक समूह में उस समूह की इकाई का रूप धारण कर लेती हैं जैसे सिंह के समूह में सिंह का रूप, हाथियों के समूह में हाथी का रूप धारण कर लेती हैं। कुलटा की व्युत्पत्ति है कुलम् कुलम् अटति अर्थात जो प्रत्येक कुल में जाती हैं। आजकल कुलटा को व्यभिचारिणी स्त्री कहते

हैं किन्तु देवी के अर्थ में प्रत्येक कुल में जाने वाली अर्थ तर्कसंगत है। कुल का अर्थ परिवार एवं समूह होता है। कुलटा स्त्रियों के कुकृत्यों का निवारण करने वाली अर्थात व्यभिचारिणी स्त्रियों की बुद्धि शुद्ध करने वाली। कुलटा + आ + आकृति। आ का अर्थ है नाश करना, इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ कुलटा को नाश करने वाली आकृति वाली अर्थात कुलटा के कुमार्ग का नाश करने वाली आकृति वाली।

36. **कुमुदा** – कुमुदस्वरूपा अर्थात कुमुद के समान सुन्दर, प्रसन्नता देने वाली, पवित्र, स्वच्छ, मीठी और अनुकूल सुगन्ध वाली और रोगनिवारिका। कुमुद purity & fertility, sweet & innocent beauty, pleasure & peace का प्रतीक है। कुत्सितानां मुदं द्यति। कुमुदगतः कुमुदः। कोः भूमेर्मुदा अनया। कुंमुच्च अश्व। कुरबो मोदन्ते अनया। दुष्टों की प्रसन्नता को नष्ट करने वाली। कुमुद नामक पुष्प में विराजमान (सुन्दरता या अन्य रूप में)। पृथ्वी में जिसके द्वारा प्रसन्नता दी जाती है। कुरब (एक वृक्ष, सियार) जिसके द्वारा प्रसन्न होते हैं।

37. **चर्चिका** – लोगों द्वारा पूजित। प्राणी अपनी कामना पूरी करने के लिए इनकी पूजा करते हैं। चर्च्यते पूज्यते इति चर्चिका। चर्च् पूजने धातु होती है। जिसकी सभी जगह चर्चा होती है अर्थात जिसके बारे में बात होती है, व्याख्यान होते हैं, कथा होती है। सभी के लिए चर्चा का विषय।

38. **कान्ति** – दूसरों को आकर्षित करने वाले शरीर से निकलने वाले प्रकाश के स्वरूप में। जब मन और शरीर शान्त होता है तब उस समय उस शरीर से निकलने वाले प्रकाश के स्वरूप में। कान्ति स्वरूपा अर्थात सुन्दर चमकती कान्ति वाली। ऐसी सुन्दरता जिससे लोग आकर्षित होते हैं या ऐसी सुन्दरता जो लोगों द्वारा चाही जाती है कान्ति है। (कान्ति शब्द इस स्तोत्र में कई स्थानों पर आया है। हर स्थान पर अर्थ अलग अलग होना चाहिये। कान्ति शब्द के अनेक अर्थ अग्र लिखित हैं – क+अन्ति=कान्ति। एकाक्षरी कोष में क के कई अर्थ दिये गये है जैसे ब्रह्म, सुख, सूर्य, स्वर्ग आदि। अन्ति का अर्थ है समीप या पास। जो ब्रह्म के अत्यन्त समीप है अर्थात साथ–साथ रहती है। जो सुख के अत्यन्त समीप है अर्थात आनन्दमयी है। जो स्वर्ग के अत्यन्त समीप है अर्थात स्वर्ग में रहने वाली है। जो सूर्य के अत्यन्त समीप है अर्थात सूर्य पर उनकी कृपा बराबर रहती है। का+अन्ति=कान्ति, एकाक्षरी कोष में का के अर्थ दुर्गा, भूमि दिए गए है। जो दुर्गा जी के अत्यन्त समीप है। जो भूमि के अत्यन्त समीप है अर्थात उस पर रहती है। भगवान कृष्ण की 16 कलाओं में से एक कला का नाम कान्ति है, उस कला के स्वरूप वाली। यह ऐसी आभा या सौन्दर्य है जिसके कारण किसी के मुख मण्डल को निहारने का मन करता है। जिसके कारण अर्थात जिसके रूप को देखकर मन स्वतः आकर्षित और प्रसन्न होता है।)

39. **कालरात्रि** – उस अवस्था के रूप में, जिसमें सभी क्रियाऐं बन्द हो जाती हैं अर्थात निष्क्रिय अवस्था स्वरूपा कालरात्रि है। सप्तशती रहस्य पुस्तक (चण्डी प्रकाशन प्रयाग) में लिखा हुआ है कि दुर्गासत्पशती में वर्णित कालरात्रि में काल शब्द समय का वाचक न होकर क्रियावाची है। कालरात्रि का अर्थ घुप्प अँधेरा या बिल्कुल अँधेरा भी होता है अर्थात सर्वत्र समभाव या अद्वैत की स्थिति लाने वाली। काल को देने वाली अर्थात दुष्टों को काल के गाल में समाने वाली। यहाँ रात्रि का अर्थ देने वाली। काल को भी हटा देने वाली अर्थात काल की भी काल।

40. **प्रिया सदा** – सदैव प्रिय लगने वाली अर्थात अच्छी लगने वाली। प्रीणाति स्वचरितैः इति प्रिया अर्थात जो अपने कार्यकलाप से प्रसन्न करे वह भी प्रिय है। सदैव प्रसन्न रहने वाली या सदैव प्रसन्न करने वाली ये दोनों अर्थ होंगे। सदैव सभी के लिए मनोभाविनी अर्थात मन को अच्छा लगने वाली।

41. **घोराकारा** – दुष्टों और राक्षसों के लिए भयंकर आकृति वाली। शिव के आकार वाली या शिव स्वरूपा। शिव का एक नाम घोर भी है। पूज्यभाव युक्त आकार या शरीर वाली। घोर का एक अर्थ पूज्यभाव भी है।

42. **घोरतरा** – भय देने वाले देवताओं और राक्षसों से अधिक भयंकर। देवताओं के भी कुछ रूप जैसे कालभैरव आदि देखने में भयंकर हैं। दुष्टों और राक्षसों के लिए अधिक भयंकर रूप वाली। भय से परे अर्थात भय रहित। विष से परे अर्थात विष का इनपर कोई असर नहीं होता। शिव से भी बढ़कर अर्थात गुण और सौन्दर्य में शिव से बढ़कर हैं।

43. **धर्माधर्मप्रदा** – धर्म और अधर्म को प्रदान करने वाली अर्थात इसका ज्ञान प्रदान करने वाली। धर्म वह कृत्य है जिससे पारलौकिक सुख मिलता है, जिससे शुभ (स्वर्ग या और ऊपर के लोक) प्राप्त होता है। अधर्म वह कृत्य है जो लौकिक सुख और पारलौकिक सुख का विरोधी है। धर्म अर्थात पुण्य कर्म और अधर्म अर्थात पाप कर्म। पुण्य कर्म एवं पाप कर्म का फल भी धर्म और अधर्म कहलाता है।

44. **मति** – उस शक्ति के रूप में जिससे कुछ जाना जाता है। मन्यते अनया इति मति। मन्यते ज्ञायते। बुद्धि स्वरूपा। साहित्य दर्पण के अनुसार अर्थ (वस्तु object) का, सत् असत् का निश्चय करने वाली शक्ति। किसी चीज को देखकर जब हम निश्चित रूप से कहते हैं कि यह वस्तु अमुक ही है तो यह मति शक्ति का काम होता है। (शब्द के आगे 'में विराजमान', 'का कारण' लगाने से भी शब्द का अर्थ निकलता है। मति का अर्थ बुद्धि का वह रूप है जिससे कोई चीज समझाी जाती है, मनन की जाती है। मननशील बुद्धि में विराजमान, मननशील बुद्धि का कारण अर्थात ऐसी बुद्धि देने वाली, यह अर्थ भी हो सकता है। वेद में मति से युक्त अर्थात मननशील व्यक्ति के लिये भी मति शब्द का प्रयोग किया गया है। वेद में मति का प्रयोग स्तुति अर्थ में भी किया गया है। यह शब्द इस स्तोत्र में कई जगह आया है, इनमे से एक एक अर्थ लिखा जा सकता है जिससे अर्थ में भिन्नता न रहे।) वैदिक कोष के अनुसार मति का अर्थ है प्रार्थना, पूजा, स्तुति। मन्यते अनया इति मति अर्थात जिसके द्वारा जाना जाता है। मति का अर्थ मनन करने वाली शक्ति अर्थात बुद्धि तो सभी लोग जानते हैं। वेद में मति का अर्थ वाणी भी किया गया है क्योंकि वाणी के द्वारा ही सबकुछ जाना जाता है। जिससे अर्थों को जाना जाता है। वेद में मतिमान अर्थात बुद्धियुक्त के अर्थ में भी मति शब्द मिलता है। शब्द के आगे 'में विराजमान' या 'का कारण' लगाने से भी शब्द का अर्थ निकलता है। बुद्धि में विराजमान। बुद्धि का कारण अर्थात उपासकों को श्रेष्ठ बुद्धि देने वाली। मन्यते अनया इति मति (जिसके द्वारा जाना जाता है) अर्थात वाणी। वाणी से ही कोई चीज जानी जाती है। मन् ज्ञाने धातु में क्तिन् प्रत्यय लगाने से मति शब्द बना जो कर्ता कारक के अतिरिक्त अन्य कारक का अर्थ देगा। यहाँ करण कारक लगाया गया। मन्यते ज्ञायते अस्मात इति मति अर्थात जिससे शास्त्रों के अर्थ जाने जाते हैं वह मति है अर्थात विद्वान। शब्द के आगे 'में विराजमन' और 'का कारण' लगाने से भी अर्थ निकलते हैं। बुद्धि का कारण अर्थात उपासकों को श्रेष्ठ मननशील बुद्धि देने वाली। मननशील बुद्धि में शक्तिरूप में विराजमान। वैदिक कोश में लिखा है कि वेद में कहीं पर मतुप् लगाये बिना मतुप का अर्थ भी दे रहा है अर्थात मतिमान। इस प्रकार मति का अर्थ मननशील बुद्धि से युक्त भी है। मनन करने वाली बुद्धि। उत्तम विचार योग्य बुद्धि तत्व विचार करने वाली मनन शक्ति। वेद में स्तुति या प्रार्थना के अर्थ में भी मति शब्द का प्रयोग हुआ अर्थात मति का अर्थ हुआ स्तुति या प्रार्थना स्वरूपा। वेद में मति का प्रयोग ज्ञान या वाणी स्वरूप परमेश्वर के अर्थ में भी हुआ है जैसे "अयं सहस्रमा नो दृशे, कविनाम् मतिर्ज्योतिर्विधर्मणि" इस प्रकार मति का अर्थ हुआ ज्ञान या वाणी स्वरूप परमेश्वर। हयग्रीव द्वारा लिखित शाक्त तन्त्र में लिखा गया है– वैदिक श्रद्धा मति। इस प्रकार वेद या वेद से जुड़े शास्त्रों में श्रद्धा को मति कहा गया है। वैदिक श्रद्धारूपी यह अर्थ हुआ। एकाक्षरी कोष से म के कुछ अर्थ ले सकते हैं एवं तनोति या विस्तारयति का ति अक्षर लेकर इस शब्द के अर्थ किये जा सकते हैं। जैसे मम् ज्ञानम् तनोति अर्थात ज्ञान का विस्तार करने वाली। म का एक अर्थ है ज्ञान। ऐसे शब्द भी ले सकते हैं जो म से शुरू होते हैं। किसी शब्द के एक अक्षर लिखने मात्र से उस शब्द का बोध हो जाता है। एक स्थान पर ति का

अर्थ आनन्द भी पढ़ने को मिला है। (मति शब्द कई जगह आया है अतः बहुत से अर्थ दे दिये गये हैं)। एक एक स्थान पर एक एक अर्थ लेकर लिखा जा सकता है।)

45. **घण्टा** – घण्टा को धारण करने वाली अर्थात हाथ में लिये है। घण्टा अस्य अस्ति इति घण्टः, स्त्रीलिंग में घण्टा। वह सत्ता जिससे सभी शब्द निकलते हैं या सभी मातृकावर्ण निकलते हैं। घण्टा अर्थात अनाहत नाद। अनाहत नाद करने वाली। अनाहत नाद से ही विश्व परिपूरित है। घण्टा शक्ति से ही विश्व की सृष्टि हुई है अर्थात बिन्दुरूपी घण्टा के नाद से सृष्टि हुई है। बिन्दु रूपी घण्टा के नाद से सभी अक्षर निकलते हैं अनाहत नाद में ही जगत की रचना और स्थिति होती है। घण्टा की घर घर या टन टन ध्वनि को बढ़ाने वाली। शरीर में होने वाला अनाहत नाद स्वरूपा। ध्वनि सूचक वाद्य प्रायः कुण्डलिनी जागरण के समय सुनाई पड़ने वाले शब्दों के लिये प्रयुक्त किये जाते हैं। शब्द के आगे 'का कारण' लगाने से शब्द का अर्थ आ जाता है, अतः कुण्डलिनी जागरण के समय इस प्रकार की ध्वनि करने वाली। देवी के हाथ में जो घण्टा (Bell) है वह आध्यात्मिक अन्तर्दृष्टि का प्रकाशक है। Bell is the revealer of spirtual insight अनाहतनाद में विराजमान। अनाहतनाद का कारण अर्थात अनाहतनाद उत्पन्न करने वाली। नियम है कि शब्द के आगे मे विराजमान' 'का कारण' लगाने से शब्द के अन्य अर्थ आ जाते हैं।

46. **घण्टा** – प्राणियों का उद्‌बोध कराने वाली अर्थात जगाने वाली। घण्टा का उपयोग जगाने के लिए भी होता था। अज्ञान में सोये हुए प्राणियों को ज्ञानामृत के द्वारा जगाने वाली अर्थात बताने वाली कि क्या सत्य है, क्या असत्य है और सत्य को कैसे पाया जाए। कुण्डलिनी जागरण के समय सुनाई पड़ने वाले घण्टे की तरह के शब्द से अभेद है जिनका अर्थात नाद ब्रह्म स्वरूपा। मनुष्य को शिक्षा देने वाली की कि अपने भीतर के अनाहत नाद को सुनो अर्थात शब्द ब्रह्म से एकाकार होने का प्रयास करो। घण्टा अनाहतनाद का प्रतीक है।

47. **घण्टानादप्रिया सदा** – सदैव घण्टे की ध्वनि है प्रिय जिन्हें। अनाहतनाद सुनकर प्रसन्न होने वाली।

48. **सूक्ष्मा** – सूक्ष्म स्वरूप वाली। जिन्हें इन्द्रियाँ पकड़ नहीं पाती हैं, वह सूक्ष्म कहलाया जाता है। इन्हें कोई देख नहीं पाता है। स्थूलेन्द्रियागोचरत्वात् सूक्ष्मा। सुखदा उत्तमा क्ष्मा अनया। सूरीन् क्षमते इयम। अणोरणीयान् जीवस्याप्यन्तर्यामी। स्थूल इन्द्रियों से ग्रहण नहीं होने वाली अर्थात् जिनका ज्ञान नही हो सकता। जिनके द्वारा पृथ्वी सुख देने वाली एवं उत्तम होती है। पृथ्वी से ही हमें अन्न, जल, रहने का स्थान, अनेक प्रकार के रत्न मिलते है अतः पृथ्वी प्राणियों के लिए सुखदयी एवं उत्तम है। पृथ्वी में इन सभी गुणों को पैदा करने वाली शक्ति देवी ने ही दी है। ज्ञानियों या विद्वानों के अपराधों को क्षमा करने वाली। जीवात्मा को सबसे छोटा माना जाता है उसके अन्दर भी रहने वाली या गति करने वाली अर्थात् जो जीवात्मा से भी छोटी है।

49. **सूक्ष्मतरा** – अन्य सूक्ष्म वस्तुओं से अधिक सूक्ष्म। अन्य देवी देवताओं से अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म।

50. **स्थूला** – मोटी या स्थूल स्वरूप वाली। जगत स्थूल है, जो इस स्थूल जगत के रूप में है। जिन्हें आँख देख सकती है, अन्य इन्द्रियाँ अनुभव कर सकती हैं वह स्थूल है। भौतिक या स्थूल का अर्थ है जिसके अंग फूले हों या भारी हो। सगुण साकार अवतार में देवी स्थूलरूपा होती हैं अतः इस नाम का अर्थ सगुणसाकाररूपा भी कर सकते हैं।

51. **अतिस्थूला** – अतिशय स्थूल रूप वाली। स्थूल अर्थात विस्तृत, बड़ा, मजबूत, शक्तिशाली, पुष्ट।

52. **सदा मति** – सदैव श्रेष्ठ बुद्धि स्वरूपा।

53. **अतिसत्या** – जो सत्य से भी बढ़कर है अर्थात सत्य से कोई ऊँचा है तो वह देवी हैं। सत्य भी देवी से निकलता है अतः देवी सत्य से बढ़कर हुई। सत्य लोक से भी ऊँचाई में स्थित हैं जो। सत्य का चरमोत्कर्ष।

लौकिक सत्य से बढ़कर। वेदान्त में तीन सत्यों का उल्लेख है। प्रातिभासिक सत्य, व्यावहारिक सत्य और पारमार्थिक सत्य। पारमार्थिक या परमसत्य अन्तिम सत्य होता है जो प्रातिभासिक और व्यावहारिक सत्य से बढ़कर होता है।

54. **सत्यवती** – सत्य बोलने वाली। सत्य का आचरण करने वाली। सत्य या धर्म का पालन करने वाली। सत्य से युक्त। सत्यगुण से युक्त, जैसा तथ्य वैसा ही बोलती हैं। जो बात जैसी है वैसा ही बोलती हैं। भगवान वेदव्यास की माता मत्स्यगन्धा का दूसरा नाम सत्यवती है। उस सत्यवती के स्वरूप वाली या उस सत्यवती से अभेद है जिनका।

55. **सत्या** – भगवान विष्णु की शक्ति स्वरूपा। भगवान विष्णु का एक नाम सत्य है। वेदान्त के अनुसार पारमार्थिक सत्ता स्वरूपा अर्थात उस वस्तु के स्वरूप वाली जो सदा ज्यों का त्यों रहती है, जिसमें किसी प्रकार का विकार या परिवर्तन नहीं होता। जिसका अस्तित्व सदैव विद्यमान रहता है। त्रिकाल से अबाधित। पारमार्थिक सत्ता स्वरूपा, वह वस्तु जो सदा ज्यों की त्यों रहती है, जिसमें किसी प्रकार का विकार या परिवर्तन नहीं होता। सत्य स्वरूपा। मन से सत्य। वचन से सत्य। कर्म या चिन्तन में सत्य। तीनों कालों में अबाधित अर्थात जिनका अस्तित्व तीनों कालों में रहता है। जिसका असत्य, झूठ, मिथ्या और अभाव से स्पर्श नही होता है। जो मूर्त भी है और अमूर्त भी है। सत् का अर्थ है मूर्त और त्य का अर्थ है अमूर्त। जो प्राण, अन्न और सूर्य स्वरूप है। सत् का अर्थ है प्राण, त का अर्थ अन्न और य का अर्थ है सूर्य। सत् का अर्थ है सज्जन, तत साधु सूत्र से इसमें यत प्रत्यय लगाया गया तो सत्य बनता है। अतः इस नाम का अर्थ हुआ जो सज्जनों के साथ भलाई का आचरण करता है। सत्सु सदाचारपरायणेषु साधुः हितः इति सत्या। सत्यगुणसम्पन्नेसु साधु। सज्जनों में अर्थात सदाचार का आचरण करने वालों में साधु अर्थात इनके लिए अनुकूल या हितकारी। सत्य गुण से युक्त लोगों में अनुकूल अर्थात इनके लिए अनुकूल या हितकारी। असत्य से रहित वाणी स्वरूपा। तथ्य स्वरूपा। जो वस्तु जैसी है, वैसी ही जानना, देखना, कहना, सुनना तथ्य कहलाता है। अवितथवागिति सत्या। सृष्टि के लिये जो प्राण (प्राण वायु) एवं ब्रह्मा जी के पास जाती है अर्थात् उनमें रहती है। सत् का अर्थ है प्राण एवं ति का अर्थ है ब्रह्मा। सत् का स्, ति पूरा ले लिया तथा याति (जाती है) से य ले लिया। स्+ ति+या इति सत्या। सदिति प्राणः। तीति ब्रह्मा। सृष्टयाद्यर्थं तौ ब्रह्मवायू यातीति सत्या। जो सत्यस्वरूप है, आनन्द स्वरूप है एवं ज्ञान स्वरूप है अर्थात् सच्चिदानन्द स्वरूप है। ति का अर्थ आनन्द और य का अर्थ ज्ञान है। तीत्यानन्दः। यमिति ज्ञानम्। दोषरहित ज्ञान एवं आनन्द स्वरूपा। सत् का अर्थ है दोषरहित। सदिति निर्दुष्टं ज्ञानानन्दमयमस्य स्वरूपमिति सत्यः। सती अर्थात् पतिव्रता स्त्रियों में विराजमान एवं अविनाशी। सती + अ, इति सत्य, स्त्रीलिंग में सत्या। शब्द के आगे ''में विराजमान'' लगाने से शब्द का अर्थ निकल आता है। पतिव्रता स्त्रियों में उनके पतिव्रत्य को दृढ़ करते हुए अर्थात बढ़ाने वाले एवं स्वयं में अविनाशिनी सतीषु सतीत्वं द्रढयन् स्थित इति सती च अश्च। सत्सु गता सत्या। सज्जनों में या प्रशसन्नीय चरित वालों में स्थित।

56. **संकेतवासिनी** – गुप्त ज्ञान में निवास करने वाली जैसे महाभारत को म. भा. लिख दिया गया तो यह संकेताक्षर हुआ। संकेत ज्ञान सर्वगम्य नहीं होता है। योगी या सामान्य उपासकों का जो लक्ष्य है उसमें निवास करने वाली। जिस रूप में योगी या उपासक ध्याते हैं देवी उस रूप वाली बन जाती हैं। यम् यम् चिन्तयते कामम् तम् तम् प्राप्नोति। संकेत का अर्थ गुप्त ज्ञान एवं लक्ष्य होता है। संकेत अर्थात ज्ञान पर निवास करने वाली। संकेत का अर्थ बोध या ज्ञान भी होता है। इस शब्द से क्या संकेत होता है, का तात्पर्य है, क्या बोध होता है। निर्धारित स्थानों पर निवास करने वाली। संकेत द्वारा अपने आश्रय स्थान में निवास करने वाली। संकेत ज्ञान को भी कहते हैं अतः ज्ञान में निवास करने वाली। श्रेष्ठ स्थान में निवास करने वाली। शब्द जिस अर्थ को संकेतिक करता है उसमें निवास करने वाली। संकेत विद्या (मन्त्र) या संकेतिअक्षर या कूट भाषा या Coded भाषा में रहने

वाली। Coded भाषा में कहे गये अक्षरों से बनें मन्त्र में शक्ति रूप में निवास करने वाली। मन्त्र शास्त्र में अक्षरों या बीज मन्त्रों का सीधा सीधा नहीं बोला जाता, उन्हें कूट भाषा में बोला जाता है। जैसे बोला गया पृथ्वी, इसका अर्थ है ल अक्षर, बोला गया अग्नि, इसका अक्षर है र। त्रिपुर भैरवी या श्री विद्या के मन्त्र भी कूट भाषा में कहे गये है जिससे उन्हें संकेत विद्या कहा गया है।

57. **क्षमा** – क्षमा गुण स्वरूपा अर्थात सामर्थ्यवान होते हुए भी दूसरे के अपराधों पर प्रतिक्रिया नहीं करना, उस भाव को अपने भीतर नहीं डालना और यह भाव रखना कि उस व्यक्ति को अपराध की सजा न मिले।

58. **भीमा** – भयंकर रूप वाली अर्थात शत्रुओं के समक्ष भयंकर रूप वाली। भीम भगवान शिव का नाम है। इस प्रकार भीमा का अर्थ हुआ शिव की शक्ति।

59. **अभीमा** – शान्त स्वरूप वाली (भक्तों के लिए)।

60. **भीमनादप्रवर्तिनी** – भयंकर आवाज या ध्वनि को करने वाली (युद्ध में या राक्षसों के समक्ष)।

61. **भ्रमरूपा** – परिधि या घेरा स्वरूपा अर्थात जगत की परिधि स्वरूपा। मिथ्या ज्ञान स्वरूपा। दुर्गा जी ने देव्यथर्वशीर्ष स्तोत्र में कहा है कि विद्या भी मैं हूँ और अविद्या भी मैं हूँ। योग के पाँच विघ्नों में से एक विघ्न भ्रम है जिसका अर्थ है मन का इधर उधर भटकना।

62. **भयहरा** – भक्तों के भय को हर लेने वाली। इसमें आवश्यक नहीं है कि भक्त भयनाश के लिए उपासना करता हो। इसी से मिलता जुलता नाम भयनाशिनी है अतः अर्थ में कुछ अन्तर किया गया है। शत्रुओं से होने वाल भय को हरने वाली।

63. **भयदा** – दुष्टों और राक्षसों को भय देने वाली।

64. **भयनाशिनी** – साधना के दौरान आने वाले भयात्मक अनुभवों से पार करा देने वाली अर्थात नाश करने वाली। भयनाश की उपासना करने पर सभी प्रकार के भयों को नष्ट कर देने वाली। अलग अलग उद्देश्यों के लिए उपासना की जाती है। मृत्यु का भय, पराजित होने का भय, आम लोगों के सामने बोलने में लगने वाला भय, परीक्षा का भय, गाड़ी चलाने पर लगने वाला भय, ऊँचाई का भय, पानी में डूबने का भय, समाज से अस्वीकृति का भय इस प्रकार के कई भय होते हैं। आधुनिक मनोविज्ञान 16 प्रकार का भय मानता है जैसे वास्तविक कारण से होने वाला भय, अवास्तविक अथवा तर्कहीन भय, सामान्य डर, पैथोलाजिकल भय, शारीरिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, अनिश्चितता का भय, प्रतिबद्धता का भय, खोज का भय, विफलता का भय, अकेलेपन का भय, तलाक का भय आदि। भयनाश के लिए भी साधना होती है।

65. **श्मशानवाशिनी** – भौतिक श्मशान में निवास करने वाली। ब्रह्म में रहने वाली। श्मशान में शव को जलाया जाता है। शव पंचतत्वों से मिलकर बना होता है। श्मशान अर्थात जिसमें पच्च तत्व जिसमें विलीन होते है अर्थात ब्रह्म। जिनके हृदय में किसी प्रकार की वासना या इच्छा नही होती, वे हृदय भी श्मशान तुल्य कहे गए है। ऐसे हदय में वास करने वाली। ब्रह्म में निवास करने वाली। श्मशान वह जगह है जहाँ पंचतत्वों से बना शरीर अर्थात पंचतत्व जलाये जाते हैं। पंचतत्व अन्ततः ब्रह्म में ही लीन होते हैं। अतः वास्तविक श्मशान ब्रह्म है। सुषुम्नानाड़ी भी श्मशान है। सुषुम्ना में रहने वाली। ब्रह्म में रहने वाली। पंचतत्व अंतिम रूप से ब्रह्म में ही समाप्त होते हैं। तंत्रग्रन्थों में सुषुम्ना के लिए भी श्मशान शब्द का प्रयोग किया गया है। कामनाओं एवं इच्छाओं से रहित हृदय श्मशान है क्योंकि इसमें कामनाओं को भस्म कर दिया गया है। अहंकार, कैलास, काशी, हिमालय और शवदाहगृह इन पाँचों को श्मशान भी कहा गया है। श्म का अर्थ है शव और शान का अर्थ है शयन। ब्रह्मा जी को भी श्मशान कहा गया है क्योंकि पाँचों तत्व उनमें लीन हो जाते हैं। परब्रह्म को भी श्मशान कहा गया है क्योंकि प्रलयकाल में उनमें सबकुछ समा जाता है। भगवान नारायण भी श्मशान हैं क्योंकि उसमें ब्रह्मा जी का लय होता है।

66. **देवी** – जिसकी स्तुति की जाती है। दिव् धातु का एक अर्थ स्तुति करना भी है। जिसके गुण और कर्म दिव्य हैं अर्थात अलौकिक (देवलोक में होने वाले) हैं।

67. **श्मशानालयवासिनी** – श्मशान रूपी घर में निवास करने वाली। जिसके हृदय में इच्छाओं का अभाव है वह हृदय श्मशान के तुल्य है, ऐसे इच्छा रहित शुद्ध हृदय में वास करने वाली।

68. **शवासना** – शव के आसन पर विराजमान रहने वाली अर्थात शव है आसन जिनका। समाधि जैसी स्थित में बैठी हुई। शव में व्यक्ति चेष्टा रहित होता है और समाधि में भी मन चेष्टा रहित हो जाता है। कूटस्थ ब्रह्म में शक्ति रूप से विराजमान। कूटस्थ तत्व हलचल रहित एवं निर्विकार होता है जो ब्रह्म ही है। शव भी निश्चेष्ट होता है अतः वह कूटस्थ ब्रह्म का प्रतीक है। (शव के अनेक अर्थ हैं जैसे – कल्याण एवं ज्ञान। शोभा एवं ज्ञान। आनन्द एवं बल। श का अर्थ शिव (कल्याण), आनन्द, शोभा है व का अर्थ ज्ञान, बल है। शव जड़ तत्व का प्रतीक है क्योंकि इसमें चेतना नहीं होती है। जड़ तत्वों को धारण करने वाली अर्थात् जड़ तत्व भी जिनके अधीन रहते है।)

69. **शवाहारा** – शव है भोजन जिनका। शव+आ, (पूर्ण रूप से) + हार। कल्याण एवं ज्ञान हैं सम्पूर्ण हार जिसके। आ का अर्थ कई स्थानों पर लगाने की आवश्यकता नहीं होती। अतः कल्याण एवं ज्ञान है हार जिनका। कल्याण एवं ज्ञान से सुशोभित। हार शोभा बढ़ाता है।

70. **शवदेहा** – शव ही है देह जिसका। दिह् उपचये धातु होती है अर्थात शवों का उपचय (वृद्धि) करती है। सभी को मारती है इस प्रकार से वृद्धि हो गयी। भारत देश में शव गतिहीन अर्थ या निष्क्रिय अर्थ में होता है। पतंजलि ने लिखा है कि अन्य देशों में शवति का अर्थ गति करना भी होता है इस प्रकार शवदेहा का अर्थ गतिशील देह वाली। शव ही हो जाता है शरीर जिनका अर्थात शव की तरह निश्चेष्ट हो जाता है जिनका शरीर। जिनके द्वारा उपासकों का कल्याण एवं ज्ञान बढ़ता है। जिनके द्वारा शोभा एवं बल बढ़ता है। दिह् धातु से देह बनने पर देह का अर्थ होता है जो वृद्धि करता है।

71. **शिवा** – सज्जनों के लिए कल्याणकारी। शिवस्वरूपा या शिव की शक्तिस्वरूपा। शिव + आ, एकाक्षरी कोष में आ का एक अर्थ शक्ति दिया गया है।

72. **अशिवा** – असज्जनों के लिए अमंगलकारी, अशुभ। दुष्ट दैत्यों के लिए दुष्ट, खतरनाक रूप धारण करने वाली जिसमें कोई कृपा या दया की गुंजाइश नहीं होती।

73. **कण्ठदेशशवाहारा** – कण्ठ स्थान में शव का आहार करने वाली या कण्ठ स्थान में शवों को सम्पूर्ण हार के रूप में धारण करने वाली। आ+ हार, आ का अर्थ है सम्पूर्ण।

74. **शवकंकणधारिणी** – शवरूपी कंकण को धारण करने वाली।

75. **दन्तुरा** – दैत्यों को चबाने के लिए ऊँचे दाँतों वाली। ऊँचे या बड़े बड़े दाँतों वाली। जिसके दाँत ओठों से भी आगे निकले हैं। दुर्गा सप्तशती के साँतवे अध्याय में आया है कि देवी अपने दाँतों से राक्षसों को चबा जाती हैं। निम्नोन्नत या नतोन्नत। कहीं ऊँची है कहीं नीची हैं।

76. **सुदती** – सुन्दर दाँतों वाली। सामान्य अवस्था में देवी के सुन्दर दाँत हैं।

77. **सत्या** – सत्य की शक्ति स्वरूपा। प्रथम युग अर्थात सत्य युग स्वरूपा। सत्य लोक स्वरूपा। ऊपरी सात लोकों में सत्यलोक सबसे ऊपर है जिसमें ब्रह्मा रहते हैं। सत्य स्वरूपा अर्थात जिनके अस्तित्व का कभी बाध नहीं होता अर्थात जो हमेशा अस्तित्व में रहती हैं।

78. **सत्यसंकेतवासिनी** – ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त करने के लिए जो जो संकेत हैं या उपाय बताऐ गये हैं उनमें निवास करने वाली अर्थात सत्य या ब्रह्म का ज्ञान कराने वाली। सत्य रूपी भंवर में रहने वाली।

79. **सत्यदेहा** – वास्तविक स्वरूप वाली अर्थात उनके स्वरूप का कभी बाध नहीं होता।

80. **सत्यहारा** – सत्य को हार की तरह धारण करने वाली अर्थात हमेशा साथ रखने वाली अर्थात सत्य का हमेशा पालन करने वाली। सत्य अर्थात जो जैसा है वैसा ही बोलना, उचित पक्ष, न्याय पक्ष, धर्म, ईमान की बात।

81. **सत्यवादिनिवासिनी** – सच बोलने वालों के यहाँ निवास करने वाली। सच बोलना अर्थात जो चीज जैसी है वैसी ही बोलना, जो घटना जैसी घटित हुई वैसा ही बोलना, अपनी तरफ से न घटाना, न बढ़ाना।

82. **सत्यालया** – सत्य (ब्रह्म) है घर जिनका। सद्‌गुणी, सच्चरित्र।

83. **सत्यसंगा** – सत्य का संग करने वाली। ईमानदार और निष्कपट भक्तों के साथ रहने वाली।

84. **सत्यसंगरकारिणी** – सत्य की विजय के लिए संग्राम/युद्ध करने वाली। सत्य प्रतिज्ञा करने वाली। संगर का अर्थ युद्ध, प्रतिज्ञा है।

85. **असंगा** – संग रहित अर्थात सांसारिक प्रपंचों से दूर रहने वाली।

86. **सांगरहिता** – जो सांग अर्थात सावयव से रहित है अर्थात अंगों से रहित है अर्थात निरवयव या निराकारा है। समूह एवं एकदूसरे से मिलन से रहित अर्थात अकेली। संग ही अण् प्रत्यय लगाने से बिना अर्थ बदले सांग हो जाता है। सांग का अर्थ जो अंगो वाला हो। अंगवाला होने से रहित अर्थात निराकार, निरवयव।

87. **सुसंगा** – अच्छी संगति करने वाली। देवताओं, सज्जनों, ऋषि – मुनियों के पास रहने वाली।

88. **संगमोहिनी** – साथ चलने या साथ रहने से मोहित करने वाली अर्थात आकर्षण पैदा करने वाली। पास में रहने वाले पशुओं, पत्थरों तक से भी आदमियों को मोह अर्थात ममत्व हो जाता है। अच्छी वस्तु दूर हो तो आकर्षित नहीं करती है। पास में रहने वाले घर आदि पत्थरों से भी मोह पैदा हो जाता है। परस्पर संग करने के लिए मोहित करने वाली अर्थात प्रेरणा देने वाली। जो मित्रता बनाने के लिए या स्त्री पुरुष में परस्पर सहवास के लिए प्रेरित करती हैं। अच्छी संगति करने वालों को भी मोहित करने वाली।

89. **माया** – वह शक्ति जो अनस्तित्व में भी अस्तित्व का भान करा दे, असत् को सत् के रूप में आभासित करा दे। अन्यत्र – अन्याकार – अवभासिनी शक्ति माया है। दूसरे का आभास कराने वाली शक्ति माया है जैसे रस्सी में साँप का आभास कराने वाली। आत्मा में अनात्मा और अनात्मा में आत्मा को दिखाने वाली या मनवाने वाली शक्ति माया ही होती है। जगत का अस्तित्व नहीं है फिर भी माया के कारएा जगत का भान होता है। मा अर्थात नही, या अर्थात जो। इस प्रकार माया का अर्थ हुआ जो नहीं है।

90. **मति** – बुद्धि स्वरूपा। मम् (ज्ञानम्) विस्तारयति इति मति। म का एक अर्थ ज्ञान होता है। विस्तारयति या तनोति का ति ले लिया। मदम् खण्डयति इति मति। अहंकार को नश्ट करने वाली। मद का म ले लिया एवं खण्डयति का ति ले लिया। ऐसे शब्द सोचे जा सकते हैं जो म से आरम्भ हों। एकाक्षरीकोश से म के कई अर्थ लिये जा सकते हैं। समझने की शक्ति को मति कहते हैं।

91. **महामाया** – बड़े बड़े ज्ञानियों और तपस्वियों को भी माया में डालने वाली अर्थात सांसारिक प्रपंच की ओर आकृष्ट कर देने वाली।

92. **महामखविलासिनी** – बड़े बड़े यज्ञों में क्रीड़ा करने वाली। क्रीड़ा करने का तात्पर्य है अग्निरूप होकर देवताओं को हवि पहुँचाना या स्वयं हवि ग्रहण करना या यज्ञ करने वाले को यज्ञ का फल देना। सम्पूर्ण विश्व

एक महायज्ञ है जिसमें निरन्तर यज्ञ चल रहा है। उस विश्वरूपी महायज्ञ में अपनी क्रीड़ा करने वाली। श्रेष्ठ यज्ञों में विलास करने वाली अर्थात क्रीडा करने वाली अर्थात सात्विक नृत्य करने वाली। लोगों को विभिन्न सात्विक क्रियाओं के द्वारा अपनी ओर आकृष्ट करने वाली।

93. **गलत्रूधिरधारा** – बहती हुई रूधिर धारा जैसी या शरीर में बहने वाली रूधिर धारा स्वरूपा। जिनसे रक्त की धारा बह रही हो अर्थात छिन्नमस्ता देवी से अभेद है जिनका।

94. **मुखद्वयनिवासिनी** – दो मुख वाली देवी के रूप में निवास करने वाली। दो मुखों में निवास करने वाली। ललिता सहस्रनाम के अनुसार अनाहतचक्र की देवी राकिणी के दो मुख हैं अर्थात उस देवी में शक्ति रूप में या चैतन्य रूप में निवास करने वाली। मुख का अर्थ द्वार है। प्रवृत्ति मार्ग और निवृत्ति मार्ग में रहने वाली। देवयान मार्ग ओर पितृयान मार्ग में रहने वाली। द्वार का अर्थ मार्ग भी होता है।

95. **सत्यायासा** – सत्य के आयास वाली अर्थात सत्य के लिए निरन्तर प्रयत्न वाली। आयास का अर्थ है परिश्रम या प्रयत्न।

96. **सत्यसंगा** – ब्रह्म, विष्णुजी, मोक्षावस्था का संग करने वाली।

97. **सत्यसंगतिकारिणी** – सत्य की संगति करने और कराने वाली। सत्यवादी लोगों की संगति कराने वाली अर्थात ऐसे लोगों के साथ सत्संग कराने वाली।

98. **असंगा** – संग रहित। दुष्टों के संग से या सांसारिक प्रपंचों के सम्पर्क से रहित।

99. **संगनिरता** – श्रेष्ठ महापुरुषों और सन्तों के साथ लगी हुई अर्थात उनके साथ रहने वाली। श्रेष्ठ लोगो से अति प्रसन्न। नि अर्थात नितराम् अर्थात बहुत, रत का अर्थ प्रसन्न, लगा होना होता है।

100. **सुसंगा** – सुन्दर या श्रेष्ठ संगति वाली।

101. **संगवासिनी** – समूह में या स्त्री पुरुष के परस्पर सहवास में निवास करने वाली। श्रेष्ठ संगति में वास करने वाली या श्रेष्ठ संगति को चलाने वाली।

102. **सदासत्या** – सदैव सत्य स्वरुप वाली। हमेशा ज्यों का त्यों रहती है, उसमें कोई परिवर्तन नहीं होता।

103. **महासत्या** – यमराज की शक्ति स्वरूपा। महासत्य का अर्थ यमराज है। परमसत्य स्वरूपा अर्थात जिसका कभी खण्डन न हो सके। वेदान्त के अनुसार तीन प्रकार के सत्य होते हैं – पारमार्थिक सत्य, व्यवहारिक सत्य और आभासिक सत्य। आभासिक सत्य और व्यवहारिक सत्य खण्डित हो जाते हैं पर पारमार्थिक सत्य खण्डित नहीं होता अर्थात वह महासत्य अर्थात सबसे बड़ा सत्य है। सत्य के अतिशय श्रेष्ठ स्वरुप से विभूषित।

104. **मांसपाशा** – मांस का अर्थात चमड़े का बना है पाश जिनका। मांस (अर्थात शरीर) के द्वारा प्राणियों को बाँधे रखती हैं। मांस से बने शरीर में मोह पैदा कर प्राणियों को बन्धन में डाले रखती हैं। पाश अर्थात जिससे कोई चीज बाँधी जाती है।

105. **सुमांसका** – श्रेष्ठ मांस से युक्त। साधक लोग वाममार्गी या कौलमार्गी साधना में अभिमन्त्रित मांस या शुद्ध किया हुआ मांस चढ़ाते हैं अर्थात श्रेष्ठ मांस चढ़ाते हैं।

106. **मांसाहारा** – मांस को लाने वाली। मांसम आहरति। मांस है आहार अर्थात भोज्य पदार्थ जिसका। मांस का आहार करने वाली अर्थात खाने वाली किन्तु यह अर्थ मांसभक्षका शब्द के लिए छोड़ दिया गया जिससे विभिन्न नामों के अर्थ में भिन्नता बनी रहे। मांस है भोजन अर्थात भोज्य पदार्थ जिनका।

107. **मांसधरा** – मांस को धारण किये हैं अर्थात मांस इनके कारण शरीर पर स्थित है। मांस को धारण करने

वाली। आध्यात्मिक बोध या ज्ञान को धारण करने वाली। मांस का अर्थ है– जिससे शाश्वत सौभाग्य और आनन्द मिलता है अर्थात आध्यात्मिक बोध या आध्यात्मिक ज्ञान। मां का अर्थ है मांगल्य या सौभाग्य। स का अर्थ है सत्–चित्–आनन्द। मा का अर्थ जिह्वा भी है। माम् स्यति अर्थात जिह्वा भक्षण करना अर्थात खेचरी मुद्रा। मांस का एक अर्थ है खेचरी मुद्रा। मा+अंस, जिह्वा का अंस अर्थात जिह्वा से सम्बन्धित अर्थात उपवास या मौन। पाप और पुण्य दोनों को ही मांस कहते हैं, इन दोनों का भक्षण आवश्यक है क्योंकि एक लोहे की जंजीर की तरह है और दूसरा सोने की जंजीर की तरह है। आध्यात्मिक बोध या ज्ञान को धारण करने वाली।

108. **मांसाशी** – मांस में व्याप्त अर्थात जहाँ जहाँ मांस है वहाँ वहाँ देवी है। अशू व्याप्तौ धातु से आशी शब्द बना। शी शयन धातु से भी आशी शब्द बनता है तब अर्थ होगा कि जो मांस में सम्पूर्ण रूप से शयन करती हैं अर्थात विराजमान हैं। दुर्व्यसनी को खा जाने वाली। माम् लक्ष्मीम् सद्गुणान् अस्यति, जो लक्ष्मी अर्थात शुभ कर्म को खाता है वह है मांस अर्थात दुर्व्यसनी है। मांस (अर्थात दुर्व्यसनी) को खाने वाली मांसाशी है। यह नाम बटुकभैरव के अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्र में भी आया है। मायाम् स्यति नाशयति इति मांसः अर्थात जो माया को खा जाता है अर्थात भक्ति योग या विचार या अन्य योग, वे मांस हैं। मांसैः अस्यते प्राप्यते इति मांसाशी अर्थात जो भक्तियोग या विवेक विचार से प्राप्त होती हैं वे मांसाशी है। माया को नाश करने वाला विचार या व्यक्ति मांसाशी है। मांस का अर्थ द्वन्द्व अर्थात पाप – पुण्य, सर्दी – गर्मी आदि भी किया गया है। उसे खा जाने वाली। काम, क्रोध, लोभ, मोह को भी मांस कहा गया है उसे खाने वाले को मांसाशी कहा गया है। मांस + आ (सम्पूर्ण रूप से) + शी। मांस के सम्मुचय पर शयन है जिसका। मांस का भक्षण करने वाली यह अर्थ भी होता है पर अगले नाम में मांसभक्षका का अर्थ भी मांस का भक्षण करने वाली होती है। व्याघ्र आदि के रूप में दुष्टों का मांस खाने वाली। मांस का एक अर्थ यह भी किया गया है कि – जिससे शाश्वत सौभाग्य और आनन्द मिलता है अर्थात आध्यात्मिक बोध या आध्यात्मिक ज्ञान। मां का अर्थ है मांगल्य या सौभाग्य। स का अर्थ है सत्–चित्–आनन्द। मां का अर्थ जिह्वा भी है। माम् स्यति अर्थात जिह्वा भक्षण करना अर्थात खेचरी मुद्रा। मांस का एक अर्थ है खेचरी मुद्रा है। मा+अंस, जिह्वा का अंस अर्थात जिह्वा से सम्बन्धित अर्थात उपवास या मौन। पाप और पुण्य दोनों को ही मांस कहते हैं, इन दोनों का भक्षण आवश्यक है क्योंकि एक लोहे की जंजीर की तरह है और दूसरा सोने की जंजीर की तरह है। मायाम् स्यति इति मांसः, जो माया को नष्ट कर दे वह है मांस। माया को विचार (ज्ञान), भक्तियोग, ज्ञानयोग ही नष्ट कर पाते हैं। मांसः भक्तियोगः, तैः अश्यते प्राप्यते। भक्तियोग या ज्ञानयोग द्वारा जिनको पाया जाता है। मायाम् स्यति इति मांसः, जो माया को नष्ट कर दे वह है मांस। माया को विचार (ज्ञान), भक्तियोग, ज्ञानयोग ही नष्ट कर पाते हैं। अश्नुते व्याप्नोति भी होता है। जो भक्तियोग में व्याप्त है। जो बीमारी बनकर दुष्टों के मांस को खा जाती है। जो व्याघ्र, सर्प आदि में विराजमान होकर दुष्टों के मांस को खा जाती है।

109. **मांसभक्षका** – मांस का भक्षण करने वाली। मांसम् भक्षयति। जिह्वा का भक्षण करने वाली अर्थात खेचरी मुद्रा लगाने वाली। मांस के भक्षकों में भी विराजमान। शब्द के आगे ''में विराजमान'' लगाने से भी शब्द का अर्थ निकलता है। देवी सर्वत्र व्याप्त हैं। पाप और पुण्य, इन रूपी मांस को खाने वालों में विराजमान। द्वैतभाव का भक्षण करने वाली अर्थात समाप्त करने वाली। मांसद्वैत भाव का एवं मत्स्य इन्द्रियों की चंचलता का प्रतीक है। आवश्यकता पड़ने पर मौन रहने वाली। मा का अर्थ है जीभ, अंस का अर्थ है वितान, परिशिष्ट, अभिव्यक्ति। इस प्रकार मांस का अर्थ हुआ जीभ की अभिव्यक्ति अर्थात् बोल या शब्द या वाक्य। बोल या शब्द को खाने वाली अर्थात् न बोलने वाली अर्थात् मौन रहने वाली। मांस का अर्थ मन को प्रिय लगने वाले पदार्थ या अन्न भी है। रसीले गूदेदार पदार्थ या फल को भी मांस कहते है। सर्वश्रेष्ठ अन्न खाद्य भी मांस है।

110. **रक्तपाना** – दुष्टों के रक्त को पीने वाली। अनुरक्त भक्तों का पान करने वाली अर्थात उनसे आनन्द को ग्रहण करने वाली या अनुरक्त भक्तों की भक्ति का पान करने वाली।

111. **रक्तरुचिरा** – रक्त में अर्थात रक्तपान में रुचि रखने वाली। रूचिर में र प्रत्यय मतुप् अर्थ देता है अर्थात युक्त अर्थ देता है। रक्त के कारण सुन्दर। रक्तेन रूचिरा। दैत्यों का रक्त लगा है तब भी सुन्दर दिखती हैं, असुन्दर नहीं। अनुरक्त भक्तों में रुचि रखने वाली।

112. **रक्ता** – रूधिरस्वरूपा अर्थात रूधिर भी उनका रूप है। अनुराग वाली अर्थात भक्तों से अनुराग करने वाली। चारों ओर से विधिवत लाल वर्ण वाली। अनुरक्त भक्तों में विराजमान।

113. **रक्तवल्लभाः** – रक्त है अत्यन्त प्रिय जिन्हें। वल्लभ का अर्थ है अत्यन्त प्रिय। वल्लसंवरण धातु से वल्लभ बनाये तो अर्थ होगा जो रक्त से ढकी हैं। रक्त है अभिलषित पदार्थ जिनके लिए। रक्त अर्थात अनुरक्त अर्थात रागी भक्त जिन्हें अत्यन्त प्रिय हैं।

114. **रक्तहारा** – रक्त का ही आहार करती हैं अर्थात रक्त है आहार या भोज्य पदर्थ जिनका।

115. **रक्तप्रिया** – दुष्ट दैत्यों/राक्षसों का रक्त है प्रिय जिन्हें। दैत्यों का रक्त देखकर प्रसन्न होती हैं। प्रिय अर्थात प्रसन्न होने वाली या प्रसन्न करने वाली। बलि में चढ़ाया जाने वाला रक्त जिन्हें प्रिय है या जिन्हें उनसे प्रसन्नता मिलती है।

116. **रक्तनिन्दकनाशिनी** – अनुरक्त भक्तों (भगवान से अनुराग या प्रेम करने वाले) की निन्दा करने वालों का विनाश करने वाली।

117. **रक्तपानप्रिया** – रक्त पीना है प्रिय जिन्हें अर्थात रक्त पीना जिन्हें अच्छा लगता है।

118. **बाला** – बालस्वरुपा या कन्यास्वरुपा। बालात्रिपुरसुन्दरी से अभेद है जिनका। जो अपने उपासकों को बल प्रदान करती है। बलयति इति बाला। बल लाभे धातु होती है। लाभ अर्थात प्राप्त करना। जो विश्व को आत्मसात् करती है या प्राप्त करती है। लाति इति ला से ला का अर्थ धारण करने वाली, नष्ट करने वाली होता है। एकाक्षरीकोश से ब या बा के अर्थ लेकर बाला के कई अर्थ किये जा सकते हैं।

119. **रक्तदेशा** – लाल शरीर वाली। देश का अर्थ शरीर भी होता है। हो सकता है कि देवी जी का देश अर्थात मणिद्वीप में लालिमा छाई हो। ऐसे देश वाली। दिश् धातु के कारण देश का अर्थ बोलना भी होता है। अनुरक्त भक्तों से बोलने वाली अर्थात उन्हें अच्छा उपदेश देने वाली। अनुरक्त भक्तों के देश में निवास करने वाली।

120. **सुरक्तिका** – ऐसी लालिमा जो भयभीत नहीं करती बल्कि सुन्दर है, ऐसी लालिमा से युक्त। सुन्दर रक्त से सुशोभित।

121. **स्वयम्भूकुसुमस्था** – स्वयं उत्पन्न होने वाले पुष्पों में स्थित। स्त्री के रज में स्थित।

122. **स्वयम्भूकुसूमोत्सुका** – स्वयं उत्पन्न होने वाले पुष्प अर्थात् स्त्री रज के लिए उत्सुक (अत्यन्त इच्छुक)। वहाँ रहने या उसे ग्रहण करने के लिए अत्यन्त इच्छुक।

123. **स्वयम्भूकुसुमाहारा** – स्वयं उत्पन्न होने वाले पुष्पों से उपलक्षित फूलों को आहार के रुप में लेने वाली। वाममार्गी साधना में स्त्रीरज से भीगे कपड़ों की आहुति दी जाती है अर्थात उसे देवता के आहार के रूप में समर्पित किया जाता है।

124. **स्वयम्भूनिन्दिकासना** – ब्रह्मा के द्वारा निन्दा किये गये अर्थात् वर्जित आसन पर विराजमान रहने वाली।

125. **स्वयम्भूपुष्पकप्रीता** – स्त्रीरज है प्रिय जिन्हें। ब्रह्माजी के द्वारा प्रकट किया गया पुष्प है प्रिय जिन्हें।

126. **स्वयम्भूपुष्पसम्भवा** – स्त्रीरज की उत्पत्ति है जिससे। सम्भव अर्थात हेतु, कारण, उत्पत्ति। ब्रह्मा जी के द्वारी उत्पन्न किये गये पुष्प से है उत्पत्ति जिसकी।

127. **स्वयम्भूपुष्पहाराढ्या** – स्वयम्भू पुष्पों से निर्मित हार में सुशोभित। जो शिव, विष्णु, ब्रह्मा को प्रिय हैं, ऐसे पुष्पों से निर्मित हार से सुशोभित। स्वयम्भू का अर्थ है ब्रह्मा, विष्णु, शिव।

128. **स्वयम्भूनिन्दकान्तका** – स्त्रीरज की निन्दा करने वालों का अन्त करने वाली। स्त्री का रज स्वयं से पैदा होने के कारण स्वयम्भू कहलाता है। ब्रह्मा जी के निन्दकों का विनाश करने वाली।

129. **कुण्डगोलविलासी** – स्त्रीरज से सुशोभित अर्थात युक्त। कुण्डगोल का अर्थ स्त्रीरज भी होता है। गोलयज्ञकुण्ड में क्रीड़ा करने वाली अर्थात अग्नि के रूप में विराजमान रहने वाली। गोलयज्ञकुण्ड में विलास करने वाली अर्थात् ऐसे यज्ञकुण्ड में किये जा रहे हवन से प्रसन्न होने वाली। गोल अग्निकुण्ड में अग्निरूप से सुशोभित। एक स्थान में कुण्ड शब्द स्त्रीरज, एवं गोल शब्द पुरुष वीर्य के लिए प्रयुक्त होना बताया गया है।

130. **कुण्डगोलसदामती** – स्त्री के रज से सदैव पूजित। आगम ग्रन्थों के अनुसार कुण्डगोल का अर्थ होता है स्त्री का रज। मत का अर्थ पूजा भी होता है और पूजित भी होता है। कुण्डवत् गोलाकार सूर्य से युक्त। गोलाकार कुण्ड भी होता है। सदा का एक अर्थ सूर्य है। गोलाकार कुण्डलिनी में स्थित प्रकाश से युक्त। यहाँ सदा का अर्थ सूर्य अर्थात प्रकाश या कान्ति लिया गया है। स्त्री के रज से सदैव पूजित। कुण्डगोल का अर्थ तन्त्र में स्त्रीरज है। मन् धातु का अर्थ पूजा भी होता है अतः हिन्दी शब्दकोश में मत का अर्थ पूजा या पूजित भी दिया गया है। यदि कुण्डगोलसदामति यह शब्द है तो अर्थ होगा गोलाकार कुण्डलिनी में स्थित तेजस्वी बुद्धि स्वरूपा अर्थात स्वयं में तेजस्विनी स्वरूपिणी। सदा अर्थात सूर्य अर्थात तेजस्विता। कुण्डलिनी में स्थित उज्जवल मति वाली। गोलयज्ञकुण्ड के बारे में सदैव जानकारी रखने वाली या उस पर निरन्तर विचार करने वाली। कुण्डगोल (अर्थात् कुण्डलिनी) के प्रति सदैव बुद्धि रखने वाली।

131. **कुण्डगोलप्रियकरी** – स्त्रीरज का प्रिय करने वाली अर्थात उसको शक्तिशाली बनाने वाली अर्थात बच्चा पैदा करने की सामर्थ्य देने वाली। रज के कारण स्त्री को कष्ट न हो ऐसा करने वाली। माहवारी आदि में कष्ट न हो ऐसा करने वाली। गोलयज्ञकुण्ड को प्रिय मानने वालों का हित करने वाली। कुण्डलिनी का प्रिय करने वाली अर्थात शिव तक पहुँचाने वाली अर्थात सहस्रार चक्र में शिव से मिलाने वाली।

132. **कुण्डगोलसमुद्भवा** – स्त्रीरज से उत्पन्न अर्थात सन्तानस्वरूपा। गोलयज्ञकुण्ड में उत्पन्न होने वाली। कुण्डलिनी में उत्पन्न होने वाली।

133. **शुक्रात्मिका** – शरीर में स्थित वीर्य के स्वरूप वाली। शुक्र के स्वरुप में या शुक्र ग्रह के स्वरुप में। शुक्र में व्याप्त। आप्लृ धातु से आत्मा शब्द बनने पर आत्मा या आत्मिका का अर्थ व्याप्त होता है। तेज के स्वरूप वाली।

134. **शुक्रकरा** – वीर्य को उत्पन्न करने वाली। शक्ति की कृपा से ही वीर्य उत्पन्न होता है। शुक्र ग्रह को करने वाली अर्थात उत्पन्न करने वाली। शक्ति या बल करने वाली अर्थात देने वाली। प्राणियों में जनन शक्ति उत्पन्न करने वाली।

135. **सुशुक्रा** – सुन्दर वीर्य वाली अर्थात सुन्दर तेज वाली। धातुओं की सन्तुलित मात्रा होना ही सुन्दर होना है। शुक्र सभी धातुओं में प्रधान होता है और शुक्र कहने से प्राधान्येन व्यपदेशी भाव से दूसरी धातुओं का भी ग्रहण हो जाता है। इस प्रकार सुशुक्रा का अर्थ हुआ जिसमें सभी धातुएं सुन्दर हैं अर्थात सन्तुलित मात्रा में हैं। सुन्दर चमकता हुआ शुक्र ग्रह स्वरूपा या सुन्दर चमकते हुए शुक्र ग्रह की शक्ति स्वरूपा यह अर्थ भी हो सकता है। सुन्दर शुक्र ग्रह की शक्ति स्वरूपा। अधिक तेजस्विनी। शुक्र शब्द बल, तेज, शक्ति, जनन शक्ति का प्रतीक है।

136. **सुशुक्तिका** – श्रेष्ठ शुक्तियों के स्वरुप वाली।

137. **शुक्रपूजकपूज्या** – शुक्राचार्य के पूजकों की अर्थात दैत्यों की पूजनीया। शुक्र धातु को महत्व देने वालों द्वारा अर्थात शारीरिक रूप से बलवान लोगों द्वारा पूजनीया।

138. **शुक्रनिन्दकनिन्दका** – शुक्र धातु या शुक्राचार्य की निन्दा करने वालों की निन्दा करने वाली।

139. **रक्तमाल्या** – लाल रंग की मालाओं को धारण करने वाली।

140. **रक्तपुष्पा** – लाल – लाल पुष्पों को धारण करने वाली या लाल – लाल पुष्प हैं पसन्द जिन्हें।

141. **रक्तपुष्पकपुष्पका** – लाल – लाल फूलों से सुशोभित होने वाली।

142. **रक्तचन्दनसिक्तांगी** – लाल चन्दन से लिपे हैं अंग जिनके।

143. **रक्तचन्दननिन्दका** – लाल चन्दन की अर्थात् विषयी लोगों की निन्दा करने वाली। लाल चन्दन की निन्दा न करने वाली। व्याकरण के सन्धि के सूत्र शकन्ध्वादिषु से चन्दन का अन्तिम अ जो पूर्व रूप है एवं अनिन्दक का प्रारम्भिक अ दोनों मिलकर एक हो गए,।

144. **मत्स्या** – मत्स्य अवतार भगवान विष्णु की शक्ति। मत्स्यस्वरुपा अर्थात् मंगल स्वरुपा। मछली मंगल का प्रतीक है। मछली की तरह जल में रहने वाली। मछली की तरह चंचल प्रकृति वाली अर्थात लक्ष्मी स्वरूपा। इन्द्रियों में चंचलता पैदा करने वाली। मत्स्य इन्द्रिय चंचलता का प्रतीक है। मत्स्य+आ, आ का अर्थ है देना, नाश करना। (शब्द कल्पद्रुम एवं ब्रह्मवैवर्त पुराण में दुर्गा शब्द के निर्वचन में आ का अर्थ, देना, नाश करना दिया गया है।)

145. **मत्स्यप्रिया** – मछली है प्रिय जिन्हें।

146. **मान्या** – माननीय अर्थात् सम्माननीय। पूजनीय या सम्मानीया अर्थात् देवताओं या प्राणियों द्वारा सम्मान के योग्य अर्थात् उनका सम्मान या आदर करते है। सर्वैः पूज्यते इति मान्यः। मां रमां अनं प्राणं च यमयति इति मान्या। लक्ष्मी (धन–सम्पत्ति) एवं प्राण (आयु) को नियन्त्रित करने वाली अर्थात निर्धारित करने वाली कि किसको कितना धन देना है, किसको कितनी आयु देनी है। मा अर्थात नहीं, अन्य अर्थात दूसरा। जिसके समान कोई दूसरा नहीं है, वह मान्या है। स्वरूपगुणक्रियादिभिः अन्यो न भवति इति मान्या। स्वरूप, गुण, क्रिया आदि में जिसके समान कोई नहीं है। मायां प्रमायां जातायां अन्या इति सुज्ञेया। श्रेष्ठ बुद्धि होने पर अर्थात भगवत विषयक बुद्धि होने पर जानने योग्य है। मन् ज्ञाने धातु होती है जिससे मान्य का अर्थ जानने योग्य होता है। प्रमा या बुद्धि, जातायां अर्थात होने पर। अन् प्राणने धातु से भी यत् प्रत्यय लगाकर अन्य शब्द बन सकता है। शाब्दिक अर्थ तो सम्मान के योग्य है पर कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र से कृत्य प्रत्ययान्त शब्द सामान्य कारकों एवं कालों से भी भिन्न अर्थ बताते है अर्थात् सम्मान करने योग्य का अर्थ सम्मान करते है भी किया जा सकता है। मा+ अन्या, मा का अर्थ है नहीं। जिनके अतिरिक्त कोई दूसरा नहीं है। देवी का अर्थ है शक्ति या ऊर्जा। हमें जो कुछ भी दिखाई देता या अनुभव में आता है, वह शक्ति या ऊर्जा का रूपान्तरण होने के कारण देवी स्वरूपा ही है। जिनके समान कोई दूसरा नही नही है, यह अर्थ भी कर सकते है। मा + न्या, मा का अर्थ है लक्ष्मी, माया। न्यास शब्द से न्या शब्दाक्षर दे सकते है। लक्ष्मी में या माया में रखी हुयी अर्थात् विराजमान। अन्येन अन्यत्वज्ञानिनैव मीयते च। अन्यत्व (भेद) को जानने वालों द्वारा जानी जाने वाली। तात्पर्य है विवेकी ज्ञानियों द्वारा जानी जाने वाली अर्थात जिन्हें सत और असत का भेद करना आता है, प्रकृति और पुरुष का भेद करना आता है। उनके द्वारा जानी जाने वाली।

147. **मत्स्यभक्षा** – मत्स्य अथवा मछली का भक्षण करने वाली। इन्द्रियों की चंचलता का भक्षण अर्थात नष्ट करने वाली। (मत्स्य इन्द्रिय चंचलता का प्रतीक हैं।)

148. **महोदया** – महान उदय वाली अर्थात् उन्नतिशीला। अतिसमृद्धिशाली। उदय अर्थात उन्नति। गौरवशाली, आदरणीया, सम्माननीया। महान सृष्टि वाली। उदय का अर्थ है उन्नति, सृष्टि, प्रसन्नता।

149. **मत्स्याहारा** – मछली है आहार जिनका। इड़ा और पिंगला नाड़ी से चलने वाली साँस को नियन्त्रण करने वाली। इड़ा पिंगला नाड़ी से चलने वाली साँस ही मछली का प्रतीक है।

150. **मत्स्यकामा** – मछली की कामना वाली, चाह रखने वाली। भक्त साँसों का नियन्त्रण करें ऐसी चाहना वाली या साँसों का नियन्त्रण करना है पसन्द है जिसे।

151. **मत्स्यनिन्दकनाशिनी** – मछली की निन्दा करने वालों का नाश करने वाली।

152. **केकराक्षी** – दुष्ट राक्षसों के लिए वक्र दृष्टि वाली। बिल्लौरी आँख वाली अर्थात रात और दिन में बराबर देखती हैं। सिर की ओर अर्थात ऊपर की ओर आँख है जिसकी। के अर्थात सिर में, कर अर्थात करना, अक्षि अर्थात नेत्र, सिर में या सिर की ओर नेत्र किया है जिसने वह है केकराक्षी। ऐसा व्यक्ति यदि सामने भी देखे तो लगता है कि ऊपर की ओर देख रहा है। सौ में सूर, हजार में काना, उनसे बढ़कर ऐंचाताना ऐसा लोक में सुनने को मिलता है। स्वर्ग में सुख देने वालों में विराजमान। राति का अर्थ है देता है। राति इति रा अर्थात जो देता है या देती है। करा अर्थात सुख देने वाली। क का अर्थ सुख है। के का अर्थ है स्वर्ग में क्योंकि क का अर्थ है स्वर्ग एवं के सप्तमी विभक्ति होने के कारण का अर्थ हुआ स्वर्ग में।

153. **क्रूरा** – दुष्ट दैत्यों के लिए निर्दयी।

154. **क्रूरसैन्यविनाशिनी** – क्रूर राक्षसों की सेना का विनाश कर देने वाली। विनाश का अर्थ है पूर्ण नाश।

155. **क्रूरांगी** – क्रूरता झलकती है अंगों से, ऐसे अंगों वाली। लाल लाल आँख, बड़े नाखून और बाहर निकले दाँत, धसी हुई आँख इन सारे अंगों से क्रूरता ही झलकती है। कठोर अंगों वाली।

156. **कुलिशांगी** – वज्र के समान कठोर अंगों वाली। वज्र को इस प्रकार धारण किये हैं अर्थात हमेशा लिये है जैसे वो इनके अंग हो। दृढ़ चरित्र वालों के पास जाने वाली। जिनके चित्त में ज्ञान है, उनके पास जाने वाली अर्थात रहने वाली। कुलिश या वज्र दृढ़ चरित्र, ज्ञानयुक्त चित्त का प्रतीक है। अंगति का अर्थ है गच्छति अर्थात जाती है।

157. **चक्रांगी** – चक्रम् अंगति अर्थात चक्र में जाने वाली अर्थात मूलाधार से सहस्रार तक के सात चक्रों में शक्ति या देवी रूप से विराजमान। इन चक्रों में जाने वाली कुण्डलिनी शक्ति के रूप में। अंगी अर्थात जाने वाली, अंगति का अर्थ है गति करना। गोलाई में है अंग जिसके अर्थात हर अंग में गोलाई है। हाथ लें तो उसमें भी गोलाई है तभी कड़ा पहन पाते हैं। ऐसा कहते हैं कि प्रकृति ने हर चीज गोल बनाई है। मनुष्य ही उसे चपटा करता है या अन्य आकृति देता है। चक्र के समान अंग वाली अर्थात सुन्दर अंग वाली। चक्र रूप में गति करने वाली या बार बार अवतार लेने वाली। जैसे हर त्रेता युग में सीता के रूप में अवतार लेने वाली या हर द्वापर युग में राधा के रूप में अवतार लेने वाली।

158. **चक्रसम्भवा** – चक्र से उत्पन्न होने वाली। श्रीचक्र से या भैरवी चक्र नामक यन्त्र से उत्पन्न होने वाली। इन चक्रों के साथ उपासना करने पर देवी प्रकट हो जाती हैं। मन से प्रकट होने वाली। चक्र मन का प्रतीक है। जिनका मन निर्मल या शुद्ध होता है, जो ईश्वर की भक्ति में लगा हुआ है, उसमें प्रकट होने वाली।

159. **चक्रदेहा** – श्रीयन्त्र या भैरवी यन्त्र है शरीर जिसका। यन्त्र को देवताओं का शरीर माना गया है। चक्र के समान सुन्दर शरीर वाली। चक्राकार अर्थात गोलाकार कुण्डलिनी के स्वरूप में है। परिवर्तित होकर वापस उसी अवस्था में आने वाले शरीर वाली अर्थात प्रकृति स्वरूपा, काल स्वरूपा आदि। ऋतुएं परिवर्तित होकर एक साल बाद वापस आती हैं अर्थात प्रकृति स्वरूपा अर्थ हुआ। युग बार बार लौटता है अतः काल स्वरूपा अर्थ हुआ।

160. **चक्रहारा** – श्रीचक्र को अर्थात श्रीयन्त्र को या भैरवी यन्त्र को हार के रूप में धारण किया है जिन्होंने। चक्रों से बने हार धारण करने वाली। द्विविमीय (two dimensional) चक्र को बहुत से लोग गले में धारण करते हैं। संसार चक्र को हार के रूप में धारण करने वाली। सुख दुख के चक्र को हार के रूप में धारण करने वाली।

161. **चक्रकंकालवासिनी** – चक्राकार अस्थिपंजर में निवास करने वाली। गोलाई लिये हुए अस्थियों में निवास करने वाली। देवी सर्वव्यापक हैं अतः हर जगह निवास करती हैं। चक्र के समान कंकालों में निवास करने वाली। निरन्तर चक्राकार परिवर्तन शील सुख उत्पन्न करने वाली वस्तुओं में विराजमान। घूर्णीय परिवर्तनशील दुखदायी घटनाओं में भी विराजमान। कल् शब्द काअर्थ निर्माण करना, नाश करना होता है। कं का अर्थ सुख है। सुख उत्पन्न करने वाली, सुख नाश करने वाली, दोनों अर्थ हो जाएंगे। जन्म मरण के चक्र के प्रतीक कंकाल में निवास करने वाली। जीवित रहने के बाद मरने पर कंकाल हो जाता है।

162. **निम्ननाभि** – गहरी नाभि वाली।

163. **भीतिहरा** – शरणागत या उनका नाम लेने वालों के भय को हरने वाली। ईश्वर के रास्ते पर चलने वाले लोगों का भय हरने वाली।

164. **भयदा** – कुमार्गगामियों या अधर्मियों को भय देने वाली।

165. **भयहारिका** – साधना के दौरान अनुभव में आने वाले भयों को देवी का आवाहन करने पर हरने वाली। सज्जनों या साधकों के भय को हरने वाली।

166. **भयप्रदा** – रूप या आकृति ऐसी है कि कोई भी सामने आ जाए, कोई भी देवी देवता, असुर आ जाए उसे डर लगता है। अपने भक्तों के शत्रुओं को भय देने वाली। साधना के दौरान आने वाली बाधाओं को भय देकर भगाने वाली। कुमार्गगामियों को भय प्रदान करने वाली।

167. **भया** – दुष्टों के भीतर विद्यमान भय के स्वरूप वाली। दुष्टों को भय देने वाली। भय+आ, आ का अर्थ है देना।

168. **भीता** – गलत काम करने मे या अधर्म का कार्य करने में डरी हुई। इस बात से डरती हैं कि कुछ गलत या अधर्म का कार्य न हो जाए। (यदि भयभीता नाम है तो अर्थ होगा भय जिनसे डरता है। भयम् अपि बिभीते यस्याः सा भयभीता। बनावटी रूप से भयभीत दिखने वाली जो वास्तव में अन्दर से भयभीत नहीं है। दुष्टों को भयभीत करने वाली)।

169. **अभीमा** – सौम्य अर्थात सात्विक अच्छे स्वरूप वाली।

170. **भीमनादिनी** – भयंकर गर्जन करने वाली।

171. **सुन्दरी** – जो देखने वाले के चित्त को अच्छी तरह से पिघला दे अर्थात उस पर अधिकार कर ले वह सुन्दरी है। सुष्ठु उनत्ति चित्तम् द्रवीकरोति इति सुन्दरी। अतिशय सुन्दरी अर्थात जिसका शरीर सुन्दर है। गुणों में भी जो सुन्दर है।

172. **शोभना** – मंगल युक्त सुन्दरता वाली। शोभन में सुन्दरता के साथ मांगल्य का भी गुण होता है। शोभा बढ़ाने वाली। लघु सिद्धन्त कौमुदी ग्रन्थ में कृदन्त प्रकरण में इस शब्द की व्युत्पत्ति शुभ् धातु + णिनि + ल्यु प्रत्यय करके की गई है जहाँ इसका अर्थ शोभा बढ़ाने वाला किया गया है। यहाँ पर ल्यु (अन) का प्रयोग कर्ता अर्थ में किया गया है। शोभना का अर्थ शोभा से युक्त अर्थात सुन्दर भी होता है। ज्योतिष में भी शोभन योग होता है।

173. **सत्या** – ब्रह्मस्वरूपा। ब्रह्म की शक्तिस्वरूपा। सत्य स्वरूप वाली अर्थात जिनका अस्तित्व हमेशा रहता है। सत्सु भवति इति सत्यः, जो सज्जनों में होता है, वह सत्य है। उस गुण के स्वरूप वाली जो सज्जनों में पाया जाता है। सत्य + आ, आ का अर्थ है शक्ति। सत्य की शक्ति स्वरूपा।

174. **क्षेम्या** – क्षेम अर्थात कल्याण से युक्त। कल्याण करने वाले गुणों से युक्त।

175. **क्षेमकरी** – कल्याण करने वाली अर्थात शान्ति और आनन्द देने वाली। आध्यात्मिक क्षेत्र में तरक्की कल्याण है। जीवन के सभी पक्षों की आवश्यताओं जैसे रोटी, कपड़ा, मकान, पानी, बिजली, स्वास्थ्य, मनोरजन, समाज में सम्मान आदि की पूर्ति कल्याण है।

176. **सिन्दूरा** – सिन्दूर की तरह लाल वर्ण वाली। सदृश शब्द प्रयोग न होने पर भी सदृश अर्थ आ जाता है जैसे वह व्यक्ति गौ है अर्थात गौ की तरह सीधा है।

177. **अंचितसिन्दूरा** – जिन्होंने सिन्दूर को धारण कर रखा है। (यदि सिन्दूरांचितसिन्दूरा नाम हो तो अर्थ होगा – सिन्दूर से सुशोभित माँग वाली। दूसरे सिन्दूर का अर्थ माँग या भाल लगायेंगे। सुन्दर सिन्दूर को धारण करने वाली। अंचितसिन्दूरा का अर्थ है जिन्होंने सुन्दर सिन्दूर को धारण कर रखा है)।

178. **सिन्दूरसदृशाकृति** – सिन्दूर के समान सुन्दर आकृति वाली। यहाँ सिन्दूर का अर्थ सुन्दर ले रहे हैं।

179. **रक्ता** – भक्तों पर अनुरक्त रहने वाली अर्थात भक्तों पर अनुराग/प्रेम करने वाली।

180. **रंजितनासा** – रंगी गई नासिका वाली अर्थात जिनकी नासिका सजाई गई है।

181. **सुनासा** – स्वाभाविक सुन्दर है नासिका जिसकी।

182. **निम्ननासिका** – तोते की तरह आगे की ओर झुकी हुई नासिका वाली अर्थात सुन्दर नासिका वाली। तोते की नाक सुन्दर और मंगलकारी मानी जाती है। नीचे को झुकी नासिका वाली अर्थात सुन्दर नासिका वाली।

183. **खर्वा** – कम ऊँचाई वाली तारा देवी से अभेद है जिनका। वामन भगवान की शक्ति। अहंकार को नष्ट करने वाली। खर्वयति खण्डयति इति खर्वा। अर्थ में संगति बिठाने के लिए अहंकार, दुष्ट आदि शब्द ले सकते हैं।

184. **लम्बोदरी** – लम्बे उदर वाली। लम्बोदर अर्थात भगवान गणेश की शक्ति स्वरूपा।

185. **दीर्घा** – फैला हुआ अर्थात क्षेत्र और समय दोनों दृष्टि से फैली हुई अर्थात व्यापक एवं दीर्घकालिक। लम्बी। दीर्घ स्वर वाली। दीर्घ का लम्बा, ऊँचा और फैला तीनों अर्थ होते हैं। बड़े बड़े अवयवों वाली अर्थात जिनका हाथ पैर, नाक, गला सुडौल है।

186. **दीर्घघोणा** – ऊँची या बड़ी या लम्बी नाक वाली। विराट स्वरूप में इस प्रकार की नाक होती है।

187. **महाकुचा** – विशाल अर्थात बड़े बड़े स्तनों वाली। सर्वाधिक पोषण शक्ति स्वरूपा। स्तन दूध पिलाने का कार्य करते हैं अर्थात वह पोषण शक्ति का प्रतीक है।

188. **कुटिला** – तिरछी गति करने वाली अर्थात नदी स्वरूपा। सरस्वती नदी का नाम कुटिला है। दुष्टों के लिए छलकपट का प्रयोग करने वाली। तिरछी चाल चलने वाली अर्थात अतिशय सुन्दर। दुष्टों के लिए कुटिल या चालाक स्वरूप को धारण करने वाली, यह अर्थ भी कर सकते हैं। मुड़ी हुई अर्थात वक्र अर्थात कुण्डलिनी स्वरूपा।

189. **चंचला** – जो चंचलता को लिये हुए है अर्थात एक जगह स्थिर नहीं है अर्थात लक्ष्मी स्वरूपा।

190. **चण्डी** – दैत्यों के प्रति अधिक क्रोध वाली। चण्ड का अर्थ है, अधिक क्रोध। क्रोध से युक्त। चडि कोपे

धातु होती है। उत्तम क्रोध से युक्त। उनका क्रोध उत्तम इसलिए है क्योंकि वह अधर्म को नहीं सहन करता और अधर्मी राक्षसों दुष्टों पर ही क्रोध का प्रयोग किया जाता है। उनका क्रोध इसलिए भी उत्तम है कि इससे अपने उपासकों को सही रास्ते पर लाती हैं। ब्रह्मस्वरूपिणी। क्रोध को ब्रह्म का रूप माना गया है तभी रूद्राध्यायी के पाँचवें अध्याय में कहा गया कि नमस्ते रूद्र मन्यवे अर्थात रूद्र देवता के क्रोध को नमस्कार है। ब्रह्म के क्रोध के कारण ही सूर्य, अग्नि, आकाश, वायु अपने अपने कामों को बिना ढिलाई किये करते हैं। एकाक्षरीकोश में चं के अर्थ सुख, विमल (निदोश), रूधिर, भ्रमण दिया गया है। डप्, डिप् धातु का अर्थ संघात करना (एकत्रित करना), फेंकना दिया गया है। इस धातु में ड प्रत्यय लगाने से टि अर्थात अप्, इप, का लोप होकर ड बनेगा जिसका अर्थ है एकत्रित करने वाला, फेंकने वाला। स्त्रीलिंग में डी या डा होगा जिसका अर्थ होगा–एकत्रित करने वाली, फेंकने वाली। इस प्रकार चण्डा का अर्थ होगा दुष्टों के सुख को फेंकने वाली अर्थात समाप्त करने वाली। भक्तों के लिए सुख एकत्रित करने वाली अर्थात एकत्रित कर उन्हें देने वाली अर्थात भक्तों को सुख देने वाली। एकाक्षरीकोश में डी का अर्थ दन्त भी दिया गया है और दाँत चबाने का कार्य करते हैं। इसमें भी अर्थ होगा दुष्टों के सुख को चबा जाने वाली अर्थात नष्ट करने वाली।

191. **चण्डनादा** – तीव्र, उग्र या दुर्दमनीय, बहुत अधिक नाद या आवाज करने वाली।

192. **प्रचण्डिका** – विनाशकारी क्रोध वाली। आपने प्रचण्ड तूफान का नाम सुना होगा जिसका अर्थ है कि ऐसा तूफान जो विनाश लाये। (यदि चण्डनादप्रचण्डिका एक शब्द हो तो अर्थ होगा भयंकर नाद करने वाली प्रचण्ड स्वरूपा)। प्र अर्थात प्रकृष्ट अर्थात अधिक। सामान्य से जरा भी अधिक होगा तो उसे प्रकृष्ट कहा जा सकता है। प्रचण्डा अर्थात अधिक क्रोध परन्तु सीमा के भीतर।

193. **अतिचण्डा** – अधिक बल या प्रताप वाली। चण्ड का अर्थ केवल क्रोध ही नहीं होता, बल और प्रताप भी चण्ड का एक अर्थ है। अधिक मात्रा के क्रोध वाली। अति का अर्थ अधिक भी होता है और अतिक्रमण भी होता है। यदि अतिक्रमण अर्थ लें, तो अर्थ होगा जिन्होने क्रोध का अतिक्रमण कर लिया अर्थात उनसे अधिक दूसरा क्रोध नहीं हो सकता। यह प्रश्न उठता है कि अतिचण्डा और महाचण्डा में कौन अधिक क्रोध वाला है। महा का अर्थ सर्वाधिक होता है। इस आधार पर महाचण्डा अधिक क्रोध वाला हुआ पर वह तभी जब अति का अर्थ अधिक लिया जाए अर्थात सामान्य से अधिक लिया जाए। किन्तु अति का अर्थ अतिक्रमण लिया जाए तो अतिचण्डा महाचण्डा से ज्यादा क्रोध वाली कहलाई जाऐंगी। क्रोध के अतिक्रमण का अर्थ यह भी हो सकता है कि वो क्रोध के पार चली गई हैं अर्थात उन्होंने क्रोध को जीत लिया है, क्रोध उनके अधीन है। अतिशय चण्ड रूप वाली अर्थात बहुत अधिक क्रोध वाली। क्रोध सीमा से बाहर चला अर्थात अतिक्रमण हो गया। (क्रोध की अन्तिम सीमा के भीतर जितने भी क्रोधी हैं उनमें महाचण्डा सर्वाधिक क्रोधिनी होंगी किन्तु यहाँ अति का अर्थ अधिक है, अतिक्रमण नहीं, महा का अर्थ है सर्वाधिक। यदि अति का अर्थ अतिक्रमण लगाऐ ंतो अतिचण्डा महाचण्डा से बढ़कर होगा) (यदि अति का अर्थ सिर्फ अधिक रखे, अतिक्रमण नही ंतो अतिचण्डा से बढ़कर प्रचण्डा होगा और प्रचण्डा से बढ़कर महाचण्डा होगा। प्र अर्थात प्रकृष्ट अर्थात बहुत अधिक, जबकि अति अर्थात अधिक।) (चण्डा–चण्डा के कई अर्थ निकाले जा सकते हैं– एकाक्षरीकोश में चं के अर्थ सुख, विमल (निदोष), रूधिर, भ्रमण दिया गया है। डप्, डिप् धातु का अर्थ संघात करना (एकत्रित करना), फेंकना दिया गया है। इस धातु में ड प्रत्यय लगाने से टि अर्थात अप्, इप, का लोप होकर ड बनेगा जिसका अर्थ है एकत्रित करने वाला, फेंकने वाला। स्त्रीलिंग में डी या डा होगा जिसका अर्थ होगा–एकत्रित करने वाली, फेंकने वाली। इस प्रकार चण्डा का अर्थ होगा दुष्टों के सुख को फेंकने वाली अर्थात समाप्त करने वाली। भक्तों के लिए सुख एकत्रित करने वाली अर्थात एकत्रित कर उन्हें देने वाली अर्थात भक्तों को सुख देने वाली। एकाक्षरीकोश में डा का अर्थ रमा भी दिया गया है। इस प्रकार चण्डा का अर्थ हुआ निर्दोष लक्ष्मी स्वरूपा।)

194. **महाचण्डा** – क्रोधियों में जो सबसे बढ़कर है। शब्द के आगे महा लगने से कभी कभी सबसे बढ़कर अर्थात सर्वाधिक अर्थ हो जाता है। विशाल क्रोध वाली पर वह क्रोध सीमा के भीतर है। मह् पूजायाम् धातु भी होती है तब अर्थ होगा पूजनीया क्रोध वाली अर्थात जिनका क्रोध भी पूजनीय है। उनका क्रोध इसलिए पूजनीय या उत्तम है क्योंकि इसका प्रयोग धर्म की रक्षा और दुष्टों के विनाश के लिए होता है। अतिशयातिशय भयंकर स्वरूप वाली।

195. **श्रीचण्डा** – शोभायमान और तीव्र बल सम्पन्न। चण्ड अर्थात तीव्र अर्थात असह्य अर्थात अधिक बल युक्त। चण्ड का अर्थ अधिक क्रोध, बल, प्रताप होता है। सत्य को शरण/सहारा देने वाली तथा दुष्टों के प्रति क्रोध युक्त। श्री का अर्थ है जो दूसरों को शरण देने वाली। सुन्दर चण्डिका के स्वरूप वाली। चण्ड का अर्थ है उग्र या तेज। उग्र अधिक का बोध कराता है। उच्चकोटि की लक्ष्मी स्वरूपा। अतिउन्नत या श्रेष्ठ लक्ष्मी स्वरूपा। जहाँ चण्ड का अर्थ तुंग अर्थात अति–उन्नत लिया गया है। श्री का अर्थ जिसका सभी आश्रय लेते हैं या जो शरण देने वाली है इस प्रकार श्रीचण्डा का अर्थ हुआ – जिसका आश्रय लिया जाता है और जो स्वयं अधिक क्रोध करने वाली हैं। चण्ड अर्थात अधिक क्रोध। जिसका आश्रय लिया जाता है और जो ब्रह्म की शक्ति है। चण्ड अर्थात ब्रह्म। (चण्डश्री का अर्थ है अति–उन्नत लक्ष्मी अर्थात श्रेष्ठ लक्ष्मी)।

196. **चण्डवेगिनी** – तीव्र वेग वाली। प्रबल वेग वाली। प्रचण्ड वेग से युक्त। आपने चण्डवात नाम सुना होगा जिसका अर्थ है बहुत तेज गति से चलने वाली वायु।

197. **चाण्डाली** – चाण्डालिनी स्वरूप वाली। चण्डाल की जाति में भी उत्पन्न। मातंगी देवी को उच्छिष्ट चाण्डालिनी कहते हैं। मातंगी देवी के प्रकरण में आता है कि पार्वती जी चाण्डालिनी का रूप धारण कर अपनी सखियों सहित शिव जी के पास गई थीं। शिवजी ने भी चाण्डाल का रूप धारण कर पार्वती जी के साथ नृत्य किया था।

198. **चण्डिका** – महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती के मिलित स्वरूप वाली। इन तीनों शक्तियों के एकत्रीभाव को चण्डिका कहते हैं। परब्रह्मस्वरूपिणी या परब्रह्म की शक्ति स्वरूपा। चण्ड का अर्थ क्रोध है जो ब्रह्म का अनिवार्य लक्षण है। ब्रह्म के क्रोध के डर से ही सूर्य चन्द्र, हवा आदि अपने कार्य में समय से लगे रहते हैं अतः क्रोध को ब्रह्म का रूप कह दिया गया है। रूद्राध्यायी में नमस्ते रूद्र मन्यवे कहा गया है जहाँ मन्यु का अर्थ है क्रोध। इस प्रकार क्रोध का अर्थ ब्रह्म है। चण्ड का एक अर्थ असाधारण गुण भी होता है। सर्वव्यापकत्व, नित्यत्व आदि असाधारण गुण हैं। असाधारण गुण केवल ब्रह्म में रहते हैं। चण्डी या चण्डिका अर्थात असाधारण गुणों वाली अर्थात ब्रह्म स्वरूपा। दैत्यों के प्रति अत्यन्त क्रोध वाली। सौन्दर्य लहरी में गिराम् आहु... श्लोक में क्रोध को परब्रह्म का स्वरूप माना गया है। चण्डिका स्वरूपा या अतिशय क्रोध स्वरूपा।

199. **चण्डशब्दरूपा** – ऊँचे या बड़े जोर के शब्द वाली अर्थात युद्ध में इस प्रकार का शब्द करने वाली। युद्ध में लोग जोर जोर से मारो मारो काटो काटो ऐसा शब्द बोलते हैं। चण्डशब्दरूपा अर्थात ऊँचे स्वर से या बड़े जोर से किये जाने वाले शब्द स्वरूपा। चण्ड अर्थात अत्यन्त उग्र अर्थात बड़े जोर का शब्द। प्रचण्ड शब्द स्वरूप वाली।

200. **चंचला** – लक्ष्मी से अभेद है जिनका। लक्ष्मी का भी एक नाम चंचला है। अपने हाव – भाव से आकर्षित करने वाली। चंचला का एक अर्थ अपने हाव भाव से आकर्षित करने वाली भी होता है।निरन्तर गतिशील अर्थात कभी स्थिर नहीं क्योंकि प्रत्येक क्षण स्पन्दन होता रहता है। वायु स्वरूपा वा वायु की शक्ति स्वरूपा।

201. **चम्पा** – चम्पा पुष्प के समान सुन्दर और सुगन्धित। कहा जाता है पुष्पेषु चम्पा।

202. **चम्पावती** – चम्पा के पुष्प से युक्त अर्थात सुशोभित या धारण की हुई।

203. **चोस्ता** – चन्द्रमा और शिव द्वारा प्रशस्ता अर्थात स्तुति या प्रशंसा की गई। च + उ + स्ता। एकाक्षरी कोष के अनुसार स्ता का अर्थ प्रशस्ता दिया गया है, यह शब्द स्तु धातु से बना है। पाखण्डियों (किन्तु आस्तिक भाव रखने वाले) द्वारा भी जिनकी स्तुति की गई अर्थात की जाती है। एकाक्षरी कोष में चो का अर्थ पाखण्डी दिया गया है। चन्द्रमा और शिव ने इनकी प्रशंसा की। च (चन्द्रमा) + उ (शिव या सूर्य) + स्ता (प्रशस्ता), ये अर्थ एकाक्षरी कोश में दिये गये हैं। चन्द्र युक्त शिव के पुत्र की शक्ति स्वरूपा। एकाक्षरीकोश में स्त का अर्थ सुत अर्थात पुत्र दिया गया है। चौर्य आदि दुष्कर्म जिसमें अस्त हो जाते हैं। जिसके आचरण में ऐसे दुष्कर्म नहीं हैं। चन्द्रमा और शिव द्वारा प्रशस्ता या प्रशंसा की गई जिनकी अर्थात उपासना की गई है। चन्द्रधारी शिव द्वारा प्रशस्ता। एकाक्षरी कोश में च का अर्थ चन्द्रमा, उ का अर्थ शिव एवं स्ता का अर्थ प्रशस्ता दिया गया है। च +उ + स्ता = चोस्ता। स्तु धातु में ड प्रत्यय लगाने से स्त शब्द बनेगा जिसका अर्थ है स्तुति करना अर्थात प्रशंसा करना। जो देवी को मानते है, ऐसे पाखण्डियों के द्वारा भी प्रशंसा की गई जिनकी। सस्कृत में स्तृञ् धातु का अर्थ ढाकना एवं स्तृह् धातु का अर्थ हिंसा करना अर्थात नाश करना है। इन धातुओं में ड प्रत्यय लगाने से स्त शब्द बनेगा जिसका अर्थ होगा ढाकने वाला, नाश करने वाला। एकाक्षरी कोश में चो का अर्थ पाखण्डी दिया गया है। पाखण्डियों का नाश करने वाली, पाखण्डियों को ढाकने वाली अर्थात उनकी गतिविधियों को सफल न होने देने वाली, ये अर्थ भी हो सकते है। चो+स्ता = चोस्ता।

204. **तीक्ष्णा** – असह्य अर्थात जिसका तेज सहन नहीं किया जा सकता। शत्रुओं के लिए तीक्ष्ण स्वभाव वाली। असह्य। जिसका तेज या क्रोध असह्य है। तीक्ष्ण अर्थात पैनापन। तेज धार की तरह शत्रुओं को आसानी से काट डालने वाली एवं उनके शरीर के बहुत भीतर तक मार कर देने वाली। तीक्ष्ण अर्थात जो शत्रुओं के लिए पीड़ादायक हो। तीक्ष्ण अर्थात जो दुष्टों के लिए कठोर, निर्दयी, दयालुरहित है। जो तीक्ष्ण बुद्धि वाली एवं तीक्ष्ण दृष्टि वाली हैं। तीक्ष्ण बुद्धि अर्थात बहुत जल्दी ही सोचने वाली या समझने वाली, नोटिस करने वाली और तुरन्त प्रतिक्रिया कर देने वाली। तीक्ष्ण व्यक्ति क्रोध से बात करता है या कार्य करता है जिससे दूसरों को क्षति पहुँच सकती है। तीक्ष्ण दृष्टि अर्थात बहुत भीतर तक अर्थात वस्तु के सार तक को देखने वाली। तीक्ष्णता में चुभना, पीड़ा पहुँचाना, असह्यता यह भाव रहता है जो तीव्रा शब्द में नहीं। (तीव्र और तीक्ष्ण दोनो का अर्थ अत्यधिक है पर तीक्ष्ण में चीजें पैनी अर्थात भीतर तक घुसने वाली या असह्य हो जाती हैं। तीव्र अत्यधिक मात्रा एवं अत्यधिक वेग के लिए आता है।)

205. **तीक्ष्णप्रिया** – तेजस्वी पुरुष या भक्त हैं प्रिय जिन्हें।

206. **क्षति** – दुष्टों या राक्षसों की हानि या नुकसान स्वरूपा। विनाशस्वरूपिणी या प्रलयस्वरूपिणी। भाव, गुण, क्रिया, समय, अवस्था आदि सभी ऊर्जा या शक्ति के ही रूपान्तरण हैं और देवी का अर्थ होता है शक्ति या ऊर्जा अतः सभी कुछ देवी स्वरूप है।

207. **जलदा** – तीनों लोकों को जल अर्थात् जीवन या सुख प्रदान करने वाली।

208. **जयदा** – विजय प्रदान करने वाली। भक्तों को जीत का वरदान देने वाली। दुष्टों के उत्कर्ष को नष्ट करने वाली। दो अवखण्डने से दा बनाने पर नष्ट करने वाली अर्थ आ जाएगा।

209. **योगा** – योग स्वरुपिणी। जीवात्मा को परमात्मा से जोड़ने वाली। योग+आ, आ का अर्थ है देना इस प्रकार योग का अर्थ हुआ योग देने वाली अर्थात योग करने वाली अर्थात जीवात्मा को परमात्मा से जोड़ने वाली। यश और ज्ञान को पहुँचाने वाली। य +उ से यो हुआ। गमयति इति गा अर्थात पहुँचाने वाली। गम् धातु को प्रेरणार्थक बनाकर ड प्रत्यय लगाने से ग बनेगा जो स्त्रीलिंग में गा हो जाएगा। य का अर्थ यश एवं उ का अर्थ ज्ञान, शिव (कल्याण) है। एकाक्षरीकोश से अन्य अर्थ भी लिये जा सकते हैं।

210. **जगता** – प्राणीजगतस्वरूपा अर्थात चैतन्यजगतस्वरूपा। प्राणीस्वरूप जगतस्वरूपा अर्थात चैतन्य जगत स्वरूपा। प्राणी स्वरूप से गतिमान अर्थात चेतनजगतस्वरूपा अर्थ लिया गया है। बदलते रहते हैं प्राणी। गच्छति इति जगत, निरन्तर गतिशील अर्थात बदलता ही रहता है। जगत स्वरुपिणी अर्थात् विश्वस्वरुपिणी। संसार का विस्तार करने वाली। जगत शब्द का जग ले लिया। तन् धातु में ड प्रत्यय लगाने से त शब्द बनेगा जो स्त्रीलिंग ता होगा जिसका अर्थ है विस्तार करने वाली, देने वाली, निर्माण करने वाली। एकाक्षरीकोश से ज एवं ग के अर्थ लेकर इस शब्द के कई अर्थ लिये जा सकते हैं।

211. **आनन्दकरिणी** – आनन्द को करने या करा देने वाली।

212. **जगत्वन्द्या** – सम्पूर्ण संसार द्वारा वन्दनीय। सामने से झुकना, नमस्कार करना और गुणों का गान करना वन्दना है।

213. **जगन्माता** – सम्पूर्ण संसार की माता। संसार को उत्पन्न और पालन करने वाली। संसार की रक्षा करने वाली। माति का एक अर्थ रक्षा करना भी होता है। माति इति माता।

214. **जगती** – प्रकृतिरूप जगत स्वरूपा अर्थात जड़जगत स्वरूपा। (210वें नाम जगता में चैतन्य जगत (प्राणी जगत) अर्थ लिया जबकि यहाँ पर स्थूल वस्तु रूप अर्थ लिया। जगती में स्त्रीलिंग का भाव है इसलिए यहाँ प्रकृति रूप जगत बोला गया है। सम्पूर्ण भूमण्डल के स्वरुप को धारण करने वाली। जगती छन्द स्वरुपा। निरुक्त में जगती का अर्थ दिया गया है जो बहुत आगे तक गया है या सरका है अर्थात अन्त्य स्वरूपा अर्थात सर्वव्यापक। जलचर (ऊर्मि) की तरह है गति जिसकी। निरन्तर गति करने वाली। कण–कण में स्पन्दन रूपी गति हो रही है। इस गति को करने वाली। गति का अर्थ क्रिया भी ले सकते है। तब इस नाम का अर्थ होगा जो निरन्तर क्रियाशील है। गम् धातु में यङ् प्रत्यय लगाने से यह शब्द बनेगा जो निरन्तरता या बहुत अधिक को बोध कराता है। जो अन्य सभी देवी–देवताओं से बहुत आगे तक गई है अर्थात् उन सबसे बढ़कर है। सृष्टि स्वरूपा। जगत का अर्थ है सृष्टि जिसे स्त्रीलिंग में जगती कहेगें। सर्वप्रेरक गति देने वाली काल शक्ति को ही वेद में जगती कहा गया है। जो बहुत दूर तक गयी है अर्थात् बहुत विशाल। वेद का जगती छन्द स्वरूपा। जलचर से ज लिया एवं गति लिया। जलचर तरंगों के समान गति होने के कारण अर्थात् उच्च–निम्न उच्चारण रूप गति होने से इस छन्द को जगती छन्द कहते है। जो अन्य छन्दों से आगे गया है अर्थात् बहुत बड़ा है अतः जगती है। बहुधा स्तूयमान परमेश्वर में इसका उपदेश किया था अतः इसका नाम जगती है। गृ शब्दे धातु से एवं गल स्रवणे+अति = जग + अत् = जगत+ ङीष् करके ऐसा अर्थ आया। जिसमें जगत आश्रित है अर्थात् समस्त जगत को चलाने वाली। वैदिक कोष में जगती के अन्य कई अर्थ दिये गये है जैसे आत्मा, ब्रह्म, पृथ्वी, पशु, वैश्य, द्यौ, प्रतीची दिशा, आदित्य की पत्नी, यश। पशु, पृथ्वी, वैश्य, यश आदि सभी निरन्तर या बहुत अधिक गमन करते है इस कारण उन्हें जगती कहा गया है। जीवात्मा भी निरन्तर गति करती है अतः इसे भी जगती कहा गया है।

215. **जगत्क्षमा** – संसार के पापियों को क्षमा कर देने वाली। संसार की आधारभूता पृथ्वी। क्षमा का एक अर्थ पृथ्वी भी होता है।

216. **जन्या** – पैदा होने योग्य अर्थात जो हिमालय की पुत्री के रूप में पैदा हुई। जन्य अर्थात लोगों के लिए हितकारी अर्थात लोगों की मदद करने वाली। जन+ यत् इति जन्य अर्थात लोगों का हितकारी।

217. **जयजनेत्री** – जीतने वाले व्यक्ति के पास जाने वाली। जय + जन + इतृ, इस प्रकार व्युत्पत्ति होगी। इण् गतौ धातु होती है। जय की उत्पत्ति तक पहुँचाने वाली अर्थात जय के पास तक पहुँचाने वाली अर्थात जय दिलाने वाली। यह अर्थ जयज + नेत्री इस व्युत्पत्ति से निकलेगा। प्रसन्नता युक्त नेत्र वाली। जयज अर्थात जय

से उत्पन्न, जय से प्रसन्नता पैदा होती है। जनेत्री को जनयित्री कह सकते हैं तब अर्थ होगा जय पैदा करने वाली, जय दिलाने वाली। यदि जलजनेत्री शब्द है तो अर्थ होगा, कमल के समान सुन्दर नेत्रों वाली।

218. **जयिनी** – जीतना जिसका स्वभाव है। जय अर्थात कल्याण वचन से युक्त। जय का अर्थ समृद्धि भी होता है इस प्रकार जयिनी का अर्थ हुआ समृद्धि से युक्त। आन्तरिक या बाह्य शत्रुओं पर जीत हासिल करने वाले गुणों से युक्त। अन्य के द्वारा की गई प्रशंसा या अभिवादन प्राप्त करने के गुणों से युक्त। जय हो अर्थात आपकी प्रशंसा हो। जयशीला। सब पर जीत का स्वभाव है जिसका। विजयशील अर्थात् जो हमेशा जीतती है।

219. **जयदा** – भक्तों को विजय का आशीर्वाद देने वाली।

220. **जननी** – संसार को उत्पन्न करने वाली। लोगों को ले जाने वाल अर्थात सन्मार्ग की ओर ले जाने वाली। जनान् नयति इति जननी। दया या करुणा गुणस्वरूपा। जननी का एक अर्थ दया, करुणा भी होता है।

221. **जगद्धात्री** – संसार को धारण करने वाली। संसार का पालन पोषण करने वाली।

222. **जयाख्या** – जया है जिसका नाम।

223. **जयरूपिणी** – आर्शीवाद के स्वरूप वाली। ब्राह्मण लोग प्रणाम के उत्तर में जो आर्शीवाद देते हैं वह जय कहलाता है। भगवान विष्णु के जय नामक पार्षद के रूप में। भगवान विष्णु के जय और विजय ये दो पार्षद थे। महाभारत ग्रन्थ के स्वरूप में। महाभारत का एक नाम जय भी है। वशीकरण क्रिया के स्वरूप में। सूर्य के स्वरूप में, सूर्य का एक नाम जय है। विजय के स्वरुप वाली। जयम् रूपयति इति जयरूपिणी अर्थात जय को दिखाने वाली। जय पर विचार करने वाली।

224. **जगन्माता** – जगत की रक्षा करने वाली। माति इति माता अर्थात् जो रक्षा करे वह माता है।

225. **जगन्मान्या** – संसार के द्वारा माननीय या संसार के लोगों द्वारा सम्माननीय।

226. **जयश्री** – विजयलक्ष्मी या जय की शोभा स्वरुपा।

227. **जयकारिणी** – भक्तों को बाधाओं पर विजय दिलाने वाली।

228. **जयिनी** – सर्वोत्कृष्ट अर्थात् विजयशीला। स्वयं विजयशीला। मृत्यु को जीत लिया है जिसने। सब पर जीत का स्वभाव है जिसका। दूसरों के द्वारा प्रशंसा या अभिवादन प्राप्त करने वाले गुणों से युक्त। किसी की जय होने का एक अर्थ है दूसरों द्वारा उसका अभिवादन किया जाए और उसकी प्रशंसा हो। समृद्धि से युक्त। जय का एक अर्थ समृद्धि भी है। आन्तरिक शत्रुओं से जीत हासिल करने के गुण से युक्त। बाह्य शत्रुओं पर जीत हासिल करने के गुणों से युक्त। कल्याण वचन से युक्त। जय का अर्थ कल्याण वचन भी है।

229. **जयमाता** – जीतने वाली माता। जय की रक्षा करने वाली अर्थात जय दिलाने वाली। जयम् माति अर्थात जो जय की रक्षा करे। जय उत्पन्न करने वाली। जय का पालन या रक्षा करने वाली अर्थात जय दिलाने वाली। जय को देने वाली माता।

230. **जया** – जया तिथि स्वरुपा। जीत हासिल करने वाली। जयति इति जया अर्थात जो जीतती हैं, वह जया हैं। इस प्रकार की जीत अन्य लोग भी हासिल करते है। जयशीला, सब जगह जीतने वाली चाहे युद्ध हो या मनुष्य के विकार हों। जया तिथि स्वरूपा। तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी जया तिथि हैं। जय अर्थात अभिवादन प्राप्त करने या प्रशंसा प्राप्त करने के गुणों से युक्त। कल्याण वचन को देने वाली अर्थात करने वाली। जय का एक अर्थ कल्याण वचन भी होता है। कृष्ण की जय हो, इसका अर्थ है हम अभिवादन करते हैं, मेरी यह याचना है। जय देने वाली या जिनकी कृपा से जय मिलती है। जय+आ, आ का एक अर्थ देना भी है। जय जिनका

स्वरूप है। जयति असुरान इति जया। असुरों पर जीत हासिल करने वाली। जयशीला। जो शत्रुओं पर, इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करती है।

231. **विजया** – विशेष जीत हासिल करने वाली या स्थाई जीत हासिल करने वाली। ऐसी जीत जिसके बाद शत्रु दुबारा लड़ने की सोच भी नहीं सकता अर्थात् स्थाई जीत। बहुत ताकतवर एवं लगभग अजेय राक्षसों पर जीत हासिल करने वाली। हमेशा एवं सर्वत्र जीत हासिल करने वाली। वि अर्थात विश्व अर्थात सर्वत्र। बिना किसी की मदद के जीतने वाली। वि अर्थात विना अर्थात बिना। वि का अर्थ विश्व अर्थात सर्वत्र या सभी भी होता है। सर्वत्र जीतने वाली, सभी पर जीतने वाली, सभी समयों पर जीतने वाली।

232. **खड्गिनी** – भेदनकारी शक्ति रखने वाली अर्थात द्वैत भाव करने वाली। खडि भेदने धातु होती है। जगत कायम रहे इसके लिए द्वैत भाव होना जरूरी है अन्यथा सभी सन्यासी और वैरागी हो जाएंगे। ज्ञानरूपी खड्ग को धारण करने वाली जिससे अज्ञान रूपी अन्धकार को काटा जाता है। भौतिक तलवार को धारण करने वाली।

233. **खड्गरुपा** – भैतिक तलवार के स्वरुप वाली। प्रत्येक वस्तु ऊर्जा अर्थात् शक्ति की बनी हो और शक्ति ही देवी हैं। रूप वह है जो आँखों से दिखाई दे। भौतिक तलवार अर्थात लोहा आदि से बनी हुई तलवार जो आँखों से दिखाई देती है, के रूप में। तलवार को दिखाने वाली। तलवार को स्वरूप देने वाली अर्थात तलवार का निर्माण करने वाली। खड्गम रूपयति इति खड्गरूपा। रूपयति का अर्थ है देखना, दिखाना, रचना करना।

234. **सुखड्गा** – सुन्दर तलवार से सुशोभित होने वाली।

235. **खड्गधारिणी** – ज्ञान रूपी तलवार को धारण करने वाली। ज्ञान की तलवार से अज्ञान रूपी अन्धकार को काटा जाता है। अपनी रक्षा के लिए या अपनी शोभा के लिए तलवार धारण करने वाली।

236. **खड्गरुपा** – खड्गेन रुपयति अर्थात् तलवार के द्वारा शत्रुओं को देखने वाली। दुष्टों को तलवार से देखती है अर्थात तलवार से बात करती हैं अर्थात् तलवार से मारने के लिए उतावली हैं। तलवार दिखाई देती है जिनके हाथ में। रुप अर्थात् जो दिखाई दे आँखों से। रूपयति का अर्थ देखना भी है और दिखाना भी है। तलवार को रूप देने वाली। रूपयति अर्थात स्वरूप देना अर्थात निर्माण करना। तलवार है ज्ञापक या बोधक जिनका। विशेष प्रकार की तलवार से पहचान ली जाती हैं कि ये देवी ही हैं। रूप्यते ज्ञाप्यते अनया इति रूपा अर्थात जिससे जाना जाए, वह रूपा है, इस प्रकार रूपा का अर्थ बोधिका या ज्ञापिका है।

237. **खड्गकरा** – जिसके हाथ में तलवार सुशोभित है।

238. **खड्गिनी** – दैहिक शक्ति से युक्त। हिन्दी कवियों ने तलवार को दैहिक शक्ति का प्रतीक माना है। रामधारी सिंह दिनकर की कविता है कलम और तलवार। इसमें कलम को ज्ञानशक्ति का तथा तलवार को दैहिक शक्ति का प्रतीक माना गया है।

239. **खड्गवल्लभा** – तलवार है प्रिय जिन्हें। वल्लभ अर्थात अतिशय प्रिय।

240. **खड्गदा** – अपने भक्तों को वरदान के रुप में अमोघ तलवार देने वाली। शत्रु की तलवार को काट देने वाली। दो अवखण्डने धातु से दा शब्दाक्षर बनाने पर खण्डन करना या काटना अर्थ आ जाता है।

241. **खड्गभावा** – तलवार के कर्म वाली, तलवार के स्वभाव वाली अर्थात दुष्टों को काटने वाली। तलवार का काम काटना होता है। शत्रु के टुकड़े करना इस भाव वाली। खड्ग के रूप में समझी जाने वाली। खड्ग शत्रु के टुकड़े करता है। तलवार के द्वारा अपने भाव (क्रोध) को प्रकट करने वाली अर्थात् क्रोध में आकर तलवार निकाल लेती हैं।

242. **खड्गदेहसमुद्भवा** – खड्ग रूपी देह से उत्पन्न होने वाले वीरता या पराक्रम स्वरूपा। तलवार की देह के रूप में उत्पन्न अर्थात तलवार के रूप में उत्पन्न अर्थात तलवारस्वरूपा। गुरू गोविन्द सिंह ने अपनी पुस्तक चण्डी दीवार में चण्डी का अर्थ तलवार बताया है। अतिशय उत्तमोत्तम शरीर से उत्पन्न होने वाली।

243. **खड्गा** – तलवार की तरह जिनमें बहुत तेज या तीक्ष्णता है। शत्रु की तलवार को नष्ट कर देने वाली या तोड़ देने वाली। खड्ग + आ, आ का एक अर्थ है नाश करना।

244. **खड्गधरा** – खड्गमुद्रा को धारण करने वाली। हाथ की अंगुलियों को मोड़कर बनाई गई मुद्राओं में एक मुद्रा का नाम खड्ग मुद्रा भी है जो देवताओं को प्रसन्न करने के काम आती है। लोहे या लोहे की कोई चीज धारण करने वाली। खड्ग का एक अर्थ लोहा भी होता है। राक्षसों को मारने के लिए तलवार को धारण करने वाली।

245. **खेला** – मन बहलाने की क्रिया या मनोरंजन कृत्य स्वरूपा। खेल वाली अर्थात जिनके लिए हर काम बहुत साधारण, मनोरंजक है।

246. **खड्गिनी** – देवताओं की रक्षा के लिए या अपनी रक्षा के लिए तलवार को धारण करने वाली। विशेष तलवार को धारण करने वाली। खड्ग पवित्र बुद्धि का प्रतीक है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ पवित्र बुद्धि वाली अर्थात पवित्र बुद्धि को धारण किये हुए। खड्ग अर्थात पवित्र बुद्धि या purified intellect, discriminating power.

247. **खड्गमण्डिनी** – तलवार से सुशोभित होने वाली।

248. **शंखिनी** – शंख को धारण करने वाली। नादशक्ति को धारण करने वाली। शंख शब्दब्रह्म या नाद का प्रतीक है। जिससे सारा नामरूपात्मक जगत पैदा होता है। शंख ज्ञानवृद्धि का सूचक है। ज्ञान की अधिकता से युक्त, शंखिनी का यह अर्थ हुआ। शंख ज्ञान के स्रोत के प्रतीक के रूप में भी माना गया है।

249. **चापिनी** – चाप अर्थात् धनुष को धारण करने वाली।

250. **देवी** – युद्ध में विजय की इच्छा रखने वाली। दिव् धातु का एक अर्थ विजिगीषा अर्थात विजय की इच्छा होती है।

251. **वज्रिणी** – वज्र को धारण करने वाली। दृढ़ निश्चय, दृढ़ संकल्पशक्ति को धारण करने वाली। वज्र firmness of character, determination का प्रतीक है, इस गुण को धारण करने वाली।

252. **शूलिनी** – त्रिशूल को धारण करने वाली। इच्छाशक्ति, ज्ञानशक्ति और क्रियाशक्ति नामक तीन शूलों को धारण करने वाली। शूल का अर्थ त्रिशूल भी होता है तथा शूल बरछी के आकार का एक अस्त्र भी होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ बरछी के आकार के शूल नामक अस्त्र को धारण करने वाली।

253. **मतिः** – सोचने समझने और निर्णय करने की शक्ति स्वरूपा। शक्तिसूत्र के अनुसार वैदिक श्रद्धा मति कहलाती है। शास्त्र विहित कार्य में श्रद्धा और निषिद्ध कर्म में त्यागभाव मति है।

254. **बालिनी** – अश्विनी नक्षत्र स्वरूपा। बालिनी का एक अर्थ अश्विनी नक्षत्र दिया गया है। बाल स्वभाव से विभूषित अर्थात् सरल स्वाभाव वाली। बल में स्वार्थ (बिना अर्थ बदले) में अण् प्रत्यय लगाने से बाल शब्द बनता है जिसका अर्थ भी बल होता है। बालिनी का अर्थ हुआ बल से युक्त अर्थात शक्ति से युक्त।

255. **भिन्दीपाली** – भिन्दिपाल आयुध को धारण करने वाली। भिन्दिपाल आयुध को धारण करने वाले शिव की पत्नी।

256. **पाशी** – पाश नामक आयुध को धारण करने वाली। पाश फन्दे की तरह का होता है इससे दुष्टों को बाँध लेती हैं। शास्त्रों में राग की उपमा पाश की है, तभी लिखा है रागस्वरूपपाशाढ्या। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ राग स्वरूप पाश को धारण करने वाली अर्थात रागशक्ति को धारण करने वाली।

257. **अंकुशी** – अंकुश नामक आयुध को धारण करने वाली। महावत हाथी को नियन्त्रित करने के लिए अंकुश का प्रयोग करता है। शास्त्रों में क्रोध को अंकुश के रूप में दिखाया गया है तभी लिखा है क्रोधाकारांकुशोज्वला। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ क्रोधशक्ति को धारण करने वाली।

258. **शरी** – बाण को धारण करने वाली। बाण गतिज ऊर्जा का प्रतीक है इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ गतिज ऊर्जा को धारण करने वाली। पंचतन्मात्राओं को भी बाण का प्रतीक माना गया है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ पंचतन्मात्रारूपी पाँच बाणों को धारण करने वाली। शरः अस्य अस्ति इति शरः, शरः का अर्थ बाण, बाण वाला (बाण धारण करने वाला) दोनो होता है। स्त्रीलिंग में शरी हुआ। शरी का अर्थ बाण धारण करने वाली, बाण धारण करने वाले पुरुष की पत्नी दोनो होता है। जब हमें गुण या विशेषता दिखानी हो तो आवश्यक नहीं है कि उसे पुरुष की पत्नी के रूप में दिखाया जाए। स्त्रीलिंग प्रत्यय में गौरादिभ्यः... सूत्र से यह स्पष्ट है। शान्ति देने वाली। राति इति रा/री अर्थात देने वाली। एकाक्षरीकोश के अनुसार श का एक अर्थ है शान्ति।

259. **धनुषी** – धनुष को धारण करने वाली। धनुष स्थितिज ऊर्जा का प्रतीक है। धनुष को ऊर्जा या शक्ति का भी प्रतीक माना जाता है इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ ऊर्जा या शक्ति को धारण करने वाली। धनुष को धारण करती हैं अर्थात संग्राम में या दुष्टों पर विजय पाने की शक्ति धारण करती हैं। मन को धनुष की उपमा दी गई है तभी लिखा गया है कि मनोरूपेक्षुकोदण्डा। कोदण्ड का अर्थ है धनुष। धनुष शक्ति के साथ साथ पवित्र (purified) चित्त का भी प्रतीक है जिससे गतिमान विचार (dynamic thoughts) रूपी बाण निकालकर अज्ञान रूपी अन्धकार के लक्ष्य को भेदा जाता है। धनुष निग्रह शक्ति का भी प्रतीक है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ दुष्टों पर निग्रह करने की शक्ति धारण करने वाली।

260. **चटकी** – गौरैया की तरह चहचहाने वाली। गौरैया के स्वरूप वाली। शत्रुओं की हिंसा करने वाली या शत्रुओं का नाश करने वाली। चटति का अर्थ है नाशयति। हिन्दी में कहते हैं कि चट कर गया अर्थात चाट गया अर्थात हिंसा करना या नाश करना। चटका पक्षी की तरह सुन्दर लगने वाली या तेजस्विता, चंचलता रखने वाली। कहते हैं पढ़ने में चटक अर्थात् अच्छा।

261. **चर्मा** – ढाल धारण करने वाली।

262. **दन्ती** – बाह्य इन्द्रियों को अच्छी प्रकार से वश में की हुई। अन्तःकरण का नियन्त्रण शम है और बाह्य इन्द्रियों का नियन्त्रण दम है। दम में क्विप् प्रत्यय लगाने से दम बन सकता है। दम् तनोति, बाह्य इन्द्रियों के वशीकरण का विस्तार करने वाली अर्थात अच्छी प्रकार से वश में करने वाली। विशाल गज के समान विशेष शक्ति से युक्त। तन् धातु में ड प्रत्यय लगाने त शब्द बनता है जिसका अर्थ है विस्तार करने वाली, निर्माण करने वाली, देने वाली। एकाक्षरीकोश से द या दं का अर्थ ले सकते हैं। अनुस्वार अवधारण (एव, ही, निश्चित रूप से) अर्थ में प्रयुक्त होता है।

263. **कर्णनालिकी** – पतवार के डण्डे की तरह संसार सागर से पार करा देने वाली। कर्ण का अर्थ है पतवार और नाल का अर्थ डण्डा। नालिकी अर्थात नाल वाली अर्थात कमलनाल वाली अर्थात कमल। इस प्रकार नालिकी का अर्थ हुआ कमल। जो कान में कमल को कान के आभूषण की तरह लटकाये। कान के नाल अर्थात विवरस्वरूपा अर्थात आकाश स्वरूपा। कान की नाली रिक्त होती है जो आकाश है। मन्त्रस्वरूपिणी क्योकि कान के आकाश में शब्द अर्थात मन्त्र होते हैं। कान के छिद्र में आकर साधक को बताने वाली जैसे कर्णपिशाचिनी

आदि। कान में कमलनाल को लटकाये हुए हैं जो। कानों में कमलनाल वाला पुष्प अर्थात् कमल धारण करने वाली। कानों के लिए भयंकर ध्वनि करने वाली।

264. **मुसली** – मूसल नामक अस्त्र को धारण करने वाली। मुसल और मूसल एक ही है। मूसल नामक अस्त्र को धारण करने वाले भगवान बलराम की पत्नी से अभेद है जिनका।

265. **हलरुपा** – हल नामक आयुध के रुप में है जो। पदार्थ भी शक्ति अर्थात् ऊर्जा अर्थात् देवी का रुप है। हल को स्वरूप देने वाली अर्थात बनाने वाली। हल को शत्रुओं को डराने के लिए दिखाने वाली। हलम् रूपयति, रूपयति का अर्थ है स्वरूप देना, दिखाना, देखना। ज्ञान रूपा। हल ज्ञान का प्रतीक है। जैसे हल भीतर के अपद्रव्य को निकाल कर बीज बोने लायक बनाता है उसी प्रकार ज्ञान भी बुरे कर्म संस्कारों को हटाकर अच्छे संस्कार रूपी बीज डालता है। अतः हल ज्ञान का प्रतीक है।

266. **तूणीरगणवासिनी** – तूणीरों अर्थात् तरकसों के मध्य में निवास करने वाली।

267. **तूणालया** – तरकश ही है घर जिसका अर्थात तरकश में रखा हुआ बाण। प्रत्येक चीज ऊर्जा या शक्ति की बनी है। देवी का अर्थ है ऊर्जा या शक्ति। इस प्रकार बाण भी देवी का रूप हुआ। तरकश में रहने वाली अर्थात बाण स्वरूपिणी। तरकस का निवास स्थान अर्थात् तरकस को धारण करने वाली।

268. **तूणहरा** – तरकश को ढोने वाली अर्थात तरकश को रखने वाली। आपने भारहरा शब्द सुना होगा जिसका अर्थ है भार को रखने वाली या ढोने वाली। तूण का अर्थ झोपड़ी के बीच का खम्बा अर्थात आधार स्तम्भ होता है। विश्व एक घर है उसकी आधार स्तम्भ अर्थात रीढ़ की हड्डी को भी प्रलय काल में समाप्त कर देने वाली। तरकस का हरण करने वाली अर्थात तकरस को ले जाने वाली अर्थात तरकस धारण करने वाली। युद्ध में तरकस को लेकर जाने वाली। शत्रुओं के तरकस को हर लेने वाली अर्थात् नष्ट कर देने वाली।

269. **तूणसम्भवरुपिणी** – तरकस से निकले हुए बाण के स्वरूप वाली। सम्भव अर्थात उत्पन्न होना अर्थात निकलना। तूणालया से इस नाम का यह भेद कि तूणालया तरकस में रखा हुआ बाण है जबकि इस नाम का अर्थ है तरकस से निकला हुआ बाण। तरकस से उत्पन्न अर्थात तीक्ष्ण बाण स्वरूपिणी। अतिशय तेज से होने वाले प्रचण्ड रुप को धारण करने वाली।

270. **सुतूणी** – सुन्दर तूणीर को धारण करने वाली।

271. **तुणखेदा** – हिंसा करने वाले, धोखेबाज या चालबाजों से खिन्न होने वाली। तुणति का अर्थ है हिंसा करना, धोखा देना। यदि तूणखेदा है तो अर्थ है भारी तरकस धारण करने के कारण श्रम वाली। तूण का अर्थ है तरकश। ख का अर्थ इन्द्रिय भी होता है तरकस में इन्द्रियों को लगा दिया है अर्थात इन्द्रियाँ या शरीर तरकस को धारण किये हुए है। खेदा का दा अक्षर दो अवखण्डने से भी बन सकता है। तब अर्थ होगा तरकस के द्वारा अर्थात बाण के द्वारा शत्रु की इन्द्रियों अर्थात शरीर को नष्ट करने वाली। अपने तूणीर में रखे गये बाणों से शत्रुओं में खेद अर्थात् खिन्नता उत्पन्न करने वाली।

272. **तूणांगी** – तरकस है अंग जिसका अर्थात तरकश को हमेशा लटकाए रहती हैं। तरकस मानों अंग है जिसका अर्थात हर अंग तीर की तरह है। तीक्ष्ण अंगों से युक्त अर्थात् तेजस्वी अंगों से सुशोभित।

273. **तूणवल्लभा** – तूणीर है अति प्रिय जिन्हें। वल्लभ अर्थात अति प्रिय।

274. **नानास्त्रधारिणी** – अनेक प्रकार के अस्त्र – शस्त्रों को धारण करने वाली।

275. **देवी** – व्यवहार करने वाली अर्थात क्रय विक्रय करने वाली। जगत के कार्यकलाप करने वाली। संसार में सभी कार्य शक्ति के द्वारा होते हैं और शक्ति ही देवी है। दिव् धातु का एक अर्थ व्यवहार है अर्थात क्रय विक्रय

है। भक्तों से उपासना लेती हैं और बदले में उनके अभीष्टों को पूरा करती हैं यही क्रय विक्रय हो गया।

276. **नानाशस्त्रसमुद्भवा** – अनेक शस्त्रों से उत्पन्न अर्थात दैत्यों की मृत्यु स्वरूपा। शत्रु नाश स्वरूपिणी। नाना शस्त्रों से शत्रु नाश ही पैदा होता है। जिसके द्वारा अनेक प्रकार के शस्त्र प्रकट किये गये हैं। अनेक शस्त्रों से उत्पन्न अर्थात राज्यलक्ष्मी स्वरूपा अर्थात युद्ध में कब्जा किया हुआ धन सम्पत्ति स्वरूपा। शस्त्रों का प्रयोग करके युद्ध में शत्रु की सम्पत्ति, धन, स्त्री आदि पर कब्जा कर लिया जाता है।

277. **लाक्षा** – लाख नामक पदार्थ की तरह लाल रंग वाली। लाक्षा लाख नामक लाल पदार्थ है जो विशिष्ट वृक्षों की टहनियों पर लाल रंग के छोटे कीड़ों से पैदा होता है। लाक्षारस का अर्थ है महावर, जो पानी में लाख को औटाकर बनाया जाता है। इस प्रकार लाक्षा का अर्थ हुआ – महावर को धारण किये हुए अर्थात पैर में महावर लगाये हुए। लाक्षा अस्याः अस्ति इति लाक्षा अर्थात महावर को धारण किये हुए। महावर की तरह लाल रंग वाली यह अर्थ भी कर सकते हैं। लाक्षा या महावर के स्वरुप वाली। प्रत्येक पदार्थ शक्ति या देवी का रुप है। सुन्दर स्वरुप वाली क्योकि महावर लगाने से सुन्दर स्वरुप को धारण कर लिया।

278. **लक्षहरा** – लाखों अर्थात् अनेक प्रकार की विपत्तियों/कष्टों को हरने वाली।

279. **लाभा** – गणेश जी के पुत्र लाभ की शक्ति स्वरुपा। गड़ा हुआ धन या गड़ी हुई सम्पत्ति स्वरूपा। लाभ स्वरुपा अर्थात् प्राप्ति स्वरूपा। लाभ देने वाली लाभ+आ, आ का अर्थ है देना।

280. **सुलाभा** – सुन्दर प्रत्यक्ष ज्ञान स्वरूपा। लाभ का एक अर्थ है प्रत्यक्ष ज्ञान। सुन्दर लाभ (प्राप्ति) स्वरुपा। उनके पास जो कुछ है वह इसलिए अच्छा है क्योंकि उससे दूसरों का भला होता है। अच्छे लाभ को देने वाली। सुन्दर ढंग से सुशोभित आभा या प्रकाश वाली। सु+लसन्+आभा।

281. **लाभनाशिनी** – शत्रुओं या दुष्ट राक्षसों के लाभों (धन सम्पत्ति) को नष्ट करने वाली। लाभ का एक अर्थ धन सम्पत्ति भी है।

282. **लाभहारा** – सांसारिक लाभ का हरण करने वाली। धन सम्पत्ति को हरने वाली। ईश्वर जिस भक्त पर कृपा करता है उसकी सांसारिक प्राप्तियों को सबसे पहले हर लेता है। भक्तों के सांसारिक लाभ अर्थात असत्य धन का नाश करने वाली। दुष्टों के लाभ का हरण करने वाली यह अर्थ भी कर सकते हैं। लाभ रूपी हार को अपने गले में धारण करने वाली अर्थात भक्तों को लाभ देने वाली। शत्रुओं के लाभ का हरण करने वाली अर्थात उन्हें नुकसान पहुँचाने वाली। लाभों की माला धारण करने वाली। अपने भक्तों को अनेक लाभों को पहुँचाने वाली। वैरागी का सांसारिक लाभ नष्ट करने वाली या दूर करने वाली। सांसारिक लाभ असत्य लाभ होता है। वैरागी के अन्दर वैराग्य की भावना पैदा कर उसे सांसारिक वस्तुओं की प्राप्ति से दूर कर देती हैं। असत्य लाभ या मिथ्या लाभ का नाश करने वाली। क्षणिक लाभ मिथ्या लाभ है। लौकिक काम, क्रोध, लोभ, मोह परक लाभों को नष्ट कर देने वाली।

283. **लाभकरा** – उपासकों को लाभ करने वाली या करा देने वाली। लाभ का अर्थ है फायदा, विजय, उपकार (भलाई), सुख/प्रसन्नता।

284. **लाभिनी** – लाभी अर्थात शिव की पत्नी। शिव को पार्वती जी मिली इसलिए शिव लाभी हुये। लाभ+इनि, लाभिन् बना जिसके एक वचन में लाभी रूप बनता है। जिस भक्त में भक्तिरूपी प्राप्ति या लाभ है उससे अभेद रखने वाली। लाभ वाली अर्थात उपासकों के लिए लाभ देने वाली। उपासकों को धन विद्या आदि की जो प्राप्ति होती है, वह लाभ ही है और यह लाभ देवी में मौजूद है। लाभ से युक्त।

285. **लाभरुपिणी** – लाभस्वरुपा अर्थात धन–सम्पत्ति स्वरूपा, प्रत्यक्ष ज्ञान या अनुभूति स्वरूपा।

286. **धरित्री** – धरिणी अर्थात पृथ्वी स्वरुपा।

287. **धनदा** – अपने उपासकों को धन प्रदान करने वाली। हर प्रकार का धन जैसे विद्या धन, गोधन, गजधन, वाजि धन, रतन धन, सन्तोष धन आदि देने वाली। भगवान का नाम सबसे बड़ा धन है। कुछ लोग साँस अर्थात प्राण को बहुत बड़ा धन मानते हैं।

288. **धान्या** – धान्य वाली अर्थात जिसके पास बहुत सा धान्य है। धान्यम् अस्या अस्ति इति धान्यः, स्त्रीलिंग में धान्या। धान्य अर्थात् फसल या अनाजस्वरुपा। धान्य के अन्दर निहित शक्तिस्वरूपा। जो धारण होता है, जिसे सँभाल कर रखा जाता है वह धान्य है। धान्यलक्ष्मी स्वरुपा।

289. **धान्यरुपा** – अनाज के स्वरूप वाली। धान्य के रुप में दिखाई देने वाली। जिसका धान्य या अनाज दिखता है। रूप वह है जो आँखों से दिखाई दे। धान्य का निर्माण करने वाली। धान्यम् रूपयति इति धान्यरूपा।

290. **धरा** – सबको धारण करने वाली। शब्दकल्पद्रुम में लिखा है धरति जीवसंधानिति धरा। ध्रियते शेषेण इति धरा अर्थात जिसे शेषनाग ने धारण किया है अर्थात पृथ्वी स्वरूपा। राति इति रा/री अर्थात देने वाली। एकाक्षरीकोश से ध के अर्थ लेकर या ऐसे शब्द लेकर जो ध से आरम्भ होते हैं, अन्य अर्थ किये जा सकते हैं।

291. **धनु** – धनुर्वेद या धनुरासन स्वरूपा। धन्यते, धनम् प्राप्यते अनेन इति धनुः, धनुर्वेद स्वरूपा। धन्यते हन्यते अनेन इति धनुः अर्थात धनुष। धनुराशि स्वरूपा। धनुषस्वरुपा। इड़ा और पिंगला नाड़ियाँ धनुषाकार आकृति की हैं अतः इड़ा और पिंगला नाड़ी स्वरूपा।

292. **धुरशब्दा** – धुर अर्थात श्रेष्ठ शब्द वाली। श्रेष्ठ वेद आदि के शब्दों को उच्चारण करने वाली अर्थात् उन्हें धारण करने वाली। हिंसक शब्द वाली। अपने शब्द मात्र से दैत्यों को मार देने वाली। दुर्गासप्तशती में आया है कि देवी के हुंकार मात्र से अनेक असुर मारे गये। धुरी हिंसायाम् धातु से धुर का हिंसक अर्थ आया।

293. **धुरा** – अग्रणी। श्रेष्ठ कार्यों में आगे रहने वाली। एकाक्षरीकोश से धु के अर्थ लेकर एवं रा का अर्थ देने वाली लेकर अर्थ बना सकते हैं। जैसे धु अर्थात चिन्ता। दुष्टों को चिन्ता देने वाली। धु अर्थात तनु (शरीर) उपासकों को स्वस्थ शरीर देने वाली।

294. **मान्या** – सभी के द्वारा माननीय या सम्माननीय। जिनके बराबर कोई दूसरा नहीं है। मा अर्थात नहीं, अन्य अर्थात दूसरा। इनके गुणों, शक्ति आदि में इनके बराबर कोई नहीं है।

295. **धरांगी** – पृथ्वी है अंग जिसका अर्थात विराट् स्वरूप वाली। विराट् स्वरूप में पृथ्वी भी भगवान के एक अंग की तरह नजर आती है। धरा अर्थात पृथ्वी है अंग जिसकी अर्थात सम्पूर्ण ब्रह्माण्डस्वरूपिणी। सम्पूर्ण पृथ्वी की प्रधान अंग स्वरुपा, यह अर्थ भी कर सकते हैं।

296. **धननाशिनी** – लौकिक धनों का या जागतिक धनों का अन्ततोगत्वा नाश कर देने वाली। लौकिक धन का एक दिन नाश अवश्य होता है। दुष्टों के धन वैभवों को नष्ट करने वाली।

297. **धनहा** – गलत रास्ते से आये हुए धन का नाश करने वाली या त्याग कर देने वाली। ऐसे धन को स्वीकार नहीं करती हैं। रिश्ते सम्बन्धी धन को या क्षणिक धन की आसक्ति को भक्तों से दूर करने वाली, त्याग करा देने वाली। हन्ति से हा शब्द बनायेंगे तो अर्थ होगा नष्ट करने वाला। हा जहाति से हा बनायेगे तो अर्थ होगा त्याग करने वाला। रिश्ते सम्बन्धी रूपी धन को खत्म कर देने वाली। दुष्ट दैत्यों के धन को हर लेने वाली।

298. **धनलाभा** – अपने भक्तों और सज्जनों को धन का लाभ कराने वाली। वास्तविक धन जैसे भगवान के नाम रूपी धन को प्राप्त कराने वाली। मनुष्य को मिली हुई साँस भी धन है क्योंकि यह गिनती की मिली होती हैं। यदि भक्त निर्धन है तो उसे भौतिक धन प्राप्त करा देने वाली।

299. **धनलभ्या** – भगवान नाम रुपी या भक्ति रूपी धन या तपस्या रूपी धन द्वारा प्राप्त होने योग्य। विशेष साधना/पूजा रुपी धन से प्राप्त होने योग्य।

300. **महाधनु** – विशाल धनुष को धारण करने वाली। धनुः का अर्थ धनुष भी है और धनुष धारण करने वाला भी है।

301. **अशान्ता** – राक्षसों के वध के लिए अशान्त होने वाली। देवी स्वभाविक रुप से शान्त रहती हैं। जिनके समान कोई शान्त नहीं है अर्थात जिनसे अधिक शान्त कोई नहीं है। यहाँ अशान्ता के अ से असदृश शब्द लिया गया। अधिक शान्त, अत्यन्त शान्त, महाप्रलय के दौरान पानी भी नहीं हिलता। अशान्ता में आ का अर्थ अधिक लिया। हमेशा गतिमान संसारस्वरूपा। सारा संसार एक क्षण के लिए भी नहीं रूकता हर क्षण गतिमान।

302. **शान्तिरुपा** – स्वतः या स्वाभाविक रुप से शान्तिस्वरुपा अर्थात् जिनके मन में कोई हलचल नहीं होती, मन स्थिर रहता है। शान्ति का निर्माण करने वाली अर्थात उत्पत्ति करने वाली। शान्ति है ज्ञापिका जिनकी अर्था शान्ति से जिनका बोध होता है। अथाह शान्ति गुण को देखकर व्यक्ति को बोध होता है कि यह देवी ही हैं।

303. **श्वासमार्गनिवासिनी** – श्वास के मार्ग अर्थात् नाक में निवास करने वाली प्राणस्वरुपा।

304. **गगणा** – ज्ञान के समूह स्वरूप वाली। ग का अर्थ है ज्ञान। कोई भी गमनशील वस्तु ग है। आकाश स्वरूपा यदि गगण का अर्थ गगन हो।

305. **गणसेव्या** – देवगणों द्वारा उपासनीया। (यदि गगणागणसेव्या एक नाम है तो अर्थ है आकाश में जो सभी समूह हैं अर्थात नक्षत्र मण्डल हैं उनके द्वारा सेविता या उपासनीया। आगण का अर्थ है सम्पूर्ण समूह। गगण अर्थात गगन अर्थात आकाश। चूँकि नक्षत्र मण्डल इसमें गति करते हैं अतः आकाश को गगन कहते हैं। जितने भी गतिशील प्राणी हैं उनके समूह के द्वारा सेवित या पूजित। गगणा का अर्थ है गतिशील प्राणी। ग का अर्थ है जो गति करता है, ग अर्थात् जितनी भी गतिशील वस्तुऐं प्राणी हैं, गगणा का अर्थ है दुनिया में गति की समस्त रुपा। देवगणों के द्वारा पूजित)। गगणागणसेव्या का अर्थ ज्ञान के समूह से सेवित भी कर सकते हैं अर्थात ज्ञान के जितने भी समूह है जैसे यज्ञविद्या, कर्मविद्या, भौतिक, रसायन विज्ञान आदि।

306. **गगणांगा** – दुनिया में गति की समष्टि रुपा जिसके अवयव हैं। गतिशील वस्तऐं या प्राणी जिनके अवयव हैं। जिनके शरीर के अवयवों में देवगणों का निवास है।

307. **वाक्** – जो इन्द्रिय को बोलने की शक्ति दे अर्थात् वह शक्ति जिसके कारण मनुष्य बोल पाता है। वैदिक परम्परा में वाक् ब्रह्म के साथ रहने वाली वह शक्ति है जो स्पन्दन करती है तथा जिस स्पन्दन से नाद होता एवं नाद से शब्द होता। मूलाधार चक्र में अनादिनिधन शब्द वाक् के रूप में होता है। परा, पश्यन्ती, मध्यमा एवं वैखरी यह चार वाक् के स्तर है। कहीं पर यह भी लिखा है कि वाक् मन और वाणी से परे है। वाणी स्वरूपा।

308. **अवल्लभा** – दुष्टों और नास्तिकों को पसन्द नहीं आने वाली। (यदि वागवल्लभा एक नाम है तो अर्थ होगा वाणी या सरस्वती को प्रिय। (गगणांगावागवल्लभा एक नाम होता तब अर्थ होता ब्रह्माण्ड में जड़ या मूर्ख जिसे पसन्द नहीं है। गगणांग+अवाग्+अवल्लभा) आकाश–गण जिसका अंग है वह है गगणांग अर्थात ब्रह्माण्ड। अवाग् अर्थात वाणी रहित अर्थात मूर्ख या जड़)।

309. **गणदा** – देवगणों को सब कुछ प्रदान करने वाली। देवगणों को शक्ति देने वाली। समूह को देने वाली या सेवक वर्ग को देने वाली।

310. **गणहा** – दुष्ट दैत्यों या राक्षस गण या समूह को नष्ट कर देने वाली। दुष्टों का त्याग कर देने वाली। यदि हन् धातु से हा बनायेगे तो मारना या नष्ट करना अर्थ होगा। यदि ओहाक् त्यागे धातु से हा शब्द बनायेंगे तो त्यागना या दूर करना अर्थ होगा।

311. **गम्या** – भक्तों या साधकों द्वारा जानने योग्य। भक्तजनों के द्वारा प्राप्त करने योग्य अर्थात् भक्तजन जिन्हें हमेशा प्राप्त करना चाहते हैं।

312. **गमना** – रास्ता या मार्ग स्वरूपा अर्थात सन्मार्ग स्वरूपा। वैशेषिक दर्शन के गमन नामक कर्म स्वरूपा। वहाँ पाँच प्रकार के कर्म बताये गये हैं जिसमें किसी वस्तु के क्रमशः एक स्थान से दूसरे स्थान को प्राप्त करने का कर्म गमन कर्म कहलाता है। जाना, चलना, यात्रा करना, प्राप्त करना, पहुँचना रूपी कर्म स्वरूपा। ज्ञान स्वरूपा। गमन का अर्थ ज्ञान भी होता है। गतिशील, उत्तरोत्तर उन्नति की ओर या श्रेष्ठ मूल्यों की ओर जाने वाली।

313. **आगमसुन्दरी** – आगमों में जिनके सुन्दर स्वरुप का वर्णन किया गया है। (यदि गमनागमसुन्दरी एक नाम हो तो अर्थ होगा ज्ञानयुक्त आगम रूपी सुन्दरी। ज्ञानात्मक शास्त्र स्वरूपा सुन्दरी।)

314. **गम्यदा** – जानने योग्य या प्राप्त करने योग्य को देने वाली अर्थात् प्राप्त करा देने वाली। जानने योग्य प्रश्न को जनवाने वाली अर्थात उसे देने वाली अर्थात उसका उत्तर बताने वाली या प्राप्त कराने वाली, तुरन्त उत्तर मिल जाता है। जिसके पास पहुँचना होता है उसे प्राप्त करवा देती हैं अर्थात इष्ट देवता तक पहुँचा देती है या योग्य गुरू की प्राप्ति करा देती है। ध्यान करने वालों को सब कुछ देने वाली।

315. **गणनाशी** – दुष्ट दैत्यों के समूहों का नाश करने वाली। गण का अर्थ है समूह।

316. **गदहा** – रोगों को नष्ट कर देने वाली। रोगों को दूर कर देने वाली।

317. **गदवर्धिनी** – दुष्टो शत्रुओं के रोगों अर्थात् विपत्तियों को बढ़ा देने वाली। गद का अर्थ है रोग।

318. **स्थैर्या** – मन की दृढ़ता, धैर्य शीलता या सहनशीलता स्वरूपा। मन की दृढ़ता, धैर्यशीलता, सहनशीलता को देने वाली। स्थैर्य +आ, स्थैर्य का अर्थ है धैर्यशीलता, सहनशीलता, मन की दृढ़ता और आ का अर्थ है देना। स्थैर्य का अर्थ है स्थिर होने का भाव, स्थायित्व, निरन्तरता, दृढ़ता, मजबूती, जितेन्द्रिय होने का भाव, ठोसपन। स्थिरता से सुशोभित। जहाँ पर आप इस समय हो, उससे गिरने नहीं देना स्थिरता है।

319. **स्थैर्यनाशा** – दुष्टों की स्थिरता का नाश करने वाली अर्थात दुष्टों को मिटा देने वाली। दुष्टों की स्थिरता या व्यवस्था को भंग करने वाली।

320. **स्थैर्यान्तकरिणी** – राक्षसों की स्थिरता (स्थायित्व या निरन्तरता) का अन्त करने वाली या खत्म कर देने वाली। जो स्थिर स्वरूपा है तथा राक्षसों का अन्त करती है। स्थैर्या च अन्तकारिणी च। शत्रुओं का अन्त करके ही विराम लेती है।

321. **कुला** – श्रेष्ठ कुल से युक्त। मूलाधार चक्र वाली अर्थात मूलाधार चक्र में विराजमान। कुलम् अस्या अस्ति इति कुला। मूलाधारचक्र स्वरूपा। मूलाधार चक्र की शक्ति स्वरुपा। कुल का एक अर्थ है मूलाधारचक्र। बुराइयों को नष्ट करने वाली। कु अर्थात कुत्सा अर्थात बुराई। लाति इति ला, ला का अर्थ ग्रहण करना, नष्ट करना होता है।

322. **दात्री** – भक्तों को सब कुछ या उनकी जरुरत की चीजों को प्रदान करने वाली।

323. **कर्त्री** – सब कुछ कर देने वाली। वास्तव में एकमात्र कर्ता देवी ही हैं, क्योंकि वे शक्ति स्वरुप होकर सभी के भीतर प्रविष्ट होकर करवाती हैं। प्राणी नहीं बल्कि प्राणी के भीतर रहने वाली शक्ति सब करती है।

324. **प्रिया** – भक्तों के मन को अच्छी लगने वाली। प्रीयते इति प्रिया। मन को अतिशय प्रसन्न करने वाली। प्रीणाति इति प्रिया अर्थात जो प्रसन्न करे वह प्रिय या प्रिया है।

325. **प्रेमा** – प्रेम या भक्ति स्वरुपा।

326. **प्रियदा** – प्रिय वस्तु को देने वाली। जिससे मन प्रसन्न होता है वह है प्रिय। मन को खुश करने वाली। अभीष्ट वस्तुओं को प्रदान कर प्रसन्न करने वाली।

327. **प्रियवर्धिनी** – प्रिय वस्तुओं या चाहे गये पदार्थों को बढ़ाने वाली। अपने प्रिय शिव या प्रिय भक्तों की उन्नति करने वाली। जिन भक्तों को पसन्द करती हैं उनकी उन्नति करने वाली।

328. **प्रियहा** – काम, क्रोध, लोभ, मोह जो इन्द्रियों को अच्छे लगने वाले विकार हैं, उन्हें नष्ट कर देने वाली। भक्त की इन्द्रियों को अच्छे लगने वाले विषयों को नष्ट करने वाली जिससे वे क्षणिक सुख की बजाए स्थाई आनन्द अर्थात मोक्ष की प्राप्ति को जाए अर्थात उस प्राप्त करें। प्रिय को बुलाने वाली या पुकारने वाली अर्थात शिव को बुलाने वाली। हा का अर्थ छोड़ना भी होता है और बुलाना भी होता है जैसे स्वाहा में हवि छोड़ना और देवताओं को बुलाना दोनो अर्थ आते हैं। जिसकी प्राप्ति से प्रसन्नता होती है वह है प्रिय।

329. **प्रियभव्या** – जो देखने में प्रिय और सुन्दर है। जो अच्छी लगती हैं तथा प्रीति देने वाली है। उपासको के लिए प्रिय होने वाली। भविष्य में प्रीति देने वाली। भव्या का अर्थ सुन्दर भी होता है और भविष्य में होने वाला भी होता है। अतिशय प्रिय लगने वाली अतः भव्य स्वरुप वाली।

330. **प्रिया** – हृदय को प्रिय लगने वाली, हृदय को लुभाने वाली। अभीष्ट प्रदान कर प्रसन्नता देने वाली। प्रीणाति इति प्रिया। प्रीयते इति प्रिया से प्रिया बनाने पर प्रिया का अर्थ प्रसन्न होने वाली होता है। भक्ति से प्रसन्न होने वाली। प्रीणाति इति प्रिया से प्रिया का अर्थ प्रसन्न करने वाली होता है।

331. **प्रेमांघ्रिपातनु** – प्रेमपूर्वक चरणों में आये हुए भक्त की रक्षा करने वाले शरीर वाली। अंघ्रि का अर्थ है चरण और पा का अर्थ है पाति अर्थात रक्षा करना। प्रेमरुपी चरण कमलों से (के द्वारा) रक्षा करने वाली और अतिशय सुन्दर स्वरुप वाली। तनु का अर्थ पतला किन्तु सुन्दरता के अर्थ में है। दुबले पतले शरीर के कारण सुन्दर स्त्री को तन्वी कहते हैं। प्रेमपूर्वक अर्चना करने वालों की अपने चरणों से रक्षा करने वाले शरीर वाली। (यदि प्रियप्रेमांघ्रिपातनु एक शब्द हो तो अर्थ होगा प्रिय के प्रेम रूपी चरण में पड़ने वाले शरीर वाली अर्थात प्रिय के प्यारे चरण को प्रणाम करने वाली। पा का अर्थ रक्षा करना भी होता है। तब अर्थ होगा प्रिय के प्रेम रूपी चरण की रक्षा करने वाले शरीर वाली अर्थात प्रिय के प्रेम की रक्षा करने वाली।)

332. **प्रियजा** – जो उपासक देवी के लिए प्रिय हैं, उनके समक्ष प्रकट हो जाने वाली। अपने प्रिय शिव के समक्ष प्रकट हो जाने वाली। अभीष्ट पदार्थ पैदा होते हैं जिनसे अर्थात भक्तों को उनका अभीष्ट देने वाली। कार्तिकेय उत्पन्न हुए हैं जिनसे। प्रिय का एक अर्थ कार्तिकेय है। ऋद्धि उत्पन्न हुई है जिनसे। प्रिय का एक अर्थ ऋद्धि भी है। प्रिय का अर्थ है जिसके प्रति बहुत अधिक स्नेह या प्रेम हो, मन को अच्छा लगने वाला, प्यारा, प्रसन्न करने वाला। प्रीति से उत्पन्न अर्थात भक्ति से प्रकट होने वाली। प्रीतिकारक श्रेष्ठ तत्वों से उत्पन्न होने वाली।

333. **प्रियभव्या** – प्रिय होने के कारण भव्य लगने वाली अर्थात् सुन्दर या आकर्षक लगने वाली।

334. **प्रियस्था** – अपने प्रिय भगवान शिव में अर्द्धनारीश्वर रूप में स्थित या भगवान शिव के साथ रहने वाली। प्रिय पदार्थों में रहने वाली।

335. **भवनस्थिता** – भवन अर्थात् श्रेष्ठ मन्दिरों में रहने वाली।

336. **सुस्थिरा** – अच्छी प्रकार से स्थित अर्थात उन्हें कोई डिगा नहीं सकता।

337. **स्थिररुपा** – स्थिररुप वाली। सर्वव्यापक होने के कारण और बढ़ना सम्भव नहीं है, अतः वे स्थिर हैं।

338. **स्थिरदा** – स्थिरता देने वाली अर्थात् भक्त को अपनी वर्तमान स्थिति से नीचे नहीं गिरने देतीं हैं।

339. **स्थैर्यवर्हिणी** – स्थिरता रूपी मोर पंख वाली अर्थात स्थिरता रूपी चिन्ह वाली। स्थिरता जिनकी निशानी है। स्थिरता के कारण मोर के समान सुन्दर। स्थिरता के सौन्दर्य से सुशोभित। मोर सुन्दर होता है।

340. **चंचला** – वायुस्वरूपा। वायु की शक्ति स्वरूपा। चंचल + आ, एकाक्षरी कोष में आ का एक अर्थ शक्ति दिया गया है। वायु का एक पर्यायवाची चंचल दिया गया है। चंचल स्वभाव वाली। एकाक्षरीकोश में चं का विमल, चरित्र, सुख दिया गया है। च का अर्थ चन्द्र, शोभा आदि दिया गया है। इस प्रकार श्रेष्ठ चरित्र एवं शोभा को धारण करने वाली अर्थ आया। निर्मल चन्द्र को धारण करने वाली अर्थ हो सकता है।

341. **चपला** – अति फुर्तीली। विद्युत स्वरूपिणी अर्थात बिजली की तरह उज्जवल वर्ण वाली या शत्रुओं पर तेजी से झपटने वाली। च+प+ला। च का अर्थ शोभा, चेतना, मुख, चन्द्र। प का अर्थ प्रकाश, परित्राण आदि हैं। लाति इति ला अर्थात धारण करने वाली, नाश करने वाली। चन्द्र प्रकाश धारण करने वाली यह अर्थ हुआ। चेतन शक्ति एवं परित्राण शक्ति को धारण करने वाली।

342. **चोला** – श्रेष्ठ वस्त्रों से सुशोभित होने वाली। जगत की चुनरी स्वरूपा अर्थात जगत का बाहरी आवरण। चोल अर्थात वस्त्र और वस्त्र के अन्दर ही शरीर होता है। च+उ+ला। च+ऊ+ला। चन्द्रधारी शिव को धारण करने वाली अर्थात उनके साथ रहने वाली। उ अर्थात शिव। च का अर्थ भी चन्द्र है और उ का अर्थ भी चन्द्र है। चन्द्र का अर्थ आह्लादकारी ले सकते हैं। इस प्रकार चोला का अर्थ हुआ आह्लादकारी चन्द्र को धारण करने वाली।

343. **चपलांगनिवासिनी** – सुन्दरियों में निवास करने वाली। चंचलाक्षि यह सुन्दरियों के लिये प्रयोग किया जाता है क्योंकि उनके नेत्र चंचल होते हैं। यहाँ अंग से तात्पर्य नेत्र रूपी अंग हो सकता है। चंचल अंगों में निवास करने वाली। यहाँ चंचल अंग से तात्पर्य सुन्दर अंग ले सकते हैं क्योंकि कभी कभी चंचलता से किसी अंग की शोभा बढ़ जाती है।

344. **गौरी** – गोरे रंग वाली या पार्वती स्वरुपा। गुरते उद्युंक्ते इति गौरी। जो चित्त को ऊपर उठा दे अर्थात अपनी ओर आकर्षित करे वह गौरी है। गुर उद्यमने धातु होती है और उद्यमन का अर्थ है ऊपर उठाना। पूर्ण शक्ति स्वरूपा। गौर वर्ण पूर्णता का प्रतीक है।

345. **काली** – प्रलय काल में सारे संसार का संहार कर देने वाली। कलयति संहारयति इति काली। जो काल का भी संहार कर दे। जो काल का भय समाप्त कर दे। काल अर्थात भगवान शिव की पत्नी या शक्ति स्वरूपा। ब्रह्म की क्रियाशक्ति रूपा पराशक्ति।

346. **छिन्ना** – अहंकार राहित्य का गुण धारण करने वाली अर्थात जिसमें अहंकार नहीं है। छिन्न अर्थात सिर या मस्तक नहीं है। सिर या मस्तक नहीं होने से अहंकार भी नहीं होगा क्योंकि अहंकार सिर या मस्तक में रहता है। अहंकार को नष्ट करने वाली यह तात्पर्य हुआ। जिन साधकों का आज्ञाचक्र भेदन अर्थात कपाल भेदन हुआ है उनसे अभेद है जिनका। मन की चंचलता को छिन्न करने वाली जिससे कुण्डलिनी शक्ति मूलाधार से उठकर सहस्रार तक पहुँच जाती है। छिन्न+आ, आ का अर्थ है देना। इस प्रकार छिन्ना का अर्थ छिन्नता देने वाला या छिन्न करने वाला निकला। जिस मन्त्र के आगे या बीच में या बाद में कुछ अक्षर कम, ज्यादा हों वे छिन्न मन्त्र कहलाते हैं। ऐसे छिन्न मन्त्र की शक्ति स्वरूपा। वामन आप्टे के संस्कृत – हिन्दी शब्दकोश में छिन्ना का अर्थ वैश्या दिया गया है सम्भवतः जिनका पातिव्रत्य छिन्न है, वे छिन्ना कहलाती हैं। देवी के सन्दर्भ में अर्थ यह होगा कि जो भी उन्हें बुलाते है, जो भी उन्हें पुकारते हैं उनके पास चली आती हैं। वैश्या की तरह सजी – धजी। जिनका मस्तक छिन्न हो गया था अर्थात् छिन्नमस्ता देवी स्वरुपा। छिन्ना (अर्थात वैश्या) की तरह सजी धजी। एक पदार्थ से दूसरे पदार्थ में भेद के रूप में स्थित या भेद करने वाली। छेदन का अर्थ भेदन भी होता है।

वैशेषिक दर्शन में विशेष नाम का पदार्थ बताया गया है जो दो परमाणुओं के बीच भेद करता है। उत्तरपदलोपी समास मानते हुए छिन्ना को छिन्नमस्त कह सकते है। सर्वव्यापी पदार्थों जैसे आकाश, वायु आदि का मस्तक नही होता है अर्थात् कोई अंग नही होता है। एक नियम है कि प्रमुख हिस्से का नाम लेने से बाकी सभी का बोध हो जाता है। मस्तक शरीर के प्रधान अंग है, इसको कहने से शरीर के सभी अंगों का बोध हो जाता है। इस प्रकार छिन्ना का अर्थ हुआ जो सर्वव्यापक है। मस्तक में ही विचार होते है, इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ जो विचार रहित है अर्थात् हमेशा वर्तमान में विद्यमान रहती है। बच्चे ज्यादा सोचते–विचारते नहीं है जिसके कारण उनमें मासूमियता रहती है। इस कारण छिन्नमस्त का अर्थ बच्चों जैसी मासूमियता रखने वाली भी होता है। शब्दकोष में छिन्न का अर्थ वैश्य दिया गया है जिसका अर्थ है सभी के द्वारा उपभोग की जाने वाली योग्य। देवी के सन्दर्भ में छिन्न का अर्थ होगा जो भी उन्हें याद करता है उनके पास मदद करने के लिए चली आती है। किसी से अलग हुयी चीज को भी छिन्न कहते है। इस नाम का अर्थ हुआ सूर्य के उस प्रकाश या तेज के स्वरूप वाली जो उससे अलग हो चुका है। सूर्य का प्रकाश विभिन्न पदार्थों में पड़ता है और ये पदार्थ उस प्रकाश या तेज को शोषित करते है। अधिकांश प्रकाश या ऊष्मा सूर्यास्त के पहले सूर्य में वापस लौट जाती है पर उस प्रकाश या तेज या ऊष्मा ऐसी भी होती है कि सूर्यास्त कें बाद भी नही लौट पाती है और वह उस पदार्थ का अंग बन जाती है। इस प्रकार अलग हुये तेज को भी छिन्न कहते है। जो समाज से अलग है अर्थात् कोई भी उसके समान नही है, वह छिन्न है। छिन्न मन्त्र में भी विराजमान (शक्ति रूप में)। कुछ अक्षरों के कम होने से मन्त्र छिन्न हो जाता है।

347. **माया** – अहम् और इदम् का भेद कराने वाली शक्ति। माया के कारण ही यह जगत नानाभेदों के रूप में प्रकट हो जाता है। मिथ्याज्ञान देने वाली शक्ति। वह शक्ति जो अखण्ड सत्ता में भी भेद दिखा देती है अर्थात भेद पैदा करने वाली शक्ति। मीयते विश्वम् अस्याम् इति माया अर्थात जिसमें जगत की प्रतीति हो। वह शक्ति जिसके कारण परमात्मा का स्वरूप छिप जाता है और वह दूसरे रूप में दिखाई देता है।

348. **मान्या** – माननीया अर्थात् लोगों द्वारा सम्मानित।

349. **हरप्रिया** – शिवजी की प्रिया अर्थात् शिवजी जिन्हें पसन्द करते हैं।

350. **सुन्दरी** – अतिशय सुन्दर रुप को धारण करने वाली। सुष्ठु द्रियते इति सुन्दरी अर्थात जो शोभन रूप के कारण या शोभा आदि गुणों के कारण आदर को प्राप्त होती है वह सुन्दरी है। सुष्ठु उनत्ति चित्तम् द्रवीकरोति इति सुन्दरी अर्थात जो सामने वाले व्यक्ति के चित्त को पिघला दे अर्थात उस पर अपना अधिकार कर ले वह सुन्दरी है।

351. **त्रिपुरा** – मन, बुद्धि और चित्त इन तीन पुरों में निवास करने वाली। तीन पुरों अर्थात् इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना नाड़ी में निवास करने वाली।

352. **भव्या** – भव्य अर्थात् सुन्दर स्वरुप वाली। ऐसी सुन्दरता जो दूसरे को प्रभावित करे, जिससे दूसरों में आदरभाव जाग्रत हो भव्यता कहलाती है। कभी कभी भव्यता का अर्थ विशालता और सुन्दरता होता है।

353. **त्रिपुरेश्वरवासिनी** – तीन पुरों अर्थात् तीन लोकों के ईश्वर शिव में या शिव के साथ निवास करने वाली। त्रिपुर नामक राक्षस का नाश करने वाले अर्थात शिव में वास करने वाली। ईश्वर का अर्थ पैदा करना, पालन करना और नाश करना है।

354. **त्रिपुरनाशिनी** – त्रिपुर पर राज करने वाले त्रिपुरासुर का अदर्शन अर्थात ओझल करने वाली। नश अदर्शने धातु होती है। शिव ने मारा अर्थात शिव की शक्ति ने मारा।

355. **देवी** – देना जिनका स्वभाव है। देवी या देवता वे हैं जो उपासकों को उनका अभीष्ट देते हैं। (देवी शब्द के बहुत से अर्थ हैं। संस्कृत व्याकरण में दिवादि गण की दिव् धातु के 10 अर्थ बताये है जो है– दिवु कीडा–विजिगीषा–व्यवहार–द्युति–स्तुति–मोद–मद–स्वप्न–कान्ति–गतिषु अर्थात् क्रीड़ा करना, विजिगीषा (जीतने की इच्छा करना), व्यवहार (क्रय–विक्रय करना या कोई भी कार्य करना), द्युति (चमकना), स्तुति (स्तुति या प्रशंसा करना), मोद (प्रसन्न या आनन्दित होना), मद (पीकर मस्त होना), स्वप्न (शयन करना), कान्ति (इच्छा करना), गति (गमन करना या ज्ञान करन या प्राप्त करना)। इन 10 अर्थों से 10 या 10 से अधिक अर्थ किये जा सकते हैं। इस प्रकार देवी नाम के अर्थ होगें– 1. जो क्रीड़ा करती है अर्थात् जगत की सृष्टि, पालन एवं संहार रूपी क्रीड़ा करती है। जो अपने आपको माया के पर्दे से छिपाकर भक्तो के साथ आँख मिचौली का खेल खेलती है। 2. जो असुरों के साथ युद्ध में जीतने की इच्छा रखती है। 3. जो क्रय–विक्रय करती है अर्थात् भक्तों से भक्ति या अन्य साधना ग्रहण करती है और बदले में उन्हें अपनी कृपा देती है। जो प्रत्येक प्रकार की क्रिया करती है। आत्मस्वरूप होने के कारण यही प्राणों को एवं इन्द्रियों को शक्ति देती है। इन्द्रियों एवं मन के द्वारा किये गये कार्य मूल रूप से आत्मा के द्वारा दी गयी शक्ति से ही होता है अर्थात् देवी के द्वारा ही होता है। 4. जो प्रकाशमान है। प्रकाश से बनी हुई है और स्वयं प्रकाशित हो रही है। देवी–देवताओं का शरीर मनुष्य की तरह पंचतत्वों से नही बना होता है बल्कि वह चैतन्या या प्रकाश का ही बना होता है। प्रकाश भौतिक प्रकाश भी है और आध्यात्मिक प्रकाश भी है। जो ज्ञानरूपी प्रकाश से प्रकाशित है। 5. पिछली व्याख्या को आगे बढ़ते हुए इस नाम का अन्य अर्थ जो दूसरो को प्रकाशित करती है या ज्ञान देती है भी कर सकते है। दीपक स्वयं को तो प्रकाशित करता ही है, पास की वस्तुओं को भी प्रकाशित करता है अर्थात् दिखने लायक बनता है। 6. लोभ जिनकी स्तुति करते है। देवता, असुर, मनुष्य आदि जिनकी स्तुति करते है। 7. जो प्रसन्न होती है। अपनी बनाई हुयी सृष्टि को देखकर या भक्तों की भक्ति को देखकर प्रसन्न होने वाली। 8. जो पीने से मदमस्त होती है। इसका तात्पर्य है कि अपने आनन्द स्वरूप का पान कर मस्त होने वाली। मस्त होने में आनन्दित होना, निश्चित होना एवं बाहरी दुनिया से बेपरवाह होना ये भाव होते है। हाथी जब झूमता हुआ चलता है तो आनन्द में डूबा हुआ होता है तथा बाहर क्या चल रहा है उससे कोई मतलब नही रहता है। सब कुछ देवी के अन्दर है, उनके बाहर कुछ नहीं है, सब कुछ उनकी इच्छानुसार हो रहा है अतः उनका निश्चिन्त या बेपरवाह होना स्वाभाविक है। मस्ती में व्यक्ति का शरीर झूमने या नाचने भी लगता है। 9. जो सम्पूर्ण जगत में सोयी हुई हैं अर्थात् लेटी हुई हैं अर्थात विराजमान हैं। यहाँ सोने का अर्थ मनुष्य की तरह आँख बन्द कर सोना नही है, बल्कि विराजमान होना है। 10. जो इच्छा करती है अर्थात जगत की सृष्टि की इच्छा करती है, भक्तों का कल्याण हो, धर्म की जीत हो ऐसी इच्छा करती है, जो इच्छा शक्ति से युक्त है। 11. जो गमन करती है अर्थात् सर्वत्र विचरण करती है या सर्वत्र क्रियाशील रहती है। देवी कण–कण में विद्यमान है और प्रत्येक कण में रहने वाले Electron, Proton आदि का गति करना स्पन्दन करना है। कोई शक्ति ही यह स्पन्दन कर रही है। गति का अर्थ ज्ञान भी होता है अतः जो सर्वज्ञ है। गति का अर्थ प्राप्त करना भी होता है जिसे सब कुछ प्राप्त है। 12. इन 10 अर्थों के अतिरिक्त भी देवी शब्द के अर्थ निकलते है। दा ददाति शब्द से भी देवी का अर्थ बनता है। जो दान देती है अर्थात् भक्तों को उनका अभीष्ट देती है या उनकी मनोकामना पूरी करती है। 13. देवताओं में रहने वाली शक्ति या Energy भी देवी कहलाती है। 14. आत्मास्वरूपा या अन्तःकरण में विराजमान आत्मचेतना स्वरूपा। दिव् धातु का अर्थ प्रकाश करना है। जो आत्मा या जीवात्मा प्रकाश स्वरूप है। इस प्रकार देवी का अर्थ आत्मास्वरूपा हुआ। 15. राज्यभार संभालने वाली रानी को भी देवी कहते है। शब्द के आगे ''में विराजमान'' लगाने से भी शब्द का अर्थ निकलता है। राज्याभिषिक्त महिला में विराजमान, यह भी देवी का अर्थ हुआ। 16. समाज की सम्मानित और श्रेष्ठ महिला को भी देवी कहा जाता है। इस प्रकार देवी का अर्थ हुआ सम्मानित और श्रेष्ठ महिला में

विराजमान। 17. ज्ञानी और विद्वान व्यक्ति को भी देव कहा जाता है। इस प्रकार देवी का अर्थ हुआ ज्ञानी और विद्वान व्यक्ति में शक्ति रूप में विराजमान। 18. ब्राह्मण को भी देवता या भूमि का देवता कहा जाता है। ब्राह्मण में उसकी शक्ति या गुण या शील के रूप में विराजमान, यह भी देवी का ही एक अर्थ हुआ। 19. आत्मा की शक्ति को भी देवी कहा गया है। इस प्रकार देवी का अर्थ हुआ आत्मा की शक्ति स्वरूपा। 20. दिव्य गुणों से युक्त। दया, करूणा, उदारता, प्रेम, क्षमा आदि गुण जो गीता के 16वें अध्याय में बताये गये है दिव्य गुण कहलाते है। 21. दिव्य गुणों पर आधारित शुद्ध संस्कारों को भी देवी कहा गया है। देवी का अर्थ हुआ pure impression based on divine virtues. 22. जिनका द्युलोक अर्थात् स्वर्गलोक में वास है। दिव् का अर्थ स्वर्ग है। 23. देवों अर्थात् देवताओं की पत्नियों से जिनका अभेद सम्बन्ध है। 24. दिव्य कर्मों को करने वाली अर्थात् अलौकिक कर्मों को करने वाली देवी है। देवी मनुष्य की तरह पंचतत्वों से नहीं बनी होती है बल्कि चैतन्य या तेज या प्रकाश से ही बनी होती है। 25. जो कामनाओं को देती है अर्थात् पूरा करती है एवं कर्मों या भक्तों की रक्षा करती है। देवी में दे से देना अर्थ ले लिया और अव (रक्षा करना) से व लेकर उसे स्त्रीलिंग में वी कर दिया। अवति इति अवः (रक्षा करने वाला)। एक नियम है कि अक्षर से पूरे शब्द का बोध होता है यदि वह अक्षर उसके आदि में हो या बीज में कहीं पर भी हो या अन्त में हो। 26. जो व्यवहार विद्या में निपुण है। दिव धातु का एक अर्थ व्यवहार करना भी है। दूसरों के साथ किस तरह से आचरण करना चाहिए इसमें निपुण है। 27. दूसरों को आनन्दित करने वाली। 28. भक्तों को विजय कराने वाली। 29. प्रकाशित करने वाली अर्थात् जगत को सूर्य, चन्द्र, तारों के रूप में प्रकाशित करने वाली, विद्या का या शास्त्र का प्रकाश करने वाली अर्थात् लोगों को बताने वाली। इन्द्रियों को प्रकाशित करने वाली अर्थात् उन्हें काम करने की शक्ति देकर काम करने लायक बनाने वाली। 30. देवी अर्थात दान रूपी क्रिया करने वाली। एकाक्षरी कोष में द का एक अर्थ है दान एवं ई का अर्थ है क्रिया। द+ई=दे, दे का अर्थ हुआ दान की शक्ति या दान किया। 31. व का अर्थ ज्ञान होता है। वाति धातु का अर्थ गच्छति अर्थात् जाती है होता है। प्रेरणा अर्थ में वाययति का अर्थ गति करवाता है या पहुँचाता है या बोध कराता है। गति के अर्थ वाली धातुओं ज्ञान और प्राप्ति अर्थ भी देती है। दान की शक्ति को पहुँचाने वाली या प्राप्त कराने वाली अर्थात् भक्तों को दान की शक्ति देने वाली। दान की शक्ति एवं ज्ञान की शक्ति स्वरूपा, यह अर्थ भी कर सकते है। 32 इन्द्रियों में अर्थात ज्ञानेन्द्रियों एवं कर्मेन्द्रियों में रहने वाली अधिष्ठात्री शक्ति को भी देवी कहा गया है।

356. **त्रिपुरप्राणहारिणी** – त्रिपुरासुर के प्राण का हरण करने वाली।

357. **भैरवी** – भयंकर शब्द करने वाली। भै का अर्थ है भयंकर और रव का अर्थ है आवाज। भरण (पालन), रवण (संहार) और वमन (सृष्टि) करने वाली अर्थात सृष्टि, पालन और संहार करने वाली। वमन करना अर्थात अपने भीतर से बाहर निकालना अर्थात सृष्टि करना। जगत जो शिव के भीतर था उसको बाहर निकाला गया अर्थात उसकी सृष्टि हुई। दुःख समूह को नष्ट करने वाली। भैरम् (दुःखसमूहम्) वाति (हिनस्ति) इति भैरवी।

358. **भैरवस्था** – भैरवस्वरूप शिव में शक्ति रूप से स्थित। तान्त्रिक ग्रन्थों में भैरव को शिव का ही रूप माना गया है।

359. **भैरवस्य प्रियातनु** – भैरव की प्रिया सुन्दर रुप वाली।

360. **भवांगी** – शिव की अर्धांगिनी। शिव की ओर जाने वाली। संसार की ओर जाने वाली अर्थात वहाँ विराजमान। अंगति का अर्थ है गति करना।

361. **भैरवाकारा** – भंयकर स्वरुप वाली।

362. **भैरवप्रियवल्लभा** – शिव की प्रिय वल्लभा अर्थात शिव को अतिप्रिय। भैरव को अतिशय प्रिय लगने वाली।

प्रिय भी है और वल्लभ भी है जो अतिशयता को दिखाता है। प्रिय और वल्लभ दोनों का एक ही अर्थ होता है, दोनों शब्द लगाये गये हैं इसका अर्थ होगा अतिशय प्रिय। शिव युद्ध में भयंकर शब्द करते हैं अर्थात भैरव कहलाते है।

363. **कालदा** – शुभ अवसर या समय को प्रदान करने वाली। काल (अर्थात मृत्यु) को नष्ट करने वाली। यहाँ कालदा का दा शब्दाक्षर दो अवखण्डने का है। जिसके कारण खण्डन करना अर्थात नष्ट करना अर्थ आया। शब्दाक्षर दा दा ददाति का नहीं है।

364. **कालरात्रि** – मनुष्य जीवन के 77 वर्ष के सातवें माह के सातवें दिन में होने वाली रात्रि कालरात्रि कहलाती है, उस रात्रि के स्वरूप वाली। महाप्रलय की रात्रि जिसमें ईश्वर का जगत–व्यवहार अर्थात जगत से सम्बन्धित क्रियाऐं समाप्त हो जाती हैं। जगत की उत्पत्ति, पालन पोषण, रक्षा आदि जगत–व्यवहार समाप्त हो जाते हैं। दो रात्रियाँ होती हैं – एक है जीवरात्रि जिसमें हम प्रतिदिन रात को सोते हैं। दूसरी है कालरात्रि या ईश्वर की रात्रि अर्थात महाप्रलय की रात्रि। काल का भी संहार करने वाली।

365. **कामा** – कामस्वरुपा अर्थात् अतिशय सुन्दर रुप वाली। कामदेव सुन्दरता का प्रतीक है। कामदेव की शक्ति स्वरूपा। कामदेव के विकारों से युक्त। क+अम। असीम से अम ले लिया, पहला और अन्तिम अक्षर। क अर्थात सुख। असीम सुख या आनन्द वाली। काम+आ, आ अर्थात देना और नाश करना। भक्तों की कामनाओं को देने वाली अर्थात पूरा करने वाली। दुष्टों की कामनाओं को नष्ट करने वाली। मा धातु में ड प्रत्यय लगाने से म बनेगा जिसका अर्थ है निर्माण करने वाला, मापने वाला, तुलना करने वाला आदि। स्त्रीलिंग में मी या मा हो जाता है। का का अर्थ धरती, दुर्गा आदि होते हैं। धरतीको मापने वाली, दुर्गा जी का सम्मान करने वाली।

366. **कात्यायनी** – कात्यायन ऋषि के यहाँ पुत्री रुप में आविर्भूत। जल का विस्तार करने वाली। क का एक अर्थ जल भी होता है। कात्यैः अय्यते प्राप्यते इति कात्यायनी अर्थात ब्रह्मनिष्ठ उपासकों द्वारा जिन्हें प्राप्त किया जाता है वह कात्यायनी हैं। कात्य का अर्थ है ब्रह्मनिष्ठ। कात्य गोत्र का नाम है और गो का अर्थ होता है वाणी तथा त्र का अर्थ है रक्षण। इस प्रकार कात्य का अर्थ हुआ वाग्रूपिणी रक्षणकर्त्री। जिनके नाम का उच्चारण करने से उपासक की रक्षा होती है वह कात्यायनी है। क अर्थात ब्रह्मा, अ अर्थात विष्णु, ब्रह्मा और विष्णु जिसके लिए गये अर्थात सरस्वती और लक्ष्मी के लिए गये। कात्य का अर्थ हुआ सरस्वती और लक्ष्मी। कात्यायनी का अर्थ हुआ सरस्वती और लक्ष्मी का अयन अर्थात परम लक्ष्य। ब्रह्म है श्रेष्ठ आश्रय/निवास स्थान जिनका अर्थात ब्रह्म में रहने वाली। क+ अति– अयन। क का अर्थ है ब्रह्म। अति अर्थात श्रेष्ठ एवं अयन अर्थात निवास स्थान या आश्रय। शास्त्र में लिखा गया है – कं ब्रह्म कं शिरः प्रोक्तं अश्मसारं च कं तम, धारणाद् वासनाद् वापि तेन कात्यायनी मता। क अक्षर से बोधित पदार्थों को धारण करने वाली अर्थात उसमें रहने वाली शक्ति या ऊर्जा कात्यायनी है। क अक्षर से ब्रह्म, सुख या आनन्द, स्वर्ग, सिर, अस्मसार आदि। स्वर्ग है जिनका श्रेष्ठ आश्रय अर्थात श्रेष्ठ निवास स्थान। शतपथ ब्राह्मण में आया है कि प्रजापति से आठ पदार्थों की उत्पत्ति हुई जो क्रमानुसार हैं– जल, जल से फेन हुआ, फेन से मृत्तिका हुई, मृत्तिका से सिकता हुई, सिकता से शर्करा हुई, शर्करा से अश्म हुआ, अश्म से लौह एवं लौह से स्वर्ण हुआ। इस प्रकार अश्मसार का अर्थ स्वर्ण भी कर सकते हैं और स्वर्ण तेजोमय पदार्थ का स्थूल रूप है। इस प्रकार कात्यायनी का अर्थ हुआ स्वर्ण या तेजोमय पदार्थ में शक्ति या ऊर्जा के रूप में रहने वाली। कति+ अयन, इस प्रकार से भी कात्यायनी शब्द का अर्थ निकाल सकते हैं। कति अयनानि सन्ति यस्याः इति कात्यायनी। जिनके बारे में पूछा जाता है कि जिनके कितने घर हैं अर्थात अनन्त घरों वाली। देवी प्रत्येक प्राणी के हृदय में, कण–कण में शक्ति या ऊर्जा रूप में रहती हैं। जिनके कितने मार्ग (उपाय) हैं अर्थात अनन्त या बहुत से उपायों वाली। अयन का एक अर्थ है मार्ग अर्थात उपाय। देवी को

पाने के लिए बहुत से उपाय हैं, यह तात्पर्य है। The form of Shakti which gives insight into and controls passions. In name of Parvati, another name of Shakti. कति अयनानि सन्ति अस्याः इति कत्यायिनी अर्थात कितने ही मार्गों या उपायों वाली अर्थात बहुत से या अनन्त मार्गों या उपायों वाली। तात्पर्य हुआ देवी को पाने के अनेक मार्ग हैं। क+अति अयन से कई अर्थ निकाले जासकतेहैं। अति अयन अर्थात श्रेष्ठ मार्ग या श्रेष्ठ उपाय। क का अर्थ सुख, स्वर्ग, ब्रह्म आदि दिये गये हैं। ब्रह्म प्राप्ति का श्रेष्ठ मार्ग, स्वर्ग प्राप्ति का श्रेष्ठ उपाय आदि करके अनेक अर्थ निकाले जा सकते हैं।

367. **क्रिया** – यज्ञ कर्म स्वरूपा। यज्ञ कर्म को भी क्रिया कहते हैं। विविध प्रकार की क्रियाओं को सम्पन्न करने वाली। वह शक्ति जिसके द्वारा कुछ किया जाता है। क्रियते अनया इति क्रिया। जगत में जड़ – चेतन आदि में जो गति या चेष्टा है वह क्रिया है जो शक्ति का ही रुप है। हर क्षण हर वस्तु में स्पन्दन होता है अर्थात क्रिया होती रहती है। क्रिया को सम्पूर्ण रूप से नही देख सकते एक क्षण में एक ही अंश दिख सकता है। इस प्रकार क्रिया का अर्थ हुआ सम्पूर्ण रूप से जिसे न देखा जा सके।

368. **क्रियदा** – क्रियाओं का शोधन करने वाली अर्थात शुद्धि करने वाली। यहाँ दा शब्दाक्षर दैप् शोधने धातु से आया। कृ करोति धातु में श प्रत्यय लगाने पर रिंग शयक् लिंगक्षु सूत्र से ऋ, र हो जाता है। इस प्रकार कृ धातु से क्रिय शब्द बनता है। क्रिय अर्थात करना, करणम्। मोनियर विलियम्स के शब्दकोष में क्रिय का अर्थ मेष राशि दिया गया है। इस प्रकार क्रियदा का अर्थ ब्रह्माण्ड को मेष राशि देने वाली अर्थात मेष राशि को अस्तित्व में लाने वाली हुआ। यज्ञ देने वाली अर्थात यज्ञ कराने वाली अर्थात यज्ञ का अवसर देने वाली। क्रिया का एक अर्थ यज्ञ भी होता है। विविध प्रकार की क्रियाओं में सफलता प्रदान करने वाली। प्रलय काल में सभी क्रियाओं को अर्थात सांसारिक गतिविधियों को नष्ट कर देने वाली। शब्द के अन्त में स्थित दा अक्षर, दो अवखण्डने का है, न कि दा ददाति का। क्रिया अस्या अस्ति इति क्रियः, इस प्रकार क्रिय का अर्थ क्रिया वाला या क्रिया से युक्त हुआ। क्रिया से युक्त शब्द देने वाली अर्थात ऐसे शब्दों को अस्तित्व में लाने वाली। कृ धातु में श प्रत्यय लगाने से बने क्रिय शब्द का अर्थ कर्ता से भिन्न होता है अतः क्रिय का अर्थ जिसके लिए कर्म या यत्न किया जाता है अर्थात क्रिय का अर्थ जीविका, उपजीविका भी होता है। जिसमें खूब प्रयत्न होता है उस राशि को भी क्रिय कहते हैं, मेष राशि में लोग बहुत परिश्रम करते हैं अतः क्रिय का अर्थ मेष राशि भी है। देवी के इस नाम का अर्थ हुआ जीविका, उपजीविका देने वाली। यदि मुख्य जीविका से पर्याप्त आमदनी नहीं आती है तो अतिरिक्त समय में व्यक्ति कुछ और कार्य करने लगता है जिससे और आमदनी आ जाए। इस अतिरिक्त कार्य को उपजीविका कहते हैं।

369. **क्रियहा** – प्रलय काल में मेष राशि (तारों का एक विशेष समूह) को नष्ट कर देने वाली। हन् हन्ति धातु से हा बनाने पर नष्ट करना अर्थ आयेगा। इहलौकिक/पारलौकिक क्रियाओं को छुड़ा देने वाली अर्थात अपने उपासकों को सन्यासी या वैरागी बना देने वाली। ओहाक् त्यागे धातु से हा शब्दाक्षर बनाने पर त्याग करना या त्याग कराना अर्थ आ जाता है। कृ करोति धातु में श प्रत्यय लगाने पर रिंग शयक् लिंगक्षु सूत्र से ऋ, र हो जाता है। इस प्रकार कृ धातु से क्रिय शब्द बनता है। क्रिय अर्थात करना, करणम्। जिसने समस्त क्रियाओं को त्याग दिया है अर्थात प्रकृति की साम्यावस्था के स्वरूप वाली। यहाँ हा शब्दाक्षर ओहाक् त्यागे धातु का है। प्रकृति की साम्यावस्था अर्थात जब सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण तीनों समान मात्रा में रहते हैं, इस अवस्था में प्रकृति क्रियाशून्य अर्थात स्पन्दनशून्य होती है। प्रकृति की है अवस्था, सृष्टि के पहले की अवस्था या प्रलय के बाद की अवस्था। अनिष्ट क्रियाओं या दुष्क्रियाओं को नष्ट कर देने वाली। हन् धातु से हा बनाने पर मारना या नष्ट करना अर्थ होगा। क्रिया अस्या अस्ति इति क्रियः, इस प्रकार क्रिय का अर्थ क्रिया वाला या क्रिया से युक्त हुआ। क्रियाओं से युक्त अभिचार कर्म जैसे मारण, उच्चाटन, विद्वेषण को नष्ट करने वाली। क्रियाओं से युक्त बुरे कर्मों से अपने उपासकों को दूर रखने वाली। दुष्टों या अधर्मियों की जीविका नष्ट करने वाली। (क्रिय शब्द का

अर्थ जीविका, उपजीविका, मेष राशि है। कृ करोति धातु में श प्रत्यय् लगाने से क्रिय शब्द बनता है। कृ धातु का अर्थ करना अर्थात् परिश्रम करना होता है। पुराने समय में आज की तरह बैठे–बिठाये भोजन नही मिलता था, उन्हें इसके लिए जंगल जाकर फल तोड़ना, लकड़ी लाना, आदि आदि कार्य परिश्रम करना होता था। इसलिए खाना और खाने के उपकरण के रूप में जीविका के अर्थ में इस 'क्रिय' शब्द का व्यवहार होता है अर्थात् क्रिय का अर्थ है जीविका। कभी–कभी मुख्य कार्य से मनुष्य की आवश्यकता नहीं पूरी होती है तो वह अतिरिक्त समय में अन्य कार्य भी करता है अर्थात् मुख्य नौकरी के अतिरिक्त सहायक नौकरी भी कर लेता है जिसे उपजीविका भी कहते है। अतः क्रिय का एक अर्थ उपजीविका भी है। क्रिय शब्द का एक अन्य अर्थ मेष राशि भी है। मेष राशि पर सूरज के रहने के दौरान ग्रीष्म क्रमशः बढ़ता जाता है और सूर्य, जल, स्थल, अन्तरिक्ष सभी अधिक से अधिकतर क्रियाशील हो पड़ते है। इसलिए क्रिय शब्द का अर्थ मेष राशि हुआ। जिसके लिए परिश्रम करना पड़ता है अर्थात् जीविका एवं जिसमें अधिक परिश्रम होता है अर्थात् मेष राशि, वह क्रिय है।)

370. **क्लैव्या** – ब्रह्मस्वरूपा क्योंकि ब्रह्म न स्त्रीलिंग है और न पुल्लिंग है। बिना सन्तान वाले देवी देवता के स्वरूप में। पार्वती जी के श्राप के कारण देवी देवताओं के सन्तान नहीं होती है। पार्वती जी के यद्यपि दो पुत्र है पर वे उनकी गर्भ से पैदा नहीं हुए हैं। यथा अवसर क्लीवता अर्थात् नपुंसकता को धारण करने वाली। अर्जुन को एक वर्ष के लिए नपुंसकता धारण करनी पड़ी थी।

371. **प्रियप्राणक्रिया** – शिव की श्वासोच्छ्वास क्रिया रूपा। देवी ही अपने प्रिय शिव को जीवित रखती हैं। साँस चलना ही जीवन की निशानी है। भयंकर विष पीने के बाद भी शिव जी देवी की कृपा से ही जीवित रहे। अपने प्रिय अर्थात् शिव की प्राण – क्रिया स्वरुपा हैं।

372. **क्रींकारी** – क्रीं बीज स्वरुपा या क्रीं का उच्चारण करने वाली। क्रीं का अर्थ है हे ब्रह्मशक्ति सम्पन्न महामाया काली, मेरे दुःखों को दूर करो। क का अर्थ है काली, र का अर्थ है ब्रह्म, ई का अर्थ है महामाया और बिन्दु का अर्थ है दुःखहरण। क्रीं का अर्थ विशेषण के रूप में लेने पर होगा – दुःखों को हरने वाली ब्रह्मशक्तिसम्पन्न महामाया काली।

373. **कमला** – जो जल को सुशोभित करती हैं अर्थात् अपनी उपस्थिति से जल की शोभा बढ़ाती हैं। कम् जलम् अलति इति कमला। काम्यते इति कमला। जिसकी कामना की जाती है कि हमको मिले। धन की सभी कामना करते हैं कि हमको मिले। कमु कान्तौ धातु में इलच् प्रत्यय लगाने से कमला बनता है। कान्ति का अर्थ इच्छा है।

374. **लक्ष्मी** – लक्ष्म अर्थात् शुभ लक्षणों से युक्त हैं। ज्ञानैश्वर्य – सुखारोग्यधनधान्यजयादिकम्, ये शुभ लक्षण हैं। जो सबकी लक्ष्यभूता हैं, वे लक्ष्मी हैं।

375. **शक्ति** – पदार्थों में कार्य की उत्पादन क्षमता के रुप में। ऐश्वर्य और पराक्रम देने वाली। श अर्थात ऐश्वर्य, क्ति का अर्थ है पराक्रम।

376. **स्वाहा** – अग्नि की पत्नी स्वरुपा। देवताओं को हवि पहुँचाने वाली। प्रत्येक चीज या घटना को सही मानने वाली। सुष्ठु आम् जिहीषे गच्छसि इति स्वाहा अर्थात अच्छी प्रकार से हाँ हाँ कहने वाली।

377. **विभुः** – जो व्यापक हैं अर्थात् सर्वव्यापक हैं। धनैश्वर्य से युक्त रहने वाली।

378. **प्रभु** – सामर्थ्यशाली अर्थात् कुछ भी करने में समर्थ। सर्वत्र प्रभुत्व को रखने वाली। जो अनुग्रह, निग्रह करने में समर्थ है। जिसके हाथ में रक्षा, दण्ड, पुरस्कार है, जिसके संरक्षण में जीवन निर्वाह चलता है, रोजी रोटी मिलती है वह प्रभु है।

379. **प्रकृतिः** – जो सृष्टि का प्रकृष्ट कारण है अर्थात् सृष्टि जिनसे पैदा हुई। कृति का अर्थ है सृष्टि और प्र से प्रकृष्ट कारण अर्थ निकला। जो कृति (सृष्टि) से पहले (प्रथम) से है। प्र अर्थात सतोगुण, कृ अर्थात रजोगुण और ति अर्थात तमोगुण। जो सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण से युक्त हो वह प्रकृति है। प्रकृष्टा प्रथमा कृति अर्थात ब्रह्मा की पहली कृति या रचना स्वरूपा।

380. **पुरुषः** – सांख्य दर्शन के पुरुष तत्व से अभेद है जिनका। पुरि शेते इति पुरुषः। पुरि अर्थात् शरीर में, शि अर्थात सोने वाली अर्थात् विराजमान रहने वाली अर्थात् आत्मा स्वरुपा। सांख्य दर्शन के अनुसार प्रकृति से भिन्न अपरिणामी असंग चेतन पदार्थ आत्मा ही पुरुष है। इसी के सान्निध्य में प्रकृति सृष्टि करती है।

381. **पुरुषा** – भगवान विष्णु या शिव की शक्ति स्वरूपा। पुरुष का अर्थ विष्णु, शिव भी है। पुरुषार्थरूपिणी अर्थात् चार पुरुषार्थ स्वरूपिणी। (पुरुषा या पुरुषी का अर्थ अग्रलिखित कर सकते हैं – शरीर में रहते हुए पापों को जला डालने वाली। पुरी अर्थात शरीर, ओष अर्थात ओषति अर्थात जलाता है। सबको पवित्र करने वाली, सबके द्वारा स्तुति होती है जिनकी और अन्त में सबको नष्ट करने वाली। पुरु अर्थात सभी, इससे पु ले लिया, रु शब्दे धातु होती है इससे रु ले लिया एवं शो अन्तकरणे से अन्त करना अर्थ ले लिया।

382. **पुरुषाकृतिः** – आवश्यकता पड़ने पर पुरुष के समान आकृति वाली। सूर्य की आकृति धारण करने वाली। पुरुष का एक अर्थ सूर्य भी है।

383. **परमापुरुषः** – परमपुरुषस्वरुपिणी अर्थात् जिनसे श्रेष्ठ कोई नहीं है, ऐसे पुरुष के स्वरुप वाली।

384. **माया** – शक्ति जिससे जगत प्रतीत होता है या ज्ञान में आता है। मीयते अनया इति माया। मीयते का अर्थ है ज्ञात होना, प्रतीत होना।

385. **नारायणी** – भगवान नारायण अर्थात् विष्णु की शक्ति स्वरुपा। नार का अर्थ नर का समूह अर्थात प्राणियों का समूह। सभी प्राणियों में आत्म चैतन्य के रूप में निवास करने वाली। नार अर्थात् जल में निवास स्थान है जिनका।

386. **मतिः** – इच्छास्वरुपा। मति का अर्थ इच्छा भी होता है। प्रशस्त बुद्धिस्वरुपा या ऐसी बुद्धि से युक्त। ज्ञानस्वरूपा। सन्मति अर्थात सद्बुद्धि स्वरूपा। सोचने समझने और निर्णय करने की मानसिक शक्ति। स्मरण स्वरूपा।

387. **ब्राह्मी** – ब्रह्मा की शक्ति स्वरुपा। सरस्वती से अभेद है जिनका। ब्रह्मा की शक्ति अर्थात् सर्जनात्मक क्षमता स्वरूपा। सृजन उत्पादन में संलग्नता संसार की सबसे बड़ी विशेषता है। धरती को भी ब्राह्मी कहा जा सकता है क्योंकि वह भी उत्पादन करती है। जिसकी उपासना से साधक मे ब्रह्म–तेजस–ब्राह्मणत्व विकसित होता है। सृजन देवता का गुण और ध्वस दानवों का गुण है। ब्राह्मी शक्ति हंस प्रवृत्ति के लोगों को ही अपने निकटतम रखती है। हंस नीर क्षीर में विवेक करता है, मोती चुनता है एवं कौड़ियों को हाथ नही लगता है यही सतोगुण है। उत्कृष्ट चिन्तन, सद्विवेक और औचित्य को ही अपनाना तथा अनौचित्य से बचे रहना यही हंस प्रवृत्ति है। ब्राह्मी शक्ति का वाहन हंस है उसका यही अर्थ है। जिस शक्ति की उपासना से व्यक्ति सही अर्थ में ब्राह्मणत्व पाता है अर्थात् उसे आत्म सन्तोष, लोक–सम्मान तथा दैवी अनुग्रह ये तीनों वरदान मिलते हैं।

388. **माहेश्वरी** – महेश्वर अर्थात भगवान शिव की शक्ति स्वरूपा। संहारिका शक्ति स्वरूपा। पार्वती स्वरुपा। यदि महेश्वरी शब्द है तो अर्थ होगा, ईश्वरी शक्तियों में सबसे बढ़कर।

389. **कौमारी** – कुमार अर्थात् कार्तिकेय की शक्तिस्वरुपा। कुमारावस्था वाली। सामान्यतः 13 – 19 वर्ष की आयु कुमारावस्था होती है। कुत्सित विचारों या दोषों को मारने वाली अर्थात् नष्ट करने वाली। Restless

thoughts नामक कुत्सित शत्रुओं को नष्ट करने वाली। कु का अर्थ पृथ्वी है एवं कौ का अर्थ पृथ्वी पर है। मार का अर्थ कामदेव भी होता है। पृथ्वी पर कामदेव के समान सुन्दर।

390. **बैष्णवी** – भगवान विष्णु की शक्तिस्वरुपा। भगवान विष्णु के वंश में उत्पन्न देवी या दिव्यगुणों से युक्त कन्या स्वरूपा। सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त शक्ति। विष्णु का अर्थ है जो सब जगह व्याप्त हो।

391. **वाराही** – वराह भगवान की शक्ति स्वरुपा। जिस तरह से भगवान वराह ने डूबी हुई पृथ्वी को ऊपर उठाया उसी प्रकार मनुष्य की कुण्डलिनी शक्ति को मूलाधारचक्र से ऊपर उठाने वाली।

392. **चामुण्डा** – जिन्होने चण्ड और मुण्ड राक्षसों का विनाश किया था। बुद्धि और सुख में जो सर्वोपरि है। च का अर्थ है बुद्धि और सुख और मुण्ड का अर्थ है सिर अर्थात् सर्वोपरि स्थान।

393. **इन्द्राणी** – इन्द्र भगवान की शक्ति स्वरुपा। इन्द्रम् आणयति जीवयति इति इन्द्राणी। इन्द्र को जीवित रखने वाली। बहुत से असुरों से युद्ध के बावजूद इन्द्र देवी की कृपा से ही जीवित रहते थे। इन्द्र की पत्नी से अभेद है जिनका।

394. **हरवल्लभा** – शंकर की प्रिया। शंकर की अत्यन्त प्रिय।

395. **भर्गी** – भर्ग वाली अर्थात तेजस्विनी। भर्जन करते हैं ऐसा तेज अर्थात जो पापों को भूँज डालता है। भर्गाः अस्य अस्ति इति भर्गः। भर्ग वाली। इसमें ङीप प्रत्यय लगाया। अतिशिय तेजस्विनी। भर्गति धारयति तेजा। (यदि भार्गी शब्द है तो अर्थ होगा जो भुनवा देती है। भार्जयति इति भार्गी अर्थात जो अपने उपासकों के शत्रुओं को दूसरों से मरवा देती है)।

396. **माहेश्वरी** – माहेश्वर सम्प्रदाय के लोगों द्वारा उपासनीया। ऐश्वर्यशालियों में जो सबसे बढ़कर हैं। नाम के आगे महा लगा हो तो कई बार उसका अर्थ "से बढ़कर", सर्वाधिक होता है।

397. **कृष्णा** – भगवान कृष्ण की शक्ति स्वरुपा। अपने रूप सौन्दर्य से सभी को आकर्षित करने वाली।

398. **कात्यायनी** – ब्रह्मा और विष्णु की आश्रय। क(ब्रह्मा) + अ (विष्णु) + आ अर्थात ब्रह्मा और विष्णु की शक्ति अर्थात सरस्वती जी और लक्ष्मी जी। अतत् अर्थात गमन करना। सरस्वती जी और लक्ष्मी जी भगवान ब्रह्मा और विष्णु जी की ओर गमन करती हैं। इस प्रकार कात्य का अर्थ हुआ ब्रह्मा और विष्णु। अयन का अर्थ है आश्रय। वाग्रूपिणी रक्षणकर्त्री। कात्य अर्थात गोत्र, गो अर्थात वाणी, त्र अर्थात रक्षा करना, जिनका उच्चारण करने से रक्षा होती है। सर्वव्यापक। जिनके बारे में कति अयन अर्थात् कितने घर हैं जिनके, ऐसा पूँछा जाता है अर्थात जो सर्वव्यापक हैं।

399. **पूतना** – पवित्र कर देने वाली। पूत का अर्थ है पवित्र, युच् प्रत्यय लगाने से पूतना बना और यह प्रत्यय केवल स्त्रीलिंग में लगता है अर्थात यहाँ पर पूती में लगा। पूतना राक्षसी को नष्ट कर देने वाली। पूतना + आ, नाम के अन्त में आ हो तो उसका अर्थ देना भी होता है और नाश करना भी होता है। भगवान कृष्ण ने मारा अर्थात भगवान कृष्ण की शक्ति ने मारा।

400. **राक्षसी** – राक्षसों को नष्ट करने के लिए राक्षसी स्वरुप को धारण करने वाली। एकान्त में दुष्टों का नाश करने वाली, मारने वाली। रहसि क्षिणोति इति रक्षसः, एकान्त में हिंसा करने वाला, जान से मारने वाला, तोड़ फोड़ करने वाला या सताने वाला राक्षस है। जिसने अपने कर्तव्य का नाश कर दिया वह राक्षस है।

401. **डाकिनी** – दुष्टों को भय देने के लिए गति करने वाली, चेष्टा करने वाली। डाय भयाय अकति इति डाकिनी। अकति का अर्थ है गति करना, चेष्टा करना। दुष्टों को भय देने के लिए घूमती रहती है या विचरण करती रहती हैं। दुष्ट दैत्यों के संहार के लिए डाकिनी का रुप धारण करने वाली।

402. **चित्रा** – आश्चर्यजनक कार्य करने वाली। स्त्री शेर पर बैठती हुई नहीं दिखाई देती है पर देवी शेर पर बैठती हैं। आकाश में ही स्थित होकर कई बार राक्षसों से युद्ध किया। विभिन्न रंगों वाली अर्थात प्रकृति स्वरूपा। सुन्दर या तरह – तरह के कार्य करने वाली।

403. **विचित्रा** – सामान्य से हटकर अर्थात अद्भुत। सामान्यतः स्त्रियों के दो हाथ होते हैं और इनके कई हाथ हैं और हाथों में अस्त्र शस्त्र हैं, शेर पर, शव पर सवार है यह सब सामान्य से हटकर ही हुआ। निराकार रूप में आँख न होने के बावजूद देख लेती हैं, कान न होने के बावजूद सुन लेती हैं यह सब सामान्य से हटकर हुआ। विशेष रुप से सुन्दर या अद्भूत स्वरुप वाली। चित्र का अर्थ रंगबिरंगा और सुन्दर भी होता है।

404. **विभ्रमा** – विविध प्रकार के हाव – भाव और विलासों से युक्त अर्थात् श्रंगारपरक चेष्टा करने वाली (अपने पति के समक्ष यथावसर)। साहित्यदर्पण के अनुसार प्रेमी से मिलने की आतुरतावश ढंग से कपड़े नहीं पहनना, आभूषण नहीं पहनना विभ्रम कहलाता है। अतः इस नाम का अर्थ हुआ शिव से प्रेम के वशीभूत जिन्हें अपने वस्त्र या आभूषण का होश नहीं है।

405. **हाकिनी** – अपने उपासकों के भव बन्धन को काटने वाली। हाक् धातू का अर्थ है काटना। संसार से बँधना अर्थात संसार न छोड़ना अर्थात बार बार जन्म लेना। बीमारी, दुश्मनी, बुढ़ापा बहुत से कष्ट हैं इस संसार में। ये सारे कष्ट भार हैं। सकाम कर्म भी भार हैं क्योंकि इनका फल मिलता है। जब कर्म कटते हैं तो मनुष्य हल्का अनुभव करता है।

406. **राकिनी** – र अर्थात् धन के लिए चेष्टा करने वाली अर्थात् अपने भक्तों को धन दिलाने वाली। राय अकति। राका (अर्थात् पूर्णमासी) के समान चेष्टा करने वाली अर्थात् आह्लाद और शान्ति देने वाली। र अर्थात् अग्नि तत्व के लिए चेष्टा करने वाली अर्थात् अग्नि तत्व पर जिनका अधिकार है।

407. **भीता** – डरी हुई अर्थात अधिक सुन्दर। जो जितना सुन्दर होता है उतना डरता है। सामान्यतः स्त्रियाँ डरपोक मानी जाती हैं। अतः भीता का अर्थ सुन्दर स्त्री होता है। दुष्ट राक्षसों को त्रस्त भाव या डरने वाले भाव को देने वाली। भीत+आ, आ का अर्थ देना एवं नाश करना दोनों होता है। अनुचित कार्य या धर्म विरूद्ध कार्य करने से डरने वाली। राक्षसों, दुष्ट शत्रुओं और नास्तिकों को भयभीत करने वाली। भीता का अर्थ भयभीत होना है पर विपरीत लक्षणा शक्ति से अर्थ होगा भयभीत करने वाली। सभी प्राणी डरे हुए होते हैं, उनमें स्वाभाविक रूप से भय होता है। इन प्राणियों वाली अर्थात इन प्राणियों में विराजमान। भीता अस्या अस्ति इति भीता।

408. **गन्धर्वा** – विशेष गान विद्या से सुशोभित। गन्धर्व का सम्बन्ध गान विद्या या गीतों से है। गन्धर्वों की शक्ति स्वरूपा। एकाक्षरी कोष के अनुसार आ का एक अर्थ शक्ति है। दूर से ही गन्ध को प्राप्त करने वाली अर्थात ग्रहण करने वाली। गन्धम् अर्वति प्राप्नोति इति गन्धर्वः।

409. **गन्धवाहिनी** – श्रेष्ठ गन्ध को धारण करने वाली।

410. **केकरी** – चार अक्षर वाले मन्त्र की शक्ति स्वरूपा। शारदा तिलक तन्त्र के अनुसार चार अक्षर के मन्त्र को केकर कहते हैं। सिर की ओर आँख की हुई अर्थात क्रोधयुक्ता। क्रोध में मनुष्य की आँखें टेढ़ी हो जाती हैं। सम्भव है कि यह योग की किसी मुद्रा को सूचित कर रहा हो अर्थात एक विशेष योगावस्था वाली। क का अर्थ है सिर या मस्तक। मस्तक पर आँख है जिसकी, मूर्धा पर आँख है जिसकी अर्थात तीसरी आँख वाली। टेढ़ी आँख वाली। भेंगी आँख वाली किन्तु यहाँ पर अर्थ होगा अतिशय सुन्दर रुप वाली। केका मोर की आवाज होती है क्योंकि वह ऊँचे स्वर में बोलता है। के अर्थात सिर में अर्थात ऊँचाई में। ऊँची आवाज करने वाली यह अर्थ भी केकरी का हो सकता है। राति अर्थात देना अर्थात करना। केकरी का अर्थ हुआ मोर को देने वाली अर्थात मोर की रचना करने वाली। क+इ+करी या क+ई+करी। एकाक्षरीकोश से क, इ और ई का अर्थ लेकर बहुत से अर्थ

किये जा सकते हैं जैसे सुख और धन–सम्पदा को करने वाली अर्थात निर्माण करने वाली या देने वाली। क अर्थात सुख, स्वर्ग, ब्रह्म आदि। ई अर्थात लक्ष्मी, धन–सम्पदा।

411. **कोटराक्षी** – धँसी हुई नेत्रों वाली। किसी रुप में धँसी हुई आँख वाली होंगी जैसे धूमावती रुप में। सब अवतार एक ही शक्ति के रुप हैं। अन्यथा भी इच्छानुसार ऐसा रूप धारण करने वाली।

412. **निर्मांसा** – शुष्क रुप वाली अर्थात् मांस कम है। सूखी जैसी शुष्कता लिए हुए। द्वैत भाव से रहित। मांस शब्द द्वैत भाव का भी प्रतीक है।

413. **उलूकमांसिका** – उल्लू के मांस का भोजन करने वाली। मूर्खता का भक्षण करने वाली। उल्लू मूर्खता का प्रतीक है। उलूकमा का अर्थ है उल्लू में बैठी हुई लक्ष्मी। अंसिका अर्थात अंश। लक्ष्मी की अंश स्वरूपा। मा का अर्थ लक्ष्मी होता है।

414. **ललज्जिह्वा** – लपलपाती जीभ वाली । आवश्यकता पड़ने पर ऐसा रूप धारण करने वाली।

415. **सुजिह्वा** – सुन्दर जिह्वा वाली।

416. **बालदा** – बाल भाव अर्थात अज्ञानता या मूर्खता को नष्ट करने वाली। बालम् द्यति खण्डयति इति बालदा। वरदान द्वारा श्रेष्ठ पुत्र को जन्म देने वाली या दिलाने वाली।

417. **बालदायिनी** – सन्तान को देने वाली। बल ही बाल हो जाता है, स्वार्थ (बिना अर्थ बदले) में अण् प्रत्यय लगाने से। इस प्रकार अर्थ हुआ बल या Power को देने वाली। सन्तानों को जन्म देने वाली या दिलाने वाली।

418. **चन्द्रा** – चन्द्रमा की शक्तिस्वरुपा। चन्द्रमा के समान भक्तों को आह्लाद देने वाली।

419. **चान्द्री** – चन्द्रमा से सम्बन्धित, चाँदनी। चन्द्रमा की स्त्री या पत्नी से अभेद है जिनका। चन्द्रमा के समान उज्जवल प्रकाश वाली। आह्लाद करने वाली। चदि आह्लादे धातु होती है। आह्लाद का अर्थ है हृदय की खुशी। आह्लादक प्रकाश वाली।

420. **प्रभा** – अधिक चमक वाली। प्रकाश (रोशनी) के आधिक्य स्वरूपा या दूर तक फैले प्रकाश वाली। जिनका प्रकाश बहुत दूर तक फैला रहता है। प्रभा नामक अप्सरा के समान सुन्दर। (यदि चन्द्रप्रभा नाम है तो अर्थ है चन्द्रमा की कान्ति के समान कान्ति वाली)।

421. **चन्द्रकान्तिषु तत्परा** – चाँदनी में रहने वाली। अतिशय सुन्दर चन्द्रमा की कान्ति से विभूषित।

422. **अमृता** – भौतिक अमृत स्वरुपा। अमृत में रहने वाली शक्तिस्वरूपा।

423. **मानदा** – भक्तों को मान सम्मान देने वाली। भक्तों को मान सम्मान दिलाने वाली।

424. **पूषा** – पालन पोषण करने वाली। पूषा नामक देव की शक्तिस्वरूपा।

425. **तुष्टि** – तृप्ति या सन्तोष स्वरूपा। तुष्टि स्वरुपा अर्थात् पूर्णता का एहसास दिलाने वाली। तुष्टि अर्थात् मन में यह भाव उठना कि अब और नहीं चाहिए। जो है उसके अलावा अन्य की आकांक्षा से रहित भाव तुष्टि कहलाता है। जो है उसके अलावा अन्य सब में तुच्छ बुद्धि तुष्टि है। सब है पूर्ण मात्रा में अतः तुष्ट हैं। तुष्टि का सम्बन्ध मन से है।

426. **पुष्टि** – वह शक्ति जो शरीर, मन और आत्मा को पुष्ट करती है अर्थात मजबूत करती है। पुष्टि स्वरुपा अर्थात् शरीर को बलवान बनाने वाली। शब्द के अर्थ में बलवान करना नहीं है किन्तु लक्षणा या तात्पर्य से यह अर्थ निकलता है। देवी या देवता का तात्पर्य है देने वाला। उनके पास जो है उसे दे देती हैं। यदि पुष्टि स्वरूपा है तो पुष्टि देंगी। पुष्टिः यस्या सकाशात् सा पुष्टिः, जिसकी समीपता से पुष्टि होती है अर्थात पुष्टि देने वाली।

427. **रति** – कामदेव की पत्नी स्वरुपा। कामदेव की पत्नी रति के समान सुन्दर।

428. **धृति** – धैर्य गुण स्वरुपिणी। वह गुण जिसके कारण व्यक्ति प्रतिकूल परिस्थिति में विचलित नहीं होता और अनुकूल समय की प्रतीक्षा करता है।

429. **शशिनी** – चन्द्रकला से युक्त। चन्द्रमा को धारण करने वाली अर्थात चन्द्रमा को मस्तक पर धारण किये हुए।

430. **चन्द्रिका** – चन्द्रमा के प्रकाश स्वरूपा। चन्द्रिका का अर्थ है चाँद का सुखदायक प्रकाश अर्थात चाँदनी। चन्द्रिका का अर्थ चन्द्रभागा नदी भी है इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ चन्द्रभागा नदी की तरह पाप नष्ट करने वाली। चन्द्रिका का अर्थ जूही या चमेली भी है अतः इस नाम का अर्थ हुआ जो चमेली की तरह सुन्दर और सुगन्धित हो। जूही की तरह मीठी और मादक सुगन्ध वाली। चन्द्रिका एक मुकुट का भी नाम है जिसे प्राचीन काल में रानियाँ पहना करती थी। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ चन्द्रिका नामक मुकुट या शिरोभूषण वाली अर्थात इस मुकुट को धारण करने वाली। चन्द्रिका अस्या अस्ति इति चन्द्रिका (चन्द्रिका वाली)।

431. **कान्ति** – सत्व गुण एवं श्रद्धा होने के कारण शरीर में आई चमक स्वरुपा। दीप्ति या प्रभा स्वरुपा। जब व्यक्ति में श्रद्धा बहुत अधिक होती है एवं सत्व गुण अधिक मात्रा में होती है तो शरीर से कान्ति निकलती है। प्रेम को उद्दीपित करने वाले सौन्दर्य या शरीर से निकलने वाले प्रकाश स्वरूपा। चन्द्रमा की पत्नी से अभेद है जिनका। चन्द्रमा की एक पत्नी का नाम कान्ति है। चन्द्रमा की सोलह कलाओं में से एक कला कान्ति है। भगवान कृष्ण की 16 कलाओं में एक कला कान्ति भी है जिसका अर्थ है ऐसी चमक या सुन्दरता जिसके कारण उनके मुख सौन्दर्य को देखने की बार बार इच्छा होती है। कमु कान्तौ धातु से इच्छा अर्थ आ जाता है।

432. **ज्योत्सना** – चाँदनी की तरह चमक वाली। चाँदनी प्रसन्नता, शान्ति और शीतलता का प्रतीक है। इस प्रकार अर्थ हुआ चाँदनी की तरह प्रसन्नता, सुख, शान्ति और शीतलता देने वाली। चाँदनी स्वरूपा।

433. **श्री** – सर्वविध सम्पत्ति स्वरूपा। कल्याण के श्रीकृष्णांक में श्री का अर्थ सर्वविध सम्पत्ति दिया गया है। लक्ष्मी स्वरुपा। जो भगवान विष्णु का आश्रय लिये है या सारा संसार जिनका आश्रय लिए है। श्रयते सर्वैः इति श्री।

434. **प्रीतिः** – प्रसन्नता, हर्ष, आनन्द या प्रेमस्वरुपा।

435. **अंगदा** – अंगद नामक बाजूबन्द के समान शोभायमान या शोभावती। अंगद नामक बाजूबन्द की शक्ति स्वरूपा अर्थात अंगद नामक आभूषण में रहने वाली सौन्दर्यशक्ति स्वरूपा। अंगद वाली अर्थात अंगदों को धारण किया है जिसने। अंगदे अस्या अस्ति इति अंगदा। शुभ या सुन्दर अंगो को देने वाली। इस जन्म में उपासको के अंग में आकर्षण शक्ति पैदा करने वाली एवं अगले जन्म में सुन्दर अंग देने वाली। (भुजा के मूल के पास केयूर पहना जाता है, केयूर से भी ऊपर अंगद पहना जाता है।

436. **पूर्णा** – सम्पूर्ण कलाओं से युक्त अर्थात् सम्पूर्ण सौन्दर्य से युक्त। जिनके पास हर चीज है और प्रत्येक चीज पूर्ण मात्रा में है।

437. **अमृता** – अविनाशिनी अर्थात् जिनकी मृत्यु नहीं होती है। गिलोय औषधि के समान सर्वकष्टहारी। अमृता का एक अर्थ गिलोय भी है और गिलोय बहुत से रोगों को दूर करने वाली औषधि भी है। इस नाम का अर्थ हुआ गिलोय नामक औषधि की तरह रोगों को अर्थात कष्टों को दूर करने वाली।

438. **कल्पलतिका** – कल्पलता के समान या कल्पलतास्वरुपा। कल्पलता के समान भक्तों को उनके सभी अभीष्ट देने वाली।

439. **कल्पदानदा** – कल्पपर्यन्त दान देने वाली।

440. **सुकल्पा** – सुन्दर यज्ञ विधान स्वरूपा। वेद के अंग कल्पसूत्र में यज्ञविधानों का उल्लेख है। सुन्दर कृत्य स्वरूपा अर्थात सुन्दर कृत्यों को करने वाली। आपने कायाकल्प शब्द सुना होगा अतः इस नाम का अर्थ हुआ सुन्दर रोगोपचार उपायस्वरूपा। कल्प नृत्य को भी कहते हैं अतः इस नाम का अर्थ हुआ सुन्दर नृत्य स्वरूपा। सुन्दर रचना वाली।

441. **कल्पहस्ता** – कल्पवृक्ष के समान हाथों वाली अर्थात भक्त जो भी इच्छा करता है उसे अपने हाथों से दे देती हैं। कल्पवृक्ष के सामने जो भी कामना करो वह पूरी हो जाती है। सम्पूर्ण कल्पों (युगों) को अपने हाथ में रखने वाली।

442. **कल्पवृक्षतरि** – कल्पवृक्ष से बनी हुई नौका के समान अर्थात भक्त को संसार सागर से पार कराने वाली। तारयति इति तरि अर्थात जो पार करा दे अर्थात नौका।

443. **हनु** – हन्ति इति हनु अर्थात दुष्टों को मारने वाली। हनु का अर्थ होता है जबड़ा और जबड़ा चबाने के काम आता है। हनु का अर्थ होगा जबड़े की तरह अर्थात जो जबड़े की तरह राक्षसों को चबा जाती है। हन्ति का अर्थ गति करना भी होता है। हनु को हनु इसलिए कहते हैं क्योंकि यह खाना खाते समय गति करता है अर्थात हिलता है। सुन्दर ठोड़ी वाली अर्थात् सुन्दर कपोलों को धारण करने वाली।

444. **कल्पाख्या** – कल्प है नाम जिनका। कल्प की संज्ञा से विभूषित।

445. **कल्पभव्या** – सभी कल्पों में भव्य रहने वाली अर्थात् प्रभावशाली सुन्दर दिखने वाली। भव्य वह सुन्दरता है जो देखने वाले के अन्दर प्रभाव पैदा करती है और उसके अन्दर आदर के भाव भी पैदा होते हैं।

446. **कल्पा** – कल्प अर्थात् समयावधि स्वरुपा। कल्प अर्थात संकल्प शक्ति का तीव्र होना। कल्प + आ, आ का अर्थ है देना, इस प्रकार कल्पा का अर्थ हुआ तीव्र संकल्प शक्ति देने वाली।

447. **आनन्दकवन्दिता** – आनन्द प्राप्ति के लिए भक्तों द्वारा वन्दित। आनन्दक नाम के उपासक द्वारा वन्दित। आनन्दक का अर्थ आनन्द है क्योंकि कन् प्रत्यय लगाने से शब्द के अर्थ में बदलाव नहीं होता है। यदि आनन्दक के अन्तिम क अक्षर का अर्थ सुख लागाया जाए, तो अर्थ होगा आनन्द रूपी सुख की प्राप्ति के लिए वन्दित।

448. **सूचीमुखी** – सुई की तरह मुख वाली अर्थात सुई की तरह तीक्ष्ण मुख वाली अर्थात मुख से ही दुष्ट राक्षसों को मार देती है। सुई चुभोने के काम आता है।

449. **प्रेतमुखी** – प्रेत के समान डरावने मुख वाली। प्रेत के मुख में आँखें चमकीली, धसी हुई, दाँत निकले हुए अर्थात प्रेत कुल मिलाकर डरावना होता है। मुखी का अर्थ खनु अवदारणे धातु से दारण करना अर्थात नष्ट करना भी होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ प्रेत के कारण हुए दुष्परिणाम का नाश करने वाली।

450. **उल्कामुखी** – जलती हुई अग्नि की तरह मुख वाली। उल्का ऐसा पत्थर होता है जो जलता हुआ जैसा दिखता है तथा उसके पीछे प्रकाश की रेखा अर्थात ज्वाला की रेखा दिखती है। जलती हुई लकड़ी अर्थात मशाल की तरह मुख वाली। उल्का अर्थात पुच्छल तारा या टूटता हुआ तारा। मत्स्यपुराण में लिखा है कि उल्कामुखी रूद्र के मानस से उत्पन्न उनकी पुत्री हैं। यह वह मातृका शक्ति है जो अंधकासुर के खून को पृथ्वी पर गिरने से पहले चाट जाती थी। उल्का अर्थात टूटते हुए तारे या पत्थर या जलती हुई लकड़ी (मशाल) के मुख वाली। उल्का के समाव मुख वाली। मुखी का अर्थ खनु अवदारणे धातु से दारण करना अर्थात नष्ट करना भी होता है। अतः इस नाम का अर्थ हो गया कि उल्कापात की घटनाओं को नष्ट करने वाली या उल्कापात से होने वाले दुष्परिणामों को नष्ट करने वाली। तेजोमय या प्रकाशमान मुख वाली।

451. **महामुखी** – विशाल मुख वाली। (यदि महासुखी हो तो अर्थ होगा बहुत अधिक सुख वाली, सुखी व्यक्तियों में सबसे बढ़कर अर्थात् सर्वाधिक सुख वाली)।

452. **उग्रमुखी** – राक्षसों के समक्ष या युद्ध में उग्र अर्थात् भयंकर मुख वाली। उग्रता में भयंकरता के साथ साथ हमलावर रुख भी होता है। उग्र अर्थात क्रोधयुक्त। उच् समवाये धातु होती है जिससे उग्र बनता है। उग्र अर्थात किसी चीज से युक्त, लोक व्यवहार में यह शब्द क्रोध से युक्त के लिए आता है।

453. **सुमुखी** – सुन्दर मुख वाली। विभिन्न नामों में विरोधाभास से आश्चर्यचकित नहीं होना चाहि, क्योंकि देवी इच्छानुसार ऐसे सभी रूप धारण कर सकती हैं। अन्यथा भी उनके किसी रूप में या अवतार में ऐसा वर्णन आया होगा। देवी के सभी रूप या अवतार एक ही हैं अतः एक रूप का गुण दूसरे में भी कह दिया जाता है।

454. **काकास्या** – सुख और दुख को फेंकने वाली अर्थात देने वाली। कर्मानुसार सुख और दुख देने वाली। क+अक+आस्य, क का अर्थ है सुख, अक का अर्थ है दुख और अस्यति का अर्थ है फेंकना। कै शब्दे धातु से काक बनाने पर काकास्या का अर्थ होगा शब्दायमान मुख वाली। आस्य का अर्थ है मुख। काक अर्थात कौवे के समान मुख वाली। कल्याणकारी मुख वाली। क या किम् का अभिप्राय माया या प्रकृति है। जिसके वश में माया है वह काक या मायावी महेश्वर शिव है।

455. **विकटानना** – भयंकर मुख वाली।

456. **कृकलास्या** – गिरगिट की तरह मुख वाली। शिव की आँख की तरह आँख वाली या अच्छी या कल्याणकारी आँख वाली। कृकर का अर्थ होता है शिव। संस्कृत में र और ल में अभेद होता है। अतः कृकर का अर्थ कृकल हो गया। अर्द्धनारीश्वर रूप में आधी आँख शिव की और आधी आँख पार्वती जी की होगी। शिव का अर्थ कल्याण भी होता है अतः कल्याणकारी आँख वाली अर्थ हुआ। कृकला का अर्थ पिप्पली भी होता है जो एक आयुर्वेदिक औषधि है। पिप्पली है मुँह में जिसके अर्थात पिप्पली खाने वाली। आस्य का अर्थ है मुख।

457. **सन्ध्यास्या** – सन्ध्या के समय के हल्के लाल रंग के मुख वाली।

458. **मुकुलीशा** – सुन्दर कली के सौन्दर्य से युक्त देवी। ईशा अर्थात शक्ति या देवी।

459. **रमाकृतिः** – लक्ष्मी की आकृति के समान।

460. **नानामुखी** – अनेक प्रकार के मुखों से सुशोभित। मुख का अर्थ है पूरा मुख अर्थात जिसमें ठोडी से लेकर ललाट तक आ जाता है अर्थात ओंठ, दाँत, नाक, आँख सब आ जाता है। पुरुष सूक्त में आया है सहस्रशीर्षा, तात्पर्य है देवी के अनेक रूप हैं।

461. **नानास्या** – अनेक प्रकार के मुखविवरों वाली। जिससे शब्द फेंके जाते हैं या जिससे भोजन चबाया जाता है वह आस्य है। अस्यति का अर्थ है फेंकना। दोनों ओठ और उनके बीच के दाँत इतना ही आस्य में आता है अर्थात आस्य का अर्थ है मुखविवर, मुखछेद। तात्पर्य है देवी के अनेक रूप हैं।

462. **नानारुपप्रधारिणी** – अनेक प्रकार के रुपों को बहुतायत से धारण करने वाली।

463. **विश्वार्च्या** – सम्पूर्ण विश्व के द्वारा पूजा के योग्य। अर्चना का अर्थ है भौतिक पदार्थ जैसे चन्दन, चावल, फूल आदि को मूर्ति, विग्रह या यन्त्र में चढ़ाना।

464. **विश्वमाता** – सम्पूर्ण विश्व की जननी। सम्पूर्ण विश्व की रक्षा करने वाली। माति इति माता, माति के कई अर्थों में एक अर्थ रक्षा करना भी है। विश्व में माता की तरह पूज्य या सम्मानित। विश्व का एक अर्थ भगवान विष्णु भी है। माति सत्कारयति भी होता है। भगवान विष्णु/शिव का सत्कार अर्थात सम्मान करने वाली।

465. **विश्वाख्या** – विश्व है नाम जिसका। विश्व देवी का स्वरूप है अतः उनका एक नाम विश्वा।

466. **विश्वभाविनी** – विश्व को प्रकट करने वाली। सम्पूर्ण विश्व के द्वारा ध्यान की जाने वाली।

467. **सूर्या** – सूर्य के समान तेजस्विनी। सूर्य स्वरुपा या सूर्य की शक्ति स्वरूपा।

468. **सूर्यप्रभा** – सूर्य की कान्ति के समान कान्ति वाली।

469. **शोभा** – उत्तम गुण स्वरूपा। बहादुरी, उत्साह, वीरता, अन्याय से नहीं डरना, श्रेष्ठ कार्यों में प्रतिस्पर्धा और बुरे कार्यों से घृणा, न्याय आदि उत्तम गुण हैं। ऐसी परिभाषा पुरुष की शोभा की है जो साहित्यदर्पण एवं नाट्य शास्त्र में दी गई है। स्त्री की शोभा शारीरिक सौन्दर्य से अधिक देखी जाती है जबकि पुरुष की शोभा उत्तम गुण से अधिक देखी जाती है। नाट्य शास्त्र में महिला और पुरुष दोनों की शोभा की अलग परिभाषा दी गई हैं। एकाक्षरीकोश में शो का अर्थ है दोष, अग। अग अर्थात जो गति न करे अर्थात पहाड़, वृक्ष आदि। भा का अर्थ है प्रकाशित होना या प्रकाशित करना। इस प्रकार शोभा का अर्थ हुआ जो दोष को प्रकाशित करे अर्थात बतलाए। हल्दी का भी एक नाम शोभा है। इस प्रकार शोभा का अर्थ हुआ जो हल्दी की तरह है अर्थात हल्दी की तरह रोगनिवारिका अर्थात कष्टनिवारिका है।

470. **सूर्यमण्डलसंस्थिता** – सूर्यमण्डल में स्थित रहने वाली। मण्डल अर्थात सूर्य का गोला।

471. **सूर्यकान्ति** – सूर्य के समान कान्ति वाली। कान्ति अर्थात दीप्ति या प्रकाश या चमक।

472. **सूर्यकरा** – सूर्य की किरणों के समान सुशोभित होने वाली। सूर्य का निर्माण करने वाली।

473. **सूर्याख्या** – सूर्य है नाम जिनका।

474. **सूर्यभावना** – सूर्य के समान दिखती है या प्रतीत होती है। सूर्य के समान तेजस्विनी। सूर्य को भी पैदा करने वाली। भावयति का अर्थ है पैदा करना। सूर्य की जैसी दीप्ति वाली। सूर्य की भावना से अर्थात् सूर्य के स्वरुप से युक्त।

475. **तपिनी** – तपस्या करने वाली। तप वाली अर्थात तपस्यारत। तपः अस्याः अस्ति इति तापी। स्वयं तपने वाली अर्थात् सूर्य स्वरूपा। तपस्या स्वरुपिणी।

476. **तापिनी** – शत्रुओं को सन्तप्त कर देने वाली अर्थात् कष्ट पहुँचाने वाली।

477. **धूम्रा** – धूम्र वर्ण वाली अर्थात् धूमावती स्वरुपा। धूम और धूम्र में अंतर है। धूम का अर्थ है धुँआ और धूम्र का अर्थ है धुँऐं की तरह वर्ण। धूम्र भगवान शिव का भी नाम है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ भगवान शिव की शक्ति स्वरूपा। हृदय चक्र या अनाहत चक्र के वायु मण्डल या आकाश में विराजमान। अनाहत चक्र की पंखुड़ियों के आकाश का रंग धूम्र माना जाता है। वहाँ जल रही ज्योति से धूम्रा वर्ण होता होगा। शब्द का अर्थ तो इतना ही है कि इस चक्र का आकाश व वायुमण्डल। एक नियम है कि शब्द के आगे ''में विराजमान'' लगाने से ही शब्द का एक अन्य अर्थ निकल जाता है। विशुद्धि चक्र के आकाश का भी रंग धूम्रा माना जाता है। इस आकाश में विराजमान। तमोगुण एवं रजोगुण से युक्त। धूम्र वर्ण लालिमा लिये काला रंग होता है। लाल रंग रजोगुण का एवं काला रंग तमोगुण का प्रतीक है। रजोगुण से उत्पत्ति, क्रियाशीलता आती है। तमोगुण से गुरूत्वाकर्षण होता है। गुण से तात्पर्य पदार्थ से है, रस्सी के तन्तु गुण कहे जाते हैं। यहाँ गुण से तात्पर्य quality, merit से नहीं है। यदि तमोगुण न हो आसमान में उछाली गई वस्तु वापस लौटकर नहीं आएगी। आपको नींद नहीं आएगी अर्थात आप दुबारा से ऊर्जा के साथ काम करने के लिए नहीं आ पाएंगे। तमोगुाण को सामान्यतः खराब माना जाता है पर यह भी जरूरी है। धूम्र+आ, आ का अर्थ है देना। उपासक को रजोगुण एवं

तमोगुण की अच्छी विशेषताओं को देने वाली। असत् में छिपे हुए सत् तत्व को बाहर लाने वाली अर्थात उपासक को उसका साक्षात्कार कराने वाली।

478. **मरीचिः** – किरण की तरह प्रकाशमयी, तेजस्विनी। किरण, ज्योति, कान्ति स्वरूपा। भगवान कृष्ण का भी एक नाम मरीचि है इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ, कृष्ण स्वरूपा। मरीचि ऋषि स्वरूपा। मरीचि का एक अर्थ है मृगतृष्णा। मृग अर्थात मोह अर्थात शरीर को मै समझना, वस्तुओं और प्राणियों में मेरे का भाव पैदा होना। इस प्रकार मरीचि का अर्थ मोह नामक गुणस्वरूपा भी कर सकते हैं। मरीचि नामक ऋषि में अंश रूप से विद्यमान।

479. **ज्वालिनी** – ज्वालास्वरुपा। ज्वालामुखी देवी स्वरुपा। ज्वालामुखी देवी ज्वाला के स्वरूप में है।

480. **रुचिः** – रूचि नामक अप्सरा की तरह सुन्दर। रूचि का अनुराग, प्रेम, किरण, शोभा, सुन्दरता अर्थ भी होता है।

481. **सुरदा** – देवताओं को प्राप्त करा देने वाली। देवताओं को देने वाली अर्थात देव प्रतिमाओं को देने वाली। विद्वानों, ऋषि मुनियों से भेंट कराने वाली। सुर का अर्थ देवता, देव प्रतिमा, सूर्य, पण्डित या विद्वान, ऋषि मुनि होता है।

482. **भोगदा** – विभिन्न प्रकार के भोगों को प्रदान करने वाली। भोग का अर्थ सुख देने वाले सांसारिक पदार्थ है। पाँचों इन्द्रियों का अपने विषयों से संयोग होने पर, होने वाली सुखानुभूति, आराम, नाम से होने वाला सुख भी भोग कहलाता है। भोग का अर्थ सांसारिक पदार्थ भी है और इन्द्रियों तथा मन को होने वाली सुखानुभूति भी है।

483. **विश्वा** – सर्वस्वरुपिणी अर्थात् जो कुछ भी दिखाई दे रहा है वह देवी का रूप है। विश्व का अर्थ अर्थात सब कुछ अर्थात सभी जड़ चेतन पदार्थ भी होता है।

484. **बोधिनी** – ज्ञान प्रदान करने वाली।

485. **धारिणी** – सम्पूर्ण विश्व के लोगों को धारण करने वाली।

486. **क्षमा** – क्षमा गुण स्वरुपा। समर्थ होने के बावजूद अपराधी के प्रति प्रतिक्रिया न करना और यह भाव रखना कि अपराधी को उसके कर्म की सजा न मिले, क्षमा गुण कहलाता है। पृथ्वी स्वरुपा अर्थात् सब कुछ सहन करने वाली।

487. **युगदा** – युग को देने वाली अर्थात युग नामक समयावधि को अस्तित्व में लाने वाली। युगों को बढ़ाने या संचालित करने वाली। प्राणियों में नर – मादा का जोड़ा बनाने वाली।

488. **योगहा** – योग में जाने वाली या योग का आवाहन करने वाली। हन् धातु का अर्थ जाना भी होता है जिससे हा बना। ह्व धातु का अर्थ बुलाना भी होता है जिससे भी हा बन सकता है योग को अपने पास बुलाती है अर्थात योग वाली। यहाँ हा का अर्थ त्यागना नहीं होगा। योग में पहुँचने वाली या योग में पहुँचाने वाली। दुख आदि के प्राप्ति के योग को नष्ट कर देने वाली। यहाँ हन् धातु का अर्थ मारना या नष्ट करना है।

489. **योग्या** – हर क्षेत्र में विशेष योग्यता को धारण करने वाली। प्रत्येक कार्य करने में सक्षम। प्रत्येक कार्य करने की काबीलियत रखने वाली। पुष्य नक्षत्र का भी नाम योग्य है। अतः योग्या का अर्थ हुआ पुष्य नक्षत्र स्वरूपा या पुष्य नक्षत्र की शक्ति स्वरूपा। पुष्य नक्षत्र वाली अर्थात जिनकी पुष्य नक्षत्र में पूजा होती है। प्रत्येक कार्य करने की सामर्थ्य से युक्त। जोड़ने वाली। संसार के सभी पदार्थों को जोड़कर रखने वाली। जोड़ने के अनुकूल अर्थात जोड़ने वालों के लिए हितकारी या जोड़ने में समर्थ। जीवात्मा को परमात्मा जोड़ने वाली।

490. **योग्यहा** – अधर्म के रास्ते पर चलने वाले योग्य व्यक्तियों को भी मिटाने वाली जैसे कौरवों की ओर से लड़ने वाले बड़े – बड़े योग्य महारथी मारे गये थे। योग्य व्यक्ति अर्थात उपासक के पास जाने वाली। हन् धातु

का अर्थ जाना होता है जिससे हा शब्द बन सकता है। योगयुक्त व्यक्ति को अपने पास बुलाने वाली यह अर्थ भी कर सकते हैं।

491. **योगवर्धिनी** – योग विद्या को बढ़ाने वाली, प्रसार करने वाली।

492. **वह्निमण्डलसंस्था** – अग्निमण्डल या तेजोमण्डल में भलीभाँति स्थित रहने वाली। मूलाधार चक्र में स्थित अग्नि या तेज के बीच स्थित कुण्डलिनी स्वरूपा।

493. **वह्निमण्डलमध्यगा** – अग्निमण्डल के मध्य में निवास करने वाली।

494. **वह्निमण्डलरुपा** – अग्निमण्डल के रुप में है जो। अग्निमण्डल का निर्माण करने वाली।

495. **वह्निमण्डलसंज्ञका** – अग्निमण्डल है नाम जिनका।

496. **वह्नितेजा** – अग्नि के समान तेज है जिनका अर्थात तेजस्विनी। वहति हुतम् देवान् इति वह्नि अर्थात जो देवता तक हव्य पहुँचाये वह वह्नि है। अग्नि के तेज को धारण करने वाली।

497. **वह्निरागा** – अग्नि, तेज से अनुराग या प्रेम करने वाली। अग्नि की तरह लाल रंग वाली। राग रंग विशेषतः लाल रंग को कहते हैं।

498. **वह्निदा** – अग्नि अर्थात् तेज को प्रदान करने वाली। अपने उपासकों को अग्नि की तरह तेज देने वाली।

499. **वह्निनाशिनी** – अग्नि या अग्नि के सदृश्य प्रचण्ड शत्रुओं को नष्ट कर देने वाली। अग्निकाण्ड अर्थात कहीं आग लग जा, तो उसे नाश करने वाली अर्थात इनका मन्त्र पढ़ने से अग्नि बुझ जाती है।

500. **वह्निक्रिया** – अग्नि की तेजस्विनी क्रियास्वरुपा। अग्नि की क्रिया अर्थात जलाना और प्रकाशित करना। दुष्टों को या आसुरी शक्तियों को जला देने वाली। उपासकों में ज्ञान का प्रकाश करने वाली।

501. **वह्निभुजा** – तेजस्वी भुजाओं से युक्त या सुशोभित। अग्नि रूपी भुजा वाली।

502. **कला वह्नौस्थिता सदा** – अग्नि में कला (शक्ति या इकाई) के रूप से नित्य निवास करने वाली। ऐसी शक्ति जो सदैव अग्नि में स्थित है। कला का अर्थ शक्ति या तेज होता है। (यदि कला एवं वह्नौ स्थितासदा अलग अलग नाम हैं तो अर्थ होगा – कला – शक्ति स्वरुपा। वर्णाक्षर स्वरुपा। चौसठकला स्वरुपा। वहनौ स्थिता सदा – सदैव अग्नि में स्थित रहने वाली। यदि कला वहनौ स्थिता सदा एक नाम हो तो अर्थ होगा सदैव अग्नि में स्थित रहने वाली कला स्वरुपा या शक्ति स्वरुपा)।

503. **धूम्रार्चिष्** – धुँऐं से युक्त प्रकाश वाली अर्थात ऐसा प्रकाश जिसके साथ धुँआ भी है। धुँऐं से निकलने वाले अग्निकणों वाली। धूम्र समूह से सुशोभित। धुँऐं की तरह प्रकाश वाली अर्थात सुर्ख काला नहीं है, कुछ न कुछ प्रकाश भी है।

504. **उज्वलिनी** – अतिशय उज्वल स्वरुप वाली। उज्जवल अर्थात दीप्तिमान, प्रकाशमान, सफेद, स्वच्छ, पवित्र।

505. **विस्फुलिंगिनी** – सुन्दर चिन्गारियों से युक्त शरीर वाली।

506. **शूलिनी** – शूल को धारण करने वाली। शूल बरछे के आकार का एक अस्त्र होता है जो लम्बा, नुकीला व काँटेनुमा होता है। शूल का अर्थ छड़ या शलाखा भी होता है। शूल का अर्थ त्रिशूल भी है। त्रिशूल वाली अर्थात त्रिशूल को धारण करने वाली। त्रिशूल के तीन काँटे इच्छाशक्ति, ज्ञानशक्ति और क्रियाशक्ति के प्रतीक हैं। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ इन तीनों शक्तियों को धारण करने वाली।

507. **सूरुपा** – सुन्दर रुप वाली।

508. **कपिला** – जिनके शरीर से भूरे, मटमैले रंग की आभा निकलती है। सफेद गाय की तरह सीधी और बहुत अच्छी। कपिल अर्थात पिंगल वर्ण वाली। भूरा रंग या मटमैला रंग कपिल रंग होता है। सफेद रंग की या जिसके शरीर में सफेद फूल पड़े हों। सफेद गाय को कपिला कहते हैं और यह गाय बहुत अच्छी और सीधी समझी जाती है। मुक्त लोगों को धारण करने वाली अर्थात् अपने सान्निध्य या समीप में रखने वाली। कं (सुखम्) पिबति इति कपिः, जो सुख को पी जाते हैं अर्थात् समाप्त कर देते हैं वे कपि है। मुक्त पुरुष सुख और दुख से विरक्त रहते है, अतः वे कपि कहलाये जाते है। इस प्रकार कपि का अर्थ हुआ मुक्त व्यक्ति। ला धातु का अर्थ है ग्रहण करना, नाश करना। कम् सुखम् पिबति इति कपिः अर्थात् सुख का आस्वादन लेने वाले अर्थात् सुखी व्यक्ति भी कपि कहलाये जा सकते है। सुखी व्यक्तियों को ग्रहण करने वाली अर्थात् अपनी समीपता देने वाली। तात्पर्य हुआ कि देवी की शरण में आने पर व्यक्ति सुखी या आनन्दित हो जाता है। आनन्दरूपाः पाता लाता वा। जो आनन्द स्वरूपा है, भक्तों की रक्षिका है एवं भक्तों को अपना आश्रय देने वाली है। क अर्थात् आनन्द। पाता (रक्षिका) से पि शब्दाक्षर लिया एवं ला से ग्रहण करने वाली अर्थात् अपने लोक में जगह देने वाली या आश्रय देने वाली अर्थ किया गया है।

509. **हव्यवाहिनी** – हवन सामग्री को ग्रहण करने वाली अर्थात् अग्नि स्वरुपा।

510. **नाना तेजस्विनी देवी** – अनेक प्रकार के तेजो से युक्त देवी। देवी का एक अर्थ है जो हर्ष से युक्त रहती है।

511. **परब्रह्मकुटुम्बिनी** – परब्रह्म शिव की कुटुम्बिनी अर्थात् शक्ति या पत्नी स्वरुपा।

512. **ज्योति** – ज्योति या प्रकाश के स्वरुप वाली। ज्योति का अर्थ है प्रकाश, उजाला, लपट, सूर्य, अग्नि, विष्णु, वेदान्त में परमात्मा का नाम। द्योतत इति ज्योतिः। ज्योतिषां ज्योतिः। द्युतेरिसिन्नादेश्च जः इति हि दशपादिका। ज्योतिः इति अग्नि। ज्योतिरिति दिवाकरः। तत्र गाते ज्योतिः। ज्योतिरिति नेत्रम्। तत्र गतं ब्रह्म ज्योतिः। ज्योतिषि नक्षत्राणि। तत्र गतं ज्योतिः। प्रकाशरूपत्वात् च ज्योति। ज्योतिरग्नौ दिवाकरे। पुमान्नपुसकं दष्टौ स्यान्नक्षत्र प्रकाशयोः। भारहरणेन ज्याया भूमेरूतिश्च अनयानेन। तदा त्विदन्तमिदं पदम्। जो चमकती है अर्थात प्रकाशशील है। प्रकाश भौतिक एवं ज्ञान दोनो का होता है। देवताओं के चारो ओर आभा मण्डल होता है। चमकने वाले की चमक अर्थात उनकी चमक का कारण या सर्वाधिक चमक वाली। सूर्य, चन्द्र, अग्नि, विद्युत या देवताओं में जो चमक होती है उसका कारण भी देवी ही है। द्युत् धातु में उणादि (दशपादिका या पंचपादिका) का इसन् प्रत्यय लगाकर आगे वाले द का ज कर ज्योति शब्द बना है। अग्नि स्वरूपा। सूर्य स्वरूपा। सूर्य या अग्नि में विराजमान। नेत्र स्वरूपा। नेत्र में स्थित ब्रह्म स्वरूपा। चमकने वाले नक्षत्र स्वरूपा। नक्षत्र में विराजमान। जो दूसरे को प्रकाशित करती है।

513. **ब्रह्ममयी देवी** – ब्रम्हमय स्वरुप वाली अर्थात् ब्रह्म के स्वरुप वाली देवी। ब्रह्म का अर्थ वेद भी है। वेद स्वरूपिणी देवी।

514. **परब्रह्मस्वरुपिणी** – परब्रह्म के स्वरुप वाली। परब्रह्म अर्थात जगत से परे एवं जगत में भी विद्यमान सर्वव्यापक निर्गुण निराकार सत्ता जिससे जगत पैदा होता है और जिसमें विलीन भी होता है। जो मन और बुद्धि से परे हो ऐसे ब्रह्म के स्वरूप वाली। पर का अर्थ है जो मन और बुद्धि की पकड़ में न आये। परब्रह्म का अर्थ है – कार्य ब्रह्म एवं कारण ब्रह्म से परे की अवस्था वाला ब्रह्म। विश्व से परे स्थित ब्रह्म। पुरुष सूक्त में आया है कि इस विश्व में ब्रह्म का केवल एक चौथाई हिस्सा ही आया है और शेष तीन चौथाई हिस्सा इस विश्व से परे है। इस विश्व से परे ब्रह्म का जो हिस्सा है वह परब्रह्म है। जो ब्रह्म कार्य ब्रह्म एवं कारण ब्रह्म से परे है। स्थूल पदार्थ एवं सूक्ष्म पदार्थ से युक्त जो चैतन्य है वह कार्य ब्रह्म है। जैसे घड़े में मिट्टी स्थूल है एवं आकाश सूक्ष्म

है, इससे युक्त जो चैतन्य है वह कार्य ब्रह्म है। कार्य को बनाने वाली शक्ति से युक्त जो चैतन्य है वह कारण ब्रह्म है। कार्य को बनाने वाली माया शक्ति से युक्त ब्रह्म कारण ब्रह्म होगा। तात्पर्य है उत्पादिनी शक्ति से युक्त चैतन्य कारण ब्रह्म है। जो शुद्ध चैतन्य है अर्थात् जिसमें कार्य एवं कारण दोनों का संयोग नही है, वह परब्रह्म है।

515. **परमात्मा** – सर्वोच्च आत्मा जिससे अन्य आत्मायें निकली हैं। परमात्मा समुद्र है और जीवात्मा समुद्र की बूँदे हैं, परमात्मा अग्नि है और जीवात्मा अग्नि से निकले हुए कण। परमात्मा को ब्रह्म, परब्रह्म, ईश्वर, भगवान भी कहते हैं। परम का अर्थ है सर्वोच्च और आत्मा का अर्थ है चेतना जिसे कभी कभी प्राण शक्ति भी कहते हैं। परमात्म स्वरुप वाली अर्थात् सर्वश्रेष्ठ आत्मस्वरुप वाली। आत्मा रचयिता है तो परमात्मा निर्देशक (Director) है, वो हमारी रचना को डायरेक्ट करता है। जीवात्मा अर्थात बूँद का परमात्मा अर्थात महासागर में मिल जाना मोक्ष या निर्वाण है। (विष्णु सहस्रनाम की एक टीका में परमात्मा शब्द का अग्रलिखित विग्रह दिया गया है – सर्वपरमाणां ब्रह्मादीनामात्मा। परमश्चायमात्मा। परा मा येषां ते परमाः। स्वयं च माया अपि परः। पान्तीति पाः लोकपाला ब्रह्मादयः। तेषां रमायाश्चायमात्मा। परविषया प्रमा येषां ते परमाः। परमाश्चानेन सर्वेअप्यात्मानः। परमानप्यत्ति चायम्। परेषां तामसानां प्रभां चायमत्ति। परांश्च तामसानयं मा आदत्ते नाअदतत इति च परमात्मा। पाति रमते चायमात्मा। परश्च मश्च ज्ञानरूपश्चायमात्मा। सभी श्रेष्ठ देवताओं की आत्मा स्वरूपा। जो स्वंय में श्रेष्ठ है और आत्मस्वरूपा है। माति अनेन इति मा अर्थात मा का अर्थ बुद्धि कर सकते है। माति अर्थात जानता है। श्रेष्ठ बुद्धि है जिनकी। आत्म अर्थात स्वंय, मा अर्थात माया, पर अर्थात परे इस प्रकार परमात्मा का अर्थ हुआ जो माया से परे है। प का अर्थ है पालन करने वाला या रक्षा करने वाला। ब्रह्मादि जो जगत की रक्षा या पालन करने वाले हैं उनकी लक्ष्मी की आत्मास्वरूपा। श्रेष्ठ या अन्य विषयों में है बुद्धि जिनकी वे हैं परमा। मॉ का अर्थ है बुद्धि जिनके द्वारा श्रेष्ठ बुद्धि मिलती है एवं जो सभी की आत्मस्वरूपा हैं। जो श्रेष्ठ या बडें देवताओं, ऋषियों का भी भक्षण करता है। प्रलयकाल में ब्रह्मा जी तक के सभी प्राणी विलीन हो जाते हैं। शत्रुओं के या तामसी राक्षसों की बुद्धि कों नष्ट कर देते हैं अर्थात हर लेते हैं। शत्रुओं और तामसी राक्षसों को ग्रहण नहीं करते अर्थात उन्हें दूर ही रखते हैं। ऐसी आत्मस्वरूपा जो भक्तों की रक्षा करता है एवं स्वयं आनन्दित है। जो श्रेष्ठ हैं ज्ञानस्वरूप हैं ऐसी आत्मा। पुल्लिंग को स्त्रीलिंग में परिवर्तित करके देवी के भी अर्थ निकाले जा सकते हैं।)

516. **परा** – सर्वोत्कृष्ट, श्रेष्ठ अर्थात् जो ज्ञान, बुद्धि सुन्दरता बल में दूसरे देवताओं से श्रेष्ठ है। परावाणी स्वरुपा अर्थात् वाणी के मूल स्वरुप वाली। मूलाधारचक्र में वाणी सर्वप्रथम जिस रूप में उद्भूत होती है वह परावणी कहलाती है। राति इति रा से रा का अर्थ है देने वाली। एकाक्षरी कोष से प के अर्थ ले सकते हैं। ऐसे शब्द जो प से आरम्भ होते हैं उनको भी ले सकते हैं।

517. **पुण्या** – पुण्य स्वरुपा। पुण्य का अर्थ है सत्कर्म, धर्मकर्म, धर्म में विहित कर्म जिसका उत्तम फल होता है अर्थात स्वर्ग लोक या और ऊपर के लोक मिलते हैं। पुण्य का अर्थ धर्मविहित और उत्तम फलदायक कार्य है। अच्छे और शुभ कर्मों का संचित रूप जिसका आगे चलकर उत्तम फल मिलता है पुण्य कहलाता है। पुण्य + आ, आ का अर्थ है देना। धार्मिक, अच्छे कार्य की फलस्वरुपा। जो स्वयं ही पवित्र करती है। जो धर्म की नियन्त्रिका है अर्थात् धर्म का अधर्म का नियन्त्रण करती है एवं अधर्म अधिक होने पर धर्म की सुरक्षा भी करती है। बड़े–बड़े देवताओं द्वारा जिन्हें पूर्ण कहा जाता है अर्थात् यह कहा जाता है कि उनके अन्दर कोई कमी नही है। जो शुभ कर्म का आचरण करती है। शुभ कर्म क्या है, भक्तों को दर्शन देना। जो अपने यश से तीनों लोकों को पवित्र करती है। पुणाति त्रिभुवनम् स्वयशसा इति पूण्या। अच्छा करना जिसके लिए अनुरूप है अर्थात् पूणे साधु। पुण् धातु का अर्थ अच्छा काम करना होता है इस प्रकार पुण्या का अर्थ अच्छा कार्य या सत्कर्म करने वाली।

518. **पुण्यदा** – पुण्य देने वाली अर्थात् पुण्य के फलों को देने वाली। अनुकूल और रूचि के अनुसार फल देने वाली। अनुकूल और मंगलकारी स्थितियाँ देने वाली।

519. **पुण्यवर्धिनी** – पुण्य को बढ़ाने वाली अर्थात् प्रेरणा देकर लोगों को पुण्यकारी कार्य में लगाने वाली।

520. **पुण्यदा** – शुभ या मंगल देने वाली। पुण्य का एक अर्थ पवित्र, शुभ या मंगलकारक भी होता है। धर्मरुपी पुण्य प्रदान करने वाली। शुभ या अच्छा फल देने वाली। जिसके दर्शन का फल शुभ या अच्छा हो।

521. **पुण्यनाम्नी** – पुण्य की संज्ञा (नाम) से विभूषित। लोग पुण्य कहकर पुकारते हैं।

522. **पुण्यगन्धा** – पुण्य की गन्ध से अर्थात् पवित्र गन्ध से युक्त। लोग गन्ध सूँघकर पवित्र होते हैं अर्थात उनके पापों का विनाश हो जाता है। पुण्य अर्थात पवित्र अर्थात दोषों का, पापों का नाश करने वाला। सोनजूही के फूल के समान पवित्र गन्ध वाली। चम्पा पुष्प के समान पवित्र गन्ध वाली।

523. **प्रियातनुः** – मनोहर शरीर वाली। प्रिय अर्थात मनोहर। तनु अर्थात शरीर। मनोहर है सम्पूर्ण शरीर जिसका। प्रिय+आ (सम्पूर्ण) + तनु। कभी कभी आ का कोई अर्थ नहीं देते हैं क्योंकि आ का एक अर्थ है भाव (पदार्थ)। प्रिय लगने वाली सुन्दर स्वरुप धारण करने वाली। तनु का अर्थ है सुन्दर शरीर।

524. **पुण्यदेहा** – पवित्र शरीर वाली क्योंकि उनका शरीर भी चैतन्य से बना है न की पंच तत्वों से।

525. **पुण्यकरा** – पुण्य को करने वाली अर्थात पुण्य की रचना करने वाली। पुण्य को कराने वाली अर्थात् बढ़ाने वाली।

526. **पुण्यनिन्दकानिन्दका** – पुण्य की निन्दा करने वालों की निन्दा करने वाली।

527. **पुण्यकालकरा** – पुण्यकाल की रचना करने वाली, निर्माण करने वाली। जैसे ब्रह्ममुहूर्त, अमावस्या संक्रांति, गुरूपुष्य नक्षत्र आदि पुण्य काल की कारण। पुण्य के समय को करने वाली या बढ़ाने वाली। पुण्यकाल का अर्थ है दान पुण्य का समय। पुण्य काल अर्थात् अच्छे कर्म करने का समय जिसमे सफलता मिलती है।

528. **पुण्या** – पवित्रता स्वरूपा। पुण्य का एक अर्थ पवित्रता भी होता है। पुण्यक व्रत स्वरूपा। पुण्य का अर्थ पुण्यकव्रत भी होता है, पुण्यक व्रत करने से पुण्य बढ़ता है, सन्तान का कल्याण होता है या सन्तान की प्राप्ति होती है। ब्रह्मवैवर्तपुराण में इसका उल्लेख है। पुण्य स्वरुपा। पवित्र करने वाली या मंगल करने वाली। पुण्य का अर्थ है पवित्र या शुद्ध या मंगलकारक, धर्मविहित और उत्तम फलदायक। धार्मिक दृष्टि से कुछ विशिष्ट अवसरों पर कुछ विशिष्ट कर्म करने से प्राप्त होने वाला शुभ।

529. **सुपुण्या** – श्रेष्ठ और उत्तम फलदायक। अच्छी प्रकार से या अत्यन्त फलदायक। पुण्य का अर्थ होता है उत्तम फलदायक। श्रेष्ठ या सुन्दर पुण्य से युक्त।

530. **पुण्यमालिका** – पुण्यों की मालाओं से विभूषित। माला का समष्टि भी होता है। अतः इस नाम का अर्थ हुआ अनेक या अनेक प्रकार के पुण्यों को करने वाली अर्थात श्रेष्ठ कर्म करने वाली। पुण्य का अर्थ है अच्छे कर्म जिसका फल अच्छा होता है अर्थात स्वर्ग आदि उच्च लोकों की प्राप्ति होती है। पुण्य अर्थात प्रिय (मनोहर) और सुन्दर (सुखद), पुण्य अर्थात पवित्र।

531. **पुण्यखेला** – पवित्र क्रीड़ाओं वाली अर्थात सत्कार्य या अच्छे कार्य या शास्त्रों में जो कर्तव्य कर्म बताये गये हैं, उनको करने वाली। शास्त्र में कहा गया है कि भगवान राम की तरह आचरण करें, न कि रावण की तरह। पुण्य अर्थात पवित्र अर्थात सत्कार्य। पुण्यों से खेलने वाली अर्थात मनोरंजन करने वाली या मनोविनोद करने वाली। भक्तों द्वारा किये गये पुण्य से इनका मनोरंजन होता है, मनोविनोद होता है अर्थात इन्हें अच्छा लगता है। खेलने के लिए नजदीक आना पड़ता है। पुण्य करोगे तो देवी तुम्हारे नजदीक आयेंगी और तुम्हारे साथ आँख मिचौली का खेल भी लेखेंगी। पुण्य ही है खेल, क्रीड़ा जिनकी। पुण्य ही है खेलने का सामान। ऐसा कहते हैं कि ग्रह–नक्षत्र, तारे, मनुष्य, पेड़, जीव, जड़ पदार्थ देवी के खेलने के खिलौने हैं।

532. **पुण्यकेली** – शुभ कर्म को बताती है या दिखाती है। पुण्यक + इला, ईरण ईल्यते प्राप्यते से यह शब्द बनता है। पुण्यकम् ईरयति इति पुण्यकेली। ईलयति और ईरयति एक हैं अर्थात र और ल में कभी कभी अभेद होता है। पुण्यों की भूमि अर्थात पुण्य इन्हीं से पैदा होते हैं। पुण्यक+इला, पुण्यक का वही अर्थ है जो पुण्य का। इला का अर्थ है भूमि। पुण्य ही है क्रीड़ा जिनकी। पवित्र कार्यों में क्रीड़ा करने वाली अर्थात उनमें रहने वाली। केली भी एक खेल है अर्थात ऐसा क्रियाकलाप है जिसमें मनोरंजन होता है।

533. **पुण्यनामसमा** – पुण्य नाम के समान पापनाशिनी। भगवान का नाम पुण्य नाम होता है या लोग सप्तपुरी, पंचकन्या आदि का नाम लेते हैं जिससे पुण्य मिलता है। जिनके नाम का उच्चारण पुण्यकारक होता है, उनके समान अर्थात पुण्य नाम वाली। पुण्य नाम के पुष्पों से सुशोभित।

534. **पुरा** – पूर्व दिशा स्वरूपा। प्राचीन काल में भी जिनका अस्तित्व था। प्राचीन काल से ही स्थित रहने वाली, प्रकाशित होने वाली। गंगा जी स्वरूपा या गंगा जी से अभेद है जिनका। गंगा जी का एक नाम पुरा है। पूर्व दिशा को भी पुरा कहते हैं। पालन करने वाली। पॄ पालने धातु से पुरा बन सकता है। इसमें उदोष्ठि पूर्वम् सूत्र लगेगा।

535. **पुण्यसेव्या** – पुण्यशील जनों द्वारा सेवनीय।

536. **पुण्यखेल्या** – पुण्यों से खेलने योग्य। पुण्य करोगे तो देवी तुम्हारे साथ खेल खेलेंगी। खेलने के लिए नजदीक आना जरूरी है और नजदीक आने के लिए पुण्य कर्म करना पड़ेगा। पुण्यात्मक खिलौने वाली अर्थात पुण्य रूपी खिलौने से खेलती है। पुण्य की क्रीड़ाओं को करने वाली।

537. **पुराणा** – बहुत अधिक उम्र वाली। हिन्दुओं के धार्मिक ग्रन्थ पुराण स्वरूपा। भगवान शिव की शक्ति स्वरूपा। भगवान शिव का एक नाम पुराण है। बहुत अधिक उम्र वाले को भी पुराण कहते हैं। पुरातन स्वरुपा या सनातन स्वरुपा। पालन करने से जीवित रखने वाली। पुरा से पालन करना और अनति से जीवित रखना अर्थ लिया है। पुराण विद्या स्वरूपा या पुराणों में रहने वाली।

538. **पुण्यवल्लभा** – पुण्यशाली या सुकृतशाली भक्तों के लिए या भक्तों की प्रिय। पुण्य अर्थात सतकर्म।

539. **पुरुषा** – बहुतों को उत्पन्न करने वाली। पुरू सूते उत्पादयति इति पुरुषः, स्त्रीलिंग में पुरुषा। शरीर रुपी पुर में शयन करने वाली अर्थात् आत्मस्वरुपा। शक्तिशालिनी।

540. **पुरुषाप्राणा** – देह में सोने वाले (अर्थात रहने वाले) प्राणस्वरूपा। ऐसा प्राण जो देह में रहता है। पुरि शेते इति पुरुषः, जो पुर अर्थात शरीर में सोता है अर्थात विराजमान रहता है वह पुरुष है अर्थात आत्मा है। श्रेष्ठ पुरुषों की प्राण स्वरुपा।

541. **पुरुषात्मस्वरुपिणी** – मनुष्य के शरीर में रहने वाली आत्मा के स्वरूप वाली। पुरुष का अर्थ मनुष्य, मनुष्य का शरीर, आत्मा, शिव, विष्णु, सूर्य, ब्रह्म, सांख्य में बताया गया अविनश्वर चेतन तत्व है। परमात्मा के स्वरूप वाली या ब्रह्म के स्वरूप वाली। पुरु सूते इस व्युत्पत्ति से भी पुरुष शब्द बनता है जिका अर्थ हुआ बहुतों को उत्पन्न करने वाला। बहुतों को उत्पन्न करने वाली आत्मा के स्वरूप वाली। पुरुष के स्वरूप के स्वरूप वाली। सांख्य दर्शन में जो पुरुष बताया गया है वह खुद इनका रूप है। श्रेष्ठ पुरुषों के पुरुषार्थ के स्वरुप वाली। आत्मा का अर्थ आत्मा, चेतन तत्व, धर्म, स्वभाव, शक्ति है।

542. **पुरुषांगी** – पुरुष के पास जाने वाली अर्थात ब्रह्म या परमात्मा के साथ स्थित। अंगति का अर्थ है गच्छति अर्थात जाना। श्रेष्ठ पुरुषों के सभी प्रकार के अंगों से सुशोभित।

543. **पुरुषी** – पुरुष की अर्थात ब्रह्म की स्त्री या गृहिणी। पुरुष ब्रह्म की स्त्री है। बहुतों को काम में लगाने

वाली। पुरू सुवति (कर्मसु प्रेरयति) पुरुषस्वरुपिणी। जब ईकार से स्त्रीलिंग होता है तो कभी कभी पुरुष के साथ अर्थ में प्रयोग होता है क्योंकि पुम्योगात ऐसा सूत्र आया है। कुछ ही नाम पहले पुरुषा शब्द भी आया और यह पुरुषी है। अतः कुछ न कुछ अन्तर करना पड़ेगा। समय पर पुरुष के अंग से युक्त अर्थात् पुरुष का रुप भी धारण करने वाली। (यदि पुरुषः यह नाम होता तो अर्थ होता पुरुष भाव में प्राप्त, स्त्री पुरुष का अभेद दिखाने के लिए जैसे किसी विद्वान पुरुष को देखकर कह दिया हो कि मानो सरस्वती ने पुरुष रूप धारण कर लिया, पुरी शेते इति पुरुषः अर्थात शरीर रूपी पुर में जो लेटा हुआ है अर्थात चैतन्य या आत्मा स्वरूपा)।

544. **पुरुषस्य कला सदा** – परम पुरुष अर्थात परमात्मा की नित्य कला (शक्ति, तेज)। परमात्मा के साथ हमेशा रहने वाली शक्ति स्वरूपा। पुरुषों में रहने वाली श्रेष्ठ कला (योग्यता या श्रेष्ठता) से सदैव विभूषित।

545. **सुपुष्पा** – सुन्दर पुष्पों से युक्त।

546. **पुष्पकप्राणा** – कुबेर का विमान या पुष्पक विमान जिसे प्राणों के समान परम प्रिय है। फूलों में हैं जिनके प्राण अर्थात फूल जिन्हें अतिशय प्रिय या पसन्द हैं। पुष्पक का वही अर्थ है जो पुष्प का। बिना अर्थ बदले पुष्प में कन् प्रत्यय लगाकर पुष्पक बना। फूलों की तरह कोमल हृदय वाला। साधुओं के लिए कहा जाता है कि उनका हृदय फूल से अधिक कोमल और वज्र से अधिक कठोर है। पुष्पक विमान जिन्हें अतिशय प्रिय है। पुष्पक विमान की आधार। प्राण का अर्थ प्राणों के समान परम प्रिय, शक्ति, बल, जीवन है।

547. **पुष्पहा** – पुष्प नामक आँखों के रोग को समाप्त करने वाली। हन् धातु से हा बनाने पर नष्ट करना अर्थ आता है। जहरीले पुष्पों को हटाने वाली। पुष्पों की माला धारण कर दुष्ट राक्षसों को मिटाने वाली। अनुचित कार्य करने वाले अतः अयोग्य पुष्पों की माला धारण कर राक्षसों का वध करने वाली।

548. **पुष्पवल्लभा** – प्रसन्न व्यक्ति जिन्हें अत्यन्त प्रिय हैं। पुष्प प्रसन्नता का प्रतीक है। पुखराज, लौंग, वाम मार्ग में चढ़ाया जाने वाला माँस जिन्हें अत्यन्त प्रिय है। पुष्प के अर्थ हैं – पुखराज, लौंग, वाम मार्ग में चढ़ाया जाने वाला माँस। पुष्पों को अच्छी लगने वाली। पुष्प है प्रिय जिन्हें।

549. **पुष्पप्रिया** – पुष्प है प्रिय जिन्हें अर्थात फूलों को पसन्द करती हैं। वाममार्गी पूजा में स्त्रीरज चढ़ाना जिन्हें बहुत पसन्द है। पुष्प का एक अर्थ है स्त्रीरज।

550. **पुष्पहारा** – फूलों के हारों से सुशोभित।

551. **पुष्पवन्दकवन्दका** – पुष्प के समान अच्छी स्तुति समूह से जिनकी वन्दना की गई। पुष्प अर्थात प्रसन्नता या विकास या सुगन्ध (यश युक्त)। वन्द अर्थात स्तुति। कन् प्रत्यय अर्थ को बिना बदले भी प्रयुक्त होता है और कभी कभी समूह या स्नेह अर्थ को दिखाता है। वन्दक अर्थात स्तुति समूह। फूल हैं प्रिय जिन्हें, उनके द्वारा वन्दित।

552. **पुष्पहा** – फूलों की ओर जाने वाली अर्थात फूलों की ओर आकर्षित होने वाली। पुष्प में विद्यमान सौन्दर्य को जाने वाली अर्थात सौन्दर्यस्वरूपा। यहाँ हा शब्द हन्ति से बना जिसका एक अर्थ जाना भी होता है। रजोधर्म का त्याग करने वाली। पुष्प अर्थात् सफलता को मिटाने वाली। अनुचित कृत्य करने वाले राक्षसों की सफलता मिटाने वाली।

553. **पुष्पमाला** – फूलों की माला धारण करने वाली।

554. **पुष्पनिन्दकनाशिनी** – पुष्प अर्थात् श्रेष्ठ गुणों की निन्दा करने वाले अधम राक्षसों का नाश करने वाली।

555. **नक्षत्रप्राणहन्त्री** – प्रलय काल में नक्षत्र के प्राण (जीवन, आयु) अर्थात श्वासोच्छ्वास क्रिया अर्थात उनकी चमक को नष्ट कर देने वाली अर्थात नक्षत्रों को समाप्त कर देने वाली। तपस्या आदि के द्वारा जिन्होंने नक्षत्र अर्थात् भाग्य बढ़ा दिया ऐसे राक्षसों का विनाश करने वाली।

556. **नक्षत्रा** – नक्षत्रस्वरुपा। नक्षत्र की शक्ति या गुण स्वरूपा। जिसमें सौहार्द्र है। न क्षदन्ति अर्थात जो नष्ट नहीं होती। (भगवान विष्णु का एक नाम नक्षत्री है जिसकी टीका एक विद्वान ने इस प्रकार की है – नक्षत्राणामयं स्वामी। चन्द्रगतश्च विशेषतः। नक्षा नक्षया अनिकेतनाः। तेषां निकेतनं भूत्वा त्रायते। नक्षत्रों का यह अर्थात् नक्षत्रों का स्वामी। चन्द्रमा में विशेष रूप से स्थित। क्षी निवासे धातु होती है जिससे क्ष का अर्थ होता है रहने वाला घर। नक्ष का अर्थ हुआ जिसका घर नही है। जिसका घर नही है उनकी रक्षा करने वाले। उनका आश्रय या घर बनकर रक्षा करते है। रक्षा का अर्थ है जीवन के लिए आवश्यक चीजों का उपलब्ध होना।)

557. **लक्षवन्दका** – लाखों उपासक जिनकी उपासना करते हैं। लक्ष का अर्थ लाख एवं लक्ष्य (उद्देश्य अर्थात मनोकामना) होता है। मनोरथ से अर्थात मनोरथ पूरा करने के लिए जिनकी वन्दना की जाती है। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वन्दनीय। लक्ष्य को प्राप्त करने वाले पुरुषों द्वारा वन्दित। लक्ष्य को प्राप्त करने वाले पुरुषों का अभिनन्दन करने वाली।

558. **लक्षमाल्या** – लक्ष्य को प्राप्त करने वाली मालाओं से सुशोभित।

559. **लक्षहारा** – लक्ष्य को दिलाने वाली। हरण करना अर्थात अपने भक्तों के लिए हरण करना अर्थात भक्तों को हरण करके देना। लक्ष्य ही है आभूषण जिनका। लाखों अर्थात् असंख्य दैत्यों का विनाश कर देने वाली। राक्षसों के उद्देश्य को नष्ट कर देने वाली।

560. **लक्षा** – जो शुभ अशुभ कर्मों को देखती रहती हैं। लक्षयति इति लक्षा। लक्षणों वाली अर्थात शुभ लक्षणों वाली। लक्ष्य स्वरुपा।

561. **लक्षस्वरुपिणी** – सभी प्राणियों के लिए परम लक्ष्य (Target) या प्राप्तव्य। लक्ष्य के स्वरुप वाली।

562. **नक्षत्राणी** – नक्षत्रों के स्वरुप वाली। नक्षत्रों को चैतन्य अर्थात क्रियाशील बनाने वाली। अनति का अर्थ है चैतन्य करना।

563. **सुनक्षत्रा** – सुन्दर नक्षत्र से युक्त।

564. **नक्षत्राहा** – नक्षत्रों को प्रलय काल में सब ओर से अर्थात पूर्णतया समाप्त करने वाली। हन्ति अर्थात मारना अर्थ से हा बन सकता है। जिसके आदेश से नक्षत्र अनुशासन में रहते हैं। नक्षत्र+आह, आह का अर्था है नियोग (अनुशासन या नियन्त्रण)/श्रेय। जिसके द्वारा नक्षत्र आकाश में फेकें गये। दैत्यों के नक्षत्रों को नष्ट कर देने वाली। श्रेष्ठ नक्षत्रों में पैदा हुए अर्थात् भाग्यशाली दैत्यों को नष्ट कर देने वाली। तपस्या के द्वारा जिन्होंने नक्षत्रों को अनुकूल कर लिया, ऐसे दैत्यों को नष्ट करने वाली। नक्षत्रों का आवाहन करना अर्थात रचना करने वाली। ह्व धातु से भी ह बन सकता है।

565. **महोदया** – अत्यधिक समृद्धि वाली। उदय का अर्थ है उन्नति अर्थात समृद्धि। महान उदय वाली अर्थात् आगे बढ़ने वाली, महान अभ्युदय वाली।

566. **महामाल्या** – बहुत बड़ी माला को धारण करने वाली। सुन्दर श्रेष्ठ मालाओं से विभूषित होने वाली। महा अर्थात पूजनीय, श्रेष्ठ, पवित्र।

567. **महामान्या** – सभी के द्वारा अतिशय सम्मानित होने वाली।

568. **महती** – पूज्या और विशाल। मह् पूजायाम् धातु होती है। तेज का विस्तार करने वाली अर्थात देने वाली। महस् का अर्थ है तेज और तनोति का अर्थ है विस्तार करना। अतिशय विशिष्ट शक्ति से युक्त। तन् धातु में ड प्रत्यय लगाने त शब्द बनता है जिसका अर्थ है विस्तार करने वाला। स्त्रीलिंग में ता या ती होता है।

569. **मातृपूजिता** – मातृ शक्तियों द्वारा पूजित। ये शक्तियाँ तन्त्र में पूजित होती है और इनकी संख्या 7 है। ब्राह्मी, वैष्णवी, माहेश्वरी, वाराही, कौमारी, चामुण्डा, ऐन्द्री ये 7 शक्तियाँ है। माताओं द्वारा पूजित।

570. **महामहाकनीया** – अत्यन्त सूक्ष्म अर्थात अणु से भी छोटा परमाणु रूप स्वरूपा। अतिशय सुन्दर श्रेष्ठ गुणों से युक्त। कनीय का अर्थ है सुन्दर और यहाँ पर श्रेष्ठ अर्थ होगा।

571. **महाकालेश्वरी** – महाकाल अर्थात् शिव पर भी शासन करने वाली। महाकाल के ऐश्वर्य की स्वामिनी। महाकाल की आराध्या।

572. **महा** – तेजस्वरुपिणी। पूजनीया। विष को नष्ट करने वाली। हन् धातु में ड प्रत्यय लगाने से ह शब्द बनेगा जो स्त्रीलिंग में हा होगा। जिसका अर्थ नष्ट करने वाली, गमन करने वाली। एकाक्षरीकोश से म का एक अर्थ विष दिया गया है। मद या अहंकार को नष्ट करने वाली। मद शब्द का म अक्षर लिया। महर लोक वाली अर्थात महर लोक में भी विद्यमान।

573. **महास्या** – विशाल मुख वाली। पूजनीय मुख वाली।

574. **वन्दनीया** – वन्दना के योग्य। वन्दना का अर्थ है प्रणाम और गुणगान।

575. **महाशब्दनिवासिनी** – महाशब्द ऊँ में या देवी प्रणव (ह्रीं) में निवास करने वाली। महान शब्द शक्ति में निवास करने वाली।

576. **महाशंखेश्वरी** – महाशंख की स्वामिनी अर्थात् श्रेष्ठ या पूजनीय शंख से विभूषित अर्थात धारण करने वाली।

577. **मीना** – मत्स्य अवतार भगवान विष्णु की शक्ति। मत्स्य स्वरुपिणी। दुष्टों की हिंसा करने वाली क्योंकि मीन धातु का अर्थ हिंसा करना होता है।

578. **मत्स्यगन्धा** – मछली की तरह गन्ध वाली अर्थात् गन्ध से सुशोभित। भगवान वेदव्यास की माता सत्यवती स्वरूपा या सत्यवती से अभेद है जिनका।

579. **महोदरी** – विशाल उदर वाली। ब्रह्माण्ड जिनके भीतर है। महा का एक अर्थ है ब्रह्माण्ड।

580. **लम्बोदरी** – लम्बे या बड़े उदर वाली। भगवान गणेश की गृहिणी से अभेद है जिनका। भगवान गणेश की शक्ति।

581. **लम्बोष्ठी** – लम्बे ओठ वाली अर्थात स्थूल जगत को चट कर जाने वाली। लम्बोष्ठी अर्थात लटके ओठों वाली अर्थात जो सुन्दर नहीं है। देवी के अनेक रूपों में कोई एक रूप ऐसा होता होगा। विराट् रूप में ओंठ इतने लम्बे कि सारे विश्व को अपने अन्दर ले सकते हैं। एक अन्य अर्थ यह भी कर सकते हैं कि जिनके ओंठ, जिनके दाँत इतने लम्बे या बड़े हैं कि शत्रुओं में भय पैदा कर देते हैं।

582. **लम्बनिम्नतनूदरी** – लटकते और गहरे कृश (पतले) उदर वाली। गहरे अर्थात अन्दर की ओर बैठा। लम्बे नीचे के अंगो और उदर वाली।

583. **लम्बोष्ठी** – लम्बे ओठों वाली अर्थात सूक्ष्म जगत को चट कर जाने वाली। जिनके ओंठ, जिनके दाँत इतने लम्बे या बड़े हैं कि शत्रुओं में भय पैदा कर देते हैं।

584. **लम्बनासा** – भगवान गणेश की शक्ति स्वरूपा। गणेश जी का सिर हाथी का है इसलिए वे लम्बी नासिका वाले कहलाते हैं। लम्बी नाक वाली।

585. **लम्बघोणा** – लम्बी नासिका वाली। लम्बी नासिका वालों की तरह भाग्यशाली, समृद्धिशाली, दृढ़निश्चयी। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जिनकी नाक लम्बी होती है वे आकर्षक, भोगी, भाग्यशाली, जीवन में सारी खुशियाँ,

दृढ़निश्चयी, भोगी होने के कारण भगवान एवं दूसरों पर कम ध्यान देने वाले होते है। हाथी वाली अर्थात हाथी पर सवार। हाथी की नाक अर्थात सूँड़ लम्बी होती है अतः हाथी का नाम लम्बघोणः है।

586. **ललत्सुका** – क्रीड़ा करने वाले शिव के प्रति सुन्दर कामनाओं वाली। शिव की सुन्दर या तीव्र कामना स्वरूपा अर्थात शिव को प्राप्त करने के लिए श्रेष्ठ कामना लिये हुए। ललत् का अर्थ है क्रीड़ा करता हुआ अर्थात क्रीड़ा करने वाला। सु अर्थात सुन्दर, का अर्थात कामना। क्रीड़ा करने वाला तोता है निर्भर जिन पर अर्थात ऐसा तोता जिनके ऊपर बैठा रहता है। आपने देवी के चित्रों में देखा होगा कि उनके शरीर के अंग में या हाथ में तोता बैठा है। एकाक्षरीकोश में सु का अर्थ निर्भर है, बिना अर्थ बदले कन् प्रत्यय लगाने से सुक का अर्थ भी निर्भर हो जाता है। प्राप्त करने की इच्छा वाली। विलास करने की इच्छा वाली। ललत्सु में कन् प्रत्यय लगाने से यह शब्द बना। सुन्दर तोता के समान स्वरुप वाली। लालायित रहने वाली। पूजा या अच्छे कर्म के लिए लालायित रहने वाली। क्रीड़ा करने वाले शिव की कामना स्वरूपा। ललत् शब्द का अर्थ है क्रीड़ा करता हुआ अर्थात् क्रीड़ा करने वाला। एकाक्षरी कोष में सु का अर्थ शिव, तोता दिया गया है। कामना का का अक्षर ले लिया, अन्यथा भी का का एक अर्थ कामना होता है। क्रीड़ा करने वाले तोता वाली अर्थात् ऐसे तोते को धारण करने वाली अर्थात् जिनके शरीर पर ऐसा तोता बैठा हुआ है। सुक का वही अर्थ है जो सु का होता है क्योंकि कन् प्रत्यय लगाने से शब्द का अर्थ नही बदलता है जैसे बालक का वही अर्थ है जो बाल का है।

587. **अतिलम्बा** – इतनी लम्बी कि मानो लम्बाई का अतिक्रमण कर लिया हो जिसने। सर्वव्यापक होने के कारण अतिलम्बी होंगी। अत्यधिक लम्बाई को लिए हुए।

588. **महालम्बा** – सर्वाधिक लम्बाई वाली अर्थात अन्य लोगों से अधिक लम्बी है। विशाल लम्बाई को लिए हुए। (नोट – प्रश्न उठता है कि अतिलम्बा और महालम्बा में लम्बा कौन है। यदि अति का अर्थ केवल अधिक लिया जाए, तो महालम्बा बड़ा है किन्तु यदि अति का अर्थ अतिक्रमण लिया जाए, तो अतिलम्बा अधिक लम्बा है क्योंकि अतिलम्बा का अर्थ हुआ जिसने लम्बाई का भी अतिक्रमण कर लिया है। महा का अर्थ है सर्वाधिक, सर्वाधिक लम्बी अर्थात अन्य लोगों से अधिक लम्बी पर महा भी एक सीमा में होता है। महाभारत में महारथी को अतिरथी से बढ़कर बताया गया है। वहाँ अतिरथी का अर्थ है बारह रथी के बराबर और महारथी का अर्थ है बारह अतिरथी के बराबर।)

589. **सुलम्बा** – सुन्दर लम्बाई से युक्त अर्थात जितनी लम्बी होनो चाहिये, उतनी लम्बी। शोभायुक्त लम्बाई वाली अर्थात लम्बी होने पर भी सुन्दर दिखती हैं, खराब नहीं दिखती है। देवी इच्छानुसार कोई भी रूप धारण कर लेती है, अतः अलग अलग नामों के अर्थ में विरोधाभास दिखने पर आश्चर्य नहीं करना चाहिये।

590. **लम्बवाहिनी** – बड़ी सेना वाली। वाहिनी का अर्थ सेना है। सारे देवता इनकी सेना हैं। चिरकाल तक रहने वाली। विलम्ब शब्द चिरकाल के लिए आता है।

591. **लम्बार्हा** – जो लम्बी भी है और पूजनीय/आदरणीय भी हैं। अर्ह का अर्थ है पूजनीय या आदरणीय। चिरकाल के लिए योग्य अर्थात चिरकालिक। विलम्ब शब्द चिरकाल के लिए प्रयोग होता है अतः लम्ब का अर्थ चिरकाल लिया गया। लम्बी आकृति वाले लोगों द्वारा पूजनीय।

592. **लम्बशक्ति** – जिनकी शक्ति बहुत बड़ी है। जिनकी शक्ति लम्बी है अर्थात औरों से अधिक है। अधिक शक्ति या सर्वाधिक शक्ति वाली। श्रेष्ठ शक्ति से युक्त।

593. **लम्बस्था** – विस्तार (महत्व) में रहने वाली। अंगों में शक्ति रूप में स्थित रहने वाली। पति में स्थित रहने वाली। लम्ब का एक अर्थ अंग दिया गया है अर्थात हाथ आदि लटकने के कारण लम्ब कहलाते हैं। लम्ब अर्थात लटकना। लम्ब का अर्थ पति भी दिया गया है। देवी अपने पति शिव में शक्ति रूप में रहती हैं या अर्द्धनारीश्वर

रूप में रहती है। लम्बे स्वरुप में स्थित रहने वाली। लम्बी चीजों में स्थित अर्थात लम्बाई में रहने वाली। लम्बिका नामक स्थान में विराजमान। कोमल तालू का लटकता हुआ मांसल भाग, उपजिह्वा लम्बिका है।

594. **लम्बपूर्विका** – ग्रहों की गति से पूर्व। लम्ब का एक अर्थ ग्रहों की गति दिया गया है। चूँकि ग्रहों में गति देवी के कारण है अतः देवी ग्रहों से पूर्व स्थित हैं। लम्बाई से युक्त या आधिक्य से युक्त, यह अर्थ भी कर सकते हैं। कभी कभी पूर्व शब्द युक्त अर्थ में भी आता है जैसे विनयपूर्वक, आदरपूर्वक का अर्थ विनययुक्त, आदरयुक्त है। पहले से ही लम्बी हैं। बाद में लम्बी नहीं हुई हैं। बहुत पहले से विद्यमान। लम्ब शब्द काल या बहुत पहले के लिए लिया गया है। पूर्व कालिका या आद्या। पूर्व का भाग लम्बा है जिनका।

595. **चतुरघण्टा** – मन्दिर में इनके चारों ओर घण्टे लगे हैं। जिनके स्थान के चारों ओर घण्टे बजते हैं चारों वेदों के शब्द या ध्वनि इनके घण्टा हैं। चार घण्टाओं / सुन्दर घण्टाओं से युक्त।

596. **महाघण्टा** – विशाल घण्टे को धारण करने वाली।

597. **घण्टानादप्रिया सदा** – सदैव घण्टे की ध्वनि है प्रिय जिन्हें। ध्यान की गहरी अवस्था में घण्टे की ध्वनि सुनाई पड़ती है।

598. **वाद्यप्रिया** – विविध प्रकार के वाद्य हैं प्रिय जिन्हें।

599. **वाद्यरता** – विविध प्रकार के वाद्यों में संलग्न रहने वाली। वाद्यों में प्रसन्न, रता का एक अर्थ प्रसन्न भी होता है।

600. **सुवाद्या** – सुन्दर वाद्यों से विभूषित अर्थात धारण करने वाली।

601. **वाद्यनाशिनी** – अपना वाद्य इतना जोर से बजाती हैं कि शत्रुओं के वाद्य का नाश हो जाता है अर्थात उनका अदर्शन अर्थात अश्रवण हो जाता है। वाद्य का अर्थ अपवाद्य अर्थात अपवाद ले लेने पर अर्थ होगा भक्तों के अपयश या बदनामी का नाश करने वाली। संस्कृत में कई बार आरम्भ के एक दो अक्षर छोड़ दिये जाते हैं जैसे कुमार सम्भव के पहले श्लोक में अवगाह्य को केवल वगाह्य लिखा गया। दुष्ट राक्षसों के वाद्यों को नष्ट करने वाली।

602. **रमा** – लक्ष्मी स्वरुपा। जो क्रीड़ा करती है अर्थात जगत की उत्पत्ति, स्थिति और संहार रूप क्रीड़ा करती है। रमु क्रीडायाम धातु होती है अर्थात जो भगवान विष्णु के साथ क्रीडा करती हैं। रमयति इति रमा अर्थात जो चित्त और मन को रमाती है वह रमा है।

603. **रामा** – भगवान राम की शक्तिस्वरुपा। राम + आ, एकाक्षरी कोष में आ का एक अर्थ शक्ति दिया गया है। कण कण में रमण करने वाली अर्थात विराजमान रहने वाली या स्पन्दन करने वाली। जिसमें योगी लोग रमते हैं अर्थात स्थिर होते हैं अर्थात अपने चित्त को टिकाते हैं। रमन्ते अस्याम् योगिनः जनाः।

604. **सुबाला** – सुन्दर बाल स्वरुपा अर्थात् सुन्दर बालात्रिपुरसुन्दरी देवी के रुप में।

605. **रमणीयस्वभाविनी** – रमणीय स्वभाव वाली। ऐसी सुन्दरता वाली जिसका रुप हर क्षण बदलता है अर्थात् नित्य नूतन सुन्दरता वाली।

606. **सुरम्या** – अच्छी तरह से रमणीय। बिना आभूषण के भी जो प्राकृतिक रुप से अति सुन्दर लगे। बिना अभूषण के भी नेत्राकर्षक और चित्ताकर्षक।

607. **रम्यदा** – सुन्दर चीजों को देने वाली अर्थात अपने भक्तों को सुन्दर वस्त्र, सुन्दर मकान, सुन्दर ज्ञान (अर्थात आत्मज्ञान) देने वाली। जो नेत्रों को अच्छा लगे वह सुन्दर है। जो आनन्द दे वह सुन्दर है। रम्यता ऐसी

सुन्दरता है जिसमें नेत्र टिक जाते है अर्थात हटने का मन नहीं करते। मनोहर व्यक्ति या मनोहर स्थान को देने वाली। रम्यता अर्थात सुन्दरता को प्रदान करने वाली। रम्यता ऐसी सुन्दरता है जिसमें तनाव समाप्त हो जाता है और चित्त आकर्षित हो जाता है। रम्य व्यक्ति बिना आभूषण के भी सुन्दर होता है।

608. **रम्भा** – रम्भा अप्सरा स्वरुपा। रम्भा अप्सरा के समान सुन्दर। कहा जाता है कि पुरुषों में विष्णु और नारियों में रम्भा। जिसकी कान्ति सुन्दर है (रमणीया भा यस्या)। जिसे क्रीड़ा करना अच्छा लगता है (रमणे भाति)। रमण अर्थात क्रीडा के कारण प्रकाशित होने वाली (रमणेन भाति)। रमणे भाति अर्थात जिसे क्रीडा करना अच्छा लगता है। रमणेन भाति रमण या क्रीडा के कारण प्रकाशित होने वाली। रमणीया भा अर्थात जिसकी सुन्दर कान्ति है। अपने आप में रमती हुई, सुशोभित। रमती हुई अर्थात आत्मा में स्थित। रमण अर्थात प्रकृति के या संसार के क्रियाकलाप जैसे नदी बह रही है, हवा चल रही है। ये परमात्मा के रमण या क्रियाकलाप हैं। स्त्रीपुरुष के आपसी रमण में सम्भोग अर्थ आता है। रमता साधु अर्थात अपने आप में आत्मा में स्थित। उन्हें दूसरे से मतलब नहीं। केले के समान मृदु और शीतल गुण वाली। केला शीतल और कोमल होता है। रम्भा का एक अर्थ केला है। देवताओं का मनोरंजन करने वाली एवं स्वयं प्रकाशित होने वाली। रम् + भा। रम् में क्विप् प्रत्यय लगाने से रम् शब्द बनेगा जिसका अर्थ है क्रीड़ा करने वाली अर्थात मनोरंजन करने वाली।

609. **रम्भोरु** – केले के वृक्ष के समान सुन्दर, चिकनी, गोल, रोम रहित हैं जंघाऐं जिसकी।

610. **रामवल्लभा** – राम को अत्यन्त प्रिय लगने वाली अर्थात् सीता स्वरुपा। वल्लभ का अर्थ है अतिशय प्रिय।

611. **कामप्रिया** – भगवान शिव की प्रिया अर्थात भगवान शिव जिन्हें चाहते हैं। काम का एक अर्थ शिव भी होता है। कामदेव को प्रसन्न करने वाली। प्रिय का अर्थ जो मन को प्यारा है, यह तो होता ही है साथ में प्रीणाति इति प्रियः व्युत्पत्ति से प्रसन्न करने वाला अर्थ भी रखता है। कामियों को प्रिय लगने वाली अर्थात अतिशय प्रिय लगने वाली। कामदेव द्वारा चाही गई अर्थात कामदेव द्वारा जिनकी कृपा की चाहना हुई।

612. **कामकरा** – कामदेव या कामशक्ति की रचना करने वाली। काम वासना को उत्पन्न करने वाली या बढ़ा देने वाली।

613. **कामांगी** – सुन्दर अंगों या मनोहर अंगों वाली। कामदेव सुन्दरता का प्रतीक है अतः काम से सुन्दर अर्थ भी लिया जाता है।

614. **रमणी** – जिसके साथ होने पर आनन्द की अनुभूति होती है। भक्तों के साथ खेल खेलने वाली। रम् धातु का अर्थ क्रीड़ा करना भी होता है। अपने को माया के परदे से छुपाकर भक्तों के साथ लुका छिपी का खेल खेलती हैं। सुन्दर युवती स्वरूपा। मन को अच्छी लगने वाली। रमते मनो अस्याम्। रमणी का अर्थ सुन्दर भी होता है एवं आनन्द देने वाली भी होता है।

615. **रति** – सुरत क्रीड़ा या सम्भोग क्रिया स्वरूपा। प्रत्येक क्रिया देवी का रूप है क्योंकि देवी शक्ति स्वरूपा हैं। कामदेव की पत्नी स्वरूपा। कामदेव की पत्नी के समान सुन्दर है।

616. **रतिप्रिया** – कामदेव की पत्नी को भी जो प्रिय है अर्थात कामदेव की पत्नी जिन्हें बहुत चाहती हैं।

617. **रतिरती** – शिव भक्ति में लगी हुई। रति का एक अर्थ भक्ति भी होता है। रती शब्द रत से बना जिसका अर्थ है लगा हुआ। रति की भी रती अर्थात अतिशय सुन्दर रूप वाली।

618. **रतिसेव्या** – कामदेव की पत्नी रति के द्वारा सेवनीय अर्थात पूजनीय या भजनीय।

619. **रतिप्रिया** – रति है प्रिय जिन्हें। अतिशय प्रिय। रति को जो प्रिय है। रति के समान रति है प्रिय जिन्हें। रति का अर्थ है कामदेव की पत्नी, सुरत क्रीड़ा।

620. **सुरभि** – गाय स्वरूपा या सुरभि गाय की तरह सबकी मनोकामना पूरी करने वाली। नासिका को तृप्त कर देने वाली गन्ध स्वरूपा। सुरभि का अर्थ सुगन्ध, बसन्त ऋतु, चम्पक, कदम्बवृक्ष।

621. **सुरभी** – सुन्दर गन्ध से युक्त। मधुर गन्ध से युक्त या खुशबूदार। सुरभिन् से सुरभि बन जाएगा। सुरभी का अर्थ विख्यात, प्रसिद्ध, सुहावना या मनोहर भी होता है। (सुरभि और सुरभी दोनों एक ही हैं, ङीष् प्रत्यय लगाने से सुरभी बनता है।)

622. **शोभा** – बढ़े हुए शारीरिक सौन्दर्य वाली। वह सौन्दर्य जो दूसरों को प्रभावित करे शोभा है। शारीरिक सौन्दर्य जो अच्छा रूप (अंगों का सही आकार, आकृति और रंग) मिलने से, युवावस्था आने से, घर में सुखोपभोग होने से प्राप्त होती है, शोभा है। जब शोभा में कामोद्रेक भी हो तो वह कान्ति हो जाती है।

623. **दिक्शोभा** – दिशाओं की शोभा स्वरूपा।

624. **शुभनाशिनी** – दैत्यों के शुभ का नाश कर देने वाली। भक्तों के अशुभों का विनाश कर देने वाली। शुभ का अर्थ है सुखप्रद स्थितियाँ, मंगल, कल्याण, सौन्दर्य।

625. **सुशोभा** – सुन्दर शोभा से युक्त। सुन्दर से तात्पर्य जो आदर का पात्र बने, सामने वाले को आकर्षित करे और उसके चित्त पर अधिकार कर ले। शोभा का तात्पर्य है शारीरिक सौन्दर्य।

626. **महाशोभा** – परमशोभा से युक्त। सर्वाधिक शारीरिक सौन्दर्य वाली। महा का अर्थ सर्वाधिक, अतिशय।

627. **अतिशोभा** – अतिशय शोभा वाली। शोभा का तात्पर्य है बढ़ा हुआ शारीरिक सौन्दर्य।

628. **प्रेततापिनी** – प्रेतों को तपा देने वाली अर्थात संतप्त या दुखी कर देने वाली। प्रेत वह मृतात्मा है जो दूसरों को पीड़ा देती है। भूत अच्छे भी होते हैं किन्तु प्रेत प्रायः पीड़ा देने का काम करते हैं।

629. **लोभिनी** – लोभ से युक्त। भगवत भक्ति, ज्ञान, योग के लोभ वाली।

630. **महालोभा** – अतिशय लोभ वाली। अच्छी चीजों जैसे ज्ञान, भक्ति का अतिशय लोभ करने वाली। देवी भक्ति की भूखी हैं। महा का अर्थ सर्वाधिक, अतिशय, बहुत अधिक होता है।

631. **सुलोभा** – सुन्दर लोभ वाली अर्थात सुन्दर वस्तुओं के लोभ वाली।

632. **लोभवर्धिनी** – लोभ बढ़ा देने वाली अर्थात श्रेष्ठ पदार्थों के प्रति लोभ बढ़ाने वाली। कुछ चीजों में जैसे विद्या प्राप्ति, भगवान की प्रप्ति के उद्यम आदि में सन्तोष नहीं करना चाहिए।

633. **लोभांगी** – ऐसे अंग वाली जिस पर लोग ललचा जाते हैं (लालच की दृष्टि से देखना या उसे प्राप्त करने की इच्छा करना)। तात्पर्य है कोमल और सुन्दर अंगों वाली। अतिशय सुन्दर अंगों वाली। कमनीय अंग वाली।

634. **लोभवन्द्या** – भक्ति आदि के लोभियों द्वारा वन्दनीय। लोभ अर्थात लालच या कामना पूर्ति के लिए भी वन्दना करने योग्य अर्थात जिनकी वन्दना की जाती है।

635. **लोभाही** – लोभ+आ+हानम्, लोभ का पूर्ण त्याग कर देने वाली। हा जहाति धातु से हा का अर्थ त्याग करना होता है। यदि हन् हन्ति धातु से हा शब्द बनायें तो अर्थ होगा जिन्होंने अपने उपासक के लोभ नामक दुर्गुण का पूर्ण रूप से नाश कर दिया है। यदि लोभाहया शब्द है तब अर्थ होगा, लोभः एव आ समर्थः हयः, लोभ ही है समर्थ अश्व जिसका अर्थात लोभ से ऊपर रहती है। लोभा रूपी अश्वों से युक्त अर्थात चंचलता से युक्त। कभी कभी आ का कोई अर्थ देने की जरूरत नहीं है क्योंकि एकाक्षरी कोष में आ का अर्थ भाव (पदार्थ या सत्ता) दिया गया है। जैसे कमलरूपी पदार्थ हाथ में है अर्थात कमल हाथ में है अतः पदार्थ को लिखने की जरूरत नहीं है।

636. **लोभभासका** – किसी लोभ से अर्थात कामना से आराधना करने पर भी जो भासित हो जाती हैं अर्थात प्रकट हो जाती हैं। किसी कामना को लेकर तपस्या करने वालों के समक्ष तपस्या से प्रसन्न होकर प्रकट हो जाती हैं।

637. **लोभप्रिया** – भक्ति के लोभी है प्रिय जिन्हें। लोभः अस्य अस्ति इति लोभः अर्थात लोभः का अर्थ लोभ वाला अर्थात जिन्हें किसी चीज का लोभ है। सकाम उपासकों को जो प्रिय है अर्थात सकाम उपासक जिनकी अधिक उपासना करते हैं। लोक में देखा गया है कि अधिकांश लोग किसी न किसी कामना से ही भगवान की उपासना करते हैं।

638. **महालोभा** – पूजनीय अर्थात श्रेष्ठ गुणों के अतिशय लोभ वाली। मह् पूजायाम धातु होती है जिससे महा का अर्थ पूजनीय भी बनता है।

639. **लोभनिन्दकनिन्दका** – सकाम उपासक या शाक्तों की निन्दा करने वालों की निन्दा करने वाली। लोभः अस्य अस्ति इति लोभः अर्थात लोभः का अर्थ है लोभ वाला अर्थात जिसे किसी वस्तु की कामना है। लोभ वाले अर्थात जो भगवती को प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं या किसी अन्य वस्तु के प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं। लोभ के निन्दकों की निन्दा करने वाली।

640. **लोभांगवासिनी** – सकाम उपासक के अंग में अर्थात समीप में रहने वाली। अंग बहुत समीप होता है अतः अंग का अर्थ सामीप्य लिया गया।लोभः अस्य अस्ति इति लोभः अर्थात लोभः का अर्थ है लोभ वाला अर्थात जिसे किसी वस्तु की कामना है। भक्ति के लोभियों के ह्रदय में वास करने वाली।

641. **गन्धा** – गन्ध स्वरूपा। देवी सुगन्ध भी है और दुर्गन्ध भी है। पृथ्वी का गुण स्वरूपा, नासिका का विषय स्वरूपा। पृथ्वी का गुण गन्ध है। सुगन्धित द्रव्य स्वरूपा।

642. **विगन्धा** – विशिष्ट गन्ध से युक्त। विशेष अर्थात अन्य गन्धों से हटकर।

643. **गन्धनाशिनी** – विविध प्रकार के दुर्गन्धों को नष्ट कर देने वाली। चुगली भी गन्ध है अर्थात चुगली रूपी दोष का नाश करने वाली।

644. **गन्धांगी** – जिनके समस्त अंगों में सुगन्ध प्रकट हो रही है। गन्ध की ओर जाने वाली अर्थात सुगन्ध की ओर जाने वाली, आकर्षित होने वाली। अंगति अर्थात गच्छति।

645. **गन्धपुष्टा** – विविध प्रकार के गन्धों से परिपुष्ट।

646. **सुगन्धा** – सुन्दर गन्ध से युक्त।

647. **प्रेमगंधिका** – प्रेम की गन्ध को धारण करने वाली।

648. **दुर्गन्धा** – दुर्गन्ध स्वरूपा अर्थात अधर्मियों और पापियों को अपने से दूर भगाने वाली। व्यक्ति दुर्गन्ध से दूर भागता है।

649. **पूतिगन्धा** – पवित्र गन्ध वाली।

650. **विगन्धा** – जिससे सामान्य गन्ध अलग हो गयी है। वि का अर्थ है विगत।

651. **अतिगन्धिका** – अतिशय श्रेष्ठ गन्ध से युक्त।

652. **पद्मान्तिका** – कमलों के समीप में निवास करने वाली।

653. **पद्मवहा** – कमल को धारण करने वाली।

654. **पद्मप्रियप्रियंकरी** – विष्णु का प्रिय करने वाली।

655. **पद्मनिन्दकनिन्दा** – कमलों की निन्दा करने वालों की निन्दा स्वरूपा।

656. **पद्मसन्तोषवाहना** – कमल के सौन्दर्य से सन्तोष को धारण करने वाली।

657. **रक्तोत्पलवरा देवी** – लाल कमल के समान श्रेष्ठ दीप्तिमती। देवी का अर्थ दीप्तिमती भी होता है और वरा का अर्थ है श्रेष्ठ। लाल कमल धारण करने वाली श्रेष्ठ देवी।

658. **रक्तोत्पलप्रिया सदा** – सदैव लाल कमल हैं प्रिय जिन्हें।

659. **रक्तोत्पलसुगन्धा** – लाल कमल की सुगन्ध से युक्त रहने वाली।

660. **रक्तोत्पलनिवासिनी** – लाल कमल में निवास करने वाली।

661. **रक्तोत्पलग्रहामाला** – लाल कमल से ग्रथित अर्थात गूँथी हुई माला को धारण करने वाली। लाल कमलों की विशाल माला से सुशोभित।

662. **रक्तोत्पलमनोहरा** – लाल कमलों से मनोहर लगने वाली।

663. **रक्तोत्पलसुनेत्रा** – लाल कमलों के समान सुन्दर नेत्र वाली।

664. **रक्तोत्पलसुरूपधृक्** – लाल कमल के समान सुन्दर रूप को धारण करने वाली।

665. **वैष्णवी** – भगवान विष्णु की शक्ति। अष्टमातृकाओं में एक मातृका वैष्णवी है, तद्स्वरूपा। संसार में व्याप्त शक्ति स्वरूपा। विष्णु का अर्थ है जो सब जगह व्याप्त हो।

666. **विष्णुपूज्या** – भगवान विष्णु के द्वारा पूजनीय।

667. **वैष्णवांगनिवासिनी** – वैष्णव भक्तों के अंगों में निवास करने वाली।

668. **विष्णुपूजकपूज्या** – भगवान विष्णु की पूजा करने वालों के लिए जो पूजनीय हैं।

669. **वैष्णवे संस्थिता तनुः** – विष्णुभक्त में अच्छी प्रकार स्थित है शरीर जिनका अर्थात जिनका सूक्ष्म शरीर स्थित है। शक्ति रूप में स्थित है। वैष्णवों में स्थित रहने वाली सुन्दरी। यदि तनु को अलग नाम माने तो तनु का अर्थ होगा सूक्ष्म शरीर वाली। भगवान विष्णु के भक्तों में अच्छी प्रकार से स्थित और सूक्ष्म शरीर वाली।

670. नारायणस्य देहस्था – विष्णु के शरीर में रहने वाली (शक्ति रूप में)।

671. **नारायणमनोहरा** – विष्णु जी के मन को हरने वाली।

672. **नारायणस्वरुपा** – विष्णु के स्वरुप वाली। ज्ञान के आश्रय के स्वरूप वाली। नार अर्थात ज्ञान, अयन अर्थात आश्रय। जीव समूह या प्राणियों के समूह के आश्रय के स्वरूप वाली। नार का अर्थ है जीव समूह।

673. **नारायणमनः स्थिता** – विष्णु जी के मन/हृदय में निवास करने वाली। मन का अर्थ मन तो होता ही है किन्तु हृदय भी होता है।

674. **नारायाणांगसम्भूता** – विष्णु जी के अंग से उत्पन्न होने वाली। गंगाजी स्वरूपा या गंगा जी से अभेद है जिनका। गंगा जी भगवान विष्णु के पैर से निकली थीं अर्थात उनके अंग से निकली थीं।

675. **नारायणप्रियातनुः** – वैष्णवों का सर्वतोभावेन विस्तार करने वाली अर्थात उन्हें सबकुछ देने वाली। यहाँ प्रिय का अर्थ उपासक है। भगवान विष्णु के उपासक अर्थात वैष्णव। आतनु का अर्थ है सर्वतोभावेन विस्तार करने वाली। आ का अर्थ है सर्वतोभावेन और तनोति का अर्थ है विस्तार करना। नारायण को अति प्रिय है सम्पूर्ण शरीर जिसका अर्थात बहुत सुन्दर शरीर वाली। आ अर्थात सम्पूर्ण और तनु अर्थात शरीर।

676. **नारी** – जो परिवार समाज को उच्च्व मार्ग अर्थात सन्मार्ग की ओर ले जाती है। नृणाति इति नारी। न+अरि, अर्थात जिसका कोई शत्रु नहीं है।

677. **नारायणी** – विज्ञान का आश्रय या आधार। नार का एक अर्थ विज्ञान होता है। मनुष्यों के समूह अर्थात सभी मनुष्यों का आश्रय। नार अर्थात नर (मनुष्य) का समूह। सभी मनुष्यों का अर्थात प्राणियों का गन्तव्य स्थान। अयन अर्थात गन्तव्य स्थान। नारद अर्थात ज्ञान देने वाला। गंगास्वरूपा या गंगा से अभेद है जिनका। नारायणी अर्थात नारायण से सम्बन्धित, गंगा जी भगवान विष्णु के चरणों से निकली थीं अतः वे नारायण (भगवान विष्णु) से सम्बन्धित हैं।

678. **गण्या** – जो भीड़ में भी गिनी जा सके अर्थात अतिमहत्वपूर्ण जिसे आजकल की भाषा में अति महत्वपूर्ण व्यक्ति (V.I.P.) कहते हैं। भक्तों के द्वारा गिनने योग्य अर्थात् अतिशय श्रेष्ठ मानी गयी। यदि नारायणीगण्या एक शब्द हो तो अर्थ होगा भगवान विष्णु की शक्ति जो भक्तों के द्वारा गिनने योग्य अर्थात अतिशय श्रेष्ठ या दूसरों से बढ़कर मानी गईं।

679. **नारायणगृहप्रिया** – विष्णु जी के घर में अतिशय प्रिय अर्थात जिन्हें अत्यधिक प्रेम, स्नेह मिलता है।

680. **हरपूज्या** – शिव जी के द्वारा पूजनीय।

681. **हरश्रेष्ठा** – पाप को हरने वाले देवी – देवताओं में श्रेष्ठ हैं।

682. **हरस्य वल्लभा** – भगवान शिव की प्रियतमा। शिव जिन्हें बहुत चाहते हैं।

683. **क्षमा** – सहिष्णुता, सहनशीलता स्वरूपा। दक्ष की क्षमा नामक कन्या स्वरूपा। खैर वृक्ष की तरह प्राणियों के लिए उपयोगी। क्षमा का एक अर्थ खैर वृक्ष भी है। पृथ्वी स्वरूपा। अपनी सन्तानों अर्थात् सभी प्राणियों के अपराधों को सहन करने वाली एवं उनको दण्ड न मिले ऐसी इच्छा रखने वाली।

684. **संहारी** – प्रलय के समय संसार का संहार करने वाली।

685. **हरदेहस्था** – भगवान शिव के देह में स्थित रहने वाली। शक्ति के रूप में या अर्द्धनारीश्वर रूप में स्थित।

686. **हरपूजनतत्परा** – भगवान शिव की पूजा करने में तत्पर रहने वाली।

687. **हरदेहसमुद्भूता** – भगवान शिव के शरीर से उत्पन्न होने वाली।

688. **हरांगवासिनी** – शिव के अंगों में निवास करने वाली।

689. **कुहू** – अमावस्यास्वरुपा। इस अमावस्या में पूर्ण अन्धेरा होता है अर्थात चन्द्रमा का जरा भी अंश नहीं होता। कुह् विस्मापयति धातु होती है अतः इस नाम का अर्थ आश्चर्य में डालने वाली भी होगा। जो अपने कार्यों से, गुणों से दूसरों को आश्चर्य में डाल देती हैं। कुहू नामक नाड़ी में विराजमान।

690. **हरपूजकपूज्या** – शिव का पूजन करने वालों की भी पूजनिया।

691. हरवन्दकतत्परा – शिव की वन्दना करने वाले भक्तों के लिए तत्पर अर्थात् उन पर कृपा करने वाली। वन्दना का अर्थ है सामने आकर सिर झुकाना एवं गुणों का गुणगान करना।

692. **हरदेहसमुत्पन्ना** – भगवान शिव के शरीर से उत्पन्न होने वाली। भगवान शिव के शरीर से उत्पन्न कार्तिकेय जी की शक्ति स्वरूपा। नर्मदा जी की उत्पत्ति भगवान शिव के पसीने से बताई गई है अतः इस नाम का अर्थ हुआ नर्मदा जी से अभेद है जिनका। नर्मदा जी की उत्पत्ति की कई कथाऐं है उनमें से एक कथा के अनुसार तपस्या में बैठे भगवान शिव के पसीने से नर्मदा जी प्रकट हुई और प्रकट होकर अपने अलौकिक सौन्दर्य

से ऐसी चमत्कारिक लीलाऐं प्रस्तुत कीं कि शिव पार्वती चकित हो गये और उनके हृदय को हर्षित किया जिससे उनका नाम नर्मदा पड़ा क्योंकि नर्म का अर्थ है सुख।

693. **हरक्रीडा** – भगवान शिव की क्रीडाओं में संलग्न रहने वाली।

694. **सदागति** – सदैव गमन करने वाली।

695. **सुगणा** – सुन्दर गणों अर्थात् सेवकों से युक्त।

696. **संगरहिता** – संग अर्थात् आसक्ति से रहित। कोई भी कार्य करते हुए आसक्ति नहीं रहती। यदि आपको किसी प्राणी, स्थान का वियोग होने पर पीड़ा होती है तो आसक्ति है, कोई फर्क नहीं पड़ता तो अनासक्ति है। बड़े भवनों को गिराने पर आकाश पुनः ज्यों का त्यों उपस्थित हो जाता है अतः आकाश अनासक्त है।

697. **असंगा** – संग न करने वाली अर्थात् अकेली। दुष्टों के साथ कोई संग नहीं करती।

698. **संगनाशिनी** – सांसारिक आसक्ति को नष्ट करने वाली।

699. **निर्जना** – लोगों से रहित अर्थात उनके पास कोई दूसरा मनुष्य या सेवक आदि नहीं है। देवी सर्वव्यापक हैं अतः उनके अलावा कोई दूसरा है ही नहीं। निर्जन वाली अर्थात् निर्जन स्थानों पर निवास करने वाली। निर्जनः अस्या अस्ति।

700. **विजना** – एकान्त स्थान अर्थात जन रहित स्थान वाली अर्थात एकान्त स्थान पर विचरण करने वाली। जिनके लिए गवाह या साक्ष्य का अभाव है क्योंकि उनका कोई कारण नही और वे सर्वव्यापक हैं।

701. **दुर्गा** – अत्यधिक कठिन विपत्तियों/संकटों अर्थात् जिनको पार पाना लगभग असम्भव है, उनको नष्ट करने वाली। दु का अर्थ है अत्यन्त कठिन, गा का अर्थ है पार पाना। दुर्गा + आ, आ का अर्थ देना भी होता है और नाश करना भी होता है। कठिन साधनों जैसे तपस्या, राजयोग साधना आदि से प्राप्त होने वाली। दुःखेन गम्यते इति दुर्गा। दुःख में जिन्हें पुकारा जाता है, याद किया जाता है। दुःखे गूयते इति दुर्गा। दुर्ग वाली अर्थात शरीर रूपी दुर्ग में आत्मा के रूप में स्थित।

702. **दुर्गक्लेशनिवारिणी** – कठिन से कठिन क्लेशों को दूर कर देने वाली। दुर्गक्लेश का अर्थ है ऐसे क्लेश जिसे पार पाना बहुत कठिन है। क्लेश अर्थात दुख या पीड़ा।

703. **दुर्गदेहान्तका** – दुर्ग नामक दैत्य के शरीर का अन्त करने वाली। दुष्ट कर्म में लगे राक्षसों के शरीरों का अन्त करने वाली।

704. **दुर्गारुपिणी** – जिसे जानना अत्यन्त कठिन है ऐसे रुप वाली।

705. **दुर्गतस्थिका** – कठिनाई से ज्ञात जो है उसमें स्थित अर्थात कठिनाई से स्थित होने वाली। कठिनाई से प्राप्त अध्यात्म ज्ञान में स्थित। गति का एक अर्थ ज्ञान, अतः गत का अर्थ हुआ ज्ञात। जहाँ पहुँचना कठिन है वहाँ पर अर्थात कठिन स्थानों में निवास करने वाली।

706. **प्रेतकरा** – सबको प्रेत बना देने वाली अर्थात मारने वाली। जो भी उत्पन्न हुआ है उसका अन्त होना निश्चित है। प्रेत अवस्था प्राप्त करा देने वाली अर्थात् अन्त कर देने वाली। प्रेत कर्म करने वाली।

707. **प्रेतप्रिया** – प्रेतों अर्थात् मृतात्मओं को जो प्रिय है अर्थात प्रेत जिन्हें बहुत पसन्द करते हैं।

708. **प्रेतदेहसमुद्भवा** – प्रेत के शरीर में सम्यक् रूप से सत्तावाली अर्थात सम्यक् रूप से विराजमान। भू धातु का अर्थ केवल उत्पन्न होना ही नहीं है बल्कि सत्तावान होना भी है। देवी सर्वव्यापक हैं अतः प्रेत मे भी विद्यमान हैं। शिव के प्रेत देह से उत्पन्न होने वाली। शक्ति के बिना शिव शव अर्थात प्रेत हैं।

709. **प्रेतांगवासिनी** – प्रेत के अंग में भी रहने वाली क्योंकि देवी सर्वव्यापक हैं।

710. **प्रेता** – प्रेत की तरह स्वयं अदृश्य रहकर सभी को देखने वाली। प्रेत को कोई नहीं देख पाता और वह सबको देखता है। शरीर से पूर्ण रूप से गई हुई अर्थात आत्म स्वरूपा। प्रकर्ष रुप से गई अर्थात अधर्मियों से स्थाई रुप से दूर गई। प्रकृष्टम् इता इति प्रेता।

711. **प्रेतदेहविमर्दका** – प्रेतों के शरीरों को विनष्ट कर देने वाली।

712. **डाकिनी** – मूलाधारचक्र की अधिष्ठात्री देवी अर्थात इस चक्र में रहते हुए जो इस चक्र को शक्ति देती है। डाकिनी एक देवी या पिशाची हैं जो काली के गणों में समझी जाती हैं। काली जी की अनुचर शक्ति स्वरूपा। दुष्टों को भय देने के लिए गति या चेष्टा करने वाली। डाय भयाय अकति। दुष्टों को भय देने के लिए जो विचरण करती रहती हैं। डाक का अर्थ है शैतान (imp), इन शैतानी आत्माओं का समूह डाकिनी है जो कालीजी के अनुचर है। इस प्रकार डाकिनी का अर्थ हुआ काली जी के अनुचरों से युक्त अर्थात काली स्वरूपा।

713. **योगिनी** – योगसम्पदा या योगशक्ति से युक्त। भक्त को शिव से मिला देने वाली। योग करने वाली या योगविद्या में पारंगत। योगियों द्वारा जिन्हें प्राप्त किया जाता है। योगिभिः नीयते इति योगिनी। मुक्ति स्वरूपा क्योंकि मुक्ति को भी योगियों द्वारा प्राप्त की जाती है।

714. **कालरात्रि** – शिवरात्रि स्वरूपा अर्थात फाल्गुन मास में आने वाली शिव रात्रि स्वरूपा। यह शिवरात्रि महाशिवरात्रि कहलाती है जबकि हर महीने में आने वाली शिवरात्रि, शिवरात्रि कहलाती है। काल का एक अर्थ शिव भी होता है। समय को भी अन्धकार रूप में परिवर्तित कर देने वाली अर्थात समय को सुला देने वाली। समय के सब रूप अर्थात भूतकाल, भविष्यकाल समाप्त होकर केवल वर्तमान रहता है। रहस्यार्थ है शिव कालातीत और प्रकाश स्वरूपा हैं जबकि शक्ति कालात्मक और अन्धकार स्वरूपा है। काल पुरुष का परिवर्तन करने वाली अर्थात प्रत्येक समय प्रकृति में परिवर्तन करने वाली, इसी के कारण पृथ्वी घूमती है। काल का भी संहार करने वाली। समय के सब रूपों को समाप्त कर केवल वर्तमान रखने वाली।

715. **कालप्रिया सदा** – भगवान शिव को सदैव प्रिय लगने वाली।

716. **कालरात्रिहरा** – अज्ञान को हरने वाली। कालरात्रि अर्थात धुप्प अंधेरा अर्थात अज्ञान। सृष्टि उत्पन्न कर महाप्रलय को भी समाप्त करने वाली। महाप्रलय कालरात्रि है। प्रलय के बाद दुबारा सृष्टि होती है। कालरात्रि (मोहरात्रि या अज्ञान की रात्रि) को नष्ट कर देने वाली।

717. **काला** – काल की शक्ति या कालस्वरुपा।

718. **कृष्णदेहा** – कृष्ण जैसे शरीर वाली। काले रंग के शरीर वाली।

719. **महातनु** – विशाल शरीर वाली। पूजनीय अर्थात् अतिशय सुन्दर शरीर वाली।

720. **कृष्णांगी** – आकर्षित करने वाले अंगों वाली। कृष्ण की ओर गई अर्थात जिन्होंने कृष्ण को प्राप्त किया। कृष्णम् अंगति इति कृष्णांगी। अंगति का अर्थ है जाना। काले अंगो वाली।

721. **कुटिलांगी** – सन्दर अंगों वाली। कृष्ण जी टेढे खड़े होते थे जिससे उनकी सुन्दरता बढ़ गई थी। तिरछी भौं, तिरछे नयन से सुन्दरता बढ़ जाती है। भगवान कृष्ण सब जगह से टेढ़े खड़े होते थे जिससे उनकी सुन्दरता बहुत बढ़ जाती थी जिसके कारण उनको बाँके बिहारी कहते हैं। कुटिल का अर्थ नत (झुकना) भी होता है जिससे सन्नतांगी शब्द बना और जिसका अर्थ होता है बहुत खूबसूरत।

722. **वज्रांगी** – वज्र के सदृश्य कठोर अंगों वाली। दृढ़ चरित्र वालों के पास जाने वाली अर्थात रहने वाली। वज्र दृढ़ चरित्र का प्रतीक है एवं अंगति का अर्थ है गच्छति।

723. **वज्ररुपधृक्** – वज्र के समान कठोर रुप को धारण करने वाली। वज्र के समान कठोर अर्थात दृढ़ चरित्र वाले रूप को धारण करने वाली।

724. **नानादेहधरा** – अनेक प्रकार के शरीरों को धारण करने वाली। सृष्टि में जड़ चेतन जितने भी आकार हैं सभी देवी के आकार हैं। देवी ऊर्जा या शक्ति स्वरूप है और ऊर्जा या शक्ति ही सभी शरीरों या पदार्थों का रूप धारण करती है।

725. **धन्या** – धन्यवाद के योग्य। देवी के द्वारा सभी प्राणियों का इतना कल्याण किया गया है कि वे प्राणियों द्वारा धन्यवाद दिये जाने के योग्य हैं। पुण्यरूपी धन से युक्त अर्थात श्रेष्ठ कर्म करने वाली। श्रेष्ठ या अच्छे कर्म करने से ही पुण्य इकठ्ठा होता है। भक्तों की रक्षा करना, भक्तों का कल्याण करना यह सब पुण्य कर्म हैं। धन से युक्त या श्रेष्ठता से युक्त।

726. **षट्चक्रक्रमवासिनी** – मूलाधार आदि षट्चक्रों में क्रमशः निवास करने वाली।

727. **मूलाधारनिवासी** – मूलाधार चक्र में निवास करने वाली। मूलाधारचक्र में शक्ति के रूप में या व, श, श, स इन चार अक्षरों के रूप में या चैतन्यशक्ति के रूप में निवास करने वाली।

728. **मूलाधारस्थिता सदा** – सदैव मूलाधार में कुण्डलिनी के रुप में स्थित रहने वाली।

729. **वायुरूपा** – बहने वाले अर्थात गति करने वाले रूप वाली। वाति इति वायु अर्थात जो गति करे, बहे वह वायु है। वायु के रुप में स्थित। वायु को स्वरूप देने वाली अर्थात उसका निर्माण करने वाली। वायुम् रूपयति इति वायुरूपा। जो वायु के रूप में दिखती है। रूप वह है जो आँखों से दिखाई दे।

730. **महारुपा** – विशाल स्वरुप या श्रेष्ठ स्वरुप वाली। जो ब्रह्माण्ड के रूप में है। ब्रह्माण्ड का निर्माण करने वाली।

731. **वायुमार्गनिवासिनी** – वायु मार्ग में निवास करने वाली। श्वाँस की नलिकाओं या इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना नाड़ी में रहने वाली।

732. **वायुयुक्ता** – वायु तत्व से युक्त। प्रकृति स्वरूपा क्योंकि प्रकृति में वायु तत्व भी है।

733. **वायुकरा** – वायु को करने वाली अर्थात् वायु को बहाने वाली। वायु को उत्पन्न करने वाली।

734. **वायुपूरकपूरका** – वायु की पूरक क्रिया को पूर्ण कर देने वाली। प्राणायाम में पूरक क्रिया होती है जिससे साँस अन्दर ली जाती है। पूरक प्राणायाम का आरम्भ है। प्राणायाम के आरम्भ को पूरी करने वाली यह अर्थ हुआ। प्राणों का भी प्राण यह कह सकते है। वायुपूरक अर्थात प्राणायाम का आरम्भ।

735. **वायुरुपधरादेवी** – वायु के रुप को धारण करने वाली देवी।

736. **सुषुम्नामार्गगामिनी** – सुषुम्ना नाड़ी के मार्ग से गमन करने वाली कुण्डलिनी स्वरुपा।

737. **देहस्था** – शरीर में स्थित रहने वाली अर्थात् आत्मस्वरुपा।

738. **देहरुपा** – शरीर के स्वरुप में। प्रत्येक चीज ऊर्जा या शक्ति की बनी हैं और शक्ति ही देवी हैं। शरीर भी ऊर्जा का बना होने के कारण देवी रुप है।

739. **देहधेया** – देह रूप में अर्थात सगुण साकार रूप में ध्यान करने योग्य। धा धारणे धातु से धेय बनाने पर अर्थ होगा जो धारण करने योग्य है अर्थात ध्यान करने योग्य है। धेट् पाने धातु से भी धेय शब्द बन सकता है। जैसे कहते हैं कथामृत का पान करो, वहाँ पान करने का अर्थ श्रवण करना है। देहधेया का अर्थ देह से पीने योग्य अर्थात जिसे सम्पूर्ण रूप में धारण किया जाता है।

740. **सुदेहिका** – सुन्दर देह या शरीर से युक्त या सुशोभित।

741. **नाडीरुपा** – नाडीस्वरुपा। प्रत्येक चीज ऊर्जा या शक्ति की बनी हैं और शक्ति ही देवी हैं। नाडी भी ऊर्जा की बनी होने के कारण देवी रुप है।

742. **महीरुपा** – पृथ्वीस्वरुपा। पूजनीय स्वरूपा। मह पूजायाम् धातु होती है।

743. **नाडीस्थाननिवासिनी** – नाडी स्थान में निवास करने वाली। बहत्तर हजार नाडियाँ हैं जिनमें इडा, पिंगला और सुषुम्ना प्रमुख हैं। ये नाडियाँ जहाँ आपस में काटती हैं तो वहाँ चक्र बनते हैं जिसमें देवी की विशेष स्थिति है। देवी सर्वव्यापक हैं।

744. **इंगला** – पृथ्वी को धारण करने वाली। ज्ञान को धारण करने वाली। इंगम् लाति ग्रह्णाति इति इंगला। इंग का अर्थ ज्ञान, पृथ्वी, गति है। इंगेन लसति इति इंगला। गति के कारण सुशोभित अर्थात संसार स्वरूपा, संसार गति के कारण ही सुशोभित है। गतिमान संसार की गति को धारण करने वाली, प्रलय काल में नष्ट करने वाली। इंगम् लाति धारयति नाशयति। इंग का अर्थ गतिमान संसार। लाति का अर्थ धारण करना भी होता है और नाश करना भी होता है। क्रियाशीलता को देने वाली। ज्ञान को देने वाली। इगी गतौ धातु होती है। गति का अर्थ क्रियाशीलता, ज्ञान होता है। आपने इंगित शब्द सुना होगा जिसका अर्थ है इशारा करना यह इशारारूपी गति का परिचायक है। भक्तों के इशारों को भी ग्रहण करने वाली यह अर्थ हुआ। आश्चर्यजनकता, हिलने – डुलने को प्राप्त कराती हैं।

745. **पिंगला** – पिंगलानाडीस्वरुपा। पिंग वर्ण को धारण करने वाली। पिंगम् लाति इति पिंगला। पिंग वर्ण भूरापन लिए पीला वर्ण होता है। पीतल वाली अर्थात पीतल में निवास करने वाली। लक्ष्मी स्वरूपा। लक्ष्मी जी का एक नाम पिंगला है।

746. **सुषुम्नामध्यवासिनी** – सुषुम्नानाडी के मध्य में निवास करने वाली।

747. **सदाशिवप्रयकरी** – सदैव शिव का प्रिय करने वाली।

748. **मूलकपतिरूपधृक्** – विष से रक्षा करने के रूप को धारण करने वाली अर्थात अमृत स्वरूपा। मूलक का एक अर्थ विष होता है और पति का अर्थ है रक्षा करने वाला। पाति इति पति। मूल प्रकृति के स्वामी के स्वरुप को धारण करने वाली। मूलक अर्थात मूल अर्थात मूलप्रकृति।

749. **अमृतेशी** – अमृत की ईश्वरी अर्थात् उसे पैदा करने वाली या उसकी स्थिति बनाये रखने वाली। ईश्वर वह है जो उत्पत्ति करता है, कुछ समय तक स्थिति बनाये रखता है और बाद में नाश कर देता है।

750. **महाशाली** – बहुत बड़ा मन्दिर है जिसका। आज के कुलपति को पहले महाशाला कहते थे जो दस हजार विद्यार्थियों को पढ़ाता था। इस प्रकार महाशाली का अर्थ है जो सभी विद्याओं का निकेतन है। अतिशय विशिष्ट सुन्दरता को लिये स्वरूप वाली। शाली का अर्थ है सुन्दरता लिए।

751. **श्रृंगारांगनिवासिनी** – श्रृंगारपरक अंगों में निवास करने वाली।

752. **उत्पतिस्थितिसंहन्त्री** – जगत की उत्पत्ति, स्थिति और संहार करने वाली। स्थिति का अर्थ है कुछ समय तक बनाए रखना अर्थात् पालन करना।

753. **प्रलया** – प्रलयस्वरुपा। प्रलय करने वाली। प्रलय+आ, आ का अर्थ है देना अर्थात यहाँ पर अर्थ हुआ करना। आ का अर्थ देना भी होता है और नाश करना भी होता है। दुर्गा में आ का अर्थ दुर्ग (विपत्ति) का नाश करना है और मंगला में आ का अर्थ देना है अर्थात मंगल देने वाली।

754. **आपदनिवासिनी** – आपद् +अनिवासिनी। आपत्ति में निवास नहीं करने वाली अर्थात उससे दूर रहने वाली। आ का अर्थ तक और पद का अर्थ है पैर अर्थात निचला भाग। चौदह भुवनों में सबसे नीचे पाताल है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ पाताल तक निवास करने वाली। श्रेष्ठ स्थान में निवास करने वाली। पद का अर्थ है स्थान।

755. **महाप्रलययुक्ता** – महाप्रलय से युक्त अर्थात् महाप्रलय करने की शक्ति से युक्त।

756. **सृष्टिसंहारकारिणी** – संसार की रचना और संहार करने वाली। प्रत्येक पदार्थ की रचना और उसका नाश करने वाली।

757. **स्वधा** – स्वधा स्वरुपा अर्थात् पितरों को तृप्त करने वाली। वह शक्ति जो पितरों तक उनका भोजन ले जाए। स्वम् (आत्मशक्तिम्) धारयति इति स्वधा अर्थात आत्मशक्ति को धारण करने वाली। स्वस्मिन् धार्यते विश्वम् इति स्वधा अर्थात जिसने अपने में विश्व को धारण कर रखा है।

758. **स्वाहा** – देवताओं को तृप्त करने वाली। वह शक्ति जो देवताओं तक उनका हव्य ले जाए। संवित् का आस्वादन लेने वाली। स्वद् आस्वादने धातु से स्वाहा बनाने पर यह अर्थ निकलेगा। संवित् का अर्थ है चेतना।

759. **हव्यवाहा** – घी को देवताओं तक पहुँचाने वाली। हव्य का एक अर्थ है घी। देवताओं तक हव्य सामग्री पहुँचाने वाली। पीपलस्वरूपा या पीपल में रहने वाली शक्तिस्वरूपा। हव्यवाह का एक अर्थ पीपल है।

760. **हव्या** – हवन सामग्री स्वरुपा।

761. **हव्यप्रियासदा** – सदैव हवन सामग्री प्रिय है जिन्हें।

762. **हव्यस्था** – हवन सामग्री में स्थित रहने वाली। देवी सर्वव्यापी हैं। शक्ति या ऊर्जा के रूप में सभी जगह स्थित हैं।

763. **हव्यभक्षा** – हवन सामग्री का भक्षण करने वाली अर्थात अग्नि स्वरूपा क्योंकि अग्नि ही हवन सामग्री का भक्षण करती है।

764. **हव्यदेहसमुद्भवा** – हव्य सामग्री ही है देह, उसके रूप में उत्पन्न अर्थात हवनसामग्री स्वरूपा।

765. **हव्यक्रीड़ा** – हवनीय द्रव्य से क्रीड़ा करने वाली अर्थात आहुति क्रिया स्वरूपा। आहुति देना ही एक प्रकार की क्रीड़ा है। हवन सामग्री के द्वारा क्रीडा करने वाली।

766. **कामधेनुस्वरुपा** – कामधेनु के समान स्वरुप वाली या इच्छित सभी पदार्थों को देने वाली।

767. **रूपसम्भवा** – नाम रूप जगत के रूप में उत्पन्न। श्रेष्ठ रुप से उत्पन्न होने वाली। आकार के साथ उत्पन्न अर्थात सगुण साकार रूप में उत्पन्न। सौन्दर्य के साथ उत्पन्न। पशुओं, हिरण के रूप में उत्पन्न। रूप का अर्थ आकार, सौन्दर्य, पशु, हिरण दिया गया है।

768. **सुरभी** – सुरभी गाय स्वरुपा। गाय की अधिष्ठात्री देवी अर्थात गाय का जन्म जिनसे हुआ। सुर+भी अर्थात देवताओं को लगने वाला भयस्वरूपा या आध्यात्मिक भय स्वरूपा।

769. **नन्दनी** – नन्द का मार्गदर्शन करने वाली। एकाक्षरी कोश में नी का अर्थ है नेतृ अर्थात नेता अर्थात मार्गदर्शक बताया गया है। नयति से नी बनाये तो अर्थ होगा नन्द को ले जाने वाली अर्थात नन्द को उनके लक्ष्य तक पहुँचाने वाली या नन्द को प्रयुक्त करने वाली या नन्द को उनके कार्य में लगाने वाली। (यदि नन्दिनी है तो नन्द+इनि से यह शब्द बनेगा या नन्द्+णिनि से यह शब्द बनेगा और तब अर्थ होगा प्रसन्नता वाली या प्रसन्न करने वाली।)

770. **पुण्या** – पवित्र तुलसी स्वरूपा। पुण्या का एक अर्थ पवित्र तुलसी भी किया गया है। पुण्य स्वरुपा अर्थात् अच्छे कर्म के फल के स्वरुप वाली।

771. **यज्ञांगी** – विविध प्रकार के यज्ञ हैं अंग जिसके। कई प्रकार के यज्ञ हैं और ये यज्ञ मानो देवी के अंग हैं अर्थात एक प्रकार का यज्ञ मानो हाथ है, दूसरे प्रकार का यज्ञ सिर है, तीसरे प्रकार का यज्ञ पैर है आदि आदि।

772. **यज्ञसम्भवा** – यज्ञ से उत्पन्न होने वाली। यज्ञ से द्रौपदी की उत्पत्ति हुई थी। ललितासहस्रनाम में एक शब्द आया है चिदग्निकुण्डसम्भूता जिसका अर्थ है कि चिदग्नि रूप यज्ञ से देवी ललिता त्रिपुर सुन्दरी उत्पन्न हुई थी।

773. **यज्ञस्था** – यज्ञ में स्थित रहने वाली। यज्ञ का अर्थ है वैदिक कृत्य जिसमें हवन और पूजन होता है। भगवान विष्णु का भी नाम यज्ञ है। अग्नि के एक प्रकार का नाम भी यज्ञ है। गीता के अनुसार निष्काम भाव से किये जाने वाले शास्त्रविहित शुभ कर्म यज्ञ हैं।

774. **यज्ञदेहा** – यज्ञ है शरीर जिनका। भगवान विष्णु है शरीर जिनका।

775. **योनिजा** – योनि से उत्पन्न होने वाली अर्थात् कारण शरीर से उत्पन्न होने वाली। देव्यथर्वशीर्ष में योनि का अर्थ कारण शरीर बताया गया है।

776. **योनिवासिनी** – योनि अर्थात् कारण शरीर में निवास करने वाली।

777. **अयोनिजा** – जो किसी कारण से पैदा नहीं हुई हैं अर्थात स्वयं से उत्पन्न हैं। एक विशेष स्थिति में गैर योनि से पैदा होने वाली। बहुत से देवता जैसे गणेश जी, कार्तिकेय जी योनि से पैदा नहीं हुए हैं।

778. **सती** – सती स्वरूपा अर्थात सदैव अस्तित्व में रहने वाली। पतिव्रता अर्थात शिव के प्रति पूर्ण समर्पित और शिव के अलावा कोई दूसरा उनके मन में नहीं आता।

779. **सत्या** – सत्य स्वरूपा अर्थात जिनके अस्तित्व का किसी काल में बाध नहीं होता। सदगुणी, सच्चरित्र, निष्कपट, विश्वस्त। सत्य लोक वाली अर्थात सत्यलोक में स्थित। भगवान विष्णु की शक्ति स्वरूपा। ब्रह्म की शक्ति स्वरूपा। पीपल वृक्ष वाली अर्थात पीपल वृक्ष में स्थित। सत्य का अर्थ भगवान विष्णु, ब्रह्म, पीपल, सदगुणी, सच्चरित्र, निष्कपट, विश्वस्त है।

780. **असती** – अव्यक्त सत्ता वाली। अव्यक्त से अ लिया। जैसे अग्नि लकड़ी में अव्यक्त रूप से रहती है उसी प्रकार देवी पूरे विश्व में अव्यक्त रूप से रहती हैं अर्थात मनुष्य उन्हें अपनी आँखों से नहीं देख सकते। ब्रह्मा, विष्णु के रूप में सत्ता वाली यह अर्थ भी हो सकता है। अ का अर्थ ब्रह्मा, विष्णु है। असत्य को भी सत्ता देने वाली। अव्यक्ता या अनभिव्यक्त। जो है पर बोध में नहीं आ रहा।

781. **कुटिलातनु** – शरीर को तिरछा किए हुए अर्थात कभी कभी इस मुद्रा में विराजमान। कुटिल होते हुए भी सुन्दर स्वरूप वाली। भगवान कृष्ण तिरछे खड़े होते थे जिससे वे और अधिक सुन्दर लगते थे। भगवाल कृष्ण और काली में अभेद है। काली में और त्रिपुर भैरवी में अभेद है।

782. **अहल्या** – जिसमें विरूपता नहीं है अर्थात अति सुन्दर। हल्य का एक अर्थ विरूपता है। जो अहल्या की तरह बहुत सुन्दर है। जिसमें हल नहीं चलाया गया अर्थात जो अक्षता हैं अर्थात एकदम कुँवारी कन्या की तरह हैं। ब्रह्मक्षेत्र स्वरूपा, ब्रह्मावस्था में पहुँचने पर किसी प्रकार के कर्म या संस्कार का उदय नहीं होता है। इस अवस्था में पहुँचे व्यक्ति में कर्मरूपी फसल पैदा नहीं होती अर्थात उसे दुबारा जन्म नहीं लेना पड़ता। ललितात्रिंशती में एक शब्द आया है हल्यवर्जिता जहाँ शंकराचार्य जी ने हल्य का अर्थ कपट किया है। इस प्रकार अहल्या का अर्थ हुआ कपट रहिता। हल उत्पादन का साधन अहल्य अर्थात वह भूमि जिस पर हल नहीं चलाया

जा सकता अर्थात जिसमें फसल नहीं हो सकती। मोक्षावस्था को प्राप्त व्यक्ति में कर्मकी फसल नहीं उग सकती अतः अहल्या का अर्थ हुआ मोक्षावस्था या ब्रह्म क्षेत्र स्वरूपा। न हिलने वाली अर्थात संकल्प से न डिगने वाली। पातिव्रत्य धर्म दृढ़ निश्चय से हिलती नहीं है।

783. **गौतमी** – गौतम ऋषि की पत्नी अहल्या स्वरूपा। गोदावरी नदी स्वरूपा जो गौतम नामक पर्वत से निकली थी। गौतम ऋषि द्वारा लिखी गई स्मृति स्वरूपा। जिस प्रकार मनुस्मृति, विष्णुस्मृति हैं, उसी प्रकार गौतमी स्मृति भी है।

784. **गम्या** – गमनीया या गेया अर्थात जानने योग्य। पहले विवाह योग्य लड़की अतः जिसके साथ शादी हो सकती है को गम्या कहते थे। गमन करने योग्य अर्थात सेवा के द्वारा प्राप्त करने योग्य। ज्ञेया अर्थात ज्ञान के द्वारा प्राप्त होने योग्य।

785. **विदेहा** – शरीर से रहित रहने वाली। शरीर में रहते हुए भी शरीर की अनुभूति से रहित। body consciousness से रहित।

786. **देहनाशिनी** – मृत्यु का समय आने पर प्राणियों के शरीर का नाश करने वाली।

787. **गान्धारी** – पृथ्वी/राज्य/वाणी धारण करने वाली। महाभारत की गान्धारी की तरह पतिव्रता, दृढ़प्रतिज्ञ। गान्धारी नामक नाड़ी में शक्ति रूप से विराजमान।

788. **द्रौपदी** – द्रुपद की पुत्री एवं पाण्डवों की पत्नी द्रौपदी स्वरूपा। द्रु अर्थात वृक्ष की लकड़ी अर्थात लकड़ी से बनी खड़ाऊँ हैं पैर जिसके अर्थात लकड़ी की खड़ाऊँ पहनने वाली। द्रु अर्थात वृक्ष की तरह लम्बे चौड़े पैर वाली।

789. **दूती** – जिन्होंने देवताओं के लिए दूत का भी काम किया। इष्ट देवताओं तक उपासकों को पहुँचाने वाली। दूती सन्देश पहुँचाने का कार्य करती है। शिव को दूत बनाने वाली।

790. **शिवप्रिया** – शिव की प्रिया अर्थात शिव को अच्छी लगने वाली। जिन्हें कल्याण या मंगल प्रिय है।

791. **त्रयोदशी** – त्रयोदशी तिथि स्वरूपा।

792. **पंचदशी** – पन्द्रह अक्षर के श्रीविद्या मन्त्र स्वरूपा।

793. **पौर्णमासी** – पूर्णिमा तिथि स्वरूपा। पूर्णिमा तिथि के समान सुन्दर, प्रकाशित करने वाली शान्ति और प्रसन्नता देने वाली।

794. **चतुर्दशी** – चतुर्दशी तिथि स्वरूपा।

795. **पंचमी** – पंचमी तिथि स्वरूपा। भगवान सदाशिव को पंचम कहा जाता है अतः इस नाम का अर्थ हुआ भगवान सदाशिव की शक्ति स्वरूपा।

796. **षष्ठी** – षष्ठी तिथि स्वरूपा। प्रकृति के छठे अंश से उत्पन्न षष्ठी देवी से अभेद है जिनका।

797. **नवमी** – नवमी तिथि स्वरूपा।

798. **अष्टमी** – अष्टमी तिथि स्वरूपा।

799. **दशमी** – दशमी तिथि स्वरूपा।

800. **एकादशी** – एकादशी तिथि स्वरूपा।

801. **द्वादशी** – द्वादशी तिथि स्वरूपा।

802. **द्वाररूपी** – मोक्ष मार्ग की द्वार स्वरूपा अर्थात इनकी कृपा से ही मोक्ष मिलता है। द्वार अर्थात श्रेष्ठ मार्ग से युक्त।

803. **भयप्रदा** – अधर्मियों को भय प्रदान करने वाली। यदि अभयप्रदा है तो अर्थ होगा भक्तों को अभय प्रदान करने वाली।

804. **संक्रान्ति** – सबमें गयी हुई अर्थात सब में संक्रमण या विद्यमान है अर्थात हर वस्तु में गयी हुई। सम्यक् क्रान्ति अर्थात सम्यक क्रमण। क्रमण का अर्थ है एक स्थान से दूसरे स्थान में जाना। संक्रांति तिथि स्वरूपा। विभिन्न प्रकार के मुहूर्तों, तिथियों की संक्रांति होना अर्थात मिलना या मिलकर आगे बढ़ जाना।

805. **सामरूपा** – सामवेद स्वरूपा या शान्त स्वरूपा।

806. **कुलीना** – श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न होने वाली। अच्छे परिवार, खानदानी कुल की महिलाओं की तरह आचार वाली अर्थात सदाचार वाली। पृथ्वी में व्याप्त। कु का अर्थ होता है पृथ्वी। पृथ्वी जिसमें लीन होती है वह है कुलीन अर्थात जल। इस प्रकार कुलीना का अर्थ जलस्वरूपा भी हुआ।

807. **कुलनाशिनी** – दुष्ट कुलों का विनाश कर देने वाली।

808. **कुलकान्ता** – कुलों को अतिशय प्रिय लगने वाली। उपासकों के समूह द्वारा चाही गई। कृपा मिले इसलिए चाही गई। कुल का अर्थ है समूह और कान्ता का अर्थ है जिसे चाहा जाता है।

809. **कृशा** – कृश शरीर वाली अर्थात पतले शरीर वाली अर्थात सुन्दर।

810. **कुम्भा** – घड़े के रूप में माने गये ब्रह्माण्ड के स्वरूप वाली। ब्रह्मा जी कुम्भकार हैं अर्थात कुम्भ का तात्पर्य ब्रह्माण्ड है। घड़े के समान विश्व को अर्न्तनिहित या समाहित करने वाली। घड़े के स्वरूप वाली अर्थात सारा संसार इनके अन्दर है। विश्व जो कुम्भ की तरह है के स्वरूप वाली। पृथ्वी को अपने यश से भरने वाली। कुम् पृथ्वीम् उम्भति पूरयति इति कुम्भा। भूमि में होने वाले अर्थात् अवतार लेने वाले। कु के आगे जो म् है वह बिन्दु रूप है जिसका अर्थ अवधारण (एव या ही) अर्थ में होता है। जिसके द्वारा पृथ्वी का अस्तित्व होता है। पृथ्वी को प्रकाशित करता है। प्रकाशित करना अर्थात् दृश्य बनाने वाली या अभिव्यक्त करने वाली। दुष्टों को विदीर्ण करने वाली अर्थात् नाश करने वाली। भ धातु का अर्थ प्रकाशित करना भी होता है और भ विदारणे से विदीर्ण करना भी होता है। घड़े में विराजमान। किसी भी शब्द के बाद ''में विराजमान'' लगाने से उस शब्द का अर्थ आ जाता है। पूजा में कलश में देवी का आवाहन होता है। घड़े में जल होता है अतः इस नाम का अर्थ हुआ जल स्वरूपा या जीवन स्वरूपा। जल का एक अर्थ जीवन भी होता है। भूमि को विदीर्ण करने वाला। बीज जमीन के भीतर होता है और जमीन को विदीर्ण करके ही अंकुरित होता है। बीज में ईश्वर ही शक्ति ही होती है। बीज के द्वारा विदीर्ण करना अर्थात् ईश्वर की शक्ति के द्वारा विदीर्ण करना होता है। शक्ति का अर्थ है देवी। वराह अवतार में भी मूलाधार दाढ़ों में पृथ्वी को लेकर आये थे। कु का अर्थ है भूमि अर्थात् मूलाधार चक्र। मूलाधार चक्र का भेदन कर कुण्डलिनी शक्ति सुषुम्ना नाड़ी में ऊपर चढ़ती है अतः इस शब्द का अर्थ मूलाधार चक्र को भेदन कर ऊपर की ओर गतिमान कुण्डलिनी शक्ति स्वरूपा है।

811. **कुम्भदेहविवर्धिनी** – ब्रह्माण्ड रूपी देह को बढ़ाने वाली। ब्रह्मा जी को कुम्भकार कहा गया है अतः कुम्भ का तात्पर्य है ब्रह्माण्ड। आज का विज्ञान भी यह कहता है कि ब्रह्माण्ड का विस्तार हो रहा है। कुम्भ के समान सुन्दर शरीर को बढ़ाने वाली।

812. **विनीता** – विनम्र स्वभाव वाली।

813. **कुलवती** – श्रेष्ठ कुल से युक्त। कुलमार्ग से युक्त अर्थात कौलमार्गियों द्वारा पूजी गई। तान्त्रिक गुरू और उनके शिष्यों का समूह कुल कहलाता है। ऐसे कुल से युक्त अर्थात ऐसे कुल द्वारा पूजित। तन्त्र में प्रकृति, काल, आकाश, जल, तेज, वायु आदि पदार्थ कुल कहलाते हैं, इन पदार्थों वाली अर्थात प्रकृति स्वरूपा।

814. **अर्थी** – जो चाहती है अर्थात चाहना रखती है। मेरी स्तुति हो, मेरी पूजा हो ऐसी चाहना रखती है। आपने विद्यार्थी, लाभार्थी ऐसे शब्द सुने होंगे। अर्थ स्वरूपिणी अर्थात धन सम्पत्ति से सम्बन्धित या इनके स्वरूप वाली।

815. **अन्तरी** – हृदय में निवास करने वाली। भीतरी या भेद वाली। एक दूसरे से जो पार्थक्य का कारण होता है उसे वैशेषिक दर्शन में विशेष या अन्तर कहा गया है। विशेष स्वरूप वाली विशेष अर्थात जो अन्यों से भिन्न है। राति इति रा/री अर्थात देने वाली। अन्त शब्द के अर्थ शब्दकोश से देख सकते हैं।

816. **अनुगा** – श्रेष्ठ सिद्धान्तों/महापुरुषों/देवताओं/भक्तों के पीछे चलने वाली। अनुगा का अर्थ है पीछे चलने वाली।

817. **उषा** – ऊषाकाल स्वरूपिणी। ओषति इति ऊषा अर्थात जो दहन करे, जला डाले (अन्धकार को) वह है उषा। अज्ञान को जला डालने वाली अर्थात नष्ट कर देने वाली। भक्तों के दुख दरिद्रता को जलाने वाली या संसार बन्धन को जलाने वाली, उषा है। अरूणोदय की लालिमा, प्रभात, तड़कासमय स्वरूपा। बाणासुर की कन्या और अनिरूद्ध की पत्नी का नाम भी उषा है।

818. **नदी** – नदीस्वरूपिणी। स्पन्दनशील/सतत गमनशील। जल के प्राकृतिक प्रवाह स्वरूपा।

819. **सागरदा** – सागरम् द्यति। प्रलय काल में सागर का अन्त कर देने वाली। जल अग्नि में मिल जाता है। सागर अर्थात समुद्र के समान अतुल समृद्धि देने वाली। सागर के गुण अर्थात गम्भीरता को देने वाली।

820. **शान्ति** – चित्त की विक्षेप रहित अर्थात स्थिर अवस्था स्वरूपी। उस मनोभाव के स्वरूप में जिसमें विपत्ति, विघ्न, उपद्रव हट जाते हैं। चित्त में समभाव आने पर जो स्थिति आती है तद्स्वरूपा। इन्द्रियों की और मन की विषय से विरक्ति होने पर जो सुखानुभूति होती है वह शान्ति कहलाती है, उस शान्ति के स्वरूप वाली।

821. **शान्तिरूपा** – शान्ति गुण या शान्ति की अवस्था को स्वरूप देने वाली अर्थात उसका निर्माण करने वाली। शान्तिम् रूपयति इति शान्तिरूपा। शान्ति है ज्ञापक यो बोधक जिनका अर्थात उनकी शान्त अवस्था को देखकर पता चल जाता है कि ऐसी शान्त अवस्था वाली, सिर्फ देवी हो सकती हैं। रूप्यते इति रूपा से रूपा का अर्थ बोधिका या ज्ञापिका होता है। जिनकी शान्ति दिखती है। रूप वह है जो आँखों से दिखाई दे। शान्ति देखती है या शान्ति दिखाती है या शान्ति बताती है। रूपयति इति रूपा अर्थात देखने वाली या दिखाने वाली या विचार करने वाली। शान्तिम् रूपयति अर्थात जो शान्ति को दिखाती है या शान्ति के धर्म का पालन करती है वह शान्ति रूपा है। आपने निरूपण शब्द का नाम सुना होगा जिसका अर्थ है व्याख्या करना। जो शान्ति को बताती है या शान्ति की व्याख्या करती है। जो शान्ति युक्त शरीर के रूप में देखी जाती है। रूप अर्थात जिसे आँख से देख सके। शान्तिस्वरूपिणी।

822. **सुशान्तिका** – सुन्दर शान्ति करने वाली अर्थात देने वाली। सु का अर्थ है सुन्दर। सुशान्तिका में अन्तिम का अक्षर करोति धातु रूप से आता है जिसका अर्थ है करना। शान्ति का प्रयोग सुख के अर्थ में भी होता है अतः इस नाम का अर्थ हुआ अच्छा सुख देने वाली। सुन्दर शान्ति से युक्त रहने वाली।

823. **आशा** – आशा स्वरूपा। किसी पदार्थ के मिलने की इच्छा या कामना स्वरूपा।

824. **तृष्णा** – तृष्णा स्वरूपा। किसी वस्तु को पाने के लिए आकुल करने वाली इच्छा स्वरूपा।

825. **क्षुधा** – भोजन करने की इच्छा स्वरूपा। ज्ञान आदि की भूखस्वरूपा।

826. **क्षोभ्या** – क्षोभित होने योग्य अर्थात प्रकृति स्वरूपा। साम्यावस्था में सृष्टि नहीं होती अर्थात प्रकृति में क्षोभ होने पर ही सृष्टि होती है। क्षोभ गुण से युक्त अर्थात क्षुभित कर देने वाली। दुष्ट दैत्यों को क्षुभित कर देने वाली।

827. **क्षोभरूपनिवासिनी** – विक्षोभ क्रिया रूप में निवास करने वाली। संसार प्रकृति का क्षोभ है इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ संसार में निवास करने वाली। क्षोभरूप में निवास करने वाली।

828. **गंगा** – निरन्तर गतिशील। निरन्तरम् गच्छति इति गंगा। जो भगवान के चरण तक ले जाती है वह गंगा है। गमयति भगवतपदाम् इति गंगा।

829. **सागरगा** – सागर तक जाने वाली अर्थात पहुँचने वाली।

830. **कान्ति** – छवि स्वरूपा। स्वरूप की उज्जवलता स्वरूपा। ऐसी आभा या सौन्दर्य के स्वरूप वाली जिसके कारण मुखमण्डल को देखकर मन उसे बार बार निहारने की इच्छा करता है। कम् अर्थात इच्छा करना। उस रूप को देखकर मन स्वतः आकर्षित होकर प्रसन्न होता है। भगवान श्रीकृष्ण की 16 कलाओं (विशेष गुण या खासियत) में एक कला कान्ति भी है जिसका अर्थ है जिससे चेहरे पर एक अलग नूर (प्रकाश) पैदा होता है जिससे देखने मात्र से आप सुधबुध खोकर उसके हो जाते हैं यानि उसके रूप सौन्दर्य से प्रभावित होते हैं। उसकी आभा से हटने का मन नहीं करता।

831. **श्रुति** – वेदस्वरूपिणी। सुनने की क्रिया या सुनने की इन्द्रिय स्वरूपा। विद्या स्वरूपा। सृष्टि के आरम्भ से चला आ रहा वैदिक ज्ञान स्वरूपा। संगीत की श्रुति स्वरूपा। संगीत में स्वरों से सम्बन्धित श्रुति होती है। संगीत में किसी सप्तक के 22 भागों में से एक भाग अथवा किसी स्वर का एक अंश श्रुति है। कर्दम ऋषि की पत्नी जिनका नाम श्रुति है, तत्स्वरूपा। कीर्ति स्वरूपा, कीर्ति का कारण अर्थात कीर्ति फैलाने वाली।

832. **स्मृति** – वह ज्ञान जो स्मरण शक्ति द्वारा प्राप्त होता है, तद्स्वरूपा। धर्म, दर्शन, आचार व्यवहार से सम्बन्ध रखने वाला ग्रन्थ स्मृति है, तद्स्वरूपा। स्मृति ग्रन्थ स्वरूपिणी जैसे मनुस्मृति, विष्णु स्मृति आदि ग्रन्थ स्वरूपिणी।

833. **धृति** – धैर्य स्वरूपिणी। धारण करने या पकड़ने की क्रिया या भाव स्वरूपा। खराब परिस्थिति में भी विचलित न होना, अपने सिद्धान्तों को न छोड़ना और अच्छे समय की प्रतीक्षा करना धृति या धैर्य है। दक्ष की एक कन्या का नाम भी धृति है। चन्द्रमा की सोलह कलाओं में से एक कला का नाम धृति है, तद्स्वरूपा।

834. **मही** – पृथ्वीस्वरूपिणी। पूजनीया। मह् पूजायाम धातु होती है।

835. **दिवा** – दिन के स्वरूप वाली। 22 अक्षरों का एक वर्ण वृत्त या छन्द दिवा कहलाता है, तद्स्वरूपा।

836. **रात्रि** – रात्रि के स्वरूप वाली। सूर्यास्त से लेकर सूर्योदय तक का समय स्वरूपा। हल्दी का भी एक नाम रात्रि है अतः इस नाम का अर्थ हुआ जो हल्दी की तरह रोग निवारिका अर्थात कष्ट निवारिका। क्रौन्च द्वीप की एक नदी का नाम भी रात्रि है, तद्स्वरूपा। रात्रि के समान सुख और सकून देने वाली। रात्रि में मनुष्य सोता है जिससे सुख मिलता है।

837. **पंचभूतदेहा** – कभी कभी पंचभूतात्मक शरीर धारण करने वाली।

838. **सुदेहका** – सुन्दर शरीर वाली।

839. **तण्डुला** – चावल की तरह अर्थात शुभ्रवर्ण वाली। चावल की तरह अर्थात मनुष्य की भूख मिटाने वाली। चावल में रहने वाली शक्ति स्वरूपा। तण्डुल+आ=तण्डुला। एकाक्षरी कोष में आ का एक अर्थ शक्ति दिया गया है। (गुण या कर्म के समानता के आधार पर देवी–देवताओं के इस प्रकार के नाम दे दिए जाते है। कई बार नाम

का अर्थ निकालने के लिए 'के समान' ऐसा अर्थ करना पडता है, आप बुद्धि से सोचिए की कौन सी समानता हो सकती है। इसी प्रकार कई बार नामों का अर्थ उस पदार्थ में विराजमान, अंशरूप से विराजमान, शक्ति या गुणरूप से विराजमान इस प्रकार के अर्थ कर सकते है।) चावल से उपलक्षित सभी अन्नों के स्वरूप वाली। चावल की शक्ति या अन्य गुण स्वरूपा। तड्यते आहन्यते अनया इति तण्डुला अर्थात जिसके द्वारा बुराई या दैत्य का नाश होता है।

840. **छिन्नमस्ता** – जिनका मस्तक कटा हुआ है ऐसी छिन्नमस्ता देवी से अभेद है जिनका। उस विद्या के स्वरूप वाली जिसके कारण साधक सामने खड़े व्यक्ति अर्थात लक्षित व्यक्ति का सिर धड़ से अलग कर सकता है। राजा जनक की सभा में ऋषि याज्ञवल्क्य ने शाकल्य का मस्तक धड़ से अलग कर दिया था। सूर्य के उस तेज के स्वरूप वाली जो उससे हटकर अन्न या वृक्षों में या अन्य पदार्थों में शोषित हो जाता है अर्थात सूर्यास्त के बाद भी वह सूर्य में नहीं लौटता। विषयों के संसर्ग से रहित। विषयों से संसर्ग तभी होगा जब मन इन्द्रियों से जुड़ेगा। मस्तक कटने पर मन का सम्बन्ध इन्द्रियों से नहीं होगा। अंहकार से रहित क्योंकि अहंकार का वास मस्तक में होता है।

841. **नागयज्ञोपवीतिनी** – नागो को यज्ञोपवीत के रूप में धारण करने वाली।

842. **वर्णिनी** – अक्षरों से युक्त अर्थात मन्त्रस्वरूपा। रंगों से युक्त अर्थात प्रकृति स्वरूपा। वर्ण का अर्थ यश (कीर्ति), स्तुति, स्वर्ग, आकृति भी है। इस प्रकार वर्णिनी का अर्थ यश से युक्त, कुमकुम धारण किये हुए, आकृति या बाह्य रूप से युक्त अर्थात सगुण साकार रूप वाली, स्तुति वाली अर्थात लोग जिनकी स्तुति करते हैं। श्रेष्ठ वर्ण से युक्त। वर्ण का अर्थ यहाँ ब्राह्मण वर्ण या अच्छे वर्ण से है। भगवान शिव को ब्राह्मण माना गया है। वर्णी का अर्थ चित्रकार होता है। अतः वर्णिनी का अर्थ हुआ सृष्टि और ब्रह्माण्ड की चित्रकारी करने वाली। वर्णि का अर्थ है स्वर्ण या सोना। वर्णिम् नयति से वर्णनी शब्द बन जाएगा जिसका अर्थ होगा सोने को ले जाने वाली अर्थात सोने को भक्तों तक पहुँचाने वाली।

843. **डाकिनी** – भय के लिए चेष्टा करती है अर्थात साधकों को साधना के आरम्भ में भय दिखाती है जिससे वे भय से पार हो सके। डाय भयाय अकति इति डाकिनी। अकति का अर्थ है गति करना अर्थात क्रिया करना अर्थात चेष्टा करना। दुष्टों को भयभीत करने के लिए विचरण करने वाली। अकति का अर्थ है कुटिल गति करना।

844. **शक्ति** – शक्ति नामक आयुध के स्वरूप वाली। लक्ष्मण जी को शक्ति लगी थी। प्रत्येक पदार्थ ऊर्जा का बना होने के कारण देवी स्वरूप है क्योंकि देवी का अर्थ ऊर्जा है। जिसमें कार्य के उत्पादन की क्षमता हो। ऐश्वर्य और पराक्रम से युक्त। श का अर्थ है ऐश्वर्य और क्ति का अर्थ है पराक्रम। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ ऐश्वर्य और पराक्रम देने वाली।

845. **कुरूकुल्ला** – विद्याओं का समूह जिनकी पूजा करता है वह हैं कुल्ला। ऐसी कुल्ला के द्वारा भी जो आराधनीय है वह है कुरूकुल्ला। कर्तृत्व भाव से युक्त होकर अर्थात कर्ता होकर वंश को बढ़ाने वाली।

846. **सुकुल्लका** – अच्छी तरह से समूह (प्राणिमात्र) का पालन करने वाली। कुलम् लालयति पालयति इति कुल्ला। समूह का पालन करने वालों में श्रेष्ठ। सुन्दर कुल से विभूषित। सात्विक गुण से युक्त सुकुल्लुका देवी। कुरूकुल्ला राजसी गुण से सम्बन्धित है तथा विकुल्ला तामसी गुण से सम्बन्धित है।

847. **प्रत्यंगिरा** – अंगिरा ऋषि के अंग अंग में वास है जिनका। प्रति अर्थात प्रत्येक अंग में। अंगिरा ऋषि के द्वारा उपासना करने पर उनके समक्ष प्रकट हुई। प्रति अर्थात सामने या समक्ष।

848. **अपरादेवी** – अन्य अवतार वाली देवियों के स्वरूप में। अपरा अर्थात जिनमें मूल का पूर्ण अंश नहीं है। जो पर अर्थात पराई नहीं है किसी के लिए अर्थात आत्मीय देवी हैं। यहाँ पर पर का अर्थ शत्रु या श्रेष्ठ नहीं लेना है। (यदि अपरा और देवी अलग अलग नाम हैं तो अर्थ हैं – अपरा – अपरा विद्या भी देवी का रूप है। इहलोक या सांसारिकता से संबंध रखने वाली विद्याऐं अपरा विद्या हैं। देवी – जो हर्ष से युक्त हैं, दिव् धातु का एक अर्थ है मोद अर्थात प्रसन्न होना, दिव् धातु से देवी शब्द बना है।)

849. **अजिता** – किसी के द्वारा जीती न जा सकने वाली।

850. **जयदायिनी** – अपने भक्तों को जीवन संग्राम में जीत दिलाने वाली।

851. **जया** – जया तिथि स्वरूपा। जिनकी कृपा से भक्तों को जीत हासिल होती है। जो सभी से बढ़ कर है (सुन्दरता, शक्ति, ऐश्वर्य गुण आदि में)। जयति का अर्थ होता है सर्वोत्कृष्टरूपेण वर्तते।

852. **विजया** – विशेष अर्थात स्थाई जीत दिलाने वाली। स्थाई जीत का तात्पर्य है कि शत्रु दुबारा लड़ने की सोचेगा भी नही। वरदान पाकर लगभग अजेय राक्षसों पर भी जीत हासिल करने वाली। लगभग अजेय शत्रु पर जीत हासिल करना भी विशेष जय है। प्रतियोगियों पर जीत हासिल करने वाली अर्थात युद्ध, विवाह, प्रतियोगिता आदि में जीत हासिल करने वाली। विजय यम का भी एक नाम है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ यम की शक्ति स्वरूपा। बिना किसी की सहायता के जीत हासिल करने वाली। वि अर्थात सर्वत्र, सर्वदा अतः विजया का अर्थ हुआ सर्वत्र और हमेशा जीतने वाली।

853. **महिषासुरघातिनी** – महिषासुर का नाश करने वाली। क्रोध या मोह का नाश करने वाली। महिषासुर क्रोध का प्रतीक है। क्रोध से ही मोह अर्थात अज्ञान पैदा होता है। महिषासुर का अर्थ मोह या अज्ञान भी होता है। महिषासुर पल पल अपना रूप बदलता था। उसी प्रकार मोह के सात प्रकार बताये गये हैं। चित्त की विक्षेप शक्ति महिषासुर है। जिस प्रकार महिषासुर पल पल अपना रूप बदलता है उसी प्रकार चित्त में विचार आते जाते हैं अर्थत बदलते रहते हैं।

854. **मधुकैटभहन्त्री** – मधु और कैटभ राक्षसों का नाश करने वाली। मधु का तात्पर्य मिठास अर्थात चापलूसी से एवं कैटभ का तात्पर्य कड़वी बातों से है। कुछ लोगों के अनुसार मधु और कैटभ का अर्थ है राग और द्वेष। अतः इस नाम का अर्थ हुआ राग और द्वेष को समाप्त करने वाली। मधु और कैटभ नामरूपी अविद्या एवं रूपरूपी अविद्या का भी प्रतीक हैं। यह जगत नामरूपात्मक है। मुधु कैटभ अर्थात स्थूलमल (gross impurities) क्योंकि ये भगवान विष्णु के कान से निकले थे।

855. **निशुम्भशुम्भहनिनी** – निशुम्भ और शुम्भ राक्षसों को मारने वाली। ममत्व और अहंकार को मारने वाली। निशुम्भ ममत्व का और शुम्भ अहंकार का प्रतीक है।

856. **रक्तबीजक्षयंकरी** – रक्तबीज राक्षस का क्षय अर्थात विनाश करने वाली। कभी न समाप्त होने वाली इच्छाऐं रक्तबीज हैं अतः ऐसी इच्छाओं को नष्ट करने वाली। रक्तबीज का तात्पर्य सविकल्पक मन भी है। पूर्व किए गये कर्म का फल भोगने के दौरान अन्य नये कर्म पैदा कर लेना रक्तबीज है। जैसे पूर्व जन्म के कर्म के कारण कोई व्यक्ति दुश्मन बन के आपकी जिन्दगी में आया, आपने कर्म के सिद्धान्त को न समझते हुए उस व्यक्ति के विरुद्ध और भी बहुत सारे अन्याय कर डाले अर्थात नये कर्मों को पैदा कर दिया। रक्तबीज कर्मों की श्रृंखला है। पूर्व जन्म का एक कर्म भोगने में दस नये कर्म पैदा करना रक्तबीज प्रवृत्ति है। पूर्व जन्म के कारण कोई व्यक्ति दुश्मन बनकर आता है और आपने प्रतिक्रिया स्वरूप दस नये कर्म पैदा कर लिये तो इसे रक्तबीज पैदा करना कहेंगे।

857. **काशी** – काशते इति काशी अर्थात जो ज्ञान विज्ञान से प्रकाशित है वह काशी है। कम् सुखम् आशयति इति काशी अर्थात सुख का आस्वादन कराने वाली। काशी नगरी की तरह मोक्ष देने वाली। काशी स्वरूपा। जो प्रकाशित होती है।

858. **काशी–निवासी** – काशी है निवास स्थान जिनका।

859. **मधुरा** – मधुर स्वभाव वाली। मधु अर्थात अमृत देने वाली। राति का अर्थ है देना। मधुम् राति इति मधुरा।

860. **पार्वती** – पर्वतराज हिमालय की पुत्री। पर्व की अधिष्ठात्री देवी अर्थात पर्व में जिनकी पूजा होती है और ये ही पूजा का फल देती हैं। ये ही पर्व मनाने की प्रेरणा देती हैं जिससे पर्व बने रहते हैं। पर्वत रूपी अज्ञान से निकली ब्रह्माकार वृत्ति स्वरूपा। तीन पर्वो अर्थात इच्छाशक्ति, ज्ञानशक्ति और क्रियाशक्ति से युक्त। अन्तरिक्ष में व्याप्त। पर्वत का एक अर्थ अन्तरिक्ष भी होता है।

861. **परा** – जो सबसे परे हो अर्थात मन, बुद्धि आदि की पहुँच से बाहर हो। परावाणी स्वरूपा। पहली वाणी जो मूलाधार से प्रथमतः आविर्भूत होती है, नाद स्वरूप होती है, वह परावाणी है। परमार्थ का ज्ञान कराने वाली विद्या पराविद्या है। परा का एक अर्थ गंगा भी है। उत्कृष्ट स्वरूप वाली। ज्ञान, बुद्धि, सुन्दरता, शक्ति में जो उत्कृष्ट हैं।

862. **अपर्णा** – तपस्या के दौरान पत्ते तक का भी त्याग कर देने वाली। सभी प्रकार के ऋणों से रहित। अपगता ऋणा।

863. **चण्डिका देवी** – दुष्ट दैत्यों के प्रति अत्यन्त क्रोधित देवी। महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती के मिलित स्वरूप को चण्डिका देवी कहते हैं।

864. **मृडानी** – मृड (अर्थात शिव) की शक्ति पार्वतीस्वरूपा।

865. **अम्बिका** – सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का स्नेह से पालन पोषण करने वाली। अम्बा में जन्म देने वाला भाव अधिक है जबकि अम्बिका में पालन पोषण करने वाला भाव अधिक है। अम्बा में कन् प्रत्यय लगाने से अम्बिका बनता है और कन् प्रत्यय कभी कभी स्नेह के अर्थ में प्रयुक्त होता है। विश्वपालिनी। अम्बिका में पालन करने वाला भाव अधिक है क्योंकि अम्बिका में कन् प्रत्यय लगाने से जो स्नेह अर्थ आया, वह पालन अर्थ के ज्यादा करीब है। विश्व का पालन तभी होगा जब व्यवहारकुशला होगी।

866. **कला** – श्रेष्ठ कला स्वरूपा। साकार जगत स्वरूपा। कला के कई अर्थ है जो है – मातृकाक्षर शक्ति, शिव के साथ हमेशा रहने वाली शक्ति, साकार जगत स्वरूपा, सौन्दर्य स्वरूपा, इकाई स्वरूपा, चौसठ कला स्वरूपा। शक्ति स्वरूपा। वर्णाक्षर स्वरूपा। चौसठ कला स्वरूपा। वह विद्या जिससे आत्मा परमानन्द की अनुभूति करने लगे परमा कला है। पाश्चात्य जगत में कला मनोरंजन का साधन है जबकि हमारे यहाँ इसके द्वारा परम् तत्व को प्राप्त कर परमानन्द की अवस्था पाई जा सकती है।

867. **शुक्ला** – शुभ्र स्वरूप वाली। शुक्ल यजुर्वेद स्वरूपा।

868. **कृष्णा** – काले रंग वाली। जिसमें गद्य भी मिल गया ऐसे कृष्ण युजर्वेद स्वरूप वाली। पापों को आकर्षित करने वाली जिससे उन्हें खीचकर नष्ट कर दिया जाए। अपने रूप सौन्दर्य से दूसरों को आकर्षित करने वाली। द्रौपदी काली नहीं थीं फिर भी इन्हें कृष्णा कहा जाता है क्योंकि उनका रूप सौन्दर्य दूसरों को आकर्षित करता था।

869. **वर्ण्यवर्णा / वर्णवर्णा** – वर्णनीय वर्णों वाली अर्थात अक्षरो वाली। वर्णन के योग्य रंग वाली अर्थात बहुत सुन्दर रंग वाली। वरण करने योग्य है रूपरंग जिनका। वर्ण्य का एक अर्थ कुमकुम भी दिया गया है। अतः इस

नाम का अर्थ हुआ कुमकुम की तरह लाल रंग वाली। वर्ण्यवर्णा शब्द अधिक उचित है। श्रेष्ठ लोगों द्वारा सम्पूजित। वर्ण का अर्थ है श्रेष्ठ लोग जैसे ब्राह्मण आदि।

870. **शरदिन्दुकलाकृति** – पूर्ण शरदकालीन चन्द्रमा के समान आकृति लिये हुए।

871. **रूक्मणी** – रूक्मणी स्वरूपा या सोने की तरह सुन्दर वर्ण वाली। रूक्म का अर्थ सोना होता है। स्वर्ण को ले जाने वाली अर्थात भक्तों तक पहुँचाने वाली।

872. **राधिका** – राधास्वरूपा। जो दूसरों के कार्य को सिद्ध कर दे वह राधा है। राध्नोति पर कार्यम् इति राधा।

(नोट – शाक्तप्रमोद ग्रन्थ में दिये गये त्रिपुर–भैरवी सहस्रनाम स्तोत्र में कुछ श्लोक कम हैं जिसके कारण एक हजार या एक हजार आठ नाम नहीं हो पा रहे हैं, जितने भी नाम निकलकर आये उनके अर्थ दे दिये गये हैं)।

श्री धूमावती सहस्रनामावलि



श्री धूमावती सहस्रनामावलि

1. **धूमा** – सृष्टि के पूर्व या प्रलय के बाद व्याप्त अन्धकारस्वरूपा। उस अन्धकार के स्वरूप में जिसके गर्भ में प्रकाश छिपा है। धुआँ सुर्ख काला नहीं होता क्योंकि उसके गर्भ में अग्नि का प्रकाश है। सृष्टि के पूर्व अन्धकार या असत् था, उसी अन्धकार से सत् की, सृष्टि की उत्पत्ति हुई। प्रलय में सृष्टि पुनः उसी अन्धकार में लीन हो जाती है। आवरणस्वरूपा अर्थात भक्तों की नकारात्मकता से रक्षा करने वाली। धुआँ अग्नि का आवरण होता है। धुआँ की शक्ति से युक्त। जो वस्तुओं की संरचना को धुआँ – धुआँ कर देती है अर्थात नष्ट कर देती है। संरचना (Structure) पुरुष है और नष्ट करने की प्रक्रिया (Process) स्त्री है। जो शिक्षा करती है कि अन्तरयात्रा करो या धुएँ के आवरण को पार करो जिससे ब्रह्माण्ड की वास्तविकता पता चल सके।

2. **धूमावती** – धुएँ से युक्त। शिव जी को निगल जाने के बाद इनके शरीर से धुआँ निकलने लगा था, अतः धुआँ से युक्त होने के कारण धूमावती कहलाई। धुएँ के आकार के रूप में या धुएँ से युक्त। सती ने जब देह त्यागा तो वेदी से घना धुआँ निकला जो धूमावती थीं। स्वतन्त्र तन्त्र के अनुसार दक्ष यज्ञ में अपने पति के अपमान से आहत होकर जब सती ने योगाग्नि से अपने शरीर को भस्म किया तो धुआँ की आकृति वाली जो रचना प्रकट हुई वह धूमावती हैं।

3. **धूमा** – धूमा+आ, आ का अर्थ नाश करना एवं देना होता है। धुआँ (अर्थात अज्ञान) का नाश करने वाली। धुआँ (अर्थात आग) अर्थात जलाने या नाश करने वाला। मनुष्य के जीवन की आध्यात्मिक/भौतिक प्रगति के मार्ग में आने वाले विघ्नों का नाश करने वाली। नामरूपात्मक वस्तुओं के वास्तविक स्वरूप अर्थात उनके भीतर स्थित चेतन तत्व को छिपाने वाली। धुआँ ढकता है अर्थात छिपाता है। धुँआ से स्पष्ट नहीं दिखता है अतः धूम धूसर अस्पष्ट कल्पना का प्रतीक है। संकल्प विकल्पात्मक अस्पष्ट कल्पना धूम है। धूम + आ, आ का अर्थ है देना, इस प्रकार धूमा का अर्थ हुआ अस्पष्ट कल्पनाओं को स्पष्ट कर उन्हें देने वाली अर्थात पूरा करने वाली।

4. **धूम्रपानपरायणा** – धूम्रपान में लगी हुई अर्थात अज्ञान रूपी पापों को पीने में लगी हुई अर्थात उन्हें नष्ट करने में लगी हुई। संसार के पापों को नष्ट करने में लगी हुई।

5. **धौताधौतगिरां धाम्नी** – शुद्ध और अशुद्ध वाणी की धाम अर्थात निवास स्थान। यदि अधौत शब्द ले तो अशुद्ध अर्थ आएगा। धौत+अधौत। अधौत का अर्थ है न धुली हुई अर्थात अशुद्ध। शुद्ध और परम शुद्ध वाणी की निवास स्थान। धौत+आधौत। आधौत का अर्थ है पूर्णतः शुद्ध। आ अर्थात समन्तात, पूर्णता। अज्ञान से युक्त वाणी को पवित्र करने वाली या ऐसी वाणी का निवास स्थान।

6. **धूमेश्वरनिवासिनी** – धूम्र वर्ण के ईश्वर (शिव) के साथ निवास करने वाली। भष्म या विभूति लगाने से भगवान शिव धूम्र वर्ण के हो जाते हैं। धूर्मवर्ण के शंकर जी के साथ निवास करने वाली। शंकर जी गोरे माने गये हैं पर विभूति लगाने से धूम्रवर्ण के कहे जा सकते हैं। ईश्वर का अर्थ है शंकरजी। धूम्र अर्थात अज्ञान या पाप। पाप का ईश्वर शिव है। ईश्वर का अर्थ है नियन्त्रण करने वाला या नाश करने वाला।

7. **अनन्ता** – जिसका अन्त नहीं है। देश, काल, गुण और शक्ति से असीमित। प्राण अर्थात आयु का विस्तार करने वाली या बढ़ाने वाली। अनमपि तनोति। बिन्दुरवधारणे। जीवों का विस्तार करने वाली। जनसंख्या में या अपने भक्तों की समृद्धि करने वाली। अकारवाच्यो न भवति इति अनः, जीवः। तम् तनोति। अकारवाच्य अर्थात ब्रह्म या विष्णु। अन अर्थात जो ब्रह्म या विष्णु नहीं है अर्थात जीव। अनन्त अर्थात शेषनाग में विराजमान लक्ष्मी देवी स्वरूपा या उनसे अभेद है जिनका। जो जीवन भी देती हैं तथा आयु पूरी होने पर या प्रलयकाल में जीवन ले भी लेती हैं। अनिति अन्तकाश्च।

8. **अनन्तरूपा** – अनन्तरूपों वाली। विष्णु के रूप को धारण करने वाली। अनन्त का एक अर्थ है भगवान विष्णु।

9. **अकाराकाररूपिणी** – अ अक्षर के रूप को धारण करने वाली। एकाक्षरीकोष के अनुसार अ का अर्थ विष्णु, ब्रह्मा, शिव है। विष्णु के आकार को धारण करने वाली। अकार भगवान विष्णु का स्वरूप है।

10. **आद्या** – सबसे पहले अर्थात सर्वप्रथम अस्तित्व में आने वाली। प्रतिपदा तिथि स्वरूपा। पक्ष का आरम्भ प्रतिपदा से होने के कारण इस तिथि को आद्या कहते हैं। आदि का अर्थ प्रधान या मुख्य भी होता है। जगत के प्रमुख कारणों में विद्यमान अर्थात ब्रह्मा, विष्णु, महेश में शक्ति रूप में विराजमान, पंच महाभूतों में विराजमान। आदौ भवा इति आद्या।

11. **आनन्ददानन्दा** – आनन्द को देने वाली आनन्दस्वरूपा। स्वयं आनन्दस्वरूपा हैं अतः उपासकों को भी आनन्द देती हैं। आनन्द + आ, आ का अर्थ है देना।

12. **इकारा** – इच्छाशक्ति या कामशक्ति स्वरूपा। इकार इच्छा का प्रतीक है। अनेक कामशक्तियों से विभूषित। इ का अर्थ है कामदेव, इ का एक अन्य अर्थ है गति। इच्छास्वरूपा। कश्मीरी शैव दर्शन के अनुसार इ निष्क्रिय इच्छा का एवं ई सक्रिय इच्छा का स्वरूप है।

13. **इन्द्ररूपिणी** – इन्द्र के स्वरूप को धारण करने वाली। परम ऐश्वर्य युक्ता, इस स्वरूप को धारण करने वाली। इदी ऐश्वर्ये धातु होती है। इन्द्र के गुण या लक्षण से युक्त अर्थात उन्हें धारण करने वाली। रूप का एक अर्थ गुण या लक्षण भी होता है। जीवात्मा के रूप वाली। वेद एवं उपनिषद में इन्द्र को जीवात्मा का प्रतीक माना गया है। ऐश्वर्य देने वाले रूप वाली।

14. **धनधान्यार्थवाणीदा** – धन धान्य के लिए वाणी अर्थात शब्द या मन्त्र देने वाली।

15. **यशोधर्मप्रियेष्टदा** – यश के लिए जो धर्म का आचरण करते हैं ऐसे प्रिय व्यक्ति को अभीष्ट सिद्धि देने वाली।

16. **भाग्यसौभाग्यभक्तिस्था** – भाग्य, सौभाग्य और भक्ति में स्थित या निवास करने वाली। भाग्य का अर्थ है किये गये कर्म का फल। सौभाग्य का अर्थ है सुन्दर घटनाओं और अनुकूल अवसर का प्राप्त होना। बिना इच्छा किये अपने आप संयोगवश यदि कोई अच्छी चीज प्राप्त हो जाती है जिससे खुशी मिलती है तो वह सौभाग्य है। कहीं कहीं चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति को सौभाग्य कहा गया है।

17. **गुहापर्वतवासिनी** – गुफाओं और पर्वत में निवास करने वाली।

18. **रामरावणसुग्रीवमोहदा** – राम, रावण और सुग्रीव को मोह देने वाली। मोह का अर्थ संसार में या सांसारिक रिश्तों में आकर्षण होना। वस्तु के वास्तविक स्वरूप को न देख पाना अज्ञान या मोह है जिसका परिणाम वस्तु या व्यक्ति में आकर्षण होता है। भगवान राम पुष्पवाटिका में सीता जी को देखकर मोहित हो गये थे, सीताजी के अपहरण में आम आदमी की तरह रो रहे थे, यह राम को मोह था। सुग्रीव जी भगवान राम को दिया गया अपना वचन भूलकर राजकीय वैभव में मस्त थे। रावण के अज्ञान से सभी परिचित हैं।

19. **हनुमत्प्रिया** – हनुमान को अतिशय प्रिय लगने वाली अर्थात अच्छी लगने वाली।

20. **वेदशास्त्रपुराणज्ञा** – वेद, शास्त्र (अर्थात षडदर्शन आदि), पुराणों की ज्ञाता।

21. **ज्योतिश्छन्दःस्वरूपिणी** – ज्योतिष और छन्द के स्वरूप को धारण करने वाली। स्वरूप अर्थात अपना ही रूप। स्वरूप का अर्थ मूल गुण या सार गुण भी होता है। ज्योतिष और छन्द के मूल गुण या मुख्यय गुण या सार गुण से युक्त। स्वरूप ऐसा गुण या लक्षण है जो कभी अलग नहीं होता, जैसे सत्, चित् और आनन्द ब्रह्म

के स्वरूप लक्षण हैं। रूप आगन्तुक गुण भी हो सकता है अर्थात कुछ समय के लिए प्रकट और कुछ समय के लिए लुप्त हो सकता है।

22. **चातुर्यचारुरुचिरा** – चुतराई के कारण सुन्दर और मन को अच्छा लगने वाली। निपुणता स्वरूपा, सुन्दर और मन को अच्छा लगने वाली। चारु अर्थात सुन्दर और रुचिरा अर्थात मन को अच्छा लगने वाली। निपुणता से अत्यन्त सुन्दर (यदि चातुर्यचारूरूचिरांजना नाम है तो अर्थ है – निपुणता रूपी अत्यन्त सुन्दर अंजन वाली। चारू का अर्थ भी सुन्दर है और रूचिर का अर्थ भी सुन्दर है अतः चारू रूचिर का अर्थ अत्यन्त सुन्दर हुआ।)

23. **रंजनप्रेमतोषदा** – मनोरंजन, प्रेम और सन्तोष देने वाली। यदि प्रेमतोषदा नाम है ता अर्थ है – प्रेम करने वालों पर तुष्टि देने वाली अर्थात सन्तोष देने वाली अर्थात मनोरथ करने वाली। (यदि अंजनप्रेमतोषदा शब्द है तो अर्थ होगा काजल की तरह प्रेम करने वालों को तुष्टि देने वाली। काजल की तरह प्रेम करने का तात्पर्य है कभी अलग न होने वाला प्रेम जैसे काजल आँख से अलग नहीं होता है। न अलग होने वाले प्रेम से तुष्टि देने वाली।)

24. **कमलासनसुधावक्त्रा** – ब्रह्मा जी के मुख से निकले अमृत (वेदामृत) युक्त मुख वाली। ब्रह्मा जी के मुख से निकले अमृत वाले मुख वाली। अमृत का अर्थ वेदामृत अर्थात वेद। तात्पर्य है वेद मन्त्र जिनके मुख में है। कमल रूपी आसन के समान सुन्दर अमृत स्वरूप, ऐसे मुख को धारण करने वाली।

25. **चन्द्रहास्मितानना** – चाँदनी की तरह मन्द मुस्कान वाले मुख वाली। चाँदनी के समान उज्जवल मन्द मुस्कान से युक्त मुख वाली। चन्द्रहासा का अर्थ है चन्द्रमा का हास अर्थात चाँदनी। स्मित का अर्थ है मन्दमुस्कान। चन्द्रमा के हास की तरह मुस्कराने वाले मुख वाली।

26. **चतुरा** – दक्ष या कुशल। संसार के निर्माण कार्य में, संचालन करने में दक्ष। परिणाम को प्रेरित करने या सकारात्मक रूप से प्रभावित करने के लिए बुद्धि का प्रयोग करने वाले चतुर कहे जाते हैं। चतुर सकारात्मक शब्द है जबकि चालाक नकारात्मक शब्द है।

27. **चारूकेशी** – सुन्दर बालों वाली अर्थात लम्बे घने काले बालों वाली या सुन्दर घुंघराले बालों वाली।

28. **मुदाचतुर्वर्गप्रदा** – प्रसन्नता से पूर्णतया चारों पुरुषार्थ देने वाली। मुद (प्रसन्नता) + आ (पूर्णतया)।

29. **कलाकालधरा** – कल्पित अवयवों से युक्त अखण्डकाल (समय) को धारण करने वाली। कला का अर्थ अवयव है अर्थात क्षण, घण्टा, दिन, महीना आदि समय के अवयव हैं। काल या समय को अखण्ड माना गया है किन्तु व्यवहार अर्थात दुनियादारी चलाए रखने के लिए इस अखण्ड समय के कल्पित खण्ड किये गये हैं। कलाशक्ति और काल शक्ति को धारण करने वाली अर्थात कर्तृत्व शक्ति एवं समय की शक्ति धारण करने वाली। प्रत्यभिज्ञा दर्शन में कला का अर्थ किंचित् कर्तृत्व शक्ति एवं काल का अर्थ समय शक्ति दिया हुआ है। नृसिंहतापन्योपनिषद में कला का अर्थ व्यापक दिया गया है। व्यापक समय शक्ति को धारण करने वाली, यह अर्थ कर सकते हैं। कला के भी समय को धारण करने वाली अर्थात निर्धारित करने वाली। कर्तृत्व शक्ति एवं समय शक्ति को धारण करने वाली। कला का अर्थ है कर्तृत्व, परिमितकर्तृत्व, अभिव्यक्ति की प्रावस्था, अंश, अक्षर या शब्दांश। काल वह शक्ति है जिससे समय या क्रम निष्पन्न होता है। समय का आनन्तर्य इसी काल शक्ति से होता है।

30. **धीरा** – धी अर्थात बुद्धि को देने वाली। धैर्य को धारण करने वाली। राति का अर्थ है देती है।

31. **धारिणी** – सम्पूर्ण जगत को धारण करने वाली। सुपात्र उपासकों को अपनी शक्ति धारण कराने वाली। (धैर्य को) धारण करने वाली।

32. **वसुनीरदा** – सम्पत्तियों और जल (जीवन) को देने वाली।

33. **हीरा** – सर्वोपरि। जैसे हीरा रत्नों में सर्वोच्च है उसी प्रकार देवी भी अन्य सभी देवीदेवताओं में सर्वोच्च हैं। हीरा की तरह कठोर अर्थात न कटने वाली अर्थात कभी नष्ट नहीं होने वाली। हीरे के समान उज्जवल। हीरा सभी रत्नों में उज्जवल माना जाता है। सर्वोपरि, जैसे हीरा सभी रत्नों में सर्वोपरि है वैसे ही देवी सारी देवी देवताओं में सर्वोपरि हैं। कठोर अर्थात अक्षुण्ण अर्थात उनका कभी नाश नहीं होता। हीरा सबसे कठोर माना जाता है जिसे काटा नहीं जा सकता। हीरे की तरह अतिशय सुन्दर स्वरूप को धारण करने वाली। एकाक्षरी कोश के अनुसार ही का अर्थ विस्मय, दुख, शास्त्र, सुख आदि दिये गये हैं। राति इति रा से रा का अर्थ देने वाली होता है। इस प्रकार हीरा का अर्थ हुआ सुख देने वाली (उपासकों को), दुख देने वाली (दुष्टों को), शास्त्र देने वाली अर्थात शास्त्रों को अस्तित्व में लाने वाली।

34. **हीरकवर्णाभा** – हीरे के वर्ण के समान कान्ति है जिनकी।

35. **हरिणायतलोचना** – हरिण की तरह विशाल नेत्रों वाली।

36. **दम्भमोहक्रोधलोभस्नेहद्वेषहरा परा** – दम्भ, मोह, क्रोध, लोभ, स्नेह, द्वेष आदि दोषों को नष्ट कर देने वाली और उत्कृष्ट रूप में स्थित रहने वाली।

37. **नरदेवकरी** – मनुष्यों और देवताओं की सृष्टि करने वाली।

38. **रामा** – जिसमें योगी लोग रमण करते हैं अर्थात अपना चित्त टिकाते हैं। जिनमें सभी देवता लोग रमण करते हैं अर्थात ध्यान लगाते हैं या चित्त टिकाते हैं। सच्चिदानन्द स्वरूपा। र = चित् आ = सत्, म अर्थात् आनन्द। जो आनन्द का स्रोत है अर्थात् योगियों को जिससे आनन्द मिलता है।

39. **रामानन्दमनोहरा** – सदैव प्रसन्न रहने वाली मनोहर स्त्री स्वरूपा। आ का अर्थ है समन्तात् अर्थात सदैव, नन्द का अर्थ है प्रसन्नता, रामा का अर्थ है स्त्री। परम रम्य आनन्द से अतिशय सुन्दर लगने वाली।

40. **योगभोगक्रोधलोभहरा** – योग (बुरी संगति का योग, बुरी आदतों का योग या नकारात्मकता का योग), भोग, क्रोध, लोभ इन विकारों को नष्ट कर देने वाली।

41. **हरनमस्कृता** – शिव जी के द्वारा जिन्हें नमस्कार किया गया या किया जाता है। नमस्कार का अर्थ है झुककर सादर अभिवादन करना।

42. **दानमानज्ञानमानपानगानसुखप्रदा** – दान, मान, ज्ञान, मान, पान, गान इन सबके सुख को देने वाली अर्थात इनसे मिलने वाले सुख को देने वाली। प्रदा अर्थात स्थाई रूप से देना।

43. **गजगोश्वपदागञ्जा भूतिदा** – हाथी, बैल/रथ, अश्व और पैदल सैनिकों की भाण्डागार (कोष) अर्थात बहुत सी चतुरंगिणी सेनाओं वाली एवं ऐश्वर्य देने वाली। गंज का अर्थ भाण्डागार या कोष है। गो अर्थात जो गति करता है अर्थात बैल या रथ। (यदि गजगोश्वपदागञ्चा भूतिदा नाम है तो अर्थ होगा हाथी, रथ, घोड़ा और पैदल ये जिसके अंग हैं ऐसी सेना से उत्पन्न ऐश्वर्य को देने वाली। ऐसी सेना से उत्पन्न अर्थात विजय द्वारा प्राप्त। गो का अर्थ गाय होता है पर यहाँ रथ ले सकते हैं। गच्छति इति गो, रथ भी चलता है इसलिए रथ को भी गो कह सकते हैं। सेना जब विजय प्राप्त करती है तो उससे जो धन – धान्य या और सम्पत्ति मिलती है वह भूति है। सारी क्रियाओं के पीछे देवी की ही शक्ति है इसलिए देवी विजेता को ऐश्वर्य देती हैं।)

44. **भूतनाशिनी** – कुत्सित आत्माओं को नष्ट कर देने वाली।

45. **भवभावा** – संसार की एक मात्र भाव स्वरूपा अर्थात सत्ता या पदार्थ स्वरूपा। एकमात्र जिनका अस्तित्व है।

46. **बाला** – बाला त्रिपुरसुन्दरी देवी माँ से जिनका अभेद है। बलयति इति बाला अर्थात जो बल को देती है, वह बाला है। जो स्वयं अत्यन्त बलयुक्त है। सुन्दर कन्या के रूप को धारण करने वाली। किसी अवतार में यह

रूप धारण किया होगा और सभी रूपों में अभेद है।

47. **वरदा** – उपासकों को वर प्रदान करने वाली।

48. **हरवल्लभा** – शंकर की प्रिया अर्थात शंकर जिन्हें पसन्द करते हैं। वल्लभ अर्थात अतिशय प्रिय।

49. **भगभङ्गभया** – ऐश्वर्य के नाश होने के भय को देने वाली। यदि व्यक्ति अधर्म के रास्ते पर चलेगा तो देवी ऐसा भय देगी। ऐश्वर्य के नाश होने के भय को समाप्त करने वाली (यह अर्थ भक्तो के लिए होगा)। भय+आ=भया। आ का अर्थ देना, नाश करना दोनों दिया गया है। (शब्द कल्पद्रुम में दुर्गा नाम की व्युत्पत्ति दी गई है। कहीं पर उन्होनें आ का अर्थ देना किया है और कही पर नाश करना किया है। रुष्ट होने पर या जो उनकी आराधना नहीं करते उन्हें ऐश्वर्य के नाश का भय दिखाने वाली। ऐश्वर्य के नाश का भय देने वाली अर्थात भय दिखाने वाली। देवी जिस पर रुष्ट होती हैं या जो देवी की आराधना नहीं करते हैं उनके ऐश्वर्य भंग का भय दिखाती हैं। राक्षसों के ऐश्वर्य (सांसारिक वैभव) नष्ट करके उन्हें भय प्रदान करने वाली।

50. **माला** – माला धारण करने वाली। माला अस्य अस्ति इति मालः, स्त्रीलिंग में माला। माला स्वरूपा। अक्षरों की माला स्वरूपा। माम् लक्ष्मीम् लाति धारयति इति माला। लक्ष्मी को धारण करने वाली अर्थात सौन्दर्य, धन सम्पत्ति आदि को धारण करने वाली। मा का एक अर्थ लक्ष्मी होता है।

51. **मालती** – मालती या चमेली के पुष्प की तरह सुन्दर और सुगन्धित।

52. **तालनाहृदा** – दुष्टों को पीडित करने का भाव है जिनके हृदय में। संस्कृत में ल और ड में अभेद होता है जिस कारण तालन का अर्थ ताडन भी कर सकते है। ताल का एक अर्थ शिव है और एकाक्षरी कोश के अनुसार ना का एक अर्थ ज्ञान है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ जिनके हृदय में शिव का ज्ञान है। एकाक्षरी कोश में न/ना का अर्थ बन्ध, सदृश दिया गया है। शिव से बँधा हुआ है हृदय जिनका या शिव के सदृश (शान्त और कल्याणकारी है हृदय जिनका) ताल का एक अर्थ सरोवर भी होता है और सरोवर का सम्बन्ध गर्मी (ताप या कष्ट) मिटाने से एवं स्वच्छता से है। सरोवर के समान शान्त और निर्मल हृदय वाली। (हृदय का अर्थ यदि ध्वनि करे तो इस नाम का अर्थ होगा कीर्तनों की ताली से युक्त ध्वनि वाली। ना एक अर्थ बन्ध अर्थात बँधा होना है। बँधना अर्थात युक्त होना। भक्त लोग जब कीर्तन करते है तो ताली भी बजाते है। ताल अर्थात ताली।) गौरवपूर्ण हृदय वाली। तल प्रतिष्ठायाम् धातु होती है जिससे तालना का अर्थ गौरवपूर्ण हुआ। (यदि तालनाददा नाम है तो अर्थ है ताल के नाद या ध्वनि को प्रदान करने वाली।)

53. **जालवालहालकालकपालप्रियवादिनी** – कपटी, अज्ञानी, शराबी के लिए जो कालकपाल (भैरव) है, उससे प्रिय बोलने वाली। जालम् अस्य अस्ति इति जालः अर्थात कपटी या मायावी, बाल का अर्थ है मूर्ख या अज्ञानी (बच्चों को अज्ञानी माना जाता है), हालः का अर्थ है शराब वाला, हाला अस्य अस्ति इति हालः। इन तीनों के लिए जो कालकपाल है, उससे प्रिय बोलने वाली। कालकपाल का अर्थ है भैरव, ऐसा काल जिसके हाथ में कपाल है।

54. **करञ्जाशीलगुञ्जाढ्या** – करंज नामक औषधि वृक्ष के स्वभाव (गुण) के समूह से समृद्ध। तात्पर्य है अनेक रोगों को दूर करने के स्वभाव वाली। शील का अर्थ है स्वभाव या गुण, गुंज का अर्थ है समूह और आढ्य का अर्थ है समृद्ध या सम्पन्न। करंज नामक श्रेष्ठ वृक्ष के स्वभाव से युक्त होने के कारण विविध सुखों को देने में तत्पर।

55. **चूताङ्कुरनिवासिनी** – आम के अंकुर में निवास करने वाली।

56. **पनसस्था** – कटहल में स्थित रहने वाली (ऊर्जा या शक्ति के रूप में)। शब्दकल्पद्रुम में पनस शब्द की व्युत्पत्ति दी गई है – पनाय्यते स्तूयते अनेन इति पनसः। जिसके द्वारा स्तुति की जाती है अर्थात वेदमन्त्र या

स्तोत्र, उसमें रहने वाली। जिससे स्तुति की जाती है अर्थात स्तोत्र पनस हुआ। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ स्तोत्र में या स्तुति में रहने वाली।

57. **पानसक्ता** – सोमपान पीने में सक्त या लगी रहने वाली। सुधापान से जुड़ी हुई अर्थात सुधापान करने में लगी हुई। महिषासुर वध के पहले देवी मधुपान कर रही थीं। यदि पा पाति धातु से ल्युट् प्रत्यय लगाने से पान शब्द बनाये तो अर्थ होगा जो रक्षा करने में लगी हुईं हैं।

58. **पनसेशकुटुम्बिनी** – स्तुत्य देव की पत्नी। पनाय्यते स्तूयते से पनस का अर्थ स्तुति करने योग्य होगा। कुटुम्बनी का अर्थ होता है पत्नी। ईश का अर्थ है शासन करने वाला अर्थात देवता। स्तुति योग्य देव अर्थात भगवान शिव। कटहल जैसे श्रेष्ठ फलों को कुटुम्ब की तरह मानने वाली अर्थात उनसे अतिशय प्रेम करने वाली। ईश अर्थात श्रेष्ठ। पनसेश अर्थात श्रेष्ठ कटहल।

59. **पावनी** – पवित्र कर देने वाली। पाप, विकार, दोष हटने से पवित्रता आती है।

60. **पावनधारा** – पवित्र धारा स्वरूपा। गंगा स्वरूपा। पवित्र होने वाले लोगों या वस्तुओं की आधार।

61. **पूर्णा** – पूर्ण स्वरूप वाली। देवी के पास सब कुछ है और प्रत्येक चीज पूर्ण मात्रा में है। गुणपूर्णत्वात् भक्तेषु गुणपूरणाच्च पूर्णा। भक्तान् स्वपुरे नयति। भक्तैः हृदयाख्ये पुरि प्रणीयते। जो गुणों से भरी हुई है अर्थात् सद्गुणों से भरी हुई है। भक्तों में गुण भर देने वाली अर्थात् सद्गुण भर देने वाले है। भक्तों को अपने दिव्य लोक में ले जाने वाली। भक्तों के द्वारा हृदय नामक पुर में अर्थात् हृदय में ले जायी जाती है अर्थात् रखी जाती हैं।

62. **पूर्णमनोरथा** – परिपूर्ण मनोरथ वाली। उनकी हर इच्छाओं को पूर्ण होना ही है।

63. **पूता** – सदैव पवित्र रहने वाली। पवित्र अर्थात पाप या दोष या विकार से रहित।

64. **पूतकला** – पवित्र कलाओं (अवयवों या अंगावयवों) वाली। पवित्र सुन्दरता स्वरूपा। कला का अर्थ सौन्दर्य, किसी वस्तु की इकाई या अवयव होता है। पवित्रता की कला (शक्ति) से युक्त।

65. **पौरा** – श्रेष्ठ नगरों में निवास करने वाली।

66. **पुराणसुरसुन्दरी** – देवताओं में जो सबसे पुराने हैं उनकी पत्नी अर्थात भगवान शिव की पत्नी। पुराणों में जिनका सुरसुन्दरी यक्षिणी के रूप में वर्णन है। सुरसुन्दरी अर्थात देवताओं या देवकन्याओं में जो सबसे सुन्दर है।

67. **परेशी** – श्रेष्ठ ईश्वरी। परा ईशी इति परेशी। पर (अर्थात श्रेष्ठों) की भी ईश्वरी अर्थात ब्रह्मा, विष्णु, महेश पर शासन करने वाली। ईश और ईश्वर में थोड़ा ही अन्तर है। ईश का अर्थ है जो शासन करे। ईश्वर का अर्थ है जो शासन करे एवं स्वयं समृद्धिशाली भी हो अर्थात ऐश्वर्ययुक्त अर्थात धनसम्पदा से युक्त हो। पर का अर्थ शत्रु भी होता है इस प्रकार परेशी का अर्थ हुआ शत्रुओं पर अनुशासन करने वाली अर्थात उन्हें नियन्त्रण में रखने वाली। ईश और ईश्वर का सामान्यतः एक ही अर्थ है। ईश में शासन करने का भाव है तथा ईश्वर में शासन करने के साथ साथ ऐश्वर्य (धन सम्पत्ति+ शक्ति) का भी भाव है। ईश्वर शासन तो करता ही है पर इसके साथ साथ वह ऐश्वर्यवान है, यह भी सूचित होता है।

68. **परदा** – शत्रुओं का नाश करने वाली। परान् शत्रून् दारयति इति परदा। पर अर्थात श्रेष्ठ। श्रेष्ठ पदार्थों, वरों या पदों को देने वाली।

69. **पारा** – उस पार के स्वरूप वाली अर्थात गन्तव्य स्थान स्वरूपा। पार लगाने वाली। पार + आ, आ का एक अर्थ है देना, पार देना अर्थात पार लगा देना। पारा नदी स्वरूपा। पारा धातु स्वरूपा। एकाक्षरीकोष में पा का अर्थ लक्ष्मी, अमृत है। इस प्रकार पाम् राति इति पारा अर्थात लक्ष्मी देने वाली, अमृत देने वाली, यह अर्थ भी हो सकता है।

70. **परमात्मा** – परमात्मा स्वरूपा। सर्वोच्च आत्मा अर्थात सभी आत्माओं की आत्मा अर्थात सभी आत्माएं (जीवात्माएं) जिनसे निकलती हैं जैसे अग्नि से अग्नि की चिंगारियाँ। सर्वव्यापी चेतन तत्व स्वरूपा, जो सर्वज्ञ है। यह सृष्टि, पालन और संहार तीनों कृत्य करता है। परमात्मा सर्वव्यापी और सर्वज्ञ है जबकि आत्मा (जीवात्मा) अणुरुप और अल्पज्ञ है।

71. **परमोहिनी** – श्रेष्ठ लोगों को भी मोहित कर देने वाली। बड़े बड़े देवताओं तपस्वियों और जो अपने आपको इन्द्रियजित् मानते हैं उनको मोहित कर देने वाली अर्थात अपनी ओर या संसार की ओर आकर्षित करने वाली। आत्मा को अनात्मा समझना और अनात्मा को आत्मा समझना अर्थात वस्तु को उसके वास्तविक स्वरूप में न देख पाना अज्ञान या मोह है जिसका परिणाम है सांसारिक क्षणभंगुर व्यक्तियों या पदार्थों में आकर्षित होना। मोहित होना अर्थात सत् – असत्, कर्तव्य – अकर्तव्य के ज्ञान से रहित हो जाना।

72. **जगन्माया** – संसार की माया स्वरूपा। माया अर्थात जो जगत को अपने में प्रतीति कराये, ज्ञान कराये। माति अस्याम् इति माया। माति अर्थात अनुमान होना या ज्ञान होना।

73. **जगत्कर्त्री** – संसार की रचना करने वाली।

74. **जगत्कीर्ति** – जगत की कीर्ति स्वरूपा अर्थात जगत में जिनकी कीर्ति का बखान होता है।

75. **जगन्मयी** – संसार से युक्त या संसार के स्वरूप वाली।

76. **जननी** – सभी लोकों को पैदा करने वाली। करुणा या दया स्वरूपा। जननी का एक अर्थ करुणा या दया भी दिया गया है। जगतां जननी। जनान् नयति। न जायते इति जना, तान् सर्वान नयति। जनं जननं नयति च। समस्त विश्व को उत्पन्न करने वाली। जनयति इति जननी। लोगों का नेतृत्व करने वाली अर्थात मार्गदर्शन करने वाली या रास्ता दिखाने वाली। भक्तजनों का मार्गदर्शन करने वाली। जनान् नयति इति जननी। ज+न अर्थात जन अर्थात जो जन्म नहीं लेती है। जन+नी से जननी बनाने पर अर्थ होगा जो स्वयं जन्म नहीं लेती है, सभी का नेतृत्व करती है या क्रियाशील करती है या मार्गदर्शन करती है। जन्म को लाने वाली अर्थात उत्पत्ति को करने वाली। जन का अर्थ है जनन या जन्म। पिता से अपने (पति) शरीर में देने वाले शुक्र को रूप देने वाली।

77. **जयिनी** – विजयशीला अर्थात जय प्राप्त करने के स्वभाव वाली।

78. **जाया** – ऐसी पत्नी जिसने पुत्रों को जन्म दिया है। पार्वती जी शिवजी की ऐसी पत्नी है जिनके गणेश और कार्तिकेय पुत्र हैं अतः पार्वती जी जाया कहलाई जाएंगी।

79. **जिता** – जीती गयीं। भगवान शिव द्वारा जीती गयीं अर्थात पत्नी रूप में प्राप्त किया गया। भक्तों द्वारा अपनी भक्ति से वश में की गई। भगवान कृष्ण को गोपियों ने जीत लिया था और भगवान कृष्ण इस हार से बड़े प्रसन्न थे। काली और कृष्ण में अभेद है। जिता का अर्थ सामान्यतः जिसे जीता गया हो, पर कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र के अनुसार कृत्य और ल्युट प्रत्यय कभी कभी सामान्य कारक एवं सामान्य काल से भी भिन्न अर्थ बताते हैं। जैसे कोई प्रत्यय कर्मकारक में एवं भूतकाल में प्रयोग होता है पर बहुलम् के कारण कभी कभी वह कर्ता अर्थ और दूसरे काल का भी वाचक होता है। इस प्रकार जिता का अर्थ सभी को जीतने वाली भी कर सकते हैं अर्थात जयशालिनी। दैत्यों या विकारों को जीतने वाली। जयशील अर्थात सदैव जीतने वाली।

80. **जिनजयप्रदा** – जैन मुनियों को भी विजय प्रदान करने वाली। जैन मुनियों को विजय का आशीर्वाद देने वाली।

81. **कीर्तिज्ञानध्यानमानदायिनी** – भक्तों को कीर्ति ज्ञान, ध्यान विद्या और सम्मान देने वाली।

82. **दानवेश्वरी** – दानवों की भी ईश्वरी। दानव भी देवी की आराधना करते हैं।

83. **काव्यव्याकरणज्ञाना** – काव्य और व्याकरण के ज्ञान से युक्त।

84. **प्रज्ञाप्रज्ञानदायिनी** – प्रज्ञा और प्रज्ञान को देने वाली। सूक्ष्म जगत या अध्यात्म जगत में प्रवेश करने वाली, समझने वाली बुद्धि प्रज्ञा है। जबकि प्रज्ञान का अर्थ है चैतन्य। प्रज्ञान को देने का अर्थ है चैतन्य की अनुभूति देने वाली। प्रकृष्ट बुद्धि और प्रकृष्ट ज्ञान को देने वाली। प्रकृष्ट का अर्थ है अधिक या श्रेष्ठ। कही पर प्रज्ञा का अर्थ एकाग्रता एवं प्रज्ञान का अर्थ बुद्धि, चेतना, विशेष रूप से प्राप्त ज्ञान, अधिक ज्ञान बताया गया है।

85. **विज्ञाज्ञा** – विज्ञों या पण्डितों को भी आज्ञा देने वाली। विज्ञ + आज्ञा + आ, आ का एक अर्थ है देना।

86. **विज्ञजयदा** – विद्वान लोगों की जीत प्रदान करने वाली। (यदि विज्ञाजयदा शब्द है तो अर्थ होगा विद्वान लोगों को सर्वतोभावेन अर्थात हर प्रकार से जीत देने वाली, आ+जयदा, आ का अर्थ है सर्वतोभावेन।) एकाक्षरीकोष में आ का अर्थ भाव दिया गया है। भाव का तात्पर्य सत्ता या पदार्थ है। प्रत्यके चीज सत्ता या पदार्थ है अतः आ का कोई विशेष अर्थ देने की जरूरत नहीं है जैसे विश्वामित्र अर्थात विश्वमित्र। विज्ञाजयदा का अर्थ विद्वान लोगों को जीत देने वाली करेंगे।

87. **विज्ञाविज्ञाप्रपूजित** – विद्वान और अविद्वान दोनों के द्वारा विशेष रूप से पूजी जाने वाली।

88. **परावरेज्या** – जो श्रेष्ठ हैं एवं जो नीचे हैं (अर्थात श्रेष्ठ नहीं हैं) उनके द्वारा पूजी जाने वाली।

89. **वरदा** – वरदान देने वाली। उपासकों को उनका वर अर्थात अधीष्ठ देने वाली। वर का अर्थ श्रेष्ठ भी होता है। अपने भक्तों को सर्वश्रेष्ठ पद देने वाली।

90. **पारदा** – संसार सागर से पार लगाने वाली। पार देने वाली अर्थात उस पार पहुँचाने वाली। जिस तट पर व्यक्ति खड़ा है वह है अवार और दूसरा तट जहाँ पहुँचना है वह है पार।

91. **शारदादरा** – सरस्वती के द्वारा जिन्हें आदर दिया गया। आदरणीय शारदा देवी स्वरूपा। जो बुद्धिगत मलिनता को नष्ट करती है वह शारदा है। शारम् द्यति खण्डयति इति शारदा। बरसात के पहले पानी के साथ बहने वाली गन्दगी शार कहलाती है। प्रसंगवश यहाँ पर बुद्धि में रहने वाली गन्दगी अर्थ ले लिया गया। (यदि दरा अलग नाम है तो दर शब्द के अर्थ होते हैं थोड़ा, डर। दर ही हिन्दी में डर हो गया। भयस्वरूपिणी अर्थात भय देने वाली। दर +आ, आ का अर्थ है देना। दरा अर्थात दर+आ, डर का नाश करने वाली। आ का अर्थ है नाश करना। दुष्टों के लिए भय स्वरूपा। अल्प स्वरूपा। स्वल्प अर्थात तनु अर्थात तन्वंगी अर्थात सुन्दरी, अर्थात बहुत छोटे आकार वाली भी हो जाती हैं यदि देवी ऐसी इच्छा करें।) शीर्यते इति शारः, इस व्युत्पत्ति के अनुसार जो क्षीण होता है वह शार है। कर्मफल क्षीण होते है अतः वह शार हैं। इस प्रकार शारदा का अर्थ स्थूलकर्मफल देने वाली होगा।

92. **दारिणी** – दुष्ट दैत्यों, राक्षसों, शत्रुओं का विनाश करने वाली। दारण करना अर्थात फाड़ देना।

93. **देवदूती** – जिन्होंने देव अर्थात भगवान शिव को दूत बनाया था। शिव को दूत बनाकर शुम्भ के पास भेजा था। भक्तों को शिव से मिलाने के लिए दूती का काम करती हैं। जैसे दूती संदेश को एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाती है उसी प्रकार देवी जी भक्तों की प्रार्थना को शिव तक पहुँचाती हैं या भक्त को ही शिव से मिला देती हैं। शक्ति तो एक है अतः देवी सभी देवताओं की दूती हुईं।

94. **मदनामदनामदा** – देवताओं को प्रसन्न करने वाली एवं दुष्ट राक्षसों को दुखी करने वाली तथा स्वयं में करने के अहंकार से रहित है। मदि हर्षे धातु होती है। जो दूसरे को प्रसन्न करे या स्वयं प्रसन्न रहे वह मदन है। अमदन का अर्थ हुआ प्रसन्नता का विपरीत अर्थात दुखी होना। अमदा का अर्थ है अहंकार से रहित। मदना + अमदना+अमदा इस प्रकार यह शब्द बना। मैने ऐसा किया इस प्रकार का अहंकार देवी में नहीं होता।

95. **परमज्ञानगम्या** – परम ज्ञान के द्वारा जानने योग्य। परम ज्ञान अर्थात आत्मज्ञान। आत्मा को जान लिया तो परमात्मा को जान लिया जाता है। आत्मज्ञान पुस्तकीय ज्ञान नहीं है बल्कि अनुभव में आने वाली अनुभूति है।

96. **परेशी** – पर अर्थात श्रेष्ठ। परेशी अर्थात श्रेष्ठ ईश्वरी अर्थात उन जैसी श्रेष्ठ दूसरी ईश्वरी नहीं है। श्रेष्ठ देवताओं और उच्च कोटि के मनीषियों की भी ईश्वरी, उन पर शासन करने वाली।

97. **परागापरा** – श्रेष्ठों में अद्वितीय। पराग अर्थात श्रेष्ठ, अपरा अर्थात अद्वितीय। पराग अर्थात परा (श्रेष्ठता) को गई। पर अर्थात श्रेष्ठ। परेशी अर्थात श्रेष्ठ ईश्वरी अर्थात उन जैसी श्रेष्ठ दूसरी ईश्वरी नहीं है। पर अर्थात श्रेष्ठ। परेशी अर्थात श्रेष्ठ ईश्वरी अर्थात उन जैसी श्रेष्ठ दूसरी ईश्वरी नहीं है। श्रेष्ठों में श्रेष्ठ अर्थात सबसे श्रेष्ठ। पराम् गता इति पराग अर्थात श्रेष्ठता को गया अर्थात श्रेष्ठता को प्राप्त। श्रेष्ठता को प्राप्त अर्थात श्रेष्ठ। जानने से बाहर और उनसे श्रेष्ठ कोई नहीं अर्थात अद्वितीय, अनन्य। गा अर्थात जानना, पर अर्थात परे अर्थात बाहर, परागा अर्थात जानने से बाहर। अपरा अर्थात दूसरा नहीं कोई। परब्रह्म तक पहुँची, ऐसी श्रेष्ठ स्वरूपा।

98. **यज्ञायज्ञाप्रदा** – यज्ञ (कर्तव्य) और अयज्ञ (अकर्तव्य) को प्रदान करने वाली अर्थात बोध कराने वाली। यह बताने वाली कि क्या करना चाहिये और क्या नहीं करना चाहिये। यज्ञ का अर्थ निष्काम भाव से किया जाने वाला कर्तव्य कर्म होता है, अयज्ञ का अर्थ सकाम कर्म कर सकते हैं। निष्काम कर्म और सकाम कर्म दोनो के ज्ञान को प्रदान करने वाली।

99. **यज्ञज्ञानकार्यकरा** – यज्ञ और ज्ञान के कार्य को करने वाली। यज्ञ का अर्थ है आहुति देने वाला कर्म। दूसरों की भलाई के लिए निष्काम भाव से किए गए कर्तव्य कर्म यज्ञ हैं। आत्मोद्धार के लिए किए जाने वाल कर्म यज्ञ हैं। जिन चीजों के आप मालिक हैं उन्हें मानव कल्याण में लगाना यज्ञ कर्म है।

100. **शुभा** – शुभ स्वरूप वाली। जो परिणाम में अच्छा हो अर्थात अन्ततः अच्छा हो वह शुभ है। श्रेष्ठ उद्देश्यों को जो पूरा करे वह शुभ है और जो अभाव को दूर करे वह शुभ है। रोटी, कपड़, मकान देना अभाव को दूर करना है अतः यह शुभ है। शुभ का अर्थ है तत्वज्ञान, अभ्युदय और निःश्रेयस की प्राप्ति। कड़वी दवाई, माता – पिता की डाँट, दुष्टों का संहार आदि परिणाम में अच्छे होते हैं अतः ये शुभ है।

101. **शोभिनी** – शोभायुक्त अर्थात सुन्दर। शोभा का अर्थ है बढ़ा हुआ शारीरिक सौन्दर्य। शोभा देने वाली, यह अर्थ भी होता है। पुण्यात्मा। शोभा का अर्थ हल्दी भी होता है। जो हल्दी से युक्त है अर्थात जिनकी पूजा में हल्दी चढ़ाई जाती है। शोभा का अर्थ सजावट, उत्तम गुण, चमक, कान्ति गोरोचन भी होता है, इनसे युक्त।

102. **शुम्भमथिनी** – शुम्भ को मथ डालने वाली जैसे दही को मथा जाता है। तात्पर्य तो मारना हुआ। शुम्भ अहंकार का प्रतीक है अतः अहंकार को मथने वाली। (यदि शुभ्रमथिनी शब्द है तो अर्थ होगा जो स्वयं शुभ्रवर्णा अर्थात कलंकरहित है तथा शत्रुओं एवं विश्व को मथने वाली है, विलोडित करने वाली है।)

103. **निशुम्भासुरमर्दिनी** – निशुम्भ नामक असुर को मसल देने वाली अर्थात मार देने वाली। निशुम्भ ममता/ममत्व का प्रतीक है अतः ममत्व नामक दोष को मिटाने वाली।

104. **शाम्भवी** – भगवान शिव की शक्तिस्वरूपा। भगवान शिव की शक्ति से युक्त। योग की शाम्भवी मुद्रा स्वरूपा। इस मुद्रा में नेत्र अपलक खुले रहते हैं, किन्तु वे बाह्य विषयों से शून्य रहते हैं।दूब की तरह पवित्र। शाम्भवी का एक अर्थ है नीली दूब।

105. **शुम्भपत्नी** – शिव की पत्नी जो यज्ञ में साथ बैठती है। भगवान शिव की पत्नी पार्वती स्वरूपा। यज्ञ में साथ बैठने से ही कोई स्त्री पत्नी कहलाती है। पति स्त्रीलिंग और पुल्लिंग दोनों है किन्तु व्यवहार में लोग पुल्लिंग ही समझते हैं। यदि कोई महिला राष्ट्रपति पद पर नियुक्त होती है तो उसे राष्ट्रपति ही कहा जाता है, राष्ट्रपत्नी नहीं। पत्नी ही यज्ञ में पति के साथ बैठने की अधिकारिणी है। यज्ञ के अवसर पर भगवान शिव के

साथ हमेशा बैठने वाली। पत्नी वह होती है जो यज्ञ के अवसर पर अपने पति के साथ बैठती है। भगवान शिव के द्वारा विश्व की रचना, पालन और संहार करने का जो यज्ञ चलता है उसमें देवी जी हमेशा साथ रहती है और सहयोग करती हैं। पति शब्द स्त्रीलिंग भी है और पुल्लिंग भी है जैसे राष्ट्रपति पर व्यवहार में यह शब्द केवल पुल्लिंग में ही प्रयोग होता है। पत्नी शब्द स्त्रीलिंग में ही होता है। पत्नी वह है जो रक्षा करती है। इस प्रकार शम्भुपत्नी का अर्थ हुआ जो भगवान शिव की रक्षा करती है। भगवान शिव के द्वारा जहर पी लेने के बाद भी देवी की कृपा से शिव जीवित रहे थे।

106. **शुम्भजाया** – शिव की ऐसी पत्नी जिससे बच्चे पैदा हुए। जायते अस्याम् सन्ततिः प्रजाः इति जाया। जिससे सन्तान पैदा होते हैं ऐसी पत्नी जाया कहलाती है। पार्वती जी से गणेश जी और कार्तिकेय जी पैदा हुए अन्यथा भी समस्त प्राणी उनकी सन्तान हैं। भगवान शिव की ऐसी पत्नी जिससे गणेश और कार्तिकेय जी पैदा हुए थे।

107. **शुभानना** – शुभ अर्थात मंगलकारी चेहरे वाली। इनका चेहरा देखने पर मंगल ही होता है। (यदि शुम्भानना नाम है तो अर्थ होगा – दीप्तिमान शुभ मुख वाली। शुभ् दीप्तौ धातु से शुम्भ शब्द बनता है।)

108. **शांकरी** – कल्याण करने वाली। शंकर की शक्तिस्वरूपा। शंकर की शक्ति से युक्त।

109. **शांकराराध्या** – शिव के उपासकों के द्वारा आराधनीय। जो शान्ति चाहते हैं उनके द्वारा उपासनीय। शम् का अर्थ है शान्ति। यदि शंकराराध्या शब्द हो तो अर्थ होगा शंकर जी द्वारा आराधना करने योग्य।

110. **सन्ध्या** – सन्ध्या कालस्वरूपा। सन्ध्या–काल में जिनकी आराधना की जाती है। जिस काल में सम्यक् रूप से ध्यान होता है वह सन्ध्या है। सम्यक् रूप से ध्यान करने वाली, यह अर्थ भी कर सकते हैं। जो विचारयुक्त है। सन्ध्य का एक अर्थ विचारयुक्त है। जोड़ने वाली अर्थात् जीवात्मा को परमात्मा से जोड़ने वाली। सन्धीयते अनया इति सन्ध्या अर्थात् जिसके द्वारा जोड़ा जाता है वह सन्ध्या है। व्यष्टि आत्मा को समष्टि आत्मा से जोड़ने वाली। सन्ध्या काल में विराजमान। शब्द के आगे ''में विराजमान'', ''का कारण'', ''के समान'' लगाने से शब्द के अन्य अर्थ निकल आते है। सन्ध्या के समान अर्थात् सन्ध्या के समान जोड़ने वाली। सन्ध्या काल दिन और रात का सन्धि स्थल है जो पूजा उपासना के लिए बड़ा पवित्र है। इस सन्ध्या काल के स्वरूप वाली। जोड़ने वाली अर्थात् प्रमेय को प्रमाता से जोड़ने वाली। सन्धीयते यस्याम् स सन्ध्या। जिस काल में दो काल जुड़ते है वह सन्ध्या है। सन्ध्या काल में दिन और रात जुड़ते है।

111. **सन्ध्यासुधर्मिणी** – सन्ध्या रूपी सुन्दर धर्म से युक्त अर्थात सन्ध्या (पूजा – उपासना) करती हैं।

112. **शत्रुघ्नी** – शत्रुओं को मारने वाली। हन्ति का अर्थ है मारना और वही घ्नी हो गया।

113. **शत्रुहा** – शत्रुओं को त्याग देने वाली अर्थात अपने से दूर कर देने वाली। यहाँ हा शब्दाक्षर ओहाक् त्यागे धातु से लिया गया। हन्ति से भी हा बन सकता है जिसका अर्थ है मारने वाला। चूँकि मारना अर्थ पिछले नाम में ले लिया गया अतः पुनरावृत्ति से बचने के लिए यहाँ त्याग अर्थ लिया गया है। शत्रुओं का संहार करने वाली।

114. **शत्रुप्रदा** – दुष्ट राक्षसों को अपने गण रूपी शत्रुओं को देने वाली अर्थात दुष्ट राक्षसों के लिए अपने गण रूपी शत्रु पैदा करने वाली। शत्रुओं का प्रकृष्ट रूप से अवखण्डन (मारना) करने वाली। दो अवखण्डने धातु से दा शब्दाक्षर आया।

115. **शात्रवनाशिनी** – शत्रुओं के समूह का लोप कर देने वाली। नश् अदर्शने धातु होती है। शत्रु जहाँ से आये हैं, वहाँ वापस भेज देने वाली। शत्रुओं के समूह को नष्ट कर देने वाली।

116. **शैवी** – शिव से सम्बन्धित। शिव से सम्बन्धित शक्तिस्वरूपा। शिव की शक्ति से युक्त।

117. **शिवालया** – शिव मन्दिर वाली अर्थात शिव मन्दिर में निवास करने वाली। शिव को सम्पूर्ण रूप से खा जाने वाली। शिव का उच्चारण करने में लीन रहने वाली।

118. **शैवी** – शिव से सम्बन्धित उपासना स्वरूपा। दुःख गलना और सुख आना ही मंगल है। अच्छे कार्यों का निर्विघ्न रूप से पूरा होना मंगल है। आध्यात्मिक क्षेत्र में उन्नति, जीवन की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति एवं मनुष्य के पाँचों शरीरों की आवश्यकताओं की पूर्ति होना कल्याण है। पर्वत पर निवास करने वाली शैलपुत्री। श+ए+वी। वाति/वाययति से व बनेगा, जो स्त्रीलिंग में वी या वा हो जायेगा जिसका अर्थ है गति कराने वाली या पहुँचाने वाली। एकाक्षरी कोश में श का अर्थ है शिव, कल्याण, शान्ति तथा ए का अर्थ है शक्ति, अनुकम्पा आदि। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ भक्तों को शांति और शक्ति पहुँचाने वाली अर्थात देने वाली। शांति और अनुकम्पा देने वाली।

119. **शैलराजप्रिया सदा** – सदैव पर्वत राज हिमालय को प्रिय अर्थात उन्हें अच्छी लगती हैं। प्रीणाति इति प्रिया से प्रिया का अर्थ प्रसन्न करने वाली एवं प्रीयते इति प्रिया से प्रिया का अर्थ प्रसन्न होने वाली होता है। सदैव हिमालय को प्रसन्न करने वाली।

120. **शर्वरी** – रात्रिस्वरूपा। श्रृणाति चेष्टाम् इति शर्वरी अर्थात शत्रुओं की चेष्टाओं का नाश करने वाली।

121. **शर्वरी** – हल्दी की तरह अर्थात हल्दी की तरह रोग या कष्ट निवारिका। शर्वरी का एक अर्थ हल्दी है। कामदेव की पत्नी रति से अभेद है जिनका। शर्वर का एक अर्थ कामदेव है, अतः शर्वरी का अर्थ हुआ कामदेव की पत्नी। सन्ध्या या शाम का समय स्वरूपा। शबर जाति की स्त्री की तरह अर्थात जंगल में रहने वाली। वृणोति से वर शब्द बन सकता है। संस्कृत में ब और व में अभेद है इस प्रकार वर या बर का अर्थ चुनने वाला हुआ। शम् का अर्थ है सुख, शान्ति। शबरी का अर्थ होता है सुख शान्ति को वरण करने वाली। शम् विभर्ति से शबरी बनाये तो अर्थ होगा जिसने सुख को धारण कर रखा है। संस्कृत में मीमांसा में शबरस्वामी का नाम प्रसिद्ध है। उन्हें शबर इसलिए कहते थे क्योंकि जंगली जाति की तरह उन्हें अपने सौन्दर्य के प्रति कोई परवाह नहीं थी, वह अपने शारीरिक सौन्दर्य के प्रति बेपरवाह थे। शबरी की तरह एकान्तवासिनी। एकान्त/वन में रहने वाले शिव हैं शबर, उन शबर की गृहिणी शबरी हुईं। शबरी स्वरूपा।

122. **शम्भू** – शम्भू के स्वरूप को धारण करने वाली। जिससे मंगल होता है। शम् मंगलम् भवति यस्मात्, स शम्भु। जिससे सुख होता हो। सुखम् भवयितारौ इति शम्भू अर्थात जो सुख की रचना करता है वह शम्भू है अर्थात जो सुख का अनुभव कराता है अर्थात जो सुख को देता हो।

123. **सुधाढ्या** – अमृत से सम्पन्न । जिसके भीतर अमृत का वास हो।

124. **सौधवासिनी** – सुन्दर महल में निवास करने वाली।

125. **सगुणागुणरूपा** – सगुण और निर्गुण स्वरूप वाली।

126. **गौरवी** – गुरू भाव वाली अर्थात जो औरों से बढ़कर है। गुरू शब्द आकार, वजन एवं गुणों में औरों से अधिक के लिए प्रयुक्त होता है। इस प्रकार गौरवी का अर्थ हुआ जो गुणों में या आकार में या वजन में अन्य लोगों से बढ़कर हैं। गौरव स्वरूपा।

127. **भैरवीरवा** – भयंकर गर्जना या अट्टहास करने वाली।

128. **गौरांगी** – गोरे वर्ण के अंगों वाली। जिनके सभी अंगों का वर्ण गौर है। गौर वर्ण पूर्णता का प्रतीक है और अंगति का अर्थ है गच्छति अर्थात जाती है। इस प्रकार गौरांगी का अर्थ हुआ जो पूर्णता की ओर जाती हो अर्थात पूर्णता की ओर जाने वाली।

129. **गौरदेहा** – दूसरों को आकृष्ट करने वाले देह वाली। गुर उद्यमने से गौर बनता है। उद्यमन अर्थात चित्त को ऊपर उठाना अर्थात अपनी ओर आकर्षित करना। उद्यमन का अर्थ प्रयत्न करना भी होता है। अतः गौरदेहा का अर्थ हुआ प्रयत्नशील शरीर वाली। किसी कार्य के लिए प्रयत्नशील शरीर वाली। गौर वर्ण के शरीर वाली।

130. **गौरी** – अव्यक्त (गुप्त) शब्द करने वाली। अव्यक्त शब्द को मन से ग्रहण करने वाली। गूङ् अव्यक्तशब्दे धातु होती है। अव्यक्तम् गुप्तम् शब्दयते मनसा ग्रह्यते घ्यायते इति गौरी। अव्यक्त शब्द परावाणी है। परावाणी के अतिरिक्त अन्य वाणियों अर्थात पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी में कुछ न कुछ व्यक्त होता है। परावाणी ज्योतिर्मय स्वरूपा है जिसमें अंग या अवयव व्यक्त नहीं रहते हैं। सम्पूर्णता लिए हुए। गौर वर्ण सम्पूर्णता का प्रतीक है। स्वरूप की उज्जवलता लिए हुए, गौर का अर्थ है स्वरूप की उज्जवलता या कान्ति। जिसमें मन आकृष्ट होता है ऐसी सुन्दरता वाली। गुरते उद्युंक्ते मनो अस्मिन अर्थात जिसमें मन ऊँचाई को जाता है अर्थात आकृष्ट होता हैं। पार्वती स्वरूपा।

131. **गुरूमति गुरू** – ऐसी गुरू (शिक्षिका) जिसमें गौरव निहित है। गौरव अर्थात विशालता या भारीपन। श्रेष्ठ मति से युक्त, गुरू स्वरूपा। गुरू का अर्थ है अज्ञान रूपी अन्धकार को मिटाने वाली।

132. **गौः गौः** – गमनशील किरणों की तरह या उसके स्वरूप वाली। व्यापक ब्रह्म शक्ति स्वरूपा। पहले गौ को अर्थ व्यापक एवं दूसरें गौ का अर्थ ब्रह्म शक्ति है। गमनशील (क्रियाशील) चेतना शक्ति स्वरूपा। गौ का अर्थ चेतना शक्ति भी होता है। वैदिक कोष के आधार पर यह अर्थ किया गया है। अतिशय सज्जन। एक ही चीज दो बार हो तो वह अतिशय या निरन्तरता को दिखाती है। गाय की तरह सीधी या सज्जन। पहले लिखे हुए गाय का अर्थ गाय लिया और दूसरे लिख हुए गाय का अर्थ गाय का गुण सीधापना लिया। अतिशय सौम्य स्वभाव वाली। गाय दूध देती है अतः अतिशय कामनाओं को देने वाली या पूरा करने वाली यह अर्थ भी कर सकते हैं। गाय या पृथ्वी स्वरूपा। कामधेनु गाय का प्रकाश स्वरूपा। पहले लिखे गौ का अर्थ है गाय अर्थात कामधेनु और बाद में लिखे गौ का अर्थ है किरण अर्थात प्रकाश।

133. **गव्यरूपा** – गाय के विकार दूध, दही, घी आदि के स्वरूप वाली। प्रत्येक चीज शक्ति या ऊर्जा की बनी है और देवी का अर्थ है शक्ति या ऊर्जा। अतः प्रत्येक चीज देवीस्वरूपा है।

134. **गुणानन्दस्वरूपिणी** – श्रेष्ठ गुणों के आनन्द के स्वरूप वाली।

135. **गणेशगणदा** – गणेश को गण अर्थात सेवक प्रदान करने वाली।

136. **गुण्यगुणा** – गुण से युक्त लोगों में जो गुणस्वरूपा है। गुण, समय, अवस्था, सम्बन्ध, दिशा, प्राणी, पदार्थ सभी चीज ऊर्जा से बनी होने के कारण देवी रूप हैं।

137. **गौरववाञ्छिता** – गौरव चाहने वालों द्वारा चाही गई। गौरव पाने के लिए वांछित अर्थात जिनकी उपासना की जाती है।

138. **गणमाता** – गणों की अर्थात सेवकों की माता (रक्षा करने वाली)। माति इति माता, जो गर्भ में शिशु की रक्षा करती है, वह माता है। माति के कई अर्थों में एक अर्थ है रक्षा करना।

139. **गणाराध्या** – देवगणों के द्वारा आराधनीय।

140. **गणकोटिविनाशिनी** – शत्रुओं के करोड़ों गणों का विनाश करने वाली। विनाश का अर्थ है पूर्ण रूप से नाश अर्थात पूर्ण समाप्ति।

141. **दुर्गा** – दुःख से अर्थात कठिनाई से अर्थात अतिपरिश्रम से पाई जाने वाली। तपस्या, अष्टांगयोगसाधना जैसे कष्टप्रद साधनों से प्राप्त होने वाली। दुखेन गम्यते इति दुर्गा। दुर्ग अर्थात कठिन विपत्तियों का नाश करने वाली। दुर्ग+आ, दुर्ग का अर्थ जिससे पार पाना कठिन है ऐसी कठिन विपत्ति, आ का अर्थ नाश करना।

142. **दुर्जनहन्त्रा** – दुष्टों का वध करने वाली।

143. **दुर्जनप्रीतिदायिनी** – भक्त दुर्जनों को भी प्रसन्नता देने वाली।

144. **स्वर्गापवर्गदा** – उपासकों को स्वर्ग और मोक्ष देने वाली।

145. **दात्री** – उपासको को उनका अभीष्ट देने वाली। दानियों की रक्षा करने वाली। दानिन् का दा ले लिया, त्री का अर्थ है रक्षा करने वाली।

146. **दीनादीनदयावती** – जो दीन है और जो दीन नहीं है, उन दोनों पर दया दिखलाने वाली। जो दीन है अर्थात जिनमें अहंकार नहीं है। दीन नहीं है अर्थात भक्ति रूपी सम्पत्ति उनके पास है।

147. **दुर्निरीक्ष्या** – बड़ी कठिनाई से दिखलाई देने वाली। बड़ी तपस्या से दर्शन होते हैं।

148. **दुरादुःस्था** – अत्यन्त कठिन स्थान पर स्थित अर्थात जहाँ तक पहुँचना कठिन है। दुर् एवं दुः दोनों के लगभग एक जैसे अर्थ हैं अतः शब्दों का दोहराव होने से पहले शब्द का अर्थ अत्यन्त हो जाता है। ऐसी कठिन जगह पर स्थित जिसे पकड़ना (जानना) कठिन है। दुःस्थ का अर्थ है कठिन जगह में स्थित जैसे दुष्प्राप्त अर्थात प्राप्त करना कठिन है। दुष्टों के लिए दूर स्थित है। दुष्टों से दूर रहती है। दुरा अर्थात दुर्जन। अत्यधिक कठिन और अगम्य स्थानों में रहने वाली। दुर+अदुः, अर्थात कठिन और सरल दोनों स्थानों में स्थित या विराजमान।

149. **दौःस्थभञ्जनकारिणी** – दुर्गति/ दरिद्रता एवं मूर्खता का भंजन करने वाली अर्थात नष्ट करने वाली। शब्दकल्पद्रुम में दुःस्थ का अर्थ दुर्दशा ग्रस्त, दरिद्र, मूर्ख बताया गया है। दुःस्थ में अण् प्रत्यय लगाने से दौःस्थ बनता है जिसका अर्थ हुआ जो दरिद्र या मूर्ख से सम्बन्धित हो अर्थात दरिद्रता या मूर्खता। जो बुराई में स्थित हैं, उनका नाश करने वाली। जो कुमार्ग अर्थात बुरे कार्य में स्थित हैं, उनका नाश करने वाली। कठिन स्थान पर रहने वाले शत्रुओं का भी विनाश करने वाली। स्वर्ग में कब्जा जमाए असुरों का नाश करने वाली। दौः का एक अर्थ स्वर्ग भी होता है।

150. **श्वेतपाण्डुकृष्णाभा** – सफेद, पीली और काली कान्ति से युक्त रहने वाली। इच्छानुसार ऐसा रूप धारण कर लेती हैं। अन्यथा भी देवी के अननिगत अवतार हुए हैं और उन अवतारों में ऐसे स्वरूप आये हैं।

151. **कालदा** – मृत्यु, मृत्युभय को नष्ट कर देने वाली। यहाँ दा शब्द दा ददाति का नहीं है बल्कि दो अवखण्डने का है। भक्तों को अच्छा समय देने वाली। समय पर मोक्ष देने वाली।

152. **कालनाशिनी** – काल को भी नष्ट कर देने वाली। काल का अर्थ है मृत्यु, समय। संस्कृत में नश अदर्शने धातु होती है जहाँ पर नष्ट होने का अर्थ अदर्शन होना बताया गया है।

153. **कर्मनर्मकरी** – यज्ञ सम्बन्धी चेष्टा और श्रृंगार सम्बन्धी चेष्टा करने वाली। कर्म से तात्पर्य प्रायः यज्ञकर्म से लिया जाता है। नर्म श्रृंगार सम्बन्धी चेष्टा है। श्रृंगार सम्बन्धी चेष्टा अपने पति शिव के साथ करती हैं। कर्म में सुख की अनुभूति करने वाली। नर्म का अर्थ सुख या आनन्द भी होता है। कर्म के द्वारा होने वाले आनन्दों को कर देने वाली।

154. **नर्मा** – सुख स्वरूपा या आनन्द स्वरूपा या प्रसन्नता स्वरूपा या हास परिहास रूपा।

155. **धर्माधर्माविनाशिनी** – धर्म और अधर्म दोनों को समाप्त करके मोक्ष प्रदान करने वाली। धर्म को भी स्वर्ण की हथकड़ी के समान बन्धन में डालने वाला माना जाता है। पुण्य का भी फल मिलता है जिसके लिए शरीर धारण करना पड़ता है। मोक्ष पाने के लिए पाप एवं पुण्य दोनों का विनाश करना पड़ता है अर्थात कर्मों को निश्काम भाव से करना पड़ता है।

156. **गोरीगौरवदा** – गौरी (पार्वती) को आदर/सम्मान देने वाली। गौर वर्ण की स्त्रियों को गौरव प्रदान करने वाली।

157. **गोदा** – गायों को देने वाली। वाणी को देने वाली अर्थात श्रेष्ठ वाणी को देने वाली। स्वर्ग को देने वाली।

158. **गणदा** – गणों अर्थात सेवकों को प्रदान करने वाली। गण अर्थात सेवक गण।

159. **गायनप्रिया** – गायन गीत है प्रिय जिन्हें।

160. **गंगा** – निरन्तर गतिशील रहने वाली। निरन्तरम् गच्छति इति गंगा। मोक्षार्थियों द्वारा जिनका आश्रय लिया जाता है। मोक्षार्थिभिः गम्यते प्राप्यते इति गंगा।

161. **भागीरथी** – राजा भगीरथ के द्वारा जिनकी उपासना की गई या राजा भगीरथ द्वारा जिन्हें लाया गया अर्थात गंगा स्वरूपा।

162. **भंगा** – कुटिल अर्थात सुन्दर रूप वाली। भंग से भंगिमा बना जो सुन्दरता का परिचायक है। भगवान कृष्ण तिरछे खड़े होने के कारण बड़े सुन्दर लगते थे। तिरछी भौं या तिरछे खड़े होने से सुन्दरता बढ़ती है।

163. **भगा** – ऐश्वर्यशालिनी। समग्र धर्म, समग्र ऐश्वर्य (शक्ति), समग्र यश, समग्र श्री, समग्र ज्ञान और समग्र वैराग्य ये छह भग या ऐश्वर्य कहलाते हैं जिन्हें षडैश्वर्य कहते हैं। समूह का नाम भी ऐश्वर्य है और समूह के एक सदस्य का नाम भी ऐश्वर्य है जिसमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए। वाशिंगटन राज्य का भी नाम है और उसमें स्थित शहर का भी नाम है।

164. **भाग्यविवर्धिनी** – भाग्य को बढ़ाने वाली।

165. **भवानी** – भव अर्थात शंकर को जीवन देने वाली। अनति का अर्थ है श्वासोच्छ्वास क्रिया करना अर्थात जीवन देना। भवम् आनयति जीवयति इति भवानी। विषपान के बावजूद भगवान शंकर देवी की कृपा से ही जीवित बचे रहे।

166. **भवहन्त्री** – प्रलय–काल में संसार का नाश करने वाली। संसार के विकारों को नष्ट कर देने वाली।

167. **भैरवी** – भक्त की साधना में आने वाले विघ्नों को भयभीत करने वाली अर्थात भयभीत कर उन्हें भगाने वाली। जगत की सृष्टि, भरण (पालन) और संहार करने वाली। भ अर्थात भरण, र अर्थात रवण (संहार), व अर्थात वमन (सृष्टि)। भयजनक शब्दों को करने वाली। भैरम् (भयजनकम्) वदन्ति इति भैरवी (स्त्रीलिंग में)। छिन्धि – छिन्धि, भिन्दि – भिन्दि, मारय – मारय आदि भयजनक शब्दों को करने वाली। दुःखसमूह को नष्ट करने वाली। भैरम् (दुःखसमूहम्) वान्ति हिनस्ति इति भैरवी।

168. **भैरवीसमा** – भैरवी देवी के समान।

169. **भीमाभीमरवा** – अत्यधिक भयंकर और अत्यधिक मधुर आवाज करने वाली। जहाँ जैसी आवश्यकता, वैसा करने वाली। भीम +अभीम+रवा।

170. **भैमी** – भीम (शिव) से सम्बन्धित अर्थात उनकी गृहिणी। भगवान शिव का एक नाम भीम है। विभेति यस्मात् सः भीमः, जिससे डरा जाता है वह भीम है। भयंकर स्वरूप वाली।

171. **भीमान्दप्रदायिनी** – अत्यधिक आनन्द प्रदान करने वाली। भीम का अर्थ विशाल भी होता है। शिव को आनन्द देने वाली। भीम का एक अर्थ शिव भी होता है।

172. **शरण्या** – शरण लेने योग्य है अर्थात इनकी शरण ली जानी चाहिए। शरण में आये हुए लोगों की रक्षिका।

173. **शरणा** – शरण देने वाली। शरण + आ, आ का अर्थ है देना।

174. **शम्या** – जिसके द्वारा शान्त किया जाता है अर्थात बीमारियों, विपत्तियों को शान्त करने वाली। शब्दकल्पद्रुम में शम् + यत् प्रत्यय लगाने से शम्य शब्द की व्युत्पत्ति की गई है। शान्त करने योग्य अर्थात उपासना के द्वारा जिनके उग्र रूप को शान्त किया जाना चाहिए। जिनकी उग्रता शान्त करने योग्य है। शमन करने वाली, सुख देने वाली। यद्यपि उनका स्वरूप उग्र है पर उपासना द्वारा सुख पहुँचाने वाली हैं। शान्त स्वरूप वाली।

175. **शशिनी** – स्त्री चन्द्रमा स्वरूपा अर्थात चन्द्रमा का स्त्री रूप। शशिनम् नयति ग्रह्णाति इस व्युत्पत्ति से अर्थ होगा चन्द्रमा धारण करने वाली। उन्होंने अपने मस्तक में चन्द्रमा को धारण किया है। मृग (हिरन), खरगोश से युक्त अर्थात मृगों, खरगोशों को पालने वाली या जिनके आसपास खरगोश रहते हैं। शश + इनि प्रत्यय। शश का अर्थ है मृग, खरगोश। चन्द्रस्वरूपा अर्थात चन्द्रमा के समान सुन्दर और शीतल। शश अर्थात खरगोश। चन्द्रमा में खरगोश जैसा चिन्ह होता है जिसके कारण उन्हें शशिनी कहते हैं।

176. **शंखनाशिनी** – शंख नामक दैत्य का विनाश करने वाली। यह दैत्य देवताओं को जीतकर वेदों को चुरा ले गया था और भगवान विष्णु ने मस्य अवतार लेकर इस असुर को मारकर वेदों का उद्धार किया था। भगवान विष्णु ने असुर को मारा अर्थात भगवान विष्णु में रहने वाली शक्ति ने असुर को मारा अर्थात देवी ने मारा। हाथी के गण्ड स्थल या दाँतों के बीच के भाग को भी शंख कहते हैं। मस्तक की हड्डी एवं दस खरब की संख्या को भी शंख कहते हैं। युद्ध में शत्रुओं के मस्तक को नष्ट करने वाली या शंख संख्या के असुरों को नष्ट करने वाली।

177. **गुणागुणकरी** – गुणों को और दोषों को दोनों को करने वाली। गुण और अगुण दोनों को करने वाली। सज्जनों में सद्गुण और दर्जनों में दुर्गुण पैदा करने वाली। यदि गुण + आगुण +करी इस प्रकार से अर्थ करने का प्रयास करें तो अर्थ होगा गुणों को सम्पूर्ण गुण बनाने वाली अर्थात गुणों को सम्पूर्णता देने वाली। आ समन्तात् होता है। अतः आगुण का अर्थ हुआ सम्पूर्ण गुण। समन्तात् का अर्थ है सर्वतोभावेन, पूर्ण रूप से।

178. **गौणीप्रिया** – गुणों पर आधारित नाम हैं प्रिय जिन्हें। गौणी का अर्थ है गुणों पर आधारित। गुण और विशेषता पर आधारित नाम लेने पर प्रसन्न होती हैं। सहस्रनाम देवी के अलग अलग गुणों पर आधारित नाम है। गौणी भक्ति का आश्रय लेने वालों की अतिशय प्रिय अर्थात गौणी भक्ति वाले देवी को अत्यन्त पसन्द करते हैं।

179. **प्रीतिप्रदायिनी** – भक्तों को प्रसन्नता प्रदान करने वाली।

180. **जगमोहनकर्त्री** – जगत को अर्थात लोगों को मोहित कर देने वाली। अनात्म चीजों में आकर्षण, ममत्व पैदा करना मोहित करना है। मूर्छा में डालना भी मोहित करना है। मोहन अर्थात charm, मोहन अर्थात मोहित करने की क्रिया अर्थात आसक्त करना या लुभाना या भ्रम में डालना। मूर्छा में डालने वाला अस्त्र भी मोहनास्त्र कहलाता है।

181. **जगदानन्ददायिनी** – सम्पूर्ण संसार को आनन्द प्रदान करने वाली।

182. **जिताजाया** – शिव के द्वारा जीती गई (प्राप्त की गई) ऐसी जाया (पत्नी)। जिता का अर्थ जिसको जीता गया पर कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र के आधार पर बहुलम् शब्द के कारण कभी कभी कारक और काल परिवर्तित हो जाते हैं अर्थात कर्म कर्ता का अर्थ देने लगता है। इस प्रकार जिता का अर्थ जीतने वाली कर सकते हैं। ऐसी जाया जो जीतने वाली है। जीतने वाली का अर्थ है जो दूसरों से श्रेष्ठ हो। जिन्होंने पत्नियों के अवगुणों को जीत लिया या दूर कर दिया।

183. **विजया** – विजयस्वरूपिणी या विशेष जीत स्वरूपिणी। विजय का तात्पर्य है स्थाई जीत अर्थात दुश्मन भविष्य में लड़ने तक की भी न सोचे। विजय (विशेष जीत) का तात्पर्य है कठिन से कठिन शत्रुओं पर जीत। बिना किसी मदद के सर्वत्र जीतने वाली। वि अर्थात बिना। सर्वत्र और सर्वदा जीतने वाली। वि अर्थात विश्व अर्थात सर्वत्र।

184. **विजयाजयदायिनी** – ऐसी विजया जो उपासकों को जीत देती हैं। विजया नाम है और जयदायिनी से उसका स्वभाव पता चलता है। विशेष जीतने वाली जयदायिनी। विजय स्वरूपिणी होकर भक्तों को जय प्रदान करने वाली।

185. **कामा** – काम स्वरूपा या इच्छा स्वरूपा। कामदेव स्वरूपा या सुन्दर रूप वाली। कामदेव सुन्दरता का प्रतीक माना गया है। कामा का अर्थ काम देव की शक्ति भी है।

186. **काली** – समय आने पर वस्तु या प्राणी का संहार करने वाली। कलयति इति काली अर्थात जो संहार करे वह काली है।

187. **करालास्या** – भयंकर मुख वाली।

188. **खर्वा** – नाटे कद वाली तारा देवी से अभेद है जिनका। तारा देवी स्वरूपा। नाटे कद वाले वामन अवतार की शक्ति। खर्व अर्थात बौना स्वरूपिणी। जब शंकर जी ने गणेश जी का सिर काट दिया था तो पार्वती जी के क्रोध से अनेक प्रकार की शक्तियाँ निकलीं उनमें से कुछ नाटे कद की भी थीं जिन्हें खर्वा कहा गया। ये शक्तियाँ अपने सामने आने वाले देवताओं और असुरों का खून पी जाती थीं। खर्व अर्थात वामन अर्थात छोटा विचार अर्थात् अपने तक सीमित विचार। मैं आत्मा हूँ, इस प्रकार का लगातार विचार वामन विचार है जब सभी को आत्मतत्व समझने लगता है तब वामन विराट हो जाता है। (बहुत से शब्द प्रतीकात्मक होते हैं जैसे मत्स्य– मद् + स्यम्। मद अर्थात् मेरे से सम्बन्धित स्यम् अर्थात् चिन्तन, मैं आत्मा हूँ ऐसा चिन्तन। नौका अर्थात् आत्मचिन्तन। धृष्ट अर्थात निडर या साहसी।)

189. **खञ्जा** – एक पैर से खड़े होकर तपस्या करने वाली। शनि की शक्ति स्वरूपा। शनि एक पैर से लंगड़ाते हुए चलते हैं। खंज का अर्थ होता है लंगड़ा।

190. **खरा** – खर (गधा) वाली। खरः अस्या अस्ति इति खरा। शीतला देवी का वाहन गधा है। खर अर्थात तीक्ष्ण। जो शत्रुओं के लिए तीक्ष्ण हैं अर्थात असह्य हैं। तेज स्वरूपिणी। जिनका तेज असह्य है। तीक्ष्ण अर्थात अभक्तों के लिए अमंगलकारी या हानिकारक है। खरम् राति इति खरा। सुख देने वाली, स्वर्ग देने वाली, कृपा देने वाली, श्रेष्ठ बुद्धि देने वाली। एकाक्षरी कोश में ख का अर्थ है सुख, स्वर्ग, कृपा, बुद्धि।

191. **गदा** – गदा आयुध में शक्ति के रूप में निवास करने वाली। गदा के समान शक्तिशाली। गदा के समान शत्रुओं को चूर्ण कर देने वाली। गदा को धारण करने वाली। गदा अस्या अस्ति इति गदः, स्त्रीलिंग में गदा। गदावाली अर्थात गदा धारण करने वाली यह अर्थ निकला। रोग नाश करने वाली। गद का अर्थ है रोग। गद + आ, आ का अर्थ है नाश करना। कई बार नामों का अर्थ ''उसके समान'' ऐसा करते हुए बनाते हैं क्योंकि उनमें कोई न कोई गुण अवश्य मिलता है। उसमें अंश रूप से विद्यमान, ऐसा लिखकर या बताकर के भी शब्द का अर्थ निकल आता है। उसकी समीपता से ऐसा होता है, इस प्रकार से भी शब्दों का अर्थ किया जाता है। जैसे शान्ति अर्थात जिनकी समीपता पाकर मनुष्य शान्ति प्राप्त करता है।

192. **गर्वा** – गर्व को धारण करने वाली। दुर्गा सप्तशती में आया है कि देवी ने कहा कि जो मुझे युद्ध में हरायेगा वह मेरा पति होगा जो उनके अभिमान (सकारात्मक अभिमान) का सूचक है। गर्व+ आ, आ का एक अर्थ है नाश करना। अहंकार का नाश करने वाली।

193. **गरूत्मती** – पंखों से अर्थात सुन्दर परों से विभूषित परी रूप वाली।

194. **घर्मा** – धूप स्वरूपिणी या घाम स्वरूपिणी।

195. **घर्घरा** – .घर्घ शब्द करने वाली। घर्घ इति अव्यक्तशब्दम् करोति। घर्घरम् अस्या अस्ति से अर्थ निकलेगा घर्घर शब्द युक्त अर्थात घर्घर ध्वनि करने वाली अर्थात अव्यक्त शब्द स्वरूपा या अव्यक्त ध्वनि करने वाली। कुछ ऐसे शब्द होते हैं जिनका कोई अर्थ नहीं होता अर्थात उनके अनुरूप कोई वस्तु नहीं होती, ऐसे शब्द अव्यक्त शब्द कहलाते हैं। घर्घर का एक अर्थ पर्वतद्वार भी होता है। इस प्रकार घर्घरा का अर्थ पर्वतद्वार वाली हुआ। जो हिमालय के पर्वत द्वार से निकलती हो ऐसी नदी स्वरूपा।

196. **घोरनादिनी** – भयंकर आवाज अर्थात गर्जना करने वाली। कल्याणकारी शब्द बोलने वाली। घोर का एक अर्थ शिव है और शिव का अर्थ है कल्याण।

197. **चराचरी** – चर और अचर सबमें व्याप्त रहने वाली अर्थात रहने वाली। चर और अचर पदार्थों के स्वरूप वाली। सबकुछ ऊर्जा या शक्ति का रूपान्तरण है अर्थात देवी का रूपान्तरण है क्योंकि देवी का अर्थ है ऊर्जा या शक्ति। चर अर्थात चलने फिरने वाले प्राणी जैसे मनुष्य, देवता, असुर आदि। जगत को चराचर जगत कहते हैं। इस प्रकार चराचरी का अर्थ हुआ जगत स्वरूपा।

198. **चराराध्या** – .चरों के द्वारा आराधना के योग्य। चर अर्थात चलने फिरने वाले प्राणी जैसे मनुष्य, देवता, असुर।

199. **छिन्नाच्छिन्नमनोरथा** – ऐसी छिन्ना जिसका स्वयं का कोई मनोरथ नहीं है। छिन्ना + छिन्नमनोरथा, छिन्न अर्थात रहित। देवी के पास सभी चीजें हैं, अतः उनमें कोई इच्छा नहीं है। ऐसी छिन्ना जो दैत्यों के मनोरथों को तोड़ देती है। टूटने वाले मनोरथों को जोड़ देने वाली अर्थात निराश व्यक्तियों के मनोरथों को पूरा करने वाली। छिन्न अर्थात टूटा हुआ, अछिन्न अर्थात न टूटा हुआ अर्थात जुड़ा हुआ। कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र से टूटा हुआ का अर्थ तोड़ने वाला कर सकते हैं तथा अच्छिन्न के अर्थ न टूटा हुआ का अर्थ जोड़ने वाला कर सकते हैं। मनोरथों को पूर्ण और नष्ट कर देने वाली। भक्तों के मनोरथों को पूर्ण और अभक्तों तथा दुष्टों के मनोरथों को नष्ट कर देने वाली। पूर्ण भी करती है और नष्ट भी करती हैं।

200. **छिन्नमस्ता** – जिनका मस्तक छिन्न है अर्थात जो मन से/मस्तिष्क से परे की अवस्था में हैं। जिनके मूल या विराट स्वरूप को मस्तक की आवश्यकता नहीं है। आकाश, वायु, बिजली आदि किसी को काम करने के लिए मस्तक की आवश्यकता नहीं है। परमात्मा की इच्छा मात्र से क्रिया होने लगती है। परमात्मा को मनुष्य की तरह हाथ पैर, मस्तक की जरूरत नहीं होती।

201. **जयाजप्या** – ऐसी जया जो जप करने योग्य है। जयति असुरान् इति जया अर्थात जो असुरों को जीतती है वह जया है। जयशीला और जपने वाली। जय रूप में स्मरण करने योग्य।

202. **झर्झरी** – झरने की तरह नित्य प्रवहण शील अर्थात निरन्तर प्रवाहमान होने वाली। झर्झर का अर्थ है झरना। झांझ/मंजरी वाद्य की तरह मधुर ध्वनि करने वाली। झांझ/मंजरी वाद्य के रूप में वाद्य प्रिय है जिन्हें या इस वाद्य को रखने वाली।

203. **झंकारा** – झम् ऐसा शब्द करने वाली अर्थात देवी ऐसा आभूषण (नूपुर आदि) पहनती हैं जिनसे झम् ध्वनि निकलती है। झम् झम् की ध्वनि करने वाली या झम् झम् की ध्वनि प्रिय है जिन्हें। (यदि झकारा शब्द है तो अर्थ होगा वायु स्वरूपा अर्थात कोई भी वायु स्वरूपा, झंझावात वायु स्वरूपा, अर्द्धनारीश्वर स्वरूपा या महेश्वर स्वरूपा। एकाक्षरी कोष में झ इस अक्षर के वायु, झंझावात वायु, चारूवायु, अर्द्धनारीश्वर, महेश्वर आदि अर्थ दिये हैं।)

204. **झीष्कृति** – बुढ़ापे का नाश करना स्वरूपा अर्थात बुढ़ापे को नाश करने वाली। एकाक्षरीकोष में झी का अर्थ जरा (बुढ़ापा) दिया गया है। ईष् धातु का अर्थ है नाश करना। भक्तों की हानि/जरा का अन्त करने वाली। एकाक्षरी कोष के अनुसार झी का अर्थ है जरा और श का अर्थ है हिंसा। एकाक्षरी कोश में ष का अर्थ अवसान, अग्नि (अर्थात जलाने वाली) दिया गया है। शब्द बनाने में प्रायः सन्धि के नियम पालन नहीं हो पाते हैं अतः ष का ष् हो सकता है। निरूक्त पढ़ने से यह स्पष्ट हो जायेगा कि शब्द का अर्थ निकालने में नियमों में बहुत सी शिथिलता करनी होती है।

205. **टीका** – कठिन वैदिक शब्दों के अर्थ को प्रकाशित करने वाली।

206. **टंका** – दुष्ट दैत्यों/राक्षसों का बन्धन करने वाली। भक्तों के मन को स्नेहवश अपने में बाँधने वाली। टंकति का अर्थ है बध्नाति। दुष्टों के गर्व और क्रोध को नष्ट करने वाली। टंक का अर्थ है गर्व या क्रोध। आ का अर्थ देना भी होता है और नष्ट करना भी होता है। टंक+आ, टंका। गर्व नष्ट करने वाली। क्रोध नष्ट करने वाली।

207. **टंकारनादिनी** – टंकार अर्थात धनुष की ध्वनि करने वाली। हाथ में धनुष लेकर ध्वनि करने वाली।

208. **ठीका** – सारा संसार है कुटुम्ब जिनका, ऐसी दुर्गा। ठी च असौ का। ठी का अर्थ है कुटुम्बिन् या पुत्रवान और का का अर्थ है दुर्गा। पुत्रवान दुर्गा अर्थात स्कन्दमातास्वरूपा। प्रामाणिक स्वरूप वाली अर्थात सत्य स्वरूप वाली।

209. **ठकुरठक्कांगी** – देवतुल्य (पूज्य) व्यापारियों के पास जाने वाली। ठकुर का अर्थ है देवमूर्ति, मोनियर विलियम्स के शब्दकोष में ठक्क का अर्थ व्यापारी किया गया है। अंगति का अर्थ है गच्छति अर्थात जाना। कृष्ण जी के प्रहार करने वाले अंग की शक्तिस्वरूपा। ठकुर अर्थात भगवान कृष्ण। जब प्रहार करते हैं तो ठक का शब्द होता है अर्थात ठक प्रहार का शब्द है। ठक् करोति इति ठक्क। श्रेष्ठ देव स्वरूप से युक्त और कल्याणकारी ज्ञान से सम्पन्न अंगों वाली। ठकुर का अर्थ है श्रेष्ठ देव स्वरूप या पूज्य या श्रेष्ठ।

210. **ठठठांकारढुण्ढुरा** – ठठठां इस मन्त्राक्षर के जप करने से प्राप्त होने योग्य। कार अर्थात आकृति या स्वरूप। ढुण्ढि अन्वेषणे धातु होती है। ठठठां इस बीज मन्त्र की आकृति या स्वरूप को ढूँढती है या की ओर जाती है। तात्पर्य हुआ कि इस मन्त्र का जप करने से प्राप्त होती हैं। तंत्र में ठम् ठम् की ध्वनि से खोजी जाने वाली अर्थात सिद्ध की जाने वाली। ठठठम् अनुकरणात्मक ध्वनि है जैसे बर्तन की ध्वनि होती है। संस्कृत में ढुण्ढि अन्वेषणे धातु होती है। इस प्रकार ढुण्ढी का अर्थ है भक्त लोग जिसे ढूँढते हैं। जिन्होंने सारे विषयों को ढूँढ लिया है।

211. **ढुण्ढु** – भक्तों के द्वारा खोजी जाने वाली। सभी विषयों, पदार्थों की खोज करने वाली अर्थात उनकी ज्ञाता या पारंगत। ढुण्ढि अन्वेषणे धातु होती है।

212. **तराजतीर्णा** – ऐसी नौका जो अज (माया, ब्रह्म) को पार करा देती हैं। तरा का अर्थ है नौका। तीर्यते अनया इति तरा अर्थात जो पार करा दे अर्थात नौका। पार करने लायक माया को जिसने पार कर लिया अथात मायातीत। तर या तरा + अज+तीर्ण, तर या तरा का अर्थ है तरति अनेन अर्थात नौका या पार करने लायक। जल को पार करने या तैरने वाली अर्थात भव सागर को पार करने वाली। जल पार करने वाली या जल पार करा देने वाली। तर का अर्थ है अग्नि या वृक्ष। तरा का अर्थ है अग्नि की शक्ति। अग्नि की शक्ति से उत्पन्न तराज हुआ। अग्नि से जल पैदा होता है। अतः तराज का अर्थ है जल।

213. **तालस्थभ्रमनाशिनी** – तालों में अर्थात संगीत में स्थित भ्रम का नाश करने वाली अर्थात सही ताल को प्रस्तुत करने वाली।

214. **थकारा** – थ वर्ण के रूप वाली। रक्षा के स्वरूप वाली। एकाक्षरी कोश में थ का अर्थ रक्षा या मांगलिक या शिव होता है। शिव के स्वरूप वाली।

215. **थकरा** – मांगलिकता या मंगल को करने वाली। थ का अर्थ मांगलिकता या कल्याण होता है।

216. **दात्री** – समस्त पदार्थों को देने वाली। समस्त मनोरथों को पूर्ण करने वाली। स्वर्ग की रक्षा करने वाली। पृथ्वी की रक्षा करने वाली। दान की रक्षा करने वाली। गंगा की रक्षा करने वाली। एकाक्षरी कोश में दा के कई अर्थ दिये गये हैं जैसे स्वर्ग, पृथ्वी, दान, गंगा आदि।

217. **दीपा** – प्रकाशीला। प्रकाश करने वाली। भौतिक प्रकाश या ज्ञान का प्रकाश करने वाली।

218. **दीपविनाशिनी** – शत्रुओं के ज्ञान रूपी प्रकाश अर्थात ज्ञान बुद्धि को नष्ट कर देने वाली। शत्रुओं के कुलदीपकों अर्थात सन्तानों को नष्ट कर देने वाली।

219. **धन्या** – धन से युक्त। पुण्य कर्म करने वाली। शरणागत के दुख दूर करना रूपी पुण्यकर्म करने वाली। भाग्यशाली। पुण्य भी एक प्रकार का धन है। धन्य स्वरूपा अर्थात श्रेष्ठ या सुन्दर स्वरूपा। धन्यवाद करने के योग्य, देवी के मानव जाति पर इतने उपकार हैं कि वे धन्यवाद की पात्र हैं अर्थात उन्हें धन्यवाद मिलना चाहिये। –धन से युक्त। धनं याति इति धन्या अर्थात धन की ओर जाने वाली या धन प्राप्त करने वाली। संस्कृत में गमन का अर्थ प्राप्त करना, जानना भी होता है। धन देने वाली। देवी देवता, जो भी उनके पास होता है, उसे दूसरों को दे देते हैं। धनं यमयति इति धन्या। धन पर नियन्त्रण करने वाली अर्थात किसको कितना धन देना है, इसका निर्धारण करने वाली। धनं लब्धा इति धन्या सुकृति अथवा पुण्यवान। अमरकोश में लिखा है कि सुकृती, पुण्यवान और धन्य ये शब्द पर्यायवाची हैं। अच्छे कर्म करने वाली, यह अर्थ हुआ। जुहोत्यादि गण की धातु धन धान्ये में अच् प्रत्यय लगाने से धनम् शब्द बनता है। अष्टाध्यायी के सूत्र 'धन गणं लब्धा' इति यत् से प्राप्त करने के अर्थ में धन शब्द से यत प्रत्यय लगाकर धन्या बना। पुण्यकर्म करने वाली अर्थात भक्तों की रक्षा, उनके श्रेष्ठ मनोरथों को पूरा करना, धर्म की रक्षा करना आदि पुण्य करने वाली। पुण्यकर्म अर्थात जो भविष्य में अच्छा फल दे या पवित्र करे अर्थात पाप या दोष हटाये। पुण्यरूपी धन से युक्त अर्थात् अच्छे या श्रेष्ठ कर्म करने वाली। भाग्यशालिनी या भाग्यशालिनी महिलाओं में विराजमान। उदार। धन वही बाँट सकता है जो उदार होगा। प्रशंसनीया। व्यवहार में कहते है कि आप धन्य है। इसका तात्पर्य है कि आप प्रशंसा के पात्र है। निरपेक्षो गुणेः पुर्णो धन्यः। धन से पूर्ण, सद्गुण भी धन है, ज्ञान भी धन है, आपने विद्याधन शब्द सुना होगा। निरपेक्ष गुण का तात्पर्य है जो अपने आपमें अच्छे हैं अर्थात हर स्थिति में ज्यों का त्यों होते हैं। तस्मै हितम् सूत्र से धन में यत् प्रत्यय लगाने से धन्या शब्द बनता है जिसका अर्थ है धन के अनुकूल अर्थात् जिसे धन दिया जाना चाहिए पर यह धन देने वाली के अर्थ में भी प्रयुक्त होने लगा है। तत्र् साधु सूत्र से भी यत्र् प्रत्यय लगाकर धन्या शब्द बनता है जिसका अर्थ है धन में निपुण। सम्भवतः धन में निपुण का अर्थ धन देने में निपुण किया गया होगा। मनु की एक कन्या का नाम भी धन्या है जिसका विवाह ध्रुव के साथ हुआ था, उस कन्या से अभेद है जिनका। वनदेवी एवं उपमाता को भी धन्या कहा गया है। छोटे आवला को भी धन्या कहा गया है। तब इस नाम का अर्थ होगा आंवले की तरह अर्थात् आंवले के समान रोग निवारिका अर्थात् कष्ट निवारिका। शब्द के आगे ''के समान'' लगाने से भी शब्द का अर्थ निकलता है। हमें व्यवहार से देखना पड़ता है कि किस गुण या कर्म के कारण सामान्यतः है।

220. **धनाधनवती** – सम्पन्नता और निर्धनता दोनों रूपों से युक्त। धूमावती देवी को गरीबी या दरिद्रता का प्रतीक माना गया है।

221. **नर्मदा** – नर्मदा नदी से अभेद है जिनका। नर्मदा देवी, जो भगवान शिव की पुत्री हैं, उनसे अभेद है जिनका। सुख देने वाली। परिहास युक्त वाणी देने वाली।

222. **नर्ममोदिनी** – श्रृंगार की मधुर चेष्टाओं से प्रसन्न होने वाली या प्रसन्न रहने वाली। श्रृंगारचेष्टा में प्रसन्न रहने वाली। शिव के प्रति श्रृंगारचेष्टा करती हैं। परिहास युक्त वाणी से प्रसन्न करने वाली या प्रसन्न होने वाली। मोदयति से मोदिनी शब्द बनाएंगे तो अर्थ होगा प्रसन्न करने वाली, मोदते से मोदिनी शब्द बनाएंगे तो अर्थ होगा प्रसन्न होने वाली।

223. **पद्मा** – लक्ष्मी स्वरूपा। कमल है आसन जिनका। पदमम् आसनम अस्ति यस्या सा पद्मा। पद्म या कमल सृष्टि का प्रतीक है। सृष्टि में विराजमान। सृष्टि स्वरूपा।

224. **पद्मावती** – कमल से युक्त अर्थात हाथ में कमल धारण किये हुए। पद्मावती अप्सरा के समान सुन्दर। पद्मावती यक्षिणी स्वरूपा या उनसे अभेद है जिनका।

225. **पीतास्फान्ता** – पीले रंग के विस्तार में अन्त तक गई। पीले वर्ण वाली और अत्यन्त विशाल स्वरूपा। स्फा अर्थात विशाल। अन्त अर्थात स्वरूपा। स्फायी का अर्थ है विस्तार। स्फान्ता का अर्थ है विशाल। पीता अर्थात जिसे पी लिया गया अर्थात जो अत्यन्त सूक्ष्म हो गई है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ अत्यन्त सूक्ष्म और अत्यन्त विशाल यह हुआ।

226. **फूत्कारकारिणी** – दैत्यों के विनाश के समय फूत्कार ध्वनि करने वाली।

227. **फुल्ला** – खिली या प्रसन्न मुख वाली।

228. **ब्रह्ममयी** – ब्रह्मस्वरूपा। ब्रह्म का अर्थ है वह सर्वोच्च सत्ता जो स्वयं में सबसे बड़ा है तथा दूसरों को भी बड़ा बना देता है। जो छोटे को बड़ा बना दे, वह ब्रह्म है। मयी शब्द का अर्थ स्वरूपा भी होता है ओर ''से युक्त'' भी होता है। ब्रह्म ज्ञान या वेद ज्ञान से युक्त।

229. **ब्राह्मी** – सरस्वती। ब्रह्मा की शक्ति।

230. **ब्रह्मानन्दप्रदायिनी** – ब्रह्मानन्द प्रदान करने वाली। ब्रह्म की स्थिति में होने वाला आनन्द अर्थात अहम् ब्रह्मास्मि की अनुभूति में होने वाला आनन्द ब्रह्मानन्द है जो सर्वोच्च आनन्द माना गया है। तृप्ति से मन में होने वाली मानसिक सुख को आनन्द कहते हैं जो इन्द्रियों से परे होता है।

231. **भवाराध्या** – शिव के द्वारा आराधना के योग्य।

232. **भवाध्यक्षा** – सम्पूर्ण संसार की अध्यक्षा अर्थात उसके कार्य पर निगरानी करने वाली और यथावसर हस्तक्षेप करने वाली। अध्यक्ष अर्थात जिसकी आँखों के तले सब कुछ हो और जो घटनाओं को नियन्त्रित कर सके। अध्यक्ष का अर्थ शासक और आश्रय भी होता है।

233. **भगालीमन्दगामिनी** – ऐश्वर्य की पंक्ति वाली और मन्दगामिनी वाली। भगाली च असौ मन्दगामिनी च। ऐश्वर्य की पंक्ति अर्थात बहुत सारे ऐश्वर्य उनके पास हैं। ऐश्वर्य की माला से सुशोभित मन्द गति वाली।

234. **मदिरा** – हर्ष प्रदान करने वाली। माद्यते अनया इति मदिरा।

235. **मदिरेक्षा** – नशीली आँखों वाली। नशीला का अर्थ है अपने में डूबना और आनन्द की अनुभूति करना।

236. **यशोदा** – यश को देने वाली। भगवान कृष्ण की माँ यशोदा स्वरूपा। भगवान कृष्ण की माँ यशोदा से अभेद है जिनका।

237. **यमपूजिता** – यमराज के द्वारा पूजित। पूजा भैतिक एवं मानसिक दोनों प्रकार से हो सकती है। यदि सामग्री उपलब्ध है, जितनी भी उपलब्ध है, उसे चढ़ाकर या उपलब्ध न होने पर मानसिक रूप से चढ़ाकर भगवान की स्तुति करना पूजा है। अर्चना भौतिक स्तर पर ही होती है और शास्त्र में जितनी सामग्रियाँ बताई गई हैं, उन सभी को चढ़ाना अनिवार्य है। यह पूजा और अर्चना में अन्तर है।

238. **याम्या** – दक्षिण दिशा वाली अर्थात उसमें स्थित। प्रत्येक प्रहर में पूजा के योग्य।

239. **राम्या** – रात्रि स्वरूपा। राम्या का एक अर्थ रात्रि भी होता है। जिसमें रमण किया जाता अर्थात सौन्दर्य युक्त या रमणीय। रमणीय अर्थात हर पल सुन्दरता बदलने वाला जिससे चित्त बँधा रहे। रमण करना अर्थात चित्त का टिकना या आकर्षित होना। (यदि रम्या शब्द हो तो अर्थ होगा स्वाभाविक रूप से ऐसी सुन्दर जो आकर्षित करे। बिना श्रृंगार और आभूषण के दूसरे के नेत्र और मन को आकर्षित करे)।

240. **रामरूपा** – भगवान राम का रूप धारण करने वाली। राम के समान सुन्दर स्वरूप वाली। आनन्द देने वाले स्वरूप वाली।

241. **रामरूपा** – भगवान राम को देखने वाली अर्थात उनकी ओर दृष्टि करने वाली। रामम् रूपयति इति रामरूपा। राम का निर्माण करने वाली। रूप्यते इति रूपा से रूपा का अर्थ ज्ञापिका या बोधिका भी होता है। भगवान राम की कृपा से जिनका बोध होता है। सुन्दर रूप से रमण या विचरण करने वाली। जिनका साथ होने से आनन्द की अनुभूति होती है। भक्तों के साथ रमण करने वाली अर्थात क्रीड़ा करने वाली। अपने को माया के परदे में छिपाकर भक्तों के साथ लुकाछिपी का खेल खेलने वाली।

242. **ललिता** – कोमल सुन्दरता से युक्त। उनके अंग अत्यन्त मृदु या कोमल हैं। ऐसे सौन्दर्य से युक्त जो आनन्द दे। लीला या क्रीड़ा करने वाली।

243. **लता** – लता की तरह फैलने वाली अर्थात सम्पूर्ण संसार में व्याप्त हो जाने वाली। लता की तरह संसार को लपेटे हुए अर्थात संसार इनके भीतर है। पृथ्वी तत्व का विस्तार करने वाली। ल अर्थात भूमि। तन् धातु में ड प्रत्यय लगाने से त बनता है जिसका अर्थ है विस्तार करने वाला, निर्माण करने वाला, देने वाला। स्त्रीलिंग में ता का ती हो जाता है। एकाक्षरी कोश से ल के अन्य अर्थ ले सकते हैं।

244. **लंकेशी** – लंका की ईश्वरी। लंका को बनाने वाली और लंका में जिनकी पूजा होती है। लंका हृदय को भी कहते हैं अर्थात हृदय लंका का प्रतीक है। हृदय में वास करने वाली देवी या ईश्वरी। लं पृथ्वी भी है जो मूलाधार चक्र में स्थित है। स्वार्थ (बिना अर्थ बदले) में कन् प्रत्यय लगाने से लंक शब्द बनता है। इस प्रकार लंक का अर्थ मूलाधार चक्र हुआ। लंकेशी का अर्थ मूलाधार चक्र में विराजमान ईश्वरी हुआ। डांकिनी देवी स्वरूपा जो मूलाधार चक्र में है। कुण्डलिनी शक्ति स्वरूपा।

245. **वाक्प्रदा** – वाक् शक्ति अर्थात सम्भाषण शक्ति प्रदान करने वाली।

246. **वाच्या** – जिनके गुण, कार्य, पराक्रम वाचन अर्थात कहने लायक हों।

247. **सदाश्रमनिवासिनी** – सदैव आश्रम में निवास करने वाली।

248. **श्रान्ता** – शत्रुओं का संहार करते करते या युद्ध करते करते थकान का अनुभव करने वाली।

249. **शकाररूपा** – शिव स्वरूपा या आनन्द स्वरूपा या शान्त स्वरूपा।

250. **शकारखरवाहना** – सर्वोत्तम/सुन्दर गर्दभ है वाहन जिनका। श का एक अर्थ है सर्वोत्कृष्ट।

251. **सह्याद्रिरूपा** – सह्याद्रि पर्वत स्वरूपा। प्रत्येक चीज शक्ति या ऊर्जा की बनी है और देवी शक्ति या ऊर्जा हैं।

252. **सानन्दा** – आनन्द के सहित अर्थात आनन्द से युक्त।

253. **हरिणीहरिरूपिणी** – ऐसी पापहारिणी जो साक्षात् विष्णु स्वरूप है। ऐसी मनोहारिणी जो साक्षात विष्णु स्वरूप है। मन को हरने वाले भगवान विष्णु के स्वरूप वाली।

254. **हराराध्या** – शिव के द्वारा आराधना के योग्य।

255. **बालवाचालवंगप्रेमतोषिता** – भोलेपन से बोलने वाले बंगाल के उपासकों के प्रेम से सन्तुष्ट होने वाली। बाल अर्थात बालक अर्थात भोलेपन से युक्त।

256. **क्षपाक्षयप्रदा** – रात्रि के अन्धकार को नष्ट करने वाली। माया जन्य अज्ञान को नष्ट कर देने वाली। क्षय देना अर्थात नष्ट करना।

257. **क्षीरा** – श्रेष्ठ दुग्ध से युक्त। क्षीरम् अस्या अस्ति इति क्षीरा। खीर वाली अर्थात खीर से युक्त अर्थात जिन्हें पूजा में खीर चढ़ाई जाती है। क्षीर सागर में निवास करने वाली। क्षीर + आ, आ का अर्थ है देना। उपासकों को दुग्ध अर्थात दुग्ध से उपलक्षित सभी पौष्टिक पदार्थों को देने वाली। जल (जीवन) देने वाली। क्षीर का अर्थ जल, खीर भी होता है।

258. **अकारादिस्वरूपिणी** – अकारादि अर्थात मातृका के अक्षरों के स्वरूप वाली या अक्षर विज्ञान से विभूषित।

259. **कालिका** – काल का भी संहार करने वाली। काले रंग वाली। दैत्यों को पीड़ित करने वाली, चोट पहुँचाने वाली। कलयति पीडयति घातयति दैत्यान् इति कालिका। लोगों को कर्मों में प्रेरित करने वाली। जनान् नानाकर्मसु प्रेरयति इति कालिका। समय स्वरूपा। समय की अधिष्ठात्री देवी। हम लोग भूतकालिक / भविष्य कालिक इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग करते हैं।

260. **कालमूर्ति** – कालस्वरूपिणी। काल का विग्रह धारण करने वाली। काल का अर्थ मृत्यु और समय दोनों हैं।

261. **कलहा** – कलहस्वरूपिणी। दुष्टों को नष्ट करने के लिए कलह करने वाली अर्थात लड़ाई झगड़ा करवाने वाली। कलह+आ, आ का अर्थ देना भी होता है और नष्ट करना भी होता है। दुष्टों के लिए कलह देने वाली अर्थात उनमें आपस में झगड़ा कराने वाली। सज्जनों में यदि संयोगवश कोई झगड़ा हो गया तो उसे नष्ट करने वाली।

262. **कलहप्रिया** – दुष्टों के साथ युद्ध करना है प्रिय जिन्हें। कलह का एक अर्थ युद्ध, लड़ाई झगड़ा होता है।

263. शिवा – पार्वती। मोक्ष देने वाली। शिव+आ, शिव का अर्थ है मोक्ष और आ का अर्थ है देना। परब्रह्म की इच्छास्वरूपिणी। वश कान्तौ धातु से वशि बनता है जो वर्णों का आगे पीछे करने पर शिव हो जाता है और कान्ति का अर्थ है इच्छा।

264. **शन्दायिनी** – शान्ति को देने वाली। शम् का अर्थ है शान्ति।

265. सौम्या – सौम्य अर्थात सुन्दर, शान्त, शीतल (विनम्र) स्वरूप वाली। यह शब्द सोम से बना और सोम का अर्थ है चन्द्रमा। चन्द्रमा शान्त, सुन्दर और शीतल होता है। शीतल का अर्थ है विनम्र स्वरूप।

266. **शत्रुनिग्रहकारिणी** – शत्रुओं का बन्धन करने वाली।

267. **भवानी** – पार्वती स्वरूपा। शिव को जीवन दान देने वाली, चेतन बनाने वाली भवम् आनयति जीवयति इति भवानी। अनति का अर्थ है जीवन दान देना। विष पीने के बाद भी शिव जी देवी की कृपा से जीवित रहे थे।

268. **भवमूर्ति** – सम्पूर्ण संसार की मूर्ति (आकार) स्वरूपा।

269. **शर्वाणी** – शर्व (शिव) की पत्नी अर्थात पार्वती। श्रृणाति का अर्थ है संहार करना। शिव विश्व का संहार करते हैं अतः शर्व कहलाते हैं।

270. **सर्वमंगला** – अपने उपासकों को हर्ष, मंगल और कल्याण इन तीनों प्रकार के मंगल को देने वाली। ब्रह्मवैवर्तपुराण में मंगल उक्त तीन प्रकार का बताया गया है। सभी भक्तों को मंगल अर्थात मोक्ष देने वाली। सभी

का मंगल करने वाली। पूजा में त्रुटि भी रह जाए तब भी प्रत्येक पूजा करने वाले का मंगल अर्थात अच्छा ही करती है। पात्रता के अनुसार सभी प्रकार का मंगल अर्थात सभी प्रकार के मोक्ष देने वाली। सालोक्य, सायुज्य, सामीप्य, सार्ष्टि और कैवल्य ये पाँच प्रकार के मोक्ष हैं।

271. **शत्रुविद्राविणी** – शत्रुओं को भगा देने वाली अर्थात भक्तों से दूर कर देने वाली।

272. **शैवी** – मनसा देवी का नाम भी शैवी है, अतः इस नाम का अर्थ हुआ मनसा देवी स्वरूपा। मंगल या कल्याण भी शिव से सम्बन्धित होने के कारण शैवी हैं, अतः इस नाम का अर्थ हुआ मंगल स्वरूपा या कल्याण स्वरूपा। शिव से सम्बन्धित। शिव की शक्ति से युक्त।

273. **शुम्भासुरविनाशिनी** – शुम्भ नामक असुर का विनाश करने वाली। शुम्भ नामक असुर अहंकार का प्रतीक है अतः इस नाम का अर्थ हुआ अहंकार का पूर्ण नाश करने वाली।

274. **धकारमन्त्ररूपा** – ऐसे मन्त्र के स्वरूप वाली जिसमें धकार है। ध वर्ण रूप मन्त्र के स्वरूप वाली। धूं धूं धूमावती स्वाहा, यह इनका मन्त्र है।

275. **धूंबीजपरितोषिता** – धूं इस बीज मन्त्र के जप से सम्पूर्ण रूप से सन्तुष्ट या प्रसन्न होने वाली। शीघ्र और सम्पूर्ण प्रसन्न होने वाली। धूम् नामक बीज मन्त्र से परितुष्ट होने वाली।

276. **धनाध्यक्षस्तुता** – जिनकी कुबेर द्वारा स्तुति की गई।

277. **धीरा** – गम्भीर स्वरूप वाली। गम्भीर अर्थात उनके भीतर क्या विचार चल रहा है, दूसरे प्राणी नहीं जान सकते।

278. **धरारूपा** – पृथ्वीस्वरूपा।

279. **धरावती** – पृथ्वी से युक्त। विराट् स्वरूप में पृथ्वी इनका एक अंग होता है। पृथ्वी को धारण करने वाली।

280. **चर्विणी** – दुष्ट दैत्यों और शत्रुओं को चबा जाने वाली। चर्व् धातु में णिनि प्रत्यय लगाने से यह शब्द बनता है। चर्वयति इति चर्विणी। दाँतों से दुष्ट राक्षसों को चबा जाने वाली।

281. **चन्द्रपूज्या** – चन्द्रमा के द्वारा पूजनीय।

282. **छन्दोरूपा** – वेदस्वरूपिणी। छन्द अर्थात वेद। छन्द शास्त्र के स्वरूप वाली। छन्द अर्थात आह्लादक रूप में प्रस्तुत की जाने वाली पद्य रचना जो सुनने मात्र से आनन्द प्रदान करे। आह्लादित करने के रूप वाली। छद् धातु का अर्थ आह्लाद करना भी होता है। वेदों का निर्माण करने वाली। रूपयति का अर्थ है निर्माण करना। छन्द (वेद) हैं ज्ञापक जिनके अर्थात वेदों से जिनका ज्ञान होता है। रूप्यते इति रूपा से रूपा का अर्थ ज्ञापिका या बोधिका भी होता है।

283. **छटावती** – कान्ति या द्युति से युक्त।

284. **छाया** – सूर्य की पत्नी स्वरूपा या सूर्य की पत्नी से अभेद है जिनका। धूप का अभाव स्वरूपा। कान्ति स्वरूपिणी। छयत्ति छिनत्ति इति छाया। दुखों कष्टों को काटने वाली। छाया की तरह सुकून या शीतलता देने वाली। यापयति अर्थात गति कराने वाली, पहुँचाने वाली, बिताने वाली। एकाक्षरी कोश से छा के अर्थ लेकर छाया के अन्य अर्थ किये जा सकते हैं। ऐसे शब्द भी लिये जा सकते हैं जिनका आरम्भ छा से होगा क्योंकि छा उन शब्दों का प्रतिनिधित्व करेगा।

285. **छायावती** – कान्ति से युक्त। छाया का एक अर्थ कान्ति या दीप्ति है।

286. **स्वच्छा** – स्वच्छ अर्थात पवित्र स्वरूप वाली।

287. **छेदिनी** – शत्रुओं को छिन्न भिन्न कर देने वाली या भक्तों के अवगुणों को नष्ट कर देने वाली।

288. **भेदिनी** – शत्रुओं में भेद डालकर नष्ट कर देने वाली या उन्हें काट डालने वाली।

289. **क्षमा** – क्षमा स्वरूपा। क्षमा अस्या अस्ति इति क्षमा, इस विग्रह के अनुसार अर्थ होगा क्षमा वाली अर्थात क्षमायुक्त अर्थात दूसरों को क्षमा कर देने वाली। दण्ड देने का सामर्थ्य होने के बावजूद दण्ड न देकर, उनके प्रति किसी प्रकार के प्रतिकार की भावना नहीं होती और यह भाव भी होता है कि अपराधी को दण्ड न मिले।

290. **वल्गिनी** – अश्वारूढ़ होने पर लगाम पकड़ने वाली।

291. **वर्धिनी** – भक्तों को बढ़ाने वाली अर्थात उनकी उन्नति करने वाली। धन, धान्य, भक्ति, सुख बढ़ाने वाली।

292. **वन्द्या** – वन्दनीया, पूजनीया, सम्मानीया। वन्दना करने का अर्थ है सामने से प्रणाम या अभिवादन करना तथा उनकी स्तुति करना। worthy to be saluted. Respectable.

293. **वेदमाता** – वेदों की जननी। वेदों की रक्षा करने वाली। शिशुम् माति रक्षयति गर्भे इति माता, जो गर्भ में शिशु की रक्षा करती है, वह माता है। इस कारण माता का अर्थ रक्षा करने वाली भी होता है।

294. **बुधस्तुता** – बुध अर्थात विद्वानों द्वारा जिनकी स्तुति की गई। बुध ग्रह द्वारा जिनकी स्तुति की गई। स्तुति में गुणों और कार्यों की प्रशंसा होती है।

295. **धारा** – धारा (बहाव) के रूप में प्रवाहित होने वाली या बहने वाली। ज्ञान की धारा स्वरूपा। धारा नामक तीर्थ की तरह पवित्र करने वाली। धाम् राति इति धारा अर्थात धन, धान्य, बुद्धि, ध्यान देने वाली। राति का अर्थ है देती है। एकाक्षरी कोष में धा के धन, धान्य, बुद्धि, ध्यान ये अर्थ दिये गये हैं।

296. **धारावती** – धारा को धारण करने वाली अर्थात नदी स्वरूपा। ज्ञान की धारा धारण करने वाली अर्थात ज्ञान स्वरूपा।

297. **धन्या** – धन्यवाद के योग्य। जिसका स्वरूप धन्य है अर्थात जिसको देखकर मुह से धन्य धन्य निकलता है। श्रेष्ठ कार्यों और परोपकार को देखते हुए लोगों द्वारा जिनके प्रति धन्यवाद के स्वर निकलते हैं।

298. **धर्मदानपरायणा** – धर्म दान में सदैव लगी रहने वाली। धर्म का उपदेश या शिक्षा देना ही दान है। धर्म का दान उपदेश द्वारा ही होगा। वे गुण या नैतिक मूल्य जिनसे समाज धारित होता है अर्थात एकता में बँधा रहता है धर्म कहलाता है जैसे सत्य, अहिंसा, न्याय, परोपकार आदि गुणों से समाज स्थिर बना रहता है, नष्ट नहीं होता। अतः ये गुण धर्म कहलाते हैं। कर्तव्य और अकर्तव्य का ज्ञान धर्म कहलाता है। वस्तुओं में रहने वाला अपरिहार्य गुण भी धर्म कहलाता है जैसे अग्नि में दाहकता, जल में शीतलता आदि।

299. **गर्विणी** – विशेष गर्व से युक्त। मैं सबसे सुन्दर, सबसे बलवान, सबसे बुद्धिमान हूँ इस गर्व से युक्त।

300. **गुरूपूज्या** – श्रेष्ठ जनों द्वारा पूजनीय या गुरूजन है पूजनीय जिनके लिए।

301. **ज्ञानदात्री** – ज्ञान देने वाली।

302. **गुणान्विता** – दिव्य गुणों से युक्त। दिव्य गुण अर्थात प्रेम, करूणा, क्षमा आदि दिव्य गुण। जो इस लोक में बहुत दुर्लभ हो किन्तु स्वर्ग लोक में पाये जाएं ऐसे गुण दिव्य गुण कहलाते हैं। विविध प्रकार के गुणों से विभूषित। प्रकृति रूप में तीनों गुणों से युक्त या मानव रूप में दिव्य गुणों से युक्त।

303. **धर्मिणी** – धर्म वाली अर्थात धर्म से युक्त। भगवती का धर्म है उपासकों या शरणागत की रक्षा करना, दुष्टों का संहार करना। धर्म से युक्त अर्थात धर्म को धारण करने वाली।

304. **धर्मरूपा** – धर्म स्वरूपा अर्थात कर्तव्य और अकर्तव्य के ज्ञान से युक्त या किसी भी वस्तु के सारभूत गुण

स्वरूपा जैसे अग्नि का धर्म जलाना है। धर्मम् रूपयति इति धर्मरूपा अर्थात धर्म को दिखाने वाली या धर्म का बहुत गम्भीरता से पालन करने वाली भी धर्मरूपा का अर्थ है। धर्म को देखने वाली, दिखाने वाली, धर्म का पालन करने वाली। धर्मम् रूपयति इति धर्मरूपा। रूपयति का अर्थ है देखना, दिखाना, पालन करना, निर्माण करना। धर्म की रचना करने वाली।

305. **घण्टानादपरायणा** – घण्टा की ध्वनि सुनने या करने में तत्पर।

306. **घण्टानिनादिनी** – घण्टा के द्वारा ध्वनि या आवाज करने वाली।

307. **घूर्णाघूर्णिता** – स्वयं घूमने के स्वभाव वाली और घूमती ही रहती हैं। घूर्णः अस्या अस्ति इति घूर्णा अर्थात जिसमें घूमना हो अर्थात घूमने के स्वभाव वाली। घूर्णित अर्थात घूमती रहती हैं अर्थात जिनमें स्पन्दन होता रहता है। घूर्ण अर्थात घूमना अर्थात गति, अघूर्ण अर्थात स्थावर। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ जंगम और स्थावर दोनों स्वरूप वाली अर्थात चलने वाले पदार्थों और न चलने वाले पदार्थों दोनों के स्वरूप वाली। प्रत्येक पदार्थ ऊर्जा या शक्ति से बने होने के कारण देवी रूप है क्योंकि देवी का अर्थ है शक्ति या ऊर्जा।

308. **घोररूपिणी** – शत्रुओं के समक्ष भयंकर रूप धारण करने वाली।

309. **कलिघ्नी** – कलियुग के पापों को नष्ट कर देने वाली। कलियुग के पापों को नष्ट करने में समर्थ।

310. **कलिदूती** – कलियुग के अवगुणों को बताने के लिए दूती की तरह काम करने वाली। दूती सन्देश पहुँचाने का या प्रियतम से मिलाने का कार्य करती है। अतः दूती का अर्थ हुआ जो सन्देश बताती है।

311. **कलिपूज्या** – कलियुग के लोगों या भक्तों द्वारा पूजनीय। कलियुग में अधिक पूजन के योग्य या कलियुग के द्वारा पूजनीय।

312. **कलिप्रिया** – कलियुग है प्रिय जिन्हें। कलियुग में थोड़ी उपासना का भी कई गुना फल मिलता है। कलियुग के भक्त हैं प्रिय जिन्हें।

313. **कालनिर्णाशिनी** – काल का भी नितराम् अर्थात पूर्णरूपेण नाश कर देने वाली।

314. **काल्या** – प्राप्तकाला अर्थात जिसका समय आ गया है अर्थात गर्भ धारण करने का समय आ गया है जिसका अर्थात जो सृष्टि के लिए उन्मुख है ऐसी प्रकृति स्वरूपा। तत्र भवः सूत्र से काले भवाः इति काल्या अर्थात समय पर होने वाली अर्थात ऋतु स्वरूपा। समय पर होने वाली क्रिया विशेष स्वरूपा। जैसे हर दिन सुबह पाँच बजे आकाश में लालिमा आ जाती है। जो ऋतुओं के अनुकूल है। प्रातःकाल किया जाने वाला कर्म स्वरूपा अर्थात प्रातःकाल किये जाने वाले सन्ध्यावन्दन, ध्यान आदि कर्म स्वरूपा।

315. **काव्यदा** – वेद, पुराण आदि काव्य समाज को देने वाली। भक्तों को काव्य शक्ति प्रदान करने वाली।

316. **कालरूपिणी** – दुष्ट राक्षसों या शत्रुओं के लिए कालस्वरूपिणी अर्थात उनका संहार करने वाली। काल अर्थात शिव या यमराज। रूप अर्थात लक्षण या गुण। शिव के गुणों से युक्त।

317. **वर्षिणी** – अच्छी बरसात करने वाली या ज्ञान की वर्षा करने वाली।

318. **वृष्टिदा वृष्टि** – बरसात करने वाली ऐसी वृष्टि देवी।

319. **महावृष्टिनिवारिणी** – अतिवृष्टि का निवारण करने वाली। इनकी उपासना से ऐसा होता है।

320. **घातिनी** – शत्रुओं का वध करने वाली। घात का अर्थ है प्रहार, हत्या, वध।

321. **घाटिनी** – घाट वाली अर्थात घाट की मालकिन अर्थात घाट को पार कराने वाली अर्थात संसार सागर को पार कराने वाली। दुःख रूपी नदी को पार कराने वाली। नदियों में घाट होते हैं। सुन्दर रचनाओं को करने

वाली। घटने वाली अर्थात गढने वाली अर्थात रचना करने वाली। घाट वाली अर्थात घाट में बैठकर घाट से सम्बन्धित कार्य करने वाली अर्थात पार कराने वाली। नदी या संसार सागर को पार कराने वाली। गले की हड्डी को भी घाटा या घाटी कहते हैं और ये हड्डी सिर को धड़ से जोड़ती है। देवी के सन्दर्भ में इस शब्द का अर्थ होगा जो कमेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों को जोड़ती है। जो जड़ और चेतन को जोड़ती है।

322. **घोण्टा** – औषधि स्वरूपा अर्थात जिसे प्राप्त कर या ग्रहण कर सारे रोगों, कष्टों, सांसारिक दुखों से दूर हो जाया जाता है। घोण्टा एक औषधि विशेष का नाम है। (घुण्यते ग्रह्यते भक्षणाय ऐसी व्युत्पत्ति शब्दकल्पद्रुम में दी गई है अर्थात जिसे खाने के लिए ग्रहण करते हैं वह औषधि घोण्टा है। देवी के पक्ष में अर्थ होगा कष्ट दूर करने के लिए जिन्हें ग्रहण किया जाता है अर्थात जिनका सहारा लिया जाता है।) घुट् धातु से हिन्दी का घोटना शब्द बना जिसका अर्थ है अदला बदली या परिवर्तन करना। मसाले को आगे पीछे करना घोटना है। इस प्रकार घोण्टा का अर्थ हुआ पूर्ववत परिवर्तन करने वाली अर्थात पुनः सतयुग, त्रेता, द्वापर आदि लाने वाली। यही घोटना है अर्थात पुनः आगे पीछे करना। घोण्टा औषधि विशेष है। मुख, नासिका आदि अवयवों से युक्त। घुण/उन्नाव का वृक्ष स्वरूपा।

323. **घातकी** – शत्रुओं/भक्तों के विकारों का घात करने वाली अर्थात नष्ट करने वाली।

324. **घनरूपिणी** – मेघस्वरूपिणी। बादल की तरह काले रंग वाली। बादल की तरह बरसात करने वाली अर्थात मनोरथों की बरसात करने वाली अर्थात भक्तों के मनोरथों को पूर्ण करने वाली।

325. **धूंबीजा** – धूम्बीजस्वरूपा या धूम् बीज से युक्त।

326. **धूम्जपानन्दा** – धूम् इस बीज मन्त्र के जप करने से आनन्दित रहने वाली। दूसरा व्यक्ति जप करता है तो उसे सुनकर आनन्दित हो जाती हैं। टुनदि समृद्धौ धातु से आनन्द बनता है। अतः अर्थ हुआ धूम् के जप करने से समृद्ध होती हुई प्रसन्नता वाली। धूम् बीजमन्त्र के जप से आनन्दित होने वाली।

327. **धूंबीजजपतोषिता** – धूम् बीज मन्त्र के जप से सन्तुष्ट (प्रसन्न) हो जाने वाली। दूसरों द्वारा धूम् बीज मन्त्र के जप से प्रसन्न की गई।

328. **धूंधूंबीजजपासक्ता** – धूं धूं बीज में लगी हुई अर्थात जुड़ी हुई अर्थात जहाँ धूं धूं बीज होता है उसके पास पहुँच जाती हैं या खिंच जाती हैं। आसक्त अर्थात धूं धूं बीज जिन्हें अत्यन्त प्रिय है। धूम् धूम् इस बीज मन्त्र के जप में निरन्तर लगी रहने वाली।

329. **धूंधूंबीजपरायणा** – धूं धूं इस बीज मन्त्र में ही रहने वाली। धूम् धूम् इस बीज मन्त्र में निरत या संलग्न रहने वाली।

330. **धूंकारहर्षिणी** – धूम् बीज मन्त्र के उच्चारण करने वाले को अर्थात जप करने वाले को हर्षित करने वाली अर्थात प्रसन्न करने वाली। हर्षिणी का अर्थ है प्रसन्न होने वाली, प्रसन्न करने वाली। हर्षति से हर्षिणी शब्द बनाएंगे तो अर्थ होगा प्रसन्न होने वाली, हर्षयति से हर्षिणी शब्द बनाएंगे तो अर्थ होगा प्रसन्न करने वाली।

331. **धूमा** – आवरण शक्ति स्वरूपा जैसे धुँआ अग्नि के लिए आवरण है उसी प्रकार इस शक्ति के द्वारा देवी अपने वास्तविक स्वरूप को छिपा लेती है। पितरों के धूम्र मार्ग स्वरूपा। मा धातु में ड प्रत्यय लगाने से म शब्द बनेगा जिसका अर्थ है मापने वाला, तुलना करने वाला, निर्माण करने वाला, सम्मानित करने वाला आदि। स्त्रीलिंग में मा या मी हो जायेगा। एकाक्षरी कोश से धू शब्द का अर्थ लेकर अन्य अर्थ किये जा सकते हैं।

332. **धनदा** – धन प्रदान करने वाली। सभी प्रकार के धन अर्थात गोधन, गजधन, वाजिधन, रत्नधन, सन्तोषधन, विद्याधन आदि देने वाली।

333. **धनगर्विता** – धन के गर्व से युक्त रहने वाली। औरों से अधिक होने का भाव गर्व कहलाता है।

334. **पद्मावती** – कमल से युक्त अर्थात कमलासन पर विराजमान या कमल है हाथ में जिनके। पद्म + आ (भाव अर्थात सत्ता या पदार्थ, एकाक्षरी कोष के अनुसार) + वती। प्रत्येक चीज भाव या सत्ता है अतः यदि आवश्यकता न हो तो, आ का कोई विशेष अर्थ देने की जरूरत नहीं है। सामान्यतः आ समन्तात् से आ का अर्थ ''पूर्ण रूप से'' या ''चारों ओर से'' किया जाता है।

335. **पद्मामाला** – कमलों की माला से विभूषित।

336. **पद्मायोनिप्रपूजिता** – ब्रह्मा के द्वारा विधिवत पूजित।

337. **अपारा** – जिनकी कोई सीमा नहीं। देश काल की सीमा से परे। असीम रूप वाली।

338. **पूरणी** – जो दूसरे को भर देती है अर्थात पूर्ण कर देती है अर्थात धन, धान्य, पशु या गाड़ी, सन्तान, घर आदि देकर पूर्ण कर देती हैं। पूरयति इति पूरणी। पूर्ण स्वरूप वाली।

339. **पूर्णा** – जो स्वयं भरी हुई है अर्थात जिसके पास हर चीज है और हर चीज पूर्ण मात्रा में है। पूर्ण ज्ञान विद्या, शक्ति, आनन्द से सम्पन्न। जो पूरी तरह से भरी हो अर्थात अभाव या आवश्यकता से रहित हो। जो सिद्ध या सफल हो। जो अखण्डित हो। शक्तिपूर्ण। पूर्ण (भगवान विष्णु) की शक्तिस्वरूपा। पूर्ण+आ, एकाक्षरी कोष में आ का एक अर्थ शक्ति दिया गया है। जलस्वरूपा। विष्णुस्वरूपा। पूर्ण का एक अर्थ जल, विष्णु, अखण्डित, सिद्ध दिया गया है।

340. **पूर्णिमा** – पूर्णिमा तिथिस्वरूपा। पूर्णिमा तिथि के समान सुखदायक, शान्तिप्रद।

341. **परिवन्दिता** – भक्तों/सज्जनों द्वारा सभी ओर से वन्दित। वन्दना का अर्थ है इष्ट देवता के गुणों का बखान करना और उनको नमस्कार करना, प्रणाम करना। वन्दना अर्थात प्रणाम+स्तुति।

342. **फलदा** – फलों को प्रदान करने वाली। यहाँ फल से तात्पर्य कर्म फल या वृक्षों के फल से है। वृक्षों में भी फल इन्हीं की शक्ति से आता है।

343. **फलभोक्त्री** – फलों का भोग करने वाली। पूजा में चढ़ाए गए फलों का भोग करती हैं अर्थात उन्हें खाती हैं।

344. **फलिनी** – इलायची की तरह सुगन्धयुक्त। मूसली की तरह रोग निवारिका अर्थात कष्ट निवारिका। मेंहदी, प्रियंगु, अग्निशिखा वृक्ष, जलपीपल में अंश रूप से विद्यमान। शब्दकोष में फलिनी के कई अर्थ बताये गये हैं जैसे प्रियंगु, अग्निशिखा वृक्ष, मूसली, इलायची, मेंहदी, जल पीपल, दूधिया आदि। फली स्वरूपा। भक्त जो भी कामना करता है वे ही फल हैं, उस फल के स्वरूप वाली। फलिनी और फलान्विता का लगभग एक जैसा अर्थ है अर्थात फल से युक्त। फलानि अस्याः सन्ति अर्थात फल वाली अर्थात फलयुक्त अर्थात फलिनी। अर्थ में विभिन्नता दिखाने के लिए फलिनी का अर्थ फली स्वरूपा अर्थात जो खुद फली के स्वरूप में है ऐसा किया गया है। फलों से युक्त अर्थात इनके पास सभी तरह के फल हैं जैसे आम का फल, अमरूद का फल आदि क्योंकि सभी वृक्ष इन्हीं से पैदा हुए हैं।

345. **फलदायिनी** – फलों को देने वाली। अपनी शक्ति से वृक्षों में फल पैदा करती हैं या मनुष्य के द्वारा किये हुए कर्मों का फल प्रदान करती हैं। फल का एक अर्थ प्रतिफल या बदला भी है। अच्छे कर्म का अच्छा प्रतिफल एवं बुरे कर्म का बुरा प्रतिफल देने वाली।

346. **फूत्कारिणी** – शत्रुओं के समक्ष फूत्कार ध्वनि करने वाली, जिससे शत्रु डर जाएं।

347. **फलावाप्त्री** – सिद्धि को प्राप्त करने वाली। फल का अर्थ है किसी कार्य का परिणाम या सिद्धि। फलों को प्राप्त करने वाली। फल +अवाप्त्री। अवाप्त्री का शाब्दिक अर्थ है प्राप्त करने वाली पर कभी कभी शुद्ध धातु प्रेरणात्मक धातु का अर्थ देने लगती है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ होगा फलों अर्थात किसी क्रिया के परिणाम को प्राप्त कराने वाली।

348. **फलभोक्त्री** – फलों का भोग करने वाली आत्मास्वरूपा। यद्यपि इन्द्रियाँ विषयों का भोग करती हुईं प्रतीत होती हैं पर वास्तव में उनका भोग आत्मा ही करती है। भक्तों को फलों का भोग कराने वाली। यह नाम पहले भी आया है जहाँ उसका अर्थ भोग करने वाली किया गया। अर्थ में अन्तर दिखाने के लिए यहाँ भोग कराने वाली अर्थ किया गया। कभी कभी शुद्ध धातुऐं प्रेरणार्थक धातु का अर्थ देती हैं अतः भोग कराने वाली अर्थ निकल सकता है। पिछले नाम में आम, अमरूद इन फलों का भोग करने वाली अर्थ कर सकते हैं और इस नाम में कर्मफल का भोग करने वाली अर्थात आत्मास्वरूपा कर सकते हैं।

349. **फलान्विता** – फलों से युक्त अर्थात लदी हुई। अनु+इण् गतौ धातु से अन्वित शब्द बनता है अतः अर्थ हुआ फलों के साथ साथ चलने वाली। तात्पर्य हुआ फल पाना है तो इनके पास चलो। फलों के लिए समझी या विचारी गई। इण् गतौ धातु का अर्थ गति के अलावा जानना भी होता है। अन्वित का अर्थ युक्त, योग्य हुआ। फलों से युक्त। अनु का अर्थ है पीछे। अनु + इण् गतौ इति अन्विता, पीछे पीछे जाना अर्थात पीछे से जुड़ जाना। फल का एक अर्थ ढाल भी है। असुरों के साथ युद्ध के दौरान ढाल से युक्त। फल का अर्थ उद्देश्य की सिद्धि भी होता है। सिद्धि उनके पीछे पीछे जाती है।

350. **वारिणी** – शुद्ध और स्वच्छ जल से युक्त।

351. **वारणप्रीता** – हाथी है प्रिय जिन्हें।

352. **वारिपाथोधिपारगा** – जल के समुद्र से पार कराने वाली। वारि अर्थात जल, पाथोधि अर्थात समुद्र, पारगा अर्थात पार कराने वाली। पारम् गमयति इति पारगा। जल से परिपूर्ण समुद्र से पार करा देने वाली। पाथोधि का अर्थ है जल।

353. **विवर्णा** – अपना चेहरा या शरीर ऐसे बनाये हैं जैसे चेहरे या शरीर की कान्ति निकल गई हो। धूमावती देवी के ध्यान मन्त्र में इनका इस प्रकार से चित्रण किया गया है। बिना वर्ण वाली अर्थात रंग रहित अर्थात निर्गुण निराकार। विशेष वर्ण अर्थात सुन्दर वर्ण से विभूषित। विवर्णा अस्या अस्ति इति विवर्णा अर्थात विवर्ण या निम्नजाति वाली अर्थात निम्नजाति में भी उत्पन्न। देवी ने उच्छिष्ट चाण्डालिनी के रूप में अवतार लिया था जो विवर्ण या निम्नजाति कहलाती है। देवी ने किरातिनी का भी रूप धारण किया था।

354. **धूम्रनयना** – धुएँ की तरह रंग वाले नेत्रों वाली। नेत्र को नयन इसलिए कहते हैं क्योंकि वह ले जाता है अर्थात रास्ता दिखाता है। धुऐ जैसे नेत्र वाली। धुआँ अर्थात कुछ उज्जवल भी है। नयन अर्थात ले जाने वाला। धूम्र के समान नेत्रों वाली या जिनके नेत्रों से धुआँ निकल रहा है। धूम्र का अर्थ होता है धुएँ के रंग का अर्थात कृष्ण लोहित या ललाई लिए काले रंग का। रजोगुण और तमोगुण को ले जाने वाली अर्थात धारण करने वाली। धूम्र लालिमा लिया हुआ काला रंग होता है। लाल रंग रजोगुण का एवं काला रंग तमोगुण का प्रतीक है। नयन अर्थात ले जाना।

355. **धूम्राक्षी** – धुएँ की तरह व्याप्त होती है जिसकी दृष्टि। अक्ष्णोति से अक्षी बनाने पर व्याप्त होना अर्थ निकलता है। अक्षि अर्थात जो सब जगह फैल जाती है जहाँ जहाँ दृष्टि डालते हैं। धुएँ के समान सुन्दर नेत्रों वाली। धूम्र का अर्थ शिव भी होता है। भगवान शिव में शक्ति रूप से व्याप्त।

356. **धूम्ररूपिणी** – शिवरूपिणी। शिव का एक नाम धूम्र भी है। अच्छे धुएँ के स्वरूप वाली। आवरण शक्ति स्वरूपा। धुआँ अग्नि को ढ़के रहता है अतः आवरण शक्ति अर्थ निकला।

357. **नीति** – नयनम् नीतिः अर्थात ले जाना अर्थात वेदोक्त मार्ग को बताने वाली। नीति अर्थात वेद क्योंकि सारा आचार यहीं से शुरू होता है। यहाँ सद्नीति से तात्पर्य है। राजनीति, धर्मनीति सभी के बीज वेद में है।

358. **नीतिस्वरूपा** – नीति जिसका अपना रूप है। सद्नीति स्वरूपा। नीति के स्वरूप से युक्त। स्वरूप अर्थात सदैव रहने वाला अर्थात कभी अलग न होने वाला गुण। नीति नामक सार गुण से युक्त। नीति जिनका स्वरूप है अर्थात सद्नीति जिनसे कभी अलग नहीं होती अर्थात चिरस्थाई है।

359. **नीतिज्ञा** – नीति को जानने वाली।

360. **नयकोविदा** – नीति शास्त्र जानने वाली। नय का अर्थ मार्ग या उपाय भी होता है। नयन्ति अत्र जनाः इति नयः। ईश्वर प्राप्ति के जितने भी मार्ग है अर्थात योग के जितने भी मार्ग है उनको जानने वाली। नीतिविद्या में पारंगत या पंडित।

361. **तारिणी** – संसार सागर से पार करा देने वाली। आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक तीनों प्रकार के दुखों से पार कराने वाली। असमंजस की स्थिति आने पर उस स्थिति से पार करा देने वाली।

362. **ताररूपा** – श्रेष्ठ स्वरूप वाली या ओंकार के स्वरूप वाली। तार अर्थात ऊँ श्रेष्ठता का प्रतीक है।

363. **तत्वज्ञानपरायणा** – तत्वज्ञान में रहने वाली। परायण का एक अर्थ आश्रय भी होता है। तत्वज्ञान से तात्पर्य ब्रह्मज्ञान या आत्मज्ञान से है। तत्व का अर्थ है ब्रह्म, परमात्मा, जगत के मूल कारण जिससे जगत बना है, सार वस्तु या वास्तविकता। परमात्मा में लीन है जो या परमात्मा में आश्रय लिया है जिसने। तत्वज्ञान में संलग्न रहने वाली। तत्व का अर्थ है जगत का सार।

364. **स्थूला** – स्थूल स्वरूप वाली अर्थात ऐसा स्वरूप भी धारण करती हैं जिन्हें आँखों से देखा जा सकता है तथा अन्य इन्द्रियों से अनुभव किया जा सकता है। उस स्वरूप वाली जो सहज में दिखाई दे देता है या समझ में आ जाता है।

365. **स्थूलाधरा** – स्थूल अर्थात मोटे ओठों वाली। देवी इच्छानुसार कोई भी रूप धारण कर सकती हैं।

366. **स्थात्री** – एक स्थान पर रहने वाली। स्थित रहने वाली अर्थात अविचल अर्थात ब्रह्म स्वरूपा। ब्रह्म सर्वव्यापक होने के कारण स्थिर है। स्थित रहने वाली। स्थान (पवित्र स्थान या तीर्थ स्थान) की रक्षा करने वाली। रहने वालों (पुण्य भूमि में या अपने लोक में) की रक्षा करने वाली।

367. **उत्तमस्थानवासिनी** – उत्तम स्थान अर्थात मन्दिर पर्वत, नदी तट पर निवास करने वाली।

368. **स्थूला** – भौतिक जगत स्वरूपा। पुष्ट या मजबूत शरीर वाली। विस्तृत या बड़ी आकृति वाली। पंच तत्वों से विभूषित शरीर वाली।

369. **पद्मापदस्थाना** – कमल पर पैर रखकर बैठने वाली।

370. **स्थानभ्रष्टा** – जो अपने स्थान से नीचे गिर गई है अर्थात दाम्पत्य भाव से नीचे गिर गई है क्योंकि उन्होंने शिव जी को खा लिया था। स्थान से अलग अर्थात संसार में परम स्थान स्वरूपा। स्थान से भ्रष्ट हुए दैत्यों का अर्थात धर्म मार्ग से भ्रष्ट हुए दैत्यों का संहार करने वाली। स्थानभ्रष्ट + आ। आ अर्थ देने वाली और नाश करने वाली दोनों अर्थ होता है।

371. **स्थलस्थिता** – पवित्र स्थल, यज्ञ स्थल या पूजा स्थल में विराजमान। स्थल का सामान्य अर्थ जमीन होता है। स्थल पर विराजमान है अर्थात जमीन पर विराजमान ।

372. **शोषिणी** – दुष्ट दैत्यों को सुखा देने वाली।

373. **शोभिनी** – अतिशय सुशोभित होने वाली। अतिशय सुन्दर।

374. **शीता** – शीतल गुणों वाली। स्थैर्य या स्थिरता के गुण वाली। शीङ् शयने, जहाँ जहाँ शैत्य है वहाँ वहाँ स्थिरता है क्योंकि ठण्डकपना से पानी जम जाता है।

375. **शीतपानीयपायिनी** – शीतल जल को पीने वाली।

376. **शारिणी** – श्रेष्ठ बाणों को धारण करने वाली। शारिणी और शरिणी दोनों शब्द सही हैं।

377. **शंखिनी** – शंख को धारण करने वाली। वराह पुराण में शंख को अविद्या विनाशक शक्ति माना गया है। शंख बजाने से नकरात्मक ऊर्जा नष्ट होती है। शंख प्रायः सफेद रंग का होता है अतः शंख को सत्वगुण का भी प्रतीक माना गया है। अविद्या नाशक शक्ति से युक्त। सतोगुण से युक्त।

378. **शुद्धा** – शुद्ध स्वरूप वाली अर्थात माया या अज्ञान से रहित। मिलावट से रहित। शुद्ध अर्थात सत्व अर्थात जो रजोगुण और तमोगुण से रहित हों। दूसरों को शुद्ध या पवित्र करने वाली। शुन्धति पूती भवति शोधयति इति शुद्धा अर्थात जो स्वयं में पवित्र है तथा दूसरों को भी पवित्र बना दे वह शुद्ध है। इस प्रकार शुद्ध के दो अर्थ कर सकते हैं, जो स्वयं में पवित्र है अर्थात मिलावट रहित है। जो दूसरों को पवित्र कर देती है। अपरोक्षानुभूति ग्रन्थ के अनुसार ज्ञेय एवं ज्ञाता से रहित जो ज्ञान है वह शुद्ध ज्ञान होता है, तत्स्वरूपा।

379. **शंखासुरविनाशिनी** – शंख नामक असुर का विनाश करने वाली। अविद्या या अज्ञान रूपी असुर का नाश करने वाली। यह असुर वेदों को चुरा ले गया था। अतः इसे अविद्या या अज्ञान का प्रतीक कह सकते हैं। बुरी प्रवृत्तियों का नाश करने वाली।

380. **शर्वरी** – भगवान शिव को देने वाली अर्थात भगवान शिव का साक्षात्कार कराने वाली या शिव ज्ञान देने वाली। शर्वम् राति इति शर्वरी। शर्व का अर्थ भगवान शिव, भगवान विष्णु होता है। भगवान विष्णु का साक्षात्कार कराने वाली। रात्रिस्वरूपा। श्रृणाति चेष्टाम् इति शर्वरी। शत्रुओं की चेष्टाओं और गतिविधियों को नष्ट करने वाली।

381. **शर्वरीपूज्या** – रात्रि में पूजा के योग्य।

382. **शर्वरीप्रपूजिता** – रात्रि के ईश्वर अर्थात चन्द्रमा या शिव के द्वारा विधिवत पूजित। मध्यमपदलोपी समास की तरह इस शब्द को ले सकते हैं। स्त्रियों के द्वारा भलीभाँति पूजित। रात्रि के समय विधिविधान से पूजा की जाने वाली। शर्वर (कामदेव) की पत्नी शर्वरी (रति) के द्वारा विधिपूर्वक पूजित।

383. **शर्वरीजाग्रता** – रात्रि में जाग्रत अर्थात अधिक प्रभावकारी। देवी की पूजा रात्रि में अधिक बलवती मानी गई है अर्थात कहा गया है कि रात्रि में पूजा करने पर अधिक कृपा मिलती है। रात्रि के रूप में जाग्रत। रात्रि में भी सजग या होश की अवस्था में रहने वाली। रात्रि में जागने वाली।

384. **योग्या** – सामर्थ्य से युक्त अर्थात प्रत्येक कर्म करने में सामर्थ्य वाली। प्रत्येक कार्य को भलीभाँति करने में पूर्ण सक्षम या काबिल। योग्य अर्थात हर चीज में योग्यता रखने वाली अर्थात समर्थ या काबिल या लायक। सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार की चीजों में पूर्ण सक्षमता रखने वाली।

385. **योगिनी** – योगविद्या में पारंगत। भक्त को भगवान से जोड़ने वाली।

386. **योगवन्दिता** – योगियों द्वारा पूजित। योगः अस्य अस्ति इति योगः, योग वाला अर्थात योगी। इस प्रकार योग का अर्थ योगी भी होता है। योगदर्शन द्वारा जिनकी वन्दना की जाती है।

387. **योगिनीगणसंसेव्या** – योगिनी के समूह द्वारा भलीभाँति सेवनीय या पूजनीय।

388. **योगिनीयोगभाविता** – योगिनियों के योग के द्वारा ध्यान की गई, सोची गई, विचारी गई, प्राप्त की गई। योगिनियों द्वारा जिसे योग से प्रसन्न किया गया। भाविता के अर्थ है pleased, gladdened, manifested, imagined, proved.

389. **योगमार्गरता** – योग–मार्ग में लगी रहने वाली, चलने वाली। योग मार्ग से प्रसन्न या योग मार्ग में प्रसन्न। रत का अर्थ है प्रसन्न, लगा हुआ होना।

390. **युक्ता** – ब्रह्म से जुड़ी हुई अर्थात हमेशा ब्रह्म के साथ रहती हैं। जैसे दूध में पानी रहता है उसी प्रकार। भगवान शिव से जुड़ी हुई जैसा कि अर्द्धनारीश्वर रूप से स्पष्ट है। प्रत्येक पदार्थ से जुड़ी हुई क्योंकि देवी ऊर्जा या शक्तिरूपा हैं और प्रत्येक पदार्थ में ऊर्जा या शक्ति होती है। योग से जुड़ी हुई अर्थात योग में स्थित। उचित आहार विहार वाली। गीता में युक्ताहारविहारे शब्द आया है।

391. **योगमार्गानुसारिणी** – योगमार्ग का अनुसरण करने वाली। योग का अर्थ है ब्रह्म के साथ ऐक्य।

392. **योगभावा** – योग ही है भाव (स्वरूप) जिनका। योगविद्या को जन्म देने वाली।योगम् भावयति (उत्पादयति) इति योगभावा। योग की क्रियास्वरूपा। योग ही है क्रिया जिसकी। योग के भाव से युक्त अर्थात योग विद्या को धारण करने वाली। योगरूपी सत्ता या पदार्थ वाली। योग की जो क्रिया है तद्स्वरूपा या क्रियायोग स्वरूपा।

393. **योगयुक्ता** – चित्तवृत्ति निरोध की अवस्था में हमेशा रहने वाली ही योगयुक्ता हैं क्योंकि योग का अर्थ है चित्तवृत्ति निरोध। चित्तवृत्तिनिरोध का अर्थ है मन के व्यापार (क्रिया) का शान्त होना। योग से युक्त रहने वाली। योग विद्या से युक्त रहने वाली।

394. **यामिनीपतिवन्दिता** – चन्द्रमा के द्वारा वन्दित।

395. **अयोग्या** – अधिक योग्य। अ का अर्थ है अधिक। योग्यता से परे अर्थात अतिशय योग्यता वाली। शिव के लिए योग्य अर्थात शिव की पत्नी बनने के लिए योग्य। अ का अर्थ है शिव, ब्रह्मा, विष्णु, ब्रह्म। गलत कार्य करने में उनकी मदद चाहे तो वे अयोग्य है अर्थात अक्षम हैं। अयोग्य अर्थात जिनकी मनुष्य की तरह सन्तान नहीं है।

396. योधिनी – योध (योद्धा/सिपाही/वीर) से युक्त। युद्ध वाली अर्थात आसुरी शक्तियों से युद्ध की भावना से युक्त।

397. **योद्ध्री** – युद्ध करने वाली। युध् + तृच् + स्त्रीलिंग। युद्ध कला में कुशल। (यदि योध्या शब्द है तो अर्थ होगा युद्ध के लिए योग्य अर्थात युद्ध करने की सामर्थ्य वाली योद्धा के गुणों से युक्त। वीरासन वाली या वीरों के वेश वाली)।

398. **युद्धकर्मविशारदा** – युद्ध कर्म में पारंगत।

399. **युद्धमार्गरता** – युद्ध मार्ग में चलने वाली अर्थात शत्रुओं के साथ युद्ध करने वाली। जिन्हें युद्ध का मार्ग पसन्द है। रता अर्थात प्रसन्न। रम् धातु से क्त प्रत्यय लगाने से रत शब्द का अर्थ प्रसन्न, लगा हुआ होता है।

400. **नान्ता** – जिनका अन्त नहीं है। न इस अक्षर के स्वरूप वाली। अन्त का एक अर्थ स्वरूप या प्रकृति भी होता है। ज्ञान के स्वरूप वाली। एकाक्षरी कोष में न का एक अर्थ ज्ञान दिया गया है।

401. **युद्धस्थाननिवासिनी** – समर भूमि में निवास करने वाली।

402. **सिद्धा** – सिद्ध स्वरूप वाली अर्थात आठों सिद्धियाँ जिनके पास हैं।

403. **सिद्धेश्वरी** – सिद्धों की ईश्वरी अर्थात सिद्ध इनकी उपासना करते हैं। सिद्धों का पालन पोषण करने वाली। पालन कर्म ईश्वर के कृत्यों में एक कर्म है।

404. **सिद्धि** – अणिमा, लघिमा आदि अष्ट सिद्धि स्वरूपा। कार्यों में सफलता स्वरूपा।

405. **सिद्धिगेहनिवासिनी** – अणिमादि सिद्धियों के मन्दिर में निवास करने वाली।

406. **सिद्धरीति** – नित्यरूप से चली आ रही परम्परा स्वरूपा। सिद्ध का एक अर्थ नित्य भी होता है। रीति अर्थात परम्परा अर्थात कुछ निश्चित नियम। सिद्धि की विशिष्ट रीति/ढंग/प्रकार स्वरूपा। सिद्धियों का मार्ग दर्शन करने वाली। कैसे सिद्धि करना है यह बताने वाली।

407. **सिद्धप्रीति** – सिद्धों से प्रीति करने वाली अर्थात प्रसन्न रहने वाली।

408. **सिद्धा** – जिन्हें किसी दूसरे ने उत्पन्न नहीं किया अर्थात जिनकी सत्ता स्वयं से है। पूर्णत्व अर्थात मोक्षावस्था में रहने वाली। पतंजलि ने महाभाष्य में सिद्ध का नित्य, मंगल अर्थ किया है। कातन्त्र व्याकरण के प्रथम सूत्र में प्रयुक्त सिद्ध शब्द का अर्थ नित्य किया गया है। सिद्ध स्वरूप वाली अर्थात आठों सिद्धियाँ जिन्हें सिद्ध हैं।

409. **सिद्धान्तकारिणी** – सिद्धान्तों का निर्माण करने वाली। सिद्धान्त का अर्थ है स्थिर किया गया मत। मत जो सदा सत्य होता है। वह बात जिसके सदा सत्य होने का निश्चय मन में होता है। सिद्धो अन्तो निश्चयो यस्मिन् इति सिद्धान्तः। सिद्ध अर्थात सदा सत्य, अन्त अर्थात निश्चय।

410. **सिद्धगम्या** – सिद्धों द्वारा जानने योग्य।

411. **सिद्धपूज्या** – सिद्ध पुरुषों द्वारा पूजनीय।

412. **सिद्धवन्द्या** – सिद्ध पुरुषों द्वारा वन्दनीय। प्रशंसा में गुणों का गुणगान करना वन्दना है।

413. **सुसिद्धिदा** – अपने भक्तों को अच्छी तरह से सिद्धि देने वाली। सिद्धि का अर्थ है अतिप्राकृतिक शक्ति, यौगिक सिद्धि, कार्यों में सफलता।

414. **साधिनी** – कार्य को सिद्ध करने वाली अर्थात पूरा करने वाली। साधयति इति साधी, स्त्रीलिंग में साधिनी। साध् + णिनि इति साधिन्, पुल्लिंग में साधी और स्त्रीलिंग में साधिनी बनेगा। (यदि साधनी शब्द हो तो अर्थ होगा साधनों या उपायों से भरी हुई अर्थात इनके पास प्रत्येक कार्य को करने के लिए उपाय हैं। राक्षस कितना भी वरदान लेकर आये उनसे निपटने का उपाय इनके पास है। साध् धातु में करण में ल्युट् प्रत्यय लगाने से साधनम् शब्द बनेगा जो स्त्रीलिंग में साधनी हो जाएगा। जिसका अर्थ होगा उस साधन के स्वरूप में जिससे कार्य सिद्ध होते हैं अर्थात देवी को याद करने से वे आपके काम बना देती हैं)।

415. **साधनप्रीता** – भगवान प्राप्ति के या मोक्षावस्था प्राप्त करने के उपायों से प्रसन्न होने वाली। भक्ति, ज्ञान, ध्यान, कर्म आदि उपाय या साधन हैं। शैव दर्शन में आणवोपाय, शाक्तोपाय एवं शाम्भवोपाय ये तीन उपाय या साधन बताये गये हैं। विविध प्रकार के साधनों से प्रसन्न होने वाली।

416. **साध्या** – आराधनीया। स्तुत्या। आराध्या। अपने कार्य के लिए आराध्या। उपासना से अनुकूल बनाई जाने योग्य। साध्य नामक देवगणों की शक्ति स्वरूपा। साध्यदेवाः अस्या अस्ति इति साध्या, साध्य नामक देवगणों वाली अर्थात साध्य नामक देवगणों से उपासनीया। सामर्थ्य स्वरूपा। यह कार्य मेरे साध्य (सामर्थ्य) से बाहर है ऐसा सुना होगा। सिद्ध करने योग्य अर्थात प्राप्त करने योग्य या वशीकृत करने योग्य। सिद्ध होने के बाद उससे कोई

भी काम कराया जा सकता है। कोई चीज सिद्ध हो गई अर्थात वह चीज काम करने के लिए हमेशा के लिए उपलब्ध हो गई।

417. **साधनकारिणी** – साधन देने वाली। साधनों का निर्माण करने वाली। सिद्धि या कार्य को पूरा करने के लिए मार्ग बताने वाली। साधनों को प्रस्तुत कर देने वाली अर्थात भक्त के लिए साधनों को ला देने वाली।

418. **साधनीया** – प्राप्त करने योग्य। जो पूरा किया जा सकता है या प्राप्त किया जा सकता है। साधन से सम्बद्ध अर्थात श्रेष्ठ उपाय स्वरूपा। राजकीय अर्थात राज से सम्बद्ध, उसी प्रकार साधनीय अर्थात साधन से सम्बद्ध। साधना करने योग्य।

419. **साध्यसाध्या** – साध्य मन्त्र से सिद्ध होने वाली। साध्य एक प्रकार का मन्त्र है। मन्त्र के कई प्रकार होते हैं जैसे सिद्धमन्त्र, साध्यमन्त्र, अरिमन्त्र आदि। जिस मन्त्र को सिद्ध करने के लिए कुछ परिश्रम की आवश्यकता पड़े वह साध्य है। भक्त साध्यों के द्वारा साधना करने योग्य।

420. **साध्यसंघसुशोभिनी** – साध्य नामक देवगणों के समूह में सुशोभित होने वाली।

421. **साध्वी** – दूसरे के कार्य को सिद्ध करने या पूरा करने के स्वभाव वाली। साध्नोति इति साध्वी। साध्नोति परकार्यम् इति साधुः। सही रास्ते पर चलने वाले व्यक्ति को साधु या साध्वी कहते हैं।

422. **साधुस्वभावा** – अच्छे स्वभाव या सात्विक स्वभाव वाली। साधु समाज का पथप्रदर्शन करते हैं, उन्हें उत्तम ज्ञान देते हैं और स्वयं साधना में रत रहकर त्याग और वैराग्य से जीते हुए ईश्वर भक्ति में विलीन हो जाते हैं। साधु को अपशब्द बोलने पर वह अपने भीतर किसी प्रकार की प्रतिकूलता नहीं लाता। साधु होने का मापदण्ड है हर परिस्थिति में समानता और सहजता का व्यवहार।

423. **तत्** – परब्रह्म स्वरूपिणी। तत् का अर्थ है वह जो परब्रह्म का वाचक है।

424. **साधुसन्ततिदायिनी** – सज्जन पुरुषों को सन्तान प्रदान करने वाली।

425. **साधुपूज्या** – सज्जन पुरुषों के द्वारा पूजनीय।

426. **साधुवन्द्या** – सज्जन पुरुषों के द्वारा वन्दनीय।

427. **साधुसन्दर्शनोद्यता** – सज्जन पुरुषों को दर्शन देने के लिए या उन्हें प्राप्त करने के लिए उद्यत (तैयार) रहने वाली।

428. **साधुदृष्टा** – साधुओं द्वारा देखी जाने वाली।

429. **साधुपृष्टा** – सज्जन पुरुषों द्वारा जिनके विषय में प्रश्न पूछे जाते हैं, अपने कौतूहल की शान्ति की जाती है।

430. **साधुपोषणतत्परा** – सज्जन पुरुषों के पोषण में तत्पर रहने वाली। पोषण का अर्थ है आवश्यक तत्व या पदार्थ पहुँचाकर शरीर की वृद्धि करना, मजबूत करना।

431. **सात्विकी** – सात्विक स्वरूप वाली। सात्विक स्वरूप का अर्थ है ज्ञानी, शान्त, सद्‌गुणी, हमेशा सुखी, आनन्दित, सदाचारी, हल्कापन से युक्त।

432. **सत्वसंसिद्धा** – सत्व गुण के द्वारा सम्यक् (भलीभाँति) सिद्ध की गई। सिद्ध होने पर देवी साधक के कार्य करेंगी, साधक का कार्य करने के लिए हमेशा उपलब्ध रहेंगी।

433. **सत्वसेव्या** – सत्व गुणों या श्रेष्ठ गुणों के द्वारा सेवा करने योग्य।

434. **सुखोदया** – सुख को उदित अर्थात प्रकट करने वाली या देने वाली।

435. **सत्ववृद्धिकरी** – सतोगुण की वृद्धि करने वाली।

436. **शान्ता** – शान्त स्वरूप वाली अर्थात जिनका चित्त हलचल से रहित है। कामना रहित होने से या मन में समता की स्थिति आने पर भीतर से जो सुखानुभूति होती है वह शान्ति है। भागदौड़ से रहित। देवी पूर्णकाम हैं अर्थात उनके पास सभी कुछ है। किसी चीज का अभाव नहीं होने के कारण उन्हें उस चीज को प्राप्त करने के लिए भागदौड़ करने की आवश्यकता नहीं है। शान्ति से युक्त। इन्द्रियों का अपने विषय से वैराग्य होने पर मिलने वाली सुखानुभूति शान्ति है। मन के अन्तर्मुखी होने पर होने वाली सुखानुभूति शान्ति है।

437. **सत्वसंहर्षमानसा** – सतोगुण से आनन्दित होने वाले ह्रदय से युक्त। वामन आप्टे के शब्दकोष में मानसम् का अर्थ मन, ह्रदय दिया गया है।

438. **सत्वज्ञाना** – सत्वज्ञान स्वरूपा अर्थात सभी दोषों से रहित ज्ञानस्वरूपा। सतोगुणी ज्ञान स्वरूपा अर्थात दोषरहित या निर्दुष्ट ज्ञान स्वरूपा या ऐसे ज्ञान से युक्त। इसमें रजोगुणी या तमोगुणी ज्ञान नहीं। सत्व या सत्वगुण के ज्ञान से युक्त।

439. **सत्वविद्या** – परब्रह्म या चैतन्य का बोध कराने वाली विद्या। विद्या अर्थात वह साधन/उपाय जिससे ज्ञान प्राप्त होता है। पिछले नाम में ज्ञान स्वरूपा है और इस नाम में वह साधन जिससे ज्ञान या चैतन्य की अनुभूति होती है। सत्व का अर्थ है चैतन्य, प्राण, बल। प्राण विद्या अर्थात प्राणायाम विद्या स्वरूपा। सतोगुण के आधिक्य वाला या सतोगुण वाला ज्ञान स्वरूपा। इसमें रजोगुण एवं तमोगुण नहीं है। सतोगुण की विद्या देवी।

440. **सत्वसिद्धान्तकारिणी** – सत्व गुण से सम्बन्धित सिद्धान्त बनाने वाली। सिद्धान्त भी सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण से तीन प्रकार के होते हैं। सत्व के सिद्धान्त को करने वाली अर्थात बढ़ाने वाली या रक्षा करने वाली।

441. **सत्ववृद्धि** – सतोगुण की वृद्धि स्वरूपा। तात्पर्य हुआ सतोगुण की वृद्धि करने वाली। देवताओं का गुण ही है देना। तभी कोई भी गुणस्वरूप होने का मतलब है उस गुण पर अमल करना, दूसरे को देना।

442. **सत्वसिद्धि** – सतोगुण की पूर्णता या परिपक्वता स्वरूपा। प्राणियों या जीवधारियों के लिए जो सिद्धि के रूप में है। सत्व का अर्थ प्राणी या जीवधारी भी होता है। प्राण या बल के द्वारा प्राप्त होने वाली सिद्धि स्वरूपा। सत्व का अर्थ प्राण या बल है। सतोगुण रूपी सिद्धि स्वरूपा अर्थात अपने भक्तों में सतोगुण की सिद्धि करने वाली। सतोगुण से सिद्ध अर्थात प्राप्त हो जाने वाली।

443. **सत्वसम्पन्नमानसा** – सतोगुण से परिपूर्ण ह्रदय वाली। सतोगुण से परिपूर्ण मन वाली। वामन आप्टे शब्दकोष में मन का अर्थ ह्रदय भी दिया गया है।

444. **चारूरूपा** – अतिशय सुन्दर रूप वाली। मनोहर रूप वाली। जिनका शरीर अति सुन्दर है। जिनका वेष अति सुन्दर है। रूप का अर्थ है आकृति, आकार, सूरत, शकल, सौन्दर्य, शरीर, वेष, समान, चिन्ह या लक्षण। पदार्थ का वह गुण जिसका बोध आँखों द्वारा होता है। देवगुरु बृहस्पति का रूप धारण किये हुईं। कुंकुम है लक्षण जिनका अर्थात उनमें विशेष कुंकुम देखकर उनकी पहचान होती है। रूप्यते इति रूपा से रूपा का अर्थ ज्ञापिका या बोधिका अर्थात चिन्ह या लक्षण होता है। चारु का अर्थ है सुन्दर, मनोहर, बृहस्पति, कुंकुम, केसर।

445. **चारूदेहा** – सुन्दर शरीर वाली। मनोहर शरीर वाली।

446. **चारूचंचललोचना** – सुन्दर चंचल नेत्रों वाली।

447. **छद्मिनी** – छल कपट से युक्त। दैत्यों को परास्त करने में छलकपट का भी सहारा लेने वाली। मोहिनी रूप में अमृत के वितरण में दैत्यों के साथ छल किया गया था। धर्म की स्थापना एवं अधर्म के विनाश के लिए

छल का सहारा लेना भी जायज है। छलयुक्त अर्थात माया स्वरूपा। कबीर दास जी ने लिखा है माया महाठगिनी। जो छुपकर रहती है अर्थात सर्वत्र दिखती नहीं है। छद्म स्वरूप को धारण करने वाली (राक्षसों के साथ युद्ध के समय)। छद्म विद्या से युक्त। चौसठ कलाओं में एक छद्म विद्या भी है।

448. **छद्मसंकल्पा** – जिनका संकल्प गुप्त (अप्रकट) है अर्थात इनके भीतर क्या चल रहा दूसरा नहीं जान सकता। छद्म (अर्थात माया) के संकल्प को ले लेने वाली।

449. **छद्मवार्ता** – जिनका समाचार गुप्त अर्थात अप्रकट है। कहने का तात्पर्य है कि उनकी बोली, उनकी भाषा समझ में नहीं आती। शत्रुओं से कपटपूर्ण वार्ता करने में दक्ष।

450. **क्षमाप्रिया** – क्षमा है प्रिय जिन्हें। दण्ड देने का सामर्थ्य होने के बावजूद दूसरे के अपराध पर प्रतिक्रिया न करना, अपने मन में न बिठाना तथा भगवान से यह अपेक्षा रखना कि भगवान से उस व्यक्ति को अपराध का दण्ड न मिले, क्षमा गुण है।

451. **हठिनी** – अटल संकल्प वाली। हठ योग से सम्पन्न अर्थात हठ योग के ज्ञान से युक्त या इसमें पारंगत। सूर्य नाड़ी (पिंगला) एवं चन्द्रनाड़ी (इड़ा) से युक्त अर्थात उनमें शक्ति रूप से विराजमान। ह अर्थात सूर्य एवं ठ अर्थात चन्द्र। दृढ़ संकल्प से युक्त। शक्ति या बल से युक्त।

452. **हठसम्प्रीति** – दृढ़ प्रतिज्ञा अच्छी प्रकार से प्रिय है जिन्हें। दृढ़ प्रतिज्ञा जैसे भीष्म पितामह ने की थी। बल जिन्हें विशेष प्रिय है। हठ अर्थात अपनी बात पर जोर लगाना अर्थात बल। हठयोग से अच्छी प्रकार से प्रीति करने वाली। कार्यों की सिद्धि के लिए हठ के साथ प्रेम करने वाली। हठ योग में ह का अर्थ है सूर्य और ठ का अर्थ है चन्द्रमा। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ सूर्य और चन्द्रमा के प्रति सम्यक् प्रीति (उचित प्रेम या शुद्ध प्रेम) रखने वाली। सम्यक् का अर्थ है, सही या उचित, शुद्ध या यथार्थ या सत्य, पूरा या समस्त, साथ जाने वाला या साथ रहने वाला।

453. **हठवार्ता** – वजनदार बातों वाली अर्थात जिनकी बात में वजन होता है अर्थात कुछ मतलब होता है। वार्ता का अर्थ बने रहना भी होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ हठ योग में बने रहने वाली। हठपूर्वक वार्ता करने वाली।

454. **हठोद्यमा** – अवश्य सफल होने वाले प्रयत्न/परिश्रम वाली। जिनके प्रयास निश्चित रूप से फलीभूत हैं। हठ के लिए परिश्रम करने वाली या हठसिद्धि के लिए परिश्रम करने वाली।

455. **हठकार्या** – हठपूर्वक कार्यों को संपन्न कर लेने वाली। जिद, अटल संकल्प, अडिग कार्यों वाली।

456. **हठधर्मा** – अपनी बात पर जमे रहने वाली और दूसरे की नहीं सुनती है। दुर्गासप्तशती में आया है कि देवी ने यह घोषित कर दिया था कि जो उन्हें युद्ध में हरायेगा वही उनका पति होगा। अपने कार्यों की सिद्धि के लिए हठ के धर्म को स्वीकार करने वाली। अपने धर्म(स्वभाव/मत/बनाये गये नियम/न्याय व्यवस्था) में अडिग। हठयोग रूपी कर्म में लगी रहने वाली।

457. **हठकर्मपरायणा** – हठपूर्वक कार्यों में लगी रहने वाली।

458. **हठसम्भोगनिरता** – हठपूर्वक सम्भोग में संलग्न रहने वाली अर्थात हठ पूर्वक विविध प्रकार के भोगों को भोगने में संलग्न रहने वाली। सम्भोग अर्थात मौज–मस्ती, विनोद, किसी वस्तु का भली भाँति उपयोग।

459. **हठात्काररतिप्रिया** – हठपूर्वक की जाने वाली भक्ति है प्रिय जिन्हें। हठपूर्वक अर्थात प्रयास करके अन्य सभी भावों से या विषयों से मन को अलग कर रखा है जिसने। शिवताण्डव स्तोत्र में रति का अर्थ भक्ति दिया गया है। हठ पूर्वक रति है प्रिय जिन्हें।

460. **हठसम्भेदिनी** – हठपूर्वक शत्रुओं में सम्यक् भेद डाल देने वाली। आपस में मिले हुए शत्रुओं में भेद पैदा करने वाली। सम्भेद का अर्थ भेद करना भी होता है और मिलना या मिलाना भी होता है। दृढ़ता से मिलन कराने वाली। दृढ़ता से अर्थात शक्तिपात के माध्यम से आत्मा का परमात्मा से मिलन कराने वाली।

461. **हृद्या** – अत्यन्त मनोरम या हृदय को प्रिय लगने वाली। हृदय को शक्ति देने वाली। गीता के 17 वें अध्याय में इस शब्द का अर्थ हृदय को शक्ति देने वाली किया गया है। हृत+या अर्थात हृदय में जाने वाली या विराजमान। मनोरम चीजों में विराजमान। मनोरम चीजों का कारण।

462. **हृद्यवार्ता** – मनोरम वार्ता को सम्पन्न करने वाली।

463. **हरिप्रिया** – विष्णु को प्रिय लगने वाली। भगवान विष्णु को प्रसन्न करने वाली।

464. **हरिणी** – मन को हरने वाली। हरिणी का रूप धारण करने वाली। श्रीसूक्त के प्रथम श्लोक में लिखा है कि देवी ने हरिणी का रूप भी धारण किया था। हरिणी के समान तीव्र गति वाली। भगवान विष्णु की ओर ले जाने वाली अर्थात भगवान विष्णु को प्राप्त कराने वाली। हरिम् नयति इति हरिणी। पाप हरने वाली। मन को हरने वाली। हरि के कार्यों में लोगों को लगाने वाली या स्वयं हरि के कार्य में लगने वाली। हरित वर्ण की। हल्दी जैसी आभा वाली– पृथ्वी। हिरणी जैसी शीघ्र गति वाली, चंचल, सुन्दर। मृगनयनी। हरि की पत्नी। नित्य युवती। भक्ति के दबाव में हरी जाने वाली अर्थात् बँधने वाली। मृगचर्म को ओढ़ने या बिछाने वाली। हरि के मध्यभाग के संश्लिष्ट।

465. **हरिणीदृष्टि** – हरिणी के समान सुन्दर नेत्रों वाली। पापों को हरने वाली या पापों को हरने वाली दृष्टि को प्राप्त करा देने वाली। हरिणी के समान सुन्दर दृष्टि वाली। चंचल नेत्र वाली।

466. **हरिणीमांसभक्षणा** – हरिणी के माँस का भक्षण करने वाली। वाममार्ग या कौलमार्ग में मांस चढ़ाते हैं जिसका देवी के द्वारा भक्षण किया जाता है। चंचल दुर्व्यसनियों का नाश करने वाली। आकर्षक भक्तियोग या ज्ञानयोग का आस्वादन लेने वाली। आकर्षक खेचरी मुद्रा का आस्वादन लेने वाली। दुर्व्यसनी, विचार (ज्ञान), भक्तियोग, ज्ञानयोग आदि। माम् (लक्ष्मीम्) स्यति इति मांसः, जो लक्ष्मी को नष्ट करता है अर्थात दुर्व्यसन के द्वारा लक्ष्मी को नष्ट करता है। मायाम् स्यति इति मासः, जो माया को नष्ट कर दे वह है मांस। माया को विचार (ज्ञान), भक्तियोग, ज्ञानयोग ही नष्ट कर पाते हैं। जिससे शाश्वत सौभाग्य और आनन्द मिलता है अर्थात आध्यात्मिक बोध या आध्यात्मिक ज्ञान। मां का अर्थ है मांगल्य या सौभाग्य। स का अर्थ है सत्–चित्–आनन्द। मा का अर्थ जिह्वा भी है। माम् स्यति अर्थात जिह्वा भक्षण करना अर्थात खेचरी मुद्रा। मांस का एक अर्थ है खेचरी मुद्रा।

467. **हरिणाक्षी** – हरिणी के समान चंचल या सुन्दर नेत्रों वाली। हरिणियों में भी व्याप्त। अक्षू व्याप्तौ धातु से अक्षी बनाने पर व्याप्त होना अर्थ आता है। चारों ओर देखने वाली। हिरणी 300 डिग्री तक देख सकती है।

468. **हरिणपा** – हरिणों का पालन करने वाली अर्थात रक्षा करने वाली। पाति का अर्थ है रक्षा करना। पालन में रक्षा का अर्थ भी आ जाता है। चंचलता को पीने वाली अर्थात समाप्त करने वाली।

469. **हरिणीगणहर्षदा** – हरिणियों के समूह को हर्ष देने वाली। अभीष्ट वस्तु प्राप्त होने पर मिलने वाला सुख हर्ष है।

470. **हरिणीगणसंहर्त्री** – हरिणियों के समूह का संहार कर देने वाली। शिकार के दौरान शिकारी द्वारा हरिण को मारने का तात्पर्य है शिकारी में स्थित शक्ति ने मारा और प्रत्येक शक्ति देवी का रूप है। तात्पर्य हुआ देवी ने शिकार को मारा।

471. **हरिणीपरिपोषिका** – हरिणियों का परिपोषण करने वाली अर्थात हर प्रकार से पालन पोषण करने वाली।

472. **हरिणीमृगयासक्ता** – हरिणियों के शिकार में आसक्त रहने वाली। देवी के अलग अलग रूप हैं और अलग अलग रूपों में अलग अलग कार्य हैं। अतः नामों में विरोधाभास दिखने पर आश्चर्य नहीं करना चाहिए। अच्छे या बुरे प्रत्येक कार्य के पीछे एक शक्ति होती है और वह शक्ति देवी का ही स्वरूप है। आसक्त का अर्थ है प्रेम करने वाला, अनुरक्त अर्थात जिसे कोई चीज बहुत अच्छी लगती है।

473. **हरिणीमानपुरस्सरा** – हरिणियों के मान में आगे रहने वाली अर्थात इनके द्वारा सर्वाधिक सम्मान दिया जाता है।

474. **दीना** – जो अहंकार या अन्य बुरे गुणों से दीन है अर्थात दरिद्र है। ये विकार या दोष उनके अन्दर नहीं है।

475. **दीनाकृति** – बुराइयों के सन्दर्भ में दीन अर्थात बुराइयों से रहित आकृति वाली। बदसूरती से रहित अर्थात सुन्दर आकृति वाली। जो अहंकार के मामले में दीन है अर्थात जिनमें अहंकार नहीं है जिसे ऐसी आकृति वाली। संस्कृत में कभी कभी आगे का अ छूट जाता है जैसे कुमारसम्भव के पहले श्लोक में अवगाह्य की जगह वगाह्य शब्द लिखा। इस प्रकार दीन को अदीन समझ सकते हैं अर्थात अदीन आकृति वाली। दीन अर्थात इतना गरीब जो दया का पात्र हो पर देवी दया का पात्र नहीं हैं अतः वे अदीन हैं। धूमावती देवी के ध्यान श्लोक में जो आकृति बताई गई है वह दीन, वृद्धा जैसी दिखने वाली है।

476. **दूना** – जो दुखी होती हैं अर्थात भक्तों के दुख को देखकर दुखी होती हैं। शब्दकल्पद्रुम के अनुसार दु गति धातु से भी क्त प्रत्यय लगाने से दून शब्द बनता है तब अर्थ होगा ज्ञात अर्थात महायोगियों द्वारा ज्ञात, महायोगियों द्वारा जिनका ज्ञान प्राप्त किया गया है। प्रत्येक गत्यर्थक धातु ज्ञानार्थक भी होती है।

477. **द्राविणी** – शत्रुओं को भगा देने वाली। द्रु गतौ धातु से द्रावयति बनाने पर भगाना या खदेड़ना अर्थ निकलता है।

478. **द्रविणप्रदा** – धन प्रदान करने वाली।

479. **द्रविणाचलसंवासा** – धन के पहाड़ में अच्छी प्रकार से रहने वाली अर्थात प्रचुर धन को धारण करने वाली। अचल का अर्थ है पर्वत अर्थात बहुत बड़ा या प्रचुर। वस् आच्छादने से वास का अर्थ वस्त्र भी होता है। इस प्रकार बहुमूल्य अच्छे वस्त्रों वाली यह अर्थ भी हो सकता है।

480. **द्रविता** – भक्तों पर द्रवित रहने वाली अर्थात हृदय पिघल जाता है।

481. **द्रव्यसंयुता** – जो एक से दूसरे में जाता है, वह द्रव्य या धन है। द्रवति इति द्रव्यः। द्रव्य अर्थात धन से युक्त। लक्ष्मी जी के हाथों से आपने धन को निकलते देखा होगा। अनन्त द्रव्यों से युक्त रहने वाली।

482. **दीर्घा** – अतिशय विशाल आकृति वाली।

483. **दीर्घपदा** – विशाल अर्थात बड़े बड़े पैरों वाली, तात्पर्य हुआ विराट् स्वरूपा।

484. **दृश्या** – जानने योग्य अर्थात ज्ञेय। दृश्य पदार्थ स्वरूपा। ज्ञानियों के द्वारा देखी जाने योग्य। जिन्हें आत्मज्ञान हो गया है वे हमेशा परमात्मा का दर्शन करते हैं अर्थात देवी या शक्ति को ही देखते हैं। दर्शन करने योग्य। आकर्षित स्वरूप होने के कारण एवं सभी विशेषताओं से युक्त होने के कारण जो दर्शन के योग्य है। जो दृश्य जगत के रूप में है। उस काव्य के स्वरूप वाली जिसे अभिनय द्वारा दर्शकों को दिखलाया जाता है अर्थात नाटक स्वरूपा। दृश्य काव्य भी होता है और श्रव्य काव्य भी होता है। देखने का अर्थ जानना भी होता है।

485. **दर्शनीया** – मनोहर या सुन्दर। देखने लायक। देखने योग्य सुन्दर आकृति वाली। देखने योग्य जो हैं उनमें श्रेष्ठ अर्थात सबसे अच्छा। जो देखने में सबसे अच्छा हो वह दर्शनीय है।

486. **दृढ़ाकृति** – जिनकी आकृति अर्थात शरीर मजबूत है। मजबूत आकार वाली या सुन्दर आकार वाली।

487. **दृढ़ा** – जो मजबूत है अर्थात अन्दर से मजबूत हैं अर्थात आत्मबल से युक्त हैं। सुन्दर स्वरूप वाली। सभी अंग सुन्दर एवं सुदृढ़ हैं। दृढ़ा अर्थात आत्मरूप से मजबूत है जबकि दृढ़ाकृति का अर्थ है शरीर मजबूत है।

488. **द्विष्टमति** – दैत्यों के लिए द्वेषपूर्ण अर्थात प्रतिकूल बुद्धि वाली। द्वेष अर्थात दूसरे लोग द्वेष करते हैं, उनमें जलन होती है क्योंकि सामने वाला श्रेष्ठ है। द्विष् का अर्थ है विरोधी या शत्रु, एकाक्षरी कोष में ट का अर्थ संहारकारिणी, शून्य दिया गया है। विरोधियों का संहार करने वाले लोगों की मति जैसी मति है जिनकी।

489. **दुष्टा** – राक्षसों/दैत्यों के लिए दुष्ट या क्रूर बन जाने वाली।

490. **द्वेषिणी** – द्वेष से युक्त अर्थात दुष्टों से द्वेष रखने वाली। मन, बुद्धि, इन्द्रिय भी द्वेष रखते हैं अर्थात विरोध करते हैं या चिढ़ते हैं।

491. **द्वेषिभञ्जिनी** – द्वेष रखने वालों को नष्ट कर देने वाली।

492. **दोषिणी** – रात्रि वाली अर्थात रात्रि स्वरूपा। तामसी। दुष्टों के लिए विविध प्रकार के दोषों से युक्त रहने वाली।

493. **दोषसंयुक्ता** – तमोगुण से युक्त।

494. **दुष्टशत्रुविनाशिनी** – दुष्ट शत्रुओं का विनाश कर देने वाली।

495. **देवतार्तिहरा** – देवताओं की पीड़ा को हर लेने वाली।

496. **दुष्टदैत्यसंघविदारिणी** – दुष्ट दैत्यों के समूहों को नष्ट कर देने वाली।

497. **दुष्टादानवहन्त्री** – दुष्ट दानवों का हनन करने वाली। दुष्टा होकर दानवों का संहार करने वाली। दानव मायावी शक्तियों से युक्त होते हैं। दनु की सन्तान दानव हैं।

498. **दुष्टदैत्यनिषूदिनी** – दुष्ट दैत्यों का वध कर देने वाली। दैत्याकार अर्थात बहुत बड़े डील डौल वाला। ऐसे दुष्ट जो बड़े आकार वाले हैं, उनका नाश करने वाली। दिति की सन्तान दैत्य हैं।

499. **देवताप्राणदा** – देवताओं को प्राण प्रदान करने वाली अर्थात उन्हें शक्ति और सुख देने वाली। प्राण अर्थात शक्ति, बल, जीवन। देवताओं को प्राण के समान प्रियता देने वाली अर्थात देवताओं से बहुत प्रेम करने वाली। देवताओं को जीवन देने वाली। प्राण शरीर की वह वायु है जिससे मनुष्य जीवित रहता है।

500. **देवी** – प्रकाशशीला अर्थात प्रकाश स्वरूपा या प्रकाश से युक्त। दिव् धातु के कई अर्थ हैं, उनमें से एक अर्थ है प्रकाशित होना। लोकों को ज्ञान प्रदान करने वाली। द्योतनात् इति देवी। सभी भोग्य पदार्थों को देने वाली। अभीष्ट मनोरथों को देने वाली। जो देता है वह देवी या देवता कहलाता है। युद्ध में शत्रुओं पर जीत की अभिलाषा वाली। दिव् धातु का एक अर्थ विजिगीषा है अर्थात जीत की अभिलाषा है। दिव् धातु का एक अर्थ है स्तुति करना। अतः देवी का अर्थ हुआ जिनकी दूसरों के द्वारा स्तुति की जाती है।

501. **देवदुर्गतिनाशिनी** – देवताओं की दुर्गति को नष्ट कर देने वाली। देवताओं की श्री छिन गई थी, वे कान्तिहीन/निस्तेज हो गये थे। उनका राज्य छिन गया था, वे छिपते भागते फिर रहे थे। यही उनकी दुर्गति थी।

502. **नटनायकसंसेव्या** – नटों के नायक शिव के द्वारा सम्यक् रूप से सेवनीय अर्थात पूजनीय। सेवा अर्थात पूजा, मिले हुए आदेश का तुरन्त पालन करना।

503. **नर्तकी** – नृत्य करने वाली या नृत्यशील। लास्य नृत्य करने वाली। शिव जी भी नृत्य करते हैं, शिव जी नृत्य करते हैं अर्थात शिव जी की शक्ति नृत्य करती है क्योंकि नृत्य करना क्रिया है और देवी क्रियारूपा है।

प्रकृति रूप में नृत्य करने वाली। वृक्षों का हिलना, नदियों का बहना, सुगन्धित हवा का प्रवाह होना, पक्षियों का कलरव करना ये सब प्रकृतिरूपी देवी के नृत्य हैं।

504. **नर्तकप्रिया** – नर्तकों को प्रिय लगने वाली।

505. **नाट्यविद्या** – नाट्य शास्त्र की विद्या स्वरूपा। वह शास्त्र जिसमें नृत्य, गीत, अभिनय का विवेचन होता है, नाट्य विद्या कहलाता है और देवी इस शास्त्र के स्वरूप में हैं। विद्या का अर्थ ज्ञान भी होता है तथा वह शास्त्र भी होता है जिसमें ज्ञान का विवेचन हो।

506. **नाट्यकर्त्री** – संसार रूपी रंगमंच में अभिनय करने वाली। विश्व का निर्माण, पालन, विभिन्न प्रकार की घटनाऐं देवी के नाटक के अनुसार हैं। संसार रूपी रंगमंच का निर्माण करने वाली। संसार एक नाटक है। विविध प्रकार के नाट्य शास्त्र और नाटकों के भेदों को रचने वाली।

507. **नादिनी** – जिसमें नाद होता है अर्थात जिसके भीतर गूँज होती है। दुष्टों के समक्ष तेजी से दहाड़ने वाली अर्थात गर्जना करने वाली।

508. **नादकारिणी** – नाद कराती हैं अर्थात शब्द करवाती हैं। तेजी से गम्भीर गर्जना करने वाली।

509. **नवीननूतना** – अतिशय नूतन अर्थात सबसे latest। नवीन और नूतन का एक अर्थ है। दो बार प्रयोग होने से अतिशय अर्थ निकलता है। प्रकृति में हर पल परिवर्तन होता है और वह नई से नई है। नवीन होते हुए भी नये से नये रूप को धारण करने वाली। बिल्कुल नवीन अर्थात इसके बाद कोई नया नहीं आया है। नवीनता की पराकाष्ठा।

510. **नव्या** – प्रशंसा या स्तुति के योग्य। स्तुति करने योग्य। नु स्तुतौ धातु होती है। हर समय नई रहने वाली अर्थात प्रकृतिस्वरूपा जो हर समय नये रूप को धारण किये रहती है। नवीन सौन्दर्य या भाव से युक्त।

511. **नवीनवस्त्रधारिणी** – नूतन वस्त्रों को धारण करने वाली।

512. **नव्यभूषा** – नये अलंकारों या आभूषणों से अलंकृत/विभूषित। नये नये आभूषणों को धारण करने वाली।

513. **नव्यमाल्या** – नई नई मालाओं को धारण करने वाली।

514. **नव्यालङ्कारशोभिता** – नये नये अलंकारों/आभूषणों से सुशोभित होने वाली।

515. **नकारवादिनी** – ज्ञान बोलने वाली अर्थात ज्ञान देने वाली। एकाक्षरी कोष में न का अर्थ ज्ञान है। नकार वाले मन्त्र को बोलने वाली अर्थात रक्षा करने वाली। मन्त्र अर्थात मनन करने वाले की रक्षा करने वाला। जिस मन्त्र में नकार है उसको बोलने वाली। नवार्णमन्त्र को बोलने वाली। नकार अर्थात न का स्वरूप। दुष्ट दैत्यों के लिए नकारात्मक बोलने वाली।

516. **नम्या** – नमन करने योग्य अर्थात जिनको प्रणाम करना चाहिए। झुकने योग्य अर्थात मुड़ने योग्य अर्थात जिनका शरीर लोचदार है। भक्तों के समक्ष झुक जाने वाली। अपने पति शिव के समक्ष झुक जाने वाली।

517. **नवभूषणभूषिता** – नूतन सुन्दर भूषणों से विभूषित।

518. **नीचमार्गा** – दुष्टों के लिए अधम मार्ग पर चलने वाली। निम्नमार्ग वाली अर्थात जल स्वरूपा या नदी स्वरूपा। जल या नदी का प्रवाह नीचे की ओर ही होता है। ऐसे रास्ते वाली या ऐसे रास्ते के स्वरूप वाली जहाँ से पतन नहीं होता है। यदि आप ऊपर होंगे तो गिरने पर चोट लगेगी किन्तु यदि आप नीचे हो तो गिरने का कोई खतरा नहीं है। सुन्दर मार्ग पर चलने वाली।

519. **नीचभूमि** – उस भूमि के स्वरूप में जहाँ से किसी का पतन नहीं होता। देवी को पा लिया तो नीचे नहीं

गिरोगे। यदि आप ऊपर होगे तो गिरने पर चोट लगेगी किन्तु यदि आप नीचे हो तो गिरने का कोई खतरा नहीं है। यहाँ नीच का अर्थ कुत्सित अर्थ नहीं है। निम्न है उनका आधार या आश्रय यह अर्थ भी कर सकते हो अर्थात बहुत ऊँचाई पर नहीं। सुन्दर भूमि स्वरूपा।

520. **नीचमार्गगति** – जिस मार्ग पर चलने से पतन नहीं होता ऐसे मार्ग पर गति करने वाली। यदि आप ऊपर होगे तो गिरने पर चोट लगेगी किन्तु यदि आप नीचे हो तो गिरने का कोई खतरा नहीं है। सुन्दर मार्ग पर गति है जिनकी, ऐसे भक्तों को सद्गति या मोक्ष देने वाली।

521. **नाथसेव्या** – नाथ सम्प्रदाय के लोगों द्वारा सेवा (पूजा) के योग्य। सेवा का अर्थ है पूजा, मिले आदेश का पालन करना।

522. **नाथभक्ता** – अपने स्वामी शिव की भक्त।

523. **नाथानन्दप्रदायिनी** – अपने नाथ शिव को आनन्द प्रदान करने वाली। नाथ सम्प्रदाय के लोगों को आनन्द प्रदान करने वाली।

524. **नम्रा** – विनम्र स्वभाव वाली। जिसमें नम्रता हो अर्थात जो विनीत हो।

525. **नम्रगति** – झुककर चलने वाली अर्थात उच्छृंखलता रहित गति वाली। उद्दण्डता रहित गति वाली। यहाँ झुकने से तात्पर्य है कि उद्दण्डता या उच्छृंखलता नहीं है। सुन्दर गति वाली। झुकी गति वाली। झुकी हुई अर्थात अहंकार रहित।

526. **नेत्री** – नायिका (समाज के सभी वर्गों का नेतृत्व करने वाली)। सन्मार्ग का रास्ता दिखाने वाली अर्थात पथप्रदर्शक।

527. **निदानवाक्यवादिनी** – समस्याओं के समाधान करने वाले वाक्यों को बोलने वाली।

528. **नारीमध्यस्थिता** – स्त्रियों के मध्य में सुशोभित होने वाली।

529. **नारी** – स्त्री के स्वरूप में। दुर्गासप्तशती में लिखा है कि समस्त स्त्रियाँ देवी का स्वरूप हैं। नारी की शक्ति से युक्त। नर की उपकारिका शक्ति। नृणाति नयति सन्मार्गे प्रेरयति इति नारी। जो पुरुष को या संसार को सन्मार्ग में ले जाती है वह नारी है। स्वयं सत्पथगामिनी होकर पति सहित पूरे परिवार को सन्मार्ग की ओर ले जाती है, अतः वह नारी है। न + अरि, जिसका कोई शत्रु या प्रतिपक्ष नहीं है वह नारी है।

530. **नारीमध्यगता** – स्त्रियों/शक्तियों के मध्य में स्थित रहने वाली। दुर्गासप्तशती के ध्यान में आया है कि देवी दुर्गा हाथ में तलवार लिये कन्याओं से घिरी हुई हैं। श्रीयन्त्र पूजा में भी ललितात्रिपुरसुन्दरी देवी माँ अपने चारों ओर नित्या देवियों से घिरी हुई हैं।

531. **अनघा** – पाप रहित या निर्दोष। बुरे लोगों या बदमाशों या दोषियो या दुष्कर्मियों या पापात्माओं से रहित। अघ का अर्थ पाप भी है और पापी भी है। इसके अतिरिक्त अघ का अर्थ दोष, व्यसन, दोषी, दुष्कर्मी, बुरा बदमाश भी होता है। अघासुर पाप एवं दानवी प्रवृत्तियों का प्रतीक है, इन दुर्गुणों से रहित। भगवान कृष्ण ने अघासुर को मारा था।

532. **नारीप्रीति** – नारी में रहने वाले प्रीतिगुणस्वरूपा। स्त्री के प्रति प्रीति (प्रेम/स्नेह) है जिनकी। स्त्री जाति को प्रसन्नता प्रदान करने वाली। प्रीति का अर्थ है वह सुख जो किसी इष्ट वस्तु को देखने या पाने से होता है, तृप्ति। प्रेम, स्नेह, हर्ष, आनन्द, प्रसन्नता, कृपा, दया, अभिलाषा, आकांक्षा, अनुकूलता, हितबुद्धि, अनुरंजन, प्रसादन आदि प्रीति के अर्थ हैं।

533. **नराराध्या** – मनुष्यों के द्वारा आराधना करने योग्य। नर नामक देवता के द्वारा आराधनीय। आपने नर और नारायण का नाम सुना होगा। आ + राध्। राध् का अर्थ है देवता को अनुकूल बनाना, प्रसन्न करना। आ का अर्थ है चारों ओर से अर्थात पूर्ण रूप से। आराधना में देवता को प्रसन्न करने के लिए अपना सर्वस्व देना होता है। अपनी सुधि न रहे और देवता के प्रति अत्यन्त प्रेम हो तब आराधना होती है। अंग्रेजी में आराधना को adoration कह सकते हैं।

534. **नरनामप्रकाशिनी** – मनुष्य के नाम को प्रकाशित करने वाली अर्थात प्रसिद्धि देने वाली जिससे सब लोग जान जाएं।

535. **रति** – कामदेव की पत्नी रति के समान सुन्दर। सुन्दरता से सभी के मन को मोह लेने वाली। अग्नि तत्व अर्थात प्राण का विस्तार करने वाली। तनोति या विस्तारयति का ति ले लिया। ऐसे शब्द ले सकते हैं जो रा से आरम्भ होते हैं। एकाक्षरीकोश से र के अर्थ लिये जा सकते हैं।

536. **रतिप्रिया** – काम देव की पत्नी को प्रिय है जो अर्थात रति जिन्हें पसन्द करती हैं। रति है प्रिय जिन्हें यह अर्थ भी कर सकते हैं अर्थात रति जिन्हें अच्छी लगती है। प्रीयते इति प्रिया इस व्युत्पत्ति से प्रिया का अर्थ प्रसन्न होने वाली एवं प्रीणाति इति प्रिया इस व्युत्पत्ति से प्रिया का अर्थ प्रसन्न करने वाली होता है। रति को प्रसन्न करने वाली या रति से प्रसन्न होने वाली।

537. **रम्या** – स्वाभाविक सुन्दरता वाली। बिना आभूषणों के भी सुन्दर लगती है और देखने वालों के नेत्र और चित्त को आकर्षित करती है। रमणीय स्वरूप वाली।

538. **रतिप्रेमा** – शिव के साथ रति क्रीड़ा में प्रेम है जिन्हें। भक्ति में प्रेम करने वाली या भक्ति से प्रेम करने वाली या भक्तिवालों से अर्थात भक्तों से प्रेम करने वाली। रति का एक अर्थ भक्ति भी होता है।

539. **रतिप्रदा** – रति (कामशक्ति या भोगशक्ति या सुन्दरता) को प्रदान करने वाली।

540. **रतिस्थानस्थिताराध्या** – मन्दिर में स्थित होकर आराधना करने योग्य। रति का एक अर्थ भक्ति भी होता है। रतिस्थान अर्थात मठ या मन्दिर। मन्दिर में जाकर जिनकी आराधना करनी चाहिए। रति के स्थान में स्थित होकर आराधना करने योग्य अर्थात एकान्त स्थान में आराधना करने योग्य। रतिस्थान अर्थात स्त्री पुरुष के मिलन का स्थान अर्थात एकान्त स्थान।

541. **रतिहर्षप्रदायिनी** – रतिक्रिया में आनन्द प्रदान करने वाली।

542. **रतिरूपा** – रति क्रीड़ा स्वरूपा। कामदेव की पत्नी रति स्वरूपा। नायक नायिका की परस्पर प्रीति या प्रेम रति है। वह कर्म जिसका उदय होने से किसी रमणीक वस्तु से मन प्रसन्न होता है। चन्द्रमा की छठी कला को भी रति कहते हैं।

543. **रतिध्याना** – भक्ति के समय जिनका ध्यान होता है। शिवताण्डव स्तोत्र में रति शब्द भक्ति अर्थ में प्रयोग किया गया है। भक्तिपूर्वक ध्यान वाली अर्थात जिनका भक्तिपूर्वक ध्यान करना चाहिए। रति के द्वारा ध्यान करने योग्य या रति का ध्यान करने वाली। रति कामदेव की पत्नी हैं।

544. **रतिरीतिसुधारिणी** – भक्ति की शैली (पूजा पद्धति/विधान) को सुन्दर ढंग से धारण करने वाली या उस शैली में सुधार करने वाली। रति की जो क्रिया है उसे सुधारने वाली।

545. **रतिरासमहोल्लासा** – भक्ति के रसास्वाद से महान आनन्दित होने वाली। रास अर्थात जिससे आनन्दित होता है। रास अर्थात नाट्यविधा। रति की जो रासलीला है उसमें अतिशय उल्लास से परिपूर्ण हो जाने वाली।

546. **रतिरासविहारिणी** – भक्ति के रसास्वाद में विहार करने वाली अर्थात रहने वाली। भक्ति है रास (नाट्य विधा), उसमें आनन्दित होती हैं अर्थात मनोविनोद करती हैं या उनका मनोविनोद होता है। रति क्रिया के रास में विचरण करने वाली।

547. **रतिकान्तस्तुता** – कामदेव द्वारा स्तुत। रति में जो सौन्दर्य या मिठास है उसके द्वारा स्तुत।

548. **राशि** – श्रेष्ठ गुणों, ज्ञान की राशि स्वरूपा।

549. **राशिरक्षणकारिणी** – सद्गुणों के समूह की रक्षा करने वाली।

550. **अरूपा** – रूपरहित अर्थात निर्गुण निराकार। ब्रह्म स्वरूपा। ब्रह्मा का रूप धारण करने वाली। विष्णु का रूप धारण करने वाली। अ अक्षर जिनका रूप है अर्थात इस अक्षर के रूप को धारण करने वाली। अ का अर्थ है ब्रह्म, ब्रह्मा, विष्णु, अ अक्षर आदि।

551. **शुद्धरूपा** – जिसमें कोई मिलावट नहीं है, ऐसा है रूप जिनका। दोष या मिलावट से रहित। शुद्ध अर्थात पवित्र स्वरूप वाली। शुद्ध पदार्थों को बनाने वाली। शुद्धम् रूपयति इति शुद्ध रूपा। शुद्ध है जिनका चिन्ह। शुद्ध चाँदी वाली अर्थात इस चाँदी से बने आभूषणों को धारण करने वाली। श्वेत वस्त्र धारण करने वाली। शुद्ध अर्थात श्वेत और रूप अर्थात वस्त्र।

552. **सुरूपा** – (सगुण साकार अवस्था में) सुन्दर रूप वाली।

553. **रूपगर्विता** – अपने सुन्दर रूप पर गर्वित रहने वाली। गर्व का तात्पर्य है अपने को औरों से अधिक सुन्दर मानना।

554. **रूपयौवनसम्पन्ना** – रूप और युवावस्था से युक्त। रूप अर्थात आकृति, अंगों की आकृति और परिमाण।

555. **रूपराशि** – सौन्दर्य की राशि स्वरूपा अर्थात अत्यन्त सुन्दर।

556. **रमावती** – लक्ष्मी से युक्त अर्थात लक्ष्मी जी इनकी सेवा करती हैं। जब लक्ष्मी जी इनकी सेवा में रहती हैं तो इसका तात्पर्य हुआ कि वे लक्ष्मी जी से युक्त हो गईं। सौन्दर्य/शोभा से युक्त। रमा अर्थात लक्ष्मी अर्थात शोभा। लक्ष्मी के गुणों से युक्त। जिसमें भगवान (शिव) रमण करते हैं अर्थात शिव का मन टिकता है या पसन्द करता है। रमावती अर्थात रमा। रमणीया अर्थात जिसमें भगवान तक का मन टिकता है। रमणीय स्वरूप से युक्त।

557. **रोधिनी** – अवगुणों/शत्रुओं को रोक देने वाली।

558. **रोषिणी** – युद्ध में असुरों से लड़ने में आवेश या जोश से युक्त। रोष का अर्थ क्रोध, आवेश, लड़ने का जोश है। शत्रुओं पर रोष प्रकट करने वाली।

559. **रुष्टा** – शत्रुओं पर रुष्ट हो जाने वाली। अधर्मियों पर अप्रसन्न, क्रुद्ध।

560. **रोषिरूद्धा** – क्रोधी (भगवान शिव) द्वारा रोकी गई अर्थात जो भगवान शिव को छोड़कर नहीं जा सकती। क्रोधियों द्वारा रोकी गई अर्थात क्रोधियों से दूर रहने वाली। रोषिभिः रूद्धा इति रोषिरूद्धा। अतिशय क्रोध के कारण आगे बढ़ने से रूक जाने वाली।

561. **रसप्रदा** – आनन्द प्रदान करने वाली। रस का एक अर्थ आनन्द है। आयुर्वेद में बताये गये मधुर, तीखा, खट्टा आदि षड्रस भी रस का एक अर्थ हैं। साहित्य में बताये गये श्रृंगार, वीर, करूण आदि नौ रस भी रस का एक अर्थ हैं।

562. **मादिनी** – प्रसन्न करने वाली। मादयति इति मादिनी। भक्तों को इतना प्रसन्न करती मानों नशे में डाल दिया हो। अतिशय हर्ष से युक्त। मदि हर्षे धातु होती है। अतिशय उन्माद से युक्त हो जाने वाली। उन्मत्त का

तात्पर्य है होश हवास खोना अर्थात क्या बोल रहा है क्या कर रहा है यह होश न रहना। (यदि मापिनी शब्द है तो अर्थ है व्यवहार को मापती हैं या भक्ति को मापती तौलती हैं अर्थात यह निर्धारित करती हैं कि उनकी भक्ति का स्तर कितना है और उनके कर्म कैसे हैं।)

563. **मदनप्रीता** – कामदेव से प्रीतियुक्त अर्थात उनसे प्रीति करने वाली। कामदेव से प्रसन्न। प्रीत का अर्थ प्रीति, प्रसन्न होता है। रति रूप में कामदेव से प्रेम करने वाली। देवी रूप में कामदेव की तपस्या से प्रसन्न।

564. **मधुमत्ता** – मधुपान कर मत्त हो जाने वाली। मत्त का अर्थ है अतिशय प्रसन्न, आनन्द से भरी हुई। मत्त व्यक्ति आनन्द का तो अनुभव करता है पर उसे बाहरी दुनिया का होश नहीं रहता। मत्त का अर्थ है मग्न हो जाना अर्थात बाहरी दुनिया का होश न रहे। मत्त अर्थात आनन्द+बाहरी दुनिया का होश नहीं। मदि हर्षे धातु होती है जिससे मत्त शब्द बनता है।

565. **मधुप्रदा** – मधु प्रदान करने वाली। मधु का अर्थ है अमृत, शहद। मिठास प्रदान करने वाली।

566. **मद्यपा** – मदिरा को पीने वाली।

567. **मद्यपध्येया** – मदिरा, सोमरस का पान करने वालों के द्वारा ध्यान करने योग्य।

568. **मद्यपप्राणरक्षिणी** – भगवान के नाम की शराब पीने वालों के प्राणों की रक्षा करने वाली। सोमपान करने वालों के प्राण की रक्षा करने वाली।

569. **मद्यपानन्दसन्दात्री** – भगवान के नाम की शराब पीने वालों को आनन्द देने वाली। सोमपान करने वालों को आनन्द प्रदान करने वाली।

570. **मद्यपप्रेमतोषिता** – भगवान के नाम की शराब या सोमपान करने वालों के प्रेम से परिपुष्ट या सन्तुष्ट हो जाने वाली।

571. **मद्यपानरता** – सोमपान में निरत रहने वाली।

572. **मत्ता** – प्रसन्नता या आनन्द से भरी हुई। मदि हर्षे धातु होती है। स्वयं में प्रसन्न। नशे में चूर जैसी अवस्था अर्थात जैसे नशे में प्रसन्न महसूस करता है। इस अवस्था में बाहरी विषयों से एकदम अलग अपने में मस्त रहती हैं, आनन्द या प्रसन्नता का अनुभव करती हैं। मत्त अर्थात मदोन्मत्त हो जाने वाली।

573. **मद्यपानविहारिणी** – मद्यपान करने के बाद विहार करने वाली अर्थात विचरण करने वाली।

574. **मदिरा** – मदिरा स्वरूपा या मदिरा के समान नशीली। इनकी भक्ति/पूजा से नशा जैसा आनन्द मिलता है। नशा तो उतर जाता है पर यह नहीं उतरती हैं या इनकी कृपा से प्राप्त आनन्द नहीं उतरता है। प्रसन्नता देने वाली। मदयति/मादयति अनया इति मदिरा अर्थात जिसके द्वारा प्रसन्नता दी जाती है वह मदिरा है।

575. **मदिरासक्ता** – शिव नाम रूपी मदिरा पीने में लगी हुई। सोमपान में निरत रहने वाली।

576. **मदिरापानहर्षिणी** – सोमपान कर हर्षित या आनन्दित हो जाने वाली।

577. **मदिरापानसन्तुष्टा** – मदिरा के पीने से सन्तुष्ट (प्रसन्न) हो जाने वाली।

578. **मदिरापानमोहिनी** – मदिरा का पान करने से अर्थात सोमरस को पीने से अधिक सुन्दर और आकर्षक हो जाने वाली। मदिरा पान के बाद अतिशय मोहिनी अर्थात सुन्दर रूप वाली।

579. **मदिरामानसा** – प्रसन्न मन वाली। प्रसन्नता देने वाले मन वाली अर्थात प्रसन्नता देने वाली। मदिरा का अर्थ है प्रसन्नता देने वाली। नशे की तरह प्रसन्नता देने वाली। यह मदिरा शिव नाम की मदिरा है। इन्हें मदिरा इतनी प्रिय है कि इनके हृदय में बस गई है। मानस का अर्थ है हृदय।

580. **मुग्धा** – लुभावनी आकृति वाली अर्थात मुग्ध स्वरूप वाली। भोलीभाली सुन्दर महिला को मुग्धा कहते हैं। भोलीभाली अर्थात जिसे दूसरा व्यक्ति बुद्धू बना सकता है।

581. **माध्वीपा** – मधु विद्या अर्थात आत्मविद्या का पान करने वाली। मधुर रस (अमृत तुल्य रस) को पीने वाली। माध्वी नामक नदी के मधुर जल को पीने वाली। मधु (महुआ) से बनी शराब का पान करने वाली। सद्‌गुणों रूपी शराब का पान करने वाली।

582. **मदिराप्रदा** – प्रसन्न करने वाली चीजों को देने वाली। ऐसी प्रसन्नता जो मदिरा पीने से होती है, को देने वाली। मदि हर्षे धातु होती है। मदिरा के समान आनन्द को प्रदान करने वाली।

583. **माध्वीदानसदानन्दा** – मधुविद्या (आत्म विद्या) के दान से सदैव आनन्दित रहने वाली। माध्वी (मधु (महुआ) से बनी शराब या सोमरस) के दान से सदैव आनन्दित रहने वाली।

584. **माध्वीपानरता** – मदिरा(सोमरस) पीना जिन्हें अच्छा लगता है। रम् धातु से रत बनने पर प्रसन्न होना या अच्छा लगना अर्थ आ जाता है। सोमरस के पीने में रत रहने वाली।

585. **मदा** – मद वाली अर्थात मद से युक्त। मदः अस्या अस्ति इति मदा। मद का अर्थ उल्लास या अतिशय प्रसन्नता है। मद का एक अन्य अर्थ है अभिमान अर्थात मेरे पास दूसरों से अधिक धन, ऐश्वर्य, शक्ति है, ऐसा भाव। मद का अर्थ हर्ष भी होता है। मद स्वरूपा (मस्ती या गर्व स्वरूपा)। मद+आ, आ का एक अर्थ है नाश/नष्ट करना। इस प्रकार मदा का अर्थ हुआ अभिमान नष्ट करने वाली।

586. **मोदिनी** – हर्ष से युक्त। मोद में इनि प्रत्यय लगाने से हर्ष से युक्त अर्थ निकलेगा। मोदयति इति मोदिनी, इस प्रकार की व्युत्पत्ति करने पर अर्थ निकलेगा भक्तों को प्रसन्न करने वाली। भक्तों को हर्ष देने वाली। अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति पर होने वाली प्रसन्नता हर्ष है। चमेली, जूही, कस्तूरी के समान सुन्दर और सुगन्धित। मोदिनी का अर्थ चमेली, जूही, कस्तूरी भी होता है।

587. **मोदसन्दात्री** – हर्ष या आनन्द को अच्छी प्रकार से प्रदान करने वाली।

588. **मुदिता** – स्वयं प्रसन्न या हर्षित रहने वाली।

589. **मोदमानसा** – आनन्दपूर्ण हृदय वाली।

590. **मोदकर्त्री** – प्रसन्नता या आनन्द या सुगन्ध की रचना करने वाली। आनन्दित करने वाली। मोद का अर्थ है प्रसन्नता, हर्ष, आनन्द, सुगन्ध, महक।

591. **मोददात्री** – प्रसन्नता को प्रदान करने वाली।

592. **मोदमङ्‌गलकारिणी** – आनन्द और मंगल को करने वाली।

593. **मोदकादानसन्तुष्टा** – भक्तों के द्वारा दिये गये गुड़, आनन्द देने वाले पदार्थों को प्राप्त करने से सन्तुष्ट (प्रसन्न) रहने वाली। आदान का अर्थ है प्राप्त करना। मोदक का एक अर्थ है गुड़, लड्‌डू, आनन्द देने वाले पदार्थ।

594. **मोदकग्रहणक्षमा** – मोदकों को ग्रहण करने में समर्थ या सक्षम।

595. **मोदकालब्धिसंक्रुद्धा** – प्रसन्न करने वाले अर्थात प्रसन्नता देने वाले पदार्थों की अप्राप्ति से सम्यक् रूप से क्रोध करने वाली अर्थात क्रुद्ध करने वाली। मोदक का अर्थ है प्रसन्नता करने वाला। अलब्धि का अर्थ है अप्राप्ति। एक ओर प्रसन्न करने वाले को विभूषित करने वाली समुद्र स्वरूपा, दूसरी ओर अधिक क्रुद्ध। मोदक अर्थात प्रसन्न करने वाला, आलब्धि अर्थात पर्याप्त समुद्र या बड़ा समुद्र। मोद अर्थात मोदक, कन् प्रत्यय लगाने से अर्थ

में परिवर्तन नहीं होता। मोदकम् अलति। प्रसन्न करने वाले को विभूषित करने वाले समुद्र जैसी और अधिक क्रोध वाली। दो विपरीत गुण एक साथ रखती हैं।

596. **मोदकप्राप्तितोषिणी** – मोदक (लड्डू) को प्राप्त करने से प्रसन्न या सन्तुष्ट होने वाली।

597. **मांसादा** – मांस का भक्षण करने वाली। अद भक्षणे धातु होती है। काम, क्रोध, लोभ, मोह रूपी मांस का भक्षण करने वाली।

598. **मांससंभक्षा** – खेचरी मुद्रा लगाकर मांस (जिह्वा) का भक्षण करने वाली अर्थात उसको अपने कपाल गह्वर में निगलने वाली। दुर्व्यसनियों को अच्छी प्रकार या भलीभाँति खा जाने वाली। माम् (लक्ष्मीम्) स्यति इति मांसः, लक्ष्मी अर्थात सद्गुणों को खाने वाला मांस कहलाता है अर्थात मांस का अर्थ हुआ दुर्व्यसनी। मांस का सम्यक् रूप से अर्थात अच्छी प्रकार से या पूरी तौर से भक्षण करने वाली।

599. **मांसभक्षणहर्षिणी** – मांस भक्षण से आनन्दित रहने वाली। मासं भक्षण करने पर मांस चबाने वाले को आनन्दित करने वाली। हर्षति से हर्षिणी बनाने पर हर्षित होने वाली अर्थ आएगा जबकी हर्षयति से हर्षिणी बनाने पर हर्षित करने वाली या आनन्दित करने वाली अर्थ आएगा। खेचरी मुद्रा लगाने से प्रसन्न होने वाली।

600. **मांसपाकपरप्रेमा** – मांस को पकाने के प्रति विशेष प्रेम रखने वाली। ज्ञानयोग या भक्तियोग के परिपक्व होने पर विशेष प्रेम करने वाली। पूर्व नाम में स्पष्ट किया जा चुका है कि मा (माया) को नष्ट (स्यति) करने के कारण मांस का अर्थ विचार या ज्ञानयोग या भक्तियोग होता है।

601. **मांसपाकालयस्थिता** – मांस बनाने वाले रसोईघर में स्थित रहने वाली। भक्ति योग को परिपक्व करने वाले निवास (अर्थात सन्त या गुरू) में विराजमान।

602. **मत्स्यमांसकृतास्वादा** – मछली के मांस का आस्वादन लिया है जिसने। मछली के मांस और मांस के भक्षण में रस लेने वाली।

603. **मकारपञ्चकान्विता** – पंच मकारों से युक्त। पंच मकार हैं – मांस, मछली, मदिरा, मुद्रा और मैथुन। इनकी पूजा पाँच मकारों का प्रयोग करने से भी होती है इसलिए ये पाँच मकारों से युक्त हैं। अन्वित का अर्थ है युक्त होना या परस्पर सम्बद्ध होना। अनु + इण्गतौ धातु से अन्वित शब्द बनता है जिसका अर्थ है पीछे से गति करना अर्थात पिछे से जुड़ना।

604. **मुद्रा** – मुदम् राति अर्थात प्रसन्नता देने वाली। जो देवताओं को प्रसन्न करे एवं राक्षसों को रूला दे वह मुद्रा है। विशिष्ट मुद्रा वाली (कुछ लोगों के अनुसार अंजली मुद्रा सर्वश्रेष्ठ मुद्रा है, इससे सब देवता खुश रहते हैं)।

605. **मुद्रान्विता** – विशिष्ट मुद्रा से युक्त। अंगुलियों को मोड़कर या कुछ अन्य शारीरिक चेष्टाओं से जो हाथ की मुद्रा बनाई जाती है उस मुद्रा से युक्त। देवी देवता प्रायः अभय मुद्रा और वर मुद्रा से युक्त दिखाई देते हैं।

606. **माता** – माता की तरह सम्पूर्ण संसार का पालन–पोषण करने वाली। माति का अर्थ रक्षा करना भी होता है। चूँकि माता गर्भ में शिशु की रक्षा करती है अतः वह माता कहलाती है। गर्भे शिशुम् माति रक्षति इति माता। अपने भक्तों की रक्षा करने वाली यह माता का अर्थ हुआ। उस अंडे (गर्भ) को अपने अन्दर रखकर रक्षा करने वाली। माति का अर्थ है रक्षा करना, माति इति माता अर्थात् जो रक्षा या पालन करती है वह माता है।

607. **महामोहा** – सभी संसारी लोगों में सांसारिक व्यक्तियों एवं पदार्थों के प्रति आसक्ति पैदा करने वाली। महा अर्थात सभी अर्थात सभी सांसारिक लोग। सांसारिक सुखों के भोग की इच्छा जो अविद्या का रूपान्तर मानी गई है, महामोह कहलाती है। महामोहस्वरूपा। भारी मोह या तीव्र आसक्ति।

608. **मनस्विनी** – श्रेष्ठ मन से सम्पन्न। उच्च विचार वाली। अपने स्वरूप पर गौरव रखने वाली।

609. **मुद्रिका** – पूजा में हाथ की अंगुलियों से बनाई जाने वाली मुद्रा स्वरूपा। गायत्री की पूजा में 24 मुद्राऐं बनाई जाती हैं। मुद्रा ही मुद्रिका है। देवताओं को प्रसन्न करने वाली और राक्षसों को भगाने वाली। मुद्रा में मु से मोदयति अर्थात प्रसन्न करने वाली और द्रा से द्रावयति अर्थात भगाने वाली अर्थ निकलता है। अच्छाई को लाने वाली और बुराई को भगाने वाली। मुदम् राति इस व्युत्पत्ति से मुद्रा शब्द का अर्थ होता है प्रसन्नता को देने वाली। अंगूठी स्वरूपा। प्रत्येक चीज ऊर्जा या शक्ति की बनी है और देवी ऊर्जा या शक्ति हैं। मुद्रिका के अन्य अर्थ हैं छोटी मोहर, सिक्का, तर्पण के समय पहनी जाने वाली कुश से बनी अंगूठी, मुद्रा इन सभी रूपों वाली। श्रेष्ठ अंगूठी धारण करने वाली। संसार में या दृश्य जगत में जो भी चीज है उसे मुद्रित करने वाला अर्थात उकेरने वाला अर्थात बनाने वाला कोई न कोई साधन अवश्य है। देवी उस उकेरने वाले साधन के स्वरूप वाली हैं।

610. **मुद्रिकायुक्ता** – श्रेष्ठ अंगूठी से विभूषित। श्रेष्ठ धातु से बनी अंगूठी धारण करने वाली। पुराने समय में अंगूठी ही मुद्रिका का काम करती थी अर्थात मोहर लगाने का काम करती थी। दृश्य जगत की चीजों को मुद्रित (बनाने) करने वाले साधनों से युक्त।

611. **मुद्रिकाकृतलक्षणा** – अंगूठी द्वारा किये गये चिन्ह से युक्त। लक्षण अर्थात चिन्ह, सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार शुभ–अशुभ सूचक चिन्ह। वह जिनकी अंगूठी मुद्रिका का जो अर्थ है वही है पहचान जिनकी। कृत का अर्थ है अर्थ तथा लक्षण का अर्थ है पहचान। मुद्रिका का अर्थ है देवताओं को प्रसन्नता देना और राक्षसों को दौड़ाना, रूलाना। मुद्रा ही मुद्रिका है। मुद्रा के मु से मुदम् ददाति एवं द्रा द्रावयति ले सकते हैं। मुदम ददाति अर्थात प्रसन्नता देना एवं द्रावयति अर्थात खदेड़ देना या दौड़ा देना। अंगूठी द्वारा सुन्दर लगने वाली, सुन्दरता बढ़ाएगी। लक्षणा अर्थात शुभ लक्षण अर्थात सुन्दरता।

612. **मुद्रिकालङ्कृता** – अंगूठी के द्वारा सुशोभित अर्थात अंगूठी पहनने से अति सुन्दर लग रहीं हैं।

613. माद्री – मद्र देश की अधिष्ठात्री देवी। मादयति इति माद्री अर्थात हर्षित करने वाली। माद्री औषधि की तरह अतिविषा अर्थात विष से आगे बढ़ने वाली अर्थात अमृत तुल्य गुणों वाली अर्थात अमरत्व देने वाली। माद्री का अर्थ अतिविषा है अर्थात विष से परे है।

614. **मन्दराचलवासिनी** – मन्दराचल पर निवास करने वाली।

615. **मन्दराचलसंसेव्या** – मन्दराचल के द्वारा सम्यक् रूप से सेवा करने योग्य।

616. **मन्दराचलवासिनी** – मन्दराचल पर निवास करने वाली।

617. **मन्दरध्येयपादाब्जा** – निश्चल भाव से जिनके चरण कमल का ध्यान करना चाहिए। मन्दर अर्थात मन्दराचल अर्थात पर्वत अर्थात निश्चल। मन्दर (मन्दराचल पर्वत) के द्वारा ध्यान किये जाने योग्य हैं चरण कमल जिनके।

618. **मन्दरारण्यवासिनी** – मन्दर (मन्दराचल पर्वत) के वन में निवास करने वाली।

619. **मन्दुरावासिनी** – अश्वशाला में निवास करने वाली। चटाई पर बैठी हुई। मन्दुरा का अर्थ है अश्वशाला, बिछाने की चटाई।

620. **मन्दा** – मन्द गति वाली मन्दाकिनी नदी स्वरूपा। सूर्य की वह संक्रान्ति जो उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद और रोहिणीनक्षत्र में पड़ती है मन्दा कहलाती है। मन्दा नामक संक्रान्ति स्वरूपा, यह अर्थ हुआ। कम दाम वाली अर्थात सिर्फ भाव या भक्ति से मिलने वाली। उनको पाने के लिए बहुत अधिक तपस्या या अन्य कष्टप्रद साधनों को अपनाने की जरूरत नहीं है।

621. **मारिणी** – दुष्ट दैत्यों को मारने वाली। मारिन् का अर्थ है हत्या करने वाला, घात करने वाला। संहारिका शक्ति अर्थात भगवान शिव की माहेश्वरी शक्ति।

622. **मारिकामिता** – महामारी के समय उसके निवारण के लिए भक्तों द्वारा चाही गई।

623. **महामारी** – महामारी स्वरूपा (विनाश के समय)।

624. **महामारीशमनी** – महामारी के प्रकोप को शान्त कर देने वाली।

625. शवसंस्थिता – शव के ऊपर सम्यक् रूप (अच्छी तरह) से स्थित होने वाली। कूटस्थ ब्रह्म में स्थाई रूप से स्थित। शव निश्चेष्ट होता है और कूटस्थ ब्रह्म भी निस्चेष्ट होता है। शिवमें स्थित। शक्ति के बिना शिव शव कहलाता है। शव शब्द पर मातंगी सहस्रनामावली में अधिक लिखा गया।

626. **शवामांसकृताहारा** – शव के सम्पूर्ण माँस का आहार करने वाली। आमांस अर्थात आ (सम्पूर्ण) +मांस। एकाक्षरी कोष में आ का अर्थ भाव (पदार्थ/अस्तित्व/सत्ता) दिया गया है। प्रत्येक चीज पदार्थ या सत्ता है। अतः पदार्थ को लिखे बिना भी काम चल जाता है। शव नामक पदार्थ के मांस का आहार करने वाली या शव के मांस का आहार करने वाली, ये दोनो अर्थ सही हैं।

627. **श्मशानालयवासिनी** – श्मशान रूपी घर में निवास करने वाली।

628. **श्मशानासिद्धिसंहृष्टा** – जो श्मशान में एकाग्रतापूर्वक सिद्धि के लिए यत्न करते हैं, उनसे अच्छी प्रकार से प्रसन्न होने वाली। श्मशान+आ+ सिद्धि+संहृष्टा। आ का अर्थ है समन्तात् अर्थात चारों ओर से अर्थात यहाँ पर अर्थ होगा एकाग्रतापूर्वक। कभी कभी आ को भाव अर्थ होने के कारण कोई अलग से अर्थ देने की जरूरत नहीं होती अर्थात आ का सम्पूर्ण या चारों ओर अर्थ देने की जरूरत नहीं है। श्मशान में सिद्धि से प्रसन्न होने वाली।

629. **श्मशानभवनस्थिता** – श्मशान रूपी भवन में बैठी हुई या विराजमान।

630. **श्मशानशयनागारा** – श्मशान में है सोने का स्थान जिनका।

631. **श्मशानभस्मभीमांगी** – श्मशान की भस्म को लपेट लेने से जिनके अंग भयंकर हो जाते हैं।

632. **श्मशानभस्मलेपिता** – श्मशान की भस्म का लेप करने वाली।

633. **श्मशानभस्मभीमांगी** – श्मशान की भस्म लपेटे शिव की ओर जाने वाली। भीम का एक अर्थ है शिव। अंगति अर्थात गच्छति अर्थात जाना।

634. **श्मशानावासकारिणी** – श्मशान में आवास को बना देने वाली। मृत्यु के बाद मनुष्य का श्मशान में वास करा देती है।

635. **शामिनी** – दुष्टों या पापों को शान्त कर देने वाली अर्थात नाश कर देने वाली मिटा देने वाली। शमयति इति शामिनी। विविध प्रकार के उपद्रवों को शान्त कर देने वाली।

636. **शमनाराध्या** – यमराज द्वारा आराधना करने योग्य।

637. **शमनस्तुतिवन्दिता** – यमराज की स्तुति के द्वारा वन्दित/ प्रशंसित।

638. **शमनाचाररसन्तुष्टा** – यमराज के आचार (क्रियाकलाप या कर्तव्य) से सन्तुष्ट (प्रसन्न) रहने वाली। शास्त्रों में जिसे करने का विधान किया गया है और जिसे न करने के लिए निषेध किया गया है, ऐसे कार्य आचार कहलाते हैं। सन्तुष्ट अर्थात प्रसन्न, तृप्त (और पाने की इच्छा का अभाव)।

639. **शमनागारवासिनी** – यमराज के भवन में निवास करने वाली।

640. **शमनस्वामिनी** – यमराज की स्वामिनी। स्वामिनी का अर्थ है यमराज को आज्ञा देने वाली। कहीं कहीं पर स्वामिनी का अर्थ उनकी उत्पत्ति करने वाली लिखा पाया गया है पर सम्भवतः यह अर्थ ठीक नहीं प्रतीत होता।

641. **शान्ति** – उद्वेग रहित अवस्था स्वरूपा। प्रत्येक परिस्थिति में मन की स्थिरता स्वरूपा चाहे जैसी स्थिति हो। इच्छा का अभाव होने पर हलचल रहित मानसिक अवस्था स्वरूपी। वेग, क्षोभ, गति, क्रिया, चिन्ता, दुख के अभाव की अवस्था स्वरूपा। मन की चंचलता का अभाव होने वाली अवस्था शान्ति की अवस्था है और इसमें मन स्थिर हो जाता है। शान्ति अर्थात निःशब्दता, सूनापन, मन की अस्थिरता। सभी इच्छाऐं अशान्ति पैदा करती हैं। शान्ति की इच्छा भी अशान्ति पैदा करती है। शान्त व्यक्ति प्रतिक्रिया नहीं करता है चाहे उसे गाली दी जाए। ऐसे व्यक्ति में बैर का अभाव होता है। अन्ति का अर्थ समीप है। श+अन्ति। एकाक्षरीकोश से श के अर्थ लेकर कई अर्थ बनाये जा सकते हैं। ऐसे शब्दों को भी लिया जा सकता है जो श से आरम्भ होते हैं।

642. **शान्तसज्जनपूजिता** – शान्त सज्जन पुरुषों द्वारा पूजित। मन में हलचल से रहित, सज्जन पुरुषों द्वारा पूजित।

643. **शान्तपूजापरा** – शान्तिकारक पूजा में संलग्न रहने वाली। ग्रहों, व्याधियों, कष्टों को शान्त करने के लिए की गई पूजा शान्तिकर्म कहलाती है।

644. **शान्ता** – बाहर सब प्रतिकूल हो फिर भी अन्दर से विचलित नहीं एवं बाहर सब अनुकूल है और अन्दर से उतावले नहीं ऐसा व्यक्ति शान्त होता है। ऐसे व्यक्ति का मन स्थिर होता है। शान्त अर्थात गुणातीत अवस्था या मन से पार की अवस्था में स्थित। मन की संकल्प – विकल्प क्रियाऐं न हो, मन विचार रहित हो तो व्यक्ति शान्त होता है। मन निरूद्ध हो, सन्तुष्ट हो, इच्छाओं का अभाव हो, राग द्वेष का अभाव हो, दौड़ समाप्त तथा कुछ भी चाहना बाकी नहीं तो ऐसा व्यक्ति शान्त होता है। मन में स्थिरता हो, मन की क्रियाओं को साक्षी भाव से देखने वाला और केवल वर्तमान में रहने वाला शान्त होता है। विचार विलीन होने पर जो अवस्था आती है वह शान्ति की अवस्था है। मन में क्षोभ, वेग, उत्तेजना, हलचल क्रिया का न होना शान्त अवस्था में पहुँचना है। शान्त स्वरूप वाली अर्थात जिसके मन में क्षोभ या हलचल नहीं है। अयोध्या के राजा दशरथ की कन्या से अभेद है जिनका। रेणुका से अभेद है जिनका। संगीत की एक श्रुति स्वरूपा।

645. **शान्तागारप्रभोजिनी** – शान्त महल में विधिवत भोजन करने वाली। कोलाहल या उपद्रव से रहित महल में विधिवत भोजन करने वाली।

646. **शान्तपूज्या** – शान्त पुरुषों द्वारा पूजनीय। इच्छा रहित, जो वर्तमान में रहते हैं, जिनका साक्षी भाव सध गया है ऐसे पुरुषों के द्वारा पूजा करने योग्य। जिनमें वेग, क्षोभ या क्रिया न हो, जो ठहरे हुए हों वे हैं शान्त पुरुष, जिनका मन हलचल रहित है वे शान्त हैं।

647. **शान्तवन्द्या** – शान्त पुरुषों द्वारा वन्दनीय। वन्दना का अर्थ है सामने सिर झुकाना और स्तुतिगान करना। जिसमें क्रोध, राग आदि का वेग न रह गया हो, जो स्थिर हों। जिन पुरुषों के मन, इन्द्रियों का विषयों से वैराग्य हो गया है उनके द्वारा वन्दना करने योग्य।

648. **शान्तग्रहसुधारिणी** – शान्त ग्रहों को सुन्दर ढ़ंग से धारण करने वाली। तीन प्रकार के ग्रह होते हैं। सौम्य (शान्त), क्रूर और पाप ग्रह। बुध, शुक्र, चन्द्र और बृहस्पति सौम्य ग्रह हैं। मंगल और सूर्य क्रूर ग्रह हैं तथा शनि, राहु, केतु पाप ग्रह हैं। ऐसा लगता है कि ये देवी का आकाश स्वरूप है। शान्त प्रकृति के ग्रहों द्वारा सुधार करने वाली।

649. **शान्तरूपा** – निर्विचार अवस्था वाली। जिसके दुष्ट विकारों का अन्त हो गया हो, घबराहट दूर हो गई हो

और विरक्ति का भाव हो गया हो। शान्त स्वरूपा। इन्द्रियों का अपने विषयों से वैराग्य होने पर होने वाली सुखानुभूति शान्ति है। जो चंचल न हो। उग्रता या चंचलता से रहित, सौम्य या गंभीर।

650. **शान्तियुक्ता** – शान्ति कर्म के लिए की जाने वाली पूजा से युक्त। पाप, प्रेतबाधा, दुष्टग्रह आदि द्वारा होने वाले अमंगल के निवारण के उपाय से युक्त। शान्ति से युक्त। मन की चंचलता से रहित होने की अवस्था से युक्त। मनोवेग, पीड़ा, शारीरिक उपद्रव, काम, क्रोध, लोभ आदि से रहित अवस्था शान्ति है।

651. **शान्तचन्द्रप्रभामला** – शान्त चन्द्रमा की प्रभा के समान स्वच्छ।

652. **अमला** – अस्पृष्ट मलों वाली अर्थात मल ने जिन्हें कभी स्पर्श नहीं किया। मल रहित। आणव मल, मायिक मल और कार्मिक मल से रहित। आणव मल अर्थात अपने को छोटा समझना (मेरे पास कम शक्तियाँ हैं आदि), मायिक मल अर्थात परमात्मा से अलग समझना, कार्मिक मल अर्थात अपने को कर्ता समझना जबकि सारा कार्य परमात्मा की शक्ति करती है।

653. **विमला** – हट गया है या दूर हो गया है मल जिसका। विगता मला यस्या सा। बुराई आयी थी पर अब दूर हो गयी किन्तु अमला में अर्थ है कि बुराई ने कभी भी स्पर्श ही नहीं किया। नष्ट हो गयी हैं अशुद्धियाँ जिनकी। सफेद अर्थात सरस्वती स्वरूपा या सरस्वती से अभेद है जिनका। सिद्धि की दस भूमियों में से एक भूमि का नाम विमला है, तद्भूमिस्वरूपा।

654. **म्लाना** – आपद्ग्रस्त देवताओं को देखकर दुखी होने वाली। म्लै धातु का अर्थ है हर्षक्षय।

655. **मालतीकुञ्जवासिनी** – चमेली के कुंजों में निवास करने वाली। कुंज का अर्थ है लता, झाड़ियों से घिरा स्थान अर्थात वह जगह जहाँ लताऐं छाई हों।

656. **मालतीपुष्पसम्प्रीता** – चमेली के पुष्प से बहुत प्रसन्न। चमेली के पुष्प हैं अतिप्रिय जिन्हें।

657. **मालतीपुष्पपूजिता** – चमेली के पुष्पों द्वारा सम्पूजित।

658. **महोग्रा** – दुष्ट दैत्यों के लिए अत्यधिक उग (भयंकर) रूप धारण करने वाली। उग्र अवस्था में व्यक्ति केवल भयानक ही नहीं दिखता, वह हिंसक भी हो जाता है।

659. **महती** – विशाल स्वरूप वाली। नारद की वीणास्वरूपा या इस वीणा की तरह जगत को माधुर्य देने वाली। बड़ाई या महिमा वाली। महती वीणा की तरह जिसकी महिमा बहुत है या जिसका महत्व बहुत है। तन् धातु में ड प्रत्यय लगाने से त बनेगा जिसका अर्थ है विस्तार करने वाला, निर्माण करने वाला या देने वाला। स्त्रीलिंग में ती हो गया। मह शब्द के अर्थ शब्दकोश से लेकर अन्य अर्थ बनाये जा सकते हैं।

660. **मध्या** – जो न तो अधिक लम्बी हैं और न अधिक छोटी हैं अर्थात समलम्बाई वाली हैं अर्थात सुन्दर हैं। भगवान राम की सुन्दरता का वर्णन करते समय समविभक्तांग इस प्रकार के शब्द प्रयोग किये गये हैं। सुन्दर स्वरूप वाली। पूरे ब्रह्माण्ड के बीच के भाव स्वरूपा। पश्चिम दिशा वाली अर्थात इस दिशा में वास है जिनका। बीच की अवस्था वाली। सुश्रुत के अनुसार 16 वर्ष से 70 तक की अवस्था मध्य अवस्था कहलाती है। संगीत के मध्या नामक सप्त स्वर के स्वरूप वाली।

661. **मध्यदेशनिवासिनी** – मध्य देश में निवास करने वाली। हिमालय के दक्षिण में, विन्ध्य पर्वत के उत्तर में, प्रयाग के पश्चिम में, कुरुक्षेत्र के पूर्व में मध्य देश है। यह प्रदेश किसी समय आर्यों का प्रधान निवास स्थान और बहुत पवित्र माना गया है। देश का अर्थ स्थान है। पृथ्वी मध्य लोक मानी गई है जिसके एक ओर स्वर्ग लोक और नीचे की ओर पाताल लोक है। पृथ्वी नामक मध्य लोक में निवास करने वाली। यहाँ देवी के बहुत से सिद्ध मन्दिर हैं। सुषुम्ना नाड़ी में विराजमान। (मध्य अर्थात मध्य चक्र अर्थात् विशुद्धि चक्र या अनाहत चक्र। शरीर का

मध्य स्थान अर्थात हृदय। स्वर्गलोक एवं पृथ्वी के बीच स्थित अन्तरिक्ष भी मध्य है। योगशिखोपनिषद के अनुसार मध्यम का अर्थ आत्मा की तुरीयावस्था है। शैव दर्शन में संवित, शुद्ध अहन्ता को भी मध्य कहा है क्योंकि यह सभी जीवों के भीतर रहता है। मध्य अर्थात भीतर।)

662. **मध्यमध्वनिसम्प्रीता** – संगीत का मध्यम स्वर सुनकर अति प्रसन्न। संगीत के मध्यम स्वर की ध्वनि जिन्हें प्रिय है। मध्यम ध्वनि अर्थात न बहुत जोर से और न बहुत धीमे से। मध्यमा ध्वनि है प्रिय जिन्हें।

663. **मध्यमध्वनिकारिणी** – मध्यम ध्वनि का उच्चारण करने वाली।

664. **मध्यमा** – मध्यमा वाणी स्वरूपा। वैखरी और पश्यन्ती वाणी के बीच में रहने वाली। संगीत के मध्यम स्वर के स्वरूप वाली अर्थात चौथे स्वर वाली। भगवान को कहा जाता है कि वह छोटा भी है, बड़ा भी है और मध्यम भी है। मध्यमा अंगुली की तरह अर्थात सबसे लम्बी अर्थात सभी देवताओं और शक्तियों में सर्वोपरी। मध्यमा नायिका की तरह अर्थात प्रेम मिलने पर आदर एवं दोष मिलने पर अनादर करने वाली अर्थात अच्छा कार्य करने पर व्यक्ति को शुभ देने वाली और खराब कार्य करने पर व्यक्ति को अशुभ देने वाली। मध्यम स्वरस्वरूपा अर्थात संगीत के सात स्वरों में चौथा स्वरस्वरूपा। सुषुम्ना नाड़ी में विराजमान।

665. **मध्यमप्रीति** – मध्य लोक (पृथ्वी) के उपासकों से प्रीति है जिनकी अर्थात उनसे प्रसन्न रहती हैं और उन पर कृपा करती हैं। मध्य का एक अर्थ न्याय्य/औचित्य है। जिनकी प्रीति न्याय्य/औचित्यपूर्ण है।

666. **मध्यप्रेमप्रपूरिता** – मध्यम लोक (पृथ्वी) के निवासियों के प्रेम से विशेष रूप से भरी हुई। जिन्हें इस लोक के निवासी बहुत प्यार करते हैं। न्याय्य/औचित्यपूर्ण प्रेम से विशेष रूप से भरी हुई। गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है कि मनुष्य जैसा मुझे मानते हैं मैं भी उन्हें वैसा ही मानता हूँ। मध्य प्रकार के प्रेम से पूर्ण रहने वाली।

667. **मध्याङ्गचित्रवसना** – मध्य के अंगों में रंगबिरंगे/सुन्दर वस्त्रों को धारण करने वाली।

668. **मध्यखिन्ना** – जिनका मध्य भाग पतला है अर्थात कमर पतली है अर्थात सुन्दर है।

669. **महोद्धता** – शत्रु/दैत्यों के समक्ष अत्यधिक उद्धत हो जाने वाली अर्थात दण्ड देने के लिए तैयार रहने वाली, किसी भी हद तक जाने वाली। उद्धत अर्थात मर्यादा से रहित हो जाना, नियम की परवाह न करना। उद्धत अर्थात अक्खड़, अविनीत, धृष्टतापूर्वक व्यवहार करने वाला। उद्धत का अर्थ है जो अपने उग्र क्रोधी या रूखे स्वभाव के कारण हेय आचरण करता हो या व्यवहार करता हो। उद्+हन् धातु+क्त प्रत्यय।

670. **महेन्द्रकृतसम्पूजा** – देवराज इन्द्र के द्वारा जिनकी पूजा की गई। यहाँ महा का अर्थ है महान अर्थात अन्य देवताओं से बढ़कर अर्थात देवराज। महा का अर्थ मह् पूजायाम् धातु से पूजनीय भी होता है। भौतिक या मानसिक दोनों प्रकार की पूजा करने वाली। पूजा का अर्थ है जो उपलब्ध हो उन सामग्रियों को चढ़ाकर की जाने वाली दैनिक स्तुति। जितना सामान उपलब्ध है या नहीं भी उपलब्ध है तब भी की जाने वाली दैनिक स्तुति पूजा कहलाती है। अर्चना में ऐसा नहीं होता है। वहाँ शास्त्र में जो जो सामग्री बताई गई है सबका होना और सबका चढ़ाया जाना अनिवार्य है।

671. **महेन्द्रपरिवन्दिता** – देवराज इन्द्र के द्वारा जिनकी विधिवत वन्दना की गई। महा+इन्द्र। जो महान हैं ऐसा इन्द्र। जो पूजनीय है ऐसा इन्द्र। मह् पूजायाम् धातु से मह का अर्थ पूजनीय किया गया है।

672. **महेन्द्रजालसंयुक्ता** – बड़े मायाजाल से युक्त अर्थात सर्वाधिक शक्तिशाली मायाजाल से अच्छी प्रकार से स्थित। इन्द्रजाल अर्थात मायाजाल। महा अर्थात सबसे बड़ा।

673. **महेन्द्रजालकारिणी** – महेन्द्र की मायाजाल को करने वाली अर्थात देवराज इन्द्र को मायाशक्ति देने वाली। देवराज इन्द्र के लिए शत्रुओं को वश में करने वाली युक्ति को उत्पन्न करने वाली।

674. **महेन्द्रमानिता** – देवराज इन्द्र के द्वारा सम्मानित।

675. **अमाना** – मान से रहित। दूसरों को सम्मान देती हैं पर स्वयं में सम्मान नहीं चाहती। भगवान विष्णु के प्रति सम्मान भाव रखने वाली। अ का एक अर्थ भगवान विष्णु होता है। भगवान विष्णु का है सममान जिनके प्रति अर्थात भगवान विष्णु भी जिनका सम्मान करते हैं।

676. **मानिनीगणमध्यगा** – मानिनी स्त्रियों के समूहों में श्रेष्ठ अर्थात अधिक माननीय। मध्यगा अर्थात श्रेष्ठ। माला में सुमेरू का दाना बीच मे ंहोता है और वह श्रेष्ठ माना जाता है इस प्रकार मध्यगा का अर्थ श्रेष्ठ लिया गया। जो अपने आप पर अभिमान करे, प्रियतम से अपने रूप यौवन का अभिमान करे अर्थात मैं अधिक रूपवती हूँ ऐसा जताए वह मानिनी है। मानिनी स्त्रियों के मध्य में पहुँचने वाली या स्थित रहने वाली।

677. **मानिनीमानसम्प्रीता** – मानिनी स्त्रियों के मान से प्रसन्न होने वाली। इन स्त्रियों का सम्मान करने से देवी प्रसन्न हो जाती हैं।

678. **मानविध्वंसकारिणी** – लोगों के मिथ्या अहंकार को नष्ट कर देने वाली।

679. **मानिन्याकर्षिणी** – मानिनी स्त्रियों को आकर्षित करने वाली।

680. **मुक्ति** – मोक्ष स्वरूपा। तीनों प्रकार के दुखों से रहित अवस्था स्वरूपा। आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक ये तीन प्रकार के दुख हैं।

681. **मुक्तिदात्री** – मोक्ष को देने वाली। संसार के बन्धन से रहित करना ही मोक्ष देना है।

682. **सुमुक्तिदा** – श्रेष्ठ मुक्ति को देने वाली। पाँच प्रकार की मुक्तियों में कैवल्य मुक्ति या सायुज्य मुक्ति सर्वश्रेष्ठ मानी गई है। केवल का अर्थ है प्रकृति ने जिसे छोड़ दिया है अर्थात जो अकेला हो गया है अर्थात जो स्वयं में स्थित है। ऐसी मुक्ति कैवल्य कहलाती है।

683. **मुक्तिद्वेषकरी** – अधम पुरुषों/दैत्यों को मुक्ति देने में द्वेष करने वाली अर्थात उन्हें मुक्ति नहीं देती।

684. **मूल्यकारिणी** – सज्जनों की प्रतिष्ठा करने वाली अर्थात बढ़ाने वाली। मूल्य का अर्थ प्रतिष्ठा, कीमत, उपयोगिता है। प्राण प्रतिष्ठा अर्थात प्राण वहाँ पर स्थित होता है। श्रेष्ठ मूल्यों को बढ़ाने वाली या रक्षा करने वाली। सत्य, ईमानदारी, न्याय, करूणा आदि मूल्य कहलाते हैं। मूल (पूँजी) लगाने से प्राप्त लाभांश मूल्य होता है जो मूल्य का वास्तविक अर्थ है। आजकल अर्थविस्तार के कारण मूल्य का अर्थ पूरी कीमत माना जाता है। जिनका आचरण करने से कुछ अच्छा प्राप्त हो, जो उपयोगी हों वे मूल्य है। पैसा मूल्य है क्योंकि इसको लगाने पर कुछ प्राप्त होता है। ईमानदारी, न्याय आदि मूल्य हैं इनको लगाने पर अर्थात इन पर चलने पर आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त होती है।

685. **मूल्यहारिणी** – दुर्जनों की प्रतिष्ठा को हर लेने वाली। दैत्यों/ राक्षसों के श्रेष्ठ मूल्यों अर्थात शक्तियों को नष्ट कर देने वाली।

686. **निर्मूला** – मूल रहित। जो कारण शून्य हैं या कार्य कारण से परे। देवी का कोई कारण नहीं है।

687. **मूलसंयुक्ता** – जगत के मूल अर्थात ब्रह्म से अच्छी प्रकार से युक्त रहने वाली अर्थात कभी न अलग हो सकें, इस प्रकार युक्त होने वाली। मूल प्रकृति से युक्त। जन्म (आदिभाव) से जुड़ी हुई अर्थात शुरू से जुड़ी हुई। शक्ति के रूप में किसी भी पदार्थ के साथ शुरू से जुड़ी हुईं। मूल का एक अर्थ जन्म, प्रतिष्ठा, रोपण होता है। आरम्भ से ही युक्त अर्थात सृष्टि के आरम्भ से ही सृष्टि से युक्त। आदि मन्त्र या बीज मन्त्र से अच्छी प्रकार युक्त। मूल का अर्थ दुर्ग, राष्ट्र, जिमीकंद, पिपलीमूल, मूल नामक नक्षत्र, किसी वस्तु का नीचे का भाग या आधार भी है।

688. **मूलिनी** – कारणों वाली अर्थात कारणों से युक्त। जगत की उत्पत्ति में पंचतत्व, पंचभूत आदि जितने भी कारण हैं वे सब देवी से उत्पन्न हुए हैं अतः देवी कारणों वाली अर्थात कारणों से युक्त हैं। कारणों का कारण। जड़ वाली अर्थात वृक्ष स्वरूपा। संसार एक वृक्ष है अतः संसार रूपी वृक्ष स्वरूपा। मूल कारणों से युक्त। ब्रह्मा, पंचमहाभूत आदि जगत के मूल कारण हैं और ये मूल कारण देवी से ही प्रकट हुए हैं अर्थात देवी इन मूल कारणों से युक्त है। तीनों लोकों की मूल कारण। मुख्य या प्रधान देवताओं से युक्त। मूल का अर्थ है मुख्य या प्रधान। मूल नामक नक्षत्र से युक्त अर्थात कोई अवतार मूल नामक नक्षत्र में लिया होगा। मूल मन्त्र या बीज मन्त्र से युक्त। दुर्ग से युक्त।

689. **मूलमन्त्रिणी** – मूल मन्त्रों वाली। प्रत्येक देवता का एक मुख्य मन्त्र होता है जिसे मूल मन्त्र कहते हैं। मूल मन्त्र वह मुख्य मन्त्र है जिससे सारी इच्छाओं को पूरा किया जा सकता है और उस मन्त्र का प्रयोग उस देवता की प्रत्येक पूजा में कर सकते हैं और उस मन्त्र से कोई भी काम ले सकते हैं। मूल दवा का अर्थ होता है जो सारे रोगों को ठीक करे।

690. **मूलमन्त्रकृतार्हाद्या** – मूल मन्त्र द्वारा की गई है पूजा जिनकी और जो आदि स्वरूप है।

691. **मूलमन्त्रार्घ्यप्रहर्षिणी** – मूल मन्त्र के द्वारा दिये गये अर्घ्य से प्रसन्न होने वाली।

692. **मूलमन्त्रप्रतिष्ठात्री** – मूल मन्त्रों को प्रतिष्ठित करने वाली अर्थात उनकी नींव डालने वाली, उन्हें शक्तियुक्त बनाने वाली। प्रतिष्ठित अर्थात अच्छी प्रकार से स्थित अर्थात अपनी स्थिति से शक्ति युक्त या चैतन्ययुक्त बनाना। हर देवी देवता का एक मुख्य मन्त्र होता है जिसे मूल मन्त्र कहते हैं। प्रतिष्ठाता अर्थात नींव डालने वाला, प्रतिष्ठित या स्थापित करने वाला।

693. **मूलमन्त्रप्रहर्षिणी** – मूल मन्त्र से आनन्दित होने वाली। उपासक इसका जप करता है तो देवी प्रसन्न हो जाती हैं।

694. **मूलमन्त्रप्रसन्नास्या** – मूल मन्त्र अर्थात मुख्य मन्त्र को सुनकर प्रसन्न मुख या वदन वाली। हर देवी देवता का एक मूल मन्त्र होता है। मूल मन्त्र से प्रसन्न मुख वाली अर्थात जिनका मुख प्रसन्न हो जाता है।

695. **मूलमन्त्रप्रपूजिता** – मूल मन्त्र से जिनकी प्रकृष्ट (मुख्य या उत्तम या श्रेष्ठ) रूप से पूजा की जाती है।

696. **मूलमन्त्रप्रणेत्री** – मूल मन्त्र (मुख्य मन्त्र) की प्रणेता अर्थात उनको बनाने वाली या रचयिता। मूल मन्त्रों की रचना करने वाली।

697. **मूलमन्त्रकृतार्चना** – मूल मन्त्रों के द्वारा जिनकी पूजा की गई। अर्चना अर्थात विग्रह (मूर्ति) में या यन्त्र में स्थूल पदार्थों जैसे चन्दन, चावल, पुष्प चढ़ाना। अर्चना में शास्त्रों में जितने पदार्थ चढ़ाने के लिए बोला जाता है उन सारे पदार्थों को चढ़ाना पड़ता है। सारे पदार्थ न मिले तो वह अर्चना न होकर पूजा हो जाती है।

698. **मूलमन्त्रप्रहृष्टात्मा** – उस चैतन्य के स्वरूप वाली जो मूल मन्त्र से अत्यन्त प्रसन्न रहता है। आत्मा अर्थात चैतन्य, प्राण, जीवात्मा, परमात्मा। मूल मन्त्रों के द्वारा जिनका हृदय प्रसन्न हो जाता है।

699. **मूलविद्या** – आदि विद्यास्वरूपा। मन्त्र जिससे बाकी मन्त्र पैदा होते हैं। स्त्री देवता के मन्त्र को विद्या कहते हैं। वास्तविक या असल या आरम्भिक ज्ञान विज्ञान मूल विद्या कहलाती है। मूल विद्या का अर्थ है principal science. श्रीविद्या साधना में चार मूल विद्याऐं (मन्त्र) हैं जो हैं – गायत्री, बाला, पंचदशी और षोडशी। योगिनी हृदय ग्रन्थ के अनुसार श्रीचक्र के नौ भागों की नौ विद्याऐं हैं, उनमें से एक का नाम मूल विद्या है। भागवत के अनुसार भगवान विष्णु का द्वादशाक्षर मन्त्र अर्थात ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय मूल विद्या कहलाती है।

700. **मलापहा** – संसार के मलों को या अज्ञान को नष्ट कर देने वाली। भक्त के तीनों प्रकार के मलों अर्थात

आणव मल, कार्मिक मल एवं मायिक मल को दूर करने वाली। पाशुपत दर्शन में पाँच प्रकार के मल बताए गए हैं, उन्हें दूर करने वाली। मल का अर्थ है पाप, दोष, बुराई इन्हें दूर करने वाली। मल का अर्थ है प्रकृति दोष अर्थात वात, पित्त, कफ दोष, इन दोषों को दूर करने वाली।

701. **विद्या** – स्त्री देवताओं के मन्त्र स्वरूपा। स्त्री देवताओं के मन्त्र को विद्या कहते हैं। उस ज्ञान के स्वरूप वाली जिससे मुक्ति होती है। आधुनिक शब्दकोषों में उस ज्ञान को भी विद्या कहा गया है जो शिक्षा आदि के द्वारा प्राप्त किया जाता है एवं वह जानकारी जो सीखकर प्राप्त की जाती है उसे भी विद्या कहा गया है। वे शास्त्र जिनके द्वारा ज्ञान प्राप्त होता है, विद्या कहलाये जाते हैं। इनकी संख्या 18 है। ऐसे शास्त्र के स्वरूप वाली। ई अक्षर स्वरूपा, तन्त्र में ई अक्षर का वाचक शब्द विद्या है। इन्द्रजाल सम्बन्धी कौशल को भी विद्या कहते हैं। किसी तथ्य या विषय का विशिष्ट और व्यवस्थित ज्ञान भी विद्या कहलाता है।

702. **अविद्या** – माया स्वरूपा। वास्तविकता से दूर जो ज्ञान है वह अविद्या है तत्स्वरूपा। अद्वैत वेदान्त के अनुसार अविद्या का अर्थ है विपरीत ज्ञान अर्थात अनित्य में नित्य, अशुचि में शुचि, दुख में सुख, अनात्मा (जड़) में आत्मा (चेतन) का भाव करना अविद्या है। वैशेषिक दर्शन के अनुसार इन्द्रियों के दोष तथा संस्कार के दोष से उत्पन्न दुष्ट ज्ञान अविद्या है। अविद्या ज्ञान का अभाव नहीं है बल्कि यह अल्प ज्ञान है।

703. **वटस्था** – विश्व एक वटवृक्ष है, उसमें स्थित अर्थात विश्व रूपी वट वृक्ष पर स्थित। वट वृक्ष के पत्ते पर लेटे भगवान कृष्ण की शक्ति। आपने चित्र देखा होगा कि प्रलयकाल में भगवान बालमुकुन्द बरगद के पेड़ के पत्ते पर लेटे हुए हैं। वटस्थ अर्थात भगवान कृष्ण।

704. **वटवृक्षनिवासिनी** – वट वृक्ष पर निवास करने वाली। नितराम् वासिनी अर्थात हमेशा रहने वाली। वट वृक्ष पर हमेशा रहने वाली। किसी भी वट वृक्ष में निवास करने वाली।

705. **वटवृक्षकृतस्थाना** – जिसने बरगद के वृक्ष को बनाया है अपने ठहरने की जगह। पिछले नाम से अन्तर यह है कि निवास का अर्थ है हमेशा रहना जबकि स्थान का अर्थ हुआ आज के Guest House or Lounge की तरह अर्थात इसमें जब मन करता है तब रहने आती हैं। हमेशा नहीं रहती। घूमते घूमते जब इच्छा की तब रहने के लिए आ जाती हैं। वट वृक्ष पर अर्थात बरगद के वृक्ष पर जिन्होंने अपना स्थान बनाया है।

706. **वटपूजापरिप्रीता** – वट वृक्ष की पूजा से अत्यधिक प्रसन्न या प्रसन्न हो जाने वाली।

707. **वटदर्शनलालसा** – बरगद के वृक्ष के दर्शन की लालसा रखे हुए।

708. **वटपूजाकृताह्लादा** – वट पूजा करने से जो आह्लादित हो जाती हैं। हृदय की खुशी आह्लाद है जिसमें उल्लास भी रहता है।

709. **वटपूजाविवर्धिनी** – वट की पूजा को विशेष रूप से बढ़ाने वाली अर्थात प्रचार करने वाली।

710. **वशिनी** – सारे जगत को अपने वश में करने वाली। स्त्री स्वरूपा, भगवान शिव की पत्नी। शब्दकोष के अनुसार वशिनी का अर्थ पत्नी, स्त्री है, शमी का वृक्ष। शमी के वृक्ष की तरह या शमी वृक्ष में शक्ति रूप से उपस्थित।

711. **विवशाराध्या** – विवश (लाचार, मजबूर) भक्तों द्वारा आराधना करने योग्य। विवश अर्थात अशक्त या जिनमें कोई शक्ति तथा बल न हो। पराधीन लोगों द्वारा आराधना करने योग्य। भारत जब गुलाम था तो बहुत से लोगों ने स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए देवी की आराधना की थी। आराधना अर्थात अपना समग्र झोंक कर देवता को प्रसन्न करने का प्रयास करना अर्थात देवी देवता में इतना खो जाना कि अपनी सुधबुध न रहे, इसमें देवी देवता के प्रति अत्यन्त प्रेम का भाव होता है। आ अर्थात समन्तात् अर्थात समग्र रूप से, अपनी सुधबुध न रहे अर्थात

अपने को पूर्ण रूप से झोंक दिया। राध् धातु का अर्थ है देवता को प्रसन्न करना, उन्हें अनुकूल बनाने का प्रयास करना।

712. **वशीकरणमन्त्रिणी** – वशीकरण मन्त्र स्वरूपा। वशीकरण मन्त्र वाली अर्थात जिनके पास बहुत से वशीकरण मन्त्र है। वशीकरण मन्त्र के गुणों से युक्त। वशीकरण के मन्त्र के स्वरूप वाली।

713. **वशीकरणसम्प्रीता** – वशीकरण मन्त्र, जो उनका स्वरूप है, से अति प्रसन्न या प्रसन्न हो जाने वाली। प्री धातु में क्त प्रत्यय लगाने से बने प्रीत शब्द का अर्थ है – जो प्रसन्न हुईं थीं अर्थात भूतकाल का अर्थ होता है पर कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र से दूसरे काल का अर्थ भी कर सकते हैं अर्थात प्रसन्न हो रही हैं या प्रसन्न होंगी ऐसा अर्थ भी कर सकते हैं। वशीकरण मन्त्र से प्रसन्नतायुक्त।

714. **वशीकारकसिद्धिदा** – वशीकरण मन्त्र, जो उनका स्वरूप है, द्वारा सिद्धि देने वाली। असुरों, शत्रुओं द्वारा प्राप्त की गई वशीकरण मन्त्र की सिद्धि को नष्ट करने वाली। दा शब्दाक्षर यदि दा ददाति धातु से बनता है तो उसका अर्थ देना होता है और दो अवखण्डने धातु से बनता है तो उसका अर्थ खण्डन करना या नष्ट करना होता है।

715. **वटुका** – ब्रह्मचारी के स्वरूप को धारण करने वाली। वट् वेष्टने धातु से वटुक शब्द बनाने पर अर्थ निकलेगा जो संसार को लपेटे है अर्थात संसार जिनके भीतर है। वटून् कायति इति वटुका अर्थात ब्रह्मचारियों को उपदेश देने वाली। बटुक भैरव की शक्ति स्वरूपा, यह अर्थ भी हो सकता है।

716. **वटुकाराध्या** – ब्रह्मचारियों द्वारा आराधना करने योग्य। बटुक भैरव द्वारा आराधनीय। बालकों द्वारा भी आराधना करने यौग्य।

717. **वटुकाराहारदायिनी** – चल रहे ब्रह्मचारियों को आहार देने वाली। वटुक+आर+आहारदायिनी। ऋ गतौ धातु से आर बना जिसका अर्थ है चलने वाला। भिक्षाटन के लिए चलने वाले अर्थात गमन करने वाले। ब्रह्मचारियों को आहार या भोजन प्रदान करने वाली।

718. **वटुकार्चापरा** – वटुकभैरव (अर्थात शिव) की पूजा करने में संलग्न रहने वाली। ब्रह्मचारियों की पूजा करने वाली स्त्रियों से अभेद है जिनका।

719. **पूज्या** – जगत के द्वारा पूजनीय अर्थात जगत को उनकी पूजा करनी चाहिए। पूजा प्राप्त करने योग्य। आदर पाने योग्य या सम्मान पाने योग्य।

720. **वटुकार्चाविवर्धिनी** – वटुकभैरव की पूजा को बढ़ाने वाली। नवरात्रि में कन्या भोजन के साथ में एक बालक को भी खिलाया जाता है जिन्हें वटुक बोलते हैं। इस प्रथा को बढ़ाने वाली। कैसे बढ़ाती हैं? शास्त्रों के माध्यम से यह कहकर कि ऐसी पूजा से वे जल्दी प्रसन्न होती हैं। बाल हनुमान की पूजा जल्दी फल दायक होती है क्योंकि वे शापग्रस्त नहीं हैं, बाद में ऋषियों ने हनुमान जी को शाप दे दिया था।

721. **वटुकानन्दकर्त्री** – ब्रह्मचारियों को आनन्द देने वाली या करने वाली। बालकों के लिए आनन्द करने वाली अर्थात उन्हें देने वाली। वटुक का अर्थ है बालक, ब्रह्मचारी, वटुक भैरव, मूर्ख या अज्ञ।

722. **वटुकप्राणरक्षिणी** – बालकों /ब्रह्मचारियों के प्राणों की रक्षा करने वाली।

723. **वटुकेज्याप्रदा** – ब्रह्मचारियों को यज्ञविद्या देने वाली या सिखाने वाली।

724. **अपारा** – जिसका तट न हो अर्थात असीम। तट बन जाने पर कोई भी चीज सीमित हो जाती है। अपार (अतिशय, असंख्य) शक्ति से सम्पन्न।

725. **पारिणी** – दूसरा किनारा वाली अर्थात नदी स्वरूपा या समुद्र स्वरूपा। पार का अर्थ होता है दूसरा किनारा। इस किनारे को जहाँ व्यक्ति वर्तमान में खड़ा है, अवार कहते हैं। पारिणी का अर्थ विस्तार के अन्तिम छोर वाली भी कर सकते हैं। पारि का अर्थ शराब का पात्र भी होता है। नी अर्थात नयति। शराब का पात्र प्रयुक्त करने वाली या इसे काम में लगाने वाली।

726. **पार्वतीप्रिया** – पार्वती हैं प्रिय जिन्हें या जो पार्वती को प्रिय हैं। (पार्ववति का अर्थ है – पर्वत (अज्ञान) से निकली ब्रह्माकार वृत्ति। Beyond ordinary consciousness of mind and matter। पर्व (तिथि, त्योहार)। पर्व में जिनकी ख्याति है अर्थात् पर्वों की अधिष्ठात्री देवी। ती शब्द ख्याति अर्थ में आता है।

727. **पर्वताग्रकृतावासा** – पर्वत के अग्रभाग पर निवास करने वाली।

728. **पर्वतेन्द्रप्रपूजिता** – हिमालय आदि श्रेष्ठ पर्वतों द्वारा प्रकृष्ट रूप से (श्रेष्ठ रूप से अर्थात विधिवत) पूजित। इन्द्र अर्थात श्रेष्ठ।

729. **पार्वतीपतिपूज्या** – शिव के द्वारा पूजनीय।

730. **पार्वतीपतिहर्षदा** – शिव को हर्ष या आनन्द प्रदान करने वाली। अभीष्ट वस्तु को मिलने पर होने वाली खुशी हर्ष है।

731. **पार्वतीपतिबुद्धिस्था** – शिव की बुद्धि में स्थित रहने वाली।

732. **पार्वतीपतिमोहिनी** – शिव को मोहित कर देने वाली। मोहित अर्थात अपनी ओर खिचाव पैदा करने वाली।

733. **पार्वतीयद्विजाराध्या** – पर्वत पर निवास करने वाले ब्राह्मणों द्वारा आराधना करने योग्य। कश्मीर में रहने वाले कौल ब्राह्मण या शाक्त ब्राह्मण पर्वतों वाले ब्राह्मण हुए। पार्वतीय का अर्थ है पर्वत प्रदेशों जैसे कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, तिब्बत आदि में रहने वाले। पार्वती + यत् + द्विजाराध्या। यत् अर्थात जो। पर्वतों वाले जो ब्राह्मण हैं उनके द्वारा आराध्या।

734. **पर्वतस्था** – पर्वत पर निवास करने वाली। देवी पीठ देवी के मन्दिर प्रायः पहाड़ों पर होते हैं जैसे वैष्णों देवी। सुषुम्नानाड़ी में स्थित विभिन्न पर्वत जैसे कैलाश (सहस्रारचक्र), विन्ध्य पर्वत (अनाहतचक्र) में स्थित। पर्वत की तरह ऊँचाई में स्थित अर्थात गुण और शक्ति में दूसरों से उच्च। पर्वत की तरह दृढ़ व्यक्तित्व के रूप में विराजमान। Beyond ordinary consciousness of mind and matter.

735. **प्रतारिणी** – प्रकृष्ट रूप से (अच्छी प्रकार से) भव सागर से पार करा देने वाली। यहाँ पर प्रकृष्ट का अर्थ तुरन्त या पार कराने में असुविधा न हो यह करेंगे। राक्षसों को भटकाने वाली अर्थात ठगने वाली। प्रतारण का अर्थ ठगना भी होता है। फटकारने वाली, गलत रास्ते पर चलने वालों को फटकारने वाली। प्रतारण का एक अर्थ फटकारना भी होता है।

736. **पद्मला** – कमल समूह को लाने वाली अर्थात उपजाने वाली। बहुत से कमलों वाली। पद्मानि लान्ति ग्रहणाति अर्थात कमलों को ग्रहण करने वाली अर्थात बहुत से कमलों वाली। पद्मानि लीयन्ते अत्र अर्थात जहाँ कमल लगे हैं। कमलों के समूह स्वरूपिणी अर्थात मुख भी कमल जैसा है, हाथ भी कमल जैसा है, पैर भी कमल जैसा है आदि (यदि पद्मलाया शब्द है तब भी अर्थ होगा कमल समूह को लाने वाली या बहुत से कमलों वाली। जैसे दा से दाय बनता है उसी प्रकार ला से लाय बना)।

737. **पद्मिनी** – पद्मिनी नायिका के समान सर्वांगसुन्दरी। कमलों से घिरी हुई अर्थात उनसे सुशोभित। बहुत से कमलों वाली अर्थात मुखकमल, चरणकमल, नेत्रकमल आदि बहुत से कमलों से युक्त। कमल सुन्दरता का प्रतीक है। कमल की सुगन्ध से युक्त अर्थात जिनके शरीर से कमल की तरह मनोहर सुगन्ध निकलती है।

भगवान विष्णु का एक नाम पद्मी है जिस पर एक ग्रन्थ ने अग्र लिखित व्याख्या की है – पद्मं हस्तेऽस्येति पद्मी। पद्मश्चतुर्मखोऽस्य विद्यते सुतत्वेनेति। लोकसारं पद्ममस्य नाभाविति। त्रिभिः पदैर्मिमीते विश्वम्। सर्वेरपि पदैर्मीयते। जिनके हाथ में कमल है। कमल सृष्टि का प्रतीक है। पद्म से उत्पन्न होने के कारण ब्रह्मा जी को भी पद्म कह दिया जाता है। ब्रह्मा जी से युक्त क्योंकि ब्रह्मा जी भगवान विष्णु की नाभि में स्थिति कमल से उत्पन्न होने के कारण उनके पुत्र है। पद्म का अर्थ संसार का सार भी है। यह सार जिनकी नाभि में है। तीन चरणों से जिन्होंने सारे संसार को नाप लिया था। सभी शब्दों से उन्हीं का ज्ञान होता है। इसमें तो केवल हजार नाम है। किन्तु संसार में जितने भी शब्द है उन शब्दों से इन्हीं भगवान को जाना जाता है। यहाँ मीयते का अर्थ है अनुमीयते अर्थात् ज्ञायते। देवी के सन्दर्भ में भी कुछ बदलाव के साथ इस प्रकार के अर्थ किये जा सकते हैं।

738. **पद्मा** – कमल से युक्त। लक्ष्मी स्वरूपा। हाथ में कमल धारण किये हैं या कमल पर विराजमान हैं। पद्मम् अस्या अस्ति इति पद्मा अर्थात पद्म वाली अर्थात पद्म धारण करने वाली।

739. **पद्मामालाविभूषिता** – कमलों की माला से विभूषित। पद्म + आ + माला, आ का अर्थ भाव होने के कारण कोई अलग से अर्थ देने की जरूरत नहीं है। कमल रूपी भाव (पदार्थ या अस्तित्वा या सत्ता) की माला से सुशोभित अर्थात कमल की माला से सुशोभित।

740. **पद्माजेड्यपदा** – ब्रह्मा जी द्वारा जिनके चरण की स्तुति की गई। पद्माज+ईड्य+पदा। विष्णु जी की नाभि में स्थित कमल से पैदा होने के कारण ब्रह्मा जी पद्माज हैं। यदि पद्मेज शब्द है तब भी ब्रह्मा जी अर्थ होगा क्योंकि पद्मेज अर्थात कमल में उत्पन्न।

741. **पद्ममालालंकृतमस्तका** – कमलों की माला से जिनका मस्तक सुशोभित है। दक्षिण भारत में महिलाऐं सिर या माथे में फूलों की माला लपेटे हुए दिखती हैं। यहाँ मस्तक से वक्षस्थल अर्थ ले सकते हैं क्योंकि माला वक्षस्थल पर पहनी जाती है मस्तक पर नहीं। संभव है कि सिर पर ऐसी माला पहनी जाती हो जो माथे पर आती हो।

742. **पद्मार्चितपदद्वन्द्वा** – कमलों के द्वारा जिनके दोनों चरणों की अर्चना की जाती है अर्थात उन चरणों में फूल चढ़ाए जाते हैं।

743. **पद्महस्तपयोधिजा** – कमल को हाथ में लिये हुए समुद्र से प्रकट होने वाली। कमल को हाथ में रखने वाली और समुद्र से प्रकट होने वाली अर्थात लक्ष्मी स्वरूपा।

744. **पयोधिपारगन्त्री** – समुद्र को पार कर चली जाने वाली।

745. **पाथोधिपरिकीर्तिता** – समुद्र द्वारा सब प्रकार से जिनका कीर्तन या यश गायन किया गया।

746. **पाथोधिपारगा** – भवसागर के पार पहुँचाने वाली। यहाँ पारगा का गा शब्दाक्षर गमयति से आया जिसका अर्थ है पहुँचाने वाली। पाथोधि का अर्थ है समुद्र। समुद्र के पार तक चली जाने वाली। भवसागर के पार पहुँची हुई। यहाँ पारगा का गा शब्दाक्षर गच्छति से आया।

747. **पूता** – पवित्र स्वरूप वाली। पवित्र अर्थात दोष/पाप/विकार न हो।

748. **पल्वलाम्बुप्रतर्पिता** – छोटे तालाब के जल से विशेष तृप्त की गई। छोटे तालाब के किनारे कोई मन्दिर होगा जिसमें जल चढ़ाकर सन्तुष्ट (प्रसन्न) किया गया होगा। पल्वल का अर्थ है छोटा तालाब। तालाब के जल से सन्तृप्त हो जाने वाली।

749. **पल्वलान्तःपयोमग्ना** – छोटे तालाब के अन्दर के जल में डुबकी लागाए हुए। तालाब जल के अन्दर के जल में निमग्न रहने वाली।

750. **पवमानगति गति** – ऐसी गति स्वरूपा जो वायु की गति की तरह है अर्थात निरन्तर गति स्वरूपा। वायु सदा गति कहलाती है क्योंकि वह सदा बहती रहती है। पवन की गति के समान गति वाली।

751. **पयः पाना** – (स्वच्छ/सुन्दर) जल को पीने वाली।

752. **पयोदात्री** – जल को प्रदान करने वाली।

753. **पानीयपरिकांक्षिणी** – जल की आकांक्षा रखने वाली। पानीय अर्थात जल। जो रक्षा चाहते हैं वे देवी की आकांक्षा करते हैं कि देवी मेरी रक्षा करें। पा रक्षणे धातु से पानीय शब्द बना जिसका अर्थ है रक्षा चाहने वाले। स्वच्छ सुन्दर जल की आकांक्षा करने वाली।

754. **पयोजमालाभरणा** – कमल की माला को जिन्होंने आभरण के रूप में धारण कर रखा है।

755. **मुण्डमालाविभूषणा** – मुण्डमाला है आभूषण जिनका। मुण्ड अर्थात कटा हुआ सिर। मुण्डमाला अर्थात दैत्यों के कटे सिर की माला। मुण्डमाला का अर्थ अक्षमाला अर्थात अक्षरों की माला भी है। अ से लेकर क्ष तक के अक्षरों को अक्ष कहते हैं। ब्रह्माण्डों की माला धारण किये हुए। मुण्ड (कटा हुआ सिर) गोल होता है एवं ब्रह्माण्ड भी गोल होते हैं।

756. **मुण्डिनी** – कस्तूरी मृग की तरह अर्थात जिनसे सुगन्ध फैलती है। मुण्डिनी का एक अर्थ कस्तूरी मृग है। भगवान शिव की सहधर्मिणी अर्थात पत्नी। मुण्डिन् अर्थात मुण्ड (सिर, राक्षसों का कटा सिर) धारण करने वाली शिव। स्त्रीलिंग में मुण्डिनी हुआ। भगवान शिव का एक नाम मुण्डी है। रूद्राध्यायी में आया है कि बिना बालों वाले शिव। मुण्डित केश वाला अर्थात बिना बालों वाला अर्थात शिव। शिव के कई रूप होते हैं, प्रायः बड़ी जटाओं से युक्त दिखाये जाते हैं, किसी रूप में बिना जटाओं वाले भी हैं। भगवान इच्छानुसार कोई भी रूप धारण कर सकता है। मुण्डों को धारण करने वाली। मुण्डी का अर्थ है वह स्त्री जिसके सिर में केश न हों। तत्व ज्ञान या श्रेष्ठ विचार शक्ति से युक्त। मुण्ड का अर्थ है सिर जिससे ही ज्ञान होता है या विचार किया जाता है।

757. **मुण्डहन्त्री** – मुण्ड नामक दैत्य का वध कर देने वाली। बदला लेने की भावना को समाप्त करने वाली। चण्ड क्रोध का एवं मुण्ड बदला का प्रतीक है। अहंकार से प्रेरित अकर्मण्यता का नाश करने वाली। चण्ड अहंकार से प्रेरित क्रियाशीलता एवं मुण्ड अहंकार से प्रेरित अकर्मण्यता का प्रतीक है।

758. **मुण्डिता** – स्वयं मुण्डित हैं अर्थात बिना बाल वाली हैं। मुण्डिनी से इसका भेद है यह कि मुण्डिनी में शिव की अपेक्षा है जबकि मुण्डिता में शिव की अपेक्षा नहीं है। मुण्डिनी का अर्थ हुआ बिना बाल वाले शिव की पत्नी और वहाँ पत्नी का भी बिना बाल वाला होना अनिवार्य नहीं है। मुण्डिता का अर्थ हुआ जो बिना बाल वाली है। सन्यासिनी यह अर्थ भी कर सकते हैं क्योंकि कई सन्यासिनी अपने बाल को मुढ़वा लेती हैं। मुण्डित का अर्थ लोहा भी होता है। लोहा से युक्त अर्थात लोहे से बने तलवार आदि हथियारों से युक्त। लोहे में अंश रूप से विराजमान। लोहे में शक्तिरूप से विराजमान।

759. **मुण्डशोभिता** – जिसका सिर सुन्दर या शोभायुक्त या सजा हुआ है। राक्षसों के कटे हुए सिर की माला धारण करने से सुशोभित।

760. **मणिभूषा** – मणि है आभूषण जिनका।

761. **मणिग्रीवा** – मणि को गर्दन में धारण करने वाली।

762. **मणिमालाविराजिता** – मणियों की माला से सुशोभित होने वाली।

763. **महामोहा** – समस्त प्राणियों या सारे जगत को मोह में डालने वाली। महा का अर्थ है समस्त जगत। मोह में डालने का अर्थ है ममत्व पैदा करना। सन्तान अपने माता पिता को घर से बाहर निकाल भी दे तब भी माता

– पिता अपनी सन्तान के हित के बारे में ही सोचते हैं क्योंकि उनके अन्दर ममत्व है। दुर्गासप्तशती में सुरथ जंगल में भी अपने घर वालों एवं जानवरों के बारे में सोचता रहता था। शरीर को मैं समझना एवं शरीर से जुड़े हुए सम्बन्धियों को तथा पदार्थो को अपना समझना मोह है। महामोह स्वरूप वाली। बड़े से बड़े देवताओं, तपस्वियों को मोहित करने वाली अर्थात उन्हें सांसारिकता में आकृष्ट करने वाली।

764. **महामर्षा** – बहुत या सर्वाधिक क्रोध वाली। महा का अर्थ बहुत अधिक या सर्वाधिक। अमर्ष का अर्थ है क्रोध। दैत्यों के साथ युद्ध करते समय ऐसा क्रोध दिखाती हैं। महा संग्राम में युद्ध करने वाली। अधर्म या बुराइयों के प्रति अतिशय असहिष्णुता वाली। अमर्ष का अर्थ है क्रोध, असहिष्णुता, 33 संचारी भावों में से एक भाव।

765. **महामाया** – मायावियों को भी माया में डालने वाली। बड़े बड़े देवताओं, ऋषियों को भी माया में डालने वाली। माया में डालने का अर्थ है कि उन्हें पदार्थों के वास्तविक स्वरूप का बोध नहीं हो पाता और वे भी सांसारिक क्षणभंगुर पदार्थो एवं प्राणियों के आकर्षण में खिच जाते हैं और उन पर अपना मन लगा बैठते हैं। माया के कारण आत्मा में अनात्मा तथा अनात्मा में आत्मा का बोध होता है। इसका परिणाम सांसारिक क्षणभंगुर पदार्थों में आसक्ति होता है। देवर्षि नारद, ऋषि विश्वामित्र, कुण्डु ऋषि आदि स्त्रियों के आकर्षण में पड़ गये थे।

766. **महाहवा** – महान या बड़े युद्ध करने वाली। आहव का अर्थ है युद्ध। महा आहवा यस्या सा। बड़े बड़े दैत्यों से युद्ध करने वाली। महा संग्राम में युद्ध करने वाली।

767. **मानवी** – मानव के श्रेष्ठ स्वरूप को धारण करने वाली। सम्मान को स्वीकार करने वाली या पसन्द करने वाली। वृ वृणोति धातु में ड प्रत्यय लगाने से व शब्द बनेगा जिसका अर्थ होगा स्वीकार करने वाला या पसन्द करने वाला। स्त्रीलिंग में व का वी हो जायेगा। मान + वी, इस प्रकार सन्धि कर अर्थ निकलेगा।

768. **मानवीपूज्या** – मनुष्य स्त्रियों द्वारा पूजनीय।

769. **मनुवंशविवर्धिनी** – मनु वंश अर्थात मनुष्यों को बढ़ाने वाली।

770. **मठिनी** – मठ वाली अर्थात मठ में निवास करने वाली। मठम् अस्या अस्ति, मठ + इनि प्रत्यय।

771. **मठसंहन्त्री** – मठों में भलीभाँति जाने वाली। हन् धातु का अर्थ केवल मारना नहीं होता बल्कि गति करना भी होता है। मठ का अर्थ है जहाँ रहा जाता है। मठ में सन्यासी, छात्र रहते हैं। मठति निवसति। दुष्टों के निवास को उजाड़ने वाली। दैत्यों के भवनों का विनाश कर देने वाली।

772. **मठसम्पत्तिहारिणी** – दैत्यों के मठों की सम्पत्तियों को हर लेने वाली।

773. **महाक्रोधवती** – सर्वाधिक क्रोध वाली अर्थात क्रोधयुक्ता प्राणियों में जो सर्वाधिक क्रोध वाली हैं। दैत्यों से लड़ने के समय या युद्ध के समय अतिशय क्रोध से युक्त।

774. **मूढा** – भक्तों को देने में विचार नहीं करने वाली। जैसे भगवान शिव औढरदानी है वैसे ही देवी भी है। मूढ अर्थात जिनका दिमाग काम नहीं करता है अर्थात विचार नहीं करने वाले। भक्तों के प्रति बाल भाव रखने वाली। मूढ़ अर्थात अज्ञानी अर्थात बालक अर्थात जो विचार नहीं करता। जैसे भगवान शिव वरदान देते समय कुछ भी विचार नहीं करते कि वे क्या दे रहे हैं, उस वरदान से उनपर भी मुसीबत आ सकती है अतः वे औढरदानी कहलाते हैं। इसी प्रकार देवी भी भक्तों को वरदान देते समय जरा भी विचार नहीं करती कि वे क्या दे रही हैं, कितना दे रही हैं। मूढ़ अर्थात अज्ञानी अर्थात जो विचार न करे। राक्षसों के लिए मूढ़ स्वरूप धारण करने वाली। बालक को मूढ़ या अज्ञानी माना जाता है। मूढ़ का अर्थ स्तब्ध या निश्चेष्ट भी होता है। मूढ़ + आ, आ का अर्थ हे देना, नष्ट करना। भक्तों के चित्त की मूढ़वृत्ति को नष्ट करने वाली। इस वृत्ति (Function) में

तमो गुण के कारण चित्त तन्द्रायुक्त या स्तब्ध रहता है अर्थात योग (समाधि) के लिए यह वृत्ति अनुकूल नहीं है। राक्षसों/दुष्टों को मूढ़वत्ति देने वाली अर्थात उन्हें निश्चेष्ट या स्तब्ध करने वाली।

775. **मूढशत्रुविनाशिनी** – अज्ञानी शत्रु या अहंकार में पड़े शत्रुओं का विनाश करने वाली। दुष्ट शत्रुओं का संहार करने वाली।

776. **पाठीनभोजिनी** – पाठीन नामक मछली का भोजन करने वाली।

777. **पूर्णा** – पूर्ण स्वरूप वाली। इनके पास हर चीज है और प्रत्येक चीज पूर्ण मात्रा में है। जिसमें किसी प्रकार की अपेक्षा या कमी न हो वह भी पूर्ण अर्थात सर्वांगपूर्णा कहलाती है। जिसके विभाग या टुकड़े न हुए हो वह भी पूर्णा कहलाई जाती है। कल्याण (मंगलकारी) गुणों से भरी हुई। पूर्यते आप्यायते स्म कल्याणगुणगुणैः। भक्तों द्वारा अर्पित फलों, भोगों से तृप्त। भक्तार्पितैः फलनैवेद्यादिभिः तर्पिता इति पूर्णा।

778. **पूर्णहारविहारिणी** – जिसमें कोई कमी या दोष न हो, ऐसे हार को लेकर घूमने फिरने वाली। पूरा हार लेकर घूमने फिरने वाली। पूर्ण नामक नाग को हार के रूप में धारण कर विहरण करने वाली अर्थात घूमने फिरने वाली। सुन्दर हार धारण कर विचरण करने वाली।

779. **प्रलयानलतुल्याभा** – प्रलयाग्नि के समान कान्ति (प्रकाश) वाली।

780. **प्रलयानलरूपिणी** – प्रलय के समय सबको दग्ध कर देने वाली अग्नि स्वरूपा।

781. **प्रलयार्णवसंमग्ना** – प्रलय सागर में सम्यक् प्रकार से निमग्न रहने वाली। देवी सर्वव्यापक हैं। सम्यक् का अर्थ है पूर्ण रूप से, अच्छी तरह से या भली भाँति, सही ढंग से।

782. **प्रलयाब्धिविहारिणी** – प्रलय सागर में विचरण करने वाली। तात्पर्य हुआ कि देवी नित्य हैं, उनकी मृत्यु नहीं होती है।

783. **महाप्रलयसम्भूता** – महाप्रलय में भी समीचीन सत्ता वाली अर्थात मृत्यु नहीं होती। भू सत्तायाम् धातु होती है।

784. **महाप्रलयकारिणी** – महाप्रलय की पृष्ठभूमि तैयार करने वाली। कारिणी अर्थात उत्पन्न करने वाली या तैयार करने वाली। महाप्रलय को कर देने वाली। महाप्रलय अर्थात ब्रह्माण्ड या विश्व का लय हो जाना। देवी ही प्रत्येक क्रिया को करने वाली है क्योंकि वह क्रियास्वरूपा हैं। जब सृष्टि पूरी तरह से जल में डूब जाती है तो महाप्रलय होता है।

785. **महाप्रलयसम्प्रीता** – महाप्रलय में अतिशय प्रसन्न। बनाना, बिगाड़ना, नष्ट करना उनका खेल है और इस खेल को करने से उन्हें प्रसन्नता मिलती है।

786. **महाप्रलयसाधिनी/महाप्रलयकारिणी** – अतिप्रलय को करने वाली। यहाँ महा का अर्थ अतिशय लिया अर्थात महाप्रलय का वह अर्थ नहीं लिया जिसके अनुसार पूरा ब्रह्माण्ड समाप्त हो जाता है। ब्रह्माण्ड या पृथवी में अत्यधिक तबाही यह अर्थ लिया गया। साधिनी का अर्थ पूर्णता तक पहुँचाने वाली कर सकते हैं। महाप्रलय को पूर्णता तक पहुँचाने वाली। महाप्रलय को सम्पन्न करने वाली। साधयति इति साधिनी। साध धातु में णिनि कृदन्त प्रत्यय लगाने से साधिनी बनेगा। महाप्रलय की व्यवस्था कर देने वाली। महाप्रलय करने वाली अर्थात पूरे ब्रह्माण्ड को समाप्त कर देने वाली। महाप्रलय कराने वाली। (यदि महाप्रलयसाधनी नाम है तो अर्थ होगा महाप्रलय का साधन भी बनती हैं अर्थात जल, तूफान आदि रूप में साधन बनती हैं। साध् धातु में करण में ल्युट् प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग में साधनी बनेगा अर्थात करण या साधन रूप।)।

787. **महामहाप्रलयेज्या** – अतिशय प्रलय का यज्ञ करने वाली। निष्काम भाव से किया जाने वाला कर्तव्य कर्म यज्ञ है।

788. **महाप्रलयमोदिनी** – महाप्रलयावस्था में प्रसन्न हो जाने वाली। मोदते से मोदिनी शब्द बनाने पर प्रसन्न होने वाली अर्थ आएगा। मोदयति से मोदिनी शब्द बनाने पर प्रसन्न करने वाली अर्थ आएगा। 785वें नाम में सम्प्रीत का अर्थ है प्रसन्न हो चुकी जबकि इस नाम के मोदिनी का अर्थ है प्रसन्न होने वाली।

789. **छेदिनी** – दुष्टों को/पापों को छिन्न भिन्न कर देने वाली।

790. **छिन्नमुण्डा** – जिनका मस्तक कटा हुआ है अर्थात छिन्नमस्ता स्वरूपा।

791. **उग्रा** – जो दुष्टों/राक्षसों के लिए हिंसक या हमलावर हैं। आपने उग्र भीड़ का नाम सुना होगा जिसका अर्थ है कि भीड़ हिंसक, हमलावर हो गई तथा अपने ऊपर नियन्त्रण खो दिया। (भयंकर या डरावना। भयंकर या डरावना घोरा शब्द का भी अर्थ होता है)। निर्दयी या क्रूर जिसे राक्षसों के प्रति कोई दया या करूणा नहीं है। शक्तिशाली या ताकतवर। उग्र शब्द उच् धातु से बना है जिसका अर्थ है एकत्रित होना या जुड़ना। जो शिव से जुड़ी हुई हैं। जो क्रोध से जुड़ी है अर्थात क्रोधित है। ऊर्जा जब एकत्रित होती है तो अधिक ताकतवर होती है। वायु जब इकठ्ठी होती है, संकीर्ण या सम्पीडित होती है तो ज्यादा ताकतवर होती है। उग्र स्वरूप वाली।

792. **छिन्ना** – अहंकार राहित्य का गुण धारण करने वाली अर्थात जिसमें अहंकार नहीं है। छिन्न अर्थात सिर या मस्तक नहीं है। सिर या मस्तक नहीं होने से अहंकार भी नहीं होगा क्योंकि अहंकार सिर या मस्तक में रहता है। अहंकार को नष्ट करने वाली यह तात्पर्य हुआ। जिन साधकों का आज्ञाचक्र भेदन अर्थात कपाल भेदन हुआ है उनसे अभेद है जिनका। मन की चंचलता को छिन्न करने वाली जिससे कुण्डलिनी शक्ति मूलाधार से उठकर सहस्रार तक पहुँच जाती है। छिन्न+आ, आ का अर्थ है देना। इस प्रकार छिन्ना का अर्थ छिन्नता देने वाला या छिन्न करने वाला निकला। जिस मन्त्र के आगे या बीच में या बाद में कुछ अक्षर कम, ज्यादा हों वे छिन्न मन्त्र कहलाते हैं। ऐसे छिन्न मन्त्र की शक्ति स्वरूपा। वामन आप्टे के शब्दकोष में छिन्ना का अर्थ वैश्या दिया गया है सम्भवतः जिनका पातिव्रत्य छिन्न हो जाता है वे छिन्ना कहलाती हैं। देवी के सन्दर्भ में अर्थ यह होगा कि जो भी उन्हें बुलाते है, जो भी उन्हें पुकारते हैं उनके पास चली आती हैं। जिनका कपाल भिदा हुआ है अर्थात सहस्रार चक्र भिदा हुआ है।

793. **छिन्नरूहार्थिनी** – कटी हुई चीज के फिर से पैदा होने की इच्छा रखने वाली अर्थात संसार दोबारा से पैदा हो, ऐसी इच्छा रखने वाली। छिन्न अर्थात कटा हुआ, रूह् का अर्थ है पैदा होना और अर्थिनी का अर्थ है इच्छा रखने वाली। फसल कटती है, दुबारा उग आती है। पेड़ों की छटाई होती है दुबारा उग आते हैं। कहीं कहीं तो पूरा का पूरा पेड़ कट जाता है और वहाँ से नया पेड़ जन्म ले लेता है। उपासकों के जन्म का बन्धन कट जाए ऐसी चाहना वाली अर्थात ऐसी इच्छा रखने वाली। रूह् का अर्थ होता है रोपण अर्थात जन्म। प्रलय समय समस्त संसार को छिन्न भिन्न की इच्छा रखने वाली।

794. **शत्रुसंछेदिनी** – शत्रुओं का विनाश कर देने वाली। छेदन अर्थात काटना या नाश करना।

795. **छन्ना** – जो व्याप्त होकर स्थित हैं। छन्न का अर्थ होता है आच्छादित, निर्जन स्थान, गुप्त स्थान। निर्जन अर्थात अकेली अर्थात असजातीय अर्थात उन जैसा कोई नहीं है। रह अर्थात एकान्त, निर्जन अर्थात अकेली। प्रच्छन्न रूप से विश्व में निवास करने वाली।

796. **क्षोदिनी** – चूर्ण हुए विश्व वाली। क्षोदा अस्या अस्ति इति क्षोदिनी। क्षुद् + णिनि। प्रलय में क्षोद वाली अर्थात चूर्ण वाली। पीसकर चूर्ण बनाया जाता है। प्रलय काल में विश्व चूर चूर हो जाता है तो चूर चूर हुए विश्व वाली। शत्रुओं को क्षुब्ध कर देने वाली, उनका चूरा बना देने वाली।

797. **क्षोदकारिणी** – चूरा बना देने वाली अर्थात विनाश करने वाली। शत्रुओं को नष्ट कर देने वाली, चूरा बना देने वाली। क्षोद का अर्थ है चूर्ण या चूरा।

798. **लक्षिणी** – सुन्दर लक्षणों से युक्त। किसी उद्देश्य को लेकर चलने वाली। नी अर्थात ले जाना। लक्ष अर्थात लक्ष्य अर्थात उद्देश्य। लाखों जिसके हैं। लाखों हाथ पैर नेत्रों वाली अर्थात अनन्त रूपों वाली। लाखों हाथ, पैर, नेत्र वाली अर्थात अनन्त स्वरूप वाली। लक्ष्य को सिद्ध करने वाली या रक्षा करने वाली।

799. **लक्षसम्पूज्या** – लाखों लोगों द्वारा विधिवत या भली भाँति पूजनीय।

800. **लक्षिता** – शुद्ध हृदय वाले उपासकों द्वारा देखी गई। बतलाई गई/ निर्दिष्ट (वेदों, उपनिषदों और महावाक्यों में)। लक्षणा शक्ति द्वारा समझ में आने वाली।

801. **लक्षणान्विता** – शुभ लक्षणों से युक्त। सामुद्रिक शास्त्र में जो मांगलिक चिन्ह बताये गये हैं उनसे युक्त।

802. **लक्षशस्त्रसमायुक्ता** – लाखों शस्त्रों से युक्त। पुरुषसूक्त में आया है कि सहस्रशीर्षा, सहस्राक्षा आदि अर्थात हर व्यक्ति या प्राणी देवी ही है। अतः लाखों हथियार वाली कहने में किसी प्रकार का आश्चर्य नहीं करना चाहिए।

803. **लक्षबाणप्रमोचिनी** – लाखों बाणों को छोड़ने वाली या लाखों बाणों से प्रहार करने वाली।

804. **लक्षपूजापरा** – लाखों प्रकार की पूजाओं में संलग्न रहने वाली। पूजा व्यक्ति करते हैं किन्तु न्यास प्रक्रिया के कारण व्यक्ति का देवता से अभेद हो जाता है जिसके कारण व्यक्ति ने पूजा किया का अर्थ देवी ने पूजा की ऐसा निकलता है। उपासक की पूजा ग्रहण करना भी पूजा में संलग्न होना है। निष्काम भाव से किये जाने वाले कर्म पूजा कहलाते हैं।

805. **अलक्ष्या** – अलक्ष्य है अर्थात इन चर्म चक्षुओं से नहीं दिखाई देती है। दुष्टात्माओं को नहीं दिखाई देती है।

806. **लक्षकोदण्डखण्डिनी** – लाखों धनुषों को खण्डित कर देने वाली। खण्डयति से खण्डिनी शब्द बनाने पर खण्डित करने वाली अर्थ होगा।

807. **लक्षकोदण्डसंयुक्ता** – लाखों धनुषों में शक्ति के रूप में जुड़ी हुई हैं। लाखों अर्थात अनन्त धनुष जिससे अच्छी प्रकार से जुड़े हैं। लाखों धनुषों से युक्त।

808. **लक्षकोदण्डधारिणी** – शत्रुनाश के लिए लाखों धनुष को धारण करने वाली अर्थात हाथ में धनुष लिये हैं। लाखों धनुषों को धारण करने वाली।

809. **लक्षलीलालया** – अनन्त लीलाओं का घर है अर्थात अनन्त लीलाऐं उनके अन्दर हैं अर्थात अनन्त लीलाओं को करने वाली हैं। लाखों लीलाओं से युक्त अर्थात उन्हें करने वाली। संस्कृत में कई जगहों पर हजार, लाख, कोटि का अर्थ अनन्त भी किया गया है।

810. **लभ्या** – भक्तों या सज्जनों द्वारा प्राप्त करने योग्य।

811. **लाक्षागारनिवासिनी** – लाक्षागृह में निवास करने वाली।

812. **लक्षलोभपरा** – लाखों (अर्थात अनन्त) लोभ से युक्त अर्थात अनन्त लोभ के स्वरूप वाली। यहाँ परा का अर्थ संलग्न है जैसे तत्पर, अध्ययनपर। अनन्त लोभों में लगी हुई अर्थात अनन्त प्राणियों में लोभ नामक गुण के रूप में स्थित। कुछ लोभ अच्छे भी माने जाते हैं जैसे विद्या का लोभ। प्रत्येक चीज अर्थात प्रत्येक गुण शक्ति का रूपान्तरण है तो लोभ भी शक्ति का रूपान्तरण हैं और शक्ति ही देवी हैं। अस्तित्व में कोई भी चीज किसी न किसी काम की अवश्य होती है। लोभ की कोई सीमा नहीं यह अर्थ भी कर सकते हैं। लाख के लोभ से युक्त।

813. **लोला** – चंचल स्वरूपा। जो एक स्थान पर स्थिर न रहे जैसे लक्ष्मी जी। प्रकृति के एक एक कण में प्रतिपल स्पन्दन हो रहा है और यह स्पन्दन शक्ति ही कर रही हैं।

814. **लक्षभक्तप्रपूजिता** – लाखों भक्तों द्वारा विधिवत पूजित।

815. **लोकिनी** – लोकों वाली अर्थात सभी लोक जिसके हैं अर्थात लोकों की स्वामिनी। लोकाः अस्या सन्ति। लोकों से युक्त।

816. **लोकसम्पूज्या** – लोक के द्वारा सम्पूजनीय। लोक का अर्थ त्रिलोक, लोग होता है।

817. **लोकरक्षणकारिणी** – लोकों की रक्षा करने वाली।

818. **लोकवन्दितपादाब्जा** – लोक या लोगों के द्वारा जिनके चरण कमल वन्दित हैं। लोक द्वारा अर्थात लोक में रहने वाले लोगों द्वारा, ऐसा अर्थ निकलता है। लक्षणा शक्ति से दिल्ली ने कहा का अर्थ है दिल्ली में रहने वाले ने कहा।

819. **लोकमोहनकारिणी** – सम्पूर्ण लोकों को मोहित कर देने वाली अर्थात प्राणियों और पदार्थों के प्रति ममत्वभाव जाग्रत करने वाली। शरीर को मै समझना तथा शरीर से सम्बन्ध रखने वाले प्राणियों एवं पदार्थों में ममत्व होना मोह है।

820. **ललिता** – कोमलता युक्त सुन्दरता से युक्त। आनन्द देने वाली सुन्दरता से युक्त। ऐसी सुन्दरी जिनके अंग बहुत कोमल होते हैं और जो क्रीड़ा प्रिय होती हैं।

821. **ललितालीना** – देवी ललिता में सम्पूर्ण रूप से लीन रहने वाली। आलीना में आ का अर्थ सम्पूर्ण रूप से है। मन बुद्धि वहीं लगी रहती है।

822. **लोकसंहारकारिणी** – प्रलय काल में संसार का संहार करने वाली।

823. **लोकलीलाकरी** – लोकों में लीला करने वाली या लोक लीलाओं को करने वाली। कर्म और लीला में अन्तर होता है। कर्म का पाप पुण्य होता है क्योंकि वह कर्तृत्व भाव से मन में बैठे संस्कारों से प्रेरित होकर किया जाता है। लीला का उद्देश्य जगत का भला करना, जगत को सिखाना ही होता है और वह अपने शुभ संकल्पों से ही प्रेरित होता है, अतः लीला में कोई पाप पुण्य नहीं लगते। लीला अर्थात बेहद आसानी से, बायें हाथ के खेल की तरह करना। स्वयं में पूर्ण के द्वारा ही लीला हो सकती है। दूसरे का भला हो या दूसरे को कुछ प्रेरणा दी जाए या कुछ शिक्षा दी जाए, इस हेतु सक्षम व्यक्ति द्वारा किया गया कृत्य जिसमें जरा भी परिश्रम न हो एवं कर्तृत्व भाव न हो, ऐसा कृत्य लीला कहलाती है। भगवान ही लीला कर सकता है और लीला सुनकर या देखकर प्रसन्नता या आनन्द की अनुभूति भी होती है। क्रीड़ा में भले ही मनोरंजन हो पर कुछ परिश्रम होता है। लीला में घटना घटित होने के कारण को ईश्वर के अलावा कोई नहीं जानता अर्थात ऐसा कैसे हो गया, इसका रहस्य अज्ञात रहता है। क्रीड़ा में खेल के नियम सभी को पता होते हैं और इस कारण घटित घटनाओं के पीछे का कारण भी लोगों को पता रहता है। यह लीला और क्रीड़ा में अन्तर है।

824. **लोक्या** – दर्शनीया अर्थात इनका दर्शन करना चाहिए।

825. **लोकसम्भवकारिणी** – लोकों की उत्पत्ति को करने वाली। लोक की उत्पत्ति का कारण। लोक का अर्थ तीन लोक या लोग होता है।

826. **भूतशुद्धिकरी** – पंचभूतों की शुद्धि करने वाली। मनुष्य का शरीर पंचभूतों से मिलकर बना है। शरीर में इन तत्वों में अशुद्धि आने पर उसे दूर कर देती हैं।

827. **भूतरक्षिणी** – भूत अर्थात प्राणियों की रक्षा करने वाली।

828. **भूततोषिणी** – प्राणियों को प्रसन्न करने वाली। प्राणियों को सन्तुष्ट करने वाली। विभिन्न जरूरी पदार्थों और अभीष्ट मनोकामनाओं को पूरा कर प्राणियों को सन्तुष्ट करने वाली। सन्तुष्ट का अर्थ है प्रसन्न, तृप्त (अब और नहीं चाहिए यह भाव)। अन्य के प्रति उदासीन भाव अर्थात अब और कुछ पाने या जानने के प्रति पूर्ण विरक्ति।

829. **भूतवेतालसंयुक्ता** – भूत और वेतालों से युक्त। वेताल वह योनि है जिसका शव पर अधिकार होता है। कही पर लिखा है विकृतियों को अपनी ताल में नचाने वाला वेताल है। वि अर्थात अनिश्चित, तु अर्थात गति करना अर्थात पकड़ना। जो मनुष्य, पशु, पक्षी आदि किसको पकड़ ले निश्चित नहीं है वह वेताल है। कहीं पर यह भी लिखा है कि वेताल छोटे आकार के भद्दे प्राणी हैं जो दूसरों को नुकसान पहुँचाते हैं। कहीं पर यह भी पढ़ने को मिला है कि जिन्हें ताल (संगीत) में रूचि नहीं है अर्थात उससे दूर हैं वे वेताल हैं।

830. **भूतसेनासमावृता** – भूतों की सेना से घिरी हुई। भूत अर्थात भूत प्रेत। शिवजी की सेना में अनेक भूतप्रेत होते हैं। भूत से तात्पर्य समस्त प्राणियों से है अर्थात देवता और मनुष्य भी इसमें आते हैं। देवों की सेना देवी के साथ चलती है। मनुष्य भी उनकी सेवा करते हैं। चतुर्विध प्राणी, पंचमहाभूत सभी उनकी सेवा करते हैं। प्राणियों की सेना से युक्त।

831. **भूतप्रेतपिशाचादिस्वामिनी** – भूत, प्रेत, पिशाच आदि की स्वामिनी। भूत, प्रेत, पिशाच भगवान शिव के अनुचर हैं। एक अन्य व्याख्या के अनुसार भूत प्रेत मृतात्मा हैं पर भूत अच्छा भी हो सकता है अर्थात लोगों की भलाई भी कर सकता है। प्रेत नुकसान ही करता है। पिशाच वह है जो कच्चा मांस खाता है। निम्नकोटि के और वीभत्स कर्म करने वाली एक हीन देवयोनि पिशाच है। किसी मृत व्यक्ति की आत्मा का वह रूप जो मोक्ष न मिलने पर कष्टदायक और अमांगलिक कार्य करता है पिशाच है। पिशाच उन जीवों को माना गया है जो इन्सानों का खून पीकर और उनका मांस खाकर जीवित रहते हैं। पश्चिमी जगत में इन्हें vampire कहते हैं। पिश (कच्चा मांस) + आ+ चम् (खाना) से पिशाच शब्द बना है जिसका शाब्दिक अर्थ है मांस खाने वाला। प्रेत वह व्यक्ति है जो संसार छोड़कर चला गया है। पुराण के अनुसार वह सूक्ष्म शरीर जो आत्मा भौतिक शरीर छोड़ने पर धारण करती है प्रेत कहलाता है। पापकर्म करने वाला प्राणी मरने के बाद एक विशेष योनि में भयानक रूप धारण करके घृणित कार्य करता है और भटकता रहता है, वह प्रेत है।

832. **भूतपूजिता** – भूतों / प्राणियों के द्वारा पूजनीय। भूत का अर्थ भूत प्रेत भी होता है और प्राणी भी होता है। शिव के भूत नामक अनुचर होते हैं।

833. **डाकिनी** – डाकिनी स्वरूपा। दुष्टों को भय देने के लिए गति करने वाली या चेष्टा करने वाली। ड का अर्थ है भय और अकति का अर्थ है गति करना, चेष्टा करना। डाय अकति इति डाकिनी। डाकानाम् समूहः इति डाकिनी। डाकों (काली के अनुचर) के समूह स्वरूपा। काली जी की सेवा करने वाली एक विशेष देवयोनि डाक है। डाक का अर्थ है Imp of Kali.

834. **शाकिनी** – शाक अर्थात बल से युक्त। दुष्टों के खून को चूसने वाली अर्थात उनका अन्त करने वाली या पतला करने वाली। शो अन्तकरणे धातु होती है जिससे शाकिनी बन सकता है।

835. **डेया** – आकाश में गति करने योग्य या समर्थ। डीङ् विहायसौ गतौ धातु होती है। धर्म की शोभा स्वरूपा। एकाक्षरी कोष में डे का अर्थ धर्म और या का अर्थ शोभा बताया गया है।

836. **डिण्डिमारावकारिणी** – डिम् डिम् इस प्रकार के चतुर्दिक शब्द करने वाली। नृत्य के दौरान ऐसे शब्द

होते होंगे। रू का अर्थ है शब्द करना जिससे राव बना। आराव अर्थात चारों ओर होने वाले शब्द अर्थात दूर दूर तक फैलने वाले शब्द। आ अर्थात समन्तात् अर्थात चारों ओर से। चारों ओर दुन्दुभि की ध्वनि करने वाली।

837. **डमरूवाद्यसन्तुष्टा** – डमरू के बजाए जाने से प्रसन्न हो जाने वाली।

838. **डमरूवाद्यकारिणी** – डमरू वाद्य को बजाने वाली। वाद्य अनाहतनाद के प्रतीक होते हैं। अनाहतनाद को करने वाली अर्थात शब्द–ब्रह्म स्वरूपा।

839. **हुंकारकारिणी** – हुंकार करने वाली। क्रोध के समय हुं बीजमन्त्र का उच्चारण किया जाता है। भगवान शिव ने इसी बीज मन्त्र का उच्चारण करते हुए कामदेव को भस्म किया था। दुर्गासप्सशती में भी आया है कि देवी के द्वारा इस बीज मन्त्र के उच्चारण मात्र से हजारों असुर मारे गये थे।

840. **होत्री** – हवन करने वाली।

841. **हाविनी** – शिव के प्रति श्रृंगार भाव रखने वाली। हाव का अर्थ है श्रृंगार चेष्टा या अदा। अदा अर्थात अंगों को विशेष प्रकार से कर अपने प्रिय को बुलाने, अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास करने की चेष्टा। देवताओं और भक्तों को अपने पास बुलाने वाली। पूजन के लिए जिनका आवाहन होता है या बुलाई जाती हैं। विभिन्न मुद्राओं में खड़े होकर फोटो खिंचवाना भी एक प्रकार की अदा है। नेत्र के भौं को तिरछा करना, चूड़ी खनखनाना, नृत्य आदि एक प्रकार की अदा है।

842. **हवनार्थिनी** – हवन की कामना रखने वाली। वह इच्छा रखती हैं कि उपासक उनके लिए हवन करें।

843. **हासिनी** – सुन्दर हास्य वाली।

844. **ह्रासिनी** – संसार का ह्रास करने वाली अर्थात संहार या नष्ट करने वाली। अपने भक्तों के अवगुणों को नष्ट करने वाली अर्थात जिन्होंने अपने अवगुणों को नष्ट कर दिया है।

845. **हास्यहर्षिणी** – हास्य से प्रसन्न/आनन्दित होने वाली। हर्षिणी का अर्थ हर्षति से हर्षित होने वाली और हर्षयति से हर्षिणी बनाने पर हर्षित करने वाली होगा।

846. **हठवादिनी** – हठवादिता से युक्त। अटल संकल्प और दृढ़ प्रतिज्ञा वाली।

847. **अट्टाट्टहासिनी** – बड़ी तेजी से अट्टहास करने वाली। अट्टहास अर्थात जोर की हँसी या खिलखिलाहट।

848. **टीका** – जिसके द्वारा वास्तविक अर्थों की व्याख्या की जाती है। जिनके विषय में विशेष व्याख्या या टीका की जाती है। टीका किसी चीज की व्याख्या होती है।

849. **टीकानिर्माणकारिणी** – टीका का निर्माण करने वाली अर्थात क्लिष्ट ग्रन्थों का भाष्य करने वाली।

850. **टङ्किनी** – विश्व को उट्टंकित करने वाली अर्थात उकेरने वाली अर्थात रचना करने वाली। भाग्य रेखाओं को उकेरने वाली अर्थात हाथ में भाग्य रेखाओं का निर्माण करने वाली अर्थात किस्मत बनाने वाली। कोई भी दो प्राणी मिलते नहीं हैं उनमें कुछ न कुछ भेद अवश्य होता है और यही पार्थक्य उकेरना है। टंकन का अर्थ है उल्लेख करना, किसी का रेखा चित्र बनाना या उकेरना। शत्रुओं को टंकित कर देने वाली या कील देने वाली। टंक अर्थात कुल्हाड़ी। इस प्रकार टंकिनी का अर्थ हुआ कुल्हाड़ी लिये हुए।

851. **टंकिता** – विशेष उल्लेखनीय कार्यों के कारण श्रेष्ठ रूप में लिखी गई।

852. **टंका** – उपासक के मन को अपने स्नेह से बांधने वाली। टंकते बध्नाति मनः स्नेहेन। टंकार ध्वनि करने वाली।

853. **टंकारमात्रसुवर्णदा** – टंकार शब्द (टम् ऐसा शब्द) से जिसकी शुद्धि, अशुद्धि का ज्ञान होता है, ऐसे स्वर्ण

को देने वाली। स्वर्ण तो यहाँ उपलक्षण है। यह चाँदी और समस्त धनों का प्रतीक है। यहाँ मात्र का अर्थ ज्ञान या अनुमान है। मा धातु का अर्थ ज्ञान होना होता है। उसमें त्रन् प्रत्यय लगाने से मात्र शब्द बना जिसका अर्थ है अनुमान अर्थात ज्ञान। टंक मात्रा में सुवर्ण प्रदान करने वाली।

854. **टंकारिणी** – टंकार वाली अर्थात धनुष के द्वारा टंकार करने वाली। पुल्लिंग में टंकारी और स्त्रीलिंग में टंकारिणी होगा। टंकारम् अस्या अस्ति इति टंकारिणी (स्त्रीलिंग में) टंकारम करोति इति टंकारिणी। टंकार ध्वनि करने वाली। टम् यह शब्द करने वाली। टम् यह शब्द करने वाली लक्ष्मी स्वरूपा। आपने सुना होगा कि टक है तो टकाटक, यह धन के लिए प्रयोग होता था। चूँकि पहले सिक्के के रूप में धन से आवाज होती थी अतः धन बजता था।

855. **टकाराढ्या** – ट वर्ण से आढ्य अर्थात सम्पन्न। एकाक्षरीकोष में ट का एक अर्थ शिव भी दिया गया है। शिव से सम्पन्न या सुशोभित।

856. **शत्रुत्रोटनकारिणी** – शत्रुओं का त्रोटन करने वाली अर्थात तोड़ने या नष्ट कर देने वाली।

857. **त्रुटिता** – आघातयुक्त अर्थात युद्ध में असुरों द्वारा कभी कभी आघात लगा हो। त्रुटित का एक अर्थ जिस पर आघात लगा हो। भक्तों पर विपत्ति आने पर या अधर्म का बोलबाला होने पर आहत होने वाली। त्रुटित का एक अर्थ आहत होता है। छोटी इलाइची का विस्तार करने वाली अर्थात अधिक मात्रा में पैदा करने वाली। त्रुटिम् तनोति इति त्रुटिता। त्रुटि का अर्थ है छोटी इलाइची और तनोति का अर्थ है विस्तार करना। समय का भाव स्वरूपा। समय का समूह स्वरूपा अर्थात अखण्ड काल स्वरूपा। त्रुटि में तल् प्रत्यय लगाकर त्रुटिता शब्द बना, तल् प्रत्यय भाव में एवं समूह में प्रयोग होता है जैसे जनता का अर्थ है जनो का समूह। त्रुटि समय का एक अत्यन्त सूक्ष्म मान है जो किसी के मत में दो क्षणों के बराबर एवं किसी के मत में चार क्षणों के बराबर होता है। त्रुटिम् तनोति इति त्रुटिता अर्थात अल्प समय का विस्तार करने वाली अर्थात बड़ा समय बनाने वाली। त्रुटित अर्थात टूट गये हैं विकार जिसके। विकारों से रहित।

858. **त्रुटिरूपा** – समय स्वरूपिणी। क्षण स्वरूपा। समय की छोटी इकाई क्षण स्वरूपा। त्रुटि समय का एक अत्यन्त सूक्ष्म मान है जो किसी के मत में दो क्षणों के बराबर एवं किसी के मत में चार क्षणों के बराबर होता है। कार्तिकेय की माता के स्वरूप में। कार्तिकेय की एक माता का नाम त्रुटि था।

859. **त्रुटिसन्देहकारिणी** – दोषों के प्रति सन्देह करने वाली अर्थात दोषों को सन्देह की दृष्टि से देखने वाली। कही कोई कमी तो नहीं रह गई ऐसा सन्देह लोगों के अन्दर पैदा करने वाली। कोई व्यक्ति कितना भी कुशल हो, जब वह कोई कृति बनाता है तो उसके अन्दर यह सन्देह पैदा होता है कि कहीं कोई कमी तो नहीं रह गई। वह दूसरों से प्रमाणिकता चाहता है। ऐसा सन्देह पैदा करने वाली शक्ति त्रुटिसन्देहकारिणी है। दोषों में सन्देह पैदा करने वाली अर्थात दोषों को सन्देह के रूप में दिखाने वाली। त्रुटियों पर सन्देह करने वाली। भक्तो की त्रुटियों पर सन्देह का लाभ देने वाली अर्थात उसे त्रुटियों में न गिनने वाली। त्रुटि अर्थात कमी, भूल, अभाव, वचन भंग। सन्देह अर्थात निश्चय का अभाव।

860. **तर्षिणी** – प्राणियों में तृष्णा पैदा करने वाली। प्रत्येक चीज का कोई न कोई उपयोग अवश्य है। तृष्णा न हो तो व्यक्ति काम नहीं करेगा। काम, क्रोध, लोभ, मोह को विकार माना जाता है पर इनके भी कुछ न कुछ उपयोग या अच्छे गुण अवश्य हैं। काम न हो तो सन्तान नहीं होगी। क्रोध न हो तो शासन अच्छी प्रकार नहीं चल सकता। लोभ न हो तो विद्या को और अधिक पाने का प्रयास नहीं किया जाएगा। मोह न हो तो माता अपने बच्चे की अच्छी प्रकार परवरिश नहीं करेगी। दुष्ट दैत्यों को तरसाने वाली अर्थात उनकी इच्छा को पूरी न करने वाली।

861. **तृट्परिक्लान्ता** – प्यास से अत्यन्त खिन्न अर्थात अत्यन्त प्यासी। भक्ति की अत्यन्त प्यासी। दैत्यों के रक्त की प्यासी। तृष्णा से शिथिल हुई।

862. **क्षुत्क्षामा** – क्षुधा के कारण क्षीण (पतली या दुर्बल) हो जाने वाली। धूमावती के ध्यान मन्त्र में उन्हें भूख प्यास से व्याकुल दिखाया गया है अन्यथा भी देवी कोई भी रूप धारण कर लेती हैं।

863. **क्षुत्परिप्लुता** – भूख से व्याप्त है या भरी हुई है अर्थात अत्यन्त भूखी है। व्याकरण में दीर्घ से बढ़कर प्लुत होता है। जो बड़ा से भी बड़ा है वह प्लुत है। भूख से अत्यन्त बढ़ी हुई। प्लुत अर्थात दीर्घ से बड़ा अर्थात अत्यन्त बड़ा। भूख से व्याकुल। धूमावती के ध्यान में और चित्र में ऐसा दिखाया गया है कि वह अत्यन्त भूखी हैं।

864. **अक्षिणी** – श्रेष्ठ नेत्रों वाली। अक्षिणी का शाब्दिक अर्थ है नेत्रों वाली, तात्पर्य में अर्थ होगा श्रेष्ठ नेत्रों वाली या सुन्दर नेत्रों वाली, क्योंकि नेत्र तो सभी के होते हैं।

865. **तक्षिणी** – अपने भक्त को तरास कर अच्छा स्वरूप देने वाली। देवी अपने भक्त को व्रत, तपस्या आदि में प्रेरित करती है।

866. **भिक्षाप्रार्थिनी** – भिक्षाप्रार्थी शिव की पत्नी स्वरूपा। आपने माँ अन्नपूर्णा के समक्ष शिव को भिक्षा माँगते हुए चित्र में देखा होगा। भिक्षा की इच्छा करने वाली अर्थात योगिनी स्वरूपा। योगिनी या साधक भिक्षा के द्वारा अपना जीवन निर्वाह करते हैं। भगवान शिव को भिक्षुक कहा जाता है। भिक्षुक अर्थात भिक्षाप्रार्थी।

867. **शत्रुभक्षिणी** – शत्रुओं का संहार करने वाली।

868. **काङ्क्षिणी** – इच्छा रखने वाली अर्थात चाहने वाली। लोक कल्याण की इच्छा रखने वाली या भक्तों से अपनी पूजा की इच्छा रखने वाली।

869. **कुट्टनी** – घर घर में जाने वाली अर्थात रहने वाली शक्ति स्वरूपा। कुट्म कुटम् अटनम इति कुट्टनम। कुट्टनम् अस्या अस्ति इति कुट्टनी। जो भी बुलाता है अर्थात पुकारता है वहाँ चली जाती हैं। कुट्टनी का अर्थ दूती भी होता है अर्थात जो यहाँ की वहाँ करे, सन्देश पहुँचाए, एक दूसरे से मिलाए। कुट्टनी अर्थात दूती स्वरूपा। शिव तक भक्तों की इच्छाओं को पहुँचाने वाली। शिव के सन्देश को भक्तों तक पहुँचाने वाली। गुरुओं के माध्यम से या शास्त्र के माध्यम से लोगों को बताने वाली कि शिव क्या चाहते हैं, शिव तक कैसे पहुँचा जाए।

870. **क्रूरा** – दैत्यों के लिए क्रूर। दुष्टों के प्रति निष्ठुर, निर्दयी अर्थात दया नहीं करती हैं, सजा देकर ही दम लेती हैं।

871. **कुट्टनीवेश्मवासिनी** – वैश्याओं के भवन में निवास करने वाली। दुर्गा पूजा के समय दुर्गा जी की मूर्ति बनाने में वैश्याओं के घर की मिट्टी भी महत्वपूर्ण मानी गई है।

872. **कुट्टनीकोटिसम्पूज्या** – करोड़ों कुट्टनियों के द्वारा विधिवत पूजनीय। करोड़ों कुट्टनियों के समान सम्पूजनीय। शब्दकोषों में कुट्टनी का अर्थ इधर की उधर लगाने वाली अर्थात मनमुटाव करने के लिए एक आदमी की बात दूसरे आदमी से कहने वाली बताया गया है। कुट्टनी का अर्थ है कुल कुल में अर्थात घर घर में जाने वाली अर्थात रहने वाली शक्ति। कुट्टनियों के कुलों द्वारा संरक्षा करने योग्य।

873. **कुट्टनीकुलमार्गिणी** – कौलमार्गियों के कुलों में अटन (गमन) करने वाली अर्थात गति करने वाली अर्थात जाने वाली। कुल मार्गियों की पद्धति से पूजा चाहती हैं। कुट्टनियों के कुल को खोजने वाली।

874. **कुट्टनीकुलसंरक्ष्या** – ऐसी कुट्टनी जो कौलमार्गियों द्वारा संरक्षण करने योग्य है। कौलमार्गी विधिविधान से उपासना करके संरक्षित करते हैं। कुट्टनी का अर्थ है कुल कुल में अर्थात घर घर में जाने वाली अर्थात रहने वाली शक्ति। कुट्टनियों के कुलों द्वारा संरक्षा करने योग्य।

875. **कुट्टनीकुलरक्षिणी** – कुट्टनियों के कुलों की रक्षा करने वाली।

876. **कालापाशावृता** – काल को प्राप्त कराने वाली आशा से घिरी हुई अर्थात लोगों को काल तक पहुँचा देती है अर्थात समय आने पर मृत्यु कर देती है। कालः आप्यते यया सा कालापा। कालपाशावृता होने पर अर्थ होगा जिसके कालपाश में अर्थात यमपाश में सभी प्राणी या सारा जगत आवृत्त है अर्थात घिरा हुआ है। यमपाश से घिरी हुई यह अर्थ ठीक नहीं है। कालपाश से आवृत्त अर्थात ढ़की हुई या धारण करने वाली।

877. **कन्या** – दीप्तिमती। कन् दीप्तौ धातु होती है। कन्या स्वरूपिणी। पाराशर ऋषि के अनुसार दस वर्ष की लड़की का नाम कन्या है। सामान्यतः कुँवारी या अविवाहित लड़की को कन्या कहते हैं। कन्या को देवी का रूप माना जाता है इसी कारण नवरात्रियों में इनकी पूजा की जाती है। पंचकन्या (अहल्या, द्रौपदी, कुन्ती, तारा, मन्दोदरी) स्वरूपा। कन्याकुमारी पवित्र तीर्थस्वरूपा। कन्या का अर्थ घीक्वार, वाराहीकन्द नामक वनौषधि भी है। इस प्रकार कन्या का अर्थ हुआ घीक्वार/वाराहीकन्द की तरह रोगनिवारिका अर्थात कष्टों को दूर करने वाली। घर में चमक या उजाला या रौनक लाने वाली। कनि दीप्तौ धातु होती है। कामयते सर्वान् इति कन्या अर्थात जो सबको चाहती है अर्थात घर के सभी लोगों को चाहती है। देवी के सन्दर्भ में अर्थ होगा जो सभी को चाहती है क्योंकि पूरा विश्व उनका घर है।

878. **कुमारीपूजनप्रिया** – कुमारियों का पूजन है प्रिय जिन्हें। सामान्यतः अविवाहित लड़की जो रजस्वला नहीं हुई हो, उसे कुमारी कहते हैं। कहीं पर 10 – 12 वर्ष की लड़की को कुमारी कहा गया है।

879. **कौमुदी** – चाँदनी की तरह चमकने वाली, प्रसन्नता देने वाली। कौ का अर्थ है पृथ्वी पर। पृथ्वी पर प्रसन्न होने वाली। पृथ्वी पर प्रसन्नता देने वाली। कभी कभी ण्यन्त धातु अण्यन्त का एवं अण्यन्त धातु ण्यन्त का अर्थ देती है। कुमद से सम्बन्धित अर्थात् कुमुद जैसी सुन्दर एवं सुंगध से युक्त। जिन्हें पूजा में कुमुद को पुष्प चढ़ाया जाता है। कुमुद में अण् प्रत्यय लगाने से कौमुद शब्द बनेगा जो स्त्रीलिंग में कौमुदी हो जायेगा।

880. **कौमुदीहृष्टा** – चाँदनी को देखकर आनन्दित होने वाली।

881. **करूणादृष्टिसंयुता** – करूणामयी दृष्टि से पूर्णरूपेण युक्त।

882. **कौतुकाचारनिपुणा** – हँसी परिहास के क्रियाकलाप में दक्ष। कौतुकपूर्ण व्यवहारों में दक्ष। कौतुकाचार का अर्थ है हँसी परिहास के क्रियाकलाप, हँसी मजाक या विनोद के कार्य, खेल तमाशा रूपी कार्य, उत्सुकता या आश्चर्य पैदा करने वाले कार्य।

883. **कौतुकाचारगारवासिनी** – जहाँ मनोरंजन होता है, उस भवन में निवास करने वाली। रंगमंच में मनोरंजन या हंसी मजाक होता है। हँसी मजाक के लिए बनाये स्थान पर निवास करने वाली। कौतुकाचार है हँसी मजाक की क्रिया कलाप। जहाँ हँसी परिहास होता है वह स्थान कौतुकाचारागार होता है। जैसे रंगमंच, विवाह में दुल्हन की सहेलियों द्वारा जहाँ पर दूल्हे के साथ हँसी मजाक की जाती है। कौतुकपूर्ण भवनों में निवास करने वाली।

884. **काकपक्षधरा** – कौए के पंख को धारण करने वाली।

885. **काकरक्षिणी** – कौओं की रक्षा करने वाली।

886. **काकसंवृता** – कौओं द्वारा सम्यक्रूपेण अर्थात पूर्णरूपेण या अच्छी तरह घिरी हुई।

887. **काकाङ्करथसंस्थाना** – कौऐ का चिन्ह जिस पर बना है ऐसे रथ में सम्यक् रूप से स्थित अर्थात ऐसा रथ है रहने का स्थान। यह नाम और अगला नाम लगभग समान है। अन्तर यह है कि संस्थान का अर्थ रहने का स्थान कर सकते हैं अर्थात इस समय बैठी हुई है या नहीं यह नहीं कह सकते हैं, जबकि आस्थिता का अर्थ है इस समय बैठी हुई हैं। रथ वह वाहन है जिसके चलने पर सवार व्यक्ति को रमणीयता अनुभव होती है अर्थात

आनन्द अनुभव होता है। रम् धातु से रथ बन सकता है। स्यन्दन का अर्थ बाहर निकलना या टपकना। स्यन्दन ऐसा वाहन है जिसके चलने पर आवाज बाहर निकलती है। कौऐ के द्वारा चलाये रथ के मध्य में विद्यमान। अंक का अर्थ गोद है पर यहाँ मध्य अर्थ लेंगे।

888. **काकाङ्कस्यन्दनास्थिता** – कौऐ का चिन्ह जिस पर बना है ऐसे रथ में बैठी हुई अर्थात इस समय बैठी हुई है। कौऐ का चिन्ह जिस शब्द करने वाले वाहन में बना है उस वाहन पर बैठी हुई। स्यन्दते नादाः यस्मात् अर्थात जिससे शब्द या आवाज निकलती है चलने पर। कौए के द्वारा संचालित रथ के मध्य स्थित।

889. **काकिनी** – कौऐ से युक्त है वाहन जिनका या स्वयं कौऐ से युक्त है। सहस्रार चक्र से टपकते अमृतपान के लिए चेष्टा करने वाली। काय अकति इति काकिनी। क का अर्थ है अमृत और अकति का अर्थ है चेष्टा करना। अमृतपान के कारण इसकी आँखें नशीली होती हैं। सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाली। ककु धातु के रूप ककते इस प्रकार से चलते हैं। जिसका अर्थ है कामना करना। इस धातु से भी काकिनी शब्द बन सकता है। जो कामना करती है। क्या कामना करती है, सबकी मनोकामना पूरी हो यह कामना करती है। काक दृष्टि से युक्त अर्थात एक या समान दृष्टि से युक्त।

890. **काकदृष्टि** – अत्यन्त एकाग्र दृष्टि वाली। कौऐ की केवल एक आँख होती है उसे अगर बाएं देखना है तो आँख की पुतली बाईं ओर ही रहेगी। तीव्र दृष्टि वाली। एक दृष्टि वाली अर्थात सब पर समान दृष्टि रखने वाली।

891. **काकभक्षणदायिनी** – कौओं के लिए भोजनोपयोगी पदार्थों को प्रदान करने वाली।

892. **काकमाता** – कौओं की माता अर्थात कौओं का पालन पोषण करने वाली या उनकी रक्षा करने वाली। क या किम् का अभिप्राय माया या प्रकृति है। जिसके वश में माया है वह काक या मायावी महेश्वर शिव है। शिव की रक्षा करने वाली। माता अर्थात रक्षा करने वाली। विषपान के बाद भी शिव देवी मा की कृपा से जीवित रहे थे। शिव के ज्ञान का विस्तार करने वाली। म अर्थात ज्ञान, ता अर्थात विस्तार करने वाली या देने वाली।

893. **काकयोनि** – कौओं की योनि अर्थात कारण अर्थात उत्पत्ति का स्रोत। योग की काकी मुद्रा को जन्म देने वाली। एकाग्रता की कारण। काक शब्द एकाग्रता का प्रतीक है।

894. **काकमण्डलमण्डिता** – कौओं के समूह से सुशोभित या घिरी हुई।

895. **काकदर्शनसंशीला** – कौओं के दर्शन का सम्यक् स्वभाव रखने वाली।

896. **काकसङ्कीर्णमन्दिरा** – कौओं से घिरे मन्दिर वाली। इनके मन्दिर में कौऐं बहुत आते हैं, अन्यथा भी मन्दिरों में खाना पीना मिलने से पशु पक्षी आते हैं। कौओं से घिरा है या व्याप्त है भवन जिनका।

897. **काकध्यानस्थदेहादिध्यानगम्या** – योग की काक मुद्रा में ध्यान लगाये हुए शरीरादि के द्वारा किये जाने वाले ध्यान से प्राप्त होने योग्य। कौऐ के चोच की तरह मुँह की मुद्रा बना लेने से योग में काकी मुद्रा कहते हैं। कौऐ की तरह चेष्टा बनी रहे, ऐसे शरीर से ध्यान करने पर जानने योग्य। कौऐ का ध्यान तो क्षणिक होता है पर उसकी चेष्टा प्रसिद्ध है क्योंकि वह हर समय चेष्टावान या चुस्त बना रहता है। आपने काकचेष्टा बकोध्यानम् यह अवश्य सुना होगा। ध्यान का अर्थ चेष्टा ले सकते हैं।

898. **अधमावृता** – अपने से निम्न प्राणियों से घिरी हुई। देवी सर्वोपरि हैं अतः उनके अलावा जो भी होगा वह उनसे नीचे होगा अर्थात अधम होगा। वे जिन देवताओं या देवियों या मनुष्यों से घिरी हैं वे रूप गुण शक्ति में देवी से निम्न होने के कारण अधम है। अधम का शाब्दिक अर्थ नीच होता है पर यहाँ नीच अर्थ न होकर अपने से निम्न स्तर होगा। जैसे राजा सर्वोपरि और मन्त्री एवं अन्य लोग उससे निम्नस्तर के होगे।

899. **धनिनी** – ध्वनि या शब्द से युक्त। धन का एक अर्थ शब्द ध्वनि या आवाज है। धनिष्ठा नक्षत्र से युक्त।

धन का एक अर्थ धनिष्ठा नक्षत्र भी है। स्नेहपात्र या अत्यन्त प्रिय व्यक्ति या जीवन सर्वस्व धन कहलाता है। पार्वती जी का जीवन सर्वस्व भगवान शिव हैं। इस प्रकार धनिनी नाम का अर्थ हुआ शिवरूपी धन से युक्त। वह वस्तु या वस्तुओं की समष्टि जिससे किसी उपयोगी या इष्ट अर्थ की सिद्धि होती है और जो श्रम, पूँजी या समय लगाने से प्राप्त होती है, विशेषतः अधिक परिमाण में संचित उपयोग की सामग्री धन कहलाती है जैसे रूपया, पैसा, जमीन, जायदाद, सम्पत्ति, द्रव्य, दौलत, जीवनोपाय। जीवन निर्वाह हेतु साधन भूत द्रव्यों से युक्त। जैसे कृषि धन के रूप में जमीन जायदाद। विविध प्रकार के धनों से युक्त। गोधन, गजधन, वाजिधन, रत्नधन, सन्तानधन आदि विभिन्न प्रकार के धनों से युक्त। रूपया, पैसा, तप, विद्या, सन्तोष आदि धन है। जिससे कुछ पैदा हो या कुछ हासिल हो वह धन है।

900. **धनिसंसेव्या** – धनी पुरुषों द्वारा सम्यक् रूप से सेवा करने योग्य।

901. **धनच्छेदनकारिणी** – दुष्टों/राक्षसों के धनों को नष्ट कर देने वाली।

902. **धुन्धुरा** – धुन्धु नामक राक्षस को मारने वाली। रू शब्दे धातु होती है और रू वधे धातु भी होती है। धुन्धुरा में रा का अर्थ मारना लिया गया है। तन्त्र में धुम् ध्वनि करने में अग्रणी। धुरा का अर्थ है अग्रणी।

903. **धुन्धुराकारा** – अज्ञान को मिटाने वाले रूप वाली। धुम् (अन्धकारम्) धुनोति अर्थात जो अज्ञान रूपी अन्धकार को कँपा दे अर्थात मिटा दे। धुन्धु नामक राक्षस को मारने वाले आकार वाली अर्थात शरीर वाली। रू वधे धातु भी होती है, अतः रा का अर्थ मारना लिया गया है।

904. **धूम्रलोचनघातिनी** – धूम्रलोचन राक्षस का वध करने वाली। धूम्रलोचन आलस्य का प्रतीक है अतः आलस्य नष्ट करने वाली यह अर्थ भी कर सकते हैं।

905. **धूङ्कारिणी** – धूम् ऐसे शब्द या धूम् इस बीजमन्त्र को करने वाली अर्थात इस बीजमन्त्र का उच्चारण करने वाली या इस बीजमन्त्र का उत्पादन/रचना करने वाली। धूम् धम् करने वाली।

906. **धूंमन्त्रपूजिता** – धूम् मन्त्र के द्वारा सम्पूजित। पूजा के दौरान विभिन्न पदार्थों को चढ़ाते समय इस मन्त्र को बोलते हैं।

907. **धर्मनाशिनी** – दैत्यों के धर्मो (क्रियाओं या कार्यकलापों को) का विनाश करने वाली।

908. **धूम्रवर्णिनी** – धूम्र वर्ण वाले शिव की गृहिणी।

909. **धूम्राक्षी** – धुँआ के रंग के समान रंग वाली आँखों वाली। रजोगुण और तमोगुण में व्याप्त। धूम्र वर्ण लालिमा लिये हुए काले रंग का प्रतीक है।

910. **धूम्राक्षासुरघातिनी** – धूम्राक्षासुर (धूम्रलोचन) का विनाश करने वाली। अक्ष का अर्थ है नेत्र या लोचन। दुर्गासप्तशती में धूम्रलोचन राक्षस का जिक्र है। आलस्य का नाश करने वाली। धूम्रलोचन राक्षस आलस्य का प्रतीक है।

911. **धूंबीजजपसन्तुष्टा** – धूम् बीज के जप से सन्तुष्ट रहने वाली। जिस मन्त्र में धूम् बीज होता है उसके जप से सन्तुष्ट रहने वाली।

912. **धूंबीजजपमानसा** – धूम् बीज मन्त्र है मन में या हृदय में जिनके। वामन आप्टे के संस्कृत – हिन्दी शब्दकोष में मानसम् का एक अर्थ हृदय भी दिया है।

913. **धूंबीजजपपूजार्हा** – धूम् बीज मन्त्र का जप है, उस जप से होने वाली पूजा के योग्य।

914. **धूंबीजजपकारिणी** – धूम् बीज मन्त्र के जप को करने वाली।

915. **धूंबीजाकर्षिता** – धूम् बीज मन्त्र से आकर्षित होने वाली।

916. **धृष्या** – उपासकों से या भक्तों से धर्षित होने वाली अर्थात दबने वाली अर्थात वश में हो जाने वाली। अपने पति शिव से धर्षित अर्थात दबने वाली अर्थात उनकी बात मानने वाली। कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र से बहुलम् के आधार पर कर्ता अर्थ भी हो सकता है अर्थात दुष्ट दैत्यों को धर्षित कर देने वाली यह अर्थ भी हो सकता है।

917. धर्षिणी – दूसरों को या दुष्टों को धर्षित करने वाली अर्थात दबा देने वाली। कहने का तात्पर्य है कि देवी अपने तेज से दूसरों को हतप्रभ कर देती हैं। राक्षसों/दैत्यों का धर्षण (पराभव या दबोचना) कर देने वाली अर्थात उन्हें बाधित या पीड़ित करने वाली। धर्षण का अर्थ होता है किसी से जबरदस्ती करना, आजकल बलात्कार शब्द इसी धर्षण का ही प्रतीक है।

918. **धृष्टमानसा** – दुष्ट दैत्यों के लिए धृष्ट हृदय वाली।

919. **धूलीप्रक्षेपिणी** – धूल उड़ाने (फेंकने) वाली अर्थात पृथ्वी स्वरूपा। युद्ध भूमि में धूल उड़ाने वाली। दुष्ट दैत्यों पर धूली को फेंकने वाली या उलीचने वाली। प्रक्षेपण का अर्थ है फेंकना।

920. **धूलीव्याप्तधम्मिल्लधारिणी** – घूली से व्याप्त जूड़े को धारण करने वाली।

921. **धूंबीजजपमालाढ्या** – धूम् इस बीज मन्त्र का जप जिस माला से हो रहा उससे सुशोभित अर्थात उसको धारण करने वाली। तात्पर्य है कि हाथ में माला लिये हैं और उसमें धूम् इस शब्द का जप कर रही हैं। धूम् बीज मन्त्र करने वालों की मालाओं से समृद्ध। धूम् बीज की जप माला में लगी रहने वाली अर्थात इस बीज के जप को करने वाली।

922. **धूंबीजनिन्दकान्तका** – धूम् बीज की निन्दा करने वालों को समाप्त कर देने वाली।

923. **धर्मविद्वेषिणी** – धर्म से विगत हो गया है द्वेष जिसका अर्थात धर्म से द्वेष नहीं बल्कि अनुराग है। यहाँ विद्वेषिणी में वि का अर्थ विगत लिया गया है। कर्तव्य और अकर्तव्य का ज्ञान धर्म है। वेद विरूद्ध धर्म से विद्वेष करने वाली या राक्षस धर्म से विद्वेष करने वाली या जैन, बौद्ध, चार्वाक आदि नास्तिक धर्मों से विशेष द्वेष करने वाली।

924. **धर्मरक्षिणी** – धर्म की रक्षा करने वाली। समाज को बनाये रखने वाले जीवन मूल्य जैसे सत्य, अहिंसा, क्षमा, करूणा, न्याय, परोपकार आदि जीवन मूल्य धर्म कहलाते हैं। कर्तव्य और अकर्तव्य के ज्ञान को भी धर्म कहते हैं।

925. **धर्मतोषिता** – धर्म से सन्तुष्ट (प्रसन्न) होने वाली।

926. **धारास्तंभकरी** – प्रकृष्ट धारा को भी रोक देने वाली। नदी आदि की तेज धारा को रोक देती है।

927. **धूर्ता** – दुष्ट दैत्यों के लिए धूर्त बन जाने वाली। धूर्त अर्थात चालबाज या धोखा देने वाला। अभक्तों के मन को धर्म मार्ग से हटाकर दुखी होने को विवश करने वाली। ध्वरयति कुटिलयति इति धूर्ता। ध्वृ कौटिल्ये धातु होती है। कुटिलयति का अर्थ यहाँ पर हटाती है कर सकते हैं। हृदय में छल रखकर प्रिय बोलने वाली जैसे मोहिनी अवतार में किया था। जिसके आगे करूणा है अर्थात करूणा से युक्त। केशव के मत के अनुसार 'करूणायां तु ताः स्त्रियाम्' । धुर्य का अर्थ आगे होता है। बैलगाड़ी में गले के ऊपर जो डण्डा रखा जाता है वह धुर्य है। चूँकि यह डण्डा गाड़ी के आगे रहता है अतः अग्रणी इसका अर्थ हो जाता है। भक्तों के द्वारा एक बार भी याद करने पर कारूणिक होने के कारण रक्षा के लिए उन तक पहुँच जाता है।

928. **धारावारिविलासिनी** – बहते हुए पानी में क्रीड़ा करने वाली अर्थात नदी जल में जल क्रीड़ा करने वाली। बहते हुए पानी में खेलने वाली या स्नान करने वाली या रहने वाली। धारा के रूप में बहने वाले जल में विलास करने वाली अर्थात विचरण करने वाली।

929. **धांधींधूंधैंमन्त्रवर्णा** – धां धीं धूं धैं इन मन्त्र वर्णों वाली।

930. **धौंधः स्वाहास्वरूपिणी** – धौं धः स्वाहा इस मन्त्र के स्वरूप वाली।

931. **धरित्रीपूजिता** – पृथ्वी के द्वारा पूजित।

932. **धूर्वा** – धूर्व हिंसने धातु होती है, अतः धूर्वा का अर्थ हुआ दुष्टों की हिंसा करने वाली अर्थात उन्हें मारने वाली। भार को वहन करने वाली या ढोने वाली। धूर् का अर्थ भार है जैसा कि धूर्जटे शब्द से स्पष्ट होता है। सम्पूर्ण जगत के पोषण का भार देवी के कन्धों में है। धूर्वा अर्थात श्रेष्ठ मन्त्रों, गुणों, विद्याओं की अग्रणी। धुर का अर्थ है अग्रणी।

933. **धान्यच्छेदनकारिणी** – सभी अन्नों को छेदन योग्य करने वाली बनाने वाली। छेदन योग्य करना अर्थात पका देना। धान्य का अर्थ चावल होता है पर प्रधान अन्न कहने से बाकी अन्नों का भी बोध हो जाता है प्राधान्येन व्यपदेशेन सूत्र से। खेतों से धान्य को फसलों को कटवाने वाली।

934. **धिक्कारिणी** – दुष्टों, असुरों, कुमार्गगामियों को धिक्कार (तिरस्कार, फटकार, अनादर) करने वाली।

935. **सुधीपूज्या** – बुद्धिमान लोगों द्वारा पूजनीय।

936. **धामोद्याननिवासिनी** – घर के बगीचे में निवास करने वाली।

937. **धामोद्यानपयोदात्री** – घर के बगीचे में पानी देने वाली अर्थात पौधों को सींचने वाली। तपस्या के दौरान भी पार्वती जी घड़ों से पौधों को सींचती थी।

938. **धामधूलीप्रधूलिता** – घर के आंगन में धूल धूसरित। यह पार्वती जी के बाल रूप की ओर इशारा करता है। धाम अर्थात घर। धूलित अर्थात धूल से युक्त हो जाना। पार्वती जी बाल्यावस्था में जब घुटनों के बल चलती होंगी तो धूल लग जाती होगी। आंगन या घर की धूलि से धूसरित।

939. **महाध्वनिमती** – प्रचण्ड ध्वनि से युक्त। यदि प्रचण्डध्वनिमति शब्द है तो अर्थ है प्रचण्ड ध्वनि करने वाली बुद्धि स्वरूपा या ऐसी बुद्धि से युक्त।

940. **धूप्या धूपामोदप्रहर्षिणी** – जिसको धूप देनी चाहिए और जो धूप की सुगन्ध से प्रसन्न होती हैं। (यदि धूप्यधूपामोदप्रहर्षिणी नाम है तो अर्थ होगा सूँघने योग्य धूप की सुगन्धि से प्रसन्न या आनन्दित होने वाली।)

941. **धूपदानमतिप्रीता** – भगवान को धूप दान देना चाहिए ऐसे विचार मात्र या बुद्धि वालों से ही प्रसन्न हो जाने वाली। धूप दान देना चाहिए अर्थात पूजा करनी चाहिए। वास्तविक तौर पर पूजा करना तो दूर, देवी तो इस प्रकार के विचार से ही प्रसन्न हो जाती हैं। धूप दान कराने वाली की बुद्धि (चिन्तन) से प्रसन्न होने वाली।

942. **धूपदानविनोदिनी** – धूप दान किये जाने पर प्रसन्न हो जाने वाली। धूप देने की क्रिया से प्रसन्न होने वाली। पूजा के दौरान लोग धूप की गन्ध ईश्वर को सुँघाते हैं।

943. **धीवरीगणसंपूज्या** – मल्लाह स्त्रीसमूह से सम्यक्रूपेण अर्थात अच्छी प्रकार से, विधिवत पूजने योग्य।

944. **धीवरीवरदायिनी** – मल्लाहों की स्त्रियों को वरदान देने वाली।

945. **धीवरीगणमध्यस्था** – मल्लाहों की स्त्रियों के मध्य में स्थित रहने वाली।

946. **धीवरीधामवासिनी** – धीवरियों अर्थात मल्लाह स्त्रियों के धाम (घर) में निवास करने वाली।

947. **धीवरीगणगोप्त्री** – मल्लाह स्त्रियों के समूह की रक्षा करने वाली। हर प्रकार से अर्थात आर्थिक नुकसान से या अपयश से या शारीरिक दुर्घटना से आदि से रक्षा करने वाली।

948. **धीवरीगणतोषिता** – मल्लाह स्त्रियों के समूह के द्वारा सन्तुष्ट होने वाली।

949. **धीवरीधनदात्री** – मल्लाह स्त्रियों को धन देने वाली।

950. **धीवरीप्राणरक्षिणी** – मल्लाह स्त्रियों के प्राणों की रक्षा करने वाली।

951. **धात्रीशा** – धारण करने वाली शक्ति की भी स्वामिनी।

952. **धातृसम्पूज्या** – विधाता अर्थात ब्रह्मा के द्वारा सम्पूजनीय।

953. **धात्रीवृक्षसमाश्रया** – आँवला के वृक्ष का आश्रय लिये हुए अर्थात उसमें निवास करने वाली।

954. **धात्रीपूजनकर्त्री** – आँवला का पूजन करने वाली।

955. **धात्रीरोपणकारिणी** – आँवला के वृक्ष को लगाने वाली।

956. **धूम्रपानरतासक्ता** – आयुर्वेद में विशेष प्रकार से तैयार धूम्रपान करने में जो प्रेम पूर्वक लगी हुई है अर्थात जुड़ी है अर्थात उसे अच्छा मानती है। रता अर्थात अच्छा मानती है या प्रेमपूर्वक, आसक्त अर्थात जुड़ी है। यह धूम्रपान बीड़ी सिगरेट का धूम्रपान नहीं है। आयुर्वेद में कुछ पदार्थो को विशेष रूप से तैयार कर उनसे धुँआ कर खाना खाने के बाद उस धुँऐं का पान किया जाता है जिससे खाना पच जाता है। धूम्रपान में संलग्न रहने वाली।

957. **धूम्रपानरतेष्टदा** – धूम्रपान में लगे (अर्थात धूम्रपान करने वाले) लोगों को अभीष्ट फल देने वाली। यहाँ बीड़ी, सिगरेट वाले धूम्रपान करने वाले नहीं है बल्कि हवन की आहूति लेने वाले देवता हैं, उन देवताओं को अभीष्ट फल देने वाली। पिछले नाम में धूम्रपान का जो अर्थ बताया गया है वह अर्थ भी ले सकते हैं। हवन करने वाले उपासको के शरीर के अन्दर भी हवन का धुँआ पहुँचता है अतः उपासक अर्थ भी ले सकते हैं।

958. **धूम्रपानकरानन्दा** – चढ़ाई गई धूप के धुँऐं का पान करने वाली और आनन्दित होने वाली। धूम्रपान कर आनन्दित होने वाली या आनन्द देने वाली। आनन्द+आ, आ का अर्थ है देना। धूम्र का अर्थ पाप भी होता है। पापों का पान करने वाली अर्थात भक्तों के पापों को समाप्त करने वाली और आनन्द देने वाली। धूम्रपान करने वालों को आनन्द देने वाली।

959. **धूम्रवर्षणकारिणी** – हवन के धुँऐं की वर्षा करने वाली अर्थात फैलाने वाली। बरसात यद्यपि नीचे की ओर होती है पर प्रसंगवश इसका अर्थ फैलाना ले लिया गया। धूम्र का अर्थ शिव भी होता है। शिव का अर्थ है कल्याण। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ कल्याण की वर्षा करने वाली। धुँऐं की वर्षा करने वाली।

960. **धन्यशब्दश्रुतिप्रीता** – धन्य शब्द जिनके कानों को अच्छा लगता है। धन्य शब्द सुनकर प्रसन्न।

961. **धुंधुकारीजनच्छिदा** – धुंधुकारी आदि राक्षस जनों को छिन्न भिन्न कर देने वाली। धुंधुकारी है एक जन, उसे कतरने वाली। भागवत में दुष्कर्म करने वाला या अशुभ कर्म करने वाला धुंधुकारी नामक एक पात्र है। धुंधुकार अर्थात धुँऐं की तरह आकार वाला अर्थात स्पष्ट ज्ञान नहीं जिसे अर्थात अज्ञान। अज्ञानीजन को काटने वाली अर्थात तकलीफ देने वाली। अज्ञानी जन जो सांसारिक वस्तुओं और सम्बन्धों को वास्तविक मानकर उनमें फंसे रहते हैं।

962. **धुंधुकारीष्टसन्दात्री** – सांसारिक सुख भोग में लगे ऐसे लोग जो धुम् धुम् इस मन्त्र का जप करने वाले हैं, उनको अभीष्ट फल देने वाली। भागवत में धुंधुकारी पात्र है जो सांसारिक सुख भोग में डूबा हुआ है। भगवान विष्णु ने इनकी मुक्ति दी थी अर्थात भगवान विष्णु में रहने वाली शक्ति ने इनकी मुक्ति दी थी। धुंधकारियों को अभीष्ट फल देने वाली।

963. **धुन्धुकारिसुमुक्तिदा** – धुन्धुकारियों (धुम्, धुम् मन्त्र का जप करने वाले) को सुन्दर (श्रेष्ठ) मोक्ष प्रदान करने वाली।

964. **धुन्धुकार्याराध्यरूपा** – धुन्धुकारी राक्षस के आराध्य रूप में। धुन्धुकारी राक्षस जब साँस छोड़ता था तब उससे धुँआ निकलता था जिससे संसार में तबाही मच जाती थी। धुन्धुकार अर्थात धुँऐं को करने वाला अर्थात नाक से धुँआ निकालने वाला। यह रेत के नीचे तपस्या करता था। प्रायः राक्षस लोग शिव की आराधना करते हैं। शिव और शक्ति में अभेद है। शिव की आराधना करना अर्थात शक्ति की आराधना करना। धुन्धु का अर्थ है धुन्धलापन अर्थात अज्ञान। अर्यते या आरयति से आर्या शब्द बन सकता है जिसका अर्थ है हटाना या चलाना। धुन्धुक (अज्ञान) को हटाने के लिए पूजा करने योग्य। धुन्धुकार अर्थात धुँऐं की तरह आकार वाली अर्थात स्पष्ट ज्ञान नहीं अर्थात अज्ञानस्वरूपा। धुन्धुकारियों की आराध्य स्वरूपा अर्थात आराधनीया।

965. **धुन्धुकारीमनस्थिता** – धुम् धुम् इस बीज मन्त्र के अभ्यास करने में लगे उपासकों के मन अर्थात हृदय में स्थित।

966. **धुन्धुकारिहिताकांक्षा** – दुराचारियों के भी इस लोक में हित की इच्छा रखने वाली। यह नाम और अगला नाम लगभग एक जैसा है। अर्थ की भिन्नता के लिए इस नाम में यह लोक ले लिया और अगले नाम में परलोक ले लिया। धुन्धुकारी दुराचारी व्यक्ति का प्रतीक है। धुम् धुम् इस बीज मन्त्र के अभ्यास करने में लगे उपासकों के हित की आकांक्षा रखने वाली।

967. **धुन्धुकारिहितैषिणी** – दुराचारियों के साथ भी मित्र की तरह व्यवहार करने वाली अर्थात उनको सही रास्ता दिखाने वाली। हितैषी का अर्थ मित्र है। सदाचारी हो या दुराचारी सभी ईश्वर की सन्तान हैं। दुराचारी व्यक्ति भी यदि ईश्वर की शरण लेता है तो उसका कल्याण होता है। यह बात श्रीमद् भगवतगीता में भी कही गई है। इतने पाप नहीं बने जिन्हें ईश्वर दूर न कर सकता हो। दुराचारियों का भी परलोक में हित करने की इच्छा रखने वाली। धुन्धु अर्थात अन्धेरा अर्थात दुराचार। दुर्गासप्तशती में आया है कि देवी असुरों को अपने हथियार से इसलिए मारती हैं जिससे हथियार की पवित्रता से असुर पवित्र होकर ऊर्ध्व लोक जा सके। धुम् धुम् इस बीज मन्त्र के अभ्यास करने में लगे उपासकों का हित चाहने वाली।

968. **धिन्धिमाराविणी** – धिम् धिम् ऐसा सब ओर से शब्द या ध्वनि करने वाली। आ+राविणी, आ समन्तात् अर्थात सब ओर से। राविणी अर्थात शब्द करने वाली।

969. **ध्यात्रीध्यानगम्या** – स्वयं ध्यान करती हैं और ध्यान में जिनका ज्ञान होता है/ ध्यान में जो देखी जाती हैं। ध्यात्री अर्थात ध्यान करने वाली। ध्यानगम्या अर्थात ध्यान से जानी जाने वाली या प्राप्त होने वाली। ध्यान करने वालों के ध्यान में आने वाली या ध्यान से समझी जाने वाली।

970. **धनार्थिनी** – धन को चाहने वाली। भक्तिरूपी धन या सद्गुणरूपी धन को चाहने वाली।

971. **धोरिणी** – निरन्तर गति वाली अर्थात प्रवाहमान जैसे नदी। धोर का अर्थ गति है। धोरिणी अर्थात निरन्तरता से विभूषित। धोरण का अर्थ है दौड़, घोड़े की सरपट चाल।

972. **धोरणप्रीता** – घोड़े की सरपट चाल से या दौड़ से प्रसन्न होने वाली। गति से प्रसन्न होने वाली अर्थात विशेष गति (अच्छे कर्म) से प्रसन्न होने वाली। कर्म एक प्रकार की गति है। खराब कर्म से प्रसन्न नहीं होंगी अतः अच्छे कर्म लिखा गया है। निरन्तर गतिशील वाहन है प्रिय जिन्हें। गतिशील लोगों अर्थात कर्मठ लोगों से प्रसन्न रहती हैं।

973. **धारिणी घोररूपिणी** – पृथ्वी को धारण करने वाली ऐसी देवी जो भयंकर रूप वाली हैं।

974. **धरित्रीरक्षिणीदेवी** – पृथ्वी की रक्षा करने वाली देवी।

975. **धराप्रलयकारिणी** – पृथ्वी का प्रलय कर देने वाली।

976. **धराधरसुता** – पर्वत अर्थात हिमालय की पुत्री।

977. **अशेषधाराधरसमद्युतिः** – सघन बादल की तरह कान्ति वाली अर्थात सघन बादल की तरह साँवले या काले रंग वाली। अशेष का अर्थ सम्पूर्ण होता है पर यहाँ पर सघन अर्थ लेना बेहतर है। शब्दों के प्रयोग के अनुसार अर्थ बदलते हैं। ऐसा नहीं है कि जो शब्दकोष में लिखा उसके अलावा कुछ दूसरा अर्थ नहीं हो सकता। जल धारा को धारण करनेवाले बादल होते हैं अतः धाराधर का अर्थ बादल है।

978. **धनाध्यक्षा** – धन की अध्यक्ष अर्थात मालकिन। समस्त धन इनके अधीन हैं। किसको देना, किससे लेना, कितना देना आदि इनकी देखरेख में या इनकी इच्छा से ही होता है।

979. **धनप्राप्ति** – जिनकी उपासना से धन की प्राप्ति होती है। धनस्य प्राप्तिः यस्याः उपासनाया सा। धन की प्राप्ति स्वरूपा। इनकी कृपा से ही धन की प्राप्ति होती है।

980. **धनधान्यविविर्धनी** – उपासकों के धन और धान्य को बढ़ाने वाली।

981. **धनाकर्षणकर्त्री** – धन का आकर्षण कर देने वाली।

982. **धनाहरणकारिणी** – धन का आहरण करने वाली अर्थात दुष्टों के धन को छीन लेती हैं। दुष्टों के धन का हरण कराने वाली।

983. **धनच्छेदनकर्त्री** – दुष्टों के धन को नष्ट कर देने वाली।

984. **धनहीना** – धनहीनों की उपासनीया। धनहीन वाली अर्थात धनहीनों की उपासनीया। धनहीना यस्या सा। लौकिक धन से हीन। भगवान शिव स्वयं भिक्षा माँगते हैं और लोगों को धन या ऐश्वर्य देते हैं अतः विपरीत नामों का कोई विरोध नहीं है। भौतिक धन साक्षात रूप से नहीं है पर भौतिक धनों को पैदा करने वाली सूक्ष्मशक्ति अवश्य है।

985. **धनप्रिया** – धन है प्रिय जिन्हें। भगवान का नाम सबसे बड़ा धन माना गया है। कुछ लोग प्राण या साँस को सबसे बड़ा धन मानते हैं। गीता के 16वें अध्याय में बताए गए दैवी गुण श्रेष्ठ सम्पत्ति या धन है। (धन शब्द के कई अर्थ हैं। जो हैं– उपयोग की सामग्री (रूपया, पैसा, पमीन जायदाद), स्नेहपात्र या अत्यन्त प्रिय व्यक्ति। वह द्रव्य जिसमें वृद्धि या व्याज सम्मिलित न हो अर्थात मूलधन, आवाज या शब्द, पुरस्कार।)

986. **धनसंवृद्धिसम्पन्ना** – धन की समृद्धि से सम्पन्न। बढ़े हुए धन से सम्पन्न।

987. **धनदानपरायणा** – धनदान करने में संलग्न अर्थात लगी हुई।

988. **धनहृष्टा** – धन से प्रसन्न होने वाली। धन देखकर या धन के दान से प्रसन्न होने वाली।

989. **धनपुष्टा** – धन से पूर्ण या पूरी।

990. **दानाध्यनकारिणी** – दान और अध्ययन करने वाली। कोई भी क्रिया हो, मनुष्य या किसी भी प्राणी में रहने वाली शक्ति ही करती है। शक्ति या ऊर्जा का अर्थ है देवी।

991. **धनरक्षा** – धन की रक्षा करने वाली।

992. **धनप्राणा** – धन ही है प्राण जिनका अर्थात धन जिन्हें अतिशय प्रिय है।

993. **धनानन्दकरी सदा** – धन के द्वारा अर्थात धन देने के द्वारा सदैव आनन्द देने वाली। जिसे धन मिलता है

उसे बहुत खुशी मिलती है क्योंकि धन से बहुत काम होते हैं। सदैव धन प्रदान के द्वारा आनन्द प्रदान करने वाली।

994. **शत्रुहन्त्री** – शत्रुओं को मारने वाली। शत्रुओं का विनाश करने वाली।

995. **शवारूढ़ा** – शव पर सवार। मातंगी सहस्रनामावली में शव शब्द पर अधिक लिखा गया है।

996. **शत्रुसंहारकारिणी** – शत्रुओं का संहार करने वाली।

997. **शत्रुपक्षक्षतिप्रीता** – शत्रु पक्ष की क्षति से प्रसन्न होने वाली।

998. **शत्रुपक्षनिषूदिनी** – शत्रु पक्ष को नष्ट या नाश कर देने वाली।

999. **शत्रुग्रीवाच्छिदाछाया** – शत्रुओं के गर्दन को काटने वाले की प्रतिरूपा या सदृश, photostate. छिदा अर्थात काटने वाली कुल्हाड़ी। शत्रुओं के गर्दनों का नष्ट कर देने वाली/काट देने वाली है कान्ति जिनकी अर्थात कान्ति से ही गर्दन काट देती हैं।

1000. **शत्रुपद्धतिखण्डिनी** – शत्रुओं की पद्धति को खण्डित करने वाली पद्धति स्वरूपा। पद्धति अर्थात मार्ग या पूजा पद्धति।

1001. **शत्रुप्राणहराहार्या** – शत्रुओं के प्राणों का हरण करना ही है भोजनीय पदार्थ जिनका। शत्रुओं के प्राणों का हरण करने वाली अतः आहार्या (बुलाने योग्य या आहवनीया)। शत्रुओं के प्राणों को हर लेने के कारण सभी के मन को हर लेने वाली।

1002. **शत्रून्मूलनकारिणी** – शत्रुओं का उन्मूलन कर देने वाली अर्थात उन्हें जड़ से उखाड़ फेंकने वाली।

1003. **शत्रूकार्यविहन्त्री** – शत्रुओं के कार्यों को बिगाड़ देने वाली, नष्ट कर देने वाली।

1004. **साङ्गशत्रुविनाशिनी** – सेना आदि अंगों के सहित शत्रुओं का विनाश कर देने वाली। विनाश का अर्थ है पूर्ण नाश।

1005. **साङ्गशत्रुकुलच्छेत्री** – अंगों सहित शत्रुओं के कुल का छेदन करने वाली। अंग अर्थात उनके पक्ष में जो लोग हैं, मित्र, परिवार, आयुध आदि। सेना आदि अंगों के सहित शत्रुओं के कुल को नष्ट कर देने वाली।

1006. **शत्रुसद्मप्रदाहिनी** – शत्रुओं के भवनों में आग लगा देने वाली, जला देने वाली।

1007. **सांगसायुधसर्वारि** – सर्वसम्पत्तिनाशिनी – सभी अंगों और सभी आयुधों सहित सभी शत्रुओं की सारी सम्पत्ति का नाश करने वाली। अंग अर्थात उनके पक्ष में जो हैं अर्थात सेना, मित्र, सम्बन्धी आदि। हथियारों के सहित सभी प्रकार के शत्रुओं की सभी प्रकार की सम्पत्तियों को विनाश कर देने वाली।

1008. **साङ्गसायुधसर्वारि** – देहगेहप्रदाहिनी – सभी अंगों और आयुधों सहित सभी शत्रुओं के शरीर और घरों को पूर्ण रूप से जला देने वाली। अंग अर्थात उनके पक्ष में जो हैं जैसे सेना, मित्र, सम्बन्धी आदि। अंगों के सहित, विविध प्रकार के हथियारों के सहित सभी प्रकार के शत्रुओं के शरीर और घर को जला देने वाली।

श्री बगलामुखी जी सहस्रनामावलि



बगलामुखी सहस्रनामावलि

1. **ब्रह्मेशी** – ब्रह्मस्वरूपिणी ईश्वरी। ब्रह्मस्वरूपिणी शासनकर्त्री। यह कर्मधारय समास से अर्थ निकला। ईश का अर्थ है शासन करने वाला, ईश्वर। देवी ब्रह्मस्वरूपा तो हैं ही, साथ में समस्त ब्रह्माण्डों पर शासन करने वाली हैं। शासन का अर्थ होता है अपने अधीनस्थों को आदेश देना तथा अधीनस्थ उस आदेश की अवहेलना नहीं कर सकते। कर्म के नियम, प्राकृतिक नियम बनाकर शासन किया जाता है। शासन करना अर्थात अपनी इच्छानुसार घटनाओं को घटित कराना। पर–ब्रह्म (अर्द्ध–नारीश्वर) की शक्ति। यहाँ ब्रह्म से तात्पर्य पर–ब्रह्म से है तथा ईशी का अर्थ शक्ति किया गया है। शिव और शक्ति का समवाय सम्बन्ध से मिलित रूप पर–ब्रह्म है। ब्रह्म का अर्थ ब्रह्म, ब्रह्मा होता है। ब्रह्मा जी को अनुशासित करने वाली अर्थात उन्हें सृष्टि रचना का कार्य देकर ठीक तरीके से सृष्टि रचना कराने वाली। ब्रह्मा पर शासन करने वाली अर्थात उन्हें अपनी इच्छानुसार चलाने वाली या उनसे अपनी इच्छानुसार कार्य कराने वाली। वे ब्रह्मा को आदेश दे सकती हैं तथा ब्रह्मा जी द्वारा उस आदेश का पालन करना अनिवार्य होता है। ब्रह्मा को प्रेरित करने वाली अर्थात उनको (ब्रह्मा जी को) कर्तव्य के लिए प्रेरित करने वाली अर्थात उन्हें काम में लगाने वाली। ईश् धातु का अर्थ शासन करना, प्रेरित करना होता है। ब्रह्मा जिनकी उपासना करते हैं, यह अर्थ भी हो सकता है। ब्रह्म का अर्थ परब्रह्म एवं ब्रह्मा दोनों होता है। ब्रह्म (परमात्मा) की भी शासिका/अधिष्ठात्री। ब्रह्म भी जिनके नियन्त्रण में हैं। यहाँ ब्रह्म का तात्पर्य परब्रहम से है।

2. **ब्रह्मकैवल्यम्** – प्रकृति से अलग होने पर प्राप्त होने वाली ब्रह्माकार अवस्था जो सत्–चित्–आनन्द की अवस्था है, कैवल्य या एकत्वावस्था कहलाती है, ऐसी अवस्थास्वरूपा। देवी या देवता देने वाले कहे जाते हैं अर्थात लक्षणा शक्ति से अर्थ हुआ ब्रह्माकार मोक्ष अवस्था देने वाली। अन्यथा भी यस्याः सकाशात् ब्रह्मकैवल्यम् भवति, सा ब्रह्मकैवल्यम् अर्थात जिसकी समीपता से ब्रह्माकार मोक्ष अवस्था प्राप्त हो वह ब्रह्मकैवल्यम् है। शुद्ध ब्रह्मस्वरूपा या अद्वितीय ब्रह्मस्वरूपा। केवल का अर्थ होता है अकेला, एकमात्र, सबसे अलग अर्थात जिसमें कोई दूसरा न हो अर्थात कोई मिलावट न हो। मिलावट न होना अर्थात शुद्ध होना। ब्रह्म से एकाकार वाली मोक्षावस्था स्वरूपा। कैवल्य का अर्थ मोक्ष है। पाँच प्रकार के मोक्ष में सबसे ऊँची अवस्था कैवल्यावस्था है। केवल का अर्थ मात्र, विलग या अलग है। संसार या प्रकृति से अलग होने का तात्पर्य है सभी पदार्थों, शरीर, इन्द्रिय, मन, बुद्धि आदि सभी प्रकृति से उत्पन्न पदार्थों से अलग होना। सभी बन्धनों से अलग होकर शुद्ध चैतन्य की अवस्था कैवल्यावस्था है। इसे कुछ लोग ऋतम्भराप्रज्ञा भी कहते हैं। पाँच मोक्ष हैं– सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य और कैवल्य। कुछ लोग सालोक्य, सामीप्य, सार्ष्टि, सारूप्य और सायुज्य को पाँच मोक्ष मानते हैं। किसी के अनुसार सायुज्य और कैवल्य एक ही हैं परन्तु कुछ लोग दोनों को अलग मानते हैं। सायुज्य का अर्थ हैं आपकी आत्मा ब्रह्म में समा गई या ब्रह्म से जुड़ गई। कैवल्य में आप ब्रह्म से पूर्णतया एकाकार हो जाते हैं। गुरू गोरखनाथ ने सायुज्य एवं एकत्व (कैवल्य) को अलग अलग माना है। एक मत में सायुज्य में दो का होना आवश्यक है तभी जुड़ना होगा। कैवल्यावस्था में अज्ञान और सभी कष्टों से अलग हो जाना होता है। ब्रह्म से लीन हो जाने वाली अवस्थास्वरूपा। केवल का अर्थ है मात्र ब्रह्म रह जाए, जैसे चीनी पानी में विलीन हो कर अपना अस्तित्व खो देती है, उसी प्रकार व्यक्तिगत जीवात्मा, जीवात्मा न रह कर ब्रह्म हो जाए। जब मन और बुद्धि पीछे छूट जाती है तभी यह अवस्था आती है अर्थात मन और बुद्धि की क्रिया समाप्त होने पर ही ऐसी अवस्था आती है। ऐसा कैवल्य जो ब्रह्म से एकाकार करा दे। केवल अर्थात सभी से सम्बन्ध विच्छेद अर्थात मन, बुद्धि, अहंकार, तीनों गुण, समस्त प्रकृति से सम्बन्ध टूट गया और किसी पर भी निर्भरता न रहकर ब्रह्म से तादात्म्य हो गया। केवल अर्थात isolated from others. ब्रह्म जैसी स्थिति वाला कैवल्य स्वरूपा। ऐसा कैवल्य या मोक्ष जो ब्रह्म के साथ एकाकार करा दे, तद्स्वरूपा। अहम् ब्रह्मास्मि जैसी स्थिति। अवस्था भी देवी

का स्वरूप है क्योंकि सब कुछ ऊर्जा है। गुण, अवस्था, समय, भाव, व्यक्ति, वस्तु सब ऊर्जा है और ऊर्जा ही शक्ति अर्थात देवी हैं। ब्रह्मस्वरूप मोक्ष स्वरूपिणी अवस्था। ब्रह्म ज्ञान प्रदान कर मोक्ष देने वाली। ब्रह्म को भी कैवल्य (मोक्ष) प्रदान करने वाली। ब्रह्मकैवल्यम् शब्द स्त्रीवाची है पर इसके रूप नपुंसक लिंग की तरह चलते हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे कलत्र शब्द स्त्रीवाचक है पर उसके रूप नपुंसक लिंग की तरह चलते हैं एवं दारा शब्द स्त्रीवाची है पर उसके रूप पुल्लिग की तरह चलते हैं। ब्रह्म के भी कई भेद हैं जैसे परब्रह्म, अपरब्रह्म आदि। शाक्त दर्शन में देवी को ईश्वर (शिव) की भी ईश्वरी कहा गया है। (कैवल्य वह अवस्था है जिसमें केवल (only) पुरुष ही रहता है एवं बुद्धि (प्रकृति) की निवृत्ति हो जाती है। कैवल्य में पुरुष का कोई परिवर्तन नहीं होता, बुद्धि का ही प्रलय होता है। इसके बाद स्थाई चित्तनिरोध हो जाता है अर्थात् ज्ञान से बुद्धि और पुरुष का संयोग समाप्त होने पर पुरुष का स्वरूप (अपने वास्तविक रूप या स्थिति) में प्रतिष्ठित हो जाता है। पुरुष का केवल अर्थात् शुद्ध स्वरूप में होना ही कैवल्य अवस्था है। बुद्धि प्रकृतिजन्य है। कैवल्य में पुरुष (आत्मा) का प्रकृति से पूर्ण विलगाव हो जाता है अर्थात् बुद्धि, मन, इन्द्रियाँ, शरीर, जड़पदार्थ से विलगाव हो जाता है। कामना इच्छा से ही चित्त में तरंगे उठती है। कैवल्य अवस्था में चित्त की स्थिति कामना रहित हो जाती है, अर्थात् चित्त निस्तरंग हो जाता है। गुणसाम्य रूप समतलता रहती है। चित्त में बुद्धि और पुरुष (आत्मा) का समस्त ज्ञान एककालिक हो जाता है अर्थात् भूत और भविष्य वर्तमान में मिल जाते है। योगी के सामने प्रत्येक वस्तु उपस्थित हो जाती है। योगी देश और काल से अतिक्रमण कर जाता है। कैवल्य प्राप्ति के अनन्त ज्ञान के सामने त्रिलोकी का समस्त ज्ञान तथा सम्पूर्ण लौकिक विद्याओं का ज्ञान निस्सार हो जाता है। कैवल्य से विशोका स्थिति आ जाती है जिसमें किसी वस्तु का शोक नहीं होता। किसी वस्तु के खो जाने का मिथ्या ज्ञान नही होता। कैवल्य अर्थात् एकाकी हो जाना अर्थात् प्रकृति (बुद्धि, मन, इन्द्रियाँ, पदार्थ, शरीर आदि) की आसक्ति छोड़कर स्वस्वरूप में स्थित हो जाना। कुछ विद्वानों के अनुसार कैवल्य मुक्ति की सर्वोच्च अवस्था है पर शैव दर्शन के लोग ऐसा नहीं मानते। उनके अनुसार सायुज्य ही सर्वश्रेष्ठ मोक्ष है। कश्मीरी शैव दर्शन के अनुसार सायुज्य में ईश्वर से जुड़ना तो हो जाता है किन्तु अपनी व्यक्तिगत चेतना भी रहती है। कश्मीरी शैव दर्शन के अनुसार भौतिक और मानसिक उपकरणों या साधनों (Physical and Mental apparutus) से पूर्णतय अलग हो जाना कैवल्य है और यह एक प्रकार से निद्रा जैसी अवस्था है जिसे सर्वोकृष्ट अवस्था नही कहा जा सकता।)

समीक्षकों के अनुसार सांख्य में जो कैवल्य बताया गया है, उस अवस्था को पाने के बाद वह व्यक्ति भले ही अपने स्वरूप में स्थित हो जाता हो पर इससे प्रकृति की समाप्ति नहीं होती है। गुरूगोरखनाथ ने सायुज्य मोक्ष को ब्रह्म से जुड़ी हुई अवस्था के रूप में बताया है पर इसमें ब्रह्म से जुड़े होने के बाद भी अपनी पृथक सत्ता का आभास होता है। उन्होंने सायुज्य से ऊपर एकत्व रूपी मोक्षावस्था को बताया है जिसमें व्यक्ति पूर्णरूप से ब्रह्म से एकाकार हो जाता है। सम्भवतः यह अवस्था कैवल्य की अवस्था है। किसी मत में सायुज्य को ही ब्रह्म से पूर्ण एकाकार की अवस्था बताया गया है। इस प्रकार विभिन्न सम्प्रदायों या मतों में कुछ भिन्नताऐं हैं। गीता में ब्रह्मनिर्वाण शब्द का प्रयोग किया गया है जिसका अर्थ है ब्रह्म में समा जाना अर्थात Absorption in Brahm. Sanskrit Glossary of Yogic Terms (Yoga Publication Trust, Munger, Bihar) के अनुसार कैवल्य की परिभाषा है– Final liberation, that state of consciouness which is beyond the duality; perefect isolation, final emancipation; nirvana; the state that unifies all differences. The Encyclopedia of Yoga (राम कुमार राय) के अनुसार– The four abodes (सालोक्य, समीप्य, सारूप्य, सायुज्य मोक्ष) are the results of action, transitory and conditioned. Mahanirvana or Kaivalya, the real Moksha, is the result of spiritual knowledge (ज्ञान), and is

unconditioned and permanenent. Those who knows the Brahman, recognizing that the worlds resulting from action are imperfect, reject them, and attain to that unconditioned bliss which transcends them all. Kaivalya is the supreme state of oneness without attributes, the state in which, as the Yogasutra says, modification of the energy of consciouness is exitnct, and when it is established in its own real nature.

3. **बगला** – लगाम लगाने वाली (शत्रुओं पर)। वल्गा का अर्थ लगाम होता है। लगाम लगाना या नियन्त्रण करना। बगला शब्द वल्गा से बना है जिसका अर्थ है शत्रुओं द्वारा किया जाने वाला अभिचार कर्म। जो देवी अभिचार कर्म को नष्ट कर देतीं हैं वह हैं बगला। बगला अर्थात बगला+आ, आ का अर्थ नाश करना एवं देना दोनों होता है। आनन्द को विघ्नरहित लाने वाली। ब अर्थात व अर्थात अमृत अर्थात आनन्द। ग भगवान गणेश का बीज है जिसका अर्थ है विघ्न रहित। ला का अर्थ है लाने वाली। वारूणी देवी, सिद्धिदा देवी और भूमि देवी की शक्तियों से युक्त। ब अर्थात व अर्थात वारूणी देवी, ग अर्थात गणेश अर्थात सिद्धि देने वाले, ल अर्थात भूमि। वर्ण के आगे पीछे होने से वलगा शब्द बगला हो गया। वलगा का अर्थ है अभिचार कर्म करने की शक्ति जिसे कृत्या भी कहते हैं। कृत्या वह शक्ति है जिसका सहारा लेकर तान्त्रिक अपने शत्रुओं का संहार करते हैं। इस कार्य हेतु भूमि में गड़े नाखून, बाल, हड्डी आदि भी वलगा है। तान्त्रिक लोग शत्रुओं के नाखून, बाल, कपड़े मिल जाने पर उन पर क्रिया करते हैं। बगलामुखी शब्द में मुखी शब्द का अर्थ नाश करना या बाहर निकालना है। खनु अवदारणे धातु होती है जिससे मुखी शब्द बनकर नाश करना अर्थ देता है। मुखः का अर्थ निःसरणम, उपाय होता है अर्थात बाहर निकालना या उपाय। उपाय अर्थात इलाज करना। बगला+आ, से भी बगला शब्द बनता है। वहाँ अर्थ होगा शत्रुओं के द्वारा किये गये अभिचार कर्म का नाश करने वाली। आ का अर्थ नाश करना। बगलामुखी का अर्थ है – शत्रु द्वारा किये गये अभिचार कर्म का नाश करने वाली। यहाँ मुखी का अर्थ नाश करने वाली या बाहर निकालने वाली या उपायस्वरूपा है। बगला अर्थात वगला। वारूणी देवी, सिद्धिदा देवी और भूमि देवी इन तीन शक्तियों से युक्त है जो वह वगला या बगला है। व अर्थात वारूणी देवी और ग अर्थात सिद्धिदा देवी। ग अर्थात गणेश जो सिद्धि के प्रतीक हैं। ल अर्थात भूमि देवी। वलगा से बगला बना। अक्षर आगे पीछे होने से ऐसा हुआ। वृणोति से वर बना। वर अर्थात वल। र और ल में अभेद है। वृण्वन् गच्छति इति वरः, जो ढ़कती हुई जाती है वह वरग या बलग है। शत्रु को मारने के लिए प्रयोग की गई कृत्या शत्रु को ढ़कती हुई जाती है अर्थात शत्रु को पता नहीं चलता, शत्रु को ढ़क देती है अर्थात उसे उबरने नहीं देती। वलग+आ, आ का अर्थ है नाश करना इस प्रकार वलगा का अर्थ हुआ कृत्या को नाश करने वाली। एक ग्रन्थ में वलगाकार का अर्थ इस प्रकार दिया गया है – वलगाः पीड़ार्थे भूमेरधो बाहुप्रदेशे निरवन्यमानाः असि केशादिवेष्टिता विष वृक्षादिनिर्मिताः पुत्तल्यो वलगा इत्युच्यन्ते सा (भूमि में एक हाथ भर नीचे खोदकर उसमें हड्डियों और केशों से लिपटी जहरीले विषवृक्ष आदि की बनी पुतली वलगा है।)

4. **ब्रह्मचारिणी** – तपस्या करने वाली। ब्रह्म का एक अर्थ तपस्या भी है। चर् धातु में णिनि प्रत्यय लगाने से चारिन् शब्द बनता है जो पुल्लिंग में चारि तथा स्त्रीलिंग में चारिणी होगा। चारिणी का अर्थ है विचरण करने वाली या करने वाली। ब्रह्म स्वरूप प्रदान करने वाली। ब्रह्म सच्चिदानन्दरूपम्, तम् चारयितुम् प्रापयितुम् शीलम् अस्या सा ब्रह्मचारिणी अर्थात ब्रह्म को प्राप्त कराना जिसका स्वभाव है। वेद तत्व में विचरण करने वाली। वेद के तत्व को ब्रह्म कहते हैं। ब्रह्म में निरन्तर रमण करने वाली। रमण करना अर्थात चित्त को संयुक्त करना, टिकाना, आनन्द अनुभव करना। अविवाहिता। ब्रह्म को प्राप्त कराने के स्वभाव वाली। चर धातु का अर्थ होता है गति करना और गति के तीन अर्थ होते हैं– गमन, ज्ञान और प्राप्ति। यहॅा प्राप्ति अर्थ ले लिया। चर् धातु में णिनि

प्रत्यय लगाने से चारिन् शब्द बनेगा जो पुल्लिंग एक वचन में चारी एवं स्त्रीलिंग एकवचन में चारिणी होगा जिसका अर्थ होगा प्राप्त करने वाली। चर धातु में प्रेरणार्थक णिच् प्रत्यय लगाने से भी चर का चार होकर चारिन् ही बनेगा और उसका अर्थ होगा प्राप्त कराने वाली। चारिणाी के प्राप्त करने वाली, प्राप्त कराने वाली, जानने वाली, जनवाने वाली, गति करने वाली, गति कराने वाली (पहुँचाने वाली) सभी अर्थ निकलेगें। णिनि प्रत्यय कभी कभी शील (स्वभाव) अर्थ में भी होता है। इसी कारण इस नाम का अर्थ ब्रह्म को प्राप्त कराने के स्वभाव वाली, ऐसा किया गया। वेद में विचरण करने वाली अर्थात् शक्ति रूप में विराजमान। णिनि प्रत्यय स्वभाव में भी आता है। शिव का नाम लेना स्वभाव है जिनका अर्थात् प्रत्येक साँस में शिव का नाम लेने वाली या जिनका रोम–रोम शिव इस मन्त्र का जप करता है। यह नाम सीख देता है कि मनुष्य को अपने विचार, साँस या जो भी देखे सुने उसमें शिव या अपने इष्ट देव का अनुभव करना चाहिए।

5. **नित्यानन्दा** – हमेशा रहने वाले आनन्द के स्वरूप वाली।

6. **नित्यसिद्धा** – हमेशा अष्टसिद्धियों से युक्त या हमेशा अतिप्राकृतिक शक्तियों से युक्त रहने वाली। हमेशा सिद्ध रहने वाली अर्थात हमेशा पूर्णता में रहने वाली। सिद्धस्वरूपा। सिद्ध का अर्थ पूर्णत्व की स्थिति में रहना या मोक्ष की स्थिति में रहना है। जो हमेशा प्राप्त है या विद्यमान है। आत्मा स्वरूपा। वेदान्ती कहते हैं आत्मा ऐसी चीज नहीं है जो आपके पास नहीं है और जिसे आपको प्राप्त करना है। आप स्वयं आत्म स्वरूप हो, पर उसे भूल गये हो। कातन्त्र व्याकरण के पहले श्लोक में नित्य, सिद्ध, मंगल को पर्यायवाची बताया गया है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ सदा मंगलकारिणी।

7. **नित्यरूपा** – तीनो काल में रहने वाले स्वरूप (आकार) वाली। हमेशा रहने वाले रूप वाली। नित्य अर्थात अविनाशी, शाश्वत। नित्य भगवान विष्णु का भी नाम है अतः इस नाम का अर्थ हुआ विष्णुस्वरूपा। नित्यम् रूपयति इति नित्यरूपा अर्थात नित्य (भगवान विष्णु) को स्वरूप देने वाली अर्थात उनकी रचना करने वाली। नित्य होना इस लक्षण से ज्ञापित होने वाली अर्थात इस लक्षण से जिनका बोध होता है। रूप्यते इति रूपा से रूपा का अर्थ बोधिका या ज्ञापिका होता है।

8. **निरामया** – रोग से रहित। आधि –व्याधि, पीड़ा बाधा से परे। आमय का अर्थ होता है रोग।

9. **संहारिणी** – प्रलय काल में जगत का संहार करने वाली। ब्रहम् की संहारिणी शक्ति जिसके कारण एक दिन हर एक को चाहे वह ईश्वर ही क्यों न हो जाना पड़ता है।

10. **महामाया** – बड़े बड़े देवताओं और ऋषि मुनियों को भी माया में डालने वाली। माया में डालने का अर्थ है सांसारिक या नष्ट होने वाली चीजों की ओर खिंचाव पैदा करना। माया की भी कारण स्वरूपा या जो माया से बढ़कर हो अर्थात उससे परे हो। सूक्ष्म जगत या परा जगत को संचालित करने वाली शक्ति। यहाँ महा का अर्थ है सूक्ष्म है क्योंकि जो सूक्ष्म होता है वही बड़ा होता है या विशाल होता है। यहाँ सूक्ष्म का अर्थ छोटा नहीं बल्कि अर्थ है जो इन्द्रियों से न अनुभव किया जा सके। जो माया से परे हो अर्थात भ्रम संशय रहित उसे भी महामाया कहते हैं। Delusionlessness महामाया है अर्थात जो भक्तों को माया से परे ले जाए या माया पार करा दे वह महामाया है। महा का अर्थ है "से बढ़कर", सर्वाधिक, अतिशय। माया से पार करा देती है अतः माया से बढ़कर हुईं। जो मायावियों को भी माया में डाल दे या मोहित कर दे वह महामाया है। परमात्मा की अव्यक्त शक्ति माया दिखाई देती है। मीयते प्रतीयते अनया इति माया अर्थात जिस शक्ति के कारण यह जगत प्रतीत होता है वह माया है। विशाल (दुस्तर) माया जिनके अधीन हैं। महामाया यस्या सा, महामाया। महामाया जिनकी है अर्थात महामाया जिनके अधीन है। महती विश्वमोहिनी माया यदधीना सा महामाया। विशाल सबको मोहित करने वाली माया जिनके अधीन है। माया का अर्थ ज्ञान, इच्छा, महिमा (यश या प्रभाव) है। महती च माया ज्ञानं, इच्छा, महिमा

च यस्या सा महामाया। जिनका ज्ञान या महिमा औरों से बढ़कर है। महती मा प्रमा यस्या सा महामा। अया शुभावहाश्च। विशाल ज्ञान वाली एवं शुभ (मंगल) लाने वाली। महती मा वागोंकारः। ताम् इयम् अयते। पूजनीय वाणी अर्थात ऊँ में गयी अर्थात उसमें स्थित या विराजमान। मा का अर्थ है वाणी। महती का अर्थ है पूजनीय अर्थात जो अन्य वाणियों से अधिक पूजनीय है। उत्सवों के द्वारा सब ओर व्याप्त लक्ष्मी (समृद्धि) को अपने उपासकों के लिए लाने वाली। महैः (उत्सवैः) आसमन्तात् (अभिव्याप्तम्) माम् (लक्ष्मीम्) उपासकाय आययति प्रापयति इति महामाया। मह+आ+मा+आया। महामाया का अर्थ है – सभी पदार्थों के वास्तविक रूप को छिपाकर दूसरे रूप में दिखाने वाली शक्ति। महा का अर्थ होता है बड़ा, जो सबको अपने में समेटे है वह सबसे बड़ा हुआ अतः महा का अर्थ सभी अर्थात सभी पदार्थ ले लिया गया। बड़े–बड़े देवताओं को भी माया में डालने वाली, मोहित कर देने वाली अर्थात उन्हें इन्द्रियों के विषय के प्रति आसक्त या आकर्षित करने वाली। ब्रह्मादीनापि मोहकत्तवात् महामाया। महा+अमाया, अ का एक अर्थ विष्णु भगवान भी है। अमाया का अर्थ हुआ विष्णु की माया और माया भगवान की वह शक्ति है जो सबकुछ करती है। इस प्रकार महामाया का अर्थ अति विशाल एवं भगवान विष्णु की सबकुछ करने वाली शक्ति हुआ। महा का अर्थ पूजनीय भी होता है। भगवान विष्णु की सबकुछ करने वाली शक्ति जो पूजनीय है। माया का अर्थ अघटितघटनापटीयसी होता है अर्थात कुछ भी कर देने वाली शक्ति माया है। माति अस्याम विश्वं इति माया अर्थात जिसमें विश्व प्रतीत होता है या जाना जाता है वह माया है।

11. **कटाक्षक्षेमकारणी** – कटाक्ष मात्र से अपने भक्तों का कल्याण करने वाली। कल्याण का अर्थ है आध्यात्मिक क्षेत्र में तरक्की, मोक्ष, आनन्द। आजकल कल्याण शब्द का अर्थ व्यापक हो गया है। जीवन के सभी पक्षों की तरक्की जिससे जीवन सँवर जाए कल्याण कहलाता है। पाँचों शरीर की आवश्यकताओं की पूर्ति होना कल्याण है। रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, स्वास्थ्य, बिजली, पानी, सड़क, मनोरंजन के साधन आदि जीवन के सभी पक्षों की तरक्की कल्याणकारी राज्य का कर्तव्य बताया गया है। दृष्टि–मात्र से कल्याण करने वाली।

12. **कमला** – जल को सुशोभित करने वाली। कम् (जलम्) अलति इति कमल, स्त्रीलिंग में कमला। लक्ष्मी जी समुद्र में अर्थात जल में पैदा हुई थी और उन्होंने समुद्र की शोभा को बढ़ाया। कमल में रहने वाली शोभा स्वरूपा। भगवान विष्णु को सुशोभित करने वाली। क का एक अर्थ भगवान विष्णु भी होता है। जल वाली अर्थात जल में रहने वाली। अमरकरकोष में कमल का एक अर्थ जल दिया गया है। सर्जनात्मक चेतना (Creative consciousness) को धारण करने वाली। क का अर्थ है जल जो Creative consciouness का प्रतीक है क्योंकि जल से ही सृष्टि पैदा हुयी है। पुराणों में आया है कि सर्वप्रथम जल था। मल् धारणे धातु होती है जिससे मला का अर्थ है धारण करने वाली। समस्त ज्ञान को धारण करने वाली। क का अर्थ है सिर और सिर अर्थात मस्तिष्क में ही ज्ञान को धारण किया जाता है। सिर का अर्थ है जो शरीर में सबसे ऊपर है। सिर स्थान को धारण करने वाली अर्थात् सभी देवी–देवताओं में श्रेष्ठ। वैदिक कोष में कमल का अर्थ जार या परस्त्रीगामी दिया गया है। कमल + आ, आ का अर्थ है नाश करना। परस्त्रीगामी व्यभिचारी पुरुषों को नाश करने वाली। पद्मचन्द्रकोश में कमल का अर्थ पद्म, जल, सारस पक्षी, ताँबा तथा कमला का अर्थ सर्वोत्तम, एक प्रकार का नींबू, सन्तरा दिया गया है। कमल (जल) स्त्रीलिंग में कमला हुआ। शब्द के आगे 'में विराजमान' या 'के समान' या 'का कारण' लगाने से शब्द के अन्य अर्थ निकल आते हैं। इस प्रकार कमला का अर्थ हुआ जल स्वरूपा, जल में विराजमान। कमला (सन्तरा) अस्या अस्ति इति कमला अर्थात सन्तरा वाली या सन्तरा से युक्त अर्थात पूजा में जिन्हें सन्तरा फल चढ़ाया जाता है। फल चढ़ाने से देवी उस फल से युक्त हो जाती हैं। उत्तरपदलोपी समास मानते हुए कमला का अर्थ सन्तराप्रिया या नींबू प्रिया कर सकते हैं अर्थात जिन्हें ये फल पसन्द है।

13. **विमला** – मल (विकार) से रहित शुद्धा। शाक्त या शैव दर्शन के तीनों मलों अर्थात आणव मल, कार्मिक

मल एवं मायिक मल से रहित। काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि विकारों से रहित। अतिशय निर्मल/सभी प्रकार के मलों से रहित। विगता मला यस्या सा अर्थात जिससे मल निकल गए हैं। छल, कपट से रहित शुद्ध चित्त वाली। नकुलीश पाशुपत दर्शन के अनुसार पाँच प्रकार के मल (दोष) है, इनसे रहित। आत्माश्रितो दुष्टभावो मलः। आत्मा की शक्ति को रोकने वाले तत्व मल है। ये है– (1) मिथ्याज्ञान, (2) अधर्म, (Demerit), (3) आसक्ति हेतु (Cause of Attachment), (4) च्युति (सदाचार से हट जाना), (5) पशुत्वमूल (जीव प्राप्त करने के अनादि संस्कार)। शैव दर्शन में भी तीन प्रकार के मल माने गये है जो है आणव मल, कार्मिक मल, मायिक मल, जिससे आत्मा की ज्ञान शक्ति, क्रिया शक्ति, इच्छा शक्ति बाधित हो जाती है। इन मलों या तत्वों के कारण ही हम अपनी पूरी शक्ति से कार्य नही कर पाते हैं। मल के कारण आत्मा पूरी तरह से प्रकाशित नहीं हो पाती है। मल वह है जिसके कारण आत्मा का स्वरूप ढक जाता है और उसकी शक्तियाँ पूर्ण रूप से प्रकट नहीं हो पाती हैं। ये तीन तत्व या भावनाएं है जिससे व्यक्ति सीमितता में फँसता है, जन्म, मृत्यु के चक्कर में फँस जाता है। मैं अपूर्ण हूँ अर्थात आणव मल। मैं भिन्न हूँ अर्थात मायिक मल। मैं कर्मों का कर्ता हूँ अर्थात कार्मिक मल। इस प्रकार के भाव ही मल है। अर्न्तशुद्धि के लिए इन्हें दूर करना आवश्यक होता है। श्रीसूक्त में क्षुत् और पिपासा को मल बताया गया है। सूक्ष्म शरीर में जो विषय विकार जम जाते है या उनकी छाप पड जाती है, वे भी मल कहलाते है। विमला का अर्थ है – मल से रहित। सूक्ष्म शरीर में रहने वाले विकारों को मल कहते हैं। योग में बताए गए योगमल से रहित। योगाभ्यास में चित्त विक्षेप के नौ विघ्न, योग प्रतिपक्ष, योग अन्तराय योग मल कहलाते हैं। पातंजलि योग सूत्र के अनुसार व्याधिस्त्यान संशय प्रमादलस्याविरति भ्रान्तिदर्शनालब्धभूमिकत्वानवस्थित्वानि चित्तविक्षेपास्ते अन्तराया।

14. **लीला** – लीलाओं वाली। लीलास्वरूपा। भीतर मौजूद आनन्द की अभिव्यक्ति के परिणाम स्वरूप होने वाले कार्यकलाप वाली। आनन्द का उफान होने पर शरीर से होने वाली स्वाभाविक क्रिया लीला है। लीला में कामना नहीं होने के कारण उस कर्म का अच्छा या बुरा कोई फल नहीं मिलता। अपनी सन्तान अर्थात प्राणियों से प्रेम होने के कारण प्रेमवश की जाने वाली क्रियायें या प्रेमवश सबकुछ देने या बताने के लिए की जाने वाली क्रियायें लीला हैं। लीला में अपने लिये कुछ भी चाहना नहीं होता अपितु जगत या दूसरों की भलाई की ही चाहना होती है। लीला में कर्तृत्व भाव नहीं हाता एवं सारा कार्य ऐसे होता है जैसे बायें हाथ का खेल हो अर्थात प्रयास रहित कार्य होता है। बेहद आसान अर्थात जिसमें प्रयास जैसी कोई चीज एहसास नहीं होती, वह क्रिया या कर्म लीला है। लीला playful activity of God है। जगत की उत्पत्ति, पालन, संहार देवी की लीला हैं। संसार भर की लीलाओं की कारण स्वरूपा। ईश्वर और सिद्ध के कर्म लीला होते हैं क्योंकि उनके पास कोई अभाव नहीं जिसे दूर करने के लिए उन्हें कर्म करने की आवश्यकता है। उन्हें कोई कर्मदोष नहीं लगता। अतः उनके कर्मों को लीला कहते हैं। लीला का उद्देश्य जगत का भला करना, जगत को सिखाना ही होता है और वह अपने शुभ संकल्पों से ही प्रेरित होता है, अतः लीला में कोई पाप पुण्य नहीं लगते। लीला अर्थात बेहद आसानी से, बायें हाथ के खेल की तरह करना। स्वयं में पूर्ण के द्वारा ही लीला हो सकती है। दूसरे का भला हो या दूसरे को कुछ प्रेरणा दी जाए या कुछ शिक्षा दी जाए, इस हेतु सक्षम व्यक्ति द्वारा किया गया कृत्य जिसमें जरा भी परिश्रम न हो एवं कर्तृत्व भाव न हो, ऐसा कृत्य लीला कहलाती है। भगवान ही लीला कर सकता है और लीला सुनकर या देखकर प्रसन्नता या आनन्द की अनुभूति भी होती है। क्रीड़ा में भले ही मनोरंजन हो पर कुछ परिश्रम होता है। लीला में घटना घटित होने के कारण को ईश्वर के अलावा कोई नहीं जानता अर्थात ऐसा कैसे हो गया, इसका रहस्य अज्ञात रहता है। क्रीड़ा में खेल के नियम सभी को पता होते हैं और इस कारण घटित घटनाओं के पीछे का कारण भी लोगों को पता रहता है। यह लीला और क्रीड़ा में अन्तर है। (एक स्थान पर पढ़ने को मिला है कि जहाँ परिणाम मन के परिक्षेत्र के भीतर है किन्तु कारण उसके बाहर है वहाँ उस कर्म को लीला कहते हैं।

जहॉ कारण और परिणाम दोनों मन के परिक्षेत्र के भीतर आ जाते हैं उसे क्रीड़ा कहते हैं। ईश्वर जो कार्य करते हैं, उसके लिए उन्हें किसी को व्याख्या या स्पष्टीकरण देने की आवश्यकता नहीं है। कारण उनमें निहित है और कार्य करने में परेशानी हो रही है जीवों को। तो यहाँ परिणाम देखतें हैं, किन्तु कारण नहीं पाते हैं, It appears to be non causal, beyond the scope of causality (कारण के परे) इसी को लीला कहते हैं।)

15. **रत्नकान्तिः गुणाश्रिता** – रत्न की उस कान्ति वाली जो गुणों पर आश्रित है। प्रत्येक चीज सत, रज, तम गुण से बनी है। कान्ति भी इन्हीं गुणों से बनी है। यदि रत्नकान्तिगुणाश्रिता यह शब्द होता तो अधिक संगत होता, तब उसका अर्थ होता रत्न की जो कान्ति है उस कान्ति के गुणों को धारण करने वाली, जिसे वह दूसरों को भी देती है। देवी और देवता का प्रमुख लक्षण होता है देने वाली, देने वाला। जो उनके पास है उसे भक्तों को दे देती हैं। शब्द के अर्थ में भले ही देना अर्थ न आता हो, लक्षणा शक्ति से या देवी–देवता का स्वभाव जानकर देने वाली ऐसा अर्थ हो जाता है।

16. **मंगला** – सुख को लाने वाली एवं दुख गलाने वाली। मंगम् (सुखम्) लाति इति मंगला मम् (दुखम्) गलति इति मंगला। जिनका नाम लेने से सभी अच्छे कार्यों में सफलता प्राप्त होती है वह मंगला हैं। मम्+गिरण से भी अर्थ निकलता है। तब अर्थ होगा अनर्थों या कष्टों को निगलने वाली। मस्ज् धातु से मस्जयति रूप होता है जिससे भी मंगला शब्द बन सकता है। तब अर्थ होगा भक्तों के पापों को धो डालने वाली। माम् गम अर्थात मुझे प्राप्त हो, जिसके बारे में ऐसी चाहना होती है। मंगल अर्थात शुभ, अच्छा, शिव रूप। मंगल + आ। मंगल का अर्थ है मोक्ष और आ का अर्थ है देना। मोक्ष देने वाली मंगला है। मंगल का अर्थ हर्ष, सम्पत्ति, कल्याण भी है। इस प्रकार मंगला का अर्थ हुआ हर्ष देने वाली। सम्पत्ति (भौतिक और आध्यात्मिक दोनो सम्पत्ति) देने वाली। कल्याण देने वाली। मंगल होना अर्थात् भावी जीवन में विघ्न, कष्ट का अभाव होना, सुरक्षा होना एवं कार्य में सफलता मिलना अर्थात् ग्रहों का अनुकूल होना। इन सब चीजों को देने वाली मंगला है। मं का अर्थ है ज्ञान और गल का अर्थ है सुन्दरकण्ठ या सुनाद, इस प्रकार मंगला का अर्थ हुआ ज्ञानयुक्त सुन्दर नाद वाली या कण्ठ वाली अर्थात सुन्दर ज्ञान वाली।

17. **विजया** – स्थाई जीत हासिल करने वाली। सभी पर जीत हासिल करने वाली। वि अक्षर विश्व का है और विश्व का अर्थ है सभी। विशेष रूप से जयस्वरूपा अर्थात विशेष रूप से जय करने वाली। विशिष्ट जय वाली अर्थात ऐसी जय जो अन्य जयप्राप्तकर्ताओं से हटकर हो। साम दाम दण्ड भेद आदि द्वारा प्रतिद्वंदी को हराने वाली जया है पर जब आप ऐसी जीत हासिल करते है जिसमे आप दूसरों के दिलों में जगह बना लेते है, आपकी वाहवाही/प्रशंसा होती है, आप अन्य लोगो के आदर्श बन जाते है, लोग आपको देखने सुनने की इच्छा करते है तो ऐसे जीतने वाली को विजया कहते है। नैतिकता का पुट विजया में होता है। ऐसी जीत जिसमे अपने प्रतिद्वंदी को इस प्रकार नेस्तनाबूत कर दें कि वह भविष्य में विजेता के विरुद्ध सर उठाने के बारे में सोच भी ना सके अर्थात बीज या अंकुर को ही ख़त्म कर देने वाली जीत विजय होती है और उसे हासिल करने वाला विजया होता है। हमेशा एवं हर जगह जीतने वाली को भी विजया कहते है। वि का अर्थ है हमेशा या सभी जगह। जिनको पार पाना लगभग असम्भव था, ऐसे कठिन से कठिन प्रतिद्वन्दिओं पर जीत हासिल करने वाली। देवी के सामने ऐसे दैत्य हुआ करते थे जिन्हें इस प्रकार के वरदान मिले होते थे कि उनका मरना लगभग असम्भव था। अतः यह जीत विशेष जीत थी। मन और इन्द्रियाँ जिन्हें जीतना बहुत कठिन है उनपर जीत हासिल करने वाली। वि अर्थात बिना, बिना किसी सहायता के शत्रुओं पर जीत हासिल करने वाली। वि अर्थात अन्न, अन्न पर जीत हासिल कर ली है जिसने अर्थात उन्हें अन्न पर निर्भर नहीं होना पड़ता। विजया का अर्थ भाँग भी होता है। विजया अस्या अस्ति इति विजया (भाँग वाली)। भाँग वाली अर्थात पूजा के समय जिन पर भाँग चढ़ाई

जाती है। विजया का अर्थ है भाँग। वि का अर्थ विश्व अर्थात सभी या सर्वत्र होता है। समस्त राजाओं पर जीत हासिल करने वाली। सर्वत्र जीत हासिल करने वाली। वि का अर्थ अन्न, आकाश भी दिया गया है। अन्य पर जीत हासिल करने वाली अर्थात उन्हें जीवित रहने के लिए अन्न की आवश्यकता नहीं है। आकाश पर जीत हासिल करने वाली अर्थात आकाश से भी अधिक सूक्ष्म, आकाश का कारण। जीत का एक अर्थ होता है दूसरे से बढ़ के होना। कारण हमेशा कार्य से बढ़कर होता है। विशेष चीजों से भी बढ़कर अर्थात ज्ञान, भक्ति के स्वरूप वाली। पूर्ण सफलता देने वाली अर्थात् वह प्राप्त कराने वाली जिससे आगे कुछ प्राप्त करने के लिए नहीं है। यहाँ वि का अर्थ है विशेष या पूर्ण या Complete तथा जय का अर्थ है Success या सफलता। ब्रह्म या आत्म साक्षात्कार ही पूर्ण सफलता है। अन्य चीजों की प्राप्ति जय है किन्तु सर्वोच्च की प्राप्ति विजय है क्योंकि इसके बाद कुछ और पाने को नहीं है। विजय में विशेष का अर्थ यह भी किया जाता है जो स्थाई हो। किसी शत्रु पर जीत हासिल करने के बाद वह जीत स्थाई हो तो उसे विजय कहेगें। तात्पर्य है कि शत्रु दोबारा से सिर उठाने के बारे में सोचेगा भी नहीं, अन्यथा उसे जय कहेगें, विजय नहीं। वि से विशेष, सर्वोच्च, पूर्ण, स्थाई, विश्व अर्थात सभी समय या सभी स्थान, इस प्रकार के अर्थ लेंगे। विशेष का अर्थ है जो औरों से हटकर हो।

18. **जया** – जीत हासिल करने वाली। जयति इति जया अर्थात जो जीतती हैं, वह जया हैं। इस प्रकार की जीत अन्य लोग भी हासिल करते है। जयशीला, सब जगह जीतने वाली चाहे युद्ध हो या मनुष्य के विकार हों। जया तिथि स्वरूपा। तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी जया तिथि हैं। जय अर्थात अभिवादन प्राप्त करने या प्रशंसा प्राप्त करने के गुणों से युक्त। कल्याण वचन को देने वाली अर्थात करने वाली। जय का एक अर्थ कल्याण–वचन भी होता है। कृष्ण की जय हो, इसका अर्थ है हम अभिवादन करते हैं, मेरी यह याचना है। जय देने वाली या जिनकी कृपा से जय मिलती है। जय+आ, आ का एक अर्थ देना भी है। जयति सर्वोत्तमो भवति। जयति शत्रूनभिभवति। जातानिजातानि याति। जनयति च यमयति च। जो सर्वोत्कृष्ठ है अर्थात् गुण और शक्ति में दूसरों से बढ़ कर है। जय का अर्थ केवल शत्रु को हराना ही नहीं होता है बल्कि दूसरों से श्रेष्ठ होना भी होता है। शत्रुओं को दबा देने वाली अर्थात् परास्त कर देने वाली। उत्पन्न होने वाली प्रत्येक चीज में गई हुयी अर्थात् शक्ति रूप में विराजमान। दो बार जातानि शब्द लगाने से प्रत्येक का अर्थ आ जाता है। संसार को जन्म देने वाली एवं उसे अनुशासित या नियन्त्रित करने वाली।

19. **सर्वमंगलकारणी** – सभी उपासकों का मंगल करने वाली। उपासना करने में चाहे आलस्य हो या विधिविधान न भी जानते हों तब भी देवी के द्वारा सिर्फ मंगल ही होता है। सभी प्रकार का मंगल करने वाली। ब्रह्मबैवर्तपुराण में हर्ष, सम्पत्ति एवं कल्याण को मंगल कहा गया है। इन सभी मंगलों को अपने भक्तों को देती हैं। मंगल का एक अर्थ है मोक्ष जो पाँच प्रकार के होते हैं। सभी प्रकार के मोक्ष को देने वाली अर्थात जिसकी जैसी पात्रता है उसे उस प्रकार का मोक्ष देने वाली।

20. **कामिनी** – काम (शिव) से युक्त। कामि का एक अर्थ रति भी होता है। रति को ले जाने वाली अर्थात उसके पति तक पहुँचाने वाली या उसके कर्तव्य के प्रति जागृति पैदा करने वाली। देवी ने भस्म हुए कामदेव को अपनी कृपा से जीवित कर रति से मिलवाया था। सुन्दर स्त्री के स्वरूप वाली। जो शिव से अनुराग रखती हैं। शिव पुराण के अनुसार अपने पति या प्रेमी से अनुराग रखने वाली को कामिनी कहते हैं। जो कामस्वरूप परमात्मा की परमशक्ति है, परमशक्ति जैसे राधा। जिसकी कृपा की कामना सभी करते हैं। स्नेह या प्रेम करने वाली। इच्छा वाली अर्थात यह इच्छा रखती हैं कि भक्तों का कल्याण हो। काम अर्थात इच्छा। कामस्वामी कामी, कामस्वामिनी कामिनी। सत्या अस्या कामा इति कामिनी। कामोऽस्ति पुत्रः अस्या इति कामिनी। अमितानन्दश्च। काभ्यां ब्रह्मवायुभ्यामपि न मीयते। कश्चामिता। कामदेव जिनके है। विग्रह है कामः अस्या अस्ति, जिनका अर्थ है कामदेव जिनके है। स्वामी शब्द अर्थ में संगति के लिए दिया गया है अर्थात् कामदेव के स्वामी अर्थात् कामदेव

की देखभाल करने वाली, उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली, रक्षा करने वाली एवं कामदेव को उनकी बातों को मानना होगा। भगवान शिव द्वारा कामदेव को भस्म करने पर देवी ने उन्हें जीवित कर दिया था तथा आँखों में बसा लिया था जिससे वे कामाक्षी कहलायीं। जिनकी इच्छायें सत्य होती है अर्थात् इनके द्वारा किया गया मनोरथ निश्चित तौर पर पूर्ण होता है। ऐसा कहा गया है कि ईश्वर या सिद्ध जो बोलते है वाणी उनका अनुगमन करती है अर्थात् उसको पूरा करने में लग जाती है। सामान्य मनुष्य अर्थ या वस्तु का अनुगमन करता है पर देवता के साथ भी उल्टा है। जिनका पुत्र कामदेव था, भगवान कृष्ण के पुत्र का नाम प्रद्युम्न था जो कामदेव के अवतार कहे गये है। कृष्ण का पुत्र अर्थात् देवी का पुत्र क्योंकि कृष्ण और देवी में कोई अन्तर नही है। क अर्थात् सुख या आनन्द, अमित शब्द से अम शब्दाक्षर ले लिया। इसका अर्थ हुआ असीमित आनन्द स्वरूपा। असीम आनन्द वाली। जीवात्मा और प्राण के द्वारा भी जिसका ज्ञान नही होता अर्थात् ग्रहीत नहीं होता। क अर्थात् ब्रह्म अर्थात् परमात्मा अर्थात् जीवात्मा। क अर्थात् वायु अर्थात् प्राण वायु। जिनका सुख असीमित हो। कामिनी एवं सुन्दरी में अन्तर – काम भावों से युक्त होने के कारण जवान स्त्री जिसे देखने में काम विकार जाग्रत हो वह कामिनी है। वह भी कामिनी है। सुन्दरी गुणों से भी सुन्दर हो सकती है। वृद्धा भी गुण और ज्ञान के कारण सुन्दरी हो सकती है पर वह कामिनी नहीं होगी। क+अ+म अर्थात काम। क अर्थात ब्रह्मा, अ अर्थात विश्णु, म अर्थात महेश (शिव)। इन तीनों देवताओं से युक्त अर्थात त्रिदेवों द्वारा उपासनीया। तीनों देवों का सम्बन्ध तीन शक्तियों से है जो हैं– उत्पत्ति शक्ति, पालन (स्थिति) शक्ति एवं संहार शक्ति। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ– उत्पत्ति शक्ति, पालन (स्थिति) शक्ति एवं संहार शक्ति को धारण करने वाली। काम का अर्थ कामना या इच्छा, इच्छित पदार्थ, भोग्यवस्तु भी होता है, इनसे युक्त कामिनी है। मेरे भक्तों का कल्याण हो, ऐसी इच्छा से युक्त। अपने पति शिव से प्रेम करने वाली। पद्मचन्द्रकोष में कामिनी का एक अर्थ प्रेम करने वाली स्त्री दिया गया है। अन्य अर्थ सुन्दर स्त्री, भीरू स्त्री, स्त्री, दारूहल्दी दिया गया है। चाह रखने वाली अर्थात् कामना रखने वाली। भक्तों का कल्याण हो, धर्म की हमेशा जीत हो, ऐसी चाह या कामना रखने वाली। दारूहल्दी नामक औषधि के समान अर्थात् इस औषधि के समान रोगों को अर्थात् कष्टों को दूर करने वाली।

21. **कामनी** – सभी कामनाओं को लाने वाली अर्थात् उसकी पूर्ति के लिए लाने वाली अर्थात् सभी कामनाओं की पूर्ति करने वाली। इच्छा स्वरूपिणी। कमु कान्तौ धातु में कम् का अर्थ इच्छा करना होता है। कमेर्णि सूत्र एवं णेरनिटि सूत्र से कामि बना और ल्युट् प्रत्यय लगाने से कामनम् बना जो स्त्रीलिंग में कामनी हो गया। ल्युट् प्रत्यय प्रायः कर्ता कारक में नहीं होते अतः इच्छा करने वाली यह अर्थ नहीं निकालेंगे। जिसकी इच्छा की जाती, जिसके द्वारा इच्छा की जाती, इच्छास्वरूपिणी आदि अर्थ तो निकाले जा सकते हैं। काम+नी धातु से अर्थ निकाले तो अर्थ होगा शिव को ले जाने वाली, उनके आगे आगे चलने वाली, उनका मार्ग दर्शन करने वाली, उन्हें उनके कर्तव्य कर्म के लिए प्रेरित करने वाली अर्थ होगा। कामदेव का मार्गदर्शन करने वाली या नेतृत्व करने वाली, कामदेव को उनके कर्तव्य के लिए प्रेरित करने वाली, यह अर्थ निकलेगा। एकाक्षरीकोश में का का अर्थ दुर्गा, पृथ्वी दिया गया है। या का रूपेण मन्यते इति कामनी। जिनको पृथ्वी के रूप में या दुर्गा के रूप में जाना जाता है, यह कामनी का एक अन्य अर्थ है। काम् (दुर्गाम्) मन्यते इति कामनी अर्थात दुर्गम पदार्थों या दुर्गम ज्ञान को जानने वाली। (कामिनी हो तो अर्थ होगा काम से युक्त।) पृथ्वी को जीवन देने वाली अर्थात प्राण स्वरूपा। का का अर्थ है पृथ्वी, काम् अनति इति कामनी। दुर्गा/पृथ्वी को मानती हैं अर्थात उन्हें आदर का स्थान देती हैं। एकाक्षरी कोष के अनुसार का का अर्थ होता है दुर्गा, पृथ्वी, शोभा आदि तब इस नाम का अर्थ दुर्गा के रूप में या पृथ्वी के रूप में जो मानी गई है। इच्छा रखने वालों को इच्छा पूर्ति तक ले जाने वाली अर्थात अपने भक्तों की इच्छा पूरी करने वाली। कामम् अस्य अस्ति इति कामः, कामः का अर्थ है इच्छा वाला। कामम् नयति इति कामनी। काम का अर्थ शिव भी होता है। कामम् नयति अर्थात शिव को शिवत्व की ओर ले जाने वाली। का रूपेण

मन्यते / मनुते इति कामनः, स्त्रीलिंग में कामनी हो गया। काम (अभिलाषा) पूर्ण करने वाली। लौकिक अभिलाषा जैसे पुत्र, धन की अभिलाषा एवं अलौकिक अभिलाषा जैसे मोक्ष की प्राप्ति। इच्छा स्वरूपिणी। काम का अर्थ है इच्छा। कमु कान्तौ धातु से ल्युट् प्रत्यय लगाकर कामनम् बनेगा, फिर कामनी बनेगा। काम् अनति अर्थात पृथ्वी को जीवन देने वाली या पृथ्वी की प्राणस्वरूपा। का का अर्थ है पृथ्वी। सभी कामनाओं को लाने वाली अर्थात् उसकी पूर्ति के लिए लाने वाली अर्थात् सभी कामनाओं की पूर्ति करने वाली। कामम् नयति इति कामनी। शिव का नेतृत्व करने वाली अर्थात् उनका मार्गदर्शन करने वाली। कामदेव का मार्गदर्शन करने वाली। नी धातु में ड प्रत्यय लगाने से न शब्द बनेगा जिसका अर्थ है नेतृत्व करने वाला, स्त्रीलिंग में नी हो जायेगा। काम का अर्थ है शिव, कामदेव। काम का अर्थ सृष्टि उत्पन्न करने की इच्छा, सर्वसंकल्पमय ईश्वर भी है। ब्रह्मा जी को सृष्टि उत्पन्न करने की इच्छा के प्रति ले जाने वाली अर्थात् उनके अन्दर ऐसी इच्छा पैदा करने वाली।

22. **काम्या** – चाही जाने वाली (निरन्तर ब्रह्मसाधना में लगे हुए तपस्वियों द्वारा चाही जाने वाली)।

23. **कामुका** – इच्छा करने वाली। भक्तों का कल्याण हो, जगत का कल्याण हो ऐसी इच्छा रखने वाली। धन की कामना रखने वाली स्त्री को भी कामुका कहते हैं। देवी के सन्दर्भ में अर्थ होगा भक्ति और श्रद्धा रूपी धन की कामना करने वाली। देवी चाहती हैं कि उनके उपासक उन्हें भक्तिरूपी धन दें। सामान्यतः कामुक का अर्थ रति की इच्छा करने वाला पुरुष होता है। कामुक+आ, आ का एक अर्थ है नाश करना। काम भावना से अत्यधिक ग्रस्त दुष्टों का नाश करने वाली। देवी के सन्दर्भ में कुण्डलिनी शक्ति स्वरूपा कह सकते हैं क्योंकि मूलाधारचक्र में स्थित कुण्डलिनी शक्ति सहस्रारचक्र में स्थित शिव से मिलने के लिए अति व्याकुल रहती हैं। कामुक का अर्थ अशोक वृक्ष, माधवी लता, चिड़ा (गौरा) भी दिया गया है। कामुकः अस्या अस्ति इति कामुका। अशोक वृक्ष वाली अर्थात अशोक वृक्ष है पास में जिनके अर्थात सीता जी। सीता जी अशोक वाटिका में रही थीं। (संस्कृत में कामुकी का अर्थ अत्यन्त रति की इच्छा रखने वाली या पुंश्चली या व्यभिचारिणी स्त्री कहा गया है। कामुका में ऐसा होना अनिवार्य नहीं है।) अशोक वृक्ष में अंश रूप से या शक्ति रूप से रहने वाली। चटक चिड़िया में अंश रूप से या शक्ति रूप से रहने वाली। शब्दकोश में कामुक का अर्थ अशोक वृक्ष या चटक चिड़िया दिया गया है। इच्छा रखने वाली। भक्तों का कल्याण हो ऐसी इच्छा रखने वाली। भक्तिधन प्राप्त हो ऐसी इच्छा रखने वाली। शब्दकल्पद्रुम में कामुका का अर्थ धन की इच्छा रखने वाली एवं कामुकी का अर्थ कामशक्ति से युक्त बताया गया है। लौकिक काम भावना की अधिष्ठात्री। (कामुका का अर्थ होता है सामान्य कामना, अभिलाषा रखने वाली जबकि कामुकी का अर्थ है मैथुन की इच्छा रखने वाली स्त्री।) शब्द कल्पद्रुम के अनुसार कामुका का अर्थ है ऐश्वर्य (धन सम्पत्ति) की अभिलाषा रखने वाली स्त्री, देवी के सन्दर्भ में अर्थ होगा – भक्तों को धन सम्पत्ति मिले, ऐसी अभिलाषा रखने वाली जो तभी सम्भव होगा जब वे ऐश्वर्य की स्वामिनी एवं दायिनी हों। धन की इच्छा रखने वाली अर्थात् अपने भक्तों की भक्ति रूपी धन की इच्छा रखने वाली। (व्याकरण के अनुसार कामुका का अर्थ है धन की इच्छा रखने वाली स्त्री एवं कामुकी का अर्थ है कामातुर स्त्री या व्यभिचारिणी स्त्री)। कामुक + आ, आ का अर्थ है नाश करने वाली या देने वाली। कामुक का अर्थ है कामी व्यक्ति या ऐयाश व्यक्ति। इस प्रकार कामुका का अर्थ हुआ ऐयाश व्यक्तियों का नाश करने वाली।

24. **कामचारिणी** – स्वेच्छानुसार विचरण करने वाली। वह कहीं भी विचरण कर सकती है, वह किसी भी रूप में जैसे ब्रह्मा, विष्णु, महेश के रूप में विचरण कर सकती है। काम का अर्थ इच्छा है। स्वतन्त्र, स्वेच्छा से क्रियाशीला। काम का अर्थ है इच्छा। अपनी इच्छानुसार विचरण करने वाली या कोई भी क्रिया करने वाली। स्वतन्त्र, स्वेच्छा से क्रियाशीला। काम का अर्थ है इच्छा। अपनी इच्छानुसार विचरण करने वाली या कोई भी क्रिया करने वाली। तीनों लोकों में या सर्वत्र अबाध रूप से विचरण करने वाली।

25. **कामप्रिया** – भगवान शिव की प्रिया अर्थात भगवान शिव जिन्हें पसन्द करते हैं। काम का एक अर्थ शिव भी होता है। भगवान विष्णु की प्रिया/वल्लभा। काम अर्थात जो कामनाओं को पूरा करे अर्थात भगवान विष्णु।

26. **कामरता** – इच्छाशक्ति में लीन। विषयों में लगी हुई या लीन। तीन प्रकार के काम हैं, आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आदिदैविक। शिव से प्रसन्न। कामदेव से प्रसन्न। रता का अर्थ हे– लगी हुई, प्रसन्न।

27. **कामा** – कामदेव की शक्ति स्वरूपा। जितनी भी कामनायें अर्थात इच्छाऐं हैं उनके स्वरूप को धारण करने वाली। काम + आ = कामा। एकाक्षरी कोष में आ का एक अर्थ शक्ति दिया गया है। इच्छा स्वरूपिणी। काम + आ, आ का अर्थ है नाश करना। इच्छाओं को नाश करने वाली अर्थात अपने भक्तों को इच्छा रहित बनाने वाली जिससे वे मन के पार चले जायें एवं उन्हें मोक्ष मिल जाये। सर्वेः काम्यते इति कामा। सभी के द्वारा जिनकी कामना की जाती है अर्थात जिनकी कृपा पाने की कामना की जाती है। अमम् अमितम् कम् सुखम् अस्या इति कामा अर्थात जिनका सुख या आनन्द असीमित है।

28. **कामस्वरूपिणी** – इच्छास्वरूपिणी। इन्द्रियों की अपने अपने विषयों की ओर प्रवृत्ति स्वरूपा। भगवान शिव, कामदेव, प्रद्युम्न या बलराम के स्वरूप को धारण करने वाली।

29. **कामाख्या** – कामनाओं को पूरी करने वाली, ऐसी संज्ञा है जिनकी। आख्या का अर्थ है संज्ञा, अभिधान, नाम आदि। कामा अर्थात काम+आ, आ का अर्थ देना अर्थात पूरा करना। काम का अर्थ प्रेम भी होता है। प्रेम की भावना को देने वाली, ऐसा नाम है जिनका। प्रेम की देवी। काम का अर्थ काम देव भी है। कामदेव को देने वाली अर्थात भस्म होने के बाद उनको पहले की तरह पूरा शरीर देने वाली, ऐसे नाम वाली। कामदेव को भस्म करने वाली, ऐसे नाम वाली। शिव ने भस्म किया अर्थात शिव की शक्ति ने भस्म किया अर्थात देवी ने भस्म किया। काम + आ, आ का अर्थ है देना, नाश करना। देवी प्रेम की देवी हैं। जहाँ कामाख्या देवी का मन्दिर है वहाँ के नीलांचल पर्वत में भगवान शिव के साथ प्रणय क्रीड़ा करने के लिए गयी थीं।

30. **कामबीजस्था** – क्लीं बीज में स्थित। काम की कारण रूप में स्थिति वाली। काम का अभिप्राय लौकिक या अलौकिक दोनों अर्थो से है। क्लीं बीज का अर्थ है कामदेव स्वरूपी भगवान कृष्ण मेरे दुखों को दूर करें या सुख दें। क का अर्थ है कामदेव अथवा कृष्ण, ल का अर्थ है इन्द्र, ई का अर्थ तुष्टिभाव और अनुस्वार का अर्थ है दुखहरण या सुखदाता। इन्द्र का अर्थ ऐश्वर्य ले सकते हैं क्योंकि इन्द्र का तात्पर्य है ऐश्वर्य देने वाला। हे कामदेव स्वरूपी भगवान कृष्ण मुझे ऐश्वर्य, सन्तोष और सुख दो। यदि ल का अर्थ व्यापक लें तो क्लीं बीज मन्त्र का अर्थ होगा – हे सर्वव्यापी कृष्ण मुझे सन्तोष दो, सुख दो। कृष्ण और राधा के युग्म का एक दूसरे के प्रति आकर्षण भी क्लीं बीज का अर्थ है। क अर्थात कृष्ण, ल अर्थात राधा, ई दोनों का युग्म और बिन्दु (म्) एकदूसरे के प्रति आकर्षण है। कृष्ण और राधा का युग्मरूप मेरे दुखों को दूर करे। ई का अर्थ है युग्म रूप और बिन्दु का अर्थ है दुखहरण। कहीं पर लिखा है ल का अर्थ दिव्यतेज और ई का अर्थ है योगेश्वर या राजराजेश्वरी, क का अर्थ है कृष्ण और बिन्दु का अर्थ है दुखहरण। इस प्रकार इस बीजमन्त्र का अर्थ हुआ योगेश्वर कृष्ण का दिव्यतेज मेरे दुखों को दूर करे। विशेषण के रूप में इस बीज मन्त्र का अर्थ होगा दुख दूर करने वाले, ऐश्वर्य एवं सुख देने वाले कामदेव स्वरूपी भगवान कृष्ण या पराशक्ति। इन्द्र अर्थात ऐश्वर्य देने वाला।

31. **कामपीठनिवासिनी** – कामपीठ में निवास करने वाली। कामरूप राज्य (आज का असम) के चार क्षेत्रों में एक क्षेत्र का नाम कामपीठ है। यह संकोश नदी के पास का क्षेत्र है। यह वह स्थान है जहाँ कामाख्या देवी का वास है। आज के कामरूप जिले को कामपीठ कह सकते हैं। मूलाधारचक्र से सम्बन्धित कामपीठ में निवास करने वाली। योनि स्थान, गुदा और लिंग के बीच का स्थान जहाँ सीवनी होती है वह कामरूप पीठ है। इस चक्र/स्थान में ध्यान लगाने से यह मनोवांछित फल देता है जिसके कारण इसे कामपीठ या कामरूपपीठ कहते है। असम के कामाख्या मन्दिर का क्षेत्र भी कामपीठ कहलाता है।

32. **कामदा** – कामनाओं अर्थात मनोरथों को देने वाली। तात्पर्य है अपने उपासकों के मनोरथों को पूरा करने वाली। समस्त कामनाओं (लौकिक और अलौकिक दोनों) को देने वाली या पूर्ण करने वाली।

33. **कामहा** – नकारात्मक या विनाशकारी कामनाओं या अहित करने वाली कामनाओं का नाश करने वाली। कामदेव को नष्ट करने वाली। भगवान शिव ने कामदेव को नष्ट किया था अर्थात भगवान शिव की शक्ति ने कामदेव को जलाया था। शिव और शक्ति में अभेद है। दुष्टों की अनुचित कामनाओं को नष्ट करने वाली। कुम्भकर्ण तपस्या से कुछ और माँगना चाहता था परन्तु धर्म की रक्षा के लिए देवी ने उसकी जिह्वा पर बैठकर कुम्भकर्ण से कुछ और कहलवा लिया।

34. **काली** – जो गणना करती है वह है काली, क्या गणना करती है, जो उत्पन्न प्राणियों एवं पदार्थो की आयु की गणना करती है। कलयति इति काली अर्थात गणना करने वाली को काली कहते हैं। गणना करने का तात्पर्य है कि किसे कितने समय तक अस्तित्व में रहना है यह निर्धारित करना। कलयति का अर्थ गणना करना, रचना करना एवं संहार करना होता है। जो संसार की रचना करती है वह भी काली है। जो संसार का संहार करती है वह भी काली है। काल अर्थात शिव की स्त्री या शक्ति। काल को भी अपने में समेटने वाली। कालसंकलनात् इति काली। काले रंग वाली। प्रलय काल में विश्व का संहार कर देने वाली। काली वह शक्ति या तत्व है जो अपने भीतर स्थित विश्व को अपने से बाहर फेंकता है अर्थात् बाहर निकालता है। कल् क्षेपे धातु होती है जिसके अनुसार कल् धातु को अर्थ फेंकना होता है। वह शक्ति जो सभी पदार्थों को ज्ञान करती है। कल् धातु का एक अर्थ जानना अर्थात् ज्ञान करना भी होती है। गति (ज्ञान) का एक अर्थ प्राप्त करना भी होता है। संस्कृत में गति, ज्ञान और प्राप्ति समानार्थक माने जाते है और कल् गतौ धातु से कल् धातु का अर्थ जाना, जानना एवं प्राप्त करना होता है। जो विश्व को प्राप्त करती है अर्थात् अपने भीतर समा लेती है अर्थात् संहार कर देती है। कल् संख्याने धातु भी होती है, जिसका अर्थ होता है गिनना अर्थात अलग–अलग करना। अलग–अलग होने पर ही गिनती हो सकती है। जो पदार्थों की आयु की गणना करती है अर्थात् यह निर्धारित करती है कि उसकी आयु पूरी हुई या नहीं हुई जिससे पूरी होने पर उसका अस्तित्व मिटाया जा सके। वह शक्ति जो अव्यक्त पदार्थों को एक दूसरे से पृथक करती है अर्थात् जिसके कारण यह पदार्थ यह है, यह पदार्थ वह नही है, वह पदार्थ वह है, इस प्रकार का भेद करवाती है। संख्यान का अर्थ है अन्यतो व्यतिभेदन अर्थात् दूसरे से अलग होना। काल अर्थात् भगवान शिव की पत्नी। जो समय शक्ति को उत्पन्न कर इस समय शक्ति से संसार का संचालन करती है। जो अपने उपासकों को काल (मृत्यु) के भय से मुक्त कराती है। जो कालेवर्णन वाली है। कलयति विश्वम् इति काली अर्थात् जो प्रलय काल में विश्व का संहार कर देती है। अनियन्त्रित कुण्डलिनी स्वरूपा। योगपीठ मुंगेर की पुस्तक के अनुसार अनियन्त्रित कुण्डलिनी काली है अर्थात ऐसी कुण्डलिनी जो जग्रत तो हुई है पर अनियन्त्रित हो गई है वह काली है। नियन्त्रित कुण्डलिनी अर्थात जो रक्षा करे या अच्छा करे वह दुर्गा है।

35. **कपाली** – कपाल धारण करने वाले शिव की पत्नीस्वरूपा। कपाल को धारण करने वाली। संस्कृत व्याकरण के अनुसार कुछ अकारान्त नाम में उनकी पत्नी का अर्थ देने के लिए ङीप् (ई) प्रत्यय लगाते हैं, वहीं ऐसा भी नियम (गौरादिभ्यः.... सूत्र) है कि स्वतन्त्र गुण या लक्षण बताने के लिए बिना पत्नी अर्थ लिए स्त्रीलिंग बन जाएगा। कपाल का अर्थ है – सिर की खोपड़ी, मिट्टी का वह पात्र जिसे भिक्षुक लोग खाना खाने के लिए रखते हैं। ब्रह्म का पालन करने वाली। क का अर्थ है ब्रह्म। सुख की रक्षा करने वाली अर्थात विचार स्वरूपिणी, ज्ञान स्वरूपिणी। क का एक अर्थ है सुख। अपनी स्वरूप का ज्ञान होने पर व्यक्ति आनन्द की अवस्था में आ जाता है। कपाल वैराग्य का प्रतीक है। कपाल, कमण्डलु, कलश, घड़ा आदि शब्द सृष्टि निर्माण के लिये आवश्यक तत्वों एवं अमृत (मोक्ष) के भी प्रतीक हैं जैसे ये तत्व, अमृत इनमें भरे हुए हैं। अमृत है अर्थात अमृत भक्तों को दिया जायेगा। कपाल अर्थात सुख की रक्षा करने वाला अर्थात उसका अस्तित्व बनाये रखने वाला।

शाश्वत सुख अर्थात आनन्द अर्थात मोक्ष को बनाये रखने वाली अर्थात भक्त को इस स्थित से नीचे नहीं उतरने देने वाली। स्वर्ग का पालन करने वाली अर्थात् रक्षा करने वाली। एकाक्षरी कोष में क का एक अर्थ स्वर्ग दिया गया है। इस कोष से अन्य अर्थ भी ले सकते है। सुख की रक्षा करने वाली अर्थात् अपने भक्तों के सुख को हमेशा बनाये रखने वाली।

36. **करालिका** – प्रलयकाल, राक्षसों का संहार करने के दौरान विकराल रूप धारण करने वाली अर्थात भयंकर या डराने वाला रूप धारण करने वाली। बड़े दाँतों वाली। अग्नि की जिह्वा स्वरूपा। अग्नि की सात जिह्वाओं में एक जिह्वा का नाम करालिका भी है। (कराली ही करालिका है तथा करालिका का एक अर्थ है – बहुत से हाथों वाली। बहुत से कामों को एक साथ करने वाली। कर का अर्थ है हाथ और हाथ से ही प्रायः कार्य किया जाता है। आली अर्थात पंक्ति।)

37. **कंसारी** – कंस नामक राक्षस की शत्रु स्वरूपा। कंस से उपलक्षित सभी राक्षसों की शत्रु स्वरूपा। कंस अज्ञान से समर्थित अहंकार का प्रतीक है अर्थात ऐसे अहंकार का प्रतीक है जिसके पीछे अज्ञान है। कंस बुरी प्रवृत्तियों का प्रतीक है।

38. **कमलाकामा** – सृष्टि में निवास करने वाली और कामनाओं से रहित। कमल सृष्टि का प्रतीक है। कमल (जल) में निवास करने वाली और कामनाओं से रहित। कमल का एक अर्थ जल भी है। जल जीवन का प्रतीक है। कमल पुष्प में निवास करने वाली और कामनाओं से रहित। कमला च असौ अकामा इति कमलाकामा। कमल में निवास करने वाली और सुन्दर स्वरूप वाली। कमला च असौ कामा। काम का अर्थ सुन्दरता से है। धन सम्पत्ति देने वाली और सुन्दर। लक्ष्मी की कामना करने वाली यह अर्थ उचित नहीं ठहरता। कमला अर्थात लक्ष्मी अर्थात धन सम्पत्ति देने वाली।

39. **कैलासेश्वरवल्लभा** – शिव की प्रियतमा। सहस्रार चक्र को कैलाश पर्वत माना गया है जहाँ पर शिव का वास है। सहस्रार चक्र में विराजमान शिव की अतिशय प्रिय। कैलास अर्थात सहस्रार चक्र। ईश्वर अर्थात शिव। वल्लभा अर्थात अतिशय प्रिया।

40. **कात्यायनी** – कात्यायन ऋषि के यहाँ जिन्होंने पुत्री रूप में अवतार लिया। कात्यैः अय्यते प्राप्यते इति कात्यायनी। कात्य का अर्थ है ब्रह्मनिष्ठ। ब्रह्मनिष्ठ लोगों द्वारा जिसे प्राप्त किया जाता है। जो हमेशा ब्रह्म के चिन्तन में लीन है वह ब्रह्मनिष्ठ है। कात्य एक गोत्र है। गोत्र में गो का अर्थ है वाक्, त्र का अर्थ है रक्षा करना। इस प्रकार कात्यायनी का अर्थ हुआ वाग्रूपिणी रक्षण कर्त्री। कति अयनानि सन्ति अस्याः इति कत्यायनी अर्थात कितने ही मार्गों या उपायों वाली अर्थात बहुत से या अनन्त मार्गों या उपायों वाली। तात्पर्य हुआ देवी को पाने के अनेक मार्ग हैं। ब्रह्म है श्रेष्ठ आश्रय/निवास स्थान जिनका अर्थात ब्रह्म में रहने वाली। क+ अति– अयन। क का अर्थ है ब्रह्म। अति अर्थात श्रेष्ठ एवं अयन अर्थात निवास स्थान या आश्रय। शास्त्र में लिखा गया है – कं ब्रह्म कं शिरः प्रोक्तं अश्मसारं च कं तम, धारणाद् वासनाद् वापि तेन कात्यायनी मता। क अक्षर से बोधित पदार्थों को धारण करने वाली अर्थात उसमें रहने वाली शक्ति या ऊर्जा कात्यायनी है। क अक्षर से ब्रह्म, सुख या आनन्द, स्वर्ग, सिर, जल अस्मसार आदि का बोध होता है। स्वर्ग है जिनका श्रेष्ठ आश्रय अर्थात श्रेष्ठ निवास स्थान। शतपथ ब्राह्मण में आया है कि प्रजापति से आठ पदार्थों की उत्पत्ति हुई जो क्रमानुसार हैं– जल, जल से फेन हुआ, फेन से मृत्तिका हुई, मृत्तिका से सिकता हुई, सिकता से शर्करा हुई, शर्करा से अश्म हुआ, अश्म से लौह एवं लौह से स्वर्ण हुआ। इस प्रकार अश्मसार का अर्थ स्वर्ण भी कर सकते हैं और स्वर्ण तेजोमय पदार्थ का स्थूल रूप है। इस प्रकार कात्यायनी का अर्थ हुआ स्वर्ण या तेजोमय पदार्थ में शक्ति या ऊर्जा के रूप में रहने वाली। कति+ अयन, इस प्रकार से भी कात्यायनी शब्द का अर्थ निकाल सकते हैं। कति अयनानि सन्ति यस्याः

इति कात्यायनी। जिनके बारे में पूछा जाता है कि जिनके कितने घर हैं अर्थात अनन्त घरों वाली। देवी प्रत्येक प्राणी के हृदय में, कण–कण में शक्ति या ऊर्जा रूप में रहती हैं। जिनके कितने मार्ग (उपाय) हैं अर्थात अनन्त या बहुत से उपायों वाली। अयन का एक अर्थ है मार्ग अर्थात उपाय। देवी को पाने के लिए बहुत से उपाय हैं, यह तात्पर्य है। एकाक्षरी कोष में त्या का अर्थ धरणी, नदी दिया गया है। इस आधार पर भी अनेक अर्थ निकाले जा सकते हैं। क+अति–अयन, का + त्या, एकाक्षरी कोष से क, का के अर्थ लेकर कात्यायनी शब्द के कई अर्थ निकाले जा सकते हैं। The form of Shakti which gives insight into and controls passions. In name of Parvati, another name of Shakti. सिर को बहुत अधिक ऊपर ले जाने वाली अर्थात् Super-consciouness क अर्थात् सिर। अति अर्थात् extreme अयन अर्थात् movement। तात्पर्य है अपने मन को संसार या संसार से सम्बन्धित पदार्थो एवं भावनाओं की बजाय ऊपर अर्थात् ईश्वर की चेतना में ले जाना चाहिए। इस चेतना को प्राप्त कराने वाली देवी कात्यायनी है।

41. **केशवा** – केशव की शक्तिस्वरूपा। सुन्दर बालों वाली। सुन्दर लम्बे बालों वाली। सुन्दर लम्बे एवं काले घुँघराले बालों वाली। व कभी कभी मतुप् (युक्त) अर्थ में होता है। क् (ब्रह्मा), अ (विष्णु) एवं ईश (शिव) से लिकर केश बनता है जिसका अर्थ होता है ब्रह्मा, विष्णु और महेश। वा धातु का अर्थ है गति करना। वाययति अर्थात गति कराने वाली अर्थात प्रेरित करने वाली अर्थात अपने कर्तव्यों के लिए प्रेरित करने वाली। इन तीनों देवताओं को प्रेरित करने वाली अर्थात सृष्टि पालन और संहार के लिए प्रेरित करने वाली। हर पल कोई जन्म लेता है, किसी का पालन (रक्षा एवं पोषण) होता है और किसी की मृत्यु होती है।

प्रकीर्णाः कुन्तलाः परितोमुखमस्योति प्रशस्तकेशवती केशवः। अवतारार्थं वितीर्णशुक्लकृष्णकेशवती केशवा। सूर्यकिरणाः केशा उच्यन्ते। तेषु वर्तमानो इयम् जगद् वर्तयति। कश्च ईशस्य केशौ ब्रह्मरूद्रौ, सृष्टिसंहारयोर्वर्तयतीति च। कृष्णरूपेण केशिनं हतवानिति च। प्रशंसनीय (अच्छे) बालों वाले। अन्तिम व अक्षर मतुप् (युक्त) अर्थ में है। प्रकीर्ण अर्थात खुले हुए। मुख के चारों ओर बिखरे हैं बाल जिनके जिससे देखने में अच्छे लग रहे हैं। उतरने के लिए सफेद और काले केशों को फैलाती हैं, यहाँ सफेद केश से तात्पर्य दिन के समय सूर्य की सफेद किरणें हैं एवं काले केश से तात्पर्य रात की काली किरणों से है। केश का अर्थ सूर्य की किरण भी होता है। उन किरणों में रहते हुए संसार का व्यवहार करती हैं अर्थात संसार को चला रही हैं। क अर्थात ब्रह्मा एवं ईश अर्थात रूद्र। ब्रह्मा और रूद्र में रहते हुए व्यवहार (कर्म) कराती हैं अर्थात सृष्टि और संहार का कार्य करवाती हैं। व्यवहार करना अर्थात कार्य करना। कृष्ण रूप से जिन्होंने केशी नामक राक्षस को मारा था। बाल बाहर को उगते या बढ़ते हैं अर्थात केश शब्द बाहर की ओर जाने वाले विचारों (Outgoing thoughts) के लिए भी प्रयुक्त होता है। वाति हिनस्ति धातु भी होती है। केशान् वाति हिनस्ति इति केशवा। बाहर की ओर जाने वाले विचारों का नाश करने वाली अर्थात व्यक्ति को अन्तर्मुखी बनाने वाली। ब्रह्मा, विष्णु, महेश अर्थात् त्रिदेवों तक पहुँचाने वाली। क् का अर्थ है ब्रह्मा, अ का अर्थ है विष्णु एवं ईश का अर्थ है शिव। वा धातु का अर्थ है गति करना। प्रेरणा अर्थ में वाययति धातुरूप बनेगा जिसका अर्थ होगा गति कराना या पहुँचाना। भक्तों को या सुपात्रों को त्रिदेवों तक पहुँचाने वाली। केशव अर्थात् भगवान कृष्ण की शक्ति। केशव + आ, एकाक्षरी कोष में आ का एक अर्थ शक्ति दिया गया है।

42. **करूणा** – करूणा भाव स्वरूपा। दूसरों के दुखों को देखकर उन्हें दूर करने के भाव एवं प्रयास करने को करूणा कहते हैं। करूणा वाली, सभी के प्रति करूणा की भावनाओ से ओत –प्रोत रहने वाली। करूणा अस्या अस्ति इति करूणा। करूण रस की शक्ति स्वरूपा। करूण + आ, एकाक्षरीकोश में आ का एक अर्थ शक्ति दिया गया है। करूण नामक तीर्थ में विराजमान। करूणा नामक वृक्ष में विराजमान। क अर्थात ब्रह्म,

आत्मा, स्वर्ग, सूर्य, उदात्त (श्रेष्ठ), शुद्ध। रू अर्थात ध्वनि, शब्द। ण अर्थात ज्ञान, आनन्द। ब्रह्म सम्बन्धी उपदेशों से या श्रेष्ठ उपदेशों से आनन्दित करने वाली। रू अर्थात शब्द अर्थात उपदेश। णा अर्थात ण+आ, आ का अर्थ है देना, नाश करना। इस प्रकार णा का अर्थ हुआ ज्ञान देना, आनन्द देना। दया+ विशालहृदयता को करूणा कहते हैं। पीड़ित दुखी या असहाय व्यक्ति के दुख से द्रवित होकर उसकी सहायता को तत्पर होना दया है। जो हमारा उपकार कर सकता है, ऐसा करने के लिए उसका तैयार रहना कृपा है। कृपा शब्द का प्रयोग शिष्टाचार के नाते भी किया जाता है जिसमें केवल सद्भावना और विनम्रता ही झलकती है। करूणा दया की निकटवर्ती स्थिति है परन्तु इसमें दया भावना के साथ साथ विशालह्रदयता भी लक्षित होती है। दया का पात्र दया करने वाले के वश में होता है और वह उसका जो चाहे कर सकता है। परन्तु करूणा करने वाला बहुत महान होता है और वह केवल कल्याण (सुख देना, आवश्यकताओं की पूर्ति करना, आध्यात्मिक उत्थान करना) ही कर सकता है, अतः वह श्रद्धा का पात्र है। स्वार्थ से रहित दूसरों का दुख दूर करने की दयावृत्ति करूणा है। स्वार्थ से रहित दूसरों का दुख दूर करने की दयावृत्ति करूणा है। कृणाति हिंसति परदुखम् इति करूणा। जो दूसरों के दुख की हिंसा करती है अर्थात उसका विनाश करती है, वह करूणा है। वैदिक कोष के अनुसार करूण का एक अर्थ कर्त्तव्य (Duty), कार्य व्यवहार, अनुग्रह निग्रह आदि कर्म है। करूण + आ, आ का एक अर्थ है देना। कर्त्तव्य (Duty) देने वाली अर्थात् गुरू या शास्त्र के माध्यम से बताने वाली कि मनुष्यों के क्या कर्त्तव्य है अर्थात् उन्हें जीवन में क्या करना चाहिए।

43. **कामकेलिभुक्** – शिव के साथ क्रीड़ा करने का भोग करने वाली अर्थात आनन्द का अनुभव करने वाली। काम का एक अर्थ शिव भी होता है। शिव के साथ रति क्रीड़ा का भोग करने वाली अर्थात सुखानुभूति करने वाली। अपनी इच्छा के अनुसार क्रीड़ा का भोग करने वाली अर्थात क्रीड़ा करने वाली। कामा का अर्थ इच्छा है। कामनाओं की क्रीड़ाओं का भोग करने वाली। क्रीड़ा खुशी में होती है, क्रीड़ा से प्रसन्नता मिलती है। कामनावश जो क्रीड़ा की जाती है उससे मिलने वाली खुशी का उपभोग करने वाली। जो खुशि मिलती है उसका उपभोग आत्मा करती है अर्थात आत्मा ही देवी है। सामान्य अर्थ है काम (लौकिक और अलौकिक दोनों) की क्रीड़ाओं का उपभोग करने वाली। काम का एक अर्थ ब्रहम् की अध्यात्म–शक्ति से है। देवी के आराधना के प्रकरण में इसका ग्राह्य अर्थ होगा। ब्रहम् की अध्यात्मशक्ति के खेल में सदैव लीन रहने वाली।

44. **क्रिया** – जिसके द्वारा कुछ किया जाता है। क्रियते अनेन इति क्रिया। जिसके द्वारा अर्थात जिस शक्ति के द्वारा संसार का हर काम निष्पादित हो रहा है। कुण्डलिनी जागरण प्रक्रिया के दौरान शरीर में होने वाली शरीरिक चेष्टा स्वरूपा। क्रिया–योग नामक साधना स्वरूपा। इस प्रकार की साधना विशेष में सुषुम्ना नाड़ी में सांस को प्रवाहित करने की चेष्टा की जाती है, ऐसी चेष्टास्वरूपा। स्पन्दन रूपा। शक्ति हमेशा स्पन्दन करती रहती हैं। कर्मण्यता स्वरूपा। भगवान कृष्ण की 16 कलाओं में से एक कला का नाम क्रिया है। जिसक शक्ति के कारण व्यक्ति कर्म करने के लिए प्रेरित होता है। भगवान कृष्ण इच्छामात्र से सारा कार्य कर सकते है पर सामान्य मनुष्य की तरह कर्म करते हुए दिखाई देते है। कर्मण्यता देने वाली। क्रिया (कर्मण्यता) + आ (देना)। मन्दिरों के निर्माण एवं उनकी मूर्ति की स्थापना या अभिषेक सम्बन्धी गतिविधि को भी क्रिया कहते हैं। पंचरात्रागम में क्रिया की यही परिभाषा दी गई है। सन्दर्भ के अनुसार परिभाषाएं बदलती रहती है। कुण्डलिनी जागरण की साधना करते समय शरीर में होने वाली स्वाभाविक हरकत या हिलना डुलना भी क्रिया है। क्रिया योग स्वरूपा। यह एक प्रकार की साधना विधि है। क्रिया योग स्वरूपा। पतंजलि के योग दर्शन में लिखा है कि तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान इन तीनों का योग अर्थात इन तीनों को करना क्रिया योग है। तपस्या शारीरिक क्रिया है, स्वाध्याय वाचिक क्रिया है एवं ईश्वर प्रणिधान मानसिक क्रिया है। महावतार बाबा जी द्वारा प्रचारित की गई क्रिया योग साधना स्वरूपा। गीता में भगवान कृष्ण ने जब कहा कि यह ज्ञान उनसे सूर्य को

दिया गया तो क्रिया योग से ही तात्पर्य था। क्रिया (अर्थात प्रत्येक चेष्टा) में विराजमान। शब्द के आगे 'में विराजमान' लगाने से शब्द का अन्य अर्थ आ जाता है।

45. **कीर्ति** – यशस्वरूपा। लक्षणा शक्ति से यश प्रदान करने वाली, ऐसा अर्थ भी निकलेगा। यस्याः सकाशात् कीर्तिः, सा कीर्तिः। जिसकी समीपता से अर्थात जिसके कारण कीर्ति मिलती है वह कीर्ति शक्ति है। क्रियते अनया इति कीर्ति। जिसके द्वारा व्यक्ति के बारे में कुछ कहा जाता है वह है कीर्ति। किरणें बिखेरने वाली अर्थात अपने भक्तों पर कृपा की किरणें बिखेरने वाली। कॄ विक्षेपे धातु से कीर्ति शब्द बनाने पर यह अर्थ निकलता है। दक्ष प्रजापति की एक पुत्री का नाम भी कीर्ति है, जिसका विवाह धर्म से हुआ था। पुराणों में पुत्र और पुत्रियाँ प्रायः किसी गुण के लिए ही आते हैं। कीर्ति का कारण अर्थात भक्तों का यश बढ़ाने वाली। शब्द के आगे 'का कारण', या 'में विराजमान' लगाने से शब्द का अन्य अर्थ आ जाता है। कीर्ति में विराजमान।

46. **कृत्तिका** – कृत्तिका नक्षत्र स्वरूपा। रूष्ट होने पर जो आसुरी शक्तियों को फाड़ देती हैं। (कृन्तति रौद्रत्वात् कृत्तिका, कृति छेदने धातु में औणादिक प्रत्यय तिकन् लगाने से यह शब्द बनता है, यह व्युत्पत्ति शब्दकल्पद्रुम में दी गई है।) संसार के सभी प्रकार के कृत्यों की मालकिन। कार्य करने की अधिष्ठात्री। जिन्होंने कार्तिकेय जी का पालन किया उन कृत्तिकाओं से अभेद है जिनका। छेदने वाली या घेरने वाली अर्थात् उग्र स्वभाव वाली। कृत्तिका नक्षत्र स्वरूपा। कृत्तिका नक्षत्र की शक्ति स्वरूपा। कृत्तिका नक्षत्र में शक्ति या उसके प्रमुख गुण के रूप में विराजमान। एक नियम है कि शब्द के आगे ''के समान'' ''का कारण'' एवं ''में विराजमान'' लगाने से शब्द के अन्य अर्थ निकल आते है। कृत्तिका नक्षत्र का कारण अर्थात् उसे उत्पन्न करने वाली।

47. **काशिका** – प्रकाशित होने वाली। काश् दीप्तौ धातु होती है जिसका अर्थ है प्रकाशित होना। प्रकाशित करने वाली अर्थात जगत को भौतिक प्रकाश या ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित करने वाली। प्रकाशित होना एवं प्रकाशित करना दोनों अर्थ होते हैं। काशि अर्थात वाराणसी नगरी स्वरूपा या इस तीर्थ की तरह पापों का नाश करने वाली। काशिक का अर्थ रेशमी वस्त्र भी लिया गया है। रेशमी वस्त्र वाली अर्थात उसे धारण करने वाली। जो सभी प्रकार के ज्ञानों को विशेष रूप से प्रकाशित करती है। काशिका अर्थात प्रकाशित करने वाली।

48. **मथुरा** – जिनके द्वारा उपासकों की पाप राशि को मथ दिया जाता है अर्थात नाश कर दिया जाता है। मथ्यते पापराशिः यया सा मथुरा। जहाँ दैत्यों का मन्थन अर्थात विनाश होता है ऐसी मथुरा नगरी स्वरूपा। मथ्नाति अत्र इति मथुरा। भगवान की मधुर शक्तिरूपा। मथुरा शब्द मधुरा से बना। भगवान की मधुर शक्ति जो सबको प्रिय लगती है अच्छी लगती है। मधुर स्वभाव वाली। ऐसा कहा जाता है कि मधुरा ही मथुरा हो गया।

49. **शिवा** – शिव की शक्ति स्वरूपा। विश्व का कल्याण करने वाली। आध्यात्मिक क्षेत्र में उन्नति को कल्याण कहते हैं। मोक्ष या आनन्द देने वाली। आधुनिक जगत में कल्याण का अर्थ व्यापक हो गया है। जीवन के सभी आवश्यक पक्षों के अभावों की पूर्ति करना कल्याण कहलाता है अर्थात रोटी, कपड़ा और मकान, बिजली, सड़क, पानी, शिक्षा, चिकित्सा, मनोरंजन के साधनों को उपलब्ध कराना भी कल्याण कहा जाता है जो कल्याणकारी राज्यों की संकल्पना है। शास्त्रों में कल्याण का अर्थ प्रायः आध्यात्मिक क्षेत्र में उन्नति को लिया जाता है। श्यति इति शि अर्थात जो पापों को नष्ट करे वह है शि। व अमृत बीज है, जिसका अर्थ होता है अमृत अर्थात मोक्ष या आनन्द। जो भक्तों के पापों को नष्ट करे तथा मोक्ष या आनन्द दे वह शिव या शिवा है। जिस प्रकार हिंस शब्द सिंह हो गया उसी प्रकार वशि शब्द शिव हो गया। संस्कृत में वश् कान्तौ धातु होती है। कान्ति का एक अर्थ इच्छा भी होता है। इस प्रकार शिवा का अर्थ हुआ शिव की इच्छा स्वरूपिणी। भक्तों का कल्याण हो, ऐसी इच्छास्वरूपा। शिव + आ। शिव का अर्थ है कल्याण एवं आ का अर्थ है दाता, प्रिय। जो कल्याण को देने वाली है। जो भगवान शिव की प्रिया है। जो कल्याण स्वरूपा है। कल्याण का अर्थ होता है आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रगति

अर्थात् अपने आत्म स्वरूप की ओर बढ़ते जाना। कल्याण अर्थात् आनन्द की प्राप्ति। आजकल कल्याण शब्द का अर्थ व्यापक हो गया है और इस शब्द का अर्थ है मनुष्य के जीवन की सभी मूलभूत आवश्यकताओं जैसे रोटी, कपड़ा, मकान, रोजगार, स्वास्थ्य, बिजली, पानी, सड़क, मनोरंजना, शिक्षा आदि की व्यवस्था होना तभी कल्याणकारी राज्य की संकल्पना की गई है। मनुष्य को वह सब उपलब्ध होना जिससे उसका जीवन सँवर जाये, सुख की प्राप्ति हो कल्याण कहलाता है। मनुष्य के पाँच शरीर होते है। पाँचों शरीरों की आवश्यकता की पूर्ति होना कल्याण है। भगवान शिव की प्रिया। शयानो याति सर्वतः इति शिवा अर्थात लेटे लेटे ही सबको चलाने वाली अर्थात पूरे शरीर में व्याप्त होकर क्रियाशील बनाने वाली। शयन का अर्थ होता है सोना अर्थात लेटना। बैठने में तो थोड़ा सा हिस्सा ही आवश्यक होता है किन्तु लेटने में पूरा शरीर फैल जाने के कारण उसको व्याप्त होना अर्थ दे दिया जाता है। श का अर्थ है आनन्द, इसमें इन् प्रत्यय लगाने से शिन् शब्द बना जिसका अर्थ है आनन्द से युक्त। शिन आनंदिनो वतर्यन् शिवा। तात्पर्य हुआ भक्तों को आनन्द युक्त बनाते हुए व्यवहार करने वाले अर्थात भक्तों को आनन्दयुक्त बनाने वाली। शिनः शब्द शिन् का बहुवचन है। तृतीय वर्ण अर्थात इकार अतिशय अर्थ में प्रयुक्त होता है। तृतीयो अतिशये। श् (आनन्द)+ इ (अतिशय)+ व (ज्ञान) इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ अतिशय अर्थात बहुत अधिक आनन्द एवं ज्ञान वाली। (भगवान विष्णु का एक नाम शिव है जिसका एक टीका में विग्रह किया गया है – शिवगतः शिवस्यापि शिवतां ददत् शिवः। शिव में स्थित होकर शिव के लिए मंगल या कल्याण देने वाले होने से इनको शिव कहते हैं। भागवत में आया है कि भगवान विष्णु के चरणोदक से निकलकर बहने वाला द्रव तीर्थ है, उस तीर्थ को धारण करने से शिव हुए। तीर्थ का अर्थ है श्रेष्ठ जल अर्थात जो पार कराता है। यच्छौचनिःसृतसरित्प्रवरोदकेन तीर्थेन मूर्ध्नि अधिधृतेन शिवः शिवोऽभूत्, इति भागवते।)

50. **कालाक्षी** – जिसकी आँख में काल अर्थात मृत्यु है, तात्पर्य है देखने मात्र से किसी को भी मार देती हैं। भगवान शिव ने देखने मात्र से कामदेव को भस्म कर दिया था। भगवान शिव द्वारा भस्म करने का तात्पर्य है भगवान शिव की शक्ति ने भस्म किया। जिसके नेत्र कालस्वरूप हैं (सृष्टि के विनाश के समय)। समय रूपी नेत्रों वाली। जिनके नेत्रों में शिव बसते हैं, काल का एक अर्थ शिव है। ब्रह्माण्ड रूप में देवी की तीन ऑखें हैं सूर्य, चन्द्र और अग्नि। सूर्य और चन्द्र से ही समय देखा जाता है। काल का एक अर्थ शिव भी होता है और अक्षु व्याप्तौ धातु होती है। जो शिव में शक्ति रूप से व्याप्त है। अक्ष अर्थात नेत्र अर्थात ज्ञान। समय की नेत्र (ज्ञान) स्वरूपा अर्थात जिन्हें प्रत्येक समय का ज्ञान है। अक्ष का एक अर्थ पासा (dice) भी होता है। समय है पासा जिनका अर्थात समय के द्वारा खेलने वाली अर्थात इस समय यह करा देती हैं, उस समय यह करा देती हैं, इतने समय बाद यह करा देती हैं। समय–शक्ति को पैदा कर उससे संसार को संचालित करने के कारण काली देवी को काली कहते हैं। काल को व्याप्त करने वाली। अक्षू व्याप्तौ धातु होती है। तात्पर्य है विशिष्ट परिस्थितियों के अनुसार विशिष्ट कार्य करने वाली। (यदि कामाक्षी शब्द है तो अर्थ होगा – ऐसी दृष्टि वाली कि जिसे कोई देख ले तो वह व्यक्ति देवी की ओर आकर्षित ही होगा। देवी जब किसी को देखती है तो जिस व्यक्ति को देखती है वह व्यक्ति देवी पर पूरी तरह से आकर्षित हो जाता है। का अर्थात सरस्वती, मा अर्थात लक्ष्मी। सरस्वती और लक्ष्मी में व्याप्त कामाक्षी देवी हैं। अक्षु व्याप्तौ धातु होती है।)

51. **कालिका** – काले मेघ के समान कामनाओं की बरसात करने वाली अर्थात कामनाओं को पूरा करने वाली। कालिका का एक अर्थ काला या घना मेघ होता है, जिससे बरसात की सम्भावना होती है। समय पर होने वाली अर्थात उचित समय पर आने वाली अर्थात उचित समय पर अवतार लेने वाली। समय से सम्बद्ध अर्थात समय पर नियन्त्रण करने वाली। आपने भूतकालिक, भविष्यकालिक, वर्तमानकालिक यह शब्द सुना होगा। अनन्त विश्वात्मा सूक्ष्म ब्रह्मस्वरूपिणी। क का अर्थ है ब्रह्म, आ का अर्थ है अनन्त, ला का अर्थ है विश्वात्मा और इ का अर्थ है सूक्ष्म। काली का विकराल रूप (शत्रु, राक्षसों, दुष्टों के संहार के लिए उग्रता धारण करती हैं)। कालिका दुष्टसंहन्त्री हैं।

एक विद्वान ने काल (शिव) के साथ क्रीड़ा करने वाली को कालिका कहा है। उन्होंने काल में इकन् जोड़कर कालिका शब्द बनाया। तेन दीव्यति इस सूत्र से इकन् प्रत्यय लगता है, दीव्यति का अर्थ है क्रीड़ा करना। कलयति प्रेरयति इति कालिका अर्थात जो लोगो को उनके काम में प्रेरित करती है वह कालिका है। कालयति घातयति इति कालिका अर्थात जो दुष्टो पर आघात पहुँचाती है वह कालिका है।

52. **काली** – काल (अर्थात शिव) की पत्नी। कृष्ण वर्ण वाली। वर्णभेदेन काली क्वचित् चोच्यते बुधैः। काली से अभेद होने के कारण बगलामुखी देवी को काली भी कहा जाता है क्योंकि सारी शक्तियॉ एक ही हैं। समस्त द्वैतभाव के लिए काल स्वरूपा। कालारंग सभी रंगों को शोषित कर लेता है अतः देवी काली सभी नानात्व को भी अपने में समेट लेती हैं। काल–भय का निवारण करने वाली अर्थात भक्तों को निर्भयता देने वाली। शरीरस्थ दस प्राण भी काली कहलाते हैं। सभी पदार्थों (जड़ व चेतना) की आयु की गणना करने वाली। ब्रह्माण्ड को या समस्त जगत को धारण करने वाली या अपने अधिकार में रखने वाली। सभी देवताओं एवं प्राणियों को प्रेरित करने वाली अर्थात् उन्हें काम में लगाये रखने वाली। सब कुछ जानने वाली। कल् धातु का अर्थ गिनना, रखना, जाना, धारण करना, अधिकार में करना, अधिकार में रखना, गति करना, सम्पादित करना, जानना, प्रेरित करना, प्रोत्साहन करना होता है। कल् धातु में अच् प्रत्यय लगाया तो कर्ता अर्थ में कल बना। स्वार्थ में अर्थात् बिना अर्थ बदले अण् प्रत्यय लगाने से कल काल हो गया तथा स्त्रीलिंग में काली हो गया।

53. **धवलाननसुन्दरी** – सफेद या गोरे रंग के मुख वाली सुन्दरी। स्वच्छ/श्वेत/सतोगुण सम्पन्न मुख से सुन्दर रूप धारण करने वाली।

54. **खेचरी** – इस नाम का सामान्य अर्थ है – आकाश में विचरण करने वाली। गूढ़ अर्थ है – समस्त प्राणियों की इन्द्रियों की शक्ति के रूप में विचरण करने वाली। ख अर्थात इन्द्रिय। खेचरी मुद्रा का कारण अर्थात इसको जन्म देने वाली या इसका अस्तित्व लाने वाली। खेचरी मुद्रा में विराजमान। आकाश में विचरण करने वाली (ख का अर्थ है आकाश)। तन्त्रशास्त्र या योग शास्त्र की खेचरी विद्या/मुद्रा उन्हीं का स्वरूप है। खेचरी मुद्रा में विराजमान। एकाक्षरी कोष में खे का अर्थ प्राण दिया गया है। प्राण में संचरण करने वाली अर्थात् शक्ति रूप में विराजमान रहने वाली। योग की खेचरी मुद्रा में विराजमान। ख का अर्थ है आकाश, अतः खे का अर्थ हुआ आकाश में। आकाश में विचरण करने वाली। हृदयाकाश में विचरण करने वाली अर्थात् आत्मा स्वरूपा। हृदय में विराजमान जीवात्मा एवं परमात्मा की तुलना पक्षी से की गयी है। जीवात्मा के भीतर परमात्मा होता है। ख अर्थात आकाश जो चेतना का प्रतीक है। चेतना के क्षेत्र में विचरण करने वाली। शैव दर्शन के अनुसार Khechari-shakti sphere is the self. It is perceived seprately from the integral conciousness in the form of desire, anger, etc. in the limited experient but in the sameness of it, there is perception of her full divine nature everywhere because of her being the nature of Bhirava (Shiva).

55. **खमूर्ति** – आकाश रूपी मूर्ति स्वरूप को धारण करने वाली। ईश्वर की आठ मूर्तियां हैं। (अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रथम श्लोक में लिखा है – पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश, वायु, चन्द्र, सूर्य, जीवात्मा ये आठ मूर्तियाँ हैं परमात्मा की)।

56. **क्षुद्रक्षुद्रा** – सूक्ष्म से भी सूक्ष्म अर्थात अति सूक्ष्म। परमात्मा की सूक्ष्मतम अव्यक्त शक्ति जो सब कुछ करती पर दृष्टिगोचर नहीं होती। क्षुद्र का अर्थ निम्न अर्थात निकृष्ट कार्य करने वाला भी होता है। जो दुष्टों के लिए दुष्ट हो जाती हैं यह अर्थ भी कर सकते हैं। क्षुद्रों (दुष्टों) के लिए क्षुद्र (निम्न) बने जाने वाली अर्थात् निम्न स्तर का कार्य करने वाली अर्थात् कठोर हो जाने वाली। सूक्ष्मतम ब्रह्म की शक्ति से युक्त क्षुद्रा सूक्त स्वरूपा। वेद में

क्षुद्र सूक्त आया है जिसमें सूक्ष्मतम ब्रह्म का उल्लेख है।

57. **क्षुधा** – भूख के रूप में। भूख दो तरह की होती है –लौकिक भूख जैसे रोटी, दाल, कपडे की भूख, अलौकिक भूख जैसे अद्वैत तत्व की भूख, परमात्मा के ज्ञान की पिपासा। चूंकि देवी माँ के गुणों का गान हो रहा है अतः उनके साथ अलौकिक अर्थ का ही पुट है। अतः परमात्मा के ज्ञान की पिपासा के रूप में यह अर्थ अधिक उचित लगता है। वह शक्ति जो मनुष्य में या प्राणियों में भूख की या भोज्य पदार्थ ग्रहण करने की इच्छा पैदा करती है। वह शक्ति जो मनुष्यों में अनुभव किये जा रहे खालीपन को भरने की इच्छा पैदा करती है। क्षुधा या भूख केवल खाने की ही नही होती है बल्कि यश, लक्ष्मी एवं अन्य चीजों की भी होती है। दुर्गा सप्तशती में 5वें अध्याय में आचार्यों ने इस शब्द की व्याख्या की है– क्षुधा बुभुक्षोत्पादकौदर्याग्निविकारः। खाने की इच्छा पैदा करने वाली पेट सम्बन्धी अग्निविकार अर्थात् जठराग्नि है। क्षुधा पार्थिवधातुक्षयकृतोऽवसादः अर्थात् क्षुधा का अर्थ है शरीर में पृथ्वी सम्बन्धी तत्व अर्थात् अन्न या भोज्य पदार्थ की कमी होने पर जो वेदना या दुख है वह भी क्षुधा कहा जाता है। क्षुधा अभ्यवजिहीर्षा अर्थात् खाने की इच्छा। अभ्यवहरति का अर्थ है भक्षयति अर्थात् भक्षण करता है या खाता है, इसमें अभी एवं अव दो उपसर्ग लगे हैं। एकाक्षरी कोश में क्षु के अर्थ क्षुद्र, वासव (इन्द्र), अर्क (सूर्य) दिये गये हैं। क्षुद्र अर्थात मन की सूक्ष्म दृष्टि को धारण करने वाली। अत्यन्त छोटी वस्तु को भी ध्यान करने वाली। इन्द्र अर्थात श्रेष्ठ, अर्क अर्थात पूजनीय। श्रेष्ठ वस्तुओं को धारण करने वाली। पूजनीय अर्थात गुणों के कारण पूजनीय भक्तों को धारण करने वाली अर्थात उन्हें अपने लोक में स्थान देने वाली या उन पर विशेष कृपा करने वाली। क्षुधा + आ, आ का अर्थ है देना, नाश करना। भूख देने वाली अर्थात् प्राणियों में भूख उत्पन्न करने वाली। भूख को नष्ट करने वाली या भूख को नष्ट करने वाली सिद्धि स्वरूपा। ऐसी सिद्धि होती है कि मनुष्य को भूख प्यास नही लगती। वैदिक कोष में क्षु का एक अर्थ अन्न दिया गया है। अन्न को धारण करने वाली अर्थात् सभी प्रकार का अन्न इन्हीं के स्वामित्व में है या इन्हीं से उत्पन्न होता है।

58. **वरा** – श्रेष्ठ, सर्वोत्कृष्ट। व्रियते इति वरा। सारे देवी देवताओं के द्वारा जिनका वरण किया जाता है वे वरा हैं। श्रेष्ठ (सब चीजों में श्रेष्ठ, रूप, गुण, शक्ति, बुद्धि, पराक्रम सभी में श्रेष्ठ है)। कुमकुम की तरह अर्थात कुमकुम की तरह लाल वर्ण वाली। कुमकुम वाली अर्थात कुमकुम धारण किये हुए। वरा अस्या अस्ति इति वरा। वरा का एक अर्थ है कुमकुम। दूल्हा या पति वाली अर्थात शिवरूपी पति से युक्त। हल्दी वाली या हल्दी की तरह रोगनिवारिका (कष्ट निवारिका)। वरा के कई अर्थ हैं जैसे कुमकुम, पति, हल्दी। ज्ञान देने वाली। व अर्थात ज्ञान, अमृत (मोक्ष)। मोक्ष देने वाली। राति इति रा से रा का अर्थ है देने वाली। एकाक्षरीकोश से व के अर्थ लेकर वरा के अन्य अर्थ भी किये जा सकते हैं। ऐसे शब्द जिनका आरम्भ व से हुआ है, उसे लेकर भी अर्थ किये जा सकते हैं। ज्ञान देने वाली। अमृत या मोक्ष देने वाली। व का अर्थ ज्ञान, अमृत, मोक्ष है। राति इति रा से रा का अर्थ देने वाली होता है।

59. **खड्गहस्ता** – हाथ में खड्ग (तलवार) धारण किये हुए, जब देवी माँ साकार रूप धारण करती है। द्वैत भाव पैदा करने की शक्ति है हाथ में जिसके अर्थात उसे धारण करने वाली। इस शक्ति के कारण ही हमें पदार्थ भिन्न भिन्न दिखाई देते हैं। तलवार दो भागों में तोड़ती है अतः यह द्वैतभाव पैदा करने की शक्ति का प्रतीक है।

60. **खड्गरता** – जिसे तलवार अच्छी लगती है। रम् धातु में क्त प्रत्यय लगाने से रत बनता है जिससे अच्छा लगना अर्थ निकलता है। तलवार से प्रीति रखने वाली। तलवार से प्रसन्न अर्थात तलवार धारण कर प्रसन्न मुद्रा वाली या तलवार धारण किए हुए योद्धाओं से प्रसन्न।

61. **खड्गिनी** – ज्ञानरूपी खड्ग को धारण करने वाली। जिसके पास अति पैनी ज्ञान की दृष्टि है जो अज्ञान का काट करती है। खड्ग को ज्ञान का प्रतीक माना गया है। शौर्य से युक्त। खड्ग या तलवार शौर्य का प्रतीक

है। ज्ञान शक्ति से युक्त। चूँकि ज्ञान से अज्ञान को काटा जाता है अतः खड्ग ज्ञान का भी प्रतीक है। शारीरिक बल से युक्त। प्रसिद्ध हिन्दी कविता कलम और तलवार में तलवार को शारीरिक बल का एवं कलम को बौद्धिक बल का प्रतीक माना गया है।

62. **खर्परप्रिया** – खर्पर कपाल है प्रिय जिन्हें। खर्पर कपाल जैसा पात्र होता है। प्रतीक रूप में मस्तिष्क जो ज्ञान का आश्रय है। खर्पर अर्थात मस्तिष्क से सम्बन्धित श्रेष्ठ ज्ञान को धारण करने वाली प्रिया। ज्ञान है प्रिय जिनको वह है खर्परप्रिया। खर्पर का अर्थ है– हड्डी की राख से बना पात्र, मिट्टी का बना तसले जैसा पात्र, जिसमें छिद्र होते हैं, जिसे सुनार सोने चाँदी की शुद्धता के लिए प्रयोग करते हैं। खोपड़ी को भी खर्पर कहते हैं। यह वह पात्र है जिसमें काली जी रक्तपान करती हैं।

63. **गंगा** – निरन्तर गतिशील रहने वाली। निरन्तरम् गच्छति इति गंगा। पुनः पुनः गच्छति इति गंगा। स्वर्गात् गाम् गच्छति इति गंगा। जो स्वर्ग लोक से आकर पृथ्वी तल पर गमन करती है वह गंगा है। ज्ञान का आश्रय। संदेश है कि ज्ञान के क्षेत्र में चलते रहना, रूकना नहीं। ज्ञान के रूप में जिनकी शक्ति हमेशा चलती रहती है। जबकि अज्ञान शुद्ध हो जाता है। ज्ञान का आधार मस्तिष्क है जो गतिशील रहता है। गमयति भगवतपदम् इति गंगा। जो भक्तों को भगवान के चरणों में पहुँचा देती है वह गंगा है। मोक्षार्थियों द्वारा जो चाही जाती है या जिसका आश्रय लिया जाता है वह गंगा है। मोक्षार्थिभिः गम्यते प्राप्यते इति गंगा। निरन्तरम् गच्छति यह व्युत्पत्ति ज्यादा बेहतर है क्योंकि पुनः पुनः गच्छति में रुका फिर चला, रुका फिर चला यह भाव आता है। गम् गमयति इति गंगा अर्थात जो ज्ञान की ओर ले जाती है वह गंगा है। गंगा वास्तव में धर्म का तरल रूप है और इसे धर्मद्रवी कहते है। तरल रूप में धर्म ही अमृत तत्व है। गाम् गमयति इति गंगा अर्थात ज्ञान के प्रकाश को अर्थात ज्ञान को प्राप्त कराने वाली। गंगा + आ, निर्मलता देने वाली। गंगा निर्मलता, धर्म का प्रतीक है एवं आ का अर्थ है देना।

64. **गौरी** – तपस्या करने से जो तेज या उज्जवलता आती है उसे गौर कहते हैं। तपस्या के तेज से युक्त। गौर का अर्थ है सतोगुण, गौरवर्ण, धवलवर्ण। सतोगुण स्वरूपा। सत्व हल्का होता है ज्ञान सूक्ष्म और हल्का होता है। गुरते उद्यंते मनो अस्मिन अर्थात जिसमें मन आकृष्ट होता है वह गौरी है। गुर उद्यमने धातु से भी गौरी शब्द बनता है। जो उद्यमनशील है अर्थात पराक्रमशील है वह गौरी है। गौरवर्ण पूर्णता का प्रतीक है। जो पूर्ण शक्ति से युक्त हैं वह गौरी हैं। आठ वर्षीया कन्या स्वरूपा। देवी इच्छानुसार कोई भी रूप धारण कर सकती हैं और एक ही समय में बहुत सारे रूप एक ही जगह पर या अलग अलग जगह पर धारण कर सकती हैं। आठ वर्ष की कन्या जो रजस्वला नहीं है, वह गौरी कही जाती है। वरुण की पत्नी का नाम भी गौरी है, उससे अभेद है जिनका। तुलसी का भी एक नाम गौरी है अतः इस नाम का अर्थ हुआ तुलसी स्वरूपा। गौरी नामक संगीत की एक रागिनी स्वरूपा। गौरी तीर्थस्वरूपा, जो पितरों की मुक्ति के लिए प्रमुख तीर्थ माना गया है। वाणी का भी एक नाम गौरी है, अतः इस नाम का अर्थ हुआ वाणीस्वरूपा। गौर शब्द निर्लिप्त और निर्मल परब्रह्म परमात्मा, पीले रंग के लिये प्रयुक्त होता है। परब्रह्म परमात्मा की शक्ति होने के कारण उन्हें गौरी कहते हैं। गौर वर्ण पूर्णता का भी प्रतीक है। पूर्ण शक्ति स्वरूपा। गौर शब्द गौर वर्ण, बैचेनी से रहित अवस्था, शान्ति का प्रतीक है। गौर वर्ण पूर्णता का भी प्रतीक है। गौर वर्ण वाली। प्रकाश से युक्त अर्थात् ज्ञान या चेतना के प्रकाश से युक्त, क्योंकि प्रकाश भी गौर वर्ण वाला माना जाता है। जिनके भीतर शान्ति (Inner calmness) है। जो किसी भी प्रकार की बैचेनी से रहित है अर्थात् (Free from all restlessness) है। अव्यक्त शब्द करने वाली अर्थात् अनाहत नाद करने वाली। जगत में सर्वत्र अनाहत नाद व्याप्त है। इस नाद को करने वाली कोई तो शक्ति अवश्य है। मनुष्य शरीर में भी अनाहत नाद व्याप्त है। अव्यक्त शब्द अर्थात् अनिर्वचनीय शब्द करने वाली अर्थात्

ऐसे शब्द करने वाली अर्थात् ऐसा शब्द करने वाली या इतना सुन्दर शब्द करने वाली जिसे आप स्वयं शब्दों से निरूपित न कर सकें। गुङ् अव्यक्त शब्दे धातु होती है जिसमें उणादि सूत्र रणि वृद्धौ लगाकर एवं निपातन से गवते इति गौरी इस प्रकार का विग्रह होगा जिसका अर्थ है अव्यक्त शब्द करने वाली। गौ का अर्थ किरण अर्थात् प्रकाश अर्थात् ज्ञान भी होता है। राति धातु रूप का अर्थ है देती है। इस प्रकार गौरी का अर्थ हुआ ज्ञान रूपी प्रकाश को देने वाली। राति इति रः (देने वाला), स्त्रीलिंग में री अर्थात् देने वाली। एकाक्षरी कोष में गौ का अर्थ स्वर्ग, वाणी, किरण दिया गया है। राति इति रः, स्त्रीलिंग में रः का री हो जायेगा। रा या री का अर्थ है देने वाली। अपने भक्तों को स्वर्ग देने वाली। अपने भक्तों को श्रेष्ठ वाणी की शक्ति देने वाली। अपने भक्तों को किरण अर्थात् प्रकाश अर्थात् ज्ञान का प्रकाश देने वाली। गौ (गाय) में रमण करने वाली अर्थात् अनुराग रखने वाली। पृथ्वी में रमण करने वाली अर्थात् विराजमान रहने वाली। वाणी में रमण करने वाली अर्थात् उसमें शक्ति रूप से रहने वाली। दीप्तिमती या प्रकाशमान। रूच् (ज्वलनार्थक) धातु में रन् प्रत्यय लगाने से गौर शब्द बनता है। यहाँ रूच् का गौ आदेश हो जाता है। गौर + ङीष् = गौरी अर्थात् चमकने वाली। गौरी का अर्थ है दीप्तिमती माध्यमिका वाक्। वेद में विद्युत् के अर्थ में भी गौरी शब्द का प्रयोग किया गया है और यह विद्युत ही जल का निर्माण करती है। अतः गौरी जल बरसाने वाली देवी है। वेद में आया है कि सलिलानि तक्षती गौरीः मिमाय। कुमारी कन्या जो रजोवती नहीं हुई है, वह भी गौरी है। अष्टवर्षीय कन्या भी गौरी है। गौरी के अन्य अर्थ है गौर वर्णन की स्त्री, पीला रंग, पृथ्वी, तुलसी का पौधा, मल्लिका लता, वरूण की स्त्री, हरिद्रा या हल्दी। जो हल्दी की तरह अर्थात् हल्दी की तरह रोगनिवारिका अर्थात् कष्ट निवारिका है।

65. **गामिनी** – गति कराने वाली अर्थात चलाने वाली अर्थात जगत को संचालित करने वाली। भक्तों को मोक्ष या उनके इष्ट तक पहुँचाने वाली। गमयति इति गामिनी। गम्+णिच्+णिनि से यह अर्थ आया। गति करने वाली अर्थात स्पन्दन करने वाली, संसार के रूप में गति करने वाली। संसार भी देवी का एक रूप है। गम् धातु में णिनि प्रत्यय लगाने से गामिन् शब्द बनेगा। जिसका पुल्लिंग एक वचन गामी होगा एवं स्त्रीलिंग एकवचन गामिनी होगा। गम् धातु का अर्थ जानना, प्राप्त करना भी होता है। भक्तों को जनवाने वाली अर्थात बोध कराने वाली। पहुँचाने वाली अर्थात भक्तों को स्वर्ग लोक या अन्य उच्च्य लोकों में पहुॅचाने वाली (गमयति इति गामिनी)। सबकुछ जानने वाली। गम् + णिच्+णिनि, ऐसा करने से गामिन् शब्द बनेगा, जो पुल्लिंग एकवचन में गामी एवं स्त्रीलिंग एकवचन में गामिनी होगा। गच्छति का अर्थ है जाता है एवं गमयति का अर्थ है पहुॅचाता है। गमन करने वाली, समस्त पदार्थों में गई अर्थात समस्त पदार्थों में शक्ति रूप में गई। व्यापक रूप से सर्वत्र विचरने वाली देवी। यदि गमयति इति गामिनी से अर्थ निकालें तो बोध कराने वाली यह अर्थ होगा, जो ज्ञात नहीं हो उसे ज्ञात कराने वाली। जो सबको चला रही है अर्थात चेष्टावान सक्रिय बनाये हुए है वह है गामिनी। गतिशीलता रखने वाली। ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में निरन्तर गतिशीलता को रखती हैं। भक्त को ज्ञान विज्ञान से सबल बना देती है। यद्यपि अज्ञान भी देवी माँ का रूप है पर लोगों को वह पंसद नहीं आता अतः यहाँ सिर्फ ज्ञान के रूप में गतिशील रहने वाली ऐसा अर्थ किया गया है। बोध कराने वाली। अज्ञात को ज्ञात कराने वाली। जिन्हें मालूम नहीं है उन्हें जनवाने वाली। गमयति इति गामिनी। गमयति अर्थात गति कराती हैं या ज्ञान कराती हैं। सबको चलाने वाली अर्थात सक्रिय किये रहने वाली अर्थात काम में लगाए रखने वाली। गीता में भगवान ने कहा है भ्रामयन् सर्वभूतानाम्।

66. **गीता** – भगवत्गीता स्वरूपा। सन्तो, देवताओं, महात्माओं द्वारा गाई गई अर्थात गाई जाती है अर्थात जिनके गुण और चरित्र का गान होता है। कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र से कृत्य प्रत्यय उस कारक एवं काल से भी अलग काल एवं कारक का भी बोध कराते हैं जिसमें वे सामान्यतः प्रयुक्त होते हैं। गीता शब्द भूतकाल का है पर इस सूत्र से वर्तमान काल एवं भविष्यकाल का भी बोध हो जाएगा। वाणी का प्रसार करने वाली अर्थात भक्तों की

वाक्शक्ति को बढ़ाने वाली या सृष्टि में वाक्शक्ति का प्रसार करने वाली। तन् धातु में ड प्रत्यय लगाने से बने त शब्द का अर्थ है विस्तार करने वाला, देने वाला, निर्माण करने वाला। गूँगे को भी वाक्शक्ति देने वाली। गी का अर्थ है वाणी, दुर्गा, सुधा। दुर्गा अर्थात संकट या आसुरी शक्तियों की विनाशिका शक्ति। वाणी का विस्तार करने वाली। तात्पर्य है भक्तों की वाणी के कौशल को बढ़ाने वाली। भक्तों को श्रेष्ठ वाणी कौशल देने वाली। वाणी को उत्पन्न करने वाली। सुधा (अमृत) को उत्पन्न करने वाली। ककुभ् (दिशा) को उत्पन्न करने वाली या उसका विस्तार करने वाली। एकाक्षरी कोष में गी के कई अर्थ दिये गये है जैसे वाणी, सुधा, पत्नी, ककुभ्। तन् धातु में ड प्रत्यय लगाने से त शब्द बनेगा जिसका अर्थ होगा विस्तार करने वाला, उत्पन्न करने वाला, देने वाला। स्त्रीलिंग में त का ता हो जायेगा। (जो उच्च स्वर में गाया जाता है वह गीत है एवं निम्न स्वर में जो गाया जाता है वह गान है। एक जगह यह भी पढ़ने को मिला है कि आत्मनेपदी की क्रियाएं धीरे–धीरे घटित होती है जबकि परस्मैपदी क्रियाएं इससे विपरीत होती है।)

67. **गोत्रविवर्द्धिनी** – गोत्र को बढ़ाने वाली अर्थात वंश परम्परा को बढ़ाने वाली। सभी के गोत्रों/वंशों, कुलो को बढ़ाने वाली। गोत्र मोटे तौर पर उन लोगों के समूह को कहते हैं जिनका वंश एक मूल पुरुष या पूर्वज से अटूट क्रम से जुड़ा है जैसे कश्यप गोत्र, भारद्वाज गोत्र, शाण्डिल्य गोत्र आदि। गोत्र का एक अर्थ पर्वत भी होता है। पर्वत को बढ़ाने वाली। पर्वत भी बढ़ते घटते हैं। विन्ध्य पर्वत जब अपनी ऊँचाई बढ़ा रहा था तो अगत्स्य ऋषि ने ऐसा करने से रोका था। वंश बढ़ाने वाली अर्थात् भक्तों का वंश बढ़ाने वाली। वेद वाणी के रक्षक आचार्य की समृद्धि करने वाली। गो अर्थात् वाणी अर्थात् वेदवाणी, त्र अर्थात् रक्षा करने वाला। भूमि में सुरक्षित बीज को बढ़ाने वाली अर्थात् उसे वृक्ष रूप में परिवर्तित करने वाली। गो अर्थात् भूमि, त्र अर्थात् सुरक्षित। ज्ञान की रक्षा करने वाले अर्थात् ज्ञान देने वाले विद्वानों को समृद्ध करने वाली। भूमि का पालन करने वाले पर्वतों की वृद्धि करने वाली। त्र अर्थात् रक्षा अर्थात् पालन। पालन का एक अर्थ रक्षा भी होता है। वैदिक कोष में गोत्र का एक अर्थ ज्ञानयुक्त हितकारी आज्ञा दिया गया है। ऐसी आज्ञा को बढ़ाने वाली।

68. **गोधरा** – ज्ञान के प्रकाश या सत्य के प्रकाश को धारण करने वाली। गो अर्थात किरण अर्थात प्रकाश। प्रकाश किरणों को धारण करने वाली। गो का एक अर्थ किरण भी है। गावः रश्मयः, ता धारयति इति गोधरा। देवी देवताओं के शरीर के चारों ओर एक आभामण्डल होता है। अन्यथा भी सूर्य रूप में देवी प्रकाश किरणों को धारण करती हैं। परब्रह्म का चेतन ही उसकी किरण है, देवी ब्रह्मस्वरूपा हैं। गो अर्थात पृथ्वी को धारण करने वाली।

69. **गोकरा** – ज्ञान का प्रकाश करने वाली। वाणी करने वाली अर्थात शब्दों का उच्चारण करने वाली अर्थात मन्त्रों का उच्चारण करने वाली या सदुपदेश देने वाली। गो का अर्थ वाणी है। गो अर्थात इन्द्रियों को अपने विषय में करने वाली अर्थात प्रवृत्त करने वाली। इन्द्रियों में कर्तृत्वशक्ति न हो तो वह बेकार है। नेत्र में यदि देखने की शक्ति न हो तो वह बेकार है। इन्द्रियों को उनकी कर्तृत्वशक्ति से युक्त करने वाली।

70. **गोधा** – गो अर्थात पृथ्वी, इन्द्रिय, गौमाता इन सबको धारण करने वाली। देवी माँ की शक्ति से ये सब संधारित है। मनुष्य की बुद्धि शक्ति जो चलायमान है उसे भी धारण करने वाली। पृथ्वी, मनुष्य की इन्द्रियाँ, इनकी सात्वकिता, इन सबको धारण करने वाली। पृथ्वी को धारण करने वाली। इन्द्रियों को धारण करने वाली अर्थात उनमें शक्ति के रूप में रहने वाली। गो का अर्थ पृथ्वी, इन्द्रिय है। इन्द्रियों को धारण करने वाली मनः शक्ति स्वरूपा। वाणी को धारण करने वाली स्त्री स्वरूपा। हाथ पर बांधा है धर्म जिसने। गो अर्थात् इन्द्रिय, यहाँ पर हाथ अर्थ ले लिया। धर्म का ध ले लिया। गायों को धारण करने वाली अर्थात् उनका पालन करने वाली।

71. **गन्धर्वपुरवासिनी** – गन्धर्वपुर में रहने वाली। गन्धर्वपुर उपलक्षक है स्वर्गलोक का। गन्धर्व का उत्कृष्ट रूप है वो जो सामवेद को गाने वाले हैं। जहाँ वेदों का पारायण होता है वहां रहने वाली गन्धर्वपुरवासिनी हैं।

72. **गन्धर्वा** – गन्धर्व के स्वरूप में है जो। गन्धर्व एक प्रकार के उपदेवता है जो स्वर्ग में रहते हैं और अप्सराओं के पति हैं। ये गायन और नृत्य विद्या में पारंगत होते हैं। गन्धर्व की शक्ति स्वरूपा, यह अर्थ भी हो सकता है। गन्धम् अर्वति गच्छति प्राप्नोति इति गन्धर्वः। जो दूर स्थित गन्ध को भी प्राप्त कर लेते हैं अर्थात अनुभव कर लेते हैं, वे गन्धर्व हैं। गति अर्थ वाली धातुएं ज्ञान एवं प्राप्ति का भी बोध कराती हैं। गन्धर्वों में विराजमान। शब्द के आगे ''में विराजमान'' लगाने से शब्द का एक अन्य अर्थ निकल आता है। प्रत्यक्ष ज्ञान के द्वारा मनुष्य को जो भावानुभूति होती है, उसे पुराणों में गन्धर्व कहा गया है। भाव की अनुभूति के आधार पर ही उन्हें भिन्न–भिन्न नामों से पुकारा गया है। उदाहरण के लिए विषय वासनाओं का उपभोग करने पर मनुष्य को आनन्द भाव की जो अनुभूति होती है, उस अनुभूति के आधार पर गन्धर्व को हू हू नाम दिया गया है। इस प्रकार गन्धर्वा का अर्थ हुआ भावानुभूति देने वाली अर्थात कराने वाली। गन्धर्व+आ, आ का अर्थ है देना। गन्धर्व की शक्ति स्वरूपा अर्थात् गायन शक्ति, नृत्य शक्ति, वाद्य शक्ति स्वरूपा या ऐसी शक्ति से युक्त। गन्ध में विचरण करने वाली शक्ति स्वरूपा। गन्ध + अर्व, अर्व् धातु का अर्थ है गति करना। गन्ध पृथ्वी को गुण है अतः गन्ध से पृथ्वी या भूमि अर्थ ले सकते है। भूमि आदि लोकों को चलाने वाली शक्ति स्वरूपा। अर्वा अर्थात् गति करने वाली अर्थात् चलाने वाली या संचालित करने वाली। वाणी को धारण करने वाली। देव वाणी को धारण करने वाले विद्वान की शक्ति स्वरूपा। गां देववाणीं धारयति इति गन्धर्वा। गन्धर्व + आ, एकाक्षरी कोष में आ का एक अर्थ शक्ति दिया गया है। गन्ध धातु का एक अर्थ अर्दन अर्थात् पीड़ा देना भी होता है। दुष्टों को पीड़ित करने वाली एवं जगत को सुचारू रूप से चलाने वाली या जगत में सर्वत्र विचरण करने वाली। वैदिक कोष में परमात्म–पालित व्यवस्था को भी गन्धर्व नाम दिया गया है।

73. **गन्धर्वकला** – गन्धर्वों की कला अर्थात गायन, नृत्य और संगीत के रूप में रहने वाली। गन्धर्वों की उच्चकला अर्थात सामवेद के गायन के रूप में स्थित रहने वाली। गन्धर्वों की शक्ति स्वरूपा या उनमें रहने वाले माधुर्य गुण स्वरूपा। उनके संगीत में माधुर्य है। कला अर्थात शक्ति, सूक्ष्म शक्ति, सूक्ष्म अंश, माधुर्य। गन्धर्वों की कला का कारण अर्थात उन्हें उत्पन्न करने वाली या देने वाली। शब्द के आगे ''का कारण'' लगाने से शब्द का अर्थ निकल आता है।

74. **गोपनी** – गोप अर्थात भगवान कृष्ण को ले जाने वाली। जन्म लेने पर भगवान कृष्ण को सुरक्षित तरीके से यशोदा तक पहुँचा दिया गया। भगवान कृष्ण गोप अर्थात ग्वालबाले थे। नी अर्थात ले जाना, कर्तव्य की ओर ले जाना अर्थात कर्तव्य के प्रति सक्रिय करना। गोप् धातु में ल्युट् प्रत्यय लगाकर गोपन शब्द बनेगा जो स्त्रीलिंग में गोपनी हो जाएगा। ल्युट् प्रत्यय प्रायः कर्ता के अतिरिक्त अन्य कारकों में होते हैं। छुपाने का साधन स्वरूपा अर्थात मायाशक्ति स्वरूपा। माया से वास्तविक स्वरूप छिपाया जाता है। गो का अर्थ है वाणी और पाति का अर्थ है रक्षा करना। पा+ड प्रत्यय = प (रक्षा करने वाला)। वाणी की रक्षा करने वाला प्राण या आत्मा होती है। प्राण को ले जाने वाली अर्थात सुषुम्नानाड़ी में ऊपर नीचे करने वाली। जीवात्मा को ले जाने वाली अर्थात कर्मों के अनुसार उच्च लोक या निम्न लोक में ले जाने वाली। गाय पालने वालों को ले जाने वाली अर्थात उनका मार्गदर्शन करने वाली या उन्हें सक्रिय बनाने वाली। गोपम् नयति इति गोपनी। गोप का अर्थ रक्षा भी होता है। रक्षा को ले जाने वाली अर्थात रक्षा करने वाली। ज्ञानियों के नेतृत्व करने वाली अर्थात् उनका मार्गदर्शन करने वाली या उन्हें शक्ति प्रदान करने वाली। गो का अर्थ है किरण अर्थात् प्रकाश अर्थात् ज्ञान का प्रकाश। जो ज्ञान रूपी प्रकाश का पान करते है वे गोप हुए। गोप धातु का अर्थ रक्षा करना भी होता है। गोप में ल्युट् प्रत्यय लगाने से गोपन बनेगा जिसका अर्थ होगा रक्षा का साधन अर्थात् जो रक्षा करता है। भक्तों की रक्षा करने वाली।

75. **गरूड़ासना** – भगवान विष्णु की शक्ति स्वरूपा। गरूड़ासन अर्थात गरूड़ है आसन जिनका अर्थात भगवान विष्णु। वेद में स्थित। धर्म में स्थित। शुभ संकल्प में स्थित। गरूड पक्षी राज है तथा यह वेद एवं धर्म का

प्रतीक है। भगवान विष्णु को गरूड पर सवार कहा गया है जिसका अर्थ है कि वे वहाँ रहते है जहाँ ज्ञान होता है या धर्म का पालन होता है। तात्पर्य है ज्ञानियों एवं धार्मिक लोगों के हृदय में रहने वाली। गरूड गुरू श्रेष्ठ माना गया है। श्रेष्ठ गुरुओं में विराजमान। गरूड ने सीता जी को बचाने का प्रयास किया था। अतः गरूड को शुभ विचार या शुभ संकल्प भी प्रतीक माना गया है। गूढ़ अर्थ में गरूड़ का अर्थ है सात्विकता, स्वच्छता, ज्ञान का उत्कृष्ट रूप। ज्ञान के उत्कृष्ट रूप में जो विराजमान है। (गरूड़ दूरदर्शी, हमेशा जागरूक एवं सर्प (शत्रु) पर पर टूट पड़ने वाला पक्षी है। गरूड़ की दृष्टि सभी पक्षियों से अधिक तीक्ष्ण है तथा ऊँचाई पर होने के बाद भी जमीन पर रेंगता हुआ कोई सर्प मिल जाए तो उस पर बिजली की तरह टूट पड़ता है और तोड़–मरोड़ देता है। गरूड़ की चाल अन्य पक्षियों की तुलना में सबसे अधिक तीव्र होती है तथा आलस्य और प्रमाद उससे कोशो दूर रहती है। इसी कारण गरूड़ को जागरूकता का प्रतीक माना गया है। अव्यवस्था रूपी सर्प से घोर शत्रुता रखने वाली तथा उसे निरस्त करने के लिए टूट पड़ने वाली प्रकृति गरूड़ है। दूरदर्शिता अपनाने वाले लोंगों को गरूड़ कहा जाता है जिन्हें न आलस्य है, न प्रमाद है व गरूड़ है। वैष्णवी देवी गरूड़ पर आरूढ़ है अर्थात् वैष्णवी की कृपा उन्हीं को मिलती है जिनकी प्रवृत्ति गरूड़ जैसी है। बगलामुखी देवी का वैष्णवी देवी या अन्य सभी शक्तियों से अभेद होता है।) (यदि गरूडा नाम है तो अर्थ होगा – सम्पूर्ण जगत को अपनी करूणा या कृपा से भिगो देने वाली। सम्पूर्ण जगत को भक्ति रस से भिगों देने वाली। सम्पूर्ण जगत में ईश्वर की महिमा को फैला देने वाली। गृ धातु के पश्चात उडच् प्रत्यय लगाने से गरूड शब्द बनता है। गृ धातु का एक अर्थ है भिगोना जैसे रोटी को घी से भिगोना। गरूड भक्ति का या भक्त के मन का भी प्रतीक है। गरूड भगवान राम के अनन्य भक्त थे। गरूड+ आ, आ का एक अर्थ है देना। भक्ति देने वाली। गरूड के समान शीघ्रगामी एवं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की महारानी। गरूड पक्षीराज कहलाता हैं अतः राजा या रानी अर्थ ले लिया गया है।)

76. **गोविन्दभावा** – गोविन्द के भाव से परिपूर्ण। गोविन्द शब्द से तात्पर्य केवल भगवान कृष्ण से ही नहीं बल्कि परमतत्व से है। परमतत्व (ब्रह्म) की भावना से भावित, जो भी ईश्वर का उदारतम रूप, वेद, विज्ञान है उससे भावित अर्थात अन्तःकरण वाली। उन भावों से भावित। भगवान विष्णु को भावित करने वाली अर्थात उन्हें मन में रखने वाली या उनका ध्यान चिन्तन करने वाली। गो का अर्थ है वेद, विन्दति का अर्थ है प्राप्त करता है। इस प्रकार गोविन्द का अर्थ हुआ वेदज्ञ विद्वान। वेदज्ञ विद्वान को भावित अर्थात सम्मानित करने वाली। नाटक में श्रोतागणों के लिए भाव शब्द का प्रयोग होता है। भावयति का अर्थ दिखाना या करना भी होता है। कृष्ण को दिखाने वाली अर्थात उनका साक्षात्कार कराने वाली या उन तक पहुँचाने वाली।

77. **गोविन्दा** – गायों/पृथ्वी को प्राप्त करने वाली। गोविन्द अर्थात भगवान विष्णु की शक्तिस्वरूपा। वाणी अर्थात वेदान्त वाक्यों द्वारा जिसे जाना जाता है। जो वाणी अर्थात वेदवाक्यों को जानने वाली हैं। गो अर्थात पृथ्वी तत्व अर्थात मूलाधार चक्र। मूलाधार चक्र को प्राप्त किया है जिसने अर्थात यहाँ विद्यमान कुण्डलिनी शक्ति स्वरूपा। प्रकाश को प्राप्त करने वाली अर्थात सत्य के प्रकाश से युक्त। विद् धातु का अर्थ प्राप्त करना है। गो का अर्थ है किरण अर्थात प्रकाश। भूमि को प्राप्त करने वाली अर्थात पृथ्वी पर अवतार लेने वाली जैसे सीता जी, राधा जी, गंगा जी आदि ने अवतार लिया था। भूमि के रूप को प्राप्त करने वाली। भूमि को भी भू देवी कहते हैं। गो का अर्थ भूमि एवं विद् धातु का अर्थ है प्राप्त करना। गाः वेदगिरः वेदयति इति गोविन्दा। वेद वाणी अर्थात वेद के ज्ञान को ज्ञात कराने वाली या समझाने वाली। गाः द्वितीया विभक्ति का बहुवचन है एवं वेदयति का अर्थ है बोधयति। गावो वेदयन्ति इमाम् इति गोविन्दा। वेद मन्त्र जिनका ज्ञान कराते हैं अर्थात जिनके बारे में बताते हैं। पृथ्वी को प्राप्त करने वाली। गां विन्दति लभते इति गोविन्दा। वराह अवतार में भगवान विष्णु ने समुद्र में डूबी पृथ्वी को प्राप्त किया था अर्थात इनकी शक्ति ने प्राप्त किया था। पथभ्रष्टां भूमिं स्वकक्ष्यायां स्थापयति इति गोविन्दा। अपने स्थान से या कक्षा से पथभ्रष्ट हुई पृथ्वी को उसी कक्षा में स्थापित करने वाली। वराह अवतार में

भगवान विष्णु ने पृथ्वी को वापस स्थापित किया था और यह कार्य उनकी शक्ति अर्थात वाराही ने किया था। लोकरक्षार्थं गाः सूर्यकिरणान् विन्दति। संसार की रक्षा के लिए जिन्होने सूर्य की किरणों को प्राप्त किया अर्थात किरणों के स्वरूप को धारण किया। तत्र सन्निहितो भवति। उन किरणों में विराजमान भी हैं। शत्रुक्षयाय गाश्च बाणान् विन्दति आदत्ते। शत्रु क्षय के लिए बाण को ग्रहण करती हैं अर्थात धनुश बाण भी धारण करती हैं। बाण के रूप को धारण करती हैं यह अर्थ भी हुआ। देवाः गां स्वर्गं विन्दति अनया। देवता लोग या दैवी प्रकृति के मनुश्य इनके द्वारा अर्थात इनकी कृपा से स्वर्ग को प्राप्त करते हैं। गवि भुवि स्वर्गे च विन्दति इमाम्। पृथ्वी में या स्वर्ग में इनको पाया जाता है अर्थात यहाँ भी इनके दर्शन होते हैं। गां ज्ञानचक्षुरविन्दति अनया सात्विका। सात्विक प्राणी जिनके द्वारा ज्ञानचक्षु प्राप्त करते हैं अर्थात ज्ञानी होते हैं। (भगवान विष्णु के गोविन्द नाम का विग्रह किया है – मत्स्यादिरूपेण गां जलं च विदन्ति। वृन्दावने गाश्चारयन् विन्दति। गवामिन्द्रो वा गोविन्दः।)

78. **गान्धारी** – पृथ्वी को धारण करने वाली वाराही शक्ति स्वरूपा। महाभारत की पात्र गान्धारी की तरह पतिव्रता अर्थात अपने पति से कभी अलग न होने वाली। गाम् अर्थात वाणी को धारण करने वाली अर्थात चेतना शक्तिस्वरूपा। गाम् अर्थात वाणी को धारण करने वाली अर्थात वाणी स्वरूपा अर्थात वाक् शक्ति स्वरूपा। गाम् अर्थात ज्ञान के परमोत्कर्ष रूप को धारण करने वाली। गान्धार राजा की पुत्री गान्धारी से अभेद है जिनका। गान्धारी के समान अर्थात गान्धारी के सामान पतिव्रता। कई बार नामों का अर्थ समानता के आधार पर किया जाता है। मत्स्य पुराण में भगवान कृष्ण की एक पत्नी का नाम गान्धारी दिया गया है, उन पत्नी से अभेद है जिनका। कश्यप ऋषि और उनकी पत्नी सुरभि से उत्पन्न कन्या का नाम भी गान्धारी है, उस कन्या से अभेद है जिनका। पार्वती जी की एक सखी का नाम भी गान्धारी है, उस सखी से अभेद है जिनका। गान्धारी नामक नाड़ी में शक्तिरूप में स्थित। सत्य के प्रकाश को धारण करने वाली। वाणी को धारण करने वाली चेतना शक्ति स्वरूपा। गो का एक अर्थ है वाणी। गायों को धारण करने वाली अर्थात् उसका पालन करने वाली। धारण करना अर्थात् adopt करना अर्थात् पालन पोषण करना। पृथ्वी का राज्य धारण करने वाली। पृथ्वी को धारण करने वाले पर्वतों की शक्ति स्वरूपा। गान्धार अर्थात् पृथ्वी को धारण करने वाला अर्थात् पर्वत। महाभारत की गान्धारी के समान अर्थात् उनके समान पतिव्रता।

79. **गन्धमादनी** – गन्ध से ही लोगो को मदमस्त कर देने वाली अर्थात हर्ष या प्रसन्नता देने वाली। मदिरा के समान प्रसन्नता देने वाली। मदिरा पीने वाले लोग जितना मदिरापान से प्रसन्न नहीं होते उतना मदिरा की बात करने से प्रसन्न होते हैं। गन्ध के द्वारा प्रसन्न करने वाली। गन्धेन मादयति इति गन्धमादिनी। चढ़ाये गये सुगन्ध को ग्रहण कर उसके बदले उपासक को प्रसन्न करने वाली। शुभ सूचना प्रदान कर प्रसन्न करने वाली। गन्ध सूचना का भी प्रतीक है। अच्छाइयों से प्रसन्न रहने वाली। मादयति का अर्थ प्रसन्न करना भी होता है और एक नियम के अनुसार प्रसन्न होना भी होता है। प्रेरणार्थक धातु कभी कभी शुद्ध धातु का भी अर्थ देते हैं जैसा कि माघ ने अपने ग्रन्थ शिशुपाल वध में प्रार्थयन्ती शब्द का प्रयोग किया है। गन्धमादन पर्वत पर रहने वाली। गन्धमादन एक पर्वत, स्थान का नाम है। सूक्ष्म रूप में इसका अर्थ है सम्पूर्ण सृष्टि का सर्वोत्तकृष्ट स्थान है, उस स्थान को अलंकृत करने वाली।

80. **गौरांगी** – गौर/शुभ्र, सात्विकता से युक्त अंगों को धारण करने वाली। सत्–चित्–आनन्द स्वरूपिणी। परब्रह्म परमात्मा की ओर जाने वाली अर्थात उनके साथ स्थित। अंगति का अर्थ है गच्छति एवं गौर का अर्थ है परब्रह्म परमात्मा जिसका स्वरूप है सच्चिदानन्द।

81. **गोपिकामूर्ति** – गोपियों के रूप को धारण करने वाली। गोपिका का तात्पर्य विष्णु की माया से भी है। परब्रह्म की माया, उस माया से युक्त हैं जो। सृष्टि में दो तत्व है एक है ब्रह्म, दूसरा माया। माया जो सारे संसार

को संचालित करती है, माया न रहे तो सारे संसार का अस्तित्व खत्म। प्रकाश आने पर अन्धकार तिरोहित होता है पर नष्ट नहीं होता। अन्धकार को दीपक के प्रकाश से नहीं देखा जा सकता। राधा की प्रतिकृति स्वरूपा। सभी गोपियों में राधा प्रधान थी। गोपिका का अर्थ रक्षा करने वाली भी है। गोपयती इति गोपिका। जो भक्तों की रक्षिका स्वरूपा है। वेदों की ऋचाओं के स्वरूप वाली। ऐसा कहा जाता है कि भगवान कृष्ण की 16 हजार रानियाँ वेदों की 16 हजार ऋचाएं हैं।

82. **गोपीगोष्ठनिवासिनी** – गोपियों की गाय के रहने के स्थान में निवास करने वाली। गोष्ठ का अर्थ है जहाँ गाय या अन्य जानवर रहते हैं। गोपियों की मण्डली या समूह के बीच रहने वाली। गोष्ठ का एक अर्थ मण्डली या समूह होता है। माया के ठहरने के स्थान अर्थात ठिकाने पर निवास करने वाली। गोपी का अर्थ माया है और गोष्ठ का अर्थ ठिकाना।

83. **गन्धा** – गन्ध वाली अर्थात सुगन्ध से युक्त। गन्धः अस्या अस्ति इति गन्धः। गन्ध में रहने वाली शक्ति स्वरूपा। गन्ध + आ = गन्धा, एकाक्षरी कोष में आ का एक अर्थ है शक्ति। स्त्रीलिंग में गन्धा हो गया। गन्धस्वरूपिणी। यह गन्ध अलौकिक होती है जो परमात्मतत्वरूपी होती है। जबकि लौकिक गन्ध में सुगन्ध और दुर्गन्ध होती है। गन्ध में गुण रूप में तत्वरूप में विराजमान। गन्ध का कारण।

84. **गजेन्द्रगामिनी** – सर्वश्रेष्ठ हाथी में सवार होकर चलने वाली अर्थात ऐरावत में आरूढ़ होकर चलने वाली। गजेन्द्र का लक्षणा द्वारा अर्थ हुआ सर्वोत्कृष्ट वाहन, उसमें आरूढ़ होकर विचरण करने वाली। हाथी बुद्धिमत्ता एवं स्मरणशक्ति के लिए प्रसिद्ध है। यह शक्ति, ज्ञान, मानसिक दृढ़ता का भी प्रतीक है। हाथी के श्रेष्ठ गुण जिस व्यक्ति में हैं उसमें रहते हुए चलने वाली अर्थात उनमें विराजमान या उनमें अधिक जाग्रत। इन्द्र अर्थात श्रेष्ठ। गजेन्द्र नाम है ऐरावत का।

85. **गदाधरप्रिया** – गदाधर अर्थात विष्णु की प्रियतमा अर्थात लक्ष्मी। वेद (ज्ञान) को धारण करने वाले अर्थात अर्थात ज्ञानियों की प्रिय। ज्ञानियों को प्रसन्न करने वाली। न्याय करने वालों की प्रिय। गदा शब्द आदि विद्या, ईश्वरीय न्याय, वेद, ज्ञानी, नकारात्मक शक्तियों को चूर्ण कर देने वाली शक्ति का प्रतीक है। गद् व्यक्तायाम् वाचि धातु से गदति इति गदा अर्थात् जो स्पष्ट बोलता है। ज्ञानी और वेद स्पष्ट बोलने के कारण गदा कहलाये जाते है। गदा बुद्धि का भी प्रतीक है। एक स्थान पर गदा को loyality का भी प्रतीक लिखा गया है। गदा विघ्नों को नष्ट करने वाली शक्ति का प्रतीक है।

86. **ग्रहा** – ग्रह अर्थात ब्रह्माण्डीय पिण्डों की शक्ति स्वरूपा। ग्रह+आ, आ का एक अर्थ है शक्ति। शक्ति अर्थात ऊर्जा अर्थात देवी। प्रत्येक वस्तु ऊर्जा से बनी होने के कारण देवी स्वरूपा है। ग्रह या ब्रह्माण्डीय पिण्ड स्वरूपा। देवी पदार्थों के रूप में भी है, प्राणियों के रूप में भी है, मन्त्र के रूप में भी है, गुण–समय–अवस्था–सम्बन्ध–क्रिया आदि रूप में भी है। जिसने सबको ग्रहण कर रखा है अर्थात पकड़ कर रखा है। ग्रह्णाति इति ग्रहा। कोई भी पदार्थ उनकी पकड़ के बाहर नहीं है क्योंकि सभी कुछ उन्हीं ने उत्पन्न किया है और सभी कुछ उन्हीं के अन्दर है। जिन्होने सबको धारण कर रखा है। ग्रह नक्षत्रों की शक्ति स्वरूपा। ग्रह नक्षत्र स्वरूपा। जो प्राणियों को उनके कर्मों का फल देने के लिए पकड़ती हैं या ग्रहण करती हैं। जो भक्तों को अनुग्रह देने के लिए एवं दुष्टों को दण्ड देने के लिए उन्हें पकड़ती हैं। ग्रह नक्षत्रों के रूप में प्रकट। ग्रहों में विराजमान। ग्रहों की कारण।

87. **घोरघोरा** – घोर से भी जो घोर है। घोर अर्थात भयानक। माता का एक रूप महाकाली भयानक से भी भयानक है जिसे कोई देख भी नहीं सकता। यदि देख ले तो उसका स्वर्गवास हो जाये। माँ से शक्ति प्राप्त होने पर ही इस रूप को या माँ के तेज को देखा जा सकता है। अधिक से भी अधिक अर्थात सर्वाधिक। देवी प्रत्येक

गुण या शक्ति में सर्वाधिक हैं। घोर का एक अर्थ अत्यधिक भी होता है जैसे घोर तपस्या। प्रायः य अत्यधिक मात्रा भयंकरता में बदल जाती है। जब इसमें हिंसक गुण भी शामिल हो जाता है तो वह उग्र कहलाया जाता है।

88. **घोररूपा** – दुष्टों के लिए अतिबुरी रूप वाली। दुष्टों के लिए निर्दयी रूप वाली। घोर अर्थात भयानक या डरावना। शक्ति का कोई भी रूप जो भयानक है वह इनका ही रूप है।

89. **घनश्रोणी** – जिनकी जंघायें सटी हुई है अर्थात सुन्दर जंघाओं वाली। जंघायें सघन (संश्लिष्ट) है जिनकी (साकार रूप में)।

90. **घनप्रभा** – बादलों जैसी कान्तिवाली। काली देवी की कान्ति इसी प्रकार है और सभी देवियों में अभेद है। जिनका काली देवी से अभेद का सम्बन्ध है। घन इव प्रभा यस्या सा, घनप्रभा। कपूर की तरह कान्ति वाली अर्थात श्वेत प्रकाश वाली। बादल की तरह कान्ति वाली अर्थात बादल की तरह साँवली कन्ति वाली। देवी इच्छानुसार कैसा भी रूप धारण कर सकती हैं। अन्यथा भी अलग अलग अवतारों में किसी में गौरवर्णा रहीं है और किसी में श्यामवर्णा भी रहीं हैं और सभी अवतार एक ही हैं अतः विरोधाभास होने पर आश्चर्य नहीं होना चाहिए। विस्तार वाली कान्ति वाली क्योंकि घन का एक अर्थ विस्तार भी है। बहुत घनी कान्ति से युक्त। अतिशय कान्ति से विभूषित।

91. **दैत्येन्द्रप्रबला** – श्रेष्ठ दैत्यों (अर्थात अधिक ताकतवर) से भी अधिक बल वाली। इन्द्र अर्थात श्रेष्ठ। दैत्यों में जो श्रेष्ठ हैं उनके लिये प्रबल अर्थात भयानक रूप धारण करने वाली (संहार के लिए)। दैत्येन्द्र जैसे रावण, बाणासुर आदि। इन्द्र का अर्थ है राजा या श्रेष्ठ। श्रेष्ठ दैत्यों के अतिशय बल को नष्ट करने वाली। दैत्येन्द्रप्रबला+आ, आ का अर्थ कहीं पर देना और कहीं नाश करना होता है। उपासना करने वाले श्रेष्ठ दैत्यों को अतिशय बल देने वाली, यह अर्थ भी कर सकते हैं। असुरों को जब ब्रह्मा, विष्णु, महेश वरदान देते थे तो वरदान देने वाली इन देवताओं की शक्ति ही होती है। दैत्य अपने बड़े आकार एवं क्रूरता के लिये जाने जाते हैं।

92. **घण्टावादिनी** – घण्टा बजाने वाली। दुर्गा–सप्तशती में देवी के ध्यान मन्त्र में आया है घण्टाशूलहलानि....., अतः देवी घण्टा को भी धारण करती हैं। घण्टा को किसी चीज से बजाया जा सकता है या चलने पर हिलने के कारण भी बज सकता है। घण्टा जड़ वस्तु है फिर भी उससे आवाज निकलती है, अतः इस नाम का अर्थ मूक व्यक्ति से भी बुलवाने वाली कर सकते हैं। उपासकों को अच्छी वाक् शक्ति देने वाली। वादिनी, यह शब्द बजाने वाली और बोलने वाली/बुलवाने वाली दोनों अर्थों में प्रयुक्त होता है। सामवेद के मन्त्रों का गायन करने वाली। सामवेद का निनाद सर्वश्रेष्ठ है उसे बजाने वाली। सामवेद के मन्त्रों के द्वारा झंकृत करने वाली। अनाहत नाद करने वाली अर्थात नाद शक्ति स्वरूपा। शब्द ब्रह्मस्वरूपा। घण्टा की ध्वनि करने वाली कुण्डलिनी शक्ति स्वरूपा। कुण्डलिनी शक्ति ऊपर उठने पर अलग अलग प्रकार की ध्वनि करती है। नामों में ध्वनि सूचक शब्द आने पर उनका तात्पर्य कुण्डलिनी शक्ति ऊपर उठने पर अलग अलग प्रकार की ध्वनि से होता है। ऐसी ध्वनि करने का तात्पर्य मनुष्यों को नाद के अनुसन्धान की ओर प्रेरित करना अर्थात शब्दब्रह्म से एकाकार होने की प्रेरणा देना है।

93. **घोरनिःस्वना** – भंयकर ध्वनि (गर्जना), अट्टहास करने वाली। निःस्वनः का अर्थ है ध्वनि।

94. **डाकिनी** – जो दुष्टों को भय देने के लिए विचरण किया करती हैं। अकति का अर्थ है कुटिलम् गच्छति। जो भय के लिए जो चेष्टा करती है या गमन करती हैं अर्थात दुष्टों को, भक्त विरोधियों को जो भय देती है। डाय (भयाय) अकति (गच्छति या चेष्टाम् करोति) इति डाकिनी। जो आरम्भिक साधकों को भय देती है जिससे साधक भय से पार कर जाए। आरम्भिक साधक जब पहले चक्र अर्थात मूलाधार चक्र में ध्यान लगाता है तो उसे भय की अनुभूति होती है। मूलाधार चक्र में डाकिनी का वास है।

95. **उमा** – पार्वतीरूपा। कठिन तपस्या करती हुई पार्वती को देखकर जिनकी मॉ ने कहा उ अर्थात हे पुत्री, मा अर्थात मत करो (तपस्या)। उ का अर्थ है सम्बोधन अर्थात हे पुत्री एवं मा का अर्थ है नहीं। शिव को तपस्या द्वारा प्राप्त कर लेती है। उ अर्थात शिव को जो मापती हैं अर्थात सीमित करती हैं वह उमा हैं। शिव अनन्त हैं। उन्हें जब सगुण साकार रूप में बना देती हैं तो वह सीमित करना हुआ। तर्क का निषेध कर अटल सिद्धान्त में स्थित रहने वाली। उ का अर्थ है तर्क। उत्तम चित्तवृत्ति वाली। उ का अर्थ है उत्तम और मा का अर्थ है चित्तवृत्ति। जो प्रणव अर्थात ओम् का सार है। उ अर्थात शिव, मा अर्थात लक्ष्मी (शोभा), इस प्रकार उमा का अर्थ हुआ शिव की शोभा स्वरूपा। माति का अर्थ है मापना, रक्षा करना, पालन करना, तुलना करना। उ के अर्थ एकाक्षरीकोश से लिए जा सकते हैं तथा अनेक अर्थों का निर्माण किया जा सकता है। शैव दर्शन के अनुसार ब्रह्म की इच्छाशक्ति का नाम उमा है। अवरक्षणे धातु से उमा का अर्थ रक्षा करने वाली शक्ति या प्रकृति स्वरूपा हैं। सूर्य की माता। वेदमाता, उ का अर्थ है ज्ञान एवं वेद ही ज्ञान का प्रतिनिधि है। माति का अर्थ है निर्माण करना। ज्ञान को उत्पन्न करने वाली अर्थात वेद को उत्पन्न करने वाली। उ अर्थात अरे, हे पुत्री। मा अर्थात नहीं (हे पुत्री तपस्या न करो जिनको उनकी मा मेना ने ऐसा कहा।)।

96. **उपेन्द्रा** – भगवना विष्णु की शक्तिस्वरूपा। उपेन्द्र अर्थात विष्णु के स्वरूप की शक्ति को अपने में धारण करने वाली।

97. **उर्वशी** – जो बहुत अधिक व्याप्त है अर्थात् सर्वत्र व्याप्त है। उरू बहु अश्नुते व्याप्नोतीति इति उर्वशी। जिसमें बहुत से प्राणी अर्थात् सभी प्राणी वास करते है। उरवो बहवः प्राणिनो यत्र वसन्ति सा। जिसके वश में बहुत होते है ऐसी वाणी। उरवो बहवो वशे भवन्ति यस्या सा वाणी। अनेको को वश में करने वाली प्रज्ञा। बहुवशकर्त्री प्रज्ञा। बहुत व्यापक यज्ञक्रिया। उर्वशी बहु व्यापिकाः यज्ञक्रियाः। बहुत लोगों द्वारा अर्थात् सभी के द्वारा जिनको प्राप्त करने की अर्थात् जिनकी कृपा प्राप्त करने की कामना की जाती है। उरूभिः बहुभिः अस्यते कामयते या सा उर्वशी। उर्वशी अप्सरा के समान सुन्दर। उरू अर्थात बड़े/महान लोगों को भी अपने वश में करने वाली। परमसुन्दरी जिसके समान कोई सुन्दर न हो। उर्वशी एक अप्सरा का नाम है पर लक्षणा शक्ति द्वारा देवी माँ के लिए अर्थ होगा कि परमसुन्दरी जिसके समान कोई सुन्दर न हो। जो बड़े–बड़े तपस्वियों को भी अपने वश में कर लेती है। उरवो बहवो वशे भवन्ति यया। उरु का अर्थ है बड़ा। जो भगवान नारायण की जाँघ में व्याप्त थी अर्थात् उससे प्रकट हुई। उरु का अर्थ है जाँघ एवं अश्नुते का अर्थ है व्याप्त होना। जिसके द्वारा बहुत सुख प्राप्त होते है, ऐसी यज्ञाक्रिया स्वरूपा। यया उरूभिः बहूनि सुखानि अश्नुवते सा यज्ञक्रिया। बहुत खाने का हेतु आन्तरिक दीप्ति। उरू बहु अश्नाति यया सा दीप्तिः। विशेष विद्या। उर्वश्याः विशेषविद्यायाः। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने उर्वशी को औषधियों, किरणों, तारों, जलों, दक्षिणा तथा ऋक् साम का प्रतीक माना है। कुछ लोगों ने उर्वशी को विद्युत का प्रतीक माना गया है। उर्वशी और पुरूरवा के प्रकरण में उर्वशी का उषा को प्रतीक एवं पुरूरवा को सूर्य का प्रतीक माना है। जो सर्वत्र व्याप्त होती है वह उर्वशी है, उषा भी सर्वत्र व्याप्त होती है।

98. **उरगासना** – सर्प है जिसका आसन अर्थात भगवान विष्णु के रूप में विराजमान। शक्ति और शक्तिमान एक है उनमें कोई भेद नहीं। भगवान विष्णु की शक्तिस्वरूपा।

99. **उत्तमा** – सर्वश्रेष्ठ। उत् उपसर्ग में तम प्रत्यय लगाकर उत्तमा शब्द बनता है।

100. **उन्नता** – सर्वोच्च स्थिति वाली। हर चीज में जैसे शक्ति, धन, पराक्रम, सुन्दरता में सर्वोच्च स्थिति वाली। उन्नत अर्थात उठा हुआ, ऊँचा, बढ़ा हुआ अर्थात श्रेष्ठ। जो विद्या, कला, शक्ति गुणों में बढ़ी हुई हैं। पुराणों के अनुसार उन्नत नामक एक महापर्वत है जो सुनहरे रंग का है एवं बहुत ऊँचा है।

101. **उन्ना** – हमेशा आर्द्र अर्थात करूणा या दया भाव से युक्त। करूणा आर्द्र मानी जाती है अर्थात जलीय

प्रकृति की मानी जाती है। पानी डालने से सूखे पेड़ हरे भरे हो जाते हैं। इसी प्रकार करूणा दिखाकर सूखे अर्थात मुर्झाये, दुखी चेहरों को हराभरा या प्रसन्न किया जा सकता है। गीली अर्थात तर अर्थात दयालु। दयार्द्र या क्लिन्न। उन्द् धातु में क्त प्रत्यय लगाने से उन्न शब्द बनता है और उन्द् धातु का अर्थ है गीला करना। स्त्रीलिंग में उन्न का उन्ना हुआ। भक्तों को या उपासकों को ऊपर ले जाने वाली अर्थात उठाने वाली अर्थात उनकी उन्नति कराने वाली। नी धातु में ड प्रत्यय लगाने से न शब्द बनता है जिसका अर्थ हुआ ले जाने वाला। स्त्रीलिंग में न का ना हुआ। उत् का अर्थ हे ऊपर। उत् नीयते अनया इति उन्ना। ऊँचाई वाली अर्थात गुणों, शक्तियों, भौतिक रूप से जो सबसे ऊँची हैं। उत्+नम्, से उन्ना बनेगा। लोगों की उन्नति की कारणरूपा। जो लोगों की आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक तीनों प्रकार की उन्नति करती हैं।

102. **उत्तमस्थानवासिनी** – उत्तम स्थान जैसे सत्यलोक, महर्लोक, जनलोक आदि में निवास करने वाली। सत्यलोक में निवास करने वाली। पृथ्वी से ऊपर के सभी लोक उत्तम रूप हैं, जिसमें से सबसे ऊँचा है सत्यलोक। सत्यलोक में निवास करने वाली यह अभीष्ट अर्थ हुआ।

103. **चामुण्डा** – चण्ड–मुण्ड का विनाश करने वाली। चामुण्डा के रूप में जो विराजमान है। दुर्गासप्तशती में प्रसंग आता है कि देवी ने चण्ड–मुण्ड के सिर काटकर लाकर उन्हें भगवती को दिया। भगवती ने उस देवी का नाम चामुण्डा रखा। चमू का अर्थ होता है सेना। पंचतत्वों की जो सेना है जिससे मनुष्य संसार से बन्धन में आ जाता है उस सेना को हटाने वाली, दूर करने वाली। चमू अर्थात सेना, डापयति अर्थात दूर करना। बुद्धि और सुख में जो सर्वोपरि है वह है चामुण्डा। च का अर्थ है बुद्धि और सुख। मुण्ड का अर्थ है सिर अर्थात सर्वोपरि भाग। श, ष, स, ह इन वर्णों की अधिष्ठात्री देवी। आगम शास्त्र में अलग अलग वर्ण समूह की अधिष्ठात्री देवी दी गई हैं। ये देवियाँ उन वर्णों में शक्ति रूप में स्थित होकर उन वर्णों के प्रभाव को पैदा करती हैं।

104. **मुण्डिका** – तत्वज्ञान से युक्त। मुण्ड या सिर ज्ञान का प्रतीक हैं। मुण्डित केशों वाली अर्थात जिनके सिर पर बाल नहीं हैं अर्थात सन्यासिनी का रूप धारण करने वाली। दैत्यों को डराने के लिए भी इस प्रकार का रूप धारण किया जा सकता है। मुण्डयति का अर्थ केश काटना होता है। वप् धातु का अर्थ बोना भी है और केश काटना भी है। मुण्डों वाली अर्थात दैत्यों के कटे सिर की माला धारण किये हुए। मुण्डानि अस्या सन्ति इति मुण्डिका। वर्णमाला को धारण करने वाली अर्थात सभी अक्षर इनसे ही उत्पन्न हुए हैं। तन्त्र में मुण्डमाला को वर्णमाला माना गया है। वाक् अर्थात शब्द ब्रह्म की स्थूल अभिव्यक्ति वर्ण या शब्द है। अनादि और अनन्त गूँज रहा अनाहतनाद शब्दब्रह्म या वाक् है। मुण्डित केशों वाली अर्थात सन्यासिनी। मुण्डो अर्थात सिरों की माला धारण करने वाली। मुख से उच्चरित होने के कारण वर्णमाला भी मुण्डमाला है, उसे धारण करने वाली। मुण्ड का अर्थ बाल मुढ़े हुए सिर, कटा हुआ सिर होता है।

105. **चण्डी** – ब्रह्मस्वरूपिणी। चण्ड का एक अर्थ असीम गुण भी होता है और असीम गुण वाला ब्रह्म ही होता है। अधिक क्रोध वाली। चण्ड का अर्थ अधिक क्रोध है। दुष्ट दैत्यों पर अधिक क्रोध करती हैं। चण्ड शब्द का प्रयोग सीमा द्वारा अपरिच्छिन्न, असाधारण– गुण–शालित्व के अर्थ में प्रयुक्त होता है जैसा कि चण्डभानु, चण्डवाद आदि से स्पष्ट है। इस कारण चण्ड शब्द परब्रह्म का सूचक है क्योंकि वही देश, काल, वस्तु इन तीन सीमाओं से परिच्छिन्न नहीं है अर्थात वही प्रत्येक देश (स्थान) में, प्रत्येक काल में एवं प्रत्येक वस्तु में विद्यमान है इस प्रकार चण्डी का अर्थ हुआ परब्रह्म की महिषी या ब्रह्मशक्ति। ब्रह्म या परमात्मा ही पूरे ब्रह्माण्ड का शासन करने वाला है और बिना क्रोध के शासन नहीं हो सकता। ब्रह्म के क्रोध के डर से ही सभी देवी देवता अपने अपने कार्यों को समय पर एवं पूरी निष्ठा से करते हैं। दया, उदारता, प्रेम आदि दैवी गुणों को तो रखने वाली हैं ही पर साथ में शासन चलाने के लिए क्रोध गुण को भी रखे हुए हैं। क्रोध अंकुश का कार्य करता है अर्थात सभी को नियन्त्रण में रखता है। एकाक्षरी कोश में चं का अर्थ सुख दिया गया है। डप् या डिप् धातु में ड प्रत्यय

लगाने से ड बनेगा जो स्त्रीलिंग में डा या डी होगा जिसका अर्थ है फेंकने वाली, संघात (एकत्रित) करने वाली। दुष्टों के सुख को फेंकने वाली अर्थात नष्ट करने वाली। भक्तों के लिये सुख को एकत्रित करने वाली अर्थात देने वाली। चं का अर्थ रुधिर, भ्रमण भी दिया गया है। रक्त फेंकने वाली अर्थात दुष्टों का रक्त निकालने वाली। असुरों को भ्रमण (घुमाकर) फेंकने वाली।

106. **चण्डदर्पहरा** – चण्ड नामक दैत्य का अहंकार हरने वाली।

107. **उग्रचण्डा** – हिंसक प्रवृत्ति वाले अधिक क्रोध वाली। आपने उग्र भीड़ का नाम सुना होगा। जो भीड़ हिंसक, हमलावर और अनियन्त्रित हो जाए वह उग्र भीड़ कही जाती है। उग्र अर्थात हिंसक यानी बेकाबू। उग्र अर्थात दूसरे व्यक्ति को मारने में इस हद तक उतावला कि अपनी और दूसरे की चिन्ता न करे। उग्र अर्थात बैरी के प्रति क्रूरता या निर्दयता। उग्र अर्थात बेकाबू, अनियन्त्रित। उग्र कठोर चण्ड स्वरूप धारण करने वाली। उग्र अर्थात जिसे देखकर व्यक्ति चिल्लाने लगे, डर जाए। जो शिव से युक्त है एवं दुष्टों पर अधिक क्रोध करने वाली हैं। उच् धातु का अर्थ समवेत होना अर्थात युक्त होना होता है। जो किसी से युक्त है वह उग्र है। सामान्यतः क्रोध से युक्त अर्थ लिया जाता है। शिव से युक्त, यह अर्थ भी उग्र का हो सकता है।

108. **चण्डचण्डा** – चण्ड से भी अधिक चण्ड अर्थात अत्यधिक क्रोध वाली।

109. **चण्डदैत्यविनाशिनी** – चण्ड नामक दैत्य का विनाश करने वाली। चण्ड दैत्य क्रोध का प्रतीक है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ क्रोध का पूर्ण नाश करने वाली। चण्ड वह दैत्य है जो हमारे सात्विक/सदगुणों को नष्ट करता है। उस दैत्य को नष्ट करने वाली।

110. **चण्डरूपा** – असह्य तेज रूप वाली। इनके तेज को किसी के द्वारा भी सहन नहीं किया जा सकता। भयंकर स्वरूप जिसे व्यक्ति देख नहीं सकता ऐसे रूप वाली। प्रखर या प्रबल या दुःसह रूप वाली अर्थात ऐसे तेज वाली। आपने चण्ड सूर्य का नाम सुना होगा अर्थात जिसकी गरमी असह्य हो। जिद्दी या हठी स्वरूप वाली।

111. **प्रचण्डा** – विनाशकारी क्रोध वाली। आपने प्रचण्ड तूफान का नाम सुना होगा जिसका अर्थ है विनाश करने वाला तूफान। अत्यधिक क्रुद्ध। प्रचण्डा में प्र का अर्थ है प्रकर्ष या प्रकृष्ट। प्रकर्ष का अर्थ है अत्यधिक। प्रकृष्ट का अर्थ प्रशंसनीय भी होता है। इस प्रकार प्रचण्डा का अर्थ प्रशंसनीय क्रोध वाली क्योंकि इससे दुष्टों का संहार होता है। प्रचण्ड सूर्य अर्थात जिसका तेज बहुत अधिक दुःसह हो। बहुत अधिक ऊष्मा या गरमी वाला सूर्य प्रचण्ड सूर्य कहलाता है। इस प्रकार प्रचण्डा का अर्थ हुआ असहनीय तेज वाली। बहुत अधिक भयंकर रूप वाली यह अर्थ भी हुआ। आक्रामक, डरावना और बहुत भयंकर रूप रखने वाली। अतिशय चण्ड रूप वाली। प्रचण्ड एक शिव के गण का नाम है। अतः प्रचण्डा का अर्थ हुआ प्रचण्ड नामक शिव गण की शक्ति स्वरूपा।

112. **चण्डा** – चण्ड का अर्थ है अधिक क्रोध, बल, प्रताप। इस प्रकार चण्डा का अर्थ हुआ बल युक्त या प्रताप वाली या अधिक क्रोध वाली। चण्ड अर्थात उग्र रूप वाली। उग्र रूप का अर्थ है बैरी के प्रति क्रूरता या निर्दयता। बेकाबू। पद्मचन्द्रकोष में चण्ड के कई अर्थ दिये गये हैं।

113. **चण्डशरीरिणी** – क्रोध से तमतमाये शरीर वाली। राक्षसों के साथ युद्ध में उनका शरीर तमतमा जाता है। काली के रूप में अत्यधिक उग्र रूप धारण करने वाली। साधकों की साधना में आ रही रुकावटों को दूर करने के लिए इस प्रकार का रूप धारण कर लेती हैं। भक्तों के पूर्व जन्म के संस्कारों को हटाने के लिए इस तरह का रौद्र रूप धारण करती हैं।

114. **चर्तुभुजप्रचण्डा** – चार भुजाओं से प्रचण्ड अर्थात अत्यधिक ताकतवर या अत्यधिक भयंकर या अत्यधिक विनाशकारी मुद्रा वाली दिखने वाली।

115. **चराचरनिवासिनी** – चर और अचर सभी में शक्ति रूप से रहने वाली।

116. **छत्रप्रायशिरोवाहा** – प्रायः सिर के ऊपर छत्र धारण किये रखती हैं। जिनके सिर के ऊपर छत्र अधिकांशतः से रहता है अर्थात अधिकांशतः सिर के ऊपर छत्र धारण करने वाली।

117. **छला** – स्वयं छल करती हैं अर्थात दुष्टों का नाश करने के लिए उन्हें धोखा देती हैं। मोहिनी रूप में दैत्यों से छल किया गया था। दुष्टों के अलावा भी सभी से छल करती हैं क्योंकि छल में वास्तविकता को छिपाया जाता है। मायाशक्ति के कारण सर्वत्र व्याप्त होने पर भी वे हमें दिखाई नहीं देती। मायाशक्ति स्वरूपा। कहा गया है माया महाठगिनी। छलयति इति छला, जो छल करती हैं वे छला हैं। कपटपूर्ण व्यवहार या वास्तविकता को छिपाने वाले कर्म के स्वरूप वाली। इस कर्म में किसी को धोखे में डालकर स्वार्थ सिद्धि की जाती है। रावण ने वेश बदलकर जब सीता का अपहरण किया था तो उसने छल किया था। रावण ने छल किया था अर्थत रावण में विराजमान शक्ति ने छल किया था। छल कर्म स्वरूपा। छल का अर्थ ब्याज या बहाना भी होता है। ब्याज स्वरूपा अर्थात बहाना स्वरूपा। संसार स्वरूपा। संसार बहाना है, असली में नहीं है। संसार के निमित्त अपनी अनुभूति कराने वाली। छल स्वरूप धारण करने वाली जैसे वामन अवतार में, रक्तबीज वध में छल का सहारा लिया गया था।।

118. **छलतरा** – दूसरों से अधिक छल वाली। मोहिनी अवतार में सारे राक्षसों को मूर्ख बनाकर उन्हें छल लिया था। माया से बढ़कर छल करने वाला और कोई नहीं है। भगवान कृष्ण ने धर्म की रक्षा के लिए कई बार छल किया था जैसे वृन्दा के साथ छल किया था। दूसरों से अधिक छल रूपा अर्थात अधिक छल कपट कर्म स्वरूपा। उपासना के छल से भक्तों को पार करा देने वाली। दैत्यों के साथ अपेक्षाकृत अधिक छलकपट करने वाली। मोहिनी रूप में दैत्यों के साथ छल ही किया गया था। छल का अर्थ बहाना भी है। जो अन्य लोगों के छल से बढ़कर है अतिशय छल वाली।

119. **छली** – छल करने वाले भगवान कृष्ण की पत्नी या प्रेमिका से अभेद है जिनका। छलम् अस्य अस्ति इति छलः (छल वाला अर्थात छल करने वाला अर्थात भगवान कृष्ण)। तात्पर्य है रूक्मणी स्वरूपा या रूक्मणी से अभेद है जिनका। राधा स्वरूपा। छली का भी अर्थ भगवान कृष्ण दिया गया है। जो कृष्ण की तरह हैं अर्थात भक्तों के पापों को खीचकर नष्ट करने वाली हैं एवं भक्तों को आनन्द या मोक्ष देने वाली हैं। वास्तविकता छिपाने वाले गुण से युक्त। अपने को माया में छिपा कर दूसरे रूप में प्रकट है। छलयुक्त अर्थात छल या बहाने से युक्त। दैत्यों से छल करने वाली। छलों से युक्त। छल में इनि प्रत्यय लगाने से छली शब्द बनता है।

120. **छत्ररूपा** – जो छत्रस्वरूपिणी है। प्रत्येक चीज शक्ति या ऊर्जा की बी होती हैं और शक्ति और ऊर्जा का अर्थ है देवी। छत्रम् रूपयति इति छत्ररूपा, इस व्युत्पत्ति से अर्थ होगा, छत्र को दिखाने वाली, बनाने वाली। छत्र है ज्ञापक या बोधक जिनका अर्थात छत्र से जिनका बोध होता है या पहचान होती है। इनके छत्र को देखकर पता चल जाता है कि ये देवी ही हैं। कष्टों से रक्षा करने वाले रूप वाली। छतात् त्रायते इति छत्रम्, जो छत (वृण या घाव) से रक्षा करे वह छत्र कहलाता है। घाव का अर्थ कष्ट ले सकते हैं। एकाक्षरीकोश में छ का एक अर्थ सूर्य दिया गया है। अतः सूर्य की रक्षा करने वाली शक्ति के स्वरूप वाली।

121. **छत्रधरा** – छत्र धारण करने वाली। तात्पर्य है समूचे विश्व रूपी राज्य की महारानी अर्थात उस पर शासन करने वाली। छतात् अर्थात हानियों से रक्षा करने के लिए छत्र धारण करने वाली। लौकिक हानियों से रक्षा करने के लिए छत्र को धारण करती हैं।

122. **क्षत्रियक्षयकारिणी** – पाप करने वाले, उद्धत, अपने अधिकार और शक्ति का दुरूपयोग करने वाले क्षत्रियों का विनाश करने वाली। भगवान परशुराम ने कई बार क्षत्रियों का नाश किया था। भगवान परशुराम ने नाश किया था अर्थात उनकी शक्ति ने नाश किया था।

123. **जया** – जय जिनका स्वरूप है। जयति असुरान इति जया। असुरों पर जीत हासिल करने वाली। जयशीला। शत्रुओं पर, इन्द्रियों पर जो विजय प्राप्त करती है। जय+आ, आ का अर्थ है देना। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ भक्तों को जीत का वरदान देने वाली। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर षड्रिपुओं पर जीत है जिनकी। जय का अर्थ है दूसरों से बढ़कर होना या सभी से बढ़कर होना। सुन्दरता, शक्ति, अन्य गुणों आदि में सभी से श्रेष्ठ।

124. **जयदुर्गा** – जय प्राप्त करने वाली दुर्गा स्वरूपा या ऐसी दुर्गा से अभेद है जिनका। जो हमेशा विजयी होती हैं, ऐसी दुर्गा स्वरूपा। भक्तों को जय देने वाली दुर्गा, यह अर्थ भी कर सकते हैं। दुर्गा अर्थात जो अत्यन्त कठिनाई से जानी जाती हैं या प्राप्त की जाती हैं। जय दिलाने वाली दुर्गा। जीतने के गुण से युक्त दुर्गा। असुरो पर जीत हासिल करने वाली दुर्गा। दुर्गा का जय स्वरूप इन्हीं का रूप है। जय का एक अथ यह भी है – दूसरों से अधिक होना अर्थात जो रूप, गुण, शक्ति, ऐश्वर्य आदि में दूसरों से बढ़कर हैं, ऐसी दुर्गा।

125. **जयन्ती** – जीतती हुई अर्थात जो हर क्षण जीत रही होती वह जयन्ती है। अंग्रेजी में continuous tense वाले विशेषण की तरह/present participle जैसे दौड़ते हुए लोग, मैच देखते हुए लोग उसी प्रकार जीतती हुई देवी। प्रत्येक चीज में जैसे सुन्दरता, वीरता, पराक्रम, धन आदि में हर क्षण पहले स्थान पर रहती हैं यही जयन्ती का अर्थ है। 2. सर्वोत्कर्षेण वर्तते इति जयन्ती अर्थात जो अन्यों से श्रेष्ठ वह है जयन्ती। यह श्रेष्ठता गुणों के कारण होती है, अन्य कारण गौण है। जैसे किसी व्यक्ति को सभा का अध्यक्ष बना दिया गया तो वह अन्य से श्रेष्ठ हो गया। जयन्ती में प्रतिद्वन्द्वी को प्रतियोगिता में हराने की तरह क्रिया होना अनिवार्य नहीं है। बिना लड़े ही गुणों के कारण लोगों ने आपको श्रेष्ठ मान लिया। विजय से सुशोभित। हमेशा विजय को देखने वाली जय से सम्पन्न। जयन्ती तिथि स्वरूपा। इन्द्र की पुत्री जयन्ती से अभेद है जिनका। जयन्ती हल्दी का भी नाम है जो रोगनिवारिका है। इस प्रकार जयन्ती का अर्थ हुआ हल्दी की तरह कष्टों को दूर करने वाले पवित्र गुणों से युक्त।

126. **जयदापरा** – जो जय देने वाली हैं एवं श्रेष्ठ हैं। जय देने वाले सभी देवी देवताओं में जो सबसे श्रेष्ठ हैं। भक्तों या उपासकों को जय देने में लगी हुई। जय देने वाली श्रेष्ठ शक्ति स्वरूपा। परम विजय प्रदान करने वाली।

127. **जायिनी** – जिससे सभी प्राणी पैदा होते है। जयन्ते अस्याः प्रणिनः। जिससे सभी ब्राह्मण उत्पन्न होते है। जिसमें सब पैदा होते हैं। जायते सन्ततिः अस्याम्। सम्पूर्ण सृष्टि उत्पन्न करने वाली।

128. **जयिनी** – जीतना जिनका स्वभाव है। जय शब्द में णिनि प्रत्यय लगाने से जयिनी शब्द बनेगा। णिनि प्रत्यय स्वभाव अर्थ मे प्रयुक्त होता है। राक्षसों पर या शत्रुओं पर हमेशा विजय पाने वाली। जय अर्थात कल्याणवचन से युक्त। जय का अर्थ समृद्धि भी होता है इस प्रकार जयिनी का अर्थ हुआ समृद्धि से युक्त। आन्तरिक या बाह्य शत्रुओं पर जीत हासिल करने वाले गुणों से युक्त। अन्य के द्वारा की गई प्रशंसा या अभिवादन प्राप्त करने के गुणों से युक्त। जय हो अर्थात आपकी प्रशंसा हो। जयशीला। सब पर जीत का स्वभाव है जिसका।

129. **ज्योत्सना** – चाँदनी की तरह, अर्थ हुआ चाँदनी की तरह प्रकाश, प्रसन्नता, शीतलता, सुख देने वाली। परम प्रकाशस्वरूपा। ज्योति रूप में जो हर समय एक जैसी प्रकाशित होती है। प्रकाश करने वाली अर्थात ज्ञान का या सत्य का प्रकाश करने वाली। Light of the soul, light of consciousness, effulgence.

130. **जटाधरप्रिया अजिता** – जटाधर शिव की प्रिया होकर जो अपराजिता अर्थात अपराजेय है। शिव की प्रिया होने के कारण वो कभी पराजित नहीं होती। (जटा शब्द आकाश या आकाश में रहने वाली वायु का प्रतीक है। भगवान शिव को व्योमकेश कहा जाता है। व्योम अर्थात आकाश। आकाश में ही वायु रहती है। बाल प्रायः काले

होते है तथा सिर से बँधे रहते है। जटाधारिणी का अर्थ हुआ काले रंग वाले तमोगुण को बाँधे हुए अर्थात अपने में नियन्त्रण किये हुए। जटाएं एक–दूसरे से उलझी हुई रहती है। इसे अज्ञान या माया का प्रतीक मान सकते है। इस प्रकार जटाधारिणी का अर्थ अज्ञान को बाँधे हुए है अर्थात अपने नियन्त्रण में लिये हुए है।)

131. **जितेन्द्रिया** – इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर ली है जिन्होंने। इन्द्रियों में रहने वाली शक्ति से बढ़कर है अर्थात इन्द्रियों में रहने वाली शक्ति भी इनके अधीन है।

132. **जितक्रोधा** – जिन्होंने क्रोध को जीत लिया है। भगवान शिव को जीत लिया जिसने अर्थात वश में कर लिया अर्थात पति बना लिया।

133. **जयमाना** – जय के कारण सम्मान वाली। चूँकि देवी सभी पर जीत हासिल करती हैं अतः उन्हें बहुत अधिक सममान मिलता है। मान का अर्थ गर्व भी होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ जीत के अभिमान वाली। मान का अर्थ शक्ति या सामर्थ्य भी होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ जीतने की शक्ति या सामर्थ्य वाली। जयशीला अर्थात जीतने के स्वभाव वाली। हमेशा जीतती रहती हैं। विजयशालिनी, जय के मान वाली। जय ही मापदण्ड है जिनका, जय ही जिनका स्वभाव है। मान का अर्थ है मापदण्ड स्वभाव, शील।

134. **जनेश्वरी** – समस्त लोगों की ईश्वरी। ईश्वरी का अर्थ है – आराध्या, स्वामिनी, संचालिका, सृष्टि, पालन और संहार करने वाली। भक्त–जनों को ऐश्वर्य देने वाली।

135. **जितमृत्यु** – जिसने मृत्यु को जीत लिया है।

136. **जरातीता** – जरा अर्थात वृद्धावस्था से परे है। जो वृद्ध नहीं होती हैं।

137 **जाह्नवी** – गंगा स्वरूपा, गंगा अर्थात सदैव गतिशीला। जह्नु ऋषि द्वारा छोड़ी जाने के कारण गंगा का एक नाम जाह्नवी है। जहाति दोषानिति जह्नुः (स्त्रीलिंग में जाह्नवी)। जहाति दुष्टान् नयति साधूनिति च। जयति जयते च, हन्ति हूयते च, नयति नीयते च। जिसने बुराई को छोड़ दिया है अर्थात दोष या बुराई से रहित। दुष्टों का त्याग करने वाली एवं सज्जनों को साथ ले जाने वाली या उच्च लोकों में ले जाने वाली। जो दूसरों से बढ़कर है, जिसे सभी संकट के अवसर पर पुकारते हैं या यज्ञ में बुलाया जाता है एवं जो भक्तों को मोक्ष की ओर ले जाती है। जय का अर्थ दूसरों से बढ़कर होना, गुण, शक्ति, सौन्दर्य आदि सभी चीजों में दूसरों से बढ़कर होना जय प्राप्त करना है। जयति का अर्थ होता है सर्वोत्कर्षेण वर्तते।

138. **जनकात्मजा** – जनक की पुत्री सीता रूप में स्थित है। जनक ब्रह्मा को भी कहते हैं। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ ब्रह्मा की पुत्री अर्थात ब्रह्मा से पैदा हुई प्रकृतिस्वरूपा। उत्पन्न करने वाले की पुत्री अर्थात पवित्रता उत्पन्न करने वाले की पुत्री अर्थात पवित्र सोच स्वरूपा। मन और बुद्धि की पवित्रता स्वरूपा अर्थात पवित्र मन और बुद्धिस्वरूपा। शास्त्रों के अनुसार सीता जी पवित्र सोच का प्रतीक हैं। जनक में स्वस्वरूप से विराजित, यह अर्थ भी कर सकते हैं। सृष्टि के लिए अनुकूल मूलप्रकृति स्वरूपा। जनक अर्थात ब्रह्मा जी, आत्मजा अर्थात अपने भीतर से निकाली गई, जनकात्मजा का अर्थ हुआ ब्रह्मा जी द्वारा अपने भीतर से प्रकट की गई सृष्टि के अनुकूल प्रकृति स्वरूपा। आत्मजा अर्थात अपने से उत्पन्न, पर पोषित अर्थ भी कर सकते हैं क्योंकि सन्तान का पोषण भी होता है। इस नाम का अर्थ हुआ सृष्टिकर्ता ब्रह्मा द्वारा पोषित सृष्टि के लिए अनुकूल मूलप्रकृति स्वरूपा। इस नाम का सार है ब्रह्मा जी द्वारा अपने भीतर से प्रकट की गई मूलप्रकृति स्वरूपा। जनक (ब्रह्मा) में आत्म स्वरूप (चैतन्य तत्व) से स्थित या व्याप्त। जा का अर्थ स्थित, विस्तार, शैय्या होता है।

139. **झंकारा** – झम् शब्द स्वरूपा। झम् शब्द का रूप धारण करने वाली (ठकार अर्थात ठ वर्ण, पकार अर्थात प वर्ण)। स्वयं झम् झम् शब्द करने वाली अर्थात प्रकृति स्वरूपा। प्रकृति में होने वाले शब्द देवी के द्वारा किए जाने

वाले शब्द है क्योंकि देवी प्रकृति रूपा हैं। मानवीय उदात्त मूल्यों/ संस्थितियों को झंकृत करने वाली। एकाक्षरी कोष में झम् का अर्थ वन, धन, ऐश्वर्य दिया गया है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ वन, धन, ऐश्वर्य की रचना करने वाली। कुण्डलिनी के रूप में सुषुम्नानाड़ी में ऊपर उठते हुए इस प्रकार का शब्द करने वाली। देवी के नामों में बहुत से नाम हैं जो किसी अव्यक्त ध्वनि को करने वाले शब्द होते हैं। उसका तात्पर्य कुण्डलिनी रूप में इस प्रकार के शब्द करना होता है। इस नाम का अर्थ अनाहतनाद या शब्द ब्रह्म से देवी की एकरूपता भी है। यह नाम उपासकों को नादानुसन्धान के लिए भी प्रेरित करता है अर्थात इस नाम का अर्थ हुआ उपासकों को नादानुसन्धान के लिए प्रेरित करने वाली या शब्दब्रह्म से एकरूपता करने के लिए प्रेरित करने वाली। शब्दब्रह्म या नादब्रह्म ब्रह्म का स्पन्दनात्मक रूप है।

140. **झंझरी** – बारिश के शब्द की तरह मधुर ध्वनि करने वाली झरना स्वरूपा। झम् का अर्थ है झम् आवाज जो बारिश में होती है। बारिश में झम् झम् की आवाज होती है अतः झम् एक अव्यक्त शब्द है। अव्यक्त शब्द का तात्पर्य है कि शब्द तो हो किन्तु जिसके अनुरूप वस्तु न हो। झरी का अर्थ है झरना। हिन्दी शब्दकोश में झँझरी शब्द मिलता है जिसका अर्थ है चलनी, जिससे आटा आदि चला जाता है। चलनी की तरह सार को रखने वाली और अनुपयुक्त या दूषित पदार्थ को बाहर फेंक देने वाली। सदैव उच्चतम मानवीय स्थितियों को बढ़ाने वाली। चलनी/छाजन की तरह अनेक छिद्रों वाली अर्थात अनेक आँखों वाली इन्द्राक्षी देवीस्वरूपा या निरन्तर दान करने वाली। एकाक्षरी कोष के अनुसार झं का अर्थ है, भोग या ऐश्वर्य, झ का अर्थ है धन, इस प्रकार झंझरी का अर्थ हुआ ऐश्वर्यरूपी धन देने वाली। राति का अर्थ है देना। झम् का अर्थ है धन, भोग, ऐश्वर्य, वन एवं झ का अर्थ है उपाय, विषय। इस प्रकार झंझरी का अर्थ हुआ धन/ऐश्वर्य के उपायों को या विषयों को देने वाली।

141. **झण्टा** – झम् इति अव्यक्त शब्दम् टंकति उच्चारयति इति झण्टा। आभूषणों के माध्यम से झम् ऐसा शब्द करने वाली। प्रत्येक चीज ऊर्जा या शक्ति से बने होने के कारण देवी रूप है। आभूषण भी ऊर्जा से बने होने के कारण देवी रूप है। नूपुर या अन्य आभूषणों से झम् की ध्वनि आती है। झम् कृत्वा रटति अर्थात झम् ऐसा बोलने वाली या उच्चारण करने वाली। ऐसा नियम है कि धातु का एक शब्द भी मिले तो उसे ले लेना चाहिए। रटति से टा शब्द ले लिया। शब्दकल्पद्रुम में झिण्टा इसी तरह से बनाया गया है। एकाक्षरी कोष में झं का अर्थ भोग, ऐश्वर्य दिया गया है एवं टा का अर्थ पृथ्वी, भूमि दिया गया है। इस प्रकार झण्टा का अर्थ हुआ भोग या ऐश्वर्य की भूमिस्वरूपा अर्थात भोग या ऐश्वर्य जहाँ से पैदा होते हैं। झम् ऐसा शब्द करने वाले पात्रस्वरूपा अर्थात झम् ऐसा शब्द करने वाली। एकाक्षरी कोष में ट का अर्थ करंक अर्थात पात्र दिया गया है और पात्र से शब्द होते हैं। एकाक्षरी कोष से झ के अर्थ लेकर भी इस शब्द के अन्य अर्थ बनाये जा सकते हैं। बिन्दु या अनुस्वार अवधारण (एव/ही/निश्चितता) का भी अर्थ देते हैं।

142. **झंकारी** – गुंजार करने वाली। बरसात के रूप में झम् शब्द करने वाली। बादलो से जब बारिश होती है तो छोटी छोटीं बूँदें झम् शब्द करती हैं। देवी प्रकृतिरूपा हैं अतः प्रकृति द्वारा की गई ध्वनि या कार्य देवी के द्वारा किया गया कहलाया जायेगा। आपने झमाझम बारिश का नाम सुना होगा। झम् शब्द करती हुई बरसती है। देवी को प्रकृति माना जाता है। प्रकृति के हर कृत्य देवी के कृत्य माने जायेंगे।

143. **झकशोभिनी** – झंझावात या चारू वायु (सुन्दरवायु) के रूप में सुशोभित होने वाली। एकाक्षरी कोष में झ का अर्थ झंझावात, चारूवायु (अच्छी लगने वाली वायु होती है)। संस्कृत के नियम के अनुसार झ अर्थात झक। बिना अर्थ बदले कन् प्रत्यय लगता है। कुण्डलिनी के रूप में सुशोभित होने वाली। कामधेनु तन्त्र में झ का एक अर्थ कुण्डलिनी बताया गया है। झक का अर्थ चमक भी है। चमक के रूप में या चमक के साथ सुशोभित होने वाली। झक अर्थात धुन। जो अपनी धुन में मस्त है, शोभासम्पन्न है, अपनी धुन से सुशोभित, अपनी धुन में मदमस्त

144. **झखा** – मत्स्यावतार भगवान विष्णु की शक्ति। झख का अर्थ होता है मत्स्य या मछली। जिसने माया या जगत रूपी वस्त्र धारण कर रखा है। झख् धातु का अर्थ है वस्त्र लपेटना।

145. **झमेशा** – शिव की ईश्वरी। शिव पर शासन करने वाली। एकाक्षरी कोष के अनुसार झ का अर्थ शिव है और मोनियर विलियम्स के शब्दकोष के अनुसार म का अर्थ शिव है, इस प्रकार झम का अर्थ है शिव। एकाक्षरी कोष के अनुसार झ का अर्थ मोक्षफलप्रद या कल्याणप्रद हो। इस प्रकार झम का अर्थ हुआ मोक्षफलप्रद या कल्याणप्रद शिव। जब वर्षा में छोटी–छोटी बूँदें गिरती हैं तो वे शब्द करती हैं, इस प्रकार झम एक शब्द या ध्वनि है। हिन्दी में झमकना का अर्थ चमकना या प्रकाशित होना भी होता है। ईश का अर्थ है उत्पन्न करने वाला। झमेशा का अर्थ हुआ झम झम शब्द करने वाली अर्थात वर्षा या बादल स्वरूपा। देवी प्रकृति स्वरूपा हैं। तेज चमक पैदा करने वाली। झमति इति झमः, जो भक्षण करता है अर्थात खाता है वह झमः है। खाने वालों की ईश्वरी अर्थात जिनकी कृपा से खाना मिलता है, वह झमेशा हैं। भक्षण करने वाली शक्तियों की ईश्वरी अर्थात उन पर शासन करने वाली, नियन्त्रण करने वाली, अपने अनुसार चलाने वाली। शासन का अर्थ होता है अपनी इच्छानुसार कार्य कराना। झमु अदने धातु होती है अर्थात झम् का अर्थ है भक्षण कराना या खाना। ईश्वरी का अर्थ है आराध्या, शासन करने वाली। खाना (eating) की ईश्वरी। खाने की शक्ति रूपा। जब यह शक्ति होती है तभी खाना खाने की क्रिया होती है, इसके बिना खाने के क्रिया नहीं हो सकती। झमु अदने इस सूत्र से झम् धातु का अर्थ खाने की क्रिया करना। ईश का अर्थ है जिसके आदेश पर क्रिया हो या न हो। जब क्रिया उसकी इच्छा के अनुसार होगी तो होगी अर्थात उसकी इच्छा के संगत होने पर ही क्रिया घटित होगी अन्यथा नही। खाने की क्रिया का अनुशासन देवी के द्वारा ही होता है।

146. **झंकारी योनिकल्याणदायिनी** – घुंघरू या पायल पहनकर झम् इस प्रकार की ध्वनि करने वाली एवं योनि से उपलक्षित स्त्रियों का कल्याण करने वाली। जो झंकार की कारण है अर्थात झंकार करने वाली है और उस झंकार के द्वारा सभी का कल्याण देने वाली है। (यदि झंकारियोनिकल्याणदायिनी शब्द है तो अर्थ है – एकान्त में स्थित दुर्गायुक्त महेश्वर के स्वरूप वाली एवं योनि से उपलक्षित स्त्रियों को कल्याण देने वाली। कैलाश पर्वत पर पार्वती सहित शिव का होना एकान्त में स्थित दुर्गायुक्त महेश्वर है। एकाक्षरी कोष के अनुसार झं का अर्थ है एकांत, वन, का का अर्थ है दुर्गा और रि का अर्थ है महेश्वर। एकान्त में होने वाले कुशब्द का क्षय करने वाली यह भी झंकारि का अर्थ है। का का अर्थ कुशब्द एवं रि का अर्थ क्षय है। (यदि झंकारी अलग शब्द है एवं योनिकल्याणदायिनी अलग शब्द है तो झंकारी का अर्थ होगा झम् इस अव्यक्त ध्वनि को करने वाली और योनिकल्याणदायिनी का अर्थ होगा प्राणियों के वर्ग अर्थात 84 लाख योनियों का कल्याण करने वाली, जगत के कारण अर्थात ब्रह्मा जी का कल्याण करने वाली या योनि धारण करने वाली अर्थात योनि से उपलक्षित स्त्रियों का कल्याण करने वाली)।

147. **झरझरा** – झरझर की ध्वनि देने वाली अर्थात तेज वायु स्वरूपा या वर्षा स्वरूपा। झरझर+आ, आ का अर्थ है देना। देवी का एक वाद्य झर्झर है उस वाद्य से विभूषित। झर्झर एक प्रकार का पुराना वाद्य (झाँझ) है जिसमें चमड़ा मढ़ा होता है, जिससे झर झर शब्द की ध्वनि आती है। (यदि झंझरा शब्द है तो अर्थ होगा झम् शब्द करने वाला झरना स्वरूपा। झम् इति युक्ता झरा।)। झर्झ् धातु का अर्थ है बोलना। झर्झति इति झर्झः अर्थात बोलने वाला। राति इति रा अर्थात देने वाला। बोलने वाले को अर्थात अच्छा उपदेश देने वाले को या धर्म की बात करने वाले को उनका अभीष्ट देने वाली।

148. **झमूरी** – शिव के घर की महिला। एकाक्षरी कोष के अनुसार झ का अर्थ है शिव, मू का अर्थ है घर और री का अर्थ है महिला। शिव को बन्धन देने वाली महिला। एकाक्षरी कोष के अनुसार मू का अर्थ बन्धन भी होता

है। बन्धन का अर्थ है शिव से हमेशा जुड़ी रहती हैं, कभी अलग नहीं होती। शिव को बन्धन देने वाली अर्थात उन्हें घर गृहस्थी का बन्धन देने वाली। झमति इति झमूरी। झमति = खादति। झम् धातु में उणादिक् प्रत्यय डमूरी लगाने से टि अर्थात अम् का लोप होकर झमूरी बना। झम् ऊरी करोति। झम् शब्द को स्वीकार करती या धारण करती। आसुरी शक्तियों को भयभीत करने के लिए झम् शब्द को धारण करती है। शिव को जिसने अंगीकार किया है या स्वीकार किया है। (यदि झमुरी शब्द है तो अर्थ होगा झम् मुरति अर्थात जो शिव को लपेटे हुए है अर्थात उनमें व्याप्त हैं। झ का एक अर्थ शिव भी है। झंझावात या अनिष्ट या गर्व को लपेटने वाली अर्थात बाँधकर मिटाने वाली। एकाक्षरी कोष के अनुसार झ का अर्थ है झंझावात, अनिष्ट, गर्व, दैत्यराज, मुर वेष्टने धातु है जिसका अर्थ है लपेटना। भक्षण करने को स्वीकार करने वाली अर्थात राक्षसों के भक्षण को स्वीकार करने वाली। झम् धातु का अर्थ भक्षण करना होता है, उरी का अर्थ स्वीकार करना होता है।)

149. **झारा** – भोग या ऐश्वर्य देने वाली। एकाक्षरी कोष में झा का अर्थ भोग, ऐश्वर्य, सुन्दरी, सरस्वती बताया गया है। झाम् राति इति झारा। जिनका विवाह नहीं हुआ है, उन्हें सुन्दरी प्रदान करने वाली। अपने उपासकों का सरस्वती अर्थात निर्मल ज्ञान (निर्मलता या स्वच्छता)। देने वाली। डाँट स्वरूपा। झर्झ धातु का अर्थ डाँटना है। झर्झ् धातु में डाराच् प्रत्यय लगाने से झारा बनता है, झर्झते इति झारा। कर्म या भाव में ऐसा अर्थ होता है। क्रियते इति कर्म जो कर्म या भाव का अर्थ दे रहा है। देवी के भक्त यदि गलत रास्ते पर चले गये हों तो उसे रोकने के लिए जो डाँटा जाता है, डाँटना देवी स्वरूपा ही है। हिन्दी शब्दकोष में झार शब्द आया है जिसके बारे में कहा गया कि यह शब्द संस्कृत शब्द झाला (ताप) से बना है और झार शब्द के अर्थ वर्षा की बूँद, ज्वाला, लपट दिये गये हैं। इस प्रकार झारा का अर्थ वर्षा की बूँद देने वाली अर्थात बादल स्वरूपा हुआ। ज्वाला या लपट देने वाली, यह अर्थ भी हुआ। झार + आ, आ का एक अर्थ है देना। हिन्दी के वे ही शब्द लिए जा सकते हैं जो तत्सम हों। हिन्दी शब्दकोष में झार का अर्थ सार (खालिश) जरा भी मिलावट न हो, बताया गया है। हिन्दी शब्दकोष में झारा का अर्थ अनाज फटकने का सूप, अनाज छानने का झरना, पटा, बनेठी, लाठी चलाने की विद्या दी गई है। झा का अर्थ झाण (एक प्रकार का ध्यान) लें और राति से रा शब्द लें तो झारा का अर्थ होगा झाण नामक ध्यान विद्या देने वाली। राति का अर्थ है देता है। झाण ध्यान में शरीर के भीतर पंच तत्वों का ध्यान किया जाता है और उन्हें क्रमशः ऊपर उठाया जाता है तथा चक्रों का भी ध्यान किया जाता है।

150. **झरा** – प्रवाहरूपिणी। झर का अर्थ है झरना। ऊपर से नीचे की ओर किसी वस्तु की लगातार वर्षा, झर या झरना कहलाती है आनन्द प्रवाह के रूप में बहने वाली या आनन्द प्रवाहरूपिणी। कल्याण देने वाली यह अर्थ भी कर सकते हैं क्योंकि एकाक्षरी कोष में झ का अर्थ कल्याण, शिव, विचार बताया गया है। झम् राति इति झरा। डाँटने वाली। झर्झ् धातु में डराच् प्रत्यय लगाने से टि का लोप होकर झरा बनता है। झर्झ् धातु का अर्थ है डाँटना। कर्ता अर्थ में ऐसी व्युत्पत्ति होती है। झरति वर्षति। जो परमतत्व ब्रह्म ज्ञान की वर्षा करती हैं। झर्झति इति झरा। झर पानी या किसी वस्तु की लगातार होने वाली झड़ी है। लगातार बहना जैसे पानी का झरना, आग की लपट, गर्मी का लगातार प्रवाह, ये सब झर हैं। विरह झर (अग्नि या लपट) से लता कुम्हलाई। झर + आ, आ का अर्थ है देना। इस प्रकार झरा का अर्थ हुआ जल का प्रवाह देने वाली, ऊष्मा का प्रवाह देने वाली अर्थात गर्मी देने वाली।

151. **झराझरतरापरा** – अधिक निरन्तर प्रवाह (या गति में बहने अर्थात चेष्टा करने) में लगी हुई। अधिक निरन्तर चेष्टा करने में लगी हुई। झर् गतौ धातु है। जिस प्रकार बदाबद, पतापत आदि शब्द बनते हैं उसी प्रकार झराझर शब्द बनता है। झराझर का अर्थ हुआ निरन्तर गति करना या बहना अर्थात निरन्तर चेष्टा करते रहना। तरा का अर्थ हुआ अधिक और परा का अर्थ है लगा हुआ। अधिक डाँटने वालो में भी श्रेष्ठ अर्थात उनसे भी अधिक डाँटने वाली। झरा का अर्थ है डाँटने वाली। बार बार करने के अर्थ में या अतिशय अर्थ में अर्थात

अधिक अर्थ में शब्द का दो बार प्रयोग होता है। झराझर हुआ तो इसका अर्थ है अधिक डाँटना। यङ्लुङ् में इस तरह की चीजें होती हैं जैसे फटाफट आदि। झराझर का अर्थ है अधिक डाँटने वाला। उसमें तर लगाने से अर्थ हुआ उससे भी बढ़कर अर्थात अधिक डाँटने वालों से भी अधिक डाँटने वाली। परा अर्थात उसमें लगी हुई। उस ब्रह्म ज्ञान की वर्षा करने में जो परा अर्थात उत्कृष्ट/सर्वश्रेष्ठ हैं। ब्रह्म तत्व को प्रकाशित करने की परम शक्ति से सम्पन्न है।

152. **झंझा** – आँधी की तरह अर्थात् शत्रुओं को समूल या जड़ से उखाड़ फेकने वाली। झंझा का अर्थ तेज आँधी होता है जिससे पेड़–पौधे उखड़ जाते है। कई नामों में 'के समान' ऐसा जोड़कर अर्थ निकल आता है। वर्षा सहित आँधी रूपा। चूँकि देवी प्रकृतिस्वरूपा हैं अतः ऐसा अर्थ कर सकते हैं। झंझावात शब्द से सभी परिचित हैं जिसका अर्थ है वर्षा सहित आँधी। साधकों की साधना में विघ्न के रूप में उपस्थित कर्मसंस्कार एवं अन्य बाधाओं को आँधी की तरह समूल हटा देने वाली। कुण्डलिनी के रूप में सुषुम्नानाड़ी में ऊपर उठते हुए इस प्रकार का शब्द करने वाली। देवी के नामों में बहुत से नाम हैं जो किसी अव्यक्त ध्वनि को करने वाले शब्द होते हैं। उसका तात्पर्य कुण्डलिनी रूप में इस प्रकार के शब्द करना होता है। इस नाम का अर्थ अनाहतनाद या शब्द ब्रह्म से देवी की एकरूपता भी है। यह नाम उपासकों को नादानुसन्धान के लिए भी प्रेरित करता है अर्थात इस नाम का अर्थ हुआ उपासकों को नादानुसन्धान के लिए प्रेरित करने वाली या शब्दब्रह्म से एकरूपता करने के लिए प्रेरित करने वाली। शब्दब्रह्म या नादब्रह्म ब्रह्म का स्पन्दनात्मक रूप है।

153. **झमेता** – शिव की ओर गई हुई अर्थात शिव के साथ रहने वाली। एकाक्षरी कोष के अनुसार झ का अर्थ है शिव एवं मोनियर विलियम्स के शब्दकोष के अनुसार म का अर्थ है शिव, इस प्रकार झम का अर्थ हुआ शिव। एकाक्षरी कोष के अनुसार झ का अर्थ है मोक्षफलप्रद या कल्याणप्रद, इस प्रकार झम का अर्थ हुआ मोक्षफलप्रद या कल्याणप्रद शिव। झम् धातु का अर्थ भक्षण करना भी होता है। झमति इति झमः, जो भक्षण करता है अर्थात जो प्रलय के रूप में सारे संसार का भक्षण करता है वह हैं, झमः अर्थात शिव क्योंकि शिव ही सारे संसार का संहार करते हैं। भक्षण के लिए गई अर्थात भक्षण करने वाली। झमम् भक्षणम् इता इति झमेता। जगत में प्रतिपल भक्षण हो रहा है, हर पल किसी न किसी प्राणी या वस्तु का क्षय हो रहा है। स्पष्ट है कि कोई शक्ति होगी जो यह कर रही है। दुर्गासप्तशती में आया है कि रथ समेत देवी ने असुरों का भक्षण कर लिया। राक्षसों का भक्षण करने वाली यह झमेता शब्द का अर्थ हो सकता है। गीता में भगवान कृष्ण ने जब अपना विराट स्वरूप दिखाया तो उनके मुँह में प्राणी और वस्तु प्रतिपल समा रहे थे। भोजन तक पहुँचाने वाली अर्थात भोजन उपलब्ध कराने वाली। इण् गतौ से इता शब्द बना है। ग्रामम् गतः अर्थात गाँव तक गई या पहुँची। उसी प्रकार झमम् इता इति झमेता।

154. **झंकारी** – झम् शब्द करने वाली अर्थात वीणा या सितार बजाने वाली। वीणा/सितार बजाने से झंकार की ध्वनि होती है। झम् करोति इति झंकारी। धन, भोग, ऐश्वर्य की रचना करने वाली। एकाक्षरी कोष के अनुसार झं का अर्थ धन, भोग, ऐश्वर्य है।

155. **झणाकल्याणदायिनी** – शब्दायमान कल्याण को देने वाली। शब्दायमान का तात्पर्य है जो औरों को भी पता चले। झण एक ध्वनि है अर्थात झणा का अर्थ है शब्दायमान। जो सुनने और देखने में सुन्दर हो ऐसे कल्याण को देने वाली। दीप्तिमान शब्द जो श्रवण–सुखद हो वह झण कहलाता है। धातु (Metal) खण्ड से झण झण शब्द होता है जो झणत्कार है।

156. **ईमनामानसीचिन्त्या** – महामाया का ज्ञान/बोध जिन्हें है, उनके द्वारा मानसिक रूप से चिन्तन करने योग्य। ई का अर्थ है महामाया। जिनका मन लक्ष्मी के प्रति है अर्थात जो लक्ष्मी पाना चाहते हैं उनके द्वारा

मानसिक रूप से चिन्तनीय। मन ज्ञाने धातु से मन का अर्थ है ज्ञान। लक्ष्मी जी के मन्त्र और स्तुति के रूप में मानसिक रूप से चिन्तन करने योग्य। ई का अर्थ है लक्ष्मी, म का अर्थ है मन्त्र और ना का अर्थ है संस्तुति। लक्ष्मी माता के रूप में मानसिक रूप से चिन्तनीय। ईम् का अर्थ है लक्ष्मी जी, अना का अर्थ है माता। मन से चिन्तनीय लक्ष्मी स्तुति स्वरूपा या मन से चिन्तनीय स्तुतिरूपा लक्ष्मी। ना का अर्थ है स्तुति। सरस्वती के मन्त्र ज्ञान द्वारा मानसिक रूप से चिन्तनीय। ई का अर्थ है सरस्वती, म का अर्थ है मन्त्र या सिद्धिदा या शिव या भद्र या सुख लाने वाला। न का अर्थ है ज्ञान, ना का अर्थ है ज्ञान। जो संसार की सृष्टि के लिए काम भावना से युक्त होकर मानसिक चिन्तन से संयुक्त है। (ई का अर्थ है काम–भावना, मना का अर्थ है युक्त होकर)। (यदि ईमना, मानसी, चिन्त्या अलग अलग शब्द है तो अर्थ होगा माया का बोध है जिन्हें/लक्ष्मी जी की मन्त्र और स्तुति के रूप में है जो, मन से उत्पन्न, चिन्तन करने योग्य)

157. **ईमुनाशंकरप्रिया** – माया के बन्धन से रहित शंकर जी की प्रिया अर्थात ऐसे शंकर जी जिन्हें पसन्द करते हैं। एकाक्षरी कोष में ई का अर्थ है माया, मु का अर्थ है बन्धन और ना का अर्थ है प्रतिषेध। काम भावना से ओतप्रोत होकर जो भगवान शिव से संयुक्त होकर उनसे प्रेम को प्राप्त करे। उकार का अर्थ है उमेश या शिव।(यदि ईमुना अलग नाम है तो अर्थ होगा जो माया के बन्धन से रहित है, शंकरप्रिया का अर्थ है शंकर जी की प्रिया अर्थात शंकर जी जिन्हें पसन्द करते हैं)।

158. **टंकारी** – टंकार वाली अर्थात धनुष से टम् ध्वनि करने वाली। टंकारः अस्य अस्ति इति टंकारः, स्त्रीलिंग में टंकारी। कुण्डलिनी के रूप में सुषुम्नानाड़ी में ऊपर उठते हुए इस प्रकार का शब्द करने वाली। देवी के नामों में बहुत से नाम हैं जो किसी अव्यक्त ध्वनि को करने वाले शब्द होते हैं। उसका तात्पर्य कुण्डलिनी रूप में इस प्रकार के शब्द करना होता है। इस नाम का अर्थ अनाहतनाद या शब्द ब्रह्म से देवी की एकरूपता भी है। यह नाम उपासकों को नादानुसन्धान के लिए भी प्रेरित करता है अर्थात इस नाम का अर्थ हुआ उपासकों को नादानुसन्धान के लिए प्रेरित करने वाली या शब्दब्रह्म से एकरूपता करने के लिए प्रेरित करने वाली। शब्दब्रह्म या नादब्रह्म ब्रह्म का स्पन्दनात्मक रूप है।

159. **टिटिका** – टिटि यह अव्यक्त शब्द करने वाली। टिटि इति अव्यक्तशब्दम् कायति। कायति का अर्थ है बोलना या शब्द करना। देवी प्रकृति स्वरूप हैं प्रकृति में हो रही हर आवाज देवी की आवाज है। अत्यंत गतिशील, इतनी तेज गति कि हमें नजर नहीं आती। निरंतर गतिशील या विशेष गति वाली। टिकृ गतौ धातु होती है जिससे यङ् लुङ् प्रत्यय करने से टिटिका शब्द बनता है। यङ् लुङ् प्रत्यय से अतिशय या बारम्बार अर्थ निकलता है। देवी प्रतिक्षण स्पन्दन करती हैं। टिक् टिक् शब्द करने वाली।

160. **टीका** – ब्रह्म की व्याख्या स्वरूपा अर्थात विस्तार स्वरूपा अर्थात जगत स्वरूपा। व्याख्या का अर्थ होता है विस्तार या स्पष्टीकरण के लिए अधिक लिखना। आपने किताबों में टीका शब्द सुना होगा जिसमें वे किसी चौपाई या श्लोक की व्याख्या करते है। व्याख्या का अर्थ विस्तार हुआ। इस नाम का अर्थ हुआ जगत स्वरूपा, क्योंकि जगत ब्रह्म या देवी का विस्तार स्वरूपा है। जिस शक्ति के द्वारा गूढ़ रहस्यों को जाना जाता है, स्पष्ट किया जाता है। टीक्यते अनया इति टीका। सम्यक् आटीक्यते (ब्रह्मज्ञानम्) इति टीका। जो ब्रह्मज्ञान का सम्यक् रूप से निरूपण करती है। भौतिक प्रकृति रूपी विवरण वाली। टीका का एक अर्थ विवरण भी है। यह भौतिक प्रकृति अव्यक्त प्रकृति का विवरण है।

161. **टंकनी** – टंक नामक हथियार को ले जाने वाली अर्थात् धारण करने वाली। टंक कुल्हाड़ी की तरह का एक हथियार होता है। नी धातु का अर्थ ले जाना होता है, जिसको धारण करना भी कह सकते है। भेदोत्पादिका शक्ति। किसी चीज के विशेष लक्षण वाली। जब हम किसी चीज को उकेरते है तो उकेरने की यह क्रिया टंकना

करना कहलाती है। वैशेषिक दर्शन में विशेष नामक पदार्थ की संकल्पना की गई है जिसके कारण एक पदार्थ दूसरे पदार्थ से भिन्न होता है। जिस साधन के द्वारा विश्व को टंकित किया जाता है अर्थात उकेरा जाता है अर्थात निर्माण किया जाता है। टंक धातु में करण में ल्युट् प्रत्यय लगाने से टंकनम् शब्द बनता है। स्त्रीलिंग में टंकनी हो जायेगा देवी विश्व के निर्माण में स्वयं मे साधन भी है, उपादान भी है और कर्ता भी है। ल्युट् प्रत्यय करण में लगायेंगे तो अर्थ होगा जिस साधन से विश्व को उकेरा जाता है अर्थात बनाया जाता है अर्थात विश्वरूप दिया जाता है। यदि कर्म में ल्युट् प्रत्यय लगायें तो अर्थ होगा जिसको टंकित किया गया अर्थात उकेरा गया अर्थात बनाया गया, इस प्रकार टंकनी का अर्थ हुआ विश्वस्वरूपा। ल्युट् प्रत्यय का प्रयोग प्रायः कर्म, करण और अधिकरण में होता है पर कभी कभी कर्ता अर्थ में भी प्रयोग होता है। उस अवस्था में टंकनी का अर्थ विश्व का टंकन करने वाली अर्थात उकेरने वाली अर्थात निर्माण करने वाली होगा। टंक का अर्थ कोष या खजाना भी होता है। टंकम् नयति इति टंकनी, इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ कोष या खजाने को भक्तों तक ले जाने वाली अर्थात पहुँचाने वाली। विश्व की आकृति करने वाली अर्थात बनाने वाली। टंकित करने का अर्थ है मुद्रित करना या कही पर आकृति बनाना। टंक का अर्थ रक्षा भी होता है इस प्रकार टंकनी का अर्थ हुआ रक्षा को ले जाने वाली अर्थात पहुँचाने वाली अर्थात रक्षिका। सत् तत्व को उट्टंकित (प्रकाशित) करती है (यदि टंकिनी शब्द है तो अर्थ होगा कुठार या फरसा को लिये हुए, मद या गर्व को लिये हुए। टंकः का अर्थ है कुठार या फरसा, मद या गर्व।)। क्रोध को लाने वाली अर्थात् राक्षसों के वध के लिए अपने शरीर को क्रोधयुक्त बनाने वाली। अहंकार को लाने वाली अर्थात् राक्षसों या दुष्टों के वध के लिए अपने भीतर अहंकार लाने वाली। देवी अद्वैत भाव में रहती है। द्वैत भाव में आये बिना राक्षसों का वध नहीं हो सकता जिसके लिए अहंकार लाना अर्थात् दूसरों से अपने आपको अलग अनुभव करने का भाव लाना बेहद आवश्यक है। इसी कारण युद्ध के पूर्व देवी मधु का पान करती है। टंक का अर्थ है कुल्हाड़ी। कुल्हाड़ी को ले जाती है अर्थात् उस धारण करने वाली। नी नयति का अर्थ है ले जाना। पद्मचन्द्रकोष में टंक के कई अर्थ दिये गये हैं जैसे– कुल्हाड़ी, छेनी, तलवार, शोभा, क्रोध, चाँदी का सिक्का, टकसाल, टखना, पैर, उन्नत प्रदेश, पहाड़ी की ढाल, कैथ का पेड़।

162. **टवर्गगा** – ट वर्ग के अक्षरों में शक्ति रूप से गईं अर्थात विराजमान। ट वर्ग के अक्षरों से निरूपित होने वाली वस्तुओं में विराजमान। एकाक्षरीकोश में प्रत्येक अक्षर के अनेक अर्थ (वस्तु) दिये गये हैं जैसे ट अर्थात ध्वनि / भूमि, ठ अर्थात शिव / चन्द्रमण्डल, ड अर्थात डाकिनी, ढ अर्थात ध्वनि, ण अर्थात ज्ञान / मोक्ष। ट वर्ग की वस्तुओं के रूप में कही जाने वाली। गीयते से गा बन सकता है जिसका अर्थ है गाई जाती है अर्थात कही जाती है। ट वर्ग (ट,ठ,ड,ढ,ण) के रूप में स्थित है (तन्त्र विद्या के प्रसंग में)। वर्ग + गा, गा शब्दाक्षर गच्छति से बना है जिसका अर्थ है जाता है अर्थात विराजमान है। आगम में हर एक वर्ग की अधिष्ठात्री देवी हैं। अधिष्ठात्री देवी अर्थात उसमें रहते हुए उन वर्णों को शक्ति देने वाली, उनको कार्य करने लायक बनाने वाली अर्थात प्रवृत्ति या functional करने वाली। क वर्ग की ब्राह्मी, च वर्ग की माहेश्वरी, ट वर्ग की कौमारी, त वर्ग की वैष्णवी, प वर्ग की वाराही य वर्ग की ऐन्द्री। अतः इस नाम का अर्थ हुआ कौमारी देवी स्वरूपा या कौमारी देवी से अभेद है जिनका।

163. **टापा** – पृथ्वी की रक्षा करने वाली। टाम् पाति इति टापा। एकाक्षरी कोष में टा का अर्थ है पृथ्वी। उछल उछल के होने वाली गतिस्वरूपा। वह शक्ति जिसके होने पर इस प्रकार की गति होती है उस शक्ति के रूप में। घोड़ा या मेढक इस प्रकार की गति करता है। घोड़े की टाप सभी जानते हैं। स्थिर लक्ष्मी स्वरूपा। एकाक्षरी कोष के अनुसार टा का अर्थ है स्थिर और पा का अर्थ है लक्ष्मी। बड़े बड़े डग भरने वाली। कहते हैं टापा भरना अर्थात बड़े बड़े डग भरना।

164. **टोपा** – सारे ब्रह्माण्ड की बड़ी टोपी स्वरूपा अर्थात देवी ब्रह्माण्ड के ऊपर है। टोपा का अर्थ होता है बड़ी टोपी। टोपी सिर के ऊपर पहनी जाती है। अतः ब्रह्माण्ड के ऊपर, ऐसा अर्थ किया गया है जैसे शिरस्त्राण।

टोप+आ, आ का अर्थ है देना। राजमुकुट या सम्माननीय पद देने वाली। एकाक्षरी कोष में टो का अर्थ गुरु, शिष्य होता है। टोम् पाति इति टोपा। इस प्रकार टोपा का अर्थ हुआ गुरु की रक्षा करने वाली, शिष्य की रक्षा करने वाली। बड़ी टोपी वाली अर्थात जो राजमुकुट/ताज पहने हुए है। टोप + आ, आ अर्थात देना, भक्तों को राजमुकुट अर्थात सम्मानसूचक पद देने वाली।

165. **टटपति** – तट और टट दोनों एक ही शब्द है तट का अर्थ है शिव, अर्थात शिव है पति जिसके ऐसा अर्थ भी हो सकता है । तट का अर्थ खेत भी होता है। खेत की रक्षा करने वाली। विकलों की स्वामिनी अर्थात रक्षा करने वाली। टल् धातु में डटच् प्रत्यय लगाने पर टट शब्द बनता है। अभावग्रस्त व्यक्ति जैसे धन नहीं है, विद्या नहीं है, वाणी नहीं है, आँख देख नहीं सकती कान सुन नहीं सकती ये सब विकल व्यक्तियों के उदाहरण है स्वामिनी होने पर ही वह इन वस्तुओं को देकर कमी पूरी कर सकती है। पति शब्द स्त्रीलिंग भी है जैसे राष्ट्रपति। महिला राष्ट्रपति होने पर उसे उसे राष्ट्रपत्नी नहीं कहा जाता। पत्नी तभी लिखना चाहिए जब शादी शुदा महिला यज्ञ में भाग ले रही हो। टट = तट, तट का अर्थ है जमीन, खेत, भूमि। पति का अर्थ है रक्षा करने वाला। टटपति का अर्थ हुआ जमीन, खेत की रक्षा करने वाली।

166. **यमनीयमनप्रिया** – –ऐसी अनुशासिका जिसे अनुशासन अच्छा लगता है। अनुशासिका अर्थात नियन्त्रण करने वाली, अनुशासन अर्थात नियन्त्रण करना या नियन्त्रण में रहना। किसके नियन्त्रण में रहना? बनाये गये नियमों या जीवनमूल्यों के नियन्त्रण में रहना। यम दम्पत्ति जिसे पसन्द करते हैं। यमयति इति यमनः, जो नियन्त्रित करे वह यमन है। अच्छाई, बुराई का फल देकर यमराज नियन्त्रित करते हैं। यमराज की पत्नी और यमराज की प्रिया। जो स्वयं में संयम रखने वाली है तथा संयम में रहने वाले शिव की प्रियतमा है। यमनी का अर्थ है जो स्वयं को विश्व में सर्वाधिक संयम रखने वाली हैं। यमन का अर्थ जो अपने को संसार में/समाज में संयम से रखते हैं अर्थात शिव।

167. ठकारधारिणी – चन्द्रमण्डल को धारण करने वाली। शून्य या आकाश को धारण करने वाली। महामन्त्र को धारण करने वाली। शिवजी को पति के रूप में धारण करने वाली। ठकार अर्थात ठ अक्षर, एकाक्षरीकोष में ठ का अर्थ शिवजी, चन्द्रमण्डल, शून्य या आकाश, महामन्त्र, महाध्वनि बताया गया है।

168. **ठीका** – कुटुम्बिनी अर्थात कुटुम्ब वाली। सारा विश्व उनका परिवार है, शिव पति है, गणेश और कार्तिकेय उनकी सन्तान है इस प्रकार वे परिवार वाली है। एकाक्षरी कोष के अनुसार ठी का अर्थ है कुटुम्बनी, ठी में स्वार्थ में कन् प्रत्यय लगाने से ठीक शब्द बनता है, ठीक शब्द स्त्रीलिंग में ठीका बन जाता है। हिन्दी मानक कोष प्रयाग में ठीका का अर्थ उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी दिया गया है। यदि यह शब्द तत्सम शब्द हो तो अर्थ होगा जिसने भक्तों का उत्तरदायित्व ले रखा है, जिसने भक्तों के योगक्षेम की जिम्मेदारी ले रखी है। यह शब्द संस्कृत के शब्दकोषों में नहीं मिलता है। हिन्दी के शब्दकोष में इसका अर्थ Contract लिखा है। पैसा लेकर काम पूरा करने की जिम्मेदारी लेना ठीका है जिसे ठेका कहते हैं।

169. **ठकारी** – 1. ठ वर्ण स्वरूपा 2. चन्द्रमण्डल/चन्द्रनाड़ी स्वरूपा (एकाक्षरी कोष के अनुसार)। ठ अर्थात ठकार। एकाक्षरी कोष में ठ का अर्थ कुण्डलिनी, शिव दिया गया है। इस प्रकार ठकारी का अर्थ हुआ शिव स्वरूपा, कुण्डलिनी शक्ति स्वरूपा, शिव की शक्ति स्वरूपा, कुण्डलिनी में विद्यमान शक्ति स्वरूपा। (यदि ठंकरी शब्द है तो अर्थ होगा ठम् इस अव्यक्त शब्द को करने वाली। यदि ठकरी शब्द है तो अर्थ होगा शंख ध्वनि करने वाली या मधुर ध्वनि करने वाली या बृहद् ध्वनि करने वाली। एकाक्षरी कोष के अनुसार ठकार का अर्थ बृहद ध्वनि, अच्छी ध्वनि, शंख ध्वनि है। चन्द्रमण्डल का निर्माण करने वाली यह अर्थ भी हो सकता है क्योंकि ठ का एक अर्थ चन्द्रमण्डल है। साधकों को शून्यता की स्थिति में ले जाने वाली यह अर्थ भी हो सकता है ठकार का एक अर्थ शून्य है।) 3. हास्य स्वरूपा (एकाक्षरी कोष के अनुसार)।

170. **ठक्करप्रिया** – शिवजी की प्रिया अर्थात शिवजी जिनसे प्रेम करते है। ठ करोति इति ठक, क का आगम हुआ। (ठ= राजा, एकाक्षरी कोष के अनुसार) ठक्कर= राजा को बनाने वाली। पिछला राजा ही अगले राजा को बनाता है, शुरू में युवराज बनाकर। भगवान शिव सबसे पहले राजा है जो बाकी राजाओं को राजा बनाते है। ठाकुर शब्द इसी ठक्कर से बना है। (यदि ठिकरप्रिया शब्द है तो भी अर्थ होगा शिवजी की प्रिया। एकाक्षरी कोष के अनुसार ठि का अर्थ है कुमार अर्थात कार्तिकेय जी। कर का अर्थ है रचना करना अर्थात उत्पन्न करना। कार्तिकेय जी को उत्पन्न करने वाला अर्थात शिवजी।)

171. **ठेकठासा** – 1. शिव रूपी मंगलमय आसन पर विराजमान। चित्रों में पार्वती जी को शिव जी की बायी गोद में बैठा देखा होगा। शब्दकल्पद्रुम में ठः का अर्थ ठे दिया है अर्थात ठे का वही अर्थ है जो ठ का। ठ का एक अर्थ शिव या मंगल होता है। ठे अर्थात ठेक, इस प्रकार ठेक का अर्थ हुआ शिव। दूसरे ठ का अर्थ शिव अर्थात मंगल ले सकते हैं। आस का अर्थ आसन अर्थात बैठने का स्थान।

2. पिण्डीभूत चैतन्य वही है परममंगल, उस परम मंगल के आसन पर विराजमान। एकाक्षरी कोष के अनुसार ठे का अर्थ है समास (इकट्ठा, पिण्डीभूत), क का अर्थ है आत्मा/चैतन्य/ब्रह्म, ठ का अर्थ है शिव अर्थात मंगल, आस का अर्थ है आसन अर्थात जिस पर बैठता है।

3. समासरूपी दुर्गम पथ की शक्ति। बाणभट्ट इसी शक्ति के कारण दुरूह समास की रचना कर पाते थे। एकाक्षरीकोश के अनुसार ठे का अर्थ है समास, ठा का अर्थ है दुर्गमपथ और सा का अर्थ है शक्ति। ठेक अर्थात ठे अर्थात समास।

4. दूसरी भाषा का सहारा लिया जाए तो ठेकठासा का अर्थ है आश्रय का उपकरण है जो, सहारा देने वाला औजार है। ठासा अर्थात उपकरण या औजार। ठेक = टेक होता है, टेक = आश्रय या सहारा, घड़े के नीचे पत्थर आदि लगाकर जो सहारा दिया जाता है जिससे घड़ा लुढ़कने न पाए, वह टेक है। ठासा अर्थात आश्रय का काम करने वाला अर्थात आश्रय देने वाला। लोहार के यहाँ एक औजार होता है जो धातुओ के किनारे को मोड़ता है जिसे ठासा कहते हैं। ठासा संस्कृत भाषा का शब्द नहीं है पर कहते हैं दूसरी भाषा में शब्द संस्कृत भाषा से ही आये हैं। उपकरण से कई काम लिये जाते है।

172. **ठकरति** – शिव के प्रति प्रेम है जिनका। ठ अर्थात शिव। संस्कृत के नियम के अनुसार ठक का वही अर्थ होता है जो ठ का। शिव का भक्ति स्थान या प्रीति स्थान अर्थात शिव जिनकी भक्ति करते हैं। शिव ताण्डव स्तोत्र में रति का अर्थ भक्ति या प्रेम बताया गया है। शिव की लीला/क्रीड़ा स्वरूपा। एकाक्षरी कोष के अनुसार ठक् =ठ= महेश, स्वार्थ में अर्थात अर्थ को बदले बिना कन् प्रत्यय लगाया जाता है जिससे ठक शब्द बना ᑊ त्रिदेवों का भक्ति स्थान या प्रीति स्थान। ठ का अर्थ शिव है, क का अर्थ ब्रह्मा, विष्णु है। इस प्रकार ठक में ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों देवता आ गये। (यदि ठकरती शब्द हो तो अर्थ होगा शिव में लगी हुई अर्थात शिव में तल्लीन। शिव के प्यार में डूबी हुई। रत का अर्थ है लगा हुआ और रत से रती बनेगा। रती का अर्थ काम की समुद्र या नदी भी है (एकाक्षरी कोष के अनुसार)। शिव से प्रसन्न। रत आ अर्थ है प्रसन्न, स्त्रीलिंग में रती हुआ।)

173. **ठामिनी** – 1. शिव के अनुचरों से युक्त। ठ अर्थात शिव। अम अर्थात अनुचर। ठाम अर्थात शिव की सेवा करने वाला। ठाम अस्य अस्ति इति ठामिन्। शिव के अनुचरों से युक्त। शिव की सेवा करने वाली या शिव जिसकी सेवा करते हैं। सेवा का अर्थ है ध्यान, उपासना या पूजा, मिले हुए आदेश का तुरन्त पालन करना।

2. एकाक्षरी कोष के अनुसार ठा का अर्थ है डाकिनी, दुर्गपथ, म का अर्थ मन्त्र है। मोनियर विलियम्स के शब्दकोष के अनुसार म का एक अर्थ प्रकाश या ज्ञान होता है। इस प्रकार ठाम का अर्थ हुआ डाकिनी का मन्त्र, दुर्ग पथ का ज्ञान अर्थात ब्रह्मज्ञान या आत्म ज्ञान। ठामिनी को ठाम+इनि प्रत्यय से बनायेंगे तो ठामिनी का अर्थ

होगा डाकिनी के मन्त्र से युक्त या दुर्गम पथ के ज्ञान से युक्त अर्थात ब्रह्मज्ञान या आत्म ज्ञान से युक्त। दुर्ग पथ वाली अर्थात उन तक हर कोई नहीं पहुँच सकता उनकी कृपा जिन पर होती है वे ही उनको सम्पूर्ण रूप से जान सकते है, आप कितनी भी मेहनत करे अपने प्रयास से उन तक नहीं पहुँच सकते। ठा अर्थात लज्जा, म अर्थात ज्ञान, ठाम अर्थात लज्जा का ज्ञान। ठाम में इनि प्रत्यय लगाने से ठामिनी बनेगा जिसका अर्थ होगा लज्जा के ज्ञान से युक्त अर्थात लज्जा का ज्ञान रखने वाली। ठामिनी का अर्थ लज्जाशील भी कर सकते हैं (एकाक्षरी कोष के अनुसार)। (यदि ठामनी शब्द है तो व्युत्पत्ति होगी ठामम् नीयते अर्थात डाकिनी के मन्त्र को पहुँचाने वाली अर्थात अपने उपासकों को डाकिनी का मन्त्र देने वाली। अपने उपासकों तक ब्रह्मज्ञान या आत्म ज्ञान पहुँचाने वाली। ठामम् नयति इति ठामनी – लज्जा का ज्ञान ले जाने वाली अर्थात लज्जा का ज्ञान उपासकों तक पहुँचान वाली।

174. **ठमनप्रिया/ठमनप्रीति** – जिसे शिव को जानने वाले पसन्द हैं। मन्यते इति मनः, अतः मन का अर्थ है जानने वाला। मन् ज्ञाने धातु में अच् प्रत्यय लगाने से मन बनेगा जिसका अर्थ है जानने वाला। शिव को जानना जिसे प्रिय है। ठ अर्थात शिव, एकाक्षरी कोष में न का अर्थ ज्ञान दिया है एवं मोनियर विलियम्स के शब्दकोष में म का अर्थ प्रकाश या ज्ञान दिया गया है, इस प्रकार मन का अर्थ हुआ ज्ञान। शिव का ज्ञान प्रिय है जिन्हें। शिव को जानना जिन्हें प्रिय है। शिव में मन है जिसका अर्थात ठमन अर्थात शिवभक्त। शिवभक्त हैं प्रिय जिन्हें। ठ अर्थात चन्द्रमा/शिव, म अर्थात सूर्य/शिव, न अर्थात हेरम्ब (गणेश) या बुद्ध। इस प्रकार ठमनप्रिया का अर्थ हुआ सूर्य, चन्द्र और गणेश में प्रीति है जिनकी। ठमन अर्थात शिव को देखकर जो प्रसन्न होती है, प्रीति करती है। ठ = महेश। ठम् आत्मानम् मन्यते/मनुते + अच् = ठमन जो स्वंय को ईश्वर/महेश मानता है। (यदि टमनप्रिया है तब भी वही अर्थ रहेगा। ठ का अर्थ शिव है और ट का अर्थ भी शिव है।) ठं अर्थात चन्द्रमण्डल, अनन अर्थात प्राणित करना। चन्द्रमण्डल को जिसे प्राणित करना जिसे प्रिय है। प्राणित करना अर्थात प्राणयुक्त करना, activate करना। चन्द्रमा प्रदीप्त रहे, चन्द्रिका बनी रहे ऐसा करना। सोम डालकर चन्द्रमा को प्रदीप्त किया जाता है। ठमन = थमन (स्तम्भन अर्थात धीरज या सब्र)। ठमनप्रिया का अर्थ हुआ जिसे धैर्य प्रिय है, पसन्द है।

175. **डारहा** – पृथ्वी पर शत्रुओं का अर्थात दुष्टों का नाश करने वाली। पृथ्वी के शत्रुओं का नाश करने वाली। एकाक्षरीकोष के अनुसार डा का अर्थ है पृथ्वी, र का अर्थ अरि अर्थात शत्रु। हन्ति से हा बना। डर में स्वार्थ में (बिना अर्थ बदले) अण् प्रत्यय लगाने से आदिस्वर की वृद्धि होकर डार बनता है। डार का अर्थ भी डर है। इस प्रकार डारहा का अर्थ हुआ भय या डर को दूर करने वाली, नष्ट करने वाली। ओहाक् त्यागे धातु से हा शब्दाक्षर बनने पर अर्थ होता है दूर करने वाली और हन् धातु से हा शब्दाक्षर बनने पर अर्थ होता है नष्ट करने वाली। हन् में ड प्रत्यय लगाने से ह शब्द बनेगा जिसका अर्थ है नष्ट करने वाला। संसार को, सृष्टि को अपने में समेटने वाली, बटोरने वाली अर्थात संहार करने वाली। डार = संसार। फेकने वाली भी डार, जिसे फेका गया अर्थात संसार वह भी डार। डप् धातु से डारच् प्रत्यय लगाने से डार शब्द बनता जिसका अर्थ होता है इक्कठा करने वाली, बटोरने वाली, संहार करने वाली। डारम् हन्ति इति डारहा। संसार का नाश करने वाली।

176. **डाकिनी** – जो भय देने के लिए गति करती है या चेष्टा करती है अर्थात अपने भक्तों के शत्रुओं, दैत्यों, राक्षसों को भय देने के लिए विचरण करती है। अकति का अर्थ है कुटिल गति करना। डाय अकति इति डाकिनी। ड अर्थात भय, डाय अर्थात भय के लिए, अकति का अर्थ है गति करना या चेष्टा करना। दुष्टों को राक्षसों को भय देने के लिए जो विचरण करती हैं। भय देने के लिए चेष्टा करने वाली। साधना के दौरान भक्तों को भय देने वाली जिससे वे भय से पार हो सकें। अपने उपासकों की साधना के दौरना आने वाली बाधाओं को भयभीत करने के लिए चेष्टा करने वाली। आकाश में गति करने वालों की तरह गति करने वाली अर्थात् आकाश में विचरण करने वाली। डीङ् विहायसौ गतौ से डी धातु का अर्थ आकाश गमन करना होता है। डी धातु में ड प्रत्यय लगाने

से ड शब्द बनेगा, जिसका अर्थ होगा आकाश में गमन करने वाला। अक् धातु का अर्थ होता है कुटिल या तिरछी गति करना। अकति इति अकः अर्थात् गति करने वाला गुण या शक्ति। आकाश में गति करने वालों की तरह तिरछी या कुटिल गति करने वाली शक्ति से युक्त। कुटिल गति का अर्थ दुष्टों के लिए कुटिल आचरण करने वाली भी कर सकते है अर्थात् शठे शाठ्यम् समाचरेत् जैसा आचरण करने वाली। डाक का अर्थ काली जी की सेविका भी है। काली की सेविकाओं से युक्त अर्थात् उन जैसी सेविकाओं से युक्त, यह डाकिनी का अर्थ हुआ।

177. **डारा** – पृथ्वी को देने वाली अर्थात स्थान देने वाली।राज्य, जमीन जायदाद, मकान के लिए स्थान देने वाली। एकाक्षरी कोष के अनुसार डा का अर्थ है पृथ्वी। डाम् राति (ददाति) इति डारा। डार का अर्थ डर भी है जो ऊपर स्पष्ट किया जा चुका है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ जो दुष्टों के लिये भयस्वरूपा हैं। डार+आ, आ का अर्थ है देना इस प्रकार डारा का अर्थ हुआ दुष्टों को भय देने वाली। डारा का अर्थ भय या डर स्वरूपा भी है। संसार को फेकने वाली अर्थात पैदा करने वाली, जन्म देने वाली। जन्म देकर प्राणियों को फेकती है। डिप् धातु का अर्थ फेकना, डाल देना, डप् (फेकना) + डारच् = डार, डार + टाप् इति डारा। डार के दो अर्थ है 1. फेंकने वाली 2. जिसे फेंका गया अर्थात इस प्रकरण में संसार। यदि कर्ता अर्थ में प्रत्यय लगाएंगे तो अर्थ होगा फेंकने वाला किन्तु कर्म अर्थ में प्रत्यय लगाएंगे तो अर्थ होगा जिसे फेंका गया अर्थात संसार। व्यावहारिक जीवन में हम डाल शब्द सुनते हैं जो सम्भवतः डार शब्द से बना है। कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र से कर्ता में डारच् लगाने से अर्थ होगा फेंकने वाली, कर्म में डारच् लगाने से अर्थ हुआ जिसे फेंका गया। डार = डाल (सहारा या आश्रय, कपड़े आदि डाल में सुखाने के लिए डाल दिए जाते हैं अतः डाल आश्रय हुआ)। किसी के डारे चलना अर्थात किसी के सहारे चलना। डारा अर्थात डार + आ, आ का अर्थ है देना। इस प्रकार डारा का अर्थ हुआ आश्रय या सहारा देने वाली।

178. **डामरा** – 1. भय देकर शत्रु भगाने वाली अर्थात खुद से शत्रु को डरा कर भगाने वाली/मारने वाली, ड = भय, मृ+अच् = मरः = पलायन करना, मारना। आचार्या एवं आचार्याणी दोनों में अन्तर है। आचार्या का अर्थ होता है जो स्वयं में पढ़ाती हो। आचार्याणी का अर्थ होता है पढ़ाने वाले आचार्य की पत्नी अर्थात वह स्वयं पढ़ाती हो यह आवश्यक नहीं। डामरा कहने का तात्पर्य है कि भय देने का कार्य देवी स्वयं कर रही है। (यदि डामरी शब्द है तो अर्थ है – दैत्यों को भयभीत करने वाले रूद्र की पत्नी। यहाँ डामर का अर्थ है भय देकर भगाने या मारने वाला अर्थात शिव। ऐसे शिव की पत्नी डामरी। यहाँ पर भय देने का काम शिव कर रहे हैं, देवी नहीं। जबकि डामरा में भय देने का काम देवी स्वयं कर रही हैं।)

2. डेन अर्थात शिवेन, शिव द्वारा, मृश् + डरच् अर्थात मरः अर्थात विचार किया गया, डः अर्थात शिवः तेन मृष्टम् विचार किया गया अर्थात शिव के द्वारा जिसका विचार किया गया वह है डामर, इसी से डामर तन्त्र बना। डामर का अर्थ है शिव तो डामरी का अर्थ हुआ शिव की अर्धांगिनी। शिव की अर्धांगिनी होकर जो दुष्टों को डराकर भगा दे वह है डामरी। डामर तन्त्र की अधीश्वरी अर्थात संचालिका। यहाँ अधीश्वरी का तात्पर्य होगा डामर तन्त्र के उपासको को साधना में सिद्धि देने वाली। ड अर्थात शिव, शिव के द्वारा मृष्ट (स्पर्शित) अर्थात लाया गया तन्त्र अर्थात डामर तन्त्र। शिव के द्वारा विचारा गया तन्त्र डामर तन्त्र है। भूतडामरतन्त्र में डामर शब्द का अर्थ भयदायक बताया गया है। इसमें उपस्थित साधनाओं को करने से शत्रुओं को भय पैदा होता होगा।)

179. **डमरूप्रिया** – डमरू वाद्य धारण करना जिसे प्रिय है। शिव की प्रिया। डमरू वाद्य यन्त्र है। लक्षणा शक्ति के द्वारा वाद्य और वाद्य को धारण करने वाला एक हो जाता है। डमरू वाद्यम् यः धारयति सः अपि डमरू। (यदि डमरप्रिया शब्द है तो अर्थ होगा राक्षसों का, शत्रुओं का डर से भागना जिसे प्रिय है अर्थात अच्छा लगता है। ड का अर्थ है भय और मर का अर्थ है पलायन। वामन आप्टे शब्दकोश देखा जा सकता है।) अनाहतनाद है प्रिय जिन्हें। देवी के नाम में आने वाले वाद्य अनाहतशब्द या शब्द ब्रह्म या नादब्रह्म के प्रतीक हैं।

180. **डाकिनी** – शिव की ओर जाने वाली अर्थात शिव के साथ रहने वाली। डम् (शिवम्) प्रति अकति (गच्छति)। काली देवी की अनुचरी। एक पिशाची या देवी जो काली देवी की अनुचर है डाकिनी कही जाती है। डी धातु का अर्थ आकाश में उड़ना है। इस धातु से डाकिनी शब्द बनाने पर अर्थ होगा आकाश में उड़ने की गति करने वाली। डी धातु में ड प्रत्यय लगाने से ड शब्द बना जिसका अर्थ है आकाश। डे अकति अर्था आकाश में गति करने वाली, यह डाकिनी का अर्थ हुआ। ब्रह्मबैवर्त पुराण के अनुसार भगवान श्री कृष्ण की नासिका के छिद्र से उत्पन्न शक्ति डाकिनी है। ड का अर्थ है भय, ड+आ का अर्थ है भय देने वाली या भय नाश करने वाली क्योंकि आ का अर्थ देना भी होता है और नाश करना भी होता है। बिना अर्थ अदले कन् प्रत्यय लगाने से डाक बनता है जिसका वही अर्थ होगा जो डा का। डा का अर्थ है भय नाश करने वाली। डाक में इनि प्रत्यय लगाने से डाकिनी शब्द बनेगा जिसका अर्थ है भय नाश करने वाली शक्ति से युक्त। तात्पर्य हुआ कि जो अभय देकर साधकों को आगे बढ़ाती है। साधकों को भय का अनुभव कराने वाली। डाय अकति अर्थात भय के लिए चेष्टा करती है अर्थात भय का अनुभव कराती हैं। भय का अनुभव कराकर ही भय से पार ले जाया जाता है। साधना की प्रारम्भिक अवस्था में जब साधक मूलाधार चक्र पर ध्यान करता है तो उसे भय का अनुभव होता है। साधक को (परीक्षा लेने के लिए) भय देती है, डराती है। यह देवी मूलाधार चक्र में होती हैं तथा जब व्यक्ति मूलाधार चक्र का ध्यान करता है तो साधक को डराती है एवं सेक्स करने का प्रलोभन भी देती है। यदि इन दोनों चीजों से व्यक्ति पार कर जाता है अर्थात न डरता है न सेक्स के प्रभाव में आता है तो यह देवी व्यक्ति को ऊँचाई तक ले जाती है। दाक अर्थात डाक, डाकम् नीयते अनया इति डाकिनी। जो अभय देकर साधकों को आगे ले जाती है अर्थात आगे बढ़ाती है वह डाकिनी है। डाकिनी (भयंकर) रूप धारण करने वाली। असुरों को नष्ट करने के लिए जो स्वयं डाकिनी बन जाती है। जैसे देवो भूत्वा देवम् यजेत, देव होकर देव की पूजा करो। वैसे ही असुरों को नष्ट करने के लिए वैसा ही रूप धारण करती हैं। असुरान् पराभावयितुम या डाकिनी रूप धारयति स डाकिनी। (यदि डखिनी शब्द है तो अर्थ होगा कि शिव के प्रति काम की नदी। काम का अर्थ है प्रेम या इच्छा। ड का अर्थ है शिव, विजय, चन्द्रमण्डल। एकाक्षरी कोष के अनुसार खि का अर्थ है काम अर्थात इच्छा या प्रेम, नि का अर्थ है नदी। नदी कहने से तात्पर्य है जो हमेशा बहती रहती है या अपार भण्डार वाली हैं)

181. **डण्डयुक्ता** – दमन करने वाली शक्ति से युक्त/धारण करने वाली। डंड का शाब्दिक अर्थ डंडा है पर यहाँ डंडा सम्पूर्ण दमन करने वाली शक्ति का उपलक्षक है क्योंकि केवल डंडे से तो राक्षसों का नाश होगा नहीं (यदि डडयुक्ता शब्द है तो अर्थ होगा निरन्तर जाप में युक्त अर्थात शिव शिव का जप निरन्तर करने वाली। एकाक्षरी कोष के अनुसार ड का एक अर्थ जप है अतः डड का अर्थ अतिशय जप या निरन्तर जप हुआ।))।

182. **डमरूकरवल्लभा** – डमरू है हाथ में जिनके उस शिव की प्रियतमा। वल्लभ का अर्थ है अतिशय प्रिय।

183. **ढक्का** – ढक्का नामक वाद्य यन्त्र के रूप में, ढक्का एक वाद्य है (नगाडों जैसा), जो युद्ध के होने पर बजाया जाता है। जो स्वयं उस ढक्का के रूप को धारण कर लेती हैं। ढक्का का रूप धारण कर उनके रूप से ही भयंकर विनाशकारी ध्वनि उत्पन्न होने लगती है। प्रत्येक चीज ऊर्जा की बनी होती है अर्थात ढक्का वाद्य यंत्र ऊर्जा से बना है। ऊर्जा ही शक्ति है या देवी है। इसी कारण ढक्का वाद्य यंत्र को भी देवी का रूप कहा जाता है। ढक्का की तरह अर्थात ढक्का की तरह युद्ध में गर्जना करने वाली। अनाहतनाद है प्रिय जिन्हें। देवी के नाम में आने वाले वाद्य अनाहतशब्द या शब्द ब्रह्म या नादब्रह्म के प्रतीक हैं। इस प्रकार की ध्वनि करने वाली, तभी साधक लोग समाधि की अवस्था में या गहरे ध्यान में सुन पाते हैं। ध्वनि को करने वाला कोई तो है।

184. **ढक्की** – डमरू लिये हुए शिव की पत्नी। ढक्का अस्य अस्ति इति ढक्कः, (डमरू वाला जो डमरू लिये हुए है अर्थात शिव।))। संस्कृत में स्त्रीलिंग प्रकरण में ङीप् प्रत्यय लगाने पर पुरुष से सम्बन्ध अर्थात पत्नी, बहन, कन्या आदि अर्थ आते हैं। यह भी नियम है कि यदि कोई गुण या विशेषता बतानी हो तो पुरुष से सम्बन्ध बताने

की जरूरत नहीं है। अतः इस नाम का अर्थ जो डमरू लिये हुए हैं, यह भी कर सकते हैं। ढक् शब्द ढोल का शब्द है। एकाक्षरीकोश में की का एक अर्थ रमा दिया गया है और रमा का एक अर्थ प्रसन्न होने वाली होता है। अतः ढक्की का अर्थ हुआ ढोल का ढक् शब्द सुनना जिन्हें अच्छा लगता है या इस शब्द से प्रसन्न होने वाली। रमते इति रमा से रमा का अर्थ प्रसन्न होने वाली, रमयति इति रमा से रमा का अर्थ प्रसन्न करने वाली होगा। ढक्कान् धारयति इति ढक्की। जो ढक्का को धारण करती है शत्रुओं को अभिभूत करने के लिए। जैसे केशी शब्द वैसा ही ढक्की शब्द बनता है। प्रशस्ता केशः यस्य सः इति केशवः। जिसके सुन्दर घुघंराले बाल हो। ढक्का धारण करने वाली शिव की पत्नी। ढक्का अस्य अस्ति इति ढक्कः। यदि किसी गुण विशेष या लक्षण के कारण ईकारान्त स्त्रीलिंग हो तो उसका अर्थ करने के लिए पति का सहारा लेने की जरूरत नहीं है। इस नाम के अर्थ ढक्का धारण करने वाली या ढक्का धारण करने वाले शिव की पत्नी, दोनों सही हैं।

185. **ढक्कनादा** – ढक्का के नाद या ध्वनि से संयुक्त। देखने पर शरीर से ढक्का जैसी ध्वनि प्रादूर्भूत हो जाती है। जाग्रत कुण्डलिनी स्वरूपा। मूलाधार से ऊपर जाते हुए ढक्कनाद अर्थात अनाहतनाद करने वाली। ढक्कनाद+आ, आ का अर्थ है देना। ढक्कनाद देना अर्थात ढक्कनाद करना।

186. **ढोलशब्दप्रबोधिनी** – ढोल शब्द के द्वारा शत्रुओं को जगा देने वाली। ढोल वह भयंकर ध्वनि है जिसके द्वारा राक्षस जाग जाते हैं। आध्यात्मिक रूप में इसका अर्थ हुआ सात्विक ढोल के द्वारा सन्तो, महात्माओं, भक्तों को अज्ञान की नींद से जगाने वाली। ढोल शब्द के साथ अर्थात अव्यक्त नाद के साथ अच्छी प्रकार से जागने वाली अर्थात जाग्रत होने वाली अर्थात जाग्रत कुण्डलिनी शक्ति स्वरूपा। कुण्डलिनीशक्ति जब मूलाधारचक्र से ऊपर उठती है तो अनेक प्रकार के शब्द सुनाई पड़ते हैं। प्रत्येक साधक के अपने अपने अनुभव हैं।

187. **ढामिनी** – निर्गुण ब्रह्म को सक्रिय करने वाली। एकाक्षरी कोष में ढा का अर्थ निर्गुण ब्रह्म है। अम् गतौ धातु से अच् प्रत्यय लगाने से स्त्रीलिंग में आमी बनेगा जिसका अर्थ होगा गति करने वाला अर्थात चेष्टावान या सक्रिय करने वाला। ढा+आमिनी इति ढामिनी। मोनियर विलियम्स के शब्दकोष के अनुसार म का अर्थ प्रकाश या ज्ञान है, इस प्रकार ढाम का अर्थ निर्गुण ब्रह्म का ज्ञान या लास्य नृत्य का सम्पूर्ण ज्ञान हुआ। ढाम में इनि प्रत्यय लगाने से ढामिनी बनेगा जिसका अर्थ होगा निर्गुण ब्रह्म के ज्ञान से युक्त या लास्य नृत्य के सम्पूर्ण ज्ञान से युक्त। (यदि ढामनी शब्द है तो ढामम् नीयते इस व्युत्पत्ति के अनुसार अर्थ होगा निर्गुण ब्रह्म के ज्ञान को ले जाने वाली अर्थात अपने उपासकों तक पहुँचाने वाली। लास्य नृत्य के सम्पूर्ण ज्ञान को अपने उपासकों तक पहुँचाने वाली। निर्गुण ब्रह्म को जानने वाली, उस पर विचार करने वाली या उसका आदर सम्मान करने वाली। ढाम् मनुते/मन्यते अर्थात निर्गुण को जानने वाला। लास्य नृत्य को सम्पूर्ण रूप से जानने वाली यह अर्थ भी हो सकता है। ढ का अर्थ है लास्य नृत्य, आ का अर्थ है सम्पूर्ण रूप से। ढाम् मन्यते इति ढामनः, स्त्रीलिंग में ढामनी बनेगा, मनुते मन्यते इति मनः अर्थात जो जानता हो वह मनः है, इस प्रकार ढामनी का अर्थ हुआ निर्गुण ब्रह्म को जानने वाली या लास्य नृत्य को सम्पूर्ण रूप से जानने वाली। ढ (लास्य नृत्य) + आ (सम्पूर्ण) + मनः)। ढा = ढ + आ (भाव, एकाक्षरी कोष में आ का अर्थ भाव दिया गया है)। भाव का अर्थ है सत्ता, पदार्थ। प्रत्येक चीज सत्ता या पदार्थ है। अतः आ का अलग से अर्थ देने की जरूरत नहीं है क्योंकि लास्य नामक भाव/पदार्थ अर्थात लास्य। आ समन्तात् से आ का अर्थ पूर्ण रूप से अर्थात सम्पूर्ण आता है तब ढा का अर्थ लास्य नृत्य की सम्पूर्णता होगी। म का एक अर्थ सममान भी होता है। ढामनी का अर्थ लास्य नृत्य रूपी भाव में अर्थात लास्य नृत्य में सम्मान लाने वाली अर्थात सम्मान रखने वाली। नी शब्दाक्षर नयति (ले जाना) से आया। ढा अर्थात लास्य नृत्य रूपी पदार्थ अर्थात लास्य नृत्य।)

188. **ढामनप्रीता** – निर्गुण ब्रह्म के जानने वालों से प्रसन्न रहने वाली। मन्यते इति मनः, मन् ज्ञाने धातु में अच् प्रत्यय लगाने से मन का अर्थ जानने वाला होता है। मोनियर विलियम्स के शब्दकोष के अनुसार म का एक अर्थ

प्रकाश या ज्ञान है, एकाक्षरी कोष के अनुसार न का अर्थ ज्ञान है, इस प्रकार मन का अर्थ ज्ञान है। ढामनप्रीता का अर्थ होगा निर्गुण ब्रह्म के ज्ञान से या लास्य नृत्य के सम्पूर्ण ज्ञान से प्रसन्न रहने वाली। ढ (लास्य) + आ (सम्पूर्ण), मन = ज्ञान। जो नृत्य के ज्ञान में प्रीति रखने वाली है। एकाक्षरी कोष में आ का अर्थ भाव (सत्ता, पदार्थ) है अतः कभी कभी आ का सम्पूर्ण अर्थ देने की जरूरत नहीं क्योंकि प्रत्येक चीज भाव है। लास्य नृत्य के ज्ञान में प्रीति रखने वाली या लास्य नृत्य के सम्पूर्ण ज्ञान में प्रीति रखने वाली, दोनो अर्थ सही हैं। आ समन्तात् से आ का अर्थ सम्पूर्ण, चारों ओर से होता है। ढ का अर्थ है गरबा आदि नृत्य और मन का अर्थ है ज्ञान। मन बोधे धातु होती है। ढोल की ध्वनि ढम ढम होती है। स्वार्थ में अण् प्रत्यय लगाने से ढम ढाम हो गया। एकाक्षरी कोष में न का अर्थ नाद, शब्द, ज्ञान, स्तुति दिया गया है। ढोल नगाड़े के शब्दों की ध्वनि जिसे प्रिय है, यह ढामनप्रीता शब्द का अर्थ कर सकते हैं। ढोल नगाड़े के शब्दों सहित की जाने वाली स्तुति जिसे प्रिय है।

189. **ढगतन्त्रप्रकाशिनी** – पैशाचिक विद्या के ज्ञान के तन्त्र को प्रकाशित या प्रकट करने वाली। एकाक्षरी कोष के अनुसार ढ = पैशाचिक, ग = ज्ञान। पैशाचिक या आसुरी तन्त्र को प्रकट करने वाली। यदि ढौकते धातु से यदि यह शब्द बनाया जाए तो गति अर्थ देगा, संभवतः नाद तन्त्र यह अर्थ हो सकता है। आसुरी तान्त्रिक क्रियायें जिनके द्वारा मारण –मोहन, वशीकरण, उच्चाटन, विद्वेषण होता है वह है ढगतन्त्र। इस प्रकार की तान्त्रिक क्रियाओं को साधुओं के हृदय में प्रकाशित करने वाली। ढौकते से ढक बना। ढौकते से डगच् प्रत्यय लगाया जिसका केवल अग् शेष रहता है। ढौकते का केवल ढ रहता है। ढ+अग्+ड प्रत्यय तो ढग बना। ढग का अर्थ हुआ गतिशील, निरन्तर गति वाली। सभी गत्यर्थक धातु ज्ञानार्थक भी होती हैं। ऐसी विद्या जिसमें गतिशीलता और ज्ञानशीलता हो, प्रकटित करने वाली। ढग गति अर्थ में, प्रेरित करने वाला ऐसा अर्थ भी देता है। नाद में गति होती है। नाद अव्यक्त ध्वनि को कहते हैं। ऐसा कहते हैं कि हमें वही शब्द नहीं सुनाई पड़ता जो वास्तव में पैदा हुआ था। जिस प्रकार तालाब में पत्थर फेंकने से एक लहर पैदा होती है, वह लहर दूसरी लहर को पैदा कर स्वयं में विराम ले लेती है। दूसरी लहर तीसरी को पैदा कर विराम ले लेती है। नाद जहाँ पैदा होता है वैसा ही ज्यों का त्यों श्रोता के पास नहीं पहुँचता और उसकी गति अद्भुत होती है। चूँकि नाद गतिशील होता है एवं ढक का अर्थ गतिशील है अतः नादतन्त्र प्रकटित करने वाली ऐसा अर्थ भी कर सकते हैं। एकाक्षरी कोष में ढ का पिशाच, ध्वनि, आयुध, लास्य अर्थ दिया गया है और ग का गति (ज्ञान) अर्थ दिया गया है। तन्त्र का अर्थ शास्त्र कर सकते हैं। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ ध्वनि ज्ञान से सम्बन्धित या आयुधों के ज्ञान से सम्बन्धित शास्त्रों को समाज के सामने लाने वाली। इस शब्द का अर्थ ढोंगियों के कार्य–कलापों से सावधान करने वाली, भी हो सकता है।

190. **अनेकरूपिणी अम्बा** – अनेक रूप धारण करने वाली मातृ शक्ति। (अम्बा का अर्थ है – जो स्नेह से युक्त होकर अपने बच्चे के पास जाती है। जो स्नेह से युक्त होकर अपने बालक को पुकरती है अर्थात् स्नेह युक्त वाणी बोलती है। अम् गतौ धातु स्नेह से युक्त होकर जाने के अर्थ में होती है। अम् धातु में उणादि वन प्रत्यय लगाने से अम्बा शब्द बनेगा। अबि शब्दे धातु से भी अम्बा शब्द बन जाता है। शिशु के अंगों की वृद्धि करने वाली अर्थात् पालन पोषण करने वाली। अंग से अम् अक्षर ले लिया, वर्धन से व ले लिया। संस्कृत में ब और व में अभेद है। ऐसी मान्यता है कि अंग्रेजी का Womb शब्द अम्ब शब्द से आया है अर्थात् अम्ब का अर्थ है गर्भ। समस्त जगत जिसके गर्भ में है। अम्बते शब्द्यते इति अम्बा अर्थात् जो शब्द करती है अर्थात् उपदेश देती है अर्थात् ज्ञान का उपदेश देती है, वह अम्बा है। अम्बते अध्यापयति इति अम्बा। जो पढ़ाती हैं अर्थात् उपदेश देती हैं। इस प्रकार अम्बा ज्ञान शक्ति का प्रतीक है। महाभारत में अम्बा तपस्या करने चली गई थी जिससे भीष्म के मारे जाने का वरदान प्राप्त हुआ था। तपस्या सतोगुण है। अतः अम्बा सतोगुण की प्रमुखता वाली जीवात्मा या प्राणी है।) अम् धातु स्नेहपूर्वक जाने के अर्थ में होती है। इस प्रकार अम्बा का अर्थ होता है जो स्नेहपूर्वक अपनी सन्तान के पास जाती है।

191. **अणिमासिद्धिदायिनी** – अपने उपासकों को अणिमा सिद्धि देने वाली। अणिमासिद्धि के द्वारा मनुष्य छोटे से छोटा रूप धारण कर लेता है।

192. **अमन्त्रणी** – शिव या विष्णु के मन्त्र को ले जाने वाली अर्थात सुपात्र भक्तों तक पहुँचाने वाली। अ का अर्थ विष्णु, शिव, ब्रह्म दिया गया है। नी धातु का अर्थ ले जाना होता है। पूर्व में आये र अक्षर के कारण नी का णी हो गया। शब्दकोष के अनुसार मन्त्र का अर्थ वैदिक मन्त्र भी होता है। अमन्त्र अर्थात जो वैदिक मन्त्र नहीं है अर्थात तान्त्रिक मन्त्र है। तान्त्रिक मन्त्र को सुपात्रों तक पहॅुचाने वाली। मन्त्र का अर्थ गुप्त बात, रहस्यपूर्ण बात, गुप्त भाषण भी होता है। उस मन्त्रज्ञान के स्वरूप वाली जो गुप्त नहीं है। ण का एक अर्थ ज्ञान भी होता है। वेद से भिन्न मन्त्रों वाली। अष्टाध्यायी में मन्त्र का अर्थ वेद ही किया गया है। देवी की पूजा वैदिक मन्त्रों के अलावा तान्त्रिक मन्त्रों से भी होती है। वेद से भी भिन्न हैं मन्त्र जिनके ऐसा अर्थ हुआ। तान्त्रिक मन्त्रों से प्रसन्न होने वाली। अमन्त्र अर्थात वेद भिन्न मन्त्र। नी धातु का अर्थ है ले जाना। वेद भिन्न मन्त्रों को साधकों तक पहुँचाने वाली, इनसे काम लेने वाली। जिन पर मन्त्र का प्रभाव नहीं पड़ता। मन्त्र की पकड़ जिन पर नहीं है। जो मन्त्र से रहित होकर भी परम शक्ति से सम्पन्न है। यहाँ विरोधाभास है। (अ का अर्थ विष्णु होता है। विष्णु के मन्त्र को ले जाने वाली अर्थात अपने भक्त पहुँचाने वाली। अमन्त्रम् नीयते इति अमन्त्रणी।) (यदि अमन्त्रिणी शब्द होता तो अर्थ होता तान्त्रिक मन्त्रों से युक्त, भगवान विष्णु के मन्त्रों से युक्त, अव्यक्त मन्त्रों से युक्त।)

193. **अणुकरी** – अणुओं को बनाने वाली। अपने रूप को अणु के समान सूक्ष्म करने वाली। सूक्ष्मातिसूक्ष्म रूप धारण करने वाली।

194. **अणुमद्भानुसंस्थिता** – प्रकाश कणों से युक्त सूर्य में भलीभाँति स्थित। सूक्ष्मता लिये किरणों में भलीभाँति स्थित। भानु का अर्थ सूर्य भी होता है और किरण भी होता है। प्रकाश/तेज के कणों से युक्त सूर्य में भलीभाँति स्थित। भानु अर्थात सूर्य, अणु अर्थात कण। अणुस्वरूप किरणों में भलीभॉति स्थित। यहाँ भानु का अर्थ किरण लिया गया है। अणु अर्थात सूक्ष्म जो दिखाई न दे। पदार्थ की किरण (AURA) में भली–भाँति स्थित। अणुमद् का अर्थ हुआ अणुओं से युक्त अर्थात पदार्थ। प्रत्येक पदार्थ अणुओं से बना होता है।

195. **तारा** – जलात् तारयति इति तारा। जो जल से अर्थात जल में होने वाली विपत्तियों से पार करा दे। यात्रियों की तूफान, बाढ़ आदि से रक्षा कर पार तक पहुँचा दे। तारा देवी जल की देवी कही गई हैं और कहा गया है कि जल में विपत्ति आने पर इनका नाम लेना चाहिए। तारयति इति तारा। जो संसार सागर से भक्तों को तार देती है। ऊँ इस अक्षर से वाच्य। तारवाच्यत्वात् तारः, स्त्रीलिंग में तारा। तार का एक अर्थ है ऊँ। जो दुखों से पार लगा देती हैं अर्थात दूर कर देती है। तारयति दुखेभ्यः। जो सर्वत्र व्याप्त है एवं सभी प्रकार से आनन्दित है। सर्वत्र तता आरमते च। जो ज्ञान से विस्तृत हैं अर्थात ज्ञानी हैं, उनको सभी प्रकार से आनन्दित करने वाली। तत का अर्थ है फैला हुआ, इस तत से त अक्षर ले लिया। ज्ञानेन ततास्ताः, तेषाम् आरमणम् यस्या। पृथ्वी में फैले हुए दुष्टों या राक्षसों को जिनके द्वारा आनन्द नहीं दिया जाता। भूमौ तता ज्यायांसो असुरा तेषाम् अरमणं यस्याः। जो संसार सागर से पार चले गये हैं, उनकी यह अर्थात उनकी स्वामिनी अर्थात उनकी देखभाल करने वाली या रक्षा करने वाली। तरन्ति संसारसागरम् इति ताराः मुक्ताः, तेषाम् इयम् स्वामिनी। लक्ष्मी अर्थात धन–सम्पदा या शोभा को देने वाली। एकाक्षरीकोष में ता का अर्थ है लक्ष्मी एवं राति का अर्थ है देती है। जो सब जगह व्याप्त हैं तथा हर प्रकार के आनन्द से युक्त हैं। तता का अर्थ है सब जगह फैली हुई, तता से ता अक्षर ले लिया। आरमते या रमते से र अक्षर ले लिया। ततत्वात् ताः, आरमणात, आरः। रमते का अर्थ है आनन्दित होती है, क्रीड़ा करती है। सब जगह फैली लक्ष्मी जी को प्रसन्न करती हैं। सर्वत्र ततां रमां रमयति। त, अ, र इन अक्षरों के अर्थ एकाक्षरीकोश से लेकर भी तारा का अर्थ किया जा सकता है। जो सर्वत्र व्याप्त है, अ अक्षर से वाच्य है, आनन्दित होती है या क्रीड़ा करती है। तार में स्वार्थ (बिना अर्थ बदले) कन् प्रत्यय लगाने से बने तारक

शब्द का वही अर्थ होता है जो तार का है। जैसे बालक का वही अर्थ है जो बाल का। तार या तारक शब्द मन के लिए आया है। तारक का अर्थ है नक्षत्र। चन्द्रमा को भी नक्षत्र कह सकते हैं और चन्द्रमा का प्रतीक मन है। मन से परे जाने पर ही मनुष्य को मोक्ष की अर्थात शिव के राज्य की प्राप्ति होती है। भक्तों को भवसागर से या समस्त दुखों से पार कराने वाली। भय से रक्षा करने वाली। तारयति (पार कराना) से एवं त्रायते (रक्षा करना) दोनों से तारा या तारका शब्द बन सकता है।

196. **तन्त्रावती** – तन्त्रों से युक्त अर्थात जिनके बहुत से तन्त्र शास्त्र हैं अर्थात् उन तन्त्र–शास्त्रों में उनकी चर्चा होती है। तन्त्र+आ+वती। एकाक्षरी कोष में आ का एक अर्थ भाव बताया गया है। प्रत्येक पदार्थ भाव है, अतः आ का अलग से कोई अर्थ देने की कहीं–कहीं पर आवश्यकता नही होती है। चौसठ तन्त्रों से युक्त अर्थात चौसठ तन्त्रों से उपासनीया। तन्त्र उपासना के लिए ही होते हैं। तन्त्र+आ+वती। सम्पूर्ण तन्त्र विज्ञान को जो चारों ओर से समेटकर अपने में ला देती हैं। आ का अर्थ है चारों ओर से और यह वती का उपसर्ग है। साधारण अर्थ है तन्त्रस्वरूपा जिनके स्वरूप से तन्त्र प्रकाशित है। तन्त्र का अर्थ काल भी होता है। निमेष से लेकर कल्प तक जितने भी काल हैं उस रूप वाली यह तन्त्रावती का अर्थ हुआ। काल तो अखण्ड है पर समझने के लिए भेद किया गया है। काल के सभी रूपों वाली या कालस्वरूपिणी यह तन्त्रावती का अर्थ हुआ।

197. **तन्त्रतत्वरूपा** – तन्त्र का जो तत्व (सार) है उसका स्वरूप धारण करने वाली।

198. **तपस्विनी** – निरन्तर तपस्या में रत रहती है। माँ का एक स्वरूप तप और स्वाध्याय में रत रहता है। ब्रह्मचारिणी अर्थात तपस्या में रत। माता पार्वतीजी ने शिवजी को पाने के लिए तपस्या की थी।

199. **तरंगिनी** – तरंगों वाली अर्थात् नदी स्वरूपा या समुद्र स्वरूपा। भव सागर से पार कराने वाली नदी स्वरूपा। तरंग एक जगह से दूसरी जगह जाती है अर्थात् वह स्थान को पार करती है। शिव के प्रति प्रेम की तरंगों से युक्त। तरंग वाली अर्थात नदी स्वरूपा या समुद्र स्वरूपा। संसार रूपी नित्य प्रवाह वाली। संसार का नित्य प्रवाह चल रहा है और उसमें सुख दुख की तरंगे उठती हैं। तरंगों से युक्त। जितनी भी संसार की उच्चतम स्थितियां हैं जैसे तन्त्र मन्त्र यम –नियम आसन, प्राणायाम, अष्टांग योग, जप योग, तपयोग, मन्त्रयोग यह सभी तरंगे हैं, इनसे युक्त। नदी की तरंगें होती हैं पर वे तरंगें सीमित होती हैं। देवी माँ के अर्थ में तरंग का अर्थ संसार की उन सारी उच्चतम स्थितियों से है।

200. **तत्वपरा** – सांख्य के 25 तत्वों में या शैव दर्शन के 36 तत्वों में विद्यमान। किसी वस्तु का जो तत्व या सार या भाव है उसमें विद्यमान। यहाँ पर परा शब्द का अर्थ विद्यमान कर सकते हैं। ब्रह्म या परमात्मा में लीन या अत्यन्त व्यस्त। तत्व विज्ञान में निरन्तर लीन रहने वाली। तत्व का अर्थ है सत्य।

201. **तन्त्रिका** – वीणा की तरह अर्थात् वीणा की तरह मधुर स्वर करने वाली अर्थात् मधुर बोलने वाली। तन्त्रि का एक अर्थ वीणा है। तन्त्रि ही तन्त्रिका है क्योंकि बिना अर्थ बदले कन् प्रत्यय लगाने से तन्त्रिका शब्द बनाता है। गुडूची (अमृता) की तरह अर्थात् गुडूची की तरह रोगनिवारिका अर्थात् कष्टनिवारिका। जैसे गिलोय रोगों को नष्ट करता है उसी प्रकार देवी जी भक्तों के रोगों अर्थात विभिन्न प्रकार के कष्टों, संसार बन्धन का कष्ट आदि को नष्ट करती हैं। शब्द कोष में तन्त्रिका का एक अर्थ गुडूची भी दिया गया है। विस्तार को प्राप्त। तन्त्रों में अभिव्यक्त अर्थात् तन्त्र शास्त्रों में रहने वाली। वीणा की तरह मधुर स्वर करने वाली। तन्त्री का अर्थ है वीणा। तन्त्रस्वरूपा। जो तन्त्र को प्रकाशित करती है। जो तन्त्र की साधना बताती हैं।

202. **तन्त्रविग्रहा** – तन्त्र ही जिनका शरीर है, स्वरूप है।

203. **तपोरूपा** – तपस्वरूपिणी। मन की शुद्धि, मोक्ष की प्राप्ति, पाप के प्रायश्चित आदि के लिये स्वेच्छा से किये जाने वाला कठोर आचरण और नियम पालन तप या तपस्या है जिसको सार रूप में कष्ट सहना कह सकते हैं।

204. **तत्वदात्री** – जगत के मूल कारण को देने वाल अर्थात उनका निर्माण करने वाली। सांख्य दर्शन में 25 तत्व, न्याय दर्शन में 16 तत्व, वैशेषिक दर्शन में 6 तत्व और शैव दर्शन में 36 तत्व बताये गये हैं जो जगत के मूल कारण हैं। पंचभूतों अर्थात पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश को भी तत्व कहा जाता है। तत्व का तात्पर्य परमात्मा, ब्रह्म, सार वस्तु या सारांश भी है। तत्व ज्ञान देने वाली। तत्व ज्ञान का अर्थ है ब्रह्म ज्ञान या आत्म ज्ञान।

205. **तपःप्रीतिप्रदर्शिनी** – तपस्या में प्रीति को प्रदर्शित करने वाली। भक्तों की तपस्या से जिन्हें प्रेम है। भक्तों की तपस्या में प्रेम दिखाने वाली। प्रदर्शिणी एवं प्रदर्शिनी दोनों का अर्थ एक है। मूर्द्धन्य एवं तालब्य श एक ही अर्थ बता रहे हैं। (यदि तपःप्रीतिप्रधर्षिनी शब्द है तो अर्थ है – तप के द्वारा लौकिक प्रीति (आसक्ति) को अच्छी प्रकार से दबाने वाली अर्थात नष्ट करने वाली। जो लोग देवी की प्रसन्नता के लिए तप करते हैं, उनसे प्रसन्न होकर देवी उनकी संसार के प्रति जो प्रेम है उसको नष्ट करने वाली। अधर्मी या राक्षस यदि अनुचित कामना के लिए तप करने की इच्छा रखे हुए हैं, तो तप के प्रति उनकी प्रीति को अच्छी प्रकार से दबाने वाली अर्थात उनके अन्दर ऐसी इच्छा को समाप्त करने वाली। सामान्यतः धर्षण का अर्थ दमन या रोकना होता है। अतः इस नाम का अर्थ होगा दैत्यों की तपस्या प्रीति का अतिशय दमन करने वाली या रोकने वाली। अपनी तपस्या प्रीति का अभिनय करने वाली। शब्दकल्पद्रुम के अनुसार धर्षक/धर्शक का एक अर्थ नट भी होता है अर्थात अभिनय करने वाला। यद्यपि इन्हें तपस्या की जरूरत नहीं है फिर भी तपस्या का अभिनय करती हैं। धर्षण का अर्थ मैथुन या रति भी होता है तब इस शब्द का अर्थ होगा भक्तों की तपस्या प्रीति को अतिशय प्रेम करने वाली।)।

206. **तन्त्रयन्त्रार्चनपरा** – तन्त्र और यन्त्र के अर्चन पूजन में संलग्न रहने वाली। परा का अर्थ है संलग्न, निरत/लीन रहने वाली। देवी स्वयं में पूजा भी करती है और दूसरों से पूजा भी करवाती हैं। न्यास की प्रक्रिया में उपासक का देवी/देवता से अभेद हो जाता है। इस कारण उपासक ने उपासना की, को देवी/देवता ने उपासना की यह कह सकते हैं।

207. **तलातलनिवासिनी** – तल और अतल लोक में रहने वाली। तल का अर्थ नीचे वाला ले कर इस नाम का अर्थ होगा नीचे के लोक और ऊपर के लोक में निवास करने वाली। तलातल नामक लोक में निवास करने वाली। मनुष्य शरीर में ही सारे लोक हैं। मूलाधारचक्र सहित ऊपर की ओर सात लोक हैं एवं मूलाधारचक्र से नीचे सात लोक हैं। सुषुम्नानाडी में स्थित सभी चक्र किसी न किसी लोक के प्रतीक हैं। इन चक्रों को जाग्रत करने पर व्यक्ति को वैसी ही अनुभूति मिलने लगती है जो शास्त्रों में इन लोकों के बारे में बताया गया है। आज्ञाचक्र या इससे ऊपर के चक्रों को जाग्रत करने पर व्यक्ति का पुनर्जन्म नहीं होता। इन लोकों में शक्ति या ऊर्जा के रूप में निवास करने वाली।

208. **तल्पदा** – सुख या आनन्द देने वाली। तल्प का शाब्दिक अर्थ है बिस्तर। बिस्तर में जाने से सुख या आनन्द मिलता है। सर्वोच्च लक्ष्य तक पहुँचाने वाली। तल्प का अर्थ होता है बिस्तर, अट्टालिका, भार्या। बिस्तर वह है जहाँ विश्राम अर्थात् सुख मिलता है। पूर्ण विश्राम या सुख ब्रह्म के पद में ही है। उपासक को श्रेष्ठ पत्नी अर्थात मनोरमा पत्नी देने वाली। सर्वोच्च सुख ब्रह्म प्राप्ति में ही होता है, उसे देने वाली। तल्प अर्थात बिस्तर या गद्दा जिसमें लोग सोते हैं। प्रलयकाल में सारा विश्व ब्रह्म में सो जाता है। अतः तल्प का अर्थ हुआ ब्रह्म। ब्रह्म को देने वाली अर्थात ब्रह्म का साक्षात्कार कराने वाली। पद्मचन्द्रकोष में तल्प का अर्थ है शय्या, पलंग, स्त्री, पत्नी, मद, नशा, गाड़ी में बैठने का स्थान दिया गया है।

209. **त्वत्सदाकाम्या** – ब्रह्म के रूप में सदैव वांछनीया अर्थात् अभीष्ट। त्वत् शब्द मध्यम पुरुष वाचक है जो ब्रह्म के लिए प्रयुक्त होता है। आपने तत् त्वम् असि यह वेदान्त वाक्य सुना होगा जहाँ पर तत् शब्द ब्रह्म के लिए आया है। तुम लोगों के द्वारा अर्थात सभी लोगों के द्वारा सदैव चाही जाने वाली।

210. **स्थिरा** – हमेशा स्थिर रहने वाली। कभी कोई विकार नहीं आता। स्थिर का अर्थ है गति नहीं अर्थात अविचल। निर्गुण निराकार सर्वव्यापी रूप में देवी स्थिर रहेंगी क्योंकि गति के लिये कोई जगह नहीं है। गुणक्रियादिभिः सदा स्थिरत्वात् स्थिरा। सर्वत्र स्थितो रमते इति स्थिरा। स्थितेषु स्थावरेषु रमते इति स्थिरा। स्थितिं रातीति स्थिरा। स्वस्मिन् स्थितेषु भक्तेषु रमते इति स्थिरा। जो गुण और क्रियाओं द्वारा सदैव स्थिर होती हैं अर्थात इनकी गुण और क्रियायें कभी कम ज्यादा नहीं होतीं। दीपक का प्रकाश तो तेल कम होने से घट जाता है और तेल डालने से बढ़ जाता है। इनकी क्रियायें बराबर चलती रहती हैं क्योंकि प्रत्येक पल स्पन्दन होता है। सभी जगह रमण करती हैं अर्थात विद्यमान रहती हैं। गतिहीन पदार्थों में भी रमण करती हैं अर्थात क्रीड़ा करती हैं। इन पदार्थों के परमाणुओं में होने वाली निरन्तर गति ही इनकी क्रीड़ा है। शक्ति ही क्रिया करती है पर शक्ति और देवता में कोई अन्तर नहीं है इस कारण इसे देवता द्वारा की जाने वाली क्रीड़ा भी कहेंगें। स्थिरता देने वाली। स्थिरता अर्थात जिसकी जिसमें रूचि है उस रूचि को लगातार होने देती हैं जैसे योगी योगाभ्यास करते, विद्यार्थी विद्या का अध्ययन करते रहते हैं। इसका अर्थ भाग–दौड़ से रहित करना भी कर सकते हैं जैसे जीविका देकर, विवाह कराकर स्थिरता दे दी गई। मन की चंचलता को रोकना भी स्थिरता देना है। स्थिरता का अर्थ है कि यदि आप आज अच्छी स्थिति में है, उससे नीचे नहीं आने देना। जीविका देने से भी व्यक्ति स्थिर हो जाता है। मन की चंचलता, मन नही लगना आदि को दूर कर स्थिरता देना होता है। अपने लोगों में अर्थात भक्तों में स्थित होकर आनन्दित होने वाली या क्रीडा करने वाली। जो भक्त अपनी आत्मा में रमण करते हैं या अपने आत्मस्वरूप भगवान के शरणागत हैं, अपने में स्थित अर्थात देवी माँ में मन लगाये हुए जो भक्त हैं, उनमें रमती हैं अर्थात क्रीड़ा करती हैं या क्रियाशील रहती हैं या आनन्दित रहती हैं या स्थित रहती हैं। दुष्टों के प्रति कठोर चित्त वाली। वेद में कठोर चित्त के अर्थ में भी स्थिर शब्द आया है।

211. **स्थिरतरा** – अन्य देवी देवताओं की तुलना में अधिक स्थिर रहने वाली। अन्य देवी देवताओं में विकार आ जाता है पर इनमें नहीं आता। तरा से तुलनात्मक भाव आता है।

212. **स्थिति** – जिनकी सदैव स्थिति (ठहराव) रहती है। Continued Existence स्वरूपा। इन्हें कोई डिगा नहीं सकता। जगत का पालन करने वाली शक्ति रूपा। सृष्टि, स्थिति (पालन) और संहार ये परमात्मा की शक्तियाँ हैं। जगत स्वरूपा। जगत परमात्मा का स्थिति रूप है। स्थूल प्रपंच को देवी का स्थिति स्वरूप कहते हैं। स्थिति का अर्थ स्थान अर्थात आधार भी होता है। जो जगत की आधारभूमि हैं अर्थात जगत इसी पर टिका है। पदार्थ को कुछ समय तक अस्तित्व में रखने वाली शक्तिस्वरूपा। ब्रह्म की शक्ति जो पदार्थों में प्रविष्ट होकर उनका कुछ समय तक अस्तित्व बनाये रखती है, स्थिति शक्ति कहलाती है।

213. **स्थाणुप्रिया** – शंकर जी की प्रिया अर्थात शंकरजी जिन्हें प्रेम करते हैं। जैसे वृक्ष का ठूँठ चाहे जहां रह सकता है वैसे शिव जी कहीं भी आसन जमाकर आनन्दित रहते हैं अतः शिवजी को स्थाणु कहते हैं।

214. **स्थलपरा** – स्थल में भी अर्थात पृथ्वी आदि स्थल में भी रहने वाली, विराजमान। विभिन्न लोक भी रहने के स्थल हैं। स्थल (भमि या भू –भाग) में स्थित रहने वाली। श्रेष्ठ स्थल जैसे यज्ञ स्थल, पूजा स्थल या तीर्थ स्थल में रहने वाली। स्थल का अर्थ भूमि या भू –भाग या जमीन भी होता है। ठहरने की जगह को भी स्थल कहते हैं।

215. **स्थिता** – जो खड़ी हुई है। देवी देवताओं के चित्र में जो तस्वीर बैठी हुई होती है वह आसीन मुद्रा है और जो खड़ी हुई है वह स्थित मुद्रा है। ध्यान योग में स्थित रहने वाली।

216. **स्थानप्रदायिनी** – अच्छी स्थिति या स्थान देने वाली। परमस्थान मोक्ष है अतः मोक्ष देने वाली।

217. **दिगम्बरा** – दिशायें जिनके वस्त्र है अर्थात सर्वव्यापक। दिशाओं की रक्षा करने वाली। अम्बर का अर्थ होता है वस्त्र और वस्त्र शरीर की रक्षा करते हैं इस प्रकार अम्बर या वस्त्र का अर्थ हुआ रक्षा करने वाला।

218. **दयारूपा** – जो दया के रूप में हैं। दूसरों के दुख को देखकर उसे दूर करने की जो इच्छा पैदा होती है वह दया कहलाती है। जो दया भाव के रूप में है। दूसरों की अनुभूति के समान अनुभूति होना भी दया की एक परिभाषा है। जिनकी दया दिखती है। रूप वह होता है जो आँखों से दिखता है। दयाम् रूपयति इति दयारूपा, इस व्युत्पत्ति के अनुसार दया को दिखाने वाली यह अर्थ होगा। दया को स्वरूप देने वाली अर्थात इस गुण की रचना करने वाली। दया है रूपक या ज्ञापक जिनका अर्थात दया गुण के कारण पहचानी जाने वाली। उनकी अतिशय दया को देखकर यह बोध हो जाता है कि ऐसी दया तो सिर्फ देवी की हो सकती है। रूप का अर्थ ज्ञापक या बोधक भी होता है, रूप्यते इति रूपः अर्थात जिससे किसी पदार्थ का बोध हो।

219. **दावाग्निदमिनि** – जंगल में लगी आग का दमन करने वाली। देवी स्तम्भन की देवी हैं। जिस प्रकार उन्होने सतयुग में आये भयंकर तूफान का स्तम्भन किया था, रोका था उसी प्रकार जंगल में लगी आग का दमन करती हैं अर्थात उसे बलपूर्वक शान्त करती हैं, नियन्त्रित करती हैं। दावाग्नि का अर्थ है विनाशक अग्नि अर्थात संसार के आधिदैविक, आधिभौतिक, आध्यात्मिक ताप, तीनों तापों का दमन करने वाली।

220. **दमा** – दम गुण वाली, दमः अस्या असि इति दमा। दुष्टों को दण्ड देने के लिये दी जाने वाली सजा दम है। बाह्य इन्द्रियों का दमन भी दम है। इन्द्रियों को वश में रखना और चित्त को बुरे कामों में प्रवृत न होने देना भी दम है। भगवान विष्णु, भगवान बुद्ध का भी एक नाम दम है अतः इस नाम का अर्थ हुआ भगवान विष्णु या भगवान बुद्ध की शक्तिस्वरूपा। इन्द्रियों का दमन (नियन्त्रण करने वाली)। दमन अर्थात बलपूर्वक शासन।

221. **दुर्गा** – दुर्ग+आ इति दुर्गा। कठिन से कठिन विपत्तियों को दूर करने वाली दुर्गा कहलाती है। दुर्ग का अर्थ है कठिन से कठिन विपत्ति या कष्ट। आ के विनाश करना एवं देना दोनों अर्थ होते हैं, यहाँ पर अर्थ है विनाश करना। शरीर भी एक प्रकार का दुर्ग है। शरीर रूपी दुर्ग में आत्मा के रूप में स्थित रहने वाली दुर्गा कहलाती है। जो बहुत कठिनाई से अर्थात तपस्या आदि करने से प्राप्त हो उसे भी दुर्गा कहते हैं। दुखेन गम्यते इति दुर्गा। ब्रह्मबैवर्त पुराण में इस शब्द के कई अर्थ बताये गये है। दुर्गा शब्द का पदच्छेद है– दुर्ग + आ। दुर्ग शब्द दैत्य, महाविघ्न, भवबन्धन कर्म, शोक, दुःख, नरक, यमदण्ड, जन्म, महान् भय तथा अत्यन्त रोगके अर्थ में आता है तथा 'आ' शब्द 'हन्ता' अर्थात् नाश करने वाली के अर्थ में आता है। इस प्रकार दुर्गा शब्द के बहुत से अर्थ हो जाते है। दैत्य का नाश करने वाली। महाविघ्न का नाश करने वाली। भव बन्धन का नाश करने वाली। शोक का नाश करने वाली। जन्म का नाश करने वाली अर्थात् जन्म नहीं होने देती है अर्थात् मोक्ष दे देती है। यम दण्ड अर्थात् मृत्यु या मृत्यु भय का नाश करने वाली। दुर्ग अर्थात विपत्ति या संकट का नाश करने वाली। कठिनाइयों का नाश करने वाली। शत्रुओं के दुर्ग (किला अर्थात् रक्षा कवच) का नाश करने वाली। दुर्गेषु गतस्तन्नामा। दुःखिषु, दुःखिभिरवगता। दुःखेन चावगता। अनवगता दुष्टानाम्। शिष्टपालनाय दुष्टानभिगच्छति च। अपगमयति दुःखं च दुरितं च। किलों में स्थित। शरीर भी किला है, उसमें जीवात्मा के रूप में स्थित। भौतिक बड़े–बड़े किलों के बीच स्थित। दुखी लोगों द्वारा या दुखियों में जानी गई क्योंकि दुखी लोग ज्यादा याद करते हैं। बड़ी कठिनाई से जानी गई अर्थात् इनको जानने के लिए कठिन तपस्या या साधना करनी होती है। दुष्टों में न जानी गई अर्थात् दुष्टों के द्वारा नहीं जाने जाने वाली। सज्जनों के पालन (रक्षा) के लिए दुष्टों के पास जाने वाली या आक्रमण करने वाली। दुष्ट शब्द का दु ले लिया एवं अवगच्छति का ग ले लिया। दुख को दूर हटाने वाली। पाप को हटाने वाली। दुख या दुरित शब्द का दु अक्षर ले लिया एवं अवगमयति का ग अक्षर ले लिया।

222. **दुर्गपरादेवी** – दुर्ग से जुड़ी हुई अर्थात दुर्ग (किला) में रहने वाली देवी। शरीर रूपी दुर्ग में आत्मा के रूप में रहने वाली अर्थात जीवात्मा स्वरूपा। दुर्ग में लगी देवी अर्थात दुर्ग में रहने वाली देवी अर्थात ऐसी देवी जिसे सब नहीं जान सकते। पर का अर्थ है लगा हुआ। जैसे अध्ययनपर अर्थात अध्ययन में लगा हुआ। शरीर रूपी दुर्ग

में रहने वाली आत्मास्वरूपा देवी। ऊँचे भवनों में रहने वाली। अपने दुर्ग में स्थित रहने वाली देवी। ब्रह्मरूपी किला दुर्भेद्य है। ब्रहम तत्व में सदैव निरत संलग्न रहने वाली।

223. **दुष्टदैत्यविनाशिनी** – दुष्ट दैत्यों का विनाश करने वाली। विनाश का अर्थ है पूर्ण नाश। उपासकों के अन्दर विद्यमान क्रूर प्रवृत्तियों या दूसरों को नुकसान पहुँचाने वाली प्रवृत्तियों का विनाश करने वाली।

224. **दमनप्रमदा** – आसूरी वृत्ति या बुराइयों को कुचलने वाली महिलारूपधारिणी। प्रमदा का अर्थ महिला है। दुष्टों का दमन करके बहुत खुश होने वाली। प्र अर्थात् प्रकृष्ट अर्थात् बहुत एवं मदी हर्षे धातु से मदा का अर्थ खुश होने वाली होता है। दमन करने वाली प्रमदा अर्थात स्त्री। प्रमदा का अर्थ है स्त्री। प्रमदा अर्थात विशेष रूप से प्रसन्न या हर्षित करने वाली। दमन में प्रकृष्ट मद रखने वाली। काम आदि विकारों के दमन करने में प्रकृष्ट मद रखने वाली अर्थात प्रसन्न रहने वाली (मदि हर्षे धातु होती है)। जो प्रकृष्ट शक्ति से सम्पन्न होकर काम आदि विकारों को नष्ट कर देती है।

225. **दैत्यदया** – दैत्यों के प्रति भी दया भाव रखने वाली। कुछ दैत्य ऐसे भी है जो ईश्वर की उपासना करते है। दुर्गा सप्तशती में आया है कि देवी दुर्गा यदि चाहती, तो इच्छा मात्र से सभी दैत्यों को नष्ट कर सकती है, किन्तु उन्होंने युद्ध किया जिससे उनके हथियार से पवित्र होकर दैत्यों को मोक्ष मिल सके। यह दैत्यों के प्रति देवी के अन्दर दया भाव का प्रमाण है। शरणागत होने पर दैत्यों पर जो दया करती है। जब दैत्य शरणागत होते है उन पर दया दिखाती हैं।

226. **दानपरायणा** – निरन्तर दान में लगी रहने वाली। अपनी कृपा और शक्तियों के दान में लगी हुई।

227. **दुर्गार्तिनाशिनी** – भक्तों की कठिन पीड़ाओं/दुखों को नष्ट करने वाली। दुर्ग का अर्थ है जिससे पार पाना लगभग असम्भव है अर्थात अत्यन्त कठिन। आर्ति ऐसी पीड़ा है जिसको दूर करने में जरा भी विलम्ब सहन नहीं किया जा सकता अर्थात ऐसी पीड़ा जिसको दूर करने की व्याकुलता हो। जैसे गजेन्द्रग्राह के प्रकरण में गजेन्द्र अपने पीड़ा को दूर करने के लिए व्याकुल हो गया था उसी प्रकार द्रौपदी के चीरहरण प्रसंग में द्रौपदी व्याकुल हो गयी थी।

228. **दान्ता** – महाभारत में वर्णित दान्ता नामक अप्सरा के समान अत्यन्त सुन्दर यह अर्थ भी हो सकता है। दमन शक्ति से सम्पन्न। इन्द्रियों, काम आदि का दमन करना अर्थात वश में करना, नियन्त्रण करना, रोकना, दबाना दमन है। जिसका शरीर तप आदि क्लेश सह सके वह दान्ता है। बन्धन का अन्त करने वाली अर्थात भक्त को सांसारिक बन्धनों से छुटकारा दिलाने वाली। शत्रुओं के दमन (परेशान करना रूपी क्रिया) का अन्त करने वाली। उपताप का अन्त करने वाली। एकाक्षरीकोश में द का अर्थ बन्धन, दमन, उपताप दिया गया है।

229. **दम्भनी** – दम्भम् नयति इति दम्भनी। दम्भ को ले जाने वाली अर्थात हटाने वाली या दूर ले जाने वाली। कभी कभी नयति का अर्थ अपनयति अर्थात दूर हटाना हो जाता है जैसे नुदति का अर्थ प्रेरणा देने के अतिरिक्त दूर हटाने में भी होता है। दम्भ का अर्थ है मिथ्या अभिमान। एकाक्षरी कोष के अनुसार नी का अर्थ नेतृ भी होता है। अतः दम्भनी का अर्थ हुआ दम्भ का नेतृत्व करने वाली अर्थात दम्भ इनके पीछे ही चलता है, कभी आगे नहीं होता है। (यदि दम्भिनी शब्द है तो दम्भ+इनि प्रत्यय लगाने से अर्थ होगा – गर्व से युक्त। दुर्गासप्तशती में देवी जी जब कहती हैं कि संग्राम में जो मुझे जीतेगा वही मेरा पति होगा। वहाँ देवी का गर्व दिखलाई देता है। उचित स्थान पर दम्भ की या माया की शक्ति से सम्पन्न। कहीं कहीं मायावी रूप धारण करना पड़ता है जैसे रक्तबीज के वध में देवी काली ने अपनी जीभ लम्बी कर दी थी, मोहिनी रूप भी कृष्ण (कृण और काली में अभेद है) ने धारण किया था।) अहंकार को दूर करने वाली अर्थात नाश करने वाली। अहंकारी को दूर करने वाली अर्थात नाश करने वाली। दम्भः का अर्थ अहंकार भी होता है और अहंकारी भी होता है। दम्भ का अर्थ अहंकार

तो है ही, साथ में दम्भः अस्य अस्ति इति दम्भः (दम्भ वाला अर्थात अहंकार वाला) इस विग्रह से अहंकार वाला अर्थ भी आता है। जैसे पापम् अस्य अस्ति इति पापः से पापः का अर्थ पाप वाला अर्थात पाप करने वाला होता है। यहाँ नी शब्द अपनयति से लिया गया है जिसका अर्थ है दूर हटाना। अप+नी धातु। संस्कृत में प्रायः शब्द के पहले अक्षर से उस शब्द का बोध होता है पर कई बार शब्द के बीच का या बाद वाला अक्षर लेने से भी उस शब्द का बोध होता है जैसे मति शब्द का विग्रह मम् (ज्ञानम्) तनोति, विस्तारयति ऐसा कर सकते हैं जिसका अर्थ है ज्ञान का विस्तार करने वाली। यहाँ तनोति या विस्तारयति का अन्तिम ति अक्षर ले लिया।

230. **दम्भवर्जिता** – सांसरिक दम्भ (मिथ्या अभिमान) या पाखण्ड से रहित। धोखे में डालने के लिए ऊपरी दिखावट रूपी घमण्ड या अभिमान से रहित। आपके पास कुछ भी न हो, फिर भी बहुत कुछ होने का जो अभिमान किया जाता है, वह दम्भ है।

231. **दिगम्बरप्रिया** – शिव की प्रिया। दिशायें ही जिसके वस्त्र हैं अर्थात सर्वव्यापी, यह नाम भगवान शिव का है।

232. **दम्भा** – शिव की शक्ति स्वरूपा। शिव का एक नाम दम्भ भी है। दम्भ शक्ति से भी सम्पन्न। दम्भ में भी विराजमान। दम्भ + आ, आ का अर्थ है नाश करना। दम्भ का नाश करने वाली।

233. **दैत्यदम्भविदारिणी** – दैत्यों का दम्भ (घमण्ड) नष्ट करने वाली। (शंकराचार्य जी के अनुसार वास्तव में अधार्मिक होते हुए भी अपने को धार्मिक व्यक्ति के रूप में प्रकट करना दम्भ है। अर्थात स्वंय की वस्तु–स्थिति से अन्यथा प्रकट करना दम्भ है अर्थात जो आप वास्तव में नही है, उसे प्रकट करने का प्रयास करना दम्भ है। गीता के 16 वे अध्याय के चौथे श्लोक में टीकाकारों ने इस शब्द को स्पष्ट किया है। अपने को सम्मानित करने के लिए वैसा न होने के बावजूद वैसी स्थिति दिखाने का नाम दम्भ है। यह सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनो अर्थो में होता है। आप धार्मिक नही है फिर भी धार्मिक दिखाने का प्रयास कर रहे है अर्थात कुछ अच्छा दिखाने का प्रयास कर रहे है। आप बुरे नही है पर बुरे लोगों के बीच अपने को स्वीकृत कराने के लिए उन जैसा बुरा आचरण करने लगना भी दम्भ है। अपना प्रयोजन सिद्ध करने के लिए किया जाने वाला ऐसा झूठा आडम्बर दम्भ है अर्थात दूसरों को धोखे में डालने के लिए ऊपरी दिखावट दम्भ है। ज्ञानी होते हुए भी मूर्खतापूर्ण आचरण करना दम्भ है जैसे रावण दम्भी था। मन्दिर में जाने के बावजूद मन्दिर में बैठे हुए भगवान के विपरीत आचरण करना दम्भ है। एक ओर तो मन्दिर जाना, दूसरी ओर रिश्वत लेना या अन्य कदाचार करना दम्भ है।)

234. **दमना** – स्वयं ही राक्षसों का या बुराइयों का दमन करने वाली। दमन का अर्थ है कुचलना या दबना। दमन करने या वश में लाने की क्रिया स्वरूपा। दमन+आ, आ का अर्थ है देना, नाश करना। राक्षसों द्वारा किए जा रहे दमन का नाश करने वाली। दमन को देने वाली अर्थात राक्षसों का दमन करने वाली। दमन + आ, एकाक्षरी कोष में आ का एक अर्थ शक्ति दिया गया है। दमन की शक्ति स्वरूपा अर्थात दमन क्रिया में रहने वाली शक्ति स्वरूपा। शत्रुओं या दुष्टों का दमन करने वाली। यहाँ दम में ल्यु प्रत्यय लगाने से दमना बना। यदि ल्युट् प्रत्यय लगाए तो दमनी शब्द बनेगा। अपने उपासकों को इन्द्रिय निग्रह को प्राप्त कराने वाली अर्थात उन्हें इन्द्रिय निग्रह करने की शक्ति देने वाली। दमं इन्द्रियनिग्रहं नयति प्रापयति। मनन शक्ति को देने वाली। मन का नाश करने वाली अर्थात अपने भक्तों को मन से परे ले जाने वाली। मनं मननं द्यति ददाति च। नी धातु में ड प्रत्यय लगाने से न शब्द बनता है जिसका अर्थ है ले जाने वाला, प्राप्त कराने वाला। स्त्रीलिंग में ना या नी हो जायेगा। नी धातु का अर्थ ले जाना होता है। नी प्रापणे से प्राप्त करना अर्थ होता है एवं प्रेरणार्थक धातु बनाने पर प्राप्त कराना अर्थ भी होता है।

235. **दन्तसौन्दर्या** – दाँतों के सौन्दर्य से विभूषित। सुन्दर दाँतों वाली को सुदति भी कहते हैं। सुदति का शाब्दिक अर्थ है सुन्दर दाँतों वाली, किन्तु यह शब्द सुन्दर महिला के लिए रूढ़ हो गया। आसुरी प्रवृत्तियों को

कुचलना जिनका सौन्दर्य है। दन्त चबाने का कार्य करते हैं। सौन्दर्य अर्थात जो दूसरों को सुख दे। असुरों के नाश से अन्य लोगों को सुख मिलता है।

236. **दानवेन्द्रविनाशिनी** – श्रेष्ठ राक्षसों (अधिक ताकतवर राक्षस) का विनाश करने वाली।

237. **दयाधारा** – जिनसे दया की धारा प्रवाहित होती है अर्थात जो दया करने वाली है। जो दया की आधार हैं ऐसा भी अर्थ निकल सकता है। अमरकोश के अनुसार जिस भाव के कारण दूसरे की रक्षा की जाती है वह दया है। दयते रक्ष्यते अनया इति दया।

238. **दमिनी** – इन्द्रिय निग्रह की सामर्थ्य से युक्त। देवी या देवता उन सभी चीजों को दे देते हैं जो उनके पास है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ अपने उपासकों को इन्द्रिय निग्रह की सामर्थ्य देने वाली। राक्षसों का दमन करने वाले भगवान शिव की पत्नी। राक्षसों का दमन करने वाले भगवान विष्णु की पत्नी अर्थात् लक्ष्मी जी से अभेद है जिनका या लक्ष्मी स्वरूपा या रूक्मिणी स्वरूपा। संस्कृत में स्त्री प्रत्यय में नियम है कि पुल्लिंग नाम में कहीं–कहीं पर अन्त में ङीप् प्रत्यय लगाया जाता है। बाह्य इन्द्रियों को दमन में करने की प्रवृत्ति से युक्त अर्थात इन इन्द्रियों को वश में रखने वाली और चित्त को बुरे कामों में प्रवृत्त न होने देने वाली। आत्म–नियन्त्रण वाली। दमः अस्य अस्ति इति दमी, दमी से दमिनी बना। दमिनी में आत्म नियन्त्रण पर जोर है जबकि दमना में बाह्य नियन्त्रण पर जोर है। दमन का अर्थ है दबाने या रोकने की क्रिया जैसे विकारों को रोक दिया, इन्द्रियों की चंचलता रोक दी। सामान्यतः अन्तःकरण को वश में करना शम माना जाता है और बाहरी इन्द्रियों को वश में करना दम माना जाता है पर कभी कभी पर्यायवाची के रूप में दोनो का प्रयोग कर लिया जाता है। दम नामक एक ऋषि भी थे, दम का अर्थ भगवान विष्णु, घर, दण्ड, शक्ति भी है। इस प्रकार दमिनी का अर्थ हुआ जो इनसे युक्त है। घर से युक्त अर्थात सारा ब्रह्माण्ड जिनका घर है। दम नामक ऋषि से युक्त अर्थात दम नामक ऋषि ने जिनकी उपासना की थी। भगवान विष्णु से युक्त अर्थात लक्ष्मी स्वरूपा या लक्ष्मी से अभेद है जिनका। (यदि दमनी शब्द है तो अर्थ होगा विष्णु जी को ले जाने वाली अर्थात उनके कर्तव्य की ओर ले जाने वाली अर्थात उनसे कर्तव्य कर्म कराने वाली या उन्हें सक्रिय करने वाली। दम अर्थात विष्णु जी, नी अर्थात ले जाना। दम अर्थात इन्द्रिय संयम को सक्रिय करने वाली।)

239. **दर्भपत्रविलासिनी** – कुश के पत्ते पर विलास करने वाली या सुशोभित होने वाली। देवी का सात्विक रूप कुशासन पर विराजमान है।

240. **धरणी** – भगवान विष्णु को प्राप्त कराने वाली अर्थात भक्तों को उनका साक्षात्कार कराने वाली। धर का एक अर्थ है भगवान विष्णु, नी प्रापणे धातु होती है। भगवान विष्णु की नायिका अर्थात उनका भी नेतृत्व करने वाली, उनका मार्गदर्शन करने वाली या उनके आगे आगे चलने वाली। भगवान विष्णु को प्रेरित करने वाली अर्थात उनके पालनकर्म या स्थितिकर्म के लिए प्रेरित करने वाली या इस कर्म के आवश्यक शक्ति देने वाली। धर का एक अर्थ है भगवान विष्णु या कृष्ण। शहतीर की तरह अर्थात् विश्व के भार को धारण किये हुये या सहन किये हुये। शहतीर मकान के ऊपरी भार को अपने में धारण करता है अर्थात् सहन करता है। धरिणी का एक अर्थ है शहतीर। शिरा (Vein) की तरह अर्थात् ब्रह्माण्ड या प्राणियों को जीवित रखने वाली। मनुष्य के शरीर में धमनी और शिरा होता है जिनका मनुष्य के जीवित रहने के लिए ठीक तरीके से कार्य करना बहुत आवश्यक है। धरणी का एक अर्थ है शिरा है। शाल्मलि वृक्ष के समान। (यदि धरिणी नाम है तो अर्थ होगा – धारण करने वाली। जिसने व्रत, नियम आदि को धारण किया है। जो धरा या पृथ्वी के रूप में अवस्थित है। स्थिर रूप में भी अवस्थित है।)

241. **धारिणी** – दूसरों में अपनी शक्ति का प्रवेश कराने वाली। दूसरों को तपस्या व्रत आदि नियमों को धारण कराने वाली अर्थात उनसे तपस्या या व्रत कराने वाली। जो सारे ब्रह्माण्ड को, विश्व को धारण किये हैं। सारा

ब्रह्माण्ड इनके अन्दर स्थित है। सूर्य का तेज प्रवेश कराने वाली। धारण करने वाली। अपनी शक्ति और गुणों को दूसरों को धारण कराने वाली। सूर्य मण्डल में धारण करने वाली शक्ति का नाम धारिणी है। वर्हिवाता पितरों की मानस कन्या का नाम धारिणी है जो मेरूपर्वत की भार्या है। पितृलोक में भी इनका स्थान है। धार शब्द या धारा शब्द में णिनि प्रत्यय लगाकर भी धारिणी शब्द बनाया जा सकता है। धारा अर्थात् ज्ञान की धारा, ऋद्धि सिद्धि की धारा या अन्य धारायें आदि। ज्ञान की धाराओं वाली। धारा अर्थात् मार्ग अर्थात् बहुत से मार्गों वाली अर्थात् जिनको पाने के बहुत से मार्ग है। आहुति में वसु धारा दी जाती है जिसमे घी की धारा अग्नि में छोड़ी जाती है। घी की धारा वाली अर्थात् अग्नि स्वरूपा, यह अर्थ भी हो सकता है। गंगा जी की अनेक धारायें है एवं अन्य नदियों की भी अनेक धारायें है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ गंगा जी या अन्य नदी स्वरूपा भी कर सकते है। गंगा जी का एक नाम त्रिपथगा भी है।

242. **धात्री** – प्रपंच (जगत) को धारण करने वाली। धाता अर्थात ब्रह्मा की परम–शक्ति। धात्री अर्थात माता/उपमाता के समान संसार का भरण पोषण करने वाली। धात्री (आँवला) की तरह अर्थात सर्वरोगनिवारिका या सभी कष्टों को दूर करने वाली। ''के समान'' लगाकर भी शब्दों का अर्थ निकाला जाता है जैसे गौ अर्थात गौ के समान अर्थात गौ के समान सीधी। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को धारण करने वाली। धात्री का अर्थ माता, उपमाता है। अतः इस नाम का अर्थ हुआ माता, उपमाता की तरह भक्तों का पालन–पोषण करने वाली। धात्री का अर्थ आँवला भी होता है जो बहुत से रोगों को ठीक करने के लिए प्रयुक्त होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ आँवले की तरह सर्वरोगनिवारिका या सभी कष्टों को दूर करने वाली। विश्व को धारण करने वाली अर्थात जो विश्व को सहारा दिए हुए है या टिकाए हुए है। धारकत्वाद् धात्री। प्राणियों का पोषण करने वाली अर्थात जीवित और स्वस्थ्य रहने के लिए आवश्यक भोज्य पदार्थ, हवा, पानी आदि देता रहता है। दधाति धारयति पोषयति चेति धाता। सभी मनोरथों को देने वाली। सर्वाभीष्टदात्री इति धात्री। धाञ् दाने धातु भी होती है। शुभ अर्थात मंगल या अच्छाइयों का पान करने से या दूसरों को पिलाने से भी इन्हें धात्री कहा जाता है। शुभस्य धयनात् पानात् वा धात्री। धेट् पाने। अच्छाइयों का पान करते है अर्थात अच्छाइयों को धारण किये हुए है अर्थात इनको अच्छी लगती है। ब्रह्मा में गई हुई अर्थात उनमें शक्ति या अंश रूप में विराजमान। धाता का अर्थ है ब्रह्मा में स्थित, अतः धत्री का अर्थ भी हुआ ब्रह्मा में स्थित। धातरि गताश्च तन्नामा। एक नियम है कि शब्द के आगे ''में विराजमान'' या ''का कारण'' लगाने से भी अर्थ निकल आता है। ब्रह्मा का कारण अर्थात ब्रह्मा जी को भी उत्पन्न करने वाली। अधाता को भी धाता कह देते है क्योंकि संस्कृत में कुछ शब्दों के आगे अ नहीं लगा होता है जैसे अपिधान की जगह केवल पिधान कह दिया जाता है। इस प्रकार धात्री का अर्थ हुआ जिसे किसी अन्य ने धारण नही किया है। अधात्री का एक अन्य अर्थ है कि जो ब्रह्मा से भी से बढकर है अर्थात श्रेष्ठ है। अधिको धाता इति अधाता, स्त्रीलिंग में अधात्री। धात्री का अर्थ आँवला भी है। शब्द के आगे ''के समान '' लगाने से भी शब्द का अर्थ निकल आता है। हमें गुण, कर्म आदि में समानता देखनी होती है। इस प्रकार धात्री का अर्थ हुआ– आँवला के समान अर्थात आँवला के समान रोग निवारिका अर्थात कष्टनिवारिका।

243. **धराधरधरप्रिया** – शिव की प्रिया। भगवान शिव जिन्हें बहुत पसन्द करते हैं। धराधर (पर्वत) को धारण करते हैं अर्थात पर्वत पर रहते हैं अर्थात कैलाश पर्वत पर रहते हैं अर्थात भगवान शिव। धराधर का अर्थ है पर्वत। धराधर के आगे जो धर शब्द है उसका अर्थ है धारण करने वाला। पर्वत को धारण करने वाला अर्थात शिव।

244. **धराधरसुतादेवी** – हिमाचल की पुत्री पार्वती देवी से जिनका अभेद है।

245. **सुधर्मा** – अच्छे या श्रेष्ठ धर्मों (जीवन मूल्य या गुण) वाली अर्थात दया, दाक्षिण्य, करूणा आदि गुणों से युक्त। अच्छे और उत्तम धर्म धारण करने वाली। अपने अच्छे धर्म पर अडिग रहने वाली।

246. **धर्मचारिणी** – धर्मानुसार आचरण और व्यवहार करने वाली। धर्म का आचरण करने वाली।

247. **धर्मज्ञा** – धर्म की ज्ञाता। धर्म का अर्थ है कर्तव्य और अकर्तव्य का ज्ञान, समाज को बाँधे रखने वाले जीवन मूल्य, मनु द्वारा बताये गये सत्य अंहिसा, न्याय आदि धर्म, पदार्थों मे रहने वाले आवश्यक और अपरिहार्य स्वरूपभूत गुण जैसे अग्नि में दाहकता, सूर्य में प्रकाशता आदि।

248. **धवला** – निर्मल, स्वच्छ, सफेद या उज्ज्वल। गौर वर्ण वाली या सफेद वस्त्र पहने हुए। सफेद गाय के समान पवित्र एवं उपयोगी। सफेद गाय का एक नाम धवला भी होता है। धवलस्वरूपा या सात्विक रूपा। धवम् कम्पम् लाति इति धवला अर्थात जो अनिश्चितता या संशय रूपी कम्पन को समाप्त कर देती है अर्थात नाश कर देती है।

249. **धूला** – जगत का भार धारण करने वाली। उपासक के भार को ग्रहण करने वाली अर्थात अपने ऊपर ले लेने वाली। धू का अर्थ है भार। उपासक बीमारी, ऋण आदि जिस किसी को भार समझता है वह धू या भार है। धू का अर्थ जटा भी होता है। जटा धारण करने वाली यह अर्थ भी निकलता है। धू का अर्थ कम्पन, चिंता भी होता है। लाति का अर्थ धारण करना भी होता है और नाश करना भी होता है।उपासकों की चिंताओं का नाश करने वाली। तुच्छ वस्तु में भी मौजूद। धूल (तुच्छ वस्तु) वाली अर्थात तुच्छ वस्तुओं में भी विद्यमान क्योंकि देवी सर्वव्यापक हैं। किसी भी नाम का अर्थ ''उसमें अंश रूप से विराजमान या शक्ति, गुण आदि रूप से विराजमान'' इस प्रकार निकाल सकते हैं।

250. **धनदा** – उपासकों को धन देने वाली। भौतिक और आध्यात्मिक दोनो प्रकार का धन देने वाली। वह वस्तु जिससे उपयोगी या इष्ट प्रयोजन की प्राप्ति होती है, धन कहलाती है। जीवन निर्वाह हेतु साधनभूत द्रव्य धन है।

251. **धनवर्धनी** – भक्तों के धन की वृद्धि करने वाली। धन का तात्पर्य है रूपया पैसा, जमीन जायदाद, स्वर्ण आदि रत्न, उपयोगी वस्तुयें। दिव्य गुणों को भी धन कहा गया है अर्थात् गीता के 16वें अध्याय में जो दिव्य गुण बताये गये है वे धन है। कुछ लोग प्राण को सबसे बड़ा धन मानते है। प्राण बढ़ाने वाली अर्थात् आयु बढ़ाने वाली। सन्तों के अनुसार भगवान का नाम सबसे बड़ा धन है।

252. **धीरा** – धैर्य गुण से सम्पन्न। जो कभी अधीर नहीं होती। धैर्य अर्थात प्रतिकूल परस्थिति आने पर नहीं घबड़ाना, दृढ और शान्त चित्त वाला बने रहना। विद्वान को भी धीर कहते हैं क्योंकि धी का अर्थ है बुद्धि। मतुप् अर्थ में र प्रत्यय लगा। समस्त विद्याओं से जो युक्त है वह है धीरा। शान्त स्वभाव वाली, अविचल, अटल और दृढप्रतिज्ञ। धियम् ईरयति इति धीरा। बुद्धि को प्रेरित करने वाली। निर्णय लेने के लिए प्रेरित करने वाली। धी का धी लिया एवं ईरयति का ईर ले लिया और दोनों को मिलाकर धीर शब्द बना जाता है। ईरयति का अर्थ Activate करती है, यह भी कर सकते हैं।

253. **अधीरा** – श्रेष्ठ कार्यों के सम्पादन के लिए हमेशा अधीर अर्थात तैयार या उतावली रहने वाली। शीघ्रता से या तेजी से श्रेष्ठ कार्य करने वाली।

254. **धीरतरा** – अन्यों की अपेक्षा जिनमें अधिक धैर्य गुण हैं।

255. **धीरसिद्धिप्रदायिनी** – धीर को या धीर की सिद्धि देने वाली। जो स्वयं में तो धीर हैं ही अपने भक्तों को भी धीर बना देती हैं।

256. **धन्वन्तरीधरा** – धन्वन्तरी की आयुर्वेद विद्या को धारण करने वाली अर्थात इस विद्या की ज्ञाता। मध्यम पद लोपी समास कर ऐसा अर्थ निकाला गया। धन्वन्तरी की तरह स्वस्थ करने वाली विद्या को धारण करने वाली। धन्वन्तरी को धारण करने वाली अर्थात स्वरूप देने वाली अर्थात विद्या देने वाली। धन्वन्तरी के पास जीवनदायिनी

विद्या है। धनु + अन्तर से धन्वन्तर शब्द बनता है जो स्त्रीलिंग में धन्वन्तरी है। धनु या धनुष् का अर्थ संकल्प होता है। अन्तर का अर्थ होता है मध्य में, ग्रहण करने वाला। इस प्रकार धन्वन्तरी का अर्थ हुआ शुभ संकल्प ग्रहण करने वाला व्यक्ति या चेतना। मैं आत्मस्वरूप हूँ, यह सबसे बड़ा शुभ संकल्प है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ शुभ संकल्प वाली चेतना को धारण करने वाली अर्थात सत्–चित्–आनन्द इस प्रकार की चेतना को धारण करने वाली। यदि शब्द के आगे अच्छा या बुरा न लिखा हो तो उसका अर्थ प्रायः अच्छा ही लिया जाता है। धनुष का अर्थ है संकल्प, अन्तर का अर्थ है भीतर, पकड़ना, ग्रहण करना। भीतरी संकल्प अर्थात् मैं सत्चित् आनन्द स्वरूपा हूँ इस प्रकार के संकल्प से युक्त चेतना धन्वन्तरी है।

257. **धीरा** – भक्तों को बुद्धि, विद्या देने वाली। धीम् बुद्धिम् राति ददाति इति धीरा। धीरा नायिका के समान गुणों वाली अर्थात गलत कार्य को देखकर क्रोध करने वाली। धीरा का अर्थ गुडूची अर्थात गिलोय भी होता है। गुडूची के समान सर्वरोगनिवारिणी अर्थात सभी कष्टों को दूर करने वाली। विनीत, नम्र, मन्द, बलवान आदि भी धीर के अर्थ होते हैं।

258. **ध्येया** – जो ध्यान करने योग्य है। लक्ष्यस्वरूपा अर्थात जो सभी प्राणियों का लक्ष्य है अर्थात अन्तिम रूप से इन्हीं को पाना है क्योंकि देवी सत्–चित्–आनन्द स्वरूपा ब्रह्म हैं। ध्येय+आ, आ का अर्थ है देना, नाश करना। गुरु के माध्यम से सभी को जीवन का लक्ष्य देने वाली अर्थात बताने वाली। गुरु में से शक्ति ही बोलती है अर्था देवी ही बोलती हैं। दुष्टों के लक्ष्य का नाश करने वाली।

259. **ध्यानस्वरूपिणी** – ध्यान का स्वरूप धारण करने वाली। लोग जिनका ध्यान करते हैं। स्वरूप वह गुण या विशेषता है जो कभी अलग नहीं होती। ध्यान नामक सार गुण या मूल गुण या कभी न अलग होने वाले गुण से युक्त।

260. **नारायणी** – भगवान नारायण की शक्ति। नार का अर्थ है जीव समूह। अयन का अर्थ है आश्रय। जीव समूह की आश्रय यह अर्थ भी हो सकता है। नार का अर्थ ज्ञान, भक्ति, परमाप्रकृति है। अयन का अर्थ है आश्रय अर्थात धारण करने वाला। ज्ञान को धारण करने वाली। भक्ति का आश्रय, परमा प्रकृति का आश्रय। जो गुणों में नारायण (विष्णु) के समान है अर्थात् उनके समान यश, तेज, रूप (सौन्दर्य) आदि में उनके समान है। जो भगवान नारायण अर्थात् विष्णु जी की शक्ति स्वरूपा है/पत्नी स्वरूपा या उनकी पत्नी से अभेद है जिनका। नार शब्द का अर्थ सारूप्य–मुक्ति है, अयन अर्थात् आश्रय। इस मुक्ति का आश्रय अर्थात् देने वाली। किये हुये पाप को भी नार कहते है। अयन का अर्थ होता है गमन। किये हुये पापों का गमन जिनसे होता है वे नारायणी है अर्थात् पूर्व में किये हुये सभी पापों को नष्ट करने वाली। नार का अर्थ है पुण्यमोक्ष एवं अयन का अर्थ है अभीष्ट ज्ञान। मोक्ष एवं ज्ञान जिससे हो अर्थात् इसे देने वाली। अयन का अर्थ होता है गमन (गति) और गति का अर्थ ज्ञान तथा प्राप्ति भी होता है। ब्रह्मबैवर्त पुराण में नारायण शब्द के इस प्रकार के अर्थ दिये गये हैं, जिसके आधार पर नारायणी शब्द के अर्थ किये गये हैं। जल है रहने का स्थान है जिनका। नारं नीरम् अयनम् यस्या इति नारायणी। अयन का अर्थ गन्तव्य स्थान या लक्ष्य है। नार का अर्थ है नर (मनुष्य) का समूह। मनुष्यों का गन्तव्य स्थान नारायणी है। मनुष्यों के द्वारा बनाये हुए मन्दिर आदि या जल से पैदा हुए तत्व (पदार्थ) हैं नार, उन सभी का है निवास स्थान या मार्ग जो, वह है नारायण या नारायणी। नाराणि, नरात् जातानि, तत्वानि नाराणि। तेषाम् इयम् अयनः। जो दोषों का निवास स्थान नहीं है अर्थात जिनमें कोई दोष नहीं है। अराः दोषाः तेषाम् अयनो न भवति इति नारायणः/नारायणी। न रमणीयः इति अरः। अतः अरः का अर्थ है जो रमणीय न हो अर्थात दोष। अराः दोषाः तेषाम् अयनो न भवति इति नारायणः, स्त्रीलिंग में नारायणी। अर का अर्थ है दोष तो नारा का अर्थ हुआ गुण। जो गुणों का घर है अर्थात जिनमें अच्छे गुण हैं। नारा गुणास्तेषाम् अयनः इति नारायणः, स्त्रीलिंग में नारायणी। जो मनुष्यों में तत्व के रूप में गये हैं वे हैं नारा या देवता। अतः नारायण या नारायणी का अर्थ हुआ

देवताओं का निवास स्थान। चक्षु में सूर्य देवता, कान में आकाश देवता रहते हैं। नारः नरेषु गतास्तत्वमानिनः सुराः, तेषाम् अयम् अयनः इति नारायणः, स्त्रीलिंग में नारायणी। मुक्त पुरुषों के रहने का स्थान, गन्तव्य, मार्ग। मुक्त पुरुषों का आश्रय। नारा मुक्ताः तेषाम् अयनः इति नारायणः, स्त्रीलिंग में नारायणी। जिन्हें मनुष्यों के समुदाय के द्वारा जाना जाता है या प्राप्त किया जाता है। नरसमुदायो नारम् तेन अयते, तस्य अयम् अयनम् पन्था इति नारायणः, स्त्रीलिंग में नारायणी। मनुष्य के समुदाय का रास्ता, गन्तव्य स्थान या लक्ष्य। जिनको निर्दोष ज्ञान के द्वारा जाना जाता है। नारं निर्दोषं ज्ञानम, तेन अयते गम्यते इति नारायणः, स्त्रीलिंग में नारायणी। निर्दोषत्वात् नारश्चा अयम् सर्वेषाम् अयनश्च च इति नारायणः, स्त्रीलिंग में नारायणी। जो निर्दोष है वह है नार। ऐसा निर्दोष जो सभी का आश्रय है। मनुष्यों का गन्तव्य या लक्ष्य या मार्ग या आश्रय। नराणाम् अयनः एव नारायणः, स्त्रीलिंग में नारायणी। नार का एक अर्थ है भक्ति, भक्ति का आश्रय नारायणी है। नर का अर्थ है आत्मा, आत्मा से जो उत्पन्न है वह है नार। पंचमहाभूत परमात्मा से उत्पन्न होने के कारण नार हैं। पंचमहाभूतों में शक्ति रूप से व्याप्त नारायणी है। विज्ञानमय कोश की चेतना को नार एवं मनोमय कोश की चेतना को नर कहते है। विज्ञानमय कोश की चेतना का आश्रय या आधार। नर अर्थात् मनुष्यों को संरक्षण देने वाली। अयन अर्थात् आश्रय अर्थात् संरक्षण देने वाला। मनुष्यों को संरक्षण देने वाली, उसकी परिस्थिति पर विचार करने वाली, निरीक्षण करने वाली। श्रीमद् भागवत में अजामिल के प्रकरण में नारायण शब्द का प्रयोग भगवत् परायणता के लिए प्रयुक्त हुआ है अर्थात् यह भाव कि भगवान जो भी कर रहे है सब ठीक कर रहे है, अतः समग्र अस्तित्व के प्रति स्वीकार भाव ही भगवत परायणता अर्थात् नारायण या नारायणी का अर्थ है।

261. **नारसिंही** – नरसिंह भगवान की शक्ति। प्राणियों में मनुष्य और पशुओं मे सिंह सबसे श्रेष्ठ माना जाता है। मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ स्थिति में पहुँचाने वाली अर्थात आत्मस्वरूप में स्थित कराने वाली।

262. **नित्यानन्दा** – हमेशा आनन्द में रहने वाली अर्थात हमेशा आनन्दित रहने वाली। जिनका आनन्द शाश्वत है अर्थात सदा रहने वाला है।

263. **नरोत्तमा** – मनुष्य जाति में सर्वश्रेष्ठ। जब मनुष्य के शरीर रूप में अवतार लेती हैं तो सुन्दरता, शक्ति, ऐश्वर्य, गुणों में सर्वश्रेष्ठ होती हैं।

264. **नक्ता** – रात्रि वाली अर्थात् जिनकी उपासना प्रायः रात में होती है। नक्तम् अस्य अस्ति इति नक्तः (रात वाला), स्त्रीलिंग में नक्ता हुआ। शब्दकल्पद्रुम में नक्ता का अर्थ रात्रि की तरह अनिष्टकारी लिखा गया है। रात्रि में चोरी, डकैती या अन्य अनिष्ट कार्य होते है अतः रात्रि अनिष्ट कर्म का प्रतीक है। देवी के सन्दर्भ में नक्ता का अर्थ होगा जो दुष्टों, राक्षसों के लिए रात्रि की तरह अनिष्ट करने वाली है अर्थात् उनका नुकसान करने वाली है। एकाक्षरीकोश में न का अर्थ हेरम्ब (गणेश जी), नाद, ज्ञान दिया गया है एवं क्ता का अर्थ मातृका दिया गया है। इस प्रकार नक्ता का अर्थ गणेश की माँ, नाद को उत्पन्न करने वाली कर सकते है। रात्रिस्वरूपा अर्थात रात्रि के समान सुख या विश्राम देने वाली। रात्रि में व्यक्ति को सुख मिलता है। विनाशिका शक्ति स्वरूपा अर्थात दुष्टों का विनाश करने वाली या समय आने पर जगत का प्रलय करने वाली। रात्रि में दिन या प्रकाश का नाश हो जाता है अतः यह संहारिका या विनाशिका शक्ति का प्रतीक है। लज्जित या शर्मिन्दा से युक्त। काली जी ने जब शिव की छाती पर पैर रख दिया था बड़ी लज्जित हो गई थीं। नज् धातु का अर्थ लजाना या शर्माना होता है। नज्+क्त+टाप् इति नक्ता। नपुंसक लिंग में नक्तम् का अर्थ रात्रि होता है पर नक्ता शब्द स्त्रीलिंग में है। देवी पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसक लिंग में हर लिंग में हैं और हर लिंग से परे भी हैं अतः नपुंसक लिंग वाला अर्थ भी लिया जा सकता है। रात्रि स्वरूपा।

265. **नक्तवती** – रात्रि से युक्त अर्थात तमोगुण से युक्त। काली तमोगुणी देवी हैं। रात्रि से युक्त अर्थात जिनकी

आराधना प्रायः रात्रि में होती है। रात्रि स्वरूपा। वतुप् प्रत्यय कहीं कहीं युक्त अर्थ नहीं देता है जैसे आनन्दमय कोष में। रात्रि की शक्ति से युक्त। रात्रि की शक्ति भी मोक्षदायिनी होती है।

266. **नित्या** – जो हमेशा रहती हैं। शाश्वत। जिसका न जन्म होता है न मरण होता है। उत्पत्ति और विनाश रहित। नियमेन भवः इति नित्या। नियम से होने वाली अर्थात प्रतिदिन होने वाली घटना या क्रियास्वरूपा। अवश्यकरणीय या अपरिहार्य कर्म स्वरूपा। अटल नियम स्वरूपा। नित्य आदि शक्ति से उत्पन्न आवरण शक्तियों को भी नित्या कहा गया है जो आदि शक्ति की सेवा करती है। नित्या देवियाँ ऐसी आवरण शक्ति रूपा हैं, जिनकी प्रत्येक दिन या तिथि को पूजा/आराधना की जाती है। जो नित्य पदार्थो अर्थात सृष्टि से लेकर प्रलय तक अस्तित्व में रहने वाले पदार्थो के रूप में है। पृथ्वी, आकाश, परमाणु, प्रकृति, काल ये सब नित्य पदार्थ कहे जाते है। नित्य (शिव या विष्णु) की शक्ति स्वरूपा। नित्य +आ=नित्या। एकाक्षरी कोष में आ का एक अर्थ शक्ति दिया गया है। नित्य पराशक्ति या परमाशक्ति से प्रादुर्भूत शक्तियों को भी नित्या कहा गया है। ऐसी नित्या शक्तियों के स्वरूप वाली या ऐसी नित्या शक्तियों वाली अर्थात ऐसी नित्या शक्तियों से युक्त अर्थात इन नित्या शक्तियों द्वारा जिनकी उपासना की जाती है या सुरक्षा का घेरा बनाया जाता है। नित्या अस्या अस्ति इति नित्या (नित्या देवियों वाली अर्थात नित्या देवियों से युक्त)। शाक्तानन्द तरंगिणी पुस्तक के अनुसार वह शक्ति जिसमें स्वेच्छा से ब्रह्मा, विष्णु और महेश पैदा होते है और उसी में लय हो जाते है, नित्या शक्ति कहलाती है। नित्य का अर्थ है अक्षर। इस प्रकार नित्या का अर्थ हुआ अक्षर में रहने वाली शक्ति। परमाणु रूप वाली पृथ्वी स्वरूपा। वैशेषिक दर्शन में परमाणु रूप पृथ्वी को नित्य एवं अन्य रूप को अनित्य माना है। एकाक्षरीकोश में नि के कई अर्थ दिये गये हैं जैसे निश्चय, दान, मोक्ष, कौशल आदि। त्या के अर्थ हैं धरणी, नदी। जो निश्चय की नदी है अर्थात जिनमें निश्चय ही निश्चय है अर्थात संशय से रहित। दान की नदी अर्थात दान के रूप में प्रवाहित होने वाली अर्थात निरन्तर दान देने में लगी हुई। ऐसे शब्द ले सकते हैं जो नि से शुरू हुए हैं। नि का अर्थ नि से आरम्भ होने वाले शब्द कर सकते हैं। नित्य लक्ष्मी से नित्या शब्द ले सकते हैं। नित्या+आ, आ का अर्थ है देना। भक्तों को नित्य अर्थात स्थाई लक्ष्मी देने वाली। नित्य का अर्थ अधिक स्थाई वस्तु भी होता है। अधिक स्थाई वस्तुओं की शक्ति स्वरूपा। एकाक्षरी कोश में आ का एक अर्थ शक्ति दिया गया है। नित्य नाम है ब्रह्म, शिव एवं विष्णु का। शिव की शक्ति स्वरूपा। ब्रह्म की शक्ति स्वरूपा। विष्णु की शक्ति स्वरूपा।

267. **नीलजीमूतसन्निभा** – नीले या काले मेघ के समान आभा वाली। जीमूत ऐसे बादल होते हैं जो बरसने वाले होते हैं। सन्निभ का अर्थ होता है की तरह, सदृश।

268. **नीलांगी** – नीले वर्ण वाले अंगों से विभूषित। नील का अर्थ आकाश भी होता है अतः इस नाम का अर्थ है आकाश जिसका अंग है। नीला रंग आकाश का है, अंगति का अर्थ है गच्छति अर्थात जाती है। इस प्रकार नीलांगी का अर्थ होगा आकाश की ओर जाने वाली अर्थात सर्वव्यापक। मनोविज्ञान के अनुसार नीला रंग बल, पौरुष एवं वीरभाव का प्रतीक है, इनसे युक्त। नीला रंग पानी का प्रतीक है जो जीवन देने का प्रतीक है। इस प्रकार नीलांगी का अर्थ हुआ जीवन शक्ति को प्राप्त किये हुए अर्थात उससे युक्त अर्थात जीवन शक्ति देने वाली। नीला रंग धर्मचक्र का भी प्रतीक है। नीला रंग एकता, शान्ति, ठण्डक, बल, पौरुष, वीरता, वफादारी और सतर्कता का प्रतीक है। मन को शान्ति प्रदान करने तथा क्रोध दूर करने के लिए इस रंग का प्रयोग किया जाता है।

269. **नीलवस्त्रा** – नीले वस्त्र धारण करने वाली। आकाश रूपी वस्त्र धारण किये हुए। नामों में विरोधाभास देखना मिलने पर आश्चर्य नहीं होना चाहिये क्योंकि देवी इच्छानुसार कोई सा भी रूप धारण कर सकती हैं। अन्यथा भी अलग अलग अवतारों में अलग अलग रूप हैं और सभी रूप एक ही हैं। वस्त्र शरीर की रक्षा करते हैं अर्थात वस्त्र का अर्थ रक्षा करने वाला भी होता है। आकाश तत्व या जल तत्व की रक्षा करने वाली। समुद्र नीले रंग का दिखता है। समुद्र है वस्त्र जिनका अर्थात समुद्र जिसके चारों ओर है अर्थात भूमि स्वरूपा।

270. **नीलपर्वतवासिनी** – नील पर्वत में वास करने वाली। कामाख्या देवी का वास नीलांचल पर्वत माना गया है। कुछ लोग हरिद्वार के पास और कुछ लोग जबलपुर के पास नर्मदा नदी के किनारे नील पर्वत की स्थिति मानते हैं। नर्मदा के किनारे वाला नील पर्वत भगवान शिव की तपस्थली है। निषध पर्वत के उत्तर में मेरु पर्वत है और मेरु पर्वत के उत्तर में तीन पर्वतश्रेणियाँ है जिनमें से एक का नाम नील पर्वत है।

271. **सुनीलपुष्पखचिता** – सुन्दर नीले पुष्पों से रचित है जिनका विग्रह।

272. **नीलजम्बुसमप्रभा** – नीले/काले जामुन के समान कान्ति वाली। संस्कृत में नीले का अर्थ नीला भी होता है और काला भी होता है।

273. **नित्याख्याषोडशीविद्या** – महानित्या नामक षोडशी देवी स्वरूपा। कुल 16 नित्या देवियाँ है जिनमें 15 नित्या देवी चारों ओर आवरण देवी के रूप में हैं और बीच में जो नित्या है वह महानित्या या षोडशी कहलाती हैं। नित्य वर्णन की जाने वाली षोडशी विद्या से सुशोभित। आख्यात का अर्थ है वर्णन किया हुआ।

274. **नित्या** – ब्रह्मस्वरूपा या विष्णु स्वरूपा। नित्य ब्रह्म का या भगवान विष्णु का नाम है। त्रिकाल व्यापी। अपरिणामिनी। हमेशा अजर, अमर स्वरूप वाली। ब्रह्म की शक्ति या भगवान विष्णु की शक्ति। नित्य अर्थात निरन्तर, तात्पर्य है ब्रह्म के साथ स्थायित्व से रहने वाली।

275. **नित्यसुखावहा** – नित्यसुख को धारण करने वाली। वह् धातु का अर्थ ढोना या वहन करना होता है। हमेशा रहने वाले सुख अर्थात आनन्द को बुलाने वाली अर्थात प्राप्त करने वाली अर्थात धारण करने वाली। आवहति अर्थात आवाहन करना अर्थात बुलाना या प्राप्त करना। अपने भक्तों के लिए नित्यसुख अर्थात आनन्द को बुलाने वाली अर्थात उन्हें बुलाकर देने वाली अर्थात देने वाली। निरन्तर सुख धारण करने वाली ।

276. **नर्मदा** – नर्मदा नदी के स्वरूप वाली। नर्म का अर्थ है सुख भी होता है। प्राणी मात्र को सुख देने वाली। आनन्द या हर्ष पैदा करने वाली। जिसे देखकर विषादग्रस्त देवताओं को हर्ष या सुख का अनुभव हुआ। नरों अर्थात मनुष्यों का अहंकार नाश करने वाली। नर, मद, आ, आ का अर्थ है नाश करना। हास –परिहास युक्त वाणी देने वाली। नर्म का एक अर्थ हास –परिहास युक्त वाणी भी है।

277. **नन्दनानन्दा** – नन्दन को अर्थात कृष्ण को आनन्द देने वाली। नन्दन वन को आनन्दित करने वाली या उसमें शोभा का संचार करने वाली।

278. **नन्दानन्दविवर्द्धिनी** – नन्द के आनन्द को विशेष रूप से बढ़ाने वाली।

279. **यशोदानन्दतनया** – यशोदा और नन्द की पुत्री के रूप में हैं जो ।

280. **नन्दनोद्यानवासिनी** – नन्दन उद्यान में रहने वाली।

281. **नागान्तका** – नाग (सर्प की वह जाति जो लोगों को डसकर विनाश करती है) का अन्त करने वाली। मृत्यु भय का नाश करने वाली। सर्प मृत्यु भय का प्रतीक है। गति का नाश करने वाली अर्थात प्रलय करने वाली या मनुष्य का प्राण हरने वाली। सर्प गति (क्रिया–कलाप) का प्रतीक है।

282. **नागवृद्धा** – नागों के बीच में वृद्ध अर्थात आदरणीया/पूजनीया। वृद्धों को आदरणीय माना जाता है। कठोपनिषद में वृद्ध शब्द ज्ञानी के लिए भी प्रयुक्त होता है। मनसा देवी नागों की देवी हैं और सभी नाग उनकी आराधना करते हैं। नाग का अर्थ पर्वत भी होता है। पर्वत अर्थात हिमालय अर्थ कर सकते हैं। जो हिमालय के द्वारा वृद्धि को प्राप्त अर्थात बढ़ाई गई अर्थात पालन किया गया। हिमालय की कन्याओं में जो सबसे बड़ी है। नग का अर्थ है पर्वत अर्थात हिमालय। स्वार्थ (अर्थ बदले बिना) या सन्तान अर्थ देने के लिए अण् प्रत्यय लगाने से

नग से नाग बना। नाग का अर्थ नग अर्थात पर्वत। नाग जाति में जो अतिशय श्रेष्ठ हैं। वृद्ध का अर्थ श्रेष्ठ है। नाग का एक अर्थ हाथी भी है। देवी के गजस्वरूपों में जो श्रेष्ठ है।

283. **नागपत्नी** – नाग जाति की पालन करने वाली। यहाँ पत्नी का अर्थ पालन करने वाली से है। नाग जाति की रक्षा करने वाली। पालन करने में रक्षा का भी अर्थ आ जाता है। पत्नी का अर्थ पालन (रक्षा) करने वाली, पतन से बचाने वाली होता है।

284. **नागिनी** – कुण्डलिनी स्वरूपा। मूलाधार चक्र में धवल वर्ण की सर्पाकार आकृति लिये कुण्डलिनी होती है। नागस्वरूपा। जिस नाग को शिव धारण किये हैं उसके स्वरूप को धारण करने वाली।

285. **नमिताशेषजनता** – सम्पूर्ण जन समूह को झुका देने वाली। (अपने गुणों से या कुछ देकर या मनोकामना पूरी कर, जिसे कुछ दिया जाता है वह झुक जाता है।) समस्त जनता को झुका देने वाली अर्थात अच्छे गुणों से युक्त करने वाली। श्रेष्ठ विद्याओं द्वारा जो सभी भक्तों को सुशील बना देती है। फल लगने पर वृक्ष झुक जाते हैं।

286. **नमस्कारवती** – नमस्कार वाली अर्थात जिसे सब नमस्कार करते हैं। नमस्कार के गुण से युक्त है। यदि नमस्कारवती नमः यह एक नाम किया जाये तो इसका अर्थ होगा जो नमस्कार के गुण से युक्त है और भगवान शिव के प्रति झुकने वाली है।

287. **पीताम्बरा** – भगवान विष्णु की शक्तिस्वरूपा। पीताम्बर + आ, एकाक्षरी कोष में आ का एक अर्थ शक्ति दिया गया है। मांगलिकता (शुभता) को धारण करने वाली। विद्या, ज्ञान और सकारात्मक ऊर्जा को धारण करने वाली। पीला रंग मांगलिकता का प्रतीक है जिसके कारण विवाह में वधू पीले वस्त्र पहनती हैं। यह रंग ज्ञान और विद्या का भी प्रतीक है। पीले रंग से सकारात्मक ऊर्जा आती है एवं नकारात्मक ऊर्जा दूर होती है। अम्बर अर्थात वस्त्र अर्थात जिसे धारण किया जाता है। दाहकता अग्नि का वस्त्र हुआ क्योंकि इसे अग्नि द्वारा धारण किया जाता है। पीले वस्त्र धारण करने वाली। स्थिति शक्ति से युक्त या स्थिति शक्ति स्वरूपा। पीला रंग पृथ्वी का होता है और पृथ्वी स्थिति तत्व है। पीला रंग (स्थिति शक्ति या स्तम्भनशक्ति) है वस्त्र जिनका। वस्त्र वह है जिसे धारण किया जाता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ स्थिति शक्ति या स्तम्भन शक्ति को धारण करने वाली। वस्त्र शरीर की रक्षा करते हैं अतः अम्बर या वस्त्र का अर्थ रक्षक भी होता है। पीला रंग पृथ्वी का होता है। पीले रंग से बोधित पृथ्वी की रक्षिका, यह अर्थ हुआ।

288. **पार्वती** – पार्वतीरूपा। पर्वतस्य अपत्यम् इति पार्वती अर्थात पर्वत की पुत्री पार्वती। पर्वत के समान अडिग अर्थात दृढ़संकल्प वाली। पर्वत की तरह दृढ़ और उन्नत। अडिग आस्था (शिव के प्रति) वाली। गुणों में, शक्ति में, सुन्दरता में सबसे ऊपर क्योंकि पर्वत ऊँचाई का प्रतीक है। पार्वती जी ने शिव को पाने का संकल्प लिया था और उसे पूरा करके ही मानी। पर्वों अर्थात उत्सवों की अधिष्ठात्री देवी। इन पर्वों में होने वाली पूजा का फल देती हैं। पर्वों का निर्माण और उसे मनाये जाने की प्रेरणा देना, पर्वों में विभिन्न विधि विधान का निर्धारण करना देवी के द्वारा ही हुआ है। तीन पर्वों अर्थात इच्छा शक्ति, ज्ञान शक्ति व क्रिया शक्ति के सामरस्य से युक्त। पर्वत का एक अर्थ अन्तरिक्ष भी है। जो अन्तरिक्ष में व्याप्त है। शिवोपासना अंक में पार्वती एक अर्थ दिया गया है – पर्वत (अज्ञान)से निकली ब्रह्माकार वृत्ति। पार्वती का अर्थ है – Beyond ordinary consciousness of mind and matter। पर्व (तिथि, त्योहार), पर्व में जिनकी ख्याति है अर्थात् पर्वों की अधिष्ठात्री देवी। ती शब्द ख्याति अर्थ में आता है।

289. **पीताम्बरविभूषिता** – पीले वस्त्र से जो सुशोभित है। मंगलकारी गुण एवं रक्षाशक्ति रूपी वस्त्र से सुशोभित। पीला रंग मांगलिक रंग कहा जाता है और रक्षाशक्ति का भी प्रतीक है। वस्त्र शरीर के बाहर होकर

शरीर की रक्षा करते हैं अतः वस्त्र का अर्थ रक्षक भी है। पृथ्वी पीली होती है। पृथ्वी रूपी वस्त्र से सुशोभित अर्थात पृथ्वी के भीतर व्याप्त शक्ति स्वरूपा।

290. **पीतमाल्याम्बरधरा** – पीली माला एवं वस्त्र धारण करने वाली।

291. **पीताभा** – पीली कान्ति से युक्त। उनके शरीर से पीले रंग की कान्ति निकलती है। मांगलिकता की आभा वाली अर्थात भक्तों को मांगलिकता का प्रकाश देने वाली।

292. **पिङ्गमूर्द्धजा** – पिङ्गल रंग के बालों वाली। मूर्द्धजा का अर्थ है बाल। पिङ्गल पीले रंग में भूरापन लिये रंग होता है। उनके बालों से ऐसी कान्ति निकलती है।

293. **पीतपुष्पार्चनरता** – पीले पुष्पों से अर्चना करने पर प्रसन्न रहने वाली या पीले पुष्प से अर्चना करना जिन्हे अच्छा लगता है। रम् धातु से रत बनाने पर अच्छा लगना या प्रसन्न होना अर्थ निकलता है। पीले पुष्प के द्वारा (भगवान अर्थात शिव के) पूजन में निरत अर्थात लगी रहती। उपासक न्यास प्रक्रिया द्वारा देवी से अभेद सम्बन्ध स्थापित कर लेता है। इस कारण उपासक ने अर्चना की अर्थात देवी ने अर्चना की, यह अर्थ निकल आता है। रता का अर्थ है प्रसन्न, लगी हुई।

294. **पीतपुष्पसमर्चिता** – पीले पुष्पों से जिनकी विधिवत पूजा की गई अर्थात पीले पुष्पों से जिनकी विधिवत पूजा की जाती है। अर्चिता का अर्थ है पूजा की गई जो भूतकाल है पर कृत्य ल्यूटो बहुलम् सूत्र से वर्तमान काल के लिये भी अर्थ निकल आता है। पीले पुष्पों से जो अर्चित की जाती हैं अर्थात जिनपर लोग पीले पुष्प चढ़ाते हैं।

295. **परप्रभा** – श्रेष्ठ या उत्कृष्ट प्रभा (प्रकाश) से युक्त। श्रेष्ठ प्रभा नामक अप्सरा के समान सुन्दर।

296. **पितृपतिः** – पितरों की रक्षिका अर्थात् उनका पालन करने वाली। पितरो तक अन्न या भोज्य पदार्थ पहुँचा कर उनको जीवित रखना ही उनका पालन करना या रक्षा करना होता है। पालन में रक्षा करना अर्थ भी आता है। स्वधा बोलकर पितरो का अन्न पहुँचाया जाता है और यह स्वधा देवी का ही रूप है। अध्यात्म के पक्ष में मनुष्य के चित्त में पड़े हुए संस्कार पितृ कहे गये है। अपने उपासकों को ऐसे संस्कारों से रक्षा करने वाली अर्थात् चित्त में बुरे संस्कार नहीं आने देती है एवं नकारात्मक संस्कारों को हटा देती है। अपने उपासकों को सन्मार्ग में चलाकर सिर्फ अच्छे संस्कार बनने देती है। अपने पिता की भी रक्षिका। पितृ देवों की रक्षा करने वाली। पितरों की स्वामिनी। स्वामी का अर्थ होता है देखभाल करने वाला, आवश्यक चीजों को उपलब्ध कराने वाला, रक्षा करने वाला तथा जो व्यक्ति अधीनस्थ है उसे अपने स्वामी की बात माननी पड़ेगी।

297. **परसैन्यविनाशिनी** – शत्रुओं की सेना का विनाश करने वाली। पर का अर्थ शत्रु है। मनुष्य के विकार ही शत्रु की सेना हैं, उनका विनाश अर्थात पूर्ण नाश करने वाली। संस्कृत में नश् अदर्शने धातु होती है जिससे नाश का अर्थ होता है अदृश्य बनाना अर्थात किसी वस्तु को उसके कारण में वापस भेज देना नाश कहलाता है।

298. **परमा** – सभी देवताओं में सर्वोच्च। जो गुण, शक्ति, सौन्दर्य, ऐश्वर्य आदि सभी चीजों में अन्य सभी से श्रेष्ठ है। परम श्रेष्ठ शक्ति से सम्पन्न। अपरिमेय शक्ति वाली। श्रेष्ठ ज्ञान स्वरूपा या श्रेष्ठ ज्ञान से युक्त। पर का अर्थ है श्रेष्ठ एवं म का अर्थ है ज्ञान। श्रेष्ठ चीजों का निर्माण करने वाली। माति का अर्थ है निर्माण करना। सर्वश्रेष्ठ सत्ता अर्थात ब्रह्म को भी मापने वाली अर्थात उसे सीमित बनाने वाली। मापना तभी सम्भव है जब पदार्थ सीमित हो। मा का अर्थ माया है। जो माया से परे है। मा का अर्थ ज्ञान या बुद्धि भी होता है इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ सर्वश्रेष्ठ ज्ञान या बुद्धि वाली। पर का अर्थ है श्रेष्ठ। प्रकृति स्वरूपा। कहा गया है प्रकृतिः परमाशक्तिः विकृतिः प्रतिबिम्बता। प्रकृति परमाशक्ति है और विकृति (परिवर्तन) उसका प्रतिबिम्ब है। षट्चक्र निरूपण ग्रन्थ में

लिखा गया है असम्भव को सम्भव बना देने वाली शक्ति परमा शक्ति है जो माया शक्ति है। वहाँ देवी पुराण के एक श्लोक का उल्लेख किया गया है जिसमें परमा शक्ति का लक्षण बताया है – विचित्रा कार्यकारणा चिन्तितातिफलप्रदा। स्वप्नेन्द्रजालवत् लोके माया तेन प्रकीर्तिता। विलक्षण कार्य को करने वाली तथा चिन्तन या ध्यान करने पर अति फल को देने वाली तथा स्वप्न में माया जाल की तरह चीजों को रचने वाली माया शक्ति ही परमा शक्ति है। पर ब्रह्म को सीमित करने वाली शक्ति परमा है अर्थात मायाशक्ति स्वरूपा। मीयते अर्थात सीमित करती है। श्रेष्ठ देवों का भी मापतौल करने वाली अर्थात् उन्हें सीमित करने वाली। पर का अर्थ है श्रेष्ठ एवं मा का अर्थ है मापन। उत्कृष्ट गुण वाली। सबसे उत्कृष्ट अर्थात् शक्ति, गुण, सौन्दर्य, ऐश्वर्य आदि सभी में सर्वश्रेष्ठ है। परमपद अर्थात् मोक्ष या अपना लोक देने वाली। परम + आ, आ का एक अर्थ है देना। सर्वश्रेष्ठ शब्द अर्थात् ओम् के स्वरूप वाली। श्रेष्ठ देवों या श्रेष्ठ स्थानों का निर्माण करने वाली। पर अर्थात् श्रेष्ठ एवं मा का एक अर्थ है निर्माण करना।

299. **परतन्त्रा** – श्रेष्ठ तन्त्र वाली अर्थात जिनका तन्त्र बाकी तन्त्रों से श्रेष्ठ है। दुर्गासप्तशती को सबसे श्रेष्ठ तन्त्र माना गया है। पर का अर्थ है श्रेष्ठ। तन्त्र का अर्थ है विधान या पूजा विधान। श्रेष्ठ तन्त्रों से विभूषित। उत्तम शास्त्रस्वरूपा या उनका ज्ञान रखने वाली। उत्तम वस्त्र धारण करने वाली। तन्त्र का अर्थ शास्त्र, वस्त्र भी है।

300. **परमन्त्रा** – श्रेष्ठ मन्त्र वाली या श्रेष्ठ मन्त्र स्वरूपा। देवी का मन्त्र अन्य मन्त्रों से श्रेष्ठ माना जाता है। श्रेष्ठ मन्त्रों वाली। श्रेष्ठ मन्त्रों से युक्त या विभूषित। उत्कृष्ट मन्त्रशक्ति से सम्पन्न।

301. **परात्परा** – जो श्रेष्ठ देवताओं से भी श्रेष्ठ है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश श्रेष्ठ देवता हैं। देवी इन श्रेष्ठ देवताओं से भी श्रेष्ठ हैं। उत्कृष्ट से भी उत्कृष्ट अर्थात अतिउत्कृष्ट। उत्कृष्टतम शक्ति से सम्पन्न।

302. **पराविद्या** – सर्वश्रेष्ठ विद्या से विभूषित। परा विद्या वह विद्या है जो मोक्ष दिलाती है। वेद पुराण आदि को अपराविद्या कहते है क्योंकि ये मोक्ष दिलाने में समर्थ नहीं है।

303. **परासिद्धिः** – उत्कृष्टतम सिद्धि स्वरूपा। इससे ऊपर कोई सिद्धि नहीं है। उत्कृष्टतम सिद्धि देने वाली। क्योंकि देवी देवता का स्वभाव देने होता है अतः देने वाली अर्थ किया गया, लक्षणा से यह अर्थ आया है।

304. **परास्थानप्रदायिनी** – उत्कृष्टतम स्थान दिलाने वाली। स्थान का अर्थ पद है। उत्कृष्टतम पद का अर्थ है मोक्ष। प्रदान अर्थात स्थाई रूप से देना।

305. **पुष्पा** – फूल की तरह प्रसन्न और ब्रह्माण्ड के रूप में विकसित। पुष्प प्रसन्नता और विकास का प्रतीक है। पुष्प में गुण या शक्ति के रूप में विराजमान। शब्द के आगे 'में विराजमान' या 'का कारण' लगाने से शब्द का एक अन्य अर्थ आ जाता है। विकास देने वाली। प्रसन्नता देने वाली। पुष्प +आ, आ का अर्थ है देना। पुष्प विकास या प्रसन्नता का प्रतीक है।

306. **पुष्पवतीनित्या** – ऐसी नित्य रहने वाली जो विकसित रूप वाली भी हैं। पुष्प का एक अर्थ विकास, प्रकाश होता है। रजोधर्म में रहने वाली और नियम से होने वाली अर्थात नियमपूर्वक रहने वाली। बसन्त ऋतु की तरह फूलों से लदी हुई एवं नित्य स्वरूप वाली। निरन्तर सात्विक प्रकाश और गन्ध से युक्त। ऐसी भूमि जो नित्य हैं। ऐसी कामाख्या देवी जो नित्य हैं। कहा जाता है कि आषाढ़ के माह में तीन दिन के लिए कामाख्या देवी और भूमि रजस्वला अर्थात पुष्पवती होती हैं।

307. **पुष्पमालाविभूषिता** – (सुन्दर) पुष्पों की माला से विभूषित अर्थात सुशोभित।

308. **पुरातना** – जिसका अस्तित्व सर्वप्राचीन अर्थात सबसे पूर्व का है। भगवान विष्णु की शक्तिस्वरूपा। भगवान विष्णु का एक नाम पुरातन है। पुरानी अर्थात आदि शक्ति के स्वरूप वाली। शुरूआत के स्वरूप से युक्त।

309. **पूर्वपरा** – वे अस्तित्व में सबसे पहले हैं और सबसे बाद में भी वे ही हैं। पूर्व का अर्थ पहले और पर का अर्थ है बाद में। आदि और अन्त वही है। संसार का ओर छोर वही हैं। प्रारम्भ में अस्तित्व में आयी हुई देवियों में जो श्रेष्ठ है। यहाँ परा का अर्थ श्रेष्ठ है।

310. **परसिद्धिप्रदायिनी** – श्रेष्ठ सिद्धि प्रदान करने वाली अर्थात मोक्ष रूपी या शिव रूपी सिद्धि प्रदान करने वाली। पर का अर्थ है श्रेष्ठ, सबसे ऊपर, मोक्ष, शिव, ब्रह्म। परसिद्धि अर्थात जिससे बढ़कर कोई दूसरी सिद्धि नहीं।

311. **पीतानितम्बिनी** – पीले नितम्ब या पृष्ठ भाग वाली (जब साकार रूप धारण करती हैं)।

312. **पीता** – पीले वर्ण वाली। स्थिर स्वरूप वाली। पीला रंग पृथ्वी का रंग माना जाता है और पृथ्वी स्थिरता का प्रतीक है। एकाक्षरी कोष में पी का अर्थ लक्ष्मी दिया गया है। तन् धातु में ड प्रत्यय लगाने पर त शब्द बनता है जिसका अर्थ है विस्तार करने वाला। लक्ष्मी का विस्तार करने वाली अर्थात भक्तों की लक्ष्मी (धन सम्पत्ति आदि) का विस्तार करने वाली। मांगलिकता को देने वाली। पीत+आ, आ का अर्थ है देना। पीला रंग मांगलिकता, स्थिरता का प्रतीक है। स्थिरता देने वाली। स्तम्भन करने वाली। पीले रंग की विशेषता है कि इसे जिस रंग में डाला जाता है उसकी चमक को नष्ट कर देता है। असुरों की या दुष्टों की चमक (समृद्धि, यश आदि चमक) को नष्ट करने वाली।

313. **पीनोन्नतपयस्विनी** – पीन (स्थूल) और ऊँचे स्तन वाली।

314. **प्रमा** – चेतना या यथार्थ ज्ञान या शुद्ध ज्ञानस्वरूपा। वह तत्व जिसके द्वारा विषय को प्रमाणित किया जाता है वह है प्रमा। सभी विषयों को सिद्ध करने वाली। प्रमीयते अनया इति प्रमा। प्रमा के स्वरूप में। श्रेष्ठ निर्माणकर्त्री। प्रकृति का निर्माण करने वाली। प्रकृति से प्र ले लिया। प्रकृष्ट से प्र ले लिया है जिसका अर्थ है श्रेष्ठ। मा धातु का अर्थ मापना, निर्माण करना, तुलना करना, सम्मानित करना होता है। श्रेष्ठ भक्तों को सम्मानित करने वाली। मापन करने में श्रेष्ठ अर्थात किस व्यक्ति ने कितने पुण्य किये है, पाप किये है, उसकी क्या विशेषताएं है क्या गुण है आदि का मापन करने में श्रेष्ठ है। आज की भाषा में कहे तो किसी भी चीज को परखने में सर्वश्रेष्ठ अर्थात उनसे चूक नही हो सकती। Prama is exact knowledge, knowledge that is ultimately the consciousness transcendent to the object, subject and standard knowledge. प्रमा का अर्थ है पाँच ज्ञानेन्दियों द्वारा पृथक–पृथक वस्तुओं एवं विषयों की साधारण अनुभूति या ज्ञान। यथार्थ ज्ञान, प्रत्यक्ष ज्ञान, विशुद्ध ज्ञान चित्त के यथार्थ विषय को प्रकाशित करने वाली शक्ति प्रमा है। समाधि से उत्पन्न प्रज्ञा ही प्रमा का चरमोत्कर्ष है।

315. **प्रमध्यमाकोषा** – श्रेष्ठ मनोमयकोश स्वरूपा। श्रेष्ठ मनोमयकोश वाली अर्थात ऐसे कोश में विराजमान। प्रमध्यमा कोशा यस्या सा प्रमध्यमाकोशा। श्रेष्ठ पृथ्वी में कोश की तरह अर्थात रक्षणीया अर्थात उपासनीया। इनके मन्त्र को गुप्त रखना चाहिए, यही रक्षा करने का तात्पर्य है। स्वर्गलोक ऊपर का लोक है, पृथ्वीलोक मध्यम लोक है एवं पाताल लोक निम्नलोक है। सुन्दर कमरयुक्त शरीर वाली। प्र अर्थात प्रकृष्ट अर्थात उत्तम अर्थात सुन्दर। मध्यम अर्थात मध्य भाग अर्थात कमर। कोष अर्थात कोश अर्थात शरीर। जिनका सम्पूर्ण मध्यम भाग सर्वश्रेष्ठ है। प्र अर्थात श्रेष्ठ मध्यम अर्थात मध्यमभाग। सुन्दर बीजकोष युक्त कली के स्वरूप में। प्र अर्थात प्रकृष्ट अर्थात सुन्दर, मध्यम अर्थात बीजकोष, कोष अर्थात कोष अर्थात शरीर। विकासशील कुड्मलों (कलियों वाली)। प्रमध्यमा अर्थात दृष्टरजस्क अर्थात जिसमें रज (परागकण) दिखने लगे। पूर्णतया निष्पक्षा। प्र अर्थात् प्रकृष्ट अर्थात् पूर्णतया। मध्यम अर्थात् बीच में अर्थात् निष्पक्ष। क्योंकि निष्पक्ष व्यक्ति ही बीच बचाव करता है।

316. **पद्म्पत्रविलासिनी** – कमलपत्र पर विलास करने वाली अर्थात विराजमान या सुशोभित। लस् धातु शोभा अर्थ में हाती है।

317. **पद्मावती** – कमल से युक्त अर्थात कमल को हाथ में धारण करने वाली या कमल में विराजमान। पद्मावती नामक अप्सरा के समान अति सुन्दर। पद्मावती नायिका के समान अर्थात ऐसी नायिका के गुणों से युक्त।

318. **पद्मनेत्रा** – पद्म के समान सुन्दर नेत्र वाली। कमल सुन्दरता का प्रतीक है। कमल के समान नेत्रों वाली अर्थात गोल नेत्रों वाली। सृष्टि को देखने वाली अर्थात उस पर नजर रखने वाली। पद्म सृष्टि का प्रतीक है।

319. **पद्मा** – कमल के समान सुन्दर स्वरूप वाली। पद्मवत् इति पद्मा। कमल सुन्दरता का प्रतीक है। कमल स्वरूप वाली। कमल में विराजमान। पद्मे स्थिता इति पद्मा। पद्मम् अस्या अस्ति इति पद्मा अर्थात कमल वाली अर्थात कमल धारण करने वाली। लक्ष्मी स्वरूपा या लक्ष्मी से अभेद है जिनका। कुबेर की नवनिधियों में एक निधि का नाम है पद्मा, तत्स्वरूपा। पैर में पद्म के आकार के चिन्ह से युक्त अर्थात अतिशय भाग्यशाली। पद्मा नामक प्राचीन नगरी स्वरूपा। पद्म पुराण की शक्ति स्वरूपा। सृष्टि स्वरूपा। पद्म या कमल सृष्टि का प्रतीक है। कमल सुन्दर, कोमल, सारी पंखुड़ियों को एकत्रित किये हुए, हमेशा सूर्य की ओर केन्द्रित रहने वाला होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ कमल की तरह सुन्दर, कोमल। जो अपने सभी अवयवों को एकजुट या एकता के सूत्र में बाँधे हुए है। जो सूर्य (ब्रह्म या सत–चित–आनन्द की अवस्था।) में केन्द्रित है अर्थात हमेशा उस अवस्था से युक्त है। जो कमल की तरह संकोच और विकास की प्रकृति वाली है अर्थात सृष्टि को अपने में लीन करने एवं पुनः उसके विकास करने वाली हैं।

320. **पद्ममुखी** – कमल के समान सुन्दर मुख वाली। कमल के समान कोमल मुख वाली। मुख का अर्थ है आरम्भ। पद्म समृद्धि और सम्पन्नता का प्रतीक है। जिनसे समृद्धि और सम्पन्नता का आरम्भ होता है अर्थात इसे देने वाली। सृष्टि का आरम्भ जिनसे होता है। मुख आरम्भ का प्रतीक है। सौन्दर्य, समृद्धि, ऐश्वर्य में सर्वोच्च हैं। मुख शरीर के सबसे ऊपर होने के कारण सर्वोच्चता का प्रतीक है।

321. **परा** – जो परा वाणी के रूप में हैं। वाणी का प्रथम रूप या अंकुरित रूप परावाणी होता है। मूलाधार चक्र से वाणी सर्वप्रथम जिस रूप से अंकुरित होती है वह परावाणी होती है। यह वाणी का मूल रूप है जो आत्मा से एक होता है। जब व्यक्ति निर्विचार हो, शून्यावस्था में हो तब इस प्रकार की वाणी उत्पन्न होती है। परावाणी पहली वाणी है जो नादस्वरूपा है और मूलाधार चक्र से निकली हुई मानी जाती है तथा यह स्वयं से अनुभूत की जाती है जिसे किसी यन्त्र से नहीं सुना जा सकता। उसके पश्चात पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी वाणी आती हैं। उत्कृष्टतम स्थिति वाली। तुरीयावस्था उत्कृष्टतम स्थिति है जो उस स्थिति में रहती हैं। जाग्रत, स्वप्न एवं सुषुप्ति के बाद तुरीयावस्था आती है जिसमें आनन्द की अनुभूति होती है। परावाणी स्वरूपा। चार प्रकार की वाणियों में पहली वाणी जो नाद स्वरूपा है और मूलाधार चक्र से निकली हुई मानी जाती है। वाणी की आरम्भिक अवस्था परावाणी है। यह विचार के भी पहले की अवस्था है जिसे Urge of thoughts कह सकते हैं। इस अवस्था में वाणी ब्रह्म या चेतन से पूरी तरह जुड़ी हुई है और उससे जरा भी अलग नही हुई है और यहाँ तक की विचार के रूप में भी प्रकट नहीं हुई है पर इसे वाणी का बीज कह सकते है। पराविद्या स्वरूपा। पराविद्या वह विद्या है जो ब्रह्म का ज्ञान कराती है। यह विद्या ऐसी वस्तु का ज्ञान कराती है जो सबगोचर पदार्थों से परे हो। इसे ब्रह्म विद्या या उपनिषद विद्या भी कहते है। गंगा जी का नाम भी परा है। अतः इस नाम का अर्थ हुआ गंगा स्वरूपा। परा का अर्थ श्रेष्ठ भी होता है। जो अन्य देवी–देवताओं से श्रेष्ठ है। वह परा है। गुण, सौन्दर्य, ऐश्वर्य, शक्ति प्रत्येक चीज में दूसरे देवताओं से श्रेष्ठ होने के कारण उन्हें परा कहते है। परित्राण (रक्षा) देने वाली अर्थात अपने

भक्तों की या धर्म की रक्षा करने वाली। प अर्थात परित्राण। राति इति रा अर्थात रा का अर्थ है देने वाली। एकाक्षरी कोष से प के अर्थ लेकर परा शब्द के बहुत से अर्थ किये जा सकते है। मार्ग देने वाली अर्थात् भक्तों को सही रास्ता दिखाने वाली। प्रकाश देने वाली अर्थात् ज्ञान का प्रकाश देने वाली। रक्षण देने वाली अर्थात् भक्त की रक्षा करने वाली। एकाक्षरी कोष में प के कई अर्थ है जैसे पवन, प्रकाश, पर्वत, सूर्य, रक्त, शिव, मार्ग, वास, शुभ। राति इति रा से रा का अर्थ है देने वाली।

322. **पद्मासना** – कमल हैं आसन जिनका। ब्रह्मा की शक्ति स्वरूपा। ब्रह्मा का एक नाम पद्मासन भी है। योग की पद्मासन मुद्रा में बैठी हुई अर्थात पद्मासन लगाये हुए। सृष्टि में विराजमान अर्थात सृष्टि के कण कण में शक्ति या ऊर्जा के रूप में विद्यमान। पद्म सृष्टि का प्रतीक है।

323. **पद्मप्रिया** – जिनको कमल प्रिय हैं या अच्छे लगते हैं। कमल से प्रसन्न होने वाली। भगवना विष्णु का पद्म नामक आयुध है प्रिय जिन्हें। जिन्हें पद्म–पुराण सुनना अच्छा लगता है। भक्तों की समृद्धि, सम्पन्नता, ऐश्वर्य है प्रिय जिन्हें। सृष्टि है प्रिय जिन्हें। पद्म या कमल समृद्धि, सम्पन्नता, ऐश्वर्य का प्रतीक है। प्रीणाति इति प्रिया से प्रिया शब्द बनाने पर प्रिया का अर्थ प्रसन्न करने वाली होता है। प्रीयते इति प्रिया से प्रिया शब्द बनाने पर प्रिया का अर्थ प्रसन्न होने वाली होता है। सृष्टि को प्रसन्न करने वाली।

324. **पद्मरागस्वरूपिणी** – मानिक रत्न की तरह लाल रंग के शरीर वाली। पद्मराग मणि का एक अर्थ मानिक नामक रत्न है जो लाल रंग का होता है। स्वरूप का अर्थ सार गुण अर्थात कभी न अलग होने वाला गुण, शरीर होता है। पद्मराग मणि के सार गुण अर्थात लालिमा से युक्त। कमल के राग (कान्ति) के समान स्वरूप वाली।

325. **पावनी** – पवित्र कर देने वाली। अपने दर्शन मात्र या कृपा मात्र से भक्तों के पापों को भष्मकर पवित्र बना देती है। पवित्र करने का अर्थ है कि पहले कुछ दोष था, जिसे हटाया गया। शुचि का अर्थ भी पवित्र होता है पर उसमें यह भाव नहीं है कि पहले दोष था। शुचि में पहले दोष हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता है।

326. **पालिका** – जगत का पालन करने वाली। रक्षिका। ब्रह्माण्ड की रक्षा करने वाली। पालन करने में रक्षा करने का भी भाव रहता है। ब्रह्माण्ड का/सबका पालन करने वाली।

327. **पात्री** – लक्ष्मी की रक्षा करने वाली। एकाक्षरी कोष के अनुसार पा का अर्थ लक्ष्मी है। पा+त्रल्, प्रत्यय से अर्थ बनेगा रक्षा करने वाली। जैसे सर्वत्र शब्द बनता है वैसे ही पात्र शब्द बनता है। पात्र का अर्थ योग्य व्यक्ति भी होता है। पात्र + इन् प्रत्यय से पात्रिन् शब्द बना जो पुल्लिंग एक वचन में पात्री एवं स्त्रीलिंग एक वचन में पात्रिणी बनेगा। देवी तीनो लिंगों वाली भी हैं और तीनों लिंगों से परे भी हैं। पुल्लिंग वाला शब्द भी आवश्यकता पड़ने पर प्रयोग किया जा सकता है। योग्य व्यक्तियों से युक्त अर्थात उनके आसपास जो अन्य देवी–देवता हैं वे अपने कर्तव्य कर्म को निभाने के लिए बहुत योग्य हैं। अनेक गुणों से अलंकृत (कहते हैं यह इस चीज का पात्र है)।

328. **परदावरदाशिवा** – शत्रुओं का नाश करने वाली, भक्तों को वरदान देने वाली ऐसी शिवा। परदा में पर का अर्थ है शत्रु, दा दो अवखण्डने का है, न कि दा ददाति का। परान् शत्रून द्यति इति परदा। श्रेष्ठ दान रूपी वरदान देने वाली शिवा। परमश्रेष्ठ सम्पत्ति देने वाली, श्रेष्ठ वर देने वाले ऐसे शिव की शक्ति।

329. **प्रेतसंस्था** – शवारूढ़ा। देवियों के कुछ स्वरूप ऐसे हैं जिसमें उन्होंने शव को अपना वाहन बनाया है। देवियों के उन स्वरूपों से अभेद है जिनका। ब्रह्मा, विष्णु, महेश, ईश्वर और सदाशिव से बने पलंग के ऊपर भली भाँति विराजमान। शक्ति के बिना ये पाँचों देव शव की तरह हैं। सदाशिव पलंग के फलक की तरह हैं एवं अन्य चार देव उसके पांवे की तरह हैं। इस नाम का तात्पर्य है इन पाँचों देवों को शक्ति सम्पन्न या क्रियाशील बनाने वाली। शव अर्थात अविचल अर्थात कूटस्थ ब्रह्म। कूटस्थ ब्रह्म में भली भाँति स्थित।

330. **परानन्दा** – सर्वश्रेष्ठ आनन्द वाली। परम या उत्कृष्ट आनन्द स्वरूपा।

331. **परब्रह्मस्वरूपिणी** – परब्रह्म के सार गुण (सत–चित्–आनन्द) से युक्त। स्वरूप का अर्थ ऐया गुण या लक्षण है जो उस गुणाधारी से कभी अलग नहीं किया जा सकता। परब्रह्म के सदृश। परब्रह्म के स्वरूप में जो है। जो सभी वर्णनों या संकल्पनाओं से परे हो ऐसा सर्वव्यापक निर्गुण निराकार तत्व परब्रह्म है जो जगत का मूल कारण है। जो मन और बुद्धि से परे है ऐसा सर्वव्यापक निर्गुण निराकार तत्व परब्रह्म है। यह परिभाषा अद्वैत वेदान्तियों की है। वैष्णव भगवान विष्णु को और शैव भगवान शिव को परब्रह्म मानते हैं। बृंह् धातु से ब्रह्म शब्द बनता है जिसका अर्थ है बढ़ना, जो सबसे बड़ा है और दूसरों को भी सबसे बड़ा बना देता है वह ब्रह्म है। कभी कभी ब्रह्मस्वरूपा और ब्रह्मस्वरूपिणी ये दोनो नाम मिल जाते हैं। ब्रह्मस्वरूपा का अर्थ है जो स्वयं में ब्रह्म है और ब्रह्मस्वरूपिणी का अर्थ है ब्रह्मस्वरूपी शिव की गृहणी या पत्नी या शक्ति।

332. **जिनेश्वरप्रियादेवी** – जिन के ईश्वर अर्थात महावीर, जिनेश्वर की प्रिया है ऐसी देवी। जो शक्ति जिनेश्वर की प्रिया हैं ऐसी देवी।

333. **पशुरक्तरतप्रिया** – पशुरक्तरत (अर्थात शिव) की प्रिया अर्थात प्रियतमा। पशुओं अर्थात आसुरी वृत्ति वाले जो मनुष्य हैं उनका रक्त पीने में जो लगे हैं वह है शिव, उस शिव की प्रियतमा अर्थात पार्वती। पशु स्वेच्छचाारिता एवं निन्दनीय कर्म का प्रतीक है। नर और मादा पशु, सब के सामने सम्बन्ध बना लेते है अतः पशु स्वेच्छाचारिता का प्रतीक है। पशुता का अर्थ है विवेकहीन आचरण, मूर्खता, स्वेच्छाचार, आठ पाशों में बंधा होना।

334. **पशुमांसप्रिया अपर्णा** – पशुओं अर्थात अज्ञानी जीवों का मांस (अर्थात पाप) प्रिय हैं जिन्हें ऐसी देवी पार्वती। अज्ञान, पाप भक्षण जिन्हें प्रिय है ऐसी देवी पार्वती हैं। तपस्या के दौरान पार्वती जी पत्ते भी नहीं खाती थीं जिसके कारण उन्हें अपर्णा कहते हैं। अपगता ऋणात् इति अपर्णा अर्थात जो सारे ऋणों से हट गई हैं वे अपर्णा हैं। यदि अपर्णा की जगह अर्पणा शब्द हो तो अर्थ होगा राक्षसों का मांस प्रिय है जिन्हें अर्थात शिव उनके लिए जो समर्पित हैं। ऐसी शिव की शक्ति जिसने अपने को शिव में समर्पित कर रखा है।

335. **परामृतपरायणा** – सर्वश्रेष्ठ अर्थात् अपने स्वरूप (अर्थात आनन्द रूपी अमृत) के पान में लगी हुईं। जो श्रेष्ठ अमृत में परायण हैं अर्थात लगी हैं अर्थात पान करने में लगी हैं। आत्मा का आनन्द ही अर्थात अपने स्वरूप का आनन्द ही श्रेष्ठ अमृत है। भोजनामृत, काव्यामृत आत्मा के आनन्द रूपी अमृत के समाने कुछ नहीं हैं।

336. **पाशिनी** – पाश (फन्दा) नामक अस्त्र विशेष धारण करने वाली। पाश से शत्रुओं को बाँधा जाता है। पाशी (वरुण) की शक्ति स्वरूपा। वरुण पाश को धारण करते हैं अतः वे पाशी कहलाते हैं। पाश वशीकरण शक्ति का प्रतीक है। इस शक्ति से युक्त। इच्छा एवं राग को भी पाश कहा गया है। मनुष्य में राग और इच्छा डालकर उसे संसार से बांधे रहती है। राग शक्ति या इच्छा शक्ति से युक्त। इन्द्रियों के विषय को भी पाश कहते है। घृणा, लज्जा, जुगुप्सा, कुल, शील आदि अष्ट पाश भी पाश कहे जाते है। पाश अर्थात रोकने वाला साधन। भक्तों को अनुचित कार्य करने से रोकने वाली। अन्तः करण में प्रेरणा के रूप में आकर या किसी गुरुवाणी/शास्त्रवाणी के रूप में आकर रोकने वाली। पाशिनी नाम की एक योग मुद्रा स्वरूपा। इस मुद्रा में दोनों पैर गर्दन पर रखे जाते हैं। पाशिनी मुद्रा में विराजमान। (पाश का अर्थ बन्धन, अविद्यादि अज्ञान और मोह के कारण जाल।) पाशिनी नाम की एक योग मुद्रा स्वरूपा। इस मुद्रा में दोनों पैर गर्दन पर रखे जाते हैं। पाशिनी मुद्रा में विराजमान। (पाश का अर्थ बन्धन, अविद्यादि अज्ञान और मोह के कारण जाल। जन्म मरण रूपी पाश को धारण करने वाली। संसार रूपी पाश को धारण करने वाली। पाश में तस्य इदम् सूत्र से ठन् प्रत्यय लगाने से पाशिनी शब्द बनेगा। वरूण का नाम ही पाशी है। पाशिम् नयति इति पाशिनी। वरूण का नेतृत्व करने वाली अर्थात् उसका मार्गदर्शन करने वाली।

337. **पाशिका** – माया–जाल में फंसाने वाली। शब्दकल्पद्रुम के अनुसार फन्दा या जाल में फंसाने वाला बहेलिया पाशिक होता है। शत्रुओं को पीड़ित करने वाली। पाशयति पीडयति शत्रून, इति पाशिका। पाश से विभूषित। पाश है अस्त्र जिनका। पाशिनी पाश को धारण किये हुए तथा पाशिका फंसाने वाला कर्म करने वाली है। पाश के कई अर्थ हैं, घृणा, लज्जा, कुल आदि प्रमुख अष्ट पाश है। राग या इच्छा को भी पाश कहा गया है। इन्द्रियों के विषय को भी पाश कहा गया है क्योंकि यह प्राणी को बाँधते हैं। इन पदार्थों का निर्माण करके देवी प्राणियों को फँसाय हुए है।

338. **पापाघ्नी** – भक्तों के पापों का सर्वतोभावेन नाश करने वाली अर्थात सर्वनाश करने वाली। पाप + आ+ घ्नी। आ का अर्थ है समन्तात् अर्थात सर्वतोभावेन। आ का अर्थ भाव या सत्ता होता है। प्रत्येक चीज भाव है अतः सर्वतोभावेन (सब प्रकार से या पूर्ण रूप से) यह अर्थ न भी देना चााहें तो भी ठीक है।

339. **पशुभक्षिणी** – जन्म मरण के बन्धन में बँधे हुए प्राणियों का काल (मृत्यु) के रूप में भक्षण करने वाली अर्थात जब प्राणियों की आयु पूरी होती है तो उनकी मृत्यु करने वाली। जो जन्म मरण के बन्धन में बँधा है या कौल दर्शन में बताऐ गये आठ पाशों में बँधा है वह पशु है। आठ पाश हैं, घृणा, लज्जा, भय, संशय, जुगुप्सा, कुल, जाति और शील। ब्रह्मा से लेकर कीट पतंग, स्थावर तक सभी पशु हैं। पशु वह है जो माया या अज्ञान से बंधा हुआ है। जो द्वन्द्व अर्थात पाप –पुण्य, सुख –दुःख आदि में जी रहा है वह पशु है। जो काम, क्रोध, लोभ, मोह से ग्रसित है वह पशु है। बलि में चढ़ाऐ गए पशुओं अर्थात जानवरों का भक्षण करने वाली यह अर्थ भी कर सकते हैं। (यदि पशुभाषिणी नाम है तो अर्थ है जन्म मरण के बन्धन में बँधे हुए प्राणियों में रहकर बोलने वाली। प्राणियों की जिह्वा में विराजमान होकर उसे बोलने लायक बनाने वाली। पशुओं (जानवरों) के माध्यम से बोलने वाली, क्योंकि प्रकृति में हो रही हर क्रिया शक्ति की क्रिया है)।

340. **फुल्लारविन्दवदना** – प्रफुल्लित कमल के समान सुन्दर मुख वाली।

341. **फुल्लोत्पलशरीरिणी** – खिले हुए नील कमल के समान सुन्दर शरीर वाली।

342. **परानन्दप्रदावीणा** – उस वीणा के समान है जो परम आनन्द देने वाली है। परमानन्द प्रदान करने में जो चतुर या दक्ष हैं। यहॉ वीणा का अर्थ दक्ष किया जा सकता है।

343. **पशुपाशविनाशिनी** – पशुओं (राक्षसों, अज्ञानियों) के पाश या जकड़ का नाश करने वाली। आठ पाश हैं, घृणा, लज्जा, भय, संशय, जुगुप्सा, कुल, जाति और शील। विनाश (पूर्णनाश) तभी होगा जब भक्ति की जाएगी, शरणागत हुआ जाएगा। ब्रह्मा से लेकर स्थावर पर्यन्त सभी पशु हैं।

344. **फूत्कारा** – फूत्कार शब्द स्वरूपा। फूत् इस प्रकार का शब्द करने वाली। फूत्कार के द्वारा राक्षसों का नाश करने वाली।

345. **फुत्परा** – फुत् ऐसा अव्यक्त शब्द करने में लगी हुई। शत्रुओं को दुत्कारने या हटाने में ऐसा शब्द करने वाली।

346. **फेनी** – बढ़ने वाली अर्थात वृद्धि को प्राप्त होने वाली। स्फायते वृद्धिम् प्राप्नोति इति फेनः, स्त्रीलिंग में फेनी। स्फायी वर्धते धातु में उणादि नक् प्रत्यय लगाने से यह शब्द बनता है तथा स्फा को फे आदेश हो जाता है। जगत या ब्रह्माण्ड के रूप में देवी अपना विस्तार किये हुए हैं। फेनी मिठाई की तरह मीठी अर्थात मधुर गुण वाली। फेन के समान बढ़ने वाली या फेन के समान उज्जवल। फेन ज्यादा जगह घेरता है। फेन के कारण ही आधा कप कॉफी एक कप हो जाती है और फेन जब बैठता तो वापस आधा कप हो जाती है। शुभ गुणों से युक्त। फेना में शुभता होती है। फेन अर्थात शुभता, सफेद, सात्विकता। सूतफेनी सभी जानते हैं।

347. **फुल्लेन्दीवरलोचना** – प्रफुल्लित कमल के समान नेत्रों वाली।

348. **फट्मन्त्रा** – फट्मन्त्र वाली अर्थात फट्मन्त्र से युक्त। जिनकी पूजा में फट्मन्त्र बोला जाता है या जिनके मन्त्र में फट् यह शब्द है। फट्मन्त्र के स्वरूप वाली। आभिचारिक मन्त्र शक्ति से युक्त। फट् का प्रयोग आभिचारिक मन्त्रों में होता है।

349. **स्फटिका** – स्फटिक मणि की तरह उज्जवल वर्ण वाली। सूर्यकान्त मणि के स्वरूप वाली। स्फटिक मणि के स्वरूप वाली।

350. **स्वाहा** – अग्नि की पत्नी के स्वरूप में। दुर्गा जी की स्तुति में आता है त्वम् स्वाहा त्वम् स्वधा। देवताओं को हव्य या खाद्य सामग्री पहुँचाने वाली। स्व अर्थात महानता एवं आह अर्थात कही गई। जिनकी महानता को कहा गया है अर्थात जिनके महान गुणों और कर्मों का बखान किया गया है। स्व अर्थात विष्णु, धन–दौलत, आत्मा, प्रकृति या स्वभाव। भगवन विष्णु द्वारा कही गई अर्थात उनके गुणों का बखान किया गया। सत्य या श्रेष्ठ वाणी स्वरूपा। सु + आह। आह का अर्थ है वाणी।

351. **स्फोटा** – जिससे पदार्थ अर्थात विश्व निकलता है, तात्पर्य है संसार को अभिव्यक्त करने वाली। शब्द की वह शक्ति जिससे शब्दों का अर्थ प्रकटित होता है। जिससे समस्त विश्व स्फुटित होता है अर्थात अंकुरित होता है या निकलता है। स्फुटति विश्वम् अस्याः। वैयाकरण के अनुसार स्फुटति अर्थो अस्मात, अर्थात जिससे अर्थ स्फुटित या अंकुरित होता है वह स्फोट है। जो ज्ञान, विज्ञान विद्या को प्रस्फुटित कर दे। स्फुटति ज्ञानम् विद्याम् इति स्फोटा। सर्प के फन के समान शत्रुओं को डराने वाली। स्फोटा का एक अर्थ सर्प का फन भी है।

352. **फट्स्वरूपिणी** – फट् मन्त्र के स्वरूप वाली (फट्मन्त्रा नाम में अर्थ है जिनके मन्त्र में फट् शब्द भी है जबकी इस नाम का अर्थ है फट् यह शब्द स्वयं में देवी का ही स्वरूप है)। फट् बोलकर बुरी शक्तियों या नकारात्मक शक्तियों को दूर भगाया जाता है। साधक साधना के दौरान दाहिने हाथ की अंगुलियों को सिर के ऊपर से घुमाकर फिर दूसरी हथेली में फट् बोलकर प्रहार करता है जिससे बुरी शक्तियॉ दूर भाग जाए। फट् मन्त्र का प्रयोग शत्रु पर आक्रमण करने के लिए भी होता है अर्थात जिस मन्त्र को बोलने से शत्रुओं पर प्रहार होता है या जिससे शत्रुओं से लड़ने के लिए साहस जाग्रत होता है वह फट् है। अभिचार क्रिया में फट् मन्त्र के स्वरूप को धारण करने वाली। फट् बोलने से शत्रुओं को विदीर्ण किया जाता है अर्थात फाड़ा जाता है। डायनामाईट आदि से भवन को उड़ाने पर फट् शब्द की ध्वनि आती है।

353. **स्फाटिकाघुटिकाघोरा** – स्फटिक की मनका के समान शांत अर्थात पारदर्शी स्वच्छ निर्मल सुन्दर। (स्फाटिक = स्फटिक)। अघोर अर्थात शांत, स्वच्छ।

354. **स्फटिकाद्रिस्वरूपिणी** – स्फटिक मणि से सुशोभित जो पर्वत उसके स्वरूप को धारण करने वाली। अद्रि का अर्थ है पर्वत।

355. **वरागंना** – अंगनाओं में जो अति श्रेष्ठ है। वर का अर्थ है श्रेष्ठ। जिनके सभी अंग सुडौल, प्रशस्त होते हैं उन्हें अंगना कहते हैं। जो गुणां में श्रेष्ठ हैं एवं सगुण रूप में स्त्री का रूप धारण करने वाली हैं।

356. **वरधरा** – वरमुद्रा धारण करने वाली। मुद्रा एक प्रकार की शारीरिक चेष्टा है। अंगुलियों को मोड़कर या कभी कभी दूसरें अंगो का प्रयोग कर मुद्रा बनाई जाती है। भगवान के चित्रों में आपने हथेली को सामने किये हुए देखा होगा जैसे वे वर दे रहे हों। कुमकुम धारण करने वाली। हल्दी धारण करने वाली। वर का एक अर्थ कुमकुम, हल्दी, दूल्हा दिया गया है। शिव जैसे योग्य पति को धारण करने वाली।

357. **वाराही** – वराह भगवान की शक्ति। जिस प्रकार वराह भगवान ने पृथ्वी को ऊपर उठाया था उसी प्रकार

साधक को भवसागर से ऊपर उठाने वाली या साधक की कुण्डलिनी शक्ति को सुषुम्ना नाड़ी में ऊपर उठाने वाली। वृ वृणोति से वर शब्द बनाने में उसका अर्थ होता है आवरक या ढक्कन। हन् धातु में ड प्रत्यय लगाने से बने ह शब्द का अर्थ नाश करने वाला, जाने वाला होता है। ओहाक् त्यागे धातु में ड प्रत्यय लगाने से बने ह शब्द का अर्थ त्यागने वाला होता है। मन और बुद्धि में पड़े अज्ञान के आवरण को नष्ट करने वाली। तात्पर्य हुआ हमारी चेतना को ऊपर उठाने वाली। प्रकृति से बनी चीजें पृथ्वी से सम्बन्धित कहीं जा सकती हैं अतः मन और बुद्धि प्रकृति से बनी होने के कारण पृथ्वी से सम्बन्धित कही जा सकती हैं। वराह भगवान ने पृथ्वी को ऊपर उठाया अर्थात हमारी मन और बुद्धि जो अज्ञान में डूबी थी उससे ऊपर उठाया। वर का अर्थ श्रेष्ठ भी होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ श्रेष्ठ पदार्थों में जाने वाली अर्थात उनमें अधिक अभिव्यक्त होने वाली। देवी तो सर्वव्यापक हैं पर वे अपनी शक्ति कुछ ही जगह प्रकट करती हैं। श्रेष्ठ के लिए अश्रेष्ठ का वध करने वाली अर्थात अभीष्ट के लिए अनभीष्ट को नष्ट करने वाली। वराय श्रेष्ठाय अभीष्टाय हन्ति इति वाराही। वृ धातु से वर शब्द बनता है जिसका अर्थ आवरण या आच्छादन होता है। मन बुद्धि रूपी पृथ्वी पर पडे हुए अज्ञानता के आवरण को नष्ट करने वाली। यह नाम मन बुद्धि रूपी पृथ्वी को दिव्यता में रूपान्तरित करने वाली विशिष्ट चेतना के लिए है। वर अर्थात श्रेष्ठ तत्व को न छोड़ने वाली। हा धातु का अर्थ है छोड़ना। अहा का अर्थ है न छोड़ने वाली। वर अर्थात श्रेष्ठ तत्व जैसे आत्म स्वरूप, वर अर्थात श्रेष्ठ भक्त या श्रेष्ठ ज्ञानी।

358. **वासुकी** – नागराज वासुकि, जो पाताल में रहते हैं, उनकी शक्ति।

359. **वरा** – अतिशय श्रेष्ठ। अन्य देवताओं से श्रेष्ठ हैं। जो रूप, गुण, शक्ति, ऐश्वर्य आदि में श्रेष्ठ है। वर+आ, इस आधार पर वरा का अर्थ होगा वरदान देने वाली क्योंकि आ का एक अर्थ देना भी है। गुड़हल वाली अर्थात गुड़हल से युक्त अर्थात जिन्हें गुड़हल का फूल चढ़ाया जाता है। वरा का अर्थ है गुड़हल, हल्दी, अपराजिता, गुरुच आदि।जिन्हें पूजा में हल्दी चढ़ाई जाती है। वरा अस्या अस्ति इति वरा।

360. **विन्दुस्था** – श्रीयन्त्र या बगलामुखी यन्त्र के बिन्दु पर विराजमान या स्थित। विन्दु में स्थित। शिव और शक्ति के मिलने से बिन्दु पैदा होता है जो समस्त आकार का जनक है। कारण कार्य में रहता है। इस प्रकार बिन्दु में स्थित रहने वाली। शिव और शक्ति के मिलन से नाद और बिन्दु उत्पन्न होते हैं। नाद से समस्त शब्द (नाम) एवं बिन्दु से समस्त रूप उत्पन्न होते हैं और यह जगत नाम रूपात्मक है। आकार या रूप के स्रोत बिन्दु में रहने वाली क्योंकि कारण सूक्ष्म रूप से कार्य में रहता है। घनीभूता, अदृष्टा, सभी शक्तियों से युक्त सूक्ष्मतम् कण बिन्दु है जिससे सारे विश्व की उत्पत्ति होती है। Bindu is undivided light of consciousness. यह बिन्दु इलेक्ट्रान प्रोटॉन आदि से भी छोटा है अर्थात सबसे छोटा है। जब कहा जाता है कि छोटे से छोटा एवं बड़े से बड़ा तो उसका तात्पर्य होता है आकार में सबसे छोटा किन्तु बल में सबसे बड़ा। दोनों भौं के बीच के स्थान अर्थात् आज्ञा चक्र से निकलने वाले तेज को भी बिन्दु कहते हैं। बिन्दु चक्र आज्ञा चक्र के विपरीत अर्थात सिर के पीछे की ओर होता है। इस बिन्दुचक्र में शक्ति के रूप में विद्यमान।

361. **विन्दुनी** – ज्ञानी या विद्वानों को ले जाने वाली अर्थात उनका नेतृत्व करने वाली या मार्गदर्शन करने वाली। नी धातु का अर्थ है ले जाना। बिन्दु का अर्थ है ज्ञानी, जानकार। बिन्दु का अर्थ शिव भी है। भगवान शिव को ले जाने वाली अर्थात भगवान शिव को शिवत्व के मार्ग पर ले जाने वाली, या कर्तव्य के प्रति सक्रिय करने वाली। शिव का मार्गदर्शन करने वाली। नी का अर्थ है नयति अर्थात ले जाना। भगवान शिव की ओर ले जाने वाली अर्थात भगवान शिव को प्राप्त कराने वाली। संस्कृत में विन्दु और बिन्दु एक ही होते हैं। यन्त्र में स्थित त्रिकोण का केन्द्र बिन्दु है, उस बिन्दु के स्वरूप वाली। सृष्टि के बीज बिन्दु को लाने वाली अर्थात उसे अस्तित्व में लाने वाली। शिव से शक्ति का आविर्भाव हुआ, उससे फिर नाद हुआ। कुछ लोग शिव शक्ति के मिलन से

नाद की उत्पत्ति बताते हैं। नाद घनीभूत होकर बिन्दु हो जाता है और यह बिन्दु एक प्रकार के बीज की तरह है जिसमें सारी सृष्टि समाई हुई है। (बिन्दु– बिन्दु शक्ति या चेतना का एक रूप है जिसमें पूरा विश्व अव्यक्त अवस्था में रहता है। Bindu is an aspect of Sakti or Consciouness. As so interpreted and as Isvara Tattava, In which it is Sakti is called Bindu because here consciouness completely identifies itself with the universe as unmanifested Itarim (otherness) and thus subjectifies it and becomes with itr a point of consciouness. नाद और बिन्दु शक्ति की अवस्थायें है जिसमें क्रियाशक्ति का बीज होता है। बिन्दु वह स्रोत है जिसमें सारा जगत बीज की तरह अव्यक्त रूप से स्थित है और वह जगत की उत्पत्ति करने के लिए एकदम तैयार है। Nada and Bindu are states of Sakti in which the germ of action (Kriya Shakti) so to speak increasingly sprouts with a view to manifestation producting a state of compactness of energy and rediness to create. They are, like all else, aspects (Forms) of Shakti, but are names of those aspects which are prone to and ready for creation. Of these the Bindu is said to be the massive state of घनावस्था of Shakti. The Shakti is seized with he desire to create and becomes घनीभूता. In other words, Shakti is conceived as passing gradually from its subtle state through Shakti tattva and Nada and becomes what is relatively gross or massive as power which is fully equipped to pass from the stage of mere potency into that of active manifestation. This stage is Bindu, which is called Mahabindu or Para-bindu to distinguish it from other Bindu into which it subsequently differentiates in the process of creation. Bindu as the Cause is चिदघना or massive consciouness and power in which lie potentially in a mass (घना).)

362. **वाणी** – उस शब्द के स्वरूप वाली जिसे वक्ता एवं पास खड़े व्यक्ति सुन सकते हैं। मुँह से निकलने वाली सार्थक वचन या स्वरस्वरूपा। साहित्यिक रचना या ग्रन्थ स्वरूपा। वाक् शक्ति स्वरूपा। सरस्वती स्वरूपा। सरस्वती देवी से अभेद है जिनका। प्रशस्त वेद–वाणी से विभूषित। वाणी में विराजमान अर्थात वाक् शक्ति स्वरूपा। वाणी की कारण अर्थात अर्थात वाणी को उत्पन्न करने वाली शक्ति। नियम है कि शब्द के आगे 'में विराजमान' या 'का कारण' लगाने से भी शब्द के अन्य अर्थ निकल आते है। व का अर्थ ज्ञान, अमृत, मोक्ष होता है। नी धातु का अर्थ है लाना। आनीयते का अर्थ भी लाना या पूर्णरूप से लाना होता है। भक्तों के लिए ज्ञान को लाने वाली या मोक्ष को लाने वाली अर्थात उन्हें पूर्ण ज्ञान या मोक्ष देने वाली।

363. **विन्दुचक्रनिवासिनी** – श्री यन्त्र के त्रिकोण के बीच स्थित। श्री यन्त्र का त्रिकोण बिन्दुचक्र है। सिर के पीछे जहाँ चोटी उगती है उसके पास (सहस्रार और आज्ञा चक्र के बीच) का ऊर्जा केन्द्र बिन्दु चक्र है। उस बिन्दु चक्र में निवास करने वाली।

364. **विद्याधरी** – विद्याधर नामक देवयोनि की शक्ति स्वरूपा। विद्याधर एक देवयोनि जिसमें खेचर, गन्धर्व, किन्नर आदि आते हैं।

365. **विशालाक्षी** – विशाल नेत्र वाली। बड़े नेत्रों वाली अर्थात् अति सुन्दर। बड़े नेत्र सुन्दरता के प्रतीक है। सबकुछ देखने वाली अर्थात् उनकी नजर से कोई भी चीज छूट नहीं सकती। आँख बड़ी हों तो बिना गर्दन

हिलाये चीजों को देखा जा सकता है। विशाल शब्द में शाल शब्द का एक अर्थ कमरा होता है किन्तु दूसरा अर्थ शील भी होता है। इस प्रकार विशालाक्षी का अर्थ हुआ जिनकी आँखों में शील है। शील का सामान्य अर्थ अच्छा व्यवहार जिसमें शिष्टता एवं नम्रता हो। शील का एक अर्थ यह भी होता है कि जिस समय जैसा व्यवहार करना चाहिए वैसा व्यवहार करना। इस प्रकार विशालाक्षी का अर्थ हुआ कि आँखों से जैसा व्यवहार करना चाहिए वैसा व्यवहार करने वाली। आँखों से कई प्रकार के संकेत दिये जाते है जैसे चुप होने का, कहीं चलने का, कहीं क्रोधित होने का आदि। इस प्रकार अपनी आँखों से परिस्थिति के अनुसार भाव प्रकट करने वाली, यह विशालाक्षी का अर्थ हुआ।

366. **काशीवासिजनप्रिया** – काशी में निवास करने वाले प्रमुख जन हैं शिव उनकी प्रियतमा (यदि जन का अर्थ प्रमुख जन से लेते हैं)। वाराणसी में निवास करने वाले लोगों की प्रिया अर्थात जिन्हें लोग पसन्द करते हैं। आज्ञाचक्र में विराजमान शक्तियों की प्रिया। आज्ञाचक्र या सहस्रार चक्र काशी है। उन्हें प्रसन्न करने वाली अर्थात शक्ति देने वाली।

367. **वेदविद्या** – वेद में उल्लिखित ज्ञान स्वरूपा। वेद विद्या के रूप में प्रतिष्ठित। वेद के ज्ञान को देने वाली। वेद शास्त्र स्वरूपा। विद्या का अर्थ मोक्ष दिलाने वाला ज्ञान, किसी विषय का वास्तविक एवं सुव्यवस्थित ज्ञान है। विद्या के अन्य अर्थ शास्त्र, स्त्री देवता का मन्त्र है। वेदविद्या+आ आ का एक अर्थ देना है। वेद के ज्ञान या शास्त्र में विराजमान। वेद का एक अर्थ वित्त (धन सम्पत्ति) भी है। अतः इस नाम का अर्थ हुआ वित्त कमाने की विद्या या ज्ञानस्वरूपा।

368. **विरूपाक्षी** – विविध रूपों की आँख वाली अर्थात सूर्य, चन्द्र और अग्नि ये विविध रूप जिनकी आँखे हैं। आकाश स्वरूप में देवी की सूर्य, चन्द्र, अग्नि ये तीन आँखें होंगी। विरूपाक्ष कहते हैं शिव को क्योंकि उनके तीन नेत्र हैं। शिव की शक्ति अर्थात विरूपाक्षी। तीन नेत्रों वाली ऐसा अर्थ भी निकल सकता है। विविध रूपों में व्याप्त। जड़ चेतन जितने भी पदार्थ है वे विविध रूप हुए। अक्ष् धातु का अर्थ व्याप्त होना होता है। अपने सभी अवतारों में व्याप्त।

369. **विश्वयुग्बहुरूपिणी** – विश्व को जोड़ने वाली अर्थात जोड़कर रखने वाली एवं अनेक रूपों वाली। देवी के ब्राह्मी, माहेश्वरी, ऐन्द्री आदि अनेक रूप या विभूतियॉ हैं। विश्व का अर्थ सब भी होता है। सबको जोड़कर रखने वाली एवं अनेक रूपों को धारण किये हुए। विश्वं युनक्ति इति विश्वयुक्। विश्व से संयुक्त अनेक रूप धारण करने वाली।

370. **ब्रह्मशक्ति** – ब्रह्मा की शक्ति। ब्रह्म के कई अर्थों में ब्रह्मा भी एक अर्थ है। पूर्ण ब्रह्म में व्याप्त शक्ति। सर्जनात्मक शक्ति स्वरूपा। विस्तार करने वाली शक्ति। वृंह् धातु का अर्थ विस्तार करना होता है।

371. **विष्णुशक्ति** – भगवान विष्णु की शक्ति के रूप में है जो। पालन शक्ति या रक्षण शक्ति स्वरूपा। सर्व व्यापक शक्तिस्वरूपा। विष्णु का अर्थ है जो सर्वत्र व्याप्त हो। सभी में प्रवेश करने वाली शक्ति। विश् धातु का अर्थ है प्रवेश करना।

372. **पंचवक्त्राशिवप्रिया** – पाँच मुखों से सुशोभित पूर्ण शिव या पर–शिव की प्रिया। परशिव में ब्रह्मा विष्णु और महेश ये तीनों उनके अंग होते हैं। आशिव अथात आ (पूर्ण) + शिव। जो पाँच मुखों वाली है और शिव की प्रिया है यह अर्थ भी निकल सकता है। पंचवक्त्रा च असौ शिव प्रिया। पाँच मुख शिवजी के हैं और अभेद होने के कारण वे मुख देवी जी के भी हैं, ऐसा कह सकते हैं।

373. **वैकुण्ठवासिनीदेवी** – वैकुण्ठ में निवास करने वाली देवी। आज्ञा चक्र या सहस्रार चक्र को वैकुण्ठ कह सकते हैं। सहस्रार चक्र को कैलाश कहते है। शिव और विष्णु में अभेद अर्थात हर ही हरि है। इस प्रकार सहस्रार

चक्र को ही बैकुण्ठ कहा जा सकता है। एक अन्य मत के अनुसार सातो चक्रों को भेदने के बाद बैकुण्ठ की प्राप्ति होती है। श्रीमद्‌भागवत की कथा जो एक सप्ताह में सुनायी जाती है उसका तात्पर्य है कि सातो चक्र भेदने के बाद भगवान विष्णु अर्थात सत्‌चित आनन्द रूपी परमात्मा की प्राप्ति होगी। परीक्षित ने सात दिन में भागवत कथा सुनकर मोक्ष पाया इसका तात्पर्य है कि प्रत्येक दिन उन्होनें एक गाँठ अर्थात एक चक्र भेदा था।

374. **वैकुण्ठपददायिनी** – वैकुण्ठपद या मोक्ष देने वाली।

375. **ब्रह्मरूपा** – जो ब्रह्मा के स्वरूप में स्थित है। ब्रह्म के सदृश। ब्रह्म के गुणों या लक्षणों से युक्त। रूप का अर्थ है सदृश, गुण, लक्षण। ब्रह्म का अर्थ ब्रह्मा, परब्रह्म दोनों होता है। ब्रह्म को दिखाने वाली अर्थात साक्षात्कार कराने वाली। रूपयति का एक अर्थ है दिखाना। ब्रह्म को स्वरूप देने वाली अर्थात उनकी रचना करने वाली। रूप का अर्थ होता है सुन्दर जो दूसरों को सुख देता है। ब्रह्म को शाश्वत सुख देने वाली अर्थात आनन्द की अनुभूति कराने वाली।

376. **विष्णुरूपा** – जो भगवान विष्णु के रूप में स्थित है। भगवान विष्णु की रचना करने वाली या उनका साक्षात्कार कराने वाली। भगवान विष्णु के सदृश। भगवान विष्णु के गुणों या लक्षणों से युक्त। रूप का अर्थ होता है सुन्दर जो दूसरों को सुख देता है। विष्णु को शाश्वत सुख देने वाली अर्थात आनन्द की अनुभूति कराने वाली।

377. **परब्रह्ममहेश्वरी** – ऐसी महान ऐश्वर्य वाली जो परब्रह्मस्वरूपा है। परब्रह्म की पत्नी या शक्ति स्वरूपा। सौन्दर्य लहरी में परब्रह्ममहेशी शब्द है जहाँ महेशी शब्द का प्रयोग पत्नी अर्थ में किया गया है। शिवोपासना अंक (गीता प्रेस) के अनुसार कारण ब्रह्म एवं कार्यब्रह्म से परे जो ब्रह्म है वह परब्रह्म है। विश्व से परे जो ब्रह्म है वह परब्रह्म है। पुरुष सूक्त में आया है कि ब्रह्म का एक चौथाई अंश इस विश्व में है और तीन चौथाई अंश इस विश्व के परे है। विश्व में कई ब्रह्माण्ड होते हैं।

378. **भवप्रिया** – शिव की प्रियतमा। जिन्हें शिव बहुत चाहते हैं या पसन्द करते हैं। शिव से प्रसन्न होने वाली। कामदेव से प्रसन्न होने वाली। शिव को प्रसन्न करने वाली। प्रीयते इति प्रिया से प्रिया का अर्थ प्रसन्न होने वाली एवं प्रीणाति इति प्रिया, ऐसी व्युत्पत्ति से प्रिया का अर्थ प्रसन्न करने वाली होता है। भव का अर्थ है शिव, कामदेव, संसार।

379. **भवोद्‌भावा** – विश्व का प्राकट्‌य जिससे हुआ है अर्थात विश्व को प्रकट करने वाली। भवस्य उद्‌भावः यस्याः सा। कामदेव को प्रकट करने वाली। शिव के श्रेष्ठ भाव स्वरूपा या उनके श्रेष्ठत्व को दिखाने वाली। भव का अर्थ है शिव, विश्व, कामदेव। संसार को उद्‌भावित (उत्पन्न, जन्म, प्रकट) करने वाली। शिव के लिए उत्पन्न होने वाले भावों से संयुक्त।

380. **भवरूपा** – शिवस्वरूपा। शिव के सदृश। शिव के गुणों या लक्षणों से युक्त। संसार स्वरूपा।

381. **भवोत्तमा** – संसार में सर्वोत्तम। शिव में विद्यमान उत्तम गुण स्वरूपा।

382. **भवपारा** – संसार से पार अर्थात मुक्ति स्वरूपा। एक तरफ संसार है और दूसरी तरफ मुक्ति है। भव (संसार) से पार रहने वाली। संसार से पृथक रहने वाली। संसार को पार करा देने वाली।

383. **भवाधारा** – शिव की आधार स्वरूपा । भव का अर्थ संसार, शिव है। आधार का अर्थ है जिस पर कोई चीज टिकी हो। आधार न हो, तो वस्तु का अस्तित्व नहीं रह सकता। जगत का आधार।

384. **भाग्यवत्‌प्रियकारिणी** – भाग्यशाली (अच्छा कर्म करने वाली) लोगों का प्रिय अर्थात अच्छा करने वाली। प्रिय अर्थात अच्छा अर्थात जिससे प्रसन्नता मिलती है। वत् अर्थात युक्त। क्रिया के सन्दर्भ में वत् का अर्थ की तरह होता है, अन्यत्र युक्त अर्थ होता है। पिछले अच्छे कर्म ही अच्छा भाग्य बनता है अर्थात भाग्यशाली का अर्थ

अच्छा कर्म करने वाले या जिन्होंने भूतकाल में अच्छा कर्म किया था, होता है। भाग्य में अच्छा भाग्य और खराब भाग्य दोनों आता है किन्तु यदि विशेषण न लगा हो तो सामान्यतः अच्छा अर्थ लेते हैं। भाग्यवान बनाने के लिए प्रिय या अच्छा कार्य करने वाली। भाग्यवान लोगों का प्रियकार्य करने वाली। प्रिय अर्थात जो दूसरों को प्रसन्न करे या जिसके होने पर प्रसन्नता मिलती है।

385. **भद्रा** – भक्तों का कल्याण करने वाली। कल्याणकारिणी। भद्र+आ। भद्र का अर्थ है कल्याण और आ का अर्थ है देना। कल्याणमयी। मोक्ष, आनन्द, जीवन की सभी आवश्यकताऐं जैसे रोटी, कपड़ा, मकान, बिजली, पानी, चिकित्सा, मनोरंजन कल्याण के अंग हैं। भद्, रम् से भद्रा बन सकता है। तब अर्थ होगा जिसकी प्राप्ति होने पर आनन्द की अनुभूति हो वह भद्रा है। कल्याण कारिणी, भला, श्रेयसी। भद्र से ही भला और भद्दा दोनों हिन्दी के शब्द बने। भद्रा नक्षत्र स्वरूपा। भद्रा नक्षत्र में शक्ति रूप में विराजमान। भूतों (प्राणियों) के द्वारा प्राप्त करने योग्य होने से कल्याण का नाम भद्र है। भूतानाम् अभिद्रवणीयम् अभिलक्ष्य प्रापपीयम् इति भद्रम्। भ + द्रु+ ड झ भ + द्र् + अ झ भद्र। जिसके होते हुए मनुष्य आनन्दित होता है, वह कल्याणकारक भी भद्र कहलाता है। भवद् + रमु क्रीडायाम् + ड झ भद् + र् + अ झ भद्र। रम् का अर्थ है आनन्दित होना। जो सुपात्र व्यक्ति को ही प्राप्त होता है। भाजन (पात्र) + र (मत्वर्थे) झ भज् + र् झ भद्र। निरूक्त में भद्र शब्द ही ऐसी ही व्युत्पत्ति की गई है। (वैदिक कोष में भद्र शब्द के अनेक तरह से विग्रह कर अनेक अर्थ बताए गए हैं और वे सारे अर्थ भद्रा शब्द के भी अर्थ हैं – प्राणियों के लिये सेवनीय अर्थात् उनकी उपासनीया (भज्+रन् से निपातन के द्वारा भद्र शब्द बना जिसका अर्थ है भजनीयम् भूतानाम)। जिसके पास सब पहुँचना चाहते है अर्थात् जिसे सब प्राप्त करना चाहते है क्योंकि वह सत्, चित्, आनन्द स्वरूपा हैं (अभिद्रवणीयम् भवति इति भद्रा।)। जिनके रहने पर कोई भी प्राणी आनन्दित होता है अर्थात जिनके मिलने पर या जिनकी प्राप्ति होने पर प्राणी आनन्दित होते हैं। (भवत् रमयति इति वा– यस्य हि तत् भवति स रमते। भू धातु में रम् लगाने पर बने भद्र शब्द का ऐसा अर्थ होगा।) जिसको जितना चाहिए वैसा विभाग करने वाली अर्थात् उतना देने वाली (भाजयिता यथायोग्यम्)। जो भन्दनीया है अर्थात् वन्दनीया है अर्थात् सब जिसकी प्रशंसा करते है। भन्दनीय, स्तुत्य, भद+रन्।)। शरीर में अच्छे चिन्हों (good marks) वाली। सामुद्रिक शास्त्र में शरीर के जिन चिन्हों को मांगलिक माना गया है उन्हें धारण करने वाली। 16 संस्कारों में अन्तिम मरण को छोड़कर अन्य सभी संस्कार मांगलिक कर्म माने गये हैं। भय को भाग देने वाली या खदेड़ देने वाली। भय का भ ले लिया। द्रावयति (खदेड़ना) का द्र ले लिया। निद्रा को भाग देने वाली अर्थात् समाप्त कर देने वाली। भ्रमर को भाग देने वाली या दूर कर देने वाली। शुक्र दोष को भाग देने वाली अर्थात् समाप्त कर देने वाली। एकाक्षरी कोष में भ के कई अर्थ दिये गये है जैसे भय, निद्रा, भ्रमर, शुक्र, वन। वन से अराजक तत्वों को भाग देने वाली। वैदिक कोष में लिखा है कि अभिद्रवणीयम भवति इति भद्रा, जिसके पास जाना चाहिए अर्थात जो अच्छा है, उपयोगी है वह भद्रा है। भजनीयम् भूतानाम् अर्थात प्राणियों के लिए उपयोगी अर्थात उपभोग या सेवन करने लायक पदार्थ भद्र है। भज्+रन् प्रत्यय से भद्र शब्द बना। भद्र+आ, आ का अर्थ है देना। ऐसे पदार्थो को देने वाली।

386. **सुभद्रा** – सुन्दर कल्याण देने वाली। सुभद्र+आ, सुभद्र का अर्थ है सुन्दर कल्याण एवं आ का अर्थ है देना। कल्याण अर्थात सभी आवश्यक वस्तुओं की प्राप्ति जिससे जीवन सर्वतोभावेन सुखमय हो सके। अच्छे से अच्छे स्वरूप वाली। सु का अर्थ भी अच्छा है एवं भद्र का अर्थ भी अच्छा है। सुन्दर कल्याण स्वरूप वाली। सौभाग्यशालिनी। स्वयं सौभाग्यवती हैं और सौभाग्य देती हैं। सौभाग्य अर्थात अच्छा ऐश्वर्य। पत्नी की प्राप्ति होना कल्याण है, पर यदि पत्नी गुणवती और रूपवती भी हो तो वह सुन्दर कल्याण या श्रेष्ठ कल्याण होगा। जीविका के लिये कोई सी भी नौकरी मिल जाना कल्याण है पर नौकरियों में भी आइ.ए.एस. की नौकरी मिलना सुन्दर या श्रेष्ठ कल्याण होगा। श्री कृष्ण की बहन और अर्जुन की पत्नी सुभद्रा से अभेद है जिनका। सुभद्रा नामक गौ स्वरूपा। सुभद्रा नामक नदी स्वरूपा। सुभद्रा नामक संगीत की श्रुति स्वरूपा।

387. **भवदा** – शिव अर्थात मोक्ष को देने वाली। शिव का साक्षात्कार कराने वाली। संसार को देने वाली अर्थात संसार को अस्तित्व में लाने वाली। कामदेव को देने वाली अर्थात कामदेव को उनका अभीष्ठ देने वाली। सतता को देने वाली।

388. **शुम्भदैत्यविनाशिनी** – शुम्भ दैत्य का विनाश करने वाली। शुम्भ अहंकार का प्रतीक है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ अहंकार का विशेष रूप से नाश करने वाली अर्थात पूर्णतः नाश करने वाली।

389. **भवानी** – भव अर्थात शिव की पत्नी। भवस्य पत्नी इति भवानी। शिव को जीवन दान देने वाली। भव का अर्थ है शिव, अन् धातु का अर्थ है सॉस लेना अर्थात जीवन देना। भवम् आनयति जीवयति इति भवानी। शिवजी द्वारा विष पान करने पर देवी ने ही उन्हें जीवित रखा था। संसार में प्राण संचार करने वाली यह अर्थ भी हो सकता है। भव का अर्थ संसार, कामदेव भी होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ शिव, संसार और कामदेव को जीवन दान देने वाली अर्थात इनकी रचना करने वाली।

390. **भैरवी** – भयंकर शब्द करने वाली। रव का अर्थ है शब्द। जो भरण (भरण पोषण अर्थात पालन), रवण (संहार), वमन (सृष्टि) करे वह है भैरवी। वमन अर्थात उल्टी में कय को मुँह से बाहर निकालते हैं अर्थात सृष्टि को अपने से बाहर निकालना अर्थात सृष्टि करना। भैरम् (भयजनकम्) वदति इति भैरवी, जो भयजनक वाक्यों जैसे छिन्दि छिन्दि, भिन्दि भिन्दि आदि को बोलने वाली है। भैरम् (दुःखसमूहम्) वान्ति (हिनस्ति) इति भैरवी (स्त्रीलिंग में)। दुःख समूहों को नष्ट करने वाली या दुःखसमूह नष्ट करने वाले भैरव (शिव) की पत्नी।

391. **भीमा** – रौद्र या भयानक रूप धारण करने वाली। भीम अर्थात शिव की शक्ति स्वरूपा। भीम अधिक बल का एवं विशाल शरीर का भी बोध कराता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ अधिक बलवाली एवं विशाल स्वरूप वाली भी हो सकता है। जिससे सभी भयभीत होते हैं। विभ्यति यस्याः सर्वे, सा भीमा इति उच्यते। अग्न्यादयो अस्याः विभ्यति। भयात् अस्याः अग्निस्तपति। जिसके भय से अग्नि, सूर्य, वायु आदि देवता अपने कार्य को सुचारू रूप से करते हैं उस परमसत्ता का नाम भीम या भीमा है। जो शत्रुओं के लिए भयंकर है। शत्रुभयंकरत्वात् भीमा। जो धर्मभीरू हैं अर्थात धर्म से विचलित होने पर डरते हैं अर्थात धार्मिक हैं उन्हें सम्मान देने वाली। भीरून् (धर्मभीरून्) मानयति इति भीमा। संस्कृत में कभी कभी आरम्भ का अ अक्षर छूट जाता है, अतः भीमा का अर्थ अभीमा भी कर सकते हैं अर्थात जो सज्जनों के लिए भयंकर नहीं है। भीम (अर्थात शिव) में विराजमान। भयोत्पादक पदार्थों जैसे नृसिंह आदि के अन्दर विचरण करने वाली अर्थात विराजमान। भीमान्तर्यामी भीमा। भक्तों को डरो मत, ऐसा विश्वास दिलाने वाली। भी अर्थात भय, मा अर्थात नहीं। भीः मा इति प्रत्यायन् अभयदो भीमा। भय का निर्माण करने वाली अर्थात दुष्टों के लिए भय का निर्माण करने वाली या देने वाली। भियं माति निर्माति। सज्जनों के भय का नाश करने वाली। भियम् माति नाशयति इति भीमा।

392. **भद्रकाली** – कल्याण करने वाली। भद्रकाली अर्थात भद्रकारी। भद्रम् कलयति रचयति इति भद्रकाली। जो कल्याण की रचना करती है वह भद्रकाली है। भद्रम् (परममंगलम्/मोक्षम्) कलयति संकलयति इति भद्रकाली अर्थात परममंगल मोक्ष का संकलन करने वाली या देने वाली भद्रकाली है। भद्रम् कलयति प्रेरयति इति भद्रकाली। मंगल को प्रेरित करने वाली अर्थात प्रेरित कर भक्तों तक पहुँचाने वाली। तात्पर्य हुआ शुभ, मंगल को अपने उपासको तक पहुँचाने वाली।

393. **सुभद्रिका** – सदैव या अत्यन्त प्रसन्न रहने वाली। सुभद्र का एक अर्थ प्रसन्नता भी है। सुन्दर भद्र स्वरूप वाली। अधिक सौभाग्यशाली। उत्तम सुख–सम्पदा से युक्त। सुभद्र का अर्थ है उत्तम सुख सम्पदा। ठन् प्रत्यय लगाने से इक हो गया जो युक्त अर्थ देता है। परमसुखमय ब्रह्म में रहने वाली ब्रह्म विद्या स्वरूपा। ये दोनों अर्थ वैदिक कोष में दिये गये हैं। शोभनानि भद्राणि अस्या सन्ति इति सुभद्रिका। सुभद्र में ठन् प्रत्यय लगाने से अन्त में

इक् होकर सुभद्रिक शब्द बनेगा जो स्त्रीलिंग में सुभद्रिका हो जायेगा जिसका अर्थ होगा सब अच्छाइयाँ इसकी है अर्थात् अच्छाईयों से भरपूर या उनकी स्वामिनी या उनको उत्पन्न करने वाली। कन् प्रत्यय प्रतिकृति अर्थ में भी होता है। अतः सुभद्रिका अर्थ होगा अच्छाईयों की प्रतिमूर्ति स्वरूपा अर्थात् अच्छाईयों के सदृश वाली।

394. **भगिनी** – छः भगों (ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य) से युक्त। ऐश्वर्यशालिनी। ऐश्वर्य से युक्त। ऐश्वर्य का तात्पर्य है अष्टसिद्धियाँ एवं अष्ट लक्ष्मियाँ। शक्ति और संपन्नता के मेल को ऐश्वर्य कहते हैं। अष्टैश्वर्य अर्थात अष्ट सिद्धि या अष्ट लक्ष्मी। भग के अन्तर्गत ऐश्वर्य आता है पर कभी कभी भग को भी ऐश्वर्य कह दिया जाता है। कभी कभी किसी राज्य का जो नाम होता है, उसी नाम का उस राज्य का शहर भी होता है। ललिता त्रिपुर सुन्दरी देवी माँ के स्वरूप वाली या उनसे अभेद है जिनका अर्थात उनसे अभिन्न स्वरूप वाली। ललिता त्रिपुर सुन्दरी देवी माँ को भगवान विष्णु की बहन माना जाता है। दुर्गा सप्तशती में मूर्ति रहस्य में जोड़े में जो देवी देवता उत्पन्न हुए, वे एक दूसरे के भाई बहन थे। उन बहनों के स्वरूप वाली। भगवान श्री कृष्ण की चार बहनों का उल्लेख मिलता है जो हैं – एकांगा, सुभद्रा, द्रौपदी, महामाया (विंध्यवासिनी देवी)। इन बहनों के स्वरूप वाली। कुण्डलिनी शक्ति को जीवात्मा की बहन कहते हैं, उस कुण्डलिनी के स्वरूप वाली।

395. **भगरूपा** – ऐश्वर्य स्वरूप वाली। परम ऐश्वर्य स्वरूप वाली। सूर्य के स्वरूप वाली। भग का एक अर्थ सूर्य भी होता है। रूप वह है जो आँखों से दिखता है अतः इस नाम का अर्थ हुआ जिनका ऐश्वर्य दिखता है। भगम् रूपयति इति भगरूपा अर्थात ऐश्वर्य को दिखाने वाली भगरूपा है। ऐश्वर्य की रचना करने वाली।

396. **भगमाना** – ऐश्वर्य के मान (अभिमान या आत्मगौरव) से युक्त अर्थात जिसे ऐश्वर्य का मान है अर्थात जिसके अन्दर यह भाव है मेरे पास दूसरों से बढ़कर ऐश्वर्य है। ऐश्वर्य से जानी जाती है अर्थात ऐश्वर्य से इनका ज्ञान होता है। मन्यते इति मना। जिसे जाना जाता है। मीयते इति मना जिसे मापा जाता है। ऐश्वर्य से मापी जाने वाली। जो ऐश्वर्य का मानदण्ड है। मान अर्थात मन्त्र, ऐश्वर्य को देने का मन्त्र। ऐश्वर्य के कारण प्रतिष्ठा, सम्मान देने वाली अर्थात ऐश्वर्य देकर अपने भक्तों को प्रतिष्ठा और सम्मान दिलाने वाली।

397. **भगोत्तमा** – सर्वश्रेष्ठ ऐश्वर्य या वैभव स्वरूपा। सर्वश्रेष्ठ ऐश्वर्य या वैभव वाली। जैसे नरोत्तम शब्द होता है उसी प्रकार से भगोत्तमा शब्द है जिसकी व्युत्पत्ति है भगेसु उत्तमा।

398. **भगप्रिया** – शिव की प्रियतमा। भग का एक अर्थ शिव भी है। ऐश्वर्य है प्रिय जिन्हें। ऐश्वर्यशाली लोगों को जो प्रिय हैं। शिव से प्रसन्न रहने वाली। शिव को प्रसन्न करने वाली। सूर्य से प्रसन्न रहने वाली।

399. **भगवती** – समृद्धि एवं ज्ञान को देने वाली। समृद्धि एवं ज्ञान का विस्तार करने वाली। भग का एक अर्थ है समृद्धि एवं व का अर्थ है ज्ञान। तन् धातु में ड प्रत्यय लगाने से त शब्द बनता है जिसका अर्थ होता है विस्तार करने वाला, देने वाला। स्त्रीलिंग में त का ती हो गया। भगवान शब्द का अर्थ कुछ आचार्यों द्वारा इस प्रकार किया गया है– जो पाँचों महाभूतों का स्वामी है, उनको उत्पन्न करने वाला है एवं उनसे सृष्टि का निर्माण करने वाला है। भ (भूमि) + ग (गगन या आकाश) + व (वायु) + अ (अग्नि) + न (नीर अर्थात् जल)। इस प्रकार भगवान शब्द में पाँचों तत्व या महाभूत आ जाते है। भगवती का अर्थ भी होगा जो पाँचों महाभूतों को उत्पन्न करने वाली है, उनकी स्वामिनी है, उनके द्वारा सृष्टि का निर्माण करने वाली है। ऐश्वर्य से युक्त। विभिन्न प्रकार के ऐश्वर्यों से विभूषित। छः प्रकार के भगों से युक्त। ऐश्वर्य, धर्म, ज्ञान, यश, श्री, वैराग्य। यहाँ ऐश्वर्य का तात्पर्य है कुछ भी कर सकने का सामर्थ्य। ऐश्वर्य का तात्पर्य है इच्छा में बाधा का न होना अर्थात जो इच्छा करे वह हो जाना। जब केवल भग या ऐश्वर्य लिखा हो तो उसका तात्पर्य छह भगों या ऐश्वर्यों से होता है। भग या ऐश्वर्य के छह अंगों में एक अंग का नाम भी ऐश्वर्य या भग है ठीक उसी प्रकार जैसे वाशिंगटन राज्य में वाशिंगटन नामक शहर भी है। अंगरूप ऐश्वर्य का तात्पर्य है दूसरे को नियन्त्रित करने की शक्ति अर्थात अपने अनुसार चलाने की शक्ति।

400. **भगवासा** – ऐश्वर्य में निवास करने वाली। ऐश्वर्यशाली अर्थात अति प्रशस्त वस्त्रों (मँहगे और सुन्दर) को धारण करने से विभूषित यह अर्थ भी हो सकता है। यहाँ वास का अर्थ है वस्त्र।

401. **भगाकरा** – जो ऐश्वर्य की खान है अर्थात सभी ऐश्वर्यों से सम्पन्न है। या सभी ऐश्वर्य जिनसे निकलते हैं। आकर का अर्थ है खान। ऐश्वर्य के आकर वाली। साक्षात ऐश्वर्य जिनसे प्रस्फुटित होता है। खान से ही सब कुछ निकलता है।

402. **भगसृष्टा** – ऐश्वर्य (अर्थात श्रेष्ठ सम्पत्तियों, वस्तुओं, पदार्थों) की सर्जक अर्थात ऐश्वर्य का निर्माण करने वाली।

403. **भाग्यवती** – भाग्यों से युक्त। भाग्य का अर्थ है सब इच्छा पूरी होना, अनहोनी और दुर्घटना से रक्षा करना। मन में सोचा मेहनत की और प्राप्त हो गया। परिश्रम करने से सफलता मिलना यह है भाग्य। सौभाग्य का अर्थ होता है भाग्य+सेहत+घर में पूर्ण प्रेम (good relation) + कारोबार सही हो अर्थात जीवकोपार्जन ठीक हो + समाज में इज्जत + चारों ओर प्रगति + धर्म के कार्य में योगदान अर्थात सदगुणी होना और धर्म के रास्ते में चलना। परमसौभाग्य का अर्थ होता है मोक्ष, बिना इच्छा किए मिलना, मांगा भी नहीं चीजें सामने हाजिर हो गई, प्रकृति ने दे दिया।

404. **भगरूपा** – शिव, चन्द्रमा, सूर्य, दाम्पत्य सुख, वैवाहिक आनन्द के रूप में है जो। भग का अर्थ सूर्य भी होता है। द्वादश भग अर्थात द्वादश सूर्य। ऐश्वर्य स्वरूपिणी। भग का रूप धारण किये हुए। भग के कई अर्थ होते हैं। ऐश्वर्य संघात अर्थात समस्त ऐश्वर्य युक्त। समस्त शोभा युक्त। भग (Fortune) की एक परिभाषा है श्री (wealth) काम (desire) माहात्म्य (magnanimity) वीर्य (prowess, skill) यत्न (striving) कीर्ति (fame) इनसे युक्त जो भी हो वह भगपदवाच्या होगा। जो भी तीनों लोको में मंगल अर्थात auspicious है वह देवी का ही रूप है। (magnanimity means kind, generous, forgiving (विशेषकर शत्रुओं के प्रति), prowess (कुशल) means great skill at doing. Strive means to work very hard to achieve something or to defeat some one.

405. **भगासिनी** – सुन्दर और श्रेष्ठ आसन पर विराजमान। भग में श्री भी आता है, श्री का अर्थ है श्रेष्ठ, सुन्दर। सर्वश्रेष्ठ आसन पर विराजमान, अच्छे से अच्छे उत्मोत्तम आसन पर विराजमान।

406. **भगलिंगप्रियादेवी** – ऐश्वर्य से युक्त शिव की प्रिया देवी। यहाँ लिंग का अर्थ है शिव। मूलाधारचक्र में जो त्रिकोण होता है उसमें जो शिवलिंग होता है उसे भगलिंग कहते हैं। तन्त्र में भग का एक अर्थ त्रिकोण भी है। एक स्थान पर भगलिंग का अर्थ प्रकृति और पुरुष दिया गया है।

407. **भगलिंगपरायणा** – मूलाधार चक्र के त्रिकोण में स्थित स्वयंभू शिवलिंग अर्थात भगलिंग आश्रय है जिसका। अर्द्धनारीश्वर रूप में भग (स्त्री योनि) और लिंग (पुरुष जननेद्रिय) है आश्रय जिसका अर्थात जिसमें भग और लिंग दोनो हैं। स्त्री योनि (भग) और पुरुष जननेद्रिय काम वासना की शक्ति या प्रजनन की शक्ति का प्रतीक है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ प्रजनन शक्ति या काम शक्ति का आश्रय। आनन्द प्राप्त होने के कारण भग और लिंग है आश्रय जिनका अर्थात देवी सूक्ष्म रूप में इन दोनो स्थानों में रहती हैं। अन्यथा भी देवी सर्वव्यापक हैं। ऐश्वर्य युक्त लिंग स्वरूप शिव में निरत रहने वाली। (लिंग का अर्थ ज्ञापक अर्थात् प्रकट करने वाला अर्थात् उत्पन्न करने वाला भी होता है। लिंग का अर्थ आलय अर्थात् निवास स्थान या सभी का परम कारण भी है। लीयते यस्मिन् सर्वे अर्थात् सब दृश्य जिसमें लीन हो जाते है वह लिंग है। लिंग के ये अर्थ लेकर के भी हम शब्दों के अर्थ कर सकते हैं।) (भगलिंग का अर्थ समृद्धि का कारण, यह भी कर सकते हैं। भग का अर्थ है समृद्धि

एवं लिंग का अर्थ है कारण। इस प्रकार समृद्धि को देने वाले देवता या शक्तियॉ भगलिंग होगी। इस प्रकार से भी इन नामों के अर्थ निकाले जा सकते हैं।)

408. **भगलिंगस्वरूपा** – भग (ऐश्वर्य) और लिंग के स्वरूप को धारण करने वाली। स्त्री की योनि और पुरुष के जननेन्द्रिय के स्वरूप वाली। देवी शक्ति या ऊर्जा रूप हैं और प्रत्येक चीज ऊर्जा या शक्ति से बनी होने के कारण ऊर्जा या शक्ति रूप अर्थात देवी रूप है। जो भी चीज अस्तित्व में है उसकी अनदेखी नहीं की जा सकती। प्रत्येक चीज ऊर्जा है और ऊर्जा ही शक्ति है अर्थात देवी है।

409. **भगलिंगविनोदिनी** – छह भगों से युक्त शिव के साथ विनोद करने वाली। ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य यह छह भग हैं। लिंग अर्थात शिवलिंग अर्थात शिव। ऐश्वर्ययुक्त लिंग अर्थात शिव से विनोद करने वाली या हँसी मजाक करने वाली। भग और लिंग के द्वारा समस्त संसार का विनोद करने वाली। स्त्री की योनि भग है और पुरुष का जननेन्द्रिय लिंग है। भग और लिंग से आनन्दित होने वाली। ऐश्वर्य के चिन्हों से आनन्दित होने वाली या ऐश्वर्य के चिन्ह जिन्हें प्रिय या अच्छे लगते हैं। लिंग का एक अर्थ है चिन्ह।

410. **भगलिंगरतादेवी** – ऐश्वर्य के प्रतीक अर्थात सुखदायी एवं मॅहंगी वस्तुओं में लगी रहने वाली देवी अर्थात उसका उपयोग करने वाली देवी। ऐश्वर्य के प्रतीक अर्थात सुखदायी एवं मॅहंगी वस्तुओं से प्रसन्न रहने वाली देवी। रता का अर्थ लगी रहने वाली, प्रसन्न होता है। देवी अर्थात प्रकाशमान शक्ति या प्रकाश करने वाली शक्ति, दूसरों को देने वाली शक्ति। भग स्त्री की जननेन्द्रिय है एवं लिंग पुरुष की जननेन्द्रिय है, अतः भगलिंग सृष्टि का कारण है। प्रतीक शास्त्र नामक पुस्तक में श्री परिपूर्णानन्द वर्मा जी ने भगलिंग को विश्व का प्रतीक माना है क्योंकि भगलिंग से ही विश्व पैदा हुआ है। उन्होंने भगलिंग को विश्व के कारण के स्थान पर विश्व को ही भगलिंग का अर्थ बता दिया है। चूॅकि कारण कार्य में व्याप्त होता है अतः सम्भव है कि उन्होने भगलिंग को समूचे विश्व का प्रतीक मान लिया। विश्व में लगी रहने वाली अर्थात विराजमान देवी। देवी शक्ति के रूप में कण कण में विराजमान है। ऐश्वर्य रूपी पताका में रमण करने वाली अर्थात उससे सुन्दर दिखने वाली देवी। छह भगों से युक्त शिव से प्रसन्न रहने वाली या आनन्दित रहने वाली। ऐश्वर्य और शिव में रत रहने वाली देवी। त्रिकोणस्थ लिंग से आनन्द अनुभव करने वाली। रता का अर्थ है delightful/ pleased/ devoted. भग और लिंग में अनुरक्त। ऐश्वर्य के चिन्ह से युक्त देवी। मूलाधार चक्र में जो त्रिकोण हैं उसमें स्थित लिंग भगलिंग है, उससे प्रसन्न देवी। लिंग शिव तत्व, ब्रह्म तत्व, जीवन शक्ति का प्रतीक है। लीनम् गमयति इति लिंगम् अर्थात जो छिपे हुए अर्थ (यहाँ पर ब्रह्म से तात्पर्य है) को ज्ञापित करे या बताये वह लिंग है। इस प्रकार लिंग चिन्ह के अर्थ को देता है।

411. **भगलिंगनिवासिनी** – ऐश्वर्य और शिवलिंग में निवास करने वाली। स्त्री की योनि और पुरुष के जननेन्द्रिय में निवास करने वाली (शक्ति के रूप में) । देवी सर्वव्यापक हैं अतः इन स्थानों पर भी हैं। स्त्री योनि (भग) और लिंग (पुरुष जननेद्रिय) में शक्ति के रूप में स्थित तभी ये इन्द्रियाँ काम कर पाती है। शक्ति ही देवी हैं।

412. **भगमाला** – ऐश्वर्य की माला से अलंकृत। माला का अर्थ समष्टि या समूह कर सकते हैं अर्थात सभी ऐश्वर्यों से युक्त यह अर्थ कर सकते हैं। मल धारणे धातु होती है। आनन्द देने वाली शक्ति या पदार्थो को धारण करने वाली। वेद में भग शब्द आनन्द देने वाले देवता के लिए प्रयुक्त हुआ है।

413. **भगकला** – षडैश्वर्य से सुन्दर स्वरूप वाली। कला अर्थात सुन्दर स्वरूप, रेखा या आधार। ऐश्वर्य की आधार स्वरूपा अर्थात ऐश्वर्य यही से उत्पन्न होते हैं। कला अर्थात शक्ति। कला अर्थात अवयव अर्थात सूक्ष्म शक्ति। ऐश्वर्य को उत्पन्न करने वाली शक्ति स्वरूपा। ऐश्वर्य को उत्पन्न करने वाली सूक्ष्म शक्ति। कला अर्थात अंश या शक्ति या सूक्ष्म शक्ति या विभाजित करने वाली शक्ति। ऐश्वर्य को विभाजित करने वाली शक्ति अर्थात

कई प्रकार के ऐश्वर्य करने वाली शक्ति। ऐश्वर्य की शोभा से युक्त। कला का एक अर्थ शोभा भी होता है। ऐश्वर्य के कारण सुन्दर। भग (योनि) की कला (अत्यन्त सौन्दर्य/शक्ति) से युक्त। ऐश्वर्य का प्रारम्भ जिनसे होता है। कला का अर्थ है रेखा, अंश। अंश का अर्थ है प्रारम्भ। ऐश्वर्य की कला से सुशोभित। जिसके द्वारा किसी की सुन्दरता बढ़ाई जाती है वह है कला। कल्यते इति कला। कला का अर्थ सुन्दरता है। भग के कारण सुन्दर। भग का अर्थ सुन्दर भी होता है। कला का अर्थ है अभिव्यक्ति (manifestation) सुन्दरता अभिव्यक्त हुई। अभिव्यक्त ऐश्वर्यरूपा, यह अर्थ भी कर सकते हैं क्योंकि कला का एक अर्थ है अभिव्यक्ति। इस प्रकार भगकला का अर्थ हुआ जो ऐश्वर्य के कारण सुन्दर है। दूसरा अर्थ हुआ ऐश्वर्य का अंश अर्थात जहाँ से ऐश्वर्य प्रारम्भ होता है। कला का अर्थ किसी वस्तु का सबसे सूक्ष्म अंश होता है जिससे वह वस्तु बनती है। भग का सूक्ष्म अंश जिससे भग बना वह भी देवी है। भग या ऐश्वर्य की पराकाष्ठा यह अर्थ भी कर सकते हैं।

414. **भगाधारा** – ऐश्वर्य का आधार अर्थात ऐश्वर्य जिन पर टिका है या पैदा होता है। ऐसी भग (योनि) वाली जो सृष्टि का आधार है। जिनका भग सृष्टि का आधार (कारण) है। शिव है आधार जिनका। भग का एक अर्थ शिव भी है। ऐश्वर्य है आधार जिनका। शक्ति को टिके होने के लिये आधार चाहिये। शक्ति का आधार शिव होते हैं। यही कारण है कि शक्ति साधक शिव साधना भी करते हैं।

415. **भगाम्बरा** – सुन्दर वस्त्रों को धारण किये हुए। ऐश्वर्य को सूचित करने वाले वस्त्रों को धारण किये हुए अर्थात मँहगे, सुन्दर और सुखदायी वस्त्रों को धारण किये हुए। वस्त्र शरीर के चारों ओर होता है। जब सगुण साकार रूप में अवतार लेती हैं तो उनके चारों ओर ऐश्वर्य होता है। हिमालय की पुत्री के रूप में जन्म लियाा था तो राजा होने के कारण उनके चारों ओर ऐश्वर्य बिखरा होना स्वाभाविक है। अतिशय सुन्दर वस्त्रों से सुशोभित। भग में श्री भी आता है, श्री अर्थात लक्ष्मी अर्थात सुन्दरता। भग अर्थात ऐश्वर्यशाली अर्थात अतिशय सुन्दर। सुखप्रद/आनन्दप्रद वस्त्रों से युक्त।

ऐश्वर्य की रक्षा करने वाली। अम्बर का अर्थ है वस्त्र और वस्त्र शरीर की रक्षा करने के कारण रक्षक शक्ति का प्रतीक है। ऐश्वर्य का अर्थ है कि ईश्वर का भाव अर्थात ईश्वर से सम्बन्धित शक्ति एवं पदार्थ। जिस शक्ति से सभी इच्छाएं पूरी होती हो अर्थात चाहे जैसी इच्छा करो, उसे पूरा होना ही है, उस शक्ति को ऐश्वर्य कहते है। सामान्य रूप से ऐश्वर्य का तात्पर्य है कि शक्ति + सम्पन्नता अर्थात अष्ट सिद्धि रूपी शक्ति + अष्ट लक्ष्मी। ईश्वरस्य भावः ऐश्वर्यम। यह ऐश्वर्य दो भागों में विभक्त है। दिव्य शक्ति के रूप में और दिव्य पद्वार्थ के रूप में। सूर्य, अग्नि और वायु आदि में यह दिव्य शक्ति क्रमशः प्रकाश, दाह और प्राण के रूप में विद्यमान रहती है तथा मेघ के द्वारा प्रदत्त जल, जल से उत्पन्न अन्न और अन्न से उत्पन्न जीव आदि दिव्य पदार्थ है। यह दिव्य शक्ति और दिव्य पदार्थ दोनों ही परमात्मा के द्वारा उत्पन्न है। इसी कारण इन दिव्य शक्तियों और पदार्थो की संज्ञा (नाम) ऐश्वर्य है। गीता की दृष्टि में अपने–अपने वर्ग में श्रेष्ठतम रूप में विद्यमान विष्णु आदि पदार्थ परमात्मा के ऐश्वर्य है। गीता में परमात्मा के इस प्रकार के ऐश्वर्य को विभूति कहा गया है जैसे नदियों में गंगा, पहाड़ों में हिमालय, वेदों में सामवेद, वृक्षों में पीपल ये भगवान की विभूति या ऐश्वर्य है। मनुष्य को इनके द्वारा इच्छित शक्ति प्राप्त होती है। ऐश्वर्य भग का एक अवयव है पर कभी–कभी भग को ही ऐश्वर्य कह देते है। इसमें आश्चर्य नहीं करना चाहिए। जैसे वांशिगटन एक राज्य का भी नाम है और उस राज्य में आने वाले एक शहर का नाम भी है। भग के अर्थात ऐश्वर्य के 06 अंग है। जो है ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान व वैराग्य। अंग के रूप में जो ऐश्वर्य है उसका तात्पर्य है कुछ भी कर सकने की शक्ति। ऐश्वर्य की परिभाषा इच्छा का व्याघात न हो, ऐसी शक्ति। इसके लिए अणिमा, लघिमा, महिमा आदि सिद्धियों का होना आवश्यक है। इसी कारण अष्ट सिद्धियों को भी ऐश्वर्य कहा जाता है। आरम्भ में ऐश्वर्य का अर्थ शक्ति के सन्दर्भ में था किन्तु बाद में धन सम्पदा को भी ऐश्वर्य का अंग माना जाने लगा क्योंकि धन भी एक बहुत बड़ी शक्ति है। आज ऐश्वर्य की

परिभाषा है अष्ट सिद्धि+अष्ट लक्ष्मी। सिद्धियों से ही शक्ति होती है क्योंकि शक्ति का अर्थ है कुछ कर पाने की या कुछ उत्पन्न कर पाने की सामर्थ्य।

416. **भगवेगा** – ऐश्वर्य के प्रवाह स्वरूपा अर्थात इनमें ऐश्वर्य का लगातार प्रवाह होता है। लगातार ऐश्वर्य देने वाली। वेग अर्थात प्रवाह अर्थात निरन्तर या लगातार। भगवेग+आ, आ का एक अर्थ है देना। ऐश्वर्य में अग्रणी। ऐश्वर्य के कारण प्रवाह वाली, गति वाली। ऐश्वर्य के कारण वेगवान। वेग का अर्थ है स्फूर्त होना। आपने देखा होगा कि कोई व्यक्ति घर से समृद्ध है तो उसका चेहरा स्फूर्तिमान, दीप्तिमान होता है, नहीं तो बुझा हुआ होता है। अर्थ (ऐश्वर्य) की ऊष्मा से चेहरा खिल जाता है। कहते हैं टक है तो टकटका। भग की वेगवती शक्ति अर्थात आकर्षण शक्ति से युक्त। इस नाम का अर्थ यह भी कर सकते हैं जिससे दाम्पत्य सुख की धारा अर्थात वैवाहिक आनन्द बना रहता है। दाम्पत्य सुख की सततता बनाये रखने वाली यह अर्थ हुआ। भग का एक अर्थ दाम्पत्य सुख होता है और वेग का अर्थ है धारा अर्थात continue रहना। ऐश्वर्य से वेगवती अर्थात चमकने वाली।

417. **भगाभूषा** – ऐश्वर्य से आभूषित। ऐश्वर्य से बढ़ी हुई शोभा वाली। आभूषण शोभा बढ़ाते हैं। ऐश्वर्य ही है प्रमुख वेश–भूषा जिनकी।

418. **भगेन्द्रा** – श्रेष्ठ ऐश्वर्य स्वरूपा या श्रेष्ठ ऐश्वर्य को धारण करने वाली। भग का अर्थ है ऐश्वर्य एवं इन्द्र का अर्थ है श्रेष्ठ। भग में केवल ऐश्वर्य (शक्ति+सम्पन्नता) ही नहीं आता बल्कि इसके 06 अंग हैं जो हैं ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य। उच्चकोटि के या श्रेष्ठ ऐश्वर्य वाली। ऐश्वर्य से दिव्यता को प्राप्त करने वाली। ऐश्वर्यशालियों में सर्वश्रेष्ठ।

419. **भाग्यरूपिणी** – भाग्यस्वरूपा। परिश्रम करने के बाद कार्यों में सफलता मिलना, दुर्घटना से बचना भाग्य कहलाता है। दैववशात् कुछ महत्वपूर्ण या बहुत कुछ प्राप्त हो जाना भाग्य है। किस्मत स्वरूपा अर्थात अच्छी किस्मत स्वरूपा। देवी या देवता देने वाले होते हैं अर्थात जो उनके पास होता है, उसे दे देती है। इस प्रकार लक्षणा से अर्थ हुआ अच्छी किस्मत देने वाली, यद्यपि शब्द से देना अर्थ नहीं निकलता है। भाग्य का अर्थ उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र भी है। उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र स्वरूपा। जो बाँटा जा सके या विभाजित किया जा सके उसे भी भाग्य कहते हैं, ऐसी वस्तुओं के स्वरूप वाली। जो भी भजनीय या सेवनीय (उपयोग करने योग्य) वस्तुएं हैं, उन्हें भी भाग्य कहा जा सकता है, ऐसी पदार्थों के स्वरूप वाली।

420. **भगलिंगांगसम्भोगा** – परमशिव के प्रत्येक भाग से आनन्द का उपभोग करने वाली। भग अर्थात स्त्री जननेन्द्रिय अर्थात सृष्टि का कारण, लिंग अर्थात पुरुष जननेन्द्रिय अर्थात सृष्टि की उत्पत्ति में बीज का कारण। परमशिव में शिव (पुरुष रूप) एवं शक्ति (स्त्री रूप) दोनों होते हैं। भगलिंग को सृष्टि का कारण अर्थात परमशिव कह सकते हैं। ऐष्वर्य के प्रतीक अर्थात सुखदायी एवं मॅहंगी वस्तुओं के हिस्सों का अच्छी प्रकार से उपभोग करने वाली अर्थात उसका आस्वादन लेने वाली। भग अर्थात ऐश्वर्य, लिंग अर्थात प्रतीक या चिन्ह, अंग अर्थात हिस्सा। किसी वस्तु का उपभोग सम्पूर्ण रूप से एक साथ नहीं होता बल्कि एक एक हिस्से करके ही होता है। जैसे बड़ा मकान हो तो आप एक एक कमरे में जाकर के ही उसके सुख का अनुभव ले सकेंगे, न कि इकठ्ठा एक साथ। आज के समय में बड़े बड़े मकान, फार्म हाउस, मँहगी गाड़ियॉ, पहनने, खाने पीने के सामान, फ्रिज, ए.सी. जो शरीर को सुख देते हैं तथा मँहगे हैं उन्हें ऐश्वर्य सूचक पदार्थ कहा जा सकता है। भग स्त्री की जननेन्द्रिय है एवं लिंग पुरुष की जननेन्द्रिय है, अतः भगलिंग सृष्टि का कारण है। प्रतीक शास्त्र नामक पुस्तक में श्री परिपूर्णानन्द वर्मा जी ने भगलिंग को विश्व का प्रतीक माना है क्योंकि भगलिंग से ही विश्व पैदा हुआ है। उन्होंने भगलिंग को विश्व के कारण के स्थान पर विश्व को ही भगलिंग का अर्थ बता दिया है। चूँकि कारण कार्य में व्याप्त होता है अतः सम्भव है कि उन्होने भगलिंग को समूचे विश्व का प्रतीक मान लिया। विश्व के अंगों

का अच्छी प्रकार से उपभोग करने वाली अर्थात उनसे सुखानुभूति लेने वाली। पानी, हवा, भूमि, प्रकृति, सूर्य, चन्द्र, तारे आदि सभी विश्व के अंग हैं। लिंग का अर्थ चिन्ह अर्थात पताका भी है। ऐश्वर्य रूपी पताका से सम्यक् उपभोग करने वाली। ऐश्वर्य रूपी पताका से जिनका सम्यक् ज्ञान होता है। ऐश्वर्य की पताका, जो रमणीय होती है, उसमें रमण करने वाली अर्थात उससे सुन्दर दिखाई देने वाली। इस नाम का अर्थ जीवात्मा स्वरूपा हुआ। इन्द्रियॉ और मन जो भी आस्वाद लेती हैं, वह वास्तव में आत्मा के द्वारा ही लिया जाता है। बुद्धि में मनरूपी अंग को लीन कराने की क्रीड़ास्वरूपा या ऐसा होने पर होने वाले सुखानभूति स्वरूपा। सम्भोग अर्थात सुख या आनन्द। प्रतीक शास्त्र में मन को लिंग कहा गया है। लयम् गच्छति इति लिंगम् मनः। भग (योनि) को बुद्धि कहा गया है। बद्धि में मन को लीन करना अर्थात मन से बुद्धि में जाना यही भगलिंग का सम्भोग है। स्त्री जननेद्रिय (भग) और पुरुष जननेद्रिय (लिंग) रूपी अंगों से सम्भोग करने वाली। भोग का सुख भी देवी ही लेती हैं क्योंकि वे आत्मास्वरूपा हैं और आत्मा ही इन्द्रिय भोग का सुख लेती है। उस सुख को पाने के लिये ही वह स्त्री पुरुष में सम्भोग क्रिया कराती हैं। ऐश्वर्य से अनुमित/ज्ञात अंग संभोग वाली अर्थात अंगों के विस्तार वाली। ऐश्वर्य से अनुमित/ज्ञात विभिन्न अंगों के विस्तार वाली, इन अंगों से सम्भोग करने वाली। अभिज्ञान–शाकुन्तलम् के प्रथम श्लोक में पाँचों महाभूत, मन, बुद्धि, यजमान ईश्वर के अंग बताऐ गये हैं अर्थात ये प्रकृति के विस्तार हैं। सम्भोग अर्थात आभोग अर्थात विस्तार। लिंग अर्थात पहचान, ज्ञान या जिससे कोई चीज ज्ञात होती है। लीनम् गमयति अर्थात जिससे छुपा ज्ञान प्रकट हो जाए वह लिंग है। ऐश्वर्य से अनुमित (ज्ञात) विभिन्न अंगों से युक्त विस्तार वाली। ऐश्वर्य को सूचित करने वाले अंगों से पदार्थों का उपभोग करने वाली। यहाँ लिंग का अर्थ है सूचित करना। स्त्री की योनि और पुरुष के जननेन्द्रिय से सम्भोग करने वाली। जगत में यह देखा जाता है अतः इसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। जगत में जो भी कुछ है, चाहे हमें अच्छा लगे या न लगे, ऊर्जा या शक्ति का रूप है। ऊर्जा या शक्ति ही देवी हैं।

तान्त्रिक ग्रन्थों में त्रिकोण अर्थात योनि (भग) के बारें में लिखा गया है। वहाँ स्त्री या शक्ति को ही सृष्टि का मूल माना गया है। जगत में जो कुछ है, वह स्त्री रूप ही है अन्यथा निर्जीव है। भगवती शक्ति को योनिरूपा कहा गया है। स्त्री को योनिरूपा और पुरुष को लिंगरूपा माना गया है। योनि रूप को ही तन्त्र ग्रन्थों में त्रिकोण या कामकला कहा है। कामकला का नित्य (अक्षर) रूप त्रिकोण है। यन्त्र में प्रतीक रूप से मूलाधार से ब्रह्मरन्ध्र पर्यन्त अधोमुख त्रिकोण और ब्रह्मरन्ध्र से मूलाधार पर्यन्त ऊर्ध्वामुख त्रिकोण बनता है इस प्रकार षट्कोण बन जाता है। स्त्रियो मेध्यास्तु सर्वतः अर्थात स्त्रियां सर्व प्रकार से पवित्र होती हैं। यह सृष्टि का प्रतीक हैं और त्रिकोण योनि इसका स्वरूप है। योनि में बिन्दुपात (वीर्यपात) होते ही उसमें हलचल होकर उस अधोमुख त्रिकोण के ऊपर पुनः एक त्रिकोण और उस पर पुनः। यन्त्र में त्रिकोण और बीच में बिन्दु अवश्य होता है। त्रिकोण जो विश्व का मूल आधार है और बिन्दु के प्रवेश होने पर सृष्टि प्रक्रिया का विस्तार विलास आरम्भ होता है। तन्त्रालोक में लिखा है –

त्रिकोणम् भगमित्युक्तम् विपत्स्थम् गुप्तमण्डलम्।
इच्छाज्ञानक्रियाकोणम् तन्मध्ये चिंचिनी क्रमम।।

शून्य में गुप्त त्रिकोण–मण्डल है, जिसकी भग संज्ञा है। इच्छा ज्ञान क्रिया इसके तीन कोण हैं, बीच में चिंचिनी शक्ति का क्रम अर्थात स्पन्द है।

421. **भगलिंगासवावहा** – परमशिव रूपी आसव को पूर्ण रूप से धारण करने वाली। परमशिव आनन्द स्वरूप है अतः उसे आसव (मद्य या शराब) कह सकते हैं। भग अर्थात स्त्री जननेन्द्रिय अर्थात सृष्टि का कारण, लिंग अर्थात पुरुष जननेन्द्रिय अर्थात सृष्टि की उत्पत्ति में बीज का कारण। परमशिव में शिव (पुरुष रूप) एवं शक्ति (स्त्री रूप)

दोनों होते हैं। भगलिंग को सृष्टि का कारण अर्थात परमशिव कह सकते हैं। ऐश्वर्य के प्रतीक आसव (मदिरा) को धारण करने वाली अर्थात अपने पास रखने वाली। कई ध्यान मन्त्रों में आया है कि देवी पानपात्र अपने पास रखे हुए हैं। आसव का अर्थ है जो निचोड़ कर निकाला गया है। विश्व भी ब्रह्म अर्थात देवी से निकले होने के कारण आसव की तरह है। विश्वरूपी आसव (मदिरा) को पूर्ण रूप से धारण करने वाली। वह् धातु का अर्थ धारण करना है। आवहा अर्थात आ+वहा, आ का अर्थ चारों ओर से या पूर्ण रूप से। एकाक्षरीकोश में आ का एक अर्थ भाव (अस्तित्व) दिया गया है। प्रत्येक पदार्थ या प्रत्येक चीज भाव है अतः कभी कभी आ का अलग से कोई अर्थ देने की जरूरत नहीं है जैसे विश्वामित्र अर्थात विश्वमित्र। मँहगे और सुखदायी पदार्थ को चारों ओर से धारण करने वाली। शिव के ज्ञान की खुमारी धारण करने वाली। भग अर्थात शिव, लिंग अर्थात प्रकट ज्ञान, आसव अर्थात शराब, मस्ती, खुमारी। यहाँ खुमारी या भगवान का नशा अर्थ लेंगे। भगलिंग ही है आसव, उसको धारण करने वाली अर्थात देने वाली। धारण अपने लिये नहीं बल्कि देने के लिए करती हैं। ऐश्वर्य और भगवान शिव के द्वारा प्राप्त होने वाले जो मादक तत्व है उसे वहन या धारण करने वाली। भग+लिंग+आसव+आवहा इस तरह से यह पूरा शब्द बना। आसव अर्थात मादक तत्व, आवहा अर्थात वहन या धारण करने वाली। ऐश्वर्य से विभूषित शिव के स्वरूप को वहन करने वाली अर्थात धारण करने वाली। स्त्री जननेद्रिय एवं पुरुष जननेद्रिय रूपी आसव (मदिरा) को धारण करने वाली अर्थात रति क्रीड़ा स्वरूपा। रति विषयक क्रिया, वही है आसव (मदिरा), इसको वहन करने वाली अर्थात धारण करने वाली। भग और लिंग द्वारा प्राप्त होने वाले रस (प्रीति/आनन्द) को धारण करने वाली।

422. **भगलिंगसमाधुर्या** – विश्व में माधुर्य युक्त अर्थात मधुर व्यवहार करने वाली। भगलिंग का अर्थ विश्व कैसे है, अन्य नामों में स्पष्ट किया जाता है। ऐश्वर्य के प्रतीकों से अर्थात सुखदायी एवं मँहगे पदार्थों से माधुर्ययुक्त दिखने वाली। लिंग का अर्थ निवास, ज्ञापक (प्रकट करने वाला) भी होता है। भगलिंग का अर्थ हुआ ऐश्वर्य का निवास अर्थात जगत स्वरूपा क्योंकि जगत ऐश्वर्य से भरा हुआ है। इस जगत में माधुर्य गुणों से युक्त। माधुर्य अर्थात जो सुख दे। शिव के ज्ञान के समान माधुर्य वाली। भग अर्थात शिव, लिंग अर्थात ज्ञान, स अर्थात समान। भग और लिंग के आनन्द से माधुर्य की सृष्टि करने वाली अर्थात इन्द्रियजन्य सुख देने वाली। भग और लिंग के सहित माधुर्य रूप वाली। भग का अर्थ ऐश्वर्य या स्त्री योनि है। लिंग का अर्थ ज्ञान, शिवलिंग या पुरुष की जननेन्द्रिय है।

423. **भगलिंगनिवेशिता** – परमशिव में अच्छी प्रकार से प्रविष्ट अर्थात रहने वाली। शक्ति रूप में परमशिव में रहती हैं। विश्व जिनमें रहता है। मँहगे और सुखदायी पदार्थ जिनमें रहते हैं। यहॉ देवी के सर्वव्यापक रूप से तात्पर्य है चूँकि इस रूप में पूरा विश्व अर्थात सभी पदार्थ उनके अन्दर रहेंगे। मनुष्य शरीर में पदार्थ को उनसे बाहर माना जा सकता है। भगवान कृष्ण ने जब अपना मुख खोलकर यशोदा माँ को दिखाया था तो सारा ब्रह्माण्ड उनके भीतर था। शिव ज्ञान में निविष्ट अर्थात प्रवेश किया है जिन्होंने। भग अर्थात शिव, लिंग अर्थात ज्ञान। बुद्धि में मन को डाला हुआ है जिसने। भग (योनि) बुद्धि का प्रतीक है और लिंग मन का प्रतीक है। भग और लिंग में निवेश करने वाली अर्थात उनमें स्थित। भग और लिंग को अपने में धारण करने वाली यह भी अर्थ हो सकता है। भग और लिंग उनमें प्रविष्ट हो जाती है ऐसा भी अर्थ है।

424. **भगलिंगसुपूज्या** – शिवलिंग के रूप में अच्छी प्रकार से पूजनीय। भग का एक अर्थ शिव है। इस प्रकार भगलिंग का अर्थ हुआ शिवलिंग। शिवज्ञान के समान अच्छी तरह पूजनीय। शिवज्ञान सभी के लिए पूजनीय होता है। ऐश्वर्य और शिवलिंग के द्वारा सम्यक् पूजा के योग्य।

425. **भगलिंगसमन्विता** – शिवज्ञान से युक्त। भग और लिंग से समन्वित/युक्त। संसार के रूप में अर्थात सांसारिक माया से युक्त। भग और लिंग से संसार उत्पन्न हुआ है, चल रहा है अतः भगलिंग सांसारिकता या सांसारिक माया का प्रतीक है। भग अर्थात ऐश्वर्य और लिंग अर्थात शिवलिंग अर्थात परमतत्व शिव।

426. **भगलिंगविरक्ता** – संसार से विरक्त अर्थात आसक्ति नहीं। मँहगे और सुखदायी पदार्थ से विरक्त अर्थात उनमें आसक्ति नहीं। राजा जनक ऐश्वर्य के बीच रहते हुए भी अनासक्त थे, कमल कीचड़ के बीच रहते हुए भी उससे अलग है। विशेष रक्त से विरक्त का अर्थ अधिक लगा हुआ भी होता है। संसार में अधिक लगी हुई अर्थात कण कण में विराजमान है। प्रत्येक कार्य के पीछे उनकी शक्ति है अर्थात सभी कुछ करने वाली वहीं हैं अर्थात वे बहुत अधिक या पूर्णरूप से लगी हुईं हैं। मूलाधार चक्र के त्रिकोण में स्थित स्वयंभू लिंग से विशेष अनुराग रखने वाली। ब्रह्मरूप में, जो सांसारिक माया से परे है। पिछले नाम में स्पष्ट किया जा चुका है कि भगलिंग सांसारिकता या सांसारिक माया का प्रतीक है। शिवज्ञान में विशेष अनुराग रखने वाली। सांसारिक ऐश्वर्य और सांसारिक ज्ञान से विरक्त। विरक्ता को विशेषण रक्ता या विगता रक्ता इस प्रकार व्युत्पन्न किया जा सकता है। यहाँ पर भग का अर्थ सांसारिक ऐश्वर्य एवं लिंग का अर्थ ज्ञान लिया गया है। चूँकि विरक्त शब्द आया है अतः आत्मज्ञान से विरक्त हुआ नहीं जाता अतः सांसारिक ज्ञान अर्थ लिया गया। ऐश्वर्य और सांसारिक ज्ञान से विरक्त रहने वाली। यहाँ लिंग का अर्थ है सांसारिक ज्ञान। शिवलिंगविरक्ता अर्थात इच्छा एवं पाखण्ड से रहित। भग = इच्छा या कामना, लिंग = पाखण्ड, लिंगवृत्ति का अर्थ होता है पाखण्ड या नकली वेश द्वारा जीविका चलाना।

427. **भगलिंगसमावृता** – मँहगे और सुखदायी पदार्थ से चारों ओर घिरी हुई। संसार है घिरा हुआ, जिनके द्वारा। समावृत अर्थात चारों ओर से घिरा। शिवज्ञान से ओतप्रोत अर्थात पूर्णरूप से ढकी हुई। मूलाधार में स्थित लिंग के चारों ओर लिपटी हुई कुण्डलिनी रूपा। भग का अर्थ है त्रिकोण/योनि में त्रिकोण/मूलाधार चक्र में जो त्रिकोण है। मूलाधार चक्र में स्थित त्रिकोण में स्थित शिवलिंग को भगलिंग कहते हैं। भग और लिंग से समावृत/परिवेष्टित/चारों ओर से घिरी हुई।

428. **माधवी** – माधव अर्थात भगवान कृष्ण की पत्नी या शक्ति से अभेद है जिनका। लक्ष्मी जी से अभेद है जिनका। मा का अर्थ है लक्ष्मी, धव का अर्थ है पति अर्थात माधव का अर्थ हुआ लक्ष्मी जी के पति अर्थात भगवान विष्णु। मधु से युक्त भगवती दुर्गा। संग्राम में राक्षस के वध के पहले देवी दुर्गा ने मधु का पान किया था। माधव की प्रिया राधा के रूप में। माधवी लता की तरह सुन्दर/सुगन्धित। माधवीलता के समान सुन्दर और सुगन्धित। श्रीकृष्ण की प्रिया राधा से अभेद है जिनका। माधव का अर्थ है श्रीकृष्ण। मा च भूत् अन्यो धवो अस्या। जिनका कोई दूसरा स्वामी नहीं है। मानां सर्ववचसाम् इयम् धवा। ''वाचो मा मातरा स्मृता'' ऐसा शास्त्रों में लिखा है। सभी प्रकार की वाणियों की स्वामिनी। मा का एक अर्थ वाणी भी है। धव का अर्थ है स्वामी। प्रमायाः धवा। बुद्धि की स्वामिनी अर्थात उस पर शासन करने वाली या नियन्त्रण करने वाली। मधुविद्यावेद्या। उपनिषद में दी गई मधु विद्या के द्वारा जानने योग्य। मधु में ''तस्य इदम्'' सूत्र से अण् प्रत्यय लगाकर माधव बनेगा जो स्त्रीलिंग में माधवी होगा। मायै अपरोक्षज्ञानाय हृदि धीयते, अन्ते वीयते गम्यते च माधवः/माधवी। अपरोक्ष ज्ञान के लिए जिन्हें हृदय में धारण किया जाता है और अन्त में जिन्हें जाना जाता है।

429. **माधवीमान्या** – लक्ष्मी जी या राधा के द्वारा माननीया/सम्मानीया।

430. **मधुरा** – मधुर स्वभाव वाली। मधुर अर्थात जिससे सुख मिले। मधु अर्थात अमृत अर्थात ब्रह्मज्ञान। मधुम् राति इति मधुरा अर्थात ब्रह्मज्ञान या मधु विद्या को देने वाली। अमृत देने वाली अर्थात मोक्ष देने वाली। मधु का एक अर्थ है अमृत। मधुर आचरण वाली अर्थात जिसकी वाणी में मिठास है एवं जिसके कार्य दूसरों को सुख देने वाले हैं। उनके द्वारा ऐसा कार्य नहीं किया जाता जो क्लेश देने वाले हैं।

431. **मधुमानिनी** – मधुर बोलने वाली या मधुर व्यवहार करने वाली किन्तु अपने भीतर मान को रखने वाली। मान अर्थात मैं दूसरों से सुन्दरता, ऐश्वर्य, शक्ति आदि में बढ़कर हूँ ऐसा भाव। अच्छे स्वभाव या सौन्दर्य के कारण

मानयुक्त। मधु अर्थात मीठा अर्थात सुखदायी बोलने वाली या सुखदायी आचरण करने वाली। अपने आपको मधु अर्थात सुन्दर मानने वाली। मानिनी अर्थात अपने आपको मानती है कि मैं ऐसी हूँ, वैसी हूँ, मैं सुन्दर हूँ।

432. **मदहासा** – स्वाभिमानपूर्वक होने वाली प्रसन्नता स्वरूपा या ऐसी प्रसन्नता से युक्त। मद के कारण प्रसन्न वदना। मद अर्थात स्वाभिमान अर्थात मेरे पास रूप, यौवन, शक्ति आदि है। दुर्गासप्तशती में देवी जी जब कहती हैं कि यो माम् जयति संग्रामे, तब इससे उनके मद का पता चलता है। मद के कारण भी प्रसन्नता होती है।

433. **महामाया** – महती माया से विभूषित या स्वरूप वाली। बड़े बड़े ऋषियों और देवो को माया में डालने वाली अर्थात वे भी असत् (क्षणभंगुर) चीजों को सत् समझने लगते हैं और फिर उसके प्रति आसक्त हो जाते हैं। वह मायाशक्ति जिसे पार पाना बड़े –बड़े देवताओं और ऋषि –मुनियों के लिए भी असम्भव है तद्रूपा। मायावियों को भी मोहित करने वाली अर्थात अनात्म वस्तुओं के प्रति आकर्षण पैदा करने वाली। यह अर्थ भी कर सकते हैं। विशाल (दुस्तर) माया जिनके अधीन हैं। महामाया यस्या सा, महामाया। महामाया जिनकी है अर्थात महामाया जिनके अधीन है। महती विश्वमोहिनी माया यदधीना सा महामाया। विशाल सबको मोहित करने वाली माया जिनके अधीन है। माया का अर्थ ज्ञान, इच्छा, महिमा (यश या प्रभाव) है। महती च माया ज्ञानं, इच्छा, महिमा च यस्या सा महामाया। जिनका ज्ञान या महिमा औरों से बढ़कर है। महती मा प्रमा यस्या सा महामा। अया शुभावहाश्च। विशाल ज्ञान वाली एवं शुभ (मंगल) लाने वाली। महती मा वागोंकारः। ताम् इयम् अयते। पूजनीय वाणी अर्थात ऊँ में गयी अर्थात उसमें स्थित या विराजमान। मा का अर्थ है वाणी। महती का अर्थ है पूजनीय अर्थात जो अन्य वाणियों से अधिक पूजनीय है। मायावियों को भी माया में डालने वाली। जो माया से बढ़कर है अर्थात भक्तों को माया से पार कराने वाली हैं। शब्द के आगे महा लगने से कई बार अर्थ ''उस शब्द से बढ़कर'' निकलता है। महा का अर्थ अत्यधिक, सर्वाधिक, पूजनीय भी होता है।

434. **मोहिनी** – संसार को मोहित कर देने वाली। अनात्म वस्तुओं के प्रति आकर्षण पैदा करना ही मोहित करना है। मोह अर्थात अज्ञान अर्थात प्राणियों एवं वस्तुओं को उस रूप में न देख पाना जिस रूप में वास्तव में वे हैं। मोह का वास्तविक अर्थ अज्ञान होता है और यह अज्ञान ही आगे चलकर अनात्म वस्तुओं में आकर्षण पैदा करता है।

435. **महदुत्तमा** – श्रेष्ठों में भी श्रेष्ठ अर्थात सर्वश्रेष्ठ। महति उत्तमा इति महदुत्तमा। सामान्यतः महोत्तमा शब्द होना चाहिए। सांख्य दर्शन में महत् शब्द का अर्थ बुद्धि किया गया है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ जो बुद्धि में उत्तम है अर्थात श्रेष्ठ बुद्धि वाली। अतिशय उत्तम। उत्मोत्तम। रूप, गुण, सौन्दर्य, शक्ति सभी में अतिशय उत्तम है।

436. **महामोहा** – सारे संसार को मोह (अज्ञान) में डालने वाली। मोह का अर्थ है शरीर को मैं (आत्मा) समझना तथा शरीर से सम्बन्ध रखने वाले क्षणभंगुर पदार्थों, प्रणियों, रिश्तेदारों में ममत्व होना। महा अर्थात ब्रह्माण्ड अर्थात सारा संसार। मोह अर्थात अज्ञान अर्थात ममत्व रूप अन्धकार, मेरा तेरा वाला भाव। बड़ो बड़ो को मोह में डाल देती हैं। मोह अर्थात शरीर और सांसारिक पदार्थों को अपना और सत्य समझने की बुद्धि। मोह अर्थात अज्ञान अर्थात कुछ का कुछ समझ बैठना। महामोह+आ, आ का अर्थ है देना। भारी मोह या तीव्र आसक्ति देने वाली। सांसारिक सुखों के भोग की इच्छा देने वाली अर्थात पैदा करने वाली। किसी विषय के प्रति उत्कृष्ट कामना महामोह है। राग को भी महामोह कहा जाता है। महामोह + आ, आ का एक अर्थ है नाश करना। उपासकों के राग या विषयों के प्रति उत्कृष्ट कामना का नाश करने वाली। सांख्यदर्शन में दस प्रकार के महामोह बताये गये हैं। पाँच इन्द्रियों के पाँच विषयों में आसक्ति को लौकिक एवं पार लौकिक दृष्टिकोण से बाँटने पर कुल दस प्रकार की आसक्ति हो जाती है जिसे महामोह कहते हैं। उस मोह (आकर्षण) को भी महामोह कहते हैं जिससे

छूटना बेहद कठिन है। दस ऐसे रिश्ते हैं जिनके प्रति मोह (आकर्षण) छूटना बहुत मुश्किल है और ये हैं – माता, पिता, पत्नी, भाई, बहन, पुत्र, पुत्री, गुरु, मित्र, शत्रु। इन रिश्तों से होने वाले मोह या आकर्षण को महामोह कहते हैं। अपने भक्तों के ऐसे महामोह का नाश करने वाली। शत्रु को भी मनुष्य रात दिन याद किया करता है, अतः वह भी आकर्षण का कारण होता है। महा का अर्थ है व्यापक जो सब जगह व्यापक है। सर्वत्र व्याप्त मोह महामोह है।

437. **महाविद्या** – जो विद्या महत् (ब्रह्म) का साक्षात्कार कराये वह महाविद्या है। ऐसी विद्या स्वरूपा। सभी अनर्थो का नाश करने वाली विद्या महाविद्या है। ऐसी महाविद्या स्वरूपा। उपनिषदों में बताये गए चार महावाक्य भी महाविद्या कहलाते हैं, तत्स्वरूपा। तन्त्र में मानी हुई दस महाविद्या देवीस्वरूपा। भोग और मोक्ष दोनो को देने वाली विद्या महाविद्या है। महा का अर्थ है सभी, इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ सभी विद्याओं के स्वरूप वाली। 14 या 18 विद्याओं के स्वरूप वाली। किसी के मत में 14 विद्यायें हैं और किसी के मत में 18 विद्यायें हैं।

438. **महाघोरा** – अतिशय भयंकर रूप वाली। पूजनीय भगवान शिव की शक्ति स्वरूपा। महा अर्थात पूजनीय, घोर अर्थात शिव, एकाक्षरी कोष के अनुसार आ अर्थात शक्ति। शैव दर्शन में घोर शक्ति उन्हें कहा गया है जो मनुष्यों को सांसारिक सुखों में फँसा कर मोक्ष के रास्त में बाधक बनती है। Ghora Shaktis are forces that draw the jivas, individuals towards worldly pleasures and create hindrances on the path of liberation. प्रत्येक प्रकार की शक्ति चाहे अच्छी हो या बुरी समझी जाती हो, देवी का ही रूप है।क्योकि देवी शक्ति रूप है। दुष्टों के साथ दुष्टता का व्यवहार करना पडता है। और वहाँ पर घोरा शक्ति सकारात्मक कहलायी जायेगी। विघ्नों एवं दुष्टों के रास्ते को रोकना, उन्हें उनके लक्ष्य तक न पहुँचने देना सकारात्मक कार्य भी है।

439. **महास्मृतिः** – समस्त प्राणियों (मनुष्य, देवता, असुर आदि) के पूर्व ज्ञान की समष्टिस्वरूपा। स्मृति का अर्थ है पूर्व ज्ञान को याद करना उसे अनुभव में लाना। महास्मृति वाली। स्मरण के मामले में उनसे बढ़कर कोई नहीं है। मनुस्मृति या अन्य जितनी भी स्मृतियाँ हैं उनके ज्ञान से युक्त ऐसा भी अर्थ हो सकता है। पूर्व कल्पों की सभी घटनाओं की स्मृति रखने वाली। भूतकाल की सभी घटनाओं का स्मरण रखने वाली शक्ति। प्रत्येक कल्प की प्रत्येक घटनाओं को स्मरण रखने वाली शक्ति। यहाँ महा का अर्थ सभी या सर्वव्यापक है। अन्य प्राणियों की स्मृति शक्ति से बढकर जो स्मरण शक्ति होती है। उसे महास्मृति कहेगें। सर्वाधिक स्मरण शक्ति स्वरूपा। शब्द के आगे महा लगने से 'से बढ़कर' या सर्वाधिक अर्थ आता है।

440. **मनस्विनी** – उच्च विचार वाली या श्रेष्ठ मन से सम्पन्न। बुद्धिमान, स्थिर चित्त वाली एवं दृढ़ निश्चयी। स्वाभिमानी तथा स्वनियन्त्रित। स्वाभिमान रूप वाली जो कभी कायरता को प्राप्त नहीं होती।

441. **मानवती** – मान से युक्त। सम्मान से युक्त अर्थात सभी उन्हें सम्मान देते हैं।

442. **मोदिनी** – मुदित रहने वाली। स्वयं आनन्दित रहने वाली और दूसरों को आनन्दित करने वाली ये दोनों अर्थ हो सकते हैं। मोदते इति मोदिनी से आनन्दित रहने वाली तथा मोदयति इति मोदिनी से आनन्दित करने वाली अर्थ निकलेगा। मोदिनी का अर्थ जूही या चमेली भी होता है अतः इस नाम का अर्थ हुआ जूही या चमेली की तरह सुगन्ध वाली।

443. **मधुरानना** – मधुर (मिठास/प्रियता) से युक्त मुख वाली अर्थात सत्–चित्–आनन्दस्वरूपा।

444. **मेनका** – मेनका अप्सरा की तरह सुन्दर। जनाः मानयति इमाम् अर्थात जिसे लोग सम्मान देते है। मान्यते पूज्यते इति मेनका। मे सदृशा न काचित् रूपे, मेरे समान कोई नहीं है सुन्दरता में अर्थात अति सुन्दर।

445. **मानिनी** – जो अपने को मानती है कि मैं सबसे शक्तिशाली हूँ, सबसे सुन्दर हूँ। मान करने वाली अर्थात अभिमानयुक्ता या गर्ववती। दुर्गासप्तशती में देवी ने कहा है कि जो मुझे युद्ध में पराजित करेगा वह मेरा पति होगा जो एक प्रकार का अभिमान या गर्व है। साहित्य में मानिनी नायिका होती है जो अपने नायक को देखकर रूष्ट होती है। जब शिवजी ने दक्षयज्ञ में जाने से सती को मना किया था तो सती रूष्ट हो गई थीं।

446. **मान्या** – मानने योग्य अर्थात सम्मान की अधिकारिणी। आदर के योग्य। मान्य (अर्थात विष्णु जी या शिवजी) की शक्ति स्वरूपा। मा+ अन्या, मा का अर्थ है नहीं। जिनके अतिरिक्त कोई दूसरा नहीं है। देवी का अर्थ है शक्ति या ऊर्जा। हमें जो कुछ भी दिखाई देता या अनुभव में आता है, वह शक्ति या ऊर्जा का रूपान्तरण होने के कारण देवी स्वरूपा ही है। जिनके समान कोई दूसरा नही नही है, यह अर्थ भी कर सकते है। मा + न्या, मा का अर्थ है लक्ष्मी, माया। न्यास शब्द से न्या शब्दाक्षर दे सकते है। लक्ष्मी में या माया में रखी हुई अर्थात् विराजमान।

447. **मणिरत्नविभूषणा** – मणि और रत्नों से विभूषित। मणि और रत्नों के बने आभूषण हैं जिनके, ऐसा भी अर्थ है।

448. **मल्लिका** – मल्लिका नामक पुष्प के समान सुन्दर और सुगन्धित अंगों वाली।

449. **मौलिकामाला** – सिर पर मालाओं को धारण करने वाली। मौलि का अर्थ का सिर। बिना अर्थ बदले कन् प्रत्यय लगाने से मौलिक शब्द बनता है जिसका अर्थ वहीं होता है जो मौलि का है। संस्कृत में कभी–कभी आ का अलग से अर्थ लिखने की जरूरत नही होती है क्योंकि एकाक्षरी कोश में आ का एक अर्थ भाव (अर्थात पदार्थ या अस्तित्व) दिया गया है और प्रत्येक पदार्थ भाव अवश्य है। मौलिक +आ+माला=मौलिकामाला। सिर पर धारण किये हुए माला की तरह सर्वश्रेष्ठ अर्थात गुण, शक्ति, वैभव आदि में सबसे ऊपर है। माला कई स्थानों पर पहनी जा सकती है पर सिर की माला सर्वोत्तम होती है। मुण्डों की माला वाली। मौलि का अर्थ मुण्ड होता है। मुण्ड अर्थात कटा हुआ मस्तक। मुण्डमाला को वर्णमाला का प्रतीक माना गया है अर्थात वर्णमाला धारण करने वाली। मुण्ड मृत्यु का भी प्रतीक है। जिनको मृत्यु भी प्रिय है या मित्र की तरह है।

450. **मालाधरमदोत्तमा** – शिव को उत्तम प्रसन्नता देने वाली। विष्णु को उत्तम प्रसन्नता देने वाली। भगवान शिव सर्प की माला पहनते हैं एवं भगवान विष्णु वन माला पहनते हैं अतः दोनों ही मालाधर हैं। मद अर्थात हर्ष। मदोत्तम+आ, आ का एक अर्थ है देना। मालाधारी होने से अर्थात माला को धारण करने से उत्तम प्रसन्नता वाली। शिव के कारण अर्थात उनके पति होने से जो अत्यन्त प्रसन्न है। माला धारण करने वाले शिव की श्रेष्ठ मदयुक्ता संगिनी या सहधर्मिणी। भगवान शिव और भगवान विष्णु दोनों माला को धारण करने वाले होने से मालाधर हैं। भगवान शिव सर्प की माला या कपाल की माला धारण करते हैं। रूप, यौवन, शक्ति आदि का मद है देवी के अन्दर।

451. **मदनासुन्दरी** – ऐसी सुन्दरी जो भक्तों को प्रसन्नता देती है। मदी हर्षे धातु होती है। युच् प्रत्यय लगाने से मदन शब्द बन सकता है। प्रसन्नता देने वाली सुन्दरी। मदयति इति मदना अर्थात जो प्रसन्नता दे वह मदना है। सुन्दरी का अर्थ है सुन्दर रूप वाली। सुष्ठु उन्दी क्लेदने अर्थात जो अच्छी प्रकार से दूसरे के चित्त को पिघला दे अर्थात उसके चित्त पर अधिकार कर ले वह सुन्दरी होती है। सबको प्रसन्नता देने वाली और सुन्दर स्वरूप वाली देवी।

452. **मेधा** – धारणावती बुद्धि स्वरूपा। जिस शक्ति के कारण एक बार देखने पढ़ने, सुनने से धारण हो जाता है, उस शक्ति का नाम है मेधा। एक बार सुनने मात्र से वह चीज बुद्धि के अन्दर चली जाती है। बुद्धि का परिष्कृत और उन्नत रूप मेधा है, तत्स्वरूपा। आजकल के आई.क्यू. के आधार पर देखे तो जिनका आई.क्यू. 100 – 110

है वे बुद्धिमान हैं और 140 से ऊपर है तो मेधावान हैं। मेधा के कारण ही व्यक्ति नई नई खोज करता है। आइंस्टीन मेधावान थे। मेधा के कारण ही व्यक्ति नये नये रास्ते निकालता है। भले ही बहुत लोगों ने इंजीनियरिंग पढ़ी हो पर मेधावान ही उसमें से कुछ नया निकालेगा। मेधावान व्यापारी ही व्यापार में नया रास्ता निकालेगा। कानून कइयों ने पढ़ा है पर नयी नयी व्याख्या मेधावान ही कर सकता है। बल या शक्ति स्वरूपा। षोडश मातृकाओं में से एक मातृका का नाम मेधा है, तत्स्वरूपा। दक्ष प्रजापति की एक कन्या का नाम मेधा है, तत्स्वरूपा। वह बुद्धि जो तीनों दोषों (संशय, यथार्थ ज्ञान की न्यूनता, विपरीत बुद्धि) से रहित है, मेधा कहलाती है। एकाक्षरी कोष में मे का अर्थ सारंग (मृग) दिया गया है और मृग को वेद का प्रतीक माना गया है। वेद को धारण करने वाली अर्थात वेद के ज्ञान को धारण करने वाली। आयुर्वेद की मेधावटी के समान अर्थात उसकी तरह बुद्धि को बढ़ाने वाली। (वेद में इसका प्रयोग धन के अर्थ में भी मिलता है। मतौ धीयते इति मेधा अर्थात मेधा वह विचार है जिसको बुद्धि में धारण किया जाता है अर्थात बार बार लाया जाता है। चूँकि संसारी व्यक्ति धन के बारे में ही सोचते रहते हैं। धन कमाना, उसकी रक्षा करना, दान देना आदि विचार करते रहते हैं इसलिए धन को ही मेधा का अर्थ मान लिया गया। सभी विद्याओं को धारण करने वाली बुद्धि भी मेधा है। शुद्ध एवं पवित्र करने वाली बुद्धि भी मेधा है। वेद में उल्लिखित मेधा सूक्त स्वरूपा। सामान्यतः धारणावती बुद्धि को मेधा कहते हैं अर्थात लम्बे समय तक चीजों को स्मरण में रखने वाली शक्ति मेधा है। स्मरण शक्ति तो अल्पकालिक भी हो सकती है किन्तु यदि यह दीर्घकालिक हो जाए तो इसे मेधा कहते हैं। (विषय को समझने वाली बुद्धि मति है, स्मरण करने वाली शक्ति स्मरण शक्ति है। जब स्मरण शक्ति दीर्घकालीन हो जाए तो उसे मेधा कहते हैं। दो या कई भागों में विभाजित करने वाली शक्ति विवेक है। जैसे क्या सत्य है, क्या असत्य है इसका विभाग बुद्धि के जिस रूप से होता है वह विवेक है। विवेक शक्ति जब अधिक बढ़ जाती है तो वह प्रज्ञा है।))। मेधा का अर्थ है– आशुग्रहणबुद्धि अर्थात ऐसी बुद्धि स्वरूपा जिससे कोई भी चीज तुरन्त पकड़ में आ जाती है। मेधा+आ=मेधा, आ का अर्थ है देना। आशुग्रहण बुद्धि देने वाली। कण्ड्वादिगण में मेधा का अर्थ आशुग्रहण दिया गया है। मेधृ धातु का अर्थ संगमन, हिंसा भी दिया गया है। संगमन का अर्थ है परस्पर मिलकर ज्ञान प्राप्त करना, सहयोग से समाज में गतिशील होना, समान रूप से भोग्य पदर्थों को प्राप्त करना, मिलकर देवपूजा करना, सात्विक दान देना, भौतिक पदार्थो की वैज्ञानिक रीति से संगमन कर लोकहित में सदुपयोग करना। देवपूजा में भी संगतिकरण शब्द आता है। मेधृ धातु के हिंसा अर्थ में मेधा का अर्थ हुआ कि समाज के विघातक तत्वों की हिंसा करने वाली अर्थात सामाजिक सन्तुलन बनाए रखने वाली। व्यक्ति और समाज के पारस्परिक हितों के विघातक तत्वों की हिंसा करने वाली। शंकराचार्य जी के अनुसार मेधा का अर्थ है– सर्वज्ञानलक्षणा बुद्धि अर्थात सारा ज्ञान है लक्षण जिसका, ऐसी बुद्धि स्वरूपा अर्थात सर्वज्ञानमयी। मेधृ संगमने धातु है और संगमन का एक अर्थ है जोड़ना। इस प्रकार मेधा का अर्थ हुआ जीवात्मा को परमात्मा से जोड़ने वाली। मेधृ धातु का अर्थ हिंसा करना भी है। मोक्ष या परमात्मा के रास्ते आने वाले सभी विघ्नों की हिंसा करने वाली। धारण शक्ति वाली बुद्धि या स्मरण कराने वाली बुद्धिस्वरूपा। समझ की तीव्रता अर्थात आशु ग्रहण क्षमता स्वरूपा। कोई भी शास्त्र हो या घटना हो अतिशीघ्रता से उसके तत्व या मूल तक पहुँच जाने वाली बुद्धि। आशु अर्थात शीघ्र। जीवात्मा को परमात्मा से जोड़ने वाली। मेधृ संगमने धातु होती है। संगमन का अर्थ होता है जोड़ना, साथ–साथ चलना। ऐसी बुद्धि स्वरूपा जो व्यक्ति को समाज के अनुकूल चलाती है। ऐसी शक्ति या ऐसी बुद्धि स्वरूपा जो समाज के विघटनकारी तत्वों या नकारात्मक शक्तियों की हिंसा करती है। मेधृ धातु का अर्थ हिंसा भी होता है। संगच्छन्ते अस्याम् इति मेधा अर्थात जिसमें सभी जाते है, अच्छे–बुरे चाहे जो हो, यदि शरणागत होते है तो इन्हें आश्रय दिया जाता है। अन्यथा भी जब समस्त जड चेतन पदार्थ उन्ही में है तो सभी उन्ही में आते–जाते है। बुद्धि में जिसे धारण किया जाता है अर्थात ऐसे विचार या भावनास्वरूपा जिसे बुद्धि में धारण किया जाता है। मतौ धीयते इति मेधा। मति में

धा धातु लगाकर क प्रत्यय लगाया जाता है जिसमें मति का मे हो जाता है। धनी लोग बार–बार धन का ही विचार करते है अर्थात धन के विचार को धारण करते है। कैसे आमदनी बढानी है, व्यापार बढाना है, धन को कहाँ लगाना है, कहाँ दान देना है इस प्रकार के विचार करते रहते है। दक्ष प्रजापति की एक कन्या का नाम भी मेधा है जिनका विवाह धर्म के साथ हुआ था। 16 मातृकाओं में एक मातृका का नाम मेधा है, उसे मातृका के स्वरूप वाली या उस मातृका से अभेद है जिनका। बुद्धि जो अज्ञान की हिंसा कर दें अर्थात् समाप्त कर दें। मेधृ हिंसायाम धातु होती है। बुद्धि जो किसी भी चीज के तत्व या मूल से जुड़ती है अर्थात् किसी भी चीज का वास्तविक अर्थ निकल लेती है। मेधृ संगमने धातु होती है। संगमन का अर्थ है जुड़ना। संगमयति से संगमन बनाये तो अर्थ होगा जोड़ने वाला। जो व्यक्ति को सत्य से जोड़ देती है या संन्मार्ग से जोड़ देती है।) मेधा का अर्थ है – सभी को जान सकने वाली बुद्धि। शकराचार्य जी ने मेधा की परिभाषा दी है सर्वज्ञानलक्षणाबुद्धि अर्थात् वह बुद्धि जिसका लक्षण है सभी कुछ जानना। लक्षण अर्थात् लक्ष्यते येन, जिससे पहचाना जायें। स्मृति को धारण करने की सामर्थ्य मेधा है। जब स्मरण शक्ति दीर्घकालीन हो जाये तो उसे मेधा कहा जाता है। Grasping power को भी मेधा कहते है। शुद्ध बुद्धि या अन्तर्दृष्टि वाली बुद्धि को भी मेधा कहते है जिसे अंग्रेजी में purified intellect या intitellect कहते है। इसके होने पर व्यक्ति वस्तुओं के भीतर सामान्यतः अदृश्य चेतना या प्रकाश को भी देख पाते है जिससे वह वस्तु बनी है अर्थात् ऐसी दृष्टि होने पर व्यक्ति प्राणियों एवं वस्तुओं के बाहरी आवरण को भेदकर उसके भीतर के तत्व को भी देख पाता है। उत्कृष्ट बुद्धि जो सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है। उचित अनुचित बताकर सन्मार्ग मे चलने की प्रेरणा देती है। इसी कारण वेद में मेधासूक्त प्रसिद्ध है। अन्तरिक्ष या ब्रह्माण्ड के रहस्य को समझने वाली बुद्धि मेधा है। धारणावती बुद्धि या अच्छी स्मृति वाली बुद्धि मेधा है। जब स्मरण शक्ति दीर्घकालीन हो जाती है तो उसे मेधा कहते है। स्मरण करने एवं समझने की मानसिक शक्ति मेधा है। आयुर्वेद की मेधावटी औषधि के समान अर्थात् मनुष्य की बुद्धि बढ़ने वाली। दुर्गा सप्तसती में मेधा ऋषि purified intellet अर्थात् शुद्ध बुद्धि या intitutive knowledge अर्थात् अन्तर ज्ञान का प्रतीक है। अन्तर ज्ञान होने पर आप वस्तुओं के अन्दर स्थित तत्व को देख सकते है। सभी पदार्थ चेतना से बने हुये है पर हमें चेतना या प्रकाश नही दिखता है। अन्तर्दृष्टि या मेधा से दिख जायेगा।

453. **मधुमत्ता** – मधु पीकर अति प्रसन्न होने वाली। मधु का अर्थ अमृत, शहद, शराब होता है। दुष्टों के संहार के पहले मदिरा से मत्त/उन्मत्त होने वाली। मत्त का अर्थ है आनन्द से भरी हुई जो निश्चिन्त एवं बेपरवाह है, ऐसी स्थिति में सामने जो विषय मौजूद है, उसके अलावा बाकी दुनिया का होश नहीं रहता। मदि हर्षे धातु से आनन्द से भरी हुई अर्थ निकलता है। दुष्टों का संहार करने के लिए अपने आपको अद्वैतभाव से हटाकर द्वैत भाव में लाना जरूरी है इसके लिए मधु का सेवन करती हैं। सात्विक मधुर पदार्थों से प्रसन्न/मस्त होने वाली। मत्त अर्थात थोड़ा–थोड़ा नशे में होने जैसा होने वाली। मधु का अर्थ अपने स्वरूप का आनन्द भी होता है, अपने स्वरूप का पान कर अति हर्षित होने वाली।

454. **मधुप्रिया** – मधुर/सात्विक वस्तुऐं हैं प्रिय जिनको। मधुर पदार्थ है प्रिय जिनको। मधु अर्थात मदिरा है प्रिय जिनको। दुर्गा सप्तशती के तीसरे अध्याय में माँ दुर्गा मधु का पान करती हैं। मधु का अर्थ है शहद, शराब, पुष्परस, जल, दूध।

455. **मत्तहंससमोल्लासा** – प्रसन्न हंस के समान उल्लसित अर्थात सुशोभित होने वाली। मदि हर्षे धातु से मत्त का अर्थ प्रसन्न भी कर सकते हैं। मत्त का अर्थ है आनन्द से भरी हुई जो निश्चिन्त एवं बेपरवाह है, ऐसी स्थिति में सामने जो विषय मौजूद है, उसके अलावा बाकी दुनिया का होश नहीं रहता। मदमस्त हंस की तरह उल्लास, हाव –भाव, चाल वाली।

456. **मत्तसिंहमहासना** – मदोन्मत्त सिंह है जिनका सबसे बड़ा आसन। मत्त सिंह का अर्थ है मतवाला, प्रसन्न, खुश। मतवाला अर्थात जैसे आनन्द से भरा हो, कुछ झूम रहा हो और अपने में ही इतना डूबा कि बाहर जो कुछ भी हो रहा है, उसका होश नहीं।

457. **महेन्द्रवल्लभा** – महान इन्द्र की प्रिया इन्द्राणी से अभेद है जिनका। गुणों/ शक्ति के कारण जो महान हैं अर्थात औरों से बढ़कर है उसके कारण इन्द्र में आगे महा शब्द लगा देते हैं।

458. **भीमा** – अतिशय भयंकर (शत्रू संहार के समय)। अतिशय बल वाली या अतिशय विस्तार अर्थात बहुत बड़े आकार वाली। भीम शब्द बल और विशाल आकार का प्रतीक है। भीम (अर्थात शिव) की शक्ति। दक्षिण भारत की एक नदी जो कृष्णा नदी में मिलती है, का भी नाम भीमा है। इस नदी के स्वरूप वाली। भीषण या भयंकर (राक्षसों के लिए)।

459. **मौल्यं च मिथुनात्मजा** – ऐसी मुख्य आधार स्वरूपा जिसकी स्त्री पुरुष युगल या नर मादा युगल सन्तान हैं। मूल शब्द में ष्यञ् प्रत्यय लगाने से मौल्य बनेगा। मूल अर्थात मुख्य आधार या उत्पत्ति का कारण। मौलि (सिर) शब्द से भी मौल्य बन सकता है। मौलि शब्द में तत्र भवः (वहाँ होना) सूत्र से यत् प्रत्यय लगाया जा सकता है जिसका अर्थ होगा सिर में होने वाला या रहने वाला। मौलि शब्द में तद् अर्हति सूत्र से यत् प्रत्यय लगाने से मौल्य शब्द बनेगा। इसका अर्थ है सिर के योग्य। सिर सबसे ऊपर होता है तथा यह सर्वश्रेष्ठ अंग माना जाता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ जो सर्वोपरि (सर्वश्रेष्ठ) हैं एवं नर मादा युगल जिसकी सन्तान है। मिथुन अर्थात नर मादा युगल या स्त्री पुरूश युगल। प्रतिष्ठा योग्य और अर्द्धनारीश्वर रूप में उत्पन्न। मूल प्रतिष्ठायाम् धातु होती है। प्रतिष्ठा अर्थात जड़ जमाना अर्थात जगत की मूल या आधार योग्य। मूल्य से मौल्य बनायेंगे तो अर्थ होगा कीमती। मौलि से मौल्य बनायेंगे तो अर्थ होगा शिरोधार्य अर्थात सर्वोपरि या पूजनीया। मूलाधारस्वरूपिणी और मिथुन रूप परब्रह्म से उत्पन्न। मूलस्य इदम् इति मौल्यम्। मूल का रूप है जो वह है मौल्यम्। मिथुन रूप परब्रह्म जिसमें पुरुष एवं स्त्री दोनों शक्तियाँ हैं उसकी आत्मजा अर्थात पुत्री।

460. **महाकाल्या** – महाकाल में होने वाली अर्थात उनमें रहने वाली शक्ति स्वरूपा। तत्र भवः एवं दिगादिभ्यो यत् प्रत्यय लगाने से काल्या का अर्थ होता है काल में होने वाली अर्थात काल में रहने वाली। तत्र साधुः सूत्र से भी महाकाल में यत् प्रत्यय लगाने से महाकाल्य शब्द बनेगा जो स्त्रीलिंग में महाकाल्या होगा। साधु का अर्थ है निपुण, योग्य, समर्थ, अनुकूल या अनुरूप, उपयुक्त। महाकाल में उपयुक्त अर्थात महाकाल के लिए उपयुक्त पत्नी स्वरूपा। तस्य इदम् सूत्र से अण् प्रत्यय लगता है पर कभी कभी यदि शब्द मिलता हो किन्तु अर्थ निकालने में उपयुक्तता न बन रही हो तब भी यत् प्रत्यय लगा सकते हैं। महाकाल की यह अर्थात महाकाल की शक्ति या पत्नी। महाकाल अर्थात शिव। शब्दकोश में काल्य का एक अर्थ शुभ या मंगल दिया गया है। अतिशय शुभ या मंगल देने वाली। काल्य+आ=काल्या। आ एक अर्थ देना होता है। महाकाल में अनुरूप अर्थात महाकाल के अनुरूप अर्थात महाकाल शिव की इच्छा के अनुसार आचरण करने वाली। महाकाली से सम्बन्धित शक्ति। काली में अण् प्रत्यय लगाने से काल्या बना। काल में तत्र भवः सूत्र से यत् प्रत्यय लगाने से भी काल्या शब्द बन सकता है जिसका अर्थ हुआ समय पर होने वाली। समय पर होने वाली का अर्थ है उचित समय पर अवतार लेने वाली या समय पर होने वाली ऋतु स्वरूपा या अलग–अलग समय में अलग–अलग रूप वाली जैसे गायत्री का तीनों कालों में अलग–अलग ध्यान होता है या नवरात्रि में प्रत्येक दिन अलग–अलग रूप होते हैं। काल्याः इदम् इति काल्यम्। स्त्रीलिंग में काल्यम् काल्या हो जाता है।

461. **महाकाली** – काल से भी जो बढ़कर है अर्थात काल को भी खा जाने वाली महाकाली है। महाकाल शिव की शक्ति को भी महाकाली कहते हैं। ब्रह्माण्ड की रचना करने वाली। महा अर्थात ब्रह्माण्ड और कलयति अर्थात रचना करना। पूजनीय काली से अभेद है जिनका। महा अर्थात पूजनीय या विशाल।

462. **महाबुद्धि** – सर्वाधिक बुद्धिस्वरूपा। अति उत्कृष्टबुद्धिस्वरूपा।

463. **महोत्कटा** – बहुत अधिक शक्ति वाली। उत्कट का अर्थ बल या शक्ति है। उत्कट का अर्थ ऊँचाई पर स्थित कर सकते हैं अर्थात् जो अत्यन्त ऊँचाई पर स्थित है। तात्पर्य हुआ जो गुणों में, शक्ति में दूसरों से बहुत बढ़कर है। कट् धातु का अर्थ वर्षा और आवरण भी होता है। उत् का अर्थ है ऊँचा या अधिक। मह् धातु का अर्थ है पूजा करना। महा का अर्थ है पूजनीय। इस प्रकार महोत्कटा का अर्थ हुआ जो पूजनीय है और अपने भक्तों पर अच्छे मनोरथों की वर्षा करने वाली है अर्थात् देने वाली है अर्थात् पूरा करने वाली है। महा का अर्थ बहुत अधिक भी होता है। बहुत अच्छे पदार्थों को बरसाने वाली। अत्यधिक उत्कट अर्थात उग्र या प्रचण्ड। उत्कट का अर्थ है तीव्र, विकट, कठिन, उग्र (भयंकर) प्रचण्ड, दुःसह, प्रबल। अतिशय श्रेष्ठ। कल्याण के गणेश अंक में उत्कट का एक अर्थ श्रेष्ठ दिया गया है। उत्कट का अर्थ होता है अत्यधिक जिसे नियंत्रित नहीं किया जा सकता अर्थात इतना अधिक जो बेकाबू हो जाए। जैसे मदोत्कटा अर्थात अनियंत्रित मद वाला।

464. **माहेश्वरी** – महेश्वर अर्थात भगवान शिव की शक्ति। पाणिनि को तपस्या के फलस्वरूप भगवान शिव से प्राप्त व्याकरण के चौदह सूत्रों को माहेश्वर कहते हैं। इन सूत्रों में निहित शक्ति माहेश्वरी है। संहारिका शक्ति स्वरूपा। अपनी संहारिका शक्ति से यह सिखाने वाली कि ब्रह्म के अतिरिक्त सब कुछ क्षण भंगुर है अतः वहाँ से ध्यान हटाकर उसे पाने का प्रयास करो जो नित्य है, सत्–चित्–आनन्द है। सर्वाधिक ऐश्वर्य वाली। ईश्वरी का अर्थ होता है ऐश्वर्य से युक्त।

465. **महामाया** – जो माया से बढ़कर है अर्थात माया से परे है। मायावियों को भी माया में डालने वाली। भगवान की सर्वोत्कृष्ट माया के रूप को धारण करने वाली।

466. **महिषासुरघातिनी** – महिषासुर का वध करने वाली। महिषासुर क्रोध का प्रतीक है अतः क्रोध का नाश करने वाली। महिषासुर चित्त की विक्षेप शक्ति का प्रतीक है अतः चित्त की विक्षेपता अर्थात चंचलता का नाश करने वाली। महिषासुर क्षण क्षण में रूप बदलता था, चित्त भी हर क्षण इधर से उधर भागता रहता है। महिषासुर को मोह अर्थात अक्षान का भी प्रतीक माना गया है।

467. **मधुराकीर्ति** – मधुर है सम्पूर्ण यश जिनका। मधुर अर्थात कानों को प्रिय लगने वाला। आकीर्ति अर्थात सम्पूर्ण यश।

468. **मत्ता** – आनन्द से भरी हुई या अतिशय प्रसन्न। मदि हर्षे धातु होती है। परब्रह्म रूप में मस्त रहने वाली। अतिशय शक्ति से उन्मत्त होने वाली यह अर्थ भी हो सकता है। आनन्द से भरी एवं निश्चिन्त अर्थात बाहरी दुनिया से बेपरवाह। हाथी मद से मस्त हो कर आनन्द में झूमता हुआ चलता है और आगे पीछे क्या हो रहा है, उससे बेपरवाह रहता है। यद्यपि सत्य यह है कि सबकुछ देवी के अन्दर ही है पर वे निश्चिन्त रहती है क्योंकि सबकुछ उनके नियमों के अनुसार ही घटित होता है। मत या श्रेष्ठ सिद्धान्तों का विस्तार करने वाली। तन् धातु में ड प्रत्यय लगाने से बने त शब्द का अर्थ विस्तार करने वाला या देने वाला होता है। म का अर्थ माया भी होता है। अद् भक्षणे धातु से बने अत्त शब्द का अर्थ है जिसे खाया गया। पर रूप संधि करके जिसके द्वारा माया का भक्षण अर्थात नाश किया जाता है, ऐसा अर्थ भी कर सकते हैं।

469. **मत्तमातंगगामिनी** – मदमस्त गज (हाथी) पर बैठकर गमन करने वाली। हाथी सिर्फ भूमि को ही देखता हुआ एवं झूमता हुआ आनन्द में डूबा हुआ बाहर की दुनिया से बेपरवाह गति करता है। कुत्तों के द्वारा भौंकने पर भी कोई प्रतिक्रिया नहीं करता।

470. **मदप्रिया** – हर्ष या आनन्द प्रिय है जिन्हें। मदि हर्षे धातु होती है। मतवाले हाथी की कनपटी से बहने वाला गन्धयुक्त द्रव्य मद कहलाता है अतः इस नाम का अर्थ हुआ। गन्धयुक्त द्रव्य, नशा, मस्ती है प्रिय

जिन्हें। ब्रह्म के रूप में अवस्थित कर देने वाला मद प्रिय है जिनको। ब्रह्मस्वरूप जो अलौकिक मद है। वह है प्रिय जिन्हें।

471. **मांसरता** – खेचरी मुद्रा लगाने से प्रसन्न। मा अर्थात जिह्वा, अस्यति अर्थात खाना। जिह्वा को तालू के पास स्थित छेद में लपेटते हुए डालना खेचरी मुद्रा है। उस छिद्र में प्रवेश करना अर्थात उस छिद्र द्वारा खाया जाना। मांगल्य को प्रदान करने वाली सत्–चित्–आनन्द अवस्था में लगी हुई या स्थित। मां से मागल्य शब्द लिया एवं स से सत्–चित्–आनन्द अवस्था लिया। दैत्यों का मांस खाना जिन्हें अच्छा लगता है। मांस खाने से प्रसन्न। रत शब्द का अर्थ लगा हुआ होता है। जिन्हें अच्छा लगता है यह अर्थ भी होता है क्योंकि यह रम् धातु से बना है। देवी का एक रूप शवारूढा है। शव में मांस होता है, मांस या शव पर विराजमान रहने वाली। मांस का अर्थ जिह्वा भी है अतः जो जिह्वा भक्षण करती है अर्थात खेचरी मुद्रा लगाती है या खेचरी मुद्रा लगान जिन्हें अच्छा लगता है। उपवास या व्रत करने से प्रसन्न। आध्यात्मिक बोध या ज्ञान से प्रसन्न या इनमे लगी हुई। (मांस का अर्थ है – जिससे शाश्वत सौभाग्य और आनन्द मिलता है अर्थात आध्यात्मिक बोध या आध्यात्मिक ज्ञान। मां का अर्थ है मांगल्य या सौभाग्य। स का अर्थ है सत्–चित्–आनन्द। मा का अर्थ जिह्वा भी है। माम् स्यति अर्थात जिह्वा भक्षण करना अर्थात खेचरी मुद्रा। मांस का एक अर्थ है खेचरी मुद्रा। मा+अंस, जिह्वा का अंस अर्थात जिह्वा से सम्बन्धित अर्थात उपवास या मौन। पाप और पुण्य दोनों को ही मांस कहते हैं, इन दोनों का भक्षण आवश्यक है क्योंकि एक लोहे की जंजीर की तरह है और दूसरा सोने की जंजीर की तरह है।) भक्तियोग या ज्ञानयोग से प्रसन्न होने वाली। माम् स्यति इति मांसः, जो माया को नष्ट कर दे वह मांस है। मा का अर्थ है माया एवं स्यति का अर्थ है नष्ट करती है। भक्ति योग या ज्ञान योग या अन्य इस प्रकार के आध्यात्मिक साधन जो माया को नष्ट करते है, वे मांस हैं।

472. **मत्तयुक्कामकारिणी** – प्रसन्न उपासको से युक्त होने पर (अर्थात पूजित होने पर) उनके कार्यो को करने वाली अर्थात उनके मनोरथो को पूरा करने वाली। मत्त अर्थात प्रसन्नता से युक्त अर्थात प्रसन्न। मदि हर्षे धातु होती है। युक् अर्थात युक्त होना या जुड़ना। पूजा करना या उपासना करना भगवान से जुड़ना ही होता है। प्रसन्नता युक्त होने पर मनोरथ या इच्छा पूरी करने वाली। मदि हर्षे धातु होती है जिससे मत्त शब्द बनता है। मदोन्मत्त होकर कामों को सम्पन्न करने वाली। मदोन्मत्त अर्थात आनन्द से भरी हुई जैसे अन्दर से झूम रही हो एवं बाहरी दुनिया से बेखबर।

473. **मैथुन्यवल्लभादेवी** – स्त्री पुरुष की परस्पर प्रीति से प्रीति करने वाली अर्थात स्त्री पुरुष की परस्पर प्रीति जिन्हें अतिशय प्रिय है, ऐसी देवी। कुण्डलिनी रूप में शिव से मिलने का भाव जिन्हें अतिशय प्रिय है ऐसी देवी। मैथुन्य अर्थात मिथुन का भाव अर्थात युग में होने वाली प्रीति अर्थात स्त्री पुरुष की परस्पर प्रीति। मैथुन शब्द में तत्र साधु सूत्र से यत् प्रत्यय लगाने से भी यह शब्द बन सकता है जिसका अर्थ हुआ मिथुन में निपुण या मिथुन में उपयुक्त अर्थात मिलने के लिए उपयुक्त अर्थात भगवान शिव। भगवान शिव जिन्हें अतिशय प्रिय हैं ऐसी देवी। सहस्रार चक्र में शिव से मिलना जिन्हें अत्यन्त प्रिय है, ऐसी देवी। मैथुन से प्रेम करने वाली देवी। मैथुन के भाव से युक्त। सृष्टि संरचना के प्रसंग में मैथुन से प्रेम करने वाली देवी।

474. **महानन्दा** – परमानन्दरूपिणी। जिससे बढ़कर दूसरा आनन्द नहीं, तद्स्वरूपा। शब्द के आगे महा लगने से सबसे बढ़कर अर्थ हो जाता है। पर्वों में अपनी पूजा से आनन्दित होने वाली। पर्वों में उपासकों को आनन्द देने वाली। मह का अर्थ है पर्व। जगत में आनन्द स्वरूपा। आनन्द का अर्थ आनन्द देने वाली, आनन्दित होने वाली।

475. **महोत्सवा** – बड़े–बड़े उत्सवों में प्रसन्न रहने वाली। अधिक उत्सवों से प्रसन्न रहने वाली। बड़े उत्सवों वाली अर्थात् बड़े उत्सवों में जिनकी उपासना होती है। चारों नवरात्रियाँ या सनातन धर्म के चारों बड़े पर्व

महोत्सव है। इन महोत्सवों में इनकी पूजा होती है। उत्सव का अर्थ आनन्द देने वाला भी है। महा का अर्थ है अत्यधिक, सर्वाधिक, पूजनीया। अपने उपासकों को बहुत अधिक या सर्वाधिक आनन्द या सुख देने वाली। सबसे बड़ा आनन्द मोक्ष का आनन्द या भगवान के सान्निध्य का आनन्द होता है, ऐसे आनन्द को देने वाली।

476. **मरीचिर्मारतिर्माया** – ऐसी माया जो चमकने वाली है और लक्ष्मी के प्रति अनुराग रखने वाली है। मरीचि अर्थात किरण अर्थात चमकने वाली। मारति अर्थात लक्ष्मी से प्रेम। प्रकाशरूपिणी लक्ष्मी में अनुराग रखने वाली मायास्वरूपिणी देवी। मरीचि अर्थात प्रकाश, मा अर्थात लक्ष्मी, रति अर्थात अनुराग रखना। मृणाति अपहरति भक्तदुखान्। भक्तों के दुख को हरने वाली शक्ति मरीचि है। मरीचि का अर्थ मृगतृष्णा देने वाली शक्ति या भ्रम पैदा करने वाली शक्ति भी है। मरीचि अन्तरिक्ष को भी कहते है। इस प्रकार मरीचि का अर्थ अन्तरिक्ष लोक में व्याप्त शक्ति भी कर सकते हैं।

477. **मनोबुद्धिप्रदायिनी** – मन और बुद्धि को देने वाली। मन से तात्पर्य यहाँ सत्संकल्प वाले मन से है। अच्छे संकल्प करने वाला मन एवं श्रेष्ठ/सात्विक बुद्धि को स्थाई रूप से देने वाली। मन संकल्प विकल्प करता है, बुद्धि निर्णय या निश्चय करती है।

478. **मोहा** – मोहस्वरूपिणी, सबको मोहित करने वाली। मोह का प्रधान अर्थ अज्ञान होता है। सबको अज्ञान में डालने वाली। अज्ञान के कारण ही लोग अनात्म वस्तुओं में आकर्षित होते हैं। मोह के मुख्य अर्थ को न जानकर आजकल अनात्म वस्तुओं में आकर्षण को ही मोह समझा जाने लगा है। मोह का अर्थ चित्त–वैचित्य भी होता है अर्थात चित्त में क्षोभ लाने वाली। चित्त भ्रमित होने पर पदार्थों की असलियत नहीं देख पायेगा जैसे चलता हुआ कैमरा सही फोटो नहीं खींच सकता। शरीर को आत्मा समझना, परायी वस्तु को अपना समझना और उसे सुख का स्रोत समझना मोह है। मुह् चित्तवैचित्ये धातु होती है। चित्त में हलचल होने से सही ज्ञान नही हो पाता जिससे मनुष्य शरीर को ही आत्मा समझने लगता है और परायी वस्तु को अपनी वस्तु समझने लगता है। सभी रिश्तेदार एवं वस्तुएं, शरीर भी पराया ही है। क्योंकि मनुष्य आत्मस्वरूप है। सभी सम्बन्धी रेलगाड़ी में बैठे हुए यात्रियों की तरह है, जिसका जो अपने–अपने स्टेशन में उतर जाते है, आप अकेले ही रह जाते हैं।

माया से मोह होता है। माया और मोह दोनों का आधार अज्ञान है। माया का सामान्य अर्थ है कि वस्तु के स्वरूप को ढक देना एवं उसे दूसरे रूप में दिखाना। सभी वस्तुयें चेतन तत्व से बनी है पर हम जब किसी वस्तु को देखते हैं तो हमें चेतन तत्व या प्रकाश नहीं दिखता है और कुछ दूसरा ही दिखता हैं। यह माया शक्ति के कारण हुआ है जिसमें आवरण (ढकना) एवं विक्षेप (दूसरे रूप में दिखाना) दोनों प्रकार की शक्ति होती है। माया के कारण व्यक्ति मोह में पड़ता है अर्थात इन्द्रियों के विषयों से आसक्त होता है आकर्षित होता है और समझने लगता है कि इन्हीं विषयों से उसे सुख मिलेगा। मोह अर्थात इन्द्रियों के विषय से आसक्त या आकर्षित होना एवं उसे अपने से जोड़कर सुख का स्रोत समझना। शब्दादिविषयेषु आसक्तिः मोहः। दुर्गा सप्तशती में लिखा है माया ही व्यक्ति को मोह में डालती है। वहाँ पर आया है कि असुरों को मोह में डाल दो, इसका अर्थ उनसे गलत कार्य करा दो अर्थात जो अकर्तव्य है उसे करा दो जिससे वे नष्ट हो जायें। जो नहीं करना चाहिए उसे करा डालो। मोह का अर्थ अज्ञान भी है। कर्तव्य और अकर्तव्य का भेद न कर पाना भी मोह कहलाया जायेगा। सामान्य तौर पर शरीर को आत्मा समझना तथा शरीर से जुड़े रिश्तेदारों एवं पदार्थों को अपना समझना तथा उन्हें सुख देने का स्रोत समझना मोह समझा गया है। मोह अज्ञान है जिसका परिणाम आकर्षण में होता है। किन्तु आजकल आकर्षण वाले अर्थ को ही प्रायः मोह के अर्थ में लेते हैं। माया शक्ति के कारण ही व्यक्ति मोह में पड़ता है। माया और मोह दोनो में पदार्थों का वास्तविक स्वरूप नहीं पता होता है पर मोह में आकर्षण एवं क्षण भंगुर पदार्थों को सुख का स्रोत समझा जाता है। मोह+आ, आ का अर्थ है देना अर्थात मोह देने वाली। मोह+आ, आ का एक अर्थ है नाश करना। अपने उपासकों के मोह नामक दोष का नाश करने वाली। शरीर में अहंता और ममता करना तथा शरीर

सम्बन्धी माता–पिता, भाई–भौजाई, स्त्री–पुरुष, वस्तु–पदार्थ आदि में ममता करना 'मोह' है। कारण कि इन शरीरादि में अहंता–ममता है नहीं, केवल अपनी मानी हुई है। अनुकूल पदार्थ, वस्तु, व्यक्ति, घटना आदि के प्राप्त होने पर प्रसन्न होना और प्रतिकूल पदार्थ, वस्तु, व्यक्ति आदि के प्राप्त होने पर उद्विग्न होना, संसार में– परिवार में विषमता, पक्षपात, मात्सर्य आदि विकार होना– यह सब–का–सब 'कलिल' अर्थात् दलदल है। इस मोहरूपी दलदल में जब बुद्धि फँस जाती है तब मनुष्य किंकर्तव्यविमूढ हो जाता है। गीता के दूसरे अध्याय के 52वें श्लोक में मोहकलिल शब्द का प्रयोग किया गया है। जड़ और चेतन दो पदार्थ है प्राणी मात्र का स्वरूप चेतन है पर उसने जड़ के साथ संग किया हुआ है। जड़ की तरफ आकर्ष होना पतन की तरफ जाना है और चिन्मय तत्व की तरफ आकर्षण होना उत्थान की तरफ जाना है जिसे कल्याण होना कहते है। जड़ की तरफ जाने में मोह की शक्ति का कार्य करती है और परमात्म तत्व या चैतन्य की ओर जाने में विवेक शक्ति काम करती है। प्राप्त वस्तु, शरीर आदि में अहंता–ममता करना यह अहंता–ममता युक्त मोह है और अप्राप्त वस्तु, घटना, परिस्थिति आदि की कामना करना यह कामना युक्त मोह है। मोह में आकर्षण होता है और उस प्राणी या वस्तु से सुख मिलता है ऐसी भावना होती है अर्थात् सुख का स्रोत शरीर, शरीर से सम्बन्ध रखने वाले प्राणियों अर्थात् रिश्तेदारों, पदार्थों या वस्तुओं को सुख का स्रोत मान लिया जाता है। माया और मोह दोनो में वस्तुओं और प्राणियों का वास्तविक स्वरूप ढकता है पर मोह में उसे मैं और मेरा से जोड़कर उससे सुख या भोग पाने की कामना होती है। अर्थात मोह में भोगेच्छा या सुखेच्छा भी होती है। (क्षणभंगुर पदार्थों में अज्ञान के कारण होने वाली आसक्ति मोह है। इससे व्यक्ति उस क्षणभंगुर पदार्थ को ही सुख का स्रोत समझने लगता है। मोह के कारण ही इन क्षणभंगुर प्राणियों एवं पदार्थो में आकर्षण या खिंचाव होता है। साधारण भाषा में कहे तो मोह के कारण अपनी आत्मा या प्राण को उन क्षणभंगुर प्राणियों या पदार्थों में रख देता है। जब यह कहा जाता है कि तुम्हारे बिना हम रह नहीं सकते, यह मोह का ही परिणाम है। पुरानी कथाओं में ऐसा आता है कि राजा के प्राण एक तोते में थे। उस राजा को चाहे जितनी बार मारा जाए वह नहीं मरता था क्योंकि उसके प्राण तो तोते में थे। जिसे जानकारी हुई उसने राजा के बजाए तोते को मार दिया। इस प्रकार राजा को बिना मारे राजा मर गया। यह कहानी मोह को ही दर्शाती है। मोह के कारण ही व्यक्ति दूसरी चीजों को मैं और मेरा करके अपने से जोड़ता है। मैं शरीर नहीं हूँ पर शरीर समझता हूँ। सगे सम्बन्धी एवं मित्र मेरे नहीं हैं फिर भी इनसे जोड़कर इनके सुख या दुख को अपना सुख या दुख समझता है। माया भी अज्ञान पर आधारित है पर माया का तात्पर्य है चीजों को उस रूप में न देख पाना जो उसका वास्तविक स्वरूप है। सभी पदार्थ चेतन तत्व से बने हैं पर हमें वह चेतन तत्व नहीं दिखाई देता और दूसरा रूप ही दिखाई देता है। माया एक ओर तो वास्तविक स्वरूप को छिपाती है तो वहीं वस्तु को दूसरे रूप में दिखाती है। इस प्रकार मोह और माया में अन्तर समझा जा सकता है यद्यपि दोनों का कारण अज्ञान है। मोह में अज्ञान के कारण आकर्षण या अपने से जुड़ाव होता है, जो माया में नहीं है। माया में भी आधार अंज्ञान है क्योंकि व्यक्ति यह वस्तुओं के वास्तविक स्वरूप को नहीं देख पाता। मोह में अज्ञान का परिणाम आकर्षण होता है अतः आकर्षण को मोह कहा जाता है। सद्–असद् वस्तु का विवेक न होना जिसके कारण शरीर को, संसार को सत्य मान लेना मोह है। हित–अहित, कार्य–अकार्य, सार–असार, हान–उपादेय इसका विवेक न होना मोह ग्रस्त होना है। शरीर को, संसार को क्षण भंगुर की जगह सत्य मान कर आनन्द का केन्द्र मान लिया और वहाँ आकर्षित हो गए। सज्जनों को गाली दे दी क्योंकि पता ही नहीं कि क्या करना चाहिए, क्या नहीं करना चाहिए। सांसरिक पदार्थो अर्थात प्रणियों एवं क्षणभंगुर पदार्थों में प्रीति या आकर्षण मोह कहलाता है। मोह का अर्थ है शरीर को आत्मा समझना अर्थात् जो मैं नही हूँ उसे मैं समझना। बिछड़ने वाली चीजों अर्थात् जिनकी उत्पत्ति और विनाश होती है ऐसे प्राणियों एवं वस्तुओं में रूचि, ममत्व या खिंचाव। शास्त्रीय मोह भी होता है अर्थात् शास्त्र में जो बुद्धिगत ज्ञान है उसके प्रति रूचि रखना, उसे न छोड़ पाना भी शास्त्र सम्बन्धी मोह है। शास्त्र की उपयोगिता है कि व्यक्ति में रूचि पैदा करें, रास्ता दिखाये, उसके बाद व्यक्ति को शास्त्र छोड़ देना चाहिए। शास्त्र

सीढ़ी की तरह है जब आप सीढ़ी से छत पर पहुँच जाते है तो सीढ़ी को पकड़ नहीं रहते है। बल्कि उसे छोड़ना पड़ता है। (माया का अर्थ है कि वस्तु को उस रूप में न देख पाना जिस रूप में वे वास्तव में है। प्रत्येक वस्तु चेतना से बनी है और हमें यह चेतना या प्रकाश नहीं दिखाई देता। माया एक ओर तो वस्तु के वास्तविक रूप को छिपाती है वही दूसरी ओर उसे दूसरे रूप में भी दिखाती है अर्थात् माया में आवरण शक्ति के साथ–साथ विक्षेप शक्ति भी है। मन और बुद्धि से निकलने पर ही व्यक्ति माया से निकल पाता है। बुद्धि से प्रश्न उठना, आपके द्वारा सुलझाने का प्रयास करना अर्थात् आप इस समय माया में है।)

479. **मोक्षा** – मोक्षरूपा। मोक्ष देने वाली यह अर्थ भी हो सकता है क्योंकि मोक्ष+आ, आ का अर्थ है देना। मोक्ष वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति जन्म मरण से परे जाकर सत् –चित् –आनन्द की अवस्था में रहता है।

480. महालक्ष्मी – महालक्ष्मी से अभेद है जिनका। जगत की रक्षा करने वाले को महालक्ष्मी कहते हैं। महा का अर्थ है जगत। संस्कृत में ल और र में अभेद होता है। लक्षयति का अर्थ रक्षयति कर सकते हैं इस प्रकार जगत की रक्षा करने वाला या ब्रह्माण्ड की रक्षा करने वाला यह अर्थ निकला। लक्ष्यते इति लक्ष्मी अर्थात जो लक्ष्य बनती है अर्थात लोगों की लक्ष्यस्वरूपा। वैकुण्ठ में रहने वाली लक्ष्मी को भी महालक्ष्मी कहते हैं क्योंकि वह पूर्ण कलाओं वाली होती है। अन्य लक्ष्मियाँ जैसे धनलक्ष्मी, धान्य लक्ष्मी, गजलक्ष्मी अंश रूप में ही होती है जिन्हें महालक्ष्मी नहीं कहा जा सकता।

481. **महत्पदप्रदायिनी** – उच्चतम पद (मोक्ष) प्रदान करने वाली। वैकुण्ठ या कैलाश लोक देने वाली।

482. **यमरूपा** – यमस्वरूपिणी (विश्व के संहार के समय)। यम अर्थात यमराज अर्थात मृत्यु के देवता।

483. **यमुना** – यमयति इति यमुना अर्थात पापों का, दुष्टों का नियन्त्रण करने वाली यमुना है। यमुना नदी के रूप में। भगवान की शक्तियां विभिन्न नदियों के रूप में भी हैं। यमुना कर्म का प्रतीक है। अतः कर्मस्वरूपा यह अर्थ भी कर सकते हैं। विभिन्न नदियों के जलों को मिलाती हुई आगे बढ़ने वाली। यु धातु का अर्थ है मिश्रण करना। वियुती गच्छती इति यमुना। देवी के सन्दर्भ में अर्थ कर सकते हैं भक्तों को अपने से मिलाकर या अपने लोक में स्थान देकर गति करने में लगी हुई अर्थात कार्य में रत रहने वाली। यमयित्वा नीयते अनया इति यमुना। दुष्टों को नागपाश से बाँधकर वध स्थान में ले जाने वाली। बन्दी बनाकर चलने वाली। भक्तों को नियन्त्रित कर सन्मार्ग में ले जाने वाली।

484. **जयन्ती** – प्रत्येक क्षण जीतती हुई अर्थात प्रत्येक क्षण में वह हर चीज में जैसे सुन्दरता, शक्ति, पराक्रम आदि में अन्यों से आगे है। इन्द्र की पुत्री जयन्ती से अभेद है जिनका। भक्तानां जयं तनोतीति जयन्ती। जयतीति जयन्ती। जि अभिभवे इत्यतो जीयादिति जयन्तो राजेति वैयाकरणाः। राजसु गतो जयन्ती। जनयति, यमयति, तनोति च। जयन्तगतस्तन्नामा। भक्तों को जय देने वाली या कार्यों में सफलता देने वाली। तन् धातु का अर्थ है विस्तार करना, देना, निर्माण करना होता है। जय शब्द का एक अर्थ है सर्वोत्कर्षेण वर्तते अर्थात् सबसे श्रेष्ठ। भक्तों को जय देती है अर्थात् उनका उत्कर्ष करती है। राजाओं को आशीर्वाद में बोला जाता था कि तुम्हारी जय हो। जिस राजा को पण्डितों ने आशीर्वाद दिया कि तुम्हारी जीत हो, ऐसे राजा में शक्ति रूप से विराजमान। जगत को जन्म देने वाली, अनुशासित (नियन्त्रित) करने वाली एवं उसका विस्तार करने वाली। जनसंख्या का विस्तार होना या क्षेत्र का विस्तार होना विस्तार है। बिन्दु से ही चीजों फैली है। जयन्त नामक इन्द्र पुत्र या जयन्ती नामक इन्द्रपुत्री में शक्ति रूप में विराजमान। नियम है कि शब्द के आगे ''में विराजमान'' जोड़ देने से शब्द का एक अन्य अर्थ आ जाता है।

485. **जयप्रदा** – अपने भक्तों को जीत प्रदान करने वाली। अपने भक्तों को जीवन के सभी पक्षों में, शास्त्रार्थ में जीत दिलाने वाली। विश्व को महाभारत जैसा ग्रन्थ देने वाली। जय का एक अर्थ महाभारत भी है।

486. **याम्या** – जो यम से सम्बन्धित है अर्थात दक्षिण दिशा रूपी। दक्षिण दिशा में यम की स्थिति है। दक्षिण दिशा में रहने वाली। जो यम से सम्बन्धित है अर्थात दण्ड देने वाली। समय का विभाजक चक्र जो याम है उस चक्र से सुशोभित होने वाली। समयचक्र को संचालित करने वाली, ऐसा भी अर्थ हो सकता है। देवी समय को स्थिर नहीं होने देतीं। भरणी नक्षत्र स्वरूपा।

487. **यमवती** – अष्टांग योग के आठ भेद हैं। यम, नियम, आसन, प्राणायाम आदि। प्रथम भेद अर्थात यम से युक्त है जो अर्थात यम का पालन करने वाली। यम अर्थात मन, इन्द्रीय आदि को वश में करना या रोक के रखना। योग के आठ अंगों में पहला अंग यम है। भगवान विष्णु से युक्त। यम का एक अर्थ है भगवान विष्णु।

488. **युद्धा** – युद्ध वाली अर्थात् राक्षसों का संहार करने के लिए युद्ध करने वाली। युद्धम् अस्या अस्ति इति युद्धा (युद्ध वाली)। युद्धस्वरूपिणी। शत्रुओं (राक्षसों) के संहार के समय युद्ध का रूप धारण करने वाली। युद्ध+आ, आ का अर्थ है देना। युद्ध देने वाली अर्थात युद्ध करने वाली। युद्ध वाली अर्थात् असुरों से युद्ध करने वाली। युद्धानि सन्ति अस्या इति युद्धा। देवताओं की रक्षा के लिए देवी ने कई बार असुरों से युद्ध किया है। अपने उपासकों के रास्ते में आने वाले सभी विघ्नों जैसे उनके कर्मसंस्कार, दुर्वृत्तियों के साथ युद्ध करने वाली अर्थात् उनका नाश करने वाली।

489. **यदोःकुलविवर्द्धिनी** – यदुओं के कुल को विशेष रूप से बढ़ाने वाली। यदु वंश का विस्तार करने वाली अर्थात् यदुवंशी भगवान कृष्ण के वंश को बढ़ाने वाली। बाल्यावस्था में इन्होंने ही कृष्ण को कंस से बचाया था। यदुकुल चन्द्रवंशी है। पुराणों में पुत्र या पुत्री किसी गुण के प्रतीक है। चन्द्रमा के गुण हैं आह्लाद या प्रसन्नता, सुन्दरता, शीतलता, अमृत बरसाना, स्नेह, प्रकाश (ज्ञान का प्रकाश) आदि। इस नाम का तात्पर्य हुआ इन गुणों को अर्थात् चन्द्रमा से सम्बन्धित गुणों को अपने भक्तों में बहुत अधिक बढ़ाने वाली। एकाक्षरी कोश में यदु का अर्थ अश्वमेध दिया गया है। अश्वमेध का अर्थ पवित्र मन अर्थात श्रेष्ठ मन होता है। अश् धातु से अश्व बना है। इस धातु का अर्थ है व्याप्त होना अर्थात फैल जाना। घोड़ा बहुत तीव्र गति से एक जगह से दूसरी जगह पहुँच जाता है अर्थात व्याप्त हो जाता है इस कारण इसे अश्व कहते है। मन से तीव्र गति से दौड़ने वाला कोई नहीं है अतः मन अश्व है। मेध का अर्थ पवित्र होता है। कुल का अर्थ है समूह अर्थात यहाँ पर दिव्य गुणो, शक्तियों का समूह ले सकते हैं। पवित्र मन वालों के सद्गुणों की शक्तियों की अधिक वृद्धि करने वाली।

490. **रमा** – लक्ष्मी रूपा। भक्त के मन और नेत्र को रमाने वाली। आकर्षित कर टिकाये रखने वाली। रमु क्रीड़ायाम् धतु से अर्थ निकला लौकिक अलौकिक दोनों क्रीड़ायें करने वाली। जगत की सृष्टि, पालन और संहार देवी की क्रीड़ायें हैं। जिसमें भगवान विष्णु का मन रमता है वह रमा है। र का अर्थ है गतिमान जीवात्मा, मा का अर्थ है ब्रह्म की शक्ति (क्रिया शक्ति)। इस प्रकार रमा का अर्थ हुआ गतिमान जीवात्मा जो ब्रह्म की क्रिया शक्ति से सम्बन्धित है। शिव के साथ क्रीड़ा करने वाली। समयति इति रमा अर्थात क्रीड़ा करने वाली अर्थात जगत के निर्माण, पालन और संहार रूपी क्रीड़ा करने वाली। वह शक्ति जिसके कारण प्रकृति अनेक प्रकार की क्रीड़ाऐं करती हैं। पेड़ों का झूमना, नदियों का कल कल करना प्रकृति की क्रीड़ा हैं। रमयति का अर्थ है क्रीड़ा करना, प्रसन्न करना। अपने गुणों एवं कार्यकलाप से अपने पति भगवान विष्णु को प्रसन्न रखने वाली। भक्तों को धन–सम्पत्ति देकर या अन्य मनोरथ देकर उन्हें प्रसन्न करने वाली। जीवात्मा जो सृष्टि तत्व के अधीन है। र का अर्थ है परमात्मा से निकली जीवात्मा और म का अर्थ है सृष्टि तत्व के अधीन। रम् माति निर्माति इति रमा अर्थात आनन्द का निर्माण करने वाली, अग्नि तत्व का निर्माण करने वाली। र अर्थात रमण (आनन्द) एवं माति अर्थात निर्माण करती हैं। शब्द का निर्माण करने वाली। सूर्य का माप करने वाली अर्थात् उसे भी सीमित करने वाली। अग्नि का निर्माण करने वाली। र का अर्थ है अग्नि एवं मा धातु का अर्थ है निर्माण करना। र के अन्य बहुत से अर्थ है जैसे सूर्य, शब्द, धन, शिव, काम, वज्र, धान्य, भय, ध्वनि, युद्ध।

491. **रामा** – राम की शक्ति के रूप में। जो कण कण में रमण करे अर्थात विराजमान है वह राम हैं। जो विश्व की समस्त स्त्रियों के रूप में है। स्त्रियों का उत्कृष्ट रूप रमण कराने वाला रूप होता है उस स्वरूप से युक्त। जिसमें सम्पूर्ण विश्व के लोग रमण करते हैं, विश्व के समस्त लोग स्त्रियों में अनुरक्त होते हैं इसलिए रामा का अर्थ स्त्री भी होता है। रमन्ते यत्र सर्वे जना इति रामा। सुन्दर और गुणशालिनी स्त्री रामा होती है। राति महीम् इति रामः, धरती को अर्थात स्थान या आधार को देने वाले राम हैं। स्त्रीलिंग में रामा हुआ। भक्तों को श्रेष्ठ स्थान या आधार देने वाले। जो समस्त प्रकार के आनन्द का उत्स अर्थात स्रोत है। रमन्ति योगिन्यः यस्याम् सा रामा। योगी लोग जिसमें रमण करते हैं अर्थात चित्त टिकाते है या ध्यान करते हैं। रावणस्य मरणम् यया सा, जिसके द्वारा रावण का अर्थात आसुरी शक्तियों का मरण होता है वह राम या रामा हैं। असीम आनन्द वाली। रम् रमणम् अमः अमितः यस्याः सा रामा अर्थात् जिनका आनन्द असीम है। र का अर्थ आनन्द एवं अम का अर्थ अमित है। रा का अर्थ धन, वैभव, स्वर्ण है। मा धातु का अर्थ निर्माण करना, मापना भी होता है। स्वर्ण, धन का निर्माण करने वाली।

492. **रामपत्नी** – सीता स्वरूपा। सीता से अभेद है जिनका। भगवान राम की रक्षा करने वाली। पत्नी का अन्य अर्थ है – पतन से बचाने वाली, पति के साथ रमण करने वाली।

493. **रत्नमाला** – रत्नों की माला वाली अर्थात रत्नों की माला से सुशोभित। किसी भी वर्ग की श्रेष्ठ चीज रत्न है। मल् धारणे धातु से माला का अर्थ धारण करने वाली होता है। श्रेष्ठ चीजों या श्रेष्ठ भक्तों या श्रेष्ठ प्राणियों को धारण करने वाली अर्थात उन पर अधिक कृपा करने वाली।

494. **रतिप्रिया** – कामदेव की पत्नी रति की प्रिया अर्थात रति जिन्हें पसन्द करती हैं। रति, सुरति क्रिया में प्रेम रखने वाली। रति को प्रसन्न करने वाली। रति से प्रसन्न रहने वाली। प्रीयते इति प्रिया से प्रिया का अर्थ प्रसन्न रहने वाली एवं प्रीणाति इति प्रिया से प्रिया का अर्थ है प्रसन्न करने वाली।

495. **रत्नसिंहासनस्था** – रत्नजड़ित सिंहासन में विराजमान रहने वाली।

496. **रत्नाभरणमण्डिता** – रत्नों से निर्मित आभूषणों से सुशोभित/अलंकृत।

497. **रमणी** – जिसके साथ रहने पर शिव आनन्द का अनुभव करते हैं। सभी को प्रसन्न कर देने वाली (अपनी क्रियाओं/चेष्टाओं से)। रमण करना अर्थात क्रीडा करना। जो भक्तों के साथ लुकाछिपी का खेल करती हैं। अपने को माया से छिपा लेती हैं और भक्त उन्हें ढूँढते रहते हैं।

498. **रमणीया** – जिसकी सुन्दरता प्रतिक्षण बढ़ती हुई प्रतीत होती है उसे रमणीय कहते है। ऐसे स्वरूप वाली। बदलाव के कारण ही व्यक्ति का मन बँधा रह सकता है जबकि एकरूपता में मन बोर होकर हट जाता है। सुन्दर अतिशय ललित रूप वाली, रमण करने योग्य।

499. **रत्या** – रति (प्रेम) स्वरूपा। रति + आ = रत्या। एकाक्षरी कोष में आ का एक अर्थ भाव (अस्तित्व) दिया गया है। प्रत्येक वस्तु या गुण या क्रिया भाव है। रति भावस्वरूपा। रति (प्रेम या भक्ति) की शक्ति स्वरूपा। एकाक्षरी कोष में आ का एक अर्थ शक्ति भी दिया गया है। शिवमहिम्न स्तोत्र में रति का अर्थ भक्ति दिया गया है। आ का एक अर्थ व्याप्त या निवास भी दिया गया है। कामदेव की पत्नी रति में शक्ति या गुण (सौन्दर्य आदि गुण) के रूप में व्याप्त। प्रेम या भक्ति में निपुण। रति में यत् प्रत्यय लगाने पर तत्र साधु सूत्र से निपुण अर्थ आ सकता है। रति में निपुण। रति का अर्थ काम क्रीडा, भक्ति, प्रेम होता है। तत्र साधु सूत्र से रति में यत् प्रत्यय लगाने से रत्य शब्द बनेगा जो स्त्रीलिंग में रत्या हो जाएगा। साधु का अर्थ निपुण, उपयुक्त, अनुकूल या अनुरूप, योग्य, उपयुक्त, समर्थ होता है। भक्ति में उपयुक्त अर्थात भक्ति के लिए उपयुक्त अर्थात जिनकी भक्ति करनी चाहिए। शिव महिम्न स्तोत्र में रति का अर्थ भक्ति दिया गया है। रति में निपुण। रति में तत्र साधु सूत्र से यत्

प्रत्यय लगाने से यह अर्थ निकलता है। रति + आ, इति रत्या। भक्ति देने वाली। आ का अर्थ है देना। जो शिव के प्रति रति (भक्ति) में निपुण हैं। रति के अनुकूल या संगत या रति के योग्य अर्थात जो रति (कामदेव की पत्नी) की सहायता करती हैं। रति से सम्बन्ध रखने वाली। रति या रत में यत् प्रत्यय लगाने से रत्या बनता है। ष्यञ् प्रत्यय लगाने से रात्य बनेगा। रति रूप से अलंकृत। कामदेव की पत्नी रति विश्व में सर्वाधिक सुन्दर मानी जाती है।

500. **रसपरायणा** – आनन्द/प्रीति में जो परायण रहती है या लगी रहती है। रस का अर्थ आनन्द भी होता है। रस (आनन्द) का आश्रय। परायण का एक अर्थ है आश्रय। लोकोत्तर प्रसन्नता या आनन्द में लगी हुई अर्थात् ऐसे आनन्द का स्वाद लेने वाली। लोकोत्तर प्रसन्नता या सुख को रस कहते है।

501. **रतानन्दा** – सुरत क्रीडा में आनन्दित होने वाली अर्थात् कुण्डलिनी स्वरूपा। मूलाधार चक्र में स्थित कुण्डलिनी शक्ति सहस्रार चक्र में स्थित शिव से मिलने पर अत्यन्त आनन्द की अनुभूति करती है। क्रीडाओं में आनन्दित होने वाली। सुरत/प्रेम में आनन्द रखने वाली। रमण (क्रीडा) से आनन्दित होने वाली। सृष्टि का निर्माण, पालन और संहार उसकी क्रिया है।

502. **रतिवती** – प्रेम से युक्त अर्थात् अपने पति शिव के प्रति प्रेम भाव से युक्त। भक्तों से प्रेम करने वाली। कामदेव की पत्नी रति से युक्त अर्थात् रति भी जिनकी उपासना करती है। उपासना करने से भक्त अपने आराध्य से जुड़ जाता है। प्रेम से युक्त। (यदि रतवती नाम है तो अर्थ होगा भोग या रमण से युक्त। रत का अर्थ है रमण, भोग, स्त्रीपुरुष का मिलन।)। प्रेम से युक्त अर्थात् अपने पति शिव के ही प्रेम भाव रखने वाली। शिव महिम्न स्तोत्र में रति का अर्थ भक्ति भी किया गया है। शिव के प्रति भक्तिभाव रखने वाली।

503. **रघूणां कुलवर्द्धिनी** – रघुवंशियों के कुल को बढ़ाने वाली। रघुवंश को बढ़ाने वाली अर्थात् रघु के कुल के भगवान राम के वंश को बढ़ाने वाली। रघुवंश सूर्यवंश ही माना जाता है। सूर्य के गुण है प्रकाश (ज्ञान का प्रकाश या चेतना), तेज, उत्साह, वीरता, जननक्षमता आदि। चेतना का विस्तार करने वाली। अपने भक्तों में सूर्य से जुड़े हुये गुणों को बढ़ाने वाली। संस्कृत में र और ल में अभेद होता है। लंघ् से रघु शब्द बनता है। लाघने वाला अर्थात बाधाओं को पार कर जाने वाला रघु है। रघु अर्थात लघु। लघु का अर्थ होता है छोटा या शीघ्र। शीघ्रता से कार्य करने वाला भी लघु है। कुल का अर्थ समूह होता है। प्रसंगवश हम अर्थ कर सकते है जैसे गुणों का समूह, वस्तुओं का समूह, शक्तियों का समूह। संस्कृत में अर्थ से संगति बनाने के लिए अध्याहार करना पडता है अर्थात बाहर से कोई शब्द लाना पड़ता है।

504. **रमणारिपरिभ्राज्या** – शिव के द्वारा सभी ओर से चमकने वाली। रमण (अर्थात कामदेव) के अरि अर्थात शत्रु, रमणारि अर्थात कामदेव का शत्रु अर्थात शिव। परि अर्थात चारों ओर से, भ्राज्या अर्थात चमकने वाली। भ्राज् दीप्तौ धातु होती है। देवता लोग स्वर्ग में रमण करते हैं अतः रमण से देवता अर्थ ले लिया गया। कामदेव रूपी शत्रु को पूर्णतः नष्ट करने वाली। भक्तों के कामविकार को पूर्णतः समाप्त करने वाली। रमण का एक अर्थ है कामदेव। वैदिक कोष (सूर्यकान्त जी द्वारा लिखित) में भ्राज् धातु का अर्थ नष्ट करना लिखा है। भ्राज्या का अर्थ हुआ नष्ट करने योग्य अर्थात् जिनको नष्ट करना चाहिये, जिनके द्वारा कामदेव रूपी शत्रु नष्ट करने योग्य है अर्थात् कामविकार को पूर्णतः नष्ट करने वाली। अन्यथा भी कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र से कृत्य प्रत्यय उन अर्थों से भी भिन्न अर्थ देते है जिनमें वे सामान्यतः प्रयुक्त होते है। भ्राज्या का अर्थ नष्ट करने योग्य होता है किन्तु इस सूत्र से नष्ट करने वाली अर्थ भी निकाल सकते है। परि का अर्थ है पूर्णतः या चारों ओर से। भगवान शिव ने कामदेव को भस्म किया था पर देवता का कोई भी कार्य उनकी शक्ति ही करती है। शक्ति का अर्थ है देवी।

505. **रैवारातिकरत्नजा** – नर्मदा नदी के उपहार अर्थात् शिवलिंग रूपी रत्न में रहने वाली। रैवा का अर्थ है

नर्मदा नदी, राति का अर्थ होता है उपहार अर्थात् जिस वस्तु को दिया जाता है। नर्मदा जी के शिवलिंग रत्न की तरह है। एकाक्षरी कोष में जा का अर्थ शय्या दिया गया है, ज का अर्थ निवास या अधिव्याप्ति दिया गया है। शय्या अर्थात् जिसमें लेटा जाता है अर्थात् रहा जाता है। रा धातु में क्तिन् प्रत्यय लगाने से राति शब्द बनता है जिसका अर्थ है जिसको दिया जाता है अर्थात् उपहार। राति और रातिक का एक ही अर्थ होता है क्योंकि राति में कन् प्रत्यय लगाने से अर्थ नही बदलता है। नर्मदा जी के शिवलिंग रूपी उपहार से उत्पन्न होने वाली अर्थात् चमक स्वरूपा। रत्न से चमक ही उत्पन्न होती है। तात्पर्य हुआ शिवलिंग या भगवान शिव की चमकस्वरूपा। नर्मदा के द्वारा दिये गए (अर्थात लाये गये) बाणलिंग रुपी रत्नों से उत्पन्न अर्थात इन रत्नों में विद्यमान। रा दाने धातु में क्तिन् प्रत्यय लगाने से राति शब्द बनेगा। रेवया रातं = रैवारात, रैवारात में (रेवारातेसू भवः/सम्बन्ध अर्थ में) ठक् प्रत्यय (उससे उत्पन्न) रत्नेषु भवः।

506. **रावी** – रव से सम्बन्धित अर्थात शब्द करने वाली। रू शब्दे धातु होती है। जो सुन्दर ध्वनियों (जैसे वेद की ध्वनि) को धारण करती हैं। नदी के प्रसंग में इसका अर्थ होगा जो सुन्दर कल कल ध्वनि को करती हो अर्थात धारण करती हो। आनन्द को प्राप्त कराने वाली। र अर्थात रमण अर्थात आनन्द। वाति अर्थात गच्छति। प्रेरणा अर्थ में गति कराना या पहुँचाना अर्थ होगा। आनन्द स्वरूपा एवं ज्ञान स्वरूपा। व का अर्थ ज्ञान भी है। रावी नदी में विराजमान। एकाक्षरी कोश से र या रा के अर्थ ले सकते है। ऐसे शब्द भी ले सकते है। जो रा से शुरू होते हो। वा धातु का अण्यन्त, ण्यन्त अर्थ लेकर अर्थ निकाल सकते है। जैसे राम से रा ले लिया। वाययति अर्थात गमयति। भक्त को राम तक पहुँचाने वाली, राम को पहुँचाने वाली। इस प्रकार अर्थ निकाल सकते हैं। रामम् वाति गच्छति इति रावी। अर्थात राम के पास तक जाने वाली या राम के पास रहने वाली अर्थात सीता स्वरूपा।

507. **रसस्वरूपा** – साहित्य के नौ रस अर्थात श्रृंगार, वीर, करुण आदि रसों के स्वरूप वाली। आनन्द रूप वाली। जो आनन्द देता है वह है रस। लोकोत्तर सुख स्वरूपा अर्थात आनन्द स्वरूपा।

508. **रात्रिसुखावहा** – जो रात्रिस्वरूपा है तथा परम सुख को बुलाने वाली या धारण करने वाली अर्थात देने वाली है क्योंकि देने के लिये ही बुलाती हैं या धारण करती हैं। ऐसी रात्रि स्वरूपा जो सुख का धारण किये हुए है या सुख को पहुँचने वाली है। वह् धातु का अर्थ धारण करना एवं ढोना (पहुँचाना) दोनो होता है। यह कालरात्रिस्वरूपा या भीषण गर्मी से युक्त या भीषण शक्ति से युक्त रात्रिस्वरूपा नहीं है जो कष्ट देती है। इस नाम का तात्पर्य है कि भक्त को सुख देने वाली रात्रि की तरह सुख देने वाली।

509. **राजसुखावहा** – श्रेष्ठ सुखों अर्थात सबसे उत्तम सुखों को बुलाने वाली अर्थात लाने वाली अर्थात देने वाली। भक्तों को देने के लिए ऐसे श्रेष्ठ सुखों को धारण करने वाली। राजपद के सुख को देने वाली। राज का अर्थ प्रभा दीप्ति भी होता है। (रात्रिराजसुखावहा यदि इसे एक शब्द माना जाये तो इसका अर्थ होगा रात्रि में श्रेष्ठ सुख लाने वाली अर्थात देने वाली। जैसे राजमार्ग का अर्थ श्रेष्ठ मार्ग है उसी प्रकार राजसुख का अर्थ श्रेष्ठ सुख है। रात को उपासना करने पर राजसुख लाती हैं (भक्तों को देने के लिए)। रात्रि में देवी पूजा का विशेष महत्व है। रात्रि में भी सुशोभित हैं अतएव सुख प्रदान करने वाली या स्वयं सुख धारण करने वाली। यहाँ राज का अर्थ सुशोभित होगा)।

510. **ऋतुजा** – ऋतुऐं जिसमें से पैदा होती हैं। ऋतवः जायन्ते अस्या इति ऋतुजा। ऋतु से उत्पन्न प्रकृति के परिवर्तन के स्वरूप में। प्रत्येक ऋतु में अलग अलग रूप धारण करने वाली। ऋतुओं में उत्पन्न होने वाले सुख या श्रेष्ठता स्वरूपा। प्रत्येक ऋतु की अपनी–अपनी विशेषता होती है और प्रत्येक ऋतु में कोई न कोई अच्छाई अवश्य होती है। समस्त ऋतुयें जिनसे पैदा होती है। ज का अर्थ विस्तार, जा का अर्थ शैय्या या विराजमान होता है। समस्त ऋतुओं में विराजमान अर्थात् समस्त ऋतुओं में उसकी शक्ति या ऊर्जा या गुण के रूप में विराजमान।

ऋतु शब्द ऋ गतौ धातु से बना है जिसका अर्थ है गति करने वाली अर्थात् बार–बार आने वाली अर्थात् परिभ्रमण (Rotate) करने वाली या बार–बार परिवर्तनशील वस्तु। दिन, रात, माह, ऋतु, वर्ष, कल्प आदि सभी परिभ्रमित (Rotate) होने वाली वस्तुयें है। ऐसी परिभ्रमण करने वाली वस्तुएं जिनसे उत्पन्न हुईं हैं अर्थात ऐसी वस्तुओं को उत्पन्न करने वाली।

511. **ऋतुदा** – सुन्दर ऋतु (बसन्त आदि) को देने वाली । बसन्त, ग्रीष्म आदि षड् ऋतुओं को देने वाली अर्थात् इनका अस्तित्व करने वाली। दा ददाति से दा शब्द का अर्थ देने वाला एवं दो अवखण्डने से दा का अर्थ खण्डन या नष्ट करने वाला होता है। ऋतुओं की समाप्ति करने वाली जिससे एक ऋतु के बाद दूसरी ऋतु आये। ऋतु का अर्थ गति करने वाली अर्थात् परिवर्तित होने वाला पदार्थ कर सकते है। जड़ पदार्थ नष्ट होते हैं फिर उनसे कुछ और बना लिया जाता है। परिवर्तित होने वाले पदार्थों को देने वाली अर्थात् उनको अस्तित्व में लाने वाली।

512. **ऋद्धा** – धन सम्पत्ति से युक्त। ऋद्धि का अर्थ है लौकिक सम्पत्ति की बहुतायत। सर्वेगुणैः समृद्धा। ऋतधारणाच्चामृद्धा। ज्ञानरूपत्वात् ऋकारः। ददद् दधद् वा दकारः। धारणाद् धकारः। ऋतान् मुक्तान् धारयति इति ऋद्धा। ऋतैर्वेदैर्ध्रियते इति ऋद्धा। ऋतं यथार्थज्ञानरूपत्वाद्, धारका सर्वस्य। निर्विकारत्वात्ऋतः। दधातीति धः। ऋतं धयति पिबतीति ऋतन्धय एव ऋद्धा। धेट् पाने। सभी गुणों से युक्त अर्थात् भरपूर। सत्य को धारण करने वाली। गतिमान सत्य को ऋत कहते है। समय और परिस्थिति के अनुसार जो उचित हो वह गतिमान सत्य है। इसे नैतिक नियम भी कहा गया है। ऋ गतौ धातु होती है जिससे ऋ का अर्थ ज्ञान भी होता है। ऋत शब्द से ऋ अक्षर लिया, ददद् शब्द से अन्तिम द् अक्षर लिया एवं धारणाद् से ध लिया। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ सत्य (यथार्थ ज्ञान) को देती हुई (अर्थात् देने वाली) एवं उसे धारण करने वाली। ऋ+द्+ध = ऋद्ध, स्त्रीलिंग में ऋद्धा। ऋत मुक्त पुरुषों का भी नाम है। मुक्त पुरुषों को धारण करने वाली अर्थात् उन्हें अपने पास रखने वाली या अपने लोक में जगह देने वाली। ऋत शब्द वेद का भी नाम है। वेदों के द्वारा जिन्हें धारण किया गया है अर्थात् वेद में जिनकी स्तुति या उल्लेख है। ऋत का अर्थ होता है यथार्थ ज्ञान। जो यथार्थ ज्ञान स्वरूपा है तथा सबको (जगत को) धारण करने वाली है। विकार रहित को भी ऋत कहते हैं। जो स्वयं में विकार रहित है तथा जगत को धारण किये हुये है। सत्य का पान करने वाली अर्थात् सत्य से युक्त स्वरूप वाली। ऋद्धि से युक्त। ऋद्धि का अर्थ है सभी वस्तुओं की समृद्धि। गुणों में समृद्धि। ऋद्धि के सात गुण माने गये हैं जो हैं सत्य, ऋत, उग्रता, दीक्षा, तप, ब्रह्म, ज्ञान, यज्ञ। ऋत गतिमान सत्य होता है अर्थात समय और परिस्थिति के अनुसार जो होना चाहिए वह ऋत है। बचपन में जो सही हो, वह आवश्यक नहीं कि युवावस्था में भी सही हो। ऋत का तात्पर्य है Ideal projection of the truth (सत्य) into particular time, place and circumstances। इसी कारण ऋत को गतिमान सत्य या परिवर्तनशील सत्य कहते है। कोई चीज एक मौसम में लाभदायक है, दूसरे मौसम में नहीं। जो चीज बचपन में सही है, वह आवश्यक नहीं कि युवा अवस्था में सही हो। किसी समय या अवस्था या स्थान या परिस्थिति में जो अनुकूल हो वह ऋत है। अधिकांश लोगों ने ऋत की परिभाषा प्रकृति या नैतिक नियम के रूप में की है जो मनुष्य की गतिविधियों Activity को नियंत्रित करती है। ऋ गतौ धातु के कारण Activity पर नियंत्रण करने वाले नियम ऋत है।

कुछ लोग नैतिक नियमों को ऋत कहते हैं। वह अपरिवर्तनीय सत्ता जो समस्त परिवर्तन अर्थात गति में क्रिया कराती है जिससे विश्व में व्यवस्था बनी रहें अर्थात विश्व के वे नियम जो ऐसे कार्य कराते है जिससे विश्व में व्यवस्था बनी रहे, वे नियम ऋत कहलाएं जाएंगें। गति या क्रिया का जो कारण होगा वह अपरिवर्तनीय होगा, नियम स्वंय में स्थिर होता है पर वह बहुत से कार्य कराता है। सूर्य कैसे गति करेगा, पृथ्वी ग्रह नक्षत्र आदि कैसे

गति करेगें, ऋतुओं का आना–जाना यह सब जिस नियम के अन्तर्गत है वह ऋत कहलाता है। ब्रह्म के दो पक्ष है। एक स्थिर पक्ष है जिसे शिव कहते है और दूसरा जो सभी क्रियाओं का कारण है जिसे शक्ति कहते है। संभवतः ऋत का सम्बन्ध शक्ति से है। ऋद्धि का अर्थ क्षुद्र सिद्धि भी होता है।

513. **ऋतुरूपा** – ऋतुस्वरूपिणी। बसन्त, ग्रीष्म, हेमन्त आदि षड् ऋतुओं स्वरूप में। (एक स्थान पर ऋतु शब्द की अग्रलिखित व्याख्या दी गई है – ऋतुमानिषु गता। ज्ञानरूपत्वादियर्तीति ऋतुः। अर्यते इति ऋतुः। ऋतं तनोति इयम्। गतिमान बाण में विराजमान ज्ञान रूप मे गति करने वाला। ज्ञान या विद्या गुरू से शिष्य की ओर जाती है। ऋतु का अर्थ ही होता है जो गतिमान है। ज्ञानियों द्वारा जिसे प्राप्त किया जाता है। अर्यते ज्ञानिभिः इति ऋतु। सत्य का विस्तार करने वाली अर्थात सत्य को फैला देने वाली। फैलाने का तात्पर्य हमेशा सत्य की विजय कराना, शास्त्रों या गुरूओं के माध्यम से सत्य पर चलने का उपदेश देना यही है।

514. **ऋतुप्रिया** – ऋतुओं से प्रेम करने वाली। अलग अलग ऋतुओं में अलग अलग रूपों में सुशोभित होती है, जो अच्छी लगती हैं।

515. **रक्तप्रिया** – अनुराग से प्रेम करने वाली। जिसे राक्षसों का रक्तपान प्रिय है। अनुरक्त भक्त जिन्हें प्रिय है। अनुरक्त भक्तों को प्रसन्न करने वाली या ऐसे भक्तों से प्रसन्न रहने वाली। प्रीणाति इति प्रिया से प्रिया का अर्थ प्रसन्न करने वाली एवं प्रीयते इति प्रिया से प्रिया का अर्थ प्रसन्न रहने वाली होता है।

516. **रक्तवती** – रक्त से युक्त क्योंकि गले में कटे मुण्डों की माला पहने हैं जिससे रक्त निकल रहा है। दैत्यों का रक्तपान करने वाली। राग वाली अर्थात भक्तों से अनुराग करने वाली।

517. **रंगिणी** – रंग वाली अर्थात सौन्दर्य शालिनी। रंग से इनि प्रत्यय लगाने से पुल्लिंग में रंगी बना और स्त्रीलिंग से रंगिणी शब्द बनता है। रंग अर्थात सुभग अर्थात सुन्दर। रणभूमि वाली अर्थात युद्ध में लड़ रही हैं। रंग का एक अर्थ युद्धभूमि होता है। मनोरंजन या आनन्दस्वरूपिणी, जिनसे मनोरंजन होता हो।

518. **रक्तदन्तिका** – लाल दांतो वाली। दुष्टों के संहार के समय दांतो में रक्त लगने के कारण दांत लाल हो जाते हैं। भगवान में अनुरक्त बनाकर मोह–ममता तोड़ने वाली। दन्त तोड़ने का कार्य करता है।

519. **लक्ष्मी** – लक्ष्मी जी से अभेद है जिनका। जो सुन्दर लक्ष्म अर्थात शुभ चिन्हों से युक्त है वह है लक्ष्मी। ज्ञान, ऐश्वर्य, सुख, आरोग्य, धन –धान्य, जय आदि शुभ चिन्ह हैं। जो नीतिज्ञों अर्थात धर्माचारियों को देखती है वह है लक्ष्मी। लक्ष्मी इसलिए देखती हैं जिससे उन्हें भौतिक और आध्यात्मिक दोनों संपत्ति दी जा सके।

जो सबकी लक्ष्य भूता है अर्थात सभी जिसे प्राप्त करना चाहते है। जो अपने भक्तों को लक्ष्य प्राप्त करने में सहायता करती है, (साधन, धन, शक्ति, ज्ञान आदि देकर)। जो अपने भक्तों को सर्वाधिक वात्सल्य भाव दिखाती है। जो भक्तरूपी पुत्रों को अपनी गोद में बिठाती है अर्थात् उनकी सर्वतोभावेन रक्षा करने वाली। जो अपने भक्तों की विपत्ति की नदी से निकलने के उपायों को दिखाती है अर्थात् बताती है या सुझाती है। शुभ लक्ष्म (चिन्ह) से युक्त। ज्ञान, ऐश्वर्य, सुख, आरोग्य, धन–धान्य, जय आदि शुभ लक्षण हैं। लक्षयति इति लक्ष्मी। देखने वाली अर्थात सभी प्राणियों के द्वारा किये जा रहे शुभ अशुभ कर्मों को देखने वाली। सभी की लक्ष्यभूता अर्थात सभी प्राणियों का लक्ष्य। लक्ष्य तक पहुँचाने वाली। जिनके लिए कपिल मुनि ने कहा कि मेरी तरफ देखो अर्थात मुझ पर कृपा करो। माम् लक्षय अर्थात मेरी तरफ देखो। लक्ष्मी जी की बहुत सी विशेषताओं को देखकर ऐसा कपिल मुनि द्वारा कहा गया। दाता को प्रेरणा देने वाली। ला धातु में ड प्रत्यय लगाने से बने ल शब्द का अर्थ है देने वाला या लेने वाला। क्षिप् धातु का अर्थ है प्रेरणा देना। लय (स्थिति एवं संहार) में प्रकृति को प्रेरणा देने वाली। लीङ् श्लेषणे धातु में ड प्रत्यय लगाने से बने ल का अर्थ लीन होना होगा। व्यक्ति में लीन होकर अर्थात प्रविष्ट होकर उसे अच्छे कार्य की प्रेरणा देने वाली। क्षम् सहने धातु से भी यह शब्द बन सकता है तब अर्थ होगा क्षमा

देने वाली अर्थात करने वाली। मा माने धातु से अर्थ होगा सभी भूतों को जानने वाली या नापने वाली। भूत का अर्थ है प्राणी, पंचभूत, शिवगण आदि। जिससे सब प्रकार के पदार्थ प्राप्त होते है। निरूक्त में इस अर्थ को लभ् (प्राप्ति) + मुट् + ई झ लभू + मी झ लक्ष् + मी झ लक्ष्मी, इस प्रकार से उत्पन्न किया गया है। धनादि ऐश्वर्य से व्यक्ति को प्रतिष्ठा, सम्मानादि प्राप्त होते है और सभी लोग उससे मिलने चाहते है, अतः धनादि का नाम लक्ष्मी है। मनुष्य के लिये अभिलषित होती है अर्थात् मनुष्य इसे पाने की आकांक्षा रखते है। लष् धातु में मुट ई जोड़ने पर लक्ष्मी शब्द बनेगा। इसे सभी प्राप्त करना चाहते है। अतः इनका नाम लक्ष्मी है। लष् कान्तु धातु में मुट ई जोड़ने पर लक्ष्मी बनेगा। कान्ति का अर्थ है इच्छा। लग् धातु से भी यह शब्द बन सकता है। सभी लोग जिसका आलिंगन करते है अर्थात् प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार करते है। लग् धातु का अर्थ आलिंगन करना है। निरूक्त में इस प्रकार की विपत्तियाँ दी गयी है। लक्षयति दर्शयति निरतिशयं वात्सल्यम् इति लक्ष्मी। जो अपने भक्तों के प्रति सर्वाधिक या बहुत अधिक वात्सल्य भाव दिखाती है। माँ का पुत्र के प्रति स्नेह वात्सल्य होता है। लक्षयति अंकम् आरोपयति भक्त पुत्रान्, जो भक्त पुत्रों को अपनी गोद में बिठाती है। लक्ष दर्शनांकनयोः धातु होती है जहाँ लक्ष् का अर्थ है दिखाना, गोद में बैठाना। लक्षयति आलोचयति स्वजनानां विपत्सरित उद्धारस्य उपायानि इति लक्ष्मी। जो अपने भक्तों को विपत्ति से निकलने के लिए उपाय पर विचार करती है या सोचती है। लक्ष आलोचने धातु होती है। लक्ष् धातु में उणादि ई प्रत्यय लगाने से, बीच में मुट् का आगम होकर लक्ष्मी शब्द बनता है। लक्षयति विज्ञापयति इति लक्ष्मी। जो भक्तों को तत्व ज्ञान (ब्रह्म ज्ञान) या चारों पुरुषार्थों का ज्ञान कराती है वह शक्ति लक्ष्मी है।

520. **लज्जा** – संकोचवृत्ति स्वरूपा। वह गुण जिसके कारण व्यक्ति अपने को गलत काम करने से रोकता है, लज्जा कहलाता है। इस गुण के रूप में है देवी। अन्तःकरण की वह स्थित, जिसमें स्वभावतः बुरे आचरण की भावना का बोध होने पर संकोचवश समस्त चेष्टाएं शिथिल होती जान पड़े, और मुँह से शब्द निकल पाना कठिन जान पड़े लज्जा नामक स्थिति या भाव है। इस भाव के स्वरूप वाली। श्री रामचन्द्र शुक्ल ने लज्जा और ग्लानि नामक निबन्ध में लज्जा के बारे में लिखा है कि दूसरों के चित्त में अपने विषय में बुरी या तुच्छ होने के निश्चय या आशंका मात्र से वृत्तियों (कार्यकलाप) का जो संकोच होता है, उनकी स्वच्छन्दता के विधान का जो अनुभव होता है– उसे लज्जा कहते हैं। सरल भाषा में समझाये तो अर्थ होगा कि दूसरे लोग गलत कहेंगे अतः गलत काम करने से अपने को रोकने वाली प्रवृत्ति लज्जा है। संकोच अर्थात कुछ करने से रोक लेना। करने योग्य कार्य को न करने से या न करने योग्य कार्य को करने से दूसरों से अर्थात् दूसरे के सामने या स्वयं से (दूसरा कोई उपस्थित नही है) होने वाला चित् का संकोच अर्थात् एक प्रकार से अप्रसन्नता या पश्चाताप जैसा भाव लज्जा कहलाता है। इस गुण के स्वरूप वाली। इस गुण में शक्ति रूप में विराजमान। कर्तव्याकारणनिमित्तम् अकार्यकरणनिमित्तम् अन्यतः स्वतो वा जनितम् लज्जनम् संकोचनम् मनुष्यादिचित्तेषु लज्जा इति उच्यते। इस गुण का कारण अर्थात् इसे उत्पन्न करने वाली या अपने भक्तों को देने वाली। पुष्प विकसित होने के कारण प्रसन्नता के प्रतीक है। विकास प्रसन्नता का प्रतीक है एवं संकोच अप्रसन्नता का प्रतीक है। संकोच का अर्थ अपने आपको रोकना भी है। गलत कार्य करने से अपने आपको रोकना भी लज्जा गुण है। अपने द्वारा किये गये कार्य का दूसरों को पता चलने पर होने वाले भय का नाम भी लज्जा है। लज्जा स्वकार्यविषयान्यज्ञानभीः।

521. **लतिका** – लता की तरह चारों ओर फैलने वाली अर्थात सभी जगह व्याप्त होने वाली। सुन्दर स्वरूप धारण कर चारों ओर फैलने वाली जैसे लता फैलती है। लता की तरह विश्व को लपेटे हुए। जैसे लता वृक्ष को लपेट लेती है उसी प्रकार देवी भी विश्व को लपेटे हुए है अर्थात विश्व उनके अन्दर है।

522. **लीलालग्नानिरीक्षणी** – विभिन्न लीलाओं में संलग्न होकर चराचर जगत का सम्पूर्ण रूप से निरीक्षण करने वाली। आनिरीक्षणी अर्थात आ+ निरीक्षणी। आ का अर्थ समन्तात् अर्थात सभी ओर से अर्थात सम्पूर्ण रूप से।

523. **लीला** – लीला वाली अर्थात शिव के साथ प्रेम का खिलवाड़ या प्रेम विनोद करने वाली। लीला अस्या अस्ति इति लीला (लीला वाली)। साहित्य में नायिका का वह भाव जिसमे आनन्द के वशीभूत होकर नायिका अपने प्रिय के बोल चाल, वेष आदि की नकल करती है, लीला कहलाता है। लीला का उद्देश्य जगत का भला करना, जगत को सिखाना ही होता है और वह अपने शुभ संकल्पों से ही प्रेरित होता है, अतः लीला में कोई पाप पुण्य नहीं लगते। लीला अर्थात बेहद आसानी से, बायें हाथ के खेल की तरह करना। स्वयं में पूर्ण के द्वारा ही लीला हो सकती है। दूसरे का भला हो या दूसरे को कुछ प्रेरणा दी जाए या कुछ शिक्षा दी जाए, इस हेतु सक्षम व्यक्ति द्वारा किया गया कृत्य जिसमें जरा भी परिश्रम न हो एवं कर्तृत्व भाव न हो, ऐसा कृत्य लीला कहलाती है। भगवान ही लीला कर सकता है और लीला सुनकर या देखकर प्रसन्नता या आनन्द की अनुभूति भी होती है। क्रीड़ा में भले ही मनोरंजन हो पर कुछ परिश्रम होता है। लीला में घटना घटित होने के कारण को ईश्वर के अलावा कोई नहीं जानता अर्थात ऐसा कैसे हो गया, इसका रहस्य अज्ञात रहता है। क्रीड़ा में खेल के नियम सभी को पता होते हैं और इस कारण घटित घटनाओं के पीछे का कारण भी लोगों को पता रहता है। यह लीला और क्रीड़ा में अन्तर है। लीला वे कर्म हैं जिसका फल नहीं मिलता। कामना कुछ पाने की होती है पर ईश्वर तो पूर्ण काम है। उनके द्वारा किये गये कर्म लीला हैं क्योंकि उन्हें अपने लिए कुछ पाना नहीं है। प्रेमवश अपनी सन्तान अर्थात मनुष्यों को कुछ सिखाने या देने के लिए ही कर्म करने का नाटक करते हैं जो लीला है। धरा अर्थात् पृथ्वी को धारण करने वाली। कंगन या वलय को धारण करने वाली। एकाक्षरी कोष में ली के कई अर्थ है जैसे धरा, कंगन, बन्धन आदि। लाति का अर्थ धारण करना, नाश करना होता है। बन्धन या दृढ़ बन्धन का नाश करने वाली। लीला में कारण का पता सिर्फ ईश्वर को होता है, बाकी लोगों को अच्छा तो लगता है पर उस क्रिया या घटना का कारण पता नहीं चल पाता अर्थात गोवर्धन पर्वत कैसे उठा लिया गया, कालिया नाग के फन में कैसे नृत्य कर लिया गया, यह बाकी लोगों को पता नही चल पाता यद्यपि उनका मनोरंजन होता है और उन्हें आनन्द मिलता है। क्रीडा में भी मनोरंजन होता है पर उन्हें घटना का कारण पता होता है अर्थात कार्य कारण सम्बन्ध का पता होता है।

524. **लीलावती** – रहस्यपूर्ण व्यापार (कर्म या क्रिया) से युक्त अर्थात करने वाली। विचित्र कार्यों से युक्त जैसे समुद्र के खारे पानी के किनारे नारियल मीठा रस देता है। लीला से युक्त। अनेक प्रकार की लीलाओं को करने वाली। सृष्टि की रचना करना, पालन करना, संहार करना, भक्तों पर कृपा करना, भक्तों के साथ माया में छिपकर आँख मिचौली करना यह सब उनकी लीलाऐं हैं।

525. **लोमाहर्षाह्लादनपट्टिका** – ऐसी तख्ती के समान जो रोंगटे खड़े करने वाली प्रसन्नता एवं हृदय की खुशी देती हो। पट्टिका का अर्थ है पट्टी, तख्ती, स्तर Stage। पट्टिका अर्थात् आधार अर्थात् जिससे कुछ पैदा होता हो अर्थात् कारण। रोंगटे खडे करने वाली प्रसन्नता और हदय की खुशी करने वाली अर्थात् देने वाली, यह तात्पर्य हुआ। अत्यधिक प्रसन्नता, दुख या आश्चर्य में रोंगटे खडे हो जाते है। आह्लाद का अर्थ है हृदय की खुशी। अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति पर मिलने वाले सुख को हर्ष कहते है। रोंगटे खड़े कर देने वाले हर्ष और खुशी की पट्टिका। खुशी की वह पट्टिका जो रोंगटे खड़े कर दे। अधिक हर्ष और भय में रोंगटे खड़े होते हैं। पट्टिका का अर्थ है Signboard या तख्ती। हर्ष से जिनके लोम या रोम आनन्दित हो जाते हैं ऐसे स्वरूप वाली। हर्षान्वित रोमांचित आनन्दित स्वरूप वाली। यहाँ पट्टिका का अर्थ स्वरूप से है।

526. **ब्रह्मस्थिता** – ब्रह्म में स्थित रहने वाली। जिस तरह दूध में पानी है वैसे ही ब्रह्म में शक्ति है।

527. **ब्रह्मरूपा** – ब्रह्मस्वरूपा। ब्रह्म वह सत्ता है जो स्वयं में सबसे बड़ा/विशाल है एवं दूसरों को भी अपनी तरह बड़ा/विशाल बना देता है वह ब्रह्म है। ब्रह्म के सदृश। ब्रह्म के लक्षणों या गुणों वाली। रूप का अर्थ है सादृश्य, लक्षण, गुण। रूपयति का अर्थ दिखाना, निर्माण करना भी होता है। ब्रह्म का साक्षात्कार कराने वाली।

528. **ब्रह्मणा** – ब्रह्म की ज्ञानशक्ति स्वरूपा। ब्रह्म+ण+आ, एकाक्षरीकोश के अनुसार ण अर्थात ज्ञान एवं आ अर्थात शक्ति। ब्रह्म–ज्ञान स्वरूपा। जो विस्तार स्वरूपा है या जिसमें विस्तार होता है। ब्रह्म में युच् प्रत्यय लगाने से ब्रह्मण शब्द बनेगा जिसमें टाप् प्रत्यय लगाने से ब्रह्मणा बनेगा। यदि ल्युट् प्रत्यय बनाकर स्त्रीलिंग करें तो ब्रह्मणी बनेगा। बृंह् धातु का अर्थ विस्तार करना होता है। जो सबसे बड़ा है तथा दूसरों को भी अपने समान बड़ा कर देता है, वह ब्रह्म है। ब्रह्म की नाभिस्वरूपा। एकाक्षरी कोष में णा का अर्थ नाभि दिया गया है। नाभि से ही शरीर सन्तुलित रहता है और नाभि से ही पूरे शरीर में जीवनी शक्ति प्रवाहित होती है, नाभि से ही विस्तार होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ ब्रह्म को सन्तुलित रखने वाली या ब्रह्म में जीवनी शक्ति का प्रवाह करने वाली या ब्रह्म को जगत के रूप में विस्तारित करने वाली। ब्रह्मस्वरूपिणी। ब्रह्मन् शब्द में न् का लोप न कर सीधे टाप् कर दिया जिससे ब्रह्मणा बना। बृह् वृद्धौ धातु से ब्रह्म बना जिसका अर्थ है बढ़ने वाली अर्थात जो संसार के रूप में वृद्धि को प्राप्त हुई। ब्रह्मतत्व से युक्त।

529. **वेदवन्दिता** – वेदों के द्वारा वन्दित। अपने इष्ट देवता के गुणों और कार्यों का बखान करना एवं उन्हें सामने प्रणाम करना वन्दना है।

530. **ब्रह्मोद्भवा** – वेद का उत्पत्ति स्थल अर्थात जिनसे वेद उत्पन्न हुआ। तपस्या गुण का उत्पत्ति स्थल। ब्रह्म का एक अर्थ वेद, तपस्या है। उद्भव का अर्थ है उत्पत्ति स्थल। ब्रह्म भी जिनसे प्रकट होता है अर्थात अभिव्यक्त होता है। परब्रह्म अपने में निहित शक्ति के कारण प्रकट या अभिव्यक्त होता है अर्थात संसार के रूप में दिखाई देता है। ब्रह्म के रूप में उत्तम सत्ता वाली। उद्भव अर्थात उत्+भू। भू का अर्थ सत्ता भी होता है। वेद को उत्पन्न करने वाली। ब्रह्म का अर्थ वेद भी होता है। तपस्या से प्रकट होने वाली। ऋषि –मुनि जब तपस्या करते हैं तो प्रसन्न होकर प्रकट हो जाती हैं।

531. **ब्रह्मकला** – ब्रह्म की शक्ति स्वरूपा। कला का एक अर्थ शक्ति भी होता है। ब्रह्म की कलारूपिणी। ब्रह्म का प्रकाश या सौन्दर्य स्वरूपा। कला का एक अर्थ सौन्दर्य या प्रकाश भी होता है। कला वह विशिष्ट तत्व है जो अतिशय सुन्दर करता है। कला व्यक्ति को सम्मोहित करती है।

532. **ब्रह्माणी** – ब्रह्मा की पत्नी स्वरूपा। ब्रह्मा को कल्पपर्यन्त जीवित रखने वाली। अनति का अर्थ है जीवित रखना। ब्रह्म आनयति जीवयति इति ब्रह्माणी। ब्रह्म शब्द का अर्थ परब्रह्म एवं ब्रह्मा दोनों होता है। ब्रह्म–शक्ति से सम्पन्न।

533. **ब्रह्मबोधिनी** – ब्रह्म का बोध करा देने वाली। वेद का बोध कराने वाली अर्थात उसका सही अर्थ या तात्पर्य बताने वाली। ब्रह्म का एक अर्थ वेद भी होता है।

534. **वेदागंना** – श्रुतिरूप सुन्दर स्त्री। अंगना का अर्थ है स्त्री जिसके सभी अंग सुन्दर हैं। वेद के छहों अंग जैसे व्याकरण, ज्योतिष, शिक्षा, कल्प, निरूक्त, छन्द के रूप में है जो। वेदों की प्रशस्त ज्ञान–शक्तिरूपा। अंगना का सामान्य अर्थ स्त्री अर्थात शक्ति से है। वेद स्वरूपी महिला। अंगना का अर्थ होता है जिसके सारे अंग श्रेष्ठ हो ऐसी महिला। वेद को श्रुति भी कहते है जो स्त्रीलिंग का शब्द है। वेदांगान् नाययति गमयति बोधयति इति वेदांगना अर्थात् वेदागों का बोध कराने वाली। शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, ज्योतिष आदि छः अंग वेद के है जिन्हें वेदांग कहते है। अंगति का अर्थ गच्छति भी होता है। ल्युट् प्रत्यय में अंगनम् शब्द बनेगा। वेद में जिनको स्थापित किया गया है अर्थात् जिनकी चर्चा होती है।

535. **वेदरूपा** – वेद के स्वरूप में है जो। रूप वह है जो आँखों से दिखाई दे। वेदरूपा का अर्थ हुआ जिसके आँख से दिखने वाला रूप वेद है। वेदम् रूपयति इति वेदरूपा अर्थात जो वेद को दिखाती है वह वेदरूपा है। वेदों का निर्माण करने वाली।

536. **वनिता** – जो अपने पति शिव की सम्यक् सेवा अर्थात भली भाँत सेवा करती है। वन सम्भक्तौ धातु से वनिता शब्द बनने पर यह अर्थ निकलता है। सुन्दर स्त्री के स्वरूप को धारण करने वाली। वनिता सामान्य स्त्री को भी कहते हैं। वनिता अर्थात अनुरक्त स्त्री अर्थात जो शिव के प्रति अनुरक्त है। संस्कृत में स्त्री के लिए वनिता शब्द आया है। यह शब्द वनु याचने धातु से बना और वन संभक्तौ धातु से भी बना। वनु याचने धातु से वनिता शब्द बनने पर अर्थ हुआ, जिसकी याचना की जाती है अर्थात जिसे मांगा जाता है वह स्त्री वनिता है। महर्षि लोग हिमालय के पास यह याचना करने गये थे कि पार्वती जी को शिव को दे दीजिए। इस प्रकार वनिता का अर्थ हुआ जिनकी याचना की जाती है अर्थात जिनकी प्राप्ति की याचना की जाती है अर्थात जिनकी कृपा की प्राप्ति की याचना की जाती है। जो सेवनीय या पूजनीय हैं।

537. **विनता** – विशेष रूप से नम्र रहने वाली। सौन्दर्य संवर्धन के लिए जो झुकती हैं।

538. **वसा** – भक्तों के हृदय में रहने वाली। वसति इति वसा अर्थात् वसा का अर्थ है जो रहती है अर्थात् रहने वाली। कण–कण में विराजमान। जिसमें सभी प्राणियों का वास हो। वसन्ति अस्याम् प्राणिनः। वसा का एक अर्थ चरबी, भेजा (दिमाग) है। मनुष्य अवतार में बहुत तेज दिमाग वाली, ऐसा अर्थ कर सकते है। चर्बीयुक्त अर्थात् मोटापे से युक्त अर्थात जिनके उदर में ब्रह्माण्ड है। देवी इच्छानुसार कोई भी रूप धारण कर सकती है। सब में रहने वाली। वसति इति वसा। वस् आच्छादने धातु भी होती है तब इसका अर्थ होगा जो सभी को आच्छादित करके स्थित हैं। स से आरम्भ होने वाले दो अक्षरों वाली धातुओं में ड प्रत्यय लगाने से स शब्द बनेगा जो स्त्रीलिंग में सा या सी हो जाएगा। व से आरम्भ होने वाले शब्द ले लेगें या एकाक्षरी कोश से व के अर्थ ले लेगें। इस प्रकार से अन्य अर्थ बनाए जा सकते हैं।

539. **बाला** – बाल्यावस्था से विभूषित। जो अपने भक्तों को बल प्रदान करे उसे भी बाला कहते हैं। बलयति इति बाला। अपनी इच्छानुसार कोई भी रूप धारण कर सकती हैं। बाला–त्रिपुर–सुन्दरी का रूप बाल रूप है। बाल–गोपाल श्री कृष्ण से सभी अवगत हैं। जिससे अर्थात जिसका नाम सुनकर दुष्टजन या भूत प्रेत दूर भाग जाते हैं। बलन्ति चलन्ति दुष्टा यस्याः सा। तात्पर्य है दुष्टों का वारण करने वाली। जो अपने पराक्रम से शत्रुओं को आच्छादित या परास्त कर देती है। बलते आच्छादयति स्वपराक्रमेण अन्यान्। भक्तों को अमृत से भर देने वाली अर्थात मोक्षदेने वाली। वम् बीज अमृत बीज है। वम् (अमृतम्) अलति पूरयति इति बाला अर्थात अमृत से भर देने वाली। बाल भगवान कृष्ण या विष्णु जी का भी नाम है। जो भगवान विष्णु या कृष्ण की तरह पराक्रमी है। बालो बालयुते पाके मुकुन्दे मुग्धके गो। ये सब कौशिक के मतानुसार पर्यायवाची हैं। बल लाभे। विश्वम् आत्मसात् करोति। विश्व को आत्मसात करने वाली अर्थात् अपने जैसा बनाने वाले या अपने अधीन करने वाली या प्राप्त करने वाली। तात्पर्य हुआ विश्वरूपिणी। बाला शब्द का शाब्दिक अर्थ तो उतना ही है कि प्राप्त करने वाली। अर्थ में संगति के लिए विश्व शब्द जोड़ दिया गया। विश्व को अपनी आत्मा से जोड़ने वाली। बलयति इति बाला अर्थात अपने भक्तों को बल प्रदान करने वाली। एकाक्षरी कोश से ब या बा के अर्थ ले सकते है। ला का अर्थ धारण करने वाली, नाश करने वाली होता है। लाति ग्रहणाति नाशयति इति ला। इस प्रकार हम अन्य अर्थ भी निकाल सकते हैं।

540. **युवती** – युवावस्था से युक्त अर्थात प्राप्तयौवना या जवान स्त्री जैसी। किसी अवस्था में जैसे षोडशी रूपा में देवी हमेशा 16 वर्ष की होती हैं, देवी के उस स्वरूप से अभेद है जिनका। युवती का अर्थ हल्दी भी होता है। तब इस नाम का अर्थ होगा जो हल्दी के समान सर्वरोगनिवारिका है अर्थात सर्वकष्टनिवारिका है। कहीं पर 16 वर्ष से 32 वर्ष तक की अवस्था युवावस्था मानी गई है और कहीं पर 16 वर्ष से 30 वर्ष की अवस्था युवावस्था मानी गई है। भाव प्रकाश ग्रन्थ में 16–32 वर्ष की अवधि युवती कही गई है। युवावस्था में शारीरिक परिवर्तनों की प्रक्रिया है जिसके द्वारा बच्चे का शरीर प्रजनन क्षमता से युक्त होकर वयस्क के शरीर में बदल जाता है।

युवावस्था मस्तिष्क द्वारा यौन अंगों (अंडाशय तथा वृषण) को हारमोन संकेत भेजे जाने से शुरु होती है। किशोरावस्था (12 –13 से 18 –19 वर्ष की अवस्था, अंग्रेजी में Teen शब्द लगा होता है आखिर में) के बाद युवावस्था आती है।

541. **वृद्धा** – वृद्धावस्था से युक्त। धूमावती रूप में देवी वृद्ध अवस्था में रहती हैं उस देवी से अभेद है जिनका। सर्वप्रथम होने के कारण सभी से वृद्ध कहलाई जायेंगी। जो ज्ञान से वृद्ध है अर्थात सर्वाधिक ज्ञान वाली। उपनिषदों में आया है कि बाल पके होने से कोई वृद्ध नहीं होता। जिसके पास जितना अधिक ज्ञान है वह उतना अधिक वृद्ध माना जाएगा। वृद्ध महिला की तरह अर्थात आदरणीया।

542. **ब्रह्मकर्मपरायणा** – ब्रह्मकर्म में लगी हुई। ब्रह्म कर्म से तात्पर्य है वेद तत्व का प्रतिपादन, वेद की व्याख्या, वेद के रहस्यों की व्याख्या। ब्रह्म के लिए किये जाने वाले कर्मों में निरत रहने वाली लगी रहने वाली।

543. **विन्ध्यस्थाविन्ध्यवासी** – विन्ध्याचल में निवास करने वाली दुर्गास्वरूपा। यहाँ विन्ध्यवासी का अर्थ दुर्गा लिया गया। विन्ध्याचल में स्थित बिडाल ऋषि द्वारा उपासित। विन्ध्यवासी का अर्थ विडाल ऋषि भी है। विन्ध्य में स्थित रहने के कारण विन्ध्यवासी कहलाई जाने वाली। स्थूल रूप से विन्ध्य–पर्वत पर स्थित एवं सूक्ष्म रूप से अनाहत चक्र अर्थात हृदय चक्र में निवास करने वाली। आगम ग्रन्थों में कुल पर्वत का तात्पर्य मूलाधारचक्र, विन्ध्यपर्वत का तात्पर्य अनाहतचक्र तथा सुमेरू पर्वत का तात्पर्य सहस्रारचक्र बताया गया है।

544. **विन्दुयुक्विन्दुभूषणा** – बिन्दी से युक्त हैं एवं बिन्दी जिनका आभूषण है। माथे पर बिन्दी लगाये हुए हैं और वह बिन्दी उनकी शोभा बढ़ा रही है। अनुस्वार से युक्त अर्थात बीजमन्त्र स्वरूपा एवं विद्वानों से सुशोभित। विद्वानों से युक्त एवं विद्वानों के द्वारा जिनकी शोभा बढ़ाई गई। विद्वानों के द्वारा उपासना करने से देवी विद्वानों से युक्त कही जाएंगी। यन्त्र रूप में जो बिन्दु से युक्त हैं और बिन्दु जिसका भूषण है। यन्त्र में बिन्दु होता है। बिन्दु का अर्थ शिव भी होता है। अतः इस नाम का अर्थ शिव से जुड़ी शिव के लिए आभूषण स्वरूपा। शिव से जुड़ी हैं और शिव हैं आभूषण जिनके यह अर्थ भी हो सकता है। जो बिन्दु शक्ति से युक्त हैं और बिन्दु शक्ति है आभूषण जिनका। नाद और बिन्दु तन्त्र शास्त्र के इन विषयों से सभी परिचित हैं। शिव शक्ति के मिलन से प्रथम अभिव्यक्त पदार्थ बिन्दु और नाद होता है। बिन्दु से समस्त आकार पैदा हुए और नाद से समस्त शब्द पैदा हुए।

545. **विद्यावती** – समस्त विद्याओं से युक्त या सुशोभित। अलग अलग मत के अनुसार चौदह या अठारह विद्याऐं मानी गई हैं। इन विद्याओं में पारंगत हैं।

546. **वेदधारी** – वेदों को धारण करने वाली। हाथ में वेदों को लिये हुए हैं। वेद का अर्थ ऋक्–यजु–अथर्व–सामवेद है। किसी विषय का विशेष रूप से धार्मिक या आध्यात्मिक विषय का सच्चा और वास्तविक ज्ञान वेद है। वेद का अन्य अर्थ वित्त, यज्ञांग, कर्मकाण्ड भी होता है। इनसे सम्बन्धित ज्ञान को धारण करने वाली।

547. **व्यापिकाबार्हिणीकला** – अतिशय व्यापक रहने वाली मयूर की पुच्छ की कला अर्थात सौन्दर्य तत्व से अलंकृत। बर्हिणी और बार्हिणी दोनों का अर्थ है मोर की पूँछ। स्वार्थ में अण् प्रत्यय लगने पर बर्हिणी बार्हिणी हो जाता है अर्थात रूप तो बदल जाता है पर अर्थ नहीं बदलता। कला का एक अर्थ सौन्दर्य है।

548. **वामाचारप्रिया** – वामाचार (पंचमकार आदि का प्रयोग जिसमें होता है) है प्रिय जिनको। जिन्हें सुन्दर आचरण प्रिय है।

549. **वह्नि** – अग्नि की तरह अर्थात् अग्नि की तरह पापों, दुष्टों को भस्म करने वाली एवं प्रकाश से युक्त अर्थात् दीप्तिमती। पहुँचने वाली अर्थात् देवताओं को सुख पहुँचाने वाली या भक्तों को उनके अभीष्ट तक पहुँचाने वाली। देवताओं को उन तक भक्ष्य पदार्थ पहुँचाने वाली। वह् धातु में नि प्रत्यय लगाने से वह्नि शब्द बनता है।

वह् धातु का अर्थ ढोना अर्थात् ले जाना अर्थात् पहुँचाना। भक्तों को मोक्ष तक पहुँचाने वाली। अग्निस्वरूपा। अग्नि के समान प्रकाश और तेज से युक्त। प्रज्जवलित अग्नि–शक्ति से युक्त। शैव दर्शन के अनुसार वह्नि वह शक्ति है जो अधः कुण्डलिनी के मूल और मध्य के अर्धभाग में पूर्ण रूप से प्रविष्ट हैं।

550. **वामाचारपरायणा** – वामाचार पूजा पद्धति का श्रेष्ठ गन्तव्य। वामाचार्य पूजा पद्धति को श्रेष्ठ मार्ग मानने वाली अर्थात इस मार्ग पर चलने पर जल्दी प्राप्त होने वाली। पर का अर्थ है श्रेष्ठ और अयन का अर्थ है गन्तव्य या मार्ग। वामाचार में संलग्न रहने वाली। साधना में न्यास प्रक्रिया के द्वारा साधक देवी या देवता से अभेद कर लेता है। अतः साधक का वामाचार में लगना देवी या देवता का वामाचार में लगना कहलाया जाएगा। वामा का अर्थ स्त्री भी होता है अतः कुछ लोग वामाचार का अर्थ स्त्री को केन्द्र में रखते हुए किये जाने वाले कार्य–कलाप से लगाते हैं। कोई भी क्रिया हो जिसे हम अच्छा समझते हो या खराब समझते हों वह शक्ति रूप होने के कारण देवी रूप ही हैं। न्यास प्रक्रिया के कारण उपासक एवं देवी का अभेद होने से उपासक के द्वारा की गई क्रिया देवी के द्वारा की गई क्रिया कहलाई जायेगी।

551. **वामाचाररतादेवी** – वामाचार में प्रेम करने वाली या वामाचार से प्रसन्न होने वाली देवी। वामाचार से ज्यादा जुड़ी हैं, वामाचार में अनुरक्त रहने वाली।

552. **वामदेवप्रियोत्तमा** – वामदेव अर्थात शिव को प्रिय हैं अतएव सर्वश्रेष्ठ (उत्तम) हैं।

553. **बुद्धेन्द्रिया** – जाग्रत या सजग इन्द्रियों वाली अर्थात् आँख कान आदि खुली या सक्रिय रखने वाली। बुद्ध की इन्द्रियों की शक्तिस्वरूपा। बुद्ध की इन्द्रियस्वरूपा अर्थात संयमस्वरूपा। बुद्ध की इन्द्रियों की विशेषता थी संयम। बुद्ध जितेन्द्रिय थे।

554. **विबुद्धा** – विशिष्ट ज्ञानी, जागृत (Enlightened) विलक्षण, ज्ञानी अर्थात उन जैसा कोई नहीं। विशेष प्रज्ञा से युक्त अर्थात सोचने, समझने और निश्चय करने की शक्ति से युक्त।

555. **बुद्धाचरणमालिनी** – समझकर या जानकर पूजा करने वालों का अपने पास रखने वाली अर्थात् आश्रय देने वाली। माला को अपने अंगों पर धारण किया जाता है अन्यथा भी मल् धारणे धातु से मालिनी का अर्थ धारण करने वाली होता है। यहाँ पर आचरण शब्द का अर्थ पूजा सम्बन्धी आचरण या कार्य है। स्वयं ज्ञान करके या समझ करके ही कार्य की समष्टि वाली अर्थात् सोच समझकर ही कार्यों को करने वाली। यहाँ आचरण शब्द कार्य के लिए आया एवं माला शब्द समष्टि अर्थात् समूह के लिए आया। समूह कहने से एक कार्य के स्थान पर बहुत से कार्य अर्थ आ गया। बुद्ध के आचरणों की मालाओं (समूह) से सुशोभित अर्थात ऐसे आचरण करने वाली। बुद्ध के सभी आचरणों से विभूषित।

556. **बन्धमोचनकर्त्री** – जन्म मरण के बन्धन का मोचन करने वाली अर्थात छुड़ाने वाली। मोक्ष देने वाली। 8 पाशों का जो बन्धन है उससे छुड़ाने वाली। संसार से आसक्ति ही बन्धन है।

557. **वारुणा** – जो शत्रुओं को रोकती है। वारयति इति वारुणा। जल से सम्बन्धित अर्थात लक्ष्मी स्वरूपा या लक्ष्मी से अभेद है जिनका। वरुण का अर्थ है जल। वरुण में अण् प्रत्यय लगाने से वारूण शब्द बनता है जिसका अर्थ है जल से सम्बन्धित। लक्ष्मी जी की उत्पत्ति समुद्र मन्थन से हुई थी अतः वे जल से सम्बन्धित हैं। पश्चिमी दिशा को भी वारूण कहा जाता है क्योंकि यह वरुण देव से सम्बन्धित दिशा है। वारूणा का अर्थ है पश्चिमी दिशा स्वरूपा। जिसने सारे विश्व को आच्छादित कर रखा है। वारयति इति वरुणः, जो रोकता है या आच्छादित करता है वह वरुण है। जल ने पूरी सृष्टि को आच्छादित कर रखा था अतः वह वरुण कहलाया जाता है। वारूणास्त्र की शक्ति स्वरूपा। वारूणा+आ, आ का अर्थ है शक्ति। वरुण में रहने वाली शक्तिस्वरूपा। वरुण से

सम्बन्धित। वारयति पापेभ्यः इति वारुणा अर्थात जो अपने भक्तों को पाप करने से रोकती है। वारयति पापेभ्यः इति वारूणा। भक्तों को पाप से बचाती है। पाप के फल या पाप करने से बचाने वाली।

558. **वरुणालया** – जिनमें वरुण भी निवास करतें हैं। वरुण की निवासस्थली। भगवान वरुण का आश्रय या सहारा। वरुण का अर्थ समुद्र भी ले सकते है। समुद्र में रहने वाली लक्ष्मी जी से अभेद है जिनका। वारयति इति वरुणः, इस प्रकार विग्रह होता है अर्थात् जो रोकता है वह वरुण है। जिसने बुराइयों को रोक दिया है वह वरुण हुआ। बुराइयों से रहित या अच्छे व्यक्ति जिनका निवास स्थान है अर्थात् ऐसे व्यक्तियों में अधिक प्रकट रूप से रहने वाली।

559. **शिवा** – शिव की शक्ति के रूप में। पार्वती रूप में। जो भक्तों के पापों को नष्ट करती हैं तथा मोक्ष देती है। शि का अर्थ है स्यति अर्थात नष्ट करना, व अमृत बीज है जिसका अर्थ है अमृत अर्थात मोक्ष। शिव की इच्छा स्वरूपिणी। वश् कान्तौ से वशि बनता है जो वर्ण के आगे पीछे करने से शिव हो गया। कान्ति का एक अर्थ इच्छा है। मोक्ष देने वाली। शिव/शिवा+आ, आ का अर्थ है देना, शिव/शिवा का अर्थ है मोक्ष।

जिसमें सारा विश्व सोया है अर्थात् लेटा है अर्थात् विराजमान है। शीङ् शयने धातु होती है। शो तनुकरणे से शिव या शिवा शब्द बनाने पर अर्थ होगा जो अपने उपासकों के पापों को दुर्बल कर देती है अर्थात् नष्ट कर देती है। शिव या शिवा का अर्थ मोक्ष भी होता है। शिव/शिवा + आ = शिवा। आ का एक अर्थ देना होता है इस प्रकार शिवा का अर्थ हुआ मोक्ष देने वाली। शिवा एक पक्षी का भी नाम है। जो एक विशेष प्रकार की आवाज करता है। इस प्रकार शिवा नाम का अर्थ मुक्ति के लिए आवाज देने वाली अर्थात् पुकारने वाली। तात्पर्य है यह उपदेश देने वाली की इस रास्ते पर चलने पर मुक्ति मिलेगी।– शिव + आ। शिव का अर्थ है कल्याण एवं आ का अर्थ है दाता, प्रिय। जो कल्याण को देने वाली है। जो भगवान शिव की प्रिया है। जो कल्याण स्वरूपा है। कल्याण का अर्थ होता है आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रगति अर्थात् अपने आत्म स्वरूप की ओर बढ़ते जाना। कल्याण अर्थात् आनन्द की प्राप्ति। आजकल कल्याण शब्द का अर्थ व्यापक हो गया है और इस शब्द का अर्थ है मनुष्य के जीवन की सभी मूलभूत आवश्यकताओं जैसे रोटी, कपड़ा, मकान, रोजगार, स्वास्थ्य, बिजली, पानी, सड़क, मनोरंजना, शिक्षा आदि की व्यवस्था होना तभी कल्याणकारी राज्य की संकल्पना की गई है। मनुष्य को वह सब उपलब्ध होना जिससे उसका जीवन सँवर जाये, सुख की प्राप्ति हो कल्याण कहलाता है। मनुष्य के पाँच शरीर होते है। पाँचों शरीरों की आवश्यकता की पूर्ति होना कल्याण है।

560. **शिवप्रियाशुद्धा** – शिव को प्रिय लगने वाली शुद्धस्वरूपिणी। शुद्ध का अर्थ है मलों या विकारों से रहित।

561. **शुद्धांगीशुक्लवर्णिका** – शुद्ध अंगों से सुशोभित, शुभ्र वर्ण वाली। जब अंग शुद्ध हो तो शुभ्रता स्वरूप/सात्विक स्वरूप आ जाता है।

562. **शुक्लपुष्पप्रियाशुक्ला** – सफेद वर्ण के पुष्प प्रिय हैं और (या अतएव) जो सम्पूर्ण रूप से शुक्ल स्वरूपा हैं। आशुक्ला में आ का अर्थ है समन्तात् अर्थात चारों ओर से या सम्पूर्ण रूप से।

563. **शिवधर्मपरायणा** – शिव की सेवा में लगी रहती हैं। शिव के द्वारा जो सात्विक धर्मोपदेश किये गये हैं, उसमें निरत रहतीं हैं अर्थात लगी रहती हैं अर्थात हमेशा पालन करती हैं।

564. **शुक्लस्थाशुक्लनी** – शुक्ल (सतोगुण) में रहती एवं स्वयं भी सतोगुणी हैं। सतोगुण में स्थित तथा उपासकों को सतोगुण की ओर ले जाने वाली। शुक्ल+नी, नी अर्थात नयति अर्थात ले जाना। शुक्लनी का अर्थ हुआ सतोगुण की ओर ले जाने वाली। सात्विक वृत्ति में स्थित होकर शुभ्र स्वरूपा हैं।

565. **शुक्लरूपाशुक्लपशुप्रिया** – जो शुक्ल स्वरूप वाली है और सम्पूर्ण रूप से श्वेत पशु (नन्दी) है प्रिय

जिन्हें। आशुक्ल अर्थात आ (सम्पूर्ण+शुक्ल)। शुक्ल स्वरूप वाली है और सात्विक जीवों को प्रिय लगने वालीं या सात्विक जीवों से प्रेम करने वाली हैं।

566. **शुक्रस्थाशुक्रिणीशुक्रा** – शुक्र धातु (या शुक्र ग्रह) में स्थित, शुक्र वाली और शुक्र स्वरूपा। बल में स्थित, बलवती और बलस्वरूपा। शुक्र का अर्थ शुक्र धातु, बल या शुक्र ग्रह है। शुक्र में स्थित रहने वाली शुक्र स्वरूपिणी और शुक्र की शक्ति को धारण करने वाली। शुक्र का अर्थ शुक्राचार्य, वीर्य दोनों हो सकता है। शुक्र धातु में विराजमान, शक्ति युक्त एवं शुक्र का संचालन करने वाली अर्थात उसे बाहर निकालने वाली या उससे जनन कराने वाली। शुक्र धातु में विराजमान, तेज से युक्त एवं शक्ति देने वाली। शुक्रिणी का अर्थ है शुक्र से युक्त अर्थात बल या तेज से युक्त। शुक्रा अर्थात शुक्र+आ, आ का अर्थ है देना। शुक्र शब्द शुक्र (वीर्य) धातु, शक्ति, तेज का प्रतीक है। (शुक्र बल, तेज, शुद्ध, उज्जवलता, वीर्य, का प्रतीक है।)

567. **शुक्ररूपा च शुक्रिका** – शुक्र रूप वाली और शुक्र शक्ति से सम्पन्न हैं। चमकदार रूप वाली एवं शक्ति सम्पन्न। सुन्दर एवं जननशक्ति से युक्त। शुक्र ग्रह सबसे चमकीला ग्रह है एवं सुन्दरता का प्रतीक है। शुक्र का अर्थ शक्ति, जननशक्ति है। चमकदार रूप वाली एवं शक्ति सम्पन्न। सुन्दर एवं जननशक्ति से युक्त। शुक्र ग्रह सबसे चमकीला ग्रह है एवं सुन्दरता का प्रतीक है। शुक्र का अर्थ शक्ति, जननशक्ति है। अति तेजस्विनी एवं शक्ति सम्पन्ना। (शुक्रिका– दीप्ति युक्त (चमकीली), शुद्ध (निर्दोष), तेजस्वी ज्वाला युक्त अर्थात तेजस्विनी, शुद्ध चित्त वाली, श्वेत वर्ण वाली। शुच् दीप्तौ धातु से या शुचि शुद्धौ धातु में रक् प्रत्यय लगाने से शुक्र शब्द बनता है। शुक्र ग्रह का रंग सफेद है।)

568. **षण्मुखी च षडंगा** – छः मुखों से सुशोभित और छः अंगों की संज्ञा वाली। दो हाथ, दो पैर, एक मध्य भाग और एक सिर यह छह अंग हैं। वेद को षडंगा बोलते हैं क्योंकि उसके व्याकरण, निरूक्त आदि छह अंग हैं। तर्क, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा, समाधि को भी षडंग कहते हैं।

569. **षट्चक्रविनिवासिनी** – छः चक्रों (मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्धि, आज्ञा चक्र) में निवास करने वाली।

570. **षड्ग्रन्थियुक्ता षोढा** – छह चक्रों से युक्त सुषुम्ना नाड़ी स्वरूपा और छ प्रकार की शक्तियों के स्वरूप वाली। महागणपति सहस्रनाम में षडग्रन्थिभेदिनी शब्द आया है जहाँ श्री भास्कर राय जी ने अपनी टीका में बताया है कि मूलाधारचक्र, मणिपुरचक्र एवं आज्ञाचक्र इन तीन चक्रों में दो दो ग्रन्थियाँ होती है इस प्रकार छह ग्रन्थियाँ हो गई। चक्र को ग्रन्थि के अर्थ में ले सकते हैं क्योंकि ग्रन्थि की तरह चक्र भी ऊर्जा को रोकते हैं। वैसे तीन प्रमुख ग्रन्थियाँ ब्रह्मा ग्रन्थि, विष्णु ग्रन्थि और रूद्र ग्रन्थि होती हैं। छह चक्रों से सम्बन्धित तीन ग्रन्थियों से युक्त सुषुम्ना नाड़ी यह अर्थ कर सकते हैं। षोढ़ा अर्थात छह प्रकार की। मूलाधार में डाकिनी के रूप में, इसी प्रकार अन्य चक्रों में अलग अलग रूपों में देवी होती हैं। यहाँ मूलाधार चक्र से आज्ञाचक्र तक के छह चक्र लिये गये हैं। सहस्रारचक्र को षट् चक्र में नहीं गिना जाता है। षोढ़ा का अर्थ छह प्रकार से व्याख्येय भी होता है। प्रसंग, उपोदघात, हेतु, अवसर, निर्वाह और एककार्यता ये छह चीजें किसी चीज की पूर्ण व्याख्या के लिए आवश्यक होती हैं। षडग्रन्थि आयुर्वेद औषधि पीपरामूल का नाम है क्योंकि उसमे छह ग्रन्थियाँ होती हैं। षाडग्रन्थियुक्ता का अर्थ हुआ पीपरामूल। देवी के पक्ष में अर्थ हुआ जो पीपरामूल की तरह रोगनिवारिका अर्थात कष्ट निवारिका हैं।

571. **षण्माता च षडात्मिका** – कार्तिकेय को पालने वाली छह माताओं के स्वरूप में और अग्नि के स्वरूप में। अग्नि के छह स्वरूप माने जाते हैं। स्वामी कार्तिकेय की माता और (या अतएव) छः स्वरूप वाली/छह शक्तियों से सम्पन्न। छह कृत्तिकाओं जिन्होने कार्तिकेय जी का पालन किया उनके नाम हैं – शिवा, सम्भूति, प्रीति, सन्नति, अनसूया और क्षमा। एक मत के अनुसार कार्तिकेय जी की छह माताओं के नाम हैं – प्रभा, आभा, तेज,

भाव्या, शोभा और सुकृति। पार्वती जी ने अपनी तांत्रिक शक्ति का प्रयोग कर छह बच्चों को एक में मिला दिया पर सिर छह रहे जो कार्तिकेय जी के जन्म की कथा है।

572. **षडगंयुवतीदेवी** – षडंगों से युक्त युवावस्था सम्पन्न देवी। सिर, मध्यभाग, दो हाथ और दो पैर ये छह अंग हैं।

573. **षडगंप्रकृतिर्वशी** – छः अंगों की प्रकृति वाली तथा जितेन्द्रिया। पुराण में आया है कि सृष्टि के विकास के लिए प्रकृति ने अपने छह भाग किये और छठवाँ भाग षष्ठी है। पंचमहाभूत और ऊर्जा (शक्ति) प्रकृति के छह अंग हैं। पंचमहाभूत और मन को भी प्रकृति के छह अंग कहा जा सकता है। वेद को भी षडंगा बोलते हैं क्योंकि उसके शिक्षा, कल्प, व्याकरण, छन्द, निरूक्त और ज्योतिष छह अंग होते हैं। षडंग प्रकृति का अर्थ होगा वेद की कारण अर्थात वेद को जन्म देने वाली। वशी अर्थात माँ की जितेन्द्रिय शक्ति।

574. **षडानना षड्रसा** – छः मुख वाली और छः रसों से युक्त। खाने के छह रस हैं मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त और कसा ये छह रस हैं।

575. **षष्ठी षष्ठेश्वरीप्रिया** – प्रकृति के छठें अंश से उत्पन्न एवं षष्ठी देवी की प्रिया अर्थात षष्ठी देवी जिन्हें पसन्द करती हैं। षष्ठेश्वर अर्थात छठे दिन के अधिदेवता अर्थात कार्तिकेय जी। षष्ठेश्वरी अर्थात कार्तिकेय जी की पत्नी अर्थात षष्ठी देवी। षष्ठेश्वरी का अर्थ छठे चक्र की ईश्वरी अर्थात हाकिनी देवी भी कर सकते हैं। तब इसका अर्थ होगा षष्ठी देवी एवं हाकिनी देवी की प्रिया। हाकिनी देवी ललिता त्रिपुर सुन्दरी देवी माँ की उपासना करती हैं। षष्ठेश्वरी का अर्थ नव दुर्गा में छठी ईश्वरी अर्थात कात्यायिनी भी कर सकते हैं। अष्ट मातृकाओं में छठी मातृका माहेन्द्री है यह अर्थ भी कर सकते हैं।

576. **षडंगस्वादा** – छह प्रकार के न्यास से अर्थात षडंग न्यास से रस ग्रहण करने वाली। षडंग न्यास से भक्ति रस ग्रहण करने वाली।

577. **षोडशी** – सोलह वर्षीया सुन्दर नवयुवती की तरह। जिनका मन्त्र 16 अक्षर का है। सोलह स्वरों में रहने वाली शक्ति स्वरूपा। शारदा तिलक तन्त्र के अनुसार सोलह स्वरों की शक्ति षोडशी है। 16 आधारो में रहने वाली शक्ति। षड चक्र निरूपण ग्रन्थ के अनुसार ये 16 आधार है मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्धि, आज्ञा, बिन्दु, कलापद, निबोधिका, अर्धेन्दु, नाद, नादान्त, उन्मनी, विष्णुवक्र, ध्रुवमण्डल और शिव। – षोडश पदार्थों में रहने वाली शक्ति स्वरूपा। प्रश्नोपनिषद में भरद्वाज ऋषि ने बताया है कि आरम्भ में पुरुष (परमात्मा या ब्रह्म) ने 16 पदार्थों को उत्पन्न किया जो हैं – प्राण, श्रद्धा, आकाश, वायु, ज्योति, जल, पृथ्वी, इन्द्रिय समूह, मन, अन्न, वीर्य, तप, मंत्र, कर्म, लोक और नाम। इन षोडश पदार्थों की शास्त्रीय संज्ञा कला है। इन षोडश कलाओं से ब्रह्माण्ड और पिण्डाण्ड (शरीर) बने। पुरुष इन 16 पदार्थों अर्थात कलाओं में प्रविष्ट है अतः उसकी संज्ञा षोडश कल्प पुरुष है। श्रीमद्भागवत में पंच ज्ञानेन्दियों, पंच कर्मेन्दियों, पंच महाभूतो एवं मन है। इन्हे षोडश पदार्थ या कला कहते है। छान्दोग्योपनिषद् में मन की 16 शक्तियों को षोडश कलाओं के रूप में प्रदर्शित किया है। अन्न भक्षण से मन को जो शक्ति प्राप्त होती है वह षोडश भागों में विभक्त हो जाती है। मन में मनोबल के रूप में पंच महाभूतों से बने शरीर में शरीर बल के रूप में और 10 इन्दियों में इन्द्रिय बल के रूप में विद्यमान रहती है। इन कलाओं अर्थात शक्तियों के कारण ही मनुष्य संकल्प विकल्प कर पाता है। शास्त्र में कला की एक विशेष परिभाषा है। दिव्य पद्दार्थो एवं उन दिव्य पदार्थों में रहने वाली शक्तियों को कला कहा जाता है। इस प्रकार कला का अर्थ दिव्य पदार्थ जैसे सूर्य, चन्द्र, वायु, आदि भी है और इन दिव्य पदार्थो में रहने वाली शक्तियाँ भी है। वेद में षोडश यज्ञ है, सम्भवतः 16 दिनों तक चलने वाला यज्ञ होगा। ऐसे स्तोत्र जिनमें 16 मन्त्र है। उन्हें भी षोडशी कह सकते है या ऐसे स्तोत्र में रहने वाली शक्ति षोडशी है।

578. **षोढान्यासस्वरूपिणी** – षोढ़ा न्यास की क्रिया स्वरूपा। षोढान्यास छह प्रकार के न्यास हैं जो गणेश न्यास, ग्रहन्यास, नक्षत्र न्यास, योगिनी न्यास, राशि न्यास और पीठ न्यास हैं। गणेश, विभिन्न ग्रहों, पीठों आदि का नाम लेकर शरीर के विभिन्न अंगों में स्पर्श किया जाता है। शाक्त दर्शन में छह प्रमुख न्यास होते हैं। ये हैं – मातृका न्यास, ऋष्यादि न्यास, षडंगन्यास, मूलमन्त्र न्यास, व्यापक न्यास और षोढ़ा न्यास। षोढ़ा न्यास को बताया जा चुका है। इस नाम का अर्थ छह प्रकार के न्यास क्रिया स्वरूपा अर्थात बताये गये मातृका ऋष्यादि, षडंग न्यास आदि छह प्रकार के न्यास क्रिया स्वरूपा भी कह सकते हैं। क्रिया अर्थात शक्ति अर्थात देवी।

579. षट्चक्रभेदनकरी – छः चक्रों का भेदन करने वाली। मूलाधारचक्र, स्वाधिष्ठानचक्र, मणिपुरचक्र, अनाहतचक्र, विशुद्धि चक्र और आज्ञाचक्र ये छह चक्र हैं।

580. **षट्चक्रस्थस्वरूपणी** – छः चक्रों में स्थित जो देवियाँ हैं उनके स्वरूप वाली।

581. **षोडशस्वररूपा** – सोलह स्वरों के रूप वाली। अ, आ, इ, ई, उ, ऊ,.......अं, अः। ये सोलह स्वर हैं।

582. **षण्मुखी** – छः मुख वाली। देवी के किसी रूप में छह मुख होते हैं। देवी के हर रूपों में अभेद है। वेद के छः अंगों का उपदेश देने वाली। मुख से बोला जाता है अतः उपदेश देने वाली अर्थ किया गया। योग के षट् चक्रों के बारे में बताने वाली। छ तान्त्रिक शक्तियों (मरण मोहन उच्चाट्न आदि) को धारण की हुई। मुख में भोजन को लिया जाता है एवं भोजन को चबाया जाता है अतः मुख शब्द से ग्रहण करने वाली, चबाने वाली अर्थात् नष्ट करने वाली अर्थ भी ले सकते है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर इन छः दोषों को चबाने वाली अर्थात् नष्ट करने वाली।

583. **षट्पदान्विता** – भौरों से युक्त। भौंरे के छह पैर होते हैं। भ्रामरी देवी के हाथ से बहुत से भौंरे निकले जिससे वे भौंरे से युक्त हो गयी। भ्रामरी देवी से अभेद है जिनका। छः पदों से सुशोभित।

584. **सनकादिस्वरूपा** – सनकादि (सनक, सनन्दन, सनत्कुमार, सनातन आदि) के स्वरूप वाली। सनकादि ऋषि जिनके अपने ही रूप हैं या वास्तविक रूप हैं।

585. **शिवधर्मपरायणा** – शिव के धर्मों में लगी रहने वाली। शिव धर्म है शिव का दर्शन, धर्म, आचार आदि। शिव तत्व में निरत।

586. **सिद्धा** – सिद्धस्वरूपिणी। हमेशा उपलब्ध। अष्ट सिद्धियों से युक्त। अतिप्राकृतिक शक्तियों से युक्त। जिनका अस्तित्व स्वयं से है अर्थात जिन्हें किन्ही दूसरे ने उत्पन्न नहीं किया। सभी के द्वारा आराधनीया। सिद्धयते आराध्यते सर्वै इति सिद्धा। मुक्त को भी सिद्ध कहते हैं। जो सभी बन्धनों से मुक्त हैं। नित्यसिद्धा सिद्धा। सर्वं सिद्धमस्याः न किमपि साध्यमिति च। सिचो बन्धनानि सितान् बद्धान् वा धत्ते। सिद्धा मुक्ता अस्या सन्ति। सर्वाः सिद्धी इयम् धत्ते। नित्यसिद्धा च रमा अस्या भार्यात्वेन अस्ति। जो हमेशा प्राप्त है या विद्यमान है। जो पहले से बना है अर्थात् जिसको किसी और न नही बनाया है। जिसे सबकुछ प्राप्त है और उसे कुछ भी प्राप्त करना नही है। बन्धन या बद्ध पुरुष अर्थात् जो संसार में बँधे हुए है उनको धारण करने वाली। सिद्ध अर्थात् मुक्त पुरुष जिनके है अर्थात् मुक्त पुरुषों वाली अर्थात् इन लोगों को अपना आश्रय दिये हुये है। सभी प्रकार की सिद्धियों को धारण करने वाली। जो हमेशा उपलब्ध है। शुद्ध हृदय वाले भक्तों के लिए सिद्ध अर्थात हमेशा उपलब्ध। तात्पर्य है कि ऐसे सच्चे भक्तों का कार्य करने के लिए हमेशा तैयार रहती हैं और प्रतीक्षा करती हैं कि मेरा भक्त मुझसे किसी काम के लिए कहे। (यह नाम कुछ और जगह भी आया है। यहाँ पर इस नाम के कई अर्थ दे दिये गये हैं। इनमें से कोई सा भी अर्थ उठाकर वहाँ ले जाया जा सकता है।)

587. **सिद्धेश्वरी** – सिद्धों की आराध्या अर्थात सिद्ध जिनकी उपासना करते हैं। सिद्धों की स्वामिनी। सिद्धों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली, उनकी रक्षा करने वाली।

588. शुद्धा – शुद्ध अर्थात सात्विकता से सम्पन्न। रजो गुण और तमो गुण से रहित अर्थात केवल सतोगुणी। जिसमें मिलावट न हो वह शुद्ध है। आणव मल, कार्मिक मल और मायिक मल तीनों मलों से रहित। सभी विकारों से रहित। भक्तों की दरिद्रता को दूर करने वाली। शुद्धयति साधकदारिद्रयम् अनया, सा शुद्धा इति कथ्यते। भक्तों के मन और कर्म को पवित्र करने वाली अर्थात दोषरहित करने वाली। भक्तानाम् शुद्धिसम्पादका शुद्धा। मिश्रण (मिलावट) से रहित अर्थात त्रिगुणातीत। स्निग्ध। माया से रहित। अन्नमय, प्राणमय आदि पंचकोशों से रहित अर्थात प्रकाश स्वरूपा। शुद्ध (दोष रहित) आचरण में तत्पर। जो अशुद्धि से रहित है। अशुद्धि का तात्पर्य है इन्द्रियों की राजसिक चंचलता एवं तामसिक जड़ता, रजोगुण और तमोगुण का आदित्य, चित के मल अर्थात् काम, क्रोध आदि दोष, सूक्ष्म शरीर के विकार या इनमें किये गये कर्म का संस्कार (Print or Photocopy)। अविद्या या मायारूपी अशुद्धता से रहित।

589. **सुरमाता** – देवताओं की माता। माति इति माता। जो रक्षा करे वह है माता। देवताओं पर जब जब संकट आता है तब तब देवी उनकी रक्षा करती हैं। गर्भे शिशुम् माति इति माता अर्थात जो गर्भ में शिशु की रक्षा करती है वह माता है। माति के कई अर्थ हैं उनमें से एक अर्थ रक्षा करना भी है।

590. **स्वरोत्तमा** – उत्तम स्वरों वाली।

591. **सिद्धविद्या** – उस मन्त्र के स्वरूप वाली जिसमें साध्यता, सुसिद्धता, अरिपना (शत्रुभाव) आदि देखने की आवश्यकता नहीं पड़ती अर्थात जब कोई भी व्यक्ति मन्त्रस्वरूपा इस देवी का जप करेगा तो उसे सफलता अवश्य मिलेगी। अन्य मन्त्रों में यह देखा जाता है कि वह साधक को जल्दी फल देगा या देर में फल देगा या उल्टा नुकसान करेगा। देवी के मन्त्र में यह देखने की आवश्यकता नहीं है। स्त्री देवता के मन्त्र को विद्या कहते हैं। सिद्धों के द्वारा जिस मन्त्र का जप किया जाता है उस मन्त्र के स्वरूप वाली यह अर्थ भी कर सकते हैं। ऋद्धि सिद्धि की शक्ति से युक्त मन्त्र स्वरूपा। सिद्ध मन्त्र बहुत थोड़ा जपते ही फल दिखाना शुरु कर देते हैं उसके लिए उन्हें लम्बी साधना नही करनी पड़ती। सिद्ध का एक अर्थ सदा उपलब्ध भी है अर्थात जो साधक या भक्त के कार्य करने के लिए हमेशा तैयार रहता है।

592. **सिद्धमाता** – सिद्धों की रक्षा करने वाली एवं उनका पालन करने वाली। मॉ की तरह भरण पोषण करने वाली।

593. **सिद्धा** – पूर्णता में पहुँची हुई अर्थात मोक्षावस्था में स्थित। जिसका किसी और से जन्म नहीं हुआ वह सिद्ध होता है। जिसे किसी दूसरे ने निर्मित नही किया है। जिसका प्रभाव होना निश्चित होता है। अर्थात इनके मन्त्र को जपा जाए तो उसका प्रभाव होता ही होता है।

594. **सिद्धस्वरूपिणी** – नित्यस्वरूपा। सिद्ध का एक अर्थ नित्य भी होता है। सिद्धों से अभेद है जिनका अर्थात गोरखनाथ, मच्छेन्द्रनाथ आदि सभी सिद्धों के स्वरूप वाली। पतंजलि ने सिद्ध का अर्थ नित्य और मांगलिक किया है। कातन्त्र व्याकरण के पहले सूत्र में ही सिद्ध शब्द आया है जिसका अर्थ है नित्य।

595. **हरा** – हर अर्थात शिव की शक्ति स्वरूपा। सभी प्रकार के पापों का हरण करने वाली।

596. **हरिप्रियाहारा** – जो भगवान विष्णु की प्रिया है और मन को हरने वाली हैं अर्थात मनोहर हैं। हरिप्रिया च हारा च, इस प्रकार समास बनेगा। हार की तरह हमेशा साथ रहने वाली हरि की प्रिया। हार हमेशा हृदय से जुड़ा रहता है। इस प्रकार हारा का अर्थ हुआ हृदय से जुड़े रहने वाली अर्थात हमेशा साथ रहने वाली। विष्णु को प्रिय लगने वाले समस्त हारों को धारण करने वाली। आहार अर्थात आ+हार, आ अर्थात समन्तात् अर्थात समस्त।

597. **हरिणी** – मन को हरने वाली। हरित वर्ण वाली। पाप हरने वाली। हिरण की तरह अर्थात् उसके समान शीघ्र गति वाली, चंचल, सुन्दर। हरि + नी अर्थात् विष्णु को लाने वाली अर्थात् उन्हें पति के रूप में लाने वाली अर्थात् उनकी पत्नी लक्ष्मी जी से अभेद है जिनका। नी धातु का अर्थ लाना, प्रेरित करना आदि होता है। भगवान विष्णु को प्रेरित करने वाली अर्थात् उन्हें उनके कर्त्तव्य कर्म में लगाने वाली। भक्तों को भगवान विष्णु की भक्ति में लगाने वाली। नित्य युवती। भक्ति के वश में बँधने वाली।

598. **हारयुक्** – हार से जुड़ी हुई अर्थात हार को धारण करने वाली। सुन्दर हार से सुशोभित।

599. **हरिरूपा** – विष्णुस्वरूपिणी।

600. **हरिधारा** – भगवान विष्णु को धारण करने वाली। पाप का हरण करने वाली धारा स्वरूपा जैसे गंगा की धारा, गोदावरी की धारा। भगवान विष्णु के शरीर से कान्ति की धारा प्रवाहित होती है। भगवान विष्णु के शरीर से निकलने वाली कान्ति की धारा स्वरूपा या उस धारा को धारण करने वाली।

601. **हरिणाक्षीहरिप्रिया** – हिरण जैसे सुन्दर नेत्रों वाली अतः विष्णु की अतिशय प्रियतमा।

602. **हेतुप्रिया** – जगत के कारण शिव की प्रिया अर्थात जो शिव को अच्छी लगती हैं। प्रीणाति इति प्रियः से प्रिय का अर्थ प्रसन्न करने वाला और प्रीयते इति प्रियः से प्रिय का अर्थ प्रसन्न होने वाला होता है। स्त्रीलिंग में प्रिय का प्रिया हो जाता है। जगत के कारण शिव को प्रसन्न करने वाली या शिव से प्रसन्न होने वाली। भगवान विष्णु को प्रसन्न करने वाली या भगवान विष्णु से प्रसन्न होने वाली। कारण की प्रिया। संसार के जितने भी कारण हैं जिससे संसार संचालित होता है उसकी प्रिया। हेतु अर्थात कारण या बीज। सर्वविधसृष्टिकारिणी। संसार बनने के जितने भी कारण हैं जिनसे संसार बनता है जैसे उपादान कारण, निमित्त कारण आदि वे सभी तत्व या कारण जिन्हें प्रिय है। ब्रह्मा संसार की उत्पत्ति करते हैं। ब्रह्मा को प्रिय लगने वाली।

603. **हेतुरता** – जगत कारण शिव में रमण करने वाली अर्थात उनके साथ रहना जिन्हे अच्छा लगता है। जगत कारण विष्णु में रमण करने वाली अर्थात उनके साथ रहना जिन्हे अच्छा लगता है। हेतु का अर्थ होता है कारण। रत का अर्थ लगा होना, प्रसन्न। शिव से प्रसन्न। रमण करने का अर्थ विराजमान होना भी होता है। जो जगत के कारण अर्थात पंचमहाभूतों में विराजमान हैं। पंच महाभूत हैं– क्षिति, जल, पावक, गगन और समीर। प्रत्येक वस्तु का कोई न कोई कारण तो अवश्य होता है, उस कारण में विद्यमान। संसार के कारण (बीज) में लगी रहने वाली अर्थात विद्यमान।

604. **हिताहितस्वरूपिणी** – सज्जनों के लिए अच्छे और दुष्टों के लिए बुरे स्वरूप वाली। सज्जनों का हित एवं दुर्जनों का अहित करना, इस स्वरूप वाली। लोगों का पुण्य कर्म के अनुसार हित करने वाली तथा उनके पाप कर्मों के अनुसार अहित करने वाली भी। हित का अर्थ है सहायता करना, आवश्यकता की पूर्ति करना। हित+आहित+स्वरूपिणी, इस प्रकार से भी अर्थ निकल सकता है। तब अर्थ होगा – विश्व के हित या अपने उपासकों के कल्याण में अपने आपको रखा है अर्थात लगा रखा है ऐसे स्वरूप वाली। आहित का अर्थ है रखा है।

605. **क्षमा** – पृथ्वीस्वरूपा। पृथ्वी का एक नाम क्षमा भी है। किसी अपराधी या दोषी को बिना किसी प्रतिकार के छोड़ देने के भाव स्वरूपा। माफी स्वरूपा। सहनशीलता स्वरूपा। क्षमाशीला, क्षमास्वभाव वाली (क्षमा अस्य अस्ति इति क्षमः, स्त्रीलिंग में क्षमा जिसका अर्थ हुआ क्षमावाली)। आकारान्त शब्दों में इस प्रकार की व्युत्पत्ति होने के कारण से युक्त अर्थ निकल आता है जैसे घण्टा शब्द का अर्थ घण्टा स्वरूपा एवं घण्टा से युक्त (घण्टा वाली अर्थात घण्टा धारण करने वाली)। सर्वसमर्थ। क्षम का अर्थ समर्थ भी होता है। सभी स्थानों में समर्थ। प्रत्येक कार्य करने में समर्थ। कर्तुम अकर्तुम अन्यथा कर्तुम। भक्तों के अपराधों को सहन करने वाली अर्थात उसका फल नहीं देती हैं। भक्तानां अपराधनम् क्षमते। क्षमते इति क्षमा अर्थात जो समर्थ है अर्थात सब कुछ करने में समर्थ है।

योग्यता या सामर्थ्य से युक्त। आपने सक्षम शब्द सुना होगा। क्षेम (कल्यण या श्रेय) का निर्माण करने वाली अर्थात देने वाली। मा धातु का अर्थ है निर्माण करना। निर्माण किसी उद्देश्य से ही किया जाता है। यहाँ भक्तों को देने के लिए, ऐसा कल्पित कर लिया गया। भक्तों के लिए उत्तम आवास का निर्माण करने वाली अर्थात देने वाली। एकाक्षरीकोश में क्ष के अर्थ हैं– क्षेम, क्षय (निवास), राक्षस। मी हिंसायाम् धातु में ड प्रत्यय लगाने से म शब्द बनेगा जिसका अर्थ है हिंसा करने वाला। इस प्रकार क्षमा का अर्थ हुआ जो राक्षसों की हिंसा करती है अर्थात उन्हें समाप्त कर देती है।

606. **क्षमावती** – क्षमा गुण से युक्त। प्रतिकार करने का सामर्थ्य होने के बावजूद अपराधी के अपराध पर प्रतिकार न करना और मन में यह भाव रखना कि उस व्यक्ति को अपराध की सजा न मिले, यह भाव या गुण क्षमा कहलाता है।

607. **क्षिता** – फैली हुई या बिखरी हुई है। वैदिक कोश में क्षि धातु का अर्थ निवास करना, अधिकार करना, नष्ट करना दिया गया है। क्षि धातु में क्त प्रत्यय लगाने से स्त्रीलिंग में क्षिता बनेगा। क्त प्रत्यय प्रायः कर्ताकारक में नहीं होता किन्तु अन्य कारकों में होता है। कभी कभी कर्ताकारक में भी अर्थ होता है जैसे तेन गृहम गता। परीक्षित का अर्थ चैतन्य का चारों ओर फैलना दिया गया है। सभी ओर व्याप्त चैतन्य शक्ति, यह क्षिता का अर्थ कर सकते हैं। अधिकरण कारक में क्षिता का अर्थ निवास किया जा सकता है अर्थात जिसमें सारे प्राणी रहते हैं। क्षिता का शब्दकोश में अर्थ नष्ट मिलता है। यदि हमें यही अर्थ लेना है तो अधर्मियों के यहाँ अप्रकट ऐसा अर्थ कर सकते हैं। अधर्मियों के यहाँ नष्ट हुई सम्पत्ति स्वरूपा, ऐसा अर्थ कर सकते हैं। शत्रुओं या दुष्टों को क्षति/प्रहार देने वाली अर्थात करने वाली। क्षित का एक अर्थ क्षति, प्रहार, वध, आधार दिया गया है। राक्षसों को वध देने वाली अर्थात उनका वध करने वाली। क्षित का सामान्य अर्थ जिसका वध किया गया हो, होता है, किन्तु कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र से वध करने वाली अर्थ कर सकते हैं क्योंकि इस सूत्र के अनुसार कृत्य प्रत्यय कभी कभी उन कारकों एवं कालों से भी भिन्न अर्थ देते हैं, जिनमें वे सामान्यतः प्रयुक्त होते हैं। क्षी निवासे धातु होती है जिससे क्षित बन सकता है तथा क्षित का अर्थ आधार या निवास हो सकता है। भक्तों को उपयुक्त आधार या निवास देने वाली। क्षित+आ, आ का अर्थ है देना। आ का अर्थ नाश करना भी होता है। दुष्टों के आधार को नष्ट करने वाली। एकाक्षरी कोश में क्षि का अर्थ ज्योतिष्, भूमि दिया गया है। तन् धातु में ड प्रत्यय लगाने से त शब्द बनता है जिसका अर्थ है विस्तार करने वाला। ज्योतिष् विद्या का विस्तार करने वाली। भूमि का विस्तार करने वाली। एकाक्षरीकोश में ता का अर्थ महिला भी दिया गया है। भूमि देवी, ऐसा अर्थ कर सकते हैं। देवी महिला के रूप में ही चित्रित होती हैं। परम या सर्वोच्च स्थान को गई अर्थात प्राप्त। एकाक्षरी कोष के अनुसार क्ष का अर्थ है परम (सर्वोच्च), परमात्मन्, क्षेन, नरसिंह आदि। अन्तिम स्थान तक गई। क्षम् इता। क्ष अंतिम अक्षर माना जाता है जिसे मेरू कहा जाता है और मेरू का उल्लंघन नहीं होता है। अन्तिम स्थान सर्वोच्च स्थान अर्थात ब्रह्म स्थान तक गई। देवताओं में जो सर्वोच्च स्थान हो सकता है वहाँ तक गई।

608. **क्षुद्रघण्टाविभूषणा** – छोटी छोटी घंटियाँ हैं विशेष आभूषण जिनके अर्थात छोटी छोटी घंटियों से विभूषित। छोटी घण्टियों से युक्त आभूषणों वाली अर्थात् ऐसे आभूषण पहने हुए है। कमर में पहनने वाली करधनी में या पैर में पहनने वाली नूपुर में इस प्रकार की घण्टियाँ लगी होती थी तो चलने पर आवाज करती थी। अध्यात्मिक पक्ष में अर्थ होगा कि छोटी घण्टियों के समान नाद करने वाली कुण्डलिनी स्वरूपा। कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत होने पर अलग–अलग तरह की ध्वनियाँ निकलती है। व्यक्ति के कर्म संस्कार पर निर्भर करता है कि उसे किस प्रकार की आवाज सुनाई पड़ेगी।

609. **क्षयकंरी** – प्रलय के समय संसार का क्षय अर्थात नाश करने वाली। जगत का क्षय अर्थात् नाश करने वाली। प्रलय काल में सम्पूर्ण जगत का क्षय होता है और प्रतिदिन भी कुछ न कुछ नाश होता रहता है। क्षय का

अर्थ निवास भी होता है। भक्तों के लिए निवास करने वाली अर्थात् अपने भक्तों को उत्तम निवास देने वाली। देवी का धाम सबसे उत्तम निवास है।

610. **क्षितीशा** – पृथ्वी की शासिका। पृथ्वी पर आराध्या। पृथ्वी की स्वामिनी। पृथ्वी पर शासन चलता है जिनका। क्षी निवासे धातु होती है। जो जिसका निवास स्थान वह उसके लिए पृथ्वी है। स्वर्ग वासियों के लिए स्वर्ग पृथ्वी हुई।

611. **क्षीणमध्यसुशोभना** – पतली कमर से सुशोभित अर्थात अतिसुन्दर। क्षीण अर्थात दुबला या पतला, मध्य अर्थात कमर।

612. **अजानन्ता** – जिसका कभी जन्म नहीं हुआ और जो अन्त (मृत्यु) से रहित है। जिसका कभी जन्म नहीं हुआ और जो अनन्त रूपों वाली है। अजा शब्द के कई अर्थ हैं – जिससे सभी पैदा होते है अर्थात ब्रह्म। अस्मात् जायते सर्वम इति अजः। अजा का अर्थ अखिल भी ले सकते है अर्थात सभी। जिसका जन्म न हो। न जायते कर्मपराधीनाः। अजति (क्षिपति) स्वजनदोषान्। जो कर्म के पराधीन होकर जन्म नहीं लेती। मनुष्य तो कर्म फल भोगने के लिए जन्म लेता है जबकि देवी लीला या धर्मरक्षा के लिए ही जन्म लेती है। जो भक्तों के दोषों को फेंक देती हैं अर्थात हटा देती है।

613. **अपर्णा** – पार्वती स्वरूपा। तपस्या के समय सूखे पत्तों का भी भक्षण त्याग दिया था अतः पार्वती अपर्णा कहलाती है। सारे ऋणों से रहित। अपगता ऋणा यया इति अपर्णा। जिनका पतन नहीं होता। पर्ण शब्द का एक अर्थ पतन भी होता है। जो अपने सत्–चित्–आनन्द अवस्था से नीचे नहीं आती हैं अर्थात पतन नहीं होता है।

614. **अहल्या** – विरूपता से रहित अर्थात शरीर में झुर्रियां या सौन्दर्य बाधक तत्व नहीं हैं। हल्य का एक अर्थ है विरूपता। कौमारी या अक्षता। अहल्या का अर्थ होता है ऐसी भूमि जिस पर कभी हल न चलाया गया हो। स्त्री के सन्दर्भ में इसका अर्थ होगा कौमारी या अक्षता अर्थात जिसका पुरुष से समागम न हुआ हो। अहल्या की तरह अत्यन्त सुन्दर। ललितात्रिंशती ग्रन्थ में शंकराचार्य जी ने हल्य का एक अर्थ कपट बताया है अतः इस नाम का अर्थ कपट रहित हुआ। हल्य का एक अर्थ है वैरूप्य, अतः अहल्या का अर्थ हुआ वैरूप्य से रहित पंचभूतात्मिका पूर्ण सृष्टि। जड़ से चेतन हो सकने वाली शक्ति अर्थात जड़ प्रकृति से चेतन प्रकृति में रूपान्तरित होने वाली शक्ति। रामायण में आया है कि अहल्या पत्थर से नारी बन गई थी। अहल्या की तरह अत्यन्त सुन्दर या मनोहर।

615. **शेषशायिनी** – शेषनाग पर शयन करने वाली या लेटने वाली। शयन का अर्थ हमेशा सोना नहीं लगायेंगे बल्कि लेटना भी लगायेंगे। देवता यदि सो जाऐंगे तो प्रलय हो जाएगी अतः कई बार लेटना अर्थ लगाना बेहतर होता है। गति तत्व पर स्थिति शक्ति के रूप में विराजमान। सर्प गति का प्रतीक और शयन स्थिति का प्रतीक है। संसार के लिए गतिज ऊर्जा एवं स्थितिज ऊर्जा दोनों की आवश्यकता है। अनन्त ब्रह्म में शयन करने वाली अर्थात् सर्वत्र व्याप्त। शेष शब्द अनन्त या ब्रह्म का प्रतीक है। प्रलय काल में सबकुछ नष्ट होने के बाद जो बचता है वह शेष है। चूँकि ब्रह्म ही बचता है अतः शेष का अर्थ हुआ ब्रह्म, जो अनन्त है। शेष शब्द Cosmic mind का भी प्रतीक है, इस ब्रह्माण्डीय मन में रहने वाली।

616. **स्वान्तर्गता** – अपने आप में अपने अन्दर गई हुई अर्थात पूर्णतः अन्तर्मुखी। स्व का अर्थ आत्मा भी होता है। आत्मा (जीवात्मा) के अन्दर गई हुई अर्थात विराजमान अर्थात परमात्मा स्वरूपा। जीवात्मा के अन्दर परमात्मा होता है। गति का एक अर्थ ज्ञान भी होता है। जिनको योगियों द्वारा अपने भीतर जाना गया अर्थात साक्षात्कार किया गया। अपने अन्दर स्थित अर्थात जिसने समाधि लगाई हुयी है। सोने और समाधि में अन्तर यह है कि समाधि में हर घटना पता चलती है, यदि सुई भी गिरती है तो भी पता चलता है।

617. **साधूनामन्तरानन्तरूपिणी** – साधुओं के अन्तःकरण में अनेक रूपों से स्थित रहने वाली।

618. **अरूपा** – निराकार रूपा, निर्गुण स्वरूपा। देवी मूल रूप में निराकार होती हैं। रूप वह होता है जिसे आँखों से देखा जा सकता है। विष्णुरूपा। ब्रह्मरूपा। विष्णु के गुण या लक्षणों वाली। अ का अर्थ भगवान विष्णु, ब्रह्म है। रूप का एक अर्थ गुण या लक्षण होता है। विष्णु के सदृश। रूप का एक अर्थ सदृश भी है।

619. **अमला** – मल रहित अर्थात परम पवित्र। आणव मल, कार्मिक मल और मायिक मल तीनों मलों से रहित। मल वह तत्व है जिनके कारण आत्मा का स्वरूप ढक जाता है। ये तीन भावनाएं/पदार्थ हैं जिससे व्यक्ति सीमितता में फँसता है, जन्म, मृत्यु के चक्कर में फँस जाता है। मैं अपूर्ण हूँ अर्थात आणव मल। मैं भिन्न हूँ अर्थात मायिक मल, मैं कर्मो का कर्ता हूँ अर्थात कार्मिक मल। इस प्रकार के भाव ही मल है। अर्न्तशुद्धि के लिए इन्हें दूर करना आवश्यक होता है। श्रीसूक्त में क्षुत् और पिपासा को मल बताया गया है। सूक्ष्म शरीर में जो विषय विकार जम जाते है या उनकी छाप पड जाती है, वे भी मल कहलाते है। कर्म करने पर फोटो के रूप में हमारे चित्त में जो संस्कार अर्थात प्रिन्ट पड़ जाता है वह मल ही है। अ अर्थात विष्णु, म अर्थात ज्ञान, लाति का अर्थ है ग्रहण करना, नाश करना। भगवान विष्णु के ज्ञान को ग्रहण करने वाली।

620. **आद्या** – सर्वप्रथम होने वाली अर्थात संसार में सर्वप्रथम जिनका अस्तित्व था। संसार की आदि शक्ति अर्थात सबका कारण। सबसे पहले होने वाली अर्थात् सबसे पहले जिनका अस्तित्व था। आदौ भवा इति आद्या। सभी प्रकारों में अर्थात् सभी रूपों में होने वाली अर्थात् अंश या शक्ति रूप में विराजमान। आदि का अर्थ प्रकार होता है। देवी अलग–अलग रूपों में अवतार लेती है और हर रूप में वे शक्ति रूप में विद्यमान रहती है। प्रधान कारणों में विराजमान अर्थात् सृष्टि के प्रधान कारण जैसे पंचभूत, ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि में शक्ति रूप में विराजमान। आदि का अर्थ प्रधान या मुख्य भी होता है। सर्वप्रथम अर्थात सबका स्रोत। अ अक्षर जिसके आदि में है अर्थात स्वर स्वरूपा या समूची वर्णमाला आद्या है। वर्णमाला की शक्ति स्वरूपा। आद्या+आ, एकाक्षरी कोष में आ का एक अर्थ है शक्ति।

621. **अनन्तगुणशालिनी** – अनन्त गुणों से युक्त या अनन्त गुणों से चमकने वाली। शब्द के अन्त में शालिनी हो तो उसका अर्थ युक्त या चमकने वाला होता है।

622. **स्वविद्या** – आत्म–विद्या स्वरूपा अर्थात आत्मज्ञान प्राप्त कराने वाली विद्या स्वरूपा। विद्यते अनया इति विद्या अर्थात जिससे जाना जाए, वह विद्या कहलाती है। स्व का एक अर्थ आत्मा होता है। स्व का अर्थ धन भी दिया गया है एवं विद्या का अर्थ है स्त्री–देवता का मन्त्र। धन प्राप्ति के लिए मन्त्र स्वरूपा अर्थात लक्ष्मी मन्त्र स्वरूपा। आत्मज्ञान स्वरूपा। आत्म–विद्या स्वरूपा। स्व का अर्थ है आत्मा। अपनी विद्यावाली। अपनी विद्या से अलंकृत। आत्मज्ञान से युक्त शास्त्रस्वरूपा। स्व अर्थात आत्म, विद्या अर्थात शास्त्र।

623. **विधिज्ञा** – विधि (ब्रह्मा) के विधान को जानने वाली। ब्रह्मा द्वारा ज्ञात।

624. **विद्याऽविद्या** – विद्या और अविद्या दोनों रूपों में जो अवस्थित है। विद्या का अर्थ है ब्रह्मज्ञान अर्थात आत्मज्ञान। वह यथार्थ ज्ञान जिसका कभी खण्डन नहीं हो सकता, विद्या है। अविद्या का अर्थ है आत्मज्ञान से हटकर जो दूसरे ज्ञान है अर्थात आजकल विद्यालयों में पढ़ाये जाने वाले भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, अर्थशास्त्र आदि सांसारिक ज्ञान अविद्या है। वेदान्त दर्शन के अनुसार अनात्मा को आत्मा मान लेना, अनित्य को नित्य मान लेना, अशुद्ध को शुद्ध मान लेना अज्ञान या अविद्या है।

625. **विन्दुलोचना** – बिन्दु अर्थात गोल नेत्रों वाली। तात्पर्य है सभी जगह समान रूप से दृष्टि रखने वाली। बिन्दु में कम या ज्यादा नहीं होता है क्योंकि केन्द्र से परिधि की दूरी हर जगह समान होती है। बिन्दु का अर्थ ज्ञानी, विद्वान, जानकार, उदार भी होता है। लोच्यते अर्थात आलोच्यते अर्थात चर्चा किया जाना या विचार किया जाना। बिन्दुषु लोच्यते आलोच्यते या सा बिन्दुलोचना। विद्वानों में जिनकी चर्चा होती है या जिनपर विचार किया

जाता है वह बिन्दुलोचना है। अनुस्वार या शून्य के रूप में जिन पर विचार किया जाता है। बिन्दुरूपेण लोच्यते इति बिन्दुलोचना। गोल नेत्र वाली। बिन्दु गोल होता है। बिन्दु का अर्थ छोटा नहीं ले सकते क्योंकि छोटे नेत्र सुन्दरता के परिचायक नहीं हैं। विशाल नेत्र ही सुन्दरता के परिचायक होते हैं।

626. **अपराजिता** – जो कभी पराजित नहीं होती। जिनके साथ रहने से दूसरे धर्मी लोग जैसे अर्जुन आदि हमेशा विजयी रहते हैं। अपरेपि अर्जुनादयो अजिता अनया। शत्रुओं के साथ अर्थात शत्रुओं से लड़ने के लिए जो युद्ध में गयीं। अपरैः शत्रुभिः सह आजिं गता। पर और अपर दोनों के अथ शत्रु होते हैं। अपर का अर्थ दूसरा भी होता है। दूसरों के लिए अर्थात देवताओं के लिए युद्ध का विस्तार करने वाली अर्थात युद्ध करने वाली। आजिं तनोति अपराणाम् (देवानाम्) अर्थे। विष्णुक्रान्ता वाली अर्थात जिन्हें पूजा में विष्णुक्रान्ता पुष्प चढ़ाये जाते हैं। अपराजिता अस्या अस्ति इति अपराजिता (अपराजिता अर्था विष्णुक्रान्ता वाली)।

627. **जातवेदा** – उत्पन्न समस्त पदार्थों (जड़ एवं चेतन) को जानने वाली। अग्निस्वरूपा। अग्नि के समान तेजस्वरूपा। चूँकि अग्नि समस्त पदार्थों में विद्यमान होती है अतः वह सभी उत्पन्न पदार्थों को जानती है। स्वाभाविक रूप से ज्ञान रखने वाली या सर्वज्ञा। उत्पन्न हुए हैं वेद जिनसे अर्थात वेदों को उत्पन्न करने वाली। जो उत्पन्न हुये सभी पदार्थों को जानती है। विद् धातु का अर्थ है जानना। उत्पन्न हुए सभी पदार्थों में विराजमान। विद् धातु का अर्थ है अस्तित्व होना अर्थात् विराजमान होना। जो स्वाभाविक रूप से ज्ञानी है अर्थात् सब कुछ जानती है। जिससे सभी वेद अर्थात् सभी विद्यायें निकली है। सभी के पैदा होने पर अर्थात किसी के भी उत्पन्न होने पर जिसे प्राप्त किया जाता है अर्थात् अग्नि स्वरूपा। प्राचीन काल में या आज भी यज्ञ के अवसर में पवित्र वृक्ष के लकड़ियों को रगड़ कर अग्नि को प्राप्त किया जाता है। विद् धातु का एक अर्थ प्राप्त करना है। जन्म लेने वाले सभी लोग जिसे जानते हैं अर्थात परमात्मा स्वरूपा। जिसे हवि रूप धन (वित्त) प्राप्त है अर्थात ऐश्वर्यशाली या धन वाली।

628. **अजपा** – बिना प्रयास के अपने आप होने वाला जपस्वरूपा। सोहम् और हंसः इन मन्त्रों के स्वरूप वाली क्योंकि ये मन्त्र प्रत्येक व्यक्ति में साँस के द्वारा अपने आप जपे जाते हैं अर्थात यह जप स्वतः होता रहता है।

629. **अमरावती** – देवताओं की नगरी स्वरूपा अर्थात जहाँ देवता आश्रय लेते हैं।

630. **अल्पा** – जो सूक्ष्म है। सूक्ष्म वह होता है जिसे इन्द्रियॉ ग्रहण नहीं कर पाती हैं।

631. **स्वल्पा** – अतिसूक्ष्म, और भी सूक्ष्म।

632. **अनल्पाऽऽद्या** – अतिशय विस्तार वाली और आदिस्वरूपा।

633. **अणिमासिद्धिदायिनी** – अणिमा सिद्धि देने वाली। जिस सिद्धि से व्यक्ति अणु की तरह छोटा हो जाता है वह अणिमा सिद्धि है। हनुमान जी ने लंका प्रवेश के दौरान यह सिद्धि दिखाई थी।

634. **अष्टसिद्धिप्रदादेवी** – अष्ट सिद्धियों को देने वाली। अणिमा, लघिमा, महिमा, ईशित्व, वशित्व, प्राप्ति, प्राकाम्य, सर्वकामावसायित्व अष्ट सिद्धियाँ होती हैं। सिद्धि शब्द का तात्पर्य ऐसी पारलौकिक और आत्मिक शक्तियों से है जो तप और साधना के द्वारा प्राप्त होती हैं।

635. **रूपलक्षणसंयुता** – सुन्दर रूप और शुभ लक्षणों से सम्यक् प्रकार से युक्त।

636. **अरविन्दमुखीदेवी** – कमल के समान सुन्दर मुख वाली देवी। कमल सुन्दरता का प्रतीक है।

637. **भोगसौख्यप्रदायिनी** – सांसारिक भोगों और सुखों को प्रदान करने वाली। इन्द्रियों का अपने विषय पर सम्पर्क होने पर होने वाली सुखानभूति भोग कहलाती है। एन्द्रिक सुख देने वाले सांसारिक पदार्थ भी भोग कहलाते हैं।

638. **आदिविद्या** – समस्त विद्याओं का आदि स्वरूपा अर्थात प्रारम्भ स्वरूपा। समस्त विद्याओं को स्रोत अर्थात समस्त विद्यायें इन्हीं से निकलती हैं। आदि का अर्थ है प्रथम, श्रेष्ठ, स्रोत।

639. **आदिभूता** – सत्तावानों में सर्वप्रथम अर्थात सबसे पहले से विद्यमान। यहाँ भूत का अर्थ प्राणी नहीं है और न ही जन्म लेना है। भू सत्तायाम् धातु से सत्ता अर्थ लेना उचित है। ईशावास्योपनिषद में सम्भूति शब्द का अर्थ सम्यक् सत्ता है, न कि सम्यक् उत्पत्ति। यदि प्राणी अर्थ लेने की हठ है तो अर्थ होगा जितने भी प्राणी है उनमें सर्वप्रथम।

640. **आदिसिद्धिप्रदायिनी** – सबसे पहले सिद्धि प्रदान करने वाली अर्थात अन्यों से पहले उपासकों को सिद्धि प्रदान करने वाली। आरम्भ से ही सिद्धि देने वाली। सर्वप्रथम सिद्धि देने वाली। परमात्मा की सिद्धि देने वाली अर्थात प्राप्त कराने वाली। आदि अर्थात परमात्मा, मूल कारण।

641. **सीत्काररूपादेवी** – सीत्कार अव्यक्त शब्द स्वरूपा देवी। प्रेमी युगल में सम्भोग के दौरान ऐसा शब्द होता है। सी –सी अक्षर रूपा देवी। सी –सी करने के रूप वाली देवी। अत्यधिक आनन्द या पीड़ा के समय साँस के लम्बा खीचने से यह शब्द होता है। देवी का अर्थ है देदीप्यमान, चमकती हुई।

642. **सर्वासनविभूषिता** – सभी प्रकार के सुन्दर आसनों (बैठने वाले आसन) से सुशोभित। योगी लोग जिन आसनों को लगाते हैं उनसे विभूषित अर्थात पारंगत यह अर्थ भी हो सकता है।

643. **इन्द्रप्रिया** – इन्द्र को प्रिय हैं जो अर्थात इन्द्र जिन्हें पसन्द करते हैं। इन्द्र को प्रसन्न करने वाली। असुरों के साथ युद्ध करके उन्हें परास्त कर देवी इन्द्र एवं समस्त देवताओं को प्रसन्न करती हैं। प्रीणाति इति प्रिया से प्रिया शब्द बनाने पर प्रिया का अर्थ प्रसन्न करने वाली एवं प्रीयते इति प्रिया से प्रिया शब्द बनाने पर प्रिया का अर्थ प्रसन्न होने वाली होता है। परम ऐश्वर्य जिन्हे पसन्द है। इन्द्र को प्रसन्न करने वाली। असुरों के साथ युद्ध करके उन्हें परास्त कर देवी इन्द्र एवं समस्त देवताओं को प्रसन्न करती हैं। प्रीणाति इति प्रिया से प्रिया शब्द बनाने पर प्रिया का अर्थ प्रसन्न करने वाली एवं प्रीयते इति प्रिया से प्रिया शब्द बनाने पर प्रिया का अर्थ प्रसन्न होने वाली होता है। परम ऐश्वर्य जिन्हे पसन्द है।

644. **इन्द्राणी** – इन्द्र की पत्नी इन्द्राणी से अभेद है जिनका। इन्द्र को जीवित रखने वाली या आयु बढ़ाने वाली। इन्द्रम् अनति आनयति इति इन्द्राणी।

645. **इन्दप्रस्थनिवासिनी** – इन्द्रप्रस्थ (आज का दिल्ली) में निवास करने वाली।

646. **इन्द्राक्षी** – इन्द्र के समान हजारों नेत्रों से सुशोभित। एक घटना के कारण इन्द्र के शरीर में हजार नेत्र हो गये थे। ऐश्वर्य देने वाली आँखों वाली अर्थात देखने मात्र से ऐश्वर्य देने वाली। इन्द्र का अर्थ है ऐश्वर्ययुक्त या ऐश्वर्य देने वाला। इदी ऐश्वर्ये धातु होती है।

647. **इन्द्रवज्रा** – इन्द्र की तरह वज्र को धारण करने वाली। इन्द्र के वज्र को धारण करने वाली यह अर्थ भी हो सकता है। इन्द्रवज्रा नाम के छन्द स्वरूपा। इन्द्र को वज्र देने वाली। इन्द्र के वज्र की तरह अत्यन्त कठोर अर्थात उनपर कुछ भी प्रहार करने पर उनका कुछ नहीं होता। इन्द्र के वज्र की अमोघ अर्थात उनका नाम लेना या उपासना कभी व्यर्थ नहीं जाती।

648. **इन्द्रमद्योक्षिणी** – भक्तों पर श्रेष्ठ आनन्द को छिड़कने वाली अर्थात देने वाली। आरती के बाद पुजारी वहाँ उपस्थित लोगों पर जल छिड़कता है। उक्षण का अर्थ है किसी पर छिड़कना। मद्य का अर्थ है नशा, यहाँ पर आनन्द का नशा अर्थ ले लिया गया। इन्द्र का अर्थ है श्रेष्ठ। इन्द्र को मद्य से संतृप्त करने वाली। इन्द्र+मद्य+उक्षिणी। उक्षिणी का अर्थ है जल छिड़कने वाली अर्थात तृप्त करने वाली।

649. **ईला** – स्तुति स्वरूपा। स्तुति वाली अर्थात जिनके बहुत से स्तोत्र हैं, जिनमें उन्हें याद किया जाता है। ईड का अर्थ स्तुति होता है एवं ईड तथा ईल एक ही होता है क्योंकि संस्कृत में ड और ल में अभेद होता है। एकाक्षरीकोश में ई का अर्थ महानन्द, कोप, लक्ष्मी, वाणी दिया गया है। ला धातु का अर्थ ग्रहण करना, नाश करना होता है। इस प्रकार ईला का अर्थ हुआ महानन्द को धारण करने वाली, क्रोध को धारण करने वाली (दुष्टों के लिए), लक्ष्मी (धन–सम्पत्ति–वैभव) को धारण करने वाली, वाणी (सरस्वती अर्थात ज्ञान) को धारण करने वाली। पृथ्वी स्वरूपा। स्तुति स्वरूपा। ईड्यते इति ईला से अर्थ होगा स्तुति योग्य अर्थात् जिनकी स्तुति की जाती है। संस्कृत में ड और ल में अभेद होता है। ई का अर्थ गति (क्रियाशीलता), लक्ष्मी भी होता है। लाति का अर्थ ग्रहण करना, नाश करना होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ क्रिया शक्ति को धारण की हुई अर्थात् क्रिया शक्ति से युक्त। लक्ष्मी (धन सम्पत्ति और शोभा) को धारण करने वाली अर्थात् इनसे युक्त। दुष्टों की धन सम्पत्ति को नष्ट करने वाली। प्रार्थना वाली अर्थात् उपासक जिनकी स्तुति करते है या प्रार्थना करते है। संस्कृत में ड और ल में अभेद है। ईडा (स्तुति) अस्या अस्ति इति ईडा (ईला)। जल धारण करने वाली। वैदिक कोष में ई का अर्थ जल किया गया है। ईरयति ईलयति से प्रेरित करने वाली अर्थात् काम में लगाने वाली अर्थ भी होगा। वैदिक कोष में ईल का अर्थ अग्नि दिया है। अग्नि जिसे दीप्त किया जा सके।

650. **कामनिवासा** – कामदेव में निवास है जिनका अर्थात कामदेव में शक्ति रूप में स्थित रहने वाली। काम (कामशक्ति, कामवासना) का निवास स्थान या आश्रय या स्रोत।

651. **ईश्वरीश्वरवल्लभा** – ऐसी ईश्वरी जो ईश्वर (शिव) को प्रिय है। पार्वती के ईश्वर अर्थात शिव की प्रियतमा। ईश्वरी का अर्थ है पार्वती। ईश्वर से यदि एक भगवान का अर्थ लेना हो तो शिव के लिए यह शब्द प्रयोग होता है।

652. **जननी** – संसार को जन्म देने वाली। दया, करुणा गुण स्वरूपा। जननी का एक अर्थ है दया, करुणा गुण। जगतां जननी। जनान् नयति। न जायते इति जना, तान् सर्वान नयति। जनं जननं नयति च। समस्त विश्व को उत्पन्न करने वाली। जनयति इति जननी। लोगों का नेतृत्व करने वाली अर्थात मार्गदर्शन करने वाली या रास्ता दिखाने वाली। भक्तजनों का मार्गदर्शन करने वाली। जनान् नयति इति जननी। ज+न अर्थात जन अर्थात जो जन्म नहीं लेती है। जन+नी से जननी बनाने पर अर्थ होगा जो स्वयं जन्म नहीं लेती है, सभी का नेतृत्व करती है या क्रियाशील करती है या मार्गदर्शन करती है। जन्म को लाने वाली अर्थात उत्पत्ति को करने वाली। जन का अर्थ है जनन या जन्म।

653. **ईश्वरी** – सारे संसार की शासिका। शासन करने का अर्थ होता है अपने आदेशों चाहे वो मौखिक हो या लिखित हों के अनुसार सृष्टि चलाने वाली। कर्म के नियम शासन का ही एक अंग हैं। सारी घटनायें उनके द्वारा निर्धारित विधान के अनुसार ही घटित होती हैं, यही शासन का अर्थ है। जगत के ऐश्वर्य की स्वामिनी। ईश्वरी का अर्थ होता है ऐश्वर्य की स्वामिनी। ऐश्वर्य का अर्थ है शक्ति + सम्पन्नता। ईष्टे इति सर्वेश्वरी। ईशानां ब्रह्मादीनामपि वरा। ईशश्च वरश्च। ईष्टे वाति रमते च। ई लक्ष्मी श्वयति गच्छति रमयति च। भक्तानामीं सम्पदं शं सुखं वं ज्ञानं च राति। वरदेशानामपि वरप्रदः। ई लक्ष्मीं श्वं श्वसनं च रमयति। शं शतानन्दं वं वायुं च वा रमयति। ईशैरपि व्रियते। ईशानामापि वं ज्ञानं रं आनंदश्चानेन। शासन करना जिनका स्वभाव है अर्थात खून में ही शासन करने का गुण है। वरच् प्रत्यय शील (स्वभाव) में भी आता है। ईश् (शासन करना) में वरच् प्रत्यय लगाने से ईश्वर बनता है जो स्त्रीलिंग में ईश्वरी है। शासन करने वाले ब्रह्मा, शिव, इन्द्र आदि देवों से श्रेष्ठ। वर का अर्थ है श्रेष्ठ। जो शासन करने वाली हैं एवं श्रेष्ठ गुणों (दया, करूणा, प्रेम, क्षमा, वीरता, शौर्य, उत्साह आदि) से युक्त हैं। शासन करने का अर्थ होता है अपने आदेशानुसार अधीनस्थों से कार्य कराना और अधीनस्थ उस आदेश के विपरीत नहीं जा सकते। शासन चलाने के लिए नियम बनाने पड़ते हैं जिसके अनुसार कार्य होता है। प्रकृति के

नियम, कर्म के नियम इस प्रकार के नियम हैं। शासन अनुग्रह (कृपा या पुरस्कार देना) एवं निग्रह (दण्ड देना) के सिद्धान्त पर चलता है। ईशा से जगदीशा अर्थ ले लिया अर्थात संसार पे शासन करने वाली लक्ष्मी जी। वर का अर्थ होता है पति या भरण करने वाला। सब पर अनुशासन करने वाली लक्ष्मी जी का भी भरण–पोषण करने वाली। जगत अर्थात सब या सभी। जो शासन करने वाली है एवं श्रेष्ठ (गुण और कर्म में) है। जो शासन करती हैं, बहती हैं (गति करते हैं) एवं क्रीड़ा करती हैं। जो शासन करती हैं, गति करती हैं (क्रियाशील या ज्ञानवान होना) एवं आनन्दित रहती हैं। गति का गमन, ज्ञान और प्राप्ति अर्थ होता है। रमण करने का अर्थ है क्रीड़ा करना, आनन्दित होना। जो शासन करने वाली है एवं श्रेष्ठ है अर्थात् अन्य देवताओं से श्रेष्ठ है। जो सबकी स्वामिनी है, शासनकर्ता एवं श्रेष्ठ है। जो शासनकर्त्री है, गति करती है (संचालन करता है) और स्वयं में आनन्द की अवस्था में रहती है अर्थात् आत्माराम है। जो लक्ष्मी के पास जाती है एवं उसे प्रसन्न करती है। भक्तों को सम्पदा, सुख एवं ज्ञान देती है। वर देने में समर्थ अर्थात् वरदान देने वाले अन्य देवताओं को भी वरदान देना वाला। वरदेश शब्द का ईश शब्द ले लिया। लक्ष्मी एवं वायु (प्राण वायु) को प्रसन्न करती है अर्थात् लक्ष्मी और जीवन देती है। जो सैकड़ों आनन्द, प्राण वायु को प्रसन्न रखती है। अन्य शासकों ने अर्थात् अन्य देवताओं ने जिसका वर्णन किया है अर्थात् जिसको देवता या आराध्य या अपने प्रभु के रूप में स्वीकार किया है। जो समर्थ है उनको भी ज्ञान व आनन्द जिनके द्वारा होता है। ऐश्वर्य से युक्त। ऐश्वर्य का अर्थ होता है वह शक्ति जिससे इच्छा का विघात नही होता है अर्थात् अवरोध नही होता है। अतः वह शक्ति जिससे किसी भी प्रकार की इच्छा पूरी होनी ही होती है ऐश्वर्य कहलाता है। इसी कारण अणिमा, लघिमा आदि अष्ट सिद्धियों को ऐश्वर्य कहते है क्योंकि इनसे इच्छायें पूरी होती है। आरम्भ में ऐश्वर्य शब्द शक्ति के लिए ही था किन्तु धन भी एक बड़ी शक्ति होने के कारण धन को भी शक्ति के साथ जोड़ लिया गया। अतः अष्ट सिद्धियों एवं अष्ट लक्ष्मियों को मिलाकर ऐश्वर्य कहते है। ईश्वरी के दो अर्थ है– समर्थ तथा सुन्दर। हमारे घर सुन्दर लक्ष्मी आये एवं वह समर्थ नही हो तो उसे लोग तंग करेंगे। सुन्दर अर्थात् जो रूप से या गुणों से सुख दे। ईश में वर शब्द जोड़ने से भी ईश्वरी शब्द बनेगा। जो शिव या विष्णु के साथ रहकर वर देती है वह ईश्वरी है। ईश+ वर– जो शासन करने वाली है एवं वरण करने योग्य अर्थात् वनिता या आदरणीय है। शृणाति धातु रूप में ड प्रत्यय लगाने से भी श शब्द बनता है जिसका अर्थ है नाश करने वाला। ई का अर्थ है शक्ति। इस प्रकार ईश्वरी का अर्थ हुआ– ऐसी शक्ति जो पापों का विनाश कर वर देती है।

654. **दीना** – जो अहंकार से दीन है अर्थात रहित है। दीन का अर्थ है जिसके पास कुछ नहीं है या डरी हुई हैं। अशुभ कर्मों से डरी हुई या दूर रहने वाली। जो लौकिक कर्मों से ऊपर है वह भी दीन है। सन्यासी दीन है क्योंकि लौकिक कर्मों से उसे मतलब नहीं। विशेष परिस्थितियों में दीन स्वरूप धारण करने वाली जैसे धूमावती के रूप में।

655. **भेदा** – पदार्थों के बीच में भिन्नता पैदा करने वाली। इस जगत में कोई भी दो पदार्थ ऐसे नही है जिसमें जरा भी भिन्नता न हो। वैशेषिक दर्शन में विशेष नाम के पदार्थ की संकल्पना की गयी है जो परमाणुओं में भी भेद पैदा करता है। उस विशेष नामक पदार्थ के स्वरूप वाली। भेद स्वरूप वाली। अभेद होने पर भी विभिन्न स्वरूपों में प्रकट होती है। लोगों में भेद डालने वाली यह अर्थ भी हो सकता है। भेद + आ, इस सन्धि विच्छेद से भेद समाप्त करने वाली यह अर्थ भी हुआ क्योंकि आ का एक अर्थ नाश करना भी होता है।

656. **ईश्वरकर्मकृत्** – ईश्वर के कार्यो को करने वाली (माया के रूप में)। ईश्वर या ब्रह्म तो कुछ करता नहीं है उसकी शक्ति माया ही सबकुछ करती है।

657. **उमाकात्यायनी** – ऐसी उमा जो ऋषि कात्यायन की पुत्री के रूप में अवतरित हुई। उमा और कात्यायनी के स्वरूप वाली। उमा का अर्थ है प्रणव (अर्थात ओम्) की सार स्वरूपा। उ (अर्थात तर्क) का खण्डन कर जो

अटल सिद्धान्त पर स्थित है। मा अर्थात प्रतिषेध अर्थात खण्डन। उच्चतम मनोवृत्ति वाली। उ का अर्थ है सर्वोच्च और मा का अर्थ है मनोवृत्ति। ऋषि कात्यायन के यहाँ पुत्री रूप में जिन्होंने अवतार लिया वे कात्यायनी हैं। कात्यैः अय्यते प्राप्यते इति कात्यायनी। ब्रह्मनिष्ठ लोगों द्वारा जिसे प्राप्त किया जाता है वह कात्यायनी है। कति अयन अर्थात कितने अयन या निवास स्थान हैं जिसके, अर्थात अनन्त निवासस्थानों वाली, यह अर्थ भी कात्यायनी का कर सकते हैं।

658. **ऊर्ध्वा** – सबसे ऊँची अर्थात सबसे ऊर्ध्व लोक में है। दुर्गासप्तशती में आया कि देवी आकाश में स्थित हैं और देवता नीचे खड़े होकर स्तुति कर रहे हैं। सर्वश्रेष्ठ ऊर्ध्वगामी स्वरूप वाली। ऊर्ध्व स्वरूप ब्रह्मलोक, उच्चलोक आदि प्रदान करती हैं। ऊर्ध्व + आ, आ का एक अर्थ देना भी होता है, इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ ऊर्ध्व लोक देने वाली। जो ऊपर है अर्थात् श्रेष्ठ है। सभी देवी–देवताओं से गुण और शक्तियों में श्रेष्ठ है।

659. **मीना** – मत्स्यावतार भगवान विष्णु की शक्ति स्वरूपा। मीन+आ, एकाक्षरी कोश में आ का एक अर्थ शक्ति दिया गया है। राक्षसों एवं दुष्टों की हिंसा करने वाली अर्थात उनका नाश करने वाली। मीनाति इति मीना। मीनाति का अर्थ है हिंसा करना। बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है, इस कारण मछली को मीन कहते हैं। शुभ मीन स्वरूप वाली। बुराइयों को खा जाने वाली। देवी के प्रसंग में अर्थ होगा बुराइयों को खाने वाली। मछली की तरह मंगल या शुभ देने वाली। मछली एक मंगल चिन्ह है।

660. **उत्तरवासिनी** – उत्तर दिशा में स्थित कैलाश पर्वत पर वास करने वाली। सहस्रार चक्र को कैलाश कहा जाता है। इस चक्र में स्थित शक्ति। श्रेष्ठ विचार या भावों वाले व्यक्ति में प्रकट रूप से रहने वाली। देवी या शक्ति या ऊर्जा सर्वत्र व्याप्त है, कुछ ही जगह प्रकट रहती है अर्थात् अपनी शक्तियों का प्रभाव दिखाती है। उत् का अर्थ श्रेष्ठ लेकर श्रेष्ठ देवता कर सकते है अर्थात् ब्रह्मा–विष्णु–महेश–गणेश–सूर्य–इन्द्र कर सकते है। इन श्रेष्ठ देवताओं से भी ऊपर जो है वे है परमशिव। परमशिव में शक्ति के रूप से स्थित। उत्तर दिशा में निवास करने वाली। भारत के उत्तर में कैलाश है जिसमें शिव और पार्वती का वास है। उत्कृष्ट स्थिति में रहने वाली यह अर्थ भी हो सकता है।

661. **उमापतिप्रियादेवी** – शिव की प्रियतमा देवी। शिव जिन्हे पसन्द करते हैं ऐसी देवी।

662. **शिवा च ओंकाररूपिणी** – जो शिव की गृहिणी हैं और ओम्कार के रूप में भी है।

663. **उरगेन्द्रशिरोरत्ना** – शिव (परमात्मा) है सर्वश्रेष्ठ रत्न जिनका। उरग का अर्थ है छाती (हृदय) में रहने वाला जीवात्मा। उरगेन्द्र का अर्थ है जीवात्माओं में श्रेष्ठ अर्थात् परमात्मा। सिर शरीर का सर्वश्रेष्ठ अंग माना गया है इसलिए सिर से सर्वेश्रेष्ठ अर्थ लिया गया। शेषनाग रूपी श्रेष्ठ रत्न धारण करने वाली। सर्पराज को रत्न के रूप में सिर पर धारण करने वाली। उरगेन्द्र अर्थात सर्पराज।

664. **उरगोरगवल्लभा** – प्रत्येक हृदय में रहने वाले शिव (आत्मा) की प्रियतमा या शक्ति। उरसि गच्छति इति उरगः, जो हृदय में जाता है अर्थात् विराजमान है, वह उरग हुआ। उरसा गच्छति इति उरगः से उरग का अर्थ सर्प होता है क्योंकि वह छाती के बल चलता है। सर्पों में श्रेष्ठ अर्थात् नागराज की प्रियतमा से अभेद है जिनका या उस प्रियतमा में विराजमान। शब्द के आगे ''मे विराजमान'' लगाने से शब्द का अर्थ आ जाता है। श्रेष्ठ सर्पराज को धारण करने वाले शिव की प्रिया। उरग का अर्थ है सामान्य सर्प, दो बार उरग लगाने से श्रेष्ठ सर्प ऐसा भाव आ जाता है। सर्प गति अर्थात क्रिया का प्रतीक है। क्रिया शक्ति जिसे अतिशय प्रिय है।

665. **उद्यानवासिनीमाला** – उद्यान में निवास करने वाली मालाधारिणी। माला अस्या अस्ति इति माला अर्थात माला का अर्थ हुआ माला वाली या माला धारण करने वाली। उद्यान में निवास करने वाली शोभा सम्पन्न। माम्

लक्ष्मीम् शोभाम् लाति धारयति इति माला। मान्यते अनया इति माला अर्थात सम्मान दिलाने वाली। बगीचे में निवास करने वाली जो अपने भक्तों को सम्माल दिलाती हैं या देती हैं।

666. **प्रशस्तमणिभूषणा** – श्रेष्ठ मणियों से युक्त आभूषणों वाली। श्रेष्ठ मणियाँ हैं आभूषण जिनकी।

667. **ऊर्ध्वदन्तोत्तमांगी** – ऊपर उठे दाँत (अर्थात दाँत बाहर निकले हों) से युक्त उत्तम अंगों वाली। सामुद्रिक शास्त्र में ऐसी महिला को सौभाग्यशाली माना जाता है। उत्तमांग अर्थात गले के ऊपर का हिस्सा अर्थात सिर या मुख। श्रेष्ठ दांतों से उत्तम अंग वाली। यहाँ ऊर्ध्व का अर्थ श्रेष्ठ है। ऐसे मुख वाली जिसमें ऊपर उठे दाँत हों।

668. **उत्तमाचोर्ध्वकेशिनी** – जो गुणों शक्तियों आदि में दूसरों से उत्तम अर्थात श्रेष्ठ हैं तथा जिनके बाल ऊपर खड़े हुए हैं। श्रेष्ठ तमोगुण वाली एवं उठे हुये बालों वाली अर्थात् अत्यन्त भयानक अर्थात् ब्रह्म स्वरूपा। शास्त्रों में आया है कि ब्रह्म के भय से वायु, अग्नि, सूर्य एवं सभी देवता समय पर सही तरीके से कार्य करते है। एकाक्षरी कोष में क का अर्थ सुख, स्वर्ग है। शी धातु का अर्थ शयन करना अर्थात् सोना है या विराजमान होना है। उच्च कोटि के सुख में या ऊपर स्थित स्वर्गलोक में शयन करने वाली या विराजमान रहने वाली। शि का अर्थ शिव अर्थात् कल्याण है। ऊर्ध्व का अर्थ उच्च कर सकते है। क का अर्थ ब्रह्म भी होता है। उच्च स्तर के ब्रह्म सम्बन्धी शिव (सुख या आनन्द) को लाने वाली अर्थात् भक्तों के लिए लाने वाली अर्थात् उन्हें देने वाली। बाल सिर से बाहर की ओर निकलते है अतः बहिर्गामी विचार (Outward thoughts) को केश कह सकते है। श्रेष्ठ विचारों से युक्त। केश का अर्थ ब्रह्मा, विष्णु और महेश भी होता है क्योंकि केश अर्थात् क् (ब्रह्मा) + अ (विष्णु) + ईश (शिव)। श्रेष्ठ गुणों वाले ब्रह्मा विष्णु और महेश को अपनी शक्ति से ले जाने वाली अर्थात् उन्हें अपने–अपने कामों में लगा देने वाली या उनका मार्गदर्शन करने वाली। केश के आगे इ का अर्थ शक्ति लिया गया है।

669. **उमासिद्धिप्रदाया** – उमा के रूप में जो सिद्धि प्रदान करने वाली हैं। या का अर्थ है जो। जिसको उनकी मॉ ने कहा हे पुत्री तपस्या न करो वह उमा है। उ अर्थात हे पुत्री एवं मा अर्थात नहीं। उमा अर्थात पार्वती। कुछ लोग उ का अर्थ तपस्या एवं मा का अर्थ नहीं करते हैं। उ का अर्थ सम्बोधन (हे पुत्र या पुत्री या कुछ और) अधिक सही है।

670. **उरगासनसंस्थिता** – सर्पासन में विराजमान।

671. **ऋषिपुत्री** – श्रेष्ठ ऋषियों की पुत्री के रूप में जैसे मतंग ऋषि के यहाँ मांतगी रूप में, कात्यायन ऋषि के यहाँ कात्यायिनी रूप में प्रकट हुयी थी।

672. **ऋषिच्छन्दा** – वैदिक मन्त्र स्वरूपा। ऋषि और छन्दों वाली अर्थात् वैदिक मन्त्र स्वरूपा क्योंकि वैदिक मन्त्र में ऋषि छन्द और देवता होते है। देवी स्वयं में देवता तो है ही। वेद मन्त्र के ऋषि और छन्द स्वरूपा अर्थात् वेद मन्त्र के ऋषि और छन्द भी देवी का ही रूप है। ऐसा कहा जाता है कि वैदिक मन्त्र के ऋषि और छन्द का ज्ञान हुये बिना उस मन्त्र का विनियोग सफल नही होता। वैदिक ऋचाओं या मन्त्रों की ऋषि भी वे ही हैं और छन्द भी वे ही हैं। वैदिक ऋचाओं का अर्थ जानने के लिए ऋषि, छन्द और देवता का ज्ञान जरूरी है। देवता तो वे हैं ही, ऋषि और छन्द भी वे ही हैं। ऋषि अर्थात मन्त्रदृष्टा। ऋषते अर्थात जो ढूँढ़ता है या खोजता है। अंग्रेजी का रिसर्च इसी ऋषि शब्द से बना। छन्द का अर्थ है अभिप्राय। मन्त्रदृष्टा का अभिप्राय अर्थात अर्थस्वरूपा। ऋषि और छन्दों से अलंकृत। वेद के मन्त्रों में ऋषि और छन्द दोनो होते है। अतः इस नाम का अर्थ वेद के मन्त्रस्वरूपिणी भी कर सकते हैं।

673. **ऋद्धिसिद्धिप्रदायिनी** – ऋद्धि और सिद्धि को देने वाली। भौतिक समृद्धि जैसे धन–धान्य, जमीन, मकान, गाड़ी आदि ऋद्धि कहलाते हैं जबकि सिद्धि का तात्पर्य है कार्य में सफलता या अष्ट सिद्धियाँ। ऋद्धि का अर्थ क्षुद्र

शक्ति भी किया जाता है। क्षुद्र शक्ति एवं बड़ी शक्ति को प्रदान करने वाली। प्रदान अर्थात स्थाई दान। ऋद्धि और सिद्धि– सामान्य तौर पर भौतिक धन सम्पत्ति को ऋद्धि एवं अलौकिक शक्तियों को अर्थात् अतिप्राकृतिक शक्तियों एवं कार्य की सफलता को सिद्धि कहते है। कहीं–कहीं पर ऋद्धि का एक अर्थ क्षुद्र सिद्धि भी दिया गया है। एक अन्य पुस्तक में ऋद्धि का अर्थ आत्मिक विभूतियाँ एवं सिद्धि का अर्थ सांसारिक सफलताएं दिया गया है। ऋद्धि अर्थात् आत्मज्ञान–आत्मबल, आत्म–संतोष, अन्तरंग उल्लास, आत्म– विस्तार, समृद्धि, विद्या, समर्थता, सहयोग सम्पादन एवं वैभव। (ब्रह्म के साथ जिस प्रकार गायत्री, सावित्री को दो सहचरी माना गया है, उसी प्रकार गणेश जी के साथ ऋद्धि–सिद्धि है। ऋद्धि आत्मबल और सिद्धि समृद्धि बल है। परब्रह्म की दो सहेलियाँ परा और अपरा प्रकृति है, उन्हीं के सहारे जड़–चेतन विश्व का गतिचक्र घूमता है। विवेक रूपी गणेश का स्वरूप निर्माण करते समय तत्वदर्शियों ने उसकी दो सहेलियों का भी चित्रण किया है। आत्मबल और भौतिक सफलताओं का सारा क्षेत्र विवेक पर आधारित है। इसी तथ्य को गणेश और उनकी सहचरी को ऋद्धि– सिद्धि के रूप में प्रस्तुत किया गया है। ऋद्धि अर्थात् आत्मज्ञान– आत्मबल, आत्म–संतोष, अन्तरंग उल्लास, आत्म–विस्तार, समृद्धि, विद्या, समर्थता, सहयोग सम्पादन एवं वैभव। लगभग यही विशेषताएँ गायत्री और सावित्री की हैं। दोनों एक साथ जुड़ी हुई है। जहाँ ऋद्धि है वहाँ सिद्धि भी रहेगी। गणेश पर दोनों को चँवर डुलाना पड़ता है। विवेकवान आत्मिक और भौतिक दोनों दृष्टियों से सुसम्पन्न होते हैं। संक्षेप में गणेश के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ी हुई ऋद्धि–सिद्धियों के चित्रण का यही तात्पर्य है।) अनेक वस्तुओं की वृद्धि स्वरूपा। जब जीवन के लिए उपयोगी एवं सुख पहुँचने वाली बहुत ही वस्तुयें हो एवं प्रत्येक वस्तु अधिक मात्रा मे है, तो उसे ऋद्धि या समृद्धि कहते है। अनेक वस्तुओं की वृद्धि का कारण अर्थात् उन्हें देने वाली। एक नियम है कि उस शब्द के आगे कारण लगाने से भी अर्थ निकल आता है जैसे ऋद्धि अर्थात् ऋद्धि का कारण अर्थात् ऋद्धि देने वाली। एक नियम यह भी है कि उसमें विराजमान, ऐसा जोड़ करके भी अर्थ निकाला जा सकता है। ऋद्धि में विराजमान यह अर्थ भी ऋद्धि का होगा। सभी वस्तुओं की समृद्धि, आठ ऐश्वर्य, ऋद्धि की अमिमानी देवी जो लक्ष्मी जी की दासी है। ऋद्धि के सात गुण है– सत्य, ऋत, उग्रता, दीक्षा, तप, ब्रह्म, ज्ञान, यज्ञ। वृद्धि–विष्णु के गुणों से वृद्धि। सुषुम्ना मार्ग से क्रमशः वृद्धि होती है। अर्घ् पूजायाम् धातु से ऋद्धि शब्द का अर्थ होगा योगियों को सम्मान देती है। क्षुद्र सिद्धि को भी ऋद्धि कहते है। अतः गणेश जी की दो पत्नियाँ है– बुद्धि और ऋद्धि–सिद्धि।ऋद्धि अर्थात ऋद्धि की अभिमानी देवी अर्थात अधिष्ठात्री देवी। ऋद्धि के सात गुण हैं जो हैं– सत्य, ऋत, उग्रता, दीक्षा, तप, ब्रह्म, ज्ञान और यज्ञ। ऋद्धि का तात्पर्य प्रायः भौतिक सम्पत्ति की बहुतायत होता है। शब्द के आगे 'में विराजमान' एवं 'का कारण' लगाने से भी अर्थ निकलता है। ऋद्धि का कारण अर्थात अपने भक्तों को भौतिक सम्पत्ति की वृद्धि करने वाली। कहीं कहीं पर छोटी सिद्धियों को भी ऋद्धि कहा गया है। इसी कारण गणेश जी की पत्नी के नाम सिद्धि–ऋद्धि एवं बुद्धि कहा गया है। अष्ट–ऐश्वर्य को भी ऋद्धि कह सकते हैं। अर्घ् पूजायाम् धातु से ऋद्धि शब्द बनाने पर अर्थ होगा जो सम्मान देती है अर्थात योगियों या भक्तों को सम्मान देने वाली। सुषुम्नामार्ग में कुण्डलिनी की वृद्धि होना अर्थात ऊपर चढ़ना भी ऋद्धि है। ऋद्धि का अर्थ है सभी वस्तुओं की समृद्धि। गुणों में समृद्धि। ऋद्धि के सात गुण माने गये हैं जो हैं सत्य, ऋत, उग्रता, दीक्षा, तप, ब्रह्म, ज्ञान, यज्ञ।

674. **उत्सवोत्सवसीमन्ता** – प्रत्येक उत्सव में माँग की तरह सर्वोपरि अर्थात् उन्हीं की उपासना होती है। सीमन्त का अर्थ है माँग जो सिर में धारण करने के कारण सर्वोपरिता का प्रतीक है। उत्सवोत्सव का अर्थ है प्रत्येक उत्सव या जो उत्सवों में सर्वश्रेष्ठ है। चारों नवरात्रियाँ या अन्य सभी पर्व प्रत्येक उत्सव हुये। उत्सवों में श्रेष्ठ अर्थात् चैत्र एवं शारदीय नवरात्रि। उत्सव का अर्थ आनन्ददायक भी होता है। आनन्द देने वाली उत्सवों में सर्वोपरि अर्थात् उपासानीया। अतिश्रेष्ठ उत्सवों के अवसर पर सुन्दर माँग (बालों की) की रचना करने वाली। उत्सव अर्थात श्रेष्ठ उत्सव। उत्सवों पर बालों में सुन्दर माँग धारण करती है।

675. **कामिकाचगुणान्विता** – भक्तों के हित की कामना करने वाली अतः श्रेष्ठ गुणों से युक्त। च का अर्थ और होता है पर यहाँ पर अतः किया गया है। कामिका का अर्थ कामवासना से युक्त भी होता है। कामशक्ति भी एक शक्ति है और सभी शक्तियाँ देवी का रूप है। कामशक्ति से युक्त एवं तीनों गुणों (सत–रज–तम) से युक्त। जो काम शक्ति (कामवासना) से युक्त है और विभिन्न गुणों से युक्त है।

676. **एला** – इलायची की तरह मधुर सुगन्ध वाली। एला अर्थात इलायची। पृथ्वी की पुत्री के रूप में यह अर्थ भी हो सकता है। ईलस्य इदम् इति एला। पृथ्वी की पुत्री। तेज को धारण करने वाली। भगवान विष्णु को धारण करने वाली। एकाक्षरी कोष में ए का अर्थ तेज, विष्णु दिया गया है। ला का अर्थ है धारण करने वाली, नाश करने वाली। ला आदाने धातु है।

677. **एकारविद्या** – शक्तिस्वरूपा विद्या या आत्मविद्या। एकाक्षरीकोश में ए का अर्थ शक्ति, आत्मा बताया गया है। एकारविद्या के गुणों से युक्त। अ और ई मिलाकर ए बनता है। अ का अर्थ है विष्णु और ई का अर्थ है कामदेव। विष्णु और कामदेव द्वारा उपासित विद्या ऐसा अर्थ भी हो सकता है।

678. **एणी** – हिरणी की तरह द्रुत (तीव्र) गति वाली। एति द्रुतम् गच्छति इति एणी। हिरणी की तरह सुन्दर और बड़ी आँखों वाली। मृगनयनी।हिरणी की तरह शर्मीली और संकोची। एणः का अर्थ है मृग जो उपलक्षक है मृगनयन का।

679. **विद्याधरा** – ज्ञान से भरी हुई अर्थात विदुषी। सभी विद्याओं को धारण करने वाली।

680. **ऊँकारवलयोपेता** – ऊँकाररूपी वलय से युक्त। ओम्काररूपी जनेऊ धारण करने वाली।

681. **ऊँकारपरमाकला** – ऊँकार के रूप में श्रेष्ठ कला स्वरूपा अर्थात् मातृका/अक्षर स्वरूपा। कला का एक अर्थ मातृका भी होता है। समस्त अक्षर ऊँ से निकले है अर्थात् ऊँ सारे वर्णों/अक्षरों का कारण है और कारण हमेशा कार्य से श्रेष्ठ होता है। कला का अर्थ शक्ति, सम्पदा, साधना रूपी विद्या भी है। ऊँकाररूपी सर्वश्रेष्ठ शक्ति से युक्त। ऊँकार जप या ऊँकार की साधना जिन्हें पाने की सर्वश्रेष्ठ साधना है। ऊँकार रूपी श्रेष्ठ कला से सुशोभित। कला का अर्थ शोभा या शक्ति है।

682. **ऊँवदवदवाणी** – ऊँ के रूप में व्यक्त एवं स्पष्ट वाणी स्वरूपा। वद व्यक्तायाम् वाचि धातु होती है। पहले वद का अर्थ व्यक्त (Manifested) किया गया एवं दूसरे वद का अर्थ स्पष्ट (Explicit) किया गया है। ऊँ की ध्वनि हम लोगों उच्चारण करते है जो सबको सुनाई पड़ती है अर्थात् व्यक्त है एवं स्पष्ट भी सुनाई पड़ती है। व्यक्त का एक अर्थ होता है जिसके अनुरूप कोई वस्तु हो। ऊँ परब्रह्म का वाचक है अर्थात् ऊँ की वस्तु परब्रह्म है। ऊँ भी स्वयं में पदार्थ है। ऊँ शब्द नदियों के कल–कल आदि की तरह अव्यक्त नहीं है अर्थात् बिना वस्तु वाला नही है। ऊँकार के विधिवत (सम्यक्) उच्चारण करने वाली वाणी स्वरूपा। दो बार वद का प्रयोग हुआ है वद का अर्थ है बोलना दो बार वद के प्रयोग का अर्थ है सम्यक् रूप से उच्चारण करना।

683. **ऊँकाराक्षरमण्डिता** – ऊँकार अक्षर से विभूषित।

684. **ऐन्द्री** – इन्द्र की शक्ति स्वरूपा। इन्द्र की शक्ति से विभूषित अर्थात इन्द्र की शक्ति इनके पास भी है। शासन शक्ति स्वरूपा। इन्द्र देवताओं का राजा है अर्थात शासक है। शासन शक्ति स्वरूपा। इन्द्र को देवताओं का राजा कहा जाता है अर्थात् वह देवता का शासक है। उनकी शक्ति ऐन्द्री अर्थात् शासन करने वाली शक्ति होगी। इन्द्र शब्द इन्द्रियों के लिए भी आता है। इन्द्रियों में रहने वाली शक्ति स्वरूपा। परमैश्वर्य देने वाली। इदी ऐश्वर्ये धातु होती है। ऐश्वर्यवान होती हुई शत्रुओं को विदीर्ण करने वाली। ऐश्वर्यशाली होने का अर्थ है दिव्य पदार्थ एवं दिव्य शक्ति होना। इन्दि+दृ विदारणे धातु होती है। ऐश्वर्यवान होते हुए जगत को संचालित करने

वाली या क्रियाशील बनाने वाली। इन्दि+द्रु गतौ। जो मनुष्य को प्रेरणा दे रही हैं कि निरन्तर कार्य में लगे रहो। जो मनुष्य को प्रेरणा दे रहीं है कि आसुरी प्रवृत्तियों को नष्ट करते रहो जब तक कि तुम्हें सिंहासन (मोक्ष पद) न मिल जाये। इन्द्र हमेशा युद्ध में लगे रहते हैं पर उनका युद्ध असुरों अर्थात आसुरी वृत्तियों से ही रहा। वराही– वर (श्रेष्ठ अर्थात आत्मा) का हनन करने वाली अर्थात उसे ढकने वाली।

685. **कुलिशहस्ता** – जिसके हाथ में वज्र है। जिसके हाथ में हीरा है। जिनके हाथ में कुठार है। दृढ़ चरित्र, निश्चय से युक्त। वज्र firm character, determination का प्रतीक है। बौद्ध धर्म में ज्ञान या बोधि युक्त चित्त को वज्र कहा गया है।

686. **ऊँलोकपरवासिनी** – ऊँ की उपासना करने वाले लोगों में श्रेष्ठ (प्रकट या स्थाई) रूप से रहने वाली। देवी का वास तो सर्वत्र है, जब यह कहा जाता है कि किसी जगह पर निवास है तो उसका तात्पर्य होता है कि वहाँ जाग्रत रूप से अर्थात् अपनी शक्तियों का प्रभाव दिखाते हुए स्थित है। लोक का अर्थ लोक अर्थात् त्रिलोक एवं लोग होता है। ऊँ का अर्थ शिव भी है। शिवलोक में स्थाई रूप से रहने वाली। ऊँ की साधना करने वाले लोगों में श्रेष्ठ विचार या उच्च चेतना के रूप में निवास करने वाली। ऊँ के बीच स्थित कारण स्वरूपा। कारण अर्थात् जगत का कारण। ऊँ के मध्य स्थित शक्ति ही जगत को पैदा करती है। बीज का अर्थ है कारण। ऊँकार के मध्य स्थित सभी बीज मन्त्र स्वरूपा। ऐसा कहा जाता है कि सभी बीज मन्त्र या अन्य कोई भी मन्त्र ऊँ से ही पैदा हुये है। ऊँ लोक या ब्रह्म लोक जो श्रेष्ठ लोक है उस पर निवास करने वाली। पर का अर्थ है श्रेष्ठ। ऊँ लोक पर अच्छी तरह से निवास करने वाली। ऊँ को ही लोक बना दिया। पर का अर्थ है अच्छी तरह से।

687. **ऊँकारमध्यबीजा** – ऊँकार रूपी उचित या न्याय्य बीज वाली। मध्य का अर्थ है उचित या न्याय्य। जिनके बीज मन्त्र में ऊँ मध्य में है।

688. **ऊँ नमोरूपधारिणी** – ऊँ नमः के रूप को धारण करने वाली।

689. **परब्रहम्स्वरूपा** – बढ़ते हुए गुणों अर्थात वर्धमान गुणों या गुणों की वृद्धि का आधार (निवास स्थान)। वैष्णव समप्रदाय के लोग परब्रह्म की इसी प्रकार व्याख्या करते हैं। वृंह् धातु का अर्थ बढ़ना होता है, यहाँ पर गुणों की वृद्धि अर्थ लिया गया है। जो परम है एवं बढ़ने वाला है। जो परम है और बढ़ाने वाला है। परम का अर्थ है सर्वश्रेष्ठ अर्थात जो गुण, शक्ति, ऐश्वर्य, सुन्दरता आदि में सर्वश्रेष्ठ हो। परब्रह्म के स्वरूप में। जो स्वयं में परब्रह्म है अर्थात सर्वव्यापक निर्गुण निराकार सत्ता वाला है, जो सत्‌चित आनन्द स्वरूप है, जिसमें जगत पैदा होता है और विलीन होता है वह परब्रह्म है। पर का अर्थ जो इन्द्रिय, मन और बुद्धि की पकड़ से बाहर हो। ओम् को भी परब्रह्म कहा गया है। जिस सत्ता का उपनिषदों में नेति नेति कहकर वर्णन किया है वह परब्रह्म है। कार्य ब्रह्म एवं कारण ब्रह्म से परे की अवस्था वाला ब्रह्म। विश्व से परे स्थित ब्रह्म। पुरुष सूक्त में आया है कि इस विश्व में ब्रह्म का केवल एक चौथाई हिस्सा ही आया है और शेष तीन चौथाई हिस्सा इस विश्व से परे है। इस विश्व से परे ब्रह्म का जो हिस्सा है वह परब्रह्म है। जो ब्रह्म कार्य ब्रह्म एवं कारण ब्रह्म से परे है। स्थूल पदार्थ एवं सूक्ष्म पदार्थ से युक्त जो चैतन्य है वह कार्य ब्रह्म है। जैसे घड़े में मिट्‌टी स्थूल है एवं आकाश सूक्ष्म है, इससे युक्त जो चैतन्य है वह कार्य ब्रह्म है। कार्य को बनाने वाली शक्ति से युक्त जो चैतन्य है वह कारण ब्रह्म है। कार्य को बनाने वाली माया शक्ति से युक्त ब्रह्म कारण ब्रह्म होगा। तात्पर्य है उत्पादिनी शक्ति से युक्त चैतन्य कारण ब्रह्म है। जो शुद्ध चैतन्य है अर्थात् जिसमें कार्य एवं कारण दोनों का संयोग नही है, वह परब्रह्म है।

690. **अंशुकांशुकवल्लभा** – परम ज्ञान है अतिशय प्रिय जिन्हें। परम ज्ञान ब्रह्म या आत्मा का ज्ञान होता है क्योंकि वहीं सत्–चित्–आनन्द स्वरूपा है। ज्ञान का ज्ञान के दो अर्थ होगें– परम ज्ञान, प्रत्येक ज्ञान। प्रकाश या किरण ज्ञान का प्रतीक मानी जाती है। अंशु का अर्थ है किरण, बिना अर्थ बदले कन् प्रत्यय लगाने से बने अंशुक

शब्द का अर्थ भी किरण होता है और किरण का अर्थ है प्रकाश। चमकीला दुपट्टा या चुनरी है अतिशय प्रिय है जिन्हें। अंशुक का अर्थ दुपट्टा या चुनरी भी होता है। वल्लभ का अर्थ है अतिशय प्रिया। श्रेष्ठ वस्त्र प्रिय हैं जिनको। अंशुक का अर्थ है वस्त्र। अंशुक अंशुक का अर्थ है श्रेष्ठ वस्त्र।

691. **ऊँकारा** – ऊँकार या प्रणव स्वरूपिणी। ऊर्ध्वम् उन्नयति इति ओंकारा। जो ऊपर की ओर ले जाये या उत्थान करे वह ओंकार है। अव धातु में मन् प्रत्यय लगान से भी ऊँ बनता है। अव् धातु के अनेक अर्थ होते हैं जैसे रक्षा करना, अवगमन (जानना), अवाप्ति (प्राप्ति)। इस प्रकार ऊँ का अर्थ हुआ जो ऊँ जपने वाले की रक्षा करता है, देवताओं की रक्षा करता है, जीवन की रक्षा करता है। जो अवगमन (जानना) करता है अर्थात सर्वज्ञ है। जिसे सबकुछ प्राप्त है। ऊँ अर्थात समग्र ब्रह्मस्वरूपा (तीनों गुणों से युक्त प्रकृति युक्त परब्रह्म स्वरूपा)। अ अर्थात सतोगुण, उ अर्थात रजोगुण, म अर्थात तमोगुण, अर्द्धमात्रा अर्थात प्रकृति, बिन्दु अर्थात परमब्रह्म। अ अर्थात विष्णु, उ अर्थात महेश और म अर्थात ब्रह्मा, इस प्रकार ऊँ का अर्थ हुआ जिसमें ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनों देवताओं का वास है।

692. **अःफट्मन्त्रा** – अः फट् मन्त्र वाली। फट् शब्द फाड़ने अर्थ में है जिसके कारण इस शब्द का प्रयोग शत्रुओं का अनिष्ट करने के लिये होता है।

693. **अक्षाक्षरविभूषिता** – मातृका अक्षर से विभूषित। अक्ष का अर्थ अ से लेकर क्ष तक के सभी मातृका वर्ण। ज्ञान रूपी अक्षर से विभूषित। इन्द्रियों और आत्मा (चैतन्य) से विभूषित। अक्षर का अर्थ है आत्मा अर्थात चैतन्य।

694. **अमन्त्रा** – जो गोपनीय या रहस्यपूर्ण बात की तरह नहीं है अर्थात प्रकट या प्रत्यक्ष है। ललिता सहस्रनाम में एक शब्द आया है आबालगोपविदिता अर्थात जिसे कम पढ़े लिखे लोग या मूर्ख लोग भी जानते हैं। हर व्यक्ति ''मैं'' बोलता है जो आत्मा के लिए ही बोल रहा होता है। आत्मा के रूप में सबको विदित है। जगत या विश्व भी सबको प्रत्यक्ष है जो देवी का ही एक रूप है। मन्त्र का अर्थ है गोपनीय बात या रहस्यपूर्ण बात। मन्त्र का अर्थ वैदिक मन्त्र भी दिया गया है। जो वैदिक मन्त्र के स्वरूप में नहीं है अर्थात तान्त्रिक मन्त्र के स्वरूप में है। अ का एक अर्थ विष्णु, शिव भी दिया गया है। जो भगवान विष्णु या शिव के मन्त्र के स्वरूप वाली हैं। मनन में नहीं आने वाली अर्थात जो बुद्धि या मन के व्यापार से परे है। भगवान विष्णु के मन्त्र के स्वरूप वाली। अ अर्थात विष्णु, ब्रह्म। ब्रह्म–मन्त्र स्वरूपा।

695. **मन्त्ररूपा** – मन्त्र स्वरूप वाली। मन्त्र की रचना करने वाली। मन्त्र दिखाने वाली अर्थात साक्षात्कार कराने वाली। रूपयति का अर्थ है रचना करना, दिखाना। मन्त्र है ज्ञापक जिनका अर्थात मन्त्र से जिनका बोध होता है। रूप का एक अर्थ ज्ञापक भी होता है।

696. **पदशोभासमन्विता** – पद अर्थात विशेष स्थान या उच्च स्थान की शोभा से युक्त। पैरों की शोभा से युक्त उत्तम पैरों वाली ये अर्थ भी हो सकता है।

697. **प्रणवोकाररूपा** – जो संसार सागर से पार कराने के लिये नौका के रूप वाली है। प्र अर्थात प्रकृति अर्थात संसार सागर। णव अर्थात नव अर्थात नाव। प्रणव रूपी ऊँकार के स्वरूप वाली। जो प्राणों को परमात्मा में लीन करा दे वह प्रणव है। प्राणान् परमात्मनि प्रणाययति इति प्रणवः। जो जपने वाले को बलपूर्वक मोक्ष पर ले जाये। प्र अर्थात प्रकर्षेण अर्थात बलपूर्वक, ण अर्थात न अर्थात नयति अर्थात लेजाना, व अर्थात मोक्ष। जो सांसारिक जीवन में दुःख कलह दूर कर मोक्ष तक पहुँचा देता है। प्र अर्थात प्रपंच अर्थात दुःख/कलह, न अर्थात नहीं, व अर्थात युष्मान् (तुम लोगो के लिये)।

698. **प्रणवोच्चारभाक्** – ओम् के उच्चारण को भोगने वाली अर्थात् उसमें रहने वाली। ओम् की ध्वनि में रहने

वाली। ओम् के उच्चारण को धारण करने वाली। प्रणव का उच्चारण करके बोली जाने वाली अर्थात पुकारी जाने वाली। ऊँ बोलकर उन्हें पुकारा जाता है।

699. **ह्रींकाररूपा** – ह्रींकाररूप वाली या ह्रीं इस बीजमन्त्र के रूप वाली। ह्रीं को 'देवी–प्रणव' कहते है। यह काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी आदि अनेक महा–विद्याओं का और अन्य देवताओं तथा बटुक भैरव आदि का भी वीज–मन्त्र अर्थात् सूक्ष्म शाब्दिक स्वरूप है। इसे माया बीज भी कहते है। इस बीज में सन्निहित वर्ण हैं– 'ह्+र्+ई+म्'। इन वर्णों के तात्पर्यों से ही वीज के पूर्ण तात्पर्य का पता मिलता है। 'ह'– कार– प्राण–वीज है, जिससे सृष्टि–क्रिया होती है। इसकी छः ऊर्मियाँ हैं– बुभुक्षा, पिपासा, मोह, मद, जरा और मृत्यु। रेफ या 'र'–कार अग्नि वा तैजस वीज है। इसी से दीप्त होकर प्राण या चेतना गतिशील होती है। इसके चार गुण है– रेफोत्था गुणाश्चत्वार एव च। 'ई– कार षट्– गुण का द्योतक है। इन गुणों के नाम हैं– मन, बुद्धि, अहंकार, चित्त, संघात, चेतना। अर्ध 'म'–कार या नाद–बिन्दु से घनीभूत परा–शक्ति के विकास या संसृति का बोध होता है। इस मन्त्र का अर्थ है उत्पत्ति, स्थिति और संहार करने वाली।

700. **ह्रीकांरी** – ह्रीं का उच्चारण करने वाली। उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय करने वाली। ह का अर्थ है उत्पन्न करना, र अर्थात रवण अर्थात involution अर्थात नाश, ई अर्थात पालना, म् अर्थात दुःखनाश। ह्रीं बीज स्वरूपा।

701. **वाग्वीजाक्षरभूषणा** – वाग्वीजाक्षर (ऐं) है आभूषण जिनका।

702. **हृल्लेखा** – ज्ञानियों/भक्तों के हृदय में निवास करने वाली। ह्रींकाररूप वाली। हृदय में लेखित या विराजमान है जो। हृदय में प्रकाश स्वरूपा अर्थात् बुद्धि स्वरूपा। लेखा, रेखा एवं कला (प्रकाश या सौन्दर्य) पर्यायवाची है। कुछ लोगों के अनुसार बुद्धि मस्तिष्क में रहती है एवं कुछ के अनुसार हृदय में रहती है। लेख देवता को भी कहते है क्योंकि उनके लेख (चित्र) बनाये जाते है। हृदय की अधिष्ठात्री देवी। अधिष्ठात्री देवी अर्थात् उस स्थान में स्वामिनी के रूप में रहकर उसे शक्ति देकर उस स्थान को क्रियाशील (Functional) बनाती है एवं उस स्थान की रक्षा करती है। अधिष्ठात्री देवी उस स्थान या वस्तु की प्रवृत्ति या निवृत्ति का कारण है। शरीर के किसी अंग के पक्षाघात–ग्रसित होने का तात्पर्य है कि उस अंग की अधिष्ठात्री देवी उसे शक्ति नहीं दे रही हैं। अधिष्ठात्री देवी उस स्थान को अपनी शक्ति देती है अतः उपासक को भी शक्ति देती है। हृदय से निकली रेखा अर्थात् मार्ग स्वरूपा जो परमात्मा तक जाता है। तात्पर्य है हृदय में स्थित जीवात्मा को परमात्मा से जोड़ने वाली। रमणीय देव अर्थात शिव की शक्ति स्वरूपा। हृल्लेख + आ, आ का एक अर्थ है शक्ति। ह्रीं का उच्चारण। ह्रीं का उच्चारण करने वाली। हृल्लेखा+आ, आ का अर्थ है देना अर्थात करना अर्थात ह्रीं का उच्चारण करने वाली।

703. **सिद्धियोगा** – शुभ तिथि, शुभ वार और नक्षत्र के योग से बनने वाले सिद्धि योग स्वरूपा जैसे सर्वार्थसिद्धियोग, अमृतसिद्धियोग। इस योग वाले दिनों में साधना करने से या काम करने से सफलता मिलती है।

704. **हृतपद्मासनसंस्थिता** – भक्तों के हृदय कमलरूपी आसन में भलीभाँति विराजमान। भक्तों के हृदय में उत्तम पद्मासन को लगाकर बैठने वाली।

705. **वीजाख्या** – वीज संज्ञा (नाम) वाली। वीज का अर्थ कारण होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ जगत का कारण जिसका नाम है। वीज मन्त्र या सबकी कारण के रूप में जो जानी जाती है।

706. **नेत्रहृदया** – नेत्र और हृदय में शक्ति रूप में या अंश रूप में विराजमान। हृदय से भी देखने वाली। ज्ञानयुक्त हृदय वाली। नेत्र का एक अर्थ ज्ञान भी होता है। नेत्र जैसे हृदय वाली। हृदय से भी उतनी देखती हैं

जितनी नेत्र से। ज्ञान रूपी हृदय वाली। भक्तों को अपने हृदय में ले जाने वाली। नयति अर्थात ले जाना। नयति से नेत्र बना है।

707. **ह्रींवीजा** – ह्रीं बीज वाली अर्थात जिनके मन्त्र में ह्रीं बीज है। ह्रींवीजा। ह्रीं बीज स्वरूप वाली।

708. **भुवनेश्वरी** – समस्त भुवनों की स्वामिनी। चौदह भुवनों से ऊपर रहकर जो चौदह भुवनों पर शासन करती है। ईश् धातु में वरच् प्रत्यय लगाने से ईश्वर शब्द बनता है जो स्त्रीलिंग में ईश्वरी है। यह प्रत्यय स्वभाव वाले कर्ता अर्थ में आता है। ईश्वर का अर्थ है शासन करना जिनके स्वभाव में है अर्थात स्वाभाविक रूप से शासनकर्ता। ईश् में वर (श्रेष्ठ) जोड़ने से ईश्वर का अर्थ निकाले तो ईश्वरी का अर्थ होगा जो शासन करने के साथ साथ श्रेष्ठ गुणों अर्थात दिव्यगुणों से भी युक्त है। गीता के 16 वें अध्याय में बताए गए दैवी गुण ही श्रेष्ठ या दिव्यगुण हैं। ईश कहने से यह आवश्यक नहीं है कि शासन करना उसका स्वाभाविक गुण है अर्थात उसके खून में ही ऐसी विशेषता है। ईश से यह भी स्पष्ट नहीं होता कि शासन करने वाला अच्छे गुणों से युक्त भी है। दुष्ट शासक या राजा ईश तो हैं पर ईश्वर नहीं है। भुवनेश्वरी का एक अन्य अर्थ है भुवनों के ऐश्वर्य (शक्ति + सम्पन्नता) की स्वामिनी। सभी भुवनों की आराध्या।

709. **क्लींकामराजा** – जो कामराज क्लीं बीज के रूप में है।

710. **क्लिन्ना** – दया भाव से युक्त। आर्द्र स्वरूप वाली। क्लिन्न का अर्थ होता है गीला जो दया को दिखाता है। गीलापन अर्थात करुणा से भीग जाना। शीतल गुण वाली अर्थात स्नेह गुण से युक्त। जिस प्रकार सूखे पेड़ में पानी डालने से वह हरा भरा हो जाता है उसी प्रकार दया या करुणा से मुर्झाये चेहरे प्रसन्न हो जाते हैं अर्थात हरे भरे हो जाता हैं अतः दया या करुणा का स्वरूप जल वाला किया गया है।

711. **चतुर्वर्गफलप्रदा** – चारों वर्ग (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) के फल को देने वाली।

712. **क्लींक्लींक्लींरूपिकादेवी** – काम बीज (क्लीं) के रूप वाली दिव्य शक्ति स्वरूपा।

713. **क्रींक्रींक्रीनामधारिणी** – क्रीं क्रीं क्रीं रूपी नाम को धारण करने वाली। काली के बीज मन्त्र, उसके नाम को धारण करने वाली।

714. **कमलाशक्तिवीजा** – लक्ष्मी जी के शक्ति बीज (श्रीं) स्वरूपा। कमला शक्ति की बीज स्वरूपा।

715. **पाशांकुशविभूषिता** – पाश और अंकुश नामक आयुध से सुशोभित।

716. **श्रींश्रींकारामहाविद्या** – श्रीं श्रीं बीज के स्वरूप वाली महाविद्या अर्थात ऐसी महाविद्या जिसका स्वरूप श्रीं श्रीं है। श्रीं श्रीं स्वरूप होने के कारण महाविद्यारूपा। महाविद्या का अर्थ है वह मन्त्र जो ब्रह्म को प्राप्त करा दे। महाविद्या अर्थात सभी अनर्थो का नाश करने वाली। महाविद्या अर्थात भोग और मोक्ष दोनों को देने वाली।

717. **श्रद्धा** – आदर पूर्ण आस्था या विश्वास स्वरूपा जैसे गुरू के प्रति श्रद्धा। किसी पर किया जाने वाला विश्वास, भक्ति या आस्था श्रद्धा है। आदर से अर्थात आदरपूर्वक देवता या गुरू के पीछे लग जाना अर्थात उनकी बात मान लेना या स्वीकार कर लेना श्रद्धा है। सम्मान की भावना सहित देवता या गुरू की किसी भी बात को स्वीकार कर लेना श्रद्धा है। विश्वास का आधिक्य श्रद्धा है। इसमें जैसा बोला जाता है ज्यों का त्यों बिना सन्देह के स्वीकार कर लिया जाता है जैसे कहा गया कि हनुमान जी ने सूर्य निगल लिया, श्रद्धावान व्यक्ति इसे स्वीकार कर लेगा। शास्त्रों में कही गई बातों में विपरीत बुद्धि न होना अर्थात कोई सन्देह नहीं करना, ज्यों का त्यों मान लेना। वेदान्त सार में कहा गया कि गुरू बताए गए वेदान्त वाक्यों के प्रति अति विश्वास रखना श्रद्धा है।

718. **श्रद्धावती** – श्रद्धा से युक्त। आस्था और विश्वास से युक्त। शिव के प्रति आदर, सम्मान, स्नेह के भाव से

या पूज्य भाव से युक्त। आदर, सम्मान और स्नेह के भाव से युक्त। पूज्य भाव से युक्त, चित्त की प्रसन्नता से युक्त। प्रबल या उत्कट इच्छा से युक्त।

719. **ऊँऐंक्लीं.ह्रींश्रींपरा** – ऊँऐंक्लींह्रींश्रीं इन बीज मन्त्रों में स्थित अर्थात इनसे युक्त। ऊँऐंक्लींह्रींश्री के जप में लगी हुई। ऊँऐंक्लींह्रींश्री से युक्त। यहाँ परा का अर्थ है युक्त।

720. **क्लींकारीपरमाकला** – क्लीं इस बीज रूप में श्रेष्ठ कला वाली अर्थात श्रेष्ठ स्वरूप या रूप वाली। क्लीं का उच्चारण करने वाली सर्वश्रेष्ठ शक्ति के रूप में। क्लीं रूप वाली आदि शक्ति की उत्तमोत्तम कला (अंश)। कला का अर्थ शक्ति भी होता है।

721. **ह्रींक्लींश्रींकाररूपा** – ह्रींक्लींश्रीं के रूप वाली अर्थात ह्रींक्लींश्रीं देवी का स्वरूप है।

722. **सर्वकर्मफलप्रदा** – सभी कर्मों के फल को देने वाली।

723. **सर्वाढ्या** – सभी प्रकार की सम्पत्तियों से भरपूर। सभी शक्तियों से भरपूर। आढ्य का अर्थ है सम्पन्न। आढ्या का अर्थ है सम्पन्न। सभी के द्वारा अच्छी प्रकार से ध्यान करने योग्य। आ + ध्या ये आध्या या आढ्या बनता है।

724. **सर्वदेवी** – सभी के द्वारा स्तुत्य। दिव् धातु का एक अर्थ स्तुति करना है। अतः देवी का अर्थ स्तुत्य है। देवी का अर्थ व्यवहार करने वाली अर्थात क्रिया करने वाली अर्थात प्रेरित करने वाली भी है। दिव् धातु का एक अर्थ व्यवहार करना भी है। सभी को कार्य करने के लिए प्रेरित करने वाली। सर्व का एक अर्थ शिव भी है। शिव को उनके कर्तव्य कर्म के लिए प्रेरित करने वाली। सभी शक्तियों में श्रेष्ठ शक्ति अर्थात श्रेष्ठ देवी। जो सभी प्रकार से चमक वाली है। देवी अर्थात चमक से युक्त। सभी कुछ देने वाली। देवी या देवता अर्थ ही हाता है कि जो दूसरों को कुछ दे। सभी में द्योतित होने वाली। सभी देवों में द्युति के रूप में चमकने वाली। सभी देवियों के स्वरूप में या सभी देवियों की आत्म स्वरूपा।

725. **सर्वसिद्धिप्रदा** – सभी प्रकार की सिद्धियों को प्रदान करने वाली। अणिमा, लघिमा आदि सभी अष्ट सिद्धियों को अपने उपासकों को देने वाली। सिद्धि का तात्पर्य अतिप्राकृतिक शक्त्यों से है। सिद्धि का अर्थ मोक्ष भी होता है जो सालोक्य, सामीप्य, सार्ष्टि, सारुप्य, सायुज्य (कैवल्य) पाँच प्रकार को होता है। सभी प्रकार के मोक्षों को देने वाली।

726. **सर्वज्ञा** – सब कुछ जानने वाली। सबको जानने वाली। भगवान शिव द्वारा ज्ञात या शिव को जानने वाली। सर्व का एक अर्थ है शिव।

727. **सर्वशक्तिश्च** – सभी प्रकार की शक्तियों के स्वरूप वाली। चित्शक्ति, आनन्दशक्ति, इच्छाशक्ति, ज्ञानशक्ति, क्रियाशक्ति आदि शक्ति के अनेक रूप हैं। सर्वशक्तिसम्पन्न।

728. **वाग्विभूतिप्रदायिनी** – वाणी का वैभव प्रदान करने वाली अर्थात अच्छा बोलना, अच्छी भाषण शैली आदि देने वाली। अच्छी वाक् शक्ति देने वाली। अपने भक्तों को वाणी की अदभुत विभूति प्रदान करने वाली। यहाँ वाणी की विभूति का अर्थ है वाणी की शक्ति।

729. **सर्वमोक्षप्रदादेवी** – सभी भक्तों को मोक्ष प्रदान करने वाली। सभी प्रकार के मोक्षों को देने वाली यह अर्थ भी कर सकते हैं। सालोक्य, सार्ष्टि, सायुज्य, सामीप्य, कैवल्य इन सभी प्रकार के मोक्षों को प्रदान करने वाली। प्रदान अर्थात स्थाई दान अर्थात हमेशा के लिए दिया जाना।

730. **सर्वभोगप्रदायिनी** – सभी प्रकार की ऐन्द्रिक सुखानुभूति को प्रदान करने वाली। सुख देने वाले सभी सांसारिक पदार्थों कों देने वाली। शब्द, स्पर्श आदि पाँच विषय, शरीर का आराम, मान (respect), नाम की

बड़ाई, इन के द्वारा सुख लेने का नाम भोग है। भोगों के लिये पदार्थ, रुपये पैसे, मकान आदि का जो संग्रह है, वह ऐश्वर्य है। सांसारिक सुख देने वाले पदार्थों को भी भोग कह दिया जाता है। सभी भक्तों को भोग प्रदान करने वाली। भक्तों को सभी प्रकार के भोग देने वाली। पाँचों इन्द्रियों से और मन से जो भोग भोगा जाता है उसे देने वाली।

731. **गुणेन्द्रवल्लभा** – गुणों (सद्‌गुणों) में श्रेष्ठ भगवान शिव या भगवान विष्णु की प्रियतमा। वल्लभ का अर्थ होता है अतिशय प्रिय। गुणों के कारण इन्द्र के द्वारा सम्मानित या आदरणीय। देवी के गुण इतने अच्छे और श्रेष्ठ है कि उनसे प्रभावित होकर इन्द्र देवी की आराधना करते है। भगवान (श्रेष्ठ गुण या अच्छे गुण जिनमें हैं अर्थात भगवान) हैं प्रिय जिसे। यहाँ भगवान से शिव अर्थ ले सकते हैं। इन्द्र का अर्थ है श्रेष्ठ या अच्छा। श्रेष्ठ गुणों वाला प्रिय है जिनको यह अर्थ भी निकल सकता है। विष्णु या शिव की प्रियतमा। सभी गुणों में श्रेष्ठ जो हैं वह हैं विष्णु। इन्द्र का अर्थ है श्रेष्ठ।

732. **वामा** – शिव के वाम (बांया) स्थान को सुशोभित करने वाली। वामा स्वरूपा। स्त्रियों के लिए भी वामा शब्द प्रयोग किया जाता है। वमति स्नेहम् इति वामा अर्थात जो स्नेह का उद्‌गरण करे अर्थात अपने भीतर से निकाले वह वामा हैं। स्नेह निकालने वाली या स्नेह प्रकट करने वाली। उल्टा आभास कराने की या उनकी धारणा बनवाने वाली शक्ति स्वरूपा। शरीर को आत्मा समझने की धारणा उलटी धारणा ही है जिसे करने वाली कोई तो शक्ति ही है। चेतना की इस अवस्था में व्यक्ति शरीर को तो आत्मा समझता ही है बल्कि भिन्नता अर्थात नानात्व या द्वैत को सत्य समझता है। अपने भीतर से विश्व को वमन करने वाली अर्थात निकालने वाली या पैदा करने वाली।

733. **सर्वशक्तिप्रदायिनी** – सभी प्रकार की शक्तियों को प्रदान करने वाली। चित्‌शक्ति, आनन्दशक्ति, इच्छाशक्ति, ज्ञानशक्ति और क्रियाशक्ति ये पाँच प्रकार की शक्तियाँ बताई गई हैं। एक अन्य मत के अनुसार सृष्टि, स्थिति, संहार, तिरोधान और अनुग्रह ये पाँच प्रकार की शक्तियाँ हैं। एक अन्य मत के अनुसार सरस्वती, लक्ष्मी और काली ये तीन प्रकार की शक्तियॉ बताई गयी हैं। ब्रह्मा, विष्णु, महेश या रजोगुण, सतोगुण और तमोगुण की शक्ति यह भी शक्ति का एक वर्गीकरण है। एक अन्य मत के अनुसार अन्तरंग शक्ति, बहिरंग शक्ति और तटस्थ शक्ति ये तीन प्रकार की शक्तियाँ बताई गयी हैं। भौतिक शक्ति, मानसिक शक्ति और आध्यात्मिक शक्ति यह भी शक्ति का एक वर्गीकरण है।

734. **सर्वानन्दमयी** – सभी प्रकार के आनन्दों से परिपूर्ण। सभी प्रकार के आनन्दों के स्वरूप वाली। तैत्तरीय उपनिषद में 11 प्रकार के आनन्द बताऐ गये हैं। वेदों का अध्ययन कर लेने वाले सदाचारी एवं सुदृढ इन्द्रियों वाले एक युवा राजा, जो शासन करने में अतिकुशल तथा सब प्रकार से बलवान हो अर्थात सार्वभौमनृपति हो, को प्राप्त होने वाले आनन्द को भूलोक का आनन्द या मानुषानन्द कहते हैं। उसका सौ गुना आनन्द मनुष्यगन्धर्वों को होता है। उसका भी सौ गुना आनन्द देवगन्धर्वों को होता है। उसका भी सौ गुना आनन्द चिरस्थाई पितृलोक को प्राप्त हुए पितरों को होता है, उसका भी सौ गुना आनन्द आजानज नामक देवों का आनन्द होता है, उसका भी सौ गुना आनन्द कर्मदेवों का होता है उसका भी सौ गुना आनन्द एकदेवता का होता है। उसका भी सौ गुना आनन्द एक इन्द्र का होता है, उसका भी सौ गुना आनन्द एक बृहस्पति को होता है, उसका भी सौ गुना आनन्द एक प्रजापति को होता है। प्रजापति के आनन्द का सौ गुना एक ब्रह्मा का आनन्द होता है और उससे भी ऊपर सर्वोपरि आनन्द ब्रह्मलोक का आनन्द होता है। इस प्रकार मानुषानन्द, मनुष्यगन्धर्व का आनन्द, देवगन्धर्व का आनन्द, स्थाई पितरों का आनन्द, आजानज नामक देवों का आनन्द, कर्मदेवों का आनन्द, देवता का आनन्द, इन्द्र का आनन्द, बृहस्पति का आनन्द, ब्रह्मा का आनन्द, ब्रह्मलोक का आनन्द। सम्पूर्ण आनन्द स्वरूपा, पूर्ण तुष्टि स्वरूपा (व्यष्टियों में भी पूर्ण है)। कश्मीर के त्रिक दर्शन के अनुसार छह प्रकार के आनन्द होते हैं जो हैं –

निजानन्द, निरानन्द, परानन्द, ब्रह्मानन्द, महानन्द और चिदानन्द (जगतानन्द)। इनमें से जगदानन्द को छोड़ शेष सारे आनन्द अधूरे माने जाते हैं क्योंकि उन सब में विश्वमयता का बहिष्कार पाया जाता है। जगदानन्द की भूमिका में विश्वमयता किसी भी प्रकार से हेय नहीं, अतः इस भूमिका को प्राप्त करने के लिए भी विश्वमयता को दुखपूर्ण या भ्रान्ति समझकर छोड़ देने की कोई आवश्यकता नहीं है। इस आनन्द की भूमिका में रममाण आत्मा के लिए विश्वमयता भी वैसी ही आनन्दमयी है जैसा कि विश्वोत्तीर्णता।

735. **सर्वसिद्धिप्रदायिनी** – सभी कार्यों में सफलता देने वाली। अपने उपासकों के द्वारा किये जा रहे सभी कार्यों में सफलता देने वाली। सिद्धि का एक अर्थ कार्य में सफलता भी होता है। सर्वसिद्धिकरी का अर्थ है – भक्तों के सभी कार्यों में सफलता देने वाली। सिद्धि का अर्थ कार्य में सफलता भी होती है। अठारह प्रकार की सिद्धियॉ देने वाली। अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व अनूर्मिमत्वम् (भूख प्यास नहीं लगती) दूरश्रवण (दूर से ही सुनना), दूरदर्शन (दूर से ही देखना), मनःजवः (जहाँ विचार हुआ वहाँ चले गये) कामरूप (इच्छानुसार रूप धारण कर लेना), परकायाप्रवेश, स्वच्छन्द मृत्यु, देवानाम् सह क्रीडा अनुदर्शनम्, यथासंकल्प संसिद्धि, आज्ञा अपराजिता गति (उनके आदेश का उल्लंघन नहीं होगा)। भागवत में इस प्रकार की 18 सिद्धियाँ बताई गई हैं। एक अन्य स्थान पर 16 प्रकार की सिद्धियाँ बताई गई हैं जो हैं – वाक् सिद्धि, दिव्य दृष्टिसिद्धि, प्रज्ञासिद्धि (ज्ञान से सम्बन्धित सारे विषयों को अपनी बुद्धि में समेट लेने वाला प्रज्ञावान कहलाता है, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से सम्बन्धित ज्ञान के साथ साथ भीतर एक चेतना पुंज जाग्रत रहता है। प्रज्ञा का तात्पर्य मेधा अर्थात स्मरण शक्ति, बुद्धि ज्ञान इत्यादि), दूरश्रवण सिद्धि, जलगमनसिद्धि, वायुगमन सिद्धि, अदृश्यकरणसिद्धि, विशोका सिद्धि (अनेक स्थानों पर अलग अलग रूप धारण करना), देवक्रियानुदर्शनसिद्धि, कायाकल्पसिद्धि, सम्मोहन सिद्धि, गुरूत्वसिद्धि, पूर्णपुरुषत्वसिद्धि (अद्वितीय पराक्रम, निडर एवं बलवान होना), सर्वगुणसम्पन्नसिद्धि, इच्छामृत्यु सिद्धि, अनूर्मिसिद्धि।

736. **सर्वचक्रेश्वरी देवी** – सभी यन्त्रों की मुख्य आराध्या के रूप में चमकने वाली। देवी अर्थात चमकने वाली और चक्र का अर्थ है यन्त्र। सभी प्रकार की सेनाओं की ईश्वरी के रूप में चमकने वाली। ईश्वरी अर्थात संचालिका या आज के शब्दों में कमाण्डर (commandar)। चक्र अर्थात सेना।

737. **सर्वसिद्धेश्वरी** – सभी सिद्धों की ईश्वरी अर्थात आराध्या। सभी सिद्धों का पालन पोषण करने वाली, उन्हें रास्ता दिखाने वाली।

738. **सर्वप्रियंकरी** – सभी प्रकार के प्रिय कार्यों को करने वाली। प्रिय कार्य अर्थात जिसमें खुशी मिले। सभी का प्रिय करने वाली ऐसा अर्थ भी हो सकता है।

739 **सर्वसौख्यप्रदायिनी** – सभी प्रकार के सुखों को प्रदान करने वाली। आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक तीनों प्रकार के सुखों को देने वाली।

740. **सर्वानन्दप्रदादेवी** – सभी प्रकार के आनन्द को प्रदान करने वाली दिव्य शक्ति। शैव दर्शन में परात्रिंशिका ग्रन्थ में आनन्द के 6 प्रकार बताये गये हैं – निजानन्द, निरानन्द, परानन्द, ब्रह्मानन्द, महानन्द, जगतानन्द (चिदानन्द)। तैत्तरीय उपनिषद के अनुसार पात्रता के अनुसार 11 प्रकार के आनन्दों को देने वाली। ललितासहस्रनाम की एक टीका में ब्रह्मानन्दा शब्द की व्याख्या करते समय आनन्द के 8 भेद बताये गये हैं जो हैं – विषयानन्द, वासनानन्द, निजानन्द, मिथ्यानन्द, आत्मानन्द, ज्ञानानन्द, ब्रह्मानन्द। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ आठों प्रकार के आनन्द को प्रदान करने वाली देवी। प्रदान अर्थात ऐसा दान जिसे वापस नहीं लिया सकता। अभिनव गुप्त ने आनन्द की आठ कोटियाँ मानी हैं, जो हैं – प्रागानन्द, निजानन्द, निरानन्द, परानन्द, ब्रह्मानन्द, महानन्द, चिदानन्द और जगदानन्द। प्रागानन्द आनन्दमय विश्व का प्रवेश द्वार है। स्वामी रामकृष्ण

परहंस ने विषयानन्द, भजनान्द एवं ब्रह्मानन्द इस प्रकार के तीन भेद किये हैं। एक स्थान पर प्रातिभासिक, व्यावहारिक एवं पारमार्थिक इस प्रकार के तीन भेद देखने में मिलें हैं।

741. **ब्रह्मानन्दप्रदायिनी** – ब्रह्मानन्द अर्थात परमानन्द को प्रदान करने वाली।

742. **मनोवांछितदात्री** – उपासकों को मनोवांछित फलों को देने वाली।

743. **मनोबुद्धिसमन्विता** – श्रेष्ठ मन और उत्तम बुद्धि से युक्त।

744. **अकारादिक्षकारान्ता** – अकार से लेकर क्षकार पर्यन्त अक्षरों के स्वरूप वाली।

745. **दुर्गादुर्गतिनाशिनी** – ऐसी दुर्गा जो दुर्गति नष्ट करने वाली है। मनुष्य की जितनी बाधायें, कष्ट होते हैं उन्हें दुर्गति कहते हैं। गरीबी, दरिद्रता, शत्रुओं से परेशान रहना, पितरों का निम्नलोकों में जाना यह सब दुर्गति है। दुर्गा का अर्थ है विपत्ति नाश करने वाली देवी। दुर्ग + आ, दुर्ग का अथ है विपत्ति एवं आ अर्थ है नाश करना। दुःखेन गम्यते इति दुर्गा अर्थात जिन्हें बड़ी कठिनाई से अर्थात तपस्या आदि करके पाया जाता है।

746. **पद्मनेत्रा** – कमल के समान गोल एवं सुन्दर नेत्र वाली। कमल सुन्दरता का प्रतीक है। गोल नेत्र अर्थात सब पर बराबर दृष्टि है। कोमल नेत्रों वाली। निर्लिप्त अर्थात पक्षपात रहित दृष्टि से सभी को देखने वाली।

747. **सुनेत्रा** – सुन्दर नेत्रों वाली। अच्छे भक्तों को अपने लोक में ले जाने वाली। अच्छे भक्तों को कृपादृष्टि से देखने वाली। नेत्र का अर्थ ज्ञान भी होता है। सुन्दर अर्थात श्रेष्ठ या सत्य ज्ञान देने वाली। सुनेत्र + आ, आ का अर्थ है देना।

748. **स्वधा** – स्वधा मन्त्र स्वरूप वाली। पितरों को उनका भक्ष्य पहुँचाने वाली। आत्मशक्ति को धारण करने वाली। स्वं (आत्मशक्तिम्) धारयति इति स्वधा। जिसने अपने आपको धारण किया है अर्थात् इनका आधार भी वे स्वयं ही है। विश्व की प्रत्येक चीज का कोई न कोई आधार अवश्य होता है किन्तु देवी ऐसी सत्ता है जिनका कोई दूसरा आधार नही है और ये स्वयं ही अपना आधार हैं। आत्म शक्ति स्वरूपा। प्रकृति स्वरूपा। सु+अ+धा। सु अर्थात् सुष्ठु अर्थात् अच्छी प्रकार से। अ अर्थात् अधिक। धा धातु का अर्थ पोषण करना भी होता है। इस प्रकार स्वधा का अर्थ हुआ अच्छी प्रकार से एवं अधिक रूप से पोषण करने वाली अर्थात् प्राणियों को जीवित एवं स्वस्थ रखने के लिए सभी आवश्यक पदार्थों को उपलब्ध कराने वाली। यह शब्द पित्रों के लिए रूढ़ हो गया अर्थात् पितरों का पोषण करने वाली अर्थ में रूढ़ हो गया। पितरों को जो अन्न से बना हुआ पिण्ड होता है उसे भी स्वधा कहते है। पितरों को यह अन्न देने वाली जो क्रिया है उस क्रिया को भी स्वधा कहते है।

749. **स्वाहा** – स्वाहा मन्त्र स्वरूप वाली। देवताओं को उनका भक्ष्य पहुँचाने वाली। अग्नि की पत्नी स्वाहा के साथ अभेद है जिनका। सुन्दर वाणी स्वरूपा या हृदय से निकली वाणीस्वरूपा। आह अर्थात जो कहा गया अर्थात वाणी। सत्यवाणी। सत्य वचन या श्रेष्ठ वचन स्वरूपा। सु = सुष्ठु, आ अर्थात् वचन। महान कीर्ति या महिमा स्वरूपा। भक्तों को महान कीर्ति या महिमा देने वाली। स्वाहा+आ, आ का अर्थ है देना। वैदिक कोष में स्वाहा का अर्थ महान कीर्ति, महिमा दिया गया है। उस क्रिया के स्वरूप वाली जिससे देवताओं को अन्न पहुँचाया जाता है। स्वाहा का अर्थ स्वामित्व या स्वत्व छोड़ना भी होता है। तात्पर्य हुआ अहंकार से रहित। जिस वस्तु के आप स्वामी है उसे पूर्ण रूप से त्याग देने वाली क्रिया स्वाहा है। वैदिक कोष में प्रियवक्ता या कल्याणवक्ता को भी स्वाहा कहा गया है। स्वाहा का अर्थ भी सुभाषित वचन भी किया गया है। स्वाहा+आ, आ का अर्थ है देना। सुभाषित वचन या कल्याण वचन देने वाली अर्थात् बोलने वाली।

750. **वषट्करी** – सबको अपने वश में या अधीन करने वाली। वषट् का अर्थ वश में करना, शत्रुओं की हिंसा करना या बन्धन को ढीला करना होता है। वश् धातु में अट् प्रत्यय लगाने से वशट् शब्द बनता है। वश कान्तौ

धातु होती है जिसमें कान्ति का अर्थ है इच्छा। अपनी इच्छानुसार संसार को अपना अनुगामी बनाने वाली अर्थात वश में करने वाली। संस्कृत व्याकरण के नियमानुसार श कभी कभी ष हो जाता है। देवताओं के लिए हविर्दान में प्रयुक्त होने वाले वषट् शब्द का उच्चारण करने वाली। कुछ देव–विशेषों को हविर्दान देते समय वषट् मन्त्र का उच्चारण करने का विधान है। व अर्थात ज्ञान। षट् अर्थात छः अर्थात छः प्रकार के आनन्द। जो ज्ञान स्वरूप है तथा अपने भक्तों को छः प्रकार के आनन्दों का उपभोग कराने वाली अर्थात इनका उपभोग कराके उससे पार सर्वोत्तम स्थिति में लाने वाली।

751. **स्ववर्गा** – स्वयं से उत्पन्न देवियों के समूह वाली। देवी ने अपने से बहुत सी अन्य देवियों को उत्पन्न किया जैसे ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, ऐन्द्री आदि–आदि। 64 योगिनियों को भी उत्पन्न किया है। ये देवियाँ इनकी सेवा में हमेशा उपस्थित रहती है। आवरण देवियाँ इन देवी के चारों ओर उपस्थित रहती है। अपने वर्ग की अकेली अर्थात इनके वर्ग का कोई नहीं है अर्थात असजातीय। उनकी जाति या आकृति का कोई नहीं है। अपने वर्ग के स्वरूप वाली। अपनों के स्वरूप को धारण करने वाली। पार्वती है तो शिव, लक्ष्मी हैं तो विष्णु, सरस्वती हैं तो ब्रह्मा।

752. **देववर्गा** – देवताओं के वर्गवाली अर्थात् देने वालों के समूह वाली। तात्पर्य हुआ कि देवी के पास देवताओं का समूह होता है या देवी देवताओं के समूह से घिरी हुई है। देववर्गा अस्या सा देववर्गा (देव समूह वाली अर्थात् जिनके साथ देव समूह रहता है)। असुरों के साथ युद्ध में देवी के साथ–साथ सेना के रूप में बहुत से देवता रहते है। देवताओं के वर्ग की श्रेणी में रहने वाली।

753. **चतुर्वर्गासमन्विता** – चतुर्वर्ग अर्थात धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष से सम्पूर्ण रूप से युक्त। आसमन्विता अर्थात आ (सम्पूर्ण रूप से) + समन्विता।

754. **अन्तःस्था** – हृदय में निवास करने वाली।

755. **वेशमरूपा** – घर या आश्रय रूपा। सभी इसी में रहते हैं। सारा ब्रह्माण्ड इनके भीतर है अतः यह सभी की घर या आश्रय हुई। सबको आश्रय देने वाली।

756. **नवदुर्गा** – नवदुर्गाओं के रूप में। शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कूष्माण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायिनी, कालरात्रि, गौरी और सिद्धिदात्री ये नौ दुर्गाओं के नाम हैं। चेतना के विकास की 9 अवस्था के स्वरूप वाली। 9 चक्रों में स्थित दुर्गम शक्ति स्वरूपा। दुर्गम अर्थात् जिसे जानना या प्राप्त करना कठिन है। योग में मूलाधार चक्र से लेकर सहस्रार चक्र तक 7 चक्र से प्रायः लोग अवगत हैं। सिर के 6 अंगुल ऊपर एवं 12 अंगुल ऊपर भी दो अतिसूक्ष्म चक्र है जिसे मिलाकर 9 चक्र हो जाते है। कुछ लोग प्लीहा (Spleen) के पास सूर्य चक्र एवं मस्तिष्क में ललना चक्र इन दो चक्रों को 9 चक्र के अन्तर्गत गिनते है। 9 ग्रहों से उत्पन्न संकट या कष्ट का नाश करने वाली। दुर्ग का अर्थ है संकट, विपत्ति, कष्ट या दुख। नवदुर्गा को मध्यमपदलोपी समास मानते हुए नवग्रहकारितदुर्गा शब्द लिख सकते है।

757. **नरोत्तमा** – मनुष्य जाति में सर्वश्रेष्ठ। जब मनुष्य रूप में अवतार लेती है तो दूसरे सभी मनुष्यों से गुणों में और शक्तियों में श्रेष्ठ हैं। वैरागी लोगों में सर्वश्रेष्ठ अर्थात सर्वाधिक वैराग्य वाली। न रमते विषयेषु इति नरः। ईश्वर में सभी गुण होते हैं अतः विरोधी गुण होने पर आश्चर्य नहीं करना चाहिये। तभी तो कहते हैं बिना पैर के चलता है, बिना आँख के देखता है। अन्यथा भी इच्छानुसार कोई भी रूप धारण कर सकता है। देवी के सभी रूप एक ही हैं।

758. **तत्वसिद्धिप्रदा** – वास्तविक सिद्धि देने वाली। सच्चिदानन्द ब्रह्म ही वस्तु हैं और बाकी सभी अवस्तु हैं।

परम ज्ञान या ब्रह्म–साक्षात्कार देने वाली। पॉच तत्वों की सिद्धि या सांख्य के 25 तत्वों की सिद्धि या शैव दर्शन के 36 तत्वों की सिद्धि प्रदान करने वाली।

759. **नीला** – नील पर्वत वाली अर्थात नील पर्वत में रहने वाली कामाख्या देवी स्वरूपा। नीलः अस्या अस्ति इति नीला। नील स्वरूप वाली। तारादेवी का रंग नीला है। नील सरस्वती का वर्ण नीला है। आकाश की शक्ति स्वरूपा। आकाश नीला है। आकाश की तरह सर्वव्यापक। तमोगुण स्वरूपा या तमोगुण वाली। संस्कृत में नीला का अर्थ काला भी होता है और काला रंग तमोगुण का प्रतीक है। सृष्टि के लिए तमोगुण भी आवश्यक है। यद्यपि तमोगुण को अच्छा नही माना जाता है किन्तु तमोगुण न हो तो प्राणियों को नींद नहीं आ सकती, हम वस्तुओं को ऊपर फेंके तो वे लौटकर नही आयेगी अर्थात् गुणत्वाकर्षण का कारण भी तमोगुण है। नींद से ऊर्जा आती है एवं व्यक्ति स्वस्थ रहता है तथा उसे सुख मिलता है। नीला रंग अर्थात् आकाश का रंग। जो आकाश की तरह सर्वेव्यापक है। नील सरस्वती देवी से जिनका अभेद है। इन्द्रनील अर्थात् नीलम मणि को धारण किये हुये। षट्चक्रनिरूपण ग्रन्थ में लाकिनी देवी का रंग नीला बताया गया है। षट्चक्रनिरूपण ग्रन्थ के अनुसार ये देवी नाभि अर्थात् मणिचक्र में रहती है। उस देवी के स्वरूप वाली या उससे अभेद है जिनका। नील नामक नवनिधि स्वरूपा या इस निधि से युक्त। नीला अस्या अस्ति इति नीला (नील निधि से युक्त)। मंगलकारी शब्द करने वाली अर्थात् देने वाली। नील का एक अर्थ मंगलघोष भी है। नील+आ का एक अर्थ है देना। विष के प्रभाव को नष्ट करने वाली। नील का एक अर्थ है विष। नील+आ, आ का एक अर्थ है नाश करना। कलंक का नाश करने वाली। नील का एक अर्थ है कलंक। पंचरात्रागम में नील शब्द को सूर्य, चन्द्र और अग्नि का प्रतीक बताया गया है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ सूर्य, चन्द्र और अग्नि स्वरूपा। सूर्य, चन्द्र और अग्नि की शक्ति स्वरूपा। नील + आ, एकाक्षरी कोष में आ का एक अर्थ है शक्ति।

760. **नीलपताकिनी** – नीले पताका से सुशोभित। इनके रथ या महल में ऐसी पताका होगी। मन पर विजयी ध्वजा फहराने वाली अर्थात मन पर विजय है जिनकी। नीला रंग आकाश का होता है जो अनन्त है। मन भी अनन्त है क्योंकि कहीं भी पहुँच जाता है अर्थात् नील शब्द से मन का भी बोध होता है। मंगल घोष के साथ विजयपताका फहराने वाली अर्थात् सर्वत्र विजय प्राप्त करने वाली। नील का अर्थ है मंगल घोष। नील नामक वानर योद्धा के साथ या उनकी मदद लेकर विजय पताका फहराने वाली अर्थात् जीत हासिल करने वाली। भगवान राम ने विजय प्राप्त की अर्थात उनकी शक्ति ने विजय प्राप्त की। भगवान राम ने जब लंका पर चढ़ाई की थी तो नल और नील नाम के दो वानरों ने समुद्र में पत्थर तैराकर सेना को पार कराया था। विष पर पताका फैराने वाली अर्थात् जहर को प्रभाव को नष्ट करने वाली।

761. **नित्यरूपा** – जिनका स्वरूप कभी नष्ट नहीं होता। नित्य अर्थात प्रतिदिन किये जाने वाले कर्मों के रूप वाली।

762. **निशाकारी** – रात्रि बनाने वाली अर्थात रात्रि को अस्तित्व में लाने वाली। चन्द्रमा की शक्ति स्वरूपा। निशा (अर्थात मोह या अज्ञान) को प्राणियों में पैदा करने वाली।

763. **स्तम्भिनी** – स्तम्भन (रोकना) करने वाली। त्रिलोकी का स्तम्भन करने वाली, ऑधी, तूफान आधि व्याधि का स्तम्भन करने वाली।

764. **मोहिनी** – मोहित करने वाली। मोह (अज्ञान) का अर्थ होता है शरीर को आत्मा समझना एवं शरीर से जुड़ी हुई वस्तुओं तथा प्राणियों में ममत्व होना। मोह का वास्तविक अर्थ अज्ञान है जिसकी परिणति आकर्षण में होती है। अनात्म वस्तुओं में आकर्षण पैदा करने वाली। पदार्थों को वास्तविक रूप में न देख पाना भी मोह या अज्ञान है अर्थात पदार्थों के बाहरी आवरण को ही सत्य मान लेना एवं उसके सार को न देख पाना अज्ञान या

मोह है। इस अज्ञान का ही परिणाम वस्तुओं और व्यक्तियों में आकर्षण होता है। सभी पदार्थों का सार है चेतन तत्व।

765. **वशंकरी** – वश में करने वाली। अपनी इच्छानुसार सामने वाले व्यक्ति या पदार्थ से काम लेना वश में करना है।

766. **उच्चाटी** – उच्चाटन करने वाली। किसी के चित्त को कहीं से हटाना उच्चाटन है। चित्त का न लगना, अनमनापन, विरक्ति, उदासीनता, मन न लगना, मन का उच्चाट हो जाना उच्चाटन है।

767. **उन्मादी** – दुष्टों को/शत्रुओं को पागल बना देने वाली अर्थात उनकी मति खराब कर देने वाली। मति खराब होने से वह स्वयं ऐसा कार्य कर देता है जिससे नष्ट हो जाता है। उनमें अहंकार पैदा हो जाता है और अहंकार से व्यक्ति नष्ट हो जाता है। उन्माद का अर्थ चित्तविक्षिप्तता या पागलपन भी होता है। इस सन्दर्भ में अर्थ होगा दुष्टों का चित्तविक्षिप्त करने वाली या उन्हें पागल बनाने वाली। देवी ने असुरों की बुद्धि ऐसे घुमा दी कि मधुकैटभ ने अपनी मृत्यु का उपाय बता दिया एवं शुम्भ निशुम्भ सहित सभी असुर भी युद्ध में मारे गये। वे नहीं समझ पाये कि पराशक्ति से वे जीत नहीं पाएंगे। कामदेव के पाँच बाणों में एक बाण है उन्मादन जिसका अर्थ है अधिक उत्तेजित करना। अधिक प्रसन्नता देने वाली। उन्मादयति इति उन्मादी। माद्यति का अर्थ है प्रसन्न होना और मादयति का अर्थ है प्रसन्न करना। उत् का अर्थ है अधिक। मदि हर्षे धातु होती है। उन्मादयति अर्थात हर्ष का आधिक्य देने वाली। सामान्य न रहना, उससे अधिक हो जाना उन्माद है। उन्मादः अस्य अस्ति इति उन्मादः, स्त्रीलिंग में उन्मादी। अत्यन्त प्रसन्न एवं उत्तेजित होना जैसे नियन्त्रण खोने पर व्यक्ति कुछ लहराने सा लगता है। उत् अर्थात ऊपर, मदि हर्षे धातु होती है।

768. **कर्षिणी** – भक्तों के पापों को खींचने वाली अर्थात खींच कर नष्ट करने वाली। सभी का आकर्षण करने वाली। आकर्षण विद्या से विभूषित। भक्तों के कर्म संस्कारों को खींचने वाली अर्थात् खींचकर नष्ट करने वाली। असुरों के प्राणों को खींचने वाली।

769. **मातंगी** – मतंग मुनि के यहाँ कन्या के रूप में उत्पन्न हुई। जिसके अंग मदशील हैं। मतम् गमयति इति मातंगी। मतम् का अर्थ है विचार और गमयति का यहाँ पर अर्थ हुआ अभिव्यक्त करना। विचार को अभिव्यक्त कराने वाली मातंगी है अर्थात मातंगी का अर्थ है वैखरी वाणी। One of the great goddness, she represents playfulness and the power to transform consciouness.

770. **मधुमत्ता** – मधु से मस्त हो जाने वाली। मधु (शराब) पीने से प्रसन्नता या आनन्द से भरी हुई, फूली हुई। देवताओं को मदिरा सदृश पदार्थ प्रिय होता है। सोमरस को भी मधु कह सकते हैं। मत्त अर्थात प्रसन्न या आनन्द से भरा हुआ।

771. **अणिमा** – उस शक्ति के रूप में जिसके कारण कोई भी व्यक्ति अणु के समान सूक्ष्म हो जाता है। अणु या सूक्ष्म रूप वाली। अणिमा सिद्धि में शक्ति रूप से विराजमान। अणिमा सिद्धि का कारण अर्थात अपने भकतों को यह सिटि देने वाली। अणिमा सिद्धि स्वरूपा। अणिमा सिद्धि का कारण अर्थात इस सिद्धि को उत्पन्न करने वाली या उपासकों को देने वाली। अणिमा सिद्धि में शक्ति रूप में विराजमान। शब्द के आगे 'मे विराजमान' या 'का कारण' लगाने शब्द के अन्य अर्थ आ जाते हैं। अणि का अर्थ सीमा, कोना, सूक्ष्मता दिया गया है। अणिम् मीयते अनया इति अणिमा अर्थात जो प्रत्येक चीज की सीमा को जानती है। हर चीज की सूक्ष्मता जाानने वाली। शैव दर्शन के अनुसार – Anima is the power of assimilating the entire manifestation to Chit which ourself.

772. **लघिमा** – उस शक्ति के रूप में जिसके कारण कोई भी व्यक्ति अत्यन्त हल्का हो जाता है। हल्के रूप वाली। लघिमा सिद्धि में शक्ति रूप से विराजमान। लघिमा सिद्धि का कारण अर्थात अपने भकतों को यह सिटि देने वाली। लघिमा सिद्धि स्वरूपा। लघिमा सिद्धि का कारण अर्थात इस सिद्धि को उत्पन्न करने वाली या उपासकों को देने वाली। लघिमा सिद्धि में शक्ति रूप में विराजमान। शब्द के आगे 'मे विराजमान' या 'का कारण' लगाने शब्द के अन्य अर्थ आ जाते हैं। लघु या ह्रस्व होने का भाव स्वरूपा। लघिमा+आ, आ का अर्थ है देना। लघु होने के भाव को देने वाली अर्थात उपासकों को अहंकार रहित करने वाली। शैव दर्शन के अनुसार Laghima is the power of unity of all i.e. discarding all sense of diversity.

773. **सिद्धा** – पूर्ण स्वरूप वाली। पूर्णता या मोक्ष की अवस्था में विराजमान। अणिमा, लघिमा आदि अष्ट सिद्धियों से युक्त। किसी दूसरे से उत्पन्न नहीं है अतः सिद्धा हैं। सदा उपलब्ध स्वरूप वाली अर्थात आत्म स्वरूपा। अपरोक्षानुभूति ग्रन्थ में शंकराचार्य जी ने सिद्धासन की व्याख्या में सिद्ध शब्द का अर्थ दिया है कि जो जाग्रत, स्वप्न एवं सुषुप्ति अवस्था के पूर्व भी स्थित है, जो विषयों, इन्द्रियों, मन के पूर्व या बिना भी स्थित है वह सिद्ध है। साध्य तो वह है जिसे इन्द्रियों द्वारा प्राप्त किया जाता है पर सिद्ध वह है जिसे प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वह तो पहले से ही प्राप्त है। बच्चे से लेकर वृद्ध तक, मूर्ख से लेकर विद्वान तक मैं मैं करते हैं और यह मैं आत्मा के लिये ही बोला जाता है।

774. **मोक्षप्रदा** – उपासकों को मोक्ष प्रदान करने वाली। मोक्ष जन्म मरण से रहित सत् –चित् –आनन्द की अवस्था है।

775. **नित्या** – हमेशा रहने वाली। तीनों कालों में जिसका अस्तित्व रहता है। नित्यस्वरूपा। श्रीविद्या में कही गई 16 नित्या देवियों के स्वरूप वाली। नित्य आदि शक्ति से उत्पन्न आवरण शक्तियों को भी नित्या कहा गया है जो आदि शक्ति की सेवा करती है। ऐसी आवरण शक्ति रूपा जिनकी प्रत्येक दिन या तिथि को पूजा आराधना की जाती है। नित्य पदार्थो अर्थात सृष्टि से लेकर प्रलय तक अस्तित्व में रहने वाले पदार्थो के रूप में है। पृथ्वी, आकाश, परमाणु, प्रकृति, काल ये सब नित्य पदार्थ कहे जाते है। नित्य (शिव या विष्णु) की शक्ति स्वरूपा। नित्य +आ=नित्या। एकाक्षरी कोष में आ का एक अर्थ शक्ति दिया गया है। नित्य पराशक्ति या परमाशक्ति से प्रादुर्भूत शक्तियों को भी नित्या कहा गया है। ऐसी नित्या शक्तियों के स्वरूप वाली या ऐसी नित्या शक्तियों वाली अर्थात ऐसी नित्या शक्तियों से युक्त अर्थात इन नित्या शक्तियों द्वारा जिनकी उपासना की जाती है या सुरक्षा का घेरा बनाया जाता है। नित्या अस्या अस्ति इति नित्या (नित्या देवियों वाली अर्थात नित्या देवियों से युक्त)। शाक्तानन्द तरंगिणी पुस्तक के अनुसार वह शक्ति जिसमें स्वेच्छा से ब्रह्मा, विष्णु और महेश पैदा होते है और उसी में लय हो जाते है, नित्या शक्ति कहलाती है। नित्य का अर्थ है अक्षर। इस प्रकार नित्या का अर्थ हुआ अक्षर में रहने वाली शक्ति।

776. **नित्यानन्दप्रदायिनी** – भक्तों को हमेशा आनन्द प्रदान करने वाली।

777. **रक्तांगी** – लाल रंग वाली। राक्षसों को मारने से उत्पन्न रक्त से लिप्त (युक्त) होने के कारण रक्तांगी। अनुरक्त भक्तों के पास पहुँचने वाली। रक्तम् (अनुरक्तम्) अंगति गच्छति इति रक्तांगी।

778. **रक्तनेत्रा** – लाल नेत्रों वाली। दुर्गा सप्तशती के मूर्ति रहस्य में इसका उल्लेख है। दैत्यों के नाश के समय गुस्से से नेत्र लाल हो जाते हैं। अनुरक्त भक्तों को देखने वाली अर्थात उनकी अच्छी प्रकार से देखभाल करने वाली। नेत्र वह होता है जो देखने का काम करता है।

779. **रक्तचन्दनभूषिता** – लाल चन्दन से सुशोभित अर्थात् लाल चन्दन का टीका या लेप लगाये हुये। रक्त अर्थात् लाल अर्थात् रजोगुण। चन्दन अर्थात् चदि आह्लादे धातु से प्रसन्न करने वाला। प्रसन्न करने वाले

रजोगुण से युक्त। रजोगुण ही चीजों को पैदा करता है, नई–नई रचना करता है जिससे लोग प्रसन्न होते हैं। रक्त का अर्थ अनुरक्त भी कर सकते हैं। अनुरक्त भक्तों में चन्दन की तरह सुशोभित अर्थात् ऐसे भक्तों में रहकर उनमें ऐसे गुण पैदा करती है जिससे लोग आकर्षित होते है एवं उन्हें शान्ति मिलती है। जीव मात्र के हृदय में रहने वाली, सुख देने वाली प्रेमस्वरूपा। लाल चन्दन से शोभायमान।

780. **स्वल्पसिद्धिः** – थोड़े से ही सिद्धि देने वाली। थोड़ी साधना से सिद्ध हो जाने वाली।

781. **सुकल्पा** – जिनका संकल्प या निश्चय सुन्दर अर्थात् श्रेष्ठ है। कल्प के अनेक अर्थ होते होते है जैसे निश्चय, कल्पवृक्ष, संकल्प, कृत्य, दक्ष, प्रलय आदि। जो सुन्दर (श्रेष्ठ) कल्प वृक्ष की तरह है अर्थात् भक्तों की मनोकामनाओं को तुरन्त पूरा करने वाली है। जो प्रत्येक कार्य करने में श्रेष्ठ रूप से दक्ष है। जिनकी रचनायें सुन्दर अर्थात् श्रेष्ठ है। जिनके कृत्य सुन्दर अर्थात् श्रेष्ठ है। सु अर्थात् शोभन अर्थात् सुन्दर अर्थात् श्रेष्ठ। कल्प अर्थात् रचना, कृत्य। जगत उन्हीं की रचना है जो बहुत सुन्दर है। शोभन कृत्य स्वरूपा या शोभन कृत्य वाली। कल्प का एक अर्थ है कृत्य। कल्पयते विधीयते असौ, इति कल्पः अर्थात जो किया जाता है वह कल्प है। अतः कल्प का अर्थ हुआ कृत्य। कल्पते स्वक्रियायै समर्थो भवति अत्र इति कल्पः अर्थात सामर्थ्य वाला। क्लृपू सामर्थ्ये धातु होती है अतः कल्प का अर्थ सामर्थ्य वाला अर्थात दक्ष या कुशल भी होता है। श्रेष्ठ सामर्थ्य से युक्त अर्थात बहुत अधिक दक्ष। तात्पर्य हुआ शोभन सामर्थ्य अर्थात अप्रतिहत सामर्थ्य वाली अर्थात कोई विघ्न नहीं पड़ता या अपने कार्य में किसी दूसरे की मदद नहीं लेती। सृष्टि, पालन, संहार आदि सभी कार्य में बहुत अधिक दक्ष। कल्प का अर्थ वैदिक याग प्रक्रिया भी होता है तभी 06 वेदांगों में एक वेदांग का नाम कल्पसूत्र है। श्रेष्ठ वैदिक कर्मकाण्ड स्वरूपा या दोषरहित यज्ञविधि स्वरूपा। सुन्दर अर्थात अच्छे कर्मकाण्ड स्वरूपा। वेद के अंगों में शिक्षा, कल्प, ज्योतिष आदि होते हैं। कल्प का सम्बन्ध कर्मकाण्ड से है अर्थात अमुक कार्य कैसे किया जाए यह बताता है। सुन्दर कृत्य या नियम वाली। कल्प का अर्थ कृत्य या नियम भी होता है। सुन्दर रचना वाली (इनके शरीर की बनावट सुन्दर है)।

782. **दिव्यचारणशुक्रभा** – आकाश में गमन करने वाले शुक्र ग्रह की कान्ति के समान है कान्ति जिनकी। दिव्य का अर्थ है द्युलोक अर्थात् आकाश, चारण अर्थात् चरण अर्थात् गमन। दिव्य स्तुति करने वाले शुक्राचार्य की कान्ति के समान कान्ति वाली। दिव्य अर्थात् अलौकिक अर्थात् अति श्रेष्ठ। चारण अर्थात् बन्दीगण अर्थात् स्तुति करने वाले। दिव्य लोक में चलने वाली या दिव्य लोक में प्रदीप्त होने वाली अग्नि की कान्ति स्वरूपा। चारण अर्थात चलने वाली अर्थात प्रदीप्त होने वाली। शुक्र का अर्थ है अग्नि। श्रेष्ठ चारणों के द्वारा जिनकी सुन्दरता की कान्ति का गान किया गया है। यदि दिव्याचरणशुक्रभा यह नाम होता तो अर्थ होगा श्रेष्ठ आचरण के कारण जो सुन्दरता की कान्ति से युक्त है। शुक्र का अर्थ है सुन्दर। पंचतत्व से रहित अर्थात प्रकाश को भी दिव्य कह देते हैं। देवी का शरीर चिन्मात्र होता है अर्थात प्रकाश स्वरूप होता है।

783. **संक्रान्तिः** – ग्रहों का सम्यक् क्रमण–स्वरूपा अर्थात गति स्वरूपा। ग्रहों का एक राशि से दूसरी राशि में जाना क्रमण है। एक स्थान से दूसरे स्थान में अच्छी प्रकार से गमन को संक्रान्ति कहा जाता है पर यह सूर्य के एक राशि से दूसरे राशि में जाने के लिए रूढ हो गया है। देवी के सन्दर्भ में अर्थ होगा भक्तों के पास अपने लोक से उतार कर उनके पास तक गई हुयी। संक्रान्ति जुड़ने या सन्धि का भी प्रतीक है। जो शिव से संक्रान्त है अर्थात् जुड़ी हुई है अर्थात् अर्द्धनारीस्वर रूप में है। एक स्थान से दूसरे स्थान पर गमन को संक्रान्ति कहते है पर यह शब्द सूर्य के एक राशि से दूसरी राशि में जाने के लिए रूढ़ हो गया है। संक्रान्ति सन्धि काल भी है अतः इस नाम का अर्थ जीव और ब्रह्म की सन्धि स्वरूपा हुआ। शब्द के आगे ''का कारण'' या ''में विराजमान'' लगाने से भी शब्द का अर्थ आ जाता है। संक्रान्ति का कारण या संक्रान्ति रूपी जो पर्व है उसमें विराजमान

अर्थात् उसमें इनकी उपासना होती है। संक्रान्ति के समय को बहुत उत्तम समय माना गया है, मकर संक्रान्ति एक प्रसिद्ध पर्व है जिसमें की गई पूजा, स्नान, दान का बहुत अधिक फल मिलता है।

784. सर्वविद्या – समस्त विद्याओं से विभूषित। विद्याओं के अलग अलग वर्गीकरण हैं। कुछ लोग परा और अपरा इस प्रकार दो प्रकार की विद्यायें बताते हैं। पराविद्या अर्थात आत्मा या ब्रह्म का साक्षात्कार कराने वाली विद्या। अपरा विद्या अर्थात जीविका या सांसारिक विषयों से सम्बन्धित रखने वाली विद्या। शास्त्रों में 14 या 18 विद्याओं का उल्लेख है।

785. **सप्तवासरभूषिता** – सप्ताह के सात दिनों से विभूषित अर्थात काल या समयस्वरूपिणी। सात दिनों से युक्त। जिनके स्वरूप में सातों दिन आ जाते हैं।

786. **प्रथमाद्वितीयातृतीयाचतुर्थिकापंचमीषष्ठी** –पूर्णिमा – प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी और पूर्णिमा इन सभी तिथियों की संज्ञा (नाम) वाली या इन तिथियों से परिपूर्ण संज्ञा वाली।

787. **खड्गिनी** – ज्ञानरूपी खड्ग से युक्त जिससे वे भक्तों के अज्ञान का संहार करती हैं। विवेक शक्ति से युक्त अर्थात् सर्वेश्रेष्ठ विवेक शक्ति धारण किये हुये। विवेक चीजों को दो भागों में बाँटता है और तलवार भी दो भागों में बाँटती है। द्वैत पैदा करने वाली शक्ति से युक्त अर्थात् माया शक्ति से युक्त। संसार बना रहे और लोग वैरागी न हो जाये, इसके लिए द्वैत का होना बहुत आवश्यक है। अतः तलवार द्वैत पैदा करने वाली शक्ति का भी प्रतीक है। शौर्य से युक्त। तलवार शौर्य गुण का भी प्रतीक है। रामधारी सिंह दिनकर जी की प्रमुख कविता कलम और तलवार में कलम बौद्धिक अर्थात् ज्ञान शक्ति का प्रतीक एवं तलवार दैहिक अर्थात् शारीरिक शक्ति का प्रतीक माना गया है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ सर्वेश्रेष्ठ शारीरिक शक्ति या बल वाली। खड्ग नामक आयुध से विभूषित।

788. **चक्रिणी** – चक्र नामक आयुध को धारण किये हुए। रक्षा शक्ति से युक्त। भगवान विष्णु चक्र के द्वारा ही अपने भक्तों की रक्षा करते थे, अतः चक्र रक्षा शक्ति का प्रतीक है। संहारक शक्ति से युक्त। दूरदर्शिता गुण से युक्त। दृढ़ संकल्प से युक्त। सुदर्शन चक्र अपने शत्रु को देख लेता था वह वो कितनी दूर हो। अतः यह दूरदर्शिता का प्रतीक है। यह चक्र अपने शत्रु को मार करके ही वापस आता था। अतः यह दृढ़ संकल्प का भी प्रतीक है। चक्र का अर्थ पूजा में प्रयुक्त किये जाने वाले यन्त्र एवं सेना भी होता है। अजेय सेना वाली। यन्त्र वाली अर्थात् जिनकी पूजा यन्त्र के माध्यम से होती है। चक्र का अर्थ सेना भी होता है अर्थात असुरों के साथ साथ युद्ध में देवी के साथ उनकी सेना भी होती है। चक्र का अर्थ यन्त्र भी है। अतः चक्रिणी का अर्थ यन्त्रों से युक्त भी होगा।

789. **घोरा** – घोर या भयंकर स्वरूपा। घोर भगवान शिव का भी नाम है। अतः घोरा का अर्थ हुआ भगवान शिव की शक्ति। घोर का अर्थ अतिबुरा भी होता है अतः इस नाम का अर्थ हुआ दुष्टों के लिए अतिबुरी। दुर्गम या कठिन भी इस नाम का अर्थ हुआ। घोर सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों होता है। किसी भी चीज की अति अर्थात आधिक्य घोर है जैसे घोर तपस्या। इसका परिणाम प्रायः भयंकर होता है। अतः यह भयंकर के अर्थ में प्रयुक्त किया जाने लगा। हन् (मारना) धातु से भी घोर शब्द बनता है। घोर शब्द विशाल, श्रेष्ठ/उदात्त (sublime) बहुत अधिक प्रभावशाली, शक्तिशाली अर्थ में भी आता है। (घोर से उग्र की विशेषता यह है कि उग्र का अर्थ भयंकर+हमलावर/हिंसक के अर्थ में आता है। जो सामने वाले पर हिंसा करने पर उतारू हो, उसकी बिल्कुल न सुने भले ही सामने वाला शान्ति का प्रस्ताव लेकर आया हो, ऐसा व्यक्ति उग्र है। यह व्यक्ति सामने वाले की हर बात को काटने का प्रयास करेगा। आपने उग्र भीड़ शब्द सुना होगा जिसका तात्पर्य है कि वह हमला या हिंसा करने पर उतारू है। शीघ्र नाराज या प्रसन्न होन वाले देवता को भी उग्र कहा जाता है।) घोष

अर्थात् ऊँची आवाज देने वाली अर्थात् करने वाली। घो का एक अर्थ है घोष। राति का अर्थ है देती है। दुष्कर संग्राम करने वाली। वैदिक कोष में घोरा का एक अर्थ दुष्कर संग्राम करने वाली दिया गया है। वैदिक कोष में घोर शब्द के कई अर्थ दिये गये है जैसे पाप, कष्टदायी आक्रमण। घोर + आ, आ का एक अर्थ है नाश करना। भक्त के पापों का नाश करने वाली। भक्त के घर में या राज्य में हुये कष्टदायी आक्रमण का नाश करने वाली।

790. **गदिनी** – गदा नामक आयुध से युक्त। उत्तम दयागुण से युक्त या उत्तम तलवार से युक्त। एकाक्षरी कोष में ग का अर्थ उत्तम या शुभ है। द का अर्थ दया, दान, बन्धन, असि (तलवार) है। आदि विद्या से युक्त। वेद से युक्त। न्याय के गुण से युक्त। दण्ड नीति के ज्ञान से युक्त। संहार शक्ति से युक्त। गदा शब्द आदि विद्या, दण्डनीति, ईश्वरी न्याय, संहार शक्ति का प्रतीक है। गद् धातु का अर्थ स्पष्ट बोलना होता है। गदति इति गदः से गद का अर्थ स्पष्ट या सत्य बोलने वाला होता है। स्पष्ट बोलने वाला या तो वेद होता है या ज्ञानी पुरुष होते हैं। इस प्रकार गदिनी का अर्थ वेद से युक्त होता है। ज्ञानी पुरुषों से युक्त अर्थात् ज्ञानी पुरुषों द्वारा जिनकी आराधना, चिन्तन होता है या जो ज्ञानी पुरुषों को आश्रय दिये हुये है। आराधना या चिन्तन से जुड़ाव होता है या युक्त होना होता है।

791. **शूलिनी** – शूल नामक अस्त्र से युक्त/सुशोभित। शूल बरछी के आकार का आयुध है। त्रिशूल को भी शूल कह देते हैं। त्रिशूल से युक्त। तीनों प्रकार के दुःखों की विघातक शक्तियों से युक्त। इच्छा ज्ञान और क्रिया इन तीनो प्रकार की शक्तियों से युक्त।

792. **भुशुण्डी** – भुशुण्डी नामक आयुध के स्वरूप वाली। प्रत्येक चीज ऊर्जा अर्थात शक्ति की बनी है अतः भुशुण्डी नामक हथियार भी देवी का रूप है क्योंकि देवी शक्ति है। हथियारों की देवी के रूप में या शक्ति के रूप में पूजा की जाती है। भुशुण्डी बन्दूक की तरह के अस्त्र का नाम है पर लक्षणा से भुशुण्डी धारण करने वाले का नाम भी भुशुण्डी हो गया, जैसे बन्दूकें चली आ रहीं है इसका अर्थ बन्दूक धारण करने वाले लोग चले आ रहे हैं।

793. **चापिणी** – चाप अर्थात धनुष से युक्त अर्थात सुशोभित। प्रतीक शास्त्र के अनुसार धनुष स्थितिज ऊर्जा का एवं बाण गतिज ऊर्जा का प्रतीक है। चित्त से विचार रूप बाण निकलते हैं अतः चित्त भी धनुष का प्रतीक है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ उत्तम चित्त वाली। मुण्डकोपनिषद में ओम् को धनुष कहा गया है क्योंकि धनुष की तरह ओम् को भी लम्बा खींचा जा सकता है। चाप अर्थात् धनुष को धारण किये हुये। धनुष सम्मोहन का प्रतीक है। सम्मोहन शक्ति से युक्त।

794. **वाणा** – बाणों वाली अर्थात् बाण धारण करने वाली। बाणा सन्ति अस्या सा बाणा (बाणों वाली)। बाण गतिज ऊर्जा का प्रतीक है। गतिज ऊर्जा अर्थात् सक्रियता को धारण करने वाली। बाण स्वरूपा। गतिज ऊर्जास्वरूपा। उत्तम या स्वस्थ विचारस्वरूपा क्योंकि विचार रूपी बाण चित्त रूपी धनुष से निकलते हैं। प्रत्येक चीज ऊर्जा से बनी हुई है। ऊर्जा का अर्थ है शक्ति या देवी। बाणों से युक्त। बाणाः अस्या सन्ति इति बाणः, बाणः का अर्थ हुआ बाण वाला अर्थात बाणों से युक्त। स्त्रीलिंग में बाणा हो गाया। इस नाम का अर्थ जीवात्मास्वरूपा भी है। मुण्डकोपनिषद में कहा गया है कि जीवात्मारूपी बाण को परमात्मा रूपी लक्ष्य में बेधना चाहिए। धनुष और बाण क्रिया शक्ति का प्रतीक हैं। क्रिया शक्तिस्वरूपा या क्रिया शक्ति वाली, यह अर्थ कर सकते हैं। बाण धारण किये हुये। क्रिया शक्ति या गतिज ऊर्जा से युक्त। बाण गतिज ऊर्जा या क्रियाशक्ति का प्रतीक है। शरीर से निरन्तर बाहर की ओर निकलने वाला तेज भी बाण है। इस प्रकार के तेज से युक्त। बाण ज्रम्भण क्रिया के तुल्य है ज्रम्भण का अर्थ है जम्हाई या आलस्य। जिसमें विचार नहीं उगते अर्थात् व्यक्ति चाहते हुए भी विचार नही कर पाता। ऐसी अवस्था से युक्त अर्थात र्निविचार अर्थात् मन से परे। बाणाः अस्या सन्ति इति

बाणा। बाणों वाली अर्थात् बाण धारण किये हुये। ललिता सहस्रनाम स्तोत्र में बाण शब्द को पंचतन्मात्रा का प्रतीक बताया गया है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ पंचतन्मात्रा स्वरूपा। बाण शब्द क्रिया शक्ति या गतिज ऊर्जा का भी प्रतीक है। इस नाम का अर्थ हुआ क्रिया शक्ति स्वरूपा या गतिज ऊर्जा स्वरूपा। वेद की ऋचायें या उपनिषद् का ज्ञान भी बाण की तरह है क्योंकि यह अज्ञान को या बाधाओं को भेद डालता है। इस नाम का अर्थ हुआ ऋचाओं वाली अर्थात् वेद स्वरूपा। इस नाम का अर्थ वैदिक ऋचा स्वरूपा भी कर सकते है। वैष्णव तन्त्र में इन्द्रियों के लिए बाण शब्द का प्रयोग किया गया है। एकाक्षरी कोष में आ का एक अर्थ शक्ति दिया गया है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ इन्द्रियों की शक्ति स्वरूपा हुआ। बाणा अस्या सन्ति इति बाणा से बाणा का अर्थ बाणों वाली अर्थात इन्द्रियों वाली अर्थात साकार रूप धारिणी हुआ।

795. **सर्वायुधविभूषणा** – सभी प्रकार के आयुधों से विभूषित।

796. **कुलेश्वरी** – शाक्त कुल अर्थात शाक्तों की आराध्या। कौलमार्ग के अनुयायियों की आराध्या। कुल का अर्थ कौलमार्ग, वाममार्ग भी होता है। प्रत्येक परिवार की आराध्या। जगत की आराध्या। कुल का अर्थ परिवार, जगत भी होता है।

797. **कुलवती** – सुन्दर कुल से युक्त। मूलाधार चक्र से युक्त अर्थात उसमें रहने वाली कुण्डलिनी स्वरूपा। कुल का अर्थ मूलाधार चक्र भी होता है।

798. **कुलाचारपरायणा** – शास्त्र में जिन कर्मों को करने के लिए कहा जाता है वे आचार हैं। कौलमार्ग में जिन आचारों का उल्लेख है उनमें लगी हुई अर्थात उनका निरन्तर पालन करने वाली। समूह में पूजा करना, स्त्री की पूजा करना, प्रत्येक चीज में अद्वैत भाव रखना यह कौलाचार है। कौलमार्ग के अनुयायियों के लिए सोना और पत्थर बराबर होता है। कौलमार्गी पंचमकार का भी प्रयोग करते हैं पर केवल पूजा के समय। कौलमार्गी कुण्डलिनी शक्ति को मूलाधारचक्र से ऊपर उठाकर सहस्रारचक्र में शिव से मिलाते हैं यह भी उनका एक आचार है। न्यास के द्वारा साधक और देवी में अभेद हो जाता है। अतः साधक जो करता है उसे कहा जाएगा कि देवी ही कर रही हैं। वास्तव में मनुष्य जो कुछ करता है वह मनुष्य की शक्ति ही करती है। शक्ति ही देवी है।

799. **कुलकर्मसुरक्ता** – कौल पद्धति से किये जाने वाले यज्ञों, अनुष्ठानों से विशेष अनुराग रखने वाली। कुल के विविध कर्म के अनुष्ठान में अच्छी तरह से अनुरक्त रहने वाली। कुल का अर्थ कौलमार्ग ले सकते हैं। तान्त्रिक गुरू और उसके शिष्यों का एक कुल होता है।

800. **कुलाचारप्रवर्द्धिनी** – कौल पूजा पद्धति को बढाने वाली अर्थात कौल पूजा पद्धति का सहारा लेने वालों को बढ़ाने वाली। किसी कुल या परिवार द्वारा परम्परा से चली आ रही रीति का संवर्धन करने वाली। वाममार्गियों तथा कौलमार्गियों के धर्म का संवंर्धन करने वाली। कुल के आचार को बढ़ाने वाली। लोगों में जिज्ञासा पैदा कर, उनमें इस ओर रूझान पैदा करती हैं, इस प्रकार से आचार का प्रसार करती हैं। शास्त्रों में जिसे करने का विधान होता है वह आचार है।

801. **कीर्तिः** – यश या ख्याति स्वरूपा। किरणें बिखेरने वाली अर्थात अपने भक्तों पर कृपा की किरणे बिखेरने वाली। कॄ विक्षेपे धातु से कीर्ति शब्द बनाने पर यह अर्थ निकलता है। दक्ष प्रजापति की एक पुत्री का नाम भी कीर्ति है, जिसका विवाह धर्म से हुआ था। पुराणों में पुत्र और पुत्रियाँ प्रायः किसी गुण के लिए ही आते हैं। कीर्ति का कारण अर्थात् कीर्ति देने वाली। कीर्ति में विराजमान।

802. **श्री** – शोभा/सम्पत्ति/लक्ष्मी तीनों स्वरूप वाली। सारा जगत जिसका आश्रय लिये है। श्रयते सर्वैः इति श्री। जो शिव का आश्रय लिये है।

803. **रमा** – मन और नेत्र को रमाने वाली। लक्ष्मी स्वरूपा। रमयति इति रमा। धन देकर या बाह्य सुख भोग के लिए आवश्यक सम्पत्ति देकर जो लोगों को प्रसन्न करती है। चित्त को लगाना, विद्यमान होना, आनन्द देना या आनन्दित होना, संतुष्ट होना। जो क्रीडा करती हैं। रमते इति रमा। सृष्टि करना, पालन करना और संहार करना देवी की क्रीडा है। जिसे भगवान विष्णु के साथ रहना अच्छा लगता है। विष्णुना सह रमते इति रमा। जो धन –दौलत, बाहरी भोगों की सामग्री देकर व्यक्ति को प्रसन्न करती है वह रमा है। रमयति इति रमा। जिसमें हर कोई रमना चाहता (अर्थात प्राप्त करना चाहता)।

804. **रामा** – भगवान राम की शक्ति के रूप में। योगियों का चित्त जिसमें रमण करता है अर्थात लगता है अर्थात ध्यान टिकता है। ब्रह्म में रमण करने वाली। संसार की नारी के स्वरूप में।

805. **धर्मा** – धर्म की शक्तिस्वरूपा। जो सबको धारण किये है। शास्त्र में बताए गए दस प्रकार के धर्म स्वरूपा। वस्तु में रहने वाले तत्व स्वरूपा जैसे अग्नि में दाहकता आदि। धर्मा का अर्थ धर्म की शक्ति स्वरूपा भी कर सकते हैं। (स्तोत्र में धर्मायै सततम् नमः लिखा है जिसका अर्थ है धर्म स्वरूप देवी को निरन्तर प्रणाम कर रहे हैं। यदि धर्मायै स्वयं में एक शब्द है तो अर्थ होगा धर्म की ओर गति करने वाली या धर्म में गति करने वाली। धर्म+अय्, अय् गतौ धातु होती है।)

806. **क्षमा** – क्षमा वाली अर्थात क्षमा गुण से युक्त। क्षमा अस्या अस्ति इति क्षमा। इस व्युत्पत्ति के आधार पर क्षमा वाली अर्थात क्षमा गुण धारण करने वाली अर्थ निकलता है। दण्ड देने का सामर्थ्य होने के बावजूद दूसरों के अपराधों को माफ करने वाली तथा यह भाव भी रखने वाली कि अपराध करने वाले को दण्ड न मिले। क्षमा का अर्थ क्षमा गुणस्वरूपा भी होता है और क्षमा गुण धारण करने वाली भी होता है। क्षमा का अर्थ पृथ्वी भी है।

807. **धृतिः** – कठिनाई को सहन करना और उससे पार पाने का प्रयास करते रहना, इस गुण के स्वरूप वाली। धैर्य स्वरूपा। कठिन परिस्थितियों में विचलित न होना, अपने सिद्धान्तों का न छोड़ना, समय ठीक होने की प्रतीक्षा करना धैर्य है। दुख के समय भी चित्त का दुखी न होना अर्थात विपत्ति काल में भी चित्त का विपत्ति अनुभव न करना धृति है। इस भाव के स्वरूप वाली। प्रत्येक चीज जिसका अस्तित्व है ऊर्जा या शक्ति का रूपान्तरण होने के कारण देवी स्वरूपा है क्योंकि देवी का अर्थ है शक्ति या ऊर्जा। प्राणी, वस्तु, गुण, स्वभाव, समय, दिशा, सम्बन्ध, भाव, मनोभाव सभी कुछ शक्ति या ऊर्जा का रूपान्तरण होने के कारण देवी स्वरूपा हैं। शब्द में 'का कारण', 'मे विराजमान' ये शब्द लगाने से भी शब्द के अन्य अर्थ निकल आते हैं। धृति का कारण अर्थात व्यक्ति में धृति या धैर्य नामक गुण देने वाली। धृति नामक गुण में विराजमान। धृति वह शक्ति है जिससे व्यक्ति में धैर्य आता है। Endurance without complaint, firmness, steadiness, perserverance; equanimity. दृढ़ निश्चयस्वरूपा अर्थात् सत्य या ब्रह्म की प्राप्ति के निश्चय से कभी न हटने वाला भाव या गुण स्वरूपा। विपत्ति आने पर यह ईश्वर प्राप्ति के प्रयास असफल होने पर भी अपने सिद्धान्तों को न छोड़ने वाला भाव या गुण धैर्य या धृति कहलाता है। दुख के समय भी चित्त का दुखी न होना अर्थात विपत्ति काल में भी चित्त का विपत्ति अनुभव न करना धृति है। इस भाव के स्वरूप वाली। प्रत्येक चीज जिसका अस्तित्व है ऊर्जा या शक्ति का रूपान्तरण होने के कारण देवी स्वरूपा है क्योंकि देवी का अर्थ है शक्ति या ऊर्जा। प्राणी, वस्तु, गुण, स्वभाव, समय, दिशा, सम्बन्ध, भाव, मनोभाव सभी कुछ शक्ति या ऊर्जा का रूपान्तरण होने के कारण देवी स्वरूपा हैं। शब्द में 'का कारण' , 'मे विराजमान' ये शब्द लगाने से भी शब्द के अन्य अर्थ निकल आते हैं। धृति का कारण अर्थात व्यक्ति में धृति या धैर्य नामक गुण देने वाली। धृति नामक गुण में विराजमान। धृति वह शक्ति है जिससे व्यक्ति में धैर्य आता है। धैर्य स्वरूपिनी। वह शक्ति जिसके कारण व्यक्ति में धैर्य गुण आता है। यस्या सकाशात् धृति सम्भवति, सा धृतिः, जिसके सामीप्य से अर्थात् जिसके कारण धैर्य गुण आता है वह धृति है।

अन्यथा भी नियम है कि शब्द के आगे ''का कारण'' लगाने से भी शब्द का अर्थ आ जाता है। विपरीत समय या कठिन समय आने पर विचलित न होना और अच्छे समय का इंतजार करना धृति या धैर्य कहलाता है। विचारों की दृढ़ता भी धृति है। अतः इस नाम का अर्थ है विचारों की दृढ़ता स्वरूपा। धृति गुण वाला व्यक्ति कठिन समय आने पर भी अपने सिद्धान्तों पर अडिग रहता है और उसे नहीं छोड़ता है। वह गुण जिसके कारण न चंचलता हो और न ही आत्मश्लाधा हो, धृति है। धृति का तात्पर्य है मन की दृढ़ता, विचारों की स्थिरता, संकट में भी स्थिर रहना अर्थात् अपने सिद्धान्तों को न छोड़ना, चित्त की अविचलता। इन्हीं के कारण धैर्य गुण आता है। देवी जिसके कारण धैर्य गुण आता है धृति है। विश्व में जिसका भी अस्तित्व है वह ऊर्जा या शक्ति का रूप होने के कारण देवी रूप ही है क्योंकि देवी का अर्थ है शक्ति या ऊर्जा। प्राणी और वस्तु तो देवी है ही किन्तु समय, सम्बन्ध, गुण, दिशा आदि सभी कुछ शक्ति रूप होने के कारण देवी रूप ही है।

808. **स्मृति** – स्मृति स्वरूपा। उस शक्ति के रूप में जिसके कारण पूर्व ज्ञान याद रहता है।

809. **मेधा** – धारणावती बुद्धि के रूप में। बुद्धि की उस शक्ति के रूप में जिसमें व्यक्ति नये नये आविष्कार कर लेता है या नया रास्ता बना लेता है। आज की शब्दावली में जिसकी आई.क्यू 140 से अधिक है वह मेधावान कहा जाता है। विज्ञान तो बहुत लोग पढ़ते हैं पर खोज वही कर पाता है जो मेधावान हो। वकालत तो बहुत लोग पढ़ते हैं पर नया रास्ता वही बना पाता है जो मेधावान हो। वह बुद्धि जो सभी शास्त्रों के तत्व को जानने वाली है। बुद्धि की अवधारण शक्ति मेधा है। अवधारण का अर्थ है ही या एव जैसे कहा जाता है कि वह व्यक्ति दूध ही पीता है अर्थात केवल दूध ही पीता है। जो वस्तु जैसी है उसको वैसी जानना अवधारण है। महामेधा का अर्थ हुआ सभी वस्तुओं को उसके यथार्थ स्वरूप जानने वाली बुद्धि। अवधारण का अर्थ होता है retention है। किसी चीज को लम्बे समय तक स्मरण रखने की शक्ति मेधा है अर्थात स्मरण शक्ति के दीर्घकालीन होने पर उसे मेधा कहा जाता है। एकाक्षरीकोश में मे का एक अर्थ दिया गया है प्रतिदान। प्रतिदान करने के गुण से युक्त को मेधा कहेंगे। निश्चय या अचल ज्ञान स्वरूपा।

810. **कल्पवृक्षनिवासिनी** – कल्पवृक्ष पर निवास करने वाली।

811. **उग्रा** – तेज या तीक्ष्ण या उत्कट। तीक्ष्ण अर्थात शत्रु जिनके तेज को सहन नहीं कर सकते हैं। उग्र संज्ञक पाँच नक्षत्र स्वरूपा। ये पॉच नक्षत्र हैं – मघा, भरणी, पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वभाद्र। उत् ग्रह्णति इति उग्रा। जो ऊपर की ओर ग्रहण करती है अर्थात अपने भक्तों को ऊपर के लोक में ग्रहण करती है अर्थात ऊपर के लोक में भेजने वाली। उम् शिवम् ग्रसति इति उग्रा। जो शिव को भी निगल गयी थी अर्थात् धूमावती देवी स्वरूपा। उ का अर्थ ज्ञान भी होता है। दुष्टों के ज्ञान अर्थात् उनकी विद्याओं को नष्ट कर देने वाली। उच् समवेते धातु से उग्रा का अर्थ होता है जो किसी से युक्त होती है। क्रोध से युक्त होती है। भक्तों से युक्त होती है। उ का अर्थ है क्रोध। भक्त के क्रोध को ग्रसित करने वाली अर्थात् समाप्त करने वाली। तात्पर्य है क्रोध नामक दुर्गुण समाप्त करने वाली। उत्पात (भूकम्प, महामारी आदि) को ग्रसित करने वाली अर्थात् नष्ट करने वाली। उत्पात का उ अक्षर ले लिया। उ के अन्य कई अर्थ है जैसे शिव, शक्ति, क्रोध, बन्धन, लोभ आदि। भगवान शिव को निगलने वाली अर्थात् धूमावती देवी स्वरूपा या धूमावती देवी से अभेद है जिनका। दुष्टों की शक्ति का नाश करने वाली। बन्धन का नाश करने वाली अर्थात् मोक्ष देने वाली। लोभ नामक दुर्गुण का नाश करने वाली। उग्रा का अर्थ तेजस्विनी भी है।

812. **उग्रप्रभा** – भीषण तेज वाली। इनके तेज को झेलना सबके बस की बात नहीं है। शिव की उत्कृष्ट कान्ति स्वरूपा। उग्र का एक अर्थ शिव भी है। उग्र कान्ति वाली। तेज इतना अधिक है कि उसे देखा नहीं जा सकता, आँखें चकाचौध हो जाती है। तीव्र/प्रचण्ड अधिक कान्ति वाली। उच्च अधिक कान्ति वाली अर्थात

सर्वाधिक कान्ति वाली। प्रभा का अर्थ है अधिक कान्ति एवं उग्र का अर्थ है तीव्र, प्रचण्ड, उच्च। प्रभा का अर्थ तेज भी होता है।

813. **गौरी** – गौर वर्ण वाली। तपस्या की उज्जवलता से युक्त। नौ वर्ष की बालिका स्वरूपा क्योंकि नौ वर्ष की बालिका को गौरी कहते हैं। गुरते उद्युंक्ते इति गौरी अर्थात जो देखने वाले के चित्त को ऊपर उठा दे अर्थात अपनी ओर आकर्षित करे वह गौरी है।

814. **वेदविद्याविबोधिनी** – वेद विद्या का बोध (ज्ञान) करा देने वाली।

815. **साध्या** – भक्तों के द्वारा साध्य है अर्थात प्राप्त करने योग्य है। साध्य नामक देवों वाली अर्थात इनके द्वारा उपासनीया। साध्या अस्या सन्ति इति साध्या (साध्य वाली)। साधना के द्वारा प्राप्त किये जाने योग्य। आध्यात्मिक क्षेत्र में किये जाने वाले निरन्तर अभ्यास को साधना कहते हैं। साध्य देवों वाली अर्थात साध्य देवों द्वारा उपासनीया। साध्या अस्या सन्ति इति साध्या (साध्य देवों वाली)। वैदिक कोश में साध्य का अर्थ साधना करने वाला, मुक्तिपथ का अभ्यासी साधक, वश करने योग्य व्यक्ति दिया गया है। साध्याः अस्या सन्ति इति साध्या, अर्थात मुक्तिकामी साधको वाली अर्थात ऐसे साधक जिनकी उपासना करते हैं। वश में होने योग्य अर्थात जो भक्ति के द्वारा भक्त के वश में हो जाती हैं। साध्या का अर्थ विश्व की रचना करने वाले प्राण रूप ऋषि, स्वर्ग के सत्पर्शि, विश्वेदेव, किरणें, विराट् पुरुष के साधक या उपासक भी दिया गया है। साध्यन्ते आराध्यन्ते इति साध्या अर्थात जिनकी साधना या आराधना होती है। विश्व की सृष्टि करने वाले प्राण साध्य हैं। प्राण शक्ति वाली या प्राणों (जीवन) को देने वाली। साध्य+आ, आ का अर्थ है देना। साध्या का अर्थ किरण भी होता है इस प्रकार साध्या का अर्थ हुआ किरणों वाली अर्थात ज्ञान की किरणों से युक्त या कृपा की किरणों से युक्त या सूर्य स्वरूपा। वश में करने योग्य अर्थात् भक्ति के द्वारा वश में करने योग्य। सिद्ध करने योग्य। साध्य एक प्रकार के द्युस्थानीय देवगण है, ऐसे देवगणों की शक्ति साध्या है। विश्वे देव को भी साध्य देव कहा गया है। ऐसे देव की शक्ति स्वरूपा। जिनकी साधना या आराधना की जाती है। साध्यन्ते आराध्यन्ते इति साध्या। साध् + ण्यत् इति साध्यः। द्युलोकवासी सप्तर्षि को भी साध्य कहा गया है। इन सप्तर्षि की शक्ति स्वरूपा। साध्य + आ, आ का एक अर्थ है शक्ति। विराट के साधक उपासक भी साध्य कहे जाते है। ऐसे साधकों की शक्ति स्वरूपा। प्राण देने वाली। साध्य + आ, आ का एक अर्थ है देना। वैदिक कोष में साध्य का एक अर्थ विश्व की सृष्टि करने वाले प्राण दिया गया है। योगाभ्यासिनी।

816. **सिद्धा** – सभी प्रमाणों से सिद्ध (निश्चित या प्रमाणित या साबित)। प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द आदि प्रमाणों से सिद्ध। सिद्धा नामक जड़ी बूटी की तरह रोग–निवारिणी अर्थात अपने उपासकों का कष्ट दूर करने वाली। दक्षिण भारत की सिद्ध नामक चिकित्सा प्रणाली की शक्ति स्वरूपा। जो काम बनाती ही है, कभी चूकती नहीं अर्थात लक्ष्य तक पहुँचाती ही हैं। जिस उद्देश्य से इनका मन्त्र जपा जाएगा या यज्ञ किया जाएगा वह पूरा होकर के ही रहेगा। सिद्धा का एक अर्थ सदैव उपलब्ध अर्थात भक्तों का काम बनाने के लिये हमेशा उपलब्ध रहने वाली भी है। अति प्राकृतिक शक्तियों से युक्त। कृतकार्य अर्थात जिसके सभी कार्य पूरे हो गये हों।

817. **सुसिद्धा** – आसानी से या पूरी तरह से अभीष्ट परिणाम देने वाली। उत्तम सिद्धियों से युक्त। उत्तम सिद्धि वे हैं जो व्यक्ति या समाज को उन्नति के रास्त पर ले जायें।

818. **विप्ररूपा** – वेद तत्व स्वरूपा। वेद में सारा ज्ञान है और वेदों से यह ज्ञान ब्राहमणों में आया। अतः ब्राह्मण स्वरूपा भी। ब्राह्मण को विप्र क्यों कहते हैं – विशेषेण प्राति पूरयति इति विप्रः अर्थात जो षट्कर्मों को विशेष रूप से पूरा करता है। षट्कर्म हैं अध्ययन करना, अध्ययन कराना, यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान देना और देना लेना। उप्यते धर्मबीजम् अत्र इति विप्रः अर्थात जिसमें धर्म की बीज बोया जाता है अर्थात जो धर्म के रास्ते पर चलने वाला है वह विप्र है।

819. **कालीकराली** – ऐसी काली (शिव की पत्नी) जो अग्नि जिह्वा के समान तेजस्विनी है। अग्नि की एक जिह्वा का नाम कराली है, जो भी डालो भष्म कर देती है। भयंकर स्वरूप वाली काली। काली के स्वरूप धारण करने से अतिशय विकराल (भयंकर) होने वाली।

820. **काल्या** – समय को प्राप्त अर्थात गर्भ धारण का समय आ गया है जिसका अर्थात सृष्टि की उत्पत्ति करने के लिये तैयार प्रकृति स्वरूपा। समय के अनुकूल। जिसका समय आ गया है (अवतार लेने का)। कालात् यत् सूत्र से काल में यत् प्रत्यय लगाने से काल्य शब्द बनेगा जो स्त्रीलिंग में काल्या होगा। शिव में होने वाली अर्थात रहने वाली अर्थात शिव में रहने वाली शक्ति स्वरूपा। तत्र भवः सूत्र से काल में यत् प्रत्यय लगाने से अर्थ होगा काल में होने वाली अर्थात काल में विद्यमान होने वाली या रहने वाली। सभी काल (समय) में विद्यमान रहने वाली। काले भवा अर्थात समय पर होने वाली अर्थात ऋतु स्वरूपा। समय के अनुकूल अर्थात ऋतु स्वरूपा। समय आने पर बसन्त, वर्षा, ग्रीष्म आदि ऋतुऐं आती हैं। समयानुकूल अर्थात समय आने पर विशेष अवस्था में हो जाने वाली अर्थात विशेष रूप धारण करने वाली या आविर्भूत होने वाली।

821. **कालदैत्यविनाशिनी** – कालरूपी दैत्य में शक्ति रूप से निवास करने वाली। शक्ति होने पर ही कोई भी पदार्थ कार्य कर पाता है। काल का अर्थ समय, मृत्यु है। इन्हें दैत्य इसलिए कहा गया है क्योंकि ये दैत्य की तरह भयानक होते है और मारने का कार्य भी करते है। समय या यमराज कुछ समय बाद किसी वस्तु का अस्तित्व समाप्त कर देते हैं। काल स्वरूप दैत्यों का विनाश करने वाली। विनाश का अर्थ है पूर्ण नाश।

822. **कौलिनीकालिका** – कौलमार्ग की ऐसी आराधनीया जो काल का भी नाश कर देती हैं। सत्कुल वाली और काल (शिव) की पत्नी। कौल शक्ति से युक्त माँ महाकाली।

823. **कचटतपवर्णिका** – कचटतप वर्णों के स्वरूप वाली। एकाक्षरी कोष में इन वर्णों के अनेक अर्थ दिये गये हैं, उन अर्थों के स्वरूप वाली। जैसे क का अर्थ है स्वर्ग, ब्रह्म, आत्मा, सुख, सूर्य। च का अर्थ है चन्द्र, चेतन। ट का अर्थ है ध्वनि, शब्द, वामन। त का अर्थ है तस्कर, युद्ध, तरू। प का अर्थ है पवन, पाताल, परित्राण आदि।

824. **जयिनी** – जीतना जिसका स्वभाव है। मृत्यु को जीत लिया है जिसने। सब पर जीत का स्वभाव है जिसका। दूसरों के द्वारा प्रशंसा या अभिवादन प्राप्त करने वाले गुणों से युक्त। किसी की जय होने का एक अर्थ है दूसरों द्वारा उसका अभिवादन किया जाए और उसकी प्रशंसा हो। बाह्य शत्रुओं से जीत हासिल करने के गुणों से युक्त। कल्याण वचन से युक्त। जय का अर्थ कल्याण वचन भी है।

825. **जययुक्ता** – जय से युक्त या अलंकृत। आशीर्वाद मुद्रा से युक्त। जय का अर्थ आशीर्वाद भी होता है, जो उन्हें प्रणाम करते हैं उन्हें आशीर्वाद स्वरूप जय हो, कहती हैं। कल्याण वचन से युक्त। जय का एक अर्थ कल्याण वचन भी है। समृद्धि से युक्त। जय का एक अर्थ समृद्धि भी है। दूसरों से उत्कर्ष (बढ़ना या अधिक होना) कराने वाली शक्ति से युक्त। जय की एक परिभाषा है सर्वोत्कर्षेण वर्तते। संयम या दम शक्ति से युक्त। यह शक्ति ही व्यक्ति को इन्द्रियों एवं विकारों से जीत दिलाती है। युधिष्ठिर का नाम भी जय है। युधिष्ठिर से युक्त अर्थात् युधिष्ठिर द्वारा जिनकी आराधना की गई। महाभारत का नाम भी जय है। महाभारत के ज्ञान से युक्त। ज का अर्थ जनन शक्ति, य का अर्थ यमन (नियन्त्रण) है, इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ जनन शक्ति एवं यमन शक्ति से युक्त।

826. **जयदा** – भक्तों को आन्तरिक शत्रुओं (काम, क्रोध, लोभ आदि) से जीत दिलाने वाली। महाभारत जैसा ग्रन्थ समाज को देने वाली। जय का एक अर्थ महाभारत भी है। प्रत्येक कार्य को कराने के लिए कोई शक्ति होती है।

827. **जृम्भिणी** – जम्हाई की तरह फैले हुए मुख वाली अर्थात जिसमें सबका ग्रास हो रहा हो। जम्हाई के

द्वारा चीजों को अपने भीतर भी डाला जाता है अतः इस नाम का अर्थ शत्रुओं को अपने भीतर डालने वाली भी हो सकता है। संसार को विकसित करने वाली। मुँह फैलाना अर्थात विकसित करना है। जम्हाई में मुँह फैलता है अतः जृम्भिणी का अर्थ है ब्रह्माण्ड के रूप में फैलने या विकसित होने वाली। कभी कभी यथावसर जम्हाई लेने वाली।

828. **स्राविणी** – दुखियों के प्रति करूणा को टपकाने वाली अर्थात देने वाली। भक्तों के प्रति मनोरथों को टपकाने वाली अर्थात देने वाली। स्राविणी का अर्थ है टपकाने वाली। जिससे लौकिक/पारलौकिक ऋद्धियाँ टपकती अर्थात निकलती रहती हैं। स्रवण का अर्थ है टपकना अर्थात निकलना। शक्ति को क्षरित (टपकाने) करने वाली देवी।

829. **द्राविणीदेवी** – शत्रुओं को भगा देने वाली।

830. **भरूण्डा** – भयदायक रुण्ड वाली। मध्यमपदलोपी समास से दायक शब्द लोप होकर भरुण्डा शब्द रह गया। एकाक्षरी कोष में भ का एक अर्थ भय बताया गया है। (यदि भेरुण्डा नाम है तब भी अर्थ होगा भयभीत करने वाले रूण्ड से युक्त। मुण्ड का अर्थ होता है सिर तथा रूण्ड का अर्थ होता है सिर से नीचे का हिस्सा। भेरूण्ड नामक पक्षी की तरह ऊँचाई पर स्थित एवं अतिशय बलशाली। ऊँचाई पर स्थित अर्थात जो अन्य सभी से सर्वोच्च है। भेरुण्ड पक्षी इतना बलवान होता है कि हाथी को भी अपने पंजों से उठा लेता है और यह बहुत ऊँचाई में उड़ता है।)

831. **विन्ध्यवासिनी** – विन्ध्य पर्वत में निवास करने वाली। अनाहत चक्र में रहने वाली शक्ति या देवी। विन्ध्य पर्वत अनाहत चक्र का प्रतीक है। इस चक्र में ललिता सहस्रनाम के अनुसार राकिणी देवी का वास है जबकि षटचक्र निरूपण ग्रन्थ के अनुसार काकिनी देवी का निवास है। काक शब्द लोलुपता का भी प्रतीक है। जो अमृतपान के लिए हमेशा लोलुप या लालायित रहती है। हृदय चक्र में विराजमान यह देवी सहस्रार चक्र से टपकने वाली अमृत को पीने के लिए हमेशा लालायित रहती है। विन्ध्य पर्वत पर या इसके आस–पास के क्षेत्र में रहने वाली स्त्रियों में विराजमान। विन्ध्य का अर्थ वींधने योग्य अर्थात् अहंकार भी किया जाता है।

832. **ज्योतिर्भूता** – ज्योति स्वरूपा। भू सत्तायाम् धातु होती है। ज्योति के रूप में विद्यमान, यह अर्थ हुआ। प्रकाशस्वरूपा।

833. **जयदा** – भक्तों को बाह्य शत्रुओं से जीत दिलाने वाली। जय देने वाली। किसी भी प्रकार के उद्यम या यत्न विशेष में सफल होना भी जय कहलाता है। उद्यम या यत्न विशेष में सफलता देने वाली। यह अर्थ जयदा एवं जया दोनों का हो सकता है। जया अर्थात जय+आ, आ का अर्थ है देना। जया अर्थात असुरान् जयति। जया का अर्थ जयति अर्थात सर्वोत्कर्षेण वर्तते भी होता है अर्थात जो सभी देवताओं में श्रेष्ठ है।

834. **ज्वालामालासमाकुला** – अत्यधिक देदीप्यमान अर्थात चमकने वाली मालाओं से भरी हुई या पूर्ण। समाकुल का अर्थ होता है – भरी हुई, पूर्ण, युक्त।

835. **भिन्नाभिन्नप्रकाशा** – ऐसे प्रकाशवाली जो जगत से अलग भी है एवं अभिन्न अर्थात् जुड़ा भी है। सूर्य की किरणें पृथ्वी तक पहुँचने के पहले उससे अलग होती है एवं पृथ्वी में पहुँचने पर जुड़ जाती है। प्रकाश अर्थात् चैतन्य। उस चैतन्य के स्वरूप वाली जो पदार्थों से अलग भी है एवं उसमें व्याप्त होकर उससे जुड़ा भी है। पदार्थ अर्थात् जड़ और चेतन दोनों पदार्थ हैं। पदार्थ का आकार होता है, उस आकार में तो चैतन्य विद्यमान है ही, उस पदार्थ के बाहर भी चैतन्य है। अनेक और एक रूप में अभिव्यक्त अर्थात एक होती हुई भी अनेक रूपों में या नाना रूपों में अभिव्याप्त। भिन्न का अर्थ है नाना, प्रकाश का अर्थ है अभिव्यक्त। पहले देवी कई होकर लड़ रही थी। जब शुम्भ असुर ने इस बात को देवी से कहा तो समस्त शक्तियॉ उनमें समा गई और देवी एक हो

गयी। भिन्न और अभिन्न प्रकाश से युक्त अर्थात सभी प्रकार के प्रकाश से युक्त। माया से भिन्न, माया से अभिन्न, माया से भिन्न अभिन्न दोनों, माया नहीं ऐसा पढ़ने को आता है।

836. **विभिन्नाभिन्नरूपिणी** – जीवात्मा स्वरूपा। जीवात्मा भी परमात्मा की तरह सत्–चित्–आनन्द है। सत् अर्थात हमेशा अस्तित्व वाला। इस सन्दर्भ में जीवात्मा और परमात्मा समान है। चित् का अर्थ है ज्ञान या Awareness दोनों में ज्ञान है अर्थात् दोनो समान है। जीवात्मा का ज्ञान परमात्मा से बहुत कम है, अर्थात् मात्रा के अनुसार दोनो में भिन्नता है। आनन्द भी जीवात्मा में कम है जबकि परमात्मा में असीमित आनन्द है। इस प्रकार दोनों तत्व रूप में समान है पर मात्रा की दृष्टि से दोनों में भिन्नता है। द्वैत और अद्वैत दोनों रूप वाली। भिन्न और अभिन्न रूप वाली।

837. **अश्विनीभरणीचैव नक्षत्रसम्भवान्विता** – अश्विनी भरणी नक्षत्र स्वरूपा और राशियों से युक्त। आकाश स्वरूपा और राशियों से युक्त। अश्विनी भरणी आदि नक्षत्रों से युक्त अर्थात आकाशस्वरूपा। नक्षत्रों से उत्पन्न अर्थात राशियों से युक्त। अश्विनीभरणी आदि नक्षत्रों से उत्पन्न होकर विभूषित होने वाली अर्थात इन नक्षत्रों से सुशोभित।

838. **काश्यपी** – पृथ्वी स्वरूपा। कश्यपेन जाता इति काश्यपी। कश्यप से जो उत्पन्न हुआ वह काश्यपी है। जीवात्मा स्वरूपा। काश् का अर्थ है प्रकाश। प्रकाश अर्थात ज्ञान के प्रकाश का पान करने वाली अर्थात जीवात्मा। कश्यप ऋषि के वंश में उत्पन्न। काश्य का अर्थ मदिरा या सोम भी होता है। आनन्द की मदिरा पीने वाली या सोमपान करने वाली। कश्यप का अर्थ आत्मा या जीवात्मा भी है। आत्मा (परमात्मा) से उत्पन्न जीवात्मा, यह अर्थ भी इस नाम का हो सकता है। पश्यक से कश्यप बना है। देखने वाली अर्थात जानने वाली अर्थात चैतन्य स्वरूपा। चेतना के कारण ही व्यक्ति कुछ जानता है, awareness रखता है एवं क्रिया–प्रतिक्रिया करता है। काश (प्रकाश) + पी, आत्मा के प्रकाश अर्थात् ज्ञान के प्रकाश का पान करने वाली अर्थात् उसका अस्वादन देने वाली। सूक्ष्म से सूक्ष्म अर्थात् सभी कुछ देखने वाली या जानने वाली। ऐसा कहते है कि पश्यक शब्द ही वर्णों के आगे–पीछे होने से कश्यप हो गया। ब्रह्माण्ड की प्रत्येक गतिविधि को देखने वाली या जानने वाली। स्वार्थ (बिना अर्थ बदले) में अण् प्रत्यय लगाने से कश्यप काश्यप हो गया और स्त्रीलिंग में कश्यपी हो गया। शास्त्रों में चिकित्सक के लिए कश्यप शब्द आया है क्योंकि वह रोग की जड़ तक पहुँच जाता है अर्थात् अत्यन्त सूक्ष्म तत्व तक पहुँच जाता है। बहुत से रोगों के लक्षण मिलते जुलते है अतः रोग की पहचान करना बेहद आवश्यक है जो तभी सम्भव है जब आप उसकी जड़ को देख लें।

839. **विनता** – विशेष रूप से झुकी होने से सुशोभित। इसी से मिलता जुलता शब्द है नतांगी जिसका अर्थ सुन्दरी होता है।

840. **ख्याता** – सर्वविदित अर्थात सबके द्वारा जिसका यशोगान किया जाता है स्तुति की जाती है। प्रसिद्ध अर्थात जिसको सभी लोग जानते हैं।

841. **दितिजादितिरेव** – दैत्यों में भी विद्यमान, देव तुल्य लोगों में भी विद्यमान। जो दैत्य भी है और अदिति भी है। देव्यथर्वशीर्ष में आया है कि मैं ही देवता हूँ, मैं ही असुर हूँ आदि। रूद्रीपाठ में भी भगवान शिव कहते है मैं ही असुर हूँ मैं ही तस्कर हूँ। (कई बार नामों के अर्थ में संगति बिठाने के लिए 'उसमें विराजमान', 'उसमें अंशरूप से विराजमान' 'उसमें अन्तर्यामी रूप में विराजमान' 'उसमें शक्ति या किसी गुणरूप से विराजमान' ऐसा अर्थ करना पडता है।)। खण्डित दृष्टि स्वरूपा जो मूलरूप से अखण्डित चेतना है। दिति का अर्थ होता है खण्डित चेतना जिससे खण्डित दृष्टि उत्पन्न होती है। अदिति का अर्थ है अखण्डित चेतना। दो अवखण्डने धातु में क्तिन् प्रत्यय लगाने से दिति शब्द बनता है। यदि हम प्रत्येक पदार्थ में उसके केन्द्र को अर्थात चेतन तत्व को देख पाते

हैं तो हमारी चेतना अखण्डित चेतना कहलाई जाएगी अर्थात हम अदिति की अवस्था में होगे। नानात्व या द्वैत देखने पर हमारी चेतना खण्डित चेतना कहलाई जाएगी। खण्डात्मक चेतना से उत्पन्न अखण्ड चेतना स्वरूपा। दो अवखण्डने सूत्र से दिति का अर्थ खण्डात्मक चेतन एवं अदिति का अर्थ अखण्ड चेतना है। यह एक प्रकार से द्वैत से अद्वैत की ओर जाने की ओर इशारा कर रहा है। ऐसी अदिति ही (केवल अदिति) जो दिति से पैदा हुई। ऐसी अदिति जिससे दिति पैदा होती है। दितिः जायते अस्याम् इति दितिजा। देवताओं में संसार की तरह सम्बन्ध नहीं होते कि दादा उससे पिता, उससे पुत्र, उससे प्रपौत्र आदि। जैसे आम के बीज से आम का पेड़ फिर आम का फल फिर पुनः बीज होता है उसी प्रकार गणेश से शंकर, शंकर से गणेश, आदि उत्पन्न होते हैं। दिति से उत्पन्न होने वाले दैत्य होते हैं, इस प्रकार दितिज का अर्थ दैत्य हुआ तथा दितिजा का अर्थ दैत्य की शक्ति हुआ। दितिज (दैत्य) + आ (शक्ति)। प्रत्येक शक्ति एक ही होती है। अदिति तो देवी हैं ही, दैत्य की शक्ति भी देवी ही हैं क्योंकि शक्ति का अर्थ ही देवी है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ ऐसी अदिति जो दैत्यों की शक्ति भी हैं। सामान्यतः अदिति को देवमाता माना जाता है।

842. **कीर्तिःकामप्रियादेवी** – भक्तों का यश फैलाने वाली एवं उनकी कामनाओं को पूरा करने से प्रसन्न होने वाली देवी। शब्द के आगे ''का कारण'' लगाने से शब्द का एक अन्य अर्थ आ जाता है। कीर्ति का कारण अर्थात् यश फैलाने वाली। कामप्रिया को मध्यमलोपीसमास मानकर मूल शब्द कामपूरणप्रिया कर सकते हैं। प्रिया का अर्थ है प्रसन्न होने वाली एवं देवी का अर्थ है चमक या प्रकाश से युक्त अर्थात् जिनके चारो ओर श्रेष्ठ आभा मण्डल है या जो स्वयं प्रकाश से ही बनी हुई हैं। कीर्तिस्वरूपा और कामना से प्रिय लगने वाली देवी।

843. **कीर्त्या** – कीर्ति में निपुण। तत्र साधुः सूत्र से यत् प्रत्यय लगाने से कीर्त्य शब्द बनता है जो स्त्रीलिंग में कीर्त्या हुआ। अपनी स्वयं की कीर्ति फैलाने में या अपने भक्तों की कीर्ति फैलाने में निपुण हैं। कीर्ति के योग्य। कीर्तनीय या भजनीय अर्थात जिसका कीर्तन किया जाता है। कीर्ति के द्वारा सुषोभित। भक्तों को कीर्ति देने वाली। कीर्ति+आ, आ का अर्थ है देना। आ का अर्थ नाश करना भी होता हे, इस प्रकार दुष्टो की कीर्ति का नाश करने वाली।

844. **कीर्तिविवर्द्धिनी** – भक्तों का यश बढ़ाने वाली। धर्म की पत्नी कीर्ति की विशेष रूप से अर्थात अधिक समृद्धि करने वाली।

845. **सद्योमांससमालब्धा** – जिनके द्वारा ताजे मांस को अच्छी प्रकार से प्राप्त किया गया अर्थात् जिनको बलि के रूप में ताजा मांस चढ़ाया गया। सद्यः का अर्थ तुरन्त अर्थात् ताजा। मांस का अर्थ खेचरी मुद्रा भी होता है। खेचरी मुद्रा लगाने से जो अच्छी प्रकार से प्राप्त की गई है अर्थात् योग की खेचरी मुद्रा लगाने से तुरन्त प्राप्त होने वाले आनन्द स्वरूपा। समालब्धा का शाब्दिक अर्थ है जिसको अच्छी प्रकार से पाया गया, पर कभी–कभी उपसर्ग अपना कोई अलग अर्थ नहीं बोलते है और धातु का अर्थ ही बोलते है अतः अच्छी प्रकार से लिखने की आवश्यकता नहीं है। ताजे मांस से (बलि देकर) सम्यक् रूप से प्राप्त की गई अर्थात जल्दी प्राप्त होने वाली। सद्योमांस+सम्+आलब्धा।

846. **सद्यश्छिन्नासिशंकरा** – शीघ्र ही अर्थात तत्क्षण तलवार के द्वारा शत्रुओं का संहार करके शान्ति प्रदान करने वाली। तुरन्त विघ्नों को काट देने वाली एवं ऐसी तलवार को धारण किये हुये जो कल्याणकारी है। दुष्टों, राक्षसों को कटना कल्याण करना ही है क्योंकि इससे धर्म की रक्षा होती है और पूरी मानवता को सुख मिलता है। तुरन्त विघ्नों को काट देने वाले तलवार से युक्त एवं कल्याणकारिणी। कल्याण अर्थात् आनन्द, जीवन के सभी आवश्यकताओं की पूर्ति होना।

847. **दक्षिणाचोत्तरापूर्वा पश्चिमादिक्** – दक्षिण, उत्तर, पूर्व और पश्चिम आदि सभी दिशाओं के स्वरूप वाली।

848 **अग्निनैर्ऋतिवायव्याऐशानीदिक्** – अग्नि, नैर्ऋत्य, वायव्य और ईशान इन सभी कोण वाली दिशाओं के स्वरूप वाली।

849. **स्मृता** – देवताओं, भक्तों द्वारा याद की गई अर्थात् याद की जाती है। देवताओं द्वारा जब–जब संकट आता है तब–तब वे पराशक्ति को याद करते है। स्मृता का शाब्दिक अर्थ है याद की गई पर कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र से याद की जाती है या याद की जायेगी अर्थ भी निकलता है। इस सूत्र के अनुसार कृत्य प्रत्यय आवश्यकता पड़ने पर उन कालों एवं कारकों से भिन्न अर्थ देते है जिनमें सामान्यतः प्रयोग किये जाते है। क्त प्रत्यय सामान्यतः भूतकाल में प्रयुक्त होता है किन्तु इस सूत्र से वर्तमानकाल का भी अर्थ निकलेगा। भक्तों के द्वारा याद की गई।

850. **ऊर्ध्वागांधोगता** – कुण्डलिनी शक्ति स्वरूपा। कुण्डलिनी शक्ति सुषुम्ना नाडी में मूलाधार चक्र से सहस्रार चक्र तक ऊपर जाती है एवं सहस्रार चक्र से वापस मूलाधार चक्र में लौटती है। जो ऊपर को भी गई है एवं नीचे को भी गई है अर्थात् सभी जगह विराजमान है अर्थात अनन्त है। उर्ध्वम् अंगति गच्छति इति उर्ध्वांगा। ऊपर की ओर अंग किये हुये पर नीचे नहीं जाती। तात्पर्य हुआ श्रेष्ठता की ओर ही गति करती है एवं मर्यादा नहीं त्यागतीं। उस कुण्डलिनी के रूप में जो सहस्रार चक्र से मूलाधार चक्र में गई। ऊपर से नीचे की ओर गई। ऊर्ध्व लोक से निम्न लोक में गई अर्थात यद्यपि देवी का वास ऊर्ध्व लोक में हैं पर आवश्यकता पड़ने पर पृथ्वी आदि लोकों में अवतार लेने के लिये या भक्तों को दर्शन देने के लिये जाती हैं। ऊर्ध्वांग अर्थात सिर या मुँह। ऊपरी और नीचे के अंगो से युक्त।

851. **श्वेता** – सफेद वर्ण वाली, उज्ज्वल। सफेद वर्ण का तात्पर्य है जो भिन्नता पर नहीं जाती और सभी रूपों में अभेद रखती हैं। शर्करा के समान अर्थात शर्करा के समान मीठी अर्थात मधुर स्वभाव वाली। सतोगुण स्वरूपा या सतोगुण देने वाली।

852. **कृष्णा** – काले रंग वाली अर्था कालीस्वरूपा। कृष्ण की शक्ति। श्यामा तुलसी की तरह अर्थात श्यामा तुलसी की तरह रोग (कष्ट) निवारिका। कृष्णा नदीस्वरूपा। तमोगुण भी आवश्यक है क्योंकि तभी वस्तुएं रुक जाती हैं नहीं तो आसमान में फेंकी गई गेंद वापस न आये। तमोगुणस्वरूपा। भगवान कृष्ण की शक्ति स्वरूपा। कृष्णा अर्थात द्रौपदी स्वरूपा या द्रौपदी से अभेद है जिनका। कृष्णा का अर्थ काले रंग वाली भी होता है। जो आकृष्ट करे वह कृष्णा है। द्रौपदी काली नहीं किन्तु गोरी थी। अपने रूप गुणों से आकृष्ट करने के कारण वे कृष्णा हैं। जो पापों को आकर्षित करे अर्थात आकर्षित कर खत्म कर दे वह कृष्ण है। सौन्दर्यसारतया सर्वलोककर्षणात् कृष्णा। नियमनादि कर्षणाच्च कृष्णा। संसारान्मुक्तिं प्रति कर्षणाच्च। कृष्णवर्णत्वाच्च। कृषेर्भूमेः णः आनन्दो यया सा च कृष्णा। अथ च कृषिर्भूवाचकः सत्तावचन इत्यर्थः। णश्च निर्वृत्तिवाचकः तेन सदानन्दा कृष्णा। सौन्दर्य का सार होने के कारण अर्थात सौन्दर्य का मूल होने के कारण या मुख्य सौन्दर्य होने के कारण सभी लोगों को अपनी ओर खींचने वाली। नियम है कि जो जो वस्तु सुन्दर है वह दूसरे को आकृष्ट करती है। मुख्य सौन्दर्य तो देवी ही हैं, बाकी तो सौन्दर्य के छीटें मात्र हैं। नियमन आदि के द्वारा सबको खींचकर रखने वाली अर्थात मर्यादा के भीतर ही खींचकर रखने वाली। कृष् से खींचना अर्थ लिया और नियमन शब्द का न अक्षर ले लिया। संसार से मुक्ति की ओर खींचकर ले जाने वाली। जिनका रंग साँवला अर्थात काला है। जिनके कारण भूमि का आनन्द है अर्थात भूमि या पृथ्वी आनन्दित या प्रसन्न हो जाती है। भूमि से तात्पर्य पृथ्वी या तीर्थों की जगह ले सकते हैं। जब देवी धरती पर अवतार लेती हैं तो धरती प्रसन्न या आनन्दित हो जाती है। सीता, राधा के रूप में अवतार लिया है। भगवान विष्णु का अवतार लेना भी देवी का ही अवतार है क्योंकि उनमें और शक्ति में कोई भेद नहीं है। कृष् अर्थात भू अर्थात सत्ता। ण अर्थात आनन्द, निवृत्ति। सत्ता अर्थात हमेशा रहने वाली। इस प्रकार कृष्णा का अर्थ हुआ हमेशा रहने वाले आनन्द स्वरूपा या हमेशा आनन्दित रहने वाली। कृषि शब्द

उत्कृष्टवाची है, ण सद्भक्ति का वाचक है एवं अ/आ दाता अर्थ देता है। कृषि शब्द परानन्द के अर्थ में भी आता है। उनके दास्य कर्म में ण का प्रयोग होता है। उन दोनों के दाता जो देवता है वे कृष्णा है। उत्कृष्ट भक्ति देने वाली। परानन्दा एवं ज्ञान को देने वाली। ण का अर्थ ज्ञान भी होता है। भक्तों के कोटि जन्मार्जित पापों और क्लेशों में कृषि का तथा उसके नाश में ण शब्द का प्रयोग होता है। इस प्रकार कृष्णा का अर्थ हुआ कोटिजन्मार्जित पापों अर्थात् पूर्व जन्म में किये हुये पापों का नाश करने वाली।

853. **रक्ता** – लाल रंग वाली। भक्तों पर अनुग्रह करने वाली। अलग अलग अवतारों में अलग अलग रूप हैं और सभी रूप एक ही हैं अतः नामों में विरोधाभास होने पर आश्चर्य नहीं करना चाहिये। अन्यथा भी देवी इच्छानुसार किसी भी रूप को धारण कर सकती हैं। रजोगुण स्वरूपा अर्थात क्रियाशीलता देने वाली।

854. **पीतका** – पीत स्वरूप वाली। स्वार्थ में अर्थात बिना अर्थ बदले कन् प्रत्यय लगाने से पीत से पीतक बना। पीत और पीतक दोनों का अर्थ एक ही है। पृथ्वी का रंग होने के कारण पीला रंग स्थिरता का भी प्रतीक है। पीले रंग से उपलक्षित पृथ्वी के समान स्थिरता देने वाली या स्थिरस्वरूपा यह अर्थ भी हो सकता है। कुछ लोग पीले रंग को गति का संचालक रंग भी मानते हैं। रक्षा शक्ति या स्तम्भन शक्ति स्वरूपा। मांगलिकता देने वाली। पीला रंग पृथ्वी का रंग होता है। यह रंग रक्षा शक्ति या स्तम्भन शक्ति, मांगलिकता का प्रतीक है।

855. **चतुर्वर्गा** – चतुर्वर्ग स्वरूप वाली। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष यह चतुर्वर्ग कहलाते हैं। चतुर्वर्ग देने वाली। चतुर्वर्ग + आ, आ का एक अर्थ है देना।

856. **चतुर्वर्णा** – चार वर्णों वाली अर्थात ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ये वर्ण उनके शरीर के अंग हैं। उनका मुख ब्राह्मण है, भुजाऐं क्षत्रिय हैं, वैश्य उरू हैं और शूद्र पैर हैं। ब्राह्मण आदि उनके शरीर के अंगों के नाम हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र इन चार वर्णों के स्वरूप वाली या इन चार वर्णों वाली अर्थात इन चारों वर्णों से युक्त क्योंकि चारों वर्णों के भक्त इनकी उपासना करते हैं। वर्ण का अर्थ रंग भी होता है। लाल, हरा, नीला, पीला ये चार प्राथमिक रंग हैं। इन प्राथमिक रंगों वाली या इन प्राथमिक रंगों के स्वरूप वाली।

857. **चतुर्मात्रात्मिकाऽक्षरा** – चार मात्राओं के स्वरूप वाले अक्षर स्वरूपा अर्थात ॐ स्वरूपा और अविनाशिनी। अ, उ, म ये तीन मात्रायें सभी जानते हैं। माण्डूक्य उपनिषद के अनुसार ॐ की चौथी मात्रा भी है जो ॐ के निराकार रूप वाली है अर्थात ॐ का उच्चारण हो जाने पर जो मौन या शान्ति रहती है वह चौथी मात्रा है। चार मात्रा के स्वर वाली अविनाशिनी। मात्रा का तात्पर्य काल से है। मात्रा स्वरों की होती है। लोक में ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत मात्रा होती है जो आज की शब्दावली में एक सेकेण्ड, दो सेकेण्ड और तीन सेकेण्ड के बराबर होती है। जब किसी अक्षर को थोड़ा लम्बा अर्थात चार सेकेण्ड तक खींच दे तो वह चतुर्मात्रा हो गई। जैसे ॐ अक्षर को थोड़ा खीच दें तो चार अक्षर हो जाऐंगे। चार मात्राओं वाले अर्थात् ॐ स्वरूपा। ॐ में अ, उ, म ये तीन मात्रायें तो अधिकतर लोगों को पता होती है किन्तु इन तीन मात्राओं के अतिरिक्त एक चौथी मात्रा भी है जिसे मौन (ilence) या अमात्रा कहते है। माण्डूक्य उपनिषद में इस बात का उल्लेख है। (कुछ लोग ॐ की 5 मात्रायें मानते हैं। अ, उ, म, के बाद कुछ देर तक जो म्म्म् इस प्रकार का गुंजार होता है, वह चौथी मात्रा है एवं इस गुंजार के समाप्त हो जाने के बाद जो शान्ति या मौन रहती है वह पाँचवी मात्रा है।)

858. **चतुर्मुखी** – चार मुख वाले ब्रह्मा जी की पत्नी से अभेद है जिनका। संस्कृत में यदि ईकारान्त शब्द ङीष् प्रत्यय लगाने से बने तो उसका अर्थ किसी पुरुष की पत्नी होता है। यह भी नियम है कि यदि किसी गुण या विशेषता को दर्शाना है तो किसी की पत्नी दिखाना अनिवार्य नहीं है। चार मुख वाली, यह अर्थ भी कर सकते हैं।

859. **चतुर्वेदा** – चार वेदों के स्वरूप वाली अर्थात चार वेद जिनके स्वरूप हैं। चारों वेदों को धारण करने वाली

अर्थात इनके ज्ञान से युक्त। चतुर्वेदा अस्या अस्ति इति चतुर्वेदा (चारों वेदों वाली अर्थात चारों वेदों को धारण करने वाली।) चार वेदों के स्वरूप वाली। वेदरूपी ग्रन्थ के स्वरूप वाली या उसके शब्दस्वरूपा हैं।

860. **चतुर्विद्या** – चार विद्याओं के स्वरूप वाली। ये चार विद्याऐं हैं–आन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्ता और दण्डनीति। चार विद्याओं वाली अर्थात चारों विद्याओं के ज्ञान को धारण करने वाली। चतुर्विद्या अस्या अस्ति इति चतुर्विद्या। चार वेदों के अन्दर स्थित ज्ञान स्वरूपा। वेद के शब्द स्वरूपा न होकर अर्थ स्वरूपा। यह पिछले नाम से अन्तर है। विद्या, अविद्या, शस्त्र विद्या, शास्त्र विद्या के स्वरूप वाली। यहाँ अविद्या का तात्पर्य कुछ विद्या/अल्प विद्या/अल्पज्ञान से है, न कि विद्या के अभाव से।

861. **चतुर्मुखा** – स्वयं चार मुख वाली हैं। चतुर्मखी का अर्थ है चतुर्मुख की पत्नी जबकि चतुर्मुखा स्वयं चार मुख वाली है। ब्रह्मा की शक्ति स्वरूपा। एकाक्षरी कोष में आ का अर्थ है शक्ति। चतुर्मुख + आ। मुख बोलने का काम करता है, चबाने अर्थात नष्ट करने का काम करता है। चारों वेदों को बोलने वाली अर्थात उसके ज्ञान का उपदेश देने वाली। मुख का अर्थ आरम्भ भी है। चारों प्रकार की वाणियों, प्राणियों का आरम्भ होता है जिनसे अर्थात इन्हें उत्पन्न करने वाली। वाणी के चारों प्रकारों को अर्थात् परा–पश्यन्ती–मध्यमा–वैखरी को धारण करने वाली। चारों वेदों को धारण करने वाली या उनका उपदेश देने वाली। नाम (कृदन्त)–आख्यात (क्रिया)–उपसर्ग–निपात इन चारों वाक्य को धारण करने वाली। चारों पुरुषार्थों को धारण करने वाली या उनका उपदेश देने वाली। मुख में भोज्य पदार्थ को धारण किया जाता है, चबाया जाता है, मुख से बोला जाता है अतः मुख शब्द से धारण करने वाला, बोलने वाला एवं नाश करने वाला तीनों अर्थ निकलते है। मुख शब्द का अर्थ आरम्भ भी होता है। इन चारों का आरम्भ जिनसे होता है। चारों वेदों का आरम्भ जिनसे होता है अर्थात् इन वेदों की उत्पत्ति करने वाली। मुख का एक अर्थ आरम्भ भी होता है।

862. **चतुर्गणा** – चार प्रमुख गणों (सेवकों) वाली। भगवान शिव के सेवक या अनुचर गण कहलाये जाते है। यद्यपि भगवान शिव के अनेक गण है किन्तु उनमें से चार प्रमुख है जिनके नाम है– नन्दी, वीरभद्र, भृंगी एवं चण्डेश्वर। शिवलिंग के सामने हमेशा नन्दी विराजते है और कहा जाता है कि सर्वप्रथम नन्दी को प्रणाम करना चाहिये एवं उनके कानों से होते हुए शिवलिंग के दर्शन करना चाहिए या उनके कानों में अपनी प्रार्थना कहना चाहिए। वीरभद्र की उत्पत्ति भगवान शिव ने अपने बाल तोड़कर दक्ष का यज्ञ विनष्ट करने के लिए की थी। भृंगी पूर्ण जन्म में अन्धकासुर नामक राक्षस थे, शिव की भक्ति के कारण उन्हें शिव के प्रमुख गणों में स्थान दिया गया। चण्डेश्वर अस्त्र लिये हमेशा युद्ध के लिए तैयार रहते है। शिव मन्दिर में दीवारों पर चण्डेश्वरगण को बनाया जाता है। इन चार प्रमुख गणों वाली कहने का तात्पर्य है कि ये गण देवी की सेवा में हमेशा तैयार रहते हैं। चार प्रमुख समूहों वाली अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों वाली अर्थात् ये समूह भी देवी की उपासना करते है। चार समूहों के स्वरूप वाली या इन समूहों की शक्ति रूप में हैं जो। जरायुज, अण्डज, उद्भिज्ज और स्वेदज ये प्राणियों के चार वर्ग हैं जिन्हें चार गण कह सकते हैं। पंचतन्मात्रा का गण (समूह), पंचमहाभूतों का गण, पंचज्ञानेन्द्रियों का गण, पंचकर्मेन्द्रियों का गण इन चार गणों के स्वरूप वाली। चार मुख्य गणों से सुशोभित।

863. **चतुर्माता** – चार की माता अर्थात चार रूप में माता। चार वेदों को पैदा करने वाली। चार वर्णों अर्थात ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र की माता अर्थात उनकी रक्षा करने वाली। माति शिशुम् गर्भे इति माता अर्थात जो गर्भ में शिशु की रक्षा करती है, वह माता है। इस प्रकार माता का अर्थ रक्षा करने वाली ले सकते हैं।

864. **चतुर्वर्गफलप्रदा** – धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चार वर्गों के फल को देने वाली।

865. **धात्री** – ब्रह्माण्ड को अर्थात समस्त प्रपंच को धारण करने वाली। धात्री अर्थात उप माता की तरह अर्थात प्राणियों को पोषण करने वाली। धा धातु में तृच् प्रत्यय लगाने से यह शब्द बनता है। एकाक्षरीकोश से धा का

अर्थ लेकर एवं त्री का रक्षा करने वाली अर्थ लेकर भी अर्थ कर सकते हैं। धन की रक्षा करने वाली। धा का एक अर्थ धन है। धात्री का अर्थ आँवला भी होता है जो बहुत से रोगों को ठीक करने के लिए प्रयुक्त होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ आँवले की तरह सर्वरोगनिवारिका या सभी कष्टों को दूर करने वाली। विश्व को धारण करने वाली अर्थात जो विश्व को सहारा दिए हुए है या टिकाए हुए है। धारकत्वाद् धात्री। प्राणियों का पोषण करने वाली अर्थात जीवित और स्वस्थ्य रहने के लिए आवश्यक भोज्य पदार्थ, हवा, पानी आदि देता रहता है। दधाति धारयति पोषयति चेति धाता। सभी मनोरथों को देने वाली। सर्वाभीष्टदात्री इति धात्री। धाञ् दाने धातु भी होती है। शुभ अर्थात मंगल या अच्छाइयों का पान करने से या दूसरों को पिलाने से भी इन्हें धात्री कहा जाता है। शुभस्य धयनात् पानात् वा धात्री। धेट् पाने। अच्छाइयों का पान करते है अर्थात अच्छाइयों को धारण किये हुए है अर्थात इनको अच्छी लगती है। ब्रह्मा में गई हुई अर्थात उनमें शक्ति या अंश रूप में विराजमान। धाता का अर्थ है ब्रह्मा में स्थित, अतः धत्री का अर्थ भी हुआ ब्रह्मा में स्थित। धातरि गताश्च तन्नामा। एक नियम है कि शब्द के आगे ''में विराजमान'' या ''का कारण'' लगाने से भी अर्थ निकल आता है। ब्रह्मा का कारण अर्थात ब्रह्मा जी को भी उत्पन्न करने वाली। अधाता को भी धाता कह देते है क्योंकि संस्कृत में कुछ शब्दों के आगे अ नहीं लगा होता है जैसे अपिधान की जगह केवल पिधान कह दिया जाता है। इस प्रकार धात्री का अर्थ हुआ जिसे किसी अन्य ने धारण नही किया है। अधात्री का एक अन्य अर्थ है कि जो ब्रह्मा से भी से बढकर है अर्थात श्रेष्ठ है। अधिको धाता इति अधाता, स्त्रीलिंग में अधात्री। धात्री का अर्थ आँवला भी है। शब्द के आगे ''के समान '' लगाने से भी शब्द का अर्थ निकल आता है। हमें गुण, कर्म आदि में समानता देखनी होती है। इस प्रकार धात्री का अर्थ हुआ– आँवला के समान अर्थात आँवला के समान रोग निवारिका अर्थात कष्टनिवारिका। दधाति पोषयति इति धात्री। जगत का पोषण करने वाली। धाञ् दाने धातु होती है जिससे धात्री का अर्थ भक्तों को अभीष्ट देने वाली। धाता अर्थात् ब्रह्मा में विराजमान। एकाक्षरी कोष में धा के कई अर्थ है जैसे धन, धान्य, ब्रह्मा, रमा, गौरी, पृथ्वी। इस प्रकार धात्री का अर्थ हुआ इनकी अर्थात् धन, धान्य, ब्रह्मा, रमा, गौरी, पृथ्वी की रक्षा करने वाली।

866. **विधात्री** – विधाता ब्रह्मा की शक्ति स्वरूपा। जगत को विशेष रूप से धारण करने वाली। समस्त विश्व की रचना करने वाली। विधाता का अर्थ है रचना करने वाला। वि अर्थात विश्व अर्थात सभी। इस प्रकार विधात्री का अर्थ हुआ सभी का पालन पोषण करने वाली। विधाता अर्थात ब्रह्मा की पत्नी। विश्व की रचयित्री। विशेषरूप से देने वाली अर्थात मोक्ष देने वाली। विशेष अर्थात जो दूसरों से हटकर हो। मोक्ष सभी से हटकर या बढकर है। विशेषतो धात्री मोक्षदानेन। धाञ् दाने धातु भी होती है। कर्मों का उचित फल करने वाली अर्थात देने वाला। कर्मणाम् उचितम् फलं विदधाति करोति। जिसने जैसा कर्म किया है, वैसा फल पायेगा। विविध प्रकार के विश्वों की रक्षा करने वाली। त्री अर्थात रक्षा करने वाली। बहुविधा का विधा शब्द एवं आतनोति, अतति से त शब्द लेकर के भी अर्थ कर सकते हैं। विदधाति का अर्थ है करोति अर्थात करना अर्थात् देना। अनेक प्रकार के जगत को विस्तार देने वाले। विधा अर्थात् बहुविधा। अनेक प्रकार के विश्व में गति करने वाले अर्थात् उसमें विराजमान। गति का अर्थ संचालन करना या स्पन्दन करना भी है। अनेक प्रकार के जगत को संचालित करने वाले। नाना प्रकार के जगत को विस्तारित करने वाली या उसमें निरन्तर गति करने वाली। गति करना अर्थात उसमें विराजमान होना, स्पन्दन करना या संचालित करना। बहुविधां जगतीम् आतनोति, अतति च। बहुविधायाः संसृतेस्तारयति। अनेक प्रकार की सन्ततियों को तार देने वाली। बहुविधा से विधा शब्द ले लिया एवं तारयति से त्री बना दिया। जिनके द्वारा विभिन्न प्रकार की संसार की गतियाँ (योनियाँ) तर जाती है। विविधा संसारगतीः तरन्ति अनया। गजेन्द्र को मोक्ष दे दिया। कबूतर ने अमृत कथा सुनी थी। जटायु को मोक्ष मिला था। तात्पर्य है कि केवल मनुष्य ही नहीं, अन्य योनियों को भी तार देती हैं। विश्च धात्री च। जो ज्ञानस्वरूपा हैं एवं विश्व को

धारण करने वाली हैं। व का अर्थ ज्ञान होता है। विश्व को धारण करने वाली हैं। विश्वम् धाता च विधाता। (विधाता नाम भगवान विष्णु का भी है जिसका विग्रह किया गया है–केवल गरूड ही इनको धारण नही करते बल्कि वास्तव में ये गरूड को धारण करते है। न केवलम विः पक्षी गरूडः एनं धत्ते। किन्तु वस्तुतः अयमेव तमपि धत्ते)। ब्रह्मा जी के अन्दर स्थित या इनके हृदय में गति करने वाली या विराजमान। ब्रह्मा जी के हृदय में वास करने वाली। विधातुः अन्तर्यामी तन्नामा। मुक्त पुरुषों को विशेष रूप से धारण करने वाले अर्थात उनका पोषण करने वाली। बन्धन से मुक्त पुरुषों को विशेष रूप से पोषण करने वाली या धारण करने वाली। विशेषेण धत्ते पोषयति मुक्तान्। 'यो नः पिता जनिता यो विधाता', यह शास्त्र में लिखा है। आत्मा के रूप में एवं शक्ति के रूप में गरूड में प्रविष्ट होकर उसे धारण किये गये है अतः उनका अस्तित्व बनाये हुये है। वि अर्थात पक्षी या गरूड़ क्योंकि वह पक्षीराज हैं। राजा को बोलने से प्रजा का भी बोध हो जाता है अर्थात गरूड़ सभी पक्षियों का प्रतिनिधित्व कर रहा है। धात्री का अर्थ है आँवला, विशिष्टप्रेम से वि अक्षर ले लिया इस प्रकार विधात्री का अर्थ हुआ विशिष्ट प्रेम है जिनका धात्री (आँवला) के प्रति अर्थात आँला को बहुत अधिक पसन्द करने वाली। जिनका कोई दूसरा पोषण करने वाला नहीं है। वि अर्थात विगत या विहीन।

867. **मिथुना** – द्वन्द्व स्वरूपा अर्थात युगल रूप में रहने वाली। देवी हमेशा भगवान शिव के साथ रहती है। अर्द्धनारीश्वर रूप भी इसी ओर इंगित करता है। मिथुन राशि स्वरूपा या मिथुन राशि की शक्ति (प्रभाव) स्वरूपा। मिथुन+आ=मिथुना। एकाक्षरी कोश में आ का एक अर्थ शक्ति दिया गया है। मिथुन रूप वाली। मिथुन या युग्म रूप जैसे शिव –पार्वती (अर्द्धनारीश्वर), लक्ष्मी–विष्णु आदि। दाम्पत्य भाव में रहने वाली। एक दूसरे के आश्रित होकर रहने वाली अर्थात अर्द्धनारीश्वर स्वरूप वाली। इसमें शिव और शक्ति दोनों एक–दूसरे पर आश्रित रहते हैं। मि+थु+ना, मिनोति श्रयतिकर्मा, मिनोति का अर्थ आश्रय लेना भी है और मिनोति से मि अक्षर ले लिया। थु नामकरण प्रत्यय है अर्थात कृदन्त प्रत्यय है। नी धातु या वन् धातु से न ले लिया। समाश्रित हो एक–दूसरे की ओर जाना मिथुन कहलाता है। मिथ धातु का अर्थ संगमन करना एवं वन धातु का अर्थ कामना करना है। संगमन करते हुए एक दूसरे की कामना करने वाले मिथुन कहलाते है। मिथुना का अर्थ जोड़े में रहने वाले सभी पदार्थों के स्वरूप वाली भी कर सकते हैं जैसे दिन और रात, द्यौ और पृथ्वी आदि। (अग्नि और सोम, ब्रह्म और क्षत्र, गायत्री और सावित्री, शब्द और अर्थ, अग्नि और पृथ्वी, नर और नारी, वायु और आकाश, द्युलोक एवं सूर्य, मन और वाक्, सकारात्मक एवं नकारात्मक ऊर्जा, प्राण और अपान जोड़े में ही रहते हैं।) आश्रयार्थक, आसेवनार्थक, मिञ्धातु, से 'थु' नामकरण (प्रत्यय) लगाया गया। नी धातु में ड प्रत्यय लगाने से टि का लोप होकर न बना। नी धातु का अर्थ है लाना। अतः न या ना का अर्थ लाने वाला, लाने वाली अर्थात् प्राप्त करने वाला/प्राप्त करने वाली होता है। इस प्रकार मिथुना शब्द बन जाता है। इसका अर्थ हुआ परस्पर आश्रित होकर (मिलकर) सुख को प्राप्त कराने वाली। तात्पर्य हुआ देवी अपने पति शिव से परस्पर आश्रित होकर एक दूसरे को या भक्तों को सुख प्राप्त कराती हैं। वन सम्भक्तौ धातु में या वनोतिः कान्तिकर्मा धातु में क प्रत्यय लगाने से भी उन शब्द बन सकता है। मिञ् + थ > मिथ; वन् + क > उन् + अ > उन, मिथ + उन > मिथ् + उन > मिथुन। इस प्रकार मिथुन का अर्थ हुआ जो जोड़े में रहने वाली है अर्थात् शिव के साथ रहने वाली है। एक दूसरे के मनोभावों का जानते हुए परस्पर कामना करने के कारण भी स्त्री–पुरुष के युगल का नाम मिथुन है। मिथ का अर्थ है परस्पर। वेद में उषा–सूर्य आदि युगल का नाम मिथुन है। इसी प्रकार सभी जोड़ों का नाम पुरुष में मिथुन और स्त्रीलिंग में मिथुना हो जायेगा। मिथुन राशि में विराजमान (इस राशि की शक्ति या गुण के रूप में विराजमान)। दम्पति भाव से रहने वाला जोडा मिथुन या मिथुना है।

868. **नारी** – स्त्री स्वरूपा। दुर्गा सप्तशती के चौथे अध्याय में स्तुति में कहा गया है कि संसार की समस्त स्त्रियाँ देवी के रूप हैं। न + अरि अर्थात जिसका कोई शत्रु नहीं है। नृणाति नयति सन्मार्गे इति नारी अर्थात जो पति

सहित पूरे परिवार को सन्मार्ग में ले जाए वह नारी होती है। देवी के सन्दर्भ में अर्थ होगा जो समाज को सन्मार्ग की ओर ले जाए। वह शक्ति जिससे मनुष्य विषयों में रमण (उपभोग करना या जाना) छोड़ देता है, नारी है। नर शब्द का एक विग्रह है– न रमते विषयेषु इति नरः अर्थात् जो इन्द्रियों के विषय में रमण नहीं करते, वे नर कहलाते है। रमण करने का अर्थ है कहीं पर जाना, रहना, क्रीड़ा करना, उपभोग करना, आनन्दित होना। इन्द्रियों के विषय से हटाने वाली वैराग्य वृत्ति ही नारी नामक शक्ति है। नरों से युक्त पृथ्वी। नायकों से युक्त सेना।

869. **नायकवासिनी** – किसी गण के मुखिया के शरीर में निवास करने वाली (शक्ति रूप में)। नायक अर्थात नेतृ अर्थात जो ले जाता है, अपने पीछे लोगों की पक्तियॉ लगा देता है। ऐसा कहा जाता है कि राजा में आठ लोकपालों का वास हो जाता है। अपने नायक में निवास करने वाली। पार्वती के नायक शिव, लक्ष्मी के नायक विष्णु। नायक की आधारा हैं जो। नायक भी निवास करतें हैं जिसमें । दोनों अर्थ निकल सकते हैं। वह शक्ति जिससे मनुष्य विषयों में रमण (उपभोग करना या जाना) छोड़ देता है, नारी है। नर शब्द का एक विग्रह है– न रमते विषयेषु इति नरः अर्थात् जो इन्द्रियों के विषय में रमण नहीं करते, वे नर कहलाते है। रमण करने का अर्थ है कहीं पर जाना, रहना, क्रीड़ा करना, उपभोग करना, आनन्दित होना। इन्द्रियों के विषय से हटाने वाली वैराग्य वृत्ति ही नारी नामक शक्ति है।

870. **सुरा** – सहस्रार चक्र से टपकने वाले अमृत द्रव स्वरूपा। सोमरसस्वरूपा। मदिरारूपिणी। समुद्र से जो चौदह रत्न निकले थे उसमें सुरा भी एक रत्न था। सुष्ठु रायति अनया इति सुरा अर्थात जिसके द्वारा अच्छी प्रकार से शब्द या आवाज की जाती है। अच्छी प्रकार से शब्द करने वाली।

871. **मुदा** – प्रसन्नता देने वाली। मुद (प्रसन्नता) + आ, आ का अर्थ है देना। हर्ष, आनन्द, प्रसन्नता (प्रीति) स्वरूपा।

872. **मुदवती** – आनन्द से युक्त।

873. **मोदिनी** – सबको प्रसन्न या आनन्दित करने वाली। जूही, कस्तूरी, चमेली की तरह प्रसन्न, सुगन्धित और सुन्दर। मोदिनी का एक अर्थ जूही, कस्तूरी, चमेली होता है। प्रसन्न होने वाली या प्रसन्नता का अनुभव करने वाली। शिव से एकाकार होने पर मिलने वाले आनन्द का अनुभव करने वाली।

874. **मेनकात्मजा** – मेनका की पुत्री पार्वती के स्वरूप में। पार्वती जी की मॉ का नाम मेना या मेनका था। मेनका की पुत्री शकुन्तला के रूप में। मेनका में आत्मस्वरूप से व्याप्त। ज/जा के एकाक्षरी कोष के अनुसार कुछ अर्थ हैं – विस्तार, व्याप्त, शैय्या। शैय्या में बैठा जाता है या सोया जाता है।

875. **ऊर्ध्वकाली** – उर्ध्व स्थान में स्थित काली। देवी का मूल स्वरूप उच्चलोक में स्थित है यद्यपि वे सर्वत्र व्याप्त है। आपने देवी मन्दिरों को देखा होगा कि वे पहाड़ों पर स्थित है। उर्ध्वमुख वाली काली, यह अर्थ भी कर सकते है। यह मध्यमपदलोपी समास है। ऊर्ध्व के बाद स्थान या मुख शब्द डाला गया है जिससे अर्थ में स्पष्टता आ जाए। ऊँचे स्थान पर निवास करने वाली काली से अभेद है जिनका यह अर्थ भी कर सकते हैं। काली के उत्कृष्ट रूप को धारण करने वाली। काली के विभिन्न रूप होते हैं उन रूपों में सर्वश्रेष्ठ स्वरूप जो है उस स्वरूप से अभेद है देवी का।

876. **सिद्धिकाली** – सिद्धि देने वाली काली से अभेद है जिनका।

877. **दक्षिणाकालिकाशिवा** – दक्षिणा कालिका के रूप को धारण करने वाली पार्वती। दक्षिणा कालिका को दक्षिणा इसलिए कहते हैं क्योंकि वे दक्षिण दिशा में वास करने वाले यम को भयभीत कर भगा देती है। दक्षिण का अर्थ चतुर या दक्ष भी होता है। जो समस्त कार्यों को करने में दक्ष है वह दक्षिणा है।

878. **नीला** – नीला नदी स्वरूपा। महाभारत में नीला नदी का उल्लेख है। नीलम मणि धारण करने वाली। नीलः अस्या अस्ति इति नीला। नील का एक अर्थ नीलम मणि, बरगद, नील नाम की एक निधि, 10 हजार अरब की संख्या है। नीलम रत्न शनि के प्रभाव को दूर करता है, अतः इस नाम का अर्थ नीलम रत्न की तरह शनि के प्रभाव को दूर करने वाली होगा। बरगद की शक्तिस्वरूपा या बरगद की तरह आश्रेय लेने वालों को शीतलता देने वाली। नील स्वरूपा। नीले वेश धारण करने वाली। नील सरस्वती से अभेद है जिनका। ऐसा कहते हैं कि लील ही नील हो गया अर्थात जो सरस्वती कार्यों को यूँ ही लीलापूर्वक (अर्थात सरलतापूर्वक) कर देती हैं वे नील सरस्वती हैं। संस्कृत में नीला और काला एक ही होता है। नीले रंग वाले आकाश स्वरूपा।

879. **सरस्वती** – सरस् (प्रवाह) से युक्त। ज्ञान के प्रवाह से युक्त। ज्ञान गुरू से शिष्य, शिष्य से उसके शिष्य इस तरह से प्रवाहित होता रहता है। सरस्वती या ज्ञान स्वरूपा। सरस् का अर्थ गति भी है। गति अर्थात चेष्टा। जो देवताओं एवं प्राणियों को चेष्टावान बनाती हैं, वह सरस्वती है। सृ धातु में असुन् प्रत्यय लगाने से यह शब्द बन सकता है। सृ गतौ धातु होती है अतः सरस्वती का अर्थ हुआ गति की अधिष्ठात्री देवी, जिससे समस्त गतियाँ प्रवर्तित होती हैं, सब आलोक प्रकाशक होता है, अज्ञान दूर होता है, ज्ञान का विकास होता है। गद्य पद्यादि रूप में जिसका (वाक्/शब्द का) प्रसारण (सृ धातु) होता है, वह सरस्वती है। जहाँ छन्द है, वही गति सरस्वती रूप है। जहाँ छन्द नहीं है, वहाँ अज्ञान है। विज्ञानवती वेद विद्या स्वरूपा। वैदिक कोष में आज्ञा पहुँचाने के कार्य में लगायी जाने वाली स्त्री को सरस्वती कहा गया है, ऐसी स्त्री में विराजमान रहने वाली। सृ गतौ धातु से गति या पहुँचना अर्थ किया गया होगा। वेद में विद्वानों की प्रतिस्पर्धा वाली सभा का भी नाम सरस्वती किया गया है। ऐसी सभा में विराजमान। नियम है कि शब्द के आगे "में विराजमान" लगाने से शब्द का अन्य अर्थ आ जाता है। सरति इति सरः, जो गति करता है वह सर है। ज्ञान एक व्यक्ति से दूसरे के पास जाता है या गति करता है अतः सर का अर्थ ज्ञान हुआ। सरस्वती अर्थात ज्ञान से युक्त अर्थात ज्ञान देने वाली। देना अर्थ शब्द में नहीं है पर लक्षणा से यह अर्थ आता है। देवी या देवता वे हैं जो देते हैं।

880. **सत्वा** – सत्व स्वरूपा या सतोगुण स्वरूपा। प्राण या बल स्वरूपा। सत्व का अर्थ प्राण या बल भी होता है।

881. **बगला** – गगनानन्द ऋषि द्वारा उपासित ऐसी शक्ति जिसके एक ओर वशिनी एवं दूसरी ओर लाकिनी है। इस नाम के बीच में जो ग है उससे गगनानन्द हुआ। आखिरी ल अक्षर से लाकिनी लिया। वल्गा ही वर्ण इधर उधर होने से बगला हो गया। वल्गा का अर्थ है शत्रु मारने के लिए प्रयुक्त कृत्या। कृत्या अभिचार कर्म की देवी हैं और यह शब्द कृति छेदने से बना जिसका अर्थ है शत्रुओं का छेदन करने वाली।

882. **छिन्नमस्तका** – छिन्नमस्ता देवी के रूप में। इन देवी का मस्तक कटा हुआ है तथा अपने मस्तक को अपने ही हाथ में लिये हैं। One of the great goddesses who represents destruction of the three granthis। रूद्र ग्रन्थि भेदने वाली। मस्तक शरीर का सबसे प्रमुख अंग है। प्रमुख अंग कहने से अन्य सारे अंगों को भी बोध हो जाता है। रूद्र ग्रन्थि का भेदन तभी होगा जब ब्रह्मा ग्रन्थि एवं विष्णु ग्रन्थि का भेदन पहले हो चुका हो। इस प्रकार तीनों ग्रन्थियों को भेदने वाली कहा दिया गया है। विचार मस्तिष्क में ही होता है। इस नाम का अर्थ हुआ निर्विचार स्वरूप वाली। विचार रहित होने से कुण्डलिनी शक्ति ऊपर उठने में सहायता मिलती है। बच्चों की तरह मासूमियत लिये हुए। बच्चे ज्यादा विचार नहीं करते हैं तभी उनके बारे में कहा जाता है कि उनमें दिमाग नहीं है। ऐसे साधकों वाली जिन्होंने रुद्र ग्रन्थि, आज्ञा चक्र एवं सहस्रार चक्र का भेदन कर लिया है। ऐसे साधकों में विराजमान। आज्ञा चक्र एवं सहस्रार चक्र मस्तिष्क में ही होते हैं।

883. **सर्वेश्वरी** – सभी की स्वामिनी। विश्व का संचालन करने वाली। विश्व के ऐश्वर्य की स्वामिनी। सर्व का

एक अर्थ विश्व है। सर्व का अर्थ विष्णु, शिव, पारा, जल भी होता है। अतः इस नाम का अर्थ हुआ भगवान विष्णु या भगवान शिव की आराध्या।

884. **सिद्धविद्या** – अवश्य ही सफलता देने वाले मन्त्रस्वरूपा। इसमें योग्य और अयोग्य का प्रश्न नहीं है। कोई भी जपे सफलता अवश्य मिलती है। स्त्री देवता के मन्त्र को विद्या कहते हैं। सिद्धों के द्वारा जिस मन्त्र का जप किया जाता है वह सिद्ध–विद्या है।

885. **परा** – परा वाणी स्वरूपा। मूलाधार चक्र में उत्पन्न होने वाली वाणी के प्रथम स्वरूप को परा वाणी कहते हैं। उत्कृष्टतम स्थिति वाली। सर्वश्रेष्ठ स्वरूप वाली।

886. **परमदेवता** – देवताओं में जो परम अर्थात सर्वोपरि हैं। उत्कृष्टतम देवी स्वरूपा। रूप, गुण, शक्ति में इनसे ऊपर कोई नहीं।

887. **हिंगुला** – हिंगुल वृक्ष के समान फलों से हमेशा लदी हुई, हमेशा पुष्पित रहने एवं मधुर सुगन्ध निकालने वाली। फलों से लदे होने का तात्पर्य है भक्तों को हमेशा फल देने वाली और पुष्पित होने का तात्पर्य है हमेशा प्रसन्न रहने वाली। मणिद्वीप जो देवी का निवास स्थान है में हिंगुल वृक्ष पाया जाता है जो हमेशा फल से लदा रहता है, हमेशा पुष्पित और पल्लवित रहता है तथा इससे मीठी सुगन्ध निकलती है जो द्वीप के कण कण में फैल जाती है। हींग के गुण को धारण करने वाली अर्थात हींग की तरह रोगनिवारिका अर्थात कष्टों को दूर करने वाली। हिंगु का अर्थ है हींग, जतुक (लाक्षा), सिन्दूर। लाक्षा से महावर बनता है जिसे महिलाऐं पैरों में लगाती हैं। हिंगुम् लाति धारयति अर्थात जो महावर को लगाऐ हुए है वह हिंगुला है। हिमम् गच्छति, गमयति में डु प्रत्यय लगाने से भी हिंगु शब्द बन सकता है जिसका अर्थ होगा बर्फ या शैत्य। डित् प्रत्यय लगाने से टि अर्थात गम् के अम् का लोप हो जाता है। शैत्य से तात्पर्य मस्तिष्क की जड़ता, दरिद्रता से है। पैसे में गर्मी होती है यह आपने सुना होगा। इसका तात्पर्य है कि गरीबी या दरिद्रता का तात्पर्य है ठण्डापन। मस्तिष्क ठण्डा हो गया अर्थात काम नहीं करता अर्थात मस्तिष्क की जड़ता या मूर्खता। लाति का अर्थ धारयति भी होता है और नाशयति भी होता है। इस प्रकार हिंगुला का अर्थ हुआ दरिद्रता, मस्तिष्क की जड़ता का नाश करने वाली, हटाने वाली। हींग के वर्ण को धारण करने वाली। हिंगु का अर्थ होता है हींग। ला आदाने से ला का अर्थ हुआ ग्रहण करना। सिन्दूर की तरह लाल आभा वाली। हिंगुल का एक अर्थ सिन्दूर भी होता है। हिंगुल शब्द का सिन्दूर (ईंगुर), हींग अर्थ होता है। हिनोति धातु रूप का अर्थ शीघ्र गति करना होता है जिससे हिंगू शब्द बना जिसे हिन्दी में हींग कहते हैं। इसकी गन्ध बहुत तेजी से फेल जाती है जिसके कारण उसे हिंगू कहते हैं। लाति का अर्थ है धारण करना। शीघ्रता से गमन करने वाले गुण को धारण करने वाली, यह भी हिंगुला नाम का अर्थ हो सकता है।

888. **हिंगुलागीं** – जिसके सभी अंगों का रंग सिन्दूर की तरह लाल है। बर्फ के समान अंगों वाली अर्थात गौर वर्ण वाली। नामों में विरोध होने पर आश्चर्य नहीं करना चाहिये क्योंकि इच्छानुसार देवी कोई भी रूप धारण कर सकती हैं। हिंगुम् लाति इति हिंगुला। हिंगुम का अर्थ है शैत्य, लाति का अर्थ है धारण करने वाली। शीतलता को धारण करने वाला अर्थात बर्फ।

889. **हिंगुलाधरवासिनी** – हिंगुल नामक पर्वत पर निवास करने वाली। धर का अर्थ है पर्वत जैसे महीधर। हिंगुल पर्वत सिन्ध और बलूचिस्तान के बीच में है।

890. **हिंगुलोत्तमवर्णाभा** – सिन्दूर का जो श्रेष्ठ वर्ण है उसकी तरह आभा वाली अर्थात लाल आभा वाली। हिंगुलांगी और इस नाम में अन्तर यह है कि हिंगुलांगी में अंगों का रंग लाल बताया गया है। जबकि इस नाम में उनके शरीर से निकलने वाली कान्ति का रंग लाल बताया गया है। सिन्दूर के रंग होते होंगे जेसे चमकीला

लाल, कम चमकीला लाल आदि। चमकीला लाल श्रेष्ठ लाल रंग है। बर्फ के उत्तम वर्ण की तरह आभा वाली यह अर्थ भी कर सकते हैं। बर्फ के भी कई रंग होते हैं।

891. **हिंगुलाभरणा** – सिन्दूर है आभूषण जिनका अर्थात सिन्दूर को आभूषण के रूप में धारण करने वाली। हींग के समान पीले रंग के आभूषणों से युक्त। हींग की शोभा से युक्त। आभरण का अर्थ है शोभा।

892. **जाग्रती** – जाग्रत अवस्था से सुशोभित। जाग्रत अवस्था स्वरूपा। प्रत्येक चीज जैसे गुण, भाव, अवस्था, समय, पदार्थ ऊर्जा का रूपान्तरण हैं। ऊर्जा ही शक्ति या देवी हैं।

893. **जगन्माता** – जगत की माता अर्थात जगत को पैदा करने वाली, उसका पालन करने वाली।

894. **जगदीश्वरवल्लभा** – शिव या विष्णु की प्रियतमा। शिव और विष्णु दोनों को जगदीश्वर माना जाता है पर ब्रह्मा को जगदीश्वर नहीं माना जाता है। ब्रह्मा ने असुरों को वरदान तो बहुत दिये हैं पर उनका संहार नहीं किया। जबकि विष्णु और शिव ने असुरों का संहार भी किया। अतः ब्रह्मा को जगदीश्वर नहीं कहते।

895. **जनार्दनप्रियादेवी** – भगवान विष्णु की प्रियतमा देवी। देवी का अर्थ है दिव्य स्वरूप धारण करने वाली।

896. **जययुक्ता** – वशीकरण शक्ति से युक्त। जय का एक अर्थ वशीकरण शक्ति भी होता है। जय नामक सहेली से युक्त दुर्गा स्वरूपा।

897. **जयप्रदा** – भक्तों को इन्द्रियों पर जीत दिलाने वाली। राक्षसों के जय अभियान को पूर्ण रूपेण खण्डन करने वाली अर्थात रोकने या समाप्त करने वाली। प्र अर्थात प्रक्रष्ट अर्थात पूर्णरूप से। दो अवखण्डने से दा का अर्थ अवखण्डन करना होता है।

898. **जगदानन्दकारी** – संसार को आनन्दित कर देने वाली।

899. **जगदाह्लादकारिणी** – जगत को आह्लादित करने वाली। हृदय की खुशी को आह्लाद कहते हैं। आह्लादन शब्द प्रायः लौकिक सुख में प्रयुक्त होता है। जबकि आनन्द शब्द अलौकिक सुख के लिए प्रयुक्त होता है। आ समन्तात् नन्दति इति आनन्दा अर्थात जो सभी ओर से अर्थात पूर्ण रूप से प्रसन्न रहती हैं। आ नन्दयति इति आनन्दा अर्थात जो चारों ओर से प्रसन्नता देने वाली हैं।

900. **ज्ञानदानकरी** – ज्ञान का दान करने वाली अर्थात ज्ञान देने वाली।

901. **यज्ञा** – यज्ञ स्वरूपा। गीता के अनुसार निष्काम भाव से किये हुए समस्त कर्तव्य कर्म या परोपकार के कर्म यज्ञ कहलाते हैं। यज्ञ का अर्थ केवल हवन करना नहीं है। आत्म –उत्थान के लिए किये जाने वाले सभी श्रेष्ठ कर्म यज्ञ हैं। जो चीज आपकी है अर्थात जिस चीज के आप मालिक हैं उसे मानवता की भलाई में लगाना यज्ञ है।

902. **जानकी** – सीता स्वरूपा। जनक की पुत्री सीता से अभेद है जिनका। जनक (अर्थात पिता अर्थात ब्रह्मा जी) से सम्बन्धित अर्थात प्रकृति स्वरूपा। सीता जी को पवित्र बुद्धि और पवित्र सोच का प्रतीक बताया गया है क्योंकि इसी से भगवान राम अर्थात ब्रह्म या परमात्मा की प्राप्ति होती है।

903. **जनकप्रिया** – अपने पिता को प्रसन्न रखने वाली। जो अपने चरित या कार्य से अपने पिता को प्रसन्न रखती है। पार्वती जी अपने कार्यों से अपने पिता हिमालय को प्रसन्न रखती थी। प्रीणाति इति प्रिया अर्थात जो प्रसन्न करे वह प्रिय है। जनक की पत्नी से अभेद है जिनका। जनक को सीता अत्यन्त प्रिय लगती थी अतः सीता भी जनकप्रिया का अर्थ है। ब्रह्मा जी को प्रसन्न करने वाली या उनसे प्रसन्न रहने वाली। जो रचनात्मक कार्य करते हैं उनसे प्रसन्न रहने वाली।

904. **जयन्ती** – पताका स्वरूपा अर्थात दूर से पहचानी जाने वाली। जयन्ती का एक अर्थ पताका भी होता है। विजय प्रदान करने की शक्ति से युक्त। पताका विजय का प्रतीक है। हल्दी के समान सर्वरोगनिवारिका अर्थात कष्टों को दूर करने वाली। जयन्ती का एक अर्थ हल्दी है। पवित्र जौ के गुणों को धारण करने वाली। जयन्ती का एक अर्थ जौ भी है। जयन्ती तिथि स्वरूपा। भक्तानां जयं तनोतीति जयन्ती। जयतीति जयन्ती। जि अभिभवे इत्यतो जीयादिति जयन्तो राजेति वैयाकरणाः। राजसु गतो जयन्ती। जनयति, यमयति, तनोति च। जयन्तगतस्तन्नामा। भक्तों को जय देने वाली या कार्यों में सफलता देने वाली। तन् धातु का अर्थ विस्तार करना, देना, निर्माण करना होता है। जय शब्द का एक अर्थ है सर्वोत्कर्षेण वर्तते अर्थात् सबसे श्रेष्ठ। भक्तों को जय देती है अर्थात् उनका उत्कर्ष करती है। राजाओं को आशीर्वाद में बोला जाता था कि तुम्हारी जय हो। जिस राजा को पण्डितों ने आशीर्वाद दिया कि तुम्हारी जीत हो, ऐसे राजा में शक्ति रूप से विराजमान। जगत को जन्म देने वाली, अनुशासित (नियन्त्रित) करने वाली एवं उसका विस्तार करने वाली। जनसंख्या का विस्तार होना या क्षेत्र का विस्तार होना विस्तार है। बिन्दु से ही चीजें फैलती हैं, जगत बिन्दु का ही विस्तार है। जयन्त नामक राजा में या इन्द्र के पुत्र में शक्ति रूप में विराजमान। इन्द्र की पुत्री जयन्ती शक्ति रूप में विराजमान। नियम है कि शब्द के आगे ''में विराजमान'' जोड़ देने से शब्द का एक अन्य अर्थ आ जाता है।

905. **जयदा** – मुकदमों में विजय दिलाने वाली। कल्याणवचन देने वाली अर्थात बोलने वाली। जय का एक अर्थ कल्याणवचन भी है। भक्तों को जीत का वरदान देने वाली।

906. **नित्या** – भगवान विष्णु या शिव की शक्ति स्वरूपा। भगवान विष्णु एवं शिव का एक नाम नित्य है। प्राक् –अभाव एवं प्रध्वंस –अभाव से रहित। उत्पत्ति और विनाश से रहित। हमेशा रहने वाली। तीनों कालों में जिनका अस्तित्व है। प्रतिदिन होने वाले नित्य कर्म की शक्ति स्वरूपा या नित्य कर्म के रूप वाली।

907. **ज्वलदग्निसमप्रभा** – प्रज्जवलित अग्नि के समान कान्ति वाली।

908. **बिम्बाधरा** – बिम्ब फल के समान लाल नीचे वाले ओठों वाली। बिम्ब फल लाल होता है। लाल अधर वाली। अधर का अर्थ है नीचे वाला ओष्ठ।

909. **बिम्बोष्ठी** – बिम्ब फल के समान लाल दोनों ओष्ठ वाली। ओष्ठ कहने से अधरोष्ठ एवं ऊर्ध्वोष्ठ दोनों होंठ आ जाते हैं। चूँकि ऊपर अधर शब्द आया है अतः ओष्ठ का अर्थ ऊपर वाला ओष्ठ भी कर सकते हैं। रजोगुण धारण करने वाली। बिम्ब फल लाल होता है जो रजोगुण का प्रतीक है। रजोगुण है ओष्ठ में जिनके अर्थात् रजोगुण को धारण करने वाली। बिम्ब फल लाल रंग का होता है और लाल रंग रजोगुण का प्रतीक है। ओ का अर्थ है सम्मुख, एवं स्थ का अर्थ है स्थित।

910. **कैलासाचलवासिनी** – कैलास पर्वत पर वास करने वाली। सहस्रारचक्र पर निवास करने वाली। योग में सहस्रारचक्र को कैलास पर्वत माना गया है।

911. **विभवा** – धन–सम्पत्ति स्वरूपा। धन–सम्पत्ति देने वाली। विभव+आ, विभव अर्थात धन सम्पत्ति, आ अर्थात देना। विशिष्टा भवाः यस्या सा। विशेष रूप से है उत्पत्ति जिनकी। मनुष्यों की तरह स्त्री पुरुष के संयोग से उत्पत्ति नहीं है अर्थात इनकी उत्पत्ति विशेष (औरों से हटकर) है। दुर्गासप्तशती में आया है कि सभी देवताओं के तेज से मिलकर महालक्ष्मी की उत्पत्ति हुई। समुद्रमन्थन से लक्ष्मी जी पैदा हुई। सभी देवियाँ स्वरूपतः एक ही हैं। धन, सम्पत्ति स्वरूपा। शक्ति, ऐश्वर्य स्वरूपा। सौन्दर्य स्वरूपा। आधिक्य या बहुतायत स्वरूपा। मोक्ष स्वरूपा। अवतारों से अभेद है जिनका। भगवान के अवतार विभव कहलाते हैं।

912. **वडवाग्निश्च** – समुद्र की अग्नि के रूप में। समुद्र की अग्नि जल को सोखती हैं।

913. **अग्निहोत्रफलप्रदा** – अग्नि मे हवन करना रूपी यज्ञ का फल देने वाली।

914. **मन्त्ररूपा** – मन्त्रस्वरूप वाली। मन्त्र देवताओं का नाद स्वरूप या सूक्ष्म स्वरूप होता है। मन्त्रों का निर्माण करने वाली। मन्त्रों का साक्षात्कार कराने वाली। मन्त्रान् रूपयति इति मन्त्ररूपा। रूपयति का अर्थ है निर्माण करना, दिखाना। मन्त्रों से ज्ञापित या बोधित होने वाली। रूपा अर्थात ज्ञापिका या बोधिका।

915. **परादेवी** – उत्कृष्टतम स्थिति वाली देवी। अन्य देवियों से श्रेष्ठ देवी।

916. **गुरूरूपिणी** – अज्ञान रूपी अन्धकार को दूर करने वाली। गु अर्थात अंधकार, रू अर्थात निरोधक अर्थात रोकने वाला अर्थात नाश करने वाला। गुरू रूप धारण करने वाली। उपदेश करने वाली। गृणाति इति गुरु, गृ शब्दे धातु होती है। किसी को ज्ञान देने वाले जितने भी ऋषि देवता, गुरू हुए हैं, उनके स्वरूप को धारण करने वाली। गुरू का अर्थ भारी या गम्भीर भी होता है। जो अपने ज्ञान के भण्डार से भारी है अर्थात गरिमा युक्त है वह गुरू है। सभी गुरूओं की भी गुरू अर्थात उन्हें ज्ञान देने वाली। जगत का अर्थ सभी भी होता है। जगत गुरू अर्थात शंकराचार्य आदि की भी गुरू। गुण शब्द से गु अक्षर ले एवं रूता से रू अक्षर ले तो अर्थ होगा जिनके गुणों को वेदों में गाया गया अर्थात कहा गया, स्तुति की गई। अस्या गुणा वेदेषु रुता। बृहस्पति देव या बृहस्पति ग्रह में विराजमान। नियम है कि शब्द के आगे 'में विराजमान' लगाने से शब्द का अर्थ निकल आता है। जिन्होने वेद को निगला अर्थात उत्पन्न किया। वेदान् गिरति उद्गिरति। अज्ञान को निगलने वाली अर्थात समाप्त करने वाली। अज्ञानं गिरति। सबसे छोटा होने पर भी पर्वतों से भी भारी है। अणोरणीयान्, अथापि पर्वतादपि गुरूः। गुरू अर्थात भारी, जो ज्ञान में सबसे भारी हैं अर्थात सर्वाधिक ज्ञान वाली। अथर्व वेद के 5/20/4 में ऋचा गुरू का अर्थ घोषित करना दिया गया है। पद्मचन्द्रकोश में गुरू के कई अर्थ दिए गए है जैसे भारी, महत्वपूर्ण, प्रशस्त अर्थात प्रशंसनीय, आदरणीय, प्रिय, छन्द शास्त्र में दीर्घ वर्ण या मात्रा।

917. **गया** – गया तीर्थस्वरूपिणी। गया तीर्थ के समान अपने उपासकों को मुक्ति देने वाली। ज्ञान को प्राप्त। ग का अर्थ है ज्ञान और यात (प्राप्त) से या लिया गया। गम् याति अर्थात ग के पास जाते हैं या ग को प्राप्त करते हैं। एकाक्षरी कोष के ग के कुछ अर्थ दे सकते हैं। ग अक्षर में शक्ति रूप से विराजमान या ग अक्षर के स्वरूप को प्राप्त किया है जिसने। गया तीर्थ के समान अर्थात् गया तीर्थ के समान मोक्ष देने वाली। वैदिक कोष के अनुसार गय के कई अर्थ है जैसे प्राण, धन, निवास स्थान। गय + आ, आ का एक अर्थ है देना। प्राण देने वाली अर्थात् भक्तों की आयु को सुरक्षित रखने वाली या बढ़ाने वाली। भक्तों को प्रचुर धन देने वाली। धन भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार का होता है। भक्तों को श्रेष्ठ निवास स्थान देने वाली। गच्छति यत्र इति गया अर्थात मन जहाँ तक पहुँच सकता है, वह गया है। गच्छति का ग लिया एवं यत्र का य लिया। गय में टाप् प्रत्यय लगाने से स्त्रीलिंग में गया हो जाता है। मन नाद– बिन्दु तक ही जा पाता है। अतः गया का अर्थ हुआ नाद बिन्दु स्वरूपा। प्रत्येक चीज देवी (अर्थात ऊर्जा या शक्ति) से बनी होने के कारण देवी रूपा ही है। अतः नाद बिन्दु भी देवी रूपा है। बौद्ध तन्त्र में नाद बिन्दु को गय बिन्दु या गया कहा गया है। इसी बिन्दु पर मन का अन्तिम अधिष्ठान है। इसके बाद मन के पार की अवस्था अर्थात आत्मा का क्षेत्र शुरू हो जाता है। इस बिन्दु पर मन की वासनाओं– कामनाओं का पिण्डदान करने पर निष्काम मन मोक्ष लाभ के उपयुक्त हो जाता है। गया+आ, आ का अर्थ है देना, नाश करना। शब्द कल्पद्रुम में दुर्गा नाम के निर्वचन में आ का देना, नाश करना दानों प्रकार का अर्थ किया गया है। मन की अन्तिम अवस्था का भी नाश करने वाली अर्थात मन से परे ले जाकर मोक्ष देने वाली। एक पुस्तक में गया का अर्थ संगीतनिपुणा नारी किया गया है। योगारूढार्थ में गय के अर्थ है–नामी पण्डित, कला कुशल व्यक्ति, प्रसिद्ध गायक/नर्तक/वादक, स्वादिष्ट मिठाई एवं स्वादिष्ट अन्न व्यंजन।

918. **गंगा** – गंगा नदी के स्वरूप वाली। स्वर्ग से धरती पर गमन करने के कारण गंगा को गंगा कहते हैं।

स्वर्गात् गाम् गच्छति इति गंगा। जो मोक्षार्थियों को भगवान विष्णु के चरण तक ले जाती है वह गंगा है। गम्यते प्राप्यते मोक्षार्थिभिः इति गंगा। वह जिसके पास मोक्षार्थी या मुमुच्छु जाते हैं। सतत् गमनशील। निरन्तरम् गच्छति इति गंगा। निरन्तर प्रवाहशील गंगा का एक अर्थ है। पुनः पुनः गच्छति इति गंगा। गाम् गमयति इति गंगा अर्थात ज्ञान को प्रापत कराने वाली। जो गंगा की तरह पवित्र एवं रोग विनाशक (कष्ट विनाशक) है। जो विशिष्ट स्थान को जाती है। जो विशिष्ट स्थान को पहुँचाती है। गम् + गन् + टाप् = गंगा। यहाँ गम् में ण प्रत्यय अन्तर्भूत समझा जाता है।

919. **गोमती** – गोमती नदी के स्वरूप वाली। गौ के समूह के बीच में रहने वाली। गुजरात के प्रभास क्षेत्र के गोमती तीर्थ के रूप में। प्रकाश से युक्त अर्थात चैतन्य या ज्ञान या सत्ये के प्रकाश से युक्त। आत्म प्रकाश से युक्त। गो का अर्थ है किरण अर्थात प्रकाश। ज्ञान प्रकाश स्वरूप होता है। श्रेष्ठ वाणी से युक्त। गो का एक अर्थ है वाणी। वेद वाणी से युक्त अर्थात् वेदों की ज्ञाता। किरणों से युक्त अर्थात् ज्ञान की किरणों से युक्त अर्थात् ज्ञानी। किरणों से युक्त अर्थात् उषाकाल। किरणों से युक्त अर्थात् उषा काल स्वरूपा। वेद में गोमती शब्द कहीं–कहीं पर उषा काल के अर्थ में आया है। अत्यन्त पशु सम्पदा से युक्त। गौ का अर्थ गाय है पर यह सभी पशुओं का प्रतीक है। एक नियम है कि समुदाय के एक प्रमुख अवयय को लिखने मात्र से पूरे समुदाय का बोध हो जाता है। गो का अर्थ इन्द्रिय भी है। अतः गोमती का अर्थ हुआ उत्तम इन्द्रिय शक्तियों से युक्त।

920. **प्रभासा** – अच्छी है दीप्ति जिनकी अर्थात् अच्छी कान्ति वाली। अच्छा अर्थात सुखकर, लाभदायक। प्र का अर्थ अच्छा, अधिक होता है। बहुत अधिक कान्ति वाली, यह अर्थ भी कर सकते है। भास् दीप्तौं धातु होती है। प्रभास तीर्थ वाली (प्रभासम् अस्या अस्ति इति प्रभासा) अर्थात प्रभास तीर्थ में निवास करने वाली। प्रभास तीर्थ के समान पुण्य देने वाली एवं पाप नष्ट करने वाली। अधिक अर्थात प्रकृष्ट प्रकाश या तेज वाली।

921. **पुष्करा** – पुष्कर तीर्थ वाली अर्थात पुष्कर तीर्थ में निवास करने वाली। जल वाली अर्थात जल में निवास करने वाली। सरोवर या तालाब वाली अर्थात सरोवर में निवास करने वाली। आकाश या अन्तरिक्ष वाली अर्थात आकाश में निवास करने वाली। कमल वाली अर्थात कमल में निवास करने वाली या कमल को धारण करने वाली। पुष्कर के कमल, जल, सरोवर, अन्तरिक्ष अदि अर्थ होते है। पुष्कम् राति इति पुष्करा। पोषण या पुष्टि देने वाली। पुष्टि का अर्थ है शक्ति का संचार, शरीर की मजबूती एवं वृद्धि।

922. **विन्ध्याचलरतादेवी** – विन्ध्य पर्वत से प्रसन्न रहने वाली देवी अर्थात गुरु का सम्मान करने वाले से प्रसन्न रहने वाली देवी। विन्ध्य पर्वत अपने गुरु अगस्त्य के सम्मान में आज भी प्रणाम मुद्रो में झुके हुए हैं। विन्ध्य पर्वत से प्रेम करने वाली देवी।

923. **विन्ध्याचलनिवासिनी** – विन्ध्य पर्वत में निवास करने वाली अर्थात महालक्ष्मी देवी स्वरूपा। अनाहत चक्र में निवास करने वाली शक्ति स्वरूपा।

924. **बहूबहुसुन्दरी** – अत्यधिक सुन्दर रूप वाली। अत्यधिक में अति भी लगा और अधिक भी लगा। इसी प्रकार दो बार बहु शब्द का प्रयोग किया गया अर्थात बहुत से भी बहुत। उत्मोत्तम सुन्दरी।

925. **कंसासुरविनाशिनी** – कंस नामक असुर का विनाश करने वाली। आसुरी प्रवित्तयों का विनाश करने वाली। कम् स्यति इति कंसः अर्थात सुख, स्वर्ग का नाश करने वाला कंस है। सुख का नाश अज्ञान, आसुरी प्रवित्तयों से होता है। स्यति की मूल धातु में ड प्रत्यय लगाने से स बनेगा

926. **शूलिनी** – त्रिशूल धारण करने वाली। तीनों तापों को हरने वाली क्योंकि त्रिशूल में तीन शूल होते हैं। शूल के अर्थ बरछी की तरह का अस्त्र, त्रिशूल, लम्बा और नुकीला काँटा, मृत्यु, पताका आदि होते हैं। दुष्टों के लिए मृत्यु धारण करने वाली। (त्रिशूल शब्द जिनका बोधक है वे हैं – त्रिविध दुखो के विघातक,

शिवः–शान्तः–साम्बः अर्थात भगवान शंकर के त्रिविध रूप। गुण–कर्म–स्वभाव। त्रिविध नाद ब्रह्म अर्थात पश्यन्ती–मध्यमा–वैखरी। परा–अपरा–परापरा विद्या, इच्छा–ज्ञान– क्रिया। शिव के तीन शक्तियाँ अर्थात उत्पादक, पालक और संहारक। ब्रह्म के वाचक ओंकार के तीन अक्षर अर्थात अ, उ और म। शान्ति, वैराग्य और बोध। मूलाधार चक्र को संवेष्टित करने वाली तीन प्रमुख नाड़ियां अर्थात इडा, पिंगला और सुषुम्ना।)

927. **शूलहस्ता** – हाथ में पताका धारण किये हुए। हाथ में लम्बा और नुकीला काँटा लिये हुए जिसका प्रयोग शत्रुओं के लिये होता है। बरछे के आकार का अस्त्र हाथ में धारण करने वाली। शूल का अर्थ बरछे के आकार का अस्त्र, त्रिशूल, झण्डा या पताका होता है।

928. **वज्रावज्रधरापि** – कठोर एवं कोमल गुणों को धारण करने वाली। वज्र + अवज्र, वज्र का अर्थ है कठोर एवं अवज्र का अर्थ है कोमल। शत्रुओं के लिए वज्र की तरह कठोर एवं भक्तों पर कृपा करने के लिए फूल की तरह कोमल। वज्र नामक हथियार और कोमल चीज (कमल) को धारण करने वाली। वज्र अर्थात कठोर और अवज्र अर्थात कोमल। शत्रुओं के लिए वज्र की तरह कठोर और भक्तों के लिए कोमल अर्थात करूणामयी।

929. **दुर्गाशिवा** – ऐसी शिवा (भगवान शिव की पत्नी या कल्याणकारिणी) जिसे जानना बहुत कठिन है। दुखेन गम्यते इति दुर्गा अर्थात् जो अत्यन्त कठिनाई से जानी जाती है या प्राप्त की जाती है, उन्हें दुर्गा कहते है। कठिनाई से प्राप्त होने वाली शिव की शक्तिस्वरूपा। दुर्गा के रूप में पार्वती स्वरूपा।

930. **शान्तिकरी** – शान्ति प्रदान करने वाली। इन्द्रियों का अपने विषय से वैराग्य अथवा हटाव होने पर प्राप्त होने वाली सुखानुभूति शान्ति है। बाह्य जगत की बजाए भीतर की ओर अपनी चेतना को करने से जो सुखानुभूति होती है वह शान्ति है।

931. **ब्रह्माणी** – ब्रह्मा को जीवित रखने वाली। अनति का अर्थ है सांस लेना अर्थात जीवित रखना। ब्रह्म आनयति जीवयति इति ब्रह्माणी। ब्रह्मा को कल्प पर्यन्त जीवित रखती हैं। ब्रह्मा की शक्ति।

932. **ब्राहाणप्रिया** – जो ब्राह्मणों को प्रिय है। ब्राह्मण प्रिय है जिसे यह अर्थ भी हो सकता है। ब्राह्मण का अर्थ है जो ब्रह्म साक्षात्कार के प्रयास में लगा हुआ है।

933. **सर्वलोकप्रणेत्री** – समस्त लोकों की नायिका (मार्गदर्शन करने वाली)। समस्त लोकों का उत्कर्ष करने वाली, रचयित्री।

934. **सर्वरोगहरा** – सभी रोगों (वात, पित्त, कफ जन्य) को हरने वाली। सभी रोगों (दुःखों) के कारण अर्थात अज्ञान को हरने वाली।

935. **मंगला** – जिनका नाम लेने से अच्छा कार्य शुरू करने में सफलता मिलती है वह मंगला है। दुख गलाने वाली एवं सुख लाने वाली। मंगम् (सुखम्) लाति इति मंगला। मम् (दुखम्) गलति इति मंगला। सर्प (जन्म–मरण रूपी सर्प) का नाश करने वाली अर्थात मोक्ष देने वाली। मंग का अर्थ है सर्प अर्थात जो गति करता है। जन्म लेना और मरण होना भी एक प्रकार की गति है। मंगम् जन्ममरणरूपसर्पणम् लाति नाशयति इति मंगला। मम् दुखम् गलति इति मंगला अर्थात दुख को गलाने वाली या नष्ट करने वाली। मंगम् सुखम् लाति ग्रह्णाति इति मंगला। सुख को लाने वाली मंगला है। जिनका नाम लेकर अच्छे कार्य करने से वह कार्य सफल होता है अर्थात भावी अच्छे कार्यों में सफलता दिलाने वाली। मंगल का अर्थ हर्ष, सम्पत्ति, कल्याण होता है। मंगल+आ, आ का अर्थ है देना। हर्ष, सम्पत्ति और कल्याण देने वाली। मंगल का अर्थ है विघ्न रहित होना, रक्षा होना, ग्रहों का अनुकूल प्रभाव देना, अच्छे कार्य में सफलता मिलना। 16 संस्कारों में अन्तिम मरण संस्कार को छोड़कर बाकी सभी कार्य, भगवान की कथा या अनुष्ठान, उपासना आदि सभी कार्य मंगल कार्य कहे जाते हैं इन्हें देने वाली।

मस्ज् धातु से मंगल शब्द बनाने पर अर्थ होगा जो धो दे अर्थात पापों को धोने वाली या नष्ट करने वाली मंगला है। गृ (निगलना)+ अच् से गर शब्द बनेगा। संस्कृत मे र और ल में अभेद होता है अर्थात गर गल हो गया। आगे मुट् एवं अनुस्वार का आगम होकर मंगल बना जो स्त्रीलिंग में मंगला है। इस प्रकार मंगला का अर्थ हुआ भावी अनर्थों और विघ्नों को निगल जाने वाली। मंग् धातु गत्यर्थक है इसमें अलच् प्रत्यय लगाने से मंगल शब्द बनता है। मंगयति गमयति सुखम् इति मंगला अर्थात जो उपासकों को सुख की ओर पहुँचाये वह मंगला है। जिसके लिए लोग कहते हैं माम् गच्छतु अर्थात मेरे पास आये वह मंगला है। गृ धातु स्तुति अर्थ में भी होता है। आगे मुट् एवं अनुस्वार का आगम होकर मंगल शब्द बनता है जिसका अर्थ होता है यत् स्तुत्य भवति। देवी के सन्दर्भ में अर्थ होगा जो स्तुत्य अर्थात प्रशंसनीय होती है। या गिरति भक्षयति अनर्थान् जो अनर्थों को निगल जाती है वह मंगला है।

936. **शोभना** – शोभा से युक्त। अतिशय सुन्दर रूप वाली। कल्याणकारी सुन्दरता वाली। ऐसी सुन्दरता जिसमें कल्याण भी शामिल हो शोभन कहलाती है। शोभा बढ़ाने वाली। शुभ् + णिच् + ल्यु प्रत्यय लगाने से शोभा बढ़ाने वाली अर्थ निकलता है। शोभना का अर्थ हल्दी, गोरोचन भी होता है। देवी के पक्ष में शोभना का अर्थ होगा, जो हल्दी लगाऐ है, जो गोरोचन लगाए है।

937. **शुद्धा** – मिलावट रहित। शुद्ध स्वरूपा। जिनके अन्दर विकार रूपी कोई मल नहीं है। रजोगुण और तमोगुण से रहित सात्विक स्वरूप शुद्ध स्वरूप होता है।

938. **निष्कला** – कला का अर्थ अवयव या अंग भी होता है अर्थात जिसके अंग या अवयव नहीं है अर्थात निराकारा, रूप रहे। सर्वत्रव्यापक। शुद्ध स्वरूप वाली। कलाओं से रहित अर्थात इकाइयों या अंगों या अवयवों से रहित। अवययरहित अर्थात् निगुण निराकर अखण्ड सत्ता अर्थात् निगुण निराकार ब्रह्म स्वरूपा। कला का अर्थ होता है अवयय। पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँचों कर्मन्द्रियाँ, पाँचों महाभूत (क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर) एवं मन, ये 16 अवयय या कला कहे गये है। निर्गुण निराकार गुण में ये अवयय या कलायें नहीं होती है। श्रुति में पुरुष (ब्रह्म या परमात्मा) के तीन रूप प्रदर्शित हुए हैं– सकलपुरुष, निष्कलपुरुष और षोडशकल पुरुष। कलायुक्त पुरुष की संज्ञा निष्कलपुरुष है। श्वेताश्वतरोपनिषद् में कलाहीन पुरुष को निष्कल पुरुष कहा है– 'निष्कलं निष्क्रियं शान्तं निरवद्यं निरंजनम्। पुरुष (ब्रह्म या पराशक्ति) अपने मूलरूप में निष्कल है। वह केवल सत्चित और आनन्दरूप है। पुरुष अपने इस रूप में निष्क्रिय, शान्त, निर्दोष और निर्मल होता है। सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्ववर्ती पुरुष निष्कल पुरुष है और सृष्टि की उत्पत्ति की ओर उन्मुख पुरुष सकलपुरुष है। जब पुरुष प्रकृति के साथ संयुक्त होकर सृष्टि का निर्माण करता है तब निष्कल पुरुष सकल पुरुष का रुप धारण करता है। पुरुषसूक्त में प्रदर्शित पुरुष निष्कल पुरुष हैं और निष्कल पुरुष से उत्पन्न विराट् पुरुष सकल पुरुष है। पुरुष (ब्रह्म या पराशक्ति) द्वारा उत्पन्न दिव्य पदार्थों या दिव्य शक्तियों की संज्ञा कला है। यद्यपि पुरुष द्वारा उत्पन्न पदार्थ अनेक है तथापि शास्त्रविदों में केवल मुख्य–मुख्य षोडश पदार्थों या शक्तियों को ही कला की संज्ञा प्रदान की है। 16 की संज्ञा को पूर्ण संज्ञा कहा जाता है।

939. **परमाकला** – 64 कलाओं में श्रेष्ठ या अन्तिम कला। अन्तिम कला ज्ञान है। इस प्रकार परमाकला का अर्थ हुआ ज्ञानस्वरूपिणी। उत्कृष्टतम कला स्वरूपा। यहां कला का तात्पर्य परमात्मा से सम्बन्धित है। जिसके द्वारा आत्मा परमात्मा में लीन हो जाती है वह विद्या या प्रक्रिया या शक्ति परमाकला है। जिसकी परिणिति उपभोग करने या मनोरंजन में है ऐसी कला से यहाँ तात्पर्य नहीं है। पाश्चात्य जगत में कला मनोरंजन का साधन होता है जबकि भारत में परमात्मा से जुड़ने का साधन होता है। सहस्रनाम श्रद्धा और भक्ति का विषय है अतः इसमें लौकिकता से ज्यादा अलौकिकता का पुट रहता है अतः जिसके द्वारा आत्मा परमानन्द में लीन ऐसी कला (विद्या, शक्ति या हुनर) यह अर्थ ज्यादा उचित लगता है। चन्द्रमा की 16 कलाओं में 15 कलायें घटती बढ़ती हैं, 16वीं

कला स्थिर रहती है और यह भगवान शिव के द्वारा धारण की गई है। इस 16वीं कला (आत्म शक्ति, अवयव) के स्वरूप वाली।

940. **विश्वेश्वरी** – विश्व की स्वामिनी। विश्व की आराध्या। विश्व के सभी ऐश्वर्यों से युक्त। विश्व को उत्पन्न करने वाली, पालन करने वाली और उसका संहार करने वाली।

941. **विश्वमाता** – विश्व की माता। विश्व की रक्षा करने वाली। माति इति माता। माति के कई अर्थों में एक अर्थ है रक्षा करना है। माता का अर्थ है जन्म देने वाली, पालन करने वाली, रक्षा करने वाली। विश्व में माता की तरह आदरणीया। माता आदरणीया होती है अतः माता का अर्थ है आदरणीया।

942. **ललिता** – कोमलतायुक्त सुन्दरता वाली। देवी के सभी अंग मृदु अर्थात कोमल हैं। आनन्दप्रदा सुन्दरता वाली। अतिशय लालित्य स्वरूपा। जिस प्रकार छोटी बच्ची डाँटने के बाद भी अपनी चंचलता नहीं छोड़ती उसी प्रकार ललितास्वरूपा अपनी चंचलता नहीं छोड़ती अर्थात जो सभी को प्रिय लगे। अपने सौन्दर्य के द्वारा सभी को जो प्रिय लगे मोहित करे वह है ललिता। क्रीड़ा करने वाली अर्थात सृष्टि, पालन, रक्षण, संहार, अपने को माया के पर्दे से छुपाकर भक्तों से आँख मिचौली का खेल करना देवी की क्रीड़ा है।

943. **हसितानना** – प्रसन्न मुख वाली।

944. **सदाशिवाउमा** – सदैव कल्याण करने वाली पार्वती स्वरूपा। सदाशिव रूपिणी उमा। उ अर्थात हे पुत्री, मा अर्थात नहीं। जिसकी कड़ी तपस्या देखकर इनकी माँ ने कहा था कि हे पुत्री, तपस्या मत करो। उ अर्थात सम्बोधन अर्थात हे पुत्री, मा अर्थात नहीं। नहीं अर्थात नहीं करो अर्थात तपस्या नहीं करो। अर्थ में संगति करने के लिए तपस्या एवं करो, इन शब्दों का अध्याहार करना पड़ा अर्थात अलग से लाना पड़ा। उ अर्थात तर्क बुद्धि और मा का अर्थ है खण्डन। जो तर्क बुद्धि को खण्डित कर अपने सिद्धांत में अटल रहे वह उमा हैं। उ अर्थात उत्तम और मा अर्थात चित्तवृत्ति। उत्तम चित्तवृत्ति वाली। प्रणव अर्थात ऊँ की सार स्वरूपा।

945. **क्षेमा** – कुशल मंगल देने वाली। क्षेम+आ, क्षेम का अर्थ है कुशल मंगल, सुख या आनन्द, अभ्युदय एवं आ का अर्थ है देना। सुख या आनन्द देने वाली। अभ्युदय देने वाली। प्राप्त की रक्षा करने वाली। क्षेम स्वरूपा। जो कुछ भी प्राप्त है उसकी रक्षा करना क्षेम कहलाता है।

946. **चण्डिकाचण्डविक्रमा** – ऐसी चण्डिका (क्रोधमूर्ति) जो बहुत तेज (अजेय) पराक्रम वाली है। युद्ध में दुष्टों एवं राक्षसों के समक्ष ऐसा पराक्रम दिखाती है। वह चण्डिका जिसका पराक्रम तीक्ष्ण अर्थात असह्य है। चण्ड का अर्थ है तीक्ष्ण, विक्रम का अर्थ है पराक्रम। प्रचण्ड पराक्रम वाली चण्डिका देवी। चण्डिका का अर्थ है दुष्ट राक्षसों पर अधिक क्रोध करने वाली क्योंकि चण्ड का अर्थ है अधिक क्रोध। असाधारण गुण या लक्षण को भी चण्ड कहते हैं। इस प्रकार चण्डिका का अर्थ हुआ असाधारण गुण या लक्षण वाली अर्थात ब्रह्म स्वरूपिणी क्योंकि ब्रह्म में ही असाधारण लक्षण जैसे सर्वव्यापकत्व, नित्यता आदि होती है।

947. **सर्वदेवमयीदेवी** – सभी देवताओं के स्वरूप वाली। सभी देवताओं से युक्त (विभूषित) है ऐसे स्वरूप वाली। ऐसा अर्थ भी होता है।

948. **सर्वागमभयापहा** – सभी शास्त्रों के स्वरूप वाली (अर्थात ज्ञानात्मिका) और भय को दूर करने वाली। भय अज्ञान से होता है। सर्वागमा च भयापहा च। ऐसा कर्मधारय समास बनेगा। सभी नकारात्मक तन्त्र विद्या से होने वाले भयों को दूर करने वाली। सभी आगमों से युक्त है अत एव भयों को नष्ट कर देने वाली, भगा देने वाली।

949. **ब्रह्मेशविष्णुनमिता** – ब्रह्मा, ईश (अर्थात शिव) और विष्णु द्वारा प्रणमित अर्थात नमस्कार किया गया जिनको अर्थात जिनके द्वारा देवी की स्तुति की गई।

950. **सर्वकल्याणकारिणी** – सभी उपासको का कल्याण करने वाली। सब प्रकार के कल्याण करने वाली। सबसे बड़ा कल्याण होता है भव सागर से मुक्ति, आनन्द की प्राप्ति। पाँचों शरीर की आवश्यकताओं की पूर्ति कल्याण है। मानव जीवन के सभी पक्षों की इस प्रकार पूर्ति की जाए कि मानव जीवन सॅवर जाए तो वह कल्याण कहलाता है। रोटी, कपड़ा, मकान, रोजगार, स्वास्थ्य, बिजली, पानी, सड़क, मनोरंजन, ध्यान, भक्ति, भरापूरा परिवार, समाज में अच्छे रिश्ते, यश या कीर्ति इन सभी की प्राप्ति आज की परिभाषा में कल्याण कहलाती है। शास्त्र के अनुसार कल्याण का अर्थ है आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रगति।

951. **योगिनी** – योग विद्या में पारंगत या योग का अभ्यास करने वाली। चौंसठ योगनियों के स्वरूप वाली। योग में पारंगत है। मुक्ति स्वरूपा। योगिभिः नीयते प्राप्यते इति योगिनी। योगियों द्वारा जिसे प्राप्त किया जाता है अर्थात मुक्ति स्वरूपा। ज्ञानभक्त्यादयः सर्वेऽप्युपापा एतदर्था इति इयम् योगिनी। सर्वेगुणैः नित्य योगिनी। युज्यन्ते इति योगा ज्ञानादयो गुणाः। ते अस्या सन्ति इति योगिनी। ध्यानयोगेन गम्या इयम् इति योगिनी। जिससे जोड़ने के लिए कई उपाय है। ज्ञान भक्ति आदि सभी उपाय इन्हीं के लिये है अर्थात् इनसे जोड़ने के लिए है। सभी अच्छे गुणों से नित्य योग वाली अर्थात् सभी गुणों से हमेशा जुड़ी रहती है। गुण अर्थात् दया, दाक्षिण्य, करुणा, वीरता, उत्साह आदि दैवी गुण जिनका उल्लेख गीता के 16वें अध्याय में है। जिसके द्वारा जोड़ा जाता है वह भी योग कहलाता है अर्थात् ज्ञान आदि गुणों को भी योग कहते है। ये गुण जिनके है अर्थात् जो इन गुणों से युक्त रहते है वे योगी या योगिनी है। अनुरूप स्थिति या सबके लिए अनुकूल। जैसे मातरि साधु। ध्यान योग के द्वारा जानी जाने योग्य या प्राप्त की जाने योग्य।

952. **योगमाता** – योग दर्शन की जन्मदात्री। समस्त योगों जैसे हठ योग, ज्ञान योग, कर्म योग आदि की जननी। योग विद्या की रक्षा करने वाली।

953. **योगीन्द्रहृदयस्थिता** – श्रेष्ठ योगियों के हृदय में रहने वाली। शिव के हृदय में रहने वाली। ऐसा भी अर्थ है। योगीन्द्र का अर्थ शिव भी है। भगवान कृष्ण के हृदय में रहने वाली क्योंकि कृष्ण को भी योगेश्वर कहते हैं।

954. **योगिजाया** – योगी शिव जी की पत्नी। शिव की पत्नी। योगी यहाँ पर शिव के अर्थ में रूढ़ है। यह शब्द तत्पुरुष समास है। समास के कारण योगी योगि हो गया।

955. **योगवती** – योग–विद्या से विभूषित। योग की शक्ति से युक्त।

956. **योगीन्द्रानन्दयोगिनी** – शिव के आनन्द को जोड़ने वाली अर्थात बढ़ाने या रखने वाली।

957. **इन्द्रादिनमितादेवी** – इन्द्रादि देवताओं के द्वारा प्रणमित या प्रणाम की गयी देवी।

958. **ईश्वरी** – परम शासिका। सभी की शासिका। परम ऐश्वर्य से विभूषित। ईश् धातु का अर्थ शासन करना, ऐश्वर्य युक्त होना है। सर्वत्र व्यापक शिव की पत्नी, यह अर्थ भी ईश्वरी का है। अमरकोष में अशूङ् व्याप्तौ धातु में वरट् प्रत्यय लगाकर अश्नुते इति ईश्वरः विग्रह से ईश्वर शब्द बनाया है जिसका अर्थ है जो सर्वत्र व्याप्त है। अमरकोष में ईश्वरी शब्द देखना चाहिए। ऐश्वर्य से युक्त। ऐश्वर्य का अर्थ होता है वह शक्ति जिससे इच्छा का विघात नही होता है अर्थात् अवरोध नही होता है। अतः वह शक्ति जिससे किसी भी प्रकार की इच्छा पूरी होनी ही होती है ऐश्वर्य कहलाता है। इसी कारण अणिमा, लघिमा आदि अष्ट सिद्धियों को ऐश्वर्य कहते है क्योंकि इनसे इच्छायें पूरी होती है। आरम्भ में ऐश्वर्य शब्द शक्ति के लिए ही था किन्तु धन भी एक बड़ी शक्ति होने के कारण धन को भी शक्ति के साथ जोड़ लिया गया। अतः अष्ट सिद्धियों एवं अष्ट लक्ष्मियों को मिलाकर ऐश्वर्य कहते है। ईश्वरी के दो अर्थ है– समर्थ तथा सुन्दर। हमारे घर सुन्दर लक्ष्मी आये एवं वह समर्थ नही हो तो उसे लोग तंग करेंगे। सुन्दर अर्थात् जो रूप से या गुणों से सुख दें। ईश में वर शब्द जोड़ने से भी ईश्वरी शब्द बनेगा। जो शिव या विष्णु के साथ रहकर वर देती है वह ईश्वरी है। ईश + वर = ईश्वरी। जो शासन करने

वाली है एवं वरण करने योग्य अर्थात् वनिता या आदरणीय है। शृणाति धातु रूप में ड प्रत्यय लगाने से भी श शब्द बनता है जिसका अर्थ है नाश करने वाला। ई का अर्थ है शक्ति। इस प्रकार ईश्वरी का अर्थ हुआ ऐसी शक्ति जो पापों का विनाश कर वर देती है।

959. **ईश्वरप्रिया** – शिव की प्रियतमा अर्थात शिव जिसे बहुत चाहते हैं या पसन्द करते हैं। यदि ईश्वर से कोई एक भगवान लेना हो तो उसका अर्थ शिव ही होता है।

960. **विशुद्धिदा** – विशुद्धि अर्थात परम पवित्रता प्रदान करने वाली।

961. **भयहरा** – भय हरने वाली। मेरा कुछ अनिष्ट न हो जाए, अकाल मृत्यु न हो जाए, मेरा रोजगार न छिन जाए आदि ऐसे भयों को उपासको के मन से दूर करने वाली। उपासकों के मन में यह बैठती हैं कि उनके योग और क्षेम की जिम्मेदारी देवी की स्वयं है।

962. **भक्तद्वेषिभयंकरी** – जो भक्तों से द्वेष रखते हैं उनके लिए भयंकर स्वरूप वाली।

963. **भववेशा** – शिव का वेश धारण करने वाली। संसार का वेश धारण करने वाली।

964. **कामिनी** – सुन्दर स्त्री स्वरूपा। शिव के प्रति काम भाव से युकत। काम शक्ति से युक्त। काम अर्थात इच्छा से युक्त। उनके अन्दर यह इच्छा होती है कि भक्त का कल्याण हो। काम शक्ति से युक्त। मनोरथ पूर्ण करने वाली। जो मन में ठान लेती है उसे करती है। यह तीनों अर्थ हैं। शिव के प्रति अनुराग रखने के कारण भी जिन्हें कामिनी कहते हैं। जिनकी कृपा की कामना सभी करते हैं। भक्तों की मंगल कामना करने वाली। जो अपने पति अर्थात शिव से अनुराग रखती है। कामिनी का एक अर्थ मदिरा भी होता है, देवी के पक्ष में इस नाम का अर्थ होगा जो मदिरा की तरह बाहरी दुनिया भुलाकर व्यक्ति को आनन्द में डुबो देती है।

965. **भेरूण्डा** – भेरूण्ड पक्षी की शक्तिस्वरूपा। भेरूण्ड पक्षी की तरह अतिबलवान। शास्त्र में उल्लेख आया है कि जब भगवान विष्णु ने नरसिंह अवतार लिया था तो उनके क्रोध को शान्त करने के लिए भगवान शिव ने शरभ (आधा सिंह आधा पक्षी) अवतार लिया। उसके पश्चात भगवान विष्णु ने भी भेरूण्ड पक्षी का अवतार लेकर शरभ का मुकाबला किया। भेरूण्ड पक्षी इतना शक्तिशाली है कि ये अपने पंजों में हाथी को दबाये है। इसके दो सिर हैं पर पेट एक ही है। भेरूण्ड पक्षी की तरह ऊँचाई पर स्थित एवं अतिशक्तिशाली। ऊँचाई पर स्थित होने का तात्पर्य है कि अन्य देवी देवताओं से जो सर्वोच्च हैं। अत्यन्त बलवान होने के कारण भेरूण्ड पक्षी ऊँचाई पर उड़ता है। ऊँचाई पर उड़ते हुए भी तेजी से आता है और शिकार पर झपट्टा मार लेता है जो एकाग्रता का प्रतीक है। भेरूण्ड पक्षी की तरह दूर से ही अपने लक्ष्य पर एकाग्रता रखने वाली। भेरूण्ड पक्षी की तरह व्यक्ति के अंदर लूट खसोट की प्रवृत्ति देने वाली। कुछ व्यक्ति लूट खसोट का काम करते हैं इसका तात्पर्य है कि कोई शक्ति है जो उनसे ऐसा करा रही है। यदि भरूण्डा शब्द होगा तब अर्थ होगा नक्षत्र रूपी रूण्ड वाली। क्योंकि भ का अर्थ है नक्षत्र।

966. **भयकारिणी** – शत्रुओं, असुरों में भय पैदा करने वाली।

967. **बलभद्रप्रियाकारा** – बलराम की प्रिया रेवती के आकार अर्थात स्वरूप वाली।

968. **संसारार्णवतारिणी** – संसार रूपी सागर से पार कराने वाली।

969. **पंचभूता** – पांचो भूतों (धरती, जल, अग्नि, वायु, आकाश) के स्वरूप वाली।

970. **सर्वभूता** – समस्त भूतों अर्थात प्राणियों के स्वरूप वाली।

971. **विभूति** – महान शक्ति स्वरूपा। वि अर्थात विशेष अर्थात महान, भूति अर्थात ऐश्वर्य अर्थात शक्ति। योग दर्शन में अणिमा, लघिमा, महिमा आदि सिद्धियों या शक्तियों को विभूति कहा गया है। ऐश्वर्य स्वरूपा। विशेष

भस्म स्वरूपा अर्थात यज्ञ कुण्ड से प्राप्त भस्म या शिव जी के शरीर में लिपटी भस्म के स्वरूप वाली।

972. **भूतिधारिणी** – वैभव धारण करने वाली। भष्म को धारण करने वाली। भूति का अर्थ समस्त ऐश्वर्य, धन वैभव, अणिमा–लघिमा आदि अष्ट सिद्धियाँ, राज्यश्री, उत्पत्ति शक्ति, सत्ता शक्ति, वृद्धि या आधिक्य।

973. **सिंहवाहा** – सिंह है वाहन जिनका अर्थात सिंह पर सवार होकर चलने वाली। वाह का अर्थ वाहन होता है। वाह्यते अनेन इति वाहः, जिसके द्वारा ले जाया जाता है वह वाह या वाहन है। सिंह धर्म का प्रतीक है। तात्पर्य है धर्म पर सवार होती हैं या जहाँ धर्म रहता है वहाँ प्रकट रूप से रहती हैं अर्थात क्रियाशील रूप में या प्रभाव दिखाने वाले रूप में रहती हैं। देवी सर्वव्यापक हैं, किसी जगह पर रहने का तात्पर्य उस जगह में जागृत अवस्था में रहने से है। सिंह को अपना वाहन बनाने वाली।

974. **महामोहा** – बड़े–बड़े देवताओं एवं ऋषियों को भी मोहित करने वाली अर्थात् अज्ञान में डालने वाली अर्थात् अपने स्वरूप से भिन्न जड़–चेतन पदार्थ है की तरफ आकर्षित करने वाली एवं उसमें अहंता–ममता की भावना स्थापित करने वाली। इस शब्द को महा+अमोह इस प्रकार से भी पद विच्छेद किया जा सकता है। जिसका अर्थ है जो पूजनीय है एवं मोह से रहित है। महा का अर्थ है पूजनीय। जो विशाल (आकार या गुण में) है एवं मोह से रहित है। जो अपने भक्त को विशाल या बड़े मोह से अलग कर देती है। बड़े बड़े देवताओं एवं तपस्वियों को भी मोहित करने वाली अर्थात संसार से आसक्त करने वाली। वह शक्ति जिसके कारण सभी संसारी लोगों की इन्द्रियों के विषयों में आसक्ति है। महा अर्थात सभी लोग और मोह अर्थात इन्द्रियों की विषयों में आसक्ति। अतिशय मोह स्वरूपा। मोहित करने वालीं। बड़े बड़े देवताओं और तपस्वियों को भी मोह में डालने वाली। मोह का अर्थ बुद्धि में पर्दा पड़ा होना भी होता है अर्थात वस्तु को उसके वास्तविक रूप में न देखकर किसी दूसरे रूप में देखना। यही अज्ञान है जिसका परिणाम संसारी क्षणभंगुर चीजों में आकर्षण है। मोह का अर्थ है सत्य न दिखना अर्थात जो वस्तु जैसी है वैसी न दिखना। हम आत्मस्वरूपा हैं पर हमें यह अनुभूत नहीं होता, इसका कारण है मोह।

975. **मोहपाशविनाशिनी** – उपासको के मोह रूपी पाश या बन्धन का नाश करने वाली।

976. **मन्दरा** – मन्दराचल पर्वत के समान अर्थात् अमृत निकालने वाली अर्थात् अमृत देने वाली। तात्पर्य हुआ भक्तों को अमृत देने वाली। संस्कृत में र अैर ल में अभेद होता है। राति को लाति लिख सकते है और लाति का एक अर्थ है नाश करना। मन्दबुद्धि शब्द से मन्द शब्द ले सकते है। मन्दम् मन्दबुद्धिम् राति लाति नाशयति इति मन्दरा। मन्दबुद्धि को नष्ट करने वाली अर्थात् भक्तों को अधिक बुद्धिमान बनाने वाली। मन्दराचल पर्वत की तरह मथने वाली अर्थात अभीष्टों को प्राप्त करा देने वाली या मनोरथों को देने वाली। मन्दराचल पर्वत ने मथानी का काम किया था जिससे अमृत पैदा हुआ था। मन्दम् राति अर्थात मन्दता या मूर्खता का दारण करने वाली या समाप्त करने वाली। मन्दराचल पर निवास करने वाली। मन्दरा अस्य अस्ति इति मन्दरः, मन्दर वाली अर्थात मन्दराचल से युक्त अर्थात मन्दराचल पर निवास करने वाली।

977. **मदिरा** – जिसके द्वारा प्रसन्नता होती है। यह प्रसन्नता नशा के योग वाली प्रसन्नता है। माद्यते अनया इति मदिरा। मदिरा स्वरूपिणी। युद्ध के समय मदोन्मत्त रूपिणी। समुद्र मन्थन में मदिरा भी प्राप्त हुई थी।

978. **मुद्रा** – तन्त्र की विभिन्न मुद्राओं के रूप वाली। अंगुलियों को मोड़कर या कुछ अन्य शारीरिक चेष्टा करने से एक विशेष तरीके से रखने से मुद्रा बनती है। प्रसन्नता को देने वाली। मुदम् राति इति मुद्रा।

979. **मुदामुद्गरधारिणी** – प्रसन्नता एवं मुद्गर को धारण करने वाली। मुद्गर एक आयुध है जिससे किसी की हिंसा की जाती है। भक्तों के लिए प्रसन्नता एवं दुष्टों के लिए मुद्गर धारण करने वाली। प्रसन्न मुद्रा से युक्त होकर मुदगर आयुध को धारण करने वाली।

980. **सावित्रीमहादेवी** – महादेवी सावित्री के रूप में। महादेवी का अर्थ है जो अन्य देवियों से श्रेष्ठ हो या जिसने सभी देवताओं को काम में लगा रखा है। दिव् धातु का व्यवहार अर्थ लेने पर काम में लगाना या प्रेरणा देना अर्थ आता है। काम में लगाना या प्रेरणा देना भी व्यवहार है। सावित्री का अर्थ है सभी लोकों की सृष्टि करने वाली या सभी वेदों की सृष्टि करने वाली या सूर्य की शक्ति।

981. **परप्रियविनायिका** – मुक्ति मार्ग पर विशेष रूप से ले जाने वाली। दो चीजें है एक है प्रेय एक है श्रेय। प्रेय का सम्बन्ध इस भौतिक क्षणभंगुर सुख से है तथा श्रेय का सम्बन्ध नित्य आत्मा के आनन्द से सम्बन्धित है। परप्रिया का अर्थ हुआ जो प्रिय से श्रेष्ठ है अर्थात् श्रेय वाला। जो श्रेष्ठ है, प्रिय है एवं विशेष नायिका (मार्गदर्शिका या अग्रगामिनी) है। पर का शत्रु भी होता है। शत्रुओं की प्रिय वस्तुओं को पूर्ण रूप से हटाने वाली या नष्ट कर देने वाली। जो सबसे श्रेष्ठ है, मन को प्रसन्न करने वाली है और जिसका कोई नायक नहीं है। परा च प्रिया च विनायिका, इस प्रकार कर्मधारय समास बना। प्रीणाति इति प्रियः, जो प्रसन्न करे वह प्रिय है। शिव के लिए अतिशय प्रिय गणेश का विशेष रूप से मार्गदर्शन करने वाली। यहाँ पर का अर्थ है शिव।

982. **यमदूती** – दुष्ट दैत्यों का प्राण हरण करने वाली। यमदूत प्राण हरण करते हैं। मृत्यु का समाचार देने वाली अर्थात प्राणियों को आभास कराने वाली कि मृत्यु आने वाली है। मादा कौआ में अंश रूप से विराजमान। कौआ यम का दूत समझा जाता है। यम की दूत स्वरूपा। मृत्यु की सूचना देने वाली शक्ति। कौआ की तरह रोगरहित। ऐसा कहा जाता है कि कौआ कभी रोग ग्रस्त नहीं होता।

983. **पिंगाक्षी** – पीले नेत्रों वाली। पीले रंग में हल्का सा भूरापन हो तो वह पिंग रंग होता है। पिंग शब्द का अर्थ पीला रंग, भैंसा, चूहा, हरताल है। पीला रंग अर्थात स्वर्ण अर्थात तेज। अक्षू व्याप्तौ धातु होती है। स्वर्ण में या तेज में विद्यमान। पिंग से जिन वस्तुओं का बोध होता है उनमें विराजमान। पीला रंग पृथ्वी, रक्षा शक्ति, मांगलिकता का भी बोधक है। पृथ्वी, रक्षा शक्ति, मांगलिक पदार्थों में शक्ति य ऊर्जा या गुण रूप से विराजमान।

984. **वैष्णवी** – भगवान विष्णु की शक्ति स्वरूपा। पालन या रक्षण शक्ति स्वरूपा। सर्वव्यापिका शक्ति स्वरूपा क्योंकि विष्णु का अर्थ है व्यापक। तुलसी से अभेद है जिनका। वैष्णवी शब्द की व्युत्पत्ति है – विष्णोः इयम् अर्थात विष्णु की यह अर्थात जो विष्णु से सम्बन्धित हो। इस कारण वैष्णवी का अर्थ तुलसी, गंगा, अपराजिता (विष्णुक्रान्ता) है। गंगा से अभेद है जिसका। विष्णुक्रान्ता पुष्प के स्वरूप में। भगवान विष्णु की शक्ति। इस शक्ति के द्वारा भगवान विष्णु सृष्टि का पालन करते हैं। वैष्णवी का अर्थ सर्वव्यापिका महाशक्ति भी है। व्यापनाद् विष्णुः अर्थात जो सर्वव्यापी हो वह विष्णु है। भगवान विष्णु के वंश में उत्पन्न त्रिकुटा देवी जो जम्मू में कटरा में स्थापित हैं। दक्षिण भारत में निःसंतान ब्राह्मण रत्नाकर सागर के यहाँ इन्होने जन्म लिया था। वैष्णवदेवी की इस प्रकार की कथा कही गई है। आद्याशक्ति की इच्छाशक्ति को भी वैष्णवी शक्ति माना गया है।

985. **शांकरी** – भगवान शंकर की शक्ति। शंकर की प्रिया।

986. चन्द्रप्रिया – चन्द्रमा है प्रिय जिनको। चूँकि शंकर जी को चन्द्रमा प्रिय है अतः पार्वती को भी चन्द्रमा प्रिय है। चन्द्रमा जिन गुणों का प्रतीक है वे हैं पसन्द जिन्हें। इस शब्द को मध्यमपदलोपी समास मानकर चन्द्रप्रतीकप्रिया ऐसा शब्द माना जा सकता है, अन्यथा भी ऐसा करने की अनिवार्यता नहीं है। आहलाद देने वाला गुण प्रिय है जिन्हें या चन्द्रमा के समान गुण वाले व्यक्ति जिन्हें पसन्द हैं।

987. **चन्द्ररता** – सदा प्रसन्न या आनन्दित रहने वाली। चदि आह्लादे धातु होती है। चन्द्रमा में लीन रहने वाली, चन्द्रमा के समान दिव्य कान्ति से विभूषित। चन्द्रमा से लगी हुई अर्थात चन्द्रमा को धारण करने वाली। जो प्रसन्न रहते हैं उनसे प्रियता रखने वाली।

988. **चन्दनारण्यवासिनी** – चन्दन के वन में निवास करने वाली।

989. **चन्दनेन्दुसमायुक्ता** – चन्दन और चन्द्रमा से विधिवत रूप से युक्त अर्थात विभूषित।

990. **चण्डदैत्यविनाशिनी** – चण्ड नामक दैत्य का विनाश करने वाली। प्रचण्ड दैत्यों को विनाश करने वाली। चण्ड क्रोध का प्रतीक है। चण्ड अहंकार से निर्देशित किए जाने वाले कर्म का भी प्रतीक है। चण्ड द्वैध वृत्ति कर भी प्रतीक है।

991. **सर्वेश्वरी** – सभी की ईश्वरी। सभी की आराध्या। देवता, असुर, मनुष्य सभी देवी की आराधना करते हैं।

992. **यक्षिणी** – जिनकी पूजा की जाती है। यक्ष पूजायाम् धातु होती है। यज धातु से यक्ष बना। यक्ष से यक्षी बना फिर यक्षी से यक्षिणी शब्द बनता है। यष्टुम् समर्था इति यक्षः, जो यज्ञ करने में समर्थ है वह है यक्ष, उस यक्ष की पत्नी यक्षिणी है। यक्षिणी देवयोनि स्वरूपा। दुर्गा जी ने यक्षिणी रूप में इन्द्र को दर्शन दिये थे, बिहार में सासाराम के पास यक्षिणी दुर्गा का मन्दिर है। ऐसी शक्ति जिसके द्वारा विश्व प्रकट हुआ है। अचानक कहीं पर भी प्रकट हो जाने वाली। वैदिक कोश में यक्ष् धातु का एक अर्थ प्रकट करना, दिया गया है। वैदिक कोश (सूर्यकान्त जी) में यक्ष का एक अर्थ रहस्य दिया गया है। इस प्रकार यक्षिणी का एक अर्थ हुआ जो रहस्य से युक्त है। रहस्य का अर्थ है जिसे बुद्धि से या अपने प्रयास के द्वारा न जाना जा सके। शरणागत होने पर ईश्वर की कृपा से इस रहस्य का अनुभव तो हो सकता है पर आपकी बुद्धि वहाँ तक नहीं पहुँच सकती।

993. **किराती** – किरात वेशधारी शिव की पत्नी या शक्ति। अर्जुन की परीक्षा लेने के लिए भगवान शिव और पार्वती किरात और किरातिनी का वेश धारण करके आये थे। जो फैलाती हुई गति करती है, तात्पर्य है अपनी कृपा या करूणा को फैलाते हुए कार्य करती है। गति करना अर्थात् कार्य करना। कृ विक्षेपे धातु में क प्रत्यय लगाने से किर शब्द बनेगा जिसका अर्थ होगा फैलने वाला। अत् सातत्य गमने धातु से अत शब्द बनेगा जिसका अर्थ है निरन्तर गति करने वाला अर्थात् निरन्तर कार्य करने वाला। किरात नामक जाति की उपास्या।

994. **राक्षसी** – दैत्यों के संहार के समय राक्षसी रूप भी धारण करने वाली। रहसि क्षिणोति इति राक्षसी अर्थात जो एकान्त में हिंसा करती है, लोगो को मार डालती है वह राक्षसी है। शास्त्र में राक्षस विवाह का उल्लेख है जिसमें बहला फुसलाकर या अपहरण कर विवाह कर लेते थे। राक्षस हिंसक, निर्दयी और बेहद ताकतवर होते हैं। ये अपने लिये कम, दूसरों के कारण ज्यादा काम करते हैं क्योंकि इन्हे दूसरों की उन्नति सहन नहीं होती। यदि कोई व्यक्ति सहायता माँगने इनके पास जाता है तो इतना बुरा व्यवहार करते हैं कि दोबारा वह व्यक्ति उससे सहायता मांगने की सोच भी नहीं सकता। इन्हें इन्द्रियों पर कोई नियन्त्रण नहीं रहता, ये बेहद स्वार्थी होते है और छोटी चीज में भी प्राणियों को मार देते हैं। देवताओं या दूसरो पर हावी होना इनका प्रमुख गुण है। ज्योतिष के अनुसार राक्षस गण के व्यक्ति में कोई भय नहीं होता और ये अतिप्राकृतिक शक्तियों के मालिक होते हैं। शठे शाठ्यम समाचरेत। दुष्ट के विनाश के लिए दुष्ट बनना पड़ता है। दुष्टों के विनाश के लिए राक्षसी का रूप धारण करने वाली। देव बनाकर देवता की पूजा की जाती है और राक्षस बनाकर राक्षसों का संहार किया जाता है। राक्षस शब्द का विग्रह है रहसि क्षिणोति इति रक्षस् अर्थात् जो एकान्त में हिंसा करता है या मार देता है वह राक्षस है। रक्ष् धातु में असुन् प्रत्यय लगाने से ही रक्षस् शब्द बनता है जिसका अर्थ है अपनी रक्षा करने वाला अर्थात् अपना ही देखने वाला या पोषण करने वाले राक्षस हैं जबकि दूसरों का पोषण करने वाले देवता कहे जाते है। रक्षस् शब्द का अर्थ रक्षा करने वाला होता है। इसमें स्वार्थ (बिना अर्थ बदले) में अण् प्रत्यय लगाने से राक्षस शब्द बनेगा जिसका अर्थ है रक्षा करने वाला। रक्ष् धातु से इस शब्द का अर्थ निकालें तो होगा जो अपने भक्तों की रक्षा करती है। तस्य इदम् सूत्र से अण् प्रत्यय लगाने पर राक्षस शब्द का अर्थ होगा जो राक्षको की है, क्या है? यह हम अपने मन से सोच सकते है जिससे अर्थ संगत रहे। जो राक्षकों की उपासनीया है, जो राक्षकों की पोषिका है या स्वामिनी है।

995. **महाभोगवतीदेवी** – महान भोगों/ऐश्वर्यों का साथ करने वाली देवी अर्थात महान भोगों से युक्त देवी।

996. महामोक्षप्रदायिनी – परम मोक्ष देन वाली। पाँच प्रकार के मोक्ष में कैवल्य सबसे बड़ा मोक्ष है। कैवल्य में व्यक्ति परमात्मा से एकाकार कर केवल वही रह जाता है अर्थात उसके अलावा किसी की सत्ता अनुभव नहीं होती अर्थात ऐसा साधक (परमात्मा) मात्र रह जाता है। कुछ लोग कैवल्य को और कुछ लोग सायुज्य को सबसे बड़ा मोक्ष मानते हैं। कुछ लोगों के अनुसार सायुज्य और कैवल्य में काई अन्तर नही क्योंकि कैवल्य का अर्थ है Merging into the existence of Brahm/Lord/Absolute unity. सायुज्य का अर्थ है Merging own existence with Brahm. कैवल्य का अर्थ है Losses his individual identity.

997. **विश्वहन्त्री** – युद्ध भूमि में सभी दुष्टों को मारने वाली (हथियार आदि से)। हन् धातु मारने अर्थ में है। विश्व का अर्थ है सभी। सम्पूर्ण विश्व में गमन करने वाली अर्थात विचरण करने वाली। हन् धातु का एक अर्थ है गमन करना।

998. **विश्वरूपा** – विश्व के स्वरूप वाली। विश्व का निर्माण करने वाली या देखने वाली। रूपयति अर्थात रचना करना, देखना, दिखाना। विश्व के द्वारा बोध होता है जिनका। रूप्यते इति रूपा अर्थात बोधिका या ज्ञापिका। विश्व अर्थात विष्णु या शिव। शिव के सदृश। शिव की तरह लक्षणों या गुणों वाली। रूपा अर्थात सदृश, लक्षण, गुण। विश्व के कई अर्थ है जैसे समस्त ब्रह्माण्ड, देवताओं का एक गण, जीवात्मा, भगवान विष्णु, भगवान शिव, पितृगण का एक वर्ग, शरीर।

999. **विश्वसंहारकारिणी** – फैले हुए विश्व को अपने में समेटने वाली। संहार शब्द हृ धातु से बनता है जिसका हरण करना या समेटना है। हन्त्री में मारने का भाव है जबकि संहार में समेटने का भाव है। जैसे मकड़ी फैला हुआ जाल समेटती है तो उसे संहार कहेंगे।

1000. **धात्री सर्वलोकानां** – सभी प्राणियों को धारण करने वाली या उनका भरण पोषण करने वाली।

1001. **हितकारणकामिनी** – हित के जो कारण है अर्थात हित करने वाले जो हैं, उनको चाहने वाली। भगवान शिव ही सबका हित करने वाले है इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ भगवान शिव की अर्द्धांगिनी। एक मत के अनुसार हित का सम्बन्ध भौतिक जगत के सुख से, शुभ का सम्बन्ध बौद्धिक जगत से एवं कल्याण का सम्बन्ध आध्यात्मिक जगत से है। अच्छा कराने वालों या अच्छा करने वालों का अच्छा चाहने वाली। कामयति इति कामिनी। जगत के हित के कारण अर्थात भगवान शिव की कामिनी (भार्या)। कामिनी का अर्थ है स्त्री, सुन्दरी, कामवती स्त्री, मदिरा। मदिरा सुख या आनन्द देती है। अतःइस नाम का अर्थ शिव को मदमस्त करने वाली या आनन्दित करने वाली कर सकते हैं। भलाई की कारण (हेतु), ऐसी कामिनी। सभी प्राणियों को उनका हित करने वाले साधन मिलें, ऐसी कामना से युक्त।

1002. **कमला** – जिसकी कामना की जाती है अर्थात जिसकी कृपा पाने की लोग इच्छा करते हैं। काम्यते असौः इति कमला ऐसी व्युत्पत्ति शब्दकल्पद्रुम में दी गई है। काम्यते असौ कमेः वृषादित्वात् कलच् यह व्युत्पत्ति है। कमलों वाली अर्थात कमल धारण किये हुए या कमल पर विराजमान। कमलम् अस्ति अस्याः इति कमला। लक्ष्मी स्वरूपा। कम् (जलम्) अलति शोभति अर्थात जो अपनी उपस्थिति से जल की शोभा बढ़ाती हैं। कम् विष्णुम् अलति अर्थात जो अपनी उपस्थिति से भगवान विष्णु की शोभा बढ़ाती है।

1003. **सूक्ष्मदादेवी** – परमात्मा के अतिसूक्ष्म स्वरूप (अव्यक्त स्वरूप) का ज्ञान देने वाली देवी।

1004. **धात्री हरविनाशिनी** – जगत का पालन पोषण करने वाली और बालक की शक्ति का हरण करने वाले स्कन्द आदि बाल ग्रहों का विनाश करने वाली। देवताओं, सज्जनों, लोकों का भरण पोषण करने वाली और चोरों

का विनाश करने वाली। हरति धनंम ऐश्वर्यम इति हरा। यहां पर हर का तात्पर्य चोर, आसुरी शक्ति से है न कि शिव से। यदि धूमावती देवी जो शिव को निगल गई थीं ऐसा अर्थ निकालें तो लोकों का भरण पोषण करने वाली एवं शिव को निगलने वाली यह अर्थ निकलेगा पर पहला अर्थ अधिक उचित लगता है। धात्री माता, उपमाता है जो पालती पोषती है। बड़े घरों में जन्म देने वाली माता होती है और दूसरी पालने पोषने वाली धाई होती है। जो धन का हरण करे वह है हर अर्थात चोर। बालकों की शक्तियों का विभिन्न ग्रह हरण करते हैं।

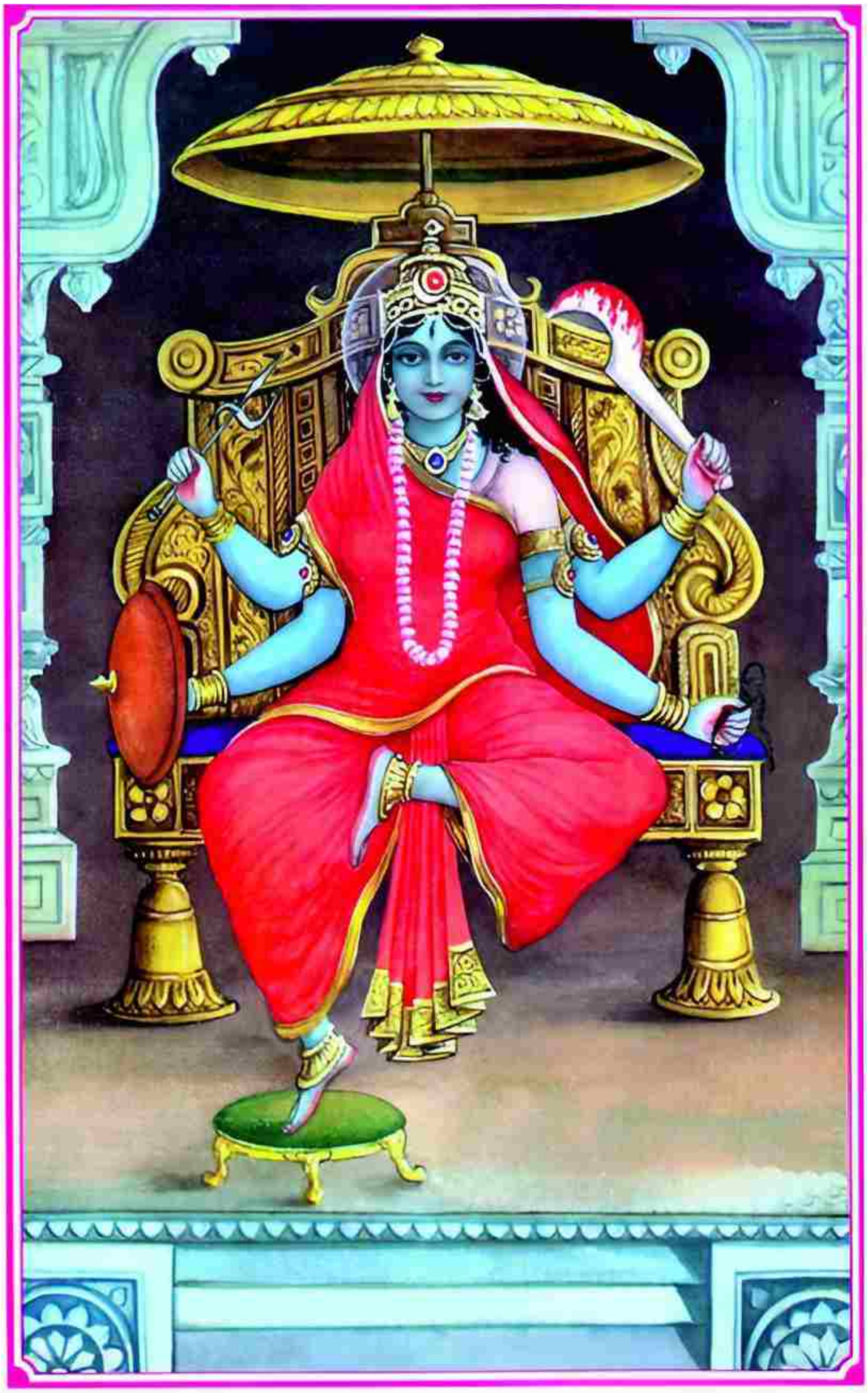
1005. **सुरेन्द्रपूजितासिद्धा** – देवराज इन्द्र के द्वारा सम्पूजित सिद्ध स्वरूपा देवी। सिद्ध वह है जो अतिप्राकृतिक शक्तियों से युक्त है।

1006. **महातेजोवतीति** – महातेज से विभूषित या युक्त।

1007. **परारूपवतीदेवी** – जो श्रेष्ठ हैं तथा अत्यन्त सौन्दर्य से युक्त हैं, ऐसी देवी। परम उत्कृष्ट स्वरूप वाली देवी।

1008. **त्रैलोक्याकर्षकारिणी** – तीनों लोंको को आकृष्ट करने वाली देवीं। एक मत यह भी है कि सभी लोक मानव शरीर में हैं। इनको आकर्षित करना अर्थात इनसे अशुद्धियाँ खींचकर शुद्ध करना जिससे वह ब्रह्म प्राप्ति का सहायक हो सके।

श्री मातंगी जी सहस्रनामावलि



श्रीमातंगी - सहस्रनामावलि

1. **सुमुखी** – सुन्दर मुख वाली। शोभनम् मुखम् यस्या सा। सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार निर्दोष मुख वाली। सुन्दरं मुखमस्याः सुमुखी। ज्ञानिनां सदा सुमुखा इयम्। सुखात्मकं सर्वविद्यात्मकं च मुखमस्याः। सुखवतां प्रमुखा इयम्। जिनका मुख सुन्दर अर्थात् मनोहर है। मुख का अर्थ आरम्भ भी होता है। जिनसे अर्थात् जिनका नाम लेने से किसी भी कार्य का प्रारम्भ अच्छा होता है। ज्ञानियों की ये सुमुखी है अर्थात् ज्ञानियों के प्रति प्रसन्न रहती है। सुखस्वरूपी मुख वाली अर्थात् जिनके मुख का दर्शन करने से सुख का अनुभव होता है या आनन्द मिलता है। जिनके मुख से सभी विद्यायें निकलती है। सुखी लोगों में सर्व प्रमुख अर्थात् सर्वाधिक सुख वाली। ज्ञानियों के लिए सुन्दर मुख वाली है अर्थात् कृपा करने वाली। यहाँ ज्ञानी शब्द का अध्याहार किया गया। सभी विद्याओं के स्वरूप वाले जिनका मुख है अर्थात् सभी विद्यायें इनके मुख से निकलती है। मुख का अर्थ आरम्भ भी होता है। यहाँ पर सु का अर्थ सुखात्मकविद्या किया गया है। सुखात्मक विद्या से सु शब्द ले लिया। मुख शरीर का श्रेष्ठ अंग है। अतः यह श्रेष्ठा का भी परिचायक है।

2. **शेमुखी** – बुद्धिरूपा। मोह/अज्ञान को चुरा लेने वाली अर्थात हटा देने वाली। शे शयनम् अर्थात स्वप्न अर्थात मोह/अज्ञान। शे (मोहम्/अज्ञानम्) तम् मुष्णाति (हरति) इति शेमुखी। शी धातु से शे शब्द बनता है जिसका अर्थ है मोह अर्थात अज्ञान। वास्तविकता को न जानना या जो वस्तु जैसी है, उसे वैसी न जानना अज्ञान है। कल्याण का द्वार। शान्ति का द्वार। तात्पर्य है कल्याण का आरम्भ या शान्ति का आरम्भ यहीं से होता है अर्थात् कल्याण देने वाली या शान्ति देने वाली। अमरकोष में शेवधि शब्द आया है जहाँ पर शे का अर्थ कल्याण, शान्ति किया गया है।

3. **सेव्या** – पूजनीया। भज सेवायाम् धातु के आधार पर भजनीया अर्थात जिसका भजन किया जाना चाहिए। सेवा करने का तात्पर्य पूजा करना व भजन करना है। अपने स्वामी के आदेश का पालन करना सेवा है।

4. **सुरसा** – सुन्दर पृथ्वीस्वरूपा। सुन्दर रस स्वरूपा अर्थात अमृत स्वरूपा। जिस शक्ति के द्वारा सुन्दर ढंग से आस्वादन किया जाता है। शोभन रसस्वरूपिणी अर्थात उत्तम आनन्द स्वरूपा। शोभन आनन्द स्वरूपा।

5. **शशिशेखरा** – जिनके मस्तक में चन्द्रमा विराजमान है।

6. **समानास्या** – सन्तुलित चेहरे वाली अर्थात बहुत लम्बा नहीं, बहुत चौड़ा नहीं अर्थात ठीक – ठाक चेहरे वाली। भगवान राम के सौन्दर्य वर्णन में शब्द आया है समविभक्तांग अर्थात न बहुत लम्बे और न बहुत छोटे, न ज्यादा मोटे और न ज्यादा पतले। आज कल की विश्वसुन्दरी प्रतियोगिता में भी यही देखा जाता है। पूरे अग्र भाग अर्थात आंख, नाक, ओठ जिसमें सब आ जाता है उसे वदन कहते है। ओठ वाले भाग को आस्य कहते हैं एवं वदन भी कहते हैं। अस्यति अर्थात जो अक्षरों को बाहर फेकता है वह है आस्य। गोल चेहरे वाली। सभी का समान रूप से भक्षण करने वाली। आस्य अर्थात मुख अर्थात भोजन का भक्षण करने वाला। आयु पूरी होने पर सभी का समान रूप से भक्षण करती हैं अर्थात यह नहीं देखती कि पुरुष है या महिला, बालक है या वृद्ध आदि।

7. **साधनी** – उपाय स्वरूपा। जिसका सहारा लेकर किसी काम को निष्पादित किया जाता है या ठीक तरीके से पूरा किया जाता है। इनका नाम लेकर कार्य करने से या इनका अनुष्ठान करने से अभीष्ट की सिद्धि होती है अतः देवी साधन या उपाय स्वरूपा हुई। साध् धातु में ल्युट् प्रत्यय लगाने से साधनम् शब्द बनता है जो स्त्रीलिंग में साधनी होगा। ल्युट् प्रत्यय प्रायः करण या अधिकरण कारक में प्रयुक्त होते हैं पर कहीं कहीं कर्ता अर्थ भी देते हैं। कर्ता अर्थ में इस नाम का अर्थ होगा कार्य को सिद्ध करने वाली अर्थात बनाने वाली। कार्यों को सिद्ध करने के लिए उपायस्वरूपा अर्थात इन्हें याद करो, काम बन जाएगा। यदि साधिनी शब्द है तो अर्थ होगा कार्य का साधन करने वाली अर्थात कार्य को बनाने वाली। साध् धातु में णिनि प्रत्यय लगाने से साधिनी शब्द बनेगा।

8. **समस्तसुरसन्मुखी** – समस्त देवताओं के सम्मुख या सम्मुख प्रकट। देवताओं ने मिलकर जब देवी की स्तुति की थी तो देवी उनके सम्मुख प्रकट हो गईं थीं। सभी देवताओं के सुन्दर मुख के स्वरूप वाली। सन्मुखी में सत् शब्द का अर्थ सत्य, श्रेष्ठ, सुन्दर, मनोहर है।

9. **सर्वसम्पत्तिजननी** – सभी प्रकार की सम्पत्तियों की उत्पत्ति करने वाली या देने वाली (भक्तों के लिए)। सभी सम्पत्तियाँ अर्थात भौतिक और पारलौकिक दोनों प्रकार की सम्पत्तियों की उत्पत्ति भक्तों को देने के लिए करती हैं।

10. **सम्पदा** – भक्तों को धन सम्पदा देने वाली। सम्पदा+आ, आ का अर्थ है देना, नाश करना। दुष्टों की धन, सम्पदा को नष्ट करने वाली। सम्यक् पद्यते अनया। जिसके द्वारा (जिसकी कृपा से) जीवन ठीक तरीके से चलता है अर्थात लोक व्यवहार या दैनन्दिन व्यवहार ठीक तरीके से चलता है। पद्यते का अर्थ है गति करता है अर्थात व्यवहार करता है अर्थात जीवन के कामकाज करता है। जिसे प्राप्त करने के लिए यत्न किया जाता है वह सम्पदा है। सम्यक पद्यते प्राप्यते इति सम्पदा। जिसको अच्छी प्रकार से प्राप्त किया जाता है या परिश्रम करके प्राप्त किया जाता है। सम्पत्ति (भौतिक/आध्यात्मिक सम्पत्ति) स्वरूपा। सम्यक् पद्यते प्राप्यते या सा सम्पदा अर्थात जिसे अच्छी तरह प्राप्त करके रखता है वह सम्पदा है।

11. **सिन्धुसेविनी** – स्थूल जगत में समद्र द्वारा सेवित जैसे समुद्र ने भगवान राम की वन्दना की थी। मुख के सात उच्चारण स्थान भी सिन्धु कहलाते हैं जिन्हें सप्तसिन्धु भी कहते है। सात विभक्तियाँ भी सप्तसिन्धु है। विभक्तियों के द्वारा जिनकी सेवा की जाती है। विभक्तियाँ जुड़ती हैं प्रातिपदिक (मूल शब्द) से। विभक्ति के बिना शब्द नहीं होते। विभक्तियों में निवास करने वाली। शुद्ध वाणी स्वरूपा।

12. **शम्भुसीमन्तिनी** – शिव की नारी अर्थात उनकी धर्मपत्नी। सीमन्त का अर्थ है माँग जो बाल में निकाली जाती है। सीमन्तिनी का अर्थ हुआ माँग वाली अर्थात नारी या स्त्री। शिव की माँग स्वरूपा अर्थात गृहिणी स्वरूपा। मंगलकारी देवता की गृहिणी अर्थात घर पर रहने वाली विवाहिता स्त्री। शम्भू अर्थात मंगलकारी। सीमन्तिनी अर्थात माँग। यदि ग्रहिणी शब्द होता तो अर्थ होता कोई वस्तु लेने वाली।

13. **सौम्या** – सुन्दर, शान्त और विनम्र रूप वाली। सुन्दरी प्रमुख अर्थ है। सौम्या शब्द सोम (चन्द्रमा) से बना है। चन्द्रमा सुन्दरता, शीतलता शान्ति का प्रतीक है।

14. **समाराध्या** – सम्यक् (विधि विधान से) पूजा करने योग्य।

15. **सुधारसा** – अमृतरस स्वरूपिणी। सहस्रार से टपकने वाले रस स्वरूपा या ऐसे रस का उपभोग करने वाली। सहस्रारचक्र से अमृतरस टपकता है जो सुषुम्नानाड़ी में होते हुए कुण्डलिनी शक्ति के पास जाता है जिसका यह शक्ति उपभोग करती है।

16. **सारंगा** – सार (तत्व) का बोध करने वाली। सारम् गमयति इति सारंगा। शास्त्र/जगत आदि के तत्व का बोध कराने वाली। सारंग शब्द का अर्थ धनुष, मृग, हिरण, आभूषण आदि होता है। धनुष वाली अर्थात धनुष धारण करने वाली। सारंगम् अस्या अस्ति इति सारंगा। इसी प्रकार मृगों से युक्त, हिरणों से युक्त, आभूषणों से युक्त अर्थ कर सकते हैं। मृग वेद का प्रतीक है। बादल की तरह वर्ण वाली। बादल की तरह बरसने वाली अर्थात मनोरथ पूरा करने वाली।

17. **सवली** – पेट की तीन रेखाओं वाली। जब बैठती हैं तो पेट में तीन रेखाएं दिखती हैं जो सौन्दर्य का उपलक्षण हैं। मोटे व्यक्ति की पेट में रेखाऐं नहीं बनती। बलयुक्त या बलवाले की पत्नी। बलेन सहिता इति सबली। बल और वल एक ही हैं। सर्वम् वलति इति सवली। वल संवरणे धातु होती है जिसका अर्थ होता है इकठ्ठा करना या समेटना। अतः सवली का अर्थ हुआ प्रलय काल में सबको अपने में समेटने वाली।

18. **वेला** – किनारा–स्वरूपा अर्थात डूबते हुए को सहारा देने वाली। जो अत्यन्त कष्ट में डूबा है उसे किनारे की तरह सहारा देने वाली। यही अन्तिम है, यही किनारा है। यदि व्यक्ति डूब रहा हो तो किनारा ही उसे मुक्ति देता है। आपत्ति से मुक्ति के लिए किनारा–स्वरूपा क्योंकि किनारा ही डूबने वाले का सहारा होता है। वेला अर्थात तट या किनारा। समय स्वरूपा। वेला समय को भी कहते हैं।

19. **लावण्यवनमालिनी** – सौन्दर्य से युक्त पुष्पगुच्छ को धारण करने वाली। मल् धारणे धातु होती हैं। वन का अर्थ पुष्पगुच्छ है। शरीर के अंगों की तुलना कमल, लता, रम्भा (केला) आदि से की गयी है अतः शरीर को भी वन कहा जा सकता है। सौन्दर्य से युक्त शरीर वाली। लावण्य ऐसी सुन्दरता है जो निर्दोष एवं पारदर्शी होती है अर्थात सामने रखी वस्तु की छाया या प्रतिबिम्ब उसके भीतर मानो तरल होती है अर्थात हिलती डुलती है। लावण्य का अर्थ सुन्दरता होता है, शरीर के अंगों की कान्ति लावण्य है। लावण्य शब्द लवण (नमक) से बना है। जिस प्रकार नमक खाने के स्वाद को बढ़ा देता है, उसी प्रकार व्यक्ति के अन्दर स्थित दैवी गुण उसकी शारीरिक सुन्दरता को और बढ़ा देते हैं। इस प्रकार लावण्य का अर्थ है दैवी गुण युक्त शारीरिक सुन्दरता। लावण्य की परिभाषा दी गई है कि ऐसा सौन्दर्य जिसमें मोतियों में छाया की तरह तरलता हो, ऐसा सौन्दर्य जिसमें झिलमिलाहट हो और शीतलता हो। लावण्य में कान्ति या प्रभा भी होती है। लावण्य की वनमाला पहने हुए ऐसा अर्थ भी कर सकते हैं। वनमाला वह माला होती है जो घुटनों तक लम्बी होती है।

20. **वनजाक्षी** – कमल के समान सुन्दर नेत्रों वाली। कमल सुन्दरता का प्रतीक है। वन का अर्थ जल भी होता है, वनजा अर्थात जल में उत्पन्न अर्थात कमल। वनज अर्थात कमल। कमल को सृष्टि का प्रतीक माना गया है। अक्ष् धातु का एक अर्थ व्याप्त होना है। इस प्रकार वनजाक्षी का अर्थ हुआ जो सृष्टि में व्याप्त है।

21. **वनचरी** – स्थूल संसाररूप वन में विचरण करने वाली। जंगल में विचरण करने वाली। वनदुर्गा देवी का नाम प्रसिद्ध है। जल पर विचरण करने वाली। पहाड़ों पर विचरण करने वाली। वन का अर्थ है जंगल, जल, पहाड़।

22. **वनी** – वन के समान अर्थात जिसे तात्विक रूप से जानना अत्यन्त कठिन है। वन या जंगल में चलना कठिन माना जाता है। संस्कृत में गमन करना, जानना और प्राप्त करना एक ही माना जाता है। वन्यते सेव्यते कष्टनिवारणाय इति वनी अर्थात कष्ट निवारण के लिए भक्त लोग जिनकी सेवा (पूजा) करते हैं। वन्यते याच्यते इष्टप्रदानाय। भक्त लोग अपने मनोरथ की प्राप्ति के लिए जिनसे याचना करते हैं। वन्यते शब्द्यते स्तूयते, जिनकी भक्त लोग स्तुति करते हैं। वन्यते हिंस्यते अनया तमः। जिनके द्वारा अन्धकार अर्थात अज्ञान का नाश किया जाता है। व का अर्थ है ज्ञान, नी धातु का अर्थ है लाना। भक्तों के लिए श्रेष्ठ ज्ञान लाने वाली अर्थात उन्हें देने वाली। पूजित। अभिलषित। वनु याचने धातु होती है। जल के ऊपर निर्वाह करने वाली। वानप्रस्थ अर्थात जंगल में रहने वाली। वन में रहने वाली। वन का अर्थ जंगल, जल, ज्रगल का निवास, अर्चन या पूजन है। अभिलषित अर्थात इच्छित, वनु याचने धातु होती है। सभी चाहते हैं कि उन्हें देवी प्राप्त हों अर्थात उनकी कृपा प्राप्त हो। केवल जल के ऊपर निर्वाह करने वाली। वन का एक अर्थ जल भी है। वानप्रस्थियों की तरह आचरण वाली। वन स्वरूपा। संसार भी वन है और संसार देवी का ही एक रूप है। ध्वनि स्वरूपा भी अर्थ कर सकते हैं। वन् धातु में अच् प्रत्यय लगाया तो वन बना। स्त्रीलिंग में वन का वनी हो गया। वन् धातु का अर्थ है शब्द करना इस प्रकार वनी का अर्थ हुआ ध्वनि करने वाली। वन्यते इति वनः अर्थात जो बोली जाती है वह भी वनी है अर्थात बोली या ध्वनि स्वरूपा भी अर्थ कर सकते हैं।

23. **वनविनोदिनी** – वन में विहार/मनोरंजन (पिकनिक आदि मनाना) करने वाली।

24. **वेगिनी** – वेग वाली (तीव्र प्रवाह अर्थात वेग, तीव्र गति, इच्छा होते ही देवी वहाँ तुरन्त पहुँच जाती हैं)।

तुरन्त कहीं भी पहुँच जाती हैं। फुर्तीली। आपने मनोवेगा नाम सुना होगा जिसका अर्थ है मन की तरह वेग वाली। प्रवाह वाली अर्थात नदी स्वरूपा। प्रवाह से युक्त अर्थात आनन्द के प्रवाह से युक्त। वेग का अर्थ प्रवाह है। किसी भी कार्य को शीघ्रता या जल्दी से करने वाली। आनन्द या प्रसन्नता से युक्त। प्रेम की भावना से युक्त। वेग का अर्थ आनन्द, प्रसन्नता, प्रेम है।

25. **वेगदा** – वेग देने वाली (उपासकों को फुर्तीली, चुस्त–दुरूस्त (smart) बनाती, स्फूर्ति वाली बनाती, न कि आलसी)। प्रसन्नता, आनन्द, वृद्धि देने वाली। वेग का एक अर्थ प्रसन्नता, आनन्द, वृद्धि है।

26. **वेगा** – वेग स्वरूपा अर्थात तीव्र गति स्वरूपा। प्रसन्नता स्वरूपा। वृद्धि स्वरूपा। प्रेम स्वरूपा। प्रेम की शक्ति स्वरूपा। वेग + आ, एकाक्षरी कोष में आ का एक अर्थ शक्ति दिया गया है।

27. **वगलस्था** – बन्धन क्रिया या स्तम्भन क्रिया में स्थित रहने वाली। बन्ध् धातु में डगलच् प्रत्यय लगाने से बगल या वगल बनता है। बन्ध् धातु का अर्थ है बाँधना अर्थात स्तम्भन करना। वरुण, गणेश और इन्द्र में शक्ति रूप में स्थित। एकाक्षरी कोष के अनुसार व का अर्थ है वरूण, ग का अर्थ है गणेश और ल का अर्थ है इन्द्र। आभिचारिक कर्म करने वाली शक्ति वालो में स्थित। नियन्त्रण करने वाली शक्ति वालों में स्थित। वल्गा या बगला का एक अर्थ है आभिचारिक कर्म करने वाली शक्ति, लगाम लगाने वाली शक्ति अर्थात नियन्त्रण करने वाली शक्ति। पंचभूतों अर्थात पृथ्वी, जल, अग्नि आकाश और वायु में रहने वाली। व का अर्थ है वह्नि, जल, वायु और ग का अर्थ है गगन तथा ल का अर्थ है पृथ्वी। (यदि वलगस्था शब्द होता तो अर्थ है गूढ़ हिंसा प्रयोग या अभिचार कर्म के द्वारा की जाने वाली हिंसा की क्रिया में स्थित। वलग का अर्थ गूढ़ हिंसा प्रयोग या अभिचार कर्म के द्वारा की जाने वाली हिंसा की क्रिया है।)

28. **वलाधिका** – बल में अधिक अर्थात जो दूसरों से बल में अधिक हैं। अधिक बल वाली। संस्कृत में ब और व में अभेद होता है। वल का अर्थ मेघ, वल नामक असुर, भी होता है। अधिक मेघ स्वरूपा अर्थात अधिक बारिश करने वाली अर्थात अधिक से अधिक कामनापूर्ति की बारिश करने वाली। जो वल नामक असुर से अधिक ताकत वाली है।

29. **काली** – प्रपंच या विश्व का संहार करने वाली। कलयति इति काली। कलयति के कई अर्थ हैं उनमें से एक अर्थ है संहार करना। प्रलयकाल में विश्व का संहार करने वाली। काली वह शक्ति या तत्व है जो अपने भीतर स्थित विश्व को अपने से बाहर फेंकती है अर्थात् बाहर निकालती है। कल् क्षेपे धातु होती है जिसके अनुसार कल् धातु को अर्थ फेंकना होता है। वह शक्ति जो सभी पदार्थों को ज्ञान करती है। कल् धातु का एक अर्थ जानना अर्थात् ज्ञान करना भी होता है। ज्ञान का एक अर्थ प्राप्त करना भी होता है। संस्कृत में गति, ज्ञान और प्राप्ति समानार्थक माने जाते है और कल् गतौ धातु से कल् धातु का अर्थ जाना, जानना एवं प्राप्त करना होता है। जो विश्व को प्राप्त करती है अर्थात् अपने भीतर समा लेती है अर्थात् संहार कर देती है। कल् संख्याने धातु भी होती है, जिसका अर्थ होता है गिनना अर्थात अलग–अलग करना। अलग–अलग होने पर ही गिनती हो सकती है। जो पदार्थों की आयु की गणना करती है अर्थात् यह निर्धारित करती है कि उसकी आयु पूरी हुई या नहीं हुई जिससे पूरी होने पर उसका अस्तित्व मिटाया जा सके। वह शक्ति जो अव्यक्त पदार्थों को एक दूसरे से पृथक करती है अर्थात् जिसके कारण यह पदार्थ यह है, यह पदार्थ वह नही है, वह पदार्थ वह है, इस प्रकार का भेद होता है। संख्यान का अर्थ है अन्यतो व्यतिभेदन अर्थात् दूसरे से अलग होना। काल अर्थात् भगवान शिव की पत्नी। जो समय शक्ति को उत्पन्न कर इस समय शक्ति से संसार का संचालन करती है। जो अपने उपासकों को काल (मृत्यु) के भय से मुक्त कराती है। जो काले वर्ण वाली है। कलयति विश्वम् इति काली अर्थात् जो प्रलय काल में विश्व का संहार कर देती है।

30. **कालप्रिया** – शिव की प्रिया। काल का एक अर्थ शिव भी है। काल (जो जगत का भक्षण करता है) की अर्धांगिनी। जो अपनी क्रियाओं से काल को प्रसन्न करती हैं। प्रीणाति इति प्रिया अर्थात जो प्रसन्न करे वह प्रिया है।

31. **केली** – क्रीडा स्वरूपा (जगत की उत्पत्ति, स्थिति, संहार देवी की क्रीडा हैं)। सुरत क्रीडा स्वरूपा, मनोविनोद स्वरूपा। अपने को माया के पर्दे में छिपाकर भक्तों के साथ होने वाले लुका–छिपी खेल स्वरूपा। शब्द के आगे 'का कारण' या ' मे विराजमान' लगाने से भी शब्द के अन्य अर्थ निकल आते हैं। प्रत्येक प्रकार की क्रीड़ा में विराजमान। क्रीड़ा का कारण अर्थात क्रीड़ा करने वाली या जिनके कारण प्रत्येक प्रकार की क्रीड़ा होती है। क का अर्थ है ब्रह्म, सुख। के का अर्थ हुआ ब्रह्म में, सुख में। लीङ् श्लेषणे धातु से ली का अर्थ हुआ जुड़ी हुई। केली का अर्थ हुआ ब्रह्म में जुड़ी हुई।

32. **कमला** – कमल के समान सुन्दर। कमल वाली अर्थात कमल को धारण की हुई या कमल में विराजमान। हाथ में कमल लिये हुए हैं। कमलम् अस्या अस्ति इति कमला अर्थात कमल वाली।

33. **कालकामिनी** – काल (शिव) के द्वारा चाही गई।

34. **कमला** – जल को सुशोभित करने वाली। कम् (जलम्) अलंकरोति इति कमला। पर्याप्त सुखस्वरूपिणी। कम अर्थात सुख, अलम् अर्थात पर्याप्त। (कम् अर्थात सुख) सुख के लिए काफी है अर्थात इनकी उपासना करो सारे सुख मिल जाएंगे। लोक भाषा में कहते हैं दैत्यों के लिए विष्णु ही काफी हैं अर्थात केवल विष्णु से देत्यों का काम समाप्त हो जाएगा। कमल के समान जगत का संकुचन एवं विस्तार करने वाली। यह अर्थ भी कर सकते हैं।

35. **कमलस्था** – कमल में विराजमान है, आसन लगाए हुए हैं। जल को सुशोभित करने वाली जो जो चीजें है उनमें रहने वाली। हृदय कमल में स्थित। सुषुम्नानाड़ी में स्थित चक्र पद्म या कमल कहे जाते हैं। उन चक्रों में शक्तिरूप से या विभिन्न देवियों के रूप में स्थित।

36. **कमलस्था** – जल में स्थित। कमल का एक अर्थ जल भी है। कमल की तरह स्थित अर्थात निर्लिप्त। पर्याप्त सुख में स्थित। कम् का अर्थ है सुख एवं अलम् का अर्थ है पर्याप्त। सुख की पराकाष्ठा में स्थित।

37. **कलावती** – चौसठ कलाओं वाली अर्थात जो इनको जानती है इनमें पारंगत है। कला का अर्थ अंश या अवयव भी होता है अर्थात शरीरावयव वाली। जब साकार रूप धारण करती हैं तो उनके भी हाथ पैर आदि अवयव होते हैं। समेकित समय वाली जिसमें समय के सारे अंश मौजूद हों। कला अर्थात समय का एक सूक्ष्म अंश। सौन्दर्य से युक्त। शक्ति से युक्त। कला का अर्थ है– विशेष कार्य करने की शक्ति। कला का अर्थ होता है अवयव अर्थात् इकाई। प्रत्येक विशेष कार्य करने की शक्ति को कला कहते है। दिव्य पदार्थ या दिव्य शक्ति को भी कला कहते हैं। सूर्य, चन्द्र, अग्नि, वायु आदि सभी दिव्य पदार्थ एवं इनमें रहने वाली शक्ति कला है। शिव के साथ समवायी सम्बन्ध से रहने वाली शक्ति कला है।

38. **कुलीना** – श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न। पृथ्वी में व्याप्त। कु अर्थात पृथ्वी एवं लीन अर्थात व्याप्त। उच्च कुल की अर्थात खानदानी महिला की तरह श्रेष्ठ गुणों एवं आचार वाली।

39. **कुटिला** – दुष्टों के प्रति वक्र दृष्टि, छलकपट वाली। कुटिलम् अस्या अस्ति इति कुटिला। टेढ़ी मेढ़ी अर्थात अभक्तों के लिए दुष्ट, कपटी, छली और चालबाज। अभक्तों के लिए कुटिल अर्थात उनके पल्ले नहीं पड़तीं। दुष्टों के लिए दुष्ट। सरस्वती नदी स्वरूपा। सरस्वती नदी का एक नाम कुटिला देवी है। कुटति वक्रम् व्रजति इति कुटिला। जो टेढीमेढी चलती है वह कुटिला है। कुट् धातु+इलच् प्रत्यय+टाप् प्रत्यय इति कुटिला। नदी स्वरूपा। वक्रम् गच्छति इति कुटिला अर्थात जो टेढ़े–मेढ़े होकर चलती है वह कुटिला है। नदी टेढ़े–मेढ़े होकर चलती है अतः नदी का नाम कुटिला है।

40. **कान्ता** – भक्तों के द्वारा चाही जाने वाली। काम्यते असौ इति कान्ता। कम् + णिच् + कर्मणि क्त, +

टाप् इति कान्ता। चमक वाली या दीप्तिमती अर्थात अत्यन्त सुन्दरी। कन् दीप्तौ धातु से या कमुकान्तौ धातु से कान्ता शब्द बनता है। कमनीया अर्थात सुन्दरी । प्रिया अर्थात सबको अच्छी लगने वाली। किसी भी प्रियतम को अच्छी लगने वाली जिसे वह प्रियतम प्यार करता है उसे उस प्रियतम की कान्ता हैं। आवश्यक नहीं है कि पत्नी अपने पति की कान्ता हो। कमनीया। इच्छामयो वा। कौ ब्रह्मवायू जीवकोटयन्तगा–वनेन। कमनीयतमः कान्तः। कयोः ब्रह्मवाय्योप्यन्तको इयम्। असतां सुखस्यान्तकृच्च। सुखरूपत्वात् कश्च सर्वान्तकश्च। कस्याऽनन्दस्यान्तः परा काष्ठा। अत्यन्त सुन्दर या जिसकी कृपा या जिसके सान्निध्य की उनके भक्तों द्वारा इच्छा की जाती है। इच्छा स्वरूपा। जिसके द्वारा ब्रह्म एवं वायु को प्राणियों के अन्दर डाला जाता है। जो सर्वाधिक सुन्दर है। जो दुर्जनों के सुख के मिटा देती है। जो स्वयं सुख स्वरूप है एवं सभी का अन्त करने वाली है। जो आनन्द की सीमा है अर्थात् इससे अधिक आनन्द नहीं है। कान्त अर्थात इच्छा स्वरूपा। ब्रह्म और वायु को अनन्त जीवों के प्रकार में जिसके द्वारा भेजा जाता है। तात्पर्य है प्राण को जिसके द्वारा अनन्त जीवों में प्रवेश कराया जाता है।

41. **कोकिला** – कोयल की तरह मधुर स्वर करने वाली या आवाज वाली। जैसे लता मंगेशकर को स्वर कोकिला कहा जाता है।

42. **कलभाषणी** – मधुर बोलने वाली अर्थात देवी कटु वचन नहीं बोलती। कल अर्थात मधुर।

43. **कीरा** – मैना को साथ रखने वाली। कीरा अस्या अस्ति इति कीरा अर्थात कीरा (मैना या तोता) वाली। कई बार सदृश शब्द न होने पर भी ''की तरह'' अर्थ निकलता है जैसे वह आदमी गौ है अर्थात गाय की तरह सीधा है। देवी के ध्यान में मैना (कीरा) का वर्णन मिलता है। मैना की तरह अर्थात मैना की तरह सुन्दर रूप वाली। मैना की तरह मधुर बोलने वाली। उपदेशिनी अर्थात उपदेश देने वाली। तोता बोलता है, उसकी तरह देवी भी उपदेश दे रही है।

44. **केलिकरा** – शिव के साथ मनोरंजन, मनोविनोद करने वाली। क्रीडा करने वाली। विभिन्न आमोद प्रमोद की क्रिया करने या कराने वाली।

45. **काली** – काल को भी अपने में समेटने वाली अर्थात अपना ग्रास बनाने वाली। कालसंकलनात् इति काली। जगत की रचना करने वाली। कलयति इति काली। कलयति का एक अर्थ रचना या निर्माण करना भी होता है। काल की शक्ति स्वरूपा। काल भी अपना कार्य इन्हीं की शक्ति से कर पाता है।

46. **कपालिनी** – हाथ में कपाल (खप्पर, खोपड़ी की हड्डी) धारण करने वाली। देवी के कई रूप होते हैं। उन रूपों में कोई रूप ऐसा भी होता है जिसमें वो हाथ में कपाल धारण किए हों। चूँकि सभी रूप एक ही शक्ति के रूप होते हैं अतः अलग अलग रूप की विशेषता को भी वर्तमान में चल रहे प्रसंग में दिखा दिया जाता है। अन्यथा भी देवी जिस रूप को चाहे उस रूप को अपनी इच्छानुसार कभी भी धारण कर सकती हैं। अतः विविध रूप होने पर या विभिन्न रूपों में विरोधाभास होने पर पाठकों को या साधकों को आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए। वैराग्य भाव से युक्त। कपाल बढ़ते हुए वैराग्य का प्रतीक है। कपाल का अर्थ है–क (सुख) का पालन (रक्षा) करने वाला अर्थात विचार (ज्ञान) स्वरूपा। विवेक या ज्ञान होने पर मनुष्य को आत्मतत्व और अनात्मतत्व में भेद पता चलता है तथा वह अनात्मतत्व से अलग कर आत्मतत्व में प्रतिष्ठित हो जाता है जो आनन्द का स्रोत है। इस प्रकार विचार या ज्ञान से या योग से सुख की रक्षा होती है। इस प्रकार कपाल का अर्थ हुआ विचार, ज्ञान या योग। क का अर्थ स्वर्ग भी है। स्वर्ग की रक्षा करने वाला अर्थात इन्द्र। इस प्रकार कपाल का अर्थ है इन्द्र या अन्य देवता। तन्त्र शास्त्र में कपाल, घड़ा, कलश आदि शब्द अमृत तत्व अर्थात मोक्ष या आनन्द का प्रतीक हैं। समुद्र मन्थन में अमृत घड़े से ही निकला था। ये शब्द सृष्टि उत्पन्न करने वाले तत्व का भी प्रतीक हैं। योग की कपालिनी मुद्रा स्वरूपा या इस मुद्रा में विराजमान।

47. **कालिका** – कृष्ण वर्ण वाली। दुर्गा सप्तशती में आता है कि पार्वती के शरीर से कौशिकी देवी निकलने पर पार्वती का रंग काला पड़ गया था जिससे उन्हें कालिका नाम मिल गया। कलयति घातयति इति कालिका अर्थात जो शत्रुओं पर घात करती है, चोट पहुँचाती है वह कालिका है। एक विद्वान ने काल शब्द में इकन् प्रत्यय लगाकर कालिका शब्द बनाया जहाँ अर्थ किया गया जो काल (शिव) के साथ क्रीड़ा करने वाली है। तेन दीव्यति सूत्र से इकन् प्रत्यय लगाया, दीव्यति का अर्थ है क्रीड़ा करना। समय समय पर अवतार लेने वाले भगवान विष्णु की शक्ति स्वरूपा। काले भवः इति कालिकः, जो समय पर उत्पन्न हो अर्थात आवश्यकता पड़ने पर अवतार ले, वह कालिक है। कालिक + आ, एकाक्षरी कोष में आ का अर्थ है शक्ति। यदि कालिक से पत्नी अर्थ में प्रत्यय लगाया जाए तो कालिकी बनेगा। यद्यपि शिवा, सूर्या, आदि शब्दों में भी पत्नी अर्थ आता है।

48. **केशिनी** – केश से युक्त अर्थात लम्बे–लम्बे काले केशों वाली। केश में इनि प्रत्यय लगाने से केशिनी शब्द बना। ब्रह्मा, विष्णु और महेश से युक्त। क् का अर्थ है ब्रह्मा, अ का अर्थ है विष्णु और ईश का अर्थ है शिव। (यदि केशनी शब्द होगा तो अर्थ होगा त्रिदेवों को ले जाने वाली अर्थात उनका मार्गदर्शन करने वाली। क का अर्थ है ब्रह्मा, विष्णु और ईश का अर्थ है शिव। नयति अर्थात ले जाना। केशान् नयति मण्डयति अर्थात बालों को संजाने संवारने वाली। श्रेष्ठ बालों को उपासकों तक पहुँचाने वाली अर्थात उपासकों को देने वाली अर्थात उपासकों को श्रेष्ठ बालों से युक्त करने वाली। केशान् नयति इति केशनी बनेगा। श्रेष्ठ लम्बे बालों को अपने साथ ले जाने वाली अर्थात उन्हें धारण करने वाली)। सूर्य की शक्ति स्वरूपा। सूर्य की किरणें उसके केश की तरह हैं। केश+इनि प्रत्यय से केशिन् शब्द बनता है जिसका अर्थ हुआ केश से युक्त अर्थात सूर्य। केशिन् वायु का भी नाम है। इस प्रकार केशिनी का अर्थ हुआ वायु की शक्ति स्वरूपा। केशिन् का अर्थ सूर्य, अग्नि, वायु है। अग्नि का धुआँ केश की तरह है, धूल कण वायु के केश की तरह हैं।

49. **कुशावर्ता** – कुश में निवास करने वाली। आवर्त अर्थात घूमना या चक्कर लगाना। यहाँ घूमने का अर्थ रहने वाली होगा। कुशों का आवर्त है जिसका। कुशावर्त नामक देश में रहने वाली।

50. **कौशाम्भी** – कुशा से पवित्र जल वाली। कुशाम्भ अर्थात कुश से पवित्र किया गया जल। अम्भ का अर्थ है जल। कुशाम्भ में अण् प्रत्यय लगाने से कौशाम्भ शब्द बनेगा जो स्त्रीलिंग में कौशाम्भी होगा। कुश से पवित्र जल से सम्बन्धित अर्थात ऐसा जल जिन्हें प्रिय है या इस जल से जिन्हें अभिषेक किया जाता है अर्थात पूजा में चढ़ाया जाता है।

51. **केशवप्रिया** – कृष्ण जिनको चाहते हैं। सूर्य की पत्नी से अभेद है जिनका। केश अर्थात सूर्य की किरण। व मतुप् (युक्त अर्थ) प्रत्यय है। इस प्रकार केशव का अर्थ हुआ सूर्य। ब्रह्म में या शिव में गति करने वाले अर्थात विराजमान अर्थात अपना मन लगाए हुए, ऐसे लोग जिन्हें प्रिय हैं। शव् धातु का अर्थ गति करना भी होता है।

52. **काली** – उत्पन्न पदार्थों या प्राणियों की आयु की गणना करने वाली अर्थात यह निर्धारित करने वाली कि उन्हें कितने समय तक अस्तित्व में रहना है। कल संख्याने धातु होती है, जिसके अनुसार कल् धातु का अर्थ गणना करना होता है। काल या समय का संचालन करने वाली।

53. **काशी** – जो प्रकाशित होती है या प्रकाशित करती है। बुद्धि के अन्धकार को दूर करती है। काश् धातु का अर्थ होता है चमकना। वाराणसी नगरी की तरह अर्थात वाराणसी नगरी की तरह मोक्ष देने वाली। वाराणसी नगरी स्वरूपा। जो सुख का आस्वादन कराती है। कम् (सुखम्) आशयति आस्वादयति इति काशी।

54. **महाकालसंकाशा** – महाकाल (शिव) की तरह दिव्य तेज वाली। महाकाल की तरह चमकने वाली/दिखने वाली। महाकाल की तरह अतिउग्र, भयंकर, क्रोधी। महाकाल (शिव) के अत्यन्त समीप। संकाश का अर्थ है समाम, सदृश, समीप, प्रकाश, दीप्ति आदि।

55. **केशदायिनी** – ब्रह्म, ब्रह्मा और शिव को देने वाली अर्थात साधकों को ब्रह्म और शिव की प्राप्ति कराने वाली। ब्रह्मा और शिव की भक्ति, पद या स्थान देने वाली। क का अर्थ है ब्रह्म, ब्रह्मा, ईश का अर्थ है शिव। भक्तों को सुन्दर बाल देने वाली। भक्त स्त्रियों को लम्बे और काले बाल देने वाली, जो सुन्दर माने जाते हैं। रूप तो सभी का होता है पर रूपवती का अर्थ अधिक सुन्दर माना जाता है। केश तो लगभग सभी के होते हैं, केश को देना अर्थात सुन्दर केश को देना। ज्ञान रूपी किरण देने वाली अर्थात ज्ञान देने वाली। ज्ञान प्रकाश रूप में होता है। सूर्य की किरणें उसके केश की तरह हैं।

56. **कुण्डला** – कुण्डे लसति इति कुण्डला अर्थात यज्ञ कुण्ड में सुशोभित होने वाली अर्थात अग्नि स्वरूपा। जल कुण्डों के स्वरूप वाली या जल कुण्डों से युक्त अर्थात पृथ्वी स्वरूपा या तीर्थ स्वरूपा। कानों में कुण्डल धारण किये हुए। जो गोल है अर्थात जिसका सिरा नहीं है। कहने का तात्पर्य है कि यह आदि और अन्त से रहित है। गोल चीजों का आदि और अन्त नहीं होता। मूलाधार चक्र मे कुण्डलिनी के रूप में स्थित जो साढ़े तीन फेरों की कुण्डली लगाए बैठी है। कुण्डल वाली अर्थात कानों में कुण्डल धारण किये हुए। कुण्डलम् अस्या अस्ति इति कुण्डला। कुण्डल धारण करने वाले शिव की शक्ति, यह अर्थ भी कर सकते हैं। कुण्डलम् लाति धारयति इति कुण्डला। अग्नि–कुण्ड को धारण करने वाली अर्थात् अग्नि स्वरूपा। कुण्ड को धारण करने वाला अर्थात् उसके आकार को या गोलाकार को धारण करने वाला कुण्डल है। ऐसे गोलाकार कुण्डल को धारण करने वाली। कुण्डले अस्या स्तः इति कुण्डला।

57. **कुलस्था** – शरीर में आत्मा के रूप में स्थित। कुल का एक अर्थ शरीर भी है। कु अर्थात पृथ्वी, लाति अर्थात गृहण करना। जो पृथ्वी तत्व को ग्रहण करे अर्थात धारण करे वह है कुल। शरीर पृथ्वी तत्व से बना होता है, अतः शरीर को कुल कहते हैं। कुल का अर्थ मूलाधार चक्र होता है अर्थात मूलाधार चक्र में स्थित (कुण्डलिनी के रूप में)। शास्त्रों में रहने वाली। कुल का एक अर्थ शास्त्र भी है। कुलों में अर्थात विभिन्न घरों/वंशों में रहने वाली। उपासकों के लिए उनकी कुल देवी स्वरूपणी। वाम मार्ग या कौल मार्ग में स्थित अर्थात इन मार्गों में विशेष रूप से पूजनीया। तान्त्रिक गुरु एवं उनके शिष्यों का समूह कुल कहा गया है। ऐसे कुल में स्थित अर्थात ऐसे कुल द्वारा उपासनीया।

58. **कुण्डलागंदमण्डिता** – कुण्डल और बाजूबंद से सुशोभित। कभी कभी अंगद को केयूर भी कहते हैं। क शिर, के अर्थात बाहु के ऊपर के भाग में। के क शब्द की सप्तमी विभक्ति है। केयूर बाहू का शिर अर्थात ऊपरी भाग। अंगद का अर्थ अंग को सुशोभित करती जो। नाट्य शास्त्र में लिखा है कि अंगद केयूर के भी ऊपर अर्थात कन्धे में पहना जाता है और केयूर भुजाओं के सबसे ऊपरी भाग में पहना जाता है। किसी किसी व्याख्या में अंगद का अर्थ वलय अर्थात कलाई में पहनने वाला कड़ा आदि भी बताया गया है।

59. **कुण्डपद्मा** – जलाशय/पोखरा से उत्पन्न कमल वाली अर्थात इनसे उत्पन्न कमल देवी जी को चढ़ाये जाते हैं। कुण्ड के समान पद्म वाली। कुण्ड के समान गहराई लिए पद्म वाली, धारण किए हुए, कुण्ड में गहराई होती है। जो विकसित हो रहा है पर अभी पूर्ण विकसित नहीं ऐसा कमल धारण किए हुए। विकसित हो रहा कमल गहराई वाला होता है। जब कि पूर्ण विकसित कमल में गहराई कुछ कम हो जाती है और फैलाव ज्यादा होता है।

60. **कुमुदिनी** – कुमुदिनी की तरह सुन्दर और सुगन्धित। कुमुदिनी कमल की तरह पुष्प है। कमलिनी की तरह सबको आकृष्ट करने वाली अर्थात सुन्दर।

61. **कुमुदप्रीतिवर्धिनी** – कुमुदों के प्रति प्रेम को बढ़ाने वाली। पृथ्वी में प्रसन्नता (मुख विकास) और स्नेह (प्रीति) को बढ़ाने वाली। कु का अर्थ है पृथ्वी और मुद का अर्थ है प्रसन्नता। पुष्पों के विकसित होने अर्थात

फैलने को पुष्पों की प्रसन्नता मानी जाती है। कुमुद के फैलाव को बढ़ाने वाली। कुमुद के फैलाव को बढ़ाने वाले चन्द्रमा की तरह सुन्दर। सफेद कमलपुष्प की प्रीति बढ़ाने वाली। कुमुद से जिसकी प्रीति/प्रसन्नता बढ़ती। जब कुमुद पुष्प चढ़ाते हो, तो देवी खुश होती हैं। वर्धिनी का अर्थ बढ़ने वाली एवं बढ़ाने वाली दोनों है।

62. **कुण्डप्रिया** – शिव की प्रिया। कुण्ड का एक अर्थ शिव भी है। कुण्ड में किए जाने वाले (अर्थात जमीन से नीचे वाले यज्ञार्थ कुण्ड) होम जिन्हें अच्छे लगते हैं अर्थात् ऐसे कुण्ड में हवन करने से वह प्रसन्न होती हैं। एक स्थण्डिल कुण्ड भी होता है जो जमीन की सतह पर होता है।

63. **कुण्डरुचि** – तीर्थस्थ जलकुण्ड जिन्हें अच्छे लगते हैं। जिन्हें यज्ञ कुण्ड या जल कुण्ड अच्छे लगते हैं। कमण्डलु (जलपात्र) जिन्हें पसन्द है या इनसे अनुराग (चाह, प्रेम) रखने वाली। रुचि का अर्थ है अनुराग, चाह, प्रेम। हवन कुण्ड में हवन करना जिन्हें अच्छा लगता है। कुण्डे रोचते इति कुण्डरुचिः। जो यज्ञ कुण्ड में दीप्त होती है अर्थात् अग्नि स्वरूपा। जो मूलाधार चक्र के कुलकुण्ड में दीप्त होती है अर्थात् वहाँ स्थित कुण्डलिनी शक्ति स्वरूपा।

64. **कुरंगनयना** – हिरण की तरह चंचल नेत्र वाली।

65. **कुला** – पृथ्वी का पालन करने वाली (कुम् पृथ्वीम् लालयति इति कुला)। कौलाचार या वामाचार रूपी उपासना पद्धति स्वरूपा। कुत्सा अर्थात बुरी वृत्तियों या दोषों को नष्ट करने वाली। लाति का अर्थ नाशयति भी होता है। कुत्सा का कु अक्षर ले लिया। कुल (शाक्त सम्प्रदाय, मूलाधारचक्र) वाली अर्थात मूलाधारचक्र में विराजमान। कुल मार्ग वाले शाक्त सम्प्रदाय के द्वारा उपासनीया। तान्त्रिक गुरू एवं शिष्यों का एक परिवार या कुल होता है।

66. **कुन्दबिम्बालिनादिनी** – कुन्द पुष्प और बिम्ब फल पर भौंरी की तरह गूँजने वाली। जिस प्रकार भौंरी आवाज करती है उसी प्रकार देवी भी आवाज करती हैं अर्थात ऐसी आवाज करती हैं जो दूसरों को सुनाई पड़ती है अर्थात वैखरी वाणी करने वाली। कुन्द अर्थात दन्ताग्र, बिम्ब (अर्थात ओंठ) में भौंरी की तरह गूँजने वाली क्योंकि देवी वैखरीवाणी हैं।

67. **कुसुम्भकुसुमाकरा** – कुसुम्भ पुष्प की निधि या भण्डार स्वरूपा। कुसुम्भ पुष्प लाल रंग का होता है अतः इस नाम का अर्थ हुआ कुसुम्भ पुष्प के गुणों की भण्डार स्वरूपा।

68. **काञ्ची** – कांची नामक आभूषण की तरह शोभायमान अर्थात शोभा से युक्त। कमर में बाँधने वाली कमर की पेटी की तरह अर्थात सारा जगत इसके अन्दर है (जैसे सारा शरीर कांची या करधनी के अन्दर होता है, वैसे ही सारा जगत इनके अन्दर है)। समस्त जगत की कांची स्वरूपा। स्त्रियाँ कमर में लाज बचाने के लिए अर्थात अधोवस्त्र नीचे न गिरे, इस हेतु कमर में कांची पहनती हैं। कांची नगरी की तरह अर्थात कांची नगरी की तरह पुण्यदायिनी।

69. **कनकशोभाढ्या** – सोने की शोभा से समृद्ध है, सुशोभित हैं। सोने के आभूषण पहनने से अधिक सुन्दर लग रही हैं।

70. **कणत्किंकिणिकाकटि** – शब्द करते हुए घुँघरू से युक्त करधनी वाली कटि वाली या कमर वाली।

71. **कठोरकरणा** – बेहद मजबूत आयुधों वाली। अतिविस्तृत, पूर्ण शरीर वाली। न दबने वाले शरीर वाली। दुष्टों के लिए क्रूर कर्मों वाली। कठोर का अर्थ पूर्ण, अतिविस्तृत, क्रूर, जिसको दबाया न जा सकता हो तथा करण का अर्थ शरीर, आयुध, कर्म दिया गया है। पूर्ण उपाय स्वरूपा अर्थात कोई भी कार्य हो इनसे अवश्य होगा, अन्य से हो या न हो। यहाँ कठोर का अर्थ पूर्ण या कर्कश है अर्थात अन्तिम उपाय या पेंटेंट उपाय। माघ ने शिशुपाल वध में

कठोर शब्द का प्रयोग पूर्ण अर्थ में किया है। दुष्टों के लिए कठोर कर्मों वाली। जिसके साधन बहुत कठोर है अर्थात् आयुध रूपी साधन शत्रुओं पर कोई दया नहीं दिखते है। माघ ने कठोर शब्द का प्रयोग पूर्ण के अर्थ में किया है। कठोरचन्द्र अर्थात् पूर्णचन्द्र। समस्त साधनों से पूर्ण अर्थात् देवी के पास सभी प्रकार के साधन है।

72. **काष्ठा** – जगत का अन्तिम छोर अर्थात इन्हीं तक जगत है। काष्ठा का अर्थ है दिशा का अन्तिम छोर, अन्तिम। काष्ठा का एक अर्थ है चरम स्थिति या अन्तिम सीमा। समय की एक अवधि स्वरूपा जो कला समयावधि का तीसवाँ हिस्सा होता है। कला समयावधि किसी के मत के अनुसार दिन का 600वाँ भाग है या किसी अन्य मत के अनुसार दिन का 1800वाँ भाग है। दिक्शक्ति स्वरूपा। दिशा स्वरूपा। निरुक्त में काष्ठा शब्द की व्युत्पत्ति दी गई है क्रान्त्वा स्थिता भवति, जो पार कर अर्थात व्याप्त होकर स्थित है अर्थात दिशा स्वरूपा। सर्वव्यापक।

73. **कौमुदी** – पृथ्वी को प्रकाशित करने अर्थात प्रसन्न करने वाली। कौमुदी (चाँदनी) की तरह भक्तों के हृदय को प्रकाशित करने वाली/शान्ति प्रदान करने वाली। चाँदनी की तरह मन को खुश करने वाली और शान्ति प्रदान करने वाली। प्रकाश तो सूर्य भी देता है पर चाँदनी प्रकाश के साथ शान्ति भी देती है। पृथ्वी में प्रसन्न रहने वाली। कौ अर्थात पृथ्वी में। यदि कौमोदी होता तो अर्थ होता प्रसन्न करने वाली। कर्मवाच्य से कौमुदी का अर्थ भी प्रसन्न करने वाली कर सकते हैं। कौ मुद्यते अनया इति कौमुदी, तब इस प्रकार विग्रह बनेगा। सिद्धान्त कौमुदी में श्री भट्टोजी दीक्षित ने स्पष्ट किया है कि आवश्यकता पड़ने पर शुद्ध (अण्यन्त) धातुओं का अर्थ ण्यन्त धातु की तरह एवं ण्यन्त धातु का अर्थ अण्यन्त धातु की तरह हो सकता है। उदाहरण स्वरूप करना को करवाना या करवाना को करना अर्थ कर सकते है। अतः कौमुदी का अर्थ भी पृथ्वी में प्रसन्न करने वाली कर सकते हैं। सामान्यतः पृथ्वी में प्रसन्न होने या रहने वाली अर्थ बनता है। कुमुद से सम्बन्धित अर्थात् कुमुद जैसी सुन्दर एवं सुगन्ध से युक्त। जिन्हें पूजा में कुमुद को पुष्प चढ़ाया जाता है। कुमुद में अण् प्रत्यय लगाने से कौमुद शब्द बनेगा जो स्त्रीलिंग में कौमुदी हो जायेगा। पृथ्वी में प्रसन्न रहने वाली। कु का अर्थ है पृथ्वी और कु का सप्तमी विभक्ति कौ हुआ। व्याकरण का एक नियम है कि आवश्यकता पड़ने पर शुद्ध धातु प्रेरणार्थक धातु रूप का अर्थ दे देती है एवं प्रेरणार्थक धातु रूप शुद्ध धातु (अप्रेरणार्थक) का अर्थ दे देती है। अतः कौमुदी का अर्थ पृथ्वी पर भक्तों को प्रसन्न करने वाली भी कर सकते है। वैसे प्रेरणार्थक रूप रखने पर कौमोदी शब्द रूप होता है।

74. **कण्ठवती** – अत्यन्त अच्छे स्वर वाली। मधुर कण्ठ वाली।

75. **कपर्दिनी** – जटाओं को धारण करने वाली। कौड़ियों वाली अर्थात जिसके पास कौड़ियाँ हैं या जो कौड़ियों को धारण करने वाली हो।

76. **कपटिनी** – सुख ही है वस्त्र जिसका। कम् (सुखम्) तदेव पटः यस्या सा कपटा। कपटा अस्याम् अस्ति इति कपटिनी। दैत्यों को मारने के लिए कपट भी दिखाती है।

77. **कठिनी** – छोटी अंगुली की तरह देवताओं में प्रथम। गिनती छोटी अंगुली से शुरू करते हैं। दूसरा कोई नहीं है अतः छोटी अंगुली में रूक जाते हैं। कठिनी का अर्थ है छोटी अंगुली और उंगलियों की शुरुआत छोटी अंगुली से होती है। छोटी अंगुली में परिगणनीय अर्थात इनके अलावा कोई नहीं। एकमात्र आराध्या, छोटी अंगुली से परिगणीय होने के कारण, दूसरा कोई नहीं। जिसे समझना जानना कठिन है। छोटी अंगुली की तरह छोटे रूप वाली। दैत्यों के लिए कठोर स्वभाव वाली। कठोर स्वभाव वाली अर्थात दैत्यों पर दया नहीं करती हैं।

78. **कलकण्ठिनी** – जिसके मधुर स्वर है कण्ठ में।

79. **कीरहस्ता** – हाथ में तोता वाली अर्थात जिसके हाथ में तोता बैठा है। तात्पर्य है कि वाणी या वाक् शक्ति इनके अधीन या नियन्त्रण में है।

80. **कुमारी** – कौमार्य है जिसमें अर्थात अक्षता। अविवाहिता। कु अर्थात पृथ्वी, तस्याम् मारः (कामदेव) पृथ्वी पर साक्षात कामदेव के समान सुन्दर। कु अर्थात कुमार्गगामियों को/दुष्टों को मारने वाली। दुष्ट प्रवृत्तियों एवं अवगुणों का नाश करने वाली। दस वर्ष की आयु वाली को कन्या कहा जाता है। दस वर्ष से 12 वर्ष तक की कुमारी कही जाती है। कहीं कहीं पर 10 से 15 वर्ष तक की आयु वाली को कुमारी कहा गया है। कुमारी शब्द में अक्षतयोनि होने पर अधिक बल दिया गया है। नवयौवना। ब्रह्मचारिणी। कुत्सा (बुराई) को मारने वाली अर्थात् समाप्त करने वाली। दुष्टों को कुत्सित तरीके से अर्थात् बहुत बुरी तरीके से मारने वाली।

81. **कुरूढकुसुमप्रिया** – पृथ्वी पर उत्पन्न होने वाले पुष्प जिसे प्रिय हैं। कु अर्थात पृथ्वी, रूह् धातु अर्थात उत्पन्न होना।

82. **कुञ्जरस्था** – हाथी पर स्थित अर्थात हाथी पर सवार होकर चलने वाली। गजगामिनी।

83. **कुञ्जरता** – जिसे झाड़ियाँ अच्छी लगती हैं। झाड़ियों में विहार करने वाली। झाड़ियों में रहने वाली। कुंज में स्थूल तना नहीं होता। रता का अर्थ प्रसन्न भी होता है।

84. **कुम्भी** – कलश में निवास करने वाली। पानी भरा कलश या कुम्भ है जिसका अर्थात ऐसे कलश से युक्त। पृथ्वी को हरा–भरा बना देने वाली, धनधान्य से सम्पन्न कर देने वाली। कुम् (पृथ्वीम्) उभति इति कुम्भी। जो पृथ्वी को या विश्व को अपनी शक्ति से भरने वाली। भूमि में होने वाली अर्थात् अवतार लेने वाली। कु के आगे जो म् है वह बिन्दु रूप है जिसका अर्थ अवधारण (एव या ही) है। जिसके द्वारा पृथ्वी का अस्तित्व होता है। पृथ्वी को प्रकाशित करती है। प्रकाशित करना अर्थात् दृश्य बनाने वाली या अभिव्यक्त करने वाली। दुष्टों को विदीर्ण करने वाली अर्थात् नाश करने वाली। भ धातु का अर्थ प्रकाशित करना भी होता है और भ विदारणे से विदीर्ण करना भी होता है। कु अर्थात कुत्सित अर्थात दुष्ट लोग। घड़े में विराजमान। किसी भी शब्द के बाद "मे विराजमान" लगाने से उस शब्द का अर्थ आ जाता है। पूजा में कलश में देवी का आवाहन होता है। घड़े में जल होता है अतः इस नाम का अर्थ हुआ जल स्वरूपा या जीवन स्वरूपा। जल का एक अर्थ जीवन भी होता है। भूमि को विदीर्ण करने वाली। बीज जमीन के भीतर होता है और जमीन को विदीर्ण करके ही अंकुरित होता है। बीज में ईश्वर की शक्ति ही होती है। बीज के द्वारा विदीर्ण करना अर्थात् ईश्वर की शक्ति के द्वारा विदीर्ण करना होता है। शक्ति का अर्थ है देवी। वराह अवतार में भी भगवान विष्णु दाढ़ों में रखकर पृथ्वी को लेकर आये थे। कु का अर्थ है भूमि अर्थात् मूलाधार चक्र। मूलाधार चक्र का भेदन कर कुण्डलिनी शक्ति सुषुम्ना नाड़ी में ऊपर चढ़ती है अतः इस शब्द का अर्थ मूलाधार चक्र को भेदन कर ऊपर की ओर गतिमान कुण्डलिनी शक्ति स्वरूपा है। कुम्भ भगवान विष्णु का एक नाम है। भगवान विष्णु की पत्नी या शक्ति स्वरूपा या उनकी पत्नी से अभेद है जिनका। कुम्भी छोटा घड़ा है जो जलपात्र है। जल अर्थात जीवन का आधार, यह कुम्भी का अर्थ हुआ। कु का अर्थ पृथ्वी है। पृथ्वी का भरण–पोषण करने वाली अर्थात् पृथ्वी में रहने वाले लोगों को भरण–पोषण करने वाली। बिन्दु या अनुस्वार को अवधारण अर्थ में प्रयुक्त किया जाता रहा है। कौ भूमे भवति अवतरति इति कुम्भः, स्त्रीलिंग में कुम्भी। पृथ्वी पर ही अवतार लेने वाली। पृथ्वी पर निश्चित रूप से अवतार लेने वाली। कुत्सित लोगों को अर्थात दुष्टों का विदारण अर्थात नाश करने वाली। भ विदारणे धातु भी होती है। कुत्सितम् जनम् विदारयति। कुम्भीधान्य नामक ब्राह्मण सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण माने गए है जो नाममात्र का अन्न रखते है अर्थात उनके पास कल का भी अन्न नही होता है। इस प्रकार कुम्भी का अर्थ हुआ कुम्भीधान्य नामक ब्राह्मण के समान अर्थात अपरिग्रह वृत्ति वाली।

85. **कुम्भस्तनी** – कुम्भ के समान बड़े स्तन वाली। दुर्गासप्तशती का मूर्ति रहस्य देखा जा सकता है।

86. **कला** – मातृका अर्थात अक्षर स्वरूपा। कला का एक अर्थ मातृका भी होता है। सारी कलाएं (64 कलाएं)

इन्हीं का रूप हैं। साकार जगत स्वरूपा। कला का एक अर्थ साकार जगत (जिसे हम आँखों से देखते हैं) भी होता है। मेघ पंक्ति स्वरूपा। कम् जलम् लाति ग्रहणाति इति कला अर्थात मेघ। कला का अर्थ है– विशेष कार्य करने की शक्ति। कला का अर्थ होता है अवयव अर्थात् इकाई। प्रत्येक विशेष कार्य करने की शक्ति को कला कहते है। दिव्य पदार्थ या दिव्य शक्ति स्वरूपा। दिव्य का अर्थ है द्युलोक में होने वाला। उपनिषद एवं पुराण में कला शब्द का प्रयोग भाग (अवयव) अर्थ के साथ–साथ एक विशिष्ट अर्थ में भी किया गया है। वहाँ दिव्य पदार्थों या दिव्य शक्तियों के अर्थ में कला शब्द का प्रयोग किया गया है। सूर्य, अग्नि, वायु आदि पदार्थ दिव्य पदार्थ है। इन पदार्थ में विद्यमान प्रकाश, दाह, और प्राण आदि शक्तियाँ भी दिव्य है। अतः सूर्य आदि दिव्य पदार्थ या सूर्य आदि दिव्य पदार्थों में विद्यमान प्रकाश आदि दिव्य शक्तियाँ कला रूप है। पदार्थ रूप या शक्ति रूप इन कलाओं में पुरूष रूप, चेतन तत्व नित्य रूप से सम्बद्ध रहता है। अतः चेतन तत्व से सम्बद्ध इस कला को चित कला भी कहा जाता है। कला रूप दिव्य पदार्थ या दिव्य शक्तियाँ परमात्मा से ही उत्पन्न हुयी है। अतः ये दिव्य पदार्थ या दिव्य शक्तियाँ पुरूष की मानी जाती है। यह पुरूष त्रिविधरूप में दृष्टिगोचर होता हैं। अतः यह पुरूष तीन रूपों में विभक्त है। सकलपुरुष, निष्कलपुरुष और षोडशकल पुरुष। दिव्य अर्थात् जो पंचभूतों से न बना हो अर्थात् प्रकाश स्वरूपा। कलयति कलते वा कर्त्तरि अच्, कल्यते ज्ञप्यते अच् वा अर्थात् जो किसी के कर्म अथवा स्थिति को द्योतित करती है, वह कला है। जैसे चन्द्रमा के सोलहवें भाग को उसकी कला कहते है। कृष्णपक्ष एवं शुक्लपक्ष में प्रतिपदा से चतुर्दशी तक चौहद कलायें होती है, अमावस्या और पूर्णिमा में दो और कलायें होती हैं, इस प्रकार सोलह कलायें हो गयी। सोलह की संख्या को पूर्णता का प्रतीक माना गया है। भू–लोक पर सोलह कलायें ही विद्यमान है। पुरूष सूक्त के अनुसार ब्रह्म का एक चौथाई हिस्सा भू–लोक में है, तीन चौथाई इसके बाहर है। इस प्रकार ब्रह्म में कुल चौंसठ कलायें है। सामान्यतः सोलह कला को ही पूर्ण कला कहा जाता है। कला अर्थात् कोई विशेष कार्य करने की शक्ति। कला अर्थात् अवयय, अवयय अर्थात् एक हिस्सा। कला अर्थात् एक विशेष प्रकार का कार्य करने की शक्ति। जैसे किसी की दस कलायें है तो प्रत्येक कला कोई एक विशेष कार्य करने में समर्थ होगी अर्थात् प्रत्येक कला कोई विशेष कार्य करने में सक्षम है। कला को आत्मशक्ति भी कहते है। एक से नौ तक की कलायें मनुष्य में पायी जा सकती है यदि वह साधना करें। नौ से सोलह की कलायें देवताओं के अवतारों में होती है। देवताओं में पायी जाने वाली ये कलायें (विशेष कार्य करने की शक्ति) इस प्रकार है– प्रभ्वी, कुण्ठिनी, विकासिनी, मर्यादिनी, संह्लादिनी, आह्लादिनी, परिपूर्ण, स्वरूपावस्थिति। इनमें प्रभ्वी का अर्थ ईश्वर की उस परिभाषा से सम्बन्धित है, जिसमें उन्हें कर्तुं अकर्तुं अन्यथाकुर्तं समर्थ प्रभु कहा गया है अर्थात् असम्भव को भी संभव कर दिखाना जैसे खम्भे में से नृसिंह अवतार प्रकट हो जाना। कुण्ठिनी कला (शक्ति) से पंचमहाभूत या विषादि को कुण्ठित (प्रभावरहित) किया जा सकता है। जैसे शिव ने विष का प्रभाव कम करके ही हलाहल पिया था। विकासिनी कला के द्वारा ही भगवान् वामन ने तीन पगों में समूचे ब्रह्माण्ड को नाप लिया था। मर्यादिनी कला के द्वारा भगवान श्रीराम सर्वशक्ति से सम्पन्न होते हुए भी मर्यादाओं (आदर्शों या नियमों की सीमा) में बँधे रहे व मर्यादा पुरूषोत्तम (Lord of Decorum) कहलाये। संह्लादिनी कला से भगवान् कृष्ण ने अऋतु में फूल–फल आदि उत्पन्न करके प्रकृति के नियम में हस्तक्षेप कर दिया था। आह्लादिनी कला से ही राधिका ने नित्य कृष्ण जी के साथ रहकर उनका अनुरज्जन किया था। स्वरूपावस्थिति कला के द्वारा सम्पूर्ण कलाओं को समेट कर अपने मूलरूप में अवस्थित हुआ जा सकता है– जैसे द्वापर में श्री कृष्ण ने अपनी सभी कलाओं को समेटकर मूल रूप में धारण किया था, जिससे उन्हें पूर्ण अवतार माना जाता है। उपर्युक्त कलाओं के अतिरिक्त अन्य भी लौकिक कलाएँ है जैसे– वास्तुकला, चित्रकला, हस्तकला, काष्ठकला, संगीतकला, नृत्यकला आदि। स्वर्ग को धारण करने वाली अर्थात् adopt करने वाली अर्थात् वहाँ रहने वाले लोगों का पालन–पोषण करने वाली। सुख को धारण करने वाली अर्थात् अत्यन्त सुख या आनन्द से युक्त। लाति का अर्थ धारण करना, नाश करना होता है। दुष्टों के सुखों का नाश करने वाली।

87. **कुम्भीकांगा** – पुन्नाग फूल की तरह गोरे, सुन्दर और सुगन्धित अंगों वाली। कुम्भीक का अर्थ पुन्नाग अर्थात नागचम्पा होता है। पुन्नाग के फूल सफेद, बहुत सुन्दर और सुगन्धित होते हैं। कुम्भीक अर्थात जलकुम्भी की तरह अंग वाली। जलकुम्भी के पत्ते जितने लम्बे होते हैं उतने ही चौड़े और मोटे होते हैं। देवी इच्छानुसार कोई भी रूप धारण कर सकती हैं अतः आश्चर्य नहीं करना चाहिए कि ऐसा रूप कैसे हो सकता है।

88. **करभोरू** – हाथ के करभ नामक हिस्से की तरह उरू वाली। हाथ में कलाई से लेकर छोटी उंगली तक का हिस्सा करभ कहलाता है। कहने का तात्पर्य है कि देवी की उरू करभ की तरह ऊपर कम मोटी, बीच में अधिक मोटी और बाद में पुनः कम मोटी है। कटि (जहाँ से पैर शुरू होता है) से लेकर घुटने तक का हिस्सा उरू कहलाता है तथा घुटने से नीचे टखने तक का हिस्सा जंघा कहलाता है। करभ पहले कम मोटा होता है फिर ज्यादा मोटा होता है, फिर कम मोटा होता है। हथेली को फैलाएं छोटी अंगुली के निचले हिस्से से शुरू कर कलाई तक जाएं तो यह हिस्सा करभ कहलाता है। हाथी की सूँड़ की तरह सुडौल उरू वाली। हाथी की सूँड को भी करभ कहते हैं।

89. **कदलीकुशशायिनी** – केला और कुशाओं में शयन करने वाली, अर्थात केला के पत्तों एवं कुशों पर शयन करने वाली अर्थात रहने वाली।

90. **कुपिता** – शत्रुओं के लिए या कुमार्ग पर चलने वालों पर क्रुद्ध होने वाली।

91. **कोटरस्था** – हृदय गुफा में रहने वाली अर्थात आत्मा स्वरूपा। पेड़ के खोखले में रहने वाली। मूलाधार चक्र में स्थित खोखले स्थान में रहने वाली कुण्डलिनी स्वरूपा।

92. **कंकाली** – कंकाल अर्थात अस्थिपंजर वाली। कंक (मेघ) के समान शोभायमान। कम् जलम् कटति वर्षयति इति कंकः अर्थात जो जल को बरसाये वह कंक है। श्मशान में रहने वाले कंक पक्षी से शोभायमान अर्थात इनके आस–पास कंक नामक पक्षी विराजमान हैं। जो जल को बरसाये वह कंक या मेघ है। कंकवत् अल्यते भूष्यते इति कंकाली अर्थात मेघ के समान शोभायमान कंकाली है। दुष्टों के सुख को नष्ट करने वाली। कम् सुखम् कालयति इति कंकाली। सिर को नष्ट करने वाला। कम् शिरम् कालयति। ब्रह्मा जी के सिर को काट दिया था। शिव द्वारा सिर काटना अर्थात शक्ति द्वारा सिर काटना होता है। सूर्य की शक्ति स्वरूपा । सूर्य का नाम कंकाल है क्योंकि वह जल को सुखाता है। कम् जलम् कालयति खण्डयति शोषयति। सुख देने वाला। कम् सुखम् कलयति सम्पादयति इति कंकाली। भक्तों को सुख देने वाली। कंकैः अल्यते इति कंकाली। कौआ, गृध्र से सुशोभित अर्थात् इनके मन्दिरों के आस–पास ये पक्षी रहते हैं। सुखाभिलाषी पुरूषों द्वारा सुशोभित अर्थात ऐसे पुरूषों द्वारा जिनकी आराधना की जाती है जिससे उन्हें सुख मिल सके। वैदिक कोष के अनुसार कंक का अर्थ है गृध्र, सुखाभिलाषी पुरूष, काक।

93. **कन्दलालया** – केले या स्वर्ण या कचनार मे निवास करने वाली। कन्दल के स्वर्ण, केला, कपाल, मधुर स्वर, नया अंकुर, कचनार आदि अर्थ होते हैं। मधुर स्वर, कपाल में निवास करने वाली।

94. **कपालवासिनी** – कपाल में निवास करने वाली। विचार में निवास करने वाली। कम् सुखम् पालयति इति कपाल। जो सुख का पालन करे वह कपाल है। विचार को सुख का पालन करने वाला कहा जाता है। शिव में रहने वाली (अर्द्धनारीश्वर रूप में) या शिव के साथ रहने वाली। शिव को कपाल कहते हैं क्योंकि वे कपाल धारण करने वाले हैं। कपालम् अस्य अस्ति इति कपालः अर्थात कपालवाला। कपाल शब्द वैराग्य का प्रतीक है। वैराग्य भावना वालों के पास रहने वाली।

95. **केशी** – दीर्घ केशों वाली अर्थात सुन्दर केशों वाली। ज्ञान की शक्ति स्वरूपा। केश अर्थात किरण अर्थात प्रकाश अर्थात ज्ञान। बहिर्गामी विचार भी केश की तरह हैं क्योंकि वे केश की तरह बाहर की ओर जाते हैं। इस

प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ श्रेष्ठ विचारों वाली। देवी देवता के नामों के अर्थ अच्छे के लिये होते हैं अतः श्रेष्ठ शब्द जोड़ा गया। जब बुरा न लिखा हो तो सामान्यतः अच्छा ही अर्थ लेते हैं। सुन्दर केश (बाल) से युक्त भगवान कृष्ण से अभेद है जिनका या उनमें शक्ति रूप से विराजमान। सूर्य में विराजमान (शक्ति के रूप में)। सूर्य की किरण उसके केश है। सूर्य के समान अर्थात् अत्यन्त तेजस्विनी एवं प्रकाशमान। वायु में विराजमान अर्थात् शक्ति के रूप में विराजमान। धुआँ, धूल, वायु के केश है। सिंह में विराजमान। सिंह के गर्दन में बाल होते है अतः सिंह केशिन् हुआ। पुल्लिंग एक वचन में केशी एवं स्त्रीलिंग एक वचन में केशिनी होगा। एक नियम है कि शब्द के आगे ''में विराजमान'', ''के समान'' लगाने से शब्द का अन्य अर्थ निकल आता है। सिंह में विराजमान। सिंह के समान अर्थात् सिंह के समान पराक्रमी।

96. **कंपमानशिरोरूहा** – उड़ते हुए केशों वाली या हिलते हुए केशों वाली।

97. **कादम्बरी** – कलहंसों के साथ रमण करने वाली अर्थात इनके साथ विचरण करने वाली या क्रीड़ा करने वाली। कदम्बेन सह रमते इति कादम्बरः, स्त्री लिंग में कादम्बर का कादम्बरी हुआ। कदम्ब का एक अर्थ कलहंस है। खुद में नशा है। आनन्दरूपी नशा स्वरूपा। कादम्बरी का एक अर्थ है कदम्ब वृक्ष के फूलों से बनी शराब। जब तक विद्या पूरी नहीं होती तब तक नशा रहता है। देवी ज्ञानविद्या की देवी हैं। कादम्बरी नामक शराब के समान आनन्द देने वाली।

98. **कदम्बस्था** – कदम्ब वृक्ष में रहने वाली। कदम्ब वृक्ष की छाया घनी होती है जो शान्ति और शीतलता देती है। कद् हिंसायाम् धातु से कदम्ब बनता है। रोग की हिंसा करने के कारण कदम्ब वृक्ष का नाम कदम्ब है। सबसे बड़ा रोग है अज्ञान। अज्ञान की हिंसा करने के कारण कदम्ब का अर्थ ज्ञानी हुआ। ज्ञानियों में ज्ञानशक्ति के रूप में विराजमान। कदम्बवन घना होने के कारण सहस्रार चक्र का भी प्रतीक है। सृष्टि में अनेक ब्रह्माण्ड है। कदम्ब के गोलाकार फल की तरह ब्रह्माण्ड का आकार भी गोलाकार होता है अतः कदम्बवन सम्पूर्ण दृष्टि या सम्पूर्ण जगत के लिए प्रतीक रूप में प्रयुक्त होता है। सहस्रार चक्र को भी कदम्बवन कह दिया जाता है।

99. **कुंकुमप्रेमधारिणी** – कुमकुम को प्रेमपूर्वक धारण करने वाली अर्थात लगाने वाली। कुमकुम के प्रति प्रेम धारण करने वाली अर्थात उन्हें कुमकुम चढ़ाने से प्रसन्नता होती है। रचनात्मकता के प्रति प्रेम भाव रखने वाली। कुमकुम लाल रंग का होता है जो रजोगुण का प्रतीक है तथा रजोगुण रचनात्मकता (creativity) का प्रतीक है क्योंकि रजोगुण ही कोई चीज उत्पन्न करता है।

100. **कुटुम्बिनी** – कुटुम्ब वाली अर्थात परिवार वाली। पार्वती जी का पूरा परिवार है। शिव उनके पति है गणेश एवं कार्तिकेय उनके बच्चे हैं। कुटुम्ब वाली अर्थात विद्यास्वरूपा क्योंकि समूह में विद्या बढ़ती है, बच्चे एक साथ पढ़ते हैं।

101. **कृपायुक्ता** – कृपा से भरी हुई अर्थात कृपालु अर्थात कृपा करने वाली।

102. **क्रतु** – यज्ञ स्वरूपा। जिस यज्ञ में सोमरस का प्रयोग होता है उस यज्ञ के स्वरूप वाली। इस यज्ञ में विराजमान। इस यज्ञ की कारण। जिस यज्ञ में सोमरस का प्रयोग नही होता उसे यज्ञ कहते है। यह भी पढने को मिला है कि जिस यज्ञ में वैदिक ऋचाओं का प्रयोग होता है, वह क्रतु है तथा जिसमें वेद के अतिरिक्त पौराणिक या अन्य मंत्र प्रयुक्त किये जाते है वह यज्ञ है। यज्ञेषु प्रत्यहं त्रीणि सवमानि क्रतवः। तत्र गतातदाराध्या क्रतुः। ज्ञानरूपत्वाच। संसारचक्रात् तारयतीति च क्रतुः। प्रत्येक दिन होने वाले तीन प्रकार के सवन अर्थात यज्ञ क्रतु हैं। उनमें विराजमान। क्रवणात् इति क्रतु अर्थात जाने वाला क्रतु है अर्थात प्रत्येक दिन होने वाले प्रातः मध्याह्न और सायंकाल में होने वाले यज्ञ में जाने वाली अर्थात वहाँ विराजमान। क्रमते का अर्थ चमकना या प्रकाशित होना भी होता है और ज्ञान प्रकाश स्वरूप होता है। इस प्रकार क्रतु का अर्थ ज्ञान स्वरूपा भी होगा।

संसार चक्र से पार कराने वाली। चक्र से क्र ले लिया और तारयति से त ले लिया। वे यज्ञ जिनमें सोमपान (यह शराब नही है बल्कि अमृततुल्य पेय है जो शरीर को बहुत ऊर्जावान एवं सजग बनाता है) होता है क्रतु कहलाते हैं तथा जिनमें नहीं होता यज्ञ कहलाते हैं। ऐसा भी पढ़ने को मिला है जो कर्म फल नहीं देते अर्थात जिन कर्मो का अच्छा या बुरा कोई फल नहीं होता वे क्रतु कहलाते हैं। विष्णु स्वरूपा। निश्चय (संकल्प), इच्छा, विवेक, प्रज्ञा स्वरूपा। कोई भी कार्य/याग/शब्द तद्स्वरूपा। शब्द स्वरूपिणी/क्रिया स्वरूपिणी/यागस्वरूपिणी। जिनमें वैदिक मन्त्रों एवे वैदिक विधियों की प्रधानता होती है, वे क्रतु कहलाते हैं। जिनमें पौराणिक/स्मार्त मन्त्रों और विधियों की प्रधानता होती है उन्हें यज्ञ कहते हैं। एक किताब में लिखा हुआ है कि वे कर्म जिनमें फल नहीं मिलते, क्रतु कहलाते है। उस यज्ञ के स्वरूप वाली जिसमें सोमपान होता है। यज्ञ में विराजमान। ज्ञान रूप होने से भी देवी को क्रतु कहा जाता है। संसारचक्रात् तारयतीति इति क्रतुः अर्थात् संसार चक्र से पार कराने वाली होने से भी देवी को क्रतु कहते है। वैदिक कोष में क्रतु के कई अर्थ दिये गये है जैसे कर्ता, कर्म, आत्मा, प्रज्ञा, संकल्प, यज्ञ। जिन यज्ञों में सोमरस का प्रयोग होता है वे क्रतु कहलाते है, सोमरस विहीन यज्ञ यज्ञ कहलाते हैं। क्रम् धातु में क्तु प्रत्यय लगाने से क्रतु शब्द बनता है। क्रम् धातु का अर्थ होता है कदम दर कदम चलना, चले रूके चारो ओर देखा पुनः चले रूके और चारों ओर देखा। यह क्रम् धातु का अर्थ होता है। आज के समय में ऐसे कर्म को या यज्ञ को क्रतु कहा जाता है जो सकाम हो अर्थात् किसी कामना से किया जाने वाला कर्म या यज्ञ क्रतु है। Mercenary service जो पैसे लेकर की जाती है क्रतु कही जायेगी। एक अप्सरा का नाम क्रतुस्थला है जिसका अर्थ है जिसमें बहुत अधिक प्रज्ञा विराजमान है। एक जगह यह भी पढ़ने को मिला है कि क्रतु में वैदिक ऋचाओं से आहुति दी जाती है जबकि यज्ञ में वैदिक ऋचा से इतर मन्त्रों से आहुति दी जाती है।

103. **क्रतुकरप्रिया** – यज्ञ करने वाले की प्रिया अर्थात यज्ञ करने वाले प्रिय है जिनको। जो यज्ञ करते हैं उन्हें देवी प्रसन्न करती हैं। प्रीणाति इति प्रिया, जो प्रसन्न करती है, वह प्रिया है।

104. **कात्यायनी** – कात्यायन ऋषि द्वारा जिनकी उपासना की गई या इन ऋषि की पुत्री के रूप में जिनका अवतार हुआ। कत का बेटा कात्य, कात्य का बेटा कात्यायन। कत के बेटे कात्य के वंश में उत्पन्न कन्या कात्यायनी है। जिनके बारे में कहा जाता है कि उनके कितने घर हैं अर्थात जो सर्वव्यापी हैं। कति अयनानि यस्या सा। वाक्रूपिणी रक्षणकर्त्री यह भी इस नाम का अर्थ है। कात्य का अर्थ है गोत्र। गोत्र में गो का अर्थ वाक् एवं त्र का अर्थ है रक्षा करना। ब्रह्मनिष्ठ साधकों द्वारा जिन्हें प्राप्त किया जाता है। कात्यैः अय्यते प्राप्यते इति कात्यायनी। कात्य का अर्थ है ब्रह्मनिष्ठ साधक। ब्रह्मनिष्ठ का अर्थ है जिनकी ब्रह्म में निष्ठा है अर्थात जो ब्रह्म चिन्तन में लीन हैं। ब्रह्म है श्रेष्ठ आश्रय/निवास स्थान जिनका अर्थात ब्रह्म में रहने वाली। क+ अति+अयन। क का अर्थ है ब्रह्म। अति अर्थात श्रेष्ठ एवं अयन अर्थात निवास स्थान या आश्रय। शास्त्र में लिखा गया है – कं ब्रह्म कं शिरः प्रोक्तं अश्मसारं च कं तम, धारणाद् वासनाद् वापि तेन कात्यायनी मता। क अक्षर से बोधित पदार्थों को धारण करने वाली अर्थात उसमें रहने वाली शक्ति या ऊर्जा कात्यायनी है। क अक्षर से ब्रह्म, सुख या आनन्द, स्वर्ग, सिर, अश्मसार आदि का बोध होता है। स्वर्ग है जिनका श्रेष्ठ आश्रय अर्थात श्रेष्ठ निवास स्थान। शतपथ ब्राह्मण में आया है कि प्रजापति से आठ पदार्थों की उत्पत्ति हुई जो क्रमानुसार हैं– जल, जल से फेन हुआ, फेन से मृत्तिका हुई, मृत्तिका से सिकता हुई, सिकता से शर्करा हुई, शर्करा से अश्म हुआ, अश्म से लौह एवं लौह से स्वर्ण हुआ। इस प्रकार अश्मसार का अर्थ स्वर्ण भी कर सकते हैं और स्वर्ण तेजोमय पदार्थ का स्थूल रूप है। इस प्रकार कात्यायनी का अर्थ हुआ स्वर्ण या तेजोमय पदार्थ में शक्ति या ऊर्जा के रूप में रहने वाली। कति+ अयन, इस प्रकार से भी कात्यायनी शब्द का अर्थ निकाल सकते हैं। कति अयनानि सन्ति यस्याः इति कात्यायनी। जिनके बारे में पूछा जाता है कि उनके कितने घर हैं अर्थात अनन्त घरों वाली। देवी प्रत्येक प्राणी के हृदय में, कण–कण में शक्ति या ऊर्जा रूप में रहती हैं। जिनके कितने मार्ग (उपाय) हैं अर्थात अनन्त

या बहुत से उपायों वाली। अयन का एक अर्थ है मार्ग अर्थात उपाय। देवी को पाने के लिए बहुत से उपाय हैं, यह तात्पर्य है। Katyayani is the form of Shakti which gives insight into and controls passions. In name of Parvati, another name of Shakti. सिर को बहुत अधिक ऊपर ले जाने वाली अर्थात् Super-consciouness क अर्थात् सिर। अति अर्थात् extreme अनय अर्थात् movement। तात्पर्य है अपने मन को संसार या संसार से सम्बन्धित पदार्थो एवं भावनाओं की बजाय ऊपर अर्थात् ईश्वर की चेतना में ले जाना चाहिए। इस चेतना को प्राप्त कराने वाली देवी कात्ययानी है।

105. **कृत्तिका** – पापों/दोषों/दुखदारिद्र्य को काटने वाली। कृति छेदने धातु होती है, जिसका अर्थ है छेदन करना अर्थात काटना। कृत्तिका नक्षत्र स्वरूपा। कृत्तिका नक्षत्र स्वरूपा। रूष्ट होने पर जो आसुरी शक्तियों को फाड़ देती हैं। (कृन्तति रौद्रत्वात् कृत्तिका, कृति छेदने धातु में औणादिक प्रत्यय तिकन् लगाने से यह शब्द बनता है, यह व्युत्पत्ति शब्दकल्पद्रुम में दी गई है।) संसार के सभी प्रकार के कृत्यों की मालकिन। कार्य करने की अधिष्ठात्री। जिन्होंने कार्तिकेय जी का पालन किया उन कृत्तिकाओं से अभेद है जिनका।

106. **कार्तिकी** – कार्तिक पूर्णमासी के समान उज्जवल, शान्ति देने वाली, सुन्दर। दो पूर्णिमाएं महत्वपूर्ण होती चैत्र पूर्णिमा और कार्तिक पूर्णिमा।

107. **कुशवर्तिनी** – कुशों में रहने वाली। पृथिवी में जो शान्ति है, उसमें रहने वाली अर्थात् पार्थिव सुख में रहने वाली। कु अर्थात् पृथ्वी, श अर्थात् शिव या कल्याण या सुख या शान्ति। कु अर्थात् कुत्सा या बुराई या दोष, शो तनूकरणे धातु से श का अर्थ पतला करने वाला या दुर्बल करने वाला होता है जिसने बुराई को दुर्बल कर दिया है अर्थात् नष्ट कर दिया है वह कुश है अर्थात् अच्छा या सभ्य व्यक्ति। अच्छाई से युक्त व्यक्ति में रहने वाली।

108. **कामपत्नी** – जो कामदेव की पत्नी रति के समान सुन्दर है। पत्नी का अर्थ रक्षा करने वाली, अर्थात जो पति की रक्षा करे। कामदेव की रक्षा करने वाली। कामनाओं की रक्षा करती हैं। कहते हैं प्रभु मेरी लाज रखना। भक्तों की कामनाओं को व्यर्थ नहीं होने देती, यही रक्षा करने का अर्थ है। कामदेवी की पत्नी रति से अभेद है जिनका।

109. **कामदात्री** – कामनाओं को देने वाली अर्थात कामनाओं को पूरा करने वाली।

110. **कामेश्वरी** – सृष्टि पैदा करने की इच्छा उत्पन्न करने वाली। काम अर्थात इच्छा, यहाँ पर सृष्टि की इच्छा, ईश्वरी अर्थात उत्पन्न करने वाली। कामनाओं पर नियन्त्रण करने वाली, शासन करने वाली या कामनाओं की ईश्वरी। कामनाओं को पूरा होना या न होने देना इनके हाथ में है। शासन के दो अंग हैं। 1. निग्रह (रोकना, न होने देना, दण्ड) 2. अनुग्रह (होने देना, कृपा), दया और दण्ड। काम अर्थात भोग्य विषय अर्थात इन्द्रियों के विषय, इनको देने वाली। अपने उपासकों को भोग्य पदार्थ देने वाली अर्थात पहुँवाने वाली। यहाँ ईश्वरी का अर्थ है देने वाली। भगवान शिव की आराध्या। कामदेव की आराध्या।

111. **कामवन्दिता** – कामदेव द्वारा जिनकी स्तुति की गई। कामनाओं की प्राप्ति के लिए जिनकी वन्दना की जाती है। यद्यपि वन्दित शब्द में क्त प्रत्यय है जो भूतकालीन है जिसका अर्थ हुआ भूतकाल में की गई। वर्तमान में कर दिया तो भविष्य में भी होगा अतः वन्दित का अर्थ वन्दना की जाती है, भी हो सकता है। कृत्यल्युटो बहुलम् सूत्र से कृत्य प्रत्यय दूसरे काल वाले अर्थ भी देते हैं। जैसे वन्दित का अर्थ हुआ वन्दना की गई, पर कृत्यल्युटो बहुलम् सूत्र से इसका अर्थ वन्दना की जा रही है एवं वन्दना की जायेगी भी निकाला जायेगा।

112. **कामरूपा** – इच्छानुसार रूप धारण करने वाली। साक्षात् कामदेव स्वरूपिणी अर्थात कामदेव भी इन्हीं का रूप है। परमशक्ति स्त्रीलिंग या पुल्लिंग नहीं होती है वह जब चाहे स्त्री का रूप धारण कर ले जब चाहे पुरूष का रूप धारण कर ले।

113. **कामरति** – कामदेव की पत्नी रति के स्वरूप वाली। कामस्य रति इति कामरति। रूप बाहरी होता है तथा स्वरूप में भीतरी एवं बाहरी दोनों पक्ष रहते हैं। शिव में प्रीति है जिनकी। शिवमहिम्न स्तोत्र में रति का अर्थ भक्ति भी दिया गया है। कामदेव की जिनके प्रति भक्ति है।

114. **कामाख्या** – काम ही है आख्या (नाम/संज्ञा) जिसकी। कामा (कामनाओं की पूर्ति करने वाली) नाम है जिसका, कामा अर्थात काम+आ, काम का अर्थ है इच्छा और आ का अर्थ है देना। इच्छाओं को देना अर्थात इच्छाओं की पूर्ति करना।

115. **ज्ञानमोहिनी** – ज्ञान के प्रति मोहित करने वाली, ज्ञान के प्रति मोह बढ़ाने वाली, ज्ञान के प्रति आकृष्ट कर देने वाली। ज्ञान को मोहित करने वाली अर्थात ज्ञान वालों को मोहित करने वाली अर्थात संसार में फँसाने वाली, सांसारिक विषयों में आसक्ति पैदा करने वाली जैसा कि विश्वामित्र को फँसाया गया था। यहाँ ज्ञान का अर्थ ज्ञान वाला/ज्ञान कर सकते हैं। ज्ञानम् अस्य अस्ति इति ज्ञानः (ज्ञान वाला अर्थात ज्ञानी)। ज्ञान युक्त अर्थात् ज्ञानियों को भी मोहित करने वाली अर्थात् संसार के रिश्तों एवं क्षणभंगुर पदार्थों में आकर्षित करने वाली। जो अपना नहीं है अर्थात् पराया है, उससे आकर्षित होना या जुड़ना एवं उसे सुख का कारण समझना मोह है। ज्ञानम् अस्य अस्ति इति ज्ञानः (ज्ञान वाला अर्थात् ज्ञान से युक्त अर्थात ज्ञानी)। ज्ञान से मोहित करने वाली अर्थात् लोगों को आकर्षित करने वाली।

116. **खड्गिनी** – खड्ग (तलवार) धारण करने वाली। ज्ञान रूपी खड्ग धारण करने वाली जिससे अज्ञान को काटा जाता है। ज्ञानरूपी खड्ग से युक्त जिससे वे भक्तों के अज्ञान का संहार करती हैं। विवेक शक्ति से युक्त अर्थात् सर्वेश्रेष्ठ विवेक शक्ति धारण किये हुये। विवेक चीजों को दो भागों में बाँटता है और तलवार भी दो भागों में बाँटती है। द्वैत पैदा करने वाली शक्ति से युक्त अर्थात् माया शक्ति से युक्त। संसार बना रहे और लोग वैरागी न हो जाये, इसके लिए द्वैत का होना बहुत आवश्यक है। अतः तलवार द्वैत पैदा करने वाली शक्ति का भी प्रतीक है। शौर्य से युक्त। तलवार शौर्य गुण का भी प्रतीक है। रामधारी सिंह दिनकर जी की प्रमुख कविता कलम और तलवार में कलम बौद्धिक अर्थात् ज्ञान शक्ति का प्रतीक एवं तलवार दैहिक अर्थात् शारीरिक शक्ति का प्रतीक माना गया है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ सर्वेश्रेष्ठ शारीरिक शक्ति या बल वाली। खड्ग नामक आयुध से विभूषित।

117. **खेचरी** – आकाश में विचरण करने वाली (ख का अर्थ है आकाश)। तन्त्रशास्त्र या योग शास्त्र की खेचरी विद्या/मुद्रा उन्हीं का स्वरूप है। खेचरी मुद्रा में विराजमान। एकाक्षरी कोष में खे का अर्थ प्राण दिया गया है। प्राण में संचरण करने वाली अर्थात् शक्ति रूप में विराजमान रहने वाली। योग की खेचरी मुद्रा में विराजमान। ख का अर्थ है आकाश, अतः खे का अर्थ हुआ आकाश में। आकाश में विचरण करने वाली। हृदयाकाश में विचरण करने वाली अर्थात् आत्मा स्वरूपा। हृदय में विराजमान जीवात्मा एवं परमात्मा की तुलना पक्षी से की गयी है। जीवात्मा के भीतर परमात्मा होता है। ख अर्थात आकाश जो चेतना का प्रतीक है। चेतना के क्षेत्र में विचरण करने वाली। Khecari-sakti sphere is the self. It is perceived separately from the integral consciousness in the form of desire, anger, etc. in the limited experient but in the sameness of it, there is perception of her full divine nature everywhere because of her being the nature of Bhairava.

118. **खञ्जा** – जिससे आकाश पैदा होता है। खम् जायते यस्मात् इति खञ्जा। खम् का अर्थ है आकाश। भगवान शनि की शक्ति। भगवान शनि लंगड़ाते हुए चलते हैं। कलियुग के धर्म स्वरूपा। ऐसा कहते हैं कि कलियुग में धर्म का एक ही पैर रह जाता है और वह है सत्य। धर्म के द्वापर में दो पैर, त्रेता में तीन और सतयुग में चार पैर

होते हैं। इनकी गति संसार में ऊपर – नीचे वाली है अर्थात कोई अमीर है, कोई गरीब है। कर्म के परिणामों में अन्तर है जिससे लोगों की स्थिति में अन्तर है। अभ्यास छोड़ देने वाले व्याकरणाचार्य की शक्ति स्वरूपा। ऐसा कहते हैं कि यदि एक सप्ताह तक व्याकरण पढ़ना छोड़ दो तो वह भूलने लगता है अर्थात उस व्याकरणचार्य की स्थिति लंगड़े व्यक्ति की तरह हो जाती है। जब गणेश जी का सिर कट गया था तो पार्वती जी क्रोध से पागल हो गयी थी जिससे विभिन्न आकृतियों की शक्तियाँ पैदा हो गई थी और वे शक्तियाँ रास्ते में जो भी आता था उसका भक्षण कर देती थी। उन शक्तियों में एक खञ्जा अर्थात लंगड़ी आकृति की भी शक्ति थी।

119. **खञ्जरीटेक्षणा** – खंजरीट पक्षी के नेत्रों के समान चंचल नेत्रों वाली। इस पक्षी के नेत्र हमेशा चंचल रहते हैं। खंजन पक्षी के समान देखने से उनके नेत्र अतिशय सुशोभित होते हैं। तेजोमय दृष्टि वाली।

120. **खगा** – ब्रह्म तक का बोध करा देने वाली। खम् गमयति इति खगा। खम् (ब्रह्म), ग अर्थात गमयति बोध करा देना। आकाश में विचरण करने वाली।

121. **खरगा** – गधे पर बैठकर चलने वाली। गधा पर सवारी करने वाली शीतला देवी से अभेद है जिनका। तीक्ष्णता से दुष्टों की ओर गमन करने वाली जिससे उन्हें मारा जा सके और भक्तों की रक्षा की जा सके। खर अर्थात तीक्ष्ण। कठोर चीजों को अर्थात् दुर्गम या दुबोध चीजों को समझाने वाली। गमयति इति गा, बोध कराने वाली अर्थात् समझने वाली।

122. **खरनादा** – तीक्ष्ण शब्द या नाद करने वाली। देवी के तीक्ष्ण शब्द सुनकर राक्षस घबड़ा जाते हैं, भाग जाते हैं। गधे की तरह स्वर वाली। कभी कभी रटने में इस तरह का स्वर आ जाता है। स्फुट (स्पष्ट) शब्द करने वाली या स्पष्ट बात स्वरूपा। देवी वैखरी वाणी स्वरूपा। वे अपने वाहन खर (गधा) की तेज गर्जना से शत्रुओं के मनोबल का मर्दन कर देती हैं। खर को प्रखर शब्द के रूप में लें तो प्रखर का अर्थ है जो सामने वाली चीज को चीरता हुआ, भीतर तक चला जाय, स्पर्श करते ही काट दे। प्रखर प्रकाश अर्थात् जो तुरन्त अन्धकार छाँट दे। प्रखर बुद्धि जो समस्या की गाँठ चीर दे एवं तुरन्त समझ ले। प्रखर चिन्तन अर्थात् भीतर तक घुसकर ऐसे तत्व एवं सिद्धान्त सामने लाये, जिससे सामने वाला दंग रह जाये।

123. **खरस्था** – गधे पर बैठी हैं। 121वें नाम में लिखे नाम खरगा का अर्थ है कि गधे में बैठकर चल रही हैं, जबकि इस नाम का अर्थ है कि वे गधे में बैठी हुई हैं अर्थात चल नहीं रही हैं। कौआ, कुत्ता या कुररी पक्षी में रहने वाली। गधे में रहने वाली। ज्ञान प्राप्ति के पूर्व सारे मनुष्य गधे हैं, उन गधों में विराजमान। वे खर अर्थात गधे की भी सवारी करती हैं। खर अर्थात तीक्ष्ण अर्थात् दुर्बोध या जो समझ में नही आये। ऐसे दुर्बोध शास्त्र में ज्ञान या शक्ति के रूप में स्थित या विराजमान।

124. **खेलनप्रिया** – खेल जिनको प्रिय है अर्थात अच्छा लगता है। सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति, संहार देवी का खेल ही है। उन्हें क्रीडा प्रेम है, वे विविध प्रकार की क्रीड़ाओं से भक्तों को आनन्दित करती है। अपने को माया के परदे से छिपाकर भक्तों के साथ लुका–छुपी का खेल खेलती हैं। स्वयं हृदय में विराजमान हो जाती हैं और लोग बाहर ढूँढते रहते हैं।

125. **खरांशु** – उनके आभामण्डल में तीक्ष्ण किरणें विद्यमान हैं जिससे उनका स्वरूप देदीप्यमान रहता है। तीक्ष्ण किरणों वाली। अंशु अर्थात किरण। तीक्ष्ण का अर्थ है जो सहन न किया जा सके।

126. **खेलनी** – खिलौना स्वरूपा। देवी द्वारा बनाये गये सभी जड़–चेतन पदार्थ उसके लिए खिलौना हैं। ग्रह नक्षत्र, मनुष्य, पशु–पक्षी, पत्थर, नदी सभी देवी के लिए खिलौने हैं क्योंकि देवी की शक्ति से ही इनमें कुछ हरकत होती है। खेल् धातु में ल्युट् प्रत्यय लगाने से खेलनम् शब्द बनता है। इसमें स्त्रीलिंग में खेलनी शब्द बनेगा। ल्युट् प्रत्यय प्रायः करण, अधिकरण, कर्म कारक में होता है और बहुत कम अवसरों पर कर्ता कारक में होता है।

खिलौना अर्थात करण कारक में ल्युट् प्रत्यय लगाया। अधिकरण कारक में खेलनी शब्द का अर्थ होगा जिस पर खेल खेला जाता है अर्थात विश्व रूपा क्योंकि विश्व में ही सभी खेल खेला जाता है। शतरंज का चौपड़ खेलनी हुआ। खेलनी अर्थात खेल का मैदान अर्थात विश्व स्वरूपा। खेलनी का एक अर्थ खिलौना है। ग्रह, नक्षत्र, पशु–पक्षी, मनुय, देवता, असुर, वृक्ष आदि सभी देवी के खिलौने हैं। ये सभी ऊर्जा या शक्ति से बने हैं और ऊर्जा या शक्ति का अर्थ है देवी। इस प्रकार प्रत्येक चीज ऊर्जा रूप होने के कारण देवी रूप है। निरन्तर क्रीड़ा में व्याप्त, वे हमेशा खेलती ही रहती हैं। वे विभिन्न प्रकार की क्रीड़ा के द्वारा अपने भक्तों को प्रसन्न रखती हैं।

127. **खट्वा** – खट्वा (पलंग) वाली अर्थात खट्वा अथवा पलंग में स्थित। खट्वा अस्या अस्ति इति खट्वा। उनका विशेष पलंग है। जिस पलंग के चार पाये ब्रह्मा, विष्णु, ईश एवं रूद्र हैं तथा फलक सदाशिव हैं। खट्वा अर्थात झूला वाली अर्थात झूले में झूलने वाली। खट्वा में जो रहता वह रहने वाला भी खट्वा कहलाता है जैसे लोक भाषा में हम कहते हैं कि दिल्ली ने यह कहा जिसका अर्थ है दिल्ली में रहने वाले ने यह कहा। कपालयुक्त दण्ड को खट्वा कहते हैं, जिसे भगवान शंकर धारण करते हैं। उनकी अर्धांगिनी होने से यह नाम सार्थक है। खट्वा का अर्थ चारपाई, झूला है। पलंगस्वरूपा अर्थात् विश्व की आधार स्वरूपा। पलंग के ऊपर व्यक्ति बैठते है या सोते है। उसी प्रकार सारा जगत भी देवी के ऊपर है, इस प्रकार खट्वा का अर्थ आधारभूति हुआ।

128. **खरा** – दृष्टों के लिए तीक्ष्ण हैं अर्थात इनका तेज सहन नहीं किया जा सकता। दुष्टों, राक्षसों के लिए निष्ठुर या कठोर। निष्ठुर का अर्थ है कि कोई दया नहीं करतीं। खर नामक राक्षस का नाश करने वाली। खर + आ, आ का अर्थ नाश करना भी होता है और देना भी होता है। यद्यपि भगवान राम ने राक्षस का मारा था किन्तु वास्तविकता में भगवान राम की शक्ति ने राक्षस को मारा था। इन्द्रियों को शक्ति देने वाली अर्थात उनको कार्य करने के लिए सक्षम बनाने वाली। खम् अर्थात् इन्द्रिय, राति अर्थात देना अर्थात शक्ति देना। इनके बिना इन्द्रियाँ काम नहीं कर सकती। खम् सुखम् राति इति खरा अर्थात् सुख देने वाली। कम् ब्रह्म, खम् ब्रह्म ऐसा उपनिषदों में कहा गया है। ब्रह्म देने वाली अर्थात् ब्रह्म का साक्षात्कार कराने वाली।

129. **खट्वांगधारिणी** – खट्वांग नामक आयुध धारण करने वाली। यह आयुध चार धार वाला एवं चार कोने वाला होता है जो देखने में चारपाई के पाये अर्थात खटवांग के सदृश होता है। यह ऊपर चौकोर अर्थात चार धार वाला, नीचे गोल होता है। गदा और तलवार का मिजाजुला रूप है। तन्त्र की एक विशेष प्रकार की मुद्रा (अंगुलियों की स्थिति) जिससे देवता प्रसन्न होते हैं, उसका नाम भी खट्वांग है। इस विशेष मुद्रा को धारण करने वाली अर्थात लगाए हुए है।

130. **खरखण्डिनी** – मन्दबुद्धि / मूर्खता को समाप्त करने वाली अर्थात बुद्धिमान बनाने वाली। खर अर्थात् गधा जो मन्दबुद्धि का प्रतीक है। खर अर्थात् कठोर या कठिनाई। कठिनाई को नष्ट करने वाली या दूर करने वाली।

131. **ख्याति** – कीर्ति स्वरूपिणी। ख्याति दर्शन स्वरूपा। वह शक्ति जिसके द्वारा वस्तुओं के विवेचन करने की शक्ति आती है। ख्यातिवाद जैन दर्शन है। अपने अद्भुत गुण, कर्म और स्वरूप के द्वारा सम्पूर्ण विश्व में अतिशय विख्यात, अतः उनका एक नाम ख्याता भी है।

132. **खण्डिता** – खण्डित स्वरूप वाली छिन्नमस्ता देवी से जिनका अभेद सम्बन्ध है। खुद टुकड़े – टुकड़े हो गई जो, खण्डम् इता इति खण्डिता। खण्डित चेतना स्वरूपा अर्थात व्यक्तिगत चेतना स्वरूप। व्यक्ति के अन्दर रहने वाली चेतना समष्टि चेतना का एक अंश अर्थात खण्ड है। खण्ड का अर्थ समूह भी होता है जैसा कि कमलखण्ड अर्थात कमल समूह। समूह की ओर गई / जाने वाली / समूह का ज्ञान कराने वाली यह अर्थ भी हो सकता है। आरम्भ में वाणी संहिता थी, जब पाठ करते तो खण्डित हो जाती। वाणी खण्डित होकर समझ में आती। अन्वय करते तो समझ में आती। देवी वाणी स्वरूपा है अतः इस शब्द का अर्थ टुकड़े होकर समझ में आने

वाली है। खण्डों के द्वारा जिनको प्राप्त किया गया अर्थात् पुंजीभूत तेज स्वरूपा। दुर्गा सप्तशती में आया है कि देवताओं के तेज मिलकर एक बड़े तेज में परिवर्तित हो गये जो महालक्ष्मी देवी के रूप में प्रकट हुई। अलग–अलग देवताओं के तेज खण्ड तेज हुये। खण्डैः इता इति खण्डिता। खण्ड का अर्थ समूह भी होता है। जैसे कमलखण्ड अर्थात् कमल का समूह। यहाँ भी अर्थ तेज समूह अर्थात् पुंजीभूत समूह होगा।

133. **खण्डनप्रिया** – कुतर्कों का खण्डन करना जिन्हें अच्छा लगता है। खण्डन अर्थात खण्डकाव्य प्रिय है जिनको। वे अपने विरोधी शत्रुओं के अस्त्र शस्त्रों को सहज में ही खण्डित कर देती हैं।

134. **खण्डप्रिया** – शर्करा या खाण्ड जिन्हें अच्छा लगता है। अवयव एवं समूह प्रिय है जिनको। खण्ड अर्थात किसी वस्तु का भाग/टुकड़ा या समूह।

135. **खण्डखाद्या** – अवयव रूप से आस्वादनीय, ग्रहीत होती हैं, बोधगम्य होती है। पहले हम संज्ञा पढ़ते, फिर सन्धि पढ़ते, फिर रूप, कारक, फिर समास पढ़ते आदि। शर्करा (मधुर पदार्थों) का सेवन करने वाली। वे शर्करा, फल आदि भक्तों द्वारा प्रस्तुत किये जाने वाले खाद्य पदार्थों को स्वीकार करती है।

136. **खण्डसिन्धु** – गन्ने के रस की समुद्र स्वरूपा। पुराणों में इक्षु सागर का वर्णन है। विद्या के अवयवों या वस्तुओं के अवयवों की सिन्धु स्वरूपा। मधुर पदार्थों की सागर अर्थात मधुर पदार्थ जिनमें पुष्कल (बहुत अधिक) मात्रा में विद्यमान हैं। वे विश्व में सर्वत्र व्याप्त हैं, उनका संवेदनशील व्यक्तित्व अतिशय प्रभावकारी है।

137. **खण्डिनी** – खण्डों से युक्त समष्टि वाली। खण्डाः अस्या अस्ति इति खण्डिनी। खण्डों वाली या विभिन्न स्तरों, कैटेगरी वाली। रामचरित मानस के कई खण्ड या अध्याय होते हैं। ज्ञान के भी खण्ड होते हैं। खण्डयति आत्मानम् इति खण्डिनी। देवी ने अपने को टुकडों – टुकड़ों में कर दिया जैसे ग्रह – नक्षत्र बना दिये, समुद्र बना दिया, वनस्पति, प्राणी, पशु – पक्षी बना दिया। देवी ब्रह्माण्ड स्वरूपा हैं एवं ब्रह्माण्ड के कई खण्ड जैसे भूलोक, भुवलोक, स्वर्ग लोक आदि हैं। यदि खण्डिका शब्द है तो अर्थ होगा खण्डन करने वाली। वे चार्वाक आदि नास्तिकों के सिद्धान्तों का सहज में खण्डन कर देती हैं।

138. **गंगा** – निरन्तर गतिमान रहने वाली। निरन्तरम् गच्छति इति गंगा। पुनः – पुनः गच्छति इति गंगा। देवी ज्ञान स्वरूपा हैं तथा ज्ञान निरन्तर गतिमान रहता है। गुरू से शिष्य, शिष्य से उनके शिष्य, एक दूसरे से होता हुआ प्रवाहित – होता रहता है। गंगा की तरह वे अपने भक्तों के कल्याण के लिए निरन्तर गतिशील रहती हैं। स्वर्गात् गाम् गच्छति इति गंगा। स्वर्ग से आकर जो पृथ्वी में गति करती हैं, वह गंगा हैं। मोक्षार्थियों द्वारा जिनका आश्रय लिया जाता है या शरण ली जाती है वह गंगा है। मोक्षार्थिभिः गम्यते इति गंगा। गाम् गमयति इति गंगा अर्थात ज्ञान प्राप्त कराने वाली। गां गच्छति इति गंगा। जो स्वर्ग से गो (पृथ्वी) की ओर लाई गई हैं। जो गा (स्तुति, शोभा) को प्राप्त होती है, वह गंगा है। गच्छति समुद्रम् इति गंगा। जो समुद्र की ओर गमन करती है, वह गंगा है। समुद्र को ब्रह्म या परमात्मा कहा गया है क्योंकि वह जीवात्मा रूपी बूँदों का समुद्र है। गच्छति अर्थात विचरण करना या विराजमान होना। जो ब्रह्म में विराजमान है। गाम् कं गच्छति इति गंगा। जो स्वर्गीय सुखों को प्राप्त करती है वह गंगा है। गच्छति का अर्थ प्राप्त करना भी होता है। गाढ़गतो गच्छति इति गंगा। जो सघन रूप से निरन्तर प्रवाहित है वह गंगा है।

139. **गोदावरी** – जो स्वर्ग देने वालों में श्रेष्ठ है। गोदावरी में स्नान करने वालों को स्वर्ग मिलता है। गो का अर्थ है स्वर्ग, दा का अर्थ है देना और वर का अर्थ है श्रेष्ठ। जल देने वालों में जो श्रेष्ठ है। गो का अर्थ है वाणी। गोदाओं (वाणी देने वालों) में श्रेष्ठ हैं अर्थात वाक्सिद्धि देने वालों में श्रेष्ठ है। गोदासु वरणीया इति गोदावरी। गाम् (वाक्) ददाति इति गोदा। गो अर्थात किरण (प्रकाश की किरण अर्थात ज्ञान की किरण)। ज्ञान प्रकाशस्वरूपा। गो अर्थात चेतना। चेतना देने वालों में सर्वश्रेष्ठ। ज्ञान देने वालों में सर्वश्रेष्ठ।

140. **गौरी** – गौर वर्ण वाली। पार्वती। तपस्या के तेज से युक्त। तपस्या करने से जो तेज या उज्जवलता आती है उसे गौर कहते हैं। गौरवर्ण पूर्णता का प्रतीक है। जो पूर्ण शक्ति से युक्त हैं वह गौरी हैं अर्थात पूर्ण शक्ति, मन की प्रेरिका शक्ति (सप्तशती सूक्त रहस्य के अनुसार)। गुरते उद्युंक्ते इति गौरी अर्थात जो चित्त को ऊपर उठाए अर्थात जो चित्त को आकृष्ट करे वह गौरी है। गौर का अर्थ है सतोगुण, गौरवर्ण, धवलवर्ण। सतोगुण स्वरूपा। सत्व हल्का होता है। ज्ञान सूक्ष्म और हल्का होता है। गुर उद्यमने धातु से भी गौरी शब्द बनता है। जो उद्यमनशील है अर्थात पराक्रमशील है वह गौरी है। गुङ् शब्दे धातु भी होती है जिससे गौरी शब्द बनाने पर अर्थ होगा शब्द करने वाली अर्थात सत्ज्ञान का उपदेश देने वाली। उपदेश देने वाली। अव्यक्त शब्द करने वाली, युद्ध में गर्जना अव्यक्त शब्द है। गुर उद्यमन का अर्थ ऊपर उठाना या प्रकाशित करना भी होता है। अपने नाम को ऊपर उठाती है अर्थात प्रकाशित करती है अर्थात ग्रहण करने योग्य बनाती है। गुर् धातु ज्वलतिकर्मणः भी है। कर्मण अर्थात अर्थ वाली। प्रकाश करना अर्थ वाली। जो अपनी ही दीप्ति से प्रकाशित रहती है और दूसरे को भी प्रकाशित करती है। स्वयं भी ग्रहीत होती है एवं दूसरे को भी ग्रहीत कराती है। दीपक स्वयं को भी प्रकाशित करता है और दूसरे को भी प्रकाशित कराता है। गौ (गाय) में रमण करने वाली अर्थात् अनुराग रखने वाली। पृथ्वी में रमण करने वाली अर्थात् विराजमान। वाणी में रमण करने वाली अर्थात् उसमें शक्ति रूप से रहने वाली।

141. **गोतमी** – श्रेष्ठ किरण (प्रकाश) स्वरूपा। श्रेष्ठ प्रकाश अर्थात स्पष्ट या अधिक प्रकाशमान। गो का अर्थ वाणी, किरण होता है। तमम् प्रत्यय लगाने से श्रेष्ठ का बोध होता है।

142. **गौतमी** – गौतम ऋषि की पत्नी अहल्या स्वरूपा। गौतम ऋषि द्वारा बनाई गयी स्मृति स्वरूपा। गौतम ऋषि से निकली गोदावरी स्वरूपा। श्रेष्ठ गाय स्वरूपा। श्रेष्ठ पृथ्वी स्वरूपा। वाणी की पृथ्वी/उर्वरा। शब्द सृष्टि के लिए पृथ्वी है। देवी शब्द स्वरूपा या वाणी स्वरूपा मानी जाती हैं।

143. **गंगा** – गंगा नदी की तरह अर्थात गंगा नदी की तरह पापनाशिनी। भक्तों को भगवत् पाद तक पहुँचाने वाली। गमयति इति गंगा। गमयति का एक अर्थ पहुँचाना भी है।

144. **गया** – गया तीर्थ की तरह अर्थात गया तीर्थ की तरह मोक्ष देने वाली। ज्ञान को प्राप्त कराने वाली। गम् यापयति इति गया। ग का अर्थ है ज्ञान। यात का अर्थ है प्राप्त। ज्ञान को प्राप्त, यह अर्थ भी गया का हो सकता है। गया तीर्थ से साम्य है जिसका। गया तीर्थ पिण्ड दान के लिए श्रेष्ठ है, गया श्रेष्ठ तीर्थ है अर्थात यहाँ चले जाओ तो कही और जाने की जरूरत नहीं पड़ती। इसी प्रकार देवी के पास चले जाओ, कहीं और जाने की जरूरत नहीं पड़ती। पितरों की मुक्ति के लिए गया होता है अर्थात देवी मोक्ष प्रदान करती हैं। गय अर्थात प्राण, आ का अर्थ है देना, नाश करना। गय+आ, भक्तों को जीवनदान देने वाली। दुष्टों के प्राण का नाश करने वाली अर्थात हरण करने वाली। गया तीर्थ के समान अर्थात् गया तीर्थ के समान मोक्ष देने वाली। वैदिक कोष के अनुसार गय के कई अर्थ है जैसे प्राण, धन, निवास स्थान। गय + आ, आ का एक अर्थ है देना। प्राण देने वाली अर्थात् भक्तों की आयु को सुरक्षित रखने वाली या बढ़ाने वाली। भक्तों को प्रचुर धन देने वाली। धन भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार का होता है। भक्तों को श्रेष्ठ निवास स्थान देने वाली।

145. **गगनगा** – आकाश में विचरण करने वाली अर्थात विराजमान रहने वाली अर्थात शब्द स्वरूपा। शब्द की स्थिति आकाश में होती है। देवी मातंगी एवं सरस्वती एक ही है। आकाश में विचरण करती हुई अपने भक्तों की रक्षा करती हैं।

146. **गारुडी** – गारुडी विद्या स्वरूपा अर्थात गरुड़ द्वारा कही गई विद्या स्वरूपा। लक्ष्मीपति विष्णु का वाहन गरुड़ है जिनके साथ अर्थात गरुड़ वाहन का प्रयोग करने से भी गारुड़ी हैं। लक्ष्मी से अभेद बताया गया यहाँ। गरुड़ की पत्नी से अभेद है जिनका।

147. **गरुडध्वजा** – जिनकी ध्वजा में गरुड़ का चिन्ह है। रथ में गरुड़ वाली ध्वजा है। ध्वजा में गरुड़ का रूप चित्रित या विराजमान है। वेद को या धर्म को सर्वोपरि मान्यता देने वाली। जिनकी दृष्टि में धर्म सर्वोपरि है। गरुड़ धर्म का एवं वेद का प्रतीक है। ध्वजा सर्वोपरि होती है। गरुड़ दूरदर्शी, जागरूक, शत्रुओं पर टूट पड़ने वाला माना जाता है। गरुड़ की दृष्टि सभी पक्षियों से अधिक तीक्ष्ण है तथा ऊँचाई पर होने के बाद भी जमीन पर रेंगता हुआ कोई सर्प मिल जाए तो उस पर बिजली की तरह टूट पड़ता है और तोड़–मरोड़ देता है। गरुड़ की चाल अन्य पक्षियों की तुलना में सबसे अधिक तीव्र होती है तथा आलस्य और प्रमाद उससे कोशो दूर रहता है। इसी कारण गरुड़ को जागरूकता का प्रतीक माना गया है। अव्यवस्था रूपी सर्प से घोर शत्रुता रखने वाली तथा उसे निरस्त करने के लिए टूट पड़ने वाली प्रकृति गरुड़ है। दूरदर्शिता अपनाने वाले लोंगों को गरुड़ कहा जाता है। जिन्हें न आलस्य है, न प्रमाद है वह गरुड़ है। वैष्णवी देवी गरुड़ पर आरूढ़ है अर्थात् वैष्णवी की कृपा उन्हीं को मिलती है जिनकी प्रवृत्ति गरुड़ जैसी है।

148. **गीता** – भगवत् गीता ग्रन्थ स्वरूपा। जिनकी मनुष्यों और देवताओं द्वारा स्तुति की गई, गान किया गया। जिनका स्वरूप एवं चरित्र देवताओं और कोविदों द्वारा गाया गया।

149. **गीतप्रिया** – जिन्हें गीत (सात्विक एवं भक्तिपरक गीत) प्रिय है। जिन्हें स्तुति प्रिय है।

150. **गेया** – जिनका चरित्र गाने योग्य है। उन्हीं का चरित्र कथनीय है अतः देवताओं, कवियों, विद्वानों के द्वारा उनके स्वरूप, चरित्र एवं गुण आदि गाये गये हैं।

151. **गुणप्रीता** – गुणों से प्रीति करने वाली। अच्छे गुणों से प्रेम करने वाली, अच्छे गुणों का आदर करने वाली।

152. **गुरू** – अज्ञान रूपी अन्धकार मिटाने वाली। गु अर्थात अन्धकार, रू अर्थात दूर करना, मिटाना। अज्ञान को दूर कर कल्याण करने वाली। ग अर्थात अन्धकार, र अर्थात नाश या दूर करना, उ दोनों में है जिसका अर्थ है शिव अर्थात कल्याण। वे ज्ञान विज्ञान एवं समस्त विद्याओं की अधिष्ठात्री देवी हैं। अतः गुरू हैं। गृणाति उपदिशति इति गुरू अर्थात वेदशास्त्रों का उपदेश देने वाली गुरू है। गीर्यते स्तूयते इति गुरू। देव, गन्धर्वों, मनुष्यों द्वारा जिनकी स्तुति की जाती है वे गुरू हैं। गुरू अर्थात भारी, वे रूप, गुण, शील, शौर्य आदि में सभी है बढ़कर है अतएव गुरू है।

153. **गिरी** – उद्गीर्ण होने वाली अर्थात वाणी स्वरूपा (उद्गीर्ण अर्थात निकलना, अन्दर से बाहर निकलना)। पर्वत के समान स्थिर, दृढ़ एवं गौरवशालिनी हैं अर्थात पर्वत की चोटियों और कन्दराओं में निवास करती हैं। अतः उनका नाम गिरी है।

154. **गो** – वाणी स्वरूपा। गाय की तरह पवित्र, सीधी और दूध देने वाली (कामनापूर्ति रूपी दूध देने वाली)। आँख या देखने की शक्ति स्वरूपा। इन्द्रिय स्वरूपा। गाय की तरह लोगों का कल्याण करने वाली। जैसे गाय अनेक उपयोगी पदार्थ देकर लोगों का कल्याण करती है उसी प्रकार लोक का कल्याण करना जिनका स्वभाव है।

155. **गौरी** – आठ वर्ष की कन्या स्वरूपा। गुर् उद्यमन धातु से भी गौरी शब्द बन सकता है, जिसका अर्थ है भक्तों को ऊपर उठाने वाली अर्थात अपनी ओर आकृष्ट करने वाली। जो दूसरों को ऊपरे उठाये अर्थात अपनी ओर आकर्षित करे वह गौरी है। गौरी अर्थात तेज का स्रोत जिससे सारे ब्रह्माण्ड में तेज प्रवाहित होता है। पूर्ण शक्ति स्वरूपा, यह अर्थ भी गौरी का है क्योंकि गौर वर्ण पूर्णता का प्रतीक है।

156. **गण्डसदना** – गण्ड अर्थात कपोलस्थल पर निवास करने वाली या गण्ड में मुख्य निवास है जिनका। मुख के उच्चारण स्थान में विराजमान। देवी वाणी स्वरूपा हैं, शब्द के उच्चारण के लिए जिन स्थानों की प्रयोग होता, वे ही इसके स्थान हैं। जिनका घर सीधा नहीं है अर्थात ऊबड़–खाबड़ है। तात्पर्य है कि जहाँ तक सरलता से

नहीं पहुँचा जा सकता अर्थात जिनकी प्राप्ति अत्यन्त कठिनाई से होती है। यह शब्द दुर्गा जी के दुर्गमा शब्द की तरह है। गण्ड या गाल सीधे नही होते है।

157. **गोकुला** – गायों के समूहों वाली, तद्स्वरूपा। वाणी के समूह वाली तद्स्वरूपा। किरणों के समूह वाली। गायों के समूह वाली अर्थात जिनके पास बहुत सी गाय है। ज्ञान के समूह वाली अर्थात सभी प्रकार के ज्ञान से युक्त। परा, अपरा, परापरा तीनों प्रकार के ज्ञान से युक्त। गो अर्थात किरण अर्थात प्रकाश अर्थात ज्ञान एवं कुल का अर्थ है समूह। वाणी के समूह वाली अर्थात वैदिक ऋचाओं के समूह वाली अर्थात वेद स्वरूपा। परा–पश्यन्ती– मध्यमा–वैखरी इन चारों प्रकार की वाणियों के समूह वाली अर्थात वाणी स्वरूपा।

158. **गोप्रतारिणी** – वाणी के द्वारा दैत्यों से, दुष्टों से छल करने वाली। मोहिनी रूप में अपनी वाणी से राक्षसों को फँसा दिया था। कुम्भकर्ण की वाणी से गलत वरदान मांगा गया था। मधुकैटभ के युद्ध के प्रकरण में मधु–कैटभ की वाणी से निकलवा दिया कि उनका वध कैसे होगा। वाक् छलरूपा। वाणी से छलने वाली महिलाओं में भी विराजमान। गो अर्थात वाणी से स्तुति आदि द्वारा संसार सागर से अच्छी तरह पार करा देने वाली। वाणी के द्वारा धोखा देने वाली अर्थात जिन्होनें अपनी वाणी से असुरों को धोखे में रखा था अर्थात मोहिनी स्वरूपा। पृथ्वी को पूर्णरूप से निकालने वाली। वराह भगवान ने अर्थात वराह भगवान की शक्ति ने पाताल में डूबी पृथ्वी को ऊपर निकाला था, इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ वाराहीदेवी स्वरूपा। धनुष की प्रत्यंचा से तीरों को अच्छी प्रकार से छोड़ने वाली। गो का अर्थ है प्रत्यंचा। प्रतारण का अर्थ डाँटना, फटकारना भी होता है। युद्ध में दैत्यों को फटकारने वाली।

159. **गोप्त्री** – भक्तों की रक्षा करने वाली। तीनों लोकों की रक्षा करने वाली। अपने साधक भक्तों की रक्षा करने वाली। यह देवी का संहारक रूप है जिनसे वे दुष्टों का संहार कर भक्तों की रक्षा करती हैं तथा प्रलय काल में सम्पूर्ण सृष्टि का संहार करती हैं। सबकी रक्षा करने वाली। सर्वस्य गोप्त्री। अपने आपको छुपाकर रखने वाली अर्थात जिसने अपने आपको माया के द्वारा छुपाकर रखा हुआ है। स्वयं गुप्ततया स्थिता इति गोप्त्री। गोपायति आत्मानम् इति गोप्त्री। गायों/ज्ञान/प्रकाश की रक्षा करने वाली। गवां गोप्त्री। वेदों की रक्षा करने वाली। वेदानां गोप्त्री। स्वर्गादि लोकों की रक्षा करने वाली। स्वर्गादेः गोप्त्री। (गोप्ता का अर्थ एक स्थान पर मिला है–सर्वत्र गमन करने वाला एवं ज्ञान के बीज को जिसके द्वारा बोया गया है अर्थात बोने वाला। सर्वगा। वप्ता च ज्ञानबीजस्य। सर्वगा का ग ले लिया एवं उप्ता (बोई गई अर्थात रखी गई) को ग से जोड दिया गया, ग+उप्ता। सर्वगत एवं सज्जनों के मनों में रक्षित अर्थात विराजमान। सर्वगता सतां मनसि गुप्ता चोप्ता चेयं परदेवता। स्त्रीलिंग में गोप्त्री का अर्थ पुल्लिंग के गोप्ता जैसा होगा।)।

160. **गोविन्दिनी** – गोविन्द (कृष्ण) से युक्त अर्थात राधा स्वरूपा। गोविन्द+इनि, इति गोविन्दिन्। गोविन्द (कृष्ण) की शक्ति। believer of Govind.

161. **गूढ़ा** – अत्यन्त गुप्त (सबको पता नहीं चलता)। सामान्य लोग उनके गूढ़ स्वरूप को नहीं समझ सकते। उनका स्वरूप उनकी अपनी माया के द्वारा आवेष्टित है, ढका हुआ है। अतः सामान्य जन न तो उनको देख सकता है और न ही समझ सकता है।

162. **गूढविग्रस्तगुंजिनी** – गुप्त और विशेष रूप से ढकी हुई, ऐसी वाणी को करने वाली अर्थात लोगों को पता नहीं चलता कि क्या बोल रही हैं। गुप्त (छुपी हुई) और विशेष रूप से ग्रसित (छुपी हुई या ढकी हुई) इस प्रकार का गुंजन करने वाली। यद्यपि गूढ़ (छिपी) और ग्रसित (अज्ञान से ग्रसित/माया से लपेट लिया अपने को) है किन्तु शब्द मात्र से (अर्थात गुंजन से) पता चलता है कि वह हैं। इनके अस्तित्व का ज्ञान शब्द से होता है, अन्य रूप से पता नहीं चलता। जब बादल हों तो सूर्योदय का पता कमल खिलने से ही होता है। गूढ़ अर्थात् जो ढकी हैं, विग्रस्त अर्थात विशेष रूप से ग्रस्त जैसे राहु से चन्द्रमा ग्रसित है। गुंजिनी अर्थात मधुर स्वर करने वाली।

आध्यात्मिक विषयों को प्रकट करने वाली। वे प्रकट और अप्रकट दोनों रूपों से अपने भक्तों की रक्षा करती हैं। जो छुपी हुई है, प्रकट भी है एवं गुंजन करने वाली अर्थात् अनाहत नाद करने वाली है। गूढ अर्थात् गुप्त या छिपी हुई। विग्रस्त का अर्थ विशेष रूप से ढकी या अधिक छिपी है। विग्रस्त में वि से विगत अर्थ लें तो अर्थ होगा जो छुपी हुई नही है अर्थात् प्रकट है। भक्तों के लिए प्रकट है एवं नास्तिकों के लिए गुप्त है। पूरे ब्रह्माण्ड में अनाहत नाद चल रहा है। गुंजिनी अर्थात् अव्यक्त शब्द करने वाली।

163. **गजगा** – हाथी पर सवारी करने वाली। अपने सुन्दर हाथी पर आरूढ़ होकर गमन करने वाली। हाथी में गमन करने वाली अर्थात विराजमान रहने वाली तात्पर्य है ऐन्द्री शक्ति या इन्द्राणी। इन्द्राणी ऐरावत पर बैठकर जाती थी। ग अर्थात ज्ञान, ज अर्थात जन्म। गज अर्थात ज्ञान जिनसे जन्म लेता है अर्थात गुरू या शास्त्र। गुरू या शास्त्र में जाने वाली, विचरण करने वाली अर्थात विराजमान। गुरू की ज्ञान शक्ति, शास्त्र का ज्ञान देवी ही है। हाथी की तरह चलने वाली अर्थात मस्त होकर चलने वाली। हाथी आनन्द से भरा हुआ कुछ झूमता हुआ बाहरी दुनिया से बेखबर, किसी की परवाह न करता हुआ चलता है।

164. **गोपिनी** – अपने को छुपाने वाली (कुपात्र से)। गुप्त करने वाली। अपने को माया का प्रयोग करके छुपाने वाली, अनभ्यासी से छुपाकर रखती हैं। भक्तों की रक्षा करने वाली। उनका स्वरूप अतिशय रहस्य पूर्ण है। सच्चा साधक कठिन साधना के द्वारा उनके स्वरूप को समझ सकता है। वे आवश्यकता के अनुसार सृष्टि को छुपा लेती हैं तथा प्रकट कर लेती है। रक्षा करने के स्वभाव वाली अर्थात अपने भक्तों या धर्म की रक्षा करने के स्वभाव वाली। गुप् धातु का अर्थ रक्षा करना है, उसमें णिनि प्रत्यय लगाया गया, गोपिन् शब्द बना। जो पुलिंग एकवचन में गोपी और स्त्रींलिंग एकवचन में गोपिनी होगा। णिनि प्रत्यय कभी–कभी स्वभाव अर्थ में भी प्रयुक्त होता है। आप स्वभाव अर्थ देना चाहें तो भी ठीक है, नही भी देना चाहे तो भी ठीक है। छिपाने वाली अर्थात मायाशक्ति स्वरूपा जिससे वे अपना एवं अन्य पदार्थो का स्वरूप छिपा लेती है। सिद्ध कुंजिका स्तोत्र में गोपनीयम् शब्द आया है जिसका अर्थ है छिपाने योग्य। गुप् धातु में णिनि प्रत्यय लगाने से यह अर्थ आ जाता है। गुप् धातु णिजन्त में कर, उससे भी गोपिनी शब्द बन जाता है। गोप अर्थात कृष्ण से युक्त, यह अर्थ भी होगा।

165. **गोपी** – वाणी/गायों की रक्षा करने वाला है, गोप, उनकी पत्नी गोपी। सबकी रक्षा करती है अतः गोपी। अत्यन्त गोपनीय स्वरूप वाली। गोप अर्थात भगवान कृष्ण की पत्नी या शक्तिस्वरूपा। लक्ष्मी या राधा स्वरूपा। इन्द्रियों की रक्षा करने वाली अर्थात उसे स्वस्थ रखते हुए अस्तित्व बनाए रखने वाली अर्थात जीवात्मा स्वरूपा। ज्ञान की रक्षा करने वाली। स्वर्ग की रक्षा करने वाली। पाति इति पः, स्त्रीलिंग में पी जिसका अर्थ है रक्षा करने वाली। इन्द्रियों की रक्षा करने वाली अर्थात् आत्मा स्वरूपा। पृथ्वी का पालन करने वाली। वाणी की रक्षा करने वाली। भूमि, वेद और वेद वाणी की रक्षा करने वाली।

166. **गोक्षा** – स्वर्ग की भूमि अर्थात आधार। अन्तरिक्ष की भूमि या आधार। एकाक्षरीकोश में गो का अर्थ स्वर्ग, तारा, अन्तरिक्ष दिया गया है। क्ष का अर्थ है भूमि। किरण रूप से व्याप्त होने वाली। अक्षु व्याप्तौ धातु होती हैं। अक्ष्णौती का अर्थ है व्याप्त होना। शब्द रूप से व्याप्त होने वाली। गो + अक्ष, पूर्व रूप हुआ अवंगस्फोटायनस्य सूत्र से। वाणी को व्यापक करने वाली। वाणी में विस्तार लाती अर्थात ज्ञान विवेक बढ़ाती तभी वाणी में विस्तार होता। कुछ लोगों को किसी भी चीज में बुलवा लो वो आराम से बोल लेते हैं और नेता आदि बन जाते हैं जब कि कुछ लोग जिन्हें बहुत आता है पर बोल नहीं पाते। गाम् अक्ष्णोति अर्थात व्यापक करना। अक्ष्णोति से गोक्ष शब्द बन जाता पर उक्षति से इस शब्द को बनाने में दिक्कत है। गाय की उक्षा से ही हैं। उक्षा का अर्थ है सिंचन करने में समर्थ अर्थात बछड़ा पैदा करने में समर्थ अर्थात् जिसमें बच्चा पैदा करने की सामर्थ्य हो। गाय की बच्चा पैदा करने की सामर्थ्य या शक्ति वे ही हैं। देवी शक्ति स्वरूपा हैं। स्वर्ग लोक में निवास करने वाली। गाम् क्षयति। क्षी

निवास अर्थ में है, न कि विनाश अर्थ में। ज्ञान में निवास है जिसका अर्थात ज्ञानशक्ति स्वरूपा। ज्ञान में रहने वाली। वाणी में निवास है जिसका अर्थात वाक् शक्ति स्वरूपा। स्वर्ग में निवास है जिसका अर्थात स्वर्ग में रहने वाली। गौ में रहने वाली अर्थात सुरभि लक्ष्मी स्वरूपा। गाय में सभी देवी–देवताओं का वास माना जाता है। क्षी निवासे धातु होती है, एकाक्षरी कोश में क्ष का एक अर्थ निवास, क्षय दिया गया है। गो का अर्थ है किरण अर्थात प्रकाश अर्थात ज्ञान। गो के अन्य अर्थ है वाणी, स्वर्ग, गाय, इन्द्रिय आदि। इन्द्रियों में निवास है जिनका अर्थात इन्द्रियों की शक्ति स्वरूपा या इन्द्रियों की अधिष्ठात्री देवी स्वरूपा। इन्द्रियों में जब यह शक्ति होती है तभी वे काम कर पाती है। गो अर्थात पृथ्वी, क्ष अर्थात क्षय या नाश। प्रलयकाल में पृथ्वी का भी नाश करने वाली।

167. **जयप्रिया** – जीतना जिसे अच्छा लगता है।

168. **गणा** – समष्टि स्वरूपा या समूह स्वरूपिणी या सब वस्तुओं की समष्टि रूपा। जो गिनती की जा सके। शिव गणों द्वारा पूजित। गणपूज्या भी इन्हें कहते हैं। समूह वाली अर्थात् समूह से युक्त या समूह की स्वामिनी। यहाँ पर देव समूह की स्वामिनी अर्थ कर सकते है। इन्द्रियों की स्वामिनी अर्थात् उनकी अधिष्ठात्री देवी अर्थात् उन्हें शक्ति देकर या न देकर क्रियाशील बनाने वाली या क्रियाहीन बनाने वाली। इन्द्रियाँ कई होती है अतः उन्हें भी गण कहा सकते है। देवगणों वाली अर्थात देव गणों की स्वामिनी। गणाः अस्या सन्ति इति गणा (समूह वाली)। देवताओं के तेज से मिलकर देवी महालक्ष्मी की उत्पत्ति हुई थी जिसका दुर्गा सप्तशती में उल्लेख है। देवताओं के तेज के समूह स्वरूपा या उस समूह से बनी हुई। समूह या संगठन बहुत सारी चीजों के हो सकते है जैसे पंचभूत, पंच ज्ञानेन्द्रियाँ, पंच कर्मेन्द्रियाँ आदि। इन सभी समूह वाली अर्थात इन सभी समूहों की स्वामिनी अर्थात इन सभी समूहों को शक्ति देने वाली जिससे ये कार्य कर पाते है। संगठन में शक्ति होती है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ अत्यन्त बलवती या शक्तिशालिनी। गण का अर्थ गणपति भी होता है। गण+आ, एकाक्षरी कोश में आ का एक अर्थ शक्ति दिया गया है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ गणेश जी की शक्तिस्वरूपा या गणेश जी की शक्ति से अभेद है जिनका। देव गणों वाली अर्थात् देव गणों से युक्त अर्थात् देवगण जिनकी आराधना करते है। आराधना करने से उपासक अपने आराध्य से युक्त हो जाता है। गणा अस्या सन्ति इति गणा। जो कई रूपों में होने के कारण गिनी जाती है। गण् + थ =गण।

169. **गिरिभूपालदुहिता** – हिमालय रूपी राजा की बेटी। पर्वत (अर्थात हिमालय) के राजा की पुत्री।

170. **गोगा** – बैल पर सवार होकर सवारी करने वाली। गाम् आरूह्य गच्छति इति गोगा। वाणी में विराजमान। गो का अर्थ है वाणी। गच्छति इति गा अर्थात् जाने वाली अर्थात् विराजमान होने वाली। पृथ्वी में विराजमान अर्थात् उसमें रहने वाली। किरणों (ज्ञान की या सूर्य की किरणें) में विराजमान। गो के कई अर्थ है, उनको लेकर बाद में ''में विराजमान'' लगाकर अन्य अर्थ निकाले जा सकते है।

171. **गोकुलवासिनी** – गोकुल में निवास करने वाली। भौतिक गोकूल में निवास करने वाली। समस्त वाड्.गमय में निवास करने वाली।

172. **घनस्तनी** – सटे हुए वक्षों वाली। जब विशालता हो तभी सटे होते हैं। विशाल और कर्कश (कठोर) होने पर ही सटना होता है, थुल–थुल न हों।

173. **घनरुचि** – बादलों की तरह छवि वाली अर्थात साँवले वर्ण वाली। रूचि का अर्थ है किरण, छवि, सुन्दरता। घन का अर्थ है बादल। वैदिक कोष में घन का अर्थ शत्रुओं को मारने में समर्थ ऐसा किया गया है। घन वह ठोस पदार्थ है जिस पर लोहा आदि पीटा जाता है। हनन करने वाले अस्त्र भी घन कहलाये जाते है।

174. **घनोरू** – सघन (सटे हुए) है उरू जिसके। कमर से लेकर घुटने तक का हिस्सा उरू कहलाता है। यह हिस्सा थुल थुल नहीं है, शिथिल मांस वाला नहीं है।

175. **घननिस्वना** – बादल की तरह गम्भीर ध्वनि वाली। (यहाँ घन का अर्थ कर्कश नहीं लेना है, गम्भीर लेना है)।

176. **घुंकारिणी** – घुं बीज का या घुम् शब्द का उच्चारण करने वाली। दुष्टों के लिए अकरुण (दयाहीन या निष्ठुर) स्वर करने वाली। एकाक्षरीकोश में घु का अर्थ अकरुण, घोणा दिया गया है। अनुस्वार कभी कभी अवधारण (एव, ही, सीमाबद्ध करना, निश्चितता) अर्थ में प्रयुक्त होता है। घुम् इस शब्द को करने वाली। एकाक्षरी कोष में घु का अर्थ अकरूण दिया गया है। अनुस्वार का अर्थ अवधारण (एव, ही, निश्चित ही) के अर्थ में होता है। जैसे बालक जाता है, बालक ही जाता है। यह ही अवधारण कहलाता है। बालक के अलावा कोई दूसरा नहीं जाता है। दुष्टों के प्रति निष्ठुर या क्रूरता का व्यवहार करने वाली। क्रूरता के अलावा दूसरा व्यवहार नहीं करेगी।

177. **घुक्षकरी** – दानवों का क्षय करने वाली अर्थात नाश करने वाली। एकाक्षरी कोष में घु का अर्थ दानव बताया गया है। क्ष का अर्थ है क्षय अर्थात नाश। समस्त विश्व के कारण शब्द का भी क्षय करने वाली अर्थात अन्त में वे स्वयं रह जाती हैं। घुङः शब्दे धातु होती है। समस्त विश्व का मूल कारण शब्द माना गया है अर्थात कहा गया है कि शब्द से ही सारा संसार पैदा हुआ है। घु से क्ष पर्यन्त अक्षरों का उच्चारण करने वाली या इनमें रहने वाली। तन्त्र से सम्बन्धित निशीथ काल। घु (दानव, कलि (कलह)) का क्षय करने वाली।

178. **घूघूकपरिवारिता** – घूघूक शब्द से घिरी हुई। घू घू शब्द करने वाले उल्लुओं से घिरी हुई।

179. **घण्टानादप्रिया** – घण्टा की आवाज जिसे बहुत प्रिय है। लोग मन्दिरों में जाकर घण्टा बजाते हैं।

180. **घण्टा** – घण्टा नामक आयुध अपने हाथ में धारण करने वाली। घण्टा अस्या अस्ति, घण्टा है जिसका अर्थात घण्टा वाली अर्थात घण्टा धारण करने वाली। शब्द मात्र से दैत्यों के तेज का नाश करने वाली होने से इसे घण्टा कहते हैं। घण्टा दान से प्रसन्न करने/होने वाली। अनाहत नाद करने वाली या अनाहत नाद स्वरूपा। देवी के नामों में विभिन्न प्रकार के वाद्यों के नाम आते है जो शब्दब्रह्म या अनाहत नाद के प्रतीक हैं। मनुष्यों को प्रेरित करने वाली कि अपने भीतर के अनाहत नाद को सुनो जिससे वह शब्दब्रह्म से एकाकार हो सके। शब्दब्रह्म या पूर्णब्रह्म की प्राप्ति से ही व्यक्ति को सत्–चित्–आनन्द की अवस्था मिल सकती है।

181. **घोटा** – घोड़े की तरह शीघ्र गति करने वाली। घोड़े को संस्कृत में घोट और घोटक बोलते हैं। घुट गतौ धातु होती है। अभ्यास से प्रसन्न होने वाली। पूजा का अभ्यास/उपासना का अभ्यास होता है तो देवी प्रसन्न होती हैं। घोटना अर्थात अभ्यास करना। जैसे कहते हैं दवाई घोटो। एकाक्षरी कोष में घो का अर्थ घोष दिया है और टा का अर्थ है पृथ्वी या भूमि। इस प्रकार घोटा का अर्थ हुआ घोष की आधार भूमि अर्थात घोष उत्पन्न करने वाली। बार–बार होने वाली क्रियास्वरूपा। घुट् अभ्यासे धातु होती है और अभ्यास का अर्थ है बार–बार क्रिया करना। बार–बार संसार की उत्पत्ति, स्थिति एवं प्रलयरूपी क्रिया करने वाली। घुट् धातु का अर्थ चेष्टा करना भी होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ निरन्तर चेष्टा करने वाली अर्थात निरन्तर क्रियाशील या निरन्तर स्पन्दन करने वाली। हर कण में स्पन्दन हो रहा है जो शक्ति या देवी के द्वारा ही हो रहा है। परमाणु में इलेक्ट्रान निरन्तर घूम रहे हैं और इन्हें घुमाने वाली जो शक्ति है वही देवी है। घुट् परिवर्तने धातु भी होती है। परिवर्तन करने वाली अर्थात ऋतुओं का परिवर्तन करने वाली या भक्तों की गरीबी की स्थिति में परिवर्तन करने वाली अर्थात उन्हें समृद्ध बनाने वाली। घुट् धातु का अर्थ वस्तु विनिमय करना, प्रतिप्रहार करना, विरोध करना भी है। घुट् में अच् प्रत्यय लगाने से घोटा शब्द बनेगा। विनिमय करने वाली अर्थात भक्ति या उपासना के बदले अपनी कृपा देने वाली। प्रतिप्रहार करने वाली अर्थात असुरों द्वारा प्रहार करने पर उसका उत्तर देने वाली। घोष की भूमि अर्थात् घोष जहाँ से उत्पन्न होता है या घोष (ध्वनि) का उद्गम स्थान। एकाक्षरी कोष में घो का अर्थ घोष दिया गया है एवं टा का अर्थ पृथ्वी या भूमि दिया गया है। टा का अर्थ आवृत्ति भी है। अतः अर्थ हुआ युद्ध

के अवसर पर बराबर गर्जना करने वाली। घोष का अर्थ है गराजने का शब्द, नाद या आवाज। घोष का अर्थ बस्ती, शिव, झोपड़ी भी होती है। शब्दों के 11 बाह्य प्रयत्नों में एक प्रयत्न घोष भी होता है।

182. **घोटकवाहिनी** – घोड़े पर सवार होने वाली। शक्ति या बल को धारण करने वाली। घोटक अर्थात घोड़ा जो शक्ति या बल का प्रतीक है। विज्ञान में अश्वशक्ति का प्रयोग होता है।

183. **घोररूपा** – जिनका बाह्य रूप भयावह है। रूप वह होता है जो हमें आँखों से दिखाई दे अर्थात बाह्य रूप। शिव पर दृष्टि डालने वाली अर्थात उन्हें देखने वाली। घोरम् रूपयति इति घोररूपा। घोर का एक अर्थ है शिव और रूपयति का एक अर्थ है देखना। शिव की रचना करने वाली। रूपयति अर्थात स्वरूप देना अर्थात निर्माण करना।

184. **घोरा** – घोर अर्थात शिव की शक्ति। शिव का एक नाम घोर भी है। दुष्टों और राक्षसों के लिए भयंकर या डरावनी। दुष्टों के लिए अति बुरी। घोर का एक अर्थ अति बुरी भी है। शत्रुओं को भयभीत करने वाली। (घोर अर्थात किसी चीज का अति की सीमा पर पहुँच जाना, कभी कभी तो इसके कारण भयंकर रूप धारण कर लेना। घोर का प्रयोग वहाँ होता है जहाँ किसी वस्तु, कार्य या भाव के गुण अति की सीमा पर पहुँच जाते हैं, यहाँ तक कि भयंकर रूप धारण कर लेते हैं। घोर शब्द का प्रयोग सकारात्मक एवं नकरात्मक दोनों क्षेत्रों में होता है पर प्रायः नकरात्मक क्षेत्र में होता है। घोर तपस्या अर्थात बहुत अधिक या अति की सीमा में की गयी तपस्या। यहाँ घोर शब्द सकारात्मक है। घोर पाप अर्थात जघन्य पाप जो नकारात्मकता को दिखाता है। घोर शब्द का एक अर्थ Sublime भी है जिसका अर्थ उदात्त या श्रेष्ठ। घोर संकट में संकट के बादल ऐसे घिर आते हैं कि चारों ओर देखने पर कहीं कुछ नहीं सूझता। घोर विरोध और घोर अपमान में भी विरोध और अपमान की अति लक्षित होती है। प्रायः घोर शब्द का प्रयोग नकारात्मक गुण के लिए होता है पर कभी कभी अच्छा कार्य भी घोर रूप धारण कर लेता है जैसे घोर तपस्या। कठोरता, प्रगाढ़ता, सघनता आदि गुणों की अति का संकेत देने के लिए भी घोर शब्द का प्रयोग किया जा सकता है।)

185. **घृतप्रीती** – घी से प्रसन्न होने वाली या घी जिसे प्रिय है। हम आहुति में घी डालते हैं जिससे देवी प्रसन्न होती हैं। जल से या घी से प्रसन्न होने वाली।

186. **घृताञ्जनी** – घी का अंजन या काजल लगाने वाली। घी का अंजन लगाने से आँखें अच्छी रहती हैं।

187. **घृताची** – अमृत से तृप्त होने वाली। घृतेन अंचति इति घृताची। घृत का एक अर्थ अमृत भी है। अंचति का अर्थ है तृप्त होना या पूजा करना। घी से पूजित। अंचु पूजायाम् धातु होती है। पूजा में घी चढ़ाते हैं। घृताची नामक अप्सरा के समान सुन्दर। घृतयुक्त अर्थात अमृतयुक्त भोजन प्राप्त करने वाली। अंचति का अर्थ है प्राप्नोति अर्थात प्राप्त करना। घृतेन अंचति तृप्तिम् भवति। घी से प्रसन्न होने वाली या तृप्त होने वाली अर्थात देवी को घी चढ़ाया जाए तो वे बड़ी प्रसन्न होती हैं। तृप्त होना अर्थात पूर्ण या भरा होना। घृत स्नेह, मानसिक स्पष्टता का प्रतीक है। स्नेह से भरी हुई। मानसिक स्पष्टता से पूर्ण। ज्ञान की चमक को धारण करने वाली। मानसिक स्पष्टता को धारण करने वाली। जल (जीवन) को धारण करने वाली। घृत की पर्त चमकदार होती है और यह प्रकाश या चमक, स्पष्टता का प्रतीक है। घृतम् अंचति प्राप्नोति इति घृताची। धृत (घी, जल, अमृत) को प्राप्त कराने वाली। घृताची का अर्थ है Full of light अर्थात् ज्ञान के प्रकाश से युक्त। घृताची नामक अप्सरा के समान अति सुन्दर। घृत (प्रकाश) को गयी अर्थात् प्रकाशयुक्त अर्थात् ज्ञान के प्रकाश से युक्त। अंचु गतौ धातु होती है। प्रकाश को प्राप्त होने वाली अर्थात् दीप्तिमती। जल का निर्माण करने वाली। घृत + अञ्च् + क्विन् + ङीष् = घृताची। अञ्च् धातु का अर्थ गति करना, पूजा करना, प्रार्थना करना होता है पर गति में कोई सी भी क्रिया आ जाती है अतः निर्माण करना अर्थ कर दिया गया। पद्मचन्द्रकोष के अनुसार अंचयति का अर्थ

अभिव्यक्त करना, खोलना होता है। अभिव्यक्त करने का अर्थ निर्माण करना या उत्पन्न करना होता है। घृत का अर्थ जल, जीवन, पुष्टिकारक पदार्थ, तेज होता है। गति का अर्थ ज्ञान करना एवं प्राप्त करना भी होता है। सर्वत्र पुष्टिकारक पदार्थों को प्राप्त करने वाली या कराने वाली शक्ति, यह भी घृताची का अर्थ है। जल का अर्थ जीवन भी होता है। परमात्मा की जीवन देने वाली शक्ति घृताची है। तेज को देने वाली शक्ति भी घृताची है। प्राणप्रद शक्ति भी घृताची का एक अर्थ है। घृताची के अन्य अर्थ रात्रि, वायु, सूर्य भी है। जल निर्माण करने वाली शक्ति। घृताची नामक अप्सरा के समान सुन्दर। घृत दीप्ति या चमक का भी प्रतीक है। अंचु धातु का अर्थ है गति करना अर्थात् प्राप्त करना। दीप्ति या चमक को प्राप्त किया है जिसने अर्थात् दीप्तिमान या तेजोवती।

188. **घृतवृष्टि** – जल वृष्टि स्वरूपा। वसोधारा स्वरूपा। घृत का अर्थ जल एवं घी दोनों होता है। हवन में हम घी की धारा प्रवाहित करते हैं जिसे वसोधारा कहते हैं।

189. **घण्टा** – घण्टा की तरह अर्थात घण्टा की तरह सचेत करने वाली कि मृत्यु किसी भी समय आ सकती है, भगवान का नाम लो ऐसा सचेत कराने वाली/सजग कराने वाली। घण्टा में अर्थात घण्टा नाद में निवास करने वाली। प्राणियों को सचेत कराती कि इस संसार से, माया से ऊपर उठो। दुष्टों को सचेत करती कि सुधर जाओ नहीं तो ठीक नहीं होगा। अनाहत नाद करने वाली। पूरे विश्व में, मनुष्य के शरीर में अनाहत नाद हो रहा है जिसे योगी ही सुन पाते हैं। इसको करने वाली जो शक्ति है वह देवी हैं। उपासकों को प्ररित करने वाली कि अनाहत नाद सुनने का अभ्यास करो जिससे शब्दब्रह्म से एक हो सको और सत् चित् आनन्द की अवस्था प्राप्त कर सको। ईश्वर के नामों में दिये गये वाद्य प्रायः अनाहत नाद के प्रतीक होते हैं।

190. **घटघटावृता** – घट – घट के अर्थात प्रत्येक शरीर के द्वारा घिरी हुई। आत्मा स्वरूपा जो शरीर के द्वारा घिरी हुई है। घट घट अर्थात प्राणी मात्र में अर्थात प्रत्येक प्राणी में। घट अर्थात शरीर।

191. **घटस्था** – कलश में स्थित। पूजा के कलश में इनका आवाहन होता है। ब्रह्माण्ड रूपी घड़े में रहने वाली। एक शरीर में रहने वाली। एक शरीर में भी रहने वाली। पूर्व नाम में अर्थ था प्रत्येक शरीर में रहने वाली, तब अर्थ होगा कि इतनी विशाल कि सब शरीर उसमें आ गये। इस नाम का अर्थ होगा कि इतनी सूक्ष्म कि एक शरीर के अन्दर है। शरीर रूपी घड़े में स्थित अर्थात आत्मा स्वरूपा। सृष्टि के निर्माण में प्रयुक्त होने वाले तत्व स्वरूपा या इसे देने वाली। अमृत स्वरूपा या इसे देने वाली। मोक्ष देने वाली। आगम ग्रन्थों में प्रयुक्त होने वाले शब्द जैसे घट, कलश, कमण्डलु आदि शब्द सृष्टि के निर्माण में प्रयुक्त होने वाले तत्व, अमृत, मोक्ष से भरे होने के प्रतीक माने गये हैं। कुम्भमेले के पीछे की कथा में अमृत से भरे घड़े का उल्लेख है। घटस्थ+आ, आ का अर्थ है देना। अमृत स्वरूपा अर्थ भी कर सकते हैं या अमृत देने वाली अर्थ भी कर सकते हैं। ब्रह्माण्ड में स्थित। देवी शक्ति के रूप में कण–कण में विराजमान है।

192. **घटना** – निर्माण क्रियास्वरूपा या प्रकट होना क्रियास्वरूपा। जो भी कहीं क्रिया हो रही है, क्रिया – कलाप हो रहा है तद्स्वरूपा। घट् धातु में ल्युच् प्रत्यय लगाने से घटना बना। जो घटित होता तद्स्वरूपा अर्थात क्रिया स्वरूपा। रूप या आकार देना, पूरा करने की क्रिया स्वरूपा। देवी क्रिया रूप हैं। कोई बात होना, वाकया होना, सभी ऊर्जा का खेल है और ऊर्जा ही देवी हैं। ब्रह्माण्डरूपी घट का नेतृत्व करने वाली अर्थात् उसका संचालन करने वाली। ब्रह्माण्ड को भी घट या घड़े की उपमा दी गयी है। नयति इति ना से ना का अर्थ है ले जाने वाली या नेतृत्व करने वाली या संचालन करने वाली। शरीर को भी घड़ा कहा गया है। शरीर का संचालन करने वाली अर्थात् जीवात्मा स्वरूपा। जीवात्मा ही अपनी शक्ति देकर शरीर को सक्रिय करती है। घट् धातु में ल्युट् प्रत्यय लगाने से घटना शब्द बन जाता है। सामान्यतः ल्युट् प्रत्यय कर्ता का अर्थ नही लेते है पर कभी–कभी कर्ता का अर्थ भी दे देते है। घटयति इति घटना से घटना का अर्थ है जो सब कुछ कर रही है

अर्थात् जो क्रियारूप है। ब्रह्माण्ड रूपी घड़े को लाने वाली अर्थात उसको अस्तित्व में लाने वाली। ब्रह्माण्ड को लाने वाली अर्थात् ब्रह्माण्ड को अस्तित्व में लाने वाली अर्थात् उसे उत्पन्न करने वाली। घट गोलाकार होता है और ब्रह्माण्ड भी गोलाकार होता है। घट से ब्रह्माण्ड का बोध होता है। नी धातु में ड प्रत्यय लगाने से बने न शब्द का अर्थ लाने वाला होता है। न का स्त्रीलिंग ना या नी होगा।

193. **घातकरी** – मारने वाली (शत्रुओं, दैत्यों, दुर्गणों को)।

194. **घातनिवारिणी** – मारण/मोहन आदि के प्रयोग, मूठ आदि मृत्यु करने वाले तान्त्रिक प्रयोगों को दूर करने वाली। घात का अर्थ है प्रहार, वध, हत्या, अतः इस नाम का अर्थ होगा अपने भक्तों के अल्प मृत्यु/अकाल मृत्यु/मृत्यु तुल्य कष्टों का निवारण करने वाली अर्थात दूर करने वाली।

195. **चंचरीकी** – भ्रमरी (जो सब जगह घूमती) रूपा अर्थात जिसे सब जगह की खबर है। सब जगह से अपनी स्तुति रूपी मधु चखने वाली। पुनः पुनः चरति इति चंचरीकि। बार – बार घूमती है। अतिशयेन चरति, रूकती नहीं।

196. **चकोरी** – चकोरी पक्षी की तरह अपने प्रिय (शिव) से अत्यन्त प्रेम करने वाली। शिव को एकटख देखने वाली। चकोर पक्षी चाँद को एकटख देखता है। एकटख देखना अर्थात अत्यन्त प्रेम करना। जिसे चकोरी के समान अपने पति शंकर प्रिय हैं। चकोर को चाँद बहुत प्रिय होता है।

197. **चामुण्डा** – चण्ड और मुण्ड नामक राक्षस को जिसने संहार किया। च (सुख) में जो सवोपरि है। मुण्ड अर्थात सिर अर्थात सर्वोपरि है। चमूम् डापयति इति चामुण्डा। सेना के समूह का अर्थात पंचतत्व रूपी सेना के समूह का जो नाश करे वह चामुण्डा अर्थात साधक को पंचतत्वों से बने संसार से ऊपर ले जाती है। चण्ड और मुण्ड प्रवृत्ति और निवृत्ति के प्रतीक हैं। प्रवृत्ति और निवृत्ति से हटाने वाली। क्रोध और बदला लेने के भाव को हटाने वाली। चण्ड क्रोध का प्रतीक है और मुण्ड बदले की भावना का प्रतीक है। चण्ड (अहंकार से प्रेरित क्रिया) एवं मुण्ड (अहंकार से प्रेरित अकर्मण्यता) का नाश करने वाली। जो ब्रह्म से अतिरिक्त किसी भी पदार्थ को ग्रहण नही करती। जो चामु (ब्रह्म से अतिरिक्त जो भी पदार्थ है) को अपने विषय में नहीं लाती अर्थात जो मात्र ब्रह्मविषयिणी है। चामुम् डापयति इति चामुण्डा। डापयति का अर्थ है उज्जनयति अर्थात न विषयीकुरूते। चामु का अर्थ है अदनीय पदार्थ अर्थात खाने योग्य नही है ऐसा पदार्थ अर्थात ब्रह्म के अतिरिक्त जो कुछ भी है वह। ब्रह्म का चारो ओर से मुण्डन करने वाली। च का अर्थ है आनन्द/ज्ञान। ब्रह्म ही आनन्द और ज्ञानस्वरूप होता है। चमू आ समन्तात् मुण्डयति इति चामुण्डा। मुण्डन का अर्थ है आधार की अपेक्षा से न्यून सत्ता वाली वस्तु का निरास (दूर करना/विरोध/खण्डन)। च का अर्थ बुद्धि, सुख है। मुण्ड का अर्थ है सिर जो शरीर में सर्वोपरि होता है। इस प्रकार मुण्ड का अर्थ सर्वोपरि ले सकते है। बुद्धि और सुख में जो सर्वोपरि है अर्थात सर्वाधिक बुद्धि वाली एवं सर्वाधिक आनन्द वाली। चमूम् डाति इति चामुण्डा अर्थात पंचतत्वों रूपी सेना को नष्ट करने वाली अर्थात मोक्ष दिलाने वाली। क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर ये पंच तत्व है। मनुष्य जब इन तत्वों से ऊपर उठ जाता है तो मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। यहाँ पर डाति का अर्थ है राति या नाशयति। राति अर्थात आदत्ते अर्थात स्वात्मसात्कारेण नाशयति। चण्ड को तूला विद्या और मुण्ड को मूला अविद्या भी कहते है। इन दोनों प्रकार की अविद्या का नाश करने वाली। चामुण्ड+आ, आ का अर्थ देना भी होता है और नाश करना भी होता है। चामुण्डा निर्विकल्प वृत्ति का प्रतीक है जो मोक्ष की कारणभूता है।

198. **चीरधारिणी** – भिक्षुणी या सन्यासिनी स्वरूपा क्योंकि ये चीर वस्त्र पहनते हैं। चीर का अर्थ है वस्त्र जो ऋषि – मुनि, भिक्षु, सन्यासियों के द्वारा पहना जाता है। चीर का अर्थ वल्कल वस्त्र भी होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ वल्कल वस्त्र को धारण करने वाली। सीताजी ने वनवास के दौरान वल्कल वस्त्र पहना था। हल्के वस्त्र धारण करने वाली। सीतास्वरूपा या सीता से अभेद है जिनका।

199. **चातुरी** – दुनिया में जो चतुराई है, तद्‍रूपा। सब कुछ शक्ति अर्थात देवी का ही रूप है। वस्तु रूप में भी शक्ति (देवी) हैं, गुण भी देवी है जैसे दाहकता जो भाव वाचक संज्ञा है उसे अग्नि की शक्ति कहते हैं। शक्ति अर्थात देवी। पशुओं में भी चतुराई होती है। सियार, गीदड़, लोमड़ी, मधुमक्खी की चतुराई प्रसिद्ध है।

200. **चपला** – चंचल स्वरूपा अर्थात लक्ष्मी स्वरूपा जो एक जगह ठहर के नहीं रहती। आज एक के पास है कल दूसरे के पास है फिर तीसरे के पास है अर्थात लक्ष्मी स्वरूपा। फुर्तीली। शत्रुओं से लड़ते समय या अन्य कार्य करते समय फुर्ती दिखाती है। चपला का अर्थ बिजली भी है जो क्षणिक तेज प्रकाश करने, गरजने तथा क्षण भर में किसी को नष्ट करने के लिए जानी जाती है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ क्षण भर में ही अपने उपासकों को ज्ञान का प्रकाश करा देने वाली अर्थात् ज्ञानी बना देने वाली। क्षण भर में ही शत्रुओं या उपासकों के विकारों को जला देने वाली।

201. **चञ्चु** – दक्ष, कुशल। प्रतिभा सम्पन्न। चंचु का अर्थ निपुण या दक्ष है अर्थात माता सृष्टि के उत्पत्ति, पालन, संहार करने में एवं सज्जनों की रक्षा तथा दुष्टों के संहार में निपुण या दक्ष है। जो चंचु अर्थात चोंच की तरह हैं अर्थात वे तीव्र चंचु प्रहार से दुष्ट दैत्यों का वध कर देती है और अपने शरणागत भक्तों की रक्षा करती हैं। श्रेष्ठ अर्थात् शास्त्रों की विशेषज्ञ। चंचु शब्द किसी क्षेत्र में श्रेष्ठता के लिए उपाधि के तौर पर लगाया जाता है। चंच् धातु गति अर्थ में है। चंचति गच्छति इति चंचु। जो सर्वत्र गति करती हैं। यही कारण है कि इसका अर्थ प्रसिद्ध दिया गया है क्योंकि यश सर्वत्र गति करता है। सर्वत्र गति करने वाली अर्थात सर्वत्र व्याप्त। स्पन्दनशील। गति करना अर्थात क्रिया करना।

202. **चिता** – शिव द्वारा पत्नी के रूप में चुनी गई। चि चयने धातु में क्त प्रत्यय लगाने से चिता शब्द बनेगा जिसका अर्थ है चुनी गई। चिता की तरह भक्तों के पापों को भस्म कर देने वाली। एकत्रित विद्या स्वरूपा। सभी विद्याओं को अपने में समेटे हुए है जो। एकत्रित अर्थात इकठ्‍ठी शक्ति के रूप में है जो। अपनी सभी शक्तियों को या स्वरूपों को अपने में समेटे हुए। दुर्गासप्तशती में देवी ने अपने सभी स्वरूपों को अपने में समेट लिया था। यह शब्द चि चयने धातु से क्त प्रत्यय लगाकर बना है। भक्तों के पापों को भस्म करने वाली। यह अर्थ भी कर सकते हैं क्योंकि चिता सभी को भस्म कर देती है। तन् धातु में ड प्रत्यय लगाने त शब्द बनता है जिसका अर्थ है विस्तार करने वाला, देने वाला, निर्माण करने वाला। एकाक्षरीकोश से चि शब्द के अर्थ ले सकते हैं। हम ऐसे शब्दों को भी ले सकते हैं जिनका आरम्भ चि से होता है। ऐसा करके हम और अर्थ भी निकाल सकते हैं। ज्ञान का विस्तार करने वाली या ज्ञान को देने वाली। बुद्धि का विस्तार करने वाली या बुद्धि को देने वाली। एकाक्षरी कोष में चि का अर्थ ज्ञान, बुद्धि दिया गया है। तन् धातु में ड प्रत्यय लगाने से त शब्द बनेगा जिसका अर्थ है विस्तार करने वाला, निर्माण करने वाला, देने वाला।

203. **चिन्तामणिस्थिता** – चिन्तामणि नामक मणि में रहने वाली। चिन्तामणि सभी कामनाओं को पूरा करने वाली मणि है।

204. **चातुर्वर्ण्यमयी** – चातुर्वण्य स्वरूपा अर्थात चारो वर्ण (ब्रह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र) स्वरूपा। खुद ही चतुवर्ण बनी है। केवल मनुष्य ही ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र नहीं होते। हर चीज चतुवर्ण होती है। पत्थर भी ब्राह्मण पत्थर, क्षत्रिय, पत्थर, वैश्य पत्थर, शूद्र पत्थर होता है। एक व्याख्या के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति चारों वर्ण वाला होता है। जब वह पूजा करता है या पढ़ता है तब ब्राह्मण है, जब अन्याय का विरोध करता है तब क्षत्रिय, जब लेन – देन करता है तब वैश्य, जब सेवा करता है तब शूद्र होता है।

205. **चंचु** – प्रसिद्ध/यशस्वी। किसी चीज को सूक्ष्म दृष्टि से देखने वाली। ज्ञान रूपी चोंच के द्वारा अज्ञान को नष्ट कर देने वाली। चोंच की तरह अर्थात चोंच के प्रहार से दुष्ट दैत्यों का वध कर देने वाली। चारों वर्णों का

अनुष्ठेय धर्म स्वरूपा अर्थात चारों वर्णों को जो कर्तव्य बताये गये हैं तद्स्वरूपा। चातुर्वर्ण्य के दोनो अर्थ हैं – चारों वर्ण एवं चारों वर्णों के धर्म।

206. **चोराचार्या** – भक्तों के पापों को चुराने में सर्वोच्च। भक्तों के कष्टों को चुराने में श्रेष्ठ। आचार्य पदक्रम में उच्च स्थान रखता है अतः आचार्य का अर्थ उच्चता से ले लिया गया। चोर कर्म की ज्ञाता या धुरन्धर पण्डित। चोर कर्म की शास्त्रीय व्याख्या करने वाली, अध्यापन करने वाली, कर्मोपदेश देने वाली। चोरी की आचार्या। भक्तों के पापों/दरिद्रता को चुराने वालों की प्रधान आचार्या। पाप आदि कलुषित वृत्तियों को चुराने (नष्ट करने में) आचार्य (दक्षगुरु) हैं। आचार्य अर्थात विद्याओं में निपुण। भगवान कृष्ण को चोर कहा जाता है क्योंकि वे भक्तों के पापों और दुःखों को चुरा लेते हैं।

207. **चमत्कृति** – चमत्कारस्वरूपिणी। आपने सुना होगा कि कल वह रिक्शा चला रहा था आज लाटरी खुल गई, यह है चमत्कार। भक्त को दुखी देख उसकी लाटरी खोल देती। आश्चर्य कराने वाली। चमत्कार का अर्थ होता है असाधारण और अलौकिक कार्य, आश्चर्य या विस्मय। आश्चर्य का विषय, वह जिसे देखकर चित्त में विस्मययुक्त आह्लाद या प्रसन्नता हो। आश्चर्य का अर्थ होता है अद्भुत होने के कारण प्रसन्न होना, यह न तय कर पाना कि यह घटना कैसे अर्थात किस कारण से हो गयी। जो सामान्य तौर पर नहीं दिखाई देता है, वह होने लगे तो व्यक्ति को आश्चर्य होता है। स्त्री युद्ध नहीं करती, सामान्य व्यक्ति शेर पर सवार होकर नहीं जाता, इच्छा करने मात्र से सबकुछ कर देना जो मनुष्य नहीं कर पाता यह सब आश्चर्य की श्रेणी में आता है। आपको उस घटना के घटित होने का कारण समझ में न आये, पहली बार आपने देखा हो और प्रसन्नता हो, यह सब चमत्कार या आश्चर्य की श्रेणी में आता है। नियम है कि शब्द के आगे ''का कारण'' लगाने से शब्द का एक अन्य अर्थ निकल आता है। चमत्कार का कारण अर्थात चमत्कार करने वाली अर्थात असाधारण एवं अलौकिक कार्य करने वाली।

208. **चक्रवर्तिवधू** – विश्व के सम्राट भगवान शंकर की पत्नी।

209. **चित्रा** – आश्चर्य पैदा करने वाले कार्यों को करने वाली। विस्मय उत्पन्न करने वाले स्वरूप वाली या कार्यों को करने वाली। कोई चीज घटित हो जाये और आपके अन्दर यह भाव उठे कि यह कैसे हो सकता, यह तो हो ही नहीं सकता था, तब विस्मय या आश्चर्य होता है जब किसी चीज के होने में कारण समझ में नहीं आता। कई रंगों वाली अर्थात प्रकृति स्वरूपा। आश्चर्य पैदा करने वाले स्वरूप वाली। अनेक रंगों वाली अर्थात प्रकृति स्वरूपा। प्रकृति में सतोगुण (सफेद), रजोगुण (लाल), तमोगुण (काला) रंग होता है। रंग बिरंगी अर्थात प्रकृति स्वरूपा। पूजनीया। चायृ पूजानिशामनयो धातु से निरूक्त में चित्रा शब्द का पूजनीया अर्थ किया गया है। चयन करने योग्य अर्थात उत्कृष्ट। निरूक्त में चिञ् चयने धातु से चित्र शब्द का चयन करने योग्य या उत्कृष्ट अर्थ दिया गया है। आश्चर्य में डालने वाले कर्म है जिसके। जो कार्य मनुष्य न तो सोच सकता है और न ही कर सकता वह देवी कर सकती है। सुन्दर। जिसका स्वरूप सामान्य तौर पर नहीं जाना जा सकता क्योंकि अद्भुत है। ज्ञान की रक्षा करने वाली। बुद्धि की रक्षा करने वाली अर्थात् भक्तों की शुद्ध बुद्धि को हमेशा बनाये रखने वाली, उसे कुन्द नहीं होने देती। रक्षा करना अर्थात् बनाये रखना, नष्ट न होने देना। एकाक्षरी कोष में चि का अर्थ ज्ञान, बुद्धि दिया गया है। त्र का अर्थ होता है रक्षा करना।

210. **चक्रांगी** – चक्र नामक आयुध है अंग (हाथ) में जिसके। चक्र मन का प्रतीक है। मन है अंग जिसका अर्थात मन से युक्त। शरीरावयव चक्र के समान गोल है अर्थात माँस ठीक – ठाक है थुल – थुल नहीं। समान रूप से विभक्त अंगों वाली। क्रियाशील अंगों वाली अर्थात जिसके अंग निरन्तर कार्य करने में लगे हुए हैं। चक्र अर्थात निरन्तर कार्य करने वाला। सुषुम्नानाड़ी में स्थित सातों चक्रों में जाने वाली अर्थात विराजमान। अंगति

अर्थात गच्छति। चक्र का अर्थ समूह भी होता है। वैदिक ऋचाओं का समूह अर्थात वेद चक्र हुए। वेद में विराजमान, यह अर्थ भी हुआ। चक्र से भगवान रक्षा करते हैं अतः यह रक्षा शक्ति का भी प्रतीक है। गति का अर्थ प्राप्ति भी होता है। रक्षा शक्ति से युक्त, यह अर्थ हुआ।

211. **चक्रमोदिनी** – श्रीचक्र से या अन्य यन्त्रों से विशेष प्रसन्न होने वाली। देवी मातंगी का भी यन्त्र होता है। मोदते से मोदिनी शब्द बनाने पर प्रसन्न होने वाली अर्थ आयेगा एवं मोदयति से मोदिनी शब्द बनाने पर प्रसन्न करने वाली अर्थ आयेगा। लगातार कार्य में जुटे हुये लोगों अर्थात् उद्यमी लोगों से प्रसन्न रहने वाली। जो निरन्तर कार्य करता रहे, जो लगातार चलता रहे, वह चक्र है। संसार चक्र में प्रसन्न होने वाली। मोदते से मोदिनी बनाने पर मोदिनी का अर्थ प्रसन्न होने या रहने वाली होता है। मोदयति से मोदिनी शब्द बनाने पर मोदिनी का अर्थ प्रसन्न करने वाली होता है। श्रीयन्त्र में पूजा करने से प्रसन्न होने वाली। शरीर में षट् चक्रों में ध्यान या पूजा करने पर प्रसन्न होने वाली।

212. **चेतचरी** – चित्त में विचरण करने वाली। चेतना में, बोध (ज्ञान) में विचरण करने वाली अर्थात उसमें विराजमान रहने वाली। चेत अर्थात चेतस् अर्थात चित्त की वृद्धि, चेतना (होश), ज्ञान, बोध, स्मरण (चित्त)। चेतना (Consciousness) में रहने वाली। चित्–शक्ति स्वरूपा। मन में रहने वाली। चेतस् शब्द होता है।

213. **चित्तवृत्ति** – चित्त की वृत्तियाँ (विचार तरंग/मनोभावा) तद्स्वरूपा। चित्तवृत्ति का अर्थ है चित्त में कुछ भी होना, कुछ भी होने का एहसास होना, चित्त का कुछ भी आकार ले लेना। वृत्ति अर्थात व्यापार अर्थात क्रिया या कुछ भी होना।

214. **चेतना** – उस शक्ति के रूप में जो शरीर में हलचल करती जिससे शरीर के अंग काम करते हैं, शरीर के भीतर और बाहर की घटनाओं को बोध होता है और संवेदना होने पर प्रतिक्रिया भी की जाती है। चैतन्य (awarenes) action=चेतना। चेतना स्वरूपा अर्थात बिना स्थूल शरीर के ही कोई भी काम कर देती है।

चेतना वह शक्ति है जिसके कारण मनुष्य सजगता/होश awareness एवं क्रिया प्रतिक्रिया कर पाता है। चेतना के दो प्रमुख कार्य होते है जो है awareness तथा क्रिया प्रतिक्रिया करना। दुर्गा सप्तशती के 5वें अध्याय में यह शब्द आया है जहाँ व्याख्याकारों ने इसकी कई तरह से व्याख्या की है। एक व्याख्या के अनुसार जीवधारी प्राणियों में जिसके कारण नाड़ी में स्पन्दन होता है अर्थात् व्यक्ति जीवित रहते है वह चेतना है। अन्तःकरण में मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार होते है। चित्त को भी चेतना कह दिया जाता है। एक मत के अनुसार चित्त नहीं बल्कि चित्त में रहने वाली अलग प्रकार की वृत्ति (Activity) या क्रियाकलाप चेतना है। वैशेषिक दर्शन में बुद्धि और चेतना को पर्यायवाची माना है पर सांख्य दर्शन में ऐसा नही माना गया। उसके अनुसार चेतना बुद्धि का एक कार्य या एक धर्म या एक Activity है। चित्त में रहने वाली शक्ति चेतना है। बुद्धि तो सूर्य की तरह स्वयं प्रकाशित है। उन्हीं व्याख्याओं में एक व्याख्या के अनुसार निर्विकल्प ज्ञान को चेतना कहा गया है। निर्विकल्प ज्ञान अर्थात् अभेद ज्ञान या पुंज रूप में होने वाला ज्ञान। जब ध्यान में ध्यान की वस्तु हट जाये तो केवल एक अनुभूति या awareness होती है, वह चेतना है। व्याकरण में निर्विकल्प उसे कहा गया है जिसमें आप अलग–अलग न कर सको जैसे पशु, यह निर्विकल्प की श्रेणी में आयेगा, क्योंकि उसमें गाय, बैल आदि को अलग नहीं किया गया। यदि कहा जाये गाय या घोड़ा तो वह सविकल्प श्रेणी में होगा। जैसे कहा जाये हिन्दू तो वह किसी के सापेक्ष निर्विकल्प होगा, किन्तु कहा जाये ब्राह्मण, तो वह सविकल्प श्रेणी में होगा। Awareness एवं consciousness को सामान्यतः पर्यायवाची माना जाता है पर Awareness चीजों को उत्पन्न नहीं कर सकती, किन्तु consciousness चीजों को उत्पन्न कर सकती है। Consciouness =

Awareness + Creativity। चैतन्य एवं चेतना में वही अन्तर है जो सूर्य के गोले एवं उससे निकलने वाली किरण में है। चैतन्य सूर्य के गोले की तरह है जिसमें बहुत से आत्मा के गुण विद्यमान है। चेतना सूर्य से निकली हुई किरणों की तरह है।

215. **चेतनप्रिया** – चेतन तत्व है प्रिय जिसको। प्राणी जिनको अच्छा समझते हैं। चेतनों (प्राणियों) को प्रिय लगने वाली। जिसको चेतन प्रिय लगते हैं। चेतन अर्थात प्राणी।

216. **चापिनी** – धनुष धारण करने वाली। चाप अर्थात् धनुष को धारण किये हुये। धनुष सम्मोहन का प्रतीक है। सम्मोहन शक्ति से युक्त। ओंकार से युक्त। उपनिषद में कहा गया है कि ओंकार रूपी धनुष से जीवात्मा रूपी बाण परमात्मा रूपी लक्ष्य में भेद करे। शुद्ध चित्त वाली। चित्त भी धनुष है जिससे विचार रूपी बाण निकलते हैं। यही कारण है कि ललिता सहस्रनाम स्तोत्र में लिखा गया है– मनोरूपेक्षुकोदण्डा पंचतन्मात्रसायका।

217. **चम्पकप्रीति** – चम्पक पुष्प से प्रसन्न होने वाली।

218. **चण्डा** – दुष्टों और राक्षसों के लिए अति क्रोध वाली। चण्ड का अर्थ है अधिक क्रोध। ब्रह्म की शक्ति स्वरूपा। ब्रह्मा का एक लक्षण क्रोध भी है जिसके कारण ब्रहम को भी चण्ड कह दिया जाता है। ब्रह्म के क्रोध के डर से सूर्य, हवा, ग्रह, नक्षत्र सभी समयानुसार एवं उचित रीति से अपने काम में लगे रहते हैं। शिव के अनुचर चण्ड की शक्ति स्वरूपा। चण्ड शब्द असाधारण गुण के लिए भी आया है। असाधारण गुण जैसे सर्वव्यापी होना, सर्वज्ञ होना आदि, जो केवल ब्रह्म में है। इस प्रकार चण्डा का अर्थ हुआ ब्रह्म स्वरूपा। चण्ड+आ, आ का अर्थ है देना। इस प्रकार का अर्थ हुआ अपने उपासकों को असाधारण गुण या शक्ति देने वाली।

219. **चाण्डालवासिनी** – चाण्डाल रूप धारी शिव के साथ रहने वाली। काशी में भगवान शिव ने चाण्डाल का रूप धारण कर शंकराचार्य जी की ज्ञान की आँखे खोली थी। चाण्डालों में निवास करने वाली। क्रोधमूर्तियों में निवास करने वाली। देवी का रूप ही चण्ड है/क्रोध है। क्रोध भी वह खुद है। चाण्डाल मध्यकाल में अन्त्यज मानी जाने वाली एक जाति है जिसे प्रायः गाँव के बाहर ही रखा जाता था। इस जाति के सदस्य का काम श्मशान पर शव को आग देना या बाँस आदि के पात्र बनाना होता था। ब्राह्मण माता एवं शूद्र पिता से उत्पन्न सन्तान को भी चाण्डाल कहा गया है। आजकल कुकर्मी, क्रूर और दुष्ट मनुष्य के लिए चाण्डाल शब्द का प्रयोग किया जाता है।

220. **चिरंजीविनी** – चिरकाल तक जीवित रहने वाली।

221. **तच्चिन्तात्ता** – परम तत्व के चिन्तन में संलग्न रहने वाली। ब्रह्म का चिंतन करने पर बोधगम्य या समझी जाती या जानी जाने योग्य। तत् का अर्थ है ब्रह्म, आत्त का अर्थ है ग्रहीत अर्थात समझी गई।

222. **चिंचामूलनिवासिनी** – इमली के वृक्ष की जड़ में निवास करने वाली।

223. **छुरिका** – छुरिका धारण करने वाली जिससे वह राक्षसों को मार देती है। छुरिका अस्या अस्ति इति छुरिका अर्थात छुरिका जिसकी है अर्थात छुरिका वाली अर्थात छुरिका धारण करने वाली। छुरी की तरह अर्थात छुरी की तरह तीक्ष्ण बुद्धि वाली। छुरिका की तरह तीक्ष्ण हैं। अत्यधिक Sharp/तेजस्विनी, ज्ञान से अज्ञान को काट देती हैं। छूरी का रूप भी वही है। शस्त्र भी वही शास्त्र भी वही। शत्रुओं का वध कर देती हैं।

224. **छत्रमध्यस्था** – छत्र के मध्य में रहने वाली अर्थात राजलक्ष्मीस्वरूपिणी। छत्र अर्थात छतरी अर्थात राजचिन्ह।

225. **छिन्दा** – छेदन करने वाले हथियार स्वरूपा। यहाँ हथियार के लिए छिन्दा शब्द आया है। नाश रूपी क्रिया स्वरूपिणी। छेदन करने वाली (रोग, शोक, विपत्ति, शत्रु आदि का)। छिन्दा शब्द शब्दकोश में नहीं है अतः व्याकरण

के नियम से बनाया गया। छिद् धातु में श (अ) प्रत्यय लगाया। शित् प्रत्यय सार्वधातुक होते हैं। छिद् धातु रूधादिगण की धातु है। सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर श्नसोरल्लोपः सूत्र से श्नम् प्रत्यय प्राप्त हो जाता है। छिद्+श, छि न् द् अ, इस प्रकार छिन्दा बनेगा। छिन्द खजूर प्रजाति का एक पौधा है जिसके कारण छिन्दवाड़ा शहर का नाम छिन्दवाड़ा पड़ा क्योंकि वहाँ छिन्द नामक पौधे बहुत होते हैं। छिन्द+ आ, अर्थात छिन्दा अर्थात छिन्द नामक वृक्ष देने वाली अर्थात संसार को छिन्द नामक वृक्ष देने वाली या उत्पन्न करने वाली। आ का अर्थ है देना। छिम् (छिं) शब्दाक्षर ले सकते है। बिन्दु या अनुस्वार का अर्थ अवधारण (एव, ही, निश्चित रूप से) होता है। इस प्रकार छिन्दा का अर्थ हुआ छल को निश्चित ही नष्ट कर देने वाली। छल को ही नष्ट करने वाली।

226. **छिन्दाकरी** – नाश करने वाली। अज्ञान, मूढ़ता, जड़ता का छेदन करने वाली।

227. **छिदा** – छल को नष्ट करने वाली। एकाक्षरी कोश में छि का अर्थ छल दिया गया है। दो अवखण्डने सूत्र से छिदा शब्द का दा शब्दाक्षर बना। दुखों/बीमारी को काटने वाली। छेदन करने वाली अर्थात देवी स्वयं छेदन करती हैं भले ही हथियार लेकर। 225वें नाम में आया शब्द करण के लिए है जब कि यहाँ शब्द कर्ता के लिए है द्य छेदन या काटने की क्रिया स्वरूपा। शब्द कल्पद्रुम में छिदा शब्द का अर्थ छेदने की क्रिया स्वरूपा बताया गया है। संसार बन्धन को काटने वाली। छिद् भिद् धातु होती है। अवगुण पापों को नष्ट कर देने वाली। छेदन क्रियास्वरूपा। शब्द कोष में आया है कि यदि छिदा स्वतन्त्र शब्द है तो अर्थ होगा छेदन क्रियास्वरूपा किन्तु यदि किसी उपपद के साथ छिद शब्द जुड़ा हो तो अर्थ होगा कि उस उपपद के अर्थ को काटने वाली। छल को नष्ट करने वाली। शत्रुओं द्वारा किये जाने वाले छल को सफल नहीं होने देती। एकाक्षरी कोष में छि का अर्थ छल, कुलालक दिया गया है। दो अवखण्डने में ड प्रत्यय लगाने से द शब्द बनेगा जिसका अर्थ है अवखण्डन करने वाला अर्थात् नष्ट करने वाला। स्त्रीलिंग में दा हो जायेगा। छिक्का शब्द का छि अक्षर लेने पर छिदा का अर्थ होगा छींक को अर्थात् सर्दी, जुकाम के रोग को नष्ट कर देने वाली।

228. **छुच्छुन्दरी** – छुच्छुम् अव्यक्त शब्द निकलता है जिससे। दीर्यते अनया अर्थात जिससे उदीर्ण होता है या निकलता है। शब्द कल्पद्रुम में छुछुन्दरी शब्द आया है। वहाँ लिखा है छुछुम् यह अव्यक्त शब्द जिससे निकलता है। छुछुम् इति अव्यक्त शब्दम् उदीर्यति निर्गच्छति अस्याः। छुम् छुम् शब्द करती हुई संशयों को काटने वाली। छुछुम् द्रणाति। छुछून्दर जीव दिवाली या धनतेरस में दिख जाए तो दरिद्रता नष्ट होती है। छुछुन्दरी की तरह भक्तों की दरिद्रता या अभाव को दूर कर उन्हें समृद्ध बनाने वाली।

229. **छलप्रीति** – दुर्जनों के साथ छल में प्रीति रखने वाली या रुचि है जिसे। एकाक्षरीकोश से छ और ल के अर्थ लेकर अन्य अर्थ भी किये जा सकते हैं।

230. **छुच्छुन्दरनिभस्वना** – छुछुन्दर जन्तु के समान आवाज करने वाली। निभ का अर्थ है की तरह और स्वन का अर्थ है आवाज।

231. **छलिनी** – दैत्यों के साथ छल करने वाली। मोहिनी अवतार में छल किया था।

232. **छत्रदा** – राज्य देने वाली, राजपाठ दिलाती हैं। छत्र शब्द उच्च पद – प्रतिष्ठा सम्पत्ति का उपलक्षक है। प्रसन्न होकर देवी अपने भक्तों को उच्च पद – प्रतिष्ठा प्रदान करती हैं।

233. **छिन्ना** – एक पदार्थ से दूसरे पदार्थ में भेद के रूप में स्थित या भेद करने वाली। छेदन का अर्थ भेदन भी होता है। वैशेषिक दर्शन में विशेष नाम का पदार्थ बताया गया है जो दो परमाणुओं के बीच भेद करता है। उत्तरपदलोपी समास मानते हुए छिन्ना को छिन्नमस्ता कह सकते है। सर्वव्यापी पदार्थों जैसे आकाश, वायु आदि का मस्तक नही होता है अर्थात् कोई अंग नही होता है। एक नियम है कि प्रमुख हिस्से का नाम लेने से बाकी सभी का बोध हो जाता है। मस्तक शरीर का प्रधान अंग है, इसको कहने से शरीर के सभी अंगों का बोध हो

जाता है। इस प्रकार छिन्ना का अर्थ हुआ जो सर्वव्यापक है। मस्तक में ही विचार होते है, इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ जो विचार रहित है अर्थात् हमेशा वर्तमान में विद्यमान रहती है। बच्चे ज्यादा सोचते–विचारते नहीं है जिसके कारण उनमें मासूमियता रहती है। इस कारण छिन्नमस्ता का अर्थ बच्चों जैसी मासूमियता रखने वाली भी होता है। शब्दकोष में छिन्ना का अर्थ वैश्या दिया गया है जिसका अर्थ है सभी के द्वारा उपभोग की जाने वाली योग्य। सम्भवतः चरित्र के छिन्न होने से वैश्या को छिन्ना कहा जाता है। देवी के सन्दर्भ में छिन्ना का अर्थ होगा जो भी उन्हें याद करता है उनके पास मदद करने के लिए चली आती है। किसी से अलग हुई चीज को भी छिन्न कहते है। इस नाम का अर्थ हुआ सूर्य के उस प्रकाश या तेज के स्वरूप वाली जो उससे अलग हो चुका है। सूर्य का प्रकाश/ऊर्जा विभिन्न पदार्थों में पड़ता है और ये पदार्थ उस प्रकाश या तेज को शोषित करते है। अधिकांश प्रकाश या ऊष्मा सूर्यास्त के पहले सूर्य में वापस लौट जाती है पर कुछ प्रकाश या तेज या ऊष्मा ऐसी भी होती है कि सूर्यास्त कें बाद भी नही लौट पाती है और वह उस पदार्थ का अंग बन जाती है। इस प्रकार अलग हुये तेज को भी छिन्न कहते है। जो समाज से अलग है अर्थात् कोई भी उसके समान नही है, वह छिन्ना है। छिन्न मन्त्र में भी विराजमान। जिन मन्त्रों में कुछ अक्षर कम होते हैं वे छिन्न मन्त्र हैं। उत्तर पद रूपी समास मानते हुए इसे छिन्नमस्ता या छिन्नसंशया शब्द कह सकते है। तब इस नाम का अर्थ हो गया जो संशय से रहित है या मनुष्य के संशय जिसके द्वारा छिन्न हो जाते है अर्थात कट जाते है या नष्ट हो जाते है वह छिन्ना है। छिन्ना का अर्थ यह भी कर सकते है– जिससे संसार बन्धन छिन्न हो गए है अर्थात कट गए है। तात्पर्य हुआ मुक्त स्वरूपा। जो मुक्त स्वरूप है वह छिन्ना है। छिन्नमस्ता देवी रूपी। जो कटी हुई हैं जैसे छिन्नमस्ता जिनका सिर कटा हुआ है। व्यवहार में कई बार पूरा नाम न लिखकर एक भाग लिख दिया जाता है जैसे सत्यभामा की जगह भामा या देवदत्त की जगह दत्त। आसुरी शक्तियों और सम्पत्तियों को छिन्न–भिन्न करने वाली। छिन्न हुए (अभावों से ग्रस्त एवं कष्टों से आहत) अपने भक्तों को पूर्णता प्रदान करने वाली।

234. **छिण्टिच्छेदकरी** – निन्दा/दाग का नाश करने वाली। कहीं पर छिण्टि शब्द का प्रयोग निन्दा के अर्थ में किया गया है। छली व्यक्ति का छेदन करने वाली अर्थात उसका नाश करने वाली। एकाक्षरीकोश में छि का अर्थ छल दिया गया है। अनुस्वार या बिन्दु का एक अर्थ अतिशय, कुछ, पूर्णता दिया गया है। टि का अर्थ भ्रष्ट, भू (आधार) दिया गया है। छल की पूर्णता से भ्रष्ट अर्थात छली, छल में जाने से भ्रष्ट अर्थात छली। छल की अतिशयता का आधार अर्थात अतिशय छल धारण करने वाला अर्थात छली। छल रूप आचार और भ्रष्टरूप आचार का छेदन करने वाली/काट देने वाली। छिम् च टिम् च छेदकरी इति छिण्टिच्छेदकरी। एकाक्षरी कोश के अनुसार छिम् का अर्थ है छल और टिम् का अर्थ है भ्रष्ट। दुख–कष्ट को विनष्ट कर देने वाली। अपनी असाधारण शक्ति के द्वारा बड़े बड़े दैत्यों को काट छाट कर उनका संहार कर देती है। विपत्ति में छेद करने वाली।

235. **छटा** – कान्ति स्वरूपा। कान्ति से युक्त। छटा अस्या अस्ति इति छटा (छटा वाली अर्थात छटा से युक्त)। बिजली की तरह अर्थात बिजली की तरह दीप्तिमती एवं शत्रुओं पर टूट पड़ने वाली। शब्दकोश में छटा के अर्थ कान्ति, छवि, किरणों का समूह, बिजली, समूह आदि दिये गए है। असौन्दर्य अर्थात अशुभ या अमंगल को काट डालने वाली अर्थात नष्ट कर देने वाली। छो धातु में अटन् प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग में टाप् प्रत्यय लगाकर छटा शब्द बनता है और छो का अर्थ है काटना, इस प्रकार छटा का अर्थ हुआ काटने वाली। असौन्दर्य को काटने अर्थात नष्ट करने के कारण छटा का अर्थ सौन्दर्य, कान्ति है। शोभास्वरूपा। वस्तु मात्र में जो शोभा दिखाई देती है वह उन्हीं का रूप है। सुन्दरता ज्यादातर चेहरे से सम्बन्धित होती है। छटा शब्द अतिशय सुन्दरता का व्यंजक है। उनकी दिव्य छटा भक्तों के मनों को सम्मोहित कर देती है। छो छिनत्ति धातु में अटन् प्रत्यय लगाने पर स्त्रीलिंग में छटा बनता है। भक्तों के कर्मबन्धन को काट देने वाली या उनके कर्म संस्कारों को समाप्त कर देने वाली। छटा का अर्थ पुंज या समूह भी दिया गया है। इस नाम का अर्थ हुआ तेज पुंज स्वरूपा। दुर्गासप्तशती में

आया है कि भगवान विष्णु एवं भगवान शिव तथा अन्य देवताओं के तेज से मिलकर देती महालक्ष्मी का प्रादुर्भाव हुआ। संस्कृत में देखा गया है कि किसी शब्द का एक अक्षर ले लेते हैं जिससे उस एक अक्षर से पूरे शब्द का बोध हो जाता है। प्रायः प्रथम अक्षर लिया जाता है परन्तु आवश्यकता पड़ने पर अन्तिम या बीच का अक्षर ले लिया जाता है। छन्द (इच्छा या मनोरथ) का छ अक्षर ले लिया। कट् धातु का अर्थ वर्षा करना, ढकना होता है। कटति इति कटः, स्त्रीलिंग में कटा। कटा का अर्थ हुआ वर्षा करने वाली, ढकने वाली। कटा का टा ले लिया। इस प्रकार छटा का अर्थ हुआ मनोकामनाओं की वर्षा करने वाली अर्थात पूरा करने वाली। मनोकामनाओं–पूर्ति की वर्षा करने वाली। छल का छ अक्षर ले लेते हैं। छल को ढकने वाली अर्थात उसे समाप्त करने वाली। शब्द का अर्थ निकालने के लिए व्याकरण के नियम शिथिल करने पड़ते हैं। कई बार ईकारान्त का अर्थ आकारान्त की तरह लेना पड़ता है जैसे देवकी का अर्थ देवका की तरह लेना पड़ता है।

236. **छद्मिनी** – कपट युक्त (दैत्यों और दुष्टों के लिए)। दुर्व्यवहारी के लिए कपट भी कर सकती हैं। छन्द का अर्थ आवरण होता है अर्थात मायाशक्ति। माता मातंगी संसार तथा दैत्यों को ज्ञान से दूर कर देती हैं तथा मोह जाल में, जन्ममरण चक्र में डाल देती हैं। वे सदैव सभी को आनन्दित करती हैं। अपने ज्ञान के प्रकाश से आच्छादित कर भक्तजनों का कल्याण करती हैं।

237. **छान्दसी** – छन्द (वेद) में रहने वाली। वेद में निहित ज्ञान रूपा। छन्द (इच्छानुसार) आचरण करने वाली। छन्द शास्त्र मे जो भी छन्द है उनके स्वरूप वाली। वेद में विद्यमान रहने वाली वेदमाता। वैदिकी । वेदों से सम्बन्ध रखने वाली। वे वेदस्वरूपिणी हैं, उनमें समस्त वैदिक ज्ञान एवं तत्व समाहित है।

238. **छाया** – त्रिताप को छेद देने वाली। छिन्नत्ति इति छाया। शान्ति देने वाली। वृक्ष की छाया शान्ति देती है। शनि की माता स्वरूपा। छाया का एक अर्थ कान्ति है, वे दिव्य कान्ति से विभूषित हैं।

239. **छरु** – भेदन करने वाले शब्द स्वरूपा। यदि छरु शब्द है तो अर्थ है निर्मल अर्थात दोष रहित शब्द वाली। दोषरहित शब्द स्वरूपा अर्थात वेद के शब्द स्वरूपा। भक्तों के पापों का अपवारण करने वाली अर्थात दूर करने वाली (छद् धातु में डरू प्रत्यय लगाने से यह शब्द बना)। एकाक्षरीकोश में छ का अर्थ सूर्य, बिजली, निर्मल आदि दिये हैं। रू का अर्थ शब्द है। इस प्रकार छरू का अर्थ सूर्य के द्वारा किया जाने वाला शब्द या बिजली द्वारा किये जाने वाले शब्द हैं। मातंगी देवी ऐसे शब्द के स्वरूप में हैं। भक्त को शक्तिशाली बनाती हैं। सृष्टि को खा लेने वाली अर्थात लीन करने वाली (छद का अर्थ अदन अर्थात खाना भी होता है)। सृष्टि को फिर से उगल देती है/बाहर कर देती हैं। दोषों, अवगुणों को नष्ट कर देने वाली। छरति दोषान् निवारयति अवगुणान् इति छरू। (यदि छः शब्द है तो अर्थ होगा निर्मल या स्वच्छ स्वर्ण स्वरूपा। एकाक्षरीकोश में रू का अर्थ स्वर्ण दिया गया है)।

240. **छन्दाकरी** – अपनी भावना के अनुरूप करने वाली अर्थात अपनी मन की करने वाली। छन्द का अर्थ स्वच्छन्द अर्थात अपने मन के अनुरूप होता है। छन्द+आ+करी। आ का अर्थ पूर्णरूपेण या चारों ओर होता है। आ का अर्थ एकाक्षरीकोश में भाव अर्थात पदार्थ या अस्तित्व भी दिया गया है। भाव अर्थ लेने पर कभी कभी आ का कोई अलग अर्थ लिये बिना काम चल जाता है जैसे पद्मावती, विश्वामित्र का अर्थ कमल से युक्त, विश्व का मित्र है जहाँ आ का कोई अर्थ नहीं लिया गया है क्योंकि आ का अर्थ है भाव या अस्तित्व। छन्दों (भावना या मनोभावों) की आकर (खान)। स्वतन्त्रता की खान। आकर का अर्थ खान होता है । स्वतन्त्रता देने वाली। छन्द का अर्थ स्वच्छन्दता है। आनन्द देने वाली। वेदों का सस्वर पाठ करते हैं तो आनन्द की अनुभूति होती है। मन्त्रशक्ति को अपने में निगूढ़ कर लेती/छिपा लेती हैं, अपने दर्शन के द्वारा सभी को आनन्दित कर देने वाली।

241. **जयदा** – शत्रुओं पर जीत का वरदान देने वाली। भक्तों की जय जयकार हो, ऐसा वरदान देने वाली।

242. **जयदा** – विश्व को महाभारत जैसा ग्रन्थ देने वाली। युधिष्ठिर एवं अर्जुन को देने वाली अर्थात विजय का वरदान देने वाली। युधिष्ठिर एवं अर्जुन का एक नाम जय है। इन्द्रियों पर जय देने वाली।

243. **जाति** – आकृति रूप से वस्तु मात्र में नित्य रहने वाली। जैसे – गोत्व, मनुष्यत्व ये जाति हैं। एकता के सूत्र में बाँधने वाली अर्थात मनुष्यत्व के कारण सभी मनुष्य अपने आपको एक समझते हैं। जाति के कारण किसी वर्ग के सभी सदस्यों में एकरूपता रहती है। जायफल के समान अर्थात जायफल के समान रोगों (कष्टों) को दूर करने वाली। चमेली की तरह सुगन्ध से युक्त। स्वर या सरगम स्वरूपा। वेद की शाखा का एक भाग स्वरूपा। जाति के कई अर्थ हैं जैसे सामान्य, जायफल, चमेली, स्वर, वेद की शाखा का नाम।

244. **जायिनी** – जिसमें संसार उत्पन्न होता है। जायन्ते अस्याम् विश्वम् इति जायिनी। तात्पर्य हुआ नाना रूप वाले विश्व को उत्पन्न करने वाली। सन्तान को जन्म देने वाली। समस्त विश्व उसकी सन्तान है। संतानोत्पत्ति वाली। जाया अस्या अस्ति इति जायी। परब्रह्म की शक्ति (जायी का अर्थ परब्रह्म कर सकते हैं।)।

245. **जामला** – बेटी/बहू का लालन पालन करने वाली/रक्षा करने वाली। जामाम् लालयति इति जामला। जामा का अर्थ है बेटी/बहू। लालयति का अर्थ है लालन पालन करना, पोषण करना। उत्पन्न करने वाली, स्थिति बनाये रखने वाली एव ंनाश करने वाली अर्थात सृष्टि, स्थिति (पालन) एवं संहार शक्ति स्वरूपा। जनयति, अमति (गच्छति), लाति (नाशयति) इस प्रकार से शब्द का अर्थ निकला। स्थिति शक्ति का अर्थ होता है शक्ति जो पदार्थ में प्रवेशकर कुछ समय तक उस पदार्थ का अस्तित्व बनाये रखती है। काल का भी नाश करने वाली। दूसरों का भक्षण करने वाले राक्षसों का नाश करने वाली। दुर्गुण या बुरी आदतें जो मनुष्य के शरीर को खोखला कर देती है, आत्मा की शक्ति ढकने वाले मलों, शरीर को खोखला बनाने वाले बुरे कर्म संस्कार, ग्रहों के बुरे प्रभाव जो मनुष्य को खाने के लिए दौड़ते है उनका नाश करने वाली। जम् धातु का अर्थ है भक्षण करना। जमति इति जमः (भक्षण करने वाला या खाने वाला)। बिना अर्थ बदले अण् प्रत्यय लगाने से जम ही जाम हो जाता है, जिसका अर्थ है भक्षण करने वाला। काल (मृत्यु), राक्षस, दुर्व्यसन, आत्मा को आच्छादित करने वाले मल या कर्म संस्कार, बुरा प्रभाव दिखाने वाले ग्रह यह सब मनुष्यों का भक्षण करते है। लाति का अर्थ नाशयति, ग्रह्णाति होता है। जो भक्त देवी की शरण में आते है उनके मृत्यु भय या अकाल मृत्यु के योग, दुर्व्यसन आदि का नाश कर देती है।

246. **जतु** – महावर की तरह अर्थात लाक्षा (महावर) की तरह वर्ण वाली अर्थात अरूण उसमें शोण/लालिमा अधिक होती। वर्ण साम्य के कारण देवी को जतु कहा गया है।

247. **जम्बूप्रिया** – जम्बू द्वीप इसे पसन्द है (निवास स्थान होने के कारण)।

248. **जीवनरथा** – श्वास उच्छ्वास क्रिया में विद्यमान रहने वाली। जीवन का अर्थ श्वास उच्छ्वास होता है। जल में विद्यमान। जीवन का अर्थ जल भी होता है।

249. **जंगमा** – जो सचल हैं अर्थात चलती फिरती हैं।

250. **जंगमप्रिया** – जो चलते फिरते हैं (अर्थात मेहनत करते हैं, उद्यमी) उन्हें पसन्द करने वाली। चलना फिरना इसे पसन्द है।

251. **जपापुष्पप्रिया** – गुड़हल के फूल इन्हें अच्छे लगते हैं। गुड़हल के फूल से प्रसन्न होने वाली। प्रीयते इति प्रिया। तभी पूजा में यह पुष्प चढ़ाया जाता है।

252. **जप्या** – जप करने योग्य मन्त्र स्वरूपा। (मन्त्र स्वरूप में) जप करने योग्य। मन्त्रस्वरूपा। मन्त्र देवता का सूक्ष्म शरीर होता है। तभी कहते हैं कि मन्त्र और देवता में कोई अन्तर नहीं होता है।

253. **जगज्जीवा** – जगत की आत्मा (यह न हो तो जगत निश्चेष्ट हो जाएगा।) जगत को चेतन रखती हैं अर्थात चेष्टावान बनाये रखती हैं तभी तो समय पर ऋतु होती, पेड़ काट दो तो दुबारा उग आता है।

254. **जगज्जनी** – संसार का उत्पन्न करने वालीं

255. **जगती** – संसार स्वरूपा। संसार भी देवी ही हैं। जगती छन्द स्वरूपा। बहुत अधिक दूरी तक जाने वाली अर्थात सबसे बड़ी। निरन्तर गति करने वाली। कण–कण में स्पन्दन रूपी गति हो रही है। इस गति को करने वाली। गति का अर्थ क्रिया भी ले सकते है। तब इस नाम का अर्थ होगा जो निरन्तर क्रियाशील है। गम् धातु में यङ् प्रत्यय लगाने से यह शब्द बनेगा जो निरन्तरता या बहुत अधिक को बोध कराता है। जो अन्य सभी देवी–देवताओं से बहुत आगे तक गई है अर्थात् उन सबसे बढ़कर है। सृष्टि स्वरूपा। जगत का अर्थ है सृष्टि जिसे स्त्रीलिंग में जगती कहेंगे। सर्वप्रेरक गति देने वाली काल शक्ति को भी वेद में जगती कहा गया है। जो बहुत दूर तक गयी है अर्थात् बहुत विशाल है। वेद का जगती छन्द स्वरूपा। जलचर से ज लिया एवं गति लिया। जलचर तरंगों के समान गति होने के कारण अर्थात् उच्च–निम्न उच्चारण रूप गति होने से इस छन्द को जगती छन्द कहते है। जो अन्य छन्दों से आगे गया है अर्थात् बहुत बड़ा है अतः जगती है। बहुधा स्तूयमान परमेश्वर ने इसका उपदेश किया था अतः इसका नाम जगती है। गॄ शब्दे धातु से एवं गल् स्रवणे+अति > जग + अत् > जगत+ ङीष् करके ऐसा अर्थ आया। जिसमें जगत आश्रित है अर्थात् समस्त जगत को चलाने वाली। वैदिक कोष में जगती के अन्य कई अर्थ दिये गये है जैसे आत्मा, ब्रह्म, पृथ्वी, पशु, वैश्य, द्यौ, प्रतीची दिशा, आदित्य की पत्नी, यश। पशु, पृथ्वी, वैश्य, यश आदि सभी निरन्तर या बहुत अधिक गमन करते है इस कारण उन्हें जगती कहा गया है। जीवात्मा भी निरन्तर गति करती है अतः इसे भी जगती कहा गया है।

256. **जन्तुप्रधाना** – जो समस्त प्राणधारियों में प्रधान हैं। यहाँ जन्तु का अर्थ प्राणी है। सारी आत्माओं में जो श्रेष्ठ आत्मा है। जन्तु का अर्थ आत्मा है। (कहीं पर जम्तुप्रधाना लिखा हुआ है तब इसका अर्थ होगा खाने का विस्तार करने वालों में जो प्रधान है अर्थात सबके खाने की व्यवस्था, संसार के खाद्य पदार्थों की व्यवस्था लगाती है जम् अर्थात जमति अर्थात खाना, तन् धातु में डु प्रत्यय लगाने से तु बनेगा)। जन्म लेने वाले प्राणियों में मुख्य रूप से अर्थात प्रकट रूप से रहने वाली अर्थात चित् शक्ति या आत्मशक्ति स्वरूपा। जन्यते इति जन्तु, जन्म लेने वाले प्राणी जैसे मनुष्य, पशु–पक्षी। देवी शक्ति रूप में सर्वत्र विद्यमान है। जब कहा जाता है कि अमुक जगह पर विद्यमान है तो इसका तात्पर्य होता है तो उस जगह जाग्रत अवस्था में विद्यमान है अर्थात अपनी शक्तियों का प्रभाव दिखा रहीं हैं।

257. **जगज्जीवपरा** – सारे जीवो में (प्राणियों में) रहने वाली। जगत का अर्थ है सभी, परा का अर्थ है रहने वाली।

258. **जपा** – जप क्रिया स्वरूपिणी। वाचिक, उपांशु, मानसिक तीनों प्रकार के जप स्वरूपा। जप की विधा को देने वाली। जप योग को देने वाली अर्थात अस्तित्व में लाने वाली। जप+आ, आ का एक अर्थ है देना, नाश करना। शब्दकल्पद्रुम में दुर्गा शब्द के निर्वचन में एवं ब्रह्मबैवर्त पुराण में दुर्गा शब्द के निर्वचन में आ का अर्थ कहीं पर देना किया है और कहीं पर नाश करना किया है।

259. **जातिप्रिया** – जाति (चमेली) नामक पौधे का पुष्प प्रिय है जिन्हें। चमेली के पुष्प से प्रसन्न होने वाली अर्थात यदि कोई यह पुष्प चढ़ाता है तो उन्हें प्रसन्नता मिलती है। समानता जिसको प्रिय है। एकता जिसे प्रिय है। जो अपने वर्ग के सभी सदस्यों में एक समान रहती है वह जाति या सामान्य है। जैसे गोत्व, पशुत्व, मनुष्यत्व जिसके कारण सभी गायें गायें कहलाती हैं, मनुष्य मनुष्य कहलाते हैं, पशु पशु कहलाते हैं।

260. **जीवनरथा** – जीवित रखने वाली आधारभूत चीजें जैसे हवा, पानी, अन्न आदि में रहने वाली। जीवन

(अर्थात जन्म से मृत्युपर्यन्त तक का काल) में बराबर रहने वाली, विद्यमान रहने वाली। जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त जीवन (आचार व्यवहार) कहलाता है। मनुष्य/प्राणी मात्र के जीवन में विद्यमान।

261. **जीमूतसदृशीरुचि** – बादल की तरह कान्ति वाली। उन बादलों की तरह कान्ति वाली जो पृथ्वी को उर्वरा बनाती हैं। एक बादल होते है गरजने वाले जिन्हें घन कहते हैं, दूसरे बादल होते हैं बरसने वाले जिन्हें जीमूत कहते हैं जो भूमि का उर्वरा बनाते हैं।

262. **जन्या** – जिसमें सारा संसार प्रकट होता है या जन्म लेता है। शब्द कल्पद्रुम में इसकी व्युत्पत्ति लिखी है जायते अस्याम् इति जन्या। मातृ स्वरूपा। सामान्यतः जन्य का अर्थ होता है पैदा करने योग्य। जो देवताओं के कार्य को पूरा करने के लिए प्रकट होती हैं, यह अर्थ कर सकते हैं।

263. **जनहिता** – लोगों का भला करने वाली। लोगों के मित्र स्वरूपा। सबका हित अलग – अलग होता है। साधु का हित कुछ और होता है, चपरासी का हित कुछ और होता है। व्यावहारिक जगत में तरक्की को हित कहते हैं। किसी की सहायता करना या मदद पहुंचाना (उसकी जरूरतमंद चीजों को देकर) हित कहलाता है।

264. **जाया** – जिसने पुत्र को जन्म दिया है। जायते पुत्ररूपेण आत्मा अस्याम् इति जाया। सबको उत्पन्न करने वाली। जिससे कुछ उत्पन्न होता है वह जाया कहलाती है। जाया का अर्थे विवाहिता स्त्री भी होता है। चूँकि पार्वती जी का शिव से विवाह हुआ है अतः वे विवाहिता स्त्री अर्थात जाया के रूप में है। वह स्त्री जो पुत्र को जन्म दे चुकी है, जाया कहलाती है। पार्वती जी के गणेश और कार्तिकेय दो पुत्र थे।

265. **जन्मभु** – वस्तु मात्र के जन्म की यह भूमि है। प्राणियों के जन्म की यह भूमि (आधार) है। तात्पर्य है कि सभी इन्हीं से जन्म लेते हैं।

266. **जम्भसी** – खाने की रुचि जोड़ देती है अर्थात पैदा कर देती हैं। सी शब्द सिनोति धातु से आया है जिसका अर्थ है सिलना अर्थात जोड़ देना। ऐसी जम्हाई स्वरूपा जो सबको निगल लेती है या जिसमें सब प्रवेश कर रहे हैं। गीता में विराट पुरुष के चित्रण में दिखाया गया है कि सभी कुछ उनके अन्दर प्रवेश कर रहे हैं। प्रलय काल में सबको निगल लेती हैं ।

267. **जभू** – वेग उत्पन्न करने वाली। एकाक्षरी कोष में ज का एक अर्थ वेग लिखा है। शब्द या वाणी की भूमि आर्थात इन्हें उत्पन्न करने वाली। एकाक्षरी कोष में ज का अर्थ शब्द, वाणी, जय, विष्णु आदि बताया गया है। संसार का जन्म जिससे होता है। पंचमहाभूतों की जन्म भूमि है।

268. **जयदा** – षड्विकारों पर/दरिद्रता पर जय देने वाली। दूसरों द्वारा प्रशंसा, अभिवादन मिले ऐसा वरदान भक्तों को देने वाली। जय का एक अर्थ दूसरों से प्रशंसा या अभिवादन मिलना भी होता है। दूसरों से आगे बढ़ना भी जय कहलाता है। अपने भक्तों को अच्छे क्षेत्रों, गुणों, सत्कर्मों में दूसरों से आगे बढ़ाने वाली।

269. **जगदावासा** – संसार इसी में निवास करता है।संसार का महल है।

270. **जायिनी** – त्रिगुणात्मक संसार जिसमें पैदा होता है।

271. **ज्वरकृच्छजित्** – ज्वर रूपी संकट को जीत लेने वाली। ज्वर रोगों में प्रधान है अर्थात सभी रोगों को जीतने वाली।

272. **जपा** – जप की शक्ति स्वरूपा। जप जपने की क्रिया है अर्थात बारम्बार उच्चारण करने की क्रिया है। वह पद, वाक्य या शब्द जिसका उच्चारण बारम्बार किया जाए जप कहलाता है। वेद पाठ की क्रिया स्वरूपा या मानसिक प्रार्थना स्वरूपा।

273. **जपती** – जप करती हुई अर्थात जो निरन्तर जप करती है। निरन्तर जप में संलग्न। पार्वती निरन्तर शिव शिव यह जप करती रहती हैं।

274. **जप्या** – जप करने योग्य नाम स्वरूपा या जप करने योग्य नाम वाली। मानसिक रूप से की गई प्रार्थना स्वरूपा। मन्त्र का जप स्वरूपा। नाम या स्तुति से जपने योग्य। मन्त्र के द्वारा जपने योग्य। जप्या का अर्थ जपने योग्य भी होता है और वामन आप्टे शब्दकोष के अनुसार मानसिक रूप से की गई प्रार्थना भी होता है। यदि कई बार जप्या हो तो अर्थ में विविधता लाने के लिए बोल कर जप किया जाने योग्य, उपांशु रूप से जप किया जाने योग्य, मानसिक रूप से जप किया जाने योग्य इस प्रकार अर्थ करेंगे।

275. **जपार्हा** – जपने योग्य अर्थात जिनके मन्त्रों को जपना चाहिए। वेद–मन्त्रों के द्वारा जपनीया।

276. **जायिनी** – जिनसे सभी विद्याऐं पैदा होती हैं। सभी विद्याओं को जन्म देने वाली।

277. **जना** – जनलोक स्वरूपा या जनलोक की शक्ति। जनलोक वाली अर्थात जन लोक की स्वामिनी, जन लोक में वास करने वाली। जनः (जनलोकः) अस्या अस्ति इति जना। तीनों लोकों के स्वरूप वाली। जन का एक अर्थ जनलोक होता है या कोई भी लोक जिसमें लोग रहते हैं, होता है। समस्त स्त्रियों के रूप वाली। जन शब्द का स्त्रीलिंग है जना। जनयति इति जना अर्थात जो समस्त विश्व को उत्पन्न करने वाली हैं। जना अर्थात जनी अर्थात जननी।

278. **जालन्धरमयीजानु** – जालन्धर तीर्थ रूपी घुटने वाली। मयी का अर्थ है रूपी। जैसे मृण्मयी। जालन्धर तीर्थ में घुटना गिरा था। सभी तीर्थ शरीर के अंगों में वास है। जालन्धर पीठ का अर्थ है – हृदय चक्र या अनाहत चक्र। तन्त्र या योग की भाषा में हृदय चक्र को जालंधरपीठ एवं विशुद्धिचक्र को ओड्याण पीठ कहते है। हृदय में ज्ञान भी होता है और अज्ञान भी होता है। अज्ञान अर्थात माया और मायाजाल आपने सुना होगा। जालन्धर का अर्थ होता है जाल अर्थात मायाजाल अर्थात अज्ञान के जाल को धारण करने वाला। हृदय का सम्बन्ध धमनियों, शिराओं से भी होता है अर्थात हृदय नाड़ियों के जाल को धारण करने वाला एक स्थान है। इस कारण भी इसे जालन्धर कहा जाता है।

279. **जलौका** – लचीली शरीर वाली। जलौका ऐसा जानवर है जिसमें अस्थि नहीं होती, इसे कहीं भी मोड़ दो मुड़ जाती है जबकि अस्थि टूटती है। जोंक की तरह शत्रुओं का खून चूसने वाली। जलौका अर्थात जोंक इस प्रकार चिपक जाती है कि पता भी नहीं चलता, व्यक्ति चलता जाता है चलता जाता है और यह खून पीती रहती है।

280. **जाप्यभूषणा** – जपनीय मन्त्र इसका आभूषण हैं। इसके लिए हार चढ़ाने की जरूरत नहीं है केवल मन्त्र जपना पर्याप्त है।

281. **जगज्जीवमयी** – सभी की प्राणस्वरूपिणी। जगत का अर्थ विश्व और सभी दोनों है।

282. **जीवा** – जीवयति इति जीवा। सबको जीवित रखने वाली। जिसकी जितनी आयु है उतनी आयु तक शरीर के साथ जीवित रखने वाली। शरीर के सम्बन्ध की दृष्टि से ही जीवन मृत्यु होती है किन्तु आत्मस्वरूप में सभी जीवित रहते हैं अर्थात उनका अस्तित्व हमेशा बना रहता है। जीवन स्वरूपा। जन्म और मृत्यु के बीच की अवस्था जीवन है जिसमें प्राणी अपनी इन्द्रियों से चेतन व्यवहार करते हैं। प्राणियों की शक्ति के स्वरूप में, यह अर्थ भी कर सकते हैं क्योंकि जीव का एक अर्थ प्राणी भी होता है। आत्मस्वरूपा (सबकी)। आत्मरूप में अर्थात जीवात्मा के रूप में। सब प्राणी में स्थित।

283. **जरत्कारू** – वृद्ध शरीर वाली अर्थात प्रथम शरीर धारी। इनसे बूढ़ा कोई नहीं। जगत की आदिकारण होने से सबसे वृद्ध या पुरानी है। यद्यपि यह वृद्ध हैं पर कमजोर नहीं है। जरत्कारू ऋषि से अभेद है जिनका। जरत्कारू नाम की दिव्य कन्या भी हुई हैं।

284. **जनप्रिया** – जो लोगों को अच्छी लगती है। भक्तजन जिसे अच्छे लगते हैं ऐसा अर्थ भी कर सकते है।

285. **जगती** – संसार के जितने भी प्राणी हैं तद्स्वरूपा। चलने फिरने वाले प्राणी इनके ही स्वरूप हैं। विश्वस्वरूपा। जगती छन्द स्वरूपा। निरुक्त में जगती का अर्थ दिया गया है – बहुत दूर तक जाने वाली अर्थात बहुत बड़ी अर्थात सर्वव्यापक।

286. **जननिरता** – जीवित प्राणियों में निरन्तर रहने वाली। लोगों में रहने वाली। भक्तजनों के साथ हमेशा रहने वाली। भक्त जनों पर सदैव स्नेह करने वाली, प्रसन्न रहने वाली। रता का एक अर्थ प्रसन्न भी होता है।

287. **जगच्छोभाकरी** – संसार को सुन्दर बनाने वाली। ऋतुएं बदलती हैं, चाँद, तारे, नदी, हरियाली इन सभी से जगत को सुन्दर बनाती हैं। सभी की शोभा बढ़ाने वाली।

288. **जवा** – वेग स्वरूपा। जिसमें वेग है। वेग इन्हीं के कारण हैं। वेग का अर्थ है Force अर्थात बल। स्थानेन्तरतमम् सूत्र में प्रयोग, जब तक हाथ का Force तब तक पत्थर रहता है फिर धरती पर गिरता क्योंकि पत्थर धरती की ही चीज है। जवा का अर्थ जपा भी दिया गया है जिसका अर्थ है गुड़हल। इस प्रकार जवा शब्द का अर्थ होगा जो गुड़हल की तरह लाल है।

289. **जगतीत्राणकृज्जंघा** – संसार का बचाव (रक्षा करना) करने वाली जंघा वाली। संसार की रक्षा के लिए गति (चलने फिरने वाली) करने वाली। जंघा का व्युत्पत्तिपरक अर्थ है जो चलती है।

290. **जातीफलविनोदिनी** – जायफल को चढ़ाने से प्रसन्न होने वाली। छोटे आँवले के फल को चढ़ाने से प्रसन्न होने वाली। जातिफल का अर्थ जायफल होता है। जाति का अर्थ छोटा आँवला भी है। जाति के फलों से खेलने वाली अर्थात ये फल उसके लिए खिलौने हैं। जाति और जाती दोनों का एक ही अर्थ है।

291. **जातीपुष्पप्रिया** – चमेली या मालती के पुष्पों से प्रसन्न होने वाली। जाती के पुष्प जिसे बहुत प्रिय हैं अर्थात इन पुष्पों से प्रसन्न होने वाली। प्रीयते इति प्रिया से प्रिया का अर्थ प्रसन्न रहने वाली, प्रीणाति इति प्रिया से प्रिया का अर्थ प्रसन्न करने वाली होता है। प्रिय का अर्थ जो प्रसन्न करे। प्रीणाति इति प्रियः।

292. **ज्वाला** – अग्नि की लपटों की तरह तेजस्विनी। लपट (अग्नि की लपटें) स्वरूपिणी। अग्नि की लपटों के स्वरूप वाली।

293. **जातिहा** – जाति (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि) को छोड़ने वाली या मिटाने वाली। देवी आत्मस्वरूपा हैं और आत्मा की कोई जाति नहीं होती। एकरूपा, प्रकृति जब साम्यावस्था में होगी तो सब एक रूप हो जाते। समाज ही विराट स्वरूप है। पुरूष सूक्त में लोग ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि को जाति मानकर गलत व्याख्या करते हैं। वहाँ पुरूष का अर्थ है मानव समाज या नर समाज। अजायत का अर्थ है उच्यते अर्थात कहा गया। यहाँ पर पैदा हुआ अर्थ लगाना गलत है। समाज में जो ज्ञान देते हैं वे हैं ब्राह्मण, जो राज भार संभालते हैं, वे हैं क्षत्रिय ओर जो व्यापार के लिए चलते फिरते हैं, वे हैं वैश्य, जो सेवा का कार्य करते हैं वे हैं शूद्र। प्रत्येक मनुष्य इन चारों प्रकार के कार्य करता है अतः प्रत्येक मनुष्य ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र है।

294. **जातिरूपिणी** – चमेली या मालती पुष्प की तरह सुगन्धित और सुन्दर। चमेली के पुष्प के गुणों से युक्त। रूप का अर्थ गुण या लक्षण भी होता है। सृष्टि में जो विभिन्न जातियाँ हैं जैसे मनुष्य जाति, पशु जाति, पक्षी जाति तद्रूपिणी। सृष्टि रूपिणी। एकाकार करने या सबको जोड़ने की शक्ति या गुण स्वरूपा। अनेक में एकाकार का बोध कराने वाली शक्ति। अनेक गायों में सबको गाय ही कहा जाता है अर्थात अनेक को एक नाम से सम्बोधित किया जाता है। जन् धातु में क्तिन् प्रत्यय लगाने से जाति शब्द बनता है और यह प्रत्यय भाव का अर्थ तो देता ही है साथ में कर्ताकारक के अतिरिक्त अन्य कारकों का भी बोध कराता है। अतः अधिकरण कारका

का अर्थ लें तो जाति का अर्थ हो गया जिसमें सब जन्म लेते हैं। कर्मकारक ले तो अर्थ होगा जिसको जन्मा जाता है, सम्भवतः इसी कारण चण्डी प्रकाशन प्रयाग की एक पुस्तक में जाति का अर्थ उत्पन्न नया शरीर किया गया है, वहाँ लिखा है कि प्रत्येक शरीर मनुष्य को केवल एक सीमा तक आगे ले जा सकता है। साधन अर्थ में अर्थात करण कारक का प्रयोग करके एकाकार कराने की शक्ति अर्थ निकाला गया है।

295. **जीमूतवाहनरूचि** – इन्द्रधनुष जैसी कान्ति वाली अर्थात बहुत ही आकर्षक कान्ति वाली। इन्द्र की तरह कान्ति वाली।

296. **जीमूता** – बरसने वाले बादल की तरह अर्थात बरस कर उत्पन्न करने वाली। वृष्टि से धनधान्य की सृष्टि करने वाली। कृपा वृष्टि से ऐश्वर्य को उत्पन्न करने वाली।

297. **जीर्णवस्त्रकृत्** – आकाश रूपी वस्त्र का निर्माण करने वाली। पुराने वस्त्र बनाने वाली। इसका अभिप्राय है सबका वस्त्र आकाश है, आकाश से पुराना कोई वस्त्र नहीं। सब चीज का वस्त्र आकाश है। पाँच महाभूतों में से एक आकाश रूपी वस्त्र बनाने वाली। विश्व या ब्रह्माण्ड वस्त्र ही है, इससे पुराना कोई दूसरा वस्त्र नहीं है।

298. **जीर्णवस्त्रधरा** – आकाश रूपी वस्त्र धारण करने वाली। आकाश से ही बाकी वस्त्र पैदा होते है। पंचभूत रूपी वस्त्रों को धारण करने वाली अर्थात् जगत स्वरूपा। माया रूपी वस्त्र को धारण करने वाली। जीर्ण का अर्थ होता है फटा पुराना अर्थात् बहुत पुराना। माया, पंचभूत दोनों बहुत पुराने है।

299. **जीर्णा** – सबसे पुरानी है। आकाश से भी पुरानी। आकाश का भी आदि कारण होने से जीर्णा (पुराना) कहा जाता है।

300. **ज्वलती** – निरन्तर जलती हुई अर्थात बुझती नहीं है। जो ज्वालामुखी देवी के स्वरूप में है। प्रकाशमान सूर्य निरन्तर जल रहा है। जो निरन्तर प्रकाश छोड़ रही है। निरन्तर ज्ञान के प्रकाश से युक्त। निरन्तर दीप्त रहने वाली अर्थात निरन्तर प्रकाशमयी। निरन्तर जलती हुयी अर्थात ज्वालास्वरूपा या ज्वालामुखी देवी से अभेद है जिनका।

301. **जालनाशिनी** – कपट जाल/संकट जाल/माया जाल को नाश करने वाली। कहते हैं जाल में फंस गया। जाल का अर्थ समूह भी होता है।

302. **जगत्क्षोभकरी** – जगत के समय क्षोभ करने वाली। क्षुभित होकर ही सृष्टि रचना होती है। जगत निर्माण के लिए शिव में क्षोभ करने वाली। जगत जब समाप्त होता है तब भी क्षोभ के द्वारा ही होता है। ज्वालामुखी, सुनामी, भूकम्प आदि के द्वारा जगत को क्षोभ करने वाली। देवी प्रकृति रूपा है।

303. **जाति** – जाति नामक वेद की एक शाखा स्वरूपा। वेद की एक शाखा का नाम जाति है। जाति नामक अलंकार स्वरूपा। अनुप्रास, यमक, श्लेष आदि अलंकारों की तरह जाति नाम का अलंकार होता है। स्वर या सरगम स्वरूपा। जन्म या उत्पत्ति क्रिया स्वरूपा। ब्रह्म–सत्ता रूप। दुर्गासप्तशती में आया है कि या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता। वहाँ जाति का अर्थ ब्रह्मसत्ता है क्योंकि परमात्मा की सत्ता सभी प्राणियों में विराजमान है। तत्व स्वरूपा अर्थात जो नष्ट न हो। जिसमें तत्व का नाश नहीं होता वह है जाति क्योंकि वह नित्य ही है। जाति व्यक्ति या व्यष्टि या इकाई में होती पर साथ में सब में भी होती है। महाभाष्य के प्रथम आह्निक में जाति का वर्णन है। एकता के सूत्र मे बाँधने वाली, यह भी जाति का एक अर्थ कर सकते हैं। मनुष्यों को दूसरे समुदायों से जो अलग करे वह है जाति। इसी प्रकार के पशुओं को या पक्षियों को जो अन्य समुदाय से पृथक करता है वह जाति है। मनुष्यत्व, पशुत्व आदि जाति हैं क्योंकि मनुष्यत्व मनुष्य को अन्य समुदायों जैसे पशु पक्षियों से अलग करता है। शब्द कल्पद्रुम में लिखा है कि जायते अस्यां इति जाति। जिसमें अर्थात जिस

अधिकरण में सब कुछ पैदा हो वह जाति है। शय्या अर्थात् सुख का विस्तार करने वाली। एकाक्षरी कोष में जा के अर्थ है– शय्या, पत्नी, योनि, खल, जार आदि। तनोति या विस्तारयति का ति ले लिया। खल अर्थात् दुष्ट पुरूषों को नष्ट करने वाली। विनाशयति का ति ले लिया। श्रेष्ठ पत्नी देने वाली। तनोति का ति ले लिया। तनोति का अर्थ है विस्तार करना, निर्माण करना, देना। जाति का अर्थ सम्प्रदाय, वंश परम्परा भी होता है।

304. **जगत्क्षोविनाशिनी** – संसार के (सबके, यह अर्थ भी कर सकते हैं) भयों, दुखों का नाश करने वाली। प्रकृति को अनुकूल करने वाली। दैवी उपद्रव का नाश करने वाली। लोगों को जो दुख होता वह भी नाश कर देती है। जो मन के प्रतिकूल है उसे दुख कहते हैं।

305. **जनापवादा** – दुष्ट जनों के लिए निन्दा स्वरूपा अर्थात दुष्टों जनों के लिए अपयश स्वरूपा। जनापवाद+आ, आ का अर्थ कहीं पर देना और कहीं पर नाश करना होता है। इस प्रकार जनापवादा का अर्थ हुआ भक्त जनों के मिथ्या अपवाद अर्थात झूठे अपवादों का नाश करने वाली। भगवान श्रीकृष्ण पर स्यमन्तकमणि के चोरी का झूठा आरोप लग गया था। लोकापवाद नाश करने वाली। जनापवाद+आ, आ का एक अर्थ नाश करना भी होता है। लोक अपवाद स्वरूपा। लोक में जो निन्दा है वह भी यही है। राम जी जब दूसरी बात सीताजी को लेकर आये तो लोगों में फैला अपवाद या बदनामी देवी ही है। सच्चा हो या झूठा यदि लोगों में फैल जाए तो व्यक्ति की महिमा कम हो जाती है। कोई भी चीज हो जैसे वस्तु, पशु, पक्षी, वृक्ष, गुण, समय, सम्बन्ध आदि सभी ऊर्जा का रूपान्तरण होने के कारण देवी रूप हैं।

306. **जीवा** – प्राण या जीवन तत्व देने वाली। जीव+आ, जीव का अर्थ है प्राण या जान या जीवन तत्व, आ का अर्थ देना भी होता है और नाश करना भी होता है। सबको जीवन दान देने वाली। बृहस्पति की शक्तिस्वरूपा। जीवयति इति जीवा। सबको जीवित रखने वाली। जिसकी जितनी आयु है उतनी आयु तक शरीर के साथ जीवित रखने वाली। आत्मस्वरूप में सभी जीवित रहते हैं अर्थात उनका अस्तित्व हमेशा बना रहता है। भगवान विष्णु की शक्ति स्वरूपा। पुष्य नक्षत्र स्वरूपा। शरीरी अर्थात शरीर रूप में अर्थात सगुण साकार रूप वाली।

307. **जननीगृहवासिनी** – जननी (माता) के रूप में हर घर में रहने वाली। हर घर में रहने वाली माता देवी का ही रूप है। दया या करुणा के रूप में प्रत्येक घर में रहने वाली। जननी का एक अर्थ दया या करुणा है।

308. **जनानुरागा** – भक्त जनों पर अनुराग (स्नेह) करने वाली।

309. **जानुस्था** – षष्ठी देवी के स्तोत्र में रहने वाली। एकाक्षरी कोश के अनुसार जा का अर्थ है देवसेना अर्थात षष्ठी देवी। नु का अर्थ है स्तुति। पत्नी की स्तुति में रहने वाली। पूजा में अंगन्यास होता है जिसमें विभिन्न अंगों में शक्तियों की स्थापना की जाती है। जानुस्था का अर्थ है वह शक्ति जिसका न्यास घुटने में किया जाता है अर्थात जिसे घुटने में स्थापित किया जाता है।

310. **जलवासा** – जल में वास करने वाली। सृष्टि के आदिकाल में जब सारा संसार जलमय था तब उस जल में निवास करने वाली। दुर्गा सप्तशती के प्रथम अध्याय में मघुकैटभ वध के प्रसंग में सारा संसार जलमय था।

311. **जलार्तिकृत** – जल के द्वारा होने वाली अर्थात दूषित पानी से बीमारी पैदा करने वाली। जड़ व्यक्ति (अल्प बुद्धि वाला) को दुखी करने वाली। संस्कृत में ल और ड में अभेद होता है अर्थात जल का अर्थ जड भी होता है।

312. **जलजा** – जल से पैदा हुई लक्ष्मीजी से जिनका अभेद है। जल से उत्पन्न वस्तुओं वाली। जलजा अस्या अस्ति इति जलजा। कौड़ी, शंख आदि जल से उत्पन्न होने वाली वस्तुओं को अपने पास रखने वाली या इन्हें अपने शरीर में धारण करने वाली।

313. **जलवेला** – जल ही है वेला (तट) जिसकी अर्थात पृथ्वी स्वरूपा। जलम् वेला यस्या सा अर्थात जल है

जिसका किनारा अर्थात पृथ्वी स्वरूपा। संसार रूपी सागर के लिए किनारा स्वरूपा अर्थात सहारा स्वरूपा। संसार को सागर अर्थात जल स्वरूपा माना गया है। किनारा वह है जहाँ आने पर व्यक्ति डूबने से बच जाता है। संसार सागर में डूबने से बचाने वाली। तात्पर्य हुआ संसार के विभिन्न कष्टों से निकालकर सुखप्रद स्थिति अर्थात आनन्दावस्था में ले जाने वाली।

314. **जलचक्रनिवासिनी** – जल समूह अर्थात बड़े जल जैसे बड़ी बड़ी नदी, समुद्र में निवास करने वाली। जल समूह से अनेक कार्य होते हैं। जैसे पनचक्की चलना, बिजली पैदा होना, खेती होना आदि। देवी का नाम जलवासा भी आया है वहाँ इसका अर्थ है किसी भी जल में वास करने वाली। जल समूह अर्थात् समुद्र में निवास करने वाली। लक्ष्मी जी समुद्र में ही रहती है। समुद्र का अर्थ परमात्मा भी होता है क्योंकि उसमे सभी जीवात्मा का वास है। परमात्मा या ब्रह्म में शक्ति रूप से रहने वाली।

315. **जलमुक्ता** – जल से बनी हुई मोती की तरह चमक या विशेषताओं वाली। जल से बनी हुई मोती स्वरूपिणी। जल ही स्वाति नक्षत्र में मोती बन जाता है। जल से मोती बन जाने वाली। जल से बनी हुई मोती के सदृश विशेषताओं, चमक, दीप्ति वाली। जल बिखर जाता है पर मोती रहता है और वह अनेक दोषों को दूर कर औषधि बन जाता है। पानी की बूँद जब अन्य जगह गिरती है तो पता नहीं चलता पर कमल के पत्ते पर मोती की तरह चमकती है।

316. **जलारोहा** – जो जल पर आरूढ़ है। आरोह का अर्थ है ऊपर चढ़ना और वह दिखता है। लक्ष्मी से अभेद है जिसका क्योंकि लक्ष्मीजी समुद्र से पैदा हुईं थी अर्थात समुद्र जल के ऊपर विराजमान अर्थात आरूढ़ थीं। बिजली तो जल के अन्दर होती जो दिखती नहीं है। गंगा जी भी जलयुक्त मगर के ऊपर बैठी रहती हैं अतः इस नाम का अर्थ गंगा जी स्वरूपा या गंगा जी से अभेद है जिनका कर सकते हैं।

317. **जलजा** – कमल की तरह अर्थात कमल की तरह सुन्दर/निर्लिप्त। संसार में रहते हुए भी संसार से अनासक्त। जल अर्थात जड अर्थात जड़ पदार्थ। संस्कृत में ल और ड में अभेद होता है। जड़ पदार्थों में भी शक्तिरूप में व्याप्त। एकाक्षरी कोष में ज का अर्थ शैय्या दिया गया है अर्थात जिसमें विराजमान हुआ जाता है।

318. **जलजेक्षणा** – कमल के समान सजल (करुणायुक्त) नेत्रों वाली। कमल के समान नेत्रों वाली अर्थात सुन्दर, विशाल और गोल नेत्रों वाली। कमल सुन्दरता का प्रतीक है।

319. **जलप्रिया** – जिन्हें जल प्रिय है अर्थात अच्छा लगता है। अतः पूजा में जल चढ़ाते हैं। शिवलिंग में जल चढ़ाते हैं। शिवलिंग का अर्घा देवी ही हैं। जल से प्रसन्न होने वाली।

320. **जलौका** – जल का मूलस्थान, घर या निवास। ओक का अर्थ है घर या निवास स्थान। जल का मूल आश्रय। जल भी इन्हीं से पैदा होता है। जल अन्यों का जीवन है पर देवी जल की भी जीवन है।

321. **जलशोभावती** – जल की शोभा से युक्त। जल से सुशोभित होने वाली अर्थात पृथ्वी स्वरूपा। जल की शोभा अर्थात सुशोभित तरंगों से युक्त।

322. **जलविस्फूर्जितवपुष्** – जल से स्फुरित (चमक) हो रहा है शरीर जिसका।

323. **ज्वलत्पावकशोभिनी** – जलती हुई अग्नि की तरह शोभा वाली अर्थात देदीप्यमान।

324. **झिञ्झा** – कलाओं को अपने अन्दर समेटने वाली। झिम् झषति। एकाक्षरी कोष के अनुसार झि का अर्थ कला, अन्धकार, कपि, तरूसंभव है। झषति अर्थात संवरण करना, समेटना। कलाओं वाली सुन्दरी। झि का अर्थ है नाना प्रकार के हाव – भाव और कला। झा का अर्थ है सुन्दरी। झिम् युक्त झा इति झिंझा। मुम् का आगम हुआ। नाना प्रकार के हाव – भाव और कला से युक्त सुन्दरी। कला अर्थात शोभा, 64 कला, साकार जगत।

325. **झिल्लमयी** – झिर् ऐसा शब्द स्वरूपा या ऐसे मधुर शब्द वाली। झिर् + ल प्रत्यय लगाने से झिल्ल बनता है। र् का ल् हो गया। झिल्ल नामक पुष्प के समान लाल। झिल्ल नील की जाति का पौधा है जिसकी छाल और फूल लाल होते हैं। झिर् इति अव्यक्तशब्देन लपति अर्थात झिर् ऐसा अव्यक्त शब्द निकालने वाले वाद्ययन्त्र के स्वरूप वाली। र् का ल् हो गया। शब्दकल्पद्रुम मे झिल्लि यह शब्द मिलता है, जिसकी व्युत्पत्ति दी गयी हैं झिर् इति अव्यक्त शब्देन लिशति।

326. **झिंझा** – झिम् ऐसा अव्यक्त स्वर या ध्वनि निकालने वाली सरस्वती या सुन्दरी। झिम् युक्ता झा। एकाक्षरी कोष में झा का अर्थ सरस्वती, सुन्दरी दिया गया है झिम् ऐसा अव्यक्त शब्द निकालने वाली। झिम् इति अव्यक्त शब्दः झरति अस्याः, झिम् ऐसा अव्यक्त शब्द निकलता है जिससे। झिम् इति अव्यक्त शब्दम् झारयति। झरति अर्थात निकलना, इसी से झरना बना है। झिम् (अन्धकार) को समेटने वाली। (कल्पतरू से उत्पन्न भोग स्वरूपिणी। झि का अर्थ है तरुसम्भव, झा का अर्थ है भोग। यहाँ मुम का आगम हुआ जो बहुत सही नहीं है। झि जन्या झा, यहाँ भी मुम का आगम करना पड़ा अतः बहुत सही नहीं है। कल्पतरु के समान भोगों को देने वाली।)। झिम् ऐसा शब्द करने वाला वारि अर्थात जल स्वरूपा। इस प्रकार झिंझा का अर्थ बारिश या वृष्टि हुआ। देवी वृष्टिस्वरूपा हैं यह इस नाम का अर्थ हुआ। आपने रिमझिम करती हुई बारिश अवश्य सुनी होगी। वहाँ रिमझिम अव्यक्त शब्द हैं। झिम् झिम् ऐसा अव्यक्त शब्द करते हुए जंगलों का नाश करने वाली दावाग्नि स्वरूपा। झिम् इति अव्यक्तशब्दम् कृत्वा झषति।

327. **झणत्कारकरी** – नूपुर पहन कर नूपुर के शब्द झण – झण करने वाली। पैरों में नूपुर या पायल पहने कर चलने से झणत् – झणत् शब्द होते हैं।

328. **झया** – तीव्र गति को प्राप्त करने वाली। झ का अर्थ है झंझावत अर्थात वायु वेग। या प्रापणे धातु होती है जिसका अर्थ है प्राप्त करना। झय् प्रत्याहार में आने वाले अक्षरों के रूप चली। झय् प्रत्याहार स्वरूपा। पाणिनि के चौदह सूत्रों में एक झय् प्रत्याहार अर्थात अक्षरों का समुदाय है। अपने समस्त स्वरूपों को या शक्तियों को अपने में समेटने वाली। सब तरफ से अपने आप में समेटने वाली। दुर्गासप्तशती में देवी ने अपने विभिन्न रूपों को अपने में समेट लिया था। झष् में डयच् प्रत्यय लगाने से झय शब्द बनता है। झषति इति झया। झषति का अर्थ है संवरण करना अर्थात समेटना। झष्+ड अर्थात झ अर्थात समेटने वाली/हिंसा वाली। दुष्टों की हिंसा करने वाली अर्थात उन्हें खाने वाली। निर्झर (झरना) के रूप में गति करने वाली अर्थात बहने वाली अर्थात निरन्तर प्रवाहशील। चेतना या ज्ञानरूपी झरने की तरह निरन्तर प्रवाहशील। निर्झर शब्द का झ अक्षर लिया, याति का अर्थ है गच्छति। झम् यमयति इति झया। झंझावात का नियन्त्रण करने वाली।

329. **झंझी** – झम् ऐसा शब्द करते हुए तेजी से बहने वाली वायु (अर्थात झंझ) की शक्ति स्वरूपा। झंझ शब्द की व्युत्पत्ति है – झम् इति अव्यक्त शब्देन झटति वेगेन वहति। झम् शब्द करते हुए वेग से बहने वाली वायु स्वरूपिणी। झमिति /अव्यक्त शब्दम् कृत्वा झटति + ङीष् प्रत्यय। झटति का अर्थ है तीव्र गति से बहना। झंझा में टाप् प्रत्यय है जब कि झंझी में ङीष् प्रत्यय है। धन की हथिनी स्वरूपा अर्थात विशाल धन वाली। झं का अर्थ वन/भुवन/भोग/धन /एकान्त है। झी का अर्थ एकाक्षरी कोश के अनुसार हाथी/जरा/हानि है। झम् धनम् तस्य झी (हस्तिनी) इति झंझी। झ का अर्थ झटति से शीघ्र वेग से बहना हुआ। दुष्टों या राक्षसों के धन या भोग की हानि स्वरूपा अर्थात हानि करने वाली।

330. **झम्पकरी** – छलांग लगाने वाली। युद्ध में देवी महिषासुर की पीठ पर कूदी थीं। छलांग लगाकर या कूदकर राक्षसों पर हमला करने वाली। इनके भक्त भी छलांग लगाते हैं अर्थात कहीं से कहीं पहुँच जाते हैं। इस प्रकार इस नाम का अर्थ भक्तों की आश्चर्यकारिणी उन्नति कराने वाली भी कर सकते हैं। झ का अर्थ तीव्र वेग

भी है। तीव्र वेग की रक्षा करने वाली, यह झपाकरी का अर्थ हुआ। तीव्र वेग से दुष्टों पर झपटने वाली यह अर्थ भी कर सकते हैं।

331. **झम्पा** – उछाल क्रिया स्वरूपा। उछाल अर्थात उन्नति स्वरूपा। समुद्र में लहरें उछलती, इस प्रकार की क्रिया स्वरूपा।

332. **झम्पत्रासनिवारिणी** – उछलने और कूदने से जो डर लगता है उस डर का निवारण करने वाली/दूर करने वाली। सिपाहियों को प्रशिक्षण में उछलना कूदना सिखाया जाता है।

333. **टंकारस्था** – टंकार शब्द में रहने वाली। धनुष का शब्द टंकार है। टम् इस शब्द में रहने वाली। देवी वाणी या ध्वनिस्वरूपा भी है।

334. **टंककरी** – जिसके हाथ में तलवार है। टंक का एक अर्थ तलवार भी होता है।

335. **टंकारकरणांहसा** – धनुष की टंकार करने से शत्रुओं को व्याकुल कर देने वाली। अम्हस् का अर्थ है व्याकुलता। टंकार + करण + अम्हस्।

336. **टंकारोट्टकृतष्ठीवा** – टंकार जन्य शब्द से जैसे शत्रुओं पर थूक रही है अर्थात उनको कुछ भी नहीं समझ रहीं। टंकार मात्र से शत्रुओं को तिरस्कृत करने वाली। उट्ट अर्थात उठा या पैदा होना। ष्ठीव अर्थात थूकना। कृतष्ठीवा अर्थात थूकने वाली। यहाँ थूकने का अर्थ है कुछ भी नहीं समझना अर्थात तिरस्कृत करना।

337. **डिण्डीरवसनावृता** – झाग की तरह फैले हुए वस्त्र से घिरी हुई अर्थात पहने हुए अर्थात धारण करने वाली। डिण्डीर का अर्थ है झाग जो फैलता है। आज की शब्दावली में इसे एक बड़ी फ्रॉक की तरह कह सकते हैं। जो ऊपर से नीचे एक ही वस्त्र की होती है ऊपर कम चौड़ी नीचे अधिक चौड़ी होती है तथा घुटने के नीचे तक जाती है एवं पैर दिखाई देते हैं। पहाड़ों में छोटी बच्चियाँ इसी तरह का वस्त्र पहनती हैं जिसे झगुली कहते हैं जो सम्भवतः झाग शब्द से ही बना है।

338. **डाकिनी** – दुष्टों को भय देने के लिए विचरण करने वाली। डाय अकति इति डाकिनी। डाय का अर्थ है भय के लिए अर्थात भय देने के लिए। भय देने के लिए चेष्टा करने वाली। ड का अर्थ है भय, अकति का अर्थ है चेष्टा करना, गति करना। जो साधना की आरम्भिक अवस्था में साधक को भय का दर्शन देती है। भय मूलाधार चक से सम्बन्धित है। साधक आरम्भिक अवस्था में साधना करता है तो मूलाधार चक्र में जब हलचल होती है तो भय का अनुभव होता है। इसे जिसने सहन कर लिया वह भय से पार हो जाता है अर्थात निर्भय हो जाता है। साधक को भय से पार कराने के लिए जो भय का अनुभव कराती है। जो भक्तों के विरोधियों या दुष्टों को भय देने के लिए चेष्टा करती है अर्थात भय देती है। आकाश में गति करने वालों की तरह गति करने वाली अर्थात् आकाश में विचरण करने वाली। डीङ् विहायसौ गतौ से डी धातु का अर्थ आकाश गमन करना होता है। डी धातु में ड प्रत्यय लगाने से ड शब्द बनेगा, जिसका अर्थ होगा आकाश में गमन करने वाला। अक् धातु का अर्थ होता है कुटिल या तिरछी गति करना। अकति इति अकः अर्थात् गति करने वाला गुण या शक्ति। आकाश में गति करने वालों की तरह तिरछी या कुटिल गति करने वाली शक्ति से युक्त। कुटिल गति का अर्थ दुष्टों के लिए कुटिल आचरण करने वाली भी कर सकते है अर्थात् शठे शाठ्यम् समाचरेत् जैसा आचरण करने वाली। डाक का अर्थ काली जी की सेविका भी है। काली की सेविकाओं से युक्त अर्थात् उन जैसी सेविकाओं से युक्त, यह डाकिनी का अर्थ हुआ।

339. **डामरी** – भय देकर शत्रुओं को भगाने वाली, यह अर्थ कर सकते हैं। ड का अर्थ है भय, वामन आप्टे शब्दकोश के अनुसार मरः का अर्थ है पलायन। भय देकर भगाने या मारने वाली। जिसके भय के कारण शत्रु/राक्षस भाग जाते हैं। डामर तन्त्र की अधिष्ठात्री देवी। डामर तन्त्र शिव द्वारा प्रतिपादित तन्त्र है। ड का

अर्थ शिव है। मृश् धातु से मर शब्द बनाने पर मर का अर्थ स्पर्शित अर्थात बनाया गया अर्थ निकलेगा। मृश् + ड प्रत्यय से म बना, उसमें र प्रत्यय लगाया तो मर शब्द बना। र प्रत्यय युक्त अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।

340. **डिण्डिमध्वनिनादिनी** – डिण्डिम इस प्रकार की ध्वनि करने वाली। अनाहत नाद करने वाली। देवी देवताओं के नाम में वाद्य यन्त्र प्रायः अनाहत नाद को सूचित करते हैं। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ शब्दब्रह्मस्वरूपा।

341. **डकारनिस्वनरूचि** – जिन्हें भयभीत करने वाला शब्द (शत्रुओं को डराने के लिए) पसन्द है। ड अर्थात भय, निस्वन अर्थात ध्वनि। डाकिनियों की आवाज या शब्द जिन्हें अच्छी लगती है। ड अर्थात भयकारक। भगवान शंकर की बातों में जिन्हें रूचि है। ड अर्थात वृषांक अर्थात शंकर। शिव शब्द अर्थात् मंगलकारी शब्द है पसन्द जिनको। ड का एक अर्थ शिव भी है।

342. **तपिनी** – जो स्वयं तप रही हैं अर्थात तपस्या कर रही हैं।

343. **तापिनी** – शत्रुओं /दुष्टों को दुखी (सन्तापित) करने वाली, कष्ट देने वाली।

344. **तरुणी** – जिसने किशोरावस्था को पार कर लिया है। 16 वर्ष से 32 वर्ष तक की अवस्था वाली। भावप्रकाश ग्रन्थ के अनुसार उक्त अवस्था तरुणावस्था कहलाती है। ओज उत्साह नवजीवन से भरी हुई। युवती स्वरूपा अर्थात जो 16 वर्ष से ऊपर है। सामान्यतः तरूणावस्था को ही युवावस्था कहते हैं। तरूणी का अर्थ तैरने वाली या पार करने वाली, पार कराने वाली (संसार सागर से) भी होता है। दरिद्रता से पार करा देने वाली। जिसने स्वयं भवसागर से पार कर लिया है अर्थात जिसके पास शक्ति है, कि भक्तों को भवसागर से पार करा दे।

345. **तुन्दिला** – जिसका पेट आगे निकला है। सारा ब्रहमाण्ड इनके उदर या पेट में है जिससे इनका पेट आगे निकला है।

346. **तुन्दा** – ब्रह्माण्ड स्वरूपा। ईश्वर के मोटे पेट ब्रह्माण्ड का प्रतीक होते हैं। तुन्द + आ, आ का एक अर्थ है देना। ब्रह्माण्ड को देने वाली अर्थात उसे अस्तित्व में लाने वाली। जो तोन्द की तरह है अर्थात राक्षसों को, दुष्टों को पचा जाती है अर्थात खा जाती है। तोन्द या पेट खाये हुए अन्न को पचा लेता है। उसी प्रकार देवी दुष्टों, असरों को पचा जाती हैं। मोटा पेट स्वरूपा अर्थात तोन्द भी वही है। तुन्दा (तोंद) अस्या अस्ति इति तुन्दः। तुन्द की स्त्रीलिंग तुन्दा है अर्थात मोटे पेट या तोंद वाली यह अर्थ भी निकलता है। मोटा पेट जिसका है वह है तुन्दा। जो पैसे वाले होते हैं उनका पेट प्रायः बाहर निकला होता है। धनी शत्रुओं को चोट पहुँचाने वाली या चोट करने वाली। तुन्दा + आ, आ का एक अर्थ है नाश करना। तुदति इति तुन्दा। तुदति का अर्थ है व्यथित करना या चोट पहुँचाना। तुन्दा का अर्थ भरा हुआ अर्थात ज्ञान, सम्पूर्ण ऐश्वर्य अर्थात षडैश्वर्य से भरी हुई, यह अर्थ कर सकते हैं। पेट की तरह अर्थात् उदारता गुण स्वरूपा। पेट भोजन को पचाकर उत्पन्न ऊर्जा को शरीर के सभी अंगों में बिना कुछ अपेक्षा किये हुये भेजता रहता है जो उदारता गुण का प्रतीक है। शब्द के आगे ''के समान'' लिखने पर अर्थ निकल आता है और हमें यह चिन्तन करना होता है कि किस गुण या कर्म में समानता है। तुन्द + आ, आ का एक अर्थ है देना। अपने भक्तों को उदारता गुण देने वाली अर्थात् उसकी वृद्धि करने वाली। पेट सभी चीजों को पचा लेता है जो गुप्त बातों को पचा लेने का प्रतीक है। गुप्त बातों को पचा लेने वाली अर्थात् किसी ने न कहने वाली अर्थात् अतिविश्वसनीया। सबको स्वीकार करने वाली। पेट में चाहे जो खा लो उसे स्वीकार कर लेता है। सहनशील अर्थात् Power of Tolerance मनुष्य दिनभर कुछ न कुछ खाता रहता है और पेट सबको सहन करता है। अत्यन्त उदार। पेट में जो भोजन पहुँचता है, उसे ऊर्जा या शक्ति के रूप में बदलकर वह बाकी अंगों में पहुँचा देता है जो उसकी उदारता का भी प्रतीक है। तुन्द+आ, आ का अर्थ है देना। इस प्रकार इस नाम का अर्थ उदारता का गुण देने वाली, सहनशीलता का गुण देने वाली कर सकते है।

347. **तामसी** – तमोगुणप्रधाना। देवी के सारे रूप एक ही शक्ति के रूप होते हैं। इस नाम के द्वारा काली से अभेद दिखाया गया है। तमोगुण वाली काली स्वरूपा। अन्धकारप्रधान रात्रि अर्थात अँधेरी रात्रिस्वरूपा। तामसी एक प्रकार की माया विद्या है, जिसे शिव ने निकुम्भिला यज्ञ से प्रसन्न होकर मेघनाथ को दी थी, उस तामसी नामक विद्या के स्वरूप वाली।

348. **तमःप्रिया** – तमोगुण है प्रिय जिनको (राक्षसों के वध के समय)। राक्षस लोगों को देवी तमोगुण से ही मारती हैं तथा यह तमोगुण भी इन्हीं से पैदा होता है। दुष्टों को मारने के लिए क्रोध, द्वैतभाव होना जरूरी है। इसी द्वैत भाव को पैदा करने के लिए देवी तमोगुण का आश्रय लेती हैं अर्थात तमोगुण उन्हें प्रिय है।

349. **ताम्रा** – ताम्र वर्ण वाली अर्थात तांबे का जैसा वर्ण होता है वैसे वर्ण वाली।

350. **ताम्रवती** – ताँबे से युक्त अर्थात ताँबे से बने पात्र विशेष को रखने वाली या व्यवहार में लाने वाली। इनके हवन आदि में ताम्र कुण्ड का प्रयोग होता है।

351. **तन्तु** – विस्तार वाली अर्थात जो विश्व के रूप में फैली हुई है। बीज वृक्ष के रूप में फैलता है। देवी भी संसार या ब्रह्माण्ड के रूप में फैली हुई है। तन् धातु का अर्थ है तनोति अर्थात फैलना। जगत का विस्तार करने वाली। तन् धातु में तुन् प्रत्यय लगाने से तन्तु बनेगा। तन् धातु का अर्थ है विस्तार करना। जगत का उपादान कारण। तन्तु से ही कपड़ा बनता है अतः तन्तु का अर्थ उपादान कारक है। तन्तु वह है जो बढ़ता है। बिन्दु से संसार पैदा हुआ अतः वह तन्तु है। मनुष्य पशु पक्षी सभी सन्तान के द्वारा अपने को बढ़ाते हैं अतः तन्तु हैं। ऐसा शब्द जो त से शुरु होता हो, एवं वस्तु का तु लेकर भी अन्य अर्थ बना सकते हैं। संसार रूपी तन्तु में विराजमान। तनोति तुदति च तन्तु। तन् धातु में क्विप् प्रत्यय लगाने से तन् शब्द ही बनेगा। तुदति से तु अक्षर ले लिया। भक्तों का विस्तार करने वाली एवं दुष्टों को पीड़ित करने वाली। विस्तार करना अर्थात समृद्ध करना।

352. **तुन्दिला** – गणेश की शक्ति क्योंकि तुन्दिल, भगवान गणेश का एक नाम है। भरी हुई अर्थात जो समस्त विद्याओं, शक्तियों, ऐश्वर्यों से भरी हुई हैं। जो सभी मनोरथों से भरी हुई हैं अर्थात उपासकों के पास मांगने के लिए उतना नहीं है जितना इनके पास देने के लिए है। वामन आप्टे कोष में तुन्दिल का एक अर्थ भरा हुआ बताया गया है।

353. **तुलसम्भवा** – साम्य भाव में उत्पन्न। जब व्यक्ति साम्य भाव में होता है अर्थात उसके लिए शत्रु, मित्र, शीत, ऊष्ण सब बराबर होते हैं तो यह प्रकट हो जाती हैं। व्यक्ति के द्वन्द्व से परे होने पर व्यक्ति को दर्शन दे देती हैं।

354. **तुलाकोटिसुवेगा** – पैरों में नूपुर पहने अत्यन्त तेज गति से चलने वाली। तुलाकोटि का अर्थ नूपुर या पायल भी होता है। तराजू के अग्र भाग के समान वेग वाली। तराजू के किनारों की तरह अतिशीघ्र पुण्य या पाप का फल देने वाली। तराजू के एक पलड़े में जैसे ही कुछ वस्तु रखी जाती है, दूसरा पलड़ा बिना देर किए हुए तत्काल ऊपर हो जाता है। तराजू के किनारों में जो वेग है उस वेग वाली अर्थात किसी को कम या ज्यादा नहीं देती। जो जैसी भक्ति करेगा, कर्म करेगा वैसा फल मिलेगा उसके लिए ब्राह्मण, वैश्य सब बराबर हैं। पहले एक ही पल्ले वाले तराजू होते थे जो डण्डी में ही लगा होता था। न्याय करने वाले करोड़ों लोगों में सबसे आगे रहने वाली अर्थात इनसे अच्छा न्याय कोई नहीं करता। तुला शब्द न्याय का प्रतीक है।

355. **तुल्यकामा** – सबके लिए तुल्य (समान) कामना करने वाली, सबका भला हो यह कामना वाली। समान रूप से जिसकी कामना होती है। सब चाहते हैं कि देवी मेरे ऊपर कृपा करें। औचित्यपूर्ण मनोरथों वाली या औचित्य रूपी मनोरथों वाली। उच्चावच नहीं है। तुलया मितम्, जो तराजू में बराबर है वह तुल्य है। जिसका काम सबसे लिए बराबर हो अर्थात जो समान रूप से मनोरथों को पूरा करती है।

356. **तुलाश्रया** – तुला का आश्रय लेती है अर्थात जो सबको बराबर देती हैं, कम या ज्यादा नहीं देती हैं। तुला की भी यह आधार है। तुला शब्द न्याय या विवेक का प्रतीक है। जिसने न्याय या विवेक का आश्रय, सहारा ले रखा हो। समास में बाद में आश्रय शब्द हो तो उसका अर्थ होता है सहारा लेने वाला। व्यापारियों या सौदागरों ने जिसका आश्रय ले रखा हो। तुला व्यापारी का प्रतीक है। जो सँभाले हुए है ऐसा आश्रय वाली। तुला सभी को सँभालती है।

357. **तुदिनी** – दुखी करने वाली (दुराचारियों को)। तुद् व्यथने धातु होती है जो दुष्टों को व्यथित करे, पीड़ित करे वह तुदिनी है। तुदा का अर्थ बैलगाड़ी में लगी हुई कील होती है और कील से बैल को चुभाया जाता है।

358. **तुनिनी** – विस्तार करने वाली या विस्तार को प्राप्त होने वाली। जो जगत का विस्तार करती है तन् + उनिन् प्रत्यय। भेद या विरोध रहित अवस्था में ले जाने वाली। एकाक्षरी कोष में तु का अर्थ भेद, विरोध, वितर्क, प्रश्न बताया गया है। नि का अर्थ है निषेध। नी का अर्थ है नेतृ अर्थात ले जाने वाला। विलक्षण या सर्वनिवृत्ति वाली मोक्षावस्था को ले जाने वाली या इस हेतु मार्ग दर्शन करने वाली। तु का एक अर्थ है विलक्षण या सर्वनिवृत्ति, नि का अर्थ है मोक्ष, नी का अर्थ है नेतृ। नेतृ का अर्थ है ले जाने वाला या मार्ग दर्शन करने वाला। ध्यान के नियम को लाने वाली अर्थात ध्यान सम्बन्धी नियम और सिद्धान्त बताने वाली। ध्यान के नियम को लाने वाली अर्थात उसे धारण करने वाली या पालन करने वाली। नयति, नाययति दोनों शब्द ले सकते है। नाययति से नी बनाने पर अर्थ होगा ध्यान के नियम को पहुँचाने वाली अर्थात लोगों को बताने वाली। एकाक्षरी कोश में तु का अर्थ ध्यान दिया गया है। एक नियम है कि किसी शब्द का कोई अक्षर लेने से उस शब्द का बोध हो जाता है। प्रायः पहले अक्षर लेते है और आवश्यकता पड़ने पर बीच का या अन्तिम अक्षर भी ले लेते है। नियम का नि अक्षर ले लिया। नी धातु में ड प्रत्यय लगाने से न शब्द बनेगा जो स्त्रीलिंग में नी है और जिसका अर्थ है लाने वाला या लाने वाली। तु से तुर (शीघ्र), तुलसी आदि शब्द भी ले सकते है। नि से निष्ठा शब्द ले सकते है जिसका एक अर्थ है एकाग्रता, तन्मयता। ध्यान में एकाग्रता या तन्मयता लाने वाली। एकाक्षरी कोश में तु का अर्थ क्रोध, नि का अर्थ बन्धन, दुर्गति, उपसर्ग (उपद्रव) दिया गया है। अपनयति से न या नी ले सकते है जिसका अर्थ है दूर हटाने वाली। क्रोध एवं बन्धन को हटाने वाली। तुन नामक एक वृक्ष होता है जो लाल रंग का होता है तथा जिसकी लकड़िया बहुत कठोर होती है। तुन में णिनि प्रत्यय लगाने से तुनिन् शब्द बनेगा जो स्त्रीलिंग एक वचन में तुनिनी हो जाएगा। तुन वृक्ष के गुणों से युक्त अर्थात लाल रंग वाली एवं अत्यन्त दृढ़। तात्पर्य हुआ रजोगुणी प्रकृति वाली, शत्रुओं के प्रति अत्यन्त कठोर। तुण् धातु का अर्थ झुकाना, टेढ़ा करना होता है। शत्रुओं को नीचे झुकाने वाली अर्थात उनका अधिकार छीनने वाली। तुनति संकोचयति इति तुनः, जो मल को दृढ़ बनाती है अर्थात दस्त समाप्त करती है वह औषधि या वृक्ष तुन है। जो संकुचित करती है अर्थात द्रव को ठोस बना देती है अर्थात जल से पृथ्वी बना देती है। देवी के पक्ष में अर्थ कर सकते है जो पंचभूतों को अच्छी प्रकार से मिला देती है जिससे सृष्टि उत्पन्न होती है। जो शत्रुओं या अहंकारियों को संकुचित कर देती है अर्थात निम्न बना देती है। जगत का विस्तार करने वाली। तन् धातु में डुनिन् प्रत्यय लगाने से तुनिन् शब्द बनेगा। जो स्त्रीलिंग में तुनिनी हो जाएगा।

359. **तुम्बा** – वीणा जैसा वाद्य है तुम्बा। तुम्बा के स्वरूप में है जो अर्थात वाद्य भी देवी ही हैं। सब कुछ देवी या ऊर्जा या शक्ति के रूप हैं चाहे व्यक्ति हो या वस्तु हो या गुण हो। दाहकता गुण है पर हम कहते हैं यह शक्ति है अग्नि की। शक्ति का अर्थ है देवी। वीणा भी ऊर्जा से बनी है, ऊर्जा है शक्ति या देवी अर्थात वीणा भी देवी ही है। तुम्बा वीणा जैसा यन्त्र है जिससे भगवती की स्तुति की जाती है। तुम्बा अस्या अस्ति इति तुम्बा (तुम्बा वीणा वाली अर्थात इसे धारण किए हुए)। अनाहत नाद पैदा करने वाली। देवी देवता के वाद्य अनाहत नाद के सूचक हैं।

360. **तुल्यकाला** – समान समय वाली अर्थात केवल वर्तमान में रहने वाली। इनके लिए भूतकाल या भविष्यकाल नहीं होता। सदैव एक ही काल है उसके लिए, न सूर्योदय न सूर्यास्त। मनुष्यों के लिए ही सुबह, दोपहर, रात होती है। ऐसा सुना जाता है कि जब अंग्रेजों का राज पूरे विश्व में था तो कभी सूर्यास्त नहीं होता था। जिस समय देवकी के गर्भ से भगवान कृष्ण पैदा हुए थे, उसी समय यशोदा के गर्भ से योगमाया प्रकट हुई थीं, हरिवंश पुराण ऐसा उल्लेख है। समान समय में पैदा होने वाली योगमाया स्वरूपा ऐसा भी तुल्यकाला नाम का अर्थ हो सकता है। औचित्यपूर्ण काल स्वरूपा अर्थात समय की पक्की। जब जो काम करना है उसी समय करने वाली अर्थात उचित समय पर करने वाली।

361. **तुलाश्रया** – तुला राशि का आश्रय लेने वाले शुक्र ग्रह की शक्ति स्वरूपा। तुला (अर्थात न्याय) का आश्रय अर्थात न्याय गुण इनसे पैदा हुआ या न्यायगुण इनमें स्थित है। तुला इनका आश्रय लेती है। तुला जिसका आश्रय लेकर समान रूप से बांटने या देने का काम करती है।

362. **तुमुला** – शोरस्वरूपिणी। ऊँचा स्वर भी यही हैं। देवी सरस्वती रूप हैं अर्थात स्वर का सीधा सम्बन्ध इनसे है। भीषण, उग्र। अनेक प्रकार के अव्यक्त शब्दों का समूह तुमुला कहलाता है। विभिन्न वाद्य बजने पर उनका समूह तुमुला कहलाता है। शब्दकोष में सेना के या युद्ध में होने वाले शोरगुल को तुमुल कहा है। इसे आध्यात्मिक पक्ष में अनाहत नाद कह सकते है। कुण्डलिनी शक्ति जब ऊपर उठती है तो कर्म संस्कार के अनुसार लोगों को अलग–अलग वाद्यों जैसी ध्वनि सुनाई पड़ती है। उन सभी ध्वनियों को सामूहिक रूप में तुमुल कह सकते है। मैं आत्मा हूँ, मैं शुद्ध–बुद्ध–मुक्त हूँ, मैं सत्–चित्–आनन्द स्वरूप हूँ, ऐसा गुंजार करने वाली अर्थात भक्तों को उनके वास्तविक आत्मस्वरूप का बोध कराने वाली।

363. **तुलजा** – तुल नामक देश में उत्पन्न होने वाली। ध्यान भूमि या विलक्षण भूमि से पैदा हुई अर्थात ध्यान करने से ये प्रकट हो जाती हैं/इनका साक्षात्कार हो जाता है। एकाक्षरी कोश के अनुसार तु का अर्थ ध्यान या विलक्षण है एवं ल का अर्थ है भूमि। जो समान रूप से प्रकट हो जाती हैं अर्थात प्रकट होने में भेदभाव नहीं करती हैं कि कौन ब्राह्मण है, कौन क्षत्रिय है, कौन वैश्य है। तुल नामक स्थान में उत्पन्न दुर्गा देवी। महाराष्ट्र में तुल नामक स्थान है। तुल अर्थात तुला अर्थात सादृश्य अर्थात समभाव। समभाव आने पर प्रकट होने वाली। समत्वम् योग उच्यते कहा गया है। मराठी मान्यता है कि त्वरिता शब्द ही तुलजा हो गया। त्वरिता का अर्थ है शीघ्र ही। भक्त की प्रार्थना पर शीघ्र ही जन्म लेने वाली अर्थात प्रकट होने वाली। तुल् उन्माने धातु होती है जिसमें अच् प्रत्यय लगाने से तुल शब्द बनता है। तुल का अर्थ हुआ तोलने वाला अर्थात न्याय करने वाला। इस प्रकार तुलजा का अर्थ हुआ न्याय करने वाले के यहाँ अर्थात धर्म के रास्ते पर चलने वालों के यहाँ प्रकट हो जाने वाली। कभी कभी संस्कृत में पूर्व अक्षर का लोप हो जाता है अर्थात हम तुलजा को अतुलजा शब्द ले सकते हैं। इस प्रकार तुलजा का अर्थ हुआ ईश्वर की अनिर्वचनीय शक्ति से उत्पन्न। जिससे अतुल धन पैदा होता है अर्थात भक्तों को अतुल धन देने वाली। (यदि तुलना नाम है तो अर्थ होगा– बराबरी का नाश करने वाली अर्थात अतुलनीया। तुलना+ आ, आ का अर्थ है नाश करना एवं तुलना का अर्थ है सादृश्य। मापने की क्रिया स्वरूपा। गुण दोषों का मूल्याकंन करने की क्रियास्वरूपा। एकाक्षरी कोष में तु का अर्थ ध्यान दिया गया है एवं ल का अर्थ भूमि, क्रिया दिया गया है। नयति से न शब्दाक्षर बन सकता है। ध्यान क्रिया की ओर ले जाने वाली या ध्यान भूमि की ओर ले जाने वाली।)

364. **तुल्या** – सन्तुलित व्यवहार वाली। औचित्य स्वरूपा। उचित भी वही है जो ठीक – ठीक हो, कम ज्यादा नहीं। जो तौलने योग्य है वह है तुल्य। सब पर समान दृष्टि रखने वाली। सबके लिए समान। सूर्य सबको समान प्रकाश देता है वह यह नहीं करता कि गन्दा नाला है या दुष्ट व्यक्ति आया तो प्रकाश को छिपा ले।

365. **तुलादानकरी** – तौलकर देने वाली अर्थात जितना पुण्य किया उतना फल दे दिया। अपने भार के बराबर तौलकर दान करना तुलादान है। तुला दान की विधि करने वाली।

366. **तुल्यवेगा** – समान वेग वाली। वेग का अर्थ है तीव्र या अधिक गति। प्रकृति देवी ही हैं। वायु, नदी सभी देवी ही हैं। सब कुछ ऊर्जा या शक्ति का बना है और देवी का अर्थ है ऊर्जा या शक्ति। प्राणी, वस्तु, समय, गुण, सम्बन्ध जिस किसी भी चीज का अस्तित्व है वह ऊर्जा या शक्ति से बना होने के कारण देवी रूप ही है। वायु का/नदी का वेग समान होता है। वह यह नहीं देखता कि यह ब्राह्मण का घर है या आस्तिक नास्तिक का घर है। जो वेग में तुल्य है अर्थात भेदभाव नहीं करने वाली है।

367. **तुल्यगति** – समान गति या ज्ञान वाली। गति का अर्थ ज्ञान भी होता है। सबको समान ज्ञान बांटने वाली/परम पद देने वाली/ऊपर के लोक देने वाली। मेहनत के अनुरूप व्यक्ति जिस लोक का हकदार है वह दे देती हैं, भेदभाव नहीं करती। सदैव समान गति वाली अर्थात् समान व्यवहार करने वाली। समान दृष्टि वाली अर्थात् समभाव वाली। समान रूप से देखने वाली अर्थात् समत्व भाव वाली। स्पन्दनरूपी समान गति वाली। विभिन्न कणों में या परमाणुओं के घटक कणों में समान गति करने वाली।

368. **तुलाकोटिनिनादिनी** – तुला के अग्र भाग में जो निनाद (अव्यक्त शब्द) होता उस अव्यक्त शब्द रूपा या वैसा शब्द करने वाली। तुला में यदि घुँघरू लगी तभी आवाज करेगी। वस्तुओं के गिरने से या हलचल करने से जो आवाज होती वह अव्यक्त शब्द कहलाता है, जिसका कोई अर्थ नहीं होता अर्थात उसके अनुरूप कोई वस्तु नहीं होती। नुपूर पहनकर शब्द करने वाली। चलते वक्त नुपूर में बनी होती है। नुपूर के किनारे एवं तराजू के किनारे एक जैसे होते हैं। अनाहत नाद करने वाली। देवी के नामों में जो आभूषणों या वाद्यों की आवाज होती है, वह अनाहत नाद के प्रतीक हैं। इस नाम का अर्थ हुआ देवी शब्द ब्रह्म स्वरूपा हैं। मनुष्यों को प्रेरणा देने वाली कि अपने भीतर के अनाहत नाद को सुनने का प्रयास करो जिससे शब्द ब्रहम् से एक हो सको और सत्चित आनन्द की अवस्था में आ सको। तराजू के अग्र भाग के तुल्य शब्द करने वाली। न्याय के प्रकारों में शब्द करने वाली अर्थात न्याय के प्रकारों को बताने वाली। तुला न्याय का प्रतीक है। कोटि अर्थात प्रकार।

369. **ताम्रोष्ठा** – ताम्र वर्ण के ओष्ठ है जिसके अर्थात लाल ओठों वाली।

370. **ताम्रपर्णी** – ताम्रपर्णी अर्थात लाल पत्तियों को अपने पास रखने वाली अर्थात लाल पत्तों वाली। ताम्रपर्णी नदी की तरह मालामाल करने वाली अर्थात मोती बरसाने वाली। ताम्रपर्णी नदी में मोती अधिक संख्या में पाये जाते हैं।

371. **तमःसंक्षोभकारिणी** – अन्धकार को सम्यक् रूप से क्षुभित करने वाली अर्थात विनाश करने वाली। अन्धकार से यहाँ तात्पर्य अज्ञान/लौकिक दरिद्रता/ अकर्मण्यता आदि से है। क्षोभण अर्थात पूर्व अवस्था का हटना अर्थात पूर्व अवस्था का नाश, अतः संक्षोभ का अर्थ नाश ले सकते हैं।

372. **त्वरिता** – शीघ्र ही जाने वाली या पहुँचने वाली। भक्तों की पुकार सुनकर तुरन्त उन तक पहुँच जाती है। त्वराम् इता इति त्वरिता। देवी में परस्पर विरोधी गुण देखकर आश्चर्य नहीं करना चाहिए क्योंकि देवी एक ही समय में इस प्रकार के अनेक रूप धारण कर सकती है जो एक दूसरे के विरोधी है। भक्तों के पास शीघ्र या तुरन्त पहुँचने वाली। भक्त ने याद किया, देवी उनके पास तुरन्त पहुँच गयीं।

373. **त्वरहा** – जल्दबाजी को मारती है अर्थात् जल्दबाजी नहीं करती है अर्थात् धैर्य गुण से युक्त है। त्वराम् हन्ति इति त्वरहा। जल्दबाजी का त्याग करने वाली अर्थात जल्दबाजी न करने वाली। भक्तों से जल्दबाजी न कराने वाली। ओहाक् त्यागे धातु से हा शब्दाक्षर बना। ऐसी जल्दबाजी जहाँ काम बिगड़ जाता है उससे तात्पर्य है।

374. **तीरा** – बाण स्वरूपा अर्थात गतिज ऊजा स्वरूपा। बाण से युक्त अर्थात गतिज ऊर्जा या ऊर्जा से युक्त। पास या निकट, भक्तों या शुद्ध हृदय वालों के पास रहती हैं। तीर का अर्थ बाण, समीप दिया गया है। मझधार में फँसे लोगों के लिए किनारा स्वरूपा। तीर का अर्थ है किनारा। आपद् समुद्र में उन्मज्जन करने वालों का किनारा स्वरूपा अर्थात सहारा। नदी या समुद्र में यदि कोई डूब रहा है तो किनारा मिलने पर वह बच जाता है अर्थात किनारा सहारा का सूचक है। किनारा पाने पर व्यक्ति भयमुक्त हो जाता है।

375. **तारकेशी** – ओम् या ऊँ रां रामाय नमः की ईश्वरी अर्थात ओम् इन्हीं से पैदा हुआ। ऊँ या ओम् रूपी ईश्वरी अर्थात ऐसी ईश्वरी जिसका स्वरूप ऊँ है। तारक मन्त्र का अर्थ है ऊँ या ऊँ रां रामाय नमः।

376. **तमालिनी** – तमाल वृक्ष की तरह श्याम वर्ण वाली। तमाल वृक्षस्वरूपिणी। वृक्ष भी देवी ही हैं। हर चीज ऊर्जा या शक्ति की बनी होती है। वृक्ष भी ऊर्जा या शक्ति का बना है। ऊर्जा या शक्ति ही देवी हैं।

377. **तमोदानवती** – तम का खण्डन या शोधन करने वाली। दान शब्द का अर्थ केवल देना नहीं होता। दो अवखण्डने धातु से दा का अर्थ खण्डन करना होता है। दान का अर्थ खण्डित करना भी होता है यदि वह दो अवखण्डने धातु से बना हो। दाप् धातु से भी दान शब्द बन सकता है। दाप् शब्द का अर्थ शोधन करना। अन्धकार या तमोगुण को खंडित करने वाली।

378. **ताम्रतालस्थानवती** – ताम्रवर्ण के ताल वृक्ष के स्थान से युक्त अर्थात उस स्थान में रहती जहाँ ताम्र वर्ण के ताल वृक्ष हैं। ताँबे से निर्मित स्थान (अर्थात सिंहासन) पर स्थित होने वाली। तल ही ताल हो जाता है अतः तल का अर्थ स्थान किया गया।

379. **तमी** – तम वाली अर्थात रात्रिस्वरूपिणी। संसार में आसक्त लोगों के लिए रात्रि स्वरूपा या अन्धकार स्वरूपा। अन्धकार का अर्थ है विनाशिका। संसार में अनासक्त लोगों के लिए प्रकाशमान है।

380. **तामसी** – क्रुद्ध (दुष्टों पर)। तामसी नदी स्वरूपा। तमोगुण विशिष्टा अर्थात तमोगुण से युक्त। तामस का अर्थ है क्रोध या हिंसा करने की प्रवृत्ति। तामसी या आसुरी विद्या स्वरूपा। एक प्रकार की माया विद्या जिसे शिव ने निकुम्भला यज्ञ से प्रसन्न होकर मेघनाद को दी थी, उसका नाम तामसी विद्या है। आसुरी विद्याऐं भी ये ही हैं। शुक्राचार्य के पास आसुरी विद्याऐं भी थीं। तमोगुण केवल खराब गुण नहीं होता है बल्कि उसकी उपयोगिता भी होती है। जडत्व या गुरूत्वाकर्षण तामसी गुण हैं।

381. **तमिस्रा** – प्रलय काल में अतिशय अन्धकार रूप में होने वाली। चारो ओर अन्धकार ही अन्धकार तमोगुण है। आस पास कुछ भी नहीं दिखाई देता ऐसी रात्रि स्वरूपा। अकर्मण्य लोगों के लिए अन्धकार स्वरूपा। अकर्मण्य होंगे लोग तो उनकी रात्रि अवश्य होगी अर्थात वे दरिद्र होंगे/विद्याहीन होंगे। रात्रि संहारिका या विनाशक शक्ति का प्रतीक है क्योंकि वह दिन का नाश करती है।

382. **तीव्रा** – शीघ्रगामी। फुर्तीला। कार्यों को चीजों को बहुत शीघ्रता से करने वाली। राक्षसों पर शीघ्रता से झपटने वाली। तीव्रा स्वर के रूप में अर्थात जो कुछ ऊँचा और अपने स्थान में बढ़ा हुआ है। तीव्र (अर्थात महादेव) की शक्ति स्वरूपा। जो किसी कार्य को बहुत ऊर्जा, उत्साह एवं एकाग्रता से करता हो तथा जिस कार्य को करता हो या जिस व्यक्ति के लिए करता हो उसमें भावनात्मक रूप से बहुत जुड़ा हो। वेगवती अर्थात तुरन्त फल देने वाली जैसा कि भगवान शंकर, आशुतोष हैं।

383. **तीव्रपराक्रमा** – अत्यधिक पराक्रम वाली। उनका पराक्रम तीव्र है अर्थात तुरन्त प्रभाव या फल देता है। धूम्रलोचन दैत्य को देवी ने देखते ही मार दिया था।

384. **तटस्था** – पक्षपात रहित। शिव में स्थित। तट का एक अर्थ शिव भी हैं। शिव के साथ स्थित।

385. **तिलतैलाक्ता** – तिल के तेल से भीगी हुई अर्थात तिल का तेल लगाती हैं।

386. **तरुणी** – घी कुआर/ग्वार पाठा की तरह रोग निवारिणी। गुलाब सेवती औषधि वृक्ष के समान सर्व रोग निवारिका अर्थात सभी कष्टों को दूर करने वाली। गुलाब सेवती औषधि वृक्ष, गुलाब की तरह सफेद होता है और वात, पित्त, कफ तीनों रोगों को दूर करता है। तरूणी का अर्थ घी कुआर, ग्वार पाठा, गुलाब सेवती औषधि वृक्ष होता है। सदैव तरुणावस्था में रहने वाली अतः आकर्षक एवं मनोहारी। तरुणी का अर्थ है कोमल soft, tender।

387. **तपनद्युति** – सूर्य के समान कान्ति वाली अर्थात प्रकाश वाली।

388. **तिलोत्तमा** – जिनके शरीर का एक–एक तिल अर्थात कण उत्तम अर्थात सुन्दर है। तिलोत्तमा नामक अप्सरा के बारे में कहा जाता है कि संसार की सभी वस्तुओं के उत्तम कणों से उनकी निर्मिति हुई थी। तिलोत्तमा नामक अप्सरा के समान सुन्दर आकृति वाली। प्रत्येक सुन्दर वस्तु से एक एक कण (तिल) निकाला गया, जिससे तिलोत्मा की रचना हुई। तिल में जो उत्तम गुण हैं जैसे चिकनाई, शक्तिमत्ता, सान्द्रता, ऊष्णता आदि गुणों को लिए हुए अर्थात इन गुणों से युक्त। जिनका एक एक कण (तिल) उत्तम है अर्थात बहुत सुन्दर है अर्थात सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार जैसा होना चाहिए वैसा ही है।

389. **तिलकृत्** – जिन्होंने तिल नामक वृक्ष को बनाया। अपने चेहरे पर तिल का चिन्ह बनाने वाली (सुन्दरता बढ़ाने के लिए makeup करने के समान)। तिल की रचना करने वाली। तिल का अर्थ है रस। तिल की तरह सुन्दर और स्नेह से आढ्य है। उनके चिबुक पर तिल शोभित है।

390. **तारकाधीशशेखरा** – चन्द्रमा को सिर पर मुकुट की तरह धारण करने वाली। शेखर का अर्थ है मस्तक, सिर।

391. **तिलपुष्पप्रिया** – तिल पुष्प जिन्हें प्रिय है या पसन्द हैं।

392. **तारा** – भक्तों को भवसागर से तारने वाली अर्थात पार करा देने वाली। उपासकों को तीनों दुखों से पार करा देने वाली अर्थात् छुटकारा दिलाने वाली। आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक ये तीन प्रकार के दुख होते हैं। स्वयं प्रकाश स्वरूपा। तारे स्वयं में चमकते हैं जबकि ग्रह सूर्य से प्रकाशित होते हैं।

393. **तारकेशकुटुम्बिनी** – भगवान शंकर की पत्नी। तारक (शिव) ही हैं ईश अर्थात तारकेश का अर्थ है शिव भगवान। ताराणाम् समूहा इति तारकः, तारकेश अर्थात चन्द्रमा। तारक असुर पर शासन किया जिसने अर्थात कार्तिकेय की पत्नी से अभेद है जिनका। ओम् अर्थात तारक मन्त्र।

394. **स्थाणुपत्नी** – शंकर जी की रक्षा करने वाली। पत्नी का अर्थ रक्षा करने वाली भी होता है। जब शंकर जी ने कालकूट विष पी लिया था तो देवी ने ही उनके प्राणों की रक्षा की थी। शंकर जी की पत्नी।

395. **स्थिरकरी** – (शंकर जी को) स्थिर करने वाली। शंकर जी पहले कटोरा लेकर घूमते थे पर जब घर में अन्नपूर्णा आयीं तो वह स्थिर हो गये। भक्तों को स्थिरता देने वाली (रोटी, कपड़ा, मकान, रोजगार देकर)। जड़, जंगम जगत को जो स्थिर किए हुए है। सूर्य चन्द्रमा आदि गिर नही जाते।

396. **स्थूलसम्पद्विवर्धिनी** – स्थूल सम्पत्ति अर्थात भौतिक सम्पदाओं को विशेष रूप से बढ़ाने वाली। स्थूल सम्पत्ति अर्थात मकान, जमीन, जायदाद, रोटी, कपड़ा, धन – धान्य जिसे इन्द्रियों से अनुभव किया जा सकता है अर्थात आँख से देख सकते, हाथ से छू सकते आदि।

397. **स्थिति** – ठहरने का स्थान या निवास स्थान। सभी का, पूरे ब्रह्माण्ड का निवास स्थान देवी ही हैं। शब्दकोष में स्थिति का एक अर्थ निवास स्थान या घर भी दिया गया है। स्थिति या ठहराव स्वरूपा। निरन्तर अस्तित्व है जिनका। जगत के continued existence स्वरूप वाली। एक अवस्था में बनी रहती हैं। अपने भक्तों

की स्थिति Settle करने वाली (रोजगार देकर, घर बसाकर)। स्थूल भौतिक जगत के स्वरूप वाली। स्थूल भौतिक जगत या प्रपंच देवी का स्थिति स्वरूप है। ईश्वर की पालन शक्ति स्वरूपा। स्थिति शक्ति अर्थात पालन शक्ति। वह शक्ति जो पदार्थों में प्रवेश कर कुछ समय के लिए उनका अस्तित्व बना कर रखती है।

398. **स्थैर्यस्थविष्ठायै** – स्थिरता से स्थित रहने वालों में जो विशेष रूप से स्थित है। स्थिरता का अर्थ है स्थायित्व, धीरता, निश्चलता, दृढ़ता। कहने का तात्पर्य है धीर में सादर प्रकट होती हैं। स्थिरता और स्थूलता वाली। स्थिर का भाव है स्थैर्य। हम आज जहाँ पर हैं उससे नीचे न गिरे, यह स्थैर्य है।

399. **स्थपतिः** – प्रत्येक घर के अधिपति देवता के स्वरूप वाली या ऐसे देवता से अभेद है जिनका। हर घर का एक अधिपति देवता होता है जिसे वास्तोष्पति देवता कहते हैं। प्रत्येक वास्तु (निवास स्थान) की स्वामिनी। वास्तुकार अर्थात समस्त विश्व की रचना करने वाली। संसार या चराचर जगत, जो स्थिर या विराजमान है, उनकी स्वामिनी। वास्तु शास्त्र की प्रवर्तक या आचार्या। वास्तुशास्त्र इन्हीं से चला। वास्तुशास्त्र की विशेषज्ञ मिस्त्री। वास्तुशास्त्री। तिष्ठति इति स्थः। जो स्थ है अर्थात कभी नष्ट नहीं होते, बने रहते है अर्थात शिव की स्वामिनी।

400. **स्थूलविग्रहा** – स्थूल विग्रह या शरीर वाली। जिन्हें आँखों से देखा जा सकता या पाँचों इन्द्रियों से अनुभव किया जा सकता है वह स्थूल स्वरूप होता है। मूर्तियों के स्वरूप वाली। मूर्तियाँ स्थूल होती हैं वह भी देवी का एक रूप माना गया है।

401. **स्थूलस्थूलवती** – स्थूल से भी स्थूल अर्थात बड़ी से भी बड़ी। आप जितने भी बड़ी चीजों की कल्पना कर सकते हैं जैसे पर्वत में हिमालय, जानवर में हाथी, वृक्ष में बरगद उनसे भी बड़ी।

402. **स्थाली** – संसार की बटलोई स्वरूपा अर्थात सारा संसार इनके भीतर है और इनके भीतर रहते हुए पक रहा है। बटलोई पकाने के लिए प्रयुक्त होती है। संसार की बटलोई स्वरूपा है। संसार की स्थाली स्वरूपा। सारा संसार इसी में पक रहा है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड इसके अन्दर पक रहा है। ब्रह्माण्ड के लिए स्थाली स्वरूपा। संसार की बटलोई या पतीली स्वरूपा।

403. **स्थलसंगविवर्धिनी** – स्थल (नगरों/गाँवों) में रहने वाले लोगों के बीच आपसी मेल–मिलाप बढ़ाने वाली, आपसी प्रेम बढ़ाने वाली, तभी लोग मिल – जुलकर रहते हैं। स्थल का एक अर्थ है कृत्रिम भूमि अर्थात नगर या गाँव, संग का अर्थ है मेल। स्थल के सम्यक् ज्ञान को बढ़ाने वाली अर्थात स्थलवासियों के सम्यक् ज्ञान को बढ़ाने वाली। संग अर्थात सम्यक् गति। गति का एक अर्थ ज्ञान भी होता है। स्थल में सम्यक् ज्ञान को बढ़ाने वाली अर्थात विशेष वृद्धि करने वाली। स्थल में सम्यक् गमन। क्षेत्रों में आसक्ति बढ़ा देने वाली अर्थात विभिन्न विषयों के लिए चाहत बढ़ा देती है। स्थल अर्थात क्षेत्र, संघ अर्थात आसक्ति।

404. **दण्डिनी** – दण्ड (डण्डा) से युक्त अर्थात दण्ड (डण्डा) को धारण करने वाली (दुष्टों, असुरों, मूर्खों को दण्डित करने के लिए)। यमदण्ड (जो पीटता है) को धारण करने वाली।

405. **दन्तिनी** – दाँतों वाली अर्थात तीखे दाँतों वाली (जो असुर पीड़ित करते उनको दाँतों से काटती हैं)। दन्त में इनि प्रत्यय लगाने से दन्तिन् शब्द बनता है जो पुल्लिंग एक वचन में दन्ती तथा स्त्रीलिंग में दन्तिनी हो जाता है। (यदि दन्तनी शब्द है तो दन्त में नी नयति धातु जोड़ने पर यह शब्द बनेगा। नयति का अर्थ है ले जाना, प्रयुक्त करना या काम में लगाना। दाँतों को शत्रुओं तक ले जाने वाली अर्थात दाँतों से शत्रुओं को दूर पहुँचाने वाली अर्थात अपने दाँतों से शत्रुओं का पकड़कर फेंक देने वाली। अपने दाँतों का काम में लगाने वाली अर्थात दुष्ट असुरों पर अपने दाँतों से आघात करने वाली।)

406. **दामा** – डोरी स्वरूपा या रस्सी स्वरूपा (यह वह डोरी है जिससे सारा संसार बँधा है)। दाम का अर्थ रस्सी या डोरी है। भगवान कृष्ण को दामोदर इसीलिए कहते हैं क्योंकि यशोदा माँ ने उनके पेट पर रस्सी बाँधी थी। पहने वस्त्र का किनारा या पल्ला दाम कहलाता है।

407. **दरिद्रा** – खराब गुणों की गरीबी वाली अर्थात इन गुणों का अभाव है जिनमें। पूर्व पदलोप या उत्तर पदलोप से भी शब्द बनते हैं। लक्ष्मी की बड़ी बहन दरिद्रा से अभेद है जिनका। अधर्मियों को दरिद्र बनाने वाली।

408. **दीनवत्सला** – दीनों पर अपनी सन्तान की तरह प्रेम करने वाली। वत्सला अर्थात प्रेम करने वाली, प्रायः माता या पिता अपनी सन्तान से जो प्रेम करते हैं उसे वात्सल्य कहते हैं। दीनों पर दया करने वाली क्योंकि दीन ही उन्हें स्मरण करते हैं। दीन या दरिद्र जिसे प्रिय हैं। देवी माँ दीनों की चिन्ता ज्यादा करती हैं। व्यवहार में भी हम देखते है कि माँ कमजोर बच्चों की ज्यादा चिन्ता करती हैं। दीन का अर्थ है जो भगवान के लिए तन मन धन सब तेरा यह भाव रखते हैं। दीन का अर्थ है जो अहंकार से गरीब है अर्थात अहंकार रहित हैं।

409. **देवा** – वरदान देने वाली (दानात् देवः अर्थात देने वाला देवता होता है)। सबसे अधिक कान्ति वाली (दिव् धातु का अर्थ कान्तियुक्त होना भी होता है)। देवताओं की शक्तिस्वरूपा। देव + आ, एकाक्षरी कोष में आ का एक अर्थ है शक्ति।

410. **देववधू** – महादेव की अर्धांगिनी। देवताओं की पत्नीरूपी अर्थात पालिका शक्ति अर्थात उनका पालन – पोषण करने वाली। पत्नी अर्थात पालिका शक्ति। प्रकाशमान या दीप्तिमान वधू की तरह दिखने वाली। देववधू (देवताओं की पत्नियाँ) में शक्ति या गुण के रूप में विराजमान। अप्सरा को भी देववधू कह सकते है। अप्सराओं में शक्ति, सौन्दर्य आदि रूप में विराजमान। अप्सराओं की तरह सुन्दर।

411. **दित्या** – देने वाले भाव को देने वाली अर्थात अपने भक्तों को दानी बनाने वाली। दिति + आ, दिति का अर्थ है देने का भाव, दा ददाति धातु में क्तिन् प्रत्यय लगाने से दिति शब्द बनता है जिसका अर्थ है देने का भाव, आ का एक अर्थ देना होता है। दैत्यों का नाश करने वाली। दित्य का एक अर्थ दैत्य भी है। दित्य + आ, आ का एक अर्थ नाश करना है। दिति शब्द खण्डित चेतना का प्रतीक है। दिति + आ, खण्डित चेतना को नष्ट करने वाली अर्थात अखण्ड चेतना के रूप में परिवर्तित करने वाली। सभी दोषों से रहित अर्थात शुद्ध। दाप् धातु का अर्थ है शोधन करना उसी से अवदाता शब्द बना। दाप् धातु से दिति शब्द बन सकता है। दिति + यत् प्रत्यय + टाप् प्रत्यय से दित्या शब्द बनेगा। दाप् में क्तिन् प्रत्यय लगाने से दिति शब्द बनता है। दित्या शब्द क्रिया नहीं है। जैसे प्रातरित्वा शब्द होता है वैसे ही दित्या शब्द बना।

412. **दामिनी** – विद्युत स्वरूपा या बिजली की तरह चमक वाली। बिजली की चमक में आँखें चुधियाँ जाती हैं तथा वह चमक क्षणिक होती है। बिजली की तरह अर्थात बिजली की तरह दुष्टों पर टूट पड़ने वाली।

413. **देवभूषणा** – देवताओं की अलंकार स्वरूपा। शक्ति से शून्य देवता शव की तरह होते हैं तथा शक्ति से ही देवता शोभित होते है। गृहिणी से ही घर शोभित होता है।

414. **दया** – उस भाव के रूप में जिसके कारण दूसरे का कष्ट देखकर स्वयं दुख की अनुभूति होती है और उस कष्ट को दूर करने की प्रेरणा आती है। सहानुभूति का भाव भी दया कहलाता है। शाक्त तन्त्र में लिखा है सहानुज्ञा दया। अमरकोष के अनुसार जिस भाव के कारण दूसरे की रक्षा की जाए वह भाव भी दया कहलाता है। दयते रक्ष्यते इति दया। वह गुण जिसके कारण दूसरों में सहानभूति दिखाई जाती है, दया कहलाता है, उस गुण के स्वरूप वाली। दक्ष प्रजापति की दया नामक कन्या से अभेद है जिनका। एकाक्षरीकोश से द का अर्थ लेकर, या धातु का प्रेरणार्थक अर्थ (पहुँचाता है या प्राप्त कराता है) लाकर अन्य अर्थ बनाये जा सकते हैं। (दया, करूणा एवं कृपा में अन्तर– दया+ विशालह्रदयता को करूणा कहते हैं। पीड़ित दुखी या असहाय व्यक्ति के दुख से

द्रवित होकर उसकी सहायता को तत्पर होना दया है। जो हमारा उपकार कर सकता है, ऐसा करने के लिए उसका तैयार रहना कृपा है। कृपा शब्द का प्रयोग शिष्टाचार के नाते भी किया जाता है जिसमें केवल सद्भावना और विनम्रता ही झलकती है। करूणा दया की निकटवर्ती स्थिति है परन्तु इसमें दया भावना के साथ साथ विशालह्रदयता भी लक्षित होती है। दया का पात्र दया करने वाले के वश में होता है और वह उसका जो चाहे कर सकता है। परन्तु करूणा करने वाला बहुत महान होता है और वह केवल कल्याण (सुख देना, आवश्यकताओं की पूर्ति करना, आध्यात्मिक उत्थान करना) ही कर सकता है, अतः वह श्रद्धा का पात्र है।)

415. **दमवती** – दम गुण से युक्त अर्थात जिसने बाह्य इन्द्रियों का दमन कर रखा है अर्थात वश में कर रखा अर्थात जितेन्द्रिय। भगवान विष्णु से युक्त अर्थात लक्ष्मीस्वरूपा। दम का एक अर्थ भगवाना विष्णु है। दम नामक महर्षि से युक्त अर्थात इन महर्षि ने जिनकी उपासना की थी। उपासना करना अर्थात युक्त होना। घर से युक्त अर्थात जिनका घर है। सारा ब्रह्माण्ड जिनका घर है या कैलाश को घर बानाए हुए हैं। दम का एक अर्थ घर भी है।

416. **दीनवत्सला** – बौद्धिक रूप से दीन अर्थात मन्द बुद्धिवाले पर स्नेह करने वाली, कृपा करने वाली। बाल्मीकि, कालीदास, पाणिनी ये सभी प्रारम्भिक अवस्था में दीन ही थे। दीन का अर्थ है तन–मन–धन सब तेरा भाव रखने वाले, अहंकार से दीन अर्थ भी कर सकते हैं। वत्सल का अर्थ है सन्तान की तरह प्रेम करने वाला, स्नेहयुक्त, कृपा करने वाला। दीन अर्थात गरीब, दरिद्र, निर्धन, कंगाल। ऐसे निर्धन जो देवी माँ को सच्चे दिल से पुकारते हैं, उनके प्रति पुत्रवत् स्नेह करने वाली।

417. **दाडिमस्तनी** – अनार के समान कठोर या तदाकृति स्तनों वाली। अनार के समान लाल वर्ण वाले स्तनों वाली। स्तन का तात्पर्य दूध पिलाने वाली अर्थात पालन पोषण करने वाली। जीवन के लिए आवश्यक खाद्य पदार्थो को उपलब्ध कराने वाली। अपने भक्तों को अनार के समान पौष्टिक एवे लाभदायक खाद्य–पदार्थो को उपलब्ध कराने वाली।

418. **देवमूर्तिकरा** – देवताओं के स्वरूप/आकृति को करने वाली अर्थात उनका निर्माण करने वाली। देवताओं के शरीर को उत्पन्न करने वाली अर्थात देवताओं को उत्पन्न करने वाली। मूर्ति का अर्थ है स्वरूप, आकृति। देवताओं की मूर्ति ही हैं कर (हाथ) जिसके। देवताओं की मूर्ति हैं किरणें/रश्मियाँ जिसकी। कर का अर्थ हाथ एवं किरण दोनों होता है। देवताओं की मूर्तियां बनाने वालों की शक्ति स्वरूपा। यहाँ शक्ति का अर्थ गुण, हुनर, कला से है। देवमूर्तिकर + आ, एकाक्षरी कोष में आ का एक अर्थ शक्ति दिया गया है। देवप्रतिमाओं को बनाने वालों को वरदान देने वाली। आ का एक अर्थ है देना।

419. **दैत्या** – दैत्यों का नाश करने वाली। दैत्य+आ, आ का एक अर्थ है नाश करना। दैत्यों की शक्ति स्वरूपा। कहीं पर भी शक्ति हो, वह देवी का ही रूप है। दिति की सर्वसन्तति स्वरूपा अर्थात दिति की जितनी भी सन्तान हैं सब देवी ही हैं। दिति की सन्तान दैत्य कहलाती हैं। ब्रह्म के लिए देवता और दैत्य सब बराबर है। जब ब्रह्म के अलावा कुछ है ही नहीं तो दैत्य भी ब्रह्म हैं जिसे स्त्रीलिंग की विक्क्षा में शक्ति या देवी भी कहते हैं। तो दैत्य भी देवी से अभिन्न हैं। देव्यथर्वशीर्ष में स्पष्ट कहा गया है कि मैं ही देवता हूँ और मैं ही असुर, राक्षस हूँ, मैं ही विद्या हूँ, मैं ही अविद्या हूँ।

420. **दारिणी** – भक्तों के दुखों को फाड़ने वाली अर्थात मिटा देने वाली। गुण, दोष को अलग करने वाली। दारण का अर्थ फाड़ना होता है एवं फाड़ने का अर्थ होता है अलग – अलग करना अर्थात गुणों और दोषों को अलग – अलग कर देती है। दारण का अर्थ है चीरना – फाड़ना, विदीर्ण करना।

421. **देवतानता** – देवता जिसके सामने स्तुति के लिए झुकते हैं। नता का अर्थ है झुका हुआ।

422. **दोलाक्रीड़ा** – झूला झूलकर क्रीड़ा करने वाली। झूलने की क्रिया/क्रीड़ा करने वाली।

423. **दयालु** – दयापूर्ण हृदय वाली। जिसमें दया का भाव अधिक है अर्थात दया करने वाली।

424. **दम्पती** – शिव पार्वती का मिलित रूप अर्थात अर्धनारीश्वर स्वरूप वाली। आत्मा और परमात्मा रूपी पति पत्नी के स्वरूप वाली। आत्मा पत्नी है, परमात्मा पति है। उपनिषद में लिखा है द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया। अर्द्धनारीश्वर स्वरूपा या शिव के साथ विद्यमान। पति सहित पत्नी स्वरूपा अर्थात् पति–पत्नी स्वरूपा अर्थात् पति और पत्नी के युगल स्वरूप वाली। जाया च पति च, ऐसा विग्रह करने पर जाया को दम् आदेश होकर दम्पती शब्द बनता है। जायते अस्याम् अपत्यम् इति जाया अर्थात् जो सन्तान पैदा करती है, वह जाया है।

425. **देवतामयी** – समस्त देवताओं के तेज से युक्त अर्थात सभी देवता इनके अन्दर समाहित हैं। दुर्गा सप्तशती में महालक्ष्मी की उत्पत्ति सभी देवताओं के तेज से मिलकर हुई। देवताओं से युक्त अर्थात देवताओं द्वारा जिनकी उपासना की जाती है या युद्ध आदि के अवसर पर देवी की सेना में बहुत से देवता भी भाग लेते हैं। उनके रहने के स्थान में देवता भी होते हैं।

426. **दशादीपस्थिता** – बत्ती रूप से दीपक में स्थित हैं अर्थात दीपक में स्थित होकर प्रज्वलित हैं। दशा का एक अर्थ बत्ती भी है। विश्व एक दीपक है और भगवती उस दीपक की बत्ती हैं अर्थात बत्ती रूप में प्रज्वलित हो रही हैं। प्रज्वलित होकर रास्ता दिखा रहीं हैं। दशों दिशाओं में जो प्रकाश है उसमें वर्तमान। वह उसी से दशों दिशाओं को प्रकाशित करती है। दशाओं (योगशास्त्र की दशाएं – जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति आदि) में प्रकाश रूप में स्थित। दीपक की बत्ती के अग्र भाग में स्थित होकर प्रकाश फैलाने या बढ़ाने वाली। दशा अर्थात अग्र भाग या बत्ती।

427. **दोषादोषहा** – रात्रि का दोष (अर्थात अन्धकार) मिटाने वाली। ओहाक् त्यागे धातु से हा शब्दाक्षर बनाने पर दूर करना अर्थ आएगा और हन्ति धातु रूप से हा शब्दाक्षर बनाने पर मारना अर्थ आएगा। भौतिक रात्रि के लिए सूर्य स्वरूपा। अज्ञान वाली रात्रि के दोष अन्धकार को मिटाने वाली ज्ञान स्वरूपा। दोष का अर्थ रात्रि, अन्धकार होता है। हा का अर्थ मिटाने वाली।

428. **दोषकारिणी** – अन्धकार करने वाली (असुरों के विनाश के लिए) असुरों का विनाश करने के लिए उनकी मति हर लेती है। सरस्वती देवी कुम्भकर्ण की जीभ पर बैठ गई थीं। नास्तिकों में अवगुण पैदा करने वाली जिससे उनका नाश हो जाए। प्रदोष नामक सन्ध्याकाल को करने वाली। वत्स अर्थात बछड़े को पैदा करने वाली गाय की तरह अत्यन्त सीधी या उत्पत्ति गुण से युक्त। दोष का एक अर्थ है प्रदोष, गोधूलि काल, बछड़ा।

429. **दुर्गा** – कठिनाई से प्राप्त होने वाली। दुखेन गम्यते अर्थात अष्टांग योग, तपस्या जैसे दुःखदायी साधनों से प्राप्त होने वाली। विशाल संकट को नष्ट करने वाली। दुर्ग + आ, यहाँ दुर्ग का अर्थ है विशाल संकट अर्थात जिसके बारे में यह विचार हो कि उससे निकलना दुर्ग की तरह कठिन है तथा आ का अर्थ है नाश करने वाली। दुर्ग (अर्थात शरीर) में रहने वाली आत्मा–स्वरूपा। शरीर को दुर्ग की उपमा दी गई है। बगलामुखी में देखे। ब्रह्मबैवर्त पुराण में इस शब्द के कई अर्थ बताये गये है। दुर्गा शब्द का पदच्छेद है– दुर्ग + आ। दुर्ग शब्द दैत्य, महाविघ्न, भवबन्धन कर्म, शोक, दुःख, नरक, यमदण्ड, जन्म, महान् भय तथा अत्यन्त रोगके अर्थ में आता है तथा 'आ' शब्द 'हन्ता' अर्थात् नाश करने वाली के अर्थ में आता है। इस प्रकार दुर्गा शब्द के बहुत से अर्थ हो जाते है। दैत्य का नाश करने वाली। महाविघ्न का नाश करने वाली। भव बन्धन का नाश करने वाली। शोक का नाश करने वाली। जन्म का नाश करने वाली अर्थात् जन्म नहीं होने देती है अर्थात् मोक्ष दे देती है। यमदण्ड अर्थात् मृत्यु या मृत्यु भय का नाश करने वाली। विपत्ति का नाश करने वाली। कठिनाइयों का नाश करने वाली। शत्रुओं के दुर्ग (किला अर्थात् रक्षा कवच) का नाश करने वाली। दुर्गेषु गतस्तन्नामा। दुःखिषु, दुःखिभिरवगता। दुःखेन चावगता। अनवगता दुष्टानाम्। शिष्टपालनाय दुष्टानभिगच्छति च। अपगमयति दुःखं च दुरितं च। किलों में स्थित।

शरीर भी किला है, उसमें जीवात्मा के रूप में स्थित। भौतिक बड़े–बड़े किलों के बीच स्थित। दुखी लोगों द्वारा या दुखियों में जानी गई क्योंकि दुखी लोग ज्यादा याद करते है। बड़ी कठिनाई से जानी गई अर्थात् इनको जानने के लिए कठिन तपस्या या साधना करनी होती है। दुष्टों में न जानी गई अर्थात् दुष्टों के द्वारा नहीं जाने जानी वाली। सज्जनों के पालन (रक्षा) के लिए दुष्टों के पास जाने वाली या आक्रमण करने वाली। दुष्ट शब्द का दु ले लिया एवं अवगच्छति का ग ले लिया। दुख को दूर हटाने वाली। पाप को हटाने वाली। दुख या दुरित शब्द का दु अक्षर ले लिया एवं अवगमयति का ग अक्षर ले लिया।

430. **दुर्गार्तिशमनी** – बेहद कठिन/व्याकुल कर देने वाले कष्टों को शान्त कर देने वाली। द्रौपदी चीर हरण या गजेन्द्र ग्राह के प्रकरण में आया कष्ट दुर्गार्ति है अर्थात यदि उन कष्टों को दूर होने में एक पल भी विलम्ब हुआ तो महान अनर्थ हो सकता था। ऐसा कष्ट जिससे छुटकारा पाने के लिए व्यक्ति व्यग्र हो जाता है आर्ति कहलाता है।

431. **दुर्गम्या** – बहुत कठिनाई से जानी जाने योग्य अर्थात जिनको समझना या जिनके बारे में जानना बेहद कठिन है। जिनके पास बहुत कठिनाई से पहुँचा जा सकता है।

432. **दुर्गवासिनी** – शरीर रूपी दुर्ग में आत्मा के रूप में वास करने वाली। दुर्गम स्थानों में जैसे पहाड़ आदि में वास है जिनका। इनका वास उस जगह में है जहाँ तक पहुँचना कठिन है। आत्मा पंचकोशों से घिरी है। आत्मा ही देवी है। जहाँ तक पहुँचने के लिए इन किलों का भेदना होता है। किले में वास करने वाली। दुर्ग का अर्थ है जहाँ तक पहुँचना या जिसे प्राप्त करना बेहद कठिन है। दुर्ग को भेदना बहुत कठिन होता है। वहाँ प्रवेश का एक ही दरवाजा होता है तथा निकलने का कोई रास्ता नहीं होता है। किले में निवास करने वाली। साधना भी किला है। साधक की साधना में स्थित है। हृदय में वास करने वाली आत्मा स्वरूपा।

433. **दुर्गन्धनाशिनी** – लौकिक गन्ध को नाश करने वाली। चुगली को दुर्गन्ध कहते हैं। अतः चुगलखोरों का नाश करने वाली। पीठ पीछे शिकायत अर्थात चुगली दुर्गन्ध ही है। अपने शरीर की सुगन्ध से वातावरण की दुर्गन्ध को अदृश्य करने वाली।

434. **दुःस्था** – ऐसे दुर्गम स्थान में स्थित (विराजमान) जहाँ पहुँचना बहुत कठिन है। देवियों के मन्दिर प्रायः पहाड़ों पर बहुत ऊँचाई पर स्थित होते है। हृदय के आकाश में विराजमान जहाँ पहुँचना बहुत कठिन होता है। देवी बाहर भी है और भीतर भी है क्योंकि सर्वत्र व्याप्त है। बाहर जाना उतना कठिन नही होता जितना अपने भीतर जाना होता है। ऐसे स्थान पर विराजमान है जहाँ सब जा नहीं सकते। कठिनाई से पहुँचने योग्य स्थान पर स्थित है जो। दुखेन प्रापणीया स्थान। दुष्ट दैत्यों के नाश तथा भक्तों का हित करने के लिए दुर्गम स्थान में भी निवास करने वाली।

435. **दुःखप्रशमकारिणी** – त्रिविध दुखों को पूर्णरूपेण दूर करने वाली अर्थात नितान्त या ऐकान्तिक शमन करने वाली। त्रिविध दुख हैं दैहिक, दैविक, भौतिक ताप।

436. **दुर्गन्धा** – विपरीत मति वालों, दुष्टों, खलों के लिए जो दुर्गन्ध के समान हैं अर्थात उन्हें अपने से दूर भगा देती हैं। दुर्गन्ध से व्यक्ति दूर भागता है। दुष्टों से कहा जाये कि वे भगवान का नाम लें तो वे भाग जाते हैं। ऐसे लोगों को देवी अच्छी नहीं लगती अर्थात ऐसे लोग देवी को प्रसन्द नहीं करते। दुर्गन्ध का तात्पर्य है जो हमें अच्छी न लगे।

437. **दुन्दुभीध्वान्ता** – असुरों के लिए दुन्दुभी (नगाड़ा) के नाद स्वरूपा अर्थात युद्ध में असुरों को भयभीत करने वाली। युद्ध में पहले नगाड़ा बजते थे, नगाड़े की ध्वनि से शत्रु भयभीत हो जाते थे। दुन्दुभि के समान नाद वाली।

438. **दूरस्था** – सभी लोकों से बहुत दूर अपने नित्य धाम में स्थित अर्थात विराजमान। यह शब्द स्थान के लिए है अर्थात ऐसे स्थान पर रहने वाली जो कि बहुत दूर है। दूर से भी दूर स्थित (अज्ञानियों एवं भक्तिहीनों के लिए बहुत दूर हैं)।

439. **दूरवासिनी** – अभक्तों, नास्तिकों, मोह या अज्ञान से घिरे लोगों के लिए बहुत दूर हैं। श्रद्धाहीनों से दूर है। देवी श्रद्धा से ही मिलती हैं।

440. **दरदा** – भय देने वाली। डर दिखाने वाली। असुरों के मन में भय पैदा कर देती हैं। दर का अर्थ डर या भय होता है।

441. **दरदात्री** – शंख देने वाली अर्थात शब्द–ब्रह्म का ज्ञान देने वाली या सतोगुण को देने वाली। दर का एक अर्थ है शंख जो शब्द–ब्रह्म, सतोगुण का प्रतीक है। फाड़ने की क्रिया को देने वाली अर्थात करने वाली। असुरों को युद्ध में फाड़ देती हैं। दर का एक अर्थ है फाड़ने की क्रिया। असुरों को युद्ध में डराने वाली। दरम् ददाति। दर का अर्थ है डर। भय देने के स्वभाव वाली।

442. **दुर्व्याधदयिता** – जिसे कोई जीत नहीं सकता ऐसे किरात (अर्थात शंकर जी) की पत्नी। अर्जुन की परीक्षा लेने के लिए शंकर जी ने किरात का रूप धारण किया था। व्याध का अर्थ है बहेलिया या किरात। क्रूर किरात या निर्दयी किरात की पत्नी। दुष्ट बहेलियों के लिए भी भक्ति के कारण जो प्रिय लगती हैं अर्थात दुष्ट किरात भी जिन्हें पसन्द करते हैं, दुष्टों को भी जो अच्छी लगती है।

443. **दमी** – दम अस्या अस्ति इति दमिन्। पुल्लिंग एक वचन में दमी एवं स्त्रीलिंग एकवचन में दमिनी बनेगा जिसका अर्थ है दम से युक्त। देवी सभी लिंगों में हैं और सभी लिंगों से परे भी हैं अतः पुल्लिंग का अर्थ भी ले सकते हैं। दुष्टों को सजा देने के गुण से युक्त अर्थात दुष्टों को सजा देने वाली। बुद्ध की पत्नी से अभेद है जिनका। बुद्ध का एक नाम दम है। आसुरी शक्तियों पर दबाव बनाने वाली। दम का एक अर्थ दबाव भी है। जिन्होंने अपनी इन्द्रियों का दमन कर दिया। शत्रुओं का दमन करने वाली। आन्तरिक शत्रु जैसे काम, क्रोध, लोभ, मोह का दमन करने वाली। बाह्य शत्रुओं का दमन करने वाली।

444. **धुरन्धरा** – प्रत्येक कार्य में दूसरों से बहुत आगे अर्थात् श्रेष्ठ। बैल के गले में रखे जाने वाली लम्बी लकडी जुआ है और उसका वह हिस्सा जो बैल के गले में है वह धुर है। चूकि धुर को धारण करने वाला बैल बैलगाडी में सबसे आगे रहता है अतः धुरन्धर शब्द किसी भी क्षेत्र में आगे रहने वाले व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होने लगा है। ब्रह्माण्ड को चलाने के लिए केन्द्र स्वरूपा अर्थात ब्रह्माण्ड के केन्द्र में स्थित। पहिये के बीच का भाग या केन्द्र धुर कहलाता है। उस धुर को धारण करने वाला धुरन्धर कहलाता है जैसे पृथ्वी का केन्द्र पृथ्वी का धुर हुआ। सभी कार्यों को सिद्ध करने में जो अद्वितीय या अप्रतिम है।

445. **धुरीणा** – भार (उत्तरदायित्व) वहन करने में श्रेष्ठ। कार्यों में अग्रणी। सभी कामों को करने में प्रमुखता रखने वाली। प्रमुखता के साथ सभी कार्यों को करती हैं। धुरीण शब्द का अर्थ है अग्रणी या प्रमुख व्यक्ति। रथ आदि में जुते घोड़े, बोझ सम्भालने वाला व्यक्ति, जिसे कोई काम सौंपा गया धुरीण कहलाता है। (विद्या में) प्रवीण या अत्यन्त निपुण।

446. **धौरेयी** – भार (उत्तरदायित्व) को वहन करने अर्थात् निभाने के योग्य अर्थात् उनके अन्दर उत्तरदायित्व निभाने का सामर्थ्य है। देवी के उत्तरदायित्व सृष्टि करना, पालन करना, संहार करना, अनुग्रह करना, तिरोभाव करना, कर्मों के नियम को पालन कराना आदि। धुरा के योग्य अर्थात् जगत का मूल आधार बनने के योग्य। धुरा अर्थात् नाभि अर्थात् मूल आधार जिस पर कोई वस्तु टिकी होती है। (धुरन्धरा, धुरीणा, धौरेयी तीनों नामों का सामान्य अर्थ भार ढोने वाली, श्रेष्ठ या प्रधान होता है किन्तु विशेषता देखते हुए अर्थ में थोड़ा–थोड़ा अन्तर किया

गया है)। (ब्रह्माण्ड के) भार को वहन करने में समर्थ। धौरेय का अर्थ है भार या बोझा ले जाने योग्य, रथ खींचने वाला, मुखिया या प्रधान। धुर में ठक् प्रत्यय लगाने से यह शब्द बनाता है।

447. **धनदायिनी** – धन देने वाली। भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार के धनों को देने वाली। गोधन, गजधन, बाजि धन, रत्न धन, सन्तोष धन आदि धन के प्रकार हैं। सन्तोष को परम धन कहते हैं पर वह सुख का साधन है, इस प्रकार सबसे बड़ा धन नित्य सुख हुआ। विद्या धन, तपो धन भी धन है। अपने आत्म स्वरूप को पाने के लिए की गयी साधना या तपस्या भी धन है। भगवान का नाम सबसे बड़ा धन है। कुछ लोग प्राण अर्थात गिनती की मिली हुई साँसों को सबसे बड़ा धन मानते हैं।

448. **धीरारवा** – गम्भीर गर्जन करने वाली। जिसका शब्द गम्भीर है। रव का अर्थ है शब्द या ध्वनि। धीरा नाम नायिका की तरह अनुचित कर्म होने पर क्रोध का स्वर निकालने वाली।

449. **धरित्री** – सबको धारण करने वाली पृथ्वी स्वरूपा। पृथ्वी की तरह अर्थात पृथ्वी की तरह क्षमा गुण से युक्त या पृथ्वी की तरह स्थिर।

450. **धर्मदा** – उचित अनुचित का विचार करने वाली चित्तवृत्ति देने वाली। कर्तव्य और अकर्तव्य का ज्ञान देने वाली। धर्म देने वाली अर्थात भगवान राम की तरह आचरण कर लोगों को उसकी सीख देने वाली। प्रत्येक वस्तु में उस वस्तु का सार देने वाली जिससे उस वस्तु का अस्तित्व रहे। दाहकता, गोत्व, पृथ्वीत्व, मनुष्यत्व ये अग्नि, गाय, पृथ्वी, मनुष्य के धर्म हैं। पदार्थों को धर्म (उनका सार गुण) देने वाली। किसी वस्तु या व्यक्ति की वह वृत्ति (गुण) जो उससे कभी अलग न हो धर्म या प्रकृति या स्वभाव कहलाता है। पारलौकिक सुख की प्राप्ति कराने वाले कर्म या कृत्यों को देने वाली अर्थात गुरु एवं शास्त्रों के माध्यम से बताने वाली। धर्म का अर्थ परस्पर व्यवहार सम्बन्धी नियम हैं जिसका पालन राजा, आचार्य आदि द्वारा कराया जाता है। यह नीति, कानून व्यवस्था, न्याय व्यवस्था है। इसे देने वाली। धर्मराज युधिष्ठिर या यमराज को वरदान देने वाली। सत्संग को देने वाली। धर्म का एक अर्थ सत्संग भी है। निष्पक्ष होने की स्थिति या गुण को देने वाली।

451. **धीरमानसा** – धीर है मन जिसका। विद्वान की तरह है मानस जिसका अर्थात विद्या से प्रकाशित है, धीरवत् मनसा यस्या सा। ज्ञानस्वरूप मानस वाली। विद्या से प्रकाशित मन वाली। धीर का अर्थ है विद्वान क्योंकि धी का अर्थ है बुद्धि।

452. **धनुर्धरा** – धनुष धारण करने वाली (दैत्यों के वध के लिए)। शुद्ध चित्त को धारण करने वाली। चित्त रूपी धनुष से विचार रूपी बाण निकलते हैं। क्रिया शक्ति को धारण करने वाली। धनुष और बाण क्रिया शक्ति का प्रतीक हैं।

453. **धमनी** – शरीर में स्थित शुद्ध रक्त वाहिनी नाड़ियों को स्पन्दित करने वाली। संस्कृत शब्दकोष में धमनी का अर्थ हट्टविलासिनी दिया गया है जिसका अर्थ है बाजारू औरत या वारवनिता या बाजार की सुन्दरी। बाजार में विलास करने वाली किन्तु देवी के प्रसंग में अर्थ लगायेंगे कि घर – घर में रहने वाली गृहिणी स्वरूपा। धमनी का एक अर्थ वाक् या वाणी स्वरूपा भी दिया गया है। हल्दी अर्थ भी मिलता है तब देवी के प्रसंग में अर्थ होगा हल्दी की तरह सर्व रोगनिवारिका। धमन शब्द का अर्थ होता है गलाना या पिघलाना। जो गलित कुष्ठ को या गम्भीर बीमारियों को गला दे, नष्ट कर दे, वह धमनी है। विश्व की नाड़ी (अर्थात जीवनस्वरूपा), कहने का तात्पर्य है कि देवी हैं तो विश्व है। विश्व देवी के कारण है। धमनी अर्थात नाड़ी, तदस्वरूपा। पृथ्वी की धमनी स्वरूपा। धमनी से जीवित रखा जाता है। विश्व की जीवन स्वरूपा। विश्व की नाड़ी या जीवन स्वरूपा। देवी विश्व का कारण हैं। धम – धम करती तभी नाम धमनी पड़ा। जीवन की संचारिणी – शक्ति रूपा। जीवन प्रदान करने वाली। जीवन चलता रहे उसके लिए संचरणशील शक्ति देने वाली। धमनी शब्द धम् धातु से बना है

जिसका अर्थ है धौंकना। हृदय का जो स्पन्दन होता है वह भाथी या धौंकनी के सामने फूलने – पिचकने के समान होता है। अतः शुद्ध रक्तवाहिनी नाड़ियों को धमनी कहा गया है। उणादि कोष में धमनी शब्द की व्युत्पत्ति है धमति प्रापयति रसादिकम् दी गई है। अतः धमनी शब्द का अर्थ हुआ जो जीवित रहने के लिए आवश्यक रस, प्राण आदि को प्राप्त कराती है।

454. **धमनीधूर्तविग्रहा** – धमनी के रूप में निरन्तर स्पन्दन करने वाले शरीर वाली। धूर्त का अर्थ निरन्तर स्पन्दनशील करेंगे क्योंकि धूर्त वह होता है जो एक स्वरूप में न रहे। धमनी में जो गुण है स्पन्दन करने का अर्थात एक जैसा न रहने का, वही गुण धूर्त में होता है। धूर्त को ठग या बदमाश भी कहते हैं। धमनियों के द्वारा असत् तत्वों (खराब पदार्थों) का विनाश कर शरीर को शुद्ध किए रहती है। ध्वनि मात्र से राक्षसों को क्षति पहुँचाने वाले शरीर वाली। दुर्गा सप्तशती में आया है कि देवी ने हुम् बोलने मात्र से अनेक राक्षसों को भस्म कर दिया था। धमनी का अर्थ है ध्वनि, वाणी। धूर्त का अर्थ है क्षति पहुँचाने वाला, प्रेमी या रसिया, चतुर या चालाक। विग्रहा का अर्थ है शरीर। सुन्दर वाणी से युक्त प्रेमी के स्वरूप वाली। धमनी का अर्थ ध्वनि अर्थात् शब्द है। धुर् धातु से धूर्त का अर्थ भार हो सकता है। भार है तो आकार भी होगा। शब्दाकार स्वरूप वाली, यह अर्थ हो सकता है। (एक स्थान पर धूर्ता शब्द का अर्थ मिला है – अभक्तों के मन को धर्म मार्ग से हटाकर दुखी होने को विवश करने वाली। ध्वरयति कुटिलयति इति धूर्ता। ध्वृ कौटिल्ये धातु होती है। कुटिलयति का अर्थ यहाँ पर हटाती है कर सकते हैं। हृदय में छल रखकर प्रिय बोलने वाली जैसे मोहिनी अवतार में किया था। धूर्त का अर्थ है – जिसके आगे करूणा है अर्थात करूणा से युक्त। केशव के मत के अनुसार 'करूणायां तु ताः स्त्रियाम्'। धुर्य का अर्थ आगे होता है। बैलगाड़ी में गले के ऊपर जो डण्डा रखा जाता है वह धुर्य है। चूँकि यह डण्डा गाड़ी के आगे रहता है अतः अग्रणी इसका अर्थ हो जाता है। भक्तों के द्वारा एक बार भी याद करने पर कारूणिक होने के कारण रक्षा के लिए उन तक पहुँच जाती हैं। इस प्रकार धमनीधूर्तविग्रहा का अर्थ जीवनदायनी शक्ति तथा करुणा से युक्त शरीर वाली, होगा। कष्टों को गला देने वाली शक्ति एवं करुणा से युक्त शरीर वाली, यह अर्थ भी कर सकते हैं।) धमन का अर्थ गलाना भी होता है, आपने धमन भट्टी का नाम सुना होगा। धमनी और धूर्तों को विशेष रूप से ग्रहण करने वाली अर्थात उन्हें विशेष रूप से जकड़ने वाली अर्थात उन्हें उस कार्य में डालने वाली। धमनी का अर्थ है वैश्या और धूर्त का अर्थ है उन वैश्याओं के लिए ग्राहक लाने वाला। वैश्या और उनके लिए ग्राहक लाने वाला देवी का विग्रह है अर्थात शरीर है।

455. **धूम्रवर्णा** – धुएँ के रंग वाली (जैसा कि धूमावती देवी हैं)। कृष्णलोहित या ललाई लिए हुए काला रंग, धुएँ का रंग होता है। धूम्र का अथ्र भूरा और बैंगनी भी होता है। अग्नि देव की सात जिह्वाएं हैं उनमें से एक धूम्रवर्णा हैं, तद्स्वरूपा। शिव की शक्तिस्वरूपा। गणेश जी की शक्ति से अभेद है जिनका। धूम्रवर्ण + आ, आ का अर्थ है शक्ति। भगवान शिव का एक नाम है धूम्र। गणेश जी का एक नाम है धूम्रवर्ण। धूम्रवर्ण वाले हृदय चक्र या अनाहत चक्र के वायु मण्डल या आकाश में विराजमान। अनाहत चक्र की पखुड़ियों के आकाश का रंग धूम्र माना जाता है। वहाँ जल रही ज्योति से धूमा वर्ण होता होगा। शब्द का अर्थ तो इतना ही है कि इस चक्र का आकाश व वायुमण्डल। एक नियम है कि शब्द के आगे ''में विराजमान'' लगाने से भी शब्द का एक अन्य अर्थ निकल जाता है। विशुद्धि चक्र के आकाश का भी रंग धूमा माना जाता है। इस आकाश में विराजमान। तमोगुण एवं रजोगुण से युक्त। धूम्र वर्ण लालिमा लिये काला रंग होता है। लाल रंग रजोगुण का एवं काला रंग तमोगुण का प्रतीक है। रजोगुण से उत्पत्ति, क्रियाशीलता आती है। तमोगुण से गुरूत्वाकर्षण होता है। गुण से तात्पर्य पदार्थ से है, रस्सी के तन्तु गुण कहे जाते हैं। यहाँ गुण से तात्पर्य quality, merit से नहीं है। यदि तमोगुण न हो तो आसमान में उछाली गई वस्तु वापस लौटकर नहीं आएगी। आपको नींद नहीं आएगी अर्थात आप दुबारा से ऊर्जा के साथ काम करने के लिए नहीं आ पाएंगे। तमोगुण को सामान्यतः खराब माना जाता है पर यह भी

जरूरी है। धूम्र+आ, आ का अर्थ है देना। उपासक को रजोगुण एवं तमोगुण की अच्छी विशेषताओं को देने वाली। असत् में छिपे हुए सत् तत्व को बाहर लाने वाली अर्थात उपासक को उसका साक्षात्कार कराने वाली।

456. **धूम्रपाना** – धुएँ का पान करने वाली। धूमावती ने शिवजी को निगला तो धुआँ निकला। देवी भूखी थीं तो उस धुएँ का ही पान करने लगीं। भक्तों के पापों को पी लेने वाली अर्थात निष्पाप बनाने वाली। यहाँ धूम का अर्थ पाप है। दुष्टता का पान करने वाली अर्थात समाप्त कर देने वाली। धूम्र का एक अर्थ दुष्टता या शरारत भी है। शिव का पाने करने वाली अर्थात निगलने वाली धूमावती देवी से अभेद है जिनका।

457. **घूमला** – धूमकेतु, उल्कापात के उपद्रवों का नाश करने वाली। धूम का एक अर्थ है धूमकेतु, उल्कापात। ला का अर्थ नाश करना, धारण करना होता है। धूमल या मटमैले वर्ण वाली। इसमें कुछ लालिमा होती है। यहाँ शंका हो सकती है कि अलग अलग विरोधी दिखने वाले नाम क्यों है तो इसका उत्तर है देवी के अनेक स्वरूप हैं। उन स्वरूपों की अलग अलग विशेषताएं है और सारे स्वरूप एक ही हैं। अन्यथा भी देवी इच्छानुसार कोई भी रूप धारण कर सकती हैं। संसार के समस्त प्रसंगों/विषयों को प्राप्त करा देती हैं। धूमम् लाति आदत्ते इति धूमला। संसार के सारे विषय धुऐं की तरह ही हैं।

458. **धूममोदिनी** – धूप के धुऐं से प्रसन्न होने वाली। देवताओं को पूजा के समय धूप की गन्ध देते हैं जो उनको वायु तत्व का समर्पण करना होता है। धूम से ही प्रसन्न होने वाली। देवी ने जब महादेव को निगला था तो धुआँ निकला जिससे वह प्रसन्न हुई क्योंकि उनकी क्षुधा शान्त हुई। आयुर्वेद में कुछ विशेष प्रकार के धुओं का सेवन कराया जाता है जिससे रोग ठीक हो सकें और ये धुएँ पाँच प्रकार के हैं।

459. **नन्दिनी** – प्रसन्न करने वाली अर्थात प्रसन्नता देने वाली। प्रसन्न रहने वाली। नन्दयति इति नन्दिनी, इस विग्रह से नन्दिनी शब्द बनाने पर अर्थ निकलता है प्रसन्न करने वाली। नन्दते इति नन्दिनी, इस विग्रह से नन्दिनी का अर्थ हुआ प्रसन्न रहने वाली।

460. **नन्दिनीनन्दा** – कामधेनु की पुत्री नन्दिनी को देखकर प्रसन्न रहने वाली। (कुमारी पूजन में) कन्याओं की पूजा से आनन्दित या हर्षित होने वाली।

461. **नन्दिनीनन्दबालिका** – प्रसन्नता देने वाली समृद्धि स्वरूपा बालिका। बालिका अर्थात आरम्भ, कहने का तात्पर्य है कि प्रसन्नता देने वाली समृद्धि का आरम्भ यहीं से अर्थात देवी से होता है। नन्दिनी का अर्थ है प्रसन्नता देने वाली या प्रसन्न करने वाली। टुनदि समृद्धौ धातु से नन्द का अर्थ समृद्धि लिया। कुमारियों का सुख प्रदान करने वाली बालस्वरूपिणी अर्थात स्वयं भी कुमारी हैं। जो नन्दिनी और नन्दबालिका के रूप में प्रतिष्ठित है।

462. **नवीना** – जो नित्य नवीन रहती, कभी पुरानी नहीं होती अर्थात प्रकृति स्वरूपा। प्रकृति हर समय नये रूप में रहती है क्योंकि वह पल – पल परिवर्तित होती रहती है। नवीना का अर्थ नवयुवती, जवान भी होता है।

463. **नर्मदा** – देवताओं को सुख देने वाली। नर्म का एक अर्थ है सुख। विषादग्रस्त देवताओं ने जब नर्मदा जी को देखा तो उन्हें सुख की अनुभूति हुई। स्त्री – पुरूष में एक दूसरे के प्रति सहज प्रेम पैदा करने वाली। नर्म का अर्थ है स्त्री पुरुष में होने वाला सहज प्रेम। अभिनेता अभिनेत्रियों के परस्पर प्रेम (इश्क) को भी नर्म कहते हैं। राजा–महाराजाओं के समय में एक नर्म सचिव होता था जिसका कार्य राजाओं के लिए इस प्रकार की व्यवस्था करना होता था। परस्पर प्रेम करने/कराने वाली। परमसौख्य प्रदान करने वाली। नर्म का अर्थ है सुख शान्ति, परिहासपूर्वक बोलना। भक्तों को हास – परिहास युक्त वाणी देने वाली। नर्म का एक अर्थ हास – परिहास युक्त वाणी भी होता है।

464. **नर्मनेमि** – प्रेमियों की आपसी बातों के लिए पहिया स्वरूपा अर्थात् पहुँचाने वाली अर्थात् ऐसी स्थिति

उत्पन्न करने वाली कि प्रेमी प्रेमिका आपस में प्रेम की बातें कर सकें। पहिया एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचता है अतः इसका अर्थ पहुँचाने वाला किया गया है। इस नाम का तात्पर्य है प्रेम को बढ़ाने वाली। परिहास की ओर ले जाने वाली। नर्म का अर्थ है परिहास, मजाक, ठिठोली, श्रृंगार। नयति अर्थात ले जाना, नी नयति धातु से नेमि (चक्र) शब्द बना क्योंकि यह पहिये को ले जाता है। प्यार की ओर (प्रेम के प्रति) ले जाने वाली अर्थात आकर्षण बढ़ाने वाली। नेमि का अर्थ है पहिया अर्थात जो ले जाता है कहीं पर। नर्म की ओर ले जाने वाली अर्थात आकर्षण पैदा करने वाली। परिहासपूर्वक बोलने में भी जो आधार रखती हैं, आधार से अलग नहीं होती हैं अर्थात हँसी – मजाक के दौरान भी नियम नहीं तोड़ती। सामान्यतः लोग ज़ब परिहासपूर्वक बोलते हैं तो नियम कानून विधि–विधान तोड़ देते हैं।

465. **नियमनिस्वना** – नियमों की शब्द–स्वरूपा अर्थात नियमों को बताने वाली। निस्वन का अर्थ है शब्द। नियमों का पालन करना जिसका आदेश है। भक्तों को नियम पर चलना अनिवार्य है तभी सिद्धि होगी। निस्वन अर्थात शब्द अर्थात आदेश। नियम (आचार), वही है शब्द (कानून)। आचार पर रहना ही जिसका आदेश है।

466. **निर्मला** – मल से रहित। सांसारिक मल अर्थात षड् विकार काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर। शैव दर्शन में बताए गए आणव मल, कार्मिक मल, मायिक मल तीनों मलों से रहित। मल शब्द से केवल आणव मल का भी बोध होता है अर्थात आणव मल से रहित। देवी के अन्दर वर्ज्य पदार्थ (waste product) नहीं बनता क्योंकि वे भोजन पानी नहीं करतीं, उन्हें प्राणवायु लेने की भी जरूरत नहीं अतः उनके अन्दर वर्ज्य पदार्थ रूपी मल नहीं बनता।

467. **निगमाधारा** – निगम (वेद) का आधार (शब्दशक्ति)। निगम या वेद उसी में स्थित हैं। वेदों का मूल वाक् रूप भगवान। देवी शब्द स्वरूपा हैं और वेद शब्दों से ही बने हैं अर्थात वेद शब्द में स्थित हैं।

468. **निम्नगा** – विनम्र के पास जाने वाली। विद्या ददाति विनयम्। विनयशील को ही विद्या प्राप्त होती है। नदी स्वरूपिणी। नदी को निम्नगा भी कहते हैं क्योंकि नदी में स्थित पानी का स्वभाव होता है नीचे की ओर बहना। नदी के पानी की तरह स्वभाव है जिसका। सरस्वती नदी के रूप में है जो। पहले गुरू का आसन ऊपर होता था और शिष्य नीचे बैठता था। ज्ञान ऊपर बैठे हुए गुरू से नीचे बैठे हुए शिष्य की ओर जाता है अतः निम्नगा का अर्थ हुआ ज्ञान स्वरूपिणी।

469. **नग्नकामिनी** – माया के पर्दे से हटे शिव की कामना करने वाली। शिव पर माया का असर नहीं होता, अतः शिव नग्न हैं। ऐसी सुन्दरी जो प्रसन्न हो जाए तो अपना सारा रहस्य खोल देती है। कामिनी अर्थात सुन्दरी। नग्न अर्थात जो खोल दें। यदि नग्रकामिनी यह होता तो अर्थ होता सभी प्रकार की कामनाओं से रहित। न + अग्र, आगे जिसके लिए कुछ नहीं है। कुछ नहीं चाहिए। अ + अ = अ, पररूप सन्धि से। जो नग्न हैं अर्थात जो माया रूपी कपड़ा नहीं पहने हुए हैं अर्थात भगवान शिव। जो सर्वव्यापक है वह भी नग्न होगा क्योंकि उसे कपड़ा नहीं पहनाया जा सकता। सर्वव्यापिका, यह अर्थ हुआ।

470. **नीला** – नील वर्ण वाली। नील सरस्वती स्वरूपा। नील सरस्वती देवी से जिनका अभेद है। काली रूपा। संस्कृत में नील का अर्थ नीला एवं काला दोनों होता है। आकाश स्वरूपा। आकाश नीला दिखाई देता है अतः उसे नील कह सकते हैं। तमोगुण स्वरूपा या तमोगुण वाली। संस्कृत में नीला का अर्थ काला भी होता है और काला रंग तमोगुण का प्रतीक है। सृष्टि के लिए तमोगुण भी आवश्यक है। यद्यपि तमोगुण को अच्छा नही माना जाता है किन्तु तमोगुण न हो तो प्राणियों को नींद नहीं आ सकती, हम वस्तुओं को ऊपर फेंके तो वे लौटकर नही आयेगी अर्थात् गुरुत्वाकर्षण का कारण भी तमोगुण है। नींद से ऊर्जा आती है एवं व्यक्ति स्वस्थ रहता है तथा उसे सुख मिलता है। नीला रंग अर्थात् आकाश का रंग। जो आकाश की तरह सर्वव्यापक है।

471. **निरत्ना** – नितान्त रत्नों वाली अर्थात सभी प्रकार के आभूषणों से सुसज्जित। शुद्ध रत्नस्वरूपा (खालिस से भी बढ़कर) यहाँ निरत्ना का तात्पर्य है नितराम् रत्ना अर्थात अत्यन्त रत्न अर्थात शुद्ध रत्नस्वरूपा। जिसे सब अपने पास रखना चाहते है वह है रत्न। सभी श्रेष्ठ वस्तुओं से विराजमान या सभी श्रेष्ठ वस्तुएं जिसके पास हैं। निःशेषतया विराजते रत्नानि यस्याम् सा। यदि निरत्ना की जगह नीरत्ना होता तो अर्थ होता श्रेष्ठ वस्तुएं हट गयीं। (नीरत्ना – निर्गता रत्नेभ्यः निर् के र का द्रलोपस्य सन्धि सूत्र से लोप हुआ और रो रि सूत्र से नि का नी हो गया, जिसने कोई आभूषण नहीं पहना)। शुद्ध अर्थात दोषरहित रत्नस्वरूपा। रत्न अर्थात श्रेष्ठ। ऐसी श्रेष्ठ शक्ति जो दोषरहित हैं। आपने निखालिस दूध शब्द सुना होगा जिसका अर्थ है दोषरहित दूध अर्थात शुद्ध दूध। नित्य से नि अक्षर ले सकते हैं। रत्न का अर्थ श्रेष्ठ होता है। किसी भी क्षेत्र के श्रेष्ठ व्यक्ति या वस्तु को उस क्षेत्र का रत्न कहते हैं। ऐसी श्रेष्ठ शक्ति जो नित्य है अर्थात जिनका अस्तित्व हमेशा रहता है।

472. **निर्वाणा** – विदेहानन्द स्वरूपा। शरीर रहित होने पर जो आनन्द होता है वह है विदेहानन्द। वाण का अर्थ है शरीर। मुक्ति स्वरूपा। वा गति धातु होती है। आवागमन रूपी गति अर्थात जन्म मृत्यु के लगातार चक्कर लगाने वाली गति से निर्मुक्त है। निर्वाण + आ, आ का अर्थ है देना। भक्तों को निर्वाण (मोक्ष) देने वाली। पंचतन्मात्राओं से रहित। ललिता सहस्रनाम में तन्मात्र के लिए बाण शब्द लिखा है। विचार रहित। चित्तरूपी धनुष से विचार रूपी बाण निकलते हैं।

473. **निर्लोभा** – लोभ रहित। जब उन्हें सब कुछ प्राप्त है तो उन्हें किसी चीज की चाहना नहीं।

474. **निर्गुणा** – गुणों से रहित अर्थात जो तीनों गुणों – सत, रज और तम इन गुणों से परे हैं। सभी प्रकार के दुर्गुणों से रहित। गुण अर्थात रस्सी अर्थात बाँधने वाला तत्व। कोई भी सत्ता ऐसी नहीं है जो उन्हें बाँध सके या अपने अधीन कर सके। गुण एक पदार्थ है, इसका तात्पर्य Quality से नहीं है। तीनों गुणों (सत, रज और तम) से रहित, त्रिगुणातीता इति निर्गुणा। जिनमें कोई दुर्गुण नहीं है। यहाँ गुण से दुर्गुण ले लिया। ज्ञानियों द्वारा जिनके गुण निर्णीत किये गये अर्थात् जाने गये या गुणों का निर्णय किया गया। ज्ञानियों द्वारा जाना गया कि उनके पास दया, उदारता, प्रेम, सौन्दर्य आदि अनेक गुण हैं। ज्ञानिभिर्निर्णीतगुणः यस्या सा। निर्णीत का निर् ले लिया। सांसारिक दोषों से रहित होने के कारण निर्गुण का अर्थ मुक्त पुरुष भी होता है। मुक्त पुरूष जिनके हैं अर्थात मोक्ष को प्राप्त व्यक्तियों को आश्रय दिये हुए। निर्गुणा मुक्ता अस्या सन्ति इति निर्गुणा। गुण रूप ब्रह्मादियों में अत्यन्त गयी हुई अर्थात् विराजमान है। गुणभूतान् ब्रह्मादीनतीता इति। नियम है कि गुण का सार होने पर गुणी को भी गुण कह देते है। सार का अर्थ तत्व, सरण अर्थात गमन भी होता है। जिसकी वाणी शुद्ध या दोषरहित है तथा जो ज्ञानस्वरूप है। ण का अर्थ है ज्ञान, किन्तु अर्थ भी कर सकते है। शुद्ध शब्दार्थ स्वरूपा। निर्णिक्ता गावो वाचो अस्या इति निर्गुः, णश्च।

475. **नती** – अत्यन्त नम्र। विनम्रता स्वरूपिणी अर्थात विनम्रता इसी का स्वरूप है। नती का अर्थ है नमस्कृति/झुकना/विनम्रता। झुकी हुई अर्थात विनम्र स्वभाव वाली। मनोरथ पूर्ति रूप फलों से युक्त। जिन वृक्षों में फल होते हैं वे झुके हुए होते हैं। नत का अर्थ झुका हुआ होता है। ज्ञान का विस्तार करने वाली। एकाक्षरी कोश में न का अर्थ ज्ञान दिया गया है। तन् धातु में द प्रत्यय लगाने से त शब्द बनता है जिसका अर्थ है विस्तार करने वाला। स्त्रीलिंग में त का ती हो गया। पृथ्वी स्वरूपा। पृथ्वी अपनी धुरी से कुछ झुकी है।

476. **नीलग्रीवा** – ग्रीवा भी नीली है जिसकी (क्योंकि स्वयं भी नीली है)।

477. **निरीहा** – कामनाओं से रहित। उन्हें किसी चीज की कामना नहीं।

478. **निरञ्जनजना** – दोषों से रहित स्त्री स्वरूपा। निरञ्जन का एक अर्थ है दोषों से रहित। माया रूपी दोष से रहित महिला के स्वरूप वाली। निर्लिप्त महिला स्वरूपिणी। जना का अर्थ है महिला तथा निरंजन का अर्थ है

जो सांसारिक वस्तुओं में लिप्त न हो। अंजन अर्थात जिसमें लिप्त हो। दर्शन में अंजन कहते हैं आवरण को। आत्मा के आवरण हैं शरीर इन्द्रियाँ एवं माया। ऐसी महिला जो शरीर, इन्द्रिय एवं मायारूपी आवरण से रहित है। अंजन एक प्रकार का आवरण ही है। सांसारिक विषयों से परे रहने वाली, इस प्रकार के व्यक्तित्व वाली। अंजन अर्थात सांसारिकता। जना अर्थात व्यक्तित्व से युक्त। चित्त में संस्कार (impresions) बनना एक दोष या अंजन है, इस अंजन से रहित। आत्मबोध ग्रन्थ में निरंजन शब्द का अर्थ चित्त के संस्कारों से रहित बताया गया है। निर्दोष, माया से रहित ब्रह्म। अंजन अर्थात् दोष। आत्मबोध ग्रन्थ के अनुसार कारण शरीर में स्थित संस्कार भी अंजन है। शरीर में विद्यमान सभी संस्कारों से रहित अवस्था निरंजन अवस्था कहलाती है। हम जगत में जो कुछ भी देखते है या करते है, यदि आसक्ति है तो छाया चित्र (Photo) की तरह वह हमारे शरीर में खिंच जाता है अर्थात् जम जाता है तथा भविष्य में अपने अनुसार मनुष्य से कार्य कराने लगता है।निर्दोष, माया से रहित ब्रह्म। अंजन अर्थात् दोष। आत्मबोध ग्रन्थ के अनुसार कारण शरीर में स्थित संस्कार भी अंजन है। शरीर में विद्यमान सभी संस्कारों से रहित अवस्था निरंजन अवस्था कहलाती है। हम जगत में जो कुछ भी देखते है या करते है, यदि आसक्ति है तो फोटो की तरह वह हमारे शरीर में खिंच जाता है अर्थात् जम जाता है तथा भविष्य में अपने अनुसार मनुष्य से कार्य कराने लगता है।

479. **नवा** – नौ संख्या जिसका स्वरूप है। पूर्ण स्वरूपा। पूर्ण संख्या स्वरूपिणी। नौ से अधिक कोई अंक नहीं होता। नवदुर्गा स्वरूपा। स्तुति योग्य। नु स्तुतौ धातु में अच् प्रत्यय लगाकर गुण करके नवा शब्द बनता है। नौ की संख्या स्वरूपा या नवदुर्गा स्वरूपा। पूर्णस्वरूपा अर्थात प्रत्येक चीज से पूर्ण। नौ की संख्या पूर्णता का प्रतीक है। नी प्रापणे धातु में डव प्रत्यय लगाने से नव शब्द बनता है। नव अर्थात आनीतम् भवति, न वननीया, न अवाप्ता। जो लायी जाती है अर्थात साधना के द्वारा अपने समक्ष प्रकट की जाती है। जो अभी तक प्राप्त नहीं हुई है अर्थात जिसका साक्षात्कार नहीं हुआ है। नौ की संख्या को नौ इसलिए कहते हैं क्योंकि उसने दस की अवस्था अभी तक प्राप्त नहीं की है।

480. **निर्गुण्डिका** – निर्गुण्डी वृक्ष की तरह रोग निवारिका अर्थात प्राणियों के रोगों और कष्टों का निवारण करने वाली। लोगों का रोग (दुख) दूर करने वाली। आयुर्वेद में निर्गुण्डी वृक्ष होता है जो रोगों को दूर करने के काम आता है। निर्गुण्डा वृक्ष की अधिक विशेषताओं से युक्त दिखने वाली। निर्गुण्डी के अधिक गुणों से विभूषित। निर्गुण्डी में कन् प्रत्यय लगाकर निर्गुण्डिका बना है। कन् प्रत्यय स्वार्थ में भी होता है (अर्थात बिना अर्थ बदले)। कन् का अर्थ ''की तरह'', अधिक एवं अल्प भी होता है। निष्काष्य रोगान् देहम् गुण्डयति रक्षयति इति निर्गुण्डी। रोग को हटाकर शरीर की रक्षा करने वाला निर्गुण्डी नामक औषधि वृक्ष है। देवी के सन्दर्भ में अर्थ होगा विभिन्न कष्टों को हटाकर भक्त की रक्षा करने वाली। रक्षा करने का अर्थ पालन करना अर्थात सुख पूर्वक जीवन जीना होता है। निष्कास्य दुखान् गुण्डयति रक्षयति। भक्तों के कष्टों को दूर कर उनकी रक्षा करने वाली अर्थात सुखयुक्त या प्रसन्नता युक्त जीवन देने वाली। निर्गुण्डी नामक औषधि वृक्ष होता है जिसका विग्रह है– निष्कास्य रोगान् गुण्डयति रक्षयति, जो रोगों को हटाकर रक्षा करती है अर्थात स्वस्थ्य और सुखी जीवन देती है।

481. **निगुण्डा** – भक्तों की नित्य रक्षा करने वाली। भक्तों के समीप रहकर रक्षा करने वाली। भक्तों की पूर्णरूप से रक्षा करने वाली। नित्य, निकट, नितराम् (पूर्ण रूप से या अधिक रूप से) इन शब्दों से नि अक्षर ले लिया है। निषेध (अभाव) से भी नि अक्षर ले सकते है। गुण्डयति रक्षति इति गुण्डा। इस प्रकार गुण्डा का अर्थ होता है रक्षा करने वाली। यस्याः गुण्डाः निषेधः अस्तिः, सा निगुण्डा। इस प्रकार निगुण्डा का अर्थ हुआ जिसकी रक्षिका का अभाव है अर्थात जिसका कोई रक्षक नही है। जो स्वंय सभी की रक्षा करती है पर जिसका कोई रक्षक नहीं है। भक्त की पूर्ण रूप से रक्षा करने वाली। नितराम् गुण्डयति रक्षयति इति निगुण्डा। जिसने संसार रूपी वृक्ष को आत्यन्तिक रूप से लपेटा हुआ है। गुडी वेष्टने धातु होती है, जिसका अर्थ है लपेटना। नितराम् अर्थात

आत्यान्तिक रूप से या पूर्ण रूप से। संसार का लपेटे हुए का तात्पर्य है कि संसार इनके अन्दर है। सिन्धूवार पुष्प के समान श्वेत वर्ण वाली। गुण्ड का अर्थ है रक्षक या Bodyguard। गुडी रक्षणे धातु से यह शब्द बनता है जिसका अर्थ होता है रक्षा करना। गुण्डयति इति गुण्डा अर्थात रक्षा करने वाले को गुण्डा कहते हैं। (यदि निर्गुण्डा नाम हो तो अर्थ होगा – रक्षिकारहित अर्थात् उनका कोई रक्षक नहीं है। गुण्ड् धातु का अर्थ है रक्षा करना। गुण्डयति इति गुण्डः अर्थात् जो रक्षा करता है वह गुण्ड है। देवी स्वयं सबकी रक्षा करती है पर उनकी रक्षा करने वाला कोई नहीं है। उनके अतिरिक्त कुछ है ही नहीं तो उनकी रक्षा की क्या आवश्यकता।)

482. **निर्नासा** – जिन्हें नासिका या इन्द्रियों की आवश्यकता नहीं है। यहाँ नासिका उपलक्षण है सभी इन्द्रियों का। जो लिखा गया है बिनु पग चलै सुनै बिनु काना इससे तात्पर्य है। जिसकी नासिका न हो अर्थात धनुर्धारणी। नास का अर्थ होता है धनुष रहित। अतः निर्नास का अर्थ हुआ धनुर्धारी। सुगन्ध और दुर्गन्ध गुणों से परे, यह अर्थ भी कर सकते हैं।

483. **नासिकाभिधा** – नासिक है नाम जिनका अर्थात जो नासिक शहर के रूप में स्थित है। खड्गरहिता नाम वाली। न + असि = नासि, नासि = नासिक, कन् प्रत्यय लगाने से अर्थ नहीं बदलता जैसे बाल = बालक। उच्च से भी उच्च स्थिति से युक्त। कहते हैं नाक बचा ली अर्थात उच्चतम स्थिति बनी रही। नाक कटा दी अर्थात उच्चतम स्थिति से गिरा दी। नासिका नाम वाली या संज्ञा वाली।

484. **पताकिनी** – ध्वजा फहराने वाली (अपने रथ पर)। दूर से ही दिखाई देने वाली या आकृष्ट करने वाली। बहुत दूर तक एवं प्रभावशाली गुणों को धारण करने वाली। पताका दूर से ही दिखाई पड़ती है और बहुत दूर तक प्रभावित करती हैं, आकृष्ट करती हैं।

485. **पताका** – खुद पताकास्वरूपिणी है। चिह्न या प्रतीक स्वरूपिणी। पताका प्रतीक है नाम का, यश का। दूर से ही पता चल जाता कि देवी वह हैं। जिनका अहसास दूर से ही हो जाता है। पताका दूर से ही दिख जाती है। पताका की तरह दिखलाई देने वाली। जो सात्विक गुण के प्रतीक रूप पताका है। पताका चिन्ह होता है। घरों में या मन्दिरों में मंगल, सौभाग्य के लिए पताका लगाई जाती है। पताका विजय का प्रतीक है। इस नाम का अर्थ हुआ जो पताका की तरह है अर्थात् मंगल, सौभाग्य और विजय देने वाली है।

486. **पत्रप्रीति** – बिल्व आदि पत्रों से प्रसन्न होने वाली। इन पत्रों से पूजित होने पर वह प्रसन्न हो जाती है।

487. **पयस्विनी** – दूध देने वाली अर्थात कामनाओं को पूरा करने वाली। पयस्विनी दूध देती हुए गाय को कहते हैं। चित्रकूट की नदी का नाम भी पयस्विनी है। उस नदी के स्वरूप वाली या उस नदी से अभेद है जिनका। दूध देने वाली गाय की तरह। तात्पर्य है भक्तों की मनोकामनाओं को पूरा करने वाली। कामधेनू स्वरूपा अर्थात् भक्तों को मनोरथ पूर्ति रूपी दूध देने वाली। पयस् का अर्थ है दूध, जल। इस प्रकार पयस्विनी का अर्थ हुआ दूध से युक्त अर्थात् दूध देने वाली गाय, जल से युक्त अर्थात् नदी स्वरूपा। जो नदी की तरह निरन्तर प्रवाहमन है अर्थात् क्रियाशील है। देवी की आराधना करने से साधक के अन्तःकरण में कामधेनु का अवतरण होता है और उसकी कामनायें भावनाओं में बदल जाती है। फलतः साधक को संसार के बड़े–बड़े कष्ट–असंतोष से सहज ही निवृत्ति मिल जाती है। कामनाऐं असीम है। एक के पूरी होने से दूसरी खड़ी हो जाती है। मनुष्य को सारी पृथ्वी का साम्राज्य मिल जायें तभी भी उसे कामनाओं से मुक्ति नही मिल पाती। पूर्ण तो सद्भावनायें होती है, जो अभीष्ट परिणाम न मिलन पर भी अपनी इच्छा और चेष्टा में उत्कृष्टता भरी रहने के कारण आनन्द, उल्लास से उमगती रहती हैं। चिन्तन के इसी स्तर को कल्प वृक्ष कहते है जो प्रकारान्तर से कामधेनू है। पयस्विनी नाम की एक नदी भी है, उस नदी के स्वरूप या उस नदी से अभेद है जिनका।

488. **पीना** – जो भरी हुई है, पूरी है, भरपूर अर्थात पूर्ण स्वरूप वाली। उनके पास हर चीज है और प्रत्येक चीज पूर्ण मात्रा में है। पीन अर्थात स्थूल, मोटा, सम्पन्न, भरापूरा, प्रवृद्ध।

489. **पीनस्तनी** – भरपूर पूर्ण स्तनों वाली। तात्पर्य है भरपूर पोषण शक्ति वाली अर्थात प्राणियें को भरपूर पोषण देने वाली। उच्च कठोर स्तन वाली। शुष्कस्तनी नहीं है।

490. **पत्नी** – रक्षिका। भक्तों की रक्षा करने वाली। पत्नी को पत्नी इसलिए कहते हैं क्योंकि वह पति की रक्षा करती है। यज्ञ में भाग लेने वाली अर्धांगिनी से अभेद है जिसका। शादीशुदा महिला यज्ञ में जिस समय पति के साथ बैठती है, उस समय वह पत्नी कहलाती है। जब यज्ञ करते हैं तो देवताओं का न्यास करते हैं, देवी शक्ति रूप में अर्धांगिनी में न्यास प्रक्रिया के दौरान समाहित हो जाती है। इस प्रकार पत्नी से अभेद हो जाता है सम्पूर्ण विश्व का पालन – पोषण करने वाली।

491. **पवनाशी** – पवन अर्थात वायु ही भक्षण करके रह लेती है। अशन का अर्थ है खाना या भक्षण करना।

492. **निशामयी** – रात्रिरूपा। रात में सब बराबर होते हैं। अमीर – गरीब सब बराबर हो जाते हैं सोते समय। अतः इस नाम का अर्थ हुआ सबको बराबर भाव में लाने वाली।

493. **परा** – श्रेष्ठ या अन्तिम गन्तव्य। (सर्वश्रेष्ठ या अन्तिम प्राप्तव्य)। परावाणी स्वरूपा। जो देवताओं से रूप, गुण, शक्ति, सम्पन्नता, ऐश्वर्य आदि में श्रेष्ठ हैं। सबसे परे अर्थात सबसे ऊँची या श्रेष्ठ।

494. **परपराकाली** – श्रेष्ठों में श्रेष्ठ काली स्वरूपिणी। पर का एक अर्थ देवता भी होता है। देवताओं में श्रेष्ठ काली यह इस नाम का अर्थ हुआ। पर अर्थात श्रेष्ठ अर्थात देवता। अलग – अलग वर्गों के कई श्रेष्ठ हैं, उन श्रेष्ठों में भी श्रेष्ठ है परपरा। पर का अर्थ है श्रेष्ठ।

495. **पारकृत्यभुजप्रिया** – काम को समाप्ति तक ले जाने वाली भुजाओं वाले व्यक्ति जिन्हें पसन्द हैं। जो व्यक्ति अनुष्ठान या किसी कार्य को अधूरा छोड़ देते हैं ऐसे व्यक्ति को पसन्द नहीं करतीं। परलोक की प्राप्ति के लिए किया जाना वाला कृत्य है प्रिय जिसे। ऐसे कृत्यों का भोग करना प्रिय हैं जिसे। उत्तम लोकों की प्राप्ति के लिए किए जाने वाले कृत्यविशेष रूपी भोजन जिसे प्रिय हैं। संसार सागर से पार करा देने वाली क्रियाएं जिन्हें प्रिय हैं। भुज का अर्थ है क्रिया। भुजा अर्थात कर अर्थात करना, भुजाओं से ही क्रिया होती है।

496. **पवनस्था** – पवित्र करने वाली वायु में रहने वाली। पवन वह है जो दूसरें को पवित्र करें।

497. **पवना** – वायुस्वरूपिणी। वायु की शक्तिस्वरूपा।

498. **पवनप्रीतिवर्धिनी** – वायु की प्रीति को बढ़ाने वाली।

499. **पशुवृद्धिकरी** – जानवरों/जीवमात्र/जो जन्म मृत्यु के पाश में बँधे हैं, उनकी वृद्धि करने वाली।

500. **पुष्पपोषका** – पुष्पों का पोषण करने वाली। बकुल, चम्पा आदि पुष्पों को बढ़ाने वाली, मजबूती प्रदान करने वाली (उन्हें आवश्यक पोषक तत्वों को देकर)।

501. **पुष्टिवर्धिनी** – प्राणि मात्र में पुष्टि नामक धर्म विशेष बढ़ाने वाली। पुष्टि शरीर की होती है। विटामिन आदि को देकर शरीर को मजबूत करना शक्ति सम्पन्न करना, पुष्ट करना कहलाता है। शारीरिक और आत्मिक दोनों प्रकार से पुष्टि करने वाली। पुष्टि शरीर की होती है एवं तुष्टि मन की होती है।

502. **पुष्पिणी** – रजस्वला के रूप में है जो अर्थात कामाख्यादेवीस्वरूपिणी। आषाढ़ माह में प्रतिवर्ष कामाख्या देवी रजस्वला होती हैं। पृथ्वीस्वरूपा क्योंकि इस आषाढ़ मास में पृथ्वी भी रजस्वला होती है। फूलों वाली अर्थात फूलों से युक्त है, या फूल धारण करने वाली है। विविध प्रकार के पुष्पों से आह्लादित होती है पुष्प के समान इनका सुन्दर एवं कोमल रूप अतिशय मनोहारी है।

503. **पुस्तककरा** – हाथ में पुस्तक धारण करने वाली। पुस्तक ज्ञान का प्रतीक है। ज्ञान से युक्त, यह अर्थ हुआ।

504. **पूर्णिमातलवासिनी** – पूर्णिमा के स्वरूप में रहने वाली। तल का एक अर्थ स्वरूप भी होता है। पूर्णिमा के चन्द्रमा के तल पर निवास करने वाली अर्थात् सुन्दर।

505. **पेशी** – प्राणियों के शरीरों में स्थित माँस ये ही हैं। माँस भी देवी हैं क्योंकि सब कुछ ऊर्जा से बना है। ऊर्जा ही शक्ति अर्थात देवी है। पेशी की तरह सिकुड़ने और फैलने वाली। प्रत्येक गति (क्रिया) का कारण। शरीर की पेशियों के कारण ही शरीर में गति या क्रिया होती है। जगत का आधार। जगत की शक्ति का आधार। जिस प्रकार पेशी शरीर का आधार है उसे साधे रहती है उसी प्रकार देवी भी पेशी की तरह सबको साधे रहती है।

506. **पाशकरी** – बन्धन में डालने वाली। अपनी मायाशक्ति से प्राणियों को बन्धन में डाल देती हैं।

507. **पाशा** – बाँधने का साधन (फन्दा) स्वरूपा या ऐसे साधन की शक्तिस्वरूपा। बन्धन स्वरूपा अर्थात माया स्वरूपिणी, जो जन्म मृत्यु के बन्धन का कारण है। पाश नामक आयुध धारण किये हुए। पाशम् अस्या अस्ति इति पाशा। पाश से किसी को बाँधा जाता है। पाशम् अस्या अस्ति इति पाशा अर्थात् पाश जिसका है अर्थात् पाश धारण करने वाली। दैत्यों को मारने के लिए पाश धारण करने वाली। पाश फन्दे की तरह होता है जिससे यमराज किसी की आयु पूरी होने पर उससे जकड़कर प्राण ले जाते है। वरूण के पास भी पाश होता है।

508. **पांशुहा** – अपवित्रता को दूर या नष्ट कर देने वाली। पांशु अर्थात धूल अर्थात अपवित्रता (भक्तों की) लांछन, कलंक, पाप, धब्बा को मिटाने वाली।

509. **पांशुला** – धूल को धारण करने वाली अर्थात भूमि स्वरूपा। पांशु का अर्थ है धूल और लाति का अर्थ है ग्रह्णाति अर्थात ग्रहण करने वाली। पांशु अर्थात धूल अर्था रज। रजस्वला/रजोधर्म में रहने वाली। सतोगुण की धूलि से धूसरित/विभूषित। सतोगुण/तमोगुण/रजोगुण भी धूलि ही है।

510. **पशु** – जो प्राणियों के शुभ – अशुभ कर्मों को देखती हैं। पश्यति इति पशु। सम्पूर्ण विश्व को देखने वाली। पश्यति इति पशु। जो किसी से भेद नहीं करती। पशु जैसे सांड़ किसी का मारता है तो यह नहीं देखता कि सामने खड़ा व्यक्ति अधिकारी है, सन्त है, निर्धन है। पशु केवल देखता है, विचार नहीं करता है अतः पश्यति इति पशुः से उसे पशु कहा जाता है। जीव–मात्र में विचारशक्ति के रूप में रहने वाली। पश्यति का अर्थ विचारयति भी होता है अर्थात विचार करना। सामान्यतः पशु को पशु इसलिए कहते हैं क्योंकि वे केवल देखते हैं, विचार नहीं करते। पश्यते बध्यते जन्ममरणबन्धने। जो जन्म मरण के बन्धन में बँधा है वह पशु है। पश्यति इति पशु अर्थात् देखने वाली या विचार करने वाली। सत्, असत् देखने वाली या जानने वाली। छोटे–छोटे जीवों से लेकर ब्रह्मा तक सभी पशु कहे गये है। जीव मात्र में विराजमान अर्थात् चैतन्य या आत्मा के रूप में विराजमान। एक नियम है कि शब्द के आगे ''में विराजमान'' लगाने से शब्द का एक अन्य अर्थ निकल आता है।

511. **पटु** – निपुण, कुशल, चातुर्य/प्रवीणतायुक्त। प्रत्येक कार्य करने में निपुण है। सृष्टि, स्थिति, संहार कर्म करने में निपुण है। निष्ठुर या अत्यन्त कठोर (दुष्टों के लिए)। रोगरहित अर्थात स्वस्थ। उग्र, तीक्ष्ण। सुन्दर या मनोहर। चिरचिटा नाम की लता के समान अर्थात रोगों (कष्टों) को दूर करने वाली।

512. **पराशा** – श्रेष्ठ इच्छास्वरूपिणी। परा अर्थात श्रेष्ठ, आशा अर्थात् इच्छा। अप्राप्त के पाने की इच्छा जिसमें थोड़ा निश्चय भी हो, आशा कहलाती है। शिव की आशा को देने वाली अर्थात भक्तों की शिव प्राप्ति की आशा को पूरा करने वाली। मोक्ष, या ब्रह्म की आशा को पूरा करने वाली। पर अर्थात शिव, ब्रह्म, मोक्ष। श्रेष्ठ दिशा स्वरूपा। दिशाओं से भी परे अर्थात दिशाओं की सीमा से बाहर। दक्ष प्रजापति की श्रेष्ठ कन्या स्वरूपा। दक्ष की

एक कन्या का नाम आशा था। श्रेष्ठ जगहों पर सोने वाली। परा + शा। शी धातु में ड प्रत्यय लगाने पर श शब्द बनेगा जिसका अर्थ है शयन करने वाली। शत्रुओं का सम्पूर्ण रूप से संहार करने वाली। शॄ शृणाति धातु में ड प्रत्यय लगाने पर बने श शब्द का अर्थ संहार करने वाला होता है। पर (शत्रु) + आ (सम्पूर्ण रूप से) + शा।

513. **परशुधारिणी** – परशु नामक शस्त्र विशेष धारण करने वाली। परशु ऐसा अस्त्र है जिसमें एक डण्डे के सिरे पर एक अर्द्धचन्द्राकार लोहे का फल लगा रहता है। परशु नामक कुल्हाड़ी का धारण करने वाली। परशु एक कुल्हाड़ी का भी नाम है। ऐसी विशिष्ट चेतना से युक्त जो मन की गलत धारणाओं अर्थात जो ब्रह्म के स्वरूप से भिन्न है, को काटने वाली हैं। परशु का अर्थ है विशिष्ट चेतना जो मन की गलत धारणाओं एवं मान्यताओं को काटती है जिससे मन शुद्ध होता है और जीवात्मा परमात्मा से मिलने के योग्य हो जाती है। पर का अर्थ है शत्रु एवं शृणाति का अर्थ है नाश करना। शत्रुओं को मारने के कारण फरसा को परशु कहते है।

514. **पाशिनी** – राग स्वरूप पाश से युक्त। देवी के लिए कहा गया है – रागस्वरूपपाशाढ्या। राग पैदा कर मनुष्य को संसार से बाँधे रखती है। पाश नामक आयुध धारण करने वाली जिससे बाँधा जाता है। पाश फन्दे की तरह होता है जिससे शत्रुओं को बाँध दिया जाता है। जीवन को पाश में बाँधने वाली। जन्म मरण रूपी पाश को धारण करने वाली। संसार रूपी पाश को धारण करने वाली। पाश में तस्य इदम् सूत्र से ठन् प्रत्यय लगाने से पाशिनी शब्द बनेगा। वरूण का नाम ही पाशी है। पाशिम् नयति इति पाशिनी। वरूण का नेतृत्व करने वाली अर्थात् उसका मार्गदर्शन करने वाली। पाश वशीकरण शक्ति का प्रतीक है। इस शक्ति से युक्त। इच्छा एवं राग को भी पाश कहा गया है। मनुष्य में राग और इच्छा डालकर उसे संसार से बाँधे रखती हैं। राग शक्ति या इच्छा शक्ति से युक्त। इन्द्रियों के विषय को भी पाश कहते है। घृणा, लज्जा, जुगुप्सा, कुल, शील आदि अष्ट पाश भी पाश कहे जाते है।

515. **पापघ्नी** – पापों का विनाश करने वाली अर्थात मारने वाली। पापियों का नाश करने वाली। पापम् का अर्थ पाप है, पापः का अर्थ पापी है। पापम् अस्य अस्ति इति पापः।

516. **पतिपत्नी** – अर्धनारीश्वरस्वरूपा। शिव और शक्ति के संयुक्त रूप वाली। पूर्ण रूप वाली। केवल पति अपूर्ण है, केवल पत्नी अपूर्ण है, दोनो मिलकर पूर्ण होते हैं, पतिपत्नी पूर्ण है।

517. **पतिता** – भक्तों के लिए पतित हो जाने वाली अर्थात भक्तों की तरह बन जाती हैं। पतित का अर्थ है गिरना। देवी भक्तों के लिए दिव्य लोक से आकर धरती में आ जाती है। सांसारिकता की दृष्टि में ऊपर से नीचे आना पतित होना है। जो भक्तों की रक्षा/दुष्टों के वध के लिए अपनी अवस्था से गिर जाती है अर्थात मनुष्य/राक्षसी का रूप धारण कर लेती है। मानव द्वारा निर्मित किसी भी समाज या जाति से परे। समाज में जाति बहिष्कृत व्यक्ति को पतित कहा जाता है। देवी सभी जातियों से परे हैं। गंगा स्वरूपा। गंगा जी श्राप के कारण अपने मूललोक से नीचे पृथ्वी लोक में आयी। ब्रह्म लोक से पृथ्वी लोक में आना अर्थात् ऊपर से नीचे आना पतन ही है। देवी–देवता जब अपने उच्च लोक से पृथ्वी पर अवतार लेते है तो शब्द के अर्थ की दृष्टि से पतन ही है। कुण्डलिनी शक्ति के उस स्वरूप या अवस्था वाली जो सहस्रार चक्र से वापस नीचे आ गई हो।

518. **पतितापिनी** – पति को दुख देने वाली। दक्ष यज्ञ में देवी यज्ञ की अग्नि में सती हो गई थीं, जिससे शिव जी दुखी हो गए थे और उनके विरह में पागल हो गए थे। इस प्रकार पति अर्थात शिव को दुखी करने वाली। शिव द्वारा मना करने पर भी वे दक्ष यज्ञ में गई थीं, इस प्रकार भी शिव को दुखी किया था। तपस्या के द्वारा विशेष शक्तिशाली बने पृथ्वी के पति (स्वामी या राजा) राक्षसों को तपाने वाली अर्थात उन्हें कष्ट देने वाली। अपने पति शिव को कष्ट देने वाली। जिद्द करके दक्ष के यज्ञ में जाने पर भी शिव को कष्ट हुआ एवं जब सती ने अपनी आहूति दे दी तो शिव को अत्यन्त कष्ट हुआ। पति का अर्थ भूपति अर्थात् राजा भी कर सकते है। अन्याय या अधर्म के रास्ते पर चलने वाले राजाओं को कष्ट देने वाली अर्थात् पीड़ित करने वाली।

519. **पिशाची** – असुरों के माँस का खाने वाली। पिशित अर्थात कच्चे माँस खाने वाले को पिशाच कहते हैं। दुर्गासप्तशती में रक्तबीज असुर के वध के समय देवी राक्षसों को कच्चा ही खा गईं थीं। दुष्टों के लिए पिशाची की तरह अर्थात उनसे अत्यन्त क्रूरता एवं दुष्टता करने वाली। पिशाच योनि में भी अंश रूप से विद्यमान क्योंकि देवी सर्वव्यापक हैं।

520. **पिशाचघ्नी** – पिशाच की तरह अत्यन्त क्रूर और दुष्ट शत्रुओं को मारने वाली। पिशाच असुरों को मारने वाली। वे दुष्टों, पिशाचों/भूत – प्रेतों व राक्षसों का संहार कर देने वाली हैं। पिशाच एक हीन देव योनि है, जो यक्षों और राक्षसों से हीन कोटि के कहे गये हैं। ये अपवित्र और गन्दे रहते हैं तथा खोपड़ी में रक्त पीना जैसे वीभत्स कर्म करते हैं। ऐसे पिशाच जो उनके भक्तों का सताते है या देवताओं से युद्ध करते हैं, उन्हें देवी मार देती है। पिशाचों को मारने वाली, उन्हें नष्ट करने वाली। निम्नकोटि के वीभत्स कार्य करने वाले पिशाच हैं। ये इंसान का मांस खाकर और खून पीकर जीवित रहते हैं।

521. **पिशिताशनतोषिणी** – माँस के भोजन से सन्तुष्ट हाने वाली। पिशित (अर्थात कच्चा माँस) देवी को बलि में चढ़ाया जाता है जिससे देवी प्रसन्न होती हैं। अशन का अर्थ है खाना या भोजन करना। माँस के भोजन के द्वारा सन्तुष्ट होने वाली। पराशक्ति माँस का भोजन करके सन्तुष्ट हो जाती हैं। तमोगुणों, अवगुणों और संसार के बन्धन रूपी अवगुण का भक्षण कर सन्तुष्ट होने वाली। माँस का तात्पर्य यह भी किया जाता कि माँस खेचरी मुद्रा, वाणी पर नियन्त्रण करना है। जीभ को उल्टाकर कपालगुहा में ले जाना ही खेचरी मुद्रा है। जीभ को उल्टा कर खेचरी नामक योग मुद्रा लगाना ही माँस भक्षण है।

522. **पानदा** – भक्तों को अमृत पान कराने वाली। पानी एवं अन्य उपयोगी पेय पदार्थों को देने वाली अर्थात प्राणियों को उपलब्ध कराने वाली। पान का अर्थ रक्षा भी होता है क्योंकि पा धातु का अर्थ रक्षा करना होता है। अपने भक्तों को रक्षा देने वाली अर्थात उनकी रक्षा करने वाली। दो अवखण्डने धातु से दा का अर्थ खण्डन या नष्ट करना भी होता है। राक्षसों के रक्षा कवच को नष्ट कर देने वाली। मदिरा पान देने वाली अर्थात मदिरा पान कराने वाली। वाममार्ग साधना में साधक मदिरा पान करता है। विभिन्न प्रकार के पेयों को प्रदान करने वाली।

523. **पानपात्रा** – अमृत पान के लिए पात्र धारण करने वाली। वाममार्गी साधना के सन्दर्भ में अर्थ होगा पानपात्र (मदिरा पात्र) को धारण करने वाली। मदिरा पान के लिए इन्होंने चषक या प्याला रखा हुआ है। इनके करकमल में पीने का पात्र, कमण्डलु सुशोभित रहता है। जो रक्षा के पात्र हैं अर्थात जिनकी रक्षा होनी चाहिये उन्हें देने वाली अर्थात सुरक्षा कवच देने वाली। पानपात्र + आ, आ का एक अर्थ है देना।

524. **पानदानकरोद्यता** – अमृत पान कराने के लिए जो सदैव उद्यत या तैयार हैं। सागर मन्थन से उत्पन्न अमृत को देवताओं को पिलाने के लिए तैयार थीं। भक्तों को उपयोगी पेय पदार्थे को देने के लिए तैयार। वाममार्गी मार्ग में मदिरा पिलाने के लिए सदैव तैयार रहती है। जो भी भक्त इस कार्य के लिए तैयार होता है, न्यास प्रक्रिया के द्वारा उसका देवी से अभेद होता है। न्यास के बाद साधकों द्वारा जो कुछ किया जाता है वह देवी देवता के द्वारा किया गया कहा जात है। अन्यथा भी कोई भी प्राणी जो भी कुछ करता है, शक्ति के द्वारा ही करता है। शक्ति द्वारा करना अर्थात देवी के द्वारा करना।

525. **पेया** – पीने योग्य रसस्वरूपा अर्थात अमृत स्वरूपिणी। कोई भी रस जो पीने योग्य हो वह देवी का ही स्वरूप है। कानों से पान करने योग्य चरितामृत वाली। भक्तगण उनके दिव्य चरित्रों का सदैव पान करते हैं, इसके द्वारा वे परमानन्द की अनुभूति करते हैं। पीने योग्य अर्थात् जिसका चरित्र कानों से सुनने लायक हो। सुनने, देखने को भी पीना कह दिया जाता है। प+ईया = पेया। पाति इति प्, जो रक्षा करता है वह पः है, शिव सभी की रक्षा करते है अर्थात् शिव प हुये। ईया का अर्थ है प्राप्त करने योग्य। शिव द्वारा प्राप्त करने योग्य। शिव की गन्तव्य अर्थात् शिव को जहाँ तक पहुँचना है।

526. **प्रसिद्धा** – जिसे सब कोई जानता है। प्रसिद्ध का अर्थ होता है विख्यात, मशहूर। प्रसिद्ध का एक अर्थ भूषित या अलंकृत भी होता है। जो दिव्य गुणों से, दिव्य आभूषणों से, दिव्य वस्त्रों से अलंकृत हैं।

527. **पीयूषा** – अमृतस्वरूपा। अमृत देने वाली। पीयूष + आ, आ का अर्थ है देना। दुग्ध स्वरूपा। गाय का वह दूध जो बच्चा पैदा होने के बाद से सात दिन या नौ दिन तक निकलता पीयूष कहलाता है। ऐसा दूध भी देवी का ही रूप है। देवी अर्थात शक्ति अर्थात ऊर्जा ही व्यक्ति, वस्तु, गुणों के रूप में रूपान्तरित होती है। अमृत स्वरूपिणी।

528. **पूर्णा** – जो सम्पूर्ण है अर्थात हर चीज उनमें विद्यमान है तथा प्रत्येक चीज भी पूर्ण मात्रा में। पंचमी, दशमी, अमावस्या एवं पूर्णिमा की तिथियां पूर्णा कहलाती हैं, इन तिथियों के स्वरूप वाली। चन्द्रमा की पन्द्रहवीं कला पूर्णिमा कहलाती है, इस कला के स्वरूप वाली। दक्षिण भारत की पूर्णा नामक नदी स्वरूपा। जो शक्तिपूर्ण है अर्थात सभी शक्तियों से युक्त हैं। जो सिद्ध या सफल हैं।

529. **पूर्णमनोरथा** – पूर्ण है मनोरथ जिसका अर्थात जिसे और कुछ नहीं चाहिए। उनकी हर इच्छा पूर्ण है। वास्तव में उनके पास कुछ भी अभाव नहीं है अतः इच्छा उठने का भी प्रश्न नहीं उठता।

530. **पतंगभा** – सूर्य की तरह आभा वाली। उनकी कान्ति सूर्य की प्रभा की तरह अत्यन्त प्रकाशमान है। पतंग का एक अर्थ है सूर्य। चिन्गारी की तरह आभा वाली। पतंग का एक अर्थ है चिंगारी। विष्णु की तरह आभा वाली। पतंग का एक अर्थ विष्णु या कृष्ण।

531. **पतंगा** – सूर्यस्वरूपिणी। सूर्य के समान प्रकाशित होने वाली। वे कभी कभी अत्यधिक तेजस्वी रूप को धारण कर लेती है जिससे प्राणीमात्र के नेत्र चकाचौंध हो जाते हैं। सूर्य की शक्तिस्वरूपा। पतंग + आ, एकाक्षरी कोष के अनुसार आ एक अर्थ है शक्ति। भगवान कृष्ण या विष्णु की शक्तिस्वरूपा।शरीर वाली अर्थात आवश्यकता पड़ने पर शरीर भी धारण करती हैं। पतंग का एक अर्थ है शरीर। पतंग नामक गन्धर्व वाली अर्थात इस गन्धर्व से उपासित। घोड़ा वाली अर्थात घोड़े पर सवार होकर चलने वाली

532. **पौनःपुन्यपिबापरा** – बार – बार पीने में लगी हुई अर्थात तत्पर (अमृत या मदिरा पीने में कोई सा भी अर्थ ले सकते हैं)। अपने आनन्द स्वरूप का बार–बार पान करने वाली श्रेष्ठ शक्ति स्वरूपा। बार–बार पीने वाली ऐसी श्रेष्ठ शक्ति स्वरूपा। अपरा अर्थात् जिससे श्रेष्ठ दूसरा न हो। पौनःपुन्यपिबा + अपरा। यदि इसे पौनःपुन्यपिबा + आ + परा इस प्रकार पदविच्छेद किया जाये तो अर्थ होगा बार–बार पीने में लगी हुयी। आ का सामान्य अर्थ समन्तात् अर्थात् चारों ओर से या पूर्ण रूप से होता है। एकाक्षरी कोष में आ का अर्थ भाव भी दिया गया है। प्रत्येक चीज भाव है अतः कभी–कभी आ का अलग से अर्थ देने की आवश्यकता नही है। विश्वामित्र का अर्थ विश्वमित्र भी होता है। परा का अर्थ है लगा हुआ या संलग्न। शत्रुओं को मारने के लिए द्वैतभाव पैदा करना आवश्यक है। ऐसा कहा जाता है कि देवी के द्वारा युद्ध में मद्यपान द्वैतभाव पैदा करने के लिए ही किया जाता है जिससे राक्षसों को मारा जा सके। कुछ लोग शहद पीने का, कुछ लोग मद्यपान (शराब) पीने का एवं कुछ लोग अपने आनन्द स्वरूप का पान करने वाली ऐसा अर्थ लगाते हैं।

533. **पंकिला** – लक्ष्मीस्वरूपिणी या समृद्धि स्वरूपा। लक्ष्मी पंकिल होती है, शुष्क नहीं होती। पंक का अर्थ है कीचड़ अर्थात गीलापन। लक्ष्मी शुष्क से विपरीत है। किसी यजमान को अच्छी दक्षिणा न मिले तो वह कहता है कि सब कुछ सूखा रहा। श्रीसूक्त में आया है कर्दमेन प्रजा भूता। संसार एक कीचड़ है उसी में लक्ष्मी होती है। कभी – कभी कीचड़ अर्थात तमोगुण की प्रधानता से युक्त। पंकिल का शब्दिक अर्थ है कीचड़ वाली। पंकिल का अर्थ बड़ी नाव भी होता है और नाव वह है जो नदी या समुद्र पार करा दे। बड़ी नाव स्वरूपा अर्थात सभी भक्तों को संसार सागर से पार करा देने वाली।

534. **पंकमग्ना** – जो संसार रूपी कीचड़ में मग्न है आर्थात व्याप्त है। संसार को कीचड़ की तरह माना जाता है। धन की अधिकता में मग्न। पिछले नाम में स्पष्ट किया गया है कि लक्ष्मी सूखी नहीं होती अर्थात गीली होती हैं। पंक अर्थात कीचड़ अर्थात गीलापन। पाप से युक्त संसार में प्रविष्ट, पंक अर्थात कीचड़ या पाप। कीचड़ में निमग्न। विभिन्न प्रकार के कलंकों, तामसी प्रवृत्तियों को धारण कर उनमें स्थित होने वाली। जो पाप में डूबे हैं, उनका नाश करने वाली। पंकमग्न + आ, आ का अर्थ है नाश करना, पंक का अर्थ है पाप। पचि विस्तारे धातु से पंक (कीचड़) शब्द बनता है क्योंकि कीचड़ फैलता है। जो फैलने के स्वभाव वाली है एवं आनन्द में मग्न हैं।

535. **पानीया** – जल स्वरूपा। जल वाली अर्थात जल में निवास करने वाली जैसे लक्ष्मी जी। पानीयम् अस्या अस्ति इति पानीया। मधु या मद्य वाली अर्थात युद्ध के अवसर पर मद्य का सेवन करने वाली। रक्षा के योग्य अर्थात मन्त्रस्वरूपा क्योंकि मन्त्र के बारे में कहा जाता है कि उसे दूसरों को नहीं बताना चाहिए अर्थात उसकी रक्षा करनी चाहिये। पानीय का अर्थ जल, मद्य, रक्षा करने योग्य, पीने योग्य दिया गया है। पीने योग्य अर्थात रस स्वरूपा। शब्द के रूप में जिसका पान किया जाता है अर्थात सुना जाता है। साधु जब बोलता है तो कहते हैं अमृत पान करो अर्थात शब्द का सुनना भी पान करना होता है। गुरू के मुख से निकली बातों को सुनने के लिए कहा जाता है कि अमृत पान करो। पानीय जल को कहते हैं। उनका एक विग्रह जल में है। जल को जीवन भी कहते हैं। जलस्वरूपा। जल रूप के द्वारा संसार को जीवन प्रदान करती हैं। पाति इति प्, जो रक्षा करता है वह पः है, शिव सभी की रक्षा करते है अर्थात् शिव प हुये। पेन आनीया अर्थात् शिव के द्वारा लायी जाने योग्य अर्थात् शिव के द्वारा पत्नी के रूप में कैलाश में लायी जाने योग्य। जलस्वरूपा या जल की शक्ति स्वरूपा। पानीय का एक अर्थ जल भी होता है। जल का एक अर्थ है जीवन।

536. **पंजरस्थिता** – कंकाल में भी रहने वाली। देवी सर्वव्याप्त हैं। संसार रूपी पिंजड़े में भी विराजमान। शरीर रूपी पिंजड़े में विराजमान आत्मस्वरूपा।

537. **पंचमी** – पंचमीतिथि स्वरूपा। तुरीयातीत अर्थात सदैव आनन्द की स्थिति वाली। जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय इन चार अवस्थाओं के बाद तुरीयातीत होती है। तुरीय अवस्था में आनन्द.की अनुभूति होती है। जब यह अनुभूति स्थाई होती है तो इसे तुरीयातीत कहते हैं। पंचम शिव को कहते हैं क्योंकि देवताओं की गिनती में पाँचवें नम्बर पर सदाशिव आते हैं। यहाँ पाँचवें नम्बर का अर्थ श्रेष्ठता के आधार पर नहीं है बल्कि गिनती करते समय पाँचवें नम्बर पर बोला गया। शिव की शक्ति पंचमी कहलाती है।

538. **पंचयज्ञा** – पंचयज्ञ स्वरूपिणी। भूत यज्ञ, पितृ यज्ञ, ब्रह्म यज्ञ, देव यज्ञ, अतिथि यज्ञ आदि पंचयज्ञ कहलाते हैं।

539. **पंचता** – विस्तार के भाव वाली अर्थात विस्तार इनका गुण है। पंच का अर्थ विस्तार भी होता है तथा तल् प्रत्यय लगाने से पंचता बना जो गुण या भाव का बोधक है। विस्तार वाली। पंच तत्वों का विस्तार करने वाली अर्थात इन तत्वों का विस्तार कर ब्रह्माण्ड का निर्माण करने वाली। तन् धातु में ड प्रत्यय लगाने से बने त शब्द का अर्थ है विस्तार करने वाला। पाँच महाभूतों का समूह स्वरूपा। पाँच महाभूतों का भाव स्वरूपा। तल् प्रत्यय लगे होने पर भाव या समूह का अर्थ होता है। जैसे जनता का अर्थ है जन का समूह। तन् धातु में ड प्रत्यय लगाने से त शब्द बनेगा जिसका अर्थ है विस्तार करने वाला। पंच महाभूतों का विस्तार करने वाली अर्थात् विस्तार कर जगत रूप में परिवर्तित करने वाली। तल् प्रत्यय भाव, गुण या विशेषता अर्थ भी देता है। पंच महाभूतों या पंच ज्ञानेन्द्रियों या पंच कर्मेन्द्रियों के भाव, गुण या विशेषता स्वरूपा।

540. **पंचमप्रिया** – पंचम स्वर अर्थात प जिसे प्रिय है (सा, रे, ग, म, प से स्पष्ट है कि प पाँचवा स्वर है)। जिसे कोयल प्रिय है। कोयल पंचम स्वर में गाती है। पंच मकारों में पाँचवा मकार है मैथुन। जिसे मैथुन प्रिय है अर्थात

शिव से एक होना पसन्द है। पंचम का अर्थ दक्ष या निपुण, सुन्दर भी है। जो गुणों के कारण सुन्दर हैं, उन्हें पसन्द करने वाली। जो अपने कार्यों को दक्षता पूर्वक करते हैं उन्हें पसन्द करने वाली।

541. **पिचुमन्दा** – नीम के समान औषधि स्वरूपा अर्थात दरिद्रता, मूर्खता आदि दोषों को दूर करने वाली। पिचुमन्द नीम का नाम है और नीम औषधि स्वरूपा अर्थात रोगों को दूर करने वाली होती है। नीम के पेड़ वाली अर्थात नीम के पेड़ को आश्रय बनाने से उन्हें पिचुमन्दा कहा गया है। पिचुमन्दम् अस्या अस्ति इति पिचुमन्दा। पिचुमन्द + आ, एकाक्षरी कोष में आ का एक अर्थ शक्ति दिया गया है। नीम में रहने वाली रोगनिवारिका या अन्य जो भी शक्तियाँ हैं, उनके स्वरूप वाली।

542. **पुण्डरीका** – कमल की तरह सुन्दर स्वरूप वाली। कमल वाली अर्थात कमल धारण करने वाली। पुण्डरीकम् अस्या अस्ति इति पुण्डरीका (सफेद कमल वाली अर्थात सफेद कमल धारण करने वाली)। पुण्डरीक का अर्थ है सफेद कमल, कमण्डलु, तिलक। सफेद कमल धारण करने वाली। कमण्डलु धारण करने वाली। तिलक धारण करने वाली।

543. **पिकी** – कोयल की तरह मधुर कण्ठ वाली।

544. **पिंगललोचना** – पीली आँखों वाली, जैसा कि बिल्ली की आँख होती है। शेर की तरह पीली आँखों वाली जो अँधेरे में भी देख लेते हैं।

545. **प्रियंगुमंजरी** – प्रियंगु नामक धान्य की मंजरी की तरह भूख मिटाने वाली। प्रियंगु सरसों की तरह का एक पौधा होता है जिसके बीज मसाले के रूप में प्रयुक्त होते हैं। कंगनी, कुटकी, राई इसके अन्य नाम हैं। कंगनी नामक पेड़ की मंजरी धारण करने वाली। प्रियंगु एक वैदिक धान्य है पर यह चावल नहीं है।

546. **पिण्डी** – विशेष आकृति रहित अर्थात निराकार। पिण्डी गोल होती है अर्थात आकृति रहित अर्थात निराकार। वैष्णो देवी में माँ का पिण्डी रूप सुशोभित है अर्थात पिण्डी रूप में विराजमान। पिण्ड शरीर को भी कहते हैं। वे चराचर जीवमात्र के पिण्ड में विराजमान है, अतः उनका नाम पिण्डी है। वैष्णोदेवी स्वरूपा। यहाँ महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती देवी पिण्डी रूप में है। पिण्ड का अर्थ है कोई गोल द्रव्य खण्ड या ठोस टुकड़ा, शरीर या देह, शक्ति या बल। इस प्रकार पिण्डी का अर्थ हुआ शरीर धारी अर्थात जो सगुण साकार रूप में भी है। बल या शक्ति से युक्त। सबको अपने में पिण्डित किये हुये अर्थात् अपने में समेटे हुए। पिण्डित करना अर्थात् एकत्रित करना। सर्प चलने पर फैलता है किन्तु बैठने पर पिण्डी रूप धारण करता है। गोलाकार आकृति वाले ब्रह्माण्ड के स्वरूप वाली। पिण्ड का आकार गोलाकार बताया गया है। हमारे शरीर की आभा शुद्ध अवस्था में गोलाकार या अण्डाकार ही होती है। एक आचार्य का मत है कि प्रकृति की सभी वस्तुऐं गोलाकार ही होती हैं उन्हें चपटा बाद में बनाया जाता है। प्रत्येक वस्तु में कुछ न कुछ गोलाकार आकृति अवश्य होती है। शब्दकल्पद्रुम में पिण्डी की एक परिभाषा ज्ञाननिरूपणार्थक उपन्यासः दी गई है जिसका तात्पर्य है कि ज्ञान को कुछ बताने के लिए जिसे सूत्र रूप में या छोटे रूप में कहा जाता है। पिण्डीभूत होना अर्थात समेटकर छोटा हो जाना। सूत्र एक प्रकार के पिण्डी हैं।

547. **पण्डिता** – सत् असत् विवेक करने वाली विदुषी। सत् असत् विवेचिनी बुद्धि को पण्डा कहते हैं। विवेक का अर्थ होता है जो दो चीज़ों को अलग कर सके। सत् असत् को अलग अलग कर सके अर्थात् जिसे पता हो कि सत् क्या है असत् क्या है। पण्डित + आ, विद्वानों में रहने वाली शक्ति स्वरूपा अर्थात विद्वता या ब्रह्मतेज रूपी शक्ति स्वरूपा।

548. **पाण्डुरप्रभा** – पीलापन लिये सफेद रंग की कान्ति वाली। पाण्डुर का अर्थ सफेद भी है और पीला भी है।

549. **प्रेतासना** – प्रेत पर चढ़ी हैं अर्थात जिन्होंने प्रेतों को आसन के रूप में प्रयोग किया हैं। देवी को पंचप्रेतासना कहते हैं। ब्रह्मा, विष्णु, रूद्र और ईशान पाये हैं तथा सदाशिव चारपाई का फलक है, जिस पर देवी विराजमान हैं। अब वे पाँचों प्रेत इसलिए कहलाते हैं क्योंकि बिना शक्ति के ये मुर्दे की तरह होते हैं। प्रगतो इतः अर्थात यहाँ से (शरीर से) चला गया है अर्थात प्रेत। कई देवियों के ध्यान में यह भी है कि वह प्रेत पर सवारी करती हैं। अनेक स्थलों पर उन्हें शवासना अर्थात शव पर पर आरूढ़ दिखाया गया है।

550. **प्रियालस्था** – प्रियाल वृक्ष (चिरौंजी वृक्ष) विशेष में विराजमान। चिरौंजी के वृक्ष में स्थित।

551. **पाण्डुघ्नी** – पीलिया रोग को समाप्त कर देने वाली।

552. **पीनसापहा** – पीनस नामक रोग (सर्दी/जुकाम) को दूर कर देने वाली।

553. **फलिनी** – फलों से युक्त, जिसमें फल लगते हैं, सभी फल लगे हैं जिसमें अर्थात हर चीज इनके पास है। बुद्धि, **वैभव,** राज्य जिसे जो चाहिए वह दे देती हैं। यमराज ने नचिकेता से कहा था जो चाहे माँग लो अर्थात सारे फल इनके पास हैं तभी तो कह सकते हैं जो चाहे माँग लो। शब्दकोष में फलिनी के कई अर्थ हैं जैसे प्रियंगु, अग्निशिखा वृक्ष, मूसली, इलायची, मेंहदी आदि। इन अर्थों में ''के समान'' या ''इनमें अंश रूप से विद्यमान'' यह जोड़कर देवी के नाम का अर्थ निकल आता है। इलायची की तरह इलायची की तरह सुगन्ध से युक्त। मूसली की तरह अर्थात मूसली की तरह अपने भक्तों में शक्ति का वर्धन करने वाली।

554. **फलदात्री** – भक्तों को अभीष्ट फल प्रदान करने वाली।

555. **फलश्री** – फलों की शोभा स्वरूपा। आम, अमरूद, अंगूर आदि फलों की शोभा भी देवी ही हैं। फलों की शोभा वाली। वे फलों की शोभा से सम्यक् रूप से विभूषित हैं। फल का अर्थ ढाल, कर्म का परिणाम, त्रिफला, लाफ, जायफल आदि भी मिलता है। ढाल की शोभास्वरूपा। वृद्धि या लाभ की शोभास्वरूपा। श्री अर्थात जिसका आश्रय लिया जाए। ढाल ने जिसका आश्रय लिया है अर्थात ढाल को धारण करने वाली। कर्मफल ने जिसका आश्रय लिया है अर्थात कर्मफल देने वाली।

556. **फलभूषणा** – फलों के आभूषण धारण करने वाली। फलों को आभूषण के रूप में धारण करने वाली।

557. **फूत्कारिणी** – फूत् ऐसा शब्द करने वाली (दैत्यों को डराने के लिए)। सम्भवतः कुण्डलिनी जागरण के समय कुण्डलिनी के रूप में ऐसा शब्द करने वाली।

558. **स्फारी** – फैलने वाली (विस्तृत होने वाली)। फैल जाने वाली। ब्रह्माण्ड के रूप में फैली हुई हैं।

559. **फुल्ला** – प्रफुल्लित/प्रसन्न या हंसते हुए स्वरूप वाली। फूली हुई अर्थात विकसित स्वरूप वाली।

560. **फुल्लाम्बुजानना** – प्रफुल्लित कमल अर्थात विकसित कमल के समान मुख वाली।

561. **स्फुलिंगहा** – चिंगारियों को निकालने वाली अर्थात जिससे चिंगारी निकलती हैं। अग्नि स्वरूपा। ओहाक् त्यागे धातु से हा का अर्थ त्यागना अर्थात emit करना होता है। ब्रह्माण्ड के ग्रह, नक्षत्र, सूर्य, चन्द्रमा, तारे सब उसकी चिंगारियाँ हैं।

562. **स्फीतमति** – बढ़ी हुई बुद्धि वाली अर्थात असीम बुद्धि वाली। विस्तारयुक्त बुद्धि वाली अर्थात विशाल बुद्धि वाली। पवित्र या शुद्ध बुद्धि वाली (यदि स्फीतमती शब्द है तो अर्थ होगा विस्तार वाली, फैले हुए स्वरूप वाली अर्थात जो पहले से ही फैली हुई है)। स्फीत का अर्थ बढ़ा हुआ, बहुत, पवित्र या शुद्ध है।

563. **स्फीतकीर्तिकरी** – फैली हुई कीर्ति अर्थात बहुत अधिक कीर्ति करने वाली। दूर दूर तक कीर्ति फैलाने वाली। बढ़ी हुई अर्थात प्रचुर मात्रा में या अधिकाधिक कीर्ति करने वाली या देने वाली।

564. **बालमाया** – जो बाला (कुमारी) भी है और माया भी है। माया भी है का अर्थ है जो जानी न जाए।

बालकों जैसी विभिन्न प्रकार की मायायों को रचने वाली जैसे वे कभी बालक बन जाते हैं कभी सिपाही बन जाते हैं कभी चोर बन जाते हैं। माया का अर्थ है जो सत्य न हो, मिथ्या या लीला हो। माया के आदिस्वरूप वाली। माया के आरम्भिक स्वरूप वाली अर्थात ईश्वर ने जब माया की सृष्टि की उसकी आरम्भावस्था वाली। बल में स्वार्थ (अर्थ बदले बिना) में अण् प्रत्यय लगाने से बाल शब्द बनेगा जिसका अर्थ है बल या शक्ति। इस प्रकार बालमाया का अर्थ हुआ बलशाली या अत्यन्त शक्तिशाली मायाशक्ति स्वरूपा। माया शक्ति का अर्थ है जो पदार्थो के वास्तविक रूप को छिपाकर उसे दूसरे रूप में दिखाती है, जो असीम को सीमित बना देती है, जो अखण्ड को खण्ड–खण्ड करके दिखाती है अर्थात द्वैत या नानत्व पैदा करती है।

565. **बलाराति** – बल नामक दैत्य जिनका शत्रु था। बल नामक दैत्य की शत्रु। दैत्यों, दुष्टों के लिए शक्तिशाली या बलवान शत्रु की तरह। आराति का अर्थ है शत्रु।

566. **बलिनी** – बल वाली अर्थात शक्ति सम्पन्न। सेना से युक्त। सत्य से युक्त। तेज से युक्त। बलराम से युक्त अर्थात बलराम जिनकी उपासना करते हैं। उपासना करने से भक्त भगवान से जुड़ता है। आश्रय से युक्त अर्थात आश्रय की मालकिन। बल के कई अर्थ हैं जैसे सेना, सत्य, तेज, बलराम, आश्रय आदि। बल का अर्थ आश्रय या सहारा है। आश्रय देने वाले से युक्त अर्थात सबके आश्रय।

567. **बलवर्धिनी** – भक्तों का बल बढ़ाने वाली। यहाँ बल से तात्पर्य शारीरिक बल, विद्याबल, यशोबल, धनबल सभी बलों से है।

568. **वेणुवाद्या** – वंशी नामक वाद्य को धारण करने वाली। बाँसुरी नामक वाद्य के गुणों वाली अर्थात उन गुणों को धारण करने वाली या उन गुणों को अपने भक्तों को देने वाली। वाद्य + आ, आ का एक अर्थ है देना। कृष्ण और काली में अभेद है। काली और मातंगी में अभेद है। वेणु का अर्थ है बांसुरी। यह अनाहत नाद का प्रतीक है। वेणु वादन का अर्थ अनाहत नाद करने वाला कर सकते है। बांसुरी में तीन प्रमुख गुण होते है। पहला इसमें गाँठ नही होती जो यह संकेत देता है कि अपने अन्दर किसी प्रकार की गाँठ मत रखो अर्थात मन में बदले की भावना मत रखों और किसी के प्रति दुर्भाव न रखो। दूसरा गुण है कि यह बिना बजाए बजती नहीं है। जिससे शिक्षा मिलती है कि जब तक कहा न जाए तब तक बोलो नही। तीसरा गुण है जब भी बजती है मीठी ही बजती है। जो मधुर बोलते है एवं जिसका आचरण मधुर या मीठा अर्थात सुखदायी है, उसे भगवान अपना लेते है, यही बाँसुरी का ओंठ से लगाने का तात्पर्य है। भगवान कृष्ण को मिश्री बहुत प्रिय है और मिश्री की मिठास मक्खन के एक–एक कण में घुल जाती है। मिश्री युक्त मक्खन जीवन और व्यवहार में प्रेम को अपनाने का संदेश देता है और यह प्रेम में घुल जाने का सन्देश देता है।

569. **वनचरी** – वन में विचरण करने वाली। किरातिनी स्वरूपा।

570. **विरञ्चिजनयित्री** – ब्रह्मा जी को भी उत्पन्न करने वाली।

571. **विद्याप्रदा** – समस्त विद्याओं को देने वाली। विद्या की संख्या कहीं पर 14 और कहीं पर 18 मानी गई है। विद्या का अर्थ मोक्ष देने वाला ज्ञान, अन्य ज्ञान (दूसरों से सीख कर जिसे प्राप्त किया जाता है), शास्त्र, देवी के मन्त्र, इन्द्रजाल कौशल आदि भी होता है। उस ज्ञान को देने वाली जिससे मुक्ति मिलती है। शास्त्रों को देने वाली अर्थात संसार में विद्वानों के माध्यम से शास्त्रों को उपलब्ध कराने वाली। स्त्री देवता का मन्त्र गुरु के माध्यम से प्रदान करने वाली। गुरु या विद्वानों की शक्ति अर्थात देवी रूपा। गुरु की शक्ति ने दिया अर्थात देवी ने दिया।

572. **महाविद्या** – महत् अर्थात ब्रह्म को प्राप्त करा देने वाली विद्यास्वरूपा। जो सभी अनर्थों को नष्ट कर दे ऐसी विद्यास्वरूपा। जो भोग और मोक्ष दोनो दे ऐसी विद्यास्वरूपा। सभी विद्याओं के स्वरूप वाली। महा का अर्थ

है सभी। 14 या 18 विद्याओं के स्वरूप वाली। उपनिषदों में दिए गये चारों महावाक्य महाविद्या कहलाते हैं, तद्स्वरूपा। अहम् ब्रह्मास्मि, तत् त्वम् असि, प्रज्ञानम् ब्रह्म, अयम् आत्मा ब्रह्म ये चार महावाक्य हैं।

573. **बोधिनी** – बोधयुक्त, ज्ञानयुक्त या ज्ञात्री। समझाने वाली। समाधि की ओर ले जाने वाली। बोधि अर्थात समाधि, नी का अर्थ है ले जाना। बुद्ध को ले जाने वाली अर्थात उनका मार्गदर्शन करने वाली। बोधि का एक अर्थ बुद्ध भी है।

574. **बोधदायिनी** – दूसरों को बोध देने वाली। बुद्धत्व देने वाली। प्राणी मात्र को बोध देने वाली क्योंकि वे ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी हैं। बोध वह ज्ञान है जिसमें आप साक्षी की तरह आप विषय के साथसाथ ज्ञान कराने वाले बुद्धि, मन और इन्द्रियों को भी देखते हैं। बोध साक्षात ज्ञान है जिससे पदार्थों के यथार्थ स्वरूप का ज्ञान होता है। बोध का अर्थ है ज्ञान, भ्रम या अज्ञान का अभाव, धीरज, सन्तोष। धैर्य, सन्तोष को देने वाली।

575. **बुद्धमाता** – बुद्ध की माता स्वरूपा। ज्ञानी की रक्षा करने वाली। माता का अर्थ है रक्षा करने वाली। भगवान बुद्ध की जननी। समस्त प्रबुद्ध जनों की संरक्षिका। शिशुम् गर्भे माति इति माता, जो गर्भ में शिशु की रक्षा करती है, वह माता है। अतः माता का अर्थ रक्षा करने वाली भी होता है।

576. **बुद्धा** – जो जागी हुई है अर्थात हमेशा सचेत रहती है या होश में रहती है। विद्वानों की शक्ति। बुद्ध + आ, आ का एक अर्थ है शक्ति। विदुषी, ज्ञानसम्पन्ना, ज्ञानी। जाग्रत स्वरूप वाली। ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी। बुद्ध की शक्ति स्वरूपा। जो विकसित या खुली हुई हैं अर्थात सभी के लिए उनका द्वार खुला हुआ है।

577. **वनमालावती** – घुटनों तक लम्बी माला पहने हुए। वनमाला वह होती है जो घुटनों तक लम्बी होती है।

578. **वरा** – श्रेष्ठ (सब चीजों में श्रेष्ठ, रूप, गुण, शक्ति, बुद्धि, पराक्रम सभी में श्रेष्ठ है)। कुमकुम की तरह अर्थात कुमकुम की तरह लाल वर्ण वाली। कुमकुम वाली अर्थात कुमकुम धारण किये हुए। वरा अस्या अस्ति इति वरा। वरा का एक अर्थ है कुमकुम। दूल्हा या पति वाली अर्थात शिवरूपी पति से युक्त। हल्दी वाली या हल्दी की तरह रोगनिवारिका (कष्ट निवारिका)। वरा के कई अर्थ हैं जैसे कुमकुम, पति, हल्दी।

579. **वरदा** – भक्तों को वरदान देने वाली। देवताओं को वरदान देने वाली।

580. **वारूणी** – वरूण की पत्नी या शक्तिस्वरूपा। समुद्र से निकली वारूणी नामक मदिरा स्वरूपिणी। समुद्रमन्थन में यह मदिरा निकली थी। वारूणी तो एक उपलक्षण है जो सभी नशों को बोध कराता है। सभी नशे इसी के स्वरूप हैं। जाति का नशा, यौवन का नशा, धन का नशा। मदमस्त। लोगों को नशा देने वाली या मदमस्त करने वाली। चन्द्रमा को ज्यादा मार्दव होता है। वारूणी का अर्थ मदिरा है। मदिरा की तरह अर्थात अपनी कृपा से सबको आनन्दित करने वाली या आनन्द में डुबोने वाली। वे काली रूप में इसे ग्रहण कर दुष्टों का निर्ममतापूर्वक संहार करती हैं, अतः इनका नाम वारूणी है। वरुण द्वारा उपदेशित उपनिषद स्वरूपा। वारुणी नामक नदी स्वरूपा।

581. **वीणा** – वीणा वाद्यस्वरूपा। वीणाधारिणी यह अर्थ भी हो सकता है। वीणा वाद्यम् अस्य सः इति वीणः, स्त्रीलिंग में वीणा, अर्थात जो वीणा को धारण करे। वीणः + टाप् से वीणा बन जाएगा। वीणा का अर्थ विद्युत, योगिनी भी है। विद्युत की तरह प्रकाशमान या शत्रुओं पर टूट पड़ने वाली। बिजली पल भर में पेड़ को नष्ट कर देती है। योगिनी के समान अर्थात योगिनी के गुणों वाली। वीणा की तरह अर्थात् वीणा की तरह मधुर स्वर करने वाली। वीणा में विराजमान।

582. **वीणावादनत्तत्परा** – वीणा वादन में लगी हुई।

583. **विनोदिनी** – हास परिहास/मनोरंजन entertainment में लगी रहती हैं। विनोदनी एवं विनोदिनी दोनों

सही हैं। विनोदनम् (ल्युट प्रत्यय) से विनादनी बनेगा। विविध प्रकार की क्रीड़ाओं एवं क्रियाओं द्वारा भक्तों का मनोविनोद करती हैं। शिव को आनन्दित करने वाली। भक्तों को आनन्दित करने वाली।

584. **विनोदस्था** – विनोद में स्थित रहने वाली। विनोदभाव में स्थित रहती हैं क्योंकि वे विनोद करने में दक्ष हैं।

585. **वैष्णवी** – विष्णु की शक्ति स्वरूपा। विष्णु सम्प्रदाय से सम्बन्धित। सर्वव्यापिका शक्ति। विष्णु का अर्थ है जो सर्वत्र व्याप्त हो।

586. **विष्णुवल्लभा** – विष्णु को अत्यन्त प्रिय। विष्णु की प्रियतमा। वल्लभ अर्थात अतिशय प्रिय।

587. **वैद्या** – चिकित्सकों की शक्ति। वैद्य+आ, एकाक्षरीकोश के अनुसार आ का एक अर्थ है शक्ति। सर्वविद्यानम् इयं परममुख्यार्था इति वैद्या। सर्ववैद्येषु इयम् स्थित्वा अगदंकरः। वातीति 'वै' इत्यव्ययवाच्यः। द्युतेः द्योतनाच्च द्या। विद्या में अण् प्रत्यय लगाने पर वैद्य शब्द बनता है जो स्त्रीलिंग में वैद्या है। 14 विद्या मानी गई हैं। इन विद्याओं से सम्बन्धित वैद्या है अर्थात इन विद्याओं की स्वामिनी या इन विद्याओं में जिनके बारे में प्रमुख रूप से उल्लेख होता है या सारी विद्याएं जिनको प्राप्त करने के लिए ही बनी हैं। अण् प्रत्यय सम्बन्ध अर्थ देता है और सम्बन्ध को आप कई प्रकार से लिख सकते हैं। सभी चिकित्सकों में शक्ति या हुनर के रूप में स्थित होकर इलाज करने वाली। शब्द के आगे 'में विराजमान' लगाने से शब्द का अन्य अर्थ आ जाता है। वैद्य में विराजमान (शक्ति या हुनर के रूप में)। निश्चित रूप से प्रकाशित होने वाली। वै का एक अर्थ है निश्चित रूप से। वा धातु में डै प्रत्यय लगाने से वै बन जाएगा। जो गतिशील है एव ंचमक वाली है। चमक भौतिक भी हो सकती है एवं ज्ञान की भी हो सकती है। चिकित्सकों की भी चिकित्सक। वे आयुर्वेद की अधिष्ठात्री देवी है तथा ब्रह्माण्ड के सम्पूर्ण आरोग्य सम्बन्धी ज्ञान से विभूषित हैं।

588. **वैद्यचिकित्सा** – चिकित्सकों की भी चिकित्सा करने वाली। चिकित्सकों द्वारा की जाने वाली चिकित्सा स्वरूपिणी। वे वैद्यों में हृदयस्थ होकर अपनी प्रेरणा के द्वारा चिकित्सकीय मार्ग दर्शन करती हैं।

589. **विवशा** – भक्तों के द्वारा मजबूर हो जाती हैं कुछ भी देने के लिए। जो किसी के वश में नहीं, ऐसा अर्थ भी कर सकते हैं। विगता वशात् ऐसी व्युत्पत्ति से बने विवशा शब्द का ऐसा अर्थ होगा। जो किसी के काबू में नहीं आती अर्थात स्वाधीन हैं। वे विशेष रूप से शरणागत भक्तों के अनुनय विनय से करुणार्द्र होकर उनके कल्याण हेतु विवश हो जाती हैं।

590. **विश्वविश्रुता** – सम्पूर्ण विश्व में प्रख्यात या प्रसिद्ध। सब जिसे जानते हैं। यहाँ विश्व का अर्थ सब भी है। जगत के रूप में प्रसिद्ध। भगवान विष्णु के रूप में प्रसिद्ध। जीवात्मा के रूप में प्रसिद्ध अर्थात सब के द्वारा जानी जाने वाली। विश्व देव के रूप में प्रसिद्ध। विश्व का अर्थ विष्णु, विश्व, जीवात्मा, विश्वेदेव है।

591. **विश्वौघविह्वला** – संसार रूपी प्रवाह देखकर प्रसन्न या आह्लादित या तुष्ट। विह्वल का एक अर्थ है प्रसन्न अर्थात जिसे प्रसन्नता हुई। संसार रुपी प्रवाह से क्षुब्ध/व्याकुल/अशान्त/बेचैन। संसार के प्रवाह से विक्षुब्ध/अशान्त। सम्पूर्ण जगत समूह के हलचल से युक्त गतिविधियाँ जिनमें व्याप्त हैं। औघ का अर्थ समूह है एवं विह्वल का अर्थ है व्याकुल, अशान्त, बेचैन।

592. **वेला** – मर्यादास्वरूपा। वाणीस्वरूपा। बुध की पत्नी वेलास्वरूपा या वेला से अभेद है जिनका। लहरों वाली अर्थात समुद्र स्वरूपा। वेला का अर्थ है लहर। वेला अस्याः अस्ति इति वेला (लहरों वाली)। तट या किनारा स्वरूपिणी। डूबने वाले आदमी को यदि नदी या तालाब का किनारा मिल जाए तो वे बच जाते हैं। व्यवहार में कहते हैं कि मुझे किनारा मिल गया। जहाँ पर आकर मनुष्य भयमुक्त हो जाते हैं। भयमुक्त का स्थान। वेला का

अर्थ मर्यादा या सीमा भी होता है। देवी विशेष मर्यादा में रहकर काल विशेष पर सम्पूर्ण विश्व के उद्भव, पालन और संहार का कारण बनती हैं अतः उन्हें वेला कहते हैं।

593. **वित्तदा** – वित्त देनेवाली। वित्त का अर्थ है धन – सम्पत्ति/रूपया – पैसा। सोना – चाँदी, जमीन – जायदाद, धन – दौलत आदि सम्पत्ति जिसकी भी गिनती पैसे के रूप में होती है, वित्त है। वित्त का अर्थ आय – व्यय की व्यवस्था, प्रबन्धन अर्थात आर्थिक प्रबन्धन भी है। अपने उपासकों को अधिकार या शक्ति देने वाली। वित्त के कई अर्थ हैं जैसे धन–सम्पत्ति, स्वर्ण, अधिकार/शक्ति, प्राप्त वस्तु, जो जाना गया है अर्थात परीक्षित है, विख्यात आदि। विद् लाभे धतु से वित्त का अर्थ हे जिसे प्राप्त किया गया हो। दो अवखण्डने धातु से बने दा शब्द का अर्थ खण्डन या नष्ट करने वाली होता है। राक्षसों के द्वारा प्राप्त वस्तु को नष्ट करने वाली अर्थात प्राप्त राज्य या धन–सम्पदा को नष्ट करने वाली।

594. **विगतज्वरा** – रोगरहित अर्थात स्वस्थ। ज्वर का अर्थ बुखार होता है किन्तु यहाँ बुखार उपलक्षण है सभी ज्वरों का। आरोग्य प्रदान करने वाली। जो अज्ञानरूपी रोग से रहित हैं उन्हें देने वाली अर्थात मोक्ष देने वाली। आरोग्य देने वाली। विगतज्वर + आ, आ का अर्थ है देना।

595. **विरावा** – विशिष्ट शब्द करने वाली। विशेष रूप से ध्वनि करने वाली। गर्जना या सिंहनाद करने वाली। शब्द रहित या निःशब्द भी अर्थ लगा सकते हैं। वि का अर्थ विशेष भी है तथा रहित भी है। विराव (कलरव) वाली अर्थात पक्षियों में शक्तिरूप से स्थित होकर कलरव करने वाली। विराव का अर्थ शोरगुल या हल्लागुल्ला भी होता है। सेना के रूप में स्थित होकर शोरगुल करने वाली। सेना की शक्ति द्वारा शोरगुल करना अर्थात देवी के द्वारा शोरगुल करना क्योंकि शक्ति का अर्थ है देवी। विशेष शब्दों वाली अर्थात् अनाहत नाद वाली अर्थात् शब्द ब्रह्म स्वरूपा। वेद ध्वनि को भी विशेष शब्द कहते है। वेद ध्वनि वाली अर्थात् वेद स्वरूपा।

596. **विवरीकारा** – विशेष श्रेष्ठता देने वाली। वि अर्थात विशेष, वर अर्थात श्रेष्ठता। बन्द चीजों को (रहस्यों को) खोलने वाली। विवर का अर्थ है छेद या मार्ग। छेद बनाने वाली या मार्ग बनाने वाली। मार्ग देने वाली, स्थान देने वाली, किसी को खोलने वाली। सम्पूर्ण सृष्टि को विवर की तरह धारण करने वाली या विवर बना देने वाली। यहाँ विवर का अर्थ है गढ्ढा। विशेष श्रेष्ठ बनाने वाली। वर का अर्थ है श्रेष्ठ, वि का अर्थ है विशेष। तात्पर्य है जो श्रेष्ठ नही है उसे विशेष श्रेष्ठ बनाने वाली। जैसे शुक्लीकरण का अर्थ है जो शुक्ल नही है उसे शुक्ल बनाना। उपासकों को किसी क्षेत्र विशेष में विशेष श्रेष्ठ बनाने वाली। जैसे कालीदास को साहित्य में विशेष श्रेष्ठ बना दिया। विवर का अर्थ बड़ा छिद्र या गुफा भी होता है। गुफा अर्थात् जिसमें लोग छिपते है या रहते है। अतः संसार भी एक विवर है। विश्वरूपी गुफा का निर्माण करने वाली।

597. **बिम्बोष्ठी** – बिम्ब फल के समान लाल ओठों वाली। तात्पर्य है रजोगुण को धारण करने वाली।

598. **बिम्बवत्सला** – बिम्ब फल के प्रति स्नेह या प्रेम से भरी हुई। बिम्ब फल जिन्हें प्रिय हैं। वे अपने बिम्ब के द्वारा अतिशय वत्सल अर्थात लोकप्रिय हैं।

599. **विन्ध्यस्था** – विन्ध्यपर्वत में निवास करने वाली। उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर में विन्ध्यवासिनी देवी है जो महालक्ष्मी देवी हैं।

600. **वरवन्द्या** – श्रेष्ठजनों की वन्दनीया अर्थात श्रेष्ठ उपासकों द्वारा वन्दना किये जाने योग्य। देवताओं/मनुष्यों में जो श्रेष्ठ हैं उनके द्वारा वंदनीय। वरदान (मनोरथपूर्ति की वरदान) प्राप्ति के लिए वन्दना किए जाने योग्य। वर का अर्थ पति (दूल्हा) बालक, प्रेमी भी होता है। पति (शिव) के द्वारा वन्दना किये जाने योग्य या पति प्राप्ति के लिए वन्दना किए जाने योग्य। प्रेम पाने के लिए प्रेमी जनों द्वारा वन्दना किये जाने योग्य।

601. **वीरस्थानवरा** – वीर स्थान अर्थात युद्ध क्षेत्र में विशेष रूप से सुशोभित होती है और अपने शौर्य कर्म के

द्वारा श्रेष्ठता को प्राप्त करती हैं। वीरता जिनके अन्दर है ऐसे वीरता वाले अर्थात वीर लोगों में श्रेष्ठ। वीरता के जो स्थान उनमें श्रेष्ठ।

602. **विदा** – विदुषी स्वरूपा। वेत्ति इति विदः। वेत्ति का अर्थ है जानना। समस्त विद्याओं और ज्ञानों में पारंगत हैं।

603. **वेदान्तवेद्या** – उपनिषदों के द्वारा जानने योग्य।

604. **विजया** – स्थाई जीत हासिल करने वाली। स्वयं जो विशेष जीत हासिल करती हैं। विशेष जीत का तात्पर्य ऐसी जीत से है कि विरोधी दुबारा लड़ने की सोच तक नहीं रखता अर्थात विरोधी को नेस्तनाबूत करने वाली जीत। सर्वत्र जीतने वाली ऐसा भी कर सकते हैं। विजय में जीतने वाले को बड़ी प्रशंसा मिलती है (उनके आदर्शों के कारण) तथा वह व्यक्ति एक प्रकार से Role Model होता है। वि का अर्थ विश्व अर्थात सभी होता है। इस प्रकार विजया का अर्थ हुआ सभी पर या सर्वत्र जीत हासिल करने वाली। वि का अर्थ अन्न, पक्षी, आकाश भी होता है। अन्न पर जीत हासिल करने वाली अर्थात बिना अन्न के जीवित रहने वाली। पक्षियों पर जीत हासिल करने वाली अर्थात पक्षियों से अधिक ऊँचाई पर एवं तीव्र गति से उड़ने वाली। बिना किसी की मदद के जीत हासिल करने वाली। वि अर्थात विना, जयति असुरान् इति जया अर्थात जो असुरों पर जीत प्राप्त करती हैं, वे जया हैं।

605. **विजयाविजयप्रदा** – वह विजया जो (भक्तों को या अन्य उपासकों को) विजय प्रदान करने वाली हैं। विजया च असौ विजयप्रदा। इस प्रकार यह शब्द बनेगा। विजय तथा अविजय (हार) दोनो प्रदान करती हैं। अतः इनका नाम विजयाविजयप्रदा है। भक्तों को विजय तथा दुष्ट राक्षसों को हार देती हैं।

606. **विरोगी** – रोगियों अर्थात अज्ञानियों से दूर। सबसे बड़ा रोग है अज्ञान। सभी प्रकार के रोगों से रहित। रोग रहित। विगतः रोगा यस्या सा। शरीर भंग करने वाली दशा से रहित अर्थात उनका शरीर हमेशा स्वस्थ रहता है।

607. **वन्दिनी** – स्तुति पढ़ने वालों का मार्गदर्शन करने वाली। वन्दि अर्थात स्तुति पाठक, नी धातु का अर्थ है ले जाना अर्थात मार्गदर्शन करना, सन्मार्ग में ले जाना। वन्दना करने वाले जिसके हैं अर्थात वन्दना करने वाले उपासकों से युक्त। वन्दाः अस्या अस्ति इति वन्दिनी। वदि अभिवादने धातु होती है। वन्दते इति वन्दः, वन्दः का अर्थ है वन्दना या उपासना करने वाला। वन्द+इनि, से वन्दिन् शब्द बनता है जो पुल्लिंग एक वचन में वन्दी तथा स्त्रीलिंग में वन्दिनी होता है। वन्दना का अर्थ है सामने वाले के समक्ष झुकना या नमस्कार करना एवं उनके गुणों को बखान करना। सोपान या सीढ़ी को लाने वाली अर्थात भगवाना तक पहुँचाने वाले मार्ग को संसार के समक्ष लाने वाली अर्थात शास्त्रों या गुरुओं के माध्यम से बताने वाली। वन्दि का एक अर्थ है सीढ़ी। जिसकी स्तुति की जाती है। कर्म वाच्य में वन्द् धातु से णिनि प्रत्यय लगाने से वन्दिन् शब्द बनेगा जो पुल्लिंग एक वचन में वन्दी एवं स्त्रींलिंग एक वचन में वन्दनीय होगा। कर्तृ वाच्य में भी यह शब्द बन जायेगा तब अर्थ होगा स्तुति करने वाली। देवी अपने पति शिव की ही स्तुति करेंगी। (यदि वन्दनी शब्द होगा तो वन्द् धातु में ल्युट् प्रत्यय लगाकर यु प्रत्यय लगाकर अर्थ करेगें।) वन्दना करने वाले शिव के द्वारा लायी गई अर्थात् उनकी पत्नी स्वरूपा। वन्द् धातु में णिनि प्रत्यय लगाने से वन्दिन् शब्द बनेगा। जो पुल्लिंग एकवचन में वन्दी होगा एवं स्त्रीलिंग एकवचन में वन्दिनी होगा। (यदि वन्दनी नाम है तो वन्दते इति वन्दनः, स्त्रीलिंग में वन्दनी। जो शिव की वन्दना करती है। जैसे नन्दति इति नन्दनः होता है, वैसे ही वन्दनः होगा जो स्त्रीलिंग में वन्दनी होगा)।

608. **वन्ध्या** – मनुष्य की तरह उनके गर्भ से सन्तान नहीं होती है। सन्तान रहित अर्थात इनका कोई पुत्र – पुत्री नहीं है। यद्यपि वे समस्त सृष्टि को पैदा करती है किन्तु जब वे मूल अवस्था में होती है/समाधि की स्थिति में होती हैं तो कार्यकारण स्थिति से ऊपर उठ जाती हैं, इस स्थित में वे निर्बीज होकर वंध्या हो जाती हैं। पार्वती

जी ने सभी देवी देवताओं को श्राप दिया था कि उनकी सन्तान नहीं होगी। वन्ध्या नामक सुगन्धि द्रव्य के समान सुगन्ध वाली। बन्ध्य एक सुगन्धि द्रव्य है, संस्कृत में ब और व में अभेद होता है।

609. **वन्द्या** – सबके द्वारा स्तुति करने योग्य। सुर और असुर सभी के द्वारा वन्दना करने योग्य। गोरोचन वाली अर्थात गोरोचन का टीका लगाये हुए। वन्द्या अस्या अस्ति इति वन्द्या। वन्द्या का एक अर्थ है गोरोचन। वृक्षों की बन्दा वाली अर्थात इनकी तान्त्रिक पूजा में वृक्षों का बन्दा चढ़ाया जाता है।

610. **वन्धनिवारिणी** – बन्धनों को पूर्णतया हटा देने वाली। अपने भक्तों के बन्धनों को काटकर मोक्ष प्रदान करती हैं। जन्म मृत्यु का बन्धन हटाने वाली।

611. **भगिनी** – ऐश्वर्य वाली। सभी ऐश्वर्यों से विभूषित। भग या ऐश्वर्य से 6 ऐश्वर्यों से तात्पर्य होता हैं। ये हैं – ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य।

612. **भगमाला** – ऐश्वर्य की समष्टि वाली अर्थात सारे ऐश्वर्यों से युक्त। माला का एक अर्थ समष्टि भी होता है। ऐश्वर्य की माला को धारण करने वाली। ऐश्वर्य को माला की तरह धारण करती हैं या पहनती हैं। बारह सूर्य उनकी माला ही हैं। भग का एक अर्थ सूर्य भी होता है। अनन्त ऐश्वर्यों से विभूषित। माला में कई फूल होते हैं अतः कई ऐश्वर्य अर्थात अनन्त ऐश्वर्य। माला से व्यक्ति सुशोभित होता है, अतः विभूषित अर्थ लिया गया। ऐश्वर्य धारण करने वाली। मल धारणे धातु होती है।

613. **भवानी** – शिव को जीवन देने वाली। अनति अर्थात जीवन देना, प्राण देना। भवम् अनति आनयति जीवयति इति भवानी। शंकर जी ने जब विष पी लिया था तो इन्होंने ही रक्षा की थी। शिव की प्राण शक्ति। कामदेव को जीवित करने वाली। संसार की प्राण शक्ति। संसार को अनुप्राणित करने वाली। भव का अर्थ शिव, कामदेव और संसार है। इन तीनों की रचना करने वाली भवानी हैं। जीवन देना अर्थात रचना करना।

614. **भवनाशिनी** – संसार का संहार करने वाली। कामदेव का नाश करने वाली। शिव ने कामदेव को भस्म किया अर्थात शिव की शक्ति ने कामदेव को भस्म किया। शिव का अदर्शन करने वाली अर्थात धूमावती रूप में शिव को निगलने वाली। नश अदर्शने धातु होती है।

615. **भीमा** – शत्रुओं के लिए भयंकर स्वरूप वाली अर्थात इनका सारा शरीर भयंकर है। मुनियों की रक्षा करने के लिए भीमा रूप धारण किया था। भीम भगवान शिव का भी नाम है। इस प्रकार भीमा का अर्थ भगवान शिव की शक्ति हुआ। विशालकाय शरीर वाली। यह अर्थ भी कर सकते हैं।

616. **भीमानना** – भयंकर मुख वाली। जिससे डर लगता है वह है भीमा।

617. **भीमाभंगुरा** – जो भयंकर है एवं शत्रुओं के लिए वक्र (टेढ़ी) हैं। भंगुर का अर्थ टूट जाने वाला, वक्रता या टेढ़ापन लिये हुए। भीमा च असौ भंगुरा। दुष्ट राक्षसों पर क्रुद्ध होने की स्थिति में भयंकर टेढ़ा – मेढ़ा रूप धारण कर लेती हैं।

618. **भीमदर्शना** – भयंकर है दर्शन जिसका। जिसके दर्शन से भी भय पैदा हो जाता है। गुरू गोविन्द सिंह ने अपने शिष्यों से कहा था कि सैनिकों को दाढ़ी मूँछें नहीं बनाना चाहिये जिससे देखने मात्र से लोग डर जाएं। भयंकर रूप धारण करने वाली।

619. **भिल्ली** – भिल्लिनी के समान आचार वाली अर्थात भिल्ल जाति की महिला की तरह अर्थात स्वच्छन्द आचरण वाली। भिल्ल जाति की महिलाएं शिकार (अर्थात अपने काम) के प्रति ही ध्यान रखती हैं और उनका अपने शरीर के प्रति ध्यान नहीं रहता। भीलनी की तरह स्वरूप वाली। कभी कोल भील का रूप धारण किया

होगा। भील पत्नी के स्वरूप वाली। अर्जुन के समक्ष शिव जी ने किरात का और पार्वती जी ने किरातिनी का रूप धारण किया था। भिल्ल जाति से सम्बन्धित Permanent या स्थाई रूप।

620. **भिल्लधरा** – भीलों को धारण करने वाली वन भूमि स्वरूपा। भीलों का पालन – पोषण करने वाली। भिल्ल रूप को जो धारण कर लेती हैं जब उनकी चाहत होती है। यह रूप क्षणिक है।

621. **भीरू** – भी (भयंकरम्) रौति अर्थात भयंकर शब्द करने वाली। स्वभाव कर्ता अर्थ में क्रुन् प्रत्यय लगाने से यह शब्द बनता है, जिसका अर्थ है भयंकर शब्द करने के स्वभाव वाली। जो पाप कर्मों से, दुष्कर्मों से डरती हैं। विभेति पापात् दुष्कर्मात् इति भीरू। भयशील अर्थात अत्यन्त सुन्दर स्त्री। स्त्रियों के लिए भीरू शब्द का इस्तेमाल किया जाता है। खुद डरने वाली अर्थात अधिक सुन्दर स्वरूपिणी जो बहुत सुन्दर स्त्री होती है, वह भीतर से डरती है। भीरू स्वरूप वाली। सांसारिक असत् अनुचित प्रवृत्तियों से अलग रहने वाली। अवगुणों, सांसारिक प्रवृत्तियों से डर कर उनमें लिप्त नहीं रहती।

622. **भेरूण्डा** – भयभीत करने वाले रूण्ड (सिर के नीचे का हिस्सा) स्वरूपा। भयंकर रूण्ड वाली। गीदड़ की तरह भोग्य पदार्थों में लूट खसोट की प्रवृत्ति कराने वाली। पूजा के बाद जिन्हें बलि दी जाती है, ऐसी शिवा स्वरूपा।

623. **भी** – भय स्वरूपिणी। भय यह भाव देवी ही हैं। सज्जनों को अपयश/पाप से भय लगता है। दुष्टों का मारे जाने का भय होता है, अपराध भय भी होता है। भय रूपी भावना भी देवी ही हैं। साक्षात भय स्वरूपा। भय का भी अस्तित्व है। जिस किसी भी चीज का अस्तित्व है वह ऊर्जा या शक्ति रूप होने के कारण देवी रूप है क्योंकि देवी का अर्थ है ऊर्जा या शक्ति।

624. **भयावहा** – भय को लाने वाली अर्थात भय को लाकर दुष्टों को दे देती हैं। भय+आ+वहा अर्थात भय देने वाले रूप को धारण करने वाली। आ का अर्थ है देना और वह् का अर्थ है धारण करना। भया अर्थात भय+आ अर्थात भय को देने वाली अर्थात भयंकर। अतिशय भयंकर रूप को धारण करने वाली। भय पैदा करने वाली।

625. **भगसर्पिणी** – ऐश्वर्यों को सरकाने वाली (भक्तों तक)। ऐश्वर्य के रूप में एक – दूसरे में पहुँचने वाली। जहाँ धन होता उसके चारों ओर सर्प बैठे रहते हैं। ऐश्वर्य की नागिनी स्वरूपिणी अर्थात जो ऐश्वर्य की रक्षा करती है। ऐश्वर्य एक के पास से दूसरे तक सर्पण करता अर्थात पहुँचता।

626. **भगा** – विश्व योनि स्वरूपा। सूर्य स्वरूपा। सूर्य की शक्ति स्वरूपा। सूर्य की प्रभा ही शक्ति है, तत्स्वरूपा। भग का एक अर्थ सूर्य है।

627. **भगरूपा** – ऐश्वर्य के स्वरूप वाली अर्थात ऐश्वर्य के रूप में जो दिखती हैं। ऐश्वर्य उन्हीं का रूप है। रूप वह होता है जो आँखों से दिखे। ऐश्वर्य से ज्ञापित यो बोधित होने वाली। उनके पास इतना अधिक ऐश्वर्य है कि यह कहना पड़ता है कि देवी के अलावा और किसी के पास इतना ऐश्वर्य नहीं हो सकता। रूपा का अर्थ है ज्ञापिका या बोधिका। रूपयति का अर्थ स्वरूप देना अर्थात निर्माण करना भी होता है। शिव को, सूर्य को स्वरूप देने वाली अर्थात इनकी रचना करने वाली। रूपयति दति रूपा (रचना करने वाली)।

628. **भगालया** – ऐश्वर्य का एकमात्र घर। शिव का आलय अर्थात शिव जिनमें रहते हैं। शिव और शक्ति घुले मिले हैं अर्थात दोनों ही एक दूसरे में रहते हैं।

629. **भगासना** – सुन्दर/श्रेष्ठ आसन वाली अर्थात ऐसे आसन में बैठने वाली। भग का एक अर्थ लक्ष्मी (शोभा) एवं शिव (श्रेष्ठ) भी होता है। जो ऐश्वर्य में ही बैठती हैं। 6 भगों में एक भग है श्री जिसका अर्थ है लक्ष्मी/सुन्दरता/ श्रेष्ठ।

630. **भवाभोगा** – संसार/शिव की परिपूर्णता वाली। शिव शक्ति के साथ ही परिपूर्ण होते हैं। आभोग का अर्थ है विस्तार या परिपूर्णता। संसार के रूप में विस्तार वाली। भव ही है आभोग (परिवेश)। संसार ही इसका मण्डल है।

631. **भेरीझंकाररंजिता** – भेरी नामक वाद्य विशेष की झंकार से प्रसन्न होने वाली या प्रसन्न रहने वाली।

632. **भीषणा** – भयंकर, भयानक (डरावना)। जो देखने में बहुत डरावनी है। जो राक्षसों के लिए बहुत दुष्ट या उग्र हों। भीषण का अर्थ शिव, ब्रह्मा भी होता है। अतः भीषणा का अर्थ शिव की शक्ति या ब्रह्मा की शक्ति भी कर सकते हैं।

633. **भीषणारावा** – भयभीत करने वाले शब्दों वाली।

634. **भगवती** – षड् ऐश्वर्य से युक्त या सम्पन्न। भग का अर्थ है ऐश्वर्य जो 6 होते हैं। धर्म, यश, श्री, ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य (शक्ति)। शिव से युक्त। भग का एक अर्थ है शिव, सूर्य। सूर्य से युक्त। देवी की एक आँख सूर्य है अतः वे सूर्य से युक्त हो गईं।

635. **अहिभूषणा** – साँप का आभूषण की तरह धारण करने वाली। सर्प गतिशीलता (कर्मण्यता) एवं काल (मृत्यु) का प्रतीक है। मृत्यु भी जिनके अधीन हैं।

636. **भारद्वाजा** – भरद्वाज ऋषि के वंश वाली अर्थात उनके वंश द्वारा पूजित। गोत्र अर्थ में भरद्वाज शब्द में अण् प्रत्यय लगाने से भारद्वाज शब्द बनता है जिसका अर्थ है भरद्वाज ऋषि के वंश वाले। भरत्+वाज अर्थात अन्न को भरने वाली अर्थात अन्न की वृद्धि करने वाली। अन्न द्वारा भरण पोषण करने वाली। वाज का अर्थ है अन्न। भरत्+वाज (अन्न) से भरतद्वाज शब्द बनता है। स्वार्थ में अर्थात बिना अर्थ बदले अण् प्रत्यय लगाने से भारद्वाज बनता है। भरत् (भरना)+ वाज (क्रिया, आचरण)। वह शक्ति जो मनुष्य के भीतर क्रिया (आचरण) का भरण करती है। ज्ञान व बल को धारण करने वाली। भरना अर्थात धारण करना। वाज का एक अर्थ ज्ञान, बल दिया गया है। वाज का अर्थ अन्न भी है। अन्न के द्वारा प्राणियों का भरण पोषण करने वाली।

637. **भोगदात्री** – भोग (सांसारिक सुखों) को देने वाली। घर देने वाली अर्थात निवास के लिए अच्छा घर देने वाली। धन सम्पत्ति देने वाली। अच्छा शरीर अर्थात स्वस्थ शरीर देने वाली। दुष्टों को दुःख या कष्ट देने वाली। भोग का अर्थ है अनुभव करना, सुख, दुःख, घर, धन–सम्पत्ति, शरीर।

638. **भूतिघ्नी** – ऐश्वर्य को मिटा देने वाली (दुष्टों के ऐश्वर्य को मिटाती है)।

639. **भूतिभूषणा** – ऐश्वर्य ही है आभूषण जिसका। ऐश्वर्य के आभूषण वाली। भस्म है आभूषण जिनका अर्थात शिव की तरह भस्म को लगाये हुए। भूति का अर्थ उन्नति की पराकाष्ठा भी होता है।

640. **भूमिदा** – भूमिहीनों को भूमि देने वाली।

641. **भूमिदात्री** – सबको आधार प्रदान करने वाली। भूमि का अर्थ आधार भी होता है अर्थात जीविका/Settlement (बसना) आदि प्रदान करने वाली। योग की सप्तभूमि का अनुभव कराने वाली जिसको पार कर ही व्यक्ति समाधि की अवस्था में पहुँचता है या उसे आत्मसाक्षात्कार होता है। ये सप्तभूमियाँ हैं – शुभेच्छा, विचारणा, तनुमानसा, सत्वापत्ति, असंसक्ति, पदार्थाभावनी और तुर्यगा।

642. **भूपति** – पृथ्वी की मालकिन क्योंकि देवी सारे ब्रह्माण्ड की मालकिन है। भू स्वामिनी स्वरूपिणी। भूमि अर्थात राज्य की रक्षा करने वाली।

643. **भरदायिनी** – भरण प्रदान करने वाली। खाना पीना आदि जीवन के आवश्यक तत्व को प्रदान करने वाली।

644. **भ्रमरी** – भौंरी की तरह अर्थात भौरी की तरह निरन्तर भ्रमण करने वाली अर्थात विचरण शील। जो भौंर की तरह घूमती है अर्थात् कहीं पर भी चली जाती है। हर एक उपासक के पास पहुँच जाती है। यदि लाखों जगह एक साथ उपासना या यज्ञ हो रहा हो तो उसी समय हर जगह पहुँच जायेगी। चूँकि देवी शक्ति के रूप में सर्वत्र है, वहाँ पहुँचने का अर्थ है उस स्थान में जाग्रत हो जाना अन्यथा भी शरीर रूप में भी अपने को कई रूपों में करके वहाँ पहुँच जाती है।

645. **भ्रामरी** – दूसरों को घुमाने वाली। गीता में लिखा है कि परमात्मा मनुष्यों के अन्तःकरण में स्थित होकर चलायमान करता है। भ्रामरी प्राणायाम स्वरूपा। मनुष्य के हृदय में बैठकर उसे आवागमन के चक्र में बैठकर आवागमन कराने वाली (कर्मफल देकर)। भक्त के शत्रुओं का दिग्भ्रम/मतिभ्रम कराने वाली। शत्रुओं से उलटा – पुलटा करवाकर षड्यन्त्र सफल नहीं होने देती। भ्रामरी कुम्भक के द्वारा प्राप्त (घेरण्ड संहिता के अनुसार)। भ्रामरी मुद्रा की अधिष्ठात्री। देहाभिमानियों को (जो प्रकृति से सम्बन्ध जोड़े हैं, देह को ही आत्मा समझते हैं।) आवागमन के चक्र में घुमाने वाली। विद्वानों को भी भ्रान्त करने वाली। लोगों को घुमाने वाली अर्थात् माया मोह के चक्कर में फँसाने वाली। गीता में आया है कि परमात्मा ही लोगों के अन्तःकरण में बैठकर इधर–उधर भ्रमण कराते है। लोगों को भ्रम में डालने वाली। भ्रम का अर्थ है किसी वस्तु में दूसरी वस्तु का आभास होना अर्थात् उसे वस्तु का वास्तविक रूप न दिखाई पड़ना।

646. **भाला** – भाला वाली अर्थात भाला धारण किये हुए। भाला अस्या अस्ति इति भाला (भाला वाली)। भाले के समान तीक्ष्ण अर्थात शत्रुओं के लिए असह्य। तेज को ग्रहण करने वाली अर्थात तेजस्विनी। प्रकाश स्वरूपा। भाम लाति ग्रह्णाति इति भाला। भाम् लाति नाशयति से भी भाला शब्द बन सकता है तब अर्थ होगा शत्रुओं की भा (श्री, कान्ति) को नष्ट करने वाली। ऊपर स्थित अर्थात श्रेष्ठ। देवताओं में श्रेष्ठ स्वरूप वाली। भाल का अर्थ है ललाट जो शरीर में श्रेष्ठ माना जाता है। भाला को धारण करने वाली। भाला अस्या अस्ति इति भाला।

647. **भूपालकुलसंस्थिता** – राजाओं के कुलों में अच्छी तरह से रहने वाली अर्थात राजलक्ष्मीस्वरूपा। राजलक्ष्मी का तात्पर्य राजाओं के खजाने या राजाओं के सप्त अंग से है। राजलक्ष्मी अन्य देवियों की तरह भी सगुण रूप में होती हैं जिनकी आराधना की जाती है।

648. **माता** – जगत की माता अर्थात जगत की रक्षा करने वाली। माति इति माता अर्थात जो रक्षा करे वह माता है। माता वह है जो केवल पैदा ही नहीं करती बल्कि पालन भी करती है। पालन के अन्तर्गत रक्षा भाव भी आता है। वैदिक निर्वचन कोष (ज्ञान प्रकाश शास्त्री) एवं नागोजी भट्ट की दुर्गा सप्तशती की टीका में मातृ शब्द की व्याख्या में मा धातु का अर्थ रक्षा करना बताया गया है। माति का अर्थ निर्माण करना होता ही है। जगत का निर्माण करने वाली। सम्पूर्ण प्राणियों का पोषण करने वाली।

649. **मनोहरी** – मन का हरण करने वाली (सौन्दर्य, कोमलता आदि गुणों से युक्त)।

650. **माया** – असत् को सत् के रूप में आभासित करने वाली शक्ति स्वरूपा अर्थात जो नहीं है उसे इस रूप में दिखाती है जैसा कि वह है। मीयते अस्मिन जगत् इति माया अर्थात जिसमें (जिस शक्ति में) जगत प्रतीत होता है। जो पदार्थ के वास्तविक स्वरूप को ढक देती है और उस अन्य रूप में दिखाने लगती है। माया आवरक शक्ति है जो वस्तुओं के वास्तविक स्वरूप को ढक देती है अर्थात हमें उनके मूल रूप अर्थात चैतन्य नहीं दिखाई देता। सभी पदार्थ जिनके द्वारा परिच्छिन्न (सीमित) होते हैं या मापे जाते हैं। मीयते परिच्छन्द्यन्ते अनया इति माया। सीमित होने का तात्पर्य है कि वे देश और काल द्वारा सीमित हैं अर्थात कोई भी पदार्थ न तो सर्वत्र फैला हुआ है और न ही हमेशा अस्तित्व में रहता है। कोई भी वस्तु या प्राणी थोड़ा सा ही स्थान घेरता है और कुछ समय बाद उसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है। अखण्ड ब्रह्म को नानात्व के रूप में दिखाने वाली शक्ति माया

है। अहम् एवं इदम् में भेद कराने वाली शक्ति माया है। माया का अर्थ है किसी भी रूप को धारण करने की शक्ति अर्थात Power of assumming multiple forms। वेद में प्रायः मा धातु का अर्थ है आकार देना, To give form है। मा का अर्थ मापना अर्थात् Measure करना, निर्माण करना, तुलना करना होता है। उपनिषद में माया शब्द भ्रम या Illusion के लिए आया है। माया शब्द का प्रयोग सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों अर्थों में होता है। सकारात्मक अर्थ में माया ईश्वर की शक्ति है जिससे वह जगत का निर्माण करते हैं।

651. **मानिनी** – मानः गर्वा अस्या अस्ति इति मानिनी। जिनमें गर्व या अभिमान (दूसरों से श्रेष्ठ होने का भाव) है। शक्ति, सौन्दर्य, सम्पन्नता सभी में दूसरों से बढ़कर है। जब ये सारी चीजे उन्हीं से पैदा होती है, तो दूसरों से बढ़कर होना स्वाभाविक है। जिसे अभिमान है अपने बल, सौन्दर्य आदि का। दुर्गासप्तशती में लिखा है कि देवी जी ने कहा जो मुझे संग्राम में जीतेगा, मेरा दर्प हरण करेगा उसी से मेरा विवाह होगा। यह एक प्रकार का मान या अभिमान है। मान करने वाली। बल, बुद्धि, पराक्रम में अपने को ज्यादा मानने वाली (पर घमण्डी नहीं)। साहित्य में मानिनी नायिका होती है, प्रियतम उसे मनाता रहता है पर वह मानती नहीं है। दृढ़ संकल्प वाली, प्रतिज्ञा वाली। (यदि माननी शब्द है तो अर्थ होगा उपासकों को सम्मान पहुँचाने वाली अर्थात दिलाने वाली। मानम् नयति इति माननी। जो मानी जाती है अर्थात जिनका सम्मान किया जाता है। मान धातु में ल्युट् प्रत्यय लगाकर मानन शब्द बना जो स्त्रीलिंग में माननी हो जाएगा। ल्युट् प्रत्यय प्रायः कर्ता कारक के अतिरिक्त अन्य कारकों में प्रयुक्त होता है। यहाँ कर्म कारक ले लिया अर्थात जिसको सम्मानित किया जाता है, ऐसा अर्थ ले लिया। जो सम्मान करती है यह अर्थ नहीं लिया। यदि मान धातु में ल्यु प्रत्यय लगाकर माननी शब्द बनाएं तो तब अर्थ हो जाएगा सम्मान करने वाली अर्थात देवताओं का सम्मान करने वाली अर्थात देवताओं का सम्मान रखती है, तभी उनके लिए युद्ध करने जाती है।)

652. **मोहिनी** – दूसरों को सौन्दर्य आदि गुणों के द्वारा अपनी ओर खींचने वाली। भगवान विष्णु के मोहिनी अवतार से अभेद है जिनका। मोहिनी नामक एकादशी से अभेद है जिनका।

653. **मही** – पूजनीया। महनीय गुणों वाली अर्थात् उच्च गुणों वाली अतः पूजनीय। मह् धातु का अर्थ है पूजन। धरती स्वरूपा या धरती से अभेद है जिनका।

654. **महालक्ष्मी** – ब्रह्माण्ड की रक्षा करने वाली। महा का अर्थ है ब्रह्माण्ड। संस्कृत में र=ल होता है। लक्षयति=रक्षयति। सम्पूर्ण कलाओं वाली या समस्त अंशों वाली लक्ष्मी जिसका वास बैकुण्ठ में है। सुन्दरता में जो सबसे बढ़कर है। शब्द के आगे महा लगने से, 'से बढ़कर' अर्थ हो जाता है। लक्ष्मी का अर्थ शोभा भी होता है, इसलिए सुन्दरता अर्थ लिया गया। जो पूजनीया हैं एवं निरतिशय दर्शन सम्पन्ना हैं अर्थात इनसे बढ़कर दर्शन योग्य कुछ नहीं है। मह् पूजायाम् से पूजनीया अर्थ आया एवं लक्ष दर्शनांकनयोः से निरतिशय दर्शनसम्पन्ना अर्थ आया। सम्पूर्ण कलाओं वाली लक्ष्मी स्वरूपा, जिसका वास वैकुण्ठ में माना जाता है। महा का अर्थ सम्पूर्ण लिया गया है। अन्य लक्ष्मियों में सभी कलाऐं नहीं होतीं। कला का अर्थ विशेष गुण या विशेषता, शक्ति या तेज होता है।

655. **मदक्षीबा** – मद से मत्त अर्थात नशे में चूर, मद से चूर। गुण/सुन्दरता/बल / यौवन आदि के कारण अपने आप में मदमस्त। मद से मस्त या नशे में चूर। मद का अर्थ मदी हरसे धातु से हर्ष या आनन्द भी होता है। आनन्द के नशे में चूर।

656. **मदिरा** – हर्ष प्रदान करने वाली। माद्यते अनया इति मदिरा अर्थात जिसके द्वारा पीने पर हर्षयुक्त/ सुखयुक्त कर दिया जाता है। मदि हर्षे धातु होती है। आनन्द का नशा स्वरूपा। मदिरा के समान औरों को भी मत्त कर देने वाली अर्थात औरों में भी नशा पैदा कर देने वाली। स्वयं में तो मदमस्त है ही।

657. **मदिरालया** – आनन्द/हर्ष देने वाली गुणों/शक्तियों का घर अर्थात ऐसे गुणों या शक्तियो से युक्त। नशे का घर। एसी मदिरा जिसमे व्यक्ति अपने आप में मस्त हो जाता है अर्थात संसार से दूर चला जाता है।

सांसारिक वस्तुएं तुच्छ लगने लगती हैं ऐसी मदिरा का घर या आश्रय। देवी का नाम या मन्त्र या साधना इसी प्रकार की मदिरा है। राक्षसों के शराबघरों को नष्ट करने वाली। मदिरालय+आ, आ का अर्थ है नाश करना।

658. **मदोद्धता** – बहुत अधिक प्रसन्नता वाली। मदी हर्षे धातु होती है। मद से ऊपर उठी हुई अर्थात् बलवती। उद्धत का सामान्य अर्थ होता है बहकना या मर्यादा से बाहर जाना। पर देवी के प्रसंग में उत्+हन् (गति)+क्त, से ऊपर उठना अर्थात अत्यधिक या अधिक मात्रा अर्थ आयेगा। अपने बल रूपी मद से उद्धत अर्थात मद से बढ़ी हुई। शिष्टाचार से न रहना उद्धता है। उद्धत अर्थात ऊपर उठा हुआ, अविनीत, अक्खड़।

659. **मतंगस्था** – हाथी में विराजमान। हाथी की सवारी करने वाली। ऐरावत में इन्द्राणी बैठती हैं। इन्द्राणी से अभेद है जिसका। हाथी बुद्धिमानी एवं सूक्ष्म दृष्टि का प्रतीक है। ये गुण जिस व्यक्ति में रहते हैं उसमें स्थित अर्थात जाग्रत रूप में स्थित।

660. **माधवी** – माधव (अर्थात कृष्ण) की पत्नी या शक्ति स्वरूपा। माधवी नामक लता के पुष्पों की तरह सुगन्ध से युक्त। सुगन्ध यश का वाचक होता है। इस प्रकार माधवी का अर्थ हुआ अत्यन्त यशस्विनी। तुलसी स्वरूपा या तुलसी से अभेद है जिनका या तुलसी के समान रोग (कष्ट) निवारिका। माधवी का एक अर्थ है तुलसी। माधवी नामक मदिरा की तरह उपासकों को आनन्द में डुबोने वाली। माधवी मधु से निर्मत शराब है।

661. **मधुमर्दनी** – मधु नामक दैत्य का मर्दन करने वाली, मारने वाली। मधु दैत्य प्रतीक है चापलूसी का। चापलूसी को नष्ट करने वाली। कैटभ कड़वे वचन का प्रतीक है। उपासकों के राग नामक दोष को समाप्त करने वाली। मधु राग का एवं कैटभ द्वेष का प्रतीक है। भगवान विष्णु के मल (तामसी पदार्थ) से मधु और कैटभ निकले थे। इस प्रकार मधु और कैटभ का अर्थ है तामसी गुण के कारण उत्पन्न विकृतियाँ। मन्यते अहमेव शूरः इति मधु। अपने को ही शूरवीर अर्थात सब कुछ समझना मधु है। कीट अर्थात इन्द्रगोप नामक कीट। इन्द्र की आभा अर्थात राजा की आभा अर्थात राज–सत्ता मद कैटभ है।

662. **मोदा** – प्रसन्नता/हर्ष, आनन्दस्वरूपिणी। सदैव प्रसन्न चित्त वाली। प्रसन्नता देने वाली। मोद+आ, मोद का अर्थ है प्रसन्नता और आ का अर्थ है देना।

663. **मोदकरी** – सुगन्ध करने वाली अर्थात देने वाली। मोद का अर्थ गन्ध होता है। सुगन्ध यश का प्रतीक है। भक्तों के यश को बढ़ाने वाली। गन्ध सुगन्ध एवं दुर्गन्ध दोनों होती है। सामान्यतः अच्छे अर्थ ही लिये जाते है। दुष्टों क अपयश को बढ़ाने वाली। एकाक्षरी कोश में मो का अर्थ पत्नी दिया है एवं द का अर्थ दान दिया है। इस प्रकार मोदकरी का अर्थ हुआ अपने उपासकों को सुन्दर एवं गुणयुक्त पत्नी देने वाली। मा+उ+द से भी मोद बनेगा। म अर्थात मर्यादा, ज्ञान उ अर्थात शिव अर्थात ज्ञान या कल्याण, द अर्थात दान इस प्रकार मोदकरी का अर्थ हुआ मर्यादा (लज्जा), ज्ञान और दान की प्रवृत्ति को करने वाली अर्थात अपने भक्तों को देने वाली। द का अर्थ दमन अर्थात इन्दियों को दमन करने की शक्ति भी ले सकते है। भक्तों को आनन्द देने वाली।

664. **मेधा** – धारणाशक्ति रूपा। दीर्घकालीन स्मरण शक्ति मेधा है। इस शक्ति के कारण मनुष्य एक बार भी किसी चीज को सुनने पर अपने भीतर उस सुनी हुई चीज को इस प्रकार डाल देता है कि उसकी स्मृति बनी रहती है। इसी शक्ति के कारण व्यक्ति को चीजों का स्मरण रहता है। स्मरण शक्ति मेधा शक्ति पर आधारित होती है। शास्त्रों के सार या तत्व को ग्रहण करने वाली बुद्धि या शक्ति मेधा कहलाती है। दुर्गा सप्तशती के श्लोक में ऐसा ही अर्थ दिया गया है। Grasping Power को भी मेधा कहते हैं। जिस विषय का विचार चल रहा हो, उस विषय की सम्पूर्ण विचारशक्ति मेधा कहलाती है। वह असाधारण मानसिक शक्ति या गुण जिससे मनुष्य किसी कार्य को बहुत योग्यता से कर सकता है, मेधा कहलाती है। (बगलामुखी देवी में यह शब्द आया है जहाँ विस्तार से लिखा गया है।)

665. **मेध्या** – बुद्धि बढ़ाने वाली। मेध्य का एक अर्थ होता है मेधा (बुद्धि) बढ़ाने वाला। इनकी उपासना करने से बुद्धि बढ़ती है। पवित्र स्वरूप वाली। स्वयं पवित्रता रूपी है। यज्ञ से सम्बन्ध रखने वाली या यज्ञ के योग्य। मेध्य का अर्थ है पवित्र, यज्ञ सम्बन्धी।

666. **मध्याधिपस्थिता** – मध्य नाड़ी अर्थात सुषुम्ना की अधिष्ठात्री देवी होकर उसमें स्थित। कुण्डलिनी शक्तिस्वरूपा जो सुषुम्ना नाड़ी में रहती है। मध्य लोक अर्थात भूलोक के राजाओं में स्थित अर्थात राजाओं के साथ स्थित। मध्य का अर्थ हृदय भी होता है। हृदय में रहने वाले आत्मा की शक्ति रूपा। मध्य का अर्थ न्याय्य भी होता है जिसका अर्थ है औचित्य। उचित अर्थात न कम न ज्यादा। जो औचित्ययुक्त शासक हैं अर्थात न्याय करने वाले शासक हैं उनमें रहने वाली। इसी शक्ति के कारण राजा लोग न्याय कर पाते हैं।

667. **मद्यपा** – मद्यपान करने वाली। दुर्गासप्तशती में महिषासुर वध के पहले देवी ने मद्यपान किया था। अमृत का पान करने वाली। सहस्रार चक्र से नीचे सुषुम्ना नाड़ी में टपकने वाले अमृत को तन्त्र–शास्त्रों ने मद्य कहा है। ऐसे अमृत का सेवन करने वाली कुण्डलिनी शक्ति स्वरूपा।

668. **मांसलोभस्था** – दैत्यों के मांस के लोभभाव में विराजमान अर्थात दैत्यों के मांस की लोभी। भक्ति योग या ज्ञान योग के लोभ में स्थित अर्थात इन योगों के लोभ वाली अर्थात देवी बहुत कामना करती हैं कि कोई उनकी भक्ति करे। मांस का अर्थ है – दुर्व्यसनी, विचार (ज्ञान), भक्तियोग, ज्ञानयोग आदि। माम् (लक्ष्मीम्) स्यति इति मांसः, जो लक्ष्मी को नष्ट करता है अर्थात दुर्व्यसन के द्वारा लक्ष्मी को नष्ट करता है। मायाम् स्यति इति मासः, जो माया को नष्ट कर दे वह है मांस। माया को विचार (ज्ञान), भक्तियोग, ज्ञानयोग ही नष्ट कर पाते हैं। मांस अर्थात जिससे शाश्वत सौभाग्य और आनन्द मिलता है अर्थात आध्यात्मिक बोध या आध्यात्मिक ज्ञान। मां का अर्थ है मांगल्य या सौभाग्य। स का अर्थ है सत्–चित्–आनन्द। मा का अर्थ जिह्वा भी है। माम् स्यति अर्थात जिह्वा भक्षण करना अर्थात खेचरी मुद्रा। मांस का एक अर्थ है खेचरी मुद्रा। मा+अंस, जिह्वा का अंस अर्थात जिह्वा से सम्बन्धित अर्थात उपवास या मौन। पाप और पुण्य दोनों को ही मांस कहते हैं, इन दोनों का भक्षण आवश्यक है क्योंकि एक लोहे की जंजीर की तरह है और दूसरा सोने की जंजीर की तरह है। निरूक्त में हृष्ट पुष्ट व्यक्ति के लिए भी मांस शब्द का प्रयोग किया गया है। मन जिसमें बैठता है अर्थात आकर्षित होता है वह मांस है। चूँकि हृष्ट पुष्ट व्यक्ति को देखकर मन आकर्षित होता है अतः उसे भी मांस कहते हैं। मनः सीदति यस्मिन् इति मांसः।

669. **मोदिनी** – आनन्द वाली। आनन्द युक्त/हर्ष युक्त।

670. **मैथुनोद्यता** – मैथुन के लिए उद्यत अर्थात शिव से मिलने के लिए उद्यत या तैयार। मूलाधार चक्र में स्थित कुण्डलिनी शक्ति सहस्रार चक्र में स्थित शिव से मिलने के लिए आतुर रहती है। मैथुन से मिलने वाले आनन्द का अनुभव करने के लिए हमेशा तैयार।

671. **मूर्धावती** – सर्वोपरि विराजमान। देवताओं में श्रेष्ठ। सभी मूर्धावान होते हैं। यहाँ मूर्धा का अर्थ मस्तक वाली मूर्धा न होकर श्रेष्ठता है। कभी–कभी मतुप् प्रत्यय स्वार्थ में भी होता है। श्रेष्ठ सिर वाली अर्थात् श्रेष्ठ विचार वाली। मूर्धा अर्थात् सिर। सभी मूर्धा से युक्त होते है। सभी रूपवती होते है पर अधिक सुन्दर या अधिक रूप वाले को रूपवती कहा जाता है। सिर अर्थात् मस्तिष्क से विचार होता है। श्रेष्ठ विचार शक्ति स्वरूपा।

672. **महामाया** – मायावियों को भी माया में डालने वाली। जिसको पार करना अतिशय दुस्तर है, ऐसी माया स्वरूपा। माया ईश्वर की शक्ति है जिससे वह जगत का निर्माण करता है। जो माया से बढ़कर है। शब्द के आगे महा लगने से सर्वाधिक या 'पिछले शब्द से बढकर' अर्थ आता है। माया से बढ़कर होने के कारण ही उपासकों को माया से पार करा देती है। माया वह शक्ति है जो पदार्थों के वास्तविक स्वरूप को ढक कर उसे

दूसरे स्वरूप में दिखाती है। माया के कारण मोह होता है अर्थात व्यक्ति अपने को शरीर समझने लगता है तथा शरीर से जुड़े पदार्थों एवं प्राणियों (रिश्तों) को अपना मानकर उसे सुख का स्रोत समझने लगता है। माया शक्ति के कारण एक अखण्ड ब्रह्म नानात्व के रूप में दिखने लगता है। महामाया का अन्य अर्थ है जो मायावियों को भी माया में डाल देती है। अति विशाल या विश्व मोहनी माया जिनके अधीन है। महती विश्वमोहिनी माया यदधीना सा महामाया। माया का अर्थ ज्ञान, इच्छा, महिमा (यश) भी होता है। जिनका ज्ञान, इच्छा, महिमा (यश) विशाल है। जिनकी बुद्धि विशाल है और शुभ या मंगल को धारण करने वाली है। महती मा प्रमा यस्य स महामः। अयः शुभावहाश्च। विशाल बुद्धि को धारण करने वाली या श्रेष्ठ बुद्धि को अपने भक्तों तक पहुँचाने वाली। महाम का अर्थ हुआ विशाल बुद्धि। अया का अर्थ है शुभावहा अर्थात शुभ को धारण करने वाली या भक्तों को पहुँचाने वाली। महती मा प्रमा यस्य स महामः। अया शुभावहा। महाम या श्रेष्ठ, अच्छाइयो या ज्ञान को धारण करने वाले या उसे भक्तों तक पहुँचाने वाली। मा का अर्थ है ज्ञान या वाक्। महती मा वागोंकारः, ताम् इयम् अयते। महती वाणी अर्थात ॐ को गयी है जो अर्थात उसमें विराजमान या उसको प्राप्त किया है जिसने। जिन्हें ईश्वर से मिलने की इच्छा नहीं है उन सभी लोगों को भोगों में फँसाये रखने वाली। महा का अर्थ है सभी या विश्वव्यापिनी। माया अर्थात जो वस्तु के वास्तविक स्वरूप को ढक देती है, उसे दूसरे रूप में दिखाती है। परिणाम यह होता है कि व्यक्ति संसार को सत्य मानकर उसमें फँस जाता है। माया का अर्थ अस्तित्व का अभाव नहीं है। माया का अर्थ है जो है उसे उसके वास्तविक रूप में न देख पाना क्योंकि माया का पर्दा पड़ा है। सभी पदार्थ चेतन तत्व से बने होते है पर हमें उन पदार्थो में वह चेतन तत्व नहीं दिखाई देता और हम बाहर से दिखने वाले आकार को ही वास्तविकता मान लेते है। व्यापिनी मायाशक्ति अर्थात जिसका प्रभाव सर्वत्र दिखाई देता है।

673. **माया** – सत्य पर आवरण डालने वाली शक्ति। माति इति माया अर्थात जो सीमित कर दे अर्थात सीमाबद्ध कर दे वह माया है। वह शक्ति जो निराकार असीम ब्रह्म को सगुण साकार बनाकर सीमाबद्ध कर देती है, माया है। एक अखण्ड सत्ता अर्थात चैतन्य को अनेक भेदों में अर्थात अनेक पदार्थो के रूप में दिखाने वाली। अहम् और इदम् में भेद करने वाली। कल्याण के साधना अंक में माया, महामाया और योगमाया के अन्तर पर प्रकाश डाला गया है जिसके अनुसार माया अपरा जगत की व्यवस्थापिका है। माया के क्षेत्र में मनुष्य, पशु – पक्षी, पंच तत्व एवं सतोगुण, रजोगुण एवं तमोगुण ये तीन गुण आते हैं।

674. **महिममन्दिरा** – गौरव या महत्व से युक्त है जिनका मन्दिर (रहने का स्थान)। यश है रहने का स्थान, जिनका। महिमाशाली है जिसका घर या आवास। ऐसे आलीशान घर वाली है जहाँ सब सामग्री मौजूद है। यश ही है मन्दिर जिसका अर्थात् यश में रहने वाली।

675. **महामाला** – सर्वश्रेष्ठ अर्थात सबसे सुन्दर माला को धारण किये हुए। ब्रह्माण्डों को माला के रूप में धारण किये हुए अर्थात विराट स्वरूप वाली। महा अर्थात सर्वाधिक/सर्वश्रेष्ठ, ब्रह्माण्ड। श्रेष्ठता में सभी मालाओं से बढ़कर जो माला है, उसे धारण करने वाली। बहुमूल्य मालाओं को धारण करने वाली। बेशकीमती बहुमूल्य मालाओं को धारण करने वाली। विशाल माला धारण किये हुये। देवी ब्रह्माण्ड स्वरूपा है जिसने नक्षत्रों की माला को धारण किया हुआ है। तात्पर्य है देवी अत्यन्त विशाल है या ब्रह्म स्वरूपा है अर्थात् सर्वत्र व्याप्त है।

676. **महाविद्या** – सभी विद्याओं में जो सबसे बढ़कर है अर्थात जिसका मन्त्र अन्य मन्त्रों से श्रेष्ठ है। स्त्रीदेवता के मन्त्र को विद्या कहते हैं। साधक को साधना की उच्चतर स्थिति में ले जाने वाली विद्या। तत्व साक्षत्कार कराने वाले उपनिषद के चार महावाक्य स्वरूपा। ये महावाक्य हैं – तत् त्वम् असि, अहम् ब्रह्मास्मि, प्रज्ञानम् ब्रह्म एवं अयम् आत्मा ब्रह्म। जीव और ब्रह्म की एकता का निरूपण करने वाले उपनिषदों के चारों महावाक्यों के स्वरूप वाली। ये चारों महावाक्य महाविद्या कहलाते हैं।

677. **महामाया** – जो माया से बढ़कर है अर्थात माया को पार कराने वाली। शब्द के आगे महा लगने पर ''से बढ़कर'' अर्थ आ जाता है। उच्च लोक में संचालन करने वाली शक्ति। परा जगत की व्यवस्थापिका। सहस्रार से लेकर ऊर्ध्व लोक तक में इसका शासन होता है। सिद्धों व देवताओं की शासिका महामाया है। महामाया के क्षेत्र में पंच तत्वों का, त्रिगुण का अधिकार नहीं है। जीवन–मरण, विवाह महामाया के हाथ में होते हैं, माया का हाथ में नहीं। भूलोक में माया का साम्राज्य है तथा उच्चलोक में अर्थात सहस्रार के ऊपर के लोकों में महामाया का साम्राज्य है। योगमाया प्रत्येक जगह में व्याप्त है (कल्याण के साधना अंक में माया, महामाया और योगमाया के अन्तर पर एक लेख लिखा हुआ है)। बड़े–बड़े ऋषि–मुनियों, देवताओं को संसार की तरफ आकृष्ट करने वाली।

678. **महेश्वरी** – जो सभी देवियों में श्रेष्ठ है। महा अर्थात सबसे बढ़कर और ईश्वरी अर्थात देवी। सभी आराध्यों में सबसे बढ़कर। शासन करने वाली सत्ताओं में जो सबसे बढ़कर है। महान ऐश्वर्य से युक्त।

679. **महादेववधू** – भगवान महादेव की गृहिणी या पत्नी। श्रेष्ठ देवताओं अर्थात ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश, सूर्य की पत्नियों से अभेद है जिनका। वधू का अर्थ नवविवाहिता दुल्हन, पत्नी, पुत्र की पत्नी होता है। अतः इस नाम का अर्थ हुआ कार्तिकेय की पत्नी देवसेना (षष्ठी देवी) से अभेद है जिनका।

680. **मान्या** – सबके द्वारा माननीय। आदर या समान की अधिकारिणी अर्थात आदर या सम्मान के योग्य। पूजनीया। मान पूजायाम् धातु होती है। प्रार्थनीया। भगवान विष्णु की शक्तिस्वरूपा। भगवान शिव की शक्तिस्वरूपा। मैत्रावरुण की शक्तिस्वरूपा। मान्य + आ, आ का अर्थ है शक्ति। मान्य का अर्थ है विष्णु, शिव, मैत्रावरुण। पूजनीया या सम्मानीया अर्थात् देवताओं या प्राणियों द्वारा सम्मान के योग्य अर्थात् उनका सम्मान या आदर करते है। सर्वैः पूज्यते इति मान्या। मां रमां अनं प्राणं च यमयति इति मान्या। लक्ष्मी (धन–सम्पत्ति) एवं प्राण (आयु) को नियन्त्रित करने वाली अर्थात निर्धारित करने वाली कि किसको कितना धन देना है, किसको कितनी आयु देनी है। मा अर्थात नहीं, अन्य अर्थात दूसरा। जिसके समान कोई दूसरा नहीं है, वह मान्या है। स्वरूपगुणक्रियादिभिः अन्यो न भवति इति मान्या। स्वरूप, गुण, क्रिया आदि में जिसके समान कोई नहीं है। मायां प्रमायां जातायां अन्या इति सुज्ञेया। श्रेष्ठ बुद्धि होने पर अर्थात भगवत विषयक बुद्धि होने पर जानने योग्य है। मन् ज्ञाने धातु होती है जिससे मान्य का अर्थ जानने योग्य होता है। प्रमा या बुद्धि, जातायां अर्थात होने पर। अन् प्राणने धातु से भी यत् प्रत्यय लगाकर अन्य शब्द बन सकता है। शाब्दिक अर्थ तो सम्मान के योग्य है पर कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र से कृत्य प्रत्ययान्त शब्द सामान्य कारकों एवं कालों से भी भिन्न अर्थ बताते है अर्थात् सम्मान करने योग्य का अर्थ सम्मान करते हैं, सम्मान करने वाली भी किया जा सकता है। मा+ अन्या, मा का अर्थ है नहीं। जिनके अतिरिक्त कोई दूसरा नहीं है। देवी का अर्थ है शक्ति या ऊर्जा। हमें जो कुछ भी दिखाई देता या अनुभव में आता है, वह शक्ति या ऊर्जा का रूपान्तरण होने के कारण देवी स्वरूपा ही है। जिनके समान कोई दूसरा नही नही है, यह अर्थ भी कर सकते है। मा + न्या, मा का अर्थ है लक्ष्मी, माया। न्यास शब्द से न्या शब्दाक्षर दे सकते है। लक्ष्मी में या माया में रखी हुयी अर्थात् विराजमान। अन्येन अन्यत्वज्ञानिनैव मीयते च। अन्यत्व (भेद) को जानने वालों द्वारा जानी जाने वाली। तात्पर्य है विवेकी ज्ञानियों द्वारा जानी जाने वाली अर्थात जिन्हें सत् और असत् का भेद करना आता है, प्रकृति और पुरूष का भेद करना आता है। उनके द्वारा जानी जाने वाली।

681. **मथुरा** – मथुरा नगरी के समान अर्थात मथुरा नगरी के समान मोक्ष देने वाली। सभी पापों को मथने वाली (यह अर्थ शब्द कल्पद्रुम में दिया गया है)। सभी दैत्यों को मथने वाली अर्थात समाप्त करने वाली। मथ्नाति धातु से यह शब्द बना। जहाँ दैत्यों को मथा गया वह है मथुरा। मथुरा वाली अर्थात मथुरा नगरी में जन्म लेने वाली। मथुरा अस्या अस्ति इति मथुरा अर्थात मथुरा वाली। कृष्ण के जन्म के पहले जो शक्ति पैदा हुई थी उसे कंस ने पटककर मारना चाहा था, उस शक्ति के रूप में है। मधुर स्वभाव वाली या मधुर आकृति वाली अर्थात सुन्दरतम

आकृति वाली। मथुरा का अर्थ मधुरा भी होता है। मन्थन करने वाली अर्थात् सार ग्रहण करने वाली या सार ग्रहण कराने वाली। तत्व ज्ञान कराने वाली। मथुं राति।

682. **मेरूमण्डिता** – सुमेरू पर्वत से विभूषित पृथ्वी स्वरूपिणी।

683. **मेदस्विनी** – मेदा से बनी हुई पृथ्वीस्वरूपिणी। मधु कैटभ के मरने से उनके शरीर से निकला मेद ही पानी में पृथ्वी बना।

684. **मिलिन्दाक्षी** – भौरों की तरह आँखों वाली अर्थात काली आँखों वाली।

685. **महिषासुरमर्दिनी** – महिषासुर नामक राक्षस का मर्दन करने वाली। महिषासुर क्रोध का प्रतीक है अर्थात क्रोध को मारने वाली। कहीं पर महिषासुर को चित्त की विक्षेप शक्ति का प्रतीक माना गया है। जिस प्रकार महिषासुर हर क्षण रूप बदलता है, उसी प्रकार चित्त भी हर क्षण इधर से उधर जाता है। चित्त की विक्षेप शक्ति को मारने वाली। कहीं पर महिषासुर को तामसी अहंकार का प्रतीक माना गया है।

686. **मण्डलस्था** – सूर्यमण्डल या चन्द्र मण्डल में विराजमान। मण्डल का अर्थ है गोला। अनेक मण्डलों अर्थात यन्त्रों में रहने वाली। मण्डल अर्थात यन्त्र जैसे लक्ष्मी यन्त्र, मातंगी यन्त्र। बिन्दु, वृत्त, त्रिभुज आदि से मिलकर मण्डल बनता है। (यदि मण्डस्था शब्द है तो अर्थ होगा – सार में स्थित। मण्ड का अर्थ शीर्ष, सिर, सार है। इस प्रकार मण्डस्था का अर्थ शीर्ष या सिर में स्थित है। वस्तु मात्र में तत्व रूप से स्थित। किसी भी अन्न का सार अर्थात तत्व मण्ड कहलाता है)।

687. **भगस्था** – सूर्यमण्डल (सूर्य का गोला) में स्थित। ऐश्वर्य में स्थित या ऐश्वर्य से युक्त स्थानों में स्थित। जहाँ – जहाँ ऐश्वर्य है वहाँ – वहाँ इनका निवास है। जब देवी होती हैं तभी वहाँ ऐश्वर्य होता है। शिव में शिव के साथ स्थित।

688. **मदिरारागगर्विता** – मदिरा और राग (संगीत का राग) से जो गर्वित है अर्थात मदमस्त है अर्थात तल्लीन है। राग अर्थात सा, रे, गा, मा आदि। शिव के आनन्द देने वाले प्रेम से गर्वित अर्थात बड़प्पन का अनुभव करने वाली अर्थात यह अनुभव करने वाली कि उसके पास विशेष चीज है। माद्यते अनया इति मदिरा अर्थात जिससे हर्ष मिलता है वह मदिरा है। राग का अर्थ है प्रेम, रंग। लाल शराब के रंग अर्थात लाल रंग से गर्वित (अभिमानिनी)। देवी के शरीर का रंग अरूण अर्थात लाल माना गया है। लाल रंग रजोगुण का रंग है जो उत्पत्ति, क्रियाशीलता का प्रतीक है।

689. **मोक्षदा** – आवागमन अर्थात जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति देने वाली। आध्यात्मिक, आधिदैविक एवं आधिभौतिक तीनों तापों से मुक्ति देने वाली। अज्ञान के बन्धन से मुक्ति देने वाली।

690. **मुण्डमाला** – मुण्डों की माला धारण किए हुए। वर्णमाला को भी मुण्डमाला कहते हैं अर्थात समस्त वर्णमाला धारण की हुई या यह वर्णमाला जिनसे निकलती है। समस्त ब्रह्माण्डों को धारण किये हुए। मुण्ड गोल होते हैं एवं ब्रह्माण्ड भी गोल होते हैं। मल् धारणे धातु से माला का अर्थ होता है धारण करने वाली। इस नाम का तात्पर्य हुआ विराट् स्वरूपा। मुण्ड अर्थात सिर अर्थात ज्ञान अर्थात विचार। तत्व ज्ञान धारण करने वाली। मुण्ड संहार शक्ति का भी प्रतीक है क्योंकि सिर काटने से ही मुण्ड बना। संहार शक्ति को धारण करने वाली।

691. **माला** – स्वयं माला स्वरूपिणी। अक्षमाला स्वरूपिणी अर्थात अ से लेकर क्ष तक जितने भी वर्ण हैं सब देवी के ही स्वरूप हैं। माला को धारण करने वाली यह अर्थ भी निकलेगा। लक्ष्मी या शोभा को धारण करने वाली। माम् (लक्ष्मीम्) लाति ग्रह्णाति धारयति इति माला। मा का एक अर्थ है लक्ष्मी और लक्ष्मी का एक अर्थ शोभा भी होता है।

692. **मालाविलासिनी** – मालाओं को पहन कर विशेष रूप से सुशोभित होने वाली। विलास का अर्थ विशेष रूप से सुशोभित होना भी होता है। माला के साथ विलास करने वाली अर्थात श्रृंगारिक विहार करने वाली। विहार का अर्थ चलना, फिरना, घूमना, सुन्दर चलना फिरना भी होता है, जिस चाल को देखकर लोग आकर्षित हो। खास तरीके से चलना जैसे मटकना, यह साधारण चलना नहीं है।

693. **मातंगिनी** – हाथियों से घिरी हुई या हाथी से युक्त। मतंग (हाथी) + णिनि से मातंगिन् शब्द बनेगा जो स्त्रीलिंग एक वचन में मातंगिनी हो जायेगा। जंगल में इनके आस – पास हाथी होते होंगे। मातंग का अर्थ हाथी होता है। इन्द्राणी हाथी पर सवार होती हैं। मतंग ऋषि ने जिनकी उपासना की थी। मतंग ऋषि के यहाँ जो कन्या रूप में प्रकट हुई। जिसके उपासक विचारवान हो जाते हैं, बुद्धिमान हो जाते हैं। बुद्धि वाली या विचार वाली। णिनि प्रत्यय कभी कभी स्वभाव अर्थ में भी आता है। हाथियों से घिरी होना अर्थात उनके बीच रहना स्वभाव है जिसका। मातंगिनी नामक योग मुद्रा स्वरूपा या ऐसी मुद्रा में विराजमान।

694. **मातंगी** – मदशील अंगों वाली। जिसे देखने पर देखने वाले को नशा सा छा जाता है अर्थात अपनी सुधबुध खो जाती है तथा भीतर आनन्द में डूब जाता है। मदमस्त हाथी की तरह हर्षोल्लास वाली। मतंग का अर्थ हाथी है। मतम् गता इति मातंगी। जो विचारों को जाती है अर्थात विचार करती है या ज्ञान को प्राप्त कराती है। बुद्धि को धारण करने वाली या विचार को धारण करने वाली। मतम् (विचारम्) गमयति इति मातंगी अर्थात विचार को ज्ञात कराने वाली। वाणी से ही विचार का पता चलता है। अतः मातंगी वैखरी वाणी स्वरूपा है। मत या विचार में गई अर्थात मन में प्रवेश किया अर्थात embodiment of thought अर्थात शब्द स्वरूपा। शिव पुराण में आया है माता पार्वती के अंग से निकली देवी मातंगी है। दुर्गा सप्तशती में आया है कि देवी के शरीर से एक शक्ति निकली जो कौशिकी कहलाईं। मतंग (हाथी) उत्पन्न हुए हैं जिनसे।

695. **मातंगतनया** – मतंग ऋषि की कन्या के रूप में। मतंग ऋषि की कन्या हुई मतंगा। मतंग से स्वार्थ में अण् प्रत्यय लगाने से मातंग बना। चाण्डाल कन्या के रूप में जिन्होंने अवतार लिया। मातंग का अर्थ चाण्डाल भी होता है और मातंगकन्या चाण्डाल कन्या हुई। चाण्डाल कन्या केवल दर्शनीया होती है, उसका स्पर्श अर्थात उपभोग नहीं किया जा सकता।

696. **मधुश्रवा** – मधुर शब्दों वाली अर्थात मधुर शब्द बोलने वाली। मधुर अर्थात जो मन को अच्छा लगे। मधुर कीर्ति वाली अर्थात अच्छी या प्रशंसात्मक कीर्ति वाली। श्रव का अर्थ हे शब्द जो सुना जाए, कान, कर्णफूल, कीर्ति। मधु का अर्थ है मीठा या स्वादिष्ट। (यदि मधुस्रवा शब्द होता तो अर्थ होता–अमृत को बरसाने वाली। स्रव अर्थात क्षरण, स्रवित होना।)

697. **मधुरसा** – अमृत रस स्वरूपिणी। अमृत रस को देने वाली। मधुरस + आ, आ का एक अर्थ है देना।

698. **बन्धूककुसुमप्रिया** – बन्धूक के लाल पुष्प जिन्हें बहुत प्रिय हैं।

699. **यामिनी** – रात्रिस्वरूपा। हल्दी की तरह अर्थात हल्दी की तरह रोग (कष्ट) निवारिका। कश्यप ऋषी की यामिनी नामक पत्नी से अभेद है जिनका। यामिनी का अर्थ है रात्रि, हल्दी, कश्यप ऋषी की एक पत्नी का नाम।

700. **यामिनीनाथभूषा** – चन्द्रमा है जिनका शिरोभूषण अर्थात चन्द्रमा को अपनी जटा जूट में धारण करने वाली।

701. **यावकरंजिता** – जौ के रस से रंगी हुईं (मेंहदी लगाना आदि रूप में)।

702. **यवांकुरप्रिया** – जौ के अंकुर बहुत प्रिय है जिसे। देवी की पूजा में कलश में लोग जौ बोते हैं।

703. **यामा यवनी** – रात्रि स्वरूपा (अज्ञान का नाश करने वाली) और जोड़ने वाली। रात्रि अन्धकार का प्रतीक है तथा अन्धकार विनाश करने वाले का प्रतीक है। यवनी नाम का अर्थ है – जोड़ने वाली। भक्त को परमात्मा से

जोड़ने वाली। ग्रामणी ग्रामम् नयति। गाँव वालों में जो प्रधान हो। इसी प्रकार यवनी। यव + नी अर्थात धान्यों में जो प्रधान हो। ऐसी अज्ञानरूपी रात्रि जो आवरक (पर्दा) भी है। यामा का अर्थ होता है प्रहरों वाली, दिन और रात दोनों के प्रहर होते है पर यह शब्द रात्रि में रूढ़ हो गया। नाटकों में यवनिका शब्द का प्रयोग पर्दा के अर्थ में किया गया है। इस आवरण शक्ति के कारण हमें वस्तुओं के वास्तविक रूप अर्थात् उसके स्वरूप के दर्शन में बाधा आती है। सभी वस्तुयें चैतन्य से बनी है पर हमें चैतन्य नहीं दिखाई देता है। यु धातु का अर्थ मिश्रण करना भी होता है जिससे यवनी का अर्थ मिश्रण करने वाली अर्थात् मिलाने वाली भी होता है। ऐसी रात्रि स्वरूपा जो मिलाती है। उपासकों को इष्ट देव से मिलाती है। रात्रि में प्रायः शक्ति की उपासना की जाती है। ऐसी रात्रि जो प्रेमी को प्रेमिका से मिलाती है।

704. **यवनार्दिनी** – वेद – विरोधियों को दुख देने वाली या नष्ट करने वाली। कुमार्गगामियों को नष्ट करने वाली। जो वेद विरोधी है वेद को नही मानते है, वेद के रास्ते पर नहीं चलते है उन्हें ही यवन या कुमार्गगामी कहा गया है।

705. **यमघ्नी** – यम (मृत्यु) का भी अन्त करने वाली। अकाल मृत्यु के भय का नाश करने वाली।

706. **यमकल्पा** – यम तुल्य (जीवधारियों के लिए)। कल्प का अर्थ है सदृश, तुल्य, समान। यम के अन्दर देवी शक्ति रूप में होती है।

707. **यजमानस्वरूपिणी** – यज्ञ करने वाले से अभेद है जिसका। पूजा/यज्ञ करने के पहले न्यास किया जाता है जिससे व्यक्ति का देवता से अभेद हो जाता है। यजमान के अन्दर वही देवी होती हैं, तभी वह हवन में प्रवृत्त होता। वही प्रेरणा देती है यज्ञ करने की। यज्ञ करने वाले से अभेद है जिसका। आत्मास्वरूपा। शिव के अष्टरूपों में एक रूप यजमान है जिसका अर्थ है आत्मा।

708. **यज्ञा** – यज्ञ भगवान की शक्तिस्वरूपा। यज्ञ + आ (शक्ति)। यज्ञ को भी भगवान के रूप में अभिव्यक्त किया गया है। यज्ञ की शक्तिस्वरूपा। यज्ञस्वरूपिणी। आत्मोत्थान के लिए किये जाने वाले सभी कर्म यज्ञ होते हैं। जिन चीजों के आप स्वामी हैं, उन्हें मानवता की भलाई में लगाना भी यज्ञ है। देवताओं के लिए हवन करना भी यज्ञ है। गीता के अनुसार निष्काम भाव से परोपकार हेतु किये जाने वाले कर्तव्य कर्म यज्ञ हैं। भगवान विष्णु की शक्तिस्वरूपा। भगवान शिव की शक्तिस्वरूपा। इज्यते इति यज्ञः अर्थात जिनकी पूजा की जाती है वे यज्ञ हैं। यज्ञ + आ, आ का अर्थ है शक्ति।

709. **यज्ञयजुष्** – यज्ञ के लिए यजुष् (यजुर्वेद) के मन्त्र स्वरूपिणी।

710. **यक्षी** – यक्ष की पत्नियों से अभेद है जिनका। कुबेर की पत्नी से अभेद है जिनका। यक्ष की शक्ति रूपा। यक्ष एक प्रकार की देवयोनि है। उपनिषद में ब्रह्म के लिए यक्ष शब्द का प्रयोग किया गया है। ब्रह्म के अर्थ में यक्षी का अर्थ होगा ब्रह्म की गृहिणी अर्थात उनकी शक्ति स्वरूपा। श्रेष्ठ क्षमा गुण स्वरूपा। ईश्वर का क्षमा गुण स्वरूपा। एकाक्षरी कोश में य का अर्थ ईश्वर, श्रेष्ठ लिखा है एवं क्षी का अर्थ क्षमा लिखा है। यक्ष जाति की स्त्रियाँ यक्षी हुईं। उन स्त्रियों में शक्ति या गुण रूप में विराजमान। नियम है कि शब्द के आगे 'में विराजमान' लगाने से शब्द का अर्थ आ जाता है।

711. **यशोनिष्कम्पकारिणी** – यश को अटल करने वाली अर्थात इनकी कृपा से यश हमेशा रहता है।

712. **यक्षिणी** – जो पूजनीय है। यक्षः पूजा अस्याः अस्ति अर्थात पूजा वाली। यक्ष् पूजायाम् धातु होती है। यक्षिणी के रूप में जो अवतरित हुई है। बिहार में सासाराम में यक्षिणी भवानी का मन्दिर है। यक्षिणी देवयोनि बनकर जिसने देवताओं की परीक्षा ली थी। यक्ष देवयोनि की अलौकिक शक्ति सम्पन्न स्वरूपा जिनकी मनुष्य

विभिन्न मनोकामनाओं के लिए उपासना करते हैं। यष्टुम् समर्थः इति यक्षः अर्थात संसार का निर्माण करना, पालन करना रूपी यज्ञ में समर्थ है जो, इसी कारण परब्रह्म का एक नाम यज्ञ भी है। जनैः यक्ष्यते इति यक्षः। लोगो द्वारा जिनकी पूजा की जाती है, उनका नाम यक्ष है। जो संसार चलाने रूपी यज्ञ करने में समर्थ है। यष्टुम् समर्थः इति यक्ष। स्त्रीलिंग में यक्षिणी होगा। कोई भी परोपकार का कार्य या अच्छा कार्य या निष्काम भाव से किया गया कर्त्तव्य कर्म यज्ञ कहलाता है। भगवान शिव की दास –दासियों को यक्ष और यक्षिणी कहा गया है। देवताओं के बाद इनमें दिव्य शक्तियाँ होती है। यक्षिणी मनुष्य की मदद और नुकसान दोनो करती है। कुछ यक्षिणियाँ अपनी सकारात्मक ऊर्जा के कारण मनुष्यों की मदद करती है। यक्ष और यक्षिणी कुबेर के सेवक है, जो प्राकृतिक धन खजाना जो जमीन में है उसकी तथा वृक्षों के जड़ की रक्षा करती है। इनका मुख्य निवास पाताल में है पर स्वर्ग एवं पृथ्वी में भी जंगलों एवं पहाड़ों पर पाये जाते है। यक्षिणी का अर्थ है ऐसी शक्ति जिसके द्वारा विश्व प्रकट हुआ है। अपने को प्रकट करने वाली अर्थात अचानक कहीं पर भी प्रकट हो जाने वाली। वैदिक कोश में यक्ष् धातु का एक अर्थ प्रकट करना है। वैदिक कोश (सूर्यकान्त) में यक्ष् धातु का एक अर्थ प्रकट करना दिया है। इसी कोष में यक्ष का एक अर्थ रहस्य दिया गया है। इस प्रकार यक्षिणी का एक अर्थ हुआ जो रहस्य से युक्त है। रहस्य का अर्थ है जिसे बुद्धि से या अपने प्रयास के द्वारा न जाना जा सके।

713. **यक्षजननी** – ब्रह्म का भी मूल कारण। ब्रह्म के लिए भी यक्ष का प्रयोग किया जाता है। यक्ष नामक देवयोनि को पैदा करने वाली, ये कुबेर के सेवक होते हैं और उनकी निधियों की अर्थात धन की रक्षा करते हैं। ई + अक्ष् + अण्, इस प्रकार यक्ष शब्द बना। ईम् लक्ष्मीम् अक्ष्णोति इति यक्ष, जो धन को व्याप्त करते हैं अर्थात धन को प्राप्त करते हैं अर्थात धन की रक्षा करते हैं वे यक्ष हैं। लक्ष्मी का अर्थ धन है।

714. **यशोदा** – यश देने वाली। कृष्ण की माँ यशोदा से अभेद सम्बन्ध है जिनका। यशोदास्वरूपिणी।

715. **यासधारिणी** – यत्न धारिणी। यत्न वाली।

716. **यशस्सूत्रप्रदा** – कीर्ति के सूत्र (मार्ग) प्रदान करने वाली।

717. **यामा** – नियन्त्रण करने वाली। यामयति इति यामा। आठों याम या प्रहर जिसके स्वरूप हैं।

718. **यज्ञकर्मकरी** – यज्ञ कर्म करने वाली/श्रेष्ठ कर्म करने वाली। परोपकार के कर्म करने वाली। निष्काम भाव से परहित में किया गया कोई भी कर्म यज्ञ कहलाता है।

719. **यशस्विनी** – यश युक्ता। जिनकी बहुत प्रसिद्धि है।

720. **यकारस्था** – य वर्ण/अक्षर में रहने वाली। य वर्ण से उपलक्षित पदार्थों में विराजमान। यम, वायु, सूर्य, चन्द्र, ईश्वर (शिव) य अक्षर से बोधित पदार्थ हैं। यम् बीज वायु का बीज माना जाता है।

721. **यूपस्तम्भनिवासिनी** – यज्ञार्थ बनाये गये स्तम्भ/खम्बे में रहने वाली। यूप वह स्तम्भ है जिसमें बलि के लिए पशु बाँधे जाते। यज्ञ के लिए बनाया गया यज्ञस्तम्भ यूप है।

722. **रंजिता** – प्रसन्न। प्रसन्न चित्त वाली।

723. **राजपत्नी** – राजा की रक्षा करने वाली। पाति इति पत्नी, जो रक्षा करे वह पत्नी है।

724. **रमा** – मन को, दृष्टि को रमाने वाली। रमाने वाली का अर्थ है आकर्षित कर एकटख लगाने वाली। सभी जिसमें रमन करें अर्थात जिसमें सभी का मन लगे अर्थात जो सभी को अच्छी लगे। सभी जिसके लिए अपेक्षा करें कि मेरे पास हो, मेरे पास हो। रमण करने का तात्पर्य है किसी से युक्त होना, जिससे आनन्द मिले। रमण करना अर्थात ध्यान करना क्योंकि ध्यान से भी आदमी जुड़ता है। योगी लोग जिसमें ध्यान करते हैं अर्थात योगी लोग जिसमें रमण करते हैं।

725. **रेखा** – सुन्दर। कला। कलास्वरूपणी। उल्लिखित या उट्टंकित जो सुन्दर चीजों के लिए ही होता क्योंकि सुन्दर चीजें ही उकेरी जाती हैं। लेख्यते इति लेखा रेखा। जो रेखा की तरह लम्बी तो है किन्तु चौड़ी या मोटी नहीं है।

726. **रवीरणा** – सूर्य को प्रकाशित होने के लिए प्रेरित करने वाली। रवि + ईरण, ईरण का अर्थ है प्रेरणा। सूर्य में भी गति करने वाली। रवि + ईरणा, सूर्य की ईरणा अर्थात गति या प्रेरणा। सूर्य को प्रेरित करने वाली अर्थात् उसे अपने कार्य करने के लिए प्रेरित करने वाली अर्थात् उसे उसके कर्त्तव्य में लगाये रखने वाली। रवि+ईरण, ईरण का अर्थ है प्रेरित करना। ज्ञानी भी सूर्य है क्योंकि वे ज्ञानरूपी प्रकाश से अज्ञानरूपी अंधकार को दूर करते है। ज्ञानियों को प्रेरित करने वाली अर्थात् उन्हें उनके कर्त्तव्यकर्म में प्रेरित करने वाली अर्थात् उन्हें उपदेशक बनने के लिए या अच्छा शास्त्र बनाने के लिए प्रेरित करने वाली।

727. **रजोवती** – रजोगुण से युक्त। कामाख्या देवी स्वरूपा जो प्रतिवर्ष आषाढ़ महीने में तीन दिन के लिए रजस्वला होती हैं। रज का अर्थ है धूल या कण। सभी ग्रह नक्षत्र देवी के लिए कण की तरह है। ग्रह नक्षत्र रूपी कणों से युक्त अर्थात् विराट् स्वरूप वाली या ब्रह्माण्डों के समूह वाली। वेद में रज शब्द पार्थिव तत्व के लिए प्रयुक्त किया गया है।

728. **रजस्वला** – रजस्वला पृथ्वी स्वरूपा। आषाढ़ मास के तीन दिन पृथ्वी रजस्वला होती है। इन तीन दिनों में उस पर कोई हल नहीं चलाया जाता। उड़ीसा में इस पर एक पर्व मनाया जाता है। रजस्वला नारी स्वरूपा क्योंकि सभी नारियाँ देवी का रूप हैं। ब्रह्माण्डस्वरूपिणी। पृथ्वी आदि ग्रह नक्षत्र इन्हीं के रज माने जाते हैं।

729. **रजश्चित्रा** – रजोगुण के कारण अनेक रूपों वाली। रजोगुण से ही विश्व बनता है, प्रकृति बनती है जो अनेक रंगों वाला है या अनेक स्वरूपों वाला है। ज्योति या प्रकाश स्वरूपा। चित्रज्योति वाली अर्थात अलौकिक ज्योति वाली। चित्र अर्थात सामान्य से हटकर और आश्चर्य पैदा करने वाली। ब्रह्माण्ड में जो भी है अर्थात सूर्य चन्द्र, तारे उनके कारण अर्थात उनके द्वारा विस्मय पैदा करने वाली। रजोगुण स्वरूपा (उत्पादिका शक्ति) एवं विचित्र अर्थात् आश्चर्यजनक कार्यों को करने वाली। ग्रह नक्षत्र रूपी रजकणों वाली अर्थात् आश्चर्यचकित करने वाली।

730. **रञ्जनी** – प्रसन्न करने वाली। रञ्जयति इति रञ्जनी।

731. **रजनीपति** – चन्द्रमा के स्वरूप में है जो। चन्द्रस्वरूपा।

732. **रोगणी** – रोगियों को स्वास्थ्य की ओर ले जाने वाली। रोगिणाः नैरुज्यम् नयति इति रोगिणा। रोगों को पैदा करने वाली, रोगों को हटाने वाली, दोनों अर्थ कर सकते हैं। रोगम् नयति/अपनयति इति रोगणी। नयति अर्थात ले जाना अर्थात पैदा करना। नयति अर्थात अपनयति अर्थात हटाना। शीतला देवी रुपा। (यदि रोगिणी शब्द है तो अर्थ होगा रोग से युक्त, रोग वाली अर्थात जिसे भक्तों पर कृपा करने का रोग लग गया हो)।

733. **रजनी** – चन्द्रमा वाली रात स्वरूपा। पूर्ण चन्द्रमा वाली रात। चाँदनी रात सुन्दर होती है। रंजयति इति रजनी। जो प्रसन्न करे वह रजनी है।

734. **राज्ञी** – ब्रह्माण्ड रूपी राज्य की महारानी, राजपत्नी। समस्त राजाओं की राजपत्नी के रूप में अर्थात राजलक्ष्मी के रूप में।

735. **राज्यदा** – राज्य प्रदान करने वाली। अपने भक्तों को राजा बना देती है।

736. **राज्यवर्धिनी** – राज्य बढ़ाने वाली अर्थात किसी राजा के अधीन बहुत सारे अन्य राज्य कर देती है।

737. **राजन्वती** – राजाओं/क्षत्रियों/योद्धाओं से युक्त। देवी राजराजेश्वरी हैं अर्थात बहुत से राजाओं वाली हैं

अर्थात बहुत से राजा इनकी उपासना करते हैं या इनके अधीन हैं। शोभा या उज्जवलता से युक्त अर्थात शोभा वाली। राजन का अर्थ है राजा, सम्राट, राजकुमार, गणेश, अग्नि, उज्जवल, शोभा। राजाओं वाली अर्थात् राजाओं की उपासनीया। राज्यलक्ष्मी स्वरूपा।

738. **राजनीति** – राजनीतिस्वरूपा। वह नीति जिसका सहारा लेकर राजा अपने राज्य की रक्षा करता और शासन मजबूत करता है। वह नीति जिसके द्वारा राज्य पर शासन किया जाता है। साम, दाम, दण्ड, भेद इसी राजनीति के अंग है। राजनीति का अर्थ है – राजाओं का मार्ग या विधान जिस पर राजा स्वयं चलते थे और दूसरें से भी उसका पालन कराते थे। आज की भाषा में इसे राजधर्म कह सकते हैं।

739. **रजतवासिनी** – चाँदी में निवास करने वाली। पहले चांदी के सिक्के चलते थे जो लक्ष्मी का प्रतीक माना जाता था।

740. **रमणी** – जिसके किसी के साथ होने पर उसे आनन्द मिलता हो। देवी जब साथ में होती है तो शिव को आनन्द मिलता है अतः देवी रमणी हैं। भक्तों के साथ क्रीड़ा करने वाली। अपने को माया के पर्दे से छिपाकर भक्तों के साथ लुका – छिपी का खेल खेलती है। युवावस्था वाली एवं सुन्दर।

741. **रमणीया** – प्रतिपल बदलते सौन्दर्य वाली, जिससे लोगों का मन आबद्ध हो जाता है। रमण करने योग्य अर्थात इतनी सुन्दर जिसमें मन लगा ही रहता है। रमणीय शब्द सौन्दर्य से सम्बन्धित है जिसमें मन लगे। अत्यन्त सौन्दर्य युक्त। रमणीय व्यक्ति इतना सुन्दर होता है कि दूसरा व्यक्ति उसके संसर्ग सुख के लिए मचल जाता है अर्थात उसका सान्निध्य प्राप्त करने का प्रयत्न करने लगता है। यही चीज रमणीय वस्तु के बारे में भी है।

742. **रामा** – योगी लोग जिसमें मन टिकाते हैं अर्थात योगियों का जिनमें मन टिकता है। भगवान राम की शक्तिस्वरूपा। राम + आ, एकाक्षरी कोष में आ का एक अर्थ है शक्ति। श्रेष्ठ स्त्री स्वरूपा। जो स्त्री रूपवती (सुन्दर) एवं सद्गुणी दोनों हो वह रामा है। जिसमें मन टिकता है (सौन्दर्यातिशय के कारण)। गायन विद्या में निपुण। गायन विद्या में पारंगत स्त्री को रामा कहते हैं। जो कण कण में रमण करती है अर्थात कण कण में विराजमान है।

743. **रामावती रति** – जो सुन्दर स्त्रियों से युक्त है तथा जिसकी स्वयं रति से अभेदता है। रति कामदेव की पत्नी है जो अत्यन्त सुन्दर मानी गयी है। जो सुन्दर है और क्रीडा रूप हैं। रति अर्थात क्रीडा तथा स्त्री के हाव – भाव। रमणीय लगने वाली रति स्वरूपा (स्त्री अर्थ में)। रति का अर्थ रतिक्रिया/पत्नी दोनों होता है।

744. **रेतोरति** – जगत के कारण स्वरूप शिव के प्रति रति (प्रेम) रखने वाली। जगत के कारण भगवान विष्णु के प्रति रति (भक्ति) रखने वाली। शिव और विष्णु में कोई भेद नही है। रेत का अर्थ वीर्य होता है जो सन्तान उत्पन्न करने का कारण है। अतः रेत का अर्थ कारण लिया गया है। उत्पत्ति के कारण (जिससे जगत या पदार्थ पैदा होते है) के प्रति प्रेम रखने वाली। गतिमान क्रीडा स्वरूपा। रीड्. क्षरणे धातु होती है जिससे रेत बना। जो निकलता है अर्थात गति करता है, वह रेत या वीर्य है। यहाँ गतिमान अर्थ लिया गया। रति का अर्थ क्रीडा लिया। वीर्य युक्त मैथुन क्रिया स्वरूपा, रेतस् पर्यन्त रति क्रिया स्वरूपा। कोई चीज अच्छी है या खराब यह मनुष्य की धारणा पर निर्भर करता है। जिस किसी भी चीज का अस्तित्व हो वह शक्ति या ऊर्जा का रुप है। शक्ति ही देवी हैं। शाब्दिक अर्थ सुनने या पढ़ने में भले ही खराब लगे किन्तु जगत में इसका अस्तित्व है, अतः इसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। रेतस् पर्यंत रति क्रिया स्वरूपा। धन के लिए क्रियमान क्रिया स्वरूपा। रेत का अर्थ धन भी होता है। भगवान विष्णु के मोहिनी रूप को देखकर भगवान शिव का वीर्य स्खलित हुआ था, वह जहाँ – जहाँ गिरा सोना एवं चांदी में परिवर्तित हो गया। बल या शक्ति में प्रेम है जिसे। रेत का अर्थ वीर्य होता है जो शक्ति का प्रतीक है। स्वर्ण को भी शिव का रेत या वीर्य कहते है। स्वर्ण (तेज) से प्रेम है जिसे।

745. **रतोत्साहा** – शिव के साथ प्रेम करने में उत्साह रखने वाली। रत का अर्थ रमण, भोग भी होता है। रति का एक अर्थ प्रेम भी होता है। कार्य में संलग्न रहने के लिए उत्साह स्वरूपिणी या उत्साह वाली। रत का अर्थ है किसी कार्य में लगे रहना।

746. **रोगघ्नी** – रोग का नाश करने वाली। शारीरिक मानसिक सभी प्रकार के रोगों का नाश करने वाली।

747. **रोगकारिणी** – पूजा आराधना का रोग लगाने वाली। रामनाम करने का रोग लगाने वाली। ऐसे रोगी को दुनिया की हर चीज तुच्छ लगने लगती है।

748. **रंगा** – भक्त को अपना स्वरूप देकर अपने रंग में रंगने वाली। रंगा अर्थात रंग + आ, आ का अर्थ है देना। रंग देना अर्थात रंगना। भक्त को अपना स्वरूप पैदा करके अपने जैसा कर देती है। श्याम तेरे रंग में रंग दे, ऐसा सुना होगा। रंगा अर्थात रोगन। विश्व (जो रंगमंच है) स्वरूपा। अग्नि तत्व का ज्ञान कराने वाली अर्थात परमतत्व या परमात्मा का ज्ञान कराने वाली। गमयति का अर्थ है ज्ञान कराना। रं अग्निबीज है। वेद में अग्नि शब्द को ब्रह्म या परमात्मा के लिए प्रयोग किया गया है। अग्नि में विराजमान अर्थात अग्नि की शक्ति दाहकता के रूप में विराजमान। गच्छति अर्थात जाती है अर्थात विराजमान होती है।

749. **रंगवती** – रंग मंच वाली अर्थात रंगमंच इसका है अर्थात संसार रूपी रंगमंच इसका है अर्थात रंगमंच इसकी सम्पत्ति है।

750. **रागा** – प्रेमस्वरूपिणी। अनुरागस्वरूपिणी। राग + आ, आ का अर्थ है देना, अतः संगीत के रागों को देने वाली अर्थात सिखाने वाली।

751. **रागज्ञा** – हृदय के प्रेम को जानने वाली अर्थात किसके अन्दर कितना प्रेम या रोग है उसे जानने वाली।

752. **रागकृतदया** – राग करने वालों पर दया करने वाली। राग करने वाले के लिए दया स्वरूपिणी।

753. **रामिका** – जिसमें वियोगी रमण करते है अर्थात ध्यान लगाते हैं। जो सुन्दर है। अधिक प्रिय लगने वाली सुन्दर स्त्री। रामा में कन् प्रत्यय लगाने से बिना अर्थ बदले अर्थात स्वार्थ में रामिका शब्द बनाता है। कन् प्रत्यय लघु एवं अधिक दोनों का प्रतीक है। रमण करने वाली अर्थात आनन्दित रहने वाली। रमण करने वाली अर्थात क्रीड़ा करने वाली। जिसमें योगी लोग अपना चित्त टिकाते हैं अर्थात जिनका चिन्तन या ध्यान करते हैं। रमन्ते योगिन्यः यस्याम् सा रामिका। राम ही रामक है। बिना अर्थ बदले कन् प्रत्यय लगाने से राम रामक बन जाता है। स्त्रीलिंग बनाने में रामक से टाप् प्रत्यय लगाया जाता है तथा व्याकरण के एक सूत्र के अनुसार पूर्व में इकार भी हो जाता है जैसे बालक का बालिका हो जाता है। राम शब्द का विग्रह किया गया है रमन्ते योगिन्यः यस्मिन् स रामः।

754. **रजकी** – धोबिन (पाप धोने वाली)। भक्तों के पापों को धोने वाली। कृष्णाष्टकम् में कृष्ण को चोर आदि इसी सन्दर्भ में कहा गया है कि वे भक्तों के पाप चुरा लेते हैं।

755. **रेवा** – जो उछलती हुई चलती है। उछलती हुई गति वाली। रेवृ प्लवगतौ धातु से यह शब्द बनता है। नर्मदा स्वरूपा। नर्मदा नदी पहाड़ों से कूदती है, उछलती हुई गति करती है, अतः उसे रेवा कहते हैं।

756. **रजनी** – प्रसन्नता देने वाली रात या रात्रि स्वरूपा। शाल्मली द्वीप की एक नदी स्वरूपा। जिसमें भक्त लोग अनुरक्त होते हैं, जिसके प्रति भक्ति करते हैं भक्तों का मन जिसमें लगता है (अमरकोश से यह अर्थ निकला)। रजनी का एक अर्थ दारू–हल्दी भी होता है जो एक औषधि वृक्ष है। दारूहल्दी के समान रोग निवारिका अर्थात रोगों या कष्टों को दूर करने वाली। रजनी का एक अर्थ लाख या जतुका होता है। लाख की तरह लाल वर्ण वाली यह अर्थ भी हो सकता है।

757. **रंगलोचना** – राग युक्त आँखों वाली अर्थात प्रेम बरसाने वाली आँखों वाली।

758. **रक्तचर्मधरा** – लाल अजिन (चमड़ी) धारण करने वाली। लाल रंग के चमड़े का ढाल यम देवता का होता है।

759. **रंगी** – प्रसन्न करने वाली अर्थात अपने भक्तों को प्रसन्न करने वाली। रंजयति का अर्थ है प्रसन्न करती है। जो स्वयं में प्रसन्न है। युद्धभूमि स्वरूपा। रंग का एक अर्थ युद्धभूमि भी होता है। रंगः अस्या अस्ति। रंग वाली अर्थात राग से युक्त। रंगः अस्या अस्ति अर्थात रंगा। तेजस्विनी वाणी स्वरूपा। एकाक्षरी कोष में रं का अर्थ तीक्ष्ण, ध्यान, वाद दिया गया है एवं गी का अर्थ वाणी, सुधा या अमृत दिया गया है। रं अग्नि बीज है। तीक्ष्ण या अग्नि बीज से तेजस्विनी अर्थ ले सकते हैं। तेज अर्थात जो दूसरे को दबा दे। ध्यान के समय सुनाई देने वाली वाणी अर्थात भीतरी नाद स्वरूपा। ध्यान के समय सहस्रार से टपकने वाले अमृत स्वरूपा।

760. **रंगस्था** – युद्धभूमि में अर्थात लड़ाई के मैदान में स्थित। युद्धभूमि में असुरों के साथ युद्ध करती हैं। विश्व रूपी रंगमंच में स्थित।

761. **रंगवाहिनी** – रणभूमि में वाहिनी स्वरूपा अर्थात सेना स्वरूपा। विश्वरूपी रंगमंच का संचालन करने वाली। संचालन का अर्थ है (to drive)। कब, क्या, कहाँ घटना घटित होनी है, सूर्य को चलाना, हवा चलाना, चन्द्रमा आदि का निकलना आदि आदि घटित कराती हैं।

762. **रमा** – लक्ष्मी से अभेद है जिनका। जिसमें मन रमता है। रमणीय गुणों वाली। रमयति इति रमा अर्थात जो क्रीड़ा करती हैं। सृष्टि की उत्पत्ति, पालन और संहार देवी की क्रीड़ा है।

763. **रंभाफलप्रीति** – केले के फल से प्रसन्न होने वाली। पूजा में इनको केला चढ़ाना चाहिए।

764. **रम्भोरू** – रम्भा (केले का स्तम्भ) के समान है उरू जिसकी अर्थात गोल और सुडौल उरू वाली। गोल, भरी हुई, चिकनी और सुन्दर जांघों वाली। Full, Round, Smooth, Tapering and Lovely जांघ वाली, रोएं नहीं हैं। उरू का तात्पर्य कटि से घुटने तक का क्षेत्र। कटि वह जगह है जहाँ बेल्ट बाँधी जाती है।

765. **राघवप्रिया** – राम की प्रिया सीता के सदृश। राम की प्रिया सीता स्वरूपा।

766. **रंगा** – रागों वाली। यहाँ राग से तात्पर्य है सा रे गा मा आदि रागों से। नृत्य वाली या नृत्यस्थान वाली यह अर्थ भी कर सकते हैं। रंग का एक अर्थ नृत्य स्थान या नाट्यशाला भी है। रंगमंच के योग्य अंगों वाली अर्थात सघन अंगों वाली।

767. **रंगांगमधुरा** – नर्तनशील अंगों से मधुर। रंगमंच में जाने के लिए सजना – धजना पड़ता जिससे सुन्दर लगती हैं।

768. **रोदसी** – आकाश और पृथ्वी के संयुक्त रूप वाली। भूमि और द्युलोक को इकट्ठा बोलना हो तो रोदसी कहते हैं। स्वर्ग और पृथ्वी मिलाकर अर्थात स्वर्ग से पृथ्वी तक जो कुछ भी है, जो कुछ भी हमारी दृष्टि में है अर्थात सम्पूर्ण विश्व स्वरूपा। स्वर्ग और पृथ्वी स्वरूपा। ऐसा शब्द जिससे स्वर्ग और पृथ्वी दोनों का बोध होता है, रोदसी है। वैदिक कोष के अनुसार रूद्र की पत्नी को भी रोदसी कहते है। रूद्र (वायु) की पत्नी माध्यमिका देवी या विभूति भी रोदसी कहलाई जाती है। रूद् + असुन् प्रत्यय = रोदस, अतः रोदसी का अर्थ हुआ रूलाने वाली। दुष्टों को रूलाने वाली। भयंकरी और रूलाने वाली। स्वर्ग और पृथ्वी का मिलित नाम अर्थात् स्वर्ग और इकट्ठा बोलना हो तो रोदसी यह शब्द बोलेगें। वैदिक कोष में रूद्र की पत्नी, यह अर्थ भी दिया गया है। रूद्र (वायु) की पत्नी माध्यमिका देवी या विभूति। रूद् + असुन् = रोदस, इस प्रकार रोदसी का अर्थ हुआ भयंकारी एवं रुलाने वाली। रूद् धातु रोने के अर्थ मे प्रयुक्त होती है। श्री अरविन्द घोष जी के अनुसार चेतना की मानसिक ऊर्जा एवं

भौतिक ऊर्जा को एक साथ बोलना हो तो रोदसी कहेगें। रोदसी अर्थात पृथ्वी और स्वर्ग का संयुक्त रूप। स्वर्ग और पृथ्वी को कोई एक नाम देना हो जिससे दोनों का बोध हो जाये तो वह रोदसी है। नियम है कि शब्द के आगे ''में विराजमान'' लगाने से शब्द का एक अन्य अर्थ आ जाता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ जो स्वर्ग और पृथ्वी में विराजमान है। शक्ति या ऊर्जा के रूप में देवी सर्वत्र विराजमान है और सगुण साकार रूप में भी अवतार लेती है, प्राणियों के ह्रदय में आत्मा के रूप में रहती है। Rodasi is two sisters, feminine forms of heaven and earth who symbolise the general energies of the mental and physical consciouness. इस प्रकार रोदसी का अर्थ हुआ, शारीरिक और मानसिक ऊर्जा।

769. **महारवा** – अत्यन्त शब्द करने वाली (दैत्यों को मारने के लिए)। प्रणव या ओम् स्वरूपा।

770. **रोधकृत्** – रोकने वाली (भक्तों को कदाचार से रोकने वाली)।

771. **रोगहन्त्री** – समस्त रोगों को नष्ट करने वाली (सन्तुष्ट होने पर भक्तों के समस्त रोगों को नष्ट कर देती है)।

772. **रूपभृत्** – रूप को धारण करने वाली अर्थात अत्यन्त रूपवती या सुन्दर।

773. **रोगस्रावणी** – रोगों को टपकाने वाली अर्थात धीरे – धीरे समाप्त करने वाली। स्रवण का अर्थ है टपकना। टपक टपक कर घड़ा खाली होता है।

774. **वन्द्या** – सामने झुककर नमस्कार करने योग्य। वन्दना करने योग्य अर्थात वन्दनीया। अपने इष्ट के समक्ष झुकना, उनको प्रणाम करना और उनके गुणों का बखान करना वन्दना है। पूजनीया या सम्माननीया भी वन्द्या का अर्थ होता है।

775. **वन्दिस्तुता** – राजाओं के द्वारा गिरफ्तार किये गये बन्दी गणों द्वारा जिनकी स्तुति की गई। वन्दना करने वालों द्वारा जिनकी स्तुति की गई। संसार के कैद में सभी हैं, अतः हम सभी बन्दी हैं। ऐसे संसारी लोगों द्वारा जिनकी स्तुति की गई। वन्दिजन का तात्पर्य है राजा की यश या कीर्ति गाने वाले या स्तुति पाठ करने वाले चारण। वन्दिजन का अर्थ जिन्हें गिरफ्तार किया गया है या कैद में डाला गया है भी होता है।

776. **बन्धु** – भक्तों को अपनी भक्ति से बाँध देने वाली। बन्धु वह होता है जो अपने स्नेह (भक्ति) से बाँध दे। भाई की तरह अपने भक्तों की कष्ट आने पर सहायता करने वाली। बन्धु या भाई कष्ट आने पर सहायता करते हैं। भक्तों को मर्यादा में बाँधने वाली। स्वयं भी नियम से बँधी हुई। आत्मानम् बध्नाति इति बन्धुः।

777. **बन्धूककुमसमाधरा** – बन्धूक नामक कुसुम के तुल्य लाल अधरों वाली।

778. **वन्दिता** – देवताओं द्वारा जिनकी वन्दना की गई। वन्दना अर्थात स्तुति + प्रणाम।

779. **वन्द्यमाना** – जिनकी निरन्तर स्तुति की जा रही है, अभी भी की जा रही है।

780. **वैद्रावी** – दौड़ाने वाली अर्थात भगाने वाली (राक्षसों को)। द्रावयति का अर्थ है दौड़ाना।

781. **वेदविद्** – वेदों को जानने वाली।

782. **विधा** – विश्व को धारण करने वाली। विश्व का पोषण करने वाली। विश्व शब्द से वि ले लिया। धा धातु का अर्थ धारण करना, पोषण करना होता है। विधा का अर्थ प्रकार होता है और प्रकार का अर्थ है भेदक अर्थात भेद करने वाला। वैशेषिक दर्शन में विशेष नामक पदाथ ही प्रत्येक चीज में है यहाँ तक कि दो परमाणुओं में भी भेद करता है। उस विशेष नामक पदार्थ स्वरूपा या उसे देने वाली अर्थात उसको अस्तित्व में लाने वाली। कार्य करने की या पूजा करने की पद्धति स्वरूपा। समृद्धि या सम्पन्नता स्वरूपा। ऋद्धि स्वरूपा। आचरण/क्रिया

/चेष्टा स्वरूपा। किसी कार्य का विधान स्वरूपा। विधान अर्थात जिसमें बताया जाता है कि कार्य ऐसे करो, आहुति ऐसे डालो आदि – आदि। अनेक स्वरूपों वाली। विविध रूप धारण करने वाली। विधा का अर्थ है प्रकार या किस्म। हम कहते हैं त्रिधा, चतुर्धा आदि। विश्व को धारण करने वाली। सूर्य को धारण करने वाली। पक्षी को धारण करने वाली। समुद्र को धारण करने वाली। वि का अर्थ है विश्व, सूर्य, पक्षी, समुद्र। चित्रों में देखा होगा कि देवी के हाथ में तोता बैठा है या पास में मोर विराजमान है या उस पर सवार है। ब्रह्माण्ड रूपी देवी के अन्दर समुद्र, सूर्य आदि हैं।

783. **विकोपा** – विशेष कोप वाली (शत्रुओं के लिए)। भक्तों के लिए कोप रहित (विगतः कोपः यस्या सा विकोपा)।

784. **विकपाल** – पक्षियों का पालन करने वाली। एकाक्षरी कोष में वि का अर्थ पक्षी है। वि अर्थात विक क्योंकि बिना अर्थ बदले कन् प्रत्यय लगाने से वि विक हो गया। विशिष्ट कपाल धारण करने वाली अर्थात सम्पूर्ण ज्ञान वाली सर्वज्ञ। विकृत कपालों वाली, दैत्यों को मार कर उनके मुण्डों को माला के रूप में धारण करती हैं। कपालरहिता यहाँ वि का अर्थ है विगत अर्थात रहित। विक का पालन करने वाली अर्थात गायों के नये दूध की रक्षा करने वाली। गाय के नये दूध को विक कहते हैं। राजाओं का पालन करने वाली अर्थात रक्षा करने वाली। विक का अर्थ राजा है। विं करोति इति विक। एकाक्षरी कोश में वि का अर्थ निग्रह करना या अनुग्रह करना है। निग्रह कौन करता, अर्थात दण्ड कौन देता राजा, राजाओं की आराधना करने से वो अनुग्रह भी करते हैं। इस प्रकार विक का अर्थ राजा निकाला गया।

785. **विंकस्था** – चिड़िया में शक्ति रूप से स्थित। चिड़िया को उड़ने की शक्ति देती हैं। शब्दकोष में विंक शब्द नहीं है पर कलविंक शब्द है जहाँ शब्द की उत्पत्ति बताई गई है वड्.क्ते रौति इति विंकः। रौति का अर्थ है शब्द करना। जो शब्द करती है अर्थात चहचहाती है वह है विंक अर्थात चिड़िया। पक्षी में जो स्थित है। आत्मा सभी प्राणियों में स्थित है। शब्दकोश में कलविंक मिलता है जिसका अर्थ होता है गौरैया। विंकस्था का अर्थ जो शब्द तन्मात्रा में स्थित है, भी कर सकते हैं। वि का अर्थ है पक्षी, आकाश। विं करोति इति विंक, जो आकाश को बनाता है वह है विंक। आकाश को कौन बनाता है, उत्तर है शब्द–तन्मात्रा। विं करोति से विक एवं विंक दोनों बनते हैं।

786. **विंकवत्सला** – चिड़िया या पक्षियों से स्नेह करने वाली। इनके चित्र में पास में तोता बना रहता है।

787. **वेद्या** – जानने योग्य। इन्हीं को जानना चाहिए। इन्हें जान लिया तो सब जान लिया।

788. **वलग्नलग्ना** – ज्ञानियों से जुड़ी हुई अर्थात ज्ञानियों के साथ रहने वाली अर्थात श्रेष्ठ ज्ञानशक्ति स्वरूपा। व का अर्थ है ज्ञान, अमृत (मोक्ष)। मोक्ष, अमृत, ज्ञान से युक्त भगवान शिव हैं। शिव से जुड़ी हुई अर्थात अर्द्धनारीश्वर स्वरूपा। जो मध्य में लगी हुई है अर्थात ब्रह्माण्ड रूपी पहिये के मध्य में लगी हुई है। वलग्न का अर्थ है बीच या मध्य या सेन्टर। मध्य भाग मुख्य अंग होता है, उसी प्रकार जैसे पहिये में धुरी। जो ब्रह्माण्ड रूपी पहिये की धुरी है। लगे हुए से जो लगी है अर्थात सटे हुए से जो सटी हुई है। जीव सटा है शरीर से, जीव से सटी है देवी। कहते हैं शरीर में आत्मा एवं परमात्मा दोनों का वास है। आत्मा सटी है शरीर से और परमात्मा सटा है आत्मा से। एकदम लगा सटा, वलग्न अर्थात अवलग्न, अ कहीं कहीं छूट जाता है, संस्कृत नियमानुसार। जीव चेतना जो शरीर से सटी है, उसकी शक्ति स्वरूपिणी। जीव शरीर के साथ सटा है उसकी शक्ति। (यदि विलग्नलग्ना नाम है तो अर्थ होगा जो संसार से रहित भी है और संसार से जुड़ी भी है। देवी का कुछ भाग संसार में है और कुछ भाग संसार के बाहर है। पुरुष सूक्त में लिखा गया है कि विराट पुरुष का एक चौथाई भाग संसार में है और तीन चौथाई भाग संसार के बाहर है। देवी का स्वरूप विराट् स्वरूप है।

789. **विधिविंककरीविधा** – ब्रह्मा जी को प्राण देने वाली। विंक का अर्थ है पक्षी। आपने प्राण पखेरू शब्द सुना होगा जिसका अर्थ है प्राण रूपी पक्षी। जीवात्मा को भी पक्षी कहा गया है क्योंकि पक्षी की तरह एक शरीर से दूसरे शरीर जाता है। शब्दकोश में कलविंक शब्द मिलता है। विकृति को जीवन एवं प्रकृति को मरण कहा गया है। ब्रह्मा जी के रूप में जगत का निर्माण करने वाली। विकृति करना अर्थात निर्माण करना। विकृति का वि लिया और बिना अर्थ बदले कन् प्रत्यय लगाने से विक हो गया। बीच का अनुस्वार अवधारण अर्थ में आ गया। ब्रह्मा रूपी चिड़िया (पक्षी) या सूर्य या समुद्र को बनाने वाली क्रियारूपिणी। ब्रह्मा ही है एक पक्षी उसको बनाने की विधा (क्रियास्वरूपिणी)। विंक का अर्थ चिड़िया, सूर्य, समुद्र लिया गया है। वि का अर्थ पक्षी, सूर्य, समुद्र होता है।

790. **शंखिनी** – शंख धारण करने वाली। शंख नाद, शब्द ब्रह्म, सतोगुण का प्रतीक है। प्राय शंख सफेद रंग के होते हु और सफेद रंग सतोगुण का प्रतीक है। नाद शक्ति धारण करने वाली। सतोगुण धारण करने वाली। शंखिनी नामक नाड़ी में शक्ति रूप में स्थित।

791. **शंखवलया** – शंख की बनी चूड़ियाँ, कंगन पहने वाली। शंख के ऊपर बनी हुई धारियाँ भी देवी स्वरूपा हैं, उनके रूप में स्थित।

792. **शंखमालावती** – शंखों की मालाओं को धारण करने वाली।

793. **शमी** – शमयुक्ता (जिसका अन्तःकरण अपने वश में है)। जिसमें शम है, अर्थात निग्रहीत चित्त वाली। अन्दर अग्नि वाली अर्थात भगवती के अन्दर अग्नि है। शमी वृक्ष के अन्दर अग्नि होती है।

794. **शंखपात्राशिनी** – शंख के पात्र पर भोजन करने वाली। शंखजड़ित पात्र पर भोजन करने वाली।

795. **शंखस्वना** – शंख की आवाज वाली। शंख स्वन है प्रिय जिसे अर्थात शंख की आवाज है प्रिय जिसे। शंख के तुल्य ध्वनि वाली आवाज वाली अर्थात कभी – कभी शंख की आवाज निकालती हैं। स्वन का अर्थ है ध्वनि।

796. **शंखगला** – शंख के समान गला वाली। शंख ऊपर मोटा होता है नीचे पतला होता है ऐसे गले वाली। कम्बुकण्ठी यह नाम आपने सुना होगा।

797. **शशी** – खरगोशनी (मादा खरगोश) की तरह कोमलांगी एवं तीव्र गति वाली। शशस्य स्त्री इति शशी अर्थात मादा खरगोश शशी है। शश वाली अर्थात खरगोश वाली। खरगोश अपने पास रखती हैं। शश का अर्थ है मृगपोत/खरगोश।

798. **शबरी** – शबरबाला (जंगली जाति) के तुल्य वेश वाली। शबर दक्षिण भारत की एक जंगली या पहाड़ी जाति है। सुख को धारण करने वाली। शम् (सुखम्) विभर्ति इति शबरी। शबल और शबर एक ही होता है और शबल का अर्थ है चितकबरा अर्थात मिश्रण। संस्कृत में र और ल में अभेद है। ज्ञान और अज्ञान से मिश्रित मन की मुमुक्षावृत्ति शबरी है। शास्त्रों में शबरी को मुमुक्षावृत्ति का प्रतीक बताया गया है।

799. **शम्बरी** – माया जादू से युक्त। मायारूपी जादू वाली। जादूगरनी। मायाविनी। अपनी माया से संसार को रच दिया। शम्बर प्रतीक है माया/जादू का। वह शक्ति जो मन के भीतर विद्यमान शम् (शान्ति) को ढक देती है प्रकट नहीं होने देती। वर का अर्थ है ढकना अर्थात प्रकट नहीं होने देना। शत्रुओं/दुष्टों की शान्ति को ढक देने वाली।

800. **शम्भुः** – शान्ति की उत्पत्ति स्थल। शान्ति सुख की उत्पत्ति स्थल स्वरूपा। शम् का अर्थ है शान्ति।

801. **शम्भुकेशा** – शिव के बालों में स्थित अर्थात गंगा स्वरूपा। शिव के बालों वाली अर्थात शिव के बालों में स्थित अर्थात गंगा स्वरूपा। शम्भुकेशा यस्या सा इति शम्भुकेशा। कल्याण करने वाले बालों वाली। बादल बाल की तरह हैं जो वर्षा के द्वारा कल्याण करते हैं। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ प्रकृति स्वरूपा। भवति से भी

भू बनता है और भावयति से भी भू बनता है। भावयति से भू बनाने पर कराने वाली अर्थ आएगा। शं का अर्थ है कल्याण। क् अर्थात ब्रह्मा, ईश अर्थात शिव। ब्रह्मा और शिव से कल्याण कराने वाली। बाल बाहर की ओर बढ़ते हैं और विचार भी प्रायः बाहर जाते हैं। इस प्रकार बहिर्गामी विचारों को भी केश कहा जाता है। शम्भु का अर्थ है कल्याणकारी या शान्तिकारक। कल्याणकारी विचारों वाली या ऐसे विचारों को अपने भक्तों को देने वाली। केश+आ, आ का अर्थ है देना। शंकर के केशस्वरूपिणी। शान्ति उत्पन्न करने वाले हैं केश जिसके। शान्ति समृद्धि देने वाले केश वाली। जिसके केश की छाया में शान्ति या सुख समृद्धि होती।

802. **शरासिनी** – धनुष वाली अर्थात धनुष धारण करने वाली। शरासन अर्थात बाण का आसन अर्थात धनुष।

803. **शवा** – जड़ पदार्थों की शक्तिस्वरूपा। जड़ पदार्थ शव की तरह निश्चेष्ट होते हैं किन्तु उनमें भी बहुत शक्ति छिपी हुई रहती है। परमाणु बम, हाइड्रोजन बम आदि जड़ पदार्थों से ही बनते हैं। शव + आ = शवा, एकाक्षरी कोष में आ का एक अर्थ शक्ति दिया गया है। शव की तरह निश्चेष्ट अर्थात निष्क्रिय ब्रह्म की शक्तिस्वरूपा। ब्रह्म के दो पक्ष हैं – एक है निष्क्रिय और दूसरा है सक्रिय जो देवी या शक्तिस्वरूपा है। निर्जीव/मुर्दास्वरूपिणी। निर्जीव देह स्वरूपिणी। कहने का तात्पर्य है कि जीव रहित देह भी वही है, जीव भी वही है। पतंजलि ने अपने महाभाष्य ग्रन्थ में लिखा है कि शव् धातु का अर्थ चेष्टारहित एवं गति करना दोनों होता है। हिमालय से विन्ध्य के बीच के लोग शव का अर्थ न चलने वाला अर्थात चेष्टारहित के अर्थ में करते हैं। जबकि अन्य भागों में शव धातु का अर्थ गति करना के रूप में भी होता है। इस प्रकार शवा का अर्थ हुआ गति स्वरूपा अर्थात चेतना स्वरूपा। दूसरा अर्थ हुआ जड़ रूपा अर्थात अचेतन पदार्थ रूपा। चेतन शक्ति से रहित अचित् तत्व या पदार्थ भी शक्ति या देवी ही हैं।

804. **श्येनवती** – बाज वाली। बाजवाली गति/पराक्रम/क्रिया स्वरूपा। बाज शिकार पर झपट्टा मारता है। बाज की तरह दैत्यों पर झपटने वाली।

805. **श्यामा** – हमेशा सोलह वर्ष वाली। सोलह वर्ष की उम्र में जैसा स्वरूप होता है वैसा स्वरूप हमेशा बनाये रखती हैं। राधा से अभेद है जिनका यह अर्थ भी कर सकते हैं। श्याम अर्थात कृष्ण भगवान के साथ रहने से राधा को श्यामा भी कहते हैं। श्यामा तुलसी की तरह रोग निवारिका अर्थात रोग या कष्ट दूरे करने वाली। गिलोय को भी श्यामा कहते हैं। गिलोय की तरह सर्वरोगनिवारिका यह अर्थ भी निकलता है। प्रकृति के स्वरूप वाली जिसमें सतोगुण, रजोगुण एवं तमोगुण सम प्रमाण में मिलते है। इस अवस्था में प्रकृति का रंग श्याम अर्थात् काला होता है। सतोगुण का श्वेत, रजोगुण का रंग लाल एवं तमोगुण का रंग काला होता है। अतिसुन्दरी, तरूणावस्था से युक्त। श्यामा शब्द तारूण्य का द्योतक है और देवी के नवयौवन एवं सौन्दर्य का सूचक है। 16 वर्षीया कन्या को भी श्यामा कहते है। इस अवस्था के स्वरूप वाली। कुण्डलिनी के ध्यान में उसे श्यामा कहा गया है। अतः इस नाम का अर्थ हुआ कुण्डलिनी स्वरूपा। वह स्त्री जो ग्रीष्म में शीतल प्रकृति की हो एवं शीत में उष्ण प्रकृति की हो, तथा उसका वर्ण द्रवित सोने की तरह है, उसे श्यामा कहा जाता है। शीतकाले भवेदुष्णा चोष्णकाले च शीतला। प्रतप्तकांचनाभा सा श्यामा स्त्री परिकीर्तिता। औरों से अधिक व्याप्त अर्थात सर्वव्याप्त। निरूक्त में श्येङ्ग गतौ धातु से ऐसा अर्थ निकाला गया।

806. **श्यामांगा** – साँवले अंगों वाली। श्यामम् अंगति गच्छति इति श्यामांगा। भगवन कृष्ण के पास जाने वाली अर्थात उनके साथ स्थित। कृष्ण के अंगों में शक्ति रूप से स्थित।

807. **श्यामलोचना** – काली आँखों वाली। कृष्ण की तरह आकर्षक आँखों वाली। भगवान कृष्ण में है दृष्टि जिसकी अर्थात भगवान कृष्ण को देखने वाली अर्थात दृष्टिपात करने वाली। भगवान कृष्ण द्वारा देखी जाने वाली। काला रंग तमोगुण, प्रलय को भी सूचित करता है।

808. **श्मशानस्था** – श्मसान में रहने वाली। विरक्त व्यक्ति में रहने वाली। विरक्त व्यक्ति में कोई सांसारिक कामना नहीं होती, अतः वह श्मशान के तुल्य है। सुषुम्नानाड़ी भी श्मशान है। सुषुम्ना में रहने वाली कुण्डलिनी स्वरूपा।

809. **श्मशाना** – कामनाओं से रहित। श्मशान में जीवान्तता का अभाव होता है एवं हरचीज वहाँ जला दी जाती है। अतः कामनाओं से रहित व्यक्ति श्मशान के तुल्य होता है। भौतिक श्मशान स्वरूपा। देवी से पृथक कुछ भी नहीं है। श्मशान स्थान भी वही है क्योंकि हर स्थान ऊर्जा का बना होता है तथा ऊर्जा को ही शक्ति या देवी कहते हैं। ब्रह्मस्वरूपा या ब्रह्म की शक्तिस्वरूपा। जहाँ पंचभूतों का अन्तिम रूप से दहन होता है वह श्मशान है। ब्रह्म में सभी का दहन अर्थात लोप हो जाता है। इस प्रकार श्मशान का अर्थ हुआ ब्रह्म। पितरों के लिए दी जाने वाली बलि या पिण्डस्वरूपा। श्मशान का एक अर्थ है पितरों के लिए दी जाने वाली बलि या पिण्डस्वरूपा। (कामनाओं एवं इच्छाओं से रहित हृदय श्मशान है क्योंकि इसमें कामनाओं को भस्म कर दिया गया है। अहंकार, कैलास, काशी, हिमालय और शवदाहगृह इन पाँचों को श्मशान भी कहा गया है। श्म का अर्थ है शव और शान का अर्थ है शयन। ब्रह्मा जी को भी श्मशान कहा गया है क्योंकि पाँचों तत्व उनमें लीन हो जाते हैं। परब्रह्म को भी श्मशान कहा गया है क्योंकि प्रलयकाल में उनमें सबकुछ समा जाता है। भगवान नारायण भी श्मशान हैं क्योंकि उसमें ब्रह्मा जी का लय होता है। सुषुम्नानाड़ी भी श्मशान है। ब्रह्म में रहने वाली। पंचतत्व अंतिम रूप से ब्रह्म में ही समाप्त होते हैं। तंत्रग्रन्थों में सुषुम्ना के लिए भी श्मशान शब्द का प्रयोग किया गया है।)

810. **श्मशानस्थानभूषणा** – श्मशान रूपी स्थान के लिए भूषण के समान। अपनी उपस्थिति से इस स्थान की शोभा बढ़ा देती हैं। काली आदि देवियों का निवासस्थान श्मशान है। श्मशान है आभूषण जिनका, यह अर्थ भी कर सकते हैं। भगवना शिव की शक्ति स्वरूपा। श्मशानस्थानभूषण अर्थात श्मशान रूपी स्थान की शोभा बढ़ाने वाली। श्मशानस्थानभूषण अर्थात श्मशान रूपी स्थान की शोभा बढ़ाने वाले शिव की शक्ति। भूष्ण + आ, आ का एक अर्थ है शक्ति। जितने भी श्मशान हैं उनसे सुशोभित।

811. **शमदा** – शान्ति देने वाली। मोक्ष देने वाली। अंतःकरण को वश में करने वाली शक्ति को देने वाली। क्षमा नामक गुण को देने वाली। मन की स्थिरता को देने वाली। शम के अनेक अर्थ है जैसे – शान्ति, मोक्ष, अन्तःकरण को वश में करने वाला गुण, क्षमा, मन की स्थिरता, निरपेक्षता या निःसंगता।

812. **शमहन्त्री** – दुष्टों की शान्ति हर लेने वाली। जहाँ शान्ति है, वहाँ जाने वाली अर्थात शान्ति की ओर जाने वाली अर्थात जहाँ शान्ति रहती है वहाँ देवी रहती हैं। हन् धातु का अर्थ हिंसा करना, गति करना होता है। हन् का अर्थ केवल हिंसा करना नहीं होता है, गति करना भी होता है, इस प्रकार हन्त्री का अर्थ हिंसा करने वाली एवं गति करने वाली दोनों होता है। राक्षसों के हाथ को काट देने वाली। शम का एक अर्थ हाथ भी होता है।

813. **शंखिनी** – शंखिनी नामक अप्सरा की तरह सुन्दर। शंख अर्थात वेदज्ञान को धारण करने वाली। शंख वेद के सार का प्रतीक है। शंखिनी नामक वनौषधि की तरह रोगनिवारिका अर्थात कष्टों को दूर करने वाली। शंख को धारण करने वाली। शंखिनी नायिका के समान गुणों वाली। शंख का घोष किसी कार्य को आरम्भ करने का द्योतक है। Alarm के साथ कोई चीज आरम्भ करने वाली। शंख शब्दब्रह्म का प्रतीक है जिससे नाम रूपात्मक जगत प्रकट होता है। नाद शक्ति से युक्त। पवित्रता और ध्वनि को धारण करने वाली। शंख ऐसी ध्वनि का प्रतीक है जो शान्ति और समृद्धि देती है। शंख पवित्रता का भी प्रतीक है।

814. **शंखरोषणा** – शंख नामक दैत्य पर क्रोध करने वाली। क्रोध इन्होंने किया तभी भगवान विष्णु ने मारा। क्रोध अर्थात ऊर्जा अर्थात शक्ति अर्थात देवी। कोई भी क्रिया, शक्ति है और देवता कुछ भी करेंगे तो शक्ति से ही करेंगे अर्थात देवी ही सब कुछ करती है। शंख की तरह उज्जवल वर्ण वाली। रूष् धातु रूचि अर्थात

उज्जवला के अर्थ में भी होती है। इसमें युच् प्रत्यय लगाने से रोषण शब्द बन सकता है। ख का अर्थ है आकाश अर्थात शून्य। रोषण का अर्थ है क्रोध। खरोषण अर्थात क्रोध शून्य। शं का अर्थ है शान्ति, आनन्द। शंकर शब्द से भी शं ले सकते हैं। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ जो शान्ति स्वरूपा हैं एवं क्रोध से रहित हैं। जो कल्याण करने वाली हैं एवं क्रोध से रहित हैं।

815. **शान्ति** – शान्ति अवस्था स्वरूपा। इन्द्रियों और मन के अपने विषय से वैराग्य होने पर होने वाली सुखानुभूति शान्ति होती है। शान्ति एक अवस्था है जो उपद्रव या उत्पात से रहित अवस्था है। इसमें स्थिरता होती है। चंचलता का अभाव होता है। वेग, क्षोभ या क्रिया का अभाव होता है। नौ ग्रहों के प्रतिकूल प्रभावों का निवारण करना भी शान्ति कहलाता है। अशुभ, अमंगल दूर करने का उपचार भी शान्ति कर्म कहलाता है। ऐसे शान्ति कर्मस्वरूपा। उपासना में शान्ति कर्म से सम्बन्धित क्रिया भी होती है शान्ति का अर्थ सौभाग्य भी है। वासनाओं एवं तृष्णाओं के छूट जाने पर प्राप्त होने वाली अवस्था स्वरूपा।

816. **शान्तिप्रदा** – दुष्टों की शान्ति को पूर्णरूपेण नष्ट कर देने वाली। यहाँ प्रदा में प्र का प्रकृष्ट अर्थात पूर्णरूप, दो अवखण्डने धातु से दा शब्द का अर्थ खण्डन अर्थात नष्ट करने वाली किया गया है। भक्तों को शान्ति प्रदान करने वाली। मन के इच्छारहित होने पर होने वाली सुखानुभूति शान्ति है।

817. **शेषाशेषाख्या** – खण्ड और अखण्डस्वरूपिणी अर्थात सम्पूर्ण स्वरूपा। शेष और अशेष नाम वाली। अशेष अर्थात सारा, उसमें बाकी भी आ गया। अवयव स्वरूपा एवं निरवयव स्वरूपा। सावयवा एवं निरवयवा दोनों नाम वाली। आख्या का अर्थ है नाम।

818. **शेषशायिनी** – शेषनाग पर शयन करने वाली अर्थात लक्ष्मी स्वरूपा। प्रलय के बाद भी जो शेष रहे अर्थात ब्रह्म या शिव में शयन करने वाली अर्थात रहने वाली। बलराम जी में शयन करने वाली अर्थात शक्तिरूप में स्थित रहने वाली। हाथी में शयन करने वाली अर्थात विराजमान या स्थित रहने वाली। परिणाम या फल में स्थित रहने वाली।

819. **शेमुखी** – बुद्धि स्वरूपा। शेमुखी का अर्थ ज्ञान भी है और बुद्धि भी है। प्रलय काल में पर्वतों, वृक्षों का विदारण करने वाली अर्थात नष्ट कर देने वाली। खनु अवदारणे धातु से बने मुखी शब्द का अर्थ विदारण करने वाली अर्थात नष्ट कर देने वाली किया गया। एकाक्षरीकोश में शे का अर्थ अग (पर्वत, वृक्ष) दिया गया है। स्वप्न को चुराने वाली अर्थात बुरे सपनों को नष्ट करने वाली। शीः स्वप्ने धातु से शे का स्वप्न अर्थ लिया गया है। मुष्णाति (चुराना) से मुखी शब्द बना। ज्ञान स्वरूपा। बुद्धि स्वरूपा। परोक्ष पाप को नष्ट करने वाली अर्थात उपासना करने पर जिन पापों को अन्य लोग नहीं जानते है, उनको नष्ट करने वाली। एकाक्षरी कोश में स का अर्थ परोक्ष, हिंसा, कलह दिया गया है तथा इ का अर्थ पाप दिया गया है। हिंसा और पाप को नष्ट करने वाली। कलह और पाप को नष्ट करने वाली। खनु अवदारणे धातु से मुख शब्द बना है जिसका अर्थ होता है नष्ट करने वाला। मुख अपने दाँतों से भोजन को चबाता है अर्थात उसके मूल रूप को नष्ट करता है। इसी कारण मुखी का अर्थ नष्ट या नाश करने वाली किया गया है।

820. **शोषिणी** – दुर्गुणों/पापों/कर्म संस्कारों का शोषण करने वाली या सुखाने वाली। आकाश स्वरूपा। आकाश सबको सुखा देता है। तेज वहन करने वाली। शब्दकोष में शोषिणी का अर्थ आकाश, तेज वहन करने वाला दिया गया है।

821. **शेषा** – महाप्रलय के बाद भी जो शेष रहती हैं अर्थात जिनका अस्तित्व बना रहता है। शेषनाग की शक्ति स्वरूपा। शेष + आ, एकाक्षरी कोश के अनुसार आ का एक अर्थ शक्ति है। शेषनाग की पत्नी या स्त्री से जिसका अभेद है। बलराम की शक्तिस्वरूपा।

822. **शौर्या** – शूरता स्वरूपा। यह एक गुण है और गुण भी ऊर्जा रूप होने के कारण देवी का रूप है क्योंकि ऊर्जा या शक्ति का ही नाम देवी है। शूरता नामक गुण की शक्ति स्वरूपा। शूर में रहने वाले गुण (शौर्य) के स्वरूप वाली। शूरता के कारण व्यक्ति युद्ध में भले ही मारा जाये पर पीठ दिखाकर भागता नहीं है। वीर आवश्यकता पड़ने पर दोबारा हमला करने के लिए युद्ध से दूर भी जा सकता है। यही शूर और वीर में अन्तर है।

823. **शौर्यशरा** – शौर्य (पराक्रम)रूपी बाण वाली।

824. **शरी** – तीरों को रखने वाली। शर का अर्थ है तीर या बाण। शरिन् शब्द होता है जो पुल्लिंग एक वचन में शरी, स्त्रीलिंग एक वचन में शरिणी होता है। देवी प्रत्येक लिंग में आती हैं और प्रत्येक लिंग से परी भी हैं। क्रिया–शक्ति से युक्त। धनुष ओर बाण क्रिया–शक्ति के प्रतीक हैं। श (शान्ति/शोभा/शास्त्र) देने वाली।

825. **शापदा** – शाप देने वाली (राक्षसों/दुष्टों को)। फटकार देने वाली अर्थात फटकारने वाली। गलत रास्ते पर चलने वालों को चेतावनी स्वरूप फटकारने वाली। शाप का एक अर्थ फटकार भी है। भक्तों को किसी अन्य के द्वारा मिले शाप को नष्ट करने वाली। दा शब्द का दो अवखण्डने धातु से नष्ट करने वाला अर्थ भी आता है। शाप अहित कामना सूचक शब्द है।

826. **शापहा** – शाप छुड़ाने वाली अर्थात शाप मिटाने वाली। शाप अर्थात बद्दुआ। कहने का तात्पर्य है कि उसके भक्त को किसी ने श्राप दिया तो यह उस श्राप को खत्म कर देंगी। कठिनाई, बाधा, उपद्रव को नष्ट करने वाली। शाप का एक अर्थ कठिनाई, बाधा, उपद्रव भी होता है।

827. **शापा** – शापस्वरूपिणी। शाप में रहने वाली शक्ति स्वरूपा। शाप+आ, इस व्युत्पत्ति के अनुसार शाप नष्ट करने वाली अर्थात शाप का प्रभाव नष्ट करने वाली अर्थ भी हो सकता है। आ का अर्थ नाश करना भी होता है।

828. **शापपथा** – शाप भी उपाय है जिनका अर्थात शाप दे करके भी दुष्टों का नाश करने वाली। पथ का एक अर्थ है उपाय। शाप अर्थात अवश्यंभाविता। अवश्यंभाविता लिए उपाय वाली। जिनका मार्ग अवश्यंभावी अर्थात अटल है। शाप मार्ग वाली अर्थात शाप में जाने वाली अर्थात शाप देकर दण्डित करने वाली या शाप देने का सामर्थ्य वाली। पथ गतौ धातु होती है जिससे अर्थ निकला शाप में जाने वाली। शाप मार्ग स्वरूपिणी (वचन के द्वारा शाप दिया जाता है अर्थात वचन ही वह मार्ग है जिससे होता हुआ शाप गमन करता है। दुष्टों के लिए शाप मार्ग स्वरूपिणी। वाक् स्वरूपिणी यह अर्थ भी निकलता है। बाधा या उपद्रव वाले रास्ते वाली अर्थात ऐसे रास्तों पर चलने वाली। पथा + आ करें तो नाश करना अर्थ भी आ जायेगा क्योंकि आ का एक अर्थ नाश करना भी होता है। बाधा या उपद्रव रूप रास्ते को नष्ट करने वाली।

829. **सदाशिवा** – निरन्तर कल्याण स्वरूपा। भक्तों को सदैव कल्याण देने वाली। शिव + आ, आ का एक अर्थ है देना। सदाशिव की शक्ति या अर्धांगिनी। आ का एक अर्थ है शक्ति।

830. **शृंगिणी** – उच्च गुणों से युक्त। श्रृंग का अर्थ होता है चोटी, सींग। सींग सबसे ऊपर होता है, मस्तक की शोभा बढ़ाता है। शॄ हिंसायाम् धातु से श्रृंग शब्द बनता है जिसका अर्थ है हिंसा करने वाला। जानवर सींग से अपने सामने वाले जानवर पर हिंसा करता है। दुष्टों को मारने के लिए हिंसक अर्थात संहार शक्ति से युक्त, यह भी इस नाम का अर्थ हुआ। पहाड़ की चोटी से युक्त अर्थात कैलास पर्वत के शिखर पर रहने वाली या मनुष्य के सहस्रारचक्र में रहने वाली। सबसे ऊपर रहने वाली अर्थात हर चीज में जो सबसे ऊपर हैं। शृंग का अर्थ सींग, पर्वत की चोटी अर्थात अग्र भाग होता है। प्रभुत्व या प्रधानता से युक्त। ऊँचाई वाली या सर्वोपरिता से तात्पर्य है। शृंग नामक वाद्य से युक्त अर्थात ऐसा वद्य रखने वाली। शृंग नामक ऋषि से युक्त अर्थात इन ऋषि द्वारा उपासनीया। उपासना करने से उपासक और उपसनीया जुड़ जाते हैं।

831. **श्रृंगिपलभुज्** – श्रृंगि नामक मछली के मांस का भोग करने वाली अर्थात खाने वाली। देवी को इस मछली का भोग चढ़ाया जाता है। कौलमार्ग और वाममार्ग में माँस का प्रयोग होता है। पल का अर्थ है माँस। सर्वोपरि अर्थात उच्च कोटि का भोजन करने वाली। श्रृंगी अर्थात सींग अर्थात जो ऊपर या अग्र भाग में होता हो अर्थात सर्वोपरि। भुज् का अर्थ है उपभोग करने वाली।

832. **शंकरी** – शान्ति करने वाली। भक्तों के जीवन में शान्ति करने वाली। शम् का अर्थ है शान्ति। कल्याण करने वाली।

833. **शंकरी** – शंकर की अर्धांगिनी। सुख करने वाली अर्थात सुख देने वाली (उपासकों को)। ग्रह शान्ति करने वाली अर्थात ग्रहों के बुरे प्रभाव को समाप्त करने वाली।

834. **शिवा** – जिसमें सारा संसार सोता है अर्थात लेटा हुआ है अर्थात स्थित है। जो सारे संसार में लेटा हुआ है अर्थात व्याप्त है। शिव शब्द शी शयने धातु से बना है जिसका अर्थ है सोना या लेटना। सारा संसार जिस पर सोया हुआ है अर्थात विराजमान है। मंगल की देवता या कल्याण/शुभ करने वाली। जो मन के अनुकूल हो तथा अन्तिम रूप से परिणाम में लाभकारी हो वह शुभ है तथा जो मन के प्रतिकूल है वह अशुभ है। कड़वी दवाई का परिणाम अच्छा होता, माता – पिता की डाँट परिणाम में अच्छी होती तो उसे शुभ ही कहेंगे। शिवा अर्थात शिव + आ, शिव अर्थात कल्याण अर्थात मोक्ष। शिवा का अर्थ भी मोक्ष होता है। इस प्रकार शिवा का अर्थ हुआ मोक्ष देने वाली। शो तनुकरणे धातु से शिवा का अर्थ होगा भक्तों के पापों को दुर्बल करने वाली अर्थात समाप्त करने वाली।

835. **शवस्था** – शिव को शव बना दिया उस पर स्थित। शक्ति के बिना शिव शव होते हैं। शिव लेटे हुए हैं, शवारूढ़ा। शव पर विराजमान। कई देवियाँ शव पर विराजमान दिखाई गई हैं, जिसका तात्पर्य है कि वे अचेतन पदार्थों से ऊपर चेतन स्वरूप हैं। जड़ पदार्थों में भी स्थित। ब्रह्म के निश्चेष्ट पक्ष के साथ सदैव स्थित। ब्रह्म के दो पक्ष हैं, एक है निश्चेष्ट और दूसरा है क्रियावान जो देवी स्वयं हैं। दोनों पक्ष मिलकर परम् ब्रह्म कहलाता है।

836. **शवभुज्** – मुर्दों को खाने वाली। श्मशान में रहने के कारण मुर्दों को खाने वाली। देहात्मवाद से ऊपर उठी हुई अर्थात देह से ऊपर उठकर शुद्ध आत्मस्वरूप में विराजमान चेतनास्वरूपा। शव अर्थात देह खा लिया अर्थात समाप्त कर लिया तो शुद्ध चैतन्य स्वरूप ही बचता है।

837. **शान्ता** – अयोध्या के राजा दशरथ की कन्या से अभेद है जिनका। रेणुका से अभेद है जिनका। संगीत की एक श्रुति स्वरूपा। शान्त स्वरूप वाली अर्थात उनके चित्त में कोई हलचल नहीं। बाहर सब प्रतिकूल हो फिर भी अन्दर से विचलित नहीं एवं बाहर सब अनुकूल है और अन्दर से उतावला नहीं ऐसा व्यक्ति शान्त होता है। ऐसे व्यक्ति का मन स्थिर होता है। शान्त अर्थात गुणातीत अवस्था या मन से पार की अवस्था में स्थित। मन की संकल्प विकल्प क्रियाऐं न हो, मन विचार रहित हो तो व्यक्ति शान्त होता है। मन निरूद्ध हो सन्तुष्ट हो, इच्छाओं का अभाव हो राग द्वेष का अभाव हो, दौड़ समाप्त तथा कुछ भी चाहना बाकी नहीं तो ऐसा व्यक्ति शान्त होता है। मन में स्थिरता हो, मन की क्रियाओं को साक्षी भाव से देखने वाला और केवल वर्तमान में रहने वाला शान्त होता है। विचार विलीन होने पर जो अवस्था आती है वह शान्ति की अवस्था है। मन में क्षोभ, वेग, उत्तेजना, हलचल क्रिया का न होना शान्त अवस्था में पहुँचना है। शान्त स्वरूप वाली अर्थात जिसके मन में क्षोभ या हलचल नहीं है।

838. **शवकर्णा** – शव के समान निश्चेष्ट/चंचलता रहित अर्थात एकाग्र होकर सुनने वाली। शव प्रतिक्रिया नहीं करता है अर्थात एकाग्र चित्त होकर सुनने वाली। शवों को कान के आभूषण के रूप में धारण करने वाली अर्थात भयंकर आकृति वाली। यह एक प्रकार का सन्देश है कि देवी तक पहुँचने के लिए भय के रास्ते को पार करना पड़ेगा अर्थात साधना के दौरान भय का अनुभव होगा जिसे साधकों को पार करना होगा। कान में पहने हुए शव

धर्म और अधर्म के प्रतीक माने गये हैं। देवी धर्म और अधर्म दोनों को धारण करती हैं। संसार को चलाए रख्ने के लिए धर्म और अधर्म दोनो का होना आवश्यक है। यदि सभी वैरागी हो जायें तो 100 साल में ही सृष्टि से मनुष्य अदृश्य हो जायेंगे। चोर है तो पुलिस है, अदालत है, वकील है, शिक्षा देने वाले हैं अतः अधर्मियों के कारण भी बहुत से लोगों को काम मिला है।

839. **शवोदरी** – कल्याणकारी ज्ञान जिनके भीतर है। आनन्द और ज्ञान जिनके भीतर है। श का अर्थ है शिव अर्थात कल्याण, आनन्द। व का अर्थ है ज्ञान एवं उदर का अर्थ है पेट या भीतरी हिस्सा। पंचतत्व या जड़ पदार्थ जिनके भीतर है। जीवात्मा निकलने से व्यक्ति शव हो जाता है और शव में पाँच तत्व रहते है पर चेतना नही रहती। वेद में शव का अर्थ बल या शक्ति या गति दिया गया है। बलशाली उदर वाली। शव को उदर में धारण करने वाली अर्थात शान्त उदर वाली अर्थात शव के समान निश्चेष्ट उदर वाली। जल या पानी जिनके उदर में है। जल जीवन का प्रतीक है। जिनके उदर में जीवन शक्ति है। मृत शरीर या प्राण रहित देह जिनके उदर में समा जाते हैं। शव का एक अर्थ है जल। कूटस्थ ब्रह्म स्वरूपा। शव हिलता डुलता नहीं है, अविचलित गुण धर्म जिसके भीतर हैं अर्थात कूटस्थ ब्रह्म स्वरूपा।

840. **शाविनी** – मृग के बच्चे को अपने साथ रखने वाली। शावक अर्थात शाव अर्थात मृगपोत अर्थात मृग का बच्चा। पशुओं के बच्चे को शाव कहते हैं। अपनी इच्छानुसार भूरे रंग को धारण करने वाली। शाव का अर्थ श्मशान, भूरा रंग भी है। श्मशान में शिव की शक्ति स्वरूपा। श्मशान में शिव को शावी कहते हैं। शवः अस्या अस्ति इति शावी।

841. **शवशिंशा** – शव को शिम् ऐसा शब्द करके कृच्छ्र बनाने वाली। वामन आप्टे संस्कृत – हिन्दी शब्दकोश में शिंशपा शब्द आया है वहाँ शिंश का अर्थ शिव अर्थात कल्याण बताया गया है। इस प्रकार शवशिंशा नाम का अर्थ हुआ, शव का कल्याण करने वाली। शव+शिंश+आ, आ का अर्थ देना है। शव को कल्याण देने वाली अर्थात शव का कल्याण करने वाली। शव की तरह लेटी हैं विश्व में अर्थात निश्चेष्ट होकर या साक्षी की तरह स्थित हैं। शी धातु में यड़्.लुड़्. करके शिशी बनेगा, मुम् का आगम पृषोदरादि नियम से होगा। शव रूप शिव की शासिका। शा का अर्थ है – शासन करना। शव रूप जो शिव उस पर शासन करने वाली, तम् शास्ति।

842. **श्री** – सब जिसका आश्रय लेते हैं। सर्वैः श्रयति इति श्री। लक्ष्मी जी से अभेद है जिनका। सरस्वती जी से अभेद है जिनका। आदरणीया। आदरणीय व्यक्तियों के आगे श्री लगाते हैं। कीर्ति या यश स्वरूपा। धन सम्पत्ति स्वरूपा। सारा जगत जिनका आश्रय लिये हुए है। श्रयन्ते सर्वैः इति श्री। जो शिव का आश्रय लिये हुए हैं। श्रयति शिवम् इति श्री। श्रृणोति इति श्री अर्थात जो भक्तों की प्रार्थना सुनती हैं अर्थात सुनकर पूरा करती हैं। श्रु श्रवणे धातु में ड प्रत्यय लगाने श्र शब्द बनेगा, जो स्त्रीलिंग में श्री होगा, जिसका अर्थ है सुनने वाली। श्री का अर्थ केवल धन सम्पत्ति ही नही होता बल्कि प्रत्येक अच्छे क्षेत्र में जो श्रेष्ठत्व होता है वह भी है। कला, संगीत, खेल, विज्ञान आदि के क्षेत्र में अर्थात् 64 कलाओं एवं अन्य अच्छे क्षेत्रों में उच्च शिखर पर व्यक्ति श्रीदेवी की कृपा से ही पहुँच जाता है। राजाओं में भौतिक, बौद्धिक एवं नैतिक शक्ति भी श्री के कारण ही होती है। जब कहा जाता है कि राजाओं की श्री चली गयी तो इसका तात्पर्य होता है कि उनकी यह शक्तियाँ चली गई है। प्रसिद्धि और Accliam श्री के कारण ही मिलती है। श्री is force of good position that enables a king to rule. It pertains to physical, intellectute and moral power to rule. श्री का अर्थ है सर्वविध सम्पत्ति, इसमें भौतिक सम्पत्ति के साथ साथ आध्यात्मिक सम्पत्ति भी आती है, श्री का अर्थ है धन– सम्पत्ति। समूचा ब्रह्माण्ड राज्य है और राज्य भी एक सम्पत्ति माना जाता है। श्री का एक अर्थ है शोभा। कान्ति से युक्त। श्री का एक अर्थ पदार्थों में कान्ति। श्री का अर्थ वेद भी है। श्री में विराजमान अर्थात सम्पत्ति, शोभा में विराजमान। शीर्ष

पर स्थित अर्थात उच्च अवस्था में स्थित पंचदेवता श्री हैं। गीता के 16 वें अध्याय में जो दिव्य गुण बताये गये हैं वे ही दैवी सम्पत्ति या श्री हैं। श्री अर्थात समृद्धि, प्रायः घर में समृद्धि का अर्थ है सुख एवं धन–सम्पत्ति के होने से लगाया जाता है। गायत्री की एक धारा श्री है। श्री अर्थात् लक्ष्मी, लक्ष्मी अर्थात् समृद्धि। गायत्री की कृपा से मिलने वाले वरदानो में एक लक्ष्मी भी है। जिस पर वह अनुग्रह उतरता है वह दरिद्र, दुर्बल, कृपण, असन्तुष्ट एवं पिछड़ेपन से ग्रसित नहीं रहता। स्वच्छता एवं सुव्यवस्था के स्वभाव को भी 'श्री' कहा गया है। वह सद्गुण जहाँ होंगे वहाँ दरिद्रता कुरूपता टिक नहीं सकेगी। पदार्थ को मनुष्य के लिए उपयोगी बनाने और उसकी अभीष्ट मात्रा उपलब्ध करने की क्षमता को लक्ष्मी कहते है। यों प्रचलन में तो लक्ष्मी शब्द सम्पत्ति के लिए प्रयुक्त होता है, पर वस्तुतः वह चेतना का एक गुण है, जिसके आधार पर निरुपयोगी वस्तुओं को भी उपयोगी बनाया जा सकता है। मात्रा में स्वल्प होते हुए भी उनका भरपूर लाभ सत्प्रयोजनों के लिए उठा लेना एक विशिष्ट कला है। वह जिसे आती है उसे लक्ष्मीवान, श्रीमान कहते हैं। शेष अमीर लोगों को धनवान भर कहा जाता है। गायत्री की एक किरण लक्ष्मी भी है। जो इसे प्राप्त करता है उसे स्वल्प साधनों में भी अर्थ उपयोग की कला आने के कारण सदा सुसम्पन्नों जैसी प्रसन्नता बनी रहती है। धन का अधिक मात्रा में संग्रह होने मात्र से किसी को सौभाग्यशाली नहीं कहा जा सकता। सद्बुद्धि के अभाव में वह नशे का काम करती है, तो मनुष्य को अहंकारी, उद्धत, विलासी और दुर्व्यसनी बना देती है सामान्यतया धन पाकर लोग कृपण, विलासी, अपव्ययी और अहंकारी हो जाते हैं। लक्ष्मी का एक वाहन उलूक माना गया है। उलूक अर्थात् मूर्खता। कुसंस्कारी व्यक्तियों को अनावश्यक सम्पत्ति मूर्ख ही बनाती है। उनसे दुरूपयोग ही बन पड़ता है और उनके फलस्वरूप वह आहत ही होती है। ऐसा कहते हैं कि भगवान विष्णु जिनकी सेवा करते हैं वह श्री हैं एवं जो भगवान विष्णु की सेवा करती हैं वे लक्ष्मी हैं।

843. **शवा** – शव की तरह निष्चेष्ट/प्रतिक्रियाहीन। वे सब जगह हैं, दूसरा कोई नहीं है। उनके अलावा दूसरा कोई नहीं है अतः प्रतिक्रिया होने का कोई प्रश्न नहीं है। शवस्वरूपिणी। देवी शवस्वरूपिणी कब होती हैं, सृष्टि के पहले या प्रलय के बाद। उस समय तीनों गुणों की साम्यावस्था में निश्चेष्ट होती हैं। शव निश्चेष्ट होता है। गति करने वाली अर्थात चेष्टा करने वाली, गति स्वरूपा यह अर्थ भी कर सकते हैं यदि पतंजलि के अनुसार शव् का अर्थ गति करना लगाया जाये। शवस्वरूप भगवान शिव की शक्ति।

844. **शवशायिनी** – शव पर शयन करने वाली। शायिनी का अर्थ है सोने वाली या विश्राम करने वाली। जल पर शयन करने वाली अर्थात विराजमान रहने वाली।

845. **शवकुण्डलिनी** – शव रूपी कुण्डलों से युक्त। मुर्दों को कुण्डली अर्थात झुमकों के रूप में पहनने वाली।

846. **शैवा** – शिव से सम्बन्धित अर्थात शिव की श्रेष्ठ उपासिका। शिव का जो भक्त है वह है शैव। शिव से सम्बन्धित जो भी होता है उसे शैव कहते हैं।

847. **शीकरा** – जलबिन्दुस्वरूपिणी अर्थात गंगा जल स्वरूपा। सौभाग्य देने वाली /करने वाली। असुरों को मोह में डालने वाली। एकाक्षरी कोश के अनुसार शी का अर्थ सौभाग्य, मोह होता है।

848. **शिशिराशिनी** – शिशिर को खाने वाली अर्थात बसन्त ऋतु स्वरूपा। शिशिर के बाद बसन्त ऋतु आती है अर्थात बसन्त ने शिशिर को खा लिया। ठण्डा खाना खाने वाली। शीतल/ठण्डा करके खाने वाली। शीतला देवी को बासा अर्थात ठण्डा भोजन चढ़ाया जाता है।

849. **शवकांची** – शवों को करधनी के रूप में धारण करने वाली। शव में प्राण नहीं होते है किन्तु पंच–महाभूत होते है और पंच–महाभूतों से संसार या प्रपंच बना है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ प्रपंच या जगत को धारण करने वाली। कांची का अर्थ है करधनी जो कमर मे पहनी जाती है अर्थात् जिसको धारण किया जाता है। पंच–महाभूतों को धारण करने वाली। करधनी को बाँधा जाता है, बाँधने का अर्थ है नियन्त्रण करना। पाँचों

महाभूत हैं नियन्त्रण में जिनके अर्थात पाँचों महाभूतों को नियन्त्रित करने वाली। शिव कल्याणकारी है और शव अकल्याणकारी है। अशुभ पदार्थो को भी धारण करने वाली। शव अर्थात चेष्टा रहित अर्थात जड़ पदार्थ। जड पदार्थो को भी नियन्त्रण में कर रखा है जिसने। शव मृत्यु का भी प्रतीक है। मृत्यु जिनके लिये बँधी हुई चीज की तरह है अर्थात मृत्यु जिनके नियन्त्रण में है। शव को हेय या प्रदूषित पदार्थ माना जाता है। प्रपंच या जगत भी शव की तरह नष्ट होता है। शव अद्वैत या एकता का भी प्रतीक है क्योंकि शवरूप होने में सभी प्राणी एक जैसे हो जाते हैं। जीवित रहने के दौरान ही अमीर गरीब आदि भेद रहते हैं। जिसने अशुद्ध समझे जाने वाले पदार्थों को भी धारण किया है अर्थात आश्रय दिया है। अतः इनकी उपासना शुद्ध अशुद्ध सभी कर सकते हैं। जिसने अद्वैत या एकता को आश्रय दिया है।

850. **शवश्रीका** – शव से सुशोभित होने वाली (श्री और श्रीक दोनों का एक ही अर्थ है क्योंकि श्री में बिना अर्थ बदले अर्थात स्वार्थ में कन् प्रत्यय लगाकर श्रीक बनता है)। गति की शोभा वाली या शोभायमान गति वाली। पतंजलि के अनुसार शव का अर्थ गति भी होता है। शक्ति के बिना शिव शव हैं अतः शव का अर्थ शिव कर सकते हैं। शिव की शोभास्वरूपा। शिव का आश्रय लेने वाली।

851. **शवमाला** – कूटस्थ तत्व अर्थात् अपरिणामी तत्व रूपी शोभा को धारण करने वाली। शिव में इकार को हटाने से शव बनता है। शव अपरिणामी तत्व है एवं इ परिणामी शक्ति है। मा का अर्थ है लक्ष्मी अर्थात् शोभा। ला का अर्थ है धारण करने वाला। देवताओं के शत्रुओं के विनाशक वज्र को धारण करने वाली। शास्त्र एवं कमल को धारण करने वाली। शस्त्र एवं कमल को धारण करने वाली। एकाक्षरी कोष में श का अर्थ देववैरीविनाशक, शस्त्र, शास्त्र, श्रेष्ठ दिया गया है तथा व का अर्थ वज्र, कमल दिया गया है। मल् धारणे धातु से माला का अर्थ धारण करने वाली किया जा सकता है। माला का अर्थ सुभोभित करने वाली भी होता है। माति मानहेतुः भवति इति माला। जो सम्मान का कारण है अतः सम्मान दिलाने वाला है वह माला है। माम् लाति इति माला अर्थात् जो शोभा को धारण करे वह माला है। मा का अर्थ है लक्ष्मी अर्थात् शोभा। शवमाला को धारण करने वाली। शवमाला अस्या अस्ति इति शवमाला। शव में चेष्टा नहीं होती और समाधि में भी शरीर हरकत नहीं करता। समाधि की अवस्था धारण करने वाली अर्थात आनन्द एवं स्थिरता की अवस्था धारण करने वाली। मल् धारणे धातु से माला का अर्थ धारण करने वाली कर सकते हैं। शव अर्थात श्वास रहित अवस्था अर्थात समाधि की अवस्था। समाधि में श्वास इतनी कम हो जाती है मानो चल नही रही। इस नाम का अर्थ समाधि को धारण करने वाली अर्थात समाधि की स्थिति में रहने वाली। समाधि के लिए आवश्यक गुणों को धारण करने वाली। देवी या देवता, उन्हें अपने भक्तों को देते है जो उनके पास होता है। अपने उपासको को समाधि की अवस्था में ले जाने वाली। मुर्दों की करधनी पहनने वाली।

852. **शवाकृति** – जल की आकृति वाली अर्थात जल स्वरूपा। जीवन शक्ति स्वरूपा। शव् धातु का अर्थ गति करना भी होता है। गति (क्रिया) करने वाले के स्वरूप वाली। शव की आकृति वाली। कूटस्थ ब्रह्म की आकृति वाली। कूटस्थ अर्थात अविचल एवं निर्विकार तत्व। शव अर्थात जो निश्चेष्ट होता है।

853. **सवन्ती** – उत्पन्न करने वाली। प्रेरित करने वाली, देवताओं और प्राणियों को उनके कर्तव्य कर्मों के प्रति प्रेरित करने वाली। सू प्रसवे और सू प्रेरणे धातु होती है। सवन का अर्थ यज्ञ भी होता है। (यदि स्रवन्ती शब्द है तो अर्थ होगा – निरन्तर बहने वाली, इनसे मनोरथ बहते हैं अर्थात भक्तों के मनोरथ बहते हैं अर्थात मनोकामना पूरी करने वाली। टपकती हुई अर्थात निरन्तर गतिशील। निरन्तर बहने वाली, प्रवाहमान)। उत्पत्ति करती हुई अर्थात निरन्तर उत्पत्ति करने वाली। सू प्राणिप्रसवे धातु होती है। प्रतिपल कोई न कोई प्राणी या वस्तु उत्पन्न हो रही है अतः उसे उत्पन्न करने वाली शक्ति अवश्य होना चाहिए। सू धातु में घञ् प्रत्यय लगाने से सव शब्द बनेगा जिसका अर्थ है उत्पत्ति। उत्पत्ति का विस्तार करने वाली।

854. **संकुचा** – प्रलय काल में सबको समेटने वाली। फैले हुए संसार को प्रलय काल में संकुचित करने वाली अर्थात् समेटने वाली। प्रसार अर्थात सृष्टि बढ़ाना, एवं संकोच अर्थात सृष्टि को समेटना। कभी कभी ण्यन्त धातु अण्यन्त (शुद्ध) धातु का अर्थ दे देती हैं एवं कभी कभी अण्यन्त (शुद्ध) ण्यन्त धातु का अर्थ दे देती हैं। अतः संकुचा का अर्थ संकोचा जैसा हो जायेगा। कुच का अर्थ स्तन होता है जो पोषण शक्ति का प्रतीक है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ उन्नति या अच्छी या श्रेष्ठ पोषण शक्ति स्वरूपा। संसार के बीज रूप में सिकुड़ी हुई। जो सूक्ष्म से सूक्ष्म रूप में है। संकोच वाली अर्थात गलत काम करने में संकोच करने वाली (यदि संकुला नाम है तो अर्थ होगा अच्छे कुल वाली, मातृ कुलों के साथ रहने वाली, ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी आदि मातृशक्तियों के साथ रहने वाली।)

855. **शक्ति** – कार्योत्पादन सामर्थ्य वाली। कार्य को उत्पादित करने वाले सामर्थ्य को शक्ति कहते हैं। पराक्रम एवं ऐश्वर्य स्वरूपा अर्थात पराक्रम और ऐश्वर्य को देने वाली। जो चीज जिसके पास है वह चीज दूसरों को भी देगा क्योंकि देवता का स्वभाव ही दूसरों को देना होता है। पराक्रम और ऐश्वर्य से युक्त। श का अर्थ है पराक्रम और ति का अर्थ है ऐश्वर्य।

856. **शन्तनु** – शान्ति का विस्तार करने वाली। कल्याण का विस्तार करने वाली। शम् का अर्थ है शान्ति। तन् धातु का अर्थ विस्तार करना है। श का अर्थ है शिव अर्थात् कल्याण। बिन्दु या अनुस्वार का अर्थ कहीं–कहीं पर अवधारण (एव या ही) होता है। तन् धातु में उ प्रत्यय लगाने से तनु बनेगा जिसका अर्थ है विस्तार करने वाला। तनु का अर्थ शरीर भी होता है। अतः इस नाम का अर्थ हुआ जिसका शरीर कल्याणमयी है अर्थात कल्याणकारी शरीर वाली। तात्पर्य हुआ कल्याण करने वाली।

857. **शवदायिनी** – जल अर्थात जीवन देने वाली। शव देने वाली अर्थात स्वच्छ या निर्मल जल देने वाली। शव का एक अर्थ निर्मल जल भी होता है। अचित् तत्वों को देने वाली अर्थात उपलब्ध कराने वाली जिससे सृष्टि का निर्माण हो सके। पतंजलि ने महाभाष्य के पहले आह्निक में लिखा है कि शव का अर्थ गति करना भी होता है। इस प्रकार शवदायिनी का अर्थ गति प्रदान करने वाला भी होता है।

858. **सिन्धु** – समुद्ररूपा। देवी कृपा/करूणा की समुद्र हैं अर्थात बहुत करूणामयी हैं।

859. **सरस्वती** – ज्ञान के प्रवाह से युक्त। आनन्द के प्रवाह से युक्त। सरस् का अर्थ है प्रवाह एवं वती का अर्थ है युक्त। चेष्टावान बनाने वाली। सरस् का अर्थ गति है, गति का अर्थ है चेष्टा। जो चेष्टा युक्त है। लक्ष्यार्थ से अर्थ होगा चेष्टावान बनाने वाली अर्थात मनुष्य के अन्दर स्थित वह शक्ति जिससे मनुष्य किसी भी कार्य करने की चेष्टा करता है। योग वाशिष्ठ के अनुसार सभी ज्ञान में सरण करने वाली अर्थात गमन करने वाली शक्ति सरस्वती है। सरणात् सर्वदृष्टीनाम् से सरस्वती बना। ज्ञान से युक्त। सरस् का एक अर्थ है ज्ञान।

860. **सिन्धुसुन्दरी** – समुद्र से उत्पन्न सुन्दरी अर्थात लक्ष्मी स्वरूपा या लक्ष्मी जी से अभेद है जिनका। सुन्दरी अर्थात सुन्दर रूप वाली। सुन्दरियों की समुद्र स्वरूपा अर्थात बहुत सी सुन्दर कन्याओं से घिरी हुई। समुद्र को भी प्रलयकाल में पूरी तरीके से निश्चित रूप से दारण करने वाली अर्थात नष्ट कर देने वाली। सुष्ठु ये सु लिया जिसका अर्थ है अच्छी प्रकार से या पूर्ण रूप से। द$_{ृ}$ दृणाति धातु होती है। अनुस्वार का प्रयोग अवधारण (एव, ही, निश्चित रूप से)। सिन्धु देश में उत्पन्न सुन्दरियों की तरह सुन्दर।

861. **सुन्दरानना** – सुन्दर मुख वाली।

862. **साधु** – सबका भला चाहने के स्वभाव वाली। चाहे शत्रु हों चाहे मित्र, सबका भला चाहती। दूसरों के अर्थात भक्तों के कार्य को सिद्ध करने वाली अर्थात पूरा करने वाली। साध्नोति परकार्यम् इति साधु। जो सब कुछ करती हैं। इन्हें प्रत्येक विषय का ज्ञान है अर्थात् सब कुछ कर सकती हैं या करा सकती हैं। जो अच्छे गुणों से

भरी हुई हैं। साध्नोति परकार्यम् इति साधु। जो दूसरों के कार्यों को बनाती हैं अर्थात उसे बनाने में सहायता करती हैं वह साधु है।

863. **सिद्धिप्रदा** – कार्यों में सफलता देने वाली। सफलता देने वाली। उपासकों को सिद्धियाँ प्रदान करने वाली।

864. **सिद्धा** – पूर्णता अर्थात मोक्ष की अवस्था में पहुँची हुई। सिद्ध स्वरूपा। जो स्वयं से उत्पन्न है अर्थात दूसरों से उत्पन्न नहीं, यह भी सिद्ध का एक अर्थ होता है। सभी सिद्धियाँ (अणिमा, लघिमा आदि अष्ट सिद्धियाँ) जिसके पास हो। इनको देखा, इनका नाम लिया, काम में सफलता मिली। नित्य स्वरूपिणी या अपरिणामी स्वरूपिणी। नित्य अर्थात सिद्ध। फलीभूता। उपासना से ये फलीभूत होती हैं अर्थात इनकी प्राप्ति होती है। जिनके पास अतिप्राकृतिक सिद्धियाँ हैं।

865. **सिद्धसरस्वती** – मांगलिक या शुभकारिणी सरस्वती। कातन्त्र व्याकरण के पहले सूत्र के अनुसार सिद्ध, नित्य एंव मंगल पर्यायवाची शब्द है। सरस्वती अर्थात ज्ञान के प्रवाह से युक्त अर्थात ज्ञान देने वाली। सरस् का अर्थ है प्रवाह। नित्य सरस्वती या पूर्णता को प्राप्त सरस्वती। जो नित्य हैं एवं ज्ञान के प्रवाह से युक्त हैं। सरस्वती के रूप में जो परिणत हुई हों या फलीभूत हुई हों। साक्षात सरस्वती रूप स्थिता। सिद्ध वाणी वाली। इनकी वाणी सिद्ध है, जो बोल दें, वही होता है।

866. **सन्तति** – सम्यक् विस्तार वाली अर्थात सम्यक् विस्तार को प्राप्त। तति का अर्थ है विस्तार क्योंकि यह तन् धातु से बना है। वंश का विस्तार करने वाली। नियम है कि शब्द के आगे 'का कारण' लगाने से शब्द का अन्य अर्थ आ जाता है। सन्तति का कारण अर्थात सन्तति करने वाली अर्थात उत्पन्न करने वाली या कराने वाली।

867. **सम्पदा** – सम्पत्ति रूपा। लौकिक और पारलौकिक दोनों प्रकार की सम्पदा स्वरूपा। विद्या, धन, वाणी, शरीर, वस्तु, वित्त ये सब सम्पत्ति हैं और देवी का ही रूप हैं। भगवान का स्मरण रूपा। शास्त्रों में लिखा है कि भगवान का स्मरण सम्पत्ति है तथा भगवान को भूलना विपत्ति है। वेदान्त दर्शन में बताई हुई षट् सम्पत्ति रूपा। सभी प्रकार के धन, वैभव, ऐश्वर्य, दैहिक, दैविक, भौतिक सम्पदा से विभूषित। सम्यक् पद्यते या सा अर्थात जिसे सम्यक् प्रकार से रखा जाता है। सम्यक् प्रकार अर्थात भलीभाँति या विधि विधान से। भक्तों को धन सम्पदा देने वाली। सम्पदा+आ, आ का अर्थ है देना, नाश करना। दुष्टों की धन, सम्पदा को नष्ट करने वाली। सम्यक पद्यते अनया। जिसके द्वारा (जिसकी कृपा से) जीवन ठीक तरीके से चलता है अर्थात लोक व्यवहार या दैनन्दिन व्यवहार ठीक तरीके से चलता है। पद्यते का अर्थ है गति करता है अर्थात व्यवहार करता है अर्थात जीवन के कामकाज करता है। जिसे प्राप्त करने के लिए यत्न किया जाता है वह सम्पदा है। सम्यक् पद्यते प्राप्यते इति सम्पदा। जिसको अच्छी प्रकार से प्राप्त किया जाता है या परिश्रम करके प्राप्त किया जाता है।

868. **संवच्छंकिसम्पत्तिदायिनी** – संग से युक्त होने के अधिक सुख रूपी सम्पत्ति देने वाली। सम् वसति से सम्वत् शब्द बनाने पर साथ रहने वाला अर्थ निकलेगा। साथ रहने वाली अधिक शान्ति रूपी सम्पत्ति देने वाली। एकाक्षरीकोष में कि का अर्थ अतिशय अर्थात अधिक दिया गया है। एकाक्षरीकोष में सं का अर्थ धन, संग, यौवन दिया गया है। यौवन से युक्त होने के अधिक सुख रूपी सम्पत्ति देने वाली। सभी ऋतुओं के अतिशय सुख रूपी सम्पत्ति देने वाली। सम्वत् का अर्थ वर्ष होता है और इसे सम्वत् इसलिए कहते हैं क्योंकि इसमें सभी ऋतुओं का वास होता है। सम् वसन्ति अस्मिन् ऋतवः इति सम्वत्। शम् का अर्थ है सुख। स्वार्थ में अर्थात बिना अर्थ बदले कन् प्रत्यय लगाने से शंक शब्द बनता है। शम् अस्य अस्ति इति शंकि अन्यथा भी एकाक्षरीकोश के अनुसार कि का अर्थ अतिशय या कुछ दिया गया है। संवत्शंकिसम्पत्तिदायिनी नाम का अर्थ है – कल्याणकारी वर्ष में होने वाली सम्पत्ति को देने वाली। (यदि संविच्छंकिसम्पत्तिदायिनी शब्द है तो अर्थ है – चैतन्य और शास्त्रों के शब्द

रूपी सम्पत्ति को देने वाली। एकाक्षरीकोश में शं का अर्थ शास्त्र, शुभ, सुख, शान्ति, वैराग्य दिया गया है। कि का अर्थ एकाक्षरीकोश में शब्द दिया गया है। संवित् का अर्थ ज्ञान, चैतन्य होता है। आत्मज्ञान/awareness देने वाली और शास्त्रों के ज्ञान को देने वाली। ज्ञान और शुभ शब्द रूपी सम्पत्ति को देने वाली। कल्याण करने वाली, बुद्धि की सम्पत्ति देने वाली या कल्याण करने वाली सम्पत्ति है बुद्धि जिसकी। सम्वित् अर्थात सम्यक् ज्ञान अर्थात बुद्धि। शंकि अर्थात कल्याण करने वाली। शं का अर्थ है कल्याण। चैतन्य में कल्याणकारिणी सम्पत्ति प्रदान करने वाली अर्थात कल्याणकारी ज्ञान रूपी सम्पत्ति देने वाली। संवित् का अर्थ है चैतन्य या ज्ञान, शंकि का अर्थ है कल्याणकारी। शम् करोति इति शंकि। ज्ञान की पराकाष्ठा द्वारा परम शान्ति से विभूषित इस प्रकार की सम्पत्ति प्रदान करने वाली। पराविद्या (संवित्) से परिपूर्ण सम्पत्ति (ज्ञान की पराकाष्ठा) को देने वाली। शंकि अर्थात शम् चीयते अनया इति शंवित् जिसके द्वारा शान्ति, श्रेष्ठा का चयन किया गया है।

869. **सपत्नी** – यज्ञ में यजमान की पत्नी के साथ रहने वाली। अंगन्यास प्रक्रिया द्वारा पति, पत्नी दोनों में देवी का वास हो जाता है। गायत्री और सावित्री एक – दूसरे की सौतन मानी जाती हैं। अतः इस नाम का अर्थ हुआ गायत्री या सावित्री स्वरूपा या जिनका गायत्री से अभेद है या जिनका सावित्री से अभेद है। दरिद्रा की शौतन अर्थात लक्ष्मी जी। यज्ञ में पति के साथ बैठने वाली अर्थात पत्नी सहित। पति के सहित पत्नी अर्थात सपत्नीक। अनेक रूपों वाली। ऐसे रूप जो विरोध रूप में अलग अलग हैं। सपत्नी अर्थात सौत। समान रूप से रक्षा करने वाली यह अर्थ भी निकल सकता है। पाति इति पत्नी अर्थात जो रक्षा करे वह पत्नी है। एकाक्षरीकोश में स का अर्थ धर्म, गौरीपुत्र, सूर्य, सोम दिया गया है। इस प्रकार सपत्नी का अर्थ धर्म की रक्षा करने वाली हुआ। गणेश, कार्तिकेय की रक्षा करने वाली। गंगा जी स्वरूपा। गंगा जी पार्वती जी की सौत है। सभी भक्तों की रक्षा करने वाली। सभी भक्तों को पतन से बचाने वाली। पत्नी का अर्थ रक्षा करने वाली, पतन से बचाने वाली होता है। शिव के साथ रमण करने वाली। सपत्न का अर्थ शत्रु होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ दुष्टों या राक्षसों से शत्रु भाव रखने वाली।

870. **सरसा** – ब्रह्म सहित। रस का एक अर्थ आनन्द या ब्रह्म है। द्रव स्वरूपिणी अर्थात वह ठोस या गैस नहीं है। सरस रूप वाली। (दया, करुणा आदि गुणों से युक्त)।

871. **सारा** – वस्तु मात्र का सार। हर चीज का सार यह तत्व है। सभी विधाओं या विद्याओं की सार स्वरूपा। तीनों लोकों की सार (वहीं से प्रकट होता है सब कुछ)। सार अर्थात किसी भी चीज का स्थिर अंश अर्थात जो नष्ट नहीं होता। जगत का सार स्वरूपा। सार अर्थात essence वह तत्व या गुण जिसके कारण वह वस्तु वह वस्तु है अन्यथा उस वस्तु का उस वस्तु के रूप में अस्तित्व नहीं होता। सार किसी वस्तु का स्थिर अंश है अर्थात उससे कभी नहीं हटता। चेतना से सभी कुछ बना है अतः देवी का अर्थ हुआ चेतना स्वरूपा।

872. **सारस्वतकरी** – उपासक को विद्वान बनाने वाली। सारस्वत अर्थात जो सरस्वती से सम्बन्धित है अर्थात ज्ञान। सारस्वत (अर्थात सरस्वती से सम्बन्धित विविध विद्याओं) को प्रकाशित करने वाली, देने वाली, दिखाने वाली, प्रकट करने वाली। सारस्वत अर्थात जो सरस्वती से सम्बन्धित है अर्थात ज्ञान विज्ञान, विद्या, कविता, संगीत।

873. **सुधा** – अच्छी प्रकार से पोषित करने वाली। सुष्ठु दधाति पुष्णाति इति सुधा। जिसका सुखपूर्वक पान किया जाता है। सुखेन धीयते पीयते या सा सुधा। जो अच्छी तरह धारण की जाए, ऐसी विद्या स्वरूपा। सुष्ठु धीयते इति सुधा। पीने वाला अमृत। सुधा अर्थात रस जो सभी प्रकार के रस का उपलक्षक है अर्थात भक्ति रस, चैतन्यरस आदि। सहस्रार से टपकने वाले रस के स्वरूप में है जो।

874. **सुरासमांसाशना** – सुरा और मांस के सहित भोजन है जिसका। सुरा + समांस + अशना। मदिरा के साथ मांस का आहार करने वाली ।

875. **समाराध्या** – विधिपूर्वक आराधना करने योग्य। आ सम्यक् आराध्या। सांगोपांग आराधना विधि में त्रुटि न हो A to z, सुन्दर (अच्छी तरह) आराधना करने के योग्य।

876. **समस्तदा** – सब कुछ देने वाली। सभी को देने वाली।

877. **समधी** – सन्तुलित बुद्धि स्वरूपा। सन्तुलित बुद्धि है जिसकी अर्थात जो सन्तुलित बुद्धि प्रदान करती है। देवताओं का नाम मन्त्र अर्थ के अनुसार फल देता है। देवताओं को जो नाम होता उसका अर्थ होता है और वह देवता वैसा ही फल देता है। श्रेष्ठ अच्छी बुद्धि वाली।

878. **सामदा** – साम वेद में प्रवीणता देने वाली। शान्ति देने वाली। सान्त्वना देने वाली समागमन की विद्या को प्रदान करने वाली।

879. **सीमा** – देवी हर चीज की सीमा हैं अर्थात इनसे आगे कुछ भी नहीं है। पूरे विश्व का अन्तिम तट अर्थात विश्व इनके भीतर ही है, इन से आगे नहीं है। मर्यादा वाली अर्थात शिष्ट आचरण करने वाली।

880. **सम्मोहा** – सम्मोह स्वरूपिणी या अज्ञान स्वरूपिणी। मोह का अर्थ अज्ञान होता है अर्थात कुछ का कुछ समझ लेना। प्राणियों और वस्तुओं का वास्तविक स्वरूप न देखकर उसके बाहरी आवरण को ही वास्तविक मान लेना जिससे सही और गलत का भेद नहीं कर पाना, उचित और अनुचित का भेद नहीं कर पाना सम्मोह कहलाता है। जिससे व्यक्ति गलत काम जैसे किसी को गाली देना आदि करता है वह सम्मोह है। मोह या अज्ञान का ही परिणाम है आकर्षण, स्नेह या लगाव। मोह का मूल अर्थ अज्ञान ही है किन्तु परिणाम आकर्षण होने के कारण आकर्षण को भी मोह कह देते हैं। सबको मोहित (आकर्षित या वशीकृत) करने वाली। संसार में व्याप्त मोह देवी ही हैं। सम्मोहन की शक्ति से युक्त अर्थात मुग्ध करने की शक्ति से युक्त।

881. **समदर्शना** – सबको समान रूप से देखने वाली। सूर्य सबको समान रूप से देखता है चाहे वह साधू हो, चाहे वह दुष्ट हो। जिसका दर्शन सभी को प्रिय है।

882. **सामति** – सभी ओर से अच्छी तरह विचार करने वाली, चिन्तन करने वाली। स+आ+मति, स अर्थात सहित, आ अर्थात सभी ओर से, मति अर्थात विचार करने की शक्ति। सभी ओर विचार करने की शक्ति सहित अर्थात सभी ओर विचार करने वाली। सरस्वती देवी की बुद्धि स्वरूपा। सा का अर्थ है सरस्वती देवी। (यदि सामती शब्द है तो अर्थ होगा – सरस्वती युक्ता। श्रीयुक्ता। सा का अर्थ सरस्वती भी होता है, श्री भी होता है। सामवेद का विस्तार स्वरूपा। तनोति से ती का अर्थ हुआ विस्तार अर्थ हुआ। साम नामक राजा की नीति का विस्तार करने वाली)। शक्ति युक्त बुद्धि वाली अर्थात शक्तिशाली (प्रभाव करने वाली) बुद्धिवाली। सा का अर्थ है श्रेष्ठ, शक्ति आदि। श्रेष्ठ बुद्धि वाली। मति ऐसी बुद्धि है जो मनन करती है, चीजों को समझती है। समझने की शक्ति मति के पास ही है। सामम् विस्तारयति से भी यह शब्द बन सकता है। साम को पूरा ले लिया एवं विस्तारयति का ति ले लिया। शान्ति का विस्तार करने वाली। साम+अति से शान्ति से गमन करने वाली अर्थात कार्यरत रहने वाली। अत् सातत्यगमने धातु से अति का अर्थ निरन्तर गमन करने वाली होगा। सन्धि से सामाति बनना चाहिए, किन्तु पर–रूप सन्धि से सामति ही हुआ। निरूक्त पढ़ने के बाद ऐसा लगता है कि शब्दों का अर्थ निकालने में व्याकरण के नियमों में शिथिलता देना होता है और विशेषकर सन्धि के नियमों में, तभी अर्थ निकल पाते है।

883. **सामधा** – सामवेद को धारण करने वाली।

884. **सीमा** – वाणी की सीमा। ज्ञान की सीमा। ऐश्वर्य की सीमा अर्थात ज्ञान और ऐश्वर्य इनसे ज्यादा किसी का नहीं। मर्यादावती सद्गुण त्यागकर अवगुण की ओर नहीं जाती, अपनी दिव्यता, श्रेष्ठता नहीं लांघती। अतः

मर्यादावती अर्थ भी हो सकता है। माँग वाली अर्थात बालों में माँग धारण किये हुए हैं। सीमा अस्या अस्ति इति सीमा। सीमा नामक आभूषण धारण किये हुए।

885. **सावित्री** – ज्ञान को उत्पन्न करने वाली। सब कुछ उत्पन्न करने वाली। सूर्य की शक्ति स्वरूपा। सावित्री शब्द सू धातु से बना है जिसका अर्थ है उत्पन्न करना। जगत को पैदा किया जिसने (सूते = जन्म देना)। सविता (अर्थात सूर्य) की शक्ति रूपा। बिना व्याहृतियों का गायत्री मन्त्र सावित्री कहलाता है, तत् स्वरूपा। व्याहृतियों सहित गायत्री मन्त्र को गायत्री कहते हैं। सूर्य से धरती पर आने वाली सौर ऊर्जा सावित्री है, तत् स्वरूपा। केन्द्र से परिधि की ओर जाने वाली शक्ति सावित्री है। ऐसी ऊर्जा या शक्ति स्वरूपा। धरती से सूर्य की ओर जाने वाली सौर ऊर्जा गायत्री है। परिधि से केन्द्र की ओर जाने वाली शक्ति/ऊर्जा गायत्री है।

886. **सविधा** – सभी विधानों अर्थात पूजा पद्धतियों के स्वरूप वाली। दक्षिणमार्गी, वाममार्गी सभी पूजा पद्धतियाँ इनके स्वरूप में। विधा का अर्थ नजदीक भी होता है। तब सविधा का अर्थ होता निकटता सहित अर्थात आत्मरूपा। आत्मा या चैतन्य ही सभी में निकटता से रहती है अतः आत्मा ही सविधा है। समीपस्था। विधान के सहित। सविधा का अर्थ समीप या विधान होता है, भक्तों या प्राणियों के समीप है। जो सब के अन्दर अन्तःकरण में है तो समीपस्थ ही हुई। हर चीज विधानपूर्वक करती हैं। ईश्वरीय तत्वों के सामीप्य वाली। (सविध = समीपता)। समीप में रहने वाली अर्थात शिव के समीप रहने वाली या अपने भक्त के समीप रहने वाली। सविध का अर्थ समीप होता है।

887. **सती** – हमेशा वर्तमान रहने वाली अर्थात जिनका अस्तित्व हमेशा रहता है। प्रजापति दक्ष की पुत्री सती से अभेद है जिनका। पतिव्रता अर्थात अपने पति शिव को कभी न छोड़ने वाली। सदैव अस्तित्ववान रहने वाली। तन् धातु में ड प्रत्यय लगाने से त, स्त्रीलिंग में ती बनेगा, ती का अर्थ होगा विस्तार करने वाली, देने वाली, निर्माण करने वाली। एकाक्षरी कोष से स के अर्थों को लेकर सती के कई अर्थ बनाये जा सकते हैं।

888. **सवना** – यज्ञस्नानरूपा। हर क्रिया शक्ति है और शक्ति ही देवी है। प्रेरित करने वाली। लोगों को यज्ञ आदि अच्छे कर्मों में प्रेरित करती है। सू प्रेरणे धातु होती है। सोम–रस को निचोड़कर रस निकालने की क्रिया स्वरूपा। मदिरा पीने से उन्माद या नशा आता है जबकि सोमरस पीने से उत्साह आता है।

889. **सवनासारा** – यज्ञ का सार अर्थात यज्ञ फलस्वरूपा। यज्ञ की सफलता स्वरूपिणी। जिस उद्देश्य से यज्ञ किया जाता है, तत्स्वरूपिणी। यज्ञ करने से अन्त में जो मिलता है वह देवी ही हैं। सवन (यज्ञ) के सारभूत तत्वों से युक्त अर्थात् सभी श्रेष्ठ विधाओं/गुणों से युक्त।

890. **सवरा** – वर (पति) सहित अर्थात शिव के साथ रहने वाली। कुमकुम सहित अर्थात उसे लगाये हुए। हल्दी सहित अर्थात उसे धारण किये हुए। वर का एक अर्थ है कुमकुम, हल्दी। श्रेष्ठ वस्तुओं के सहित अर्थात जिनके पास सभी श्रेष्ठ वस्तुऐं हैं। श्रेष्ठ वस्तुओं वाली। श्रेष्ठ वस्तुओं के सहित अर्थात सभी श्रेष्ठ वस्तुएं उनके पास हैं। वरा का अर्थ हैं श्रेष्ठ। श्रेष्ठ गुणों को अच्छी प्रकार से वरण करने वाली (सम्यक् वृणोति इति सवरा) सम्यक् रूप से श्रेष्ठ भक्तों का वरण करती हैं। वृणोति इति वरा। वृ धातु में अच् प्रत्यय लगाने से वर शब्द बनता है, जिसको चुना जाता है वह वर या श्रेष्ठ है। जल स्वरूपा भी इस नाम का अर्थ है क्योंकि वर का एक अर्थ जल भी है। शिव की शक्ति यह भी अर्थ है क्योंकि शिव का एक नाम है सवर।

891. **सावरा** – श्रेष्ठ लक्ष्मी स्वरूपा या श्रेष्ठ सरस्वती स्वरूपा। एकाक्षरी कोश के अनुसार सा का अर्थ लक्ष्मी एवं सरस्वती। सा च असौ वरा इति सावरा। अच्छी तरह से चारों ओर से सत्पुरूषों/ज्ञानी भक्तों को चुनती हैं। सम्यक् रूपेण आ समन्तात वृणोति। अवर के सहित अर्थात अधीनस्थों के सहित या जो बाद में पैदा हुए हैं उनके सहित। तात्पर्य है अपनी विभूतियों (अवतार या कला या manifestation) के सहित हैं। दुर्गासप्तशती में आया है कि देवी बहुत सी कन्याओं से घिरी हुई हैं। श्रेष्ठ को चुनने वाली अर्थात धारण करने वाली। सा का अर्थ है

श्री, लक्ष्मी। श्री का अर्थ है श्रेष्ठ, धन सम्पत्ति। शिव श्रेष्ठता या लक्ष्मी है। लक्ष्मी अर्थात शोभा भी है। सभी प्रकार की धन सम्पत्तियों, शोभा से युक्त। वृ वृणोति धातु में अच प्रत्यय करने से वर शब्द बनता है जिसका अर्थ है चुनने वाला या ग्रहण करने वाला। अवति इति अवः से अव का अर्थ रक्षा करने वाला होता है। स का अर्थ सहित, श्री, शक्ति है। श्रेष्ठ रक्षा शक्ति को देने वाली या ऐसी शक्तियों से आनन्दित होने वाली। राति से देना अर्थ आएगा और रमते से आनन्दित होना अर्थ आएगा। रक्षा का साहित्य (साथ रहना) देने वाली। काम को पूरा करने वाली शक्ति/गुण को चुनने वाली अर्थात ऐसी शक्ति या गुण से युक्त। साध् धातु में ड प्रत्यय लगाने से स शब्द बनेगा जिसका अर्थ है पूरा करने वाला।

892. **समी** – सभी के लिए समान भाव रखने वाली। सूर्य, चन्द्रमा, नदी आदि सभी के प्रति समान भाव रखते हैं, चाहे सज्जन व्यक्ति हो चाहे दुर्जन सभी को समान प्रकाश मिलता है। सभी के पास समान रूप से आती हैं। ई गति धातु होती है। निष्पक्ष। न्याययुक्त। सम का स्त्रीलिंग में समी बनता है। सम्यक् रूप से सभी का कल्याण करने वाली, सम्यक् रूपेण अयति (ई धातु का अर्थ है गति करना अर्थात कुछ क्रिया करना)।

893. **सिमरा** – नित्य और अनित्य वस्तुओं में वर्तमान। एकाक्षरी कोष के अनुसार सि का अर्थ है अमर धर्मा, मर का अर्थ है मरण धर्मा। नित्य वस्तुएं जैसे आकाश, काल, मन। अनित्य वस्तु पृथ्वी आदि। उभयधर्म वालों में विद्यमान ऐसा अर्थ भी कर सकते हैं। सृष्टि से प्रलय तक रहने वालों को भी नित्य मान लिया जाता है। समस्त चीजों को या सम्पूर्ण चीजों या प्रत्येक चीज को देने वाली। सिमम् राति इति सिमरा। अपने भक्त को आवश्यक सभी चीजों को देने वाली। सिम का अर्थ समुदाय, प्रत्येक, सम्पूर्ण, समग्र, समस्त है। राति इति रा से रा का अर्थ देने वाली होता है। सिनोति धातु रूप का अर्थ बाँधना होता है। माति का अर्थ निर्माण करना या मापना होता है। रमते का अर्थ आनन्दित होना या क्रीडा करना होता है। भक्त को अपने इश्ट से बाँधने वाली, ज्ञान देने वाली और आनन्दित करने वाली। म का अर्थ ज्ञान होता है। नियम है कि शब्द के आगे ''का कारण'' लगाने से शब्द का अन्य अर्थ निकल आता है। म का अर्थ ज्ञान का कारण अर्थात ज्ञान करने वाली अर्थात ज्ञान देने वाली। संसारीजन के लिए अर्थ होगा संसार से बाँधने वाली, उसे सीमित करने वाली एवं आनन्दित करने वाली। संसारी व्यक्ति की शक्तियाँ सीमित रहती है।

894. **सतता** – जिसमें नैरन्तर्य हो अर्थात किसी प्रकार का व्यवधान (Gap) न हो। अटूट। हर पल अस्तित्व है जिसका। हर पल क्रियाशील। नैरन्तर्यस्वरूपा। निरन्तरा स्वरूपा। निरन्तरता से युक्त (अबाध गति वाली) किसी समय उनकी गति रुकती नहीं।

895. **साध्वी** – अच्छे चरित्र वाली या अच्छे कर्म करने वाली। जो मन, वचन, कर्म से अच्छा हो वह है साधु। साधु गुणों अच्छे गुणों से युक्त।

896. **सध्रीचि** – साथ–साथ रहने वाली और साथ ही प्रकट होने वाली शक्ति (वैदिक कोष में इसका यही अर्थ दिया गया है)। भक्तों की अच्छी सहेली अर्थात भक्तों के साथ – साथ चलने वाली। सध्रीचि का अर्थ होता है अन्तरंग सहेली। सध्रीचि अप्सरा के समान सुन्दर रूप धारण करने वाली।

897. **ससहायिनी** – अनेक सहायिकाओं के साथ चलने वाली। ब्राह्मी, माहेश्वरी आदि मातृशक्तियों के साथ चलने वाली या युद्ध में लड़ने वाली। सहाय के साथ रहने वाली अर्थात शिवजी के साथ चलने वाली। जो साथ – साथ चले वह है सहाय, शिवजी देवी के सहाय हैं।

898. **हंसी** – अजपा जप की शक्ति स्वरूपा। ऐसा कहते हैं बिना प्रयास किये मनुष्य के सांस लेते समय सो का उच्चारण होता है और सांस छोड़ते समय हम् का उच्चारण होता है। चूँकि यह बिना जपे अपने आप होता है, अतः इसे अजपा जप कहते हैं। जो हंसों से युक्त है अर्थात हंस जिसके साथ साथ हैं।

899. **हंसगति** – हंस की तरह श्रेष्ठ गति वाली। हंस श्रेष्ठता का प्रतीक है। हंसगति स्थिर शुभगमन का प्रतीक है। हंस की तरह गति वाली अर्थात जिसकी गति अच्छी है सुन्दर है एवं लयबद्ध है। हंस एक लय में चलते हैं अर्थात पूर्व क्रम और बाद वाला क्रम एक जैसा होता है। हंस के समान सुन्दर गति से चलने वाली।

900. **हंसी** – परमात्मा या जीवात्मा स्वरूपिणी। हंस का एक अर्थ परमात्मा या जीवात्मा भी होता है। हंस के समान उज्जवल वर्ण वाली। परमात्मा/ जीवात्मा की शक्तिस्वरूपा।

901. **हंसोज्जवलनिचोलयुज्** – हंस के समान उज्जवल कंचुक/चुनरी धारण करने वाली। निचोल का अर्थ है कंचुक या चुनरी। युज् का अर्थ है युक्त होना। हंस के समान उज्जवल सफेद वस्त्रों को धारण करने वाली। (उज्जवल = सुन्दर से सुन्दर) मातंगी सरस्वती का ही तान्त्रिक रूप है, सरस्वती वैदिक रूप है)।

902. **हालिनी** – मद्य वाली अर्थात मद्य से युक्त। हाला अस्या अस्ति इति हालिनी। हाला अस्य अस्ति इति हालिन्। पुल्लिंग एक वचन में हाली एवं स्त्रीलिंग एकवचन में हालिनी होगा। हाला का अर्थ है मद्य, मद्य के कई अर्थ होते हैं – शराब, अमृत आदि। युद्ध के समय द्वैत भाव पैदा करने के लिए मद्य पीती हैं। हाला का अर्थ स्थूल पत्नी भी होता है अर्थात जो स्थूल देह वाली हैं। जब शिव स्थूल देह को धारण करते हैं तो देवी भी स्थूल देह को धारण करती हैं। शब्दकोष में हालिनी का एक अर्थ बड़ी छिपकली दिया गया है। धनतेरस के दिन छिपकली दिखना शुभ माना गया है और यह धन आगमन का सूचक है।इस प्रकार इस नाम का अर्थ छिपकली के समान अर्थात छिपकली के समान धन आगमन की सूचना देने वाली अर्थात भक्तों को धन देने वाली।

903. **हालिनी** – हल नामक आयुध विशेष धारण करने वाली। हाल का अर्थ हल, बलराम दिया गया है। बलराम जी की शक्ति स्वरूपा। बलराम जी का एक नाम हाली भी है क्योंकि वे हल को धारण करते हैं। हलेन क्रीडति इति हालः। जगत की उत्पत्ति करने वाली। जगत की उत्प्पत्ति करने वाली शिव की शक्ति। जो अन्नादि उत्पन्न करता या हल चलाता वह कृषक है हाली। हलति इति हालः। संसार खेत है तथा शिव हैं हाली।

904. **हाला** – बुराई छोड़ने वाली एवं अच्छाई ग्रहण करने वाली। त्याग और आदान दोनों। हा युक्ता ला युक्ता इति हाला। जहाति इति हा, लाति आदत्ते इति ला। मदोन्मत्त होने वाली। (दुष्टों के वध के समय) एकमात्र लक्ष्य, इतना उन्माद आ जाये कि दुष्टों का संहार करके ही मानेंगे। साधकों को उस अवस्था में लाने वाली जिससे वे अपने को भूलकर ईश्वर में लीन हो जायें।

905. **हलश्री** – हल नामक आयुध की शोभा। खेत में चलाए जाने वाले हल की शोभा अर्थात जमीन उर्वरा बनाने वाली। हल चलाने से जो नाली जैसी रचना होती है उसे सीता कहते हैं। हल की शोभा से युक्त।

906. **हरवल्लभा** – शंकर की प्रियतमा। शिव को प्रिय है जो। वल्लभ अर्थात अतिशय प्रिय।

907. **हला** – पृथ्वीस्वरूपा या जल स्वरूपा। हल वाली अर्थात हल धारण करने वाली। हलम् अस्या अस्ति इति हला। सखी धर्म का निर्वाह करने वाली। हर्ष लाने वाली। हर्ष ग्रहण करने वाली अर्थात धारण करने वाली। एकाक्षरी कोश में ह का अर्थ है हर्ष। लाति का अर्थ है ग्रह्णाति अर्थात ग्रहण करना।

908. **हलावती** – जलवाली या जल युक्ता। हला का अर्थ है जल। सखी धर्म को उसकी सुन्दरता में (उत्तमोत्तम रूप में) धारण करने वाली। हल+आ+वती। आ का अर्थ एकाक्षरीकोश में भाव (पदार्थ या अस्तित्व) दिया गया है। आ समन्तात् से आ का अर्थ पूर्ण रूप से या चारों रूप से होता है। हल नामक भाव से युक्त अर्थात हल से युक्त अर्थात हल धारण करने वाली।

909. **ह्येषा** – जो निश्चित स्वरूपिणी है, जिसमें कुछ भी अनिश्चित नही है। जो सबका कारण है अर्थात निमित्त स्वरूपिणी। हि+एषा, से ह्येषा शब्द बनेगा। हि का अर्थ निश्चय, हेतु होता है। एषा का अर्थ है इयम्

अर्थात यह जो देवी के लिए कहा गया है। ह+ईशा से भी यह शब्द बन सकता है। संसार का क्षय चाहने वाली। प्रलयकाल में संसार का क्षय चाहने वाली। हन् धातु का अर्थ है हिंसा करना या मारना, गति करना। गति या क्रियाशीलता को चाहने वाली। विशेष कामना स्वरूपा या प्रसिद्ध कामना स्वरूपा। मैं एक से अनेक हो जाऊँ, शिव ही मुझे पति के रूप में मिलें, यह विशेष कामना है। एकाक्षरी कोश में हि का अर्थ विशेष, प्रसिद्ध, अकेला, केवल, निस्सन्देह दिया गया है। एषा का अर्थ है कामना। हि+एषा इति ह्येषा। (यदि ह्वेषा नाम है तो अर्थ है – युद्ध में घोड़े की हिनहिनाहट के समान शब्द करने वाली जिससे दैत्यों को ललकारा जाता है। ह्वेषा घोड़े की हिनहिनाहट का शब्द है। अश्व की हिनहिनाहट के समान प्रसन्नता प्रकट करने वाली। युद्ध में गम्भीर गर्जना करने वाली। ह्वेषा अस्या अस्ति इति ह्वेषा (ह्वेषा वाली)।)।

910. **हेला** – क्रीड़ा स्वरूपिणी। क्रीड़ा क्रिया स्वरूपा। हर चीज उसके लिए बायें हाथ का खेल है अर्थात आसान क्रीड़ा है। विलास के विशेष भाव की अभिव्यक्ति (प्रकाशित) करने वाली। श्रृंगार भाव से पैदा क्रियाविशेष या सुरत की प्रौढ़ इच्छा स्वरूपा। हेला श्रृंगारभाव सूचक भाव या क्रिया है। वह भाव जिसके कारण मन में श्रृंगार (कामभाव का अंकुरण) का आवेग तीव्र होने पर ललित या सुन्दर आंगिक चेष्टा होने लगती है उसे हेला कहते हैं। व्यक्ति के नेत्र, भौं, गर्दन, अन्य अंगों में इस प्रकार की चेष्टा होने लगती है जिससे व्यक्ति के भीतर कामभाव के अंकुरण का पता चल जाता है। सुरत क्रीड़ा स्वरूपा। सुरत की बलवती इच्छा स्वरूपा। प्रत्येक चीज ऊर्जा या शक्ति है। भाव भी ऊर्जा या शक्ति हैं। देवी का तात्पर्य है ऊर्जा या शक्ति अतः भाव भी देवी का रूप हैं। अनर्थ का नाश करने वाली। हे का अर्थ एकाक्षरीकोश में अनर्थ लिखा है। लाति नाशयति। हे का एक अर्थ सम्बोधन अर्थात पुकारा जाने वाला नाम भी होता है। लाति ग्रहणाति धारयति। सम्बोधन के नाम को धारण करने वाली यह अर्थ भी हो सकता है।

911. **हर्षविवर्धनी** – हर्ष को विशेष रूप से बढ़ाने वाली या अधिक बढ़ाने वाली। हर्ष को विशेष (अधिक) रूप से बढ़ाने वाली। अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति पर मिलने वाली खुशी हर्ष है।

912. **हन्ती** – आकाश का विस्तार करने वाले शिव की पत्नी। हं बीज का अर्थ आकाश होता है। प्रसन्नता सूचक शब्द का उच्चारण करने वाली। हन्त शब्द वाली। हन्त एक अव्यय शब्द है जो अनुकम्पा या प्रसन्नता को व्यक्त करता है। मारने वाली। हन्त शब्द से स्त्रीलिंग में हन्ती बना।

913. **हन्ता** – मनुष्य की उपजीवी अर्थात् उसे भोजन या भक्ष्य पदार्थ पहुँचाने वाली। वृहदारण्यक उपनिषद् के आठवें अध्याय में लिखा है कि वाणी कामधेनु की तरह है जिसके चार स्तन है। दो स्तन स्वाहाकार एवं वषट्कार है। तीसरा स्तन हन्तकार है। चौथा स्तन स्वधाकार है। स्वाहा और वषट् का उच्चारण करने से भोजन देवताओं तक पहुँचता है। तभी हवन करते समय स्वाहा शब्द बोला जाता है। हन्त का उच्चारण करते हुए मनुष्य को भोजन दिया जाता है। स्वधा इस शब्द के उच्चारण के साथ पितरों को भोजन दिया जाता है। आकाश का विस्तार करने वाली। हं बीज का अर्थ आकाश होता है। हं का अर्थ परब्रह्म, हर्ष (खुशी) भी होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ परब्रह्म का विस्तार करने वाली शक्ति। जगत ब्रह्म का ही विस्तार है। भक्तों के हर्ष या सुख का विस्तार करने वाली। तन् धातु का अर्थ है विस्तार करना, इसमें ड प्रत्यय लगाने से त शब्द बनता है जिसका अर्थ हुआ विस्तार करने वाला। अहम् का विस्तार करने वाली। दृष्टि की रचना में अहम् का बड़ा योगदान है और इसके बिना सृष्टि का विस्तार नहीं हो सकता है। सो अहम् मन्त्र अपने आप साँस के साथ चलता है। सो के साथ साँस अन्दर आती है अर्थात् परमात्मा की शक्ति हमारे भीतर आती है। हम् (अहम्) के साथ साँस बाहर जाती है अर्थात् जीवात्मा परमात्मा से मिलने जाता है। अनुकम्पा स्वरूपा। हन्त एक अव्यय शब्द है जिसका अर्थ अनुकम्पा। हम् का विस्तार करने वाली। तनोति धातु रूप का अर्थ है विस्तार करना। तन् धातु में ड प्रत्यय लगाने से बने त शब्द का अर्थ है विस्तार करने वाला। बुराइयों का हनन करने वाली। घातक स्वरूप

वाली। हम् शब्द का विस्तार करने वाली। दुष्टों का वध करने वाली। एक स्थान पर पढ़ने को मिला है कि अनुस्वार या बिन्दु अवधारण (एव या ही जैसे वह दूध ही पीता है, निश्चयात्मक निर्णय) अर्थ में आते हैं। एकाक्षरी कोष से ह के अर्थ लेकर हन्ता शब्द के कई अर्थ बना सकते हैं।

914. **हया** – हयग्रीव भगवान की शक्ति। सूर्य पत्नी संज्ञा से अभेद है जिसका। सूर्य पत्नी संज्ञा घोड़ी या हया बन गई थी। अश्व रूप में ब्रह्म का उपदेश दिया जिसने। हय (घोड़ा) रूपी अर्थात लक्षणा से अर्थ होगा हय (घोड़े) पर आरूढ़ होने वाली। हयः अस्या अस्ति इति हया अर्थात घोड़े वाली अर्थात जिसके पास घोड़ा है या जो घोड़े पर बैठकर चलती है। हय + आ, आ का अर्थ देना एवं नाश करना दोनों होता है। इस प्रकार हया का अर्थ हुआ घोड़े को देने वाली अर्थात पशु समृद्धि देने वाली।

915. **हाहाहिता** – हाहा नामक गन्धर्व का हित चाहने वाली या हित करने वाली। गन्धर्व विद्या के ज्ञाताओं का हित करने वाली। (लक्षणा से अर्थ है सामदेव के ज्ञाता) गन्धर्व विधान सामवेद का उपलक्षण है।

916. **अहंतातिकारणी** – अहंकार को पीछे छोड़ने वाली। वामन आप्टे शब्दकोष में कृ धातु में अति उपसर्ग लगाने से पीछे छोड़ना या surpass करना अर्थ दिया गया है। भक्तों के अतिशय दर्प को पूर्णरूपेण नष्ट करने वाली। अतिकार शब्द रहित अवस्था एवं अति अवस्था दोनों का सूचक है। अहंकार से रहित यह अर्थ भी हुआ और अहंकार का अतिकार करने वाली अर्थात उससे भी आगे बढ़ जाने वाली यह अर्थ भी हुआ। देव्यथर्वशीर्ष में देवी कहती हैं मैं ही रुद्र हूँ, मैं ही वरुण हूँ तो अभिमान का उच्च स्वरूप आ गया। अहंकार का अतिक्रमण करने वाली या बढ़ाने वाली। देवी पहले असुरों के अहंकार को जाग्रत या बढ़ाती है फिर बढ़ जाने पर उसका संहार कर देती है। दुर्गासप्तशती में शुम्भ – निशुम्भ के प्रकरण में कहती हैं यो माम् जयति संग्रामे, यो में दर्पो व्यपोहति। अहंता + अतिकारिणी। अतिशय दर्प (भक्तों के) को पूर्ण रूपेण नष्ट करने वाली। अहंकार से अतिक्रमण कराने वालीअर्थात भक्त को अहंकार रहित करने वाली। अतिक्रमण से अति ले लिया एवं कारिणी का अर्थ है करने वाली, कराने वाली। अति का अर्थ अत्यधिक ले तो इस नाम का अर्थ होगा दुष्टों के अहंकार को अत्यधिक करने वाली अर्थात और बढ़ाने वाली जिससे उनका नाश हो जाए। अहंकार के बढ़ने से व्यक्ति का नाश हो जाता है।

917. **हंकारी** – हम् बीज की विधायिका अर्थात इस बीजाक्षर की रचना करने वाली। युद्ध में हंकार करते हुए शत्रुओं पर झपटने वाली। युद्ध में हम् शब्द का उच्चारण करने वाली। हिन्दी शब्दकोष के अनुसार हंकारी शब्द अहंकारी से ही बना है। इस प्रकार हंकारी का अर्थ हुआ अहंकारी या दर्पयुक्त। दुर्गा सप्तशती में देवी जी जब कहती हैं कि जो मुझे संग्राम में जीतेगा, मेरे दर्प का हनन करेगा वही मेरा पति होगा, यह उक्ति उनके हंकारी होने का प्रमाण है।

918. **हंकृति** – हम् इस शब्द के स्वरूप वाली। कृति का अर्थ है रचना या स्वरूप। आकाश जिसकी निश्चित रूप से कृति है अर्थात् आकाश का निर्माण करने वाली। ह का एक अर्थ है आकाश। बिन्दु या अनुस्वार अवधारण (एव, ही, निश्चित) अर्थ में आते हैं।

919. **हंका** – हम् शब्द करने वाली अर्थात हम् शब्द का उच्चारण करने वाली अर्थात हम् शब्द करके दानवों का वध करने वाली। हम् इति शब्दम् कायति इति हंका। हर्ष युक्ता दुर्गा अर्थात दुर्गा की प्रसन्नता। एकाक्षरी कोश के अनुसार हम् का अर्थ है हर्ष तथा का का अर्था है दुर्गा। हम् बीज मन्त्र की कामना करने वाली। हम् कामयते इति हंका। युद्ध में भयंकर गर्जना करने वाली। परब्रह्म को बोलने वाली। हम् कायति इति हंका। हम् का अर्थ एकाक्षरी कोश में परब्रह्म दिया है। क्रोधोक्ति वाला कु शब्द अर्थात खराब शब्द अर्थात ललकार स्वरूपा। हंका अर्थात ललकार स्वरूपा। एकाक्षरी कोष में हं का अर्थ है क्रोधोक्ति या क्रोध भाव एवं का क अर्थ है कु शब्द। हर्ष

से युक्त होकर बोलने वाली। हर्ष को बोलने वाली अर्थात् प्रकाशित करने वाली या फैलाने वाली। ह का अर्थ है हर्ष। बिन्दु या अनुस्वार अवधारण (एव, ही, निश्चित) अर्थ में आते है। कै धातु का अर्थ बोलना होता है। इस धातु में ड प्रत्यय लगाने से क शब्द बनेगा। जिसका अर्थ है बोलने वाला अर्थात् प्रकाशित करने वाला या अभिव्यक्त करने वाला। स्त्रीलिंग में क का ''का'' हो जाता है, कहीं पर ''की'' भी हो जाता है। यद्यपि संस्कृत व्याकरण कौमुदी में आकारान्त एवं ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्द बनाने के नियम हैं पर कई बार शब्दों का अर्थ निकालने के लिए इसमें शिथिलता की आवश्यकता होती है जैसे देवका एवं देवकी का एक ही अर्थ होगा।

920. **हीहीहाहाहिता** – ही ही एवं हा हा नामक गन्धर्वों का हित करने वाली या चाहने वाली। हा हा एवं ही ही नामक गन्धर्वों का हित करने वाली।

921. **हिता** – मित्र स्वरूपा अर्थात उपासकों की सुख – दुख में मदद करने वाली। शब्दकोषों में हित का अर्थ मित्र, रखना और अच्छाई बताया गया है। सुहृद (शत्रु का विपरीत)। कल्याण करने वाली। हित+आ, आ का एक अर्थ देना भी है। हित देने वाली अर्थात हित करने वाली। शिव द्वारा रखी गई अर्थात जिन्हें अपने घर में स्थान दिया गया। शिव कैलाश पर्वत में रहते हैं। कैलाश पर्वत सहस्रार चक्र है। हित देने वाली अर्थात् हित करने वाली। हित+आ, आ का अर्थ है देना। धारण की हुई अर्थात् जिसको धारण किया गया है। भगवान शिव ने अपने वामांग में धारण किया है। भक्तों के द्वारा जिसे अपने हृदय में धारण किया गया है।

922. **हीति** – आश्चर्य ऐसी अर्थात आश्चर्यमयी। ही + इति। ही आश्चर्यसूचक अव्यय है। हि + इति, हि का अर्थ है कारण या निश्चय। निश्चयात्मिका। निश्चय ही ऐसी। ऐसी विचित्र है जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती। एकाक्षरी कोश के अनुसार ही का अर्थ है विस्मय विषय। ही + इति। कुशाग्र ज्ञान स्वरूपा। अतिशय ज्ञान से युक्त। प्रश्न, वितर्क, दुख के लिए मूषक स्वरूपा अर्थात इन्हें कुतरने वाली। ही का अर्थ प्रश्न, वितर्क, दुख है और ति का अर्थ है मूषक (चूहा)। आश्चर्य, सुख की महाधन। ही का अर्थ है आश्चर्य, सुख और ति का अर्थ है महाधन।

923. **हेमप्रदा** – स्वर्ण प्रदान करने वाली। भक्तों को स्वर्ण से लबालब करने वाली। सभी प्रकार के ऐश्वर्य, समृद्धि, प्रदान करने वाली। (हेम सब ऐश्वर्य का उपलक्षण है)।

924. **हारारावणी** – मनोहर शब्द करने वाली। मन को हरने वाले श्रेष्ठ मन्त्रों की ध्वनि करने वाली। हारा अर्थात मनोहर, रावणी अर्थात शब्द करने वाली।

925. **हरिसम्मता** – भगवान विष्णु द्वारा सम्मानित अर्थात् उपासिता। अर्गला स्तोत्र में आया है कृष्णेन संस्तुता देवि......। सम्मत का अर्थ है पसन्द, प्रिय, सोचा विचारा हुआ, समान, सम्मानित या प्रतिष्ठित, युक्त या सहित। जो विष्णु को सम्मत है अर्थात प्रिय है (विष्णु जिन्हें चाहते हैं)। सम्मत का अर्थ है पसन्द या प्रिय। भगवान विष्णु द्वारा जिन्हें विचारा गया। भगवान विष्णु सहित। भगवान विष्णु से युक्त।

926. **होरा** – कालांश स्वरूपा अर्थात जो काल खण्ड के स्वरूप वाली हैं। ऐसा कहते हैं कि होरा शब्द से ही अंग्रेजी में hour बना जो घण्टा ही है। दिन में चौबीस होरा होती हैं। काल स्वरूपा (समय स्वरूपा)। हर्ष (आनन्द) एवं ज्ञान को देने वाली। ह+उ = हो, ह का अर्थ है हर्ष एवं उ का अर्थ ज्ञान है। राति का अर्थ है देती है।

927. **होत्री** – हवन करने वाली। यजमान स्वरूपिणी। (व्यक्ति के अन्दर की शक्ति ही सब करती है, शक्ति देवी है, देवी भूत्वा देवं यजेत्। न्यास में देवता को बुलाकर देवता शरीर में प्रविष्ट होता है, यज्ञ करने वाला देवता हो जाता है। जिससे व्यक्ति द्वारा हवन करना देवी/देवता के द्वारा हवन करना हो जाता है, इस प्रकार व्यक्ति और देवी देवता दोनों यजमान हो जाते हैं।

928. **होलिका** – बुराइयों को जलाने वाली। अग्निरोध (fireproof), होलिका को fireproof कहते हैं और वह प्रह्लाद को लेकर बैठ गई थी। सभी चर अचर प्राणियों में नवजीवन का संचार करने वाली। होलिका अर्थात बसन्तोत्सव, बसन्त काल की पूर्णिमा तत्स्वरूपा। बसन्त में नये जीवन का संचार होता है।

929. **होमा** – यज्ञ स्वरूपा, हवन स्वरूपिणी। आहुति देने का कर्म स्वरूपा। हर्ष एवं ज्ञान को मापने वाली। हर्ष एवं ज्ञान का निर्माण करने वाली। ह+उ = हो। ह का अर्थ है हर्ष एवं उ का अर्थ है ज्ञान। माति का अर्थ होता है मापन करना, निर्माण करना। एकाक्षरी कोष से हो, ह, उ इनके अर्थ लेकर इस शब्द के बहुत से अर्थ किये जा सकते है।

930. **होमहविष्** – देव यज्ञ की सामग्री या द्रव्य स्वरूपा। होम देवता के लिए ही होता है अर्थात देवता के लिए किया जाने वाला यज्ञ होम है। दी हुई आहूति स्वरूपा। होम के लिए जो हविष् (सामग्री) प्रस्तुत की जाती तत् स्वरूपा। घी या आज्य होमहविष् का भाग है। वह द्रव्य जिसकी देवता के निमित्त आहुति दी जाती है तत्स्वरूपा।

931. **हविष्** – किसी भी यज्ञ के लिए जो सामग्री अर्पित की जाती है वह हविष् है। अतिथि यज्ञ में अतिथियों के लिए जो खाना पकाया जाता है वह भी हविष् कहलाया जायेगा। होमहविष् और हविष् में अन्तर यह है कि होम का सम्बन्ध केवल देवता से है, जब कि हविष् सभी यज्ञों के लिए है। हवि द्रव्यस्वरूपिणी अर्थात वह सामग्री जिसकी आहूति दी जाती है। आज्यचरू आदि। श्रेष्ठ (अच्छा) हवन सामग्री रूपा। ज्ञान यज्ञ के सन्दर्भ में ज्ञान स्वरूपा।

932. **हरिणी** – पापों का हरण करने वाली (भक्तों के पापों का)। हरि की तरफ ले जाने वाली। हरिम् नयति इति हरिणी। हिरणी की तरह शीघ्र गति वाली, चंचल, सुन्दर। मृगनयनी। हरित वर्ण वाली, हल्दी जैसी आभा वाली, पृथ्वी। हरि अर्थात भगवान विष्णु की पत्नी से अभेद है जिनका। मृग चर्म को ओढ़ने या बिछाने वाली। भगवान विष्णु के कार्यों में लगाने वाली या स्वयं भगवान विष्णु के कार्य में लगने वाली।

933. **हरिणीनेत्रा** – मृगी की तरह चंचल नेत्रों वाली। उनके नेत्र सजल होते हैं, शुष्क नहीं। हरिणी के नेत्रों की तरह नेत्र वाली अर्थात चंचल नेत्र वाली।

934. **हिमाचलनिवासिनी** – हिमाचल में निवास करने वाली। हिमालय की पुत्री है पार्वती। हिमाचल अर्थात हिम (बर्फ) से बना अचल (पर्वत) अर्थात हिमालय।

935. **लम्बोदरी** – विशाल उदर वाली क्योंकि सारा ब्रह्माण्ड उनके उदर में समाया है।

936. **लम्बकर्णा** – दीर्घ कानों वाली अर्थात भक्त की आवाज दूर से सुन लेती हैं। भक्त धीरे से भी बोलता है या मानसिक रूप से जप करता है सुन लेती हैं। जिनके कान लम्बे होते हैं, वे भाग्यशाली माने जाते हैं। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ भाग्यशाली।

937. **लम्बिका** – लटकने वाली अर्थात झुकने वाली। मनोरथ पूरा करने रूपी फल से लदी हुई। फल लदे होने पर वृक्ष की डालियाँ लटक जाती है अर्थात झुक जाती हैं। लटकने वाली तस्वीरों के रूप में रहने वाली। लम्बिका का शाब्दिक अर्थ है लटकने वाली। 19 वर्षों तक लटके रहे शनि के शक्ति के स्वरूप में है जो। शिव जी ने दण्ड देने के लिए शनि को लटका दिया था और वे 19 वर्ष तक इसी अवस्था में शिव जी की आराधना करते रहे। लटके हुए त्रिशंकु की शक्ति स्वरूपा। शब्द कल्पद्रुम में लम्बिका का अर्थ सुधा धारा भी किया गया है। इस प्रकार लम्बिका का अर्थ हुआ अमृत बरसाने वाली। संसार की आलम्बन अर्थात जिस पर सारा संसार आलम्बित है। गले में तालु स्थान पर लटकता हुआ मांस होता है जिसे कौआ बोलते है उस कौआ को लम्बिका कहा गया है। इस स्थान में भी शक्तिरूप में विराजमान।

938. **लम्बविग्रहा** – लम्बे शरीर वाली अर्थात लम्बे कद वाली। विशाल शरीर वाली।

939. **लीला** – क्रीड़ा स्वरूपा। स्वेच्छा से किया जाने वाला अभिनय स्वरूपा। वह व्यापार जो चित्त की उमंग से केवल मनोरंजन के लिए किया जाता है, लीला कहलाती है। लीला का अर्थ रहस्यपूर्ण व्यापार या विचित्र काम स्वरूपा कर सकते हैं। लीला में कर्म करने का अभिमान अर्थात कर्तृत्व भाव नहीं होता एवं स्वयं सुख प्राप्त करने की इच्छा नहीं होती तथा दूसरों को सुख देना ही अभीष्ट होता है। (लीला का उद्देश्य जगत का भला करना, जगत को सिखाना ही होता है और वह अपने शुभ संकल्पों से ही प्रेरित होता है, अतः लीला में कोई पाप पुण्य नहीं लगते। लीला अर्थात बेहद आसानी से, बायें हाथ के खेल की तरह करना। स्वयं में पूर्ण के द्वारा ही लीला हो सकती है। दूसरे का भला हो या दूसरे को कुछ प्रेरणा दी जाए या कुछ शिक्षा दी जाए, इस हेतु सक्षम व्यक्ति द्वारा किया गया कृत्य जिसमें जरा भी परिश्रम न हो एवं कर्तृत्व भाव न हो, ऐसा कृत्य लीला कहलाती है। भगवान ही लीला कर सकता है और लीला सुनकर या देखकर प्रसन्नता या आनन्द की अनुभूति भी होती है। क्रीड़ा में भले ही मनोरंजन हो पर कुछ परिश्रम होता है। लीला में घटना घटित होने के कारण को ईश्वर के अलावा कोई नहीं जानता अर्थात ऐसा कैसे हो गया, इसका रहस्य अज्ञात रहता है। क्रीड़ा में खेल के नियम सभी को पता होते हैं और इस कारण घटित घटनाओं के पीछे का कारण भी लोगों को पता रहता है। यह लीला और क्रीड़ा में अन्तर है।)

940. **लीलावती** – लीलायुक्त अर्थात लीला करने वाली। लीलाओं को करने वाली। भगवान लीला करते हैं क्योंकि उन्हें पाने के लिए कुछ भी चेष्टा नहीं करना पड़ती है। लीला तो दूसरों को कुछ देने के लिए होती है। लीला में अपने को सुख पाना उद्देश्य नहीं होता बल्कि दूसरें को सुखी करना उद्देश्य होता है। ईश्वर के कर्म लीला हैं, अतः उसमें कर्म दोष नहीं लगता।

941. **लोला** – चंचला। लक्ष्मी चंचल होती है। चंचल स्वरूपा। देवी सामान्यतः शान्त होती है पर अत्याचार की बात सुनते ही दुष्टों का विनाश करने के लिए उतावली हो जाती हैं।

942. **ललना** – जो अपने रूप से, गुणों से विलसित/सुशोभित होती है। लल् विलासे धातु में युच् प्रत्यय लगाने से या लल् ईप्सायाम् धातु में युच् प्रत्यय लगाने से ललना शब्द बनता है। अपनी कोमलता, कौतूहल प्रधानता, क्रीड़ाशीलता, प्रसन्नता आदि गुणों की धारक नारी ललना कहलाती है। श्रेष्ठ महिला स्वरूपिणी। स्त्रियों में सर्वाधिक सुन्दरी (ललना=सामान्य स्त्री)। दुलारी स्त्री जिससे सभी प्रेम पूर्वक व्यवहार करते हैं ललना होती है। विलासिनी महिला के रूप में। लड् विलासे धातु होती है। विलास का एक अर्थ सुन्दर क्रिया करना होता है। संसार की उत्पत्ति, पालन, संहार देवी के विलास है। ललति ईप्सति कामान् इति ललना। जो शिव की इच्छा करती है। जो अच्छी इच्छाओं (भक्त का कल्याण, धर्म की जय आदि) की चाहना रखती है। ललना का अर्थ जिह्वा भी होता है। एक नियम है कि शब्द के आगे ''में विराजमान'' लगाने से भी शब्द का अन्य अर्थ निकल आता है। जिह्वा में विराजमान अर्थात वाक् शक्ति स्वरूपा।

943. **ललिता** – कोमल सुन्दरता वाली। उत्साह से भरी हुई क्रीड़ा करने वाली सुन्दर महिला। माधुर्य युक्त सुन्दरता वाली। लालित्य ज्यादा है या कोमलता युक्त सुन्दरता वाली। (नये पत्ते में जैसी चिकनाहट होती) सुन्दर महिला जो मन को आकर्षित करे। ललित अर्थात अनुपम सुन्दरता। अनुपम सुन्दरता वाली।

944. **लता** – लता की तरह सर्वत्र फैली हुई अर्थात सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त। ब्रह्माण्ड के लिए लता स्वरूपा। लता में ही फूल लगते हैं। सूर्य, चन्द्रमा, ग्रह, तारे, देवी रूपी लता में लदे हुए फल हैं। लता की तरह अर्थात लता की तरह सारे संसार को अपने में लपेटे हुए। लता वृक्ष को लपेट लेती है। सारा संसार देवी के भीतर है।

945. **ललामलोचना** – सुन्दर आँखों वाली। सुन्दर नेत्रों वाली।

946. **लोभ्या** – जिसे लालच की दृष्टि से देखा जाता है अर्थात मुझे मिल जाए, मुझे इनकी कृपा मिल जाए, इस भाव से देखा जाता है। attractive. जिसे देखकर लोभ आता है अर्थात प्राप्त करने का लालच आता है अर्थात सुन्दर। लोभनीय अंगों वाली अर्थात आकर्षक व्यक्तित्व वाली। सत्य ओर ज्ञान के लिए लोभ रखने वाली (लोभ से युक्त लोभ्य)।

947. **लोलाक्षी** – चंचल नेत्रों वाली।

948. **लकुला** – निरुपाधिक माया स्वरूपा। कु का अर्थ है पृथ्वी। कुल अर्थात पृथ्वी (ब्रह्माण्ड) जिसमें लीन होता हो अर्थात सोपाधिक माया। कुल (सोपाधिक माया) जिसमें लीन हो वह है लकुल। सोपाधिक माया निरुपाधिक माया में लीन होती है इसलिए लकुल का अर्थ हुआ निरुपाधिक माया। इन्द्र के कुल वाली। इन्द्र हुआ है कुल में जिसके अर्थात कश्यप या अदिति स्वरूपा। ल का अर्थ है पृथ्वी और कुल का अर्थ है समूह। समूह जैसे – गाणपत्य सम्प्रदाय, शैव सम्प्रदाय, शाक्त सम्प्रदाय आदि। आगम ग्रन्थों के अनुसार लकुला का अर्थ स्वाधिष्ठान चक्र एवं मणिपुर चक्र में रहने वाली शक्ति है। पृथ्वी तत्व अर्थात कु जिसमें लीन हो वह है कुल अर्थात मूलाधार चक्र। मूलाधार चक्र जिसमें लीन हो वह है लकुल अर्थात स्वाधिष्ठान चक्र। इस प्रकार लकुला का अर्थ हुआ स्वाधिष्ठान चक्र की अधिष्ठात्री देवीं।

949. **लया** – लय क्रिया स्वरूपा। लय क्रिया में निहित शक्ति स्वरूपा। संसार का लय करने वाली। लय+आ, आ का एक अर्थ है देना। संसार को लय देने वाली अर्थात संसार का लय करने वाली। चित्तवृत्ति का लय करने वाली।

950. **लपत्नी** – इन्द्र की पत्नी इन्द्राणी स्वरूपा या इन्द्राणी से अभेद है जिनका। पृथ्वी की रक्षा करने वाली। ल का अर्थ पृथ्वी, इन्द्र होता है। पति का अर्थ रक्षा करने वाला होता है अतः पत्नी का अर्थ भी रक्षा करने वाली ले लिया गया। (यदि लपन्ती नाम है तो अर्थ होगा – बोलती हुई अर्थात जो बोल रही हैं अर्थात बोलने वाली देवी स्वरूपा। जैसे – जब देवी ने कहा कि देवताओं वर माँगों, तब देवी लपन्ती कहलाई जायेंगी अर्थात बोलती हुई कहलाई जायेंगी। यहाँ बोलने वाली देवी हैं अर्थात इन्द्रियों के पीछे जो चैतन्य शक्ति है जिससे इन्द्रियां काम करती हैं, इससे तात्पर्य है। जिह्वा के पीछे जो शक्ति बुलवा रही है, उससे तात्पर्य है। लप् धातु का अर्थ बोलना। उच्च कोटि का ज्ञान/विद्या का प्रवचन करती हुई अर्थात करने वाली)।

951. **लपती** – अच्छा बोलने वाले भक्तों की संख्या में विस्तार करने वाली। लप+ती। लपति इति लपः (बोलने वाला)। तन् धातु का अर्थ है विस्तार करना। इस धातु में ड प्रत्यय लगाने से त शब्द बना जिसका अर्थ है विस्तार करने वाला। स्त्रीलिंग में ती हो गया। बोलती हुई इन्द्रियस्वरूपा अर्थात जिह्वा स्वरूपा। बोलने वाली जिह्वा इन्द्रिय स्वरूपा। लपन्ती और लपती दोनों का एक ही अर्थ होता है बोलती हुई पर दोनों में कुछ अन्तर दिखाना है, इसलिए लपन्ती का अर्थ किया गया वह शक्ति जो जीभ से बुलवा रही है और लपती का अर्थ किया गया जीभ। संस्कृत में नियम है कि कभी–कभी प्रेरणार्थक धातु शुद्ध धातु की तरह अर्थ दे देते हैं और शुद्ध धातु प्रेरणार्थक धातु का अर्थ दे देते हैं, जैसे–धुलवाना (प्रेरणार्थक) और धोना (शुद्ध धातु) में अन्तर है पर कभी – कभी धुलवाना वाली धातु धोने का अर्थ दे देती है। इस नियम के अनुसार लापती शब्द लपती का अर्थ दे सकता है। लापती का अर्थ है बुलवाने वाली। अतः लपती का अर्थ बुलवाने वाली कर सकते हैं। गूँगों को बुलवाने वाली अर्थात वाणी देने वाली। लापयति इति लपती। लपति इति लपती भी बन सकता है तब अर्थ होगा बोलने वाली। यहाँ भी इसका अर्थ बोलने वाली की जगह बुलवाने वाली कर सकते हैं क्योंकि कभी–कभी बिना ण्यन्त के ण्यन्त जैसा अर्थ निकलता है। बोलती है जो। जो शक्ति ज्ञान/विद्या का प्रवचन कर बोलती है। लपति जल्पति विद्यां ज्ञान शास्त्र या सा, ज्ञानवती। भक्तों को वाग्वैदग्ध्य देने वाली अर्थात अच्छा बोलने की क्षमता बढ़ाने वाली। लप् धातु में अप् प्रत्यय

लगाने से भाव में लप शब्द बनेगा जिसका अर्थ कहना या कथन करना है। तन् धातु में ड प्रत्यय लगाने से त शब्द बनेगा जिसका अर्थ विस्तार करने वाला, देने वाला, निर्माण करने वाला है। स्त्रीलिंग में त का ती या ता होता है।

952. **लम्पा** – पृथ्वी का पालन (रक्षा) करने वाली। लम् बीज पृथ्वी के लिए प्रयुक्त होता है। आदर को पीती है अर्थात ग्रहण करती हैं अर्थात आदर से प्रसन्न होने वाली। एकाक्षरी कोश के अनुसार लम् का अर्थ दया, आदर, लक्ष्मी, दान, लीला, कुश होता है। पा पिबति, पा पाति, पा प्रीणति। आदर से प्रसन्न होने वाली। दान की रक्षा करने वाली। लक्ष्मी की रक्षा करने वाली, विलास (शोभा) की रक्षा करने वाली अर्थात शोभायमान चरित्र वाली। विलास का अर्थ है सुन्दर चरित्र या मनमोहक चरित्र करना।

953. **लोपामुद्रा** – धर्म का लोप होने पर जो अप्रसन्न (अमुद्र) हो जाती हैं। जिसने नाम रूप का त्याग कर दिया अर्थात नाम रूप रहित (प्रलयकाल में)। संसार के नाम रूप जिसके लिए समाप्त हो गये हैं, उनका कोई असर नहीं पड़ता। जो लौकिक सभी प्रकार की स्थितियों/आकांक्षाओं से परे है। मुद्रा (अर्थात स्थितियाँ, संसार के कार्य विकार) जिनके लिये समाप्त हो गयी हैं। (लोपा = समाप्त होना)। प्रकृति के विभिन्न उत्कृष्ट पदार्थों का हवन (लोप) करने के बाद जिनके शरीर (मुद्रा) का निर्माण हुआ है। जिन्होंने सभी सुन्दरियों की सुन्दरता का लोप कर उन्हें मुद्रित कर दिया है अर्थात उनका मुँह बन्द कर दिया है, इतनी सुन्दर। समस्त सुन्दर स्त्रियों की सुन्दरता को जिसने मुद्रित कर दिया अर्थात दबा दिया।

954. **ललन्तिका** – गले में पहनने वाले आभूषण की तरह सुन्दर (ललन्तिका आभूषण का नाम है), गतिशील या विलासवती।

955. **लतिका** – संसार की लता स्वरूपा। यह वो बेल है जिसमें नक्षत्र, पृथ्वी, तारे रूपी फल लगते हैं। लतिका से फलों का जन्म होता है अतः पूरे ब्रह्माण्ड की जननी। लता के समान सुशोभित होने वाली। (अर्थात फैलने वाली, लता फैलती है, सारे संसार में व्याप्त है)। विश्वरूपी वृक्ष को लपेटे हुए। लता वृक्ष को लपेट लेती है।

956. **लंघिनी** – लंघन करने वाली अर्थात छोटा बनाने वाली। अभिमानियों को छोटा बनाने वाली। जिन्हें किसी भी चीज का अभिमान है, जैसे – सौन्दर्य का, शक्ति का, सम्बन्धों का उनके अभिमान को छोटा बना देती हैं। अवमानिनी। बुराइयों को छोड़कर आगे बढ़ने वाली अर्थात विश्वातीत। किसी को छोड़कर आगे बढ़ने को लांघना कहते हैं। लांघने के स्वरूप वाली। प्राकृतिक शक्तियों का उल्लंघन करने वाली अर्थात प्राकृतिक शक्तियों का नियम इन पर लागू नहीं होता है। अग्नि इन्हे जला नहीं सकती, समुद्र डुबो नहीं सकता, ये चट्टान के भीतर भी प्रवेश कर सकती है। बुराई का स्पर्श न करते हुए आगे बढ़ जाने वाली अर्थात अपने कार्य में लगी रहने वाली। भक्तों को संसार सागर से पार करा देने वाली। लघु का अर्थ शीघ्र भी होता है, शीघ्र गति वाली।

957. **लंघा** – अपने सच्चे भक्त के लिए नियमों का भी अतिक्रमण करने वाली। भगवान शिव ने मार्कण्डेय जी की आयु बढ़ा दी, भगवान कृष्ण ने गर्भ में परीक्षित को जीवित कर दिया, अपने भक्त का मान बढाने के लिए अपनी प्रतिज्ञा का उल्लंघन करते हुए भीष्म के विरूद्ध आयुध उठा लिये। इन देवताओं द्वारा किया गया कार्य वास्तव में शक्ति द्वारा किया गया कार्य होता है। पुल या सेतु स्वरूपा अर्थात भक्तों को संसार सागर से पार कराने वाली। जो सभी से आगे निकल गयी हैं अर्थात सौन्दर्य, बल, शक्ति आदि में सभी से आगे निकल गयी हैं। राक्षसों का विनाश करने वाली। लम् घातयति इति लंघा। एकाक्षरी कोश में लम् का अर्थ राक्षस भी होता है। जिसके द्वारा समस्त विकारों का अतिकमण (लांघना) किया गया है। लंघ्यते समस्त विकाराः अनया।

958. **लालिमा** – सौन्दर्य से युक्त। संस्कृत में लड् विलासे धातु होती है जिसमें पहले घञ् प्रत्यय एवं बाद में इमनिच् प्रत्यय लगाने से लालिमा शब्द बनता है। विलास का अर्थ है सौन्दर्य। इस प्रकार लालिमा का अर्थ हुआ जो सौन्दर्य से युक्त है। ललाई या अरूणता से युक्त अर्थात् उनके शरीर में ललाई (लाल रंग) छाया हुआ है।

संस्कृत के शब्द कोष में यह शब्द नही मिलता है किन्तु हिन्दी के शब्द कोष में यह शब्द मिलता है जहाँ पर लिखा गया है कि यह शब्द संस्कृत से लिया गया है। लालिमा अस्या अस्ति इति लालिमा (ललाई से युक्त)। लड् धातु में घञ् प्रत्यय लगाने से लाड शब्द बनेगा, फिर इमनिच् प्रत्यय लगाया, उसके बाद स्त्रीलिंग में टाप् प्रत्यय लगाना पड़ेगा। प्राप्त करने की इच्छा स्वरूपा। लल् धातु से इमनिच प्रत्यय लगाने से यह शब्द बनता है। लल् का अर्थ है इच्छा करना। हिन्दी में लालिमा शब्द मिलता है पर संस्कृत के शब्दकोषों में नहीं है। अरुण वर्ण स्वरूपा। अतिशय सुन्दर। लालिमा सुन्दर का उपलक्षण है। शारीरिक सुन्दरता, इन्द्रियों को सुख दे उससे मतलब है (वामा भी सुन्दरी है जो शरीर के साथ गुणों से भी सुन्दर है, शत्रुओं को नष्ट कर देती है।)

959. **लघुमध्यमा** – पतले मध्य भाग वाली अर्थात पतली कमर वाली। लघु अर्थात छोटा अर्थात पतला। अवस्था में तो लघु है फिर भी युवती सी लगती हैं।

960. **लघीयसी** – बहुत स्फूर्ति वाली, जिसे हम smart कहते हैं। तेज काम करने वाली, जल्दी – जल्दी काम निपटाने वाली। रघु = लघु अर्थात तीव्र। अतिशय लघु रूप में स्थित। आवश्यकतानुसार इस रूप में हो जाती है। लघु अर्थात छोटा। कठोपनिषद् के अनुसार अणोरणीयान स्वरूप वाली।

961. **लघूदरी** – पतले पेट वाली या पतले कमर वाली। पतला (कृश) उदर (पेट) है जिसका = सुन्दर उदर (पेट) वाली।

962. **लूता** – मकड़ी के समान विश्व का निमित्त और उपादान कारण स्वरूपा। संसार की मकड़ी। लूता का अर्थ है मकड़ी, जो अपने से ही जाल निकालती है अर्थात सामग्री के लिए दूसरे पर निर्भर नहीं है। मकड़ी के समान संसार की सृष्टि और उपसंहार करती (मकड़ी का जाला पैदा और नष्ट होता है)। भूमि का विस्तार करने वाली। रूद्र का विस्तार करने वाली अर्थात् समृद्ध बनाने वाली। इन्द्र का विस्तार करने वाली। एकाक्षरी कोष में लू का अर्थ रूद्र, इन्द्र, छेदन, गरूड़, भूमि दिया गया है। तन् धातु में ड प्रत्यय लगाने से त शब्द बनेगा जिसका अर्थ है विस्तार करने वाला, देने वाला, निर्माण करने वाला।

963. **लूताविनाशिनी** – लूता नामक रोग दूर करने वाली। मकड़ी का रोग नष्ट करने वाली। लूता नामक बीमारी में फफोले की तरह फुंसी हो जाती है जो मकड़ी के द्वारा पेशाब करने से होती है।

964. **लोमशा** – शरीर में बहुत सारे बाल है जिसके। लोम का अर्थ है रोम। श मतुप अर्थ में अर्थात युक्त अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। सुन्दर लोमों (अर्थात रोमों) से शोभायमान।

965. **लोमलम्बी** – लम्बे बालों वाली। जिसकी जटाएं लटकी रहती हैं। लोमानि लम्बन्ते अस्या सा लोमलम्बी। लम्बे केशों वाली। विशाल रोम (लोम) से युक्त। लोमों के कारण लम्बी दिखने वाली।

966. **लुलन्ती** – झूलने वाली (पेण्डुलम की तरह)। निरन्तर स्पन्दनशील। पेण्डुलम कभी स्थिर नहीं रहता।

967. **लुलम्पती** – चलायमान गति या क्रिया स्वरूपा। लुल् धातु का अर्थ आन्दोलित होना या चलायमान होना है। चंचल स्वरूपा (भगवती का चंचल स्वरूप)। पतः से पती बना। पतृ गतौ धातु से पतः बनेगा। यदि लुलुम्पती शब्द है तो अर्थ होगा पृथ्वी का लोप करने वाली अर्थात नष्ट करने वाली अर्थात प्रलय काल में पृथ्वी का भी अस्तित्व समाप्त करने वाली। एकाक्षरी कोश में लु का अर्थ भू अर्थात पृथ्वी दिया गया है। लुप् धातु का शतृ प्रत्यय में स्त्रीलिंग में लुम्पती शब्द बनता है जिसका अर्थ होता है लोप या नष्ट करने वाली। बार – बार संसार का लोप करने वाली। लुपि धातु। यङ प्रत्यय लगाने से लोलुम्पती शब्द बनता है जिसका अर्थ है बार – बार संसार का लोप करने वाली। ऐसा कहा गया है कि किसी शब्द का अर्थ निकालने के लिए व्याकरण के नियम शतशः लागू हो आवश्यक नहीं है। लुलुम्पती का अर्थ वह ले सकते हैं जो लोलुम्पती का है। इस प्रकार लुलम्पती

शब्द का अर्थ होगा बार – बार लोप करने वाली अर्थात संसार का बार बार अर्थात निरन्तर संहार करने वाली। पतृ गतौ से पती का अर्थ गति करने वाली या क्रिया करने वाली कर सकते हैं।

968. **लुलायस्था** – यमराज की शक्ति अर्थात मृत्यु की या धर्म की शक्ति स्वरूपा। भैंसे पर विराजमान होने के कारण लुलायस्थ का अर्थ है यमराज। यमराज को धर्मराज भी कहा जाता है। लुलाय का अर्थ है भैंसा। भैंसे पर विराजमान। चलायमान अर्थात चंचल गति में स्थित। लुल् का अर्थ है चंचल होना और अय् गतौ धातु होती है। झूमते या हिलते हुए, गति करने वालों में शक्ति रूप से स्थित जैसे – झूलते हुए पेड़ में रहने वाली शक्ति। भगवान की करवट में स्थित। करवट बदलना अर्थात लय क्रिया। लय में स्थित अर्थात लय इसी से होता है। बारम्बार होने वाली लय क्रिया में स्थित। लुल् + यङ् + लाम्। लुल् + णिच् लुलाय, लुल् का अर्थ है लोटना या करवट बदलना। भैंस पर स्थित। मिलजुलकर रहने वाले एवं अपनी शक्ति का दुरुपयोग न करने वाले लोगों में प्रकट या जाग्रत रूप से रहने वाली। तात्पर्य है अपना प्रभाव भी दिखा रही है। लुलाय शब्द का अर्थ है भैंस। भैंस का गुण है कि वह झुण्ड में रहती है तथा यदि कोई शिकारी जानवर किसी एक भैंस पर हमला करे तो बाकी भैंस उसे बचाती है तथा शिकारी जानवर पर हमला करती है। शक्तिशाली होते हुए भी भैंस या भैंसा शान्त होता है किसी को तंग नही करता। भैंस काले रंग की होती है जिसका तात्पर्य है तमोगुण। काला रंग सभी रंगों को अपने में शोषित कर लेता है। ऐसे व्यक्ति जो सभी को अपना लेते है, उनमें विशेष रूप से रहने वाली। तमोगुण में भी रहने वाली। देवी सर्वत्र व्याप्त है।

969. **बलहरी** – शत्रुओं के बल का हरण करने वाली। बल नामक दैत्य का हरण करने वाली।

970. **लंकापुरपुरन्दरा** – लंका नामक पुर की इन्द्राणी अर्थात लंकेश्वरी अर्थात रानी। लंकापुर का भेदन करने वाली। लंकापुर की भी इन्द्र (अर्थात स्वामिनी/ अधिकार क्षेत्र वाली/मालकिन, लंकापुर की ऐश्वर्य/विभूति की स्वामिनी)। भक्त के हृदय की मालकिन। आगम ग्रन्थ में हृदय को लंका कहा गया है। मूलाधार चक्र भी लंका है क्योंकि लम् पृथ्वी बीज है। मूलाधार चक्र को भेदने वाली शक्ति स्वरूपा।

971. **लक्ष्मी** – लक्ष्म अर्थात शुभ चिन्हों से युक्त। ज्ञान, ऐश्वर्य, सुख, आरोग्य, धन, धान्य, जय आदि शुभ चिन्ह हैं। लक्ष्म (शुभ चिन्हों) से युक्त। जगत के प्रत्येक कृत्य (पाप, पुण्य) देखने वाली। प्राणियों का लक्ष्य स्वरूपा अर्थात सभी प्राणी जिसे प्राप्त करना चाहते हैं। सभी वस्तुओं में विद्यमान पहचान चिन्ह के स्वरूप वाली। लक्ष्मी का अर्थ है शोभा और प्रत्येक वस्तु का जो पहचान चिन्ह होता है, वही उसकी शोभा है। सभी मनुष्यों के कर्मों को देखने वाली अर्थात उसके अनुसार भविष्य में फल देने वाली। लक्षयति इति लक्ष्मी।

972. **लक्ष्मीप्रदा** – लक्ष्मी अर्थात धन प्रदान करने वाली। अष्ट लक्ष्मी अर्थात् धन, धान्य, गज (पशु), सन्तान, वीरता, विद्या, विजय और मोक्ष देने वाली। आदि लक्ष्मी अर्थात लक्ष्मी का आदि स्वरूप मोक्ष देने का काम करती हैं।

973. **लभ्या** – प्राप्तव्या अर्थात इन्हीं को पाना सबका लक्ष्य है। भक्त को ही सुलभ/ प्राप्त होने वाली। सुपात्रों के द्वारा प्राप्त किये जाने योग्य।

974. **लाक्षाक्षी** – लाख की तरह लाल वर्ण की आँखों वाली। महावर की तरह लाल आँखों वाली। वामन आप्टे कोश में लाक्षा का अर्थ महावर दिया है। हिन्दी में लाक्षारस का अर्थ महावर होता है।

975. **लुलितप्रभा** – आन्दोलित कान्ति वाली अर्थात झूलती हुई कान्ति वाली। ऐसा लगता है कान्ति झूल सी रही है या आ जा रही है। जिसकी देहकान्ति लोटती हुई सी है अर्थात चारों तरफ लोट रही है अर्थात फैल रही है। चंचल कान्ति वाली। (हर क्षण उनकी कान्ति परिवर्तित जैसी लगेगी, जिससे रमणीयता, आकर्षण बढ़ जाता है)। फैलने वाले प्रकाश से युक्त अर्थात उनका भौतिक प्रकाश या ज्ञान का प्रकाश चारों ओर फैल रहा है। जैसे सूर्य का प्रकाश चारों ओर फैलता है।

976. **क्षणा** – कालांशस्वरूपिणी। समय स्वरूपा। उत्सव स्वरूपा। (लक्षणा से अर्थ निकला आनन्दस्वरूपा)। क्षिणोति दुखम् इति क्षणा अर्थात दुखों को नष्ट करने वाली। उत्सव देने वाली। क्षण् + आ, आ का एक अर्थ है देना, नाश करना। प्रसन्नता के अवसर देने वाली। वैदिक कोष में क्षण के कई अर्थ दिये गये है जैसे अल्पतम काल (एक सेकण्ड का 4/5 भाग), फुर्सत, विश्राम काल, उपयुक्त अवसर, सौभाग्य का समय, शुभकाल, शुभ समय, शुभ मुहूर्त, उत्सव, प्रसन्नता, निर्भरता, केन्द्र, मध्य बिन्दु।

977. **क्षणक्षुद्** – क्षणों को चूर चूर करने वाली। क्षण मिटते रहते हैं भूत काल में परिवर्तित कर देने वाली अर्थात हर क्षणों को भूतकाल में परिवर्तित कर देने वाली।

978. **क्षुत्क्षीणा** – भूख से कमजोर अर्थात दुबली पतली। धूमावती के ध्यान श्लोक में उनका स्वरूप इसी प्रकार बताया गया है। इच्छानुसार ऐसे स्वरूप को धारण करने वाली।

979. **क्षमा** – पृथ्वी स्वरूपा (यदि क्षमाक्षान्ति एक ही शब्द हो तो उसका अर्थ होगा क्षमावत् अर्थात पृथ्वी की तरह क्षमा गुण स्वभाव स्वरूपा)। क्षमा नामक गुण मानव का रूप धारण कर ले तो वही देवी हैं।

980. **क्षान्ति** – सहनशीलता या सहिष्णुता गुण स्वरूपा।

981. **क्षमावती** – क्षमा भाव से युक्त। क्षमा कर देने वाली (शत्रुओं को क्षमा कर देती है)। क्षमा गुण से युक्त।

982. **क्षामा** – दुबली पतली। सभी सुन्दर अंगों से युक्त। हर अंग जितनी माप का एवं जहाँ होना चाहिए वैसा ही है। ऐसा नहीं कि पेट ज्यादा निकला हो, नाक ज्यादा ऊँची हो। प्रत्येक अंग सुन्दरता लिये हो। एकाक्षरीकोश में क्षा का अर्थ पृथ्वी, क्षमा दिया गया है तथा मा का अर्थ लक्ष्मी या धन दिया गया है। इस प्रकार क्षामा का अर्थ पृथ्वी की लक्ष्मी (धन–सम्पदा, शोभा) स्वरूपा। क्षमा रूपी धन स्वरूपा। क्षाम् माति इति क्षामा अर्थात पृथ्वी को मापने वाली अर्थात उसे सीमित करने वाली अर्थात उसकी लम्बाई, चौड़ाई, गोलाई, मोटाई आदि का सीमांकन कर सीमित कर देती है अर्थात उसे अनन्त नहीं बनने देती। क्षामा का अर्थ दग्ध या जला हुआ भी होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ तपस्या के द्वारा जिसने अपने आपको तपाया है। क्षामा + आ, आ का एक अर्थ है नाश करना, देना। अन्धकार का नाश करने वाली। अज्ञान रूपी अन्धकार का नाश करने वाली। भूमि को देने वाली। आकाश और भूमि को देने वाली अर्थात् उसको अस्तित्व में लाने वाली। वैदिक कोष में क्षामा के अर्थ दिये गये है – अन्धकार, विनाशकारिणी नीच प्रवृत्ति, भूमि, आकाश और भूमि।

983. **क्षामोदरी** – पतले पेट वाली। पेट आगे न निकला हो जिसका। यह नाम लम्बोदरी का विपरीत है। अत्यन्त पतले पेट वाली।

984. **क्षेम्या** – प्राप्त होने पर रक्षा करने योग्य। अप्राप्त की प्राप्ति योग है तथा जो प्राप्त है उसकी रक्षा क्षेम है। क्षेम से युक्त।

985. **क्षौमभृत्** – रेशमी वस्त्र अर्थात सिल्क धारण करने वाली। रेशमी वस्त्र धारण किये हुए।

986. **क्षत्रियांगना** – भय से त्राण करने वाले शिव की पत्नी। क्षत् से त्राण करने वाले को क्षत्रिय कहते हैं अर्थात विष्णु और शिव क्षत्रिय हैं क्योंकि ये क्षत् अर्थात भय से रक्षा करते हैं। परमशौर्य से युक्त स्त्री स्वरूप धारण करने वाली। (क्षतात् त्रायते अर्थात क्षतियों यानि जो हानियों से रक्षा करता है वह क्षत्रिय है)।

987. **क्षया** – क्षय रोग का नाश करने वाली। क्षय + आ, आ का अर्थ है नाश करना। धीरे – धीरे क्रमशः घटने की क्रिया अर्थात क्षय क्रिया स्वरूपिणी। क्षय स्वरूपा। संसार उन्हीं का रूप है जो प्रलय काल में क्षय हो जाता है। प्रलय काल में क्षय स्वरूपा। सबको समेट कर स्थित होती है जो। (नोट – आ का अर्थ देना भी होता है और नाश करना भी होता है, मंगला अर्थात मंगल देने वाली, दुर्गा अर्थात दुर्ग (विपत्ति) का नाश करने वाली)।

सबके लिए निवास स्वरूपिणी अर्थात सभी प्राणी इसी में रहते है। क्षी निवासे धातु से क्षय का एक अर्थ निवास भी होता है। सारा ब्रह्माण्ड देवी के अन्दर है। अतः सभी पदार्थ देवी के भीतर ही रहते है। क्षय+आ, आ का एक अर्थ है नाश करना, देना, शक्ति। इस प्रकार क्षया का अर्थ हुआ भक्तों के नुकसान का नाश करने वाली। क्षय शक्ति स्वरूपा अर्थात क्षय करने वाली शक्ति स्वरूपा।

988. **क्षयंकरी** – संसार का क्षय करने वाली। संसार को क्षीण करने वाली। क्षीण होना या मुरझाना। समस्त पापों, अवगुणों, मायामोह में फंसाने वाले कार्यों, अविद्या का विनाश करने वाली। (यदि क्षायाकरी हो तो अर्थ होगा – भूमि पर गमन करने वाली या विचरण करने वाली। पृथ्वी पर अवतार लेकर शरीर से गमन करने वाली। गंगा स्वरूपा क्योंकि गंगा जी पृथ्वी पर एक स्थान से दूसरे स्थान में गमन करती है। एकाक्षरी कोष में क्षा का अर्थ भूमि, या का अर्थ गमन, लक्ष्मी (शोभा), त्याग दिया गया है। भूमि पर शोभा स्वरूपा। पेड़–पौधों, फूलों, नदियों, अन्य प्राकृतिक दृश्यों से सौन्दर्य स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। क्षी निवासे धातु से इसका अर्थ होगा निवास देने वाली। क्षय अर्थ में इस शब्द का अर्थ होगा क्षति देने वाली अर्थात् राक्षसों का नुकसान या नाश करने वाली। शासन करने वाली (ब्रह्माण्ड का))। क्षी धातु में णिच् प्रत्यय लगाने से क्षायी बना। क्षायी में अच् प्रत्यय लगाने से क्षाय बना क्षी धातु का अर्थ है राज्य या शासन करना। (यदि छायाकरी शब्द होता तो अर्थ होता तापहरण रूपी छाया करने वाली)।)। सबके लिए निवास उपलब्ध कराने वाली। क्षय का एक अर्थ है निवास।

989. **क्षीरा** – दूध के समान उज्जवल वर्ण वाली। क्षीर (अमृत तत्व, विद्या तत्व, ज्ञान) को धारण करने वाली। क्षीरः अस्या अस्ति इति क्षीरा। (आकारान्त शब्दों में धारण करने वाला अर्थ निकल आता है जैसे घण्टा अस्या अस्ति इति घण्टा अर्थात घण्टा धारण करने वाली)। क्षीर स्वरूपा। संसार को अपना दुग्ध तत्व प्रदान कर, संचालित करने वाली अतः क्षीर स्वरूपा।

990. **क्षीरदा** – दूध देने वाली अर्थात पौष्टिकता देने वाली। क्षीर से उपलक्षित सभी पदार्थ जैसे दुग्ध दही घी सभी कुछ देने वाली। अमृत देने वाली। ज्ञानामृत, पराविद्या, मोक्ष देने वाली।

991. **क्षीरसागरा** – स्वयं क्षीर (दूध, पानी) की समुद्र हैं अर्थात बहुत विशाल हैं। क्षीरसागर वाली अर्थात क्षीरसागर में निवास करने वाली। क्षीरसागरम् अस्या सा।

992. **क्षेमंकरी** – योगस्थ (अर्थात प्राप्त) वस्तु की रक्षा करने वाली। सभी प्रकार के कल्याण करने वाली।

993. **क्षयकरी** – मकान या आवास करने वाली अर्थात देने वाली। क्षय का एक अर्थ आवास भी होता है। क्षय करने वाली अर्थात समस्त अविद्याओं को, संसार को अपने में समेट लेने वाली जैसे मकड़ी जाले को समेट लेती है। (यदि क्षयंकरी नाम है तो अर्थ है नाश करने वाली।) संसार का क्षय (अन्त या नाश) करने वाली। आयु पूरी होने पर जड़ या चेतन पदार्थो को समाप्त करने वाली। निवास करने वाली अर्थात् भक्तों को श्रेष्ठ निवास या घर देने वाली। क्षय का अर्थ निवास होता है। वैदिक कोष में क्षय का अर्थ निवास, ऐश्वर्य, रोगनाशक सामर्थ्य, व्यवहार, पृथ्वी दिया गया है। पृथ्वी का निर्माण करने वाली।

994. **क्षयकृत्** – दुष्टों/अधर्मियों की हानि या नुकसान करने वाली। शब्द के अन्त में लगे कृत् शब्द का अर्थ करने वाला होता है। कृती छेदने धातु से इसका अर्थ छेदन करने वाला भी होता है। क्षय रोग का नाश करने वाली। जो नाश कर चुकी हैं। पहले कई बार सृष्टि का नाश कर चुकी हैं। नाश करने वाली अर्थात लय करने वाली। पापों/अवगुणों/दोषों को नष्ट कर देने वाली। ऐश्वर्य को करने वाली अर्थात् अपने भक्तों को ऐश्वर्य देने वाली। वैदिक कोष में क्षय का अर्थ निवास, ऐश्वर्य, रोगनाशक सामर्थ्य, व्यवहार, पृथ्वी दिया गया है। पृथ्वी का निर्माण करने वाली।

995. **क्षणदा** – रात्रिस्वरूपिणी। उत्सव, उल्लास, आनन्द देने वाली। क्षणम् का अर्थ आनन्द भी होता है। दुष्टों

के क्षण को अवखण्डित अर्थात नष्ट करने वाली। दो अवखण्डने धातु से बने दा शब्द का अर्थ नष्ट करने वाली होता है। प्रसन्नता या उत्सव देने वाली। सौभाग्य का समय, शुभ काल या उपयुक्त अवसर देने वाली। वैदिक कोष में क्षण के कई अर्थ दिये गये है जैसे अल्पतम काल (एक सेकण्ड का 4/5 भाग), फुर्सत, विश्राम काल, उपयुक्त अवसर, सौभाग्य का समय, शुभकाल, शुभ समय, शुभ मुहूर्त, उत्सव, प्रसन्नता, निर्भरता, केन्द्र, मध्य बिन्दु। दा ददाति से बने दा शब्द का अर्थ देने वाली एवं दो अवखण्डने धातु से दा शब्द बनाने पर दा शब्द का अर्थ नष्ट करने वाली होता है। इस प्रकार क्षणदा का अर्थ हुआ निर्भरता को समाप्त करने वाली अर्थात् अपने भक्त को आत्मनिर्भर बनाने वाली। क्षणु हिंसायाम् धातु में अच् प्रत्यय लगाने से बने क्षण शब्द का अर्थ हिंसा करने वाला होता है। क्षण् धातु का अर्थ खण्ड–खण्ड करना भी होता है।

996. **क्षती** – कटी हुई अर्थात छिन्नमस्ता स्वरूपा या छिन्नमस्ता से अभेद है जिनका। आपने क्षत – विक्षत शब्द सुना होगा। तट युक्त नदी स्वरूपा। धन की नदी स्वरूपा। एकाक्षरीकोश में क्ष का अर्थ तट, धन, क्षेम, राक्षस बताया गया है तथा ती का अर्थ नदी, जलधि, शोक बताया गया है। क्षत का अर्थ होता है व्रण। हानि स्वरूपिणी। व्रण (घाव), हानि को अस्तित्व देने वाली। क्षेम (कल्याण) की नदी या जलधि स्वरूपा। राक्षसों के लिए शोक स्वरूपा।

997. **क्षुद्रिका** – बहुत छोटी। अत्यन्त सूक्ष्म स्वरूप वाली। अत्यन्त छोटे स्वरूप वाली। सूक्ष्म स्वरूप वाली अर्थात जिसे इन्द्रियाँ न देख सके। वैदिक कोष में क्षुद्र एक सूक्त का नाम है जिसमें अति सूक्ष्म ब्रह्म का विवेचन किया गया है। उस ब्रह्म की शक्ति क्षुद्रिका हुई। अथर्व वेद में 19/22/6 ऋचा में लिखा है क्षुद्रेभ्यः स्वाहा। क्षुद्र के अन्य अर्थ है जल, छोटा, नीच। क्षुद् + रा = क्षुद्रा से क्षुद्रा का अर्थ क्षुधा अर्थात् भूख देने वाला जल भी होता है।

998. **क्षुद्रिकाक्षुद्रा** – छोटे से भी छोटी अर्थात सबसे छोटी अर्थात जिससे छोटा कुछ नहीं है। क्षुद्रिकासु क्षुद्रा। सूक्ष्मातिसूक्ष्म क्षुद्रिका से भी क्षुद्र/सूक्ष्म। अंग्रेजी का superlative degree। अतिशय सूक्ष्म रूप वाली (दिखाई नहीं देती, साधना भक्ति से पवित्रता आने पर अनुभव हो सकती है)। दुष्टों के लिए दुष्ट। क्षुद्र अर्थात निम्न अर्थात दुष्ट। नीच कर्म करने वालों के लिए क्रूर।

999. **क्षुत्क्षामा** – भूख से पतली जैसे धूमावती देवी। सभी प्रकार की क्षुधाओं को समाप्त करने में सक्षम। क्षमा का अर्थ है सक्षम या समर्थ। क्षुत् का अर्थ है सांसारिक भोगों की भूख, केवल रोटी – दाल नहीं बल्कि हर इन्द्रियों की भूख – भूख है या क्षुत् है। भूख से पीड़ित अर्थात भक्ति की प्यासी। छिन्नमस्ता देवी के साथ चलने वाली जया और विजया भूख से पीड़ित थीं, ये देवियाँ इड़ा और पिंगला नाड़ी की प्रतीक हैं। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ इड़ा और पिंगला नामक नाड़ी में शक्ति रूप से विराजमान।

1000. **क्षीणपातका** – जिसके पाप क्षीण हो चुके हों अर्थात पाप रहित। पाप रहित अर्थात विशुद्ध तुरीय चैतन्य। जिसके दर्शन होने पर सभी पाप नष्ट हो जाए। क्षीणानि पातकानि यस्याम् सा अर्थात जहाँ तक पहुँचने पर अर्थात प्राप्त होने पर अर्थात दर्शन करने पर पाप क्षीण हो जाएं। यस्याम् का अर्थ है जहाँ तक पहुँचने पर। जिसके सभी पाप नष्ट हो गए हैं, विशुद्ध तुरीय चैतन्य। पाप पुण्य कुछ भी नहीं है। क्षीण हो जाते हैं पाप जिसके द्वारा अर्थात पापों को नष्ट करने वाली।

श्री कमला जी

सहस्रनामावलि



श्री कमला सहस्रनामावलि

पूर्वपीठिका

ऊँ का उच्चारण करते हैं। उन सुन्दर ऐश्वर्य वाली तीनों लोकों में पूजित लक्ष्मी का आवाहन करता हूँ। कमल के समान नेत्रों वाली, कमल समूहों को निवास बनाने वाली ऐसी देवी आइये आइये।।1।।

हे वरदान देने वाली आइये आइये अपने नेत्र से मुझको देखिए। हे धर्म, अर्थ, काम, मोक्षयुक्ता, शुभ स्वरूपा देवी आइये आइये। (आयाहि अर्थात आइये)।।2।।

इस प्रकार की स्तुतियों द्वारा, सत्यवचनों द्वारा सत्यार्थ रूप में (सत्य है अर्थ जिसका ऐसे पदों वाले) जिनकी स्तुति की गई, अतिशय छोटी उम्र वाली, महाभाग्य वाली (अतिशय भाग्यशाली), परमात्मा चन्द्रमा के द्वारा (सम्यक् प्रकार से स्तुति की गई)।।3।।

वह देवी चन्द्रस्वरूपा है। समुद्र से उत्पन्न होते ही वे दोनों भाई बहन थे जो शिव और केशव में स्थित रहने वाले थे या आश्रित थे। (उत्पन्नमात्रा अर्थात उत्पन्न होते ही, आस्तां अर्थात थे, भ्रातरौ अर्थात भाई बहन) ।।4।।

सनत्कुमार ने उन ऋषि से पुराना इतिहास कहकर लक्ष्मी के श्रेष्ठ स्तोत्र को कहा (समाभाष्य अर्थात कहकर) ।। 5।।

इस संसार में इस प्रकार के अत्यन्त भयंकर दरिद्रता रूपी नरक से कैसे छुटकारा मिलता है, दरिद्रता को पूर्णतया समाप्त कैसे किया जाता है। (भस्म अर्थात पूर्णतया समाप्त)।। 6।।

सनत्कुमार ने कहा –

पूर्व में सतयुग में सभी लोको की रचना करने वाले भगवान ब्रह्मा ने नाना प्रकार की सृष्टि करके, इसके पश्चात वो (अर्थात ब्रह्मा जी) चिन्ता को प्राप्त हुए अर्थात चिन्ता करने लगे (उपेयिवान् अर्थात प्राप्त किया) ।।7।।

पृथ्वी पर इन प्रजाओं के लिए क्या भोजन उत्पन्न होगा, किस प्रकार यहाँ (अर्थात धरती पर) इनकी (अर्थात प्रजाओं की) दरिद्रता से पार पाना होगा। ।। 8।।

दरिद्रता से मरना श्रेय है। मन में ऐसी चिन्ता करके समुद्र के उत्तरी किनारे पर ब्रह्मा जी गये (चेतसी अर्थात मन में, जगान अर्थात गये) वहाँ कठोर तपस्या करके किसी समय कमलनेत्रों वाले, वसुदेव के पुत्र, जगतगुरू परमेश्वर के दर्शन किये। सर्वज्ञ, सभी शक्तियों के एकमात्र आश्रय स्थल (सभी शक्तियों के एवं सभी के एकमात्र आश्रयस्थल), हमेशा अस्तित्व में रहने वाले, सभी के ईश्वर, जगत में वास करने वाले अर्थात वासुदेव, लक्ष्मीपति, सामर्थ्यशाली, विष्णु अर्थात जगत में व्याप्त, करोड़ों चन्द्रमा के समान देदीप्यमान (चन्द्रमा के अग्रभाग के समान देदीप्यमान ऐसा अर्थ भी कर सकते हैं), क्षीरसागर के शुद्ध जल में, अनन्त नामक सर्प के ऊपर सोये हुए, विश्राम किये हुए, लक्ष्मी का निवास स्थल, करोड़ों सूर्यों के समान प्रभाव वाले महायोगेश्वरों (योग विद्या के स्वामी या पारंगत) के भी ईश्वर, योगनिद्रा में सोये हुए, लक्ष्मी के स्वामी, सभी में निवास करने वाले, देवताओं के स्वामी, संसार की उत्पत्ति, संहार, स्थिति के कारणों के कारण, लक्ष्मी आदि शक्तियों को करने वाले (इनके अन्दर शक्ति प्रदान करने वाले), उत्पन्न हुए समूह (अर्थात उत्पन्न हुए जगत समूह) की महिमाओं को अभिमण्डित करने वाले, शरीर का रूप धारण कर चक्रादि आयुधों से घिरे हुए (आयुधों ने शरीरधारी मनुष्य का रूप धारण कर लिया है), देवताओं के द्वारा, सिद्धों के द्वारा और सैकड़ों महायोगियों द्वारा दुर्निरीक्ष्य (अर्थात ये लोग दर्शन नहीं कर सकते), सभी शक्तियों के आधार (आधार का अर्थ है शक्तियाँ इन्हीं से प्रकट होती है, इन्ही में रहती है और इन्हीं

में विलीन हो जाती हैं), अतिशय असहनीय परम तेज को धारण करने वाले प्रबुद्धदेव ईश्वर स्वरूप (विष्णु भगवान) को देखकर ब्रह्मा सिर पर अंजली रखकर निश्चित रूप से स्तुति से पहले इस प्रकार बोलने लगे। (ह का अर्थ है निश्चित रूप से), हे महेश्वर आप मनोवांछित सिद्धि को पूरा करें। ।। 9–17।।

हे कमलनयन आपके स्वरूप ने चराचर जगत को जीत लिया, विश्व के द्वारा भावित (भावना करने या ध्यान किये जाने वाले) आपको नमस्कार। हे हृषिकेश (हृषिक (इन्द्रियों) को वश में करने वाले) आपको सादर प्रणाम हैं। आप महापुरूषों के भी पूर्वज हैं। (पूर्वज अर्थात आदि पुरूष अर्थात सबसे पहले महापुरूष आप ही हैं) सभी के ईश्वर, जय रूपी आनन्द को देने वाले, सभी के आश्रय स्थान, पर से भी पर (अर्थात श्रेष्ठ से भी श्रेष्ठ अर्थात सर्वश्रेष्ठ), आप प्रसन्न होकर मुझ भक्त के सन्देह से उत्पन्न होने वाले अन्धकार (अज्ञान) को नष्ट कर दीजिए। अव्यक्त जन्म वाले ब्रह्मा के द्वारा इस प्रकार से स्तुति किये जाने पर, परम शान्त नेत्रों से युक्त विष्णु भगवान ने अत्यन्त प्रसन्नता से युक्त होकर कहा। (अव्यक्तजन जिनका प्रकटीकरण नहीं हुआ अर्थात जिन्होने कार्यकलाप आरम्भ नहीं किया।)।। 18 –20।।

श्री भगवान (विष्णु जी ने कहा)

हे हिरण्यगर्भ ब्रह्मा, मैं सन्तुष्ट हूँ जो तुम्हें अभीष्ट हो उसे बोलिये, उसको मैं कहूँगा इसमें सन्देह नहीं है, हे अच्छे व्रत करने वाले ब्रह्मा तुम मेरे भक्त हो। करूणा से परिपूर्ण हृदय वाले विष्णु से वचन सुनकर महाबुद्धिमान ब्रह्मा ने बदले में भगवान विष्णु को कहा (चेतन अर्थात हृदय)।। 21–22 ।।

श्री ब्रह्मा ने कहा–

हे केशव, ये चार प्रकार का भूतसर्ग है (भूतसर्ग अर्थात प्राणियों की सृष्टि जो चार प्रकार की है अण्डज, जरायुज अर्थात गर्भाशय से पैदा होने वाला, स्वेदज, उदभिज्ज ये चार प्रकार के प्राणी हैं) उनकी रक्षा के लिए अदभुत रहस्य बताओ जो गरीबी को शान्त करने वाला, श्रेष्ठ या धन देने वाला, सुन्दर और परम पवित्र हो (परम पवित्र का मतलब धन सही रास्ते से आये)। हे सभी के ईश्वर, महान बुद्धि वाले सभी प्रकार के दुखों पर अतिशयन (हावी/तिरस्कृत करना) होने वाले लक्ष्मी जी के उस महाभैरव स्वरूप और उनके शाश्वत ज्ञान को बताओ। हे अच्युत तुम्हारे मुखकमल से प्रकट होने वाले लक्ष्मी के मुख्य और जितने गौण नाम हैं उनको तत्वपूर्वक (अर्थात नामों का सार या ऐसा नाम क्यों पड़ा बताते हुए) सुनाएं। इस प्रकार ब्रह्मा के वचनों को सुनकर भगवान विष्णु ने प्रत्युत्तर के रूप में यह वाक्य बोला।।25–26।।

श्रीभगवान विष्णु ने कहा–

महान विभूतियों से युक्त, भगवान के छह गुणों से युक्त शरीर वाले, भगवान विष्णु से कभी दूर न जाने वाली या हमेशा उन्हीं की कृपा से ही प्राप्त होने वाली (अनपायिनी अर्थात दूर न जाने वाली या अन्य उपायों से प्राप्त न होने वाली) एक ही अभिन्न रूप में रहने वाली, चन्द्रमा की चाँदनी (कान्ति) की तरह जो सभी शक्तियों की स्वरूपा/आधार है, सम्पूर्ण विश्व को व्याप्त करके स्थित है, सभी प्रकार के ऐश्वर्यों के गुणों से युक्त है, नित्य शुद्ध स्वरूप वाली है, पृथ्वी पर सभी प्रकार के प्राणियों की जो यह प्राणशक्ति है, सभी शक्तियों की कारणस्वरूपा, उत्कृष्ट कोटि की कला (शक्ति, सौन्दर्य, गुण) है, मैं उसके नामों में उत्तम श्रेष्ठ इन हजार नामों को कहता हूँ, सावधान होकर सुनो, ये नाम परमऐश्वर्य और विभूतियों को देने वाले हैं, देवी के नामों को याद करने मात्र से, दरिद्रता, भष्मता को प्राप्त हो जाती है अर्थात पूर्णतया समाप्त हो जाती है। (लीयते परमानन्दे या आत्मा सा पराकला, जो (साधन) सभी को परमानन्द प्राप्त करा दे वह उत्कृष्टम कला है। ऐश्वर्य अर्थात ईश्वर का भाव, ईश्वर का भाव अर्थात स्वामीपना या मालिकाना, जिन वस्तुओं से उनका स्वामित्व सिद्ध होता है, वे सारी चीजें जो उनके नाम को उजागर करती हैं जैसे यह मकान उनका है यह कार उनकी है, ये सारी चीजें ऐश्वर्य

कहलाती हैं। ऐश्वर्य का अर्थ है शक्ति + सम्पन्नता। भूति का तात्पर्य अणिमा आदि सिद्धियों से हैं। आख्या अर्थात नाम, स्मृति अर्थात याद करना, अवहित अर्थात सावधान)। ।। 27 – 31।।

1. **श्री** – जिसने भगवान विष्णु का आश्रय लिया हो। श्रयते विष्णुम् इति श्री। श्रु श्रृणोति से भी यह शब्द बन सकता है तब अर्थ होगा जो भक्तों की प्रार्थना, स्तुति सुनती हैं। श्रु श्रवणे धातु होती है। भक्तों के पाप नष्ट करने वाली। शॄ हिंसायाम धातु होती है।

2. **पद्मा** – कमल को धारण करने वाली या कमल में विराजमान। पद्मम् अस्या अस्ति इति पद्मा (कमल वाली)। कमल की तरह कोमल/सुन्दर। सृष्टि स्वरूपा। पद्म या कमल सृष्टि का प्रतीक है। कमल सुन्दर, कोमल, सारी पंखुड़ियों को एकत्रित किये हुए, हमेशा सूर्य की ओर केन्द्रित रहने वाला होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ कमल की तरह सुन्दर, कोमल। जो अपने सभी अवयवों को एकजुट या एकता के सूत्र में बांधे हुए है। जो सूर्य (ब्रह्म या सत्–चित्–आनन्द की अवस्था) में केन्द्रित है अर्थात हमेशा उस अवस्था से युक्त है। जो कमल की तरह संकोच और विकास की प्रकृति वाली है अर्थात सृष्टि को अपने में लीन करने एवं पुनः उसके विकास करने वाली हैं। सृष्टि में विराजमान। सृष्टि स्वरूपा।

3. **प्रकृति** – सृष्टि (जगत्) का उपादान कारण जिससे जगत पैदा हुआ। वह तत्व जो सृष्टि (कृति) के निर्माण में प्रकृष्ट कारण अर्थात सबसे उत्तम कारण है। जो कृति (अर्थात सृष्टि) के पहले से विद्यमान है। जिसकी कृति या कार्य प्रकृष्ट अर्थात श्रेष्ठ है।

4. **सत्वा**– सतोगुण से युक्त। सतोगुण स्वरूपा। सतोगुण की शक्ति। (नोट– यदि 'प्रकृतिसत्वा' यह शब्द है तो अर्थ होगा प्रकृति की शक्ति से युक्त। (सत्व) = शक्ति। यदि प्रकृतिः सत्वा है तो अर्थ होगा = प्रकृति जो सत्व–गुण से युक्त है।) आन्तरिक बल स्वरूपा या इस बल से युक्त। अस्तित्व स्वरूपा। प्राण स्वरूपा। प्रकृति का वह गुण जिसका लक्षण प्रकाश है सत्व कहलाता है। आन्तरिक बल स्वरूपा। सत्वा + आ, आ का अर्थ है देना। आन्तरिक बल देने वाली।

5. **शान्ता**– अविचलित या हलचलरहित मन वाली। (जब इच्छाऐं नहीं रहती, भावनायें नहीं रहती, षड् रिपु काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर ये विकार नहीं रहते तब शान्त समुद्र अर्थात तरंग रहित जैसी स्थिति होती है। जिसका चित्त आन्दोलित नहीं है अर्थात जो भूत और भविष्य के बारे में नहीं सोचती।)

6. **चिच्छक्ति**– परब्रह्म परमात्मा में व्याप्त शक्ति के रूप में। (चित् = ब्रह्म)

7. **अव्यया**– जिसमें व्यय/विकार न हो। सदा एक ही रूप में रहने वाली। (व्याकरण में अव्यय वह है जिसके रूप एक जैसे होते हैं)।

8. **केवला**– मात्र वही हैं अर्थात सिर्फ उन्हीं का अस्तित्व है। उनके अलावा किसी का भी अस्तित्व नहीं है। जो कुछ भी दिख रहा है वह ऊर्जा अर्थात शक्ति अर्थात देवी ही हैं। शुद्ध स्वरूपा अर्थात् जिसमें कोई दूसरा तत्व नहीं है। केवल का अर्थ होता है जिसमें दूसरा न हो। ब्रह्मा में जो ज्ञान है, उसको धारण करने वाली अर्थात् वेद को धारण करने वाली अर्थात् वेद के ज्ञान से युक्त। क अर्थात् ब्रह्मा, के अर्थात् ब्रह्मा में, व अर्थात् ज्ञान, लाति ग्रह्णाति धारयति इति ला अर्थात् धारण करने वाली। जिसमें कोई मिलावट नहीं है अर्थात जो पूर्ण शुद्ध है। प्रकृति या प्रकृति के विकार (शरीर, मन, बुद्धि, जड–जगत) से एकदम पृथक। अकेली, असाधारण, बिना ढकी हुई। केवल+आ, आ का एक अर्थ है देना। केवल–ज्ञान अर्थात मोक्ष–ज्ञान या परम–ज्ञान देने वालीं। के आनन्दे वलनम् स्वरूपावगतिः यस्या स केवला, आनन्द में ही जिसका स्वभाविक बोध या अनुभव है अर्थात आनन्द का ही अनुभव करने वाली। क का एक अर्थ है सुख या आनन्द। के वलति सरति इति केवला अर्थात आनन्द में

विचरण करने वाली अर्थात आनन्द का अनुभव करने वाली अर्थात आनन्द स्वरूपा। केवला का अर्थ है alone, isolated (from prakriti).

9. **निष्कला**– अवयव रहित (निर्गुण रूप में जब आकार नहीं धरा तब वह अवयव रहित होती हैं)। सगुण रूप में हाथ, पैर, आँख आदि अवयव होते हैं। कला का अर्थ है अवयव। कला का अर्थ आकार, गुण भी होता है। इस प्रकार निष्कला का अर्थ निर्गुणा भी है।

10. **शुद्धा** – मिलावट से रहित। समस्त मलों से रहित। आणव, कार्मिक और मायिक तीनों मलों से रहित। कायिक, वाचिक, मानसिक समस्त दोषों से रहित। भक्तों की दरिद्रता को दूर करने वाली। शुद्धयति साधकदारिद्रयम् अनया, सा शुद्धा इति कथ्यते। भक्तों के मन और कर्म को पवित्र करने वाली अर्थात दोषरहित करने वाली। भक्तानाम् शुद्धिसम्पादिका शुद्धा। मिश्रण (मिलावट) से रहित अर्थात त्रिगुणातीत। स्निग्ध। माया से रहित। अन्नमय, प्राणमय आदि पंचकोशों से रहित अर्थात प्रकाश स्वरूपा। शुद्ध (दोष रहित) आचरण में तत्पर। जो अशुद्धि से रहित है। अशुद्धि का तात्पर्य है इन्द्रियों की राजसिक चंचलता एवं तामसिक जड़ता, रजोगुण और तमोगुण का आधिक्य, चित्त के मल अर्थात् काम, क्रोध आदि दोष, सूक्ष्म शरीर के विकार या इनमें किये गये कर्म का संस्कार (Print or Photocopy)। अविद्या या मायारूपी अशुद्धता से रहित। भक्तों की दरिद्रता को दूर करने वाली। शुद्धयति साधकदारिद्रयम् अनया, सा शुद्धा इति कथ्यते।

11. **व्यापिनी**– जो सर्वत्र व्याप्त है अर्थात सभी जगह विराजमान है। व्याप्त अर्थात फैलने के स्वभाव वाली। कभी–कभी संस्कृत में णिनि प्रत्यय का प्रयोग स्वभाव अर्थ में होता है। अपने भक्तों को सभी मनोरथ प्राप्त कराने वाली। स्वेषां सर्वम् अभीष्टम् आपयति इति व्यापिनी। विशेष अर्थात खास किस्म के असली भक्तों को प्राप्त करने वाली अर्थात उनके पास पहुँच जाने वाली। विशिष्टान् भक्तान् प्राप्नोति। वीन् ज्ञानिनः आप्नोति अर्थात ज्ञानियों को प्राप्त करने वाली अर्थात ज्ञानियों के पास पहुँच जाने वाली या रहने वाली। विशेष साधको द्वारा जिन्हें प्राप्त किया जाता है अर्थात प्रत्येक व्यक्ति द्वारा प्राप्त करना सम्भव नही है। विशिष्टसाधकैः आप्यते इयम् इति व्यापिनी। (सर्वत्र व्याप्त। वि+आप्, वि अर्थात विश्व अर्थात सर्वत्र, आप् अर्थात प्राप्त करना, सबको प्राप्त किया है अर्थात सब जगह स्थित है। स्वयं सर्वत्र व्याप्नोति। अपने लोगों अर्थात भक्तों को सभी मनोरथ प्राप्त कराने वाली अर्थात पूरा करने वाली। वि अर्थात सभी। स्वेषां सर्वम् अभीष्टम् आपयति। वीन् ज्ञानिन आप्नोति। ज्ञानियों को प्राप्त करती है अर्थात ज्ञानियों के पास जाती हैं अर्थात ज्ञानी जिनका साक्षात्कार कर पाते हैं। विविधम्/विलक्षणम्/विशिष्टम् आपयति इति व्यापिनी। अपने भक्तों को विलक्षण या विशेष चीजें (जैसे मोक्ष, अपना लोक) प्राप्त कराती हैं अर्थात देती हैं। जो वेदमार्ग (कर्मकाण्ड) के बिना हैं, किन्तु सच्चे भक्त हैं उनको प्राप्त कर लेती हैं अर्थात उन तक तुरन्त पहुँच जाती हैं। वि अर्थात बिना, आप् अर्थात प्राप्त करना या पहुँच जाना। जो वेद मार्ग नहीं जानते अर्थात कर्मकाण्ड नहीं जानते किन्तु सच्चे भक्त हैं उनतक भी पहुँच जाती हैं। आप्नोति अर्थात प्राप्त करती हैं या पहुँच जाती हैं।)

12. **व्योमविग्रहा** – व्योम (आकाश) है विग्रह जिसका अर्थात आकाशरूपा। विग्रह का अर्थ है शरीर।

13. **व्योमपद्मकृताधारा** – जल कमल को आधार बनाया है जिसने अर्थात जल में खिलने वाले कमल पर बैठी हुई। व्योम का एक अर्थ जल भी है। आकाश कमल को आधार बनाया है जिसने अर्थात आकाश कमल में बैठने वाली। आकाश कमल को बनाया है जिसने आधार अर्थात हृतकमल में वास करने वाली। (हृदय के आकाश को हृदयाकाश या दहराकाश कहते हैं)। शरीरस्थ सातों चक्र सूक्ष्म रूप होने के कारण आकाश में ही है, उनमें रहने वाली। सारे चक्र पद्म की तरह दिखते हैं। विशाल कमल को आधार बनाया जिसे (व्योम = विशाल)।

14. **परा** – श्रेष्ठ। समस्त देवी देवताओं से श्रेष्ठ है (सौन्दर्य, गुण, शक्ति आदि सभी मे औरों से श्रेष्ठ)।

15. **व्योमामृतोद्भवा** – दिव्य अमृत में प्रकट होने वाली। आकाश में, जो अमृत उससे उत्पन्न। प्रचुर मात्रा में प्रस्तुत अमृत से उत्पन्न होने वाली। अविनाशी तत्व से उत्पन्न। प्रचुर अमृत सहित उत्पन्न। जल स्थित अमृत सहित उत्पन्न।

16. **निर्व्योमा** – आकाश से परे (चूँकि आकाश इन्हीं से उत्पन्न हुआ अतः देवी आकाश से परे हुई, निर्गतः व्योमः यस्मात् सा निर्व्योमा) सृष्टि के पूर्व आकाश नहीं था। मूल अवस्था में निर्व्योमा। आकाश के गुणों से परे (गुरु स्तुति में व्योमातीतम् शब्द आता है)।

17. **व्योमध्यस्था** – जल के मध्य में स्थित। आकाश के मध्य स्थित। सुषुम्ना नाड़ी के आकाश में स्थित या हृदय के आकाश में स्थित। सर्वव्यापी होने के कारण सब जगह स्थित है। परमात्मतत्व के मध्य में स्थित रहने वाली (व्योम परमात्म ब्रह्म है)। आकाश को भी ब्रह्म की संज्ञा दी गयी।

18. **पंचव्योमपदाश्रिता** – 1. आकाश, महाकाश, पराकाश, तत्वाकाश, सूर्याकाश ये पाँच आकाश कहे गये हैं इन स्थानों पर आश्रित अर्थात इनमें रहने वाली। 2. नेत्र तन्त्र में पंच व्योम इस प्रकार है– अ– जन्म स्थान = उपस्थेन्द्रिय, मूलाधार चक्र। ब– नाभि, स– हृदय द– बिन्दु चक्र (जहाँ चोटी रखी जाती है उससे थोड़ा नीचे पर आज्ञाचक्र एवं सहस्रार के बीच में)। य– नाद (सहस्रार चक्र)। इन पंचव्योमरूपी स्थान पर आश्रित अर्थात रहने वाली (पद अर्थात स्थान)। 3. आकाश से बाकी चार भूत पैदा हुए है। सभी में आकाश का अंश है। आकाश तो आकाश है ही, शेष 4 भूतों में भी आकाश है। पंचममहाभूत में जो आकाश है उस स्थान पर आश्रित रहने वाली। 4. विस्तृत आकाश रूपी स्थान के आश्रित (पंच का एक अर्थ विस्तृत भी होता है)। (पंच आकाश रूपी स्थान में आश्रित अर्थात विराजमान या स्थित। सामान्यतः रिक्त स्थान को आकाश या व्योम कहते है। मण्डल ब्राह्मण उपनिषद् के अनुसार पंच आकाश इस प्रकार है– 1. आकाश– जो अन्दर और बाहर दोनों ओर से अन्धकार से पूर्ण है, वह आकाश है। 2. पराकाश– जो बाह्याभ्यन्तर कालाग्नि तुल्य है, वह पराकाश है। 3. महाकाश– बाहर और भीतर से जो अपरिमित कान्ति सदृश है, वह महाकाश है। 4. सूर्याकाश– जो बाहर और अन्दर सूर्य सदृश है, उसे सूर्याकाश कहते है। 5. परमाकाश– जो आकाश अनिर्वचनीय, ज्योतिरूप, सर्वव्यापी और अतिशय आनन्द के लक्षण से युक्त है, उसे परमाकाश कहा गया है।)

19. **अच्युता**– अपने स्थान/स्थिति से न गिरने वाली (सत्, चित्, आनन्द की स्थिति से कभी नहीं हटीं। अच्युत का अर्थ है जो कभी पथभ्रष्ट न हुआ हो, जिसने कभी त्रुटि, भूल न की हो)।

20. **व्योमनिलया** – व्योम (आकाश) ही है घर जिसका। शब्द–ब्रह्म ही है निवास जिनका (व्योम में शब्द गुण रहता है)। वेदों में निवास करने वाली। आकाश को ब्रह्म कहते हैं। ब्रह्म का एक अर्थ वेद भी है।

21. **परमानन्दरूपिणी** – सर्वश्रेष्ठ आनन्द के स्वरूप वाली। कुछ लोग आनन्द और परमानन्द में यह भेद करते हैं कि आनन्द एक व्यक्ति का आनन्द है जबकि परमानन्द समष्टि का आनन्द है अर्थात समूह का आनन्द है। इससे बड़ा आनन्द नहीं होता। आनन्द के 7 प्रकार बताये गये हैं– जगतानन्द, निजानन्द, निरानन्द, परानन्द, ब्रह्मानन्द, महानन्द, चिदानन्द।

22. **नित्यशुद्धा** – हमेशा ही शुद्ध है (= माया/अविद्या के स्पर्श से रहित)। शुद्ध अर्थात मिलावट से रहित। ऐसा नहीं कि किसी समय पर माया/अविद्या से अलग हुई, हमेशा से माया/अविद्यारूपी मल से अलग रही हैं)।

23. **नित्यतृप्ता** – हमेशा तृप्त। (तृप्ति = अब कुछ भी नहीं चाहिए, सब है मेरे पास यह भाव, अन्य की आकांक्षा से रहित, अन्य सभी में तुच्छ बुद्धि)।

24. **निर्विकारा** – काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि विकारों से रहित। जायते, अस्ति, वृद्धि, विपरिणाम (वृद्धि का रूकना), क्षय और मरण इन छह विकारों से रहित।

25. **निरीक्षणा** – सूक्ष्म रूप से देखने वाली। नि अर्थात नितराम्, ईक्षण अर्थात देखना। सूक्ष्म दृष्टि वाली/बारीकी से देखने वाली। निरन्तर देखने वाली। निर् अर्थात विशेष रूप से अर्थात अत्यन्त सूक्ष्म विचार करने वाली। अन्यथा भी ईक्षण शब्द सूक्ष्म दृष्टि के लिए आता है।

26. **ज्ञानशक्ति** – वह शक्ति जिसके कारण व्यक्ति कुछ जानने की ओर प्रवृत्त होते हैं, तद्रूपा। इस शक्ति की अभिव्यक्ति अन्तःकरण एवं ज्ञानेन्द्रियों के रूप में होती है।

27. **कर्तृशक्ति** – वह शक्ति जिसके कारण व्यक्ति कर्म करने में प्रवृत्त होता है। इस शक्ति की अभिव्यक्ति प्राणों तथा कर्मेन्द्रियों के रूप में होती है।

28. **भोक्तृशक्ति** – वह शक्ति जिसके कारण व्यक्ति विषय/वस्तुओं को भोग कर पाता है। यह शक्ति न हो तो खाना खाते वक्त न तो खाने का सुख ले पायेगा, न खाना पच पायेगा।

29. **शिखावहा** – चोटी धारण करने वाली (शिखाम् वहति)। अग्निरूपा।

30. **स्नेहाभासा** – स्नेह का आभास देने वाली। जिसके पास पैसा होता है उसका वास्तविक लगाव तो पैसे से होता, बाकी से तो ऊपरी स्नेह होता है।

31. **निरानन्दा** – जिससे बढ़कर आनन्द न हो, ऐसे आनन्द वाली। निरतिशय आनन्द वाली।

32. **विभूति** – 1. धन, धान्य, सम्पत्ति, दौलत रूपी। 2. अणिमादि 8 सिद्धियां रूपी। 3. भगवान विष्णु की नित्य और स्थाई ऐश्वर्य शक्ति रूपी। (ऐश्वर्य कुछ भी करने की शक्ति है तथा ऐश्वर्य में सम्पन्नता भी आती है अर्थात अष्ट लक्ष्मी भी आती है।) भूति का अर्थ है ऐश्वर्य। वि अर्थात विशेष अर्थात नित्य या स्थायी। भगवान विष्णु का वह ऐश्वर्य जो नित्य और स्थायी है। ऐश्वर्य का अर्थ है शक्ति+सम्पन्नता। आरम्भ में ऐश्वर्य शक्ति के अर्थ में ही प्रयुक्त होता था। चूँकि धन में भी शक्ति होती है इसलिए बाद में समपन्नता को भी जोड़ दिया गया। शक्ति में अष्ट सिद्धियाँ आती है और सम्पन्नता में अष्ट लक्ष्मी आती है। विभूति का अर्थ आलौकिक या दिव्य शक्तियां भी है। जैसे अणिमा, लघिमा आदि अष्ट सिद्धियाँ या आकाश गमन, मरे व्यक्ति को जीवित कर देना, दूसरे के मन की बात जान लेना, असाध्य रोगों को ठीक कर देना आदि आते है। वि अर्थात विपुलता, भूति अर्थात धन सम्पत्ति, धन दौलत। इस प्रकार विभूति का अर्थ हुआ धन सम्पत्ति, धन दौलत की बहुतायत या विपुलता वाली। यह वृद्धि का भी अर्थ है। विभूति अर्थात अलौकिक शक्ति, महत्ता, वैभव।

33. **विमला**– मलों से रहित। विगता मला यस्या सा। सूक्ष्म शरीर में रहने वाली विकार को मल कहा गया है। शुद्ध, पवित्र। मल अर्थात पाप, दोष, दुर्गुण, बुराई, मनोविकार से रहित। किसी के साथ भेदभाव, अन्याय आदि दोषों से रहित। जो छलकपट, भेदभाव से रहित है। जो निष्पक्ष है एवं जिनके मन में किसी प्रकार का मैल या दुर्गुण नही है। मन में छल कपट नहीं है। दिल में किसी के प्रति द्वेष या अन्य नाकारात्मक भाव नहीं है। सभी के प्रति सामान्य व्यवहार करने वाली।

34. **चला** – चंचल, लक्ष्मी एक जगह टिकती नहीं हैं।

35. **अनन्ता** – अनन्त भगवान विष्णु की शक्ति। अनन्त विस्तार वाली अर्थात जिसके विस्तार का अन्त नहीं है। न अन्तो अस्या गुणानाम्। अनन्ते शेषे गता। अनिति अन्तका। अनम् अत्ति तृणत्ति छिनत्ति इति अनन्ता। कालतः देशतः गुणतः शक्तितश्चवापरिच्छिन्ना अनन्ता। अनमपि तनोति। अने तता। बिन्दुरवधारणे। अकारवाच्यो न भवतीत्यनो जीवः। तं तनोति। जिसके गुणों का अन्त नहीं है। शेषनाग में विराजमान अर्थात लक्ष्मी स्वरूपा। जो सबमें रहते हुए सांस ले रही है एवं सबका अन्त करने वाली है। अनिति का अर्थ साँस लेना अर्थात जीवित करना होता है। जो जीवन देने वाली भी एवं अन्त करने वाली भी है। जो झुके हुए नहीं हैं अर्थात विनम्र नहीं हैं अर्थात

उददण्ड हैं, उनको नष्ट करने वाली। बिन्दु अवधारण (एव, ही, निश्चित रूप से) का अर्थ देता है। नन्त अर्थात नत (झुका होना) हो गया। अनत अर्थात जो झुका नहीं है अर्थात नम्र नहीं है। जो समय, देश, गुण और शक्ति से सीमित नहीं है अर्थात असीम समय, देश, गुण और शक्ति वाला। प्राण को देने वाली। अन का अर्थ है प्राण या आयु। आयु का विस्तार करने वाली अर्थात अपने भक्तों की आयु को बढ़ा देती है। तन् धातु का विस्तार करना, देना, निर्माण करना अर्थ होता है। जो अ नहीं है अर्थात विष्णु या ब्रह्म नहीं है। वह अन हुआ अर्थात जीव हुआ। जीवों का विस्तार करने वाली। 2–4 योनि नहीं बल्कि 84 लाख योनि बनाई गई हैं जो जीवों का विस्तार ही है। सन्तान पैदा करने की शक्ति के रूप में स्थित होकर जनसंख्या को बढ़ाना भी जीवों का विस्तार करना है।

36. **वैष्णवी** – भगवान विष्णु की शक्ति। सर्वव्यापक शक्ति। विष्लृ धातु का अर्थ है व्याप्त होना। इस शक्ति के द्वारा भगवान विष्णु सृष्टि का पालन करते हैं। वैष्णवी का अर्थ सर्वव्यापिका महाशक्ति भी है। व्यापनाद् विष्णुः अर्थात जो सर्वव्यापी हो वह विष्णु है। त्रिकुटा देवी स्वरूपा या इन देवी से अभेद है जिनका। भगवान विष्णु के वंश में उत्पन्न त्रिकुटा देवी जो जम्मू में कटरा में स्थापित हैं। दक्षिण भारत में निःसंतान ब्राह्मण रत्नाकर सागर के यहाँ इन्होने जन्म लिया था। वैष्णों देवी की इस प्रकार की कथा कही गई है। आद्याशक्ति की इच्छाशक्ति को भी वैष्णवी शक्ति माना गया है। वैष्णवों (भगवान विष्णु के भक्त) वाली अर्थात उनके द्वारा उपासनीया।

37. **व्यक्ता** – दिखलाई देने वाले सांख्य दर्शन के 23 तत्व रूपा। 23 व्यक्त रूपों में (प्रकट रूपों में) दिखलायी देने वाली। सांख्य दर्शन में कुल 25 तत्व हैं जिनमें 02 तत्व है प्रकृति और पुरूष हैं। प्रकृति अपने को 23 अन्य तत्वों में अभिव्यक्त करती है।

38. **विश्वानन्दा** – विश्व की आनन्द स्वरूपा। सम्पूर्ण आनन्द स्वरूपा। विश्व का अर्थ समस्त भी होता है।

39. **विकाशिनी** – विशेष रूप से प्रकाशित होने वाली।

40. **शक्ति** – ऐश्वर्य और पराक्रम से युक्त। जो सब कुछ करने में समर्थ है। श का अर्थ है ऐश्वर्य और ति का अर्थ पराक्रम। कार्योत्पादन सामर्थ्य स्वरूपा। दुर्गा सप्तशती के 5वें अध्याय में यह शब्द आया है जहाँ व्याख्याकारों ने इसकी कई तरह से व्याख्या की है। एक व्याख्या के अनुसार कार्य करने की सामर्थ्य (योग्यता)। कार्य को उत्पन्न करने की सामर्थ्य या योग्यता को भी शक्ति कहा गया है। वस्तु में स्थित स्वाभाविक धर्म अर्थात् उसके भीतर से ही पैदा हुआ धर्म या गुण। यह बाहर से किसी अन्य में नहीं डाला है। प्रत्येक वस्तु कोई न कोई ऐसी क्रिया करती है जो उसके लिए ही निश्चित या नियत की गई है। जैसे अग्नि का धर्म है जलाना। जलाना अग्नि की शक्ति होगी। वस्तु के लिए निश्चित किया गया धर्म की यह वस्तु यह ही कार्य करेगी, ऐसा धर्म उसकी शक्ति है। आधार–आधेय सम्बन्ध को भी शक्ति कहा गया है। समस्त भूतों में आधार आधेय भाव से रहने वाला सामर्थ्य या एक दूसरे पर निर्भर रहने वाला सामर्थ्य या योग्यता शक्ति है। सापेक्षता के सिद्धान्त के आधार पर प्रत्येक वस्तु एक दूसरे पर निर्भर है। शिव के अर्द्धअंश को भी शक्ति कहा गया है। शिव का अन्तर्बल जिसके द्वारा वह पंचकृत्य करता है, शक्ति है। शक्ति शिव का अभिन्न चिन्मय सामर्थ्य या स्वातन्त्र्य है जिसमें आनन्द का प्राधान्य है। (शैव दर्शन के 36 तत्वों में शिव पहला या सर्वोत्कृष्ट तत्व है यह समष्टि चित है। चित् ही इसका स्वरूप है, शिव और शक्ति ये दोनों तत्व सभी अभिव्यक्ति के मूल हैं और एक प्रकार से अभिव्यक्ति के परे हैं।)

41. **विभिन्नसर्वार्ति** – सभी पीड़ाओं को विशेष रूप से नष्ट करने वाली (वि = विशेष या विविध रूप से, भिन्न–भिन्न करना अर्थात नष्ट करना)।

42. **समुद्रपरितोषिणी** – बेटी के रूप में जन्म लेने के कारण समुद्र को पूर्ण रूपेण तुष्ट (प्रसन्न) करने वाली। जिसके घर में सन्तान होती वह बहुत प्रसन्न हो जाता है, तुष्ट हो जाता है।

43. **मूर्ति** – प्रतिमा के रूप में विद्यमान। प्रतिमा में प्राणप्रतिष्ठा करने पर उसमें देवी का वास हो जाता है। मूर्ति को मूर्ति इसलिए कहते हैं क्योंकि वह मूर्छित जैसी अर्थात बेहोशी जैसी अर्थात हलचल रहित सी दिखती है। मूर्ति में अंश रूप से विराजमान। शैव दर्शन के अनुसार आत्मज्ञान प्राप्त करने के 6 मार्ग हैं जिन्हें षडाध्वा कहते हैं। उनमें से देशाध्वा या मूर्ति अध्वा एक मार्ग है। देशाध्वा मार्ग के स्वरूप वाली।

44. **सनातनी** – सदा से रहने वाली (बहुत प्राचीन काल से जिनका अस्तित्व चला आ रहा है)। सनातनी अर्थात पहले से चली आ रही हैं जो अर्थात जो कल थी, आज भी हैं। नित्य और सनातन दोनो का अर्थ तीनों कालों में रहने वाला है। नित्य रूप बदलकर भी रह सकता है जबकि सनातन ज्यों का त्यों रहता है।

45. **हार्दी** – हृदय में होने वाला अर्थात स्नेह या प्रेम स्वरूपा। (हार्दिक = हृदय में रहने वाला या स्नेही)।

46. **निस्तरंगा** – तरंग रहित अर्थात शान्त योगी की तरह। संकल्प विकल्प से रहित। चित्त के विचार तरंग की तरह होते हैं। चंचलता रहित अर्थात शान्त। तरंग चलायमान होती है। सांसारिक प्रपंचों से परे। (तरंग = प्रपंच)। संसार भी एक तरंग है।

47. **निरामया** – रोग से रहित। निर्गता आमयाः यस्मात् सा निरामया।

48. **ज्ञानगम्या** – ज्ञान से प्राप्त होने योग्य। यह ज्ञान साधारण ज्ञान/किताबी ज्ञान नहीं, बल्कि आध्यात्मिक ज्ञान है। यह ज्ञान अनुभव वाला ज्ञान है, न कि बौद्धिक ज्ञान।

49. **ज्ञानज्ञेया** – ज्ञान के द्वारा जानी जाने योग्य। ज्ञान और ज्ञेय के स्वरूप वाली। ज्ञेय का अर्थ है जानने योग्य वस्तु।

50. **ज्ञानज्ञेयविकाशिनी** – प्रमा और प्रमेय के रूप में प्रकाशित होने वाली। ज्ञान और ज्ञेय के रूप में अपने को विकसित करने वाली। आरम्भिक अवस्था में ज्ञान, ज्ञेय और ज्ञाता में अभेद होता है। विकास क्रम में ज्ञान, ज्ञेय और ज्ञाता अलग अलग दिखायी देने लगते हैं। (यदि ज्ञानज्ञेयविकासिता शब्द होता तो अर्थ होता – ज्ञान और ज्ञेय के रूप में अधिक प्रकाशित अर्थात् अभिव्यक्त। संस्कृत में कास् धातु होती है जिसका अर्थ होता है चमकना अर्थात् प्रकाशित होना। ज्ञान और ज्ञेय के रूप में विकसित अर्थात् विस्तृत। तात्पर्य है विश्व या जगत के रूप में विस्तृत। समस्त जगत ज्ञान और ज्ञेय का संघात है क्योंकि इस विश्व में ज्ञेय पदार्थ है, ज्ञान एवं ज्ञाता है। ज्ञान और ज्ञेय को बढ़ाने वाली। कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र से कृत्य प्रत्यय उन अर्थों से भी भिन्न अर्थ देते है जिनमें वे सामान्यतः प्रयुक्त होते है, इस प्रकार विकासिता का अर्थ विकास करने वाली भी कर सकते है। अतः इस नाम का अर्थ हुआ ज्ञान और ज्ञेय का विकास (विस्तार) करने वाली।)

51. **स्वच्छन्दशक्ति** – स्वतन्त्र शक्ति वाली (किसी के अधीन नहीं)। स्व का अर्थ है अपनी और छन्द का अर्थ है इच्छा। ऐसी शक्ति जो अपने अधीन हो।

52. **गहना** – जिनको समझना अत्यन्त कठिन है। दुर्बोध या दुरूह। उनके विषय में वाणी मौन हो जाती है। तर्क वितर्क द्वारा प्राप्त नहीं है। अत्यधिक गम्भीर ज्ञान वाली। जंगल को गहन जंगल कहते हैं अर्थात जिसमें प्रवेश करना बहुत मुश्किल होता है। दुर्ज्ञेय अर्थात जिसको जानना बहुत कठिन है। गं गणपतिं हं रहं च नयति। गणेश जी को एवं भगवान शिव का नेतृत्व करने वाली, मार्गदर्शन करने वाली, सही दिशा में ले जाने वाली या उन्हें सक्रिय करने वाली। ये दोनों देवता वरदान और शाप इन्हीं की शक्ति से दे पाते हैं। शत्रुगणहननाद् गहा वीराः। तान् इयम् नयति। शत्रु समूह को मारने वाले हैं गह अर्थात वीर। इन वीरों का नेतृत्व करने वाली, उन्हें रास्ता दिखाने वाली, मार्गदर्शन करने वाली, सक्रिय करने वाली। गण का ग, हन् का ह एवं नयति का न अक्षर ले लिया। गहन का अर्थ वन भी है। गहने वने गता। वन में गई अर्थात वन में रहने वाली। दुर्बोध या दुर्गम्य अर्थात जिसको जानना बेहद कठिन है। अथापि न ज्ञायते इति गहना अर्थात प्रयत्न करने के बाद भी जिसे न जान पाये

वह गहना है। गतिम् हतिम् प्रणयति इति गहना अर्थात ज्ञान में बाधा को लाने वाली अर्थात जिसका ज्ञान नही हो सकता। गति का अर्थ है ज्ञान, नयति का अर्थ है लाती है। गणेश एवं शिव का नेतृत्व करने वाली अर्थात उनका मार्गदर्शन करने वाली। ग अर्थात गणेश, ह अर्थात हर, नयति अर्थात नेतृत्व करना या लाना। गहन का अर्थ जंगल भी होता है। वन या जंगल में विराजमान। गहन का अर्थ संकट, कष्ट, दुख भी होता है। गहन+आ, आ का अर्थ है देना, नाश करनां। भक्तों का संकट, दुख नाश करने वाली एवं दुष्टों को दुख देने वाली।

53. **निष्कम्पार्चिष्** – जिसकी ज्वाला हिलने वाली नहीं है अर्थात शाश्वत प्रकाश वाली।

54. **सुनिर्मला** – अत्यन्त निर्मल स्वरूप वाली। निर्मल अर्थात दोषरहित।

55. **स्वरूपा** – आत्मरूपा। विष्णु के रूप में है जो। स्व का अर्थ आत्मा, विष्णु है। जिसमें अपना ही रूप है। कारण का प्रभाव या अंश नहीं है। सामान्यतः कार्य में कारण का अंश या प्रभाव आ जाता है पर देवी किसी का कार्य नहीं है। निर्गुण और सगुण स्वरूप वाली।

56. **सर्वगा**– हर जगह पहुँच जाने वाली या हर जगह विराजमान। निराकार रूप में सर्वव्यापक है एवं साकार रूप में जहाँ इच्छा करे वहाँ पहुँच जाती हैं।

57. **पारा**– जो विश्व से पार है अर्थात उत्तीर्ण है या परे है। ईश्वर को विश्वोत्तीर्ण भी कहते हैं। पारयति इति पारा से पारा का अर्थ होगा जो अपने भक्तों को संसार सागर से पार करा देती है। पाति इति पा अर्थात पा का अर्थ है रक्षा करने वाली। पिब् धातु में णिच् प्रत्यय लगाकर पुनः ड प्रत्यय लगाने से पा शब्द बनेगा जिसका अर्थ होगा पान कराने वाली। राति इति रा से, रा का अर्थ देने वाली है। इस प्रकार पारा का अर्थ हुआ भक्तों की रक्षा करने वाली एवं उनके मनोरथों को देने वाली अर्थात पूरा करने वाली। भक्तों को सुखपान कराने वाली एवं उनके मनोरथों को देने वाली। एकाक्षरी कोश में पा का अर्थ है लक्ष्मी। इस प्रकार पारा का अर्थ हुआ लक्ष्मी (धन–सम्पदा, शोभा) देने वाली। पारा नाम की एक नदी भी है, उस नदी के स्वरूप वाली। अन्तिम गन्तव्य स्थान। वह किनारा जहाँ तक पहुँचना है। दो किनारे होते हैं वह किनारा जहाँ व्यक्ति खड़ा है अवार कहलाता है और दूसरा किनारा जहाँ पहुँचना है पार कहलाता है। पृ पूरणे से पार शब्द बनता है।

58. **बृंहिणी** – अतिशय विस्तृत रूप वाली। ब्रह्माण्ड के रूप में वृद्धि को प्राप्त। वृद्धि करने वाली।

59. **सुगुणोर्जिता** – अच्छे गुणों से शक्ति सम्पन्ना। अच्छे गुण अर्थात् दया, करूणा, न्याय, स्नेह, परोपकार, धैर्य आदि। अच्छे गुणों के कारण शक्तिशालिनी। अच्छे गुण जैसे दया, उदारता, करूणा, प्रेम, परोपकार, धैर्य, शक्ति आदि। ये गुण उनके अन्दर दूसरों से अधिक हैं। सुन्दर गुणों से प्रकाशित होने वाली। सद्गुणों से ऊर्जित अर्थात अत्यन्त तेजस्विनी। जिनमें सद्गुण हैं, ऐसे देवता या योगी भी सुगुण हैं। ऐसे देवताओं से तेजस्विनी। दुर्गासप्तशती में आया है कि सभी देवताओं के तेज से मिलकर देवी महालक्ष्मी की उत्पत्ति हुई थी।

60. **अकलंका** – किसी भी प्रकार के कलंक (बदनामी या बदनामी का दाग) से रहित। निन्दनीय कर्म करने से समाज में जो छाप पड़ती है वह है कलंक। चूँकि देवी कोई निन्दित कर्म नहीं करती है अतः उन्हें कोई कलंक नहीं लगता है। अपयश या लांछन से रहित। दोष से रहित। अकलंक का अर्थ हुआ यश। यश से युक्त। अकलंक + आ, आ का अर्थ है देना, नाश करना। भक्तों को यश देने वाली। दुष्टों या अधर्मियों का यश नाश करने वाली।

61. **निराधारा** – जिनका कोई आधार नहीं है। हर वस्तु को टिके रहने के लिए उसके नीचे आधार चाहिए पर देवी तो सबका आधार है। इन्हें कोई आधार की जरूरत नहीं। सर्वव्यापी को आधार की जरूरत नहीं।

62. **निःसंकल्पा** – संकल्प (मानस कर्म) से परे, क्योंकि देवी मन से परे है। मन से जो विचार/चिन्तन किया जाता है वह है संकल्प।

63. **निराश्रया** – उसे अपने अस्तित्व/निर्वाह/रक्षा के लिए किसी आश्रय की जरूरत नहीं है।

64. **असंकीर्णा** – विशाल ह्रदय वाली। तुच्छता/तुच्छ विचार से रहित।

65. **सुशान्ता** – सम्यक् रूप से शान्त। सम्यक् का अर्थ है भली–भाँति या यहाँ पर स्थिर अर्थ कर सकते हैं। स्थाई रूप से शान्ति की अवस्था ग्रहण किये हुए। अच्छी प्रकार से शान्त प्रकृति वाली अर्थात् उनके मन में उथल–पुथल नहीं होती। इन्द्रियों और मन का विषयों से वैराग्य होने पर अनुभव किया जाने वाला सुख शान्ति कहलाता है। (शान्त– आनन्द की पराकाष्ठा। शम् का अर्थ है आनन्द और अन्त का अर्थ है पराकाष्ठा। प्रकृति से अर्थात मन, बुद्धि, इन्द्रिय, शरीर, संसार से असंगत होने पर प्राप्त अवस्था से युक्त। असंगतया च शान्तः।)

66. **शाश्वती** – हमेशा विराजमान।

67. **भासुरा** – चमकीली/चमकदार। उनके विग्रह में चमक है अर्थात शरीर से चारों ओर चमक निकलती है।

68. **स्थिरा** – स्थिर अवस्था वाली अर्थात जो अपने दिये गये वचनों से डिगती नहीं है। पृथ्वी स्वरूपा। इन्हें कोई डिगा नहीं सकता। जो अपने गुण क्रिया आदि के द्वारा सदैव स्थिर अर्थात एक जैसी रहती है। सूर्य का प्रकाश एक जैसा रहता है, वह घटता–बढता नहीं है। दीपक का प्रकाश तो तेल कम होने से घट जाता है और तेल डालने से बढ़ जाता है। सर्वत्र स्थित होते हुए आनन्दित हो रही हैं या क्रीडा कर रही हैं। सर्वत्र स्थितो रमते इति स्थिरा। दुनिया में जो भी गतिविधियां हो रही है, ये ही मजा ले रही हैं। स्थावर चीजों में प्रविष्ट होकर आनन्दित होने वाली या क्रीडा करने वाली। स्थितेषु स्थावरेषु रमते इति स्थिरा। स्थिरता देने वाले। स्थितिम् राति इति स्थिरा। स्थिरता का अर्थ है कि यदि आप आज अच्छी स्थिति में है, उससे नीचे नहीं आने देना। जीविका देने से भी व्यक्ति स्थिर हो जाता है। मन की चंचलता, मन नहीं लगना आदि को दूर करना भी स्थिरता देना होता है। अपने लोगों में अर्थात भक्तों में स्थित होकर आनन्दित होने वाले या क्रीडा करने वाले। स्वस्मिन् स्थितेषु भक्तेषु रमते इति स्थिरा। सृष्टि, स्थिति, विनाश, भगवान कृष्ण द्वारा खेली गई अनेक क्रीड़ायें, माया के परदे से छुपाकर भक्तों के साथ आँख मिचौली करना, यह ईश्वर की क्रीड़ा है।

69. **अनौपम्या** – उपमा के योग्य पदार्थों से रहित अर्थात् अनुपमा। जब उनके अतिरिक्त कुछ है ही नही तो देवी की उपमा किसी से दी नही जा सकती। जो कुछ भी दिखाई दे रहा है वह ऊर्जारूप होने के कारण देवी रूपा ही है अर्थात् देवी के अतिरिक्त कुछ है ही नहीं। यदि द्वैत को माना भी जाए तभी भी कारण रूप होने के कारण वे अन्य सभी से श्रेष्ठ है। कारण कार्य से श्रेष्ठ होता है। इसकी किसी से उपमा नहीं की जा सकती।

70. **निर्विकल्पा** – इनका कोई विकल्प (Substitute) नहीं क्योंकि उनके जैसा कोई नहीं है। कल्पना से रहित अर्थात देवी केवल काल्पनिक चीज नहीं है बल्कि उनका वास्तव में अस्तित्व है।

71. **नियन्त्रा** – सभी पदार्थों को नियन्त्रण मे रखने वाली अर्थात् उन्हें अपनी सीमा में रखती है। नियन्त्रयति इति नियन्त्रा। पदार्थ में जड़ और चेतन दोनों पदार्थ आते है अर्थात् जड़ वस्तुयें एवं मनुष्य, पशु–पक्षी आदि चेतन प्राणी। अपने आपको नियन्त्रित किये रहने वाली। स्थिर/स्थिरमति। अपने आप में नियन्त्रित अर्थात स्वात्माधीन। यम अर्थात वश में करना या नियन्त्रण करना।

72. **यन्त्रवाहिनी** – विमान आदि पर आरूढ़ होने वाली (यन्त्र अर्थात वाहन)। एक है सिंह/मयूर आदि इस प्रकार के वाहन व दूसरे हैं यन्त्र वाले वाहन जैसे पुष्पक विमान आदि।

73. **अभेद्या** – जिनका भेदन न किया जा सके (आत्मा को कोई भेद नहीं सकता)। देवी आत्मा स्वरूपा है।

74. **भेदिनी** – शत्रुओं में भेद डालने वाली। एक पदार्थ को दूसरे पदार्थ से अलग करने वाली। वैशेषिक दर्शन में विशेष नामक पदार्थ होता है जिसके कारण प्रत्येक पदार्थ एक दूसरे से अलग होता है। विशेष नामक पदार्थ स्वरूपा।

75. **भिन्ना** – सबसे विशिष्ट या अलग। अपने गुण, कर्म, शक्ति के कारण दूसरों से अलग है। भिन्न स्वरूप वाली। प्रकृति–पुरुष दो हो गये। पहले एक थे अब दो हो गये।

76. **भारती** – ज्ञानरूपी प्रकाश में लगी हुई। भा अर्थात प्रकाश अर्थात ज्ञानरूपी प्रकाश। भारती सरस्वती का भी नाम है अर्थात सरस्वती से अभेद है जिनका। प्रकाश (सतोगुण, ज्ञानादि) में अनुराग या रति है जिनकी। अग्नि में आहूति के लिए बोले जाने वाले मन्त्र स्वरूपा। भरत का अर्थ है अग्नि। हवींषि विभर्ति इति भरतः। यज्ञकर्म विभर्ति इति भरतः। भरतस्य इयम् इति भारती अर्थात अग्नि की यह अर्थात अग्नि से सम्बन्धित अर्थात अग्नि में आहूति देते समय बोले जाने वाले मन्त्रस्वरूपा। यर्जुवेद स्वरूपा। यर्जुवेद में ही यज्ञ के मन्त्र दिये गये हैं। विभर्ति प्रजा इति भरतः अर्थात जो प्रजा का पालन पोषण करे ऐसे प्रजापालक राजा को भी भरत कहते हैं। प्रजापालक राजाओं की वाणीस्वरूपा। सूर्य की यह अर्थात सूर्य की दीप्ति या किरण या ज्योतिस्वरूपा। सूर्य भी जल को खींचकर, पुनः वर्षा कर अन्न उगाकर लोगों का भरण–पोषण करता है अतः सूर्य का नाम भी भरत है। सब शास्त्रों को अपने में धारण करने वाली अर्थात सरस्वती स्वरूपा। विभर्ति इति भारती। विभर्ति का अर्थ है धारण करना, भरण–पोषण करना।

77. **वैखरी** – व्यक्त वाणी स्वरूपा। ऐसी वाणी जो बोलने वाले को भी सुनाई दे और सुनने वाले को भी सुनाई दे वैखरी वाणी होती है। वै अर्थात निश्चित रूप से, ख अर्थात आकाश अर्थात कर्णविवर, राति अर्थात देना। जो निश्चित रूप से कर्ण विवर को देती है अर्थात ध्वनि देती है। ख का अर्थ इन्द्रिय भी होता है। विशेष इन्द्रिय को अर्थात श्रवणेन्द्रिय को देने वाली। क्या देने वाली? शब्द देती हैं। विशेष कठोरता के कारण इसे वैखरी कहते है। खर का अर्थ है कठोर या Hard। निश्चित रूप से जो आकाश में जाती है। वै का अर्थ है निश्चित रूप से, ख अर्थात् आकाश अर्थात् कान का छेद। र अर्थात् जाती है या प्रवेश करती है, योगशास्त्र के अनुसार विखर नामक प्राण से पैदा होने के कारण इस वाणी को वैखरी कहते है।

78. **खगा** – आकाश में विचरण करने वाली।

79. **अग्राह्या** – सामान्य लोगों द्वारा प्राप्त करने योग्य नहीं। (भक्त/पात्र ही दर्शन कर सकते हैं)।

80. **ग्राहिका** – ग्रहण करने वाली। भक्तों की भक्ति, प्रसाद ग्रहण करती है।

81. **गूढ़ा** – छिपी हुई। (अभक्तों/अनार्यों/असज्जनों के लिए प्रकाशित/ प्रकटित नहीं होती, उनसे छिपी रहती)।

82. **गम्भीरा** – गम्भीर अर्थात जिसके बारे में यह न पता चल सके कि उनके अन्दर क्या चल रहा है। देवी की योजना क्या है या उनके अन्तर्मन में क्या है यह किसी को पता नहीं चल पाता। गहरी अर्थात उनके गुण, शक्ति और अन्य विशेषताएं नहीं दिखती अर्थात नहीं पता चलती। समुद्र गहरा हो ता ऊपर से देखने पर आपको नहीं दिखेगा कि तल में क्या है। गहरी अर्थात् वहाँ पहुँचने के लिए बेहद प्रयत्न की आवश्यकता है। गम्भीर अर्थात जहाँ तक पहुँचने के लिए बहुत परिश्रम करना पड़ता है। शान्त, सौम्य और धैर्य वाली। अत्यन्त गहराई वाली। अर्थात अथाह गहराई वाली। उनमें कितना बल, करूणा, ऐश्वर्य आदि है इसका छोर या पता नहीं लगाया जा सकता। आवश्यकता पड़ने पर मुस्कान रहित एवं अभिव्यक्ति रहित चेहरा धारण करने वाली अर्थात उनके चेहरे को देखकर कोई नहीं कह सकता कि उनके भीतर क्या चल रहा है। स्वाभाविक अभिव्यक्ति में आगे बढते हुए अभिव्यक्ति को गहनतर या दीर्घ स्तर में ले जाने वाली। जिनमें पाण्डित्य की गहराई है। भारी आवाज या भारी ध्वनि करने वाले को भी गम्भीर कहते है। इन्द्रिय समूह को स्तब्ध करने वाली जिसे अंग्रेजी में ग्रेविटी नाम दिया गया है। सब का गन्तव्य अर्थात अन्तिम लक्ष्य। गम्भीर समुद्र का नाम है। सभी नदियों का लक्ष्य समुद्र होता है। समुद्र अर्थात जल की तरह सर्वव्यापक। रात्रि स्वरूपा। गम्भीर व्यक्ति के अन्दर क्या चल रहा है आप

नही जान सकते है। उसी प्रकार रात्रि में भी चीजें समझ में नही आती हैं अर्थात दिखाई नहीं देती हैं। गम्भ् धातु आकर्षक रूप से इस प्रकार से चलने के लिए प्रयुक्त होती है जो लोगों की नजर में भी आती है। इस प्रकार की चाल चलने वालीं। अपार बल एवं सामर्थ्य वाली। गम् ज्ञानम् भम् आनन्दम् ईरयति इति गम्भीरा। भक्तों को ज्ञान एवं आनन्द पहुँचाने वाली।

83. **विश्वगोपिनी** – प्रलय काल में विश्व को आत्मसात् करने वाली अर्थात् अपने में छुपाने वाली। विश्व को छुपाने वाली। भगवान विष्णु की रक्षा करने वाली। विश्व का एक अर्थ है भगवान विष्णु, सब। सभी प्राणियों की रक्षा करने वाली। गोपन का अर्थ रक्षा, छुपाना होता है। जो अपने में विश्व को छिपाये है।

84. **अनिर्देश्या** – जिनके विषय में कोई निर्देश न दिया जा सके (इस प्रकार का निर्देश कि देवी यह हैं, इस प्रकार की हैं)।

85. **अप्रतिहता** – जिनकी गति रूकने वाली नहीं है।

86. **निर्वीजा** – इनका कोई कारण नहीं है। (लक्षणा से अर्थ होगा कि यह कार्य और कारण दोनों से रहित है)। बीज वृक्ष का कारण होता है।

87. **पावनी** – पवित्र कर देने वाली है। अपने दर्शन से भक्तों के पापों, दोषों को नष्ट कर उन्हें पवित्र बना देती हैं।

88. **परा** – परावाणी के रूप में स्थित। परावाणी वाणी की आद्यावस्था है, इसे एक प्रकार से वाणी का अंकुर कह सकते हैं जो मूलाधार से निकलता है। श्रेष्ठ अवस्था में स्थित। परावाणी स्वरूपा। चार प्रकार की वाणियों में पहली वाणी जो नाद स्वरूपा है और मूलाधार चक्र से निकली हुई मानी जाती है। वाणी की आरम्भिक अवस्था परावाणी है। यह विचार के भी पहले की अवस्था है जिसे Urge of thoughts कह सकते हैं। इस अवस्था में वाणी ब्रह्म या चेतन से पूरी तरह जुड़ी हुई है और उससे जरा भी अलग नही हुई है और यहाँ तक की विचार के रूप में भी प्रकट नहीं हुई है पर इसे विचार का बीज कह सकते हैं, विचार के बाद ही वाणी प्रकट होती है। पराविद्या स्वरूपा। पराविद्या वह विद्या है जो ब्रह्म का ज्ञान कराती है। यह विद्या ऐसी वस्तु का ज्ञान कराती है जो सब गोचर पदार्थों से परे हो। इसे ब्रह्म विद्या या उपनिषद विद्या भी कहते है। गंगा जी का नाम भी परा है। अतः इस नाम का अर्थ हुआ गंगा स्वरूपा। परा का अर्थ श्रेष्ठ भी होता है। जो अन्य देवी–देवताओं से श्रेष्ठ है। वह परा है। गुण, सौन्दर्य, ऐश्वर्य, शक्ति प्रत्येक चीज में दूसरे देवताओं से श्रेष्ठ होने के कारण उन्हें परा कहते हैं। परित्राण (रक्षा) देने वाली अर्थात अपने भक्तों की या धर्म की रक्षा करने वाली। प अर्थात परित्राण। राति इति रा अर्थात रा का अर्थ है देने वाली। एकाक्षरी कोष से प के अर्थ लेकर परा शब्द के बहुत से अर्थ किये जा सकते हैं।

89. **अप्रतर्क्या** – जिनके विषय में किसी प्रकार का तर्क नहीं किया जा सकता। (देवी हृदय में अनुभव से मिलती हैं)

90. **परिमिता** – जो हर जगह या हर चीज में ठीक ठीक मात्रा में है। परिमित का अर्थ है नपातुला। कितना आकाश चाहिए, कितनी वायु चाहिए, कितनी पृथ्वी तत्व। सभी नपी तुली मात्रा में है। परितो मिता इस व्युत्पत्ति से इस नाम का अर्थ होगा सब ओर से जिसका ज्ञान हो। सूक्ष्मातिसूक्ष्म रूप में स्थित।

91. **भवभ्रान्तिविनाशिनी** – संसार रूपी भ्रान्ति का पूर्ण नाश करने वाली। संसार में रहने वाले लोगों की अर्थात अपने भक्तों की भ्रान्तियों या संशयों का विनाश करने वाली। भ्रान्ति का अर्थ है अयथार्थ ज्ञान, किसी को कुछ और ही या दूसरा समझने का भाव।

92. **एका** – अपने ढंग की अकेली। एक स्वरूप वाली अर्थात नित्य स्वरूप वाली। अपने ढंग की अकेली। एकमात्र अर्थात इनके अलावा किसी का अस्तित्व नहीं है। इण् गतौ धातु से अर्थ होगा जो सभी में गई हुई है अर्थात सभी में व्याप्त। एक की संख्या सभी में विद्यमान होती है। सरलता से याद हो जाने वाली। इक् स्मृतौ धातु से एका शब्द बनाने पर अर्थ होगा जिनको स्मरण करना बहुत आसान होता है। हम सभी मैं मैं बोलते रहते हैं जो आत्मा या देवी के लिए ही बोलते हैं।

93. **द्विरूपा** – प्रकृति और पुरुष/ब्रह्म और माया दो रूप हैं। इन दो रूपों में स्थित है।

94. **त्रिविधा** – तीन प्रकार वाली। जो महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती इन तीन प्रकार से स्थित हैं। इच्छाशक्ति, ज्ञानशक्ति और क्रियाशक्ति, इन तीन प्रकार के रूपों वाली। सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण इन तीन रूपों वाली।

95. **असंख्याता** – अनन्त रूपों वाली। जड़ चेतन जो कुछ भी दिखाई दे रहा है, वह ऊर्जा या शक्ति का रूपान्तरण है। देवी का अर्थ है ऊर्जा अर्थात् शक्ति। अगणित रूपों वाली। जिनकी गणना नहीं की जा सकती। देवी ने अनेक अवतार लिये हैं। समस्त नारियाँ भी देवी का स्वरूप मानी गयी हैं।

96. **सुरेश्वरी** – देवताओं की ईश्वरी अर्थात देवताओं की आराध्या। देवताओं पर शासन करने वाली। आदेशों के द्वारा एवं नियम बनाकर देवताओं पर शासन करती हैं।

97. **सुप्रतिष्ठा** – 1. सुन्दर आश्रय या घर अर्थात देवी सभी का आधार हैं, सभी को अच्छी प्रकार से आश्रय दिये हुए हैं। 2. अच्छी प्रकार से प्रतिष्ठित= प्रशंसिता/अभिनन्दिता/सम्मानिता।

98. **महाधात्री** – सम्पूर्ण विश्व को धारण करने वाली, उसका पालन पोषण करने वाली (महा अर्थात विश्व/ब्रह्माण्ड)।

99. **स्थिति** – जगत का ठहराव या निवास स्वरूपा। सभी प्राणियों का आवासस्थल या निवासस्थल। जगत के उस स्वरूप में जब उसका अस्तित्व बना रहता है। नियम या मर्यादा (सीमा) स्वरूपा। कुशलक्षेम या कल्याण स्वरूपा। जीव की तीन अवस्थाओं में से एक अवस्था है स्थिति अवस्था तद्स्वरूपा। विश्व की पालन शक्ति। स्थिति शक्ति अर्थात पालन शक्ति। वह शक्ति जिसके कारण कोई वस्तु कुछ समय तक विद्यमान बनी रहती है। यह शक्ति वस्तु में जब तक रहेगी, वस्तु का अस्तित्व रहेगा।

100. **वृद्धि** – उन्नति, बढ़ती, विकास स्वरूपा। ज्ञान, विज्ञान, बुद्धि, वैभव सारी समृद्धि इन्हीं के स्वरूप है। वृद्धि का कारण अर्थात वृद्धि करने वाली। शब्द के आगे 'में विराजमान' या 'का कारण' या 'के समान' लगाने से शब्द के अन्य अर्थ निकल आते हैं। बहुतायत या बढ़ती वाली। धन सम्पत्ति, धन दौलत की बहुतायत या विपुलता स्वरूपा। शब्द के आगे ''का कारण'' या ''में विराजमान'' या ''के समान'' लगा देने से भी उस शब्द का अर्थ निकल आता है। वृद्धि का अर्थ हुआ वृद्धि का कारण अर्थात भक्तों की वृद्धि करने वाली। वृद्धि में विराजमान। (श्री विष्णुसहस्रनाम स्तोत्र, आचार्य गोविन्दकृत नामचन्द्रिका टीका में कई नामों में इस तरह के अर्थ किये गए है। अन्यथा भी यस्याः सकाशात् वृद्धिः भवति, सा वृद्धिः इति कथ्यते अर्थात जिसकी समीपता से वृद्धि होती है, वह वृद्धि है अर्थात वृद्धि का अर्थ हुआ वृद्धि करने वाली।)

101. **ध्रुवा गति** – अविचल अवस्था या अविचल ज्ञानस्वरूपा। गति का अर्थ चलना, अवस्था, ज्ञान होता है। अविचल चलना यह अर्थ बनेगा नहीं। ऐसा ज्ञान जो घटता बढ़ता नहीं है, तद्स्वरूपा। यदि ध्रुवा को अलग नाम दिया जाता है तब इस नाम का अर्थ होगा– जो सदैव स्थिर रहने वाली पृथ्वी आदि के रूप में है। यदि गति को अलग नाम दिया जाता है तो अर्थ होगा–गमनस्वरूपा, ज्ञानस्वरूपा, लक्ष्यस्वरूपा।

102. **ईश्वरी** – शासन करने के स्वभाव वाली। कर्ता एवं शील (स्वभाव) अर्थ में ईश् धातु से वरच् प्रत्यय लगता है। ईश का अर्थ हुआ शासन करने वाला, ईश्वर का अर्थ हुआ शासन करने के स्वभाव वाला अर्थात जिसके खून में ही शासन करने का गुण है। ईश्वर शासक तो है ही, उसके स्वभाव में भी शासन करने का गुण है। शासन करने वाली (सारे ब्रह्माण्ड का)। इनके आदेश व नियमानुसार ही सब कुछ होता है। जो शासन करने वाली है एवं श्रेष्ठ है अर्थात् अन्य देवताओं से श्रेष्ठ है। जो सबकी स्वामी है, शासनकर्त्री एवं श्रेष्ठ है। जो शासनकर्त्री है, गति करती है (संचालन करती है) और स्वयं में आनन्द की अवस्था में रहती है अर्थात् आत्माराम है। वर देने में समर्थ अर्थात् वरदान देने वाले अन्य देवताओं को भी वरदान देने वाली। ईश अर्थात समर्थ अर्थात वरदान देने में समर्थ। ईश्वर और ईश दोनो का अर्थ सामन्यतः शासन करने वाला होता है। ईश्वर में वर शब्द भी लगाा है। वर का अर्थ है श्रेष्ठ। जो शासन करने वाली है एवं श्रेष्ठ गुणों (दया, करुणा, प्रेम आदि) से भी युक्त है। ईश कहने से शासन करने का भाव तो आता है पर उसके गुण कैसे हैं, यह अच्छी प्रकार से पता नहीं चलता। शासन में अधीनस्थों को आदेश दिया जाता है और अधीनस्थों को वह कार्य करना पड़ता है। शासक की इच्छा के अनुसार घटनाएं घटित होंगी। प्रकृति के नियम, कर्म के नियम आदि का पालन करना होता है। शासन अनुग्रह और निग्रह के सिद्धान्त पर चलता है। ईश धातु का अर्थ है शासन करना, प्रेरित करना।

103. **महिमा** – महिमा सिद्धि स्वरूपा। इस सिद्धि में व्यक्ति कितना भी बड़ा आकार धारण कर सकता है। 'महत्' तत्व से युक्त। सर्वाधिक महत्वपूर्ण। सबसे बड़ी। ज्ञान, विज्ञान, विद्या, बुद्धि, धन, शक्ति में सबसे ऊँची। The power of acquisition of the sense of all pervasiveness.

104. **ऋद्धि** – भौतिक सम्पन्नता या समृद्धि स्वरूपा। रूपया, धन–दौलत, सम्पत्ति, फार्म हाउस, दुकान आदि सभी ऋद्धि के रूप हैं। जिसके द्वारा आदमी समृद्धिवान/संपत्तिवान बनता है वह ऋद्धि कहलाती है। ऋद्धि शब्द ऋ गतौ धातु से बनता है। ऋध् का अर्थ है बढ़ना। आजकल यह भौतिक सम्पत्ति के या भौतिक समृद्धि के अर्थ में प्रयुक्त होता है। रूपया–पैसा, धन–दौलत, जमीन–जायदाद, गाड़ियाँ जो भौतिक वस्तुऐं अधिकता में होती है वह ऋद्धि कहलाती है अर्थात प्रचुर मात्राओं में भौतिक वस्तुओं का होना ऋद्धि है। प्रचुर मात्रा में भौतिक सम्पदा रूपी यह अर्थ निकलेगा। यश को भी ऋद्धि के अन्तर्गत गिना जाता है। कहीं कहीं पर क्षुद्र सिद्धियों को भी ऋद्धि कहा गया है, ऐसी सिद्धि के स्वरूप वाली। अनेक वस्तुओं की वृद्धि स्वरूपा। जब जीवन के लिए उपयोगी एवं सुख पहुँचाने वाली बहुत ही वस्तुयें हो एवं प्रत्येक वस्तु अधिक मात्रा मे है, तो उसे ऋद्धि या समृद्धि कहते हैं। अनेक वस्तुओं की वृद्धि का कारण अर्थात् उन्हें देने वाली। एक नियम है कि उस शब्द के आगे कारण लगाने से भी अर्थ निकल आता है जैसे ऋद्धि अर्थात् ऋद्धि का कारण अर्थात् ऋद्धि देने वाली। एक नियम यह भी है कि उसमें विराजमान, ऐसा जोड़ करके भी अर्थ निकाला जा सकता है। ऋद्धि में विराजमान यह अर्थ भी ऋद्धि का होगा। सभी वस्तुओं की समृद्धि, आठ ऐश्वर्य, ऋद्धि की अभिमानी देवी जो लक्ष्मी जी की दासी है। ऋद्धि के सात गुण है– सत्य, ऋत, उग्रता, दीक्षा, तप, ब्रह्म, ज्ञान, यज्ञ। वृद्धि–विष्णु के गुणों से वृद्धि। सुषुम्ना मार्ग से क्रमशः वृद्धि होती है। अर्घ् पूजायाम् धातु से ऋद्धि शब्द का अर्थ होगा योगियों को सम्मान देती है। क्षुद्र सिद्धि को भी ऋद्धि कहते है। अतः गणेश जी की दो पत्नियाँ है– बुद्धि और ऋद्धि–सिद्धि। एक किताब में ऋद्धि का अर्थ Substance of spiritual attainment तथा सिद्धि का अर्थ है Physical or material attainment दिया गया है।

105. **प्रमोदा** – अधिक प्रसन्न रहने वाली। प्रकृष्टम् प्रमोदते इति प्रमोदा। अधिक प्रसन्न करने वाली या भक्तों पर अधिक प्रसन्नता बरसाने वाली। प्रमोदयति इति प्रमोदा। आमोद, प्रमोद और सम्मोद ये तीन शब्द होते हैं। इच्छित वस्तु की प्राप्ति की आशा से होने वाली प्रसन्नता आमोद है। जबकि इच्छित वस्तु प्राप्त हो जाने पर होने

वाली प्रसन्नता प्रमोद है। शायद इच्छित वस्तु को भोगने पर होने वाली प्रसन्नता सम्मोद होती होगी। गणेश सहस्रनाम में आमोद और प्रमोद शब्द आये हैं।

106. **उज्ज्वलोद्यमा** – जिनका उद्यम (क्रिया या कार्यकलाप) दोषरहित है। कलंकरहित यत्न या कार्य वाली। निर्दोश यत्नों वाली। ईमानदारी की कमाई उज्जवल कमाई है और घूस लेकर की गई कमाई काली कमाई है। सात्विक प्रयासों/लगन वाली (उज्ज्वल= स्वच्छ) अर्थात् सही दिशा में बड़े काम करने वाली।

107. **अक्षया** – जिनका कभी भी क्षय नहीं होता। अक्षय तृतीया तिथि स्वरूपा। उस योग के स्वरूप वाली जिसमें किया हुआ पाप या पुण्य नाश नहीं होता। परमात्मा के शक्तिस्वरूपा। सन्यासी की शक्ति स्वरूपा। अक्षय + आ, एकाक्षरी कोष के अनुसार आ का एक अर्थ शक्ति है। अक्षय के अर्थ परमात्मा, सन्यासी है।

108. **वर्धमाना** – सदैव बढ़ने वाली। विश्व या ब्रह्माण्ड का लगातार विकास हो रहा है।

109. **सुप्रकाशा** – सुन्दर प्रकाश वाली।

110. **विहंगमा** – आकाश में विचरण करने वाली, वि अर्थात आकाश। पक्षी अर्थात सतत गतिशीला।

111. **नीरजा** – जो नीर अर्थात जल में पैदा हुई। देवी लक्ष्मी समुद्र मन्थन से पैदा हुई थी।

112. **जननी**– प्राणिमात्र को जन्म देने वाली। जनम् नीयते इति जननी। भक्तजनों का नेतृत्व करने वाली अर्थात उनका रास्ता दिखाने वाली। करुणास्वरूपा। शब्द कोष में जननी का एक अर्थ करुणा भी दिया है।

113. **नित्या** – सदैव अस्तित्व में रहने वाली। जिनका अस्तित्व तीनों कालों में रहता है। जो उत्पत्ति और विनाश से रहित हैं। भगवान विष्णु का एक नाम नित्य है। भगवान विष्णु की शक्तिस्वरूपा। नित्य अर्थात प्रतिदिन यि जाने वाले कर्म स्वरूपा।

114. **जया** – असुरों पर जीत हासिल करने वाली। जयति असुरान् इति जया। जिसने विरोधियों को जीत लिया। विरोधियों या काम, क्रोध, लोभ आदि विकारों पर जीत हासिल करने वाली।

115. **रोचिष्मती** – दिव्य प्रकाश वाली।

116. **शुभा** – जो सुख दे। जो अभावों की पूर्ति कर दे या जो अच्छे लक्ष्य को पाने के लिए आवश्यक साधन दे। शुभ का अर्थ होता है जो अभावों की पूर्ति करे या जो अच्छे लक्ष्य या परम लक्ष्य को पाने में सहायक हो। रोटी–कपड़ा–मकान अभाव की पूर्ति करते है इसलिए शुभ हैं। उपासना या साधना परम लक्ष्य को पाने में सहायक होते हैं इसलिए शुभ हैं। परमशुभ मोक्ष होता है, जो किसी का साधन नहीं है, स्वयं में साध्य है। भक्तों को सन्मार्ग में चलाना, दिव्य गुणों को देना शुभ है। राक्षसों और दुष्टों को मारना भी शुभ है। माता–पिता बच्चे के सुधार के लिए यदि पिटाई करते हैं तो वह भी शुभ है क्योंकि अच्छे उद्देश्य के लिए ऐसा किया जाता है। कड़वी दवाई जो रोगों को ठीक करती है शुभ है क्योंकि अन्तिम परिणाम अच्छा है।

117. **तपोनुदा** – तप के द्वारा प्रेरित होने वाली अर्थात तप से प्रसन्न होकर वरदान देने के लिए प्रेरित होने वाली। तप के द्वारा प्रेरित होने वाली अर्थात आकर्षित होने वाली या अनुकूल बनने वाली। दुर्गासप्तशती में जब राजा सुरथ ने तपस्या की थी तो देवी उनकी ओर प्रेरित हुई थी अर्थात उनके अनुकूल हुई थी। तप में प्रेरित करने वाली यह अर्थ भी निकाल सकते हैं अर्थात अपने उपासको को तप करने की ओर प्रेरित करती है। नुदति का अर्थ दूर करना या प्रेरित करना होता है।

118. **ज्वाला** – अग्नि की लपट की तरह तेजस्विनी। अग्निस्वरूपा।

119. **सुदीप्ता** – अत्यन्त दीप्तिमान।

120. **अंशुमालिनी** – किरणों को धारण करने वाली। किरणों से युक्त। उनके आभामण्डल से ऐसा लगता है मानो किरणें निकल रही हों। सूर्य की शक्ति स्वरूपा। अंशुमाली का अर्थ होता है सूर्य।।

121. **अप्रमेया** – प्रमाणों से जिसका ज्ञान न हो। प्रमाण है– प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द आदि।

122. **त्रिधा** – तीन रूपों वाली (क्षर, अक्षर, पुरुषोत्तम) या महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती स्वरूपा या इच्छाशक्ति, ज्ञानशक्ति, क्रियाशक्ति स्वरूपा या आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक स्वरूपा।

123. **सूक्ष्मा** – इन्द्रियों से अनुभव न की जा सकने वाली (इन्द्रियातीत)। जिनका अनुभव इन्द्रियों से नहीं होता उन्हें सूक्ष्म कहते हैं। स्थूलेन्द्रियागोचरत्वात् सूक्ष्मा। सुखदा उत्तमा क्ष्मा अनेया। सूरीन् क्षमते इयम। अणोरणीयान् जीवस्याप्यन्तर्यामी। स्थूल इन्द्रियों से ग्रहण नहीं होने वाली अर्थात् जिनका ज्ञान नही हो सकता। जिनके द्वारा पृथ्वी सुख देने वाली एवं उत्तम होती है। पृथ्वी से ही हमें अन्न, जल, रहने का स्थान, अनेक प्रकार के रत्न मिलते हैं अतः पृथ्वी प्राणियों के लिए सुखदायी एवं उत्तम है। पृथ्वी में इन सभी गुणों को पैदा करने वाली शक्ति देवी ने ही दी है। ज्ञानियों या विद्वानों के अपराधों को क्षमा करने वाली। जीवात्मा को सबसे छोटा माना जाता है उसके अन्दर भी रहने वाली या गति करने वाली अर्थात् जो जीवात्मा से भी छोटी है।

124. **परा** – पराविद्यास्वरूपा। ऐसी विद्या जो परमार्थ का ज्ञान कराए, दृष्टिगोचर समस्त पदार्थो में छिपे चैतन्य का साक्षात्कार कराये, पराविद्या है। ऐसी विद्या या ज्ञान जो मोक्ष दिलाये पराविद्या कहलाती है। जो अन्य देवों से श्रेष्ठ है ऐसा अर्थ भी कर सकते हैं। पम् राति इति परा। रा का अर्थ है देने वाली। एकाक्षरीकोश से प के अर्थ लेकर परा शब्द के अर्थ निकाले जा सकते हैं।

125. **निर्वाणदायिनी** – मोक्ष देने वाली। शरीर रहित अवस्था से होने वाले अलौकिक आनन्द को देने वाली। (वाण = शरीर)। वा धातु का अर्थ गमन करना होता है। इस प्रकार निर्वाण का अर्थ जन्ममृत्युरूपी आवागमन से मुक्त होना।

126. **अवदाता** – स्वच्छ स्वरूप वाली। (अव का अर्थ है नीचे तक या अन्त तक। दाता शब्द दैप् शोधने धातु से बना जिसका अर्थ है शुद्ध। नीचे तक या अन्त तक जो शुद्ध है, कहीं मैल नहीं अर्थात एकदम शुद्ध। अव = निम्न अर्थात् गन्दगी। दाता, दो अवखण्डने धातु से अर्थ देगा खण्डन करना अर्थात मिटाना)। गन्दगी मिटाना = स्वच्छ करना।

127. **सुशुद्धा** – अच्छी तरह से शुद्ध अर्थात सूक्ष्म रूप से भी शुद्ध। त्रिगुणों को अर्थात सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण को दोष माना जाता है। इन दोषों से रहित। शोभना चा शुद्धा इति सुशुद्धा। सांसारिक दोषों से रहित सुन्दरी। सुन्दरी अर्थात सुन्दर रूप वाली।

128. **अमोघाख्या** – जिनका नाम अमोघा है। आख्या का एक अर्थ है नाम। अमोघ का अर्थ अचूक या कभी निष्फल नहीं होना वाला भी होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ जिनका नाम कभी व्यर्थ नहीं जाता है अर्थात् इनका नाम लेने से काम सफल होना निश्चित होता है। इनका नाम लेकर जो भी अच्छा कार्य किया जायेगा उसका बनना निश्चित है। अमोघ है आख्या (नाम) जिनकी। जितने भी नाम हैं अचूक हैं अर्थात् उन नामों का जो अर्थ है वह अवश्य मिलता है। अमोघ का अर्थ है जो व्यर्थ न जाए। इनका नाम जपने से, फल अवश्य मिलेगा।

129. **परम्परा** – अनादि काल से आज तक चली आ रही अर्थात जिनका अस्तित्व और श्रेष्ठ कार्यकलाप जो अभी तक चला आ रहा है। परम्परा में आरम्भिक पर का अर्थ पहले है एवं अन्त में लिखे पर का अर्थ बाद में है। पहले से बाद तक चली आ रही चीज परम्परा है। पर का अर्थ श्रेष्ठ भी होता है। जो श्रेष्ठो में भी श्रेष्ठ है अर्थात

सर्वश्रेष्ठ है। श्रेष्ठ का अर्थ है गुण, शक्ति, वैभव आदि में श्रेष्ठ होना। श्रेष्ठ रीति रिवाज स्वरूपा। भूतकाल से चली आ रहीं हैं जो अर्थात जिनका अस्तित्व भूतकाल से चला आ रहा है। पहले से भी पहले। श्रेष्ठ से भी श्रेष्ठ। परम्परा में दो पर हैं। पर का अर्थ पुराना या श्रेष्ठ होता है। क्रम से चली आ रही पूजा या साधना स्वरूपा। रीति में विराजमान। रीति का कारण। शब्द के आगे 'में विराजमान' या 'का कारण' या 'के समान' लगाने से शब्द के अन्य अर्थ निकल आते हैं।

130. **संधानकी** – जोड़ने वाली। जीवात्मा को परमात्मा से जोड़ने वाली, भक्त को भगवान से जोड़ने वाली, भक्त की मनोकामना को उसके इष्ट पदार्थ से जोड़ने वाली, ऐसा अर्थ निकाल सकते है। जोड़ने वाली अर्थात भक्त को भगवान से जोड़ने वाली या जीवात्मा को परमात्मा से जोड़ने वाली। शब्दकोश में सन्धान का अर्थ जोड़ना, धनुष में बाण चढ़ाना, मृत व्यक्ति को जीवित करना, सहारा देना आदि दिया गया है। युद्ध के अवसर पर धनुष में बाण चढ़ाए हुए। कृ करोति धातु से ड प्रत्यय लगाने से बने क शब्द का अर्थ करने वाला है। मृत व्यक्ति को जीवित करने की क्रिया करने वाली अर्थात ऐसी मन्त्रस्वरूपिणी क्योंकि मन्त्र ही वह कार्य कर रहा है। मृत व्यक्ति को जीवित करने वाले मृत संजीवनी मन्त्र स्वरूपा। शुक्राचार्य के पास मृत संजीवनी विद्या (मन्त्र) थी। समस्त विश्व को सहारा देने वाली अर्थात आधार स्वरूपा। संकट में पडे अपने भक्तों को सहारा देने वाली। जोड़ने वाली अर्थात आत्मा को परमात्मा से जोड़ने वाली। संधान करने वाली। शत्रुओं पर अस्त्र शस्त्रों का सम्यक् रूप से प्रयोग करने वाली। लक्ष्यसन्धान करने वाली अर्थात लक्ष्य तक पहुँचाने वाली। मदिरा निकालने की क्रिया को भी संधान कहते हैं। इस क्रिया के दौरान निकली हुई अर्थात मदिरा स्वरूपा यह अर्थ हुआ। (यदि संधनी है तो अर्थ होगा सम्यक् या प्रचुर धन वाली)।

131. **शुद्ध विद्या** – दोषरहित मन्त्र स्वरूपा। मन्त्रों के छिन्न, रुद्ध, कीलन आदि बहुत से दोष होते हैं। विद्या का अर्थ है स्त्री देवता का मन्त्र। मोक्ष दिलाने वाली विद्यास्वरूपा। निर्मल ज्ञान स्वरूपा। कश्मीरी शैव दर्शन के अनुसार 5 शुद्ध तत्वों में पाँचवें तत्व का नाम शुद्धविद्या है। इस तत्व में इदम् और अहम् दोनों अंश बराबर होते हैं। परमतत्व (शिव) को यह लगता है कि जगत उनके वैभव का विस्तार है। इस तत्व के स्वरूप वाली। श्रीविद्या का 16 अक्षरों का मन्त्र भी शुद्ध विद्या कहलाता है।

132. **सर्वभूतमहेश्वरी** – समस्त प्राणियों की सबसे बड़ी ईश्वरी। ईश्वरी अर्थात आराध्या या शासन करने वाली, पालन करने वाली। ईश्वर वह है जो उत्पन्न, पालन और संहार करे।

133. **लक्ष्मी** – शुभ चिन्हों से युक्त (लक्ष्म = चिन्ह)। ज्ञान, ऐश्वर्य, धन सम्पत्ति, विजय, आरोग्य आदि शुभ चिन्ह हैं। शरीर में जितने भी शुभ चिन्ह जैसे तिल, कमल का निशान आदि सभी हैं उनके शरीर में। जो सबकी लक्ष्य भूता है अर्थात सभी जिसे प्राप्त करना चाहते है। जो अपने भक्तों को लक्ष्य प्राप्त करने में सहायता करती है, (साधन, धन, शक्ति, ज्ञान आदि देकर)। जो अपने भक्तों को सर्वाधिक वात्सल्य भाव दिखाती है। जो भक्तरूपी पुत्रों को अपनी गोद में बिठाती है अर्थात् उनकी सर्वतोभावेन रक्षा करने वाली। जो अपने भक्तों की विपत्ति की नदी से निकलने के उपायों को दिखाती है अर्थात् बताती है या सुझाती है। शुभ लक्ष्म (चिन्ह) से युक्त। ज्ञान, ऐश्वर्य, सुख, आरोग्य, धन–धान्य, जय आदि शुभ लक्षण हैं। लक्षयति इति लक्ष्मी। देखने वाली अर्थात सभी प्राणियों के द्वारा किये जा रहे शुभ अशुभ कर्मों को देखने वाली। सभी की लक्ष्यभूता अर्थात सभी प्राणियों का लक्ष्य। लक्ष्य तक पहुँचाने वाली। जिनके लिए कपिल मुनि ने कहा कि मेरी तरफ देखो अर्थात मुझपर कृपा करो। ''मा लक्षय'' अर्थात मेरी तरफ देखो। लक्ष्मी जी की बहुत सी विशेषताओं को देखकर कपिल मुनि द्वारा ऐसा कहा गया। दाता को प्रेरणा देने वाली। ला धातु में ड प्रत्यय लगाने से बने ल शब्द का अर्थ है देने वाला या लेने वाला। क्षिप् धातु का अर्थ है प्रेरणा देना। लय (स्थिति एवं संहार) में प्रकृति को प्रेरणा देने वाली। लीङ् श्लेषणे धातु में ड प्रत्यय लगाने से बने ल का अर्थ लीन होना होगा। व्यक्ति में लीन होकर अर्थात प्रविष्ट होकर उसे

अच्छे कार्य की प्रेरणा देने वाली। क्षम् सहने धातु से भी यह शब्द बन सकता है तब अर्थ होगा क्षमा देने वाली अर्थात करने वाली। मा माने धातु से अर्थ होगा सभी भूतों को जानने वाली या नापने वाली। भूत का अर्थ है प्राणी, पंचभूत, शिवगण आदि। जिससे सब प्रकार के पदार्थ प्राप्त होते है। निरुक्त में इस अर्थ को लभ् (प्राप्ति) + मुट् + ई > लभ् + मी > लक्ष् + मी > लक्ष्मी, इस प्रकार से उत्पन्न किया गया है। धनादि ऐश्वर्य से व्यक्ति को प्रतिष्ठा, सम्मानादि प्राप्त होते है और सभी लोग उससे मिलने चाहते है, अतः धनादि का नाम लक्ष्मी है। मनुष्य के लिये अभिलषित होती है अर्थात् मनुष्य इसे पाने की आकांक्षा रखते है। लष् धातु में मुट् ई जोड़ने पर लक्ष्मी शब्द बनेगा। इसे सभी प्राप्त करना चाहते है। अतः इनका नाम लक्ष्मी है। लष् कान्तौ धातु में मुट् ई जोड़ने पर लक्ष्मी बनेगा। कान्ति का अर्थ है इच्छा। लग् धातु से भी यह शब्द बन सकता है। सभी लोग जिसका आलिंगन करते है अर्थात् प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार करते है। लग् धातु का अर्थ आलिंगन करना है। निरुक्त में इस प्रकार की व्युत्पत्तियाँ दी गयी है। पुण्यार्थियों द्वारा देखी गई या देखी जाने वाली। आत्मपरक दृष्टि को भी लक्ष्मी कहते हैं।

134. **तुष्टि** – तृप्ति रूपा। किसी भी अन्य चीज की आकांक्षा से रहित भाव स्वरूपा। अब और नहीं चाहिए इस भाव के रूप में है जो। चूँकि देवी के पास सबकुछ है और वह भी पूर्ण मात्रा में तो उन्हें कुछ और आवश्यकता नहीं है। यह नाम तारा नामावली में देखिए।

135. **महाधीरा** – धैर्यवानों में जो सबसे ऊपर हैं। कठिन परिस्थिति आने पर भी विचलित न होना, सन्तुलन बनाये रखना धैर्य है। जो पूजनीया भी है और धैर्यवान भी है। मह् पूजायाम् धातु से महा का अर्थ पूजनीय भी होता है।

136. **आपूरणेन शान्ति** – कोई वस्तु पूर्ण होने से या मनोकामना पूर्ण होने से जो शान्ति अनुभव में आती है, उस शान्ति के स्वरूप वाली। सर्वथा परिपूर्ण होने से शान्ति वाली। धन की पूर्ति हो जाने से शान्ति स्वरूपा। आपूरण = भरपूर। धन की पूर्ति। नये – नये धन की पूर्ति के द्वारा आने वाली शान्ति स्वरूपा।

137. **अनुग्रहा शक्ति** – कृपास्वरूपिणी शक्ति। कोई भी देवता जब अपने भक्तों पर कृपा करता है तो यही कृपाशक्ति होती है जिसके द्वारा देवता कृपा करते हैं। भक्तों पर कृपा बरसाने वाली शक्ति स्वरूपा। यदि अनुग्रहा अलग शब्द होता तब उसका अर्थ होता कृपास्वरूपा। यदि शक्ति अलग नाम होता तो अर्थ होता कार्योत्पादन करने की सामर्थ्य स्वरूपा।

138. **आद्या** – सबसे पहली (सबसे पहले उन्हीं का अस्तित्व था)। सृष्टि के आरम्भ में वही थी।

139. **जगज्ज्येष्ठा** – संसार में सबसे बड़ी (आयु, ज्ञान, ऐश्वर्य सभी में)।

140. **जगत्विधि** – संसारिक नियमरूपा। सम्पूर्ण जगत् के लिए विधान करने वाली।

141. **सत्या** – जो किसी भी काल में बाधित न हो अर्थात् भूत, वर्तमान, भविष्य तीनों कालों में अर्थात हमेशा अस्तित्ववान। जो हमेशा रहती है। हमेशा यथावत रहे। सज्जनों में विराजमान। सत्सु गता सत्या। सज्जनों में अनुकूल अर्थात सज्जनों के लिए अनुकूल या हितकारी। सत्सु साधु इति सत्या। सदगुणों या अच्छाइयों से भरे हुए अर्थात इनसे पूर्ण। सदगुणभरिता सत्या। ब्रह्म और जगत को जोड़ने वाली। स अर्थात सत् अर्थात ब्रह्म। त अर्थात मूर्त जगत। यु धातु में ड प्रत्यय लगाने से बने य शब्द का अर्थ जोड़ने वाला होता है। (ऋत भी सत्य का पर्याय होता है किन्तु ऋत परिवर्तनशील सत्य है जैसे हर वर्ष बसन्त आती है, ग्रीष्म आती है किन्तु कुछ समय के विराम के बाद दुबारा आती है। परिवर्तनशील सत्य अर्थात जो समय के अनुसार उचित होता है। बचपन में जो सही हो, आवश्यक नहीं की वह युवावस्था में सही हो। कोई चीज गर्मी में सही हो तो आवश्यक नहीं कि वह सर्दी में भी सही हो। सत्य अपरिवर्तनशील होता है अर्थात स्थाई होता है)। उस वाणी के स्वरूप वाली जो कभी

मिथ्या नही होती। जिनकी वाणी मिथ्या नहीं होती अर्थात हमेशा सही होती है। अवितथ वाक् इति सत्या। वितथ अर्थात तथ्य के विपरीत। लौकिक ऋषि वही बोलते है जैसा कुछ घटित होता है। ईश्वर एवं सिद्ध जो बोलते है वैसा ही घटित होता है तभी वरदान और श्राप होते हैं। यही कारण है कि इनके बारे में कहा जाता है कि अर्थ (वस्तु या घटना) इनकी वाणी का अनुगमन करते है। जो ब्रह्म वायु के पास जाती हैं (सृष्टि के लिये) सत् का अर्थ प्राण अर्थात प्राण वायु। ती का अर्थ है ब्रह्मा। य का अर्थ है याति अर्थात जाना। देवी ब्रह्मवायु से कहती हैं कि आप सृष्टि करो। दोषरहित ज्ञानानन्द स्वरूप वाली। ती अर्थात आनन्द, यम् अर्थात ज्ञान, सत् अर्थात निर्दुष्ट। सच्चिदानन्द स्वरूपा। पतिव्रता स्त्रियों के सतीत्व को दृढ करते हुए उनमें स्थित एंव ब्रह्म स्वरूपा या अविनाशी स्वरूपा। सतीषु सतीत्वं द्रढयन् स्थित इति सती च अश्च। जिनका निर्माण अर्थात जगत सत्य है। सत्यम् जगत् अस्य निर्माणम् इति सत्यः। यथार्थज्ञानपूर्वक जो कोई भी रचना होती है, उस रचना में स्थित। यथार्थज्ञानपूर्विका कृति् सत्यम्, तत्र गतः।

142. **प्रह्वा** – विनम्र। बहुत लोगों द्वारा जिनका आवाह्न किया जाता है या पुकारना होता है। प्रभूत से प्र लिया। प्रत्येक संकट में देवताओं या भक्तों द्वारा जिनका आवाहन किया जाता है। प्रतिसंकट से प्र शब्द लिया। श्रेष्ठ लोगों द्वारा अर्थात श्रेष्ठ देवों या श्रेष्ठ भक्तों द्वारा जिनका आवाहन किया जाता है। प्रकृष्ट (श्रेष्ठ) से प्र शब्द लिया।

143. **क्रिया** – जिसके द्वारा सब कुछ किया जा सकता है। क्रियते अनया सा क्रिया, कर्तृशक्ति। सभी प्रकार के कामों को निष्पन्न करने वाली। क्रिया योग नामक साधना स्वरूपा। इस साधना में सुषुम्ना नाड़ी से साँस प्रवाहित करने का प्रयास किया जाता है। कुण्डलिनी साधना के दौरान शरीर में कुछ अपने आप चेष्टायें होने लगती हैं, जिनका नाम क्रिया है। ऐसी क्रिया स्वरूपा।

144. **योग्या** – सबसे अधिक योग्य। योग्यता में इनकी बराबरी कोई नहीं कर सकता। जगत के निर्माण, पालन कर्म में पूर्ण योग्य अर्थात सक्षम। सभी प्रकार की सामर्थ्य से युक्त अर्थात कर्तुम्, अकर्तुम्, अन्यथाकर्तुम् की सामर्थ्य से युक्त। योग्यता का अर्थ है सामर्थ्य। विश्व को जोड़कर रखने वाली। योग + यत्, तत्र साधु सूत्र से यत् प्रत्यय जिसका अर्थ है जोड़ने में निपुण। भक्त को अपने इष्ट से जोड़ने वाली या उसके मनोरथ से जोड़ने वाली।

145. **अपर्णा** – तपस्या के दौरान पत्ता तक नहीं लेती थी, ऐसी पार्वती स्वरूपा या ऐसी पार्वती से अभेद है जिनका। ऋण रहित अर्थात पितृ ऋण, देव ऋण आदि से रहित। अपगता ऋणात् इति अपर्णा।

146. **ह्लादिनी** – सभी को आनन्द प्रदान करने वाली।

147. **शिवा** – पाप नष्ट करने वाली एवं मोक्ष देने वाली। शि का अर्थ श्यति से नष्ट करना है अर्थात पाप नष्ट करना। व = अमृतबीज अर्थात मोक्ष। (श्यति विनाशयति पापं। वाति दत्ते पुण्यं/मोक्षं)

148. **सम्पूर्णा** – परिपूर्ण। सब कुछ समेटे है अपने में।

149. **ह्रादिनी** – विद्युत स्वरूपा। शत्रुओं पर विद्युत की तरह टूट पड़ने वाली, शब्द करने वाली। विद्युत की तरह तेजी से चमकने वाली।

150. **शुद्धा** – तुरीय चैतन्य स्वरूपा जो शुचि या शुद्धि की अवस्था है। शुद्ध नामक राग स्वरूपा या शुद्ध नामक राग की शक्ति स्वरूपा। इस राग में अन्य कोई राग मिले नहीं होते। भक्तों की दरिद्रता को दूर करने वाली। शुद्धयति साधकदारिद्रयम् अनया, सा शुद्धा इति कथ्यते। भक्तों के मन और कर्म को पवित्र करने वाली अर्थात दोषरहित करने वाली। भक्तानाम् शुद्धिसम्पादका शुद्धा। मिश्रण (मिलावट) से रहित अर्थात त्रिगुणातीत। स्निग्ध। माया से रहित। अन्नमय, प्राणमय आदि पंचकोशों से रहित अर्थात प्रकाश स्वरूपा। शुद्ध (दोष रहित) आचरण में तत्पर।

151. **ज्योतिष्मती** – विशिष्ट प्रकाश से युक्त। मन की निस्तरंग सागर जैसी अर्थात शान्त अवस्था स्वरूपा। आत्मा के स्वरूप से प्रकाशित होने के कारण इस वृत्ति या प्रवृत्ति को ज्योतिष्मती कहा जाता है। ज्ञानालोक के आधिक्य वाली। ज्ञान प्रकाश स्वरूप होता है। ज्योति का अर्थ है सात्विक प्रकाश।

152. **अमृतावहा** – अमृत को चारो ओर से या पूर्ण रूप से धारण करने वाली। आ = चारों ओर, वह् = धारण करना। अमृत के प्रवाहों से युक्त। अमृत के खजाने रखने वाली। भक्तों के लिए अमृत लाने वाली या भक्तों को अमृत प्राप्त करा देने वाली। वह् धातु का अर्थ प्राप्त करना या धारण करना है। अमृत को धारण करने वाली। कई बार आ का अर्थ चारों ओर से या पूर्ण रूप से करने की आवश्यकता नहीं हाती अर्थात आ का कोई अलग से अर्थ देने की जरूरत पहीं है। एकाक्षरी कोष में आ का एक अर्थ भाव (अस्तित्व) दिया गया है। प्रत्येक चीज अस्तित्व है अतः आ का अलग से अर्थ देने की जरूरत नहीं है।

153. **रजोवती** – धूल से उपलक्षित सभी लोक, ब्रह्माण्ड से युक्त। शास्त्रों में कहा गया है कि जितने भी लोक, बह्माण्ड, ग्रह–नक्षत्र, पृथ्वी आदि है वे देवी की चरणों की धूल है। रज का एक अर्थ है धूल। रज स्त्री के माहवारी को भी कहते है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ रजस्वला नारी के रूप में है जो। कामाख्या देवी स्वरूपा, इस नाम का अर्थ हुआ। शास्त्रों में आया है कि आषाढ़ मास में तीन दिन तक कामाख्या देवी एवं पृथ्वी रजस्वला होती है। पृथ्वी देवी या भूमि देवी स्वरूपा, यह भी इस नाम का अर्थ हुआ। गौरीकुण्ड तीर्थ स्वरूपा। ऐसा माना जाता है कि यह तीर्थ गौरी देवी के रज से बना। रजोगुण से युक्त। संसार की सृष्टि के समय मुख्य रूप से रजोगुण धारण करने वाली। मातंगी देवी में यह नाम है।

154. **अर्कप्रतिभा** – सूर्य के समान कान्ति वाली अर्थात् अति तेजस्विनी। अर्क का अर्थ है सूर्य, प्रति का अर्थ है समान, भा का अर्थ है कान्ति। सूर्य की विशिष्ट कान्ति से विभूषित।

155. **आकर्षिणी** – चारो ओर से लोगों को अपनी ओर खींचने वाली (आ अर्थात चारो ओर से)।

156. **कर्षिणी** – 1. खींचने वाली (युद्ध में शत्रुओं को खींचने वाली अर्थात् खींचकर उनका वध करने वाली)। 2. भक्त के पापों को खींचने वाली = खींच कर नष्ट करने वाली।

157. **रसा** – 1. रसस्वरूप वाली अर्थात् आनन्दस्वरूप धारण करने वाली। 2. पृथ्वीरूपा। 3. विभिन्न पदार्थों के 6 प्रकार के रस का अनुभव कराने वाली (रस्यते आस्वाद्यते अनया)।

158. **परा** – परा नाम की नदी स्वरूपा। गंगा स्वरूपा या गंगा से अभेद है जिनका। परा का एक अर्थ गंगा जी भी है। पुराणों में परा नाम की एक नदी का भी उल्लेख है। सर्वोत्कृष्ट (सबसे परे)। गुण, शक्ति, सौन्दर्य, ऐश्वर्य आदि सभी में दूसरों से बढ़कर है।

159. **वसुमती** – संसार की समस्त सम्पत्तियों को धारण करने वाली।

160. **देवा** – निरन्तर प्रकाशशील रहने वाली। (दिव् धातु का अर्थ है प्रकाशित होना)।

161. **कान्ति** – उस प्रकाश के रूप में जो दूसरों को आकर्षित करता है। चमक स्वरूपा। अपने स्वरूप की उज्जवलता कान्ति कहलाती। मनुष्य का शरीर और मन जब शान्त होता है तो उसके शरीर से निकलने वाली आभा या प्रकाश कान्ति कहलाती है जो लोगों को आकर्षित करती है। इस कान्ति के दायरे में आनेवाले लोग उस व्यक्ति के पास से हटना नहीं चाहते, बैठे रहना चाहते हैं क्योंकि उन्हें सुकून मिलता है। जब सतोगुण, श्रद्धा आदि गुणों का विकास होता है तो कान्ति निकलती है। चन्द्रमा की शक्ति या चन्द्रमा की पत्नी का नाम भी कान्ति है। ब्रह्म के समीप अर्थात ब्रह्म के साथ–साथ रहती हैं। सुख के समीप अर्थात हमेशा सुख या आनन्द का अनुभव करती हैं। क + अन्ति, क अर्थात ब्रह्म, सुख, स्वर्ग एवं अन्ति अर्थात समीप।

162. **शान्ति** – इन्द्रियों का अपने विषयों से वैराग्य होने पर अनुभव में आने वाली सुखानुभूति स्वरूपा। हलचल रहित मानसिक स्थिति स्वरूपा। काम, क्रोध, लोभ न रहे, इच्छा न रहे, तनाव न रहे, तो ऐसी स्थिति आती है।

163. **मति** – उस शक्ति के रूप में, जिसके द्वारा चिन्तन किया जाता है। मति (बुद्धि) किसी भी बात या वस्तु की तह तक जाती है। मनन शक्ति स्वरूपा। तर्क शक्ति स्वरूपा। बुद्धि का वह स्वरूप जो सोच विचार या मनन करती है। एकाक्षरी कोष म का अर्थ है शिव, ति का अर्थ है पूजा, महाधन। इस प्रकार मति का अर्थ हुआ शिव है महाधन जिनका या शिव की महाधन स्वरूपा। त्रिपुरभैरवी नामावली में अधिक दिया गया है। तर्क शक्ति, मनन शक्ति।

164. **कला** – शक्ति स्वरूपा। कला का अर्थ शक्ति भी होता है तद्स्वरूपा। क्रिया स्वरूपा। कला का एक अर्थ क्रिया भी होता है। खण्ड खण्ड करने वाली शक्ति। कला का अर्थ है अवयव अतः एक अखण्ड को कई अवयवों में करने वाली शक्ति कला शक्ति है। साकार जगत् स्वरूपा अर्थात् जिसे हम अपनी आँखों से देखते है उस जगत् के स्वरूप वाली। अक्षरों के स्वरूप वाली। कला अर्थात् आधार जिससे कोई चीज पैदा होती है। कला अर्थात् प्रकाश या किरण जैसे चन्द्रकला। कला अर्थात् शक्ति या अवयय या सूक्ष्म शक्ति। कला अर्थात् किसी विशेष कार्य को करने की शक्ति। कला अर्थात् आत्मिक शक्ति। कला अर्थात् भगवान शिव के साथ हमेशा रहने वाली शक्ति। कला अर्थात् अभिव्यक्ति (Manifestiation)। कला अर्थात् नैपुण्य। कला एक विशेष प्रकार का गुण या खासियत है। इसमें सामान्य से हटकर सोचना, समझना और काम करना होता है। कला का अर्थ सौन्दर्य भी दिया गया है। कला वह आधार है जिससे कोई चीज पैदा होती है। कला का अर्थ क्रिया या करने वाली भी है। जैसे काम कला का एक अर्थ है इच्छा होने पर उत्पन्न करने वाली। शास्त्रों में लिखा है भगवान के अन्दर विश्व की इच्छा हुई और उस इच्छा के होने पर विश्व की उत्पत्ति करने वाली शक्ति काम कला है। कला अर्थात् अवयव अर्थात् कोई एक विशेष कार्य करने वाली शक्ति। कला का एक अर्थ बुद्धि भी है। कला वह तथ्य है जिसके कारण व्यक्ति चेतना (Consciousness) की बजाये अपने को शरीर से तादात्म्य (Identify) कर लेता है। शैव दर्शन में एक सूत्र में ऐसा ही लिखा गया है।

165. **कला** – साकार जगत स्वरूपा। साकार जगत को भी कला कहते हैं। जगत भगवान की किरण है, कल्यते इति कला अर्थात् जिसे गिना जा सकता है वह कला है। जगत की वस्तुओं को गिना जा सकता है। कला का अर्थ मातृका अर्थात अक्षर भी होता है, तद्स्वरूपा। संसार के देदीप्यमान होने वाले चन्द्र/सूर्य आदि रूपों को धारण करने वाली। (कला अर्थात दीप्ति)। आपने चन्द्रकला का नाम सुना होगा जिसका अर्थ है चन्द्रमा का प्रकाश। कला का एक अर्थ आधार भी है अर्थात जिससे कोई चीज पैदा होती है या सहारा लेती है। कला वह शक्ति है जिससे शैव दर्शन में बताए गए तत्व विकसित (evolve) हुए।

166. **कलंकरहिता** – जिनके शरीर में कोई काला दाग या काला चिन्ह नहीं है। किसी भी प्रकार के कलंक से रहित। कुकर्म करने से जो बदनामी का दाग लगता है, उसे कलंक कहते हैं। कलंक अर्थात चरित्र का दाग। देवी के शरीर में न तो चन्द्रमा की तरह कोई दाग है और न ही उनके कर्म ऐसे हैं जिससे बदनामी की छाप पड़े।

167. **विशालोद्दीपनी** – बहुत ज्यादा चमक वाली। अतिशय श्रेष्ठ स्वरूप/शक्ति/विद्या/वैभव आदि से प्रकाशित होने वाली।

168. **रति** – अनुराग या भक्ति स्वरूपा। भक्तों पर अनुराग रखने वाली। कामदेव की पत्नी रति से अभेद है जिनका।

169. **सम्बोधिनी** – ठीक ठीक ज्ञान कराने वाली। सम्यक् रूप से प्रबोध कराने वाली (ज्ञान/विज्ञान/विद्या बताने वाली)।

170. **हारिणी** – मन को हरने वाली अर्थात सुन्दर। जो भी व्यक्ति इन्हें देख लेता है उसके मन को हर लेती हैं। कल्पान्त में संसार का हरण करने वाली। भक्तों के दोषों को, पापों को, कष्टों को हरने वाली।

171. **प्रभावा** – अतिशय प्रभाववाली अर्थात् अपनी छाप छोड़ने वाली (सभी पर अपनी छाप छोड़ती हैं)।

172. **भवभूतिदा** – संसार में जितनी भी समृद्धि या ऐश्वर्य है उसे देने वाली। संसार की विभूतियों को प्रदान करने वाली। शिव की भूति (अर्थात 8 सिद्धियाँ) देने वाली। अणिमा, लघिमा, महिता आदि अष्टसिद्धि को भूति कहते हैं। भव का अर्थ भव्य अर्थात सुन्दर भी होता है। सुन्दर ऐश्वर्य देने वाली। भवभूति नामक कवि को देने वाली अर्थात अद्भुत काव्य क्षमता देने वाली।

173. **अमृतस्यन्दिनी** – अमृत टपकाने वाली अर्थात देने वाली। सहस्रार चक्र स्वरूपा, इसी से सुषुम्ना नाड़ी में अमृत गिरता है।

174. **जीवा** – जीवात्मा स्वरूपा। जीव स्वरूपा। सभी में जीवनी शक्ति का संचार करने वाली। बृहस्पति की शक्ति स्वरूपा। जीव का एक अर्थ है बृहस्पति।

175. **जननी** – दया या करुणा गुण स्वरूपा। जननी का एक अर्थ दया या करुणा भी है। प्राणी मात्र को जन्म देने वाली। ब्रह्मांड को जन्म देने वाली। तीनों गुणों को जन्म देने वाली। भक्त जनों को सन्मार्ग या मोक्ष के मार्ग में ले जाने वाली। जन अर्थात भक्त जन। नी धातु का अर्थ होता है ले जाना।

176. **खण्डिका** – खण्डों वाली अर्थात् पृथ्वी स्वरूपा। शास्त्रों में आया है कि पृथ्वी के नौ खण्ड है। राक्षसों के टुकड़े–टुकड़े करने वाली। खण्डयति इति खण्डिका। खण्ड् धातु में ण्वुल् प्रत्यय लगाने से खण्डिका शब्द बनेगा। जिज्ञासु शिष्यों/पाठकों वाली अर्थात् पाठकों से युक्त अर्थात् पाठक भक्त जिनकी उपासना करते है। शब्दकोष में खण्डिक शब्द का अर्थ ग्रन्थ को खण्ड–खण्ड करके पढ़ने वाले शिष्य अर्थात् क्रमशः पढ़ने वाले शिष्य दिया गया है। खण्डिकाः अस्या सन्ति इति खण्डिका। जो भक्तों के पाप एवं दरिद्रता को खण्डित या नष्ट कर दें उसे भी खण्डिका कह सकते हैं। खण्डयति पापम् दारिद्रयम् इति खण्डिका। जो दुष्ट राक्षसों को खण्डित कर दे अर्थात काट दे। जैसे कारक, कारिका शब्द बनते हैं उसी तरह से खण्डक, खण्डिका शब्द बनते हैं। भगवान विष्णु के खण्ड या अंश के रूप में हैं जो। जिस प्रकार अर्द्धनारीश्वर में आधे भाग में पार्वती हैं उसी प्रकार भगवान विष्णु के आधे भाग में लक्ष्मी हैं अर्थात खण्ड रूप में लक्ष्मी हैं। शिव और विष्णु में अभेद है। खण्ड का अर्थ समूह भी होता है जैसे पद्मखण्ड का अर्थ है पद्मसमूह। सभी देवताओं की शक्ति के समूह के रूप में है जो। दुर्गासप्तशती के अनुसार सभी देवताओं के शरीर से तेज निकलकर इकठ्ठा होकर महालक्ष्मी का प्रादुर्भाव हुआ।

177. **स्थिरा** – 1. पृथ्वी की तरह सदैव स्थिर रहने वाली। (यद्यपि लक्ष्मी चंचल होती हैं किन्तु कुछ मन्त्र या स्तोत्र ऐसे होते हैं जिनके पाठ करने से वह स्थिर हो जाती हैं। जहाँ भगवान विष्णु की निरन्तर आराधना होती है वहाँ लक्ष्मी स्थिर हो जाती हैं)। 2. पृथ्वी के रूप में सदैव स्थिर रहने वाली।

178. **धूमा** – उस असत या अन्धकार के स्वरूप वाली जिसमें प्रकाश छिपा है। तभी धुआँ का रंग पूरा काला नहीं है। असत् से सत् की उत्पत्ति होती है और असत् में ही उसका संहार होता है। छिपी हुई चेतना स्वरूपा अर्थात अजाग्रत चेतना स्वरूपा जिसे अंग्रेजी में unconsciousness (अचेतना) कहते हैं। भक्त के पापों और प्रगति के मार्ग के अवरोधक विघ्नों को भश्मसात् करने वाली। धूम अर्थात अग्नि अर्थात भष्मसात करना। धूम्र मार्ग स्वरूपा अर्थात पितृयान स्वरूपिणी। यज्ञ विद्या स्वरूपिणी। धूम्रवर्णा, सगुण और निर्गुण के बीच की अवस्था स्वरूपा। धूम अर्थात अग्नि है भी और अग्नि नहीं भी है अर्थात सगुण और निर्गुण के बीच की अवस्था। प्रचण्ड धूम से घिरी रहती हैं। संकल्प विकल्पात्मक कल्पनाओं को मूर्त या साकार रूप देने वाली अर्थात उन्हें पूरा करने

वाली। कल्पनाओं को धूल धूसरित कल्पनाऐं कहा जाता है अर्थात उन्हें धुँऐ का एक रूप माना जाता है। पर्याप्त शक्ति वाली।

179. **कलावती**– समस्त कलाओं से युक्त अर्थात इनके ज्ञान से युक्त (इन्हें 64 कलाओं का ज्ञान है)।

180. **पूर्णा** – पूर्ण स्वरूप वाली। देवी के पास प्रत्येक चीज है और हर एक चीज पूर्ण मात्रा में है। उनमें कोई अभाव नहीं है। सभी शक्तियों से युक्त। पूर्णा नामक नदी स्वरूपा।

181. **भासुरा** – स्फटिक वाली अर्थात स्फटिक मणियों की माला पहने हुए या स्फटिक पर्वत पर रहने वाली। भासुर का एक अर्थ स्फटिक भी होता है। देदीप्यमान/ चमकने वाली।

182. **सुमति** – श्रेष्ठ बुद्धि स्वरूपा। श्रेष्ठ बुद्धि से युक्त।

183. **रसा** – पृथ्वी स्वरूपा। रस्यते शब्दद्यते अस्याम्, जिसमें शब्द होता है अर्थात कोलाहल होता है अर्थात पृथ्वी रूपा। जिसमें माधुर्य, अम्ल आदि सभी छह रस मौजूद हो वह रसा है। सम्पर्क करने से अर्थात खाने से जो अनुभव या स्वाद होता है वह रस है। मधुर, अम्ल (खट्टापन), लवण (नमकीन), कटु (चरपरा), तिख्त (कड़वा), कशाय (जैसे नीम आदि) ये छह रस होते हैं। देवी किसी के लिए मधुर स्वभाव वाली हैं किसी के लिए कड़वी स्वभाव वाली है किसी के लिए तीक्ष्ण स्वभाव वाली हैं अतः देवी के अन्दर सभी छह रस मौजूद हैं। जिसके द्वारा सम्पूर्ण संसार विभिन्न प्रकार के रसों का आस्वादन करता है।

184. **शुद्धा** – शुद्ध पक्ष वाली अर्थात शुक्ल पक्ष वाली अर्थात जिनकी शुक्ल पक्ष में विशेष पूजा होती है। भूल या गलती से रहित अर्थात जिनसे गलती नहीं होती। तुरीय शुद्ध अवस्था स्वरूपा या वाली।

185. **ध्वनि** – शब्द या नाद स्वरूपा। उस काव्य के स्वरूप वाली जिसमें शब्दों के सीधे अर्थ के बजाए व्यंग्य वाला अर्थ लिया जाता है जिससे उस काव्य में चमत्कार आ जाता है। जिसके द्वारा सारे संसार को सुनाई देता है। शब्द की ध्वनि नामक शक्ति स्वरूपा। जिस शक्ति के द्वारा लोग सुनते हैं। जिसके द्वारा शब्द के विशिष्ट अर्थों को जान सकते। छात्र ने कहा घण्टा बज गया उससे यह अर्थ ध्वनित हुआ कि गुरु जी समय पूरा हो गया अब आप जाओ।

186. **सृति** – श्रेष्ठ मार्ग स्वरूपा। सृति का अर्थ है मार्ग। जिसके द्वारा परम लक्ष्य मोक्ष तक जाया जाता है अर्थात पहुँचा जाता है। मार्ग से कहीं पर पहुँचा जाता है। श्रेष्ठ मार्ग दिखलाने वाली। (सृति= मार्ग, पूजा पद्धति) जिसके द्वारा लोग चलते हैं। सर्यते अनया इति सृति। पूजा पद्धति स्वरूपा अर्थात पूजा विधान स्वरूपा। दुर्गार्चनसृति का तात्पर्य है दुर्गा के अर्चन की पूजा पद्धति।

187. **सृष्टि** – सारा विश्व और इसके सभी प्राणी एवं पदार्थस्वरूपा। प्रकृति या पृथ्वी स्वरूपा। रचना या निर्माण स्वरूपा। दानशीलता या उदारता गुणस्वरूपा। सृष्टि का एक अर्थ दानशीलता या उदारता भी है। अपनी सन्तानों में अंश रूप से विद्यमान। जड़ चेतन सभी पदार्थ उनकी सन्तान हैं।

188. **विकृति** – कार्य स्वरूपा या जिसका कोई मूल है। जगत कार्य है अतः विकृति का अर्थ है जगत स्वरूपा। प्रकृति अमूल होती है जबकि विकृति समूल होती है। मूल प्रकृति का वह रूप जो उसमें विकार आने पर या परिणमित होने पर होता है। पंचमहाभूत स्वरूपा। पंचमहाभूत प्रकृति के विकार होने के कारण विकृति हैं। विकृति माया का एक नाम भी है। सांख्य दर्शन के अनुसार मूल प्रकृति का वह रूप जो उसमें विकार आने पर होता है, विकृति कहलाता है। पंचमहाभूत, पंच ज्ञानेन्द्रिय, पंच कर्मेन्द्रिय विकृति है। प्रातिपदिक या मूल धातु से बने शब्द स्वरूपा। जैसे राम यह प्रातिपदिक अर्थात प्रकृति या मूल शब्द है किन्तु रामस्य यह विकृति स्वरूपा है। गम् धातु प्रकृति है एवं गच्छन्ति विकृति है।

189. **कृष्टि** – कृषि स्वरूपा। कृषि द्वारा संसार का भरण पोषण करने वाली।

190. **प्रापणी** – प्राप्त करा देने वाली। (भक्तों को सभी प्रकार की सम्पत्तियाँ, ऋद्धि/सिद्धि प्राप्त करा देने वाली)।

191. **प्राणदा** – प्राण को देने वाली। शंकर जी द्वारा विष पीने पर उनकी शक्ति शिवा ने ही उन्हें जीवित रखा था। प्राण देने वाली शिवा से अभेद है जिनका। किसी भी प्राणी के उत्पन्न होने पर जिनके द्वारा प्राण का संचार होता है। वायुमण्डल में प्राण का संचार करने वाली, जिसके कारण लोग प्राणायाम करते हैं।

192. **प्रह्वा** – बहुत ही सरल (अच्छी तरह सरल रहने वाली जैसे सीधी रेखा)। जिसको बार बार पुकारा जाता है। प्र अर्थात प्रकृष्ट अर्थात अधिक अर्थात बार बार। ह्व अर्थात आवाह्न करना। देवता पर जब जब संकट आता है तब वे देवी को ही याद करते हैं।

193. **विश्वा** – सम्पूर्ण संसारस्वरूपा। ब्रह्माण्ड स्वरूपा। विश्व रूप धारण करने वाली। जितना, जो भी है वह सब। शिव या विष्णु स्वरूपा। वह लोक जिसमें हम प्राणी रहते हैं तद्स्वरूपा।

194. **पाण्डुरवासिनी** – उज्जवल पदार्थों में विशेष रूप से रहने वाली। देवी सर्वव्यापक है पर उज्जवल अर्थात् श्रेष्ठ पदार्थों में विशेष रूप से रहती है अर्थात् प्रकट या प्रभावी रूप से रहती है। गीता में भी भगवान कृष्ण ने कहा कि जिन पदार्थों में विशेष चमक होती है अर्थात् अच्छाई के सन्दर्भ में जो पदार्थ श्रेष्ठ है उनमे वे विशेष रूप से अर्थात् प्रकट रूप से रहते है। पाण्डु का अर्थ सफेद, पीला दिया गया है। पाण्डुर का अर्थ सफेदयुक्त, पीलायुक्त, सफेद, पीला है। सफेद रंग सतोगुणी रंग है। इस नाम का तात्पर्य हुआ सतोगुण में या सतोगुणी व्यक्तियों में व्यक्त या प्रकट रूप से रहने वाली। देवी तो सर्वव्यापक है पर कहीं पर अव्यक्त रूप से है और कहीं पर व्यक्त रूप से हैं। व्यक्त रूप का अर्थ है कि अपनी ऊर्जा या कृपा विशेष रूप से उस स्थान में प्रकट कर रही है जिससे वह व्यक्ति या वस्तु दूसरों से बेहतर हो जाती है। कबूतर और बगुला के सफेद रंग के होने के कारण उन्हें भी पाण्डुर कहा जाता है। कबूतर और बगुला में अंश या अन्तरयामी रूप से या शक्ति रूप से विद्यमान है। सतोगुण से युक्त स्थानों पर निवास करने वाली। (पाण्डुर=पीला, लक्षणा से अर्थ लिया सतोगुण)। पाण्डुर का अर्थ पीला और सफेद दोनों होता है। सफेद सतोगुण को बताता है। व्यवहार में ऐसे सफेद को जिसमें हल्का सा पीलापन हो पाण्डुर कहते हैं जैसे चन्द्रमा में होता है। स्त्रियों के वक्षस्थल जिससे वे अपनी सन्तान का स्तनपान कराती हैं पाण्डुर होते हैं, उनमें यह निवास करती है। अतः अपने बच्चों को स्तनपान कराने वाली, यह भी अर्थ निकाल सकते हैं। सारा संसार उनकी सन्तान है।

195. **अवनी** – रक्षा करने वाली। (अव् धातु का अर्थ है रक्षा करना) विभिन्न प्रकार से प्राणिमात्र की रक्षा करने वाली। पृथ्वी का नाम अवनी है क्योंकि यह उन्हें स्थान देकर, फल, भोजन आदि देकर रक्षा करती है अर्थात जीवन देती हैं देवी। पृथ्वी स्वरूपा।

196. **वज्रनलिका** – वज्र और नाल नामक हथियार वाली अर्थात् इनसे युक्त। वज्रनलिका यस्या सा इति वज्रनलिका (वज्रनलिका वाली अर्थात् वज्रनलिका से युक्त)। वज्र एक अमोघ हथियार है जो प्रायः इन्द्र के द्वारा धारण किया जाता है। नलिका अर्थात् नाल जो बन्दूक की तरह का हथियार है जिससे लोहे की गोलियाँ निकला करती थी। पुराने समय में भी आज की बन्दूक की तरह एक हथियार होता था जिसे नालिका या नाल कहते थे। शरीर में स्थित वज्र नाड़ी स्वरूपा। संसार की ऐसी नाड़ी स्वरूपा जो कठोर है। शरीर नाड़ियों से चलता है अतः वज्रनलिका का अर्थ जीवनदायिनी भी कर सकते हैं। वज्र तुल्य अस्त्र धारण करने वाली। (बन्दूक में नलिका होती अतः नलिका का अर्थ अस्त्र लिया)।

197. **चित्रा** – चितकवरे या रंगबिरंगे स्वरूप वाली अर्थात विभिन्न रंगों वाली अर्थात प्रकृतिस्वरूपा। प्रकृति रंग बिरंगी है। आश्चर्य में डालने वाले कार्य करने वाली। चित्रा नामक अप्सरा के समान सुन्दर। रंग बिरंगी अर्थात प्रकृति स्वरूपा। चित्रा नामक रागिनी विशेष स्वरूपा। एकाक्षरी कोष से चि के अर्थ लेकर एवं त्रा का अर्थ रक्षा करने वाली लेकर चित्रा के अनेक अर्थ किये जा सकते हैं। ऐसे शब्दों को भी लिया जा सकता है जो चि से शुरु होते हैं। चि अक्षर से उन शब्दों का बोध होगा।

198. **ब्रह्माण्डवासिनी** – सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में निवास करने वाली।

199. **अनन्तरूपा** – भगवान विष्णु के रूप वाली। अनन्त रूपों वाली। देवी ने अलग अलग युगों में अलग अलग अवतार लिये हैं, समस्त नारियाँ देवी का रूप मानी जाती हैं।

200. **अनन्तात्मा** – अनन्त आत्माओं वाली। अनन्त शरीरों वाली। अनन्त प्राणों वाली अर्थात शक्तियों वाली। (आत्मा = आत्मा, शरीर, प्राण)। परब्रह्म के स्वरूप में उनके अन्दर अनन्त जीवात्माओं का वास है।

201. **अनन्तस्था** – अनन्त भगवान (विष्णु) में स्थित। भगवान विष्णु के वक्षस्थल में विराजमान होती है।

202. **अनन्तसम्भवा** – अनन्त रूपों में उत्पन्न होने वाली।

203. **महाशक्ति** – शक्ति में जिनसे बढ़कर कोई नहीं। शब्द के आगे महा लगा होने से ''सबसे बढ़कर'' अर्थ हो जाता है। अतिशय शक्तिसम्पन्ना। महा अर्थात सर्वाधिक, अतिशय, ब्रह्माण्ड। ब्रह्माण्ड में व्याप्त शक्तिस्वरूपा या ब्रह्माण्ड को चलाने वाली शक्तिस्वरूपा।

204. **प्राणशक्ति** – मूल या बीजभूत (primodial) ब्रह्माण्डीय ऊर्जा जिससे सारे शारीरिक कार्य होते हैं। जिस शक्ति से प्राणी जीवित रहते हैं। प्राण का अर्थ ब्रह्म, ब्रह्मा भी दिया गया है। ब्रह्म में रहने वाली शक्ति। मूलाधार में रहने वाली वायु प्राण शक्ति है। प्र + अण (अन धातु का अर्थ है जीवित रखना)। वह शक्ति जो प्राणियों को प्रकृष्ट (मुख्य) रूप से जीवित रखती है। प्रकृष्ट अर्थात मुख्य, श्रेष्ठ। वह शक्ति जो शरीर में आत्मा को बाँधे रखती है। प्राण के समाप्त होने पर जीवात्मा भी शरीर छोड़ देती है। शिव और शक्ति के मिलने से पहले प्राण उत्पन्न होते हैं, उसके बाद तीनों गुण। प्रायः किताबों में यह नहीं बताया जाता है। ऐसा कहते है कि सूर्य से प्राणों का प्रवास होता है। प्राण शक्ति की चाबी ध्यान को कहा गया है। शक्ति का अर्थ है Energy within everything।

205. **प्राणदात्री** – प्राण देने वाली। शरीर की वह वायु जिससे प्राणी जीवित रहता है। शक्ति देने वाली। बल देने वाली। जीवन देने वाली।

206. **रतिम्भरा** – प्रेम को धारण करने वाली। अपने पति शिव के प्रति प्रेम भाव से युक्त। कामदेव की पत्नी रति का भरण–पोषण करने वाली। रति शक्ति को भरने वाली अर्थात् प्रदान करने वाली।

207. **महासमूहा** – विश्व में जितने भी समूह है उन समूहों की समष्टि स्वरूपा। महान समूहों से युक्त। अनन्त समूहों से युक्त। जिसके समूहों की गिनती नहीं। 84 लाख योनियां इसी के समूह हैं। संस्कृत में सर्वः, सवौः, सर्वे इस प्रकार रूप चलते हैं। सर्व का अर्थ है एक समूह के सभी और सर्वे का अर्थ है सभी समूह के सभी।

208. **निखिला** – सम्पूर्णस्वरूपिणी। खिल का अर्थ होता है शून्य, खाली स्थान, शेष भाग, आधा। निखिल का अर्थ हुआ जो खिल से निकली हैं अर्थात जो खिल नहीं है अर्थात जो सम्पूर्ण है। समस्त स्वरूपों की अधिष्ठात्री देवी। संसार में जितने भी रूप हैं उनकी मालकिन क्योंकि उनसे बढ़कर कोई नहीं है। निखिल का अर्थ सम्पूर्ण, सब, सारा होता है।

209. **इच्छाधारा** – इच्छा के अनुसार विभिन्न रूपों को धारण करने वाली। इच्छा की आधारस्वरूपा अर्थात इनके कारण इच्छा जन्म लेती है। इच्छा का जन्म इन्हीं से होता है।

210. **सुखावहा** – भक्तों के लिए सुख लाने वाली। भक्तों को सुख प्राप्त करा देने वाली अर्थात देने वाली। वह् का अर्थ प्राप्त करना और धारण करना होता है।

211. **प्रत्यक्षलक्ष्मी** – दिखाई देने वाली लक्ष्मी। लक्ष्मी के प्रत्यक्ष स्वरूप को धारण करने वाली। भक्त की उपासना से प्रसन्न होकर प्रत्यक्ष रूप में दर्शन देने वाली।

212. **निष्कम्पा** – स्थिर रहने वाली।

213. **प्ररोहा** – अंकुर रूपा अर्थात सृष्टि की आरम्भिक अवस्था स्वरूपा। जगत विकास क्रम में पहले चरण के रूप में। उन्नयनशील। समस्त संसार को उत्पन्न कर देने वाली। आरम्भ अर्थात विकाससूचक चिन्ह स्वरूपा अर्थात जिसका यौवनकाल आरम्भ हो गया, ऐसी किशोरी स्वरूपा।

214. **बुद्धिगोचरा** – बुद्धि के द्वारा दृश्यमान अर्थात् जानी जाने वाली।

215. **नानादेहा** – अनेक रूपों को धारण करने वाली।

216. **महावर्ता** – संसार रूपी महान आवर्त (= भँवर) से युक्त या भँवर स्वरूपा (महा= संसार)। संसार चक्र स्वरूपा। सभी चक्कर लगा रहे हैं। सूर्य, पृथ्वी अपने केन्द्र के चारों ओर चक्कर लगा रहे हैं। मनुष्य भी कर्म बन्धन में चक्रवत घूम रहे हैं। जन्म, वृद्धि, मृत्यु पुनः जन्म, वृद्धि, मृत्यु ये सब चक्र हैं।

217. **बहुदेहविकासिनी** – अनेक शरीरों से विकसित होने वाली (अर्थात् लक्षणा शक्ति से अर्थ होगा अनेक देहों को प्रकट करने वाली)

218. **सहस्राणी** – हजारों अर्थात अनन्त प्राणियों को जीवित रखने वाली अर्थात उन्हें जीवन देने वाली। अनति का अर्थ है जीवयति अर्थात जीवित रखना जैसे शिवानी अर्थात शिव को जीवित रखने वाली। सहस्र शब्द अनन्त का भी वाचक है। हजारों रूपों को धारण करने वाली।

219. **प्रधाना** – मूलप्रकृति स्वरूप। जो सबको अपने में आत्मसात् किये हैं/ धारण किए है। प्रधत्ते सर्वम् आत्मनि इति प्रधाना। जो सम्पूर्ण विश्व को अपने में धारण किये है।

220. **न्यावस्तुप्रकाशिका** – वस्तु के यथोचित स्वरूप को दिखाने वाली। न्याय का अर्थ होता है यथोचित या वास्तविक। विद्वानों का मत है कि संसार अवस्तु है और वस्तु तो सत्‌चित्‌आनन्द ब्रह्म ही है। सही अर्थ में वस्तु का ज्ञान कराने वाली अर्थात चैतन्य या सत्‌चित्‌आनन्द ब्रह्म का ज्ञान कराने वाली। न्याय के मार्ग को प्रकाशित करने वाली।

221. **सर्वाभिलाषपूर्णेच्छा** – देवी वह इच्छा है जिसमें सभी अभिलाशाओं की पूर्ति हो गई। कहते हैं कि केवल देवी की इच्छा करो तो सभी इच्छाऐं अपने आप पूरी हो जाऐगी। सभी की अभिलाषाओं से होने वाली समस्त इच्छाओं को पूर्ण कर देने वाली। सभी की चारों ओर से चाही गई इच्छाओं का पूर्ण कर देने वाली।

222. **सर्वा** – सर्वस्वरूप वाली। सभी पदार्थों के स्वरूप वाली। संसार की सभी वस्तुएँ/ स्वरूप जिसमें समाहित हैं। भगवान विष्णु की शक्तिस्वरूपा। भगवान शिव की शक्तिस्वरूपा। पारद वाली अर्थात पारद में रहने वाली शक्तिस्वरूपा। सर्व का अर्थ विष्णु, शिव, पारद भी है।

223. **सर्वार्थभाषिणी** – सभी अर्थों को स्पष्ट कर देने वाली।

224. **नानास्वरूपचिद्धात्री** – नाना स्वरूपों की चैतन्य शक्ति को धारण करने वाली।

225. **शब्दपूर्वा** – जिनके स्वरूप की निष्पत्ति शब्दपूर्वक होती है। जिनके स्वरूप को शब्दों के द्वारा व्यक्त किया जाता है। शब्द से पूर्व अर्थात आकाश स्वरूपा। आकाश से शब्द की उत्पत्ति होती है अतः आकाश शब्द से पूर्व हुआ। शब्दतन्मात्रा की दृष्टि से आकाश बाद में आता है जबकि स्थूल शब्द की दृष्टि से आकाश पहले आता है। शब्दतन्मात्रा से आकाश उत्पन्न हुआ और आकाश से स्थूल शब्द पैदा हुए।

226. **पुरातना** – पुरानी शक्ति। ब्रह्म की सर्वप्राचीन शक्ति।

227. **व्यक्ताव्यक्ता** – जो व्यक्त भी है, अव्यक्त भी है। (सांख्य में प्रकृति को छोड़कर बाकी 23 तत्व व्यक्त है, प्रकृति अव्यक्त है)।

228. **जीवकेशा** – समस्त संसारी जीव जिनके रोम हैं। जीव अर्थात जीवक। जीव का अर्थ है जीवात्मा। जीवक+ईशा। इस प्रकार जीवकेशा का अर्थ हुआ जीवात्मा की ईश्वरी अर्थात जीवात्मा को चलाने वाली। सभी जीवात्माऐं इसी का प्रतिबिम्ब हैं। जीवनशक्ति की प्रधानता को धारण करने वाली (केश अर्थात आगे, केश सबसे आगे होते हैं)।

229. **सर्वेच्छापरिपूरिता** – जिसकी सभी इच्छायें परिपूर्ण हैं अर्थात पूरी हो चुकी है अर्थात पूर्ण तृप्त हैं। सर्वाभिः इच्छाभिः परिपूरिता अर्थात आप्तकाम। सभी की इच्छायें पूरी की गई हैं जिसके द्वारा अर्थात सभी की इच्छाओं को परिपूर्ण कर देने वाली।

230. **संकल्पसिद्धा** – संकल्प से सिद्ध होने वाली। सत्यसंकल्प से सिद्धिवाली। (संकल्प = मानस कर्म)। सच्चे मन से करने में सिद्ध होती हैं। सच्चे मन से उनकी उपासना की जाए तो वह प्रकट हो जाऐंगी।

231. **सांख्येया** – सांख्य दर्शन के द्वारा प्राप्तव्य या पाने योग्य या जानी जाने योग्य। विवेक ज्ञान के द्वारा प्राप्तव्य या पाने योग्य या जानी जाने योग्य। सांख्य का एक अर्थ विवेक (प्रकृति और पुरुष के बीच का भेद या जड़ और चेतन के बीच का भेद) होता है। ई प्रापणे धातु में क्यप् प्रत्यय लगाने से बने ईय शब्द का अर्थ होगा प्राप्तव्य या पाने योग्य। इण् गतौ धातु से भी इय शब्द बन सकता है, गति के तीन प्रमुख अर्थ होते हैं – गमन, ज्ञान और प्राप्ति। सांख्य दर्शन में जिनकी चर्चा की गयी अर्थात् प्रकृति स्वरूपा। सांख्य दर्शन में प्रकृति और पुरूष की चर्चा है। सांख्य शब्द में ढक् प्रत्यय लगाने से यह शब्द बनता है। एकाक्षरी कोष में इ का एक अर्थ वरेण्य या श्रेष्ठ दिया गया है, ई का अर्थ श्री (लक्ष्मी या श्रेष्ठ) दिया गया है। य का अर्थ निवास, यान दिया गया है। या का अर्थ यान (गाड़ी) दिया गया है। इस प्रकार इया, ईया का अर्थ श्रेष्ठ निवास या श्रेष्ठ यान हो सकता है। वाहन में भी व्यक्ति बैठता है। सांख्य + इया/ईया = सांख्येया। इस आधार पर भी सांख्येया का अर्थ सांख्य दर्शन में निवास करने वाली या विराजमान कर सकते है। तात्पर्य हुआ सांख्य दर्शन में जिनकी चर्चा है। सांख्य का अर्थ विवेक ज्ञान भी होता है। प्रकृति और पुरूष के पार्थक्य का ज्ञान, सही और गलत के बीच के भेद का ज्ञान, कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य के भेद का ज्ञान विवेक ज्ञान कहलाता है। विवेक ज्ञान में निवास करने वाली। सांख्य के द्वारा व्यक्त होने वाली। सांख्य का अर्थ है शिव, विचारक। सांख्य दर्शन द्वारा जानने योग्य। इस दर्शन में सत्य ज्ञान, विवेक ज्ञान बताया जाता है। विवेक का अर्थ है अलग–अलग करने की शक्ति। प्रकृति ओर पुरुष को अलग–अलग कर तत्वज्ञान दिया जाता है।

232. **तत्वगर्भा** – तत्व हैं गर्भ में जिसके। शैवदर्शन के सभी 36 तत्व जिनके भीतर स्थित हैं। इन्हीं 36 तत्वों से जगत का विकास हुआ है। सांख्य दर्शन के सभी 25 तत्व जिनके भीतर स्थित हैं। सांख्य की भूमि में तीन प्रकार के तत्व हैं। व्यक्त, अव्यक्त तथा ज्ञ चेतन। सत् तत्व को अपने भीतर/अपने हृदय में धारण करने वाली। प्रत्येक वस्तु में तत्व के रूप में भीतर रहने वाली, यह अर्थ भी कर सकते हैं।

233. **धरावहा** – पृथ्वी को धारण करने वाली।

234. **भूतरूपा** – 1. पंचभूतस्वरूपा (क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर)। 2. स्वेदज, अण्डज, उद्भिज्ज, जरायुज ये 4 प्रकार के प्राणी या भूत हैं, तद्स्वरूपा।

235. **चित्स्वरूपा** – ब्रह्म स्वरूपा। चित् का एक अर्थ ब्रह्म भी है। चित्शक्ति के स्वरूप वाली। ब्रह्म में निहित शक्ति को चित् शक्ति कहा जाता है। ज्ञानस्वरूपा अर्थात जिसके कारण ज्ञान होता।

236. **त्रिगुणा** – तीन गुणों से युक्त। तीन गुण सत, रज, तम के स्वरूप वाली। तीन गुणों द्वारा संसार चक्र चलाने वाली। तीन प्रकार से बाँधने वाली। गुण का अर्थ है रस्सी जो बाँधने का काम करती है। सतो गुण, रजो गुण और तमो गुण के कारण व्यक्ति प्रकृति से बँधता है। आत्मसाक्षात्कार के लिये इन तीनों गुणों से परे जाना आवश्यक है।

237. **गुणगर्विता** – तीन गुणों से युक्त होने के कारण गर्वित। जब कोई चीज किसी के पास होती तो उसका गर्व होता है। माँ के पास तीन गुण हैं। श्रेष्ठ गुण (सौन्दर्य, शक्ति, साहस आदि) होने के कारण गर्व का अनुभव करने वाली अर्थात दूसरों से अधिक समझने वाली।

238. **प्रजापतीश्वरी** – प्रजापति ब्रह्मा की भी स्वामिनी। सृष्टि के लिए प्रजापति ब्रह्मा को प्रेरित करने वाली/चलाने वाली। प्रजापति ब्रह्मा की आराध्या। ईश् धातु का अर्थ शासन करना, प्रेरित करना होता है।

239. **रौद्री** – भयंकर रूप धारण करने वाली (शत्रुओं/राक्षसों के संहार के समय)। संहार करने वाली शक्ति जो भगवान रुद्र से सम्बन्धित है अर्थात उनकी शक्ति स्वरूपा अर्थात उनकी शक्ति से अभेद है जिनका। भक्तों के विघ्नों को रोकने वाली शक्ति। शैव दर्शन में रौद्री की परिभाषा दी गई है जो मुक्ति के रास्ते को रोकती है। चाहे सकारात्मक कर्म हों चाहे नकारात्मक कर्म हों उनके पीछे एक शक्ति अवश्य रहती है। रूद्र की शक्ति अर्थात संहारिका शक्ति। शैव दर्शन के अनुसार रौद्री वह शक्ति है जो व्यक्ति के आत्मसाक्षात्कार में बाधक बनती है। शत्रुओं को रूला देने वाली शक्ति। रोदयति इति रूद्रः। रूद्र में स्वार्थ में अण् प्रत्यय लगाया, जो स्त्रीलिंग में रौद्री हो गया। संहारिका शक्ति। दुखो या कष्टों को भगा देने वाली। रूत् द्रावयति इति रौद्री। रूत् का अर्थ है दुख या कष्ट। शैव दर्शन के अनुसार Raudri is sakti that obstructs the passage of liberation. अधर्मियों के रास्ते में रूकावट डाली जाती है।

240. **सर्वाधारा** – सभी की आधार। पृथ्वी, सूर्य, व्यक्ति सभी को नीचे टिकने की जगह होनी चाहिए। देवी वह टिकने की जगह हैं।

241. **सुखावहा** – सुख को सर्वतोभावेन अर्थात समस्त रूप से धारण करने वाली। सुख + आ + वह्। आ का अर्थ है सर्वतोभावेन। भक्तों के लिए चारों ओर से सुख को धारण करने वाली। (आ अर्थात चारो ओर)। परमात्मा के सुखमय स्वरूप से विभूषित। सुख को धारण करने वाली। कभी कभी आ का अलग से अर्थ देने की जरूरत नहीं है।

242. **कल्याणवाहिका** – कल्याणों को वहन करने वाली (सभी प्रकार के कल्याण है इनके पास)। चूँकि सभी प्रकार के कल्याण इनके पास हैं अतः इन्हें भक्तों को देने वाली, यह तात्पर्य होगा। कल्याण का अर्थ है मोक्ष, आनन्द, आध्यात्मिक क्षेत्र की प्रगति। आज के समय में कल्याण का व्यापक अर्थ हो गया है जिस धारणा पर कल्याणकारी राज्य की संकल्पना की गई है। मनुष्य के जीवन की सभी आधारभूत आवश्यकताऐं जैसे – रोटी, कपड़ा, मकान, रोजगार, स्वास्थ्य, शिक्षा, बिजली, पानी, सड़क, मनोरंजन, सफाई आदि ये सब कल्याण के अंग हैं। मनुष्य के पाँचों शरीरों की आवश्यकताओं की पूर्ति कल्याण कहलाता है।

243. **कल्या** – निरोगिता, शुभ या मंगल देने वाली। कल्य का अर्थ है निरोगिता, शुभ या मंगल। कल्य+आ, आ

का अर्थ है देना। उपाय/साधन, शुभ समाचार देने वाली। कल्य का अर्थ उपाय/साधन, शुभ समाचार, बधाई, प्रातःकाल या सवेरा होता है। प्रातःकाल स्वरूपा अतः शुभ का उद्गम स्थल। प्रातः काल होने पर व्यक्ति प्रार्थना के दौरान शुभ शुभ बोलता है। कल्य का एक अर्थ है प्रातः काल।

244. **कलिकल्मषनाशिनी** – कलियुग के पापों को नष्ट कर देने वाली।

245. **नीरूपोद्भिन्नसन्ताना** – रूप रहित होती हुई भी सन्तान को उत्पन्न करती हैं। जैसे निरोग नीरोग हो जाता है, व्याकरण के उसी नियम के अनुसार निरूप, नीरूप हो जाता है। स्वयं रूपरहित होकर कल्पवृक्ष के समान कामनाओं को उत्पन्न करने वाली अर्थात पूरा करने वाली। उद्भिन्न अर्थात उत्पन्न कर दिया। संसार के सभी रूपों को सन्तान परम्परा द्वारा चलाने वाली। नी = समस्त, उद्भिन्न = जो प्रकट होती है। निःशेष रूप से प्रकट होने वाली सृष्टि परम्परा। सतत चलने वाली सृष्टि। समस्त उत्पन्न रूपों की सन्तान परम्परा को चलाने वाली। जो स्वयं रूपरहित है पर जिनसे सन्तान (प्राणी और अन्य सभी पदार्थ) उत्पन्न हुये है, तात्पर्य है रूपरहित होकर भी पदार्थों को उत्पन्न करने वाली। सन्तान का अर्थ फैलना भी होता है। रूपरहित पदार्थों के रूप में फैली हुई है।

246. **सुमन्त्रा** – सुन्दर मन्त्रों के स्वरूप वाली अर्थात वैदिक मन्त्र स्वरूपा। वैदिक मन्त्र का तात्पर्य होता है जो सुन्दर है अर्थात लाभदायक है।

247. **त्रिगुणालया** – तीनों गुणों की आधार/निवास स्थल रूपा।

248. **महामाया** – ऐसी माया जिससे बढ़कर और कोई माया नहीं। बड़े बड़े देवताओं एवं ऋषि मुनियों को भी माया में डालने वाली अर्थात उनके अन्दर अनात्म वस्तुओं के प्रति आकर्षण पैदा करने वाली। माया की पराकाष्ठा। महती दुरत्यया माया यस्या सा महामाया इति उच्यते। ऐसी माया जिसका उत्क्रमण नहीं किया जा सकता अर्थात जिससे अपने प्रयास से पार नहीं हुआ जा सकता।

249. **योगमाया** – ईश्वर की सृष्टिमूलक शक्ति। भगवान की सृजन शक्ति। भगवती जो विष्णु की माया हैं। योगमाया भगवान की अन्तरंग शक्ति है। यह भगवान की अपनी शक्ति है। भगवान के जितने भी कार्य होते हैं वह योगमाया से होते हैं। भगवान जो भी लीला करते हैं वह योगमाया के द्वारा करते हैं। भगवान जो कुछ भी सोचते हैं वह योगमाया तुरन्त उसे कर देती हैं जैसे जब कृष्ण का जन्म हुआ था तो द्वारपाल सो गये और द्वार अपने आप खुल गये, यमुना जी ने मार्ग दे दिया, यह सब योगमाया की शक्ति से हुआ। भक्त को भगवान से जोड़ने वाली मायाशक्ति स्वरूपा। कृष्ण की शक्ति स्वरूपा। यशोदा के गर्भ से उत्पन्न कन्या जिसे कंस ने मार डालने का प्रयास किया था।

250. **महायोगेश्वरी** – महायोग है समाधि की स्थिति। समाधि (अर्थात महायोग) की अधिष्ठात्री देवी अर्थात उसे देने वाली या इसे बनाने वाली। महायोगों की ईश्वरी। योग के अच्छे रूप जैसे भक्ति योग, ज्ञानयोग, कर्मयोग महायोग कहलाते हैं। राजयोग है महायोग। इसे प्रदान करने वाली।

251. **प्रिया** – सभी को प्रिय लगने वाली। सभी जिनको पसन्द करते हैं क्योंकि यह सभी की मनोकामना पूरी कर देती हैं। प्रीयते इति प्रिया से प्रिय या अच्छा लगने वाली, प्रसन्न रहने वाली अर्थ निकलता है। सदैव प्रसन्न रहने वाली। प्रीणाति इति प्रिया से प्रसन्न करने वाली अर्थ निकलता है। अपने उपासकों की मनोकामना पूरी कर उन्हें प्रसन्न करने वाली, प्रिया का यह अर्थ भी हो सकता है।

252. **महास्त्री** – जो सभी स्त्रियों से बढ़कर हो। सर्वश्रेष्ठ स्त्रीस्वरूपा। गुणों में और शक्ति में जो सर्वश्रेष्ठ स्त्रीस्वरूपा हैं। तीनों लोकों की सर्वश्रेष्ठ स्त्री के स्वरूप को धारण करने वाली। शब्द के आगे महा लगने से

सबसे बढ़कर, अतिशय अर्थ आता है। मह् पूजायाम से महा का अर्थ पूजनीय भी होता है। पूजनीय स्त्री स्वरूपा यह अर्थ भी महास्त्री का होगा।

253. **विमला कीर्ति** – ऐसी कीर्ति स्वरूपा जो स्वच्छ है। विमल (स्वच्छ) स्वरूप वाली एवं सर्वश्रेष्ठ कीर्ति वाली। विमल का अर्थ है मलों से रहित अर्थात आणव, कार्मिक और मायिक मल से रहित। अतिशय श्रेष्ठ कीर्ति वाली।

254. **जया** – जया तिथि स्वरूपा। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार दोनों पक्षों की तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी तिथियाँ जया तिथि कहलाती हैं। माघ शुक्ल एकादशी स्वरूपा जो जया एकादशी है। जीत दिलाने वाली। असुरों पर जीत हासिल करने वाली। जयति असुरान् इति जया। जिन्होंने सभी इन्द्रियों/ आन्तरिक विकारों को जीत लिया है।

255. **लक्ष्मी** – जगत् में होने वाले समस्त कर्मों को/पाप पुण्य को देखने वाली (लक्षयति इति लक्ष्मी)। सम्पूर्ण जगत की लक्ष्य स्वरूपा। शुभ लक्ष्म (चिन्ह) से युक्त। ज्ञान, ऐश्वर्य, सुख, आरोग्य, धन–धान्य, जय आदि शुभ लक्षण हैं। लक्षयति इति लक्ष्मी। देखने वाली अर्थात सभी प्राणियों के द्वारा किये जा रहे शुभ अशुभ कर्मों को देखने वाली। सभी की लक्ष्यभूता अर्थात सभी प्राणियों का लक्ष्य। लक्ष्य तक पहुँचाने वाली। जिनके लिए कपिल मुनि ने कहा कि मेरी तरफ देखो अर्थात मुझ पर कृपा करो। मा लक्षय अर्थात मेरी तरफ देखो। लक्ष्मी जी की बहुत सी विशेषताओं, गुणों को देखकर ऐसा कपिल मुनि द्वारा ऐसा कहा गया था। दाता को प्रेरणा देने वाली। ला धातु में ड प्रत्यय लगाने से बने ल शब्द का अर्थ है देने वाला या लेने वाला। क्षिप् धातु का अर्थ है प्रेरणा देना। लय (स्थिति एवं संहार) में प्रकृति को प्रेरणा देने वाली। लीङ् श्लेषणे धातु में ड प्रत्यय लगाने से बने ल का अर्थ लीन होना होगा। व्यक्ति में लीन होकर अर्थात प्रविष्ट होकर उसे अच्छे कार्य की प्रेरणा देने वाली। क्षम् सहने धातु से भी यह शब्द बन सकता है तब अर्थ होगा क्षमा देने वाली अर्थात करने वाली। मा माने धातु से अर्थ होगा सभी भूतों को जानने वाली या नापने वाली। भूत का अर्थ है प्राणी, पंचभूत, शिवगण आदि।

256. **निरञ्जना** – दोषों/कालिमा से रहित शुद्ध स्वरूप वाली। (अनात्म पदार्थ, माया, शरीर, इन्द्रिय ये सब अंजन/कालिमा है, इनसे परे)। ब्रह्म को पूर्ण रूप से प्रकट करने वाली शक्ति। निःशेषेण अंजति व्यक्तीकरोति प्रकटयति इति निरंजना। ब्रह्म तो बीज स्वरूप है और उसको जगत् के रूप में प्रकट करने वाली जो शक्ति है वह निरंजना कहलाती है। उस ज्ञान के स्वरूप वाली जिसमें ज्ञाता, ज्ञेय एवं ज्ञान में अन्तर नहीं रह जाता अर्थात ज्ञान मात्र ही रह जाता है। शंकराचार्य जी ने इस प्रकार की व्याख्या की है। जिसे किसी भी वस्तु को देखने के लिए अंजन विद्या की आवश्यकता नहीं होती। तन्त्र में एक अंजन विद्या होती है जिसमें नाखून में काजल लगाकर आप जो भी देखना चाहे देख सकते हैं। देवी अन्तस् चक्षु से सब कुछ देख लेती हैं। अन्यथा भी जब सब कुछ उनके अन्दर है तो वे सब कुछ देख लेती हैं।

257. **प्रकृति** – जो सृष्टि के पहले विद्यमान थी। (कृति = सृष्टि) प्र = प्रकृष्ट, यहाँ पूर्व में अर्थ करेंगे। प्रकरोति इति प्रकृति अर्थात सब कुछ उत्पन्न करने वाली। प्र अर्थात प्रवीण, कृति अर्थात सृष्टि। जो सृष्टि उत्पन्न करने में सर्वाधिक प्रवीण हैं। एक नियम है कि किसी शब्द का पहला अक्षर लिखने से उस शब्द को बोध हो जाता है।

258. **भगवन्माया शक्ति** – ऐसी शक्ति जो भगवान की मायास्वरूपिणी है। भगवान की मायास्वरूपिणी शक्ति (भगवन्माया सा एव शक्ति इति भगवन्माया शक्ति)। यदि भगवन्माया यही शब्द एक नाम होता तो अर्थ होता – भगवान की माया स्वरूपा। जिस शक्ति से भगवान संसार की रचना कर देते हैं। यदि शक्ति अपने में एक नाम होता तो अर्थ होता – 1. कार्य करने की सामर्थ्य रूपा। 2. तीनों शक्तियों अर्थात महाकाली–महालक्ष्मी–महासरस्वती, इच्छाशक्ति–ज्ञानशक्ति–क्रियाशक्ति, आध्यात्मिक/आधिदैविक/ आधिभौतिक शक्ति स्वरूपा या इन शक्तियों से युक्त।

259. **निद्रा** – भगवान विष्णु की निद्रा स्वरूपा। भक्तों को निद्रा की तरह विश्रान्ति और सुख देने वाली। अच्छी नींद आने का या नींद नहीं आने का वरदान देने वाली। निद्रा देवी ने ही लक्ष्मण जी को वरदान दिया था कि उन्हें 14 वर्ष तक नींद नहीं आयेगी और उनकी पत्नी उर्मिला 14 वर्ष तक नींद में रहेंगी। दुर्गति को भगाने वाली। संशय को भगाने वाली। एकाक्षरी कोष में नि के कई अर्थ है जैसे दुर्गति, संशय। द्रावयति (खदेड़ना) से द्रा शब्द ले लिया। ऐसे शब्द भी ले सकते है जिसकी शुरूआत नि से हो एवं द्रावयति का द्रा ले सकते है। एकाक्षरी कोष से द्रा का अर्थ भी ले सकते है। दुर्गति को भगा देने वाली। संशय को भगा देने वाली अर्थात दूर करने वाली। बन्धन को खदेड़ने वाली अर्थात समाप्त करने वाली। एकाक्षरीकोश में नि के कई अर्थ दिये गये हैं जैसे दुर्गति, संशय, बन्धन। द्रावयति (खदेड़ना) का द्रा अक्षर ले लिया। ऐसे शब्द भी ले सकते हैं जो नि से शुरू होते हैं।

260. **यशस्करी** – यश प्रदान करने वाली (भक्तों को)। यश गुण को उत्पन्न करने वाली अर्थात यह गुण भी उन्हीं के द्वारा पैदा किया हुआ है।

261. **चिन्ता** – चिन्तन स्वरूपा। विचार स्वरूपा। ध्यान स्वरूपा। चिति धातु से यह शब्द बना जिसमें नुम् का आगम हुआ। शक्ति जिसके द्वारा चिन्तन होता, तद्रूपा। (चिन्तयते अनया सा चिन्ता) जिस शक्ति के द्वारा चिन्तन किया जाता। चिन्ता का अर्थ श्रेष्ठ विषयों में चिन्तनशील है। भक्तों का कल्याण हो, जगत का कल्याण हो, ऐसा चिन्तन करने वाली)। चिन्ता वाली अर्थात चिन्तन वाली अर्थात भक्तों के या जगत के कल्याण का चिन्तन करने वाली। विचार स्वरूपा, चिन्तन स्वरूपा। चिन्त् धातु में अङ् प्रत्यय लगाने से भाव में चिन्त शब्द बनेगा जो स्त्रीलिंग में चिन्ता बनेगा अतः चिन्ता का अर्थ विचार स्वरूपा, चिन्तन स्वरूपा, ध्यान स्वरूपा हुआ। चिन्ता अस्या अस्ति इति चिन्ता से चिन्ता का अर्थ श्रेष्ठ चिन्तन करने वाली, भक्तों की देखभाल करने वाली अर्थ आएगा। सोचने की शक्ति। मन में परेशान करने वाले संकल्प विकल्प उठना। विचार स्वरूपा। चिन्तन स्वरूपा। विचारशक्ति स्वरूपा। चिन्ता+आ, एकाक्षरीकोश में आ का एक अर्थ शक्ति दिया गया है। आ का अर्थ देना, नष्ट करना भी होता है। भक्तों को श्रेष्ठ विचार शक्ति देने वाली। चिन्ता का नाश करने वाली। चिन्ता अस्या अस्ति इति चिन्ता अर्थात विचार या चिन्तन वाली। तात्पर्य है श्रेष्ठ विचार करने वाली जैसे भक्तों का कल्याण हो, धर्म की हमेशा जीत हो ऐसा विचार रखने वाली। चिन्त्+णिच्+अङ्+टाप् से बने चिन्ता शब्द का अर्थ होगा ध्यान करवाने वाली, चिन्तन करवाने वाली।

262. **बुद्धि** – सोचने समझने और निश्चय करने की मानसिक शक्ति स्वरूपा। जिस शक्ति द्वारा या जिसके द्वारा जाना जाता। शुद्ध बुद्धि वाली अर्थात् सतोगुणी बुद्धि वाली। बुद्धि त्रिगुणात्मिका होती।

263. **यशः** प्राज्ञा – यश करने वाली एवं अच्छी बुद्धि स्वरूपा। यश करने वाली अर्थात यश फैलाने वाली। ऐसी अच्छी बुद्धि स्व्रूपा जो यश करने वाली है।

264. **शान्ति** – शान्ति नामक कर्म स्वरूपा। शान्ति कर्म एक धार्मिक क्रियाकलाप है जिसे तान्त्रिक लोग या अन्य साधक ग्रह बाधाओं या अन्य बाधाओं तथा अमंगल को दूर करने के लिए करते हैं। चीजों को पाने के लिए दौड़भाग से रहित क्योंकि देवी के पास प्रत्येक चीज है। अन्तर्मुखी होने पर, अपने भीतर जाने पर होने वाली सुखानुभूति स्वरूपा। चित्त की स्वस्थता स्वरूपा। मन की अवस्था जो क्षोभ, चिन्ता, दुःख से रहित है। अव्याकुलता स्वरूपा। मन की स्थिरता स्वरूपा। जिनके मन में कोई व्याकुलता नहीं है। सतोगुण स्वरूपिणी। वेग, क्षोभ या क्रिया का अभाव इस अवस्था के स्वरूप वाली। चंचलता के अभाव वाली स्थिति स्वरूपा। वासनाओं से या तृश्णा से रहित अवस्था स्वरूपा। मन से परे अवस्था स्वरूपा।

265. **आप्रीतिवर्द्धनी** – पूर्ण या सम्पूर्ण तृप्ति को बढ़ाने वाली। सम्पूर्ण प्रीति (अर्थात प्रसन्नता) बढ़ा देने वाली। यदि आप्रीतिवहनी शब्द है तो अर्थ होगा सम्पूर्ण तृप्ति को रखने वाली।

266. **प्रद्युम्नमाता** – प्रद्युम्न की माता रूक्मणी स्वरूपा। प्रद्युम्न = प्रकर्षेण द्योतते प्रकाशते, अच्छे गुणों, सुन्दरता से प्रकाशशील)। यदि प्रद्युम्न माता शब्द है तो अर्थ होगा ऐसी माता जो गुणों से प्रकाशित है।

267. **साध्वी** – जो दूसरों के कार्य को सिद्ध कर दे वह है साध्वी। साध्नोति परकार्यं इति साधु। स्त्रीलिंग में साध्वी हो जाएगा। साधु के गुणों से युक्त। पतिव्रता या पवित्र आचरण वाली। बगलामुखी नामावली में देखे।

268. **सुखसौभाग्यसिद्धिदा** – सुख, सौभाग्य और सफलता देने वाली। सौभाग्य का अर्थ है चार पुरूशार्थों की प्राप्ति। सिद्धि का अर्थ है अच्छे कामों में सफलता मिलना।

269. **काष्ठा** – जगत को व्याप्त करके स्थित। निरूक्त में क्रान्त्वा स्थिता इति काष्ठा, ऐसी व्युत्पत्ति कर काष्ठा का अर्थ जल किया है क्योंकि आरम्भ में सर्वत्र जल ही जल था। देवी ऊर्जा रूप में सृष्टि के चारों ओर तो है ही, सृष्टि में भी सर्वत्र व्याप्त है। गन्तव्य लक्ष्य या चरम स्थिति। सभी प्राणियों के द्वारा अन्तिम रूप से पाने योग्य यह देवी ही हैं। समयस्वरूपा। दिशास्वरूपा। स्थिति शक्तिस्वरूपा। काल गति शक्ति एवं दिशा स्थिति शक्ति है। काष्ठा+आ, काष्ठा का अर्थ है उच्चतम स्थिति एवं आ का अर्थ है देना। साधना की उच्चतम या चरम स्थिति देने वाली अर्थात मोक्ष देने वाली। काष्ठ का अर्थ है लकड़ी या ईंधन। काष्ठ+आ, ईंधन अर्थात ऊर्जा या शक्ति देने वाली। दिशा की छोर अर्थात् यहाँ से आगे नहीं जा सकते अर्थात् प्राप्त करने वाली चीजों में सर्वश्रेष्ठ। इनसे बढ़कर ऐसा कुछ नहीं है जिसे प्राप्त करना है। दिक् शक्ति स्वरूपा।

270. **प्रतिष्ठा** – जिसमें सारा विश्व अच्छी प्रकार से स्थित है। प्रतिष्ठते सर्वम् विश्वम् अस्याम्, इति प्रतिष्ठा। ब्रह्म स्वरूपा अर्थात सम्पूर्ण सृष्टि का आधार या कारणभूत आधार। प्रतिष्ठा शब्द का अर्थ है आश्रय, आधार, घर, उच्चपद, कीर्ति। कारणभूत आधार। जिसमें कोई चीज प्रतिष्ठित या स्थिर रहती है। ब्रह्म विद्या सभी विद्याओं की आधार या प्रतिष्ठा है। जिसमें सम्पूर्ण सृष्टि प्रतिष्ठित है अर्थात ब्रह्म स्वरूपा। रक्षा करने वाली अर्थात वेदांग स्वरूपा। वेदांग वेदों की प्रतिष्ठा करते है अर्थात रक्षा करते है। उपनिषद में रक्षा करने अर्थ में भी प्रतिष्ठा शब्द का प्रयोग हुआ है। प्रतिष्ठा+आ, आ का अर्थ है देना। भक्तों को उच्चपद या कीर्ति देने वाली।

271. **निष्ठा** – प्रलयकाल में सबको अपने भीतर छुपाकर रखने वाली। प्रलये यदुदरे सर्वं निलीय तिष्ठति। निलीय से नि लिया जिसका अर्थ है छुपाकर। यत् अर्थात जो कुछ भी है अर्थात सब कुछ। पेट में अर्थात अपने भीतर। सबकी परम गति अर्थात इससे अधिक कुछ भी नहीं है। इन्हें पा लिया तो सबकुछ पा लिया। सर्वेषां च परा निष्ठा। चरमा स्थितिः। जिसमें प्रलयकाल के समय समस्त भूतों की स्थिति होती है। मन में होने वाला दृढ़ निश्चय या विश्वास। श्रृद्धा, आस्था, भक्ति। निष्ठा+आ, सिद्धावस्था की अन्तिम स्थिति देने वाली। अन्तिम स्थिति है जिसमें आत्मा और ब्रह्म एक हो जाते हैं। निष्ठा का अर्थ है अन्तिम स्थिति अर्थात सिद्धावस्था की अन्तिम स्थिति। आ का एक अर्थ है देना। निष्ठा का अर्थ कौशल, चातुर्य, दक्षता, नाश भी दिया गया है। निष्ठा+आ। उपासकों को कौशल या दक्षता देने वाली। दुष्टों का नाश करने वाली। अनन्य भाव वाली (विष्णु भगवान, अपने उपासकों, भक्तों के प्रति)। विश्वास या श्रृद्धा स्वरूपा। (जिस किसी भी चीज का अस्तित्व है वह ऊर्जा या शक्तिरूप होने के कारण देवी स्वरूपा ही हैं क्योंकि देवी का अर्थ है शक्ति या ऊर्जा। केवल प्राणी या वस्तुएं ही नहीं, बल्कि सभी चीजें जिनका कोई नाम होता है या अभी तक नाम नहीं दिया जा सका है, सब देवी रूपा हैं। गुण, सम्बन्ध, समय, दिशा, भाव आदि सभी कुछ ऊर्जा रूप होने के कारण देवी रूपा ही हैं। यही कारण है कि हम दिशाशक्ति, काल शक्ति, अग्नि शक्ति ऐसे शब्दों का प्रयोग करते हैं।)

272. **ज्येष्ठा** – उम्र में सबसे बड़ी (क्योंकि सबका कारण है)। शैव दर्शन के अनुसार ज्येष्ठा वह शक्ति है जो व्यक्ति को आत्मसाक्षात्कार के लिए प्रेरित करती है।

273. **श्रेष्ठा** – सबसे बढ़कर (रूप, गुण, कर्म, आदि में)। उच्च मानवीय गुणों से सम्पन्न। आचार विचार नीति की दृष्टि से महान।

274. **जयावहा** – जय को बुलाने वाली। जयं आवाहयति। (भक्तों के लिए जय बुलाती अर्थात् जय को भक्तों में देती हैं। जय को अर्थात जीत को सर्वतोभावेन धारण करने वाली। जय+आ+वह्, आ का अर्थ समन्तात् अर्थात चारों ओर से।

275. **सर्वार्तिशायिनी प्रीति** – ऐसा प्रेम/ऐसी प्रसन्नता स्वरूपा जो सभी प्रकार के कष्टों से ऊपर उठा हुआ है। यदि सर्वार्तिशायिनी यह अलग नाम होता तो अर्थ होता = सारे दुःखों को सुलाने वाली अर्थात दूर करने वाली। शायिनी का अर्थ है सुलाने वाली। आर्ति का अर्थ है कष्ट। यदि प्रीति अलग नाम होता तो उसका अर्थ होता – प्रसन्नता स्वरूपा।

276. **विश्वशक्ति** – उस शक्ति के रूप में जो विश्व का केन्द्र है, जो विश्व को चला रही है। विश्व की सबसे बड़ी शक्ति।

277. **महाबला** – बल में जो सर्वाधिक है। शब्द के आगे महा लगाने से कभी कभी इसका अर्थ सर्वाधिक होता है। अतिशय शक्ति वाली। सर्वाधिक बल वाली। बल अर्थात जिसमें व्यक्ति कार्य करने के बाद भी थकता नहीं है।

278. **वरिष्ठा** – पद में सबसे ऊपर। शासन क्षेत्र में सबसे ऊपर।

279. **विजया** – विशेष जीत वाली। ऐसी जीत कि विरोधी दुबारा सिर उठाने की हिम्मत नहीं कर सकते, सोच भी नहीं सकते। जड़ से खत्म कर देती विरोधी को। अत्यन्त शक्तिशाली शत्रुओं पर विजय पाने वाली। वरदान पाने के कारण असुरों को जीतना लगभग असम्भव था। उसके बावजूद ऐसे शत्रुओं पर देवी ने जीत हासिल की थी। गूढ़ार्थ विषय जैसे शास्त्रार्थ में जीत हासिल करने वाली। बिना किसी दूसरे की मदद से शत्रुओं पर जीत प्राप्त करने वाली। वि अर्थात विना। विजया (विजया वाली)। विजया का अर्थ है भाँग। वि का अर्थ विना अर्थात बिना भी होता है। बिना किसी और की मदद से जीतने वाली। वि का अर्थ विश्व अर्थात सभी या सर्वत्र होता है। समस्त राजाओं पर जीत हासिल करने वाली। सर्वत्र जीत हासिल करने वाली। वि का अर्थ अन्य, आकाश भी दिया गया है। अन्न पर जीत हासिल करने वाली अर्थात उन्हें जीवित रहने के लिए अन्न की आवश्यकता नहीं है। आकाश पर जीत हासिल करने वाली अर्थात आकाश से भी अधिक सूक्ष्म, आकाश का कारण। जीत का एक अर्थ होता है दूसरे से बढ़ के होना। कारण हमेशा कार्य से बढ़कर होता है। विशेष चीजों से भी बढ़कर अर्थात ज्ञान, भक्ति के स्वरूप वाली। भाँग वाली अर्थात जिन्हें पूजा में भाँग चढाई जाती है। विजया अस्या अस्ति इति विजया अर्थात भाँग वाली।

280. **वीरा** – बहादुर या योद्धा। पराक्रम से युक्त। दूसरों से बढ़कर। जब किसी क्षेत्र में कोई व्यक्ति दूसरों से बढ़कर होता तो वीर कहते जैसे दानवीर/धर्मवीर। अपने कारनामों/उपलब्धि/दिव्य गुणों से बढ़कर है। वीर रस स्वरूपा।

281. **जयन्ती** – हर क्षण जीतती हुई अर्थात् प्रत्येक क्षण वे पहले स्थान पर रहती हैं। सुन्दरता, गुण, कर्म आदि में हर क्षण दूसरों से आगे रहती हैं। जीतने वाले स्वभाव वाली। स्वभाव में ही जीतना है। जयन्ती तिथि स्वरूपा। शब्दकल्पद्रुम में आया है कि जयन्ती तिथि सारे पापों को नाश करने वाली तिथि है और यह द्वादशी तिथि या अष्टमी तिथि होती है। हल्दी के समान सर्वरोगनिवारिका अर्थात लोगों के कष्टों को दूर करने वाली। जयन्ती का एक अर्थ हल्दी होता है। पवित्र जौ के समान पवित्र गुणों वाली। जयन्ती का एक अर्थ जौ होता है। पुण्य करने वाली। शब्दकल्पद्रुम में लिखा है जयम् पुण्यम् च कुरूते जयन्ती इति ताम् विदुः।

282. **विजयप्रदा** – अपने भक्तों को विजय प्रदान करने वाली। प्रत्येक क्षेत्र में जीत प्रदान करने वाली।

283. **हृदगृहा** – हृदय है घर जिसका अर्थात हृदय में विराजमान।

284. **गोपिनी** – गायों/वाणी/प्रकाश की किरणों की रक्षा करने वाली। गो का अर्थ गाय, वाणी, पृथ्वी है। गाम् पाति इति गोप। गोप से गोपनीय बना। अपने उपासकों की रक्षिका। गोपनम् अर्थात रक्षणम्। जिसने अपने को छिपाया है (माया के आवरण से)।

285. **गुह्या** – गोपनीय/छिपाने योग्य। मन्त्र और देवी एक ही है, मन्त्र को दूसरों से बताया नहीं जाता। मन्त्र रूप में दूसरों से छुपाने योग्य। जो गुरू की कृपा के बगैर केवल शुश्क तर्कों से नहीं जानी जा सकती। वेदों में छिपी हुई अर्थात वेदों में कूट भाषा (Coded Language) में जिनका वर्णन है। गुह्या छन्दसु। हृदय गुहा में गई हुई अर्थात विराजमान। हृदयगुहायां गता। कार्तिकेय जी में विराजमान अर्थात शक्तिरूप में विराजमान। कार्तिकेय जी में शक्ति रूप में बैठें हैं। गुहं याति। गुह का अर्थ है कार्तिकेय। छन्दानि छादयन्ति इमाम्। वेदों ने या गायत्री–अनुष्टुप् आदि छन्दों ने जिन्हें ढक के रखा है। गुणगृहयोपि गुह्यो भवति। गुण के द्वारा ग्रहण करने योग्य अर्थात सभी गुण इनमें हैं। गुणी लोगों द्वारा ग्रहण करने योग्य। गुह्य उपनिषद स्वरूपा या इस उपनिषद में शक्ति रूप से विराजमान। छिपाने के योग्य अर्थात गोपनीय मन्त्र स्वरूपा। रक्षण करने योग्य अर्थात मन्त्र स्वरूपा। गुरूमन्त्र या अन्यकठिन साधनाओं के मन्त्र किसी अन्य को नही बताए जाते। गुह्या छन्दसु, छन्दांसि हि छादयति एनाम्। वेद की ऋचाओं या मन्त्रों से आच्छादित है जो अर्थात मन्त्रार्थ स्वरूपा। अर्थ अर्थात object or meaning मन्त्रार्थ हर कोई नही जानता। गुहा (हदय गुफा) में गयी अर्थात विराजमान अर्थात आत्मस्वरूपा। गुह अर्थात कार्तिकेय के पास गयी अर्थात उनके पास रहने वाली। वेद में गुहा का अर्थ बुद्धि भी किया गया है। बुद्धि द्वारा जानने योग्य। जो छिपने में कुशल है वह भी गुह है। गुह्य का अर्थ कछुआ भी है। कूर्मावतार भगवान विष्णु की शक्ति स्वरूपा। गुह्य अर्थात गुप्त, एकान्तवासी। गूढ़ तत्व स्वरूपा।

286. **गणगन्धर्वसेविता** – देवगणों एवं गन्धर्वों से पूजित। सेवा करने का अर्थ पूजा करना भी होता है, जैसा कि भज् सेवायाम् धातु से स्पष्ट है। सेवा का अर्थ मिले हुए आदेश का त्वरित पालन करना भी होता है।

287. **योगेश्वरी** – योगियों की आराध्या या योगियों में सर्वश्रेष्ठ।

288. **योगमाया** – योग के द्वारा जिन्होंने माया का रूप धारण कर लिया। ऐसी माया शक्ति जो भक्त को भगवान से मिला देती है। भगवान की समस्त इच्छाओं को पूरा करने का कार्य योगमाया शक्ति का होता है।

289. **योगिनी** – जिन्होंने अपनी चित्तवृत्तियों का निरोध कर लिया। पतंजलि ने योग की परिभाषा करते हुए कहा कि चित्तवृत्ति निरोध योग है। जो योग में पारंगत हैं या निरन्तर योग करने वाली हैं। मुक्ति स्वरूपा। योगिभिः नीयते प्राप्यते इति योगिनी। योगियों द्वारा मुक्ति को पाया जाता है। अतः योगिनी का अर्थ मुक्ति हुआ।

290. **योगसिद्धिदा** – योग की सिद्धियां देने वाली (उपासकों, भक्तों को)। अणिमा, लघिमा, महिमा आदि अष्ट सिद्धियाँ प्रसिद्ध हैं।

291. **महायोगेश्वरवृता** – विष्णु/शिव द्वारा जिनका वरण किया गया या चुना गया।

292. **योगा** – योगस्वरूपा। योग के रूप में स्थित रहने वाली (जीवात्मा और परमात्मा के ऐक्य रूपी योग स्वरूपा)।

293. **योगेश्वरप्रिया** – विष्णु भगवान जिन्हें पसन्द करते/चाहते हैं।

294. **ब्रह्मेन्द्ररुद्रनमिता** – जिन्हें ब्रह्मा, इन्द्र एवं रुद्र के द्वारा सदैव प्रणाम किया जाता हैं।

295. **सुरासुरवरप्रदा** – तपस्या या उपासना करने पर देवताओं एवं राक्षसों को वर देने वाली।

296. **त्रिवर्त्मगा** – तीन रास्तों या मार्गों से चलने वाली अर्थात् गंगा रूपा। आकाश गंगा, पृथ्वी गंगा और पाताल गंगा। वर्त्म का अर्थ है रास्ता। शिव जी की जटा से तीन मार्गों से या तीन लोकों में चलने वाली गंगा स्वरूपा।

297. **त्रिलोकस्था** – तीनों लोकों में स्थित। तीनों लोकों में धन सम्पत्ति शोभा के रूप में स्थित हैं।

298. **त्रिविक्रमपदोद्भवा** – विष्णु के चरणों से उत्पन्न।

299. **सुतारा** – दुखों से सुन्दर ढ़ंग से छुड़ाने वाली अर्थात छुड़ाते वक्त कष्ट का अहसास नहीं होता। सामान्यतः काँटा निकालते समय कष्ट का अहसास होता है। सुन्दर तारा (तारने वाली) के विग्रहवाली। सुन्दर नेत्रों वाली। सुन्दर तारे के समान चमक वाली।

300. **तारिणी** – भक्तों को दारिद्रय रूपी संसार से पार कराने वाली। उपासकों को भव सागर से पार कराने वाली। तार में णिनि प्रत्यय लगाने से स्त्रीलिंग में तारिणी शब्द बनता है। णिनि प्रत्यय स्वभाव के लिये भी प्रयुक्त होता है। तारने के स्वभाव वाली।

301. **तारा** – दुखों से छुड़ाने वाली। जल के भय से अर्थात तूफान चक्रवात आदि से पार कराने वाली। जलात् तारयति इति तारा। कहते हैं जल में कोई आपदा हो तो तारा देवी का स्मरण करना चाहिए। पार कराने वाली (ज्ञानी, भक्त आदि को इस दुःख रूपी संसार सागर से, आवागमन रूपी संसार से पार कराने वाली।

302. **दुर्गा** – अत्यन्त कठिनाई से (तपस्या, योगादि से) प्राप्त होने वाली। शरीर रूपी दुर्ग में आत्मा के रूप में स्थित। भक्तों को दुर्ग अर्थात रक्षा देने वाली। दुर्ग+आ, आ का अर्थ है देना। दुष्टों के दुर्ग को नष्ट कर देने वाली। दुर्ग + आ, आ का अर्थ है नाश करना। दःखे गीयते इति दुर्गा अर्थात दुःख में जिन्हे पुकारा जाता है।

303. **सन्तारिणी** – सम्यक् रूप से पार कराने वाली। (सम्यक् अर्थात अच्छी प्रकार से, पूर्ण रूप से या ठीक ढंग से) भक्तों को अच्छी तरह से (संसार सागर) पार कराने वाली।

304. **परा** – श्रेष्ठ। जो दूसरे देवताओं से श्रेष्ठ है। परावाणी के रूप में है जो।

305. **सुतारिणी** – जिसकी पार कराने की क्रिया सुन्दर है। दैहिक, दैविक, भौतिक तीनों प्रकार के कष्टों से सुन्दर ढ़ंग से पार कराने वाली अर्थात पार कराते समय जरा भी धक्के का अहसास नहीं होता। अच्छी प्रकार से पार कराने के स्वभाव वाली।

306. **तारयन्ती** – पार करती हुई। हर समय खुद पार कर रही है, कोई भी क्षण खाली नहीं या जो भक्तों को हर समय तारती रहती (पार कराती रहती, संसार सागर से)। हर समय किसी न किसी को दुखों से पार कराने में लगी हुई।

307. **भूरितारेश्वरप्रभा** – प्रचुर मात्रा में चन्द्रमा की कान्ति से सुशोभित।

308. **गुह्यविद्या** – ब्रह्म विद्या स्वरूपा। विद्या का वह रूप जिनको सामान्य लोग जान नहीं पाते।

309. **यज्ञविद्या** – यज्ञ विद्या स्वरूपा। समस्त यज्ञ विद्याओं में पारंगत। विद्या का अर्थ शास्त्र भी होता है। जिस शास्त्र में यज्ञों के बारे में जानकारी दी गई हो उस शास्त्र के स्वरूप वाली। यज्ञ सम्बन्धी ज्ञान स्वरूपा। विद्या अर्थात किसी विषय का विशिष्ट ज्ञान। वह जानकारी जो सीखकर हासिल की जाती है विद्या है। वे शास्त्र जिनके द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाता है विद्या है।

310. **महाविद्या** – 1. महत् अर्थात ब्रह्म को प्राप्त कराने की विद्या (ज्ञान) स्वरूपा। 2. विश्व की सर्वश्रेष्ठ विद्या के रूप को धारण करने वाली (महती च असौ विद्या)। 3. सर्व – अनर्थो का नाश करने वाली विद्या। 4. भोग और मोक्ष दोनों को देने वाली विद्यास्वरूपा।

311. **सुशोभिता** – अच्छी तरह से सुन्दर लगने वाली। अच्छी प्रकार से शोभायमान या रमणीय या अलंकृत। अच्छी प्रकार से सजी हुई, सँवरी हुई।

312. **अध्यात्मविद्याविघ्नेशी** – अध्यात्म विद्या में पड़ने वाले विघ्नों का निवारण/संहार कर देने वाली (ईश = ईश्वर जो पैदा/स्थिति/संहार करता है)। वह ज्ञान या क्रिया जो आत्मतत्व की प्राप्ति करा दे, अध्यात्म है। अध्यात्म अर्थात आत्मा की ओर गति करना अर्थात लौटना। अधि अर्थात की ओर, अत् अर्थात गमन करना।

313. **पद्मस्था** – कमल में विराजमान। सुशुम्ना नाड़ी में स्थित षट्चक्र रूपी कमलों में विद्यमान।

314. **परमेष्ठिनी** – ब्रह्मा की शक्ति स्वरूपा अर्थात ब्राह्मी या वाग्देवी। ब्रह्मा की शक्ति को धारण करने वाली। परमेष्ठी का अर्थ है परमे व्याम्नि चिदाकाशे ब्रह्मपदे व तिष्ठति। परमेष्ठी का अर्थ है ब्रह्मा, महादेव। महादेव की शक्ति स्वरूपा। परमेष्ठिनी का अर्थ ब्राह्मी जड़ी भी होता है जो बुद्धि बढ़ाने के काम आती है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ ब्राह्मी जड़ी के समान बुद्धि बढ़ाने वाली।

315. **आन्वीक्षकी** – तर्क विद्या स्वरूपा। न्याय विद्या स्वरूपा। आत्म विद्या स्वरूपा। सूक्ष्म रूप से देखने वाली। अनु (अणु) + ईक्षक से आन्वीक्षकी शब्द बनेगा। वह शास्त्र जिसमें सूक्ष्म रूप से विचार होता है, आन्वीक्षकी कहलाता है। तर्क शास्त्र में सूक्ष्म रूप से विचार होता है अतः वह आन्वीक्षकी है। अनु+ईक्षण का अर्थ बाद में देखना होता है अर्थात बारीकी से देखना। आजकल का आडिट (Audit) कहा जा सकता है। आडिट में जो पहले से लिखा गया है उसे बाद में देखा जाता है।

316. **त्रयीवार्ता** – वेद में प्रतिपादित आजीविका प्राप्ति सम्बन्धी विद्या स्वरूपा। वृत्ति (जीविका) से वार्ता शब्द बना और त्रयी का अर्थ है तीन वेद। वेद के द्वारा कृषि और लाभकारी विद्याओं की प्रतिपादिका (त्रयी अर्थात वेद, वार्ता = धनोपार्जन वाली विद्या जैसे व्यापार/कृषि)। कौटिल्य ने वार्ता के तीन अंग कहे हैं – कृषि, वाणिज्य तथा पशुपालन, जिनसे प्रायः वृत्ति या जीविका का उपार्जन किया जाता था। जिसके द्वारा वृत्ति अर्थात व्यवसाय प्राप्त हो वह है वार्ता। आजकल जिसे अर्थशास्त्र कहा जाता है वह पहले वार्ता कहा जाता था। तीनों वेदों में जिसकी चर्चा हो, वह भी त्रयीवार्ता है। वार्ता का अर्थ समाचार भी होता है।

317. **दण्डनीति** – दण्ड देकर अर्थात पीड़ित करके शासन में अर्थात अनुशासन में रखने की राजाओं की नीति स्वरूपा। अपराधी या शत्रु को भय का दण्ड दिखाकर या देकर वश में रखने की नीति। किस अपराध के लिये क्या सजा है, उसका उल्लेख जिस शास्त्र में है वह दण्डनीति शास्त्र है, ऐसे शास्त्र के स्वरूप वाली।

318. **नयात्मिका** – नीति मार्ग स्वरूपा (नय = नीति)।

319. **गौरी** – तपस्या के तेज से युक्त। तपस्या के तेज को गौर कहते हैं। गुर उद्यमने धातु होती है। उद्यमन का अर्थ ऊपर उठना या आकर्षित करना है। जो दूसरों के मन को आकर्षित करे। अव्यक्त शब्द करने वाली। गूङ् धातु का अर्थ है अव्यक्त शब्द करना।

320. **वागीश्वरी** – वाणी के ऐश्वर्य (सम्पन्नता/शक्ति) की स्वामिनी। बोलने वालों (वक्ताओं) में सर्वश्रेष्ठ। प्रकृति के जड़ चेतन पदार्थों को शब्द या ध्वनि उत्पन्न करने की शक्ति देने वाली। ईश्वरी अर्थात देने वाली। आरम्भ में सृष्टि मूक थी। जब सरस्वती माँ ने वीणा का तार झंकृत किया तो प्राणियों एवं अन्य पदार्थों में शब्द या ध्वनि उत्पन्न करने की शक्ति आ गई जिसके कारण सरस्वती माँ को वागीश्वरी कहा जाता है। मनुष्य, पशु, पक्षी तो आवाज लगाते ही हैं, नदियों, वृक्षों, बादलों आदि में भी इन्हीं के कारण ध्वनि निकालने की सामर्थ्य आई है। सभी देवियाँ मूल रूप से एक ही हैं। देवी सरस्वती स्वरूपा या देवी सरस्वती से अभेद है जिनका। पदार्थ में जड़ और चेतन दोनों पदार्थ आते हैं।

321. **गोप्त्री** – सभी भक्तों की रक्षा करने वाली। सबकी रक्षा करने वाली। सर्वस्य गोप्त्री। अपने आपको छुपाकर रखने वाली अर्थात जिसने अपने आपको माया के द्वारा छुपाकर रखा हुआ है। स्वयं गुप्ततया स्थिता इति गोप्त्री, गोपायति आत्मानम् इति गोप्त्री। गायों/ज्ञान/प्रकाश की रक्षा करने वाली। गवां गोप्त्री। वेदों की रक्षा करने वाली। वेदानां गोप्त्री। स्वर्गादि लोकों की रक्षा करने वाली। स्वर्गादेः गोप्त्री। (गोप्ता का अर्थ एक स्थान पर मिला है–सर्वत्र गमन करने वाला एवं ज्ञान के बीज को जिसके द्वारा बोया गया है अर्थात बोने वाला। सर्वगा। वप्ता च ज्ञानबीजस्य। सर्वगा का ग ले लिया एवं उप्ता (बोई गई अर्थात रखी गई) को ग से जोड़ दिया गया, ग+उप्ता। सर्वगत एवं सज्जनों के मनों में रक्षित अर्थात विराजमान। सर्वगता सतां मनसि गुप्ता चोप्ता चेयं परदेवता।)

322. **गायत्री** – जो गायन करने वालों की रक्षा करती अर्थात् जो भक्त उनके गुणों/नाम/मन्त्र का श्रद्धापूर्वक जप करता उनकी रक्षा करती। प्राणों के समूह की रक्षा करने वाली। गय (प्राणों) की रक्षा करने वाली। प्राण रक्षक मन्त्रों को धारण करने वाली। गय (प्राण) का भाव गाय है। गायम् त्रायते से गायत्र बना। गायत्र का अर्थ है प्राणों की रक्षा करने वाले मन्त्र। 24 अक्षरों वाले गायत्री नामक छन्द के स्वरूप वाली। गै धातु से बने गायत्री शब्द का एक अर्थ है, जो देवताओं का गायन करती है अर्थात चरित (जीवनलीला) का गायन करती हैं। त्रि+गायत्, का क्रम परिवर्तित करने पर गायत्+त्रि हो जाता है जिसका अर्थ है जो त्रिगमना है अर्थात तीन चरणों वाली हैं। गाते हुए ब्रह्मा जी के मुख से गिर जाने के कारण भी इन्हें गायत्री कहा जाता है। आधुनिक वेद विज्ञान के अनुसार सूर्य से धरती में आने वाली सौर ऊर्जा सावित्री है तथा पृथ्वी से सूर्य की ओर लौटने वाली ऊर्जा या सौर ऊर्जा गायत्री है। केन्द्र से परिधि की ओर जाने वाली ऊर्जा सावित्री है एवं परिधि से केन्द्र की ओर लौटने वाली ऊर्जा गायत्री है। विज्ञान के नियम के अनुसार केन्द्र से परिधि की ओर जाना एवं परिधि से केन्द्र की लौटना, ये गतियाँ निरन्तर होती रहती हैं। सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक के सूर्य को सूर्य कहा जाता है एवं सूर्यास्त से लेकर सूर्योदय तक के सूर्य को सविता कहा जाता है। चूंकि रात में सूरज दिखाई नहीं देता अतः पुराने ग्रन्थों के अनुसार रात में सूर्य अँधेरी किरणें निकालता है, ऐसा लिखा गया है। जीवन का प्रथम काल अर्थात ब्रह्मचर्य काल गायत्री है। गृहस्थ काल त्रिष्टुप् है एवं वृद्धत्व काल जगती है। (सावित्री और गायत्री– सूर्य से पृथ्वी में आने वाली सौर ऊर्जा सावित्री है तथा पृथ्वी से वापस सूर्य में जाने वाली सौर ऊर्जा गायत्री है। केन्द्र से परिधि में जाने वाली ऊर्जा सावित्री है और परिधि से केन्द्र में वापस जाने वाली ऊर्जा गायत्री है।) गायत्री और सावित्री Aspects of Awareness है। गायत्री जहाँ perceiving awareness का प्रतीक है वहीं सरस्वती/सावित्री discriminating intellect का प्रतीक है। वेद में ब्राह्मण गण को गायत्र कहा गया है। विद्वानों को भी गायत्र कहा गया है। वहाँ लिखा है गायत्रो वा ब्राह्मण, गायत्रो विद्वान। इस प्रकार गायत्री का अर्थ ब्राह्मण की शक्ति, विद्वानों की शक्ति कर सकते है। वैदिक कोष में गय का अर्थ प्राण, धन, निवास किया गया है। प्राणों की रक्षा करने वाली अर्थात् प्राणों का बनाये रखने वाली अर्थात दीर्घ जीवन देने वाली। भक्तों के धन की रक्षा करने वाली। देवताओं के निवास स्थान या भक्तों के निवास स्थान की रक्षा करने वाली।

323. **कमलोद्भवा** – कमल में उत्पन्न। सृष्टि में उत्पन्न अर्थात अवतार लेने वाली। कमल सृष्टि का प्रतीक है।

324. **विश्वम्भरा** – विश्व का भरण पोषण करने वाली। शाक, सब्जी, फल, दूध वायु आदि को उत्पन्न कर प्राणियों का भरण पोषण करती हैं। सम्पूर्ण जगत को अपने में धारण करने वाली।

325. **विश्वरूपा** – जो विश्व/जगत् के रूप में है। देवी अर्थात् प्रकृति। प्रकृति ही विश्व रूप में परिवर्तित हुई। विश्वम् रूपयति इति विश्वरूपा। विश्व को स्वरूप देने वाली अर्थात विश्व का निर्माण करने वाली।

326. **विश्वमाता** – जगत की रक्षा करने वाली। माति इति माता अर्थात जो रक्षा करे वह है माता। विश्व में माता की तरह पूजनीय।

327. **वसुप्रदा** – उपासकों को धन/रत्न आदि प्रदान करने वाली। वसु का अर्थ है धन।

328. **सिद्धि** – गणेश जी की सिद्धि नामक पत्नी से अभेद है जिनका। मोक्ष स्वरूपा। कार्य की सफलता स्वरूपा। अणिमा, लघिमा आदि अष्ट सिद्धियों के रूप में। ये सिद्धियों मानव रूप में भी वर्णित की गयी है अर्थात इनका मानव के रूप में भी आकार है। वह शक्ति जो सिद्धि (सफलता) देती। सिद्धि परममंगलम्। तद्गुणसारत्वात्, तद् व्यपदेश इति न्यायात् सिद्धिमयस्य सिद्धि रिति व्यपदेश। परम मंगल का नाम सिद्धि है। ऐसा नियम या फार्मूला है कि जिसमें जो गुण होता है वैसा ही नाम पड़ जाता है। सिद्धिमय को सिद्धि कहा जाता है। व्यपदेश अर्थात कहना। सभी कार्यों में सफलता की कारण होने से उन्हें सिद्धि कहते है। अणिमा, लघिमा आदि अष्ट सिद्धियों की कारण होने से भी सिद्धि कहा जाता है। जो सभी साधनों की सिद्धिरूपा या सभी साधनों एवं सिद्धि रूप वाली है। ज्ञान और आनन्द रूप सिद्धिस्वरूपा। ज्ञान को और आनन्द को ही सबसे बड़ी सिद्धि कहा जाता है क्योंकि मनुष्य ज्ञान और आनन्द के लिए ही कुछ करता है।

329. **स्वाहा** – देवताओं को उनका भक्ष्य पहुँचाने वाली। उस रूप में जिसमें वह देवताओं को हविष्य पहुँचाती है। अग्नि की पत्नी स्वरूपा या अग्नि की पत्नी से अभेद है जिनका। निरुक्त में स्वाहा का अर्थ सु + आह से कल्याणकारी वचन किया गया है। स्वा (अपना हृदय), वाक्, आह इस प्रकार से अपने हृदय में जो है उसे वाणी से प्रकट करने वाली को भी स्वाहा कहते हैं। सुन्दर या श्रेष्ठ वाणी स्वरूपा। सु+आह, सुष्ठु अर्थात् सुन्दर या श्रेष्ठ। आह अर्थात् वाणी। सुन्दर वाणी देने वाली अर्थात् बोलने वाली। आ का अर्थ है देना। स्वाह + आ।

330. **स्वधा** – पितरों को उनका भक्ष्य पहुँचाने वाली। उस रूप में जिसमें वह पितरों को अन्न पहुँचाती। स्वम् (आत्मशक्तिम्) धारयति इति स्वधा। आत्मशक्ति को धारण करने वाली।

331. **स्वस्ति** – कल्याण रूपा (भक्तों के लिए)। पूरी आयु देना, धन समृद्धि देना, जीने के लिए सभी आधारभूत वस्तुएँ अर्थात् रोटी, कपड़ा, मकान देना। कल्याण का वास्तविक अर्थ होता है आत्मोद्धार, मोक्ष या परमानन्द।

332. **सुधा** – अमृत स्वरूपा। अन्न स्वरूपा। वेद में जिस अन्न को देवताओं को चढ़ाया जाता है उसे सुधा कहा गया है। सुष्ठु दधाति पुष्णाति। अच्छी प्रकार से या रूचि से पुष्ट (वृद्धि और मजबूती) करने वाली। सुधा का अर्थ है कलई जो सफेद रंग की होती है। सुधा (कलई) की तरह सफेद। अन्न स्वरूपा। वेद में जिस अन्न को देवताओं को चढ़ाया जाता है उसे सुधा कहा गया है। सुष्ठु दधाति पुष्णाति। अच्छी प्रकार से या रूचि से पुष्ट (वृद्धि और मजबूती) करने वाली। उत्तम भरण पोषण करने वाली अमृत रूप शक्ति। सहस्रारचक्र से टपकने वाला अमृत जो पूरे शरीर को पुष्ट किये रहता है।

333. **सर्वार्थसाधिनी** – सभी उद्देश्यों (प्रयोजनों) को सिद्ध करने वाली/पूरा करने वाली।

334. **इच्छा** – मन में होने वाली चाहरूपा (कि यह काम हो जाये, यह चीजें मिल जाये)।

335. **सृष्टि** – जगत् की रचना करना रूपी क्रिया या कर्मस्वरूपा (सृ सर्जने धातु होती है)। कोई भी उत्पत्ति या रचना क्रिया स्वरूपा। संसार या जगत स्वरूपा। निसर्ग या प्रकृति स्वरूपा। उदारता स्वरूपा।

336. **द्युति** – कान्ति स्वरूपा। द्यु का अर्थ होता है अन्तरिक्ष। कारण शरीर जो आत्मा के एकदम करीब होता है उसमें रहने वाली कान्ति द्युति है। हृदयाकाश में होने वाली कान्ति को द्युति कहते हैं। शरीर के बाहर अर्थात स्थूल शरीर के बाहर निकलने वाली कान्ति धारा को ओज कहते हैं। जब यह ओज परिपक्व होता है तो कान्ति धारा सूक्ष्म शरीर में पहुँच जाती है जिसे तेज कहते हैं। स्वप्नावस्था में सूक्ष्म शरीर जाग्रत होता है और उस समय आत्मा के स्वरूप को तैजस कहते हैं। जब ओज और तेज परिपक्व होता है तो यह और सूक्ष्म रूप में कारण शरीर में पहुँच जाता है तथा भीतर के अन्तरिक्ष में अर्थात हृदयाकाश में कान्तिधारा प्रवाहित होने लगती है जो आत्मा के बेहद नजदीक होती है इसे द्युति कहते हैं।

337. **मूर्ति** – प्रकट/व्यक्त स्वरूप वाली। शरीर धारी (शरीर को भी मूर्ति कहते हैं)। मूर्तिकलास्वरूपा। मूर्ति की तरह ठोस अर्थात जिनका भेदन नहीं किया जा सकता। मूर्ति में अंश रूप से स्थित।

338. **कीर्ति** – यश स्वरूपा (जिन्दा रहते हुए यश होता, मृत्यु के बाद कीर्ति होती)। अवतार के रुप में लीला करने के बाद वापस अपने लोक में गमन करने के पश्चात मिलने वाला यश स्वरूपा। शब्द में ''का कारण'', ''में विराजमान'' लगाने से भी शब्द का अर्थ निकलता है। कीर्ति का कारण अर्थात कीर्ति देने वाली। कीर्ति नामक गुण में शक्ति या ऊर्जा रूप में विराजमान।

339. **श्रद्धा** – पूज्य या बड़े लोगों के प्रति मन में होने वाली आदरपूर्ण आस्था या विश्वास स्वरूपा। (श्रद्धा अर्थात आदरयुक्त आस्था, विश्वास)।

340. **दयामती** – दयायुक्त। दूसरों पर किये जाने वाली दया नामक भाव से युक्त। यदि दयामति हो तो अर्थ होगा दयायुक्त बुद्धि वाली।

341. **श्रुति** – वेद की ऋचाओं के रूप में, जिन्हें प्रथम बार सुना गया।

342. **मेधा** – धारणावती बुद्धि। बुद्धि का वह स्वरूप जिसके कारण ज्ञान अन्दर रख जाता है, धारण हो जाता है। बुद्धि जो अज्ञान की हिंसा कर दें अर्थात् समाप्त कर दें। मेधृ हिंसायाम धातु होती है। बुद्धि जो किसी भी चीज के तत्व या मूल से जुड़ती है अर्थात् किसी भी चीज का वास्तविक अर्थ निकल लेती है। मेधृ संगमन धातु होती है। संगमन का अर्थ है जुड़ना। संगमयति से संगमन बनाये तो अर्थ होगा जोड़ने वाला। जो जीवात्मा को परमात्मा से जोड़ देती हैं। जो व्यक्ति को सत्य से जोड़ देती हैं या सन्मार्ग से जोड़ देती है। वह बुद्धि जो औचित्यपूर्ण ज्ञान कराये। मेधृ संगमने धातु होती है और संगमन का एक अर्थ औचित्यपूर्ण तरीके से ज्ञान या गति करना है। जो बात जैसी है, वैसा ही ज्ञान कराने वाली। किसी आभूषण में जो रत्न या धातु जहाँ लगने हो वही पर ही लगे, तभी औचित्यपूर्ण कहलाया जाएगा। आशुग्रहणबुद्धि अर्थात ऐसी बुद्धि स्वरूपा जिससे कोई भी चीज तुरन्त पकड़ में आ जाती है। मेधा+आ=मेधा, आ का अर्थ है देना। आशुग्रहण बुद्धि देने वाली। कण्ड्वादिगण में मेधा का अर्थ आशुग्रहण दिया गया है। मेधृ धातु का अर्थ संगमन, हिंसा भी दिया गया है। संगमन का अर्थ है परस्पर मिलकर ज्ञान प्राप्त करना, सहयोग से समाज में गतिशील होना, समान रूप से भोग्य पदार्थों को प्राप्त करना, मिलकर देवपूजा करना, सात्विक दान देना, भौतिक पदार्थो की वैज्ञानिक रीति से संगमन कर लोकहित में सदुपयोग करना। देवपूजा में भी संगतिकरण शब्द आता है। हिंसा का अर्थ हुआ कि समाज के विघातक तत्वों की हिंसा करने वाली अर्थात सामाजिक संतुलन बनाएं रखने वाली। व्यक्ति और समाज के पारस्परिक हितों के विघातक तत्वों की हिंसा करने वाली। दान देने की प्रेरणा देने वाली। संगतिकरण अर्थात उपासक को उपास्य से जोड़ना।

343. **धृति** – उस गुण के रूप में जिसे धैर्य कहते। विपरीत स्थिति में विचलित न होना एवं अनुकूल समय की प्रतीक्षा करना धैर्य है। (यदि धृतिह्ली यह शब्द होता तो धैर्य या संतोष में अपने को छुपाकर रखने वाली ऐसा अर्थ बनता है, अपह्नुति अलंकार का नाम सुना होगा।)। धैर्य, प्रीति। वाचस्पत्यम् में लिखा है धृतिर्धैर्य प्रीतिर्वा। मानसिक धारणा को भी धृति कहते है, जिसका उल्लेख गीता में 18 अध्याय में है। जाबाल दर्शनोपनिषद् के अनुसार दस यम होते हैं जिसमें से एक का नाम धृति है। दृढ़ निश्चय भी धृति का एक अर्थ है। इस उपनिषद के अनुसार वेदादेव विनिर्मोक्षः संसारस्य न चान्यथा। इति विज्ञान निष्पत्तिर्धृतिः प्रोक्ता हि वैदिकैः अर्थात् वेदादि की अनुकूलता (वैदिक मार्ग पर चलने) से ही सांसारिक प्राणियों को मोक्ष प्राप्त होता है। इससे भिन्न मोक्ष प्राप्ति का अन्य कोई साधन नही है, इस प्रकार के दृढ़ निश्चय या दृढ़ धारणा को ही धृति कहा गया है। विपत्ति में या ईश्वर प्राप्ति के प्रयास में असफल होने पर भी सिद्धान्तों को न छोड़ना धृति है।

344. **ह्री** – लज्जा रूपा। उस गुण के रूप में जिसके कारण व्यक्ति गलत काम करने में झिझक महसूस करता। जिस भाव के कारण व्यक्ति अपनी बड़ाई नही चाहता या ऊपरी प्रशंसा नही चाहता।

345. **श्री** – सभी के द्वारा जिनका आश्रय लिया जाता है। श्रयते सर्वैः या, सा श्री इति उच्यते। जिसे देवता श्रद्धा से चाहते हैं। श्र अर्थात श्रद्धा, ई अर्थात ईप्सिता। शाश्वत शरण रूपा। जो गुणों से विश्व का विस्तार करने वाली हैं। शॄ विस्तारे धातु होती है। जो भक्तों की वाणी अर्थात उनकी पुकार सुनती है। (श्रृणोति = सुनना) (यदि श्रीविद्या नाम हो तो अर्थ होगा श्रेष्ठ विद्या स्वरूपा)।

346. **विद्या** – 1. उस ज्ञान के रूप में जो व्यक्ति को मोक्ष दिलाता है। 2. 14 या 18 विद्यायें, उसके रूप में। किसी के मत में 14 विद्याऐं हैं और किसी के मत में 18 विद्याऐं हैं।

347. **विबुधवन्दिता** – विद्वानों द्वारा वन्दित। देवताओं द्वारा वन्दित।

348. **अनसूया** – असूया से रहित। (गुणों में भी दोष खोजना असूया है) 1. दूसरों के अवगुणों/दोषों की तरफ ध्यान न देने वाली। 2. ईर्ष्या/द्वेष से रहित।

349. **घृणा** – कृपागुण स्वरूपा। घृणा का अर्थ कृपा भी होता है। तब उसका अर्थ होगा भक्तों के प्रति कृपा दिखाने वाली। घृणा का अर्थ करुणामयी भी होता है। घृणा अस्या अस्ति इति घृणा (घृणा वाली)। लोगों को बरगलाने के लिए घृणास्पद रूप धारण कर लेने वाली, दुष्टों, राक्षसों के लिए घृणा स्वरूपा। तेजस्विनी। घृण अस्या अस्ति इति घृणा (घृणा वाली)। शब्दकोश में घृण् धातु का अर्थ चमकना, जलना बताया गया है एवं घृण का अर्थ ताप, गर्मी है। यहाँ पर ताप का अर्थ तेज ले सकते हैं। दीप्ति का क्षरण करने वाली अर्थात् दीप्तिमती। वैदिक कोष में घृ (क्षरण) धातु से घृणा का अर्थ दीप्ति का क्षरण, दीप्ति किया गया है। सम्पन्न दीप्ति देने वाली अर्थात् भक्तों को दीप्ति से युक्त करने वाली। घृणा + आ, घृणा का अर्थ है दीप्ति एवं आ का अर्थ है देना। घृण का अर्थ चमकने वाला भी किया गया है। ऋग्वेद में 6/15/5, ऋचा को देखा जा सकता है। घृण + आ = घृणा। अतः घृणा का अर्थ हुआ चमकने वाले पदार्थ जैसे स्वर्ण आदि देने वाली।

350. **नीति** – लोक व्यवहार हेतु नियत किये गये आचार स्वरूपा। उचित या ठीक रास्ते पर ले जाने या ले चलने की क्रिया स्वरूपा। राष्ट्र या समाज की उन्नति या हित के लिए निश्चित किये गये आचार व्यवहार स्वरूपा। राज्य या शासन की रक्षा तथा व्यवस्था के लिए तय किये गये नियम तथा सिद्धान्त स्वरूपा। नीतिस्वरूपा (सभी प्रकार की नीतियां जिसके अन्दर विराजमान हैं (सही रास्ते में ले जाने की क्रिया रूपा)। 1. आचार/व्यवहार रूपा जिससे समाज का कल्याण हो। 2. राज्य के वे सिद्धान्त जिससे राजा और प्रजा के बीच ठीक सम्बन्ध होते हैं, राज्य अच्छी तरह चलता है नीति या सिद्धान्त कहलाते हैं। उस सिद्धान्त के रूप में।

351. **निवृत्ति** – मोक्षस्वरूपा। संसार के कार्यों एवं वस्तुओं से आसक्ति रहित भाव स्वरूपा। सांसारिक विषयों का छुटकारा या त्याग स्वरूपा। जो पूर्णता को प्राप्त हो गई हैं। निर्गता वृत्तिः यस्याः सा निवृत्ति। जब कार्यकलाप पूरा हो जाए तो व्यक्ति उस कार्यकलाप से आगे निकल जाता है अर्थात कार्यकलाप पूरा हो गया। जब तक क्रिया हो रही है तब तक उस क्रिया से आगे नहीं निकला। वृत्ति का अर्थ है क्रिया या कार्यकलाप। निपट चुकी है लौकिक आचार से जो अर्थात कैवल्य या आनन्द की स्थिति में है जो। अन्तिम आनन्द स्वरूपा।

352. **कामधुक्करा** – कामनाओं का दोहन करने वाली अर्थात दुहकर देने वाली अर्थात कामनाओं को पूरा करने वाली। धुक् शब्द दुह् शब्द से बना है। हो घा सूत्र लगा। कामधेनु की रचना करने वाली। कामधुक् अर्थात कामधेनु। कामधेनु का दोहन किया जाता है अर्थात निकाला जाता है।

353. **सन्तति** – समीचीन या अच्छे विस्तार वाली या अच्छे विस्तार को प्राप्त अर्थात सृष्टि स्वरूपा। सम्+तति।

सम्+तन्+क्तिन्। क्तिन् प्रत्यय कर्ता में नहीं होता। सम्यक् तन्यते इति संतति अर्थात जिसका सम्यक रूप से विस्तार होता है।

354. **प्रतिज्ञा** – स्वीकार किये व्रत को निभाने वाली (जब – जब देवताओं पर संकट आयेगा रक्षा के लिए आऊँगी, ऐसा व्रत लिया है देवी ने)।

355. **भूति** – विभूति स्वरूपा। ऐश्वर्य धन – दौलत, संपत्ति स्वरूपा। जो भूमि से निकले ऐसे धन – दौलत स्वरूपा। विष्णु स्वरूपा। वृद्धि स्वरूपा। भूति के वैभव, धन–सम्पत्ति, योग के अष्टसिद्धियाँ, वृद्धि, विष्णु अर्थ है। प्राणस्वरूपा। वैदिक कोष में भूति का अर्थ प्राण भी दिया गया है। भक्त या उपासकों की परम सम्पदा स्वरूपा। जिसमें सभी पदार्थ जन्म लेते है या विराजमान रहते है। क्तिन् प्रत्यय प्रायः कर्ता कारक अतिरिक्त अन्य कारकों में प्रयुक्त होता है। यहाँ अधिकरण कारक में अर्थ ले सकते है। उत्पन्न होने वाली के बजाए जिसमें पदार्थ उत्पन्न होते है, यह अर्थ अधिक ठीक है। अस्तित्वस्वरूपा। वास्तव में अस्तित्व है जिसका। भू सत्तायाम् धातु होती है जिसके अनुसार भू का अर्थ अस्तित्व में होना है। कृत्य ल्यूटो बहुलम् सूत्र से कई बार प्रत्यय सामान्य तौर पर जिस कारक में प्रयुक्त होते है उससे भिन्न कारक का अर्थ देने लगते है जैसे अदिति का अर्थ है सब कुछ देने वाली, इसी प्रकार उत्पन्न होने वाली या सत्ता में आने वाली। ऐसा अर्थ कर सकते है। उत्पन्न होना अर्थात् अवतार लेना। कई चीजों के रूप में अस्तित्व में होने वाली। Full of Glory प्राण। वैदिक शब्द कोष में भूति का एक अर्थ प्राण दिया गया है। भूति का अर्थ है महालक्ष्मी, महालक्ष्मी में विराजमान। परम आनन्द स्वरूप को भी भूति कहते हैं। उन्नति की पराकाष्ठा भूति है। भुवः ऊती रक्षा अनया इति भूति। भूमि की रक्षा जिस शक्ति के द्वारा होती है वह भूति है। भूति का अर्थ है उत्पत्ति, जन्म, अस्तित्व, समृद्धि, कुशलक्षेम। धन की वृद्धि करने वाली। विस्तारयति या तनोति का ति अक्षर लिया। एकाक्षरीकोश में भू का अर्थ भूमि, स्थान, धन दिया गया है। ऐसे शब्द भी ले सकते हैं जो भू से आरम्भ होते हैं। स्थान/भूमि की वृद्धि करने वाली अर्थात भक्तों की अचल सम्पत्ति की वृद्धि करने वाली।

356. **द्यौ** – आकाश स्वरूपा। स्वर्ग या अग्नि स्वरूपा। स्वर्ग में विराजमान दिव्य शक्तिरूपा। शाब्दिक रूप से अर्थ निकलता है स्वर्ग स्वरूपा या आकाश स्वरूपा। लक्षणा के द्वारा अर्थ निकलेगा आकाश या स्वर्ग में रहने वाली जैसे दिल्ली ने कहा अर्थात दिल्ली में रहने वाले ने कहा। भाला चले आ रहे हैं अर्थात भालाधारी चले आ रहे हैं। आधुनिक वेद विज्ञान में मनुष्य के शिरोभाग को स्वर्ग लोक कहा गया है और उसमें विद्यमान न्यूरोन्स को देवता कहा जाता है। सिर में चार छिद्र या शून्य स्थान है। इन रिक्त स्थानों को घट या कलश कहा गया है। इनमें सोमरस भरा होता है जो शरीर को शक्ति और स्फूर्ति देते हैं।

357. **प्रज्ञा** – प्रकृष्ट ज्ञान से युक्त (प्रकृष्ट = श्रेष्ठ)। विदुषी (प्रकर्षेण जानाति इति प्रज्ञा)। सूक्ष्म से सूक्ष्म तत्व की जानकारी प्राप्त करने वाली बुद्धि। गुरु के उपदेश से अर्थात् तत् त्वम् असि आदि वाक्यों से उत्पन्न होने वाली बुद्धि प्रज्ञा है। श्वेताश्वतर उपनिषद में 4/18 में लिखा है प्रज्ञा गुरुपदेशात् तत्त्वमादिवाक्यजा। छान्दोग्य उपनिषद 7/5/2 में भी ऐसा लिखा है। उत्कृष्ट कोटि की विवेक शक्ति को प्रज्ञा कहते है। रामायण में हनुमान जी प्रज्ञा का प्रतीक माना गया है। प्रज्ञा शक्ति वह शक्ति है, जो प्राप्त हुए ज्ञान तक सीमित न रखकर उसे आचरण में उतार देती है अथवा ऐसा भी कह सकते है कि ज्ञान और आचरण का समन्वित स्वरूप ही प्रज्ञा है। प्रज्ञा विदुषी महिला को भी कहते है। (निर्णय लेने की शक्ति बुद्धि है, समझने एवं मनन करने की शक्ति मति है, चीजों को याद किये रहने की शक्ति स्मृति है, स्मृति अल्पकाल की भी हो सकती है, वह शक्ति जो दीर्घकाल तक स्मरण को धारण किये रहती है, वह मेधा है, पार्थक्य ज्ञान कराने वाली शक्ति विवेक है अर्थात् सही गलत, कर्त्तव्य–अकर्त्तव्य या अन्य इसी प्रकार के भेद को कराने वाली शक्ति विवेक है और विवेक की उत्कृष्ट अवस्था प्रज्ञा है।)

358. **विश्वमानिनी** – विश्व में सर्वाधिक मानी जाने वाली। संसार की माननीयों में अग्रणी।

359. **स्मृति** – धर्मशास्त्र स्वरूपा (जैसे मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति आदि)। धर्म दर्शन, आचार, व्यवहार आदि से सम्बन्ध रखने वाले हिन्दू धर्म शास्त्र जिनकी रचना ऋषि मुनियों ने वेदों का स्मरण या चिन्तन करके की थी। वे हिन्दू धर्म ग्रन्थ जो मानव रचित हैं तथा निम्न कोटि के माने जाते हैं। बुद्धि का वह प्रकार जो अतीत की घटना को याद रखता है या वह शक्ति जिससे बीती हुई बातें मन में किसी रूप में बनी रहती हैं, स्मृति हैं। तद्स्वरूपा।

360. **वाग्विश्वजननी** – वाणी के विश्व को जन्म देने वाली। वाणी का विश्व अर्थात हर प्रकार की भाषा जैसे संस्कृत, हिन्दी, जर्मन, अंग्रेजी, फ्रैंच, मराठी, तमिल, तेलगू, मलयालम आदि। विश्व में वाणी को जन्म देने वाली। पुरुषोत्तम में उत्तम बाद में है इसी प्रकार वाग्विश्व में विश्व बाद में लगाया जा सकता।

361. **पश्यन्ती** – वाणी का वह स्वरूप जो दिखलाई देता। वाणी के इस स्वरूप को केवल योगी लोग देख सकते हैं नाभि के पास सुषुम्णा नाड़ी में जिसमें उन्हें प्रकाशनुमा कुछ दिखता है किन्तु शब्द और अर्थ (वस्तु) में भेद नहीं दिखाई देता। जैसे हवाई जहाज से ऊँचे उड़ने पर नीचे की चीजों में पार्थक्य नहीं दिखाई देता है। प्रकट रूप वाली। भक्तों के कर्मों पूजा पाठ देखने वाली।

362. **मध्यमा** – पश्यन्ती वाणी एवं वैखरी वाणी के बीच जो वाणी है तद्रूपा, इसमें शब्द और अर्थ में थोड़ा सा अन्तर दिखाई पड़ता है वह भी मानसिक स्तर पर। नायिका जो नायक के द्वारा अच्छा व्यवहार करने पर अच्छा, खराब व्यवहार करने पर खराब व्यवहार करती है, मध्यमा नायिका कहलाती है। उस नायिका के गुणों वाली। अलग अलग विशेषताऐं देवी के अलग अलग रूपों में होती है अतः यह भ्रम नहीं करना चाहिए कि एक ही देवी में इतनी सारी विशेषताऐं कैसे हो गयी। देवी के सभी रूप तत्वरूप में एक ही हैं। बीच के शरीर अर्थात् मनोमय कोष में रहने वाली शक्तिस्वरूपा। अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय एवं आनन्दमय ये पाँच कोष होते है। मध्यम नाड़ी अर्थात् बीच में रहने वाली नाड़ी या सुषुम्ना नाड़ी में रहने वाली शक्ति स्वरूपा या कुण्डलिनी स्वरूपा। बीच के लोक अर्थात् अन्तरिक्ष लोक के स्वरूप वाली या इसमें विचरण करने वाली। मध्यम आकार वाली अर्थात् न बहुत अधिक लम्बी है और न बहुत अधिक छोटी है। मध्यम मार्ग वाली अर्थात् गौतम बुद्ध के द्वारा बताये गये मध्यम मार्ग पर चलने वाली या इस मार्ग पर चलने से प्राप्त होने वाली।

363. **समा** – सभी के साथ कर्मानुसार समान व्यवहार करने वाली। किसी के साथ पक्षपात नहीं करती। जिसने जितने पुण्य या पाप किये हैं उस अनुसार फल देती हैं। वर्ष या संवत्सर स्वरूपा विशिष्ट काल से युक्त। (किसी विशिष्ट समय में कुछ विशेष हो जाता जैसे वाल्मीकि जी के मुख से संस्कृत का पहला वाक्य निकला मा निषाद प्रतिष्ठां त्वाम् गता) वह समय जिसमें कुछ विशेष घटित हो जाता।

364. **सन्ध्या** – वह समयरूपिणी, जिस समय इष्ट देवता का सम्यक् रूप से ध्यान किया जाता। उपासना का समय स्वरूपा जो प्रायः 3 होते हैं – प्रातः, मध्यान्ह, सायं। वह समय जब दिन का अन्त और रात्रि का प्रारम्भ होता है। दो युगों के मिलने का समय। उपासना स्वरूपा। सम्यक् रूप से ध्यान करने वाली।

365. **मेधा** – बुद्धि का वह उत्कृष्ट स्वरूप जो नई नई खोज या नए नए रास्ते निकालती है। मेधावान व्यक्ति ही खोज कर पाता है।। बुद्धि का वह रूप जिसमें कठिन से कठिन, सूक्ष्म से सूक्ष्म विषयों का बहुत आसानी से समझ में आ जाता, बिना संशय के। बुद्धि का वह रूप जिसके होने पर व्यक्ति ब्रह्माण्ड और अन्तरिक्ष के रहस्यों को समझ जाता है। पशुता को समाप्त करने वाली बुद्धि। समाज से अनुकूलता बनाये रखने वाली अर्थात व्यक्ति और समाज में अच्छे सम्बन्ध बनाये रखने वाली बुद्धि स्वरूपा। मेधृ धातु का अर्थ हिंसन और संगमन (अनुकूल होना) दिया गया है।

366. **प्रभा** – कान्ति रूपिणी। अधिक चमक वाली। प्रभा नामक अप्सरा के समान अति सुन्दर।

367. **भीमा** – अतिशय भयंकर। उग्र स्वरूप वाली (काली का रूप भयंकर है। देवी और काली अभिन्न है)। भीम भगवान शिव का एक नाम है। भगवान शिव की शक्ति भीमा हुई। इस नाम का अर्थ हुआ भगवान शिव की शक्ति से अभेद है जिनका।

368. **सर्वाकारा** – समस्त आकारों से युक्त। समस्त आकारों में दिखाई देने वाली या बुद्धि, इन्द्रिय आदि रूपों में अर्थात, सांख्य के 25 तत्व रूपा।

369. **सरस्वती** – निरन्तर ज्ञान के प्रवाह से युक्त (सरस् = प्रवाह, ज्ञान का प्रवाह)। आनन्द के प्रवाह से युक्त। सरस्वती नदी रूपा। ज्ञान से युक्त। सरस् का अर्थ ज्ञान भी होता है क्योंकि ज्ञान पानी की तरह ऊपर से नीचे अर्थात गुरु से शिष्य की ओर बहता है।

370. **काङ्क्षी** – जो कामना करती है। काङ्क्षते इति कांक्षः, काङ्क्ष+ङीप इति कांक्षी। भक्तों की कामना करती कि कोई मेरी भक्ति करे। भगवान विष्णु की कामना की थी कि वे पति रूप में मिलें। इच्छा वाली/भक्तों को चाहने वाली (आकांक्षा)। कामना स्वरूपा यह अर्थ भी होगा। कांक्षः का अर्थ कामना होता है और स्त्रीलिंग में कांक्षी।

371. **माया** – जो ब्रह्म को सीमाबद्ध कर दे (मीयते अनया इति माया)। अनन्त ब्रह्म में भेद पैदा करने वाली। ब्रह्म अनन्त है उसे छोटे – 2 आकारों में दिखा सकने वाली। सबको अधीन करने वाली। माया अर्थात विश्व निर्माणकारी तत्व, परिमितिकारी तत्व। मा धातु का अर्थ निर्माण करना, सीमित करना है। पंचकंचुकों का कारण या स्रोत। शैव दर्शन में माया के पंचकंचुक हैं जिन्हें पाश कहते हैं। ये हैं कला, विद्या, राग, काल, नियति।

372. **महामाया** – मायावियों को भी माया में डालने वाली। जो माया से बढ़कर है अर्थात माया से परे है। संसार को इस रूप में दिखाने वाली शक्ति जैसे वास्तव में उसका (संसार का) अस्तित्व है। (महा = संसार) (चेतना की उच्च अवस्था में जाने पर पता चलता कि संसार का अस्तित्व नहीं है वह स्वप्नवत् मिथ्या है। मिथ्या संसार को सत्य रूप में दिखाने वाली)।

373. **मोहिनी** – चित्त को लुभाने वाली अर्थात अत्यन्त सुन्दरी। पूरी तरह अपनी ओर खींच लेने वाली (मन को लुभाने/मुग्ध करने/रिझाने वाली)। (extremely attractive & interesting)। मोह का मौलिक अर्थ अज्ञान होता है और यही अज्ञान लोगों या वस्तुओं के प्रति आकर्षण में बदल जाता है। वैशाख शुक्ल एकादशी स्वरूपा जिसे मोहिनी एकादशी कहते हैं। भगवान विष्णु का वह स्त्री रूप जो उन्होने समुद्र मन्थन के उपरान्त अमृत बाँटते समय धारण किया था।

374. **माधवप्रिया** – कृष्ण जिनको बहुत चाहते हैं। कृष्ण को प्रसन्न करने वाली।

375. **सौम्या** – जो विनम्र भी है, सुन्दर भी है, शान्त भी है। सौम्या शब्द सोम अर्थात चन्द्रमा से बना है जो शान्त और सुन्दर होता है।

376. **भोगा** – नैवेद्य वाली अर्थात जिन्हें पूजा में नैवेद्य (प्रसाद) चढ़ाया जाता है। आहार या भक्षण वाली। सुख देने वाले पदार्थों के रूप में। वस्तु जिससे सुख प्राप्त हो तद्रूपा। भोगा अस्या अस्ति इति भोगा, अर्थात समस्ज भोग्य पदार्थों से युक्त। भोग का अर्थ घर, धन भी होता है। घरवाली, धनवाली।

377. **महाभोगा** – महान सुख, बड़े – बड़े सुखवाली (अतिशय विशिष्ट भोगों के स्वरूप वाली) (भोग व्यष्टि है, महाभोग समष्टि है)। जिनकी पूजा में महाभोग जैसे 56 भोग आदि अर्पित किये जाते हैं। भगवान कृष्ण को 56 भोग चढ़ाये जाते हैं और देवी का भगवान कृष्ण से अभेद है।

378. **भोगिनी** – दिव्य आनन्द का भोग करने वाली अर्थात अनुभव करने वाली। भोग करने वाली (उपभोग करने

वाली)। नागिन स्वरूपा अर्थात सर्पाकार कुण्डलिनी स्वरूपा। भोग नाग या नागिन के फण को कहते हैं।

379. भोगदायिनी – भोग पदार्थ देने वाली। ऐन्द्रिक अनुमति देने वाली।

380. **सुधौतककनकप्रख्या** – शुद्ध किये गये स्वर्ण के सदृश कान्ति वाली। सुन्दर स्वच्छ किये स्वर्ण की कान्ति वाली। प्रख्या का अर्थ है – के समान दिखने वाला, मिलता जुलता।

381. **सुवर्णकमलासना** – स्वर्ण कमल के आसन पर विराजमान।

382. **हिरण्यगर्भा** – जिसके अन्दर स्वर्ण से उपलक्षित सभी ऐश्वर्य है। हिरण्य = सोना, जो सोना, चांदी, सभी रत्नों का उपलक्षक है। सुवर्णमय अण्डे के भीतर रहने वाली। वह ज्योतिर्मय अण्ड जिससे ब्रह्मा और सारी सृष्टि की उत्पत्ति हुई, हिरण्यगर्भ कहलाता है। जिनके भीतर अतिशय तेज है। हिरण्य शब्द तेज का वाचक है। हिरण्य का अर्थ होता है हृदयरमणीया अर्थात हृदय को अच्छा लगने वाला। जो स्वयं रमणीय है और गर्भ में सबको धारण किये हुए है। हिरण्य अर्थात जो हितकारी है एवं देखने में भी सुन्दर है। कुछ चीजें देखने में अच्छी होती हैं पर हितकारी नहीं होती हैं। जिसके गर्भ में तेजोमय ब्रह्माण्ड है। आरम्भ में ब्रह्माण्ड तेजोमय ही था।

383. **सुश्रोणी** – सुन्दर नितम्ब प्रदेश (Hips) वाली।

384. **हारिणी** – भक्तों के पापों और कष्टों को हरने वाली। सबके हृदय को हर लेने वाली।

385. **रमणी** – सुन्दर तरुणी स्त्री के रूप में। जिसके पास होने पर आनन्द मिलता। अत्यधिक अच्छी लगने वाली। हृदय में स्थान पाने योग्य। भक्तों के साथ खेल खेलने वाली। अपने को माया के पर्दे से छिपाकर लुका – छिपी का खेल करती हैं। पत्नी जो अपने पति द्वारा भोगी जाने वाली हैं।

386. **रमा** – जो क्रीडा करती हैं। रमते इति रमा। सृष्टि करना, पालन करना और संहार करना देवी की क्रीडा है। जिसे भगवान विष्णु के साथ रहना अच्छा लगता है, आनन्द का अनुभव होता है। विष्णुना सह रमते इति रमा। जो धन – दौलत, बाहरी भोगों की सामग्री देकर व्यक्ति को प्रसन्न करती है वह रमा है। रमयति इति रमा। जिसमें हर कोई रमना चाहता (अर्थात प्राप्त करना चाहता)।

387. **चन्द्रा** – मन को आह्लादित करने वाली। चदि आह्लादे धातु होती है। चन्द्रमा की तरह सबको प्रसन्न करने वाली।

388. **हिरण्मयी** – सुवर्ण कान्ति से युक्त शरीर वाली। सोने के अर्थात सुनहरे रूप वाली। सोना (स्वर्ण) तेजस तत्व का स्थूल रूप है। षड्विकारों से मुक्त तैजस शरीर वाली। स्वर्ण पवित्रता का भी प्रतीक है। पवित्रता से युक्त। स्वर्ण धन–सम्पत्ति का भी प्रतीक है। प्रचुर धन–सम्पत्ति से युक्त। शब्द के आगे मयट् प्रत्यय लगाने से स्वरूपा, से युक्त, प्राचुर्य अर्थ आ जाता है। मूलाधार चक्र से उठकर सहस्रारचक्र या उससे भी आगे द्वादशान्त तक जाने वाली सुनहरे आभा वाली कुण्डलिनी शक्तिस्वरूपा। स्वर्ण देह वाली। स्वर्ण से बनी मूर्ति में विराजमान। शब्द के आगे ''में विराजमान'' लगाने से भी अर्थ निकलता है।

389. **ज्योत्सना** – चाँदनी के समान प्रकाशमान। चाँदनी के समान शान्ति और सुख देने वाली। चाँदनी का अर्थ है चन्द्रमाँ का प्रकाश, चाँदनी रात। ज्योत्सना का अर्थ सौंफ भी दिया गया है। ज्योत्सना अस्या अस्ति इति ज्योत्सना (सौंफ वाली) अर्थात पूजा में सौंफ भी चढ़ाई जाती है। आत्मस्वरूपा क्योंकि आत्मा ही प्रकाश स्वरूप है।

390. **रम्या** – स्वाभाविक रूप से सुन्दर अर्थात बिना आभूषणों और श्रृंगार के भी नेत्रों को सुन्दर लगने वाली, जिसमें चित्त आकर्षित हो। रमण करने योग्य/सुन्दर। चित्ताकर्षक सौन्दर्य वाली। बिना आभूषणों के एवं श्रृंगार के जो स्वाभाविक रूप से सुन्दर हो, जिसमें चित्त आकर्षित हो रम्या कहलाती है। जो अन्य चीजों से अधिक

सुन्दर हो वह रम्य है। रम्या और रमणीय प्रायः एक ही अर्थ देते हैं पर रम्या नेत्र से अधिक सम्बन्धित है और रमणीयता में केवल नेत्र से अच्छी अर्थात देखने में अच्छी होना आवश्यक नहीं है। रमणीय में दृष्टा को गरीब की टोकरी, मैली–कुचैली स्त्री, कोई कार्य रमणीय लग सकता है। रम्या का अर्थ चम्पा भी होता है। चम्पा पुष्प के समान सुन्दर और सुगन्धित। सुहावनी, सुखप्रद, आनन्दप्रद।

391. **शोभा** – बढी हुई शारीरिक सौन्दर्य वाली। छवि, कान्ति स्वरूपा। जो सुशोभित होता। शोभते या सा शोभा। गोरोचन वाली अर्थात गोरोचन लगाये हुए। हल्दी की तरह रोग अर्थात कष्ट निवारिका। शोभा का एक अर्थ गोरोचन, हल्दी दिया गया है।

392. **शुभावहा** – शुभ को बुला लेने वाली जिससे वह भक्तों को दे सके। किसी अभाव की पूर्ति करना शुभ है। बड़े लक्ष्य जैसे मोक्ष प्राप्ति की प्राप्ति में सहायक साधन बनना शुभ देना है। जो परिणाम में अच्छा हो वह शुभ है जैसे कड़वी दवाई शुरूआत में भले ही कड़वी लगे पर परिणाम अच्छा होने के कारण शुभ कहलाई जाएगी। शुभ को सम्पूर्ण रूप से धारण करने वाली। शुभ+आ+वह्, आ का अर्थ है समन्तात् अर्थात चारों ओर से अर्थात सम्पूर्ण रूप से और वह् का अर्थ है धारण करना। एकाक्षरी कोष में आ का एक अर्थ भाव अर्थात सत्ता दिया गया है। प्रत्येक चीज भाव है। अतः कई बार आ का कोई अर्थ देने की जरूरत नहीं अर्थात चारों ओर से या पूर्णरूप से, यह लिखने की जरूरत नहीं है।

393. **त्रैलोक्यमण्डना** – तीनों लोकों की आभूषण स्वरूपा।

394. **नारी** – स्त्री स्वरूपा। न+अरि, जिनका कोई शत्रु नहीं है। अरि दीर्घ होकर अरी हो गया। स्त्री के रूप में नर को आकृष्ट करने वाली। नृणाति सन्मार्गे नयति इति नारी अर्थात अपने उपासकों को सन्मार्ग में ले जाने वाली। वह शक्ति जिससे मनुष्य विषयों में रमण (उपभोग करना या जाना) छोड़ देता है, नारी है। नर शब्द का एक विग्रह है – न रमते विषयेषु इति नरः अर्थात् जो इन्द्रियों के विषय में रमण नहीं करते, वे नर कहलाते हैं। रमण करने का अर्थ है कहीं पर जाना, रहना, क्रीड़ा करना, उपभोग करना, आनन्दित होना। इन्द्रियों के विषय से हटाने वाली वैराग्य वृत्ति ही नारी नामक शक्ति है। नारी अर्थात नरों से युक्त पृथ्वी, नायकों से युक्त सेना।

395. **नरेश्वरार्चिता** – श्रेष्ठ राजाओं द्वारा भी अर्चित है अर्थात पूजा की गई। हल्दी, चन्दन चावल चढ़ाना अर्थात भौतिक वस्तुओं को चढ़ाना अर्चना है।

396. **त्रैलोक्यसुन्दरी** – तीनों लोकों में जो सबसे सुन्दर है। त्रैलोक्य का अर्थ तीन लोक, तीन लोकों से सम्बन्धित दोनो होता है।

397. **रामा** – भगवान राम की शक्ति स्वरूपा। रमन्ते योगिन्यः अस्याम् इति रामा, अर्थात जिसमें योगी लोग रमण करते हैं अर्थात ध्यान करते हैं चित्त टिकाते हैं वह रामा है। सुन्दर स्त्री के रूप में। रमन्ते नराः अस्याम् (रम+अण्) जिसमें मनुष्य रमण करता। रामा शब्द स्त्री के लिए, रमा लक्ष्मी के लिए रूढ़ हो गया।

398. **महाविभववाहिनी** – अत्यन्त वैभव को प्राप्त कराने वाली या अत्यन्त वैभव को धारण कराने वाली। सारे विश्व का विभव धारण करने वाली / लाने वाली । महान वैभव धारण करने वाली / लाने वाली (लौकिक ऐश्वर्य)। महा का अर्थ ब्रह्माण्ड अर्थात सारा विश्व। विभव अर्थात धन सम्पत्ति, दौलत, शक्ति, पराक्रम है।

399. **पद्मस्था** – कमल में विराजमान। कमल में स्थित (स्थ = थोड़ी देर के लिए बैठना)। पद्म संख्या अर्थात असंख्य संख्या के रूप में स्थित। सभी जीवात्माऐं देवी का रूप हैं और उनकी संख्या असंख्य है। सृष्टि के कण कण में शक्ति के रूप में विराजमान। पद्म या कमल सृष्टि का प्रतीक है। सुषुम्नानाड़ी में स्थित चक्र में विराजमान।

400. **पद्मनिलया** – कमल के वनों में निवास करने वाली। कमल में निवास करने वाली (अर्थात् स्थाई रूप से वास करने वाली)। पद्मसंख्या घरों में अर्थात अनन्त घरों में निवास करने वाली। शरीर घर है जिसमें आत्मा रूप में विराजमान रहती है।

401. **पद्मालाविभूषिता** – कमलों की माला से विभूषित।

402. **पद्मयुग्मधरा** – दो कमलों को धारण करने वाली।

403. **कान्ता** – अतिशय प्रिय लगने वाली। चमक से युक्त अर्थात अति सुन्दर। कनि दीप्तौ धातु होती है। दुष्टों के सुख का अन्त करने वाली। क अर्थात सुख। कान्त (प्रिय या पति) से युक्त अर्थात भगवान शिव या भगवान विष्णु से युक्त। कमनीया। इच्छामयो वा। कौ ब्रह्मवायू जीवकोटयन्तगा–वनेन। कमनीयतमः कान्तः। कयोः ब्रह्मवाय्योप्यन्तकोऽयम्। असतां सुखस्यान्तकृच्च। सुखरूपत्वात् कश्च सर्वान्तकश्च। कस्याऽनन्दस्यान्तः परा काष्ठा। अत्यन्त सुन्दर या जिसकी कृपा या जिसके सान्निध्य की उनके भक्तों द्वारा इच्छा की जाती है। इच्छा स्वरूपा। जिसके द्वारा ब्रह्म एवं वायु को प्राणियों के अन्दर डाला जाता है। जो सर्वाधिक सुन्दर है। जो दुर्जनों के सुख के मिटा देता है। जो स्वयं सुख स्वरूप है एवं सभी का अन्त करने वाली हैं। जो आनन्द की सीमा है अर्थात् इससे अधिक आनन्द नहीं है।

404. **दिव्याभरणभूषिता** – दिव्य आभूषणों से विभूषित। दिव्य का अर्थ है स्वर्ग लोक में होने वाला। जो पाँच तत्वों से न बना हो वह भी दिव्य है। पृथ्वी लोक में जो अत्यन्त दुर्लभ हो एवं अत्यन्त उत्कृष्ट हो वह भी दिव्य कहलाता है।

405. **विचित्ररत्नमुकुटा** – अनेक रंगों के रत्नों से जड़ित मुकुटों वाली। विचित्र (= सुन्दर) रत्नों वाले मुकुट धारण करने वाली।

406. **विचित्राम्बरभूषणा** – कई रंगों के वस्त्रों से विभूषित। विचित्र वस्त्रों से विभूषित।

407. **विचित्रमाल्यागन्धाढ्या** – कई रंगों की माला और अनेक प्रकार के गन्ध से युक्त/सुशोभित। विचित्र मालाओं की गन्ध से अलंकृत। सुन्दर मालाओं एवं सुगन्ध से सुशोभित/युक्त।

408. **विचित्रायुधवाहना** – अनेक प्रकार के आयुधों और वाहनों वाली। विचित्र आयुधों (=शस्त्रास्त्र) और वाहनों वाली।

409. **महानारायणी देवी** – महानारायण की शक्ति, ऐसी देवी। महानारायण के स्त्रीभाव वाली एवं देदीप्यमान। महानारायण की शक्ति जिसकी स्तुति की जाती है। देवी का एक अर्थ होता है जिसकी स्तुति की जाए। यदि महानारायणी एक नाम होता तो अर्थ होता – नारायणी के श्रेष्ठ स्वरूप वाली। यदि देवी एक अलग नाम होता तो अर्थ होता – प्रकाशित होने वाली या जिसकी स्तुति की जाती है। दिव् धातु का अर्थ प्रकाशित होना, स्तुति करना होता है, जिससे देवी बना।

410. **वैष्णवी** – विष्णु की शक्ति स्वरूपा। विष्णु की शक्ति से युक्त। विष्णु के स्वरूप वाली। सर्वव्यापिका शक्ति स्वरूपा। विष्णु का अर्थ है जो सर्वत्र व्याप्त है। भगवान विष्णु से सम्बन्धित अर्थात गंगा जी स्वरूपा या गंगा जी से अभेद है जिनका।

411. **वीरवन्दिता** – वीरों के द्वारा वन्दित। वीर का अर्थ है बहादुर या योद्धा। वीर आवश्यकता पड़ने पर शत्रु पर और जोरदार हमला करने के लिए कभी कभी युद्ध के मैदान से अलग हो सकता है किन्तु शूर कभी अलग नहीं होता चाहे उसके प्राण चले जायें। शूर कभी पीछे नहीं हटता।

412. **कालसंकर्षिणी** – काल को भी खींच देने वाली। (पैसे वाले लोग अच्छा इलाज कर काल को कुछ समय के लिए टाल देते हैं)। काल को खींचना अर्थात् मृत्यु से बचा देने वाली।

413. **घोरा** – दुष्टों और राक्षसों के लिए अतिशय भयंकर रूप वाली। घोर शब्द में भयंकरता अर्थ निहित होता है। दुष्टों को भय देने वाली। रात्रिस्वरूपा क्योंकि घोर का एक अर्थ रात्रि भी है। हन्ति विनाशयति इति घोरा अर्थात जो असुरों दुष्टों का नाश करे वह घोर है। हन्ति के ह का घ हो जाता है (संस्कृत के नियमानुसार)। घोर भगवान शिव का भी नाम है। इस प्रकार घोरा का अर्थ हुआ शिव की शक्ति स्वरूपा। जब हम घोर कर्म कहते हैं तो उसका अर्थ होता है बुरा या अतिबुरा कर्म। अतः घोरा का अर्थ है दुष्टों या राक्षसों के लिए बुरी या अतिबुरी हुआ। घोर शब्द अत्यधिक मात्रा को सूचित करता है, कभी कभी अत्यधिक मात्र भयंकरता में बदल जाती है। घोर शब्द सकारात्मक भी होता है जैसे घोर तपस्या अर्थात बहुत अधिक तपस्या।

414. **तत्वसंकर्षिणी कला** – तत्वों को मिलाने वाली शक्ति स्वरूपा। संकर्षिणी अर्थात सम्यक् रूप से खीचने वाली अर्थात मिलाने वाली। पंचतत्वों अर्थात पंचमहाभूतों को मिलाने वाली शक्ति। पंचीकरण प्रक्रिया द्वारा सृष्टि का निर्माण होता है। कला का अर्थ है शक्ति। सभी तत्वों को खीचने वाली, ऐसी कला या शक्ति। ऐसी कला (शक्ति) जो सभी 25 तत्वों (सांख्य दर्शन के 25 तत्व) के संकर्षण अर्थात एकत्रित भाव वाली है। यदि तत्वसंकर्षिणी एक नाम होता तो उसका अर्थ होता – प्रत्येक वस्तु के सार को अपनी ओर आकर्षित करने वाली (विज्ञान की भाषा में – सारे विटामिन को अपनी ओर खींचने वाली, सारभूत तत्वों को खींच लेने वाली अर्थात् अपने में समाहित करने वाली। विश्व में कहीं भी सारभूत तत्व है उसको खींच लेती हैं (अपने में)। यदि कला एक अलग नाम होता तो उसका अर्थ होता शक्ति या परमानन्द को प्राप्त करा देने वाली शक्ति स्वरूपा। लीयते आत्मा परमानन्दे या सा परमाकला। वह शक्ति या ज्ञान जो आत्मा को परमानन्द में लीन कर दे परमाकला है। कला का अर्थ प्रकाश भी होता है जैसे चन्द्रकला में कला का अर्थ प्रकाश/किरण है। कला का अर्थ मातृका अर्थात अक्षर भी होता है। ऐसी इकाई (सूक्ष्मशक्ति) जो पदार्थ का अस्तित्व ले सकती है या उसमें विराजमान हो सकती है। संक्रान्त अर्थात विराजमान। तत्व पदार्थ का वह सार या स्थिरांश है जिसके कारण उस पदार्थ का अस्तित्व है।

415. **जगत्सम्पूरणा** – संसार को सम्पूर्णता प्रदान करने वाली (विविध पदार्थ, ज्ञान, विद्या, बुद्धि उपलब्ध कराकर)।

416. **विश्वा** – विश्व (जगत) स्वरूप वाली। विश्व नामक देवयोनि स्वरूपा या इस देवयोनि की शक्ति। विष्णु स्वरूपा या भगवान विष्णु की शक्ति। विश्व का एक अर्थ विष्णु भी है।

417. **महाविभवभूषणा** – महान आध्यात्मिक वैभवों से विभूषित रहने वाली। आत्मा का आनन्द, आत्मा का ज्ञान, आत्म स्वरूप का ज्ञान होने पर प्रकट होने वाले गुण जैसे करूणा, प्रेम, मुदिता आदि सभी आध्यात्मिक वैभव हैं। यह शब्द 398 वें नाम में भी आया है वहाँ भौतिक वैभव अर्थ लिया गया। गीता में विभूति शब्द जिन जिन रूपों में ईश्वर अभिव्यक्त हो सकता है, उसके लिये आया है अर्थात प्रत्येक वर्ग में जो सर्वोच्च है उसके लिये आया है जैसे वृक्षों में पीपल आदि।

418. **वारुणी** – वरुण देवता की शक्ति स्वरूपा। उनकी शक्ति से विभूषित। वरूण देवता की शक्ति से विभूशित यह अर्थ करने में दो का भाव हो जाता है अर्थात वरूण में तो शक्ति है ही और देवी में भी उनकी शक्ति है। वरूण की दिशा में शोभा पाने वाली।

419. **वरदा** – उपासकों को वरदान देने वाली। मांगे हुए मनोरथ को देने वाली। स्त्री उपासक को योग्य पति देने वाली।

420. **व्याख्या** – जो विद्वानों/कवियों द्वारा विशेष रूप से बखानी जाती है। विशेषेण आख्यायते या सा व्याख्या। विशिष्ट नामों वाली। आख्या का अर्थ है नाम या संज्ञा।

421. **घण्टाकर्णविराजिता** – घण्टा के समान बड़े–2 कानों से सुशोभित। घण्टाकर्ण यक्ष से सुशोभित। घण्टाकर्ण यक्ष से अभिनन्दित, लक्षणाशक्ति द्वारा यह अर्थ हुआ।

422. **नृसिंही** – दैत्यों के विनाश के समय नृसिंह रूप को धारण करने वाली। भगवान नृसिंह की शक्ति स्वरूपा। मनुष्यावतार में सर्वाधिक पराक्रमी एवं श्रेष्ठ। सिंह पराक्रम एवं पशुओं में श्रेष्ठता का प्रतीक है।

423. **भैरवी** – भैरव की शक्ति स्वरूपा। दुष्टों को भगाने के लिए भयानक शब्द करने वाली। रव का अर्थ है शब्द और भै का अर्थ है भयानक। विश्व का भरण, निर्माण और संहार जिसके द्वारा होता है वह भैरव है। अपने साधकों के विघ्नों को भय देकर भगाने वाली। विश्व की उत्पत्ति (वमन), पालन (भरण) और संहार (रवण) करने वाली। भैरम् (दुखसमूहम्) वाति (हिनस्ति)। दुख समूह को नष्ट करने वाली। भैरवी का अर्थ भैरव की पत्नी, दुख समूह नष्ट करने वाली, भयंकर आवाज करने वाली आदि है। स्त्रीलिंग में ईकारान्त होने पर पुरुष से सम्बन्ध अर्थ जैसे पत्नी, पुत्री, बहन आदि अर्थ तो होते ही हैं, पुरुष से सम्बन्ध हटा करके भी अर्थ निकलते हैं। यदि कोई गुण या विशेषता या लक्षण बताना हो तो पुरुष से सम्बन्ध अर्थ देने की जरूरत नहीं है। भैरवा में भैरव+आ, आ का अर्थ है शक्ति। ऐसे शब्दों में भी गुण या विशेषता बता सकते हैं अर्थात भैरवा का अर्थ भी दुख समूह नष्ट करने वाली, भयंकर नाद करने वाली होगा। भैरव मुद्रा से युक्त। इस मुद्रा वाला व्यक्ति एक ओर आन्तरिक आत्म तत्व से जुड़ा होता है और दूसरी ओर अपनी इन्द्रियों से सांसारिक कार्य भी करता है। एक ओर से योगस्थ स्थिति में रहते हुए सांसारिक कार्य करने वाली। तन्त्र की प्रक्रिया में महिला साधक भैरवी है, उस भैरवी में विराजमान।

424. **ब्राह्मी** – सर्जन शक्ति अर्थात विश्व की उत्पादिका शक्ति। भगवान ब्रह्मा की शक्ति स्वरूपा। वेद से सम्बद्ध (ब्रह्म अर्थात वेद)। ब्राह्मी औषधि की तरह अर्थात रोग या कष्टनिवारिका। ब्राह्मी लिपि स्वरूपा। ब्रह्मा की शक्ति से युक्त। ब्रह्म से सम्बद्ध (ब्रह्माणी होता तो अर्थ होता ब्रह्मा को जीवित रखने वाली, ब्रह्मा की शक्ति)। ब्रह्मा की शक्ति अर्थात् सर्जनात्मक क्षमता स्वरूपा। सृजन उत्पादन में संलग्नता संसार की सबसे बड़ी विशेषता है। धरती को भी ब्राह्मी कहा जा सकता है क्योंकि वह भी उत्पादन करती है। जिसकी उपासना से साधक मे ब्रह्म–तेजस–ब्राह्मणत्व विकसित होता है। सृजन देवता का गुण और ध्वंस दानवों का गुण है। ब्राह्मी शक्ति हंस प्रवृत्ति के लोगों को ही अपने निकटतम रखती है। हंस नीरक्षीर में विवेक करता है, मोती चुनता है एवं कौड़ियों को हाथ नही लगता है यही सतोगुण है। उत्कृष्ट चिन्तन, सद्विवेक और औचित्य को ही अपनाना तथा अनौचित्य से बचे रहना यही हंस प्रवृत्ति है। ब्राह्मी शक्ति का वाहन हंस है उसका यही अर्थ है। जिस शक्ति की उपासना से व्यक्ति सही अर्थ में ब्राह्मणत्व पाता है अर्थात् उसे आत्म सन्तोष, लोक–सम्मान तथा दैवी अनुग्रह ये तीनों वरदान मिलते है। भगवान ब्रह्मा की शक्ति। ब्राह्मी औषधि के समान रोग–निवारिका। जिनका शरीर बहुत विशाल है तथा प्रत्यक्ष अनुमान आदि प्रमाण से जिनकी महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता।

425. **भास्करी** – विशेष कान्ति प्रदान करने वाली।

426. **व्योमचारिणी** – आकाश में विचरण करने वाली। व्योम का अर्थ ब्रह्म भी है। ब्रह्म को प्राप्त कराने के स्वभाव वाली। चारयितुम् शीलम् इति चारिणी। हृदय के आकाश में विचरण करने वाली अर्थात विराजमान रहने वाली अर्थात जीवात्मा स्वरूपा।

427. **ऐन्द्री** – भगवान इन्द्र की शक्ति स्वरूपा। इन्द्र की शक्ति से युक्त। शासन शक्ति स्वरूपा। इन्द्र को देवताओं का राजा कहा जाता है अर्थात् वह देवता का शासक है। उनकी शक्ति ऐन्द्री अर्थात् शासन करने वाली शक्ति होगी। इन्द्र शब्द इन्द्रियों के लिए भी आता है। इन्द्रियों में रहने वाली शक्ति स्वरूपा।

428. **कामधेनु** – कामधेनु के समान सभी की इच्छाओं को पूर्ण कर देने वाली। कामधेनु वह गाय है जो सभी की इच्छाऐं पूर्ति करती हैं। सभी इच्छाओं को पूरी करने वाली। सभी की इच्छाओं को पूरी करने वाली। कामधेनु तन्त्र स्वरूपा।

429. **सृष्टि** – प्रकृति स्वरूपा। परमात्मा की रचना स्वरूपा। (अभिज्ञानशाकुन्तलम् का प्रथम श्लोक या सृष्टिः सृष्टुराद्या....है.)।

430. **कामयोनि** – सुन्दर कारण अर्थात जगत का सुन्दर (श्रेष्ठ) कारण। काम का अर्थ है सुन्दर और योनि का अर्थ है कारण। इच्छा जिनकी प्राप्ति का कारण है। काम अर्थात इच्छा योनि अर्थात कारण। लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए प्राप्ति की इच्छा होना जरूरी है। कामना से उत्पन्न होती लक्ष्मी। मूल कारण है लक्ष्मी जी की कामना। इच्छा होने पर ही व्यक्ति आगे बढ़ेगा। सुन्दर योनि वाली।

431. **महाप्रभावा** – सर्वाधिक सामर्थ्य वाली, सर्वाधिक तेज वाली, सर्वाधिक शक्ति वाली। दूसरों पर छाप छोड़ने में जो सर्वश्रेष्ठ हैं। प्रभाव का अर्थ है छाप पड़ना।

432. **दृष्टा** – प्रत्यक्ष स्वरूप वाली। जो दिखलाई देती हैं। जब अवतार लेती हैं तो समाज को दिखती है, भक्त की उपासना से प्रसन्न होकर दर्शन देती हैं। इस नाम का अर्थ है – 1. देखी गयीं (देवताओं, मनुष्यों द्वारा)। 2. ज्ञात, जानी गयी (देवताओं, उपासकों द्वारा)।

433. **काम्या** – जो कामना के योग्य हो अर्थात जिसकी कामना की जाए। जो कामना की सिद्धि के लिए हो। जो इच्छा के अनुकूल हो। कमनीया, चाही जाने वाली, अतिशय सुन्दर।

434. **विश्वशक्ति** – संसार की सर्वश्रेष्ठ शक्ति। विश्व का निर्माण करने वाली शक्ति। विश्व में व्याप्त शक्ति।

435. **बीजगत्यात्मदर्शना** – बीज की गति है आत्मदर्शन/स्वरूपदर्शन जिसका। बीज की गति है अंकुरित होना या बढ़ना अर्थात वृक्ष। गति का अर्थ लक्ष्य भी होता है। इस प्रकार बीज की गति हुई वृक्ष। वही है स्वरूप दर्शन जिसका। ब्रह्मरूपी बीज की गति है संसार। संसार को देख लिया अर्थात देवी को देख लिया। बीज की तरह स्वभाव वाली होकर अपना दर्शन दिखाने वाली। बीज अर्थात जो विकृत होकर उत्पन्न होता है। बीज की तरह विकृत होकर संसार के रूप में अपना दर्शन कराने वाली। कारण रूप से प्रकट होकर अपने को दिखलाने वाली। अपने स्वरूप को दिखलाने वाली गति अर्थात क्रिया अर्थात प्रकट होना।

436. **गरुड़ारूढ़हृदया** – भगवान विष्णु के हृदय में निवास करने वाली। विष्णु जी जिनके हृदय में निवास करते हैं। गरुड़ पर आरूढ़ होने वाले विष्णु की हृदय स्वरूपा अर्थात अत्यन्त प्रिय।

437. **चान्द्री श्री** – ऐसी शोभा स्वरूपा जो चन्द्रमा की तरह है। चान्द्री का अर्थ है चन्द्रमा से सम्बन्धित या चन्द्रमा की तरह। चन्द्रमा की शोभा की तरह शोभा वाली। श्री का एक अर्थ शोभा भी होता है। चान्द्री और श्री ये शब्द साथ में ही रहना उचित है क्योंकि अकेले चान्द्री का अर्थ स्पष्ट रूप से घटित नहीं हो रहा है। फिर भी यदि चान्द्री को अलग नाम दिया जाए तो उसका अर्थ होगा – चन्द्रमा की शक्ति से युक्त। चन्द्रमा की शोभा से युक्त। यदि श्री को अलग नाम दिया जाए तो अर्थ होगा – धन सम्पदा। मन वचन और कर्म से धनी। भौतिक और आत्मिक सम्पदा युक्त। जो भक्तों की पुकार सुनती हैं। जो भक्तों की पुकार सुनकर उसे भगवान विष्णु जी तक ले जाती हैं। श्रु श्रवणे धातु होती है।

438. **मधुरानना** – सुन्दर मुख वाली। मधुर का अर्थ है सुन्दर, मनोरंजक। शान्त या सौम्य मुख वाली। मधुर का अर्थ है शान्त या सौम्य। सुख देने वाले मुख वाली अर्थात इनके मुख का दर्शन करने से सुख मिलता है। मधुर अर्थात मीठा अर्थात सुख देने वाला। प्रिय सुन्दर मुख वाली।

439. **महोग्ररूपा** – अत्यन्त क्रोधयुक्ता या अत्यन्त क्रोध स्वरूपा। उग्र भगवान शिव का नाम है। अतः इस नाम का अर्थ हुआ भगवान शिव के महान रूप वाली। दुष्टों और राक्षसों के लिए अतिशय उग्र स्वरूप वाली। देखने वालों के मन में आतंक या भय का संचार करने वाली। (अपने आकार प्रकार, रूप रंग की विकरालता के कारण) जो क्रोध, वैर, विरोध आदि के प्रसंगों में क्रूरता या निर्दयता का व्यवहार करने वाला। अतः दुष्टों के प्रति निर्दयी, क्रूर और निष्ठुर। जो बल प्रयोग करके कष्ट या हानि पहुँचा सके। उग्र भीड़ अर्थात हिंसक भीड़ जिसमें शान्ति और सौम्यता का अभाव हो। जो अपनी मात्रा की अधिकता के कारण सहज में सहन न किया जा सके अर्थात जिसका तेज या क्रोध असह्य हो। घोर और उग्र दोनों में भयंकरता अर्थ होता है पर उग्र में भयंकरता के साथ साथ हमला करने की वृत्ति भी होती है। घोर शब्द अत्यधिक मात्रा में, सकारात्मक अर्थ में भी प्रयोग होता है।

440. **वाराही** – ऐसी देवी जिनका मुख वराह अर्थात सुअर के मुख जैसा है। वराह की शक्ति स्वरूपा। वराह की शक्ति से युक्त। वराह में बिना अर्थ बदले अण् प्रत्यय लगाने से वाराह शब्द बन सकता है। भगवान वराह की शक्ति की तरह मनुष्य को भवसागर से ऊपर उठाने वाली या कुण्डलिनी शक्ति को ऊपर उठाने वाली। भगवान वराह की शक्ति ने पृथ्वी को अपने दाँतों से ऊपर उठा लिया था।

441. **नारसिंही** – प्राणियों में मनुष्य श्रेष्ठ होता है और पशुओं में सिंह श्रेष्ठ होता है इस प्रकार नृसिंह श्रेष्ठता का प्रतीक है। उपासकों को श्रेष्ठ स्थिति में ले जाने वाली अर्थात उन्हें आत्मस्वरूप में स्थित करने वाली। नृसिंह की शक्ति (नृसिंह भगवान की साक्षात् शक्ति), नृसिंह की शक्ति से युक्त, ये दोनों अर्थ निकल सकते है। नृसिंह की शक्ति से युक्त अर्थात नृसिंह के अलावा भी कोई दूसरा व्यक्ति है जिसमें नृसिंह की शक्ति आ गयी। नृसिंह की पराशक्ति से युक्त। नृसिंह में स्वार्थ में अण् प्रत्यय लगाने से नारसिंह बनेगा।

442. **हतासुरा** – असुरों का विनाश कर देने वाली (मारे गये हैं असुर जिसके द्वारा)।

443. **युगान्तहुतभुगज्वाला** – युग के अन्त में अग्नि की ज्वाला स्वरूपा (हुतमुक् = अग्नि)। प्रलयाग्नि स्वरूपा।

444. **कराला** – अत्यन्त कराल (भयंकर) स्वरूप वाली। कराल का अर्थ है भयोत्पादक। दुष्टों के सुख साधन को नष्ट करने वाली। कम् (सुखम्) राति (ददाति) इति करः। कर का अर्थ हुआ सुख देने वाला अर्थात सुख साधन। लाति का अर्थ ग्रहण करना भी होता है और नाश करना भी होता है। करम् लाति नाशयति इति कराला। करं लाति ददाति इति कराला अर्थात भक्तों को सुख के साधन देने वाली। दुष्टों के लिए भयंकर। शब्दकोशों में कराल का अर्थ भयंकर दिया गया है। काली जी, धूमावती जी आदि देखने में बड़ी भयंकर हैं और सभी देवियाँ मूल रूप से एक ही हैं। आगे निकले दाँतों वाली। मुख बन्द करने पर भी कुछ दाँत आगे निकले रहते हैं जिससे भयंकर लगती हैं। दन्तुर का अर्थ है जिसके दाँत आगे निकले हों। दन्तुर का अर्थ आवरण रहित या खुला हुआ भी होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ जो माया के आवरण से रहित हैं। ''करालो दन्तुरे तुंगे भीषणे'' ऐसा शब्दकोश में मिलता है। तुंग अर्थात ऊँची। जो बहुत ऊँची हैं (आकार या गुणों में)। पुरुषसूक्त में लिखा है कि ब्रह्म का एक चौथाई ही यह विश्व है। देवी ब्रह्म स्वरूपा हैं। जो सभी से अधिक ऊँची हैं।

445. **पिंगला** – पिंगल (पीला) वर्ण वाली अर्थात् अत्यन्त सुन्दर स्वरूप वाली। पिंगला नाड़ी स्वरूपा। पिंगला अस्या अस्ति इति पिंगला (पिंगला वाली) अर्थात पिंगला नाड़ी में रहने वाली। शब्द के आगे ''में विराजमान'' लगाने से भी शब्द का अर्थ निकलता है। पिंगला नाड़ी में स्थित सौर ऊर्जा स्वरूपा अर्थात भक्तों में उत्साह, साहस एवं अधिक प्राण भरने वाली। पिंगला नामक वैश्या की तरह कामनाओं या आशाओं से रहित।

446. **कला** – मातृका या अक्षर स्वरूपा। अक्षरों को भी कला कहते हैं। साक्षात जगत स्वरूपा। दिखलाई देने वाले इस साक्षात जगत को भी कला कहते हैं। चारों ओर फैला हुआ प्रकाश कला है और जगत फैले हुए प्रकाश की तरह है। परमात्मा का सर्वसुन्दर स्वरूप। तेज के अंश को भी कला कहते हैं। तेज के अंशों वाली अर्थात

तेजस्विनी। कलयति कलते वा कर्त्तरि अच्, कल्यते ज्ञायते अच् वा अर्थात् जो किसी के कर्म अथवा स्थिति को द्योतित करती है, वह कला है। जैसे चन्द्रमा के सोलहवें भाग को उसकी कला कहते है। कृष्णपक्ष एवं शुक्लपक्ष में प्रतिपदा से चतुर्दशी तक चौदह कलायें होती है, अमावस्या और पूर्णिमा में दो और कलायें होती हैं, इस प्रकार सोलह कलायें हो गयी। सोलह की संख्या को पूर्णता का प्रतीक माना गया है। भू–लोक पर सोलह कलायें ही विद्यमान है। पुरुष सूक्त के अनुसार ब्रह्म का एक चौथाई हिस्सा भू–लोक में है, तीन चौथाई इसके बाहर है। इस प्रकार ब्रह्म में कुल चौंसठ कलायें है। सामान्यतः सोलह कला को ही पूर्ण कला कहा जाता है। कला अर्थात् कोई विशेष कार्य करने की शक्ति। कला अर्थात् अवयय, अवयय अर्थात् एक हिस्सा। कला अर्थात् एक विशेष प्रकार का कार्य करने की शक्ति। जैसे किसी की दस कलायें है तो प्रत्येक कला कोई एक विशेष कार्य करने में समर्थ होगी अर्थात् प्रत्येक कला कोई विशेष कार्य करने में सक्षम है। कला को आत्मशक्ति भी कहते है। एक से नौ तक की कलायें मनुष्य में पायी जा सकती है, यदि वह साधना करें तो नौ कलाओं तक प्राप्त कर सकता है। नौ से सोलह की कलायें देवताओं के अवतारों में होती है। देवताओं में पायी जाने वाली ये कलायें (विशेष कार्य करने की शक्ति) इस प्रकार है– प्रभ्वी, कुण्ठिनी, विकासिनी, मर्यादिनी, संह्लादिनी, आह्लादिनी, परिपूर्णा, स्वरूपावस्थिति। इनमें प्रभ्वी का अर्थ ईश्वर की उस परिभाषा से सम्बन्धित है, जिसमें उन्हें कर्तुं अकर्तुं अन्यथाकुर्तं समर्थ प्रभु कहा गया है अर्थात् असम्भव को भी सम्भव कर दिखाना जैसे खम्भे में से नृसिंह अवतार प्रकट हो जाना। कुण्ठिनी कला (शक्ति) से पंचमहाभूत या विषादि को कुण्ठित (प्रभावरहित) किया जा सकता है, जैसे शिव ने विष का प्रभाव कम करके ही हलाहल पिया था। विकासिनी कला के द्वारा ही भगवान् वामन ने तीन पगों में समूचे ब्रह्माण्ड को नाप लिया था। मर्यादिनी कला के द्वारा भगवान श्रीराम सर्वशक्ति से सम्पन्न होते हुए भी मर्यादाओं (आदर्शों या नियमों की सीमा) में बँधे रहे व मर्यादा पुरूषोत्तम (Lord of Decorum) कहलाये। संह्लादिनी कला से भगवान् कृष्ण ने अऋतु में फूल–फल आदि उत्पन्न करके प्रकृति के नियम में हस्तक्षेप कर दिया था। आह्लादिनी कला से ही राधिका ने नित्य कृष्ण जी के साथ रहकर उनका अनुरज्जन किया था। स्वरूपावस्थिति कला के द्वारा सम्पूर्ण कलाओं को समेट कर अपने मूलरूप में अवस्थित हुआ जा सकता है– जैसे द्वापर में श्री कृष्ण ने अपनी सभी कलाओं को समेटकर मूल रूप में धारण किया था, जिससे उन्हें पूर्ण अवतार माना जाता है। उपर्युक्त कलाओं के अतिरित अन्य भी लौकिक कलाएँ है जैसे– वास्तुकला, चित्रकला, हस्तकला, काष्ठकला, संगीतकला, नृत्यकला आदि। विशेष गुण अर्थात सामान्य से हटकर सोचना, समझना व करना। कुछ खासियत या हुनर कला है। (कला एक विशेष या खास कार्य करने की शक्ति है। कला का अर्थ है अवयव अर्थात एक कोई विशेष कार्य करन की शक्ति। किसी प्राणी में 10 कला है तो इसका अर्थ हुआ कि उसके पास 10 अलग–अलग कार्य करने की शक्तियाँ है।)। विशेष कार्य करने की शक्ति। कला का अर्थ होता है अवयय अर्थात् इकाई। प्रत्येक विशेष कार्य करने की शक्ति को कला कहते है। दिव्य पदार्थ या दिव्य शक्ति स्वरूपा। दिव्य का अर्थ है द्युलोक में होने वाला। उपनिषद एवं पुराण में कला शब्द का प्रयोग भाग (अवयय) अर्थ के साथ–साथ एक विशिष्ट अर्थ में भी किया गया है। वहाँ दिव्य पदार्थों या दिव्य शक्तियों के अर्थ में कला शब्द का प्रयोग किया गया है। सूर्य, अग्नि, वायु आदि पदार्थ दिव्य पदार्थ है। इन पदार्थ में विद्यमान प्रकाश, दाह, और प्राण आदि शक्तियाँ भी दिव्य है। अतः सूर्य आदि दिव्य पदार्थ या सूर्य आदि दिव्य पदार्थों में विद्यमान प्रकाश आदि दिव्य शक्तियाँ कला रूप है। पदार्थ रूप या शक्ति रूप इन कलाओं में पुरूष रूप, चेतन तत्व नित्य रूप से सम्बद्ध रहता है। अतः चेतन तत्व से सम्बद्ध इस कला को चित कला भी कहा जाता है। कला रूप दिव्य पदार्थ या दिव्य शक्तियाँ परमात्मा से ही उत्पन्न हुयी है। अतः ये दिव्य पदार्थ या दिव्य शक्तियाँ पुरूष की मानी जाती है। यह पुरूष त्रिविधिरूप में दृष्टिगोचर होता हैं। अतः यह पुरूष तीन रूपों में विभक्त है। सकलपुरुष, निष्कलपुरुष और षोडशकल पुरुष। दिव्य अर्थात् जो पंचभूतों से न बना हो अर्थात् प्रकाश स्वरूपा। शक्ति जो

कार्य करने के लिए प्रेरित करती है कला है। स्वर्ग को धारण करने वाली अर्थात् adopt करने वाली अर्थात् वहाँ रहने वाले लोगों का पालन–पोषण करने वाली। सुख को धारण करने वाली अर्थात् अत्यन्त सुख या आनन्द से युक्त। लाति का अर्थ धारण करना, नाश करना होता है। दुष्टों के सुखों का नाश करने वाली। साकार जगत को भी कला कहा गया है। प्रकृति जो चेतन के अधीन है, उसे कला कहा गया है। पत्नी अर्थ में भी कला का प्रयोग होता है।

447. **त्रैलोक्यभूषणा** – तीनों लोकों की आभूषण स्वरूपा। तीनों लोकों में सौन्दर्य द्वारा आभूषण स्वरूपा। तीनों लोकों में गुण, कर्म, क्रिया से आभूषण स्वरूपा।

448. **भीमा** – उग्र, भयंकर रूप वाली (आसुरी शक्तियों के विनाश के समय)। भीम (अर्थात शिव) की शक्ति स्वरूपा। भीम (शिव) की आराध्या देवी।

449. **श्यामा** – श्याम वर्ण वाली। यमुना नदी स्वरूपा। सुन्दर स्त्री स्वरूप। कृष्ण की शक्ति स्वरूपा। श्याम अर्थात कृष्ण, आ का एक अर्थ है शक्ति। श्याम + आ। श्यामा तुलसी की तरह रोग निवारिका अर्थात कष्ट निवारिका।

450. **त्रैलोक्यमोहिनी** – तीनों लोकों को मोहित करने वाली। मोहित करने का अर्थ हुआ अज्ञान में डालना अर्थात वस्तु के वास्तविक रूप को न देख पाने के कारण बाहरी रूप को ही सत्य मान लेना। सांसारिक क्षणभंगुर पदार्थों में आकर्षित होना, उन्हें सत्य मान लेना भी मोहित होने का अर्थ है। मोह अर्थात अज्ञान अर्थात वास्तविकता न देख पाना। जो वस्तु जैसी है, वैसी न देख पाना और उसके बाहरी आवरण को सत्य मानकर उसके प्रति आकर्षित होना। सभी वस्तुएं चैतन्य से बनी हैं पर हमें वह चैतन्य नहीं दिखाई देता।

451. **महोत्कटा** – सर्वाधिक विशाल या अतिशय विशाल। उत्कट का अर्थ है बड़ा, बल, तेज। अत्यन्त बलशाली। अत्यन्त या बहुत अधिक तेज वाली। अत्यधिक शक्ति सम्पन्न। उत्कट का अर्थ नशे में चूर भी होता है और शक्ति से नशा आता है। शक्ति के कारण महान नशा वाली अर्थात महान शक्ति वाली। अतिशय उत्कट स्वरूप वाली (शत्रुओं के संहार के समय)। उत्कट का अर्थ अधिक डिगी का उत्साही, जोशीला भी होता है, तब महोत्कटा का अर्थ होगा सर्वाधिक उत्साही या जोश वाली। जो परिमाण, मूल्य, गुण आदि की दृष्टि से अधिक हो वह उत्कट कहलाता है। जैसे उत्कट विद्वान। जो प्रभाव स्वभाव आदि की दृष्टि से बहुत तीव्र हो या असहनीय हो वह उत्कट है। जो मान मात्रा आदि के विचार से बहुत ऊँचा या बढ़ा चढ़ा हो वह उत्कट होता है। उद्+कट् (गति)। किसी के प्रति तीव्र या बहुत अधिक भावना वाली। अंग्रेजी में उत्कट को ardent or fervent कहते हैं।

452. **महारक्ता** – अतिशय रक्त वर्ण वाली।

453. **महाचण्डा** – आसुरी शक्तियों के प्रति क्रोध करने में जो सर्वाधिक हों। बल और प्रताप में जो सर्वाधिक हैं। चण्ड का अर्थ है अधिक क्रोध, बल, प्रताप। महा अर्थात अतिशय, सर्वाधिक।

454. **महासना** – बहुत बड़े विशाल आसन पर विराजमान।

455. **शंखिनी** – शंख से सुशोभित। नाद शक्ति से युक्त। पवित्रता से युक्त, सतोगुण से युक्त। शंख नाद शक्ति, शब्द ब्रह्म, पवित्रता, सतोगुण का प्रतीक है। सफेद होने के कारण सतोगुण का प्रतीक है। कहीं पर शंख को आनन्द का प्रतीक बताया गया है। शंखिनी नामक नायिका की तरह लम्बी अर्थात गुणों में या अन्य चीजों में दूसरों से ऊपर, चंचल नेत्र और गम्भीर वाणी वाली। शंखिनी नामक नाड़ी में शक्ति रूप में विराजमान। नाद शक्ति से युक्त। सतोगुण से युक्त। पवित्र कारक गुणों से युक्त। छोटे–छोटे शंखों से बनी माला या कंकण या अन्य आभूषणों का धारण किये हुये। आनन्द और ज्ञान से युक्त। शंख से निकली ध्वनि नाद शक्ति का प्रतीक

है। इसकी ध्वनि ओम की ध्वनि की तरह है। जो हमार बाहर होता है वह भीतर भी होता है और बाहर की चीजें आपको याद दिलाने के लिए होती है कि यह आपके भीतर है, उसे खोजिए। आत्मा की ध्वनि भी ओम की तरह या शंख की तरह है। आपसे कहा जाता है कि आत्मा की आवाज सुनकर कार्य करो। इस नाम का अर्थ हुआ व्यक्ति को आत्मा से जुड़ने या अन्तरमुखी होने की प्रेरणा देने वाली। शंख की ध्वनि नकारात्मक ऊर्जा को नष्ट कर वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा लाती है। पवित्र करने का अर्थ है दोष को हटाकर अच्छाई लाना। मन्दिर में भगवान का अभिषेक प्रायः शंख में दूध या पानी डालकर किया जाता है इसका तात्पर्य है कि शंख पवित्र करने वाले गुण या शक्ति का प्रतीक है। प्रायः शंख सफेद रंग के होते है जो सतोगुण का प्रतीक है। शंख बजाने फेफड़े सुचारू रूप से कार्य करते है, स्मरण शक्ति एवं श्रवण शक्ति बढ़ती है तथा मुख का तेज भी बढ़ता है। शंख शब्द शम् एवं ख से बना है। शम् का अर्थ है आनन्द या कल्याण, ख का अर्थ है ज्ञान। इस प्रकार शंखनी का अर्थ हुआ सर्वेश्रेष्ठ आनन्द और ज्ञान से युक्त।

456. **लेखिनी** – संसार को लिखने वाली अर्थात बनाने वाली। लेख से लेखी शब्द बना फिर लेखिनी शब्द बना। लेखः का अर्थ है जो लिखता है या जो लिखा जाता है। इस प्रकार लेखिनी शब्द का अर्थ कर्मानुसार भाग्य को लिखने वाली भी कर सकते हैं। सुन्दर लेख से अलंकृत। सुन्दर लेखों को लिखने वाली।

457. **स्वस्थालिखिता** – स्वस्थ रूप में आलिखित। सुन्दर रूप में अभिचित्रित। (= इनका चित्र बड़ा सुन्दर है)।

458. **खेचरी** – आकाश में विचरण करने वाली। योग की खेचरी मुद्रा स्वरूपा।

459. **भद्रकाली** – लोगों का कल्याण करने वाली (कल्याण = अमंगलहारी, असुरों का नाश करना भी कल्याण मामना जाता है, भक्तों को ईश्वर की ओर ले जाना भी कल्याण माना जाता है, आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रगति, मोक्ष या आनन्द की प्राप्ति कल्याण है। पाँचों शरीर के आवश्यकताओं की पूर्ति कल्याण है। रोटी, कपड़ा, मकान, बिजली, पानी, सड़क, स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार, मनोरंजन की प्राप्ति कल्याण है क्योंकि इससे पूरा जीवन संवर जाता है)।

460. **एकवीरा** – अद्विितीय पराक्रम से युक्त।

461. **कौमारी** – कार्तिकेय की शक्ति स्वरूपा। कार्तिकेय की शक्ति से युक्त। पृथ्वी पर दुष्टों को मारने वाली। कौ का अर्थ है पृथ्वी पर। कुमारावस्था वाली।

462. **भवमालिनी** – सुन्दर मालाओं वाली। भव का एक अर्थ सुन्दर भी है। संसार रूपी माला से विभूषित।

463. **कल्याणी** – कल्याणमय स्वरूप वाली। लोगों का सर्वविधि हित करने वाली। जीवन की सभी आधारभूत आवश्यकताएं रोटी, कपड़ा, मकान एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में खुशी, मोक्ष देने वाली। सन्मार्ग, भगवान के रास्ते में चलाने वाली जिससे मोक्ष मिल सके। मधुर बोलने वाली। (कल = मधुर) अणति = बोलना। कल्याणकारी गुणों से युक्त। कल्याण करने वाली। कल्याण के कई अर्थ है जैसे सुख, समृद्धि, उत्तम भाग्य, शुभ, शुभ शकुन। कम् + यक् (सार्वधातुक) + आन = कल्याण (म् का ल् और न का ण हो जाता है।) जो पदार्थ कमनीय हो और जिसकी सभी कामना करें वह कल्याण है। कल्याण का अर्थ हुआ कमनीय, प्रार्थनीय।

464. **कामधुग्ज्वालामुखी** – कामनाओं का दोहन करने वाली और दैत्यों के लिए ज्वालामुखी स्वरूपा (= भक्तों की कामनाओं को पूर्ण करने वाली और दैत्यों को जला देने वाली)।

465. **उत्पलमालिका** – नील कमलों की माला से सुशोभित।

466. **बालिका** – बाल स्वरूपा। बाला–त्रिपुर–सुन्दरी, जो बाल स्वरूपा हैं से जिनका अभेद है।

467. **धनदा** – धन देने वाली। धन कई प्रकार के होते हैं। लौकिक, अलौकिक। दैवी सम्पदा रूपी धन देने

वाली। शम, दम, उपरति, तितिक्षा आदि वेदान्त की षट् सम्पत्तियों को देने वाली। गोधन गजधन बाजिधन और रतनधन खान। जब आवे सन्तोश धन, सब धन धूरि समान। इसमें सन्तोष को सबसे बड़ा धन कहा गया है पर सन्तोष भी सुख या आनन्द के लिए होता है। अतः सुख या आनन्द ही सबसे बड़ा धन है। कहीं पर प्राण या मिलने वाली साँसों को सबसे बड़ा धन कहा गया है। कहीं पर यह भी लिखा है कि जिसके पास भगवान का नाम है वही धनी है, बाकी सब निर्धन हैं।

468. **सूर्या** – सूर्य की शक्ति स्वरूपा। सूर्य + आ, एकाक्षरी कोष में आ का एक अर्थ है शक्ति। सूर्य की तरह प्रकाशित। सूर्य स्वरूपा विद्या, विज्ञान आत्मा। आत्मा का एक नाम सूर्य भी है। क्योंकि दोनों ही प्रकाशित है। सूरि (विद्वानों) का हित करने वाली। हित अर्थ में सूरि से यत् प्रत्यय लगाया। ऐश्वर्य स्वरूपा। सू + र् + या = सभी जीवों के हित के लिये तत्वपद्धति को उत्पन्न करने वाली। सू धातु का अर्थ प्रसव (उत्पन्न करना) एवं ऐश्वर्य होता है। प्राणियों को भोगों में रमन कराने वाली एवं काल द्वारा नियंत्रण करने वाली। रमु क्रीड़ायाम् धातु होती है एवं यम् धातु का अर्थ नियंत्रण करना।

469. **हृदयोत्पलमालिका** – हृदय कमल की माला स्वरूपा।

470. **अजिता** – जो किसी के द्वारा जीती नहीं गई अर्थात अपराजिता। अजेय शक्ति वाली।

471. **वर्षिणी** – कृपा की वर्षा करने वाली। अमृत की वर्षा करने वाली, ज्ञान की वर्षा करने वाली, जल की वर्षा करने वाली।

472. **रीति** – समाज की परम्परा/ रस्मरिवाज परिपाटी स्वरूपा। साहित्य की विशेष पद रचना स्वरूपा अर्थात वर्णों की वह योजना जिससे ओज, प्रसाद या माधुर्य आता है। कायदा या नियम स्वरूपा। श्रेष्ठ रीति और गुणों से सम्पन्न (जहाँ रीति होती है, वहाँ गुण होते हैं)। विस्तारयति का ति ले लेंगे। एकाक्षरीकोश से री अक्षर के अर्थ ले लेंगे। ऐसे शब्द भी ले सकते है जो री से आरम्भ होते हैं, इस प्रकार अन्य अर्थ भी आ जाएंगे। पतिव्रता स्त्री का विस्तार करने वाली अर्थात् उसे समृद्ध बनाने वाली। एकाक्षरी कोष में री का अर्थ नारी, पतिव्रता, भानु, अग्नि, भ्रान्ति, भ्रम, भूमि दिया गया है। विस्तारयति का ति ले लिया। भक्तों की भ्रान्ति को नष्ट करने वाली। विनाशयति का ति ले लिया। तनोति का अर्थ है विस्तार करना, देना, निर्माण करना। भूमि को उत्पन्न करने वाली। अपने भक्तों को भूमि देने वाली।

473. **भरूण्डा** – यदि भरूण्डा शब्द होगा तो अर्थ होगा भरुण्ड पक्षी के समान स्वरूप धारण करने वाली। नक्षत्र ही है रुण्ड जिसके (भ = नक्षत्र, सारे नक्षत्र) सारे नक्षत्र ही है रुण्ड जिसके (रुण्ड अर्थात सिर के नीचे का हिस्सा रुण्ड कहलाता है)। भयभीत करने वाले रुण्ड के स्वरूप वाली यदि मेरुण्डा शब्द होता)। मुण्ड अर्थात ऊपर = सिर, रुण्ड सिर के नीचे का हिस्सा।

474. **गरुड़ासना** – (गरुड़ पर विराजमान) जब विष्णु जी गरुड़ में बैठते तो ये भी उनके साथ बैठती हैं। विष्णु जी की शक्ति स्वरूपा (गरुड़ासन = विष्णु भगवान)। गरूड़ वेद, धर्म का प्रतीक है। जो व्यक्ति वेद या धर्म के रास्ते पर चलते हैं उन्हें गरूड़ासन कह सकते हैं। ऐसे व्यक्ति में प्रकट रूप से विराजमान।

475. **वैश्वानरा** – वैश्वानर अग्नि की शक्ति स्वरूपा। जो सभी मनुष्य में विद्यमान है वह है वैश्वानर अग्नि। विश्व अर्थात सभी और नर अर्थात मनुष्य। नर अर्थात नेता या जीवनी शक्ति। सम्पूर्ण विश्व की जीवनी शक्ति। नर अर्थात नेता अर्थात जीवनी शक्ति। विश्व अर्थात समस्त। समस्त जीवनी शक्तियों का समुच्चय वैश्वानरा है।

476. **महामाया** – विशाल (दुस्तर) माया जिनके अधीन हैं। महामाया यस्या सा, महामाया। महामाया जिनकी है अर्थात महामाया जिनके अधीन है। महती विश्वमोहिनी माया यदधीना सा महामाया। विशाल सबको मोहित करने

वाली माया जिनके अधीन है। मायावियों को भी माया में डालने वाली। माया का अर्थ ज्ञान, इच्छा, महिमा (यश या प्रभाव) है। महती च माया ज्ञानं, इच्छा, महिमा च यस्या सा महामाया। जिनका ज्ञान या महिमा औरों से बढ़कर है। महती मा प्रमा यस्या सा महामा। अया शुभावहाश्च। विशाल ज्ञान वाली एवं शुभ (मंगल) लाने वाली। महती मा वागोंकारः। ताम् इयम् अयते। पूजनीय वाणी अर्थात ऊँ में गयी अर्थात उसमें स्थित या विराजमान। मा का अर्थ है वाणी। महती का अर्थ है पूजनीय अर्थात जो अन्य वाणियों से अधिक पूजनीय है। जो माया से बढ़कर है अर्थात माया से परे है। माया का सर्वोत्कृष्ट स्वरूप, तद्रूपा।

477. **महाकाली** – महाकाल भगवान शिव की शक्ति स्वरूपा। काल का भी नाश कर देने वाली अर्थात काल का भी काल। शक्ति का भण्डार। (काली = शक्ति, लक्ष्मी= वैभव, सरस्वती =ज्ञान)। कलयति का अर्थ केवल खा जाना ही नहीं, अपितु निर्माण करना भी होता। (कलन= रचना)। निर्माण करने एवं संहार करने दोनों में शक्ति की आवश्यकता होती। शक्ति का तात्पर्य ही है, उत्पादन करने का धर्म। अतः काली = शक्ति सम्पन्ना। ब्रह्माण्ड का निर्माण करने वाली। ब्रह्माण्ड का संहार करने वाली। महा का अर्थ है ब्रह्माण्ड। काल (शिव) की पत्नी जो पूजनीय भी है। महा का अर्थ है पूजनीय।

478. **विभीषणा** – दुष्टों को विशेष रूप से डराने वाली। विशेष भय के रूप द्वारा लोगों को भयभीत करने वाली। विशेष रूप से डराने वाली। काली आदि देवियाँ शत्रुओं को डराती हैं और प्रत्येक देवी मूल रूप से एक ही है। लक्ष्मी के सन्दर्भ में बात की जाए तो वह भी डराती है क्योंकि अधिक पैसा होने पर व्यक्ति चोर, डकैतों या सरकारी एजेंसियों से डरता है। यदि वि का अर्थ विगत करें तो अर्थ होगा जिससे भीषण प्रवृत्ति निकल गई है अर्थात सौम्य या शान्त प्रकृति वाली। विभीषण को राज्य सत्ता एवं सद्गति देने वाली। विभीषण + आ, आ का अर्थ है देना। विभीषण की तरह सात्विक गुणों के प्राचुर्य वाली। रामायण में विभीषण सात्विक गुणों से भरपूर व्यक्तित्व है, यद्यपि उनका देहाभिमान मिटा नहीं है।

479. **महामन्दारविभवा** – महान कल्पवृक्ष के वैभव से युक्त। बहुत बड़े स्तुत्य विभव वाली अर्थात जिसके वैभव की स्तुति/प्रशंसा होती है। मदि स्तुति धातु होती है जिससे मन्द्यते स्तूयते बनता है। अतः मन्दार का अर्थ स्तुत्य लिया गया।

480. **शिवानन्दा** – शिव को आनन्दित करने वाली अर्थात देने वाली। आनन्द + आ, आ का अर्थ है देना। शिव से आनन्दित होने वाली। शिव के आनन्द स्वरूपा। शिव या शिवा का अर्थ मोक्ष भी होता है। मोक्षावस्था में होने वाले आनन्द स्वरूप वाली या भक्तों को मोक्ष का आनन्द देने वाली।

481. **रतिप्रिया** – कामदेव की पत्नी रति की तरह प्रिय, सुन्दर लगने वाली। रति (कामदेव की पत्नी) को प्रिय लगने वाली। रति को पसन्द करने वाली (विष्णु का संग = रति)।

482. **उद्रीति** – नियम से हटकर अर्थात जिनके लिए कोई नियम कानून नहीं है अर्थात जो नियम कानून से ऊपर हैं। रीति अर्थात पीढ़ी दर पीढ़ी चले आ रहे संस्कार अर्थात नियम कानून। सीमा से बाहर अर्थात असीम। रीति अर्थात सीमा। रीति रिवाजों से बाहर।

483. **पद्ममाला** – कमलों की माला से सुशोभित। सृष्टि कों धारण करने वाली। पद्म सृष्टि का प्रतीक है। मल् धारणे धातु से माला या माली/मालिनी का अर्थ धारण करने वाला/वाली हो जाता है।

484. **धर्मवेगा** – धर्म को विशेष गति देने वाली अर्थात बढ़ाने वाली। वेग + आ, आ का एक अर्थ है देना, वेग देना अर्थात बढ़ाना। धर्म के उत्कृष्टतम स्वरूप को धारण करने वाली। धर्म रूपी तेज गति वाली। (= धर्म से जल्दी मिल जाती हैं। धर्म है तीव्र गति जिसकी)।

485. **विभावनी** – विश्व को प्रकट करने वाली। स्वयं को भक्तों के सम्मुख प्रकट करने वाली। विभाव अर्थात प्रकट करना। विशेष रूप से सभी को प्रकाशित करती हैं, भावनामय बना देती हैं, आकृष्ट करती हैं। विशेषेण भावयति सर्वाणि। विशेष रूप से दिखाने वाली या प्रकट करने वाली। संसार को दिखाने वाली या प्रकट करने वाली। अपनी माया या रूप–सौन्दर्य को दिखाने वाली। विभाव का अर्थ शिव भी है। शिव का नेतृत्व करने वाली या उनके आगे चलने वाली या उनका मार्गदर्शन करने वाली। शिव तक पहुँचाने वाली।

486. **सत्क्रिया** – श्रेष्ठ कर्म स्वरूपा, श्रेष्ठ क्रिया वाली, श्रेष्ठ क्रिया स्वरूपा।

487. **देवसेना** – देवताओं की सेना रूप में या षष्ठी देवी के रूप में।

488. **हिरण्यरजताश्रया** – सोने और चांदी में विराजमान।

489. **सहसावर्तमाना** – अचानक से प्रकट हो जाने वाली/आ जाने वाली। लक्ष्मी अचानक आती हैं। कहते हैं कि लक्ष्मी जब आती है, अचानक से आती है और छप्पर फाड़ के आती है। सहस् की तृतीया विभक्ति सहसा होती है जिसका अर्थ होता है शक्ति के साथ या कान्ति के साथ तब सहसावर्तमाना का अर्थ होगा शक्ति के साथ विद्यमान या कान्ति के साथ विद्यमान। अचानक से कहीं पर भी प्रकट हो जाने वाली। तेज या ओज या कान्ति के साथ विराजमान अर्थात कान्ति से युक्त। सहस् का अर्थ है ओज, कान्ति, तेज। सहसा सहस् शब्द की तृतीया विभक्ति है। समास के नियम के अनुसार यदि किसी का नाम करना हो तृतीया विभक्ति को ज्यों का त्यों रख सकते हैं।

490. **हस्तिनादप्रमोदिनी** – हाथियों के नाद को सुनकर खुश हो जाने वाली।

491. **हिरण्यपद्मवर्णा** – सोने के एवं कमल के वर्ण वाली।

492. **हरिभद्रा** – विष्णु जी का कल्याण करने वाली। (विष्णु जी को आनन्द की अनुभूति इन्हीं की वजह से होती है)। विष्णु जी द्वारा पालन कर्म, असुर–संहार इन्हीं के द्वारा होता क्योंकि हर कर्म शक्ति ही करती है)। पालन कर्म या असुरों का संहार करना समाज का कल्याण करना ही है।

493. **सुदुर्धरा** – बड़ी कठिनाई से धारण की जाने वाली (अधिक दुर्धर)। लोग कितनी भी कोशिश करें पर लक्ष्मी जी टिकती नहीं हैं।

494. **सूर्या** – सूर्य की शक्तिस्वरूपा। सूर्य की शक्ति से युक्त। सूर्य के समान तेजस्वी। सूर्य की पत्नी संज्ञा स्वरूपा या संज्ञा से अभेद है जिनका। सूर्य का अर्थ आक या मदार भी होता है। सूर्यः अस्या अस्ति इति सूर्या (आक वाली)। तात्पर्य हुआ मदार में शक्ति या गुण के रूप में रहने वाली या इनके आसपास मदार के वृक्ष लगे होते हैं।

495. **हिरण्यप्रकटसदृशी** – व्यक्त (दृश्य) स्वर्ण की तरह अर्थात उसके समान सौन्दर्य या चमक या दीप्ति वाली। प्रकट का अर्थ है जो व्यक्त या स्पष्ट दिखाई देता है या उत्पन्न हुआ है। कट वर्षावरणे धातु होती है। प्र अर्थात प्रकृष्ट अर्थात अधिक। तेज का स्थूल रूप स्वर्ण है। तेज की अधिक वर्षा के समान अर्थात अत्यधिक तेजस्विनी। स्वर्ण के प्रकट (= प्रकाशित) स्वरूप के समान।

496. **हेममालिनी** – सोने की माला पहने हई। (माला की तरह गले में सोने के आभूषण पहने हुई है)। स्वर्ण को धारण करने वाली। मल् या माल् धातु का अर्थ धारण करना होता है जिससे माली या मालिनी का अर्थ धारण करने वाली होता है। स्वर्ण सदृश पुष्पों की माला धारण किय हुए है। स्वर्ण अर्थात तेज को धारण किये हुए।

497. **पद्मानना** – कमल के समान सुन्दर चेहरे वाली/मुख वाली। कमल के समान कोमल मुख वाली।

498. **नित्यपुष्टा** – हमेशा पुष्ट रहने वाली अर्थात धन धान्य से परिपूर्ण रहने वाली। पुष्ट का अर्थ है शरीर और

मन की स्वस्थता। इस प्रकार नित्य पुष्टा का अर्थ हुआ जिनका शरीर और मन हमेशा स्वस्थ रहता है। हमेशा से उनके पास सारी चीजे हैं और वे भी पूर्ण मात्रा में (पुष्ट =1. मजबूती, 2. पूर्णता)।

499. **देवमाता** – देवताओं की रक्षा करने वाली। माति इति माता। जो रक्षा करे, पालन करे वह है माता। पालन करने में रक्षा करने का अर्थ आ जाता है। गर्भ में शिशु की रक्षा करती है, इस अर्थ में माति का अर्थ रक्षा करना भी होता है, गर्भे शिशुम् माति इति माता।

500. **अमृतोद्भवा** – अमृत के साथ उत्पन्न (अमृतेन सह उद्भवा)। अमृतस्य उद्भवा यस्या सा, जिससे अमृत का उद्भव अर्थात उत्पत्ति होती है अर्थात अमृत (मोक्ष) देने वाली।

501. **महाधना** – विपुल धनराशि से विभूषित। सारे संसार का धन रूपा (समष्टि, महा=विश्व)। भगवान का नाम सबसे बड़ा धन है। कुछ लोग साँस को सबसे बड़ा धन मानते हैं। महाधन + आ, आ का अर्थ है देना। पात्र लोगों को भगवान का नाम रूपी धन देने वाली। साँस देने वाली अर्थात लम्बी आयु करने वाली।

502. **श्रृंगी** – दुष्टों, राक्षसों की हिंसा करने वाली अर्थात् उनका नाश करने वाली। श्रॄ हिंसायाम् धातु में गन् प्रत्यय लगाने से एवं इसके बाद स्त्री प्रत्यय लगाने से श्रृंगी शब्द बनता है जिसका अर्थ हुआ हिंसा करने वाली। श्रृंग का अर्थ सींग भी होता है क्योंकि पशु इस सींग से दूसरों जानवरों को मार सकता है। श्रृंग का अर्थ चोटी अर्थात् पर्वतों की चोटी भी है। चोटी का अर्थ है सबसे ऊँचा। इस प्रकार श्रृंगी का अर्थ हुआ जो गुण, कर्म, स्वभाव में सर्वोत्तम है। श्रृंगी नामक ऋषि में गुण, तपस्या, शक्ति रूप में विराजमान। शब्द के बाद ''में विराजमान'' जोड़ देने से भी शब्द का अर्थ निकल आता है। श्रृंगी नाम के एक ऋषि भी हुए है अतः इस नाम का अर्थ जो श्रृंगी ऋषि की तरह है अर्थात् तपस्विनी एवं यज्ञ विद्या में दक्ष। कुछ लोग श्री श्रयते धातु से भी श्रृंग शब्द बनाते है। तब इस नाम का अर्थ हो गया कि लोग जिनका आश्रय लेते है। गति वाली या गति स्वरूपा। श्रृंग् गतौ धातु होती है। सर्पाकार गति या उछलने वाली गति को श्रृंग गति कहते हैं। सर्वोच्च स्थिति में स्थित। (गुण, कर्म, स्वभाव की दृष्टि से, श्रंग = चोटी) उन्नत स्थान स्वरूपा। श्रृंग या सींग जो किसी को मारने के लिए आगे बढ़ता है। लक्ष्मी से अर्थात किसी को पैसे देकर उसके द्वारा किसी को भी मारा जा सकता है। जिनके मुख में सींग जैसी रचना थी अर्थात् मत्स्यावतार भगवान विष्णु स्वरूपा। तभी प्रलय काल में नाव को मुख से फंसा कर रखा था। चारों वेद सींग कहे गये है अर्थात् सबसे ऊपर कहे गये है। सींग एक प्रकार का चिन्ह है सिर के ऊपर का। सींग सबसे ऊपर होते है और वेद श्रेष्ठ होते है अतः वेद को सींग कहा गया है। जो जगत को समेटते है। श्रृंग अर्थात् वेद में जिनकी स्तुति की गयी है। सींग वाले प्राणियों में रहने वाली शक्ति के रूप में रहने वाली। शृणाति का अर्थ है हिंसा करना। चूँकि इससे दूसरों जानवरों को मारा जाता है अतः श्रृंग कहते है। सींग चिन्ह या परिचायक है और सिर के ऊपर चिन्ह की तरह है। जिससे दूसरे की रक्षा करता है। बाधते परम् से बाहु शब्द बना, दूसरें को रोकता है अर्थात् दूसरे से रक्षा करता है। इस कारण बाहु को बाहु कहते है। चोटी अर्थात् परमात्माचिन्तन।

503. **कार्दमी** – जिन्होंने कर्दम ऋषि की पुत्री के रूप में अवतार लिया था। संसार को भी कीचड़ माना जाता है। संसार से सम्बद्ध अर्थात संसार में व्याप्त या संसार की स्वामिनी। कर्दम (कीचड़) से युक्त। (कीचड़ में कमल, कमल में लक्ष्मी विराजमान। सांसारिक लौकिक पापरूपी कीचड़ पारकर स्थित)। कीचड़ में उगने वाले कमल पर विराजमान। जहाँ लोग ज्यादा जाते वहाँ बहुत अधिक आवागमन से कीचड़ हो जाता। बड़े–बड़े व्यापारिक स्थलों के आसपास कीचड़ जमा हो जाता। व्यापारिक स्थल धन या लक्ष्मी के केंद्र हैं। कर्दम अर्थात कर्द (कीचड़) को साफ करने वाला। मार्जयति का अर्थ है साफ करना। आत्म तत्व के अलावा जो कुछ भी है वह कीचड़ है। जिन्होंने कर्दम ऋषि के यहाँ कन्या रूप में अवतार लिया। कर्दं मार्जयति इति कर्दमः। जो कीचड़ (अज्ञान या आत्मतत्व बाधक जो कुछ भी है) को साफ करता है अर्थात् दूर करता है वह कर्दम ऋषि है। कर्द का एक अर्थ

कीचड़ भी है। शब्दकोष में कर्दमी का अर्थ चैत्र पूर्णिमा भी दिया गया है। शरद पूर्णिमा एवं चैत्र की पूर्णिमा सबसे सुन्दर मानी गई है। इस प्रकार कार्दमी का अर्थ हुआ जो चैत्र पूर्णिमा से सम्बन्धित सौन्दर्य वाली है अर्थात् अति सुन्दर है।

504. **कम्बुकन्धरा** – शंख के समान गर्दन वाली। शंख ऊपर से चौड़ा और नीचे से पतला होता है।

505. **आदित्यवर्णा** – सूर्य के समान वर्ण (रंग) वाली ।

506. **चन्द्राभा** – चन्द्रमा के समान आभा है जिसकी।

507. **गन्धद्वारा** – गन्ध है प्रवेश द्वार जिसका अर्थात सुगन्धित पुश्प चढ़ाने से या सुगन्ध चढ़ाने से प्राप्त होने वाली। सभी सुगन्धों का मूल। गन्ध से प्रवेश होता है जिसका अर्थात पता चलता है। जिसके घर या महल के दरवाजे सुगन्धित हैं अर्थात चन्दन आदि की लकड़ियों से बने हैं।

508. **दुरासदा** – कठिनाईयों से प्राप्त होने वाली अर्थात दुश्प्राप्य। दुख (कष्ट/तपस्या) से प्राप्त होने वाली। दुःखेन आसाद्यते प्राप्यते/लभ्यते।

509. **वरार्चिता** – श्रेष्ठ देवताओं जैसे ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश, सूर्य, इन्द्र आदि द्वारा भी पूजित। श्रेष्ठ महापुरुषों द्वारा अर्चित। वरा का अर्थ गुड़हल भी है। गुड़हल का पुष्प चढ़ाकर पूजी गई अर्थात पूजी जाती हैं। वर का अर्थ कुमकुम, केसर, हल्दी आदि भी दिया गया है। इन वस्तुओं को चढ़ाकर पूजी गई अर्थात पूजी जाने वाली। अर्चित का अर्थ पूजी गईं होता है पर पूजी जा रही हैं या पूजी जाती हैं या पूजी जायेंगी भी अर्थ निकलता है। कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र के अनुसार कृत्य प्रत्यय सामान्यतः जिन कालों या कारकों में प्रयुक्त होते हैं, उससे भिन्न भी अर्थ निकाले जा सकते हैं यदि आवश्यकता पड़े। अतः पूजी गईं का अर्थ पूजी जाती हैं भी कर सकते हैं।

510. **वरारोहा** – जिनका प्रादुर्भाव (अवतार लेना या प्रकट होना) वर है अर्थात श्रेष्ठ है। वरा आरोहा यस्या सा, वरारोहा। राक्षसों और दुष्टों का विनाश करने के कारण तथा धर्म की स्थापना उददेश्य होने के कारण इनका आविर्भाव श्रेष्ठ है। जिनका नितम्ब श्रेष्ठ है अर्थात सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार जैसा होना चाहिए वैसा है। आरोह अर्थात नितम्ब। जिसकी प्राप्ति सर्वश्रेष्ठ है अर्थात जिसको प्राप्त करने के बाद दुबारा जन्म–मरण के चक्र में नहीं फँसना पड़ता। यहाँ आरोह का अर्थ है प्राप्ति। श्रेष्ठ सोपान (सीढ़ी) स्वरूपा। भगवान तक पहुँचने के लिए श्रेष्ठ सोपान स्वरूपा। जिनकी गोद या जिनको पा लेना सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि वह पा लेने पर दुबारा दुखरूपी संसार में नहीं आना पड़ता है। आरोह अर्थात गोद। वरदान देने के लिए प्रकट होने वाली या वरदान देने के लिए चढ़ी हुई अर्थात तैयार। जिनके द्वारा श्रेष्ठ भक्तों का मोक्ष के प्रति आरोह किया जाता है अर्थात उठाया जाता है अर्थात पहुँचाया जाता है। वराणां मोक्षं प्रति आरोहः यया। जो स्वयं श्रेष्ठ हैं एवं दूसरों (भक्तों या अन्य देवों) के आरोह का हेतु हैं अर्थात उनकी उन्नति का कारण हैं। वराश्च परेषाम् आरोहः हेतुश्च। जो ज्ञान देने वाली है एवं स्वयं वृद्धि को प्राप्त नहीं होती हैं। वं ज्ञानम् राति इति वरः। न रोहति, न वर्धते इति आरोहा। अनन्त असीम होने के कारण उनका सांसारिक वस्तुओं की तरह बढ़ना, घटना नहीं होता। जो वरदान देने वाले हैं एवं स्वयं वृद्धि को प्राप्त नहीं होती है। वरं राति इति वरः। श्रेष्ठ होती हुई ही प्रकट होने वाली अर्थात श्रेष्ठ रूप में ही प्रकट होने वाली। वरा एव सन्नारोहति प्रादुर्भवति। जिस प्रकृति को सब चाहते हैं, उसे बढ़ाने वाली। वरणीयां प्रकृतिं रोहयति। लोग धन सम्पत्ति आदि चाहते हैं जो प्रकृति का ही रूप है। उपासना करने पर इसे बढ़ा देती हैं। जो ज्ञान, आनन्द और व्यास के रूप में प्रकट होती हैं। व का अर्थ है ज्ञान, र का अर्थ है आनन्द। इस प्रकार वर का अर्थ हुआ ज्ञान और आनन्द। किसी स्मृति ग्रन्थ में अ आ अं अः पुराणर्षिः, ऐसा लिखा है। आ का अर्थ पुराण का ऋषि अर्थात वेद व्यास ले लिया गया क्योंकि उन्होंने ही पुराणों की रचना की थी। वरात्मना रोहति प्रादुर्भवति

इति वरारोहा। आ का अर्थ चतुर्मुख अर्थात ब्रह्मा जी भी है। तं सर्वेषाम् उपरि आरोहयति इति वरारोहा। ब्रह्मा जी को सबसे ऊपर रखने के कारण या देवताओं में सबसे उच्च लोक देने के कारण ही इन्हें वरारोहा कहते हैं। जिनके द्वारा श्रेष्ठ स्थान में या श्रेष्ठ लोगों में प्रकट हुआ जाता है। श्रेष्ठ भक्तों में या श्रेष्ठ तीर्थों में प्रकट होने वाली। वराणां वरे स्थाने आरोहो यया। वरः श्रेष्ठ आरोहः प्रादुर्भाव समुच्छ्रयो यस्या। जिनकी ऊचाई श्रेष्ठ है अर्थात गुणों में या शारीरिक लम्बाई में ऊँची है। जिनका आरोह (प्रादुर्भाव) श्रेष्ठ है क्योंकि इसका उद्देश्य मानव कल्याण, धर्म की रक्षा करना और अधर्म का विनाश करना है। श्रेष्ठ नितम्बों वाली। आरोह का अर्थ नितम्ब (thigh) भी होता है। जो उपासकों को वरदान देने के लिए चढ़ी हुई है अर्थात हमेशा तैयार रहती हैं। सुन्दर अंगों से सुशोभित। आरोह = अंगों का उतार–चढ़ाव, नितम्ब।

511. **वरेण्या** – वरण (= प्राप्त) करने योग्य, श्रेष्ठ।

512. **विष्णुवल्लभा** – भगवान विष्णु की प्रियतमा अर्थात भगवान विष्णु जिनको बहुत चाहते हैं। वल्लभ अर्थात अतिशय प्रिय।

513. **कल्याणी** – कल्यम् अणति इति कल्याणी। निरोगिता को बोलने वाली या निरोगिता को लाने वाली। सबसे बड़ा रोग है अज्ञान अतः अज्ञान को दूर करने वाली अर्थात मोक्ष या आनन्द देने वाली। कल्यम् आणयति आनयति इति कल्याणी। कल्यम् का अर्थ है निरोगिता और आनयति का अर्थ है लाना। संसार का सबसे बड़ा रोग है अज्ञान अतः निरोगिता का अर्थ हुआ ज्ञान। ज्ञान को लाने वाली। कल्याण का एक अर्थ आनन्द या मोक्ष भी होता है। आध्यात्मिक प्रगति देने वाली क्योंकि कल्याण का एक अर्थ आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रगति भी है। कल्यम् अणति इति कल्याणी अर्थात शुभ शब्द बोलने वाली। कल्य का अर्थ है शुभ समाचार अर्थात शुभ शब्द, शुभ कामना। कल्य का अन्य अर्थ है प्रशंसा, प्रातः काल, बधाई, उपाय। मधुर बोलने वाली। कल का एक अर्थ है मधुर अव्यक्त शब्द।

514. **वरदा** – भक्तों को मनोवांछित वर देने वाली। उत्तम पति देने वाली। इच्छा देने वाली अर्थात पूरा करने वाली। वर का एक अर्थ इच्छा भी होता है।

515. **वामा** – सुन्दर स्वरूप वाली। वमति सौन्दर्यम् इति वामा अर्थात जो अपने भीतर से सुन्दरता को उगलती है वह वामा है। (विष्णु की वामांगी) विष्णु के बायें भाग में स्थित।

516. **वामेशी** – विश्व की सुन्दरतम स्त्रियों की स्वामिनी। वामा=सुन्दर स्त्री। सुन्दर स्त्रियों में जो सर्वश्रेष्ठ सुन्दर हो। वाम मार्ग को अनुशासित रखने वाली। वाम मार्ग में उपासनीया। काली आदि देवियाँ वाम मार्ग में उपासनीया होती हैं और देवी लक्ष्मी का काली आदि देवियों से अभेद सम्बन्ध है।

517. **विन्ध्यवासिनी** – विन्ध्य पर्वत पर वास करने वाली माता विन्ध्यवासिनी। विन्ध्यवासिनी देवी माँ महालक्ष्मी हैं। ऐसी माँ महालक्ष्मी से अभेद है जिनका।

518. **योगनिद्रा** – योग की समाधि जैसी स्थिति या अवस्था स्वरूपा। योगनिद्रा स्वरूपा। यह जागृत और स्वप्न के बीच की अवस्था है तथा इसे लेटकर के ही किया जाता है। सृष्टि की उत्पत्ति और प्रलय के बीच की अवस्था को भी योगनिद्रा कहते हैं। योगनिद्रा में स्थित रहने वाली।

519. **योगरता** – योग में संलग्न (योग के अंग यम, नियम आदि में हमेशा लगी हुई। हमेशा तुरीयावस्था, तुरीयातीत अवस्था जो समाधि की अवस्था है में संलग्न, चित्तवृत्ति के निरोध वाली अवस्था में रहती)। सिद्धि असिद्धि में समभाव को भी गीता के अनुसार योग कहते हैं। समभाव में स्थित। योग से प्रसन्न। रता का एक अर्थ प्रसन्न भी होता है।

520. **देवकी** – देवताओं को शक्ति सम्पन्न बनाने वाली। देवान् शक्तिसम्पन्नान् करोति इति देवकी। प्रकाशशीला। (दीव्यति इति देवी = प्रकाशशील) देवी एव देवकी, स्वार्थ में अर्थात बिना अर्थ बदले कन् प्रत्यय लगाकर देवक हो जाता है अर्थात् देव एवं देवक दोनों का एक ही अर्थ है। स्त्रीलिंग में देवकी।

521. **कामरूपिणी** – 1. इच्छानुसार रूप धारण करने वाली। (काम=इच्छा)। 2. सुन्दर रूप धारण करने वाली। (काम = सुन्दर)।

522. **कंसविद्राविणी** – कंस को भगा देने वाली। विद्रावण का अर्थ है भगा देना। यहाँ भगा देने का अर्थ होगा नष्ट करना या मारना। आसुरी वृत्तियों को भगा देने वाली।

523. **दुर्गा** – कष्टों/विपत्तियों का नाश करने वाली। दुर्ग = कष्ट/आपत्ति, आ= नाश करना (दुर्ग+आ= दुर्गा)।

524. **कौमारी** – कुमार अवस्था वाली। (कुमारत्ववयोविशिष्टा) कुमार अवस्था द्वारा जो अतिशय सुन्दर लगती हैं। पृथ्वी पर दुष्टों को मारने वाली। कु अर्थात पृथ्वी, कौ अर्थात पृथ्वी पर। कुमार (कार्तिकेय) की शक्तिस्वरूपा या उस शक्ति से अभेद है जिनका। वाराहीकन्द नामक औषधि की तरह रोगनिवारिका अर्थात कष्टनिवारिका। कौमारी का एक अर्थ वाराहीकन्द भी होता है।

525. **कौशिकी** – पार्वती के शरीर (= कोश) से जो देवी निकली वे हैं कौशिकी। उन कौशिकी देवी से अभेद है जिनका। दुर्गासप्तशती में इसका उल्लेख है। कुश् धातु का अर्थ उपदेश देना है। उपदेश देने वाली। गुरु के द्वारा उपदेश देना अर्थात गुरु में स्थित शक्ति द्वारा उपदेश देना अर्थात देवी के द्वारा उपदेश देना होता है। पाँचों कोशों (शरीरों) के भीतर स्थित जीवात्मा स्वरूपा। सभी विद्याओं का उपदेश देने वाली या उन्हें प्रकाशित (प्रकट) करने वाली। कुश् धातु का अर्थ उपदेश करना एवं क्रंश् धातु का अर्थ प्रकाशित करना है जिससे कौशिक शब्द बनता है। स्त्रीलिंग में कौशिकी हो जायेगा। सूर्य को भी कौशिक कहते है क्योंकि यह दो कुशियों (दिन और रात) से परिग्रहीत है। सूर्य की पत्नी या शक्ति कौशिकी होगी। उपदेश करने वाली। कुश धातु का अर्थ उपदेश करना है। वेदों के अर्थ का प्रकाशन करने वाली। क्रंश् धातु से कौशिक शब्द बनाने पर यह अर्थ निकलता है। क्रंश् धातु का अर्थ है प्रकाशन करना। उपदेश देने वाली। कुश् धातु का एक अर्थ शब्द करना अर्थात उपदेश देना, अध्यापन करना है। काली सहस्रनामावाली में अधिक व्याख्या की गई है।

526. **क्षमा** – क्षमाशील। क्षमा अस्या अस्ति इति क्षमा (क्षमा वाली)। क्षमा गुण स्वरूपा। क्षमा गुण चित्त की एक प्रकार की वृत्ति (स्वभाव) है जिससे मनुष्य दूसरे द्वारा पहुँचाए हुए कष्ट को चुपचाप सह लेता है और उसके प्रति दण्ड की इच्छा नहीं रखता। सर्वसमर्थ। क्षम का अर्थ समर्थ भी होता है। आपने सक्षम शब्द सुना होगा। सभी स्थानों में समर्थ। प्रत्येक कार्य करने में समर्थ। कर्तुम्–अकर्तुम्–अन्यथा कर्तुम् में समर्थ। भक्तों के अपराधों को सहन करने वाली अर्थात उसका फल नहीं देती हैं। भक्तानां अपराधनम् क्षमते इति क्षमा।

527. **कात्यायनी** – कात्यायन ऋषि की पुत्री के रूप में जिन्होंने जन्म लिया था। कात्यैः अय्यते प्राप्यते इति कात्यायनी अर्थात ब्रह्मनिष्ठ साधकों द्वारा जिनको प्राप्त किया जाता है। कति अयनानि सन्ति अस्याः इति कात्यायिनी अर्थात कितने ही मार्गों या उपायों वाली अर्थात बहुत से या अनन्त मार्गों या उपायों वाली। तात्पर्य हुआ देवी को पाने के अनेक मार्ग हैं। अनन्त घरों या निवास स्थान वाली। सभी प्राणियों के हृदय में देवी का वास है, कण कण में देवी का वास है। यह नाम त्रिपुर भैरवी नामावली में देखें।

528. **कालरात्रि** – काल (मृत्यु) का भी संहार करने वाली। काल (शिव) को रात्रि के समान सुख देने वाली। रात्रि विश्रान्ति देने वाली होती है जिससे सुख मिलता है। कालपुरुष में परिवर्तन करने वाली। पृथ्वी का घूमना आदि निश्चित करने वाली। काल (शनि) की पीड़ा नष्ट करने वाली। काल के अर्थ शनि, समय, मृत्यु दिये गए

है। रात्रि को संहारिका शक्ति कहते है क्योंकि यह दिन अर्थात प्रकाश का नाश करती है। रात्रि को सुख देने वाली भी कहते है क्योंकि सोने या विश्राम करने से सुख मिलता है। शिव को सुख देने वाली। काल अर्थात मृत्यु के भय का नाश करने वाली अर्थात दूर करने वाली। खराब समय को नष्ट करने वाली। यमराज की एक बहन का नाम भी कालरात्रि है। ब्रह्माण्ड पुराण में एक वर्ण शक्ति का नाम भी कालरात्रि बताया गया है। यह नाम त्रिपुर भैरवी नामावली में देखें।

529. **निशितृप्ता** – रात्रि में तृप्त होने वाली। पूजन, बलि आदि द्वारा प्रसन्न होने वाली। ज्यादातर बलि रात्रि में होती। दूसरा देख न ले, अतः रात्रि में बलि होती। देवी की आराधना प्रायः रात्रि को की जाती।

530. **सुदुर्जया** – अतिशय दुर्जय, जिसे कोई जीत नहीं सकता।

531. **विरुपाक्षा** – विविध रूपों की आँखों वाली। सूर्य, चन्द्र और अग्नि देवी की तीन आँखें हैं और तीनों अलग अलग हैं। आकाश या ब्रह्माण्ड के रूप में जब देवी की कल्पना की जाती है तो सूर्य, चन्द्र और अग्नि इनके नेत्र कहे गये हैं। तीन नेत्रों वाली (सामान्यतः व्यक्ति दो नेत्रों से सुन्दर लगता, तीन नेत्रों से खराब लगता किन्तु देवी के सन्दर्भ में ऐसा नहीं है)।

532. **विशालाक्षी** – विशाल नेत्रों वाली। बड़े नेत्रों वाली अर्थात् अति सुन्दर। बड़े नेत्र सुन्दरता के प्रतीक है। सबकुछ देखने वाली अर्थात् उनकी नजर से कोई भी चीज छूट नहीं सकती। आँख बड़ी हो तो बिना गर्दन हिलाये चीजों को देखा जा सकता है। विशाल शब्द में शाल शब्द का एक अर्थ कमरा होता है किन्तु दूसरा अर्थ शील भी होता है। इस प्रकार विशालाक्षी का अर्थ हुआ जिनकी आँखों में शील है। शील का सामान्य अर्थ अच्छा व्यवहार जिसमें शिष्टता एवं नम्रता हो। शील का एक अर्थ यह भी होता है कि जिस समय जैसा व्यवहार करना चाहिए वैसा व्यवहार करना। इस प्रकार विशालाक्षी का अर्थ हुआ कि आँखों से जैसा व्यवहार करना चाहिए वैसा व्यवहार करने वाली। आँखों से कई प्रकार के संकेत दिये जाते है जैसे चुप होने का, कहीं चलने का, कहीं क्रोधित होने का आदि। इस प्रकार अपनी आँखों से परिस्थिति के अनुसार भाव प्रकट करने वाली, यह विशालाक्षी का अर्थ हुआ।

533. **भक्तानाम् परिरक्षिणी** – भक्तों की सभी ओर से रक्षा करने वाली। सब प्रकार से रक्षा करने वाली।

534. **बहुरूपा** – अनन्त रूपों वाली।

535. **स्वरूपा** – आत्मा के रूप वाली। धन के रूप वाली। स्व का अर्थ आत्मा, धन (प्राप्य धन) होता है। स्वरूप का अर्थ सुन्दर भी होता है। अपने स्वरूप में स्थित रहने वाली। समाधि में व्यक्ति अपने स्वरूप में स्थित होता। स्व अर्थात आत्मा। आत्मस्वरूप में स्थित।

536. **विरूपा** – अनेक विकृत (भद्दे, कुरूप) रूपों वाली जैसे छिन्नमस्ता, त्रिनयना। विविध रूप (रंगरूप या शक्ल) वाली। जो अनुरूप न हो ऐसे अप्राकृतिक रूप वाली।

537. **रूपवर्जिता** – रूप (आकार) रहित अर्थात् निराकार। (केवल ज्ञान चक्षु द्वारा अनुभूत हो सकती हैं)। रूप का अर्थ शरीर भी होता है। बिना शरीर के भी रहने वाली। रूप के कई अर्थ है जैसे समान, लक्षण, श्वेतवर्ण, वेष।

538. **घण्टानिनादबहुला** – घण्टों की ध्वनि की बहुलता वाली अर्थात् जिनके मन्दिरों में बहुत सारे घण्टे बजते है। जिनके मन्दिर में बहुत सारी घण्टियाँ बजती हैं। अतिशय घण्टा निनाद वाली (ऐसी घण्टा नाद से राक्षसों को भयभीत करने वाली)। समाधि लगाने पर सुनाई देने वाली बहुत सी घण्टा की तरह अव्यक्त ध्वनि स्वरूपा अर्थात् नाद स्वरूपा। अपने भक्तों को समाधि में सुनाई पड़ने वाले बहुत से घण्टा की तरह ध्वनि का अनुभव देने वाली। बहुल + आ, आ का एक अर्थ है देना। नाद अव्यक्त शब्द है जिसमें अवयय नही है।

539. **जीभूतध्वनिनिःस्वना** – मेघ जैसी गर्जना करने वाली। जिन मेघों से बारिश होती है उन्हें जीमूत कहते हैं।

540. **महादेवेन्द्रमथिनी** – देवराज इन्द्र के अहं को चूर्ण कर देने वाली। महादेव और इन्द्र के मन को विकृत कर देने वाली। मोहिनी रूप में शिव मोहिनी के पीछे भाग रहे थे।

541. **भृकुटीकुटिलानना** – कुटिल अर्थात तिरछी भौं से युक्त मुख वाली। भौं के द्वारा गुस्सा करने वाले (भयंकर) मुख वाली। (भौं तिरछी हों तो भयंकर दिखती हैं)।

542. **सत्योपयाचिता** – सत्यस्वरूप परमात्मा (भगवान विष्णु) द्वारा मांगी गयी। सत्य के द्वारा प्रार्थित अर्थात याचित अर्थात प्राप्त होने वाली। सत्य के द्वारा शीघ्र प्राप्त की गई अर्थात् प्राप्त होने वाली। याचना का अर्थ होता है माँगना। माँग कर जो चीज प्राप्त हो वह याचित है। सत्य के मार्ग पर चलने से देवी की शीघ्र प्राप्ति होती है।

543. **एका** – अपने ढंग की अकेली। अद्वितीया। ए में बिना अर्थ बदले कन् प्रत्यय लगाने पर स्त्रीलिंग में एका बनेगा। एकाक्षरी कोष में ए के कई अर्थ हैं जैसे – भगवान विष्णु, आकाश, रात्रि आदि। बिना अर्थ बदले कन् प्रत्यय लगाने से ए ही एक हो जाता है। भगवान विष्णु स्वरूपा या उनकी शक्ति स्वरूपा। आकाश स्वरूपा। कृ धातु में ड प्रत्यय लगाने से क शब्द बनेगा जिसका अर्थ है करने वाला। आकाश को करने वाली अर्थात उसकी रचना करने वाली। रात्रि की रचना करने वाली।

544. **कौबेरी** – कुबेर से सम्बन्धित। कुबेर की उपासनीया, उपासना करने से उपासक देवता से सम्बद्ध हो जाता है। कुबेर के घर रहने वाली, निवास करने वाली। कुबेर से सम्बन्धित दिशा अर्थात उत्तर दिशा स्वरूपा।

545. **ब्रह्मचारिणी** – ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने वाली। ब्रह्मत्व का अभ्यास करने वाली। ब्रह्म में स्थित रहने वाली। तपस्या का आचरण करने वाली। ब्रह्म का एक अर्थ तपस्या भी होता है।

546. **आर्या** – आर्य के आचरण से युक्त। (सदैव कर्तव्य कर्म करते रहना, जो करने योग्य न हो उसे न करना यह आर्य का आचरण होता है।) जो सदैव श्रेष्ठ रास्ते पर चलता है वह है आर्य। अतः श्रेष्ठ रास्ते पर चलने वाली। सज्जनों के आचरण में सदैव स्थित। ज्ञानवान एवं श्रेष्ठ अर्थात नियमानुसार कर्म करने वाली। ऋ गतौ धातु से आर्य शब्द बनता है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है गतिशील। गति का अर्थ ज्ञान, क्रिया होता है।

547. **यशोदा** – यश देने वाली। नन्द की पत्नी एवं भगवान कृष्ण को पालने वाली माँ यशोदा से अभेद है जिनका। यशोदा नामक वर्णवृत्त (छन्द) स्वरूपा।

548. **सुतदा** – पुत्र देने वाली। सोमयाग को देने वाली अर्थात संसार को यह विधि बताने वाली। सोम बलि देने वाली। सुत के कई अर्थों में कुछ अर्थ हैं सोमयाग, सोमबलि, राजा। योग्य राजा देने वाली अर्थात जिनके राज्य में इनकी उपासना होती है, उस राज्य को योग्य राजा देती हैं।

549. **धर्मकामार्थमोक्षदा** – धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष देने वाली।

550. **दारिद्रयदुःखशमनी** – दरिद्रता के दुःख का शमन करने वाली। दारिद्रयनाशनस्तोत्र पढ़ने पर दुःखों का नाश करने वाली।

551. **घोरदुर्गर्तिनाशिनी** – बहुत अधिक दुर्गति का नाश करने वाली। किसी चीज की अधिक मात्रा को भी घोर शब्द से कह दिया जाता है जैसे घोर तपस्या। घोर का अर्थ बहुत अधिक, भयंकर होता है। घोर निर्दय अर्थात बहुत अधिक निर्दय। घोर वन अर्थात भयंकर वन। भयंकर मुश्किल विपत्ति मिटाने वाली। (दुर्ग = जिसे पार पाना मुश्किल है) भयंकर (जिसे पार पाना मुश्किल है) ऐसी विपत्ति मिटाने वाली। घनघोर (अतिशय बढ़कर) पीड़ाओं को नष्ट करने वाली। दुर्गति का अर्थ है बुरी गति और बुरा हाल जैसे दरिद्रता, बुरी संगति में फँस जाना, वह दुर्दशा जो निम्न लोकों में जाने पर कष्ट के रूप में मिलती है, नर्क।

552. **भक्तार्तिशमनी** – भक्तों की व्याकुलता वाली पीड़ा का शमन करने वाली। (आर्ति = अब सहन नहीं होता ऐसी व्याकुलता भरी पीड़ा जैसे गजराज को जब मगरमच्छ काट रहा था उस समय उसे अनुभव हो रही थी या जब द्रौपदी का चीरहरण हो रहा था, उस समय द्रौपदी को हो रही थी अर्थात उस पीड़ा के निवारण में एक क्षण का भी देर हुआ तो अनर्थ हो सकता था, तब इन्होंने भगवान को पुकारा था)।

553. **भव्या** – सुन्दर और प्रभावशील। प्रभावशील सुन्दरता वाली। ऐसी सुन्दरता जो दूसरों के मनो मस्तिश्क में प्रभाव डाले भव्यता है। अतिशय सुन्दर। मंगल सूचक अर्थात अपने भक्तों को भविष्य में होने वाले मंगलों की सूचना देने वाली। भव्य का अर्थ भविष्य में होने वाला भी होता है। भविष्य में भी अवतार लेने वाली या भविष्य में भी विद्यमान, ऐसा अर्थ कर सकते हैं।

554. **भवभर्गापहारिणी** – संसार के तेज का अपहरण करने वाली। संसार का तेज धन है जो आज एक के पास, कल दूसरे के पास और फिर किसी तीसरे के पास। शिव के तेज का अपहरण करने वाली। 2. संसार के कष्टों को दूर कर देने वाली।

555. **क्षीराब्धितनया** – क्षीरसागर से उत्पन्न/उनकी कन्या।

556. **पद्मा** – कमल को धारण करने वाली अर्थात कमल को हाथ में लिए। कमल में विराजमान। पद्म (कमल) के गुणों से युक्त, सुन्दरता स्वच्छता, निर्लेपता, कोमलता आदि। पद्मा नामक एकादशी स्वरूपा जो भाद्र मास के शुक्ल पक्ष में पड़ती है। पद्म नामक चिन्ह वाली अर्थात जिनके पैर में कमल का चिन्ह बना हुआ है जो सौभाग्य का प्रतीक है। कभी कभी पद्मासन में बैठने वाली।

557. **कमला** – जो क (अर्थात् विष्णु) को सुशोभित करे। कम् विष्णुम् अलति इति कमला। जो जल को सुशोभित करे (कम् = जल)। कमल की तरह संकोच–विकास वाली। सृष्टि = विकास, संहार = बन्द होना। काम्यते इति कमला। जिनकी प्राप्ति की कामना की जाती है वह कमला हैं। काम्यते असौ इति कमला, कलच् प्रत्यय लगाने से यह शब्द बनेगा। सर्जनात्मक चेतना (Creative consciousness) को धारण करने वाली। क का अर्थ है जल जो Creative consciouness का प्रतीक है क्योंकि जल से ही सृष्टि पैदा हुयी है। पुराणों में आया है कि सर्वप्रथम जल था। मल् धारणे धातु होती है जिससे मला का अर्थ है धारण करने वाली। समस्त ज्ञान को धारण करने वाली। क का अर्थ है सिर और सिर अर्थात मस्तिष्क में ही ज्ञान को धारण किया जाता है। सिर का अर्थ है जो शरीर में सबसे ऊपर है। सिर स्थान को धारण करने वाली अर्थात् सभी देवी–देवताओं में श्रेष्ठ। वैदिक कोष में कमल का अर्थ जार या परस्त्रीगामी दिया गया है। कमल + आ, आ का अर्थ है नाश करना। परस्त्रीगामी व्यभिचारी पुरुषों को नाश करने वाली।

558. **धरणीधरा** – पर्वत स्वरूपा। पर्वत में अनन्त रत्नों की खान है, रत्न पर्वत में ही पैदा होते जो नदियों से होते हुए समुद्र में जाते हैं। पर्वत ही धरती को धारण किये हैं, नहीं तो धरती समुद्र में डूब जाए। सर्वोच्च चेतना के स्वरूप वाली। पर्वत ऊँचाई का प्रतीक है। इस प्रकार देवी चेतना की सर्वोच्च अवस्था वाली हैं।

559. **रुक्मिणी** – सोने से युक्त (अर्थात् सभी ऐश्वर्यों से युक्त, लक्षणा शक्ति द्वारा यह अर्थ निकलेगा) (रुक्म = सोना)। भगवान श्रीकृष्ण की पटरानी रूक्मणीजी से जिनका अभेद है।

560. **रोहिणी** – बढ़ने के स्वभाव वाली। जगत के रूप में विकसित होने के स्वभाव वाली। रोहः शीलम् अस्याः। जो सदैव अपनी शक्ति से ऊपर की ओर बढ़ती या बढ़ाती (ऊर्ध्वगामिनी)। चन्द्रमा की पत्नी रोहिणी के समान अत्यन्त सुन्दर। महाश्वेता अर्थात बहुत गोरी। रोहिणी का अर्थ बिजली भी होता है। बिजली की तरह चमकदार। नौ वर्ष की कन्या से अभेद है जिनका। 9 वर्ष की कन्या को रोहिणी कहते हैं। सभी कामनाओं को पूरा करने

वाली। कौषीतकी ब्राह्मण में यही अर्थ दिया गया है। रुह्यन्ते प्राप्यन्ते इति रोहः अर्थात रोह का अर्थ हुआ कामना या मनोकामना। रोह में णिनि प्रत्यय लगाने से रोहिन् शब्द बनेगा जो स्त्रीलिंग एक वचन में रोहिणी होगा। सुख उपजाने वाली। स्वास्थ्य उपजाने वाली। सम्भवतः रोहिणी नक्षत्र का नाम इसी कारण रोहिणी पड़ा। रोहिणी का शाब्दिक अर्थ है उपजाने वाली। पूर्व जन्म में किये हुए कर्मो के फल को उपजाने वाली अर्थात देने वाली।

561. **सीता** – शान्ति स्वरूपा। आत्म–रामायण में सीता को शान्ति का प्रतीक माना गया है। जनकनन्दिनी सीता से अभेद है जिनका। खेत में हल चलाने से बनने वाली पंक्ति को सीता कहते हैं, चूँकि सीता की उत्पत्ति खेत की पंक्ति में हुई थी इसलिए उन्हें सीता कहते हैं। सीराग्रतो जाता इति सीता। सत्य स्वरूपा, माया स्वरूपिणी और वाग्देवीस्वरूपा। स् का अर्थ है सत्य, अमृत। ई का अर्थ है माया और ता का अर्थ है वाग्देवी। सीतोपनिशद में यह व्युत्पत्ति दी गई है। स्यति कर्मसमाप्तिम् करोति इति सीता। उणादिकोष में ऐसी व्युत्पत्ति दी गई है जिसका अर्थ है कर्म की समाप्ति करने वाली अर्थात जो भी कर्म हाथ में लेती हैं उसे पूरा ही करती हैं, अधूरा नहीं छोड़ती। शरीर, मन और आत्मा इन तीनों को एकसूत्र में बाँधने वाली प्राण शक्ति चेतना। सिनोति धातु रूप का अर्थ होता है बाँधना।

562. **सत्यभामा** – सत्य की कान्ति की रक्षा करने वाली अर्थात् उस कान्ति को बनाये रखने वाली। प्रत्येक अच्छे गुण का एक तेज या कान्ति होती है। भा का अर्थ है कान्ति। माति का अर्थ है रक्षा करना अर्थात् पालन करना अर्थात् बनाये रखना। सामान्य शब्दकोषों में माति का अर्थ नापना, तुलना करना मिलता है। माया शब्द में माति का अर्थ उत्पन्न करना लिखा है। एक वैदिक शब्दकोष में मातृ शब्द का अर्थ रक्षिका किया गया है और उन्होंने देवमातृक शब्द में मातृक का अर्थ रक्षिका किया है। इस प्रकार माति का अर्थ रक्षा करना भी होता है। माति रक्षति शिशुम् गर्भे इति माता अर्थात् जो गर्भ में अपने बच्चे की रक्षा करती है, वह माता है। भगवान श्रीकृष्ण की सत्यभामा नामक पत्नी से अभेद है जिनका, यह अर्थ भी कर सकते है। सत्यस्वरूपा महिला। सत्य भी है, महिला भी हैं, सत्य के द्वारा चमकती है, सत्येन भाति विभाति या सा सत्यभामा (सत्य+भा+मनिन् प्रत्यय) सत्य के व्रत को स्वीकार किया जिसने।

563. **यशस्विनी** – यश से युक्त भगवान विष्णु की पत्नी। यशस् शब्द में इन् प्रत्यय लगाने से यशस्विन् शब्द बनेगा। यशस्विन् की पत्नी यशस्विनी हुई। यश से युक्त। प्रशंसा पाने वाले अनेक उपासकों से युक्त। गंगा नदी स्वरूपा। महाज्योतिष्मती स्वरूपा। यशस्विनी के अर्थों में गंगा नदी, महाज्योतिष्मती, वन कपास दिया गया है। यशस्विनी नामक नाड़ी में शक्ति रूप से विराजमान।

564. **प्रज्ञाधारा** – प्रज्ञा की आधार अर्थात प्रज्ञा इसी में रहती है। प्रकृष्ट ज्ञान की आधार (प्रकर्षेण जानाति इति प्रज्ञा) (अच्छी तरह से जानती है वह है प्रज्ञा) जिनमें प्रज्ञा की धारा निरन्तर प्रवाहित होती है। प्रज्ञा का प्रवाह स्वरूपा। प्रज्ञा अर्थात जिस बुद्धि द्वारा किसी चीज को अच्छी तरह जान लेते, A to Z अर्थात आदि से अन्त तक जानते हैं। ज्ञान चेतना के दो पक्ष हैं – प्रज्ञा और बुद्धि। प्रज्ञा का सम्बन्ध अन्तःकरण से है जबकि बुद्धि का सम्बन्ध मस्तिषक से है। प्रज्ञा आत्मक समाधान और उत्कर्ष का पथ प्रशस्त करती है जबकि बुद्धि लोक व्यवहार एवं निर्वाह की गुत्थी सुलझाती है। प्रज्ञा का सम्बन्ध मुख्यतः आत्मा या आत्मिक प्रगति से है।

565. **अमितप्रज्ञा** – जिनकी बुद्धि सीमा रहित है अर्थात जिनकी बुद्धि की कोई सीमा नहीं है। अमिता प्रज्ञा यस्या सा अमितप्रज्ञा। समास में पहले शब्द को पुल्लिंग बना दिया जाता है। अनन्त प्रज्ञा से युक्त, अनन्त विषयों का A to Z ज्ञान रखने वाली। प्रज्ञा का अर्थ बुद्धि, एकाग्रता है। अतुलनीय एकाग्रता वाली। ऐसी विदुषी जिसके समान कोई दूसरा नहीं है। प्रज्ञा का एक अर्थ विदुषी भी है।

566. **वेदमाता** – गायत्री से अभेद है जिनका। गायत्री को वेदमाता कहा जाता है। चारों वेदों का सार गायत्री

मन्त्र में है। वेदों को उत्पन्न करने वाली। वेदों की रक्षा करने वाली। माति इति माता। माति का एक अर्थ है रक्षा करना। शब्दकोष में मा धातु का मापना, निर्माण करना, तुलना करना ही अर्थ दिया गया है। वहाँ रक्षा करना अर्थ नहीं दिया गया है। दुर्गा सप्तशती की टीकाओं में नागोजी भट्ट ने या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः, इस मन्त्र की टीका में मातृ शब्द का पालिका अर्थात रक्षिका अर्थ दिया गया है। इससे स्पष्ट है कि मा धातु का एक अर्थ पालन करना या रक्षा करना भी होता है। देवमातृक शब्द में भी मा धातु का यही अर्थ आता है। वैदिक निर्वचन कोष (ज्ञान प्रकाश शास्त्री) में भी मातृ का अर्थ पालिका दिया गया है।

567. **यशोवती** – जा यश से युक्त है। प्रशंसा से युक्त यश स्वरूप (जो स्वयं यश ही हो गईं)। सर्वत्र व्याप्त होने वाले गुण से युक्त। अश् धातु का अर्थ व्याप्त होना है जिससे यश शब्द बना। अश्नुते व्याप्नोति इति यशः, अश् धातु में असुन् या उणादि युट् प्रत्यय लगाया जाता है।

568. **समाधि** – जीवात्मा और परमात्मा की ऐक्यावस्थास्वरूपा। सहारा या आश्रय स्वरूपा। तपस्या स्वरूपा। मौन स्वरूपा। प्रतिज्ञा स्वरूपा।

569. **भावना** – मन के भीतर के वो भाव जो गहराई तक चले गये हैं, उस भाव के रूप वाली। अच्छा लगने वाली। मन के विचार, ख्याल, कल्पना, ध्यान, चिन्तन, कामना, इच्छा स्वरूपा। अुनभव और स्मृति से मन में उत्पन्न होने वाला भाव भावना है। चिन्तन में ज्ञान विशेष की अवस्था, ज्ञान विशेष की वासना या ज्ञान विशेष ध्यान। जिस ज्ञान, दृष्टि, विद्या द्वारा कोई चीज जानी जाती, समझी जाती तद्रूपा। भाव्यते अनया सा भावना, जिसके द्वारा भावित किया जाता/ समझा जाता। भावना चित्त का वह संसकार है जो अनुभव और स्मृति से बनता है। भावना अर्थ जल भी है अतः इस नाम का अर्थ हुआ जल स्वरूपा। भावों को ऊँचाइ अर्थात शिव की ओर ले जाने वाली। नी धातु मे ड प्रत्यय लगाने से न या ना का अर्थ ले जाने वाला/वाली होता है।

570. **मैत्री** – मित्रता या दोस्ती स्वरूपिणी। दोस्तों या मित्रों के बीच में होने वाला परस्परिक सम्बन्ध मैत्री कहलाती है। हर भाव या गुण देवी है। योग के चार साधन कर्म में एक नाम मैत्री भी है। मैत्री, करुणा, उपेक्षा, मुदिता ये चार साधन हैं। योग के इस साधन के स्वरूप वाली या इसमें अंश रूप से विराजमान।

571. **करुणा** – वह भावस्वरूपिणी जिसमें व्यक्ति किसी के दुःख देखकर स्वयं दुःखी होता और सामने वाले के दुःख को दूर करने का प्रयास करता। करुणा अस्या अस्ति इति करुणा से करुणायुक्त यह अर्थ भी निकलता है। करुणा का अर्थ हुआ – करुणा गुण, करुणा गुण से युक्त। कोमलता गुण स्वरूपा। करोति मनः आनुकूल्याय, इस प्रकार की व्युत्पत्ति करुणा शब्द के लिये की गई है तथा उनम् प्रत्यय लगाया गया है। जिस गुण के कारण व्यक्ति का मन दुखी व्यक्ति के मन के अनुकूल होता है अर्थात उसी की तरह हो जाता है। करुणा नामक वृक्ष में अंश रूप में विराजमान। वैदिक कोष के अनुसार करूण का एक अर्थ कर्त्तव्य (Duty), कार्य व्यवहार, अनुग्रह निग्रह आदि कर्म है। करूण + आ, आ का एक अर्थ है देना। कर्त्तव्य (Duty) देने वाली अर्थात् गुरू या शास्त्र के माध्यम से बताने वाली की मनुष्यों के क्या कर्त्तव्य है अर्थात् उन्हें जीवन में क्या करना चाहिए।

572. **भक्तवत्सला** – भक्तों को प्रिय लगने वाली। भक्त है प्रिय जिन्हें (दोनों अर्थ हो सकते हैं)। वत्सल अर्थात अतिशय प्रिय।

573. **अन्तर्वेदी दक्षिणा** – यज्ञवेदी के अन्तर्गत विद्यमान दक्षिणा स्वरूपा। दक्षिणा यज्ञ की पत्नी कही गयी है और पत्नी का अर्थ है रक्षा करने वाली। अन्तर्वेदी के कई अर्थ है जैसे यज्ञशाला के अन्दर विद्यमान वेदी, वह देश जिनके अन्दर बहुत सारी यज्ञवेदियाँ हो, यज्ञवेदी के अन्दर का भाग। ऐसी दक्षिणा स्वरूपा जो यज्ञ वेदी में दी जाती है। यज्ञ की सफलता दक्षिणा से होती है। यज्ञवेदी की दक्षिणास्वरूपा। यज्ञ के समापन में जो उपहार

दक्षिणा दी जाती तद्स्वरूपा। यदि अन्तर्वेदी अलग नाम होता तो अर्थ होता अन्तःकरण से जानने योग्य। अन्तर्वेदी का अर्थ है वह देश जिसमें यज्ञों की वेदियाँ होती हैं। अन्तर्वेदी का एक अन्या अर्थ है गंगा और यमुना के बीच का दोआब क्षेत्र, ब्रह्मावर्त। एसी दक्षिणा स्वरूपा जो इस प्रकार के क्षेत्र से सम्बन्धित हो। अन्तर्वेदी का अर्थ इस प्रकार के क्षेत्र में अंशरूप से विराजमान या पायी जाने वाली होता है। ऐसी दक्षिणास्वरूपा जो इस प्रकार के क्षेत्र में होती है। (यदि दक्षिणा अलग नाम होता तो अर्थ होता 1. उदार स्वरूपा 2. दक्षिण दिशा से सम्बन्धित 3. यज्ञ की पत्नी से अभेद है जिनका। सर्वत्र समदर्शित्वात् दक्षिणा। दक्षो वा दक्षिणा। दक्षश्चसाविनाः। दक्षते भक्तानुग्रहाय धावतीति दक्षिणा। दक्षते दुष्ट–दमनायेति च दक्षिणा। दक्षते सर्वं जानातीति दक्षिणा। दक्ष गति–शासनयोः। दक्ष वृद्धौ शीघ्रार्थे च। दक्षभागे स्थित इनश्च इयम्। सभी जगह समान रूप से देखने वाली अर्थात् अत्यन्त उदार। दक्षिणा का अर्थ उदारता कहा जाता है। जो निपुण है वह दक्ष या दक्षिण कहलाता है। जो निपुण है एवं मालिक भी है अर्थात् विश्व की स्वामिनी भी हैं। जो दक्षिण दिशा में स्थित है एवं संसार की स्वामिनी हैं। इन का अर्थ है स्वामी। भक्तों पर कृपा करने के लिए उनकी ओर दौड़ती हैं अर्थात् शीघ्रता से जाती हैं। दुष्टों का दमन करने के लिए शीघ्र गति करती हैं। दक्ष् धातु का अर्थ है गति करना, शासन करना, शीघ्र करना, वृद्धि करना। गति का अर्थ ज्ञान भी होता है इस प्रकार गति करने का अर्थ जानना भी होता है। जो सब कुछ जानती हैं। सफलता को सुनिश्चित करने वाली अर्थात सफलता की guarantee। यज्ञ में दक्षिणा देने पर ही उसकी सफलता सुनिश्चित होती है।)

574. **ब्रह्मचर्यपरा गति** – ऐसी अवस्था जो ब्रह्मचर्य का पालन कर रही है, तद्अवस्थारूपी। परा का अर्थ लीन या युक्त। गति का अर्थ है अवस्था। ब्रह्मचर्य की श्रेष्ठ आश्रय या स्थान अर्थात ब्रह्मचर्य का पालन करने वाली। गति का अर्थ आश्रय अर्थात निवास किया जा सकता है। यदि ब्रह्मचर्यपरा यह नाम होता तो अर्थ होता ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने वाली। यदि गति एक अलग नाम होता तो अर्थ होता निरन्तर चलने वाली (गमनशील, कभी नहीं रुकती)। ब्रह्म अर्थात सत्य, ब्रह्म, चर्य अर्थात करने योग्य या कर्तव्य अर्थात आवश्यक। ऐसी क्रिया स्वरूपा जो आवश्यक सत्य धर्म से जुड़ी हो।

575. **दीक्षा** – ज्ञान देने वाली एवं पापों का क्षय करने वाली। दीक्षा में दी शब्द देने के अर्थ में है और क्षा शब्द क्षय करने के अर्थ में। यज्ञ कार्य में अधिकारिता दिलाने वाली। गुरु से प्राप्त ज्ञान के द्वारा सभी विषयों को सम्यक् रूप से देखने वाली। दो चीजें होती हैं – शिक्षा और दीक्षा। शिक्षा में गायत्री मन्त्र का उपदेश होता। जब अन्य मन्त्र विशेष या विशिष्ट मन्त्र का उपदेश होता वह दीक्षा कहलाती। विशेष कार्य करने में अधिकृत करना दीक्षा है। यज्ञादि के लिए संकल्पपूर्वक विशिष्ट मन्त्र का अनुष्ठान दीक्षा है। विशिष्ट मन्त्र अनुष्ठान में अधिकारिता देना दीक्षा है। उचित मार्ग बताने वाली। यह अर्थ भी कर सकते हैं। एक निष्ठा के साथ लक्ष्य प्राप्ति के लिए लगे रहना दीक्षा है।

576. **वीक्षा** – सारे संसार को विशेष रूप से देखने वाली।

577. **परीक्षा** – सभी ओर से देखने वाली अर्थात उनकी नजरों से कुछ भी छूटता नहीं है। व्यक्ति छिपाने की जितनी भी कोशिश करे नहीं छिपा सकता। परि का अर्थ है चारों ओर से। पूर्ण रूप से सूक्ष्मदृष्टि से देखने वाली। ईक्षण शब्द प्रायः सूक्ष्म दृष्टि के लिए प्रयुक्त होता है।

578. **समीक्षा** – सम्यक् रूप से (अर्थात विधिवत) देखने वाली। सम्यक् रूप से, अच्छी प्रकार से देखने वाली, जड़ तक जाती हैं। जब देखती हैं, सूक्ष्म रूप से देखती हैं। (परीक्षा और समीक्षा में यह अन्तर कर सकते हैं कि परीक्षा में सभी पक्ष देखे जाते हैं अर्थात प्रत्येक दृष्टि से विचार किया जाता है, समीक्षा में भले ही सभी पक्ष न देखे जाते हो किन्तु जो भी देखा जाता है उसे गहराई तक देखा जाता है।)

579. **वीरवत्सला** – वीर पुरुष जिन्हें अति प्रिय लगते हैं।

580. **अम्बिका** – पार्वती स्वरूपा। स्नेह युक्त माता स्वरूपा। कन् प्रत्यय स्नेह अर्थ को भी बताता है। स्नेह से भरी हुई जगन्माता। इच्छाशक्ति, ज्ञानशक्ति, क्रियाशक्ति का सम्मिलित रूप अम्बिका कहलाता है। ऐसी शक्ति से अभेद है जिनका। अम्बते जनयति इति अम्बिका। ब्रह्मबैवर्त पुराण में अम्बिका शब्द का अर्थ दिया गया है जो समस्त लोक की माता है एवं लोगों द्वारा पूजिता तथा वन्दिता है। अम्बा शब्द माता का प्रतीक है तथा अम्ब शब्द से पूजित एवं वन्दित अर्थ निकलता है। अम्बा में जहाँ स्नेह से युक्त होकर जाने या बोलने का भाव है पर अम्बिका में पूजित होने का या वन्दित होने का भाव है। (जो स्नेहपूर्वक अपने बच्चे के पास जाती है या उससे बात करती है वह अम्बा है, अंग्रेजी का Womb शब्द अम्ब से बना है, जिसके गर्भ में जगत है वह अम्बा है।) अम्ब धातु परस्मैपदीय में चलना या क्रिया करना अर्थ देता है। अम्बयति जनयति इति अम्बिका अर्थात् अम्बिका का अर्थ है क्रियाशक्ति। महाभारत में अम्बिका जब सन्तान पैदा करने के लिए व्यास के पास गई थी तो भय के कारण आँख बन्द कर लिया था। अतः अम्बिका शब्द तमोगुण से युक्त जीवात्मा या प्राणी का भी बोधक है। आगम शास्त्र में इच्छाशक्ति, ज्ञान शक्ति एवं क्रियाशक्ति इन तीनों का मिलन जिस मुख्य शक्ति में होता हे उसे अम्बिका कहा गया है अर्थात् अम्बिका को इन तीनों शक्तियों का जनक माना गया है। समस्त जगत को उत्पन्न करने वाली एवं उसका पालन पोषण करने वाली माता अम्बिका है। अम्बा में समस्त जगत को उत्पन्न करना वाला भाव नही है। दयानन्द सरस्वती जी ने अम्बा को माता, अम्बिका को माता की माता अर्थात् मातामही नानी, अम्बालिका को प्रमातामही माना है। वेद में अम्बिका शब्द का प्रयोग वेद वाणी के रूप में भी किया गया है इस प्रकार अम्बिका का अर्थ वेदवाणी भी है। यजुर्वेद में 3/57 एवं 23/18 के छन्दों को देखा जा सकता है। गले में रहने वाली वाक् शक्ति जो बर्हिगामी है। अबि गतौ धातु से जाने वाला अर्थ निकलेगा। मन की शक्ति अर्थात मन में रहने वाली संशयात्मिका शक्ति। महाभारत में अम्बिका को संशय होता है। अम्बिका का अर्थ है – Supreme mother who nourishes all kind of life with care and affection. अम्बा में उत्पन्न करने का भाव तथा अम्बिका में पालन पोषण करने का भाव अधिक है। (**अम्बालिका का अर्थ** – जिसने अम्बा इस नाम को ग्रहण किया है या अम्बा (दुर्गा) की शक्ति को धारण किया है। ला धातु का अर्थ ग्रहण करना है। अम्बाला शहर का नाम इसलिए अम्बाला है क्योंकि उसने अम्बा को ग्रहण किया है अर्थात् वहाँ अम्बा देवी का मन्दिर है। अम्बा देवी की शक्ति या गुण को धारण करने वाली स्त्री अम्बालिका होगी। अम्बालिका इच्छा शक्ति का प्रतीक है। इस नाम का अर्थ हुआ इच्छाशक्ति स्वरूपा। गले में रहने वाली वाक् शक्ति जो अन्तर्गामी है। बुद्धि की शक्ति अर्थात बुद्धि में रहने वाली निश्चयात्मिका शक्ति। महाभारत में अम्बालिका बुद्धि से निश्चय कर लेती है। ला धातु का अर्थ ग्रहण करना भी होता है। जिसने अम्बा नाम को धारण किया है। अम्बाला शहर का अर्थ है कि जिसने अम्बा देवी को धारण किया है अर्थात जहाँ अम्बा देवी का मन्दिर है। ल पृथ्वी का बीजमंत्र है अर्थात ल से पृथ्वी या सम्पूर्ण विश्व का बोध होता है। विश्वरूपी माता स्वरूपा।)

581. **सुरभि** – सुगन्ध स्वरूपा। बसन्त ऋतु के समान आनन्द देने वाली। सुरभि के कई अर्थ हैं जैसे बसन्त, चैत्र मास, स्वर्ण, जायफल, सुगन्धित वस्तु। जायफल के समान रोगनिवारिका अर्थात कष्टनिवारिका, यह अर्थ भी कर सकते हैं।

582. **सिद्धा** – अष्ट सिद्धियों से युक्त। अतिप्राकृतिक शक्तियों से युक्त। पूर्णत्व अर्थात मोक्षावस्था को प्राप्त। जो स्वयं सिद्ध है जिसके दर्शन से व्यक्ति के कार्य सिद्ध हो जाते हैं। जो अपने अस्तित्व एवं अपने गुणों तथा कार्यों के लिए किसी पर भी निर्भर नहीं है।

583. **सिद्धविद्याधरार्चिता** – सिद्धों और विद्याधरों द्वारा अर्चित। अर्चना में देवी – देवता पर या उनकी प्रतिमा/फोटो पर बाह्य सामग्रियों जैसे फूल, चंदन, चावल चढ़ाए जाते हैं।

584. **सुदीक्षा** – अच्छे यज्ञसंस्कार स्वरूपा। यज्ञ करने के लिए पात्र बनने के लिए कुछ संस्कार या क्रियाकलाप किये जाते थे जो दीक्षा कहलायी जाती थी। सुन्दर दीक्षा (विशेष प्रकार की दीक्षा) स्वरूपा। शोभना दीक्षा/अच्छे फल देने वाले मन्त्रानुष्ठान स्वरूपा।

585. **लेलिहाना** – लपलपाती जीभ वाली। सर्प अर्थात् विशेष गति करने वाली, रजोगुण से युक्त (जीभ चलाना, लपलपाना अर्थात रजोगुण से युक्त)। लेलिहान का अर्थ सर्प है अतः कालसर्पिणी रूपा यह अर्थ होगा अर्थात सर्प की तरह प्रलय काल में संसार का संहार कर देने वाली। लेलिहान का अर्थ चखने या चाटने वाला भी होता है। सबको चाटने वाली, गरीबी को चाटने वाली। प्रलय काल में पूरे विश्व को चाटती है अर्थात नष्ट करती हैं।

586. **कराला** – करों से अर्थात कर्मों से सुशोभित अर्थात श्रेष्ठ कर्म करने वाली। करैः अलिता इति कराला। कर (हाथ) से ही कर्म किये जाते हैं अतः कर कर्म का प्रतीक हैं। कटे हुए हाथों से सुशोभित। काली जी कटे हुए हाथों को अपनी कमर में बाँधे रहती हैं। पूर्ण, श्रेष्ठ, जो ऊपर उठा हुआ है। सामान्य से उन्नत को कराल कहते हैं। जैसे सामान्य दाँत नीचे की ओर होते हैं पर अगर दाँत आगे निकले हो तो करालदन्त कहा जाता है। कराल का अर्थ भयंकर, पूर्ण, श्रेष्ठ, ऊपर उठा हुआ होता है। आगे निकले हुए दाँतों वाली यह अर्थ कर सकते हैं। सामान्य से अधिक शक्ति सम्पन्नता, सौंदर्य, गुण भी होते हैं।

587. **विश्वपूरका** – विश्व के सभी पदार्थों को पूर्ण करने वाली।

588. **विश्वसंधारिणी** – विश्व को सम्यक् रूप से धारण करने वाली

589. **दीप्ति** – कान्ति, उजाला, प्रकाश, चमक या आभा स्वरूपा। ज्ञान का प्रकाशस्वरूपा जिससे विवेक उत्पन्न होता है और अज्ञान का अन्धकार दूर होता है। वह शक्ति या तत्व जिसके योग से वस्तुओं आदि का रूप आँख को दिखाई देता है। शोभित होने की अवस्था या भाव स्वरूपा। अलौकिक नायिका स्वर्गीय नायिका।

590. **तापनी** – दैत्यों को कष्ट देने वाली। भक्तों के ताप (कष्ट) को ले जाने वाली अर्थात दूर ले जाने वाली अर्थात हटाने वाली। नी धातु का अर्थ होता हे ले जाना।

591. **ताण्डवप्रिया** – शिव का ताण्डव नृत्य है प्रिय जिन्हें अर्थात अच्छा लगता है। ताण्डव नृत्य से शिव जी द्वारा प्रसन्न की जाने वाली। प्रिया का अर्थ प्रसन्न रहने वाली एवं प्रसन्न करने वाली दोनो होता है।

592. **उद्भवा** – उत्पन्न होने वाली (अवतार आदि में)।

593. **विरजा राज्ञी** – ऐसी राज्ञी (परब्रह्ममहिषी) जो विशुद्ध है अर्थात मालिन्यरहित है। यदि विरजा यह अलग नाम होता तो अर्थ होता रजोगुण से रहित। पाप से रहित। यदि राज्ञी अलग नाम होता तो अर्थ होता प्रकाशशीला (राट् अर्थात प्रकाश)। राट् से राज्ञी शब्द बनता है।

594. **तापनी** – तापन अर्थात सूर्य की शक्ति स्वरूपा। तापन अर्थात ग्रीश्म ऋतु की शक्ति स्वरूपा। गरमी देने वाली। शुद्धता या पवित्रता देने वाली। आलसी, निरूद्यमियों को दुःखी करने वाली। उन्मार्ग–गामियों को दुःखी करने वाली अर्थात् गलत रास्ते से पैसा कमाया है तो कष्ट देती हैं। तापनीय उपनिशद् स्वरूपा।

595. **बिन्दुमालिनी** – मोतियों की माला धारण किये हुए। बिन्दु जिस प्रकार गोल होता है उसी प्रकार मोती भी गोल होते हैं अतः बिन्दु का अर्थ मोती भी ले लिया गया है। बिन्दुओं की माला से युक्त। संसार की सभी वस्तुओं और पदार्थों का एक केन्द्र होता है जिसे बिन्दु कहते हैं। ऐसी बिन्दुओं की माला से युक्त क्योंकि समस्त पदार्थ ऊर्जा अर्थात शक्ति अर्थात देवी के ही रूप हैं। नाद, बिन्दु तन्त्र का शब्द है। श्रीयन्त्र में बहुत से बिन्दु होते हैं उन सारे बिन्दुओं को धारण करने वाली। श्रीयन्त्र देवी का ही स्वरूप है। छोटी–छोटी इकाई से बड़ी राशि का स्वरूप धारण करने वाली। इकाई से वृहत्तर राशि का स्वरूप धारण करने वाली। बूँद–बूँद कर समुद्र बनता है।

घनीभूता, अदृष्टा, सभी शक्तियों से युक्त सूक्ष्मतम् कण बिन्दु है जिससे सारे विश्व की उत्पत्ति होती है। ऐसे बिन्दु को धारण करने वाली। पराशक्ति से ही बिन्दु की उत्पत्ति हुई है अतः पराशक्ति ही बिन्दु को धारण किये हुये है। दोनों भौं के बीच के स्थान अर्थात् आज्ञा चक्र से निकलने वाले तेज को भी बिन्दु कहते है। ऐसे तेज को धारण करने वाली। मल् धारणे धातु से माला, माली या मालिनी शब्द बनाने पर धारण करने वाली अर्थ आता है। शब्द का विस्तारहीन मानसिक भाव बिन्दु है। बिन्दु अर्थात शब्द तन्मात्र। इस प्रकार बिन्दुमालिनी का अर्थ हुआ– शब्द तन्मात्र को धारण करने वाली। बिन्दु का अर्थ है वीर्य जो शक्ति या ओज का प्रतीक है। वीर्य संरक्षित होने पर वह सूक्ष्म ऊर्जा में परिवर्तित हो जाता है जो ओज कहलाता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ शक्ति, ओज, तेज को धारण करने वाली। शिव शक्ति मिलन से एक नाद और यह अनाहत नाद घना होने पर बिन्दु बन गया। यह बिन्दु उस बीज की तरह है जिसमें पेड़ की तरह सारा संसार समाया हुआ है। जगत के कारण इस बीज को धारण करने वाली, यह बीज इन्हीं से पैदा हुआ है। शरीर के जितने भी कोश हैं उनके केन्द्र को बिन्दु कहते हैं। प्रत्येक शरीर के जो भी केन्द्र हैं, वे उस शरीर के बिन्दु हैं। बिन्दु है अर्थात शरीर भी है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ शरीरों को धारण करने वाली। सूक्ष्म तेज या ज्ञानरूप अंश भी बिन्दु कहलाता है, इस बिन्दु को धारण करने वाली। बिन्दु शब्द हृदय के लिए प्रयोग किया जाता है। वीर्य मन के अधीन रहता है। वीर्य को धारण करना अर्थात उसे नियन्त्रित रखना अर्थात मन को भी नियन्त्रित रखना इस प्रकार बिन्दुमालिनी का अर्थ हुआ स्थिर चित्त या मन को धारण करने वाली। योग उपनिषद कोश में बिन्दु के कई अर्थ बताये गये हैं जो हैं– वीर्य, मन, मनस्तत्व, ईश्वर, चक्षु, तारक, बिन्दुरूपशिव। जिसके मन में बिन्दु (शिव) हमेशा रहते हैं वह बिन्दुमालिनी है। मल् धारणे धातु होती है।

596. **क्षीरधारा** – दूध की धारा की तरह उज्जवल वर्ण वाली एवं पुष्टि देने वाली। शुद्ध दुग्ध की धारा से विभूषित (अभिषेक के समय दूध की धारा डालते हैं, जब धारा डालते हैं तो देवी उससे विभूषित हो जाती है)। दुग्ध धारा अर्थात दुग्ध सम्पत्ति वाली। लक्ष्मीवान को दूध, दही, घी, सभी मिलता है जिसका तात्पर्य है कि लक्ष्मी जी में ये सभी हैं तभी वे दे पाती हैं।

597. **सुप्रभावा** – सुन्दर प्रभाव वाली, अतिशय प्रभाव वाली। प्रभाव अर्थात किसी पर छाप छोड़ना। इसका प्रभाव अच्छा पड़ता। चित्त पर अच्छा प्रभाव डालने वाली (Impressing) विष्णु भगवान जी सिर से पैर तक बने ठने (Tip Top) रहते हैं क्योंकि उन्हें लक्ष्मी मिली हैं, शंकर जी को लक्ष्मी नहीं मिली इसलिए वे बहुत कम कपड़ों में रहते हैं। पैसे वाले लोगों के प्रति श्रद्धा होती। अन्य लोग नमस्कार करते है यह लक्ष्मी का प्रभाव है।

598. **लोकमाता** – तीनों लोकों को पैदा करने वाली। तीनों लोकों का पालन करने वाली और तीनों लोकों की रक्षा करने वाली।

599. **सुवर्चसा** – सुन्दर तेज से युक्त अर्थात् अतिशय तेज से युक्त।

600. **हव्यगर्भा** – हवन की सामग्री अन्दर धारण करने वाली अर्थात अग्नि रूपा। हव्य का अर्थ हवन सामग्री, आहुति, घी है। जिसके भीतर आहुति विद्यमान है। अग्नि वाली अर्थात तेजस्विनी। हव्यगर्भः का अर्थ है अग्नि। हव्यगर्भः अस्या अस्ति इति हव्यगर्भा।

601. **आज्यगर्भा** – हवन में दिये जाने वाले घी को अन्दर धारण करने वाली (अर्थात अग्नि रूपा)। अग्नि आहूति रूप में दिये गये घी को अपने गर्भ में धारण कर लेती है और फिर देवताओं तक पहुँचा देती हैं। जिसके भीतर प्रातःकालिक होत्र के मन्त्र हैं। इन मन्त्रों को आज्य कहते हैं। वह सूक्त जिसमें ये मन्त्र होते हैं आज्यसूक्त कहलाया जाता है। तात्पर्य है कि ये मन्त्र या यह सूक्त देवी से ही निकलता है। आज्य का अर्थ घी या अन्य हवनीय सामग्री होता है।

602. **जुह्वतो यज्ञसम्भवा** – यज्ञ करने वाले के यज्ञ में उत्पन्न होने वाली। हवन करने वालों के द्वारा यज्ञ से उत्पन्न होने वाली। द्रौपदी यज्ञ से ही पैदा हुई थीं।

603. **आप्यायनी** – तृप्त कर देने वाली। भर देने वाली। शक्ति, समृद्धि से अपने उपासकों को भर देने वाली। तृप्ति स्वरूपा। पूर्णतया सन्तुष्ट कर देने वाली।

604. **पावनी** – शुद्ध या साफ करने वाली। हरीतकी या हरड़ की तरह रोग निवारिका अर्थात कष्टों को दूर करने वाली। पावनी का एक अर्थ हरीतकी या हरड़ भी होता है। गाय स्वरूपा, पावनी का एक अर्थ गाय भी होता है। पवित्र कर देने वाली (पाप, गन्दगी दूर होने पर व्यक्ति पवित्र हो जाता है)।

605. **दहनी** – दुष्टों को जला देने वाली।

606. **दहनाश्रया** – अग्नि है आश्रय जिसका अर्थात अग्नि में भी निवास है।

607. **मातृका** – प्यारी माता स्वरूपा। माता के विशुद्ध स्वरूप को धारण करने वाली। अक्षरस्वरूपा। अक्षर जिनको तान्त्रिक माता की तरह पूजते हैं।

608. **माधवी** – माधव अर्थात कृष्ण की पत्नी या उनकी शक्ति स्वरूपा। माधवी लता (चमेली का एक प्रकार) के समान सुन्दर, आकर्षक और सुगन्धित। मधु विद्या से प्राप्त होने वाली। यह विद्या वेद में है, जो ब्रह्म या आत्मा का साक्षात्कार कराने वाली विद्या है। मधु का अर्थ है मिठास, सुख, आनन्द। आनन्द तो ब्रह्म या आत्मसाक्षात्कार में ही होता है क्योंकि ब्रह्म या आत्मा आनन्द स्वरूप है। मधु में अण् प्रत्यय लगाने से माधव बना जिसका अर्थ है मधु से सम्बन्धित। प्राप्त होने वाली चीज भी सम्बन्धित ही होगी, तभी प्राप्त हो सकती है। स्त्रीलिंग में माधव का माधवी हो गया।

609. **मुख्या** – समस्त देवियों में अग्रगण्य/प्रधान।

610. **मोक्षलक्ष्मी** – मोक्ष देने वाली लक्ष्मी के स्वरूप को धारण करने वाली। मोक्ष रूपी शोभा स्वरूपा। मोक्ष से आनन्द मिलता है अतः यह शोभा है। लौकिक मोक्ष अर्थात कर्ज, बीमारी आदि से मुक्ति और पारलौकिक मोक्ष अर्थात समस्त बन्धनों से मुक्त होकर आत्म स्वरूप में स्थित हो जाना।

611. **महर्द्धिदा** – महान ऋद्धि (=धन, धान्य, संपत्ति आदि) देने वाली, बहुत सम्पन्नता देने वाली। प्रचुर मात्रा में भौतिक धन सम्पत्ति को ऋद्धि कहते हैं। ऋद्धि अर्थात लौकिक सम्पत्ति। कहीं कहीं पर क्षुद्र सिद्धियों को भी ऋद्धि कहा गया है। गायत्री परिवार के लोग ऋद्धि का अर्थ आत्मिक विभूति एवं सिद्धि का अर्थ सांसारिक सफलता किया करते हैं।

612. **सर्वकामप्रदा** – सभी प्रकार के मनोरथों को प्रदान करने वाली अर्थात पूरा करने वाली।

613. **भद्रा** – सभ्य और शिष्ट, साधु प्रकृति वाली। समीचीन फल प्रदान करने वाली। कल्याण करने वाली। मन की चाहत पूरी करना, नौकरी दे दी, शादी हो गई, परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया, मन के अनुकूल अर्थात उस व्यक्ति के लिए कल्याणकारी। यात्रा से सकुशल लौटना भी कल्याण कहलाता है। कल्याण का अर्थ है आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रगति, मोक्ष या आनन्द की प्राप्ति। मानव जीवन के सभी पक्षों की आवश्यकताओं की पूर्ति अर्थात रोटी, कपड़ा, मकान, बिजली, पानी, सड़क, स्वास्थ्य, शिक्षा, मनोरंजन की पूर्ति होना जिससे सारा जीवन सँवर जाऐ कल्याण कहलाता है। (भूतों (प्राणियों) के द्वारा प्राप्त करने योग्य होने से कल्याण का नाम भद्र है। भूतानाम अभिद्रवणीयम् अभिलक्ष्य प्रापपीयम् इति भद्रम्। भ + द्रु + ड > भ + द्र् + अ > भद्र। जिसके होते हुए मनुष्य आनन्दित होता है, वह कल्याणकारक भी भद्र कहलाता है। भवद् + रमु क्रीडायाम् + ड > भद् + र् + अ > भद्र। रम् का अर्थ है आनन्दित होना। जो सुपात्र व्यक्ति को ही प्राप्त होता है। भाजन (पात्र) + र (मत्वर्थे) > भज् + र् > भद्र।

निरूक्त में भद्र शब्द ही ऐसी ही विपत्ति की गई है।)। इस प्रकार भद्रा का अर्थ हुआ, सुपात्र को ही प्राप्त होने वाली। जिसके साथ होने पर व्यक्ति आनन्द अनुभव करता है।

614. **सुभद्रा** – सुन्दर अर्थात् अधिक सुन्दर कल्याण देने वाली अर्थात करने वाली। (पत्नी मिल गयी = कल्याण हो गया, सुन्दर गुणवान पत्नी मिल गयी अर्थात सुन्दर कल्याण अर्थात सुभद्रता हो गई)। कोई भी नौकरी मिल गई = भद्र (कल्याण), आईएएस बन गये सुभद्र। सुभद्र+आ, आ का अर्थ है देना। सुभद्र का अर्थ सौभाग्य, विष्णु, सनत् कुमार मिलता है। सुभद्र + आ, एकाक्षरी कोष के अनुसार आ का एक अर्थ है शक्ति। अतः सुभद्रा का अर्थ हुआ सौभाग्य में रहने वाली शक्ति, भगवान विष्णु की शक्ति, सनत् कुमार की शक्ति। शब्दकोष में सुभद्रा का अर्थ एक गाय का नाम, भगवान कृष्ण की बहन जिसका विवाह अर्जुन के साथ हुआ था। सुभद्रा नामक गाय की तरह कल्याणकारिणी, सीधी। भगवान कृष्ण की बहन सुभद्रा से अभेद है जिनका।

615. **सर्वमंगला** – सभी प्रकार का मंगल देने वाली। ब्रह्मबैवर्त पुराण में हर्ष, सम्पत्ति और कल्याण को मंगल कहा गया है। इन तीनों को देना सभी मंगल देना है। मंगल का अर्थ मोक्ष भी होता है जो पाँच प्रकार का होता है। पात्रता अनुसार इन मोक्षों को देना सभी मंगल को देना है। सभी भक्तों का मंगल करने वाली, भले ही उनकी उपासना में कुछ त्रुटि रह गई हो। सभी उपासकों का मंगल करने वाली अर्थात उपासना में आलस्य, विधि में चूक हो जाने पर भी सभी उपासकों का मंगल अर्थात अच्छा ही करने वाली। अभीष्ट पदार्थों की बिना त्रुटि प्राप्त होना मंगल होना है पर अभीष्ट पदार्थ दूसरों का नुकसान करने वाले न हों। सभी प्रकार का मंगल (आध्यात्मिक, अधिदैविक, अधिभौतिक तीनों) करने वाली। आध्यात्मिक, अधिदैविक, अधिभौतिक इन तीनों क्षेत्रों में उन्नति करने वाली। सभी का मंगल करने वाली। मंगम् लाति इति मंगल अर्थात जो सुख को लाता है वह मंगल है। मम् गलति इति मंगल अर्थात जो दुख को गलाता है नष्ट करता है वह मंगल है। सामान्य रूप से सुख आना और दुख जाना यह मंगल है। भविष्य में अच्छे कार्यों में सफलता मिलना, विघ्न का नाश होना, दुर्घटना न होना, ग्रहों का अनुकूल फल देना, अच्छी संगति मिलना, यह सब मंगल कहलाता है। अंग्रेजी में मंगल के लिए auspiciousness शब्द होता है जिसका अर्थ है कार्य में सफलता मिलना। सभी प्रकार की मंगलकारी वस्तुओं जैसे सिन्दूर, कुमकुम, चूड़ी आदि को धारण करने वाली। अष्टमंगल आठ मंगलकारी पदार्थो के नाम हैं जो हैं – सिंह, वृष (बैल), नाग, कलश, पंखा, वैजयन्ती (पताका), भेरी (वाद्य) और दीपक। दूसरे मत में ब्राह्मण, गौ, अग्नि, स्वर्ण, घी, सूर्य, जल, और राजा। आठ औषधियों से बना घी भी अष्टमंगल हैं जो हैं – वच, कुट, ब्राह्मी, सरसों, पीतल, सारिवा, सेंधा नमक और घृत। आयुर्वेद में अष्टमंगल घृत एक प्रसिद्ध औषधि है।

616. **श्वेता** – सात्विक गुण से युक्त। सफेद (शुभ्र = निष्कलंक) सतोगुण स्वरूपा। शर्करा की तरह अर्थात मधुर बोलने वाली एवं मधुर आचरण वाली। केवल बोलना ही नहीं, अन्य आचरण भी यदि सुख और शीतलता देते हैं, तो वे मधुर ही कहलाये जायेंगे।

617. **सुशुक्लवसना** – अतिशय शुभ वस्त्रों को धारण करने वाली। इतना शुभ्र कि आँखे चकाचौंध हो जाऐ।

618. **शुक्लमाल्यानुलेपना** – शुभ्र माला, सफेद चन्दन आदि लेपन से विभूषित।

619. **हंसाहीनकरी** – जीवित प्राणियों में हंस नामक अजपाजप को नष्ट न करने वाली अर्थात निरन्तर बनाये रखने वाली। साँस के साथ हंस इस शब्द का अपने आप जप होता है अतः यह अजपाजप है। एक यज्ञ का नाम अहीन यज्ञ है जो पाँच दिनों तक चलता है। अहीन अर्थात जिसमें कुछ कमी नहीं रह गई अर्थात कुछ छूट नहीं गया अर्थात यज्ञ के सारे अंग आ गये। हंस अर्थात विवेक शक्ति क्योंकि हंस नीरक्षीर को अलग करता है। विवेक अर्थात अलग करने की शक्ति अर्थात सही और गलत, कर्तव्य और अकर्तव्य को अलग करने की शक्ति। ऐसी विवेक शक्ति जो पूर्णता वाला यज्ञ कर रही हैं। संसार का हित करना या संसार चलाना यज्ञ है क्योंकि यज्ञ की

एक परिभाषा परोपकार करना है। आप जिसके स्वामी हैं, उसे दूसरों की भलाई के लिए लगा देना भी यज्ञ है। अपने भक्तों को मुक्ति से नीचे नहीं करतीं अर्थात नीचे नहीं आने देती। हंस का अर्थ है मुक्ति की अवस्था या ब्रह्मसाक्षात्कार। अहीनकरी का अर्थ है नीचे न करना। हीन का अर्थ है नीचे। अहीन का अर्थ है नीचे नहीं। करी का अर्थ है करने वाली। हंस नाम है अजपाजप या अजपा गायत्री का। देवी ऐसी अजपा गायत्री हैं जो अपने जापक को हीन नहीं होने देती, गिरने नहीं देती अर्थात नीचे की अवस्था में नहीं आने देती। हीन का अर्थ है कम या अधम। परमेश्वर से जोड़ने वाली (हंस = परमात्मा, हीन = हटाना अर्थात् अहीन = जोड़ना)। हंसा अर्थात जो निरन्तर गतिशील रहती। (हन्ति सततम् गच्छति)। हंस + अहीनकरी, अजपाजप के रूप मे अहीन यज्ञ कराने वाली। हंस अर्थात अजपाजप, अहीन यज्ञ अर्थात बहुत दिनों तक चलने वाला जप और अजपाजप तो जिन्दगी भर चलता है। हंसमन्त्र जपने वाले को तुच्छ नहीं होने देती हैं।

620. **हंसी** – हंस की तरह नीर – क्षीर विवेक करने वाली अर्थात गुण दोष की पहचान या ठीक ठीक विवेचना करने वाली। हंस परमात्मा या जीवात्मा का भी नाम है इस प्रकार हंसी का अर्थ ब्रह्मस्वरूपिणी या परमात्म स्वरूपिणी भी होगा। हंस के समान शुभ्र स्वरूप वाली। परमात्मा स्वरूप। श्रेष्ठ गुणों को, श्रेष्ठ भक्ति को ग्रहण करने वाली/ चुनने वाली (हंस रत्न को ही चुनता है)।

621. **हृद्या** – अत्यन्त प्रिय लगने वाली, अच्छी लगने वाली, मन को लुभा देने वाली। गीता में यह शब्द आया है वहाँ इसका अर्थ है हृदय को मजबूत करने वाली, शक्ति देने वाली दिया गया है। हृत+या अर्थात हृदय में जाने वाली या विराजमान। मनोरम चीजों में विराजमान। मनोरम चीजों का कारण।

622. **हृत्कमलालया** – हृदय कमल में निवास करने वाली।

623. **सितातपत्रा** – श्वेत छत्र वाली, छाते वाली। (जो धूप से बचाये वह है, आतपत्र अर्थात् छाता)। आतप का अर्थ है धूप, त्र का अर्थ है रक्षा करना।

624. **सुश्रोणी** – सुन्दर जंघाओं वाली।

625. **पद्मपत्रायतेक्षणा** – कमल पत्र के समान विशाल नेत्रों वाली।

626. **सावित्री** – सूर्य की शक्ति स्वरूपा। सृष्टि को जन्म देने वाली (सूति = जन्म देना)। जो सम्पूर्ण संसार को अपने – अपने कर्मों में लगा देती। (सुवति कर्मणि प्रेरयति इति सविता, सूर्य काम में लगा देता। सूर्योदय के साथ ही पुजारी मन्दिर में, विद्यार्थी पढ़ने में लग जाते हैं)। आदि शक्ति की दो धाराएं हैं – 1. आत्मिकी, 2. भौतिकी। आत्मिकी धारा को गायत्री एवं भौतिकी धारा को सावित्री कहते हैं। गायत्री एक मुख है, उसे एकात्मवाद, अद्वैतवाद, आत्मवाद कह सकते हैं। सावित्री पंचमुखी है। शरीर पाँच तत्वों से बना है। उनकी इन्द्रियानुभूति पाँच तन्मात्राओं के सहारे शब्द, रूप, रस, गन्ध, स्पर्श के रूप में होती है। चेतना का स्पन्दन पाँच प्राणों के सहारे चलता है। पाँच तत्व और पाँच गण मिलकर जिस जीव सत्ता को चलाते हैं उनकी अधिष्ठात्रि सावित्री हैं। पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कर्मेन्द्रियाँ इसी जीवनचर्या का चक्र आगे घसीटती हैं।

627. **सत्यसंकल्पा** – सत्य संकल्प वालीं (जो सोचती हैं, वह पूरा हो जाता है)।

628. **कामदा** – इच्छाओं को देने वाली अर्थात् पूरा करने वाली।

629. **कामकामिनी** – कामदेव की पत्नी रति से अभेद है जिनका। कामनाओं को पूरा करने वाली महिला के स्वरूप को धारण किये हुए। कामिनी अर्थात सुन्दर महिला। शिव जी की पत्नी से अभेद है जिनका। काम अर्थात शिव, कामिनी अर्थात पत्नी। काम के द्वारा भी चाही जाने वाली अर्थात् कामदेव भी जिसे चाहते है। काम को भी भी अतिशय प्रिय लगने वाली। शिव के द्वारा जिनकी कामना की जाती है अर्थात कृपा की कामना की जाती है। कामदेव द्वारा जिनकी कृपा की कामना की जाती है। इच्छा को पूरी करने वाली सुन्दरी या स्त्रीस्वरूपा।

630. **दर्शनीया** – देखने योग्य अर्थात अतिशय सुन्दर या सर्वाधिक सुन्दर। जिनको देखने की सबको अतिशय इच्छा हो। सुन्दर वस्तुओं की शक्ति स्वरूपा या उनमें अंश रूप में विद्यमान। दर्शनीय + आ, आ का एक अर्थ है शक्ति।

631. **दृशा** – दिखाने वाली अर्थात ज्ञान या बोध कराने वाली। दृश्यते अनया इति दृशा। दृक् अर्थात ज्ञान। देखने का अर्थ ज्ञान करना होता है। दृष्टि स्वरूपा। दृष्टि का अर्थ है आँख की ज्योति, खुली आँख। वह शक्ति जिससे प्राणी देखते हैं। आँख की क्रिया जिससे रूप, रंग आदि का ज्ञान होता है। दृष्टि का अर्थ ध्यान, विचार, कृपादृष्टि भी है। दृक ही दृशा हो गया, हलन्त शब्द स्त्रीलिंग में आकारान्त हो जाते हैं जैसे क्षुत्, क्षुधा हो जाता है। अक्षि स्वरूपिणी अर्थात आँख के रूप में। सबकी दृष्टि स्वरूपा। सबको इन्हीं के कारण दिखलाई पड़ता है।

632. **दृश्या** – प्रत्यक्ष जगत स्वरूपा अर्थात दिखाई देने वाले जगत के स्वरूप वाली। दृश्य जगत में विद्यमान शक्ति स्वरूपा। जो देखने में आ सके अर्थात दिखाई दे सके। जो कुछ भी दिखलाई पडता है वह देवी ही है। वह पदार्थ घटना या स्थल जो आँखों के सामने हो दृश्य कहलाता है। दर्शन करने या देखने योग्य। प्रत्येक चीज ऊर्जा अर्थात शक्ति से बनी है और शक्ति ही देवी हैं। परमात्मा भोक्ता भी है और भोग्य भी है अर्थात अपने आपको भोक्ता एवं भोग्य दोनों रूप में परिवर्तित कर देता है। विद्वानों/सहृदयों/साधकों/तपस्वियों के द्वारा दिखलाई देने वाली। वह काव्य जिसका अभिनय किया जा सके, दृश्य काव्य है। ऐसे काव्य स्वरूपा।

633. **स्पृश्या** – छूने योग्य अर्थात् भक्त जनों के द्वारा जिनके चरण कमल छुए जाते हैं।

634. **सेव्या** – सेवा करने योग्य (भक्ति रस द्वारा)। सेवा का अर्थ पूजा करना, आदेश का पालन करना भी होता है। भज् सेवायाम् धातु होती है।

635. **वरांगना** – समस्त श्रेष्ठ अंगों से युक्त। (वर अर्थात श्रेष्ठ)। संसार की सभी स्त्रियों में अति सुन्दर। अंगना अर्थात सुन्दर अंगों वाली स्त्री, उनमें भी वर अर्थात श्रेष्ठ।

636. **भोगप्रिया** – जो पूजा में चढ़ाये गये नैवेद्य से प्रसन्न रहती हैं। आनन्द के भोग से प्रसन्न रहने वाली। प्रिया अर्थात प्रसन्न करने वाली या प्रसन्न रहने वाली। ब्रह्म पहले अकेला था जिससे उसे अच्छा नहीं लगा। इसके बाद द्वैत और नानात्व की रचना की गई जिसमें भोग अर्थात इन्द्रियानुभूति होती है। सुख या विलास जिन्हें प्रिय है। भोग का अर्थ है सुख, विलास। सुख या दुख आदि का अनुभव करना या अपने शरीर पर सहना भोग कहलाता है। भोग है प्रिय जिन्हें (यहाँ भोग = ईश्वर की भक्ति, न कि संसारिक भोग)। भक्ति सर्वश्रेष्ठ भोग है। हृदय भक्ति का भूखा रहे, भक्ति द्वारा भोग करे। भक्तों द्वारा भोग अर्थात प्रसाद चढ़ाना, जिन्हें प्रिय है।

637. **भोगवती** – भोगने वाली अर्थात अनुभव करने वाली। इन्द्रियों से रूप, रस, गन्ध आदि का अनुभव करने वाली। आँख रूप नहीं देखती बल्कि आँख के माध्यम से आत्मा रूप को देखता है। जीभ स्वाद नहीं लेती बल्कि जीभ के माध्यम से आत्मा स्वाद लेती है। आत्मा से ही इन्द्रियों में काम करने की शक्ति आती है। भोग (फण) से युक्त अर्थात नागिन स्वरूपा अर्थात मूलाधार चक्र में स्थित कुण्डलिनी स्वरूपा। धन/सम्पत्ति, सुख से युक्त। भोग का एक अर्थ धनसम्पत्ति है। पाताल गंगा स्वरूपा। भोगवती का एक अर्थ है पाताल गंगा, गंगा, एक प्राचीन नदी, नागों के रहने का स्थान अर्थात नागपुरी। संसार के भक्ति/ज्ञान और वैराग्य के समस्त भोगों से अलंकृत।

638. **भोगीन्द्रशयनासना** – शेषनाग की शैय्या है आसन जिनका। भोगी अर्थात सर्प, इन्द्र अर्थात श्रेष्ठ। भोगीन्द्र अर्थात सर्पों में श्रेष्ठ अर्थात शेषनाग। भगवान विष्णु शेषनाग में लेटे रहते हैं और लक्ष्मी देवी उनके साथ रहती हैं।

639. **आर्द्रा** – दयालु, करूणामयी, कोमल स्वभाव वाली। आर्द्र का अर्थ गीला होता है। जो करूणा या दया से गीली है। 27 नक्षत्रों में छठे नक्षत्र आर्द्रा की शक्ति स्वरूपा। जल से भीगी हुई। समुद्र मन्थन से उत्पन्न होने के

कारण लक्ष्मी जी जल से भीगी हुई हैं। शीतल गुणों वाली अर्थात् जो दूसरों को ठण्डक पहुँचाये, शान्ति दे, उनके दुख रूपी अग्नि को ठण्डा कर दे ऐसे गुण वाली। स्नेह या प्रेम से युक्त। आरात् द्राविणी इति आर्द्रा। आरात् शब्द से आर् ले लिया एवं द्राविणी शब्द का द्रा ले लिया। पास पहुँचकर दुष्टों को या भक्तों के दुर्गुणों को भगा देने वाली अर्थात् हटा देने वाली। पास पहुँचकर पिघलाने वाली अर्थात् भक्तों के कठोर स्वभाव को मृदु या कोमल स्वभाव में बदले देने वाली या अपने कठोर स्वभाव को भी कोमल बना देने वाली। आरात् का अर्थ है पास से, द्राविणी का अर्थ है भगा देने वाली, खदेड़ने वाली या पिघलाने वाली। आरात् द्राविणी। पास से भगाने वाली या पिघलाने वाली। शत्रुओं के पास पहुँचकर उन्हें भगा देती हैं। भक्तों के पास पहुँचकर उनके दुर्गुणों को भगा देती हैं। भक्तों के पास पहुँचकर अपने भावों को पिघला देती हैं अर्थात दया के स्नेह के जल से भिगो देती हैं। भक्त के पास पहुँचकर उन्हें अर्थात भक्तों को पिघला देती हैं अर्थात उनकी कठोरता को पिघलाकर उन्हें प्रेम, स्नेह, करूणामय बना देती है। शीतल प्रकृति वाली अर्थात स्नेह के गुण से भरी हुई। भीगी हुई अर्थात समुद्र मन्थन से निकलने के कारण जिनका शरीर भीगा हुआ था अर्थात लक्ष्मी देवी स्वरूपा। आर्द्रा नक्षत्र स्वरूपा। आर्द्रा नक्षत्र में विराजमान (उसकी शक्ति या गुण के रूप में)।

640. **पुष्करिणी** – पुष्टि कराने वाली। पुष्टि का अर्थ है शरीर की वृद्धि, मजबूती अर्थात शरीर में आवश्यक तत्वों को पहुँचाना जिससे शरीर बढ़े। शरीर की मजबूती कराने वाली।

641. **पुण्या** – पवित्रस्वरूपा। सत्कर्मों का फल देने वाली। पुण्य + आ, आ का अर्थ है देना। पुण्य का अर्थ है जो धर्मविहित हो एवं उत्तम फलदायक हो। साक्षात् पुण्य के स्वरूप को धारण करने वाली। सुकृत स्वरूपा। पवित्र करना अर्थात पाप या विकार हटाना। पुण् धातु का अर्थ अच्छा कर्म करना होता है। अच्छे कर्म या सत्कर्म करने वालों की अनुकूल अर्थात उनका हित करने वाली। तत्र साधु सूत्र से यत् प्रत्यय लगाया है।

642. **पावनी** – तुलसीस्वरूपा या तुलसी से अभेद है जिनका। पावनी का एक अर्थ तुलसी होता है। पवित्र कर देने वाली (बाहर और भीतर दोनों की पवित्रता, जो उनका दर्शन कर लेता पवित्र हो जाता)।

643. **पापसूदनी** – पापों को विनष्ट कर देने वाली।

644. **श्रीमती** – शोभा और सभी प्रकार की सम्पत्तियों से विभूषित। श्री का अर्थ है शोभा, सम्पत्ति। शोभा, ऐश्वर्य और सौभाग्य से युक्त। श्री का अर्थ शोभा, सौभाग्य और ऐश्वर्य है। श्रीललितात्रिपुरसुन्दरी देवी एवं लक्ष्मी जी के लिए प्रायः यह शब्द प्रयोग किया जाता है। श्रेष्ठता से युक्त। श्री का एक अर्थ है श्रेष्ठता। श्री का अर्थ है सर्वविध सम्पत्ति, इसमें भौतिक सम्पत्ति के साथ साथ आध्यात्मिक सम्पत्ति भी आती है, ऐसी सर्वविध सम्पत्ति से युक्त। जगत या ब्रह्माण्ड रूपी धन से युक्त। हिरण्मयं ब्रह्माण्डमेव यस्या स्वं सा सर्वेश्वरी श्रीमती। स्व का अर्थ है धन। श्री का अर्थ है धन–सम्पत्ति। समूचा ब्रह्माण्ड राज्य है और राज्य भी एक सम्पत्ति माना जाता है। शोभा या सुन्दरता से युक्त। श्री का एक अर्थ है शोभा। कान्ति से युक्त। श्री का एक अर्थ पदार्थों में कान्ति। श्री का अर्थ वेद भी है। वेद से युक्त या वेद की भी स्वामिनी। शीर्ष पर स्थित अर्थात उच्च अवस्था में स्थित पंचदेवता श्री हैं। ये पंचदेवता हैं चक्षु, श्रोत्र (कान), मन, वाक् (वाणी) और प्राण। चक्षु (नेत्र) में सूर्य देवता की शक्ति है अतः दैवी शक्ति से युक्त होने के कारण चक्षु भी देवता है। कान में चन्द्रमा, मित्र देवता, यम, वरूण और कुबेर की शक्ति का वास है। मन में गरूड़, शेषनाग, रूद्र, इन्द्र और कामदेव की शक्ति का वास है। वाणी अग्निस्वरूपा है। प्राण मध्यम प्राण है। वेद में लिखा है 'ता वा एताः शीर्षन् श्रियः श्रिताश्चक्षुः श्रोत्रं मनो वाक् प्राणः'। इन पाँच देवताओं का नियमन अर्थात नियन्त्रण करने से भगवान विष्णु को श्रीमान कहा जाता है। नियमन् से मन शब्द ले लिया और मन् से मान् बना दिया। बिना अर्थ बदले अण् प्रत्यय लगाने से मन् का मान् हो जायेगा। ऐसे भगवान विष्णु से अभेद है जिनका। सौन्दर्य के सार से युक्त अर्थात उत्कृष्ट सौन्दर्य होने वाले से

भी उन्हें श्रीमती कहा जाता है। तीनों वेदो के सामवेद स्वरूप को श्री कहते हैं। इस वेद से युक्त अर्थात इस वेद के ज्ञान से युक्त श्रीमती हैं। श्री का अर्थ केवल धन सम्पत्ति ही नही होती बल्कि प्रत्येक अच्छे क्षेत्र में जो श्रेष्ठत्व होता है वह भी है। कला, संगीत, खेल, विज्ञान आदि के क्षेत्र में अर्थात् 64 कलाओं एवं अन्य अच्छे क्षेत्रों में उच्च शिखर पर श्रीदेवी की कृपा से ही पहुँच जाता है। राजाओं में भौतिक, बौद्धिक एवं नैतिक शक्ति भी श्री के कारण ही होती है। जब कहा जाता है कि राजाओं की श्री चली गयी तो इसका तात्पर्य होता है कि उनकी ये शक्तियाँ चली गई है। प्रसिद्धि और Acclaim श्री के कारण ही मिलती है। श्री is force of good position that enables a king to rule it pertains to physical, intellectute and moral power to rule. पदार्थो की कान्ति को भी श्री कहा जाता है। श्रेष्ठ गुण स्वरूपा। गीता के 16 वें अघ्याय में जो दिव्य गुण बताये गये हैं वे ही दैवी सम्पत्ति या श्री हैं। प्रायः घर में समृद्धि का अर्थ है सुख एवं धन–सम्पत्ति के होने से लगाया जाता है। (विष्णु सहस्रनाम में उनके एक नाम श्रीमान् की व्याख्या एक टीकाकार द्वारा अग्र लिखित प्रकार से की है – अंकम् श्रिता श्रीरस्येति श्रीमान्। श्रीवत्सत्वाच्च श्रीमान्। शीर्षणि श्रिताः इति श्रियः शेमुखी बन गया था वह श्रीवत्स कहलाता है। श्री से तात्पर्य श्री वत्स से है क्योंकि एक नियम के अनुसार शब्द का पहला अक्षर लिखने से पूरे शब्द का बोध हो जाता है। शीर्ष पर स्थित अर्थात उच्च अवस्था में स्थित पंचदेवता श्री हैं। ये पंचदेवता हैं चक्षु, श्रोत्र (कान), मन, वाक् (वाणी) और प्राण। चक्षु (नेत्र) में सूर्य देवता की शक्ति है अतः दैवी शक्ति से युक्त होने के कारण चक्षु भी देवता है। कान में चन्द्रमा, मित्र देवता, यम, वरूण और कुबेर की शक्ति का वास है। मन में गरूण, शेषनाग, रूद्र, इन्द्र और कामदेव की शक्ति का वास है। वाणी अग्निस्वरूपा है। प्राण मध्यम प्राण है। वेद में लिखा है 'ता वा एताः शीर्षन् श्रियः श्रिताश्चक्षुः श्रोत्रं मनो वाक् प्राणः'। इन पाँच देवताओं का नियमन अर्थात नियन्त्रण करने से इन्हें श्रीमान कहा जाता है। नियमन् से मन शब्द ले लिया और मन् से मान् बना दिया। बिना अर्थ बदले अण् प्रत्यय लगाने से मन् का मान् हो जायेगा। सौन्दर्य के सार से युक्त अर्थात उत्कृष्ट सौन्दर्य होने वाले से भी उन्हें श्रीमान् कहा जाता है। तीनों वेदो के सामवेद स्वरूप को श्री कहते हैं। जो इन वेदों को जानता है या इन वेदों के द्वारा जाना जाता है उन्हें श्रीमान् कहते हैं। मन् ज्ञाने धातु होती है। जो सभी सम्पदाओं का स्थान है अर्थात जिनमें सभी सम्पदायें रहती हैं। पद अर्थात स्थान या आश्रय। लौकिक, पारलौकिक या अलौकिक जो भी सम्पदायें हैं सभी से तात्पर्य है। शं नाम हैं ब्रह्म् का या वायु का। ब्रह्म या वायु में जो रत है अर्थात संलग्न है, वह सरस्वती या भारती श्री हैं। वह श्री जिनकी पत्नीं हैं। श्रीमान् अर्थात श्री (सरस्वती) से युक्त। श्री का अर्थ द्रौपदी भी है। द्रौपदी दुष्टों को मरवाने के लिए जिनके लिए कारण या प्रेरणा बनी, वे भगवान विष्णु श्रीमान् हैं।)

645. **शुभाकारा** – शुभ शरीर वाली। सुन्दर मंगलकारी स्वरूप वाली। मांगलिक है आकृति जिसकी। कुछ वस्तुएं सूरत से ही मांगलिक होती हैं।

646. **परमैश्वर्यभूतिदा** – सबसे श्रेष्ठ ईश्वर सम्बन्धी अणिमा, लघिमा आदि सिद्धि देने वाली। यहाँ ऐश्वर्य का अर्थ है ईश्वर सम्बन्धी और भूति का अर्थ है अणिमा, लघिमा आदि सिद्धियाँ। अतिशय श्रेष्ठ ऐश्वर्य रूपी विभूति देने वाली।

647. **अचिन्त्यानन्तविभवा** – अचिन्त्य और अनन्त है वैभव जिसका। अचिन्त्य अर्थात कल्पनातीत, जितना तुम सोच नहीं सकते उतना। सोचने से भी परे अनन्त वैभव से युक्त (व्यक्ति सोच भी नहीं सकता कितना वैभव है उनके पास)।

648. **भवभावविभाविनी** – संसार में जो भाव (पदार्थ) हैं, उन्हें प्रकट करने वाली। संसार के पदार्थों को प्रकट करने वाली। भव अर्थात संसार, भाव अर्थात पदार्थ। भगवान शंकर के प्रति भावना बनाने वाली अर्थात भक्ति पैदा

करने वाली। भव अर्थात भगवान शंकर। शंकर के भाव (उच्चकोटि के चिन्तन) को स्पष्ट प्रकाशित करने देने वाली, प्रकट कर देने वाली, बता देने वाली।

649. **निश्रेणी** – सीढ़ी। नसेनी स्वरूपा (स्वर्ग और अपवर्ग को प्रदान करने के लिये)। सीढ़ी से चढ़कर गन्तव्य तक पहुँचते हैं अतः सीढ़ी एक सहारा है। इनके सहारे से अर्थात देवी के सहारे से स्वर्ग, श्रेष्ठ मोक्ष पा सकते है।

650. **सर्वदेहस्था** – सभी प्रकार के शरीरों में स्थित। (84 लाख योनियों में स्थित) (उद्भिज्ज, अण्डज, जरायुज, स्वेदज इन चारों प्रकार के प्राणियों में स्थित) सबके शरीर में स्थित रहने वाली, हर आदमी अपने को सुन्दर देखता, समझता है, सुन्दरता अर्थात लक्ष्मी।

651. **सर्वभूतनमस्कृता** – सभी प्राणियों द्वारा प्रणाम की गयी।

652. **बला** – बल वाली अर्थात शक्ति वाली। बलम् अस्य अस्ति इति बलः, स्त्रीलिंग में बला। बलम् अस्य अस्ति का अर्थ है जिसके पास बल है अर्थात बल वाला। ऋषि विश्वामित्र द्वारा भगवान राम को दी गई बला विद्या स्वरूपा जो एक प्रकार का मन्त्र होता था। इसके प्रभाव से भगवान राम लगातार युद्ध करने के बावजूद शरीरिक रूप से बलवान रहते थे उनमें थकावट नहीं आती थी। उन्हें मानसिक रूप से बलवान रहने के लिए आदित्य हृदय स्तोत्र का सहारा लेना पड़ा था। उपासकों को बल देने वाली। बल+आ, आ का अर्थ है देना। बल वाली अर्थात अतिशय शारीरिक ताकत वाली। विलक्षण शक्ति से युक्त (बल = शरीर की ताकत), (शक्ति = अध्यात्म की शक्ति, मन्त्र की शक्ति। शक्ति में अध्यात्म का पुट ज्यादा होता। शक्ति साधना कहते हैं, पराक्रम साधना नही कहते। पराक्रम स्थूल शक्ति है जो दिखाई देती है, जैसे सिंह का बल)। आपत्ति, कष्ट, भूतप्रेतबाधा का नाश करने वाली। पृथ्वी स्वरूपा। बला का एक अर्थ पृथ्वी है। दक्ष प्रजापति की एक कन्या का नाम बला है। उस कन्या से अभेद है जिनका।

653. **बलाधिका** – बल में अधिक अर्थात अधिक बल वाली। जो बल, पराक्रम में सबसे अधिक है।

654. **देवी गौतमी** – देवी स्वरूपा गौतम ऋषि की पत्नी से अभेद है जिनका। गुण, कर्म स्वभाव, शील से प्रकाशित। देवी = प्रकाशित, गौतमी अर्थात गौतम ऋषि की पत्नी जो उच्च गुण, कर्म, स्वभाव, शील का प्रतीक है। उच्च कोटि की महिलाओं को भी देवी कहा जाता है। सद्गुण जब आदत या आचरण में आ जायें तो उन्हें शील कहते हैं।

655. **गोकुलालया** – गोकुल गाँव है निवास जिनका। गायों के बीच रहने वाली। गोकुल का एक अर्थ है गायों का समूह। गोकुल का एक अर्थ गौशाला अर्थात जहाँ गाय बँधी रहती हैं, भी है। गौशाला में निवास है जिनका।

656. **तोषिणी** – भक्तों को सन्तुष्ट कर देने वाली (मनोवांछित फल देकर)।

657. **पूर्णचन्द्राभा** – पूर्ण चन्द्रमा की कान्ति के समान है कान्ति जिनकी।

658. **एकानन्दा** – अद्वितीय आनन्द स्वरूपा। इसके बराबर दूसरा अनन्द नहीं, दूसरी जगह ऐसा आनन्द नहीं होता। परमानन्द स्वरूपा।

659. **शतानना** – सैकड़ों मुखों वाली। उपलक्षण से सैकड़ों= हजारों = अनन्त, अनन्त मुखों वाली।

660. **उद्याननगरद्वारहर्म्योपवनवासिनी** – उद्यान (फुलवारी या वाटिका), नगरद्वार, धनी लोगों के महल, उपवन (छोटा जंगल, बाग, बगीचा) में निवास करने वाली। उद्यान (फुलवारी या वाटिका), नगर, नगरद्वार, राजमहल, उपवन (छोटा जंगल, बाग, बगीचा) में निवास करने वाली। बगीचा रूपी नगर के द्वार पर जो महल (अर्थात राजभवन) रूपी उपवन है उसमें निवास करने वाली। हर्म्य सेठ लोगों या धनी लोगों के मकान होते थे जो वातानुकूलित जैसे होते थे। इनमें सर्दी में सर्दी नहीं और गर्मी में गर्मी नहीं लगती थी। राजाओं के महल महल

या प्रासाद कहलाते थे। उद्यान शब्द उत्+यान से बना है। यान अर्थात गति करना। मनोरंजन के लिए जिसमें लोग चलते फिरते हैं अर्थात यहाँ चलने फिरने का रास्ता बना हुआ है जैसे आजकल के पार्क वे उद्यान कहलाते हैं जो प्रायः कृत्रिम होता है। उपवन को भी बगीचा कहते हैं पर उपवन में चलने फिरने बैठने की सुविधा होना आवश्यक नहीं है और यह वन का छोटा रूप भी होता है।

661. **कूश्माण्डा** – कुछ मुस्कान के साथ अर्थात मन्द मुस्कान के साथ ब्रह्माण्ड को जन्म देने वाली। कुत्सित अण्ड (अर्थात ब्रह्माण्ड) है जिसके गर्भ से अर्थात् जिसके अन्दर ब्रह्माण्ड है। कुत्सित ब्रह्माण्ड के रूप में है जो। कूष्माण्ड का अर्थ कुम्हड़ा या पेठा भी होता है। कूष्माण्डम् अस्या अस्ति इति कूष्माण्डा अर्थात कूष्माण्ड वाली अर्थात कुम्हड़ा या पेठा वाली अर्थात पूजा में जिन्हें कुम्हड़ा या पेठा चढ़ाया जाता है।

662. **दारूणा** – भयंकर, दुष्टों के लिये भय पैदा करने वाली। भयावह आकृति वाली। दुष्टों के लिए प्रचण्ड दुख स्वरूपा। दारूण ऐसा दुख है जिससे मानो हृदय में शूल पड़ गया हो। दारुणा का अर्थ अक्षय तृतीया भी होता है, अक्षयतृतीया तिथि स्वरूपा। दारुण का अर्थ शिव, विष्णु, राक्षस भी है। दारुण + आ, आ का अर्थ है देना, नाश करना। राक्षसों का नाश करने वाली। शिव या विष्णु की शक्ति स्वरूपा।

663. **चण्डा** – अतिक्रोध वाली। दुष्टों और राक्षसों के समक्ष अतिक्रोध करती हैं। चण्ड का अर्थ असाधारण गुण भी होता है। असाधारण गुण केवल ब्रह्म में होते हैं अतः चण्ड का अर्थ है ब्रह्म। असाधारण गुण जैसे सर्वज्ञत्व, सर्वव्यापकत्व आदि। इस प्रकार चण्डा का अर्थ हुआ ब्रह्म की शक्ति स्वरूपा।

664. **किराती** – किरातिनी का रूप धारण करने वाली पार्वती जी से अभेद है जिनका। किरात के स्वरूप को धारण करने वाली। पार्वती ने एक बार किराती का रूप धारण किया था। उस किराती रूप पार्वती से अभेध है जिनका। किरात एक जंगली जाति होती है। अर्जुन की परीक्षा के लिये भगवान शंकर और पार्वती जी ने किरात – किरातिनी का रूप धारण किया था।

665. **नन्दनालया** – नन्दन वन है निवास स्थान जिनका। (नन्दन वन अर्थात इन्द्र का वन)।

666. **कालायना** – शिव जिनकी ओर गति करते हैं अर्थात पहुँचते हैं। शिव की ओर गति करने वाली अर्थात उनके पास पहुँचने वाली अर्थात उनके साथ रहने वाली। काल का एक अर्थ शिव भी है। काल अर्थात समय की गमन क्रिया स्वरूपा। समय का निरन्तर बीतना ही उसकी गति है। काल का आश्रय अर्थात आधार अर्थात इसी के सहारे काल (समय, मृत्यु) का अस्तित्व है, ये देवी से ही शक्ति पाते हैं। काल की गति वाली। काल है आश्रय जिनका। काल द्वारा/समय विधान द्वारा संसार चलाने वाली। अयन का अर्थ घर भी होता है।

667. **कालगम्या** – समय आने पर ज्ञान का विषय बनने वाली। जब हृदय और मन पवित्र हो जाता है, सभी कर्म नष्ट हो जाते हैं तो देवी ज्ञान का विषय बनती हैं अर्थात प्रत्यक्ष रूप से उनका अनुभव होता है। काल (समय) के द्वारा जानी जानी योग्य। यथासमय प्रतिदिन साधना करो तो मिल जाती है या जानी जाती है। शिव द्वारा जानी जाने योग्य। शिवगुणों से युक्त उपासकों द्वारा जानी जाने योग्य।

668. **भयदा** – (1) दुष्ट दैत्यों को भयभीत कर देने वाली। (उग्र स्वरूप द्वारा)। (2) लोगों को पापों के भयों को देने वाली। पाप से मिलने वाली सजा बताकर लोगों को भयभीत करती हैं। वैदिक शास्त्र भगवान की वाणी होते हैं। शास्त्र का कहना अर्थात भगवान का कहना।

669. **भयनाशिनी** – (भक्तों के) सभी प्रकार के भयों को नष्ट कर देने वाली।

670. **सौदामनी** – बिजली की तरह अतिशय चमकने वाली। सौदामनी नामक अप्सरा की तरह अत्यन्त सुन्दर। सौदामनी नाम की रागिनी स्वरूपा।

671. **मेघरवा** – मेघ के समान भयंकर गर्जन करने वाली। रव का अर्थ है ध्वनि या नाद।

672. **दैत्यदानवमर्दिनी** – दैत्य और दानवों का मर्दन करने वाली अर्थात नष्ट कर देने वाली। दैत्य मारता है मारकर छोड देता। दानव मारता भी है एवं उसे खा भी जाता है। दानव दैत्य से ज्यादा भयानक है। असुर = असु (प्राण) लेने पर प्रसन्न इति (र = रमते, प्रसन्न होना) दैत्य मारता, सताता है। दैत्य का संबंध प्रायः बड़े आकार से होता है जिसे कहते हैं दैत्याकार जबकि दानव का संबंध माया विद्या से होता है, दानव मायावी होतें है। जिनसे यज्ञ की रक्षा की जाती है उन्हें राक्षस कहतें हैं। रहसि अक्ष्णोति इति राक्षस्, एकान्त में मार देता है वह राक्षस है। रहसि अर्थात एकान्त में और अक्ष्णोति अर्थात हिंसा करते हैं, मार देते हैं। राक्षस प्रायः मनुष्यों को खा जातें हैं। किसी व्यक्ति को दैत्य कहने पर दैत्याकार (विशाल आकृति) एवं क्रूरता का बोध होता है।

673. **जगन्माता** – संसार की जननी। जगत में माता की तरह आदरणीय या पूजनीय।

674. **अभयकरी** – भक्तों या उपासकों को निर्भीक (भय रहित) कर देने वाली। मोक्ष देने वाली। अद्वैत की अवस्था में अभय होता है और अद्वैत की अवस्था मोक्ष है। भय तभी होता है जब कम से कम दो हों।

675. **भूतधर्ती** – विश्व के समस्त प्राणियों को धारण करने वाली (चींटी से लेकर हाथी, मनुष्य, विभिन्न देवयोनि आदि सभी प्राणियों को धारण करने वाली)।

676. **सुदुर्लभा** – सर्वसामान्य के लिये अति दुर्लभा/अत्यधिक कठिन। बड़े बड़े भक्त ही पा सकते हैं।

677. **काश्यपी** – कश्यप ऋषि के वंश में उत्पन्न। पृथ्वी स्वरूपा। कश्यप की पुत्री अर्थात पृथ्वी स्वरूपा। प्रजा स्वरूपा या प्रजा में अंश रूप से विद्यमान। काश्यपी का अर्थ पृथ्वी, भूमि, प्रजा है। समस्त प्राणी देवी की प्रजा हैं और देवी ब्रह्माण्ड की महारानी हैं। सूक्ष्म से सूक्ष्म अर्थात् सभी कुछ देखने वाली या जानने वाली। ऐसा कहते है कि पश्यक शब्द ही वर्णों के आगे–पीछे होने से कश्यप हो गया। ब्रह्माण्ड की प्रत्येक गतिविधि को देखने वाली या जानने वाली। स्वार्थ (बिना अर्थ बदले) में अण् प्रत्यय लगाने से कश्यप काश्यप हो गया और स्त्रीलिंग में कश्यपी हो गया। शास्त्रों में चिकित्सक के लिए कश्यप शब्द आया है क्योंकि वह रोग की जड़ तक पहुँच जाता है अर्थात् अत्यन्त सूक्ष्म तत्व तक पहुँच जाता है। बहुत से रोगों के लक्षण मिलते जुलते है अतः रोग की पहचान करना बेहद आवश्यक है जो तभी सम्भव है जब आप उसकी जड़ को देख लें। कश्य अर्थात सोमरस या आनन्द। आनन्द का पान करने वाली अर्थात जीवात्मा स्वरूपा काश्यपी है। आत्म प्रकाश वाली। कश्य का अर्थ है प्रकाश। सर्वदृष्टा अर्थात् जीवात्मा या आत्मास्वरूपा। तत्वदृष्टा। पश्यक शब्द का कश्यप हो गया। पश्यक का अर्थ है देखना। बिना अर्थ बदले अण् प्रत्यय लगाने से कश्यप काश्यप हो गया और स्त्रीलिंग में काश्यपी हो गया।

678. **शुभदात्री** – शुभ देने वाली। मानव जीवन के अभावों को पूरा करने वाली या परम लक्ष्य अर्थात मोक्ष को पाने के लिए आवश्यक साधन जैसे सद्गुरू, साधना, भक्ति देने वाली। अभाव की पूर्ति करना एवं बड़े लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक बनना शुभ कहलाता है। रोटी, कपड़ा अभाव की पूर्ति करते हैं अर्थात शुभ हैं। गुरू का सान्निध्य परम लक्ष्य अर्थात मोक्ष प्राप्ति में सहायक है अतः शुभ है। अभ्युदय और मोक्ष, तत्व ज्ञान देने वाली। जो परिणाम में अन्तिम रूप से अच्छा होता है वह शुभ है। शुभ का एक अर्थ समाज और व्यक्ति के बीच में पारस्परिक प्रेम, स्वास्थ्य और सुख भी होता है।

679. **शुभा** – जिनका दर्शन शुभ है अर्थात शुभ स्वरूपा। इनके दर्शन से मंगल होता है और पाप, बाधायें नष्ट होती हैं। शुभ अर्थात मंगलकारी, हितकारी, श्रेष्ठ फलदायक, पवित्र। शुभा अर्थात मंगलस्वरूपा या कल्याण स्वरूपा। शुभ+आ, आ का अर्थ है देना अतः शुभ का अर्थ हुआ शुभ देने वाली अर्थात शुभ करने वाली। हर प्रकार के अच्छे कार्यों (में सफलता)/ अच्छी विद्या/बुद्धि देने वाली। (शुभ यानि परिणाम में अच्छा हो, व्यक्ति,

समाज के अच्छे के लिये हो, दवाई भले ही कड़वी हो, परिणाम में अच्छी = शुभ होती है। दुष्टों का विनाश भी शुभ है क्योंकि इससे अच्छे लक्ष्य अर्थात समाज में शान्ति बनाये रखने एवं धर्म की स्थापना करने में सहायता मिलती है)।

680. **वनमाला** – वनमाला से अलंकृत। वह माला जो घुटनों तक लम्बी होती है वनमाला है। वनमाला अस्याः अस्ति इति वनमालः, स्त्रीलिंग में वनमाला। जंगली फूल (वैजयन्ती) से बनी माला वनमाला है, उसे धारण करने वाली। वनम् (जलम्) मलते इति वनमाला अर्थात जल को धारण करने वाली अर्थात जल में रहने वाली।

681. **वरा** – अतिशय श्रेष्ठ (सुन्दरता, बल, बुद्धि, विद्या, ऐश्वर्य, धन सभी में)। जिसे सभी प्राप्त करना चाहते। (व्रियते इति वरा)। वर का अर्थ कुमकुम/केसर दिया गया है। वरम् अस्या अस्ति इति वरा अर्थात कुमकुम या केसर धारण करने वाली। वरा का अर्थ त्रिफला या गुडूची भी है। त्रिफला या गुडूची के समान रोग निवारिका अर्थात सभी कष्टों को दूर करने वाली। वरा का अर्थ गुड़हल भी है। वरा अस्या अस्ति इति वरा अर्थात गुड़हल वाली अर्थात जिन्हें गुड़हल चढ़ाये जाते हैं। वम् राति इति वरा। संयम, गुण देने वाली। जल (जीवन) देने वाली। एकाक्षरीकोश में व का अर्थ संयम, जल दिया गया है।

682. **धन्या** – बहुत पुण्यों वाली अर्थात पुण्यवान। पुण्य कर्म रूपी धन या अन्य जितने भी धन के रूप हैं उनसे युक्त। पुण्य अर्थात सत्कर्म। धन देने वाली। धन्य (विष्णु) की शक्ति स्वरूपा। जो सौभाग्यशालिनी हैं। धन से युक्त। धनं याति इति धन्या अर्थात धन की ओर जाने वाली या धन प्राप्त करने वाली। संस्कृत में गमन का अर्थ प्राप्त करना, जानना भी होता है। धन देने वाली। देवी देवता, जो भी उनके पास होता है, उसे दूसरों को दे देती हैं। धनं यमयति इति धन्या। धन पर नियन्त्रण करने वाली अर्थात किसको कितना धन देना है, इसका निर्धारण करने वाली। धनं लब्धा इति धन्या सुकृति अथवा पुण्यवान। अमरकोश में लिखा है कि सुकृती, पुण्यवान और धन्य ये शब्द पर्यायवाची हैं। अच्छे कर्म करने वाली, यह अर्थ हुआ। जुहोत्यादि गण की धातु धन धान्ये में अच् प्रत्यय लगाने से धनम् शब्द बनता है। अष्टाध्यायी के सूत्र 'धन गणं लब्धा' इति यत् से प्राप्त करने के अर्थ में धन शब्द से यत् प्रत्यय लगाकर धन्या बना। पुण्यकर्म करने वाली अर्थात भक्तों की रक्षा, उनके श्रेष्ठ मनोरथों को पूरा करना, धर्म की रक्षा करना आदि पुण्य करने वाली। पुण्यकर्म अर्थात जो भविष्य में अच्छा फल दे या पवित्र करे अर्थात पाप या दोष हटाये। पुण्यरूपी धन से युक्त अर्थात् अच्छे या श्रेष्ठ कर्म करने वाली। भाग्यशालिनी या भाग्यशालिनी महिलाओं में विराजमान। उदार। धन वही बांट सकता है जो उदार होगा। प्रशंसनीया। व्यवहार में कहते है कि आप धन्य है। इसका तात्पर्य है कि आप प्रशंसा के पात्र है। निरपेक्षो गुणेः पुर्णो धन्यः। धन से पूर्ण, सद्‌गुण भी धन है, ज्ञान भी धन है, आपने विद्याधन शब्द सुना होगा। निरपेक्ष गुण का तात्पर्य है जो अपने आपमें अच्छे हैं अर्थात हर स्थिति में ज्यों का त्यों होते हैं। तस्मै हितम् सूत्र से धन में यत् प्रत्यय लगाने से धन्या शब्द बनता है जिसका अर्थ है धन के अनुकूल अर्थात् जिसे धन दिया जाना चाहिए पर यह धन देने वाली के अर्थ में भी प्रयुक्त होने लगा है। तत्र साधु सूत्र से भी यत् प्रत्यय लगाकर धन्या शब्द बनता है जिसका अर्थ है धन में निपुण। सम्भवतः धन में निपुण का अर्थ धन देने में निपुण किया गया होगा। मनु की एक कन्या का नाम भी धन्या है जिसका विवाह ध्रुव के साथ हुआ था, उस कन्या से अभेद है जिनका। वनदेवी एवं उपमाता को भी धन्या कहा गया है। छोटे आँवला को भी धन्या कहा गया है। तब इस नाम का अर्थ होगा आँवले की तरह अर्थात् आँवले के समान रोग निवारिका अर्थात् कष्ट निवारिका। शब्द के आगे ''के समान'' लगाने से भी शब्द का अर्थ निकलता है। हमें व्यवहार से देखना पड़ता है कि किस गुण या कर्म के कारण सामान्यतः है।

683. **धन्येश्वरी** – धन्यों की भी स्वामिनी (धन्य = पुण्यशील, अच्छे लोग)। धन्यों की आराध्या। धन्यों में जो सबसे श्रेष्ठ हो।

684. **धन्या** – दूसरों के द्वारा जिन्हें धन्यवाद दिया गया या जिनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त की गई या जिन्हें अभिनन्दित किया गया अर्थात सराहना की गई। प्रशंसा या बड़ाई के योग्य। श्रेष्ठ कर्म करने के कारण लोगों द्वारा धन्यवाद दिये जाने के योग्य हैं।

685. **रत्नदा** – सद्गुणरूपी रत्नों को देने वाली या अच्छे संस्कार रूपी रत्नों को देने वाली। रत्नों अर्थात श्रेष्ठ पदार्थों को देने वाली। पशु रत्न, मनुष्य रत्न, विद्या रत्न, साधना रत्न आदि सभी रत्न हैं। रत्नों अर्थात आभूषणों में जड़े जाने वाले बहुमूल्य चमकीले पदार्थों या पत्थरों को अपने उपासकों को देने वाली। माणिक्य, हीरा पन्ना, मोती आदि भी प्रस्तरों में श्रेष्ठ है। रत्न का अर्थ केवल माणिक्य भी होता है। बहुमूल्य पत्थर जो आभूषण आदि में जड़े होते हैं वे रत्न हैं। जातियों में जो श्रेष्ठ है वह रत्न है।

686. **वसुवर्धनी** – पृथ्वी लोक में सम्पत्ति (धन सम्पत्ति) बढ़ाने वाली।

687. **गान्धर्वी** – श्रेष्ठ गायन विद्यास्वरूपा। गन्धर्व में अण् प्रत्यय लगाने से गान्धर्व शब्द बनेगा जिसका अर्थ है जो गन्धर्व से सम्बन्धित हो। गायन विद्या गन्धर्व से सम्बन्धित होने के कारण गान्धर्व है। स्वार्थ (अर्थ नहीं बदलना) में अण् प्रत्यय लगाने से बनें गान्धर्व शब्द का अर्थ गन्धर्व ही होगा। तब गान्धर्वी का अर्थ होगा गन्धर्वों की पत्नी अप्सराओं के समान अर्थात अतिसुन्दर। श्रेष्ठ गायन करने वाली अर्थात परमात्म तत्व का श्रेष्ठ गायन करने वाली। गन्धर्वविद्या में पारंगत। गायन विद्या में पारंगत/ सामवेद में पारंगत।

688. **रेवती** – बलराम की पत्नी रेवती से अभेद है जिनका। वैदिक कोष में रे का एक अर्थ धन दिया गया है। सभी प्रकार के धनों से युक्त। रेवती नक्षत्र स्वरूपा या रेवती नक्षत्र के समान सुन्दर। र+इ+वती। धन और विद्या से युक्त। एकाक्षरी कोष के अनुसार र का अर्थ है धन और इ का अर्थ है विद्या। रेवृ प्लवगतौ धातु होती है जिसका अर्थ होता है चलना। उछलकर चलने वाली अर्थात उछलकर या झपट्टामारकर शत्रुओं पर आक्रमण करने वाली। उछलकर गति करने वाली या निरन्तर गतिशील यह रेवती शब्द का अर्थ होगा। रू शब्दौ धातु से भी यह शब्द बन सकता है। रू से रवति बनता है और पृशोदरादि नियम से र का रे हो सकता है। इस प्रकार अर्थ होगा शब्द करने वाली। (कृष्ण और बलराम एक ही तत्व है)

689. **गंगा** – गंगा नदी की तरह पापनाशिनी अर्थात जो अपने भक्तों या उपासकों के पापों का नाश कर देती है। जो निरन्तर चलती रहती हैं अर्थात गति थमती नहीं है अर्थात जो हमेशा क्रियाशील हैं। निरन्तरम् गच्छति इति गंगा। पुनः पुनः गच्छति इति गंगा। जो अपने भक्तों को भगवान के चरणों तक पहुँचा देती है। गमयति भगवत्पदान् इति गंगा। मोक्षार्थियों द्वारा जिनका आश्रय लिया जाता है, प्राप्त किया जाता है। मोक्षार्थिर्भिः गम्यते इति गंगा। गंगा स्नान से, गंगा पूजन से पाप नष्ट होकर मोक्ष मिलता है अतः भक्त गंगा जी का आश्रय लेते हैं।

690. **शकुनि** – सब कुछ करने में समर्थ। शक्नोति इति शकुनिः। जो प्रत्येक कार्य करने में समर्थ है। शक्नोति इति शकुनि, जो समर्थ है वह शकुनि है। पक्षी (जो शुभ माने जाते हैं) तद्रूपा जैसे नीलकण्ठ, गरूड़, हंस आदि। पक्षी की तरह अर्थात पक्षी की तरह आकाशगामिनी। जीवात्मा स्वरूपा। उपनिषद में पक्षी को जीवात्मा का प्रतीक माना गया है।

691. **विमलानना** – निर्मल मुख वाली। उनके मुख में कोई दाग धब्बा नहीं। बच्चे जैसा मासूमियत (निर्दोष) वाला है मुख जिसका।

692. **इडा** – पृथ्वी स्वरूपा (इला = इडा, संस्कृत में ल = ड होता है)। इडा नाड़ी स्वरूपा अर्थात् जो चन्द्र प्रकृति की होने के कारण शीतलता, प्रसन्नता प्रदान करती हैं।

693. **शान्तिकरी** – शान्ति प्रदान करने वाली। मन में किसी प्रकार की तरंग का न उठना शान्ति की अवस्था है। चित्तवृत्ति चित्त या मन की तरंग है।

694. **तामसी** – तमोगुण से युक्त (प्रलय की स्थिति मे, तामसी रूप प्रकट होता है।) राक्षसों के संहार के समय तमोगुणी हो जाती हैं अर्थात क्रोध आदि गुण से युक्त हो जाती हैं। पालन के समय सतोगुणी, जन्म में रजोगुणी होती हैं। तमोगुण सृष्टि प्रक्रिया के दौरान भी जरूरी है क्योंकि यह जड़त्व अर्थात रोकने का कार्य करता है। पृथ्वी की गुरूत्वाकर्षण शक्ति इसी तमोगुण का परिणाम है। यदि यह न हो तो मनुष्य आकाश में गेंद फेके तो लौटकर के ही न आये। रामायण में वर्णित तामसी नदी के स्वरूप वाली।

695. **कमलालया** – कमल है निवास/आश्रय/बैठने–लेटने का स्थान जिनका।

696. **आज्यपा** – घी पीने वाली अर्थात घी से उपलक्षित सभी पौष्टिक पदार्थों का सेवन करने वाली। अग्नि की शक्तिस्वरूपा। आज्यपः+आ, आज्यपः का अर्थ है अग्नि, आ का अर्थ है शक्ति। आज्य का अर्थ है घी। यज्ञ में घी की आहुति प्राप्त करने वाली अर्थात् अग्नि रूपा। आज्यप+आ, अग्नि का नाश करने वाली अर्थात भीषण आग लगी हो तो इनके मन्त्र से अग्नि शान्त हो जाती है। आ का एक अर्थ है नाश करना। घी की रक्षा करने वाली अर्थात अनिष्ट प्राणियों से घी की रक्षा करने वाली। यज्ञ के दौरान अनिष्ट पशु–पक्षी हवन में प्रयुक्त होने वाले घी को नष्ट न कर दें, इसके लिये किसी व्यक्ति को जिम्मेदारी दी जाती है। व्यक्ति ने रक्षा की अर्थात उस व्यक्ति में रहने वाली शक्ति ने रक्षा की अर्थात देवी ने रक्षा की। (अग्नि स्वरूपा। आज्य का अर्थ है पिघला हुआ घी। आज्यं पिबति इति आज्यपा अर्थात अग्नि। अग्नि घी को पी जाती है अर्थात ग्रहण कर लेती है, इस कारण अग्नि का एक नाम आज्यपा है। आज्यपा+ आ, अग्नि की शक्ति स्वरूपा। एकाक्षरी कोश में आ का एक अर्थ शक्ति दिया गया है।)

697. **बज्रकौमारी** – अक्षत कौमार्य वाली अर्थात जिनका कौमार्य कभी भंग नहीं होता। वज्र अर्थात ऐसा हथियार जो कभी भंग नहीं होता। विशुद्ध कौमार्य वाली। वज्र अर्थात कठोर। माघ कवि ने कठोर शब्द का प्रयोग पूर्णता के अर्थ में किया है और पूर्ण का अर्थ है विशुद्ध। कठिन कौमार्य व्रत धारण करने वाली (जो टूटे नहीं ऐसा व्रत)। जिनका कौमार्य कभी खण्डित नहीं होता। वज्र अर्थात कठोर अर्थात जिसको तोड़ा नहीं जा सकता।

698. **सोमपा** – सोमपान करने वाली।

699. **कुसुमाश्रया** – फूल है आश्रय जिनके अर्थात फूलों में निवास करने वाली। कमल के पुश्प में विराजमान, ऐसा चित्र आपने देखा होगा। फूलों का आश्रय अर्थात फूल जिनमें रहते हैं अर्थात फूलों को धारण करने वाली। हाथ में कमल आदि का फूल धारण किये रहती हैं।

700. **जगत्प्रिया** – संसार जिनसे स्नेह रखता। संसार से स्नेह रखने वाली। संसार से उपलक्षित सभी प्राणियों/वस्तुओं से स्नेह रखने वाली। उपलक्षण का तात्पर्य है कि एक शब्द बोलने से कई का बोध हो जाता है। जैसे किसी ने कहा कि रोटी खा लो तो यहां रोटी से सब्जी दाल चावल आदि का भी बोध हो जाता है अर्थात रोटी अन्य सभी चीजों का उपलक्षण है। जगत से प्रसन्न रहने वाली, क्योंकि जगत उनकी सन्तान है। जगत को प्रसन्न करने वाली। प्रिया का अर्थ प्रसन्न रहने वाली एवं प्रसन्न करने वाली, दोनों होता है।

701. **दुर्जया** – जिन्हें जीतना बहुत कठिन है।

702. **सरथा** – रथ के सहित अर्थात् रथ पर आरूढ होकर चलने वाली।

703. **खगवाहना** – पक्षी है वाहन जिनका। गरूड़ या उल्लू पर सवार होती हैं।

704. **मनोभवा** – कामदेव की शक्ति स्वरूपा। कामदेव का एक नाम मनोभव भी है। मन से उत्पन्न होने वाली। मन से होने वाली इच्छा स्वरूपा।

705. **कामचारा** – इच्छानुसार विचरण करने वाली। तीनों लोकों में निर्बाध गमन करने वाली।

706. **सिद्धचारणसेविता** – सिद्धों और चारणों के द्वारा सेवित अर्थात इनके द्वारा जिनका भजन पूजन होता है। सिद्ध चारणों द्वारा सेवा की जाने वाली। चारण स्तुति गान करने वाले होतें हैं। यहां सिद्ध का अर्थ सिद्धियों में सिद्ध या अपने काम में दक्ष कर सकते हैं।

707. **व्योमलक्ष्मी** – आकाश की शोभा स्वरूपा। आकाश में ग्रह नक्षत्रों की चमक से आकाश में शोभा होती है। आकाश की शोभा स्वरूपा। आकाश में जो तारामण्डल दिखाई देते हैं वे आकाश की शोभा हैं। लक्ष्मी का एक अर्थ शोभा है। आकाश की लक्ष्मी। आकाश की तरह सर्वव्यापी कान्ति से युक्त। आकाशीय तत्व से सम्बन्धित शोभा स्वरूपिणी। वायु रहित। आकाश में ग्रह, तारे नक्षत्र जगमगाते दिखते जो आकाश की शोभा है। लक्षयति इति लक्ष्मी अर्थात लक्ष्मी का अर्थ है दिखाने वाली। आकाश को दिखाने वाली अर्थात आकाश को प्रकट करने वाली। लक्ष्मी शब्द का सम्बन्ध लक्ष्य से है जिसे तन्त्र में सार (essence) से भी सम्बोधित किया गया है। आकाश का सार अर्थात आकाश का अपरिहार्य तत्व, स्थिर अंश, जिसके बिना आकाश का अस्तित्व नहीं है।

708. **महालक्ष्मी** – वैकुण्ठ में निवास करने वाली लक्ष्मी क्योंकि यह सभी कलाओं (आत्मिक शक्तियों) से युक्त है। अन्य लक्ष्मियाँ जैसे राज्य लक्ष्मी, गजलक्ष्मी, महालक्ष्मी के अंश हैं। न्याय के रास्ते से, परिश्रम से प्राप्त की गयी धनसम्पत्ति रूपा। न्याय और परिश्रम से प्राप्त धन सम्पत्ति को महालक्ष्मी कहते हैं। महालक्ष्मी का एक अन्य अर्थ है – Who cater physical needs of all living beings in the form of nature. यहाँ महा का अर्थ सभी या सर्वव्यापी है।

709. **तेजोलक्ष्मी** – तेजस्विनी लक्ष्मी स्वरूपा या तेजस्विनी शोभा स्वरूपा। तेज को दिखाने वाली अर्थात प्रकट करने वाली। लक्षयति इति लक्ष्मी। तेज का सार स्वरूपा। तेज स्वरूपा लक्ष्मी या तेज से सम्बद्ध लक्ष्मी। अग्नि में जो शोभा है वह तेजो लक्ष्मी है। तेज के द्वारा लक्ष्मी रूप में देदीप्यमान। सूर्य, अग्नि में विद्यमान शोभा स्वरूपा। सूर्य, अग्नि तेज स्वरूप होतें हैं।

710. **सुजाज्वला** – सुन्दर अधिक दीप्त होने वाली। ज्वल अर्थात दीप्त होना। ज्वल ज्वल से जाज्वल शब्द बना और जाज्वल का अर्थ है अधिक दीप्त होना। अतिशय चमकने वाली। श्रेष्ठ कान्ति, कान्ति से युक्त।

711. **रसलक्ष्मी** – रस को दिखाने वाली अर्थात प्रकट करने वाली। लक्षयति इति लक्ष्मी। रस का सार स्वरूपा। रसस्वरूपा लक्ष्मी। रस में जो शोभा है वह रस लक्ष्मी है क्योंकि लक्ष्मी का अर्थ है शोभा। रस से सम्बन्धित लक्ष्मी या शोभा। रस की तरह भक्तों के द्वारा सेवन योग्य। रसास्वाद में जो माधुर्य (स्वाद) है, खाने पीने की चीजों में जो अच्छाई है, वह यही देवी हैं।

712. **जगद्योनि** – जगत की कारणभूता अर्थात जगत इन्हीं से पैदा हुआ। देवी जगत का निमित्त कारण भी हैं और उपादान कारण भी हैं।

713. **गन्धलक्ष्मी** – गन्ध को दिखाने वाली अर्थात प्रकट करने वाली। लक्षयति इति लक्ष्मी। गन्ध का सार स्वरूपा। गन्ध स्वरूपा लक्ष्मी अर्थात गन्ध से सम्बन्धित लक्ष्मी या शोभा। गन्ध की शोभा स्वरूपा अर्थात उसकी शक्ति या अनिवार्य गुण स्वरूपा। लक्ष्मी का अर्थ शोभा होता है। शोभा भी एक प्रकार की शक्ति या गण है। अतिशय श्रेष्ठ गंध स्वरूपा अर्थात सुरभि स्वरूपा। इत्र में निवास करने वाली। लक्ष्मी अर्थात जो अच्छी लगती हैं।

714. **वनाश्रया** – एकान्त में निवास करने वाली। जल में निवास करने वाली। (वनज–कमल)। वन का अर्थ जल भी होता है।

715. **श्रवणा** – श्रवण नक्षत्र स्वरूपा। श्रवण नक्षत्र की शक्ति स्वरूपा। श्रवण + आ, एकाक्षरी कोष में आ का

एक अर्थ शक्ति दिया गया है। वेदान्त के आत्मबोध के प्रथम उपाय अर्थात् श्रवण उपाय स्वरूपा। वेदान्त वाक्यों को सुनना श्रवण किया है। यहाँ सुनने का तात्पर्य केवल यूँ ही सुनना नही है बल्कि समझना एवं निश्चय करना भी है। यह सुनना तब हो पाता है जब मन पूरी तरह से एकाग्र रहे एवं अन्य इन्द्रियाँ भी इस सुनने की प्रक्रिया में साथ रहे। इस प्रकार के सुनने से ही कोई चीज अन्दर तक अतः हृदय तक जाती है। श्रवण का अर्थ धन सम्पत्ति, यश भी दिया गया है। श्रवण + आ, आ का एक अर्थ है देना। इस प्रकार श्रवणा का अर्थ हुआ धन सम्पत्ति देने वाली। यश को देने वाली। अपने भक्तों को धन सम्पत्ति, यश देती है। श्रवण नामक नक्षत्र स्वरूपा या श्रवण नामक नक्षत्र की शक्ति स्वरूपा। श्रूयते अनया इति श्रवणा अर्थात श्रोतेन्द्रिय। श्रोतेन्द्रिय की शक्ति स्वरूपा। शब्दमात्र श्रूयमाण होता है अतः इस नाम का अर्थ शब्द शक्ति भी कर सकते हैं। श्रवण कुमार की तरह मातृ–पितृ भक्त। हिमालय एवं मेनका से उत्पन्न पार्वती जी अपने माता–पिता से बहुत प्रेम करती थी।

716. **श्रावणी** – श्रवण नक्षत्र से युक्त पूर्णमासी में वेद विद्या के रूप में जिज्ञासुओं के द्वारा सुनी जाने वाली। श्रावणी पूर्णमासी स्वरूपा। जिससे सुना जाता (क्या–वेद विद्या)। जिस काल में सुना जाता वह है श्रवण। प्राचीन काल में श्रवण नक्षत्र से वेद विद्या का कार्य आरम्भ होता था, उस समय किताबें नहीं थी सुनने की परम्परा से ही पढ़ाई, वेदाध्ययन होता था।

717. **नेत्री** – समूह का नेतृत्व करने वाली अर्थात् देव समूह या भक्तों के समूह का मार्गदर्शन करने वाली। नायिका रूपा। नायिका अर्थात सर्वमार्गदृष्टा, सभी को रास्ता दिखाती। सभी को सन्मार्ग का रास्ता दिखाती हैं। सबको लेकर चलने वाली। समाज, संसार के लोगों को नेतृत्व देती।

718. **रसनाप्राणचारिणी** – जिह्वा और प्राण में विचरण करने वाली अर्थात इनमें रहती हैं।

719. **विरञ्चिमाता** – ब्रह्मा की माता अर्थात पैदा या रक्षा करने वाली।

720. **विभवा** – ऐश्वर्य स्वरूपा। विभव + आ, आ का अर्थ है देना, इस प्रकार विभवा का अर्थ हुआ ऐश्वर्य देने वाली। ऐश्वर्य का अर्थ होता है सम्पन्नता एवं शक्ति। वैभव से युक्त। विभवाः अस्या अस्ति। जब धन के साथ ठाठ बाट शान शौकत होती है जिसे दूसरे लोग भी देख सकतें हैं तब उसे वैभव कहतें है। बड़ा शानदार घर, बहुत से नौकर चाकर, बहुत सी गाड़ियाँ, कई फार्म हाउस आदि जब होते हैं तो दूसरे व्यक्ति देखकर वाह करते हैं। यही वैभव अर्थात शानोशौकत या ठाठ बाट है। विभव+आ, आ का अर्थ है देना। अपने उपासकों को वैभव देने वाली। विभु अर्थात विस्तार। प्रदर्शन में धन का विस्तार हो जाता है। विगतः भवः यस्याम्/यस्या सा अर्थात जिसका या जिसमें जन्म न हो अर्थात मोक्ष स्वरूपा। जन्म नहीं तो मरण भी नहीं। जन्म मरण से परे अर्थात मोक्षावस्था। भव अर्थात जन्म।

721. **वरवारिजवाहना** – श्रेष्ठ कमल पर विराजमान। वर का अर्थ है श्रेष्ठ और वारिज का अर्थ है कमल।

722. **वीर्या** – वीर्य शक्ति का प्रतीक है। शक्ति स्वरूपिणी। ज्यादा शक्ति या पराक्रम वाली। वीर विक्रान्तौ धातु होती है। विक्रमण करने वाली अर्थात ज्यादा पराक्रम वाली। देवताओं से अधिक शक्ति या पराक्रम वाली। जब किसी को रूपवान कहते हैं तो उसका अर्थ होता है कि वह दूसरों से अधिक सुन्दर है क्योंकि रूपवान तो सभी होते हैं। अतिशय शक्ति (पराक्रम) से युक्त। शक्ति देने वाली, तेज गुण देने वाली। वीर्य का अर्थ शक्ति, तेज होता है। वीर्य+आ, आ का अर्थ है देना।

723. **वीरेश्वरी** – वीरों की भी अधिकारिणी/स्वामिनी। वीरों की आराध्या।

724. **वन्द्या** – वन्दनीय (सभी के द्वारा)। पूजा के आरम्भ में इष्ट देवी देवता के सामने मस्तक झुकाना एवं उनके गुणों का बखान करना वन्दना कहलाती है।

725. **विशोका** – शोक रहित। (विगता शोका यस्या सा)। सभी प्रकार के शोकों से रहित। मानसिक क्लेशों से दूर। विगता शोका। मुक्ताश्च विगतशोका अनया। विशिष्टानन्दत्वाद् विशः। ऊकश्च रक्षिता च। विशानां मुक्तानामूका। विविधाश्च शोका अनया भवन्ति। जो स्वयं में शोक अर्थात दुखरहित हैं। जिनके द्वारा उपासक शोक रहित होते हैं अर्थात मुक्त हो जाते हैं अर्थात मोक्ष को प्राप्त कर लेते हैं। अलौकिक आनन्द वाली एवं रक्षा करने वाली (भक्तों या जगत की)। वि अर्थात विशेष अर्थात औरों से हटकर अर्थात जो इस लोक में नहीं है अर्थात लोकोत्तर या अलौकिक। श का अर्थ है आनन्द। ऊक का अर्थ है रक्षिता। रक्ष् धातु में तृच् प्रत्यय लगाने से रक्षितृ शब्द बनेगा जो पुल्लिंग एक वचन में रक्षिता होगा एवं स्त्रीलिंग में रक्षित्री बनेगा। देवी और देवता में अभेद होता है, अतः आवश्यकता पड़ने पर पुल्लिंग का रूप ले सकते हैं। वि+श+ऊका, इस प्रकार विग्रह किया गया। विश अर्थात विगतशोक अर्थात दुख से रहित अर्थात मुक्तपुरूष। ऐसे मुक्त लोगों की रक्षा करने वाला। दुष्टों को विभिन्न प्रकार के शोक (दुख) जिनके द्वारा होते हैं। योग में बताई गई विशोका प्रवृत्ति स्वरूपा। सात्विक अभ्यास से जिस चित्तवृद्धि के रजोगुण का परिणाम दूर हो गया है। शोक रहित, सुखमय, ज्योतिष्मती प्रवृत्ति। इस स्थिति में चित्त परम सुखमय सात्विक भाव से परिपूर्ण रहता हैं, अतः इस प्रवृत्ति को विशोका कहते है। यह मन के नितान्त सात्विक गुण सम्पन्न होन की अवस्था है। सात्विक प्रकाश या ज्ञान का आलोक अत्यधिक मात्रा में रहने के कारण यह ज्योतिष्मती कहलाती है। यहाँ ज्योति से अभिप्राय सूक्ष्म, व्यवहित और विप्रकृष्ट विषय का प्रकाश करने वाले ज्ञान के आलोक से है, न कि तेज या प्रभा आदि से। विशोका ज्योतिस्वरूपा। पेट के ऊपर हृदय पिंजर के अन्दर कमल जैसा मांसपिण्ड है, इसलिये इसका नाम हृत्पद्म है। इस हृत् कमल को रेचक प्राणायाम द्वारा ऊर्ध्वमुख धारणा करके इस भावना पर चित्त लगाने से एक प्रकार की ज्योति का अनुभव होता है। यह ज्योति तरंगहीन और शब्दरहित समुद्र के समान प्रशान्त, मनोरम और निर्मल है। इसमें क्षण–क्षण में सूर्य प्रभा, चन्द्र प्रभा, मणि प्रभा आदि अनेक प्रभाएँ स्फुरित होती हुई दिखती हैं। इस आलोक के प्रकाशित होने पर मन में कोई शोक नहीं रहता है। अतः इस आलोक या ज्योति को विशोका ज्योति कहते है। हृदय कमल में विशोका ज्योति के ध्यान में चित्त के निमग्न होने पर सम्प्रज्ञात समाधि या अत्यन्त उत्कृष्ट योग उत्पन्न होता है। विशोका ज्योति को बुद्धि–सत्व और चैतन्य प्रदीप्त–अस्मिता (सात्विक अहंकार) भी कहते है। इसी प्रवृत्ति को प्रवृत्यालोक भी कहा जाता है। श्वेताश्वतर उपनिषद में ''अङ्ष्ठमात्रो रवितुल्यरूपः'' कहा गया है। विशोका सिद्धि स्वरूपा। सर्वभाव अधिष्ठातृत्व और सर्वज्ञातृत्व सिद्धियाँ। ये सिद्धियाँ बुद्धि और पुरूष के बीच भेद पता चलने पर ही होती है। इनसे योगी को क्रिया रहित विवेक ज्ञान होता है। जिसे प्राप्त कर योगी सर्वज्ञ, क्षीणक्लेश–बन्धन और वशी हो जाता है।

726. **वसुवर्धिनी** – गंगा जी से अभेद है जिनका। गंगा के रूप में आठवें वसु अर्थात् भीष्म को बढ़ाने वाली। (बढ़ाना यानि पालन पोषण करना या पाल पोस कर बड़ा करना।)। सज्जनों या साधु पुरुषों की समृद्धि करने वाली। वृक्ष की समृद्धि करने वाली। पाताल लोक में पाये जाने वाले विविध रत्न आदि सामग्री बढ़ाने वाली। (पाताल लोक की धन सम्पदा बढाने वाली) वसुवर्धनी यह शब्द पहले भी आया। उस शब्द में पृथ्वीलोक यह अर्थ लिया गया। यहाँ पर पाताललोक लिया गया। वसु का अर्थ धन, स्वर्ण, रत्न, वृक्ष, शिव, विष्णु, सज्जन या साधु व्यक्ति भी होता है। इनको बढ़ाने वाली। आठों वसु देवताओं का पालन पोषण करने वाली। कुबेर की वृद्धि करने वाली। वसु के कई अर्थ हैं जैसे विष्णु, शिव, स्वर्ण, वृक्ष, साधु, घृत, वस्तु, जल, अगस्त का पेड़, धन, रत्न, अग्नि आदि।

727. **अनाहता** – अनाहत ध्वनि स्वरूपा। जो ध्वनि किसी से टकराये बगैर अपने आप अस्तित्व में रहती है वह अनाहत ध्वनि है। ब्रह्माण्ड में गूँज रही ऊँ की ध्वनि अनाहत नाद अर्थात ध्वनि है। लम्बी साधना के पश्चात साधक को अपने भीतर इस प्रकार के नाद सुनाई पड़ते हैं। योग में वह शब्द या नाद जो दोनों हाथों के अंगूठे

से दोनों कानों की लवें बन्द करके ध्यान करने से सुनाई पड़ता है। हम जो शब्द बोलते हैं वे आकाश से टकराने के कारण आहत नाद हैं। हथेली टकरा कर या बर्तन को टकराने से उत्पन्न ध्वनि आहत नाद है। हठयोग के अनुसार हृदय में स्थित अनाहत चक्र की शक्ति स्वरूपा।

728. **कुण्डलिनी** – मूलाधार चक्र में सर्पाकार लिपटी हुई अर्थात गोलाकार आकृति में विराजमान ऊर्जा स्वरूपा। हठयोग में नाभि के पास मूलाधार के नीचे प्रायः सुशुप्त अवस्था में रहने वाली वह शक्ति जिसे साधना में जाग्रत किया जाता है और जिसके ब्रह्म रन्ध्र में पहुँच जाने पर योगी मुक्त और अमर जीवन प्राप्त करता है। गायत्री की कुण्डलिनी नामक शक्तिस्वरूपा। कुण्डलिनी वह भौतिक ऊर्जा है जो जीवात्मा के साथ लिपटकर अत्यन्त घनिष्ठ हो गई है। इसे प्राण विद्युत, जीवन शक्ति, ऊर्जा, योगाग्नि आदि नामों से जाना जाता है। नस नाड़ियों में एक चैतन्य विद्युत गतिशील रहती है। शेषनाग, शिव सर्प आदि इसी के नाम हैं। कुण्डलिनी शक्ति का उत्तरीध्रुव ब्रह्मरन्ध्र है एवं दक्षिणी ध्रुव मूलाधार चक्र है।

729. **नलिनी** – कमलिनी स्वरूपा (कमल के गुणों जैसे सुन्दरता, कोमलता, निर्लेपता, संकोच और विकास आदि से युक्त)। नल बन्धने धातु होती है। बाँधने वाले गुण या शक्ति अर्थात आकर्षण शक्ति से युक्त।

730. **वनवासिनी** – वन में निवास करने वाली (जैसे वन देवी)। जल अर्थात् क्षीर सागर/समुद्र में निवास करने वाली। वन का एक अर्थ जल भी होता है। संसार को भी वन माना जाता है।

731. **गान्धारिणी** – वाणी को धारण करने वाली। वाणी इन्हीं के कारण बोली जाती है। गाम् वाचम् धारयति इति गान्धारिणी। गा+धारिणी। धारिणी का अर्थ है धारण करने वाली। पृथ्वी को धारण करने वाली। किरणों को धारण करने वाली। गो शब्द के कई अर्थ हैं यहाँ वाणी, पृथ्वी, किरण अर्थ ले लिया गया। ग्रह, नक्षत्रों की भी भूमि होती है भले ही वे स्वयं गतिमान हों। गति में भी एक आधार चाहिए जो उसकी भूमि है। ग्रह नक्षत्रों की भूमि को धारण करने वाली। यह अर्थ भी गान्धारिणी का हो सकता है। वाणी को धारण करने वाली अर्थात वाक्स्वरूपा। गो का एक अर्थ वाणी होता है। सुगन्ध वाली अर्थात सुगन्ध से युक्त। गन्धम् ऋच्छति अर्थात जो गंध को प्राप्त होती है। गंध को प्राप्त करने वाला गान्धार होगा। किरण अर्थात आत्मज्योति को धारण करने वाली अर्थात आत्म स्वरूपा। (गान्धार से भी गान्धारिणी शब्द बनाया जा सकता है, णिनि प्रत्यय लगाकर। सिन्दूर से युक्त अर्थात लगाये हुए। गन्धरस नामक सुगन्धित द्रव्य से युक्त अर्थात इसे लगाये हुए। गान्धार का अर्थ है सिन्दूर, गन्धरस नामक सुगन्धित द्रव्य। संगीत के तीसरे राग अर्थात गान्धार राग से युक्त अर्थात यह राग अधिक पसन्द है या इसमें पारंगत है। वेद में गो शब्द प्रायः प्रकाश या किरण के लिए आया है। गान्धार का अर्थ हुआ सूर्य या ज्ञानी। ज्ञानियों से युक्त अर्थात उनके द्वारा उपासनीया।)

732. **इन्द्रनमिता** – इन्द्र जिनके समक्ष झुक जाते हैं अर्थात् इन्द्र के द्वारा वन्दिता। इन्द्र नामक आदित्य (सूर्य) के द्वारा पूजी गईं। 12 आदित्य में एक का नाम इन्द्र है।

733. **सुरेन्द्रनमिता** – देवताओं में जो प्रमुख देवता (गणेश, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, सूर्य, इन्द्र) वे सभी इनके समक्ष झुकते अर्थात् प्रणाम/वन्दना करते हैं।) (इन्द्र अर्थात श्रेष्ठ, प्रमुख)। देवराज इन्द्र के द्वारा पूजी गयीं।

734. **सती** – तीनो कालों में अस्तित्व वाली। पतिव्रता स्वरूपा अर्थात किसी भी जन्म में अपने पति से अलग नहीं होती हैं। अपने पति के अलावा किसी अन्य का चिन्तन न करने वाली। दक्ष पुत्री सती की तरह पतिव्रता अर्थात मन में अपने पति के अतिरिक्त अन्य किसी का विचार न करने वाली। सदानन्द का विस्तार करने वाली या देने वाली। सत्य का विस्तार करने वाली। सत्व (आन्तरिक बल) को देने वाली या विस्तार करने वाली। सदानन्द, सत्य, सत्व से स अक्षर लिया। तन् धातु का अर्थ है विस्तार करना, देना, निर्माण करना। तन् धातु में ड प्रत्यय लगाने से त शब्द बनेगा जिसका अर्थ है विस्तार करने वाला, देने वाला, निर्माण करने वाला। स्त्रीलिंग

में त का ता या ती हो जाता है। सती का एक अर्थ है सत्व (आत्मा) से जुडी बुद्धि अर्थात बुद्धि का वह स्वरूप जिसकी धारणा है कि आत्मा ही सत्य है।

735. **सर्वमंगलमांगल्या** – सभी प्रकार के मंगलों में जो मंगल स्वरूपा है। सभी मंगलों में मंगल के कारण रूप में स्थित रहने वाली जैसे अग्नि में दाहकता रहती है वैसे ही मंगल में मांगल्यता रहती है तभी मंगल मंगल है अर्थात सभी मंगलों में जो मांगल्यता है वह देवीं हैं। मांगल्यता वह भाव है जिसके कारण कोई चीज मंगल कहलाती हैं। पूजा पाठ, उपासना, सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, सोलह संस्कारों में मृत्यु को छोड़कर अन्य पन्द्रह संस्कार, ये सभी मंगल होते हैं। सभी मंगलों में मंगल अर्थात सर्वाधिक मंगल स्वरूपा। कभी कभी मंगल और मंगल्य का एक ही अर्थ होता है।

736. **सर्वकामसमृद्धिदा** – सभी इच्छाओं को बढ़ा–चढ़ा करके देने वाली अर्थात पूरा करने वाली। माँगा एक घर और दे दिया दस घर। सभी प्रकार की कामनाओं (इच्छाओं) एवं समृद्धियाँ को देने वाली।

737. **सर्वानन्दा** – सभी प्रकार के आनन्दों से परिपूर्ण। सभी प्रकार के आनन्दों के स्वरूप वाली। तैत्तरीय उपनिशद में 11 प्रकार के आनन्द बताऐ गये हैं। वेदों का अध्ययन कर लेने वाले सदाचारी एवं सुदृढ इन्द्रियों वाले एक युवा राजा, जो शासन करने में अतिकुशल तथा सब प्रकार से बलवान हो अर्थात सार्वभौमनृपति हो, को प्राप्त होने वाले आनन्द को भूलोक का आनन्द या मानुशानन्द कहते हैं। उसका सौ गुना आनन्द मनुष्य–गन्धर्वों को होता है। उसका भी सौ गुना आनन्द देव–गन्धर्वों को होता है। उसका भी सौ गुना आनन्द चिर्स्थाई पितृ लोक को प्राप्त हुए पितरों को होता है, उसका भी सौ गुना आनन्द आजानज नामक देवों का होता है, उसका भी सौ गुना आनन्द कर्मदेवों का होता है उसका भी सौ गुना आनन्द एक देवता का होता है। उसका भी सौ गुना आनन्द एक इन्द्र का होता है, उसका भी सौ गुना आनन्द एक बृहस्पति को होता है, उसका भी सौ गुना आनन्द एक प्रजापति को होता है। प्रजापति के आनन्द का सौ गुना एक ब्रह्मा का आनन्द होता है और उससे भी ऊपर सर्वोपरि आनन्द ब्रह्मलोक का आनन्द होता है। इस प्रकार मानुशाननद, मनुष्य–गन्धर्व का आनन्द, देव–गन्धर्व का आनन्द, स्थाई पितरों का आनन्द, आजानज नामक देवों का आनन्द, कर्मदेवों का आनन्द, देवता का आनन्द, इन्द्र का आनन्द, बृहस्पति का आनन्द, ब्रह्मा का आनन्द, ब्रह्मलोक का आनन्द, ये 11 प्रकार के आनन्द हैं। सम्पूर्ण आनन्द स्वरूपा, पूर्ण तुष्टि स्वरूपा (व्यष्टियों में भी पूर्ण है)। कश्मीर के त्रिक दर्शन के अनुसार छह प्रकार के आनन्द होते हैं जो हैं – निजानन्द, निरानन्द, परानन्द, ब्रह्मानन्द, महानन्द और चिदानन्द (जगतानन्द)। इनमें से जगदानन्द को छोड़ शेष सारे आनन्द अधूरे माने जाते हैं क्योंकि उन सब में विश्वमयता का बहिश्कार पाया जाता है। जगदानन्द की भूमिका में विश्वमयता किसी भी प्रकार से हेय नहीं, अतः इस भूमिका को प्राप्त करने के लिए भी विश्वमयता को दुख पूर्ण या भ्रान्ति समझकर छोड़ देने की कोई आवश्यकता नहीं है। इस आनन्द की भूमिका में रममाण आत्मा के लिए विश्वमयता भी वैसी ही आनन्दमयी है जैसाकि विश्वोत्तीर्णता।

738. **महानन्दा** – महा का अर्थ सर्वाधिक होता है। सर्वाधिक आनन्द वाली। आनन्दों की समष्टि, जितने भी आनन्द हैं उनकी समष्टि रूपा। अतिशय आनन्दस्वरूपा। (अर्थात् महान आनन्द देने वाली, आनन्द स्वरूपा होने का तात्पर्य है कि भक्तों को आनन्द देती हैं)। महानन्द+आ, आ का एक अर्थ है देना अर्थात भक्तों को महानन्द देने वाली।

739. **सत्कीर्ति** – श्रेष्ठ कीर्ति स्वरूपा।

740. **सिद्धसेविता** – सिद्धों के द्वारा जिनकी सेवा (=उपासना) की जाती है। आज्ञा पालन भी सेवा है।

741. **सिनीवाली** – अमावस्या स्वरूपा। यह ऐसी अमावस्या है जिसमे चंद्रमा का कुछ अंश रहता है। सिनीम् चंद्रकलाम् वलति धारयति इति सिनीवाली। चन्द्र कला को धारण करने वाली अमावस्या स्वरूपा। कुछ अमावस्या

ऐसी होती हैं कि उसमें चन्द्रमा पूरी तरह से लुप्त नहीं हो पाता है और उसका थोड़ा सा अंश रहता है। कला अर्थात् अंश। जो प्रेमबद्ध है एवं बल प्रदान करने वाली है। षी सिनोति धातु का अर्थ होता है बांधना या सिलना। अतः सिनी का अर्थ हुआ बद्धा। जो अपने पति के प्रेम में बँधी हुयी है एवं उसे शक्ति भी प्रदान कर रही है। संस्कृत में ब और व में अभेद होता है। वलयति अर्थात् बलयति अर्थात् बल प्रदान करना। इस प्रकार वाली का अर्थ हुआ बल प्रदान करने वाली। वलयति का अर्थ घेरना भी होता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सिनीवाली शब्द का विग्रह किया है – या सिनी प्रेमबद्धा कन्या वलयति सा इति सिनीवाली। जो अपने पति के प्रेम में बँधी हुयी है एवं उससे लिपटी हुई भी है। मूलाधार चक्र में कुण्डलिनी शक्ति स्वयंभू शिवलिंग के चारों ओर लिपटी रहती है। सहस्रार चक्र में भी जाकर शिव से लिपट जाती है।

742. **कुहू** – अमावस्या स्वरूपा। पूर्ण अमावस्या स्वरूपा। आश्चर्यचकित कार्य करने वाली। कुह् विस्मापने धातु होती है। विस्मापन अर्थात आश्चर्यचकित करना। उस अमावस्या के स्वरूप वाली जिसमें चन्द्रमा बिल्कुल नहीं दिखाई देता है। अमावस्या की तिथि में अमावस्या के 8 प्रहर के साथ– साथ चतुर्दशी का अन्तिम प्रहर भी शामिल होता है। इस प्रकार अमावस्या के कुल नौ प्रहार होते है। इन नौ प्रहरों में पहले के दो प्रहार में चन्द्रमा की कुछ कला (अंश) दिखती है। अन्तिम दो प्रहरों में चन्द्रमा की सम्पूर्ण कलाओं का क्षय हो जाता है। अमावस्या के पहले दो प्रहर को सिनीवाली कहते है एवं अन्तिम दो प्रहर को कुहू कहा जाता है। बीच के पाँच प्रहर दर्श कहे जाते है। वैदिक कोष में गुह् धातु में कु प्रत्यय एवं ऊङ् प्रत्यय लगाकर कुहू शब्द बनाया गया जिसका अर्थ है जो गोपनीय बातों को गुप्त रखती है अर्थात् बहुत गम्भीर रहती है। गुह् + कु + ऊङ् = कुहू। जिसे कहीं पर भी बुलाया जा सकता है अर्थात् भक्त कहीं पर भी हों, सच्चे दिल से बुलायें तो आ जाती हैं। क्व + ह्वञ् = कुहू। ह्वञ का अर्थ है आह्वान करना अर्थात् बुलाना। कुहू नामक नाड़ी में विराजमान।

743. **राका** – ऐसी पूर्णिमा स्वरूपा जिसमें चन्द्रमा पूरा हो। चन्द्रमा का एक अंश भी कम न हो। सुख देने वाली। राति इति रा, रा का अर्थ है देना। रा और राक दोनों का एक ही अर्थ है। सुख शब्द का अध्याहार किया गया। पूर्णिमा के समान प्रसन्नता देने वाली। पूर्णिमा के समान प्रकाशमयी। इस पूर्णिमा में देवताओं को हवि का दान दिया जाता है इसलिए इसे राका कहते है।

744. **अमा** – चन्द्रमा की अमा नामक कला स्वरूपा। अमावस्या की शक्ति से युक्त। (अमा अर्थात सूर्य और चन्द्रमा का एक साथ हो जाना, अमा का अर्थ है साथ साथ)। अ का अर्थ भगवान विष्णु है और मा का अर्थ लक्ष्मी (शोभा) है। इस प्रकार अमा का अर्थ हुआ भगवान विष्णु की शोभा स्वरूपा। अमा का अर्थ आत्मा, संसार, अमावस्या भी है।

745. **अनुमति** – ऐसी पूर्णिमा जिसमें चतुर्दशी भी हो, तद्रूपा। चतुर्दशी से युक्त पूर्णिमा स्वरूपा। जिनकी पूजा का विधान देवताओं एवं ऋषियों ने अनुमत किया है अर्थात अनुमति दी है। अनु का अर्थ पश्चात् और छोटा/किंचित् न्यून दोनों होते हैं। अनुज का अर्थ छोटा है क्योंकि यह बाद में पैदा हुआ अतः अनु से छोटा अर्थ या कम अर्थ भी निकल सकता है। आज्ञा स्वरूपा। अनुकूल (हितकारी) बुद्धि वाली। अनुकूल से अनु शब्द लिया एवं मति का अर्थ बुद्धि होता है। सात्विक बुद्धि के अनुकूल रहने वाली।

746. **द्युति** – प्रकाश स्वरूपा। द्यु का अर्थ है आकाश। भीतरी आकाश अर्थात हृदयाकाश में रहने वाली चमक द्युति होती है। स्थूल शरीर का प्रकाश ओज है। सूक्ष्म शरीर का प्रकाश तेज है और कारण शरीर का प्रकाश द्युति है। यह द्युति आत्मा के सबसे नजदीक होती है क्योंकि कारण शरीर आत्मा के सबसे नजदीक होता है।

747. **अरून्धती** – जो अपने पति को मन, वचन और कर्म से रोकती (Resist) नहीं है। आध्यात्मिक अर्थ होगा जिसके पाँचों शरीर आत्मा के साथ संरेख (Align) रहते है अर्थात् पाँचों शरीर आत्मा की दिशा में ही कार्यरत

रहते है। अरोधनशीला अर्थात् सबको मुक्त करने वाली। रुध् अर्थात बन्धन, अरुध् अर्थात मुक्ति। तन् धातु का अर्थ है विस्तार करना। तन् धातु में ड प्रत्यय लगाने से बने त शब्द का अर्थ होगा विस्तार करने वाला। मुक्ति का विस्तार करने वाली अर्थात मुक्ति देने वाली। अरूष् (घाव) को भरने वाली औषधि को अरून्धती कहते है। इस औषधि की तरह जीवों के कष्टों को दूर करने वाली। जिसके द्वारा कभी भी धर्म का प्रतिषेध नहीं होता (शिव पुराण में ऐसा ही अर्थ दिया गया है)। जो अपने पति को उनकी तपस्या आदि में रोकती नहीं हैं। जो अपने पति की आज्ञा का प्रतिशेध नहीं करती अर्थात रोकती नहीं है अर्थात पतिव्रता।

748. **वसुमती** – पृथ्वी स्वरूपा। विविध प्रकार की सम्पत्तियों से युक्त। धनी या सम्पन्न स्त्री रूपा। काव्यशास्त्र का एक छन्द स्वरूपा जिसमें प्रत्येक चरण में तगण और सगण होते हैं।

749. **भार्गवी** – भृगु ऋषि के वंश में उत्पन्न। भृगु ऋषि की कन्या के रूप में जिन्होंने अवतार लिया था। भृगु ऋषि द्वारा उपासिता। उड़ीसा देश की भार्गवी नामक नदी से अभेद हे जिनका। दूब की तरह पवित्र। भार्गवी का एक अर्थ दूब भी है। भार्गव के कई अर्थ है जैसे परशुराम, शुक्राचार्य, मार्कण्डेय, जमदग्नि, शिव, धनुर्धर, ज्योतिषी या भविष्यवक्ता। शिव की पत्नी। परशुराम, शुक्राचार्य आदि की पत्नियों से अभेद है जिनका।

750. **वास्तुदेवता** – वास्तु अर्थात् निवासस्थान की देवी, निवास स्थान की अधिष्ठात्री देवी। अधिष्ठात्री देवी का ताप्तर्य है कि जो किसी वस्तु में रहकर और उसकी स्वामिनी होकर उसे शक्ति प्रदान करे, उसका नियन्त्रण करे, उसे कार्य करने लायक बनाए, उससे कार्य करवाये। वास्तु कला के ज्ञान से युक्त देवी।

751. **मायूरी** – मोर पर विराजमान रहने वाली। मयूर की तरह सुन्दर या अनेक वर्ण वाली। मयूर के नृत्य की तरह अनेक प्रकार से आनन्दित करने वाली।

752. **वज्रवेताली** – अजेय भगवान शिव की पत्नी है। वज्र अमोघ होता है अतः अजेय अर्थ लिया गया। वेताल भगवान शिव या भैरव के अंश होते हैं। ताल का अर्थ है आधार। वि+ ताल+ अण् प्रत्यय से वैताल शब्द बनेगा जिसका अर्थ है जो बिना आधार का है। भगवान शिव सबके आधार हैं पर उनका कोई आधार नहीं अतः वैताल या वेताल का अर्थ भगवान शिव कर सकते हैं। यदि वेताल को अलग योनि माने तो वज्र लिये वेताल की पत्नी से अभेद है जिनका, ऐसा अर्थ भी कर सकते हैं। भारत के कुछ स्थानों में वेताल भगवान के मन्दिर हैं। वेताल वह योनि है जो किसी प्राणि के शव को कब्जा कर उसमें रहती है। आपने विक्रम वेताल की कहानी अवश्य सुनी होगी। जो वज्र के समान अमोघ है, अप्रतिहत गति वाली है तथा शव पर अधिकार रखने वाली है। वेताली का अर्थ है शव पर अधिकार रखने वाली। वजति का अर्थ है शब्द करना और वज्र का अर्थ हुआ जो शब्द करता हुआ गिरता है जैसे बिजली की कड़कड़ाहट। वज् का अर्थ गति करना भी होता है अतः अर्थ हुआ अप्रतिहत गति वाला। अनुचित शक्तियों को अपनी ताल पर नचाने वाली (अपने ऊपर हावी न होने देने वाली) कठोर शक्ति। (वै = विकृतियाँ) कठोर वेताल के रूप को धारण करने वाली। वेताल अर्थात विकृतियों को अपने ताल पर नचाने वाला।

753. **वज्रहस्ता** – हाथ में वज्र धारण करने वाली। हीरा को हाथ में धारण करने वाली। असुरों के साथ युद्ध के समय वज्र की तरह कठोर हाथ वाली अर्थात असुर उनके हाथों का कुछ भी अहित नहीं कर सकते थे।

754. **वरानना** – श्रेष्ठ मुख वाली अर्थात जिसमें दिव्यगुण झलकता है ऐसे मुख वाली या अतिशय सुन्दर मुख वाली।

755. **अनद्या** – जिसे कोई खा न सके। अद् भक्षणे धातु होती है। अद्य का अर्थ है खाने योग्य। देवी सबको खाती हैं पर देवी को कोई खा नहीं सकता है। संस्कृत में गद् व्यक्त वाणी के लिए और नद अव्यक्त वाणी के लिए शब्द है। जो अव्यक्त वाणी नहीं है अर्थात स्फुट वाणी या स्फुट वाक्य स्वरूपा है यह अर्थ भी अनद्या का हो

सकता है। अद्य का अर्थ आज भी होता है। जो आज नहीं है अर्थात भूतकाल या भविष्य काल में है। यह शाब्दिक अर्थ निकलता है पर देवी के सन्दर्भ में यह ठीक नहीं क्योंकि देवी हमेशा रहती हैं।

756. **धरणी** – सबको धारण करने वाली।

757. **धीरा** – बुद्धि को देने वाली। धीम् बुद्धिम् राति इति धीरा। धैर्य गुण से युक्त अर्थात प्रतिकूल समय आने पर विचलित नहीं होने वाली।

758. **धमनी** – नाड़ियों में धम धम शब्द करने वाली अर्थात प्राण शक्ति प्रवाहित करने वाली। धमन का अर्थ गलाना भी होता है। जो कुष्ठ या अन्य रोगों को गला देती है। प्राण शक्ति से युक्त।

759. **मणिभूषणा** – मणियाँ हैं आभूषण जिनके। मणिजड़ित आभूषणों वाली अर्थात इसे धारण किये हुये। मणि जड़ित आभूषणों वाली। मणि है आभूषण जिनका।

760. **राजश्री** – राजाओं की सम्पत्ति (राजकोष) एवं शोभा स्वरूपा या इनसे विभूषित। श्री=सम्पत्ति, शोभा। सुशोभित होने वाली शोभास्वरूपा। राजाओं की लक्ष्मी (राज्य के सप्तांग राजलक्ष्मी होते है, हर अंग श्री या लक्ष्मी है)। राजाओं के कोष स्वरूपा।

761. **रूपसहिता** – सौन्दर्य सहित अर्थात सुन्दर रूप वाली। रूप का अर्थ है सौन्दर्य, शरीर, चाँदी। चाँदी सहित अर्थात चाँदी भी धारण करती हैं। शरीर से युक्त अर्थात सगुण साकार रूप वाली।

762. **ब्रह्मश्री** – ब्रह्म की शोभा। बृंहति से ब्रह्म शब्द बनता है, जो संसार के रूप में बढ़ता है वह ब्रह्म है। जैसे बीज से वृक्ष होता है वैसे ही ब्रह्म रूपी बीज से संसार रूपी वृक्ष पैदा हुआ। बृंहयति इति ब्रह्म अर्थात जो दूसरों को अपनी तरह विशाल असीम बना दे वह ब्रह्म है। ब्रह्म ही है आकार जिसका ऐसी लक्ष्मी। ब्रह्मस्वरूपा लक्ष्मी अर्थात शोभा। ब्रह्म की लक्ष्मी। ब्रह्म अर्थात वेद अर्थात शिक्षा का सौन्दर्य रूपा। ब्रह्म सम्बन्धी शोभा। पढ़ा लिखा व्यक्ति सुन्दर माना जाता चाहे कुरूप हो जैसे अष्टावक्र।

763. **ब्रह्मवन्दिता** – ब्रह्मा के द्वारा वन्दित। (वन्दना अर्थात प्रणाम करना एवं गुणों का बखान किया जाना)। ब्रह्म अर्थात ब्रह्म, पर ब्रह्म, ब्रह्मा।

764. **जयश्री** – विजय की लक्ष्मी (शोभा) स्वरूपा। कार्य की सफलता की शोभा स्वरूपा। परीक्षा में सफल हो जाने पर मुँह खिल जाता है जो एक प्रकार की शोभा है।

765. **जयदा** – अपने भक्तों को जीत देने वाली अर्थात देवी की कृपा से उनके भक्तों को जीवन के हर क्षेत्र में जीत या सफलता मिलती है। भक्तों को जीत का वरदान देने वाली।

766. **ज्ञेया** – जानने योग्य (सम्पूर्ण विश्व में इन्हीं को जानना चाहिये, बाकी सब बेकार है)।

767. **सर्गश्री** – सृष्टि की शोभा। प्रकृति में प्रातःकाल, सुन्दर वृक्ष, फूल, नदी, चाँद, तारे, चाँदनी जो कुछ भी अच्छा लगता है वह सब शोभा है। सम्पूर्ण सृष्टि की सम्पत्ति, लक्ष्मी। सृष्टि में जो धन धान्य है जो उपयोगी है वह भी सर्गश्री का अर्थ हो सकता है। श्री अर्थात सर्वविध सम्पत्ति। श्री अर्थात धनधान्य, उपयोगी चीजें। सृष्टि में प्रकृति रूप में शोभा विद्यमान है।

768. **सताम् स्वर्गति** – सज्जनों की स्वर्ग की प्राप्ति स्वरूपा अर्थात् सज्जनों को स्वर्ग प्राप्त कराने वाली। सत्पुरुषों के लिए स्वर्ग रूपी परिणाम वाली। सत्पुरूशों के लिए श्रेष्ठ कर्मफलरूपा। गति का एक अर्थ परिणाम भी होता है जैसे आपने सुना होगा तस्य का गति अर्थात उसका क्या परिणाम। सज्जन लोगों की स्वर्गगमन स्वरूपा, सज्जनों को इस अवस्था तक पहुँचाने वाली। सज्जनों को सुख देने वाली। सज्जनों को स्वर्ग देने वाली (अर्थात स्वर्ग में ले जाने वाली)।

769. **सुपुष्पा** – सुन्दर पुष्प की तरह खिली हुई। अतिविकसित या अति प्रसन्न। उनका चेहरा वैसे ही खिला हुआ है जैसे सुन्दर पुश्प का। सुन्दर पुष्पों वाली अर्थात पूजा में जिन्हें सुन्दर पुष्प चढ़ाये जाते हैं।

770. **पुष्पनिलया** – पुष्प में निवास करने वाली।

771. **फलश्री** – फलों में रहने वाली शोभा रूपा। फलों की वृद्धि स्वरूपा (अर्थात बढ़ाने वाली)। जिस पर प्रसन्न हो जाए तो उनके अच्छे फल की वृद्धि करती है। फलों में विद्यमान सुन्दरता स्वरूपा। कार्य का परिणाम (यज्ञ का फल) रूपी शोभा स्वरूपा। कार्य परिणाम स्वरूपा।

772. **निष्कलप्रिया** – निर्गुण अवस्था जिसे प्रिय है। किसी में कोई विशेषता, गुण हो तो उसे कला कहते हैं। ब्रह्म की प्रिया। ब्रह्म कला रहित होते हैं। कला रहित अर्थात अवयवरहित। कला का अर्थ बनावटीपना भी है। अकृत्रिम स्वरूप जिसे पसन्द है। छलकपट से रहित लोग जिन्हें पसन्द हैं। व्यवहार में चापलूस को कहते हैं कि वह बड़ा कलाबाज है अर्थात छलकपट वाला है। स्वर्ण को धारण करने वाले अर्थात् धनी लोगों की प्रिया अर्थात् धनी लोग जिन्हें पसन्द करते है या देवी को प्रसन्न करने का प्रयास करते है। निष्क का अर्थ स्वर्ण है। ला धातु में ड प्रत्यय लगाने से ल बनेगा जिसका अर्थ है धारण करने वाला। स्वर्ण धारण करने वाला अर्थात् धनी। ल का एक अर्थ दान भी है। जिन्हें स्वर्ण का दान करना अच्छा लगता है अर्थात् यदि कोई भक्त स्वर्ण का दान करता है तो देवी प्रसन्न होती है। प्रिया का अर्थ प्रसन्न होने वाली या प्रसन्न करने वाली होता है। निष्क में लच् प्रत्यय लगाने से भी निष्कल शब्द बन सकता है जिसका अर्थ होगा स्वर्ण। स्वर्ण से प्रसन्न रहने वाली या भक्तों को स्वर्ण देकर प्रसन्न करने वाली, या अर्थ भी हो सकता है। जो बिना किसी कारण के प्रिय है, ऐसा अर्थ भी कर सकते है।

773. **धनुर्लक्ष्मी** – धनुष से ग्राह्य (अर्जित होने योग्य) लक्ष्मी स्वरूपा अर्थात् राजलक्ष्मी स्वरूपा। युद्ध में धनुष का प्रयोग करके दूसरे राज्य की जिस धन सम्पदा को अपने कब्जे में लिया जाता था वह राजलक्ष्मी कहलाती है। यद्यपि राजलक्ष्मी का शरीर भी है अर्थात् मनुष्य के रूप में भी उनका विग्रह है। धनुष (साधन) का प्रयोग करके प्राप्त की गई लक्ष्मी स्वरूपा। धनुष का प्रयोग करके अर्थात वीरता दिखाकर या वीरकर्म करके प्राप्त होने वाली धन सम्पत्ति स्वरूपा। धनुष के द्वारा लक्ष्मी का अर्जन करने वाली। जिनके धनुष में लक्ष्मी का निवास हो। धुनष और बाण क्रिया शक्ति के प्रतीक हैं। ऐसी लक्ष्मी जो क्रिया शक्ति है।

774. **अमिलिता** – जो सांसारिक प्रपंचों में मिली नही है। पापों से मिली नहीं है अर्थात पापों से रहित।

775. **परक्रोधनिवारिणी** – शत्रु के क्रोध का निवारण करने वाली। पर का एक अर्थ है शत्रु। दूसरे के क्रोध का निवारण करने वाली। अत्यधिक बड़े क्रोध का निवारण करने वाली।

776. **कद्रू** – बुराई को समाप्त करने वाली। कत् रावयति इति कद्रू अर्थात बुराई को नाश करती है। कद् अव्यय बुराई के अर्थ में, कदाचार के अर्थ में प्रयुक्त होता है। रोदयति अर्थात रूलाना अर्थात मिटाना। कत् + रु, कत् का अर्थ है बुराई, दुष्ट। एकाक्षरी कोष में रू का अर्थ है शत्रु। दुष्टों के लिए शत्रु स्वरूपा अर्थात उनका नाश करने वाली। नागों की माता कद्रू से अभेद है जिनका। पीले वर्ण वाली। हिन्दी में कद्दू शब्द इसी कद्रू से बना है। जो पककर पीला हो जाए वह कद्दू है। सोमरस स्वरूपा या सोमरस की तरह आनन्द देने वाली। वेद में पुरानी सोमलता को कद्रू कहते हैं। कद्रू अर्थात कुछ भूरा पीला, जिस रंग की सोमलता होती है। (वैदिक कोष में कद्रू के पृथ्वी, उपदेश देने वाली विदुषी (कवते उपदिशति असौ कद्रू, अर्थात उपदेष्टा विदुषी) एवं ब्रह्म विद्या अर्थ दिये गये हैं।) वैदिक कोश में कद्रू के कई अर्थ दिये गये है जो है उपदेश देने वाली, पृथ्वी, ब्रह्म विद्या। कवते उपदिशति इति कद्रू। पृथ्वी स्वरूपा, ब्रह्म विद्या स्वरूपा। कत् का अर्थ बुराई एवं द्रावयति का अर्थ है खदेड़ना या भगाना। बुराई को खदेड़ देने वाली अर्थात् दूर करने वाले वाली।

777. **धनायुष्** – धन की तरह निरन्तर गति करने वाली अर्थात् जो स्थिर नही रहती है अर्थात् चंचल स्वभाव वाली है। धन कभी स्थिर नही रहता। आ + इण् गतौ + उस् प्रत्यय से आयुष शब्द बनता है जिनका अर्थ है आयु या जीवन। आ का एक अर्थ है निरन्तर। इण् धातु या अय् धातु का अर्थ है गति करना। जो निरन्तर गति करता है वह आयुष् है। आयु को आयु इसलिए कहते है क्योंकि वह निरन्तर गति करती रहती है अर्थात् बीतती जाती है। धन के रूप में निरन्तर गति करने वाली, ऐसा अर्थ भी कर सकते है। धन ही ही है आयु जिसकी। जिसके पास धन रहता है तो कहा जाता है कि लक्ष्मी है। धन नहीं रहा तो कहा जाता है कि लक्ष्मी चली गई। धन के रूप में गति करने वाली अर्थात आने जाने वाली। आयुष् शब्द अय् गतौ धातु से बनता है, जो गति करती है अर्थात बीतती है, वह आयु है पर व्युत्पत्ति से आयुष् का अर्थ गति करने वाला होगा। धन स्वरूप आयु वाली अर्थात धन है तो लक्ष्मी है और धन नहीं है तो लक्ष्मी नहीं है। धन चले जाने पर कहते हैं कि लक्ष्मी चली गई। धन अर्थात रूपया पैसा या विद्याधन, गोधन, गजधन, वाजिधन, रत्नधन, सन्तोषधन आदि धन। धन का अर्थ शब्द भी होता है। धनति अर्थात शब्द करता है। ऐसा कहते हैं कि जब मनुष्य की मृत्यु होती है तो सबसे पहले उसकी वाणी अर्थात वाक्शक्ति चली जाती है। बाद में बाकी इन्द्रियाँ काम करना बन्द करती हैं। जब तक शब्द है तब तक आयु है, इसका यह अर्थ हुआ। शब्द से पता चलता है कि व्यक्ति जीवित है। जीवात्मा शब्द करता है और उसमें स्वतः स्पन्दन होता है। वाक् या शब्द स्वरूप आयु स्वरूपा अर्थात चैतन्य स्वरूपा। चैतन्य में ही शब्द या विचार होते हैं। धनस्वरूप जीवनकाल वाली। जब तक धन है तब तक लक्ष्मी है। द्रविण या द्रव्य स्वरूपिणी। धन और आयुष् रूपा। धन होने पर व्यक्ति अच्छा इलाज कराकर अकाल मृत्यु को टलवाकर अपनी आयु को कुछ बढ़वा लेता है।

778. **कपिला** – भूरे बादामी रंग वाली। ताँबे के जैसे रंग वाली। लक्षणा शक्ति से अर्थ होगा अत्यधिक सुन्दर। जिसके शरीर से भूरे रंग की कान्ति निकल रही हो। सभी अवतार देवी के ही रूप हैं। किसी अवतार में यदि भूरा रंग है तो वह भी लक्ष्मी जी का रंग कहलाया जाएगा क्योंकि सभी अवतार एक ही हैं। अन्यथा भी देवी इच्छानुसार कोई भी रूप धारण कर सकती हैं। कपिला नामक गाय की तरह अत्यन्त उपयोगी अर्थात प्राणियों को तरह तरह के लाभदायक पदार्थ देने वाली। मुक्त लोगों को धारण करने वाली अर्थात् अपने सान्निध्य या समीप रखने वाली। कं (सुखम्) पिबति इति कपिः, जो सुख को पी जाते है अर्थात् समाप्त कर देते है वे कपि है। मुक्त पुरुष सुख और दुख से विरक्त रहते है, अतः वे कपि कहलाये जाते है। इस प्रकार कपि का अर्थ हुआ मुक्त व्यक्ति। ला धातु का अर्थ है ग्रहण करना, नाश करना। कम् सुखम् पिबति इति कपिः अर्थात् सुख का आस्वादन लेने वाले अर्थात् सुखी व्यक्ति भी कपि कहलाये जा सकते है। सुखी व्यक्तियों को ग्रहण करने वाली अर्थात् अपनी समीपता देने वाली। तात्पर्य हुआ कि देवी की शरण में आने पर व्यक्ति सुखी या आनन्दित हो जाता है। आनन्दरूपा पाता लाता वा। जो आनन्द स्वरूपा है, भक्तों की रक्षिका है एवं भक्तों को अपना आश्रय देने वाली है। क अर्थात् आनन्द। पाता (रक्षिका) से पि शब्दाक्षर लिया एवं ला से ग्रहण करने वाली अर्थात् अपने लोक में जगह देने वाली या आश्रय देने वाली अर्थ किया गया है। कम्प् धातु से भी कपिल शब्द बनता है, तब अर्थ होगा सबको कम्पित करने वाली अर्थात सबकी संचालिका आत्मस्वरूपा या जीवात्मास्वरूपा। यहाँ कँपाने का अर्थ स्पन्दन करना, सक्रिय (Activate) करना है। जीवात्मा के रहने से ही प्राण अपना कार्य कर पाता है अर्थात शरीर को चेष्टायुक्त या सक्रिय बना पाता है। शारीरिक चेष्टओं या क्रिया का कारण प्राण है। गलत धारणाओं को हिलाने वाली अर्थात दूर करने वाली चेतना या ज्ञान स्वरूपा। कम्प् धातु का अर्थ है हिलाना। गलत धारणायें जैसे मैं शरीर हूँ, ये प्राणी और वस्तुयें मेरी है आदि। इनको हिलाकर सही ज्ञान देने वाली अर्थात मैं आत्मस्वरूप हूँ, चैतन्य या ब्रह्म के अलावा मेरा कोई नहीं है, ऐसी धारणा देने वाली। वह विशेष चेतना जो जड़ीभूत चेतना (मैं

शरीर हूँ, इस प्रकार की चेतना जड़ीभूत चेतना है) को कँपा देती है अर्थात् नष्ट कर देती है। वह ज्ञान जो अज्ञान (मैं शरीर हूँ ऐसा अज्ञान) को कँपा देता है अर्थात् नष्ट कर देता है, कपिल है जिसका स्त्रीलिंग रूप कपिला है। सबको कम्पित करने वाला सबका संचालक जीव या आत्मा कपिल है। उस आत्मा के स्वरूप वाली। कम्प् धातु से कपिल शब्द बनता है।

779. **सुरसा** – तुलसी के स्वरूप में क्योंकि तुलसी का रस अच्छा माना जाता है। मत्स्य पुराण के अनुसार मन से पैदा हुई दिव्य माँ का नाम सुरसा है जो अन्धक राक्षस के खून को पीने के लिए पैदा हुई थीं। सुरसा नामक नदी के स्वरूप में है जो ऋक्ष नामक कुलपर्वत से निकली थी। नागों की माँ का नाम भी सुरसा है। सुरसा दक्ष प्रजापति की एक कन्या थी जिससे नागों की उत्पत्ति हुई। सर्पों की दो जातियाँ हैं एक है नाग और दूसरी है उरग। कद्रू से उरग पैदा हुए। सुन्दर आनन्द देने वाले श्रृंगारादि रसों से युक्त। सुन्दर रस रूपिणी क्योंकि देवी आनन्द स्वरूप हैं और आनन्द से अच्छा कोई रस नहीं।

780. **सुरमोहिनी** – देवताओं को भी मोहित करने वाली। मोहित करना अर्थात अनात्म वस्तुओं के प्रति या किसी का शरीर देखकर उसकी ओर आकर्षित करना। भगवान शंकर मोहिनी रूप को देखकर आकर्षित हो गये थे।

781. **महाश्वेता** – सरस्वती देवी से अभेद है जिनका। अत्यधिक शुभ्र वर्ण वाली। श्वेत वर्ण वालों में जो सर्वाधिक श्वेत वर्ण की हैं।

782. **महानीला** – अत्यधिक सुन्दर नीलवर्ण से सुशोभित। संस्कृत में नीला का अर्थ काला भी होता है। सर्वाधिक काली अर्थात सबको अपने में समा लेने वाली। काला रंग अन्य रंगों को अपने में समा लेता है।

783. **महामूर्ति** – विशाल मूर्तिवाली अर्थात् अति विशाल शरीर वाली।

784. **विषापहा** – विष का हरण (अर्थात नष्ट) करने वाली। विष से तात्पर्य केवल जहर से नहीं है बल्कि कालुष्य और सांसारिक विषय रूपी विष से भी है। विभिन्न प्रकार के दोष विष की तरह ही हैं।

785. **सुप्रभा** – सुन्दर कान्ति वाली। अतिशय विशिष्ट कान्ति से सुशोभित। सुन्दर प्रभा वाली। प्रभा का अर्थ है कोई भी चमक जो आस–पास या बगल वाली चीजों से अधिक चमके। प्रभा अर्थात आस–पास की वस्तुओं से अधिक चमकने वाली।

786. **ज्वालिनी** – अग्नि स्वरूपा। पापों को जलाने वाली।

787. **दीप्ति** – प्रकाश या चमक स्वरूपा। कान्ति स्वरूपा। ज्ञानरूपी प्रकाश स्वरूपा जिससे अज्ञान का अन्धकार मिटता है। कीर्ति स्वरूपा। दीप्ति में विराजमान। दीप्ति (यश) का कारण। शब्द के आगे 'में विराजमान' या 'का कारण' या 'के समान' लगाने से शब्द के अन्य अर्थ निकल आते हैं।

788. **तृप्ति** – आवश्यकता पूरी होने पर मिलने वाली मानसिक शान्ति स्वरूपा। तृप्त हो जाना अर्थात यह भाव पैदा होना कि अब और नहीं चाहिए। तृप्ति या तुष्टि में अन्य कुछ पाने की आकांक्षा का अभाव हो जाता है और दूसरी चीजों में तुच्छ बुद्धि हो जाती है। अपनी कृपा की वर्षा से भक्तों की तृप्त करने वाले गुण स्वरूपा। (तुष्टि और तृप्ति में अन्तर – अधिगत (प्राप्त) वस्तु से अन्यत्र तुच्छत्व बुद्धि तुष्टि है। हमारे पास बेहतर है, बाकी के पास जो है वह तुच्छा है, ऐसा भाव। तृप्ति का अर्थ है भक्षणादिनां आकांक्षानिवृत्ति। इन्द्रियों से विषय ग्रहण की इच्छा नही रही, अब नही चाहिये, यह स्थिति तृप्ति है)। तृप्ति यदि स्थाई हो जाये तो उसे सन्तृप्ति कहेगें। तुष्टि का अर्थ है वीततृष्णा, सन्तुष्टि का अर्थ है सर्वतोभावेन वीततृष्णा। वस्तु के भोग के बाद आकांक्षा की निवृत्ति तृप्ति है। विषय के सम्पर्क से होने वाले सुख की आकांक्षा से रहित हो जाना तृप्ति है।) State in which a person is unable to take further, is Tripti.

789. **व्याप्ति** – व्याप्त (फैला हुआ) होने की अवस्था या भाव स्वरूपा। सभी अवस्थाओं में व्याप्त होने का भाव स्वरूपा। विस्तार या फैलाव स्वरूपा। वि+आप्ति, विश्व में आप्ति अर्थात उपस्थिति स्वरूपा। वि का अर्थ विश्व लिया। संसार के रूप में फैलाव व्याप्ति है। व्यप्ति अर्थात जैसे दूध में मक्खन व्याप्त है। सब जगह उपस्थिति वाली।

790. **प्रभाकरी** – प्रकाश करने वाली। सूर्य की शक्ति स्वरूपा। प्रभाकर का एक अर्थ है सूर्य। विशिष्ट तेज से विभूषित (प्रभाकर अर्थात सूर्य अर्थात तेज से युक्त)।

791. **तेजोवती** – दूसरों को अभिभूत करने वाले प्रकाश से युक्त। इनका तेज या प्रकाश दूसरों के लिए असह्य होता है। ईश्वरीय तेज से युक्त। वह शक्ति जिससे सामने वाला अभिभूत हो जाता है अर्थात दब जाता है, तेज है।

792. **पद्मबोधा** – कमल खिलाने वाली। हृदय कमल में ज्ञान को प्रकट करने वाली, बोध अर्थात ज्ञान। विकसित कमल के सौन्दर्य से युक्त, बोध अर्थात खिलना अर्थात विकसित होना। कमल से ही इनका ज्ञान होता है (क्योंकि कमल में निवास करती है)। शरीर में स्थित सातों चक्रों को जगाने वाली। तात्पर्य है कुण्डलिनी शक्ति को जाग्रत करने वाली। बोधयति इति बोधा से जगाने वाली अर्थ भी कर सकते है। शरीर में स्थित चक्रों में जिसका बोध या ज्ञान होता है। शरीर में स्थित सातों चक्र कमल के आकार के होते है, इस कारण उन्हें पद्म कहते है। ये सातों चक्र ऊर्जा के केन्द्र है जो ब्रह्माण्ड से ऊर्जा लेते है।

793. **मदलेखा** – गर्व से है पहचान जिनकी अर्थात् जानी जाने वाली। लेखा अर्थात् पहचान का चिन्ह। दुर्गा सप्तशती में आया है कि देवी ने कहा कि जो मुझे युद्ध में हरायेगा वह मेरा पति होगा अर्थात् देवी ने ऐसा कहकर अपने गर्व को सूचित किया है। मदी हषे धातु भी होती है। लेखा का अर्थ है प्रथम सोपान। जो हर्ष की प्रथम सोपान है अर्थात् हर्ष पर चढ़ाने वाली है अर्थात् अपने भक्तों को हर्ष देने वाली है। जिनके शरीर पर कस्तूरी का निशान या चिन्ह है। मद का एक अर्थ है कस्तूरी और लेखा अर्थात रेखा अर्थात चिन्ह या निशान। हर्ष की रेखा स्वरूपा अर्थात हर्ष स्वरूपा। लेखा अर्थात रेखा अर्थात कला। कला का अर्थ है अंश, आधार। हर्ष की अंश अर्थात हर्षस्वरूपा। हर्ष का आधार स्वरूपा अर्थात जिनमें हर्ष टिका हुआ है या जिनसे हर्ष पैदा होता है, तात्पर्य है हर्ष देने वाली। सभी प्रकार की प्रसन्नता की प्रथम सोपान अर्थात प्रसन्नता की शुरुआत यहीं से होती है। लेखा, रेखा और कला का एक अर्थ है प्रथम सोपान या उसका मूल कारण। हर्ष की कला स्वरूपा अर्थात हर्ष का प्राथमिक सोपान अर्थात हर्ष का आरम्भ अर्थात हर्ष यही से शुरू होता है। मदि हर्षे धातु होती है। मद का मूल अर्थ हर्ष होता है किन्तु बाद में यह रूप, यौवन, तारूण्य के कारण होने वाले स्वाभिमान के रूप में प्रयुक्त हो गया। रेखा अर्थात लेखा अर्थात कला। अतिशय विशिष्ट सम्पत्तियों के चिन्हों से युक्त। मद अर्थात सम्पत्ति, लेखा अर्थात चिन्ह (मद नामक द्रव हाथी के गाल सें बहा करता है, अच्छे गज उदात्त कोटि के गज से ही बहता है। मद है चिन्ह (प्रतीक) जिनका, मद से गर्वीली, जिनके पास लक्ष्मी होती उन्हें अभिमान हो जाता है (लेखा = रेखा = कला)। मदलेखा नामक वर्णवृत्त स्वरूपा अर्थात जिसके प्रत्येक चरण में 7 अक्षर होते हैं।

794. **अरूणावती** – अरूण कान्ति (= लाल कान्ति) से सुशोभित। अरुण + आ + वती। आ का एक अर्थ भाव (अस्तित्व) भी होता है, क्योंकि प्रत्येक चीज भाव है अतः कभी कभी आ का अलग से अर्थ देने की जरूरत नही है। आ समन्तात् से आ का अर्थ चारों ओर से अर्थात पूर्ण रूप से होता है। पूर्ण रूपेण अरूण कान्ति (= लाल कान्ति) से सुशोभित।

795. **रत्ना** – जो देवताओं के वर्ग में सबसे उत्तम अर्थात सर्वश्रेष्ठ हैं। रत्न का एक अर्थ है जो अपने वर्ग या जाति में सबसे उत्तम हो। रत्न स्वरूपा। रत्न की शक्ति अर्थात उनके गुण स्वरूपा। रत्नों की शक्ति (अर्थात

चमक, सुन्दरता) स्वरूपा। रत्न + आ, एकाक्षरी कोष के अनुसार आ का एक अर्थ है शक्ति। रत्न का अर्थ जल, अयसकांत चुम्बक, माणिक्य भी है।

796. **रत्नावती** – रत्नों से युक्त। रत्नों वाली माला से सुशोभित। रत्नों से युक्त विशेष हार से सुशोभित।

797. **भूता** – पंचभूतस्वरूपा। पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु ये पंचभूत हैं। पंचभूत की शक्ति स्वरूपा अर्थात उनमें विद्यमान शक्ति स्वरूपा। चतुर्विध प्राणी में विद्यमान रहने वाली या उत्पन्न होने वाली। अण्डज, जरायुज, स्वेदज और उद्भिज ये चार प्रकार के भूत अर्थात प्राणी होते हैं। जो चीज होती है वह भूत है। भू सत्तायाम् धातु होती है।

798. **शतधाम्ना** – सैकड़ों घरों वाली अर्थात् सैकड़ों तीर्थों में निवास है जिनका। संस्कृत में सौ या हजार का अर्थ अनन्त भी किया जाता है। सैकड़ों तेज वाली अर्थात् महातेजस्विनी। सैकड़ों घरों वाली अर्थात अनन्त घरों वाली। देवी का कण कण में वास है या प्रत्येक जीव के हृदय में विराजमान है। अनन्त तेज वाली अर्थात महातेजस्विनी। सैकड़ों अर्थात अनन्त या असंख्य घरों वाली। धामन् शब्द का अर्थ है घर और धाम्ना शब्द तृतीया विभक्ति का एक वचन है। प्राणियों के हृदय देवी के रहने का घर हैं। सैकड़ों घरों में निवास करने वाली अर्थात अनन्त घरों में निवास करने वाली। शरीर एक घर है जिसमें देवी आत्मा के रूप में निवास करती हैं। शतधा+म्ना से यह शब्द बनाये तो अर्थ होगा सैकड़ों प्रकार से अर्थात अनन्त प्रकार से कही गईं या बोली गईं। म्ना का अर्थ है बोलना या कहना। अनन्त तेज वाली अर्थात अत्यन्त तेजस्विनी।

799. **शतापहा** – सैकड़ों शत्रुओं (विकारों, बाधाओं) को दूर करने वाली। अपहा का अर्थ है दूर करना।

800. **त्रिगुणा** – तीन गुणों के स्वरूप वाली। तीन गुणों से युक्त। सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण ये तीन गुण होते हैं।

801. **घोषिणी** – ऊँची आवाज करने वाली। युद्ध में शत्रुओं के समक्ष ऐसा करती हैं। शत्रुओं के लिये भयंकर हुंकार (ध्वनि) करने वाली। भक्तों के लिये वर रूपी घोषणा करने वाली (शब्द करने वाली/घोष स्वरूपा)। घोश का अर्थ है शब्द, नाद/ध्वनि, जोर से किया गया गर्जन। सस्वर उच्चारण, मन्त्रोच्चारण को भी घोष कहते हैं। सस्वर मन्त्रोच्चारण करने वाली। शब्द कोश में घोष का अर्थ ध्वनि, शब्द, कोलाहल, मन्त्रोच्चारण, सस्वर पाठ, बादल की आवाज, वर्णों के उच्चारण में बाह्य प्रयत्न का एक भेद दिया गया है। शब्द, वचन, स्तुति से युक्त अर्थात् जिनकी भक्त जनों द्वारा स्तुति की जाती है। घुष् + ष्यञ् से घोष शब्द बनेगा जिसका अर्थ होगा शब्द, वचन, स्तुति। निवास स्थान या झोपड़ी से युक्त। घोष का अर्थ है निवास स्थान या झोपड़ी। मन्दिर देवी के निवास स्थान। घोष का अर्थ शोर भी है। शोर से युक्त अर्थात् युद्ध के मैदान में व्यस्त, जहाँ शोरगुल होता है। घोषणा करने वाली (जो मेरी शरण में आयेगा उसका कल्याण ही होगा, जो धर्म के रास्ते पर चलेगा उसका भला ही होगा इस प्रकार का उद्घोष करने वाली)।

802. **रक्ष्या** – रक्षा करने योग्य। मन्त्ररूप में रक्षा करने योग्य अर्थात दूसरे को मन्त्र नहीं बताना चाहिए। धन की सभी रक्षा करते हैं। सत् कर्मों, पूजा पाठ/ स्तुति करने से शक्ति बढ़ती अर्थात् इनकी रक्षा हो जाती है। हवन करते तो देवता पुष्ट होते है। सूर्य को अर्घ्य देने से सूर्य की रक्षा होती, वह पुष्ट होता है तो वज्र बनकर राक्षसों का वध करता। कभी कभी प्रत्यय दूसरे कारक और काल का भी बोध कराती है अर्थात भाव अर्थ या कर्म अर्थ वाला प्रत्यय कर्ता का अर्थ देने लगता है। इस संदर्भ में रक्ष्या का अर्थ रक्षिका भी कर सकते हैं।

803. **नर्दिनी** – गर्जना करने वाली, ललकारने वाली (युद्ध के दौरान)। गरजने वाली, शत्रुओं के समक्ष गरजने वाली। नर्द् का अर्थ है गरजना।

804. **घोषवर्जिता** – स्वभाविक रूप से या सामान्यतः गर्जना से रहित। सज्जनों के लिये ऊँची आवाज न करने वाली।

805. **साध्या** – साधना के योग्य। साधना के द्वारा सिद्ध या प्राप्त होने योग्य। परिश्रम से प्राप्त करने योग्य। परिश्रम से धन सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। वश में करने योग्य अर्थात् भक्ति के द्वारा वश में करने योग्य। सिद्ध करने योग्य। साध्य एक प्रकार के द्युस्थानीय देवगण है, ऐसे देवगणों की शक्ति साध्या है। विश्वे देव को भी साध्य देव कहा गया है। ऐसे देव की शक्ति स्वरूपा। जिनकी साधना या आराधना की जाती है। साध्यन्ते आराध्यन्ते इति साध्या। साध् + ण्यत् इति साध्यः। द्युलोकवासी सप्तर्षि को भी साध्य कहा गया है। इन सप्तर्षि की शक्ति स्वरूपा। साध्य + आ, आ का एक अर्थ है शक्ति। विराट के साधक उपासक भी साध्य कहे जाते है। ऐसे साधकों की शक्ति स्वरूपा। प्राण देने वाली। साध्य + आ, आ का एक अर्थ है देना। वैदिक कोष में साध्य का एक अर्थ विश्व की सृष्टि करने वाले प्राण दिया गया है। योगाभ्यासिनी

806. **अदिति** – देवमाता स्वरूपा। जिसका कोई खण्ड न कर सके, अखण्ड स्वरूप वाली। अखण्ड चेतना स्वरूपा। समष्टि चैतन्य स्वरूपा। अखण्ड सर्वव्यापी ऊर्जा अदिति है। Aditi is supreme or infinite consciousness. It is undivided infinite free of dualities. अखण्ड या नष्ट न होने वाले पदार्थ स्वरूपा। दो अवखण्डने धातु से बने दिति शब्द का अर्थ खण्डित होना या नष्ट होना है। यह विश्व सृष्टि का मूल है। यह विश्व की मूलशक्ति है। सृष्टि के पूर्व और अन्त में जो अव्यक्त अखण्ड विभु पदार्थ है वह अदिति है। यह चित् पदार्थ है, संसार में जो भी था, जो भी है और जो भी होगा वह सब अदिति का रूपान्तरण होने के कारण अदिति स्वरूप ही है। गीता में इसे अव्यक्त पदार्थ कहते है। सृष्टि से पूर्व और बाद में यह अव्यक्त रहता है और बीच में व्यक्त रहता है। आज के विज्ञान की भाषा में अदिति द्रव्य (matter) है एवं दक्ष ऊर्जा (energy) है। ऋग्वेद में कहा गया है कि अदिति से दक्ष और दक्ष से अदिति उत्पन्न होते है। इसका तात्पर्य है (matter) से (energy) और (energy) से (matter) उत्पन्न होता है। इसी कारण कहा जाता है कि देवताओं में पिता पुत्र एक दूसरे के पिता पुत्र होते है। वहाँ मनुष्य की तरह नहीं होता कि पुत्र पिता की सन्तान है। आम की गुठली से आम का वृक्ष, पुनः गुठली पुनः, वृक्ष ऐसा चलता है। सभी कुछ ऊर्जा (अर्थात शक्ति अर्थात देवी) ऊर्जा का रूपान्तरण होने के कारण एक दूसरे के पिता–पुत्र होना सब संभव है। डा0 वी0जी0रेले ने अपने ग्रन्थ वैदिक गॉड्स में जीव विज्ञान की दृष्टि से निश्कर्ष निकाला कि वेदों की अदिति मस्तिष्क का रोलेण्डिक एरिया है। मस्तिष्क के दरार वाले भाग को अदिति कहा गया जिसे वेद में विदृति द्वार कहा गया है। सम्भवतः यह स्थान ब्रह्म रन्ध्र होगा। मस्तिष्क का उपरी भाग द्यु लोक या स्वर्ग लोक है तथा इसी द्वार से देवता अन्दर आते है। न्यूरोन्स को ही देवता कहा गया है जो संख्या में अनन्त है। अदिति का अर्थ सब कुछ भक्षण करने वाला भी है। अद् भक्षणे धातु से अदिति शब्द बनाने पर ऐसा अर्थ निकलता है। प्रलयकाल में सबका भक्षण कर लेती हैं। न देने वाली, ऐसा अर्थ भी है। कुपात्रों को आत्मविद्या का ज्ञान न देने वाली।

807. **दिति** – खण्डित चेतना स्वरूपा। व्यष्टि चैतन्य स्वरूपा। दो अवखण्डने धातु से खण्डित अर्थ निकलता है। दानक्रियास्वरूपा अर्थात उदारतास्वरूपा। दा धातु में क्तिन् प्रत्यय लगाने से दिति शब्द बनेगा तब अर्थ होगा दान क्रिया या उदारता। दिति का अर्थ है divided consciousness अर्थात् वह consciousness जो finite है। Divided होने के कारण यह Multiplicity को भी दिखाता है। दिति का अर्थ देने वाला भी होता है। अपने को शरीर समझ लेना या दूसरे के आत्म तत्व तक न पहुँचकर केवल शरीर तक देख पाना खण्डित चेतना है।

808. **देवी** – (1) प्रकाशीला (2) जिनकी लोग स्तुति करते। (3) आनन्द स्वरूपा (4) व्यवहारों (अर्थात संसार की क्रियाऐं) को करने वाली या इनकी ज्ञाता। शरीर से जो कर्म किये जाते हैं वह शरीर में रहने वाली शक्ति ही करती है और शक्ति ही देती है। दिव् धातु का अर्थ प्रकाशित होना, स्तुति, मुदित होना, व्यवहार करना होता है।

809. **मृगवाहा** – सिंह है वाहन जिनका। सिंह पर सवार होकर चलती है। सिंह पर दुर्गा जी सवार होती हैं। सभी देवियाँ एक ही हैं अतः लक्ष्मी जी के लिए भी यह नाम कर दिया गया। अन्यथा भी देवी इच्छानुसार किसी भी पल कोई सा भी रूप धारण कर सकती हैं।

810. **मृगांकगा** – चन्द्रमा में गई (स्थित हुई) अर्थात कान्तिस्वरूपा। चन्द्रमा में कान्ति के रूप में या कान्ति के द्वारा निवास करने वाली/स्थित है। चन्द्रमा में कान्ति रूप से समाहित हैं, चन्द्रमा उसी से चमकता है। मृगांक अर्थात चन्द्रमा।

811. **चित्रनीलोत्पलगता** – सुन्दर नीले कमल में विराजमान। चित्र का एक अर्थ सुन्दर है। आश्चर्यकारी नीले कमल के समान जानी गई या देखी गई। नीलसरस्वती, तारा आदि के रंग नीले हैं। गति का अर्थ जानना, विराजमान होना, स्थित होना या प्राप्त करना भी होता है। अतिशय सुन्दर नील कमल में निवास करने वाली। (गत अर्थात गति करना अर्थात विराजमान होना)। आश्चर्यजनक नील कमल में स्थित। चित्र = अनेक वर्ण वाली या विस्मयवाली। उत्पल का अर्थ नीला कमल होता है। उसके आगे पुनः नीला लगा दिया गया है। यदि नीलोत्पल का अर्थ सामान्य कमल लें तो इस नाम का अर्थ होगा अनेक वर्णों के कमलों में रहने वाली अर्थात विराजमान। सुन्दर नीले कमल को प्राप्त किया है जिसने। चित्र का अर्थ सुन्दर भी होता है।

812. **वृषरत्नकराश्रया** – बैलों में श्रेष्ठ अर्थात् नन्दी का आश्रय करने वाली अर्थात् आश्रय लेने वाली। शैल पुत्री देवी बैल पर सवार होती है। रत्न का एक अर्थ श्रेष्ठ होता है। वृष (बैल) धर्म का भी प्रतीक है। श्रेष्ठ धर्म द्वारा जिनका आश्रय किया जाता है अर्थात् लिया जाता है। बरसते हुए रत्न जिनके हाथों का आश्रय लिये हैं। वृश का अर्थ है वर्शणशील। वृष अर्थात बैल धर्म का भी प्रतीक है। धर्म रूपी रत्न जिनके हाथों में आश्रय करता है। धर्म और रत्न जिनके हाथों में आश्रय करता है अर्थात रहता है। अतिशय श्रेष्ठ रत्न से सुशोभित हाथों वाली। हाथ के अतिशय सुन्दर आभूषण से सुशोभित। वृष का अर्थ धर्म होने के कारण अतिशय श्रेष्ठ गुण कर सकते हैं।

813. **हिरण्यरजतद्वन्द्वा** – स्वर्ण और चाँदी के युगल वाली अर्थात् इन दोनों से बने हुये आभूषणों को धारण करने वाली। हिरण्यरजतद्वन्द्वा यस्या सा इति हिरण्यरजतद्वन्द्वा (स्वर्ण और चाँदी के युगल वाली)। शास्त्र में कहा गया है कि भगवान शिव के वीर से सोने और चाँदी की उत्पत्ति हुई थी। सोने और चांदी दोनो प्रकार की धातुओं वाली अर्थात इनसे बने आभूषणों से अलंकृत/विभूषित। सोना और चाँदी इन दोनों के जोड़े के रूप में है अर्थात जो दोनों को लिये हुए है। यदि सोना है तो वह भी देवी हैं, यदि चाँदी है तो वह भी देवी हैं, यदि सोना और चाँदी दोनों हैं तो वह भी देवी हैं और यदि सोना और चाँदी दोनों मिले हुए है तो वह भी देवी हैं। सोना और चाँदी के युगल स्वरूप वाली अर्थात श्रेष्ठ धातु स्वरूपा। सोना चाँदी श्रेष्ठ धातु का उपलक्षण हैं। सोने/चाँदी की धातुओं को जोड़ने वाली।

814. **शंखभद्रासनस्थिता** – शंखासन और भद्रासन में स्थित अर्थात कभी कभी इन आसनों में विराजमान हो जाती हैं। कभी शंखासन और कभी भद्रासन लगाकर बैठने वाली। पवित्र कल्याणकारी आसन पर विराजमान। (शंख = पवित्र)। अतिशय, श्रेष्ठ आसन पर विराजमान।

815. **गोमूत्रगोमयक्षीरदधिसर्पिजलाश्रया** – गोमूत्र, गोबर, दूध, दही, घी और जल में निवास करने वाली।

816. **मरीचि** – मृणाति अपहरति स्वजनानाम् भयः। जो अपने लोगो अर्थात भक्तों के भय को समाप्त करती है। मदम् रेचयति इति मरीचि। अहंकार को बाहर हटाने वाली अर्थात समाप्त करने वाला। मरीचि नामक ऋषि में

विराजमान (शक्ति या गुण के रूप में)। किरण या कान्ति या प्रकाश स्वरूपा। वह शक्ति या तत्व जिसके योग से वस्तुओं आदि का रूप दिखाई देता है। ज्याति की वे अतिसूक्ष्म रेखाऐं जो प्रवाह के रूप में सूर्य, चन्द्रमा, दीपक आदि प्रज्जवलित पदार्थों में से निकलकर फैलती हुई सी दिखाई देती हैं। अपने निर्मल रूप का प्रकाश करने वाली। मरीचि नामक ऋषि से अभेद है जिनका। अपने भक्तों के भयों को नष्ट करने वाली। दुष्टों को नष्ट करने वाली। मृणाति अपहरति इति मरीचि। मृ + ईचि प्रत्यय से मरीचि शब्द बनेगा। किरण या प्रकाश करने वाली अर्थात ज्ञान का प्रकाश देने वाली। शब्द के आगे ''का कारण'' लगाने से भी शब्द का अर्थ निकल आता है। किरण का कारण अर्थात प्रकाश का कारण अर्थात ज्ञानरूपी प्रकाश देने वाली। ज्ञानरूपी प्रकाश में विद्यमान। शब्द के आगे ''में विराजमान'' लगाने से भी शब्द का अर्थ निकल आता है।

817. **चीरवसना** – वल्कलवस्त्र धारण करने वाली। सीता जी ने वल्कल वस्त्र धारण किया था, पार्वती जी ने जब तपस्या की थी तो उन्होंने भी चीरवस्त्र धारण किया था। चीर का अर्थ वल्कल वस्त्र या उत्तम कोटि के वस्त्र दोनों होता है। चीरवस्त्र को धारण करने वाली (चीर वस्त्र = सुन्दर/श्रेष्ठ साड़ी) द्रौपदी का चीर हरण हुआ था तो वहाँ चीर का तात्पर्य उत्तम कोटि के वस्त्र अर्थात श्रेष्ठ साड़ी आदि से है। सीता जी ने जब चीर वस्त्र पहना था तो वहाँ तात्पर्य वल्कल वस्त्र से है। वसन का अर्थ धारण करना भी होता है और वसन का अर्थ वस्त्र भी होता है। इस नाम में धारण करना अर्थ ज्यादा ठीक है।

818. **पूर्णा** – परिपूर्ण। देवी के पास हर एक चीज है और प्रत्येक चीज पूर्ण मात्रा में है। हर चीज से परिपूर्ण। कल्याण गुणों से तर्पित या भरी हुई। पूर्यते आप्यायते कल्याणगुणैः इति पूर्णा। बिना कुछ चढ़ाये हुए केवल प्रार्थना मात्र से बहुत अधिक सन्तुष्ट हो जाने वाली। Mightly satisfied by the verbal prayer. पूर्ण कलाओं वाली अर्थात पूर्णमासी स्वरूपा।

819. **चन्द्रार्कविष्टरा** – चन्द्रमा और सूर्य है आसन जिनका अर्थात इनमें विराजमान। विष्टर अर्थात बिस्तर या आसन।

820. **सुसूक्ष्मा** – अति सूक्ष्म/सूक्ष्मातिसूक्ष्म (अणोरणीयान)। देवी ब्रह्म स्वरूपा हैं और ब्रह्म के बारें में कहा जाता है कि वह बड़ा से बड़ा अर्थात सर्वाधिक बड़ा एवं छोटा से छोटा अर्थात सर्वाधिक सूक्ष्म है।

821. **निर्वृत्ति** – शान्ति स्वरूपा। निर्गता वृत्तिर्यस्मादिति निर्वृत्ति। चित्तवृत्ति अर्थात चित्त की उथल पुथल या संकल्प विकल्प जिससे निकल गया हो अर्थात संकल्प–विकल्प, उथल–पुथल से रहित है जो, ऐसी शान्त स्वरूप वाली। वृत्ति अर्थात कार्यकलाप, कलाप अर्थात समूह। जिसने अपने सभी कार्यकलाप पूरे कर लिये हैं। पूर्णता की अवस्था स्वरूपा। पूरापन या सिद्धि स्वरूपा। दैनिक जीवन में हम कहते हैं कि अमुक काम से निर्वृत्त हो गये अर्थात वह काम पूरा कर लिया। वृत्ति का अर्थ है दैनिक या व्यवहारिक कामकाज। (यदि निवृत्ति नाम हो तो अर्थ होगा मुक्तिस्वरूपा। निवृत्ति शब्द प्रवृत्ति का उल्टा है। निवृत्ति का अर्थ अनासक्ति, दुख का त्याग, दायित्व आदि से रहित होना, मुक्त करने या मुक्त होने की अवस्था या भाव, मृत्यु के फलस्वरूप सांसारिक कष्ट भोगों से होने वाली समाप्ति अथवा उनसे छुटकारा। निवृत्ति अर्थात कार्य समाप्ति। निवृत्ति अर्थात काम की प्रवृत्ति का अभाव या सांसारिक विषयों का किया जाने वाला त्याग या किसी प्रकार के जंजाल, झंझट, पाश बंधन आदि से मुक्त होने की क्रिया।)

822. **स्थूला** – स्थूल स्वरूप वाली (अतिशय स्थूल)। स्थूलस्वरूपा (ब्रह्म को महतो महीयान कहा जाता है)। स्थूल वह है जिसे हम आँख से देख सकते हैं, हाथ से छू सकते हैं और अन्य इन्द्रियों से अनुभव कर सकते हैं। सगुण साकार रूप में स्थूल रूप होता है। प्राण प्रतिष्ठित मूर्तियाँ भी देवी का स्थूल रूप है। भक्तों की सम्पत्ति बढ़ाने वाली। सगुण साकार रूप में उन्हें देखा जा सकता है, छुआ जा सकता है। स्थूल का अर्थ विस्तृत या बड़ा

होता है। जो बहुत शक्तिशाली या मजबूत या पुष्ट हैं। स्थूल का एक अर्थ शक्तिशाली/पुष्ट/मजबूत भी होता है। स्थूलयति बृंहयति इति स्थूला अर्थात जो वृद्धि करे वह स्थूल या स्थूला है। सम्पत्ति आदि शब्द तो हमें अध्याहार करने पड़ते हैं जिससे अर्थ में स्पष्टता आ जाये।

823. **निवृत्ताराति** – शत्रुओं को निपटा दिया है जिसने अर्थात समाप्त कर दिया है जिसने। अराति का अर्थ है शत्रु। शत्रुओं से रहित (समाप्त है शत्रु जिनके)।

824. **उपमरीचि** – मरीचि नामक अप्सरा के समान अर्थात अत्यन्त सुन्दर। मरीचि (किरण) के समीप अर्थात सदृश अर्थात प्रकाशित करने वाली। मरीचि नामक अप्सरा की तरह अर्थात अतिसुन्दर। उप का अर्थ है समीप अर्थात ''की तरह''। सभी प्रकार की तृष्णाओं से रहित। उपमरीचि का शाब्दिक अर्थ है मृततुल्य हो जाना, (मृ = मरना + इचि प्रत्यय)। प्रलयावस्था में स्पन्दनहीन अवस्था वाली।

825. **ज्वालिनी** – भस्मसात् करने वाली। जलाने वाली (पापों, दुष्प्रवृत्तियों, दुष्ट राक्षसों को)।

826. **धूम्रा** – धूम्र से युक्त। धूमावती देवी से अभेद है जिनका। कल्पनाओं को धूल धूसरित रूप वाला कहा जाता है। धूम्र (अर्थात कल्पनाओं) को साकार रूप देने वाली। निर्गुण और सगुण के बीच की अवस्था वाली। धुआं न तो पूरा काला होता है और न ही अग्नि की तरह रंग वाला होता है अर्थात धुआं बीच की अवस्था वाला है।

827. **हव्यवाहा** – हवन में डाली गयी सामग्री (हवि) को देवताओं तक पहुँचाने वाली।

828. **हिरण्यदा** – सोना देने वाली। धन सम्पत्ति देने वाली। (हिरण्य = सोना, जो सभी धन सम्पत्ति का उपलक्षक है)। अपने उपासकों को तेज देने वाली। अपने भक्तों को स्वर्ण देने वाली। सूक्ष्म तेज का स्थूल रूप हिरण्य या सोना है।

829. **दायिनी** – देने वाली (वर, ऐश्वर्य, सम्पत्ति, विभूति आदि को देने वाली)।

830. **कालिनी सिद्धि** – समय पर होने वाली सिद्धि या सफलता स्वरूपा। तत्काल सफलता नहीं, जब समय आएगा उस समय सफलता मिलेगी जैसे तुम राजा बनोगे अर्थात समय आने पर राजा बनोगे। समयानुसार होने वाली सिद्धि स्वरूपा। ऐसा पढ़ा जाता है कि अमुक दिन, अमुक नक्षत्र में यह मन्त्र या स्तोत्र जपा जाए तो इससे सिद्धि मिलती है। सिद्धि का तात्पर्य है कि अब आप प्रयोग कर सकते हैं अब प्रयोग फलदायी होगा। ऐसी सिद्धिस्वरूपा जो समय या काल में होती हैं अर्थात समय आने पर होने वाली सिद्धि। ऐसा कहा जाता है कि साधना करता रहे अर्थात इसमें लगा रहे। जब समय आयेगा तो सिद्धि हो जायेगी। यदि कालिनी अलग नाम होता तो अर्थ होता तीनों कालों में युक्त स्वरूप वाली। (भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों काल जिसमें विराजमान है)। यदि सिद्धि अलग नाम होता तो अर्थ होता अणिमा, लघिमा आदि सिद्धि स्वरूपा, लक्ष्य जिसे प्राप्त करना चाहिए, फल जिसे भोगना चाहिए। यदि सिद्धा नाम होता तो अर्थ होता सिद्वियों से युक्त।

831. **शोषिणी** – सोखने वाली (पापों को)। शत्रुओं को नष्ट करने वाली।

832. **सम्प्रबोधिनी** – सम्यक् बोध कराने वाली अर्थात ज्ञान देने वाली। सम्यक् का अर्थ है सही, ठीक, यथार्थ, समस्त। भक्तों को सम्यक् रूप से जगा देने वाली अर्थात ज्ञान देने वाली। हरिबोधिनी एकादशी स्वरूपा। भगवान विष्णु को जगाने वाली तिथि स्वरूपा। सम्यक ज्ञान देने वाली अर्थात ठीक–ठीक ज्ञान देने वाली। क्या तत्व है क्या अतत्व है, क्या स्थायी है क्या क्षणभंगुर है, क्या कर्त्तव्य है क्या अकर्त्तव्य है इसका पूर्ण रूपेण बोध कराने वाली।

833. **भास्वरा** – देदीप्यामान स्वरूप वाली। अतिशय चमकने वाली। दीप्ति युक्त या चमकदार। दिन के स्वरूप वाली। भगवान सूर्य की शक्ति स्वरूपा या अग्नि की शक्ति स्वरूपा। भास्वर का एक अर्थ सूर्य, अग्नि है।

834. **संहति** – तेज पुंज स्वरूपा। संहति का अर्थ समूह या पुंज होता है। दुर्गा सप्तशती में आया है कि सभी देवताओं के तेज के पुंज (समूह) से महालक्ष्मी की उत्पत्ति हुई थी। अत्यधिक शक्तिशाली। ऐसा कहा जाता है कि समूह बलवान होता है। सभी पदार्थों के समूह के स्वरूपा वाली। देवी के अलावा कुछ भी नहीं है। अतः जड़–चेतन सभी पदार्थ देवी के अन्तर्गत ही है। समूह रूपा अर्थात कई शक्तियों का समूह स्वरूपा। समूह में बड़ी ताकत होती है। तृण से बनी रस्सी हाथी को भी बाँध देती है। 25 तत्वों का समुदाय, तत्स्वरूपा (सांख्य दर्शन में पुरूष, प्रकृति सहित कुल 25 तत्व होते हैं)। संसार के समस्त प्रपचों को समष्टि रूप में अपने में स्थापित करने वाली। दुर्गा सप्तशती के अनुसार महालक्ष्मी की उत्पत्ति सभी देवों के तेज से मिलकर हुई है।

835. **तीक्ष्णा** – युद्ध में शत्रुओं के लिए पैनी चीजों की तरह असह्य। जिनका तेज दुष्टों, राक्षसों को असह्य है। दुष्टों राक्षसों को चुभने वाली। तीक्ष्ण अर्थात पैना जिससे चीजें आसानी से कट जाती हैं और बहुत भीतर तक घुस जाती हैं। पैनी वस्तुओं की तरह राक्षसों को बहुत आसानी से मारने वाली या उनके बहुत भीतर तक अपने अस्त्र शस्त्रों को प्रवेश कराने वाली। पैनी चीजें अन्य वस्तुओं के भीतर बड़ी आसानी से और बहुत अन्दर तक प्रवेश कर जाती हैं।

836. **प्रचण्डज्वलनोज्ज्वला** – प्रदीप्त या उद्दीप्त अग्नि के उज्जवल वर्ण वाली। ज्वलन का अर्थ है अग्नि। यदि प्रचण्डजवलना अलग नाम होता तो अर्थ होता प्रचण्ड अग्नि स्वरूपा। यदि उज्जवला अलग नाम होता तो अर्थ होता अतिशय सात्विक स्वरूप वाली।

837. **सांगा** – अंगों सहित अर्थात् अवयवों सहित। सगुण साकार रूप में मनुष्य के रूप में होती है जिसके बहुत से अंग होते है। विराट स्वरूप में भी अंग सहित होती है क्योंकि तब सूर्य, चन्द्र, अग्नि और विभिन्न लोक अंगों की तरह होते है। वेदस्वरूपा, यह अर्थ भी कर सकते है क्योंकि वेद के छः अंग है जिन्हें वेदांग कहते है। अंगों सहित। समस्त अंगों से सम्पूर्ण रूप से सुशोभित होने वाली। सगुण साकार रूप में समस्त अंगों से युक्त होती हैं। (विवेक–चूड़ामणि ग्रन्थ में यह शब्द आया है)।

838. **प्रचण्डा** – दुष्टों के लिए विनाशकारी क्रोध वाली। आपने प्रचण्ड तूफान शब्द सुना होगा जिसका अर्थ है विनाश मचाने वाला तूफान। चण्ड का अर्थ होता है अधिक क्रोध।

839. **दीप्ता** – प्रकाश या चमक से युक्त। अतिशय देदीप्यमान कान्ति से युक्त। यश से प्रकाशित। ज्ञानरूपी प्रकाश से प्रकाशित। अप्राकृत तेजोमय।

840. **वैद्युति** – जो सारस्वरूपा भी है एवं द्युति (चमक या कान्ति) स्वरूपा भी है। एकाक्षरी कोष में वै का अर्थ सार दिया गया है। जो कान्ति की सारस्वरूपा है अर्थात् कान्ति नामक गुण इन्हीं से विकसित हुआ है। यदि विद्युत् को क्रिया मानकर इञ् प्रत्यय या इण् लगाया जाए तो शब्द बन सकता है जिसका अर्थ होगा विद्युत् से सम्बन्धित अर्थात् विद्युत की देवता या विद्युत की अग्नि। तात्पर्य हुआ विद्युत् की अग्नि की तरह अर्थात् वज्राग्नि की तरह शत्रुओं को पल भर में नष्ट कर देने वाली। विद्युत् की तरह चमक वाली। विद्युत् की तरह शत्रुओं को तुरन्त भस्म कर देने वाली। विशेषता युक्त चमक वाली। वि अर्थात विशेष। वि में अण् प्रत्यय लगाने से वै बना जिसका अर्थ है विशेष से सम्बन्धित अर्थात विशेषता। बिजली की चमक स्वरूपा या प्रकाशमान। बिजली से सम्बन्ध रखने वाली। विद्युत की चमक या प्रकाश के समान। नाशक्रिया स्वरूपा। जीवात्मा स्वरूपा। विद्युत् में अण् प्रत्यय लगाने पर वैद्युत शब्द बनेगा जिसका अर्थ है विद्युत से सम्बन्धित अर्थात चमक या नाश। अब इस वैद्युत शब्द में इञ् प्रत्यय लगाने से वैद्युति शब्द बनेगा जिसका अर्थ है वैद्युत की सन्तान अर्थात वैद्युत से उत्पन्न होने वाला। चमक से चमक उत्पन्न होती है, नाश से नाश ही उत्पन्न होता है। इस प्रकार वैद्युति का अर्थ चमक या नाशक्रिया स्वरूपा या चमक के समान या नाश क्रिया के समान अर्थ हुआ। उपनिषदों में विद्युत शब्द का प्रयोग

जीवात्मा के लिए किया है। वैद्युत का अर्थ हुआ जीवात्मा से सम्बन्धित अर्थात परमात्मा या सत्–चित्–आनन्द अवस्था। वैद्युति का अर्थ हुआ परमात्मा से उत्पन्न या सत्–चित्–आनन्द से उत्पन्न अर्थात जीवात्मा स्वरूपा या सत्–चित्–आनन्द अवस्था स्वरूपा। बिजली अर्थात विद्युत से सम्बन्धित। विद्युत की शक्ति से युक्त। विशेष द्युति वाली अर्थात औरों से जिसकी द्युति हटकर है। द्युति अर्थात प्रकाश या कान्ति।

841. **सुमहाद्युति** – सुन्दर महान द्युति (प्रकाश या कान्ति) वाली। अतिशय देदीप्यमान कान्ति से युक्त।

842. **कपिला** – कपिला गाय के समान लाभदायक चीजें देने वाली (गणेश जी का नाम भी कपिल है)। वह गाय जिसके बाल भूरे या सफेद हों कपिला गाय है। कपिला गाय वह होती है जो मालिक के पास उसके घर में खूँटे के साथ बँधी रहती है। मालिक उसे जो चारा डालता है, वही चारा वह खाती है। वह गली में घूमने वाली गायों जैसी नहीं होती कि जो भी मिल जाए वही खा ले। कपिला गाय अपने मालिक से मिला हुआ शुद्ध चारा खाती है अतः उसका दूध भी शुद्ध होता है। अतिशय सुन्दर रूप वाली। कपिल मुनि की शक्ति स्वरूपा। कपिल + आ, एकाक्षरी कोष के अनुसार आ का एक अर्थ है शक्ति।

843. **नीलरक्ता** – जो कण्ठ में नील तथा बाकी शरीर में रक्तवर्णा है। कहीं– कहीं पर बाल लाल रंग के कहे गये है। देवी अर्द्धनारीश्वर स्वरूप में भी है। भगवान शिव के द्वारा विष पीने से उनके गले में नील रंग का चिन्ह हो गया था। जो नीले (काले) रंग के शरीर वाली भी है और जिन्होंने रक्तवर्णा शरीर वाले रूप को भी धारण किया है। तारादेवी का रंग नीला है एवं त्रिपुर सुन्दरी देवी का शरीर का रंग लाल है। संस्कृत में नीले का अर्थ काला भी होता है। जो काली रूप में भी है एवं त्रिपुर सुन्दरी में भी है। काला रंग तमोगुण का प्रतीक है एवं लाल रंग रजोगुण का प्रतीक है। तमोगुण एवं रजोगुण को धारण करने वाली अर्थात् जड़त्व एवं क्रियाशीलता को धारण करने वाली अर्थात् इन गुणों को अपनी सन्तानों को भी देने वाली। नील और लाल वर्ण वाली। संस्कृत में नीला का अर्थ काला भी होता है। शरीर का रंग लाल और बाल का रंग काला। अतः नीला और काला दोनों रंग आ गया।

844. **सुषुम्णा** – अतिसुन्दर ढ़ंग से विचार होता है जिसमें। म्ना का अर्थ है कहना, बोलना, विचार करना। म्ना धातु से भी मन बन सकता है। सुषुम्णा नाड़ी स्वरूपा। सुशु यह शब्द करने वाली। सुषुम्णा नाड़ी में सुषु यह शब्द होता है। सूर्य की प्रधान किरण के समान चमकने वाली, जगत् अथवा सत् तत्वों को सुन्दर रूप से अच्छी तरह से प्रकाशित करने वाली। (सुषु + म्ना) म्नाति अर्थात कथयति अर्थात प्रकाशयति। सुषुम्ना नाड़ी में विराजमान अर्थात अग्निशक्ति स्वरूपा। सुषुम्ना नाड़ी में विराजमान अर्थात सरस्वती देवी स्वरूपा या इनसे अभेद है जिनका। सुषुम्ना नाड़ी में विराजमान अर्थात कुण्डलिनी शक्ति स्वरूपा। वैदिक कोष के अनुसार सुषुम्णा का अर्थ है उत्तम सुख से युक्त या उत्तम सुख देने वाली।

845. **विस्फुलिंगनी** – चिंगारी के समान चमकने वाली। सुन्दर रूप से चमकने वाली। विविध जीवात्माओं के स्वरूप वाली। उपनिषद में आया है कि परमात्म अग्नि है एवं जीवात्मा अग्नि के कण हैं। चिंगारियों की तरह प्रकाषशील। उपदिशा स्वरूपा। उपनिषद में प्रमुख चार दिशाओं को अग्नि एवं उन दिशाओं के बीच वाली जो उपदिशाऐं हैं उन्हें विस्फुलिंगनी कहा गया है। अग्नि की चिंगारी की तरह तेजोवती।

846. **अर्चिष्मती** – विशिष्ट कान्ति युक्त।

847. **रिपुहरा** – शत्रुओं को नष्ट करने वाली। बाह्य एवं आन्तरिक दोनो शत्रुओं को नष्ट करने वाली।

848. **दीर्घा** – अतिशय विशाल स्वरूप वाली। दीर्घ का अर्थ है विस्तृत या फैला हुआ। व्याकरण की दीर्घ सन्धि स्वरूपा। अतिशय लम्बी। दीर्घ का अर्थ लम्बा या ऊँचा भी होता है। गम्भीर। दीर्घ साँस शब्द में दीर्घ का अर्थ गहरा या गम्भीर होता है।

849. **धूमावली** – धुँऐ की पक्ति वाली अर्थात् धूम समूहों से आवेष्टित रूप वाली। शिव को निगलने के बाद धूमावती देवी के शरीर से धुँआ निकलने लगा था। धुँऐं की पंक्ति की तरह अर्थात धुँऐ के वर्ण वाली। देवी के कई रूप होते हैं उनमें से कोई रूप धुँऐं के वर्ण वाला भी होता है जैसे धूमावती। धुँऐं की पंक्ति वाली अर्थात यज्ञ स्वरूपा। यज्ञ में अग्नि प्रज्जवलित करते हैं तो धुँऐं की पंक्ति निकलती है। अवली का अर्थ है पंक्ति।

850. **जरा** – वार्धक्यस्वरूपा या वर्धत्व को प्राप्त। सबसे पुरानी या दीर्घ आयु वाली। शादी में वैदिक मन्त्र में कहा जाता है जराम् गच्छ अर्थात दीर्घ आयु को प्राप्त हो। प्रौढ़ अवस्था वाली। परिपक्व बुद्धि वाली। बुढ़ापे में बुद्धि परिपक्व हो जाती है। जरा + आ, आ का अर्थ है नाश करना, बुढ़ापा नाश करने वाली, जरा का यह अर्थ भी हो सकता है।

851. **सम्पूर्णमण्डला** – समस्त भूमण्डल के स्वरूप वाली।

852. **पूषा** – सभी का पोशण करने वाली। पूषा देवता की शक्ति स्वरूपा। पूषा देवता की शक्ति से युक्त (पूषा = जो सबको परिपुष्ट करे)।

853. **संस्रिनी** – नीचे खिसकने वाली अर्थात् कुण्डलिनी शक्ति के उस स्वरूप वाली जो सहस्रार चक्र से नीचे मूलाधार चक्र की ओर गई है। नीचे की ओर भी गमन करने वाली अर्थात उस कुण्डलिनी शक्ति के रूप में जो सहस्रार चक्र से नीचे की ओर मूलाधार चक्र की ओर जा रही है। संस्रन का अर्थ टपकना, रिसना, नीचे की ओर गिरना होता है। भक्तों की पुकार सुनकर अपने उच्च लोक से उतर कर पृथ्वी आदि निम्न लोक की ओर गमन करने वाली। धर्म की रक्षा हेतु एवं विश्व में व्यवस्था बनाये रखने हेतु धरती या निम्न लोकों में आने वाली। गंगा जी स्वरूपा क्योंकि वे स्वर्गलोक से उतर कर नीचे आई है। अपनी उच्चावस्था अर्थात आनन्द की अवस्था को त्याग कर निम्नावस्था अर्थात क्रोध की अवस्था में आने वाली जिससे राक्षसों का वध किया जा सके। अपनी उच्चावस्था अर्थात अद्वैत की अवस्था से निम्नावस्था अर्थात द्वैत की अवस्था में आने वाली। बिना द्वैत अवस्था में आए हुए राक्षसों का वध नहीं किया जा सकता था, इस अवस्था को लाने के लिए ही देवी के द्वारा मधु पान का उल्लेख शास्त्रों में किया गया है। खिसकने वाली या नीचे की ओर जाने वाली। तात्पर्य है कि भक्तों की प्रार्थना पर अपने उच्च लोक से निम्न लोक में भी आ जाती है। षड्भाव में पाँचवें भाव से युक्त अर्थात् ह्रास करने वाली। जायते, अस्ति, वृद्धि, विपरिणाम, क्षय, मरण षड्भाव होते है। मुख्य स्वरूप से दूसरे स्वरूप में जाने वाली या पूर्ण शक्ति स्वरूपा से कम कलाओं वाली शक्ति का रूप धारण करने वाली। भगवान के अवतारों में कलायें (शक्तियाँ) होती है। भगवान कृष्ण की 16 कलायें है, भगवान राम की 12 कलायें है। जितनी आवश्यकता होती है उसके अनुसार उतनी कलाओं को लेकर भगवान अवतार लेते है। कलायें अलग–अलग कार्य करने की शक्तियाँ है अर्थात् प्रत्येक कला का एक अलग कार्य है। कला को अवयव शक्ति या सूक्ष्म शक्ति या आत्मिक शक्ति भी कहते है। निरन्तर बहने वाली नदी की तरह। संस्र धातु का अर्थ पतन अर्थात गिरना होता है पर यहाँ पर हम वहन अर्थ लेगें अर्थात इस नाम का अर्थ होगा प्रवहणशीला अर्थात नदी की तरह निरन्तर बहने वाली। संसरणशील प्रकृति वाली। (चलती हैं, चलाती है, संसार को)।

854. **सुमनोहरा** – अधिक मनोहर। सत्यस्वरूपा एवं सुन्दर। सु अर्थात सुष्ठु अर्थात अतिशय, भली भाँति, यथायोग्य, सत्य। मन को अतिशय हर लेने वाले स्वरूप वाली अर्थात मन को हर लेने वाले अतिशय स्वरूप वाली।

855. **जया** – जयशीला, जीत हासिल करने वाली। जयति असुरान् इति जया अर्थात जो असुरों पर जीत प्राप्त करती हैं वह जया है। जय+आ, आ का अर्थ है देना। भक्तों को जीत का वरदान देने वाली। जया तिथि का भी नाम है अतः जया तिथि स्वरूपा।

856. **पुष्टिकरी** – पुष्टि करने वाली। पुष्टि का अर्थ अंगों को पोशण पहुँचाकर उन्हें बढ़ाना, मजबूत करना।

857. **छाया** – कष्ट का छेदन करने वाली। छिनत्ति आतपम् इति छाया। जो धूप का छेदन करती है अर्थात कष्ट का छेदन करती है वह छाया है। सूर्य की पत्नी छाया से अभेद है जिनका। छाया की तरह शान्ति प्रदान करने वाली। छाया के समान पथिकों/ दीन दुखियों को शान्ति प्रदान करती। (वत् न भी लगा हो तो छाया का अर्थ छायावत् छाया की तरह कर सकते)।

858. **मानसा** – मन में होने वाले विचार स्वरूपा अर्थात सद्विचार स्वरूपा। मानसरोवर में रहने वाली। मानस का एक अर्थ मानसरोवर भी होता है। ध्यान में मन के द्वारा अवस्थित होने वाली। मन में पैदा होने वाली। पहले मन में इच्छा होती बाद में प्राप्ति होती। लौकिक लक्ष्मी पहले मन में इच्छा रूप में होती है।

859. **हृदयोज्ज्वला** – हृदय में सदैव उज्जवल अर्थात विशुद्ध हृदय वाली। दुष्टों के लिए बाहर से भले ही उग्र या घोर लगे पर भीतर उनका हृदय बड़ा विशुद्ध रहता है। हृदय से प्रकाशित होने वाली।

860. **सुवर्णकरणी** – स्वर्ण अर्थात् धन सम्पत्ति को कर देने वाली। स्वर्ण की बनाने वाली। स्वर्ण का साधन स्वरूपा। स्वर्ण का निमित्त कारण स्वरूपा।

861. **श्रेष्ठा** – जो सबसे अच्छी है, सर्वोत्तम है। गुण, शक्ति, सुन्दरता आदि में दूसरों से बढ़कर हैं। जो उच्च दैवी गुणों से युक्त हैं वह भी श्रेष्ठ होता है।

862. **रणेमृतसंजीवनी** – युद्ध में/समरांगण में मरे हुए योद्धाओं को जिला देने वाली अर्थात जीवित कर देने वाली।

863. **विशल्यकरणी** – घावों से रहित कर देने वाली। घायल व्यक्ति को स्वस्थ कर देने वाली।

864. **शुभ्रा** – अतिशय शुभ्र स्वरूप वाली। शुभ्र का अर्थ है श्वेत और स्वच्छ। शुभ्र का अर्थ है गोरा, सफेद, चमकता हुआ, चमकीला या देदीप्यमान। शुभ्रा का अर्थ गंगा जी भी होता है अतः इस नाम का अर्थ हुआ गंगा जी से अभेद है जिनका। शुभ दीप्तौ धातु से रक् प्रत्यय लगाने से शुभ्र शब्द बनता है। शुभ्र का अर्थ हुआ चमकता हुआ या चमकने वाला सफेद रंग। शुभ्र का अर्थ चन्दन भी होता है, इस प्रकार शुभ्रा का अर्थ चन्दन की तरह सुगन्धयुक्त या चन्दन की शक्तिस्वरूपा भी कर सकते हैं। शुभ्र अर्थात उद्दीप्त, शुक्लगुण युक्त।

865. **सन्धिनी** – जोड़ने वाली अर्थात् भक्त को उनके इष्ट देवता से जोड़ने वाली या जीवात्मा को परमात्मा से जोड़ने वाली। मित्रता की ओर ले जाने वाली अर्थात मित्रता कराने वाली। नी का अर्थ है ले जाना। सन्धि अर्थात जोड़ कराने वाली अर्थात व्याकरण में सन्धि के नियम स्वरूपा। व्याकरण में दो या अधिक शब्दों को जोड़ने के लिए नियम या सूत्र बनाए गए है। गाभिन गाय की तरह दूध देने वाली अर्थात मनोकामना पूर्ति रूप दूध देने वाली अर्थात भक्तों की मनोकामना पूरी करने वाली। संनधिनी का एक अर्थ गाभिन गाय है। (शब्दों का अर्थ निकालने के लिए ''के समान,'' उसमें अंश या शक्ति या अन्तर्यामी रूप से विद्यमान इस प्रकार के तरीके का प्रयोग कर सकते है। लक्षणा शक्ति का भी प्रयोग किया जाता है। देवी या देवता देने वाले होते है। अतः यदि कोई गुण उनके अन्तर्गत बताया गया है तो उस गुण के स्वरूप वाली एवं लक्षणा से उस गुण को देने वाली अर्थ भी किया जाता है। जैसे देवी का नाम पुष्टि है, तो इसका अर्थ पुष्टि स्वरूपा भी हो जाएगा और पुष्टि देने वाली भी हो जाएगा। अन्यथा भी यस्याः सकाशात् पुष्टिः भवति, सा पुष्टि इति उच्यते, ऐसा विग्रह करने पर जिसकी समीपता से पुष्टि होती है अर्थात पुष्टि देने वाली ऐसा अर्थ निकल आता है।) प्रगाढ़ सम्बन्ध वाली। ब्रह्म से निरन्तर जुड़ी हुई या भगवान शिव, विष्णु से निरन्तर जुड़ी हुई। सम्+धा से यह शब्द बना जिसका अर्थ है साथ साथ होना। गाय और बैल सन्तति के लिए जब जुड़े होते हैं तो ऐसी गाय अर्थात गर्भिणी गाय सन्धिनी कहलाती

है। ब्रह्म का स्वरूप है सत् चित् और आनन्द। ब्रह्म की अन्तरंगा शक्ति जो सत् पक्ष से जुड़ी है सन्धिनी कहलाती है। चित् पक्ष से सम्बन्धित शक्ति संवित् शक्ति और आनन्द पक्ष से सम्बन्धित शक्ति ह्लादिनी शक्ति कहलाती है। ऊँ आदि श्रेष्ठ विद्याओं का सन्धान कर देने वाली अर्थात प्राप्त करा देने वाली।

866. **परमौषधि** – उत्तमोत्तम औषधि स्वरूपा (औषधियों की भी औषधि)। इससे श्रेष्ठ दूसरी औषधी नहीं है। इससे हर रोग अर्थात हर कष्ट दूर होता है चाहे वह कितना भी कठिन क्यों न हो।

867. **ब्रह्मिष्ठा** – ब्रह्म में स्थित रहने वाली। वेद में स्थित रहने वाली।

868. **ब्रह्मसहिता** – ब्रह्म के साथ रहने वाली। ब्रह्म से सुशोभित। तपस्या के सहित अर्थात तपस्या करने वाली। वेद के सहित अर्थात हाथ में वेद लिए हुए।

869. **ऐन्दवी** – शिव की पत्नी स्वरूपा या शिव की पत्नी पार्वती जी से अभेद है जिनका। इन्दु+अण् से ऐन्दव शब्द बना जिसका अर्थ है चन्द्रमा को धारण करने वाले अर्थात शिव। व्याकरण में एक नियम है कि यदि किसी का विशेष गुण या विशेषता बतानी हो तो पुरूष की पत्नी, माता, बहन आदि अर्थ करने की आवश्यकता नहीं है। चन्द्रमा को धारण करने वाली अर्थात अमृत या शीतलता को धारण करने वाली। चन्द्रमा की शोभा से युक्त। चन्द्र की शक्ति से युक्त। चन्द्रमा से सम्बन्धित अर्थात चन्द्रमा की कला स्वरूपिणी, सौन्दर्य स्वरूपिणी, अमृत स्वरूपिणी। इन्दु + अण् + ङीप्। इन्दु + अण् का अर्थ है चन्द्रमा की यह, यह में हम सम्बन्धित चीजों को लेते हैं जैसे सौन्दर्य, कला, अमृत आदि। शब्द के अन्त में ''में विराजमान'' या ''का कारण'' जोड़ देने से भी अर्थ निकल आता है। ऐन्दव या ऐन्दवी का अर्थ हुआ अमृत (मोक्ष), सौन्दर्य, चन्द्रकला। अमृत, सौन्दर्य देने वाली या अमृत, सौन्दर्य में विराजमान, यह अर्थ भी निकलेगा।

870. **रत्नसम्भवा** – जिससे सभी रत्न उत्पन्न होते है अर्थात् जिससे सही रत्न उत्पन्न हुए हैं। रत्नों में उत्पन्न अर्थात् विद्यमान नाना प्रकार की कान्तिस्वरूपा। रत्नों के साथ उत्पन्न। रत्नैः सह सम्भवः यस्या सा। समुद्र मन्थन में लक्ष्मी जी के साथ अन्य बहुत से रत्न पैदा हुए थे। समस्त रत्नों की उत्पत्ति स्थान। रत्नानि सम्भवन्ति यस्याः सा। समस्त रत्न इन्हीं से उत्पन्न होते है।

871. **विद्युत्प्रभा** – विद्युत के समान कान्ति या चमक या प्रकाश से युक्त।

872. **बिन्दुमती** – अपने माथे पर बिन्दी लगाये हुए। श्री यन्त्र या लक्ष्मी यन्त्र स्वरूपा। इन यन्त्रों में सबसे ऊपर बिन्दु होता है जिसमें देवी का वास होता है। अत्यन्त विराट् स्वरूपा। ऐसा कहा जाता है कि ग्रह नक्षत्र आदि सभी बिन्दु की तरह हैं। देवी इन बिन्दुओं से युक्त हैं अर्थात विराट् स्वरूप वाली हैं। विद्वानों वाली अर्थात विद्वानों से युक्त। सारे देवता विद्वान हैं जिसके कारण उन्हें विबुध भी कहते हैं। बिन्दु का एक अर्थ है जानने वाला अर्थात विद्वान। श्रीयन्त्र के या लक्ष्मी यन्त्र के स्वरूप वाली। श्रीयन्त्र में या लक्ष्मी यन्त्र में सबसे ऊपर या सबसे मध्य में एक बिन्दु होता है। बिन्दु से युक्त (तांत्रिक लोगों का बिन्दु जिसमें वो पूजा उपासना करते हैं)।

873. **त्रिस्वभावागुणाम्बिका** – तीन स्वभाव वाली और त्रिगुणों की अम्बिका अर्थात त्रिगुणों को उत्पन्न करने वाली। त्रिस्वभावा च असौ गुणाम्बिका। तीन स्वभाव अर्थात सात्विक, राजसिक और तामसिक जो सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण के कारण होते हैं। तीन प्रकार के स्वभावों से युक्त अतएव त्रिगुणात्मिका माता। (स्त्रीलिंग की विवक्षा में त्रिस्वभावा आया है)। त्रिस्वभावा अगुणाम्बिका, इस प्रकार की भी व्युत्पत्ति हो सकती है। तब अर्थ होगा तीन स्वभाव वाली होते हुए भी निर्गुण अम्बिका है। निर्गुण निराकार परमात्मा बिना आँख के भी देख सकता है। बिना पैर के भी चल सकता है।

874. **नित्योदिता** – जो भक्तों के हृदय में हमेशा उदित अर्थात विराजमान है चाहे रात हो चाहे दिन हो जबकि

सूर्य केवल दिन में ही होता है। नित्य प्रति उदित होने वाली। नित्य प्रति अभ्युदय को प्राप्त करने वाली, उनका अभ्युदय है – भक्तों का कल्याण, शत्रुओं पर जीत। हमेशा प्रकट रहती हैं अर्थात कभी अस्त नहीं होती अर्थात जीवात्मा स्वरूपा। जीवात्मा जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति तीनों अवस्थाओं में सक्रिय रहती है।

875. **नित्यहृष्टा** – सदैव हृष्ट (प्रसन्न) रहने वाली। सदैव आनन्दित रहने वाली।

876. **पद्मांका** – कमल है लक्षण जिसका अर्थात कमल से पहचानी जाने वाली अर्थात हाथ में कमल धारण करने वाली। जिनकी हथेली में या पैर के तलवों में कमल का चिन्ह है। सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार ऐसी नारी बहुत सौभाग्यवती होती है। कमल के चिन्ह वाली अर्थात जिनके चरणों में कमल का चिन्ह है अर्थात सौभाग्यशाली।

877. **नित्यकामकरीषिणी** – सदैव कामनाओं को फेंका जाता है जिसके द्वारा अर्थात् सदैव अपने भक्तों की कामनाओं को पूरा करने वाली। कृ धातु का अर्थ फेंकना होता है। कीर्यते क्षिप्यते इति करीषम् (गोबर), चूँकि गाय के शरीर से गोबर बाहर फेंका जाता है अर्थात् निकलता है अतः गोबर को करीष कहते है। वैदिक कोष में करीषिणी का अर्थ करने वाली दिया गया है, गाय गोबर या मूत्र को करती है। करीषिणी माता लक्ष्मी का नाम है क्योंकि वे गोबर में निवास करती है एवं धन सम्पत्ति की अधिष्ठात्री देवी है। हमेशा मनोकामना को बिखेरने (फैलाने) वाली अर्थात् भक्तों की मनोकामना को हमेशा पूरा करने वाली। कृ विक्षेपे धातु से करीष शब्द बनता है जिसका अर्थ है गोबर क्योंकि वह गाय के द्वारा बिखेरा जाता है अर्थात् फेका जाता है। सदैव भक्तों की इच्छा को करने की इच्छा रखने वाली अर्थात उन्हें पूरा करने की इच्छा रखने वाली अर्थात उन्हें पूरा करने वाली। करी + इषिण्, इश धातु का अर्थ है इच्छा करना अतः इशी का अर्थ है इच्छा रखने वाली। इषिण् का एक वचन पुल्लिंग में इषी एवं स्त्रीलिंग में इषिणी होगा।

878. **वज्रचिन्हा** – वज्र है पहचान जिनकी अर्थात् जिन्हें दूसरों लोग इस प्रकार जानते है कि देवी वज्र नामक आयुध को धारण करने वाली है। चिन्ह का एक अर्थ पताका भी है। जिनकी पताका में वज्र बना हुआ है। वज्र के चिन्ह है जिनके चरणों में। वज्र कठोरता का प्रतीक है। कठोर होना पड़ता है, तभी लक्ष्मी का निवास होता है। व्यक्ति यदि उदार हो तो लोग धन को हड़प लेते हैं। वज्र सभी आयुधों का प्रतीक है। हथियारों से लक्ष्मी की रक्षा होती है।

879. **वक्रदण्डविभासिनी** – टेढ़े (कठोर या असह्य) दण्ड के रूप में प्रतीत होने वाली अर्थात् दिखाई देने वाली। दुष्टों को कठोर दण्ड देने वाली, इस प्रकार आभासित कराने वाली। तात्पर्य है कि देवी दुष्टों को कठोर दण्ड देने वाली है, ऐसा दूसरों को दिखता है या प्रतीत होता है। टेढ़े डण्डे से सुशोभित है। टेढ़ा डण्डा अधिक मार करता होगा अतः दुष्टों को मारने के लिए टेढ़ा डण्डा लिये रहती हैं। वक्रोक्ति का अर्थ सुन्दर उक्ति होता है अतः वक्र का अर्थ सुन्दर भी होता है। विशेष सौन्दर्य युक्त डण्डे से सुशोभित अर्थात दिखने में जो अच्छा लगे ऐसे दण्ड से सुशोभित। दुष्टों दैत्यों के लिए तिरछे डण्डे की तरह दिखाई देती हैं अर्थात आभासित होती हैं। डण्डे से मारा जाता है। तीक्ष्ण दण्ड के द्वारा सुशोभित होने वाली। वक्र का अर्थ तिरछा अर्थात बाँका भी होता है। तिरछे ढंग से खड़े होने के कारण भगवान कृष्ण को बाँके बिहारी कहा जाता है। डण्डा पतला होता है। बाँकी पतले शरीर रूप में दिखलाई देने वाली यह अर्थ भी कर सकते हैं। बाँका का अर्थ है सुन्दर और बना ठना अर्थात जो अपने शरीर को खूब सजाये हो जिसे छैला भी कहते हैं। बाँका शब्द बंक धातु से बना।

880. **विदेहपूजिता** – राजा जनक द्वारा पूजित। सन्यासियों / वैरागियों द्वारा पूजित। शरीर होते हुए भी शरीर का भान न रहे, यह विदेह की अवस्था है।

881. **कन्या** – अतिशय चमकने वाली। शरीर की कान्ति द्वारा चमकती अतः कन्या कहलाती हैं। कन्या शब्द कन् दीप्तौ धातु से बना है। दस वर्ष की लड़की स्वरूपा अर्थात अविवाहिता। पाराशर स्मृति के अनुसार दस वर्ष की लड़की कन्या कहलाती है। कन्याकुमारी तीर्थ स्वरूपा अर्थात इस तीर्थ की तरह पाप नाशा करने वाली अर्थात पवित्र करने वाली। कन्या राशि स्वरूपा। सर्वैः काम्यते इति कन्या, सभी के द्वारा वांछनीय कि उन्हें देवी की कृपा मिले। घीक्वार या वाराहीकन्द नामक औषधि की तरह अर्थात इनकी तरह रोगों (कष्टों) का नाश करने वाली। घर में चमक या उजाला या रौनक लाने वाली। कनि दीप्तौ धातु होती है। कामयते सर्वान् इति कन्या अर्थात जो सबको चाहती है अर्थात घर के सभी लोगों को चाहती है। देवी के सन्दर्भ में अर्थ होगा जो सभी को चाहती है क्योंकि पूरा विश्व उनका घर है।

882. **माया** – एक अखण्ड सत्ता को भेद के रूप में प्रतीत कराने वाली शक्ति। माया के कारण ही व्यक्ति अन्य पदार्थों, प्राणियों से अपने आपको अलग महसूस करता है और शरीर को अपना स्वरूप मानता है। सम्पूर्ण जगत् को भ्रम में डालने वाली शक्ति। वह शक्ति जिसके कारण प्राणी नानात्व का अनुभव करते हैं जबकि ब्रह्म के रूप में केवल एकत्व है।

883. **विजयवाहिनी** – विजय का वहन करने वाली, धारण करने वाली। विजयशीला। विजय नामक धनुष को धारण करने वाली।

884. **मानिनी** – मान/अभिमान से युक्त। अपनी सुन्दरता, शक्ति एवं गुणों का मान है जिसे। मान का अर्थ है गर्व या अभिमान। मानिनी नामक नायिका की तरह दोषों को देखकर नाराज होने वाली।

885. **मंगला** – सुखों को लाने वाली। मंगम् (सुखम्) लाति इति मंगला। दुःखों को गलाने वाली। (मम् (दुखम्) गलति इति मंगला)। जिनका नाम लेकर कोई शुभ काम करने से सफलता मिलती है, यात्रा में दुर्घटना से रक्षा होती है, वह मंगला कहलाती हैं।

886. **मान्या** – सभी के द्वारा सम्मान करने योग्य। सभी जिनका सम्मान करते हैं।

887. **मानिनी** – सम्मानिता या गौरवान्वित। मान का एक अर्थ सम्मान भी होता है। मनोयोगी की शक्ति। गर्व युक्त अर्थात किसी चीज में अपने को दूसरों से अधिक मानने वाली। जैसे रूप से गर्व युक्त, शक्ति से गर्व युक्त, ऐश्वर्य से गर्व युक्त। यदि मानिनी शब्द कई बार आये तो अलग अलग जगहों में कहीं रूप के कारण गर्व वाली, कहीं शक्ति के कारण गर्व वाली, कहीं ऐश्वर्य के कारण गर्व वाली इस प्रकार अलग अलग अर्थ कर सकते हैं।

888. **मानदायिनी** – सम्मान प्रदान करने वाली (भक्तों को समाज से सम्मान दिलाती हैं)।

889. **विश्वेश्वरी** – सम्पूर्ण विश्व की स्वामिनी। सम्पूर्ण विश्व की आराध्या। विश्व को उत्पन्न करने वाली, पालन करने वाली एवं संहार करने वाली।

890. **गणवती** – गणों (सेवकों) से युक्त। इनके गण इनके चारों ओर रहते हैं। जब चाहें गणों को प्रकट कर देतीं, जो युद्ध में युद्ध करते हैं।

891. **मण्डला** – आभामण्डल वाली। देवताओं के चारों ओर एक आभामण्डल अर्थात aura बना रहता है। मण्ड (सार) को धारण करने वाली। सुषुम्नानाड़ी में स्थित चक्र स्वरूपा। षट् चक्र या सात चक्र मण्डल कहलाये जाते हैं। मूलाधार, स्वाधिष्ठान आदि सात चक्रों में स्थित शक्ति स्वरूपा। गुण स्वरूपा जैसे पृथ्वी मण्डल का अर्थ हुआ पृथ्वीमहाभूत का काठिन्य गुण स्वरूपा।

892. **मण्डलेश्वरी** – समस्त भूमण्डल की अधिष्ठात्री देवी। अधिष्ठात्री का अर्थ है जो मालकिन होकर नियन्त्रण करे अर्थात अपनी इच्छानुसार घटनाओं को घटित कराये। किसी स्थान की अधिष्ठात्री होने का तात्पर्य है कि वह

उस स्थान की रक्षा करे एवं अपनी शक्ति देकर उसे क्रियाशील बनाये। मण्डल अर्थात समूह। देवताओं/ऋषियों/ मुनियों के मण्डल को काम में लगाने वाली।

893. **हरिप्रिया** – हरि की प्रिया अर्थात् हरि जिन्हें पसन्द करते हैं। हरि हैं प्रिय जिनको, यह अर्थ भी कर सकते हैं।

894. **भौमसुता** – भूमि से सम्बद्ध उत्पन्न पदार्थ स्वरूपा। भौम का अर्थ होता है भूमि से सम्बद्ध और सुता का अर्थ है जो पैदा हुई। सम्पूर्ण पदार्थ ऊर्जा के बने होते हैं और ऊर्जा ही शक्ति अर्थात देवी हैं। भौम का अर्थ मंगल भी होता है। मंगल की पुत्री यह अर्थ हुआ। परमेश्वर की पुत्री (भूमा से युक्त = भौम)। जो सम्पूर्ण प्रभुत्व को लिये वह है भूमा, जो सबको समाहित किये है। समस्त उत्कृष्ट सामग्रियों से युक्त।

895. **मनोज्ञा** – दूसरे के मन को जानने वाली। दूसरे को बताने की जरूरत नहीं है, देखने या चिन्तन मात्र से जान लेती हैं कि उसके मन के अन्दर क्या चल रहा है। अतिसुन्दर। मन जिसको जानता है या जिसकी प्रतीति करता है। मन प्रायः सुन्दर चीजों की ओर जाता है और उसी को याद करता है अतः मनोज्ञ का अर्थ सुन्दर या मन को अच्छा प्रतीत होने वाला किया गया है। दूसरों के मन की बात को जानने वाली। दूसरों को कहने की आवश्यकता नहीं होती। जिसे मन जानता है अर्थात् अतिशय सुन्दर। मन उसे जानता जो बहुत सुन्दर है। सुन्दर, मन को अच्छा लगने वाली। मन का बोध कराती हैं। मन अच्छी चीजों की ओर या सुन्दर चीजों की ओर ही जाता है और उन्हें ही प्राप्त करना चाहता है अतः मनोज्ञ का अर्थ सुन्दर किया गया है।

896. **मतिदायिनी** – बुद्धि प्रदायिनी। किसी भी बात की तह तक जाने वाली बुद्धि मति कहलाती है। शाक्त तन्त्र में वेद में श्रद्धा को भी मति कहा गया है, ऐसी श्रद्धा देने वाली।

897. **प्रत्यंगिरा** – अंगिरा ऋषि के सामने प्रकट होने वाली। प्रति का एक अर्थ है सामने। शक्ति का प्रतिकार करने वाली अर्थात् लौटा देने वाली। प्रति अर्थात उल्टा अर्थात वापस लौटाना। शत्रु देवी के भक्तों पर जब तान्त्रिक क्रिया करते तो देवी उसे लौटा देती हैं। प्रत्यंगिरस एवं अंगिरस ऋषियों ने जिनके मन्त्र का साक्षात्कार किया था। अपने उपासकों के अंगों में विराजमान रहने वाली। अंगों को निगल लेने वाली अर्थात उसमें विराजमान (अंगानि गिरति = अंगिरा)।

898. **सोमगुप्ता** – शिव द्वारा रक्षित। सोम का अर्थ है उमासहित अर्थात शिव। गुप्त शब्द गुप् धातु में क्त प्रत्यय लगाने से बनता है। समास में नियम है कि यदि बाद में क्त प्रत्ययात शब्द हो तो पूर्व शब्द में तृतीया विभक्ति लगती है। भगवान शिव द्वारा रक्षित अर्थात् पार्वती स्वरूपा या पार्वती जी से अभेद है जिनका। उमाया सहित् इति सोमः, जो उमा के सहित है वे है सोम अर्थात् सोम का अर्थ है भगवान शिव। सोम के अन्य अर्थ है अमृत, चन्द्रमा। अमृत है रक्षित जिनके द्वारा अर्थात् अमृत की रक्षा करने वाली। मोहिनी अवतार में उन्होंने अमृत को राक्षसों के हाथों नहीं पड़ने दिया अर्थात् अमृत की रक्षा की। अमृत पीने के कारण रक्षित अर्थात सुरक्षित अर्थात मरती नहीं हैं। सोम (चन्द्रमा) के द्वारा संरक्षित। सोमलता के रस के पान के द्वारा संरक्षित शक्ति वाली। शक्ति मिलने के कारण सोमलता का रस पीते थे जैसे दूध पीने पर शक्ति आती है। पहले देवता आवाहन करते थे फिर पीते थे जिससे शक्ति बढ़ती थी।

899. **मनोभिज्ञा** – सबके मन को अच्छी तरह जानने वाली। मन को अधिक सुन्दर लगने वाली। मन के द्वारा जानी जाने वाली।

900. **वदन्मति** – बोलती हुई बुद्धि वाली अर्थात् जाग्रत या सक्रिय बुद्धि वाली। उनकी बुद्धि निष्क्रिय नहीं है अर्थात् हमेशा काम करती रहती है। कभी– कभी कुछ चित्रों को देखकर ऐसा लगता है मानो वे बोल रहे है। बोलती हुई बुद्धि वाली अर्थात पूर्ण जाग्रत या खुली हुई बुद्धि वाली। जाग्रत बुद्धि स्वरूपा, यह अर्थ भी कर सकते

हैं। बोलती हुई बुद्धि स्वरूपा अर्थात व्यक्त या प्रकट बुद्धि स्वरूपा, न कि मन्द बुद्धि स्वरूपा। कभी कभी चित्र इस प्रकार बना होता है जैसे वह बोल रहा हो।

901. **यशोधरा** – यश को धारण करने वाली। जीवित व्यक्ति का यश होता है जबकि मृत व्यक्ति की कीर्ति होती है।

902. **रत्नमाला** – रत्नों से जड़ित माला को धारण करने वाली। रत्नजड़ित आभूषणों को धारण करने वाली। मल धारणे धातु होती है। रत्नमाला से विभूषित। रत्नों की समष्टि से युक्त। माला का एक अर्थ समष्टि भी होता है।

903. **कृष्णा** – भगवान कृष्ण की शक्ति स्वरूपा। कृष्ण के स्वरूप को धारण करने वाली। अपने रूप सौन्दर्य से सभी को आकर्षित करने वाली। कर्षति इति कृष्णः या कृष्णा। भक्तों के पापों को खींचने वाली अर्थात खींचकर नष्ट करने वाली। सौन्दर्यसारतया सर्वलोककर्षणात् कृष्णा। नियमनादि कर्षणाच्च कृष्णा। संसारान्मुक्तिं प्रति कर्षणाच्च। कृष्णवर्णत्वाच्च। कृषेर्भूमेः णः आनन्दो येन स च कृष्णा। अथ च कृषिर्भूवाचकः सत्तावचन इत्यर्थः। णश्च निर्वृत्तिवाचकः तेन सदानन्दा कृष्णा। सौन्दर्य का सार होने के कारण अर्थात सौन्दर्य का मूल होने के कारण या मुख्य सौन्दर्य होने के कारण सभी लोगों को अपनी ओर खींचने वाले। नियम है कि जो जो वस्तु सुन्दर है वह दूसरे को आकृष्ट करती है। मुख्य सौन्दर्य तो ये ही हैं, बाकी तो सौन्दर्य के छीटें हैं मात्र। नियमन आदि के द्वारा सबको खींचकर रखने वाले अर्थात मर्यादा के भीतर ही खींचकर रखने वाले। कृश् से खींचना अर्थ लिया और नियमन का न ले लिया। संसार से मुक्ति की ओर खींचकर ले जाने वाली। जिनका रंग साँवला अर्थात काला है। जिनके कारण भूमि का आनन्द है अर्थात भूमि या पृथ्वी आनन्दित या प्रसन्न हो जाती है। भूमि से तात्पर्य पृथ्वी या गोकुल आदि क्रीड़ा स्थल ले सकते हैं। जब भगवान धरती पर अवतार लेते हैं तो धरती प्रसन्न या आनन्दित हो जाती है। कृश अर्थात भू अर्थात सत्ता। ण अर्थात आनन्द, निवृत्ति। सत्ता अर्थात हमेशा रहने वाला। इस प्रकार कृष्ण का अर्थ हुआ हमेशा रहने वाला आनन्द स्वरूपा या हमेशा आनन्दित रहने वाले।

904. **त्रैलोक्यबन्धनी** – तीनों लोकों को बन्धन में डालने वाली (माया के रूप में)।

905. **अमृता** – अमृतस्वरूपा। अमृत मृत्यु का विपरीत है। मृत्यु से अप्रभावित अर्थात हमेशा जीवित रहने वाली। अमृत (मोक्ष) देने वाली। अमृत + आ, आ का एक अर्थ देना है। शब्दकल्पद्रुम में दुर्गा नाम को देखा जा सकता है जहाँ उन्होंने आ का अर्थ कहीं पर देना किया है और कहीं पर नाश करना किया है। (भगवान विष्णु के अमृत नाम की व्याख्या एक टीकाकार ने इस प्रकार की है – नित्यमुक्तत्वादमृतः। न विद्यते मृतं मृतिरस्येति। अं अकरावाच्यं स्वात्मानमेव ऋतः गतः। स्वे महिम्नि प्रतिष्ठितः। अन्तकत्वादम् ऋतश्च। अनुस्वारवाच्यत्वादम्, ऋकारवाच्य ऋत इति ऋतम्भरः। जो हमेशा से ही मुक्त है अर्थात् पहले से ही मुक्त है। ऐसा नहीं है कि जीवन में आने के बाद मुक्त हुआ है। जिनकी मौत नहीं होती है। मृत अर्थात् मृति अर्थात् मृत्यु। अकार से उन्हीं का बोध होता है और अकार में जो गया हुआ है। अकार विषय को प्राप्त या अ अक्षर में स्थिर। अपनी ही महिमा में स्थिर। जो सबका अन्त करने वाला है एवं सत्य स्वरूप है। अनुस्वार से बोधित होने के कारण अम्, और ऋकार से बोधित होने के कारण ऋत है। अनुस्वार और ऋत (सत्य) को धारण करने वाला।) इस आधार पर भी अमृत शब्द के अन्य अर्थ किये जा सकते हैं।

906. **धारिणी** – सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को धारण करने वाली।

907. **हर्षा** – हर्ष से विभूषित। अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति पर मिलने वाली खुशी हर्ष कहलाती है। हर्ष में अंगों का फैलाना अनिवार्य नहीं है अर्थात मन्द मुस्कान के साथ भी हर्ष हो सकता है। हर्ष जब इतना बढ़ जाये कि व्यक्ति अंगों को फैलाने लगे, नृत्य करने लगे ता वह उल्लास कहलाता है।

908. **विनता** – विशेष रूप से नम्र स्वभाव वाली।

909. **वल्लकी** – वीणा की तरह अर्थात वीणा की तरह मधुर ध्वनि करने वाली, मधुर ध्वनि में उच्चारण करने वाली। (वल्ल + क्वुन प्रत्यय)। क्वुन औणादिक प्रत्यय है। वीणा स्वरूपा। देवी ऊर्जा स्वरूपा हैं और प्रत्येक वस्तु ऊर्जा की बनी होने के कारण देवी स्वरूपा है। (वीणा – वेति श्रोतुः चित्तम् व्याप्नोति। वी व्याप्तौ + न प्रत्यय। श्रोता के मन में व्याप्त हो जाने वाली अर्थात मनोरथस्वरूपिणी। वेति दृष्टिमात्रम् अपगच्छति इति वीणा। जो दृष्टि मात्र से हट जाती है अर्थात क्षण भर चमकने के कारण दृष्टि की पकड़ में नहीं आती अर्थात विद्युत स्वरूपा। बिजली के समान चमकदार, शत्रुओं पर टूट पडने वाली। वीणाधारिणी में उत्तरपदलोपी समास से वीणा का अर्थ वीणा को धारण करने वाली भी कर सकते है। वीणा में विराजमान अर्थात स्वर स्वरूपा।)

910. **शची** – इन्द्राणी स्वरूपा। इन्द्राणी से अभेद है जिनका। शच् स्पष्टायाम् वाचि धातु होती है अतः शची का अर्थ हुआ स्पष्ट बोलने वाली। व्युत्पत्ति के आधार पर अर्थ हुआ स्पष्ट बोलने वाली। यदि शच् शब्दे ऐसा करें तो प्रिय बोलने वाली या अच्छा बोलने वाली अर्थ निकल सकता है। चि चिनोति धातु में ड प्रत्यय लगाने से बने च शब्द का अर्थ चुनने वाला होगा। स्त्रीलिंग में ची हो जायेगा। एकाक्षरी कोष में श के कई अर्थ दिये गये हैं जैसे शोभा, शान्ति, शिव आदि। शिव को चुनने वाली अर्थात पार्वती स्वरूपा या पार्वती जी से अभेद है जिनका। शोभा से युक्त। शान्ति से युक्त। शिव का चयन करने वाली अर्थात् जिन्होने पति रूप में शिव का चयन किया था या ग्रहण किया था। शोभा को चयन करने वाली अर्थात् धारण करने वाली। शान्ति धारण करने वाली। एकाक्षरी कोष में श का अर्थ शिव, शोभा, शान्ति दिया गया है। चि चिनोति धातु है ड प्रत्यय लगाने से च बनेगा, जिसका अर्थ है चुनने वाला अर्थात् ग्रहण करने वाला। रात्रि लिंग में च का ची हो जायेगा।

911. **संकल्पा** – संकल्प अर्थात् मानसकर्मस्वरूपिणी। संकल्प स्वरूपा।

912. **धामिनी** – अच्छे निवास वाली या अच्छे प्रकाश वाली। धाम का अर्थ निवास या प्रकाश होता है। तेजस्विनी।

913. **मिश्रा** – शिव से मिश्रित अर्थात मिली हुई। अर्द्धनारीश्वर स्वरूप में देवी शिव से मिली हुई हैं। मिश्र का अर्थ है मिश्रित। यजुर्वेद स्वरूपिणी (यजुर्वेद में गद्य और पद्य दोनों का मिश्रण है)। मिश्रित स्वरूप वाली अर्थात सृष्टि स्वरूपा। सृष्टि में तीनों गुण या पाँचों महाभूत मिले रहते हैं। भगवान विष्णु के साथ मिली हुयी है। मिश्र का अर्थ मिश्रित होता है। जगतस्वरूपा क्योंकि जगत पॉच महाभूतों को मिश्रित रूप है। (मिश्रा नाम के ब्राह्मण भी होते हैं। ब्राह्मणें के सभी कर्तव्य करने के कारण इन्हें मिश्रा कहते हैं। इनके अतिरिक्त अन्य ब्राह्मणों के विशेष कर्तव्य होते थे जैसे कोई केवल शुक्ल यजुर्वेद पढ़ता है, कोई दो वेद पढ़ता है आदि। पहले ब्राह्मण सबके हाथ का खाना नहीं खाते थे। सम्भव है कि कुछ ब्राह्मण खाना बनाते होंगे अर्थात खाना बनाने के लिए चीजों को एकदूसरे से मिलाते होंगे।) सभी कर्तव्यों से मिश्रित अर्थात सभी के कर्तव्यों को स्वयं भी करती हैं।

914. **कादम्बरी** – कलहंस के साथ जाती, उसमें सवार होकर चलती हैं। (कदम्बेन सह ऋच्छति)। कदम्ब का एक अर्थ है कलहंस। कदम्बेन सह रमति। कलहंस के साथ जिन्हें अच्छा लगता है अर्थात सरस्वती देवी। सरस्वती देवी से अभेद है जिनका। कदम्ब के वृक्ष या फूल जिन्हें पसन्द हैं ऐसी सरस्वती से अभिन्न। कादम्बरी मदिरा के समान मदमत्त कर देने वाली (लौकिक धनलक्ष्मी से मद पैदा होता है)। कदम्ब वृक्ष के फूलों से बनी मदिरा कादम्बरी कहलाती है।

915. **अमृता** – गुरूच (गिलोय या अमृता) को जीवनी शक्ति प्रदान करने वाली। गिलोय की तरह सर्वरोग निवारिका अर्थात सभी कष्टों को दूर करने वाली।

916. **प्रभा** – अधिक दीप्ति या चमक वाली। अत्यधिक दीप्ति या चमक स्वरूपा। प्र का अर्थ है अत्यधिक या

सीमा से अधिक और भा का अर्थ है। चमक, दीप्ति। प्रकाश स्वरूपा। किरण स्वरूपा। दीप्ति स्वरूपा (प्रकर्षेण भाति इति प्रभा)। प्रभा नामक सूर्य की पत्नी से अभेद है जिनका। प्रभा नामक अप्सरा की तरह सुन्दर।

917. **अगता** – अज्ञाता अर्थात सम्पूर्ण रूप से नहीं जानी जाती। गति का एक अर्थ ज्ञान भी होता है। अ का अर्थ है विष्णु। भगवान विष्णु में गई अर्थात भगवान विष्णु के साथ रहने वाली। अविनाशी, जो कभी जाती नहीं अर्थात् शाश्वत सदैव रहने वाली। सामान्य लोगों द्वारा नहीं जानी गई अर्थात् अपात्रों द्वारा जिन्हें नहीं जाना जा सकता है। गत का अर्थ जाना गया होता है किन्तु कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र से कृत्य प्रत्ययों का अर्थ उन कारकों एवं कालों से भिन्न–भिन्न अर्थ भी किया जा सकता है यदि आवश्यकता पड़े। जाना गया को जाना जा सकता है, या जाना जायेगा, ऐसा अर्थ भी कर सकते है।

918. **निर्गता** – समुद्र से अच्छी प्रकार से निकली हुई। लक्ष्मी जी की उत्पत्ति समुद्र मन्थन से हुई थी। निर्गत होने का अर्थ है किसी चीज से बाहर निकलना। इसी प्रकार इस नाम का अर्थ हुआ प्रकृतिस्वरूपा, क्योंकि प्रकृति या जगत् ब्रह्म रूपी बीज से निकला है। गम् धातु का अर्थ जानना भी होता है। नि का अर्थ नितराम्। योगियों द्वारा ध्यान की परिपक्व अवस्था में जिन्हें पूर्णरूप से जाना गया, यह अर्थ भी हो सकता है। सांसारिक बन्धन से निकली हुई अर्थात माया से परे। संसार में होते हुए भी निर्लिप्त। सृष्टिरूपा। सृष्टि रूप से निकली हुई अर्थात बीज से निकली हुई। निर्गत का अर्थ होता है निकला हुआ अर्थात बाहर आया हुआ। बीज से वृक्ष निकलता है तो कहते हैं बीज से वृक्ष निर्गत हुआ। जो संसार से अलग भी है। संसार में तो व्याप्त है ही, संसार से परे भी है। पुरुष सूक्त में लिखा है कि ब्रह्म का एक चौथाई हिस्सा ही संसार में हैं और तीन चौथाई संसार से बाहर है। संसार से बाहर वाला हिस्सा निर्गता कहलाया जाएगा। योगियों द्वारा ठीक–ठीक तरीके से या पूरी तरह से जिन्हें जाना गया। नितराम् गता योगिभिः इति निर्गता।

919. **वज्रा** – वज्र को धारण करने वाली। वज्रः अस्या अस्ति इति वज्रा। वज्र हथियार स्वरूपा। प्रत्येक चीज ऊर्जा की बनी होती है और ऊर्जा ही शक्ति अर्थात देवी हैं। वज्र की तरह कठोर एवं अमोघ स्वरूप वाली। दुष्टों, असुरों से लड़ते वक्त वज्र जैसा शरीर धारण कर लेती हैं। कठोर अर्थात इनके शरीर को नुकसान नहीं किया जा सकता। अमोघ अर्थात इनकी उपासना व्यर्थ नहीं जाती। दृढ़संकल्प या चरित्र वाली। वज्र की तरह शत्रुओं के प्रति अत्यन्त कठोर। वज्र + आ, आ का अर्थ है देना, इन्द्र को वज्र देने वाली। वेद में वज शब्द पराक्रम के लिए भी आया है। पराक्रम देने वाली। वज्र + आ, आ का एक अर्थ है देना। व्रज दृढ चरित्र एवं अमोघ शक्ति का भी प्रतीक है।

920. **सुहिता** – मित्र की तरह अर्थात् अपने भक्तों के सुख–दुख में साथ खड़ी हुई एवं उन्हें सही सलाह (मार्गदर्शन) देने वाली। सुहित के अर्थ हैं मित्र, उपयोगी, लाभकारी। भक्तों के लिए उपयोगी या लाभकारी अर्थात् उन्हें बहुत से लाभ देने वाली। भक्तों के सुन्दर हितों को करने वाली। अच्छा हित करने वाली अर्थात श्रेयस्करी। हित का अर्थ योग्य या उपयुक्त भी होता है। इस प्रकार सुहिता का अर्थ अत्यन्त योग्य या नितान्त योग्य भी हुआ।

921. **सहिता** – हितकारिणी। सहिता का अर्थ है हित के सहित। हित (उपकार) सहित अर्थात शुभ से भरपूर। हित का अर्थ रखा हुआ भी होता है। सह हिता इति सहिता अर्थात जो साथ–साथ रखी हुई है अर्थात शिव/विष्णु के साथ हमेशा रहने वाली। शिव से या ब्रह्म से मिली हुई यह अर्थ भी कर सकते हैं। धर्म अर्थ काम मोक्ष पुरूषार्थों से युक्त रहने वाली। शिव और विष्णु में कोई भेद नहीं है तभी उन्हें हरिहर कहा जाता है। भगवान विष्णु के साथ रहने वाली। शिव के साथ रहने वाली पार्वती स्वरूपा या पार्वती जी से अभेद है जिनका। सहित का अर्थ है साथ।

922. **अक्षता** – कभी विनष्ट न होने वाली। अविवाहिता या कुमारावस्था वाली, अक्षता का अर्थ होता है वह स्त्री जिसका पुरुष के साथ संयोग न हो। देवी इच्छानुसार कोई भी रूप धारण कर लेती है अतः विभिन्न नामों के अर्थ में विरोध होने पर आश्चर्य नहीं करना चाहिये। अन्यथा भी देवी के कुछ रूप जैसे कन्याकुमारी, बाला त्रिपुर सुन्दरी आदि रूप हैं जिसमें उनका पुरुष से संयोग नहीं हुआ है। देवी के सभी रूप मूलतः एक हैं। यह नाम कुण्डलिनी शक्ति की उस अवस्था का बोध करा रहा है जिसमें उसका अभी तक सहस्रार स्थित शिव से मिलन नहीं हुआ है। चावलों वाली अर्थात पूजा में चावल चढ़ाये जाते हैं। अक्षताः यस्या सा अक्षता। चावल में स्थित शक्तिस्वरूपा। अक्षत + आ, आ का एक अर्थ है शक्ति।

923. **सर्वार्थसाधनकरी** – सभी कार्यों को सम्पन्न करने वाली। भक्तों के सभी अभीष्ट कार्यों को सम्पन्न करने वाली। अर्थ का तात्पर्य है कार्य या उद्देश्य, साधन का अर्थ कार्य करना, सम्पन्न करना, प्राप्त कराना होता है। जो जिसका मनोरथ है वह उसका अर्थ है। अर्थ्यते इति अर्थः अर्थात जो चाहा जाता है वह अर्थ है। अर्थ अर्थात वस्तु। करी का अर्थ है करने वाली। सभी अभीष्ट वस्तुओं की प्राप्ति कराने वाली। सभी प्रकार के अर्थ साधनों को सम्पन्न करने वाली। (धन के सभी प्रकार देने वाली, धन धान्य आदि)।

924. **धातुर्धारणिकाया** – ब्रह्म जी के जगत को धारण करने वाले शरीर के स्वरूप वाली। धातृ का अर्थ होता है ब्रह्मा। संस्कृत व्याकरण के एक सूत्र के अनुसार विकल्प से धारणी का धारणि हो जाता है जैसे कालीदास का कालिदास हो जाता है। धारिणी का अर्थ है धारण करने वाली। ब्रह्मा को या शिव को धारण करने वाले शरीर वाली। धातु का अर्थ है ब्रह्मा, शिव। धेट् पाने क्रिया से धातु शब्द बना जिसका अर्थ सृष्टि करना एवं संहार करना हुआ। पी जाना अर्थात संहार करना।

925. **अमला** – मल रहित। संसारिक प्रपंचों में रहित। जो आत्मा की शक्ति को आच्छादित करे उसे मल कहते हैं। सामान्यतः तीन प्रकार के मल होते हैं वे हैं – आणव मल, कार्मिक मल और मायिक मल। भगवान विष्णु को धारण करने वाली अर्थात् उनको adopt करने वाली अर्थात् उनका पालन–पोषण करने वाली। अ का एक अर्थ भगवान विष्णु है। मल् धारणे धातु होती है।

926. **करूणाधारसम्भूता** – करुणा के आधार अर्थात हृदय में सम्यक् रूप से सत्ता है जिसकी। भू सत्तायाम धातु होती है। करुणा हृदय में ही होती है। आधार अर्थात प्राप्ति स्थान। भगवान विष्णु और शिव भी करुणा से भरे रहते हैं। इस प्रकार अर्थ हुआ भगवान विष्णु के साथ सम्यक सत्ता है जिसकी अर्थात उनके साथ हमेशा रहने वाली। करूणा के आधार (विश्वेश्वर विष्णु/शिव) द्वारा प्रकट होने वाली। मूलतः करूणा के स्वरूप में उत्पन्न। आधार अर्थात् मूलतः। करूणा के आधार अर्थात् भगवान शिव के साथ अच्छी तरह स्थित अर्थात् विराजमान। भू सत्तायाम् धातु से भू का अर्थ सत्ता वाला होना होता है। सामान्यतः भू का अर्थ उत्पन्न करना होता है।

927. **कमलाक्षी** – कमल के समान सुन्दर नेत्रों वाली। कमल सुन्दरता का प्रतीक है।

928. **शशिप्रिया** – चन्द्रमा की तरह प्रिय लगने वाली। चन्द्रमा है प्रिय जिनको। चन्द्रमा की पत्नी रोहिणी से अभेद है जिनका। रोहिणी नक्षत्र स्वरूपा।

929. **सौम्यरूपा** – शान्त और सुन्दर स्वरूप वाली। आह्लादकारी अर्थात प्रसन्नता देने वाले स्वरूप वाली। शीतल प्रकृति वाली। सौम्य शब्द सोम से बना है जिसका अर्थ है चन्द्रमा। चन्द्रमा सुन्दर, शान्त, आह्लाद देने वाला और शीतल होता है। सुमधुर स्वरूप वाली। (soft natured /gentle/beautiful)। जो सुन्दर एवं नम्र हो उसे सौम्य कहते हैं।

930. **महादीप्ता** – जिसमें बहुत अधिक कान्ति है। जिसमें सर्वाधिक कान्ति है। महा का अर्थ बहुत अधिक या सर्वाधिक होता है। रत्न में भी कान्ति होती है। यह कान्ति किसी को जलाती नहीं है। अतिशय चमकने वाली। दीप्त का अर्थ ज्ञानरूपी प्रकाश से युक्त भी कर सकते हैं। शब्द के आगे महा लगा हो तो उसका अर्थ सर्वाधिक होता है। इस प्रकार महादीप्ता का अर्थ ज्ञान रूपी प्रकाश से युक्त लोगों में सर्वाधिक ज्ञान वाली हुआ। कीर्ति या यश से भी प्रकाशित हुआ जाता है। यशस्वी प्राणियों में जो सबसे बढ़कर है अर्थात जिनका यश सर्वाधिक है।

931. **महाज्वाला** – सबसे बड़ी अग्निस्वरूपा अर्थात प्रलयकालीन अग्नि स्वरूपा। यह सामान्य अग्नि नहीं है। शब्द के आगे महा लगा होने से सबसे बढ़कर अर्थ हो जाता है। महती ज्वाला वाली। अतिशय/प्रचण्ड ज्वलन शक्ति से युक्त। सभी कर्मों को जला देने वाली ज्ञानाग्नि स्वरूपा। महा अर्थात सभी, ज्वाला अर्थात जलाने वाली। दुष्टों को और पापों को जलाने के लिए सर्वोच्च शक्ति स्वरूपा। महा अर्थात सर्वाधिक, ज्वाला अर्थात जलाने वाला। विशाल ज्वाला स्वरूपा अर्थात सभी दुष्टों को भस्म करने वाली या विशाल चमक वाली। अग्नि की चमक जला देती है, जबकि रत्न की चमक नहीं जलाती है।

932. **विकाशिनी** – विशेष चमक वाली या विशेष प्रकाश वाली। काश् धातु का अर्थ होता है चमक। विकाश का अर्थ विकास भी होता है। इस सन्दर्भ में विकाशिनी का अर्थ प्रफुल्लित या प्रसन्न करने वाली या प्रसन्न रहने वाली होगा। विशेष फैलाव या विस्तार वाली अर्थात सभी का विकास करने वाली। आध्यात्मिक/आधिदैविक एवं आधिभौतिक तीनों विकास। वि का अर्थ है विश्व अर्थात सभी।

933. **माला** – शोभा धारण करने वाली। माम् (लक्ष्मीम्=शोभाम्) लाति ग्रह्णाति इति माला। शोभा सम्पत्ति लाने वाली। माला धारण करने वाली। माला अस्याः अस्ति इति माला।

934. **कांचनमाला** – सोने की माला वाली अर्थात सोने की माला धारण करने वाली। स्वर्णमाला जैसे मंगलसूत्र।

935. **सद्वज्रा** – सदैव वज्र को धारण किये हुए। श्रेष्ठ वज्र से सुशोभित।

936. **कनकप्रभा** – सोने की तरह चमकने वाली। आत्मा के प्रकाश की तरह चमकने वाली। सोना आत्मा का प्रतीक है।

937. **प्रक्रिया** – विशेष विधान या वेदोक्त विधान स्वरूपा। यज्ञ विधान स्वरूपा। जो किया जाता है वह विधि या विधान या क्रिया है। प्रकृष्ट कर्म या अच्छा कार्य स्वरूपा। प्रकृष्ट क्रिया वाली। युक्ति या तरीका स्वरूपा। वह क्रिया या प्रणाली जिससे कोई वस्तु होती है, बनती है या निकलती है प्रक्रिया कहलाती है, ऐसी क्रिया स्वरूपा। सभी प्रकार की क्रियाओं को सम्पादित कर देने वाली। श्रेष्ठ कर्मों वाली। क्रिया का एक अर्थ कर्म भी होता है। चूँकि उनके कर्म धर्म की रक्षा हेतु होते है अतः वे श्रेष्ठ है। श्रेष्ठ यज्ञ विधान स्वरूपा। प्र अर्थात् प्रकृष्ट अर्थात् श्रेष्ठ। श्रेष्ठ या प्रशंसनीय कर्मो वाली। प्र अर्थात प्रकृष्ट अर्थात श्रेष्ठ या प्रशंसनीय। क्रिया का अर्थ है कर्म। सृष्टि, पालन, संहार, अनुगृह, तिरोधान, असुरों से युद्ध करना, भक्तों को मनचाहा वरदान देना, करूणा और कृपा की धारा प्रवाहित करना आदि श्रेष्ठ कर्म है। राजकीय चिन्हों को धारण करने वाली अर्थात विश्व की महारानी। प्रक्रिया अस्या अस्ति इति प्रक्रिया (प्रक्रिया वाली)। शब्दकोश में प्रक्रिया का एक अर्थ राजकीय चिन्ह दिया गया है। उच्च शक्ति से युक्त। प्रक्रिया का एक अर्थ उच्च शक्ति भी दिया गया है।

938. **परमा** – सर्वश्रेष्ठ स्वरूप वाली। शक्ति, गुण, सम्पन्नता, सौन्दर्य आदि में जो सबसे बढ़कर हैं। मुख्य या प्रधान। वह व्यक्ति या वस्तु जो सर्वोच्च हो परम कहलाता है। परम (अर्थात शिव या विष्णु) की शक्ति स्वरूपा। परम अर्थात ऊँकार स्वरूपा या ऊँकार की शक्ति स्वरूपा। परम अर्थात ब्रह्म की शक्ति स्वरूपा।

939. **योक्त्री** – जोड़ने वाली (उपासकों को अपने आत्मस्वरूप से जोड़ती है)। भक्तों को अपने इष्ट देव से

जोड़ने वाली। भक्तों को अभीष्ट लक्ष्य से जोड़ने वाली अर्थात प्राप्त कराने वाली। उपासक को उपास्य से जोड़ने वाली या भक्तों को अपने स्वरूप से जोड़ने वाली या जीवात्मा को परमात्मा से जोड़ने वाली या उपासक को उसके मनोरथ से जोड़ने वाली अर्थात मनोरथ पूरा कराने वाली।

940. **क्षोभिका** – सृष्टि निर्माण के लिए शिव को क्षुब्ध (आन्दोलित) करने वाली। क्षुब्ध एक प्रकार का रतिबन्ध या कामशास्त्र की क्रिया है। दैत्यों को क्षुब्ध (भयभीत, व्याकुल) करने वाली।

941. **सुखोदया** – भक्तों के सुखों का उदय कर देने वाली।

942. **विजृम्भणा** – विशेष विस्तार स्वरूपा अर्थात् अधिक विस्तार स्वरूपा। विशेष विस्तार वाली अर्थात् जगत स्वरूपा। विशेष का अर्थ है जो औरों से हटकर हो या सामान्य से अधिक हो। विशेष जम्हाई है जिनकी अर्थात फैले हुए मुख वाली। भयंकर जम्हाई लेने वाली (संग्राम में शत्रुओं के संहार के समय) वि = विशेष (यहाँ पर भयंकर)। जगत को प्रकट कर देने वाली। वि = विश्व / जगत्, जृम्मभ्ण = जम्हाई लेना अर्थात प्रकट कर देना। जम्हाई अर्थात मुँह फैलाना अर्थात मुँह का विकास करना अर्थात जगत का विकास करना। विश्व का संहार करने वाली यह अर्थ भी होता है क्योंकि जम्हाई में बाहर की चीजें अन्दर भी आती है। विराट् रूप में जब भगवान जम्हाई लेते हैं तो सारा कुछ उनके अन्दर प्रवेश करता हुआ दिखता है। दुर्गासप्तशती में आया कि देवी ने अपना मुँह फैलाया तो चण्डमुण्ड सेना सहित और रथ सहित उनके मुँह में समा गये।

943. **वज्राख्या** – जिनका नाम वज्रा है अर्थात् वज्रा नाम से पुकारी जाने वाली। वज्रा जिनका नाम है ऐसी नाडी स्वरूपा या ऐसी नाडी में शक्ति रूप में विराजमान। वज्रा की तरह अमोघ नाम वाली अर्थात् जिनका नाम लेना कभी निष्फल नहीं माना जाता। वज्र एक ऐसा स्थान है जो कभी निष्फल नहीं होता। वज्र नाम से प्रसिद्ध। शत्रुओं के लिये वज्र की तरह, आचरण करने वाली। आख्या का अर्थ होता है नाम या संज्ञा। वज्र नाम है जिसका ऐसी वज्र नाड़ीस्वरूपा।

944. **शृंखला** – जंजीर की तरह अर्थात जंजीर की तरह समस्त प्राणी जगत को बाँधने वाली अर्थात मायाशक्ति स्वरूपा। माया ने सभी प्राणियों को संसार से बाँध कर रखा है। जंजीर प्राणी को किसी चीज से जोड़ती है। माया रूपी जंजीर ने प्राणियों को संसार से जोड़कर रखा है। शृंखला (जंजीर) की तरह संसार से जुड़ी हुई। शृंखला (अर्थात जंजीर) की तरह। जंजीर से बाँधने का काम होता है इस प्रकार शृंखला का अर्थ हुआ जंजीर की तरह शत्रुओं को बाँध देने वाली। कष्ट को दूर करने वाली। अमरकोष में शृंखला शब्द की व्युत्पत्ति दी है – शृंगम् प्राधान्यम् खलति इति श्रृंखला। जो प्रधानता को संचित करती है अर्थात सबसे मजबूत होती है वह शृंखला है। खल् संचये धातु होती है। देवी के सन्दर्भ में अर्थ होगा जिसने प्रधानता को संचित किया है अर्थात जो सभी देवी देवताओं में सर्वोपरि हैं। सूर्य को खल कहते हैं क्योंकि इस नाम का विग्रह है खे लसति अर्थात आकाश में सुशोभित होता है।

945. **कमलेक्षणा** – कमल के समान सुन्दरता से देखने वाली। कमल सुन्दरता का प्रतीक है। कमल का एक अर्थ जल भी होता है। सजल नेत्रों वाली। करुणारूपी जल उनकी आँखों में रहता है। कमल के समान विशाल और गोल नेत्रों वाली अर्थात चारों ओर देखने वाली अर्थात सब कुछ जानने वाली। सुख धारण करने वाली अर्थात प्रसन्न नेत्रों वाली। क अर्थात सुख, मल धारणे धातु होती है अतः कमल का अर्थ हुआ सुख धारण करने वाला। ईक्षण का अर्थ है देखना, नेत्र। कमल के समान निर्लिप्त भक्तों पर दृष्टिपात करने वाली अर्थात कृपा की दृष्टि डालने वाली।

946. **जयंकरी** – जय (जीत) दिलाने वाली। जीत करने वाली अर्थात जीतने वाली।

947. **मधुमती** – अमृत से युक्त। मधुर स्वभाव वाली। शहद से युक्त, पूजा में शहद चढ़ाते हैं तो देवी शहद से

युक्त हो जाती हैं। मधु नामक ब्रह्मविद्या से युक्त। मधुमती नामक नदी स्वरूपा। गंगा स्वरूपा या गंगा से अभेद है जिनका। गंगा का एक नाम मधुमती है। मधुमती नामक समाधि की एक अवस्था स्वरूपा। अभ्यास और वैराग्य के कारण जब रजोगुण और तमोगुण के पूर्णतः दूर हो जाने पर केवल सतोगुण का प्रकाश होता है तब ऐसी अवस्था आती है। तान्त्रिकों की मधुमती नामक नायिका (देवी) स्वरूपा, जिनकी उपासना और सिद्धि से मनुष्य कहीं पर भी आ जा सकता है।

948. **हरिता** – हरित वर्णन वाली। जीवन स्वरूपा या जीवन को देने वाली। हरित रंग जीवन का उपलक्षण है। जब हम कहते है कि कोई चीज हरी–भरी है तो इसका तात्पर्य है कि उसमें जीवन है। हरित + आ, आ का एक अर्थ है देना। हरि अर्थात् भगवान विष्णु को गई अर्थात् उन्हें प्राप्त हुई अर्थात् लक्ष्मी स्वरूपा या लक्ष्मी जी से अभेद है जिनका। हरि + इता से सामान्यताः हरीता बनेगा, हरीता नही किन्तु संस्कृत व्याकरण में एकसूत्र है शकन्ध्वादिषु. ..., जिसके अनुसार पररूप होकर हरिता शब्द बन सकता है। हरित वर्ण वाली हरियाली स्वरूपा। हरियाली की तरह सर्वत्र सुखों की वर्षा करने वाली। (हरिता = हरियाली जो सुख और आनन्द की प्रतीक है)। जो हरण की गई अर्थात सीता स्वरूपा, जिसे रावण ने हरण किया था। भक्तों की भक्ति से जिसका हरण हो जाता है।

949. **शशिनी** – चन्द्रमा की तरह अर्थात चन्द्रमा की तरह सुन्दर, आह्लाद प्रदान करने वाली और शीतल गुणों वाली। शश का अर्थ है खरगोश, शश+इनि से स्त्रीलिंग में शशिनी शब्द बनेगा जिसका अर्थ है खरगोश के चिन्ह से युक्त अर्थात चन्द्रमा। शशि का अर्थ भी चन्द्रमा है और नी का अर्थ ले जाना है। चन्द्रमा को ले जाने वाली अर्थात उसे अपने कार्य में लगाने वाली। चन्द्रमा की 16 कलाओं में से एक शशिनी नाम की कला के स्वरूप वाली। शश अर्थात मृग, खरगोश से युक्त अर्थात देवी के पास ये रहते हैं। शश अर्थात चन्द्रमा के कलंक से युक्त अर्थात काजल का टीका लगाए हुए। शश (खरगोश) के चिन्ह से युक्त अर्थात चन्द्रमा। शशिनी चन्द्रमा का भी एक नाम है क्योंकि उसमें खरगोश के चिन्ह जैसा कलंक या दाग होता है। चन्द्रमा के समान अर्थात सुन्दर, सौम्य और शीतल।

950. **शिवा** – शिव की पत्नी पार्वती स्वरूपा। शिव की शक्ति स्वरूपा। शिव की इच्छा स्वरूपा। वश् कान्तौ धातु होती है और कान्ति का अर्थ है इच्छा। वास्तव में वशि शब्द के वर्ण आगे पीछे होकर शिव बन गये जिसका अर्थ है इच्छा। शिव+आ, शिव का अर्थ है मोक्ष और आ का अर्थ है देना। शिवा का अर्थ भी मोक्ष होता है। शिवा (मोक्ष) + आ (देना)। इस प्रकार शिवा का अर्थ हुआ मोक्ष देने वाली।

951. **मूलप्रकृति** – आदि प्रकृति जिससे चराचर जगत की रचना हुई। प्रकृति अर्थात सत–रज–तम इन तीनों गुणों की साम्यावस्था को धारण की हुई शक्ति।

952. **ईशानी** – ईशान (शिव) की शक्ति। ईशम् अनति आनयति जीवयति इति ईशानी अर्थात शिव को जीवित रखने वाली। अनति का अर्थ है जीवित रखना। जहर पीने के बाद भी शिव देवी की कृपा से जीवित रहे थे। सभी पर शासन करने वाली। इन पर शासन करने वाला कोई नहीं है।

953. **योगमाता** – योग विद्या की जननी। योगियों का भरण पोषण करने वाली, रक्षा करने वाली। योगम् अस्य अस्ति इति योगः (योग वाला अर्थात योगी)।

954. **मनोजवा** – मन के समान वेग वाली। हनुमान जी की शक्तिस्वरूपा। हनुमान जी का एक नाम है मनोजव।

955. **धर्मोदया** – धर्म के उदय का स्थान या आश्रय। धर्मोदय+ आ, आ का अर्थ हे देना। धर्मोदय देना अर्थात धर्म का उदय करने वाली। उपदेश के माध्यम से बताकर या शास्त्र रूप में बताकर या अपने आचरण द्वारा धर्म प्रकट करती हैं।

956. **भानुमती** – अतिशय प्रकाशशीला, किरणों वाली (रश्मि जाल से घिरी), (भानु = किरण)।

957. **सर्वाभासा** – सभी को आभासित करने वाली। सूर्य, चन्द्र, विद्युत, अग्नि इन सभी में देवी के कारण ही प्रकाश है। सभी प्रकार की कन्तियों के स्वरूप वाली। सभी प्रकार की कान्तियों से युक्त।

958. **सुखावहा** – सुखों को ला देने वाली (भक्तों के लिये)। भक्तों के लिये सुख को लाने वाली अर्थात सुख लाकर भक्तों को देने वाली। वह् धातु का अर्थ धारण करना भी होता है। सुख को सम्पूर्ण रूप से धारण करने वाली। सुख+आ+वह्, आ का अर्थ है सम्पूर्ण रूप से।

959. **धुरन्धरा** – अग्रणियों में भी अग्रणी (सबके आगे रहने वाली)।

960. **बाला** – बाल स्वरूपा। बाला त्रिपुर सुन्दरी से अभेद है जिनका। जो स्वयं बल से युक्त है या अपने उपासकों को बल देती है वह बाला है। बलयति इति बाला। जिससे अर्थात जिसका नाम सुनकर दुष्टजन या भूत प्रेत दूर भाग जाते हैं। बलन्ति चलन्ति दुष्टा यस्याः सा। तात्पर्य है दुष्टों का वारण (हटाना या दूर करना) करने वाली। जो अपने पराक्रम से शत्रुओं को आच्छादित या परास्त कर देती है। बलते आच्छादयति स्वपराक्रमेण अन्यान्। भक्तों को अमृत से भर देने वाली अर्थात मोक्षदेने वाली। वम् बीज अमृत बीज है। वम् (अमृतम्) अलति पूरयति इति बाला अर्थात अमृत से भर देने वाली। बाल भगवान कृष्ण या विष्णु जी का भी नाम है। जो भगवान विष्णु या कृष्ण की तरह पराक्रमी है। बालो बालयुते पाके मुकुन्दे मुग्धके गो। ये सब कौशिक के मतानुसार पर्यायवाची हैं।

961. **धर्मसेव्या** – धर्म के द्वारा सेवनीया। धर्म देवता जिनकी पूजा उपासना करते हैं। सेवा करना अर्थात पूजा या उपासना करना।

962. **तथागता** – तथता (सत्य) को प्राप्त कर लिया जिसने ऐसे बुद्ध स्वरूपा। ज्ञान स्वरूपा।

963. **सुकुमारा** – अत्यन्त कोमलस्वरूप वाली।

964. **सौम्यमुखी** – सुन्दर शान्त मुख वाली। प्रसन्न मुख वाली। सोम अर्थात चन्द्रमा से सौम्य बना और चन्द्रमा सुन्दर शान्त और प्रसन्न होता है।

965. **सौम्यसम्बोधना** – सुगम (सुवाच्य या सरल) है सम्बोधन जिनका। जिनका नाम सौम्य है, यह अर्थ भी किया जा सकता है। सुन्दर एवं आह्लादक तरीके से बोलने वाली। आह्लादक अर्थात प्रसन्नता देने वाला। विनम्र तरीके से बोलने वाला। शीतल या कोमल तरीके से बोलने वाली। मधुरभाषिणी। सोम अर्थात चन्द्रमा प्रसन्न, आह्लादक, शीतल, शान्त होता है।

966. **उत्तमा** – गुण, विशेषता आदि में सबसे बढ़कर। सबसे अच्छा, सबसे भला और श्रेष्ठ। अतिशय श्रेष्ठ।

967. **सुमुखी** – सुन्दर मुख वाली। सुमुखी नामक अप्सरा की तरह सुन्दर। सुखदायी मुख वाली अर्थात जिनके मुख का दर्शन करने से सुख की अनुभूति होती है।

968. **सर्वतोभद्रा** – सभी ओर से कल्याण करने वाली।

969. **गुह्यशक्ति** – छिपी हुई अर्थात अप्रकट शक्तिस्वरूपा। देवी कण कण में विद्यमान हैं फिर भी प्रकट नहीं हैं। ह्रदय में छिपी हुई शक्तिस्वरूपा। गुप्त शक्ति या छिपी हुई शक्ति के रूप में स्थित। गोपनीय या छिपाने योग्य शक्ति के रूप में। जिसका तात्पर्य सहज में न समझा जा सके या जिसे आसानी से न जाना जा सके ऐसी शक्ति के रूप में।

970. **गुहालया** – ह्रदय रूपी गुफा में निवास करने वाली। बुद्धि रूपी गुफा में निवास करने वाली।

971. **हलायुधा** – हल को आयुध के रूप में प्रयोग करने वाली। बलराम की शक्ति स्वरूपा। बलराम जी हल को आयुध के रूप में धारण करते थे अतः उन्हें हलायुध कहते हैं।

972. **एकवीरा** – अद्वितीय वीरा। वीर का अर्थ है योद्धा, बहादुर।

973. **सर्वशस्त्रसुधारिणी** – सभी प्रकार के शस्त्रों को सम्यक् रूप से धारण करने वाली। शस्त्र वो हैं जो हाथ में पकड़े हुए ही किसी पर चलाये जाते हैं। अस् धातु का अर्थ होता है फेंकना अतः अस्त्र वे आयुध हैं जो फेंककर चलाए जाते हैं।

974. **व्योमशक्ति** – आकाश, ब्रह्म या परमात्मा की शक्ति स्वरूपा। आकाश की शक्ति से युक्त। परमात्मा की शक्ति से युक्त। आकाश को ब्रह्म अर्थात परमात्मा कहा गया है। आकाश की शक्ति अर्थात शब्द तन्मात्रा। आकाश में व्याप्त नाद शक्तिस्वरूपा। शब्द शक्ति है।

975. **महादेहा** – सबसे विशाल शरीर वाली। पूजनीय शरीर वाली अर्थात बहुत सुन्दर शरीर वाली। मह् पूजायाम धातु होती है।

976. **व्योमगा** – आकाश में विचरण करने वाली। आकाश में विराजमान।

977. **मधुमन्मयी** – माधुर्य युक्त पदार्थों वाली अर्थात् देवी के पास ऐसे सभी पदार्थ है जिनमें अच्छाई है। जो पदार्थ सुख देते है अर्थात् मन को अच्छे लगते है वे मधुर पदार्थ कहलाये जाते है। मधुर (अच्छाईयुक्त) पदार्थों वाली अर्थात सभी अच्छे पदार्थ इनके पास हैं। मधुर अर्थात मधु से युक्त अर्थात मधुमत्। मधुसूक्त में मधु का अर्थ पार्थिव पदार्थ किया गया है। अतिशय मधुर स्वभाव वाली। (मधुमत् = मधुर) मयट् प्रत्यय दो बार लगा अतः अतिशय मधुर। माधुर्य युक्ता। दो मयट् प्रत्यय लगे हैं एक का अर्थ युक्त किया और दूसरे का अर्थ स्वार्थ अर्थात अर्थ में बदलाव नहीं।

978. **गंगा** – गंगा की तरह पापनाशिनी अर्थात भक्तों, उपासकों के पापों का नाश देवी के नाम लेने से हो जाता है। ज्ञानियों के हृदय में निरन्तर विचरण करने वाली। निरन्तरम् गच्छति, पुनः पुनः गच्छति इति गंगा अर्थात जो निरन्तर गति करती है वह गंगा है। मोक्षार्थियों के द्वारा जिसका आश्रय लिया जाता है (मोक्ष पाने के लिए) वह गंगा है। मोक्षार्थिभिः गम्यते इति गंगा। जो भक्तों को भगवान के चरणों तक पहुँचाती है वह गंगा है। भगवत्पदान् गमयति इति गंगा।

979. **वितस्ता** – व्यास नदी स्वरूपा। व्यास नदी के समान पवित्र करने वाली अर्थात पाप दूर करने वाली। इनके जल से स्नान करने से या पूजा करने से पाप दूर होते हैं। विशेष रूप से फैली हुई अर्थात व्यापक। विस्तृत स्वरूप वाली। ब्रह्माण्ड के रूप में विस्तृत।

980. **यमुना** – यमुना नदी में विराजमान। यमुना की शक्ति से युक्त। यमुना नदी स्वरूपा। जिसके द्वारा इन्द्रियों को/मनुष्यों को नियन्त्रित किया जाता है। (यम्यते नियम्मते इन्द्रियाणि मानवाः यया)। जो सभी को मिलाकर अर्थात सभी को समाहित कर आगे बढ़ती है। यु धातु का अर्थ है मिश्रण करना। यमुना जी में बहुत सी नदियों का जल मिलता है जिससे उनमें जल की मात्रा बहुत होती है। प्रवियुती इति यमुना अर्थात जो दूसरी नदियों को अपने में मिलाती हुई आगे बढ़ती है, वह यमुना है। दूसरे देवताओं के तेज को अपने में मिलाती हुई विस्तृत होने वाली। दुर्गा सप्तशती में आया है कि पहले ब्रह्मा, विष्णु, महेश के तेज से महालक्ष्मी देवी की उत्पत्ति हुई, उसके बाद अन्य देवताओं का तेज भी मिलता गया। इस शब्द में मिश्रण अर्थ आता है क्योंकि यु धातु का अर्थ मिश्रण करना, अमिश्रण करना होता है। यमुना को यमुना इसलिए कहते हैं क्योंकि यह नदी विभिन्न नदियों के जल को अपने में मिलाती हुई आगे बढ़ती है। देवी के सन्दर्भ में सभी भक्तों को अपने में मिलाती हुई अर्थात अपने लोक में स्थान देती हुई कार्यरत, ऐसा अर्थ कर सकते हैं।

981. **चन्द्रभागा** – चन्द्रभागा नदी की शक्ति से युक्त। चुन्द्रभागा नदी के रूप में। चन्द्रमा की कान्ति के समान जो सुन्दर रूप में प्रवाहित होती है। (चन्द्रस्य भा इति चन्द्रभा, चन्द्रभा इव गच्छति इति चन्द्रभागा)।

982. **सरस्वती** – ज्ञान के प्रवाह से युक्त। सरस् का अर्थ है प्रवाह। आनन्द के प्रवाह से युक्त। प्राणियों को चेष्टायुक्त करने वाली। सरस् का अर्थ है गति अर्थात चेष्टा।

983. **तिलोत्तमा** – तिलोत्तमा अप्सरा के समान सुन्दर रूप से सुशोभित। जिसका एक – एक तिल (कण) सुन्दर है। सभी उत्तम वस्तुयें का सार (तिल) लेकर बनायी गयी जो।

984. **उर्वशी** – उर्वशी अप्सरा के समान सुन्दर रूप वाली। उरू (अर्थात महान लोगों, तपस्वियों) को भी जो अपनी सुन्दरता से वश में कर लेती है उसे उर्वशी कहते हैं। उरू (जांघ) के सौन्दर्य से लोगों को वश करने वाली। अतः उर्वशी नाम पड़ा। उरू अर्थात जांघ में व्याप्त। भगवान नारायण के जांघ से उर्वशी की उत्पत्ति मानी गई है। वश् अर्थात वस् अर्थात रहना। भगवान नारायण की जांघ में जिनका वास था।

985. **रम्भा** – रम्भा अप्सरा के समान सुन्दर रूप वाली। अपने आप में रमती हुई सुशोभित। रमण क्रिया के कारण या रमण करने में सुशोभित। रम्भा में भा का अर्थ है सुशोभित एवं रम का अर्थ रमण है। रमण के कई अर्थ होते हैं। जैसे रमता साधु का अर्थ है अपने आप में लीन, जिसे दूसरे से मतलब नहीं। संसार में हो रही क्रियाकलाप जैसे नदी का बहना, हवा चलना, ऋतुऐं बदलना ये परमात्मा का रमण है। स्त्री – पुरुष के बीच के सम्भोग को भी रमण कहते हैं। क्रीडा करना भी रमण है। रम्भा का अर्थ केला भी है। इस प्रकार रम्भा का अर्थ केला की तरह कोमल एवं शीतल गुणों वाली। केले के पत्ते विशाल होते हैं अतः विशाल हाथों वाली यह अर्थ भी कर सकते हैं। जिनका सहारा लिया जाता है अर्थात जिनके सहारे आगे बढ़ा जाता है, यह भी रम्भा शब्द का अर्थ हो सकता है। निरुक्त में रम्भः शब्द डण्डे के लिए आया है क्योंकि उसको पकड़कर वृद्ध लोग चलते हैं। आरभते आलभते इति रम्भः, जिसको ग्रहण किया जाता है अर्थात पकड़ा जाता है वह है रम्भ (डण्डा या छड़ी)।

986. **स्वामिनी** – जगत की मालकिन। उनकी इच्छानुसार ही सब कुछ होगा। प्रत्येक घटनाऐं उनकी इच्छानुसार ही हो रही हैं। वे अपनी चाहना से जिसको भी चाहें, राजा बना दें।

987. **सुरसुन्दरी** – देवताओं की स्त्रियों से भी अधिक सुन्दर। सुरसुन्दरी यक्षिणी से अभेद है जिनका।

988. **बाणप्रहरणा** – बाण है हथियार जिनके। (प्रहरण– हथियार / आयुध)। युद्ध में हथियार के रूप में बाणो का प्रयोग करने वाली। युद्ध में बाणों का प्रहार करने वाली। चलाने वाली।

989. **बाला** – बाल स्वरूप वाली अर्थात मधुर स्वरूप वाली। बाल रूप मधुर होता है। बालात्रिपुरसुन्दरी से जिनका अभेद है। जिससे अर्थात जिसका नाम सुनकर दुष्टजन या भूत प्रेत दूर भाग जाते हैं। बलन्ति चलन्ति दुष्टा यस्याः सा। तात्पर्य है दुष्टों का वारण (हटाना) करने वाली। जो अपने पराक्रम से शत्रुओं को आच्छादित या परास्त कर देती है। बलते आच्छादयति स्वपराक्रमेण अन्यान्। भक्तों को अमृत से भर देने वाली अर्थात मोक्षदेने वाली। वम् बीज अमृत बीज है। वम् (अमृतम्) अलति पूरयति इति बाला अर्थात अमृत से भर देने वाली। बाल भगवान कृष्ण या विष्णु जी का भी नाम है। जो भगवान विष्णु या कृष्ण की तरह पराक्रमी है। बालो बालयुते पाके मुकुन्दे मुग्धके गो, ये सब कौशिक के मतानुसार पर्यायवाची हैं। अतिशय बल से युक्त। बल में स्वार्थ में अण प्रत्यय लगाने से बाल बनेगा। बालः अस्या अस्ति इति बाला। ब (शंकर, वरूण, पुरूष, कुम्भ, कलश, प्रचेता, मन्त्र) को शोभायमान करने वाली। अल भूषणे धातु होती है। बा (वन्दन, मन्त्र, नर्मदा नदी, गण अर्थात् देवगण) को धारण करने वाली। ला का अर्थ धारण करना, नाश करना होता है। बल में स्वार्थ (अर्थात् अर्थ नही बदलना) में अण् प्रत्यय लगाने से बाल बनेगा जिसका अर्थ भी बल होगा। बाल + आ, आ का अर्थ है देना, नाश करना।

भक्तों को बल देने वाली अर्थात् बल बढ़ाने वाली। दुष्टों के बल का नाश करने वाली। बलयति इति बाला अर्थात अपने भक्तों को बलवान बनाने वाली।

990. **बिम्बोष्ठी** – बिम्ब के समान लाल – लाल होठों वाली।

991. **चारूहासिनी** – सुन्दर हास्य से युक्त।

992. **कुकुद्मिनी** – उठाव वाली अर्थात स्वयं सबसे ऊपर उठी हैं अर्थात अन्य देवताओं से ऊपर हैं। बैल के गले के पास उठा हुआ माँस ककुद कहलाता है। ककुद अर्थात उठा माँस अर्थात शिखर या चोटी वाला अर्थात ऊचाई वाला। ककुदमान पर्वत पर रहने वाली। सुन्दरता के उभार से युक्त अंगों वाली। (कपोल, स्तन, नासिका, सभी अंग कुकुद, उभार से युक्त है)। लक्षणाशक्ति से अर्थ होगा अतिशय सुन्दर रूप वाली।

993. **चारूपृष्ठा** – सुन्दर पृष्ठभाग (पीठ) है जिसकी।

994. **दृष्टादृष्टफलप्रदा** – लौकिक और अलौकिक फलों को प्रदान करने वाली। अलौकिक अर्थात लोक से परे चीजें दृष्टि में नहीं आती इसलिए वे अदृष्ट हैं।

995. **काम्याचारी** – काम्य कर्म का विधान करने वाली। नित्य, नैमित्तक और काम्य इस प्रकार के तीन कर्म होते हैं। काम्य कर्मों को कराने वाली अर्थात् काम्य कर्म करने के लिए प्रेरित करने वाली। काम्यम् कर्म आचारयति इति काम्याचारी। आचरति का अर्थ है आचरण करना या करना एवं आचारयति का अर्थ है कराना। काम्यम् कर्म आचारति इति काम्याचारी से अर्थ होगा काम्य कर्मों को करने वाली जो देवी के अर्थ में उचित नहीं लगता है। किन्तु न्यास प्रक्रिया के आधार पर काम्य कर्म करने वाली अर्थ भी हो सकता है। भले ही कोई मनुष्य या देवता इन काम्य कर्मों को करता है किन्तु न्यास प्रक्रिया के कारण उस मनुष्य का देवी से अभेद हो जाता है। इस प्रकार मनुष्य के द्वारा करना अर्थात् देवी के द्वारा करना हो जाता है। अन्यथा भी मनुष्य या देवता द्वारा कुछ करना अर्थात् मनुष्य या देवता के भीतर स्थित शक्ति द्वारा करना अर्थात् देवी द्वारा करना ही होता है। काम्य कर्म का अर्थ है जो किसी कामना से किये जाते है जैसे पुत्र प्राप्ति के लिए यज्ञ करना, वर्षा कराने के लिए यज्ञ करना आदि। कमनीय अर्थात सुन्दर आचार वाली। आकर्षित करने वाले व्यवहारों (सुन्दर व्यवहार) को करने वाली। शास्त्रों में जो करने को कहा जाता है वह आचार है। कामनाओं को पूरा करने वाले शिव की पत्नी। काम्याचार का अर्थ हुआ शिव। काम्य अर्थात काम। तीनों लोकों में स्वेच्छापूर्वक विचरण करने वाली।

996. **काम्या** – सबके द्वारा चाही जाने योग्य (सुन्दरता, गुणों आदि के कारण)। अतिशय सुन्दर।

997. **कामाचारविहारिणी** – स्वेच्छानुसार विचरण करने वाली।

998. **हिमशैलेन्द्रसंकाशा** – बर्फीले हिमालय की तरह चमकने वाली अर्थात गोरे वर्ण वाली। बर्फीले हिमालय की चोटियों की तरह चमकने वाली। शैल का अर्थ है पत्थर और शैलेन्द्र का अर्थ है पहाड़। हिमालय पर्वत के समान सुशोभित होने वाली।

999. **गजेन्द्रवरवाहना** – ऐरावत हाथी पर आरूढ़ अर्थात स्थित होकर चलने वाली। (श्रेष्ठ हाथियों में भी श्रेष्ठ अर्थात ऐरावत)। (गजेन्द्र अर्थात श्रेष्ठ हाथी, वर अर्थात श्रेष्ठ) पर आरूढ़ होकर चलने वाली।

1000. **अशेषसुखसौभाग्यसम्पदामुत्तमायोनि** – समस्त श्रेष्ठ सुख, सौभाग्य, सम्पत्ति आदि उत्तम पदार्थों की कारण। (ये पदार्थ इनके कारण ही उत्तम है)।

1001. **सर्वोत्कृष्टा** – सबसे उत्कृष्ट अर्थात सर्वश्रेष्ठ। रूप, गुण, शक्ति, ऐश्वर्य सभी में दूसरों से बढ़कर हैं।

1002. **सर्वमयी** – सम्पूर्ण विश्व है स्वरूप जिसका। सर्व का एक अर्थ विश्व भी होता है। सभी पदार्थों से युक्त या सभी पदार्थों के स्वरूप वाली।

1003. **सर्वा** – जो कुछ भी है सब यही हैं (सर्व स्वरूपा)। सभी पदार्थ देवी के रूप हैं। देवी के सभी रूपों के स्वरूप वाली। सर्व का अर्थ शिव भी होता है। शिव की शक्तिस्वरूपा।

1004. **सर्वेश्वरप्रिया** – शंकर जी/ विष्णु जी को जो अतिशय प्रिया है।

1005. **सर्वांगयोनि** – जिनके सभी अंग योनि की तरह है अर्थात किसी भी अंग से कोई प्राणी पैदा कर सकतीं हैं। नारद जी अंगूठे से पैदा हुये थे। रूद्राक्ष भगवान शिव के आँसू अर्थात आँख से पैदा हुये। शिव के द्वारा पैदा करना अर्थात शिव की शक्ति द्वारा पैदा करना। सम्पूर्ण वस्तुओं की कारण स्वरूपा। सर्वांग का अर्थ है सम्पूर्ण या सारा। सभी श्रेष्ठ अंगों की कारण। जिनके कारण सभी प्रकार के श्रेष्ठ अंग निर्मित होते है। (ज्ञान/वेद/वेदांग आदि अंग)। इन्द्रस्वरूपा या इन्द्र की तरह राजा। जैसे इन्द्र देवताओं के राजा हैं, उसी प्रकार देवी भी सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की महारानी हैं। इन्द्र अर्थात एक समय जिनके सभी अंगों में योनि का चिन्ह आ गया था। इन्द्राक्षी देवी स्वरूपा। इन्द्र द्वारा अहल्या से अवैध सम्बन्ध बनाने पर गौतम ऋषि के श्राप के कारण इन्द्र के शरीर में हजार योनि के चिन्ह हो गये थे। इन्द्र ने दुर्गा जी की आराधना की और दुर्गा जी ने योनि को आँखों में परिवर्तित कर दिया और स्वयं भी हजार आँखों वाली हो गई, इस कारण उन्हें इन्द्राक्षी देवी कहा जाता है।

1006. **साव्यक्ता** – अव्यक्त के सहित अर्थात व्यक्त स्वरूपा। अव्यक्तेन सहिता इति साव्यक्ता। जो व्यक्त भी है और अव्यक्त भी है। जगत के रूप में या सगुण साकार रूप में दर्शन देने पर दिखाई देती है किन्तु निर्गुण निराकार रूप में नहीं दिखाई देती हैं। वह परोक्ष शक्ति जो संसार के रूप में प्रकट है। जो पहले अव्यक्त थी, वही संसार के रूप में प्रकट है, सा + व्यक्ता इस विग्रह से यह अर्थ आया। वह शक्ति जो अप्रकट थी। सा + अव्यक्ता, इस विग्रह से पिछला अर्थ आया। तत् त्वम् असि में तत् शब्द परोक्ष के लिए आया है अर्थात जो सामने नहीं है। इसी प्रकार सा शब्द परोक्ष के लिए आया है। अव्यक्त और व्यक्त दोनों स्वरूप वाली (अव्यक्तेन सह अत्यक्त के साथ)। अत्यक्त अर्थात दिखलाई न पड़ने वाली प्रकृति। अव्यक्त रहते हुए भी जो प्रकट हो जाये)। अव्यक्त के सहित का अर्थ हुआ कि जो अव्यक्त के साथ व्यक्त भी है। सा का अर्थ गौरी/लक्ष्मी भी होता है। इस प्रकार साव्यक्ता का अर्थ हुआ अव्यक्त गौरी या लक्ष्मी स्वरूपा। गौरी और लक्ष्मी के रूप में प्रकट यह अर्थ भी कर सकते हैं। सारूपेण व्यक्ता इति साव्यक्ता।

1007. **सम्प्रधानेश्वरेश्वरी** – विचार या निर्णय करने में जो श्रेष्ठ है, उन श्रेष्ठों में भी श्रेष्ठ अर्थात् सर्वश्रेष्ठ। सम्प्रधान का अर्थ विचार, निर्णय होता है। सम्प्रधान का अर्थ सम्यक् विचार भी कर सकते है। सम्यक् विचार वह होता है जो पूर्व पक्ष एवं उत्तर पक्ष दोनों को देखता है अर्थात् आगे–पीछे या सभी पक्षों पर विचार करता है। ईश्वर का अर्थ है श्रेष्ठ। सांख्य दर्शन में प्रधान का अर्थ बुद्धि, प्रकृति दिया गया है। सम्यक् बुद्धि में जो श्रेष्ठ हैं, उन सभी से अधिक श्रेष्ठ, यह अर्थ किया जा सकता है। ईश्वर का अर्थ देने वाला भी होता है। अच्छी बुद्धि देने वालों की भी ईश्वरी अर्थात् उन्हें भी दूसरों को बुद्धि देने की शक्ति देने वाली। ध्यान या चिन्तन करने वाले ऋषियों, योगियों की आराध्या। सम्प्रधान का अर्थ है ध्यान या चिन्तन। ध्यान में जो ईश्वर (महारथी या पारंगत) हैं वे हुए सम्प्रधानेश्वर अर्थात ऋषि, मुनि, योगी। निश्चय कराने की ईश्वरी अर्थात निर्णय करा देती हैं। सम्प्रधान अर्थात ध्यान या निश्चय करना। श्रेष्ठ प्रधानों के ईश्वरों की भी ईश्वरी (श्रेष्ठ प्रधान–देवता) (श्रेष्ठ प्रधान देवता अर्थात अति श्रेष्ठ ईश्वर ब्रह्मा, विष्णु, महेश इनको सम्प्रधानेश्वर कह सकते हैं। इन तीनों देवताओं की भी ईश्वरी। अच्छे ध्यान के ईश्वर अर्थात शिव की आराध्या। सम्प्रधान का अर्थ है ध्यानपूर्वक विचार करना अर्थात गौर करना। सम्यक् प्रकृष्ट ध्यान देना।

1008. **विष्णुवक्षःस्थलगता** – विष्णु भगवान के वक्षस्थल पर गई अर्थात पहुँची अर्थात विराजमान।

कमला सहस्रनामफलसिद्धि

इस प्रकार अच्छाइयों को लाने वाला (कल्याणदायक) लक्ष्मी जी का सहस्रनाम बोला गया। जो श्रेष्ठ और कम श्रेष्ठ दोनों प्रकार से या मुख्य और गौण प्रकार से कहा गया है। पर का अर्थ है श्रेष्ठ और अवर का अर्थ है उससे कम। श्रेष्ठ मुख्य से सम्बन्धित है और अवर गौण से सम्बन्धित है। ऐसा प्रतीत होता है लक्ष्मीजी का जो ब्रह्मरूप या निराकार रूप है वह उनका पर रूप या श्रेष्ठ रूप हुआ एवं जो शरीरधारी रूप है जिसको मनुष्य आँखों से देख सकता है वह उनका गौणरूप या अवररूप हुआ।।1।।

हे ब्रहमाजी जो इसे पवित्र होकर ध्यान (एकाग्रता) से श्रद्धा और भक्ति से युक्त होता है नित्य पढ़ता है या सुनता है ।।2।।

भगवान विष्णु की अच्छी तरह पूजा करके पुष्प, धूप, चन्दन आदि के द्वारा नाना प्रसादों के द्वारा मधुपर्क (शहद) आदि के द्वारा, यथोपलब्ध सामग्री के द्वारा जगतगुरू भगवान विष्णु की अर्चना करते हैं ।।3।।

उनके पास स्थित लक्ष्मी देवी को जो भगवान विष्णु की प्रिया हैं अच्छी तरह पूजकर फिर अर्थात इसके बाद इस सहस्र नाम से लक्ष्मी जी को सन्तुष्ट करें। ।4।।

अनेक रत्नावली के समान इस स्तोत्र का जो नित्य पाठ करता है लक्ष्मी जी प्रसन्न होकर आगे आकर अर्थात सामने आकर उस व्यक्ति को सबकुछ दे देती हैं। (रत्नावली का अर्थ है रत्नों का समूह, देवी का एक–एक नाम एक एक रत्न है)।।5।।

(कहीं कही पर नाना रत्नावली की जगह नामरत्नावली लिखा है तब अर्थ होगा नामरत्नावली स्वरूप इस स्त्रोत को जो निरन्तर पढ़ता है।)

जिस लक्ष्मी से संसार में सदा विचरण करने वाली या व्याप्त सभी शक्तियाँ सदा उत्पन्न होतीं हैं, वे सभी शक्तियाँ इस चराचर जगत में कारण के रूप में नहीं हैं। (अर्थात इस जगत का कारण लक्ष्मी जी हैं, न कि लक्ष्मी जी से उत्पन्न शक्तियाँ, विश्वगा का अर्थ है विश्व में जाने वाली, विचरण करने वाली अर्थात विश्व में रहने वाली।।6।।

अतः प्रसन्न होकर जगतमाता लक्ष्मी जी, जो विष्णुप्रिया हैं उनके प्रसन्न होने पर दूसरी सभी शक्तियाँ अच्छी प्रकार प्रसन्न होकर इष्ट सिद्धि को दे देती हैं या कहती हैं। (इस श्लोक का तात्पर्य है कि लक्ष्मी जी के प्रसन्न होने पर अन्य शक्तियाँ अपने आप प्रसन्न हो जाती हैं। दिशन्ति का अर्थ है देना या कहना)।।7।।

जगत के स्वामी एक ही हैं जो शक्तिमान प्रभु विष्णु हैं। अन्य ब्रह्मा, रूद्र आदि उन्हीं के अंश के रूप में शक्तिमान हैं तथा जिस प्रकार भगवान विष्णु के अलावा अन्य सभी अंशभूत शक्तिमान हैं, (पूर्ण शक्तिमान तो भगवान विष्णु ही हैं)।।8।।

वैसे ही उसकी करूणामयी पराशक्ति केवल एक 'श्री' ही है जो पराप्रकृति ज्ञानादि षट्गुणों से युक्त कही गई है। (उसी प्रकार एकमात्र श्रेष्ठ शक्ति लक्ष्मी हैं जो उन भगवान विष्णु के करूणा के आश्रय में रहती हैं वे ही ज्ञान, वैराग्य, यश, श्री, ऐश्वर्य आदि छः गुणों से युक्त है तथा उन्हीं को पराप्रकृति कहते हैं)।।9।।

उस प्रकृति की द्वितीया शक्ति एक ही है, जो आत्मा में रहती है। वह परा, परेशी, सर्वेशी, सर्व आकार वाली, सनातनी। (लक्ष्मी ही एक एक शक्ति या एक मात्र शक्ति हैं द्वितीया शक्ति अपने आप में रहती या आत्मा में रहती। जो आत्मा में रहती वह परा या श्रेष्ठ है। श्रेष्ठों की भी ईश्वरी हैं। सभी की ईश्वरी है। सभी आकृतियों को धारण करने वाली है, निरन्तर रहने वाली अर्थात कभी नष्ट नहीं होने वाली है)।।10।।

लक्ष्मीजी अनन्त नामों वाली हैं और श्रीचक्र की नायिका हैं, इस चराचर जगत में सबको व्याप्त कर स्थित है। (यहाँ नायिका का अर्थ श्रेष्ठ (master) है अर्थात उनसे ऊपर कोई नहीं है जैसे भारत में प्रधानमन्त्री से ऊपर कोई नहीं होता। व्युत्पत्ति के आधार पर नायिका का अर्थ होता है ले जाने वाली अर्थात मार्गदर्शिका, नामधेय का

अर्थ होता है नाम, नाम वाला। नाम्ना धीयते अर्थात नाम से ध्यान किया जाता है, जाना जाता है, नाम से जाना जाता है। जैसा लिखा हुआ है कि कमल की तरह सुन्दर आँख, तो वैसा ध्यान होगा। नाम से स्वरूप बनता है, नाम से नामी का ध्यान होता है। यदि धीयते से अभिधीयते शब्द लें तो अर्थ होगा नाम से या इस नाम के द्वारा कहा जाता है।)।।11।।

अतः अकेली और श्रेष्ठ लक्ष्मी जी जो विश्वरूपिणी हैं उस एक को ही जानना चाहिए। ये सौम्य (सुन्दर) और असौम्य (भयंकर) दोनों रूपों में रहती हैं ठीक उसी प्रकार जैसे नट का व्यवहार होता है। (नट के जीवन (व्यवहार) की तरह लक्ष्मी देवी सौम्य और भयंकर दोनों रूपों से रहती हैं। पुराने जमाने में अभिनय करने वाला अर्थात नट कई भूमिका निभाता था जैसे उसी नाटक में वह राजा भी बन जाएगा थोड़ी देर में खलनायक भी बन जाएगा यानि एक ही व्यक्ति किसी नाटक में अलग अलग भूमिका निभाता था उसी प्रकार एक ही लक्ष्मी सुन्दर और भयंकर दोनों रूप वाली हो जाती है)।।12।।

इस जगत में पुल्लिंग में जो जो बोला जाए अर्थात जितने भी पुरूष हैं उनको विष्णु के रूप में निश्चय कर लें तथा जितनी भी स्त्रियाँ हैं उन सभी में लक्ष्मी स्थित हैं।।13।।

पुरूष और प्रकृति के अलावा तीसरा कोई नहीं है। अधिक क्या कहा जाए भगवान विष्णु पुरूष और नारी दोनों रूपों से युक्त है। (जैसे अर्द्धनारीश्वर में एक हिस्से में शिव और दूसरे हिस्से में पार्वती उसी प्रकार भगवान विष्णु के एक हिस्से में विष्णु और दूसरे हिस्से में लक्ष्मी जी रहती हैं)।।14।।

इस प्रकार अनेक भेद से परमेश्वर भिन्न भिन्न होतें हैं जो लोग विष्णुप्रिया महाविभूति (अर्थात लक्ष्मी देवी) की स्तुति करतें हैं वे शुद्ध चित्त वाले परम लक्ष्मी को प्राप्त होते हैं, पद्मयोनि ब्रह्मा ने इसको प्राप्त करके इस स्तोत्र को क्रमशः पढ़ते हुए, उनके प्रसाद से दिव्य अष्टगुणित ऐश्वर्य को प्राप्त किए, इस प्रकार सकाम स्तुतिकर्ता को फल देने वाली और निष्काम स्तुतिकर्ता को मोक्ष देने वाली हैं। (अनेक भेदों से भिन्न भिन्न परमेश्वर किये गये हैं अर्थात ब्रह्मा के साथ सरस्वती, रूद्र के साथ पार्वती, इन्द्र के साथ इन्द्राणी। जो महाविभूतिस्वरूपिणी विष्णु की प्रिया (दयिता) की स्तुति करते हैं वे शुद्ध चित्त वाले लोग श्रेष्ठ लक्ष्मी प्राप्त करते हैं। ब्रह्मा जी ने इस स्तोत्र को प्राप्त करके इस स्तोत्र को पढ़ते हुए क्रम से दिव्य आठ गुणों वाले ऐश्वर्य (अष्ट लक्ष्मी या अष्ट ऐश्वर्य) उनकी कृपा से प्राप्त किया। सकाम उपासको को उनकी कामनाएं देती हैं तथा निष्काम उपासकों को मोक्ष का फल देती हैं)।। 15 – 16 – 17।।

पुस्तक रूप से प्रसिद्ध, भयरूप से रक्षा करने वाली, सफेद वस्त्र वाली, त्रिलोचना, महापद्म पर बैठी हुई उस अजर लक्ष्मी को हम नमस्कार करते हैं। (पुस्तक लिए हुए आख्या है जिसकी अर्थात पुस्तकस्वरूपिणी। भय से बचाने वाली सफेद वस्त्र पहने हुए (शायद सहस्रनाम को सफेद कपड़े में लपेटा जाता होगा।) तीन नेत्रों वाली (सूर्य चन्द्र, अग्नि रूपी तीन नेत्र) पृथ्वी में बैठी हुई उस देवसमूहस्वरूपिणी लक्ष्मी जी को नमस्कार करता हूँ। (महापद्म का अर्थ है पृथ्वी। अजर का अर्थ है देवता। अतः अजरता का अर्थ हुआ देव समूह))।।18।।

दोनो हाथों से गृहीत पूर्णकुम्भ को धारण करने वाली, कहीं निर्मल स्थान में रहने वाली, शंख, पद्म और रूद्राक्ष हाथ में लिये हुई कहीं दयित (प्रियतम) के अंग पर चमर डुलाते हुए हाथों वाली और कहीं अंकुश और पाश को धारण करने वाली हेमकान्ति से युक्त हैं। (दोनों हाथों से पकड़ा हुआ भरा हुआ घड़ा दान करने वाली, कहीं निर्मल ज्ञान में स्थित हाथ में शंख, कमल और अक्षमाला लिये हुए, कहीं अपने प्रियतम विष्णु के ऊपर चमर या पंखा डुलाने वाले हाथों वाली, कहीं सृणि और पाश को धारण किये हुए, हेम (स्वर्ण) की तरह कान्ति वाली हैं। गम् अर्थात जाना, गम् धातु बोध अर्थ में भी प्रयुक्त होती है इसलिए निर्मल ज्ञान में स्थित या निर्मल बोध में स्थित। गत का अर्थ हुआ बोध या ज्ञान)।।19।।

सम्पूर्ण

माँ दुर्गा के ३२ नाम

1. **दुर्गा** – दुखेन गम्यते इति दुर्गा। बहुत तपस्या/साधना द्वारा जिन्हें जाना/समझा जा सकता है, हृदयंगम किया जा सकता है, कृपा पायी जा सकती है। बहुत कठिनाई से जिसका ज्ञान, सान्निध्य, कृपा प्राप्त होती है, वह है दुर्गा। (जिनको कठिनाई से अर्थात तपस्या आदि का कष्ट उठाकर प्राप्त किया जा सकता है (दुःखेन गम्यते इति दुर्गा)। जिनको कठिनाई से अर्थात तपस्या आदि का कष्ट उठाकर जाना जा सकता है (दुःखेन गम्यते इति दुर्गा)। दुखो या कष्टो को दूर करने वाली या नाश करने वाली (दुर् दुःखानि गमयति दूरयति नाशयति इति दुर्गा)। नरकं या निम्न योनि के कष्टों का नाश करने वाली अर्थात भक्तों को उनसे निकालने वाली (दुर् दुर्गतिं (नरकं) गमयति, दूरयति सा दुर्गा)। दुर्दशा का नाश करने वाली, दुर् दुर्दशां गमयति (नाशयति) सा दुर्गा। दुराशा को दूर करने वाली या नाश करने वाली (दुर् दुराशां गमयति, दूरयति सा दुर्गा)। पापों का नाश करने वाली (दुर् दुरितानि (पापानि) गमयति विनाशयति सा दुर्गा।) भक्तों के अन्दर यदि कोई भी दुराचार या कोई भी दोष हो उसे दूर करने वाली (दुर् दुराचारं दोषं वा गमयति, दूरं करोति सा दुर्गा)। दैत्यों (असुरो), विघ्नों, रोग, पाप, भय तथा शत्रु का नाश करने वाली। द अर्थात दैत्यनाशक, उ अर्थात विघ्ननाशक, र अर्थात रोगनाशक, ग अर्थात पापनाशक, आ अर्थात भयनाशक तथा शत्रुनाशक। शब्द कल्पद्रुम में दुर्गा नाम के विग्रह में बताया गया है कि आ अक्षर नाश करने वाले, देने वाले, दोनों अर्थो में प्रयोग होता है। दुर्ग शब्द विपत्ति का वाचक है इस प्रकार दुर्गा का अर्थ हुआ विपत्ति का नाश करने वाली। दुर्ग (विपत्ति)+आ= दुर्गा। जिसका गुणगान कठिन हो वह दुर्गा है (दुःखेन गीयते स्तूयते इति दुर्गा)। उनके इतने गुण है, प्रशंसनीय कर्म है कि उन्हें शब्दों में बॉधा बेहद कठिन है। देव्यथर्वशीर्ष में लिखा हुआ है यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता। जिससे श्रेष्ठ कुछ भी नही है वह दुर्गा है। शरीर को दुर्ग कहते है। दुर्गः अस्या अस्ति इति दुर्गा अर्थात दुर्ग वाली, तात्पर्य है कि दुर्ग (शरीर) में रहने वाली अर्थात जीवात्मा स्वरूपा। दुर्ग+आ=दुर्गा। शत्रुओं के दुर्गो (किला) का नाश करने वाली। भक्त को किला देने वाली अर्थात किला के समान अभेद्य सुरक्षा देने वाली। यहॉ पर आ का अर्थ देना किया गया है।) (दुर्गेषु गतास्तन्नामा। दुःखिषु दुखिभिरवगता। दुःखेन चावगता। अनवरतश्च दुष्टानाम्। शिष्टपालनाय दुष्टानभिगच्छति च। अपगमयति दुखं च दुरितं च। किले में स्थित अर्थात रहने वाला। शरीर रूपी किले में आत्मा के रूप में स्थित। दुख में जानी गयी अर्थात जानी जाने वाली। जब मनुष्य दुख में होता है तो भगवान को याद करता है। ग शब्दाक्षर अवगत से ले लिया गया। दुखियों द्वारा जानी जाती हैं अर्थात चिन्तन या ध्यान होता है। बड़ी कठिनाई से जानी जाने योग्य। जिसे दुष्टों द्वारा नहीं जाना जा सकता। जो सज्जनों की रक्षा के लिए दुष्टों पर आक्रमण करती हैं। पालन में रक्षा अर्थ भी आता है। दुख और पाप को हटा देने वाली।)

2. **दुर्गार्तिशमनी** – बहुत/अतिशय कठिन पीड़ाओं को शान्त करने वाली। असम्भव/असाध्य रोग जिसे कोई ठीक नहीं कर सकता, असाध्य शत्रु जिसे पार नहीं पाया जा सकता, दुर्भाग्य का लेख जिसे कोई शान्त नहीं कर सकता ऐसी सभी पीड़ाओं को शान्त कर देने वाली। दुर्ग, आर्ति, शमनी तीन शब्दों से मिलकर बना है। दुर्ग अर्थात बहुत कठिन, आर्ति अर्थात पीड़ा या कष्ट। (कहीं कहीं दुर्गतिशमनी यह शब्द मिलता है। जिसका अर्थ है दुर्गति को शान्त करने वाली। दुर्गति अर्थात बहुत कठिन कष्ट जैसे रोग, दरिद्रता, शत्रुओं से घिरा होना, निम्न योनियों में जन्म लेना आदि।) (कठिन कष्टों को शान्त करने वाली अर्थात नाश करने वाली। आर्ति वह कष्ट या दुख है जिसे दूर करने के लिए मनुष्य व्याकुल हो जाता है अर्थात एक क्षण भी विलम्ब हुआ तो बहुत अनर्थ हो सकता है जैसे गजेन्द्र ग्रह के प्रकरण में या दौपदी के चीर हरण के प्रकरण में विलम्ब स्वीकार्य नहीं था। (कही–कही पर दुर्गति शब्द आया है जिसका अर्थ है अत्यंत कष्ट घोर दरिद्रता, समाज में तिरस्कार, घरवालो द्वारा बहिष्कार, बाहर जंगलों में भटकना या भीख मॉगना, गुलामी करना, निम्नयोनि में जन्म लेना, निम्नयोनि में

व्यक्ति तभी जन्म लेता है जब दुराचार, पाप, या व्यसन करता है। सद्गति का अर्थ है मृत्यु लोक से ऊपर के लोक में जाना।) भक्तों की दुर्गति का नाश करने वाली। सबसे बड़ी दुर्गति है ईश्वर से दूर जाना अर्थात् ईश्वर का चिन्तन न करना और आत्मा से दूर जाना। दुर्गति अर्थात बहुत कठिन कष्ट जैसे भयंकर रोग, दरिद्रता, शत्रुओं से घिरा होना, नशे की लत लगान, चरित्रहीनता, सम्पत्ति का विरोधियों द्वारा कब्जा होना, बुरी संगति अर्थात दुर्व्यसन, मृत्यु के बाद निम्न योनियों में जाना आदि। यदि कोई व्यक्ति दुर्गा जी की उपासना करता है तो उसके पितृ यदि निम्न योनि में हैं तो उन्हें सद्गति अर्थात उच्च लोक प्राप्त हो जाते हैं। आर्ति का अर्थ है संकट, विपत्ति, कष्ट या कठिनाई। आर्ति ऐसा कष्ट है या संकट है जिससे दूर होने के लिए व्यक्ति व्याकुल हो जाता है अर्थात वह चाहता है कि तुरन्त दूर हो जाए और अब एक पल का विलम्ब बहुत बड़ा अनार्थ कर सकता है जैसे दौपद्री का चीरहरण, ग्राह द्वारा गजेन्द्र को पकड़ लेना।

3. **दुर्गापद्विनिवारिणी** – ऐसी आपत्ति/विपत्ति जो असाध्य हो, जिसका इलाज/पार पाना सम्भव न हो, उसका अच्छी तरह से निवारण (हटाना) करने वाली। आपत्ति ऐसी परेशानी या मुसीबत है कि अचानक से आ जाती है और जिसका तुरन्त समाधान करना पड़ता है अर्थात जिसमें समय नहीं मिलता है। जैसे भूकम्प, दंगा, बाढ़ आदि। इसमें सोचने विचारने का समय नही मिलता और इसके लिए कहा जाता है कि आपत्तिकाले मर्यादा नास्ति अर्थात ऐसी स्थिति आने पर नियम कानून का ध्यान नहीं रखा जाता। विपत्ति का अर्थ है चारों ओर से संकट से घिर जाना पर इससे निपटने के लिए हमारे पास समय रहता है और हम सोच विचार कर सकते है। जैसे बेरोजागारी, बीमारी, मुकदमेबाजी आदि।

4. **दुर्गमच्छेदनी** – शास्त्रो की दुरूह ग्रन्थियों का छेदन करने वाली। शास्त्रों में बहुत सी बातें ऐसी होती है जो इस तरह से लिखी होती है कि समझ में नही आता। देवी बुद्धि को प्रकाशित कर उसे समझा देती हैं। सुषुम्ना नाड़ी में स्थित तीनों ग्रन्थियों अर्थात् ब्रह्मा ग्रन्थि, विष्णु ग्रन्थि एवं रूद्र ग्रन्थि का छेदन करने वाली। इन ग्रन्थियों का छेदन करना बेहद कठिन है और गुरू की कृपा अर्थात् शक्तिपात की आवश्यकता होती है इसलिए ये ग्रन्थियाँ भी अत्यन्त कठिन अर्थात् दुर्ग है। दुर्गम विपत्ति/कष्ट आदि को छिन्न भिन्न कर देने वाली। जो चीजें दुर्गम हैं जैसे असाध्य रोग, घोर दरिद्रता आदि को छिन्न भिन्न कर देती है। यह शब्द दुर्गम और छेदनी दो शब्दों से मिलकर बना है। दोनों शब्दों के बीच में पाणिनी के सूत्र छे च से तुक् आकर उस तुक् का च् होकर दुर्गमच्छेदनी शब्द बनता है। बेहद कठिन स्थिति (दुख आदि) को छेदने वाली अर्थात नष्ट करने वाली। दुरूह शास्त्रीय ग्रन्थियों को छेदने वाली। शास्त्रों में कूट भाषा का प्रयोग होने के कारण उसे समझना बेहद कठिन होता है। देवी प्रसन्न होकर अन्तःकरण में आकर उनके वास्तविक अर्थ को बता देती है। जिनका भेदन करना बहुत कठिन है, ऐसी तीनों ग्रन्थियों का छेदन कर देने वाली। सुषुम्ना नाड़ी में स्थित ऐसी तीनों ग्रन्थियॉ हैं– ब्रह्मा ग्रन्थि, विष्णु ग्रन्थि और रूद्र ग्रन्थि।

5. **दुर्गसाधिनी** – आत्मा को प्राप्त करा देने वाली अर्थात साक्षात्कार करा देने वाली। जिसे पाना सबसे कठिन है वह है दुर्ग। दुर्गम विषयों को भी सिद्ध करा देने वाली अर्थात प्राप्त करा देने वाली। मन्त्र साधना, मोक्ष की प्राप्ति, सद्गुणों की प्राप्ति, दुर्लभ ज्ञान, पढ़ाई–लिखाई आदि सभी दुर्गम विषय हैं। जिन्हें सरल कर साधकों को प्राप्त करा देतीं हैं। कठिन से कठिन साधना से तपस्या से प्राप्त करा देने वाली।

6. **दुर्गनाशिनी** – दुष्टों के रक्षा कवच को नष्ट करे देने वाली। दुर्ग या किला रक्षा का कार्य करते है। माया को भी दुर्ग कह सकते है क्योंकि माया को पार करना बिना ईश्वर की कृपा से सम्भव नही है क्योंकि माया ईश्वर की शक्ति है। अत्यन्त कठिन बाधाओं या विघ्नों का नाश करने वाली। संस्कृत में नश् अदर्शने धातु होती है जिसका अर्थ होता है किसी चीज को अदृश्य कर देना अर्थात् जिस कारण से वह चीज आयी है उस कारण में वापस भेजा देना। नाश और ध्वंस में अन्दर है। ध्वंस में चीज को वापस नही भेजा जाता और न ही अदृश्य

किया जाता है बल्कि वहीं पर इस तरह से टुकड़े–टुकड़े कर दिये जाते है कि वह दुबारा जीवित न होने पाये और अपना कार्य न कर पायें। कठिन से कठिन जिनका परित्याग नहीं हो सकता, ऐसे दुर्व्यसनों/गलत आदतों, मनुष्य के अभ्युदय और उन्नति के रास्ते में जो भी कठिन से कठिन बाधायें हैं उनका नाश करने वाली। दुर्ग का अर्थ है अत्यन्त कठिन, कठिनाई।

7. **दुर्गतोद्धारिणी** – जो दुर्गति में पड़ गये हैं ऐसे दुर्गतों का उद्धार करने वाली। मनुष्य पापों के कारण दुर्गति को प्राप्त होता हैं। गलत संगति या दुर्व्यसन में पड़ना भी दुर्गति में पड़ना है। निम्न योनि में जाना भी दुर्गति है। उन्हीं का उद्धार होता है जिनके मन में देवी की भक्ति होती है। यह भी सम्भव है कि दुर्गति में पड़े उस व्यक्ति की पीढ़ी देवी की भक्ति करती हो किन्तु वह व्यक्ति स्वयं में भक्त न हो। दुर्गति अर्थात बहुत कठिन कष्ट जैसे भयंकर रोग, दरिद्रता, शत्रुओ से घिरा होना, नशे की लत लगान, चरित्रहीनता, सम्पत्ति का विरोधियों द्वारा कब्जा होना, बुरी संगति अर्थात दुर्व्यसन, मृत्यु के बाद निम्न योनियों में जाना आदि।

8. **दुर्गनिहन्त्री** – अत्यन्त कठिन कर्म संस्कारों का पूर्ण रूप से नाश करने वाली। अच्छे एवं बुरे दोनों प्रकार के संस्कार जब तक पूर्ण रूप से नष्ट नहीं होगें तब तक मनुष्य को मोक्ष (सत्–चित्–आनन्द की अवस्था) नहीं प्राप्त होगा। अच्छे कर्म सोने की जंजीर की तरह है और बुरे कर्म लोहे की जंजीर की तरह है अतः दोनो ही बाधक है। देवी की कृपा होने से क्षण भर में सारे कर्म संस्कार भस्म हो जाते है। अभिमान रूपी या अहंकार रूपी अत्यन्त कठिन विकार को पूर्ण रूप से नष्ट करने वाली। दुर्ग अर्थात् अत्यन्त कठिन अर्थात् जिसे पिघलाना या गलाना बेहद कठिन होता है और अहंकार सबसे कठिन विकार माना जाता है जिसे दुर्ग कह सकते है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, राग, द्वेष इन्हें भी दुर्ग कह सकते है क्योंकि इन पर जीत हासिल करना बेहद कठिन है। देवी के शरणागत होने पर सारे विकार क्षण भर में पूर्ण रूप से समाप्त हो जाते है। दुर्ग नामक राक्षस का वध करने वाली। निहन्त्री अर्थात नितरां हन्त्री अर्थात पूरी तरह से हिंसा करने वाली अर्थात मार देने वाली।

9. **दुर्गमापहा** – कठिनाई से समाप्त होने वाले पाप का भी पूर्ण नाश कर देने वाली। अपहा का अर्थ होता है विनाश करने वाली। दुर्गम का अर्थ होता है अत्यन्त कठिन। तात्पर्य हुआ कि जो पाप महापाप है, जिनके बारे में कहा जाता है कि इसे भोगना ही पड़ेगा, सच्चे भक्त के द्वारा पूर्व जन्म में अज्ञानतावश ऐसे पाप हो गये हों तो उसका भी पूर्ण नाश करने वाली। एक शब्द मिलता है अपहपापात्मा। पाप शब्द शब्द के अर्थ में नहीं है, इसका अध्याहार किया गया है जिससे अर्थ में संगति आ जाये। इस नामावली में दुर्ग शब्द बार–बार आया है तो कहीं कठिनाई, कहीं विघ्न, कहीं रोग आदि शब्दों का अध्याहार करना पड़ेगा जिससे अर्थों में भिन्नता आ जाये। कठिन से कठिन/कष्टदायी रोगों/बाधाओं को दूर करने वाली। विकट भय (मृत्यु भय आदि) को दूर करने वाली या हटाने वाली। कठिन स्थितियों अर्थात कष्टों को दूर करने वाली। कठिन स्थितियों अर्थात कष्टों को नष्ट करने वाली।

10. **दुर्गमज्ञानदा** – जो ज्ञान दुर्बोध है उसे देने वाली। आत्मज्ञान सर्वाधिक दुर्गम होता है। जिस ज्ञान तक मनुष्य की बुद्धि नहीं पहुँच सकती, वह देने वाली।

11. **दुर्गदैत्यलोकदवानला** – आसुरी वृत्तियाँ या दुर्गुणों के समूह ही दैत्य लोक है। भयानक दैत्यों के समूह को या आश्रय स्थान को विनष्ट कर देने वाली। लोक का अर्थ समूह और आश्रय स्थान दोनों है।

12. **दुर्गमा** – जिनको जानना बहुत कठिन है। जिन्हें प्राप्त करना बहुत कठिन है। सामान्य लोगों के लिए जो दुर्गम है अर्थात सामान्य व्यक्ति जिनकी कृपा, सान्निध्य, भक्ति नहीं प्राप्त कर सकता। जहाँ तक पहुँचना बहुत कठिन है। भौतिक या बौद्धिक रूप से पहुँचना बहुत कठिन है। गम् धातु का जाना, जानना, प्राप्त करना ये तीन प्रमुख अर्थ होते हैं। जहाँ तक जाना अर्थात पहुँचना बहुत कठिन है। जिसे जानना बहुत कठिन है। जिसे प्राप्त

करना बहुत कठिन है। अगम्या। भक्ति (शरणागति) पूर्वक कष्ट उठाने से जानी जाने वाली। भक्त्या पुनर्दुखेन गम्यते अवगम्यते च। दुर्ग (बहुत कठिन) रूप में प्रतीत होने वाली या जानी जाने वाली। दुर्ग इति मीयते अनुमीयते। दुर्बोध शास्त्रों में अर्थात शास्त्रों के द्वारा जिसकी प्रतीति होती है अर्थात जाना जाता है। दुर्गेषु शास्त्रेषु मीयते। वेद या आगम शास्त्र दुर्गम या दुर्बोध हैं क्योंकि उन्हें कूट (Coded) भाषा में लिखा गया है। बिना विकूटन (Decoding) किये उनके वास्तविक अर्थ नहीं निकाले जा सकते। अतः दुर्ग का अर्थ वेद आदि शास्त्र भी है। अगम्यो दुर्गमः। भक्तया पुनर्दुःखेन गम्यते अवगम्यते च भगवान्। दुर्ग इति मीयते। दुर्गेषु शास्रेषु मीयते। जहाँ तक पहुँचना अर्थात जिसे प्राप्त करना कठिन है। जिन्हें जानना कठिन है। भक्ति से या दुख (तपस्या) के द्वारा जानी जाने वाली अर्थात ज्ञान का विषय बनती है। दुर्ग (कठिनाई से प्राप्त) के रूप में जानी जाने वाली। शास्त्रों में जानी जाती हैं या प्रतीत होती है। आपने वेदारण्य का नाम सुना होगा। अरण्य अर्थात जंगल अर्थात जहाँ चलना कठिन है। दुर्ग अर्थात जिसको जानना कठिन है। शास्त्रों को समझना भी कठिन होता है अतः शास्त्र भी दुर्ग हैं। मीयते अनुमीयते ज्ञायते अर्थात जानी जाती है। शास्त्रों के द्वारा जिसका ज्ञान होता है।

13. **दुर्गमालोका** – जिनका दर्शन लोगों के लिए अतिशय कठिन है। इन चर्मचक्षुओं से जिन्हे नहीं देखा जा सकता। अर्जुन को भगवान कृष्ण का दिव्य रूप देखने के लिए भगवान कृष्ण ने दिव्य चक्षु दिये थे क्योंकि इन चर्म चक्षुओं से उनके दर्शन नहीं किये जा सकते थे। जब तक व्यक्ति पूर्ण रूप से शुद्ध नही हो जाता तब तक उसे इन भौतिक नेत्रों से भगवान का दर्शन नहीं हो सकता है। आलोक का अर्थ दर्शन भी है और प्रकाश भी है। जिनका दर्शन बेहद कठिन है। आलोक अर्थात दर्शन। कड़ी तपस्या या स॒च्ची भक्ति से ही दर्शन हो सकता है। जिनके प्रकाश (कान्ति/ज्ञान) को जानना बहुत कठिन है। दुर्गमः आलोकः यस्या सा। साधारण व्यक्ति के लिये बेहद कठिन है। देवी कण–कण में व्याप्त हैं फिर भी हमें नहीं दिखाई देतीं। अग्नि लकड़ी में विद्यमान रहती है फिर भी हमें नहीं दिखती। प्रत्येक वस्तु और कण में देवी शक्ति रूप से विद्यमान है परन्तु हमें नहीं दिखाई देती। देवी का दर्शन दिव्य चक्षु से ही हो सकता है, इन चर्म चक्षुओं से नही। भगवान कृष्ण के दिव्य स्वरूप का दर्शन करने के लिए अर्जुन को दिव्य चक्षु देने पडे थे। सम्भवतः दिव्य का अर्थ है प्रकाश स्वरूपा या जो पंचतत्वों से न बना हो। जिनसे निकलने वाले प्रकाश को जानना बेहद कठिन है। प्रकाश का अर्थ भौतिक प्रकाश, ज्ञान का प्रकाश, कृपा, ऋद्वि, सिद्धि होगा। वे इतनी ऋद्धियाँ (भौतिक सम्पत्ति) एवं सिद्धियाँ (अति प्राकृतिक शक्तियाँ) दे सकती है जिन्हें कोई दूसरा नही जान सकता। जिसके आलोक तक नहीं पहुँचा जा सकता। जिनका प्रकाश या तेज सामान्य व्यक्ति सहन नहीं कर सकता या झेल नहीं सकता। दुर्गम चीज के लिए प्रकाश की तरह अर्थात दुर्गम आत्मा को दिखा देने वाली या उसका साक्षात्कार कराने वाली। जिसे जानना या प्राप्त करना सबसे कठिन है वह दुर्गम है और आत्म तत्व को जानना या उसे प्राप्त करना सबसे कठिन है अर्थात वह दुर्गम है।

14. **दुर्गमात्मस्वरूपिणी** – जिनकी आत्मा अतिशय दुर्गम है ऐसे स्वरूप वाली। आत्मा का अर्थ आत्मा, हृदय, शरीर, बुद्धि, स्वभाव, शक्ति है। जिनका स्वरूप, बुद्धि, स्वभाव, शक्ति दुर्गम है अर्थात उसे जानना, प्राप्त करना बेहद कठिन है।

15. **दुर्गमार्गप्रदा** – कठिन से कठिन मार्गों/साधनों को प्रदान करने वाली। कठिन रास्ता को सरल बना देती हैं। मोक्ष के लिए सही रास्ता दिखा देती है। दो अवखण्डने धातु से दा बनाने पर खण्डन करने वाली अर्थ आता है। कठिन रास्ते को समाप्त करना अर्थात उसे सरल कर देना। मोक्ष के लिए सही रास्ता दिखा देती है।

16. **दुर्गमविद्या** – दुर्गमविद्या स्वरूपिणी। ऐसी विद्या जो केवल असाधारण व्यक्ति द्वारा ही प्राप्त हो सकती है या जो केवल उनकी कृपा से प्राप्त हो सकती है। आगम शास्त्र, षड्दर्शन वेद–विज्ञान ये सब दुर्गम विद्या हैं। आत्म साक्षात्कार प्राप्त कराने वाली विद्या सबसे दुर्लभ है।

17. **दुर्गमाश्रिता** – जो दुर्गम स्थान हैं वहाँ स्थित। दुर्गम स्थान जहाँ प्राणी नहीं पहुँच सकते वहाँ भी स्थित। मनुष्य का हृदय सबसे दुर्गम है, उसमे रहने वाली। मनुष्य ईश्वर को बाहर तलाशता रहता है। सबसे कठिन है अपने भीतर जाना। दुरूह शास्त्रों में शक्ति रूप में स्थित। भक्ति में रहने वाली। भक्ति को पाना सबसे कठिन है। ईश्वर सब कुछ दे सकते है पर भक्ति सबसे अन्त में देते है क्योंकि भक्ति से वे वश में हो जाते है इसलिए भक्ति ही दुर्गम है अर्थात पाने में सबसे कठिन है। वे साधनायें या मन्त्र जिनको गुरू बहुत परीक्षा करने के बाद देते है अर्थात सुपात्रता निश्चित करने के बाद ही देते है ऐसी मन्त्र या साधना भी दुर्गम कही जा सकती है, उनमें रहने वाली। देवी तो सर्वव्यापक है अर्थात वे सभी जगह है। जब कहा जाता है कि वे उस स्थान में रह रही है तो उसका तात्पर्य होता है कि उस स्थान में प्रकट या जाग्रत रूप में रह रही है अर्थात उस स्थान में अपनी शक्तियों का भी प्रदर्शन कर रही है। ऊँचे पहाड़, दिव्य लोक, हृदय आदि जो चीजें है जहाँ पहुँचना बहुत अधिक है, दुर्गम जगह हैं।

18. **दुर्गमज्ञानसंस्थाना** – जो ज्ञान सामान्य लोगों को नहीं प्राप्त हो सकता ऐसे अत्यन्त कठिन ज्ञान में अवस्थित रहने वाली। आत्मज्ञान सबसे दुर्गम है अतः उसमें भलीभाँति स्थित। वास्तव में देवी ज्ञानस्वरूपा हैं।

19. **दुर्गमध्यानभासिनी** – अतिशय गहन ध्यान के द्वारा प्रकाशित होने वाली, जानी जाने वाली, व्यक्त होने वाली।

20. **दुर्गमोहा** – अतिशय दुर्गम मोह, उसके स्वरूप वाली। मोह की शक्ति दुर्गा की पवित्र शक्ति है इसे मनुष्य सामान्यतः काट नहीं सकता है। मोह का अर्थ है अज्ञान जिसका परिणाम क्षणभंगुर चीजों में आकर्षण होना होता है। वस्तु के वास्तविक स्वरूप को न जानकर उसके बाहरी आवरण को ही वह वह वस्तु समझ लेना मोह है। जैसे आत्मस्वरूप के स्थान पर शरीर को ही मैं मान लेना मोह है। इसके कारण व्यक्ति को पदार्थों एवं प्राणियों में ममत्व हो जाता है। दुर्गमोह+आ, ऐसा सन्धि विच्छेद करने पर अर्थ होगा अत्यन्त कठिन मोह का भी नाश करने वाली। पराई चीज को अपना मान लेना और उसे सुख का कारण समझ लेना मोह है।

21. **दुर्गमगा** – दुर्गम स्थानों पर भी पहुँच जाने वाली, जहां प्राणी नहीं पहुँच सकते वहां भी गमन करके पहुँच जाती है। कठिन से कठिन स्थान, ज्ञान का स्वरूप उसमें भी पहुँच जाने वाली। कठिन ज्ञान को भी जानने वाली। गति का अर्थ ज्ञान भी होता है।

22. **दुर्गमार्थस्वरूपिणी** – अतिशय दुर्गम अर्थात जिसे प्राप्त करना बेहद कठिन है उस मोक्ष नामक पुरूषार्थ के स्वरूप वाली। चारों पुरूषार्थों में मोक्ष को पाना ही सबसे कठिन है।

23. **दुर्गमासुरसंहन्त्री** – दुर्गम अर्थात अतिशय बलशाली जिन्हें जीता नहीं जा सकता, ऐसे दैत्यों का संहार करने वाली। अहंकार सबसे बड़ा शत्रु है।

24. **दुर्गमायुधधारिणी** – ऐसे अस्त्र शस्त्र जो सामान्य लोंगो को प्राप्त होने योग्य नहीं है, उसे धारण करने वाली।

25. **दुर्गमांगी** – दुर्गम अंगों या शरीर के अवयवों वाली। जिनके अंग सुन्दरता और सुडौलता में दुर्गम हैं अर्थात ऐसे अंग अन्य के पास मिलना बेहद कठिन है। उनके अवयवों को समझा नहीं जा सकता। जिनकी ओर गति करना अर्थात पहुँचना बहुत कठिन है। अंगति का अर्थ है गच्छति अर्थात गति करना। दुर्गम अंगों या शरीर के अवयवों वाली। (कठिन या दुर्गम स्थानों में जाने वाली। दुर्गम+अंग=दुर्गमांग। स्त्रीलिंग में दुर्गमांगी हो गया। अंगति (गच्छति) इति अंगः, अंगः का अर्थ जाने वाला, इस प्रकार अंगी का अर्थ जाने वाली।)

26. **दुर्गमता** – दुर्गम भाव स्वरूपा। दुर्गम में भाव अर्थ में तल् प्रत्यय लगाने से स्त्रीलिंग में दुर्गमता शब्द बनेगा। दुर्गमता का स्वरूप लिये हुए। दुर्गमता नामक गुण को धारण किये हुए अर्थात उस गुण से युक्त जिसके

कारण देवी जी को जानना और प्राप्त करना बहुत कठिन हो जाता है। दुर्गमता अस्या अस्ति इति दुर्गमता (दुर्गमता गुण वाली अर्थात इस गुण को धारण करने वाली।)। तृ धातु का अर्थ है पार करना, पार कराना (ण्यन्त में)। तृ धातु में ड प्रत्यय लगाने से त बनेगा जिसका अर्थ होगा पार करने वाली या पार कराने वाली। दुर्गम का अर्थ है कठिन स्थिति या कठिनाई। दुर्गम+ता, इस प्रकार से दुर्गमता का अर्थ हुआ कठिन स्थिति को पार कर लिया है जिसने अर्थात जो कठिन स्थिति से या कठिनाई से परे हैं। कठिनाई से या कठिन स्थिति से पार कराने वाली यह अर्थ भी होगा। दुर्ग+मता, इस प्रकार से सन्धि विच्छेद करने पर इस नाम का अर्थ होगा जिनके विचारों को जानना बड़ा कठिन है। दुर्ग अर्थात बहुत कठिन एवं मत अर्थात विचार। जो अगम्य है ऐसे दुर्गम भाव से विभूषित। ऐसा स्वरूप जिन्हें लोग समझ नहीं सकते। दुर्गम में तल् प्रत्यय लगाकर दुर्गमता बना है। (दुर्गम होने की अवस्था स्वरूपा। दुर्गबोधता या अपरागम्यता या कठिनाई स्वरूपा। प्रत्येक चीज ऊर्जा स्वरूप होने के कारण या ऊर्जा की बनी होने के कारण शक्तिरूप अर्थात देवीरूप है। भाव अर्थात जिसे हम देख या छू नहीं सकते किन्तु अनुभव में आता है। जैसे मिठाई को हम देख–छू सकते है पर मिठाई में रहने वाली मिठास को नहीं देख–छू सकते। भाव, अवस्था, समय, सम्बन्ध आदि सभी कुछ ऊर्जा का रूपान्तरण होने के कारण देवी स्वरूप है। दुर्गम का अर्थ है कठिनाई या कठिन स्थिति। तृ धातु में ड प्रत्यय लगाने से त शब्द बनेगा जिसका अर्थ है पार करने वाली या पार कराने वाली। दुर्गम स्थिति अर्थात अयन्त कठिन स्थिति से पार कराने वाली। कठिन स्थिति या बडे–बडे दैत्यों से पार हो जाने वाली। जो कठिनाई से पार बैठी है अर्थात स्वंय कठिनाई से परे है। दुर्गम भाव स्वरूपा। एकाक्षरी कोश में ता का अर्थ पूजा भी दिया गया है। अत्यन्त कठिन स्थिति में जिनकी पूजा होती है अर्थात जिनकी उपासना करना बहुत कठिन है। यदि दुर्ग एवं मता इस प्रकार सन्धि की जाएं तब अर्थ होगा कि जिनकी विचारों को जानना बडा कठिन है। मत का अर्थ है विचार ता का अर्थ एकाक्षरी कोश में महिला, लक्ष्मी भी दिया गया है। दुर्गम +ता=दुर्गमता अर्थात ऐसी महिला जो दुर्गम है अर्थात जिसे प्राप्त करना या जानना बहुत कठिन है। ता भाव में होने के कारण गुण धर्म का भी प्रतीक है। दुर्गम अर्थात अत्यन्त कठिन गुणधर्म स्वरूपा, दुर्गम वस्तुओं के गुण धर्म स्वरूपा।) दुर्गम वस्तुओं के गुण, विशेषता या भाव के स्वरूप वाली। तल् प्रत्यय प्रायः भाव, गुण या विशेषता के लिए प्रयुक्त होता है। तन् धातु में ड प्रत्यय लगाने से त शब्द बनेगा जो स्त्रीलिंग में ता या ती हो जायेगा जिसका अर्थ है विस्तार करने वाली। दुर्गम तत्व का विस्तार करने वाली। सबसे दुर्गम तत्व है ब्रह्म और शक्ति ही ब्रह्म का विस्तार जगत के रूप में करती है। शिव शक्ति से उत्पन्न कारण बिन्दु भी दुर्गम तत्व है। भक्ति को भी दुर्गम माना गया है। आत्मज्ञान को भी दुर्गम माना गया है। भक्ति का विभिन्न सन्तों के माध्यम से विस्तार करने वाली। आत्मज्ञान का उपनिषद आदि ग्रन्थों एवं सद्‌गुरूओं के माध्यम से विस्तार करने वाली।

27. **दुर्गम्या** – जो सभी के लिए दुर्गम्य है अर्थात जहां तक पहुँचा नहीं जा सकता। जो भोग या सम्भोग के योग्य नहीं है अर्थात सती या पतिव्रता स्वरूपा। गम्य का अर्थ होता है जिसको भोगा जा सके। अनेक राक्षसों ने देवी को अपनी पत्नी बनाना चाहा पर कोई भी सफल न हो सका। अपने पति शिव के अतिरिक्त किसी के द्वारा भी भोगा नहीं जा सकती। परमात्मा या जीवात्मा स्वरूपा। जीवात्मा को भोगना अर्थात अपने सत्–चित्–आनन्द स्वरूप को प्राप्त करना बेहद कठिन है। जब तक प्रकृति (मन, बुद्धि, इन्द्रिय, संसार) से सम्बन्ध नहीं टूटेगा और हम पूरी तरह अर्न्तमुखी नहीं होगें, तब तक हमें आत्मस्वरूप के साक्षात्कार नहीं होगें अर्थात हम आत्मस्वरूप को नहीं भोग पायेंगें। बेहद कठिनाई से जानी जाने वाली विद्या (साधना/मन्त्र) स्वरूपा। इनकी साधना की विधि या इनके मन्त्र को आसानी से नहीं दिया जाता। पहले पात्रता की पूरी परीक्षा ली जाती है। चूँकि हृदय में आत्म तत्व के रूप में बैठी हुई है अतः उन्हें पाना या उनको जानना बेहद कठिन है। बाहर जाना आसान है और अपने भीतर जाना बेहद कठिन है। अपने भीतर स्थित होकर साधना करना बहुत कठिन है।

28. **दुर्गमेश्वरी** – दुर्गम ऐश्वर्य से युक्त। दुर्गम का अर्थ है जो अत्यन्त मुश्किल से मिलता है। ईश्वर का अर्थ है जो ऐश्वर्य से युक्त हो। दुर्गम ईश्वरी शक्ति से सम्पन्न। दुर्गम का अर्थ है अति कठिन बहुत उच्च जहाँ तक कोई पहुँच नहीं सकता या जिसे जानना बेहद कठिन है।

29. **दुर्गभीमा** – अतिशय भयंकर रूप धारण करने वाली (शत्रुओं के लिए)।

30. **दुर्गभामा** – उस माननीय महिला के स्वरूप में जहाँ तक पहुँचना कठिन है। भामा शब्द महिला, क्रोध युक्त महिला के प्रयुक्त होता है। नाटक में रूठने वाली महिला को भामा कहा गया है। सामान्य तौर पर माननीय महिला को भामा कह सकते है। भा का अर्थ है प्रकाश। प्रकाश भौतिक (आँखे से दिखने वाला) भी हो सकता है एवं ज्ञानरूपी प्रकाश भी हो सकता है। दुर्गभा+अम, अमित से अम ले लिया। जिनका प्रकाश जानने में भी कठिन है तथा परिमाण में भी अमित अर्थात् असीम है। अम् गतौ धातु से अमयति धातु रूप का अर्थ प्राप्त कराना, पहुँचाना भी होता है। दुर्गम ज्ञान को अपने भक्तों में पहुँचाने वाली। आत्मज्ञान ही सबसे दुर्गम ज्ञान होता है। मा धातु का अर्थ निर्माण करना, अनुमीयते से प्रतीत होना भी होता है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ दुर्गम ज्ञान का निर्माण करने वाली। ज्ञान तो शाश्वत होता है, निर्माण करने का अर्थ है कि अज्ञान का आवरण हटा दिया तो ज्ञान दिखने लगा। दुर्गम ज्ञान (साधनारूपी ज्ञान) से प्रतीत होने वाली, जानी जाने वाली। सिद्धों के पास जो साधनायें होती है, जो किताबों में नही मिलती है, उसकी साधना के द्वारा प्रतीत होने वाली अर्थात् जानी जाने वाली। सिमेण्टिक्स ऑफ वेदा नामक पुस्तक में मा धातु का अर्थ आकार लेना भी दिया गया है। इस प्रकार इस नाम का अर्थ दुर्गम ज्ञान का आकार लेने वाली भी कर सकते है। अतिशय कान्ति से देदीप्यमान या विभूषित। दुर्ग का अर्थ है अतिशय, भा का अर्थ है कान्ति या शुभ्र तेज, मा अर्थात मापयति। लक्षणा द्वारा मापयति का अर्थ प्राप्नोति या विभूषित। प्रवीण का अर्थ है जो वीणा बजाने में निपुण हो पर लक्षणा द्वारा किसी भी क्षेत्र में निपुण को प्रवीण कह देते हैं। कुशल का अर्थ है जो कुश लाता हो। कुश बहुत नुकीली घास है जिसको लाने में बहुत कुशलता चाहिए। पर कुशल शब्द को लक्षणा द्वारा किसी भी क्षेत्र में निपुण को कहते हैं।

31. **दुर्गभा** – सामान्य लोगों द्वारा जिनकी कान्ति या तेज सहन नहीं की जा सकता अर्थात उनका तेज नहीं झेला जा सकता। जिनका प्रकाश अत्यन्त कठिन है अर्थात जिनके प्रकाश या तेज को झेलना बेहद कठिन है। यदि देवी सामने आ जायें और व्यक्ति पवित्र न हो तो उनके तेज से व्यक्ति अन्धा भी हो सकता है। शरीररूपी दुर्ग में स्थित प्रकाशस्वरूपा अर्थात आत्मा स्वरूपा। जिनके प्रकाश (ज्ञान) को पार नहीं पाया जा सकता। दुर्ग अर्थात किला अर्थात जिसे पार नहीं किया जा सकता। तात्पर्य है कि देवी के अन्दर कितना ज्ञान है, यह कोई नहीं जान सकता। देवी सामने है पर उसके तेज को ग्रहण नही कर पा रहे क्योंकि हृदय शुद्ध न होने के कारण सम्बन्ध या connection नहीं बना। कठिनाईयों में प्रकाश की तरह। दुर्ग का अर्थ है कठिनाई, संकट, कष्ट। तात्पर्य हुआ जो कठिनाईयों में प्रकाश की तरह अर्थात कठिनाईयों से निकलने का रास्ता बता देती है। प्रकाश अर्थात जो रास्ता दिखा देती है। दुर्ग का अर्थ शास्त्र भी होता है क्योंकि शास्त्र को जानना बहुत कठिन होता है। दुर्ग अर्थात अति कठिन। दुर्गे भाति इति दुर्गभा। शास्त्रों में प्रकाशित है अर्थात शास्त्रों में जिसके बारे में बताया जाता है वह दुर्गभा। दुर्गान् शास्त्रान् भासयति इति दुर्गभा। शास्त्रों को प्रकाशित करती है अर्थात शास्त्रों को अस्तित्व में लाती है या भक्तों को शास्त्र के सही अर्थ प्रकाशित करती है अर्थात बताती है या ज्ञान कराती है। ज्ञान प्रकाश स्वरूप होता है। प्रकशित करना अर्थात प्रकट करना या ज्ञान कराना।

32. **दुर्गदारिणी** – शत्रुओं, दुष्टों और राक्षसों के किलों को विदीर्ण कर देने वाली। दुर्ग का अर्थ है किला। कठिन विकारों को फाड़ने वाली अर्थात नष्ट करने वाली। काम, क्रोध, लोभ आदि विकार सहज में वश में नहीं किये जा सकते। वे दुर्ग के समान हैं अर्थात उन्हें पार करना या उनसे निकलना अत्यन्त कठिन हैं। ऐसे विकारों को नष्ट करने वाली। दुर्ग नामक राक्षस को विदीर्ण करने वाली, फाड़ देने वाली। काम, क्रोध, लोभ आदि विकार

सहज में वश में नहीं किये जा सकते। वे दुर्ग के समान हैं अर्थात उन्हें पार करना या उनसे निकलना अत्यन्त कठिन हैं। ऐसे विकारों को फाड़ देने वाली अर्थात् नष्ट करने वाली। दुर्ग का अर्थ है किला। शत्रुओं, दुष्टों और राक्षसों के किलों को विदीर्ण कर देने वाली। दुर्ग नामक राक्षस को विदीर्ण करने वाली, फाड़ देने वाली।

बीजमन्त्रों के अनुस्वार या बिन्दु का उच्चारण म् या ङ्, किस प्रकार होना चाहिए?

संस्कृत के विद्वानों से यदि यह पूछा जाए कि इनमें से कौन सा उच्चारण सही है तो आधी संख्या में विद्वान कहेंगे म् सही है एवं ङ् गलत है, जबकि आधी संख्या में विद्वान कहेंगे कि ङ् सही है एवं म् गलत है, अतः दुविधा बनी रहती है। इस समस्या का समाधान उन्हीं लोगों द्वारा हो सकता है जो संस्कृत के साथ साथ आगम के भी अच्छे विद्वान हों।

पण्डित गोविन्द शास्त्री जी तन्त्र के जाने माने नाम हैं, उन्होने एक स्थान पर लिखा है कि– 'देखने में आया है कि बिहार व बंगाल में अनुस्वार को ङ् बोलने की अशुद्ध परिपाटी ही चल पड़ी है। अनुस्वार म् ही बुलेगा। व्याकरण के अनुसार मोनुस्वारः का नियम है अर्थात मकार को ही अनुस्वार से लिखा जाता है और अनुस्वार को बोलते समय म् ही बोला जाता है। ऐं को ऐम् ही बोलना चाहिए, ऐङ् नहीं। ङ् बोलने पर अर्थ बदल जाता है, अर्थ बदलने से उसका प्रभाव व परिणाम ही बदल जाएगा– यह बात व्यवहार से सिद्ध है। दूसरी बात यह है कि अनुस्वार का मकार चेतन भी है और पुरूष भी है, ङ् में यह बात नहीं है। शास्त्र कहता है– मकारः पुरूषो यतः। मकार के देखे देख प्रत्येक वर्गान्त अक्षर को अनुस्वार के रूप में लिखने और अशुद्ध उच्चारण करने का एक प्रवाद सा चल पड़ा। मन्त्र को मंत्र, अङ्ग को अंग, काण्ड को कांड लिखना आज सामान्य व्यवहार हो गया। संस्कृत में अनुस्वार को म् ही बोलना चाहिए पर ङ् बोलने की परम्परा चल पड़ी है, लिखेंगे सम्स्कृत, बोलेंगे सन्स्कृत। भाषा में इससे विशेष अन्तर नहीं पड़ता क्योंकि इस प्रकार उच्चारण करने पर ही सम्यक् सम्प्रेषण हो जाता है पर यह कुप्रवृत्ति मन्त्रों में भी लागू हो जाए, तो अनर्थ हो जाता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि बीजमन्त्र शक्ति का आणविक रूप है, उनके बार बार जप करने से उसकी केन्द्रीय शक्ति प्रकट होती है जबकि भाषा में संहति बल काम करता है।'

एक स्थान पर लिखा है कि अनुस्वार मकार का ही अघोष उच्चारण है।

मन्त्र और मातृकाओं का रहस्य– इस पुस्तक में श्री हरिशंकर अवस्थी जी ने लिखा है कि 'अ मकार की उपाधि से बिन्दु एवं हकार की उपाधि से विसर्ग हो जाता है। हकार विसर्ग का स्थूल रूप है'। स्पष्ट है कि बिन्दु के मकार से बनने के कारण इसका उच्चारण म की तरह होना अधिक ठीक है। प्राणतोषिणी ग्रन्थ के प्रथम भाग में लिखा है कि मकार ही बिन्दुरूप में परिवर्तित होता है।

शारदा तिलक तन्त्र के द्वितीय पटल में चौथे श्लोक में लिखा है –

सर्वबीजेषु बिन्दुरूपमकारयोगात् पुरूषैक्यं तेषामिति मन्तव्यम्।

मकारस्य बिन्दुरूपत्वात, बिन्दु पुमान् रविः प्रोक्तः।।

राजस्थान प्राच्य विद्या संस्थान की पुस्तक पथ्यास्वस्ति में भी अनुस्वार के उच्चारण पर लिखा गया है। श्री परमहंस मिश्र की पुस्तक तन्त्रसार में अक्षरों की उत्पत्ति का विवरण दिया गया है।

अं अः वास्तव में (ं) एवं (ः) है पर बिना अ के लिख नहीं सकते, बोल नहीं सकते अतः अं, अः ऐसा

लिखा जाता है। कुछ विद्वानों का यह भी मत है कि यदि कामनाओं की समाप्ति करना है एवं मोक्ष पाना है तो मकार की तरह उच्चारण करना चाहिए एवं सांसारिक कामनाओं या तान्त्रिक कार्यों (मारण, मोहन, उच्चाटन आदि षट्कर्म) को करना हो तो ङ् की तरह उच्चारण करना चाहिए। जब मकार का उच्चारण होता है तो ओंठ बन्द रहते हैं अर्थात मन्त्रजप से उत्पन्न ऊर्जा शरीर के भीतर ही रहती है। जब ङ् का उच्चारण करते हैं तो ओंठ खुले रहते हैं। ओंठ बन्द करके ङ् का उच्चारण नहीं हो सकता एवं ओंठ खुले रखकर म् का उच्चारण नहीं हो सकता। यदि कामनाओं से छुटकारा पाना है, अपने शरीर के भीतर ही बदलाव लाना है, कुण्डलिनी जाग्रत करनी है, मोक्ष पाना है या संसार से वैराग्य होने के कारण ईश्वर की शरण चाहिए तो मकार का उच्चारण करना चाहिए। सांसारिक कामनाओं की पूर्ति करना है तो ङ् का उच्चारण करना चाहिए। कुछ विद्वानों का यह भी कथन है कि हमेशा मकार का ही उच्चारण करना चाहिए क्योंकि मकार से ही ङ् बना है।

यह भी कहा जाता है कि अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः सूत्र से बाद के अक्षर को देखते हुए अनुस्वार का उच्चारण करना चाहिए अर्थात यदि बाद में क वर्ग हो तो ङ् का, च वर्ग हो तो ञ् का, ट वर्ग हो तो ण् का, त वर्ग हो तो न का, प वर्ग हो तो म का उच्चारण करना चाहिए। यह अत्यन्त अव्यवहारिक है क्योंकि बीजों के अनुस्वार का उच्चारण या तो म् की तरह या ङ् की तरह ही सुना जाता है।

श्री वंशीधर त्रिपाठी के अनुसार अनुनासिक वर्णों का ही रूपान्तरण अनुस्वार है एवं ङ् प्रथम अनुनासिक वर्ण होने के कारण सभी अनुनासिक वर्णों में अग्रज है तथा उनका प्रतिनिधि है। ङ् में बाद में लिखा हुआ बिन्दु ही अनुस्वार में परिवर्तित हो जाता है अतः अनुस्वार का उच्चारण ङ् की तरह होना चाहिए। इस प्रकार विद्वानों के दोनों मत हैं। कौन सा उच्चारण सही है, कौन सा गलत है, इसका निर्णय तो ईश्वर ही कर सकता है या वे लोग कर सकते हैं जिन्हें ईश्वर की कृपा है।

गुरू प्राप्त न होने पर साधना कैसे करें-

शास्त्रों में स्पष्ट रूप से लिखा है कि सद्गुरू से प्राप्त मन्त्र की ही साधना करनी चाहिए क्योंकि ऐसा मन्त्र पूर्ण रूप से जाग्रत होता है और सभी दोषों से रहित होता है तथा साधक को अनुकूल फल ही देता है। ऐसा मन्त्र प्राप्त होने पर बहुत कम संख्या में भी जपने पर स्पन्दन की अनुभूति होने लगती है। गुरू का महत्व इसलिए है क्योंकि गुरू जानता है कि साधक के लिए अनुकूल क्या है एवं गुरू द्वारा दिये गये मन्त्र में संस्कार करने की जरूरत नहीं होती। यदि अपने से या कोई किताब पढ़कर साधना करता है तो या तो उसे सफलता नहीं मिलती जिससे वह इस विद्या पर विश्वास खो देता है या कुछ नुकसान होने की भी सम्भावना होती है। यह भी सत्य है कि सद्गुरू का मिलना आसान काम नहीं है। प्रश्न उठता है कि ऐसी स्थिति में क्या करें। पण्डित रूद्रदेव त्रिपाठी ने शास्त्रों का हवाला देते हुए कुछ विकल्प बताए हैं जिनमें शैव दीक्षामन्त्र ग्रहण के लिए मन में निश्चय करके शुभ तिथि वार, नक्षत्रयोग एवं चन्द्रबल आदि देखकर प्रातःकालीन नित्यकर्म से निवृत्त होकर शिवजी के चित्र अथवा मूर्ति के सामने प्रणाम करके बैठ जाएं। फिर जिस मन्त्र का जप करना हो, उसे चाँदी के पात्र, तालपत्र अथवा भोजनपत्र पर लिखकर सामने पटिये पर रख दें और उसकी विधिवत पूजा करे। खीर का नैवेद्य लगायें तथा उपवास रखते हुए मन्त्र का 108 बार जप करें।

सौर दीक्षा के बारे में उन्होंने बताया कि उत्तर की ओर बहने वाली प्रसिद्ध नदी के किनारे सूर्य की पूजा करके भोजपत्र पर मन्त्र लिखकर पूजा करें तथा भगवान सूर्य नारायण को गुरू मानकर वहीं मन्त्र का 108 बार जप करें। इस तरह दीक्षा हो जाती है तथा मन्त्र फलप्रद होता है।

उन्होने शाम्भवी दीक्षा का उल्लेख करते हुए एक उपाय यह भी बताया कि जिस मन्त्र को करना चाहते हैं

उसे शहद से अनार की लकड़ी के द्वारा पान के पत्ते पर लिखकर भगवान शिव को समर्पित कर दें और उनसे प्रार्थना करें कि वे इस मन्त्र को दें। आँख बन्द कर यह भावना करें कि भगवान शिव उस मन्त्र को पढ़कर आपके कान में डाल रहे हैं। 03 बार उन्होंने (भगवान शिव ने) उच्चारण किया और वह मन्त्र आपके दाहिने काने से होता हुआ पूरे शरीर में फैल गया है। अब आप भगवान शिव को मन ही मन प्रणाम कर धन्यवाद दीजिए और उस पान को खा जाइए।

।। मन्त्र जाग्रति हेतु मृतसंजीवनी मन्त्र विद्या।।

विनियोग :– ऊँ अस्य श्रीमृतसंजीवनी महामन्त्रस्य ऊँ सदाशिव ऋषिः। ऊँ गायत्रीच्छन्दः। ऊँ पराशक्ति देवता। ऊँ हं बीजं। ऊँ सौं शक्तिः। ऊँ हं कीलकं। ऊँ श्री पराशक्ति प्रीत्यर्थं सर्वमन्त्रसंजीवनार्थं शीघ्रं उपनामं प्रसिद्धयर्थं जपे विनियोगः।

करन्यास :– ऊँ हंसां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ऊँ हंसीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ऊँ हंसूं मध्यमाभ्यां वषट्। ऊँ हंसैं अनामिकाभ्यां हूँ। ऊँ हंसौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ऊँ हंसः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

हृदयादिन्यास :– ऊँ हंसां हृदयाय नमः। ऊँ हंसीं शिरसे स्वाहा। ऊँ हंसूं शिखायै वषट्। ऊँ हंसैं कवचाय हुम्। ऊँ हंसौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ऊँ हंसः अस्त्राय फट्।

।। ध्यानम् ।।

ऊँ नमो भगवति मन्त्रमातृके अक्षमालिके सर्वदा स्फुरसि सर्वहृदि वससि नमस्ते परारूपे। नमस्ते पश्यन्ती रूपे। नमस्ते मध्यमारूपे। नमस्ते वैखरी रूपे। सर्वतत्वात्मिके। सर्व विद्यात्मिके। सर्वशक्त्यात्मिके। सर्वमन्त्रशापविमोचनि। सर्वमन्त्रसंजीवनि। सर्वदेवतात्मिके भगवति मन्त्रमातृके अक्षमालिके नमस्ते नमस्ते नमस्ते।

मन्त्र– ऊँ ह्रीं श्रीं ऊँ भूर्भुवः स्वः ऊँ अं आं इं ईं ह्रीं ह्रैं ह्रीं जूं सः सर्वमंत्रान् संजीवय संजीवय स्वाहा। ऊँ ह्रीं जूं सः ऊँ भूर्भुवः स्वः ऊँ उं ऊं ऋं ॠ सर्वमन्त्रयन्त्राणां संजीवनं कुरू कुरू स्वाहा। ऊँ भूर्भुवः स्वः ऊँ लृं लॄ ऊँ ह्रीं हंसः सोहं रं रं रं सर्वमन्त्रान् संजीवय संजीवय कुरू कुरू स्वाहा। ऊँ भूर्भुवः स्वः ऊँ एं ऐं ऊँ ह्रीं रं रं रं सर्वमन्त्राक्षराणां उत्कीलय उत्कीलय स्वाहा। ऊँ भूर्भुवः स्वः ऊँ ओं औं अं अः ऊँ ह्रीं ऊँ ह्रीं ह्रीं सर्वमन्त्रयन्त्रतन्त्रादीनां संजीवय संजीवय रं रं रं ठः ठः ठः सर्वमन्त्रसंजीवनं कुरू कुरू स्वाहा।

ऊँ त्वमाद्यानन्त शक्तिस्त्वं प्रवाहो जायते त्वया। सास्मृता पूजिता ध्याता योगिनामपि सिद्धिदा।। ऊँ त्वया बद्धा सर्वदेवा भ्रमन्ति निजकर्मणा। सा तुष्टा सर्वमन्त्राणां अमृता सिद्धिदायिनि।। ऊँ मन्त्रसंजीवनी विद्या वसिष्ठेन च साश्रिता। सिद्धिदा सर्वमन्त्राणां सदाशिव–प्रसादतः।। जपादौ बा पाठादौ वा जपान्ते वा पाठान्ते। सप्तवारं पठित्वा तु शीघ्रं सिद्धि लभेन्नरः।

विधान– किसी शुभ मुहूर्त में इसके 108 पाठ करके सिद्ध कर लें और उसके बाद प्रत्येक दिन एक पाठ करता रहे। इसके प्रभाव से मन्त्रों का संजीवन व उत्कीलन होता है तथा साधना में शीघ्र सिद्धि मिलती है। विनियोग को ज्यों का त्यों पढ़कर या जिस मन्त्र तथा स्तोत्र के लिए इसे करना है, उसका उल्लेख करके विनियोग पढ़ा जा सकता है। प्रथम और अन्तिम बार पूरा स्तोत्र पढ़ना है तथा बाकी के स्तोत्र में मुख्य स्तोत्र ही पढ़ना है अर्थात ध्यान, विनियोग, पूर्वपीठिका एवं फलश्रुति नहीं पढ़नी है।

सामान्यतः स्तोत्र की सिद्धि दस हजार पाठ करने से होती है, कहीं कहीं एक हजार की संख्या या 108 की संख्या भी कही गई है। यह विधान भी मिला है कि जितने श्लोक हैं उतने पाठ प्रतिदिन उतने दिन तक करने से

भी स्तोत्र का पुरश्चरण हो जाता है। जैसे किसी स्तोत्र में 18 श्लोक हैं तो 18 पाठ 18 दिन तक करने में स्तोत्र की सिद्धि हो जाती है। सम्भवतः इसी कारण कुछ लोग हनुमान चालीस के प्रतिदिन 40 पाठ 40 दिन तक करते हैं एवं बजरंग बाण के 35 पाठ प्रतिदिन 35 दिन तक करना होता है। बजरंग बाण के पाठ में कहा गया है कि जलती आग में कुछ कुछ देर में लोबान डालते रहना चाहिए। वहाँ यह नहीं कहा गया है कि हर श्लोक या चौपाई के बाद डालना है। स्तोत्र के आरम्भ एवं अन्त में ऊँ अवश्य लगाना चाहिए। जब दो स्तोत्र लगातार पढ़े जाएंगे तो दोनों के बीच दो ऊँ हो जाऐंगे, एक ऊँ पहले स्तोत्र का अन्तिम हिस्सा होगा एवं दूसरा ऊँ अगले स्तोत्र का आरम्भ होगा। स्तोत्र का अन्तिम श्लोक दो बार पढ़ना चाहिए। यदि कई स्तोत्र पाठ करने हों तो पहला एवं आखिरी स्तोत्र पूरा पढ़ना चाहिए अर्थात उसमें पूर्व पीठिका, ध्यान, विनियोग, न्यास, फलश्रुति सभी कुछ होना चाहिए। बीच के पाठों में केवल मुख्यपाठ पढ़ना चाहिए अर्थात पूर्व पीठिका, ध्यान, विनियोग, न्यास, फलश्रुति पढ़ने की आवश्यकता नहीं है। प्रत्येक स्तोत्र के आदि और अन्त में ऊँ एवं अन्तिम श्लोक को दो बार पढ़ना, यह नियम प्रत्येक पाठ के लिए लागू रहेगा। ललिता सहस्रनाम स्तोत्र का पुरश्चरण चालीस हजार पाठ माना गया है। यह भी पढ़ने को मिला है कि यदि इस सहस्रनाम के पूर्व ललिता–अष्टोत्तर शतनाम का एक पाठ कर दिया जाए तो ललिता सहस्रनाम के पाठ का फल सौ गुना हो जाता है। ललिता अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्र को सौभाग्याष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र भी कहा जाता है जिसका पहला श्लोक है– कामेश्वरी कामशक्तिः कामसौभाग्यदायिनी, कामरूपा कामकला कामिनी कमलासना। ललिता सहस्रनाम स्तोत्र के विनियोग और ध्यान के बाद सौभाग्याष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र पढ़कर ललिता सहस्रनाम स्तोत्र का पाठ किया जा सकता है। ललिता सहस्रनाम के विनियोग में ललिता–अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रपूर्वक ललितासहस्रनामस्तोत्रपाठम् करिष्ये, ऐसा पढ़ा जा सकता है। अपराजिता स्तोत्र पढ़ने से ऐसा लगता है कि यह तीन स्तोत्रों का मिश्रण है अर्थात इसमें वैष्णवी अपराजिता,अभया अपराजिता एवं महाबला अपराजिता स्तोत्र को मिश्रित करके बनाया गया है क्योंकि इसमें तीन बार पूर्व पीठिका, मूलस्तोत्र एवं फलश्रुति आई है। यदि एक बार पाठ करना हो तो पूरा पढ़ना चाहिए। यदि कई पाठ करने हों तो पहला एवं अन्तिम पाठ पूरा पढ़े। मध्य के पाठों में से सभी पूर्व पीठिका (भूमिका) एवं फलश्रुति हटा दें। तीन मुख्य स्तोत्रों को मिलाकर पढ़ना चाहिए। ऊँ नमो नारायणः ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय...................... जनार्दन नमोस्तुते, ऊँ नमोस्तुते अभये अनघे अजिते.......................माम् रक्ष सर्वोपद्रवेभ्यः स्वाहा, ऊँ ह्रीं हन हन कालि शर शर गौरि धम धम ....तत्रैव प्रतिगच्छतु स्वाहेत्योम्। इस प्रकार स्तोत्र बनेगा। विजयादशमी में इसके 108 पाठ करने का बहुत महत्व है। इस दिन अपराजिता अर्थात विष्णुक्रान्ता की पूजा भी की जाती है। कुण्डली में शुक्र ग्रह सूर्य के पास ही होता है। कभी कभी एक ही घर में दोनों ग्रहों के होने के कारण शुक्र अस्त हो जाता है। ऐसे जातकों के लिए, जिनका शुक्र अस्त है, अपराजिता स्तोत्र पढ़ने का सुझाव दिया जाता है। साधको को सलाह दी जाती है कि वे अपने शत्रुओं को याद न करें या क्षमा कर दें क्योंकि वह आपके पूर्व जन्म के कर्मों को मिटाने आया है। उनका ध्यान करने से साधना में एकत्रित ऊर्जा उन तक पहुँचने लगती है जिससे वे और अधिक शक्तिशाली हो जाते हैं। ईश्वर का ध्यान या चिन्तन करने से उन तक पहुँची ऊर्जा कई गुना होकर आप तक वापस लौटती है, जो शत्रुओं या अन्य मनुष्यों के प्रकरण में नहीं होता है। जिन्हें आप उपचारित या हीलिंग करना चाहते हैं उनका ध्यान कर वहाँ तक ऊर्जा भेजते हैं। साधना के पूर्व चौर गणेश मन्त्र से न्यास करने का भी सुझाव दिया जाता है जिससे ऊर्जा सुरक्षित रहे, क्षरित या लीक न हो।

दुर्गासप्तशती में दिया गया सिद्ध कुंजिका स्तोत्र बहुत ही प्रभावशाली स्तोत्र है। इस स्तोत्र में आरम्भ में एक बड़ा मन्त्र दिया गया है। कुछ लोगों के अनुसार मन्त्र की प्रथम पंक्ति में विच्चे के बाद स्वाहा शब्द भी लगना चाहिए। इस बड़े मन्त्र का कम से कम 11 बार पाठ करके मूल स्तोत्र का पाठ पढ़ना चाहिए। यदि इस स्तोत्र को कई बार पढ़ना है तो पहले एवं अन्तिम बार पूरा स्तोत्र पढ़ना चाहिए अर्थात भूमिका, विनियोग, ध्यान, न्यास, फलश्रुति आदि सभी कुछ पढ़ना चाहिए तथा आरम्भ में दिये गये बड़े मन्त्र का कम से कम 11 बार पाठ

करना चाहिए। बीच के स्तोत्रों में एक बार बड़ा मन्त्र एवं मूल स्तोत्र पढ़ना चाहिए अर्थात प्रत्येक मूल स्तोत्र के साथ एक बार बड़ा मन्त्र अवश्य पढ़ना चाहिए क्योंकि वह मन्त्र भी स्तोत्र का हिस्सा है। बीच के इन पाठों में भूमिका, विनियोग, ध्यान, न्यास, फलश्रुति को पढ़ने की आवश्यकता नहीं है। प्रत्येक बार स्तोत्र के आदि और अन्त में ऊँ लगाना आवश्यक है एवं अन्तिम श्लोक को दो बार पढ़ना भी आवश्यक है। जानकीनाथ कौल द्वारा लिखित पुस्तक इन्द्राक्षी स्तोत्र में बताया गया है कि यह स्तोत्र 64 योगिनियों के नामों का स्मरण है। 64 योगिनियाँ पराशक्ति के अंश हैं। पहले श्लोक का अर्थ है – इन्द्राक्षी नाम वाली देवताओं के द्वारा यह नाम बताया गया, जो गौरी, शाकम्भरी एवं दुर्गा नाम से प्रसिद्ध है। (नोट– इन्द्राक्षी देवी महाकाली, महालक्ष्मी एवं महा सरस्वती देवी का मिलित रूप है, यहाँ पर गौरी महाकाली के लिए, शाकम्भरी महालक्ष्मी के लिए एवं दुर्गा महासरस्वती के लिए आया है। अतः इन तीन नामों को इस स्तोत्र में कहे गये देवी के नामों में नहीं गिना जाएगा। शाकम्भरी का अर्थ होता है शाक सब्जी को धारण करने वाली। देवी ने जगत के पोषण के लिए अपने शरीर से शाक सब्जियाँ पैदा कीं और पैदा कर उन्हें अपने शरीर में धारण भी किया अतः शाकम्भरी कहलाती हैं। इस श्लोक में नाम शब्द अलग से लिखा है अर्थात किसी शब्द से जुड़ा नहीं है जो सही है। क्योंकि अलग से लिखा नाम अव्यय होता है जिसके रूप नहीं होते। यदि शब्द के साथ जुड़ा होता तो नाम्ना, नाम्नी आदि रूपान्तरण हो जाता है। जिस प्रकार चौंसठ योगिनियाँ होती हैं, उसी प्रकार इन्द्राक्षी स्तोत्र में इन्द्राक्षी देवी के 64 नाम कहे गये हैं। पहला नाम कात्यायिनी है एवं अन्तिम नाम अर्थात 64 वाँ नाम शंकरार्द्धशरीरिणी है। इन्द्राक्षी स्तोत्र के साथ में शिव कवच का पाठ करना अनिवार्य होता है। जम्मू कश्मीर के सनातनधर्मावलम्बी लोग इन्द्राक्षी स्तोत्र एवं भवानी सहस्रनाम का पाठ बहुतायत से करते हैं। गौतम ऋषि के श्राप के कारण इन्द्र के शरीर में हजार योनियों के चिन्ह हो गये थे और इन्द्र ने पराशक्ति की आराधना की। पराशक्ति ने प्रसन्न होकर उन योनियों को नेत्रों में बदल दिया ओर स्वयं के शरीर में भी हजार नेत्र पैदा कर लिये।

कुंजिका का अर्थ है चाभी अर्थात किसी बन्द चीज को खोलने वाला। कुंजिका स्तोत्र का चाभी के रूप में प्रयोग होने से उसके पाठ द्वारा दुर्गा सप्तशती रूपी पूरी तरह से बन्द शक्ति (locked power) को खोलने से तात्पर्य है। कोई चीज खुलने पर ही आप उसके भीतर जा सकते हो और भीतर की चीजें प्राप्त कर सकते हो। अतः दुर्गासप्तशती पाठ करने के पूर्व सिद्ध कुंजिका स्तोत्र का पाठ करना आवश्यक है जिससे दुर्गासप्तशती की शक्तियाँ प्राप्त हो सकें। अन्यथा वह किसी बन्द मकान के बाहर आवाज लगाने जैसा ही होगा जिससे कोई लाभ नहीं होगा। सिद्ध कुंजिका स्तोत्र का पाठ केवल दुर्गासप्तशती आरम्भ करने के पहले ही नहीं करना बल्कि इसे बाद में भी करना होता है जिससे परिपथ (path or circuit) बन्द (close) किया जा सके।

कुंजिका अर्थात चाभी अर्थात खुल जाना अर्थात वह अब बन्द/छिपा हुआ नहीं है (no longer hidden). जब घर में प्रवेश करते हैं तो चाभी के द्वारा घर खोलते हैं, इसी प्रकार जब घर से बाहर निकलते हैं तो चाभी के द्वारा घर बन्द करके ही बाहर निकलते हैं। कहने का तात्पर्य है कि दुर्गासप्तशती के आरम्भ में एवं दुर्गासप्तशती का पाठ पूरा करने के बाद भी सिद्ध कुंजिका स्तोत्र को पढ़ना चाहिए। सिद्ध का अर्थ है पूर्णता (perfection) युक्त एवं स्तोत्र का अर्थ है गीत (song), कुंजिका का अर्थ है खोलने वाली (opener) अर्थात no longer hidden because of growth. भगवान शिव ने दुर्गासप्तशती की शक्ति (power) में ताला (lock) लगाया। सिद्ध कुंजिका स्तोत्र का शाब्दिक अर्थ हुआ song of perfection which is no longer hidden. पूर्णता (perfection) का न छिपा हुआ (unhidden) स्तोत्र। perfection (सिद्ध) का स्तोत्र जो अब छिपा (hidden) नहीं रहा। कुंजिका का अर्थ है खोलने वाला अर्थात जो अब छिपा हुआ (hidden) नहीं रहा। इस स्तोत्र का पाठ दोनों भौं के बीच में ध्यान लगाकर करना चाहिए क्योंकि यह स्तोत्र चक्रों को जाग्रत करता है।

सिद्ध कुंजिका स्तोत्र में एक बड़ा मन्त्र है जिसका अर्थ समझने के लिए निम्न चीजें जानना जरूरी है–

ज्वालय– जलाओ (किसी साधन से जैसे घर में माचिस रूपी साधन का प्रयोग करते हैं)।

ज्वल– जलना अर्थात स्वयं में जलना।

प्रज्वल– पूर्ण रूप से जलना अर्थात प्रकृष्ठ रूप से या अधिक रूप से जलना।

देवी माँ ऊर्जा के रूप में हैं, माँ की शक्ति अग्नि रूप में या ऊर्जा के रूप में है। इन तीन शब्दों का अर्थ हुआ– ऊर्जा को आरम्भ (start) करो, ऊर्जा जले, ऊर्जा पूर्ण रूप से या बहुत अधिक मात्रा में जले अर्थात प्रकटित हो।

विच्चे– अविद्या रूपी रज्जु (रस्सी) की ग्रन्थि खोलो अर्थात ज्ञान प्रदान करों। वित् का अर्थ ज्ञान होता है। ज्ञान प्राप्ति के लिए अर्थात ब्रह्म ज्ञान या आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिए आपका ध्यान करते हैं। हे महासरस्वती, महालक्ष्मी, महाकाली रूपी चामुण्डा देवी, ब्रह्मज्ञान या आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिए आपका ध्यान करता हूँ। (महासरस्वती, महालक्ष्मी, महाकाली रूपी चामुण्डा देवी को नमस्कार है। वे अविद्या रूपी रज्जु की ग्रन्थि खोले अर्थात ज्ञान प्रदान करें........................मैं इन बीज मन्त्रों का आवाहन करता हूँ। इन बीजमन्त्रों में छिपी शक्ति को प्रस्फुटित करो (जलाना प्रारम्भ करो), इनकी शक्तियाँ या ऊर्जा प्रस्फुटित हों, पूर्ण रूप से प्रस्फुटित हों। महासरस्वती, महालक्ष्मी, महाकाली रूपी चामुण्डा देवी को नमस्कार है। आपकी शक्ति प्रदीप्त हो। आज्ञाचक्र एवं स्वाधिष्ठानचक्र में स्थित इन बीजमन्त्रों को प्रहारित (hit) करो जिससे ये चक्र जाग्रत हो जाएं। जलो और इन बीजमन्त्रों को विस्फोटित (destroy) करो जिससे ऊर्जा निकलेगी। परमाणु बम का विस्फोट होता है तो बहुत ऊर्जा निकलती है। निकली ऊर्जा से चक्र जाग्रत हो जाएगा। जो ऊर्जा पैदा हुई, उसे आपको समर्पित करता हूँ। मैं अपने को आपकी शरण में ले जाता हूँ अर्थात शरणागत होता हूँ। मै अपने आपको आपकी सेवा में आत्मसमर्पण करता हूँ।

स्वाहा– मैं स्वयं को समर्पित (surrender) करता हूँ। इसका अर्थ यह भी कर सकते हैं– जो ऊर्जा पैदा हुई उसे आपको समर्पित करता हूँ। मन्त्र में आखिरी पंक्ति में जो बहुत से बीज मन्त्र दिये गये हैं वे आज्ञाचक्र, स्वाधिष्ठानचक्र या मूलाधारचक्र में स्थित बीज है।

(नोट– बड़ा मन्त्र स्तोत्र का अनिवार्य हिस्सा है अतः जितने बार भी पाठ करेगें हर बार इस बड़े मन्त्र को पढ़ना होगा। यदि कोई व्यक्ति मात्र एक ही बार सिद्ध कुंजिका स्तोत्र का पाठ करता है तो उसे कम से कम ग्यारह बार बड़े मंत्र को पढ़ना होगा। यदि अधिक पाठ करते हैं तो हर पाठ में एक बार बड़े मन्त्र को भी पढ़ना होगा। ब्रह्ममुहूर्त में या रात नौ बजें के बाद इस पाठ को करना बेहतर होता है। ब्रह्ममुहूर्त 28वाँ प्रहर होता है। कुंजिका अर्थात चाभी अर्थात खोलने (unlock) की युक्ति। इसे पढ़कर दुर्गासप्तशती की शक्ति (power) को खोला (unlock) किया जाता है। इस स्तोत्र में धिजाग्रम् नामक शब्द भी आया है जिसका अर्थ है खूब जगाओ, बहुत जाग्रत करो। वास्तव में यह शब्द अधिजाग्रम् है। पढेंगे तो धिजाग्रम् ही, किन्तु मन में ध्यान रखेंगे कि यह अधिजाग्रम् शब्द है। व्याकरण में कभी कभी उपसर्ग का पहला अक्षर लुप्त हो जाता है जैसे पिधान शब्द वास्तव में अपिधान है। कुमार सम्भव के पहले श्लोक में वगाह्य है, यह शब्द वास्तव में अवगाह्य है। लघु सिद्धान्त कौमुदी में इसका सूत्र दिया गया है। अधि का अर्थ होता है खूब या बहुत ज्यादा या प्रचुर मात्रा में। धिजाग्रम् शब्द देखने में संज्ञा की तरह लग रहा है किन्तु पूरे श्लोक में नजर दौड़ाये तो यह शब्द क्रिया ही है। पाणिनि के व्याकरण से धिजाग्रम् शब्द नहीं बनता बल्कि धिजाग्रहि शब्द बनता है। कुछ शब्द ऋषियों के प्रयोग होते हैं जिनमें व्याकरण के नियम काम नहीं करते हैं। सम्भव है कि यह शब्द पाणिनि व्याकरण के अतिरिक्त अन्य

व्याकरणों से बना हो। धिजाग्रम् को क्रिया मानना ही अधिक सही लगता है। कुछ लोगों ने संज्ञा के रूप में इस नाम की व्युत्पत्ति करने का प्रयास किया है। धि का अर्थ है पात्र अर्थात जिसमें कोई चीज धारण की जाती है जैसे जलधि। धिजों में जो अग्र हो वह है धिजाग्र। धी या धि का अर्थ होता है बुद्धि, ज का अर्थ है पैदा करना। बुद्धि से जो उत्पन्न हो अर्थात विचार। अतः धिज का अर्थ हुआ विचार। विचारों का अग्र अर्थात विचारों का बाहुल्य, उसको तोड़ो। किन्तु धिजाग्रम् दो बार प्रयोग हुआ है अतः क्रिया अर्थ अर्थ मानना ही ज्यादा बेहतर है। यह शब्द सिद्ध कुंजिका स्तोत्र के जिस श्लोक में हैं उस श्लोक का अर्थ है– इन बीज मन्त्रों का आवाहन करता हूँ। सभी वर्णों (all classes of alphabets) को activate (धिजाग्रम्) करो, break (त्रोटय) करो, ignite (दीप्तम् कुरू) करो। activate(धिजाग्रम्) अर्थात जगाओ जैसे सोये हुए को जगाना पड़ता है। break(त्रोटय) अर्थात जैसे परमाणु को तोड़ना पड़ता है। धिजाग्रम् शब्द को धिजाग्रम् ही पढ़ेगें, अधिजाग्रम् नहीं, पर मन में रहेगा कि यह शब्द अधिजाग्रम है।

फट् का अर्थ है प्रहार करना, hit करना। इस स्तोत्र में जम्भनादिनी शब्द भी आया है जिसका अर्थ है दाँतों से किटकिटाहट या चबाने वाली आवाज करने वाली। दातों की किटकिटाहट वाली आवाज वाली। नाद का अर्थ है आवाज, जम्भ का अर्थ है दाँतों में कोई चीज रखकर किटकिटाना। बहुत अधिक दहाड़ने वाली। ऐसा अर्थ भी कर सकते हैं। जम्भनामक असुर के समान आवाज करने वाली अर्थात अत्यन्त दहाड़ने वाली।

सभी मन्त्रों के शापविमोचन की सामान्य विधि

बहुत से मन्त्रों को शापग्रस्त कर दिया गया है। जब तक कि उनको दिये गये शाप का परिहार नहीं होता तब तक मन्त्र जप करने में सफलता नहीं मिलती। अलग अलग मन्त्रों के लिए शापविमोचन की अलग अलग विधि है। एक पाण्डुलिपि से ऐसी विधि प्राप्त हुयी है जो सभी मन्त्रों के लिए प्रयुक्त की जा सकती है। वह विधि निम्नवत है –

अथ सर्वमन्त्राणां शापोद्धारविधिः तारम् नमो भगवते यस्य मन्त्रस्य यो मुनिः।। तदन्ते मन्त्रमुच्चार्य शापोद्धारणमीरितं।। ऊँ नमो भगवते अमुकऋषये नमः मूलमन्त्रमुच्चार्य।। एवं शापमोचनम्।।

ऐसा प्रतीत होता है कि यहाँ पर भगवते शब्द ऋषि का विशेषण है। दो बार नमः ऋषि के लिए ही बोला गया है। द्विरूक्ति से अधिक शक्ति का, अधिक कृपा प्राप्त करने का उद्देश्य होता है। जैसे किसी ने बोला रोको रोको इसका अर्थ है अवश्य रोको। भगवान शब्द का अर्थ होता है ऐश्वर्य से, वैभव से युक्त होना। कोई व्यक्ति किसी क्षेत्र विशेष में उत्कृष्ट हो तो उसे भगवान कहा जाता है। मनुष्य ऋषि जो उत्कृष्ट हो उन्हें भगवान से सम्बोधित किया जाता है। भगवान का शाब्दिक अर्थ है ऐश्वर्य से युक्त होना ही है। यह बात अलग है कि यह शब्द राम, कृष्ण, दुर्गा आदि के रूप में रूढ़ हो गया हो। जो भी छह भगों (ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य) से युक्त होगा उसे भगवान कहेंगे। बहुत से ऋषि छह भगों से युक्त होते थे अतः उन्हें भगवान कहा जाता था जैसे भगवान विश्वामित्र, भगवान वशिष्ठ, भगवान गोरखनाथ, भगवान पाणिनि आदि। ईश्वर में सभी छह भग पूर्ण रूप से होते हैं जबकि ऋषियों में सभी छह भगों का पूर्ण रूप से होना अनिवार्य नहीं है पर दोनों ही भगवान कहलाये जाएंगे। (इस मन्त्र में भगवते शब्द ऋषि के लिए प्रयुक्त हुआ है या ईश्वर के लिए प्रयुक्त हुआ है, इस पर स्रोत में कुछ लिखा नहीं गया है, पर ऐसा लगता है कि यह शब्द ऋषि के लिए है।)

चूँकि मन्त्र या स्तोत्र शापग्रस्त हो सकते हैं, उनके देवी देवता नहीं, अतः उन मन्त्रों एवं स्तोत्र के देवी देवता से प्रार्थना की जा सकती है कि आपका यह मन्त्र या स्तोत्र जितने भी शापों से ग्रस्त हो, उन शापों से मुक्ति देने की कृपा करें। ऊँ देवी–देवता का बीज मन्त्र, सम्बोधन विभक्ति में देवी–देवता का सम्बोधन, मन्त्र,

इमम् मन्त्रम् सर्वशापेभ्यो विमोचय विमोचय स्वाहा, इस प्रकार से 10 बार जप किया जा सकता है। जैसे ऊँ दुं दुर्गे! ऊँ दुं दुर्गायै नमः इमम् मन्त्रम् सर्वशापेभ्यो विमोचय विमोचय स्वाहा। अन्त में जो स्वाहा लिखा गया है, उसका तात्पर्य है कि मैं आपके चरणों में आत्मसमर्पण करता हूँ। दो बार विमोचय लिखने का तात्पर्य है कि अवश्य ही शाप से छुटकारा दिलाइये।

दान और प्रतिग्रहण के सिद्धान्त के आधार पर भी निष्कीलन एवं शाप–विमोचन होता है। इसमें अपने को, आपके पास जो भी है उसे ईश्वर को भावनात्मक रूप से समर्पित करना होता है और यह भावना करनी होती है कि ईश्वर ने संसार के कल्याणार्थ आपको वह सब कुछ लौटा दिया जिसे आपने समर्पित किया था। जिस मन्त्र का या स्तोत्र का जप करना है उसे ईश्वर को समर्पित कर यह भावना करना चाहिए कि ईश्वर ने उसे संस्कारित कर अर्थात सभी दोषों से मुक्त कर आपको वापस कर दिया है अर्थात दे दिया है।

देवी रहस्य नामक ग्रन्थ में बहुत से देवी देवताओं के मन्त्रों के उत्कीलन, शाप–विमोचन एवं संजीवन करने का विधान दिया गया है।

सभी मन्त्रों के उत्कीलन की सामान्य विधि

शास्त्रों में कहा गया है कि लगभग सभी मन्त्रों को कीलित कर दिया गया है। अतः मन्त्रों का उत्कीलन किये बिना मन्त्र के जप करने में सफलता नहीं मिलती। वैसे तो अलग अलग मन्त्रों के लिए अलग अलग विधान हैं पर एक सामान्य विधान जो सभी मन्त्रों पर लागू होता है, वह साधकों के लाभ के लिए लिखा जा रहा हैः–

अथ सर्वमन्त्राणामुत्कीलनविधिः।। तारत्रयंमातृकार्णामूलमन्त्रस्यसम्पुटम्।। दशवारंजपेदेनमुत्कीलनमुदाहृतं।। ऊँ ऐं ह्रीं अकारादिळकारान्तवर्णान् मूलमन्त्रम् ळकारादिअकारान्तवर्णान् ह्रीं ऐं ऊँ।।

ऊँ ऐं ह्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं (मन्त्र) ळं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एं लॄं लृं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं ह्रीं ऐं ऊँ। (इसे 10 बार जपें), अनुस्वार या बिन्दु का उच्चारण म् की तरह करना अधिक उचित है।

मन्त्राणां प्रबोधोपाय (मन्त्र – जागृति की विधि)–

सम्पुटीकृत्य यत्नेन लान्तानाद्यान्सबिन्दुकान्। पुनश्च सविसर्गांस्तान् क्षकारं केवलं पठेत्।।

एवं जप्त्वोपदिष्टश्चेत् प्रबुद्धः शीघ्रसिद्धिदः।

अयमर्थः– मन्त्रोपदेशकाले प्रथममकारादिलकारान्तान् वर्णान् सबिन्दूनुच्चार्य, ततो मन्त्रं पुनर्लकाराद्यकारान्तान्सबिन्दूनुच्चरन्नष्टोत्तरशतवारं मन्त्रं जपित्वा, पुनस्तथैव सविसगैर्वर्णैः सम्पुटीकृत्याष्टोत्तरशतवारं मन्त्रं जपनीयम्।

अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं (मन्त्र) ळं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एं लॄं लृं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं । (इसे 108 बार जपें)

इसके बाद

अः आः इः ईः उः ऊः ऋः ॠः लृः लॄः एः ऐः ओः औः अंः अः कः खः गः घः ङः चः छः जः झः ञः टः ठः डः ढः णः तः थः दः धः नः पः फः बः भः मः यः रः लः वः शः षः सः हः ळः (मन्त्र) ळः हः सः षः शः वः लः रः यः मः भः बः फः पः नः धः दः थः तः णः ढः डः ठः टः ञः झः जः छः चः ङः घः गः खः कः अः अंः औः ओः ऐः एः लॄः लृः ॠः ऋः ऊः उः ईः इः आः अः (इसे 108 बार जपे)

इस तरह से मन्त्र की जागृति हो जाती है।

नोटः 1. अनुस्वार युक्त वर्णमाला में 15 वाँ अक्षर अं (Am) होता है एवं 16 वाँ अक्षर अः (Aha) ही रहता है।

2. विसर्ग युक्त वर्ण माला से जब मन्त्र को जोड़ा जाता है तो 15 वाँ स्वर अर्थात अं में सीधे विसर्ग लगाते है, अं के ऊपर का बिन्दु या अनुस्वार नहीं हटाते हैं अर्थात अंः (Amha) बनता है। 16 वाँ अक्षर अः (Aha) ही होता है, इसमें ऊपर अनुस्वार नहीं लगाते।

3. श्लोक में क्षकारम् केवलमं पठेत् लिखा है, इसका क्या अर्थ है केवल अर्थात इसके साथ कुछ नहीं जोड़ना। जब वर्णमाला के एक एक अक्षर से (अर्थात एक बार में एक अक्षर एवं मन्त्र) युक्त करके मन्त्र जप किया जाता है तो क्षकार को केवल पढ़ते हैं अर्थात केवल क्षकार पढ़ते हैं, उसके साथ मन्त्र को युक्त नहीं किया जाता है क्योंकि क्षकार को मेरू कहा गया है जैसे अं (मन्त्र) अं, आं (मन्त्र) आं, इं (मन्त्र) इं .... ळं (मन्त्र) ळं के बाद क्षं (मन्त्र) क्षं नहीं होगा, बल्कि क्षं इतना मात्र पढ़ा जाएगा क्योंकि क्षं मेरू है। इस क्षं के बाद विपरीत क्रम से अर्थात ळं (मन्त्र) ळं, हं (मन्त्र) हं.................. इं (मन्त्र) इं, आं (मन्त्र) आं, अं (मन्त्र) अं इस प्रकार से होता है। दो तरीके होते हैं। एक प्रकार है – सारे वर्णाक्षरों को एक साथ लिखकर फिर मन्त्र एवं पुनः समस्त वर्णाक्षर विपरीत क्रम में लिखना होता है। दूसरा प्रकार या तरीका है – अं (मन्त्र) अं, आं (मन्त्र) आं, इं (मन्त्र) इं। दूसरे तरीके में मन्त्र को क्षं से पुटित नहीं करते हैं अर्थात मन्त्र के आगे पीछे क्षं नहीं लगाते हैं।

मन्त्र चैतन्य की विधि–

शास्त्रों में कहा गया है कि मन्त्र को चैतन्य किये बिना उसे जपने से सिद्धि प्राप्त नहीं होती अतः मन्त्र जाप के पूर्व उसको चैतन्य करना आवश्यक है। वैसे तो शास्त्रों में इसकी अनेक विधियाँ बताई गयीं है पर उनमें से दो सरल विधियों का यहाँ पर उल्लेख किया जा रहा है।

1. ईं बीजेनैव पुटितं मूलमन्त्रं जपेद्यादि। तदेव मन्त्रचैतन्यं भवत्येव सुनिश्चितम्।।

यदि मन्त्र को ईं से सम्पुटित करके जप किया जाय तो मन्त्र चैतन्य हो जाता है। सात दिनों तक सुबह और शाम अर्द्धप्रहर पर्यन्त इस तरह से जप करना होता है।

2. कामबीजं रमाबीजं शक्तिबीजं सुरेश्वरि। एतानि पूर्वमुच्चार्य मातृकास्तदनन्तरम्।।

पुटितं मुलमन्त्रं च शतमष्टोत्तरं जपेत्। कोटिकोटिगुणं चैव लभते नात्र संशयः।।

मन्त्र के पूर्व कामबीज, श्रीबीज और शक्तिबीज तथा अकार से लेकर क्षकारपर्यन्त समस्त मातृकावर्णों को बोलें। फिर मन्त्र का उच्चारण करके पीछे भी उन्हीं बीजों और अक्षरों का उच्चारण करे। इस प्रकार इस मूलविद्या का 108 बार जप करे। इस प्रयोग से मन–चैतन्य हो जाता है। उदाहरण स्वरूप मन्त्र है 'ऐं', इसको चैतन्य करना है, तो पहले पूर्वोक्त तीनों बीजों का उच्चारण करना चाहिए– 'ऊँ क्लीं श्रीं ह्रीं, और इसके पश्चात उसी कं खं गं घं ङं. चं छं– इस प्रकार क्षं पर्यन्त उच्चारण करना चाहिए। इसके पश्चात उसी 'ऐं' मन्त्र और पुनः उन्हीं बीज तथा अक्षरों का 108 बार जप करने से मन्त्र चैतन्य हो जाता है एवं जप का फल कोटि– कोटि गुणित होता है। एक प्रश्न उठता है कि मन्त्र के बाद वर्णाक्षरों को विपरीत क्रम में लिखा जाए या अनुलोम क्रम में लिखा जाए क्योंकि पुटित करने के तीन तरीके होते हैं। उदय सम्पुट, अस्त सम्पुट, उदय अस्त सम्पुट। भूतशुद्धि तन्त्र में निम्न श्लोक लिखा गया है–

मन्त्राक्षराणि देवेशि मातृकापुटितं क्रमात्,
कृत्वा जीवः प्रसन्नात्मा जपेदष्टशतं प्रिये।
अनुलोम विलोमेन कुर्यात परमयत्नतः,
अनेन क्रमतो देवि चैतन्यं विदि सुन्दरि।।

इससे स्पष्ट है कि अनुलोम विलोम तरीके से ही मन्त्र को सम्पुटित कर 108 बार जप करना होगा। ऊँ क्लीं श्रीं ह्रीं अं आं इं ईं .... ळं क्षं (मन्त्र) क्षं ळं ....ईं इं आं अं ह्रीं श्रीं क्लीं ऊँ। (यहाँ पर एक प्रश्न उठता है कि ळं के बाद क्षं आना चाहिए या नहीं क्योंकि कई स्थान पर ऐसा लिखा है कि क्षं को सम्पुट के रूप में प्रयोग नहीं करना चाहिए, क्ष = क्+ष, ये दोनों अक्षर आ चुके हैं, ऊँ आगे या सबसे पीछे लगाना चाहिए या नहीं। दोनों प्रकार के विरोधी मत हो सकते हैं अतः बेहतर है कि न तो क्षं का प्रयोग किया जाए और न ऊँ का प्रयोग किया जाए।)

प्राणतोषिणी ग्रन्थ में मन्त्र चैतन्य के सन्दर्भ में लिखा है कि –

कामबीजं रमाबीजं शक्तिबीजं सुरेश्वरी

एतानि पूर्वम् उच्चार्य मातृकाम् तदनन्तरम्।

सूर्य मण्डल के मध्य में मन्त्र स्थित है, ऐसा चिन्तन कर जप करने से भी मन्त्र चैतन्य होना बताया गया है।

एक स्थान पर लिखा है कि तन्त्र साधना के अनुसार बीजाक्षरों का सम्पुट लोम विलोम लगता है अर्थात अं बं सं (मन्त्र) सं बं अं इस प्रकार से मन्त्र जपा जाता है।

आगम रहस्य के 17 वें पटल में एवं तन्त्रसार में लिखा है–

मातृकापुटितं कृत्वा स्वस्वमन्त्रं जपेत् सुधीः,

क्रमोत्क्रमात् शतावृत्या तदन्ते च मनुं जपेत।

एवं तु प्रत्यहं कृत्वा यावल्लक्षं समाप्यते,

निश्चितं मन्त्रसिद्धिः स्यादित्युक्तं तन्त्रवेदिभिः।।

क्रम–उत्क्रम अर्थात अनुलोम विलोम। पहले मातृका वर्णों से 100 बार अर्थात 108 बार अनुलोम विलोम से पुटित कर जप करें और फिर सीधे मन्त्र जपें, जितनी भी माला का आपने प्रतिदिन करने का लक्ष्य रखा है। 108 बार मातृका से अनुलोम विलोम से पुटित कर मन्त्र जपना चाहिए और उसके बाद उस दिन मातृका से पुटित किये बिना मन्त्र का जप करना चाहिए। प्रतिदिन 108 बार अनुलोम विलोम से पुटित कर मन्त्र जपें फिर बिना पुटित किये हुए केवल मन्त्र जपें। मान लो आपको किसी मन्त्र का एक लाख बार जपना है और आपने लक्ष्य बना रखा है कि प्रतिदिन 108 बार अनुलोम विलोम से पुटित मन्त्र एवं बीस माला बिना पुटित किये हुए जप करना है तो आपको 50 दिन ऐसा करना होगा। अक्षर के ऊपर बिन्दु या अनुस्वार लगाने से वह मन्त्र बन जाता है और ऊर्जा का स्रोत हो जाता है। आगम रहस्य के 17वें पटल में लिखा है कि एक कृष्णाष्टमी से दूसरी कृष्णाष्टमी तक प्रतिदिन एक हजार बार जप करने से एक मास में पुरश्चरण हो जाता है।

ईं का अर्थ है शिव–शक्ति सामरस्य रूप। ईं = अहं, ईं रक्त बिन्दु, शुक्ल बिन्दु, मिश्र बिन्दु और संवित (अथवा हार्धकला) इन चार बिन्दुओं से बना। श्रीविद्यासपर्यावासना में लिखा है–

ईकारस्य बिन्दु–विसर्गात्मनः शिवशक्त्योः।

अकार हकारयोः सामरस्यरूपत्वात्।।

एक स्थान पर मन्त्र चैतन्य के लिए लिखा गया है कि मन्त्रार्थ को ध्यान में रखते हुए मन्त्र जप करने से मन्त्र चैतन्य होता है। जप के दौरान मन्त्र का यह अर्थ है और यह जप आत्मशुद्धि के लिए किया जा रहा है ऐसा भाव होना जरूरी है।

चित्शक्ति चैतन्य की संकुचित अवस्था में चित्त बनती है और वही विकसित होकर चिति (विशुद्ध आत्मा) बनती है।

एक स्थान पर लिखा गया है कि मन्त्र के आदि में अर्थात प्रारम्भ में मायाबीज (ह्रीं)+कामबीज (क्लीं) +श्रीबीज (श्रीं) लगाकर मन्त्र जप करने से मन्त्रों का दोष दूर हो जाता है। तन्त्रसार नामक ग्रन्थ देखा जा सकता है। मन्त्र तोषिणी ग्रन्थ में लिखा है कि तार (ऊँ) से सम्पुटित कर मन्त्र को जपने से दुष्ट मन्त्र भी सिद्ध हो जाता है। भुवनेशी पारिजात ग्रन्थ में लिखा गया है कि–

मायाबीज समायुक्तः क्षिप्र प्रसिद्धिदो भवेत्,

पिण्डस्तु केवलो मन्त्रो मायाबीजोज्वलीकृतः।

मायाबीजात् भवेत प्राणो बीजम् चैतन्यवीर्यवत्।।

अतः मन्त्र को मायाबीज (ह्रीं) से युक्त कर जपना चाहिए जिससे वह प्राणवान एवं चैतन्य युक्त रहे। एक अन्य स्थान पर लिखा है कि मातृका अर्थात संस्कृत की वर्णमाला से युक्त कर मन्त्र जपने से मन्त्रों के दोषों का परिहार हो जाता है।

मेरूतन्त्र में लिखा हुआ है कि नवार्णमन्त्र के पहले प्रणव (ऊँ) न लगायें। यदि ऊँ लगाते हैं तो वह मन्त्र निर्बीज हो जाएगा जिसके जपने से निराशा बढ़ती है। दुर्गोपासनाकल्पद्रुम ग्रन्थ में लिखा है कि नवार्णमन्त्र के पहले ऊँ लगाना चाहिए एवं बाद में स्वाहा लगाना चाहिए। सिद्धकुंजिका स्तोत्र में स्तोत्र के पहले दिए गए बड़े मन्त्र में भी स्वाहा लगाना चाहिए। यह भी कहा जाता है कि ऊँ रहित नवार्ण मन्त्र जपने से महा सरस्वती, महालक्ष्मी एवं महाकाली की कृपा होती है तथा ऊँ लगाने से इन शक्तियों की कृपा के साथ साथ मोक्ष भी मिलेगा। चण्डी कार्यालय, प्रयाग ने इस विषय पर बड़ा विस्तृत लेख निकाला है और उनका निश्कर्ष है कि ऊँ रहित नवार्ण मन्त्र ही जपना चाहिए और नवार्ण मन्त्र में नौ अक्षर ही होना चाहिए। ऊँ लगाने से दस अक्षर हो जाते हैं और स्वाहा लगाने से 12 अक्षर हो जाएंगे।

मन्त्र को शाप से विमुक्त करने के लिए मन्त्र के देवता से ही प्रार्थना करनी चाहिए क्योंकि शाप मन्त्र या स्तोत्र को दिया गया है, न कि मन्त्र या स्तोत्र के देवता को। ऊँ बीजमन्त्र सम्बोधन में देवता का नाम सर्वशापम् विमोचय विमोचय स्वाहा, ऐसी प्रार्थना देवता से की जा सकती है। नाद का आविर्भाव ही मन्त्र को मन्त्र एवं जप को जप बनाता है अन्यथा मन्त्र जड़ वर्णों का समूह ही रह जाता है। मन्त्र जपते समय यदि शरीर की कोशिकाओं से अर्थात रोम रोम से स्पन्दन या vibration हो रहा है तभी वह सही दिशा में या काम करता हुआ माना जा सकता है। चैतन्य की रश्मियाँ ही मन्त्र से सिद्धि दिलाती हैं। चैतन्य रहित मन्त्र को जपने वाला पापी कहा जाता है। मन्त्रार्थ अर्थात मन्त्र का अर्थ अर्थात मन्त्र जिस देवता को बताता है। अर्थ का तात्पर्य है वस्तु। जैसे मुँह से रसगुल्ला यह शब्द निकला तो इस शब्द का अर्थ दुकान में रखी वह गोल गोल वस्तु होगी। मन्त्र देवता का एक शरीर है और मन्त्र और देवता में भेद नहीं करना चाहिए अर्थात यह भाव रखना चाहिए कि देवता इस रूप में हैं। मन्त्र या स्तोत्र को जपने से वैसी ही आकृति या यन्त्र बन जाता है जो ध्यान के श्लोक में लिखा होता है। गन्धर्व तन्त्र में लिखा है कि कुछ अक्षर/बीज चैतन्य के ही विजृम्भण (विस्तार या अभिव्यक्ति) हैं। अतः मन्त्र को चैतन्य करने के लिए उन्हीं बीजों का प्रयोग किया जाता है। गन्धर्व तन्त्र में तीसवें पटल में ऐसा लिखा हुआ है। बिन्दु विसर्ग ह स चतुर्थ स्वर (ई) ये सब आपकी मातृका देह में चैतन्य के विजृम्भण रूप होते हैं। इनसे हीन मन्त्र तथा विद्याऐं निष्प्राण हैं। ऐसा लगता है कि इसी कारण ईं एवं ह्सौं से युक्त करने के लिए कहा जाता है। गन्धर्व तन्त्र के 22वें पटल में लिखा है कि देवी का तीन मुहूर्त तक स्वापकाल होता है अर्थात इसमें देवी सोती हैं, इसमें पूजा न करें। दिवानिशा नौ मुहूर्त की होती है, उसके बाद देवी के स्वापकाल वाले तीन मुहूर्त आते हैं।

सूर्य ग्रहण के तुल्य कुछ तिथियॉ मानी गई हैं जो हैं– सोमवती अमावस्या, रविवार सप्तमी (शुक्ल पक्ष), मंगल चतुर्थी (शुक्लपक्ष), बुध अष्टमी (शुक्लपक्ष)। माघ सप्तमी का पुण्यकाल अरूणोदय काल है। धर्मसिन्धु के

अनुसार पंचपर्वकाल चतुर्दशी, अष्टमी, अमावस्या, पूर्णिमा और रविवार के दिन संक्रान्ति हैं। धनतेरस, नरकचतुर्दशी (दक्षिण भारत की दीपावली), दीपावली, गोवर्धनपूजा दिवस, भाईदूज इन्हें भी पंचपर्व एवं पंचमहारात्रि कहा जाता है। महाविद्या अर्थात भोग और मोक्ष दोनों देने वाली, अविद्या अर्थात सांसारिक आसक्ति देने वाली। विद्या अर्थात मोक्ष का रास्ता दिखाने वाली।

सभी मन्त्र दोषों को दूर करने का एक अन्य उपाय

नेत्र तन्त्र में सभी मन्त्र दोषों को दूर करने का एक सरल उपाय बताया गया है जिसके अनुसार किसी मन्त्र को अमृतेश मन्त्र (त्र्यक्षरी मृत्युंजय मन्त्र) से सम्पुटित कर 108 बार जपने मात्र से वह मन्त्र सभी दोषों से रहित हो जाता है। वहाँ लिखा है कि जो मन्त्र भावहीन, शक्तिहीन, कीलित (अक्षरों को या पदों को उल्टा पुल्टा करने से बनाए गए) वर्णमात्राविहीन, गुरू की परम्परा से रहित, भ्रष्ट आम्नाओं (अज्ञात संहित से प्राप्त) के कारण नष्ट, आगम से त्यक्त, विघ्नित है तथा इष्ट रूप में हजारों बार जप किये जाने पर भी सिद्ध नहीं होते, उसी प्रकार जो असिद्ध शत्रु हैं, सर्वांश से रहित हैं आदि वर्ण के सहित आद्यन्त सम्पुट से होने से रोधित हैं वे अमृतेश मन्त्र से जीवित होने पर यथेष्ट जाप किये जाने पर बिना प्रयत्न के सिद्ध हो जाते हैं। (त्र्यक्षरी मृत्युंजय मन्त्र) (इष्ट मन्त्र जिसे सिद्ध करना है) (उल्टा त्र्यक्षरी मृत्युंजय मन्त्र) इस प्रकार 108 बार जपना होगा। ऊँ जूं सः (मन्त्र) सः जूं ऊँ, इस प्रकार से 108 बार जपना होगा। ऊँ जूं सः के स्थान पर ऊँ जुं सः भी मिलता है, दोनों सही हैं।

गायत्री उत्कीलन विधान–

एक पाण्डुलिपि में गायत्री मन्त्र के उत्कीलन का विधान देखने को मिला है। सामान्यतः शाप विमोचन मन्त्र तो मिलते हैं पर गायत्री का उत्कीलन विधान नहीं देखने को मिलता है। पाठकों के लाभार्थ इसे दिया जा रहा है। गायत्री ध्यान, मानसोपचार से पूजा करने के उपरान्त उत्कीलन मन्त्र जपना होता है। उत्कीलन मन्त्र इस प्रकार है–

ऊँ ऊँ ऊँ ऊँ हौं जूं सः ऊँ भूः तत्सवितुवरणीयं सः जूं हौं

ऊँ ऊँ ऊँ ऊँ हौं जूं सः ऊँ भुवः भर्गोदेवस्य धीमहि सः जूं हौं

ऊँ ऊँ ऊँ ऊ हौं जूं सः ऊँ सुवः धियो यो नः प्रचोदयात् सः जूं हौं

ऊँ ऊँ ऊँ ऊ परो रजसे सावदों गायत्री उत्कीलिता भव।

उत्कीलन मन्त्र के बाद शाप विमोचन मन्त्र पढ़ना चाहिए। गायत्री मन्त्र में दो तरह के मत हैं। कुछ लोग वरेण्यम् को वरेण्यम् ही पढ़ते हैं, अन्य का मत है कि वरेण्यम् पढ़ने से 23 अक्षर ही होते हैं, 24 नहीं। 24 अक्षर करने के लिए अर्थात गायत्री छन्द को पूर्ण करने के लिए वरेणियम् पढ़ना चाहिये। चण्डी प्रकाशन, प्रयाग के ग्रन्थ गायत्री कल्पतरु में समझाया गया है कि वरेण्यम् ही पढ़ना चाहिये।

सर्वयन्त्रमन्त्रतन्त्र – उत्कीलन स्तोत्र भी मिलता है जो इंटरनेट में उपलब्ध है। उस स्तोत्र में बीच में मूलमन्त्र दिये हैं पर यह नहीं लिखा गया है कि उसे कितनी बार पढ़ना चाहिए। पंचरात्रागम की विभिन्न पाण्डुलिपियों को पढ़कर ऐसा लगता है कि मूल मन्त्र 28 बार पढ़ना चाहिए तथा इस मूल मन्त्र के बाद वह मन्त्र जिसमें 51 मातृका वर्ण है उसे 3 बार पढ़ना चाहिए। वैसे भी यह लिखा मिल जाता है कि पूजा के पूर्व मातृका वर्णों (अं आं इ ई .... ळं क्षं) को 3 बार उच्चरित होना चाहिए। मूल मन्त्र (ऊँ ह्रीं ह्रीं ह्रीं सर्वमन्त्रतन्त्रयन्त्राणां उत्कीलनं कुरू कुरू स्वाहा) के बाद कई मन्त्र दिये हैं, उनमें से सभी मन्त्र पढ़ने का समय न

हो तो वह मन्त्र जरूर पढ़ें जिसमें सभी मातृकावर्ण जरूर आ गये हों। स्तोत्र सम्भवतः एक बार ही पढ़ना होगा। कहीं कहीं पर मूल मन्त्र ऊँ भ्रां भ्रां ....श्लां............इस प्रकार दिया गया है। इसे स्तोत्र के पूर्व 28 बार, फिर अन्य मन्त्र जिसमें सभी मातृका वर्ण आ गये हैं का 03 बार या 01 बार पाठ करें, फिर स्तोत्र का 01 बार पाठ करें। कुछ ऐसे स्तोत्र भी हैं जिसमें मूल मन्त्र या मन्त्र नहीं है। उसका 07 बार पाठ होना चाहिए, न कि 01 बार। मेरे अनुसार मूलमन्त्र अर्थात ऊँ ह्रीं ह्रीं ह्रीं सर्वमन्त्राक्षराणां उत्कीलनं कुरू कुरू स्वाहा का 28 बार, फिर मातृकाक्षरों से युक्त मन्त्र का 03 बार और स्तोत्र का 01 बार पाठ करना चाहिए। विनियोग में थोड़ा सा बदलाव करना होगा अर्थात यह पढ़ना होगा कि किस मन्त्र या स्तोत्र का उत्कीलन आदि करना है अथवा सभी मन्त्र या स्तोत्र कहकर भी पढ़ सकते हैं।

श्रीवागीशास्त्री जी ने उत्कीलन की दो विधियाँ बताई हैं–

ऊँ ऐं ह्रीं(मन्त्र) ह्रीं ऐं ऊँ को 108 बार जपें। दूसरा तरीका है मन्त्र को मन्त्र से ही पुटित करके एक माला जपना है और यह सम्पुटन अनुलोम, अनुलोम तरीके से होगा अर्थात अनुलोम–विलोम नहीं होगा जैसे नमः शिवाय मन्त्र का उत्कीलन करना हो तो– नमः शिवाय (नमः शिवाय) नमः शिवाय, इस प्रकार 108 बार पढ़ना होगा।

ह्रीं बीजमन्त्र का अर्थ है– माया की वह अमोघशक्ति जो सर्वत्र व्याप्त है, दुख दूर करे। ई अर्थात माया/महामाया, र अर्थात शक्ति (अमोघ शक्ति), ह अर्थात आकाश अर्थात सर्वत्र व्याप्त, बिन्दु या अनुस्वार अर्थात दुखहरण। शिव सहित विश्वमाता महामाया शक्ति मेरे दुखों को दूर करे, यह अर्थ भी कर सकते हैं। ह का अर्थ है शिव, र का अर्थ है प्रकृति या विश्वमाता, ई का अर्थ है महामाया। विशेषण के रूप में यदि इस बीजमन्त्र का अर्थ निकालना हो तो अर्थ होगा– माया की सर्वत्र व्याप्त, दुख दूर करने वाली अमोघशक्ति।

ह्रीं में ल् जोड़ देने पर बने बगलामुखी बीज अर्थात ह्ल्रीं अर्थ होगा माया की वह अमोघशक्ति जो सर्वत्र व्याप्त है, तथा स्थिरता–कारक है, दुख दूर करे। ई अर्थात माया, र अर्थात शक्ति (अमोघ शक्ति), ह अर्थात आकाश अर्थात सर्वत्र व्याप्त, ल अर्थात पृथ्वी अर्थात स्थिरता का सूचक। बिन्दु या अनुस्वार अर्थात दुख दूर करे। स्तम्भन अर्थात लोक या अन्य किसी चीज को रोक कर रखना जिससे वह गिर न पड़े। ह्लीं का अर्थ आकाश से पृथ्वी तक व्याप्त महामाया शक्ति, मेरे दुखों को दूर कर। अनुस्वार का अर्थ दुख हरना या कल्याण करना या सुख देना होता है। विशेषण के रूप में इस बीज का अर्थ होगा आकाश से पृथ्वी तक व्याप्त, दुख दूर करने वाली महामाया शक्ति। ह का अर्थ है आकाश, ल का अर्थ है पृथ्वी, अनन्त। आकाश से पृथ्वी अर्थात पाँचों महाभूत अर्थात पूरा विश्व क्योंकि विश्व इन्हीं पाँच तत्वों से बना है। विशेषण के रूप में यदि यह बीजमन्त्र आता है तो अर्थ होगा– आकाश से पृथ्वी तक व्याप्त दुख दूर करने वाली महामाया शक्ति। ल का अर्थ कहीं कहीं पर अनन्त या अनन्त विस्तार वाला भी करते हैं जैसे कालिका नाम के अर्थ में किया गया है।

नवार्ण मन्त्र (ऐं ह्री क्लीं चामुण्डायै विच्चे) का अर्थ है– चित् सत् आनन्द रूपिणी, महासरस्वती, महालक्ष्मी, महाकाली के एकीभूत स्वरूप चामुण्डा देवि ब्रह्मविद्या के लिए आपका ध्यान करता हूँ।

ऐं – हे चिद्रूपिणी महासरस्वती।

ह्री– हे सद्रूपिणी महालक्ष्मी।

क्लीं – हे आनन्दस्वरूपिणी महाकाली।

चामुण्डायै– ब्रह्मविद्या प्राप्ति के लिए।

विच्चे– आपका ध्यान करते हैं। (वित् = चित्, च = सत्, इ = आनन्द।)

विद् ज्ञाने धातु होती है जिससे वित् का अर्थ ज्ञान अर्थात चित् किया गया है। ज्ञान और चेतना एक ही

चीज हैं। जो ब्रह्म से अतिरिक्त किसी भी पदार्थ को ग्रहण नही करती। जो चामु (ब्रह्म से अतिरिक्त जो भी पदार्थ है) को अपने विषय में नहीं लाती अर्थात जो मात्र ब्रह्मविषयिणी है। चामुम् डापयति इति चामुण्डा। डापयति का अर्थ है उज्जनयति अर्थात न विषयीकुरुते। चामु का अर्थ है अदनीय पदार्थ अर्थात खाने योग्य नही है ऐसा पदार्थ अर्थात ब्रह्म के अतिरिक्त जो कुछ भी है वह। तात्पर्य हुआ कि ब्रह्म से अतिरिक्त जो भी है वह उसके लिये अस्तित्वहीन जैसा है। इस प्रकार चामुण्डा का अर्थ हुआ ब्रह्म से एकाकार।

चतुरक्षर मृत्युंजय मन्त्र (ऊँ ह्रौं जूं सः) का अर्थ है दुखों को दूर करने वाले शिव और सदाशिव, मुझे जीवन दो, शक्ति दो। ह या ह्र का अर्थ है शिव, औ का अर्थ है सदाशिव, बिन्दु का अर्थ है दुख दूर करना, ज का अर्थ है जीवन, स का अर्थ है शक्ति। जूं के स्थान पर कहीं कहीं पर जुं भी मिलता है, दोनो सही हैं। रं अग्निबीज है, मन्त्र में ऊर्जा या शक्ति बढ़ाने के लिए कई बार बीजमन्त्रों में र् जोड़ दिया जाता है। श्री विद्या के पंचदशी मन्त्र के अनेक अर्थ वरिवस्या रहस्य नामक ग्रन्थ में दिये गये हैं। ब्रह्मा, विष्णु, महेश द्वारा आराध्य देवी, जो आनन्दमय है तथा सूर्य और चन्द्र जिसके नेत्र है ऐसी देवी, सभी कलाओं से युक्त देवी मैं आपको प्रणाम करता हूँ। कला का अर्थ शक्ति भी होता है और इसका तात्पर्य 64 कलाओं से भी है। ईड् धातु का अर्थ है आराधना करना या स्तुति करना। संस्कृत में ड और ल में अभेद होता है। अतः ईल् एवं ईड् का एक ही अर्थ है। इस मन्त्र में जो मायाबीज है उसका अर्थ देवी ले लिया गया है। ईड्+अ (शिव), ए का अर्थ है विष्णु, ह का एक अर्थ है चन्द्रमा। हस का अर्थ आनन्दमय ले लिया गया क्योंकि आनन्द में व्यक्ति प्रसन्न होता है। क का अर्थ ब्रह्मा, सूर्य है।

बगलामुखी देवी का 36 अक्षर का मन्त्र सबसे प्रसिद्ध है, इसे ब्रह्मास्त्र विद्या कहते हैं। शत्रुओं पर इसका प्रयोग करते समय अपनी जिह्वा पर ध्यान नहीं होनी चाहिए बल्कि शत्रु पर ही होना चाहिए। सर्वदुष्टानाम् की जगह मम शत्रूणाम् का भी प्रयोग किया जा सकता है। 48 अक्षर का भी मन्त्र बहुत प्रसिद्ध है जिस पर आधारित एक कवच भी है। 80 अक्षर के मन्त्र की महिमा भी बहुत गायी गई है। 80 अक्षर के इस मन्त्र में बहुत से बीजमन्त्र हैं जिनका अर्थ इन बीजमन्त्रों में शक्तिरूप में स्थित/इन बीजमन्त्रों में स्थित/इन बीजमन्त्रों की शक्ति को धारण करने वाली, ऐसा कर सकते हैं। आवेशय आवेशय का अर्थ है प्रवेश करो प्रवेश करो, आवाहय आवाहय का अर्थ बुलाओ बुलाओ (किसको– अपने आपको या अपनी फैली हुई समस्त शक्तियों को या अपने विभिन्न रूपों को), सान्निध्यम् कुरू कुरू अर्थात अपनी समीपता को करो, करो अर्थात अपनी समीपता दो। मम हृदये एहि एहि का अर्थ है मेरे हृदय में आओ आओ (कभी कभी प्रेरणार्थक क्रिया सामान्य या शुद्ध क्रिया का भी अर्थ दे देती है।)। हुम् फट् स्वाहा का अर्थ है शत्रुओं पर गुस्सा करो, प्रहार करो, नाश करो। हुम् का अर्थ है गुस्सा दिखाओ, शत्रु को डरा दो। अपने गुस्से को निकालने के लिए हुम् को बोला जाता है जिससे तीसरे नेत्र से भस्म करने वाली ऊर्जा निकलती है जिसका प्रयोग भगवान शिव ने कामदेव को भस्म करने के लिए किया था। फट् का अर्थ है आक्रमण करो, प्रहार करो, शत्रुओं को भगा दो। स्वाहा का अर्थ है भस्म कर दो, नाश कर दो। दुर्गासप्तशती के यदि किसी एक मन्त्र का जप करना हो तो उस मन्त्र के पहले ऊँ श्रीं श्रीं क्लीं हूं ऊँ ऐं क्षोभय मोहय उत्कीलय उत्कीलय उत्कीलय ठं ठं, इस मन्त्र का 108 बार जप कर लेना चाहिए जिससे शाप विमोचन, उत्कीलन हो जाएगा। कहीं कहीं पर लिखा होता है कि अमुक मन्त्र का इस चक्र में या शरीर के इस स्थान में इतनी बार जाप करें। इसके तीन अर्थ हो सकते हैं– उस चक्र या स्थान का ध्यान करते हुए मन में मन्त्र का जप करना, तत्वमुद्रा (ॲंगूठा और अनामिका का अग्रभाग मिला हुआ) से उस स्थान को स्पर्श करते हुए उस स्थान का ध्यान करते हुए जप करना, अपने सूक्ष्म शरीर को उस स्थान पर बिठाकर उस सूक्ष्म शरीर के माध्यम से जप करना अर्थात आप सूक्ष्म शरीर हो गये हो और उस स्थान पर बैठकर मन्त्र जप कर रहे हो।

दस संस्कारों में पहला संस्कार जनन संस्कार है। उसमें लिखा हुआ है कि जनन यन्त्र (मातृका यन्त्र) से मन्त्र का उद्धार करना है। उद्धार का अर्थ ऊपर लाना अर्थात लिखना है। पहले मातृका यन्त्र बना लेना है जिसमें

नीचे की ओर अर्थात अपनी ओर कोना रहे। दूसरे भोजपत्र पर उस मन्त्र को लिखें जिसका जप करना है। मन में भावना रहे कि जनन यन्त्र से उठा उठाकर दूसरे भोजपत्र में लिख रहे हैं। तात्पर्य है कि दूसरे भोजपत्र पर मन्त्र लिखते समय इस भाव से लिखना है कि जनन यन्त्र से अक्षरों को उठाकर के यहाँ लाकर लिखा जा रहा है। उद्धार अर्थात कहीं से ऊपर उठाया जा रहा है अर्थात वहाँ से उठाकर यहाँ लिख रहे हैं। दूसरी विधि यह है कि भोजपत्र पर गोरोचन या कुमकुम से जनन यन्त्र बनाना है। जनन यन्त्र तैयार हो गया। अब मान लो ऊँ नमः शिवाय का जप करना है, तो लाल चन्दन में अनामिका डुबोकर मन्त्र के अक्षर अर्थात अ उ म न म ह श इ व आ य में प्रत्येक अक्षर को शक्तिबीज मन्त्र (मायाबीज) का उच्चारण करते हुए स्पर्श करते जाऐंगे। इसी प्रकार भभूत से शिव मन्त्र से (नमः शिवाय से) प्रत्येक अक्षर को शिव मन्त्र बोलते हुए छूते जाऐंगे अर्थात स्पर्श करते जाऐंगे। इस प्रकार से मन्त्र के सारे अक्षर उद्घाटित हो जाऐंगे। यदि गोरोचन /लाल चन्दन न मिले तो लाल स्याही से मन्त्र लिख सकते हैं।

एक स्थान पर पढ़ने को मिला है कि ध्यान कम से कम 07 मिनट अवश्य करना चाहिए। दीक्षा से प्राप्त साधना को न करते हुए यदि लगातार 48 दिन हो जाते हैं, तो दुबारा दीक्षा लेने की आवश्यकता पड़ती है। सिद्धजन साँस के साथ मन्त्र या भगवान का नाम जोड़ने की सलाह देते हैं। साँस में एक सावधानी बरतनी होती है कि जब साँस अन्दर जाए तो पेट फूलना चाहिए एवं जब बाहर जाए तो पेट पिचकना चाहिए। इसका परीक्षण करने के लिए कुछ लोग नाभि के ऊपर कुछ भारी चीज रखकर देखते हैं। एक योगी व्यक्ति ने बताया कि यदि गले में नीचे जो गढ्ढा होता है उससे साँस लिया या छोड़ा जाए तो साँस लेने पर पेट फूलेगा ही। साँस तो नाक से ही आती है और जाती है पर भावना के द्वारा हम किसी भी अंग से साँस ले और छोड़ सकते हैं। यदि आप भावना को हाथ के किसी बिन्दु में ले जाएं और भावना करें कि साँस इस बिन्दु में अन्दर जा रही है और इसी से बाहर निकल रही है तो प्राणों का प्रवेश होने लगता है। जब हम होश के साथ अर्थात अनुभव करते हुए कि साँस आ रही है, या जा रही है, यह प्रक्रिया करते हैं तो प्राणों का प्रवेश होता है। होश शामिल होने के कारण ही प्राणायाम की प्रक्रिया इतनी असरदार है। बिना होश के साँस लेने से प्राणों का कम ही प्रवेश होता है। शास्त्रों में लिखा है कि ईश्वर ने मनुष्य को गिनती की साँसें दी हैं। सिद्ध लोग साँसों पर इस प्रकार नियन्त्रण करते हैं कि उनकी आयु बढ़ जाती है। कई साधनाओं में सुषुम्नानाड़ी (रीढ की हड्डी के अन्दर) से साँस लेने एवं छोड़ने का अभ्यास कराया जाता है। मूलाधारचक्र से सहस्रारचक्र तक पूरक अर्थात साँस लेना एवं सहस्रारचक्र से मूलाधारचक्र तक साँस छोड़ने का अभ्यास कराया जाता है। एक अन्य तरीके में साँस को मूलाधारचक्र से सुषुम्नानाड़ी में होते हुए सहस्रारचक्र तक खीचते हुए ले जाते है और फिर साँस छोड़ते हुए सहस्रारचक्र (सिर का ऊपरी भाग) से शरीर के आगे की ओर अर्थात मुख और पेट के बाहर से होते हुए पुनः मूलाधारचक्र में लाकर फिर सुषुम्नानाड़ी में सहस्रारचक्र तक लाते हैं। एक प्रकार से अर्द्धवृत्ताकार गति हो जाती है। कुछ अभ्यास के बाद साँस लेने और छोड़ने के लिए परिश्रम नहीं करना पड़ता है। साँस छोड़ना जैसे ही समाप्त होने वाला होता है उसके कुछ ही पूर्व दुबारा से साँस लेना चालू कर दिया जाता है जिससे साँस टूट नहीं पाती अर्थात वृत्ताकार गति चलती रहती है। जब तक साँस टूटे नहीं उसे एक ही साँस माना जाता है। सिद्धों की लम्बी आयु का यह भी एक कारण है।

आचार्य श्री शत्रुघ्नदास की सप्तशती तन्त्रसार नामक पुस्तक में दुर्गासप्तशती का उत्कीलन मन्त्र ऊँ वाग्बीज (ऐं) मायाबीज (ह्रीं) कामबीज (क्लीं) लक्ष्मीबीज (श्रीं) नमः शिवाय, इस प्रकार से दिया गया है। दुर्गासप्तशती का पाठ करने के पूर्व इस मन्त्र का 108 बार जप करना चाहिए। ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं नमः शिवाय, इस मन्त्र का पाठ के पूर्व 108 बार जप करने से दुर्गासप्तशती का निष्कीलन हो जाता है। कीलक स्तोत्र का प्रथम श्लोक है– विशुद्ध ज्ञानदेहाय त्रिवेदीदिव्यचक्षुषे। श्रेयःप्राप्तिनिमित्ताय नमः सोमार्धधारिणे। कीलक स्तोत्र के

इस प्रथम श्लोक से ही वास्तविक उत्कीलन मन्त्र का उद्धार किया जाता है। यथा– विशुद्धज्ञानदेहाय– विशुद्ध (परम् ब्रह्म) ज्ञान ही जिनका शरीर है अर्थात परमब्रह्म स्वरूप अर्थात ऊँ। त्रिवेदीदिव्यचक्षुषे– त्रिचक्षु अर्थात सत्, रज, तम रूप अर्थात सरस्वती–लक्ष्मी–काली रूप। श्रेयःप्राप्तिनिमित्ताय अर्थात श्रेय प्राप्ति हेतु अर्थात श्रीं, नमः सोमार्धधारिणे अर्थात नमः शिवाय। भगवान शिव चन्द्रार्ध को धारण करने वाले होते हैं।

यह मन्त्र दुर्गासप्तशती के आरम्भ में दिये गये कीलक स्तोत्र के प्रथम श्लोक से निकाला गया है। दिव्य का अर्थ है ऊँ, त्रिवेदीदिव्यचक्षुषे से वाग्बीज+मायाबीज+कामबीज, श्रेयःप्राप्तिनिमित्ताय से लक्ष्मीबीज, नमः सोमार्द्ध धारिणे से नमः शिवाय लिया गया है। दुर्गासप्तशती में आरम्भ में सभी शापों से दूर करने के लिए 18 श्लोकों का स्तोत्र दिया गया है। उसमें लगभग हर श्लोक में प्रथम पंक्ति में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग किया गया है। इस विभक्ति के बाद नमः, शब्द आना चाहिए, हमें मन में सोच लेना है कि नमः शब्द है। यदि मन्त्र बड़ा न हो तो प्रयास करना चाहिए कि पूरा मन्त्र एक साँस में आ जाए। यह भी सुनने में आया है कि 108 के बजाए 109 बार जपना चाहिए, 108 शक्तिपीठ हैं अतः 108 मन्त्र उन शक्तिपीठों के लिए एवं 109 वाँ अपने लिए होता है।

वषट्/वौषट का एक अर्थ पहुँचाना है। वह् धातु में डषट् प्रत्यय लगाने से वषट् शब्द बनता है। वह् धातु का अर्थ है ढोना (अर्थात पहुँचाना), धारण करना। सन्देश पहुँचाना या हवि पहुँचाना। देवताओं को हवि पहुँचाने के लिए बोला गया शब्द, देवताओं को सन्देश पहुँचाने के लिए बोला गया शब्द। जैसे नेत्रत्रयाय वौषट् अर्थात नेत्रों के द्वारा उसे अपना सन्देश पहॅुचाते हैं। वषट् शत्रुओं को नष्ट करने के लिए होने वाला भाव भी है। वषट् / वौषट् इस शब्द का प्रयोग शत्रु को नियन्त्रित एवं आदेशित करने के लिए भी किया जाता है। वषट् का प्रयोग ऊर्जा को नियन्त्रित करने एवं उसे किसी मार्ग में भेजने के लिए अर्थात channelise करने में भी होता है। वौषट् का प्रयोग वषट् की तरह होता है इसके अलावा it is used when one wants control over one's vision and observation. स्वाहा का अर्थ विनाश, अपने को समर्पण करना है। फट् अर्थात शत्रुओं पर आक्रमण करना या शत्रुओं को भगाना, हुं क्रोध को सूचित करता है जिससे शत्रु को डराया जाता है। भगवान शिव इसी मन्त्र से क्रोध द्वारा तीसरे आँख से ज्वाला निकालते हैं अर्थात भस्माग्नि करते हैं। क्रोध आने पर इस शब्द को बोलकर तीसरे नेत्र से ऊर्जा निकाली जाती है। हुम् का प्रयोग सुरक्षा कवच बनाने के लिए भी होता है। हुम् फट् अपने को सुरक्षित करते हुए लक्ष्य पर हमला करने के लिए होता है। स्वाहा का प्रयोग आहुति देने एवं तर्पण देने दोनों में होता है। लोग जपते चले जाते हैं, मन कही और भटकता है विचार कहीं और रहता है जिससे सफलता नहीं मिलती है। एकाग्रता के लिए सुझाव दिया जाता है कि मन्त्र को भ्रूमध्य पर लिखा देखें, उसे देखते हुए जप करने का अभ्यास करें। एक अन्य तरीका यह भी बताया जाता है कि अपने द्वारा हो रहे जप को स्वयं सुनने का अभ्यास करना चाहिए अर्थात स्वयं अपना श्रोता बनना चाहिए। अभिमन्त्रित करना शब्द भी प्रयोग में आता है, मन्त्र पढ़कर उस वस्तु में फूँक मारने से वह वस्तु अभिमन्त्रित हो जाती है। जितनी बार मन्त्र पढेंगे उतनी बार फूँक मारना होगा। एक पुस्तक में पढ़ने को मिला है कि अद्वैत वेदान्त के श्रवण मनन निदिध्यासन आदि उपायो के बजाय कुण्डलिनी जागरण साधना या भक्ति मार्ग का सहारा लेना बेहतर उपाय है। भक्ति योग में लीनता होती है, कर्मयोग एवं ज्ञान योग में साक्षी भाव होने के कारण एक दूरी होती है।

नवार्ण-संस्कार-विधिः

श्रीगणेशाय नमः। अद्य पूर्वोच्चरित एवं गुण–विशेषण–विशिष्टायां शुभ–पुण्य–तिथौ श्रीइष्ट–देवतानुष्टुभ्–मन्त्रस्य छिन्नत्वादि–पञ्चाशद्–दोष–परिहारार्थं आराध्य–कर्मणः मध्ये विघ्न–विच्छेद –जनित–प्रत्यवाय–परिहार–द्वारा श्री इष्ट–देवता–प्रीत्यर्थं पुनश्च जननादि–दश–विध–संस्काराणि करिष्ये।

उक्त प्रकार संकल्प कर निम्न जननादि संस्कार करें। प्रत्येक संस्कार के लिए निर्दिष्ट मन्त्र को ताम्र–पात्र में अष्ट–गन्ध से लिखकर उसका षोडशोपचारों से पूजन करे। फिर उसका अष्टोत्तर–शत (108) बार जप करे। जहाँ अधिक जप करना है, वहाँ उसका उल्लेख कर दिया है।

1. शापोद्धार– 'स्वाहा'–युक्त नवार्ण–मन्त्र के प्रत्येक अक्षर को 'हस्रौं' से पुटित कर लिखें–

हस्रौं ऐं हस्रौं, हस्रौं ह्रीं हस्रौं, हस्रौं क्लीं हस्रौं, हस्रौं चा हस्रौं, हस्रौं मुं हस्रौं, हस्रौं डा हस्रौं, हस्रौं यै हस्रौं, हस्रौं वि हस्रौं, हस्रौं च्चे हस्रौं, हस्रौं स्वा हस्रौं, हस्रौं हा हस्रौं। जप संख्या– अयुत (10,000)।

2. उत्कीलन– पूर्ववत् स्वाहा युक्त नवार्ण के प्रत्येक अक्षर को ह्स्क्लीं से पुटित कर लिखे। यथा– ह्स्क्लीं ऐं ह्स्क्लीं इत्यादि।

3. चेतनी– ईं ऐं औं क्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा ईं ऐं औं।

4. आह्लादिनी– ऊँ क्लीं नमः ऐं ह्रीं क्ली चामुण्डायै विच्चे स्वाहा ऊँ क्ली नमः।

5. तेजोद्दीपन– वद वद वाग्वादिनि ऐं ह्रीं क्लीं..... स्वाहा वद वद वाग्वादिनि।

6. मन्त्राभ्य–जनन– अं आं इं ईं.... सं हं लं क्षं ऐं ह्रीं क्लीं.... स्वाहा क्षं लं हं सं शं षं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एं लॄं लृं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं। (जहाँ पर ....दिया गया है वह बीच के वर्ण हैं अर्थात पूरी वर्ण माला अनुस्वार लगाकर पढ़नी है, अः अः ही रहेगा, अं अं ही रहेगा।)

7. सूतकनिवारण–ऐं क्ली सौः ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा ऐं क्लीं सौः।

8. उभय–सूतकादि–त्याग (जन्म–मृत्यु आदि निवारण) 'स्वाहा'–युक्त नवार्ण के प्रत्येक अक्षर को प्रणव (ऊँ) से सम्पुटित कर लिखें। यथा– 'ऊँ ऐं ऊँ', 'ऊँ ह्रीं ऊँ ' इत्यादि।

9. मन्त्र–प्रत्यक्ष (संजीवन)–'स्वाहा'–युक्त नवार्ण के प्रत्येक अक्षर को श्री–बीज (श्रीं) से सम्पुटित कर लिखें। यथा– – 'श्रीं ऐं श्रीं, श्रीं ह्रीं श्रीं' इत्यादि। जप संख्या– अयुत (10,000)।

10. प्राण–स्थापन– 'स्वाहा'–युक्त नवार्ण के प्रत्येक अक्षर को वाग्वीज (ऐं) से सम्पुटित कर लिखें। यथा– 'ऐं ऐं ऐं, ऐं ह्रीं ऐं इत्यादि।

11. मन्त्र–स्पन्दन–वह्नि– ऊँ ह्रीं ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा ऊँ ह्रीं ऊँ।

12. दीपन– भूर्ज–पत्र पर अष्ट–गन्ध से अधोमुख त्रिकोण अकारादि से क्षकारान्त लिखें। अधोमुख शीर्ष 'अं' से बनाकर वाम–भुजा 'अः' तक लिखकर पूरी करें। ऊर्ध्व–स्थित आधार को 'कं' से प्रारम्भ कर 'थं' तक लिखकर पूर्ण करें। फिर दक्ष–भुजा को 'दं' से प्रारम्भ कर 'हं लं क्षं, तक लिखकर उसे पूरा करें। इस त्रिकोण के मध्य में 'हंसः' से सम्पुटित नवार्ण–मन्त्र लिखें। यथा–

'हंसः ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा हंसः'। जप संख्या–एक सहस्त्र (1000)।

13. ताड़न– ताड़ पत्र के ऊपर निम्न प्रकार अष्ट गन्ध से मन्त्र लिखकर ताम्र–पात्र में स्थापित करें और षोडश या पञ्चोपचार–पूजन कर दर्भ–शाखा से जल में एक सहस्र (1000) बार जप करते हुए ताड़न करें–

'यं फट् ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा यं फट्'

14. निबोधन– करवीर–पत्र के ऊपर 'स्वाहा'–युक्त नवार्ण–मन्त्र के प्रत्येक अक्षर को कूर्च–वीज (हूं) से सम्पुटित कर लिखें। यथा– 'हूं ऐं हूं, हूं ह्रीं हूं' इत्यादि। फिर पूर्ववत् उसे ताम्र–पात्र में स्थापित कर, पूजन कर, पञ्च–सहस्र (5000) जप करें।

15. अभिषेचन– ताड़ या अश्वत्थ–पत्र पर निम्न प्रकार मन्त्र लिखें–

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा अभिषिञ्चयामि।'

फिर पूर्ववत् ताम्र–पात्र में स्थापित कर, पूजन कर, उस पर जल–धारा छोड़ते हुए एक सहस्र (1000) जप कर उसका अभिषेक करें।

16. दाहन– ब्रह्म–वृक्ष के तैल या अष्ट गन्ध से ताम्र–पात्र में निम्न प्रकार मन्त्र लिखें–

श्री श्री श्री श्री श्री

रँ रँ रँ रँ रँ रँ
रँ ऐं रँ ।। रँ ह्रीं रँ ।। रँ क्लीं रँ ।। रँ चा रँ ।। रँ मुं रँ ।। रँ डा रँ ।।
रँ रँ रँ रँ रँ रँ

रँ रँ रँ रँ रँ रँ
रँ यै रँ ।। रँ वि रँ ।। रँ च्चे रँ ।। रँ स्वा रँ ।। रँ हा रँ ।।
रँ रँ रँ रँ रँ

फिर पूर्ववत् पूजन कर अष्टोत्तर– शत (108) जप करे। स्पष्ट है कि मन्त्र के प्रत्येक अक्षर को रँ से चारों ओर से घेरा गया है।

17. विमलीकरण–ताम्र–पात्र में पूर्ववत् निम्न मन्त्र को लिखें, पूजन कर एक सहस्र(1000) जप करें– ऊँ ह्रौं वषट् ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा ऊँ ह्रौं वषट्।

18. पुनर्जीवन– क्रमांक 17 के समान निम्न मन्त्र का प्रयोग करें–

वषट् ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा वषट्।

19. प्रोक्षण– भूर्ज–पत्र पर अष्ट गन्ध से निम्न प्रकार मन्त्र लिख दण्डवत् कर पूर्ववत् पूजन कर कुश–शाखा द्वारा जल से प्रोक्षण अष्टोत्तर–शत (108) बार जप करते हुए करें– ऊँ क्रौं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा ऊँ क्रौं।

20. आप्यायन– पूर्ववत् ताम्र–पात्र में 'स्वाहा'– युक्त नवार्ण के प्रत्येक अक्षर को 'ह्सौं' से सम्पुटित कर लिखें, फिर पूजन कर एक सहस्र (1000) जप करें– 'ह्सौं ऐं ह्सौं, ह्सौं ह्रीं ह्सौं' इत्यादि।

21. तर्पण– पूर्ववत् ताम्र–पात्र में निम्न मन्त्र लिखकर गो दुग्ध, गो– घृत और जल से पूर्ण कर यथा–विधि पूजन कर एक सहस्र (1000) जप द्वारा तर्पण करें–

स्वधा ऐं क्रीं क्लीं विद्महे तत्–प्रधानाय धीमहि तन्नो देवी चामुण्डायै विच्चे स्वाहा प्रचोदयात, श्रीमहाकाली–महालक्ष्मी–महासरस्वती–देवताः तर्पयामि।

22. पुनर्दीपन– पूर्ववत् ताम्र–पात्र में लिखकर पूजन कर एक सहस्र (1000) जप करें–

ऊँ क्रीं श्रीं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा ऊँ क्रीं श्रीं।

23. गोपन– 'स्वाहा'– युक्त नवार्ण मन्त्र के प्रत्येक अक्षर को काली–बीज (क्रीं) से सम्पुटित कर पूर्ववत् ताम्रपात्र में लिख पूजन–पूर्वक एक सहस्र (1000) जप करें– यथा 'क्रीं ऐं क्रीं, क्रीं ह्रीं क्रीं' इत्यादि।

उक्त प्रकार संस्कार कर अन्त में मूल–मन्त्र का एक सहस्र जप करें।

मूल–मन्त्र है– ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा।

पुरश्चरण के आदि, मध्य और अन्त में इस विधि का का पालन करने से प्रत्यक्ष–सिद्धि प्राप्त होती है।

।।इति बाल–चन्द्रिकायां नवार्ण–जननादि–दश–विध–संस्कारं सम्पूर्णम्।।

वर्णमाला से जप

ऊँ

अं नमः शिवाय अं

आं नमः शिवाय आं

इं नमः शिवाय इं

ईं नमः शिवाय ईं

उं नमः शिवाय उं

ऊं नमः शिवाय ऊं

ऋं नमः शिवाय ऋं

ॠं नमः शिवाय ॠं

ऌं नमः शिवाय ऌं

ॡं नमः शिवाय ॡं

एं नमः शिवाय एं

ऐं नमः शिवाय ऐं

ओं नमः शिवाय ओं

औं नमः शिवाय औं

अं नमः शिवाय अं

अः नमः शिवाय अः

कं नमः शिवाय कं

खं नमः शिवाय खं

गं नमः शिवाय गं

घं नमः शिवाय घं

ङं नमः शिवाय ङं

चं नमः शिवाय चं

छं नमः शिवाय छं

जं नमः शिवाय जं

झं नमः शिवाय झं

ञं नमः शिवाय ञं

टं नमः शिवाय टं

ठं नमः शिवाय ठं

डं नमः शिवाय डं

ढं नमः शिवाय ढं

णं नमः शिवाय णं

तं नमः शिवाय तं

थं नमः शिवाय थं

दं नमः शिवाय दं

धं नमः शिवाय धं

नं नमः शिवाय नं

पं नमः शिवाय पं

फं नमः शिवाय फं

बं नमः शिवाय बं

भं नमः शिवाय भं

मं नमः शिवाय मं

यं नमः शिवाय यं

रं नमः शिवाय रं

लं नमः शिवाय लं

वं नमः शिवाय वं

शं नमः शिवाय शं

षं नमः शिवाय षं

सं नमः शिवाय सं

हं नमः शिवाय हं

ळं नमः शिवाय ळं

क्षं

ळं नमः शिवाय ळं

हं नमः शिवाय हं

सं नमः शिवाय सं

षं नमः शिवाय षं

शं नमः शिवाय शं

वं नमः शिवाय वं

लं नमः शिवाय लं

रं नमः शिवाय रं

यं नमः शिवाय यं

मं नमः शिवाय मं

भं नमः शिवाय भं

बं नमः शिवाय बं

फं नमः शिवाय फं

पं नमः शिवाय पं

नं नमः शिवाय नं

धं नमः शिवाय धं

दं नमः शिवाय दं

थं नमः शिवाय थं

तं नमः शिवाय तं

णं नमः शिवाय णं

ढं नमः शिवाय ढं

डं नमः शिवाय डं

ठं नमः शिवाय ठं

टं नमः शिवाय टं

ञं नमः शिवाय ञं

झं नमः शिवाय झं

जं नमः शिवाय जं

छं नमः शिवाय छं

चं नमः शिवाय चं

ङं नमः शिवाय ङं

घं नमः शिवाय घं

गं नमः शिवाय गं

खं नमः शिवाय खं

कं नमः शिवाय कं

अः नमः शिवाय अः

अं नमः शिवाय अं

औं नमः शिवाय औं

ओं नमः शिवाय ओं

ऐं नमः शिवाय ऐं

एं नमः शिवाय ए

लॄं नमः शिवाय लॄं

लृं नमः शिवाय लृं

ऋॄं नमः शिवाय ऋॄं

ऋं नमः शिवाय ऋं

ऊं नमः शिवाय ऊं

उं नमः शिवाय उं

ईं नमः शिवाय ईं

इं नमः शिवाय इं

आं नमः शिवाय आं

अं नमः शिवाय अं

अं नमः शिवाय अं

कं नमः शिवाय कं

चं नमः शिवाय चं

टं नमः शिवाय टं

तं नमः शिवाय तं

पं नमः शिवाय पं

यं नमः शिवाय यं

शं नमः शिवाय शं

ऊँ

नोट– क्षं सुमेरू है अतः इसे क्षं ही पढेंगे, इसके अगल बगल मन्त्र नहीं लगाऐंगे। अं को अं ही पढेंगे, इसमें बिन्दु पहले से लगा हुआ है अतः अन्य बिन्दु लगाने की जरूरत नहीं है। अः को अः ही पढेंगे, चूँकि इसमें बगल में दो बिन्दु पहले से लगे हुए हैं अतः ऊपर अनुस्वार का बिन्दु लगाने की जरूरत नहीं है।

त्रिपुरासारसमुच्चय ग्रन्थ के द्वितीय पटल में शारदा तिलक ग्रन्थ का उल्लेख करते हुए लिखा है कि– एव मातृकाक्षरमालया जपं कुर्वताम् एकवारेण जपः शतसंख्यापरिमितो भवति। शारदातिलके राघवभट्टेन एव व्याख्यातम्। जिसका तात्पर्य है कि वर्णमाला से किसी मन्त्र का एक बार जपने से वही फल मिलता है जो अन्य मालाओं के द्वारा सौ बार जपने से होता है।

वर्णमाला से जप का एक अन्य तरीका निम्नवत् है–

अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं (मन्त्र) क्षं ळं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एं लॄं लृं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं । (इसे 108 बार जपे)

इस प्रकार के जप में एक सन्देह है। मन्त्र के पहले एवं बाद में क्षं का प्रयोग होना चाहिए या नहीं। यदि क्षं को मेरू माना जाता है तो क्षं का प्रयोग नहीं होना चाहिए। किन्तु कुछ किताबों में क्षं को भी दिखाया है। इस विषय के प्रबुद्ध जन इसका समाधान कर सकते हैं। (यह हो सकता है कि जब सारे अक्षरों को इकठ्ठा पढ़ना हो तो क्षं डालने से सुमेरू का उल्लंघन न होता हो, किन्तु इस विषय पर मैं आश्वस्त नहीं हूँ। मुझे केवल ळं तक गई वर्णमाला भी मिली है और क्षं तक गई वर्णमाला भी देखने में मिली है।) ऐसा कहते हैं कि एक मास तक प्रतिदिन 108 बार इस प्रकार से जप करने से मन्त्र का पुरश्चरण हो जाता है। इससे थोड़ा कम अक्षर भूत लिपि

में है। भूतलिपि से भी मन्त्र को सम्पुटित कर प्रतिदिन 108 बार इस प्रकार जप करने से एक मास में पुरश्चरण हो जाता है। भूतलिपि में अक्षरों का क्रम इससे भिन्न है। ल के उच्चारण में जिह्वा दाँत से स्पर्श करती है एवं ळ के उच्चारण में जिह्वा मूर्धा में स्पर्श करती है। र, रि एवं ऋ के उच्चारण में जिह्वा मूर्धा से स्पर्श करती है। रिं एवं ऋं के उच्चारण में क्या अन्तर है, इसे समझने के लिए संस्कृत जानने वालों से सम्पर्क किया जा सकता है। बहुत पहले मुझे संस्कृत महाविद्यालय के एक व्याख्याता ने बताया था कि जैसे टर्रर्रर के उच्चारण में जिह्वा हल्की सी मुड़ी होकर फटफटाती हुई एक विशेष प्रकार की गति करती है, वैसी ही जिह्वा की गति ऋ के उच्चारण में होना चाहिए, किन्तु इस पर मुझे स्पष्टता नहीं है। विद्वान ही प्रकाश डाल सकते हैं। गं एवं ङं के उच्चारण में भी सावधानी की आवश्यकता है। गं में ग बोलने के बाद ही म् बोलना होगा। ङं के उच्चारण में आरम्भ से ही नाक को शामिल कर ग का उच्चारण कर अन्त में म् बोलना होगा। सही उच्चारण शिक्षा शास्त्र नामक वेदांग में पढ़ाया जाता है। र्यां का उच्चारण र्याम् इस प्रकार कर सकते हैं। क्स्लूं का उच्चारण कस्लूम् की तरह होगा पर क और स में अधिक समय नहीं लेना होगा बल्कि इन अक्षरों में छूते ही भागने जैसा करना होगा। हिन्दी में राम को राम् की तरह पढ़ते हैं जबकि संस्कृत में राम्अ जैसा पढ़ते हैं। गं के एवं ङं के उच्चारण के भेद को समझना होगा।

गुप्त साधन तन्त्र में बताया गया है कि वर्णाक्षर ही स्त्री है। तन्त्र में जहाँ कहा गया है कि स्त्री से युग्मित होकर मन्त्र जपना है वहाँ इसका तात्पर्य है कि वर्णाक्षरों से युक्त कर मन्त्र जपना है। वर्णमाला से युक्त होकर जप करने की विधि पहले ही बताई जा चुकी है। गदाभयकरः का अर्थ गदा से अभय करने वाला है। इसे पढ़ेंगे कैसे? यदि गदा, भयकरः पढ़ें तो अर्थ हो जायेगा गदा से भय करना। सम्भवतः गदा के आ को थोड़ा खींचना होगा, अलग से आ नहीं पढ़ना होगा और उस खिंचाव में अ आजायेगा। खिंचाव का तात्पार्य आवाज को तेज या धीमा करना नहीं है। इसी प्रकार किसी शब्द के अन्त में ओ है, उसके बाद ऽ चिन्ह के बाद वाला शब्द अ से शुरु होता है तब भी यह समस्या आती है। वहाँ भी ऽ इस चिन्ह के पहले जो ओ है उसे थोड़ा सा खींचना होता है। सही उच्चारण संस्कृत व्याकरण के ज्ञाता लोगों से पूछा जा सकता है। यदि भाव अच्छा है तो उच्चारण गलत होने पर भी सफलता मिल जाती है किन्तु सकाम कर्म के लिये कहा जाता है कि उच्चारण शुद्ध होना चाहिये अन्यथा अनर्थ हो सकता है। साधकों को यह भाव निकालना आवश्यक है कि मैंने यह किया, वह किया, उसके लिये यह किया, क्योंकि कर्ता केवल ईश्वर ही है। उसने ही आपके माध्यम से किसी का हित किया है और आप यह समझ बैठे कि आपने किया है। साधना में या अन्य समयों में अपने शत्रु का भी ध्यान नहीं होना चाहिये क्योंकि इससे आपकी ऊर्जा वहाँ प्रवाहित होने लगती है। यही कारण है कि सिद्ध लोग शत्रुओं को क्षमा करने की सलाह देते हैं। आपका हृदय या मन शत्रुओं को बैठाने के लिये नहीं है। साधना दो–तीन घण्टे की नहीं बल्कि चौबीस घण्टे की होती है क्योंकि उसके हर कर्म पूजा की तरह होना चाहिये।

शब्दों के अर्थ कैसे निकाले जाते है-

शब्द को इस प्रकार टुकड़ों में बाँटा जाता है जिसमें प्रत्येक टुकड़े का कोई न कोई अर्थ हो। शब्द को कई प्रकार से टुकड़ों में बाँटा जा सकता है। जैसे शाश्वती इस शब्द को शश्वत् अव्यय से बनाकर उसका अर्थ हमेशा रहने वाली किया जा सकता है। श+अश्व+ती, इस प्रकार से भी विच्छेद किया जा सकता है। श का अर्थ है कल्याण या आनन्द। अश्व का अर्थ है घोड़ा जो शक्ति का प्रतीक है। तन् धातु में ड प्रत्यय लगाकर त शब्द बनता है जिसका अर्थ होता है विस्तार करने वाला, देने वाला या निर्माण करने वाला। इस प्रकार अर्थ हुआ आनन्द एवं बल को बढ़ाने वाली। श+आशु+ती इस प्रकार से भी विच्छेद किया जा सकता है। तब अर्थ होगा

आनन्द का शीघ्र ही विस्तार करने वाली। इस प्रकार से अनेक अर्थ किये जा सकते है। यह भी देखा गया है कि कोई अक्षर किसी शब्द का प्रतिनिधित्व करता है। प्रायः शब्द का पहला अक्षर लेने से पूरे शब्द का बोध हो जाता है। जैसे मति का अर्थ माया का विस्तार करने वाली भी कर सकते है। म का एकाक्षरी कोष में अर्थ माया है। मम् मायाम् विस्तारयति इति माया। माया का पहला अक्षर ले लिया और विस्तारयति का अन्तिम ति अक्षर ले लिया। म माया के लिए एवं ति विस्तारयति के लिए ले लिया गया है। केवल पहला एवं अन्तिम अक्षर ही पूरे शब्द का बोध नहीं कराता है बल्कि यह भी देखा गया है कि बीच के अक्षर से ही पूरे शब्द को ले लिया जाता है। जैसे दम्भनी का अर्थ दम्भ (अहंकार) को हटाने वाली अर्थात् नष्ट करने वाली किया गया है। यहाँ विग्रह है– दम्भम् अपनयति इति दम्भनी। दम्भ शब्द तो पूरा ले लिया पर अपनयति का न अक्षर ले लिया जो शब्द के बीच में है। इस प्रकार शब्द का कोई अक्षर लेकर उसको पूरे शब्द को प्रतीक मानकर भी शब्दों के अर्थ निकाले जाते है। यह भी देखा गया है कि व्याकरण के सभी नियमों का पालन पूर्ण रूपेण नहीं हो पाता है। जैसे कुल्ला शब्द का विग्रह किया गया कुलम् लालयति इति कुल्ला अर्थात् जो इन्द्रियों के समूह को पोषित करे वह शक्ति कुल्ला है शब्द बनेगा कुलला, किन्तु बन गया कुल्ला। बीच का ल हलन्त वाला ल हो गया। कुन्ती शब्द का एक अर्थ लिया गया जो अपने प्रयास से सिर को ठण्डा या शीतल किये हुये है अर्थात् ठण्डे दिमाग वाली। क+ उन्द+ ई, इस प्रकार से शब्द का विच्छेद किया गया। क का अर्थ सिर एवं उन्द् का अर्थ गीला है। ई का अर्थ शक्ति होता है अतः प्रयास अर्थ किया गया। कोन्दी शब्द बनना चाहिए पर बन गया कुन्ती। ऐसा लगता है पररूप सन्धि कर दी गयी है। व्याकरण के नियम विशेषकर सन्धि के नियम प्रायः लगते हुए नही देखे गये है। निरूक्त पढ़ने से तो समझ में नही आता कि व्याकरण का कौन सा सूत्र लगाकर शब्द बनाया गया है। किसी शब्द का कोई अक्षर लेते है फिर उस अक्षर का भी रूप बदल दिया जाता है। मेरी समझ में तो यह आया है कि यथासम्भव शब्दों के इस प्रकार से टुकड़े किये जायें कि उन टुकड़ों के कुछ अर्थ हो या उन टुकड़ों को किसी शब्द से जोड़कर अर्थ किया जाये तथा सन्धि के नियमों में ढील दी जाये तो शब्दों के अर्थ निकाल जा सकते हैं। केश में ई जोड़ने पर केशे बनेगा पर हमने केश+ई को केशी बनाते हुए भी देखा है। सन्धि के नियम पालन होते हुए नहीं देखे गये है। निरूक्त में भद्र, मंगल शब्द के अर्थ जिस तरह से निकाले गये है उससे तो यही लगता है कि यह नियम निर्धारित किया गया है कि शब्द में धातु देखो या कुछ ऐसे अक्षर देखो जिससे अर्थ इस प्रकार निकले कि कुछ संगत अर्थ निकल आये एवं सन्धि के नियम तथा व्याकरण के अन्य नियम शिथिल कर दो।

एकाक्षरी कोष से भी बहुत मदद मिलती है। ड प्रत्यय का प्रयोग करने से बड़ा लाभ होता है क्योंकि प्रायः धातुयें दो अक्षर की होती है और ड प्रत्यय लगाने से एक अक्षर का शब्द बन जाता है। इस प्रत्यय में टि (शब्द के अन्तिम स्वर से लेकर अन्त तक के अक्षर) का लोप हो जाता है और कर्ता अर्थ में अर्थ आ जाता है। जैसे तन् धातु में ड प्रत्यय लगाने से टि (यहाँ पर अन् है) का लोप होकर त बनेगा जिसका अर्थ है विस्तार करने वाला। सिद्धान्त कौमुदी, निरुक्त, विष्णु सहस्रनाम (आचार्य गोविन्द, केरल) का भली भाँति अध्ययन करने से बहुत लाभ होगा।

शब्द के आगे ''में विराजमान'', ''का कारण'', ''के समान'' लगाने से भी अर्थ निकलते है। जैसे पुष्टि शब्द का अर्थ पुष्टि स्वरूपा, पुष्टि में विराजमान, पुष्टि का कारण अर्थात् पुष्टि देने वाली होगा। जैसे किसी का नाम बोला गया सिंह तो इसका अर्थ होगा सिंह के समान अर्थात् सिंह के समान बहादुर। हमें सोचना होता है कि किस गुण या किस कर्म में समानता है। ''यह इसका है'' लगाने से भी अर्थ निकलते है। जैसे पापम् अस्य अस्ति इति पापः, पाप इसका है अर्थात् पाप वाला अर्थात् पापी। ''इसका है'' का अर्थ स्वामी भी किया जाता है। गदा इसका है अर्थात् गदा का स्वामी।

प्रत्यय लगाकर शब्द बनाये जाते है तो हमें देखना होगा कि प्रत्यय किस कारक में लगाये गये। उस कारक

में ही अर्थ लगाना चाहिए। जैसे साधनी शब्द है। साध् धातु में ल्युट् प्रत्यय लगाकर साधनम् शब्द बना और फिर स्त्रीलिंग में साधनी हो गया। ल्युट् प्रत्यय कर्ता कारक में नहीं होता है। अतः इसका अर्थ प्राप्त करने वाला नहीं होगा। इसका अर्थ करण कारक में होगा अर्थात् जिसके माध्यम से किसी चीज को प्राप्त किया जाता है।

कृत्य ल्युटो बहुलम् सूत्र का बहुत लाभ मिलता है। इस सूत्र के अनुसार कृत्य प्रत्यय सामान्यतः जिन कारकों एवं कालों में प्रयुक्त किये जाते है, आवश्यकता पड़ने पर उससे भिन्न कालों एवं कारकों का भी बोध कराते है। जैसे देवी का एक नाम स्मृता है, उसका अर्थ हुआ जिसे याद किया गया पर इस सूत्र से अर्थ जिसको याद किया जाता है या जिसको याद किया जायेगा, यह अर्थ भी निकलता है।

स्तोत्रो में बीच बीच में बीज मन्त्र दे दिये जाते हैं जो विशेषण जैसे दिखते हैं, वहाँ पर इस बीज मन्त्र के स्वरूप वाली, इस बीज मन्त्र में विराजमान, इस बीज मन्त्र में शक्ति रूप से विराजमान, इस बीज मन्त्र की शक्ति स्वरूपा इस प्रकार से अर्थ लिख सकते हैं।

देवीरहस्य ग्रन्थ में सूर्य कवच दिया गया है जिसमें बहुत से बीज मंत्रों का प्रयोग किया गया है। इन श्लोकों के अर्थ निकालने में कुछ समस्या होती है अतः कुछ श्लोको का अर्थ दिया जा रहा है

ऊँअंआंइंईं शिरः पातु ऊँ सूर्यो मन्त्रविग्रहः।

ऊंऊंऋंॠं ललाटं में ह्रां रविः पातु चिन्मयः।

ऊँ अर्थात त्रिदेव स्वरूपा या सबकी रक्षा करने वाले, मन्त्र स्वरूप वाले सूर्य जो ऊँ अं आं इं ईं इन मातृकाओं में (शक्तिरूप में) विराजमान है, या इन मातृकाओं के स्वरूप वाले है या इन मातृकाबीजों से वेष्टित है/ धारित है या इन मातृकाओं से शक्ति प्राप्त करते है, या इन मातृकाओं की शक्ति से युक्त है, वे सिर की रक्षा करें। (इस प्रकार से अर्थ निकालते है।) ह्रां बीज से उपलक्षित/ बोध्य (ह्रां=आनन्द शक्ति की प्रधानता जिसमें है, आ आनन्द शक्ति का बोधक है), चित् शक्ति युक्त उं ऊं ऋं ॠं मातृका बीजों से वेष्टित या इन मातृका बीजों से शक्ति प्राप्त करने वाले सूर्य, या इन मातृका बीजों के स्वरूप वाले या इन मातृका बीजों में शक्ति रूप में स्थित सूर्य मेरे ललाट की रक्षा करें। सः सर्वजगदीश्वरः का अर्थ है – सः बीज से बोध्य जो सम्पूर्ण जगत का ईश्वर है, सः बीज कहने से ही सर्व जगदीश्वर बोधित होते है। नं नारायणवल्लभः का अर्थ है– नं बीज से उपलक्षित, नारायण की प्रिय या जिनको नारायण प्रिय है दोनों अर्थ कर सकते है)। प्रभु अर्थात सभी कार्य करने में समर्थ। र्यां को र्यां–Ryamm पढ़ेगें। मं महसां निधि का अर्थ है मं बीज से उपलक्षित, महसांनिधिः अर्थात तेजों के भण्डार। मूल अर्थात सभी कार्यो के कारण पर जिनका कोई कारण न हो, कारणनपुसंक लिंग ही होता है, कारण अर्थ में मूल नपुंसक लिंग होगा। सकलनायक– अर्थात सभी जीवों की जीवन यात्रा कराने वाले।

ऊँऊँऊँ उत ऊँउऊहसमयः सूर्यो अवतान्मां भयाद्, ह्रांह्रींह्रं ह्हहा हसोः हसहर्सौः हसो अवतात् सर्वतः। सःसःसः सससा नृपादवनचराचौराद्रणात् संकटात्, पायान्मां कुलनायकोअपि सविता ऊँह्रींहसौः सर्वदा।

तीन ऊँ एवं ऊँ उ ऊ ह स मातृकाओं की शक्ति रखने वाले या इन मातृकाओं की प्रचुरता वाले सूर्य मुझको भय से रक्षा करें। ह्रीं ह्रीं ह्रुं स्वरूपा या इन बीजों से बोधित, तीन ह मातृका (समुच्चय रूप से), ह मात्रका सौः बीज, ह मातृका से सम्पुटित स मातृका व सौः बीज, इनकी शक्ति रखने वाले सूर्य सब ओर से रक्षा करें। (हंस = सूर्य, सब जगह व्याप्त)। सः सः सः तीन सः बीजों की पृथक–पृथक शक्ति मिश्रित रूप से तीन स मातृकाओं की शक्ति से युक्त (पृथक अस्तित्व नही), ऊँ ह्रीं हसौः की शक्ति से युक्त कुलनायक सविता देवाता नृप से, वनचर (हिंसक जन्तुओं से), चोर से रक्षा करें। (कुलनायक विशेषण है, सविता विशेष्य है, कुल अर्थात 36 तत्वों से युक्त विश्व)। (ऊँ ऊँ ऊँ – यहाँ तीनों ऊँ की पृथक सत्ता है पर मिलकर शक्ति देते है, ऊँउऊहस– यह समास है, सबका पृथक अस्तित्व समाप्त होकर मिलित शक्ति का बोध कराता है।)

द्रांद्रींद्रूं दधनं तथा च तरणिरर्भांभैर्भयाद् भास्करो, रांरींरूं रूरूरूं रविर्ज्वरभयात् कुष्ठाच्च शूलामयात्, अंअंआं विविवीं महामयभयं मां पातु मार्तण्डको, मूलव्याप्ततनुः सदावतु परं हंसः सहस्त्रांशुमान्।

द्रां द्रीं द्रूं इन बीजों के स्वरूप वाले/ इन बीजों में शक्ति रूप से स्थित/ इन बीजों की शक्ति रखने वाले (सभी बीजों का पृथक–पृथक अस्तित्व है जैसे चावल के ढेर में चावल के कण)। द ध न मातृकाओं से मिलकर बने बीज दधनं (Dadhanam/ Dadhnanag) की शक्ति रखने वाले, भां बीज की शक्ति रखने वाले, भैः बीज की शक्ति रखने वाले तरणि सूर्य भय से रक्षा करें। रां री रूं बीजों की शक्ति रखने वाले, तीन रू मातृकाओं की शक्ति रखने वाले रवि भगवान ज्वर, भय, कुष्ठ, शूल (मानसिक पीड़ा) से रक्षा करें। अं अं आं बीजों के स्वरूप वाले या इन बीजों में शक्ति रूप से स्थित या इन बीजों की शक्ति रखने वाले, तीन वि मातृकाओं की शक्ति/ मातृकाओं से बने बीज की शक्ति रखने वाले मार्तण्डक भगवान, महारोग युक्त मेरी रक्षा करें। मूलाधार चक्र में भी व्याप्त जिनका सूक्ष्म शरीर, ऐसे सहस्र किरणों वाले हंस भगवान ज्ञानमय शरीर (पर अर्थात यहाँ पर ज्ञानमय शरीर ले सकते है।) की रक्षा करें। ग्रहनाथ अर्थात सभी ग्रह जिनसे शक्ति प्राप्त करते है, दिनेश्वर अर्थात जब तक सम्पूर्ण दिन है तब तक उसके वैभव के स्वामी। त्रयीतनुं अर्थात तीनों वेद जिनका स्वरूप है, वेद वर्णात्मिका है। इन वर्णो में सूर्य का ही तेज है, ये वेद सूर्य के ही प्रतिपादक है।

प्रकीर्ण

मन और विचार की एकाग्रता होने पर बैखरी वाणी, मध्यमा या पश्यन्ती का रूप ले लेती है अर्थात सूक्ष्मतम अवस्था में चली जाती है जिससे जिन मन्त्र वर्णों का उच्चारण हो रहा है, वे जिस चक्र में है उसमें हलचल या कम्पन होने लगता है और शक्ति का स्फुट होने लगता। इन चक्रों में जो अक्षर हैं वे जब तक सूक्ष्म नहीं बनेंगे तब तक चक्रों में हलचल नहीं हो पाएगी, जितनी मन एवं विचारों की एकाग्रता उतनी सूक्ष्मता होती है। बैखरी शब्द जब अपने अन्य रूपों में परिवर्तित होने लगता तब इस अवस्था विशेष को मन्त्रजागरण या मन्त्र चैतन्य कहते हैं। मन्त्र जाग्रत होने पर (सम्बन्धित वर्ण, चक्र में हलचल होकर शक्ति का स्फोट होने पर) शक्ति चैतन्य होती है और शक्ति के चैतन्य होने से मन्त्र के अधिष्ठाता देवता आकर्षित होकर फल प्रदान करते हैं। मन्त्र जब जाग्रत होकर शक्ति युक्त होता उस समय अर्थ भावजगत एवं सूक्ष्मजगत में आकार धारण करने लगता है जो समयानुसार देव रूप में परिवर्तित हो जाता। मन्त्र देवता का सूक्ष्म रूप एवं देवता मन्त्र का स्थूल रूप होता है। मन्त्र को जाग्रत एवं सिद्ध करने के लिये और उसके द्वारा अभीष्ट फल प्राप्त करने के लिये मन पर संयम (यन्त्र) और विचारों की एकाग्रता तो आवश्यक है ही, इसके अलावा मन्त्र जिस देवता का हो, उसका ध्यान भी हृदय में बराबर होना चाहिये। जिह्वा पर मन्त्र और हृदय में देवता का ध्यान हो। (नोटः– हमारे अनुसार यदि कठिनाई हो तो मन्त्र का ही ध्यान करें)।

6 चक्र शक्तियों के केन्द्र हैं। तंत्र शास्त्र यही बतलाता है कि किस प्रकार की अभिलषित सिद्धि के लिये किस प्रकार की शक्ति पर ध्यान द्वारा मन को एकाग्र करना चाहिये। तन्त्र अर्थात विस्तार। जब शक्ति अपने स्थान पर उद्बुध हो जाती तो उसे सम्पूर्ण देह के विभिन्न केन्द्रों में प्रसारित करने की प्रक्रिया तन्त्र कहलाती है। यन्त्र अर्थात मन को संयत करने का प्रयास (न कि कागज पर रेखा बनाना, अंक लिखना, लोग जपते चले जाते हैं, मन कहीं और भटकता, विचार कहीं और रहता, जब सफलता नहीं मिलती तो कहते है सब पाखण्ड है। एकाग्र करने के सूत्र हैं – मन्त्र को भ्रूमध्य पर लिखा देख, उसे देखते जप करने का अभ्यास करना या अपने द्वारा हो रहे जप को स्वयं सुनने का अभ्यास करना अर्थात स्वयं अपना श्रोता बन जाना।

मानसिक जप करने से हृदय कमल तथा कण्ठ में विशुद्ध चक्र जागृत होने लगता है। भ्रूमध्य में ध्यान करते

हुए जप करें। जब व्यक्ति मन्त्र जपकर्ता के स्थान पर श्रोता बन जाता तो उसका सूक्ष्म शरीर जागृत हो जाता। मन्त्र सिद्धि के बाद तत्फल की प्राप्ति हेतु कर्मकाण्ड अर्थात हवन आदि आवश्यक होता है। यह अनुभव है कि एकाग्रचित्तता से जप के बाद बहुत अच्छा, ताजगीपन, ऊर्जावान लगता है। ऊर्जा शरीर में उसी प्रकार आती हुई प्रतीत होती है जैसे योग प्राणायाम के बाद ऊर्जा आती हैं एवं अच्छा लगता है।

अकार (अ) मकार की उपाधि से अर्थात मकार की छाया पड़ने पर अनुस्वार (.) बन जाता है, जिस प्रकार इकार, रेफ (र) की छाया पड़ने पर ऋ बन जाता है। अनुस्वार या बिन्दु को 'परमप्रमाता' एवं मकार को संकुचित प्रमाता कहते हैं। 'हृदय में हकार रूपी शक्ति मकार रूप नर के साथ स्थित है। इससे एक बात स्पष्ट हुई कि मन्त्र शास्त्र में अनुस्वार का उच्चारण 'मकार' की तरह करना चाहिये।

मन्त्रयोग संहिता में विभिन्न बीजों के उद्धार हेतु दिये श्लोकों में 'म्' कार लिखा है। 'दुःख क्यों होते हैं? भाग–5, गीता प्रेस इस पुस्तक में पेज–212 में लिखा है कि 'अनुस्वार' का उच्चारण मकार के समान करना अधिक उपयुक्त है। 'तन्त्र सिद्धि रहस्य (केदारनाथ) पुस्तक में लिखा है अनुस्वार मकार है। यह मकार लौकिक एवं पारलौकिक कार्यों में सिद्धि देने वाला तथा विस्तार करने वाला है। गीता प्रेस के कल्याण के शक्ति अंक में लिखा है बंगाल में अनुस्वार का उच्चारण 'ङ्' की तरह, मद्रास में 'म्' की तरह होता है। बंगाल वाले ऐं को ऐंङ् इस प्रकार पढ़ते हैं, जबकि तमिलनाडु के लोग ऐं को ऐम् इस प्रकार पढ़ते है। एक विद्वान ने बताया है कि उर्ध्वरेता, मुक्तिकामी ङ् की तरह व सांसारिक कामना हेतु 'म्' की तरह उच्चारण करना चाहिए। पर यह उल्टा प्रतीत होता है क्योंकि म् का उच्चारण करने पर मुख बन्द रहता है, अतः ऊर्जा भीतर ही रहेगी जिससे कुण्डलिनी शक्ति ऊपर उठेगी और मुक्ति मिलेगी। ङ् का उच्चारण करने पर मुख खुला रहेगा और ऊर्जा बाहर जायेगी जिससे सकाम कर्म पूरे होगें। तान्त्रिक कर्मों (मारण–मोहन–उच्चाटन आदि) में ङ् की तरह उच्चारण होना चाहिए चूँकि वे सकाम कर्म है और आप अपने से बाहर किसी पर प्रयोग कर रहे है। शारदा तिलक के द्वितीय पटल के चौथे श्लोक में लिखा है मकारस्य बिन्दु रूपत्वात् बिन्दुः पुमान् रविः। मकार बिन्दु रूप है। बिन्दु के व्यंजन होने के कारण अर्धमात्रा होती है। बिन्दोरपि व्यंजनत्वाद् अर्धमात्रैव। पण्डित गोविन्द शास्त्री के अनुसार मकार बिन्दु अथवा अनुस्वार का ही रूप है। मकार के बिन्दु रूप में परिणत होने के कारण यदि साधक बिन्दु का मकार के रूप में उच्चारण करते है तो सही है क्योंकि बिन्दु का मूल रूप मकार ही है। हिन्दी प्राणतोषणी ग्रन्थ के अनुसार क से भ तक के 24 वर्ण प्रकृति आदि 24 तत्वात्मक हैं और उनका योग सूर्य रूप 'म' से होता है। 'म' बिन्दु रूप होने से सूर्य का स्वरूप हैं। एक स्थान पर लिखा है कि बिन्दु मकार का प्रतीक है। सर्वप्रथम उत्पन्न होने वाला बिन्दु इस मकार का दूसरा नाम है 'अनुत्तरोत्तरो बिन्दुर्म, इति प्रतिशब्द्यते। श्रीनेत्र तन्त्र के 21वें अध्याय में लिखा है कि बिन्दु मकार के रूप में परिवर्तित हो जाता है। बिन्दु अभेद का सूचक है एवं म भेद का सूचक है। मकार सभी वर्णों का आश्रयस्थली है। पथ्यास्वस्ति पुस्तक (राजस्थान प्राच्य विद्या प्रकाशन) में लिखा है अनुस्वार का उच्चारण तीन प्रकार से होता है। सामवेद वाले म् की तरह उच्चारण करते है। ऋग्वेद वाले न् की तरह उच्चारण करते है। क्षेत्र विशेष के लोग ङ् की तरह उच्चारण करते है। वरिवस्यारहस्य में लिखा है कि बिन्दु मकार का रूप है। श्रीनेत्रतन्त्र के द्वितीय अधिकार के 29वें श्लोक में लिखा है प्रभंजनान्तो मकारो बिन्दुरूप। एक विद्वान के अनुसार म शब्द मित् से बना है, बीजाक्षरों के उच्चारण में मुख बन्द होना चाहिए जिससे ऊर्जा अन्दर रहे। अतः म् इस प्रकार उच्चारण करना सही है। हिमालय के योगी बिन्दु को म् की तरह पढ़ते हैं।

अक्षर में बिन्दु लगाने से मन्त्र बन जाता है। ऊर्जा उत्पन्न करने के लिये दो तत्व आवश्यक है– 1. माध्यम (Medium) 2. क्षोभ (Distribution)। अक्षर माध्यम का तथा बिन्दु या चन्द्र बिन्दु क्षोभ का कार्य करते है। आगम रहस्य के दशम पटल में लिखा है कि बिन्दु युक्त वर्ण ही वीर्यवान होता है।

ईं कृ शिव–शक्ति सामरस्य रूप।

ईं कृ अहं, ईं रक्त बिन्दु, शुक्ल बिन्दु, मिश्र बिन्दु और संवित् (अथवा हार्धकला) इन चार बिन्दुओं से बना।

ईकारस्य बिन्दु– विसर्गात्मनः शिवशक्त्योः।

अकार हकारयोः सामरस्य रूपत्वात्।।

ह्रीं कृ शिव–शक्ति रूप।

(ईं कृ ऊँ कृ अहं)

ह्रीं कृ माया की वह अमोघ शक्ति जो सर्वत्र व्याप्त है, दुःख दूर करे। विशेषण के रूप में इस बीज मन्त्र का अर्थ होगा दुख दूर करने वाली, माया की अमोघ शक्ति जो सर्वत्र व्याप्त है। ईं अर्थात माया, र अर्थात शक्ति या अमोघ शक्ति, ह अर्थात आकाश, बिन्दु (अनुस्वार) अर्थात दुख हरण।

ह्रीं में ल् लगाने पर बगलामुखी बीज बनता है जिसका अर्थ है माया की वह अमोघ शक्ति जो सर्वत्र व्याप्त है, तथा स्थिरताकारक है, दुख दूर करे। ल अर्थात स्थिरताकारक, ल पृथ्वी का बीज है जो स्थिरता का प्रतीक है। ह का अर्थ है आकाश एवं ल का अर्थ है पृथ्वी। इस बीज मन्त्र में ह् एवं ल् दोनों है। जिसका अर्थ हुआ जो आकाश से पृथ्वी तक व्याप्त है अर्थात् सर्वत्र व्याप्त है। बगलामुखी देवी स्तम्भन की देवी है। स्तम्भन का अर्थ है लोक को स्थिर रखना अर्थात उसे गिरने नहीं देना।

ज्ञानेन्द्रियों एवं कर्मेन्द्रियों की शब्द–स्पर्शादि विषयों में पहुँचने वाली मानसिक वृत्तियों को रोककर अपने भीतर स्वाभाविक रूप से विचरणशील अनाहत नाद का अनुभव करना मानसिक जप है। यह नाद वर्णमाला के अक्षरों का मूल कारण है। अक्षर मन्त्रों के कारण है। गुरु नही है तो गुरुस्तवराज के जप से यूँ ही पुरश्चरण हो जाता है (शाक्त सिद्धान्त, श्री मोतीलाल खड्डर)।

अकार प्रकाश रूप परम शिव है। इकार पराशक्ति का द्योतक होने के कारण सभी वर्णों का कारण है, चित् कला है। पराशक्ति का वाचक होने के कारण ही अनुस्वारयुक्त इकार अर्थात् 'इं' का सम्पुट लगाकर जपने से मन्त्र चैतन्य होता है। अकार रूप निर्गुण ब्रह्म जब इकार रूप शक्ति (चित्–शक्ति) के सम्पर्क में आता है तब वह 'उ–कार' रूप सगुण ब्रह्म बन जाता है। ई कृ शिव – शक्ति सामरस्य, इ कृ पराशक्ति।

ऊँ हौं जूं सः मे हौं यह त्वरित फल पाने के लिए जोड़ा जाता है। किसी भी साधना को शुरू करने के पूर्व उस देवी, देवता की गायत्री की पाँच माला अवश्य करें अन्यथा संकल्प सिद्ध नहीं होता। विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र को भगवान रूद्र द्वारा शापित किया है और इसके शापोद्वार की विधि अनुष्ठान प्रकाश ग्रन्थ में दी गयी है। नवग्रह पीड़ाहारी स्तोत्र की सिद्धि करने की विधि नहीं दी गयी है पर इससे मिलता–जुलता एक स्तोत्र जैन सम्प्रदाय में प्रचलित है जिसमें 21 पाठ प्रतिदिन 27 दिन तक करने को कहा गया है। सम्भवतः 27 नक्षत्रों के आधार पर ऐसा करने के लिए कहा गया होगा। सामान्यतः स्तोत्र के दस हजार पाठ करने का विधान है, अन्यथा एक हजार पाठ होना चाहिए। एक अन्य विधान में जितने श्लोक है उतने श्लोक प्रतिदिन उतने दिनों तक करने को कहा गया है। माया तन्त्र के सातवें पटल के अनुसार चतुर्दशी पौर्णमासी यदि सोमवार या मंगलवार को पड़े तो उसका प्रभाव सूर्यग्रहण से भी ज्यादा होता है। सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः, मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः। इस श्लोक में मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति को एक साथ पढ़ेगें फिर न संशयः पढेगें जिससे अर्थ स्पष्ट हो जायें। सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके, शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते, इस श्लोक को प्रातःकाल सात बार पढ़ना चाहिये जिससे मंगल ही मंगल हो। पुरश्चरण की वैकल्पिक विधियों में एक मास की विधि के अनुसार एक कृष्णाष्टमी से अगली कृष्णाष्टमी तक एक सहस्र जप प्रतिदिन करना चाहिए। 15 दिन का भी एक विधान है जिसके अनुसार एक चतुर्दशी से दूसरे चतुर्दशी तक प्रतिदिन एक सहस्र जप होना चाहिए।

एक अन्य मत में इन पन्द्रह दिनो में प्रतिदिन 6 सहस्र जप होना चाहिए तथा इसमें हवन आदि की आवश्यकता नही है। 11 दिन के विधान में कृष्ण चतुर्दशी से नवमी तक प्रतिदिन 6 सहस्र जप होना चाहिए। नवरात्रि में भी पुरश्चरण का विधान है जिसके अनुसार रात में प्रतिदिन 6 सहस्र जप होना चाहिए तथा अष्टमी एवं नवमी को उपवास होना चाहिए। देव तिथियों में एक ही दिन में पुरश्चरण का विधान है। सूर्योदय से सूर्योस्त तक या सूर्योस्त से सूर्योदय तक लगातार जप करना चाहिए। जैसे रामनवमी में भगवान राम के मन्त्र का जप, गणेश चतुर्थी में गणेश जी का जप करना चाहिए। कृष्णाष्टमी से कृष्ण चतुर्दशी तक अर्थात इन 7 दिनों में कुल मिलाकर 40 हजार जप करना चाहिए। लगभग छः हजार जप प्रतिदिन होगा। मातृका से पुटित करके प्रतिदिन 108 बार जपने से पुरश्चरण हो जाता है। मातृकाओं के ऊपर बिन्दु लगेगा तभी मन्त्र बनेगा और मन्त्र के आगे अनुलोम क्रम में एवं मन्त्र के बाद विलोम क्रम में मातृकाओं का प्रयोग होगा। शारदा तिलक ग्रन्थ के अनुसार भूतलिपि से भी पुटित करके प्रतिदिन 108 बार जप जपने से मन्त्र का एक मास में पुरश्चरण हो जाता है। वार पुरश्चरण भी है अर्थात रविवार को एक हजार, सोमवार को दो हजार आदि...... शनिवार को सात हजार। मन्त्र दोष शान्ति के लिए आगम रहस्य के 19वें पटल में लिखा गया है कि मातृकाओं से मन्त्र को अनुलोम विलोम तरीके से पुटित करके 108 बार जपना चाहिए। प्राणतोषिणी ग्रन्थ में लिखा है कि भूतलिपि से 108 बार पुटित करने से मन्त्र के दोषों से शान्ति हो जाती है। प्राणतोषिणी ग्रन्थ में भी सर्वकाण्ड में लिखा है कि ह्रीं या श्रीं या क्लीं या ऊँ से मन्त्र सम्पुटित कर एक हजार आठ बार जपने से मन्त्र के दोषों से शान्ति मिल जाती है। आगम रहस्य के 19वें पटल में भी एक उपाय लिखा है। वहाँ संख्या नही बतायी गयी है पर ऐसे प्रसंग में कई स्थानों पर एक हजार की संख्या का उल्लेख किया गया है। वहाँ लिखा है एषु दोषेषु प्राप्तेषु मायां काममथापि वा, क्षिप्त्वा चादौ श्रियं चैव तद्दूषणविमुक्तये।

आगम निगम (वेद) से निकले है अतः निगम या वेद का हमेशा आदर करना चाहिए। यही कारण है कि आगम या तांत्रिक साधनाओं में भी गायत्री मन्त्र या उस देवी–देवता के गायत्री मन्त्र को जपने का विधान किया गया है। जप, ध्यान, ध्यान/जप में चेतना का एक केन्द्र पकड़े रहो, कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है। मन्त्र में चैतन्य या जीवत्व लाने का विधान कामधेनू तन्त्र के सातवें पटल में किया गया है। नेत्र तन्त्र में लिखा है कि– लां कारेण तु बीजेने तथैकान्तरितेन च। बलवान् जायते मन्त्रः......। 'लां' बीज से मन्त्र के एक–एक वर्ण को अन्तरित (सम्पुटित) करने से मन्त्र बलवान होता है जैसे ऊँ नमः शिवाय के लिए 'ऊँ लां न लां मः लां शि लां वा लां य लां' इस प्रकार जपना होगा। क्या बीज मन्त्र को पद कहा जा सकता है। पद्यते गमयते इति पदम्, जिसे कारण कुछ जाना जाये वह पद है। बीज मन्त्रों में भले ही सुप् आदि विभक्तियाँ न होती हो पर इनसे कुछ जाना जाता है अतः इसे पद कह सकते है। सम्पुट तीन प्रकार के होते है। 1. उदय सम्पुट (मन्त्र के पूर्व एवं बाद दोनों में अनुलोम क्रम से बोलना।) 2. अस्त सम्पुट (इसमें मन्त्र के पूर्व अनुलोम क्रम से एवं मन्त्र के बाद विलोम क्रम से रखना पड़ता है।) जैसे – हौं जूं सः 'ऐं मार्कण्डेय उवाच' सः जूं हौ। ऐसा करने से ऊर्जा बाहर नही जाती। 3. अर्द्ध सम्पुट (कामना मन्त्र या बीज मन्त्र के आदि या अन्त में एक ही स्थान में लगाया जाता है।) साधना करने पर पहले पूर्व जन्म के संस्कार कटते हैं, उसके बाद सफलता मिलती है। यही कारण है कुछ लोगों को जल्दी सफलता मिल जाती है कुछ लोगों को देर में। दुर्गा सप्तशती या अन्य स्तोत्रों के लोम विलाम पाठ का विधान है। लोम में गाने से पहले मन पर असर होता है और बाद में उसकी प्रतिक्रिया जागती है। लोम में गाने के बाद यदि वही स्तोत्र विलोम में गाया जाये तो उसकी प्रतिक्रिया बाहर नहीं होगी अपितु मन में ही होगी अर्थात् उसका प्रतिफल नही जागेगा।

कामना लक्ष्य से 'लोम–विलोम' दोनों में गाने से प्रतिक्रिया नहीं होगी और कामना सिद्धि नही होगी। केवल विलोम में स्तवन करने का कोई अर्थ नही।

प्रारम्भ से अन्त तक (स्तोत्र या भजन) पढ़ना लोम पाठ और अन्त से प्रारम्भ तक पढ़ना विलोम पाठ है। आपदामपहर्तारम् दातारम् सर्वसम्पदाम्..... मन्त्र को 41 तक दिन तक प्रतिदिन ग्यारह माला जपना चाहिए। मन्त्रमहार्णव में मन्त्र जाग्रति का एक विधान दिया गया है जिसके अनुसार ऊँ रं सं (मन्त्र) रं क्षं ऊँ इस प्रकार सात बार जपने से मन्त्र जाग्रत हो जाता है। मन्त्र को श्वास के साथ जपने का विधान है। श्वास लेते समय एवं छोड़ते समय भी मन्त्र करना चाहिए। छोटा मन्त्र है तो हर साँस के साथ मन्त्र जपना चाहिए। प्रयास यह करना चाहिए कि एक साँस में पूरा मन्त्र हो जाये। एक पुस्तक में यह भी पढ़ने को मिला है कि मन्त्र का जप श्वास के साथ हो, जब साँस ले तो जपें, साँस छोड़े तो न जपे, मन्त्र छोटा होना चाहिए इससे सुप्त मन्त्र जाग्रत हो जायेगा। किन्तु अधिकांश लोगों का यही कथन है कि साँस लेते एवं छोड़ते दोनों अवसरों पर जप होना चाहिए। अनुष्ठान प्रकाश में मन्त्रोत्कीलन का एक विधान दिया गया है– मायां तारपुटां मन्त्री जपेदष्टोत्तरशतं मन्त्रस्यादौ तथा वान्ते भवेत्सिद्धिप्रदा तु सा। इससे सिद्ध होता है कि ह्रीं ऊँ (मन्त्र) ऊँ ह्रीं लगाकर 108 बार जपने से मन्त्र का उत्कीलन हो जाता है। ब्राह्मण को सम्मान से दूर भागना चाहिए। किसी भी व्यक्ति का कितना भी नाम क्यों न हो जाये कुछ समय बाद समाप्त हो ही जायेगा। सौ, हजार, एक लाख इतने वर्षों के बाद उस व्यक्ति का नाम समाप्त हो ही जायेगा। केवल ईश्वर का नाम ही हमेशा रहता है। अतः नाम कमाने से दूर भागना चाहिए। जब तक आत्मासाक्षात्कार या ईश्वर का साक्षात्कार न हो, तब तक अपने को गुप्त ही रखना चाहिए। जो मन्त्र जपते समय त्रिकुटी के मध्य लाया जाता है, वह तत्काल जाग्रत हो जाता है। यह सिद्धि का वह गुप्त भेद है जो या तो लोग जानते नहीं या जानते तो प्रकट नहीं करते है। तन्त्रदीपनी ग्रन्थ के अनुसार मन्त्र को वर्णमाला के प्रत्येक वर्ण से अनुलोम–विलोम क्रम से सम्पुटित करके जपने से अरिमन्त्र भी सर्वसिद्धिदायक होता है। माया बीज युक्त मन्त्र शीघ्र सिद्ध होते है। माया (ह्रीम्) बीज से मन्त्रों में प्राण एवं चैतन्य का संचार होता है। कुछ तिथियाँ सूर्यग्रहण जैसी होती है जो है सोमवती अमावस्या, भौम चतुर्दशी, रविवार सप्तमी। चतर्दशी और सप्तमी तिथि शुक्ल पक्ष की हो। शुक्ल पक्ष की मंगल चतुर्थी एवं अष्टमी बृहस्पति तिथियाँ देवपर्व के समान मानी गयी है। चौर गणेश मन्त्र से न्यास करने का विधान प्रत्येक साधक के लिए बताया गया है जिससे साधना का फल उसे अवश्य मिले और वह बाहर न चला जायें।

स्तोत्र में पदच्छेद कर पढ़ सकते हैं क्योंकि वैसा पाठ करना चाहिए जिससे साधक को स्वयं तृप्ति मिले, अर्थ बोध स्पष्ठ हो। ऐसा करना पाठक की गुणवत्ता मानी जाती है।

भुवनेश्वरी के एक मन्त्र में हर–त्रिपुरहर–भवानी शब्द आया है, इसका अर्थ ऐसे शिव जो त्रिपुरासुर का संहार करने वाले, उनकी भवानी या पापों को नष्ट करने वाले, त्रिपुरासुर का संहार करने वाले शिव के प्राणों को जीवित रखने वाली करेंगे। भव अर्थात शिव एवं अनति अर्थात जीवित रखना। गदाभयकरो वास्तव में गदा+अभय+करो है। इसे इस प्रकार पढ़ना चाहिए कि अभय का बोध हो, न कि भय का। दा में थोड़ा रुक जाना है, पिच या नोड वही रखना है, थोड़ा देर दा पढ़ना बिना उतार चढ़ाव के। इसी प्रकार याचेहम् में चे पर थोड़ा देर तक पढ़ा जा सकता है। मुक्तिद धनद को मुक्तिद, धनद पढ़ेगे या मुक्ति द, धन द ऐसा पढ़ेगे। मुझे एक प्राचार्य ने बताया था कि यदि देवी देवता एकदम नजदीक हों तो मुक्तिद पढ़ेगे और यदि थोड़ा दूर हो तो मुक्ति द इस प्रकार पढ़ेगे (संस्कृत के विद्वान अधिक प्रकाश डाल सकते हैं)।

मन्त्र अभ्यास में सतर्कता एवं एकाग्रता होनी चाहिए। मन्त्र अभ्यास में यह सतर्कता और एकाग्रता दूसरे अन्य विचारों को रोकती है। जब मन्त्र योग का अभ्यास साधक के द्वारा समर्पण भाव से होता है तो उसका जप सहज ही बिना प्रयत्न के अपने आप होने लगता है। समर्पणभाव से किये जप में प्रयास की आवश्यकता नहीं होती। मन्त्र मन में गूँजने लगता है और व्यक्ति की सत्ता में अपना स्थान बना लेता है। यह श्वास के साथ सहज ही उच्चरित होने लगता है। एक समय आता है कि उसके शरीर की कोशिकाओं से अपने आप मन्त्र

निकलने लगता है तथा वह जपने के स्थान पर सुनने लगता है। आत्मा का स्वभाव सुनना है। यदि सुनाई देने वाली अवस्था आने लगी तो इसका तात्पर्य है कि व्यक्ति आत्मा के करीब पहुँच रहा है। मन्त्र जप तो वह जप है जिसमें एक एक कोशिकायें मन्त्र जपती हैं अर्थात साँस लेने के साथ मन्त्र कोशिकाओं के अन्दर आता है एवं साँस छोड़ने के साथ कोशिकाओं से बाहर जाता है।

लोमविलोम पाठ भी होता है। लोम में गाने से पहले मन पर असर होता है और बाद में उसकी प्रतिक्रिया जागती है लोम में गाने के बाद यदि वही स्तोत्र विलोम में गाया जाए तो उसकी प्रतिक्रिया बाहर नहीं होगी अपितु मन में ही होगी अर्थात उसका प्रतिफल नहीं जागेगा। कामना लक्ष्य से लोम–विलोम दोनों में गाने से प्रतिक्रिया नहीं होगी और कामना सिद्धि नहीं होगी। केवल विलोम में स्तवन करने का कोई अर्थ नहीं। प्रारम्भ से अन्त तक स्तोत्र या भजन पढ़ना लोमपाठ है और अन्त से प्रारम्भ तक पढ़ना विलोम पाठ है। तीसरे नेत्र पर ध्यान से कामदहन होता है। शिवजी ने इसी नेत्र से कामदेव को भस्म किया था। सुविधा के लिए सफेद बिन्दु पर ध्यान कर सकते हैं। भ्रूमध्य में ध्यान करते हुए जप करना चाहिए। जपकर्ता को स्वयं अपने जप का श्रोता बन जाना चाहिए। मन्त्र के अक्षरों का न्यास करने से व्यक्ति देवता होता है। बिना न्यास के मन्त्र जप आसुर एवं विफल होता है। जिस मन्त्र में दो ह्रीं होते हैं वह शीघ्रप्रद होता है तथा उसमें कीलक होते हुए भी दोष नहीं होता है। यही कारण है कि कुछ लोग ह्रीं ऊँ (मन्त्र) ऊँ ह्रीं की एक माला जप मन्त्र के उत्कीलन के लिए बोलते हैं। मन्त्रोच्चारण के समय देवता को योनि मुद्रा दिखाने से मन्त्रोच्चारण दोष दूर हो जाता है। भावना में सब कुछ है। वर्णों की भावना तेज पुंज के रूप में करना चाहिए। वर्णों को चेतन शक्ति युक्त समझना चाहिए। शब्दों की मूल चेतना परा, पश्यन्ती और मध्यमा में अन्तगर्भित है। अतः चेतना लाने के लिए वैखरी को सूक्ष्यस्तर पर लाना पड़ता है। वैखरी जड़ है। वर्णात्मक मन्त्र नहीं है बल्कि वर्णो में निहित शक्ति मन्त्र है। पश्यन्ती वाक् मन्त्र है। साधक दसों दिशाओं में मन्त्राक्षरों के व्याप्त होने का अनुभव करता है। मन्त्राक्षरों के सागर में डुबकी लगाते हैं। एक सिद्ध थे कि उन्हें मन्त्र के एक एक अक्षर अपने आस–पास चलते हुए दिखाई देते थे और वे उन अक्षरों को उसी प्रकार पकड़ लेते थे जैसे किसी वस्तु को छुआ जाता है। अक्षर माध्यम है और उसमें प्रयुक्त बिन्दु ऊर्जा है। ऊर्जा उत्पन्न करने के लिए दो बातों की आवश्यकता होती है। माध्यम एवं क्षोभ। अक्षर माध्यम का कार्य करते हैं बिन्दु एवं चन्द्र बिन्दु क्षोभ का कार्य करते हैं इस प्रकार मन्त्र बन जाता है। यही कारण है कि किसी भी अक्षर में अनुस्वार या बिन्दु लगाने से वह मन्त्र बन जाता है।

बगलाशाबर मन्त्र में एक साधक ने इसमें प्रयुक्त शब्दों का निम्न अर्थ बताया –

राजमुखबन्धन– Boss or Senior officer

ग्राममुखबन्धन– subordinate officer या association में जो नेता होगा।

ग्रामपुरूषबन्धन– subordinates या associates

व्याघ्रमुखबन्धन– चुगलखारी, पीठ पीछे षड़यन्त्र फैलाना।

कालमुखबन्धन– समय आपके इष्टकाम में रूकावट नहीं बनेगा। जैसे ट्रेन पकड़ने गये बस 1 मिनट देरी हो गई, बॉस से मिलने गये, कुछ देर हो गयी।–

मन्त्र सिद्धि का दर्शन

मन्त्र यह विषय व्यावहारिक नहीं है, इसका सम्बन्ध मानस शास्त्र से है। मन की एकाग्रता पर इसकी नींव है। इन्द्रियों के विषयों की ओर से लक्ष्य हटाकर मनको एकाग्र कर मन्त्र साधना करने से मन्त्र सिद्ध होता है। मन की चंचलता जितनी जल्दी हटेगी, उतनी ही जल्दी मन्त्र सिद्ध होगा। मन्त्र शब्द का शब्दार्थ भी महर्षियों ने

यही किया है कि मननात् त्रायते यस्मात् तस्मात् मन्त्र प्रकीर्तितः अर्थात मकार से मनन और त्रकार से रक्षण यानि जिन विचारों से हमारे कार्य सिद्ध हों वह मन्त्र है। मन्त्र विद्या योग का उच्च कोटि का विषय है। यह मन की बेतार की तार वर्की, wireless system है। हिप्नोटिज्म, मेस्मेरिज्म आदि इस विद्या के सम्मुख अत्यन्त तुच्छ हैं। मन से वर्णोच्चारण का घर्षण होने से एक दिव्य ज्योति प्रकट होती है। उन्हीं वर्णों के समुदाय का नाम मन्त्र है। इस विषय का ज्ञाता सम्पूर्ण सिद्धियाँ प्राप्त कर सकता है। इसलिये शास्त्रकारों ने मन्त्र शब्द का अर्थ विचार किया है। राजनीतिशास्त्र में इसीलिये लिखा गया है कि जिन विचारों को गुप्त रखकर राज्य तन्त्र चलाया जाता है, वे मन्त्र हैं। जपते चले जाओ अवश्य सिद्धि होगी जपात् सिद्धिः जपात् सिद्धिः।

मन की शुद्धि पर मन्त्र शास्त्र की नींव है। जब तक मनुष्य को विषय लालसा रहती है, तब तक बुद्धि निश्चयात्मक नहीं होती। मन तल्लीन नहीं होता। वह विषय वासना से अशुद्ध रहता है। इसलिये कहा गया है कि किसी कार्य को सिद्ध करना हो तो वासना रहित होकर कार्य में तल्लीन हो जाना चाहिए तब वह शीघ्रतर सिद्ध हो जाता है। मन्त्र का जप तल्लीन होकर करने से मन्त्र शीघ्र ही सिद्ध हो जाता पर मन्त्र साधना के समय साधनीय कार्य की ओर ही मन रहने से मन्त्र में तल्लीनता नहीं आती। बार बार उस कार्य का स्मरण होता है और बिना एकाग्रता के मन्त्र नहीं सिद्ध होता। यही मन्त्रशास्त्र का रहस्य है और वासना रहित होकर एकाग्रता–तल्लीनता प्राप्त कर लेना सहज बात नहीं है, यह बड़ा ही कठिन है। आज्ञा चक्र के क्षीण होने से जप तप पूजा पाठ में सफलता नहीं मिलती। अगर यह सक्रिय हो जाये तो सब पूर्ण रूप से सार्थक होगा। सबका फल भी मिलेगा। ध्यान चक्रों को भोजन है। ध्यान से चक्र सक्रिय होते हैं।

सहायक ग्रन्थों की सूची

1. श्रीमद्भागवत महापुराण।
2. वृहद्धर्म पुराण।
3. कालिका पुराण।
4. श्रीमद्देवी भागवत पुराण।
5. काली कल्पतरू, चण्डी प्रकाशन, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।
6. ताराकल्पतरू, चण्डी प्रकाशन, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।
7. कल्याण के विशेषांक, गीताप्रेस, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश।
8. चण्डी प्रकाशन प्रयागराज की विविध पुस्तकें।
9. तन्त्र महाविज्ञान, संस्कृति संस्थान, बरेली, उत्तर प्रदेश।
10. दुर्गासप्तशती की सप्तटीकाएं।
11. श्रीमदभगवत् गीता (साधक संजीवनी), गीता प्रेस।
12. श्रीमद्भगवत् गीता, स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती।
13. दस महाविद्या– गीता प्रेस, गोरखपुर।
14. दसमहाविद्या तन्त्रमहाशास्त्र, पं. राजेश दीक्षित।
15. तन्त्रालोक – श्री अभिनव गुप्त।
16. भारतीय दर्शन, बलदेव उपाध्याय।
17. चारों वेद–स्वामी दयानन्द सरस्वती।
18. 108 उपनिषद, श्रीराम शर्मा आचार्य।
19. निरूक्त निर्वचनानि, उदयनो मीमांसक।
20. योग उपनिषदकोश, सुभाष विद्यालंकार।
21. संस्कृत हिन्दी शब्दकोश, वामन आप्टे।
22. संस्कृत अंग्रेजी शब्दकोश, मोनियर विलियम्स।
23. एकाक्षरीकोश–राजस्थान प्राच्यविद्या संस्थान।
24. भारतीय प्रतीक विद्या, जनार्दन मिश्रा।
25. प्रतीक शास्त्र, परिपूर्णानन्द वर्मा।
26. विष्णुसहस्रनाम, आचार्य गोविन्द, उडुपी, केरल।
27. ललितासहस्रनाम, श्री भास्कर राय।
28. उपनिषदों में निर्वचन, वीणा मल्होत्रा।
29. वैदिक कोश, चन्द्रशेखर उपाध्याय।
30. वैदिक देवो का आध्यात्मिक और वैज्ञानिक स्वरूप, डा. कपिल देव द्विवेदी।

31. ऋग्वेदीय निर्वचन, छवि कृष्ण आर्य।
32. रामायण रहस्य– राधा गुप्ता।
33. भागवत, महाभारत एवं रामायण के छिपे रहस्य–राधा गुप्ता।
34. जय श्री लक्ष्मी– जयदेव सिंघानिया।
35. वैदिक कोश, राजवीर शास्त्री।
36. वैदिक देवी देवता–रघुवीर।
37. वैदिक निर्वचन कोश– ज्ञान प्रकाश शास्त्री।
38. हठयोग प्रदीपिका (स्वात्माराम)–ज्ञान शंकर सहाय
39. ज्ञानसंकलिनी तन्त्र– स्वामी प्रज्ञानन्द।
40. देवता तत्व विज्ञान– घनश्याम उनियाल।
41. प्रतीकोपासना– डा. ताराचन्द।
42. उरूज्योति– वासुदेव शरण अग्रवाल।
43. श्लेष तत्व– गुरूपाद हेगड़े।
44. प्रत्यभिज्ञा हृदय– जयदेव सिंह
45. विज्ञान भैरव– लक्ष्मण जू
46. शिव सूत्र – श्यामाकान्त द्विवेदी
47. भावप्रकाश निघण्टु– गंगा सहाय पाण्डेय
48. शब्दचयनिका– प्रभात रंजन सरकार
49. स्पन्दकारिका – रंजीत चौधरी
50. वेदोपज्ञा निर्वचन विद्या– रूपकिशोर शास्त्री
51. ऋग्वेदीय निर्वचन कोश –डा0 छवि कृष्ण आर्य
52. हिन्दी साहित्य कोश– ज्ञान मण्डल लिमिटेड, वाराणसी
53. मानक हिन्दी के शुद्ध प्रयोग– रमेश चन्द्र मेहरोत्रा
54. शब्दार्थ मीमांसा– प्रभाती लाल भाास्त्री
55. सप्तशती सर्वस्व– सरयू प्रसाद द्विवेदी
56. प्रयोगिक तन्त्र– पं0 गोविन्द शास्त्री
57. शब्दार्थ विचारकोश– रामचन्द्र वर्मा
58. मानव मूल्य व्याख्या कोश – धर्मपाल मैनी।
59. श्रीमद्आपदुद्धारक– बटुक भैरव स्त्रोत्र– डॉ. रूद्रदेव त्रिपाठी।
60. रूद्रयामलतंत्र– डा0 रूद्र देव त्रिपाठी।
61. श्री भवानी सहस्रनाम स्त्रोत्र– श्री जगदीश सेमवाल।
62. श्री गणेश सहस्रनाम– पवन कुमार शास्त्री
63. निरूक्त कोश– आचार्य महाप्रज्ञ

64. देवीसूक्त– प0 देवीदत्त चतुर्वेदी
65. उपनिषदों के निवर्चन– डा0 वेदवती वैदिक
66. प्रमुख उपनिषदों के पारिभाषित शब्द– संजय कुमार झा।
67. तंत्रागमीय ज्ञानकोश– डा0 चन्द्रशेखर शिवाचार्य।
68. सप्तशती सर्वस्व– सरयू प्रसाद द्विवेदी
69. दुर्गासप्तशतीरहस्य – आचार्य गंगाराम शास्त्री।
70. अर्थववेद– क्षेमकरण त्रिवेदी।
71. इतिहासपुराण निर्वचन कोश– शिवसागर त्रिपाठी।
72. पद्मचन्द्रकोश– धर्मेन्द्र कुमार गुप्त
73. गायत्री की शक्तियाँ– आचार्य श्रीराम शर्मा।
74. शक्ति तत्व एवं शाक्त साधना – श्यामाकान्त द्विवेदी।
75. Semantics of Rigveda- R.L.Kashyap
76. Dictionary of Vedas- T. Rangrajan
77. Vedic Dictionary- Suryakant
78. The Mahabharat - Paramhans Prajnananda
79. Mysticsm of Srimad Bhagwatam- Swami Jyotirmayanand
80. Mysticsm of Devi Mahatmya- Swami Jyotirmayanand
81. The Ten Great Cosmic Power- S. Shankaranarayan
82. Tantric Goddess & the Wisdom Goddess- David Frawley
83. The Ten Mahavidya, Tantric Vision of Divine Femine- David Kinsley
84. Philosophy of Gorakhnath- Akshya Kumar Bannerji
85. Glossary of Sanskrit Language – M. P. Pandit
86. Vedic Symbolism- Shri M. P. Pandit
87. Sanskrit Glossary of Yogic Terms- Swami Yogakanti
88. Abhinav Gupta Minor Works and Glossary - Satya Prakash Singh
89. The Rigveda Samhita - Prasanna Gautam
90. Tantrasara - B.N. Pandit